# دەولەت و میرگەهێن کوردی

## ل سەردەمێن ناڤەڕاست و نوودا

# الدول والإمارات الكُردية

## في العصرين الوسيط والحديث

کۆمەکا ڤەکۆلەران

مجموعة باحثين



Zakho Centre for Kurdish Studies


بەرگێ ئێکێ

UNIVERSITY OF ZAKHO

زانكۆيا زاخۆ

Zakho Centre
for Kurdish Studies

سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# دەولەت و میرگەهێن کوردی

# ل سەردەمێن ناڤەڕاست و نوودا

کۆمەکا ڤەکۆلەران

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکۆلینێن کوردی

سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

| | |
|---|---|
| پەرتووك | دەولەت و میرگەهێن كوردی ل سەردەمێن ناڤەڕاست و نوودا |
| ژ نڤیسینا | كۆمەكا ڤەكۆلەران |
| بەرگ | بەرگێ ئێكێ ٢٠٢٣ |
| بەرگ و سەرپەرشتییا دیزاینێ | وارهێل عەبدولباقی<br>رمزیە خلیل احمد |
| دەستەكا دیزاینێ | شرین غریب صالح<br>ئیمان عبد محجوب<br>رێزان قاسم حسێن<br>فاطمە خالد عزیز<br>سارە فیاض طیب<br>دلژین مستەفا یوسف<br>هێژا فاخر سەعید |
| رێكخەر | پالە عیسا |
| ISBN | 978-9922-661-15-5 |
| ژمارا سپاردنێ | D- \2344 \ 23 |

مافێ چاپێ یێ پاراستیە بۆ ©
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی
zcks@uoz.edu.krd +964 (0) 751 536 1550
Iraq-Kurdistan Region, Zakho- Univesity of Zakho

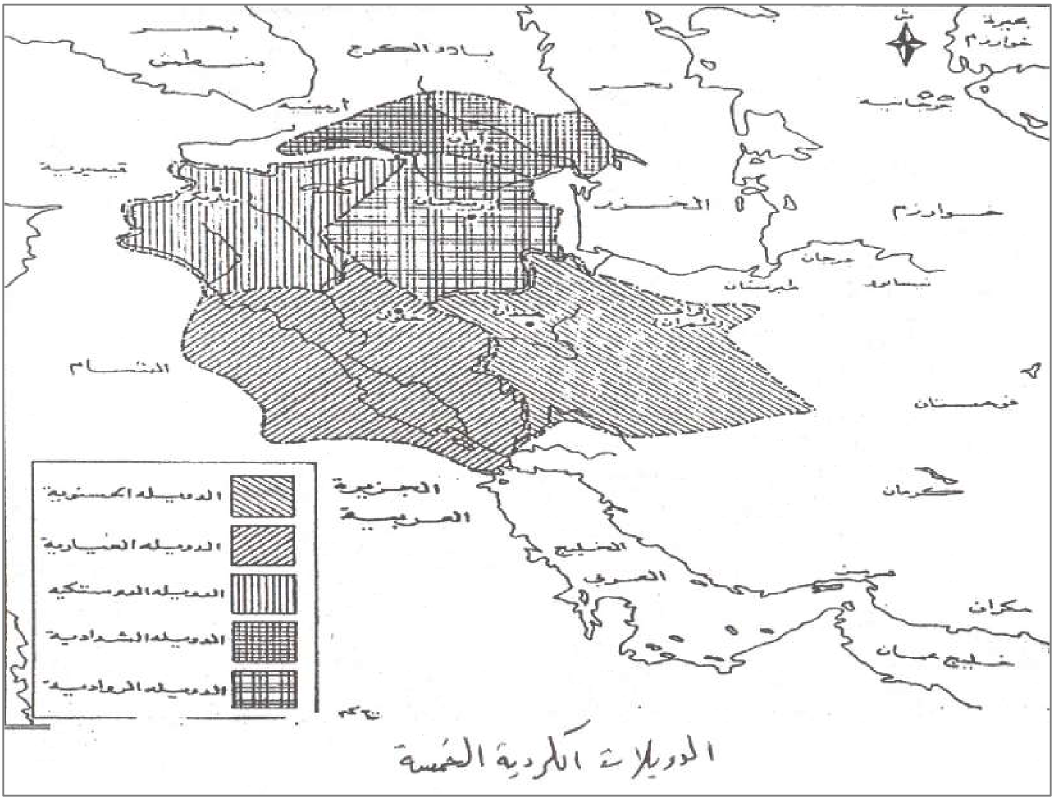


**سحر السيد عبد العزيز سالم و ابراهيم محمد علي مرجونة، تاريخ الاكراد: دراسة تاريخية حضارية في ظل الخلافة العباسية، الاسكندرية، ٢٠١٠.**

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

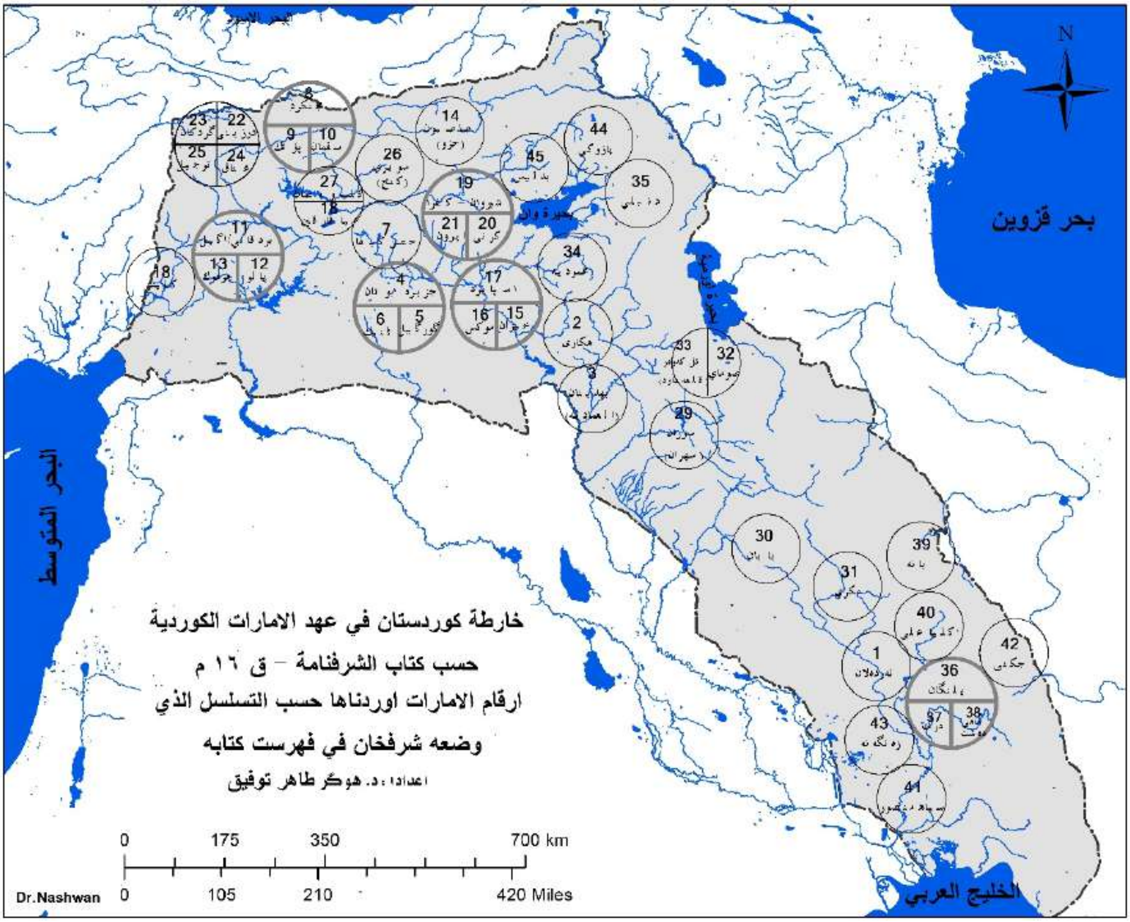


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# پێشکێشکرن

هوگر طاهر توفيق | نزار أيوب حسن

ئاراس محمد صالح
أجقو علي
بشار اكرم جميل
پەخشان سابير حەمەد
ثريا محمود عبد الحسن
حسين عثمان عبدالرحمن
خضير عباس المنشداوي
خطاب إسماعيل أحمد
درويش يوسف حسن
زرار صديق تۆفيق
سەردار ئەحمەد حەسەن گەردی
عبدالباسط سيدا
عبد الغنى عبد الفتاح زهرة
عثمان احمد محمدعلي
عمار يوسف عبدالله
عوسمان دەشتی
فايزة محمد حسن ملوك
فرست مرعي إسماعيل
فرهاد حاجي عبوش
كامران أورحمان مجيد
کەیوان ئازاد ئەنوەر
محمد الطاهر بنادي
محمود صالح سعيد
نزار علوان عبدالله
هيمداد حوسێن بەکر
ابوبكر دێوانه حمد بالەکی
توفيق رشيد يوسف
دەريا جەمال حەوێزی
سروشت جەوهەر
شهلة برهان عبدالله
طارق محمد أورحيم
عماد عبدالعزيز يوسف

قحطان احمد فرهود
لوقمان رەئووف
محمد علي صالح ويس
محمد محمود محمود حمد الدودانى
هدار سليم صالح
یەدوڵلا پەشابادی
أحمد سعيد السيد زيدان
بزار عثمان أحمد
پەروین رەئووف هادی
حسام السيد ذكى شلبى
شريف محمد مراد
صدرالدين عبدالرحمن قادر
عبد الباري عزيز عثمان
علي رحمتى
محسن إبراهيم أحمد الدوسكي
محمد مولود متي
نعمەت شەهاب حاجی
ئیسماعیل خالند ناوخۆش
امين غانم محمد
جەمیل محەمەد ئەنوەر شێلازی
خالد مغديد كانبى
ژیهات قادر حەسەن
شاين حمد امين صادق
شمال خمو خضر
صالح زاهير محمد
عبدالخالق عبدالله عثمان
کۆڤان رێسان حەسەن
نێچیروان جاسم ولی
هێرش کەمال رێکانی

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پشتی هەلبژارتنا ڤەکۆلینان ژلا یێ لیژنەیا زانستیڤە، لیژنەیا ژێرێ ب کارێ سەرپەرشتی و ئامادەکرنا ڤەکۆلینان ژ پێخەمەت دیزاینکرن و بەلاڤکرنێ ڕا بوو. لیژنە ژ ئەڤان بەڕێزان پێکهاتییە:

١. پ. د. هوگر طاهر توفیق
٢. . پ. هـ. د. نزار أیوب حسن
٣. پ. د. عبدالسلام نجم الدین عبداالله
٤. پ. د. حسین عثمان عبدالرحمن

ئەڤ پەرتووک کە (دەولەت و میرگەهێن کوردی ل سەردەمێن ناڤەڕاست و نوودا) کۆ مەکا ڤەکۆلینان ب خوە ڤە دگریت، کو بۆ هەڤ تەمین کۆنفرانسێ ناڤدەو لەتییێ سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی یا سەر ب فەکۆلتییا زانستێن مرۆڤایەتی ل زانکۆیا زاخۆ، ل ڕۆژێن ٣ و ٤ێ گولانا ٢٠٢٣ێ هاتینە پێشکێشکرن. ڤەکۆلینێن گەهشتینە کۆنفرانسێ ژلایێ لیژنەیا زانستیڤە هاتینە هەلسەنگاندن و ڤەکۆلینێن هەژی بۆ بەلاڤکرنێ هاتینە دەستنیشانکرن. لیژنەیا زانستییا کۆنفرانسێ ژ ئەڤان بەڕێزێن ل خوارێ پێکدهێت:

| | | | |
|---|---|---|---|
| پ. د. هوگر طاهر توفيق | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | سەرۆکێ کۆنفرانسێ |
| پ. د. عبدالسلام نجم الدين عبدالله | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | سەرۆکێ سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی |
| پ.هـ. د. نزار أيوب حسن | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | سەرۆکێ لیژنەیا زانستی |
| پ.د. خليل علي مراد | صلاح الدين | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.د. حسين عثمان عبدالرحمن | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. فاخر حسن يوسف | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ. هـ. د. ديار عبدالكريم سعيد | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.د. فرست مرعي اسماعيل | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.د. شوكت عارف محمد | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.د. خضير عباس محمد | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.د. خطاب إسماعيل احمد | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.د. شێرزاد زكريا محمد | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. لولاف مصطفى سليم | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. غسان وليد مصطفى | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. طارق احمد شيخو | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. عثمان عبدالكريم عمر | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. اڤين محمد حسن | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. محمد عبد القادر حسين | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. کامران إبراهيم خليل | زاخۆ | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| پ.هـ. د. حيدر لشكري | کۆیە | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| د. هيمن عمر احمد | سۆران | هەرێما کوردستان/ عیراق | ئەندام |
| د.ئیسماعیل شمس | علامه طباطبایی | ئیران | ئەندام |
| پ.هـ.د. سەبری ئاتەش | S.Methodist. Uni | ویلایەتێن ئێکگرتییێن ئەمریکا | ئەندام |
| پ.هـ.د. فاتح گەنچەر | Bitlis Eren. Uni | کۆمارا تورکیا | ئەندام |
| پ.هـ.د. ئەرجان گوموش | Mardin Artuklu. Uni | کۆمارا تورکیا | ئەندام |
| پ.هـ.د. ئەرجان چاغلایان | Muş Alparslan . Uni | کۆمارا تورکیا | ئەندام |

Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

| | | | |
|---|---|---|---|
| پ.هـ.د. عومەر توكوش | Bingöl . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| پ.هـ.د. مەتين ئاتماجا | Ankara Sosyal Bilimler . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| د. خلات موسى | زاخۆ | هەرێما كوردستان/ عيراق | ئەندام |
| د. ئەردال چيفتچى | Mardin Artuklu . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| د. فەسيح دينچ | Mardin Artuklu . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| د. ئەكرەم ئاكمان | Mardin Artuklu . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| د. نەوزاد كەلەش | Bingöl. Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| د. يالچن چاكماك | Munzur. Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| د. يووسف بالوكەن | Yozgat Bozok . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| د. ساشا ئەلسەنجاكلي | Inalco‹s Eurasian Studies | كۆمارا فەرەنسا | ئەندام |
| د. ياشار كاپلان | Hakkâri . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| د. عەبدولسەلام ئەرتەكين | Dicle . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |
| م. عەبدوللاهـ دەمير | Bingöl . Uni | كۆمارا توركيا | ئەندام |

## ليژنەيا ئامادەكار

| | | |
|---|---|---|
| پ. هـ. د. ماجد محمد يونس | سەرۆك | زانكۆيا زاخۆ |
| د. شورەشڤان عادل | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| د. ژيروان سەعيد | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| پ. هـ. د. شڤان قاسم حسن | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| پ. هـ. د. كاوان خليل اسماعيل | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. جمعة محمد قادر | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. وارهيل إسماعيل عمر | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. كاروان صالح ويسي | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. هژار عبد الله حسين | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. سليمان شفيق | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. عمر عبد الرحمن عمر | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. ژێهات قادر حسن | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. وحيد نعمت رمضان | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. پالە عيسى | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. دلێر كمال | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. محەمەد عيسى | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. وارهيل عبدالباقي كامل | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. جەگەرخوين جميل امين | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |
| م. محمد حجي حميد | ئەندام | زانكۆيا زاخۆ |

# ناڤەرۆک


| | | |
|---|---|---|
| پێشگۆتن | پ. د. هوگر طاهر توفيق<br>پ. هـ. د. نــزار أيــوب حسن | ١ |
| میرنشینەکانی کوردستان خوێندنەوەیەکی نوێ بۆ ناوی میر و هۆزەکان و باژێڕ و کەلهەکان | پ. د. زرار صديق تۆفيق | ٧ |
| کاریگەری کۆچ و کۆچپێکردن لە سەر هەرێمەکوردنشینەکان لەنێوان سەدەکانی (٥-٦ک/ ١١-١٢ز). | پ. ی. د. ئەبوبکر دێوانە<br>حەمەدحەسەن باڵەکی<br>ئیسماعیل خالند ناوخۆش | ٣١ |
| شوێنەواری شەدادیەکان لەشاری ئانی لێکۆڵینەوەیەکی مێژوویيە | پ. هـ. د.طارق محمد ئەورەحیم | ٥٧ |
| دەولەتا دوستەکی – مەروانی (٣٧٢-٤٧٨مش/٩٨٢-١٠٨٥ز) د پەرتوکا (العبر) دا یا ئیبن خەلدونی (م:٨٠٨مش/١٤٠٥ز) | صالح زاهير محمد زێباری | ٨٣ |
| هۆکارە ناوخۆییەکانی ڕووخانی میرنشینە کوردییەکانی لە سەدەکانی ناوەڕاستد میرنشینیە کوردییەکانی سەردەمی خیلافەتی عەباسی بە نموونە (٣٣٤-٥٩٥ك/٩٤٥-١١٩٠ز) | پ. د. کەیوان ئازاد ئەنوەر | ١١٣ |
| هەڤبەندیا دناڤبەرا ناووسك و دێراندا!! (دەڤەرا ئامێدییێ وەك نموونە) | م. جەمیل محەمەد شێلازی | ١٤٧ |
| بزاڤی خوێندن و ڕۆشنبیری لە میرایەتی بادیناندا | پ. د. ئاراس محمد صالح | ١٧٧ |
| ژ دەق و دەستنڤیسێن ب زمانێ کوردی ل سەردەمێ میرگەها بەهدینان ل سەدێ ١٦- ١٨٤٢ز | هێرش کەمال ڕێکانی | ١٩٩ |
| میرنشینی ئەردەڵان لە سەردەمی فەرمانڕەوایی زەندەییەکاندا (١٧٥١-١٧٩٤) | د. نعمەت شەهاب حاجی | ٢٣١ |
| ڕۆڵی زانستی و سەربازی ئافرەتانی کورد لە سەدەکانی ١٧ تا ١٩ زاینیدا "توێژینەوەیەکی مێژوویيە" | د. بژار عوسمان ئەحمەد | ٢٥٩ |
| میرنشینی بابان و داگیرکاریی عوسمانی لە قەسیدەیەکی سالم دا | پ. د. هیمداد حوسێن بەکر<br>پ. د. سەردار ئەحمەد حەسەن | ٢٨٩ |

| | | |
|---|---|---|
| ڕۆڵی میرگەهێن کوردی لە سەرهەڵدانی شیعری کلاسیکیی کوردیدا (بۆتان . بابان) بە نموونە | پ. د. عوسمان دەشتی<br>پ. ی. د. دەریا جەمال حەویزی | ٣٢٥ |
| ڕۆشنبیری زمان و ئەدەبی کوردی لە سایەی میرنشینی بۆتان و میرنشینی بابان دا | پ. د. پەخشان سابیر حەمەد | ٣٤٧ |
| ڕۆڵی میرنشینە کوردییەکان لە گەشەسەندنی ڕۆشنبیری و ئەدەبیاتی کوردیدا میرنشینەکانی ئەردەڵان و بابان بەنموونە | پ. ی. د .لوقمان رەئوف عەلی<br>پ. ی. د. سروشت جەوهەر حەویز | ٣٨٣ |
| ڕەنگڤەدانا بەرخودانا کەلا دمدم د فۆلکلۆرێ کوردیدا و بەراوردکرنا ئەوێ لگەل ژێدەرێن دیرۆکی | پ. د. حسين عثمان عبدالرحمن | ٤٠٧ |
| میر و میرگەهـ د روانگەها خانیدا | م. ژیهات قادر حەسەن | ٤٣٥ |
| ڕەنگدانەوەی بارودۆخی میرنشینی بابان لە ئەدەبی کوردیدا | م. ی. نێچیروان جاسم ولی | ٤٥٩ |
| رولێ میرێن هوزانڤان د ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجیا سەریدامیرگەهێن بەهدینان و هەکاری وەك نموونە | د. پروین رووف هادی | ٤٩٣ |
| ڕەنگدانەوە و ڕۆڵی یوفیمیزم لە گوتاری میری بۆتان لە چوارچێوەی "مەم و زین" ی ئەحمەدی خانیدا | أ. م. خالد مغديد كانبى<br>أ. م. شاين حمدامين صادق | ٥١٩ |
| هەولێن شێخ حەسەنێ ئادانی (١١٩٤ – ١٢٤٦)ز بۆ چێکرنا قەوارەیەکی سەربەخۆ (ل دویف ئەدەبیات و کەلتوورێ ئێزدیان) | کۆڤان ڕێسان حەسەن<br>شمال خمو خضر | ٥٤٧ |
| ڕەنگدانەوەی مێژووی میرانی کورد لە شیعری حاجی قادری کۆییدا | د. یەدوڵلا پەشابادی | ٥٧٥ |
| بررسی جایگاه ایل زعفرانلو در درگیری‌های نظامی و چالش‌های سیاسی عصر افشار | علی رحمتی | ٥٩١ |
| اهمیت ژئوپولیتیک مناطق کردنشین ایران در قرون نهم و دهم هجری | یووسف تەکین<br>سلیمه افراسیابی | ٦٢١ |
| تقديم | أ. د. هوگر طاهر توفيق<br>أ. م. د. نزار أيوب حسن | ٦٤٣ |
| أطباء الدويلات والمدن الكوردية ودرهم في تقدم علم الطب | أ. د. خضير عباس المنشداوي | ٦٤٩ |



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

| | | |
|---|---|---|
| ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م) | أ. د. فرهاد حاجي عبوش | ٦٨٣ |
| تمرد الأمير شروه بن مم | پ. د. درويش يوسف حسن | ٧٠٥ |
| أثر الصراعات الداخلية للإمارة العنازية على سياستها العامة | أ. د. بشار اكرم جميل | ٧٢٣ |
| أخبار الحسنويين الكُرد أصحاب الإمارة الحسنوية من خلال كتاب الكامل في التاريخ لإبن الأثير دراسة تاريخية | أ. د. خطاب إسماعيل أحمد | ٧٣٣ |
| نساء بني مروان في تاريخ ميافارقين للفارقي (ت بعد٥٧٧/١١٨١م) | م. د. هدار سليم صالح | ٧٧٩ |
| الأمير أحمد بن مروان رائد التأسيس للعمل الإنساني في الإمارة المروانية الكردية | ا. د. علي أحمد أجقو | ٧٩٩ |
| الامارات الكردية في كتاب مرآة الزمان في تواريخ الأعيان لسبط ابن الجوزي- دراسة تحليلية مقارنة | پ. د. فرست مرعي إسماعيل<br>أ. عبدالخالق عبدالله عثم | ٨٢١ |
| الإمارات الكردية في مسالك الابصار لابن فضل الله العمري (ت: ٧٤٩هـ/ ١٣٤٩م) | أ. م. محمد علي صالح الشرابي | ٨٥٧ |
| منهج المؤرخين فى تناول تاريخ الأكراد: ابن خلدون نموذجاً دراسة تحليلية ونقدية | ا. د. عبد الغنى عبد الفتاح زهرة | ٨٦٩ |
| أتابكية لورستان الكُرديةمن خلال رحلة ابن بطوطة | أ. د. خطاب إسماعيل أحمد<br>ا. م. د. توفيق رشيد يوسف | ٨٩٥ |
| دور السلطان صلاح الدين القيادي في تأسيس واتساع الدولة الأيوبية وتماسكها | عبدالباسط سيدا | ٩٢٣ |
| جهود السلطان صلاح الدين الأيوبي في نشرها المذهب السني الأشعرية أنموذجاً | د. شريف مراد البوطاني | ٩٤٩ |
| دور الاديرة العلمية في المناطق الكوردية في القرن ٣-٦هـ/ ٩-١٢م | پ. هـ. د. شهلة برهان عبدالله | ٩٧١ |
| دور علماء الكرد في تدوين ونشر العلوم الإسلامية النقلية والعقلية . | د. عبدالباري عزيز عثمان | ١٠٠١ |

| | | |
|---|---|---|
| آراء أحمد بن إسماعيل الكوراني في مصطلح الحديث من خلال كتابه الكوثر الجاري إلى رياض البخاري | د. محسن إبراهيم أحمد الدوسكي | ١٠٢١ |
| التراث الثقافي والحضاري الكردي في كتابات الرحالة دراسة في كتابات خلال القرن السابع عشر الميلادي، الرحالة "أوليا جلبي" إلى كردستان ١٠٦٥هـ/ ١٦٥٥م | د. أحمد سعيد السيد زيدان | ١٠٥٥ |
| بهدينان في كتابات مؤرخي الموصل في القرن الثامن عشر ياسين بن خير الله العمري انموذجاً | أ. د. محمود صالح سعيد | ١٠٨٧ |
| عوامل تراجع الامارة البابانية عن حالة الازدهار والتقدم في عهد امارة سليمان باشا (١٨٢٨-١٨٣٨) | ا. د. نزار علوان عبدالله | ١١٠١ |
| الامارة البابانية دراسة في احوالها الداخلية وعلاقاتها الخارجية حتى عام ١٨٥١م (دراسة تاريخية) | أ. د ثريا محمود عبد الحسن الخزعلي<br>أ. م. د. قحطان احمد فرهود | ١١١٣ |
| مساهمات النساء في الشؤون الإدراية والدينية في إمارة أردلان ماه شرف خانم (مستوره) نموذجاً | أ. د. كامران أورحمان مجيد<br>د. محمد مولود متي | ١١٤٣ |
| الإمارات الكُردية في المصادر الأمريكية المعاصرة خلال النصف الأول من القرن التاسع عشر الميلادي | د. حسام السيد ذكي الإمام شلبي | ١١٩١ |
| صراع النفوذ البريطاني _ الروسي في كردستان خلال النصف الاول من القرن التاسع عشر واثره على الامارات الكردية ١٨٠٠-١٨٥١ | ا. د. عمار يوسف عبدالله | ١١٩١ |
| الانتفاضات الكردية في كردستان في النصف الاول من القرن التاسع عشر | أ. م. د. عماد عبدالعزيز يوسف<br>م. م. امين غانم محمد | ١٢٠١ |
| الابعاد الدولية لحركة الأمير بدرخان باشا ١٨٤٢-١٨٤٧ | ا. د. عثمان علي<br>م. د. صدرالدين قادر | ١٢٤٧ |
| واقع كردستان في ظل المعاهدات الإيرانية-العثمانية (١٥١٤ - ١٨٤٧) م | پ. د. محمد الطاهر بنادي | ١٢٧٧ |
| الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية للإمارات الكردية في مذكرات جيمس بكنغهام وجيمس ريج | أ. د. م محمد محمود محمود حمد الدودانى | ١٣٠٧ |
| سياسة الدولة العثمانية تجاه الإمارات الكردية في كردستان (١٥١٤-١٨٥١م) | أ. د. فائزة محمد حسن ملوك | ١٣٢٣ |


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

# پێشگۆتن

پ. د. هوگر طاهر توفیق
پ. هـ. د. نزار ئەیووب حەسەن

گۆتنەك د ناڤەندێن ئەكادیمی و گشتیدا بەلاڤ بوویە ئەوژی؛" كوردان د مێژوویێدا چ دەولەت نەبوون"، یان ژی دەولەت و میرگەهێن كوردان د سەردەمێن بووریدا (نیمچە دەولەت) بوون و نە خودان بڕیارا خوە یا مەركەزی بوون و ئەڤ گۆتنە د سەردەمێ سەرهلدانا دەولەتێن نەتەوەییدا ل سەدەیێن ١٩ و ٢٠ پتر بەلاڤ بوو نەخاسمە پشتی كوردان نەشیاین دەولەتەكێ بۆ خوە ل سەر ئەردێ خوە (كوردستانێ) ئاڤا بكەن.

ل سەر بناخەیێ ئەڤێ هزرێ وئەڤێ بۆچوونا دیرۆكێ سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی بڕیاردا كو كۆنفرانسێ خوە یێ حەفتێ ل ژێر ناڤێ (دەولەت و میرگەهێن كوردی ل سەردەمێن ناڤەڕاست و نوودا" بگێڕیت، داكو ب كووراتی بچیتە د ناڤ ژیان و شارستانی و كاریگەرییێن ئەواندا و ئەڤا ل خوارێ كورتییەكە ژ ئەوان دەولەت و میرگەهێن كوردانە ئەوێن د چارچووڤێ جوگرافیا كوردستانێدا پەیدا بووین:

-١-

## دەولەتێن كوردان ل سەردەمێ ناڤەڕاستا ئیسلامیدا

د سەردەمێ خیلافەتا عەبباسیدا پێنج دەولەت و دەولەتۆكێن كوردان پەیدا بوون كو د ڕێڤەبرنا كاروبارێن خوەیێن ناڤخۆیی و دەرەكیدا سەربخۆ بوون، ئەوژی:

١- دەولەتۆكا ڕەووادی (٣٣٧-٤٦٣هـ/٩٤٩-١٠٧١م)، ئەوا ل ئازەربیجانێ ل ڕۆژهەلاتا كوردستانێ پەیدا بووی وئەڤە كەڤنترین دەولەتا كوردییە ل ڕۆژهەلاتا ئیسلامی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

و پایتەختێ ئەوێ باژێرێ تەبریز بوو، سەبارەت ئەوان ئیبن ئەثیر دبێژیت: "کوردێن ڕەووادی ل ئازەربیجانێ پەیدا بوون و ئەو ژ پێشکێش و بەراهیێن کوردانە" و ژ گرنگترین میرێن ئەوان محەمەد کوڕێ حسێنێ ڕەووادی، دەیسەم کوڕێ ئیبراهیمێ ڕەووادی، ئەبی لهەیجاء کوڕێ مەملان".

٢- دەولەتا شەددادی ل ئاران (ئێریڤانێ) (٣٤٠-٥٩٥هـ/٩٥١-١١٩٨م): دکەڤیتە باکوورێ رۆژهەلاتێ کوردستانێ، کوردان شیان دەولەتەکا سەربخۆ ل ئارانێ کو پارچەیەکا سەر ب هەرێما ئازەربیجان وئەرمەنستانێیە ئاڤا بکەن وژ مەزنترین میرێم ئەڤێ دەولەتێ: محەمەد کوڕێ شەدادێ کوردی، محەمەد کورێ مەرزبانێ کوردی، ئەبولحەسەن عەلی کورێ مووسایێ لەشکەری.

٣- دەولەتا حەسنەوییە ل هەمەدانێ (٣٤٨-٤٠٦هـ/٩٥٩-١٠١٥م)، ژ گرنگترین میرێن ئەوێ؛ حەسنەوییە کوڕێ حسێنێ بەرزگانی، بەدرێ کوڕێ حەسنەوییەی.

٤- دەولەتا عەیاری (عەنازی) (٣٨١-٥١١هـ/٩٩١-١١١٧م)، ل باژێرێ حەلوانێ- زەهاو ل نزیکی باژێرێن جەلەولاء وخانەقین و قەسر شیرینێ ل باشوورێ کوردستانێ هاتییەدانان، ژ گرنگترین میرێن ئەوێ: ئەبولفەتح محەمەد کوڕێ عیاز، ئەبولشەوک، ئەلشەوق کوڕێ ئەبولفەتح محەمەد کوڕێ عیازی.

٥- دەولەتا دەستکی- مەروانی (٣٧٣-٤٨٩هـ/٩٨٣-١٠٩٦م)، ل دیاربەکر ل باکوورێ کوردستانێ هاتیە دامەزراندن وگەلەك باژێر ب سەرڤە بوون وەك سێرت، خیزان، حسنکێفا، جزیرا بۆتان، نسێبین، میافارقین، مەلازگرد وئەرجیش.... دامەزراندنا ئەوێ ل سەردەستێ باد کوڕێ دوستکێ کوردی بوو، باد سەرکردەیێ کوردێن حەمیدی بوو وناسناڤێ (بابێ عەبدوللاهی وبابێ شوجاعی) هەبوون. دەربارەی ئەوی ئیبن ئەثیر دبێژیت:" ئەوی ل تخووبێن دیاربەکرێ گەلەك غەزوە دکر، ئەو خودانێ ڕەوشتەکێ مەزن بوو، لەوڕا خەلك ل دور ئەوی کومبوون... هەروەسا ئەو کەسەکێ مەرد بوو وپەزێ خوە ژ بۆ خوارنا خەلکی سەردبڕی، لەوڕا ناڤودەنگێ مەردینیا ئەوی ل هەمی جهان بەلاڤ بوو، ڤێجا مروڤێن ئەوی زێدە بوون وهەردەمێ دەستکەفتەك یان تالانەك ب دەست کەڤتبا ئێکسەر ل سەر زەلامێن خوە دابەش دکر... ژبەر حەزا مللەتێ ئەوی یێ کورد بۆ ئەوی ئەو د حوکمێ خوەدا سەرکەفتی بوو". هەروەسا دیرۆکنڤیس ئەلفارقی دبێژیت: "ئەو زەلامەکێ جەببار بوو". ژ میرێن ئەڤێ دەولەتێ: باد کوڕێ دوستکی، ئەبو عەلی حەسەن کوڕێ مەروانی، ئەبو نەسر ئەحمەد کوڕێ مەروان.

پتریا ئەڤان دەولەت ودەولەتووکان ل سەر دەستێ تورکێن سەلجوقی پشتی هێرشێن ئەوان بۆ سەر جیهانا ئیسلامی ل دووماهییێن سەردەمێ عەبباسی هاتنە ژناڤبرن.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

## میرنشینێن کوردان ل سەردەمێ نوو

کوردستان ل سەدەیێن ١٣ و١٤ کەڤتە بەر هێرشێن مەغول وتەتاران و پتریا دەڤەرێن کوردستانێ ل سەر دەستێ تەیموور لەنگی (١٣٣٦-١٤٠٤ز) هاتنە وێرانکرن، ئەو تەیموورێ گەلەك ژ میرگەهێن کوردان ئێخستینە ژێر ڕکێفا خوە. و پشتی ڤان ڕوودانان دوو دەولەتێن تورکمانی دەرکەڤتن کو حوکم ل کوردستانێ دکرن ئەو ژی قەرەقوینلو (پەزێ ڕەش) (١٣٨٠-١٤٦٨م) کو بازێڕێ تەبریز وەکو مەلبەند بۆ خوە هەلبژارتبوو وئاق قوینلو (پەزێ سپی) (١٣٧٨-١٥٠١) کو پایتەختێ ئەوان دیاربەکر بوو، پاشی ل سالا ١٥٠٨ کوردستان کەڤتە دبن ڕکێفا دەولەتا سەفەوی، لێ ئەڤ ڕەوشە گەلەك نەڤەکێشا و ل سالا ١٥١٤ شەڕەکێ ڤەبڕ ل دەشتا چالدیرانێ د ناڤبەرا سەفەوی و دەولەتا عوسمانیدا ڕوودا و ژ ئەنجامێ ئەوێ پتریا کوردستانێ کەڤتە ژێر دەستهەلاتا عوسمانیدا و بەشا ڕۆژهەلاتا کوردستانێ دبن حوکمێ سەفەویدا ما و ئەڤ دوخێ دابەشبوونێ هەتا سەدەیێ ٢٠ بەردەوام بوو.

د قۆناغا دەستپێکێ ژ سەردمێ نوودا، هەروەك دیرۆکنڤیسێ کورد شەرەفخان ددەتە دیارکرن، د کوردستانێدا ول هەر دوو پشکێن سەفەوی و عوسمانیدا ٤٨ میرگەهێن کوردی هەبوون و دبیت گرنگترین میرگەهـ ل کوردستانێ ئەوبن ئەوێن بەدلیسی ب گۆتنا " حاکمێن کوردستانێ ئەوێن هەرچەندە بانگەشەیا سولتانی و سەربخۆیێ نەدکر، لێ هندەك جاران ئەوان ب تەنا سەرێ خوە خوتبە ب ناڤێن خوە خواندیە و پارە ب ناڤێن خوە لێدایینە" بەحسێ ژێ کریە، ئەو ژی: ئەردەلان، هەکاری، ئامێدی، جەزیرە و حسنکێف بوون".

ئەڤ میرگەهە هەر ژ سەدەیێ ١٦ تا ناڤەڕاستا سەدەیێ ١٩ خودانێ پەیڤا دووماهیێ د ژیانا سیاسییا کوردستانیدا بوون، و دبیت تشتێ ژ هەمی پتر ئەڤ میرگەهە جیاواز کربیت بابەتێ شارستانیێ بیت کو پێشبڕکییا هندەك ژ دەولەتێن ئەوی سەردەمی دکر، ژ ئەوان شارستانیا میرگەها بەدلیسێ هەروەك گەڕوکێ تورك ئەولیا چەلەبی ل ١٦٥٥ بەحس کری کو ل سەردەمێ میرێ ئەوێ عەبدال خانی بەدلیسێ بازاڕەکێ ئاڤا و شارەکێ ب ڕەوش بوو کو چەندین قەسر و پر و پەرتووکخانە و... تێدا هەبوون، ول ئەوی دەمی ئەوی گۆتنا خوە یا ناڤدار گوت:" ئەز گەڕوکەکم کو ٤٠ سالە ل وەلاتان دگەڕم، لێ ئەڤ تشتە من ل چ وەلاتەکێ دی نەدیتیە".

مژارا شارستانیا کوردی گەلەک گرنگترە، ژبەر کو گەلەك ژ لایەنێن ئەوێ نەهاتینە ڤەکۆلین، هەروەسا بابەتێ شارستانیا دەولەت و میرگەهێن کوردان د پەراوێزا مژارێن سیاسیدا دهێنە بەحسکرن، لێ د ڕاستیدا شارستانی ئەو خۆدیکە و ئاستێ هزر و ئاڤەدانییا هەر مللەتەکێ دیار دکەت، و مللەت و گەل ب ئاستێ وەرارا شارستانییا خوە و تێگەهشتنا خوە بۆ کەتواری و پشکدارییا ئەوی د خزمەتکرنا مروڤایەتییێدا دهێنە پیڤان،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بێ گومان كوردان ل ئەوی سەردەمی شارستانیا تایبەت ب خوەڤە هەبوو ژبەر كو شوونوارێن هەبوونا شارستانی ل كوردستانێ هند گەلەكن كو هەتا نوكە بەرماییێن ئەوان ب چاڤ دهێنە دیتن و هژمارا ئەوان هند زورە كو د شیاندا نینە هەموو د پەرتووكەكێدا بهێنە تۆماركرن، چونكە ب ڕاستی كوردستانی دكەڤیتە سەر چیایەكی ژ شوونوارێن مێژوویی، لێ كێماسیا شارستانیا كوردان ئەوە كو د دەمێ خوەدا نەهاتینە تۆماركرن و رۆلێ ئەوان یێ دیرۆكی چ ل كوردستانێ یان ل دەرڤەی وێ ب دروستی نەهاتییە ئاشكەرا كرن.

-٣-

## كەڤتنا میرگەهێن كوردی ل ناڤەڕاستا سەدەیێ نوزدەیێ

نیڤا ئێكێ ژ سەدەیێ نوزدەیێ پەیدابوونا سێ بزاڤێن مەزن ب خوەڤە دیت كو ژلایێ میرێن كوردڤە ل دژی دەولەتە عوسمانی هاتنە ئەنجامدان، و ئارمانج ژئەڤان بزاڤان بەرفرەهكرنا سنورێ میرگەهێن خوە و وەرگرتنا پتر سەربەخوییێ د بڕیاراندا بوو

**بزاڤا ئێكێ**: ئەو بزاڤ بوو ئەوا ژلایێ عەبدولرەحمان پاشایێ بابانی (١٧٨٩-١٨١٣) هاتییە ئاراستەكرن وئەو ژ بهێزترین میرێن میرگەها بابان بوو، ئەوی دەستهەلات ل ١٧٨٩ وەرگرت، لێ پتر ژ شەش جاران ژ حوكمێ خوە هاتە لادان، ئەو ژی ژبەر هەڤڕكیێن ناڤخویی یان دەستێوەردان و لەشكەركێشەیا هەردوو دەولەتێن ئیران و عوسمانی. بهێزترین سەردەمێ ئەوی د ناڤبەرا ١٨١٠-١٨١٢ بوو دەمێ داخواز ژێ هاتییە كرن كو ببیتە والیێ بەغداد لێ ئەوی ڕەدكر. عەبدولرەحمان پاشا ژ نشكاڤە ل ١٨١٣ وەفات كر وپشتی مرنا ئەوی میرگەهـ بەرەڤ لاوازیێ چوو ول سالا ١٨٥١ هاتە هەلوەشاندن.

هوزانڤان شێخ ڕزایێ تالەبانی (١٨٣٥- ١٩٠٩) سەبارەت ئەڤێ میرگەهێ دبێژیت:

له بیــرم دێ ســولەیمانی كه دارولمــولكی بابــان بــوو
نه مەحكوومی عەجەم، نه سوخرەكێشی ئالێ عوسمان بوو

**بزاڤا دوویێ**: ئەو بزاڤا مەزن بوو ئەوا ژلایێ میرێ سۆران محەمەد بەگی (میرێ گەورە- میرێ كۆرە) (١٨١٣-١٨٣٦) هاتیە ئەنجامدان، ئەوی ل دەستپێكێ گرنگی ب چێكرنا چەكان ب تایبەت توپان دا، وپشتی دەستنیشانكرنا بەرەیێ خوە دەست ب ڤەگرتنا میرگەهێن بابان، بەهدینان و بۆتان كر و باژێڕێن كەركووك، هەولێر و سێرت ستاندن. دهندەك ژ ژێدەرێن دیرۆكیدا هاتیە كو هەژمارا لەشكەرێ میر محەمەدی نزیكی ١٣٠ هزار سەربازان بوو، پشتی ئەوان سەركەفتنان دەولەتا عوسمانی هەوەكا مەزن ب سەرۆكاتییا والیێ سیواس محەمەد ڕەشید پاشای هنارتە سەر میر محەمەدی و ژ بەر نەهەڤسەنگییا هێزێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

دەولەتا عوسمانی شیا هەتا سالا ١٨٣٦ حوكمێ میر محەمەد و میرگەها سۆران ب دووماهی بینیت.

كونسولێ بەریتانی جیمس برانت ل سالا ١٨٣٥ سەبارەت میر محەمەدێ ڕەواندوزی دبێژیت:"من پرسیار كر چەوا هند رووقاییم بوویە كو بشێت بەرسینگێ محەمەد ڕەشید پاشای براوەستیت، ددەمەكیدا كو پاشای دەستهەلاتا خوە ژ سولتانی وەرگرتبوو؟ د بەرسڤدا حەجییەكی [كەسەكێ كورد] گۆتە من: نە ئەوی نە بابوكالێن ئەوی چ جاران خوە بۆ پاشایان نەچەماندبوو و چ جارا باج نەدابوون سولتانی، لەوڕا ئەو نزانین بۆچی نەچارە كو نوكە وەبكەت! لەوڕا هندی ژ ئەوی دهێت دێ بەرگریێ ژ خوە كەت".

**سەبارەت بزاڤا سێیێ:** ئەو بزاڤە بوو كو ژلایێ میرێ بۆتان بەدرخان بەگی (١٨٣٨-١٨٤٧) ل دژی دەستهەلاتا عوسمانی هاتیە ڕاگەهاندن، پشتی شیای هندەك ژ میرگەهێن باكورێ كوردستانێ د قولپەكا موكومدا كۆم بكەت بڕیار دا كو سنوورێ خوە بەرفرەهـ بكەت، لەوڕا دەولەتا عوسمانی هەوەكا مەزن ژ ٢٥ هزار سەربازان ب سەرۆكاتییا عوسمان پاشا ل گولانا ١٨٤٧ هنارتە سەر بۆتان، ژلایێ خوەڤە بەدرخان بەگی نەشیا خوە ل بەر هێرشا عوسمانی بگریت و ل ٢٠ تیرمەها ١٨٤٧ خوە ڕادەستی دەولەتێ كر، پاشی بۆ ئیستانبولێ هاتە هنارتن و ژ ئەوێرێ بۆ گزیرتا (گریت) هاتە دوورخستن، پاشی زڤڕی بۆ شامێ و ل سالا ١٨٦٨ل باژێڕێ دیمەشقێ وەفات كر.

ب ئەڤان ڕوودانێن مەزن سەردەمێ میرگەهان ل كوردستانێ ب داوی هات وكوردستان كەڤتە دبن حوكمێ ڕاستەوخویێ دەولەتا عوسمانیدا و ل دووماهێ د كارین ئەگەرێن كەڤتنا میرگەهێن كوردی د ئەڤان خالاندا كورت بكەیت:

١- لاوازبوونا میرگەهێن كوردان هەر ژ دووماهیێن سەدەیێ هەڤدە هەتا دەستپێكا سەدەیێ نوزدە.

٢- هەڤڕكیێن ناڤخویی د ناڤ میرگەهاندا كو وەكر هەر میرەك دەلیڤەیێ ل میرەكێ دی هەلبێخیت.

٣- هەڤڕكی و ململانێیا د ناڤبەرا میرگەهێن كوردیدا كو ل دووماهییێ بوونە ئەگەرێ لاوازبوون و نەمانا ئەوان.

٤- میرگەهێن كوردی ل ئەوی دەمی – نەخاسمە ل دەستپێكێن سەدەیێ نوزدە- كەڤتنە ژێر كاریگەرییا سیاسەتا نێڤدەولەتی و كوردستان بوو ئێك ژ مەیدانێن هەڤڕكییێ د ناڤبەرا دەولەتێن زلهێزێن ئەورووپی نەخاسمە بەریتانیا، فەرەنسا و ڕوسیا قەیسەریدا.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

٥- ل ژێر گڤاشێن دەولەتێن زلهێز، دەولەتا عوسمانی دەست ب سەپاندا سیستەمێ مەلبەندی ل کوردستانێ کر وئێك ژ مەزنترین ئەنجامێن ئەوێ کەڤتنا میرگەهێن کوردان بوو.

یا گرنگ د ئەڤی ڤەگێڕانا دیرۆکێدا نە ب تنێ دیارکرنا دەولەت ومیرگەهێن کوردانە، بەلکو یا مە دڤێت تەکەزیێ ل سەر بکەین ئەوە کو ئەردێ کوردان (کوردستان) بەردەوام ددەستێ کورداندا بوو و ئەوان حوکم لێدکر و میرگەهـ و دولەتێن خوە ل سەر ئاخا ئەوێ ئاڤا کربوون، تەنانەت ئەو دەمی کوردستان دبوو پشکەك ژ ئیمپراتورییێن عەبباسی و سەفەوی و عوسمانی و ئیرانی ژی کورد هەر خودانێ ئەردێ خوە بوو، ئەڤ ئەردێ د ژێدرێن دیرۆکیدا ب ناڤێ "کوردستان|" هاتییە نیاسین و ئەڤە کاکلکا مەبەستا مەیە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# میرنشینەکانی کوردستان خوێندنەوەیەکی نوێ بۆ ناوی میر و هۆزەکان و باژێڕ و کەلهەکان

پ. د. زرار صدیق تۆفیق

ک. زانستێن مرۆڤایەتی- زانکۆیا دهۆک/ کوردستانا عیراقێ

**پۆختە:**

هەروەك دیار نوخبەی خوێندەواری کورد بە درێژایی سەدەکانی مێژووی ئیسلامی گرنگییەکی کەمیان بە کۆدکردنی مێژووی گەلەکەیان و نیشتمانەکەیان داوە. و هەموو ئەو زانیاریانەی لە بارەی میرنشین و قەوارە سیاسیەکانی کورد بە شێوەی پچڕ پچڕ لە ڕێگای ژێدەرە عەرەبیە و فارسییەکان پێمان گەیشتووە، ئەمە خزمەتێکی گەورەیە بۆ مێژووی کورد، بەلام لەم ژێدەرانەشدا ناوی شازادە و سەرکردەکانی کوردیان هەروەها ناوی ئەو هۆز و شارۆچکە و قەلایانەی کە ملکەچی ئەوان بوون، بەپێی یاسا و بناغەکانی زمانی عەرەبی دانراون، و ئەو پیتانەیان گۆڕیوە کە لە زمانی عەرەبیدا بوونیان نییە بەو پیتانەی کە لە بێژەکردندا لێی نزیکن یان لە فۆرمدا هاوشێوەی ئەو پیتانەن، وەک چۆن دەستکارییان لە پیتی (و) کراوە (واو المفتوحة)، کە یەکێکە لە گرنگترین نیشانەکانی ناوی تایبەت لە زمانی کوردیدا، بۆ (ویە).

توێژەرانی هاوچەرخیش ئەم ڕێبازەیان پەیڕەو کردووە و هەمان ئەو ناوە کەسیی و جوگرافییانەیان نووسی کە سەر بە میرنشین و هۆزە کوردەکانن بە هەمان فۆرمولەی مێژوونووسانی کۆن.

بەم پێیە ئەم توێژینەوەیە دەستپێشخەرییەکی جدییە و هەوڵێکی سەرەتاییە بۆ لێکۆڵینەوە لەم دیاردەیە، بو دیارکردنی هۆکارەکان و گرنگترین حاڵەتەکان کە تێیاندا ناوە غەیرە عەرەبییەکان بۆ عەرەبی گۆڕدراون ، و بو پەیدا کرنی شێوەی رەسەنی ئەو ناوانە پشتبەستن بە سەرچاوە پەیوەندیدارەکان و بەڵگە زمانەوانییەکان کراوە.

**پەیڤێن سەرەکی:** *میرانی کورد، هۆزەکانی کورد، باژێڕەکانی کوردستان، راستکردنەوەی ناویان*

## پێشگۆتن:

لە سەدەی چوارەمی کۆچی/ دەهەمی زاییەوە و تا ناوەڕاستی سەدەی نۆزدەهەم، میران و سەردارانی هۆزەکانی کورد، دەهان دەوڵەت و میرنشین و دەستەڵاتداریی گەورە و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بچووکیان دامەزراند و لە ژێر سایە و داننانی دەوڵەتانی ناوەندا، حوکمی پانتاییەکی فراوانی کوردستانیان دەکرد و بەڕێوەیان دەبرد، لای هەمووان ئاشکرایە کە مێژوو و سەربوردەی ئەم قەوارە سیاسییانە پتر سەرچاوەی بیانین و خەڵکانێکی غەیرە کورد بە زمانی عەرەبی و فارسی و پاشتریش لە سەردەمی عوثمانی بە تورکی دایاننـاوە کە هەرچۆنێک بێت بێڕادە خزمەتی مێژوو و کەلتوری کوردییان کردووە و ئەگەر ئەوان نەبانەیە، ئەوا چمان بۆ نەدەمایەوە و شتێکی وامان لەبارەی بەسەرهاتی رابردووی گەلەکەمان نەدەزانی، بەڵام ئەم سەرچاوانە هاوکات لە خەوش و ناتەواوی بەدەر نین و یەکێکیان ئەوەیە کە لە تۆمارکردنی ناوی زۆربەی میر و ناودارانی کورد و شوێنە جوگرافیەکانی کوردستان کە لە ژێر دەستی میرنشینە خۆجێهەکان بوون، راستییان نەپێکاوە و بەپێی دەستووری زمانی فارسی و عەرەبی نووسیویانە، ڤەکۆلەرانی هاوچەرخی مێژووی کوردیش سەرنجی ئەم پرسەیان نەداوە و کاریان بۆ راستکردنەوەی نەکردووە و چ ناوێکی کوردیی پەیوست بە میرنشینەکان، تا هەنوکە هاوشێوەی سەرچاوەکان دەنوسرێن.

ئەم بابەتە، تۆژینەوەیەکی ئۆنۆماتالۆگی و تۆپۆنیمیە و دەستپێشخەرییێکە بۆ دیڤچوونی ئەم مژارە و بەپێی بۆچوون و تێگەهیشتنی خۆمان و بە مەبەستی خزمەتکردنی چاند و زمانی کوردی، هەوڵمان داوە بنەکۆکی کوردیی ئەم ناوانە ساخ بکەینەوە.

- گرنگیی بابەت:

گومانی تێدا نیە کورد گەلێکی دێرین و رەسەنە و خاوەند ناسنامەی نەتەوایەتیی خۆیەتی و زمانەکەشی بەڵگە و بنەمایەکی هەرە گرنگی رەسەنایەتیەتی، دیارە زمانی کوردییش وەک هەر زمانێکی زیندووی دی لە جیهان هەر لە کۆنەوە، خاوەند رێزمانی سەربەخۆیە و بۆ هەر دیاردە و پرسێکی زمانەوانی یاساو و رێسا تایبەتی خۆی هەیە کە بە درێژایی مێژوو پەیدابووە و گەشەی کردووە و گەلاڵەبووە، لەوانەش پرسی ناولێنان، چ ناوی کەسەکان و گیانلەبەران و شوێنەکان و چ ناوی خواردن و خورادنەوە و روەک و ئامێر و کەرەستە و جلوبەرگ...هتد.

لای هەمووومان ئاشکرایە کە کورد هەندە هەستی بە بەها و بایەخی مێژوی خۆی نەکردووە و دەگمەن نەبێت دەربەستی نووسینەوەی نەبووە و ئەوەی نوسراوە و بۆ ئێمە ماوەتەوە، خەڵکانی غەیرە کورد و بە زمانانی دی تۆماریان کردووە بە تایبەتی هەردوو زمانی عەرەبی و فارسی، بۆیەش چ پەیڤ و ناو و دەستەواژەی کوردی هەیە کە پەیوەندیی راستەوخۆی بە میرنشینەکانی کوردەوە هەیە، نەشیاون وەک خۆی بیانگوازنەوە، بەڵکو بەپێی چۆنیەتی گۆکردنیان لە زمانی ئاخافتنی خۆیان وەریان گرتووە ئێستاش دەمی ئەوە هاتووە چیتر نەکەوینە ژێر باندۆری زمانی عەرەبیەوە و ئەو ناوانە بگەڕێننەوە بۆ ئەصڵە

کوردییەکەیان و پێویستە وەک باب و باپیرانمان بیانبێژین و بەکاریان بهێنین نەوەک چاو لەوان بکەین.

پێم وایە ئەگەر کۆی ئەم ناوانە ساخ بکرێنەوە و بخرێنە ژێر لێکۆڵینەوەی وردی وشەناسیەوە، دەشێت پەی بە راست و رەوانیی هەر یەکێکیان ببرێت، بەمەش چەندین پەیڤی دێرینی کوردی لە فەوتان و لەناوچوون رزگار دەکرێن و زیندوو دەکرێنەوە و خەرمانی پەیڤی رەسەنی کوردییان پێ دەوڵەمەند دەکرێت و خزمەتێک بە زمانی نەتەوایتیمان دەگەهێنرێت. نەخاسمە ئەگەر ئاگامان لەوەبێت کە چ دەقێکی کوردیی وا شک نابەین بگەرێتەوە بۆ سەدەکانی ناوەڕاست و سەردەمانی دەسەڵاتداریە خۆجهیەکانی کوردستان تا بیکەینە کەرەستەی لێکۆڵینەوە بۆ هەر مژارێکی پەیوەندیدار بە دیرۆکی کوردەوە، روونە ئەمەش کێشەی هەرەمەزنی توێژەری بواری مێژوو و ئیتمۆلۆجیای زمانی کوردییە.

**یەکەم: فۆرمی فارسیی ناوی شوێنەکانی کوردستان:**

دیارە زۆربەی دەڤەرە کوردنشینەکان لە سەردەمی پێش ئیسلامدا و بۆ ماوەی پتر لەچوار سەدە(٢٢٦- ٦٥١ز)، بەشێک بوو لە قەڵمرەوەی دەوڵەتی ساسانی و لەم دەوڵەتەش، فارسی زمانی رێڤەبەری و حوکمداری بوو و بێگومان ناوی قەڵا و باژێر و شارەکانی کوردستانیش لە دەفتەر و تۆمارەکانی دەوڵەتدا هەر بەو زمانە دەنوسران کە هەرچەند لەگەڵ کوردیدا دەستەخوشکن، بەڵام جگە جیاوازیی رستەسازی و وشەسازی، لە گۆکردنی چەند دەنگ و پیتێکیشدا جیاوازن و دەنگەکان لە نێوانیاندا دەگۆڕدرێن، دواتر پاش فەتحی ئیسلامی، عەرەبە فاتحەکان ئەم ناوانەیان هەر لە تۆمارەکانی دەوڵەتەوە یان لە رێگای کارگێران و فەرمانبەرانی فارسەوە وەرگرت و هاوشێوەی ئەوان تۆماریان کردن و لە نامە و پەیام و نوسراوە فەرمیەکان و لە سەرچاوەکان جێگیر کران و تا هەنوکە ئاوەهاش ماونەتەوە.

لێرە تەنها لە دیاترین ئەم جیاوازییانە دەدوێین کە گرنگە بۆ ئێمە و راستەخۆ پەیوەستە بە تۆژینەوەکەمان، یەکێکیان ئەوەیە کە لە وشەگەلێکدا وەک هەموومان دەیزانین، پیتی (ب)ی فارسی لە کوردیدا دەبێتە(و) نەخاسە لە کۆتاهی ناوەکە:( شەب وئاب وسیب...هتد) دەبنە (شەو و ئاو و سێو یان شەڤ و ئاڤ و سێڤ) ، لە هەندێک لەهجەیەکی باشووری کوردستاندا، ئەم گۆڕانە زەقترە: باران- واران ، تابستان- تاوستان، بە- وە...هتد.

ئەوەی لێرە مەبەستمانە ئەوەیە کە زۆرجار ئەو (ب)یەی لە سەرەتا و کۆتاهی ناوی میرانی کورد و ناوی قەڵا و شار و گوندەکانی کوردستان دەبینرێت، لە بنەڕەتدا و بە کوردی (و) و (ڤ) بووە. هەروەها پاشبەندی(ئاباد) و ( رود) کە بە ناوی زۆر شوێنەوە دەلکێنران، دەنگی(د) لە کوردیدا دەسوێت و نامێنێت و دەبنە(ئاوا) و(رو- رۆ) و پولاد دەبێتە پۆلا.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بۆ سەلماندنی ئەمەش نموونە زۆرن و وابزانم هێنانەوەی دوو سێیەکیان مەبەست بەدەستەوە دەدات، ئەوەتا شەقڵاوا بە(شقلاباذ)[١] و عەنکاوا- عەمکاوا بە (عمكاباذ)[٢] و زەهاو بە(زهاب و ذهاب) و سیساوا بە (سيساباد) و باداوا بە(باداباد) هاتوون[٣]، ئەم دوو گوندەی دواهی موڵکی میرنشینی سۆران بوون و دواتر کەوتنە دەست کاربەدەستانی عوثمانی لە هەولێر، ناوچەی زەنگابادی گەرمیان لە کۆتاهی سەردەمی عەباسییەوە ناسراوە و لە سەرچاوە فارسیەکاندا بە زەنگیئاباد ناوی هاتووە[٤] چ گومانێکمان نییە کە ئەو دەمانەش کوردی ناوچەکە بە پێیان گوتووە زەنگاوا- زەنگاواد و لە هەواڵێکیشدا وا هاتووە، بەڵام بە هۆی هەڵەی نەسخکردنەوە بووە بە رانکاوا[٥] و قەڵای(بەهار) یەکەم پایتەختی ولایەتی کوردستان- ناوەڕاستی سەدەی٧ک /١٣ز-[٦] لای مێژوونوسێکی ئەو سەردەمە بە (وەهار) ناو براوە کە دیارە لە زاری خەلکانێکی کوردەوە بەرگوێی کەوتووە[٧] و میر سورخابی کوڕی بەدری کوڕی موهەلهەلی کوڕی محەمەدی شادنجان (٤٦٧- ٥٠٠ک /١٠٧٤- ١١٠٦ز) خاوەندی قەڵای خوفتیان- خەفتیدەکان لە رۆخی زێی خوارو و ناوچەکانی ئاغجەلەر و کۆیە[٨]، بەخۆی ناوی سورخاو بووە و پێم وایە چەمی سورخاوشان- سورخاو شاهان کە دەڕژێتە ناو زێوە یادگاریی ئەوە[٩]، لە بەیتە شیعرێکی کوردیی سەدەی ١١ک/١٨ز ناوی بنەماڵەی خانەدانی سورخاو هاتووە:

کەی صنعەت کەی طەبع، کەی ئاسا کەی خوو
نەسڵ خانەدان سورخاو مامو[١٠].

بەم پێیە دەکرێت کۆی ناوکانی دیش راست بکەینەوە و بیانگەڕێنینەوە بۆ ئەصلە کوردییەکەیان،

دارائاباد یەکێک بوو لەو سێ شارۆچکەیەی شارەزور کەوا لە دەمی فەتحی ئیسلامی ئاوەدان بوون و فەتح کران و بە ناوی شاه دارای ئەخمینیی بنیادنەریەوە ناونراوە و لە سەدەی ٤ک/١٠ز کەوتە دەستی میرانی حەسەنۆیی بەرزەکان، لە کوردیدا داراوا بووە[١١] و بنەماڵەی شبانکارەی کورد کە لە ناوەڕاستی سەدەی ٥ک/١١ز دا، دەسەڵاتداریەکیان لە بەشێکی هەرێمی فارس و ئەسپەهان دامەزراند، ناوی دروستیان شوانکارەیە[١٢] و ئێستاش خێڵێکی کوردی دانیشتووی شارەزور بەم ناوەوە هەرماوە و گوندی شوانکارەش هەیە و دەکەوێتە رۆژهەڵاتی پاوەوە. کەلهی خۆشاب بارەگای میرانی مەحمودی[١٣] نەدورە بە کوردی خۆشاف بوبێت، کەچی یاقوتی حەمەوی(م: ٦٢٦ک/١٢٢٩ز) کردوویەتی بە خەوشەب[١٤]، هەروەها کەلهی ئامێدیی بارەگای میرانی هەکاری لە سەردەمی عەباسی، بە قەڵای(جلاب)یش دەناسرا[١٥]، نەدوورە ئەمەش بەفارسیکردن یان شێوەی فارسیی ناوەکە بێت و گەلئاف- گەلاف یان گولاف بووە وەک چۆن ناوی گوندی (رێژاو)ی کوردستانی رۆژهەڵات لە دەقە فارسیەکان و نوسراوە رەسمییەکانی دەوڵەتانی ئێراندا کراوە بە (ریجاب)،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

ناوی هەردوو روباری سپیرود(أسبیروذ)[١٦] و جوانرود لە کوردیدا سپیرۆ و جوانرۆ بوونە لە شیوەی تانجەرۆ، وشکەرۆ، ناوی جوانرۆ ئێستاش لای خەڵکەی هەر وەک خۆی ماوە.

لەبەر رۆشنایی ئەو حاڵەتە گۆڕانەی بەسەر ئەم ناوانە هاتوون، دەکرێت چ ناوێکی پەیوەست بە مێژوومانەوە هەیە و لە نووسراوە فارسییەکاندا هاتوون، بیگەڕێنینەوە بۆ شێوە کوردییەکەی.

**دووهەم: عەرەب و کردنی پاشگری(ۆ)ی ناوی کوردی بە (ویە):**

راستییەکی بەڵگەنەویستە کە عەرەب بە درێژایی مێژوویان لە پێش و پاش ئیسلامدا، سەدان وشەیان لە گەلانی دیکەوە وەرگرت و پاش گونجاندنیان، بەکاریان هێنان و تێکەڵی زمانی خۆیانیان کردن و دەبوو بەپێی دەستور و رێزمانی عەرەبی سەرەدەریی لەگەڵ بکەن و دەستکاریی بنیادی بکەن و پیتەکانی بگۆرن، ئەو وشانەی زوو وەرگیرابن و لە ئاخافتنی کۆنی عەرەبی پێش ئیسلام، شوێنی خۆیان گرتبێت و پاشتر لە قورئان و فەرموودە راستەکانی پێغەمبەر و شیعری سەرەتاکانی سەردەمی ئیسلامی هاتبن کە بە سەردەمی گەواهیهێنانەوە(عصر الاستشهاد) دەناسریت، بە بەعەرەبیکراو (معرب) دادەنرێن و چونکە لە قورئاندا بەکار هاتوون و چەند جارێکیش جەخت لەوە کراوەتەوە کە قورئان بە عەرەبیەکی پەتی و رەوان هاتۆتە خوارەوە، بۆیە زۆربەی زمانەوان لە کۆنەوە لەگەڵ داننانیان بە رەگوریشەی ناعەرەبیی ئەم وشانە، نەدەشیان نکۆڵی نەکەن و بە موڵکی عەرەبیان دادەنێن و ئەحکامی زمانی عەرەبیی بەسەر دەچەسپێنن[١٧]، ئەم جۆرە وشانە جیاوازن لە وشەی بیانی(دخیل) و دروستکراو(مولد)، ف. عەبدولڕەحیم ساخکەرەوەی کتێبی(المعرب من كلام الأعجمي) دانراوی ئەبو مەنصوری جەوالیقی(م: ٥٤٠ک/١١٤٥م)، بە وردی لەم بابەتەی کۆڵیوەتەوە و زانیاریی بەکەڵکی خستۆتە روو[١٨]، لە ئاکامی ئەمەدا، ئەو میرە کوردانەی لەم سەردەمەدا دەرکەوتوون، ناویان هەر بە فۆرمە عەرەبیکراوەکەی براوە و وەک سەدان ناوی دی بوونەتە وشەی (معرب) و پاشتریش هەر وا ماوەنەتەوە و بە پێویست نەزانراوە وەک خۆیان لێ بکرێتەوە و ئێستاش دوا قالبی خۆیان وەرگرت. تەنانەت لە وشەگەلێکدا، دەستکاریکردن چەند پیتێکی دەگرتەوە تا وای لێ دەهات تەواو دەگۆڕاو و بە ئاسانی ئەصلەکەی ناناسرێتەوە.

ئەگەر کتێبە مێژوویی و ئەدەبیەکانی سەردەمی ئیسلامی بپشکنین و چاوێکی خێرا بە هەواڵەکانی چوار سەدەی یەکەمی سەردەمی ئیسلامی ١- ٤ک/ ٧- ١٠ز بگێڕین، دەبینین دەهان کەسایەتی ناسراو هەن لە زمانەوان و دانەر و زانا و فەقیهـ و موفەسیر و میر و بەرپرسی بە نەژاد ئێرانی، خۆیان یان یەکێک لە باب و باپیرانیان، هەڵگری چەشنە ناو یان ناسناوێکن بە پاشگری(ویە) کۆتا دێت: (بالویە، خالویە، خمارویە، درستویە، راهویە، زادویە، زنجویە، زیلویە، سیبویە، شاهویە، شیرویە، قولویە، کاکویە، مردویە، ماهویە، ماسویە،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

متویه، مسکویه، مهرویه،... هتد)، پێشتر ئەم پاشگرە لای عەرەب تەواو نامۆ و نەناسراو بوو و لە سەردەمی جاهیلی و بەر لە تێکەڵبوونی عەرەبە فاتحەکان بە گەلانی بیانی، چ شوێنەوارێکی لە زمانی عەرەبی نەبووە، بەڵام پاشتر تەنانەت دەخرایە دووی چەند ناوێکی عەرەبییش و دەبوو بە پشکێک لە ناوەکە: (حربویە، حسنویە، حمدویە، زکرویە، عمویە، عمرویە، فضلویە، نفطویە...هتد).

لەمێژە زانایان و زمانەوانی موسڵمان هەڵوەستەیان لەسەر ئەم حاڵەتە کردووە و بایەخیان پێداوە و چونکە لایان نامۆ بووە، را و لێکدانەوەی جیاوازیان لەبارەیەوە خستۆتە روو لەبارەی دروست گۆکردنی بە(ویە، ە ویە، وەیە، ویە)، یان سەبارەت بە ئەحکامی ئیعرابکردن و گەردانکردنی، ئەمەش بەردەوام گەنگەشە و مشتومڕی هێناوەتەکایەوە، بەڵام گشتیان کۆک و یەکدەنگن لەمەڕ ئەوەی ئەم پاشگرە چ رەگوڕیشەیەکی لە زمانی عەرەبی نییە و بە لێزیادکردنەوە لە فارسییەوە وەرگیراوە و لەگەڵ بنیاد و رێزمانی عەرەبیدا گونجێنراوە، توێژەرێک بە سەرلەبەری را و سەرنجەکانی زمانەوان چۆتەوە و هەڵی سەنگاندوون و توێژینەوەیەکی قوولی لەسەر ئەم مژارە ئەنجامداوە[١٩].

لێرە پێویستە ئەوەش بڵێین لە فەرهەنگی(لسان العرب)ی(ابن منظور: م٧١١ک/١٣١١ز) و فەرهەنگەکانی دی و لە سەرجەم کەلتوری عەرەبدا، هەر وشەیەکی بەعەرەبیکراو و وەرگیراوی ئێرانی هەیە و چووبێتە ناو زمانی عەرەبییەوە، بێ سێودوو گەڕێنراوەتەوە بۆ زمانی فارسی و بە(فارسي معرب) هەژمار کراوە و چ حیسابێک بۆ کوردی و زمان و زارەکانی دیکەی سەر بە خێزانی زمانە ئێرانییەکان نەکراوە، کەچی بڕێکی بەرچاوی ئەو وشانە زیاتر لە کوردییەوە نزیکن نەک لە فارسی[٢٠].

ئەوەی جێگای باسە و پەیوەستە بە دیرۆکی میرنشینەکانی کورد، ئەوەیە ژمارەیەک لەو میر و سەرکردە کوردانەی دەگەڕێنەوە بۆ چوارسەد ساڵی یەکەمی دیرۆکی ئیسلامی، بە هەمان شێوە ناویان بە (ویە) کۆتاهی دێت و ئاشکرایە کاتی خۆی چ حیکایەتخوانان و هەواڵزانان و چ بنووسان و باجگران و فەرمانبەرانی دەوڵەتی ئیسلامی بە دەستکارییەوە تۆماریان کردووە تا بەگوێرەی سیستمی زمانی عەرەبی بخوێرێنەوە و بە ئاسانی لێیان تێ بگەن و دواتریش لە سەرچاوەکان بەم چەشنە یاداشت کران:

- جیلویە: سەرکردەیەکی کورد بوو ساڵی ١٩٦ک/٨١٢ز کوژرا[٢١].
- فاذویە: کابرایەکی نەناسراوی کوردە- ناوەڕاستی سەدەی ٣ک/٩ز[٢٢].
- سەرکردەی خەواریج ئیبراهیم شادکویە- نیوەی دووەمی سەدەی٣ک/٩ز- ناسناوی بە سێ شێوە هاتووە: شاذکویە[٢٣]، شاذلویە[٢٤]، شادلویە[٢٥] و دەبێتە باوکی دەیسەمی کورد میری ئادەربیجان (٣١٥- ٣٤٥ک/٩٢٧- ٩٥٦ز) کە ناسراوترین میری قۆناغی بەرایی دەسەڵاتداریی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کـورده و لە پێشـەنگی ئەو میـرانەیە کە دراوی بە نـاوی خـۆیەوە نەخشـاندووە و لەسـەر ئاستی خیلافەی عەباسی و ڕۆژهەڵاتی ئیسلامی بەناووبانگ بوو[٢٦].

- شکویە: میر جەعفەری کوڕی شکویەی هەدبانی- هەدبان، خودانی شاری سەڵماس بوو و لە هەواڵەکانی ساڵی ٣٣٢ک/٩٤٤ز دەنگوباسی هاتووە[٢٧]، شکویە هەر جکویەیە، ئەمەش نیشانەی ئەوەیە کە ناوەکە چکۆ بووە و پیتی(چ) دەکرا بە(ج) یان(ش)[٢٨].
- بانویە: باوکی میری قەڵای ئەردەمشت صالحی کوڕی بانویە- سەدەی ٤ک/١٠ز[٢٩].
- حسـنویە: کـوڕی حوسـێنی بەرزەکـان(٣٤٨- ٣٦٩ک/ ٩٦٠- ٩٨٠ز) دامەزرێـنەری میرنشـینی حەسنەویهی لە هەرێمی چیا و شارەزور کە هەر بە ناوی خۆیەوە ناوزەد کراوە[٣٠].
- جکویـە- چکـویە: موصـەکی کـوڕی جکـویە یەکەم میـری ناسـراوی هەدبانەکـانی هەولێر و رەنگە میری دامەزرێنەریش بێت و ساڵی ٣٨٧ک/٩٩٧ز دا، میری هەولێر بووە[٣١].
- شـیروە- شـیرویە کـوڕی مەم: سـاڵی ٤٠١ک/١٠٠٩ز میر(ممهـد الدولـة) سـەعیدی کـوڕی مەروانـی کوشـت و بـۆ نـزیکەی سـاڵێک حـوکمی میرنشـینی مەروانیـی گـرتە دەسـت و نازناوی (الواثق بالله) لێنرا و دراوی حبە ناوی خۆیەوە لێدا.
- فضـلویە: لە میرانـــی کـــوردی شـــوانکارە لە هەرێمـــی فـــارس، و فەضـــلۆیی هـــۆزێکی لوڕستانە[٣٢].
- دیلـویە: سـەردارێکی نەناسـراوی کـوردە و قەڵایەکـی بەدەسـتەوە بـووە کە بە مەزنـدە دەکەوتە شوێنێکی نزیک مەندەلی و حلوانەوە و هەر بە ناوی خۆیەوە نـاو نـراوە: دزدیلـویە واتـا دژ یـان قەڵای دیلـویە و دواتـر ئەم قەڵایە کەوتـۆتە ژێـر دەسـەڵاتی میرانـی عەننـازیی شادنجانەوە و لە روداوەکانی ساڵانی ٤٣٧- ٤٣٩ک/١٠٤٥- ١-٤٩ز دەنگوباسی هاتووە[٣٣].

ئێمە وای بـۆ دەچـین تـا رادەیەکـیش دڵنیـاین لەوەی کە سـەرلەبەری ئەم نـاوانە لە بنەڕەتـدا و بە زمـانی خۆمـاڵیی کـوردی، بە(ۆ) کۆتاهییـان هـاتووە نەک بە (ویــە) و دەنگەکانی(ج، ف، ذ) لە بنەکۆک و پێش گۆڕینیان (گ، چ، پ، د) بوونە، ئەگەر بخوازین وەک باب و باپیرانمان ناویان بهێنین، دەبێت بێژین: ( گیلۆ، پادۆ، شادکۆ- شادلۆ، چکۆ، بـانۆ، حەسـەنۆ، چکـۆ، شێرۆ، فەزڵۆ، دیلۆ) و رەنـگە هـۆزی دەلـۆ لە هۆزەکـانی گەرمیـان پەیوەندییەکی بەم میرە دیلۆ- دەلۆ ناوەوە هەبێت.

ئەگەر نەکارین بەڵگەی مێژوویی پێویست بۆ سەلماندنی راستیی ئەم بۆچوونەمـان سەبارەت بە گشت ئەم ناوانە بهێنینەوە، ئەوا دەشێین بێ دوودڵی، سەبارەت بە سێ چوارێکیـان بەڵـگە گومـانبڕ بخەینـەڕوو، حەسـنەویەی بەرزەکـان یەکێـک لە میـرە هەرە ناسـراوەکانی کـوردە و لە سـەرتاپای سـەرچاوە عەرەبییەکانـدا نـاوی بە(حسـنویە) هـاتووە و نەقشـبەندی گەهیشـــتۆتە ئەو ئەنجـــامەی کە دروســـتەکەی (حەسنەویهـــ)یە[٣٤]. کەچـــی دانەری



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کتێبی(مجمل التواریخ والقصص) کە خەڵکی ئەسەدئابادی کوردستانە و لە نیوەی دووەمی سەدەی ٥ک/١١ز و نیوەی یەکەمی سەدەی ٦ک/١٢ز ژیاوە و ساڵی ٥٢٠ک/١١٢٦ز کتێبەکەی داناوە، ناوی بە شێوە کوردیەکەی حەسەنۆ (حسنو بن الحسین البرزکان) نووسیوە[٣٥]، بگەرە ناوی میر بەدر(٣٦٩- ٤٠٥ک/٩٧٩- ١٠١٤ز)ی کوڕ و جێگرەوەیشی، بە (بدر حسنو)- بەدری حەسەنۆ نووسیوە[٣٦]، ساخکەرەوەی کتێبەکە وایزانیوە وشەکە ناتەواوە و لە هەردوو شوێنەکەدا رابووە (یە)ی بۆ زیاد کردووە، روونە ئەم مێژوونووسە کە زۆر نزیکە بەخۆیشی کورد بێت، ناوی ئەم میرەی هاونیشتمانی لە زاری خەڵکە کوردەکە وەرگرتووە، دەکرێت بە دڵنیایەوە بڵێین میر بەدر، لە ناوخۆی کوردستان و هەرێمەکانی ئێران بە بەدری حەسەنۆ ناوی رۆیشتووە، عومەری خەیام لە نەورۆزنامەکەیدا و لە بازیار- بازەوان عەلی کامە دەدوێت دەڵێت لە خزمەت(بدر حسنو)- بەدری حەسنۆ بووە[٣٧]. وەلێ مخابن بەهۆی هەڵە و نەزانینی ناسخانی دەستخەتی نەورۆزنامەکەوە، ناوی شێوێنراوە و دیارە ساخکەرەوەکەش ناشارەزا بووە و بە(بدر خستو) خوێندویەتیەوە، بێئاگا لەوەی لە رۆژگاری عومەری خەیامدا واتا لە سەدەکانی ٥-٦ک/١١-١٢ز، چ دەسەڵاتدرێک بەم ناوە نەبووە کە هیچ واتایەکیش بەدەستەوە نادات، زیاد لەمەش ئەم عەلی کامەیە هاودەمی میر بەدر و سەرای لە شاری راگ- رەی هەبوو[٣٨].

سەبارەت بە(جکویە، شکویە) کە ناوێکی باوبوو لەکن کوردانی هەدبان، راستەکەی چکۆ یان چەکۆیە وەک لە سەرچاوەکانی سەردەمی ئەیوبی هاتووە و میر عیزەدین موسەکی کوڕی چەکۆ(م: ٥٨٥ک /١١٨٩ز)، خالۆزای سوڵتان صەلاحەدینی ئەیوبی بوو، واتا خاڵێکی سوڵتان ناوی چەکۆ بووە، صەدیقی کوڕی چەکۆ سەرکردەیەکی کورد بوو لە سوپای ئەیوبی و ساڵی ٥٧١ک/١١٦٧ز کوژرا[٣٩] و سیف الدین ئیبراهیمی کوڕی شروە- شیرۆ کوڕی عەلی کوڕی مەرزەبان کوڕی کلۆل چەکۆ، میرێکی دیکەی کوردبوو لە لەشکری ئەیوبی[٤٠]، ئەمە جگە لەوەی چەکۆ یەکێکە لە کارەکتەرەکانی چیرۆکی ئەڤینداریی مەم و زین.

هەروەها فارقی(م: پاش ٥٧٧ک/١١٨١ز) کە خەڵکی میافارقینە و لە کوردستان لەدایک بووە و ژیاوە، ناوی مامێکی میر نصر الدولة ئەحمەدی کوڕی مەروان(٤٠١-٤٥٣ک/١٠١٠- ١٠٦١ز) بە شێوە کوردییەکەی هێناوە: بلاشۆ کوڕی کەک[٤١]، میر شێرۆی کوڕی مەم، بەخۆی ناوی فەرمیی شێروین بووە وەک لە تاکە دراوێکی دۆزراوەی نەخشێنراوە، کەچی بە شروە- شێروە نوسیویەتی کە هەر شێرۆی کوردییە و تا ئێستاش لە کرمانجی سەروودا، هەر کەسێک بڕگەی یەکەمی ناوی شێر بێت وەک: شێروان، شێرزاد، شێرکۆ بە شێرۆ گاز دەکرێت، فارقی ناوی کوڕێک و نەوەیەکی میر ئەحمەدی کوڕی مەروانیشی بە(عیسکوە) نوسیوە: عیسکوە کوڕی دەرباس کوڕی عیسکوە[٤٢] و دیارە لەبەر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

نەبوونی (ۆ) لە عەرەبی، ناچاربووە ئەم دوو ناوە: شێرۆ، عیسکۆ بە(وە) بنوسێت کە شێوەی فارسیی(ۆ) یە بیانکات بە شروە و عیسکوە. جیلویە ناوی زۆمێکی کوردە لە هەرێمی پارس و راستەکەی گیلۆیە و کێوی گیلۆ کە بە فارسی کراوە بە (کوە گیلویە)[٤٣].

سەبارەت بە شاهویە، شاهۆ ئێستا زنجیرە کێوێکی ناسراوە و دەکەوێتە نێوان هەردوو ئوستانی کرماشان و کوردستان- سنە و نشینەگەی پیرخدری شاهۆ بووە کە بە مەزندە لە سەدەی ٦ک/١٢ز ژیاوە، گومانێکی وام نییە شاهۆ لە بنەڕەتدا، ناوی کەسە نەک ناوێکی تۆپۆنۆمی و دەبێت شاهۆ ناوێک پەیوەندیی ئەم کێوەوە هەبێت تا ئەو ئاستەی بە ناویەوە ناوزەد کراوە، هەندەی ئێمە پێی بزانین لە سەدەکانی ٣-٤ک/٨- ٩زدا، دوو کەسی ئێرانی ناویان شاهۆ- شاهوە بووە و لە دەقە عەرەبیەکاندا کراون بە شاهویە[٤٤].

پاش بڕانەوەی رۆژگاری هەژموونی زمان و چاندی عەرەبی و بەسەرچوونی(عصر الإستشهاد)، جێبەجێکردنی رێزمانی عەرەبی بەسەر ناوە ناعەرەبیەکاندا نەما یان کز و سست بوو و ئەگەر هەشبوایە ئەوا بە بەرنامە نەدەکرا، لەم چوارچێوەیەشدا، گونجاندنی (ۆ)ش نەما و وەک خۆی دەنوسرا و لە سەردەمی ئەیوبییەوە ناوی چەند کوردێک بۆ دەستکاری و وەک خۆیان هاتوون:

- بلاشۆ: عیسای کوڕی بلاشۆ(م:٥٨٤ك/١١٨٨ز) والیی حەلەب بوو.
- ملکیشۆ: کوڕ و نەوەکانی میر و کاربەدەست بوون لە کوردستان و لە سوپای ئەیوبی[٤٥].
- ئیبن بوبو: زانایەکی کورد بوو لە بەغدا[٤٦].
- مەندۆ: مەندوە، شێخ مەندۆی کورد خاوەند قەڵای ئەرقین لە چارەکی یەکەمی سەدەی ٨ک/١٤ز[٤٧] و دامەزرێنەری میرنشینی مەنتشا- مەنتەشاهی کە هەر بە ناوی ئەوەوە ناونرا.
- هندۆ: باوکی بەدرەدین حەسەنی کوڕی هندۆ کە دەسەڵاتدارێکی ناسراوی کورد و حاکمی شنگار بوو و ساڵی ٧٤٨ک/١٣٤٧ز موصڵی خستە ژێر دەستی خۆیەوە و پاش شەش ساڵێک هاتەکوشتن[٤٨].

کورد بەوەندەوە نەوەستا، بەڵکو ئەم دەستورەی ناونانەیان بەسەر ناوە عەرەبی و ئیسلامیەکانیشدا سەپاند و بە لکاندنی پاشکۆی(ۆ) پێیانەوە، دەیانکردن بە خۆماڵی و روخساری کوردەواییان پێ دەبەخشین، بۆ نموونە(شیخ)یان دەکرد بە شیخۆ و ئەم حاڵەتە تا ئێستاش هەر بڵاوە و شێخۆ ناوێک ماوەیەک پاش حەسەنی کوڕی هندو بووە حاکمی شنگار بوو[٤٩] و(زید) یان دەکرد بە زەیدۆ و شێخ زەیدۆی زەرقی- زەرکی یەکەم پێشەوای مەشیخەی زەرقی بوو[٥٠] کوردی واش هەبوو (محمد) و (سلیمان)ی دەکردن بە محەمەدۆ و سلێمانۆ[٥١]، بەڵام لە زۆربەی حاڵەتەکاندا، ناوە عەربیەکان کورت دەکرایەوە ئەوجا (ۆ) دەخرایە پاڵ نەخاسمە ناوە لێکدراوەکان، بەدلیسی راستیی پێکاوە دەمێک دەڵێت کورد خولیای کوردکرنەوەی ناوەکانن[٥٢]، زمانەوانی عەرەبیش لەزووەوە هەستیان بە دیاردەیە

کردبوو و زانیویانە ئەم پاشگرە رۆڵی کورتکردنەوە و گازکردنیش دەگێڕێت[٥٣]، ئەگەر بڕوانینە لیستی ناوی میرانی کورد، لە سەدەکانی ٨-١٣ک/١٤- ١٩ز، دەبینین کورد بە دەگمەن ناوە درێژەکانیان لە کورتکردنەوە بواردووە:

- بە میر بەدرەدینی بوختی- بوهتانی میری جزیرەی بوهتان(م: ٨٧٣ک/١٤٦٩ز) یان دەگوت بەدرۆ و ئاوەهاش مێژوونوسێک گوێی لێبووە[٥٤] و بە میر غرز الدینی سلێمانی- سلێڤانییان دەگوت غەرزۆ کە یەکەم میری ناسراوی سلێڤانییە و رەنگە میری دامەزرێنەری میرنشینی سلێڤانییش بێت، بە هەمان دەستور، ناوی میران: سیف الدین و عز الدین و شمس الدین و خلیل و جەمشید و ئەبدال ...هتد، کران بە سەیفۆ، عەزۆ، شەمۆ، خەلۆ، جمۆ، ئەبدۆ[٥٥].

حاڵی حازر ئەم پاشگرە وەک خۆی ماوە و هەمان رۆڵ دەگێڕێت و لە کرمانجیی سەروودا زۆر چالاکە و بەچڕی بەکاردێت و تا ئەم ساڵانەی دوایی ناوی رێژەیەکی بڵندی خەڵکی ناوچەرگەی کوردستان ئەم پاشگرەی پێوەبوو، نەخاسمە لە نێوان کوردانی داسەنی- یەزیدی و خێڵە کۆچەرەکان ئەوانەی هۆگری دەشت و هەرد و کێوەکان بوون و هەندە تێکەڵی خەڵکانی بیانی نابوون و مۆرکی خۆڕسکی کوردەوارییان پاراستبوو. تەنانەت بە میرانی فەرمانڕەوا و خانەدانی هەکاری دەگوترا شەمۆ و بە میرانی ساسۆنیش دەگوترا بنەماڵەی حەزۆ- عەزۆ[٥٦].

ناوی میر حەسەنۆش باشترین بەڵگەیە بۆ سەلماندنی ئەوەی ئەم ئامرازە پێشتر لە لەهجەکانی ناوچەکانی شارەزور و کوردستانی رۆژهەڵاتیش هەبووە، هەرچەند بەرەبەرە کاڵ بۆتەوە و ئێستا هەندە بەرچاو ناکەوێت، سەبارەت بە لەهجەی هەورامییش، کاکۆ زەکەریا دەناسین کە رێبەرێکی ئاییینی پایەبەرز و بەشکۆی هەورامان بووە و لە سەدەی ١١ک/١٨ز ژیاوە و ئێستاش زێد و شوێنی لەدایکبوونی بە گوندی کاکۆزەکەریا و نەوە و شوێنکەوتووەکانی بە کاکۆزەکەریایی دەناسرێن و شاعیر سەید یەعقوبی ماهیدەشتی(١٨٠٨- ١٨٨١) بە سەید یاقۆ ناوی دەرکرد و بووە ناسناوی[٥٧].

بەڵگەکان هەندە روونن و هەندە زۆرن بە زیادەوە بایی ئەوە هەن بتوانم بڵێم لکاندنی(ۆ) بە کۆتاهی ناوی کەسییەوە واتا ئۆنۆماستیک (اسم علم)، لەوە زەقتر بووە بە دیاردە یان دۆخێکی زمانی ناوبرێت، بەڵکو لەمێژەوە و پێش ئەوەی لە دووتوێی سەرچاوە بیانییەکان یاداشت بکرێت، وەک هەر یاسایەکی زمانەوانی، لە زمانی کوردی خەملیوە و جێگیر بووە و ئەگەر لەو کورتە راپۆرتەش ورد بینەوە کە مەلا مەحمودی بایەزیدی(١٧٩٧- ١٨٧٠) بۆ " ئیسم و ناڤێ کورمانجیان کو تمام و بێ کێماسی دبێژین" رێکی خستووە، دەگەینە ئەو ئەنجامەی کە کرمانج- واتا کۆچەری و گوندنشیانی کورد، چ ناوێکی عەرەبی هەبووە و راستەخۆ پاش کورتکردنەوەی، ئامرازی ناونانی کوردییان خستۆتە سەر:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

عبدالله- عەبۆ، عبد القادر- قەدۆ- قادۆ، عبد اللطیف- لەتۆ، حیدر- حەیدۆ، جعفر- جەعفۆ...هتد[٥٨].

لێرەوە دەتوانین بەدڵنیاییەوە بڵێین لە زووەوە لای گەلی کورد بووەتە ئامرازی ناونان، وەک چۆن لە گەلێک زمانی ئەمڕۆی جیهاندا ئامرازی تایبەت هەیە بۆ ناونان وەک ئامرازی (ڤیچ) و(ۆڤ) لە زمانە سلاڤییەکان. با لێرە ئەوەش نەبوێرین لە ژێر کاریگەریی کوردا، ناوانەکانی عەبدۆ، سەعدۆ، حەجو، حەمۆ، لەناو عەرەبی سوریا و لوبنانیش پەیدا بوون و چەندین کەسایەتیی ناسراوی عەرەب هەن ناویان بە(ۆ) کۆتا دێن.

**سێهەم - گۆڕینی پیتێک یان زیاتر لە ناوی کوردی:**

جەوالیقی کتێبی(المعرب من کلام الأعجمي علی حروف المعجم) لەبارەی وشە وەرگیراو و بەعەرەبیکراوەکان داناوە و دەڵێت عەرەب زۆرجاران ناوە ئەعجەمیەکان- ناعەرەبیەکان دەگۆڕن و ئەو پیتانەی نییانە لای دەبەن و نزیکترین پیتی خۆیان لێیەوە، لە جێگای دادەنێن و دەبوو ئەم رەفتارە پێویستەش بکەن تا پەیڤی بیانی وا نەچێتە نێو ئاخافتنیانەوە، کە پیتی وەهای تێدایە ئەوان نییانە[٥٩]، لەوانەش پیتی(پ) کە دەنگەکەی دەکەوتە نێوان (فاء) و(باء)ەوە لە عەرەبی نییە و بە بائی فارسی و (الباء المهموسة) ناویان دەبرد، بۆیە عەرەب ئەم پیتەی لە سەرەتای هەر وشەیەکی بیانی خوازراودا دەکرد بە(ف) تا لەگەڵ زمانەکەی خۆی بیسازانێت[٦٠]، وەک: پارس- فارس، سوپاهان، ئەسپاهان- ئەصفەهان، پەهلە و پەهلەویات- فەهلە و فەهلەویات، پولاد- فولاذ، پالودە- فالوذة، پیرۆز- فیروز... هتد. جاری واش هەبوو بە(ب) دەیانهێشتەوە.

بێگومان ئەم پیتگۆڕکێیە ناوی میر و کەسایەتیە کوردەکانیشی گرتەوە، کوردێکی لایەنگری دوا ئیمامی شیعەی دوازدە ئیمامی، ناوی بە (فاذویە الکردي) هاتووە[٦١]، دەشێم بە دڵنیاییەوە بێژم ئەم کوردە گومناوە هەرگیز ناوی دروستی ئاوا نەبووە، بەڵکو پادۆ بووە و ئەوانەی دیویانە یان گوێبیستی دەنگوباسی بوونە، ناویان خستۆتە ژێر بنەماکانی بەعەرەبیکردنی ناوی ئەعجەمی و سێ گۆڕاکاریان بەسەر پیت یان دەنگەکانی هێناوە و (پ) و (د) و (ۆ) لەدووی یەک کردووە بە(ف) و (ذ) و (ویە) و سەرئەنجام پادۆ بوو بە (فاذویە). لێرەوە دەگەینە ئەو بڕوایەی کە پادۆ- پاد هەرچەند لە زمانی کوردیی هاوچەرخ نەماوە و نانرێت چ واتایەک دەگەهێنێت، پەیڤێکی دێرینی کوردی بووە و لە گشت ناوچەکانی کوردستان بۆ ناونانیش بەکار هاتووە.

لە لایەکی دیکەوە، ڤەکۆڵەرانی کورد بەخۆمەوەش، باوەر ناکەم پێشتر درکیان بە چۆنیەتی وەرگرتن و خواستنی وشەی بیانی کردبێت کە عەرەبەکانەوە پەیڕەویان دەکرد لە زمانی گەلانی دی بە تایبەت فارس و کورد و سەرنجی ئەوەمان نەدابوو کە ئەم خواستنە یاسا و رێسای خۆی هەیە و هەڕەمەکی نەبووە و لە ناشارەزاییەوە وامانەزانی ناوی هەر هۆز و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کەسایەتیەکی کورد، یان ناوی هەر بازێر و گوندێکی کوردستان ئەگەر پیتی(ذ)ی تێدابوو، ئەوا پیتە راستەکەی(ز) و دەبێت بەم پیتە بنوسرێت تەنها بە پاساوی ئەوەی ئەم دوو دەنگە لێک نزیکن و دەهان ساڵە لە کتێب و لێکۆڵینەوەکانماندا وامان دەکرد، هەر بۆ نموونە محەمەد ئەمین زەکی، دەنگوباسی میر بادی کوڕی دۆستەک(باذ الكردي) و هۆزی هەدبانیی لە کتێبی (الكامل في التأريخ) ورگرتووە و ناویانی کروون بە(باز) و (هەزبەنی)[٦٢]. پێدەچێت ناوی دروستی ئەم میرە پاد بووبێت نەک (باد)[٦٣] و(باذ)[٦٤]، وەک لە سەرچاوە عەرەبیەکان هاتووە و توێژەر عەبدولرەقیب یوسف چەند ساڵ لەمەوبەر گەهیشتبووە ئەم ئەنجامە[٦٥]. پادی کوڕی دۆستەک میرێکی ناسراو و کەسایەتیەکی کاریزمایە لە مێژووی کورد و بە خەباتی سەختی شییا میرنشینی دۆستەکی- مەروانی دابمەزرێنێت و لە رێگای بەدیهێنانی ئەم ئامانجە ساڵی ٣٨٠ک/٩٩٠ز هاتە کوشتن. یان ئەو کەسە باد ناوەی گوندی باداوەی رۆژهەڵاتی هەولێری ئاواکردووە و بەناوی خۆیەوە ناونراوە باداوە- بادآباد.

بەڵام ئەوە جێگای سەرنجە ناوی دوو میری ناسراوی کورد: میر شاووری کوڕی فەضلونی شەدادی هەدبانی(٤٤١- ٤٥٩ک/١٠٤٩- ١٠٦٧ز) و وەرامی گاوانی(م: ٤٠٣ک/١٠١٢ز) یەکەم میری ناوبراوی کوردانی گاوان، دەستکاری نەکراون وەک خۆیان و بە شیوە کوردیەکەی ماونەتەوە، شاوور شێوەی کوردیی شاپورە و وەرامیش سووککراوەی وەهرام- بەهرامە و دوو سێ میری دیی گاوانی هەر ناویان وەرام بوو.

هەر لەمبارەیەوە، ناوی باپیرە هەرەگەورەی شێخ صەفیەدینی ئەردەبیلی(م: ٧٣٥ک/١٣٣٤ز)ی باپیری صەفەوییەکان پیرۆز- پیرۆزشاهی کورد بووە[٦٦] و ئەم وشەیە تا ئێستاش لە کوردی وەک خۆی ماوە و بۆ ناونانی ژنانیش بەکار دێت، کەچی لە دەستپێکی ئیسلامەو تا ئەمرۆ لە عەرەبی و فارسیدا هەر بە فەیروز دێت و فەیروزی دەیلەمی(م: ٥٣ک/٦٧٣ز) یەکێکە لە هەڤالانی پێغەمبەر وەک چۆن ناوی گەل و وڵاتی پارسیش بە یەکجاری بووە فارس. هەروەها ناوی باپیرەگەورەی قاضی صەدرەدین عەبدولمەلیکی کوڕی عیسای مارانی(م: ٦٠٥ک/١٢٠٨ز) بە (فیر) هاتووە[٦٧]، کە چ واتا و رامانێک بەدەستەوە نادات و نەدوورە راستەکەی (پیر) بێت بە واتای پیاوچاک و رێبەری ئایینی.

**سێهەم: ناوی هۆزە دسەڵاتدارەکان:**

هەموو دەزانین کورد وەک گەلانی دیی دەرهاوسێ لە دەمی دەرکەوتنیەوە تا ئێستا، لە سەدان هۆز و خێڵ و تیرە و ئێل پێکدەهات و دەنگوباسی دەهانیان لە سەرچاوەکاندا هاتووە بەو ئەگەرەی کە پشکدارییان لە چێکردنی روداو و گۆڕانکاریەکانی کوردستان کردووە و چەند میرنشین و دەسەڵاتدارییێکی خۆجێهییان بنیاد ناوە، ئەوەی لێرە مەبەستە،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ناوی ژمارەیەکیان بە فۆرمی عەرەبی نووسراوە نەک وەک خۆیی و بە فۆرمە کوردیەکەی و ئیمە هەوڵ دەدەین بە دیتنی تێگەهیشتنی خۆمان پەی بە ناوی دروستیان ببەین، دەستپێک پێویستە ئەوەش بزانین، کە هۆزەکانی(الهدبانیة، البرزیکانیة، الشادنجانیة، الجاوانیة، السهرانیة...هتد) (ویة) نسبەی بۆ ناویان زیاد کراوە وپێم وایە ناوی دروستیان وانەبووە، بەڵکو(هەدبان، بەرزەکان، شادنگان، جاوان- گاوان، گۆران، سوهران) بووە وەک چۆن هۆزگەلێکی دی ناوی رەسەنی خۆیان پارستووە و بێ دەستکاری هاتوون، وەک:(البلاشجان- بلاشگان، الجورقان، المازنجان، المزدانکان- المستکان، بالکان)، ئەوەتا ناوی هۆزەکەی میر حەسنۆی کورد لە سەرچاوەکان بە(البرزیکانیة) هاتووە، کەچی بە خۆی بەرزەکان بووە[٦٨].

### ١- هەدبان- هەدبانی(الهذبانیة):

هەدبان یەکێکە لە هۆزە گەورە و ناودارەکانی کورد و چەند خێڵ و تیرەیەکی لێ بۆتەوە و هەوار و نیشتمانیان لە دەشتایی نێوان هەردوو زێیەوە درێژ دەبۆوە تا زۆزانەکانی سەڵماس و شنۆ و ئورمێ و مەراغە لە هەرێمی ئادەربیجان، پاشان لە سەدەی سێهەمی کۆچی/ نۆهەمی زایینەوە بەرەبەرە چەند لق و تیرەیەکیان نیشتەجێ بوون و بوونە دەسەڵاتدار و فەرمانڕەوا و سێ میرنشینیان دامەزراند، میرانی شەدادی لە ئەڕان- ئالان و ئەرمینیا و میرانی رەوادی لە ئادەربیجان و میرانی هەدبانی لە هەولێر لە سێ بنەماڵەی دەستڕۆیشتووی ئەم هۆزە بوون و رۆڵی مەزنیان گێڕا لە مێژووی حوکمڕانیی کورد و بنەماڵەی ئەیوبییش هەر کوردی رەوادی بوون کە خێڵێکی هەدبانییە و لە ئەرمینیا گیرسابۆوە. ناوی ئەم هۆزە لە سەرجەم هەواڵەکاندا بە (الهذبانیة) هاتووە دوو سێ جارێکیش شێوێنراوە و کراوە بە (الهذیانیة) و (الهلبایانیة؟).

سەبارەت بەم ناوە، وەک ئاشکرایە عەرەب گەلێک جاران لە دەمی وەرگرتنی وشە ناعەرەبیەکان، پیتی(د) یان دەکرد(ذ) و ئەم گۆڕینە زۆر باو و کارپێکراو بوو و سەدان ناو و وشەی جۆربەجۆری زمانە ئێرانیەکانی گرتەوە لەوانەش کوردی، لە ناوی کەسایتی و ناوی شوێن و خواردن و خواردنەوە و ئامێر و کەلەپەل.. .هتد تا وەک دیاردەیەکی زمانەوانی لێهات و زمانەوانان لێی دوواون، بەڕادەیەک کەم وشە هەن ئەم دیاردەیە نەی گرتبێتنەوە، بە ئاخافتنێکی وردتر ئەو وشانەی ئەم گۆڕینەیان بەسەردا هات زۆرترن لە وشە نەگۆڕێنراوەکان.

من وای بۆ دەچم و رەنگە کەسانی دییش پێشتر هەمان بۆچوونیان هەبووبێت کە هۆیەیەکی سەرەکیی ئەم پیتگۆڕکیە و کردنی(د) بە(ذ) و (س) بە (ش) ئەوە بێت کە تا سەردەمانی بەرایی ئیسلام، هێشتا خاڵبەندی بۆ پیت و وشەکانی زمانی عەرەبی نەکرابوو و عەرەب هەر بە بەهرەی خۆڕسک و بە سەلیقە وشەکانی زمانەکەیان دەناسیەوە و لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

چوارچێوەی رستەکەوە، دەیانزانی پیتە هاوشێوەکانی هەر پەیڤێک چۆن بخوێننەوە تا واتایەک بەدەستەوە بدات، بەڵام کاتێک پاش فەتحی ئیسلامی و وڵاتگیریی هەرێمەکانی ئێرانزەمین، بەم هەرێمانە بڵاوبوونەوە و تێکەڵی گەلانی دی بوون و بێ ئەوەی ئاشنای زمانی ئەم گەلانە بن و بەمەزندە و بەگوێرەی دەستوری زمانی عەرەبی وشەکانیان دەخواست و بەکاریان دەهێنا[٦٩]، ئەمەش کارێکی وای کرد کە پیتی(د) و(س)ی لە زۆر وشە بە(ذ) و (ش) بخوێنرێنەوە و ئەوجا تۆمار بکرێن. پاشتر ئەم گۆڕانە وەک یاسایەکی زمانەوانی لێهات و زۆربەی جاران پیتی(د)ی ناو وشە ئێرانییەکان بە(ذ) دەنوسرا و دەخوێنراوە.

ئەگەر نەمر محەمەد ئەمین زەکی، لەبەر سەرقاڵی و نەپرژانی هەستی بەمە نەکردبێت، دەبوو ئێمە زووتر سەرنجی ئەم دیاردەمان بدایە و بە دروستی بماننووسایە، مخابن ئێمەمانانیش لەسەر ئەم رێچکەیە رۆیشتین و (الهذبانیة) (الهذباني)مان کرد بە هەزبانی بە بیانووی ئەوەی ناوی نزیکە لە وشەی هۆز و گوایا ناوی لە هۆزەبان- هۆزەوانەوە هاتووە بە واتای سەرۆکی هۆز یان لە دەستەواژەی(ئەزبەنی) یەوە داڕێژراوە کە لە کرمانجیدا بۆ رێزلێگرتن بەکاردێت و ئاگامان لەوەنەبوو کە عەرەب هەرگیز پیتی(ز)ی هیچ ناوێکیان ناکرد بە(ذ)، چونکە وێنەی ئەم دوو پیتە لێکەوە دورن، بۆ نموونە ناوی شەهرەزور و زاب و زۆزان و ئەرزن... هتد وەک خۆیان مانەوە و دەستکارییان نەکران. واتا ناوی رەسەن و کوردیی ئەم هۆزە هەدبان بووە، ئەمەش پشتیوانیی ئەو بۆچوونەی کوردناس ڤلادمیر فیۆدۆرۆفیچ مینۆرسکی(١٨٧٧- ١٩٦٦) دەکات کە هەدبانی گرێ دەدات بە ناوی کۆنی وڵاتی هەولێر: هدیاب- حدیاب و پێدەچێت وشەکە بەم چەشنە گۆڕانکاریی بەسەردا هاتبێت: هدیاب- هدیابان- هەدبان.

## ٢- شادنگان(الشاذنجان):

شادنگان هۆزێکی دیکەی ناوداری کوردە و نیشتەجێی بەرازاییەکانی حلوان و دەرەتەنگ بوو و لە سەرەتای سەردەمی بوەیهییەوە بووە هێزێکی خێڵەکیی کاریگەر و کۆنترۆڵی رێگای مەزنی خوراسانی کرد کە بە ناوچەکانی ژێر دەسەڵاتی دەبرِی و میرانی شادنگان: (ابو الشوک) و (ابن ابی الشوک) و(ابو الفتح) محەمەدی کوڕی عەنناز(٣٨١-٤٠١ک/٩٩١- ١٠١٠ز)، بە هێز و کۆششی لەشکریی خۆیان شیان بناغەی میرنشینی عەننازیی شادنگانی دابرِێژن[٧٠].

ئاشکرایە ناوی ئەم هۆزەش دووچاری هەمان گۆڕین بووە سەرەڕای گۆڕینی(د) بۆ (ذ) و لە گشت هەواڵەکان بە فۆرمە بەعەرەبیکراوەکەی هاتووە و توێژەرانی کورد لێرەش بەهەڵەدا چوون و ناویان کرد بە شازنجان گوایا ئەمە کوردیەکەیەتی، بەڵام راستەکەی شادنگانە کە ئاستەمە بزانرێت واتای چی بووە و لە چ وشەیەکەوە داڕێژراوە رەنگە لە شاد-شادییەوە وەرگیرابێت.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

### ٣- گاوان(الجاوان) و گۆران(الجورقان) گەلاڵی(الجلالية):

راستیەکی بەڵگەنەویستە کە (گ) لە عەرەبیدا نییە و عەرەب ئەم پیتەیان لە هەر وشەیەکی وەرگیراو بدیتایە، بە ناچاری دەیانکرد بە (ج) یان (ک) یان( ق)، ئەوەتا گەوهەر و گوێز و گۆرەوی لە عەرەبیدا کراون بە (جوهر، جوز و جورب)[٧١].

ۆربەی ئەو ناوانەی پەیوەندییان بە کوردەوە هەیە و دەنگی(ج) یان، تێدایە، لە کوردیدا(گ)بووە، بۆ نموونە لە چەندین دەقدا ناوی دوو هۆزی گەورەی کورد بە شێوەی جۆرەقان(الجورقان)[٧٢] و (الجاوان- الجاوانية)[٧٣] و هاتووە، کەچی یەکەمیان لە سەرچاوەیەکی خۆماڵی کە دانەرەکەی خەڵکی ئەسەدئابادە بە گۆران و گۆرانان هاتووە[٧٤] و لە سەرچاوەکانی سەردەمی مەملوکیدا، ناوبردنی بە جۆرەقان نامێنێت و تەنها بە گۆرانی(الكورانية) دێت و ئاشکرایە ئێستا گۆران هەم هۆزێکی گەورەیە و هەم بەشێکی بنەڕەتیی گەلی کوردن، ناوی هۆزی دوهەمیشیان چ واتایەکی نییە لە کوردیدا و ئاشکرایە هەر گاوانە و دەبێت لە سەرەتای پەیدابوونی، پیشەی زۆربەیان گاوانی بووبێت بۆیە ئەم ناوەیان بەسەردا بڕاوە، بە هەمان شێوە گەلاڵی هۆزێکی دێرینی کوردە و لە سەدەی سێی کۆچی/ دەهەمی زایینیەوە نیشتەجێی شارەزورە و لە دەقە عەرەبیەکاندا بە (الجلالية) ناوی براوە[٧٥] کەچی دواتر ناوی بە (الكلالية) دێت و بەشێکیان لە گوندەکانی دەوربەری هەولێر[٧٦] و شوێنی دی بڵاو بوونەوە، لە دەورانی هێرشەکانی مەغۆلدا، برایان شەرەفەدین سەلار و تاجەدین شێروان لە میرانی گەلاڵی بوون لە هەولێر، ئەم هۆزە ئێستاش گەلاڵی بە هەمان ناوەوە ماوە و نیشتەجێی شەهرەزور و هەولێرە.

دیاردەیەکی دی زیادکرنی پیتی (ق)ە بۆ چەندین وشەی ئێرانی و لێرەش وایان لە گۆران کردووە من وای بۆ دەچم ناوی راست و دروستی وتابعیی ناوداری کورد جابان، گاوان بووە ولای فارسەکان بووە بە گابان و دواتر لای عەرەب بووە بە جابان، واتا بە دوو قۆناغی گۆران تێپەڕیوە.

### ٤- چوبی و بەژنەوی(البشنوية):

چوبی لە هۆزە بەدەسەڵاتەکانی هەرێمی جەزیرە بوو و میرنشینێکی بچووکی پێکەوە نابوو و لە چەندین دەقدا بە(الجوبية) هاتووە و دەگەڕێنەوە بۆ کابرایەکی کورد بە ناوی چوب(جوب الكردي) کە رەنگە پەیوەندیی بە چوپان- شوانەوە هەبێت[٧٧]، ناوی لە کوردیدا چوبی یان چوپی بووە بە بەڵگەی ئەوەی (ابن الصابوني: م٦٨٠ك/١٢٨١ز) دەڵێت ئەم هۆزە بە شۆبی(الشوبية)ش ناو دەبرێت[٧٨] و ئاشکرایە جاروبار لە عەرەبیدا، (چ) نەک(ج) دەکرێت بە(ش)، وەک چۆن ناوی میر جەعفەری کوڕی چکۆ کرا بە (جعفر بن شكويه).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەشنەوییش هۆزێکی دەسەڵاتداری دیکەیە لە هەرێمی جەزیرە و ناوی بە (البشنوية) هاتووە[٧٩]، کەچی ناوی دروستی بەژنۆیی بووە و لە شەرەفنامەدا بووە بە بەجنەوی[٨٠].

**چوارەم: ناوی جوگرافی- تۆپۆنیمی:**

گۆڕینی ناوەکان، بە ناوی میر و هۆزەکانەوە رانەوەستا، بەڵکو ئەم سنورەی بەزاند و ناوی جوگرافی- تۆپۆنیمیشی گرتەوە، لەوانەش ناوی ژمارەیەک شار و شارۆچکە و قەڵای کوردستانی ژێر حوکمی میرنشینەکان و بەگوێرەی ئەو حاڵەتانەی وا باسکران، ئەمانیش زۆر و کەم دەستکاری کران و پیتێک یان زیاتریان گۆڕدران و لە شێوەی کوردی و رەسەنی خۆیان تا رادەیەک دوور خرانەوە تا عەرەب بشێن بە ئاسانی گۆیان بکەن و لە تۆمار و نووسراوەکان بەکاری بهێنن، بگرە بەغدادیش لە چەند دەقێکدا کراوە بە(بغداذ) و ناوی چەند شوێنێک بە یەکجاری گۆڕان و فۆرمە نوێ و بەعەرەبیکراوەکەیان چەسپا، دیارترین نموونەش ناوی هەرێمی ئاتەربیگان- ئادەربیگانە کە بەیەکجاری گۆڕدراو بە ئاذەربیجان جێگیر بوو و تا ئێستاش هەروا ماوەتەوە. ناوی هەر شار و گوندێک ئەگەر بە پاشگری رو- رود و ئاوا- ئاباد کۆتا هاتبێت، ئەوا ئە دەبوون بە (روذ) و(آباذ)، وەک: رودراوەر- روذراور، سپیرود- أسبیروذ، مرورود- مرو الروذ، ئیسترائاباد- إستراباذ، ئەسەدئاباد- أسدآباذ...هتد[٨١].

سەبارەت بە کوردستان و قەڵەمڕەوی میرانی کورد، ئەو شار و کەلهانەی بە (ۆ) کۆتا بهاتایە، وەک ناوی کەسایەتی(إسم علم) کە پێشتر باسکرا، سەرەدەریی لەگەڵ دەکرا و یەکسەر دەکرا بە (ویە)، شنۆ کە بارەگای میرانی زەرزاری- زەرزا بوو، کرا بە ئوشنەوە، ئوشنەویە(أشنوە، أشنويە)[٨٢] و لەو دەمەوە تا هەنوکە لە فارسیدا وا مایەوە و لە تۆماری دەوڵەتانی ئێراندا جێگیر کرا، کەچی کورد لەمێژە هەر دەڵێت شنۆ، لەمیانەی ئاخافتنی یاقوتی حەمەوی خویا دەبێت، کە هەوڵدراوە ناوی ئورمێش بە پێوانەی زمانی عەرەبی بخوێنرێتەوە و بکرێت بە ئورمەوە- ئورمویە، بەڵام وا دیارە دەستی ئەم دەستکاریەی نەداوە و کرا بە أورمیە، کەچی ئورمێ شێوەی عەجەمیی ناوی شارەکە بوو[٨٣]. قەڵای بەرزویە(برزويە) کە لە ناوەڕاستی سەدەی سێی کۆچی/ نۆهەمی زایینیەوە تا ساڵی ٣٣٧ک /٩٤٩ز بە دەست میرانی کوردەوە بوو، رەنگە لە بنەڕەتدا بەرزۆ یان بەرزێ بوو بێت و خەڵکی پێیان دەگوت بەرزیە[٨٤] و بەپێی کردنی (پ) بە (ف)، لە چەند دەقێکدا ناوی شارۆچکەی پاوە بە (فاوج) هاتووە[٨٥].

لە ناوی دیدا، (ش) کراوە بە(س) ئەمەش دیاردەیەکی دەنگیی زێدە باوە لە وشە خوازراوەکاندا و دەهان پەیڤی جۆربەجۆر ئەم گۆڕینەیان لەسەر کراوە[٨٦]. ناوی شنگار لە گشت دەقەکاندا دوو پیتی گۆڕدراوە و بە(سنجار) هاتووە، کەچی کورد تا ئێستاش هەر دەڵێت شنگار، دیارە ئەمەش شێوە کۆن و رەسەنەکەیەتی، حەمزەی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەسپەهانی(م:٣٦٠ک/٩٧١ز) دەڵێت سنجار بەعەرەبیکراوی شنگارایە. هەروەها قەڵای شێروانە کە بارەگایەکی پتەو سەنگەری پشتەوەی میرانی شادنگان بوو و لە زۆربەی هەواڵەکاندا بە (السیروان) هاتووە[٨٧]، بەخۆی ناوی شێروان بوو وەک لە تاکە هەواڵێک هاتووە کە باس لە بەندکردنی (الملک الرحیم)ی دوا شاهی بوەیهی دەکات لەم قەڵایە و دواتر گواستنەوەی بۆ شوێنێکی دی، سەرچاوەی ئەم هەواڵەش کتێبە مێژووییە فەوتاوەکەی محەمەدی کوڕی هیلالی صابیئی ناودار بە(غرس النعمة: م٤٨١ک/١٠٨٨ز)یە کە هاودەمی رووداوەکە بووە[٨٨]، ئاشکراشە تا ئێستاش هەر بە کەلهی- قەڵای شێروانە دەناسرێت، پێویستە لێرە ئەوەش بڵێین کە مەلا جەمیلی رۆژبەیانی(١٩١٣- ٢٠٠١) پێشتر درکی بەمە کردووە و دروست بۆی چووە کە قەڵای سیروان هەر قەڵای شێروانەیە، بەڵام د. حسام الدین نەقشبەندی رەخنەی لەم بۆچوونە دروستەی گرتووە و رەتی کردۆتەوە، مخابن ئەویش ئەم سەرنجە نادروستەی لەبەرچاو گرتووە و پەسندی کردووە و ئەم لێکدانەوە راستەی خۆی بە هەڵە داناوە"... ئێمە بەهەڵەدا چووین و وامانزانی(سیروان) هەر ئەو (شێروانە)یە کە بەسەر ئاوی سیروانەوەیە"[٨٩].

**ئەنجام:**

ئەوەی لای هەمووان ئاشکرایە وجێگای داخیشە، ئەوەی لە مێژوومان ماوەتەوە، زۆربەی هەرەزۆری بە خامەی کەسانی غەیرە کورد نوسراون و ئەگەر ئەوان نەبوونایە رەنگە ئەوەندەشمان بۆ نەمایەتەوە، دیارە ئەوانیش بە گوێرەی دەستوری زمانی خۆیان، چ ناوێکی کەسی و تۆپۆنۆمیی کوردی هەیە تۆماریان کردووە بۆیە رێژەیەکی بەرزی ئەم ناوانە بە شیوە رەسەنەکەی نەهاتووە ئەوەی لای کورد بەکارهاتووە، ئێمە لێرە هەوڵمانداوە بگەهینە ئەنجامگەلێک و گرنگترینیان بریتیە لە وەی پیتی(و)ی ناوە کوردییەکان لە دەقە فارسیەکاندا، کراوە بە(ب) و هەروەها دەستنیشانکردنی ئەو پیتانەی وا لەم ناوانە هاتوون و لە ئەلفەبای عەربی نین، لە دەقە عەرەبیەکاندا دەستکاری کراون یان گۆڕدراون بۆ پیتی دی، و ناوی هەر هۆزێک بە(یة النسبة) کۆتا بێت، ئەوا لە بەخۆی و لای کورد وانەبووە، لەمانەش گرنگتر بە بەپشتبەستن بە بەڵگە و هەواڵە مێژوویەکان، بۆمان خویا بوو ناوی چ کوردێک پاشگری(وه) فارسی و(ویە) عەربی پێوە بێت، ئەوا لە کوردیدا(ۆ) بووە، بۆیە لەمەودوا ئەرکی سەرشانی گشتمانە ئەم ناوانە وەک خۆی بیان نووسین و کورد چۆن گوتویەتی و بەکاری هێناوە ئێمەش ئاوەها بەکایان بهێنین.

- **لیستی سەرچاوەکان:**
- **بە عەرەبی:**

- ابن الأثير، عزالدين علي بن محمد الجزري(ت: ٦٣٠هـ/١٢٣٢م).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

- الكامل في التاريخ، دار المعرفة (بيروت: ٢٠٠٧).
- اللباب في تهذيب الأنساب، مكتبة المثنى (بغداد: د. ت).
- الاصفهاني، القاضي(ت: حوالي ٥٩١هـ/١١٩٥م).
- البستان الجامع (المنسوب خطأ الى العماد الأصفهاني)، المكتبة العصرية (بيروت: ٢٠٠٢).
- الباخرزي، أبو الحسن علي بن الحسن بن علي(ت ٤٦٧هـ/١٠٧٤م).
- دمية القصر وعصرة أهل العصر، دار الجيل (بيروت: ١٤١٤هـ).
- البدليسي، الأمير شرفخان بن شمس الدين الروژكي (ت: ١٠١٠هـ/١٦٠١م).
- شرفنامه، ترجمة محمد جميل الملا احمد الروزبياني، ط٢ (اربيل: ٢٠٠١).
- التنوخي، المحسن بن علي بن محمد(ت: ٣٨٤هـ/٩٩٤م).
- الفرج بعد الشدة، ت: عبود الشالجي، دار صادر( بيروت:١٩٧٨).
- الجواليقي، ابو منصور موهوب بن أحمد(ت: ٥٤هـ/ ١١٤٥م).
- المعرب من كلام الأعجمي، مقدمة وتحقيق ف. عبدالرحيم، قدار القلم(دمشق: ١٩٩٠).
- الجوهري، ابو بكر احمد بن عبدالعزيز(ت:٣٢٣هـ/٩٣٥م).
- السقيفة وفدك، شركة الكتبي للطباعة والنشر (بيروت: بلا).
- الحصني، الحسن بن إبراهيم (ت: بعد٨٢٢هـ/١٤١٩م).
- تاريخ حصن كيفا، تحقيق يوسف بالوكن، دار نوبهار (إسطنبول: ٢٠١٩).
- ابن حوقل، أبو القاسم محمد بن حوقل النصيبي (ت: ٣٦٧هـ/٩٧٧م).
- صورة الأرض، دار مكتبة الحياة (بيروت: ١٩٩٢).
- الخفاجي، شهاب الدين أحمد بن محمد بن عمر(ت: ١٠٦٩هـ/١٥٥٩م).
- شفاء الغليل فيما في كلام العرب من الدخيل،المطبعة المنيرية (القاهرة: ١٩٥٢).
- دفتر تحرير مفصل وإجمال ولاية أربيل سنة ٩٤٩هـ /١٥٤٢م، ترجمة د. خليل علي مراد، الأكاديمية الكردية (أربيل: ٢٠١٥).
- رمضان رمضان متولى، عيد النوروز عند الفرس وتأثيره في المجتمعات العربية(القاهرة:٢٠١٣).
- زين الدين عبدالباسط الحنفي (ت: ٩٢٠هـ/١٥١٤م).
- المجمع المفنن بالمعجم المعنون، المطبعة العصرية (بيروت: ٢٠١١).
- سبط ابن الجوزي، شمس الدين أبي المظفر يوسف بن قزاوغلي(ت:٦٥٤هـ/١٢٥٦م).
- مرآة الزمان في تاريخ الأعيان، الجمعية التاريخية التركية (أنقرة : ١٩٦٨).
- ابن الشعار، كمال الدين المبارك ابن الشعار الموصلي (ت: ٦٥٤هـ/١٢٥٦م).
- قلائد الجمان في فرائد شعراء هذا الزمان، دار الكتب العلمية (بيروت: ٢٠٠٥).
- أبن الصابوني، جمال الدين أبي حامد محمد (ت٦٨٠هـ/١٢٨١م).

- العباسي، نزهة المالك والمملوك، المكتبة العصرية(بيروت: ٢٠٠٣).
- تكملة اكمال الاكمال، عالم الكتب (بيروت ١٩٨٦).
- عبدالرقيب يوسف، الدولة الدوستكية في كردستان الوسطى، ج٢(السليمانية: ٢٠١٤).
- ابن العديم، كمال الدين عمر بن أحمد العقيلي(ت: ٦٦٠هـ/١٢٦٢م).
- بغية الطلب في تأريخ حلب، تحقيق د. سهيل زكار، دار الفكر (بيروت: بلا).
- العرضي، ابو الوفاء محمد بن عمرالحلبي(ت: ١٠٧١هـ/ ١٦٦١م).
- معادن الذهب في الأعيان المشرفة بهم حلب، تحقيق عبدالله الغزالي(الكويت: ١٩٨٦).
- العماد الأصفهاني، ابوحامد محمد بن محمد(ت:٥٩٧هـ/١٢٠٠م).
- زبدة النصرة ونخبة العصرة، إختصار الفتح بن علي البنداري(ليدن: ١٨٩٩).
- العمري، شهاب الدين أحمد بن يحيى بن فضل الله (ت: ٧٤٩هـ/١٣٤٨م).
- مسالك الأبصار فى ممالك الأمصار، المجمع الثقافي (أبوظبي: ١٤٢٣هـ).
- الفارقي، أحمد بن يوسف بن علي (ت: بعد ٥٧٧هـ/١١٨١م).
- تاريخ ميافارقين، مطبعة نوبهار (استانبول: ٢٠١٤).
- القلقشندي، أحمد بن علي(ت: ٨٢١هـ/ ١٤١٨م).
- صبح الأعشى في صناعة الإنشا، دار الكتب العربية(بيروت: ١٩٨٧).
- ابن المستوفي، شرف الدين المبارك بن احمد (ت: ٦٣٧هـ/١٢٣٩م).
- تاريخ أربل، ج٢، دار الرشيد للنشر (بغداد: ١٩٨٠).
- المسعودي، ابوالحسن علي بن الحسن بن علي(ت : ٣٤٦ هـ/٩٥٧م).
- مروج الذهب ومعادن الجوهر، دار المعرفة (بيروت: ٢٠٠٥).
- التنبيه والإشراف، دار مكتبة الهلال (بيروت ١٩٨١).
- مسكويه، أحمد بن محمد بن يعقوب (ت: ٤٢١هـ/١٠٣٠م).
- تجارب الأمم، تحقيق: أبو القاسم إمامي، سروش، ط٢(طهران: ٢٠٠٠).
- مؤلف مجهول (القرن٨هـ/١٤م).
- كتاب الحوادث، دار الغرب الإسلامي (بيروت:١٩٩٧).
- المنذري، زكي الدين عبدالعظيم بن عبدالقوي (ت:٦٥٦هـ/١٢٥٨م).
- التكملة لوفيات النقلة، مؤسسة الرسالة، ط٤ (بيروت: ١٩٨٨).
- النقشبندي، حسام الدين علي غالب، الكرد في لرستان الشمالية وشهرزور(السليمانية: ٢٠١١).
- ابن واصل، جمال الدين محمد بن سالم(ت:٦٩٧هـ/١٢٩٨م).
- مفرج الكروب في أخبار بني أيوب، ج١-٥(القاهرة: ١٩٥٣-١٩٧٥).
- ياقوت بن عبدالله الحموي الرومي (ت: ٦٢٦هـ/ ١٢٢٩م).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

- معجم البلدان، دار أحياء التراث العربي (بيروت: بلا).
- اليعقوبي، أحمد بن إسحاق بن جعفر (توفى بعد٢٩٣هـ/٩٠٦م).
- تاريخ اليعقوبي، مطبعة شريعت (قم المقدسة: ١٤٢٥هـ).
- اليونيني، قطب الدين أبو الفتح موسى بن محمد (ت: ٧٢٦ هـ/١٣٢٦م).
- ذيل مرآة الزمان، دار الكتاب الإسلامي، الطبعة الثانية (القاهرة: ١٩٩٢ ).

**ب- به فارسى و كوردى:**

- ابن بزاز أردبيلى، درويش توكلى بن إسماعيل بزاز (سال٧٥٩هـ/١٣٥٨م).
- صفوه الصفا، مصحح غلامرضا طبابايى، چاپ تك (تهران: ١٣٨٦ش).
- حمدالله مستوفى قزوينى (ت: ٧٥٠هـ/١٣٤٩م).
- تاريخ گزيده، بأهتمام عبدالحسين نوائى، أمير كبير(تهران: ١٣٨١ش).
- نزهه القلوب، تصحيح محمد دبير ساقى، حديث أمروز (قزوين: ١٣٨١ ش).
- عمر خيام، نوروزنامه، مطبعة روشنائى(طهران:١٩٣٣).
- محمد نوربخش، محمد بن عبدالله قطيفى (ت: ٨٦٩هـ/١٤٦٥م).
- سلسلة الأولياء، بإهتمام محمد تقى دانش پژوه (تهران: ١٣٩٧ش).
- مؤلف ناشناخته( سال٥٢٠هـ/١١٢٦م).
- مجمل التواريخ والقصص، بتصحيح ملك الشعراء بهار(تهران ١٣١٨ش).
- شێخ عەبدولموئمینی مەردۆخی، کەشکۆڵە شیعرێکی کوردیی گۆرانی(سلێمانی: ٢٠١٠).
- فەرهاد پیربال، مەلا مەحمودی بایەزیدی، دەزگای ئاراس(هەولێر: ٢٠٠٠).

**پەراویز:**

(١) ياقوت الحموي، معجم البلدان(بيروت: بلا)، ١٥٠/٥.

(٢) ابن الشعار، قلائد الجمان (بيروت: ٢٠٠٥)، ٢٧٥/١.

(٣) دفتر تحرير مفصل وإجمال ولاية أربيل سنة ٩٤٩هـ /١٥٤٢م (أربيل: ٢٠١٥)، ص١٩٤- ١٩٥.

(٤) مستوفى قزوينى، نزهة القلوب(قزوين: ١٣٨١ش)، ص٨٢.

(٥) مؤلف مجهول، كتاب الحوادث (بيروت: ١٩٩٧)، ص ٢٨٥.

(٦) مستوفى قزوينى، تاريخ گزيده(تهران: ١٣٨١ش)، ص٥٥٦، نزهة القلوب، ص١٦٢.

(٧) مؤلف مجهول، كتاب الحودات، ص٢٣٠.

(٨) ابن الأثير، الكامل في التاريخ، (بيروت: ٢٠٠٧)، ٤٤٧/٨- ٤٤٨.

(٩) بگەڕێرەوە بۆ کتێبەکەم: لەبارەی مێژوو و کەلتوری کوردییەوە (سلێمانی: ٢٠٢١)، ل٣٥٦- ٣٥٧.

(١٠) شێخ عەبدولموئمینی مەردۆخی، کەشکۆڵە شیعرێکی کوردیی گۆرانی(سلێمانی: ٢٠١٠)، ل٤٢٨.

(١١) البلاذري، فتوح البلدان(بيروت: ١٩٧٨)، ص٣٢٩، ابن الأثير، الكامل في التأريخ، ٣١/٣.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

[12] بگەڕێرەوە بۆ: مەلا جەمیل ڕۆژبەیانی، چوار دەوڵەتی کورد(هەولێر: ٢٠٠٠)، ل٧٥- ١١٢.

[13] البدليسي، شرفنامه، ٥٠٣- ٥١٢.

[14] معجم البلدان، ٢٦١/٢.

[15] الكامل، ٧٠٣/٨- ٧٠٤، ابن واصل، مفرج الكروب، ٥٥/١- ٥٦.

[16] معجم البلدان، ١٤٢/١- ١٤٥.

[17] الخفاجي، شفاء الغليل، ص٢٤-٢٥.

[18] المعرب من كلام الأعجمي (دمشق: ١٩٩٠)، ص١٣- ٨٨.

[19] د. عبدالله بن محمد الأنصاري، حقيقة العلم المختوم ب(ويه) واحكامه النحوية، مجلة العلوم العربية، جامعة الامام بن سعود، العدد(٣٤)/ محرم ١٤٣٦هـ، ص٧١- ١٢٤.

[20] بڕوانە: الخفاجي، شفاء الغليل فيما في كلام العرب من الدخيل (القاهرة: ١٩٥٢)، أدى شير، الألفاظ الفارسية المعربة، ط٢(القاهرة: ١٩٨٨).

[21] اليعقوبي، تأريخ اليعقوبي، (قم المقدسة: ١٤٢٥هـ)، ٣٠٩/٢.

[22] الجوهري، السقيفة وفدك (بيروت: بلا). ٣٣٠/٢، ٣٤٧.

[23] الباخرزي، دمية القصر وعصرة أهل العصر(بيروت: ١٤١٤هـ )، ٤٤١/١.

[24] ابن حوقل، صورة الأرض، ص٣٣٤، ٣٥٤.

[25] المسعودي، مروج الذهب، ١٠٠/٣.

[26] لەبارەیەوە بگەڕێرەوە بۆ: کورد و کوردستان لە ڕۆژگاری خیلافەی ئیسلامی(هەولێر: ٢٠٢٠)، ل١٠٣- ١٠٤، ١٢٣- ١٢٤.

[27] مسكويه، تجارب الأمم، ٩٨/٦.

[28] ئێستا (چ)ی وشە بیانییەکان زیاتر دەکرێت بە(ش) و (تش): چەرچل- شەرشل، چیک- تشیک، چیڵسی- تشیلسي.

[29] التنوخي، الفرج بعد الشدة( بيروت:١٩٧٨)، ١٨٦/٢.

[30] الكامل في التأريخ، ٥٣/٧، ١٢٤.

[31] المصدر نفسه، ٢٢٨/٧.

[32] تاريخ گزيده، ص٤٢٥، ٤٣٣، ٥٥٠.

[33] الكامل في التأريخ، ٩٢/٨، ٩٥، ٩٨.

[34] الكرد في لرستان الشمالية وشهرزور خلال العصر الوسيط(السليمانية: ٢٠١١)، ص١٣١، ١٤٤.

[35] مؤلف ناشناخته، مجمل التواريخ والقصص (تهران ١٣١٨ش)، ص٣٩٤.

[36] مجمل التواريخ والقصص، ٣٩٨.

[37] عمر خيام، نوروزنامه، مطبعة روشنائى(طهران:١٩٣٣)، ص٤٤-٤٥، رمضان رمضان متولى، عيد النوروز عند الفرس وتأثيره في المجتمعات العربية(القاهرة:٢٠١٣)، ص١٢٥.

[38] مستوفى قزوينى، تاريخ گزيده، ص٤٢٩.

[39] الأصفهانى، البستان الجامع، ص٤١٢.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(٤٠) اليونيني، ذيل مرآة الزمان،٣/٨٩.

(٤١) الفارقي، تاريخ ميافارقين(استانبول: ٢٠١٤)، ص٥٣٩- ٥٤٠.

(٤٢) تاريخ ميافارقين، ص٤٦٠- ٤٦١، ٥٣٩- ٥٤٠.

(٤٣) حاڵی حازر(كوه گيلويه و بوير أحمد)، ئوستان- پارێزگايەكی ئێرانە و دەكەوێتی نێوان ئوستانەكانی ئەسپەهان و خوزستان فارسەوە.

(٤٤) بڕوانە: التنوخي، نشوار المحاضرة، تحقيق: عبود الشالجي، دار صادر (بيروت: ١٩٧١)، ٣/١٣٩، ٤/٩٤-٩٦، البيروني، الآثار الباقية عن القرون الخالية، دار العراب (دمشق: ٢٠١٣)، ص٧٨، ٢٧٣.

(٤٥) ابن واصل، مفرج الكروب، ٤/٢٥٧، ٥/٨٠.

(٤٦) المنذري، التكملة لوفيات النقلة(بيروت: ١٩٨٨)، ٢/٦٠٣.

(٤٧) العباسي، نزهة المالك والمملوك(بيروت: ٢٠٠٣)، ١/٢٣٧.

(٤٨) بڕوانە: كردستان في العهد الجلائري، الاكاديمية الكردية(أربيل: ٢٠٢٢)، ص٨٣- ٨٥. ئەم ناوە بە فۆرمە كوردييەكەی لای فارسيش هەبوو، باپيری نوژدار و ئەديب(ابو الفرج بن حسين هندۆ: م٤٢٠ك/١٠١١ز) خەڵكی قووم ناوی هندۆ بوو.

(٤٩) القلقشندي، صبح الأعشى، ٧/٢٩٧.

(٥٠) الحصني، تاريخ حصن كيفا، نوبهار(أستانبول: ٢٠١٩)، زەيدۆ دەشێت زێدانيش بێت.

(٥١) ابو الوفاء العرضي، معادن الذهب(الكويت: ١٩٨٦)، ص٢١٩.

(٥٢) شرفنامە، ص٣٨٠.

(٥٣) حقيقة العلم المختوم ب(ويه) واحكامه النحوية، ص٨٨.

(٥٤) زين الدين الحنفي، المجمع المفنن بالمعجم المعنون، ٢/١٨٣.

(٥٥) الحصني، تاريخ حصن كيفا، ص١٤١، ١٦١-١٦٢، ١٦٧، ٢٤٤، ٢٨٩... هتد، البدليسي، شرفنامە، ص٣٨٠.

(٥٦) شرفنامە، ص٢٣٣، ٣٦٣.

(٥٧) عەلائەدين سەجادی، مێژووی ئەدەبی كوردی، بڵاوكردنەوەی كوردستان(سنە: ١٣٨٩ش)، ل٣١٤-٣٢٠.

(٥٨) بگەڕێرەوە بۆ: فەرهاد پيرباڵ، مەلا مەحمودی بايەزيدی(هەولێر: ٢٠٠٠)، ل١٥٧- ١٥٨.

(٥٩) المعرب من كلام الأعجمي، ص٩٤.

(٦٠) المعرب من االكلام الأعجمي، ص٩٥، الخفاجي، شفاء الغليل، ص٢٥.

(٦١) الجوهري، السقيفة وفدك، ٢/٣٣٠، ٣٤٧.

(٦٢) خولاصەيەكی تاريخی كورد و كوردستان، بنكەی ژين(سلێمانی: ٢٠٢٠)، ل٢٤٧- ٢٤٨، ٢٥١، ٣٦١، ٦٨٩- ٦٩٣.

(٦٣) تأريخ ميافارقين، ص٤٤٩- ٤٥٣.

(٦٤) الكامل فى التأريخ، ٧/١٥٠- ١٥٢، ١٧٧- ١٧٨.

(٦٥) الدولة الدوستكية في كردستان الوسطى، ج٢(السليمانية: ٢٠١٤)، ص٧٠٢- ٧٠٤.

(٦٦) ابن بزاز الأردبيلي، صفوة الصفا، ص٧٠.

(٦٧) المنذري، التكملة لوفيات النقلة، ٢٥٦- ٢٥٨.

(٣) مجمل التواريخ والقصص، ص٣٩٤.

(٦٩) لەمبارەیەوە بگەڕێرەوە بۆ: ابراهيم جمعة، قصة الكتابة العربية، دار المعارف(القاهرة:١٩٤٧)، ص٤٩-٥٥.

(٧٠) بۆ پتر زانیاری بگەڕێرەوە بۆ: النقشبندي، الكرد في لرستان الشمالية، ص٢٠٥- ٢٥٤.

(٧١) المعرب من كلام الاعجمي، ص٩٤، ٢٣٥- ٣٣٨.

(٧٢) المسعودي، التنبيه والإشراف(بيروت ١٩٨١)، ص٩٤، مروج الذهب، ١٢٤/٢، ابن الأثير، اللباب في تهذيب الأنساب (بغداد: د. ت)، ٣٠٧/١، الكامل في التأريخ، ٣٩٢/٧، ٣٩٧.

(٧٣) بگەڕێرەوە بۆ: مصطفى جواد، جاوان القبيلة الكردية المنسية، مطبعة المجمع العلمي الكردي (بغداد ١٩٧٣).

(٧٤) مؤلف ناشناخته، مجمل التواريخ والقصص، ص٣٩٩.

(٧٥) الكامل في التاريخ، ٦٨/٦، ٣٢١.

(٧٦) معجم البلدان، ٢٦١/١

(٧٧) اللباب في تهذيب الأنساب، ٣٠٧/١. بۆ پتر پێزانین بڕوانە کتێبەکەم: القبائل والزعامات القبلية الكردية في العصر الوسيط، ط٢، دار الزمان(دمشق:٢٠١٦)، ص٩٤- ١٠٠.

(٧٨) ابن الصابوني، تكملة إكمال الإكمال، ص١٠٥.

(٧٩) اللباب في تهذيب الأنساب، ١٥٧، بۆ پتر پێزانین بڕوانە: القبائل والزعامات القبلية الكردية، ص٥٣- ٦٠.

(٨٠) شرفنامه، ص٣٠٥، ٣١٠، ٣١٩- ٣٢٠.

(٨١) معجم البلدان، ١٤٢/١- ١٤٥.

(٨٢) ابن المستوفي، تأريخ أربل، ٥١/١، ٧٠، معجم البلدان، ١٦٤/١، نزهة القلوب، ص١٢٧، ١٣٢- ١٣٣.

(٨٣) معجم البلدان، ١٣٢/١- ١٣٤.

(٨٤) معجم البلدان، ٣٠٤/١، ٤١٣/٣، ابن العديم، زبدة الحلب، ٩٤١/٢.

(٨٥) محمد نوربخش، سلسلة الأولياء (تهران: ١٣٩٧ش)، ص٤٦.

(٨٦) هەر بۆ نموونە: ئاوریشم، شەروال، سەرپۆش، تەشت، کران بە أبريسم، سروال، شربوش- طربوش، طست.

(٨٧) العماد الاصفهاني، زبدة النصرة، ص١٩، الكامل، ٦٣/٨، ٩٠، ١٢٥، ١٦١.

(٨٨) سبط ابن الجوزي، مرآة الزمان، الحوادث الخاصة بالسلاجقة، ص٥.

(٨٩) بگەڕێرەوە بۆ: توێژینەوەکانی دیداری مەلا جەمیل رۆژبەیانی، کەلار ١١- ١٢/ ٢/ ٢٠٢١، ل١٩٩.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

## الامارات الكردية
## قراءة جديدة لأسماء الأمراء والقبائل والمدن والقلاع

**الملخص:**

من المعروف ان النخبة المثقفة من الكرد عبر عصور التأريخ الإسلامي، لم تولى اهتماما يذكر بتدوين تأريخ شعبهم وبلادهم وكل ما وصلتنا حول تأريخ الأمارات والكيانات القبلية الكردية، عبارة عن أخبار مبعثرة وروايات متناثرة بين المصادر العامة التي كتبت من قبل المؤرخين والكتاب العرب والفرس وغيرهم، فقدموا بذلك خدمة كبيرة للتأريخ الكردي، غير انهم ثبتوا اسماء الأمراء والزعماء الكرد وكذلك اسماء القبائل والبلدات والقلاع التي خضعت لهم، وفق قواعد واسس اللغة العربية في الغالب وبدلوا الحروف التي لا توجد في العربية بالحروف القريبة منها في اللفظ او شبيهة لها في الشكل كما حوروا الواو المفتوحة التي هي من أهم علامات اسماء الأعلام في اللغة الكردية الى(ويه). وسار الباحثون المعاصرون على هذا النهج وكتبوا كل الأسماء الشخصية والجغرافية التي تخص الإمارات والقبائل الكردية بنفس الصيغة المثبتة لدى المؤرخين القدامى.

وبناءا على ذلك، فهذا البحث هو مبادرة جادة ومحاولة أولية لدراسة هذه الظاهرة مبينا حسب رأي الباحث اسبابها وأهم الحالات التي تعرب فيها اسماء الأعلام أو يغير فيها الأحرف الأعجمية الى العربية، وبالتالي الى الإهتداء الى أصلها الكردي وذلك بالإعتماد على المصادر المعنية والشواهد اللغوية.

**الكلمات الدالة:** *ألامراء، والعشائر الكردية، مدن كوردستان، تصحيح*

## Kurdistan Emirates
## A new reading of the names of emirs, tribes, cities and castles

**Abstract**

It is known that the educated elite of the Kurds throughout the ages of Islamic history paid little attention to codifying the history of their people and their country. This is a great service for Kurdish history, except that they fixed the names of the Kurdish princes and leaders, as well as the names of the tribes, towns and castles that were subject to them, according to the rules and foundations of the Arabic language mostly, and they replaced the letters that do not exist in Arabic with letters that are close to it in pronunciation or similar to it in form, as they altered the (ۆ) Which is one of the most important signs of proper nouns in the Kurdish language to (weh).

Contemporary researchers followed this approach and wrote all the personal and geographical names that belong to the Emirates and Kurdish tribes in the same formula proven by ancient historians. Accordingly, this research is a serious initiative and a preliminary attempt to study this phenomenon, indicating, according to the researcher's opinion, its reasons and the most important cases in which proper names are expressed or the non-Arabic letters are changed to Arabic, and thus to the guidance to its Kurdish origin, depending on the relevant sources and linguistic evidence.

**Key words**: *Kurdish princes and tribes, Kurdistan cities, correction*

# کاریگەری کۆچ و کۆچپێکردن لە سەر هەرێم ەکوردنشینەکان لەنێوان سەدەکانی (٥-٦ک/ ١١-١٢ز)

**پ. ی. د. ئەبوبکر دێوانە حەمەدحەسەن بالەکی**

بەشی زانستی کومەلاتیەکان ـ فاکولتی پەروەردە ـ زانکوی سوران ـ سوران/کوردستان

**ئیسماعیل خالند ناوخۆش**

بەشی میژوو ـ فا کولتی ئاداب ـ زانکوا سوران ـ سوران/کوردستان

**پوختە:**

ئەم تـویژینەوە لەژێـر ناونیشـانی؛"کاریگەریی کـۆچ و کـۆچپێکردن لەسـەر هەرێمەکوردنشینەکانە". کۆچکردن لە مێژووی مرۆڤایەتیدا کۆنە، دەکرێت ئاماژە بەوەی بکەین لەوەتەی مرۆڤ لەسەر ئەم خاکەیە، کۆچ سروشتێکی تێکەڵبووی مرۆڤ بووە، بە تێپەربوونی کات هۆکار و ئامانجەکانی و لێکەوتەکانی هەمەجۆربوونە، هەڵبژاردنی ئەو بـابەتە بـۆ ڕووداوێکـی گرنـگ لە مێـژووی کـورد دەگەڕێـتەوە ئەویـش لێکەوتەکـانی کۆچکردنە، کە نەبووەتە بابەتی سەرەکی تویژینەوە لە لای توێژەرانی کورد. دیاریکردنی سـەدەی(٥-٦ک/ ١١-١٢ز)ش دەگەڕێـتەوە بـۆ ئەو ڕووداوە سیاسـیی و سـەربازییانەی لەو دوو سەدەیەداڕوویانداوە. ئەم تـویژینەوەیە لە پێشـەکی و سێ بـاس پێکـدێت: لە باسـی یەکەم؛ وشـەی کـۆچ و کـۆچپێکردن لە ڕووی زاراوە و زمـانەوانی دەناسـرێت. لە باسـی دووەمـدا؛ بـۆ خۆپاراستن لەدووبارەبوونەوە بەکورتی هەرێمەکوردنشینەکان دەخرێنە بەر ناساندن. لە باسی سێیەمدا؛ باسـی کـاریگەریی ئەو کـۆچ و کـۆچپێکردنە دەکرێت لەسـەرلایەنی سیاسـی و کۆمەلایەتی و سەربازی و زانستی، هەروەهاله کۆتایی تویژینەوەکە ئەنجامەکان خراونەتە ڕوو.

**پەیڤێن سەرەکی:** *کۆچ، کۆچپێکردن، کاریگەری، هەرێمە کوردنشینەکان، سیاسی.*

**پێشەکی:**

کـۆچ لە مێـژووی گەلانـدا بە گشـتی بـوونی هەیە، هەنـدێک کـات وەک چارەسەرێکی ناچاری بەرۆکی مرۆڤی گرتووەوە و ناچاری کردووە ڕێگەی هات و نەهات بگرێتەبەر، ئەم ڕێـگەیەش دەشێ هەنـدێکجار مـایەی ڕزگـاربوونی بێـت، بەڵام لەوانەشـە دەروونی ئارام نەبێت، لەبەرئەوەی سروشتی مرۆڤ وایە لە کوێ لەدایک بوویێت، ئەو شوێنە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

نیشتمانێکی ئارام بەخشە بۆی. ئەو کۆچکردنەش بەبێ کاریگەریی نامێنێتەوە، بێگومان کاریگەری لەسەر هەموو لایەنەکانی ژیان هەیە.

ئەم تـوێژینەوەیە لە سـێ بـاس پێکـدێت؛ لە باسـی یەکەم وشـەی کـۆچ و کۆچپێکردن لە ڕووی زاراوە و زمـانەوانیی خـراوەتە بەر بـاس، لە باسی دووم بەکورتی باسی هەرێمەکوردنشـینەکان دەکەیـن بـۆ خۆپاراسـتن لە دووبـارەبوونەوە هەر یەک لە هەرێمی ئازەربایجـان، ئـاران، ئەرمینیـا، چیـا و جەزیـرە و، لە باسی سێیەمدا هەر یەک لە لێکەوتەی کۆچکردن لە ڕووی سیاسی و کۆمەڵایەتی و سەربازی و زانستی.

گرفتەکـان زۆرن وەک هەر تـوێژینەوەیەکی دیـکە، بە تـایبەت کەمـی زانیـاری لە هەندێ بابەت و پەرشوبڵاوی زانیارییەکان، هەروەها مێژوونووسانی ئەو کاتی ئیسلامی زیاتر گرنگیـان بە ڕووداوە سیاسـییەکان و ژیاننـامەی کەسـایەتییەکان داوە، کەمتـر پـرژاونەتە سەر لایەنی کۆمەلایەتی و زانستی، نەخاسمە ئەم زانیارییانە لەمەڕ هەرێمەکوردنشینەکان بن کە لە بنەڕەتدا مێژووەکەی بە کەمی سەرچاوە دەناڵێنێت، ئەمە وایکرد هەندێک کات ناچار بووین لە سێبەری ڕووداوەکان و بەکارهێنانی ژێدەرەکان زانیـاری نوێ بخەینە ڕوو، هەر ئەمەش هۆکارێک بوو وایکرد کە کۆکردنەوەی زانیاری بۆ ئەم توێژینەوە ماندووبوونێکی زۆری بوویت.

تـوێژەران لەم تـوێژینەوەیەدا هەوڵیـان داوە، کـاریگەریی کـۆچ و کـۆچپێکردن لەسەرلایەنی سیاسی و کۆمەڵایەتی و سەربازی و زانستی لە هەرێمە کوردنشیەنەکان دیاری بکـات، چ کـاریگەرییەکی هەبووە بەسـەریانەوە و، چـۆن کـرداری کـۆچ و کۆچپێکردنیـان ئەنجام داوە؟ ئەو کات ئامرازەکانی گواستنەوە سادەبوون؟ ئایا کاریگەری ئەرێنی و نەرێنی هەبووە بەسەر هەرێمەکوردنشینەکان؟.

میتۆدی توێژینەوە:

میتۆدی مێژوویی شیکاری وبەراودکاری بە کارهاتوە.

مەبەست لە کاریگەری سیاسی وکۆمەلایەتی وسەربازی وزانستیە.

## باسی یەکەم: چەمکی کۆچ لە ڕووی زمانەوانیی و زاراوەییەوە:

### ١- لە ڕووی زمانەوانییەوە:

وشـەی کـۆچ لە فەرهەنـگی کوردیـدا لە پیتەکـانی (ک، ۆ، چ) پێکـدێت، ئەم زاراوەیە بـۆ چەنـد مەبەسـتێکی جیـا بەکـار دێـت، ئەویـش دوای ئەو گۆڕانکـایـانەی بەسـەر وشەکە دادەهێندرێت، بە هۆی خستنەسەری پێشگر یان پاشـگر، یانیش لێکدراو وەک ئەم نموونـانە: (کـۆچ، کۆچـاوکۆچ، کـۆچکردن، کـۆچەر، کـۆچەراتی، کـۆچەری، کۆچبـار و ...تاد)، دەبینین هەر یەک لەم وشانە سەرچاوەی سەرەکی لە وشەی کۆچەوە دروست بووە، هەر

یەکەیان بۆ مەبەست و واتایەک بەکار دەهێندرێت.(خاڵ، ٢٠٠٥ز:٣٦٤؛شەرەفکەندی، ١٣٦٩ک: ٦٢٦)

وشەی کۆچ لە زمانی عەرەبیدا (الهجرة) یان (الهجر) گوزارشتی لێ کراوە، لە پیتەکانی (الها، والجیم، والراء)، کە هەر یەک لەم پیتانە بنەمایە و بناغەیەکە بۆ پچڕان و پچڕاندن، ئەوەی دیکەیان ئاماژەیە بۆ توووندکردنی شتێک و بەستنەوەی، جا یەکەمیان (الهجر) پێچەوانەی پەیوەستبوونە بەهەمان شێوەش (الهجران)(ابن فارس، ١٩٧٩م: ٦/ ٣٦؛ ابن منظور، د.ت، ٦/ ٤٦١٧؛ الفیروزآبادي، ٢٠٠٨م: ١٦٧٥) (وهجرة، هجرا، وهجرانا) بەجێی هێشت یان پچڕاندی، وازی لێ هێنا، یان لێی دوور کەوتەوە (ابن منظور، د.ت، ٦/ ٤٦١٧؛ آبادی، ٢٠٠٨م: ١٦٧٥).

**٢- لە ڕووی زاراوەییەوە:**

کۆچ بە واتای گواستنەوە لە شوێنێک بۆ شوێنێکی دی بکرێت، ڕۆیشتنی کەسێک لە شوێنی ڕەسەنی خۆی و ئەو شوێنەی تێدا ژیاوە، یان تێدا لەدایک بووە بۆ شوێنێکی دی، ئەوسا کۆچەکە لە وڵاتێکەوە بێت بۆ وڵاتێکی دیکە، لە گوندەوە بێت بۆ شار، لە شارێکەوە بۆ شارێکی دیکە، یان لە هەرێمێکەوە بێت بۆ هەرێمێکی دیکە، پێی دەگوترێت کۆچکردن، لەبەرئەوەی ماڵ و حاڵی خۆیان بەجێ هێڵاوە. (ابن منظور، د.ت، ٦/ ٤٦١٧؛ الفیروزآبادي، ٢٠٠٨م: ١٦٧٥).

**کۆچپێکردن (التهجیر) لە ڕووی زمانەوانیی و زاراوەییەوە:**

**_ لە ڕووی زمانەوانیی:**

کۆچپێکردن لە زمانی کوردیدا، لە بنەڕەتدا لە وشەی کۆچ وەرگیراوە، لە زمانی کوردی هەندێک وشە پێشگر یان پاشگری بۆ زیاد دەکرێت، یانیش وشەکان لێکدەدرێن، وشەیەکی دیکەیان لێ دروست دەکرێت. کۆچ (چاوگی داڕێژراوی پێ کردن) بۆ زیاد کراوە، کۆچ+ پێکردن= کۆچپێکردن، کە بە مانای ناچار دەبێت کۆچ بکات (خۆشناو، ٢٠١٣: ٢٦-٢٩)، بەهۆی هەر بارودۆخێکی نەخوازراو ڕوو بدات، جا لە ڕووی ئابووریی، سیاسیی، کۆمەڵایەتیی، ئایینیی و سەربازیی ڕوو بدات.

**_ لە ڕووی زاراوەییەوە:**

کۆچپێکردن بە واتای ناچار دەکرێت کۆچ بکات لە شوێنێکەوە بۆ شوێنێکی تر، کەسێک ناچار بێت شوێنی نیشتەجێبوونی خۆی بگۆڕێت، جا لە گوندەوە بێت بۆ شار، لە شارێکەوە بێت بۆ شارێکی دیکە، لە هەرێمێکەوە بێت بۆ هەرێمێکی دیکە، یان لە وڵاتێکەوە بێت بۆ وڵاتێکی دیکە، لە ئەنجامیبوونی بارودۆخێکی نەخوازراو وەک بارودۆخی سیاسیی، ئابووریی، کۆمەڵایەتیی، ئایینیی، سەربازیی، سروشتیی ...هتد، ئەو بارودۆخە دەبێتە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هۆکارێک ناچاری دەکات کەوا شوێنی نیشتەجێبوونی خۆیان بگۆڕن (ابن فارس، ١٩٧٩م، ٦/ ٣٦- الفیروزآبادي، ٢٠٠٨م: ١٦٧٥- عزیز، ٢٠١٥م: ٢٠).

**باسی دووەم: ناساندنی هەرێمەکوردنشینەکان:**

گەڕان بەناو سەرچاوە مێژووییەکان بۆمان دەردەکەوێت هیچ هەرێمێک نەبووە، هەموو دانیشتووانەکەی سەد لە سەد لە ڕەگەزی کورد بن، بەڵام لە هەندێک هەرێم زۆرینەی دانیشتووانی لە ڕەگەزی کورد بووینە، هەر یەک لەم هەرێمانەش کۆمەڵێک شار و مەڵبەند لەخۆ دەگرن، ئێمە هەوڵ دەدەین گرنگترین ئەو شار و مەڵبەندانەی ئەم هەرێمانە بناسێنین، بەکورتی شوێنی جوگرافییان بخەینەڕوو، پاش گەڕان بەناو سەرچاوە ڕەسەنەکان بۆمان دەرکەوت کە ئەم پێنج (٥) هەرێمانە زۆرترین شار و گوند، هەروەها دانیشتووانی کورد بووینە، ئەم هەرێمانەش ئەمانەی خوارەوەن:

**یەکەم: هەرێمی ئازربایجان:**

هەرێمی ئازربایجان هەرێمێکی دیار و فراوانی ئەو سەردەمی بووە، کەوا زۆرینەی دانیشتووانی لە نەتەوەی کورد بوون، کەوتبووە خۆراوای دەریای خەزەر و وڵاتی دەیلەم و خۆرهەڵاتی هەرێمی چیا و باکووری هەرێمەکانی ئەرمەنستان و ئاران (ڕان). (ابن حوقل، ١٩٩٢م، ٢٧٨-٢٨٥؛ مؤلف مجهول، ١٩٩٩م: ١١٩؛ زادە، ٢٠٠٨م،١٣٤)لە گرنگترین مەڵبەند و شارەکانی ئەم هەرێمە بریتیین لە: تەورێز، مەراغە، ئەردەبیل، میانج، ئورمیە، خۆی، سەلماس، سراو، مەرەند، شنۆ، جابروان، موقان، ورثان و برزندە. ئەم شار و ناوچانەی سەرەوە هەرێمی ئازربایجانیان پێکدەهێنا. (ابن حوقل، ١٩٩٢م، ٢٨٥-٣٠٤- مؤلف مجهول، ١٩٩٩م، ١١٩-١٢٠- الحموی، ١٩٩٧م: ١/ ١٣٦- ابن المستوفی، ١٣٤٢ە: ٨٠- الحمیری، ١٩٨٤م: ٥٣٥؛ کی لسترنج، د.ت، ١٩٥)

**دووەم: هەرێمی ئاران:**

هەرێمی ئاران یەکێکی دیکەیە لە هەرێمەکوردنشینەکان، کە ڕێژەیەکی زۆری دانیشتووانی لە نەتەوەی کورد بوون، ئەم هەرێمە دەکەوێتە باکووری ئازربایجان و خۆراوای ئەرمەنستان و باکووری باکووری خۆرهەڵاتی جەزیرە. (ابن حوقل، ١٩٩٢م: ٢٨٧؛ الحموی، ١٩٩٧م: ١/ ١٣٦؛ ئەنوەر، ٢٠١٥ز: ٢٥)، کە چەند شار و مەڵبەندی کوردنشین لەخۆ دەگرێت، گرینگترینشیان بریتیین لە: بەرزغە، کەنجە، شەماخی، ئانی، دبیل (دوین) ، (باب الابواب)، نشوی بەو ناوانەش هاتووە؛ (نخشیفان، نخشوان و نقجوان)، باکۆ، شروان و تفلیس. (ابن حوقل، ١٩٩٢م: ٢٨٥-٣٠٤؛ مجهول، ١٩٩٩م: ١١٩-١٢٠؛ المقدسی، د.ت، ٣٧٥؛ ابوالفدا، ١٨٤٠م: ٤٠٥؛ البروسی، ٢٠٠٦م: ١٨٥) هەر یەک لەم شار و مەڵبەندانە ڕێژەیەکی زۆری دانیشتووانی لە نەتەوەی کورد بوون لە مێژووی سەدەکانی ناوەڕاست.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**سێیەم: هەرێمی ئەرمینا:**

هەرێمی ناوبراو یەکێکی دیکەیە لە هەرێمەکوردنشینەکان، کەوا ڕێژەیەکی زۆری دانیشتووانی لە نەتەوەی کورد بوون، سنووری جوگرافیای ئەم هەرێمە لە ڕۆژهەڵات هاوسنوورە لەگەڵ هەرێمی ئاران، لە سنووری ڕۆژاوای لەگەڵ جەزیرە، لە باشوور هاوسنوورە لەگەڵ ئازربایجان، لە سنووری باکووری هاوسنوورە لەگەڵ وڵاتی ڕۆم. (ابن حوقل، ١٩٩٢م: ٢٩٥)، هەرێمی ئەرمینیا کۆمەڵێک شار و مەڵبەندی گرنگ لەخۆ دەگرێت، کەوا کوردەکان ڕێژەی زۆری دانیشتووانی ئەم شار و مەڵبەندانەیان پێکدەهێنا لە ماوەی سەردەمی توێژینەوەکەدا، گرنگترین ئەوە شار و مەڵبەندانەی ئەم هەرێمە ئەمانەن: (خلاط)، مەلازگرد، بەدلیس، (ارزن)، (ارجیش)، بەرگری، موش، مەعدەن. (مؤلف مجهول، ١٩٩٩م: ١٢٠-١٢٣؛ ابن عساکر، ١٩٩٣م: ١٥١؛ الحموی، ١٩٩٧م: ١/ ١٥٠،٣/ ٣٨٠، ٥/ ٢٢٣؛ مؤلف مجهول، ٢٠١٠م: ١٢٠)

**چوارەم: هەرێمی چیا:**

مەبەست لە هەرێمی چیا ئەو ناوچە بەرفراوانە بووە، کە کەوتبووە بەری خۆرهەڵاتی ناوچەکانی خوراسان و ئەسفەهان و فارس و باکووری خۆرهەڵاتی خوزستان، لە بەری باکووریش ناوچەکانی دەیلەم و قەزوین و ڕەی، لە باشوور عێراق و خوزستان دەورەیان دابوو. (ابن حوقل، ١٩٩٢م، ٣٠٤)، ئەم هەرێمە کۆمەڵێک شار و مەڵبەندی گرنگ لەخۆ دەگرێت، گرینگترینیان بریتیین لە: دینەوەر، قەرمیسین، نەهاوەند، بروجەرد، هەمەدان، حەلوان، خانەقین، مەندەلی، شارەزوور، سیروان، جەلەولا، و (الصمیرە). (ابن حوقل، ١٩٩٢م، ٣٠٨؛ مهلهل، ١٩٥٥م، ١٤؛ الحموی، ١٩٩٧م، ١/ ٤٠٤، ٢/ ١٥٦، ٣٤٠/ ٥/ ٣١٣؛ الحمیری، ١٩٨٤م، ٤٥٤).

**پێنجەم: هەرێمی جەزیرە (الجزیرة الفراتیة):**

یەکێکە لە هەرێمەکوردنشینەکان، مەبەست لە هەرێمی جەزیرە، ئەو ناوچە بەرفراوانەیە کە کەوتبووە کەنار و نێوانی بەری باکووری هەردوو ڕووباری دیجلە و فورات، ناوچەکانی (جەزیرە، مووسڵ و ئامەد) دەگرتەوە و هاوسنووری هەرێمی ئاران و چیا بووە. (مجهول، ١٩٩٩م، ١١٧؛ الحموی، ١٩٩٧م، ٢/ ٢٩٤؛ کی لسترنج، د.ت، ١٤٧-١٤٨؛ خۆشناو، ٢٠١٣ز، ١٣٢؛ ڕەسوول، ٢٠٢٠ز، ٤٧) ئەم هەرێمە کۆمەڵێک شار و مەڵبەند لەخۆ دەگرێت کە ئەمانەن: مووسڵ، سنجار (شنگار)، داسن، ئامەد، میافارقین، نوسەیبین، ڕوها، (حصن کیف)، فاقان، ماردین، جەزیرەی ئیبن عومەر، مەلاتییە، حەران، زۆزان، ئاکرێ (عقرە)، هەولێر، سعرد سێرت، باجرمی کەرکووک، بینون. (المقدسی، د.ت، ١٤١؛ الحموی، ١٩٩٧م، ١/ ١٣٨، ٥٣٥، ٢/ ٢٦٥، ٣/ ١٠٦، ٤/ ٤٤٦- ابوالفداء، ١٨٤٠م، ٢٧٧؛ جعفر، ١٩٨١م، ١١٣)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**باسی سێیەم: کاریگەری کۆچ و کۆچپێکردن لە سەر لاینی سیاسی و کۆمەڵایەتی و سەربازی و زانستی**

**یەکەم- لێکەوتە لەسەرڕەوشی سیاسی:**

هەرێـمە کوردنشـینەکان لەژێـر کـاریگەریی سیسـتەمی خێڵەکـی و شـێوازی بەڕێوەبردنی ڕەوشـی سیاسـی و سـەربازی، خـاوەن هێزێکـی گەورەی مرۆیـی بـوون، هـیچ هـۆز و میرنشینێک نەبووە خـاوەن هێـزی تـایبەت بە خـۆی نەبووبێت(الفارقي، ١٩٥٩م، ص٩٣_١٠٠؛ ابن الاثـیر، ٢٠١٢م، ج٨/ ص٥٢_٢٣) و،دەوڵەت و میرنشـینە ناکوردییەکـانیش سـوودیان لە توانـای سـەربازی کـورد وەرگـرتووە(ابن الجـوزي، ١٣٥٩هـ،ج١٦/ص ١٢٥؛ مؤيدالـدين، سـيرة المؤالـدين، د.ت، ص١٣٧ )، هەر کـاتێک پێگەیـان یـان سـنووری فەرمانڕەوایيـان تووشـی مەترسـی بووبێت بێهەڵوێسـت نەبـوون، بە گـوێرەی توانـای خۆیـان هەڵوێسـتیان هەبـووە و بەرپەرچـی هێـزی داگیرکەریـان داوەتەوە(ابـن الجـوزي، ١٣٥٩هــ،ج٨/ص٥٠ ؛ ابـن الاثيـر، ٢٠١٢م، ج٧/ ص٥٧٤، ٧٤٠)،بـۆ نمـوونە؛"میر فەزلـۆنی یەکەم" (٣٧٥-٤٢٢ک/ ٩٨٥-١٠٣١ز) فەرمـانڕەوای میرنشـینی شەدادی بووە، لە ماوەی فەرمانڕەوایدا توانیـویەتی بەرپەچـی ئەرمەنییەکـان بـداتەوە، هەروەهـا هێرشـێکی بەرفـراوان بکـاتە سـەر چەنـد نـاوچەیەکی ئەرمەنـی و باجیـان بەسـەردا بسەپێنێت(کسروی، ١٣٨٨هـ، ص٢٧١).

خەڵـک دەیانەوێت ستەمیان لێنەکرێت، کەسـێک بیانپارێزێت(مەکیاڤیلی، ٢٠١٥، ل٨٤)، ئەویـش میـرە یـان پاشـایە(ئیبن خلـدون، ٢٠١٥، ب١/ل١٩٦)، بەرگریکـردن لە مـاڵ و گیانیـان داوەتە دەسـت فەرمانڕەوایـان، گەر فەرمانڕەواکەیـان نەیتـوانی بیانپارێزێـت، ئەوا خەڵـک بە ناچـاری ڕێـگەی کـۆچکردن دەگـرنەبەر(ئیبن خلـدون، ٢٠١٥، ب١/ل٣٥٠)، بـۆ نموونە"میر نەسرودەولە مەڕوانـی" (٤٠١-٤٥٣ک/١٠١١-١٠٦١ز) میـری میرنشـینی مەڕوانیـی بـوو، تـوانی پارێزگـاری لە خەڵکـی خـۆی بکـات لە هێـزی دەرەکـی، لە نـاوخۆی میرنشـینەکە گرنگـی بە لایەنـی ئاوەدانی، زانسـتی، کـاری خێرخـوازی، دادپەروەری و گیروگرفتەکـانی خەڵکیدا، بۆیە لە ڕۆژگاری ئەودا شاری میافارقینی پایتەخت و شارەکانی تر جمەیان دەهات لە قەلەباڵغیدا(الفارقي، ١٩٥٩م، ص١٤١_١٧٦)، کەواتە میری ناوبراو توانیویەتی پارێزگـاری لە خەڵکی بکات.

بەڵام ئەو ڕەوشـەی بەسـەر هەرێمە کوردنشـینەکان هـات، بـووە هـۆی کـۆچکردنی سەدان میر و هەزاران سەربازی لێکەوتەوە، ئەمەش کـاریگەریی گەورەی کـردە سـەر ڕەوشـی سیاسی لە هەرێمە کوردنشینەکان، ئەمەش دەبێتە هۆی کەمبوونەوەی ئاقڵمەنـدی سیاسـی، ڕۆشـنبیران، میـران و سـەربازان، کە داینەمـۆی جـوڵانەوەی سیاسـی بـوون لە هەرێـمە کوردنشینەکان، بەمەش هیوای بەدەستهێنانی دەسەڵاتیخۆجێیی لە هەرێمە کوردنشینەکان هیـوابڕاو بوو(مجهـول، ٢٠١٠م، ص٢٠٥، ٢١٠_٢١١، ٢٣٨، ٣٠٠)، ئەمە بـووە هـۆی ئەوەی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

داگیرکەرانی هەرێمە کوردنشینەکان دەرفەتیان بۆ بڕەخسێت، بە گوێرەی بەرژەوەندیی خۆیان هەرێمە کوردنشینەکان بەڕێوەببەن(ابن الاثیر، د.ت، ص٧٩؛ الجمیلي، ١٩٧٠م، ص٢٤٩_٢٥٠)، چونکە دەسەڵاتێک و میرنشینێک نەبوو بتوانێت بەرپەرچیان بداتەوە، سەرەڕای ئەوەی بە ئارەزووی خۆیان باجیان لە خەڵک وەردەگرت، وەک لە ناوچەکانی؛ (ماردین، جزیرە، حەسەن کێفا و مووسڵ)(ابن القلانسي، د.ت، ص٢١٨؛ الرواندي، ٢٠٠٥م، ص٢٦٠)، پێشتر ئەو ناوچانە لە لایەن میر نەسرەدولەی مەڕوانی دەپارێزران، کەچی ئێستا باجیان لێوەدەگرن، لێرەدا کاریگەریی کۆچ بە ڕوونی بەدیاردەکەوێت.

هەروەها کۆچکردنی میر و جەنگاوەران نەمانەوەیان لە زێدی خۆیان هەوڵنەدانیان بۆ دامەزراندنی دەسەڵاتێکی بەهێزی کوردی، ئەمەش زیاتر دەرفەتی ڕەخساند بۆ گێرەشێوێنی و تاڵانکاری، بۆ نموونە"تورکمانی بابەکری"[١]، بە مەرومالاتەوە ڕوویان کردە هەولێر(اربل) بۆ ماوەی سێ ساڵ(٥١٧-٥٢٠ک/ ١١٢٣-١١٢٦ز) فەرمانڕەوای هەولێریان دەکرد، لەو ماوەیە بە ویست و ئارەزووی خۆیان فەرمانڕەواییان لە خەڵکی هەولێر و دەوروبەریان دەکرد(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ص٢٧٣؛ ابن أبي هیجاء، ١٩٩٣م، ص١٨٠_١٨١ )، لێرەدا ئەگەر میرێکی بەهێز هەبایە لە ڕووی سیاسی و سەربازی ئەوا نەیاندەتوانی بەو شێوەیە خەڵکی بچەوسێننەوە.

دانیشتوانی شار پشت بە هێزی سوپا و پاسەوانەکان دەبەستن لە کاتی مەترسی، ئەگەر نەیانتوانی بیان پارێزن، ئەوا کۆچ دەکەن(ئیبن خلدون، ٢٠١٥، ب٢/ ل٥٨)،بۆ نموونە قەرەبولیی (القرابلی) سەرداری هۆزی سولغوری تورکمانی لەگەڵ "میر سورخاب کوڕی بەدر" (٤٦٧- ٥٠٠ک/ ١٠٧٥- ١١٠٧ز) میری میرنشینی عەنازی، لەسەر لەوەڕگا دەبێتە شەڕیان، تورکمانەکان ژمارەیەکی زۆری سەربازانی میر سورخابیان کوشت؛ ناچار بە کۆچکردنیان کرد و ناچاربوون هەڵبێن بۆ ناوچە چیایەکان، گشت ناوچەکانی ژێر دەسەڵاتی میر سورخابیان گرت، تەنها داقوق وشارەزوور نەبێت(ابن الاثیر، ٢٠١٢م، ج٨/ ص٤٧٦)، هەروەها سەرهەڵدانی کێشەی نێوان کورد و تورکمانەکان کە کوشتوکوشتارێکی زۆریان لە یەکتری کرد و بووە هۆی ئاوارەبوونی ژمارەیەکی زۆری هەردوو ڕەگەز،شەڕوئاژاوە زۆربەی ناوچەکانی هەرێمەکانی گرتەوە، شارەکانی وەک مووسڵ، شارەزوور، نوسەیبین(ئینسکلۆپیدیای ئیسلام، ٢٠١٠، ل١١)، دیاربەکر، تورعابدین، جەزیرە،ئازەربایجان، شام، مەلاتیە و چەند شارێکی تری گرتەوە(الاصفهاني، ٢٠٠٣م، ص٤٢١_٤٢٢؛ الجمیلي، ١٩٧٠م، ص٢٨٦). نەبوونی دەسەڵاتێکی کوردی بۆ چارەسەرکردنی کێشەکە(الاصفهاني، ٢٠٠٣م، ص٤٢١_٤٢٢؛ ابن الاثیر، ٢٠١٢م، ج١٠/ص ١٣٦؛ الجمیلي، ١٩٧٠م، ص٢٨٦)، ئەمەش هەمووی لە ئەنجامی نەبوونی هێزێکی سیاسی بەهێز کە فەرمانڕەوای هەرێمە کوردنشینەکان بکات و، بتوانێت بە شێوەیەکی بەهێز بەرپەرچیان بداتەوە.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەم باسەی سەرەوەدا لەوە تێدەگەین کەوا کۆچکردنی میر و سەربازانی کورد کاریگەریی نەرێنی هەبووە لەسەر ئاسایشی تاکی هەرێمە کوردنشینەکان و، دەرفەتی زیاتری بۆ هێزەداگیرکەرەکان ڕەخساندووە بۆ ستەمکردن لە خەڵکی بێتاوانی هەرێمە کوردنشینەکان، هەروەها کاریگەریی نەرێنی لەسەر خامۆشبوونی دەسەڵاتیخۆجێیی و درەنگ هەڵسانەوەی جولانەوەی دەسەڵاتە خۆجییەکان لە هەرێمە کوردنشینەکانەبووە.

**دووەم-لێکەوتەی سەربازی:**

هەرێمە کوردنشینەکان لەژێر کاریگەریی سیستەمی خێڵەکی و شێوازی بەڕێوەبردنی ڕەوشی سیاسی و سەربازی، خاوەن هێزێکی گەورەی مرۆیی بوون، هیچ هۆز و میرنشینێک نەبووە خاوەن هێزی تایبەت بە خۆی نەبووبێت(الفارقي، ١٩٥٩م، ٩٣_١٠٠؛ ابن الاثير، ٢٠١٢م، ج٨/ ص٥٢_٥٣)، هەر کاتێک پێگەیان یان سنووری فەرمانڕەواییان تووشی مەترسی بووبێت بێ هەڵوێست نەبوون، بە گوێرەی توانای خۆیان هەڵوێستیان هەبووە و بەرپەرچی هێزی داگیرکەریان داوەتەوە(ابن الجوزي، ١٣٥٩هـ، ج٨/ ص٥٠؛ ابن الاثير، ٢٠١٢م، ج٧/ ص٥٧٤، ٧٤٠)، ئیبن خلدون دەڵێت پاسەوانی دەوڵەت لە لایەن پاشاوە دەکرێت( ابن خلدون، ٢٠١٥، ب٢/ ل١٠٣)، میر "ئەبو هیجا حوسێن کوڕی محەممەد ڕەوادیی" (٣٤٤-٣٧٨ک/ ٩٥٥-٩٨٨ز) فەرمانڕەوای میرنشینی ڕەوادیی بوو لە هەرێمی ئازەربایجان، لە ساڵی(٣٧٧ک/ ٩٨٧ز) هەڵمەتێکی سەربازی کردە سەر ئەرمینیا زیاتر لە سەد(١٠٠) هەزار جەنگاوەر دەبوون و توانیان چەند ناوچەیەک داگیربکەن و، باج و سەرانە بخەنە سەر دانیشتووانی ئەرمەن و پاشاکەیان "باگراتۆنی" ناچار کرد ملکەچی بۆ میری ڕەوادی نواند(حوزنی، ٢٠٠٧، ب٢/ ل٢١٥)، هەرچەندە کەمێک پێش سەردەمی توێژینەوەکەی ئێمەیە، و ڕەنگە ئەم ژمارەیە زیادەڕەویی تێدابێت، بەڵام بەڵگەیە لەسەر ئەوەی کەوا ئەو میرنشینە سوپایەکی گەورە و بەهێزی هەبووە.

هەروەها نموونەیەکی تر؛ "میر فەزلۆنی یەکەم" (٣٧٥-٤٢٢ک/ ٩٨٥-١٠٣١ز) فەرمانڕەوای میرنشینی شەدادی بووە، لە ماوەی فەرمانڕەواییدا توانیویەتی بەرپەرچی هێرشی دەرەکی بداتەوە، هەروەها توانیویەتی سنووری فەرمانڕەوایی خۆی فراوان بکات(کسروی، ١٣٨٨هـ، ص٢٧١)، ئەوە بەڵگەیە لەسەر ئەوەی کەوا ئەم میرە هێزی سەربازی باشی هەبووە تا بتوانێت ئەو هێرشەی پێ ئەنجامبدات.

هەروەها "میر نەسرودەولە ئەحمەدی کوڕی مەڕوان" (٤٠١-٤٥٣ک/ ١٠١١-١٠٦١ز) میری میرنشینی مەڕوانی، توانی عوقەیلییەکان[٢] تێکبشکێنێت کاتێک لە ساڵی(٤٠٤ک/١٠١٣ز) هێرش دەکەنە سەر تورعابدین لە نزیک ماردین، بەڵام دوای ماوەیەک ئاشتی لەنێوانیان بەرقرار بوو(رشینایا، ١٩٧٠م، ص٢٠٥؛ محمد، ٢٠١٨، ل١٤٩)، ئەمەش بەڵگەیە کەوا ناوبراو سوپایەکی بەهێزی هەبووە.

دوای ئەوەی دانیشتووانی هەرێمە کوردنشینەکان کۆچیانکرد جا بە هەر هۆکار و ئامانجێک بێت، هەروەک لە بەشی سێیەم لە تەوەرەی یەکەم لە کاریگەریی کۆچ و کۆچپێکردن لەسەر دیمۆگرافیای هەرێمە کوردنشینەکان ڕوونمان کردووە، کەوا؛ کۆچکردن دەبێتە هۆی کەمبوونەوەی ژمارەی دانیشتووان، کەمبوونەوەی ژمارەی دانیشتووان دەبێتە هۆی کەمبوونەوەی هێزی سەربازی، کەمبوونەوەی هێزی سەربازیش دەبێتە هۆی لاوازبوونی دەسەڵاتی میر و فەرمانڕەواکان. بۆ نموونە تورکمانی بابەکری(٥١٧-٥٢٠ک/ ١١٢٣-١١٢٦ز) فەرمانڕەوای هەولێریان دەکرد لەو ماوەیەدا بە ویستی خۆیان باجیان بەسەر خەڵکیدا سەپاندووە(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ق١/ ص٢٧٣؛ ابن أبي هيجاء، ١٩٩٣م، ص١٨٠_١٨١). ئەگەر هاتوو کوردەکان خاوەن هێزێکی سەربازیی بەهێزبوونایە، ئەوا تورکمانەکان نەیاندەتوانی بەو شێوەیە فەرمانڕەوایی هەولێر بکەن.

هەروەها "میر ئەحمەدیلی کوڕی ئیبراهیمی کوڕی وەهسوزانیی ڕەوادی"، شاری مەڕاغەی کە یەکێکە لە شارە ئاوەدانەکانی هەرێمی ئازەربایجان بەدەستەوەبوو، بەڵام لەساڵی (٥١٠ک/ ١١١٦ز) لە شاری بەغداد تیرۆرکرا، بەم تیرۆرکردنە کۆتایی بە دەسەڵاتی کوردەکان لەوێ هات(ابن القلانسي، د.ت، ص١٩٨؛ الصفدي، ١٩٩١م، ج٨/ ص ٣٠٣_٣٠٤)،لە ڕووی سەربازی لاواز بووە بۆیە، تیرۆرکراوە، ئەو نموونەیە ئەگەر بەراورد بکەین لەگەڵ "میر ئەبو هیجا حوسێن ڕەوادی" کایگەری کۆچ لەسەر لایەنی سەربازی بەڕوونی بەدیاردەکەوێت، کەوا زۆر لاواز بوونە میرە کوردەکان.

بە دامەزراندنی ئەتابەگییەکان لەسەر خاکی هەرێمە کوردنشینەکان، بە تەواوی خۆری دەسەڵاتە کوردییەکان بەکۆتاهات، ئەتابەگییەکان چاوتێبڕینیان بۆ داگیرکاری و گەیشتن بە دەسەڵات وردتر و توندتر بوو(ابن الاثير، ٢٠١٢م، ج٨/ ص٥٧٤)، لە ئەنجامی ئەمەدا گەلێک میر و سەربازی کورد بێکار مانەوە؛ ئەو بێکارییە کاریگەریی گەورەی کردە سەر ژیانیان، بۆیە هەندێک لەمانە چوونە ڕیزیسوپایی داگیرکەر خزمەتیان کرد(ابن الاثير، ٢٠١٢م، ج٨/ ص٤٩٦_٤٩٧).

"شاهنشای کوڕی مەحموود"فەرمانڕەوای شاری ئانی[3] لە ساڵی(٥٥٦ک/ ١١٦١ز) گرتە دەست، لە ساڵی(٥٩٦ک/ ١١٩٩ز) ئەرمەنەکان هێرش دەکەنە سەر شاری ئانی دەیگرن، و زیانێکی زۆریان پێگەیاندن(کسروی، ١٣٨٨هـ، ٣١٧_٣١٨)، پێشتر کوردەکان دەیانتوانی باج لە ئەرمەنییەکان وەربگرن، بەڵام ئێستا بە پێچەوانەوە ئەرمەنەکان ناوچەکوردنشینەکان داگیردەکەن.

کاریگەریی کۆچ و کۆچپێکردن لەسەر لایەنی سەربازی لە هەرێمە کوردنشینەکان، بووە هۆی کەمبوونەوەی ژمارەی دانیشتووان، کەمبوونەوەی ژمارەی دانیشتووانیش دەبێتە، هۆی کەمبوونەوەی ژمارەی سەربازان و لاوازی هێزیی سەربازی،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

کەمبوونەوەی هێزی سەبازیش دەبێتە هۆی لاوازبوونی دەسەڵاتی میر و فەرمانڕەوایانی هەرێمە کوردنشینەکان، لاوازبوونی میر و فەرمانڕەوایانی هەرێمە کوردنشینەکان، ڕێگە لە بەردەم هێزەداگیرکەرەکان خۆشدەکات، تا ئەو شوێنانەی مەبەستییانە داگیری بکەن، بە ویستی خۆیان لەوێ فەرمانڕەوایی بکەن.

**سێیەم: - لێکەوتەی کۆمەڵایەتی:**

کۆچکردنی هەر گەلێک لە زێدی خۆیەوە بۆ هەر شوێنێک، گەلێک لێکەوتەی جیاجیا دەهێنێتە بوون، یەکێک لەو لێکەوتانە لێکەوتەی کۆمەڵایەتیە کە لە لێکەوتە زۆر دیار و کاریگەرەکانە، لەبەرئەوەی ئاشنابوونی فەرهەنگ و کەلتووری گەلێک بە فەرهەنگ و کەلتووری نەتەوەکانی دیکەیە، بە یەکەوە شارستانییەتێکی هاوبەش بنیاتدەنێن، کە ئەو شارستانیی بنیاتیان ناوە بە شارستانیی ئیسلام ناسراوە.

ئەو بارودۆخەی بەسەر هەرێمە کوردنشینەکان داهات، بووە هۆی کۆچ و کۆچپێکردن جا بە هەر هۆکار و ئامانجێک بێت و هەندێکیان هەر بە ناچاری تێکەڵی گەلانی تر بوون(ابن أبي هيجاء، ١٩٩٣م، ٢٠)، کوردیش لەو ئاوێتەبوونە پشکی گەورەی بەردەکەوێت(الحويري، ١٩٧٩م، ٤٦)، بەوەی لە ڕێی قوتابخانەکان ئاشنای زانا و مامۆستایان بووە، لە ڕێی مزگەوت ئاشنای خەڵکی و تەواوی چینوتوێژەکان دەبوون، لە یەکەکانی سوپا و دامودەزگا کارگێڕییەکان، ئاڵوگۆڕی گەورەیان لە کایەکانی زمان و پۆشاک و دابونەریتی دانیشتووان و خواردن هەبووە، بە کورتی باس لە هەندێکیان دەکەین:

**أ- ژن و ژنخوازی:**

دوای ئەوەی خەڵکی هەرێمە کوردنشینەکان بۆ شوێنەکانی دیکەکۆچیانکرد، لەگەڵ دانیشتووانی شوێنی کۆچبۆکراو ئاشنای یەکتر بوون و تێکەڵبوون لە زمانی یەکتر، مرۆڤەکان کۆشش دەکەن بۆ ئەوەی کەسانێک بدۆزنەوە تاوەکو بتوانن پێداویستییەکانی خۆیان پێ پڕبکەنەوە(ئیبن خلدون، ٢٠١٥ز، ب٢/ ٢٥٩)، دەبینین لێرە و لەوێ ئافرەتی غەیرە کورد دەبێتە جێی سەرنج و دڵخوازی کەسایەتییەک و سەردارێکی کورد. بۆ نموونە؛ لە ساڵی (٥٦٤ک/ ١١٦٨ز) سوڵتان سەلاحەددین هاوسەرگیری لەگەڵ کچی شاوەری وەزیری فاتمیی کردووە، (المقريزي، ١٩٧١م، ج٣/ ٢٩٢؛ حسن، ١٩٩٧م، ٢١) هەروەها سوڵتانسەلاحەددینی ئەیوبی هەڵساوە بە هاوسەرگیری لەگەڵ خاتوو؛ (عەصمة الدين كچی مير معين الدين)کردووعصمة الدين كچی مير معين الدين: ئافرەتێکی چاکەکار، خێرخواز و ڕاستگۆ بوو، یەکێک بووە لە ئافرەتە دیارەکانی شام. کە پێشتر هاوسەری "نورەددین مەحموود" بووە، دوای کۆچی دواییکردنی نورەددین مەحموود هاوسەرگیری لەگەڵ سوڵتان سەلاحەددین ئەیوبیی کرد(ابن شاهنشاه، د.ت، ٢٢٧) هەروەها "مەلیک سالح نەجمەددین ئەیوبی" هاوسەرگیری لەگەڵ کەنیزەیەکی خۆی (شجر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الدر)کرد(اليونيني، ١٩٩٢م، ج٤٥/١)، له بەرانبەر ئەو هاوسەرگیرییەی کە کوردەکان لەگەڵ ژنانی غەیرە کورد کردوویانە، بە هەمان شێوە ئافرەتانی کوردیش هاوسەرگیرییان لەگەڵ پیاوانی بێگانە کردووە، بۆ نموونە"ست شام" خوشکی سوڵتانسەلاحەددینی ئەیوبی هاوسەگیری لەگەڵ"عومەر کوڕی لاجین" کردووە(ابن خلكان، ١٩٧٨م، ج١/ ٣٠٧).

هەروەها لە ساڵی (٦٣٥/ ١٢٣٧ز) لەسەر داوای "غەیاسەددین کەیخسرو"سوڵتانی ڕۆم "غازیە خاتوون کچی مەلیک عزیزی ئەیوبی" شووی پێکرد(ابن واصل، ٢٠٠٩م، ج٥/ ١٨٣)، هاوسەرگیریی ئافرەتانی کورد لەگەڵ ڕەگەزی بێگانە بەردەوام بووە، بۆ نموونە "مەلیک ظاهر بیبرس" هاوسەرگیری لەگەڵ کچێکی شارەزووری کردووە، بەڵام لە ساڵی (٦٥٨ک/ ١٢٦٥ز) لێی جیابووەوە(ابن شداد، ١٩٨٣م، ٢٣٢).

هەڵبەت ژن و ژنخوازی لەگەڵ ڕەگەزەکانی تر لە ئەنجامی کۆچ و کۆچپێکردنەوە دروست بوو، ئەو ژن و ژنخوازییەش لێکەوتەی تری بەدوای خۆیدا هێناوە، وەک ئەمانە:

١- لە ڕووی سیاسی و سەربازی پێگەی کوردی بەهێزکرد.

٢- لە ڕووی کۆمەلایەتیشەوە کرانەوە بە ڕووی کۆمەڵگەکانی ترەوە.

٣- دروستبوونی نەوەیەک کە بەرهەمی ئەو تێکەلاوییە بوو.

٤- ئاسانکاری بۆ کاروباری بازرگانی.

**ب- ئاوێتەبوونی زمان:**

کورد وەک هەر گەلێکی تر خاوەن زمانی تایبەتی خۆی بووە کە زمانی کوردییە، کە زمانی گفتوگۆی ڕۆژانە بووە. دیارە هەموویان زمانی عەرەبیان نەدەزانی، بۆیە هەندێکجار پەنایان بۆ وەرگێرەکان بردووە بۆ لێکتێگەیشتن(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ق١، ص١٥٨_١٥٩) ،سەرچاوەکانیش باس لەوە دەکەن کەوا مەلیکەکانی ئەیوبی خۆبەخۆ و لەگەڵ ڕاوێژکارەکانیان هەندێجار بە زمانی عەجەمی قسەیان کردووە(ابو شامة، ٢٠٠٢م، ج٣/ ص٦٦)، کە ئەو زمانەش کوردی بووە(ابو شامة، ٢٠٠٢م، ج٣/ ص٦٦؛ تۆفیق، ٢٠١٤، ل١٥٤_١٥٥).

بە تێپەڕبوونی ڕۆژگار ناوە کوردییەکانیش لەناو ناوەکانی شارستانیی ئیسلامی بەرەو توانەوە چوون، چونکە کوردیش بەشێک بووە لە شارستانیەتی ئیسلامی، ناوە پیرۆزەکان وەردەگیران، یان کورت دەکرانەوە دەستکارییان دەکرا بە هۆی خستنەسەری ئامرازەکانەوە(الفارقي، ١٩٥٩م، ص١٧٩؛ تۆفیق، ٢٠١٤، ل١٦٢_١٦٥)، لە پاڵ ئەوەشدا زمانی کوردی لە ڕێگەی کوردە کۆچکردووەکان دزەی کردووەتە ناو فەرهەنگی زمانەکانی تر. بۆ نموونە؛"چوخ-چوخکی"، جلی میرانی کوردی(ابو شامة، تراجم رجال القرنين، ١٩٧٣م، ص٦٦ )، جفتە= جوتە- دووانە، جاشنگر- چێژگر، ئەو کەسەی پێش سوڵتان چێژی

خواردنەکە دەکات نە بادە خواردنەکە ژەهراوی کرابێت(القلقشندي، ١٩١٤م،ج٣/ ص٨_٢٥)، زاراوەی خاتوون= خاتوون لە زمانی فارسی و تورکیدا یەک واتای هەیە کە مەبەست دانانی ڕێزە لە ئافرەت(الخطيب، ١٩٩٦م، ص١٥٥)، لە زمانی کوردیش بە هەمان مەبەست بەکاردەهات(هەژار، ١٣٦٩ک، ل١٥٥).

یەکێک لە ئەنجامەکانی کۆچ و کۆچپێکردن لە هەرێمە کوردنشینەکان ئاوێتەبوونی زمانی کوردیە لەگەڵ زمانی عەرەبی، فارسی و تورکی، هاوشانی ئەوان چەندان وشەی کوردی بوونە بەشێک لە فەرهەنگی شارستانیی ئیسلامی، بە پێچەوانەشەوە چەندان وشەی زمانەکایی تر هاتنە ناو زمانی کوردی، ئەگەر چی زمانی کوردی زمانی نووسین نەبوو، بەڵام دواجار توانی ببێتە زمانی گفتوگۆ.

### ج- لکاندنی ناوی کوردی بە شوێنەکان:

لکاندنی ناوی کورد و هۆزەکان و میر و سەردارانی کورد، تێکهەڵاوبوونی شارستانیی کورد بە شارستانیی شوێنەکانی تر وەک؛ بەغداد،میسر، شام و خوراسان. هەڵبەت ئەم ناوانەی کوردی لە غوربەت بە زیندوویی هێشتووەتەوە، بۆ نموونە گەڕەکی کوردان (حارة الاكراد)لە دیمەشق(الشهابي، ١٩٩٩م، ج١/ص ٢١٨)، (حي الخلاطيين) لە قاهیرە(چەلەبی، ١٩٧٩، ل١٦٠)، گەڕەکی (حي الاكراد) لە شاری حەلەب(ابن شداد، ١٩٩١م، ج١/ ص١٩٨)، کۆڵانی مەهرانی(المهراني)(النعيمي، ١٩٩٠م، ج٢/ ص ١٥١).

هەروەها مزگەوت و قوتابخانە و شوێنەکانی دی بە ناوی هۆزەکوردییەکان دەکران، بۆ نموونە؛ مزگەوتی مەهرانی (مسجد المهراني)، مزگەوتی زەرزاری (مسجد الزرزاري)، مزگەوتی بەشنەوی(مسجد البشنوين)، مزگەوتی ئیبن ئەبی هیجا (مسجد ابن ابي الهيجاء) و سابق کوردی (مسجد السابق الكردي)(ابن شداد، ١٩٩١م، ج١/ ص ١٩٨_١٩٩، ٢٢٣_٢٢٤)، ئەمانە بەشێکن لە دەسکەوتی شارستانیی کوردی کە ئاوێتەی شارستانیی شوێنەکانی تر بووە لە چوارچێوەی شارستانیی ئیسلامیدا.

ناوی شوێنەوارەکان بە بەشێکی گرنگ لە کەلتوور و فەرهەنگی شارستانیی گەلان دادەندرێت، بۆیە ئەم شوێنەوارانە بە ناوی جیا جیای کوردییەوە، خەرمانێکی گەورەیە لە مێژووی ڕابردووی هەرێمە کوردنشینەکان.

### د- ناساندنی جلوبەرگی کوردی بە شوێنەکانی کۆچ بۆکراو:

لەگەڵ کۆچ و کۆچپێکردن لە هەرێمە کوردنشینەکان، بێ ویستی هەمووان پۆشاکی کوردی بە فەرهەنگ و کەلتووری بییانی ناسێنرا، دواتر پۆشاکی کوردی بووە بەشێک لە شارستانیی ئیسلامی، کە جیاواز بوو لە هی گەلانی تر، بۆیە بە(زي الاكراد) ناوی هاتووە(ابن شعار، ٢٠٠٥م، ج٤/ ص٢٤٠)، بۆ نموونە؛ (محمد بن ابي الهيجاء بن محمد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

الامير الفاضل عز الدين الهذباني الكردي.٧٠٠ک/١٣٠٠ز) ناسراو بە؛ "ئیبن ئەبی هیجا"، لە دووریی نشتیمان جەمەدانی خڕی لەسەر دەنا و پرچی تا سەر شان بەرداوە، بەمەش پۆشاکی کوردی بە گەلانی ترناساندووە(الصفدي، ١٩٩١م، ج٥/ ص١١٢)، هەروەها میران و سەرکردە کوردەکانی سوپای ئەیوبی مەندیلیان لەسەر دەنا، مەندیل بۆ لەپشتکردن و سەرپێچانەوەش بەکار دەهێندرا. هەروەها "مەلیک کامل محەممەد" مەلیکی میسر(٦١٥-٦٣٥ک/ ١٢١٨-١٢٣٧ز) ئەویش مەندیلی لەسەردەنا(ابو شامة، ١٩٧٣م، ص١٦٦؛ تۆفیق، ٢٠١٤، ل٢٥٨_٢٥٩)، هەروەها "مەلیک ئەشرەف مووسا کوڕی مەلیک عادل ئەیوب"، لە دیمەشق(شاش) نیشانداری لەسەر ناوە، کە لە ناوەڕاستییەوە بە مەندیلێک پێچرابوو(ابن واصل، ٢٠٠٩م، ج٤/ ص٢٢٨)، کە ئەمەش دەبێتە هۆی ناساندنی پۆشاکی کوردی بە گەلانی دیکە.

شەرواڵی کوردیش کە شێوەیەکی پانوبەرینی هەیە، لە ناوەڕاستەوە بەرەو خوارەوە دادەپۆشێت(العبيدي، ١٩٨٠م، ص١٩٩)، میران و پاشایانی ئەیوبی لە پۆشینی شەرواڵ بەردەوام بوون، هاوشانی پۆشاکەکانی دیکە(ابو شامة، ١٩٧٣م، ص٦٦؛ تۆفیق، ٢٠١٤، ل٢٦٠_٢٦١)، هەروەها چۆخ-چۆخکێ یەکێکە لەو پۆشاکە کوردەواریانەی لە ڕێگەی ئەیوبیەکان بە جیهانی ئیسلامیدا ناسرا، کە لە خوری دروستدەکرێت، چۆخیش تا ڕۆژگاری ئەمڕۆش لە کوردستان دەپۆشرێت، زیاتر بۆ خۆپأراستن لە تەڕبوون لە ڕۆژانی باراندا لەبەردەکرا(المقريزي، د.ت، ج٣/ ص١٧٨؛ تۆفیق، ٢٠١٤، ل٢٦٨)، کاتێک "میر جەناحی هەکاریی" لە ساڵی(٦٠٥ک/ ١٢٠٨ز) مرد، هەموو ئەو میر و سەرکردە کوردانە لە ڕێوڕەسمی بە خاکسپاردن و پرسەکەی ئامادەبوون، هەموویان چۆخ-چۆخکیان لەبەرکردبوو و مەندیلیان لەسەر نابوو(ابو شامة، ١٩٧٣م، ص٦٦). هەروەها هەندێک پۆشاکی هاوبەشی گەلان هەبووە. بە نموونە؛ کەوی (کەوا) قۆڵی هەبووە لەسەر کراس لەبەردەکرا، کوردانی ئەیوبیش لە دوورە نشتیمان هاوشانی گەلانی دیکە کەوایان لەبەر دەکرد(ابن واصل، ٢٠٠٩م، ج٣/ ص١٨٠_١٨١).

دەشێت زۆرێک لەو پۆشاکە کوردییانە بۆ شوێنی کۆچ بۆکراو، بە تێپەڕبوونی ڕۆژگار گۆڕانکاری بەسەر شێوازی دروویین دروستکردنیان هاتبێت، بە سوودوەرگرتن لە پۆشاکی گەلانی نیشتەجێ، بەمەش کەلتوورێکی نوێ لەو پۆشاکە کە هاتووەتە ئاراوە، لە لایەکی تر بەشێک لە پۆشاکە کوردییەکان گرنگیان پێ دراوە، لەبەرئەوەی قایم و بەهێز دروستدەکران، ئەمەش دەگەڕێتەوە بۆ سەختیی جوگرافیای هەرێمە کوردنشینەکان و سەرماوسۆڵەکەی، بەمەش دەتوانین بڵێین کۆچ و کۆچپێکردن کاریگەیی لەسەر لایەنی کۆمەڵایەتی هەرێمە کوردنشینەکان هەبووە لە ماوەی سەردەمی توێژینەوەکەمان.

## چوارەم- لێکەوتەی زانستی:

### أ- لێکەوتەی نەرێنی

بواری زانستیش وەک هەموو بوارەکانی دیکە، کەوتووەتە ژێر کاریگەریی کۆچڕەوی دانیشتووان، ئەندێشەی مرۆڤیش عەودالی بەدەستهێنانی پێویستییەکانە، بۆیە کۆشش دەکات و دەگەڕێت بۆ ئەوەی مرۆڤانێک بدۆزێتەوە تا ئەو بۆشاییەی لە پێویستییەکانیداهەیە بە زانیاریی ئەوان پڕ بیکاتەوە(ئیبن خلدون، ٢٠١٥ز، ب٢/ ل٢٥٩).کەوا چەندین قوتابی، زانا و ئەوانەی حەزی فێربوونی زانستیان هەیە لە هەرێمە کوردنشینەکان کۆچیان کردووە بۆ مەڵبەندە گرنگەکان لە بواری زانست و زانیاری. ئیبن خەلدوون پێیوایە؛ زانستە گەورە و قووڵەکان لە شارەگەورەکان باویان هەیە،لە شارە گەورەکاندا بەدەستهێنانیان ئاسان ترە(ئیبن خلدون، ٢٠١٥ز، ب٢/ ل٢٧٢). بەشێک لە زانایان و قوتابییان لە شارە گەورەکان نەگەڕاونەتەوە لەوێ خزمەتیان کردووە؛ لەبری ئەوەی ئەو خزمەتەی لە زێدی خۆیان بکەن. بۆ نموونە؛ یەکێک لە زاناکان بە ناوی؛"محەممەد کوڕی عەلی کوڕی محەممەد کوڕی عوسمان" ناسراو بە؛ (ابوالفتح الحلوانی) لە ساڵی (٤٣٩ک/ ١٠٤٧ز) لەدایکبووە، زانستی فقهی خوێندووە تا بووەتە زانایەکی بەناوبانگ لە شاری بەغدا لەسەر مەزهەبی "حنبلی"یەوە، لە ساڵی(٥٠٥ک/ ١١٢٦ز) کۆچی دوایی کردووە(ابن الجوزي، ١٣٥٩هـ، ج٨/ ص١٧٠؛ ابن رجب، ١٩٥٢م، ج١/ ص١٠٦). ئەو زانایە لە شاری بەغداد خزمەتی کردووە نەک لە شارەکانی هەرێمە کوردنشینەکان؛ ئەگەر لەوهەرێمانە خزمەتی کردبایەڕەنگە توانیبایە زیاتر زانست و زانیاری لە هەرێمە کوردنشینەکان پێش بخات.

نموونەیەکی تر؛ "فەزڵ کوڕی عومەر کوڕی ئەبی مەنسور ئەبومەعافی حەلوانی"، کەوا شارەزایی باشی لە زانستی قورئان خوێندنەوە هەبووە، چەندین کەسی فێری قورئان خوێندن کردووە، هەروەها فەرموودەی زۆری گێڕاوەتەوە، لە هەمان کاتدا زۆر شتی نووسیوە. لە ساڵی(٥٤١ک/ ١١٤٦ز) لە شاری بەغدا کۆچی دوایی کرد(الجزیري، ١٩٣٣م، ج٢/ ص١٠_١١؛ یاسین، ٢٠١٣ز، ل١٥٥)، لەوێ خزمەتی قورئان کردووە، و خەڵکی فێرکردوون.

مارانییەکانیش کە بنەماڵەیەکی کوردی زانستدۆست بوون و چەندین زانا و کەسایەتیی شارەزایان هەبووە، پێگە و جێگەیان لە بزاڤی زانستی و ڕۆشنبیریدا دیار و بەرچاو بووە، ئەوانیش هەولێر(اربل)یان بەجێهێشت کۆچیانکرد بەرەو دیمەشق، بەمەش درزێکی گەورە کەوتە نێو ڕەوشی زانستی لە هەرێمە کوردنشینەکان بە گشتی و بە تایبەتی شاری هەولێر و دەوروبەری(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ق٢/ ص٣٦٩؛ ابن خلکان، وفیات الاعیان، ١٩٧٨م، ج٣/ ص٢٤٢). بۆ نموونە؛ "ئەبو عومەر عوسمان کوڕی دەرباس کوڕی فیر کوڕی جهم کوڕی عبدوس مارانی(م٦٠٨ک/١٢١١ز)"شەرعزانێکی شافعیی مەزهەب بووە،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

دواتر بوو به قازی قاهیره(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ق٢/ ص٣٦٩؛ ابن خلكان، وفيات الاعيان، ١٩٧٨م، ج٣/ ص٢٤٢؛ ابن قاضي شهبة، ١٠٨٦م، ج٢/ ص٧٠_٧٦)، له میسر خزمەتی کردووە.

هەروەها زمرزارییەکانیش کە لە ڕۆشنبیران و زانایانی ناوداری هەرێمە کوردنشینەکان بوون، خزمەتی زانست و ڕۆشنبیریی هەرێمە کوردنشینەکانیان کردووە، لە ئەنجامی کۆچکردنیان، ئەو خزمەتەیان گواستووەتەوە ئەو شوێنانەی کۆچیان بۆ کردووە، وەک؛میسر، شام و بەغدا(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ق١/ ص٢٣٠، ٢٧١، ٢٧٣، ٢٧٤). بۆ نموونە؛ "ئەحمەد کوڕی عوسمان کوڕی عەلی کوڕی مهدی کوردیی زارزاری" (م٥١٩ک/ ١١١٨ز) ئیمامێکی گەورە بووە، بە هۆکاری زانستی کۆچیکردووە بۆ مسر و شام، ئیمام بووە لە زانستی قورئان(الهسنياني، ٢٠١٢م، ص٨٥).

گەشەسەندنی ئاوەدانی گەشەسەندنی شار و خوێندن و فێربوونە(ئیبن خلدون، ، ٢٠١٥ز، ب٢/ ل٢٠٧)، هەولێر (اربل) لە ئەنجامی گرنگیپێدان لە لایەن فەرمانرەوایانی، بووە شارێکی ئاوەدان و مەڵبەندێکی گرنگ لە بواری زانست و زانیاری، بە تایبەتی لە سەردەمی "میر ئەبو هیجا هەزبانی"(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ق١/ ص٧٠_٧١، ٢٣٢_٢٣٣، ٣٧٠؛ تۆفیق، ٢٠١٠ز، ل١٥١)، هەروەها میر نەسرودەولە مەڕوانی نموونەی مامەڵەی جوان و دادپەروەرانە بوو لە ڕەعییەتەکەی، ئامەد و میافارقین مەڵبەندی گرنگ بوون لە بواری زانست و زانیاری(الفارقي، ١٩٥٩م، ص١٦٦؛ ابن الوردي، ١٩٩٦م، ج١/ ص٣٥٥؛ زەینەل، ٢٠٠٨ز، ل٢٥٢)، کۆچکردن کاریگەریی نەرێنی لەسەر بواری زانست هەبووە، لەبری ئەوەی هەریەک لە شارەکانی هەرێمە کوردنشینەکان، وەک؛ ئامەد، میافارقین، شنۆ، نوسەیبین، هەولێر،مووسڵ و چەندان ناوچەی تر، کەمەڵبەندی گرنگی زانست بوون، لە ئەنجامی کۆچکردن لە شوێنی ئەوان شوێنی تر بوونە مەڵبەندی گرنگ لە بواری زانست، بۆ نموونە هەریەک لە شارەکانی قاهیر، دیمەشق و حەلەب(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ق١/ ص١٧٠_١٧١؛ هەروتی، ٢٠١٦ز، ل١٣٨)، ئەمەش کاریگەیی نەرێنی دوورمەودا و نزیکمەودالەسەرڕەوشی زانست لەسەر هەرێمە کوردنشینەکانداهەبووە.

لێرەدا کاریگەریی کۆچکردن بە نەرێنی لەسەر بواری زانست بەدیاردەکەوێت، ئەگەر هاتوو ئەم کەسایەتییانە یاخود ئەم زانایانە لەوێ خزمەتیان نەکردبایە گەڕابانەوە زێدی خۆیان، لە زێدی خۆیان خزمەتیان کردبایە، ڕەنگە ئێستا هەرێمە کوردنشینەکانخاوەنی چەندان زانا و مامۆستای پڕ زانستتری هەبووایە، ڕەوشی زانست بە شێوەیەکی زۆر باشتربووایە لەو سەردەمی و سەردەمی دواتریش.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ب- لێکەوتەی ئەرێنی:

کۆچکردن لە هەرێمە کوردنشینەکان بە هەمان شێوەیکاریگەریی نەرێنی، کاریگەریی ئەرێنیشی لەسەر لایەنی زانست و زانیاری هەبووە. بە دەیان قوتابی، فەقێ، مەلا و زانا لە هەرێمە کوردنشینەکان بۆ میسر، شام، بەغدا کۆچیانکرد و هەموو ئەو مەڵبەندە گرنگانەی کەوا ڕۆڵیان هەبووە لە بەرەوپێشچوونی زانست و زانیاری، لەوێ دەرفەتیان بۆ ڕەخساوە تا پەرە بە توانا زانستیەکانی خۆیان بدەن، دواتر گەڕاونەتەوە زێدی خۆیان بەو هۆیەوە توانیویانە خزمەتێکی باشی بواری زانست بکەن(سەعید، ٢٠٢٢ز، ل٦٤).بۆیە جێگەی تێڕامانە بۆ دەرچوونی تاکەکان تاکوو لەڕێگەی پیشەیەك بگەڕێنەوە وەکوو پێویستییەکی کۆمەڵگە، بەڵکوو نیشانەی گەشانەوەی ئاوەدانییە(ئیبن خلدون، ٢٠١٥ز، ب٢/ ١٧١_١٧٣). بۆ نموونە؛ "ئەبولعباس هەولێری"؛"خدری کوڕی نەسڕی کوڕی عەقیلی کوڕی نەسڕی ئەربیلیی" (٤٧٨-٥٦٧ك/ ١٠٨٥-١١٧١ز) بۆ پەرەدان بە تواناکانی لە بواری زانست بۆ بەغداکۆچدەکات، لەوێ لە "قوتابخانەی نیزامییە"ی بەغدا دەست دەکات بە خوێندن، تا هەگبەی زانستی خۆی پڕ دەکات، پاشان دەگەڕێتەوە بۆزێدی خۆی شاری هەولێر، لەوێدا دەست بە وانەوتنەوەدەکات، خزمەتی بواری زانست و زانیاری دەکات، تا ساڵی(٥٦٧ك/ ١١٧١ز) کۆچی دوایی دەکات، هەر لەوێ دەینێژن(ابن خلکان، ١٩٧٨م، ج٢/ ٢٣٧_٢٣٩؛ نیا، ٢٠٠٩ز، ل٢٤٩)."ئەبولقاسمی نەسڕ کوڕی عقیل" ناسراو بە؛ "ئەبولقاسمی هەولێری"، بەناوبانگترین ئەو زانایە کە لەسەر دەستی ئەو پێگەیشتووە(ابن خلكان، ١٩٧٨م، ج٢، ص٢٣٨)، لە نموونەی سەرەوە کاریگەریی ئەرێنی زۆر بە ڕوونی دیارە.

هەروەها زانایەکی تر، "عیمادەددین هەولێری"،"ئەبو حامد محەمەد کوڕی ڕەزیوددین هەولێری" ناسراو بە؛"عیمادەددین" (٥٣٥-٦٠٨ك/ ١١٤٠-١٢١١ز) لە شاری مووسڵ لەدایکبووە، زانستی شەرعزانی لە لای باوکی خوێندووە، پاشان بۆ زیاتر بەرەوپێشبردنی تواناکانی بەرەو بەغداکۆچیکرد، لەوێ لە قوتابخانەی نیزامییە خوێندنی تەواوکرد، پاشان گەڕاوەتەوە مووسڵ لەوێ دەرسی بە قوتابییەکانی دەگوتەوە(ابن قاضي شهبة، ١٠٨٦م، ج٢/ ٨٤_٨٥ )، لە شاری مووسڵ خزمەتی بواری زانست و زانیاریی دەکرد.

هەروەها نموونەیەکی دیکە، "ئەبولفەزڵ یونس کوڕی محەممەد" کە بە؛(رضی الدین) ناسراوە(٥٠٨-٥٧٦ك/ ١١١٤-١١٨٠ز)، سەرەتا لە شاری مووسڵ لە زێدی خۆی دەستی بە خوێندن کردووە، دواتر بۆ زیاتر پەرەدان بە توانا زانستیەکانی خۆی و پڕکردنەوەی ناتەواوییەکانی لەم بوارە، بەرەو بەغدا کۆچدەکات لەوێ لە قوتابخانەی نیزامییە دەستدەکات بە خوێندن تاوەکوو قۆناغەکانی خوێندن تەواودەکات، دواتر دەگەڕێتەوە زێدی خۆی لە شاری مووسڵ لەوێ دەستدەکات بە وانەوتنەوە و فەتوادان، لە هەموو لایەکی زانستخوازان خۆیان دەگەیاندە خزمەتی، لە ساڵی(٥٧٦ك/ ١١٨٠ز)کۆچی دوایی کرد(ابن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

قاضـــي شـــهبة، ١٠٨٦م، ج٢/ ص٢٥_٢٦؛ نيـــا، ٢٠٠٩ز، ل٢٥١_٢٥٢))، بەمەش دەتـــوانین بڵێـــین خزمەتێکی باشی ئەوانەی ویستی فێربوونیان هەیە کردووە.

یەکێکی تر لە نموونەکان "شەهابەددین محەممەد کوڕی ئیبراهیم ئەبی بکر کـــوڕی خلکـــان" (م٦١٠ک/ ١٢١٣ز) کـــۆچیکردووە بـــۆ میســـڕ و شـــام، دوای ئەوەی خـــۆی پێگەیانـد لە بـواری زانسـت و زانیـاری گەڕاوەتەوە شـاری هەولێـر لەسـەر دەسـتی ئەو دەیـان کەســـایەتی و فێرخـــواز پێگەیون(المنـــذري، ١٩٨٤م، ج٤/ ص٨٠_٨١؛ الأســـنوي، ١٩٧٨م، ج١، ص٢٣٨).

کـۆچکردن بە هۆکـاری زانسـتی دوای ئەوەی ئەو قوتـابی، فەقـێ و زانایـانە، کە هەگبەی خۆیان پڕ کرد لە زانست و زانیاری، گەڕانەوە زێدی خۆیان، کـاریگەریی ئەرێنییـان لە زێدی خۆیاندروستکرد، چونکە ئەوان بوونە هۆی ئەوەی بە دەیان زانا و بلیمەت لە هەرێمە کوردنشـینەکان سـەر هەڵبـدەن، ئەوانـیش کاریگەرییـان لەسـەر بـواری زانسـت و زانیـاری هەبێت(شــەرەفخان، ٢٠٠٦ز، ل٢٦)، بــۆ پشتڕاســتکردنەوەی وتەکانمــان بە پێویســتمان زانــی هەنــدێک نمــوونە لەم بــواردا بخەیــنەڕوو، نمــوونەیەکی تــر لە زاناکــان "شــەڕەفوددین هەولێری"؛"ئەبـولفەزڵ ئەحـمەد کـوڕی کمـالەددین هەولێـری بـووە، کە بە شـەڕەفوددین بە ناوبانگ بووە(٥٧٥-٦٢٢/ ١١٧٩-١٢٢٥ز) یەکێک بووە لە مامۆستا بە تواناکان، کەوا لە شاری هەولێـر و مووسـڵ وانەی بە قوتابییـان گوتـووە، یەکێـک لە قوتابییەکـانی بە نـاوی ئیـبن خەلەکـان لەبـارەی لێهـاتوویی ئەم زانـایە دەڵێت؛ "لە شێوازی وانەوتـنەوەدا بێوێنە بـووە، هەر کاتێک بیر لەو پیاوە دەکەمەوە، جیهان لە بەرچاوم کەم و پەست دەنوێنێ"(ابن خلکـان، ١٩٧٨م، ج١/ ص١٠٨_١٠٩). ئیدی نموونەکان لەم بارەیەوە زۆرن.

هەروەها نموونەیەکی تر؛ "ئیبنو سەڵاح شارەزووری"، "ئەبو عومەر عوسمان کوڕی ســـەڵاحەددین شـــارەزووری" (٥٧٧-٦٤٣ک/ ١١٨١-١٢٤٥ز) شـــارەزای فەرمـــوودە و ڕاڤەزان و شەرعزانێکی شافیعیی بووە ولە زانستی حەدیسیش دەستێکی باڵای هەبووە(ابن خلکـان، ١٩٧٨م، ج٣/ ص٢٤٤_٢٤٥)، کـاریگەریی کـۆچکردن وایکـرد ئەم زانـایە دروست بێت، کـو کۆچیکردووە بۆ موسل و خوراسان و شام، دواتر هەر ئەمەش وایکرد چەندانی تر دروست بن، بۆ نموونە ئیبن خەلەکان دەڵێت: "لە ساڵی (٦٣٢ک/ ١٢٣٤ز) ماوەی ساڵێک چوومە خزمەت ئیبن سەڵاحەددینی شارەزووری، لە خزمەتی فێری زانست و زانیاری بووم(ابن خلکـان، ١٩٧٨م، ج٣/ ص٢٤٤)؛ ئەمەش بەڵگەیە لەسەر ئەوەی کەوا کۆچکردن کاریگەریی لەسەر لایەنی زانست و زانیاریهەبووە.

نمـوونەیەکی تـر "ئیـبن خەلەکان"؛"ئەبولعەبـاس شەمســەددین ئەحـمەد کـوڕی شەهابەددین محەمـمەد کـوڕی ئیبـراهیم کـوڕی ئەبوبەکر خەلەکـان" (٦٠٨-٦٨١ک/ ١٢١١-١٢٨٢ز) قـازیی، مێژوونـووس و ئەدیبێکـی ناسـراو بەنێوبـانگی شـافعیی مەزهەبە، بە نـاوی


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

یەکێک لە گوندەکانی هەولێر کە بە ناویخەلەکانی باپیرە گەورەی ناوندرابوو(ابن المستوفي، ١٩٨٠م، ق١/ ص٤٧٣)، لێرەدا دەکرێت ئاماژە بەوە بکەین کەوا یەکێکی تر لە لێکەوتەکانی کۆچکردن دروستکردنی ئەم زانایە بووە، کە تا ئێستاش مێژوونووس سوودی یەکجار بێوێنەی بۆ نووسینەکانیان لێدەبینن.

لەم نموونانەی خستمانەڕوو کاریگەریی کۆچکردن لە هەرێمە کوردنشینەکان لەسەر بواری زانست و زانیاری بە ڕوونی بەدیارکەوت، کەوا کاریگەریی ئەرێنی لەسەر پێشکەوتن لەم بوارەداهەبووە، کە کاریگەرییەکەی بووە هۆی پێگەیاندنی دەیان زانا، مامۆستا و ڕۆشنبیری بە توانا، ئەوانیش کاریگەریی دوورمەودا و نزیکمەودای لەسەر دانیشتووانی هەرێمە کوردنشینەکانهەبووە.

تورکمانەکانی بابەکری: ئەمانە سەربازانی سەرکردەیەکی تورک بوون بە ناوی؛ "ئەبابکر کوڕی مکائیل". (ابن ابی الهیجاء، ١٩٩٣م، ص١٨١).

عقیلییەکان: هۆزێکی گەورە و ناوداری عەرەبن لە ناوچەکانی بەحرینەوە کۆچیان بۆ ناوچەکانی جزیرە کردووە، توانیان بە سوودوەرگرتن لە بارودۆخی ناوچەکە میرنشینێک لە ناوچەی جەزیرە و مووسڵ دابمەزرێنن (٣٨٠-٤٨٩ک/ ٩٩٠-١٠٩٥ز). بۆ زانیاریی زیاتر بڕوانە: (القلقشندي، م، ص١١٩-١٢٠؛ المعاضدي، ١٩٨٦م، ص٢٧)

ئانی: شارێکی ئاوەدان و بە پیتی هەرێمەکە بوو، کەوت بوویە خۆرئاوای شاری گەنجە. ابن حوقل، ١٩٩٢م، ٢٨٧-٢٨٨)

**ئەنجام:**

پاش گەڕان بەدوای زانیارییەکان لەنێو سەرچاوە هەمەجۆرەکان و هەڵسەنگاندنیان، توێژینەوەکەمان بەم ئەنجامانە گەیشت، کە ئەم خاڵانەی خوارەوەن:

یەکەم: کۆچ و کۆچپێکردنی هەزاران خەڵکی هەرێمە کوردنشینەکان، تێکهەڵبوونیان بە گەلانی دیکە چەندین لێکەوتەوەی کۆمەڵایەتی، سەربازی، سیاسی، زانستی، لێکەوتەوە کە کاریگەرییان لە سەر بەرەوپێشبردنی شارستانیی ئیسلامی هەبووە.

دووەم: کۆچکردووەکان و کۆچپێکراوەکان خزمەتی شارستانیی ئیسلامییان کردووە، لە ڕێگەی دروستکردنی مزگەوت، قوتابخانە، نەخۆشخانە، کە ئەمەش ڕۆڵی هەبووە لە گەشەسەندنی زیاتری شارستانیەتی ئیسلامیدا.

سـێیەم: ئـاوێتەبوونی کەلتـوور و فەرهەنگـی کـوردی بە کەلتـوور و فەرهەنگـی گەلانـی دیـکە، بەشـێک لە کوردەکـان ناسـنامەی خۆیـان پاراسـتووە بە شـێوەی جیاجیـا، ناونـانی شـوێنەکان وەک؛ مـزگەوت، قوتابخانەکـان و گەڕەکەکـان بە نـاوی کـوردیی خۆیـان، یـان هـۆزی خۆیـان توانیویـانە پارێزگـاری لە ناسـنامەی کوردبوونی خۆیان بکەن، زیاتر بە دونیای دەرەوە بناساندرێت.

چـوارەم: ئەو کـۆچکردنە بـووەتە هـۆی زیـاتر ئاشـناکردنی کـورد بە گەلانـی دیـکە، بە پێچەوانەشەوە گەلانی تریش ئاشنای کورد بوون، و سوودیان لێ وەرگرتوون.

**لیستی سەرچاوەکان**

**یەکەم: سەرچاوە ڕەسەنەکان**

**أ بە زمانی عەرەبی:**


**ابن الاثير**، عزالدين ابن الحسن على بن محمد بن عبدالكريم الجزري، (ت٦٣٠هـ/ ١٢٣٢م):

- الكامل فى التاريخ، حققه: عمر عبدالسلام تدمرى، دار الكتاب العربى، (بيروت: ٢٠١٢).

**الاسنوي**، جمال الدين عبدالرحيم بن الحسن، (ت٧٧٢هـ/ ١٣٧٠م).

- طبقات الشافعية، دار الكتب العلمية، (بيروت: ١٩٨٧).

**ابن الجزري**، شمس الدين ابى عبدالله محمد بن ابراهيم بن ابى بكر القرشى (ت٧٣٨هـ/ ١٣٣٨م):

- غاية النهاية في طبقات القراء، مكتبة الخانجى، (مصر: ١٩٣٣م).

**ابن الجوزي**، الامام ابو الفرج عبدالرحمن بن على ابن محمد بن على (ت٥٩٧هـ/ ١٢٠٠م):

- المنتظم فى تاريخ الملوك والأمم، مطبعة دائرة المعارف العثمانية، (حيدرآباد: ١٣٥٩ه).

**الحميري**، محمد بن عبد المنعم (ت٧٥٠هـ/١٣٤٩م).

- الروض المعطار في خبر الاقطار، حققه: احسان عباس، ط٢، مكتبة لبنان، (بيروت: ١٩٨٤م).

**ابن حوقل**،ابى القاسم النصيبى (ت٣٦٧هـ/ ٩٧٧م).

- صورة الارض، منشورات دارمكتبه الحياة، (بيروت: ١٩٩٢م).

**ابن خلكان**،ابى العباس شمس الدين احمد بن محمد بن ابى بكر (ت٦٨١هـ/ ١٢٨٢م).

- وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان، حققه: احسان عباس، دار صادر، (بيروت: ١٩٧٨م).

**ابن خلدون**، ابوزيد عبدالرحمن بن خلدون (ت٨٠٨هـ/ ١٤٠٥م):

- تاريخ ابن خلدون، مراجعة: سهيل زكار، دار الفكرر، (بيروت: ٢٠٠٠م).

**الراواندي**،محمد بن على بن سليمان الرواندى (ت٦٠٣هـ/ ١٣٠٧م).

- راحة الصدور وآية السرور، من منشورات المجلس الاعلى للثقافية، (القاهرة: ٢٠٠٥م).




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**ابن رجب،** الامام الحافظ عبدالرحمن بن احمد (ت ٧٩٥هـ/ ١٣٩٢م).

- ذيل على طبقات الحنابلة، مطبعة السنة الحمدية، (د.م: ١٩٥٢م).

**سباهى زاده،**محمد بن على البروسى الشهير بن سباهى زاده، (ت٩٩٧هـ/ ١٥٨٩م).

- أوضح المسالك الى معرفه البلدان والممالك، تحقيق:المهدى عبدالرورخية، (بيروت: ٢٠٠٨م).

**ابو شامة،**عبدالرحمن بن اسماعيل المقدسى (ت٦٦٥هـ/ ١٢٦٦م).

- تراجم رجال القرنين السادس والسابع المعرف بالذيل على الروضتين، مراجعة: السيد عزت العطار الحسينى، ط٢، دار الجيل، (بيروت: ١٩٧٣م).

- الروضتين فى اخبار الدولتين النورية والصلاحية، وعلق عليه: ابراهيم شمس الدين، دار الكتب العلمية، (بيروت: ٢٠٠٢م).

**ابن شاهنشاه الأيوبي،**محمد بن عمر المظفر بن شاهنشاه الأيوبى (ت٦١٧هـ/ ١٢٢٠م).

- مضمار الحقائق وسر الخلائق، المحقق: حسن حبشي، الناشر عالم الكتاب، (القاهرة: د.ت).

**ابن شداد،** عزالدين محمد بن على(ت٦٨٤هـ/ ١٢٨٥م).

- الاعلاق الخطيرة في ذكر أمراء الشام والجزيرة، حققه: يحيى زكريا عبارة، منشورات وزارة الثقافة، (دمشق: ١٩٩١م).

**ابن شعار،** كمال الدين ابى البركات المبارك الموصلى (ت٦٥٤هـ/ ١٢٥٦م).

- قلائد الجمان فى فرائد شعراء الزمان_ المشهور ب_ عقود الجمان فى شعراء هذا الزمان، تحقيق: كامل سلمان الجبورى، دار الكتب العلمية، (بيروت: ٢٠٠٥م).

**الصفدي،**خليل بن ايبك بن عبدالله (ت٧٦٤هـ/ ١٣٦٢م).

- تحفة ذوي الالباب، حققه: إحسان بن سعيد خلوسى و زهير حميدان الصام، منشورات وزارة الثقافة، (دمشق: ١٩٩١م).

- الوافى بالوفيات، تحقيق: احمد الارناووط، دار احياء التراث العربى، (بيروت:٢٠٠٠م).

**ابن العبري،**غيرغوريوس ابن الفرج بن هارون الملطى (ت٦٨٥هـ/ ١٢٨٦م).

- تاريخ الزمان، قدم له: جان مؤريس فييه، دار المشرق،(لبنان: ١٩٩١م).

**ابن عساكر،**ابو القاسم على بن الحسن (ت٥٧٢هـ/ ١١٧٥م).

- الاربعون البلدانية، تحقيق: عبدوالحاج محمد الحريرى، المكتب الاسلامى، (بيروت: ١٩٩٣م).

-تاريخ مدينة دمشق، دراسة و تحقيق: محب الدين ابى سعيد عمر، دار الفكر، (بيروت: ١٩٩٥م)

**الاصفهاني،**ابو حامد محمد بن محمدعماد الدين الكتاب (ت٥٩٧هـ/ ١٢٠٠م).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردى

- البستان الجامع لجميع تواريخ أهل الزمان، دراسة وتحقيق: محمد على الطعانى، مؤسسة حمادة، (الاردن: ٢٠٠٣م).
**العمري**،شهاب الدين احمد بن يحيى بن فضل الله (ت٧٤٩هـ/ ١٣٤٨م).
- مسالك الابصار فى ممالكالامصار، حققه: كامل سلمان الجبورى، دار الكتب العلمية، (بيروت: ١٩٧١م).
**ابن فارس**،احمد بن فارس بن زكريا ابو الحسين (ت٣٩٥هـ/ ١٠٠٤م).
- معجم مقاييس اللغه، تحقيق: عبدالسلام محمد هارون، دار الفكر، (د.م: ١٩٧٩م).
**الفارقي**،احمد بن يوسف بن على الازرق (ت بعد ٥٧٧هـ/ ١١٨٢م).
- تاريخ الفارقى، حققه: بدوى عبداللطيف عوض، الطابع الاميرية، (القاهرة: ١٩٥٩م).
**ابو الفداء**،عماد الدين اسماعيل بن على بن محمد الايوبى (ت٧٣٢هـ/ ١٣٣١م).
- تقويم البلدان، دار صادر (بيروت: ١٨٤٠م).
- المختصر فى اخبار البشر، المطبعة الحسينية، مصر، (مصر: د.ت).
**الفيروز آبادى**،مجدالدين محمد بن يعقوب (ت٨١٧هـ/ ١٤١٤م).
- القاموس المحيط، تحقيق: انس محمد الشامى و زكريا جابر احمد، طبع و نشر و توزيع دار الحديث، (القاهرة: ٢٠٠٨م).
**ابن قاضي شهبة**،محمد بن ابى بكر (ت٨٥١هـ/ ١٤٤٨م).
- طبقات الشافعية، المحقق: الحافظ عبدالعليم خان، عالم الكتب، (بيروت: ١٤٠٧هـ/١٩٨٦م).
**ابن القلانسي**،أبى يعلى حمزة (ت٥٥٥هـ/ ١١٦٠م).
- بذيل تاريخ دمشق، مكتبة المتنبي،(القاهرة: د.ت).
**القلقشندي**،الشيخ ابى العباس احمد بن على (ت٨٢١هـ/ ١٤١٨م).
- صبح الاعشى، المطبعة الاميرية، (القاهرة: ١٩١٤م).
- قلائد الجمان، حققه: ابراهيم الابيارى، ط٣، الناشرون دار لكتب الاسلامية (د.م: ١٩٨٢م).
**ابن المستوفي**،شرف الدين ابو البركات المبارك بن احمد الاربلى (ت٦٣٧هـ/ ١٢٣٩م).
- تاريخ إربل، المحقق: سامى بن سيد خماس الصقار، دار الرشيد للنشر، (العراق: ١٩٨٠م).
**مسعر بن مهلهل**، ابو دلف الخزرجى (ت٣٨٤هـ/ ٩٩٤م).
- الرسالة الثانية، مطبعة جامعة القاهرة، (القاهرة: ١٩٥٥).
**المقدسي**،ابو عبدالله شمس الدين محمد البشارى (ت٣٨٠هـ/ ٩٩٠م).
- احسن التقاسم فى معرفة الاقاليم، ط٣، مكتبة مدبولى، (القاهرة: د.ت).
**المقريزي**،تقى الدين احمد بن على (ت٨٤٥هـ/ ١٤٤١م).
- اتعاظ الحنفا بأخبار الأمة الفاطميين الخلفا، تحقيق: محمد حلمى احمد، مطبعة الاهرام، (القاهرة: ١٩٧١م).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ فەکولینێن کوردی

**المنذري**،زكى الدين عبد المنعم بن عبد القوى (ت٦٥٦هـ/ ١٢٥٨م).

- التكملة لوفيات النقلة، حققه: بشار عواد معروف، ط٢، مؤسسة الرسالة، (بيروت: ١٩٨٤م).

**ابن منظور**، ابو الفضل جمال الدين محمد بن مكرم (ت٧١١هـ/ ١٣١١م).

- لسان العرب، تحقيق: عبدالله على الكبير وأخرون، دار المعارف، (الالقاهرة: د.ت).

**مؤلف مجهول**،(ت بعد٦٥٥هـ/ ١٢٥٧م).

- تاريخ دولة الاكراد و الاتراك تاريخ دولة الاكراد، تحقيق: موسى مصطفى الهسنيانى، مطبعة جامعة دهوك، (دهوك: ٢٠١٠م).

**مؤلف مجهول**،(ت بعد ٣٧٢هـ/ ٩٨٢م).

- حدود العالم من المشرق الى المغرب، تحقيق: يوسف الهادى، دار الثقافة للنشر (القاهرة: ١٩٩٩م).

**مؤيد الدين**، هبة الله بن موس (ت بعد٤٦٠هـ/ ١٠٧٧م).

- سيرة المؤيد الدين داعى الدعاة، تحقيق: محمد كامل حسين، دار الكتاب المصرى (القاهرة: ١٩٤٩م).

**النعيمي**،عبدالقادر بن محمد (ت٩٢٧هـ/ ١٥٢٠م).

- الدارس في تاريخ المدارس، أعد فهارسه: ابراهيم شمس الدين، دار الكتب العلمية، (بيروت: ١٩٩٠م).

**ابن ابى هيجاء**،الامير عز الدين محمد بن محمد الهذبانى الأربلى، (ت٧٠٠هـ/ ١٣٠١م).

- تاريخ ابن أبى هيجاء، تحقيق: صبحى عبدالمنعم محمد، د.ط، (د.م: ١٩٩٣م).

**ابن واصل**،جمال الدين محمد بن سالم (ت٦٩٧هـ/ ١١٩٧م).

- مفرج الكروب فى أخبار بنى أيوب، تحقيق: جمال الدين، الناشر مطبعة الأميرية، (د.م: ٢٠٠٩م).

**ابن الوردي**،زين الدين عمر بن مظفر (ت٧٤٩هـ/ ١٣٤٨م).

- تاريخ ابن الوردى، دار الكتب العلمية، (بيروت: ١٩٩٦م).

**اليافعي**،ابى محمد عبدالله بن اسعد بن على (ت٧٦٨هـ/ ١٣٩٩م).

- مراة الجنان و عبرة اليقظان، وضع حواشية: خليل المنصور، دار الكتب العلمية، (بيروت: ١٩٩٧م).

**ياقوت الحموي**،شهاب الدين بن عبدالله (ت٦٢٦هـ/ ١٢٢٩م).

- معجم البلدان، دارصادر، (بيروت: ١٩٧٧م).

**اليونيني**،ابو الفتح موسى بن محمد(ت٧٢٦هـ/ ١٣٢٦م).

- ذيل مراة الزمان، تحقيق: الحكمة والامور الثقافة الحكومة الهندية، ط٤، دار الكتب، (القاهرة: ١٩٩٢م).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو فەکولینێن کوردی

**ب_ بەزمانی کورد**

**ئەولیا چەلەبی(م١٠٩٥ک/١٦٨٤ز)**

- سیاحەتنامەی ئەولیا چەلەبی، کورد لە مێژوو دراوسێکانیدا، و:سەعید ناکام، چاپخانەی کۆڕی زانیاریی کوردی، (بەغدا: ١٩٧٩ز).

**ئیبن خەلدوون**

- موقەدیمەی ئیبن خەلدوون، و:سەعید بەشیر، چاپەمەنی گەنج، (سلێمانی: ٢٠١٥ز).

**شەرەفخانی بەدلیسیی(م١٦٠٣ز)**

- شەرەفنامە، و:مامۆستا هەژار، چ٦، بڵاوکراوەی کتێبی میدیا، (سنە: ٢٠١٠ز).

**نیکۆلۆ مەکیاڤیللی**

- میر، و:بەختیار ئەحمەد ساڵح، چاپخانەی گەنج، (سلێمانی: ٢٠١٥ز).

**دووەم: ژێدەرەکان(سەرچاوە نوییەکان)**

**بە زمانی کوردی**

**نیا، ئومێد بەهرامی**

- مێژووی کوردەکانی جەزیرە، و:عەبدوڕەحیم مەعرفتی، بڵاوکردنەوەی پرۆژەی تیشک، (ب.ش.چ: ٢٠٠٩ز).

**محەممەد، ئاکۆ بوڕهان**

- میرنشینە کوردییەکانی سەردەمی عەباسی، چاپخانەی چوارچرا، (سلێمانی: ٢٠١٨ز).

**یاسین، هەمزە کاکە**

- حەلوان لە سەردەمی خەلافەتی عەباسیی تا ڕووخانی میرنشینی عەنازی، چاپخانەی حاجی هاشم، (هەولێر: ٢٠١٣ز).

**شەرەفکەندی، هەژار عەبدولڕەحمان (م١٩٠٠ز)**

- هەنبانەبۆرینە، چاپخانەی سروشت، (تەهران: ١٣٦٩ک).

**خۆشناو، نەریمان عەبدوڵلا**

- ڕێزمانی کوردی، چ٥، چاپخانەی هێڤی، (هەولێر: ٢٠١٣ز).

**ئەنوەر، کەیوان ئازاد**

- کوردستان و کورد لە سەدەکانی ناوەڕاستدا، چاپخانەی پەنجەرە، (تاران: ٢٠١٥ز).

**کورد لە ئینسکلۆپیدیای ئیسلامدا**

- کورد لە ئینسکلۆپیدیای ئیسلامدا، و:حەمەکەریم عارف، دەزگای چاپ و پەخشی سەردەم، (سلێمانی: ٢٠١٠ز).

**خاڵ، شێخ محەممەد شێخ عەلی حاجی شێخ ئەمین (م١٩٨٩)**

- فەرهەنگی خاڵ، چ٢، چاپخانەی ئاراس، (هەولێر: ٢٠٠٥ز)
**تۆفیق، زرار سەدیق**
- کۆمەڵگەی کوردەواری لە سەدەکانی ناوەڕاست، چاپخانەی ڕۆژهەڵات، (هەولێر: ٢٠١٤ز).
**ڕەسووڵ، ئیبراهیم ڕەسووڵ**
- پێکهاتەکانی کوردستان لە سەردەمی عەباسیدا، دەزگای چاپ و پەخشی نارین، (هەولێر: ٢٠٢٠ز).
**حوزنی، حوسێن موکریانی**
- سەرجەم بەرهەمی حوسێن حوزنی، لەچاپدانی دەزگای ئاراس، (هەولێر: ٢٠٠٧ز).
**بە زمانی عەرەبی**
**حسن، أسامة**
- الناصر صلاح الدين، دار الامل، (د.م: ١٩٩٧م).
**رشينايا، ايليا**
- تاريخ ايليا برشينايا، قدم له وعلق عليه: يوسف حبى، مطبوعات مجمع اللغة السريانية، (بغداد: ١٩٧٠م).
**حسن، ابراهيم حسن**
- تاريخ الاسلام السياسى والدينى والثقافى والاجتماعى، ط١٤، مكتبة النهضة المصرية،
**الجميلى، رشيد (ت٢٠٢٢)**
- الاتابكة فى الموصل بعد عمادالدين زنكى، دار النهضة العربية، (بيروت: ١٩٧٠).
**الهسنياني، صالح شێخۆ**
- علماء الكورد و كردستان، مطبعة هاوار، (دهۆک: ٢٠١٢م).
**العبيدي، صلاح حسين**
-الملابس العربية الاسلامية، منشورات وزارة الثقافة و الاعلام، (عراق: ١٩٨٠م).
**الشهابي، قتيبة**
- معجم دمشق التاريخى، منشورات وزارة الثقافة_ فى الجمهورية العربية السورية، (دمشق: ١٩٩٩م).
**كى السترنج**
- بلدان الخلافة الشرقية، نقل الى العربية: بشير فرنسيس و كوركيس عواد، مؤسسة الرسالة، (العراق: د.س).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**الخطيب، مصطفى عبد الكريم**

- معجم المصطلحات والالقاب التاريخية، مؤسسة الرسالة، (بيروت: ١٩٩٦م).

**به زمانى فارسى**

**كسروى، احمد**

- شهريارانى گمنام، چ٢، مؤسسه انتشارات نگاه، (تهران: ١٣٨٨).

**سێیەم: نامەی ماستەر و دکتۆرای بەڵاونەکراوە**

**عزيز، صباح حسن**

- جريمة التهجير القسرى، رسالة ماجستر، جامعة النهرين، ٢٠١٥.

**چوارەم_گۆڤارەکان**

**هەروتیی، مەهدی عوسمان**

- کورد و دیاردەی کۆچکردن لە سەدەکانی ناوەڕاستدا(توێژینەوەیەکی شیکارییە لەبارەی هۆکار و ئەنجامەکانی)، International journal of kurdish studies,vol2/3, December 2016.

**الملخص:**

أن هذه الدراسة التي تقع تحت عنوان(تأثير الهجرة والتهجير على الأقاليم الكوردية في قرني ٥-٦هـ/١١-١٢م) محاولة لمعرفة مدى تأثير هذه الظاهرة على الاقاليم الكوردية والحقيقة ان للهجرة تاريخاً قديما مرتبطا بتاريخ الانسانية فمنذ أن وجد الانسان على هذا الارض ارتبطت الهجرة به ارتباطاً طبيعياً وبمرور الزمن ظهرت أسبابها ونتائجها وتأثيراتها والتي كانت متنوعة.

اختيارنا لهذا العنوان يرجع الى أحداث مهمة وقعت في تاريخ الكورد وتتمثل بنتائجها، والتي لم يكن موضوع بحث مستقل لدى الباحثين بشكل مفصل وأما تحديد قرني (٥-و٦هـ/١١-١٢م) يرجع الى كثرة وقوع الاحداث السياسية والعسكرية في الاقاليم الكوردية.

يتكون البحث من مقدمة وثلاثة مباحث، خصص المبحث الأول لتعريفي الهجرة والتهجير لغة واصطلاحا، وخصص المبحث الثاني للتعريف بالأقاليم الكوردية، وتناول المبحث الثالث تأثيرات الهجرة والتهجير على الأقاليم الكوردية من الناحية السياسية والاجتماعية والعسكرية والعلمية ، واختتم البحث بنتائج توصل اليها البحث وملخص للدراسة باللغتين العربية والانكليزية وقائمة لأهم المصادر والمراجع.

**الكلمات الدالة:.** *الهجرة، التهجير، التأثيرات، الاقاليم الكوردية، السياسية*

**Abstract:**

This study is entitled (The Impact of Immigration and Displacement on the Kurdish Regions in the 5-6 AH / 11-12 AD Centuries, the Political, Social, Military and Scientific Case as a Model), it attempts to find out the extent of the impact of this phenomenon on the Kurdish Region. Humans on this earth were associated with migration naturally. However, with the passage of time, its causes, results, and effects were appeared that was different.

The choice of this title was due to the important events that took place in the history of the Kurds and it was represented by their results. It was not the subject of independent research by researchers in detail.

The current research consists of an introduction and three sections. The first section is devoted to definition of migration and displacement in language and idiomatic. The second section is devoted to definition of the Kurdish regions. The third section deals with the effects of migration and displacement on the Kurdish regions in terms of political, social, military, and scientific aspects. The research concluded with the results of the research and a summary of the study in Arabic and Englishalso a list of the most important sources and references were presented.

**opening words**: *Immigration, displacement, influences, Kurdish regions, politics.*

# شوێنەواری شەدادیەکان لەشاری ئانی لێکۆڵینەوەیەکی مێژووییە

**پ. هـ. د. طارق محمد ئەورەحیم**

زانکوی سەلاحەددین- هەولێر- هەریما کوردستان/ عیراق

**پوختە:**

شوێنەوارە ئیسلامیەکانی شاری ئانی بەشێکی دانەبڕاوی شارستانیەتی ئیسلامین، لەنێو ئەو شوێنەوارە جێماوەدا، شوێنەواری شەدادیەکان بەشێکی گرنگی شوێنەواری شاری ئانی پێکدەهێنێت.

شەدادیەکان لە نێوان ساڵانی ( ٣٤٠-٥٩٥ک./٩٥١-١١٩٩ز. ) میرنشینێکیان لە وڵاتی ئاران دامەزراند و لە شارەکانی وەک دوین و گەنجە و ئانی فەرمانڕەوایی ناوچەکەیان کرد. لە ماوەی فەرمانڕەوایی ئەواندا لە نێوان ساڵانی (٤٥٦-٥٩٥ ک/ ١٠٦٤-١١٩٩ ز) شاری ئانی گەشایەوە، کە شوێنەوارەکانیان هێشتا ماون، وێنەی مزگەوتی مەنۆچەر و بورجە سەربازیەکانی دەوروبەری شار.

ئەم توێژینەوەیە بە سێ تەوەر بابەتەکە ڕوون دەکاتەوە، سەرەتا بە مێژووی بنەماڵەی شەدادیەکان دەست پێدەکات و پاشان مێژووی شاری ئانی لە سەردەمە جیاوازەکاندا کورت دەکاتەوە، بۆ ئەوەی لە دوایین تەوەردا لەسەر ئەو شوێنەوارە جیاوازانە بوەستێت کە دەگەڕێتەوە بۆ سەردەمی شەدادیەکان، وە بە چەند نەخشەو وێنە بابەتەکەی لە پاشکۆدا لە بیری خوێنەر نزیکتر کردۆتەوە، لە کۆتایشدا لیستی سەرچاوەکانی باسەکە تۆمارکراوە.

**وشەی کلیلی:** *بنەماڵەی شەدادی، شاری ئانی، شوێنەواری ئیسلامی، مزگەوتی مەنوچەر، سەلجوقیەکان*

---

**پێشەکی:**

وڵاتی ئاران و شێروان[٤] بە درێژایی مێژوو چەندین نەتەوەو گەل تێیدا ژیاون، یەک لەو گەلانە، گەلی کورد بوە، کە هێندە بەهێزبوون توانیویانە حوکمڕانی ناوچەکە بۆ دەیان ساڵ بگرنە دەست لە سەدەکانی ناوەڕاستدا، لە ڕێگەی ئەو میرنشینانەی دایانمەزراندوە. یەک لەوانە میرنشینی شەدادیە. (رۆس،١٩٩٨، ٢٠/ ٦١٦٢)

شوێنەواری شەدادیەکان لە شاری ئانی هەرچەندە خودی سەرچاوە بەجێماوەکان وەک مزگەوت و شورەو گەرماو و سککەی دراو و شوێنەواری نوسراوی سەر دیوارو منارەو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بورجە سەربازیەکان هەمووی بەڵگەو سەرچاوەی بەردەستی تویژەرن. بەڵام لە هەمان کاتدا تویژەر دەتوانیت بگەڕیتەوە بۆ سەرچاوە کۆن و نوییەکان کە زیاتر بە زمانی عەرەبی و فارسی و تورکی نوسراون،یان بۆ کەسێک شارەزای زمانەکانی ئەرمەنی و گورجی بیت دەتوانیت زانیاری زۆری دەست کەویت لەو سەرچاوانەی سەبارەت بە میژووی شاری ئانی و ناوچەکە نوسراون. لە هەمان کاتدا نوسراو و لیکۆڵینەوەی رۆژهەڵاتناسانیش گرنگن، بەتایبەت رۆژهەڵاتناسە رووسەکان، کە بە حوکمی نزیکی جوگرافیان زیاتر بایەخیان بە میژوو و شوینەوارەکانی شاری ئانی داوە.

وە لە دیارترین ئەو تویژینەوە ئەکادیمیانەی میژووی شەدادیەکانیان تاوتوێ کردوە، بەر لەهەموان دەبیت ئاماژە بە کاریکی رۆژهەڵاتناس مینۆرسکی (م.١٩٦٦ز.) بکریت، کە بریتیە لە لیکۆڵینەوە لە دەستنووسیکی میژوویی بەناوی (باب فی الشدادیة من کتاب جامع الدول) کە لەلایەن میژوونووس ئەحمەد کوڕی عیسی کوڕی لطف الله ناسراو بە مونەجیم باشي، (م.١١١٣ک./١٧٠٢ز.) نوسراوە. مینۆرسکی لەپیشەکی ئەو بەرهەمەیدا ناونیشانی پازدە کتیب و وتار تۆماردەکات، کە لەرۆژهەڵات و رۆژئاوا لەسەر ئەم خانەدانە بڵاوکراونەتەوە. (Minorsky,1953,2-3) هەروەها وەک نامەی زانکۆیی دوو نامەی زانکۆیی هەن، یەکەمیان ماستەرنامەکەی تویژەر ئیسماعیل شوکر رەسولە بە زمانی عەرەبی، (رسول،٢٠٠١) دووەمیش تیزی دکتۆراکەی نەوزاد کەلەشە بەزمانی تورکی. ( Keleş, 2016, 57-304)

شایانی باسە بۆ زانیاری لەسەر زۆربەی لایەنەکانی شاری ئانی دەکریت تویژەر بگەڕیتەوە بۆ ماڵپەڕی ئەلیکترۆنی http://www.virtualani.org/maps/reconstruction.htm کە بەزمانی ئینگلیزی سەرچاوەو زانیاری و وینەی زۆری تیدا دەستەبەر کراوە.

**تەوەرەی یەکەم: ناساندنیکی خانەدانی شەدادی**

خانەدانی شەدادی ناوەکەی دەگەڕیتەوە بۆ موحەممەد کوڕی شەداد کوڕی کرتاک (م.٣٤٤ک.-٩٥٥ز.) کە لەهەلیکی گونجاودا لەساڵی(٣٤٠ک./٩٥١ز.) توانی دەسەڵاتی خۆی بسەپینیت بەسەر شاری دوین لە ناوچەی ئاران لە هەریمی ئەرمەنستان. دوای ئەوەی حوکمڕانی شاری دوین سالار مەرزەبان محمد میری موسافیری (٣٣٠-٣٤٦ک./٩٤٢-٩٥٧ز.) جەنگی دۆڕاند و وەک دیل کەوتە لای بوەیهیەکان (٣٣٤-٤٤٧ک./٩٤٥-١٠٥٦ز.). لەو کاتەدا میر محەممەد شەداد میرنشینی خۆی لە شاری دوینەوە راگەیاند. (رۆس،١٩٩٨، ٢٠/ ٦١٦٢)

پاش وەرگرتنی دەسەڵاتی شاری گەنجە، شەدادیەکان بوونە دەسەڵاتداریکی بەهیزی باشوری ئازەربایجان، پەیوەندی سیاسی لەگەڵ دەوڵەت و میرنشینەکانی دەوروبەریان دروست کرد. بەڵام بە مردنی محمد شەداد لە ساڵی (٣٤٤ک./ ٩٥٦ز.) میرنشینەکە بەشیکی زۆری ئەو ناوچانەی حوکمی دەکرد لەدەستی دا. دواتر ئەبولحەسەن عەلی لەشکری (٣٦٠-



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٣٦٨ك/٩٧١-٩٧٩ز.) بۆ ماوەی هەشت ساڵ لەشاری گەنجەوە فەرمانڕەوایەتی میرنشینەکەی کرد. (Keleş, 2016, 57-304)

پاشان مەرزەبانی برای حوکمڕانی میرنشینەکە دەکات بۆ ماوەی حەوت ساڵ (٣٦٨-٣٧٥ك./٩٧٩-٩٨٦ز.)، بەڵام لەبەر ناکارامەیی لەحوکمڕانیدا میرنشینەکە کەوتە پشێوی، بۆیە لەلایەن فەزلونی برای کوژراو، خۆی حوکمڕانی میرنشینەکەی وەرگرت ، چونکە فەزلون میرێکی بەهێزو کارامە بوو، توانی بۆ ماوەی چل وحەوت ساڵ (٣٧٥-٤٢٢ك/٩٨٦-١٠٣١ز.) میرنشینەکە ببات بەڕێوە، لەسەردەمی حوکمڕانی ئەودا میرنشینی شەدادی گۆڕان و پێشکەوتنی زۆری لە بواری ئاوەدانی و سەربازی بەخۆیەوە بینی. پاش مردنی سێ کوڕی بەداوی یەکدا تا ساڵی (٤٥٧ك./١٠٦٥ز.) میرنشینەکەیان بەڕێوەبرد. دوای ئەوانیش ئەبەلئەسوار شاوەر کوڕی فەزل بوویە میر تا ساڵی (٤٥٩ك./١٠٦٧ز.).( Keleş, 2016, 57-304)

لەدەمی هاتنی سەلجوقیەکان (٤٢٩-٥٩٠ك./ ١٠٣٧-١١٩٤ز.) ڕوەو ئەنادۆڵ، شەدادیەکان بێ راوەستان بوونە هاوکاریان، بۆیە کاتێک سوڵتان ئەلپ ئەرسەلان (٤٥٦-٤٦٥ك./١٠٦٤-١٠٧٣ز.) پاش گەمارۆدانێکی بیست وپێنج رۆژە، لە (٢٣ شەعبانی ٤٥٦ك.) بەرامبەر (١٦ ئابی ١٠٦٤ز.) بە سوپاکەیەوە چوویە ناو شاری ئانی، حوکمی شارەکەی بەو خانەدانە سپارد، فەزلونی دووەم مەنوچەر کوڕی ئەبولئەسوار شاوەری شەدادی بوویە حوکمڕانی شارەکە. ئیتر شاری ئانی لەدەستی شەدادیەکان مایەوە تا ساڵی (٥٩٥ك./١١٩٩ز.)، دواتر کەوتە بن دەستی گورجیەکان، لێرەدا مێژووی میرنشینی شەدادیەکان کۆتایی دێت. (Keleş, 2016, 57-304)

ڕۆژهەڵاتناس مینۆرسکی زۆر بەبایەخەوە باسی حوکمڕانی ئەم خانەدانە دەکات لەو ناوچەیەداو دەڵێت: ((شەدادیەکان بەشێک لە ڕواڵەتەکانی سەردەمی ناوبڕی ئێرانی پێکدەهێنن،ئەگەر چی سەردەمێکی کورتیش بوو، بەڵام زۆر بەبایەخ بوو، چونکە ناوبڕی هەردوو سەردەمی عەرەبی و تورکی بوو)). (Minorsky,1953, 2) .

**تەوەرەی دووەم: ناساندنێک بۆ شاری ئانی**

سەبارەت بە مانای وشەی شاری ئانی و مێژووکەی ڕۆژهەڵاتناسی روسی بارتۆڵد (م.١٩٣٠ز.) پێی وایە ناوی ئانی بۆ ناوی پەرستگای خوداوەندێکی ئێرانی دەگەڕێتەوە بەناوی ئاناهیتا، شارەکە زۆر لەکۆنەوە مرۆڤی لێ ژیاوە بۆیە شوێنی ئاگرپەرستیشی تێدا دۆزراوەتەوە ( ١٩٦٩، ٣/ ١٢) ، ڕۆژهەڵاتناس گی لسترنج (م.١٩٣٣ز.) خاوەنی کتێبی ناودار (بلدان الخلافة الشرقية) تەنها دوو جار لە کتێبەکەیدا ئاماژەیەکی لاوەکی بە شاری ئانی دەکات(١٩٨٥، ١٧٢و ٢١٧) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەرچۆنێک بێت دەکرێت بوترێت، شاری داڕوخاوی ئانی بە دووری چل و پێنج کیلۆ مەتر کەوتۆتە باشوری ڕۆژهەڵاتی ویلایەتی قارس ، نزیکەی ١٤٥٠م لە ئاستی ڕووی دەریاوە بەرزە، لای باشوری رووباری ئارپاچایە کەبەشێکی سنوری ئێستای نێوان وڵاتی تورکیاو ئەرمینیا پێک دەهێنێت. لای رۆژئاوای چەمی بۆستانلەرەو لای رۆژهەڵاتیشی چەمی میغ میغە، ئەوەی دەمێنێتەوە شورەیەکە بە درێژی پێنج کیلۆمەترو نیو، کە لە سەر رووبەرێکی سەد هەکتار شاری ئانی تێدا ئاوەدان کراوەتەوە. (Arslan, 2021, 29)

مێژووی شاری ئانی بۆ سەدان ساڵ بۆ بەر لە زاینی دەگەڕێتەوە، بەڵام بێ دابڕان وەک شارێکی ئاوەدان لەنێوان ساڵانی ( ٣١١-١٦٠٥ز) (Sevindi,2015, 593) چەندین دەسەڵات و شارستانیەتی جیاوازی بە خۆیەوە بۆیە شاری ئانی بە شاری لانەی شارستانییەتەکان ناسراوەو لەبەر زۆری ژمارەی کلێسەکانی بە شاری هەزار و یەک کلێسەپێناسە دەکرێت. (BOY,2019,1312.)

بەر لە هاتنی سوپای ئیسلام بۆ ناوچەکە شانشینی کامسارکانی ئەرمەنی لە نێوان ساڵانی (٣١١-٦٤٠ز) کردویانەتە مەڵبەندی دەسەڵاتیان، تا لە سەردەمی هەردوو خەلیفەی دووەم و سێیەمی راشیدی، (١٣-٣٥ک./٦٣٤-٦٥٦ز.) هەرێمی ئەرمینیا بەگشتی بوویە بەشێک لە سنووری دەوڵەتی ئیسلام.( اسکندر، ١٩٨٣، ٢٥-٥٠)

بەڵام دواتر لە نێوان ساڵانی (٣٥٠-٤٣٧ک./٩٦١-١٠٤٥ز.) شارەکە بوویە پایتەختی فەرمانڕەوای خانەدانی باگراتیدی ئەرمەنی . شارەکە گرنگی سیاسی و ئاینی و ئاوەدانی زیاتری پەیدا کرد، بۆیە شورەی شارەکە لە نێوان هەردوو رووباری میگ میگ و روباری بۆستانلار قایمتر کرا، بورجەکان بەبەرزی هەشت بۆ دە مەتر بەرزکرایەوە. (TÜYSÜZ,2017,847-848) .(Arslan. 2021,34-44)(پاشکۆی وێنەی شورەی شار).

بەڵام لەساڵی (٤٣٧ک./ ١٠٤٥ز.) بێزەنتیەکان (...-٨٥٧ک./ ٣٩٥-١٤٥٣ز.) شارەکەیان لە بندەست ئەرمەنەکان دەرهێناو کردیانە بەشێک لە ئیمپراتۆریەتی بێزەنتی. ئەم پێشهاتەش بوویە هۆکارێک تا شارەکە لەبەردەمی گەمارۆی سەلجوقیەکان خۆ نەگرێت، چونکە بێزەنتیەکان بەپێی پێویست بەرگریان لەشارەکە نەکرد، خەڵکی ئەرمەنی شارەکەش لەبەر ناکۆکی مەزهەبیان لەگەڵ بێزەنتیەکان دەیانویست لەژێر دەسەڵاتی ئەوان دەرباز ببن. (اسکندر،١٩٨٧، ٦-٧) جا کەوتنی شاری ئانی لە (٢٣ شەعبانی ٤٥٦ک.) بەرامبەر (١٦ ئابی ١٠٦٤ز.) بوویە خاڵێکی وەرچەرخانی مێژوویی بۆ وڵاتی ئەنادۆڵ، بۆیە لەلایەن مێژوونووسانی موسڵمان و سریانی و ئەرمەنی و بێزەنتیەکانەوە وەک ڕووداوێکی کاریگەر بایەخی پێدراوە. (اسکندر،١٩٨٧، ٩-٢٥)

وەک لەسەرەوە باسکرا سەلجوقیەکان حوکمداری شارەکەیان بە شەدادیەکان سپارد، ئەم خانەدانە کوردە خاوەن هێزو ئەزموونە لە ناوچەکەدا ساڵانێکە لەشاری دوین و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

گەنجەش فەرمانڕەوان، بۆیە توانیان بە گیانێکی لێبوردەیی و پێکەوە ژیان، لە نێوان ساڵانی (٤٥٦-٥٩٥ک./١٠٦٤-١١٩٩ز.) حوکمڕانی شاری ئانیش بکەن و ئاوەدانی بکەنەوە، کە تا ئێستاش بەشێک لە شوێنەواری تەلارسازی سەردەمی ئەوان لە شارەکەدا ماوە. (Keleş, 2016, 57-304) (اسكندر،١٩٨٧، ٧)

بە گوێرەی رۆژژمێری کۆچی حوکمڕانی شەدادیەکان لە شاری ئانی نزیکەی سەدو چل ساڵی خایاند، میر مەنوچەر نزیکەی چل و هەشت ساڵ حوکمی کرد، (٤٥٦-٥٠٤ک./١٠٦٤-١١١٠ز.). کە لەسەردەمی ئەم میرەدا ئانی وەک شارێکی ئاوەدان و مەڵبەندێکی بازرگانی دەرکەوت. (Minorsky,1953, 82). دواتر ئەبولئەسوار شاوەری کوڕی جێگەی باوکی گرتەوە تا ساڵی (٥١٨ک./ ١١٢٤ز.) پاش گرتنەوەی شارەکە بۆ ماوەیەک لەلایەن گورجیەکان فەزلونی کوری ئەبولئەسوار لەنێوان ساڵانی (٥١٩-٥٢٦ک./ ١١٢٥-١١٣١ز). توانی شارەکە بگەڕێنێتەوەو ببێتە میری شەدادیەکان لە شاری ئانی. دواتریش چوار میری تری شەدادی بەدوای یەکدا دێن تا ساڵی (٥٥٦ک./ ١١٦١ز.) حوکمداری میرنشینەکە دەکەن، بەڵام لەبەر فشارو هێرشی گورجیەکان، شاری ئانی دەکەوێتەوە دەست گورجیەکان کە لە ئیمپراتۆریەتی بیزەنتیەوە پشتیوانی دەکران. (Minorsky,1953, 84-86).

بەڵام بە یارمەتی سەلجوقیەکان جارێکی تر شارەکە گەڕایەوە بۆ شەدادیەکان، وە لە نێوان ساڵانی (٥٥٩-٥٩٥ک./١١٦٤- ١١٩٩ز.) دوو میری شەدادی فەرمانڕەوایی شارەکەیان کردەوە، (بڕوانە پاشکۆی ناوی میرەکانی شەدادی) بەتایبەت سوڵتان کوڕی مەحمود کوڕی شاوەر شەدادی (رۆس، ١٩٩٨،٢٠/ ٦١٦٤)، لەبەرئەوەی ئەم میرە ئاوەدانیەکی زۆری بۆ شارەکە گەڕاندەوە، بۆیە بە میر ئەبولموعەممەر (واتە: ئاوەدانکار) نازناوی دەرکرد، مزگەوتێکیشی بەو ناوە دروست کرد، کە یەکێکە لە شوێنەوارە دیارەکانی شەدادیەکان. بەڵام شارەکە بەیەکجاری لە ساڵی ( ٥٩٥ک./١١٩٩ز.) دەکەوێتە دەست گورجیەکان، لەو ساڵە بەدواوەش کۆتایی بە میرنشینی شەدادی دێت لە ناوچەکەدا.( Kırzıoğlu, 1953,402) (Arslan. 2021,54-65)

شایانی باسە پاش نزیکەی چل ساڵ لە دەسەڵاتی شەدادیەکان، لێشاوی مەغۆلەکان شاری ئانیش دەگرێتەوە، بۆیە لە نێوان ساڵانی (٦٣٦-٧٥٩ک./ ١٢٣٩-١٣٥٨ز.) شارەکە لە بن دەستی مەغۆلەکان بووە، دواتر بنەماڵەی قەرەقۆینلۆ لە نێوان ساڵانی (٧٨٢-٨٧١ک./ ١٣٨٠-١٤٦٧ز.)، پاشان دەوڵەتی ئاق قۆینلۆش لە نێوان ساڵانی (٨٧١-٩١٤ک./١٤٦٧-١٥٠٨ز.) شارەکەیان گرتە دەست، تا لەسەردەمی سوڵتان سولەیمانی قانونی (٩٢٦-٩٧٤ک./١٥٢٠-١٥٦٦ز.) بویە بەشێک لە دەوڵەتی عوسمانی (٦٩٨-١٣٤٢ک./١٢٩٩-١٩٢٣ز) Arslan. 2021,54-65. BOY,2019, 1303-1308



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شاری ئانی سەرباری ڕۆڵی ئاینی و سیاسی و سەربازی بۆ سەردەمانێکی درێژ ڕۆڵی کاروانسەرایەکی بازرگانی دەبینی لەسەر ڕێگای ئاوریشم، لە نێوان ئێران و ئازەربایجان و هەرێمی دەریای ڕەش، بەڵام ئەم شارە کەوتۆتە ناوچەیەک بوومەلەرزەی زۆر لێی دەدات، بەتایبەت بوومەلەرزەیەکی بەهێز کە لەساڵی (١٠١٤ک./ ١٦٠٥ز.) بەر شارەکە کەوت، بویە هۆکاری ئەوەی شارەکە ببێتە وێرانەو ژیان تیایدا نەمێنێت. (BOY,2019, 1303) ( Arslan, 2021, 54-65) بۆیە گەریدەی ناودار ئۆلیا چەلەبی (م.١٦٨٢ز.) لەکاتی چوونی بەرەو شاری یەریڤانی -پایتەختی ئەمڕۆی ئەرمەنستان- لە ساڵی (١٠٥٧ک./ ١٦٤٧ز.) شاری ئانی وەک وێرانەیەک وەسف دەکات. (ÇELEBI,1970, 2)/٣٣٦

هەڵبەتە ئەم شارە هەرچەندە زیاتر لە چوار سەدەیە وێرانەیە، بەڵام گرنگی مێژوویی خۆی هەیە بۆ وڵاتێکی وەک تورکیا کە بەشێکە لەمێژوو و جوگرافیاکەی، بەڵام بۆ وڵاتێکی وەک ئەرمینیا گرنگی سیاسی و ئاینیشی هەیە، چونکە سەردەمێک پایەختی سیاسی و ئاینی ئەرمەنەکان بوە. ئەمەش بە ڕوونی تێبینی دەکرێت لە مۆزەخانەی نیشتیمانی لە شاری یەریڤان کە چۆن شوێنەواری شارەکە پیشان دراوە لە نەخشەیەکی سێ لاییدا، پلانیان چۆنە بۆ دووبارە بنیتنانەوەی شارەکە، کە هیچ منارەیەکی مزگەوت لە شارەکەدا نیە، بەڵام هەر کلێسایەک هەبێت یان بووبێت وێنەی کێشراوە.( بڕوانە پاشکۆی نەخشەی شار). هەروەها لەسەر وێنەی ئەو پولە فەرمیانەی هەن لە ئەرمینیا وێنەی کلێسای گەورەی شاری ئانی لەسەر دانراوە. هەروەها لە ناو ئەدەب و کەلتوری خەڵکی ئەرمەندا ناوی ئانی ئامادەیی هەیە لە شیعرو ڕۆمان ، هەروەکو ناوێکە بۆ کچان و بۆ بەرهەم و مارکە بەناوبانگەکان[٦].

**تەوەرەی سێیەم: شوێنەوارەکانی سەردەمی شەدادی لە شاری ئانی**

ناوبانگی مێژویی و بوونی چەندین شوێنەواری سەردەمە جیاوازەکانی شاری ئانی سەرنجی گەریدەکانی راکێشاوە، لەسەردەمە جیاوازەکاندا گەریدەی ڕۆژئاوایی زۆر یادداشتی خۆیان لەسەر شوێنەوارەکانی ئەم شارە تۆمار کردوە. لە نێوان ساڵانی(٦٥٣-١٣٨٥ک./١٢٥٥-١٩٦٧ز.) زیاتر لە شازدە گەڕیدە لەسەر شوێنەوارەکانی ئەم شارە تێبینی خۆیان یادداشت کردوە، بەڵکو بەشێکیان بەر لەسەردەمی کامێرا وێنەی شوێنەوارەکانیان دەکێشا، لەوانە ڕۆژهەڵاتناسی فەرەنسی م.ف. بروسیت (م.١٨٨٠ز.). دواتر بە کامێرا وێنەی شوێنەوارەکان گیراون، هەشیانە ئەوەی دیویانە لەو شارە بەشێوەی ڕۆمان بڵاویان کردۆتەوە.[7]

پیاوانی ئاینی ئەرمەنی لەهەموان زیاتر پەرۆشی شوێنەوارەکانی شاری ئانی بوون، بۆیە لەساڵی ١٨٤٨ز. داوایەک پێشکەشی سوڵتان عەبدولمەجیدی یەکەم (١٨٢٣-١٨٦١ز.) دەکەن بۆ ئاوەدانکردنەوەی شارەکە، بەڵام دوای هەڵسەنگاندنی پرۆژەکە، لەبەر هۆکاری



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

زۆری خەرجیەکەی بۆ ئەو سەردەمەی دەوڵەتی عوسمانی، داواکەیان نەکەوتە بواری جێبەجێکردنەوە.(Arslan, 2021,67)

سەردەمێک کە ئەو ناوچەیە لە ژێر دەسەڵاتی دەوڵەتی روسیا بوو[8]، دەستەیەک لە پسپۆڕانی زانکۆی سانت پترۆسپۆرگی روسی دەستیان بە گەڕان و کنەکاری کردوە، بە سەرۆکایەتی رۆژهەڵاتناس و شوێنەوارناس نیکۆلای مار (م.١٩٣٤) لە ساڵی (١٨٩٢-١٨٩٣ز.) پاشان هەمان دەستە لەنێوان ساڵانی (١٩٠٤-١٩١٧ز.) لەئەنجامی ئەم کنەکاریە شوێنەواری جۆراو جۆر لە دیواری شورەی شارو پەرستگە و کڵێسەو مزگەوت و گەرماو و خەزێنەی ئاو و کۆشک و رێگاو بان و خان و بازاڕ و کێلی گۆڕی شازادەکان دیاری دەکات، کەلەو نەخشەیەی کێشاویەتی بۆ شوێنەواری ناو شارو دەوروبەری سەدوحەڤدە شوێنەواری دەستنیشان کردوە، کە بەلێدانی ئەم لینکە[9] نەخشەکە دەردەکەوێت. (Watenpaugh,2014, 529)

پسپۆڕانی زانکۆکانی تورکیاش لەساڵی ١٩٤٤ز. بەدواوە پشکنین و لێکۆڵینەوەکانیان بەردەوام بوە لەسەر شوێنەواری ئەم شارە. بەتایبەت ئەو کنەکاریەی زانکۆی هاجەت تەپە لە نێوان ساڵانی (١٩٨٩-٢٠٠٥ز.)بەسەرۆکایەتی پرۆفیسۆر بەیهان کەرەمئاغالاری ئەنجامی باشی لێوەدەرکەوت. لە دوای ساڵی ٢٠٠٦ز. یشەوە بەڕێوبەرایەتی مۆزەخانەی شاری قارس و زانکۆی قەفقاسیای ئەو شارە کاری کنەکاری لە شاری ئانیدا گرتۆتە ئەستۆی خۆی.(Arslan, 2021,69-75)

لە دەرئەنجامی ئەو کنەکاریانەی کە باسکران، شوێنەوارە بەجێماوەکانی سەردەمی شەدادیەکان لەو شارەدا، دەکرێت بەم جۆرە دابەش بکرێت:

**یەکەم: شوێنەواری مزگەوتەکان**

لەدیارترین شوێنەواری پەرستگەی بەجێماوی شەدادیەکان لە شاری ئانی دەکرێت باس لە سێ مزگەوت بکرێت کە دروستکردنەکەی بۆ سەردەمی ئەو خانەدانە دەگەرێنرێتەوە، لەوانە:

**١.شوێنەواری مزگەوتی مەنوچەر**

یەک لەو شوێنەوارانەی تا ئێستا ماوە مزگەوتی مەنوچەرە، کە لە باڵەخانەیەکی دوو قاتی پێکدێت و دەکەوێتە ناو قەڵای ناوەوەی شارەکە، بەجۆرێک لەلای رۆژهەڵاتیەوە دەڕوانێت بەسەر رووباری ئارپا چایدا. گەڕیدەو رۆژهەڵاتناسان نووسینەکانی سەر دیواری بەشی رۆژئاوای مزگەوتەکەیان بەر لە ڕووخانی خوێندۆتەوە، کە لەو نووسینەدا کە بەخەتی کوفی گوڵدار ئەمەی خوارەوە نوسرابوو:

بسم الله الرحمن الرحيم امر ببناء هذا المسجد والمنارة الامير الاجل شجاع الدولة ابو شجاع منوجهر بن شاور في دولة مولانا السلطان المعظم شهنشاه الاعظم ابي فتح ملك شاه بن الب أرسلان. (بڕوانە پاشکۆی مزگەوتی مەنوچەر)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەرچەندە لەم نووسینەدا ساڵی دروستکردنی لەسەر نیە، بەڵام ناوی میری شەدادی میر مەنوچەر کوڕی شاوەر. هەروەها ناوی مەلیک شای کوڕی ئەلب ئەرسەلان دەرباز دەبێت، دەتوانرێت ساڵی دروستکردنەکە لە نێوان ساڵانی (٤٧٨-٤٨٥ک./ ١٠٨٦-١٠٩٢ز.) مەزەندە بکرێت، چونکە مەلیک شاە لەو ماوەیەدا حوکمڕانی کردوە. (Erdal, 2019,132-133)

هەروەها لەسەر هەمان دیوار نووسراوێکی درێژ هەبوە بە زمانی فارسی: لەشێوەی باندێکی ئاسۆیی درێژدا نووسراوێکی تەواونەکراو هەبوە کە دەڵێت میر مەنوچەر مزگەوتەکەی دامەزراندوە، لەخوار ئەم نوسراوە فارسیەش نووسراوێکی پارچەپارچە هەبوە بە زمانی ئەرمەنی وجۆرجی.( Erdal, 2019,130 )

لەو مزگەوتە دووو قاتیەدا کە بە بەردی سورو رەش دروست کراوە، قاتی یەکەمی لە چوار بەش پێکهاتووە وەک خوێندگە بەکارهاتوە، لە چوار پەنجەرەی گەورەوە دەڕوانێت بەسەر روبای ئارپاچایدا. سەقف وگومەتی مزگەوتەکە بەنەخشی بەردینی جیاواز لەسەری دەبینرێت. لەپاڵیدا منارەیەکی هەشت لا بەبەرزی نەوەدو نۆ پلەکانە دروست کراوە (بڕوانە پاشکۆی مزگەوتی مەنوچەر)(YILDRIM,2010,107-109)

هەروەها لە سەر منارەی مزگەوتی مەنوچەر لە بەری رۆژئاوای منارەی مزگەوتەکە بە خەتی جەلی سولس لە یەک دێڕدا بەبەردی سپی نوسراوە (بسم الله) هێندە بە گەورەیی نوسراوە ، بەتایبەت پیتی (ب) لە شێوەی پیتی ئەلیف بە ئەندازەی ٥٢ سانتیم درێژ کراوەتەوە هەر لەدوورەوە سەرنجی تەماشاکار ڕادەکێشێت، لەسەر پیتی (س) وێنەی بەردێکی ڕەنگ سوور لە شێوەی گوڵی لالە دەبینرێت. شایانی باسە لەسەر منارەکە هیچ نوسراوێکی تر نیە، وەک ساڵی دروستکردن و کێ دروستی کردوە، (بڕوانە پاشکۆی مزگەوتی مەنوچەر) بەڵام بە گوێرەی نوسراوی سەردیواری مزگەوتەکە کە وشەی (المنارە) شی تێدابوو، روون دەبێتەوە کە منارەکەش لەگەڵ مزگەوتەکە لە ساڵانی (٤٧٨-٤٨٥ک./١٠٨٦-١٠٩٢ز.) لەسەردەمی میر مەنوچەر دروستکراوە..(Erdal, 2019,134-135)

لەگەڵ ئەمەشدا بەشێک لە نووسەرانی ئەرمەن پێیان وایە کە بینای ئەم مزگەوتە پێش لە هاتنی سەلجوقیەکان هەبوە، لە بنەڕەتدا کۆشکێک یان کلێسایەکی کۆن بووە و دواتر گۆڕدراوە بۆ مزگەوت. بەڵام لەراستیدا رای سەرەوە زیاتر جێگەی باوەڕە، چونکە تەلاری بیناسازی مزگەوتەکە هیچ بە تەلاری کڵێسا ئەرمەنیەکانی ئەو سەردەمە ناچێت، بەڵکو بە پێچەوانەوە زۆر بە تەلاری سەردەمی سەلجوقیەکان دەچێت. (KARAKAYA, 2004,29/156)

**٢.شوێنەواری مزگەوتی ئەبو موعەممەران**

ئەم مزگەوتە لەلایەن میری شەدادی سوڵتان کوڕی مەحموود کوڕی شاوەر شەدادی بوو کەناسراوە بە میر ئەبولموعەممەر دروستکراوە، بۆیە بە یەکێک لە شوێنەوارە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دیارەکانی شەدادیەکان دادەنرێت، کە کەوتبوە باکوری مزگەوتی مەنوچەر، لەسەر شەقامی سەرەکی بازاری شاری ئانی بنیات نراوە، بەگوێرەی وەسفی گەریدەکان مزگەوتێکی گەورە بوە جێگەی پەرستش و خوێندنی لەخۆ گرتبوو. (Erdal,2010,124)

لەسەر دیواری رووخاوی مزگەوتەکە چەند دێڕێک بە فارسی نوسراوە کە ناوی شەدادی تێدا دەرباز دەبێت. مزگەوتەکەش لە ساڵی ١٩١٧ز. بەیەکجاری رووخێنرا ( بڕوانە پاشکۆی مزگەوتی ئەبولموعەممەران). منارەی مزگەوتەکەش وەک منارەی مزگەوتی مەنوچەر هەشت لا بوە، بەڵام لەو بەرزتر بوە وە لەسەر منارەکە نوسراوێک هەبوە کە مێژووی بنیاتنانی منارەکەی بۆ ساڵی (٥٩٥ک./ ١١٩٩ز.) نیشان دەدا. شایانی باسە ئەم منارەیە نزیکەی حەوت سەد ساڵ بەرگەی هەموو ئەو زەمینلەرزانەی گرت کە لەمێژووی ناوچەکەدا روویداوە. بەڵام لەو چل ساڵەی شارەکە لە ژێر دەسەڵاتی دەوڵەتی روسیا بوو، یەک لەپیاوانی ئاینی ئەرمەنی لەساڵی ١٨٩٤ز. بەدینامیت منارەکەی رووخاندوە.( YILDRIM,2010, 111) (بڕوانە پاشکۆی مزگەوتی ئەبولموعەممەران)

شایانی باسە میسیۆنێری فەرەنسی ئێگۆنە بورە (م.١٨٧٨ز.) کە بە ناوچەکەدا بەکاری میسیۆنێری خەریک بوە، لەساڵی ١٨٣٨ز. سەردانی شاری ئانی کردوەو، نوسراوی سەر منارەکەی تۆمار کردوە کە بریتی بوە لە حەوت دێڕ بەزمانی فارسی بەخەتی کوفی و دێڕێکیش بە زمانی ئەرمەنی، کە ئەمەی خوارەوەی لەسەر نوسراوە: Erdal, 2016, 485-486) ( Eser,2019,2157) )

١. سلطان بن محمود بن شاور بن منوچهر من کی
٢.الشدادی از برای جان درازی جدو فرزندانم
٣.چنان فرمودیم کی پنبه فروشی و قطانی ازین سر
٤.است خریدکی مسجد ابو المعمران است تا بدکان کو سبیل
٥.وفروخت هم اینجا فرمودیم کی بکنند هر کی درین فرمان
٦.طعنه زند در خشم خدای (عز) و تعالی گرفتار باشد
٧.فی تاریخ خمس وتسعین وخمسمایه
٨. دێڕێک بە زمانی ئەرمەنی هەبوە

بە کورتی و بە کوردی: من کە سوڵتان مەحمود کوڕی شاوەر کوڕی مەنوچەری شەدادیم، بۆ بەردەوامی گیانی باپیرو کوڕەکانم فەرمانمان کردوە: پەمووکەتان فرۆشی بۆ خەرجی مزگەوتی ئەبو لموعمرانە بەڵکو هەرچی مامەڵەی دوکانە خێرەکەی بۆ مزگەوتە، هەروەکو وتوومانە هەرکەسیش تانە بدات لەم فەرمانە و پێچەوانەکەی بکات، بە خەشمی خودای بەهێزو باڵا گرفتار بێت. لە ساڵی ٥٩٥ک./١١٩٩ز.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**٣. شوێنەواری مزگەوتی حەمزە خۆجە کوڕی قوبادشا کوڕی مەحمود**

لێکۆڵەران بەگوێرەی شوێنەوارە نووسراوەکانی نێو شارەکە گەشتوونەتە ئەو ئەنجامەی کە مزگەوتێک هەبوە لە ساڵی ٤٦٥ک./١٠٧٣ز. بنیات نراوە بە ناوی حەمزە خۆجە، کە بە زمانی عەرەبی و خەتی کوفی چەند نوسینێک هەیە ئاماژە بەو زانیاریانە دەکات، بەڵام تا ئێستا بەتەواوی جێگای مزگەوتەکە دەستنیشان نەکراوە. ( Arslan, 2021, 125-126)

دەکرێت ئەوەی رۆژهەڵاتناسی روسی ن.مار دۆزیویەتیەوە، پەیوەندی ببێت بەو منارەو مزگەوتەوە. کە لەسەر دوو بەردی هەڵکۆڵراوی شکاو کە بەزمانی عەرەبی بە خەتی سولس لە دوو ڕیزدا لەچوار چێوەیەکی لاکێشەییدا نوسراوە:

منارة هذ الجدار لبيت الله

رحمه الله عالي بن سعيد

بەگشتی ئەم شێوە نووسینە دەگەرێتەوە بۆ سەردەمی حوکمڕانی شەدادیەکان. (Erdal,2016,129)

**دووەم: شوێنەواری نووسراو لەسەر باڵەخانەی کریستانەکان**

نووسراوی کڵێسەی سەنت پۆرکیتچ لە باکووری ڕۆژهەڵاتی شاری ئانیە و لە ساڵی (٤٢٨ک./ ١٠٣٧ز.) لەلایەن شازادە ئەبولغرێب پەهلوڤانی بنیاتنراوە ، لەکۆی پێنج نووسراوی ئەرمەنی لەسەر ڕووپۆشەکانی بیناکە یەکێک لەو نووسراوانە لە سەر دەروازەی ڕۆژئاوای کڵێساکە دەگرێتەوە بۆ سەدەی دوازدەهەمی زاینی.

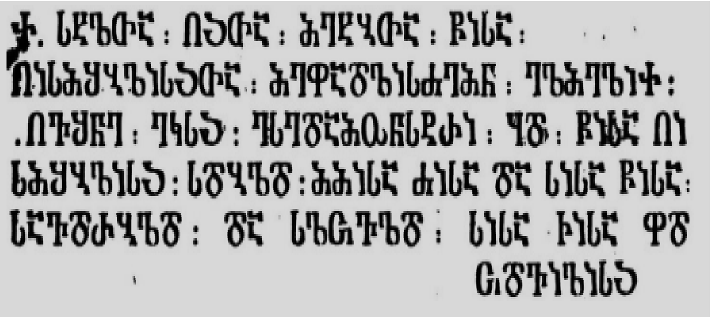

مانای نووسراوەکە:

لەسەردەمی بارسێگدا کە خوداو ڕۆحە پیرۆزەکان شەرەفمەندی کردوە، خاوەن ناوبانگی باش نەوەی مەنوچەر میر موحەممەد کوری میر لە رۆژانی حوکمڕانیدا لە ساڵی (٥٨٩ک./١١٩٣ز.) مـن سۆستەنس کوری قەشە ترداد، سەرۆک قەشەی ئارانوچ و نەوەی گیڤرۆک و خێزانم خزمەتکاری عیسا، خودا بە میهرەبانی خۆی ئەرکی خۆمانمان زانی، بۆیە لە میراتی خۆمان پارەیەکی زۆرمان بە هەوڵ و تێکۆشانەوە هۆڵێکمان دروستکرد بە

مەبەستی پێشوازی و لەخۆگرتنی کەسانێک لەسەفەرەوە دێن بەزستان یان بە هاوین بۆ کلێسا.(Erdal,2019,136)

لە دەقەکەدا بە ڕوونی ناوی میرموحەمەد نەوەی میر مەنوچەر هاتوەو ساڵی دروستکرنیشی تێدایە. ئەمەش بەڵگەیەکی ئاشکرایە لەسەر باری پێکەوەژیان و تەبایی نێوان ئاینەکان لەسەردەمی فەرمانڕەوایی شەدادیەکان لە شاری ئانی.

**سێیەم: شوێنەواری سەربازی**

شارەکە لەسەر شێوازی سێگۆشەدا بە شورەیەک دەورە دراوە، کە لەبەشی ڕۆژهەڵاتەوە روباری ئەرپاچایەوە دەست پێدەکات تا ڕۆژئاوای شار کە رووبار بۆستانجی بەتەنیشتیدا دەڕوات، واتە شورەکە کەوتۆتە نێوان ئەو دوو ڕووبارەوە، هەشت دەروازەو قاپی تێدایە.

**١. دەوازەی سەرەکی ناسراو بە ئەرسلان کاپی**

لەکاتی فەتحکردنی شارەکە لەلایەن ئەلپ ئەرسەلان لە ساڵی٤٥٦ک/ ١٠٦٤ز. شورەی شار لەچەند لاوە رووخابوو، میر مەنوچەری شەددادی هەستا بە نۆژەنکردنەوەو قایمکردنی زیاتری شورەکە، یەک لەو جێگانەی نۆژەنی کردەوە دەوازەیەکی سەرەکی بوو ناوی لێنا ئەرسلان کاپی، لەسەر دەروازەکە جگە لە دانانی وێنەی شێرێکی لەبەرد هەڵکۆڵراو لەسەر بورجی لای راستی تەنیشت دەوازەکە لەسەر بەردێک لە چوار دێڕدا بە خەتی کوفی ئەم چوار دێڕەی لەسەر بەردی هەڵکۆڵراو داناوە: (بڕوانە پاشکۆی شوێنە سەربازیەکان)

بسم الله الرحمن الرحيم

أمر ببناء هذا البرج الأمير الأجل

المنصور شجاع الدولة أبو

شجاع منوجهر بن شاور

لەسەر بەردەکە مێژووی ئەم فەرمانە نەنوسراوە، تەنها ناوی میر مەنوچەری شەدادی نوسراوە، بۆیە دەتوانرێت بوترێت لە نێوان ساڵانی (٤٥٦-٤٥٨ک./ ١٠٦٤-١٠٦٦ز) ئەو بورجە نۆژەنکراوەتەوە.(Erdal,2019,130)

میر مەنوچەر جگە لەمەش لەرۆژهەڵاتی دەروازەکەوە دوو بورجی بۆ شورەکە زیادکردو لەسەر بورجەکە وێنەی تاشراوی دوو ئەژدیاو سەری گایەکی قۆچداری داناوە. ، هەروەها لەجێگاکانی تریش شورەی شاری قایم کرد. (YILDIRIM, 2010,94) (بڕوانە پاشکۆی شوێنە سەربازیەکان)

**٢. دەرگای قەڵای ناوخۆ**

شـەدادیەکان لەو ناوچـانەی حوکمڕانیـان کـردوە لەسـەر ئەو بینـا سـەربازیانەی دروستیان کردوە نوسراویان جێهێشتوە. لەوانە چەند نوسراوێک هەن لەسەر دەرگای قەڵای ناوخۆ  ئەم چەند دێڕە نوسراوە:

أمر ببناء هذا الباب في أوائل ربيع الأول:

فەرمانی کرد بە دروستکردنی ئەم دەرگایە لە سەرەتاکانی رەبیعی یەکەم

الأمير الأسب سالار فخر الدين شداد : میر ئەسپ سالار  فەخرەدین (شەداد)

بن محموود بن شاور بن منوجهر حسام أمير المؤمنين :

کوڕی مەحمود ،  کوڕی شاوەری کوڕی مەنوچەهر  شمشێری میری باوەڕداران.

لەبەر ئەوەی لەسەر بەردە هەڵکۆڵراوەکە هیچ ساڵێک نەنوسراوە، تەنها ناوی فەخرەدین مەحمود شاوەر هەیە. دەکرێت بگەرێتەوە بۆ  بەر لە ساڵی (٥٥٠ک./١١٥٥ز.) . چونکە لەم ساڵەدا فەزل کوڕی مەحمود جێگەی فەخرەدین برای گرتەوە.   . (Erdal,2019,131)

**٣. لە باکوری رۆژئاوای شار  بورجێک دروستکراوە لە لایەن دەوڵەمەندێکی ئەرمەنی شاری ئانی، لە سەر بورجەکە لەسەر بەردێک بە زمانی ئەرمەنی نوسراوە:**

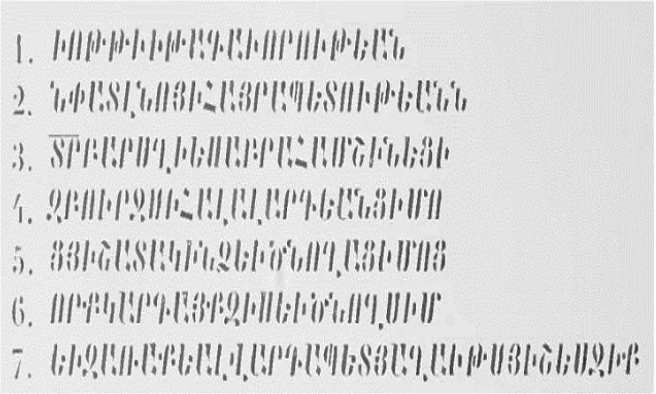

بە کورتی واتە:  لە سەردەمی  حوکمڕانی فەدلۆن (٥٥٠-٥٥٦ک./ ١١٥٥-١١٦١ز.) و بارسەگی کاسۆلیکدا ، من ئەبراهام، بۆ یادی خۆم و بنەماڵەکەم، ئەم بورجەم بە دەرامەتە حەڵاڵەکانی خۆم بنیاد ناوە. با خوێنەرانی لە نزاکانیان یادی من و بنەماڵەکەم و ڤارداپێت ئەراکیل بکەن.(Erdal,2019,132)

وادیارە لە سەردەمی میر فەزلون ی شەدادی واتە لە ساڵی (٥٥٤ک/١١٦٠ز) پارەدارێکی ئەرمەنی شاری ئانی هەستاوە بەم نۆژەنکردنەوەیە. ئەمەش ئاماژەیە بۆ تەبایی و پێکەوە ژیانی نێوان دانیشتوانی شارەکە لە سەردەمی حوکمڕانی شەدادیەکاندا.

**چوارەم: شوێنەواری گەرماو لە شاری ئانی**

شـوێنەواری دوو باڵەخـانە دۆزراوەتەوە کە وا دیـارە گەرمـاو بـوون و لە سـەردەمی شەدادیەکاندا دروست کراوە، ئەوانیش بە گەرماوی گەورە و گەرماوی بچووک ناسراون.

**١.گەرماوی گەورە**

دەکەوێـتە بـاکوری رۆژهەلاتـی مزگەوتـی ئەبولمـوعەمەران کە بەتەواوی دوای رووخانی کەوتبوە ژێر خاک تا لەدوای کنەکاری پرۆفیسۆر کەمال باڵکان و هاورێکانی لەساڵی ١٩٦٦ز. دۆزرایەوە. بەپێی زانیاریە مێژووییەکان لەساڵی (٥٣٧ک./ ١١٤٣ز.) ئەم گەرماوە هەبوە، هەرلەناو ئەو کنەکاری شـوێنەواری گەرمـاوەکەدا سـککەی پارەیەک بینـراوەتەوە کە لەڕوویەکی ناوی مەلیکشا ولە روویەکی ناوی مەنوچەر نوسراوە. کە ئەمانە دەکرێت ببنە بەڵگەی ئەوەی کە ئەم گەرمـاوە لەنێوان سـالانی (٤٦٤-٤٨٣ک./ ١٠٧٢-١٠٩٠ز.) دروسـت کرابێـت. لەبنـاغەی گەرمـاوەکە بەشـەکانی وەک شـوێنی سـاردو گەرم و کوڵخـان وبەشـەکانی تـر دەناسـرێتەوە، کە چـوار ژووری گەرمـی گشـتی و چـوار ژووری بچـووک دەناسرێتەوە.(بڕوانە پاشکۆی گەرماوەکـان) (BALKAN,1970,40-41). (ESER, 2019, 2158)

**٢.گەرماوی بچوک**

دەکەوێتە باکوری رۆژهەلاتی شاری ئانی، کە بچوکترە لە گەرماوی یەکەم بەلام بەهەمـان شـێوە هەمـوو بەشـەکانی گەرمـاوی تێـدا دەناسـرێتەوە. هەرچەنـدە تـا ئێسـتا شوێنەوارێکی نوسـراو نەدۆزراوەتەوە، بەلام بەوەی وێـنەی گەرمـاوی یەکەمە هەرلە سـەردەمی شـەدادیەکان دروسـت کرابێـت.(بڕوانە پاشـکۆی گەرماوەکـان). (ERDAL,2010,132) (CENGIZ,2008,65-66) (ESER, 2019, 2159).

**پێنجەم: شوێنەوار و نوسراوی سەر گۆڕەکان**

نوسـراوی سـەر کێلـی گـۆڕە کۆنەکـانی شـاری ئـانیش لایەنێکـی مێژوویـی وشـوێنەواری سـەردەمە کۆنەکـان دەخەنە ڕوو، ئەوەی دۆزراوەتەوە لە بەردە هەڵکۆڵراوەکـانی سـەر کێلەکـان کە پیشـانی دەدەن ئەو گـۆڕانە بـۆ سـەردەمی حـوکمڕانی شـەدادیەکان دەگەڕێتەوە.،(Erdal,2019,137-139) لەوانە:

**١.گۆڕی عەلائەددین**

لەسـەر جێگەیەکـی بەرز لە باشـوری ڕۆژئـاوای مزگەوتـی فەتحییە گۆڕێـک هەیە کە سندوقێکی هەشت لای نەخشێنراوی لەسەرە، نوسینی زۆری بە زمانی عەرەبی لەسەرەو زۆربەی زۆری ناخوێنرێتەوە تەنها ئەم چەند وشەیەی دەخوێنرێتەوە:

انتقل من دار الدنیا الی دار الآخرة....علاءالدین.... وسعل...

لێکۆڵەران نوسراوی سەر ئەم گۆڕە دەگەڕێننەوە بۆ سەردەمی شەدادیەکان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**٢. گۆڕی کوڕی رەحیم:**

سندوقێکی لە بەرد دروست کراو کە لە لاکانی نووسراوی بە خەتی سولسی عەرەبی لەگەڵ نەخشێکی جوان وشەیەکی دەتوانرێت بخوێنرێتەوە کە بۆ سەردەمی شەدادیەکانی دەگێڕنەوە، (بڕوانە وێنەی پاشکۆی نوسراوی سەرگۆڕ) :

من دار الدنيا الى دار الآخرة .... ابن رحيم... نور الله قبره....

**٣. نوسراوی سەر گۆڕێکی نەناسراو**

لەسەر بەردی گۆڕێک بە خەتی سولسی عەرەبی چەند ئایەتێک نوسراوە، هەرچەندە ساڵی لەسەر نیە بەڵام لێکۆڵەران بۆ سەردەمی شەدادیەکانی دەگێڕنەوە، لە ئایەتانەی لەسەر گۆڕەکە نوسراون:

كل من عليها فان (سورة الرحمن)

بسم الله الرحمن الرحيم الله لا إله إلا هو الحي القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم له ما في السماوات وما في الأرض من ذا الذي يشفع عنده إلا بإذنه يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشيء من علمه إلا بما شاء وسع كرسيه السماوات والأرض ولا يئوده حفظهما وهو العلي العظيم، إن الدين عند الله الاسلام، كلها مما تنبت الارض ومن أنفسهم ومما لا يعلمون، وآية لهم الليل نسلخ منه النهار فإذا هم مظلمون والشمس تجري لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم والقمر قدرناه منازل حتى عاد كالعرجون القديم لا الشمس ينبغي لها ان تدرك القمر والضرب لهم مثلا أصحاب القرية اذ جاءها المرسلون (چەند ئایەتێک لە چەند سورەتێکی جیاواز)

**٤. نوسراوی سەر گۆڕێکی نەناسراو**

هەروەها بەخەتی سولسی عەرەبی چەند ئایەتێک لەسەر بەرد هەڵکۆڵراوە، هەرچەندە مێژووی لەسەر نیە بەڵام چونکە وەک نووسینەکانی ترە لێکۆڵەران دەیبەنەوە سەردەمی شەدادیەکان..

كل من عليها فان ويبقى وجه ربك ذو الجلال والاكرام (سورة الرحمن)

بسم الله الرحمن الرحيم الله لا إله إلا هو الحي القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم له ما في السماوات وما في الأرض من ذا الذي يشفع عنده إلا بإذنه يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشيء من علمه إلا بما شاء وسع كرسيه السماوات والأرض ولا يئوده حفظهما وهو العلي العظيم. شهد الله أنه لا إله الا هو والملائكة وأولوا العلم قائما بالقسط لا إله الا هو العزيز الحكيم. ان الدين عند الله الاسلام. (سورة آل عمران) لەگەڵ چەند ئایەتێک لە سورەتی یاسین.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**ئەنجام:**

دوای ناساندنێکی خێرای مێژووی خانەدانی شەدادی و خوێندنەوەیەکی خێرای مێژووی شاری ئانی، دەستنیشانکردنی ئەو شوێنەوارانەی بۆ سەردەمی شەدادیەکان دەگەڕێتەوە، دەکرێت ئەم ئەنجامانەی لای خوارەوەی لێبگیرێت:

١. شەدادیەکان خانەدانێکی کورد بوون کە لە نێوان سالانی (٣٤٠-٥٩٥ک/٩٥١-١١٩٩ز.) لە ناوچەی ئاران وئازەربایجان فەرمانڕەوا بوون، سەرەتا لە شاری دوین دەسەلاتی خۆیان جێگیر کرد، پاشان شاری گەنجەیان خستە بن دەستی خۆیان، دواتریش بوونە فەرمانڕەوای شاری ئانی، کە ئەمڕۆ ئەو سێ شارە دەکەوێتە نێو سنووری سێ ولاتی جیاوازەوە.

٢. شاری ئانی لە نێوان سالانی (٣١١-١٦٠٥ز.) بەبەردەوام ئاوەدان بوەو، خانەدانی شەدادی لەنێوان سالانی (٤٥٦-٥٩٥ک./ ١٠٦٤-١١٩٩ز.) فەرمانڕەوای شارەکە بوون، سەردەمی ئەوان بەسەردەمی بنیاتنان و ئاوەدانی و تەبایی و پێکەوە ژیان دادەنرێت، چونکە میرانی شەدادی جگە لە پارێزگاری کردن لە ئاوەدانیەکانی پێشتری شارەکە، شارەکەیان زیاتر ئاوەدان کردەوە، شوێنەوارەکانی ئەو سەردەمە گەواهی ئەو ڕاستیە مێژووییە دەدەن .

٣. شاری ئانی بەر لەهەموان سەرنجی گەڕیدە ڕۆژئاواییەکانی ڕاکێشاوە، دواتر ڕۆژهەلاتناس و شوێنەوارناسانی روسی کەوتنە کۆلین و پشکنینی شوێنەوارەکانی شارەکە، کە بە وێنەکێشان یان وێنە گرتن یان بە خوێندنەوەی نوسراوەکان، توانیان بەشێکی شوێنەوارەکانی بناسێنن.

٤. لەسەدەی بیستەمی زاینیدا، بە دیاریکراوی لەسالی ( ١٩٤٤ز.) بەدواوە زانکۆکانی ولاتی تورکیا بەری خۆیان دایە کنەکاری و پشکنینی شوێنەوارەکانی شاری ئانی، ئەنجامی ئەم گرنگی پێدانە چەندین بەرهەمی زانستیە: وەک وتاری زانستی یان وەک نامەی زانکۆیی، یان وەک بەرهەمی سەربەخۆ بلاوکرانەوە.

٥. شاری ئانی شوێنەواری زۆری تێدا دەستنیشان کراوە، بەلام ئەوەی تایبەتە بەسەردەمی شەدادیەکان دەکرێت دابەش بکرێت بۆ شوێنەواری ئاینی وەک مزگەوت و کلێسا، شوێنەواری سەربازی کە مەبەست لێی نۆژەنکردنەوەو قایمکردنی شورەو بورجەکانی دەوری شارە. هەروەها شوێنەواری خزمەتگوزاری وەک گەرماو، هەروەها نوسراوی سەر کێلی بەشێک لە گۆڕەکانیش بۆ سەردەمی شەدادیەکان دەگەڕێتەوە.

٦. میرانی شەدادی بەگشتی خەریکی خزمەت و ئاوەدانکردنەوە بوون، بەلام جێدەستی دوو لەو میرانە لە هەموویان زیاتر دیارترە، یەکەمیان میر مەنوچەر کە چل وحەوت سال فەرمانڕەوای شاری ئانی بوە، دوەمیشیان سولتان کوڕی مەحموود کوڕی شاوەر شەدادی بووکە سی وپێنج سال حوکمڕانی هەمان شار بوە، ئەم میرە لەبەر بایەخدانی بەردەوامی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەئـاوەدانی شـارەکە بە میـر ئەبولمـوعەممەر ناسـراوە. هەردوکیشـیان بەنـاوی خۆیـان دوو مزگەوتی مەزنیان لەشارەکەدا دروستکردوە.

٧. ناوەڕۆکی نووسراوەکانی سەردەمی شەدادیەکان یاخود ئایەتێکی قورئانی پیرۆزە، یـاخود دۆعـایەکە، یـاخود فەرمـانی میـرێکە بـۆ دروسـتکردنی بورجێـک یـان دەروازەیەک، یـان منارەیەک یان مزگەوتێک. نوسینەکان بەزمانی عەرەبی و فارسی و ئەرمەنیە و جۆرجیە. بەلام زۆرینەی عەرەبیەو بە خەتی سولسی عەرەبی نوسراوە.

٨. شـاری ئـانی مۆزەخـانەیەکی کـراوەیە، شـوێنەواری پـێش ئیسـلام و سـەردەمە جیاوازەکـانی مێـژووی ئیسـلامی تێـدایە، ئەم شـوێنەوارانە لەپـاڵ یەکـدا بەڵـگەی پێکەوەژیـانی نێـوان ئاینەکانە، هێژایە بە جۆرێک نوێ بکرێتەوە، تـا مرۆڤـایەتی لە چوارلای دونیـاوە سـەردانی بکەن و پەندی پێکەوەژیانی سەردەمانی رابردووی لێ وەربگرن.


**سەرچاوەکان بە زمانی عەرەبی:**

- أسـكندر، فـايز نجيـب، ١٩٨٣، الفتوحـات الاسـلامية لأرمينيـة، أسـكندرية، دار نشـر الثقافة.
- أسـكندر، فـايز نجيـب، ١٩٨٧، اسـتيلاء السـلاجقة علـى عاصـمة أرمينيـة (آنـي)، أسكندرية، توزيع دار الفكر الجامعي.
- بارتولـد، ف، ١٩٦٩، دائـرة المعـارف الاسـلامية، ترجمـة: نخبـة مـن اسـاتذة الجامعـات المصرية والعربية، المجلد الثالث، الطبعة الثانية، القاهرة، دار الشعب.
- رسول، اسماعيل شكر، (٢٠٠١)، الشداديون في بلاد اران، اربيل، مطبعة وزارة التربية .
- رۆس. سير دينسون، ( ١٩٩٨): بنـو شـداد، مـوجز دائـرة المعـارف الاسـلامية،ج٢٠، الطبعـة الاولى، الشارقة، مركز الشارقة للابداع الفكري.
- زامباور، أدوارد فون، (١٩٨٠) معجم الأنساب والأسرات الحاكمة في التـاريخ الاسلامي، ترجمة زكي محمد حسن و حسن أحمد محمود، بيروت، دار الرائد العربي.
- لسترنج، گی، (١٩٨٥)، بلدان الخلافة الشرقية يتنـاول صفة العراق والجزيـرة وايران واقليم آسيا الوسطى منذ الفتح الاسلامي حتى عهد تيمور ، ترجمة وتعليق: بشير فرنسيس و كوركيس عواد، بيروت، مؤسسة الرسالة.

**سەرچاوەکان بە زمانی تورکی:**

- Balkan, Kemal,1970, “Ani’deki Selçuklu Hamamı”, Anadolu, S.XII, Ankara: TTK Basımevi.
- BOY, Arzu, (2019), ANI ŞEHRİ’NİN DOĞUŞ VE KARSELİ DERGİLERİNE YANSIYAN YÜZÜ, Journal of History School (JOHS), Year 12, Issue XLIII.
- CENGIZ, Ercan 2008, ŞEDDADÐLER DÖNEMÐNDE ANI (1064-1200), YÜKSEK LISANS TEZI, KARS.

- Çelebi, Evliya,1970, Seyahatname,cilt.II, Çeviren: Zuhuri Danışman, İstanbul.
- Erdal, Zekai,2010, “Büyük Selçuklular Öncesi Kafkaslardaki Beylikler: Şeddadiler” Uluslararası Van Gölü Havzası Sempozyumu, Istanbul.
- Erdal Zekai, 2016, “Şeddadi Kitabeleri”. Nahçıvan ve Doğu Anadolu Abideleri UluslararasıSempozyumu, Ankara.
- Erdal Zekai, 2019, Şeddadilerden Bahseden Kitabeler, Bingöl Üniversitesi İlahiyat Fakültesi Dergisi,
- Eser, Elvan & Veli Ulaş Asmadili, 2019, Bir Kültür Mozaiği Olan Ani Kentine Götüren Raylar: Turistik Doğu Ekspresi, Akademik Tarih ve Düşünce Dergisi, Cilt:6, Sayı:4.
- KARAKAYA, ENiS, 2004, MENÜÇiHR CAMii Türkiye'nin Ermenistan sınırında Anadolu'daki ilk camilerden biri. İslam Ansiklopedisi, Ankara, Türkiye Diyanet Vakfı.
- Keleş, Nevzat, , 2016, Şeddadiler (951-1199) Ortaçağ'da Bir Kürt Hanedanı, İstanbul, Belge kültür sanat.
- KIRZIOĞLU, M. Fahrettin (1953), Kars Tarihi, I-II, İstanbul, Isil Matbaası.
- SEVINDI, Cemal, 2015, Tarihi Anı Şehri’nin (Kars) Kuruluş ve Gelişim Süreciyle İlgili Coğrafi Bir Analiz, https://www.researchgate.net/publication/314545139.
- TÜYSÜZ, Cem, 2017, Ani Kenti Ortaçağ Savunma Sistemlerinin Değerlendirilmesi, 21. Yüzyılda Eğitim ve Toplum,cilt 6, sayi 18
- YILDIRIM,Avşar, 2010, SELÇUKLU DEVRİNDE ANİ ŞEHRİ, YÜKSEK LİSANS TEZİ, Enstitü Bilim Dalı: Ortaçağ Tarihi, Sakarya Üniversitesi.
- http://e-derslik.edu.az/books/223/units/unit-1/page64.xhtml


**سەرچاوەکان بە زمانی ئینگلیزی:**


- Minorsky, V, 1953, Studies in Caucasian History, London, Taylor’s Foreign Press.
- Minorsky, V. 1958, A History of Sharvan and Darband in the 10th-11th Centuries, Cambridge.
- Watenpaugh, heghnar zeitlian, December 2014, Preserving the Medieval City of Ani: Cultural Heritage between Contest and Reconciliation, Journal of the Society of Architectural Historians, Vol. 73, No. 4.
- http://www.virtualani.org/


**پەراوێز:**

---

[٤] بۆ زانیاری زیاتر لەسەر جوگرافیاو مێژووی ئەم ناوچەیە بڕوانە: Minorsky, V. 1958, A History of Sharvan and Darband in the 10th-11th Centuries,Cambridge

[٥] بۆ ناسینێکی گشتی میرانی شەدادی و سەردەمی هەریەکەیان بڕوانە پاشکۆی ناوی میرەکان.

[٦] بۆ زانیاری زیاتر بگەڕێوە بۆ ماڵپەڕی تایبەت بە شاری ئانی:
(http://www.virtualani.org/maps/reconstruction.htm)

[7] بۆ زانیاری زیاتر سەردانی ماڵپەڕی تایبەت بەشاری ئانی بکرێت:
.(www.virtualani.org/maps/marrplan.htm)

[٨] شایانی باسە شاری قارس لە ئەنجامی جەنگی نێوان روسیاو دەوڵەتی عوسمانیدا بۆ ماوەی چل ساڵ لە نێوان ساڵانی ١٨٧٨-١٩١٨ز. لە ژێر دەسەڵاتی دەوڵەتی روسیا بوە. جا ئەو دەستەیەی زانکۆی سانت پترسبۆرگ هەستاوون بە بردنی بەشێکی زۆری شوێنەوارەکان بۆ مۆزەخانەی مۆسکۆ و یەریڤان بۆ زانیاری زیاتر بڕوانە:
(BOY, 2019,1300).

[9] www.virtualani.org/maps/marrplan.htm

## الشداديين في مدينة آني- دراسة تأريخية


الملخص:

تعد الآثار الإسلامية الموجودة في مدينة آنى جزءا لا يتجزأ من الحضارة الإسلامية ، ومن بين تلك الآثار، تتشكل آثار الشداديين في تلك المدينة جزءا مهما من آثارها الباقية.

أسس الشداديون إمارة في بلاد آران بين عامي ٣٤٠-٥٩٥ هـ/ ٩٥١-١١٩٩م ، إذ حكموا تلك المنطقة من مدن مركزية مثل دوين وكنجة وآني. وقد ازدهرت مدينة آني إبان حكمهم لها بين عامي (٤٥٦-٥٩٥ ك/ ١٠٦٤-١١٩٩م)، ولا تزال معالم وشواهد تلك الفترة باقية، متمثلا بمسجد منوجهر و الأبراج القائمة في أطراف المدينة.

استهل البحث بتاريخ الامارة الشدادية، ثم لخص تاريخ مدينة آني في عصورها المختلفة، لكي يتوقف في المحور الأخير على تلك الآثار المختلفة التي تعود الى عهد الشداديين، مقربا ذلك بخرائط وصور موضوعة في الملحق،وفي النهاية تم تثبيت المصادر المستخدمة.



**الكلمات المفتاحية:** *الأسرة الشدادية ، مدينة آني ، الآثار الإسلامية ، مسجد منوجهر، السلاجقة .*

**The remnants of the Shaddadids in the city of Ani - a historical study**

**Abstract:**

The Islamic remnants found in the city of Ani are an integral part of Islamic civilization, and among those remnants the Shaddadids in that city form an important part of its surviving monuments.

The Shaddadids established a principality in the land of Aran between (340-595 AH / 951-1199 AD) ruling that region from central cities such as: Dvin, Ganja and Ani. The city of Ani flourished during their rule between the years (456-595 AH / 1064-1199 AD), and the landmarks and evidence of that period still remain, represented by the Mosque of Manuchehr and the towers on the outskirts of the city.

This research deals with the subject in three axes, starting with the history of the Shaddaid dynasty, then summarizing the history of the city of Ani in its different eras, in order to stop in the last axis on those different remnants dating back to the era of the Shaddadids, approaching that with maps and pictures placed in the appendix, and in the end the sources used were installed.

**Keywords**: *Shaddaid dynasty, Ani city, Islamic remnants, Manuchehr Mosque, Saljukids.*

## پاشكۆكان:

## پاشكۆی ناوی میرانی شەدادی

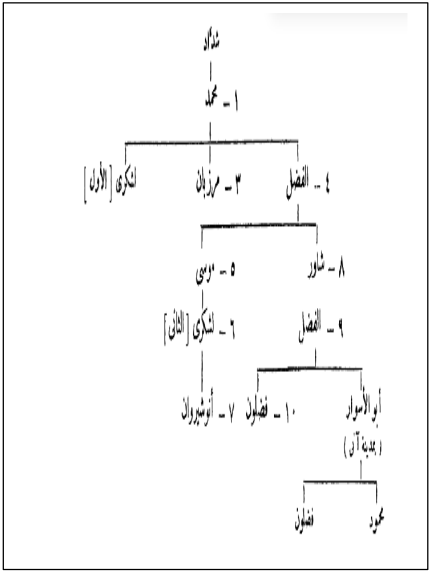


میرانی شەدادی لە هەر سێ شاری

دوین و گەنجە و ئانی. (زامباور ، ١٩٨٠، ٢٨٣)

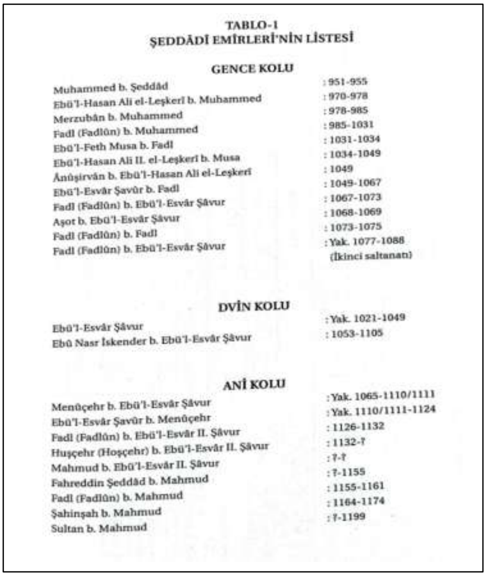

TABLO-1
ŞEDDÂDÎ EMİRLERİ'NİN LİSTESİ

GENCE KOLU

| | |
|---|---|
| Muhammed b. Şeddâd | : 951-955 |
| Ebü'l-Hasan Ali el-Leşkerî b. Muhammed | : 970-978 |
| Merzubân b. Muhammed | : 978-985 |
| Fadl (Fadlûn) b. Muhammed | : 985-1031 |
| Ebü'l-Feth Musa b. Fadl | : 1031-1034 |
| Ebü'l-Hasan Ali II. el-Leşkerî b. Musa | : 1034-1049 |
| Ânûşirvân b. Ebü'l-Hasan Ali el-Leşkerî | : 1049 |
| Ebü'l-Esvâr Şavûr b. Fadl | : 1049-1067 |
| Fadl (Fadlûn) b. Ebü'l-Esvâr Şâvur | : 1067-1073 |
| Aşot b. Ebü'l-Esvâr Şâvur | : 1068-1069 |
| Fadl (Fadlûn) b. Fadl | : 1073-1075 |
| Fadl (Fadlûn) b. Ebü'l-Esvâr Şâvur | : Yak. 1077-1088 (İkinci saltanatı) |

DVİN KOLU

| | |
|---|---|
| Ebü'l-Esvâr Şâvur | : Yak. 1021-1049 |
| Ebû Nasr İskender b. Ebü'l-Esvâr Şâvur | : 1053-1105 |

ANİ KOLU

| | |
|---|---|
| Menûçehr b. Ebü'l-Esvâr Şâvur | : Yak. 1065-1110/1111 |
| Ebü'l-Esvâr Şavûr b. Menûçehr | : Yak. 1110/1111-1124 |
| Fadl (Fadlûn) b. Ebü'l-Esvâr II. Şâvur | : 1126-1132 |
| Huşçehr (Hoşçehr) b. Ebü'l-Esvâr II. Şâvur | : 1132-? |
| Mahmud b. Ebü'l-Esvâr II. Şâvur | : ?-? |
| Fahreddin Şeddâd b. Mahmud | : ?-1155 |
| Fadl (Fadlûn) b. Mahmud | : 1155-1161 |
| Şahinşah b. Mahmud | : 1164-1174 |
| Sultan b. Mahmud | : ?-1199 |

ناوی میرانی شەدادی و ساڵانی فەرمانڕەواییان.

(KELEŞ. 2016.361)

نەخشەو سنوری میرنشینی شەدادی لە ماڵپەڕێکی ئازەربایجانی

وەرگیراوە کە شارەکانی ئانی و گەنجە و دوین

تێدایەhttps://e-derslik.edu.az/books/223/units/unit-1/page64.xht

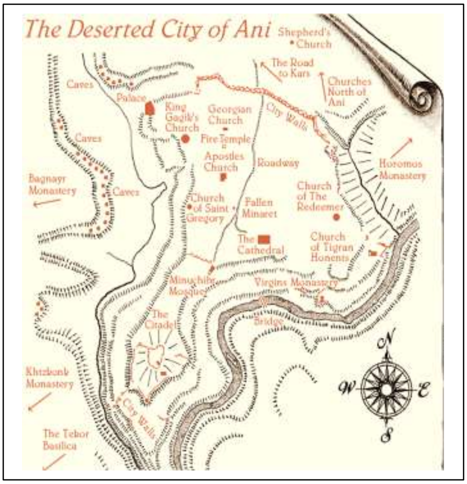


نەخشەی شوێنەوارەکانی شاری ئانی لەلایەن ڕۆژهەڵاتناس

نیکۆڵای مار ١٩٣٤ز http://www.virtualani.org/maps/marrplan.htm



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ڕەوشی ئێستای شاری ئانی لە وێنەیەک کە لە فڕۆکەوە وەرگیراوە.
http://www.virtualani.org/anifromtheair/index.htm

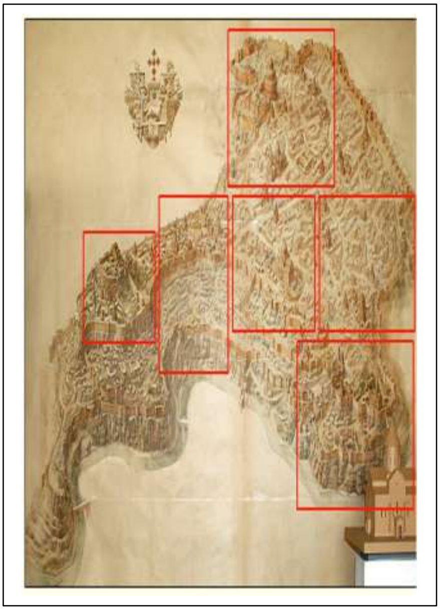

نەخشەیەک کە لەمۆزەخانەی نیشتیمانی ئەرمەنستان پیشان دراوە کە تەواوی شوێنەکان وێنەکراوە بەڵام نە منارەی مزگەوتی مەنوچەر نە شوێنەواری مزگەوتی ئبوموعەممەران نەکێشراوە. ئەم وێنەیە بە شەش وێنەی تر روون کراوەتەوە
http://www.virtualani.org/maps/reconstruction.htm

پاشکۆی مزگەوتی مەنوچەر

دیمەنی ڕۆژئاوای مزگەوت و منارەی مەنوچەر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

وێنەی ناوەوەی مزگەوتەک

نوسراوی سەردیواری مزگەوتەکە کە لە
مۆزەخانەی شاری قارس ئەم وێنەیە پارێزراوە

نەخشی گومبەتی مزگەویەکە

نوسراوی بسم الله پاشکۆی مزگەوتی
ئەبوموعەممەران



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بناغەی مزگەوتی ئەبو موعەممەران

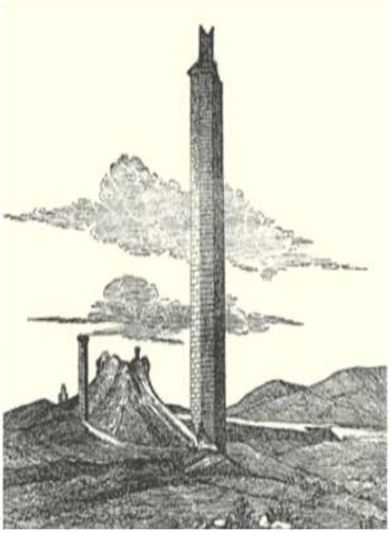

وێنەی نەخشەکێشراوی منارەی مزگەوتی ئەبو
موعەممەر بە دەستی رۆژهەڵاتناس م.ف. برۆست.

وێنەی منارەی رووخاوی مزگەوتی ئەبوموعەممیر کە لە
ساڵی ١٨٩٤ز. بەدەست ئەنقەست تەقێنرایەوە.
www.virtualani.org)

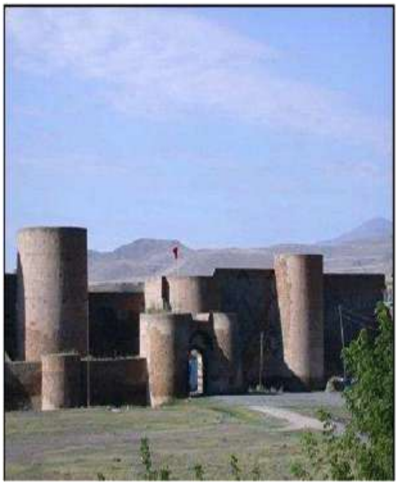

پاشکۆی سەبازی
دەروازەی ئەرسەلان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

نوسراوی سەر بورجێک لە رۆژئاوای دەروازەی ناوەراستی شورەی شا

بورجی ئەژدەر کە دوو لارو سەری گایەکە لە سەر بورجێکی شورەی شاری ئانی

وێنەی شێری سەر دەروازەکە

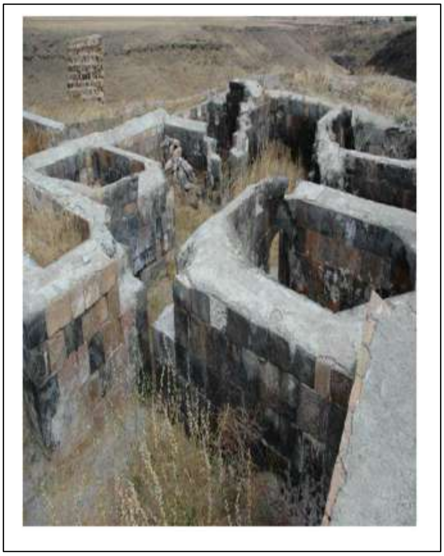

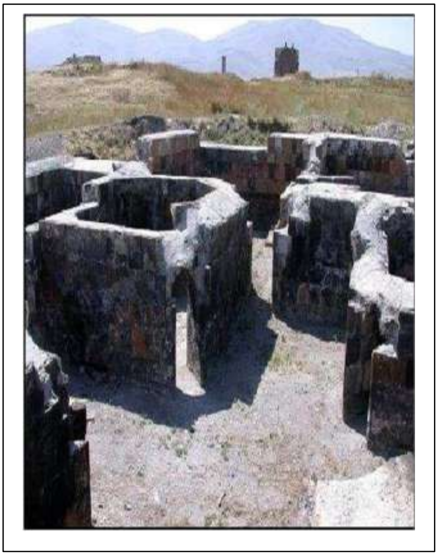

پاشکۆی گەرماوەکان گەرماوی گەورە

گەرماوی بچووک

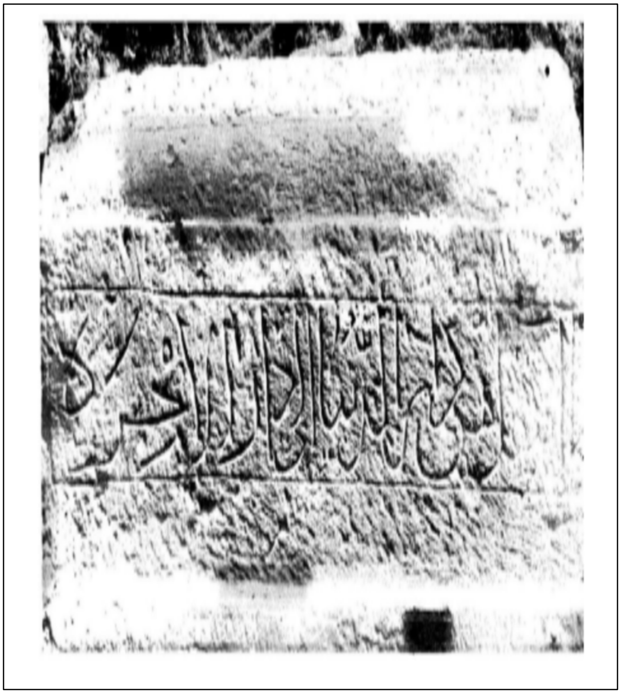

نوسراوی سەر گۆڕێک (Erdal, 2019, 153)

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

# دەولەتا دوستەکی – مەروانی (٣٧٢-٤٧٨مش/٩٨٢-١٠٨٥ز) د پەرتوکا (العبر) دا یا ئیبن خەلدونی (م:٨٠٨مش/١٤٠٥ز)

صالح زاهیر محمد زێباری

ل پەروەردا ئاکرێ- هەریما کوردستان/ عیراق

**پوختە:**

کورد ل سەدێن ناڤین (سەردەمێن ئیسلامی) دا ل چارچوڤێ سنورێن خیلافەتا ئیسلامی دا وەك میللەتێن دیتر ییێن دەڤەرێ پێنگاڤەکا گرنگ هاڤێت و قەوارێن سیاسی تایبەت ب خۆ دامەزراندن، ب هێزیا ڤان قەوارەییێن سیاسی کاریگەری ل سەر بیاڤێن جودا جودا یێ ژیانا کوردی کریە ل سەدێن ناڤین دا، ب هێزی و مەزنی و کاریگەریا ڤان قەوارێن سیاسی ل دەڤەرێ دا و کاریگەریا وان ل ناڤ هەفکێشێن هێزێن مەزنێن ناڤ خیلافەتا ئیسلامی، مێژوونڤیس پالدانە بۆ وێ چەندێ دەنگ و باسێن ڤان قەوارێن سیاسی تومار بکەن، ئێك ژ وان مێژوونڤیسێن گرنگیەك زۆر ب تومارکرنا مێژوویا ڤان قەوارێن سیاسیێن کوردی د ئیبن خەلدون بوویە د پەرتوکا (العبر) دا، تایبەت مێژوویا دەولەتا (دوستەکی-مەروانی)، مێژوونڤیسێ مە ئاماژێ ب دامەزراندنا دولەتا (دوستەکی-مەروانی) دکەت هەتا دوماهیکا وێ و کەفتنا ڤێ دەولەتا کوردی، کو ل ڤەگێرانێن خۆ دا ب دەولەتەك کوردی ب هێز ناڤ دکەت و جودا دکەت ل دەولەتێن دیتر یێن دەڤەرێ و ل تومارکرنا ڤێ مێژوویا گرنگ دا ئیبن خەلدون پشت بەستنا سەرەکی دکەت سەر پەرتوکا (الكامل في التاريخ) یا مێژوونڤیس (ابن الأثير)، ل دەمێ خاندن و ڤەکۆلین کرن ل پەرتوکا (العبر) دا دەرئەنجامێن گرنگ ب دەست دکەڤن.

**پەیڤێن سەرەکی:** *کورد، دەولەت، دوستەکی، مەروانی، ئیبن خەلدون.*

**پێشەکی:**

کورد وەك ئێك ژ میللەتێن مەزنێن دەڤەرێ ل سەردەمێن ناڤین دا، شیان د بوارێ ئاڤاکرنا قەوارێن سیاسی دا بەرەف پێشچونەکا مەزن بدەست بینن، ب تایبەت ل سەردەمێ دەولەتا عەباسی دا (١٣٢-٦٥٦مش/٧٥٠-١٢٥٨ز)، وەك میللەتێن هەفسییێن خۆ پێنگاڤەك مەزن هاڤێت و دەستهەلاتێن خوییێن ناوچەیی و هوزایەتی پێشخستن و میرگەهـ و دەولەت ئاڤاکرن، ئەڤ پێنگاڤا مەزن د ناڤخو و دەرڤەیی هەرێمێن کوردنشین کاریگەریا خۆ هەبوو، هەروەسا ڤێ چەندێ دەرئەنجامێن زۆر هەبووینە، ل وان دەرئەنجامان مێژوویا کوردان پتر

کەفتیە بەر گرنگیدانا مێژوونڤیسان و ڕەنگە ژێدەرێ وی سەردەمی نەبیت، کو گرنگی ب مێژوویا کوردان نەدابیت.

ل وان ژێدەران، کو گرنگی ب ڤی بابەتی دایی پەرتوکا (العبر) یا ئیبن خەلدونی یە (م:٨٠٨مش/١٤٠٥ز)، یا بناڤێ (كتاب العبر، وديوان المبتدأ والخبر في أيام العرب والعجم البربر، ومن عاصرهم من ذوي السلطان الأكبر)، کو ب ڕەنگەکێ بەرفرەهـ ئاماژە ب مێژوویا کوردان کری، دناڤدا دەولەتێن کوردی، ئەڤ پەرتوکە ئێکەم ژێدەرێ مێژوویا ئیسلامیە، کو ناڤێ سێ دەولەتێن کوردی بەحس لێ دکەت، دناڤدا دەولەتا (دوستەکی-مەروانی)یە، ب شێوازەکێ بەرفرەهـ مێژوویا وێ ڤەگێڕایە، ئەڤ بابەتە ل چەندین نامێن ماستەرێ و تێزێن دکتورایێ هاتینە بەحسکرن و پەرتوك و ڤەکۆلین ل سەر دروست بووینە.

ئەڤ پەرتوکە ژی کەفتیە بەرڤەکۆلینێ تایبەت بابەتێ کوردان د پەرتوکا (العبر) دا ژلایێ مە ڤە وەك دوو ڤەکۆلەر (قوتابی و سەرپەرشت)، لێ ب درێژی بابەتێن تایبەت ب دەولەتا (دوستەکی-مەروانی) نەهاتینە گەنگەشکرن و شروڤەکرن و هەروەسا ب بابەتێن دەولەت و دەمارگیریا هۆزایەتی ڤە نەهاتە گرێدان و ل بابەتێ دەرئینانا دەرئەنجامێن تایبەت ب ڤی تەوەری ڤە ژی ب کورتی بەحس لێ هاتیەکرن، بەلکو پتر گرنگی ب راستڤەکرتا شاشی و شروڤەکرنا مێژوویی و ڕەخنەیی هاتیەدان، ژبەرکو بەرپەرێن نامەیا ماستەرێ سنوردارن و دشیان دا نەبوویە هەمی بابەت ب درێژی بهێتە بەحس لێکرن، کو ئیبن خەلدون ب درێژی بەحس ل کوردان دکەت و دشیان دا هەیە زێدەتر ل نامەیەك و تێزەك و چەند ڤەکۆلینەکان ل سەر مێژوویا کوردان د پەرتوکا (العبر) بێنە دروستکرن، لەوما پتر هزرا گرنگیدان ب مێژوویا ڤێ دەولەتێ بۆ مە دروست بوویە و د ڤێ ڤەکۆلینێ دا ب درێژی و تایبەتی کار ل سەر دەولەتا (دوستەکی-مەروانی) هاتیەکرن و ب پرسێن جودا جودا و دەرئەنجامێن گرێدای ب قەوارێن سیاسی هاتینە نڤێسین و هەروەسا ئەڤ ڤەکۆلینە ب ئەڤرویا کوردان ڤە هاتیە گرێدان تایبەت ل دەرئەنجامان دا و سەرەرایێ وێ چەندێ شێوازێن نوییێن ڕێبازا ڤەکولینێ هاتینە بکارئینان و ب ناڤ نیشانەك گرێدای ب ناڤەروکێ ڤە و هەروەسا پتر شروڤە و پشت بەستن ب هژمارەك زۆرتر ل ژێدەران و زێدەبوونا ئەزموونی ل ڤی کاری هاتیە بکارئینان بۆ وێ چەندێ پتر پشکداریێ ل دەولەمەندکرنا مێژوویا کوردان بێتەکرن.

قەوارێن سیاسی یێن کورد د سەردەمێن ناڤین دا ڕۆلەك مەزن دیتیە ل ئاراستەکرنا ڕویدانێن مێژوویی و پێگەهێ وان ل ناڤ هێز و لایەنێن سیاسی یێن وی دەمیدا گەهشتبوو کوپیتکێ و ئەڤێ چەندێ کاریگەریەك مەزن ل سەر پێگەهێ میللەتێ کورد ژی کر بوو د هەمی بیاڤەکی ژیانێ دا، ژێدەرێن مێژوویی گرنگیەك زۆر ب دەنگ و باسێن ڤان قەوارێن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

سیاسی دایە، دناڤدا دەولەتا (دوستەکی - مەروانی)، وەك ئێك ژ قەوارێن سیاسی یێن کاریگەر ل سەردەمێ چەرخێن ناڤیندا.

ژ ئەگەرێن سەرەکیێن هەلبژاردنا ڤێ ڤەکولینێ دیارکرنا مێژوویا دەولەتا (دوستەکی- مەروانی) یە، وەك ئێك ژ دەولەتێن ناڤدارێن کوردان ل سەردەمێن مێژوویا ئیسلامی دا هەروەسا بەرچاڤکرنا ژێدەرەکێ مێژوویی یێ گرنگ و ناڤدارە ل سەر ئاستێ جیهانی، کو ڤی قەوارێ کورد ب (دەولەت) وەسفدکەت، هەروەسا ب شێوازەکێ بەرفرەھ گرنگی ب مێژوویا قەوارێن سیاسی ییێن کوردی دایە، سەرەڕایێ دیارکرنا قوناغەکا پڕ شانازیا مێژوویا کوردان، کو شیاینە د ڕێڤەبرنا دەولەتێن مەزن و بهێزدا سەرکەفتی بن، پشکداریکرن ل تومارکرنا مێژوویا کوردان و زەنگینکرنا پەرتوکخانا کوردی ژی پالدەرێن سەرەکی بووینە ل ڤی کارێ ئەکادیمی.

ئەڤ ڤەکولین هاتیە دابەشکرن ل سەر ڕێخۆشکرن و دوو تەوەرێن سەرەکی، تەوەرێ ئێکێ ئاماژە ب سەردەمێ بادێ دوستەکی هاتیەکرن وەك دامەزرێنەرێ دەولەتێ، تەوەرێ دوویێ دا بەحسێ قوناغا دوویێ یا ڤێ دەولەتێ هاتیە کرن ل سەردەمێ بنەمالا مەروانی دا، زنجیرا دەستهەلاتدارێن(مەروانی) هاتینە ڤەگێران، ل دوماهیکێ ژی پەراوێز و لیستا ژێدەرێ سەرەکی و هاریکارهاتیە نڤێسین.

هەرچەندە بابەتێ ڤەکولینێ بەهرا پتر دپەرتوکا(العبر) یا (ابن خلدون) دا هێتەوەرگرتن، لێ مفا هاتیە وەرگرتن ژ هژمارەك ل ژێدەرێن سەرەکی و هاریکار، وەکی پەرتوکا(تاريخ ميافارقين وآمد) یا (ابن الأزرق الفارقي)(م:٥٧٧مش/١١٨١ز)، هەروەسا پەرتوکا (الكامل في التاريخ) یا (ابن الأثير) (م:٦٣٠مش/١٢٣٢ز),سەرەڕایی بکارئینان چەند ژێدەرێن هاریکار وەکی(تاريخ الدول والإمارات الكردية فى العهد الإسلامى) یا (محمد أمين زكي) و (تاريخ الدولة الدوستكية) یا (عبدالرقيب يوسف) و پەرتوکا (الإمارات الكردية في العصر العباسي الثاني) یا (فرست مرعي إسماعيل).

ڕێبازێن ڤەکۆلینێ یێن مێژوویی و بەراوردکاری بۆ شرۆڤەکرنا پێزانینێن مێژوویێ هاتیەبکارئینان و هەول هاتیەدان کێمترین کێم و کورتی هەبن و کێماسیا هەبیت ژی ب مەرەم نەبوویە، ئەڤ ڤەکولینە ژی بیێ ئاستەنگ نەبوویە و هەبوونا شاشیا د پەرتوکا (العبر) دا کو دبیت پشتی مرنا ئیبن خەلدونی دروست ببن و ب چاپێن جودا ئەڤ شاشیە دروست ببن، هەروەسا بەرفرەهیا پێزانینێن ل سەر دەولەتێ و سنورداریا ڤەکولینێ ژی ئاستەنگ بوویە، کو گەلەك شروڤە نەهێنەکرن. ل دوماهیکێ ژی چ کار بێی کێماسی نینە وتەماتی بۆ خودایێ مەزنە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**ڕێخوشکرن: ژیانناما ئیبن خەلدونی و ژێدەرێن وی**

عەبدولرەحمان وەلیە دین ئەبو زەید کورێ محەمەد کورێ محەمەد کورێ محەمەد کورێ حەسەن کورێ محەمەد کورێ جابر کورێ محەمەد کورێ ئیبراهیم کورێ عەبدولرەحمان کورێ خەلدون( ابن خلدون،١٩٨٨، ٥٠٣/٧ ؛ ابن حجر العسقلاني،١٩٨٨،ص٢٣٤ ؛ ابن تغري بردي،١٩٦٤، ٢٠٥/٧ ؛ ابن الخطيب، ٤٩٧/٣ ؛ ابن العماد الحنبلي،١٩٨٦،١/٧١) دیڤ گوتنا ئیبن خەلدونی ژبلی ڤان (دەهـ) باپیرێن ناڤێن وان ئیناى، پێزانین ل سەر چ باپیرێن دیتر یێن خۆ هەتا دگەهیتە (خەلدونی)، کو ئەوی دەمی ب (حەفت سەد) سالا ددەتە دیارکرن، کو ئەگەر (خەلدون)[1] ل دەستپێکا ڤەکرنا ئەندەلوس[2]، چوبیتە ڤی وەلاتی، واتا هەر سێ نفش ل چەرخەکێ بووینە، دیڤ ڤێ هەفکێشێ ئەڤ دەمە دبیتە (بیست) بەرەباب هەتا دگەهیتە (خەلدون)، (ابن خلدون،١٩٨٨، ٥٠٣/٧)، ئیبن خەلدون ب ناسناڤێ (الحضرمي)[3]، (الاشبیلي)[4]، (المالکي)[5].

ئیبن خەلدون د پەرتوکا خۆ دا ئاماژێ ب ژ دایکبوونا خۆ دکەت، کو دەستپێکا هەیڤا رەمەزانا سالا (٧٣٢مش/١٣٣٢ز) ل تونس ژ دایکبوویە(ابن خلدون،١٩٨٨، ٥١١/٧)، ل روژا چوار شەمبی چوار روژ ل هەیڤا رەمەزانا سالا (٨٠٨مش/١٤٠٦ز)، ما بوون ئیبن خەلدون ل ژیێ (٧٦) سالییێدا ب ئەگەرێ نەخوشیەکا گران مریە و ل قاهیرە هاتیە ڤەشارتن(المقریزي،٢٠٠٢، ٣٩٨/٢ ؛ السیوطي،١٩٦٧، ٤٦١/١).

ئیبن خەلدون پشتی گەهشتن ب کەلها (بني السلامة) کو ب جهەك خوش و باش وەسفدکەت و ئاماژێ ب وی دەمێ درێژ دکەت، کو د کەلهێ دا مایی و دەست ب نڤیسینێ کریە[6]، ب دەریازبوونا چوار سالا (٧٧٦ – ٧٨٠مش/١٣٧٤ – ١٣٧٩ز) دڤێ کەلهێ دا بریارێ ددەت، کو بەرهڤ تونس بچیت، ئەگەرێ سەرەکی ئەو بوویە، کو دەست ب پتر پێزانینا بگەهیت، بۆ تەمامکرنا پشکێن دیتر یێن پەرتوکا خۆ زێدەکرن و ڕاستڤەکرن تێدا دکر(ابن خلدون،١٩٨٨،٧/ ٦٣٩)، ئیبن خەلدون ب (پەرتوکا العبر ودیوان المبتدأ والخبر فی أیام العرب والعجم والبربر ومن عاصرهم من ذوي السلطان الأکبر) ناڤدارە، نڤیسینا ڤێ پەرتوکێ د ژیانا ئیبن خەلدونی دچیتە قوناغا سێێ ل ژیانا وی دا(خلیل شرف الدین،١٩٩٥، ٢٩).

**ژێدەرێن ئیبن خەلدونی:**

ل دەمێ ڤەکۆلین کرن ل پەرتوکا مێژوویا ئیبن خەلدونی (العبر) دا تایبەت بابەتێن گرێدایی ب مێژوویا دەولەتا (دوستەکی-مەروانی) ب ژبلی جارەکێ ناڤ ئینا مێژوونڤیس (ابن الأثیر)ی خودانێ پەرتوکا (الکامل في التاریخ)، ل بابەتێ بەحسکرنا کەسایەتیا بادێ دوستەکی، د ئێك ڤەگێران دا(ابن الأثیر،١٩٩٧،٧/٤٠١) ب هیچ شێوازەکێ بەحسێ ژێدەرێن خۆیێن نڤیسی ناکەت، ژبەرکو ل بەر دویراتیا دەم و جوگرافیایێ هەمی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

مێژوونڤیسێن سەدەیێن پشتی ڤان دەولەتان هاتی و ل سەر نڤیسی وەك رێبازا دهاتە بجھ ئینان ل پەرتوكێن مێژوونڤیسێن بەری خۆ دهاتە وەرگرتن و (ابن الأثیر) ل بابەتێ دەولەتا (دوستەكی-مەروانی) بۆ ئیبن خەلدونی ژێدەرێ سەرەكی بوویە ل هەمی رووداناندا، ژبلی هندەك كورت و پوختكرنا بابەتی و تێبینەك بچیك و تێكەفتنا شاشیان و گوهورینا سیستەمێ نڤیسینا (ابن الأثیر) كو سالانە (الحولیات) ل دەف مێژوونڤیسێ مە بوویە نڤیسینا بابەتی ب شێوازێ دابەشكرنا بابەتا ب زنجیرەیی و ل دەستپێكا دروستكرنا دەولەتێ هەتا ژ نافچوونا وێ ئێك ل دیف ئێك ناڤێ میرێن دەولەتا (دوستەكی-مەروانی) تومارکریە ب مفا وەرگرتنا سەرەكی ل پەرتوكا (الكامل في التاريخ).

**تەوەرێ ئێكێ: سەردەمێ ئێكێ ل دەولەتا (دوستەكی- مەروانی):**

ئیبن خەلدون ل چارچوڤێ ڤەگێرانێن مێژوویی دا دئێتە سەر بەحسكرنا مێژوویا دەولەتا (دوستەكی-مەروانی) وەك ئێك ژ دەولەتێن مەزن و ناڤدارێن دەڤەرێ و ب زنجیرە ئاماژێ ب دەنگ و باسێن میرێن دەولەتێ دكەت،، د ڤێ ڤەكولینێ دا دێ هەول هێتەدان ڤەكولین ل سەر چەند بابەتەكێن جودا جودابێتە دابەشكرن ب مەرجێ پێگیر بوون ب وان پێزانینێن ل پەرتوكا (العبر) دا هاتی و هەروەسا ب بەراوردكرن ب پێزانینێن پەرتوكێن دیتر، كو ل سەردەمێ ڤێ دەولەتێ نیزیك بووینە و ژێدەرێن ئیبن خەلدونی بووینە.

**ئێك- بادێ دوستەكی (٣٧٢ – ٣٨٠مش/٩٨٣ - ٩٩٠ز):**

بەری ڤەگێرانا دەنگ و باسێن تایبەت ب میر بادێ دوستەكی فەرە ئاماژە ب وان پێزانین و نەرینێن جودا بێتەدان، كو دناڤ ژێدەرێن مێژوویی و ڤەكولەران دا هەیل سەر (ناڤ و ناسناڤ و هۆزا بادێ دوستەكی).

١- ئیبن خەلدون د پەرتوكا (العبر) دا ناڤێ دامەزرێنەرێ دەولەتا (دوستەكی - مەروانی) ب (باد) دئینیت، هەروەسا ب ڤی شێوازی ل دەف گەلەك مێژوونڤیسێن دیتر ژی هاتیە[٧]، هەروەسا ئەڤ ناڤە ب شێوازێ (باذ) ژی هاتیە ل چەند ژێدەرەكان دا دبیت كاریگەریا زمانەوانی ل سەر هەبیت[٨]، دناڤ ڤەكولەرێن نوی ژی دا ئەڤ ناڤە ب شێوازێن جودا هاتیە ڤەگوهاستن،محەمەد ئەمین زەكی (م١٩٤٨ز) ب (باز) ددەتە ناسین(٢٠٠٦، ١١٤/٢)، ئەرشاك بولادیان ل سەر وێ بووچوێ یە كو (باد) ڕاسترە و ژیەركو دناڤبەرا (باد و باز و باذ و ڕاد) شاشی و گوهورین كەفیتە تێدا(٢٠٠٩،١٦٣)، ڤەكولەرێن نوی ژی ل سەر ڤێ بوچوونێ نە، كو (باد) بكارئینایە[٩]، ڤەكولەرێ شارەزاد بیاڤێ مێژوویا دەولەتا دوستەكی عەبدرەقیب یوسف ب (ڕاد) دئینیت (٢٠٠١،٢/١٣)، دبیت ل (ابن تغري بردي) (٨٧٤مش/١٤٦١ز) وەرگرتبیت(د.ت،٤/١٤٥)، دناڤبەرا (باد و ڕاد و باز و باذ) دا بوچونێن جودا هەبووینە و كاریگەری ل سەر ناڤەروكا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

بابەتی نەکریە ڤێ چەندێ و دبیت ل شاشێن زمانی دا ئەڤ جوداهیە هەبیت و مێژوونڤیسێ مە (باد) بکارئینایە و بڤی شێوازی دێ سەرەدەری دگەل هێتەکرن.

ب- سەبارەت ب ناسناڤێ (باد)ی ژی جوداهی کەفتیە دناڤبەرا مێژوونڤیسان دا، ئیبن خەلدون کۆ دپرانیا مێژوویا خودا ئاماژەیێن زۆر کێم ب ژێدەرێ خوێ نڤیسی دکەت، د ڤەگێرانا تایبەت ب بادێ دوستەکی دا ئاماژێ پێدکەت و ل (ابن الأثیر) (م:٦٣٠مش/١٢٣٢ز) ی وەرگرتیە بیێ چ گوهورینان لێ بکەت و ناسناڤێ وی ب(باد) دئینیت و ناڤێ وی ژی (أبو عبدالله الحسین بن ذوشتك = دوستك) (أبو شجاع)، هندەك دبێژن (أبو عبدالله الحسین) برایێ بادی یە(الفارقي،١٩٥٩،٥٠ ؛ ابن الأثیر،١٩٩٧، ٤٠١/٧ ؛١٩٨٨،٤/٣٢٢)، فارقی ناسناڤێ برایێ بادی ب (أبو الفوارس الحسین بن دوستك) دئینیت(١٩٥٩،٥٢).

ج- سەبارەت ب هۆزا بادێ دوستەکی مێژوونڤیسێ مە هەر هەمان بووچونێن مێژوونڤیس (ابن الأثیر)ی دئینیت، ب کوردێت حەمیدی[١٠]،ددەتە نیاسین و هەڤڕای هەیە د گەل ژێدەرێن دیتر هەیە(الروذراوري، د.ت، ٨٤/٣ ؛ العبر،١٩٨٨ ٣/ ٥٣٧ ، ٣٢٢/٤)، ژێدەرێ تایبەت و نیزیك ل مێژوویا (دوستەکی – مەروانی) بوچوونەك جودا هەیە دیار دکەت، کو باد سەر ب هۆزا بوتانی (الحاربختی)، لێرەدا دبیت شاشی هاتبیتەکرن و ل بنەرەت دا (چوار بوختی – الجهار بخی)،کو بیت تیرەیەك (لقەك) بیت سەر ب هۆزا (بوختی)[١١] یە(الفارقی،١٩٥٩،٤٩)،کو جهـ و وارێ ڤێ هۆزێ نیزیکە ل جهـ و وارێن هۆزا بوختی، هەتا نوکە ژی گوندەك ل چیایێن ئاکرێ بناڤێ (چوار بوتی) ئەڤ دەڤەرە یێن هۆزا حەمیدی نە(توفیق،٢٠١٠،ل١٩٣).

د- ئیبن خەلدون ل سێ ناڤ و نیشانێن جودا جودا دا ئاماژێ ب دەنگ و باسێن بادێ دوستەکی دکەت، (ابتداء دولة باد وبني مروان بالموصل)،(العبر،٥٣٧/٣)، (خبر باد الكردي ومقتله على الموصل)،(العبر،١٩٨٨،٤/٣٢٢)،(تغلب باد الكردي على الموصل من يد الديلم ثم رجوعها اليهم)، (العبر،١٩٨٨،٤/٦٠٨).

**دوو- گرنگترین رویدانێن گرێدای ب مێژوویا بادێ دوستەکی ڤە:**

ئیبن خەلدون ل دەستپێکێ ب ناڤ و نیشانەك تایبەت بەحسێ دەولەتا بادی دکەت (ابتداء دولة باد و بني مروان بالموصل)[١٢]، (العبر، ١٩٨٨، ٥٣٧/٣)، ل جهەکێ دیتر ب ڤی شێوازی ئاماژێ پێدکەت (خبر باد الكردي ومقتله على الموصل)، (العبر، ١٩٨٨،٤/٣٢٢)، هەروەسا ئاماژێ ب سالوخەتێن مەردینی و هێز و زیرەکی ب ئەگەرەك سەرەکی دهژمێریت، کو خەلك ل دەوروبەرێن بادێ دوستەکی کومبن هەروەسا کاروچالاکیێن وێین لەشکەری کار ل سەر بەرفرەهکرن و بهێزکرنا دەستهەلاتا وی کریە و د ژێدەران ژی دا هەما بوچوون هەیە(الروذراوري،د.ت، ٨٤/٣ ؛ العبر،١٩٨٨، ٣٢٢/٤)، سەرەرایێ وێ چەندێ ئیبن خەلدون دیاردکەت،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

کو دەستگرتن ب کەل و پەلێن خەلکی و رێگرێی ژی کاریگەری ل سەر پێگەهێ وی کریە، کو پتر خەلك لێ کومببیت و دەست ب سەر دەڤەرێن زێدەتر بگریت و دەست ب سەر بازێرێ ئەرجیش[13]، دا گرتیە دیڤدا ڤەگەریایە بازێرێ دیاربەکر (ئامەد)،(ابن خلدون،١٩٨٨، ٣٢٢/٤ ؛ ابن تغري بردي،١٩٦٤،٤،١٤٥/١٩٦٤)، بەردەوام دەستهەلاتا خۆ زێدەکریە(ابن الأثير،١٩٩٧، ٤٠٣/٧).

کارەك دیتر یێ، کو بادێ دوستەکی پێهاتیە ناسین و د ژێدەران دا بەحس لێ هاتیەکرن پاراستنا دەڤەرێن سنوری بوویە ئەوێن دکەفتنە بەرامبەر دەولەتا بێزەنتی ئەڤ شەرکرنە ژی دهاتە سەپاندن ل سەر بادێ دوستەکی ژبەرکو دەڤەرێن وی دکەفتنە سەر سنوری(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٥٣٧/٣)، پشتی بادێ دوستەکی بهێزکەفتی دەستکر بەرفراوانخوازیا و دەستگرت ب سەر دەڤەرێن نوی دا و هەردوو بازێرێن دیاربەکر و میافارقین و نسیبین کونترولکرن ل سالا(٣٧٤مش/٩٨٥ز) ب ڤێ پێنگاڤێ بادێ دوستەکی دبیتە خودان هێزەك کاریگەر ل دەڤەرێ دا(الفارقی،١٩٥٩، ٥٢ ؛ ابن خلدون،١٩٨٨، ٣٢٢/٤).

ئەڤ دەستهەلات بەرفرەهکرنە ژی بۆ چەند ئەگەران ڤەدگەرێت، ژبلی خواستا میر بادی بۆ هندێ دەستهەلاتا خۆ زێدە بکەت، رەوشا ئالوزا خیلافەتا عەباسیو تایبەت ل سەردەمێ دەولەتا بویهی (٣٣٤ – ٤٤٧مش/٩٤٦ - ١٠٥٦ز)، کو شەر و کێیشەیێن بەردەوام هەبوون ل ناڤبەرا سەکردەیێن وان دا، دەرفەتا زێدەکرنا دەستهەلاتێ ب بادیێ دوستەکی دا(هەورامی،٢٠١٠، ١٠٠)، هەروەسا کەسایەتیا بهێز یا میر بادێ دوستەکی و هەبوونا لەشکەرەکێ بهێز و پشتەڤانیا بەردەواما خەلکێ دەڤەرێ(توفیق،١٩٢،٢٠١٠ - ١٩٣).

ئێکەم پەیوەندیا بادێ دوستەکی دگەل بویهیان دروست بووی ل دەمێ گرتنا بازێرێ موسل بوویە ژلایێ(عضد الدولة البويهي) (٣٦٧-٣٧٢مش/٩٧٨-٩٨٣ز) ڤە، پشتی ڤێ سەرکەفتنێ شاندێن جودا جودا سەرەدانا (عضد الدولة) ی دکەن، کو دبیت بۆ خێرهاتن و پیروزبایی و دیارکرنا ئالیگریێ بیت بو بوەیهیان، باد ژی وەکی ئێك ژ خودان هێزێن دەڤەرێ سەرەدانا بازێرێ موسل دکەت، لێرەدا د ئێکەم دیتن و پەیوەندی دا کێشە دروست دبیت و پەیوەندی تێکدچن و باد هەست ب هەبوونا مەترسی و پیلانەکێ دکەت ل دژی خۆ و ب پلانەکا موکە شیا ل ناڤ هێزێن (عضد الدولة)ی دەرکەڤیت بیێ چ کێشە بۆ دروست ببن(ابن خلدون،٤،١٩٨٨/٣٢٢)، ئەڤ مەترسیە ل هزرا (عضد الدولة) ی هات دەمێ دیار کری کەسێن وەکی بادی مەترسیدار نابیت بمینن ((هذا الرجل ذو بأس وبطش وشر وغدر، ولا يجوز الإبقاء عليه)) لێرەدا دیار دبیت دەنگ و باسێن بادی گەهشتبنە (عضد الدولة)ی، ئەگەر نە ب ئێك روینشتن تایبەت ئەگەر پیروزبایی بیت،چاوا ئێکسەر ئەڤ نەرینەبۆ(عضد الدولة)ی دورست بوویە؟ (الروذراوري،د.ت، ٨٤/٣)، (ابن الأثير) کو ڤێ رویدانێ ل ڤەگێرانێن سالا (٣٧٣مش/٩٨٤ز) ڤەدگێریت، ژی هەر هەمان شێواز ڤی دەنگ و باسی ڤەدگێریت، کو هەبوونا سالوخەتێن زیرەکی و ب پلان و خودان شیانییێ وەکریە (عضد الدولة) بترسیت و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

هەولا ژناڤبرنا بادێ دوستەکی بدەت(١٩٩٧، ٤٠٢/٧)، مرنا (عضد الدولة)ی ل سالا(٣٧٢مش/٩٨٣ز) بوویە ئەگەرەك، کو بادێ دوستەکی پتر هەولا بەرفرەهکرنا دەستهەلاتا خۆ بدەت و دەرفەت دهێتە پێش(ابن خلدون، ١٩٨٨،٣/٥٣٧، ٣٢٢/٤).

دەمێ دەستهەلاتا بادی دگەهیتە ئامەد و میافارقین و ئەرجیش و نسیبین وەك چەند دەڤەرەکێن گرنگێن هەرێما جزیرێ، بوەیهی هەست ب مەترسیێ دکەن ل زێدەبوونا پێگەهێ بادی و (صمصام الدولة بن عضد الدولة) (٣٧٢-٣٨٨مش/٩٨٣-٩٩٨ز)لەشکەرەك ب سەرکردایەتیا ئەبی سەعید بەهرام کورێ ئەردەشێر هنارتە سەر دەڤەرێن بادی بۆ هندێ سنورەکێ بۆ مەترسیا بادی دانیت(ابن الأثیر،١٩٩٧، ٤٠٢/٧)، لێ وەك دیار دبیت، کو هێزا بادی زۆر بوویە و ئەڤ هەوا بویهی چ ئەنجامان بدەست نائینن و بەرامبەر لەشکەری بادی شکەستن خاریە و نەچاری (صمصام الدولة) لەشکەرەکێ دیتر بەرهەڤ دکەت بۆ ژناڤبرنا مەترسیا بادی ب سەرکردایەتیا ئەبو قاسم سەعەد کورێ محەمەد حاجب، (ابن الأثیر،١٩٩٧، ٤٠٢/٧)، بۆ چەندێ هێرشی کەلها کواشێ[١٤]، وەك ئێك ژ دەڤەرێن بادی بکەت، ئەڤ لەشکەرە ژی نەشێت خۆ لبەر سینگێ هێزا بادی بگریت و پاشکەشێ دکەن بۆ ناڤ باژێرێ موسل و خەلك دژی ڤێ هێزێ ڕادبنە سەرخۆ و ل باژێری دەردکەن و وەك دیار دبیت بادێ دوستەکی بدیف دا هاتیە و ل سالا (٣٧٣مش/٩٨٤ز) کونترولا باژێرێ موسل کریە(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٥٣٧/٣ — ٥٣٨، ٣٢٢/٤)، د ڤی شەری دا هژمارەك مەزن ژ لەشکەرێن بویهی ل شەری دا و هژمارەك ژ دەستەسەرکریان کوشتینە، وەك (ابن الأثیر) دیاردکەت، جهێ شەر ل (باجلایا)[١٥]، بوویە ل (خابور الحسنیة)[١٦]، (١٩٩٧، ٤٠٢/٧)، سەرکەفتنا بادێ دوستەکی و دەستگرتن ب سەر باژێرێ موسل دەنگ ڤەدایە و هۆزان پێهاتینە گوتن، ژوان هوزانێن ناڤدار، کو ژێدەرا ئاماژە پێکری و پەسنا سەرکەفتن و مێرینی میر باد و لەشکەرێ وی دکەت، هوزانڤانێ دەولەتا (دوستەکی - مەروانی) حوسێن کورێ داود بەشنەوی کوردی ب ڤی ئاوایی ڤەدگێریت:

| | |
|---|---|
| أنصــار لــدولتكم ولــيس فــي ذا | خفــا فــي العجــم والعــرب أنصـــار |
| بـــاذ بـــأرجيش وشـــيعته | بظـاهر الموصـل الحـدباء فـي العطـب |
| بباجلايـــا جلونـــا عنـــه غمتـــه | ونحــن فــي الــروع جــلاءون للكــرب |

(ابن الأثير, ١٩٩٧, ٤٣٤/٧).

ئەڤ سەرکەفتنە و دەستڤەئینانا پشتەڤانیا خەلکێ دەڤەرێ و نەرازیبونا خەلکێ موسل ل بەرپرسێن بویهی بوویە ئەگەرەك، کو میر باد هزرێ ل هێرشکرنە سەر باژێرێ بەغداد بکەت وەك بنگەهێ سەرەکی یێ خیلافەتا عەباسی و هەروەسا دەولەتا عەباسی بۆ هندێ ل بن دەستێ بوەیهیا رزگاربکەت، ئەڤ چەندە ل دەف مێژوونڤیسێ مە هاتیە بیێ، کو ئاماژێ ب ئەگەر و پالدەر و ئارمانجێن بادی بکەت، هەروەسا ل دەمێ ڤەگێرانا تەمیاما



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

مێژوویا کوردان ژلایێ ئیبن خەلدون ب هیچ شێوازەکێ بەحسێ هەولا گرتنا بەغداد بکەت، بەروڤاژی هێز و میللەتێن دیتر(ابن خلدون،١٩٨٨، ٥٣٨/٣).

مەترسیا بادی بەردەوام دبیت و بوەیهیژی ل پیلانگێرییێ بەردەوام دبن بۆ وێ چەندێ ڤێ مەترسیێ ژناڤببەن، سەرەرایێ وێ چەندێ ل دوو هێرشێن هاتینە بەحسکرن سەرکەفتن ب دەست نەئینایە و بەروڤاژی هێزەك زێدەتر ب بادی دا و بۆ بوەیهیا دیار بوو گرنگە هێزەك هەبیت ل موسل بەرسینگێ بادی بگریت،باشترین هێز بۆ ڤێ مەرەمێ حەمدانیبوون(ابن خلدون،١٩٨٨،٤/٣٢٣)، ل سالا (٣٧٤مش/٩٨٥ز) هێرشەکا لەشکەرێ بوەیهی ب سەرکردایەتیا شەهراکوی دهێتە سەر لەشکەرێ بادێ دوستەکی و ئەنجامدا ریبریێ شکەستنێ دبیت و د ڤی ریبریبوونێ دا هژمارەك زۆر ژ لەشکەرێ بادی ژی هاتنە کوشتن و ژ دەرئەنجامێن ڤی شەری دەست ب سەر باژێرێ موسل دا گرتیە، لێرەدا بوەیهی یا داخازا پشتەڤانیێ ژ (سعد الدولة بن سيف الدولة بن حمدان) (٣٥٦-٣٨١مش/ ٩٦٧-٩٩١ز) کر، ل دەف ئیبن خەلدونی ب شاشی هاتیە(أبي المعالي حمدان صاحب حلب)،کو هاریکاریا وان بکەت بەرامبەر وێ چەندێ، کو باژێرێ ئامەدێ (دیاربکر)ێ پێبدەت، ئەبو مەعالی ڤێ چەندێ رازیدبیت و هێرشی سەر بادی دکەت و نەشێت سەرکەفتنێ دەست ڤە بینیت و بەرەف میافارقین دچیت و دورپێچ دکەت و پشتی نەشیای سەرکەفتنێ دەست ڤەبینیت ڤەگەریا حەلب، لێرەدا دیار دبیت، کو بادی لەشکەرەك بهێز هەبوویە و شیایە خۆ ل بەرسینگێ لەشکەرێ حەلەب و بویهی بگریت( ابن خلدون،١٩٨٨، ٤/ ٣٢٣).

پشتی ژ نافچوونا ڤان هەولێن لەشکەری ئیبن سەعد حاجب کەسەکێ ڕادسپێریت، کو خیانەتێ ژ بادێ دوستەکی بکەت و بکوژیت، ئەڤ چەندە دیار دبیت، کو کەسایەتیا بهێز و کاریگەر ل سەر لەشکەرێ وی بوویە ئەگەرەك سەرەکی، کو ڤان هەولان ژنافببەت و ئەو کەسە دچیت بێ، کو ئیبن خەلدون ئاماژێ ب ناڤ و ناسناڤێن وی کەسی بکەت، دبیت کەسەك بیت دناڤ لەشکەرێ بادی دا ژبەرکو ب ساناهی نەبوویە کەسەك بیانی و نەشارەزا و بویهی و دەرڤە بهێت پیلانا کوشتنێ ل دژی بادی بجە بینیت، ل دەمێ بجە ئینانا ڤێ پیلانێ ئەو کەسە شاش دبیت و ل بن رەشمالێ دا ب شیرێ خۆ دربەکێ ل پێیێن بادی ددەت، کو وەسا تێگەهشت بوو ئەڤە سەرێ ویە، کو سێ خال دیار دبن ل ڤێ هەولێ مەترسیا بادی ل سەر بویهیان و گێرانا هەمی هەولەکێ بۆ ناڤبرنا وی، هەروەسا ژ خۆ ترسیانا بادی ل چارەنڤیسێ خۆ و دبیت جهێ نقستن و رینشتنا خۆ گوهوری بیت و هەروەسا شارەزاییا کەسێ خیانەتکار، کو گەهشتیە بادی(ابن خلدون،١٩٨٨ ،٣٢٣/٤).

لێرەدا باد دگەهیتە باوەریەکێ، کو دەست بۆ ئاشتەوایی ببەت ژبەرکو وەك دیار دبیت شەرێن بەردەوام کاریگەری ل سەر لەشکەرێ وی هەبوویە و هەروەسا پرانیا لایەنێن دەوروبەر هەڤڕ بووینە ل سەر دژایەتیا بادی، ژبەر ڤێ چەندێ نامەیەکێ هنارتیە بۆ (سعد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

الحاجب) ل موسل و داخازا ئاشتەوایێ کریە و باد هەمی وان دەڤەرا دپارێزیت، کو ل بن دەستێ وی بوون هەتا نیڤەکا (طور عبدین)[١٧]،(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٣٢٣/٤).

مرنا (سعد الحاجب) ل سالا (٣٧٧مش/٩٨٧ز) دووبارە رەوشا دەڤەرێ تێکدچیت و لەشکەرەك بویهی دهێتە دەڤەرێ و ژلایێ خۆ ڤە بادێ دوستەکی ژی رێککەفتناما دیارکرنا سنورێ خو دشکینیت و هێرشا (طورعبدین) دکەت و کونترول دکەت، برایێ خۆ هنارتیە سەر دەڤەرێن بیابانێ و ل ڤی شەری دا برایێ بادی (أبو الفوارس الحسین بن دوستك) (الفارقي،١٩٥٩، ٥٢)، هاتیە کوشتن و ئەڤ هێرشە چ گوهورینیێن مەزن دروستنەکرینە[١٨]، (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٣٢٣/٤).

د ژێر ناڤویشانێ (عود بني حمدان الى الموصل ومقتل باد) ئیبن خەلدون دئێتە سەر بابەتەکێ گرنگ ئەو ژی دوماهیك هاتنا بادێ دوستەکی یە(العبر، ١٩٨٨، ٣٢٣/٤ - ٣٢٤)، ل دەف (ابن الأثیر) ئەڤ دەنگ و باسە ل ڤەگێرانێن سالا (٣٨٠مش/٩٩٠ز) هاتیە(١٩٩٧، ٤٣٤/٧)، باد چاڤدێریا رەوشا باژێری موسل دکەت تایبەت پشتی، کو کێشە دروست دبیت ل سەر دووبارە ڤەگریانا( أبو طاهر إبراهیم) (م:٣٨٠مش/٩٩٠ز) و (أبو عبدالله الحسن) (م:٣٨٦مش/٩٩٦ز)کورێن (ناصرالدولة بن حمدان) (م: ٣٥٨مش/٩٦٩ز) دناڤبەرا بوەیهی و خەلکێ موسل، کو دژایەتیا والیێ باژێری موسل دکر، لێرەدا باد ژی هەولا دەستگرتن ب سەر موسل ددەت وی دەمی ل دیاربکر(ئامەدێ) بوو، دڤێ رویدانێ دا ئیبن خەلدون ئاماژێ ب پێشهاتەك نوی دکەت، ئەوژی هاریکاریا هوزێن کوردی[١٩]بوویە بۆ بادی تایبەت هۆزا بەشنوی[٢٠]، خودانێن کەلها (فنك)بووینە، کو ئیبن خەلدون وەسا دیار دکەت هژمارها وان زۆر بوویە،(العبر،١٩٨٨، ٣٢٤/٤)، ژێدەرێ ئیبن خەلدونی بیێ، کو ئاماژێ پێبکەت (ابن الأثیر) بوویە و وەك خۆ ڤەگوهاستیە،(الکامل،١٩٩٧، ٤٣٤/٧)، پشتەڤانیا کوردان بو بادی ل گەل وی بنەمایێ سەرەکی دگونجیت، کو ئیبن خەلدون ل پێشەکیا خۆ دا بەحس دکەت، دەمارگیری (العصبیة) وەك بنەمایێ سەرەکی یێ ئاڤاکرنا دەولەتێ و ئارمانجا دەمارگیریێ گەهشتنە ب دەستهەلاتێ ((لأن الملك إنما یحصل بالتغلب وتغلب إنما یکون باالعصبیة...)) لێرەدا دیار دبیت دیف بۆچوونا ئیبن خەلدونی دەمارگیریا هۆزایەتی بنیاتێ ئاڤاکرنا دەولەتێ یە و سێیەکا (مقدمة)ێ ژلایێ مێژوونڤیسێ مە ڤە هاتیە تەرخانکرن بۆ بەحسکرنا دەولەتێ،(ابن خلدون،١٩٨٨, ١٩٧/١؛ ساطع الحصري, ١٩٥٣, ٣٥٤ ؛ البابیري،٢٠١٠, ٩٦).

قوناغەکا دیتر دەستپێدکەت ل شەر و هەڤرکێ ل سەر موسل، حەمدانی هەر وەکی بۆ دیار بوویە ب هیچ شێوازەکێ شیانێن بەرسنگرتنا لەشکەری بادی نینە، دەستکر ب گرێدانا پەیماننامەا د گەل هێزێن دەڤەرێ بۆ دروستکرنا بەرەیەکێ ئێیکگرتی دژی بادی و ئەو بەرەیە دروست دبیت، کو دبیت هەمی لایەنان ئەو حەزە هەبیت خۆ ژ مەترسیا هێرش و بەرفراوانخازیا بادی دەرباز بکەن و دوماهیکێ پێ ب ئینن، لەوما داخازێ ژ(إقبال

الدولة محمد بن المسيب بن رافع العقيلي) (٣٨٠-٣٨٦مش/٩٩٠-٩٩٦ز) دكەت میرێ (بنو العقیل)، وەك هێزەك کاریگەر ل دەڤەرێ،کو پشتەڤانیا حەمدانیان بکەت بەرامبەر پێدانا (جزیرة ابن عمر)و نەسیبینێ، عەقیلی ڤان مەرجان قەبیل دکەن و ژبەرکو دەڤەرەك ستراتیژی و گرنگ دێ ب دەستکەفتی دەمێ سەردکەڤن(ابن خلدون،١٩٨٨, ٤/ ٢٤)، لێرەدا زێدەبوونا ڕولێ حەمدانیا ل بەرامبەر هێزا بادی بۆ دەولەتا بوەیهی خالەك باش بوویە و ڤیایە سنورەك بۆ دەستهەلاتا بادی بێتەدانان(توفیق،١٩٩،٢٠١٠)، باد هێرشی موسل دکەت ژبەرکو پشتەڤانی دناڤ خەلکی ژی دا هەبوویە، لێ هەڤکێشا هێزێ پشتی پەیمانێن کورێن ناسر دەولەیێ حەمدانی دگەل هێزێن دەڤەرێ هاتبیە گۆهۆرین هێرشا بادی هاتە شکاندن و ل گەرمەیا شەری دا دەمێ باد ل هەسپەکێ خۆ هاڤێتیە هەسپەکێ دیتر کەفتیە ئەردی و بریندار بوویە، ژبەرکو دشەری دا شکەستن خواریە و خوارزایێ وی کو ئیبن خەلدون چ ئاماژەیان پێناکەت وەسا ڤەدگێریت، کو هەڤالێن وی باد هێلایە و پشتی هنگی هاتیە کوشتن لێ (ابن الأثیر) ناڤێ خوارزایێ وی دئینیت (أبو علي) هەولا ددەت، کو خالێ خۆ رزگار بکەت، لێ نەشێت، د ڤی دەمیدا کەسەك بادی دناسیتەڤە و سەرێ وی لێددەت و بۆ (بني حمدان) (٣١٧-٣٩٥مش/٩٣٠-١٠٠٣ز) دبەت و دیاریەکێ بەرامبەر ڤی کاری وەردگریت،باد ل بەردەرگەهێ (الإمارة) دهێتە هەلاویستن(ابن الأثیر، ١٩٩٧، ٧/٤٣٥ ؛ سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٨/ ٤١-٤١ ؛ ابن خلدون،١٩٩٨، ٣٢٤/٤)، ل دەف (الفارقي) وەسا هاتیە پشتی هاتیە یتن ل ناڤ کوشتیان دا ب بریندار دهێتە کوشتن و دەست و پێین وی هاتینە ژێڤەکرن و ژبلی موسل بریە بەغدا ژی و یاری ب تەرمێ وی هاتینەکرن،(١٩٥٩، ٥٩).

مێژوونڤیسێ مە بەحسێ هەلاویستن و ڤەشارتنا بادێ دوستەکی ناکەت ل موسل، ل دەف مێژوونڤیسێن دیتر ئاماژە پێهاتیەکرن، تایبەت دەمێ خەلکێ موسل نەرازیبوونا خۆ دیار کری ل سەر هەلاویستنا بادی و خەلکی دگوت: نابیت کەسەك خەبات کری (جیهاد) ب ڤی شێوازی بێتە هەلاویستن و ڕاست و دروست نینە و ڤیانا خۆ بۆ وی دیارکر و ئینا خوارێ و ل دیف ڕێنماییێن ئاینێ ئیسلامێ شوشتیە و (کفن) کریە و دیڤدا ڤەشارتیە، هەتا (الروذراوري) رەخنەیان ل خەلکێ موسل دگریت ل سەر ڤی هەلویستی،(د.ت، ١٧٨/٣ ؛ ابن الأثیر،١٩٩٧٧/٤٣٥)، خەلکێ موسل خەمەك مەزن بۆ هەلگرتیە و گەلەك بۆ بادی گرینە و پەشمان بووینە، ئەڤ خەم و پەشیمانی و گریە ناهێتە وەسفکرن(الفارقي،٥٨،١٩٥٩).

**تەوەرێ دوویێ: سەردەمێبنەمالامەروانی (٣٨٠ ٤٧٨مش/٩٩٠ – ١٠٨٦ز)**

ئیبن خەلدون د پەرتوکا خۆ دا هژمارەك زۆر ژ ڤەگێرانان تایبەت کرینە ب مێژوویا ڤێ دەولەتێ، کو پترن ژ سیه ڤەگێرانێن جودا جودا، ژ دەستپێکێ مێژوونڤیسێ مە بناڤ و نیشانەك تایبەت، کو ڕامانێن سیاسی و جوگرافی و پێناسەکرنێ ددەتە وی قەوارێ سیاسی و ئەوێ کو مەروانیان ل دەڤەرەك بەرفرەهـ ژ هەرێما جزیرێ ئاڤاکری، دبێژیت:

((الخبر عن دولة بني مروان بدياربكر بعد بني حمدان ومبادي أمورهم وتصاريف أحوالهم))،(العبر،١٩٨٨،٤/٤١٠)، دەستپێکا ڤەگێرانێن تایبەت ب دەولەتا مەروانی ڤە، ئیبن خەلدون دابەشکاریەکێ دکەت بۆ دەولەتێن هەفسنوری دەولەتا (دوستەکی – مەروانی)، لێرەدا دیار دبیت، کو پالدەرێ سەرەکی یێ دامەزراندنا ڤێ دەولەتێ دەمارگیری(العصبية) یا کوردی دناڤدا هوزایەتی بوویە، وەکی ئیبن خەلدون ل پێشەکیا مێژوویا خو دا دبێژیت: ((أن الملك إنما يكون بالعصبية...)) لێرەدا مێژوونڤیسێ مە بنیاتێ ئاڤاکرنا دەولەتێ دیار دکەت(العبر، ١٩٨٨، ٢٠٤/١)، ل دەسپێکا دەستهەلاتا مەروانیان دبێژیت: یا ڕاست و ڕەوا ئەو بوویە، کو من ئاماژە ب ڤێ دەولەتێ کریا ل دەمێ بەحسکرنا دەولەتا حەمدانیا هەروەسا دەولەتا (بني مقلد) (٣٥٥-٤٨٩مش/٩٦٦-١٠٩٦ز)هاتیە کرن ل موسل، بني مرداس ل حەلەب(٤١٤-٤٧٢مش/١٠٣٢-١٠٧٩ز)ژبەرکو ئەڤ دەولەتە دروستبوونە و ژێك بوونە و وەك دیار دبیت ژێدەرێن وێ پێیکڤە گرێدایە، لێ بنەمالا مەروانی نە ژ عەرەبا بووینە، بەلکو کوردن و گیروکرنا بەحسکرنا وان بۆ وێ چەندێ بووینە داکو ل گەل دەولەتێن نەعەرەب (عەجەم) بێنە بەحسکرن، هەروەسا ل گەل دەولەتا (بني طولون) (٢٥٤-٢٩٣مش/٨٦٨-٩٠٦ز)ژێ نەهاتیە بەحسکرن، چونکی گەلەك پێش وان هاتیە ئاڤاکرن، لێرەدا دیار دبیت دەولەتا (دوستەکی – مەروانی) ژ دەولەتێن ناڤدارێن دەڤەرێ بوویە ل وی سەردەمی دا، کو خودانێ سازیێن سیاسی و ئابوری و کارگێری و جڤاکی بوویە(العبر،١٩٨٨، ٤/٤١٠ ؛ کوچەر،٢٠١٠، ٢٤٢).

هەرچەندە دەنگ و باسێن تایبەت ب بادێ دوستەکی هاتبینە بەحسکرن، لێ وەك ئێککگرتنا بابەتی و ئەو پێکڤەیبا دەمی و جهی بۆ دەولەتا مەروانی، کو د ژێدەران دا ب (دولة بني مروان) دهێتە ناسین، ژوانا د ژێدەران دا ب شێوازێ (دولة بني مروان) سەرەدەری ل گەل ڤێ دەولەتا کوردی کریە دگەل گۆهۆرینێن کێم کو د ناڤ و نیشانان دا بەحس لێکریە،(ابن الأثير،١٩٩٧، ٧/٤٣٥)، ب (ذكر إبتداء دولة بني مروان)،(أبو الفداء،د.ت،٢/١٢٦) ب خودانێن دیاربەکر(ئامەد) وەسفدکەن،(صاحب ديار بكر وإبتداء دولة بني مروان)،(الذهبي،١٩٩٣،٣٢/ ٢٦)، ب (دولة بني مروان) دئینیت، ل دەف الفارقي ب (ذكر ولاية بني مروان دياربكر جميعها)،(١٩٥٩، ص٥٩) شەرەفخانێ بەدلیسی، ب (فەرمانڕەوانیانی دیاربەکر و جزیر)، ناڤدکەت، (٢٠٠٦، ٢٩)[٢١]، واتا ب چ شێوازەکێ ناڤێ ڤی قەوارێ سیاسی یێ کوردی یێ ناڤدار ب دەولەتا دوستەکی نەهاتیە ل ژێدەرێن سەرەکی دا و هەر ب دەولەتا مەروانی هاتیە[٢٢].

**١- ئەبو عەلی حەسەن کورێ مەروان (٣٨٠ – ٣٨٧مش/٩٩٠ – ٩٩٧ز)**

ئیبن خەلدون دەمێ دئێتە سەر دەنگ و باسێن ئەبو عەلی حەسەن کورێ مەروانی)، کو ئیبن خەلدون ناڤی وی ب ئەبو عەلی کورێ مەروانی دئینیت و دەستپێکێ ب ڤەگێرانێن تایبەت ب زێدەبوونا ڕولێ بادێ دوستەکی و پەیوەندیێن وی دگەل بوەیهی و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

حەمدانیان و هەتا کوشتنا وی و دەرباز بوونا ئەبو عەلی ل ڤی شەری دا، (الروذراوري،د.ت، ١٧٧/٣ ؛ الفارقي، ١٩٥٩،٥٩ ؛ العبر، ١٩٨٨، ٤١٠/٤)، مەروان کورێ کەك[٢٣] بابێ (ئەبو عەلی)، سەر ب هۆزا (الحاربختي) یە، زاڤایێ بادێ دوستەکی ژ خویشکێ، چوار کور هەبووینە بناڤێن (حەسەن و سەعید و أحمد و کەك)، ژ پێشکێش و خانەدانێن گوندێ کرماس، کو دکەڤیتە دناڤبەرا سێرت (أسعرت) و مەعەدەنێ دا بووینە،(الفارقي،٥٩،١٩٥٩)، ئەبو عەلی پشتی، کو ژ هەولا رزگارکرنا خالێ خۆ سەرکەفتنێ بدەست نائینیت دەمێ ل شەرێ بەرامبەر لەشکەرێ هەڤپشکێ موسل بریندار دبیت، ب پلانەك باش شیایە ئەو لەشکەرێ مایی ل شەری دا رزگار بکەت (ابن الأثیر١٩٩٧، ٤٣٥/٧)، خو بگەهینیتە حسنکیێفا (حصن کیفا)، شیا ژنخالا خۆ ڕازیبکەت کو دەیلەمی بوویە، دەرگەهێ ئاسیگەهێ بۆ ڤەبکەت و بچیتە دژوورڤە و دەنگ و باسێ کوشتنا خالێ خۆ پێراگەهاندیە و ڕەوش قەبیلکریە و داخازا پلانا داهاتی ل ئەبو عەلی کریە، پلانا ئەبو عەلی رزگارکرنا هەمی ئەردێن خالێ وی بووینە و ژنخالا خۆ ژی مارەکریە، بۆ وێ چەندێ دەستهەلاتا خۆ پتر پێ موکم بکەت و دبیت ژی میراتگرا بادی (هەڤژینا وی) چ بژاردێت دیتر نەبن بۆ هندێ هەمی وان دەڤەرا بۆ ڤەگەرینیت و بپارێزیت و بەردەوامێ ب دەستهەلاتا بادی بدەت(الفارقي،١٩٥٩، ٦١ ؛ ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٠/٤)، مێژوونڤیسێ مە ژی وێ چەندێ دیار دکەت، کو ب کوشتنا بادی دەستهەلاتا دەولەتا مەروانی دەستپێدکەت، واتا ژیواری خۆ وەسا دسەپاند، کو دانپێدان ب ئەبو عەلی بێتەکرن(العبر ،١٩٨٨، ٥٤٥/٣)، واتا دەولەتا مەروانی درێژکریا دەمێ دەولەتا دوستەکیە و ئەڤ چەندە دگەل هزر و بۆچوونێن ئیبن خەلدونی ژی دگونجن، کو دەولەت درێژکریا دەم و جهی و ب ڕامانەکا دیتر سەربەخویا خۆ ل دەولەتەکا دیتر وەرگرتیە، لێ ئەڤ دەولەتا کوردی ڤێ یاسا دەردکەڤیت و ب هەول و شیانێن بادێ دوستەکی و بەردەوامی دانا خارزاییێن وی دروستبوویە و بهێزکەفتیە(ابن خلدون،١٩٨٨، ٥٣٧/٣ -٥٤٥ ، ٤١٠/٤).

مێژوونڤیسێ مە دەست ب پەیوەندییێن دناڤبەرا ئەبو عەلی و حەمدانیا دکەت، دیار دبیت سەرکەفتنا حەمدانیا ب سەر بادی و کوشتنا وی پتر پالدانە، کو ل هێرشکرنە سەر دەڤەرێن بادی بەردەوام بن، لێ ئەبو عەلی ژبەرکو بەردەوام ل گەل خالێ خۆ بوویە و گۆهگرێ وی بوویە ژ زیرەکی و شارەزاییا سیاسی و شەرکەرێ ژ خالێ خۆ کێمتر نەبوویە و ب ئاستێ وان گەفان بوویە، کو هاتینە رێکا دەولەتا وی دا و شیایە رێزێن خۆ ئێکپێخیت(ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٠/٤)، هەتا ئیبن خەلدون وەسا وەسفدکەت پشتی ڤان سەرکەفتنێن، کو ئەبو عەلی ب سەر حەمدانیا دئینیت دەستهەلاتا وان ل موسل ژی نامینیت(العبر،١٩٨٨، ٤١٠/٤)، ل دورپێچا سەر میافارقین کو ژلایێ هەردوو کورێن حەمدانی ڤە (أبو طاهر و أبو عبدالله)بوو، دڤی شەری دا ل سالا (٣٨٠مش/٩٩٠ز) (أبو عبدالله) هاتە دەستەسەرکرن، هاتە بەردان، لێرەدا مێژوونڤیس ئاماژێ ب چ مەرجا ناکەن بۆ ئازادکرنا(أبو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

عبدالله)ى ل دەمەكێ دا هێشتا شەر يێ بەردەوام بوويە و دەمەك كێم ب سەر كوشتنا بادى ڤە چوويە ب دەستێن حەمدانيا، (أبو عبدالله) خو گەهاندنە برايێ خۆ (أبو طاهر)ى، كو ئامەد دورپێچكر بوو و دووبارە دهێتە دەستە سەركرن و ب ناڤەندگيرى و داخازيا خەليفێ فاتمى ل مسريێ (العزيزبالله) ٣٦٤-٣٨٦مش/٩٧٥-٩٩٦ز)هاتيە ئازادكرن و كورێن حەمدانى هاتينە شكاندن(العبر،١٩٨٨، ٣٢٤/٤)، ئەبو عەلى دەست ب سەر دياربەكر و ميافارقين دا دگرت وەك دوو باژێرێن سەرەكى يێن دەولەتا (دوستەكى – مەروانى)(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤١٠/٤)، هەروەسا ئاماژێ ب سەرەدەريا ئەبو عەلى دكەت ل گەل خەلكێ ميافارقين و ئەو كوشتارا ب سەرێ وان ئيناى، جورە ترسەك ل دەف خەلكێ باژێرێن ديتر دروستكر بوو و ئەڤ چەندە ژى دبيتە ئەگەرەك بۆ دوماهيك هاتنا وى(ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٠/٤ – ٤١١)

ئيبن خەلدون بيێ درێژەدان ب دەنگ و باسێن سەردەمێ ئەبو عەلى مەروانى و دئێتە سەر كوشتنا وى ل ژێر ناڤ و نيشانێ (مقتل أبي علي بن مروان وولاية أخيه أبي نصر)، ئەگەرێ وێ وێ ژى ل پرسەكا هەڤژينايا سياسى دناڤبەرا مەروانى و حەمدانيا دەستپێدكەت، دەمێ ئەبو عەلى كچا (سعد الدولة) يێ حەمدانى دخوازيت ل حەلەبێ بناڤێ(ست الناس بنت الأمير سعدالدولة بن شريف سيف الدولة بن حمدان) مەرجێ (ست الناس) ئەو بوويە، كو ل ئامەدێ بێتە ئاكنجى كرن(العبر، ١٩٨٨، ٤١١/٤)، ئەڤ مەرجە دئێتە بجهـ ئينان و ئەبو عەلى حەسەن ژى بۆ بجهـ ئينانا ڤى مەرجى و رێورەسمێن ڤێ هەڤژينێ بەرەف ئامەدێ دچيت، ل جهێ خۆ (ست الناس) ژى ب رێك دكەڤيت و دژێدەران دا، كو ئيبن خەلدون ئاماژێ پێناكەت، (ست الناس) هۆزانەكێ دبێژيت، كو رامانا وێ چەندێ ددەت ئەگەر هەيە ئەڤ هەڤژينى يە بەرى بجهـ بێت ئەبو عەلى بهێتە كوشتن،ئەڤ هۆزانە هاتيە گوتن:

لهفي على فارس فجعت به أرملني قبل ليلة العرس[٢٤]

لێ بەرپرس و كەسايەتيێن باژێرى ب سەركرداتيا شێخ عەبدلبر ترسا وێ چەندێ ل ئەبو عەلى هەبوو، كو وان ژ ب هەمان چارەنڤيسێ خەلكێ ميافارقين ببەت(ابن خلدون،١٩٨٨،٤/٤١١)، ئەڤە سەرەراێ وێ چەندێ، كو دەستپێكێ پەيوەندييێن ئەبو عەلى و شێخ عەبدلبر خوش بوون، لێ كەسەكێ ديتر بناڤێ شێرەوى كورێ مەم (م: ٤٠١مش/١٠١١ز) ناڤبەرا هەردوولايا تێكددەت هەتا وى رادەى، كو شێخ دگەل شێرەوەى و چەند كەسايەتيێن ديتر يێن ئامەدێ بريارا كوشتنا ئەبو عەلى بدەن ل دەمێ دگەهيتە ئامەدێ تايبەت ل دەرگەهى، كو جهەك تەسك بوويە و پيلان ئەو بوويە كى بكوژيت بەرامبەر دا بەرپرسياريا باژێرى وەربگريت و ل دەمێ بجهـ ئينانا پيلانێ پارەى ب سەر ڕا پاڤێژن بۆ هندێ ئێك بشێت ل نيزيك ڤە پيلانا كوشتنێ بجهـ بينيت و ئەنجامدا ئەبو تاهر يوسف كورێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولينێن كوردى

دومنەی(م:٤١٥مش:١٠٢٥ز) ڤە هاتە کوشتن ل سالا (٣٨٧مش/٩٩٧ز)، (ابن الاثیر، ١٩٩٧، ٤٣٦/٧ ؛ سبط ابن الجوزي،٢٠١٣،١٨/٩٨ ؛ توفیق، ٢٠٤، ٢٠١٠).

**٢- مومەهد دەوله ئەبو مەنسور کورێ مەروان(٣٨٧ – ٤٠١مش/٩٩٧ - ١٠١١ز)**

ب کوشتنا ئەبو عەلی دەستهەلات بۆ برایێ وی (أبو نصر بن مروان) ی دچیت و بەرەف میافارقین دچیت وەك بنگەهێ دەستهەلاتداریا وان، لێ دەستهەلاتا وی یا زۆر نەبوویە و ئیبن خەلدون ب ڤی شێوازی وەسفا دەستهەلاتا وی دکەت((...ولم یکن له فیه الا السکة والخطبة))،لێرەدا دیار دبیت، کو وەك ئێك ژ بنەماییێن دەولەتا سەربەخو، ڤێ دەولەتا کوردی ل چەرخێن ناڤینپارەیێ تایبەت ب خۆ هەبوویە هەروەسا ناڤێ میرێن دەولەتا (دوستەکی – مەروانی) ل گوتارا ئەینی دگەل ناڤێ خەلیفێ عەباسی هاتیە گوتن وەك نیشانێن قەوارێن سیاسی یێن سەرەکی (العبر، ١٩٨٨، ٤١١/٤)، هەروەسا مومەهد دەوله ل گەل وان ئاشتەوایی دکەت، کو برایی وی کوشتی و دەستهەلاتەك زێدەتر ژی پێددەت تایبەت شێرەوەی وەك پیلانگێرێ سەرەکی یێ کوشتنا ئەبو عەلی(الفارقي، ١٩٥٩،٨٠ ؛ ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١١/٤)، ئیبن خەلدون بەحسێ هەلویستێ بنەمالا مەروانی ل ڤێ رویدانێ ناکەن، بتنێ ئاماژێ ب وێ چەندێ دکەن، کو پەیوەندیا مومەهد دەولەی و برایێ وی (أبو نصر)ی تێکدچیت و برایێ خۆ دویر دئێخیت بۆ ئەسعەرد (سێرت)، بۆ وێ چەندێ ل مەلبەندێ بریاردانێ دیر بکەڤیت (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤١١/٤).

ئەوێن کو مومەهد دەوله ب پیلانا کوشتنا برایێ وی ئینایە سەر دەستهەلاتا، هەر هەمان کەس بوون ب شێوازەك دیتر مومەهد دەوله ب هەمان چارەنڤیس بری، ل دیف ڤەگێرانا مێژوونڤیسێ مە، کول (ابن الاثیر) وەرگرتیە، وی دەمی دا دەستهەلاتا مومەهد دەولەی ب دەستێ شێرەوی کورێ مەم دا بوویە((... وکان قائده شروه متحکما في دولته))، واتا ل بەرامبەر کوشتنا ئەبو عەلی دەستهەلاتەك زێدەتر وەرگرتیە، هەروەسا ئیبن خەلدون بەحسێ وێ چەندێ دکەت، کو شێرەوەی کەسەك نیزیك ل خۆ هەبوویە بناڤێ ئیبن فەلیوس(٤٠٠مش/١٠١٠ز) بەرپرسیاریا پاراستن و ئێمناهیێ پێ هاتیبە پاراستن و مومەهد دەولەی ئەڤ کەسە نەدڤیا و ژبەر شێرەوەی نەدشیا ب بکوژیت، لێرەدا (ابن فلیوس) هەولا تێکدانا ناڤبەرا هەروو لایا ددەت و شێرەوەی بریارا کوشتنا مومەهد دەولەی ددەت، ئەڤ پیلانا ل سالا(٤٠١مش/١٠١٠ز)هاتیە بجهـ ئینان و ل دەمێ دربا ل مومەهد دەولەی دانێ دا ژی وێ چەندێ دووپات دکەت کو شێرەوی ب دیف پیلانێن (ابن فلیوس) کەفتیە، ((آه یا شروة ! اتبعت غرض ابن فلیوس، الله لا أفلحت))، (أبو الفداء،د.ت، ١٧٢/٢ ؛ ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤١١/٤).

شێرەوەی ب کوشتنا مومەهد دەولەی ل کەلها (هەتاخ)[٢٥] دەست دکەت ب تەمامکرنا پیلانا خۆ ئەو ژی گرتنا کەلهـ و باژێرا و دەستەسەرکرنا میرێن بنەمالا دەستهەلاتێ و کەسایەتیێن نیزیك بوویە ل مومەهد دەولەی، نامە بۆ وان بەرپرسا هنارتن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

بناڤێ مومەهد دەولەی، لێ د ڤێ پێنگاڤێ دا سەرکەفتنێ نائینیت(الذهبي،١٩٣٠، ٣٣٧/٣٠ ؛ ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٢/٤).

**٣-نەسر دەولە مەروانی (٤٠١ – ٤٥٣مش/١٠١١ - ١٠٦١ز)**

پیلانا شێرەوەی ئاشکرا بوو، کو مومەهد دەولە یێ کوشتی و پێنگاڤێن دەستگرتن ب سەر دەستهەلاتێ ددەت، خواجە ئەبو قاسم بەرپرسێ باژێرێ ئەرزن[٢٦]، دیف داخازناما شێرەوەی دچیت، لێ پشتی درێکا دا پیلانا شێرەوەی بۆ ئاشکرا بوو ڤەگەریا ئەرزن، بۆ وێ چەندێ شەرعیەتێ ل شێرەوەی وەربگریت دانپێدان ب (نصر الدولة المرواني) دکەت،(سبط ابن الجوزي،٢٠١٣، ١٢٥/١٩ ؛ ابن کثیر،١٩٨٦، ٨٧/١٢)، ئەڤ چەندە ژی ل گەل بنەمایێ هزرا ئیبن خەلدونی دگونجیت، کو دەستهەلاتا دێ بۆ ئێك ژ هۆزا سەردەست و سەرکەفتی بیت ب میراتگری((ان الرئاسة علی أهل العصبیة لا تکون في غیر نسبهم))، (العبر،١٩٨٨، ١٦٥/١)، کو ل باژێرێ ئەسعردداخازکری بو ئەرزن و ل سەر گورێ ئەبو عەلی دگەل بابێ ئەبو عەلی سوز دا کار بۆ ژناڤبرنا شێرەوەی بکەت و ئەڤ پێنگاڤە بوویە ئەگەرەك سەرەکی بۆ ژناڤبرنا پیلانا شێرەوەی و دەستهەلات دووبارە ڤەگەریت بۆ بنەمالا مەروانی(ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٢/٤).

ئیبن خەلدون ئاماژێ ب وێ چەندێ دکەت، کو پێنگاڤێن خواجە ئەبو قاسم و نەسردەولەی سەرکەفتن ئینا و نەسردەولەی دەست ب سەردەڤەرێن سەرەکی یێن دەولەتا مەروانی داگرت، مێژوونڤیسێ مە ئاماژێ ب دەمێ درێژێ دەستهەلاتا وی دکەت، کو زێدەترە ل پێینجی سالان بوویە و میرەك باش بوویە، زانایا سەرەدانا وی کریە ب رێژەیەکا زۆر ئەڤ چەندە ژی پێشڤەچون و سەرکەفتن و گەشەکرنا بیاڤێن جوداێن دەولەتا (دوستەکی – مەروانی) ڤەدگریت ل سەردەمێ نەسر دەولەی، ژوان کەسێن سەرەدانا وی کری (أبو عبدالله الکازروني)، هەروەسا وەك ئێك ژ مەزهەبێن بەربەلاڤێن ئاینێ ئیسلامێ و پێگریا زوربەی کوردان ب ڤی مەزهەبی و پشتەڤانیا نەسردەولەی ب ئاینێ ئیسلامێ و زانایا مەزهەبێ (شافعی)، ل دەولەتێ دا بەلاڤبوویە(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤١٢/٤)، نەسردەولە یێ بەردەوام بوویە ل کارێن باش و هوزانڤانا قەستا کوچکا وی کریە و پەسنا وی کریە ل هۆزانێن خودا ل بەرامبەر دا دیار پێیدانە، هەروەسا سنور(الثغور) پاراستنە و ئێمناهی تێدا بەلاڤکریە، یا گرنگ ئەبوویە کو خەلك ب گشتی ل ژیانەك خوش دابوویە هەتا مری(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤١٢/٤).

مێژوونڤیسێ مە ئاماژێ ب داخازا خەلکێ روهایێ دکەت، کو نەسردەولە باژێرێ وان ل بن دەستێ ئێك ژ بەرپرسێن نمیریبا بناڤێ عوتەیر رزگار بکە بیێ، کو روونکرنەك زێدە ب کەسایەتیا ڤی بەرپرسی بدەت ژبەر ستەم و نەدادیا وی، دبیت ئەڤ چەندە ل گەل هزر و بیرو پلانێن نەسردەولەی گونجا بیت بۆ وێ چەندێ دەستهەلاتا خۆ پتر بەرفرەهـ بکەت،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

روها ب بن دەستهەلاتا عەتیری ئینا دەرێ ل سالا (٤١٦مش/١٠٢٦ز)، پشتی نەما عەتیری کورێ وی داخازا بازێرێ روها دکەت بۆ ڤێ مەرەمێ(صالح بن مرداس) (م:٤٢٠مش/١٠٢٩ز)هەولدان کو ناڤەندگیرێی بکەت و نەسردەوله رازیبکەت و ڤی بازێرێ بۆ میراتگرێن وی بزڤرینیت و ئەنجامدا داخازیا وی قەبیلکر و دەستهەلاتا وان بۆ بازێرێ ڤەگەراند(ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٢/٤ ؛ ابن العبري، ١٩٩٢، ١٨٠).

د ڤەگێرانا دیتر یا گرنگ دا ل سالا (٤١٩مش/١٠٢٨ز)، کو دچیتە خانەیا پەیوەندییێن نەسر دەولەی ل گەل هێز و قەوارێن دەوروبەر ل ژێر ناڤ و نیشانێ (حصار بدران بن مقلد نصيبين)، هەر چەندە ئەو هێزا ل نسیبینێ وەك پێتڤیا نەدشیا خۆ ل بەرسینگێ هێزا عەقیلیا بگریت، بەلێ پشتەڤانی ژلایێ نەسردەولەی ڤە گەهشتنێ و ئەنجامدا شیان ڤێ هەوا عەقیلیا بشکینن و نەسیبین هەر ل چوار چوڤێ دەستهەلاتا مەروانیا ماڤە(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤١٣/٤).

ل درێژاهیا ڤەگێرانێن خودا ئیبن خەلدون بەحس ل گەهشتنا سەلجوقیا دکەت، بۆ دەڤەرێن جزیرێ و سنورێن دەستهەلاتا نەسردەولەی، دیار دبیت ئەڤ پێنگاڤە ل بیێ پیلانیا هات و ئەڤ هۆزە ژ دەستێ ئیبرهیم یەنال (م:٤٥١مش/١٠٥٩ز)ی رەڤین و گەهشتنە دەڤەرێن مەروانیا، ل دەسپێکێ دیار دبیت، کو سلیمان کورێ نەسردەولەی هەولا پاراستنا دەڤەرێن خۆ ددەن و داخازا ئاشتیێ دیرئییێخستنا ڤان شەر و کێشەیان دکەت، لێ وەك مێژوونڤیسێ مە دیار دکەت، کو سلێمان کورێ نەسردەولەی مێڤان کرینە و هژمارەك ژوان کوشتینە(العبر،١٩٨٨، ٤١٣/٤)، پشتی ڤێ رویدانێ، کو دیار دبیت وەك تولڤەکرن ژ سەرەدەریا سلێمان کورێ نەسردەولەی هاتبیت، دووبارە سەلجوقی هێرشی چەندین دەڤەرێن جزیرێ دکەت و تالان و وێرانکاری دیف خو ڕا دئینن(ابن خلدون،٤،١٩٨٨/٤١٣).

ئیبن خەلدون رویدانەك دیتر، کو وێ چەندی دیار دکەت، نەسردەوله ل سەر مەزهەبێ سوننی بوویە بۆچونییێن وی ل گەل خیلافەتا عەباسی بووینە، ئەڤ ڤەگێرانە ل (ابن الأثير)ی وەرگرتیە لێ ناڤ و نیشان گوهورینە و هەروەك (ابن الأثير) ب ڤی کاری داخبار ببیت(ذكر الخطبة العباسية بحران والرقة)، گوتار بناڤێ خەلیفێ عەباسی (القائم بأمرالله) خواندیە و گوتار بناڤێ خەلیفێ فاتمی(المستنصر بالله) (٤٢٧-٤٨٧مش/١٠٣٦-١٠٩٤ز) قەدەغەکریە، ئەڤە ل دەمەکێ دا بوویە وەك ئیبن خەلدون دبێژیت بانگەوازا عەلەوی ل شام و جزیرێ بەلاڤ ببو، ئەڤ پێنگاڤە ژی ل پشتی گەفێن دەولەتا فاتمی هاتن ل نەسردەولەی، کو دێ هێرشی سەر وی کەن و نەسردەولەی ژی داخازێ ل هێز و قەوارێن دەڤەرێ دکەت ئێك دەنگ بن بۆ رەتکرنا ڤێ بانگەوازێ و گەفێن دەولەتا فاتمی ئەڤ چەندە ل سالا (٤٣٠مش/١٠٣٩ز) بوویە و پشتی گەفێن بەردەوام ل حەران دووبارە گوتار بناڤێ فاتمیا خواندی لێ ل دەولەتا (دوستەکی – مەروانی) نەهاتیە خواندن(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤١٤/٤).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

مێژوونڤیسێ مه ل ژێر ناڤ و نیشانێ (مقتل سليمان بن نصير[٢٧] الدولة) دئێته سەر بابەتەك تایبەت ب پەیوەندییێن مەروانی دگەل وان هێزێن کوردی ئەوێن دکەفتنە دناڤ سنورێ دەولەتا (دوستەکی – مەروانی) دا وەکی هۆزێن (البختيةوالبشنوية[٢٨])، ئەو ژی پشتی، کو نەسردەولەی کورێ خۆ (سلێمان) یێ ناسیار ب (أبو حرب) کریە بەرپرسێ جزیرێ و هەڤسنورێ دەستهەلات و پییگەهێ (موسك بن المجلي)[٢٩]،سەرکردێ کوردێت بوختی بوویە(ابن الأثير،١٩٩٧، ١٢٣/٨ ؛ ابن الوردي،١٩٩٦، ٣٤٤/١).سلێمان کورێ نەسردەولەی ب پیلانەکێ کوشتیە پشتی کو ئینای و وەسا دیار کریە دێ کچا ئەبی تاهر بەشنەوی خودانێ کەلها (فنك)[٣٠]، خارزایا نەسردەولەی لێ مارەکەت و ئەڤ هەڤژینی یە دروست دبیت لێ سلێمان دەستەسەردکەت و هەتا سولتان توغرول بەگ سەلجوقی (م ٤٥٥مش/١٠٦٣ز)، داخازا بەردانا وی دکەت لێ وەسا دیار کریە کو مریە، مێژوونڤیسێ مە ئەگەرێ ڤێ چەندێ دیار دکەت، کو موسك چوویە بەرەیێ سولتان توغرول بەگ و هێرشی دەڤەرێن بێزنتیا ل ئەرمینیا کریە و ل بەری ڤی دەمی ل بەرەیێ نەسردەولەی بوویە، دبیت ترسا مەروانیا ل پاشەروژێ و زێدەبوون و وەرگرتنا دەستهەلات و دەستکەفیتان ل ڤان هەوا دا کاریگەریەك نەرێنی ل سەر دەستهەلاتا وان هەبیت(ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٤/٤).

ل درێژاهیا تێکچونا پەیوەندییێن نافخوی (أبو طاهر البشنوي) گازندەیا وێ چەندێ ل خالێت خۆ دکەت، وەکی (ابن الأثير) ڤەدگێریت، کو (أبو طاهر)ی گوتیە: ئەگەر وە پیلانا کوشتنا وی (موسك) ی هەبوویە، بۆچی کچا من ببیت قوربانی و بۆ من ببیتە خالەك جهێ شەرمێلێرەدا ترس دروست دبیت ژلایێ خالێن وی ڤە و پیلانا کوشتا وی دانایە و خۆ لێ دەربازکریە، پشتی وەرگرتنا دەستهەلاتا بەشنویا ژلایێ عوبیدوللا کورێ ئەبو تاهر بەشنەوی( ابن الوردي،١٩٩٦، ٣٤٤/١)، هەرچەندە ئەبو حەرب خۆ نیزیکی وی دکەت و لێ (عبيدالله) پیلانەکێ دانیت و مێڤانداریا ئەبو حربی دکەت و ئەو ژی ب هژمارەك کێم یا هێزێ دچتە دەف (عبيدالله) وهاتیە کوشتن و (عبيدالله) هەر ب کوشتنا بابێ خۆ پیلانا تولڤەکرنێ هەبوویە و شیایە ب زیرەکیا خۆ ئەو پێش پیلانێن ئەبو حربی بکەڤیت و هەرچەندە، کو دبیت پلانەك ژلایێ ئەبو حەربی هەبیت بۆ دووبارە خوشکرنا پەیوەندیێن هەردوولایا، ئەڤ چەندە دبیتە ئەگەرەك بۆ تێکچوونا پەیوەندییێن نافخوی و دەرگەهەك بۆ دەست وەردانێن زێدەرتر ل دەڤەرێ(ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٤/٤ - ٤١٥).

مێژوونڤیسێ مە دئێتە سەر کارڤەدانا نەسردەولەی ل سەر کوشتنا کورێ خۆ ژبەرکو بابەتی ئاراستێ جڤاکی ڤەگرت وەکی ئیبن خەلدون ل سەر کوشتنا ئەبو حەربی دبێژیت: ((فقتله عبيدالله وأدرك من ثأر أبيه))، ئێکسەر نەسردەوله بریارێ ددەت کو کورێ خۆ (نصر)ی فریکەت بۆ پاراستنا سنورێن دەولەتا خۆ ل هێرش و هەوێن هێزێن دەڤەرێ، کو دەرفەت هەبوو هوزێن کورد ژی پشتەڤانییێ لێ بکەن ژبەرڤان رویدانان، پشتی رەوش



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

گەهشتیە ڤێ قوناغێ قوریش کورێ بەدران خودانێ موسل داخازیا جزیرێ کر و لێرەدا بەروڤاژی هزرو بۆچوونێن ئیبن خەلدونی کو ل (مقدمة) دا هاتی ل سەر رولێ دەمارگیریێ (العصبية) کو بنیاتێ ئاڤاکرنا دەولەتێ یە، هەردوو هوزێن بوختی و بەشنوی ل گەل قوریش کورێ بەدرانی دهێنە لەشکەرێ دەولەتا (دوستەکی - مەروانی) یا کوردی، لێنەسردەولە شیایە خۆ ل بەرسینگێ ڤێهێرشێ بگریت و بشکینیت و قوریش ڤەگەریا موسل و نەسردەولەی شیا دەستهەلاتا خۆ ب سەپینیت و بەروڤاژی سیاسەتا وی بوون(الأكراد على خلافه)،( ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٤/٤ - ٤١٥)، دبیت ئەڤ پێنگاڤا نەسردەولەی ل بەرامبەر بوختی و بەشنەویا ل گەل وێ دیتنا ئیبن خەلدونی بگونیت، دەمێ بەحسێ قوناغێن دەولەتداریێ دکەت و ل قوناغا دوویێ دا دەستهەلاتداریێ ب دەمارگیریێ هاتبیتە سەردەستهەلاتێ دڤێت تاکرەویێ بکەت و ل دەوروبەرێن خۆ بێمەنت دبیت،((والجيل الثاني تحول حالهم بالملك والترفه من البداوة إلى الحضارة ومن الشظف إلى الترف والخصب ومن الاشتراك فى المجد إلى افراد الواحد به وكسل الباقين عن السعي فيه ومن عز الاستطالة إلى ذل الاستكانة فتنكسر سورة العصبية بعض الشيء وتؤنس منهم المهانة والخضوع ويبقى لهم الكثير من ذلك بما أدركوا الجيل الأول...))، (ابن خلدون،١٩٨٨، ٢١٤/١).

ئیبن خەلدون ئاماژێ ب مەترسیا سەلجوقیا ب سەرکردایەتیا سولتان توغرول بەگی دکەت، پشتی ل سالا (٤٤٨مش/١٠٥٧ز) دەست ب سەر موسل دا دگریت و ل بن دەستێ قوریش کورێ بەدران دئینیتە دەرێ، بەردەوام دبیت ل پێشڤەچونێن خۆ و دگەهیتە سنورێن دەولەتا (دوستەکی – مەروانی)، لێرەدا بەروڤاژی نفشێ ئێکێ یێ دامەزرێنەر دەمێ ل سەردەمێ بویهیا ب سەرکردایەتیا بادی هێرشی موسل دکر و هەولا گرتنا بەغدا ددا، ژبەرکو دیف دیتنا ئیبن خەلدونی نفشێ ئێکێ خودانێ سالوخەتێن هێز و شیان و توندایەتی و دەمارگیریا هوزایەتی و هێرشکرن ل دەف وان هەیە،((الجيل الأول لم يزالوا على خلق البداوة وخشونتها وتوحشها من شظف العيش والبسالة والافتراس والاشتراك بالمجد فلا تزال بذلك سورة العصبية محفوظة فيهم...))، (ابن خلدون،١٩٨٨، ٢١٤/١). لێرەدا بۆ دیرکرنا مەترسیا سەلجوقیا دیاریێن ب بها بۆ توغرول بەگی هنارتینە و وەسا دیارکریە، کو ئەو بەرەڤانیا ل دەڤەرێن سنوری (الثغور) دکەت،(ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٥/٤).

مێژوونڤیسێ مە دوماهیکێ ب دەنگ و باسێن نەسردەولەی دئینیت ب دیارکرنا سالوخەتێن کەسایەتی و ناساندنا نەتەوەیێ و گەشەکرنا وەلاتێ وی، دەستپێکێ ب خودانێ دیاریەکر(ئامەد)ێ ددەتە ناسین هەروەسا ناسناڤێ وی دیار دکەت، کو (القادر بالله) بوویە، پێنجی و دوو سالا دەستهەلات ل دەولەتا خۆ کریە (٤٠١ – ٤٥٣مش/١٠١١ - ١٠٦١ز)، هەروەسا ئاماژێ ب رێژا پارەی (١٠٠) هزار دینارا دکەت دگەل دیاریەکا ب بها بۆ توغرول بەگی بناڤێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

(حبل الياقوت) يا بوەيهيا، كو لئەبى مەسنور كورێ جەلال دەولەی كری بوو بۆ توغرول بەگی هنارتن(ابن كثير،١٩٨٦، ١٢/ ٨٧ ؛ ابن خلدون،١٩٨٨، ٤/٤١٥).

ديار دبيت ل ڤەگێرانێن مێژوونڤيسێ مە، كو دەولەتا (دوستەكی – مەروانی) ل سەردەمێ نەسردەولەی ل خوشگوزەرانێ دا بوویە، ديف وێ هەفكێشێ و بيردوزا ئيبن خەلدونی ئەڤ دەولەتە ل ڤێ قوناغێ دا ل قوناغا خوشگوزەرانی و ئيسراف و مەزاختنێن زۆر دابوویە، نەسردەولەی كەنيزە(جارية) كريە ب پێنج سەد ديناران و زێدەتر ژی، نيزيكی هزار كەنيزە ل دەف هەبووینە، هەروەسا گرنگيەك زۆر ب ئامانێن خوارنێ دانە ب سەد هزار ديناراا دهاتنە مەزەندەكرن، ل گەل مالێن شاها خزمايەتی كريە و تەباخ هنارتينە بۆ مسرێ بو هندێ تەباغێت دەولەتا فاتمی كو بێگومان يێت كوچكا خەليفێ فاتمی بووينە فێری خوارنێن تايبەت بكەن و مەزاختنەك زۆر لێكريە(ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤/ ٤١٥ – ٤١٦).

دەولەتا (دوستەكی - مەروانی) وەك دەولەتەك مەزن و ناڤدار بوويە جهێ ڤەستكرنا بەرپرسێن ناڤدار و خودان شيان، ژوانا ئەبو قاسم مەغربی (٤١٨مش/١٠٢٧ز) ل دەولەتا فاتمی و هەروەسا فەخر دەولە ئيبن جوهەير(م:٤٨٣مش/١٠٩٠ز)ژ ل دەولەتا عەباسی بەرەف دەولەتا (دوستەكی – مەروانی) هاتن و نەسردەولەی لێ رازيبوویە و بەرپرسياريا وەزارەتێ پێدایە، هەروەسا هۆزانڤان و زانايا ژی ڤەستا وی كریە و پەسنا وی كریە و رێز لێهاتیە كرن، واتا وەلات ل قوناغا ئارامیی و پێشڤەچونێ دا بوویە و ئەڤ چەندە بوویە ئەگەرەك، كو بەرپرس و زانا و هۆزانڤان و كەسێن ناڤدار ڤەستا وەلاتێ نەسردەولەی بكەن و پشكدار ببن ل بەرەف پێشبرنا شارستانيا دەولەتا دوستەكی(31)، وەك ئێك ژ دەولەتێن كوردی ل سەردەمێن ناڤين(ابن خلدون،١٩٨٨، ٤/٤١٦ ؛ ابن العماد الحنبلي، ١٩٨٦، ٥/٢٢٥)..

ل سالا (٤٥٣مش/١٠٦١ز) نەسردەولە مریە پشتی پێنجی و دووسالێن دەستهەلاتدارێ و ل ژێی بيست و دوو سالێ دا دەستهەلات وەرگرتيە و حەفتێ و حەفت سالێ دا مریە(ابن خلكان، ١/١٧٨ ؛ الذهبي،٢٠٠٦، ٢/ ٣٠٠ ؛ عەبدوللا،٢٠١٢، ٥٧).

**٤- نيزامەدين نەسر كورێ نەسردەولە مەروانی(٤٥٣-٤٧٢مش/١٠٦١-١٠٨٠ز)**

ئيبن خەلدون ئاماژێ ب هژمارەك ل رويدانێن سياسی دكەت ل سەردەمێ ڤی ميری دا، وەسا ڤەدگێريت كو نەسر پشتی مرنا بابێ خۆ (نصرالدولة)ی دەستهەلات وەرگرتيە ل سالا (٤٥٣مش/١٠٦١ز) و ل سالا (٤٧٢مش/١٠٨٠ز) مريە، هەروەسا شەر و كێشە دروست دبن دناڤبەرا نەسر و برايێ وی سەعيدی دا، سەعيد هاتيە شكاندن و ل دوماهيێ دا نەسر ل ميافارقين و سەعيد ژی ل ئامەدێ دبيتە دەستهەلاتدار، پشتی مرنا وی كورێ وی مەنسور دبيتە ميراتگرێ وی و زێدەتر روونكرنێ نادەت، ئەڤ چەندە ژی بۆ ژێدەرێ سەرەكی يێ ئيبن خەلدونی ڤەدگەرێت ل سەر دەولەتا (دوستەكی - مەروانی)، كو (ابن الأثير) و ب كێمێ بەحسێ رويدانێ ڤێ قوناغێ كريە(الفارقي،١٩٥٩، ١٧٧ ؛ ابن خلدون، ١٩٨٨، ٤/٤١٦)، هەروەسا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولينێن كوردی

هێرشا سەلجوقیا دهێتە سەردەڤەرێ و نەسر هەولا وێ چەندێ ددەت، کو ڤێ مەترسیێ لابدەت و داخازا شەرەف دەولە موسلن کورێ قوریش(م:٤٧٧مش/١٠٨٥ز)ی کر ل بەرامبەر دژایەتیا ئیبن جوهەیر دێ ئامەدێ پێ بەخشیت، ئەڤ چەندە دروست دبیت (ابن جهیر) سەرکەفتنێ بدەست دئینیت، لێرەدا ئیبن خەلدون بەحس ل رویدانەکێ دکەت، کو خەلك هێرشی مالێن کریستیانان ل میافارقینێ دکەن ئەوێن سەردەمێ مەروانیا باج کوم دکرن، کو ب دیتنا وان ستەم ل وان دکر و تولا خۆ ژێڤەکریە، لێرەدا دیار دبیت پێکڤەژیان ل دەولەتا (دوستەکی - مەروانی) دا هەبوویە و گروڤە ژی کریستیان ب پلە و پوستێن سیاسی و ئیداری گەهشتینە ئەڤ رویدانەل ڤەگێرانێن سالا (٤٧٨مش/١٠٨٦ز) هاتیە، (ابن خلدون،١٩٨٨،٤/٤١٧).

**٥- مەنسور کورێ نەسر کورێ نەسردەولە مەروانی(٤٧٢-٤٧٨مش/١٠٨٠-١٠٨٦ز)**

سەرەرایێ وێ چەندێ میر مەنسور ئێك بوویە ژ میرێن دەولەتا (دوستەکی- مەروانی) و نیزیکی شەش سالان دەستهەلات کریە، پشتی بابێ خۆ وەك سیستەمێ کارپێکەر ل هەمی قەوارێن سیاسیێن کوردی دا ل سەردەمێن ناڤین دا ب پشتا و پشت دەستهەلا بۆ مایە، مێژوونڤیسێ مە بەروڤاژی میرێن دیتر بەحسێ زێدە بوونا رولێ وەزیران دکەت، واتا ب هاتنا میرێن بێهێز رولێ وەزیری ل دەستهەلاتێ دا زێدەدبیت و ئیبن ئەنباری کاروبارێن دەولەتێ ب رێڤە دبت (ابن خلدون،١٩٨٨،٤/٤١٦)

ل دوماهیکێ ژی مێژوونڤیسێ مە ل ژێر ناڤ و نیشانێن (استیلاء ابن جهیر علی میافارقین وجزیرة ابن عمر وانقراض دولة بني مروان) دەستگرتن ب سەر میافارقین و جەزیرا ئیبن عومەری ژلایێ ئیبن جوهەیری و ژناڤچوونا دەولەتا مەروانی دوماهیکێ ب ڤەگێرانێن تایبەت ب دەنگ و باسێن ئێك ژ مەزنترین قەوارێن سیاسی ل مێژوویێ دا دئینیت تایبەت مێژوویا سەردەمێن ناڤین، ئیبن خەلدون بەحسێ دەست ب سەرداگرتنا مال و سامانێ مەروانی دکەت ژلایێ ئیبن جوهەیری، کو ئەڤ کەسە وەزیر بوویە ل ڤێ دەولەتێ دا و شارەزایی هەبوویە ل دەولەمەندیا ڤێ دەولەتا کوردی، ئەڤ مال و سامانە هاتیە هنارتن بۆ سولتانێ سەلجوقی مەلیك شاهی، هەروەسا مێژوونڤیسێ مە ئاماژێ ب خیانەتا بنەمالاکێ دکەت بناڤێ( بنو وهبان) ل دەولەتا (دوستەکی - مەروانی)، کو بوویە ئەگەرەك بۆ هەرفینا ڤێ دەولەتێ، لێ وەك دیار بەری ڤێ خیانەتێ ئاماژە و نیشانێن کەفتنێ دیار ببون، ژوانا ئەو شەر و کێشەیێن نافخوی و مەزاختنێن زۆر و هێرشێن دەرڤە، هەروەسا نەیا رەوایە ئێك ئەگەر ببیتە ئەگەرێ سەرەکی بۆ ژناڤچونا دەولەتەکا ژیێ وێ پتر ژ سەد سالان(ابن خلدون،١٩٨٨،٤/٤١٨).

دوماهیك هاتنا میر مەنسور کورێ نەسری ل ڤێ رەوشێ دا بوویە، سەرکردێ سەلجوقی (جکرمش) دوماهیك میرێ مەروانی دەستەسەر دکەت و ل مالا کەسەکێ جوهی زیندان دکەت هەتا ل سالا (٤٨٩مش/١٠٩٦ز) مریە، لێرەدا دیار دبیت پەیوەندیێن مەروانیا ل گەل ئاینێن دیتر خوش بوویە و چ کێشە نەبووینە و جهێ باوەریا وان بووینە و پێکڤە ژیان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەبوویە و هەروەسا دبیت ئەڤ کەسە ژی ل سەردەمێ دەستهەلاتداریا میر مەنسوری کەسێن دیار و خودان دەستهەلات بن، ژلایەکێ دیتر ڤەدبیت مەرەمەك دیتر ژی پێ هەبیت جکرمش ی ئەو ژی کێم کرنا کەسایەتیا میر مەنسوری بیت بەرامبەر خەلکی و ڕادەستی جوهیەکێ کریە، مێژوونڤیسێ ب رستەیا ((والبقاء لله وحده))، ئانکو مانەڤەیا هەتا بتنێ بۆ خودایێ مەزنە (ابن خلدون،١٩٨٨، ٤١٨/٤).

**دەرئەنجام:**

١- ئیبن خەلدون ژوان مێژوونڤیس و فەیلەسوفایە، کو دیتن و بیردۆزەك تایبەت هەبوویە بۆ تێگەهێ دەولەتێ و شارستانیێ ل پێشیا پڕانیا وان زانا و فەیلەسوفان کەفتیە، کو ل سەر تێگەهێ دەولەت و چاوانیا دروست بوون و بهێزکەفتن و نافچوونا وێ ئاخفتیە، دەولەت ب زاراڤێن (الدولة) و (الملك) و (السلطة) ل دەف مێژوونڤیسێ مە هاتیە، ب دەهان ڤەکۆلینێن جودا جودا ل سەر ڤی بابەتی دروست بووینە تایبەت پێشەکیا ئیبن خەلدونی.

٢- کورد ل مێژوویێ دا تایبەت ل سەدێن ناڤین دا ب دەستهەلاتێن خوجهی گەهشتیە و شیایە ببنە ئێك ژ میللەتێن بهێز و کاریگەرێن دەڤەرێ و پڕانیا دەمێن مێژوویا سەردەمێن ناڤین هۆز و میرگەهـ و دەولەتێن کوردی دەستهەلات ل دەڤەرێن کوردنشین کریە. دەمارگیریا هۆزایەتی (العصبية القبلية) کاریگەری ل سەر ئاڤاکرنا ڤان دەولەتان هەبوویە، ژوانا دەولەتا (دوستەکی-مەروانی)

٣- دەولەتا (دوستەکی– مەروانی) ئێکە ژ وان دەولەتێن کوردی یێن ناڤدار، کو ل پڕانیا ژێدەران دا ب دەولەتەك کوردی هاتیە ناسین و سنورێ دەستهەلاتا وان هژمارەك مەزن ژ دەڤەر و باژێر و گوند و کەلهێن کوردا ڤەگرتینە ل دیاربەکر و میافارقین و سێرت و نەسیبین ئەرزن و ئەرجیش.

٤- مێژوونڤیسێ مە ئەڤ دەستهەلاتا کوردی ب دەولەت دایە ناسین و ل ریزا مەزنە دەولەتێن دەڤەرێ دایە دیارکرن و ب زنجیرەیی دەنگ و باسێن وێ ڤەگێراینە ل دامەزراندنێ هەتا ژناڤچوونێ، ژێدەرێ وی سەرەکی پەرتوکا (الكامل في التاريخ) یا (ابن الأثير) ی بوویە و ب گۆرانکاری کرنێن جودا جودا ئەڤ دەنگ و باسە ڤەگێرانە، هژمارەك زۆر ل شاشیان ل ناڤ و ناسناڤ و سالاندا هەنە و پێتڤی ب دیفچوون و دووبارە (تحقيق) کرنێ هەیە تایبەت مێژوویا کوردان ل پەرتوکا (العبر) دا، ژبەرکو ئەو شاشیێن، کو کەفتیە د پەرتوکا (العبر) دا وەك دیار دبیت پشتی مێژوونڤیسی دروست بووینە و دنوکەدا ئەو شاشیە د پەرتوکا (العبر) دا ب هەمی زمانان بەلاڤ بووینە و هژمارەك زۆر ل شاشیان هەنە.

٥- کوردان ل سەردەمێن ناڤین هژمارەك کەسایەتێن ناڤدارێن خودان هزر و بیرێن ئازادی و سەربەخویێ هەبووینە و ڤیایە وەك میللەتێن دەڤەرێ ببنە خودان قەوارەك تایبەت بخو، ژوانا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

باد و نەسردەولە کو زورترین هەول داینە ل ڤی بیاڤی دا، کاریگەری هەبوویە هەولێن وان و دانپێدان ب دەستهەلاتا وان هاتیەکرن. ئەڤ چەندە وێ ئێکێ دگەهینیت، میللەتێ کورد بەردەوام دشیان دا هەیە ب ل هەولێن سەرکەفتن و گەهشتن ب ئارمانجێن نەتەوەی ل دەڤەرێ ب ئەنجامێن مەزن بگەهیت و ببنە خالا هەڤسەنگیێ ل دەڤەرێ دا.

٦- گرنگیا قەوارێن سیاسی ل دەف ئیبن خەلدونی زۆر بوویە، ئانکو دەستهەلا و دەولەت هەبوونا میللەتیە و ب نافچونا قەوارێ سیاسی دەنگ و باسێن میللەتی ژی وەك پێتقی نامینن و ئەڤ چەندە دکەڤیتە پێش چاڤێن مە دەمێ (دوستەکی-مەروانی) ل سالا(٤٧٨مش/١٠٨٦ز) ژناڤدچن و دەنگ و باسێن کوردان بۆ دەمەك درێژ ل ڤان دەڤەران بەرەف کێم بوونێ دچن، دنوکە ژی هەبوونا قەوارێن سیاسی پتر دبیتە ئەگەرەك بۆ وێ چەندێ تاك پتر هەست ب هەبوونا خۆ بکەت دناڤ نەتەوەیێن دەڤەرێ و سەرانسەرێ جیهانێ، هەروەسا ئیبن خەلدون وێ چەندێ دووپات دکەت، کو شەر و ناکوکی و خیانەتا نافخویی کاریگەری ل سەر بێهێزکرنا شیانێن دەولەتێ کریە، و ل دواماهیکێ ژی ئیبن خەلدون نموونەکێ ل سەر ژنافچوونا دەولەتا (دوستەکی – مەروانی) ئایەتەکێ دئینیت((وتلك الأيام نداولها بين الناس))، (سورة آل عمران، آية ١٤٠).

**لیستا ژێدەران:**

**-القرآن الكريم.**

**ئێك: ژێدەرێن سەرەکی:**


**أ- ژێدەرێن سەرەکی ب زمانێ کوردی:**

١- بەدلیسی: شەرەفخان کورێ شەمسەدین (٢٠٠٦ز)، **شەرەفنامە**، وەرگێران بۆزمانێ کوردی: ماموستاهەژار، دەزگای چاپ و بەلاوکراوەی ئاراس، چاپی سێیەم، هەولێر.

**ب- ژێدەرێن سەرەکی ب زمانێ عەرەبی:**

٢- ابن الأثير: عزالدين أبي الحسن علي بن محمد بن عبدالكريم بن عبدالواحد الشيباني الجزري (١٩٩٧م)،**الكامل في التاريخ**، تحقيق: عمر عبدالسلام تدمري، دار الكتب العربي، ط١، بيروت.

٣- الإدريسي:محمد بن محمد بن عبدالله الحسني الطالبي(١٤٠٩هـ)،**نزهة المشتاق في إختراق الآفاق**، عالم الكتاب، ط١،بيروت.

٤- البنداري: الفتح بن علي بن محمد الأصفهاني(١٩٠٠م)،**تاريخ دولة آل سلجوق**، مطبعة الموسوعات، د.ط،القاهرهة.

٥- ابن تغري بردي، جمال الدين أبو المحاسن يوسفالأتابكي(١٩٦٤)، **النجوم الزاهرة فى ملوك مصر والقاهرة**، دار الكتب، وزارة الثقافة والإرشاد القومي،القاهرة.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٦- ابن حجر العسقلاني: شهاب الدين أحمد بن علي(١٩٨٨م)،**رفع الاصر عن قضاة مصر**، تحقيق: علي محمد عمر، مكتبة الخانجي، ط١،القاهرة.
٧- الحميري: أبو عبدالله محمد بن عبدالله بن عبدالمنعم(١٩٨٨م)، **صفة جزيرة الأندلس**، دار الجليل، ط٢،بيروت.
٨- ابن خلدون، عبدالرحمن بن محمد بن محمد(١٩٨٨م)، **العبر وديوان المبتدأ والخبر في أيام العرب والعجم والبربر ومن عاصرهم من ذوي السلطان الأكبر**، تحقيق: خليل شحادة، دار الفكر، ط٢، بيروت.
٩- ابن خلكان، شمس الدينأحمد بن محمد بن أبي بكر الأربلي (١٩٠٠م)،**وفيات الأعيان وأنباء أبناء الزمان**، تحقيق: إحسان عباس، دار صادر،بيروت.
١٠- ابن الخطيب، أبي عبدالله محمد بن عبدالله بن سعيد بن أحمد السلماني لسان الدين(٢٠٠٣م)، **الإحاطة في أخبار غرناطة**، تحقيق: يوسف علي طويل، دار الكتب العلمية، بيروت.
١١- الذهبي، شمس الدين أبو عبدالله محمد بن أحمد بن عثمان بن قايماز(٢٠٠٦م)،**سير أعلام النبلاء**، تحقيق: محمد أيمن الشبراوي، دار الحديث، القاهرة.
١٢- الذهبي:شمس الدين أبو عبدالله محمد بن أحمد بن عثمان بن قايماز (٢٠٠٦م)،**العبر في خبر من غبر**، تحقيق: محمد السعيد بسيوني زغلول، دار الكتب العلميه، ط١،بيروت.
١٣- الروذراوري، الوزير أبو شجاع محمد بن الحسن (د.ت)،**ذيل كتاب تجارب الأمم**، دار الكتب الإسلامية،القاهرة.
١٤- سبط ابن الجوزي:شمس الدين أبي المظفر يوسف بن قزاوغلي بن عبدالله(٢٠١٣م)، **مرآة الزمان في تواريخ الأعيان**، تحقيق الجزء (١٧ و ١٩)، محمد أنس المخن و كامل محمد الخرائط و عمار ريحاوي، دار الرسالة العالمية، دمشق.
١٥- السيوطي:جلال الدين عبدالرحمن بن أبي بكر(١٩٦٧م)، **حسن المحاضرة في تاريخ مصر والقاهرة**، تحقيق: محمد أبو الفضل إبراهيم، دار إحياء العربية، ط١، مصر.
١٦- ابن شداد: عزالدين محمد بن علي بن إبراهيم(١٩٩١م)،**الاعلاق الخطيرة في ذكر آمراء الشام والجزيرة**، تحقيق: يحيى زكريا عبارة، منشورات وزارة الثقافة، ط١، دمشق.
١٧- ابن عبد الحكم: أبو القاسم عبدالرحمن بن عبدالله(١٤١٥هـ)، **فتوح مصر والمغرب**، مكتبة الثقافة الدينية، مصر.
١٨- ابن عبد ربه الأندلسي:أبو عمر شهاب الدين أحمد بن محمد بن عبد ربه(١٤٠٤هـ)، **العقد الفريد**، دار الكتب العلمية، ط١، بيروت.
١٩- ابن العبري: أبو الفرج يوحنا ابن هارون بن توما الملطي(١٩٩٢م)،**تاريخ مختصر الدول**، تحقيق: أنطون صالحاني اليسوعي، دار الشرق، ط٣، بيروت.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

٢٠- ابن العديم: كمال الدين عمر بن أحمد بن هبة الله بن أبي جرادةالعقيلي(د.ت)، **بغية الطلب في تاريخ من حلب**، تحقيق: سهيل زكار، دار الفكر للطباعة والنشر، بيروت.

٢١- ابن العماد الحنبلي: عبدالحي بن أحمد بن محمد(١٩٨٦م)، **شذرات الذهب في أخبار من ذهب**، تحقيق: محمود الأرناؤوط، دار ابن كثير، ط١، دمشق–بيروت.

٢٢- الفارقي: أحمد بن يوسف بن علي بن الأزرق(١٩٥٩م)،**تاريخ ميافارقين وآمد(تاريخ الفارقي)**، تحقيق: بدوي عبداللطيف عوض، الهيئة العامة لشؤن المطابع الأميرية،القاهرة.

٢٣- أبو الفداء، الملك المؤيد عمادالدين اسماعيل بن علي بن محمود بن عمر بن شاهنشاه بن أيوب(د.ت)،**المختصر في أخبار البشر(تاريخ أبو الفداء)**، المطبعة الحسينيةالمصرية، ط١، القاهرة.

٢٤- ابن كثير: أبو الفداء اسماعيل بن عمر بن كثير القرشي البصري الدمشقي(١٩٨٦م)،**البدايةوالنهاية**، دار الفكر، بيروت.

٢٥- ابن الوردي: عمر بن مظفر بن محمد بن أبي الفوارس المعري الكندي(١٩٩٦م)، **تاريخ ابن الوردي**، دار الكتب العلمية، بيروت.

٢٦- المقريزي: تقي الدين أبو العباس أحمد بن علي بن عبدالقادر الحسيني العبيدي(٢٠٠٢م) **درر العقود الفريدة في تراجم الاعيان المفيدة**، تحقيق: محمود الجليلي، دار الغرب الإسلامي، بيروت.

٢٧- ياقوت الحموي: شهاب الدين أبو عبدالله ياقوت بن عبدالله الحموي(د.ت)،**معجم البلدان**، تحقيق: فريدعبدالعزيز الجندي، دار الفكر،بيروت.

**دوو : ژێدەرێن هاریکار:**

**أ- ژێدەرێن هاریکار ب زمانێ کوردی:**

٢٨- توفيق: زرارسەديق(٢٠١٠ز)، **کورد و کوردستان لە روژگاری خیلافەی ئیسلامیدا**، چاپخانەی روژهەلات، چ١،هەولێر.

٢٩- عبدالله : کامەران عەزیز (٢٠١٢ز)،**هوکارەکانی سەرهلدان و روخانی میرنشینه کوردییەکان لە سەردەمی عەباسیدا**، چاپخانەیحاجیهاشم،هەولێر.

**ب- ژێدەرێن هاریکار ب زمانێ عەرەبی:**

٣٠- آمیدی: كرڤان محمد أحمد(٢٠٠٦م)،**الكرد في كتابات المؤرخ ابن الأثير الجزري**، دار سپيريز، ط١،دهوك.

٣١- أحمد: خطاب اسماعيل(٢٠١٩م)، **دراسات في تاريخ الكرد السياسي والحضاري عبر العصور المختلفة**، مركز زاخو للدراسات الكردية، ط١، زاخو.

٣٢- اسماعيل: فرست مرعي(٢٠٠٥م)،**الإمارات الكرديةفى العصر العباسي الثاني (٣٥٠ – ٥١١هـ/٩٦٠ – ١١١٧م)**، دار سبيريز، ط١،دهوك.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٣٣- البابيري: حكيم عبدالرحمن(٢٠١٠م)، **الدولة الأيوبية وفق نظرية الدولة لإبن خلدون**، كورى زانيارى كوردستان،أربيل.

٣٤- بولاديان: أرشاك (٢٠٠٩م)، **الأكراد في حقبة الخلافة العباسية**، ترجمة: الكسندر كشيشان، دار آراس للطباعة والنشر، ط١،أربيل.

٣٥- توفيق: زرارصديق(٢٠٠٧م)، **القبائل والزعامات القبليةالكردية في العصر الوسط**، مؤسسة موكرياني، ط١،أربيل.

٣٦- حسن: قادر محمد(٢٠١١م)، **الامارات الكردية في العهد البويهي**، مؤسسة موكرياني للبحوث والنشر، ط١،أربيل.

٣٧- الحصري: ساطع (١٩٥٢م)، **درسات عن مقدمة ابن خلدون**، دار المعارف،القاهرة.

٣٨- زكي: محمد أمين (٢٠٠٦م)،**تاريخ دول والامارات الكردية في العهد الإسلامي**، دار الشؤون الثقافة العامة،بغداد.

٣٩-زكي: محمد أمين(١٩٣٩م)، **خلاصة تاريخ الكرد و كردستان من أقدم العصور التاريخية حتى لآن**، ترجمة: محمد علي عوني، مطبعة السعادة،مصر.

٤٠ - شرف الدين: خليل (١٩٩٥م)، **ابن خلدون**، مكتبة الهلال،بيروت.

٤١- عنان: محمد عبدالله (٢٠٠٦م)،**ابن خلدون حياته و تراثه الفكري**، دار الكتب والوثائق، ط٤،القاهرة.

٤٢- كوچر: سگڤان محمد سعيد (٢٠١٠م)،**الفارقي ومنهجه من خلل كتابه تاريخ ميافارقين وآمد**، منشورات الاكاديمية الكردية،أربيل.

٤٣- لازاريف وآخرون (٢٠٠٦م)،**تاريخ كردستان**، ترجمة: عبدي حاجي، دار سبيريز، ط١، دهوك.

٤٤- يوسف: عبدالرقيب (٢٠٠١م)،**الدولة الدوستكية في كردستان الوسطى**، دار ئاراس، ط٢، أربيل.

**ج- نامێن ماستەرێ و ڤەكولين:**

**- نامێن ماستەرێ ب زمانێ كوردى:**

٤٥- هەورامى: خالد عەلى رەسول(٢٠١٠ز)،**(سبط ابن الجوزي) و كورد لە كتێبى(مرآة الزمان فى تاريخ الأعيان)**، نامەى ماستەرى بەلاونەكراوە، پێشكێش كراوە بە كولێژى زانستە مروڤايەتيەكان- زانكويسلێمانى– سلێمانى.

**پەراوێز:**

---

[(١)] ناسناڤێ خەلدون ژ ناڤێ باپيرێ عەبدولرەحمانى هاتيە، كو ناڤێ وى يێ دروست( خالد) بوويە، ل وەلاتێ ئەندەلوس و (واو و نون) ل كەسايەتيێن ناڤدار دهاتنە زێدەكرن،(محمد عبدالله عنان، ابن خلدون حياته و تراثة الفكري، ص١٧).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولينێن كوردى

[٢] ئەندەلوس ل سالا (٩٢مش/٧١١ز) ل سەردەمێ خەلیفێ ئەمەوی وەلید کورێ عەبدولمەلیک (٨٦ – ٩٦مش/ ٧٠٥ - ٧١٥ز)، ب سەرکردایەتیا تارق کورێ زیاد هاتە فەتحکرن( ابن عبدالحکم، فتوح مصر والمغرب، ص ٢٣٢ - ٣٥٣).

[٣] ئەڤ ناسناڤە ژبلی ناڤێ دەڤەرەکا ناڤدارا وەلاتێ یەمەنێ هاتیە، حەزرەمەوت دەڤەرەکا بەرفرەهە دکەڤیتە روژهەلاتێ باژێرێ عەدەن،(یاقوت الحموي، معجم البلدان، ج٢، ص٢٦٩).

[٤] ئەڤ بنەمالا باژێری ئاکنجی بوون و کو باژێرەك مەزن و ئاڤەدان و خودان شیرهـ و بازاریت مەزن و ژ باژێریت مەزن و ناڤداریێن ئەندەلوس بوویە، (ادریسي، نزهة المشتاق فی إختراق الافاق، ج٢، ص ٥٤١ ؛ الحمیري، صفة جزیرة الأندلس، ص١٨).

[٥] ئیبن خەلدون ئێك بوویە ژ پێشکێش و شارەزاییێن مەزهەبێ مالکی و وەك ئێك ژ چوار مەزهەبێن سوننی بۆ الإمام المالك) ڤەدگەریت(أبو عبدالله بن مالك بن أنس بن مالك بن أبي عامر)، خودانێ پەرتوکا (الموطأ).

[٦] کەلها بەنی سەلامە: ئەڤ کەلهە ژ کەلهێن ناڤدارە و دنها دا دکەڤیتە وەلاتێ جەزائیر و شوینواریێن وێ ماینە، ل وێ قوناغێ دا ل بن دەستهەلاتا بنو عەریف بو، ل دەمێ مانەڤا ئیبن خەلدونی ل وێرێ رێزەك زۆر ل ئیبن خەلدونی گرتیە، دەمێ هاتیە دەڤ وان و کوشکەکا خویا تایبەت ل کەلها بنی سەلامە دانا دەستی دا ل تاغورت(جەزائیر)، (محمد عبدالله عنان، ابن خلدون حیاته وتراثه الفکري، ص٦٣).

[٧] د ژێدەران دا ب شێوازێن لێك نیزیك ئاماژە ب دامەزرێنەرێ دەولەتا دوستەکی – مەروانی هاتیە کرهن، ژ وان ژێدەران: الروذراوري، ذیل تجارب الأمم، ج٣، ص٨٤ ؛ الفارقی، تاریخ میافارقین وآمد، ص٤٩ ؛ ابن العدیم، بغیة الطلب فی تاریخ حلب، ج٣، ص١١٣٠ ؛ ابن العبری، تاریخ مختصر الدول، ص ١٧٢ – ١٧٣ ؛ أبو الفداء، مختصر أخبار البشر، ج٢، ص١٢٦ ؛ الذهبي، سیر أعلام النبلاء، ج١٣، ص٣٤٠.

[٨] ب شێوازێ (باذ) ل چەند ژێدەرەکان دا هاتیە دبیت ل گوهورینا زمانی دا هات بیت و چەند ژێدەران دا ب ڤی شێوازی ئینایە (د) ب (ذ) گوهوریە، ژوانا: ابن الأثیر، الکامل فی التاریخ، ج٧، ص ٣٩٨، ٤٢١ ؛ سبط ابن الجوزي، مرآة الزمان فی التواریخ الأعیان، ج١٨، ص١٢.

[٩] پرانیا رەها ژ ڤەکولەرێن نوی (باد) بکارئینایە بۆ ناڤێ دامەزرێنەرێ دەولەتێ، ژوانا: فرست مرعي إسماعیل، الإمارات الکردیة في العصر الثاني، ص٢٣١ ؛ زرار سەدیق توفیق، کوردو کوردستان لە روژگاری خیلافەی ئیسلامیدا، ل ١٩٢ ؛ لازاریف، تاریخ کوردستان، ص٥٦ ؛ قادر محمد حسن، الإمارات الکوردیة في العهد البویهي، ص١٣٦ ؛ خطاب إسماعیل أحمد، دراسات في تاریخ الکرد السیاسي و الحضاري، ص٩٣.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

(١٠) حەمیدی: ژ هۆزێن مەزن و ناڤدارێن کوردی بوویە ل سەدێن ناڤین، جهێ ئاکنجیبوونا وان ل ناڤبەرا ئامەد بۆ شارەزو تایبەت ل ناڤبەرا زێێ مەزن و ریبارێ خازر ب رۆژهەلاتا موسل، تایبەت ل کەلها ئاکرێ و دەوروبەر بوویە،زرار سەدیق توفیق، القبائل والزعامات القبلیة الکردیة فی العصر الوسیط،ص٨٣.

(١١) بوتی: هۆزا بوختی (بوتی) ژ هۆزێن مەزن و ناڤدارێن کوردایە، د سەردەمێن ناڤین دا رولەك بەرچاڤ هەبوویە و ل هۆزێن لێهاتی و شەرکەر و خودان هێز بوویە، بۆ پتر پێزانینان: بەدلیسی، شەرەفنامە، ل ١٧١ ؛ زرار سەدیق توفیق، القبائل والزعامات القبلیة الکردیه في العصر الوسیط،ص٢٥.

(١٢) د ژێدەرێن دیتر دا وەسا ئاماژە پێهاتیەکرن، کو مەروانی دەستهەلاتدارێن هەرێما جزیرێ و دیار بەکر و میافارقینێ بووینە، ئەڤ چەندا ئیبن خەلدونی ژی گوتیە، دبیت بۆ وێ چەندێ بزڤریت، کو بادێ دوستەکی بو دەمەکێ دەست ب سەر موسل دا گرتیە، ل سالا (٣٧٣مش/٩٨٤ز) . (بەدلیسی، شەرەفنامە،٢٠٠٦، ٢٨ ؛ زرار سەدیق توفیق، کورد و کوردستان لە روزگاری خیلافەی ئیسلامیدا، ل ١٩٢- ١٩٥).

(١٣) ئەرجیش: ژ باژێرێن کەڤن و ناڤدارە ل هەرێما ئەرمینیا نیزیك باژێرێ خەلات، پتر یا خەلکێ وێ ژ ئەرمن نە، (یاقوت الحموي، معجم البلدان،ج١، ١٤٤).

(١٤) کواشێ: ژ کەلهێن ناڤدارێن کوردان بوویە، دنوکە دا دکەڤیتە سنورێ قەزا سێمێلێ، ئیبن خەلدون د پەرتوکا خۆ دا (١٨) جاران ناڤێ ڤێ کەلهێ ئینایە.

(١٥) باجلایا: دەڤەرەکە سەر ب خابور الحسنیة (زاخو) ئەڤ ناڤە ب ڤی شەری پتر هاتیە ناسین.(ابن الأثیر،الکامل،ج٧،ص٤٣٤.

(١٦) خابور الحسنیة: دەڤەرێن سەر ب موسل ڤەنە ل رۆژهەلاتێ دیجلە ریبارەك ناڤدار هەیە.(یاقوت الحموي،معجم،ج٢، ص٣٣٥).

(١٧) طور عبدین: شاروچکەیەکە سەر ب نەسیبین ڤە، دناڤ چیایێ درێژ دکەڤیتە هنداڤی دەڤەرێ و گرێدای ب چیایێ جودی ڤە، (یاقوت الحموي، معجم البلدان، ج٤، ص٤٨).

(١٨) برایێ بادێ دوستەکی، د ژێدەران دا گەلەك تێکهەلی هەیە د ناڤ ناڤێ باد و برایێ وی دا.

(١٩) بۆ پتر پێزانینان ل سەر مێژوویا هۆزێن کوردی سەحکە: زرار صدیق توفیق، القبائل والزعامات القبلیهة الکردیة فی العصر الوسیط).

(٢٠) بەشنوی: ژ هۆزێن ناڤدار و بهێزێن سەردەمێن ناڤین بوویە و ل دیف هۆزا بوختی دووەم هۆز بوویە ل دەڤەرا جەزیرێ(جزیرة ابن عمر) خودانێن کەلهێن ڤنك وەك ئێك ژ کەلهێن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ناڤدار و ئاسێین دەڤەرێ، ابن الأثير، الكامل، ج٩، ص٤٢٥ ؛ زرار صديق، القبائل والزعامات،ص٤٠.

[٢١] د ژێدەرێن نوی ژی ب شێوازێن جودا جودا سەرەدەری ل گەل مێژوو و ناڤ و نیشانێ ڤی قەوارێ سیاسی هاتیە کرن. محمد أمين زكي، تاريخ الدول والامارات الكردية فى العهد الإسلامي، ب شێوازێ، (الحكومة المروانية) ئينايە، ص ١٠٢ ؛ فرست مرعي اسماعيل، الإمارات الكردية فى العهد الإسلامي، ب (إمارة بني مروان) هاتيە، ص٢٢٣ ؛ زرار سەديق توفيق، كورد و كوردستان لەرۆژگار خيلافەی ئيسلاميدا، ل ١٩٢، ب (مەروانيەكان لە هەرێمی جەزيرە) ناڤ دكەت. قادر محمد حين، الامارات الكوردية فى العهد البويهي، ب (الإمارة المروانية) ئينايە ،ص٤٦.

[٢٢] عبدالرقيب يوسف، الدولة الدوستكية، ج١،ج٢، پشکا سیاسی و شارستانی ب شێوازەك دیر و درێژ ل سەر مێژوویا دوستەکی – مەروانیا د ئاخڤیت.

[٢٣] ل دەف (ابن تغري بردي) ب (مروان بن كيسرى) هاتيە (النجوم الزاهرة في ملوك مصر والقاهرة، ج٤، ص١٤٥ ؛ و ل پرانیا ژێدەرێن مێژوویی ب مەروان کورێ کەك هاتیە،

[٢٤] الفارقی، تاريخ ميافارقين وآمد، ص٧٢ ؛ سبط ابن الجوزي، مرآة الزمان، ج١٨، ص٩٧. د ژێدەران دا هاتیە، کو ئەڤ هۆزانە یا (لوبانە کچا عەلی) یە خاستیا ئەمین کورێ هارون رەشد (م:١٩٨مش/٨١٤ز) و بەری گەهشتنا وان ب ئێك دوو، ئەمین ل شەرێ دگەل برایێ خۆ مەئمونی (م:٢١٨مش/٨٣٣ز) دا هاتیە کوشتن، (ابن عبد ربه الأندلسي، العقد الفريد، ج٢، ص٢٣١ – ٢٣٢ ؛ سگڤان محمد سعيد کوچەر، الفارقي ومهجه من خلال كتابه تاريخ ميافارقين وآمد، ص١٤٦).

[٢٥] کەلها هەتاخ: کەلهەکا ئاسێ یە ل دیاریەکر نیزیکی میافارقین.(ياقوت الحموي، معجم البلدان،ج٥، ص٣٩٢).

[٢٦] ئێکە ژ باژێرێن ناڤدار و کەلهەك ئاسێ لێ هەیە و دکەڤیتە نیزیك باژێرێ خەلات، دنها دا دکڤیتە باکورێ کوردستانێ(تورکیا)، (ياقوت الحموي، معجم البلدان،ج١، ص١٥٠).

[٢٧] ل دەف ئیبن خەلدونی ب (نصير الدولة) هاتیە، تاريخ ابن خلدون، ج٤، ص٤١٤.

[٢٨] البشنوية: ل دەف ئیبن خەلدونی ب(البثنوية) هاتیە، تاريخ ابن خلدون،ج٤، ص٤١٤.

[٢٩] ل دەف مێژوونڤیسێ مە ب (بشر موشك بن المحلي)، تاريخ ابن خلدون،ج٤، ص٤١٤.

[٣٠] کەلها فنك: ل دەف مێژوونڤیسێ مە ب (فسك و فنك) هاتیە. وەك ئێك ژ کەلهێن ناڤدارێن بەشنەوییا. تاريخ ابن خلدون،ج٤، ١٢٤.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(٣١) بۆ پتر پێزانینان ل سەر شارستانیا دەولەتا دوستەکی، سەحکە: عبدالرقیب یوسف، الدولة الدوستكية في كردستان الوسط، الجزء الثاني – القسم الحضاري، دار ئاراس للطباعة والنشر، ط٢، (أربيل – كردستان العراق : ٢٠٠١م).


**الملخص:**

إستطاع الكرد في العصور الوسطى (العصور الإسلامية)، وفي إطار حدود الخلافة العباسية أن يؤسسوا لأنفسهم إمارات ودويلات عديدة شبه مستقلة، عن االخلافة العباسية، شأنهم في ذلك شأن الشعوب والأمم الأخرى، كان لتلك الإمارات والدويلات أثر على نواحي عديدة لا سيما الناحية السياسية، منها تأثيرها الكبير على تحقيق التوازنات السياسية في المنطقة، لا سيما بين الإمارات والدويلات الأخرى، سواء الكردية منها أو غير الكردية وبين الخلافة العباسية، مما دفع المؤرخين إلى تدوين أخبار هذه الكيانات السياسية الكردية، ويعد ابن خلدون أحد أبرز المؤرخين الذين أبدوا إهتماما كبيرا لكتابة تاريخ هذه الكيانات السياسية الكردية، في كتابه (العبر)، ومن بين تلك الإمارات أو الدويلات الكردية التي نالت إهتمام ابن خلدون، هو ذكره لتاريخ الدولة (الدوستيكة - المروانية)، وقد إعتمد ابن خلدون بشكل رئيسي على الكتاب (الكامل في التاريخ) للمؤرخ (ابن الأثير)، وقد تبين ذلك بصورة واضحة أثناء الدراسة والبحث في كتاب (العبر) لابن خلدون، عن موضوع الدولة (الدوستكية-المروانية) من خلال كتاب العبر.



**كلمات الافتيتاحية**: *الكرد، الدولة، دوستكي، المرواني، ابن خلدون*



**Abstract:**

In the Middle Ages (Islamic times), and within the borders of the Abbasid caliphate, the Kurds were able to establish for themselves many semi-independent emirates and states from the Abbasid caliphate, just like other peoples and nations. Those states and states had an impact on many aspects, especially the political aspect, including Its great influence on achieving political balances in the region, especially between the Emirates and other states, whether Kurdish or non-Kurdish, and between the Abbasid caliphate, which prompted historians to write down the news of these Kurdish political entities, and Ibn Khaldun is one of the most prominent historians who showed great interest in writing the history of this Kurdish political entities, in his book (Lessons), and among those Kurdish emirates or states that attracted the attention of Ibn Khaldun, It is his mention of the history of the state (Dostakia - Marwanism), and Ibn Khaldun relied mainly on the book (Al-Kamil fi al-Tarikh) by the historian (Ibn al-Athir). Marwaniya through the Book of Lessons.



**Introductory wor**: *Kurds, Country, Dostki, Marwani, Ibn Khaldun*

# هۆکارە ناوخۆییەکانی ڕووخانی میرنشینە کوردییەکانی لە سەدەکانی ناوەڕاستد میرنشینیە کوردییەکانی سەردەمی خیلافەتی عەباسی بە نموونە (٣٣٤-٥٩٥ك/٩٤٥-١١٩٠ز)

**پ. د. کەیوان ئازاد ئەنوەر**

بەشی مێژوو- کۆلیژا زانستە مرۆڤایەتییەکان- زانکۆی سولەیمانی- هەریما کوردستان- سلێمانی/ عیراق

**پوختە:**

مێژووی هەوڵەکانی کورد بۆ سەربەخۆیی و دورستکردنی دەسەڵاتێکی سیاسی کۆنە. جا ئەو دەسەڵاتە ناوچەیی بووبێت، یان هەرێمی. میرنشین بووبێت، یان ئەتابەك و دەوڵەت، بەڵام هیچ یەك لەو دەسەڵاتە سیاسییانە زۆر درێژەیان نەکێشاوەو ڕووبەڕووی شکست و ڕووخان بوونەتەوە. یەکێك لەو هۆکارانەش ڕۆڵیان لە ڕووخاندنی میرنشین و دەسەڵاتە ناوچەییە کوردییەکاندا بینیووە، هۆکارە ناوخۆییەکانە. بەواتایەکی تر ئەگەر لەناوخۆیی میرنشین و دەسەڵاتە کوردییەکان دەستێك یان پیلانێك بۆ لێدانیان نەبووایە، ئەستەم بوو زۆرێك لەوان ڕووبەڕووی شکست و ڕووخان ببنەوە.

لێرەوە بەمەبەستی تیشك خستنەسەر دیارترینی ئەو هۆکارە ناوخۆییانەی ڕۆڵیان لە شکست و ڕووخانی ئەو دەوڵەت و میرنشینانەدا بینی لە سەدەکانی ناوەڕاست و لەسەردەمی خیلافەتی عەباسیدا لەنێوان سالانی (٣٣٤-٥٩٥ك/٩٤٥-١١٩٨ز)، کار لەسەر ئامادەکردنی ئەم تویژینەوەیە کرا. بۆ ئەو مەبەستەش توێژینەوەکەمان بۆ دەروازەیەك و دوو باس دابەشکرد. لە دەروازەدا تیشك خراوەتەسەر زاراوەو چەمکی میرنشین و دەوڵەت لەسەدەکانی ناوەڕاست و ئەو میرنشین و دەسەڵاتانەی، کەوتبوونە سەردەمی دەسەڵاتداریێتی بووەیهی و سەلجوقییەکان بەسەر دەوڵەتی خیلافەتی عەباسییەوە. تەوەری یەکەمیش بۆ خستنەڕووی دیارترین هۆکارەکان لەسەر ئاستی بنەماڵەی میرەکان تەرخانکراوە. دوا تەوەریش، کە تەوەری دووەمە کار لەسەر دیارترین ئەو هۆکارە ناوخۆییانە کراوە لەسەر ئاستە جیاجیاکان، کە بوونە هۆکاری شکستی سەرجەم ئەو میرنشین و دەسەڵاتە کوردییانەی ئەو قۆناغە مێژووییە. دواتر بەئەنجامێك، لەگەڵ ڕیزبەندی ئەو سەرچاوەو ژێدەرانەی بۆ ئەم تویژینەوەیە سوودی لێوەرگیراوە، کۆتایی بەم کارە هاتووە. بەهیوای ئەوەشین هەوڵەکەمان کەلێنێکی زانستی لە حەوتەمین کۆنفرانسی زانستی سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوەی کوردی لە فاکەڵتی زانستە مرۆڤایەتییەکانی زانکۆی زاخۆ پڕبکاتەوە.

**پەیڤێن سەرەکی:** *ڕووخان، میرنشین، دەوڵەت، میر، بووەیهی، سەلجوقی، عەباسی*



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**پێشەکی:**

مێژووی دەوڵەت و دەوڵەتداری و گەیشتن بە قەوارەیەکی سەربەخۆ لە کوردستان نوێ نییە و کۆنە. مێژوویەك بۆ قۆناغی مێژووی کۆن و هەزارەی سێیەمی پێش زایین دەگەڕێتەوە. بۆ سەردەمێك (کورد) وەك نەتەوە دەرنەکەوتبوو، بەڵام هەوڵەکان لەسەر خاکی کوردستان و لەلایەن دانیشتوانی ڕەسەنی ئەو خاکە بوون، بۆیە دەکرێت بە هەوڵی پێکهاتەیەك وەربگیرێت، کە دواتر ناوی (کورد)ی لێنرا. ئەم هەوڵەش لە قۆناغی سەدەکانی ناوەڕاست وەك قۆناغەکەی پێشوو درێژەی هەبوو، بەڵام بێ ئەنجام ما، چونکە کۆمەڵێك هۆکار بوونە لاوازبوون و دواتر ڕووخاندنی یەك لەدوا یەکی ئەو میرنشین و دەسەڵاتە کوردییانەی لەو قۆناغەدا بوونیان هەبوو. یەکێك لەو هۆکارانەش ململانێ و کێشمەکێشی نێو ئەندامانی بنەماڵەی دەسەڵاتدارو دۆخی ناوخۆیی هەریەك لەو دەسەڵاتە سیاسیانە بوو.

(هۆکارە ناوخۆییەکان) لە سەرەکیترین ئەو هۆکارانە بوون، ڕۆڵیان لە لاوازبوون و دواتر ڕووخانی یەك لە دوا یەکی میرنشین و دەسەڵاتە کوردییەکان بینی. دیارە ئەگەر ئەو لایەنە نەبوایە ئەستەم بوو هۆکارێکیتر یان شاڵاوی دەرەکی، بتوانێت چۆك بەو دەسەڵاتە کوردییانە دابدات و بەرەو لاوازبوون و ڕووخانی بەرێت، بۆیە پێمان باش بوو بەو هۆکارانە بگەین، کە دۆخی ناوخۆیی ئەو دەسەڵاتانەیان تێکداو کێشەو ململانێی ناوخۆییان دروستکردو قوڵکردەوە. دواتر زەمینەی ڕووخاندن و پەلکێشکردنی دەوڵەت و زلهێزەکانی سەردەمەکەیان بۆ میرنشین و دەوڵەت و پایتەختەکانیان وەك چەقی سیاسی ئەو دەسەڵاتانە ڕەخساند. بەو هیوایەشین ئەم کارەمان دەروازەیەك بەڕووی ئایندەی کوردا واڵا بکات و وەك ئەزموونێکی مێژوویی، ڕێگری لە ڕووخاندنی هەوڵەکانی داهاتوویی بکات. هەموو ئەوانەش لە دەروازەیەك و (دوو) تەوەردا جێی کراوەتەوە. ئەوەش دوای پشتبەستن بە دەیان سەرچاوەو ژێدەری مێژوویی.

**دەروازە**

**میرنشین و دەوڵەت لە سەدەکانی ناوەڕاست**

**١. زاراوەو چەمکی (میرنشین):-** (میرنشین) لە ڕووی زمانەوانییەوە لە هەردوو بڕگەی (میر+نشین) پێکهاتووە. زاراوەی (میر) لەزاراوەی (الامیر)ی عەرەبی وەرگیراوە، بەواتای دەسەڵاتێکی ناوچەیی بچووك. (الامیر)یش بچووکراوەی (الامر)ە. (الامر)یش بەواتای ئەو کەسە یان دەسەڵاتدارە هاتووە، کە ماف و توانای دەرکردنی فرمانی هەبووەو هەیە(فیروزابادي٢٠٠٧، ص٢٠٠٧، ابوبکر الرازي١٩٩٧، ص١٦). بەوەش پێناسە کراوە، کە دەسەڵاتدارێکە فرمان بەسەر پێکهاتەیەك یان میرنشینێکدا دەکات(ادم متز١٩٥٧, ١٣٨/١, حسن الباشا١٩٨٩, ص١٧٩, قتيبة الشهابي, ١٩٩٥, ص٢٣, د.ئاراس فەریق زەینەڵ٢٠١٢، ل١٥٢). هەروەها بەمانای سەرکردەی سوپای ناوچەیەکیش هاتووە, کە لەلایەن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

میرنشینێکەوە بەڕێوەبرابێت(القلقشندی١٩١٣-١٩١٤، ٤٤٩/٥). لەزمانی کوردیشدا بە (میر) هاتووە, بەواتای دەسەڵاتداری ناوچەیەکی بچوك. مەبەستیش لە بچووکی دەسەڵاتەکەی نەبووە، بەڵکو نیمچە سەربەخۆبوونی دەسەڵاتەکەی بووە، بەهۆی ئەوەی پێویستی بەدانپێدانانی هێزو دەوڵەتێکی گەورە هەبووە(د.عەبدولرەحمان غانم٢٠٠٣, لل١٦٠-١٦٦، فارس نەورۆڵی٢٠٢٠، ل٢٦٩)، وەك دەوڵەتە ئیمپراتۆرییەکان یان دەوڵەتانی خیلافەتی ئیسلامی و دەوڵەتە زلهێزەکان

٢. **زاراوەو چەمکی (دەوڵەت):** (دەوڵەت) لەزمانی کوردیدا لەزاراوەی (الدولة)ی عەرەبی وەرگیراوە، کە لەزمانی ئینگلیزیدا زاراوەی (State) بۆ دانراوە. ئەم زاراوەیەش لە زاراوەی (Status)ی لاتینی وەرگیراوە، بەمانای ئارامی و ئاسایش و دۆخی جێگیری ناوچەو هەرێمێك هاتووە(د.اسماعیل غزال١٩٨٢، صص٦٩-٧٠). لەکاتێکدا ئەم زاراوەیە لەزمانی عەرەبیدا بەمانای (دەسەڵات و هێز) هاتووە، نەك ئارامی و ئاسایش(د.محمد احمد خلف الله, بلا, ص٥)، بەڵام پێدەچێت بەوە بەراورد کرابێت، کە بێ بوونی دەسەڵات و هێز، ئەستەم بووبێت ئارامی و ئاسایشی بۆ بەرقەرار کرابێت.

سەبارەت بەچەمك و مانای (دەوڵەت)یش، چەندین پێناسەی جیاجیای بۆکراوە. لەوانە بە قەوارەیەك ووتراوە، کە خاوەن دارایی و هێزی چەکداری تایبەت بەخۆی بێت(ابوبکر الرازی، صص٤٥٨-٤٥٩). هەندێکی دیکە بەوە پێناسەیان کردووە، کە قەوارەییەکی سیاسی دانپێدانراوەو دوای هەوڵ و تێکۆشانێکی زۆری هاوڵاتییەکانی یان دەستەیەکی باڵادەست لەنێو هەر کۆمەڵگاو هەرێمێك، دروست بووە. لەڕووی کۆمەڵایەتیشەوە، زیاتر لە ڕێکخراوێکی سیاسی کۆمەڵایەتی چووە، کە بەهۆی چینێکی دەسەڵاتدارەوە لەڕووی هێزی سەربازی و ئابووری و تەنانەت کۆمەڵایەتییەوە، دەستی بەسەر جومگەکانی قەوارەکەدا گرتووە(داریوش ئاشوری و دکتور بەهادینی پازاگاد و روزبە١٩٨٥، لل٨٤-٨٥، د.عەبدولرەحمان غانم، لل١٥٥-١٦٥). بەواتایەکیتر (دەوڵەت) ئەو چوارچێوە سیاسییە بووە، کە سەرجەم ئەندامانی کۆمەڵگایەکی لەژێر قەوارەیەکی دانپێدانراودا کۆکردۆتەوەو هەوڵی پاراستنی داوە. ئەرکی سەرەکی دەوڵەتیش داکۆکیکردن بووە لەچین و بنەماڵەی فەرمانڕەواو خاوەن دەسەڵات، نەك چینەکانی خوارەوە(ئاشووری و ئەوانیتر، ل٨٥, د.محمود خلف١٩٩٧, ص٢٧). هەروەها بەوەش پێناسە کراوە، کە دەسەڵاتێکی خاوەن سەروەری و دارایی و هێزی چەکدار بووەو لەلایەن بنەماڵە یان دەستەیەکی دەسەڵاتدارەوە بەڕێوەبراوە(ئەندرو ڤنسنت٢٠١١، لل٣١-٣٥). ئەمەو خاوەنی (سێ) پێکهێنەری سەرەکی بووە، کە (خاك، دانیشتوان، سەروەری) بوون(د.عەبدولرەحمان غانم، لل١٦٠-١٦١، دڵشاد تاڵەبانی٢٠١٣، (٦٨/١-٧٢)). پێویستیش بووە دەوڵەت خۆی بڕیار لەسەربەخۆیی خۆی بدات و بوێری ئەوەشی تێدابێت سەربەخۆیی قەوارەکەی بپارێزێت. بەپێچەوانەی میرنشینەوە، کە لەهەوڵی ئەوەدابێت ئەو لایەن و هێزە سیاسییەی دانی پێداناوە، پشتیوانی لە پاراستنی بکات(د.عەبدولرەحمان غانم، لل١٦٠-١٦٦، نەورۆڵی، ل٢٦٩). بەم پێناسانەش بێت (دەوڵەت) بنیاتنانی دەسەڵاتێکی سیاسی بووە لەسەر خاکێك، کە خاوەنی ژمارەیەك هاوڵاتی و زمان و دابونەریت و ئایین و مێژوویەکی تایبەت بەخۆی بووە. ئەوەش دوای ئەوەی دەوڵەتێکیتر یان هێزێکی سیاسی گەورە، پشتیوانی لە دروستبوون و دانپێدانانی کردووە(ژیان خۆشەویست پیرۆت٢٠١٨, صص٢٠-٣١). وەك مێژووش دروستبوونی دەوڵەت لە (دەوڵەتکەی شار) بۆ (میرنشین) دواتر بۆ (دەوڵەت) گەشەی کردووەو کەوتوونەتە نێو نەخشەی سیاسی جیهان(م. ن. نچکینا و دیگران، ٢٥٣٦شاهنشاهی، ١٦/١-١٧).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**٣. دەسەڵاتی سیاسی و دەسەڵاتە سیاسییە کوردییەکانی سەردەمی دەوڵەتی خیلافەتی عەباسی:**
(دەسەڵاتی سیاسی)و (دەسەڵاتە سیاسییە کوردییەکان) ئەو میرنشین و دەوڵەتانە بوون، لەساڵانی باڵادەستی بووەیهییەکان بەسەر دەوڵەتی خیلافەتی عەباسییەوە، لەنێوان ساڵانی (٣٣٤-٤٤٧ك/٩٤٥-١٠٥٥ز) دەرکەوتن(عبدالعزیز الدوری١٩٤٥، ص٢٨٧، محمد سهیل طقوش٢٠٠١, صص٢٢٠-٢٣٠, د.یوسف العش٢٠٠٣, صص١٨٥-١٩٨, د.قادر محمد حسن٢٠١١، صص٣٥-١١٥، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠١٢، لل٨٠-٢٣٥)، بەڵام بەدەرکەوتنی تورکە سەلجوقییەکان لەنێوان ساڵانی (٤٤٧-٥٩٥ك/١٠٥٥-١١٩٨ز) کۆتایی بەدەسەڵاتیان هات(طقوش٢٠٠١, صص٢٣٧-٢٤٧، حسام الدین علی غالب نەقشبەندی٢٠٠٨، ل٢٧٦، د.قادر محمد حسن١٥٩-١٧٠، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠١٢، لل٢٤٧-٣٠٤). (بووەیهییەکان) پەیڕەوییان لە سیاسەتی (لامەرکەزی) کردو سیستەمی دەرەبەگایەتیان زیندوو کردەوە(ن.م. پیکولوسکایاو دیگران١٣٦٣ه.ش، ص٣٣٧، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠٠٨، ل٢٠، د.موسا محەمەد خدر٢٠١١، ل٤٥). بەو هۆیەشەوە سەرۆک خێڵ و سەرۆک هۆزەکانیان سەرپشك کرد، کاروباری سنووری ناوچەکانی خۆیان بەڕێوە ببەن, چونکە لە بەرژەوەندییان بوو خۆیان ناوچەکانیان بەڕێوەببن و ئەرکێکیان لەکۆڵ بێتەوە(طقوش٢٠٠١، صص٢٣٠-٢٣١، العش, صص١٩٣-١٩٤، د.شفان ظاهر عبدالله٢٠١٨، ص٧٩). کوردەکانیش دوای شکستی هەوڵەکانیان لە ڕاپەڕین و شۆڕشەکان لە دژی دەوڵەتی خیلافەتی عەباسی، هاتنی بووەیهییەکانیان بەهەلزانی بیر لەخۆڕێبەری ناوچەکانیان بکەنەوە(د.ئاراس فەریق زەینەل، ل٣٤٤). ئەمەش وای لەسەرۆك خێڵ و سەرۆك هۆزو گەورەی بنەماڵەکان کرد، هەریەك لە ناوچەی خۆیانەوە دەسەڵاتێکی ناوچەیی بۆ خۆیان دروست بکەن و ببنە میرو دەسەڵاتداری ناوچەو هەرێمەکەی خۆیان(د.شفان ظاهر عبدالله، ص٧٢). ئەم دۆخەش بەهاتنی سەلجوقییەکان گۆڕانکاری بەسەردا هات و زۆرینەیان بەرەو نەمان چوون، بەهۆی ئەوەی سەلجوقییەکان پەیڕەویان لە سیستەمی ناوەندی (مەرکەزی) کردو کاروباری ناوچەو هەرێمەکانیان بە دەوڵەتەکەیانەوە گرێدا(نەقشبەندی، ل٣٥٤، مەهدی عوسمان هەروتی٢٠٠٨، لل٤٧-٤٨، د.زرار صدیق توفیق٢٠١٢، ل٢٥٠، کامەران عەزیز عەبدوڵلا٢٠١٢، ل١٣٦). ئەو دەسەڵاتە سیاسیانەشی ناوچە کوردنشینەکانی ئەو سەردەمەیان بەڕێوەبرد، هەندێکیان بە (میرنشین)و هەندێکی تریان بە (دەوڵەت) ناسران. لەم بوارەدا بەشێك لەمێژوونووسان دەسەڵاتی دۆستەکی مەروانیان بە (دەوڵەت) ناوبردووە(ئیبنوئەزرەقی فارقی٢٠٠٧، ل١٥، أبن الاثیر، بلا، ٤١٣/٧، ابن شداد١٩٧٨، ٢٢٦/١/٣، ٤٠٤، عبدالرقیب یوسف، ١٩٧٢/١، ١٩٧٣/٢، هدار صالح الاتروشی٢٠١٣، ص١١٥). هەندێکیش دەسەڵاتی حەسنەوەییەکانی بە (دەوڵەتی حەسنەوەی) داناوە(مستوفی قزوینی١٣٨١ه.ش، ص٤٢١، أبن خلدون٢٠١٠, ٥١٢/٤, میرزا موحەممەد ئەمینی مەنگوڕی٢٠٠٨، ل١٥). (مەلا جەمیل ڕۆژبەیانی)ش دەسەڵاتەکانی (دونبوڵی، شاهینی، شوانکارە میتنەشاهی) وەك دەوڵەت باسکردووە(٢٠٠٠، لل٩-١٤٦). (فائیزە مەحمود عیزەت) دوای کارێکی زانستی لەسەر ژیانی کۆمەڵایەتی کورد لەنێوان سەدەکانی (٤-٩ك/١٠-١٥ز)، گەیشتۆتە ئەوەی، کە سەرجەم دەسەڵاتەکانی سەردەمی دەسەڵاتداریێتی بووەیهییەکان (میرنشین) بوون و بە (میر) ناوهێنراون(٢٠٠٩, صص٢٣-٢٤). لەم بوارەشدا دەسەڵاتدارانی بووەیهیش، بەناوی جیاجیا ناوبران، وەك ئەوەی (موعزئەلدەولە) لەلایەن خەلیفە (موستەکفی بیلای عەباسی) بە (سوڵتان) ناوبرا، چونکە لەساڵی (٣٣٤ك/٩٤٥ز) هاتە ناو شاری (بەغداد)و دەوڵەتی خیلافەتی عەباسی لە تورکەکان ڕزگار کرد، لەکاتێکدا (میر)یان پێدەوت(أبن خلدون، ٤٣٥/٤،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

لولاف مصطفى سليم٢٠١٨، ص١٠٨)، بەڵام (عیزدئەلدەولە بەختیار)یش زاراوەکەی لەساڵی (٣٣٨ك/٩٤٩ز) بۆ (الامیر الامراء-میری میران) گۆڕی(پیکولوسکایاو دیگران، ص٢٣٥، حسن پیرنیا و عباس اقبال اشتیانی١٣٨٥ه.ش، ص٤٣٦, طقوش٢٠٠١, ص٢٢٨). (جەلالئەدەولەی بووەیهی)ش لەساڵی (٤٢٩ك/١٠٣٨ز) بۆ (شاهنشاە-شای شاکان)و (خەسرەو پیرۆز)یش بۆ (شا) واتە (الملك) گۆڕی، بە (الملك الرحیم) ناسرا(طقوش٢٠٠١, صص٢٢٨-٢٢٩). ئەمە لەکاتێکدا دەسەڵاتی بووەیهییەکان بە (دەوڵەت) ناوبرا(طقوش٢٠٠١, صص٢٢٠-٢٣٠, العش, صص١٨٧-١٩٨, د. سید احمد رضا خضری١٣٨٨ه.ش, صص١٧٣-١٩٤). هەمووئەوانەش بەو مانایە هات، کە دەسەڵاتدارەکانی سەدەکانی ناوەڕاست، ناوی دەسەڵاتەکەیان و نازناوەکانی خۆیان دیاریدەکرد، نەوەك لەسەر پێوەرێکی سیاسی و یاسایی، بۆیە لای بەشێك (دەوڵەت)و لای بەشێکی دیکە بە (میرنشین) ناوهێنراون. بەدەر لەوانەش بەهۆی ئەوەی پێویست بوو میرنشینە کوردییەکان لە ووتاری ڕۆژانی هەینیدا ناوی خەلیفەکانی عەباسی و میرەکانی بووەیهی و دواتر سوڵتانەکانی سەلجوقی بهێنن و بەناوی ئەوان ووتار بخوێننەوە(ناصر خسرو١٣٥٠ه.ش، صص٥-٨، مسکویە٢٠٠١، ٢/٢٥٧، عبدالرقیب یوسف، ١٦٠/٢)، بۆیە وەك میرنشین ناسران نەك دەوڵەت.

**باسی یەکەم:**

**هۆکارەکان لەسەر ئاستی بنەماڵەی دەسەڵاتدار:**

ئەگەرچی کورد لە مێژوودا بە خەڵکانێکی ئازاو چاونەترس ناسراون(جرجی زیدان، بلا، ٤٧٤/٢، د.لولاف مصطفى سليم، ص١٠٨)، بەڵام لەشێوازی دروستکردنی دەسەڵاتێکی بەردەوام سەرکەوتوو نەبوون. ئەوەش بەو مانایە نەبووە، کە ئازایەتی ڕۆڵی لە بەردەوامی دەسەڵاتێکدا نەگێڕابێت، بەڵکو بەو مانایە بووە، کە چەندە دەسەڵات و میرنشینەکان پێویستیان بە دەسەڵاتدارانی ئازاو بوێر و خەڵکانی خۆڕاگر هەبووە، زیاتر لەوە پێویستیان بەسیاسەت و هونەری بەڕێوەبردن و دیپلۆماسییەت هەبووە(ڤنسنت، لل٣٤-٣٥، د.ئاراس فەریق زەینەڵ، ل٥٢ بەدواوە). هەربۆیە هەر دەسەڵاتێکی سیاسی سەربەخۆ بووبێت یان نیمچە سەربەخۆ، کۆتایی بە ژیانی سیاسی و دەسەڵاتەکەی هاتووە. یەکێکیش لە دیارترین ئەو هۆکارانەی، بەردەوامی بەو دەسەڵاتە کوردییانە نەدا، پەرتەوازەیی خودی کوردو ململانێی ناوخۆیی خێڵ و هۆزو بنەماڵەکان بووە، کە هەریەکەیان بۆ بەرژەوندی تایبەتی خۆیان کاریان کردووە، بۆیە ئەو دەرفەتانەی بۆ کورد هاتنەپێش لەدەست چوون(ساڵح قەفتان٢٠٠٤، ل١٢٩). لە دیارترین ئەو هۆکارانەشی لەسەر ئاستی بنەماڵەی دەسەڵاتدار ڕۆڵیان لە ڕووخاندنیان هەبوو، ئەمانەی خوارەوە بوون:

**١-١: کاریگەری پێکهاتەی کۆمەڵگای کوردی لەسەر بنەماڵەی دەسەڵاتدار:** بەو پێیەی کۆمەڵگای کوردی کۆمەڵگایەکی خێڵەکی و هۆزایەتی و تیرەگەری و ناوچەیی بوو، وە لە چەند خێڵ و هۆزو تیرە پێکهاتبوو(ڤلادیمیر مینۆرسکی١٩٨٤، لل١٣١-١٣٢، د.زرار سدیق

تۆفیق٢٠٠٨، ل٦)، هەر ناوچەو دەڤەرێکیش بەدەست خێڵ و هۆزو تیرەو بنەماڵەیەکەوە بوو، کە لەلایەن سەرۆکی ئەو خێڵە یان هۆزو تیرانەوە بەڕێوەدەبرا(زیدان, ٤٧٤/٣, مینۆرسکی، لل١٣١-١٣٢)، بۆیە ئەم حاڵەتە کۆمەڵگای کوردی پەرتەوازەو دابەشکردبوو(مینۆرسکی، لل١٣١-١٣٢، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠٠٨، ل٦). لەنێو ئەو خێڵ و هۆزانەشی بوونیان هەبوو، هەریەك لە (هەزبانی، گۆران، حەمیدی، گاوانی، بەرزیکانی، شازنجانی، لوڕ، دونبولی، ڕەوادی، مەروانی، شاهینی، بەشنەوەی، جاف، بوختی، زرزاری،.....تاد) بوون(المقریزی١٩٩٧، ٣/٢/١، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠٠٨، ل١٢). لەنێو ئەوانیش خێڵ و هۆزی گەورە هەبوون، وەك (خێڵی هەزبانی)، کە یەکێك بوون لەخێڵە گەورەکانی نەك تەنیا ناوچەی موسڵ و هەولێر، بەڵکو لە هەرێمەکانی (ئازەربایجان، ئەرمنستان، قەفقازیا)ش(احمد عبدالعزیز محمود٢٠٠٦، د.محسن محمد حسین٢٠١٢، ص٣٥، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠١٢، ل١٢٨). لەنێو ئەم خێڵەشدا چەندین هۆزو تیرە دەرکەوتن، وەك (ڕەوادی، سالاری)(احمد عبدالعزیز محمود، ص٤١). هەروەها (هۆزی حەمیدی) لەهۆزە کوردییە دیارەکانی سەردەمەکە بوون، کە لەناوچەکانی (موسڵ-هەولێر-ئاکرێ)و ڕۆڵی بەرچاویان لەڕووداوە سیاسییەکان هەبوو(هیلین رفیق محمد سعید باجلوری٢٠١٢, صص١٤-٣١). (میر باد کوڕی دۆستەك)یش دامەزرێنەری (دەوڵەتی دۆستەکی) لەو هۆزە بوو(مسکویە، ١٠٦/٧، عبدالرقیب یوسف، ١/٥-٦). جیاواز لەوەش لەنێو ناوچە کوردنشینەکان و ئەو خێڵە کوردانە بەتایبەت لە هەرێمی جزیرە خێڵە عەرەبییەکانی (بەکر، ڕبیعە، مەزەر)(امید بهرامی نیا١٣٨٦ه.ج، ص٣٣، د.اکو برهان محمد، صص٣١-٢٣)و هەروەها هۆزەکانی (ئەزد، تەی، کیندە، عەبدولقەیس، شەیبان) نیشتەجێبوون. لەپاڵ نیشتەجێبوونی دەیان خێڵ و هۆزو بنەماڵەی عەرەبی تر لە ناوچە کوردنشینەکانی (ئازەربایجان، ئاران، ئەرمەنستان، خوزستان، فارس)(د. محمد جاسم حمادی١٩٧٧, ص١٧٢, احمد عبدالعزیز محمود، ص٣٩، ڕەحیم ئەحمەد ئەمین٢٠٠٨، لل١٣٤-١٥٨).

لەلایەکی دیکەوە بەهۆی ئەوەی زۆرینەی دانیشتوانی ناوچە کوردنشینەکانیش گوندنشین و نەخوێنەوار بوون، بەڵام بەهۆی ئەوەی شوێنی نیشتەجێبوونی زۆرینەی سەرۆك خێڵ و سەرۆك هۆزو خاوەن موڵکەکان بوون(أبن رستە١٨٩٢، ص١٥٣، الروذاروي, ٢/ ٢٩٠)، بۆیە زۆرجار بێ لێکدانەوە بۆ دۆخە سیاسییەکە، ئەو خێڵ و هۆزو تیرانە دژ بە بەرژەوەندی یەك کاریان دەکرد. هەندێکجاریش لە ڕووبەڕووبوونەوەی شالاوە دەرەکییەکانیش هاوکارو پشتیوانی یەکتر بوون(د.قادر محمد حسن، ل٦٩، د.شفان ظاهر عبداللە، ص٧٢). زۆرترین ململانێکانیش لەنێو خۆیانداو لەسەر خاك و زەوی کشتوکاڵی و قەڵاکان بوون. بەتایبەت دوای ئەوەی هەر سەرۆکی بنەماڵەو هۆزو تیرەیەك، خاوەنی قەڵایەك یان چەند قەڵایەك بوون، ئەمەو جگە لەوەی هەریەك لەوان خاوەنی یاسای کارپێکراوی خۆی و سەرۆکەکانیشیان بڕیاردەری شەڕو ئاشتی بوون(کریس کۆچێرا٢٠٠٤، ل١٣، د.ئاراس فەریق زەینەڵ، ل٣٤٤).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

جیاواز لەوانەش پێکهاتەی کۆمەڵگای کوردی لە هەردوو چینی تایبەت و گشتی پێکهاتبوون(موسى مصطفى الهسيناني٢٠٠٥, ص١٤٨, د.فائزة محمود عزت، ص٣٧، اكو برهان محمد٢٠١٢، ص٣٥). چینی تایبەت لە بنەماڵەی خێڵ و هۆزو تیرەکان و خاوەن موڵك و وەزیرو قازی و نووسەران و دادوەران پێکهاتبوون(الصابي١٩٨٦, ص٢١، سوادي عبد محمد١٩٨٩, ص١٦١, اكو برهان محمد, ص٣٥-٣٦). پیشەوەرو کارسبکارو کرێکارو جوتیارو زەحمەتکێش و دەستگێرەکانیش، لەچینی گشتی بوون(الصفدي١٤٢٨ه، ص١٢، عادل محي الدين الالولسي١٩٨٧، ص٨٣). لەدیدگای هەندێك مێژوونووسیشەوە (بازرگانی مام ناوەند، پیشەوەر، کاسبکار، کارمەندی ئاسایی، تەنانەت مامۆستایانی ئایینی)ش، لەتویژی ناوەند بوون(أبن الجوزي١٤٢٤ه, ص٩٣٩٣، التنوخي١٣٩١ه, ١/١٨٣، ابن خميس الموصلي١٤٢٧ه, ١/٢٦٥-٢٦٦)، بەڵام هەروەك چینی گشتی ئەژمار کرابوون، چونکە دووربوون لە بڕیاری سیاسی و سەرقاڵی بژێوی ژیانی ئاسایی خۆیان بوون(الالولسي, ص٨٣-٨٤، سوادي عبد محمد, ص١٦١). ئەمەو چینی تایبەتیش لە چینی گشتی کەمتر بوون(الصابي, ص٢١, الصفدي, ص١٢, سوادي عبد محمد, ص١٦١). هەربۆیە کاتێك هەریەك لەو خیلانە لەرێگای سەرۆکەکانیانەوە بەهۆی پێگەکەیانەوە سوودیان لە لاوازی دەوڵەتی خیلافەتی عەباسی بینی و هەریەکەیان لە ناوچەی خۆیانەوە سەربەخۆیی خۆیان ڕاگەیاند(د.زرار سديق تۆفيق٢٠٠٨، ل٦). بە بەهێزبوونەوەی ئەو دەوڵەتەش، دەسەڵاتی ئەوان بەرەو لاوازی و ڕووخان برد(د.زرار صديق توفيق٢٠٠٧, ص١). لەنێو ئەو دۆخەشدا چینی گشتی بێئاگاو تەنیا تەماشاکارو جێبەجێکاری فرمانی چینی تایبەت بوون، چونکە ناکۆکی ناوخۆیی ئەندامانی بنەماڵەی فەرمانڕەوا لەسەر دەسەڵات بووبێت، یان لەسەر شێوازی بەرێوەبردن، تا بە مامەڵە دەگات لەگەڵ ئەو هێزو لایەنانەی لە دەرەوەی میرنشین ودەسەڵاتەکەدا بوون، بە هەموویان بوونە مایەی هەرەشەو دواجار کۆتاییان بە دەسەڵاتی ئەو میرنشینانە هێنا. بەوەش بنەماڵەکانیان لەدەسەڵات و ڕووداوەکان دوورخستەوە(د.قادر محمد حسن، صص٥٠-٥١، د.ئاراس فەریق زینەڵ، ل٣٥١، د.ئاکۆ بورهان محەمەد٢٠١٨، لل١٠٣-١٠٤). بەو هۆیشەوە ئەو سەرۆك خێڵ و سەرۆك هۆزو سەرۆکی بنەماڵانە، لەپێناو بەرژەوەندییەکی تایبەت بەخۆیان وازیان لەشتێکی بەنرختر هێنا، کە سەربەخۆیی بوو(قەفتان، ل١٢٩)، تەنانەت بۆ ئەوەش نەچوون، کە ئەوەی زیان دەکات خۆیانن و ئەوەی وێران دەبێت خاك و ئاوەدانی خۆیانە، ئەوەشی دەبێتە قوربانی هەر لەخۆیانە(ابوحيان التوحيدي١٩٤٤, ٣/٨٩, عادل محي الدين الالولسي١٩٨٧, ص٨٣, هنري فيلد٢٠٠١, ص٧). خۆ ئەگەر وایان نەکردایە، زۆر باش دەیانتوانی سەربەخۆیی خۆیان بپارێزن و ناوچەکانی دەورو پشتی خۆیان بخەنە ژێر دەسەڵاتی خۆیانەوە، نەوەك بە پێچەوانەوە دەستیان بچێتە خوێنی یەکترو یەکتر تەواو بکەن، بەڵام بەهۆی ئەوەی ناکۆکی و دووبەرەکیان لەنێواندا زۆر بوو، بۆیە ئەوانی لەو سەردەمەدا بە ئامانج نەگەیاند(العمري١٩٨٨, ص٥٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

هەربۆیە ئەوەی زیاتر ڕۆڵی لەقوڵبوونەوەی ناکۆکی بنەماڵەیی هەبوو سیستەمی خێڵایەتی نێو کۆمەڵگای کوردی بوو. بەو پێیەشی خودی کۆمەڵگای کوردیش بەشێوەیەکی ناسروشتی پەرەی سەندبوو، بۆیە بەو شێوەیە لەگەڵ ڕووداوەکانی سەردەمەکەی ڕۆیشت(عەتا قەرەداغی٢٠١٢، ل١٢). ئاراستەکەش وەها بوو، کە ململانێی نێو بنەماڵەی دەسەڵاتدار لەلایەك و ململانێ نێوان خێڵ و هۆزەکان لەلایەکی دیکە، لاوازبوون و دواتر ڕووخاندنی میرنشینەکانی بەدوادا هات.

**١-٢: سنووردارکردنی دەسەڵاتەکان لەنێو یەك بنەماڵە و هۆز و خێڵدا:** بەو پێیەی دەسەڵات لە میرنشینەکان بنەماڵەیی و پشتاوپشت و لەباوکەوە بۆ کوڕ بوو(عبدالرقیب یوسف، ٢/٧٦-٧٧)، وە لەکاتی نەبوونی کوڕیش بۆ براو دواتر مام و خاڵ و هەندێکجاریش بۆ زاواش بەجێما، وەك ئەوەی (باد) دامەزرێنەری میرنشینی دۆستەکی براکەی بەناوی (ئەبولفەوارس حوسێن کوڕی دۆستەك) کردە فەرمانڕەوای میافارقین، چونکە کوڕی نەبوو(فارقی، ل١٥)، دوای خۆیشی خوشکەزاکەی (مەروان کوڕی کك) شوێنی گرتەوە(فارقی، ل٢١، أبن الاثیر، بلا، ٧/٤١٤). هەربۆیە ئەم شێوازە لە دەسەڵات لەو سەردەمەدا پیادە دەکرا. ئەوەش کێشەی گەورەی بەدوادا هات. بەئاستێك بووە یەکێك لەدیارترین هۆکارە ناوخۆییەکان بۆ سەرهەڵدانی ململانێ نێوان ئەندامانی خێزان و بنەماڵە کوردەکان لەسەر دەسەڵات. بەتایبەت کاتێك فەرمانڕەوای شارەکان و فەرماندەکانی سوپا و پۆستە کارگێڕییەکان لەسەر ئەندامانی بنەماڵەی فەرمانڕەوا سنووردار کرابوو. ئەوەش دۆخێکی ڕەخساندبوو، کە مەرج نەبوو هەموو ئەندامانی بنەماڵەی فەرمانڕەوا کەسانی شیاوبن و شایستەی ئەو پۆستانە بن(د.لولاف مصطفی سلیم, ص٤٨). هەربۆیە هەندێکجار بەهۆی لاوازی بەشێك لەوان لاوازبوون و دواتر ڕووخاندنی یەك لە دوای یەکی میرنشینە کوردییەکانی بەدواداهات(کامەران عەزیز عەبدوڵلا، لل١٣٤-١٣٥). وەك ململانێ (موحەممەد کوڕی موهەزەبی شاهینی) میری میرنشینی شاهینی لەگەڵ خوشکەزاکەی لەساڵی (٤٠٩ك/١٠١٨ز)، کە دواتر بە کوژرانی دوایی هات، لەلایەن خوشکەزاکەییەوە. بەوەش دەسەڵات لەدەست بنەماڵی شاهینی دەرچوو، وە کەوتەدەست بووەیهییەکان(ابن خلدون، ٤/٥١١-٥١٢، ڕۆژبەیانی،٢٠٠٠، ل٧١).

لە میرنشینی حەسنەوەیشدا ململانێ نێوان ئەندامانی بنەماڵە کاریگەری خراپی لەسەر ئایندەی میرنشینەکە بەجێهێشت. (حەسنەوەی کوڕی حوسێن) دامەزرێنەری میرنشینەکە (حەوت) کوڕی هەبوو بەناوەکانی (ئەبولعەلا، عەبدولرەزاق، ئەبونەجم بەدر، عاسم، ئەبوعەدنان، بەختیار، عەبدولمەلیك). بە گەورەبوونیان تەماعی دەسەڵات لێدان و ئەوانی بەسەر (سێ) بەرەدا دابەشکرد(مسکویە، ٦/٤٦٦). سیانیان چوونە پاڵ (فەخرئەلدەولەی بووەیهی) بۆ ئەوەی پشتیوانیان بکات بۆ دەسەڵات. سیانەکەی تر چوونە پاڵ (عیزدئەلدەولەی بووەیهی). کوڕێکیشی لە قەڵایەك خۆی پەنادا، تا لە دەرفەتێکدا بگاتە دەسەڵات، بەڵام


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

دواجار (عیزدلەدەلە) جگە لە (بەدر) هەموویان کوشت(مسکویە، ١٨/٧)، چونکە دەیویست بە ناکۆکی ناوخۆیی ململانێکانیان قوڵ بکەاتەوەو دواتر بە ئاسانی دەستبگرێت بەسەر تەواوی میرنشینەکەدا(د.شفان ظاهر عبدالله، صص٩٤-٩٥). هەربۆیە دواجار (حەسنەوەی) جگە لە (بەدەر) یەك کوڕی بۆ بەجێ نەما. ئەوەش کاریگەری کردە سەر پێگەی بنەماڵە. بە ئاستێك ئەو ڕووداوە کاریگەری لەسەر داهاتووشی بەجێهێشت(الروذراوی١٩١٦، ١٢/٣، نەقشبەندی، لل٢٧٤-٢٧٥، د.ئاراس فەریق زەینەڵ، لل٣٦٤-٣٦٥). بەوەی (هیلال) کوڕی لەگەڵ باوکی کەوتە ململانێ لەسەر دەسەڵات. لەبەر ئەوەی (بەدر) کوڕە ناونجییەکەی کردە جێنشین، کە ناوی (ئەبو عیسا) بوو. ئەوەش ناڕەزایی (هیلال)ی لێکەوتەوە. بەدوایدا (تاهیر کوڕی هیلال)یش بەرامبەر (بەدر)ی باپیری وەستا، چونکە لە باوکی دابوو(ابن الاثیر, بلا, ٤٧/٨, أبن خلدون, ٥١٦/٤, شرفخان البدلیسي٢٠٠١، ص١١٨، محەمەد جەمیل ڕۆژبەیانی١٩٩٦، ل٩٩، نەقشبەندی، لل٢٧٤-٢٧٥، د.ئاکۆ بورهان محەمەد، لل١٠٣-١٠٤). هەموو ئەوانەش میرنشینی حەسنەوەیان لە میرنشینێکی بەهێزەوە بەرەو لاوازی برد.

میرنشینی شەدادیش بەدەر نەبوو لە ناکۆکی ناوخۆیی، وەك ئەوەی (مەرزبان کوڕی موحەممەد) لەساڵی (٣٧٠ك/٩٨٠ز) لەلایەن (فەزلون)ی برایەوە کوژرا(منجم باشی١٩٥٣م، صص١٠-١١، احمد کسروی١٣٥٣ه.ش، ص٢٦٤، کامەران عەزیز عەبدوڵلا، ل١١٤). هەروەها (موسا کوڕی فەزڵون)یش لەساڵی (٤٢٥ك/١٠٣٣ز) لەلایەن (لەشکر)ی کوڕییەوە کوژرا. ئەو ناکۆییانەش، میرنشینەکەی بەرەو لاوازی برد(منجم باشی، ص١٢، احمد کسروی١٣٥٣ه.ش، ص٢٨٧).

(ئەبولماجید موهەلهەل کوڕی موحەممەدی عەننازی)یش لەساڵی (٤٣٤ك/١٠٤٢ز)و لەپێناو گەیشتن بە دەسەڵات، ملکەچی بۆ (توغروڵ بەگی سەلجوقی) ڕاگەیاند، تا پشتیوانی گەیشتنی دەسەڵاتی لێبکات و (سەعدی کوڕی ئەبولشەوك) برازای لە میری بخات(ابن الاثیر, بلا, ٢٣٢/٨-٢٣٣, ابن خلدون, ٥٢٠/٤, البدلیسی، صص١١٩-١٢٠، کامەران عەزیز عەبدوڵلا، لل١١٣-١١٤). ئەوەش ڕێگری لە گەشەکردن و پێشکەوتنی میرنشینەکە کرد(د.ئاراس فەریق زینەڵ، ل١٧٥). هەروەها کۆچی دوایی (نەسرئەلدەولەی مەروانی) لەساڵی (٤٥٣ك/١٠٦١ز)و لەتەمەنی (٨٠) ساڵی و دوای (٥٢) ساڵ لە دەسەڵات (٢٠) کوڕی لە دوای خۆی بەجێهێشت(أبن الاثیر, بلا, ٣٣٠/٨, أبن شداد, ٣٦٧/١/٣). هەربۆیە کاتێك (نیزامەدین) شوێنی گرتەوە، ناڕەزایی براکانی لێکەوتەوە. بەتایبەت برا گەورەکەی (سەعید کوڕی نەسر)، ئەمەش زۆر خراپ بەسەر دەسەڵاتەکەیدا شکایەوە(ابن شداد، ٣٦٧/١/٣، عبدالرقیب یوسف، ٥٢/٢، د.احمد الخلیل: ٢٠٠٩, ص٦٩, کامەران عەزیز عەبدوڵلا، ل١١٦).

(میرنشینی بەشنەوەی)ش، کە خاوەنی قەڵای فێنك بوون(أبن الاثیر، بلا، ٤١٣/٧، یاقوت الحموی٢٠٠٨، ٤٤٧/٦)و بەوە ناسرابوون، کە لەگەڵ هەموو ئەوانە دڵسۆز و باشبوون، کە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پەنایان بۆ دەهێنان و داڵدەیان دەدان(یاقوت الحموي, ٤٤٧/٦، القزويني١٩٦٠، ص٤٣٢)، کەچی کێشە لەنێوان ئەندامانی هۆزەکەدا هەبوو، وەك ململانێ نێوان (ئیبراهیمی بەشنەوەی) لەگەڵ براکەی (عیسا) لەسەر دەسەڵاتداریێتی قەڵاکە، ئەوەش هۆکارێکی لاوازبوونی میرنشینی بەشنەوەی بوو، کە هەر ئەمەش دواتر زەمینەی ڕووخاندنی ڕەخساند(أبن الاثير١٩٨٠, ١٥٧/١, المنذري١٩٨١, ٢٧٣/٣, د.زرار سديق تۆفيق٢٠١٢، ل٢٤٤).

١-٣: **تاکڕەوی لە دەسەڵاتدا:** هۆکارێکی تر، کە بووە هۆی لاوازبوون و دواتر ڕووخاندنی میرنشینە کوردییەکان یەك لە دوای یەك، تاکڕەوی میر و دەسەڵاتدارانی میرنشینە کوردییەکان بوون لەماوەی دەسەڵاتیانداو قۆرخکردنی سەرجەم دەسەڵاتەکان بوو لەدەستیان. ئەوەش بێ گەڕانەوەو ڕاوێژ بۆ کوڕو براو خزم و دۆستەکانیان، تا بە فەرماندەکانی سووپاو هێزە چەکدارەکانی دەگات. ئەمەو بێ هاوبەشی پێکردن یان ئاگادارکردنەوەی کەسە نزیکەکانی خۆیان، لەوەی دەیکەن و کۆی دەکەنەوە. هەربۆیە بەشێکی ئەندامانی بنەماڵەکەی لە کوڕو براو نزیکەکانیان والێکرد پاڵ بدەنە نەیارەکانیان(ئاکۆ بورهان محەمەد، ل١٠٤). وەك کوژرانی (جوستان و ناسر) کوڕانی (مەرزبان) لەگەڵ دایکیان لەلایەن مامیانەوە (واهسوزان کوڕی سالار) میری میرنشینی سالاری، لەساڵی (٣٤٩ك/٩٦٠ز) بەهۆی ئەوەی ئامادەنەبوون دان بە دەسەڵاتەکەیدا بنێن. ئەوە لەکاتێکدا بوو، کە (جوستان و ناسر) لەسەر داوای دایکیان ئامادەبوون بگەڕێنەوە بۆ لای (واهسوزان)ی مامیان و دان بە دەسەڵاتەکەیدا بنێن، بەڵام لەبەر ئەوەی هەردوو براو تەنانەت دایکیشیان نەیانتوانی برا گەورەکەیان (مەزربان) لە هەرێمی ئەرمەنستان بگەڕێنەوە ئازەربایجان بۆ لای مامیان، بۆیە دواجار (واهسوزان) هەرسێکیانی کوشت، بەڵام دەستی نەگەیشتە برا گەورەکەیان بەناوی (مەرزبان)، چونکە لە دەرەوەی دەسەڵاتەکەی بوو(أبن الاثير, بلا، ٢٥٦/٧). ئەوەش کاریگەری لەسەر قوڵکردنەوەی ململانێی بنەماڵەی بەجێهێشت. هەروەها (بەدر کوڕی حەسنەوەی) لەساڵی (٤٠٥ك/١٠١٤ز)گەمارۆی (حوسێن کوڕی مەسعود)ی لە قەڵای (کوسجە)دا. گەمارۆکەش کەوتە وەرزی زستان و سووپاکەی (بەدر) بەهۆی بارینی بەفرو باران و سەرمای سەختی زستانەوە، شەکەت و ماندوو بوون و داوایان لە (بەدر) کرد، یان شەڕێکی یەکلاکەرەوە بکات، یان گەمارۆکە هەڵبگرێت و بۆ وەرزی بەهاری دوابخات، بەڵام (بەدر) هەردوو داواکەی ڕەتکردەوە، بۆیە دواجار بەشێك لە سوپاکەی پشتیان تێکرد. هەروەها هۆزی گۆران لێ هەڵگەڕایەوەو چوونە پاڵ سوپاکەی (شەمس ئەلدەولە کوڕی فەخرئەدەولەی بوەیهی). ئەو ڕووداوەش بووە هۆی تەنیا کەوتنی (بەدری کوڕی حەسنەوەی)و دواتر کوژرانی(أبن الاثير, بلا, ٦٩/٨, أبن خلدون, ٥١٦/٤, نەقشبەندی، ل٢٧٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

**٤-١: دابەشکاری دەسەڵات:** هۆکارێکی تری لاوازبوونی بەشێك لە میرنشینەکان و دواتر ڕووخاندنیان، دابەشکردنی ناوچەو شارو قەڵاکانی سنووری دەسەڵاتیان بوو بەسەر کوڕو براو نزیکەکانیاندا. ئەمەش یەکگرتووی خاك و دەسەڵاتی میرنشینەکانی خستەمەترسییەوە. کارەکەش بەو شێوەیە نەبوو، کە فەرمانڕەوایەك بۆ ناوچەو شارو قەڵاکان دابنرێن، بەڵکو دابەشکردنی میرنشینەکە بوو لەنێو کوڕو براکاندا. ئەمەش هۆکارێکی لاوازبوون و دواتر ڕوخاندنیان بوو. وەك ئەوەی (حسام ئەلدەولە ئەبولشەوك فارس کوڕی ئەبولفەتحی عەنناز) شارو قەڵاکانی سنووری دەسەڵاتی بەسەر براکانیدا دابەشکرد. ئەوەش کێشەی خستە نێوانیان لەسەر بەش و میراتی و هەریەکەیان خۆی بە غەدرلێکراو زانی. تەنانەت وای لە هەندێکیان کرد پەنا بەرنەبەر هۆزو هێزەکانی دەرەوەی دەسەڵاتەکەیان، تا لەپێناو پشتیوانیکردنیان بچن بەگژ بەرامبەرەکانیاندا. بەمەش دەستی دەرەکی هێنایەسەر میرنشینەکەو لەساڵی (٥١١ك/١١١٧ز) کۆتایی بە دەسەڵاتی (ئەبومەنسور کوڕی سورخاب) دوای میری میرنشینی عەننازی هێنا(نەقشبەندی،لل٣٥٥-٣٥٦) لەلایەن سەلجوقییەکانەوە(نەقشبەندی، ل٢٧٦، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠٠١٢، ل١٨٨، کامەران عەزیز عەبدوڵلا، لل١٢٣-١٢٤).

**٥-٢: هەڵگەڕانەوەکان لەسەر ئاستی ناوخۆ:** هەڵگەڕانەوەی کوڕ لە باوك و براو لە براو مام لە برازا وەزیر و بەرپرسانی میرنشینەکان لە میرەکانیان، ڕۆڵێکی خراپیان لەسەر میرنشینەکان گێڕاو ڕووبەڕووی کێشەی ناوخۆیی و دەرەکیان کردنەوە، کە دواجار بە شکستیان دوایی هات، وەك هەڵگەڕانەوەی (ئەبی لقاسم عەلی کوڕی جەعفەر) لە میرەکەی (دەیسەمی کوردی)، هۆکاری ئەوەبوو (مەرزبانی سالار) بە پشتیوانی کوردە دەستڕۆیشتوەکانی هەرێمی ئازەربایجان، بەسەر (دەیسەم)دا زاڵ ببن و لە دەسەڵات دووری بخەنەوە(مسکویە، ٦/٦٢-٦٦، ٩٤، ٩٨)، فارقی، لل١١٧-١١٨، د.زرار صدیق توفیق٢٠١٨م، ص١٧٨). هەروەها هەڵگەڕانەوەی (هیلال کوڕی بەدر) لە باوکی و (تاهیر کوڕی هیلال کوڕی بەدر) لە باپیری، کاردانەوەی خراپیان لەسەر میرنشینی حەسنەوەی بەجێهێشت(ابن الاثیر, بلا, ٨/٤٧, البدلیسي، ص١١٨، ڕۆژبەیانی١٩٩٦، ل٩٩). هەڵگەڕانەوەی (عوبەیدوڵلا کوڕی ئەمیر کوری تاهیری بەشنەوەی) لە باوکی (ئەمیر کوڕی تاهیری بەشنەوەی) میری میرنشینی بەشنەوەی و کوشتنی، کاریگەری لەسەر لاوازبوونی میرنشینەکە هەبوو(عبدالرقیب یوسف، ٥٧/٢). هەڵگەڕانەوەی (فەخرئەلدولە ئەبونەسر کوڕی جەهیر) وەزیری (نەسرئەلدەولەی مەروانی)و چوونە پاڵ خەلیفەی عەباسی (قایم بیئەمریلا) لەساڵی (٤٥٤ك/١٠٦٢ز)(ابن الاثیر, بلا, ٣٣٤/٨-٣٣٥). دواتر لێدانی لەلایەن خەلیفە (موقتەدی بیلا) لەساڵی (٤٧١ك/١٠٧٨ز)و پەنابردنی بۆ (سوڵتان مەلکشای سەلجوقی)، ڕۆڵی لەلاوازبوونی دەسەڵاتی دۆستەك مەروانیدا گێڕا. ئەوەش دوای ئەوەی (فەخرئەلدولە ئەبونەسر کوڕی جەهیر) لەساڵی (٤٧٨ك/١٠٨٥ز) سووپایەکی لەژێر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

سەرکردایەتی (ئەبالقاسمی کوڕی)و لەسەر فرمانی (سوڵتان مەلیکشای سەلجوقی) ناردە سەر (دیاربەکر)و گرتی. ئەوەش لەوناوچەی دوورخستەوەو سنووردار و لاوازی کرد(أبن الاثیر، بلا، ٨/٣٨٨-٣٨٩، أبن خلدون، ٥/٧-٩، البدلیسی، ص١٠٩)، تا گەیشتە ئەوەی سەلجوقییەکان لەرێگای هەڵگەڕانەوەی (شەمس ئەلدەولە) ناسراو بە (جەگمژ) لە (ئەبو موزەفەر مەنسوور کوڕی نیزامەدین ئەبولقاسم) میری مەروانی لەساڵی (٤٨٩ك/١٠٩٥ز) لەشاری (موسڵ) دەستگیر بکەن(ابن شداد، ٣/١/٤٠٣-٤٠٤، البدلیسي, ل١٠٩, قەفتان، ل١٤٨)و کۆتایی بەو دەسەڵاتەش بهێنن(فارقی، لل١١٧-١١٨، الذهبي١٩٨٦, ١٨/٦٠٩, مەنگوڕی، ل٢١، د.قادر محمد حسن، ص٥١).

**باسی دووەم:**

**هۆکارە ناوخۆییەکان لەسەر ئاستە جیاجیاکان:**

ململانێ ناوخۆییەکان تەنیا لەسەر ئاستی بنەماڵەی دەسەڵاتدار هۆکاری لاوازبوون و ڕووخاندنی ئەو دەسەڵاتە کوردییانە نەبوون، بەڵکو چەندین هۆکاری ناوخۆ لەسەر ئاستی جیاجیا ڕۆڵیان لەو بوارەدا هەبوو، لەوانە:

**٢-١: ململانێی لەسەرئاستی خێڵ و هۆز و تیرە و بنەماڵەدا:** ململانێی خێڵەکی و هۆزایەتی یەکێکی تر بوو لەو هۆکارانەی دەسەڵاتە کوردییەکانیان لاواز کرد. تەنانەت پابەندبوونی کورد بەژیانی خێڵەکی و وابەستبوونی بەناوچەکەی و شەڕ بۆ فراوانبوونی دەسەڵاتەکەی، هۆکار بوو بەرامبەر خێڵ و هۆزەکانی بەرامبەری بووەستێت. وەك ململانێ نێوان هۆزەکانی (بەرزیکانی-شازنجانی)و (بەرزیکانی-گۆران)(محەمەد ئەمین زەکی، ٢٠٠٤، ٢/٧٢، ڕۆژبەیانی١٩٩٦، ل٩٩، نەقشبندی، لل٣٥٥-٣٦٥) ، تا بە ململانێی (چواربەختی-بەشنەوی)، (بوختی-هەکاری)، (روزکی-بازوکی)، (مەحمودی-دونبەڵی)، (زێباری-مازنجانی) دەگات(مؤلف مجهول١٣١٨ەش، ص٤٠١، العمری, ص٥٨). ئەمەو جگە لەوەی هەندێك لە خێڵەکان چوونە پاڵ بووەیهییەکان و هەندێکیان ڕوویان سەلجوقییەکان کرد(د.محمد صالح داود القزاز١٩٧١, صص(٢٠٤-٢٠٨)، بۆ لێدانی مانەوەی خۆیان و لێدانی یەکتر، وەك خێڵی گاوانی(د.زرار صدیق توفیق٢٠١٢، ص٥٦). لەکاتێکدا گاوانییەکان خێڵێکی گەورەی کوردو سەرۆك و میرەکانیشیان لە پیاو ئازاکانی خێڵ و سەردەمەکەیان بوون(الاصفهانی١٩٣٧, ٢/٤/٤٢١-٤٢٢, مصطفی جواد١٩٧٣م, ص١٢, اواز محمد علي٢٠٠٣, صص١٥-١٨). لەم نێوەندەدا دەسەڵاتدارانی سالاری بەزەبری شمشێر کەوتنە گیانی یەك و دژایەتی ئەو خێڵ و هۆزانەیان کرد، کە بوونە لەمپەر لەبەردەمیان. دواجار ئەم هۆکارەش کۆتایی بە دەسەڵاتیان هێنا(أبن الاثیر: بلا، ٧/٢٧٠، قەفتان، ل١٣٠). (هیلالی کوڕی بەدر)یش لەلایەن (هۆزی پۆلاوەند)ییەوە کوژرا، چونکە نەیاری یەکتر بوون. ئەوەش دوای ئەوەی لەلایەن (شەمس ئەلدەولەی بووەیهی) دەستگیرکراو نێردرایە لای ئەو هۆزە، تا تۆڵەی خۆیانی لێبکەنەوە(مؤلف مجهول١٣١٨ەش, صص٣٩٩-٤٠٠). هەروەها ململانێی هەردوو بنەماڵەی

حەسنەوەی و عەننازی و هەوڵەکانی (ئەبولشەوکی عەننازی) سەرۆکی بنەماڵەی عەننازی بۆ دەستگرتن بەسەر ناوچەکانی ژێر دەسەڵاتی میرنشینی حەسنەوەی، ڕۆڵیان لە لاوازبوون و دواتر ڕووخانی میرنشینی حەسنەوەیدا بینی(محەمەد ئەمین زەکی، ٧٢/٢، ڕۆژبەیانی١٩٩٦، ل٩٩). وەك ئەوەی (ئەبولشەوکی عەننازی) لەساڵی (٤٠٦ك/١٠١٥ز) توانی (تاهیری کوڕی هیلال)ی بکوژێت، چونکە (سەعد)ی برای کوشتبوو(أبن الاثیر، بلا، ٨/٧٧-٧٨). (سەعد کوڕی ئەبولشەوکی عەننازی) بەهاوکاری سەلجوقییەکان چوو بەگژ (هۆزی گاوان) و سەرووماڵیان تالان کردن(أبن خلدون، ٥١٨/٤، د.ئاراس فەریق زەینەڵ، لل١٨٤-١٨٥.). ئەوە لەکاتێکدا بوو، کە پێشتر (هۆزی گاوان) لەپاڵ بووەیهییەکان پشتیوانی میرەکانی عەننازیان کرد لە دژی میرەکانی حسنەوەی(د.زرار صدیق توفیق٢٠١٢, ص٥٦).

لەلایەکی دیکەوە (عوبەیدللا کوڕی ئەمیری بەشنەوەی) چووە پاڵ (قوڕەیش کوڕی بەدرانی عوقەیلی) لە دژی (نەسرئەلدەولەی مەروانی)، کاریگەری لەسەر لاوازبوونیدا هەبوو(ابوالفداء، بلا، ١٨١/٢).

**٢-٢: فریودانی میر و دەسەڵاتداران:** ئەم لایەنەش ڕۆڵی خۆی لە لاوازی و دواتر ڕووخاندنی دەسەڵاتە کوردییەکاندا بینی. لەم بوارەدا (دوو) هەڵە زیانی بە دەسەڵاتی دۆستەکی مەروانی گەیاند و زەمینەی ڕووخاندنی ڕەخساند. هەڵەی یەکەم بەشداری و پشتیوانی بەشێك لە ئەندامانی بنەماڵەی مەروانی بوو، تا بە دانیشتوانی شاری (خەلات) دەگات لە سەلجوقییەکان و (سوڵتان ئالب ئەرسەلان) لە شەڕی (مەلازگرد) لەساڵی (٤٦٣ك/١٠٧١ز)، لەبەرامبەردا سەرلجوقییەکان دوای ئەو سەرکەوتنە هەوڵەکانیان بۆ لێدانی ئەو دەسەڵاتە چڕ کردەوە(ابراهیم زکی خورشید واخرون١٩٦٩، ٤٣٤/٢، حکیم عبدالرخمن زبیر البابیری٢٠٠٥، ص٧٩). کاتێکیش هەواڵی شاڵاوی سەلجوقییەکان گەیشتە (نەسرئەلدەولەی مەروانی)، لەلایەن (ئەبوسالم) ڕاوێژکارو پزیشکی تایبەتی میرەوە فریودرا. ئەوەش بووە هەڵەی دووەم، کاتێك لەساڵی (٤٧٩ك/١٠٨٦ز) شاڵاوی (سوڵتان مەلکشای سەلجوقی) پێ ڕاگەیاند، کە ئەو شاڵاوە کاریگەری لەسەر دۆخی وڵات نابێت و بەرهەم و گەنجینەی وڵاتەکە بەرگەی (١٠) ساڵ شەڕو ململانێ دەرەکی دەگرێت. بەوەش میری مەروانی باوەڕی کردو ڕووبەڕووی سولتانی سەلجوقی وەستا، بەڵام بەرگەی یەك ساڵی نەگرت و لەلایەن سوپای سەلجوقییەوە لێدرا. تەنانەت دەستیان گەیشتە تەواوی گەنجینەو سامانی میرو دەسەڵاتەکەی. هەربۆیە میری مەروانی بە ناچاری بڕیاریدا تەنیا لە شاری (میافارقین) بەرگری بکات(فارقی، لل١٢١-١٢٢). بەو ڕووداوەش سنوورەکەی بەرتەسك بوویەوەو ڕووی لە لاوازی کرد و زەمینەی ڕووخاندنی ڕەخسا.

**٢-٣: ڕۆڵی ئافرەت لەنێو بنەماڵەی دەسەڵاتدارەکاندا:** لەنێو ئەوانەشی ڕۆڵیان لە قوڵبوونەوەی ناکۆکی بنەماڵەیی هەبوو، ئافرەتانی نێو بنەماڵەکان بوون، هەر لە دایکی میرەکان، تا بە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ژن و کچــی دەســەڵاتداران دەگــات. لەم بــوارەدا (تــاهیری کــوڕی هــیلال) خوشــکی (ئەبولشــەوکی عەننــازی) ســەرۆکی هــۆزی شــازنجانی هێنــا، تــا بــۆ گەیشــتن بە دەســەڵات پشــتیوانی بکــات، بەڵام لەلایەن (ئەبولشــەوکی عەننــازی) خەزوریــیەوە کــوژرا، چــونکە لەباوکی هەڵگەڕایەوە، کە یەکێك بوو لە هاوپەیمانەکانی(الصابی٢٠٠٣, ٦٨/٧، أبن خلدون، ٥١٦/٤، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠١٢، ل١٧١، د.قادر محمد حسن, ص٤٦، سلام احمد عبدالله العبابیلی النقشبندی٢٠١٣، ص١٢٨).

لەلایەکی دیـکەوە (نەسرئەلدەولەی مەروانـی) بەهـۆی ئەوەی خوشـکی (قـرواش کوڕی مـوقەلەدی عەقیلـی) بەنـاوی (السـیدە) هێنـابوو، لەلایەن میـری میرنشـینی عـوقەیلی پشـتیوانیکرا لە لێـدانی (بەدران)ی بـرای، کە ڕکەبەری دەسـەلاتەکەی بـوو. ئەوەبـوو بە هاوکــاری ئەو میــرەو ســووپاکەی، (نەســرئەلدەولە) تــوانی بەســەر (بەدران)ی برایــدا سەرکەوێت(عبدالرقیب یوسف، ٥٥/٢).

(نیــزامەدین ئەبولقاســم کــوڕی نەســرلدەولە) میــری مەروانــی لەلایەن کەنیزەکێکەوە لەساڵی (٤٧٤ك/١٠٨١ز) ژەهرخـوارد کـراو کـوژرا، کە لەلایەن (سـەعید)ی برایەوە نێردرابوو(عبدالرقیب یوسف، ٥٢/٢، د.زرار سدیق تۆفیق٢٠١٢، ل٢٣٣). هەموو ئەوانەش ڕۆڵی ئافرەتیان لەنێو ڕووداوە سیاسییەکان، لاوابوون و ڕووخانی دەسەڵاتە کوردییەکان دەرخست.

**٢-٤: دەستێوەردانی دەرەکی بە هەوڵی ناوخۆیی:** یەکێکی دیکە لەو هۆکارانە دەستێوەردانی دەرەکــی بــوو لە کاروبــاری نــاخۆیی میرنشــینەکان بە پشــتیوانی ئەنــدامانی بنەمــاڵەی دەســەڵاتدار یــان بەرپرســە دەستڕۆیشــتوەکان. لەم بوارەشــدا دەســتێوەردانی بــووەیهی و ســەلجوقییەکان و تەنــانەت خەلیفەکــانی عەباســی و بەرپرســانی دەوڵەتەکەش، بەرچــاو بوون(د.ئــاراس فەریــق زەینــەڵ، ل١٤١). هۆکــارەکەش ئەوەبــوو، کە هەنــدێکجار هەریەك لەو هێـزانە لەپێنـاو ملکەچکـردن بە میرێکـی کـورد زۆر مانـدوو ئەبـوون، بـۆیە پەنایـان بـۆ میرێکی نەیاری یان کەسێکی ئەندامانی بنەماڵەکەی دەبرد، تا بەرامبەری بوەستێت و لێی بــدات، یــان ناچــاری بکــات مــل بــدات(ابراهیم محمــد مرجــونه٢٠١٠, ص٤١٥). هەر لەم چوارچێوەیەشدا بووەیهییەکـان هەوڵەکانیـان بۆ دروسـتکردنی دووبەرەکـی نێوان ئەندامانی بنەماڵەی دەسەڵاتدار و نێوان میری میرنشینە کوردییەکان چڕکردەوە(طقوش٢٠٠١, ص٢٣٠). وەك دەســتێوەردانی (عیمــادئەددینی بــووەیهی) لەکاروبــاری نــاوخۆیی میرنشــینی ســالاری و میــرەکەی (ســالاری مەرزبــان)، لەرێگــای براکــانییەوە، بــووە هــۆی لاوازبــوونی ئەو دەسەڵاتە(مەنگوڕی، ل١٦).

هەروەهــا دەســتێوەردانی (شــەمس ئەلــدەولە کــوڕی فەخرئەلــدەولە) لە کاروبــاری میرنشــینی حەســنەوەی، هۆکــاری لاوازبــوون و دواتــر ڕووخــانی بــوو. ئەوەش کــاتێك (تــاهیری کوڕی هیلال)ی هاندا ڕووبەڕووی (بەدری کوڕی حەسنەوەی) باپیری بێتەوە، چونکە (هیلالی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

باوكی) له (قەڵای دینەوەر) زیندانی كردبوو(أبن الاثیر، بلا، ٤٧/٨، البدلیسی، ص١١٩، محەمەد ئەمین زەكی، ٧٢/٢، قەفتان: س.پ، ل١٥٣، ڕۆژبەیانی١٩٩٦، لل٢٣٦-٢٣٧، النقشبندی، ص١٣١). هەروەها دەستێوەردانیان له هاندانی (هۆزی گۆران)، تا پشت بكەنه (بەدر)و كۆتایی به ژیانی خۆی و كوڕێكی بهێنن(أبن الاثیر، بلا، ٧٧/٨-٧٨، نەقشبەندی، ل٢٧٦). لەبەرامبەردا لۆڕەكان چوونه پاڵ (ئەبولشەوكی عەننازی) بۆ دژایەتیكردنی (تاهیری كوڕی هیلال)و پشتیوانی له (بەدر)(مستوفی قزوینی١٣٨١ه.ش، ص٥٥١، البدلیسی، ص١١٩، محەمەد ئەمین زەكی، ٧٢/٢، قەفتان، ل١٥٣، ڕۆژبەیانی، لل٢٣٦-٢٣٧). ئەم دۆخەش میرنشینی حەسنەوەی بەرەو دووبەرەكی و لەناوچوون برد.

میرنشینی عەننازیش، كه هۆكارێكی كێشەكانی میرنشینی حەسنەوەی بوو، هەمان كێشه بەرۆكی خۆی گرتەوە. ئەوەش كاتێك (ئەبولماجید موهەلهەل كوڕی موحەممەدی عەننازی) لەساڵی (٤٣٧ك/١٠٤٥ز)دا ڕووبەڕووی (سەعدی كوڕی ئەبولشەوك) برازای وەستا. ئەو ڕووداوەش، نەك هەر دەستێوردانی بووەیهییەكان و دواتر سەلجوقییەكانی هێنایه سەر میرنشینەكە(الحسینی١٩٨٦, صص٦٠-٦١, ابن الاثیر, بلا, ٢٣٢/٨-٢٣٣، ابن خلدون، ٥١٨/٤)، بەڵكو ناوچەكانی ژێر دەسەڵاتیان دووچاری تاڵان و وێرانكاری و سووتان بوون(النقشبندی، صص١٣٥-١٣٦، هەروتی، ل٥٠). ئەوەش دۆخی ناوچەكەی تێكداو دەرفەتی دایه سەلجوقییەكان دەست بگرن بەسەریداو كۆتایی به دەسەڵاتی بهێنن(الحسینی, صص٦٠-٦١, النقشبندي، ص١٣٦).

ڕەوادییەكانیش وەك بنەماڵەیەكی سەر به خێڵی هەزبانی(د.محسن محمد حسین، ص٣٧) دوای ئەوەی له بەشێكی هەرێمی ئازەربایجان دەسەڵاتێكی سیاسییان دامەزراند، لەگەڵ تیرەو هۆزەكانی خێڵەكەیان دووچاری كێشه هاتن، واته لەبری ئەوەی پشتیوانی لەیەك بكەن، چوون به گژ یەكدا. ئەو دۆخەش هەلی دایه بێزەنتییەكان بەدەم داوای (واهسوزانی كوڕی مەملان) بچن، تا زەوی و سامانی (ئەبو الهیجا كوڕی ڕەبیب ئەلدەوله)ی سەرۆكی هۆزی هەزبانی لەشاری (ورمێ) تاڵان بكەن. تەنانەت قەڵای بەرگۆیانیشیان داگیركرد. ڕووداوەكەش هاوكات بوو لەگەڵ هاتنی سەلجوقییەكان بۆ هەرێمەكە، بۆیه (واهسوزان) لەپێناو پاراستنی دەسەڵاتەكەی و هەڵنەگەڕانەوەی سەرۆكی خێڵی هەزبانی لێی و نەچوونه پاڵ سەلجوقییەكان، ئەمجارەیان پشتی كرده بێزەنتییەكان و ڕووی له سەلجوقیەكان وەرگێڕاو ملكەچی بۆ ڕاگەیاندن(د.ئاكۆ بورهان محەمەد، لل٥١-٥٢). ئەمەش دەرفەتی دایه سەلجوقییەكان دەست وەربدەنه كاروباری میرنشنی ڕەوادی و لەسەردەمی (مەملان كوڕی واهسوزان)و به بیانوی پاراستنی شاری (مەراغه) لەشاڵاوی هەزبانییەكان، شارەكەیان لەساڵی (٤٢٥ك/١٠٣٣ز) داگیر بكەن(احمد عبدالعزیز محمود٢٠٠٦، ص٤١). دواتر تا بۆیانكرا ناكۆكییەكانیان قوڵتر كردووەو گەیشته ئەوەی (سوڵتان ئالب ئەرسەلانی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

سەلجوقی) لەساڵی (٤٦٣ك/١٠٧١ز) جارێکیتر سوودی لەم ناکۆییانە بینی و پەلاماری میرنشینی ڕەوادیداو (مەملان کوڕی واهسوزان)ی میری ڕەوادی و منداڵەکانی دەستگیرکرد، بەوەش کۆتایی بەو دەسەڵاتە هێنا(محمد أمين زكي،٢٠٠٤، ٥٢/٢، عبدالحسين زرين كوب١٣٧٤ە.ش، ٣١٩/٢، د.قادر محمد حسن: س.پ، لل ٢٩، ٧٦).

ململانێی بەردەوامی نێوان ئەندامانی بنەماڵەی سالاریش لەسەر دەسەڵات، ڕۆڵی سەرەکی لە پەرتەوازەیی خێزانی و کاری سیاسی و لەبەریەك هەڵوەشانی شیرازەی بنەماڵەیدا بینی. بەتایبەت لە سەردەمی (ئیبراهیم کوری واهسوزان) ئەو ململانێ ناوخۆییە وڵاتی بەرەو پەرتەوازەیی و نائارامی برد(كسروى، صص١٠٩-١١٠).

لە میرنشینی شەدادیش ناکۆکی نێوان ئەندامانی بنەماڵە زەمینەی شاڵاوی ڕووس و تورکە خەزەرییەکانی لەبەری باکوورو بێزەنتییەکانی لەبەری خۆرئاواو سەلجوقییەکانی لەبەری باشوور ئاسانکرد. ئەمەو هەرێمی ئاران بووە گۆرەپانی شەڕ(اسماعيل شكر رسول٢٠٠١, صص٧٧-٧٨). باجی ئەو شەڕانەش دانیشتوان و حکومەتەکە دای و بووە هۆکاری وێرانکردنی ناوچە سنوورییەکان و تێکدانی باری ئاسایشی ووڵات(منجم باشى: س.پ، لل١٢-١٣، كسروى، صص٣١١-٣١٢، هەروتی، ل٥٠)، تا گەیشتە ئەوەی میرنشینەکە لەلایەن سەلجوقییەکانەوە کۆتایی پێهات(زرين كوب، ٣١٩/٢، د.ئاكۆ بورهان، لل٣١-٣٢). ئەوەش دوای ئەوەی دوا میری شەدادیان بەناوی (شاهەنشا کوڕی مەحموود) لەساڵی (٥٩٥ك/١١٩٩ز) لە میری خرا(كسروى، ص٣١٤، حوسێن حوزنی موکریانی١٩٣٧، لل٤٥٠-٤٥٨، ئاکۆ بورهان محەمەد، ل٣٢).

دەسەڵاتی دۆستەکیش لەم ناکۆکی و ململانێیە بەدەر نەبوو. ئەوەش دوای ئەوەی (ناکۆکی و ململانێ (نیزامەدین ئەبولقاسم نەسر) لەگەڵ برا گەورەکەی (سەعید کوڕی نەسرئەلدەولە) لەسەر دەسەڵاتداریێتی دۆستەکی مەروانی دەستێوەردانی سەلجوقییەکانی لەگەڵ خۆی هێنا. ئەوەش کاتێك (سەعید کوڕی نەسرئەلدەولە) پەنای بۆ (سوڵتان توغرۆڵ بەگی سەلجوقی) برد، تا لەو کارەدا پشتیوانی بکات، سوڵتانی سەلجوقیش لەساڵی (٤٥٥ك/١٠٦٣ز) سوپایەکی لەگەڵ نارد، تا پەلاماری شاری (میافارقین)ی پایتەخت بدەن. بەو ڕووداوەش دەستی سەلجوقییەکان گەیشتە ئەو دەسەڵاتە(أبن الأثير، ٣٣٠/٨-٣٣١، أبن شداد، ٣٦٧/١/٣). گەیشتە ئاستێك لە قۆناغێکی دواتردا (ناسرئەلدەولە مەنسوور کوڕی نیزامەدین) لەساڵی (٤٧٦ك/١٠٨٤ز) پشتیوانی سوڵتانی سەلجوقی (تەتش کوڕی ئالب ئەرسەلان) کرد لە گەمارۆدان و گرتنی شاری (دیمەشق). لەبەرامبەردا ساڵی (٤٨٧ك/١٠٦١ز) سوڵتانی سەلجوقی (تەتش کوڕی ئالب ئەرسەلان) شاڵاوێکی کردە سەر دەسەڵاتی دوا میری دۆستەکی مەروانی و سەرباری گرتنی پایتەختەکەی، (ناسرئەلدەولە مەنسوور کوڕی نیزامەدین)ی کوشت، کە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

پێشتر له گرتنی شاری (دیمەشق)دا هاوکاری کردبوو. بەوەش کۆتایی بە دەسەڵاتی ئەو میره و دەسەڵاتەکەشی هێنا(أبن القلانسی١٩٠٨، ص١١٤, أبن الاثیر، بلا، ص١٢)

هەروەها دەستێوەردانی دەسەڵاتدارانی موسڵ له کاروباری ناوخۆی میرنشینی هەزبانی لەرێگای هۆزی حەمیدی، هۆکاری لاوازبوونی میرنشینەکەو دواتر ڕووخانی بوون. ئەوەش دوای ئەوەی (ئەبوعەلی کوڕی موسەك)ی برای میری میرنشینی هەزبانی لەساڵی (٤٤٠ك/١٠٤٨ز) لەلایەن عوقەیلییەکانی موسڵەوەو بەهاوکاری (ئەبولحەسەنی کوڕی عیبنکان) له هۆزی حەمیدی بەکارهێنرا، تا براکەی (ئەبولحەسەن کوڕی موسەك) له دەسەڵات دووربخاتەوەو خۆی بچێته شوێنی، بەو مەرجەی میرنشینەکە بخاته خزمەتی بەرژەوەندییەکانی میرنشینی عوقەیلی لەشاری (موسڵ). بەو ڕووداوەش یەکێتی هۆزایەتی هەزبانی کەوته مەترسییەوە(أبن الأثیر, بلا، ٢٥٥/٨، أبوالفداء١٨٤٠، ص١٦٨, د.محسن محمد حسین، صص٣٩-٤٢، باجلوری، صص٧٩-٨٠.)و میرنشینەکه بەرەو لاوازی برد(أبن الاثیر, بلا, ٢٥٥/٨, د.محسن محمد حسین، صص٣٩-٤٢، باجلوری، صص٧٩-٨٠). دوای ساڵانێکیش ململانێی لەنێوان خێڵی هەزبانی و هۆزی حەکیمی سەری هەڵدا. ئەوەش دوای ئەوەی (بابەکری کوڕی میکائیل) له هۆزی حەکیمی خۆی گەیاندە پایەی میرو لەساڵی (٥١٧ك/١١٢٢ز) جڵەوی دەسەڵاتی لەدەست هەزبانییەکان دەرهێنا(أبن الأثیر، بلا, ٢٥٥/٨، د.زرار صدیق توفیق٢٠١٢، ص٢٠.). ئەو ڕووداوەش هەزبانییەکانی ناچارکرد پەنا بەرنه بەر (حکومەتی ئەتابەکی زەنگی) لەشاری (موسڵ)و داوا له (عیمادئەددینی زەنگی) بکەن، ئەو بنەماڵەیه له دەسەڵات دووربخاتەوە. بەوە هۆیەش ساڵی (٥٣٤ك/١١٣٩ز) پەلاماری شاری (هەولێر)یدا. بەدوایدا بواری بە هیچ یەك له ئەندامانی بنەماڵەی (هەزبانی و حەکیمی) نەدا بگەرێنەوە بۆ دەسەڵات و هەولێرو دەوروبەری به دەسەڵاتەکەیەوە گرێدا(أبن عساکر٢٠٠١, ٣٨٨/٥, أبن الاثیر, بلا، ٢٨٥/٩-٢٨٦، ٣٢٦-٣٢٧، أبن أبي الهیجاء الهذباني٢٠٠٤, ص٢٩٩, ابن خلدون، ٢٢٩/٥، احمد عبدالعزیز محمود, صص٦٤-٦٦).

دۆخی دەستێوەردانی دەرەکی له کاروباری میرنشینه کوردییەکان، تەنیا بە زیانی دەسەڵاتی میرنشینەکان کۆتایی نەهات، بەڵکو کاریگەری خراپیشی لەسەر دانیشتوانەکانی دروستکرد. ئەوەش هەر له ترس و تۆقاندن، تا بە تاڵانکردن و سوتاندنی ماڵ و بازاڕو موڵك و زەوییه کشتوکاڵییەکان دەگات(اواز محمد علی، ص٢٠٧).

**٢-٥: هۆکاری ئابووری:** ئەم لایەنەش ڕۆڵی خۆی له لاوازبوون و ڕووخاندنی دەسەڵاتە کوردییەکاندا بینی. بەتایبەت بایەخ و دەوڵەمەندی ناوچە کوردنشینەکان له ڕووی ئابوورییەوە(د.شفان ظاهر عبدالله, صص٧١-٧٢). لەم بوارەدا دەوڵەمەندی ناوچەی شارەزوورو هەروەها ناوچەی (دینەوەر) لەبواری کشتوکاڵی و ئاژەڵداری و بازرگانی و پیشەو پیشەسازی، داهاتێکی باشی بۆ میرنشینەکانی حەسنەوەی و عەنازی دروستکرد بوو(ابوالفداء، ص٤٤٥، مستوفی قزوینی١٣٦٢ه.ش، ص١٠٧, چرا محمود حسن، لل٣٦-٤٤، سۆران بەها ئەحمەد٢٠١٩، لل٩٥-


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٠٥). تەنانەت چاکسازییەکانی (بەدر کوڕی حەسنەوەی) لە بایەخدان بە کشتوکاڵ و ئاژەڵداری و ڕێکخستنەوەی باجەکان، گەشەی بە ئابووری ناوچەی دینەوەرو شارەزووردا(الروذراوي, ٢٩٠/٣, محمد أمين زكي بك١٩٤٥، ص٨٤، چرا محمود حسن، ل٣٦، د.شفان ظاهر عبدالله، ص٩٧). بە ڕادەیەك بووە خاوەنی سامان و داهاتێکی زۆر، کە لە پێداویستییەکانی میرنشینەکەش زیاتر بوون(النقشبندی، ص١٢٠). ئەوەش نەك تەنیا ململانێ ناوخۆیی ئەندامانی بنەماڵەی لەگەڵ خۆی هێنا، تا بەو سامان و داهاتە زۆرە بگەن، وەك ئەوەی (مەملان کوڕی ئەبولشۆك کوڕی عەنناز) لەساڵی (٤٣٤ك/١٠٤٢ز) بۆ ئەوەی لە (موهەلهەل)ی برای بدات، کە میر میرنشینەکە بوو وە خۆی بچێتە شوێنی، پەلاماری ناوچەی شارەزووریداو دوای ئەوەی ناوچەکەی تالانکرد، سوتاندی. ئەوەش سەرباری ئەوەی زیانی زۆری بە ناوچەکە گەیاند، بە زیانی ئابووری میرنشینەکەش تەواوبوو(أبن الاثير، بلا، ٢٣٢/٨-٢٣٣, أبن خلدون, ٥٢٠/٤)، چاوی تەماعی بووەیهی و دواتر سەلجوقییەکانی کەوتەسەر، تا لەپێناو گەیشتن بەو زەوییە بەپیت و داهاتە زۆرانە، دەستی بەسەردا بگرن. لەلایەکەوە چاوی تەماعی بووەیهی و دواتر سەلجوقییەکانی کەوتەسەر، تا لەپێناو گەیشتن بەو زەوییە بە پیت و داهاتە زۆرانە، دەستی بەسەردا بگرن(کامەران عەزیز عەبدوڵلا، ل١١٨). دیارە ئەوەش لەکاتێکدا بوو، کە دۆخی ئابووری دەوڵەتی خیلافەتی عەباسی لەو سەردەمەدا خراپ و باجەکان زیادکرابوون و دەستی دەرەبەگەکانی بۆ سەر جوتیاران والآکردبوو وە دەیان چەوساندنەوە(الدوري, ص٢٧٨). لەو دۆخەشدا میرنشینی حەسنەوەی پێدا تێپەڕدەبوو (بەدر) بۆ ناوخۆیی خۆی و دەوروپشتەکەی و نزیکانی ڕژدو پیسکە بوو، بەپێچەوانەوە (هیلال)ی کوڕی دەستکراوە و بەخشندە بوو. ئەمەش ڕۆڵی خۆی نەك هەر لە قوڵبوونەوەی ناکۆکی، بەڵکو لە دووبەرەکی بنەماڵەی حەسنەوەی و هۆزی بەرزیکانیشدا هەبوو. بەوەی زۆرینەیان پشتیوانیان لە (هیلال) کردو کێشە بۆ (بەدر)ی باوك دروستبوو، کە دواتر بە کوژرانی دوایی هات(أبن الاثير, بلا, ٦٩/٨, نەقشبەندی، ل٢٧٦).

هەر ئەم لایەنە، بەڵام بە شێوەیەکی دیکە کاریگەری خراپی لەسەر دەسەڵاتی دۆستەکی مەروانی بەجێهێشت. ئەوەش بەهۆی پیسکەیی و دنیاپەرستی (ئەبومەزەفەر مەنسوور کوڕی میر سەعد) وایانکرد بایەخ بە کاروباری حکومەت و بژێوی دانیشتوانی سنووری دەسەڵاتەکەی نەدا. بەوەش ناڕەزایی خەڵك بەرزبوویەوە، بەرامبەری وەستان(أبن الأثير, بلا، ٣٣٠/٨-٣٣١، موکریانی١٩٢٩، ٤/٤-٥).

لایەنێکی تری کاریگەری خراپی ئابووری لەسەر میرنشینەکان، کارەساتی سروشتی لە نموونەی لافاو و زریان و بەفربارین و بارانی بە لێزمە، تا دەگاتە بومەلەزرە و تەنانەت ووشکەساڵی و بڵاوبوونەوەی پەتای کوشندە. دیارە هەریەك لەو کارەساتانە، لەپاڵ ململانێی ناوخۆیی و دەستێوەردانی دەرەکی، کاریگەری خراپی لەسەر تێکچوون و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

خراپبوونی دۆخی ئابووری و دارایی میرنشینەکان و تەنانەت کۆی ژیانی خەڵك دروستکرد(ابوحیان التوحیدي, ٨٩/٣, الالولسي, ص٨٣). بەوەش لاوازبوون و ڕووخانی بەشێك لەو میرنشینانەی نزیك کردەوە، کە دووچاری یەکێك لەو ڕووداوانە بوون(فرهاد عبوش٢٠٠٥, صص١١٥-١٢٤). لەوانە ئەو لافاوانەی بەشێك لە شارەکانی هەرێمی جزیرەی گرتەوە، وەك (هەولێر، شنگال، میافارقین) لەساڵی (٥١١ك/١١١٧ز)(مؤلف مجهول٢٠٠٧, صص٢٧٦-٢٧٧, أبن الفوطي١٩٣٢م, ص١٥٥, د.مەهدی عوسمان هروتی٢٠١٥, ل٣٥٨)، کە ئاسایی کاریگەری لەسەر میرنشنی هەزبانی دروستکردووە. هەروەها ڕوودانی بومەلەرزە لەساڵەکانی (٥٠٨ك/١١١٤ز)، (٥٣٤ك/١١٣٨ز)، (٥٦٥ك/١١٦٩ز)، (٥٩٧ك/١٢٠٠ز) لە هەرێمەکانی (چیا، جزیرەو جزیره)(هروتی، ل٣٦٤)، لەپاڵ هاتنی ووشکە ساڵی لەنێوان ساڵانی (٥١١-٥١٢ك/١١١٧-١١١٨ز)، (٥٣٤ك/١١٣٨ز)، (٥٤٨ك/١١٥٣ز)، (٥٧٤-٥٧٥ك/١١٧٨-١١٧٩ز) بۆ هەمان هەرێمەکان(ابن المستوفي١٩٨٠, ٢١٢/٥, ابو شامة٢٠٠٢، ١٢/٣، زرین کوب, ٥١٧/٢, هروتی، ل٣٦٤)، هەروەها هاتنی هێرشی کوللەش بۆسەر زەوی و کێڵگە کشتوکاڵییەکانی هەرێمەکانی (چیا و جزیره) لەساڵانی (٥٤٦-٥٤٧ك/١١٥١-١١٥٢ز)(المقريزي١٩٩٧, ٣٣٥/١)، کاریگەری خراپیان لەسەر دۆخی خەڵك و دەسەڵاتدارە کوردییەکان بەجێهێشت و دووچاری ئاستەنگی ئابووری و کۆمەڵایەتی کردن.

**٢-٦: هۆکارە ئایینی و ئایینزاییەکان:** لایەنێکی تر ڕۆڵی لە پەرتەوازەیی کۆمەڵگای کوردی بینی و ململانێ ناوخۆییەکانی توندتر کردەوە، فرە چەشنی باوەڕو ئایینی کۆمەڵگای کوردی بوو. بەتایبەت جیاوازی باوەڕی ئایینی و ئایینزایی لەگەڵ ئەو هێزو لایەنە دەرەکییانەی دەستیان وەردایە کاروباری ناوخۆی میرنشینەکان. دیارە بەو پێیەی زۆرینەی کۆمەڵگای کوردی موسڵمان و بە تایبەت میرەکانی کورد سەر بە ئایینزای سوونە بوون(الذهبي١٩٨٦م, ١١٨/١٨, مینۆرسکی، ل١٠٧، تۆمابوا١٩٨٠، لل١٩٥-١٩٦، باسیل نیکیتین٢٠٠٤, ص٢٥١)و لەڕووی ئایینزاشەوە، بەشێکی تاڕادە زۆری سەربە ڕێبازی فیقهی شافیعی بوون(مینۆرسکی، ل١٠٧، بوا، لل١٩٥-١٩٦، نیکیتین, ص٢٥١.)، بەڵام بەشێکیشیان لە پەیڕەوانی شیعە بوون(نیکیتین، ص٢٥١، مارتین فان برونسەسن٢٠٠٣ز، ١٠٥/٢). لەم بوارەشدا بووەیهییەکان لەبەر ئەوەی لە پەیڕەوانی شیعەی دوانزە ئیمامی بوون(ابن خلکان، ١٧٥/١، عبدالحمید ابوالفتوح بدوي١٩٨٣, صص١٢٧-١٣٨, طقوش٢٠١١, ص١٨٨, د.موسا محەمەد خدر, ل٤٩)، کاریگەریان لەسەر بڵاوکردنەوەو سەپاندنی ئایینزاکەیان بەسەر کۆمەڵگای کوردی و پشتیوانیکردنی ئەوانە هەبوو، کە لەسەر پەیڕەوکەیان بوون(د.موسا محەمەد خدر, ل٤٩). لەم بوارەدا بەشێك لە میرانی میرنشینی حەسنەوەی، لەپێناو ڕازیکردنی بووەیهییەکان، پەیڕەویان لە ئایینزای شیعە کرد(المسعودی١٩٣٨، ص٣٠٦، محمد کرد علی١٩٣٨, ٣٦٣/٢, بندلي جوزي, بلا, ص١٠٨). هەمان ئایینزاش لەنێو هۆزی گاوانی لە خوارووی سنووری حەسنەوەییەکان بڵاوبوویەوە(د.زرار صدیق توفیق٢٠١٢، ل١٠٤). هەروەها ئەو ئایینزایە لە ناوچە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

جیاجیاکانی ناوچەی دیاربەکریش بڵاببوویەوە(اکو بورهان محمد، ص٣٤)، بۆیە کاتێک سەلجوقییەکان گەیشتنە ئەو ناوچەیەو لە پەیڕەوانی سوونە بوون، ئاینزای شیعە ڕووی لە پاشەکشە کرد(طقوش٢٠١١, ص١٩٢). تەنانەت سەلجوقییەکان توانیان بەناوی پاراستنی یەکڕیزی موسڵمانان، کار لەسەر وروژاندنی هەستی ئاینی و ئاینزایی کوردەکان بکەن بۆ بەشداری لە شەڕەکانیان(البابیری، ص٧٤). هەر ئەوەش لە دواجاردا بە زیان و کۆتایی هاتنی دەسەڵاتە کوردییەکان دوایی هات.

**ئەنجام:**

لە کۆی ئەم توێژینەوەیە گەیشتینە ئەم ئەنجامانەی خوارەوە:

١. دۆخی خراپی سیاسی و ئابووری و کۆمەڵایەتی دەوڵەتی خیلافەتی عەباسی، کە بەرئەنجامی سەدەیەک دەسەڵاتی تورکەکان بوو بەسەر ئەو دەوڵەتەوە، دەرفەتی دایە بووەیهییەکان دەست بەسەر دەوڵەتی خیلافەتی عەباسیدا بگرن. بەدوایدا سیستەمی لامەرکەزی پیادە بکەن. ئەوەش دەرفەتی دایە سەرۆک خێڵ و سەرۆک هۆزو گەورەی بنەماڵە کوردەکان، کە هەریەک لەناوچەکانی خۆیاندا بانگەشەی دەسەڵاتێکی ناوچەیی بکەن.

٢. بەهۆی سیستەمی خێڵایەتی و هۆزگەری کۆمەڵگای کوردی و پابەندی هەر خێڵ و هۆزو بنەماڵەیەک بەسەرۆکەکەی وایکرد، لەبری ئەوەی ئەو دەسەڵاتە کوردییانە یەک دەسەڵاتی یەکگرتووی کوردی دروستبکەن، هەریەکەیان لە سنووری ناوچەی خۆیانەوە کاریان بۆ دروستکردنی دەسەڵاتێکی ناوچەیی کرد. ئەو حاڵەتەش پەرتەوازی کورد و خاکەکەی لێکەوتەوە، کە دواتر هۆکارێکی رووخاندنیان بوو.

٣. سیستەمی بنەماڵەیی و پشتاوپشت، کە سیستەمێکی باوی سیاسی سەردەمەکە بوو لە دەوڵەت و میرنشینەکاندا، کێشەی میرایەتی و شوێنگەرەوەی دەسەڵاتی لەگەڵ خۆی هێنا. بەتایبەت لەنێو ئەندامانی بنەماڵەو هۆزو خێڵەکاندا. ئەمەو جگە لەناکۆکی خێڵ و هۆزو بنەماڵەکانی کورد لەنێو خۆیاندا.

٤. ناکۆکی ناوخۆیی ئەندامانی بنەماڵە کوردەکان لەسەر دەسەڵات و گەیشتن بە داهات و قەڵاو قولەی میرنشینەکان، دەرفەتی دایە هەردوو هێزی بووەیهی و سەلجوقی، سود لەو ناکۆکیانە ببینن و لەرێگای دەستێوەردان لەکاروباری میرنشینەکان و قوڵکردنەوەی ناکۆکییەکان، کار بۆ لاوازکردنیان بکەن.

٥. پیادەکردنی سیستەمی دەسەڵاتی ناوەندی (مەرکەزی) لەلایەن سەلجوقییەکان و پەیڕەویکردنیان لە ئاینزای سوونە، کە ئاینزای زۆرینەی کوردەکان و دەسەڵاتە کوردییەکانی ئەو سەردەمە بوو، ڕۆڵی خۆی گێڕا، لە کۆتایی هاتنی ئەو دەسەڵاتە


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کوردییانە. سا ئەوە لەسەر بیرکردنەوەی بەشێك لەمیرە کوردەکان وەستابێت بۆ پاراستنی یەکریزی موسڵمانان و یەك دەسەڵاتی و پابەندییان بەسوڵتانەکانی سەلجوقی و خیلافەتی عەباسی، یان بەهۆی توندی و زەبرو هێزی سەلجوقییەکان بووبێت بۆ سەر میرنشینەکان، دواجار کۆتایی بەیەك بەیەکی ئەو دەسەڵاتانە هێنا.

٦. بەهێزی پێگەی ئابووری ناوچە کوردنشینەکان، هۆکارێکی تری ململانێی ناوخۆیی بوو لەسەر دەستگرتن بەو سەرچاوە داهاتە ئابوورییانە. ئەمەو هانی بووەیهییەکان و سەلجوقییەکانیشدا دەست بەسەر سەرچاوەو داهاتی ئەو ناوچانەدا بگرن.

٧. ڕوودانی کارەساتە سروشتییەکانی وەك (بومەلەرزە، لافاو و زریان، ووشکە ساڵی، پەتای کوشندە)ش رۆڵی خۆی گێڕا لەدروستکردنی کێشەی جۆراوجۆر و دەرکەوتنی چەندین قەیران لەو ناوچانەی دووچاری ئەو کارەساتانە بوون. ئەوەش دواجار بە زیان و کەوتنی میرنشینەکان گەڕایەوە.

**سەرچاوەکان:**


**یەکەم: سەرچاوەکان بە زمانی عەرەبی:**

**١. سەرچاوە کۆنەکان:**

ابن الاثير، ابي الحسن علي بن الكرم محمد/(٦٣٠هـ/١٢٣٢م)

١. تاريخ الباهر في الدولة الاتابكية, تحقيق: عبدالقادر احمد طليمات, دار الكتب-القاهرة, بلا.

٢. الكامل في التاريخ، تحقيق: خيري سعيد, الطبعة الاولى، المكتبة التوفيقية-القاهرة, بلا.

٣. اللباب في تهذيب الانساب, الطبعة الاولى, دار صادر-بيروت, ١٩٨٠م.

الاصفهاني، حمزه بن الحسين/(٣١٠هـ/٩٧١م)

٤. خريدة القصر و جريدة العصر-قسم الشعراء العراق, تحقيق: محمد بهجة الاثري, الطبعة الاولى, منشورات المجمع العلمي العراقي-بغداد, ١٩٣٧م.

البدليسي, شرفخان/(١٦٠٣م)

٥. الشرفنامة, ترجمة: محمد جميل احمد الروزبياني, الطبعة الثانية, مؤسسة موكريان للطباعة والنشر-اربيل, ٢٠٠١م.

ابوبكر الرازي، محمد بن ابي بكر بن عبدالقادر/(٦٦٦هـ/١٢٦٧م)

٦. مختار الصحاح، صنعة: نديم مرعشلي، اسامة مرعدشلي، عادل مرعشلي، قدم له: د.وهبة الزحيلي، الطبعة الأولى، دار البشائر للطباعة والنشر والتوزيع-دمشق، ١٩٩٧م.

التنوخي, ابو علي المحسن بن علي بن محمد بن داود بن ابراهيم/(٣٨٤هـ/




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٧. نشوار المحاضرة وأخبار المذاكرة, تحقيق: عبدو الشالجي, الطبعة الاولى, دار صادر-بيروت, لبنان, ١٣٩١ه.

ابو حيان التوحيدى على بن محمد بن العباس التوحيدى/(٤١٤ه/١٠٢٣م)

٨. الامتاع والمؤانسة, تحقيق: احمد امين و احمد الزاين, الطبعة الاولى, مطبعة لجنة التأليف والترجمة والنشر-القاهرة, ١٩٤٤م.

أبن الجوزي، جمال الدين ابي الفرج عبدالرحمن البغدادي/(٥٩٧ه/١٢٠٠م)

٩. أخبار الازكياء, الطبعة الاولى, دار أبن حزم-بيروت, ١٤٢٤ه.

١٠. المنتظم في تأريخ الملوك والامم، دراسة و تحقيق: محمد عبدالقادر عطا و مصطفى عبدالقادر عطا، راجعه وصححه: نعيم زرزور، الطبعة الاولى، دار الكتب العلمية-بيروت، بلا.

الحسينى، صدرالدين على بن ناصر/(٦٢٢ه/١٢٣٦م)

١١. أخبار الدولة السلجوقية المسمى ب(زبدة التواريخ في أخبار الامراء والملوك السلجوقية, تحقيق: محمد نورالدين, الطبعة الثانية, دار الامراء للنشر والتوزيع-بيروت, ١٩٨٦م.

ابن خلدون، أبو زيد عبدالرحمن بن عمر/(٨٠٨ه/١٤٠٧م).

١٢. تاريخ العبر وديوان المبتدا والخبر في أيام العرب و العجم والبربر ومن عاصرهم من ذوي السلطان الأكبر، اعتنى به: عادل بن سعد، الطبعة الاولى، دار الكتب العلمية-بيروت، ٢٠١٠م.

ابن خلكان، أبو العباس شمس الدين أحمد بن محمد بن أبي بكر/(٦٨١ه/١٢٨٢م)

١٣. وفيات الأعيان وأنباء أبناء الزمان، تحقيق: محمد محي الدين عبدالحميد، الطبعة الاولى، مطبعة السعادة، القاهرة، ١٩٤٧م.

أبن خميس الموصلي, حسين بن نصر بن محمد/(٣٠٠ه/٩١٢م)

١٤. مناقب الابرار ومحاسن الاخبار, تحقيق: محمد أديب الجادر, الطبعة الاولى, مركز زايد للتراث والتاريخ-العين, ١٤٢٧ه.

الذهبي، شمس الدين بن عبدالله محمد بن احمد بن عثمان/(٧٤٨ه/١٣٤٧م)

١٥. سير أعلام النبلاء, تحقيق: شيعب الارناؤوط و محمد نعيم العرقوسي, الطبعة الاولى, مؤسسة الرسالة-بيروت, ١٩٨٦م.

أبن رسته, ابو علي احمد بن عمر/(٣٠٠ه/٩١٢م)

١٦. الاعلاق النفيسة, باهتمام: دي غورية, مطبعة بريل-ليدن, ١٨٩٢م.

الروذراوى، ظهيرالدين ابوشجاع محمد بن الحسين بن محمد بن عبدالله/(٤٨٨ه/١١٩٦م)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٧. ذيل تجارب الامم، أعتنى بالنسخ والتصحيح: ه.ف.ا. امدروز، مطبعة شركة التمدن الصناعية-القاهرة, ١٩١٦م.

ابو شامة, عبدالرحمن بن اسماعيل بن ابراهيم بن عثمان/(٥٦٦٥/١٢٦٧م)

١٨. الروضتين في اخبار الدولتين النورية والصلاحية, وضع حواشيه وعلق عليه: ابراهيم شمس الدين, الطبعة الاولى, منشورات محمد علي بيضون-دار الكتب العلمية, بيروت-٢٠٠٢م.

أبن شداد, عزالدين محمد بن علي بن ابراهيم/(٥٦٨٤/١٢٨٥م)

١٩. الاعلاق الخطيرة في ذكر امراء الشام والجزيرة, تحقيق: زكريا عبارة, الطبعة الاولى, منشورات وزارة الثقافة والارشاد القومي-دمشق, ١٩٧٨م.

الصابى، ابوالحسين هلال بن محسن بن ابراهيم/(٥٤٤٨/١٠٥٦م)

٢٠. تاريخ هلال الصابى، الطبعة الاولى, دار الكتب العلمية-بيروت, ٢٠٠٣م.

٢١. رسوم دار الخلافة, تحقيق: ميخائيل عواد, الطبعة الثانية, مركز الرائد العربي-بيروت, ١٩٨٦م.

الصفدي, صلاح الدين أبوالصفاء خليل بن ايبك بن عبدالله/(٥٧٦٤/١٣٦٣م)

٢٢. نكت الهميان في نكت العميان, تحقيق: مصطفى عبدالقادر عطا, الطبعة الاولى, دار الكتب العلمية-بيروت, لبنان, ١٤٢٨ه.

أبن عساكر, ثقة الدين ابوالقاسم علي بن الحسين بن هبة الله/(٥٥٧١/١١٧٥م)

٢٣. تاريخ دمشق الكبير, تحقيق و تعليق و تخريج: العلامة: ابوعبدالله علي عاشور الجنوبي, الطبعة الاولى, دار أحياء التراث العربي-بيروت, لبنان, ٢٠٠١م.

العمرى، شهاب الدين احمد بن يحيى بن فضل الله/(٥٧٤٩/١٣٤٨م)

٢٤. التعريف بالمصطلح الشريف, الطبعة الاولى, تحقيق: محمد حسين شمس الدين، دار الكتب العلمية-بيروت, ١٩٨٨م.

أبو الفداء الأيوبى، عماد الدين أسماعيل بن على بن محمود/٥٧٣٢/١٣٣١م)

٢٥. تقويم البلدان، بأعتناء: رينورد ديسلان، الطبعة الثانية،، دار الطباعة السلطانية-باريس، ١٨٤٠م.

٢٦. المختصر فى اخبار البشر، تحقيق: د.محمد زينهم محمدعزب و يحيى سيد حسين، الطبعة الاولى, بيروت, لبنان, بلا.

ابن الفوطي, عبدالرزاق بن احمد بن محمد الصابوني/(٥٧٢٣/١٣٢٣م)

٢٧. الحوادث الجامعة في التجارب النافعة في المائة السابعة, تحقيق: مصطفى جواد, الطبعة الاولى, المكتبة العربية-بغداد, ١٩٣٢م.

الفيروز ابادى، مجدالدين محمد بن يعقوب/ (٨١٧هـ/١٤١٤م)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

٢٨. القاموس المحيط، رتبه و وثقه: خليل مامؤن شيحا، الطبعة الثانية، دار المعرفة–٢٠٠٧م.
القزويني, ابو عبدالله زكريا بن محمد/(٥٦٨٢/١٢٨٢م)
٢٩. أثار العباد وأخبار العباد, الطبعة الاولى, بيروت, لبنان, ١٩٦٠م.
أبن القلانسى، حمزه بن أسد بن على بن محمد التميمي/(٥٥٥٥/١١٦٠ز)
٣٠. ذيل تاريخ دمشق, الطبعة الاولى, جامعة الاباء اليسوعيين-بيروت, ١٩٠٨م.
القلقشندى، أبوالعباس احمد بن على/(٥٨٢١/١٤١٨م)
٣١. صبح الاعشى في صناعة الانشاء, الطبعة الاولى, مطبعة الاميرية-القاهرة, ١٩١٣-١٩١٤م.
أبن المستوفي, مبارك بن احمد شرف الدين اللخمي/(٥٦٣٧/١٢٣٩م)
٣٢. نباهة البلد الخامل بما ورد من الاماثل-تاريخ اربل, تحقيق: سامي بن السيد خماس الصقار, الطبعة الاولى, منشورات وزرارة الثقافة والاعلام-دار الرشيد, بغداد, ١٩٨٠م.
المسعودي، أبوالحسن علي بن الحسين/(٥٣٤٥/٩٥٦م)
٣٣. مروج الذهب ومعادن الجوهر، عني به: د.محمد هشام النعسان و د.عبدالمجيد طعمة حلبي، الطبعة الاولى، دار المعرفة للطباعة والنشر والتوزيع-بيروت، ٢٠٠٥م.
٣٤. التنبيه والاشراف، تحقيق: عبدالله أسماعيل الصاوى، دار الصاوى-القاهرة، ١٩٣٨م.
أبن مسكويه، ابوعلي أحمد بن محمد بن يعقوب الرازي/(٥٤٢١/١٠٣٠م)
٣٥. تجارب الامم، حققه و قدم له: د.ابوالقاسم امامي، الطبعة الاولى، دار سروش للطباعة والنشر والتوزيع-طهران، ٢٠٠١م.
المقريزي، تقي الدين ابوالعباس محمد بن علي بن عبدالقادر بن محمد/(٥٨٤٥/١٤٤١م)
٣٦. كتاب السلوك لمعرفة دول الملوك، تحقيق: محمد عبدالقادر عطا، الطبعة الاولى، دار الكتب العلمية-بيروت، ١٩٩٧م.
منجم باشى، أحمد بن لطف الله السلانيكي الرومي/(٥١١١٣/١٧٠٢م)

٣٧. باب في الشدادية من كتاب جامع الدول، عني بتحقيقه ونشره، ولاديمير مينورسكى، الطبعة الاولى، لندن، ١٩٥٣م.

المنذري, زكي الدين ابي محمد عبدالعظيم/(٥٦٥٦/١٢٥٨م)
٣٨. التكملة لوفيات النقلة, تحقيق: بشار عواد معروف, الطبعة الاولى, بيروت, ١٩٨١م.
مؤلف مجهول/(القرن السابع الهجرى/الثالث عشر الميلادى)
٣٩. أخبار سلاجقه الروم، تحقيق: السعيد جمال الدين، الطبعة الاولى, مركز القومي للترجمة-القاهرة, ٢٠٠٧م.
أبي الهيجاء الهذباني، الامير عزالدين محمد بن أبى الهيجاء الاربلى/(٥٧٠٠/١٣٠٠م)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٤٠. تاريخ أبن أبي الهيجاء الهذباني, تحقيق: احمد فريد المزيدي, الطبعة الاولى, دار الكتب العلمية-بيروت, لبنان, ٢٠٠٤م.

ياقوت الحموي، شهاب الدين ابي عبدالله ياقوت به عبدالله/(٥٦٢٦/١٢٢٨م)

٤١. معجم البلدان، قدم لها: محمد عبدالرحمن المرعشلي، الطبعة الاولى، دار احياء التراث العربي-بيروت، ٢٠٠٨م.

**ب. سەرچاوە نوێیەکان:**

ابراهيم زكى خورشيد واحمد الشنتاوى و عبدالحميد يونس/

٤٢. دائرة المعارف الاسلامية، الطبعة الثانية, مجلة كتاب الشعب-القاهرة, ١٩٦٩م.

الاتروشى، هدار سليم صالح/

٤٣. الكرد فى كتاب الاعلاق الخطيرة لابن شداد، الطبعة الاولى, مطبعة الحاج هاشم, اربيل, ٢٠١٣م.

أحمد عبدالعزيز محمود/

٤٤. الامارة الهذبانية في أذربايجان و أربيل و الجزيرة الفراتية (٢٩٣-٥٦٥٦/٩٠٥-١٢٥٨م)-دراسة سياسية حضارية، الطبعة الاولى، مكتب التفسير للنشر والاعلان-اربيل، ٢٠٠٦م.

اسماعيل شكر رسول/

٤٥. الامارة الشدادية الكردية في بلاد اران من ٣٤٠-٥٥٩٥/٩٥١م١١٩٨م-دراسة سياسية حضارية, الطبعة الاولى, مؤسسة موكريان للطباعة والنشر-اربيل, اقليم كردستان العراق, العراق, ٢٠٠١م.

د.اسماعيل غزال/

٤٦. القانون الدستورى والنظم السياسية, الطبعة الاولى, المؤسسة الجامعية للدراسات والنشر والتوزيع-بيروت، ١٩٨٢م.

د.اكو برهان محمد/

٤٧. الحياة الثقافية في دياربكر في العصر العباسي, الطبعة الاولى, مطبعة الحاج هاشم-أربيل, ٢٠١٢م.

الالولسي، عادل محي الدين/

٤٨. الرأي العام في القرن الثالث الهجري, الطبعة الاولى, مطبعة افاق العربية-بغداد, العراق, ١٩٨٧م.

البابيرى، حكيم عبدالرخمن زبير/

٤٩. مدينة خلاط-دراسة في تاريخها السياسي والحضاري (٤٩٣-٥٦٤١/١١٠٠-١٢٤٣م), الطبعة الاولى, مطبعة وزارة التربية-أربيل, أقليم كردستان العراق-العراق, ٢٠٠٥م.

الباشا, حسن/



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٥٠. الالقاب الاسلامية في التاريخ والوثائق والاثار, الطبعة الاولى, القاهرة, ١٩٨٩م.
باجلوري، هيلين رفيق محمد سعيد/
٥١. الكورد الحميدية و دورهم السياسي والحضاري خلال القرون (٣-٩/٥٨-١٤م), الطبعة الاولى, مطبعة الحاج هاشم-اربيل, أقليم كردستان العراق, العراق, ٢٠١٢م.
بدوي, عبدالحميد ابوالفتوح/
٥٢. التاريخ السياسي والفكري للمذهب السني في المشرق الاسلامي من القرن الخامس الهجري حتى سقوط بغداد, الطبعة الثانية, عالم المعرفة-جدة, ١٩٨٣م.
جوزي, بندلي/
٥٣. من تأريخ الحركات الفكرية في الاسلام, الطبعة الاولى, دار الروائع-بيروت, بلا.
الخليل، د.احمد/
٥٤. عباقرة كردستان في القيادة والسياسة, الطبعة الاولى, مطبعة خاني-دهوك, أقليم كردستان العراق-العراق, ٢٠٠٩م.
الدورى، عبدالعزيز/
٥٥. دراسات فى العصور العباسية المتأخرة, الطبعة الاولى, بغداد, ١٩٤٥م.
د.زرار صديق توفيق/
٥٦. القبائل والزعامات القبيلة الكردية فى العصر الوسيط، الطبعة الاولى, مطبعة مؤسسة ئاراس-اربيل، ٢٠٠٧م.
٥٧. الكرد فى العصر العباسى (١٣٢-٥٣٣٤/٧٤٩-٩٤٦م)، الطبعة الاولى، دار موكريانى للطباعة وللنشر-أربيل، ٢٠١٨م.
زيدان، جرجى/
٥٨. تاريخ التمدن الاسلامي, الطبعة الاولى, منشورات مكتبة الحياة-بيروت, بلا.
ژيان خۆشەويست پيرۆت/
٥٩. الاعتراف بالدولة بين التصور القانوني واتعامل الدولي, الطبعة الاولى, مكتبة زين للطباعة والنشر والتوزيع-بيروت, ٢٠١٨م.
سوادى عبد محمد/
٦٠. الاحوال الاجتماعية والاقتصادية في الجزيرة الفراتية خلال القرن (٥٦/١٢م), الطبعة الاولى, بغداد, ١٩٨٩م.
د.شفان ظاهر عبدالله/
٦١. الاقطاع في كردستان (٣٣٤-٥٦٥٦/٩٤٥-١٢٥٨م), الطبعة الاولى, مركز زاخو للدراسات الكردية-زاخو, ٢٠١٨م.
الشهابي, قتيبة/


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٦٢. معجم القاب ارباب السلطان في الدولة الاسلامية في العصر الراشدي حتى بداية القرن العشرين, الطبعة الاولى, دمشق, ١٩٩٥م

د.صلاح الدين فوزي/

٦٣. النظم السياسية-النظرية والتطبيق, الطبعة الاولى, مكتبة اكلاء الجديدة-المنصورة, ١٩٩٤م.

طقوش, د.محمد سهيل/

٦٤. التأريخ الاسلامي الوجيز, الطبعة الخامسة, دار النفائس للطباعة والنشر والتوزيع-بيروت, ٢٠١١م.

٦٥. التاريخ الدولة العباسية, الطبعة الثالثة, دار النفائس للطباعة والنشر والتوزيع-بيروت, ٢٠٠١م.

عبدالرقيب يوسف/

٦٦. الدولة الدوستكية، الجزء الاول, الطبعة الأولى، مطبعة اللواء-بغداد، ١٩٧٢م, الجزء الثاني، بغداد, العراق, ١٩٧٣م.

العش، د.يوسف/

٦٧. تاريخ عصر الخلافة العباسية, الطبعة الاولى, دار الفكر-دمشق, ٢٠٠٣م.

فائزه محمود عزت/

٦٨. الحياة الاجتماعية للكورد بين القرنين (٤-٥٩/١٠-١٥م), الطبعة الاولى, مطبعة الحاج هاشم-أربيل, ٢٠٠٩م.

فيلد, هنري/

٦٩. جنوب كردستان-دراسة انتروبولوجية, نقله الي العربية: جرجيس فتح الله, الطبعة الاولى, دار أراس للطباعة والنشر-أربيل, ٢٠٠١م.

د.قادر محمد حسن/

٧٠. الامارات الكوردية في العهد البويهي-دراسة في علاقاتها السياسية والاقتصادية (٣٣٤-٥٤٤٧/٩٤٥-١٠٥٥م), الطبعة الاولى, مؤسسة موكرياني للبحوث النشر-اربيل, ٢٠١١م.

القزاز، د.محمد صالح داود/

٧١. الحياة السياسية في العراق (٥١٢-٥٦٥٦), الطبعة الاولى, مطبعة القضاء-النجف الاشرف, ١٩٧١م.

د.لولاف مصطفى سليم/

٧٢. الكرد في المصادر الادبية العربية خلال العصر العباسي (١٣٢-٥٦٥٦/٧٥٠-١٢٥٨م)-دراسة تأريخية تحليلية, الطبعة الاولى, مركز زاخو للدراسات الكردية-زاخو, ٢٠١٨م.

متز، ادم/

٧٣. الحضارة الاسلامية في القرن الرابع الهجري, ترجمة: د.محمد عبدالهادي أبوريدة, الطبعة الاولى, مطبعة لجنة التأليف والنشر،القاهرة, ١٩٥٧م.

محمد أمين زكى/

٧٤. تأريخ الدول والامارات الكردية فى العهد الاسلامى، الطبعة الاولى، القاهرة، ١٩٤٥م

٧٥. مشاهير الكرد والكردستان في العهد الاسلامي، ترجمة: سانحة زكي بك، قدم للجزء الثاني و زاد عليه: محمد علي عوني، الطبعة الاولي، دار الزمان للطباعة والنشر-دمشق، ٢٠٠٦م.

د.محمد احمد خلف الله/

٧٦. القران والدولة, الطبعة الاولى, مكتبة الانجلو المصرية-القاهرة, بلا.

د.محسن محمد حسين/

٧٧. اربيل-دراسة تاريخية, الطبعة الاولى, دار اراس للطباعة والنشر-أربيل, ٢٠١٢م.

محمد كرد على/

٧٨. الاسلام والحضارة العربية, الطبعة الاولى, القاهرة, ١٩٣٨م.

د.محمود خلف/

٧٩. مدخل الى علم العلاقات الدولية, الطبعة الاولى, دار زهران للنشر-عمان, ١٩٩٧م.

مرجونه، ابراهيم محمد/

٨٠. تاريخ الاكراد-دراسة تاريخية حضارية في ظل الخلافة العباسية, تقديم: سحر السيد عبدالعزيز سالم, الطبعة الاولى, مؤسسة الشباب-الجامعة الاسكندرية, ٢٠١٠م.

مصطفى جواد/

٨١. جاوان القبيلة الكردية-المنية ومشاهير الجاوانيين, الطبعة الاولى, المجمع العلمي الكردي-بغداد, ١٩٧٣م.

النقشبندى، سلام احمد عبدالله العبابيلى/

٨٢. مباحث في تأريخ شهرزور في العصور العباسية, الطبعة الاولى, مطبعة الحاج هاشم-أربيل, ٢٠١٣م.

نيكيتين، باسيل/

٨٣. الكرد-دراسة سوسيولوجية و تأريخية, تقديم: لويس ماسينيون، نقله من الفرنسية و علق عليه: د.نورى طالباني, الطبعة الثالثة, منشورات اراس-اربيل, ٢٠٠٤م.

الهسيناني, موسى مصطفى/

٨٤. سنجار-دراسة في تأريخيها السياسي والحضاري (٥١٢-٥٦٠٠/١٢٧-١٢٦١م), الطبعة الاولى, دار سبيريز-دهوك, ٢٠٠٥م.

**سێیەم: سەرچاوەکان بە زمانی فارسی**

**ا. سەرچاوە کۆنەکان:**

مستوفی القزوینی، أبوبکر بن حمد بن نصر القزويني/(٥٧٥٠/١٣٤٩م)

٨٥. تاریخ گزیده، با اهتمام: د.عبدالحسين نوابی، چاپ چهارم ، چاپخانه سپهر -مؤسسه انتشارات امیر کبیر، تهران، ١٣٨١ه.ش.

٨٦. نزهة القلوب في المسالك والممالك, بأهتمام: کی لسترنج, چاپ اول، تهران، ١٣٦٢ه.ش.

مؤلف مجهول/القرن السادس الهجری/الثانی عشر الميلادی)

٨٧. مجمل التواریخ والقصص، بتصحيح: ملك الشعراء بهار، چاپ اول، تهران، ١٣١٨ه.ش.

ناصر خسرو، أبومعين الدين القبادياني المروزی/

٨٨. سفرنامه، بتصحيح: دبير ساقی، چاپ اول، تهران، ١٣٥٠ه.ش.

**ب. سەرچاوە نوێیەکان:**

پیرنیا، حسن و عباس أقبال اشتیانی/

٨٩. تاريخ ايران-از اغاز تا انقراض ساسانیان از صدر اسلام تا انقراض قاجاريه، چاپ دوم، انتشارات میلاد-تهران، ١٣٨٥ه.ش.

پیکولوسکایا، ن. و و دیگران/

٩٠. ایران از دوران باستان تاپایان سده هجدهم، ترجمه: کریم کشاورز، چاپ پنجم، أنتشارات پیام، چاپخانه مروی- تهران، ١٣٦٣ه.ش.

رضا خضری, د. سید احمد رضا/

٩١. تاریخ خلافت عباسی از اغاز تا پایان ال بویه، چاپ هفتم، چاپ مهر-قم، ایران، ١٣٨٨ه.ش.

زرین کوب، عبدالحسين/

٩٢. تاریخ مردم ایران- ایران قبل از اسلام- کشمکش باقدرتها، چاپ أول، مؤسسه أنتشارات امیر کبیر-چاپخانه سپهر، تهران، ١٣٧٤ه.ش.

کسروی، أحمد/

٩٣. شهریاران گمنام، چاپ سوم، أنتشارات أمير كبير-تهران، ١٣٥٣ه.ش.

م. ن. نچکینا و دیگران/

٩٤. تأريخ مختصر جهان، ترجمة: محمد تقی فرامرزی، چاپ اول، تهران، ٢٥٣٦شاهنشاهی.

**چوارەم: سەرچاوەکان بە زمانی کوردی:**

د.ئاراس فەریق زەینەڵ/

٩٥. دیبلۆماسیەتی کورد لەسەردەمی بووەیهییەکاندا، چاپی یەکەم، چاپخانەی کەمال-سلێمانی، ٢٠١٢ز.

ئاشوری ، داریوش و دکتور بەهادینی پازاگاد و روزبە /



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٩٦. زاراوەی نوێ یان فەرهەنگی نوێ، وەرگێڕانی: بورهان قانع، چاپی یەکەم، چاپخانەی الحوادث- بەغداد، ١٩٨٥ز.
برونسەسن، مارتین فان/
٩٧. ئاغا و شێخ و دەوڵەت، وەرگێڕانی: د.کوردۆ عەلی، چاپی یەکەم، چاپخانەی سەردەم-سلێمانی، ٢٠٠٣ز.
بوا، تۆما/
٩٨. ژیانی کوردەواری، وەرگێڕانی: حمەسعید حمەکریم، چاپی یەکەم، چاپخانەی زانکۆی سلێمانی-سلێمانی، ١٩٨٠ز.
چرا محمود حسن/
٩٩. بزافی رۆشنبیری دینەوەر لەسەدەی سێیەم و چوارەمی کۆچی نۆیەم و دەیەمی زایینی، چاپی یەکەم، چاپخانەی چوارچرا-سلێمانی، ٢٠١٣ز.
ڕەحیم ئەحمەد ئەمین/
١٠٠. بەعەرەبکردنی هەرێمە کوردنشینەکان (٦٣٧-٨٤٧ز)-لێکۆڵینەوەیەکی مێژوویی شیکارییە، چاپی یەکەم، چاپخانەی تیشك، سلێمانی، ٢٠٠٨ز.
ڕۆژبەیانی، مەلا جەمیل/
١٠١. چوار دەوڵەتی کوردی-چوار دەوڵەتی فەرامۆشکراوی نەناسراو (دونبوڵی، شاهینی، شوانکارە، مینتشاهی)، چاپی یەکەم، چاپخانەی وەزارەتی ڕۆشنبیری-هەولێر، ٢٠٠٠ز.
١٠٢. مێژووی حەسنەوەیهی و عەییاری، چاپی یەکەم، دار الحرية للطباعة-بغداد، ١٩٩٦م.
پ. د.زرار صديق تۆفیق/
١٠٣ چەند لێکۆڵینەوەیەك دەربارەی کۆمەڵگای کوردی لە سەدەکانی ناوەڕاستدا، چاپی یەکەم، چاپخانەی خانی-دهۆك، ٢٠٠٨ز.
١٠٤. کوردو کوردستان لەڕۆژگاری خیلافەی ئیسلامیدا (١١-٦٥٦ك/٦٣٢-١٢٥٨ز)، چاپی یەکەم، چاپخانەی ڕۆژهەلات-هەولێر، ٢٠١٢ز.
سۆران بەها ئەحمەد/
١٠٥. کشتوکاڵ و خۆراك لە هەرێمی چیا لە سەدەی (چوارەمی کۆچی دەیەمی زایینی)دا، چاپخانەی ناوەندی سارا-سلێمانی، هەرێمی کوردستانی عێراق-عێراق، ٢٠١٩ز.
د.عەبدولرەحمان غانم/
١٠٦. بنەماکانی زانستە سیاسییەکان، وەرگێرانی: دلاوەر عەبدوللا و محەمەد کەریم، چاپی یەکەم، سلێمانی، ٢٠٠٣ز.
قەرەداغی، عەتا/
١٠٧. پەرەسەندنی ناسروشتی کۆمەڵگای کوردی، چاپی یەکەم، سلێمانی، ٢٠١٢ز.

قەفتان، ساڵح/
١٠٨. مێژووی گەلی کورد لە کۆنەوە تا ئەمڕۆ، چاپی دووەم، چاپخانەو ئۆفسێتی شڤان-سلێمانی، ٢٠٠٤ز.
ڤنسنت، ئەندرو/
١٠٩. تیۆرییەکانی دەوڵەت، وەرگێڕانی: عەبدوڵلا فازڵ گەرمیانی، چاپی یەکەم، خانەی وەرگێڕان-چاپخانەی ڕۆژهەڵات، هەولێر، ٢٠١١ز.
کامەران عەزیز عەبدوڵلا/
١١٠. هۆکارەکانی سەرهەڵدان و ڕووخاندنی میرنشینە کوردییەکان لەسەردەمی عەبباسیدا-لێکۆڵینەوەیەکی شیکاری مێژووییە، چاپی یەکەم، چاپخانەی حاجی هاشم-هەولێر، ٢٠١٢ز.
کۆچێرا، کریس/
١١١. کورد لە سەدەی نۆزدەو بیست دا، وەرگێڕانی: حەمە کەریم عارف، چاپی یەکەم، چاپخانەی شڤان-سلێمانی، ٢٠٠٤ز.
مەنگوڕی، میرزا محەمەد ئەمین/
١١٢. کوردو کوردستان لە ئیسلامەوە هەتا ١٩٧٠ز، چاپی یەکەم، چاپخانەی شەهید ئازاد هەورامی-کەرکوك، ٢٠٠٨ز.
محمد أمين زكى/
١١٣. خولاصەیەکی تاریخی کورد و کوردستان چاپی دووەم، چاپخانەی شڤان-سلێمانی، ٢٠٠٤ز.
موسا محەمەد خدر/
١١٤. وێنەی کورد لەسەرچاوە مێژووییە فارسییەکاندا، چاپی یەکەم، چاپخانەی ڕۆژهەڵات-هەولێر، ٢٠١١ز.
موکریانی، حوسێن حوزنی/
١١٥. اورێکی پاشەوە، چاپی یەکەم، چاپخانەی کوردستان-ڕواندوز، ١٩٢٩ز.
١١٦. کوردستانی موکریان، چاپی یەکەم، چاپخانەی زاری کرمانجی-ڕەواندوز، ١٩٣٧ز.
مینۆرسکی، ڤلادیمیر/
١١٧. کورد: وەرگێڕانی: حمەسعید حمەکریم، چاپی یەکەم، چاپخانەی زانکۆی سەلاحەددین-هەولێر، ١٩٨٤ز.
نەقشبەندی، د.حسام الدين على غالب/
١١٨. شارەزوورو لوڕستانی باکور لەسەدەکانی ناوەڕاست دا-لێکۆڵینەوەیەکی (مێژوویی و شیکاری)یە، وەرگێڕانی لەعەرەبییەوە: ڕەنج ئەبوبەکر محەمەد، چاپی یەکەم، چاپخانەی حەمدی-سلێمانی، ٢٠٠٨ز.
نەورۆڵی, فارس/



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١١٩. دەروازەی چەمکەکان، چاپی چوارەم، چاپخانەی تاران، ٢٠٢٠ز.
هروتی، د.مەهدی عوسمان/
١٢٠. ڕۆڵی سەربازی کورد لە دەوڵەت و میرنشینە کوردییەکان لە سەردەمی عەبباسیدا (١٣٢-٦٥٦ك/٧٤٩-١٢٥٨ز)، چاپی یەکەم، هەولێر، هەرێمی کوردستانی عێراق-عێراق، ٢٠٠٨ز.
١٢١. نەهامەتی و کارەساتەکانی کوردستان لە سەدەکانی (٦٠٨ك/١٢-١٤ز)، چاپی یەکەم چاپخانەی ڕۆژهەڵات-هەولێر، ٢٠١٥ز.
**پێنجەم: نامە و تێزە زانستییەکان:**
اواز محمد علي/
١٢٢. الكورد الجاوانيون و دورهم السياسي والحضاري في العصر العباسي (٣٩٢-٥٦٥٦/١٠٠٢-١٢٥٨م), رسالة ماجستر غير منشور, جامعة دهوك-دهوك, ٢٠٠٣م.
**شەشەم: بڵاوکراوەکان:**
فرهاد عبوش/
١٢٣. الكوارث الطبيعية وأثرها في المناطق الكوردية في القرن (٢-٥٧/٨-١٣م), مجلة جامعة دهوك, العدد (٢), مجلد (٨), سنة (٢٠٠٥م).

**الملخص:**

منذ زمن ليس بقريب حاول الكرد عبر عصوره التأريخية بتأسيس العديد من الكيانات المستقلة وشبه مستقله تحت ظل الامارات والدول يحكمها طائفة أو عشيرة من الطوائف والعشائر الكردية في التأريخ, لكن الشي الغريب من هذه المحاولات باءت كلها بالفشل وسقطت جميع الدول والامارات الكردية في التأريخ. وكانت السبب الرئيسي لفشل تلك المحاولات و سقوط تلك الكيانات, العامل الداخلي التي لها الدور في أسقاطها, بالاخص في العصر الاسلامي الوسيط. ويرجع السبب الى بروز النزاعات الداخلية على السلطة وبتأثير القوى السياسية الخارجية.

من هنا ومن أجل تسلط الضوء على سقوط الدول والامارات الكردية في العصر الاسلامي الوسيط وبالاخص في العصر العباسي الوسيط, قمنا بكتابة هذا البحث للمؤتمر العلمي الدولي السابع لمركز زاخو للدراسات الكردية في جامعة زاخو. وقسمنا البحث الى مدخل ومبحثيين. ففي المدخل قمنا بتوضيح العديد من المصطلحات يخص البحث أمثال (الامارة, الدولة, الكيان السياسي في العصر الاسلامي الوسيط). اما في المبحث الاول تطرقنا الى أهم العوامل الداخلية على سطح العوائل والطوائف الحاكمة في الدول والامارات الكردية التي لها الدور في سقوطها. اما في المبحث الثاني شرحنا العديد من العوامل الداخلية في أسقاط تلك الدول والامارات. وأختتمنا بحثنا هذ بعدة نتائج وصل اليه الباحث, مع الاشارة الى المصادر والمراجع الذي أستخدمنا في هذا البحث ومن الله التوفيق.

**Abstract:**

Not long ago, the Kurds tried through their historical eras to establish many independent and semi-independent entities under the shadow of the Emirates and states ruled by a sect or clan of the Kurdish sects and clans in history, but the strange thing of these attempts all failed and all Kurdish states and emirates fell into history. And it was the main reason for the failure of those attempts and the fall of those entities, the internal factor that had a role in the fall and collapse of it. Especially in the middle Islamic era. The reason is due to the emergence of internal conflicts over power, with the influence of political forces outside the authority of those Kurdish states and emirates.

From here and in order to shed light on the fall of the Kurdish states and emirates in the medieval Islamic era, especially in the medieval Abbasid era, we wrote this research for the Seventh International Scientific Conference of the Zakho Center for Kurdish Studies at the University of Zakho. We divided the research into an introduction and two topics. In the introduction, we clarified many terms related to the research, such as (the emirate, the state, and the political entity) and then dealt with the Kurdish society in that era.

As for the first topic, we discussed the most important internal factors on the surface of the ruling families and sects in the Kurdish states and emirates that have a role in their downfall. As for the second topic, we explained many of the internal factors that led to the overthrow of those countries and the Emirates. And we concluded this research with several results reached by the researcher, with reference to the sources and references that we used in this research, and God grant success.

# هەڤبەندییا دناڤبەرا ناووسك و دێراندا (دەڤەرا ئامێدییێ وەك نموونە)

**م. جەمیل محەمەد شێلازی**

هەریما کوردستان- دهوك/ عیراق

**پوختە:**

ئەڤ ڤەکۆلینە ڤەکۆلینەکا مەیدانی شرۆڤەکارییە، د ڤێ ڤەکۆلینێدا بزاڤ هاتییە کرن کا ل دەستپێکێ چاوا و بۆ چ شکەفتێن خۆرستی هاتینە بکارئینان، کو ل قۆناغێن جودا جودا هاتینە بکارئینان ژ بۆ (ڤەحەویانێ و ژیانێ، پاراستن و ڤەشارتنێ و ژ بۆ پەرستنێ و خەلوەتێ)، پاشی هزر ددروستکرنا شکەفتێن دەستکرد (هەلکولایی) کرینە، نەخاسمە ل وان دەڤەرێن شکەفتێن خۆڕستی لێ نەبوون یان دکێم بوون، و کا ئەو هەڤبەندییا دناڤبەرا ناووسکان و دێراندا چییە و بۆ چ هاتینە بکارئینان، و ڤەکۆلین ژ دوو پشکان پێکدهێتن، پشکا ئێکێ/ د مژارا ئێکێدا، شکەفت و ناووسك و دێر و ڕەبەن وەك پێناسە و زاراڤ، و کورتییەك ل دوور دیرۆکا ناووسکان ل سەر دەمێن جودا جودا، نەخاسمە کا مەسیحییەت د چ قۆناغ را دەربازبوویە و چ ب سەرێ وێ هاتییە؟ و دمژارا دوویێدا، چەندین گریمانەك هاتینە بەحسکرن، تێدا هاتینە خۆیاکرن کا ناووسك کەنگی و بۆ چ هاتینە دروستکرن؟ و دپشکا دوویێدا/ د مژارا ئێکێدا، بەحسێ جۆرێن ناووسکان هاتییە کرن، کا ژ لایێ نەخشەسازیڤە د چاوانن؟ ب چ شێوە هاتینە دروستکرن؟ کو ئاماژە ب کومەکا هەر جۆرەکی هاتینە دان، ئەوێن ل دەڤەرا ئامێدییێ د بەربەلاڤە، و د مژارا دوویێدا، ئەو گریمانێن د پشکا ئێکێدا هاتین، هاتینە گەنگەشە کرن، کا کیش گریمان ڕاستترە ژ بۆ وان ناووسکێن ل دەڤەرا ئامێدییێ، هاتینە دروستکرن و هەلکولان د کەڤراندا، ل دویڤ جهێ جۆگرافییێ وان، و بزاڤ هاتییە کرن و هاتینە خۆیاکرن، کو ئەو ناووسکێن ل دەڤەرا ئامێدییێ هاتینە دیتن ژ بەر چەند هۆکارەکان، چەند ئەنجامەك ژی دەرکەفتینە، کو ناووسکان هەڤبەندییەکا خۆرت ب دێرانڤە هەنە، و ژ بۆ جهێن خۆ ڤەشارتن ژ دوژمنان و پەرستنێ هاتینە بکارئینان.

**پەیڤێن سەرەکی:** *شکەفت، ناووسك، دێر، صەومەعە، ڕەبەن، دەڤەرا ئامێدییێ، پەرستگەه و پەرستن.*

**پێشگۆتن:**

دەڤەرا ئامێدییێ ئێك ژ وان دەڤەرانە یێن كو هەر نهالەكا وێ، هەر گەلییەكێ وێ، هەر دۆلەكا وێ، هەر سەرێ چیایەكی، هەر سەرێ گۆپیتكەكێ، هەر سەر كەڤرەكی، دێ پاشماییێن شوینەوارەكی لێ بینی، ئەڤجار ئەڤ شوینەوارە یێن سەردەمێن چەرخێن بەرینی یێن كەڤن بن، یان یێن لۆلۆیی، گۆتی، كاشی، میتانی، میدی و...هتد بن، یان یێن جۆهییەتێ بن، یان مەسیحییەتێ، یان زەرەدەشتیێ، یان مۆسلمانەتیێ، یان یێن سەردەمێن میرگەهان بن، كو ئەڤرۆ پێتڤی ب هەلشكافتن و هەلكۆلان و ڤەكۆلینێ هەنە، دا ڕاستییا دیرۆكا وان شوینەواران بهێنە زانین و قەیدكرن و ئەرشیفكرن، ژ بۆ بەرەبابێن مللەتێن د كوردستانێدا د ئاكنجی، كو تشتەكێ ژ بۆرییێ خۆ بزانن، كا چ شارستانییەت هەبوویە، یان چ ب سەرێ كوردستانێ هاتییە ل قۆناغێن بۆریدا.

گرنگییا ڤەكۆلینێ:

هەتا نهۆ ب سەدان شوینەوارێن ل كوردستانێ هەین وەك: كنیشتە، دێر، مزگەفت، كەلهە، دویرگەهـ، ناووسك و...هتد، كو بشێوەكێ مەیدانی نەهاتینە دیتن، كا چ ل وان جهان هەنە، چ پاشماو لێ هەنە؟ بۆ چ مللەت و قۆناغ دزڤرن؟ لەوما گرنگییا ڤێ ڤەكۆلینێ د وێ چەندێ دایە، هەمی ئەو جهێن دێ بەحسكەین یان میناكان ژێ وەرگرین، دناڤبەرا سالێن (٢٠١٣ . ٢٠١٥)ێ سەرەدانێن مەیدانی ژ لایێ مە ڤە بۆ پیتر ژ (٣٠) گۆندێن دەڤەرێ هاتینە كرن و بشێوەكێ زانستی زانیاری ل سەر هاتینە كومكرن، و ئەو هەمی شوینەوار و زانیارییێن وان د پەرتووكەكێدا ب ناڤێ (ژ شوینەوارێن دەڤەرا ئامێدییێ) ژ لایێ (سەنتەرێ بێشكچی بۆ ڤەكۆلینێن مرۆڤایەتی) ل سالا (٢٠١٧)ێ هاتییە چاپكرن، ئەڤە ژ لایەكێڤە، و ژلایەكێ دیڤە، كا چ هەڤبەندی دناڤبەرا دێر و ناووسكاندا هەنە، بشێوەكێ زانستی ڤەكۆلین ل سەر هێتە كرن.

سنۆرێ ڤەكۆلینێ:

ڤەكۆلین ژ دوو لایانڤە یا سنۆردایە، ئەوژی: تنێ دەڤەرا ئامێدییێ وەك نموونە هاتییە وەرگرتن، و ژ دەڤەرا ئامێدییێ ژی ژ گۆندێ دێرێ ل ڕۆژهەلاتێ ئامێدییێ ل دەڤەرا سپنەی و بەرێ گارەیی، دگەل دەڤەرا بەرواری بالا ئەڤە ژ لایەكیڤە. و ژ لایەكێ دیڤە، ژ شوینەواران ژی تنێ هەڤبەندییا ناووسكان ب دێرانڤە هاتییە وەرگرتن، كو بەحسێ پەرستگەهێن دی وەك یێن جۆهیاتییێ و زەرەدەشتییەتێ و مۆسلمانەتییێ نەهاتینە وەرگرتن داكو بابەت درێژ نەبیت.

ڕێبازا ڤەكۆلینێ:

ڤەكۆلین ڤەكۆلینەكا (مەیدانی دیرۆكی شرۆڤەكاری)یە، كو بزاڤ هاتییە كرن ل سەر ڤێ ڕێبازێ، ڤەكۆلین بهێتە نڤیسین، ئەوژی هەمی ئەو ناووسك و دێرێن دێ بەحس لێ هێتە كرن، سەرەدانێن مەیدانی بۆ هاتینە كرین، و ل دویڤ زانیاری و ژێدەران، ل سەر لایەنێ دیرۆكی یێ وان شوینەواران ڤەكۆلین و شرۆڤەكرن بۆ هێنە كرن، لەوما ڤەكۆلینەكا مەیدانی دیرۆكی شرۆڤەكارییە.

پلانا ڤەكۆلینێ:

ڤەكۆلین ژ بلی پێشەكیێ، ژ دوو پشكێن سەرەكێ پێكدهێتن و هەر پشكەك ژی ژ دوو مژاران پێكدهێتن، ب ڤی شێوەیی: پشكا ئێكێ/ دبنە دوو مژار، مژارا ئێكێ، شكەفت و ناووسك و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

دێر و ڕەبەن وەك پێناسە و زاراڤ، و كورتییەك دیرۆكی ل سەر وان كارەسات و رویدانێن ب سەر دەڤەرێدا هاتین و كارئینانا شكەفتێن خۆرستی د قۆناغێن جودا جودا دا و پاشی هەلكولانا شكەفتێن دەستكرد (ناووسك . ناعوسك . صەومەعە). و مژارا دوویێ، چەند گریمانەك هاتینە وەرگرتن، ل دوور ناووسك كا بۆ چ هاتینە دروستكرن و بكارئینان؟ و كا چ هەڤبەندییا وان ب دێرانڤە هەنە؟ و پشكا دوویێ/ دیسان ژ دوو مژاران پێكدهێتن، مژارا ئێكێ، كا چەند جۆرێن ناووسكان هەنە؟ هەر جۆرەك یێ چاوایە؟ نەخشەسازییا وان چاوانە؟ ل كیرێ هاتینە دروستكرن؟ دگەل هندەك میناكان ژ وان دێرێن ل سەر دەمێن جودا جودا بووینە مزگەفت، یان مەزارەكێ مۆسلمانا. و مژارا دوویێ، گەنگەشەیا وان هەر چوار گریمانان دهێتەكرن، دا ل دویماهییێ ئەنجام خۆیا ببن، كا ئەڤ ناووسكە ل دەڤەرێن مە كەنگی و بۆچی هاتینە دروستكرن و بكارئینان؟ و ل دویماهییا ڤەكۆلینێ ئەو ئەنجامێن گەهەشتینێ ب چەند خالەكان هاتینە خۆیاكرن، دگەل لیستا ژێدەران و پۆختەیێ ڤەكۆلینێ ب زمانێن (كوردی، عەرەبی و ئنگلیزی).

پەیڤین سەرەكی: (شكەفت، ناووسك، دێر، صەومەعە، ڕەبەن، دەڤەرا ئامێدییێ، پەرستگەه و پەرستن).

**پشكا ئێكێ:**

**مژارا ئێكێ/ ناووسك و دێر و ڕەبەن وەك زاراڤ و پێناسە:**

ل دەمێ ڤەكۆلین و دویڤچوون لسەر شوینەوارێن كەڤنێن دەڤەرێ دهێتە كرن، گەلەك تشت دهێنە دیتن كۆ پێتڤی ب ڤەكۆلینێن زانستی هەیە ژ بۆ گەهەشتنا راستییێ، لەوما هەبوونا رێژەیەكا زۆرا ناووسكان و دێران ل دەڤەرا بەهدینان پێتڤی ب ڤەكۆلینێن هویر و كویر هەیە كا چ هەڤبەندی پێكڤە هەنە، لەوما بابەت ڤەكۆلینەكە ل دوور هەڤبەندییا ناووسكان ب پەرستگەهانڤە ب تایبەت ژی ب دێرانڤە، چونكە پێتڤییە بزانین كا ناووسك چنە؟ شێوازێ وان یێ چاوایە؟ چاوان هاتینە دروستكرن؟ كەنگی هاتینە دروستكرن؟ بۆ چ هاتینە بكارئینان؟

و دەڤەرا ئامێدییێ وەك میناك هاتە وەرگرتن، چونكە سەرەدانێن مەیدانی بۆ پیتر ژ (٣٠) گوندێن دەڤەرێ هاتینە كرن، ل دەڤەرا بەرواری بالا و سپنەیی و بەرێ گارێ، ئەو شوینەوارێن مینا (ناووسك، دویرگەهـ، دێر، مزگەفت، شكەفتێن شوینەواری)، هەمی هاتینە وێنەكرن و پیڤان شێوازێن دروستكرن و ئاڤاكرنا وان ب پیڤانێن هویربین زانیاری ل سەر هاتینە كومكرن، و ئەو هەمی د پەرتووكەكێدا ب ناڤێ (ژ شوینەوارێن دەڤەرا ئامێدییێ[1])دا هاتینە چاپكرن، لێ ب فەر هاتە زانین وەك ڤەكۆلینەك خۆسەر و هویر ل سەر هەڤبەندییا دناڤبەرا ناووسك و دێراندا بهێتە كرن، چونكە هەتا نهۆ ڤەكۆلینێن ب ڤی شێوەیی ل سەر شوینەوارێن دەڤەرێ نەهاتینە كرن.

شكەفت د قۆناغێن دیرۆكێدا:

ئەگەر چاڤخشاندنەك سەرێ بۆ شكەفتێن خۆرستی (سرۆشتی) بهێتە كرن، ئەوێن د پرانییا چیایاندا هەنە، دهێتە تێبینیكرن، ل قۆناغێن جودا جودا یێن ژیانێدا هاتینە بكارئینان وەك پەناگەهـ و جهێ ڤەحەویانێ و خۆ پاراستن ژ دوژمنان، ئانكو د سێ خالاندا دهێنە كومكرن، ئەوژی:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

**١. وەك پەناگەهـ (جهێ ڤەحەويانێ):**

هەر بۆ ميناك هەردوو شكەفتێن (شانەدەر و هەزارمێرد) ل كوردستانێ كو ب ئێكەمين جهێ ڤەحەويان و ژيانا مرۆڤێ ژ جۆرێ نياندرتالێ تێدا، كو كوردستان ب لاندكا شارستانييەتێ هاتييە ناڤكرن، چونكە ژ دەستپێكا پەيدابوونا مرۆڤی تاكو (١٠.٠٠٠) سالان ل بەری زايينی ژيان د ڤان شكەفتاندا دەستپێكربيە. هەر وەكو (زێباری و مايی) د پەرتووكا خودا دبێژن: ((دويڤچوويێن شينواران دووپاتی ل سەر وێ چەندێ كربيە، كو كوردستان هەر د چەرخێن كەڤندا مرۆڤ لێ ژيانە و ئاكنجيبووينە و ڤەكۆلينێن دەستپێكێ خۆياكرينە، كو شكەفت و جهێن نێزيكی رووبار و ژێدەرێن ئاڤێ ئەو جهبووينە هەر ژ چەرخێ بەری ێ كەڤن بووينە جهێ ژيارا مرۆڤان)) (٢٠١٢: ٢٨).

**٢. وەك جهێ خۆ پاراستن و ڤەشارتنێ ژ دوژمنان:**

هێرش و داگيركرنێن بەردەوامێن مرۆڤان ل سەر ئێك و دوو، وەل خەلكێ كربيە، بەرەڤ هندەك جهان برەڤن دا تێدا خۆ ژ هێرشێن دوژمنان بپارێزن، (لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ) (ئەلتەوبە/ ٥٧) ئانكو: (ئەگەر وان ئاسێگەهەك . كو تێدا هاتبانە پاراستن .، يان شكەفتەك . كۆ تێدا نەهاتبانە ديتن .، يان ژێر زەمينەك . كۆ چۆبانە تێدا . ديتبايە، دا ب لەز و بەز بەرێ خۆ دەنێ . ژ ترساندا.)(سگێری، ٢٠٠٢: ١٩٦). هەر بۆ ميناك: دەما كو (هەڤالێن شكەفتێ) دخواستن ژ بەر ستەم زۆردارييا شاهێن خۆ يێن ستەمكار برەڤن: (إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا) (ئەلكەهف/ ١٠) ئانكو: ((بێژە وان، دەمێ وان گەنج و لاوان خۆ گەهاندييە شكەفتێ، و وان گۆت: خودێ وۆ، تو دلۆڤانييەكێ ژ دەڤ خۆ ب مە ببە . ل ئاخرەتێ ل مە ببۆرە، و مە ئێمن بكە ژ نەياران...)) (سگێری، ٢٠٠٢: ٢٩٤). و ل جهەك دی د هەمان سورەت دا هاتييە: (وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى الْكَهْفِ...) (ئەلكەهف/ ١٦). ئانكو: (و گاڤا هەوە خۆ ژ وان و يێت ئەو شوينا خودێ د پەرێسن . ژ بوتان .، دوير ئێخست و خۆ ژێ دا پاش، ڤێجا خۆ بگەهيننە شكەفتێ...) (سگێری، ٢٠٠٢: ٢٩٥). هەر ديسان دەما كو قورەيشييان دخواستن پێغەمبەری (س) بكوژن، لێ پشتی ئەو ژ مەكەهێ دەركەفتی رەڤی، بەرەڤ شكەفتێ چوون: (...ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا...) (ئەلتەوبە/ ٤٠). ئانكو: (...وەختێ ئەو هەردوو د شكەفتێڤە بوون، دەمێ دگۆتە هەڤالێ خۆ . ئەبووبەكری . ب خەم نەكەڤە، نێ خودێ يێ دگەل مە...) (سگێری، ٢٠٠٢: ١٩٣).

**٣. وەك جهێ خەلوەت و پەرستنێ:**

شكەفت جهەك بوويە خودێ پەرێس بەرەڤ شكەفتا دچوون، ل وێرێ دگەل خودێ دكەفتنە د خەلوەتێدا، هەر وەكو موحەمەد پێغەمبەری (س) بەری شرۆشێ د چوو شكەفتا حەرائێ، هەر وەكو د ژێدەراندا هاتی: (دەما كو ژيێ وی بەرەڤ چل سالێڤە چوويی، ڤيانا بتنێ مانێ ل دەڤ پەيدابوو، كو هەر هەيام هەيام، بەرەڤ شكەفتا حەرائێ دچوو . شكەفتا حەرائێ دكەفتە چيايەكێ لایێ باشۆرێ رۆژئاڤایێ مەككەهێ .، و بتنێ ما د وێ شكەفتێدا، دكەفتە خەلوەتێ، و ب شەڤان پەرستن تێدا دكر، هندەك جار دەهـ شەڤان دما و هندەك جاران ژی هەيڤێ هەمييێ، و پاشی دا ڤەگەريتەڤ مالێ، بەلێ گەلەك ڤەنەدكێشا دا جارەكا دی چيتەڤ شكەفتا حەرائێ، و هۆسان هەتا

کو جارەکێ د شکەفتێدا د خەلوەتێدا بوو و سرۆش بۆ هاتە خوار) ((المباركفوري، (د س): ٦٠) و (البوطي، ١٩٩٠: ٦٤)). کو ل دویڤ هندەك ژێدەران دکەفتە (١٧ێ رەمەزانێ سالا چل و ئێکێ ژ بوونا وی، ٦ أغسطس ٦١٠ز) بوو) (الندوي، ١٩٨٩: ١١٦).

لێ وەکی خۆیا ل هەمی جهێن پێتڤی شکەفتێن خۆڕستی نەبووینە، ژ بۆ ڤەحەویانێ وەك پەناگەه، یان خۆ پاراستن و ڤەشارتنێ تێدا، یان ژ پۆ پەرستنێ و خەلوەتێ، لەوما مرۆڤی هزر د دروستکرنا شکەفتێن دەستکرد دا کرینە، ئەوژی کولانا کەڤران، کو ب ناڤێ (ناووسك . ناعوسك) هاتینە نیاسین، هەر وەکو د قورئانا پیرۆزدا ئاماژە ب وێ چەندێ کرییە، وەك تێدا هاتییە: (وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا...) (ئەلئەعراف: ٧٤). ئانكو: ((بيننه بيرا خۆ وەختێ هوين ئينايين و د ئەرديدا ئاكنجى كرين پشتى خودێ عێلا عاد بەر ئاتاف کری، ل دەشتێت وێ . هوین . قەسران ئاڤا دکەن و چیایان دکۆلن د کەنە خانی...)) (سگێری، ٢٠٠٢: ١٦٠).

**ناووسك وەك پێناسە:**

ئەگەر ئەم ل دویڤ هندەك ژێدەران بچین کا ناووسك چنە؟ دێ بینین هندەك پێناسەیێن کورت ژ لایێ ڤەکۆلەرانڤە داینێ، خودانێ پەرتووکا (تأريخ يوسف بوسنايا) هۆسان پێناسە دکەت: (پێکهاتییە ژ شکەفتێن د کەڤری کولاین و دەرێ وێ ژی کونەکا بچویکە) (بن كلدون، ١٩٨٣: ٣٨).

**پەڕستگەه:**

ل دەستپێکێ دا بزانین کا پەرستگەه (معبد) چ رامان ددەت، پاشی دێ پێناسا دێر و کنیشتەیان بەرچاڤ کەین، هەر وەك د فەرهەنگۆکا (پەرتووکا پیرۆزدا) هاتی هۆسان پەڕستگەه پێناسە دکەن:

((ئاڤاهیێ هەری گرنگێ جۆهیان بوو. سلێمان کو پێغەمبەر و پاشایێ ئیسرائیلیان بوو، پەڕستگەها ئێکێ ل باژێرێ ئورشەلیمێ ئاڤاکر. پەڕستگەه ل ئورشەلیمێ ب تنێ هەبوو. گەلێ ئیسرائیل داخواز و پەڕستنێن خۆ ل وێرێ دکرن و قوربانێن خۆ ل وێرێ سەرژێدکرن. ئەو پەڕستگەها سلێمانی ئاڤاکری، پشتی ٣٥٠ سالان ژ لایێ لەشکەرێ بابلیڤە هاتە وێرانکرن. ئەو پەڕستگەه ل سەر دەمێ عیسایێ مەسیح، هێرودێسێ مەزن ب ئاوایەکێ جوان چێکربوو. و ژ چوار پشکان پێکدهات: حەوشا دەرڤە، حەوشا ناڤخۆ، پیرۆزگەهـ و جهێ هەری پیرۆز. پەردەیەکا مەزن پیرۆزگەهـ و جهێ هەری پیرۆز ژێکجوداکرن. سەرۆك کاهن سالێ جارەکێ، پشتی کو قوربان دهاتنە سەرژێکرن، دچوو جهێ هەری پیرۆز. وی ل وێرێ، ژ بەر گۆنەهێن خۆ و ژ بەر گونەهێن مللەتێ خۆ ژی نڤێژ دکرن و لێبۆرینا گونەهان ژ خودێ دخواست. دەمێ عیسایێ مەسیح ل سەر خاچێ مری، ئەو پەردەیا دناڤبەرا پیرۆزگەهێ و جهێ هەری پیرۆز دا شەق بوو. ل سالا ٧٠ زایینی، لەشکەرێن ئیمپراتۆریا رۆمایێ پەڕستگەه داگیر و وێران کر و ژ هنگی هەتا ئەڤرۆ پەڕستگەه جارەکا دی نەهاتیە ئاڤاکرن. پەڕستگەها خودێ نوکە کومبوونا باوەرداران ب خۆیە)) (پەرتووکا پیرۆز: ٢٠١٩: فەرهەنگۆك، پیتا پ).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**دێر و کنیشتە:**

ڕەنگە هندەك پێناسەیێن هەڤگرتی بۆ دێران د ژێدەراندا هاتبن، هەر وەکی د هندەك ژێدەراندا ب ڤی شێوەیی پێناسە دکەن: (دێر: خانییەکە ڕەبەن پەرستنێ تێدا دکەن، و ئەو نە ل ناڤا باژێرێن مەزنن، بەلکو ل دەشت و سەرێن چیانە، ئەگەر ئەو ل باژێران بن دبێژنێ کنیشتە یان بیعە، و هندەکان هۆسان ژێك جوداکرنە و دبێژن: هندیکە کنیشتەنە یێن جوهیانە، و بیعە یێن نەسارییانە؛ و جەوهەری دبێژیت: دێرێن نەساریا ئەصلێ وان ژ خانی (دار) هاتییە، کو کوما وان دبیتە (أديار)، و دێرانی خودانێ دێرێ) (الحموي، ١٩٧٧: ٤٥٩/٢). و (دێر ل نك نەساریا تایبەتە ب وان کەسێن ب شەڤ و ڕۆژ تێدا دمینن ژ بۆ پەرستنێ، کنیشتە ئەو جهە یێ هەمی بۆ کرنا نڤێژان لێ خڕڤەدبن) (حداد، ٢٠١٥: ١١٤/١). و (دێر مەسترە ژ کنیشتێ ژ لایێ قەلافەتێڤە، بەلێ هندیکە کنیشتەنە مەسیحی وان بکاردئینن ژ بۆ ڕێورەسمێن خۆ یێن ئایینی ل باژێران) (بنگلی، ٢٠٠٥: ٢٢٨ - ٢٢٩). و خودانێ (موسوعة التراث القروي) دبێژیت: (ئەو دکەڤنە هندەك جهێن ئاسێ کو ب زەحمەت بشێێن بگەهنێ یان هێرشان بکەنە سەر بەلکو ڕێکەکا ئاخێ یا ب کەند و کور گەلەك تەنگ دچیتێ. ئەو ژ بەرێن دارشتی هاتینە ئاڤاکرن، لسەر هندەك شەنگستێن کەڤران لسەر چیایێن مەزن، کو وەل وان کرنە ئەو گەلەك د موکوم بن، و پاراستنا وان دکەن کو ب زەحمەت مرۆڤ و گیانەوەرێن دەهبە بگەهنێ) (ڕیحانا، ٢٠٠٤: ٩١/١).

ئەگەر ئەم چاڤخشاندنەکێ بۆ وان دێران بکەین یێن ل دەڤەرێن مە هاتینە ئاڤاکرن، گەلەك ژ وان ل دویڤ وان سەخلەتانە ئەوێن د ڤان ژێدەراندا بەحسێ وان کرین، ژ وان: (دێرە سۆرێ، کو دکەڤیتە دناڤبەرا گۆندێ ئینشکێ و گۆندێ ئەرەدنا ژۆریدا، هەر وەسان دێرا باگویلێ دکەڤیتە سەرێ چیایێ مەتینا دناڤبەرا ژۆریا گۆندێ ئینشکێ و ژۆریا گۆندێ ئیسفکا، هەر وەسا دێرا گۆندێ دیهێ کو دکەڤیتە ڕۆژئاڤایێ ژۆرییا گۆندێ دیهێ لسەرێ چیایی[٢]، یان دێرا مار زەیایی کو دکەڤیتە ڕۆژئاڤایێ گۆندێ گەرەگۆ[٣]، ل سەرێ چیایێ گارەیی، و دێرا دێرەشێ کو دکەڤیتە ددەرێ گەلیدا لێ ل بلنداهییا پیتر ژ (١٥٠م) ژ عەردی، کو (٣٦٠) پەیسك د کەڤری هاتینە کولان، تا دگەهییە جهێ دێرێ[٤]، و..هتد)، کو ئەڤە هندەك ژ وان نموونانە یێن بۆ مە دوویات دکەت کۆ دێر ل سەرێ چیا و جهێن ئاسێ هاتینە ئاڤاکرن.

**ڕەبەن و خەلوەت:**

بتنێ مان ژ بۆ پەرستنێ (خلوة) ڕەنگە ژ نیشانێن کەسێن خودێ ترس و خودێ پەرێس بیت، ل سەر دەمێن جودا جودا یێن دیرۆکێدا هاتبیتە دیتن، نەخاسمە پشتی پەیدابوونا تاك پەرستنێ بۆ خوداوەندەکی یان خودایەکێ بتنێ، لەوما گەلەك کەس ژ بۆ مانەڤەیا بتنێ ژ بۆ پەرستنێ، گەلەك ڕێك گرتینە بەر، ژ وان ڕێکان، دەرکەفتن بەرەف بیابانێ یان شکەفتاندا، هەر وەك د (موسوعة الدیارات) هاتییە: (زڤرین بۆ بیابانێ ئانکو بتنێ مان د کوخەکێڤە، ڤەدەر، داکو هەڤبەندیا وی بتنێ دگەل خودایدا بیت!! کو ل وی دەمی پیتر دێ ئێمناهییێ بدەستڤە ئینیت، کو ژ مرۆڤ و هەر تشتەکی و ژ دەنگان خۆ دویردکەت و ب ئاشتی ئەو دژیت و خۆ زیندان دکەتن د پەرستگەهەکێ یان کولکەکیڤە) (حداد، ٢٠١٥: ١٦/١). و ڕەبەن (رهبانیة): ژ ژێدەرێ (راهب)

هاتییە، و ناڤێ رەهبانیەت هەر وەکو د قورئانا پیرۆزدا هاتی: (ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَى آثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ) (ئەلحەدید: ٢٧). ئانکو: ((پاشی مە پێغەمبەرێت خۆ د دویف وانڕا هنارتن، و پشتی وان مە عیسایێ کۆڕێ مەریەمێ هنارت و مە ئنجیل دایێ و مە نەرمی و دلۆڤانی ئێخستە د دلێت واندا، ئەوێت باوەری پێ ئینایین و ب دویف کەڤتین، و ڕەبەناتیيا ئەو ل سەر دچن، مە بۆ وان نەنڤیسیبوو، ئەوان ژ نك خۆ ب ئنیەتا ڕازیبوونا خودێ چێ کربوو، دگەل هندێ ژی وەك پێدڤی ب جه نەئینان، و ژ وان ئەوێت باوەری ئینایین مە خەلاتێ وان دایێ، و گەلەك ژ وان ژ ڕێکا ڕاست دەرکفتن و خراب بوون)) (سگێری، ٢٠٠٢: ٥٤١). هەر ل دوور پەیڤا (رەهبانییەت) کا ژ کویڤە هاتییە و چو ڕامان ددەت، (إبن کثیر) هۆسان ئایەتا زۆری شرۆڤەدکەتن دبێژیت: ((وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ)، ئانکۆ: مللەتێ نەسارا رەهبانییەت یێ ئینایە دناڤ دینێ خودا، نەکو مە ل سەر وان سەپاندییە و دورستکرییە، بەلکو وان ژ نك خۆ کرییە، ب مەرەما ڕازیبوونا خودێ) (د س: ٤٧٧/٣).

**کەنگی رەبەن پەیدابوون:**

ل دویف ئەو دیتنێن بۆ پەیدابوونا (ڕەبەن . رهبان)انان هاتینە خۆیاکرن هەر وەکو د پەرتووکا (موسوعة عالم الأديان)دا هاتی، هۆسان زاراڤێ (رهبان) ددەتە پێناسەکرن: (ئەو ڕەبەنێن کو بووینە بنەمایێ . رەهبەنیێ . و . ڕەهبانییێ . ئەون ئەوێن دهێنە نیاسین ب(رهبان)، کو ژ ڕه و ڕیشالێن (رَهب) هاتییە ب ڕامانا ترس و لەرز و دوودلی و ڕەڤین، و (رَهب) د عەرەبیدا: ترسییا، ڤەلەرزی، و پاشی ئەڤ پەیڤە بوو (راهب). و پشتی کو رەبەن (ژ نێر و مێیان) پەیدابووین، ئەڤ پەیڤە دناڤ زمانێ عەرەبی ژی پەیدابوو، کو ب ڕامانا: ئەوێ دترسیت دهێت. و پاشی بۆ وان کەسان ژی هاتە گۆتن، ئەوێن خۆ ژ خەلکی ڤەدەر . منعزل . دکەن و بەرەڤ دێران چووین ژ بۆ مەرەما پەرستنێ. و رهبان ب ڕامانا: هەرزەکاری دترسێ ژی دهێت) (مجموعة من الباحثين، ٢٠٠٨ : ١٨١/٨ . ١٨٢).

ئەگەر میناکەکێ ژ وان میناکان وەرگرین یێن ددەنە خۆیاکرن کا چاوان ڕەبەن ژ دێران دەرکەفتینە و بەرەڤ هندەك جهێن ڤەدەر (منعزل) ڤە چووینە ژ بۆ پەرستنی و خۆپاراستنێ ژ گۆنەهان، هەر وەکو خودانێ پەرتووکا (الرؤساء) ئاماژێ ب وان کەسان دکەتن یێن ددێرانڤە تۆشی هندەك گۆنەهان بووین و ژ پەرستنێ دویرکەڤتین دبێژیت: (ئەو ل وی دەمێ ژ دێران دویرکەفتین و هەڤژینێن خۆ هێلاین ئەوێن کو شەیتانی ژ بەر وان ئەو دسەردا برین، و ئەو بەرەڤ فوغونتا (فوغیثا) ڤە چووین، کو ئەو جهەکە زۆرێ بێدەنگە و ڕەحەتە، ئەو بۆ دەمەکێ درێژ ماینە ل وێرێ و وان خۆ ژ وان گۆنەهان شویشتن ئەوێن تۆشبووینێ، ئەوژی ب ڕۆندك باراندنێ و خەمێ و لومەکرنا وژدانا خۆ و شکاندنا دلێن خۆ، ئەو جارەکا دی سەرژنوی ساخبوونە ڤە پشتی مرین، و ئەو بوونە ڤە کەسێن قەنج پشتی کو بووینە کەسێن لاواز و شکەستی، و کەسێن خۆ ڕاگر پشتی دوو دل بووین، و بووینە مالخۆ پشتی کو بووینە بیانی، و کەسین پیرۆز (قدیس) و خەملاندی پشتی کو بووینە کەسێن دەرکری و دویرکەفتی، پشتی کو دناڤ پویچاتییێدا بەرزەبووین، ژ نوی مێشکێن وان پاقژ بوون هێزا هزرێن وان نوی بوو ڤە ئەوێن هاتینە هەرڤاندن، ئەو ژ نوی وەك کەسێن نوی و


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بهێزەكا ئاڤاكری ژ دەروون و لەشیڤە، ئەوژی ب كاری و هزركرنێ، كو ئەو دوو هێزێن تەمامكەرێن ئێكن ژ بۆ رازیبوونا خودایێ هەموویان و ڕیزگرتنا نێزیكان) (المرج، ١٩٦٦: ٣٨). و وەسا دیارە هەر ژێدەرێن مەسیحییەتێ بخۆژی د هەڤڕانە، دگەل وێ چەندێ كو (رەهبانییەت) ئێك وان داهێنان (بدعة)تانە یێن هندەكان دروستكرین و ئینانینە دناڤ مەسیحییەتێدا، هەر وەكی خودانێ (تأريخ كلد و آثور) دبێژیت: (هندیكە ئەون یێن دوعاكەر و نڤێژكەرن دناڤ دێران و رەبەناندا خۆیابوون، كو ئەو ل چەرخێ چارێ ل دەوروبەرێن ئورهایێ خۆیابووین، و داهێنەرێ وان شەمعوون و هرمس و داد و ئوسابیوس بوون، كو وان خۆ ب رێكا ئەنطونیوسی دانە خۆیاكرن، كو ئەو بابێ ڕەبەنانن. لێ دناڤا واندا هەڤدژی وێ چەندێ بووینە. كو وان وەسا خۆ ددانە خۆیاكرن كو ئەو ب دوعا و نڤێژێن گەهەشتینە پلەیێن روحانییان و روحا قودسی خۆ نیشا وان ددەتن و دگەل واندا د ئاخڤیتن) (أدي شير، ٢٠٠٧: ٢٥٠).

و هەر ژ وان ئیدیومێن بۆ رەبەنان هاتینە بكارئینان: (دێری . الديريون . : ژیانەكا هەڤپشكدا دژین، ئانكو ددێرانڤە و ل دویڤ هندەك یاسایێن دەستنیشانكری. و هەروەسا تاكپەرستی: ئەو ل سەر نموونەیا مەسیحێ ئێكانەنە، و ئەڤ پەیڤە هاتییە وەرگرتن ژ پەیڤەكا سریانی ب ڕامانا تاك و تەنیایە، ئانكو تاكپەرستە د هەمی تشتاندا، ئەو د هندەك كولكاندا یان شكەفتێن هەلكولایی دكەڤراندا دمینن. و ئەو دهێنە دێران ل هندەك دەمێن دیاركری (شەمبی و ئێكشەمب)ان. و هەتا نهۆ ژی چیایێ ئەلكویش و دەڤەرا دهۆكێ و زاخۆ ل عێراقێ، یا پڕە ژ سەدان ناووسكان . صوامع . ئەوێن هەلكولاین بشێوەكێ هۆنەری دكەڤراندا. و ئەو دهێنە هژمارتن ب تاكپەرستییان) (حداد، ٢٠١٥: ١٢١/١).

بۆچی ئەڤ ترسە ل نك هندەكان پەیدابوو، هەتا ب وی ناڤێ (راهب) بهێنە ناڤكرن؟!

ل دوور ئاڤاكرنا دێر و كنیشتان و رێورەسمێن خۆ یێن ئایینی (بنگلی) دبێژیت: (و مەسیحی خودان ئازادییەكا ڕەهانە د ئاڤاكرن و دێر و كنیشتەیاندا ژ بۆ پەرستنێ و وەرگرتنا فێربوونا دینێ خۆ و بجهئینانا رێورەسمێن باوەرییێن خۆ وەك هەر خودان ئایینەكێ دی) (٢٠٠٥: ٢٢٩). لێ لڤێرە دڤێت ژبیر نەكەین، هەر ئایینەك ل قۆناغەكێ یان دەمەكی كەفتییە بن هێرشێن داگیركەران، لاوازكرنا ئایین و رێورەسمێن وان، ئێك ژ وان ژی مەسیحینە. كو نوكە دەما بەرسڤا پسیارا ل سەری ددەین و دبێژین: دیسان هەر ژ بۆ بەرسڤا پسیارا ژۆری هەر دێ ل سەر چەند خالەكان ڕاوەستین، ئەوێن بووینە هۆكارێ ترس و ڕەڤین بۆ جهێن ئاسێ و نەپەنی، ئاڤاكرنا دێران ل جهێن بلند و ئاسێ و نەپەنی، هەر وەكو (حداد) دەبارەیی ئاڤاكرنا دێران ل جهێن بلند بەحسێ دێرا (ئینشكێ) دكەت، پاشی ئاڤاكرنا وێ ل سەرێ چیایی (كو دبیت بەحسێ دێرەسۆرێ ل ڕۆژئاڤایێ ئینشكێ بیت ب دویراتییا (١كم)، یان دێرِا باگویلێ كو دكەڤیتە باكۆرێ ڕۆژهەلاتێ ئینشكێ ب دویراتییا (٢كم) ل سەرێ چیایێ مەتینا)، هەروەكو دبێژیت: (پاشی ڕەبان عەبد یەشوعێ ئەصلێ وی ژ دەڤەرا داسن و ل سەر دەستێ رەبان كۆڕێ یەلدایی ل دێرا باصیارێ . ل گۆندێ زێوا شێخ پیرامویس . دەرس وەرگرتینە... پاشی ژ وێرێ بەرەڤ دێرا قدیس رەبان یووسڤی ل ئینشكێ دچیت، بەلێ ژبەركو دێر ل جهەكێ نزم بوو، یا ئێمن نەبوو. ئەوی ڤەگۆهاستە جهەكێ گەلەك بلند، كو دكەڤتە هنداڤ هەمی دەڤەرێ، داكو خەلكێ گۆندێن دەوروبەران گول دەنگێ هەوارا وان ببیت، ل دەمێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

هێرشەکا کەسێن شەرخواز و خرابکار ب سەر واندا دهێن، دا د هانا وان بچن) (٢٠١٥: ٨/٣٣٠٠). و دیسان چوونا بەرەڤ شکەفت و دروستکرنا ناووسکان، ئەوژی بڤی ڕەنگی:

**ئێك/ پشتی پەیدابوونا مەسەبییەت (مذهبية)ێ دناڤ مەسیحییەتێ بخۆ دا:**

کو ئەڤ چەندا هە د(موسوعة عالم الأديان)دا هاتییە ڕۆهنکرن، کا چاوان پشتی پەیدابوونا مەسەب (مذاهب)ان دناڤ مەسیحییەتێدا، بوویە ئەگەرێ ڕەڤین ژ ئێك و دوو بەرەڤ جهێن بلند و ئاسێ و نەپەنی، کۆ ناووسك ل وی سەردەمی هاتینە دروستکرن، ئەوژی پشتی هەڤڕکانا مەسەبییەتێ (مذهبية)ێ دناڤ ئایینێ مەسیحیەتێ، هەروەك هاتییە: (هەر ل دەستپێکا بەلاڤبوونا مەسیحییەتێ، ترس ئێخستنە دلێ خودان باوەرێن باوەرییەکا راستەقینە ب مەسیحی ئینایێن، و سێ هەلبژارتن دانانە بەر وان: یان مرن، یان بێ باوەری ب مەسیحی، یان رەڤین بەرەڤ چول و ڕێلان و هەلبژارتنا وێ ل سەر هەردوو هەلبژارتیێن دی، ئەوژی ژیانا نەخۆشی زوهدێ بباوەری پاراستنێ ل سەر وان) (مجموعة من الباحثين، ٢٠٠٨: ٨/١٨١). (و دویر نینە کو ل چەرخێ دوویێ و هێڤە ببیتە کنیشتەیا موسیحییان، نەخاسمە ل وی دەمێ کو مەسیحی ل بن زۆلم و ستەما دینی یا ساسانییان، کو ل وی دەمی مرۆڤێن دیندار جهێن بلند و دویر و ئاسێ دکرنە جهێن پەڕستنێ، کو ئەو جهە ناڤکرینە ب (النساك المضطهدون)، کو وان صەومەعە کرینە جهێ خلوەتا خۆ یا دینی) (برادوستی و....، ٢٠٢١: ٢٨١).

**دوو/ هێرشا عەزدولدەولەی (سالا ٣٦٧مش/٩٧٧ز) بۆ سەر دەڤەرێ:**

خودانێ پەرتووکا (وەلاتێ هەکارێ) ل دویڤ هندەك ژێدەران ئەگەرێ ڤێ هێرشێ بۆ سەر ویلایەتا مویسل دزڤرینیت بۆ: ((هەروەك ژێدەرێن دیرۆکی ئاماژێ پێدکەن ئەو بوو کو ئەبوتەغلەبێ میرێ موسلێ و کەلایێن هەکارێ ل سالا (٣٦٧مش/٩٧٧ز) پشتەڤانی ل عیزولدەولەیێ بەختیاری کری دژی پسمامێ وی عەزدولدەولەیێ بووەیهی)) (هرۆری، ٢٠١٠: ١١٦). پاشی ل جهەك دی دبێژیت: ((هەژییە بێژین دەمێ عەزدولدەولەیێ بووەیهی دەست ب سەر وەلاتێ هەکارێ دا گرتی، کارەکێ سرۆشتی یە کو دێر و کەنیسە ژی ژ ڤێ وێرانکاریێ رزگار نەبوون)) (هرۆری، ٢٠١٠: ١٢٦). و رەبان یوحەنا کۆڕێ کەلدونی یێ پێزانین دەربارەی مامۆستایێ خوە یوسف بوسنایا کومکرین، هندەك گۆتنین مامۆستایێ خۆ کومکرینە، کو ئاماژەکرنە ب هێرشکرنا سەر دەڤەرێ و خرابکرن و کاڤلکرنا دێر و کنیشتە و گۆندان، کو تێدا هاتییە: (یووسڤی خۆزییێن مرنا خۆ دخواستن داکو وێ وێرانکاریێ ب چاڤێن خۆ نەبینیت، هەر وەکی گۆتی: بەلێ ئەڤ غەزەبا باری و خودێ دزانیت دێ ئەنجام د چاوابن، و من داخوازا ژ مەسیحی کری من ژێ دویر بکەت دا ب چاڤێن خۆ ژێ نەبینم، چ وێرانکاری ب سەرێ خەلکی و دێراندا دێ هێت) (بن کەلدون، ١٩٨٣: ٥ . ٦). و بەری هێرشا ناڤبڕی دەست پێ بکەت، یووسف بۆسنایی شاگردێ خۆ (بن کەلدون) ب وێ کارەساتێ ئاگەهدارکرییە: (رەبان یووسڤی بەری دەمەکی ژ رویدانێ ئەز ل سەر وێ وێرانکارییا وەلاتێ داسن ئاگەهدار کرم... خەلکێ وێ ژێك بەلاڤەبوو و هند ژێ هاتنە کوشتن کو نەهێنە هژمارتن) (بن کلدون، ١٩٨٣: ٥٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**سێ/ ل سەر دەمێ ئۆسمانی:**

ژ لایەکێ دیڤە وەك خۆیا پشتی هاتنا ئیسلامێ نەخاسمە ل قۆناغێن دویماهیێ وەك ل سەر دەمێ ئۆسمانی وەسا خۆیایە کو گڤاشتن و مەترسی زۆر کەفتینە سەر دێران و پەرستگاهێن مەسیحییەتی، هەتا کو ئەڤ مەترسییە ل سەر دێران و پەرستگاهێن مەسیحییەتێ گەهەشتینە لبنانێ ژی، هەر وەك (رەیحانا) ئاماژێ ب ڤێ چەندێ ددەت: (دێ گەلەك دێرێن کەڤنێن شوینەواری بینی، کو د بەلاڤەنە ل سەر گۆپیتکێن بلند، یان د گەلیێن کویردا، کو گەهەشتنا دەڤ وان یا بزەحمەتە، کو ئەڤێن هۆسان پاراستنا وان یا بساناهییە. ژبەرکو بەردەوام مەترسی ل سەر جڤاکا مەسیحی هەبوون، ژ لایێ ئەوێن دژایەتییا وان دکرن، هەتا کو دویماهییا دەستهەلاتدارییا ئۆسمانی ژی یا بەردەوام بوو. ئەڤ مەترسییا هە بوویە هۆکارێ ئاڤاکرنا دێران ل جهێن ئاسێ کو بزەحمەت هێرش بگەهنە وان جهان، کو ب چەکەکێ کێم و هێزەکا کێم بکارن بەرەڤانییێ ژێ بکەن. کو ئمبراتورییا ئۆسمانی کونترۆل ل سەر کریبە، کو وان گرۆپێن مەسیحی ب (أهل ذمة) حسابکرن و ئەڤە بۆ هۆکار هندەك دەمان تۆشی تەعدایی و هێرشان ببن و رێگری ل ئازادییا وان بهێتە گرتن) (٢٠٠٤: ٨٩/١ . ٩٠).

کو ئەم دکارین بێژین ئەڤە هندەك هۆکارن ژ کومەکا هۆکاران، کو دێر ل جهێن بلند و ئاسێ بهێنە ئاڤاکرن، هەر وەکو (رەیحانا) ژی ڤێ چەندێ دسەلمنیت: (ئەو دکەڤنە جهێن ئاسێگەهـ و بزەحمەت بگەهنە وێرێ یان هێرشا بکەنە سەر، چونکە هندەك رێکێن ئاخێ یێن زۆر تەنگ و ب چەپ و چیر دچنە وان دێران) (٢٠٠٤: ٩١/١). لەوما نەچاربووینە کو دێرا ل جهێن بلند و ئاسێ ب تایبەت ل سەرێ چیا و گەلیێن ئاسێدا ئاڤا بکەن، داکو خۆ ژ وان کەسان بپارێزن ئەوێن ململانا مەسەبی پەیداکرین و بزاڤکرین، ژ تاکپەرستییێ بەرەڤ پیتر ژ خودایەکی . شرکێ . ببەن و هەڤالان بۆ خودێ دورستبکەن و عیسایی بکەنە کوڕێ خودێ، هەروەکی د پێناسێن بۆریدا ئەڤ چەندا هە خۆیادبیت. و هەر ئەڤە هندەك هۆکارن بووینە پالدەر (کو ئەو ڤان دێران ب رەخ شکەفتێن خۆرستیڤە ئاڤا بکەن، یان کەڤران بکولن، ژ بۆ پاراستنا دێران ل دەمێن پێدڤی) (ریحانا، ٢٠٠٤: ٩٢/١).

زاراڤێن بۆ ناووسکان هاتینە بکارئینان:

د پەرتووکا (موسوعة الديارات) هاتییە: (هندیکە رەبەنن ل دەستپێکێ ل هندەك جهێن سرۆشتیدا دژیان، وەکو: شکەفت، کونکەڤر، تیکەکەڤر ل چیایان، پاشی هندەك جهێن ڤەحەویانی بۆ خۆ دروستکرن، کو چەندین ناڤان دبێژنێ: المغارة، كوبا، الكهف، الكوخ، الخُص، الكرح، القوس، التامور، المنسك . المنسكة، المحبس، المحجر، قبة، القصر، العمود، القائم، صومعة الراهب، العراء، الصومعة، القلاية، الدير، العمر و...الخ)) (حداد، ٢٠١٥: ١٢٣/١ . ١٢٤).

**مژارا دوویێ/ چەند گریمانەك ل دوور کارئینانا ناووسکان د قۆناغێن جودا دا:**

دەما کو ئەم ل هندەك ژێدەران ڤەدگەرین یێن کەڤن، چەند گریمانەك هەنە ل دوور ناووسك و شێوازێ ناووسکان بۆ چەند مەرەمان هاتینە کولان، هەرئەوژی ئەڤ گریمانەنە:

**گریمانا (١)ێ، ژ بۆ ڤەحەویانێ:**



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەگەر ئەم ڤێ پێناسا ل ژۆری ل دوور ناووسکان هەڤبەرکەین دگەل هندەک تێکستێن د قورئانا پیرۆزدا هاتین، کۆ د چەندین ئایەتاندا ئاماژە دایە ناووسکان، کو دکەڤران دهێنە کولان وەك شکەفتێن دەستکرد، کۆ نوکە دبێژنە وان (ناووسك) یان (ناعوسك)، هەروەکی ڤان ئایەتان: (وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ) (ئەلحجر: ٨٢). ئانکو: ((وان خانیییێت ئێمن بۆ خۆ دچیایان دکولان . دا نە هەرفن و دویری دزیکەر و دوژمنان بن، یان ل دویڤ هزرکرنا وان دا ژ ئیزایا خودێ دئێمن بن .)) (سگێری، ٢٠٠٢: ٢٦٦). و ل جهەك دی هاتیە: (وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ) (ئەلشوعەرا: ١٤٩). ئانکو: ((هوین . ب هۆستایی . خانی یێت بەرفرەهـ دچیایاندا دکۆلن)) (سگێری، ٢٠٠٢: ٣٧٣). کو لڤێرە وەسا خۆیادبیت، هزرا کولانا ناووسکان د ناڤ کەڤراندا ڤەدگەریتەڤە بۆ پشتی وان چیرۆکێن پێغەمبەران ئەوێن دناڤ پەرتووکێن ئاسمانیدا هاتینە ڤەگێران، هەر وەکی د قورئانا پیرۆزدا چیرۆکا عێلێ . عاد. ی هاتییە ڤەگێران، وەکی دفەرمووت: (وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ...) (ئەلئەعراف: ٧٤). ئانکو: ((بیننە بیرا خۆ وەختێ هوین ئینایین و د ئەردیدا ئاکنجی کرین پشتی خودێ عێلا عاد بەر ئاتاف کری، ل دەشتێت وێ . هوین . قەسران ئاڤا دکەن و چیایان دکۆلن د کەنە خانی...)) (سگێری، ٢٠٠٢: ١٦٠).

**گریمانا (٢)ێ، ژ بۆ ڤەشارتنا مرییان دناڤدا:**

ل سەر دەمێ فینیقییا وەك گۆڕ هاتینە بکارئینان، هەر وەکو د ژێدەرەکیدا هاتییە: (گەلەك ژ گۆڕێن فینیقی هاتنە دیتن ل بەیروتێ و چیایێ صەیدا و صور، و نەخاسم ل عمریت، باشۆرێ ئەرواد، هەمی ژی د کەڤری هاتینە کولان، دگەل ڤەشارتنا مریێن خۆ د وان جهاندا، تشتێن وانێن بهاگران . زێر و زینەت . ێن وان دگەلدا دڤەشارتن، ژ بەر باوەریا وان کۆ پشتی مرنێ ژیانەکا دی هەیە، بەلێ ئەو گۆڕ دهاتنە دزین، ژ بەر وێ چەندێ دکێم مفا بوون بۆ زانستی) (مجموعة باحثين، ٢٠٠٨: ١٤٠/١). و (د عێراقا کەڤندا) هۆسان مری هاتینە ڤەشارتن: (کەلەخ دهاتنە ڤەشارتن د تابویتاندا یان ناووسکاندا یان د گۆراندا، و ناووسکێن شاهان زۆر د مەزن بوون، هەر بۆ نموونە ناووسکا شاهێ ئاشۆری ئاشۆر ناسربانیبالێ دوویێ ژ کەڤرێ Dolerite . کو ئەو ژ کەڤرێن ئاگرینەنە . یە و قەلافەتێ ناووسکێ (٣٥٠ × ١٨٠ × ١٨٠سم) دگەل قەپاغەکی ژ کەڤرێ بورکانی Dolerite ستویراتیبیا وی نێزیکی (١٥سم) بوون. و شاه و تەخا بلند ژ جڤاکی مریێن خۆ د ژۆرێن بشێوێ قوبە ل بن عەردێ خانی و کوچکاندا دڤەشارتن، لێ خەلکێ هەژار وان ڤەشارتنەکا تایبەتا سادە هەبوون، کو وان مریێن خۆ د گۆرێن خێزانی یێن پاراستیدا دڤەشارتن...) (الأسود، ٢٠١٢: ٢١٣).

**گریمانا (٣)یێ، وەك جهێ زێرەڤانییێ:**

ڕەنگە هندەك بۆچوون بۆ هندێ دچن، کو ناووسك هاتینە دروستکرن، کو تێدا زێرەڤانی و چاڤدێری و بەرەڤانیێ ژ دێران بکەن، هەر وەك (رەیحانا) بۆ هندێ دچیت، دەما دبێژیت: (دێر ب ڕەخ شکەفت و کونکەڤرێن خۆڕستی و یێن کولاین د کەڤراندا ل گەلیێن کویر و ئاسێدا هاتینە ئاڤاکرن ژ بۆ بەرەڤانیکرنێ ژ دێران ل دەمێن پێدڤی) (٢٠٠٤: ٩٢/١). و (د. بێوار خنسی) دەربارەی ناووسکا دبێژیت: (گەلەك ژ جهێن شوینەوارێن (ناووسك)ا ل دەوروبەرێن سەنحاریب ل خنسێ هەنە، و

پڕانیبا وان جهان خالێن چاڤدێری و زێرەڤانیێ بووینە ل سەر جهێ سەنحاریب ل خنسێ. و دیارترین جهێن شوینەواری هندەك ژۆرێن كولاینە د كەڤران ل ڤان جهان: (گەلی ناووسكێ) باشۆرێ خنسێ، گەلییێ شینۆی، گۆندێ هارینا، گەلییێ ئاڤریڤا، گەلییێ مویسەكا، گەلییێ مكێرس، گۆندێ مەلكێشان). هەر د هەمان ژێدەریدا ل جهەك دی گۆتییە: (ناووسكەكا دوو دەرگەهی هەیە، ئێك ژ وان بشێوێ سێگۆشەییە، ئەڤ ناووسكە دكەڤیتە لایێ رۆژهەلاتێ گەلی، ل سەر جهەكێ بلند، دبیت ئەو یێ تایبەت بیت ب زێرەڤانی و چاڤدێریا گەلی بیت) (خنسی، د.س: ٢٩).

**گریمانا (٤)ێ، وەك جهێ پەرستنێ:**

چێدبیت هندەك ژ ڤان شكەفتێن د كەڤران هاتینە كولان نە ناووسك بن، بەلكو جۆرەكێ دی بیت ب ناڤێ (دوخمە)، هەر وەكو شوینوارناس (كوڤان احسان یاسین) ب ڤێ شێوەی بەحسێ وان دكەت: (ل دویڤ هندەك ژێدەران بۆ وێ چەندێ دچن كو بۆ سەردەمێن بەراهیێن مەسیحی دزڤرنەڤە، دیسان ستایلێ دروستكرنا . دۆخما . یان ئەو جهێ دیندار و پیرەكێن زەرەدەشتییا ئایین ب ئاگری تێدا ئەنجامدا، ئەڤ ڕەنگە بوو، لێ ل ناڤەراستێ چالەك هەبوو خۆلی تێدا دهاتە پاراستن، ئەگەر ل ڤێرە پرسیارەك بهێتە كرن... ئایا ئەڤ ناووسكە بۆ چ دهاتنە بكارئینان؟ بەرسڤ ل دەما پیرەك و ڕەبەن و ئاییندارێن مەسیحی ل ژێر كونترۆلا ئایینی دهاتنە ئەڤان جها، دا بشێێن ب ئازادی پێرابوون و بیرەوەرییێن ئایینی ئەنجام بدەن)(یاسین، ٢٠١٠: ١٨). د ژێدەرەكێ دیدا ل دوور ناووسكێن (خنسێ) وەسا خۆیادكەت، كو بۆ پەرستنێ هاتینە بكارئینان، تێدا هاتییە: هەلكولانێن خنسێ ژ جوانترین شوینەوارێن ئاشۆری یێن كەڤنن ل دەڤەرا بەهدینان، كو هندەك ژ وان ل جهێن زۆر بلند هاتینە كولان، كو ژ لایێ هندەك كەسانێن زۆر شارەزا د هەلكولاناندا هاتینە دروستكرن، كو ڤەدگەڕن بۆ سەردەمێ شاه سەنحاریبێ ئاشۆری ل سالا (٦٩١ب ز). كو ل ڤان چەرخێن دویماهییێ هاتینە بكارئینان وەك پەرستگەه (صەومەع) ژ لایێ ڕەبەنانڤە. (دون أسم، ٢٠٠٥: ١١٠ . ١١٢).

**(پشكا دوویێ)**

**مژارا ئێكێ/ جۆرێن ناووسكان ژ لایێ نەخشەسازیڤە:**

د پەرتووكا خودا ب ناڤێ (ژ شوینەوارێن دەڤەرا ئامێدییێ) بەحسێ شوینەوارێن ناووسكێن چەندین گۆندان كرینە، ئەوژی پشتی (سەرەدانێن مەیدانی[٥]) بۆ وان هەمی جهان هاتینە كرن و هەمی ژی ب پیڤان و چاوانییا ئەندازەیا كولانا وان، پشتی وان هەمی سەرەدانا (پێنج) جۆرێن ناووسكان ل وان جهێن سەرەدان بۆ هاتینە كرن هاتینە دیتن، ئەوژی:

**ئێك/ ئێك تەختی:** ئەڤ جۆرە تنێ ئێك تەخت تێدا هەیە و ب رەخڤە پەنجەركەك یان وەك تەقچەكەكی تێدا هەیە ژ بۆ دانا تشتان تێدا، دەرێ ڤان ناووسكان یێ مەزنە ل دویڤ درێژیا تەختی، وەكی ناووسكا گۆندێ (ئەدنێ) و دناڤبەرا گۆندێ (چەلكێ و كێستە)دا و باكۆرێ ڕۆژهەلاتێ كومەلگەها بێگۆڤا، و ناووسكێن گۆندێ بازێ ل دەڤەرا بەرواری بالا. (سەرەدانێن مەیدانی، ل ٢٠١٣/٦/١٧ و ٢٠١٣/١١/٤). (**بنێڕە: شكلێ ژمارە (١)**).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

**دوو/** دوو تەختی: ل هندەك جهان دێ بینی ناووسك هاتینە كولان ب هەمان ستایل لێ دوو تەخت تێدا هەنە كو دوو كەس دناڤدا دهاتنە ڤەحەواندن و كارێن پەرستنێ دكرن، وەكی ناووسكێن: گۆندێن هرۆرێ، دیهێ، ئەدنێ، دەرگەلكا سەیدا، مایێ، ئاڤارێ چەلكێ، سەرەرۆ، بازێ و بێلویزانێ ل دەڤەرا بەرواری بالا. و ناووسكێن گۆندێن دیهێ، ئەرەدنا، دێرەسۆرێ، ئینشكێ، ئیسفكا، ل سپنێ بەهدینان، و ناووسكێن گۆندێ دیهیكێ ل دەڤەرا بەرێ گارێ. (سەرەدانێن مەیدانی، ٢٠١٣/٦/١٧، ٢٠١٣/١٠/١٨، ٢٠١٤/٥/٧). **(بنێرە: شكلێ ژمارە (٢)).**

**سێ/** سێ تەختی: هەلبەت جۆرێ ناووسكێن سێ تەختی ژ هەمی جۆرێن دی بەربەلاڤە ترن، كو پرانییا ناووسكێن هاتینە دیتن سێ تەختینە، وەك: (ئەدنێ، مایێ، ئەلكویشكێ، بازێ، بێلویزانێ، دیهێ، دیهیكێ، ئەرەدنا، ئینشكێ، دێرەسۆرێ)، ئانكو دەما كو دچییە دناووسكێڤە، لایێ سینگێ دەرگەهە، لایێ راستێ و چەپێ و پشتێ سێ تەخت تێدا هاتینە كولان و دروستكرن، ب رەخ هەر ئێكی ژ وان تەختان ژی وەك پەنجەركەكێ بشێوێ كڤانی هاتییە كولان، ژ بۆ دانانا تشتان و چراكێ ئاگری، كو ئەو ناووسكێن بەری نهۆ مە ئاماژە پێكرین، ل پرانییا وان گۆندان، ناووسكێن ژ جۆرێ سێ تەختی ژی لێ هەنە. (سەرەدانێن مەیدانی، ٢٠١٣/٦/١٧، ٢٠١٣/١٠/١٨، ٢٠١٤/٥/٧، ٢٠١٤/٦/٥، ٢٠١٥/١/٦). **(بنێرە: شكلێ ژمارە (٣)).**

**چوار/** چوار تەختی: سەرەرایی كو ئەڤ جۆرێ ناووسكێن چوار تەختی زۆر دكێمن، لێ ئەوا مە دیتی، ئێك ل ئاستەنگا گۆندێ (ئەلكویشكێ) ل دەڤەرا بالا هەیە، كو چوار تەخت تێدا هەنە، یا ژ من وەرە ئەڤە ژی بۆ وێ چەندێ دزڤریت، كۆ دبیت ئەڤ كەڤرە یی ب ساناهی بوویە بۆ كولانێ، لەوما دوو ناووسكێن دوو تەختی دناڤێكدا هاتینە دروستكرن كو هەر ئێك ژ دوو تەختا پێكدهێت، ئانكو لایێ راستێ دوو تەخت لێ هاتینە كولان و لایێ چەپێ ژی دوو تەخت، و وەك دەرگەهەكی دناڤبەرا واندا هەیە. (سەرەدانا مەیدانی، ٢٠١٣/٦/١٧). **(بنێرە: شكلێ ژمارە (٤)).**

**پێنج/** ناووسكێن دناڤ شكەفتاندا هاتینە دروستكرن: جۆرەكێ دی هەیە نە دكەڤری دهێنە كۆلان، بەلكو دناڤ شكەفتێن سرۆشتیدا هاتینە دروستكرن، كۆ هەمان تەرز و شێوازێ ناووسكانە، ژ بەر و كسلان هاتینە دروستكرن و بشێوێ ئاقدی (كڤانی) دیسان ب رەخڤە پەنجەركەك تێ هەیە ژ بۆ دانانا تشتان تێدا، ئەز بباوەرم ئەڤ جۆرە پێتر لسەر دەمێ زەرەدەشتی هاتینە بكارئینان، پاشی ژ لایێ مەسیحیەتێ ژیڤە وەك جهێ پەرستنێ و هەم ڤەحەویانێ هاتبنە بكارئینان، كو هەتا نهۆ چوار ژ وان ل دەڤەرێ مە دیتینە، دوو ژ وان ل سپنێ بەهدینان، ئەوژی: (شكەفتا قەلایێ ل گۆندێ ئەرەدنا ژۆری، شكەفتا كانی سێفكێ ل پشتا گۆندێ ئینشكێ)، و دوو ژی ل دەڤەرا بەرواری بالا، ئەوژی (شكەفتا بزنا ل گۆندێ گویلكا، و شكەفتا بەرێ شیش ل گۆندێ شێلازا) (سەرەدانێن مەیدانی، (سەرەدانێن مەیدانی، ٢٠١٥/٦/٣، ٢٠١٥/٦/٩). **(بنێرە: شكلێ ژمارە (٥)).**

### ناووسك ژ لایێ ڤەلافەتێڤە:

هەرچەندە پرانییا وان ناووسكێن مە دیتین، ژ لایێ نەخشەسازی و ڤەلافەتا وان هندی ئێك نینن، لێ پیڤانێن وان گەلەك د نێزیكی ئێكن، لەوما تنێ دێ هندەك پیڤەرێن نێزیك بۆ گشت



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

ناووسكان دانين، (لێ هەر كەسەكێ بخوازيت، پیڤانێن وان ب دورستی بزانيت، دشێت ل پەرتووكا مە يا بناڤێ ژ شوینەوارێن دهۆكێ دەڤەرا ئامێدیێ بزڤریت).

**دەرگەهێن وان:**

دەرگەهێن وان بلنداهييا وان ژ عەردى دناڤبەرا (٥٠سم تا ٥م) دانە و بشێوێ لاكێشەی و چوار گۆشەیی و بازنەیی و بشێوێ هێكێ هاتینە دروستكرن. و ژلایێ قەلافەتێ وان پیترییا (٥٠سم × ٥٠سم) یان (٥٠سم × ٦٠سم)، و هەنە ژی پیتر یان كێمتر لێ پیترییا وان بڤی شێوەیینە. د پڕانییا ناووسكاندا دبینین سەروبنێن دەرگەهی ژ لایەكیڤە وەك دوو كورك لێ هاتینە كولان كو مرۆڤ دزانيت ئەو ژ بۆ دارێ دەرگەهی هاتینە دروستكرن، داكو دەرگەه بساناهی تێدا لێك بزڤریت ل دەمێ گرتن و ڤەكرنا وی. (سەرەدانێن مەیدانی، ٢٠١٣/٦/١٧، ٢٠١٣/١٠/١٨، ٢٠١٤/٥/٧، ٢٠١٤/٦/٥، ٢٠١٥/١/٦). (**بنێرە: شكلێ ژمارە (٦)**).

**ناڤا ناووسكان:**

ناڤا وان بشێوێ لاكێشە و چوارگۆشە هاتینە دروستكرن وەك ژۆرێن خانییان، و ژ لایێ فرەهی و درێژی و بلنداهییێ دناڤبەرا (٢م فرەه × ٢م درێژ × ١.٥م بلند)ن. (سەرەدانێن مەیدانی، ٢٠١٣/٦/١٧، ٢٠١٣/١٠/١٨، ٢٠١٤/٥/٧، ٢٠١٤/٦/٥، ٢٠١٥/١/٦).

**تەختێن وان:**

ئەو تەختێن دناڤ ناووسكاندا هاتینە دروستكرن، قەلافەتا وان (١٨٠سم درێژ × ٦٥سم فرەه × ٥٠سم بلند)، دگەل هەبوونا بالیفكەكێ هەر ژ كەڤری هاتییە دروستكرن و ب تەختیڤەیە. و تەنشتا هەر تەختەكی ژ وان وەك پەنجەركەكا (نیڤ كڤانی) د كەڤری هاتییە كولان ژ بۆ دانانا تشتان و چراك و خەتیرێن ئاگری هاتینە بكارئینان. (سەرەدانێن مەیدانی، ٢٠١٣/٦/١٧، ٢٠١٣/١٠/١٨، ٢٠١٤/٥/٧، ٢٠١٤/٦/٥، ٢٠١٥/١/٦).

**پەنجەرك (چاڤك):**

دناڤ گەلەك ناووسكاندا دێ بینی پەنجەركەك نە گەلەك مەزن تێ هاتییە ڤەكرن، ژ بۆ هەم رۆناهی و هەوا بهێنە ژۆر، و دەركەفتنا دویكێلێ ژی ل دەمێ هەلكرنا ئاگری (چ خەتیر و چراك بن، یان ئاگر دناڤدا هەلكربيت)، چونكە د گەلەك ناووسكان دهێتە دیتن، ئاگر د نیڤا وێدا هاتینە هەلكرن). (سەرەدانێن مەیدانی، ٢٠١٣/٦/١٧، ٢٠١٣/١٠/١٨، ٢٠١٤/٥/٧، ٢٠١٤/٦/٥، ٢٠١٥/١/٦).

**جورنیك:**

ل نیڤا هندەك ناووسكان دهێتە دیتن، كو جورنییەك هاتییە كولان، ژ بۆ عمباركرنا ئاڤێ تێدا، و لایێ بەر دەرێ ناووسكێ وەك چاڤیكەكا بچویك تێ هاتییە كولان و ڤەكرن ژ بۆ ئاڤا زێدە ژێ بچیتە دەرڤەیی ناووسكێ، كو قەلافەتا ڤان جورنیكان (١م درێژ × ١م فرەه × ٣٠سم كویر). (سەرەدانێن مەیدانی، ٢٠١٣/٦/١٧، ٢٠١٣/١٠/١٨، ٢٠١٤/٥/٧، ٢٠١٤/٦/٥، ٢٠١٥/١/٦).

ئەڤە دیارترین ئەو سەخلەتن یێن دناڤ پڕانییا ناووسكاندا دهێنە دیتن، كو دكارین بێژین ستایلێ (٩٥٪) یێ هەمی ناووسكان ل هەر جهەكی یان دەڤەرەكێ بیت، ژ لایێ نەخشەسازییێڤە وەكە ئێكن. كو ئەڤە وێ چەندێ دوویات دكەت، هەمی د قۆناغەكا دەستنیشانكریدا هاتینە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

دروستکرن و ژ لایێ هندەك كەسێن شارەزا ژ لایێ تەكنیك و ئەندازەیی و نەخشەسازییێڤە، لەوما هەموی وەکی ئێکن.

**گۆهارتنا دێران بۆ مزگەفتان:**

دەما کو سەرەدانا گەلەك جهێن پەرستنێ وەك (کنیشتە و دێر و مزگەفت) دکەین، دێ ژ شێوازێ بیناسازییا وێ خۆیابیت، کو بۆ پیتر ژ پەرستگەهەکێ هاتییە بکارئینان، لەوما تنێ دێ ب کورتی ئاماژێ ب وان (دێران) کەین ئەوێن ل دەڤەرا بەهدینان تایبەت ژی دەڤەرا ئامێدییێ هاتینە گۆهارتن و کرینە پەرستگەها مۆسلمانان (مزگەفت)، ئەوژی:

- **دێرا زێوا شێخ پیرامویسی:**

ل دوور ڤێ دێرێ د (موسوعة الديارات) هاتییە: (رەبان مووسایی دخواست خۆ ل جهەکێ بلند ڤەدەرکەت و بمینیتە بتنێ، ئینا وی جهەك بۆ خۆ هەلبژارت نێزیکی گۆندێ تنێ، و ئەڤ مەزارە یان بارەگایە ناڤکر ب (پیرامووس) و ب کوردی ئانکو: پیرمووسا، یان رەبەن مووسا، کو ئەو مەزارەکە هەتا نهۆ مایە) (حداد، ۲۰۱٥: ۲۹۱۲/۷). و دژێدەراندا هاتییە، پاشی ئەو (دێر) بوویە مزگەفت، ل سەردەمێ ((شێخ الإسلام[7]) (ب٤۰۹مش/۱۰۱۸ز . م٤۸٦مش/۱۰۹۳ز)) (دۆسکی، ۲۰۱۳: ١٤). ئەوێ مەزارێ وی ل گۆندێ (دێرەشێ[8])، کو ئێك ژ شاگردێن وی ب ناڤێ (شێخ پیرامویس) هاتییە گۆندێ (زێوا شێخ پیرامویسی)، هەر وەکو (مایی و عەباسی) ژی ڤێ چەندێ دبێژیت: (ژ شاگردێن شێخ ئەلئیسلام، شێخ پیرامویسە ئەوێ هاتییە ڤەشارتن ل گۆندێ زێوێ رۆژئاڤایێ گۆندێ بامەرنێ) (۱۹۹۹: ۸۸ . ۸۹ و ۱۹٦۹: ۱۳٦). کو ژ بلی ژێدەرێن ئیسلامی، هەر هندەك ژێدەرێن مەسیحییان ژی ئاماژێ ب وێ چەندێ دکەن، کو ئەڤ دێرە بوویە مزگەفت، هەر وەکو (شمامي) دبێژیت: (جهێ ڤێ دێرێ ل . زاویتا .، رۆژئاڤایێ بامەرنێ ل نهالا . سفین . و دبێژنێ نهالا سپنەی، ئەوا نێزیك ئامێدییێ ل ژۆرییا عێراقێ، نۆکە بوویە مزگەفتا شێخ . پیرامویس . ی، ئەوا هندەك ژ پاشماییێن وێ دزڤرنە چەرخێ دوازدێ. ئەو جهێ دبێژنێ . دێرا باصیارێ، مالا وێنەکێشان . کو دکەڤیتە ب رەخ دێرێڤە ب رەخ گۆندێ تنێڤە) (۲۰۰۷: ٤۱). هەر دیسان ژ وان ژێدەرێن مەسیحییان یێن وێ چەندێ دۆپات دکەن، هەر وەك (حداد) دبێژیت: (جولاغ وێ چەندێ دۆپات دکەت، کو جهێ دێرا باصیارێ تنێ وەك کولکەکێ بچویك هەتا نهۆ مایە ل گۆندێ . زێوا شێخ پیرامویسی . کو ئەو مەزارەکێ دینییە ل نك خەلکێ گۆندێن دەوروبەران ژ کورد و مەسیحییان، و هەتا ڤان سالێن دویماهییێ ژی خەلکی نەدر پێ ددان، کو ئەو داهاتێ نەدران، دکرنە پێنج پشك، پشکەك بۆ خەلکێ گۆندێ . تنێ . یا مەسیحیا بوو، و ئەو چار پشکێن دی بۆ خەلکێ مۆسلمانێن بامەرنێ بوون) (۲۰۱٥: ٦٦۳/۲). (سەرەدانا مەیدانی، ۲۰۱٤/۱/۱۸). **(بنێرە: شکلێ ژمارە (۷)).**

- **دێرا قەدشێ:**

ل دوور ڤی گۆندی (رووف) دبێژیت: (قەدشێ گۆندەکێ کەڤنە ل بنێ چیایێ مەتینا، ل نهالا سپنەی، ل سەر رێکا سەرەکی دناڤبەرا ئامێدی و زاخۆ دا. سۆلتان حوسەین وەلی (۹٤۰ . ۹۸۱مش/ ۱٥۳۳ . ۱٥۷۳ز) خانەك ئاڤاکربوو بۆ بازرگانان. و ل سەر فرۆتنا داهاتییێ وێ هاتە سەپاندن ب دانا خویکێ پێنج قرش و چارێکەك داکو ببنە وەقف بۆ قۆتابخانا قوبەهان. و هندەك میرێن دی ژی خانەك لێ ئاڤاکربوو بۆ ڤەحەویانا کاروانییێن بازرگانا ئەوێن دناڤبەرا مویسل و ئامێدییێدا


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هاتن و چوون دکرن ب رێکا بامەڕنێ یان سەرسنکێ) (٢٠١١: ٢٩٤). و ل (ڕدێنی) ژ پەرتووکا (أشهر شهداء المشرق القديسين) ڤەدگوهێزیت: (گۆندێ قەدشێ ل سالێن ٣٤٥ ـ ٣٥٠ز هەبوو، یێ ئاڤەدان بوو) (٢٠١٥: ١٠). و خودانێ (كتاب الرؤساء) هۆسا ناڤێ قەدشێ ئینایە: (و وان ژنكەك ژ گۆندێ ـ بیث قدشێ ـ ئینا كو ئەو یا ب كنفەكێ گرێدای بوو و وێ جلكێن خۆ دڕاندن ژ ئەگەرێ كارتێكرنا شەیتانی ل سەر...) (المرج، ١٩٦٦: ٢٦٨). ئەڤە بەڵگەنە كو قەدشێ زۆر یا كەڤنە و گۆندێ مەسیحییان بوویە، هەتا دەستپێكا چەرخێ نوزدێ ژی، چو موسلمان ل ڤی گۆندی نەبوون، ڕەنگە ڕەڤینا مەسیحییان ژ ڤی گۆندی ڤەدگەڕیت بۆ دەمێ داگیركرنا میرگەها بەهدینان ژ لایێ (میر محەمەدێ ڕەواندوزی ـ میرێ كۆرە)ڤە ل سالا (١٨٣٣ز)، یان بەری هینگێ ب دەمەكێ كێم، لێ چوونا مەسیحییان ژ وێرێ نەدیارە. و پشتی كو دێرا وێ ئەوا زۆر كەڤن بوویە مزگەفتا مۆسلمانان ژی هەر نیشانێن دێران ل سەر ماینە، ئەوژی ئەو بەرێ (خاچ) لسەر هاتییە دروستكرن، كو دكەفتە لایێ ڕاستێ یێ دەرگەهێ وێ. (سەرەدانا مەیدانی، ٢٠١٣/١/٢٣). **(بنێرە: شكلێ ژمارە (٨))**.

و هەتا كو سالا (١٩٥٢) دەمێ ژ لایێ (ئەحمەد حاج مەهدی)ڤە هاتییە ڕاگەهاندن وەك شوینەوارەكێ عێراقێ یێ كەڤن، كو هاتییە دەڤەرێ و چەندین جهێن شوینەواری ل دەڤەرێ ڕاگەهاندینە نەخشاندینە و د ڕۆژناما (الوقائع العراقية)، هژمارا (٢١٩٩)، ل ڕێكەفتی (١٩٥٢/١٢/٢٢)ێ، هاتییە بەلاڤكرن، ئێك ژ وان شوینەواران (دێرا قەدشێ) بوو[9]. و (هەتا نۆكەژی ئەو بەرێ دێرا قەدشێ یێ خاچ ل سەر هاتییە پاراستن ل دێرا بێناتا). **(بنێرە: شكلێ ژمارە (٩))**. ل دویڤ ژێدەرێن زاردەڤكی (ئێكەم بنەمالا موسلمانا ل قەدشێ ئاكنجی بوویی بنەمالا ـ حەجی باپیر ـ ی بوویە، كۆ ئەڤ بنەماڵە ژ گۆندێ ـ ئورە ـ ژ دەڤەرا بەرواری بالا هاتینە بامەڕنێ، و ل دەستپێكا (١٨٠٠ز) ژ بامەڕنێ هاتینە قەدشێ) (شێلازی، ٢٠١٧: ١٧٠).

- **مزگەفتا ئیسفكا:**

د پشكا ئێكێ ژ ڤێ ڤەكۆلینێ مە بەحسێ مزگەفتا ئیسفكا كرییە، كو د ئەصلدا مزگەفت نەبوویە، بەلكو بەری هینگێ وەك كنیشتە و دێر بوویە، هەر وەك (یاسین) ژی دبێژیت: (ئەگەر ئەم بهێنە سەر دیرۆكا ڤێ مزگەفتێ دراستیا خودا چ دیكومێنتێن دروست ل بەر دەست نینن كو ئەم پشتا خۆراستبكەین و بێژین دیرۆكا وێ بۆ فلان سەردەمی دزڤریتەڤە، بیروباوەرەكا هەی دناڤ خەلكێ گۆندیدا كو دزڤرینە ڤە بۆ سەردەمێ میرگەها بەهدینان، ل سەر دەمێ ـ میر حسێن وەلی/ ١٥٣٤ ـ ١٥٧٠ ـ كو دیارە ل سەر دەمێ ئەڤی میری میرگەها بەهدینان گەلەك پێنگاڤێن بیناكارییێن مەزن هاڤێتینە و بەرفرهەیەكا شارستانی بخوڤە دیتیە) (یاسین، ٢٠١٠: ١٧ ـ ١٨). (لێ د راستیدا ڤێ مزگەفتێ چو هەڤبەندی ب میرگەها بەهدینان ڤە نینە، بەلكو ئەو كنیشتەكا ڕۆژهەلاتی یا كەڤنە، بەلێ ئەم نزانین كەنگی هاتییە گۆهارتن بۆ مزگەفتێ. و ژ لایەكێ دیڤە هەبوونا چەندین گۆڕان ل قاتێ عەردی، و نەخشێ وێ یێ بیناسازی وەكی یێ مگەفت ـ دێر ـ ا قەدشێ و كنیشتەیا مهادوختە ل ئەرەدنا) (برادوستی و...، ٢٠٢١: ٢٨٠). ل دویڤ تەرز و شێوازێ ئاندازەیێ ئاڤاكرنا مزگەفتا ئیسفكا د ئەسلدا مزگەفت نەبوویە، بەرچاڤترین خال نهۆما ئێكێ دەرگەهێ وێ ل باشۆری (قیبلێ) هاتییە دانان، كو ئەڤەژی نینە د مزگەتاندا دەرگەه بكەڤیتە قیبلێ. (سەرەدانا مەیدانی، ٢٠١٣/١/٣٠). **(بنێرە: شكلێ ژمارە (١٠))**.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

• **كۆڕێ مزگەفتا:**

ل دوور ڤی جهی (یاسین و عەلی) دبێژن: ((كۆڕێ مزگەفتا شكەفتەكا سرۆشتییە دكەڤیتە ناڤەندا چیایێ گارەی ئەم دشێن بێژین بۆ خاریا ڕۆژهەلاتێ قەسرا گارەی، هەلبەت جهەکێ ئاسێیە و ل دوور و بەرێن دەرگەهی گەلەك دار شین بووینە، ل دوور شرۆڤەكرنا ناڤێ ڤی جهی بوسلمان دبێژنێ . كۆڕێ مزگەفتا . ل دوور دیتنا مە بۆ ڤی ناڤی ئەوە كو ژ . گۆڕێ مزگەفتا . هاتبیت و دیكومینتا مە ئەوە هەبوونا دوو گۆڕا دناڤ شكەفتێدا و ڕەنگە ئەڤ بیروباوەرە ژ بەری هاتنا ئیسلامێ هاتبن و ئەڤ جهە یێ ل دەڤ خەلكی پیرۆزبیت و ئەڤ دیاردە . Phenomenon . یا ل دەڤ وانا بەردەوام بیت و هەردوو ئایین ب ڕەنگەكێ پیرۆز بەرێ خۆ دابیتە ڤی جهی)) (٢٠١٠: ١٠).

و (حداد) دەربارەیی ڤی مەزاری دبێژیت: (بەلێ ئەو صەومەعا ب ناڤێ مار زیا هاتییە ناڤكرن ئەوا تێدا ڕەبەنی كری، و مەسیحییەت تێدا بەلاڤەكری دكەڤیتە سەرێ چیایێ گارەی، كو ئەو ژ ژۆرەكێ پێكدهێت و بەرسینگێ وێ بەردایە و بەربهاڤە. و ل دەرێ شكەفتێ دەرگەهەكێ داری یێ گەلەك كەڤن هەیە و هندەك بزمارێن بنێن وان زۆر پەحن پێڤەنە) (٢٠١٥: ١٦٧٦/٤). و (ئەوا دهێتە بەرچاڤان كو دوو گۆڕێن د ڤێ شكەفتێدا، و خەلكێ دەڤەرێ ژ كوردان گەلەك ڕێزێ ل وی جهی دگرن، چێدبیت ئەو هزربكەن كو ئەو ئێك ژ قەنجێن وانە. ئەز هزردكەم كو مار زەیا و هەڤالێ خۆ طابوری ئەڤ جهە بۆ خۆ كرییە جهێ پەرستنێ، وەك هەر كەسەك دی دكەڤیتە د خەلوەتێدا، بەری كو گەڕیانا خۆ بەرەڤ دەڤەرا هەكارییا ببەن) (٢٠١٥: ١٦٧٢/٤). **(بنێڕە: شكلێ ژمارە (١١).**

• **مزگەفتا موئمنا (المؤمنین):**

مزگەفت دكەڤیتە نك كانیا قشێلۆیی ل ناڤا بامەڕنێ، ل ناڤا گەلیێ دناڤبەرا چیایێ مەتینا و چیادێركی، دەربارەی ناڤێ مزگەفتێ ژ ناڤێ باوەرداران (مؤمنین) هاتییە، ل دوور دیرۆكا ئاڤاكرنا وێ هەروەكو د ڕیبەرێ مزگەفتاندا هاتی ل ١٥١٥ز هاتییە ئاڤاكرن. مزگەفت ژ بەر و كسلان هاتییە ئاڤاكرن، و مزگەفت ل نێزیك كانیێن ئاڤێ دهێنە ئاڤاكرن، و دبینین كانیەكا ئاڤێ ل بن مزگەفتێ دەردكەڤیت، و مزگەفت د چەندین قۆناغێن دیرۆكێ ڕا دەرباز بوویە. بەلێ دەما كو ل شێوازێ بیناسازیا ڤێ مزگەفتێ دنێڕین، ئەو وەكی كنیشتەیێن ڕۆژهەلاتییە، ژ لایێ پێكهاتەیا خۆڤە، لەوما پشتی ب هویری ل شێوازێ بناسازیا وێ دنێڕین، ئەم هزردكەین كو ل دەستپێكێ كنیشتە بوویە و پاشی بۆیە مزگەفت. و ل دویف ژێدەرێن دیرۆكی ل چەرخێ چوارێ زایینی ئەبریشەیەكا مەسیحی ل بامەڕنێ هەبوو، و مەتران شملی ب ڕیڤەدبر و ل دویف چیرۆكا ژیانا مار زبعایی، ئەو كانیا ئاڤێ یا ب ناڤێ قشێلۆیی ژ ناڤێ (قەشە ئیلیا) هاتییە و وان (٤) ڕەبەن هەبوون. (برادوستی و...، ٢٠٢١: ٢٨٥ . ٢٨٦). **(بنێڕە: شكلێ ژمارە (١٢).**

**مژارا دوویێ/ گەنگەشەیا گریمانەیان:**

د ڤێ مژارێدا دێ بزاڤێ كەین، گەنگەشەیان وان هەر پێنج گریمانەیێن د پشكا ئێكێدا هاتین كەین، داكو بگەهینە ئەنجامەكی، كا ئایا ئەڤ ناووسكە بۆ چ هاتینە دروستكرن و بكارئینان؟ ئەرێ بۆ كیش قۆناغێ ڤەدگەڕن؟ ئەرێ كیش ئایینی یان مللەتی بكارئینانینە؟؟ ئارمانج ژ دروستكرنا ڤان ناووسكان چ بوویە؟



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

**گریمانا (١)ێ، ژ بۆ ڤەحەویانێ:**

ئەگەر ئەم ل دویف گریمانا ئێکێ بێژین (ژ بۆ ڤەحەویانێ هاتینە بکارئینان)، ڕەنگە ل هندەك دەڤەران یان قۆناغێن ژیانێ، ل هندەك جهان ناووسك هاتبنە دروستكرن ژ بۆ جهێ ڤەحەویانێ، لێ ئەگەر ئەم ل سەر وان ناووسكان راوەستین یێ ل كوردستانێ هاتینە دروستكرن و بێژین، كو بۆ ڤەحەویانێ هاتینە دروستكرن، هندی ئەو ناووسكێن مە ل جهێن جودا جودا دیتین، ل هەر جهەكی یان دەڤەرەكێ ژمارا ناووسكان ژ (١٥) تەختان دەرباز نابن، باشە وەك پسیار بەرئاقلە ئەو مرۆڤێن ل وان جهان دژیان تنێ (١٥) كەس لێ هەبووینە ب زێدەییڤە، و پا ئەو دێرێن هند مەزن تنێ بۆ وان ڕێژا كێما مرۆڤان هاتینە ئاڤاكرن؟!!

**گریمانا (٢)ێ، ژ بۆ ڤەشارتنا مرییان دناڤدا:**

ئەگەر ل سەر دەمێن جودا جودا یان ل هندەك جهان هاتبنە دروستكرن و كارئینان ژ بۆ دانانا مرییان د وان جهاندا، هەتا كەلەخێن وان پویچ دبن، باشە ما بەرئاقلە هیچ پاشمایەكێ وان د وان ناووسكاندا نەمابن، یان هەتا كو بێژین ژ لایێ زانستیڤە بهێین شرۆڤەبكەین، ئەو جهێ كەلەخێ مری لێ د حەلییێت و پویچ دبیت، پاشمایێ دوهن و بەزێ وان بۆ قۆناغێن گەلەك پشتی هینگێ ژی دێ مینیت ب وان كەڤر و جهانڤە، لێ هیچ پاشمایەكێ هۆسان مە ب وان جهانڤە نەدیتینە، كو مرۆڤ هەست بكەتن مرۆڤێن مری لێ هاتبنە دانان هەتا كەلەخێن وان پویچ ببن.

**گریمانا (٣)یێ، وەك جهێ زێرەڤانییێ:**

چەند بۆچوونەك بۆ هندێ دچن كو جهێن زێرەڤانیێ و چاڤدێرییێ بن، لێ دەما كو سەحدكەینە ئەو جهێ ناووسك لێ هاتینە دروستكرن، ژ لایێ جۆگرافیێ وانڤە هیچ نیشانەك لێ خۆیانابیت كو بێژین بۆ جهێن چاڤدێریێ هاتینە دروستكرن، ئەوژی ژ بەر چەند هۆكارەكان، وەك: ئەو ناووسكێن مە ل دەڤەرێ دیتین، پرانییا وان ل جهێن كویر و گەلیاندا هاتینە دروستكرن، ئانكو جهێن نەپەنی و ڤەشارتینە، كو ئەڤە نە ل دویف سەخلەتێن جهێن چاڤدێرییێیە، بەلكو جهێن چاڤدێریێ ل جهێن بلند پێشچاڤ دهێنە دروستكرن، هەر وەكو ئەو هەمی دویرگەهێن ل دەڤەرێ هاتینە دروستكرن، كو ل جهێن بلند و بەرامبەر كەلهان هاتینە دروستكرن، كو گەلەك ژ دویر بكارن ل دەمێن مەترسی دكەڤیتە سەر، ب رێكا وان دویرگەهان دهاتنە ئاگەهداركرن، لێ ناووسكان ئەڤ سەخلەتە تێدا ناهێنە دیتن، هەر وەكو ڤان ناووسكان: ناووسكێ گۆندێن (هرۆرێ، ئاقارێ چەلكێ، ئەدنێ، سەرەرۆ، ئەلكویشكێ، ماێ، بێلویزانێ و بازێ) ل دەڤەرا بەرواری بالا، كو هەمی ل جهێن كویر و گەلی و نەپەنیدا هاتینە دروستكرن. هەر وەسان یێن سپنێ بەهدینان وەك یێن گۆندێن: (دیهێ، دێرە سۆرێ، ئەرەدنا، ئینشكێ، دیهیكێ)، دیسان ل جهێن كویر و نەپەنیدا هاتینە دروستكرن، كو هەتا مرۆڤ نەچیتە بەر دەرێ وان ناهێنە دیتن، لەوما هیچ سەخلەتەك تێدا ناهێتە دیتن، كو بێژین بۆ جهێن چاڤدێریێ و زێرەڤانیێ هاتبنە بكارئینان.

**گریمانا (٤)ێ، وەك جهێ پەرستنێ:**

مە د گریمانا چوارێدا ئاماژە ب هندەك گرۆڤەیان كرییە، كو ناووسك وەك جهێ پەرستنێ هاتینە بكارئینان، و بەلكو دبیت هندەك ژ وان وەك (دوخمە) ژ بۆ پەرستنا سەردەمێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

زەرەدەشتییەتێ ژی هاتبنە بکارئینان. کو ئەڤەژی تا ڕاددەیەکی دکارین بێژین تشتەك نۆڕماڵە، چونکە گەلەك ژ مزگەفتێن دەڤەرێ یێن کەڤن، بەری ببنە پەرستگەها مۆسلمانان (مزگەفت) هاتبنە بکارئینان، هەر هەمان ئاڤاهی بەری هینگێ (دێر) بووینە. لەوما دکارین بێژین، ئەو ناووسکێن ل دەڤەرێن مە هاتینە دروستکرن، ژ بۆ دوو مەرەمان هاتینە بکارئینان، ئەوژی:

**ئێك/** ڕەڤین و خۆڤەشارتن ژ دوژمنان، چ ژ بەر هەڤڕکانێن مەسەبی دناڤ مەسیحییەتێدا (وەك مە بەری نهۆ بەحسێ وێ هەڤڕکانا مەسەبی کری ئەوا دناڤ مەسیحییەتێدا سەرهلدایی)، یان ئەو هێرشێن جودا جودا ل سەر دەمێن ئیسلامێ (نەخاسمە ل سەردەمی بووەیهی و ناکوکییێن میرگەه و ئۆسمانییان) دەما ب سەر دەڤەرێدا هاتین و داگیرکرین و پەرستگەهێن وان خرابکرین، کو نەچاربین ل جهێن ئاسێ پەرستنێ بکەن. د قورئانا پیرۆز دا ب ئاشکەرایی ڤێ چەندێ دسەلمینیت، کا چاوان ژ بۆ خۆ پاراستن و ڤەشارتنێ بەرەڤ شکەفت و جهێن نەپەنیڤە درەڤین، وەکی تێدا هاتی: (لويجدون ملجأً أو مغارات أو مدخلاً لولوا اليه وهم يجمحون) (ئەلتەوبە/ ٥٧) ئانکو: (ئەگەر وان ئاسێگەهەك . کو تێدا هاتبانە پاراستن .، یان شکەفتەك . کۆ تێدا نەهاتبانە دیتن .، یان ژێر زەمینەك . کۆ چۆبانە تێدا . دیتبایە، دا ب لەز و بەز بەرێ خۆ دەنێ . ژ ترساندا.)(سگێری، ٢٠٠٢: ١٩٦).

**دوو/** ژ سەخلەتێن صۆفیاتیێ بوو، کو ئەو کەسێن خۆ ب صۆفی دزانن، ل جهێن ڤەدەر و بتنێ مان (منعزل) تاکپەرستیێ بکەن، کو ئەڤ چەندا هە هەر ل دەستپێکا پەیدابوونا ئایینان پەیدابوویە، کو د شکەفت و صەومەعاندا بمینن و پەرستنێ بکەن. هەر بوو میناك کو ئەڤ (ناووسك . صەومەع)ە ژ بۆ پەرستنێ هاتینە بکارئینان، د پەرتووکا (تأريخ يوسف بوسنايا)دا هاتییە: (...دەمێ رەبان . مەرەم پێ ڕەبان یوسف . ە زڤرییەڤ دێرێ، ئەو چوو د صەومەعا خۆڤە و دەرگەه ل خۆ گرت و نە بەس وی دەرگەهێ داری گرت، بەلکو وی دەرگەهێ دلێ خۆژی گرت و کۆلکێ وی گەلەکێ بچویك بوو، کو ئەو یێ پێکاهاتی بوو ژ دوو شکەفتێن د کەڤری کولایی و دەرگەهەکێ بچویك تێ هەبوو) (بن کلدون، ١٩٨٣: ٣٨).

**سێ/** دیسان پڕانییا وان جهێن مە سەرەدانێن مەیدانی بۆ کرین، و هەر جهەکێ دویڤچوونێ بکەیی، دێ بینی ل نێزیك ناووسکان پاشماییێن دێرەکێ هەنە، هەر بۆ میناك: دێرا ئینشکێ ژ لایێ باکۆرێ ویڤە ب دویراتییا (٤٠٠م) دوو ناووسك لێ هەنە. و دێرەسۆرێ ل ڕۆژئاڤایێ ئینشکێ، دیسان لایێ ڕۆژهەلاتێ دێرەسۆرێ ب دویراتییا (٣٠٠م) دیسان سێ ناووسك لێ هەنە، و ڕۆژهەلاتێ دێرا گۆندێ دێرێ ب دویراتییا (٢٠٠م) دیسان دوو ناووسك لێ هەنە. و ل باکۆرێ دێرا ئەرەدنا ب دویراتییا (٥٠٠م) پێنج ناووسك لێ هەنە. و ل ڕۆژئاڤایێ دێرا مێرگەتویێ ب دویراتییا (٥٠٠م) دوو ناووسك لێ هەنە. و ڕۆژئاڤایێ دێرا باگویلێ ب دویراتییا (٥٠٠م) شکەفتەك لێ هەیە کو چەندین ناووسك دناڤا شکەفتێدا ب بەر و کسلا هاتینە دروستکرن دگەل سێرچەکا ئاڤێ. و ل باکۆرێ ڕۆژهەلاتێ دێرا دیهێ ب دویراتییا (٥٠٠م). و باشۆرێ دێرا ئەلکویشکێ ب دویراتییا (٥٠٠م) دوو ناووسك لێ هەنە، دیسان ل باشۆرێ ڕۆژئاڤایێ ب دویراتییا (٦٠٠م) دیسان ناووسکەك لێ هەیە. و ل باکۆرێ دێرا ئاقارێ چەلکێ دوو ناووسکێن ئێك تەختی لێ هەنە، و ڕۆژئاڤایێ ویژی بۆ لایێ بێگۆڤا، کو دکەڤنە هنداڤی خابویری، دوو ناووسك لێ هەنە. و ل باکۆرێ ڕۆژئاڤایێ (مایا نەسارا) ب دویراتییا (٥٠٠م) کو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دکەڤنە پشت گۆندێ (مایا إسلام)ا نوکە، سێ ناووسك لێ هەنە. (سەرەدانێن مەیدانی، (٢٠١٣/٦/١٧)، (٢٠١٣/١١/٤)، (٢٠١٥/٦/٩)، (٢٠١٣/١١/٣)، (٢٠١٤/٥/٧)، (٢٠١٤/٦/٥)، (٢٠١٥/١/٦)، (٢٠١٣/١/٣٠)).

ئەڤە هندەك میناك بوون، کو هەر جهەکێ ناووسك لێ هەبن، هەکەر دویڤچوون بۆ هەبیت، دێ خۆیابیت کو پاشماییێن دێرەکێ ل دوروبەرێن وان ناووسکان هەبوویە، کو ئەڤە باشترین گرۆڤەنە کو ناووسك هاتینە بکارئینان ل سەردەمێ مەسیحییەتێ ژ بۆ خۆپاراستنێ و پەرستنێ، ژ لایێ ناکوکیێن دناڤبەرا مەسەبێن مەسیحییەتێ بخۆڤە ژ لایەکی، ژ لایەکی ژی ژ بەر هێرشێن عۆسمانی و میرگەهان بخۆ بۆ سەر دەڤەرێ، نەچاربووینە، دێران ل جهێن بلند و ئاسێ ئاڤاکەن، و ل دەوروبەران ژی ناووسك هاتینە کولان دکەڤران ژ بۆ خەلوەتێ و پەرستنێ، هەم ژی خۆ پاراستنێ، لێ رێژا هەرە زۆرا ناووسکێن دەڤەرێ یێن خەلوەتێ و مانا بتنێ و پەرستنێ نە.

**ئەنجام:**

١. ناووسك هەر ل سەردەمێ فینیقییا وەك جهێ ڤەشارتنا مرییان هاتینە بکارئینان، کو گۆرێن وان دکەڤری هاتینە کولان و دروستکرن وەك تابویتان و مرییێن خۆ تێدا ڤەشارتینە.

٢. ل هندەك جهان وەك پەرستگەهـ هاتینە بکارئینان نەخاسمە ل سەردەمێ زەردەشتی و مەسیحییەتێ، کو تێدا کارێ پەرستنی کرینە.

٣. هندەك جهان ژ بۆ جهێ ڤەحەویانێ و خۆ ڤەشارتنێ ژ دوژمنان هاتینە بکارئینان، و پرانییا وان ل جهێن کویر و ڤەشارتی و نەپەنی هاتینە دروستکرن.

٤. پیترییا ئەو ناووسکێن ل دەڤەرێ هاتینە دیتن، د کەڤراندا هاتینە کولان، وەك شکەفت لێ کرینە، و دناڤدا ژ چەند تەختان پێکدهێن.

٥. ل هندەك جهان د ناڤ شکەفتێن خۆرستیدا، ب بەر و کسلان هاتینە ئاڤاکرن و کرینە ناووسك، کو دیسان ژ بۆ ڤەحەویانێ و پەرستنێ هاتینە بکارئینان.

٦. ئەو هەمی ناووسکێن ل دەڤەرێ هاتینە دیتن، ژ بۆ پەرستنێ و خۆ ڤەشارتنێ ژ دوژمنان ل سەردەمێ مەسیحییەتێ هاتینە بکارئینان.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

(شكلێ ژمارە (١)، ئێك تەختی/ فۆتۆ ڤەكۆلەر)

(شكلێ ژمارە (٢)، دوو تەختی/ فۆتۆ ڤەكۆلەر)

(شكلێ ژمارە (٣)، سێ تەختی/ فۆتۆ ڤەكۆلەر)

(شکلێ ژمارە (٤)، چوار تەختی/ فۆتۆ ڤەکۆلەر)

(شکلێ ژمارە (٥)، ناووسك دناڤا شکەفتێدا/ فۆتۆ ڤەکۆلەر)

(شکلێ ژمارە (٦) دەرگەهێن ناووسکا/ فۆتۆ ڤەکۆلەر)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

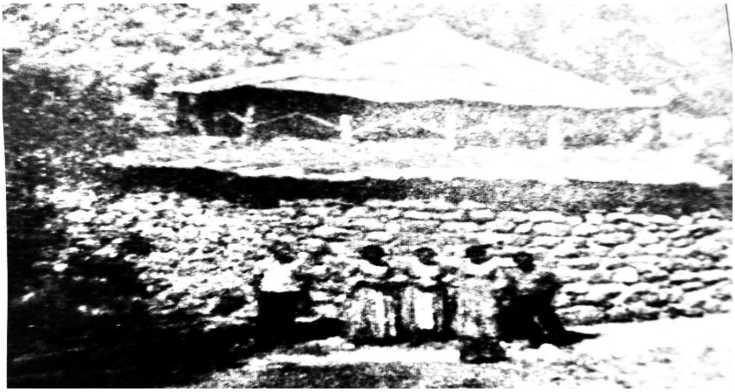

(شکلێ ژمارە (٧)، مەزارێ شێخ پیرامویسی یان رەبان مووسایی . گۆندێ زێوا، ژ (شەمامی))

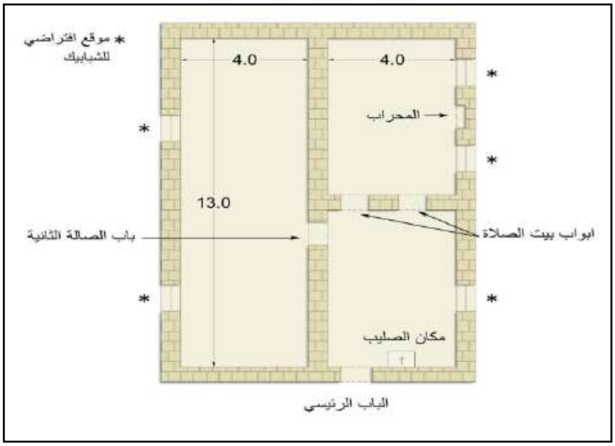


(شکلێ ژمارە (٨)، نەخشێ دێرا قەدشێ، (ژ (کوڤان ئحسان))

(شکلێ ژمارە (٩)، خاچا دێرا قەدشێ/ فۆتۆ ڤەکۆلەر)

(شکلێ ژمارە (١٠)، پاشمایێ مزگەفتا ئیسفکا/ فۆتۆ ڤەکۆلەر)

(شکلێ ژمارە (١١)، مەزارێ مار زەیایی ل چیایێ گارەیی، ژ (یاسین و محەمەد))

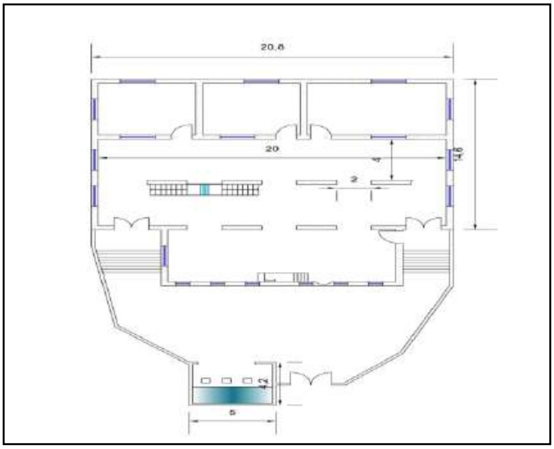


(شکلێ ژمارە (١٢)، مزگەفتا موئمنا، ژ (کوڤان ئحسنان))

دەهمەن:

(1) بنێڕە: جەمیل محەمەد شێلازی، ژ شوینەوارێن دەڤەرا ئامێدییێ (سەرەدانێن مەیدانی ـ ڤەکۆلین)، چاپا ئێکێ، (دهۆك: ٢٠١٧)، ژ وەشانێن زانکۆیا دهۆك، سەنتەرێ بێشکچی یێ ڤەکۆلینێن مرۆڤایەتی.

(2) بۆ پیتر زانیاری بنێڕە پەرتووکا مە: ژ شوینەوارێن دەڤەرا ئامێدییێ، لاپەرێن (٢٢٠ و ١٦٢ و ١٣٠).

(3) بۆ پیتر زانیاری ل سەر ڤێ دێرێ بنێڕە: (کوڤان ئحسان یاسین و نەزیف محمد علی، گەرەگو..... شینوار و پێکڤە ژیان، گۆڤارا (سیلاڤ)، هژمارا (٤٦)، شواتا ٢٠١٠، بپ١٠).

(4) بۆ پیتر زانیاری ل سەر دێرا گۆندێ دێرەشێ بنێڕە: (کوڤان ئحسان یاسین، دێرا دێرەشێ ـ چەند پەیسکەك دناڤبەرا مە و دیرۆکەکا کەڤن، گۆڤارا (سیلاڤ، هژمارا (٣٤)، شواتا ٢٠٠٩، بپ١٤ ـ ١٥). و دیسان سەرەدانەك مەیدانی بۆ شوینوارێ دێرا دێرەشێ، ل ڕۆژا (شەمبی) ڕیکەفتی (٢٠٢٢/٨/٢٠).

(5) سەرەدانێن مەیدانی بۆ ناووسکێن ڤان گۆندێن دەڤەرا بەرواری بالا: (بازێ)، ل ڕۆژا سێشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٣/٣/١٢). و (ئەدنێ، سەرەرۆ، مایێ و ئەلکویشکێ)، ل ڕۆژا سێشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٣/٦/١٧). و (بێلویزانێ)، ل ڕۆژا ئەینی ڕێکەفتی (٢٠١٣/١٠/١١). و (دەرگەلکا سەیدا)، ل ڕۆژا ئەینی ڕێکەفتی (٢٠١٣/١٠/١٨). و گۆندێن: (کێستە و هرۆرێ)، ل ڕۆژا دووشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٣/١١/٤). و (گویلکا)، ل ڕۆژا چوارشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٥/٦/٣). و سەرەدانا شوینەوارێن دەڤەرا سپنێ بەهدینان و گارەیی: (قەدشێ)، ل ڕێکەفتی (٢٠١٣/١/٢٣). و (ئیسفکا)، ل ڕێکەفتی (٢٠١٣/١/٣٠). و (گۆندێ دێرێ)، ل ڕۆژا سێشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٣/١١/٣). و (زێوا شێخ پیرامویسی). ل ڕۆژا شەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٤/١/١٨). و (ئەرەدنا ژێری ـ نەسارا ـ و دێرەسۆرێ)، ل ڕۆژا چوارشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٤/٥/٧). و (دیهێکێ و مێرگەتوییێ)، ل ڕۆژا پێنجشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٤/٦/٥). و (دیهێ)، ل ڕۆژا سێشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٥/١/٦). و (ئینشکێ و شکەفتا کانی سێفکێ)، ل ڕۆژا سێشەمبی ڕێکەفتی (٢٠١٥/٦/٩).

(٦) د پەرتووکا (وفيات الأعيان)دا هۆسان بەحسێ (شێخ الإسلام) دکەت: (ئەبو ئەلحەسەن عەلی کۆڕێ ئەحمەدی کۆڕێ یووسفی کۆڕێ جەعفەری کۆڕێ عەرفەیێ هەکاری ئەوێ ناسیار ب شێخ ئەلئیسلام؛ کو بوونا وی ل سالا ٤٠٩ مشەختییە و مرنا وی ل ئێکی محەرەما سالا ٤هەشتێ و شەشێ مشەختی) (أبن خلكان، ١٩٧٨: ٣٤٥).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

[7] دێرەشێ: گۆندەکێ نێزیکی گۆندێ (زێوا شێخا)یە، دکەڤیتە باشۆرێ ڕۆژهەلاتێ ئامێدییێ بۆ لایێ باکۆرێ گارەیی. (العباسي، ١٩٦٩: ١٣٦).

[8] ئەڤ زانیارییە دگەل نەخشێ وێ ژ لایێ (کوڤان ئحسان بامەڕنی)ڤە، ل ڕێکەفتی (١/٦/٢٠١٣) گەهەشتیمە مە ب سوپاسیڤە.

**ژێدەر:**

**١. پەرتووک:**

**أ. ب زمانێ عەرەبی:**


١. القرآن الكريم.

٢. إبن الخلكان، أبي العباس شمس الدين أحمد بن محمد بن أبي بكر(٦٠٨هـ . ٦٨١هـ (١٣٩٨هـ/١٩٧٨م)، وفيات الأعيان وانباء أبناء الزمان، تحقيق/ الدكتور إحسان عباس، الطبعة (دون)، المجلد الثالث، بيروت، دار صادر.

٣. الأسود، حكمت بشير (٢٠١٢)، حضارة بلاد الرافدين . الأسس الدينية والإجتماعية، الطبعة الأولى، دهوك، دار المشرق الثقافية . دهوك.

٤. البوطي، د. محمد سعيد رمضان (١٩٩٠)، فقه السيرة، الطبعة السابعة، بغداد، مكتبة الشرق الجديد.

٥. بن كلدون، يوحنا (١٩٨٣)، تأريخ يوسف بوسنايا، ترجمة: يوحنان جولاغ، الطبعة الأولى، بغداد.

٦. بنگلى، سيپان حسن على (٢٠٠٥)، حصن كيفا (دراسة في تأريخها السياسێ والحضاري (١٢٠٠ . ١٣٠٠م))، الطبعة الأولى، أربيل، مؤسسة سپيرێز للطباعة والنشر . دهوك.

٧. الدمشقي، عمادالدين أبي الفداء إسماعيل إبن كثير (د س)، مختصر تفسير إبن كثير، تحقيق: محمد علي الصابوني، الطبعة الأولى، بيروت . لبنان، دار إحياء التراث العربي للطباعة والنشر والتوزيع.

٨. رووف، د.عماد عبدالسلام (٢٠١١)، المعجم التأريخي لإمارة بهدينان، الطبعة الأولى، أربيل، من مطبوعات الأكاديمية الكوردية.

٩. العباسي، محفوظ محمد عمر (١٣٨٨هـ . ١٩٦٩م)، إمارة بهدينان العباسية، الطبعة الأولى، موصل.

١٠. حداد، بنيامين (٢٠١٥)، موسوعة الديارات، الأجزاء (١ و ٢ و ٤ و ٧ و ٨)، الطبعة الأولى، دهوك، اللجنة الأدبية لكنيسة المشرق الآشورية.

١١. خنسي، د.بيوار (د س)، أبرز المواقع ألأثرية في محافظة دهوك، دهوك.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

١٢. دون أسم (٢٠٠٥)، الدليل السياحي، الطبعة الأولى، المؤسسة العامة للسياحة/ كوردستان العراق . أربيل.

١٣. ريحانا، العميد الركن سامى (٢٠٠٤)، موسوعة التراث القروي، الطبعة ألأولى، الجزء الأول، بيروت . لبنان، دار النشر والتوزيع (NOBLIS).

١٤. شمامي، الأب جبرائيل (٢٠٠٧)، تنا قريتي الحبيبة، عروس وادي صبنا، الطبعة الأولى، دهوك.

١٥. المايي، أنور (١٩٩٩)، الأكراد في بهدينان، الطبعة الثانية، دهوك.

١٦. المباركفوري، صفي الدين الرحمن (د س)، الرحيق المختوم، الطبعة (دون)، الرياض، دار السلام للنشر والتوزيع.

١٧. المرج، توما أسقف (١٩٦٦)، كتاب الرؤساء، تعريب: الأب البير أبونا، الطبعة الأولى، الموصل.

١٨. مجموعة من كبار الباحثين (٢٠٠٨)، موسوعة عالم الأديان، بأشراف: أبو طلال ب. مفرج، طبعة ثالثة معدلة، الأجزاء (الأول والثامن)، بيروت . لبنان، دار النشر والتوزيع (NOBLIS).

١٩. الندوي، أبو الحسن علي الحسني (١٩٨٩)، السيرة النبوية، الطبعة الثامنة، جدة . سعودية، دار الشروق للنشر والتوزيع والطباعة.

٢٠. نخبة من الأساتذة (د س)، قاموس الكتاب المقدس، هيئة التحرير: الدكتور بطرس عبد الملك، الدكتور جون ألكسندر طمسن و الأستاذ إبراهيم مطر، (دون مكان).

ب . ب زمانێ كوردی:

٢١. ئنجيلا پيرۆز. مزگينيا عيسايێ مەسيح، ب زمانێ كوردی . بەهدينی، چاپا ئێكێ، (لبنان: ٢٠١٩).

٢٢. أسماعيل سگێرى (٢٠٠٢)، تەفسيرا ژيان، چاپا ئێكێ، قم . تەهران.

٢٣. زێبارى و مايى؛ د.محمەد سالح و م. رێبەر مايى (٢٠١٢)، مێژوويا كوردستانێ يا كەڤن، چاپا ئێكێ، دهۆك، ڕيڤەبەرييا چاپ و بەلاڤكرنێ دهۆك.

٢٤. شێلازى، جەميل محەمەد (٢٠١٧)، ژ شوينەوارێن دەڤەرا ئامێدييێ، چاپا ئێكێ، دهۆك، ژ وەشانێن زانكۆيا دهۆك . سەنتەرێ بێشكچى بۆ ڤەكۆلينێن مرۆڤايەتى.

٢٥. هرورى، د.دەروێش يوسف حەسەن (٢٠١٠)، و: موسەدەق تۆڤى، چاپا ئێكێ، دهۆك.

٢. گۆڤار:

٢٦. برادۆستى و ياسين و محمد طاهر؛ د.زيدان رشيد خان اودل، كوڤان احسان، د.يادگار محمد سليم (٢٠٢١)، المباني الدينية بين الديانة المسيحية والإسلامية في منطقة (آميدى)، گۆڤارى (ئەكاديمياى كوردى، هژمارا (٤٩)، سالا ٢٠١٢، پشكا عەرەبى، هەولێر، ئەكاديمياى كوردى, بپ (٢٧٣ . ٣٠٤).

٢٧. دۆسـكى، تەحسـين ئيبـراهيم (٢٠١٣)، شـێخ ئيسـلامێ هـەكارى (٤٠٩ . ٤٨٦مشـەختى ١٠١٨ . ١٠٩٣زايينى) ناساندنەكا كورت و پسيارەكا گرنگ، **گۆڤارا (ديرۆك وار)**، هژمارا (١)، هاڤينا ٢٠١٣، دهۆك، بپ (١٤).

٢٨. ردێنى، وەصفى حەسەن (٢٠١٥)، كتاب الرؤساء پەرتووكا سريانى يە هندەك ژ ديرۆكا دەڤەرا بەهدينان تاكو سە (٨٤٠ز)الا تومارکريه، **گۆڤارا (نيژەن)**، هژمارا (٥)، زڤستانا ٢٠١٥ێ، بپ (١٠).

٢٩. شێلازى، جەميل محەمەد (٢٠١٨)، ڤەكۆلينەك لسەر دێرا باصياری و مەزارێ شێخ پيراموسى، **گۆڤارا (ديرۆك وار)**، هژمارا (١٩)، هاڤينا ٢٠١٨، دهۆك، بپ (٥٠ . ٩٥).

٣٠. ياسين، كوڤان ئحسان (٢٠١٠)، گوندێ ئيسفكا... وارگەه، جوگرافيا، شينوار و ئەفسانە، **گۆڤارا (سيلاڤ)**، هژمارا (٥٢)، تەباخا ٢٠١٠، دهۆك، بپ (١٦ . ١٨).

٣١. ياسين، كوڤان ئحسان (٢٠٠٩)، دێرا دێرەشێ . چەند پەيسكەك دناڤبەرا مە و ديرۆكەكا كەڤن، **گۆڤارا (سيلاڤ)**، هژمارا (٣٤)، شواتا ٢٠٠٩، بپ (١٤ . ١٥).

٣٢. ياسين و على؛ كوڤان ئحسان و نەزيف محمد (٢٠١٠)، گەرەگو..... شينوار و پێكڤە ژيان، **گۆڤارا (سيلاڤ)**، هژمارا (٤٦)، شواتا ٢٠١٠، بپ (١٠ . ١٢).

**الملخص:**

هذا البحث بحث ميداني وتحليلي، في البداية معرفة كفية و لماذا استخدم الإنسان الكهوف الطبيعية، والتي كانت تستخدم خلال عصور مختلفة كمأوى (للعيش والاختباء والعزلة والعبادة)، ثم التفكير في صنع كهوف يدوية. (محفور) خاصة في المناطق التي تكون فيها الكهوف الطبيعية قليلة أو غير موجودة، وإلقاء الضوء على العلاقة بين (الناووسك) والكنائس والغرض من وراء استخدامها.

يتكون البحث من جزأين، في الجزء الأول/ المحور الأول الكهوف، النواسك، الكنائس والراهبات تعاريف ومصطلحات، وملخص عن تاريخ (النواسك) في عصور مختلفة وخاصة مراحل المسيحية وما حدث لها.

و في المحور الثاني، يتم التركيز على العديد من النظريات حول متى والغرض من إنشاء الناوسك و الصوامع.

في القسم الثاني/ المحور الأول، تمت مناقشة أنواع النواسك، وكيف يتم تأسيسها هندسيًا، وفي أي أشكال تم إنشاؤها؟ حيث ذكرنا مجموعة من كل نوع من أنواع النواسك المنتشرة في منطقة العمادية، مع القاء الضوء على بعض الديارات في منطقة العمادية, والتي تحولت الى المساجد, في زمن البوهيين وهجماتهم على المنطقة, وكيف هدموا مئات الديارات في المنطقة, وأيضا فترة احتلال المنطقة من قبل الامبراطورية العثمانية, وأحتلال المنطقة من قبل مير محمد الرواندزي. و في المحور الثاني تمت مناقشة النظريات المذكورة في القسم الأول، وما هي النظرية الأكثر صحة بالنسبة للنواسك التي تم إنشاؤها وحفرها في الصخور في منطقة العمادية حسب موقعها الجغرافي؟ ولأسباب عديدة، أن النواسك في منطقة العمادية لديها علاقة قوية بالكنائس وقد تم استخدامهم للاختباء من الأعداء وكذلك لغرض الخلوة والعبادة.

**الكلمات الرئيسية**: *الكهف ، ناووسك، صومعة ، الكنيسة ، الراهبات ، منطقة العمادية ، المعبد والعبادة*

**Abstract:**

Our research is a field and analytical research. At the beginning we tried to find out about how and for what the natural caves were used by human being, which are used during different eras as a (shelter, and for living, hiding, solitude and worshipping), then thinking about making hand making caves (engraved) especially In areas where natural caves are few or do not exist, We shed light on what is the relationship between nawoosk and churches and the purposes behind of their using.

The research consists of two parts, in the first part/ topic 1, caves, nawoosk, churches and nuns as definitions and terms, an abstract about the history of Nawoosks in different eras specially the stages of the Christianity and what happened for it.

In the second section, the focus is on many theories about when and the purpose of establishing the Nawoosks/silos .

In the second section/ part one, the types of Nawoosks are discussed, how are they established geometrically, and in what forms were they constructed? in which we mentioned a group of each of its types widespread nawoosks in Amadiya area.

in the second part, the mentioned theories in the section one are discussed, which theory is truer for the nawoosks established and digged in rocks in Amadiya area according to its geography location? For many reasons we figared that the nawoosks in Amadiya area have a strong relation with churches and they were used for hididing from enimies as well as for worshipping purpose.

**The main words:** *Cave, nawoosk/ silo, church, nuns, Amadiya area, temple and worship*

# بزاڤی خوێندن و ڕۆشنبیری لە میرایەتی بادیناندا

**پ. د. ئاراس محمد صالح**
زانکۆی سلێمانی- کۆلێجی زانستە ئیسلامیەکان- سلێمانی/ عێراق

**پۆختە:**

دوای ئەوەی میرایەتییە کوردیەکان دامەزراون و بنیاتی کارگێری خۆیان چەسپاندووە، بەپێی ئەو توانایەی هەیانبووە، لە هەموو ڕوویەکەوە هەوڵی پێشخستنی دەسەڵاتەکەیانداوە، یەکێک لەو لایەنانەی جێگەی بایەخی میرە کوردەکان بووە، گرنگیدانیان بووە بە لایەنی خوێندن و ڕۆشنبیری، بۆ ئەم مەبەستەش هەوڵی زۆریانداوەو پشتگیری زانایان و فەقێکانیان کردووە، هەروەها خوێندنگەو مزگەوتیان بۆ دروستکردوون و وەقفیان بۆ دابینکردوون، هەموو ئەم هەنگاوانەش کاریگەری زۆریان هەبووە لە گەشەپێدانی خوێندن و ڕۆشنبیری.

ئەم توێژینەوە بە تایبەت باس لە (بزاڤی خوێندن و ڕۆشنبیری) دەکات لە میرایەتی بادیناندا، لە دەستپێکێک و دوو باس پێکهاتووە، لە دەستپێکدا بە کورتی مێژووی میرایەتی بادینان باسکراوە لەگەڵ گرنگیدانیان بە بواری خویندن و رۆشنبیری، ئەوەش خۆی دەبینێتەوە لە دروستکرنی خوێندنگاو هاوکاری زانایان و فەقێکان و دابینکردنی پێویستیەکانی خوێندن.

لە باسی یەکەمدا ئاماژەکراوە بە گرنگترین هۆیەکانی گەشەکردنی بزاڤی خوێندن و زانست لە سنوری قەڵەمڕەوی میرایەتی بادیناندا، وەک پشتگیری و هاوکاری میرەکانی بادینان لە پرۆسەی خوێندن و زانایان و گرنگیدانیان بە دانانی کتێب و پاراستنی بەرهەمی زاناکان، هەروەها دڵسۆزی خەڵکی ناوچەکە بۆ زانایان و هاوکاری فەقێکان، بەرقەراربوونی ئارامی ئاسایش هەتا ئاستێکی باش ڕۆڵی هەبووە گەشەکردنی خوێندن و ڕۆشنبیری و ئاوەدانی لەو ناوچەیەدا.

لە باسی دووەمدا باسی گرنگترین ناوەندەکانی خوێندن کراوە لە سنوری میرایەتی بادیناندا، بەتایبەتی خوێندنگەکان ئامێدی و قوبەهان و ئاکرێ و دهۆک و زاخۆ، کە چوار ناوەندی گرنگی خوێندەواری بوون لە سەردەمی میرایەتی بادیناندا، لەگەڵ ئاماژەکردنی بە ناوی ژمارەیەک خوێندنگەی تر لە دەڤەری بادیناندا.

لە کۆتاییدا گرنگترین ئەنجامەکانی توێژینەوەکە ئاکاژەی پێکراوە لەگەڵ ڕاسپاردەو پێشنیارەکاندا، لە کۆتاییدا لیستی سەرچاوەکان تۆمارکراوە.

**ووشە کلیلیەکان:** *بزاڤ، خوێندن، ڕۆشنبیری، میرایەتی بادینان.*

**پێشەکی:**

میرە کوردەکان بۆ بەرەوپێشبردنی دەسەڵات و میرایەتیەکەیان هاوکاری بزاڤی خوێندن و زانستیان کردووە، ئەو خوێندنگایانە تەنها ناوەندبوون خوێندەوارو نووسەرو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کەسی شیاوی بۆ پەروەردە کردبن، خوێندنگە ئاینییەکانی ئەو ڕۆژگارە ڕۆڵی گەورەیان بینیوە لە ئێگەیانی خوێندەواری بە تواناادا، لەلایەکی ترەوە میرەکان بۆ جوان کردنی ڕووی دەسەڵاتەکەیان و ململانیی لەگەڵ میرایەتی و دەسەڵاتەکانی دەوروبەریاندا شانازیان بە خوێندەوارو زاناکانی ناو چوارچێوەی قەڵەمڕەوەکەیانەوە کردووە.

میرە کوردەکان بەهۆی دڵسۆزیان بۆ گەل و نیشتمانەکەیان پشتگیری بەردەوامی بزاڤی خوێندنیان کردووە، هەربۆیە هەوڵی زۆریانداوە زانای گەورەو خوێندنگەی ئاوەدان لە سنووری قەڵەمڕەوەکەیاندا دروستبکەن، لەگەڵ هەموو ئەمانەشدا پاڵنەری ئاینی ڕۆڵی گەورەی هەبووە لەوەی میرە کوردەکان هەموو کات هاوکاری پرۆسەی خوێندنبن و پشتگیری زانایان و قوتابیان بکەن.

لەم توێژینەوەدا توێژەر هەوڵ دەدات سیاسەتی ڕۆشنبیری میرەکانی میرایەتی بادینان ڕوون بکاتەوە، بۆ ئەم هەوڵە زانستییە پشت بە سەرچاوەی ڕەسەن و دەستنووس بەڵگەنامەکان دەبەستێت لە بواری توێژینەوەکەیدا.

**گرنگی توێژینەوە:** بەشێوەیەکی گشتی مێژوونووسان زیاتر گرنیان بە نووسینەوەی مێژووی سیاسی و سەربازیداوە، ئەوەندەی توێژەر ئاگاداربێت هەتا ئێستا بەشێوەی توێژینەوەی زانستی سەربەخۆ کەم لەبارەی لایەنی ڕۆشنبیری و زانستی میرایەتیە کوردیەکانەوە نووسراوە، بەتایبەتی میرایەتی بادینان لە ئامێدی، لەگەڵ ئەوەشدا بایەخدانی میرەکانی بادینان بەلایەنی خوێندن و خوێندەواری جێگەی ستایش و لێکۆڵینەوەیە، ئەم توێژینەوە هەوڵێکە لەو بوارەدا.

**ڕێبازی توێژینەوە:** ئەم توێژینەوە بە ڕێبازی وەصفی شیکاری دەنووسرێت.

پرسیاری توێژینەوە: ئایا لە سنووری میرایەتی بادیناندا بزاڤی خوێندن و ڕۆشنبیری لە چ ئاستێکدا بووە؟ میرەکانی بادینان چەندە هاوکاری پرۆسەی خوێندن بوون لە ڕۆژگاری خۆیاندا؟ ئەو هۆیانە چی بوون هاوکاری گەشەکردنی خوێندن و ڕۆشنبیریانداوە لە ڕۆژگاری بادیناندا؟ ئەم توێژینەوە هەوڵ دەدات وەڵامی ئەم پرسیارانە بداتەوە.

**سنوری توێژینەوە:** لە ڕوی شوێنی جوگرافیەوە تەنها سنوری میرایەتی بادینان لەخۆ دەگرێت، لەڕووی کاتەوە، باس لەو ماوەیە دەکات کە میرایەتی بادینان حوکمی تێداکردووە.

پلانی توێژینەوە: ئەم توێژینەوە لە پێشەکیەک و دەسپێکێک و دوو باس پێکهاتووە، لە پێشەکیدا باس لە گرنگی توێژینەوەو ڕێباز و پرسیاری توێژینەوەو پلانەکەی دەکرێت، لە دەستپێکدا ناساندنێکی کورت بۆ میرایەتی بادینان ئەنجام دەدرێت، لە باسی یەکەمدا هۆیەکانی گەشەکردنی بزاڤی خوێندن و ڕۆشنبیری لە میرایەتی بادیناندا شرۆڤە دەکرێت، هەروەها لە باسی دووەمدا گرنگترین ناوەندەکانی ڕۆشنبیری لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

سنووری میرایەتی بادینان باس دەکرێن، لە کۆتاییدا ئەنجامی توێژنەوەو ڕاسپاردەکان دەنووسرێت لەگەڵ لیستی سەرچاوەکاندا.

**دەستپێک:**

**کورتەیەک لەسەر میرایەتی بادینان**

هەرچەندە بۆچونی جیاواز هەیە لەبارەی مێژووی پێکهێنانی میرایەتی بادینانەوە، بەڵام زۆرێک لە لێکۆڵینەوەکان مێژووی دروسبوونی دەگەڕێننەوە بۆ دەوروبەری کۆتایی سەدەی حەوتەم و سەرەتاکانی سەدەی هەشتەمی کۆچی، میرەکانی ئەم میرایەتیە شاری ئامێدیان کردووەتە پایتەختی دەسەڵاتەکەیان، سەرەتا لەلایەن میر خەلیل پاشای کوڕی میر عیزەدین پاشاوە کە نازناوی (بەهادین)بووە دروستکراوە، لە پاشاندا بەناوی ئەو میر بەهادینەوە ناوی (بەهادینان)ی وەرگرتووە، دواتر بە تێپەڕبوونی ڕۆژگار ناوی میرایەتیەکەو هەموو ناوچەکە بووە بە بادینان[1].

هەرچەندە هەندێ لە مێژوونووسان ڕیشەی بنەماڵەی میرەکانی بادینان دەبەنەوە بۆ سەر ڕەچەڵەکی بنەماڵەی حوکمڕانی عەباسییەکان لە شاری بەغداد[2]، بەڵام مێژوونووسی ناسراو شەرەفخانی بەدلیسی ئەم بۆچوونە پەسەند ناکات و بە بێ بەڵگەو بێبنەما وەسفی کردووە[3].

ئەوەی پێویستە لێرەدا بوترێت ئەوەیە کە شەرەفخانی بەدلیسی لە ڕۆژگاری ئەو میرایەتیەدا ئەو کتێبەی نووسیوەو قسەکەی ئەو وەجێگەی بایەخە، نەک کەسانێک دوای چەند سەدەیەک هاتوون ئەو مێژووە تۆمار بکەن.

لەگەڵ ئەوەشدا ئەوەی پێویستە لێرەدا باس بکرێت، ئەو بەڵگەنامەیە (الشجرة الزیوکیة)یە کە بەڵگەنامەیەکی کۆنەو بەناوی گوندی (زێوە)وە ناوبراو کە تێدا پارێزراوە، ئەم بەڵگەنامە لەلایەن مێژوونووس (د.عماد عبدالسلام)وە لێکۆڵینەوەی لەبارەوە کراوەو ئەوەی پشتڕاستکردووەتەوە کە بنەچەی میرەکانی ئامێدی دەچێتەوە سەر بنەماڵەی عەباسیەکان لەدوای هێرشەکانی هۆلاکۆوە بۆسەر بەغداد عەباسیەکان پەرتەوازە بوون و دواتر لقێکیان گەیشتونەتە کوردستان و لە شەمزینان و ئامێدی توانیویانە جارێکی تر دەسەڵات بگرنەوە دەست[4].

ئەوانەی لێکۆڵینەوەیان لەبارەی مێژووی میرایەتی بادینانەوە کردووە، ئاماژەیان بەوە کردووە کە سەرەتا لە سەرووی زێی گەورەوە دروستکراوە، لەسەر سنوری میرایەتی شەمزینان، پاشان بەرەو ڕۆژئاوا درێژبووەتەوەو دەستیان بەسەر قەڵای ئامێدیدا گرتووەو کردوویانە بە پایتەختی دەسەڵاتەکەیان، پاشان سنورەکەیان فراوان کردووە، توانیویانە دەسەڵاتی خۆیان زیاتر فراوان بکەن و بگەنە سنوری چیاکانی هەکاری و کەنارەکانی زێی گەورە[5].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

میرایەتی بادینان لە کۆتاییەکانی سەدەی نۆیەمی کۆچی (١٥م) توانی لە ڕۆژئاواوە دەستبگرێت بەسەر زاخۆدا و لە میرایەتی بۆتانی دابڕێت، لەو کاتەدا توانیویەتی سوود لە کێشەکانی نێوان هەردوو دەوڵەتی عوسمانی و صەفەوی وەربگرێت و سنوری دەسەڵاتەکەی فراوان بکات لەسەر حسابی میرایەتییە کوردیەکانی دراوسێی، بۆ ماوەی چەند ساڵێک شاری موصڵی خستووەتە ژێر دەسەڵاتی خۆیەوە، لەو ڕۆژگارەدا موصڵ گرنگی و بایەخی زۆری هەبووە، چونکە ناوەندی ویلایەتی موصڵ بووە کە گرنگی زۆری هەبووە لەلای دەوڵەتی عوسمانی[٦].

پێگەو گرنگی میرایەتی بادینان لە هەردوو سەدەی دەیەم و یازدەیەمی کۆچیدا (١٦-١٧ز) زیاتر لە ڕووی سیاسیەوە دەرکەتووە، بەجۆرێکی وەها کە بووەتە یەکەیەکی کارگێری سەربەخۆ، ڕاستەوخۆ پەیوەندی بە سوڵتانی عوسمانی (باب العالی)وە هەبووە لە ئەستەمبوڵ، میرەکانی بادینان فەرمانیان ڕاستەوخۆ لە سوڵتانی عوسمانی وەرگرتووەو بۆ چارەسەری کێشەکانیان و هێرشە سەربازیەکانیان، میرایەتیەکەیان وەک حکومەتێکی سەربەخۆ (حکومت) کاری کردووە، میرەکەش بە ناوی (حاکم)ەوە حوکمڕانی کردووە، دەسەڵاتی کۆکردنەوەی باج و دانانی قازی و فەرماندەی لەشکری هەبووە[٧].

سیستمی حکومڕانی بنەماڵەیی بووەو لە باوکەوە بۆ کوڕەکانی ماوەتەوە، لە سەرەتاکانی سەدەی دوانزەی کۆچیدا (١٨ز)دا کاریگەربووە بە نەخشەی (الخطة العراقية) کە بەرزکردنەوەی ئاڵاکەی لە دەسەڵاتی والی بەغدادا بووە، لەو نەخشەدا داواکراوە والیەکانی بەغداد سەرپەرشتی ویلایەت و میرایەتیەکانی دەوروبەریان بکەن، لەو هەنگاوەشدا والی بەغداد سەرکەتوو بووە بە لکاندنی میرایەتی بادینان بە ویلایەتی بەغدادەوە، والی بەغداد داوای کردووە کە میرایەتی ئامێدی باجی ساڵانە بدەن بە والی بەغداد[٨].

میرەکانی بادینان بەپێی کاریگەری بە دەرەوەی خۆیانەوە چەند نازناوێکیان هەبووە، سەرەتا بە پاشا (ملک) ناوبراون، ئەمەش ئاماژەیە کە نیمچە سەربەخۆ بوون لەو کاتەدا، لە سەدەکانی نۆ و دەی کۆچی (١٥-١٦ز) بە سوڵتان ناوبراون، ئەمەش نیشانەی سەربەخۆیی تەواویانە لەو قۆناغەدا، لە سەدەی یازدەی کۆچی (١٧ز) نازناوی (خان)یان وەرگرتووە، ئەمەش بەڵگەی کاریگەریان بووە بە دەوڵەتی صەفەوی لەو ڕۆژگارەدا، لە سەدەی دوازدەی کۆچی (١٨ز) بە نازناوی (بەگ) ناوبراون، ئەم نازناوە دراوە بەو کەسانەی لەلایەن سوڵتانی عوسمانیەوە دامەزراون، لە قۆناغێکی دواتر نازناوی پاشایان وەرگرتووە.

پێکهاتەی کارگێری میرایەتیەکە بەهێز بووە، میر لە ئامێدی پایتەخت دانیشتووە، قازیەک هاوکاری کردووە بۆ کاروباری سکاڵاو فتوادان و دەسەڵاتی یەکلایی کردنەوەی هەبووە، لە هەموو شار و گوندێکی سەرەکیدا میرێکی بنەماڵەی فەرمانڕەوا


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دانــراوە، بــۆ هەمــوو هــۆزو عەشــیرەتێکیش ســەرۆکێک دیــاری کــراوە، میــرایەتیەکە لەشکرێکی چەکداری هەبووە، چەکدارەکانی پێکهاتووە لە هێزی عەشیرەتەکانی ژێر دەسەڵاتی میرایەتیەکە، بۆ هەمموو عەشیرەتێک بلۆکێک (سریە)یەک یان زیاتری هەبووە.

ئەم میــرایەتیە لە مــاوەی حــوکمڕانی خۆیــدا نــزیکەی (٣٨) میــر حوکمڕانیــان کردووە، ماوەی نزیکەی شەش سەدە بەردەوام بووە، لە ڕۆژگاری سوڵتانی حسێن وەلیدا کە (٤١) ســاڵ بەردەوام بــووە، لە نێــوان ســاڵانی (٩٤٠-٩٨١ک) حــوکمی کــردووە، بەهێزتــرین دەسەڵات و فراوانتـرین سـنوری هەبـووە، یەکەم میـر، یـان پاشـای ئەم میـرایەتیە خەلیـل پاشـا بـووە، کۆتـا میـری ئیسـماعیل پاشـا بـووە، کە لە نێوان سـاڵانی (١٢٥١-١٢٥٨ک) حـوکمڕان بووە، لە ساڵی (١٢٥٨ک- ١٨٤٢ز) کۆتایی بە دەسەڵاتەکەیان هاتووە.

دوای چەنــد ســەدەیەک لە حــوکمڕانی بەهــۆی کۆمەڵێــک پــاڵنەری نــاوخۆیی و دەرەکیەوە کۆتایی بە دەسەڵاتی میرایەتی بادینان هاتووە، لە گرنگترین هۆیەکانی ڕوخانی ئەم میــرایەتیە بریتــی بــووە لە نــاکۆکی نــاو بنەمــاڵەی حوکمڕان و ڕێکنەکەوتیــان لە ســەر دابەشکردنی دەسەڵات، هەروەها ململانێی و هێرش و پەلاماری میرایەتیە کوردیەکانی وەک سۆران بـۆ سـەر ئامێدی، لە هەمـان کاتـدا گـۆڕانی سیاسـەتی دەوڵەتـی عوسـمانی کە خـۆی ڕاستەوخۆ حوکمی هەموو ناوچەکانی ژێر دەسەڵاتی بکـات و هەمـوو میرایەتـی و دەسـەڵاتە ناوچەییەکانی هەڵوەشاندەوەتەوە[٩].

## باسی یەکەم

## هۆیەکانی گەشەکردنی بزاڤی خوێندن و ڕۆشنبیری لە میرایەتی بادیناندا

بێگومــان گەشەکردنی هەرلایەنێکی وڵات و دەســەڵاتی سیاســی کۆمەڵێــک هــۆی بــابەتی و نــاوخۆیی هەیە، گەشــەکردنی لایەنــی زانســت و ڕۆشــنبیری و زۆربــوونی ژمــارەی خوێنـدنگاو کۆبـوونەوەی مامۆسـتایان و ژمـارەیەکی بەرچـاو فەقـێ لە سـنوری قەڵەمـڕەوی میرایەتــی بادینانــدا دەگەڕێــتەوە بــۆ کۆمەڵێــک هــۆی ســەرەکی کە لێــرەدا ئامــاژە بە هەندێکیان دەکەین، لە گرنگترینی ئەو هۆیانە:

**یەکەم/ پشتگیری میرەکانی بادینان لە پرۆسەی خوێندن:** میرەکانی بادینـان هەموویـان پشــتگیری و هاوکــاری زانایــان و فەقێــی و خوێنــدنگەکان بــوون، تەنــانەت هەنــدێکیان نووسـەرو دانەری کتێب بوون، خوێندنگە ئاینیەکان تەنها ناوەندی خوێندن و خوێنـدەواری بوون لەو ڕۆژگارەدا، میرە کوردەکان بۆ ئەوەی کەسانی شیاو بەتوانا بـۆ هەمـوو بەشـەکانی دەسەڵاتەکەیان پەروەردە بکەن خوێندنگە ئاینیەکان تەنها شوێنێک بـوون نووسـەرو قـازی و موفتی و مێژوونووس و مامۆستایان پێبگەیەنێت، هەربۆیە بەردەوام هاوکـارو پشتگیری ئەو ناوەندانە بوون و مناڵی خۆیانە ناردووەتە لای مامۆستاکانی سنوری دەسـەڵاتەکەیان بۆ ئەوەی فێری خوێندەواریان بکەن[١٠].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەم بنەماڵە رۆشنبیرەدا ژمارەیەکی زۆر میری پێگەیشتوون کە گرنگی زۆریان بە زانست و رۆشتبیریداوە لە ناوچەکەیاندا، وەک دامەزراندنی خوێندنگە، وەقفی کتێب، بەخشینی ماڵ بە مامۆستایان و قوتابیان، هەندێکیان دانەرو ئەدیب بوون، ئارامی ئاسایشی میرایەتیەکەیان پاراستووە، ئەمەش گەشەکردنی ژیاری بەدوادا هاتووە، ئەو ئارامیە پاڵنەری گەشەکردنی بزاڤی خوێندن و رۆشنبیریش بووە.

دەتوانین بڵێین هاندانی میرایەتیەکە بۆ بزاڤی رۆشنبیری رەنگدانەوەی زۆری هەبووە لە بەرامبەردا، وەک چەسپاندنی ئاکاری کۆمەلایەتی بەرز، وە چەمکی سیاسی نوێ، وە بنەمای رێزگرتنی سیستمی سیاسی لەبری پاشاگەردانی[11].

**دووەم/ بنیاتنانی مزگەوت و خوێندنگە:** لە رۆژگاری میرایەتی بادیناندا ژمارەیەکی بەرچاو مزگەوت و خوێندنگە بنیاتنراون، یان بەردەوام نۆژەن کراونەتەوەو پێویستی مامۆستایان و پرۆسەی خوێندن دەستەبەر کراوە، لە شاری ئامێدی ناوەندی دەسەلاتەکەیاندا کۆمەڵێک ناوەندی خوێندن و رۆشنبیری بنیاتنراون، هەروەها لە ئاکرێ و دهۆک و زاخۆ و چەند گوندێکی ناو سنوری قەڵەمرەوەکەیاندا خوێندنگەیان بنیاتناوە، بەهۆی هاوکاری بەردەوامی میرەکانی ئامێدیەوە بەردەوام لایەنی خوێندن و رۆشنبیری لە گەشەکردندا بووە[12].

میرەکانی بادینان لە ناوشاری ئامێدیدا ژمارەیەک خوێندنگەیان کردووەتەوەو ژمارەیەک خوێندنگەی دێرینیان نۆژەنکردووەتەوە، بەلام لە هەموویان گرنگتر بنیاتنانی خوێندنگەی قوبەهان بووە، لەو رۆژگارەدا ئەم خوێندنگەیە لە ئاستی زانکۆدا بووە، خوێندنگەکانی ئاکرێ و دهۆک و زاخۆو مایێ ئەرمشت و بامەرنی و شوێنەکانی تر بەڵگەی گرنگیدانی ئەو میرانەیە بە پرۆسەی خوێندن و رۆشنبیری لە قەڵەمرەوەکەیاندا[13].

**سێیەم/ بلاوکردنەوەی رەوشت و ئاکاری بەرز:** خوێندنگەو مزگەوتەکانی کوردستان ناوەندێکی گرنگ بوون بۆ بلاوکردنەوەی رەوشت و ئاکاری جوان، بنەماکانی ئیسلام کە لەو خوێندنگایانەدا خوێندراون خەڵکیان فێری راستگۆیی‌و دەستپاکی و داوێنپاکی و دوورکەوتنەوە لە هەموو کردەوەیەکی خراپ کردووە، دڵسۆزانی کورد زانیویانە ئەو رەوشتە جوانانەی لە خوێندنگەکاندا فێری دەبن باشترین رێگەی پاراستنی میللەتە لە کردەوەی خراپ و داڕوخانی کۆمەڵگە، هەربۆیە خەڵکی بەگشتی هاوکاری ئەو ناوەندانەیان کردووەو منداڵی خۆیان ناردووەتە ئەو خوێندنگایانەو هانی خەڵکیانداوە بەهەموو شێوەیەکی دارایی و مەعنەوی هاوکاریان بکەن[14].

**چوارەم/ پابەند بوون بە سیستەمەوە:** زۆرجار هەندێ خێڵ و دەستەو گروپ کێشەیان بۆ میرو دەسەلاتە ناوچەییەکان دروست کردووە، لەبەرامبەردا مامۆستایانی ئاینی‌و ئەو رێنوێنیانەی لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

خوێندنگەکاندا دەخوێندران هانی خەڵکیان دەدا بۆ پابەند بوون بە قانوون و سیستمی میرەکان و دوور کەوتنەوە لە هەموو کردەوەیەکی ڕێگری و یاخیبوون لە دەسەڵات[15]. بێگومان ئەم ئارامیە کۆمەڵایەتیە هۆی گەشەکردنی وڵات بووە لە هەموو ڕووەکانی شارستانی و ڕۆشنبریەوە.

**پێنجەم/ دابینکردنی وەقف:** یەکێک لە هەنگاوەکانی میرەکان بۆ خزمەتکردنی پرۆسەی خوێندن لەناو میرایەتیەکەیاندا، دابینکردنی وەقف بووە بۆ بەڕێوەچوونی ئیشوکاری خوێندنگەو مامۆستاکان، میرەکانی بادینان لە ماڵ و سامانی خۆیان و داهاتی حکومەتەکەیان بەردەوام پشتگیری ناوەندەکانی خوێندنیان کردووە، هەروەها گوند و باخ و زەوی کشتوکاڵیان وەقف کردووە بۆ خوێندنگەکانیان.

لە هەمان کاتدا ئەو زەکاتە دەیەکەی ساڵانە لە بەروبومی جوتیارەکانیان وەرگرتووە تایبەتیان کردووە بۆ خزمەتی مزگەوت و خوێندنگەو مامۆستاو فەقێکان، لە هەمان کاتدا ساڵانە باجێکیان لەسەر جولەکەو گاوەرەکانی ناو قەڵەمڕەوەکەیان داناوەو بەکاریانهێناوە بۆ خزمەتی زانست و خوێندن[16].

سیستمی وەقف جۆرێک لەسەربەخۆیی بۆ ناوەندەکانی خوێندن و زانایان دەستەبەرکردووەو هەموو کات چاویان لە دەستی میرو دەسەڵاتدارەکان نەبووە کە هاوکاریان بکات، لە هەمان کاتدا لەکاتی کێشەو شەڕدا، یان مردنی میرێکدا تووشی کێشەی دارایی نەبووونەتەوە بەهۆی ئەو وەقفانەی بۆیان دابینکراوە، لەگەڵ هەمو ئەمانەشدا بەردەوام خەڵکی خێرخوازی شارو شارۆچکەو گوندەکان یارمەتی و مزگەوت و فەقێ و مزگەوتیان کردووەو بە چاوێکی خواناسی و پاداشتی دواڕۆژ سەیری ئەو هاوکاریانەیان کردووە.

**شەشەم/ دەستەبەرکردنی کتێب و پێویستی خوێندن:** میرەکانی بادینان هەموو کات لە خەمی پەیداکردنی کتێب و دەستنووسی بە نرخدابوون بۆ مامۆستاو فەقێکان، بەم هەنگاوەشیان خزمەتی زۆری فەرهەنگ و خوێندنیان کردووە، هانی زاناکانیانداوە بۆ نووسین و دانانی کتێب، لە هەمان کاتدا زۆر لە خەمی پاراستنی دیوانی شاعیران بەرهەمی زانا کوردەکاندا بوون، ئەو سەرچاوانەی باسیان لە مێژووی خوێندنگاکان کردووە ئاماژەیان بەوە کردووە کە کۆگای کتێب (خزانة الكتب)یان هەبووە، هەندێک لەو کۆگایانە زیاتر لە هەزار نوسخەی دەستنوسی بە نرخی تێدابووە[17].

لایەنێکی دی لەلایەنە پرشنگدارەکانی میرانی ئامێدی بە ڕۆشنبیری لە دەڤەرەکەیاندا، ئەو بایەخدانە گەورەیان بووە بە کۆکردنەوەی دەستخەت و دانراوی جۆراوجۆری مامۆستایانی جیهان. ئەو هەوڵە گەورەیە بەرەکەی کتێبخانەیەکی کەم وێنە بووە، کە مەگەر هەر خودا بزانێ چەند دانراوی بێ وێنەو چەند دەستخەتی زەڕکەفتکراو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

چەند دیاری نایابی تێدا پارێزراو بووە. بەڵام بە پوکانەوەی میرنشینەکە، کتێبخانەکەشیان (کتێبخانەی قوببەهان) بەر چەپۆکی زەمانە کەوتووەو بەشی زۆری بە تالان و دزین و دەستبەسەراگرتن و مشک و مۆرانەو چەندین جۆری دیکەی تێدا چوون و تێدا بردن و لەناوبردن و بێ سەروشوێن بووە.

پاشماوەیەکی کەمی- کە بەڵگەی گەورەیی ئەو کتێبخانەو بایەخدانی کەم وێنەی میرانی ئەو دەڤەرە، بە تایبەتی میر حسێنە بەم لایەنە پڕ بایەخەی ڕۆشنبیری، لەم دوایانەدا لە ڕێگەی مامۆستایەکەوە درا بە (دار العراق للمخطوطات) کە ژمارەیان (٣٢٠) دانە زیاتر دەبن و بە (٢٠٧٦٥-٢١٠٨٦) تۆمار کراون[١٨].

میرەکانی بادینان تەنها گرنگیان بە دەستنووس و کتێبە ئاینیەکان نەداوە، بەڵکو گرنگیدانیان بە شیعرو ئەدەب و مێژوو، لە کارە لە پێشینەکانی ئەو میرانە بووە، هەربۆیە هانی هەندێ لە مامۆستایانداوە کە دیوانی مەلای جزیری شەرح بکەن و دەستنووسەکانی ئەو دیوانە بپارێزن و وەک بابەتێکی گرنگ سەیریان کردووە، نووسەر محەمەد عەلی قەرەداغی لەباسی بایەخدانی میرەکانی بادیناندا بە بزاڤی ڕۆشنبیری و زانست و ئەدەب لە چەند خاڵێکدا کورت دەکاتەوەو ئەڵێت:

یەکەم: ئەو بایەخدانەی میرەکانی بادینان لە چوار دەقی شەرحی دیوانی چەند قەصیدەی مەلای جزیریدا ڕەنگی داوەتەوە، کە مامۆستایانی کورد شەرحی قەصیدەکانیان کردووەو، دوایی کارەکانیان پێشکەش بە دوو میری عیمادییە زوبەیر پاشاو، ئیسماعیل پاشا کردووە.

دووەم: ئەو بایەخدانە هەر لایەنی ئەدەبی نەبووەو، لایەنە جۆراوجۆرەکانی زانستی وەک: تەفسیر و، شەرع و، بابەتی دیشی گرتوەتەوە.

سێیەم: کەرەستەی پێویست بۆ مامۆستاو فەقێ لە ڕووی فراوانکردنی ئاستی زانستیانەوە، ئەمەش خۆی لەو کتێبخانە گەورەو کەم وێنەدا دەبینێ کە لە عیمادییەدا بەناوی (مكتبة قبهان)وە بووە، سەدان و هەزاران کتێبی پڕ بایەخی لە هەموو جۆرە زانیاریەکی سەردەم تێدابووە[١٩].

**حەوتەم/ هاوکاری زانایان و کۆکردنەوەیان لە سنوری میرایەتیەکەدا:** یەکێکی تر لە بەرنامەی میرە کوردەکان بۆ پێشخستنی بزاڤی خوێندن لە سنوری میرایەتیەکەیاندا بریتی بووە لە کۆکردنەوەی زانا گەورەکان و کردنەوەی خوێندنگەو دابینکردنی پێداویستی خوێندن بۆیان، بێگومان میرەکانی بادینان لەم ڕووەوە دریغیان نەکردووە، چوونی مامۆستایانی حەیدەری لە شاری هەولێرەوە زانایانی گوندی زیارەتی ناوچەی خۆشناوەتی بۆ ئامێدی و ژمارەیەکی مامۆستا تر لە ئامێدی و قوبەهان و شوێنەکانی تری سنوری میرایەتی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

وانەیـان وتـوەتەوەو لە بنەڕەتـدا خەڵكـی ئەو نـاوچە نەبـوون، بەهـۆی هانـدان و پشـتگیری میرەكانی ئامێدیەوە بووە[٢٠].

**هەشـتەم/ تایبەتمەنـدی خەڵكـی نـاوچەكە:** بەهـۆی زۆری زانایـان و خوێنـدنگەی ئـاینیەوە خەڵكـی نـاوچەی میرایەتـی بادینـان خەڵكـانی زانسـتخوازو ئاشـتیپەروەر بـوون، هەمـوو كـات هاوكاری كاری چاكەیان كردووەو دووركەوتوونەتەوە لە خراپە، ئەمەش جۆرێـك لە هێمنـی و ئاسایشــی كــۆمەڵایەتی دروســتكردووە، ئەو هێمنــی ئــارامیەوە یــارمەتی پێشــكەوتنی ناوچەكەیداوە لە ڕووەكـانی زانستی و ئـاوەدانی و پێشـكەوتنی كۆمەڵایەتی و بەرقەرابـوونی ئاسایشی و ئارامی لەو ناوچەیە.

شــەرەفخانی بەدلیســی لەبــارەی سروشــتی خەڵكــی ئامێــدیەوە ئەڵێــت: (زمــان و فەرهەنگیـان بە كـوردی و عـارەبی هەوێـن كـراوە، گەورەو بچووكیـان پـاك و بە دیـن و خێرخـوڵان و دڵیـان بە چـاكەوە بەنـدە، میرانـی ئامێـدی خوێنـدنگەو مزگەوتیـان لەوێ سـازكردوون، مامۆسـتایان و زانایـان سـەرقاڵی پەرەپێـدانی زانسـتی دینـین و لەسـەر ئەو ڕێبـازە دەڕۆن كە بڕوای بە هەقی تێدا سەلماوە)[٢١].

**نـۆیەم/ بەرقەراری ئاسـایش:** بەپێـی ئەو سیاسـەتەی پەیڕەویـان كـردووە، میرەكـانی بادینـان لەشــكرێكی ســەربازی تۆكمەیــان هەبــووە، پێكهــاتەی ئەم لەشــكرە لە هەمــوو هــۆزو عەشیرەتەكانی سنوری دەسەڵاتەكەیان بووە، بەتایبەتی عەشیرەتە گەورەكـان، ئەم هەنگـاوە سیاسـەتێكی دانایانە بـووە كە پەیڕەویـان كـردووەو زۆرتـرین كەسـیان بەشـداری پێكـردووەو لەنـاو پێكهـاتەی حكومەتەكەیانـدا، بەو هـۆیەوە هەمـوو عەشـیرەتێك میـرایەتیەكەی بەهـی خۆی زانیوەو وەلائی تەواوی بۆی هەبووەو هاوكـارو پشـتگیری دەسـەڵات بـووە، ئەم هەنگـاوەش كاریگەری زۆری هەبووە لە پاراستنی ئاسایش و ئارامیدا، لە هەمان كاتدا هێزێكـی تۆكمە بوون بۆ بەرگری لە هێرشی دەركی بۆ پاراستی میرایەتی بادینان[٢٢].

**دەیەم/ سـەربەخۆیی مەلا و فەقێـی كـورد لە خوێندنـدا:** لەگەڵ هەمـوو نائارامیەكـانی كوردسـتان و شـەڕی نێوان عوسمانی و صـەفەوی لەلایەك، لەلایەكـی تـرەوە ململانێی نێوان میـرایەتیە كوردیەكـان نەیتوانیـوە ڕێـگەی هـاتووچۆی خوێنـدن لە فەقێ و مەلای كـورد بگرێت، بەڵكو مەلا و فەقێی كورد نەبوونەتە بەشێك لە ململانێی و لایەنگیری لایەك، بەڵكـو هەمـوو كـات و سـەردەمێكدا هـاتۆچۆی نێـوان عوسـمانی و صـەفەویان كـردووە، لەلایەكـی تـرەوە لە نێـوان میـرایەتیە كوردیەكـانی بادینـان و سـۆران و بابانـدا بە ئـازادی هـاتوچۆی خۆیـانكردووەو بەدوای زانـای گەورەو خوێنـدنگەی بەناوبانگـدا گەڕاون، بێئەوەی كێشەو پەلامارەكانی نێوان ئەو میرایەتیانەی بتوانێت بێتە بەربەست لەبەردەمیاندا.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

نووسەر مەسعود محەمەد لەمبارەوە ئەڵێت: زۆربەی گەشتی فەقێکانی کوردستان لە سنوری کوردستاندا بووە، واتە: جوگرافیای گەشتەکانیان نەخشەی کوردستانی کێشاوە، هەرچەندە سیاسەتی نێوان دەوڵەتان خۆی نەناس کردبێ لەو نەخشەو سنورە، بێگومان بزوتنەوەیەکی بێخوتەو پلانی فەقێیان لە هەموو خاکی کوردستانداو بە جۆرێکی هەمیشەیی و بە قەڵەبالغی و لەسەر ئەرکی خەڵکی کوردەواری، بەڵگەی بوونی گیانێکی ئاشنایەتی و خۆیایەتی و یەک ماڵیە لە نێوان خەڵک و فەقێکاندا، کە هەموویان پێکەوە هەستیان بەو یەکبوونە کردووە، هەست بە کوردبوون ئەوەندە بەهێز بووە لە نێوان فەقێ و خەڵکدا، سنوری نێوان عوسمانی و ئێرانی نەیتوانیوە ئەو هەستە کەرت بکات، تەنانەت کە هەردوو دەوڵەت شەڕیشیان بوویێت، فەقێی ژێردەستی عوسمانی هاتوچۆی خوێندنی هەر کردووە بۆ ناو کوردی ژێردەستی ئێران، بە پێچەوانەشەوە، هەردوو دەوڵەتیش لای خۆیانەوە بە واقیعی بێدەنگ و بگرەوبەردە دانیان بەو کوردایەتیەدا ناوەو لێی بێدەنگ بوون[٢٣].

**باسی سێیەم**

## گرنگترین ناوەندەکانی ڕۆشنبیری میرایەتی بادینان

هەرچەندە لە ڕۆژگاری میرایەتی بادینانەدا لە ژمارەیەک شارۆچکەو گوندی گەورەدا مزگەوت و خوێندنگە هەبووە، بەڵام لێرەدا زیاتر باسی ناوەندە گەورەکانی خوێندن دەکەین لەو ڕۆژگارەدا، لە توێژینەوەیەکی وەهادا ناکرێت هەموو ئەو شوێن و خوێندگایانە باس بکرێت، لەبەر درێژنەبوونەوەی توێژینەوەکە، لێرە باس لە چوار ناوەندی گرنگی ئامێدی و ئاکرێ و دهۆک زاخۆ دەکەین:

ئامێدی وەک پایتەختی میرایەتی بادینان جێگەی بایەخی ئەو دەسەڵاتە بووە لە هەموو ڕووەکانی ئاوەدانی و خوێندن و دابینکردنی ئاسایشەوە، لەدوای ئەوەی ئەم شارە کراوەتە ناوەندی دەسەڵاتی میرایەتی بادینان پێشکەوتنی زۆری بەخۆیەوە بینیوە لەڕووەکانی شارستانی و ڕۆشنبیریەوە، بەهۆی پشتگیری میرەکانەوە بووەتە ناوەندێکی گرنگی خوێندەواریو ژمارەیەک خوێندنگەو کۆگای کتیب و زانای گەورەی تێدابووە، لە زۆربەی ناوچەکانەوە قوتابی ڕوویان کردووەتە ئەم شارەو لە خوێندنگەکانیدا نیشتەجێبوون و لە زانستی مامۆستا گەورەکانی بەهرەمەندبوون[٢٤]. لە گرنگترین ئەو خوێندنگایانەی لە شاری ئامێدیدا بوون لە ڕۆژگاری میرایەتی بادیناندا ئەمانەن:

خوێندنگەی عەتیقە: دێرینترین خوێندنگەیەک هەواڵی بە ئێمە گەیشتووە، خوێندنگەی نابراوە بە عەتیقە، لە ڕۆژگاری میرایەتی ئامێدیدا بە خوێدنگەی زاهیدیە (الزاهدیة) ناسراوە، بەناوی دامەزرێنەرەکەیەوە ژنە میرزادە زاهیدەی عەباسیەوە (٧٢٩ک-١٣٢٨ز) ناوبراوە، کەوتووەتە ناو شورای شارەکەوە، دەستنووسێکی تێدا نوسراوەتەوە (شرح



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوەی کوردی

الایجاز) لە ساڵی (١١٤٠ک-١٦٣٠ز)، لێکۆڵەران پێیانوایە هەمان خوێندنگەیە کە دواتر بەناوی سەیدی خان ناسراوە، میری بادینان سەیدی خان بەگ لە ساڵی (٩٩٢-١٠٢٩ک-١٥٨٤-١٦١٩) نۆژەنیکردوەتەوە، لە دوای ئەوە بە خوێندنگەی نوێ (الجدیدة) ناسراوە.

ئەوەی لە شوێنەواری ئەم خوێندنگەیە بە دەستمان گەیشتووە، دەستخەتی (**حقائق الدقائق)**لە بە دەستخەتی تەها کوڕی سەید موسا کوڕی شێخ عوبێد الکلیرمانی لە ساڵی (١١٥٨ک-١٧٤١ز) لە خوێندنگەی نوی (الجدیدة) لە ئامێدی نوسراوەتەوە[٢٥].

لە سەدەکانی دواییدا بە خوێندنگەی مەلا یەحیای مزوری ناسراوە، بەناوی زانای گەورە مەلای یەحیای مزوریەوە کە لە سەدەی سیانزەی کۆچیدا ناوبانگی دەرکردووە، بەهۆی زۆری دانراو و فەقێکانیەوە، بەشداری کاروباری سیاسی ڕۆژگاری خۆی کردووە، ڕۆژگارێکی زۆر لەو خوێندنگەدا وانەی وتوەتەوە، ژمارەیەک زۆر لە قوتابیانی زانستی لەسەر دەستی دەرچوون و خوێندنیان تەواوکردووە.

لە دوای مەلا یەحیاشەوە خوێندن لەم خوێندنگەدا بەردەوامبووە، چەند مامۆستایەک وانەیان تێدا وتوەتەوە، لەوانە: مەلا مەحمود ئەفەندی ئامێدی (١٣٢٣ک-١٩٠٣ز) جێگەی سەردانی قوتابیە زیرەک و بەهرەدارەکان بووە هەتا کۆچی دوایی کردووە، لە دوای ئەویش مەلا سەلیم کە نەوەی مەلا یەحیای مزوری بووە وانەی وتوەتەوە، دواتر ئەم خوێندنگەیە وێرانبووەو شوێنەکەی کراوەتە ناوەندی سۆلاڤی کچان[٢٦].

خوێندنگەی قەزا (القضاء): ئەم خوێندنگەیە پێشبڕکێی زانستی لەگەڵ خوێندنگەکانی پێش خۆیدا کردووە، لە کۆتایی دەستخەتێکی (التحفة)وە ئاماژەی پێکراوە، نوسەرەوەکەی باسی ئەوەی کردووە لە ساڵی (٧٧٦ک-١٣٧٤ز) لەم خوێندنگەدا نوسیویەتیەوە، زانیاری نیە بۆچی بە قەزا (القضاء) ناوبراوە، وە پاڵدراوەتە چ (القضاء)یەک، سەرچاوەکان بێدەنگ بوون لە ئاستی ناونانەکەیدا[٢٧].

خوێندنگەی قوبەهان: بە دێرینترین خوێندنگەی ناوچەکە دادەنرێت، هەندێ لە لێکۆڵەران مێژووەکەی دەگێڕنەوە بۆ سەردەمی عەباسییەکان، بەبێ پشبەستن بە سەرچاوەی پێویست، ئەوەی جێگەی باسە میژووی بنیاتنانی دەگەڕێتەوە بۆ سەدەی هەشتەم، یان سەدەی نۆیەمی کۆچی، بەپێی هەندێ لێکدانەوە، سەدەی چواردەو پازدەی زاینی، دەکەوێتە قولایی ئەو دۆڵەی ئامێدی دەڕوانێت بەسەریدا، مامۆستایان و قوتابیانی ناوچەکە ڕوویان تێکردووە.

میری بادینان سوڵتان حسێن نۆژەنی کردووەتەوە، بەناوی کوڕەکەیەوە (قوبادخان) ناویناوە، دواتر ناوەکە گۆڕانی بەسەردا هاتووەو بووە بە قوبەهان.

ئەم خوێندنگەیە نمونەی خوێندنگەیەکی تەواوە لە ڕووی خزمەتگوزاریەوە، حەوشەیەکی فراوانی هەیە، مزگەوتێکی گەورە لە پێشیەوەو گومەزێکی لەسەربووە، لە پێشیەوە ژوورو شوێنی نوێژی هاوینە بووە، هەیوانێکی هەبووە ڕوانیویەتی بەسەر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

حەوشەکەیدا، ژووری جیاوازی بۆ مانەوەی مامۆستایان تێدابووە، چەند ژوورێکی هەبووە بۆ بەشی ناوخۆیی قوتابیان، مزگەوت و منارەیەکی جوانی تێدابووە، هەروەها کۆگایەک و گەرماو و تەویلەی هەبووە، ئاشێکی هەبووە، هەندێک لەوانەی کە لە کۆتاییەکانی خوێندن تێدا بینیویانە، وتویانە لەگەڵ ئەوەشدا بەهۆی تێپەڕینی ڕۆژگارەوە کۆن بووە، لەگەڵ جوانی و سەنگینی خۆی لە دەستنەداوە، وەک پارچەیەک لە چیا وابووە، وەک پارچە ئاڵتونیکی لە قاڵبدراو بووە.

کتێبخانەیەکی پڕ لە کتێبی لە زانستە جیاوازەکاندا تێدابووە، زۆربەی کتێبەکانی وەقفی سوڵتان حسێن بووە، لە کۆتایی کتێبەکاندا مۆری تایبەتی خۆی لێداون، تێدا نوسراوە: (الواثق بالملك الناسي حسين بن السلطان حسن العباسي).

لەگەڵ ئەوەشدا کە کۆگای کتێبەکانی تووشی کارەسات بوونەتەوە، بەڵام ژمارەیەک دەستخەت ماوەتەوە، یەکێک لەوانە کە دەقی وەقفنامەکەی لەسەرە، لە ساڵی (١٠٨١ک-١٦٧٠ز) نوسراوەتەوە، لەو کتێبانەی لەو خوێندنگەیەدا دانراون، دەستخەتی (الرسالة الكريمية) لە ڕاڤەی کتێبی (الروزنامة) دانراوی حاجی عەبدولکەریمی مەحمود وانی، لە ساڵی (١١٣٥ک-١٧٢٢ز) نوسراوەتەوە، دەستخەتێکی ئیبراهیم ئامێدی لە خوێندنگەی قوبەهاندا نووسیویەتی لە سەردەمی سوڵتان بەهرامدا، لە ساڵی (١١٧٣ک-١٧٥٩ز).

هەروەها دەستخەتی: (المفصل فى صناعة الاعراب، للزمخشرى) عەلی کوڕی سەید تەها لە ساڵی (١١٩٢ک-١٧٧٨ز) لە خوێندنگەی قوبەهاندا نووسیویەتیەوە، هەروەها یەکێکی تر لەو دەستخەتانەی لەو خوێندنگەدا نوسراون: (تفسير سوره الفاتحة) دانراوی موفتی ئامێدی مەلا مەحمودی کوردیە، لە ساڵی (١٢٠٢ک-١٧٨٨ز) کۆچی دوایی کردووە، بەرگێکی ماماناوەندە، هەموو پیتەکانی بێ نوختەیە، یەکێکی تر لە دەستخەتە نایابەکانی هەتا لەسەردەمی نوێدا ماوە، (تفسير الرازى) بووە لە یەک بەرگدا، پارچەیەک بووە لە جوانی و ڕازاوەیی، هەروەها کتێبی (الإبانة) لە فیقهدا، لە ساڵی (٦١٣ک-١٢١٦ز) نوسراوەتەوە، وە ڕەشنووسی (شرح نورالدين) لە فیقهدا، دانەرەکەی لە میصرەوە ناردوویەتی بۆ ئەوەی پیشانی زانایانی خوێندنگەی قوبەهان بدرێت، وە دەستخەتێکی قورئانی پیرۆز، نمونەیەک بووە لە جوانی هونەری نووسین.

بەهۆی گرنگی و ئاستی بەرزی زانستیەوە ئەم خوێندنگەیە پەیوەندی زانستی هەبووە لەگەڵ زانکۆی ئەزهەردا لە قاهیرە، سەرچاوە داراییەکانی کە لە ئێرانەوە بۆیان ناردووە بە هۆقەیەک ئاڵتون و دوو هۆقە زیو دانراوە، جگە لەوە سەد بار ئاردی ساڵانە بۆ هاتووە، دابەشکراوە بەسەر قوتابیەکانیدا کە ژمارەیان سەد قوتابی زیاتر بووە[٢٨].

خوێندنگەی مورادخان بەگ: یەکێکی تر لە خوێندنگەکانی، خوێندنگەی مورادخان بەگ (١٠٤٨-١٠٧٢ک-١٦٣٨-١٦٦١ز) بووە، دامەزرێنەرەکەی مورادخان بەگ بووەو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەنـاوی ئەوەوە نـاوبراوە، لە نزیـک یەکێـک لە دەرگاکـانی شـورای شـاردا بـووە، گـۆڕی دامەزرێنەرەکەی لەناو خوێندنگەکەدایە، کۆگایەکی گەورەی کتێبی تێدابووە، مورادخان وەقفی کردووە، مۆری ئەم میرە لەسەر کتێبەکانە، دەقەکەی: (الواثق بالله المنان عبده مرادخان).

لە بەناوبانگترین ئەو زانایانەی وانەیان تێدا وتوەتەوە، مەلا ئەحمەدی صدیقی بووە، میری ئامێدی داوای لێکردووە بڕوات بۆ ئامێدی لەو خوێندنگەیەدا وانە بڵێتەوە، قوتابیانی زانست ڕوویان تێکردووە، دوا مامۆستای زانای گەورە شوکری ئەفەندی موفتی ئامێدی بووە، ئەم خوێندنگەیە ڕوخێنراوەو کەلاوەکانی هەتا شەستەکانی سەدەی بیستەم ماون، دواتر لەناوباوەو شوێنەواری نەماوەتەوە[٢٩].

خوێندنگەی ئیمام قاسم: ئەم خوێندنگەیە میر غیاثەدین قاسمی کوڕی بەهاددین لە ساڵی (٧٨٤ک-١٣٨٢ز) دایمەزراندووە، کۆگایەکی کتێبی تێدابووە، بەهۆی نالەباریەکانی ڕۆژگارەوە لە ناوچووە.

خوێنـدنگەی مزگەوتـی گەورە: ئەم خوێنـدنگەیە کەوتـوەتە گۆشـەیەکی مـزگەوتەکەوە، سەرەتای دامەزرانـدنی دەگەڕێتەوە بـۆ سـاڵی (٥٣٧ک-١١٤٣ز) ئەوەی ڕاسـتیە خوێندنگەکە لە کاتی فراوانکردنی مزگەتەکەدا لە سەردەمی سوڵتان حسێنی عەباسیدا دروستکراوە، لە ناوەڕاستی سەدەی دەیەمی کۆچیداو سەدەی شازدەی زاینیدا، لای ڕاستی ژووری نوێژکردنەکەی داگیرکردووە، پێش ئەوەی لەگەڵ شوێنی نوێژکردندا بکرێن بە یەک لەم دوایانەدا، دواتر تایبەت کراوە بە شوێنی نوێژی ژنانەوە، هەتا ئێستا ئەو بەشەی مـزگەوتەکە تایبەتمەنـدی بیناسـازی خـۆی پاراسـتووە لەگەڵ بەشـەکانی تـری شـوێنی نوێژکردنەکەو هەندێ لە ژوورەکانی تری[٣٠].

خوێنـدنگەی مەیـدان: بەنـاوی گەڕەکـی مەیـدانەوە نـاونراوە، لە بەشـی باشـوری شـارەکەدایە، هەنـدێ لە نووسـەران تێکەڵاویـان کـردووە لەگەڵ خوێنـدنگەی شـاری جولەمێرگ، مەلا یاسین خانی (ت: ١٣٣٧ک-١٩١٨ز) وانەی تێدا وتوەتەوە.

خوێنـدنگەی سـەردبکیە: ئەم خوێنـدنگەیە زانیـاری پێویسـت لەسـەر مێـژووی دروستکردنی و کێ دروستیکردووە نیە، هیچ دەستخەتێک نیە ئاماژەی پێکردبێت و باسی مێژووەکەی کردبێت.

تەنها ئەم خوێندنگایانە نەبوون لە ئامێدیدا کە خزمەتی بزاڤی خوێندن و دانانی کتێب و نووسـینەوەی دەسـتخەتیان کـردووە، بەڵکـو زۆر شـوێنەواری زانسـتی تـر کە لە ئامێدیـدا نووسـراونەتەوە لە زانسـتە جیاوازەکانـدا، بەڵام ناسـنامەیان دیـاری نەکـراوە، وەک (المختصر) لە سـاڵی (٩٠٠ک-١٤٩٤ز) لە ئامێـدی نوسـراوەتەوە، هەروەهـا (منهـاج العابـدین)ی ئیمامی غەزالی، ئەبوبەکری کوڕی داود لە ساڵی (٩٩٦ک-١٥٨٧ز) لە ئامێدی نووسـیویەتی، وە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کتێبی (الاعلال) له زانستی (الصرف)دا، عەبدولای کوڕی ئەلیاس الکلکوری داینـاوه له قەڵای ئامێدی که پارێزراوه به حکومەتی بنەچەی سەیدخان عوسمان بەگ کوڕی سەعیدخان، له ساڵی( ١٠٩٩ک-١٦٨٧ز)دا، هەروەها (حاشیة علی شرح الشمسیة) له نووسینی سەید شەریف جورجانی، عوبێدولای کوڕی صیبەغتولای حەیدەری له ساڵی (١١٦٢ک١٧٤٧ز)دا له قەڵای ئامێدیدا نووسیویەتەوه، وه (حاشیة یوسف الأصم الکردي علی حاشیة عصام الدین علی الفوائد الضیائیة) عوبەبێدولای ناوبراو له ساڵی (١١٦٣ک-١٧٤٩ز) له قەڵای ئامێدیدا نووسیویەتیەوه، هەروەها (حاشیة داود علی حاشیة السید علی تحریر القواعد المنطقیة) نوسەرەوەی ناوبراو له ساڵی (١١٦١ک-١٧٤٧ز) لەسەر لوتکەی قەڵای ئامێدی نوسیویەتیەوه.

هەروەها دەستخەتی (المختصر) عەبدوللەتیفی کوڕی یونسی شوشی له ساڵی (١٢٤١ک- ١٨٢٦ز) بۆ موفتی ئامێدی ئەسعەد ئەفەندی موفتی نووسیوەتەوه، دەستخەتی (الصواعق المحرقة)ی (ابن حجر الهیتمی) له ساڵی (١١٠٩ک-١٦٩٧ز) نووسراوەتەوه.

ئەوەی تێبینی دەکرێت شاری ئامێدی له ماوەی شەش سەدەی حوکمڕانی میرایەتی بادینانـدا به چالاکی زانستی زۆر دەرکەوتووه، بەو ناسراوەتەوه که خوێندنگەی زۆرو کۆگای کتێبی زۆری تێدابووه، زۆر جێگەی تر که مۆرکی ڕۆشنبیریان هەبووه، هەروەها ژمارەیەکی زۆر دەستخەتی تێدا دانراوەو ڕاڤەکراون، یان پەراوێزیان بۆ نوسراوه، یان نوسراونەتەوه، لەسەر دەستی زانایان و بلیمەت و لێهاتوودا له خەڵکی شارەکه، یان ئەوانەی بۆ خوێندن و فێربوون ڕوویان تێکردووه[٣١].

خوێندنگەی پزیشکی و ساخلەمی (دار الطب والاستشفاء) له ئامێدی: ئەو گەشەکردنەی شاری ئامێدی له ڕۆژگاری میرایەتی بادیناندا تەنها خوێندنگەی ئاینی نەبووه، بەڵکو گرنگی به زانستەکانی تریش دراوه وەک پێویستیەکانی ژیانی خەڵکی، یەکێک لەوناوەندانه خوێندنگەی پزیشکی بووه، شەرەفخانی بەدلیسی تابلۆیەکی له کتیبەکەیدا نەخشاندووه، که کەسێک له بەرگی زانایەکدا دانیشتووەو وانه به چەند قوتابیەک دەڵێتەوه، وێنەی خوێندنگەکەو فەرش و تاق و دیوارەکان وێنەی خوێندنگەیەکی پزیشکی نیشان دادەت، هەروەکو شەرەفخانی به خانەی پزیشکی و چارەسەرکردن ناوی بردووه، لەو ڕۆژگارەدا له شاری ئامێدیدا زانستی پزیشکی به پێوەری ئەوکاته خوێندراوه[٣٢].

زانایەک له شاری ئامێدیدا بەناوی یەحیابەگەوه هەبووه، شارەزای پزیشکی بەکارهێنانی ڕووەکه دەرمانیەکان بووه، توانیویەتی له گوڵ و ڕووەکی سروشتی دەرمان بۆ چارەسەری نەخۆشیەکان دروست بکات، هەرچەنده کەسێکی بنەماڵەی میرانی بادینان بووه، بەڵام مێژووی ژیان و خوێندنی تۆمار نەکراوه، هەتا بتوانرێت زانیاری لەسەر پێگەیشتن و پیشەکەی بنووسرێت[٣٣].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دووەم/ حوێندنگەکانی ئاکرێ: لە دوای ئامێدی شاری ئاکرێ دووەم مەڵبەندی گرنگی میرایەتی ئامێدی بووە، لە سەردەمی سوڵتان حسێن وەلی میری بادیناندا خراوەتە ناو چوارچێوەی دەسەڵاتی میرایەتیەکەوە، ئەم میرە کەسێکی خوێندەوار و خێرخوازبووە، لە رۆژگاری ئەودا سنووری میرایەتیەکەی فراوان بووەو گەشەی زۆری کردووە، لە شاری ئاکرێدا خوێندنگەکەیەکی دامەزراندووەو کتێب و دەستنووسی بۆ دابینکردووە.

یەکێک لەو دەستخەتانەی لەم خوێندنگەدا نوسراوەتەوە کتێبی (تنبیه الغافلین) بە دەستخەتی حەیدەری کوڕی حاجی عەلی مەکی، لە ساڵی (٩٧٦ک-١٥٦٨ز) نوسراوەتەوە، هەروەها دەستخەتی (شرح الجزرية) لە زانستی تەجویدا، لە ساڵی (١١٩٢ک-١٧٧٨ز) لە خوێندنگەی ئاکرێدا نووسراوەتەوە.

لە بەناوبانگترین ئەو مامۆستایانەی لە خوێندنگەی ئاکرێدا وانەی وتوەتەوە، مەلا محەمەدی زیارەتی بووە، لە ساڵی (١٧٨١ز) کۆچی دوایی کردووە، هەروەها زانای گەورە مەلا جەرجیسی ئەربیلی لە ساڵی (١٧٩١ز) کۆچی دوایی کردووە، ئەم زانا گەورەیە لەم خوێندنگەدا وانەی وتوەتەوەو خزمەتی زۆری بە خوێندن و خوێندەواری کردووە[٣٤].

خزمەت کردنی دوو زانای گەورەی وەک مەلا محەمەدی زیارەتی و مەلا جەرجیسی ئەربیلی کە لە سنوری هەولێرەوە چوونەتە ئاکرێ و لە خوێندنگەکانی ئەو شارەدا خزمەتیان کردووە، بەڵگەی گرنگیدانی میرەکانی بادینانە بە پرۆسەی خوێندن لە سنووری قەڵەمڕەوەکەیاندا، بە تایبەتی سوڵتان حسێن وەلی، کە یەکێک لە هەنگاوەکانیان بۆ خزمەتی بزاڤی زانستی و رۆشنبیری لە قەڵەمڕەوەکەیاندا کۆکردنەوەی زانا گەورەکان بووە لە خوێندنگەکانی سنووری دەسەڵاتەکەیاندا.

سێیەم/ خوێندنگەکانی زاخۆ: زاخۆ یەکێک بووە لە ناوەندە گرنگەکانی میرایەتی بادینان، دوای ئەوەی میرەکانی بادینان لە سەدەی دەیەمی کۆچی (١٦ز) خستویانەتە ناو سنوری دەسەڵاتەکەیانەوە لەلایەن میرێکی بنەماڵەکەیانەوە بەڕێوەبراوە، لەو رۆژگارەدا خوێندنگەی مزگەوتی گەورە گرنگترین خوێندنگەی زاخۆ بووە، ژمارەیەک مامۆستای گەورە خزمەتیان تێدا کردووە، یەکێک لەوانە زانای گەورە مەلا مەحمودی بەهۆسی بووە، کە فەقێی مەلا حەیدەری حەیدەری ماوەرانی بووە، ئەم زانایە لە ساڵی (١٦٨٩ز) کۆچی دوایی کردووە.

یەکێک لەو دەستخەتانەی لەو خوێندنگەدا نووسراوەتەوە کتێبی (حاشية على مختصر للتفتازاني) لە سەر کورتەی (المفتاح)ی ئیمامی قەزوینی، لەلایەن ئیبراهیم مەلا جوندی کوڕی حسێن کوڕی ئیبراهیم دوە نوسراوەتەوە، هەروەها ژمارەیەکی تر حاشیەو تەعلیقاتی تر[٣٥].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

چوارەم/ خوێندنگەکانی دهۆک: لە سەردەمی میرایەتی بادیناندا یەکێک بووە لە ناوەندە گرنگەکانی ئەو دەسەڵاتە، لە ساڵی (٩١٦ک-١٥١٠ز) لەلایەن میر حەسەنی کوڕی سەیفەدینەوە خراوەتە سەر میرایەتی بادینان، لەدوای دەست بەسەراگرتنیەوە بەردەوام لەلایەن کەسێکی بنەماڵەی میرانی ئامێدیەوە حوکمڕانی کراوە، یەکێک لە خوێندنگە گرنگەکانی خوێندنگەی مزگەوتی گەورە بووە، یەکێک لە مامۆستاکانی مەلا محەمەد ئەحمەد دهۆکی کوردی بووە، لە سەر دەستخەتی (المقصد)دا ناوی هاتووە، ئەم دەستخەتە لە دوای ساڵی (١١١١ک-١٧٠٤ز) نووسراوەتەوە، هەروەها دەستخەتێکی تری ئەم خوێندنگەیە دەستخەتی (الفناری) لە ساڵی (١٧٢٤ز) لەلایەن مەلا ئەحمەد مەلا عەلی باجلوریەوە نووسراوەتەوە[٣٦].

بەهۆی گەشەکردنی بزاڤی زانستی و ڕۆشنبیریەوە لە شاری دهۆک لەو ڕۆژگارەدا، لە ساڵی (٩٤٨ک-١٥٤١ز) بە گوندی پیرۆز (القرية المباركة) ناوبراوە، بێگومان ئەم نازناوە بەڵگەیەکی زیندووە کە لەو ڕۆژگارەدا ژمارەیەکی زۆر مزگەوت و خوێندنگەو زانای گەورەو فەقێی تێدابووەو سەرقاڵی خوێندن و زانست بوون[٣٧].

لە سنوری میرایەتی باد‌یناندا جگە لەم ناوەندە گرنگانەی ئاماژەی پێکراوە، لە زۆرێک لە گوندەکانی ئەو سنورەدا خوێندنگەی گرنگ و زانای بە توانا هەبووەو ساڵانێکی زۆر خزمەتی ڕەوشی خوێندن و ڕۆشنبیریان کردووە، لە گرنگترین ئەو خوێندنگایانە، خوێندنگەی بامەڕنی، مایە، کێستە، ئەسپیندار، بجیل، بریفکان، بەرۆشکی، بیسکی، ڕەبتەکی، شێخ عەدی، شەرانش، ئارمشت، دەیان خوێندنگەی تر کە لە سنوری میرایەتی بادیناندا هەبوون[٣٨].

## کۆتایی توێژینەوەو ڕاسپاردەکان

مێژووی میرایەتی بادینان لەڕووی خزمەتکردن بە بزاڤی زانستی و خوێندەواری لاپەڕەیەکی پرشنگداری مێژووی کوردستانە، لە دوای ئەوەی لە کۆتاییەکانی سەدەی حەوتەمی کۆچیەوە میرایەتی بادینان دامەزراوە، میرەکانی بادینان خزمەتی زۆریان بە پرۆسەی زانست و ڕۆشنبیری کردووە لە سنوری دەسەڵاتەکەیاندا.

بۆ ئەوە مەبەستە دەیان مزگەوت و خوێندنگەیان دامەزراندووەو هاوکاری زانایان و فەقێیان کردووەو پێویستیەکانی خوێندنیان بۆ دەسەبەرکردوون، هەروەها وەقفی تایبەتیان بۆ خوێندنگەکان دابینکردووە، هەموو ئەمانە کاریگەری زۆری هەبووە لەسەر گەشەکردنی بزاڤی زانست و ڕۆشنبیری لە میرایەتی بادیناداو بووەتە هۆی دەرکەوتنی خوێندنگەی بەناوبانگ و زانای گەورەو کۆبوونەوەی هەزاران فەقێ لەو خوێندنگایانەدا.

لە سنوری دەسەڵاتی میرایەتی بادیناندا کۆمەڵێک هۆی تایبەتی وخودی کاریگەریان هەبووە لەسەر گەشەکردنی بزاڤی ڕۆشنبیری، وەک هاوکاری میرەکان و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

پشتگیری بەردەوامی دانیشتوانی ناوچەکە لە پرۆسەی خوێندن و زانست، هەروەها ئەو ئارامی و هێمنییەی کە زۆربەی کات باڵی بەسەر سنوری میرایەتی بادیناندا کێشاوە، هەموو ئەم هۆیانە کاریگەری زۆریان هەبووە لەسەر گەشەکردنی بزاڤی زانست و خوێندەواری لەو ناوچەیەدا.

بەهۆی پشتگیری میرەکانی بادینان و هاوکاری خەڵکی ناوچەکە و دڵسۆزی زانایان و لێبڕانی فەقێکانەوە، لە ڕۆژگارەی میرایەتی بادیناندا کۆمەڵێک شوێن بوونەتە ناوەندە خوێدن و ڕۆشنبیری وەک: شارەکانی ئامێدی و ئاکرێ و دهۆک و زاخۆ و زۆر شوێنی تر لەناو قەڵەمڕەوی میرایەتی بادیناندا، بە تایبەتی خوێندنگەی قوبەهان لە شاری ئامێدی لە شێوەی زانکۆیەکدا بووە، وەقفی تایبەت و شوێنی مانەوەی مامۆستاو فەقێ و ئاش و چێشتخانەی هەبووە، تەنانەت لەو ڕۆژگارەدا ئەوەندە پێشکەوتوو بووە لەگەڵ زانکۆیەکی گرنگی وەک ئەزهەردا پەیوەندی هەبووە.

## ڕاسپاردە و پێشنیارەکان

یەکەم/ گرنگی زیاتر بدرێت بە مێژووی زانست و خوێندن و لایەنی فەرهەنگی کوردستان و کێژووی زانایانی کورد.

دووەم/ هەوڵ بدرێت دەستنووس و بەرهەمی زانایان کۆبکرێتەوەو لەلایەن زانکۆکانی کوردستان و ناوەندە ئەکادیمیەکانەوە لێکۆڵینەوەی لەبارەوە بکرێت.

سێیەم/ زیندووکردنەوەی مێژووی زانایان و شاعیران و بەهرەمەندانی کورد و دۆزینەوەی بەرهەم و نووسراوەکانیان لە کتێبخانەو ئەرشیفخانەی وڵاتاندا.

چوارەم/ هەوڵبدرێت ئەو بەڵگەنامەو نووسراوانەی لەبارەی زانایانی کورد و خوێندنگەکانی کوردستانەوە لە ئەرشیفی عوسمانی و ئێرانی و دەوڵەتانی دراوسێدا هەیە، کۆبکرێتەوەو توێژینەوەی زانستیان لەسەر بکرێت و مێژووی بزاڤی خوێندن و ڕۆشنبیری لە کوردستاندا بەشێوەیەکی زانستی بنووسرێتەوە.

پێنجەم/ ناوەندە زانستی و ڕۆشنبیریەکان بەناوی ئەو زانا و میرە کوردانەوە ناوبنرێت کە خزمەتی زۆریان بە پرۆسەی خوێندن و ڕۆشنبیری کردووە لە کوردستاندا، وەک میر حسێن وەلی و مەلا یەحیای مزوری و چەندانی تر.

شەشەم/ لایەنە پەیوەندیدارەکان هەوڵی تەواو بدەن بۆ پاراستنی شوێنەواری مزگەوت و خوێندنگە دێرینە گرنگەکانی وەک قوبەهان و شوێنەکانی تر، هەتا ئەو مێژووە بە زیندووی بمێنێتەوە.

## لیستی سەرچاوەکان:

١/ انور المايي، الأكراد في بهدينان، الطبعة الثالثة ٢٠١١، دهوك.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٢/ زبير بلال اسماعيل، علماء ومدارس في اربيل، الطبعة الأولى ١٩٨٤ الموصل.

٣/ سعيد الحاج صديق الزاحويي، زاخو الماضي والحاضر، الطبعة الأولى ٢٠٠٩ كوردستان.

٤/ شەرەف خانی بەدلیسی، شەرەفنامە، وەرگێڕانی: سەلاحەددین ئاشتی، چاپی یەکەم ٢٠١٧، بنکەی ژین، سلێمانی.

٥/ صديق الدملوجي، إمارة بهدينان الكردية أو إمارة العمادية، الطبعة الثانية ١٩٩٩، مؤسسة آراس، أربيل.

٦/ عباس العزاوي، المحامي، العمادية في مختلف العصور، التحقيق: حمدي عبدالمجيد السلفي وعبدالكريم فندي، الطبعة الأولى ١٩٩٨، كوردستان.

٧/ عماد عبدالسلام رؤوف، الدكتور، الشجرة الزيوكية وثيقة نسب أمراء بهدينان ونتريخهم، الطبعة الأولى٢٠٠٩، مكتب التفسير- أربيل.

٨/ عماد عبدالسلام رؤوف، الدكتور، المعجم التاريخي لإمارة بهدينان، الطبعة الثانية ٢٠٢١، مكتب التفسير- أربيل.

٩/ عماد عبدالسلام رؤوف، الدكتور، أمراء وعلماء من كردستان في العصر العثماني، الطبعة الأولى ٢٠١٦م، دار الزمان- بيروت، ومكتب التفسير- أربيل.

١٠/ عماد عبدالسلام رؤوف، الدكتور، دراسات وثائقية في تاريخ الكرد وحضارتهم، الطبعة الأولى٢٠١٢، دار الزمان- بيروت.

١١/ عماد عبدالسلام رؤوف، الدكتور، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، الطبعة ألأولى٢٠٠٨، أربيل.

١٢/ عماد عبدالسلام رؤوف، الدكتور، مراكز الإدارة والأسر الحاكمة في العراق، الطبعة الأولى٢٠٢١، مكتب التفسير، أربيل.

١٣/ محفوظ العباسي، إمارة بهدينان العباسية، الطبعة الأولى ١٩٦٩م، مطبعة الجمهورية، الموصل.

١٤/ محەمەد عەلی قەرەداغی، بایەخدانی میرانی ئامێدی بە رۆشنبیری لە دەڤەری بادینانىدا، چاپی یەکەم ٢٠٠٦، دەزگای ئاراس- هەولێر.

١٥/ محەمەد عەلی قەرەداغی، بووژاندنەوەی مێژووی زانایانی کورد لە ڕێگەی دەستخەتەکانیانەوە، بەرگی سێیەم، چاپی یەکەم ٢٠٠٠، بەغداد

١٦/ محەمەد عەلی قەرەداغی، بووژانەوەی مێژووی زانایانی کورد لە ڕێگەی دەستخەتەکانیانەوە، بەرگی دووەم، چاپی یەکەم ١٩٩٩، بەغداد.

١٧/ مسعود مصطفى الكتاني، مدرسة قوبا- قوبهان ذلك الطود من تاريخ بادينا- العمادية الشمس الآفلة، الطبعة الأولى ٢٠٠٩.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

١٨/ مەسعود محەمەد، حاجی قادری کۆیی، چاپی یەکەم ١٩٧٢، چاپخانەی کۆڕی زانیاری کورد، بەغداد.
١٩/ ياسين العمرى، غاية المرام في تاريخ محاسن بغداد دار السلام، الطبعة الأولى ١٩٦٨، بغداد.

**الهوامش:**

---

[١]- ينظر: محفوظ العباسي، إمارة بهدينان العباسية، الطبعة الأولى ١٩٦٩م، مطبعة الجمهورية، الموصل، ص٩.

[٢]- ينظر: صديق الدملوجي، إمارة بهدينان الكردية أو إمارة العمادية، الطبعة الثانية ١٩٩٩، مؤسسة آراس، أربيل، ص١١. محفوظ العباسي، إمارة بهدينان العباسية، الطبعة الأولى ١٩٦٩، الموصل، ص٣٠ فما بعدها.

[٣] - شەرەفخانی بەدلیسی، شەرەفنامە، وەرگێڕانی: صەلاحەدین ئاشتی، چاپی یەکەم، ٢٠٢١، بنکەی ژین، سلێمانی، ب١ ل٢١٣-٢١٤.

[٤]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، الشجرة الزيوكية وثيقة نسب أمراء بهدينان ونتريخهم، الطبعة الأولى٢٠٠٩، مكتب التفسير-أربيل ص٤١ وما بعدها.

[٥]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز الإدارة والأسر الحاكمة في العراق، الطبعة الأولى٢٠٢١، مكتب التفسير، أربيل، ص٣٣٢.

[٦]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، دراسات وثائقية في تاريخ الكرد وحضارتهم، الطبعة الأولى ٢٠١٢، دار الزمان بيروت، ومكتب التفسير أربيل، ص٢١ وما بعدها.

[٧]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز الإدارة والأسر الحاكمة في العراق، ص٣٣٣-٣٣٤.

[٨]- ينظر: ياسين العمرى، غاية المرام في تاريخ محاسن بغداد دار السلام، الطبعة الأولى ١٩٦٨، بغداد، ص٩٢-٩٣. وينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز الإدارة والأسر الحاكمة في العراق، ص٣٣٤.

[٩]- ينظر: محفوظ العباسى، إماره بهدينان العباسيه، ص ١٠٨-١٠٩. و ينظر: صديق الدملوجي، إمارة بهدينان الكردية أو إمارة العمادية صديق الدملوجي، ص٣٥.

[١٠]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، أمراء وعلماء في كردستان في العصر العثماني، الطبعة الأولى ٢٠١٦، دار الزمان، بيروت-لبنان، ص٨٥. . وينظر: زبير بلال اسماعيل، علماء ومدارس في اربيل، الطبعة الأولى ١٩٨٤ الموصل، ص١٠.هەروەها بڕوانە: محەمەد عەلی قەرەداغی، بووژانەوەی مێژووی زانایانی کورد لە ڕێگەی دەستخەتەکانیانەوە، چاپی یەکەم ١٩٩٩، بەغداد، ب٢ل٨٨ بەدواوە.

[١١]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص١١٤-١١٥.

[١٢]- ينظر: د. مسعود مصطفى الكتاني، مدرسة قوبا- قوبهان، الطبعة الأولى ٢٠٠٩، ص١٣ وما بعدها.

[١٣]- ينظر: محفوظ العباسي، إمارة بهدينان العباسية، ص١٥٥ وما بعدها.

[١٤]- بڕوانە: شەرەفخانی بەدلیسی، شەرەفنامە، ب١ل٢١٤-٢١٥.

[١٥]- ينظر: د. عماد عبدالسلام رؤوف، أمراء وعلماء من كردستان في العصر العثماني، الطبعة الأولى ٢٠١٦م، دار الزمان- بيروت، ومكتب التفسير- أربيل، ص٨٥.

[١٦]- ينظر: صديق الدملوجي، إمارة بهدينان الكردية أو إمارة العمادية، ص٥٣-٥٤.

[١٧]- ينظر: محفوظ العباسي، إمارة بهدينان العباسية، ص ٥٥ وما بعدها.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

[18]- محەمەد عەلی قەرەداغی، بایەخدانی میرانی ئامێدی بە ڕۆشنبیری لە دەڤەری بادیناندا، چاپی یەکەم ٢٠٠٦، دەزگای ئاراس- هەولێر، ل٤٨-٤٩.

[19]- محەمەد عەلی قەرەداغی، بایەخدانی میرانی ئامێدی بە ڕۆشنبیری لە دەڤەری بادیناندا، ل٤٩.

[20]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز الإدارة والأسر الحاكمة في العراق، ص٣٣١ وما بعدها.

[21]- شەرەف خانی بەدلیسی، شەرەفنامە، وەرگێڕانی: سەلاحەددین ئاشتی، چاپی یەکەم ٢٠١٧، بنکەی ژین، سلێمانی، ب١ل٢١٥.

[22]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز الإدارة والأسر الحاكمة في العراق، ص٣٣٥.

[23]- بڕوانە: مەسعود محەمەد، حاجی قادری کۆیی، چاپی یەکەم ١٩٧٢، چاپخانەی کۆڕی زانیاری کورد، بەغداد، ب١ل٢٥٦-٢٥٧.

[24]- ينظر: انور المايي، الأكراد في بهدينان، ص ٢٤٦ وما بعدها.

[25]- ينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة، ص١١٤-١١٥-١١٦.

[26]- المحامي عباس العزاوي، العمادية، ص٩٢.

[27] - د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص١١٦.

[28]- ينظر: د.مسعود مصطفى الكتاني، مدرسة قوبا- قوبهان، ص٢١ وما بعدها. د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص ١١٦-١١٧-١١٨. محفوظ العباسي، إمارة بهدينان العباسية، ص١٥٥-١٥٦. هەروەها بڕوانە: محەمەد عەلی قەرەداغی، بووژاندنەوەی مێژووی زانایانی کورد لە ڕێگەی دەستخەتەکانیانەوە، چاپی یەکەم ٢٠٠٠، بەغداد، ب٣ل٢٢٩ بەدواوە.

[29] د.عماد عبدالسلام رؤوف، معجم التاريخي لإمارة بهدينان، ٤٤٥. د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص١١٨.

[30]- د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص١١٨.

[31]- د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص١١٩-١٢٠.

[32]- بڕوانە: شەرەفخانی بەدلیسی، شەرەفنامە، ب١ل٢١٧-٢١٨. وينظر: د.عماد عبدالسلام رؤوف، المعجم التاريخي لإمارة بهدينان، ص٤٣٧-٤٣٩.

[33]- ينظر: المحامي عباس العزاوي، العمادية في مختلف العصور، ص٨٧.

[34]- ينظر: د. عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص ١٣-١٤.

[35]- د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص٨٧. سعيد الحاج صديق الزاحويي، زاخو الماضي والحاضر، الطبعة الأولى ٢٠٠٩، ص ٢٣٧ وما بعدها.

[36]- د.عماد عبدالسلام رؤوف، مراكز ثقافية مغمورة في كردستان، ص٧٥.

[37] ينظر: د,عماد عبدالسلام رؤوف، المعجم التاريخي لإمارة بهدينان، ص١٨٨-١٨٩.

[38]- ينظر: محفوظ العباسي، إمارة بهدينان العباسية، ص ١٥٥-١٦٠.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

## حركة التعليم و الثقافة في إمارة بهدينان


**الملخص:**

يتناول هذا البحث تاريخ التعليم والثقافة في عهد إمارة بهدينان، ويتكون من تمهيد و مطلبين، وفي التمهيد يتحدث الباحث عن تاريخ انشاء إمارة بهدينان في العمادية، ومدى أهتمام امراء هذه الإمارة بالحركة الثقافية والدراسية، ودعمهم المادي والمعنوي للعلماء وطلبة العلم ومدارسهم العلمية.

وفي المطلب الأول يتطرق الباحث الى بيان أهم أسباب تطور الجانب العلمي والثقافي في عهد إمارة بهدينان، ومن أهمها دعم أمراء بهدينان لحركة العلم و العلماء وتخصيص الوقف لشؤون الدراسة واستقرار حالة الأمن و تعاون أهل المنطقة مع العلماء والطلبة، هذا من أهم أسباب تطور الحركة العلمية في إمارة بهدينان.

وفي المطلب الثاني يبحث الباحث عن أهم مراكز العلم والثقافة في إمارة بهدينان، وهو مدارس العمادية عاصمة الإمارة، والعقرة ودهوك زاخو، وكذلك يشير الى أسماء بعض المدارس الأخرى التي بناها امراء بهدينان في القرى والأرياف في منطقة بهدينان بشكل عام.

وفي الختام يكتب أهم نتائج البحث وتوصياته لخدمة تاريخ العلم والمعرفة في تاريخ الإمارات الكردية عامة وخاصة إمارة بهدينان، وفي نهاية البحث يسجل أهم المصادر المراجع التي أعتمد عليها في بحثه.



**الكلمات الدالة:** *حركة، التعليم، الثقافة، ميراث بهدينان*


## The movement of education and culture in the emirate of Bahdinan


**Abstract**:

The recent research study the history and culture in the emirate of Bahdinan, it consists of an introduction and two demands. In the introduction the author talked about the history of emirate of Bahdinan in Al- Amadiya, and the extent of this emirate's interest in the cultural and academic movement of scholars and students of science and their scientific schools. In the first demand the author mentioned the importance of scientific and cultural development in emirate of Bahdinan era, and the most important of which is the support of the Bahdinan princes for the movement of science and scholars, the allocation of the endowment for study affairs, the stability of the security situation, and the

cooperation of the people of the region with scholars and students, and this is one of the most important reasons for the development of the scientific movement in Emirate of Bahdinan .

In conclusion, the author talks about the most important results of the research and his recommendations to save the history of science and knowledge in the Kurdish emirates, especially the emirate of Bahdinan. At the end of the research, the most important reference used were put.

**Keywords:** *movement, education, culture, Bahdinan legacy*

## ژ دەق و دەستنڤیسێن ب زمانێ كوردی  ل سەردەمێ میرگەها بەهدینان ل سەدێ ١٦– ١٨٤٢ز

**هێرش كەمال رێكانی**

پشكا میژوو- زانكویا دهوك - دهوك/كوردستان

**پۆختە:**

ئێك ژ كارێن گرنگ و هەژی و گەش دناڤ دیرۆكا میرگەهێن كوردی دا . گرنگیدانە ب نڤیسین و دەقێن ب زمانێ كوردی ، ئەڤجا چ ئەو نڤیسین د بوارێ ئەدەبیات و هەلبەستێ دا بن . یان ژی دەقێن ئایینی و فەرهەنگ و وەرگێڕانێ بن. میرگەها بەهدینان ژی ئێك ژ وان میرگەهێن كوردی یێن ناڤدارە یێن هژمارەكا ژ زانا و شاگردێن مەدرەسەیێن ئایینی و میرێن وێ گرنگی ب ڤی بیاڤێ ناڤبری دا و چەندین دەستنڤیس و دەقێن گرنگ بۆ نفشێ دووڤ خۆ دا هێلاینە. ئەڤ ڤەكۆلینە بزاڤەكا رژدە ل سەر وان بزاڤێن زانستی یێن زانا و هۆزانڤان و میرێن میرگەها بەهدینان د بوارێ ژێگوتی دا. كو رۆلەكێ باش و بەركەفتی بخوڤە گرتی ، ڤەكۆلین ماوەیێ دناڤبەرا (سەدێ ١٦_١٨٤٢ز) بخۆڤە دگریت ، ئەڤە ژی پشت بەستن ل سەر دەق و دەستنڤیسێن هژمارەكا ژ زانا و هۆزانڤان و میرێن میرگەهێ و ژێدەرێن ڕەسەن ، ڤەكۆلین ل سەر دوو تەوەران هاتیە دابەشكرن و ئەو ژی ئەڤەنە :

تەوەرێ ئێكێ : ژ دەستنڤیسێن هندەك ژ میرێن میرگەها بەهدینان.

تەوەرێ دووێ : ژ دەق و دەستنڤیسێن هندەك ژ زانایێن كورد ل بەهدینان.

**پەیڤێن سەرەكی** : *میرگەها بەهدینان ، زانا و میر ، مەدرەسە ، دەق و دەستنڤیس.*

**پیشەكی :**

دناڤ دیرۆكا میرگەها بەهدینان دا نەخاسمە ل سەدێ (١٦ز) ژ قوناغێن دەستپێكی یە ژ پێنگاڤێن گرنگ و بالكێش كو پویتە ب دەق و نڤیسینێن ب زمانێ كوردی هاتیە دان ، ئەڤ چەندە ژی چ ژلایێ هندەك میرێن میرگەهێ یان ژی ژلایێ زانا و هەلبەستڤانان ڤە بیت.

ئەگەرێ هەلبژارتنا ڤێ مژارێ ئەوە ، كو هەتا نوكە وەك پێدڤی ئەڤ بابەتە نەهاتیە ڤەكۆلینو دیاركرن ، و بتنێ هندەك ئاماژەدانێن كێم هاتینە دیاركرن ، بەلێ هندی دووڤچوون و لێگەڕیانێن رژد و بەردەوام بهێنە كرن ، بەرهەم و ڤەرێژێن هەژیتر و نوو دهێنە ڤەدیتن.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

سەردەم و قوناغا دیرۆکی یا ئەڤ ڤەکۆلینە بۆ هاتیە تەرخانکرن دناڤبەرا سالێن ١٥٣٣_ ١٨٤٢ بخۆڤە دگریت کو یا ئێکێ گرێدای دەستپێکا وەرگرتنا دەستهەلاتا میرگەهێ یە یا مەزنترین و ناڤدارترین میرێ میرگەها بەهدینان میر سولتان حسێن وەلی ئەوێ گەلەك گرنگی ب ناڤەندێن زانستی و زانا و دەستنڤیسان دای ، و مێژوویا دووێ ژی سالا کەفتنا میرگەها بەهدینانە .

ژ پرسگرێك و ئاستەنگێن ڤەکۆلینێ ئەو بوویە ، بەهرا پتریا دەستنڤیسێن مەدرەسەیا قوبەهان و چەندین ناڤەندێن دیتر یێن زانستی ( مەدرەسە و مزگەفت) یێن بەهدینان نە ل بەردەستن ، ئانکۆ دانەییێن ڕەسەن کو ب دروستی مفا ژ مژارێن وان بهێتە دیتن.

ئەڤ ڤەکۆلینە کورتیەکا دیرۆکی یا میرگەها بەهدینان بخوڤە دگریت ، پاشی ژ دوو تەوەران پێکدهێت ، د تەوەرێ ئێکێ دا بەحسکرنا وان میرێن میرگەها بەهدینانە یێن گرنگی ب دەقێن کوردی دای یان ئەو بخو ژی خودان بەرهەمێن ئەدەبی و دەستێ هەلبەستڤەهاندنێ هەی ، و د تەوەرێ دووێ دا ژی دەستنڤیس و بەرکارێن وان زانایێن بەهدینان یێن ب زمانێ کوردی بخوڤە دگریت ، ئەڤجا چ دەقێن ئایینی یان یێن ئەدەبی بن.

هەژی ئاماژەدانێ یە د ڤەکۆلینێ دا ئەو بەرهەمێن ب کوردی هاتینە نڤیسین و سەردەمێ وان یێ گرێدای ماوەیێ ڤەکۆلینێ بیت و وەك دیوان هاتینە چاپکرن ، بتنێ بۆ نموونە مە دەقەك ئانکۆ پارچەیەکا کورت ژێ وەرگرتیە ، چونکی دڤەکۆلینێ دا پتر گرنگی ب دەقێن دەستنڤیس هاتیە دان.

هەروەسا ل دووماهیێ ژی دیارکرنا چەند نموونەیان ژ وان دەستنڤیسێن میر و زانایان یێن دناڤەرۆکا ڤەکۆلینێ دا هاتینە بەحسکرن و وەك پاشکۆ هاتینە دانان.

**میرگەها بەهدینان :**

میرگەها بەهدینان ( ئامێدیێ ) ئێك ژ گرنگترین و ناڤدارترین میرگەهێن کوردی بوویە ل باشورێ کوردستانێ ، ل نیڤا دووێ ژ سەدێ ١٣ز هاتیە دامەزراندن.

سنوورێن وێ دگەل میرگەهێن کوردی یێن دەوروبەر ژلایێ باشوورێ رۆژهەلاتی ڤە رووبارێ زێ یێ مەزن تخوبێ دناڤبەرا میرگەها بەهدینان و سۆران دا بوو، و ژلایێ باکوورێ رۆژهەلاتی ڤە ژی سنوورێ دناڤبەرا میرگەها بەهدینان و میرگەهـ و دەڤەرا شەمدینان دا بوو، ژلایێ باکووری ژی هەڤسنوور بوو دگەل میرگەها هەکاری (جولەمێرگ) و زنجیرا چیایێن ئورەمارێ  کو ب چیایێن تیارێ ناڤدارن و ژلایێ رۆژئاڤا و باکوورێ رۆژئاڤاڤە ژی میرگەها بۆتان بوو ، ژلایێ رۆژئاڤا دەڤەرا پێشخابوور (فیشخابوور) و رووبارێ هیزل و چیایێن شەرنەخێ و پاشی رووبارێ دیجلە سنوورێ سرۆشتی یێ دناڤبەرا هەر دوو میرگەهێن کوردی یێن (بەهدینان) و (بۆتان) دا بوو ، ( **ئامیدی** ، ٢٠٠٠ : ٢٤ ).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ل دۆر دامەزراندنا ڤێ میرگەهێ ژی گەلەك بۆچوون و ڤەگێڕان و مێژوویێن جودا جودا دیارکرینە [١]

بەلێ یا ژ هەمیان بنەجهتر ئەوە ئەڤ میرگەهە ڤەدگەریتەڤە بۆنیڤا دووێ ژ سەدێ (١٣ز) ، چونكی ناڤێ ئێكەم میرێ كورد هاتی ل پشتی كەفتنا دەولەتا عەبباسی كو دەستهەلاتداری ل ئامێدیێ كری ناڤێ وی میر ئەبو بەكر بوو، ئەوێ ل سالا ١٢٨١ز ل سەر دەستێ مەغولان هاتیە كوشتن.( **ابن العبري**، ١٩٩١ : ٣٤١)،( **العمري** ، ٢٠١٠ : ٢٠٥) ، میرێ ناڤبری دبیتە میرێ ئێكەمین كو بەرهەنگاری مەغوولان بووی و خۆ ملكەچ نەكری ، لەوما ناڤبری دبیتە كەسێ دەستپێكێ یێ دامەزراندنا میرگەها ئامێدیێ (هەكاری یا باشور / بەهدینان) ، هەژی یە بێژین دژێدەرێن سەردەمێن ئیسلامی دا دەڤەر دگەل (وەلاتێ هەكاری چیایێن هەكاری ، هەرێما جزیرێ ، چیایێن كوردان) دهاتە نیاسین ، ئانكۆ بەری ناڤێ دەڤەرێ ببیتە بەهدینان دەڤەر ب (وەلاتێ هەكاری) دهاتە نیاسین، ئانكۆ دشێین بێژین (هەكاری یا كەڤن/ هەكاری یا باشوور) پایتەختا وێ كەلا (ئامێدیێ) بوو، و (هەكاری یا باكوور) ژی میرگەها هەكاری لێ هاتبوو دامەزراندن و پایتەختا وێ (جولەمێرگ)ێ بوو ، گرۆڤە ژی ل سەر ڤێ چەندێ ل سالا ١٢٩٣ز میر عەلائەددین ئەبولحەسن عەلی هەكاری میرێ (هەكاری یا باشوور ئانكۆ بەهدینان / ئامێدیێ)بوو، هەروەكی مێژوونڤیسێ مەملووكی (ابن عبدالظاهر) ل دۆر ڤێ چەندێ گوتیە : "میر عەلائەددین ئەبولحەسەن عەلی هەكاری" ل هەیڤا (رەبیعول ئەووەل ٦٩١مش/ ١٢٩٢ز) كەسەك بناڤێ شێخ عەبدولحەمید هنارتبوو ل دەف نائیبێ سۆلتانێ مەملووكی"مەلك ئەلئەشرەف خەلیل" (١٢٦٧_١٢٩٣ز) ل باژێرێ دیمەشقێ ، ( **ابن عبدالظاهر ، مخطوطة** : ٩٢_٩٨ ) ، ئەڤ میرگەهە هەتا سالا ١٨٤٢ یا بەردەوام بوو تاكو ل سالا ناڤبری ژلایێ دەولەتا عوسمانی ڤە هاتیە ژناڤبرن و ئیسماعیل پاشایێ دووێ (١٨٣٦_١٨٤٢ز) دووماهیك میرێ میرگەهێ بوو.

میرگەها بەهدینان د بەرفرەهبوونێن بەردەوام دا بوو ، زۆربەیا وان ل سەردەمێ میرێ بەهدینان یێ ناڤدار سۆلتان (حەسەن بەگ) حەسەن بەگ كورێ سەیفەددین (سێڤدین) (٨٧٠_٩٤٠مش /١٤٦٥_١٥٣٣ز) بووینە ئەوێ دبیتە بابێ سۆلتان حسێن وەلی ، ئەو ژی دەمێ دەولەتا (ئاق قوینلوو) یا توركمان ڤیای و بزاڤكری ئامێدیێ داگیر بكەت و حوكمێ میر (حەسەن بەگ) بێخیت، سەركردەكێ وان بناڤێ (سلێمان بەگ بیژەن ئوغلی) سەركردایەتیا لەشكەرەكێ كر بۆ ئەرد و وەلاتێ ئامێدیێ (میرگەها ئامێدیێ) و هەر دوو كەلهێن سەر ب وێ ڤە (ئاكرێ و شوش) داگیركرن و ئامێدیێ ژی بۆ ماوێ سێ هەیڤان دۆرپێچ كر، بەلێ ل ڤێرێ رۆلێ هێزێن مللی یێن پشتەڤان بۆ میرگەهێ بەرچاڤ بوو یا كو عەشیرەتان نوونەراتی دكر ئەو ژی دەمێ هێرشكریە لەشكەرێ داگیركەرا و زیانێن مەزن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

گەهاندینە وان، لەوما دۆرپێچ شکاند و یێن ژ لەشکەرێ پاراستی و قورتال ژی بووین خۆ ڤەکێشان و رەڤین، و ئەڤ روودانە ژی ل سالا (٨٧٥ مش/١٤٧٠ز) بوو، ( **رؤوف** ، ٢٠٠٩ : ٨).

پشتی ڤێ سەرکەفتنێ میرگەها بەهدینان پتر بەرفرەهی بخو ڤە دیت، و نیمچە میرگەها (بەرواری بالا) ژی کو بنگەهێ وێ کەلا هرۆرێ بوو ئێخستە سەر ب میرگەهێ ڤە و دگەل ڤێ چەندێ ژی دانپێدان ب زنجیرا مالباتا وان یا کەڤن یا حوکمدار ژی کر، ئانکۆ مالباتا میرێن وێ هەر هێلانە ل سەر دەستهەلاتدارێ ، و دبەردەوامیا بەرفرەهکرنا میرگەهێ دا ل ماوەیەکێ ژ سەدێ (٩مش/ ١٥ز)ێ دەڤەرا (نێروە) ژی یا هەڤسنوور دگەل( بەرواری بالا) حوکمێ زنجیرا وان یا سەربخۆ ب دووماهیك ئینا، و دەڤەرا (مزووری بالا) ژی ل رۆژهەلاتا (زیێ مەزن) ئێخستە سەر ب میرگەهێ ڤە، و ب ڤێ چەندێ میرگەهێ شیا سەروەریا خۆ بێخیتە ل سەر هەمی دەڤەرێن دەورۆبەرێن خۆ ژلایێ باکوری ڤە( **رؤوف ، المصدر السابق** : ٨).

هەروەسا میرێ میرگەهێ سۆلتان (حەسەن بەگ) شیابوو ل سالا (٩١٦مش/١٥١٠ ز) (کەلا دهۆك)ێ ژی ژ دەستێ (داسنی) یا بینیتەدەر، و ئەڤ چەندە ژی کو پشتی شیای ل سەر کەلا (دهۆك)ێ زال ببی و میرگەها (داسن) ژی ژناڤ ببەت و پاشی (شێخان) ژی کو سەر ب میرگەها (داسن) ڤە بوو ئێخستە سەر ب میرگەها ئامێدیێ ڤە ، دیسا شیا ئاکرێ ژی بێخیتە ژێر دەستهەلاتداریا میرگەها خۆ.( **بەدلیسی** ، **بازیدی** ، ٢٠٠٧: ١٧٠)، ( **العباسي** ، ١٩٦٩: ٥٣)، ( **المایي** ، ١٩٩٩: ١٢٠) ، ( **رؤوف** ، ٢٠١١ : ٣٨٤).

زاخۆ ژی ل نیڤا دویێ ژ سەدێ (١٦ز) ژ دەستێ (سندیان) هاتبوو دەرێ و کەفتبوو ژێر دەستێ مالباتا میرێن میرگەها ئامێدیێ (بەهدینان) ڤە و ئێدی سنوورێ میرگەهێ گەلەك بەرفرەهبوو ، و میرێن ڤان دەڤەران هەر ژلایێ میرێ ئامێدیێ ڤە دهاتنە دەستنیشانکرن ، ئەڤجا چ ژ کەسەکێ مالباتێ بخو بیت یان کەسەکێ دیتر بیت بەلێ هەر ل دووڤ رازەمەندی یا میرێ میرگەهێ. هەروەکی د بەلگەنامەیەکا عوسمانی یا سالا ١٥٦٠ دا هاتی ل وی دەمی برایێ سۆلتان حسێن وەلی (خان ئەحمەد کورێ سۆلتان حەسەن) میرێ زاخۆ بوویە ، هەر دوو عەشیرەتێن سندی و سلێڤانەی گلەیی ژ رەفتارێن میرێ ناڤبری کرینە. ( **گولی _ الجوادي** ، ٢٠١٩ : ٨٤).

دەربارەی سنورێ میرگەهێ ژلایێ باشورێ رۆژئاڤاڤە ل سەردەمێ سۆلتان حسێن وەلی هەتا دەڤەرا دێر مەقلووب چووبوو ، هەروەکی دبەلگەنامەیێن عوسمانی دا نەخاسمە دەفتەر تەحریرا مووسل یا سالا ١٥٤٠ دا هاتی ناحیا دێر مەقلووب کو بۆ ئێکەم جار ل سالا ١٥٤٠ دناڤ دەفتەر تەحریرێن مووسل دا هاتیە تۆمارکرن ، ل سالا ناڤبری باژێرکێ دێر مەقلووب ژ (٢٩) گوندان پێکدهات ، ل سالا ١٥٥٧ ژ (٢٥) گوندان و ل سالا ١٥٧٥ ژ (١٧) گوندان پێکدهات ، رێڤەبرنا ڤان گوندان ل ژێر حوکمداری یا میرێ ئامێدیێ سۆلتان حسێن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

[وەلی] بوو ، پاشی ئانکۆ پشتی مرنا وی ئەڤ دەڤەرە بۆ کورێن وی هاتینە ئاراستەکرن ( ).
Gunduz . 1998 : 40

د دەفتەر تەحریرا مووسل یا سالا ١٥٢٣ دا ناڤێ شێخان (شێخانا نوکە) وەك گوندەکێ سەر ب کەسەکێ داسنی ڤە بناڤێ شێخ حەیدەر هاتبوو دیارکرن ، بەلێ د دەفتەر تەحریرا سالا ١٥٤٠ دا ناڤێ ڤان دەڤەران (دەڤەرێن داسن) وەك ئەردەکێ سەر ب حوکمێ میرێ ئامێدیێ ڤە هاتیە ( Gunduz . 1998: 191 )، چونکی بەهانەیا سۆلتان حسێن وەسا دیارکریە کو گوندێ شێخان سەر ناحیا (دێر مەقلووب) ڤەیە و ئەڤ ناحیە ژی سەر ب حکوومەتا بەهدینان ڤەیە.

ژ ئەڤا بوری دیاردبیت کو سنورێ میرگەها بەهدینان ژلایێ باشورێ رۆژئاڤاڤە هەتا چیایێ مەقلووب و رووبارێ دیجلە چوویە.

**زمانێ کوردی ( کرمانجی ) ل میرگەها بەهدینان :**

ئێك ژ کارێن گرنگ و بالکێش دناڤ میرگەهێن کوردی دا ، پووتەدان و گرنگیدانە ب زمانێ خۆ یێ رەسەن ئانکۆ ب زمانێ کوردی ، نەخاسمە دەمێ دناڤ نڤیسین و ژێدەر و ڤەگێرانێن دیرۆکی دا ئاماژە پێهاتیە دان ، و دەستنڤیس و بەرکارێن زانا و میر و هۆزانڤانێن کورد گرۆڤەیێن راستیا ڤێ چەندێ نە ، نەمازە کو میرگەها بەهدینان هەڤسۆیا دوو میرگەهێن گرنگێن کوردی بوویە یێن کو شاعرێن ناڤدار و مەزن و پێشەنگ دناڤ دا پەیدا بووینە بۆ نموونە : مەلایێ جزیریو رەمەزانێ جزیری ل جزیرا بۆتان ، میر و هۆزانڤان عیمادەددین هەکاری (صەبووری) (١٦٣٤_١٦٣٩) و مەلایێ باتەیی و پەرتۆ بەگێ هەکاری ...هتد ل میرگەها هەکاری (جولەمێرگێ) ، و بەرهەمێن وان یێن ئەدەبی ب زمانێ کوردی رەنگڤەدانا خۆ ل سەر میرگەها بەهدینان ژی هەبوویە کو بەرهەمێن وان بهێنە نەسخ کرن و دناڤ کەشکۆلێن وان دا بهێنهڤەید کرن. د ڤێ چەندێ دا ژی دیوانا مەلایێ جزیری سەرپشك بوویە.

ل دۆر زمانێ کوردی ل بەهدینان میر و دیرۆکنڤیسێ کورد شەرەف خانی بەدلیسی د پەرتووکا خۆ شەرەفنامەیێ دا ئەوا ل سالا ١٠٠٥ مش (١٥٩٧ز) نڤیسی ، دەربارەی زمانێ ل میرگەها بەهدینان دهێتە بکارئینان و خەلك پێ دئاخڤن دبێژیت : زمانێ خەلکێ ئامێدیێ (بەهدینان) ب کوردی و تازی (عەرەبی) تێکەلە ، ( **بەدلیسی ، ١٠٠٥ مش ، ورقە** : ٣٨ ) ، ئانکۆ ب کورمانجی دئاخڤن و ژبەر ئایینێ پیرۆزێ ئیسلامێ پەیڤ و بکارئینانێن عەرەبی ژی هەنە.

گەرۆکێ عوسمانی ئەولیا چەلەبی (١٦١١_١٦٨٢) ل سالا ١٦٥٦ دەمێ سەرەدانا خۆ دا بۆ ئامێدیێ دکەت بەحسێ دەڤۆکا بەهدینان دکەت و دبێژیت : کوردان هژمارەکا زار و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

دەڤۆکان یێن هەین و پێ دئاخڤن ، بەلێ خەلکێ ئامێدیێ ب دەڤۆکەکا زەلال و نازك و ڕەهوان دئاخڤن و ئەڤ مللەتە ب (بەهدینان) بەرنیاسن ، ( **چەلەبی ، دەستنڤیس ، ص ٣٨٠** ).

هەژی گوتنێ یە ل میرگەها بەهدینان گرنگی ب دەقێن نڤیسکی دایە و ئەڤە ژی پێنگاڤەکا ڕژد بوویە بۆ پاراستن و تۆمارکرنا بەلگەهکرنا دەقێن کوردی د بوارێن جودا جودا دا ، ئەڤجا چ بەرهەم و بەرکار بیت ، یان وەرگێڕان یان ژی نەسخکرنا بەرهەمێن کەسایەتییێن ل بەری خۆ.

د ڤێ ڤەکۆلینێ دا دێ تیرۆژکێ ئێخینە ل سەر چەندین میر و زانا و شاعرێن بەهدینان یێن بەرهەمێن ب کوردی نڤیسین ، ئەڤجا چ بەرهەم یێ وان بخو بیت ، یان ئەو ب کارێ نەسخ کرنێ ڕابین.

**تەوەرێ ئێکێ : ژ دەستنڤیس و بەرهەمێن میرین میرگەها بەهدینان:**

دناڤ میرگەها بەهدینان دا هندەك ژ میر هەبووینە گرنگیەکا گەلەك باش ب لایەنێ ڕەۆشەنبیری و زانستی و زانینێ دایە ، نەخاسمە د بوارێ ئەدەبی دا ب زمانێ کوردی ، ئەڤە ژی هەکە میر بخو ژی ژ کەسێن زانا و شاعر و ئەدەبدۆست بیت ، پتر ئەڤ ڕەنگەدانە ل سەردەمێ وی دا پەیدابوویە ، ل ڤێرێ دێ ئاماژە دەینە وان میران یێن ئەڤ بیاڤە ب گرنگی ڤە ڤەگرتی و پویتەکێ باش داینە دەستنڤیس و شاکار و بەرهەمێن ئەدەبی یێن تۆر و کلاسیکیا کوردی ، ل میرگەها بەهدینان هەر ل سەردەمێ میر سولتان حسێن وەلی گەلەك گرنگی ب زانا و دەستنڤیسان هاتیە دان.

**سولتان حسێن وەلی ( ١٥٣٣_١٥٧٣) :**

ئێك ژ ناڤدارترین میرێن میرگەها بەهدینان کو سەردەمێ وی ب سەردەمێ زێرین دهێتە ناڤکرن ئەو ژی سۆلتان حسێن بەگ (حسێن وەلی) یە ، بۆ ماوەیێ چل سالان (١٥٣٣_١٥٧٣ز) حوکمداری ل میرگەها بەهدینان کریە ، باشترین دانەناساندنا نیشانێن کەسایەتیا وی ئەوی ژی پەسنا دیرۆکنڤیسێ کوردێ مەزن (شەرەفخانی بدلیسی ١٥٤٣_١٦٠١/١٦٠٢ز)ی یە کو ناڤهاتی یێ هەڤسەردەمێ وی بوویە، دپەرتووکا خۆ (شەرەفنامە)یێ دا ئەوا ل سالا ١٥٩٧ز نڤیسی ب ڤی ڕەنگی پەسن و بەحسێ سۆلتان حسێن وەلی کریە دبێژیت : (مرۆڤەکێ دیندار و موتەقی و عولەما و صولەحا پەروەر و ڕەعیە دۆست ، مەزن و بچوکێد وەلاتی ژ وی ڕازی و شاکرو لەشکەرێ ب عەدل و دادبوویی و ب وەجهەکێ ئەحسەن و صدق و صەداقەت و خەدەمات ئمور حەزرەت پادشاهی سەعی و جهد تەمام دکرین ب واسگا صدق و صەداقەت خزمەت ل نك خوندکاری مومتاز و بەینەل ئەقران ، سەرفەرازبوویی ، حەتا جملەئێ ئومەرائید کوردستانێ با وی مراجعەت دکرین ، ژ خەبەرا وی بدەرڤە حەرەکەت نەدکرین ، هەر چی خصوصا کو ژ بووی ئەکرادان وەیاخود مادەیەکی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دنێ مەمالك عوسمانیە وەکو ئەوێ ئەادا حضورا حەزرەت خوندکاری بکرا رەد نەدبوو...) ، ( **بەدلیسی** ، ٢٠٠٧ ، **ل** ١٧١ ) ، ناڤهاتی گەلەك گرنگی ب زانا و زانینێ دایە و گەلەك پەرتووك وەك وەقف پێشکێشی مەدرەسەیا قوبەهان کرینە کو ب ئاڤاکەرێ وێ دهێتە نیاسین و مەدرەسەیا ناڤبری ژلایێ وی ڤە هاتبوو نووژەنکرن و بەرفرەهکرن و سەخبێرکرن ، لەوما مەدرەسە دگەلەك دەستنڤیسان دا بناڤێ السلطانیة و الحسینیة هاتیە ناڤکرن بۆ نموونە دئێك ژ کەڤنترین دەستنڤیسێن ل ڤێ مەدرەسەیێ هاتیە نڤیسین : " وقع الفراغ من التسوید یوم الاثنین من الشهر شوال في مدرسة السلطانیة المنشارة في قریة قبَهان المتصقة بزیارة محمد الباقر زاده الله شرفاً سنة ٩٤٨ هـ (١٥٤٢م) " ( **البختي ، مخطوط** : **٩٤٨هـ ، ص** ٦٤ )، دانەیەکا ڤێ دەستنڤیسێ ل دەڤ نڤیسەرێ ڤێ ڤەکۆلینێ پاراستی یە ، دیسا ژ وان وەقفان ژی یێن سۆلتان حسێن کرینە وەقف بۆ مەدرەسەیا قوبەهان بۆ نموونە دەستنڤیسا : **اسنی المطالب شرح روض الطالب : ن : احمد بن علی بن عبدالرحیم الشافعي ٩١٤ هـ ، هذا ما وقفه و حبس و سبل الامیر العالم العادل سلطان حسین بك علی مدرسته سنة** ٩٧٨ **هـ** ) ، ( **القرداغي** ، ٢٠١٤ ، **ص** ٣٤٠ ).

**قوباد بەگ :**

ناڤبری کوڕێ میرێ میرگەها بەهدینان سولتان حسێن وەلی (١٥٣٣_١٥٧٣ز) یە ، ژبلی حوکمداریا میرگەها بەهدینان (١٥٧٣_١٥٨٤ز) ، د بیاڤێ ئەدەبی دا ژی دەستێ هەلبەستڤەهاندنێ ژی هەبوویە ، هەتا نوکە هژمارەکا هەلبەستێن وی ب زمانێ فارسی و هەلبەستەکا ب کوردی پەیدابووینە ، هەژی گوتنێ یە ئەڤە بۆ ئێکەم جارە ئاماژە ب هەلبەستا وی یا ب زمانێ کوردی دهێتە دان هەروەکی د مالکا دەستپێکێ دا دبێژیت :

**د وەنە سووئالەك ژ مە کر قەند کەلامێ**

**شیرینە مە هێژ حەلقە ب وێ توحفە پەیامێ**

و ل دووماهیێ دبێژیت :

**دێ خەسف بە بن سەبعەیێ سەییارە حیجابی**

**ساقی کو د مەجلیس ژ مە ڕا پلتە خەرامێ.** ( **کەشکۆل** ، ١١٤٣ **مش** ).

هەژی ئاماژەدانێ یە کو ژ بلی کو میرێن میرگەهێ بخو دەقێن کوردی نڤیسی بن ، ئانکۆ وان بخۆ ژی دەستێ هەلبەستڤەهاندنێ هەبیت و ب کوردی ڤەهاند بن ، میران کارێ نەسخ کرنا بەرهەمێن ب کوردی ژی کریە و هەروەسا زانا ژی ڕاسپاردینە کارێ وەرگێڕانێ ژی بکەن یان زانایان کارێ وەرگێڕانێ بۆ میران کرینە دیاری ، کەواتە دوو تەوەرێن گرنگ بخۆ ڤە دگرن ئەو ژی ، وەرگێڕان و نەسخ کرنە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**ئێک : وەرگێڕان**

ئێـک ژ خـالێن بـالکێش دناڤ میرگـەها بەهـدینان دا کـو هنـدەک ژ میـرێن وێ گرنگی پێدای ، ئەو ژی لایەنێ وەرگێڕانێ بوویە ، نەخاسمە دبوارێ دەقێن ئـەدەبی دا ، ژبـەر کو وەرگێڕانا پرەکا رەۆشەنبیریێ یە دناڤبەرا دوو جڤاك و زمـانێن جودا جـودا دا ، لـەوما بۆ گەهاندن و ڤەگۆهاستنا ئەدەبیاتا کوردی بۆ جڤـاکێن دەورۆبـەر پێنگاڤەکا هەژی بوویە ، ژ بۆ ڤێ چەندێ ژی میرێن بەهدینان زانا ڕاسپاردینە کو دەقێن شـاکارێن کـوردی بـۆ زمـانێن دیتر ڤەگۆهێزن نەمازە بۆ زمانێ فارسی کو ل وی سـەردەمی زمـانێ بەربـەلاڤێ دەڤەرێ بوویە. ل ڤێرێ دێ ئاماژە دەینە چەند نموونەیەکان وەك :

**زوبێر پاشایێ دووێ ( ١٨٠٨_ ١٨١٦) :**

ئەڤە میرە ژی ئێك ژ وان میرێن بەهدینانە یێن گرنگی دایە زانا و ئەدەبێ کـوردی ، لەومـا زانـایێ ناڤـدار مەلا یەحیـایێ مـزووری پەسـنا وی کـریە و ل سـەر داخـوازا وی ئێـك ژ هەلبەستێن مەلایێ جزیری بناڤێ (موغبەچەی مەی فرۆش) ب فارسی شەرح کریە ، هەروەکی ل سەر دەستنڤیسا ڤێ شەرحێ هاتیە نڤیسین :

و فانی حب دنیای دنیەی مکارە (یحیی بن خالد) عفی عنهما الملك الواحد ، کە در تاریخ هزار و دو صد و بیست و دو در شهر مبارك ذي الحجة خلاصەی در زمان دودمان ال عباس ، و مظنەی صدق ( خیر الناس من ینفع الناس ) اعنی بە زبیر باشا بن المرحوم اسماعیل باشا _ یسر اللە لە من الخیر ما یشاء _ ازین خقیر فقیر طلب شرح غزل ( مغبچە می فروش) از دیوان حضرت شیخ احمد جزری _ رحمە اللە علیە_ کرم فرمودە هر چند بضاعت این صناعت نداشتم..." ، ( **قەرەداغی ، ٢٠٠٦ ، ل ٢٠٥** ) ، ئـانکۆ مەلا یەحیـایێ مزووری ئەڤ هەلبەستا مەلایێ جزیری ( موغبەچەی مەی فرۆش ) ل ( زیلحیجەجەیا ١٢٢٢ مش / شوباتا ١٨٠٨ز ) ل سـەر داخـوازا میـرێ میرگەهـا بەهـدینان زوبێـر پاشـایێ دووێ ب فارسـی شرۆڤەکریە ، بێگۆمـان ئەڤە ژی ئێـك ژ گرنگیـدانا میـر و زانـایێن بەهـدینان بـوویە کـو پێشـەنگێن کلاسـیکیا کـوردی نەخاسـمە جزیـری ب زمـانێن دیتـر ژی بهێـنە نیاسـین و گرنگیدانە ب پێنگـاڤ و بزاڤا وەرگێڕانێ کو ئەدەبیاتا کوردی دناڤ جڤاکێن دیتـر دا ژی بهێتە نیاسین و بەلاڤکرن ، ئـەڤ شرۆڤە ژ دانەیەکا دەستنڤیس ژلایێ سـەیدا محەممەد عەلی قەرەداغی د پەرتووکا ( بایەخدانی میرانی ئامێدی بە ڕۆشنبیری لە دەڤەری بادیناندا) دا هاتیە بەلاڤکرن.

ئەڤـە ژی خالـەکا گرنگـە کـو گرنگـی ب وەرگێڕانـێ هاتیـە دان و سـەرەرای نڤیسینا دەڤێ ب کوردی بۆ زمانەکێ دیتر ژی بهێتە وەرگێڕان ، کەواتە زێدەباری پاراستن و تۆمارکرنا دەقەکێ ب زمـانێ کـوردی ، بـەلاڤکرن و ڤەگۆهاستنا رەۆشـەنبیری و ئـەدەبیاتا کوردی یە ژی بۆ کەسێن زمانێن وەلاتێن دەورۆبەر.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**مەلا جەرجیس ئەربیلی ( مرن : ١٢٠٦ مش / ١٧٩١ز):**

ئێك ژ زانایێن ناڤدارێن كورد یێن سەدێ هەژدێ یە ، بۆ ماوەیێ چەند سالەكان ل ئاكرێ ژیایە و دەرس داینە و چوویە ئامێدیێ ژی ، ل هەیڤا زیلحیجەیا ١١٨٥ مش / ئادارا ١٧٧٢ز هەلبەستا ( الحدوث) یا مەلایێ جزیری ب فارسی شەرح كریە و ب ( رسالة الفتحية ) ناڤكریە و پێشكێشی میرێ میرگەها بەهدینان ( ئامێدیێ ) ئیسماعیل پاشایێ ئێكێ ( ١٧٦٨_ ١٧٩٨) كورێ بەهرام پاشایێ مەزن ( ١٧١٤_١٧٦٨ز) كریە ، (**ئەربیلی ، ١١٨٥ هـ**) ؛ (**قەرەداغی** ، ٢٠٠٦ ، **ل** ٢٦) ، ئەڤ شرۆڤە ژ دانەیەكا دەستنڤیس ژلایێ سەیدا محەممەد عەلی قەرەداغی د پەرتووكا ( بایەخدانی میرانی ئامێدی بە ڕۆشنبیری لە دەڤەری بادیناندا) دا هاتیە بەلاڤكرن.

**مەلا یەحیایێ مزووری ( مرن : ٧ / ١ / ١٨٣٩):**

مەلا یەحیایێ مزووری ئێك ژ ناڤدارترین و مەزنترین زانایێن كورد یێن نیڤا دووێ ژ سەدێ هەژدێ و نیڤا ئێكێ ژ سەدێ نۆزدێ یە، ئێك ژ كارێن وی د بیاڤێ ئەدەبی دا شەرحا هەلبەستەكا شاعرێ مەزنێ كورد مەلایێ جزیری یە، ئەڤ هەلبەستە بناڤێ (موغبەچەی مەیفرۆش) كو ب فارسی شرۆڤەكریە ، ئەڤ چەندە ژی ل سەر داخازا میرێ میرگەها بەهدینان (زبێر پاشایێ دووێ كورێ ئیسماعیل پاشایێ ئێكێ ١٨٠٨_١٨٢٤ز) كریە ، هەژی یە بێژین ئەڤ شەرحە ل سالا (١٢٢٢مش/ ١٨٠٨ز) ل ئامێدیێ نڤیسی بوو ، و كورێ وی محەممەدصالح ژی ئەڤ شەرحە ل سالا ١٢٥٩ مش (١٨٤٣ز) ل جولەمێرگێ نڤیسی یە ، (**قەرەداغی** ، ٢٠٠٦ ، **ل** ٢٦). ئەڤ شرۆڤە ژ دانەیەكا دەستنڤیس ژلایێ سەیدا محەممەد عەلی قەرەداغی د پەرتووكا ( بایەخدانی میرانی ئامێدی بە ڕۆشنبیری لە دەڤەری بادیناندا) دا هاتیە بەلاڤكرن.

**مەلا صالح سیراجی یێ ئاكرەیی:**

ئێك ژ زانایێن سەدێ (١٨_١٩ز ) یە ، ل ١٢٢٧ مش / ١٨١٢ز ل سەردەمێ میرێ میرگەها بەهدینان ( ئامێدیێ ) زوبێر پاشا كورێ ئیسماعیل پاشایێ ئێكێ ( ١٧٦٨_ ١٧٩٨) ب زمانێ فارسی شەرحا دوو هەلبەستێن مەلایێ جزیری كریە ، ئانكۆ ئەڤ شەرحە پێشكێشی میرێ ناڤبری كریە ، ( **قەرەداغی** ، ٢٠٠٦ ، **ل** ١٠ ) ، ئەو دوو هەلبەست ژی ئەڤەنە : ئێك ( تۆ سەحەرگەهـ وەرە بازارێ حودووث ) كو ناڤێ وێ كریە ( وحدت الخلوص و شرح الحدوث ) و یا دووێ ( سررێ وەحدەت ژ ئەزەل گرتیە حەتتا ب ئەبەد) ، ( **دۆسكی** ، ٢٠١٨ ، **ل** ١٤_١٥ ) ، دانەیەكا ڤێ دەستنڤیسێ دناڤ پەرتووكخانەیا جامعا مەزن یا ئاكرێ یا مەلا محەممەدێ ئاكرەیی هاتیە پاراستن.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

**دوو : نەسخ كرن**

دناڤ دەستنڤیسێن میرێن میرگەها بەهدینان دا نەسخ كرن ژ ڕەنگڤەدانێن بەرچاڤ بوویە ، كەواتە میرێن میرگەهێ گەلەك گرنگی ب نەسخ كرنا بەرهەم و شاكارێن كوردی دایە ب تایبەتی دیوانا مەلایێ جزیری ، هەروەكی ل ڤێرێ دێ چەند نموونەیەكان دەینە دیار كرن :

**محەممەدتەییار پاشا ( غەریبی ) :**

میر محەممەدتەییار پاشا كوڕێ میر ئیسماعیل پاشایێ ئێكێ ( ١٧٦٨_١٧٩٨) یە ، ناڤبری ژبلی كو ئەو بخو ژی شاعر بوویە و ناسناڤێ وی یێ شعری ( غەریبی ) بوویە و وەك هێمایەك بۆ ناڤێ خۆ ژمارە (٩٢) بكارئینایە كو ب هژمارا ئەبجەدی دبیتە (محەممەد) ، شعر ب كوردی و فارسی ڤەهاندینە ، گەلەك گرنگی ب كلاسیكێن كورد ژی دایە نەخاسمە شاعرێ پێشەنگ مەلایێ جزیری ، كو میرێ ناڤبری ل رۆژا ئەیینی ( ١٨ زیلحیجە ١٢٣١مش _ ٨ چریا دووێ ١٨١٦ز) ژ نڤیسینا (نەسخ كرن) وێ ب دووماهیك هاتیە ، ب خەتێ شكەستە یێ فارسی نڤیسی یە ، قەبارێ وێ ( ١٦ سم × ٢١ ,٥ )ە و دیوانا جزیری (١٤٥) لاپەڕان بخۆڤە دگریت ، ( **پاشا** ، **دەستنڤیس : ١٢٣١ مش ، ل ١٤٥** ) ، زێدەباری نەسخكرنا دیوانا جزیری سێ ژ شعرێت جزیری ژی كرینە پێنج مالكی (تەخمیس) و شعرەكا میرو شاعر مستەفا بەگێ هەكاری ( پەرتەو بەگێ هەكاری ١٧٥٦_ ١٨٢٥) ژی تەخمیس كریە ، دیسا دگەل ڤێ كەشكۆلا وی دا تەخمیسەكا ڕەمەزانێ جزیری ( ڕەمەزان ئاغا / ڕەمەزانێ بۆتی) هەیە و هەروەسا شعرەكا شاعر سەوادی ،و شعرەكا ئەحمەد كاتب قوباد بەگ...هتد، دیسا هژمارەكا شعرێن خۆ ژی ل سەر ڤێ كەشكۆلێ نڤیسینە ، دیسا دیوانا وی بناڤێ (غەریبی) دناڤ دەستنڤیسێن (دار المخطوطات العراقیة) دا هاتیە پاراستن كو ڤەكۆلەر ئیسماعیل بادی مژوولی بەرهەڤكرنا دیوانا ڤی میری یە ، دانەیەكا دەستنڤیسا دیوانا مەلایێ جزیزی یا ب دەستنڤیسا وی ل دەف نڤیسەرێ ڤێ ڤەكۆلینێ هەیە ، ژ هەلبەستێن وی پێنجمالكییەك ل سەر غەزەلەكا مەلایێ جزیری یە ، ل دەستپێكێ دبێژیت :

ئەرقەمان حەلقە كو بەستن چەپ و ڕاست
ئەفعەیان دل ژ مە گەستن چەپ و ڕاست
مە د دل خارە شكەستن چەپ و ڕاست
( نێرگزێن شەنگ د مەستن چەپ و ڕاست
ساقیان جام د دەستن چەپ و ڕاست )

و ل مالكا دووماهیێ دا دبێژیت :

ب ( غەریبی ) دلێ مەسروور صفەت

رەقصى سەرخوەش و مـــەخمووور صفەت
مـــەستيا بـــادەئێ ئـــەنگوور صــفــەت
(مـــەلێ ســـوڕپەرييا حـــوور صــفەت
سەد مەلەك دەست ب دەستن چەپ و ڕاست ).
( **پاشا ، ١٢٣١ مش ، ل ١٦٠** ).

**ئيسماعيل پاشايێ دووێ ( ١٨٣٦_ ١٨٤٢) :**

ئيسماعيل پاشايێ دووێ ( ١٨٣٦_١٨٤٢) كوڕێ محەممەدتەييار پاشا (غەريبى) يە ، ژبلى وەك مير و دەستهەلاتدار ، خودان دەستەكێ باشنڤيسێ ژى بوويە و گرنگى ب ڕەوشەنبيريێ دايە و حەژێكەرێ ئەدەبياتێ ژى بوويە هەر وەكى يا ديار ژ دەستنڤيسا وى ئەوا ل سالا (١٢٦٠مش/ ١٨٤٤ز) نڤيسى چەندين هوزانێن هندەك هوزانڤانێن كلاسيك يێن كورد و فارس و تورك نڤيسينە وەك : ديوانا مەلايێ جزيرى ، لاغەر ، مەولانا رومى ، حافزێ شێرازى ، جامى ، سەعدى شێرازى ، ديوانا فضولي ، طەيفى (تەيفى هەكارى) ، قانع ... هتد ، هوزانەكا وى بخو ژى ب زمانێ فارسى ئانكو وى بخو ژى دەستێ ڤەهاندنا هوزانان هەبوويە كو ئاماژە دايێ (من كلام اسماعيل عباسى) ، ئەڤ كەشكولا وى ژ (١٥٤) پەڕان پێكدهێت ، ( **ئيسماعيل پاشا ، دەستنڤيس : ١٢٦٠ مش** ) ، ئەڤ دەستنڤيسە دانەيەكا دەستنڤيسا ديوانا مەلايێ جزيزى يە ب دەستنڤيسيا ميرێ ناڤهاتى ئانكو نەسخ كرنا ديوانا جزيرى يە ، ٢٣ شەووالا ١٢٨٩مشەختى كو دبيتە ٢٣ كانوونا ئێكێ ١٨٧٢زايينى چوويە بەر دلوڤانيا خودێ ، ( **ڕێكانى ، ٢٠١٩ ، ل ٦٣٩** ).

**تەوەرێ دووێ : ژ دەستنڤيس و بەركارێن زانا و شاعرێن بەهدينان**

ئێك ژ پێنگاڤ و كارێن هەژى و گرنگ دناڤ هژمارەكا ژ زانايێن كورد ل ميرگەها بەهدينان ، پووتەدانا وانە ب نڤيسين و نەسخ كرنا لايەنێن ئەدەبياتا كرمانجى و ب تايبەتى هندەك ژ وان بخو ژى ژبلى نەسخ كرنا شعرێن كلاسيكێن كورد ، ئەو بخو ژى ژ شاعرێن پايەبلند بوينە ، ل ڤێرێ دێ ئاماژەيێ دەينە چەندەك ژ وان زانا و شاعران (زێدەبارى وان زانايێن مە د تەوەرێ ئێكێ دا بەحس كرين ).

**حەميدى :**

ئەڤ شاعرێ مە ژ وان كلاسيكێن كوردە يێن هەتا نوكە بتنێ هەلبەستەكا وى هاتيە ديتنو بەلاڤكرن ، ئەڤ چەندە ژى بۆ ئێكەم جار ژلايێ نڤيسەر مەسعوود كتانى هاتبوو بەلاڤكرن ، بەلێ ژ بەر كو د مالكەكێ دا پەيڤا (باتى/ باتەيى) هاتيە ( **باتى ئێ خێرخواز نەبيتن دائما بيت تازيدار**) ، لەوما ناڤێ گوتارا خۆ كريە ( مەلايێ باتەيى و سلطان حسێنێ ميرێ ئاميدێ ) و هەلبەست دايە پال مەلا حسێنێ باتەيى ، ( **كتانى ، ١٩٩٨ ، ل ٩**) ،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلينێن كوردى

پاشی نڤیسەر سەعید دێرەشی گوتارەك بناڤێ ، و نڤیسەر تەحسین دۆسكی ژی پاشی ل سەر بنیاتێ كو د مالكەكێ دا پەیڤا (مەحموود) هاتیە دیار دكەت كو ناڤێ وی مەلا مەحمووده ، ( **دۆسكی** ، ٢٠١٩ ، **ل ٢٥** ) ، هەتا نوكە چ پێزانینێن پشتراستكری بۆ زانینا كەسایەتی و سەردەمێ وی نەهاتینە زانین ، چونكی ئەو دەستنڤیسا كتانی بەلاڤكری چ مێژوو ل سەر نەهاتینە دیاركرن ، بەلكۆ بتنێ بۆچوونن ، بۆ نموونە ژبەر كو ل سەرێ هەلبەستێ هاتیە نڤیسین ( در صفت دیوان سلطان حسین از گفتار حمیدی ) ئانكۆ گوتنا حەمیدی دەربارەی سالۆخەتدانا دیوانا سولتان حسێن ، و وەك یا دیار مەزنترین و بەرنیاسترین میرێ بەهدینان میر سولتان حسێن (وەلی) بۆ ماوەیێ چل سالان دناڤبەرا (١٥٣٣_١٥٧٣ز) حوكمداریا میرگەهێ كریە ، ئەگەر ئەڤ چەندە ب بەلگەیێن ڤەبڕ بهێتە سەلماندن و پشتراستكرن و ئێكلاكرن ، كەواتە شاعرێ ناڤبری ل سەدێ ١٦ز ژیایە ، هەلبەستا وی یا ئێكانە ب مولەممەع هاتیە نڤیسین ئانكۆ هەر مالكەك ب زمانەكێ ( كوردی ، توركی ، عەرەبی ، فارسی).

ل مالكا دەستپێكێ دبێژیت :

**واجب و لازم ل هەر كەس كن ژ بۆ میرێ كوبار**

**هەم ثەنایان هەم دوعایان دا نەمینن دین و هار**

و ل دووماهیێ دبێژیت :

**ادعی بالعلم فضلا من یسمی (بالحمید)**

**این من یأتي مجیبا باحثا بالاقتدار**

**ئەحمەد كاتب:**

ئەحمەد كاتب یان مەلا ئەحمەد كاتب ، ئێك ژ وان كلاسیكێن بەهدینانە یێن هەتا نوكە گەلەك ب كێمی پێزانین ل سەر هاتینە نڤیسین ، هەروەكی د هندەك دەستنڤیس و كەشكۆلان دا هاتی ناڤبری كاتبێ میر قوبەد بەگی بوویە ، ئەڤ چەندە ژی ئاماژەدانەكا گرنگە بۆ زانینا سەردەمێ وی ، چونكی قوباد بەگ كوڕێ سولتان حسێن وەلی دناڤبەرا (١٥٧٣_١٥٨٤ز) حوكمداری ل میرگەها بەهدینان كریە ، د كەشكۆلەكا سالا ( ١١٤٣ مش /١٧٣٠ز) دا هندەك نامەیێن بەهیداریێ كو ژلایێ چەند میر و كەسایەتیێن كورد ڤە ب هەلكەفتا مرنا میر سولتان حسێن وەلی (١٥٧٣ز) بۆ كوڕێ وی قوبادی هاتینە هنارتن ژ وان ژی میر بۆداق بەگێ موكری و بەرسڤدانا وان ژلایێ مەلا ئەحمەد كاتب ڤە هاتینە نڤیسین ، هەتا نوكە بتنێ هەلبەستەكا وی هاتیە ڤەدیتن ،( **كەشكۆل** ، ١١٤٣) ؛ ( **پاشا** ، ١٢٣١ **مش** ، **ل** ١٣٩).

د مالكا دەستپێكێ دا دبێژیت :

**چەشمێن د شەهلا عەنبەرین وان ضەربێ ئیمانە**



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

**دائیم ڤمن ڕا کینییه وان هەر ضەرب و لێکدانه غەرەض**

ل دووماهیێ دبێژیت :

**( کاتب ) قەلەم ڕەوشەن بتن عەننابێ لێڤان وەر نەبین**

**تا سۆز و ساز سازەندە بن ، لەوڕا کو سەیرانە غەرەض.**

**دەردی :**

ئێك ژ وان شاعرێن کورمانجی یه یێن هەتا نوکه بتنێ دوو هەلبەستێن وی هاتینه بەلاڤکرنو چ پێزانین ل سەر ژیان و بەرهەمێن وی نەدیار بووینه ، ژ بەر کو د مالکەکێ دا هاتیه ( حاکمێ عادلی جەوواز تویی نام وەلێ) ، لەوما هندەك نقیسەر وەسا بۆ چووینه کو ئەڤە ب میر عادل بەگێ کوڕێ ئیسماعیل پاشایێ ئێکێ ڤەهاند بیت ئەوێ دناڤبەرا (١٨٠٤_١٨٠٨) میراتیا میرگەهێ کری ، ( **یوسف** ، ١٩٨٨ ، **ل** ٨٠ ) ؛ ( **دۆسکی** ، ٢٠١٩ ، **ل** ١٣١) ، بەلێ ل دویف ڤەگێڕانێن دیرۆکی ل سەردەمێ میر عادل بەگ یێ تژی هەڤڕکی و ئالۆزی بوویه ، کو دناڤبەرا ١٨٠٤_١٨٠٨ سێ جارا بوویه میر ، ئانکۆ هاتیه لادان و ڤەگەڕیایەڤە ، ( **ڕێکانی** ، ٢٠١٩ ، **ل** ٦٣٤_٦٣٥) ، و ئەو سالۆخەتدانێن د هەلبەستێ دا دگەل کاودانێن سەردەمێ وی ناگونجن ، و ئەم وەسا دبینین ئەو سالۆخەتدان پتر بۆ کەسایەتیا میر سولتان حسێن وەلی (١٥٣٣_١٥٧٣) دگونجن و ئەڤ پەیڤا (حاکمێ عادلی ) سالۆخەتدانه ئانکۆ حاکمێ دادپەروەر نه کو ئاماژەدان بیت بۆ ناڤێ میر عادل بەگ (لەوما ئەڤ چەندە پتر پێدڤی ڤەکۆلین و بەڵگەیێن ڤەبڕە ).

د هەلبەستەکا خۆ دا ل مالکا دەستپێکێ دبێژیت :

**کەس و ضەرب و ب تەبەرزێنی نەهن شاه و وەزیر**

**تێت کو کن خدمەتێ دەرگایێ وە سولطان و ئەمیر**

و ل مالکا دووماهیێ دا دبێژیت :

**وەکی مەشهووری د ڤی عەصری ب ئەخلاقێ جەمیل**

**کەمترین مادحێ خۆ (دەردی) یێ شەیدا تۆ بگیر.**

**شێخ شەمسەددینێ ئەخلاتی ( بریفکانی ) :**

ناڤێ وی شێخ شەمسەددین کوڕێ شێخ عەبدولکەریم ئەخلاتی (خەلاتی) یه ، ل سالا ١٥٨٨ ل باژێرێ خەلاتێ سەر ب بەدلیسێ ڤە هاتیه سەر دنیایێ ، ل سالا ١٠٣٠ مش / ١٦٢٠ ز مشەختبوویه ئامێدیێ و میرێ میرگەها بەهدینان سەیدخان کوڕێ قوباد بەگی حەفت گوند ل دەڤەرا مزووری بالا دانێ و ژ وان ژی بریفکا کو تەکیا خۆ ل گوندی ناڤبری دانایه و ڕێبازا خۆ یا صوفیگەریێ (قادری) بەلاڤکریە. ل سالا ١٠٨٥ مش / ١٦٧٤ز چوویه بەر دلۆڤانیا خودێ و ل بریفکا هاتیه ڤەشارتن ، (**بریفکانی** ، ٢٠٠١ ، **ل** ٦-٧).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دەردێ عشق وە ل من ڕۆژێ ئەزەل كر سەرنڤشت
هەر ژ هنگێ دلێ كۆل بوویە چوو بڕیان برشت
ئەڤ دلێ كو ل سۆز و دەردێ ژ تە بتن تا ئەبەد
متڤێ حوور و قصوور و جوملە لەزرات بهەشت .
(بریفكانی ، ٢٠٠١ ، ل ١٧).

**مەلا ڕەمەزانێ عەبباسی :**

ژ وان هۆزانڤانێن كلاسیكێن كوردە یێن هەتا نوكە گەلەك ب كێمی بەرهەمێ وی هاتیە دیتن ، ل سالا ١٦٥٦ دەمێ گەڕۆكێ عوسمانی ئەولیا چەلەبی سەرەدانا دەڤەرا بەهدینان (ئامێدیێ) دكەت هەلبەستەكا مەلا ڕەمەزانێ عەبباسی ژێ ڤەگێڕیت ، ( گولی ، ٢٠١٦ ، ل ٤١) ، د مالكا دەستپێكێ دا دبێژیت :

رایێ ل ئاصف دكەن والە و حەیرانێ عشق
دەرسێ ئەرسطووی ددەن سەرخۆش و سەكرانێ عشق

و ل مالكا دووماهیێ دا دبێژیت :

فاش مەكە زارێ خوە ئەی ( ڕەمەزان ) گەر دكەی
شوبهی نەسیمێ دبی طازی و عوریان عشق.
( چەلەبی ، دەستنڤیس ، ل ٣٨٠ )

هەژی یە بێژین ئەم دوور نابینین كو ئەڤ مەلا ڕەمەزان عەبباسی هەمان ڕەمەزانێ جزیری یە ئەوێ د دیوانا مەلایێ جزیری دا هاتی

**بەكر بەگێ ئەرزی :**

ناڤێ وی بەكر بەگ كوڕێ میر بەهدۆر بەگێ دووێ یە ، دبنیات دا دگەهیتە ماڵباتا میرێن ئامێدیێ ، ل نیڤا ئێكێ ژ سەدێ ١٨ز هاتیە سەر دونیایێ ، چونكی هەلبەستا خۆ (بەیتا سێرانێ) ل سالا ١١٧٠ مش (١٧٥٦ز) ڤەهاندی یە ، ل نیڤا ئێكێ ژ سەدێ ١٩ز چوویە بەر دلۆڤانیا خودێ و ل گوندێ ئەرزێ ل دەڤەرا دۆسكی ژێریان هاتیە ڤەشارتن ، دیوانا وی ل سالا ١٩٨٢ ژلایێ عەبدولكەریم فندی دۆسكی (كەریم فندی) و ل سالا ٢٠٠٢ ژلایێ محەممەدئەمین دۆسكی ڤە هاتیە چاپكرن. د بەیتا (تەڕگێ) دا دبێژیت :

سوبحان ژ شاهێ جەلیل ، دا ئەز بكەم بەیانە
ئەمر كر بۆ میكائیل ،تەڕگێ بڕێژە ژ عەسمانە
ڕەعدێ دبەر بۆ دەلیل ، هشیار بكەن ئینسانە.
( دۆسكی ، ٢٠٠٢ ، ل ١٤٢ ).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

**مەلا مەنصووریَ گێرگاشی :**

ژ شاعرێن کلاسیک یێن سەدیَ (١٨ز) یە ، خەلکێ گوندیَ گێرگاش ل دەڤەرا بەرێگاریَ (ئامێدیێ) یە ، هەڤپەیڤینەکا شعری دناڤبەرا وی و مەلایێ باتەیی دا هەیە ، ئێک ژ هەلبەستێن وی ل سالا (١١٨١ مش / ١٧٦٧ز) د دەستنڤیسا محەممەد کوڕیَ مەسیحای دا هاتیە ، ( **مەسیحا** ، ١١٨١ **مش** ، **ل** ١٦) ، ل دەستپێکا هەلبەستێ دبێژیت :

سوبحان ژ شاهێ بێچوون
چە بهارەکە کەسکوونە
قادریَ ( کن فیکون)
ژ ئەرضان دەریوون عیوونە

و ل مالکا دووماهیێ دا دبێژیت :

ژ ئەخرەس و فەصیحان
پاکی تبیت ظهوورە
ژ مووسای و مەسیحان
داعی بخوو (مەنصوور)ە [1]

**صادق ئامێدی :**

ئێک ژ وان شاعرێن کلاسیکە یێن هەتا نوکە ب رۆهنی ژیاننامەیا وی و بەرهەمێ وی ب تمامی نەهاتیە دیتن ، کەڤنترین ژێدەر ناڤێ وی تێدا هاتی ئەو ژی دەستنڤیسا کەشکۆلا محەممەد کوڕیَ مەسیحایە ئەوا ل سالا ١١٨١ مش ( ١٧٦٧ز ) هاتیە نڤیسین ، ( **مەسیحا** ، **دەستنڤیس** ، ١١٨١ **مش** ، **ل** ١٠٩) ، ئانکۆ ئەو ل بەری ڤێ سالێ ژیایە و نەهاتیە زانین چەند سالان پشتی هنگێ ژیانێ دا مایە ، ڤەکۆلەر عەبدوررەقیب یووسف ژ بۆ پەرتووکا خۆ ( دیوانا کرمانجی ، بەغدا : ١٩٧١) مفا ژ ڤێ دەستنڤیسێ وەرگرتیە ، هەتا نوکە سێ هەلبەستێن وی ب زمانێ کوردی هاتینە دیتن ، هەروەکی د کەشکۆلەکێ دا هاتی کو بەهرا پتر ژ دیوانا مەلایێ جزیری و هندەک شاعرێن کورد و فارس بخو ڤە دگریت ، ل جهەکێ دا هاتیە ( هذا من کتاب دیوان صادق عمادی) ، ئەڤە ژی نیشانە کو ناڤبری خودان دیوانەکا تمامە ، د چەندین دەستنڤیسان دا هەلبەستێن ب فارسی ژی هەنە کو ل دووماهیا وان ب ناسناڤێ (صادق) ب دووماهیک دهێن ، بەلێ ژبەر کو هەلبەستڤانەکێ فارس ژی ب هەمان ناڤ هەیە ئانکۆ (صادق) و هەلبەستڤانەکێ دیتر یێ فارس صادق مەلا ڕەجەب ئەصفەهانی ب (صادق ملا رجب) ناڤێ خۆ بکارئینایە ، لەوما یا ب زەحمەتە ئەو هەلبەست بهێنە ئێکلاکرن و بۆ صادق ئامێدی بهێنە هژمارتن ، چونکی شاعریَ مە بتنێ ناڤێ خۆ بکارئینایە و چ ناڤ و نیشانێن دیتر نینن کو بهێتە نیاسین.

ل دەستپێکا هەلبەستێ دبێژیت :

خەلقۆ وەرن ببین
چ حوسنەکە ل کەمالە
حەیران ژ دل بمینن
ل صونعا ذولجەلالە

و ل مالکا دووماهیێ دا دبێژیت :

دێ چەند ببێژی ( صادق )
ژ ئەسرار و دەقائق
ئەڤان وەصفێت ت لائق
ژ حوسنا یا دەلالە [٢]

**چاکەر :**

ژ وان هەلبەستڤانێن کوردە یێن هەتا نوکە بتنێ هەلبەستەکا وی هاتیە ڤەدیتن ، ئەو ژی بۆ ئێکەم جار نڤیسەر مەسعوود کتانی د گوتارەکا خۆ دا دگەل چەند هەلبەستڤانێن دیتر یێن نەنیاس یان کێم نیاس بەلاڤکرین ، ( **کتانی** ، ١٩٩٨ ، ل ٣٢ _ ٣٣ ) ، ژبەر کو ئەو دەستنڤیسا د گوتارا ناڤبری دا هاتیە بکارئینان ، نە ناڤێ ناسخی و نە مێژوویا وێ ل سەر نینە ، لەوما چ ژ سەردەمێ وی نەهاتیە زانین ، بەلێ ژبەر کو دگەل هەمان دەستنڤیس دا هەلبەستەکا صادق ئامێدی ژی هەیە ، لەوما دوور نابینین ناڤبری ژی یێ سەردەمێ وی بیت ، ئانکۆ ب کێمی ناڤبری ل سەدێ ١٨ز ژیایە ، ل دەستپێکا هەلبەستێ دبێژیت :

سەلاما بلبلێ بێ دل
ت وەقتێ زار و نالینێ
ل مەعشووقا وەکو سۆرگول
ژ وێ ئوسلوب و ئایینێ

و ل مالکا دووماهیێ دا دبێژیت :

وەرە ( چاکەر ) وەفادار بە
ل پێش وی هەر دوعاکار بە
نەبە غافل تۆ هشیار بە
بگر دەستان ل ئامینێ

**سەید عەبدوللاهێ گەلیرمانی :**

ناڤبری کورێ سەیید حەسەن گەلیرمانی یە ، خەلکێ گوندێ گەلیرمان ل دەڤەرا مزووری ژێریانە ، ل گوندێ ژێگوتی ژی مەدرەسەیەك هەبوویە [٣].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دەستنڤیسێ ڤی زانای ل سەر کەشکۆلەکا مەلا خەلیلێ سێرتی هەیە ئەوا ل سالا ١١٩٢مش (١٧٧٨ز) ل مەدرەسەیا قوبەهان ل ئامێدیێ هاتیە نڤیسین ، ئەڤ کەشکۆلە ب دەستنڤیسیا مەلا خەلیل سێرتی و هندەك کەسێن دیترە و هەروەسا سەید عەبدوللاهی ژی ل سەر نڤیسی یە ، ئەو ژی نڤیسینا هەلبەستەکا ئەحمەدێ خانی یە ئەوا ب ( ئەی دریغا مامە تەنها ئەز ژ شەمسا خاوەری) دەستپێدکەت ، و ل دووماهیا وی لاپەڕی ژ کەشکۆلێ هاتیە : " نمقه الحقیر الفقیر عبدالله بن سید حسن الگلی رمانی از برای استان عزیز." ، یا ژ ڤێ چەندێ دهێتە زانین کو ناڤهاتی ل نیڤا دووێ ژ سەدێ هەژدێ و دەستپێکێن سەدێ نۆزدێ ژیایە [٤].

**سەیفیێ شوشی :**

ناڤێ وی یێ دروست (عەبدوللەتیف کوڕێ شێخ یوونس شوشی) یە ، ل سالا ١١٤٩ مش (١٧٣٦ز) ل گوندێ شوش هاتیە سەر دونیایێ ، ( **شوشی ، ١٢٩٠ مش**) ، هەلبەست ب هەر سێ زمانێن کوردی و عەرەبی و فارسی ڤەهاندینە ، ژ مەزنترین دەستنڤیسێن وی دناڤبەرا سالێن (١١٩٥_ ١٢٠١ مش / ١٧٨٠_١٧٨٦ز) هاتیە نڤیسین ، کو ئەڤ دەستنڤیسە بوویە ژێدەرێ سەرەکی بۆ چاپکرنا بەرهەمێ وی ل سالا ١٩٩٩ ژلایێ هەر نڤیسەران ( تەحسین ئیبراهیم دۆسکی _ محسن ئیبراهیم دۆسکی ) ، ( **دۆسکی ، ١٩٩٩، ل ١٤**) ، کەشکۆلا وی کو نێزیکی (٣٠٠) بەرپەڕا پێکدهێت چەندین هەلبەستێن مەلایێ جزیری و مەلایێ باتەیی و یێن شاعرێن فارس بخوڤە دگریت ، ( **دۆسکی ، ١٤١٢ مش ، ل ١٤_١٥**) ، ئەڤا ل ژێری ژی پارچەکە ژ ئێك ژ هەلبەستێن وی یە یێن بۆ ئێکەم جار دهێتە بەلاڤکرن ، کو ل سالا ١١٩٧ مش / ١٧٨٢ز) ڤەهاندی یە ، ( **شوشی ، ١٢١٠ مش**).

**هەر کەسێ ل ئەسپی سووار بیت ، ئەو موفەکری بوو عەگید**
**هەر ئەوێ شەملك ل سەر بیت ، ئەو ژی ببێت ئەز ڕەشید**
**بێ عەقل دەرسەك بخوینیت ئەو ببوویە مونتەها**
**هەر وەکی صوفی ل نانی ، ئەوێت بێن یا شێخ مورید.**

**مەلا عەبدوڵلاهێ مامیسی یێ ڕێکانی:**

مەلا عەبدوللاهێ ڕێکانی ، ئێك ژ زانایێن کورد یێن سەدێ هەژدێ یە ، ل مەدرەسەیا قوبەهان ل ئامێدیێ خواندی یە ، ب چەندین زمانان دەستنڤیس هەنە ب عەرەبی و فارسی و تورکی و دگەل هندەك پارچەیێن ب کوردی.

ژ دەستنڤیسێن وی دبوارێ ئەدەبی دا بەحرێت دروستکرنا هۆزانان ب زمانێ تورکی یا عوسمانی، بەحسێ هەڤسەنگییێت (وزن) بەیتێت تورکی دکەتن ، و دگەل شرۆڤا ڕامانێت پەیڤێن هۆزانان ب زمانێن (کوردی، عەرەبی، فارسی)، و بۆ فێربوونا زمانێ تورکی و فارسی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ب رێکەکا خۆش و ب ساناهی و ڕێخوشکەر، ئانکۆ وەکی فەرهەنگوکەکێ ب تەرزێ هۆزانکی ، دیسا (کتاب زواهر اللغات) ل سالا (١١٩٠مش_١٧٧٦ز) ل مەدرەسەیا قوبەهان نڤیسی یە ، ژ دانانا (ئەبو ئەلنەجیب محەممەد ئەلجوانرودی)، ژ (٢٨) لاپەڕان پێکدهێت ، وەك فەرهەنگۆکەکێ یەبۆ زانینا ڕامان و شرۆڤەیا پەیڤێن پەرتووکا (گۆلستان) و (بۆستان) یێن هۆزانڤانێ فارسی (سەعدی شێرازی ١٢١٠_١٢٩١ز) ، ( **مفتی** ، ٢٠١٥ ، **ل** ١١٣ ).

دیسا پێنج مالکیا دناڤبەرا ڕەمەزان (جزیری) و مەلایێ جزیری دا وەك پرسیارکرنو بەرسڤدان هاتیە ڤەهاندن ، هەتا نوکە کەڤنترین و ئێکانە دەستنڤیس کو ئەڤ پێنج مالکییە تێدا هاتی دەستنڤیسا "روزنامە جدید"ە یا زانایێ کورد یێ بەهدینان عەللامە کوڕێ مەلا مەحموود بهۆسی (مزووری) ب دەستنڤیسا زانا مەلا عەبدوللاهێ مامیسی یێ رێکانی (مرن : ١٧٩٥ز) ، ئەڤ دەستنڤیسە مەلا عەبدوللاهی ل سالا ١١٩٢مش / ١٧٧٨ز نەسخ کریە ، ئەڤ پێنج مالکیەل دووماهیك لاپەڕهاتیە نڤیسین و هەروەکی ژ جورێ نڤیسینا پەراوێزەکا هەمان لاپەڕ دهێتە زانین کو ژلایێ (حەیدەر کوڕێ شێخ محەممەد) هاتیە نڤیسین و جورێ نڤیسینا پێنج مالکیێ ژی هەمان جورێ نڤیسینێ یە،( **رێکانی** ، ٢٠٢١ ، **ل** ١٦ ) ، دانەیا ڕەسەن دناڤ پەرتووکخانەیا موفتییێت ئاکرێ دا ژلایێ ئەندازیار بلند مفتی ڤە هاتیە پاراستن.

**سؤال (رمضان) من شیخ احمد (پرسیارا ڕەمەزان ژ شێخ ئەحمەد / مەلایێ جزیری )**

مە بخەف گوتە حەبیبێ خۆ ب لوتف و ب ئەدەب

پرسیارەك مە هەیە سەروەر و سالارێ عەرەب

کافران جە ل جەنناتێ نیە لەو مامە عەجەب

زولف و خالێن تە ل عارض تکەرن ئەز چ سەبەب

**گوتە من رابە سوئالێ تۆ ژ کەششاف بکە**

**جواب شیخ احمد (بەرسڤا شێخ ئەحمەد / مەلایێ جزیری)**

دا نەبەی ظەن کوففاران تۆ ب پۆشاکی ڕەشی

خال زەنگیی بچین زولف بیلالێ حەبەشی

مە وە زانی بوو ژ ئاسارێ ڕەسوولێ قورەشی

عەبدێ گوستاخە بیلال ت جەنانێ تمەشی

سینەیێ حەق ژ هەمی وەهم و شکان صاف بکە

**شێخ نوورەددین بریفکانی :**

ناڤێ وی سەیید سلێمان کوڕێ سەیید حاج داوود کوڕێ سەیید عەبدولناصر کوڕێ سەیید قوتب جەمالەددین حوسەینی یێ شۆشی ) یە ، دیسا هژمارەکا پەرتووك و شرۆڤا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هۆزانـان ژلایـێ زانـا  و هۆزانڤـان شـێخ نـوورەددین بریفکـانی (١٧٩٠_١٨٥٢/١/٣١ز) ئەوێ هەر ژ زارۆکینی هەتا سالا (١٨٢٧ز) ل ڤی گوندی ژیای و پاشی هەر ل ڤێ سالێ ژبەر ئێشا مرنا رەش (تـاعوونێ) ئەو و برایـێ خـۆ محەممەدئەمـین چـووینە گونـدێ بریفکـان ، ژ وان پەرتووکێن شێخ نوورەددین ل مەدرەسەیا ئێتیتێ نڤیسین ئەڤەنە : ( نظم الدرر لأسماء النبي المفتخر (١٨١٥ز) ، تعليقات على القصيدة البائية المسماه بكرب الحال من ذي الجمال و الجلال ( ١٨١٥ز )، أبراز دقائق الحقائق في شرح القصيدة الحائية (١٨١٧ز) ، شرح القصيدة الهمزية (١٨٢٠ز) ، ذخرة السالكين (١٨٢٠ز) ، البدور الجلية  فيما مست اليه الفقراء الصوفية ( ١٨٢٢ز ) ، حجة اللهجة ( ١٨٢٣ ) ، ( **بریفکانی ، ٢٠٠٢ ، ل ٢٦_٢٧**) ، ل سالا ٢٠٠٢ دیوانا وی ب ناڤێ (زیانێ کوردی) ژلایێ زاهد بریفکانی هاتیە چاپکرن ، ناڤبری ب هـەر سێ زمانان : کوردی ، عەرەبی و فارسی هەلبەست ڤەهاندینە.

د هەلبەستا (نصحەت) دبێژیت :

**ئەی گەلی یار و برادەر ، گـوهـ بـدن ڤێ نصحەتێ**

**نصحـەتـا مـن چێترە بـووە ژ خـەزینا دەولـەتێ**

**ئەڤ زەمان ئاخر زەمانە ، قـەنج و صالح تێ نەمان**

**فسق و زولما ئەو ل سەر مە ، کەفتە بەحرا ظولمەتێ.**

**( بریفکانی ، ٢٠٠٢ ، ل ١٩٧).**

**سەیید سلێمان شۆشی:**

ناڤێ وی سەیید سلێمان کورێ سەیید حاج داوود کورێ سەیید عەبدولناصر کورێ سەیید قوتب جەمالەددین حوسەینی یێ شۆشی ) یە ، ژ ماڵباتا سەییدێن گوندێ شوشێ یە، ل سالا ١٧٤٩ ئامێدیێ پایتەختا میرگەها بەهدینان ژ دایکبوویە ، ل  دەستپێکێ  قورئانا پیرۆز ل دەف بـابێ خـۆ سـەیید داوودی خوانـدی یە و پاشـی چوویە دەڤەرا بەرواری بـالا و ل گونـدێ مـایێ ل دەف مەلا عـومەرێ کـورێ ئیبراهیمـێ مـایی خوانـدی یە ، پاشـی چوویە مەدرەسـەیا قوبەهـان و ل دەف مەلا محـموودێ بەهـدینی یـێ ئامێـدی خوانـدیە و ل دووڤ دەستنڤیسـەکا سـەیید سلێمانی کو دیاردکەت (نحن دعونا الى قرية شوش في سنة ١٨٠٤ على أمر محمد سعيد باشا العباسي أمير إماره بهدينان و على طلب سيد الشيخ النورالدين بريفكـاني قـدس سـره) ئـانکۆ دیـار دبیـت کـو ل سـەر داخوازیـا میـرێ ئامێـدیێ ( محەممەدسەعید پاشا ) و زانا و هۆزانڤانێ ناڤدار شێخ نورەددینێ بریفکانی ماڵباتا سەیید سلێمان هـاتینە گونـدێ شۆش و بـوویە نوونەرێ تەریقەتـا بریفکـانی یـا خلوەتی ل تەکیا شوش یا شێخ شەمسەددین (ئێکێ) قوتبێ شۆشی ، ( **رێکانی ، ٢٠٢٢ ، ل ٣٣** ).

هەروەسا سەیید سلێمانێ حوسەینی یێ شۆشی ئێك بوو ژ فەقە و شاگردێن زانایێ مەزن مەلا یەحیایێ مزووری ل مەدرەسەیا جەدیدە ل سالا ١٢٢٥ مش ١٨٠٩ز و ئیجازا زانستی ل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

سەر دەستێ مەلا یەحیایێ مزووری وەرگرتی یە ، سەیید سلێمان ب پارچە هۆزانەکێ بەحسێ فەقیاتیا خۆ و وەرگرتنا باوەرناما زانستی دکەت:

**ئەز فەقیێ خالدی مە**

**ب عومر شێست سالیمە**

**عەللامە خالدی چل سالیە**

**ڕاستە ئەز کەبیرم ل جەمیع فەقیا وی**

**لێ من حەزە سەلم بکەم ئیجازەیا عیلمی ب دەستێ وی...**

و هەروەسا سەیید سلێمان حوسەینی شۆشی ئێك بوو ژ خەلیفەیێن شێخ نورەددینێ بریفکانی ل گوندێ شوش و تەکیا شوش هەروەك وی ددەستنفیسەکا خۆ دا دایە دیارکرن کو دبێژیت : ل سالا ١٨٢٠ ئەز بویمە خەلیفێ سەیید شێخ نورەدینێ بریفکانی ، پاشی هەر ل گوندێ شۆش دمینیت ، ناڤبری هژمارەکا ڕوودانێن گرنگ یێن بەهدینان یێن ل سەردەمێ خۆ و یێن بەری هنگی ژی نڤیسینە ، سەرەرای تۆمارکرنا بوون و مرنێن چەندین زانا و کەسایەتیان و یێن ماڵبات و گوندێ خۆ ، ل ڕۆژا ئێك شەمبی ٢٥ جەمادیلئاخیر ١٢٤٠ مش بەرامبەر ١٣ شوباتا ١٨٢٥ز ل گوندێ شوش دچیتە بەر دلۆڤانیا خودێ و ل سەر وەسیەتا وی ل گوڕستانا گوندێ بریفکان دەڤەرا مزووری ژێریان دهێتە ڤەشارتن ، (**ڕێکانی ، ٢٠٢٢ ، ل ٣٣**).

**سەیید سەعدی شوشی :**

ئێك ژ زانایێن گوندێ شوش ل دەڤەرا ئاکرێ یە ، چەندین ڕوودانێن سەردەمێ خۆ و ژ دەستنڤیسێن (سەیید سلێمان شوشی) ڤەگۆهاستینە و تۆمارکرینە ، د دەستنڤیسەکا خۆ دا یا مێژوویا وێ ڤەدگەڕیت بۆ سالا ١٢٦٧ مش (١٨٥٠ز) دەربارەی ئاڤاکرنا مزگەفتەکێ ل سەر شوونەوارێ دێرەکێ ل گوندێ شوش ب شێوەیێ هۆزانکی دبێژیت :

**ل سالا هزار و دوو سەد و شێست و حەفت**

**ژ هیجرەتا سەروەرێ ئەحمەد**

**دێرا فەلا من کرە مزگەفت. ( شوشی ، ١٢٦٧ مش )**

**مەلا عوبەیدوللاهـ مفتی (مرن : ١٨٢٧) :**

ئەڤ زانایە کوڕێ زانایێ مەزن یێ بەهدینان و سەیدایێ مەدرەسەیا قوبەهان مەلا مەحموودێ بەهدینی ( مرن : ١٧٨٧) یە ، ل ئامێدیێ هاتیە سەر دونیایێ و ب بنیات خەلکێ گوندێ بهوسێ (بوسێ) یە ل دەڤەرا مزووری بالا ، ل مەدرەسەیا قوبەهان بوو فەقە و شاگردە و ل بەر دەستێ بابێ خۆ فێربوویە زانین و شەهرەزابوونێ دزانستێن ئایینی دا ، ل سالا (١٢٣٩مش/ ١٨٢٣ز) بوو مفتیێ ئامێدیێ و دەرس ل مەدرەسەیا قوبەهان گوتینە و هژمارەکا شاگردێن زانینێ ل سەر دەستێ وی پێگەهشتینە ، ل سالا (١٢٤٣مش/ ١٨٢٧ز) چوویە بەردلۆڤانیا خودێ. دوو کوڕ ل دووڤ خۆ دا هێلاینە و هەر دوو ژی بوونە زانایێن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ئايينى ئەو ژى ئەڤە بوون : مەلا ئەسعەد ئەفەندى و مەلا ئەحمەد ، ( دوسكى ، ١٩٩٨ ، ص ١٠٠).

**واعلم ئەى مەفرەدێ موخاطبێ زهنێ تۆ بزانە (إن النور) ب تەحقيقا هەچيكە نوور ( من اسمائه تعالى) ژ ناڤێت خودێ يە وەكە ژ بۆ وى ئيسمى (سرٌ عظيم ) سڕڕەكە مازن (مەزن) وا هەى (مَن كَتَب) هەچيێ بنڤيسيت...هو رەنگە يەعنى جودا جودا (خمس مرات) پێنج جارا و (علَقه) هەلاويسيت (على مَن شكى) ل سەر وى مرۆڤێ وەكو گازندێ بكەت (وَجَع مَعدته) ئێشانا مەعدا خو ( و خفقان قلبه ) ئو تەحەرروكا دلێ خۆ (أزال الله تعالى) دێ ژێ بەت خودێ ( و إذا وضع ) وەكو بێتە دانان ( على موضع ألم ) ل سەر جهێ ئەلەمەكێ (سكن) دێ راوەستيت ".**

شرح هذا الكلام بالكردي " عبيدالله بن محمود بن إبراهيم بن علامة بن محمود بن ابراهيم بن خليل مامةرظ المزوري عشيرةً و البهوسي قرية و أصلاً و العمادي مولداً و وطناً رحمة الله تعالى عليهم و علينا رحمة واسعة "

**قيل هاتيە گوتن ژ كنارێ عولەماڤە ( القدماء ) هەچيكە دەين دێ تەعەللوق كرن (بحسنات المفلس) ب قەنجيێت مرۆڤى رويت ( ما عدى الايمان ) ب قەبر ژ ئيمانێ ( كما يترك ) هەجوەكو دێ ئێت هەكە ژ موفلسێ دەست ب دەست ئەڤ قياسە نەكو ماقيل لەورا ئەوێ وەيە و تەحقيق كريە مەلا گەردى ڕەحمەتا خودێ لێ بيت ( بأن هذا ) ب وى خەبەرى كو هەچيكە ئەڤ تەوقيفێ يێ تەوقيفێ يەعنى تەوەققوف كرى ل سەر واردبوونا تشتێ ژ زار ڕەسوولێ الله ( صل الله تعالى عليه و على آله و على أصحابه و سلم ) ( فلا مدخل ) پا چوو جهێ داخل بوونێ نينە (للقياس) ژ بۆ قياسێ مەيە دێ وێ دا ".** " شرح هذا الكلام يعني كلام الفاضل الكامل الشيخ أحمد بن حجر الهيتمي الشافعي رحمة الله تعالى عليه و علينا رحمة واسعة بالكردي عبيدالله بن محمود رحمة الله تعالى عليهما و جميع المؤمنين و المؤمنات و المسلمين و المسلمات الأحياء منهم و الأموات آمين آمين آمين يا مجيب السائلين بحرمة سيد المرسلين عليهم و آلهم أفضل الصلاة و اكمل السلام "

**محەممەدسەعيد ميهرى ( ١٧٩٥_١٨٨٤) :**

ئێك ژ زانا و موفتى و شاعرێن ناڤدارێن بەهدينانيە ، ناڤێ وى (محەممەدسەعيد كوڕێ مەلا عەبدررەحمان كوڕێ مەلا يەحيا مزوورى)يە ، ل سالا ( ١٢١٠مش/١٧٩٥ز) ل ئاكرێ هاتيە سەر دونيايێ ، ل سالا ١٨٥٤ز بوويە ئێكەم مفتيێ فەرمى يێ قەزا ئاكرێ، ژ دەستنڤيسێن وى يێن گرنگ ئەوا بناڤێ (المجمع) يا كو هۆزان (هۆزانێن وى بخو و يێن چەندين هۆزانڤانێن كلاسيكى يێن كورد) و بەرهەمێن ئەدەبى و فەتوا و بابەتێن زانينێن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلينێن كوردى

شەرعی و قووناغێن ژیانا خۆ و یاماڵباتا خۆ(ژ دایکبوون و مرنێن وان) و هەر وەسا مێژوویا (سالێن) چەندین روودانێن گرنگێن گرێدای دەڤەرا بەهدینان(نەخاسمە یێن سەردەمێ وی بخو) تێدا هاتینە تۆمارکرن، کو چەندین زانیارییێن وێ هندەك گرێکێن دیرۆکی یێن دەڤەرێ ڤەدکەن و قووولاچێن تاری رۆهن دکەن و لایەنێن شێلی زەلال دکەن، ئەڤ دەستنڤیسە دناڤبەرا سالێن (١٨٤٤_١٨٨٣ز) هاتبوو نڤیسین، ئەڤ دەستنڤیسە دناڤ پەرتووکخانەیا موفتییێت ئاکرێ دا ژلایێ ئەندازیار (بلند محەممەدشوکری مفتی) ڤە هاتیە پاراستن کو ناڤبری ئێك ژ نەڤیێن مالباتا میهری یە ، ل رۆژا(٦ رەجەبا ١٣٠١مش_١/٥/١٨٨٤ز) میهری چوویە بەردلۆڤانیا خودێ

ناسناڤێ وی شعری مهری بوویە و ب زمانێن کوردی و عەرەبی و فارسی و تورکی ڤەهاندینە، وەکی ل بوری مە گرنگیدانا وی ب تۆمارکرن و نڤیسینا رووداننێن دیرۆکی کری ، سەرەرای ڤێ چەندێ دەستهەلیەکا باش دبوارێ نڤیسینا شعرێ دا ژی هەبوو ب هەر سێ زمانێن کوردی و فارسی و تورکی ، و چەندین شعر و پارچە شعرێن هژمارەکا شاعرێن کلاسیکێن کورد و فارس و تورك نڤیسینە (نەسخ کرینە) ، یێن کورد وەك مەلایێ جزیری ، ڕەمەزانێ بۆتی (جزیری) ، حالەت ، نورەس ، وەداعی ، نالی ، هیجری ، کەیفی ، خادم ، خالد شەهرەزووری (مەولانا خالد) ....هتد ، و ئێك دوو شعرێن مەلایێ جزیری ژی پێنجمالکی ( تەخمیس ) کرینە ، ( **مزووری ، ١٩٩٤، ل ٥** ) ، هەروەسا ئێك ژ فەتوایێن باپیرێ خۆ مەلا یەحیایێ مزووری ( مرن : ١٨٣٩ز) یێن ب کوردی ژی نڤیسیە : .....و قال بالکردی " **ئەڤە سێ طەلاقێت کچا فلان کەسی ئەو ژ من چوویی بت...**" ، ( **مهری ، ١٢٨٢مش** ).

**ئەنجام:**

د ڤێ ڤەکۆلینێ دا بۆ مە چەندین خال و ئەنجام دیاربوون ، ل ڤێرێ دێ د چەند خالان داب کورتی دیارکەین :

١. میرێن میرگەها بەهدینان هەر ژ سەدێ ١٦ز گرنگیەکا باش ب زمان و دەقێن کوردی دایە و ڕەنگڤەدانا خۆ ل سەر نڤیسینێن وان هەبوویە .
٢. ژبلی زانا و هۆزانڤانێن جودا جودا ، هندەك میرێن میرگەهێ بخو ژی خودان دەستهەلیەکا ئەدەبی بووینە و گرنگی ب ڤەهاندنا هەلبەستان ب کوردی هەبوویە وەك : قوباد بەگێ کوڕێ سولتان حسێن وەلی ، محەممەدتەییار پاشا (غەریبی) ، ئیسماعیل پاشایێ دووێ کوڕێ محەممەدتەییار پاشا.
٣. زانایێن ئایینی ژی گرنگی ب وەرگێڕان و نڤیسینا دەقێن ئایینی دایە کو ب کوردی بهێنە نڤیسین و وەرگێڕان ، ئەڤجا چ وەرگێڕانا ژ زمانەکێ دیتر وەك عەرەبی بۆ کوردی یان ژ کوردی بۆ فارسی ، بۆ نموونە : مەلا یەحیایێ مزووری ، مەلا عوبەیدوللاهێ موفتی...هتد.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٤. ل ماوەیێ سەردەمێ ڤەکۆلینێ بخۆڤە گرتی (سەدێ ١٦_١٨٤٢ز) ، دناڤ میرگەها بەهدینان دا بەهرا پتر نڤیسین و دەقێن ب کوردی د بیاڤێ ئەدەبیات و هەلبەستێ دا بووینە.

٥. هژمارەکا ژ میر و زانا و شاعران هێشتا بەرهەمێن وان ماینە یێن کو نەهاتینە دیتن ، ئانکۆ پتر پێدڤی لێگەریان و دووڤچوونێ نە کو بەرکارێن وان یێن ماین ژی رۆناهیا بەلاڤکرنێ بینن ، زێدەتر ژ ئەڤێن مە ئاماژە پێدای ، هێشتا ناڤ و بەرکارێن میر و زانا و شاعران دیار بن

**لیستا ژێدەران**

**ئێك/ دەستنڤیس :**


_ **الاربيلي**، جرجيس بن محمد ، رسالة الفتحية ، ( ١١٨٥هـ _ ١٧٧٢م). ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری ).

_ **الاكاسري** ، شرف بن شمس الدين ( البدليسي ) ، ( مخطوطة : ١٠٠٥هـ _ ١٥٩٧م) ، شرف نامه تاريخ كردستان. ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری ).

_ **بایەزیدی** ، مەلا مەحموود. شەرفخان بدلیسی ، ( دەستنڤیس : ١٢٧٥مش _ ١٨٥٨ز). شرفنامه (تواريخ قديم كوردستان) . جلد أول . ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری ).

_ **البختي** ،محمد بن محمود البرواري (الناسخ) ، (مخطوطة : ٩٤٨ هـ / ١٥٤٢م)، مجمل الاصول في الاحكام. ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری ).

_ **جزیری ( مەلا )** ، شێخ ئەحمەد ، دیوان الشيخ أحمد الجزرى ، محمدطيار بن إسماعيل پاشا ( ناسخ ) ، دەستنڤیس (١٢٣١ مش/ ١٨١٦ز).

_ ، إسماعيل بن محمدطيار بن اسماعيل پاشا (ناسخ) ، ديوان الشيخ أحمد الجزرى ، دەستنڤیس (١٢٦٠ مش/١٨٤٤ز). ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری ).

_ **چەلەبی** ، ئەولیا ، سیاحتنامەسی.

_ **ابن عبدالظاهر** ، محيى الدين أبو الفضل عبدالله المصري،الالطاف الخفية في السيرة الشريفة السلطانية الملكية الأشرفية، (مخطوطة)، مكتبة ميونخ ، رقم التسلسل : ٤٠٥ ، ج ٣.

_ **رێکانی** ، مەلا عەبدوللاه مامیسی ، دەستنڤیسێن جودا جودا ،( پەرتووکخانەیا موفتیێت ئاکرێ ).

_ **سێرتی** ، خەلیل ، کەشکۆل ، ( ١١٩٢ مش / ١٧٧٨ز ). ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری ).

_ **الشمديني** ، طه بن ملا عزير بن ملا محمود بن ملا حسين بن الشيخ هڤند (الناسخ) ، الشجرة الزيوكية ، ( مخطوطة : ١٢١٠هـ_ ١٧٩٥م). ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری )

_ **شوشی** ، سەید سلێمان ، المجمع ، ١٢١٠ مش / ١٧٩٥ ؛ ١٢٣٥ مش / ١٨٢٠ز. ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری ).

_ **شوشی** ، سەید سەعدی ، ١٢٦٧ مش / ١٨٥٠ ؛ ١٢٩٠ مش / ١٨٧٣ز. ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری )

_ **مەسیحا** ، محمد ، کەشکۆلا محمد کورێ مەسیحا ، دەستنڤیس ، (١١٨١ مش / ١٧٦٧ز) ، ( دانەیەك ل دەڤ ڤەکۆلەری )




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

_ **ميهرى** ، محمدسعيد ، المجمع ، (دەستنڤيسەكا نەبەلاڤكرى )، ( ژ پەرتووكخانەيا موفتيێت ئاكرێ / ئەندازيار بلند محمدشكرى مفتى ).

_ . ، كەشكۆل ، ١١٤٣ مش / ١٧٣٠ز. ( ژ ئەرشيفێ : د.يووسف بالوكەن ).

**دوو/ پەرتووك :**

**أ _ ب زمانێ كوردى :**

- **ئەخلاتى** ، شێخ شەمسەدين ، ديدارێ يار ديوانا شێخ شەمسەدينێ قوتبێ ئەخلاتى يێ بريفكانى ١٥٨٨_١٦٧٤. بەرهەڤكرن : زاهد بريفكانى . بلاوكراوەى ئاراس ، چ ٢ ، ( هەولێر : ٢٠٠٢).
- **بريفكانى** ، زيانێ كوردى ديوانا شێخ نورەدينێ بريفكانى ، بەرهەڤكرن : زاهد بريفكانى بلاوكراوەى ئاراس ، (هەولێر : ٢٠٠٢).
- **بەدليسى** ، شەرەف خان ، شەرەفنامەيا شەرەفخانێ بدليسى تەرجەما مەلامەحمودێ بازيدى ١٧٩٧_١٨٦٧. توێژاندن : سەعيد دێرەشى ، دەزگەها سپيرێز يا چاپ و وەشانێ ، ( دهۆك : ٢٠٠٧ ).
- **دۆسكى** ، تەحسين ئيبراهيم ، باغێ ئيرەم گەشتەك دناڤ گولزارا شعرا كرمانجى دا، سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلينێن كوردى _ زانكۆيا زاخۆ ، چ ١، ( دهۆك : ٢٠١٩).
- . ، شەرحا بەرمايا ديوانا عەلييێ حەريرى ، ( دهۆك : ٢٠٢٠).
- **دۆسكى** ، تەحسين ئيبراهيم ، محسن ئيبراهيم ، هەلبەستڤان سەيفى يێ شۆشى و بەرهەمێ وى ، ژ وەشانێن گۆڤارا مەتين ، چ ١، ( دهۆك : ١٩٩٩).
- **رێكانى** ، هێرش كەمال ، عەشيرەتێن بەهدينان ١٥١٤_١٩١٩ز (ڤەكۆلينەكا ديرۆكى بەڵگەناميى) ، سەنتەرێ بێشكچى بۆ ڤەكۆلينێن مرۆڤايەتى - زانكۆيا دهۆك ، (دهۆك : ٢٠١٩).
- . ، گەنجينەيا بەهدينان ژ دەستنڤيسێن زانا و مير و هۆزانڤانان ل سەدێ ٩_١٥مش / ١٥ _٢٠ز . دهۆك : پرۆژەيێ بەندەر _ دهۆك ، ( دهۆك : ٢٠٢٠).
- **قەرەداغى** ، محەمەد عەلى ، بووژاندنەوەى مێژووى زانايانى كورد لەرێگەى دەستخەتەكانيانەوە، بەرگى ١ ، (بەغدا : ١٩٩٨).
- . ، بووژاندنەوەى مێژووى زانايانى كورد لەرێگەى دەستخەتەكانياوە ، بەرگى ٣ ، ( بەغداد : ١٤٢١ ك _ ٢٠٠٠ز).
- ، بايەخدانى ميرانى ئاميدى بە رۆشنبيرى لە دەڤەرى بادينانـدا ، دەزگاى چاپ و بلاوكردنەوەى ئاراس ، ( هەولێر : ٢٠٠٦ ).
- **يوسف** ، عبدالرقيب ، ديوانا كرمانجى ، چاپا ئێكێ ، ( بەغدا : ١٩٧١ ).

**ب _ ب زمانێ عەرەبى :**

- **ئاميدي** ، كاوه فريق أحمد شاوەلى ، إماره بادينان ١٧٠٠_١٨٤٢ دراسة سياسية اجتماعية ثقافية ، مؤسسة موكرياني للطباعة و النشر ، ( أربيل : ٢٠٠٠).

- **ابن العبري** ( ت : ١٢٨٦ م ) ، تاريخ الزمان لأبي الفرج جمال الدين ابن العبري ، نقله الى العربية : الأب إسحق أرملة . قدم له الأب جان موريس فيه ، ( بيروت : ١٩٩١).
- **رؤوف** ، عماد عبدالسلام ، الشجرة الزيوكية وثيقة نسب أمراء بهدينان و تاريخهم (دراسة و تحقيق) ، مكتب التفسير للنشر و الإعلان ، (أربيل : ٢٠٠٩).
- ، السلطان حسين ولي أمير بهدينان ٩٤٠_٩٨١هـ/١٥٣٣_١٥٧٣م ، ( هولير : ٢٠٠٩).
- ، المعجم التاريخى لإماره بهدينان ، ط ١، مطبعة الحاج هاشم ، (أربيل : ٢٠١١).
- **رؤوف** ، عماد عبدالسلام _ محمد أمين ، نرمين علي ، شواهد المقبرة السلطانية في العمادية. أربيل : من مطبوعات الاكاديمية الكوردية ، (أربيل : ٢٠١١).
- **العمري** ، ابن فضل الله ( ت : ١٣٤٩م) ، مسالك الابصار في ممالك الامصار، تحقيق : كامل سلمان الجبوري ، ج ٣ ، دار الكتب العلمية ، (بيروت : ٢٠١٠).
- **عواد** ، كوركيس ، خزائن الكتب القديمة في العراق منذ أقدم العصور حتى سنة ١٠٠٠ للهجرة . ط ٢ ، دار الرائد العربي ، ( بيروت : ١٩٨٦).
- **القرداغي** ، محمد علي . ٢٠١٤. كنوز الكرد في خزائن دار المخطوطات العراقية . ج ٢. أربيل.

- **الكتاني** ، مسعود مصطفى ، مدرسة قوبا _ قوبهان (ذلك الطود الشمس الآفلة )، (دهوك : ٢٠٠٩).
- . ، المساجد و المدارس و العلماء و المخطوطات في إمارة بادينان_العمادية ، ( دهوك : ٢٠١٠).
- **گولى** ، نزار أيوب _ الجوادي ،غسان وليد ، مقدمة في تاريخ زاخو خلال العهد العثماني ١٥١٥_١٩١٨ ، مركز زاخو للدراسات الكردية _ جامعة زاخو ، ( زاخو : ٢٠١٩).
- **المايي** ، أنور ، الاكراد في بهدينان ، ط ٢ ، مطبعة هاوار ، ( دهوك : ١٩٩٩).

**ج _ ب زمانێ توركی :**

- **ÇELEBİ , EVLİYÂ**, *Evliya Çelebi Seyahatnamesi* , Haz. Seyit Ali Kahraman. Yücel Dağlı. IV kitap. İstanbul : ( ٢٠٠٠ ) .
- **Gunduz , Ahmed _** Osmanli Doneminde Musul **1523** _ **1639**. Doktora Tezi. Elazig Universitesi. **1998.**

**سێ _ گۆڤار :**

- **دۆسكی** ، تەحسین ئیبراهیم كەشكۆلا مەلا خەلیلێ سێرتی و گرنگیا وێ بۆ دیرۆكا ئەدەبیاتا كوردی ، گۆڤارا دیرۆك ، ژ (١٩) هاڤینا ٢٠١٨، ل ١٢٤_١٢٥.
- **دۆسكی** ، محسن ئیبراهیم ، ژ كلاسیكێن مە سەیفی یێ شوشی ، گۆڤارا ڕاستەڕێ ، ژمارە ( ١ ) ، ڕەمەزانا ١٤١٢ مش.

- **ڕێکانی** ، هێرش کەمال ، پرسیار و بەرسف دناڤبەرا مەلایێ جزیری و ڕەمەزانێ جزیریدا ، گۆڤارا رووگەهـ ، ژمارە ( ١٢ ) ، پاییزا ٢٠٢٠ و زڤستان و بهارا ٢٠٢١.
- ، رۆلێ زانایێت دەڤەرا (ریکان) د ژیانا زانستی و چاندی دا ل (هەکاری) و (بەهدینان) ل چەرخێ (١٠_١٥مش/ ١٦_٢٠ز) ، گۆڤارا دیرۆك . ژمارە (٢٠) ، ٢٠١٨.
- . ، مەدرەسەیا سەییدخان (جەدیدە) زانا و دەستنقیس و شاگردێن ئەوێ ، گۆڤارا رووگەهـ . ژمارە (١٤) ، گولانا ٢٠٢٢.
- **کتانی** ، مەلایێ باتەیی و سلطان حسێنێ میرێ ئامێدیێ ، گۆڤارا پەیڤ ، ژمارە (٦) ، زڤستانا ١٩٩٨.
- ، مەسعوود مستەفا ، چەند هۆزانڤانێت کلاسیکی پێت نەنیاس ، گۆڤارا پەیڤ ، ژمارە (٧) ، ١٩٩٨.
- **گولی** ، نزار ئەیووب ، ژ هۆزانڤانێت کەڤنێت بەهدینان مەلا رەمەزانێ عەبباسی ، گۆڤارا دیرۆك ، هژمارە (١٢) ، ٢٠١٦.
- **مزووری** ، هوزانڤانێ پایەبلند محمدسعید میهری ، گوڤاری کاروان ، ژمارە (١٠) ، ١٩٩٤.
- ، کاودانێن رەوشەنبیری ل میرگەها بەهدینان ، گوڤارا دیرۆك ، هژمار (٥) ، ٢٠١٤.
- **مفتی** ، بلند محمد شکری ، مەلا عبدالله یێ ریکانی یێ مامیسی ئێکە ژ زانا و ناڤداریت میرگەها بەهدینان ، گۆڤارا دیرۆك ، ژمارە (٧) ، ٢٠١٥.
- **یوسف** ، عبدالرقیب ، شیعرێن چەند شاعیرەکی کەڤن ددەستنقیسین مەدرەسا قوبەهان دا ، گۆڤارا ڕوشنبیری نوێ ، ژمارە (١١٩) ، ١٩٨٨.


**پاشکۆ:**

هەلبەستا مەلا ڕەمەزانێ عەبباسی د هەلبەستەکا صادق ئامێدی ژ دەستنقیسا سیاحەتنامەیا ئەولیا چەلەبی دا ، ١٦٥٦ز محەممەد کوڕێ مەسیحا ، ١١٨١ مش /

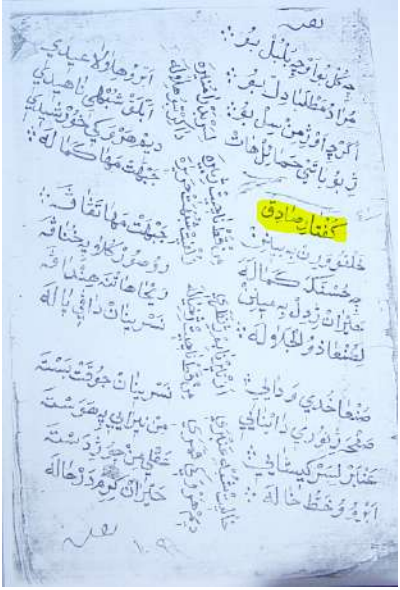

رسالة الفتحية ، شەرحا مەلا جەرجیسێ ئەربیلی بۆ هەلبەستا مەلایێ جزیری ل سالا ١١٨٥ مش

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پارچـه مـالكێن پرسـيارا ڕەمـەزانێ جزيـری و بەرسـڤا مـەلایێ جزيری ددەستنڤیسا "روزنامه جدید" دا ژ دەستنڤیسیا مەلا عەبدوللاهێ مامیسی یێ رێكانی ١١٩٢مش / ١٧٧٨ز

دمریاییێن شعری ب ڤەهاندنا توركی (عوسمانی) و دیار كرنا هندەك پەیڤان ب كوردی ژ دەستنڤیسیا مەلا عەبدوللاهێ مامیسی یێ رێكانی

Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

ژ : پەرتووکخانەیا موفتیێت ئاکرێ.
هەلبەستەکا ئەحمەدێ خانی ژ دەستنڤیسا سەید عەبدوللاهێ گەلیرمانی ، ١٧٧٨ز

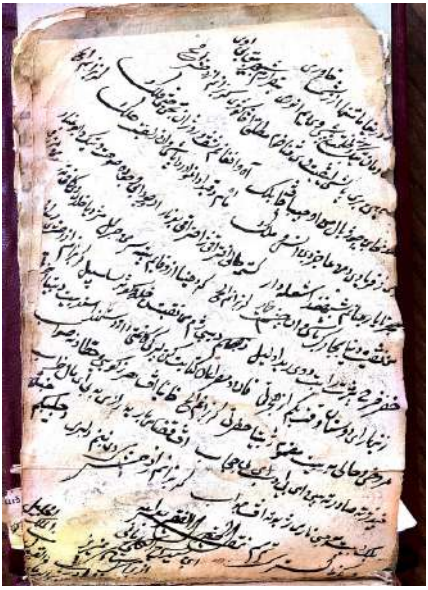

**پێنجمالکیەکا محەممەدتەییار پاشا (غەریبی) ل سەر غەزەلەکا مەلایێ جزیری ژ دەستنڤیسا وی یا دیوانا مەلایێ جزیری ، ١٢٣١ مش / ١٨١٦ز**

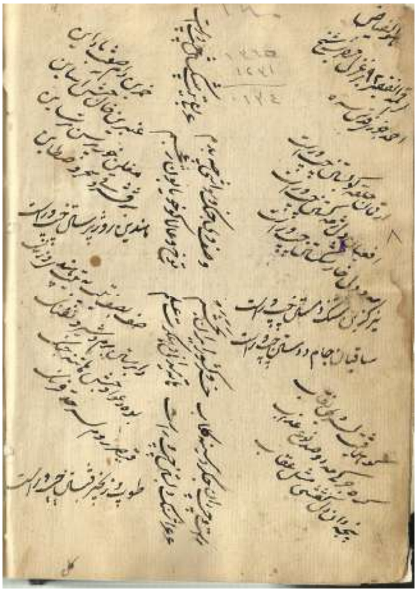

**دەستنڤیسا ، المجمع ، محەممەدسەعید میهری ( مفتیێ ئاکرێ )**

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دەستنڤیسا مفتیێ ئامێدیێ مەلا عوبەیدوللاھ ئەفەندی

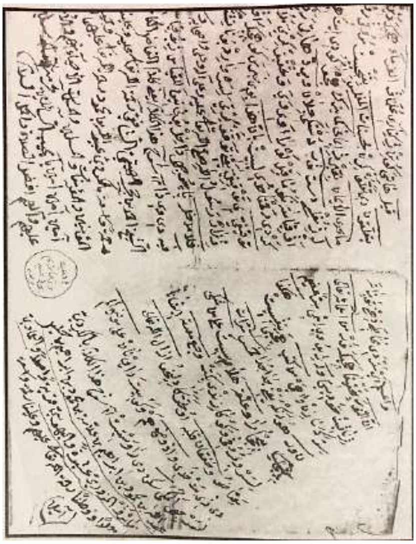

هەلبەستەکا هۆزانڤان ( دەردی)

ژ : ئەرشیفێ / ڤەکۆلەر : عەبدوررەقیب یووسف

دیوانا مەلایێ جزیری ب دەستنڤیسیا میر ئیسماعیل پاشایێ دووێ

ل سالا (١٢٦٠مش, ١٨٤٤ز)

## پەراویز:

(١) بۆ نموونە مێژوونڤیس ئەنوەر مایی (١٩١٣_١٩٦٣) دبێژیت : نێزیکی سالا ٦٥٩ مش / ١٢٦٢ز بهائەددین کوڕێ شەمسەددین کوڕێ شوجاعەددین کوڕێ نەجمەددین کوڕێ خچر کوڕێ مبارز کەك خۆ وەك حاکمێ ئامێدیێ ڕاگەهاندی یە.( **المايي** ، ١٩٩٩ : ١١٨) ، بەلێ ل دووڤ ژێدەرێن ڕەسەن ل سالا ٦٦١ مش / ١٢٦٣ز حاکمێ ئامێدیێ عززەددین ئەیبەك کوڕێ عەبدوللاە ئەلبەدری ملکەچیا خۆ بۆ مەغوولان ڕاگەهاندی یە ، مێژوونڤیسێ مصری یێ مەملووکی (إبن ناظر الجيش ٦٩٧_ ١٢ زیلحیجه ٧٧٨ مش / ١٢٩٧_ ٢١ نیسان ١٣٧٧ز) دیار دکەت : ل سالا ٧٧٨ مش [١٣٧٧ز] (شوجاعەددین کوڕێ خضر کوڕێ مبارز کەك) خودانێ ئانکۆ میرێ ئاکرێ و شوش بوو. (**إبن ناظر** ، ١٩٨٧ : ٧٧ ) ، بۆ ڤێ چەندێ ژی ل دووڤ ڤەگێڕانا ئەنوەر مایی میر بهائەددین دبیتە نەڤیێ ڤی میرێ ناڤبری ، بێگومان ب ڤی ڕەنگی ژی دڤێت مێژوویا میر بهائەددین ل پشتی ڤێ مێژوویێ بیت ، نەکو نێزیکی پتر ژ سەدەیەکێ ل بەری هنگی بیت ! ، هەروەسا مێژوونڤیسێ عیراقی مەحفوز ئەلعەبباسی (١٩٢٤_٢٠١٠) مەلك خەلیل ب دامەزرێنەرێ میرگەهێ دەستنیشان کریە.( **العباسي** ، ١٩٦٩ : ٥٠).

(٢) دەربارەی ڤی بابەتی بنێڕە : هێرش کەمال ، پرسیار و بەرسڤ دناڤبەرا مەلایێ جزیری و ڕەمەزانێ جزیریدا ، گۆڤارا رووگەهـ ، ژمارە ( ١٢ ) ، پاییزا ٢٠٢٠ و زڤستان و بهارا ٢٠٢١.

(٣) د دیوانا بەکر بەگێ ئەرزی دا ئەڤ هەلبەستە بناڤێ (بەیتا بهارێ) دگەل وان هەلبەستان هاتیە دانان یێن بۆ ئەرزی دهێنە هژمارتن. ( دۆسکی ، ٢٠٠٢ ، ل ١٦١).

(٤) ئەڤ هەلبەستە د هندەك دەستنڤیسان دا بۆ عەلیێ حەریری هاتیە هژمارتن ، ژبەر کو بتنێ ل مالکا دووماهیێ ل شوونا ( دێ چەند ببێژی صادق) ئەڤ مالکە هاتیە ( چەند بێژە عەلییێ صادق). بنێڕە : تەحسین ئیبراهیم دۆسکی ، شەرحا بەرمایا دیوانا عەلییێ حەریری ، ( دهۆك : ٢٠٢٠) ، ل ١١٥_ ١١٦).

(٥) ئەڤ مەدرەسەیە دکەڤیتە گوندێ گەلیرمانێ ل دەڤەرا مزووری ژێریان ل باکورێ گوندێ بریفکان ، ژلایێ شێخ ئەحمەدێ گەلیرمانی (مرن : ١١٥٠مش/ ١٧٣٧ز) کو ئێك ژ نەڤیێن شەمسەددینێ ئەخلاتی (بریفکانی) یە هاتیە ئاڤاکرن ، ئێك ژ دەستنڤیسێن ل ڤێ مەدرەسەیێ هاتینە نڤیسین ڤەدگەریت بۆ سالا (١١٩٢مش / ١٧٧٨ز) ئەو ژی (ملخص علم الهيئة) یا مەحموود ئەلجەخمینی ئەوا ژلایێ (مەلا عەبدولقادر ناڤەکی) هاتیە نڤیسین. بنێڕە : محەمەد عەلی قەرەداغی، بووژاندنەوەی مێژووی زانایانی کورد لەرێگەی دەستخەتەکانیاوە ، دەزگای چاپ و بلاوکردنەوەی ئاراس، بەرگێ ٦، ( هەولێر : ٢٠٠٤) ، ل ١٦٦ ؛ عەبدولرەحمان مزووری، کاودانێن رەۆشەنبیری ل میرگەها بەهدینان ، ل ١١.

(٦) ل دۆر دانەنیاسینا ڤێ کەشکۆلێ بنێڕە : تەحسین ئیبراهیم دۆسکی ، کەشکۆلا مەلا خەلیلێ سێرتی و گرنگیا وێ بۆ دیرۆکا ئەدەبیاتا کوردی ، گۆڤارا دیرۆك ، ژ (١٩) هاڤینا ٢٠١٨، ل ١٢٤_١٢٥.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الملخص:

من احدى الأعمال المهمة و المشرقة في تاريخ الإمارات الكردية لاسيما إمارة بهدينان (العمادية) . هي اهتمام بالكتابة في مجال شتى باللغة الكردية لاسيما من جوانب نصوص الدينية (الاسلامية ) و الادب الكلاسيكية . أو نصوص و قواميس و ترجمات بعض نصوص من قبل عدد من العلماء الكورد و طلاب المدارس الدينية و نبلاءها و أمراء تلك الإمارة الذين تركوا العديد من المخطوطات والنصوص الثمينة للجيل القادم. اعتمد هذه الدراسة على مخطوطات لعلماء و الشعراء و أمراء العائلة المالكة. الذين قدموا دور كبير في مجال الكتابة باللغة الكردية ، تناول الباحث عن الفترة ما بين القرن السادس عشر و ١٨٤٢م ، و هذا بعد قراءة و دراسة وثائق و مخطوطات عدد من علماء و أمراء و المصادر الأصلية ، تم تقسيم الدراسة إلى نوعين كما يلي :

أولا : من مخطوطات بعض أمراء إمارة بهدينان

ثانيا : من نصوص و مخطوطات بعض علماء الكورد في بهدينان

**الكلمات المفتاحية :** *إمارة بهدينان ، علماء و أمراء ، مدرسة ، نصوص و مخطوط*

## Texts and manuscripts in the Kurdish language During the era of the Emirate of Behdinan During the 16 th century _ 1842 AD

**Adstract:**

One of the important and bright works in the history of the Kurdish emirates , especially the emirate of Bahdinan (Amadiyah). She is interested in writing in various fields in the Kurdish language, especially in the aspects of religious (Islamic) texts and classical literature. Or texts, dictionaries and translations of some texts by a number of Kurdish scholars and students of religious schools and its nobles and princes of that emirate who left many precious manuscripts and texts for the next generation. This study was based on manuscripts of scholars and princes of the royal family. Those who played a major role in the field of writing in the Kurdish language, the researcher dealt with the period between the sixteenth century and **1842** AD, and this after reading and studying the documents and manuscripts of a number of scholars and princes and the original sources, the study was divided into two types as follows :

**First :** From the manuscripts of some of the princes of the Emirate of Bahdinan.

**Second :** From texts and manuscripts of some Kurdish scholars in Bahdinan.

**Keywords:** *Emirate of Bahdinan , scholars and princes , school , texts and manuscripts*

# میرنشینی ئەردەڵان لە سەردەمی فەرمانڕەوایی زەندییەکاندا
# (١٧٥١-١٧٩٤)

**د. نعمەت شەهاب حاجی**
زانکۆی سەڵاحەددین، هەولێر، هەرێمی کوردستان، عێراق

**پوختە:**

دامەزراندنی فەرمانڕەوایی زەندییەکان، لە سەر دەستی کەریم خانی زەند (١٧٥١-١٧٧٩) بە یەکێ، لە قۆناغە گرنگەکانی مێژووی نوێی ئێران دەژمێردرێت. ماوەی دەسەڵاتداریێتی زەندییە کان لە ئێرانی نیوەی دووەمی سەدەی هەژدەهەمدا (١٧٥١-١٧٩٤)، تا سەرهەڵدانی قاجارەکان، کە نزیکەی نیو سەدەی خایاند، هەڵگری کۆمەڵێ ڕووداوی جۆراوجۆر بوو، کە بە گوێرەی ڕاو بۆچوونی زۆربەی هەرە زۆری توێژەرانی ئێرانی و بیانی، ئەم دەورانە تەمەن کورتە بە یەکێ، لە نەناسراوترین و شاراوەترین دەورانەکانی مێژووی نوێی ئەم وڵاتە دەژمێردرێت. میرنشینی ئەردەڵا نیش وەک یەکێ لە میرنشین و دەسەڵاتە خۆجێیەکانی کوردستانی ڕۆژهەڵات، لە ماوەی فەرمانڕەوایی زەندییەکان، ئەگەرچی لە بارودۆخێکی ئاڵۆزی بگرە و بەردەی دەسەڵاتدا، ژیاوە و لەم ماوەیەدا، تووشی تەنگ و چەڵەمەیەکی زۆر هاتووە، بەڵام هەرچۆنی بێ میرانی ئەم میرنشینە ، لە کارەکتەرە گرنگەکانی ئەم سەردەمە ئاڵۆز و پڕ گرفتە، کە ڕۆڵێکی گرنگیان هەبووە لە بەرەنگار بوونەوە و یەکلاکردنەوەی گیروگرفت و کێشە ناوخۆییەکانی ئەم ناوچەیە ئەژمار دەکرێن.

دیارە ئەم بارودۆخە ناسەقامگیرە، بەرهەمی ئاڵۆز و پەشۆکاوی گۆڕانکارییە یەک لە دوای یەکەکانی،ساڵانی دوای ڕووخانی دەوڵەتی سەفەوی و سیاسەتە شەڕئەنگێزەکانی نادرشای ئەفشار و دەرئەنجامی بە دیار کەوتنی زەندییەکان، لە سەر شانۆی سیاسی ئەو کاتەی ئێرانی نیوەی دووەمی سەدەی هەژدەهەم بوو، کە بەرۆکی ناوچە کوردنشینەکانی کوردستانی ڕۆژهەڵاتیشی گرتبووەوە. لە سۆنگەی ئەم باسەوە هەوڵمان داوە بە وردی تیشک بخەینە سەر بارودۆخی گشتی میرنشینی ئەردەڵان و ڕووداوە گرنگە مێژووییەکانی ئەم میرنشینە، لە سەردەمی فەرمانڕەوایی زەندییەکان و هۆکارەکانی بە دیارکەوتن و گەشەسەندن و هەروەها شێوازی حوکمڕانی میرانی ئەردەڵان و ڕۆڵیان، لە پێکهاتەی کارگێڕی و سیاسی دەوڵەتی زەندییەکان، بخەینە بەر باس و گفت و گۆیەکی بابەتیانە. لەم ڕووەوە توێژینەوەکە هەوڵدەدات شەن و کەوی لایەنە گرنگەکانی پاڵنەری



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کۆمەڵایەتی، سیاسی، سەربازیی و تەنانەت ناوچە گرنگەکان و مەودای قەڵەمڕەوی ژێر دەسەڵاتی میرنشینی ئەردەڵان، دەستنیشان بکات و لە پێوەندییە ناسەقامگیر و پڕ لە گرفتەکانی میرانی ئەردەڵان و فەرمانڕەوایانی زەند و هۆکارە سەرەکییەکانی دروستبوونی ئەم ئاڵۆزیانە بکۆڵێتەوە. لەگەڵ دەرخستنی گرنگترین هۆکارە پاڵنەرەکانی پشت ئەو هەنگاوانەی پاڵیان بە میرانی ئەردەڵان دەنا، کە لە ناوچەیەکی هەرە ئاڵۆز و پڕکێشەی کوردستانی ڕۆژهەڵات، لە ئێرانی نیوەی دووەمی سەدەی هەژدەهەمدا، سەرەڕای هەموو گرفتەکانیان، حوکمڕانی بکەن و قەڵەمڕەوی خۆیان، لە دەست ڕکابەرە ناوخۆیی و دەرەکییەکان، بپارێزن و درێژە بە تەمەنی دەسە ڵاتیان بدەن.

بە لێکدانەوە و تیشک خستنە سەر تارمایی ڕووداوە مێژووییەکان و گۆڕانکارییە بنەڕەتییەکانی میرنشینی ئەردەڵان، لە سەردەمی فەرمانڕەوایی زەندییەکان، دەگەینە ئەو ئەنجامەی، کەوا بە هۆی سیاسەتە ناجێگیرەکانی فەرمانڕەوایانی زەند، لە ئاست میرنشینی ئەردەڵان، بارودۆخی ناوچەکانی کوردستانی ڕۆژهەڵات، بە گشتی و میرنشینی ئەردەڵان بە تایبەت، دۆخێکی ئاڵۆزی سیاسی و کۆمەڵایەتی و ئابووری، ناسەقامگیر و دژواریان تێپەڕاندووە. فەرمانڕەوایانی زەند بە گۆڕینی زوو بە زووی میرانی ئەردەڵانی، کە پێوەندییەکی باشیان، لە گەڵ خێڵی قاجاردا هەبوو، کە ڕکەبەری سەرەکی زەندییەکان بوون و دانانی کەسانی لاواز و لایەنگری خۆیان، لە حوکمڕانی ئەم ناوچە گرنگەدا، سەلمێنەری ڕادەی پەشۆکاوی دۆخی ناوخۆی ئەم میرنشینە و نەبوونی یەکڕیزی و تەبایی، لە نێوان ئەندامانی ئەم بنەماڵە کوردیە، کە لەم ماوەیەدا نەیانتوانیوە وەک پێویست، لە دەرفەتە مێژووییە بەردەستەکان، بۆ بەهێزکردنی پێوەندییەکانیان، لە گەڵ زەندییەکان سوود وەربگرن و سنووری قەڵەمڕەوی خۆیان، لە هێرشە بەردەوامەکانی هێزە کانی دەوروبەر بپارێزن.

هەر بۆیەش فەرمانڕەوایانی زەند، بۆ سەپاندنی دەسەڵاتی خۆیان، ماوەماوە، بە سوود وەرگرتن، لەم شلەژاوی و ناتەباییەی نێوان ئەندامانی بنەماڵەی ئەردەڵانەکان، هەوڵیان داوە، کەوا چەند کەسانێک، لە خانەدانی بابانەکان لە دەرەوەی سنووری قەڵەمڕەوی میرنشینی ئەردەڵان، وەک حاکمی فەرمی ئەم میرنشینە، دەستنیشان بکەن و جڵەوی فەرمانڕەوایەتی ئەم میرنشینە گرنگەیان بە دەستەوە بدەن.

**ووشە سەرەکییەکان:** *میرنشینی ئەردەڵان، فەرمانڕەوایی زەندییەکان، کەریم خانی زەند، میرانی بابان، قاجارەکان*

**پێشەکی:**

ئەردەڵان وشـەیەکی گەلێک بەرز و هێـژایە، لەبەر ئەوەی مێژوویەکـی دێرینـی لەپشت خۆیەوە حەشـار داوە. دەکرێ بڵێین، کەوا لە وشەی ئەردەڵانـدا، بڕێکـی زۆر لەو شانازییانەی، کە نەتەوەیەک پێی سەربەرزە، بەدی دەکرێت. میرە ماڵێک، کە لانی کەم حەوت سـەدە خەبـاتێکی چڕوپڕی کـرد، تـا چـرای مـانەوەیی و سـەربەرزیی، هەڵگیرسـاو ڕابگرێت. بۆ هەر بوارێک، لە بوارەکانی سیاسی، سەربازی، زانستی، ئەدەبی، مێژوو نووسی، تەلارسازی و هونەریدا چاو بگێڕی، شوێن پێی ئەردەڵانییەکان لە کوردستانی ڕۆژهەڵاتدا بە ڕەنگینـی دەدۆزیـتەوە. ئەردەڵانەکـان بنەمـاڵەیەکی کـۆن و ڕەسـەنی کـوردن، کە بـۆ سـەردەمێکی دووورودرێـژ، لە سـەدەی سێزدە تـا سـەرەتای سـەدەی نۆزدەی زایینـی حـوکمڕانی بەشـێکی گەورەی کوردسـتانیان کـردووە. ئەم میرنشـینە، لە هەڵـومەرجی ئـاڵۆز و ناسەقامگیری دوای هەڵوەشانەوەی دەوڵەتی ئێلخانی (١٢٥٦-١٣٣٥)، لە بەشێکی کوردستاندا، کە ناوەندەکەی شارەزوور بـوو، دامەزرا و بە کەڵک وەرگرتن لە بۆشایی هێزێک، کە لە ئەنجامی نەمانی دەوڵەتێکی گەورە لە ناوچەکەدا هاتبووە ئاراوە، حکومەتێکی نیـمچە سـەربەخۆیان پێکهێنا و توانیـان درێـژە بە بـوون و مـانەوەی خۆیـان بـدەن. لە ڕاسـتیدا ئەم میرنشینە لە دروستکردنی مێژووی کورد و بەدیهێنـانی ڕەوتی گۆڕانکاریی و سـەرهەڵدانی ڕووداوەکـانی نـاوچەکەدا، دەوری بـاڵای گێـڕاوە و کـاریگەریی خـۆی هەبـووە. سـەرچاوە مێژووییەکـان سـەبارەت بە بنەمـا و بنچیـنەی خـانەدانی ئەردەڵانەکـان و چۆنیەتی دەسـەڵات گرتنیان، زانیارییەکی ڕوون بەدەستەوە نادەن. میر شـەرەفخان میرانی ئەردەڵانی، لە پێشـەوەی فەرمانڕەوایانی مەزنی کورد ستان داناوە، ئەوانەی هەرچەند تەواو ئـازاد و سـەربەخۆ نەبوون و بیریـان لە جیابوونەوە نەکردۆتەوە، بەڵام جاروبـار نـاو و نازناویـان لە وتـاری مزگەوتەکانـدا، دەهێنـدرا و لەسـەر دراوەکانیـان دەنەخشـێندرا (بدلیسـی، ٢٠١٧: ١٨١-١٨٢)، دیـارە ئەم دوو هەنگـاوەش لە هێمـا و نیشـانەکانی خۆ بە سـەربەخۆ زانیـنن. سـەرەڕای ئەم ڕاسـتییەش، هیـچ قەوارەیەکـی سیاسـیی کـورد، لە مێژوودا بەقەد ئەردەڵان سـەربوردە و بەسـەرهاتەکانی لێڵ و شاراوە نین و ئەوەندە دەرکەوتن و پێگرتنی تەم و مژاوی نییە. ئەم میرنشینە یەکێکە لە قەوارە جوگرافیایی و سیاسییە دیار و ناسراوەکانی کوردستان،کە مێژوویەکـی دوورودرێـژی، لە فەرمانڕەوایەتیکردن بە سەر هەرێمێکی بەرفراوانـدا هەبووە، کە پێشتر بە نـاوی شـارەزوور دەناسرا.

ئەم ڤەکۆڵینە هەوڵێکی بەرایی دیـکەیە لە پێـزانین و دەنگوباسـی نوێ لە مەڕ بارودۆخی میرنشینی ئەردەڵان لە سـەردەمی فەرمـانڕەوایی زەندییەکانـدا، هاوکـات ڕەوانـدنەوەی بڕێک لەو تەمـومژە چڕەیە، کە بە مێژووی ئەم میرنشینە کوردییە، لە مـاوەی فەرمـانڕەوایی زەندییەکاندا لکاوە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**ئاخێزگەی زەندییەکان و پێوەندییان لە گەڵ بنەماڵەی ئەردەڵان:**

زۆربەی هەرە زۆری ئەو مێژوونووسانەی لە بارەی مێژووی زەندییەکان دوواون، لە سەر ئەمە ڕێکن کە هۆزی "زەند" بەشێکن لە لوڕەکان[١] کە لە پێش وەدەرکەوتنی کەریم خانی زەند لە سەر شانۆی سیاسی ئێران ناوبانگێکی ئەوتۆیان لە مێژوودا نەبووە (آشتیانی، ١٣٥٧: ٧٣٩؛ شعبانی، ١٣٧٨: ١٤٥) هۆزەکانی"لوڕ" یش لە ڕووی زاری گوتنەوە بە سەر هەر دوو گروپی لەک[٢] و لوڕ[٣] دابەش دەبن. زۆرینەی تیرەکانی لەك لە هەرێمەکانی باکوور و باکووری رۆژئاوای لوڕستان دەژین. سەرەڕای ئەوە، کە بەشێکی تریشیان هەر لە دێر زەمانەوە، لە نێو هەندێ لە هۆزەکانی تری لوڕستان، ئیلام و کرماشان و تەنانەت لە ناوچەکانی هەمەدان و قەزوین نیشتەجێ بوونە، هۆزی" زەند"یش یەکێکە لەوانە کە لە ناوچەکانی نێوان برۆجێرد، نەهاوەند، خورەم ئاوا و کرماشان و هەروەها ئیلام دەژین، کە دەکەونە نێوان کوردە فەیلییەکان و کرمانجەکانی تر(پری، ١٣٨٤: ٢٤-٢٥).

بە پێی ئاماژەکردنی هەندێ لە مێژوونوسانی ئێرانی و بیانی زەندییەکان هۆزێکی ڕەسەن و دێرینی کوردن، کە لە ناوچەکانی نێوان هەرێمی کرماشان و ناوچە لوڕنشینەکاندا دەژین و لە ڕووی مەزهەبەوە شیعەی دوازدە ئیمامین(صداقت کیش،١٣٨١: ١١٩؛ فتاح قاضی، ١٣٦٧: ٩٧).زەندییەکان وەك گشت کوردەکانی باشووری رۆژهەڵاتی کوردستان، لە ڕووی زمانەوانییەوە بە شێواز و زاراوەیەکی کوردی قسە دەکەن (مینورسکی، ١٩٨٤: ٣٤) و بە پێی ئاماژەکردنی پرۆفیسۆر "**پاول هورن**" (١٨٦٣-١٩٠٨) و هەروەها "**ئێدوارد براون**" (١٨٦٢-١٩٢٦) کە دوو پسپۆر و شارەزای بواری مێژووی وڵاتی ئێرانن، هۆزی"**زەند**" لە هۆزە هەرە دیارەکانی لەك دەژمێردرێ، کە لە ئەسلدا لە کوردە ڕەسەنەکانی کوردستانی ئێران پێکهاتووە (آا120 :1959 ,).

لە لایەکی دیکە گەورە مێژوونوسی کورد، "**میرشەرەفخانی بدلیسی**" نە تەنیا زەندییەکان بە کورد دەزانێ، بگرە بە ڕای ئەو، سەرجەم لوڕ و بەختیارییەکانیش لە کوردە ڕەسەنەکانی کوردستانی رۆژهەڵاتن و لە مێژەوە بەشێکی بەرین، لە عێراقی عەجەم شوێنی ژمارەیەکی بەرچاو لەو هۆز و خێڵانە بوون، کە بەڵێنیان بە فەرمانڕەوایانی ئێرانی دابوو و هاوپەیمانییان لەگەڵدا ساز کردبوون. میرشەرەفخان گووتەنی:"جگە لە بەهێزترینی ئەم هۆزانە، کە سیامەنسوور و چگنی و زەنگەنەکانن، خێڵەکانی لەک و زەندیش سەریان وەبەر پاشایان و مەزنانی دیوانی هێنابوو و خزمەتیان دەکرد" (بدلیسی، ٢٠١٧: ٥٠٢).

هەرچەند هەندێ لە نووسەر و مێژوونووسی ڕۆژئاوایش زەندییەکان، بە بەشێك لە خێڵی گەورەی زەنگەنە دادەنێن، لە وانە قونسوولی ڕووسی ئا. ئاکویف (اکویف، ١٣٧٦: ٨٤)، بەڵام بە پێی بۆچوونی مینۆرسکی لەکەکان لە بنەڕەتدا لوڕ بوونە و وردە وردە بوونەتە کورد و تەنانەت گەلێ هۆزی کوردی خۆیان بە لەك دەزانن و بە شێوەزاری "**لەکی**" قسە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دەکەن، لە وانە کەلهوڕەکان. ئەم زاراوەیە (لەکی) هەمان شێوازی باشووری کوردستانە، کە بە هۆی تێپەربوونی کات و کاریگەری رووداوە مێژووییەکان بە تۆزێك جیاوازی، لەگەڵ زاراوەکانی دیکەی کوردی، ئەمڕۆ لە نێوان گشت هۆزەکانی لەك قسەی پێدەکرێت، بۆیە دەتوانین گشتیان بە کورد لە قەڵەم بدەین (مینورسکی، ١٩٨٤: ٨٦).

غەففاری کاشانی، کە یەکێکە لە مێژوونوسە دیارەکانی فارس و لە سەدەی هەژدەهەم و سەردەمی کەریم خانی زەند ژیاوە، گشت هۆزەکانی"**لەك**"لە وانەش زەندییەکان بە کوردی لوڕستان ناو دەبات (غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٤٢). بە پێی ئاماژەکردنی "**جێن داف گارسۆڤیت**" لە زاری "**لورد کورزەن**" دەکرێ سەرجەم لوڕەکان بە کورد لە قەڵەم بدرێن(گارسویت، ١٣٧٣: ٨١-٨٢). سەرەڕای دانپێدانی مێژوونوسە بیانییەکان، هەندێ لە مێژوونوسە ئێرانییەکانیش پێیان وایە نە تەنیا زەندییەکان کوردن بگرە لوڕەکانیش بە کوردی ڕەسەن دەزانن(شمیم همدانی، ١٩٨٠: ٤٨). بەڕای نووسەری ناوداری بەریتانی"**جان پێری**" سەرەڕای هۆزی زەند، هۆزەکانی کەلهوڕ، زەنگەنە، مافی و باجەڵانیش بەشێکن لە هۆزەکانی لەکی لوڕستان، کە دەبێ ئەوانیش بە کوردی ڕەسەن بزانین (پری، ١٣٨٤: ٢٤). بە پێی ئاماژەکردنی سەرچاوە مێژووییەکان، هۆزی زەند دابەش دەکرێتە سەر سێ تیرەی جۆراوجۆر، کە ئەم تیرانە بە پێی پلەی ڕەسەنایەتی و گرینگییان بریتینە لە: ١- زەندی بەگلە ٢- زەندی هەزارە ٣- زەندی خەراجی(نوذری، ١٣٦٨: ١١٣). هەر دوو تیرەی بەگلە و هەزارە لە یەك ڕەگەز پێکهاتوون و لە ئەسڵدا، لە یەك بەرەبابن. پێکهاتەی تیرەی خەراجی بریتیە لە خەڵکی هەژار و ژێردەست کە لە ئەسڵدا بە ژێرگروپی تیرەکانی دیکە دەژمێردرێن. کەریم خانی زەند (١٧٥١-١٧٧٩ز)، کە دامەزرێنەری فەرمانڕەوایەتی زەندییەکانە، لە تیرەی بەگلە بوو، بۆیە هەر بە پێی ڕێ و ڕەسمی عەشیرەتیش بێ، سەرپەرەشت و فەرمانڕەوای ڕاستەقینەی تیرەکانی هەزارە و خەراجی بوو (نوایی، ١٣٥٦: ٣٧). دیارە هۆزی زەند دوای هێرشی شاعەبباسی یەکەمی سەفەوی (١٥٨٧-١٦٢٩ز) بۆ سەر ناوچەکانی لوڕستان و بە تایبەتی لە ڕاپەڕینی شاوێردیخاندا، بە هۆی ترس و دڵەڕاوکێ، لە شوێنی سەرەکی خۆیان، ڕایانکرد و دوای چەندین ساڵ ئاوارەیی و دەربەدەری توانییان، لە ناوچەی قەڵای "**پەری**"[٤] و "**کەمازان**" لە نزیك شاری مەلایر نیشتەجێ بن و جارجاریش لە بەر ئەوەی زۆربەیان بە کاری شوانکارەیی خەریکبوون، بۆ کوێستان و گەرمیان دەچوونە ناوچەی "**پەرۆپەرێز**" (پری، ١٣٨٤: ٩).

گوایە ئاژەڵداری کاری سەرەکی و گرنگی هۆزی زەند بوو، کە بە شێوەی نیوە کۆچەری دەژیان و شوێنی نیشتەجێ بوونیان زۆرتر ناوچە دەشتاییەکانی هەمەدان و کرماشان بوو. دەستەیەکیان هەر لە مێژەوە لە ناوچەی لەیلاخ و هەندێکیشیان لە کوردستانی ئەردەڵان نیشتەجێبوون. هەر لە نیوەی یەکەمی سەدەی دوازدەی کۆچی، نێوی زەندییەکان و بە تایبەت هۆزی باقلە، کەوتە سەر زاری خەڵکی ویلایەتی کرماشان و لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ناوچەی دروفرماندا نیشتەجێ بوون، کە سنووری قەڵەمڕەوی هاموشۆکردنیان لە ڕۆژهەڵات بە هەرسین و لە ڕۆژئاوادا بە ماهیدەشت و کرماشاندا دوایی دەهات و لە وەرزی بەهاردا بۆ کوێستانەکانی قەراخ هەمەدان کۆچیان دەکرد. هۆزی زەندی باقلە کە مەهدی خان و دوو براکەی ئیناق خان و بوداق خانی سەرکردایەتییان دەکرد، فەرمانبەری عەلیقولی خان و سوبحانوردی خان بوون و دواتر ئیناق خان بە خواستنی خۆشکی سوبحانوێردی خان، بوو بە زاوای بنەماڵەی ئەردەڵانەکان و کەریم خانی کوریشی، کە دواتر بوو بە فەرمانڕەوای ئێران، خوشکەزای ئەردەڵانییەکانە (اردلان، ١٣٨٧: ٧٧-٧٩).

**میرنشینی ئەردەڵان[٥] لە سەردەمی پاشاگەردانی و نەمانی دەسەڵاتی ناوەندی (١٧٤٧-١٧٥١):**

دیارە میرنشینی ئەردەڵانیش وەك ناوچەکانی دیکەی کوردستانی ڕۆژهەڵات، لە ماوەی نێوان سالانی (١٧٢٢-١٧٤٧ز) واتا سالانی دوای ڕووخانی ئیمپراتۆری سەفەوی، تا کوژرانی نادرشای ئەفشار، لە بارودۆخێکی ئالۆزی بگرە و بەردەی دەسەڵاتدا ژیابێ، کە بێ گومان ئەم بارودۆخە، بەرهەمی ئێرانی ئالۆز و پەشۆکاو و گۆڕانکارییە یەك لە دوای یەکەکانی ئەم ماوەیە بوو، بە تایبەتی سیاسەتە شەڕئەنگێزەکانی نادرشا. لە دوا ساتەکانی فەرمانڕەوایی نادرشای ئەفشار(١٧٣٦-١٧٤٧) کاتێک میرزا محەممەد تەقی خانی گولستانەی فەرمانبەری خەزێنەی شاهی، بە مەبەستی وەرگرتنی باج و پیتاکی ساڵانە، ڕووی لەم میرنشینە کردبوو، بە گەیشتنی هەواڵی کوشتنی نادرشا، حەسەنعەلی خانی کوڕی عەبباسقولی خان (١٧٤٨-١٧٥١) بە یارمەتی خەڵکی سنە و ئەردەڵان، سوبحانوێردی خانی کۆنە والیی ئەردەڵانیان لادا و خۆی جڵەوی دەسەڵاتی ئەم میرنشینەی گرتە دەست (گلستانە، ١٣٩١: ١٣٣؛ پری، ١٣٨٤: ٣٥-٣٦).

بە کوژرانی نادرشای ئەفشار (١٦٨٨-١٧٤٧)، ئالۆزی و پشێوی لە ئێراندا بەدیهات و لە ئەنجامی ئەم پەشۆکاوییە شەڕێکی ناوخۆیی سەریهەڵدا، کە نزیکەی پازدە ساڵی خایاند، بۆیە ڕکابەرایەتی نێوان خوازیارانی تاج و تەختی ئێران کەوتە دۆخێکی ناهەموار و هەڵبەز و دابەزێکی زۆری بە خۆیەوە بینی. شارۆخ شا(١٧٤٨-١٧٤٩)ی نەوەی نادرشا، کە لە ساڵی ١٧٤٩کوێر کرابوو، هەتا ساڵی ١٧٩٥ تەنیا توانی وەک حاکمی خوراسان، درێژە بە فەرمانڕەوایی خانەدانی ئەفشارەکان بدات و دواتر بە فەرمانی ئاغا محەممەد خانی قاجار لە کار لا برا و کوژرا. دوای نەمانی نادرشا، کەریم خانی زەند وەک یەکێ لە سێ ڕکابەری سەرەکی تاج و تەختی ئێران، دوای دروستکردنی هاوپەیمانییە کی ناوچەیی، بەشێکی گەورەی ناوچەکانی ڕۆژئاوای ئێرانی بەدەستەوە گرت. دوای ئەویش عەلیمەردان خانی بەختیاری، هەرێمی گەورەی لوڕستان و بەختیارییەکانی بەدەستەو بوو و سێیەم کەسیش، ئازاد خانی ئەفغان بوو، کە بە داگیرکردنی ویلایەتی ئازەربایجان دەسەڵاتێکی پان و بەرینی بۆ خۆی دەستەبەر کردبوو. دواتر کەریم خانی زەند و عەلیمەردان خان و ئەبولفەتح



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

خانی بەختیاری پەیمانێکی سێ قۆلییان بەست. ئەمانە بە هۆی دەستەمۆکردنی شا ئیسماعیلی سێیەم وەک شای ئێران، پێگە سەرەکییەکانی دەسەڵاتیان لە نێو خۆیان بەم شێوەیە دابەشکرد؛ عەلیمەردان خان وەک جێگرەوەی شا و ئەبولفەتح خان وەک بەگلەربەگی ئەسفەهان و کەریم خانیش وەک فەرماندەی هێزە سەربازییەکانی عێراقی عەجەم. گوایە بەڵێندەرانی ئەم پەیمانە سێ قوڵییە، لە پێناو یەکگرتنەوەی سەرجەم هەرێم و ناوچەکانی دیکەی وڵاتی ئێران، درێژە بە کار و چالاکییەکانیان دەدەن (نامی، ١٣٦٣: ١٢-١٦).

حەسەنعەلی خان، کە لە ساڵی ١٧٤٨بە فەرمانی فەرمی ئیبراهیم شای ئەفشار (١٧٤٨-١٧٤٩)، بوو بە فەرمانڕەوای ویلایەتی کوردستان، هەر لە سەرەتاوە دەستیکرد بە ڕێکخستنی سوپا و نۆژەن کردنە وەی قەڵا سەربازییەکانی ناو هەرێمەکەی و لە ماوەیەکی کەمدا، توانی سوپایەکی دوازدە هەزار کەسی، لە جەنگاوەرانی کورد و ئەفغان و ئۆزبەک پێک بێنێت و لە دەوری خۆی کۆ بکاتەوە (قاضی، ١٣٨٧: ٥٤). بە پێی گێڕانەوەی محەممەد تەقی خانی گولستانە، میری ئەردەڵان بە لەشکرێکی بیست هەزار کەسی، لە جەنگاوەرانی کورد و تورک و ئەفغان ئەم هەرێمە دەوڵەمەندەی، لە ڕۆژئاوای وڵات بەڕێوەدەبرد. زۆری نەبرد میری ئەردەڵان لە سەر داوای مهرعەلی خانی تەکەلووی حاکمی هەمەدان، بە مەبەستی ڕووبەڕوو بوونەوە لە گەڵ کەریم خانی زەند، لە ساڵی ١٧٤٩لەشکری خۆی تەیار کرد (گلستانە، ١٣٩١: ١٥٣-١٥٩) و لە ئەنجامی شەڕێکی گران، سوپای ئەردەڵان بە دەسکەوتێکی بەرچاو و کوژرانی ژمارەیەکی زۆر لە چەکدارانی زەندییەکان، لەم شەڕەدا سەرکەوت و بەرەو سنە گەڕایەوە(مردوخ، ١٣٧٩: ٣٤٩).

دیارە سەرەتای دروستبوونی کێشە و تێکچوونی پێوەندییەکانی نێوان میرنشینی ئەردەڵان و زەند ییەکان، بۆ ئەم شەڕە دەگەڕێتەوە، کە ژمارەیەک لە ناودارانی زەندیی نێو سوپای کەریم خان بە دەستی سوپای ئەردەڵان دەکوژرێن و حەسەنعەلی خانی ئەردەڵانیش وێڕای ڕزگارکردنی مهرعەلی خانی تەکەلوو لە تەنگەژە و ئابلووقەی سوپای زەند، بە تالانکردنی ئۆردووی کەریم خان و دوور خستنەوە و کۆچپێکردنی زۆرە ملێیانەی چوارسەد بنەماڵەی لەک، لە خانەدانی زەندییەکان بۆ سێ گوندی ناوچەی لەیلاخ، بووە هۆی تووڕەبوونی لە ڕادەبەدەری کەریم خانی زەند (قاضی، ١٣٨٧: ٥٤؛ مستورە، ٢٠٠٥: ١١٤).

زۆری پێ ناچێ ئیمامقوڵی خانی زەنگەنەش، بە لەشکرێکی گران هێرشی هێنایە سەر ئەردەڵان و میری ئەردەڵانیش، لە ناوچەی بیلەوار پێشی پێ گرت (مستورە، ٢٠٠٥: ١١٦؛ گلستانە، ١٣٩١: ١٥٤) و لەشکری ئیمامقوڵی خانی شکاند و لە ئەنجامی ئەم سەرکەوتنە بڕێک لە ناوچەکانی کرماشان، سونقۆری کولیایی، کەنگاوەر، مەلایر و تەنانەت بروجێرد و گولپایگانیشی خستە ژێر رکێفی خۆی و ڕاستەخۆ حاکمی بۆ دانان (مستورە، ٢٠٠٥:

١١٦؛ اردلان، ٢٥٣٦: ٤٨؛ مـــردوخ،١٣٧٩: ٣٤٩). بەم شــێوەیە ســنووری قەڵەمــڕەوی میرنشـــینی ئەردەڵان، لە سـەردەمی حەسـەنعەلی خـان دوای چەنـدین سـاڵ پەرتەوازەیـی، تـا رادەیەکـی زۆر بەرفـراوان دەبێ و چەنـدین خێڵـی گـەورەی ئەم ناوچـانە وەك؛ زەنـگەنە، کەلهـوڕ و گـۆران بە ناچـاری ملکەچبـوونی خۆیـان ڕادەگەیـنن و دەچـنە ژێـر ڕکێفـی دەسـەڵاتداریێتی حەسـەنعەلی خانی میری ئەردەڵان.

کەمێـک دواتـر، بە ڕاونـانی سلێمان پاشـای بابـان بە هـۆی سـەلیم پاشـا و دواتـریش پەنادانی سـلێمان پاشـا لە لایەن حەسـەنعەلی خـان، پێوەنـدی نێـوان ئەم دوو میرنشـینە ئـاڵۆز دەبێ و گـرژی و پەشۆکـاویی تێدەکـەوێت (اردلان، ٢٥٣٦: ٤٨-٤٩). لە بەر ئەوەی میری ئەردەڵان ڕازی نابێ سلێمان پاشا تەسلیمی سەلیم پاشای بابان بکـاتەوە، سـەرەڕای هەمـوو هەوڵە ئـاشتی خوازەکـان و گـۆڕینەوەی نامە و ناردنی نوێنەرانی تـایبەت، بـۆ بەدەسـتە وەدانـی سـلێمان پاشـا و دەسـتێوەرنەدان لە کـاروبـاری ئەو میرنشـینە، لە کـۆتـایی سـالی ١٧٤٩ز دا، شـەڕێکی سـەخت لە نـاوچەی مەریـوان لە نێـوان هەردوولا ڕوودەدا و تێیدا میـری ئەردەڵان بە تونـدی توشـی شکسـت دەبـێ و بە نـاچـاری بەرەو هەورامــان ڕا دەکـات(گلسـتانە، ١٣٩١: ١٥٨-١٦٠). لە ئەنجـامی ئەم هێرشـە، شـاری سـنە لە تـۆڵەی حەوانـدنەوەی سـلێمان پاشـا، بـۆ مـاوەی یەک سـاڵ، لە لایەن سوپای بابانەکانەوە دەستی بەسەرداگیرا و بە توندی تـاڵان کـرا و ئاواییەکـانی سووتێنرا و ژمارەیەکـی زۆر لە خەڵکـی دەوڵەمەندی سـنە و بنەمـاڵە ناودارەکـانی بـۆ سـلێمانی و کـۆیێ و هەریر ، بە زۆر کوچێنراِن (کوردستانی، ١٩٨٩: ١٥٦).

حەسەنعەلی خان دوای ساڵێک دووری، توانی جارێکـی دیـکە بگـەڕێتەوە بـۆ سـنە و جڵەوی دەسەڵات بە دەستەوە بگرێت، بەڵام زۆری پێنەچوو بە هـۆی کـێشە ناوخۆییەکـانی نـاو بنەمـاڵەی ئەردەڵان و هەڵگـەڕانـی ئیبـراهیم بەگـی وەکیـل، کە حـاکمی پلنـگان و بـیلەوەر بوو، دیسان دۆخی ئەم میرنشینە ڕووی لە کزی و پەشۆکـاری نا. ئیبراهیم بەگ کە ڕۆڵێکـی بەرچـاوی لە شـکانی سـوپای حەسـەنعەلی خـان لە بەرامـبەر هێرشـی بابانەکانـدا هەبـوو، بە گـەڕانەوەی ناوبراو تەنـگەتاو دەبێ و بە ناردنی چەند نامەیەکـی نهێنی بۆ کـەریم خـانی زەنـد و ئیمـام قـولی خـانی زەنـگەنە، وێـڕای ئـامـاژەکردن بە دۆخـی نالەبـاری نـاوخۆی میرنشـینی ئەردەڵان، هـاوکـات داوایـان لـێ دەکـات کە ئەم دۆخە بە دەرفەت بـزانن و پـێکەوە هێـرش بکـەنە سەر ئەردەڵان(مردوخ، ١٣٧٩: ٣٥١؛ مستوره، ٢٠٠٥: ١٢١).

لە ساڵی ١٧٥٠و لەم کـات و ساتە هەستیارەدا، زەندییەکـان شکـانی حەسـەنعەلی خان و کـێشە ناوخۆییە کـانی ئەم میرنشینەیان قۆزتەوە و بە لەشـکرێکـی گـەورە، هێرشیان بـردە سەر ئەردەڵان و ئەگـەرچی پیاو مـاقووڵ و ریشسـپیانی نـاوچەکە هەوڵیانـدا، لە ڕێگـای ئـاشتی کـێشەکـان چارەسەر بکـەن، بەڵام سوودی نەبوو و سوپای زەند سەر لە نوێ سنەیان تـاڵانکـرد و بە فەرمـانی خـانی زەنـد، سـەرجەم ئاواییەکـان و تەنـانەت مـزگەوت و قوتابخانەکـانیشـیان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

سوتاند(قاضی، ١٣٨٧: ٥٧؛ گلستانه، ١٣٩١: ١٧٩). به پێی گێرانەوەی مەستوورە خانمی ئەردەڵان "مزگەوت و قوتابخانەکان بوون بە ئاخۆڕی ئەسپەکان"(کوردستانی، ١٩٨٩: ١١٧). دیارە کردەوە کانی کەریم خان و سوپاکەی لە وێرانکردنی شاری سنە و کوشتن و سووتاندنی ئاواییەکان و تالانی سەروەت و سامانی دانیشتوانی ئەم شارە، ڕق و کینەی نێوان ئەم دوو خانەدانەیان قووڵتر کرد(وقایع نگار کردستانی، ١٣٨٤: ١٠٨، سنندجی، ١٣٦٦: ١٤٥) سەرەڕای گشت هەوڵەکانیان، سوپای زەند نەیتوانی حەسەنعەلی خانی میری ئەردەڵان، کە خۆی لە قەڵای سەختی "قەراتورا" حەشاردا بوو، بگرن (مردوخ، ١٣٧٩: ٣٥١).

دەکرێ بگوترێ تێکەڵ بوونی حەسەنعەلی خان لە کێشەی میراتگرانی دەسەڵاتی بابانەکان بە هۆی حەواندنەوەی سلێمان پاشای ڕاکردوو، بە تێچوونی دوا ڕۆژی سیاسی خۆی تەواو بوو و لە ئەنجامدا میرنشینی ئەردەڵان دیسان بوو، بە کاوڵگە و شێوانی بواری ئابووری، جێگەی ماوەی کورتی ئارامی و سەقامگیری وڵاتی گرتەوە. دوای گەڕانەوەی سوپای زەند، حەسەنعەلی خان لە تۆڵەی هێرشی زەندییەکان بە باشی زانی بۆ ڕێک و پێککردنی کاروبار و هەروەها سەلماندنی دەسەڵاتە لاوازەکەی، ڕوو لە ئازادخانی ئەفغان بکات و گوێ ڕایەڵیی خۆی پێ ڕابگەینێت(سنندجی، ١٣٦٦: ١٤٦).

**میرنشینی ئەردەڵان لە سەردەمی فەرمانڕەوایی کەریم خانی زەند (١٧٥١-١٧٧٩):**

سالی ١٧٥١ز لە کاتی هێرشی عەلیموراد خانی بەختیاری بۆ سەر ناوچەی کرماشان و دواتر ئەردەڵان، بە بیانووی گەڕاندنەوەی تاج و تەختی پاشایەتی بۆ شا سولتان حوسێنی دووەم، حەسەنعەلی خان ئەم دەرفەتەی قۆزتەوە و هاوکات ڕووی لە بەرەکانی شەڕ کرد. بۆیە بۆ یەکەم جار سوپای یەکگرتووی میری ئەردەڵان و زەندەکان لە دەشتەکانی "بلیوار" ی کوردستان لە ئەنجامی شەڕێکی سەخت توانیان لەشکری خانی بەختیاری تێک بشکێنن. لە هاوینی هەمان ساڵ ئازادخانی ئەفغان، کە لە ئەسفەهان دەسەڵاتی خۆی جاڕدا بوو، لە وەڵامی چاکەکانی پاشای بابان، حەسەنعەلی خانی لابرد و سەلیم پاشای بە حاکمی نوێی ئەردەڵان دانا. زۆریشی پێ نەچو و حەسەنعەلی خانی کۆنە والی بە فەرمانی سەلیم پاشا لە سنە دوور خرایەوە و پاش حەوت مانگ لە قەڵاچوالان بە شێوەیەکی نهێنی کوژرا (اردلان، ٢٥٣٦: ٤٩؛ سنندجی، ١٣٦٦: ١٤٦، پری، ١٣٨٤: ٢٦٨؛ مردوخ، ١٣٧٩: ٣٥٢).

دوای کوژرانی حەسەنعەلی خان، کەریم خانی زەند دیسان ڕووی لەشکری خۆی لە ئەردەڵان کرد و شاری سنەی پێتەخت سەر لە نوێ تالان کرا. بەردەوامی ئەم دۆخە ناڵەبارە وایکرد، کە خەڵکی ئەردەڵان پشتگیری لە کەریم خانی برای حەسەنعەلی خان بکەن، تا وەک میری نوێ دەست بە کار بێت، بەشکەم دۆخەکە ڕوو لە سەقامگیری و ئارامی بنێت. ماوەی دەسەڵاتی کەریم خان (١٧٥١-١٧٥٢) کە کەمتر لە یەک ساڵی خایاند، جگە لە پەشۆکاوی و ماڵوێرانییەکی پتر، بۆ دانیشتوانی ئەم میرنیشینە، هیچ ئەنجامێکی دیکەی


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەدوای خۆیدا نەهێنا، هە بۆیەش بە گوتەی دانەری "لب التواریخ" : " خۆڵ بە سەری کوردستان و کەریم خانی والی، کە لەم ماوە کەمەی دەسەڵاتیدا، ئاگری خستە ناو ماڵ و گیانی خۆی و دانیشتوانی ئەم میرنشینە داماوە"( اردلان، ٢٥٣٦: ٥٠).

دوای مردنی کەریم خانی ئەردەڵان، بۆشاییەکی گەورە ڕووی لە فەرمانڕەوایەتی ئەم میرنشینە کرد، کە لەو ماوەیەدا پتر بە وێرانەیەک دەچوو، بۆیە دانیشتوانی ئەردەڵان چاوەڕوانی گۆڕانکارییەکی گەورە بوون. زۆری نەبرد خسرەو خانی دووەم (١٧٥٢-١٧٨٣) کە لە تەمەنی بیست ساڵیدا بوو، سەرەڕای نەبوونی هیچ جۆرێ تەجربەیەکی حوکمڕانی، تاکە پالیوراوی بە دەستەوە گرتنی دەسەڵاتی میرنشینی ئەردەڵان بوو (قاضی، ١٣٨٧: ٥٩). ڕێک لەم کات و ساتانەدا کەریم خانی زەندیش لە چاو ڕکابەرانی دیکەی دەسەڵات ڕووبەر و مەودای قەڵەمڕەوەکەی بەرفراوانتر ببوو و لە ژێر ناوی "وەکیل الدولە" لە ئەسفەهانی کۆنە پێتەختی جارانی سەفەو بیەکان فەرمانڕەویی دەکرد. خووڵی یەکەمی حوکمڕانی خسرەو خانی گەنج، کە بە بێ هیچ پشتیوانییەکی دەرەکی جڵەوی دەسەڵاتی لە میرنشینی ئەردەڵان بەدەستەوە گرتبوو، زۆری نەخایاند و بە هۆی دەستێوەردانی بەردەوامی سەلیم پاشای بابان، بۆ ماوەی نزیکەی چوار ساڵ (١٧٥٢-١٧٥٦) بە ناچاری حوکمڕانی ئەردەڵانی ڕادەستی سەلیم پاشا کرد (مەستوورە، ٢٠٠٥: ١٢٨).

لەم کاتانەدا کە وڵاتی ئێرانیش بە دۆخێکی هەستیاردا تێدەپەڕی، میری ئەردەڵان بە مەبەستی گەڕانەوە بۆ سەر تەختی دەسەڵات، بە پلانێکی زیرەکانە و بە سوود وەرگرتن لە ڕکابەرایەتی دێرینی نێوان کەریم خانی زەند و محەممەد حەسەن خانی قاجار، خۆی لە خانی قاجار نزیک کردەوە و بە پاڵپشتی ناوبراو توانی جارێکی دیکە بە دەرپەڕاندنی سەلیم پاشای بابان لە ساڵی ١٧٥٦، جڵەوی فەرمانڕەوایی میرنشینەکەی بەدەستەوە بگرێت (اردلان، ٢٥٣٦: ٦٠). ئەگەرچی لە ماوەی چوار ساڵی حوکمی سەلیم پاشا لە میرنشینی ئەردەڵان، ناوچەکانی ژێر دەسەڵاتی تا ڕادەیەك بووژابوونەوە، بەڵام دواتر لە ژێر گوشاری خەڵکی نارازی و بە فەرمانی محەممەد حەسەن خانی قاجار، لە کار لادرا و خسرەو خانی دووهەم جارێکی دی لە شوێنی کرا بە میری ئەردەڵان (پری، ١٣٨٤: ٢٦٩).

لە لایەکی دیکەوە بە گوێرەی باسکردنی وقایع نگاری کوردستانی دوای یەکلابوونەوەی چارەنووسی حەسەنعەلی خانی کۆنە والی ئەردەڵان، هێشتا ساڵێك بەسەر حوکمی سەلیم پاشا تێنەپەڕی بوو، کە خەڵکی ناوچەکە دژی دەسەڵاتی ناوبراو ڕاپەڕین. سەلیم پاشا، کە بە زەحمەت توانیبووی گیانی خۆی ڕزگار بکا، بۆ ئەوەی سەر لە نوێ دەسەڵات بگرێتەوە دەست، بە باشی زانی بچیتە ژێر سێبەری قاجارەکان (اردلان، ٢٠٠٥: ١٢٨-١٣٠)، بەڵام خانی قاجار (محەممەد حەسەن خان) کە بە وردی چاودێری بارودۆخی میرنشینی ئەردەڵانی دەکرد، بۆ ڕێزگرتن لە دۆستایەتی و پێوەندی لە مێژینەی ئەحمەدخانی کۆنە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

هاوپەیمانی، خسرەو خانی کوڕی ئەحمەد خانی، بە میری ئەردەڵان دانا و ڕەوانەی سنەی کرد (وقایع نگار کردستانی،١٣٦٤: ١٠٩؛ سنندجی، ١٣٦٦: ١٤٧).

بە گوێرەی باسکردنی هەندێ لە مێژوونووسە ناوخۆییەکان، خانی قاجار بە مەبەستی ڕێگەگرتن لە هەر جۆرێ هەڵگەڕانێکی دیکە لە لایەن نەیارانی وەک خانەدانی وەکیلی، عەباباس خانی شاهسەوەنی بە دوو سەد سواری چەکدار، بۆ پشتیوانی کردن لە میری ئەردەڵان بەرەو سنەی بەڕێکرد(مردوخ، ١٣٧٩: ٣٥٤). دیارە خانەدانی وەکیلی، لە بنەماڵە کۆنەکانی نیشتەجێی میرنشینی ئەردەڵان بوون، کە دوای خانەدانی ئەردەڵا نییەکان خاوەنی پێگە و هێزی تایبەت بەخۆیان بوون و بە درێژایی ماوەی بوونیان لە دامودەزگای کارگێڕێ و سیاسیی میرنشینی ئەردەڵاندا، جێگە و پێگەی دیار و ڕۆڵی گرنگ و بەرچاویان لە گۆڕانکارییە سیاسییەکانی ناو دەسەڵاتی میرنشینی ئەردەڵان لە ماوەی سەدەکانی دوازدە و سێزدەی کۆچی لە کوردستاندا هەبووە (بهرامی و مظفری، ١٣٩٠: ٦٥-٦٦). خسرەو خان دوای بەدەستەوەگرتنی دەسەڵات بۆ جاری دووەم، بۆ ئەوەی دۆخی نالەباری سنەی پێتەخت، کە بە هۆی هێرشەکانی زەندییەکان لە لایەک و سەلیم پاشای بابان لە لایەکی دی ڕووی لە خراپی پەشۆکاوی نابوو، لە یەکەم هەنگاودا زۆربەی دانیشتوانی ئەم شارەی بۆ قەڵای حەسەن ئاوا گواستەوە (مردوخ، ١٣٧٩: ٣٥٤، مستوره، ٢٠٠٥: ١٣٢). دیارە ئەم قەڵایە یەکە لەو چوار کۆنە قەڵایانە (زەڵم، پلنگان و مەریوان) بوو، کە بەر لە دروستکردنی شاری سنە و کردنی بە پێتەختی فەرمانڕەواییەکەی، ناوەندی دەسەڵاتی میرانی پێشووتری ئەردەڵانییەکان بوو. لە ساڵی ١٧٥٨ئازاد خانی ئەفغان بە هاندانی سلێمان پاشای بابان و بە بیانووی ئەوەی کەوا، ڕەوندە کۆچەرەکانی سەرسنووری نێوان ئەردەڵان و بابان لە لایەن داروودەستە خسرەو خان ئازار دەدرێن، هێرشی کردە سەر سنە و ئەم شارەی ئابلووقەدا (مستوره، ٢٠٠٥: ١٣٤). دوای چەند شەڕێکی بچووکی بێ ئەنجام، لەشکری ئازاد خان پاش دوازدە ڕۆژ بە بێ هیچ دەسکەوتێکی بەرچاو، وازیان لە ئابلووقەدانی سنە هێنا و بەرەو بارەگاکانی خۆیان کشانەوە(اردلان، ٢٣٥٦: ٦٢).

دوای کوژرانی محەممەد حەسەن خانی قاجار لە ساڵی ١٧٥٨لە شەڕێکی ناوخۆیی لە ناوچەی ئەستەر ئابادی گورگان، خوسرەو خان هەستی بەوە کرد کەوا، کەریم خانی زەند، کە ئیتر تاکە فەرمانڕەوای زۆربەی هەرێم و ناوچەکانی ئێران بوو، بە هۆی هەبوونی پێوەندیی گەرم و گوڕی ناوبراو، لەگەڵ خانی قاجار و خۆبە دوورگرتن لە زەندییە کان، بە توندی لێی ڕەنجاوە و ڕەنگە دیسان بە تەمای ئەوە بێ، کە تۆڵەی لێ بکاتەوە (سنندجی، ١٣٦٦: ١٥١)، بۆیە هەر زوو دەستی کرد بە کۆکردنەوەی سوپا و سەر لە نوێ خۆ ڕێکخستنەوە و نۆژەنکردنەوەی قەڵا سەربازییەکانی ناو قەڵەمڕەوی میرنشینەکەی و هاوکات هەوڵیدا، لە ڕێگەی جێبەجێ کردنی سیاسەتێکی نرم و حەکیمانە بە مەبەستی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پاراستنی دەسەڵاتەکەی، خۆی لە خانی زەند نزیک بکاتەوە. بۆ ئەم مەبەستە، کاتێک لە ساڵی ١٧٥٩هەواڵی گەیشتنی ئۆردووی کەریم خانی "**وەکیل الرعایا**"ی زانی، ئەحمەد خانی کوڕی بە دیارییەکی زۆرەوە نارده لای کەریم خانی زەند و گوێڕایەڵی خۆی پێڕاگەیاند (سنندجی، ١٣٦٦: ١٥٢)، ئەگەرچی وەقایع نگاری کوردستانی پێی وایە کەوا خسرەوخان، دوای هەستکردن بە مەترسی توڵە سەندنەوەی خانی زەند، خۆی چوویتە لای کەریم خان و گوێڕایەڵی خۆی پێ ڕاگەیاندووە (وقایع نگار کردستانی، ١٣٨٤: ١٠٩-١١٠) دواتر خسرەو خانی ئەردەڵان، بۆ ئەوەی خانی زەند لە کردەوەکانی خۆی دڵنیا بکاتەوە، ئەحمەد خانی کوڕی بۆ شیرازی پێتەخت نارد، تا وەك بارمتە لە خزمەت فەرمانڕەوای زەندا بێت(کوردستانی، ١٩٨٩: ١٢٧).

لە ساڵی ١٧٦٢سلێمان پاشای بابان هێرشی کردە سەر ناوچەی ئەردەڵان، بەڵام لە مەریوان لە لایەن سوپای خسرەو خان تێك شکا و ناچار بوو پەنا بۆ بارەگای کەریم خان لە شیراز ببا و هەر لە وێش توانی خانی زەند ڕازی بکا، کە لە شوێنی خسرەو خان ببێ بە والی کوردستان (مردوخ، ١٣٧٩: ٣٥٦؛ پری، ١٣٨٤: ٢٦٩)، تاکۆ بەم شێوەیە میرنشینی ئەردەڵان بە دەسەڵاتی بابانەوە بلکێنێ. شایانی باسکردنە کەوا، کێشە کۆنەکانی نێوان میرنشینی ئەردەڵان و زەندییەکان و پێوەندیی میری ئەردەڵان بە خانەدانی قاجار، کە لە ئەنجامدا بوو بە هۆی بێ بڕوایی خانی زەند بە میری ئەردەڵان، یەکێ لە هۆکارە سەرەکییەکانی سەپاندنی دەسەڵاتی بابانەکان بوو بە سەر میرنشینی ئەردەڵان. سلێمان پاشا کە دەسەڵاتی گرتە دەست، نەك هەر ملی بۆ عوسمانییەکان نەدا، بگرە بۆ سەلماندنی گوێڕایەڵی خۆی بە خانی زەند، هەر زوو عەلی خانی کوڕی بە خێزانەوە وەك بارمتە، بۆ لای کەریم خان نارد. سلێمان پاشا بۆ ماوەی دوو ساڵ بە سەربەخۆیی فەرمانڕەوایەتی بابان و ئەردەڵانی کرد(پری، ١٣٨٤: ٢٧٠؛ موسوی نامی، ١٣٦٨: ٤٧). سلێمان پاشا دوای شەش مانگ لە پەنابردنی بۆ دەرباری زەند، لە لایەن کەریم خانەوە بە سوپایەکی تێکەڵ بە ئەردەڵانییەکان و بابانەکان بەمەبەستی داگیرکردنی شارەزوور، بەرەو ئەم هەرێمە بەڕێکەوت و بە بەزاندن و دەرکردنی ئەحمەد پاشای بابان، کە لەلایەن وەزیری بەغداوە لە شوێنی دانرابوو، دەستی بەسەر هەرێمی شارەزوور داگرت، بەڵام زۆری پێنەچوو حاکمی بەغدا بە مەبەستی تەمبێ کردنی ناوبراو ڕووی لە کوردستانی بابان کرد( مردوخ، ١٣٧٩: ٣٦٧). لە میانەی ئەو شەڕەی کە لە نێوان سلێمان پاشا و سوپای حاکمی بەغدا ڕوویدا، سلێمان پاشا شکا و دەسەڵاتی لە کوردستانی بابان داڕما و زۆری پێنەچوو بە دەستی فەقێ ئیبراهیم ناوێک، کە خەڵکی ئەردەڵان بوو کوژرا (سنندجی، ١٣٦٦: ١٥٣).

بە کوژرانی سلێمان پاشا لە ساڵی ١٧٦٤بە فەرمانی کەریم خان، عەلی خانی کوڕی جێگەی باوکی گرتەو و دەسەڵاتی میرنشینی ئەردەڵانی بە دەستەوە گرت، بەڵام



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەبەر ئەوەی کە لە کارەکەیدا سەرکەوتوو نەبوو و خەڵکی ئەردەڵان لێی نارازی بوون، دوای گەیشتنی وەفدێک لە پیاوماقوولانی ئەردەڵانی بۆ بارەگای کەریم خان و داوای گەڕانەوەی خسرەو خان بۆ سەر دەسەڵاتی میرنشینی ئەردەڵان، کەریم خان ڕازی دەبێ بە مەرجی بە بارمتە هێشتنەوەی ئەحمەد خانی کوڕی لە شیراز، عەلی خانی کوری سلێمان پاشا لە دەسەڵات لابەرێت و دیسان فەرمانی میرایەتی بۆ خسرەو خان واژۆ بکات و ڕەوانەی سنەی پێتەخت بکاتەوە(اردلان، ١٣٨٧: ١٤٥). بەم شیوەیە بە لادانی عەلی خانی کوڕی سلێمان پاشا لە حوکمڕانی ئەردەڵان، بۆ دواجار دەسەڵاتی بابانەکان لە میرنشینی ئەردەڵان نەما و ململانێی دەسەڵات، لە نێوان میرەکانی ئەردەڵان و پاشاکانی بابان زۆری نەخایاند، چوونکە بە گەڕانەوەی خوسرەوخان بۆ سنە میرنشینی ئەردەڵان سەر لە نوێ لە لایەن ئەندامانی ئەم بنەماڵەیە فەرمانڕەوایەتی کرا (ڤاسیلیەڤا، پی. ئی، ١٩٩٧: ٦٥).

گەڕانەوەی خسرەوخانی گەورە، بۆ ئەردەڵان و دانیشتنی لە سەر تەختی حوکمڕانی، بە قسەی مێژوو نوسانی ئەو کات، بە خۆشییەکی گەورە و بە گەرمی پێشوازی لێ کرا (سنندجی، ١٣٦٦: ١٥٢؛ مردوخ، ١٣٧٩: ٣٥٧). دیارە دوای سەقامگیری بارودۆخ و ڕێك و پێك کردنی کاروبارەکان، وڵات ڕووی لە ئاوەدانی و گەشە کردنی ئابووری و سەقامگیری ئاسایش و ئارامی کرد. وا پێدەچێت ئەم جارە تا ١٥سالی دوای مردنی کەریم خان یانی تا سالی ١٧٩٤ز و کۆتایی فەرمانڕەوایەتی زەندەکان پێوەندییەکانی میرنشینی ئەردەڵان لەگەڵ دەسەڵاتی ناوەندی، جگە لە چەند شەڕ و هەڵپرژانێکی بچووک و کاتی، تا ڕادەیەك باش بووبێ و کەمتر تووشی کێشە و گرفتی گەورە بووبن (کوردستانی، ١٩٨٩: ١٦٧).

خسرەو خان لە خووڵی سێیەمی فەرمانرەواییەکەیدا (١٧٦٥-١٧٩٣)، بە شێوەیەکی گشتی هەموو هەوڵی خۆی خستە گەڕ تاکۆ دۆخی ئابووری، سیاسی و کۆمەڵایەتی دانیشتوانی میرنشینەکەی ببوژێنێتەوە و وڵات ئاوەدان بکات و خەڵک لە نەهامەتی و بێ دەرەتانی ڕزگار بکات و وڵاتیش لە شەڕ و ئاژاوە و دووبەرەکی بەدوور بگرێت، تاکۆ دانیشتوانی میرنشینەکە، لە سێبەری ئاشتی و ئارامی ژیانێکی ئاسوودە بەسەر ببەن. بۆ ئەم مەبەستە میری ئەردەڵان داوای لە سەرجەم دانیشتوانی قەڵەمڕەوی ژێر دەسەڵاتی خۆی کرد تاکۆ هاوکاری یەک بن لە دووبارە بنیاتنانەوە و سەر لە نوێ ئاوەدانکردنەوەی وڵات و نۆژەنکردنەوەی خراپی و وێرانییەکانی ڕابردوو و گەڕانەوەی ماڵباتە کۆچێنراوەکان، کە لە ساڵانی دەسەڵاتی بابانەکان بە زۆری لە نیشتیمانی خۆیان دوور خرابوونەوە. لە ئەنجامی ئەم داواکارییە ژمارەیەکی زۆر لە بنەماڵە ناودار و زەنگینەکانی ئەردەڵان، سەر لە نوێ گەڕانەوە بۆ سەر جێگە و پێگەی خۆیان و بە سەروەت و سامانی خۆیان یارمەتیدەری خسرەو خان بوون لە دووبارە گەشاندنەوەی وڵات. خسرەو خان لە درێژەی کارەکانیدا، قەڵای "**دار الایالە**"ی نۆژەن کردەوە، کە دواتر ناوی تەپۆڵەی لێ نرا، کە گەرماوێک و مزگەوتێک



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

و چوار باخێکی جوان و ڕازاوەی لە خۆ دەگرت. هەروەها دەستیکرد بە دروستکردنی کۆشکێکی گەورە و ناوازە بە ناوی خسرەو ئاوا، لە ناوەندی شاری سنە، کە دواتر بوو بە ناوەندی ڕایکردنی کاروباروکانی میری (سنندجی، ١٣٦٦: ١٥٣؛ وقایع نگار کردستانی، ١٣٨٤: ١١١).

بە گوێرەی باسکردنی مەستوورە خانمی ئەردەڵان، خسرەو خانی والی بە درێژایی دوازدە ساڵ، لە ماوەی ساڵانی (١٧٦٥-١٧٧٧) سەرجەم هێز و توانای خۆی خستە گەڕ بۆ سەپاندنی دادپەروەری و باشترکردنی دۆخی ژیانی دانیشتوانی میرنشینەکەی، تاکۆ لەو پەڕی ئاسوودەیی و تەبایی لە ئاشتییەکی سەقامگیر و بێ خەوش دا بژین (مستوره، ٢٠٠٥: ١٤٠). دیارە بە هۆی ئەم کار و کردەوانەی والی و خۆ بەدوورگرتن لە هەر جۆرێ هەڵسوکەوتی ناشیاو و خۆبەگەورە زانین، دانیشتوانی ئەردەڵان نازناوی " **خان دەروێش**" یان پێ دابوو (بابانی، ١٣٧٧: ٥١). ئەگەرچی ئەو ئارامی و ئاسایشەی کە لە سێبەری سیاسەتە چاکەکانی والی هاتبووە ئاراوە زۆری نەخایاند و بە هۆی کێشەکانی ئێران و عوسمانی سەر لە نوێ گۆڕانی بەسەرداهات و ئاڵۆزییەکان جێگەیان گرتەوە.

ساڵی ١٧٧٢کاتێک محەممەد پاشای میری بابان لە بەر کێشە ناوخۆییەکانی بنەماڵەکەیان و لە تۆڵەی دەستێوەردانی عومەر پاشای حاکمی بەغدا لە کاروباری میرنشینەکەی، پەنای بردە بەر کەریم خانی زەند و لە شیرازی پایتەخت ئاکنجی بوو تاکۆ لە کاتی پێویست پشتگیریی لێ بکات بۆ ئەوەی بگەڕێتەوە سەر تەختی دەسەڵاتەکەی، خانی زەندیش ئەم دەرفەتەی قۆستەوە و بە تەیارکردنی سوپایەک بە سەرکردایەتی عەلیموراد خانی زەند بە مەبەستی داگیرکردنی شارەزوور، لە ساڵی ١٧٧٣هانی محەممەد پاشای بابانی دا، کە جارێکی دیکە جلەوی دەسەڵاتی میرنشینی بابان بە دەستەوە بگرێت (قاضی، ١٣٨٧: ٦٢). ئەگەرچی بە گوێرەی باسکردنی نووسەری "**تاریخی گیتی گوشا**" سوپای هاوبەشی کوردانی گەرووس و سایین قەڵا و ئەنگۆران بە سەرکردایەتی عەلیموراد خانی زەند لە شەڕی دژ بە کاربەدەستانی دەوڵەتی عوسمانی و هاندانی محەممەد پاشای بابان، لە سەرەتادا سەرکەوتنیان بەدەست هێناوە بەڵام، دواتر بە هۆی بەدیلگرتنی عەلیموردا خانی زەند و پەرتەوازە بوونی سوپاکەی، کەریم خان ناچار دەبێ جارێکی دی نەزەرعەلی خانی زەند بە سوپایەکی تازە بە هانای پاشای هەڵگەڕاوی بابان بچێت(نامی، ١٣٦٣: ٦٧-٦٨).

واپێدەچێت ئەگەری بەردەوامبوونی خراپی پێوەندییەکانی نێوان زەندییەکان و میرنشینی ئەردەڵان بگەڕێتەوە بۆ پشتگیری دەسەڵاتی ناوەندی (زەندەکان) لە بابانەکان، کە ڕکابەری سەرەکی بنەماڵەی ئەردەڵان بوون (بابانی، ١٣٦٦: ٥٣) دیارە مەبەستی زەندییەکانیش لەم سیاسەتە، لاوازکردنی دەسەڵاتی عوسمانییەکان بوو لە کوردستانی ژێر دەسەڵاتی بابانەکاندا. دوای ئەوەی سوپای زەند توانی لە ٦نیسانی ١٧٧٦ز شاری گرینگ و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ستراتیژیکی بەسرا داگیر بکات، دەوڵەتی عوسمانی دەیویست بەرەیەکی جەنگی لە کوردستاندا بکاتەوە بۆ ئەوەی ئێران ناچار بکات هێزەکانی خۆی لە بەسرا بکێشێتەوە و سەرقاڵی کێشەکانی کوردستان بن تا ئەرکی ئازادکردنی بەسرا ئاسانتر بێ. بەم شێوەیە فەرمان بۆ حەسەن پاشای والی شارەزوور دەرچوو تا بچێتە بەرەی کوردستان (غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٩٥).

بە هۆی ئاماژەکردنی نووسەری کتێبی دانسقەی "**گولشەنی موراد**" زۆری پێناچێت، کە محەممەد پاشای بابان، سەرەڕای هەموو چاکەکانی کەریم خان و پشتگیرییە سەربازییە بەردەوامەکانی بۆ ئەوەی، کە جارێکی دیکە جڵەوی دەسەڵات لە بابان بگرێتە دەست، کاتێک لە لایەن عومەر پاشای حاکمی بەغدا، لە شوێنی ئەحمەد پاشای برای دەکرێتە حاکمی قەڵاچوڵان و ئەحمەد پاشای برای دەبەزێنێ و ئەویش بە ناچاری پەنا دەباتە بەر خسرەو خانی والی ئەردەڵان، محەممەد پاشا بە سوپایەکی دوازدە هەزار کەسی لە بەهاری ساڵی ١٧٧٧هێرش دەکاتە سەر میرنشینی ئەردەڵان (غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٣٦٥؛ قاضی، ١٣٨٧: ٦٤-٦٥؛ مستورە ، ٢٠٠٥: ١٤١). دیارە محەممە پاشای بابان، بە مەبەستی مسۆگەرکردنی پشتگیری والی بەغدا بەڵێنی پێدابوو، کە ئەگەر بێتو لە ڕووی سەربازییەوە پشتگیری بکرێ، ئەردەڵانی بۆ داگیر دەکات، بۆیە والیش لەشکرێکی گەورەی بە هانای دەنێریت و پێکەوە ڕوو لە ناوچەی ئەردەڵان دەکەن و هەر ئەوەندەی سوپای هاوبەشیان، دەگاتە مەریوان و بانە، دەست بە کوشتار و تاڵان و برۆییەکی زۆر دەکەن (نورس، ١٩٧٩: ٢٧٧-٢٧٨).

لەم کات و ساتە هەستیارەدا، کە خسرەو خانی والی و میرنشینەکەی لە ناکاوەوە، بە هۆی یەکێ لە هاوپەیمانە کۆنەکانی کەریم خان، تووشی هێرشێکی بەربڵاو دەبن، بە مەبەستی ڕێگەگرتن لەم هێرشە بەرفراوانە و بەرگریکردن لە قەڵەمڕەوی میرنشینەکەی، دوای ئاگادارکردنەوەی کەریم خان، بە سەرکردایەتی سوپایەک ڕوو لە بەرەکانی شەڕ دەکەن. هەر دوو سوپا لە ناوچەی "**سەترەنجان**"ی مەریوان پێکداهەڵپرژان و لە ئەنجامدا سوپای ئەردەڵان تووشی شکستێکی سەخت هات و زیانێکی زۆری لێ کەوت و ژمارەیەکی زۆریشیان لێ کوژران و ژمارەیەکیش بەدیل گیران، بۆیە بەناچاری بەرەو سنە پاشەکشەیان کرد(کوردستانی، ١٩٨٩: ١٦٨؛ سنندجی، ١٣٦٦: ١٥٤؛ مردوخ، ١٣٧٩: ٣٥٨-٣٥٩؛ غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٣٦٦). بڵاوبوو نەوەی هەواڵی هێرشی سوپای هاوبەشی محەممەد پاشای بابان و والی بەغدا بۆ سەر میرنشینی ئەردەڵان و شکانی سوپای والی ئەردەڵان، وایکرد کەریم خانی زەند بە مەبەستی تەمبێکردن و تۆڵە سەندنەوە لە محەممەد پاشای یاخی، سوپایەکی گەورە بە سەرکردایەتی کەلبعەلی خانی زەند و زۆلفەقار خانی حاکمی خەمسە، بەرەو مەیدانی شەڕ بەرێ بکات. هەر ئەوەندەی هەواڵی بەڕێکەوتنی سوپای زەند گەیشتە ئۆردووی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پاشای بابان، ئەویش عومەر پاشای حاکمی بەغدای تێگەیاند و زۆری پێنەچوو، بە فەرمانی والی بەغدا لەشکرێکی ٤٢ هەزار کەسی بۆ پشتیوانی محەممەد پاشای بابان خۆی گەیاندە بەرەکانی شەڕ(غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٣٦٦-٣٦٧؛ قاضی، ١٣٨٧: ٦٦، مستوره، ٢٠٠٥: ١٤٤).

سوپای یەکگرتووی زەندییەکان لە یەکەم هەنگاودا، توانیان هێرشی سوپای بابانەکان و والی بەغدا تێکبشکێنن و هێزەکانیان لە ناوچەکانی سەقز و بانە بیبەزێنن و بەرەو سنوورەکان ڕامالن. بە سەرکەوتنی سوپای زەند، لە هەنگاوی دووەمدا والی ئەردەڵان و سوپاکەی توانیان سوپای هاوبەشی والی بەغدا و بابانەکان لە شارەزووریش دەر بکەن. لە لایەکی دیکەوە سوپای زەند هەتا کەرکووکیش نەوەستان و تەنانەت دوای دانانی ئەحمەد پاشا بە حاکمی قەڵاچۆلان، بە فەرمانی کەریم خان بەرەو سنووری قەڵەمڕەوی خۆیان گەڕانەوە ( غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٣٦٨؛ قاضی ١٣٨٧: ٦٦). خسرەو خانی والی دوای سەرکەوتن لەم شەڕەدا، ژمارەیەکی زۆر لە دیلەکان و بڕێک لە خانەدانە زەنگینەکانی بابانی، لە تۆڵەی کردەوە کۆنەکانی سلێمان پاشا و محەممەد پاشای بابان، بەرەو کوردستانی ئەردەڵان گواستەوە (قاضی، ١٣٨٧: ٦٨).

**میرنشینی ئەردەڵان لە سەردەمی میراتگرانی کەریم خانی زەند:**

بە مردنی کەریم خانی زەند لە سالی ١٧٧٩ و ئەو زۆرانبازییەی لە لایەن میراتگرانی فەرمانڕەوایی بۆ بە دەستەوەگرتنی دەسەڵات بە دوای خۆیدا هێنا، بۆ ماوەی نزیکەی ١٥ سال درێژەی کێشا و بووە هۆی ئەوەی هێزەکان بە شێوەیەکی تر دابمەزرێنەوە. کاتێک زەندییەکان لە ناوخۆیان شەڕیان بوو و دواتریش بە ناچاری ڕووبەڕووی هێرشەکانی لێکدانەبڕاوی قاجارەکان بوون، خسرەو خان ئەم دەرفەتەی بە چاکی قۆزتەوە و دەسەڵاتی خۆی باش قایمکرد. میری ئەردەڵان بە سوود وەرگرتن لە ناکۆکی نێوان هەردوو بەرەی دژبەیەك **(زەندییەکان و قاجارەکان)** و هەروەها ئەنجامدانی کۆمەڵێ چالاکی سەربازی، بە پێی بەرژەوەندییەکانی خۆی لەو ڕەوشە سیاسییە ئالۆزەی دوای مردنی کەریم خان، توانی بە کردەوە سەربەخۆیی بە دەست بێنیت (کوردستانی، ١٩٨٩: ١٦٩) دەکرێ بگوترێ میری ئەردەڵان بەشدارییەکی چالاکانەی کرد لەو زۆرانبازییەی، کە فەرمانڕەواکانی ئێرانی دەیان گرتەبەر، بەڵام لە هەمان کاتدا هەوڵی ئەوەشی دەدا سیاسەتی تایبەتی خۆی هەبێ، بۆیە بە کردەوە سەلماندی، کە دەتوانێ بە سەربەخۆیی فەرمانڕەوایی میرنشینی ئەردەڵان بکات و لە تەنگوچەڵەمەکانی بەردەمی بپارێزێت (ڤاسیلیەڤا، ١٩٩٧: ٦٩).

بە هۆی سەرهەڵدان و تەشەنەکردنی، کێشە لە بن نەهاتووەکانی میراتگرانی کەریم خان، لە لایەک و هەوڵ و تێکۆشانی ڕکابەرانی دیکەی تاج و تەختی پاشایەتی ئێران لە لایەکی دیکە، دوای بڵاوبوونەوەی هەواڵی مردنی خانی زەند، ئاسایش و ئارامی


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وڵات نەما و زۆربەی هەرە زۆری ناوچە و هەرێمەکانی ئێرانی ئەوکات تووشی شڵەژاوی و کوشتاری هەرەمەکی و تاڵان و فەرهوودکردنی بێسنوور بوون. گۆڕانکارییە ناوخۆییەکانی ئەردەڵان و ڕووبەڕوو بوونەوەی گەورە پیاوانی ڕکابەری خسرەو خان بە پیلانی محەمەد ڕەشید بەگی وەکیل، تای تەرازووی هێزەکانی ناو میرنشینی ئەردەڵانی لاسەنگ کرد و زۆری نەبرد عەلیموراد خانی زەندیان بە لابردنی والی ئەردەڵان هاندا(سنندجی، ١٣٦٦: ١٥٥؛ قاضی، ١٣٨٧: ٧٠-٧١).

بە باوەڕی ڕۆژهەڵاتناس و کوردناسی ناوداری ڕووس خاتوو "**یڤگینینا ئیلینچنا ڤاسیلیەڤا**" دیارە پەرەسەندنی هێز و سەربەخۆیی خسرەو خان، ببووە مایەی تووڕەبوونی ڕکابەرەکانی کورد و غەیرە کورد، بۆیە بە بەردەوامی هەوڵیان دەدا خسرەو خان بە یەکجاری لە سەر کار لابەرن، لە وانە بنەماڵەی "**وەکیلەکان**"[٦] کە لە مێژ بوو دژی دەسەڵاتی خسرەو خان پیلانگێڕییان دەکرد. دیارە پیلانی ناحەزان کاریگەری هەبوو لە سەر بڕیاری عەلیموراد خانی زەند، بۆ وەلانانی خسرەو خان و دانانی "**کەهزادخانی ئەردەڵان**" لە شوێنی و ڕاگرتنی خسرەو خان لە ئیسفەهان لە سەرەتای سالی ١٧٨٠ دا، بۆ ماوەیەکی کورت. هەرچەند زۆری پێ نەچوو سوپای جەعفەرخانی زەند دوای تێکشکاندنی لەشکری عەلیموراد خان، شاری ئیسفەهانی داگیر کرد و سەر لە نوێ خسرەو خان توانی جڵەوی دەسەڵاتداری میرنشینی ئەردەڵان وەك جاران بگرێتە دەست( ڤاسیلیەڤا، ١٩٩٧: ٦٩-٧٠).

واپێدەچێت کە خسرەو خانی والی لە دوای مردنی کەریم خانی و شلەژانی دۆخی ناوخۆی ئێران، هەموو هەوڵی خۆی خستۆتە گەڕ، بۆ ئەوەی سەربەخۆیی میرنشینەکەی لە بەرامبەر هەڕەشەی میراتگرانی خانەدانی زەند و چاوتێبڕینی پاشایان بابان لە قەڵەمڕەوی ئەردەڵانییەکان بپارێزێت، چونکە لە ساڵی ١٧٨٠لە یەکێ لە ڕاپۆرتە مێژووییەکاندا ئاماژە بەوە کراوە، کەوا خسرەو خانی والی و محەممەد خانی کوڕی ئیسماعیل خانی فەیلی والی لوڕستان، لە کاتێ بە ڕێکەوتنی عەلیموراد خانی زەند (١٧٨٢-١٧٨٥) لە ئەسفەهان هاوڕێتییان نەکردووە، ئەگەرچی والی لوڕستان دواتر بە ناردنی دیاریی و خەڵاتێکی زۆر و پێشکەشکردنی سەدان ئەسب و هەزار سەر مەڕ، کەوتە بەر سیلەی لێبوردنی خانی زەند، بەڵام بێدەنگی و بێهەڵوێستی خسرەو خانی والی لە مەڕ دڵدانەوەی عەلیموراد خان وایکرد تاکۆ ناوبراو، بە مەبەستی تەمبێکردنی والی ئەردەڵان، هێرش بکاتە سەر میرنشینەکەی، بەڵام ڕووداوەکانی دواتر، کە لە هەمەدان و ئەسفەهان سەریان هەڵدا، پلانی خانی زەندیان بە جارێک لە بار برد( غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٥٤٣-٥٤٤).

دوای ماوەیەک عەلیموراد خان بە مەبەستی هێشتنەوەی پێوەندییەکانی لە گەڵ والی ئەردەڵان، فەرمانیدا، ڕەزا قوڵی خانی برای والی ئەردەڵان، کە پێشتر لە لایەن محەممەد سادق خانی زەندەوە دەستبەسەر کرابوو ئازاد بکرێت و بە کۆمەڵێک دیاری و خەڵاتی

شایستە بۆ خسرەو خان، بەرەو ئەردەڵان بەرێی بکرێت. بەڵام سەرەڕای ئەم هەڵوێستە باشەی خانی زەند و بە سەلامەت گەیشتنی برای والی بۆ سنە، دیسان خسرەو خان هیچ گۆڕانکارییەکی لە پێوەندیکردن بە خانی زەند لە هەڵسوکەوتەکانیدا نەهاتە ئاراوە، بۆیە عەلیموراد خان بڕیاریدا میری ئەردەڵان تەمبێ بکات. بۆ ئەم مەبەستە بە فەرمانی خانی زەند، لە ساڵی ١٧٨٢سوپایەک بە سەرکردایەتی محەممەد جەعفەر خانی زەند، بە مەبەستی بەجێ گەیاندنی فەرمانی گەورە خانی زەند و هەروەها بەرپرچدانەوەی هەڕەشەکانی عەبدوڵلا پاشای بابان لە ناوچە سنوورییەکان، بەرەو میرنشینی ئەردەڵان بەڕێ کەوت (غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٦٥٠).

هەر ئەوەندەی کە سوپای زەند، لە هەمەدان نزیک بوونەوە، عەبدوڵلا پاشای بابان و هێزەکەی بەرەو قەڵاچولان پاشەکشەیان کرد. لە لایەکی دیکەوە ڕەزا قوڵی خانیش کە بەینی لەگەڵ خسرەو خانی برای باش نەبوو، بە پاڵپشتی ژمارەیەک لە کوردانی ئەردەڵان بەتەمای دەستبەسەرکردنی خسرەو خانی والی بوو، بەڵام بەر لە وەی کە دەستییان پێ بگات، والی لە گەڵ ژمارەیەک لە دەست و پێوەندەکانی بەرەو ئەسفەهان هەڵهات و دواتریش بە ناوبژیوانی پیاوماقولان و ریشسپیانی زەند و ئەردەڵان پاش داوای لێبوردن کردن لە عەلیموردا خان، کەوتە بەر سیلەی کەرمی خانی زەند. خسرەو خانی والی بۆ ماوەی شەش مانگ بێ ئەوەی هیچ جورێ فەرمانێکی بەسەردا بسەپێنرێت، دوور لە تەشریفاتی پێویستی والیگەری، لە بارەگای عەلیموراد خانی زەند مایەوە (غفاری کاشانی، ٦٥١-٦٥٢).

بە گوێرەی باسکردنی بابا مەردۆخی کوردستانی لە کات و ساتە هەستیارەکاندا، چ لە لایەن خسرەو خان و چە لە لایەن بابانەکانەوە هەوڵی ئەوە دراوە تاکو پێوەندییەکانیان باشتر بکەن، بۆ نمونە کاتێک خسرەو خان بڕیاریدا بەرەو ئەسفەهان هەڵبێت، فەرمانی بە کەس و خزمەکانی خۆیدابوو، کە لە کاتی هەستکردن بە مەترسی خۆیان لای بابانەکان بشارنەوە. گوایە کاربەدەستە سیاسی و سەربازییەکانی ئەردەڵان و بابان لە کاتی تەنگە تاویدا هەستییان بە دوژمنە هاوبەشەکانیان دەکرد، کە سەدان ساڵ بوو ئەمانیان لێ تیغدابوون، بۆ ئەوەی ملکەچیان بکەن و بۆ بەرژەوەندییە تایبەتییەکانیان سوود لە هێزی چەکدارییان وەرگرن(مردوخ، ١٣٧٩: ٣٦٢).

ئەگەرچی دەستبەسەری لە ئەسفەهان و دوور کەوتنەوە لە دەسەڵات بۆ خسرەو خانی والی، زۆری نەخایاند و جارێکی دیکە جڵەوی فەرمانڕەوایی بەدەستەوە گرت، بەڵام ئەم هەڵسوکەوتەی عەلیموراد خان وایکرد کە جارێکی دی پێوەندییەکانی نێوان خانەدانی زەند و ئەردەڵانییەکان ڕوو لە کزی و ساردی بکات. دواتریش پێکداهەڵپڕژانی خسرەو خانی والی و ئەڵلاقولی خانی زەنگەنەی بەگلەربەگی کرماشان و هەروەها دەست بە سەر داگرتنی هەندێ لە ناوچە گرنگەکانی هەمەدان و ویلایەتی کرماشان و نافەرمانی کردن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەرامبەر بە ویست و داواکارییەکانی زەندییەکان، کە فەرمانڕەوای فەرمی ئێران بوون، وایکرد کە جەعفەر خانی زەند( ١٧٨٥-١٧٨٩)یش هەر ئەوەندەی کە جڵەوی دەسەڵاتی بەدەستەوە گرت دژایەتی خسرەو خانی کرد و بڕیاری دا، کە لە دەسەڵات دووری بخاتەوە. کاتێک خسرەو خانی والی هەستی بە پلانی جەعفەر خانی زەند کرد، توانی بە یارمەتی وەرگرتن لە کوردان گەرووس و خەمسە و کۆکردنەوەی سوپا و سەرلەنوێ خۆ ڕێکخستنەوە، بە سوپایەکی توکمە لە پشتیوانی کردنی ئیسماعیل خانی برازای کەریم خانی زەند، کە حاکمی هەمەدانیش بوو، بۆ دەستەمۆکردنی دەسەڵاتی ناوەندی لە گەڵ جەعفەر خان شەڕ بکات و شکستی پێ بێنێ و بیبەزێنێت (شیرازی، ١٣٦٥: ٥٥-٥٧؛ غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٧٠٩-٧١٢؛ ملکم، ١٣٨٣: ٤٧٠-٤٧١).

بەم شیوەیە تا کۆتایی ژیانی سیاسی جەعفەرخانی زەند لە ساڵی ١٧٨٩، لەشکرکێشی جەعفەرخان بۆ سەر قەڵەمڕەوی خسرەو خان و نافەرمانی و هەڵگەڕان و بەرپرچدانەوەکانی والی ئەردەڵان بە سەر ویست و ئامانجەکانی خانی زەند، وێڕای هەموو کێشە و گرفتە ناوخۆییەکانی ناو میرنشینی ئەردەڵان بەردەوام بوو و خسرەو خانی والی سەرەڕای ئەو هەمو تەنگەژە و گرفتەکان، توانی درێژە بە دەسەڵاتی خۆی بدات و لە بەرامبەر هێرشی دراوسێکانی وەک ئەڵلاقوڵی خانی زەنگەنەش، بەرگری لە قەڵەمڕەوی دەسەڵاتی خۆی بکات و بە چاکی بیانپارێزێت(بابانی، ١٣٧٧: ٥٢؛ غفاری کاشانی، ١٣٦٩: ٧٠١-٧٠٢). بە گوێرەی باسکردنی ڤاسیلیەڤا، هەندێ لە سەرچاوە مێژووییە ناوخۆییەکان بە ڕاشکاوی باسی ئەو سەرکەوتنە مەزنانە دەکەن کە خسرەو خانی والی، لە شەڕەکانیدا دژ بە نەیارانی ناوخۆیی وەدەستی هێناون، بە تایبەتی دەست بە سەرداگرتنی ژمارە یەک لە ناوچەکانی ویلایەتی کرماشان لە وانە: تویسرکان، سەعد ئاباد، سونقور و دیناوەر لە ساڵی١٧٨٤ و هەروەها دەستبەسەرداگرتنی ناوچە بە پیتەکانی بروجێرد، بەهار، کەزاز، فەرەحان، ملایر، گولپایگان و چەندین ناوچەی گرنگی دی لە ویلایەتی لوڕستان، دوای تێکشکانی سوپای زەند لە سالی ١٧٨٥ دا (ڤاسیلیەڤا ، ١٩٩٧: ٧١).

دیارە خسرەو خانی والی هەوڵی داوە بە باشترین شێوە سوود لە ئاڵۆزی و پەشۆکاوی دۆخی ناڵەباری ئێرانی دوای مردنی کەریم خانی زەند، سەرەڕای پاراستنی سنووری قەڵەمڕەوی میرنشینەکەی فراوانتریش بکات (اردلان، ٢٣٥٦: ٧٥). ئەم سەرکەوتنانە بایەخی سیاسی گرینگییان هەبوو، چونکە ئەڵلاقوڵی خانی زەنگەنەی حاکمی کرماشان، یەکێك بوو لە داواکارانی تەختی پاشایەتی وڵاتی ئێران و زەندییەکانیش سەرەڕای لێك ترازان و پێکداهەڵپرژانی دۆخی ناوخۆییان، هێشتا بە دەسەڵاتداری فەرمی ئێران دەناسران (مردوخ، ١٣٧٩: ٣٦٨-٣٦٩). زانیارییەکانی مێژوونووسانی ئەردەڵانی سەبارەت بە سەرکەوتنە جەنگییەکانی خسرەو خان لە لایەن مێژوونووسانی کۆشکی ئێرانیشەوە بە تایبەتی


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

محەممەد هاشم ئاسفی ئەسفەهانی، نووسەری رستم التواریخ، پشتگیری دەکرێن و دانی پێدا دەنرێت، کە خسرەو خان و ئەڵلاقوڵی خانی زەنگەنە هەردووکیان داواکاری تەختی پاشایەتی ئێران بوون (سلطانی، ١٣٨١: ج٢و٣/ ٦٤١) هەر وەکوو ماهشەرەف خانمیش هەمان بۆچونی هەیە (کوردستانی، ١٩٨٩: ١٣٧).

دیاره دوای فراوانبوونی مەودای دەسەڵاتی میرنشینی ئەردەڵان، راوێژکارانی کۆشکی میری بە پەسەند یان نەزانیوە، کە خسرەو خان ئەم ئاواتە جێبەجێ بکات، بۆیە دوای ململانێیەکی زۆر، میر دەست دەکا بە ئازاد کردنی دیلەکان و بە نووسینی نامەیەکی بەندەیی و پێشکەشکردنی دەسکەوتی شەڕەکان بۆ خانی قاجار (ملکم، ١٣٨٣: ٤٩٦)، گوێڕایەڵی و ملکەچبوونی خۆی بەرامبەر بە دەسەڵاتی تازە پێگرتوویان رادەگەینێ و بەرەو شاری سنە دەگەرێتەوە، بەم شێوەیە گەورەترین هەڵی زێڕین بۆ گرتنی پێتەختی ئێران لە دەست دەچێت (ڤاسیلیەڤا، ١٩٩٧: ٧١). دیارە ئاغا محەممەد خانی قاجار(١٧٩٤-١٧٩٧) لەم کات و ساتە هەستیارانەدا، بەرامبەر بە خسرەو خان هەست بە مەترسییەکی زۆری دەکرد، بۆیە لە سالی ١٧٨٧بە مەبەستی داگیرکردنی میرنشینی ئەردەڵان، بە سوپایەکی گەورە و گران رووی لە شاری هەمەدان کرد، بەڵام دواتر ویستی بە بانگە شەیەکی شەکراوی خسرەو خان میوان بکات و لە ناوی بەرێت. خسرەو خانیش کە پێشتر لە مەبەستی خانی قاجار تێگەیشتبوو، دوای دەرچوون لە سنە، چوونی خۆی بۆ ئەوێ دووا خست و بە ناردنی ڕاسپاردەیەکی ژیرانە داوای لێبوردنی لە خانی قاجار کرد (مردوخ، ١٣٧٩: ٣٦٩-٣٧٠). ئەمەش بێگومان نیشان دەدا کە پێوەندی نێوان خانی قاجار و میری ئەردەڵان هەرگیز ئاشتییانە نەبووە، سەرەرای ئەمەش سەفەری میری ئەردەڵان بۆ تاران دوای چەند سالێك ئەنجامدرا و ئاغا محەممەد خانیش دوای پێشوازی کردن لە والی، هەر ئەوەندەی دەرفەتی بۆ هەڵکەوت، پیلانی لە ناوبردنی و کوشتنی والی جێبەجێ کرا و خسرەوخان بە هۆی خواردنێکی ژەهراوی بە خراپی نەخۆش کەوت و دوای چەند ساڵ مانەوە بە دیلی، سەرئەنجام میری ئەردەڵان لە سالی ١٧٩٣بە فەرمانی خانی قاجار دەکوژرێت و لەناو دەچێت( کوردستانی، ١٩٨٩: ١٤٠).

کەسایەتی خسرەوخان، کە بە گەورە ناویان بردووە، وێڕای گشت هەڵبەز و دابەزەکانی ماوەی حوکمرانییەکەی جێگەی سەرەنج و بایەخی زۆرە. ئەمە لە هەموو شت و لە هەر کردەوەیەکیدا، کە مێژوونوو سانی کۆشك تۆماریان کردووە یا خود شاعیران پێیان هەڵگوتووە هەوڵیداوە لە "شا" بچێت. بۆ نمونە، لە نووسینەکانی ماهشەرەف خانمدا ئاوا میری ئەردەڵان دەبینین، کە خۆیان ویستوویانە وابێت: سەرکردەی هەموو کوردان، سەنتەری دونیا، شاهەنشا یان شای شایان(ڤاسیلیەڤا، ١٩٩٧: ٧٢).

دوای مردنی خسرەوخان و بە هاتنی لوتفعەلی خانی (١٧٩٣-١٧٩٤) مامی بۆ سەر تەختی فەرمانڕە وایی، وردە وردە ملکەچبوونی والیانی ئەردەڵان لە ئاست سیاسەتی شایانی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

قاجـار، له لاپەرەكـانی مێـژوودا بەدیـار دەكەوێـت. شـایانی قاجـاریش دوای ئەوەی، بە وردی شارەزای تایبەتمەندیی کەسایەتی میرانی ئەم خانەدانە و بایەخی لە ڕادەبەدەری قەڵەمڕەوی میرنشینەکەیان دەبن، بە تێپەڕبوونی کات لە ڕێگەی بەکارهێنانی سیاسەتی جۆراوجۆر، بۆ ڕامـاڵینی دەسـەڵات و دوورخسـتنەوی یەکجارەکیـان هەمـوو هەوڵێـک دەخەنە گەڕ، تـا لە کۆتاییدا بە سوود وەرگرتن لە لاوازی و بێ دەرەتانی کەسایەتییە لاوازەکانی ئەم خانەدانە، لە سـالی ١٨٦٧ ناسـرەددین شـای قاجـار بە دانـانی مـامی خـۆی بە حـاکمی کوردسـتان، بـۆ هەتاهەتـایە کۆتـایی بە دەسـەڵاتی ئەم بنەمـاڵەیە دێنێـت (کوردسـتانی، ١٩٨٩: ١٢٦-١٣٠؛ ڤاسیلیەڤا، ١٩٩٧: ٨٨؛ بابانی، ١٣٦٦: ٩٤).

**کۆبەند:**

- گۆڕانکارییە ناوخۆییەکانی ئێرانی دوای مردنی نادرشای ئەفشار تا کۆتایی دەسەڵاتی خانەدانی زەندییەکان، بـۆ میرنشـینی ئەردەڵان هەڵگری کـۆمەڵێ ڕووداوی گرنگـی مێژوویـی، سیاسـی، ئـابووری و کـۆمەڵایەتی بـوو. لەشکرکێشـییە بەردەوامەکـانی ڕکـابەرانی تـاج و تەختـی دەسـەڵاتی ناوەنـدی بـۆ سـەر ئەم میرنشـینە دەوڵەمەنـدە، بە مەبەسـتی گلّدانەوەی بـاج و پیتـاکی پتـر، بـۆ دابینکردنـی تێچـووی شـەڕەکانیان، بە ئاراستەی لاوازکردن و دەستەمۆکردنی فەرمانڕەوایانی ئەم هەرێمە دەوڵەمەندە هەنگاوی نا.
- سەرەتای دروستبوونی کێشە و تێکچوونی پێوەندییەکانی نێوان میرنشینی ئەردەڵان و خانەدانی زەند، بەر لە بەدەستەوە گرتنی دەسەڵاتی کەریم خان لە ئێران، بۆ ساڵی ١٧٤٩ دەگەڕێتەوە. کاتێک حەسەنعەلی خانی ئەردەڵان دژ بە خانی زەند، بە هانـای مێهرعەلـی خـانی تەکەلـووی حـاکمی هەمەدان دەچێـت و لە میـانەی شـەڕێکی سـەختدا، دوای کوشـتنی ژمـارە یەک لە نـاودارانی زەنـدییەکان، هاوکـات مهرعەلـی خـانی تەکەلـووی کۆنە دوژمنـی خـانی زەنـدیش لە تەنـگەژە و ئـابلووقەی زەنـدییەکان ڕزگـار دەکـات و دواتـریش بە تـاڵانکردنی ئۆردووی کەریـم خـان و دوور خسـتنەوە و کـۆچپێکردنی زۆرە ملێیـانەی چوارسـەد بنەمـاڵەی لەک، لە خـانەدانی زەنـدییەکان دەبێـتە هـۆی بنیاتنـانی دوژمنـایەتییەکی قـووڵ لە نێـوان هەردو بنەمـاڵەدا، کە وەک میراتێکـی مـاڵوێران بـۆ میراتگرانی هەردوو بنەماڵە بەجێ دەمێنێت.
- کەریم خانی زەند دوای ئەوەی وەک فەرمانڕەوای فەرمی دەوڵەتی ئێران دەسەڵاتی گرتە دەست، بە سەپاندن و پێداگریکردن لە سەر سیاسەتی پشتگیری و هاندانی بابانەکان بـووە هـۆی گرژبـوونەوە و بەلاڕێـدابردنی پێوەنـدییەکانی نێـوان خـانەدانی زەنـد و ئەردەڵانییەکـان، هەر بـۆیە ئەم سیاسـەتە هەڵەیە دواتـر وەک میراتێکـی نـابەجێ بـۆ فەرمانڕەوایـانی پـاش کەریـم خـانیش، بە جێمـا و ئەنجامەکانیشـی جـگە لە

پێکداهەڵپرژانی بەردەوام و شەڕی لابەلای وێرانکەر، هیچ دەسکەوتێکی دیکەی بۆ دانیشتوانی ئەردەڵان بە جێ نەهێشت.

- هێرشی لابەلای بابانەکان بۆ سەر میرنشینی ئەردەڵان، جگە لە کوشتاری خەڵکی بێ دەرەتانی ئەردەڵان و بابان و تالانی و بڕۆی سەروەت و سامانییان، هاوکات ببووە هۆی کۆچپێکردنی زۆرە ملێیانەی ژمارەیەکی بەرچاو لە خانەدانە ناودار و زەنگینەکانی هەردوولا بۆ ناوچەکانی ژێر دەسەڵاتی یەکتر و تێدابڕان و ماڵوێرانی ناوچەکوردییەکان.
- سەرەڕای تەنگەژە و گرفتە لە بن نەهاتووەکانی ناوخۆیی و دەرکی لە ماوەی فەرمانڕەوایی خسرەو خانی ئەردەڵان، ئەم میرە توانی لە ئاست زۆربەی هەرە زۆری کێشەکانی بەردەم خۆی و میرنشینەکەی و تەنانەت چەندین جار لادان و دوور خستنەو لە دەسەڵات، سەرکەوێت و هەتا لە توانای دابوو و لە دەستی دەهات هەوڵی دا، کە سنووری قەڵەمڕەوەکەی بپارێزێ و هەندێ جاریش بەرفراوانتری بکات، بەڵام لە بەر ئەوەی کە سەردەمی فەرمانڕەواییەکەی پڕ بوو لە گیر وگرفت و شەڕ و لەشکرکێشی ناوخۆیی و دەرەکی، دەرفەتی لە باری بۆی ڕێنەکەوت تاکۆ لە سایەی ئارامی و ئاسایشی پێویست، میرنشینەکەی لە ڕووی ئابووری و ژیانی ئاسایی ببوژێنێتەوە و ئاوەدانتری بکات.
- سیاسەتە هەڵەکانی فەرمانڕەوایانی زەند بە گشتی و کەریم خانیش بە تایبەت دژ بە میرنشینی ئەردەڵان هەر لە سەرە تاوە، تا دوا ساتەکانی دەسەڵاتیان وایکرد، کە میرانی ئەردەڵان بۆ پاراستنی دەسەڵات و هێشتنەوەی میرنشینەکەیان، بە ناچاری پەنا بۆ هێزی قاجارەکان ببەن کە لە مێژ بوو، ڕکابەری سەرەکی و دوژمنایەتی دێرینیان لە گەڵ زەندییەکاندا هەبوو. ئەگەرچی بە تێپەڕبوونی کات و گۆڕانکارییە سەیرەکانی مێژوو، میرنشینی ئەردەڵان بە دەستی خودی قاجارەکان لە ناو چوون و بۆ هەتا هەتایی تێکەڵ بە مێژوو بوون.

**پەراوێزەکان:**

١- بە نیسبەت پێشینەی کۆنی لوڕەکان تا کۆ ئێستا لە لایەن توێژەرە مێژووییەکانەوە مشت و مڕێکی زۆری لە سەر کراوە. بۆ زانیاری زیاتر بروانە: مینورسکی، ڤلادیمیر (٢٠٠٢ز)، مینورسکی و کورد، وەرگێرانی ئەنوەری سولتانی، دەزگای موکریان، هەولێر؛ امان الهی بهاروند، اسکندر (١٣٧٠ه.ش)، قوم لر، نشرآگاه، تهران؛ هدایتی، هادی (١٣٦٣ه.ش)، تاریخ زندیه، انتشارات جام، تهران؛ صداقت کیش، جمشید (١٣٨١ه.ش)، کردان پارس و کرمان، انتشارات صلاح الدین ایوبی، ارومیه؛ رجبی، پرویز (١٣٨٩ه.ش)، کریم خان زند و زمان او، نشر کتاب آمه، تهران.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٢- "لەك" تیرە یا خود هۆزێکی هەرە گەورەی لوڕەکان دەژمێردرێ و وەکو زۆربەی هۆزەکانی تری لوڕ شیعە مەزهەبن و بە زاراوەی لەکی کە جۆرێکە لە شێوەزاری ئاخاوتنی کوردستانی رۆژهەلات، دەدوێن. بۆ زانیاری زیاتر بروانە: ك. ب. اكوپف ( هاكوپیان ـ م. ا. حصاروف ) (١٣٧٦ه.ش)، کردان گوران و مساله کرد در ترکیه، ترجمه سیروس ایزدی، نشر هیرمند، تهران؛ مینورسکی، ولادیمیر ( ١٣٦٢ه.ش)، دو سفرنامه درباره لرستان، رساله لرستان و لرها، ترجمه اسکندرامان الهی بهاروند و لیلا بختیار، انتشارات بابك، تهران.

٣- لوڕەکانیش بە شێوەیەکی گشتی دابەش دەبنە سەر دوو گروپی لوڕی بچوك (خێڵەکانی لوڕستان و پۆشت کوە ) و لوڕی گەورەی خێڵەکانی بەختیاریش کە دوو تایفەی ( حەوت لەنگ و چوار لەنگ)، یان لێ دەکەویت. بۆ زانیاری زیاتر بروانە: صفی نژاد، جواد ( ١٣٨١ه.ش)، لرهای ایران، نشر آتیه، تهران.

٤- ناوچەی "پەری" دەکەوێتە ٣٠ کیلومەتری باشووری رۆژهەڵاتی شاری مەلایری سەر ڕێگای ئەراك "کەمازان"یش ناوی گوندێکە لە نزیك پەری. بۆ زانیاری زیاتر بروانە: رزم آرا، سپهبد حاجعلی (١٣٥٦ه.ش)، فرهنگ جوغرافیای ارتش، انتشارات جاویدان، تهران.

٥- میرنشینی ئەردەڵان (ویلایەتی کوردستان) بەشێکە لە هەرێمی چوارەم کە سنووری قەڵەمڕەوەکەی دەگاتە عێراقی عەرب، عێراقی عەجەم، خوزستان، ئازەربایجان و هەندێ جاریش هەتا دیاری رەبیعە درێژەی دەبوو. ناوەندی دەسەڵاتی ئەم میرنشینە کوردستانی ئەردەڵان (سنە) بوو کە بە هەبوونی گوند و لادێ و قەڵا و کەژ و کێوی گەورە و سەخت و بەرز و خەڵکانی ئازا و جەنگاوەر ناوبانگی هەبوو. لە سەدەی یازدەی کۆچی، ئەم میرنشینە شازدە شار و ناوچەی گەورە و دوو قەڵای بەرز و پتەوی لە خۆ دەگرت لە وانە: ئەردەلان (سنە)، ئالان، ئەلیشتەر، چەمچەماڵ، حسبەنان، حەسەن ئاوا، دەربەند، تاج خاتوون، دزبیل، دینەوەر، سوڵتان ئاوا، شارەزوور، قەڵای بەهار، قەڵای هەرسین، کەنگاوەر، کەرند، خوشان و وەستام. بۆ زانیاری زیاتر برروانە:سنندجی، میرزا شکرالله (١٣٦٦ه.ش)، تحفه ناصری، تصحیح؛ دکتر حشمت الله طبیبی، انتشارات امیر کبیر، تهران؛ اعتماد السلطنه، محمد حسن خان ( ١٣٦٨ه.ش)، مرآه البلدان، به کوشش عبدالحسین نوایی و میر هاشم محدث، نشر دانشگاه تهران، تهران؛ چلبی، اولیا (١٣٦٤ه.ش)، کرد در تاریخ همسایگان، ترجمه فاروق کیخسروی، نشر صلاح الدین ایوبی، ارومیه؛ مستوفی بافقی، محمد مفید بن محمود (١٣٩٠ه.ش)، مختصر مفید (جغرافیای ایران زمین در عصر صفوی) به کوشش ایرج افشار با همکاری محمد رضا ابویی مهریزی، نشر محمود افشار

یزدی، تهران؛ گلستانه، ابوالحسن بن محمد امین (١٣٩١ه.ش)، مجمل التواریخ شامل وقایع و رویدادهای سیو پنج ساله بعد از نادرشاه و ذیل زین العابدین کوهمره ملقب به امیر در تاریخ زندیه، به کوشش محمد تقی مدرس رضوی، چاپ چهارم، نشر دانشگاه تهران، تهران.

٦- وەکیلەکان، یەکێکن لە بنەماڵە کۆن و ناودارەکانی سنە، بە باوەڕی مەردوخ وەکیلەکان مێژوویەکی دوور و درێژیان هەیە، بۆ زانیاری زیاتر بڕوانە: مردوخ کردستانی، شیخ محمد (١٣٧٩ه.ش)، تاریخ مردوخ، نشر کارنگ، تهران؛ وقایع نگار کردستانی، علی اکبر (١٣٨٤ه.ش)، حدیقه ناصری در جغرافیا و تاریخ کردستان، تصحیح محمد رئوف توکلی، نشر ارژنگ، تهران.

**لیستی سەرچاوەکان بە زمانی فارسی:**


- آشتیانی، عباس اقبال (١٣٥٧ه.ش)، تاریخ مفصل ایران، انتشارات ابن سینا، تهران.
- اردلان، شیرین (١٣٨٧ه.ش)، خاندان کرد اردلان، ترجمه مرتضی اردلان، نشر تاریخ ایران، تهران.
- اردلان، خسرو بن محمد بن منوچهر (٢٥٣٦ه، ش)، لب التواریخ، کانون انتشارات خانوادگی اردلان، تهران.
- اردلان، ماهشرف خانم (مستوره) (٢٠٠٥ز)، تاریخ الاکراد، با موخره میرزا علی اکبر وقایع نگار، ویرایش جمال احمدی آیین، نشر آراس، اربیل.
- اعتماد السلطنه، محمد حسن خان ( ١٣٦٨ه.ش)، مرآه البلدان، به کوشش عبدلاحسین نوایی و میر هاشم محدث، نشر دانشگاه تهران، تهران.
- اکوپف و هاکوپیان، ک. ب، م ا. حصارف (١٣٧٦ه.ش)، کردان گوران و مساله کرد در ترکیه، ترجمه سیروس ایزدی، انتشارات هیرمند، تهران.
- امان الهی بهاروند، اسکندر (١٣٧٠ه.ش)، قوم لر، نشر آگاه، تهران
- بابانی، عبدالقادر ابن رستم (١٣٦٦ه.ش) تاریخ و جغرافیای کوردستان (سیرالاکراد)، به اهتمام محمد رئوف توکلی، چاپ ارژنگ، تهران.
- بهرامی و مظفری، روح الله و پرستو (١٣٩٠ه.ش)، کارکرد، تقسیمات و ساختار تشکیلاتی والی نشین اردلان در عهد قاجار، مجله پژوهشهای تاریخی دانشکدەی ادبیات و علوم انسانی دانشگاه اصفهان.
- پری، جان (١٣٨٤ه.ش)، کریم خان زند، تاریخ ایران بین سالهای (١٧٤٧-١٧٧٩) ترجمه علی محمد ساکی، نشر آسونه، تهران.
- چلبی، اولیا (١٣٦٤ه.ش)، کرد در تاریخ همسایگان، ترجمه فاروق کیخسروی، نشر صلاح الدین ایوبی، ارومیه.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- رجبی، پرویز (۱۳۸۹ه.ش)، کریم خان زند و زمان او، نشر کتاب آمه، تهران.
- رزم آرا، علی (۱۳۵٦ه.ش)، فرهنگ جغرافیای ارتش، انتشارات جاویدان، تهران.
- وقایع نگار کردستانی، علی اکبر (۱۳۸٤ه.ش)، حدیقه ناصری در جغرافیا و تاریخ کردستان، تصحیح محمد رئوف توکلی، نشر ارژنگ، تهران.
- سلطانی، محمد علی (۱۳۸۱ه.ش)، جغرافیای تاریخی و تاریخ مفصل کرمانشاهان، نشر سها، تهران.
- سنندجی، میرزا شکرالله (۱۳٦٦ه.ش)، تحفه ناصری، تصحیح؛ دکتر حشمت الله طبیبی، انتشارات امیر کبیر، تهران.
- شعبانی، رضا (۱۳۷۸ه.ش)، مختصر تاریخ ایران در دوره‌های افشاریه و زندیه، انتشارات سخن، تهران.
- شمیم همدانی، علی اصغر (۱۹۸۰ز) جغرافیای کوردستان ایران، وەرگێڕانی عبدالرحمان محمد امین زبیحی، بەغدا.
- شیرازی، ابن اعبدالکریم علی رضا ( ۱۳٦۵ه.ش)، تاریخ زندیه ( جانشینان کرم خان زند)، مقدمه و تصحیح ارنست بێیر، ترجمه غلامرضا ورهام، نشر گستره، تهران.
- صداقت کیش، جمشید (۱۳۸۱ه.ش)، کردان پارس و کرمان، انتشارات صلاح الدین ایوبی، ارومیه.
- صفی نژاد، جواد ( ۱۳۸۱ه.ش)، لرهای ایران، نشر آتیه، تهران.
- غفاری کاشانی، ابولحسن (۱۳٦۹ه.ش)، گلشن مراد، به اهتمام غلامرضا طباطبایی مجد، انتشارات زرین، تهران.
- فتاح قاضی، اسماعیل (۱۳٦۷ه.ش)، کرد در دایره المعارف اسلامی، انتشارات صلاح الدین ایوبی، ارومیه.
- قاضی، ملا شریف (۱۳۸۷ه.ش)، زبدەالتواریخ سنندجی در تاریخ کردستان، به کوشش محمد رئوف توکلی، نشر توکلی، تهران.
- گارسویت، جن. داف (۱۳۷۳ه.ش)، تاریخ سیاسی اجتماعی بختیاری، با استفاده از انتشارات منتشر نشده وزارت خارجه انگلیس، ترجمه و حواشی مهراب امیدی، نشر سهند، تهران.
- گلستانه، ابوالحسن بن محمد امین (۱۳۹۱ه.ش)، مجمل التواریخ شامل وقایع و رویدادهای سیو پنج ساله بعد از نادرشاه و ذیل زین العابدین کوهمره ملقب به امیر در تاریخ زندیه، به کوشش محمد تقی مدرس رضوی، چاپ چهارم، نشر دانشگاه تهران، تهران.
- مردوخ کردستانی، شیخ محمد (۱۳۷۹ه.ش)، تاریخ مردوخ، نشر کارنگ، تهران.
- ملکم، سر جان ( ۱۳۸۳ه.ش)، تاریخ ایران، ترجمه میرزا اسماعیل حیرت، نشر سنایی، تهران.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- مستوفی بافقی، محمد مفید بن محمود (۱۳۹۰ه.ش)، مختصرمفید ( جغرافیای ایران زمین در عصر صفوی) به کوشش ایرج افشار با همکاری محمد رضا ابویی مهریزی، نشر محمود افشار یزدی، تهران.
- موسوی نامی اصفهانی، میرزا محمد صادق ( ۱۳٦۸ه.ش)، تاریخ گیتی گشا در تاریخ زندیه، تحریر و تحشیەی عزیز الله بیات، چاپ دوم، نشر امیرکبیر، تهران.
- مینورسکی، ولادیمیر ( ۱۳٦۲ه.ش)، دو سفرنامه درباره لرستان، رساله لرستان و لرها، ترجمه اسکندرامان الهی بهاروند و لیلا بختیار، انتشارات بابك، تهران.
- نوذری، عزت الله (۱۳٦۸ه.ش)، پژوهشی پیرامون ایل زند در استان مرکزی، فصلنامه تحقیقات جغرافیایی، نشر آستان قدس رضوی، شماره سوم، سال چهارم، مشهد.
- نوایی، عبدالحسین (۱۳٦٥ه.ش)، کریم خان زند، انتشارات سپهر، تهران.
- هدایتی، هادی (۱۳٦۳ه.ش)، تاریخ زندیه، انتشارات جام، تهران

- **سەرچاوەکان بە زمانی کوردی:**
- بدلیسی، میرشەرەفخان ( ۲۰۱۷ز)، مێژووی ماڵەمیرانی کورد، وەرگێڕانی سەلاحەددینی ئاشتی، دەزگای سەردەم، سلێمانی.
- کوردستانی، ماهشەرەف خانم مەستوورەی (۱۹۸۹ز)، مێژووی ئەردەڵان، وەرگێڕانی حەسن جاف و شوکور مستەفا، بەغدا.
- ڤاسیلیەڤا، پی. ئی (۱۹۹۷ز)، کوردستانی خوارووی ڕۆژهەڵات لە سەدەی حەڤدە تا سەرەتای سەدەی نۆزدە (کورتەیەکی مێژووی میرنشینانی ئەردەڵان و بابان)، وەرگێڕانی ڕەشاد میران، چاپخانەی وەزارەتی ڕۆشنبیری، هەولێر.
- مینورسکی، ڤلادیمیر (۱۹۸٤ز)، کورد، وەرگێڕانی حەمە سەعید کەریم، بەغدا.

- **سەرچاوەکان بە زمانی عەرەبی:**
- نورس، علاء (۱۹۷۹م)، العراق فی العهد العثمانی، دراسه فی العلاقات السیاسیه (۱۷۰۰-۱۸۰۰م)، بغداد.

**سەرچاوەکان بە زمانی ئینگلیزی:**
- Paul Horn: Grundriss der iranischen philologic " Strassburg 1895-1904" 592 ff. / Strassburg, 1986
- H. Braun: Handbuch der Orientalistik. Abt. ,6. Band 3. Abschnitt (Leden - Koeln 1959) 120 f.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

## Emirate of Ardalan during the reign of the Zandais (1751-1794)


**Abstract**

The establishment of the Zandi rule by Karim Khan Zand (1751-1779) is considered one of the most important stages in Iran's modern history. The period of Zandi rule in Iran from the second half of the eighteenth century (1751-1794) until the rise of the Qajars, which lasted nearly half a century, was short-lived according to most Iranian and foreign scholars One of the most unknown and hidden periods in the country's recent history. Ardala Nish Emirate as one of the emirates and local authorities of East Kurdistan, during the rule of the Zandis, although in a complicated situation and even the stone of power, lived and during this period, suffered many difficulties They have played an important role in fighting and resolving the internal problems of the region.

Therefore, the rulers of Zand, to impose their authority, from time to time, taking advantage of this confusion and division among the members of the Ardalan family, tried to appoint several members of the Baban dynasty outside the territory of the Ardalan empire and take them over the rule of this important empire.



**Keywords**: *Ardalan Empire, Zand, Karim Khan Zand, Baban princes, Qajar*


## إمارة أردلان في عهد الزنديين (١٧٥١-١٧٩٤)


**الملخص:**

يعتبر تأسيس الحكم الزندي على يد كريم خان زند (١٧٥١-١٧٧٩) أحد أهم المراحل في تاريخ إيران الحديث. كانت فترة الحكم الزندي في إيران من النصف الثاني من القرن الثامن عشر (١٧٥١-١٧٩٤) حتى ظهور القاجاريين ، والتي استمرت قرابة نصف قرن ، فكانت فترة قصيرة العمر وفقاً لمعظم العلماء الإيرانيين والأجانب. كما انها من الفترات الغامضة في تاريخ ا لبلاد الحديث. و كانت إمارة أردلان من الإمارات والسلطات المحلية في شرق كردستان ، خلال حكم الزنديين ، على الرغم من أنها في وضع معقد وحتى حجر القوة ، عاشت وخلال هذه الفترة عانت من صعوبات كثيرة في القتال وحل المشاكل الداخلية. المنطقة.

لذلك ، حاول حكام الزند، من وقت لآخر، فرض سلطتهم على اردلان مستغلين هذا الارتباك والانقسام بين أفراد عائلة أردلان ، حاولوا تعيين عدة أفراد من سلالة بابان على هذه الامارة المهمة.



**كلمات مفتاحية:** *امارة أردلان ، حكم الزند، كريم خان الزند ، أمراء بابان، القاجار*

# ڕۆڵی زانستی و سەربازی ئافرەتانی کورد لە سەدەکانی ١٧ تا ١٩ زاینیدا "توێژینەوەیەکی مێژووییە"

**د. بژار عوسمان ئەحمەد**

بەشی مێژوو- فاکەڵتیی ئاداب-زانکۆی سۆران/ هەرێمی کوردستانی عیراق

**پوختە:**

بە درێژایی مێژوو ڕۆڵ و پێگەی ئافرەتان لە نێو کۆمەلگایەکاندا جیاوازبووە، گرنگی و بایەخی و کاریگەری کۆمەڵایەتی و سیاسی و زانستی و سەربازییان لە سەردەمێکەوە بۆ سەردەمێکی تر گۆڕانکاری بەسەردا هاتووە، لە نێو کورد دا ئافرەتان لە بوارە جیاجیاکاندا پێگەی بەرزییان هەبووە، بەتایبەتی لە نێو میرنشیە کوردییەکانی سەردەمی حوکمڕانی عوسمانیدا (١٥١٤-١٨٥١)، هەروەها لەدوای ڕووخانی میرنشینە کوردییەکانیش، ئافرەتانی کورد لە دەرەوە و ناوەوەی کوردستان ڕۆڵی جیاواز و گرنگیان بینیووە، بەتایبەتی لە لایەنەکانی سەربازی و زانستیدا، کە لەم دوو قۆناغە جیاوازەدا چەندین ئافرەتی سەرکردە و ناودار لەناو میرنشین و کۆمەڵگا کوردییەکاندا دەرکەوتوون، خودی دەرکەوتنی ئەم ئافرەتانەش زیاتر لە لایەنەکانی سیاسی و سەربازی و زانستی بووە. تەنانەت کۆمەڵگای کوردی دەرفەتی بۆ دەرکەوتنی ئافرەتانی بیانیش ڕەخساندووە، وەکو "کەیغان" لە نێو میرنشینی بابان پێگە و کاریگەری بەدەرکەوتووە. ئەمە لەکاتێکدا زۆرێك لە گەریدەکانیش گەواهی ڕاستی گەورەیی و کاریگەری پێگەی ئافرەتان لە نێو کوردان دەدەن، کە چۆن ئافرەتانی کورد هاوکار و هاوشانی پیاوەکانیان وەستاون لە گشت لایەنەکانی ژیانیان دا. لەبابەتی لایەنی زانستیدا چەندین ئافرەتی کوردی وەکو ماهـ شەرەفخانم (مەستورەی ئەردەلانی) لەو سەردەمیدا دەرکەوتوون، کە ناوبراو پێگەی یەکەمین و کەسایەتی دیارییان لە بابەتەکانی مێژوو و ئەدەبیاتی کوردیدا هەبووە، خودی ئەم دەرفەتانە بۆ ئافرەتانی کوردی نا موسڵمانیش درووست بووە. ئەمە لەکاتێکدا ئافرەتی کورد وەکو سەرکردەی سەربازی و لێهاتووش بەدەرکەوتووە، وەکو "خانزادی میری سۆران" کە لە نێو میرنشینی سۆران و قەرەفاتم لەنێو سوپای دەوڵەتی عوسمانی لەشەڕی دژی ڕووسەکان دەرکەوتن. لەگەڵ ئەمەش دا هەندێ لە توێژەرانی بیانی پێیان وایە پێگەی ئافرەتی کورد پێگەیەکی لاواز بووە و نەیانتوانیوە لە ماڵەکانیان بێنە دەرەوە و بواری دەرکەوتن و چالاکی نواندنیان بۆ نەڕەخسێنراوە. تەنانەت لەوباوەڕەدان وایە پیاوانی کورد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

دڵیان پیس بووە بەرامبەر بە ئافرەتان و ڕێگەیان نەداون بێنە دەرەوە و کاروچالاکی خۆیان ئەنجام بدەن.

بەگشتی ئەم توێژینەوەیە هەوڵێکی زانستیانەیە بۆ پیشاندانی ڕۆڵی سیاسی و سەربازییانەی ئافرەتانی کورد لە نێو میرنشین و کۆمەڵگا کوردییەکانی سەدەکانی ١٧ تا ١٩ز دا. کە لە دەرەوە و ناوەوەی کوردستاندا چەندین ئافرەتی زانا و سەرکردەی سەربازی کورد دەرکەوتن.

**کلیله وشه:** *ئافرەت، کورد، کوردستان، سەرکردە، میرنشین*

---

**پێشەکی:**

لە نێو مێژووی کورد دا ئافرەتان هەمیشە خاوەنی پێگەیەکی بەرز و کاریگەر بوونە، لە زۆربەی لایەنەکانی ژیاندا ڕۆڵیان بینیوە و کاریگەری خۆیان بەجێهێشتووە، بەتایبەتی لە لایەنەکانی سەربازی و زانستیدا، چونکە لەم دوو لایەنەدا دەرفەتی لەبار و گونجاو هەڵکەوتووە بۆ دەرکەوتنیان، بەتایبەتی لەبواری زانست و گێڕانەوەی فەرمووده و خوێندن لە زانستە ئیسلامییەکانی ئەوکاتیدا، هەروەها لە لایەنی سەربازیشدا، زۆر جار ئافرەتانی کورد وەکو سەرکردەی سەربازی لەنێو سوپا و لەمەیدانەکانی جەنگدا بەدەرکەوتوون، بۆ ئەمەش بارودۆخە سیاسییەکانی ئەوکاتی ڕۆڵی سەرەکی بینیوە. ئەم دەرکەوتنەی ڕۆڵی ئافرەتانی کورد لە نێو میرنشین و کۆمەلگا کوردییەکانی ناوەوە و دەرەوەی کوردستان لە سەردەمی عوسمانییەکاندا بەردەوامی هەبووە و بگرە زیاتریش بووە، بەتایبەتی لەوکاتیدا ئافرەتانێکی وەکو خانزادی میری سۆران و قەرەفاتم لەنێو ریزی سوپادا دەرکەوتوون، هەروەها لە لایەکیترەوە دەبینین ئافرەتانی کورد لە لایەنەکانی زانستی و ئەدەبیدا پێگەی یەکەمین و کەسایەتی دیارییان هەبووە، بۆ نموونە مەستورەی ئەردەلانی کە لە بنەماڵەی میرانی ئەردەلانە، توێژەران ئەو بەیەکەم ئافرەتی مێژوونووس لە مێژووی ڕۆژهەڵاتی ناوەڕاست دادەنێن، لەکاتێکدا بەیتە شیعرییەکان و چالاکییە ئەدەبییەکانی ئەو پێگەیەکی گرنگیان هەیە لە نێو ئەدەبی کوردیدا. بەتایبەتی لە پەیوەندی لەگەڵ شاعیرانی کوردی هاوسەردەمی خۆیدا.

ئەوەی جێگای ئاماژەیە، ئافرەتانی کورد لەلایەنەکانی سیاسی و سەربازی و زانستی و کۆمەڵایەتی و ئابوریدا ڕۆڵێکی کاریگەر و پێگەیەکی دیار و بەرزییان هەبووە، هەروەها لە لایەن پیاوەکانیانەوە ڕێزێکی تایبەتیان لێگیراوە. ئەمە لەکاتێکدایە سەرەڕای ئەوەی توێژینەوەی زانستی تایبەت بە بارودۆخ و ڕۆڵی سەربازی و زانستیانەی ئافرەتانی کورد لە سەدەکانی ١٧ تا ١٩ ز نەکراوە، لە لایەکیترەوە بەشێك لە توێژەران و نووسەرانی بیانی لە باسکردنی ڕۆڵ و ژیانی ئافرەتانی کورد دا، زانیاری هەڵەمان پێدەدەن و پێیان وایە ئافرەتانی کورد لەماڵ نەهاتونە دەرەوە و دەرفەتی کارکردن و دەرکەوتنیان بۆ نەڕەخسێنراوە. لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

کاتێکدا سەرچاوە مێژووییەکان پێمان دەڵێن کۆمەڵگای کوردی دەرفەتی دەرکەوتنی بۆ ئافرەتان لە زۆربەی لایەنەکاندا ڕەخساندووە و ئافرەتانیش لە بوارە جیاوازەکاندا ڕۆڵیان بینیوە و جێ پەنجەی خۆیان بەجێهێشتووە، بەتایبەتی لە لایەنەکانی سەربازی و زانستیدا. تەنانەت ئافرەتان ئەوکاتە هاتونەتە دەرەوە و بازارکردنیان بۆ ماڵەکانی خۆیان کردووە و پێداویستییەکانی خۆیان کڕیوە و هەندێکیان بازرگانیشییان کردووە و سەربەستییەکی تەواویان پێدراوە.

لەم توێژینەوەیە دا باس لە ڕۆڵی زانستی و سەربازی ئافرەتانی کورد لە سەدەکانی ١٧ تا ١٩ زاینیدا دەکەین، ئەویش بە پشت بەستن بە بەڵگەنامە بڵاونەکراوەکانی عوسمانی و سەرچاوەکانی تایبەت بە مێژووی کورد لەو سەردەمیدا. هەروەها ئامانج لەم توێژینەوەیە دا ئەوەیە تیشك بخەینە سەر ڕۆڵی زانستی و سەربازی ئافرەتانی کورد لەنێو میرنشین و کۆمەڵگا کوردییەکانی سەردەمی عوسمانیدا، هەروەها گرنگترین کار و چالاکییەکانیان لە لایەنی زانستی و سەربازیدا پیشان بدەین، ئەویش بە پشت بەستن بە چەند میتۆدێکی زانستی لە پێش هەموویان میتۆدی شیکاری مێژوویی و خستنەڕوو و شیکردنەوەی دەقی بەڵگەنامەکان وەکو سەرچاوەی یەکەم، هەروەها بەکارهێنانی سەرچاوە زانستییەکانی تری وەکو کتێب و توێژینەوە زانستییەکانی وەکو ماستەرنامە و تێزی دکتۆرا، کە زانیاری ورد لە بارەیەوە دەدەن، لە گرنگترین ئەو سەرچاوانەش (محمد أمين. زكي بك، (١٩٤٥). مشاهير الكرد وكردستان في العهد الإسلامي. بغداد: مطبعة التفيض الأهلية)، (الصويركي، محمد علي. (٢٠٠٠). معجم العلماء الكرد. سليمانية: ژين) کە دوو سەرچاوەی زۆر گرنگی ئەو بابەتەن و زانیاری ورد لەبارەی ڕۆڵ و پێگەی ئافرەتانی کوردەوە دەخەنە بەردەستمان، هەروەها یەکێکیتر لەو سەرچاوانەی کە زانیاریی زۆر وورد لەبارەی ئەم بابەتەوە تێدایە، بریتییە لە کتێبی گەریدە و نوێنەری بەریتانی و بەڕەگەز فەرەنسی (ڕیچ، کلدیۆس جیمس. (٢٠٢٢). گەشتنامەی ڕیچ بۆ کوردستان. هەولێر: ئاراس). کە ئەویش لە یاداشتەکانیدا زۆر باسی ڕۆڵ و پێگەی ئافرەتانی کورد دەکات و زانیاری نوێمان بۆ بەیان دەکات.

ئەم توێژینەوەیە لە دەروازەیەك و دوو تەوەرەی سەرەکی پێکدێت، کە ئەوانیش دابەش دەبنە سەر چەند باسێك، لەوانە لە دەروازە دا باسی پێگە و کەسایەتی ئافرەتی کورد لەنێوان سەدەکانی ١٧ تا ١٩ی زاینی دا کراوە، لە تەوەرەی یەکەمدا باسی ڕۆڵی سەربازییانەی ئافرەتی کورد لەنێوان سەدەکانی ١٧ تا ١٩ی زاینیدا کراوە و لە تەوەرەی دووەمدا باس لە ڕۆڵی زانستیانەی ئافرەتی کورد لەنێوان سەدەی ١٧ تا ١٩ی زاینیدا کراوە. هەروەها بە خستنەڕووی چەند ئەنجامێك توێژینەوەیەکەشمان کۆتایی پێهێناوە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لە گرنگترین ئەو ئەنجامانەی لەم توێژینەوەیەدا پێی گەیشتوین بریتیە لەوەی کە ئافرەتانی کورد هەر لەکۆنەوە لەلایەنی سەربازی و زانستیدا شانبەشانی پیاوان ڕۆڵیان هەبووە، هەر ئەمەش وایکردووە لە هەمیشە ئافرەتان لەنێو کۆمەڵگای کوردیدا خاوەنی ڕێز و پێگەیەکی تایبەتی بن. هەروەها لە نێو کۆمەڵگای کوردی دا دەرفەت بۆ ئافرەتانی کوردی ناموسڵمانیش هەڵکەوتووە و توانیویانە لەلایەنی زانستیدا خۆیان بەرەو پێش ببەن و لەدوای پێگەیشتن و پێشکەوتنیاندا وەکو مامۆستایەکی ئاینی لە بابەتی ئاینی جوولەکەدا وانە بڵێنەوە و خزمەت بە ئاین و کلتوری خۆیان بکەن. تەنانەت ئەو ئافرەتانەی کە وەکو سەرکردەیەکی سەربازی ناسراون، لەهەمان کاتیش دا خزمەتێکی زۆری لایەنی زانستییان کردووە، بۆنموونە خانزاد خاتون سەرەڕای ئەوەی سەرکردەیەکی سەربازی لێهاتوو بووە، لەهەمانکاتدا خزمەتێکی بەرچاوی لایەنی زانستی و ئاینیش کردووە، هەروەها بەهۆی پێگە سەربازییەکەیەوە کاریگەری لەسەر دەوڵەتی عوسمانی داناوە و مووچەی تایبەتی لە سوپای هومایونی عوسمانیدا بۆ بردراوەتەوە. لەگەڵ ئەمەش دا ئافرەتانی کورد، جگە لەو زانست و بوارەی کە خزمەتیان تێداکردووە، لەهەمانکاتدا بە ئافرەتانی یەکەم و پێشەنگ لە ڕۆژهەڵاتی ناوەڕاستدا هەژمارکراون. هەروەها ئازایەتی ئافرەتانی کورد لە مەیدانی جەنگدا یەکێکە لە تایبەتمەندییەکانی ئافرەتانی کورد، هەروەکو قەرەفاتم و خانزادی میری سۆران و ئەو ئافرەتەی لەلایەن کلۆدیۆس جیمس ڕیچەوە باسی لێوەدەکرێت کە نموونەی باڵای ئەم بابەتەن، هەروەها گەریدەکانیتریش باسی هەمان ئازایەتی ئافرەتان دەکەن کە لەکاتی شەڕەکاندا شانبەشانی پیاوەکانیان بەشداری شەڕ دەکەن.

**دەروازە: پێگە و کەسایەتی ئافرەتی کورد لەنێوان سەدەکانی ١٧ تا ١٩ی زاینیدا:**

لە نێو کلتور و مێژووی کورددا ئافرەت هەمیشە خاوەنی پێگەیەکی بەرز بووە، بەردەوام بە چاوێکی بەرز و گەورەوە سەیرکراوە و ئافرەتانیش شوێن پەنجەیان لە نێو ڕووداوە مێژووییەکاندا بەجێهێشتووە و کاریگەرییان لەسەر لایەنەکانی ڕامیاری و کۆمەڵایەتی و ئاینی و زانستیدا هەبووە. بەتایبەتی لەنێو بنەماڵە حوکمڕانەکاندا دەبینین چەندین ئافرەت ڕۆڵی جیاوازییان بینیووە، بەتایبەتی لەنێو بنەماڵە و میرنشیینە کوردییەکانیتریش ئەم ڕۆڵە بەشێوەی جیاواز بەدیدەکەین بەتایبەتی لە بابەتی هاوکاریکردنی کوڕەکانیان بۆ هاتنە سەر کورسی دەسەڵاتی میرنشینەکە و ڕاگرتنی حوکمڕانی لەنێو میرنشیینەکەدا ، هەروەها چەندین زانا و کەسایەتی دیار لەنێو ئافرەتانی کوردی ئەوکاتە دەرکەوتن، کە خزمەتێکی بەرچاوی زانست و ئاینییان لە نێو دەوڵەت و میرنشینە کوردییەکاندا کردووە (Ahmed, Nori, 2020, 140-141).

هاتنی دەوڵەتی عوسمانی بۆ ناوچەکانی کوردستان و پەیوەندی ڕاستەوخۆ و شێوازی ژیانیان لەناوچەکانی کوردستان، هیچ گۆڕانکارییەکی ئەوتۆی لە شێوازی ژیان و گوزەران

ئافرەتانی کورد لە نێو میرنشین و کۆمەڵگا کوردییەکاندا درووستنەکرد، بەڵکو ئەوەی هەیە درێژکەرەوەی هەمان قۆناغەکانی پێشووی خۆیان بوون، بەتایبەتی لەلایەنەکانی زانستی و سەربازیدا. سەرەڕای ئەمەش پێگە و بایەخی کورد هەر بە گەورەیی و بە بەرزی لەناو کۆمەڵگا کوردییەکاندا مایەوە (عومەر، ٢٠١٦، ٧٧-٧٨). لە ماوەی سەدەکانی ١٧ تا ١٩ زایینی دا ئافرەتان پێگە و کەسایەتیان هەمیشە دەرکەوتووە، هەروەکو مەلا مەحموودی بایەزیدی[1] باسی پێگەی ئافرەتانی کورد دەکات، کە کاتێک کێشە لەنێوان دوو هۆز یاخود دوو بنەماڵە درووست ببوایە، کاتێک ئافرەت دەچووە نێوەندگیرییان ئەوا شەڕ و کێشەکان ڕادەوەستان، هەروەها ئەگەر مێردیان لەشەڕدا بکوژرایە، ئەوا هیچ کات هاوسەرگیرییان نەدەکردەوە (بایەزیدی، ٢٠١٥، ٣٩-٤٠). تەنانەت لەکاتی شەڕەکاندا کاتێک دوژمن بەسەریاندا بدەن، ئەوا ژنانی کوردیش دار بەدەستەوە دەگرن و بەرەو شەڕ دەڕۆن و هاوکاری پیاوەکانیان دەکەن (بایەزیدی، ٢٠١٥، ٣٣). ئافرەتانی کورد لەوکاتیدا خاوەنی سەربەستییەکی تەواو بوون، تەنانەت سەرپەرشتی کاروباری ماڵ و بازاڕکردن و شت و پێداویستی کڕینیان دەکرد و بە ئازادانە دەچوونە دەرەوە لەماڵەکانیان، لەکاتی چوونە دەرەوەشدا سەرپۆشێکیان لەسەری خۆیان دادەنا (ڕیچ، ٢٠٠٢، ٢٦١) ژنی کورد لەماڵەوە سەرپەرشتی چێشت لینان و کاری کشت و کاڵ و بەڕێوەبردنی ماڵ و کڕینی پێداویستی و زین کردن و بەخێوکردنی ئەسپ و کڕین و فرۆشتنی دەکرد (ئەحمەد، ٢٠٢١، ٥٥). تەنانەت خاوەنی دارایی خۆیان بوونە، زۆرجار لە میراتی باوکیانەوە ژنانی کورد چەندین سەر مەڕ و مانگایان بۆ دەمایەوە، یاخود مێردەکانیان پێیان دەدان پیاوانی کورد دەستکاری ماڵی ژنەکانیان نەدەکرد و بەمافی ئەوانیان دەزانی، کە ئەمەش پێیان دەگووت "شکارەت" (بایەزیدی، ٢٠١٥، ٦٧). ئافرەتانی کورد ڕۆڵێکی بەرچاویان لە ژیانی کۆمەلایەتی و هاوکاریکردنی خێزان و پیاوەکانیاندا هەبوو، چونکە لەکاروباری ڕۆژانەدا هاوکارییان دەکردن (الدملوجي، ١٩٩٩، ١٤٩)، بەهۆی سەختی ناوچەکانی کوردستانەوە، وایکردبوو ئافرەتانی کورد ببنە سوارچاکی لێهاتوو، هەروەها لە هاوکاریکردنی هاوسەرەکانیان لە کێڵگە و کشت و کاڵدا ڕۆڵێکی سەرەکیان هەبوو (نەبەز، ٢٠٠٣، ١٢٣).

ئەگەرچی بەشێوەیەکی گشتی بارودۆخی ئافرەتانی کورد تا ڕادەیەکی زۆر هاوشێوەی ئافرەتانی ڕۆژهەلاتی ناوەڕاست بوون، چونکە ئاینی ئیسلام لەم ڕووەوە کاریگەری بەسەر ئافرەتانی هەموو میلەتانی ڕۆژهەلاتی ناوەڕاستدا هەیە، لەگەڵ ئەمەشدا ئافرەتانی کورد لەوکاتی دا هەندێك تایبەتمەندی و کەسایەتی خۆیان هەبوو، کە بەشێوەیەك لە ئافرەتانیتری عەرەب و تورك و فارس جیای دەکردنەوە، بۆ ئەمەش گەریدەکان گەواهی ئەو ڕاستییە دەدەن کە ئافرەتانی کورد خاوەنی پێگەیەکی بەرز و کاریگەر بوونە لەنێو کۆمەڵگایەکانی خۆیاندا، بەتایبەتی گەریدە و نوێنەری بەریتانی و بەڕەگەز فەرەنسی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کلۆدیۆس جیمس ڕیچ[2] لە باسی پێگە و ئازادی ئافرەتانی کوردستاندا کە بە ئافرەتانی ئێران و تورک بەراوردیان دەکات و دەڵێت "ئافرەتانی کورد پلەوپایەیان زۆر لە ئافرەتانی تورکیا و ئێران بەرزترە، ئافرەتی هیچ شوێنێك هێندەی ئافرەتی کورد بە ڕەوشت نین، پلە و پایەی ئافرەت لە کوردستاندا، زۆر لە پلەوپایەی ئافرەتانی تورکیا و ئێران بەرزترە!"(ڕیچ، ٢٠٠٢، ٢٦١). ئەوەی جێگای باسە زۆر جاران ژنەکان مێوانداری خەڵکی بیانیان دەکرد و زۆریش کراوەبوون بەرامبەر بە میوانان، وە لەلایەن پیاوەکانیشیانەوە دڵ پیسیان بەرامبەردا نەکراوە، هەروەکو بایەزیدی ئاماژە بۆ ئەوە دەکات کە ئەگەر ژنەکانیان جوانیش بوایە دڵپیسیان لێنەدەکردن، تەنانەت ئەگەر بەردەوام لەگەڵ مێوان دابنیشتنایە و بەدەمیانەوە پێبکەنیبونایە، بەڵام ئەگەر هاتوو خیانەتیان بکردایە، ئەوا بێ دوودڵی هەم ژنە و هەمیش پیاوە خیانەتکارەکە دەکوژران و کەسیش لە هەواڵیانی نەدەپرسییەوە (بایەزیدی، ٢٠١٥، ٤١).

هەندێك لە گەڕیدە ڕۆژئاواییەکان کە سەردانی کوردستانیان کردووە و باسی گرنگی و پێگەی ئافرەتی کوردیان کردووە، هەروەکو گەریدەی ئەڵمانی لیرخ ئاماژە بۆ ئەوە دەکات کە ئافرەتانی گوندەکان کاری کشت و کاڵیان لەگەڵ مێردەکانیان دەکرد و چاودێری منداڵەکانیان دەکرد، لەگەڵ ئەمەشدا لەکاروباری ڕستن و چنینی فەرش و جاجمدا دەستێکی باڵایان هەبوو، هەربۆیە ئافرەتانی کورد هەمیشە خاوەنی پێگەیەکی بەرز و سەربەستییەکی زۆر بوون و هەمیشە جێگای متمانە و ڕێزی پیاوەکانیان بوون (لیرخ، ٢٠٠٨، ٣٨-٣٩). ئەگەر پیاوەکانیان لەماڵ نەبوایە، ئەوا ئافرەتەکانیان پێشوازییان لەمیوان دەکرد و خزمەتی میوانیان دەکرد (سۆن، ٢٠٠٧، ١٥٦). تەنانەت فردریك میلینگ پێی وایە کە ئافرەتانی کورد زۆر ئازادن و زیرەکن، هەروەها زۆر بەوەفان بۆ هاوسەرەکانیان و هیچ خیانەتێکیان لێناکەن، زۆر بەهێزن و دەتوانن هەر شتێك بکەن کە بیانەوێت (Milingen, 1870, 250). هەروەها جیمس برەیس[3] لە باسی ئافرەتی کورددا دەڵێت "ئافرەتانی کورد سەرپۆش لەسەردەکەن، بەڵام هیچ پێچەیەك ناکەن (واتە دەموچاویان ناپۆشن)، ئەوان لە ئێمە و لە خەڵکانی قەفقاسیا نەدەترسان" (Bryce, 1910, pp. 254-255). هەروەها پیترۆ دیلاڤالی دەڵێت "ئافرەتی کورد سەرپۆش ناکات، هەروەها لەگەڵ پیاوانیش قسەدەکەن و لەگەڵ ئێمەش زۆر بە ئازادانە قسەیان دەکرد" (دیلاڤالیە، ٢٠٠٦، ٩٤).

ئەوەی لێرەدا بۆمان ڕوون دەبێتەوە ئەوەیە کە ئەم گێڕانەوە جیاوازانەی گەریدەکان دەرخەری جیاوازی شێواز و تایبەتمەندی ژیان و ڕۆڵی ئافرەتانی کورد لە سەردەمێکەوە بۆ سەردەمێکیتر، هەروەها لە قۆناغێکەوە بۆ قۆناغێکیترە، کە گەریدە ڕۆژئاواییەکان بەناوەچکانی کوردستاندا تێپەڕیون و بینیویانە (هۆمەر، ٢٠١٩، ٧٩).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**تەوەرەی یەکەم: ڕۆڵی سەربازییانەی ئافرەتی کورد لەنێوان سەدەکانی ١٧ تا ١٩ی زایینیدا:**

**باسی یەکەم: ڕۆڵی سەربازییانەی ئافرەتی کورد لە نێو میرنشینەکانی سەردەمی عوسمانیدا** لەنێو مێژووی کورددا، چەندین ئافرەت وەکو سەرکردەی سەربازی و سیاسی دەربکەون و لەدوای کۆچی دوایی هاوسەرەکانیان بەرگری لە کورسی دەسەلات بکەن و بتوان کوڕەکانیان وەکو میری نوێی میرنشینەکان دابنێن، بۆنموونە: لە مێژووی دەوڵەتی دۆستەکیدا[٤] دەبینین کە ئافرەتان ئەم ڕۆڵەیان هەبووە بەتایبەتی لەلایەنی سەربازی و سیاسدا، هەروەکو فاتیمە کچی ئەحمەدی کوردی کە بە "فاتیمە خاتوون" ناسراوە، یەکێك بوو لەو ئافرەتە سیاسییە لێهاتوانەی لەدوای کۆچی دوایی هاوسەرەکەی، توانیویەتی دەست بەسەر میرنشینەکەدا بگرێت و کورسی دەسەڵات بۆ کوڕەکەی بەناوی "ئەبو تەغلەب" بگوازێتەوە (زكي بك، ٢٠٠٠، ٢٤٦). هەروەها ڕەحیمە خاتون کچی ئەمیر سەعید و خێزانی ناسر ئەلدەولە توانیویەتی لە کاتی هێرشی سەلجوقییەکاندا وەکو سەرکردەیەکی سەربازی توانیویەتی شارەکە لە هەڵمەتی سەربازییانە و شەڕی سەلجوقییەکان بپارێزێت و دواتریش لەگەڵ نیزامولمولك ئەلتوسی وەزیری سوڵتان ئەلب ئەرسلان (١٠٦٣-١٠٧٢) سەبارەت بە ڕادەستکردنی شاری میافارقین بە سەلجوقییەکان لە سالی ١٠٧١ز بەبێ هیچ خوێن ڕێژییەك ڕێکبکەوێت (یوسف، ٢٠٠١، ١٤٨).

هەروەها هەوداد خاتوون کە دوایین حوکمڕانی دەوڵەتی ڕەوادی[٥] بوو، ناوبراو کچی عەلائەدین بەگ بوو، ناوەندی حوکمڕانییەکەی لە شاری مەراغە بوو، لەدواتردا هاوسەرگیری لەگەڵ جەلالەدین خوارەزمشا ئەنجامدا و شاری مەراغە و دەوڵەتی ڕەوادیشی کردە بەشێك لە دەوڵەتی خوارەزمی (الصويركي، ٢٠٠٠، ٧٥٣).

لە سەردەمی حوکمڕانی میرنشینە کوردییەکانی سەردەمی عوسمانیشدا ئافرەتانی کورد لەپاڵ کاری ماڵ و ژیانی رۆژانە و بەڕێوەبردنی ماڵ، ئەوا هەمیشە وەکو سەرکردەیەکی ئازا و سەربازی دەرکەوتوون، هەربۆیە لەکاتی تەنگانە و لەکاتی شەردا شانبەشانی پیاوەکانیان لەدژی دوژمن دەوەستنەوە و وەکو جەنگاوەرێك دەردەکەون (Joseph, Nağmābādī, 2005, 359)، هەروەها ئەگەر بێتو پیاوەکانیان لە شەڕدا ڕابکات، ئەوا بەچاوێکی نزم سەیری پیاوەکەی دەکا و تف لەڕووی پیاوەکەی دەکا و گاڵتەی پێدەکات (بایەزیدی، ٢٠١٥، ٤٣).

دۆخی ئافرەتانیش لەوکاتیدا بەگشتی درێژە پێدەری سەردەمانی پێشووی خۆی بوو، بۆنموونە: لە میرنشینی لوڕستان (حکومەتی لوڕستان)[٦]دا ئافرەتێك هەبوو بەناوی دەولە خاتوون، کە لەدوای کۆچی دوایی پیاوەکەی حوکمڕانی گرتە ئەستۆ، بەڵام نەیتوانی خۆی و میرنشینەکە لە کێشە و دووبەرەکی ناو میرنشینەکە بپارێزێت، هەروەکو ئافرەتانی سەردەمانی پێشوو لەدەسەلات بمێنێتەوە، هەربۆیە کورسی حوکمڕانی بۆ برایەکەی بەناوی


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

عزەدین حوسێن بەجێهێشت (الصویرکي، ٢٠٠٠، ٢٧٥؛ زکي بك، ٢٠٠٠، ٢٣٥). هەروەها لە میرنشینی بەدلیس، کە لە قانوننامەی سوڵتان سلێمان قانونییدا بە حکومەتی بەدلیس یاخو حکومەتی ڕۆژەکیان ناسراوە (Ahmed, Nori, 2020, 146)، ئافرەتێك بەناوی شاھ خاتوون لەدوای کۆچی دوایی مێردەکەی بەناوی ئەمیر شەمسەدین بۆماوەیەك حوکمڕانی میرنشینەکەی کرد تاکو کوڕەکەی "ئەمیر ئیبراھیم" لە ساڵی ٨٣٥ك/ ١٤٣١ ز تەمەنی پێڕاگەیشت و توانی بیهێنێتە سەر کورسی دەسەڵات (الصویرکي، ٢٠٠٠، ٣٤٠؛ زکي بك، ٢٠٠٠، ٢٣٨).

تەنانەت دەرفەت بۆ ئافرەتانی هەڵکەوتووە کە وەکو میر و وەکو فەرماندەی سەربازی ڕۆڵی بینیوە، بۆنموونە: میرنشینی سۆران[7] لەلایەن خانزاد خاتوون[8]ەوە حوکمڕانی دەکرا، بەتایبەتی لەدوای ئەوەی هاوسەرەکەی میر سلێمان شاکەلی لەلایەن عوسمانییەکانەوە لە بەغدا دەستگیرکرا، ئەوا سەرچاوەمان پێمان دەڵێن کە خانزاد خاتوون زۆر بە باشی جڵەوی دەسەڵاتی میرنشینەکەی گرتە دەست وخزمەتی میرنشینەکەی کردووە و کاتێکی زۆری تەرخانکردووە بۆ گوێگرتن لە کێشەکانی خەڵکی و چارەسەرکردنیان، ناوبراو لەماوەی حوکمڕانیدا چەندین کاری گرنگی وەکو دروستکردنی چەندین مزگەوت و قەڵای ئەنجانمدا. جگە لەوەش پایتەختی میرنشینەکەی لە قەڵای دوینەوە گواستەوە بۆ هەریر، بۆ پاراستنی ئاسایش پایتەختەکەی لە مەترسی و هێرشی دوژمنان قەڵای کەلاسۆی دروستکرد تەنانەت سوپایەکی گەورەی ئامادە کرد و هێرشی کردە سەر زۆرێک لە شارەکانی دەوروبەری میرنشینەکەی (زکي بك، ٢٠٠٠، ٢٣٤ ؛ نەبەز، ٢٠٠٣، ١٢٤). خانزاد لەماوەی حکمڕانی خۆیدا چەندین قەڵا و قوڵەی درووستکرد، لەسەردەمی ئەودا ئاسایش بەجۆرێك بەرقرابوو کە تاکو ئێستاش خەڵك ستران بۆ یادی چاکی ئەو دەڵێن و شاعیران لەسەردەمی خۆیدا ستایشییان کردووە لەگرنگترین ئەو قەڵایانەی خانزاد دروستیکردون، بریتین لە قەڵای بانەمان، قەڵای بنەی هەیری، هەروەها قەڵایەکیتر لەناوچەی باڵەك لە ڕۆژهەڵاتی ڕایات (هەروتی، ٢٠١٨، ٩٠،٩١،٩٢). تەنانەت ئەندازیاری بەریتانی "هاملتن" کە لەساڵانی ١٩٢٧-١٩٣٢ز لەناوچەکەدا ژیاوە، بە پشت بەستن بە قسەکانی موکریانی لەبارەی خانزادەوە دەڵێت "خانزاد حوکمی لەوڵاتی فارسەوە هەتا دەشتی هەریر دەڕۆیشت.. تەلارەکەیم بینی کە هێشتا لەسەر شاخی هەریر بەپێوەیە" (هاملتن، ٢٠١٣، ٢١١؛ هەروتی، ٢٠١٨، ٩١-٩٢).

سەرەڕای ئەوەی خانزاد وەکو حوکمڕانێکی گەورە لەنێو میرنشینی سۆراندا دەرکەوت، بۆنموونە وەکو پەرچەکردارێك لەبەرامبەر کوژرانی "سلێمان بەگ"، ئەوا خانزاد لە دەوڵەتی عوسمانی یاخی دەبێ و بڕیاری شەڕکردن لەدژی عوسمانییەکان دەدات (هەروتی، ٢٠١٨، ١١٣). لەهەمان کاتیش دا سەرکردەیەکی سەربازی لێهاتوو بوو، بۆنموونە ئەسکەندەر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

بێك توركمان له كتێبەكەیدا بەناوی "ذیل عالم آرای عباسی" لەمیانەی ڕووداوەكانی ساڵی ١٠٣٢ك/١٦٢٣ز له بەرامبەر شاڵاوی هێزەكانی ئەردەڵانی و سەفەوییەكاندا ناوی خانزادی سۆران دەهێنێت كه بەرگری له میرنشینی سۆران كردووە، هەروەها له ڕووداوەكانی ساڵی ١٦٣٩ز له سەردەمی هەڵمەتەی سوڵتان مورادی چوارەمدا ئازووقەی بۆ سوپای عوسمانی دابین كردووە (هەروتی، ٢٠١٨، ١٠٤-١٠٥). له قۆناغەكانی دواتریش دەبینین دەوڵەتی عوسمانی لەسەر ئەركی سوپای هومایۆنی عوسمانی مووچەی بۆ خانزاد خاتوون لەسەر دارایی ویلایەتی مووسڵ بڕیوەتەوە (BOA.TSMA.E.1079.56, 1658,1).

لەمەوە بۆمان دەردەكەوێت كه خانزادی سۆران هەم لەڕووی كارگێڕی و حوكمڕانییەوە میرێكی بەهێزی میرنشینی سۆران بووە، لەهەمان كاتدا سەركردەیەكی سەربازی لێهاتووی ناو میرنشینەكەی بووە و هەمیشه له ریزی پێشەوەی سوپاكەیدا بووە لەكاتی هەڵمەتەكاندا.

خانزادی سۆران نەك هەر له ناوچەكانی ڕۆژهەلاتی كوردستان، تەنانەت له باشوری كوردستانیشدا چەندین هەلمەتی ئەنجامداوە و سەركردایەتی سوپای میرنشینی سۆرانی كردووە، بۆنموونە لەساڵی ١٦٢٣ز دەوڵەتی سەفەوی فراوانخوازیكرد و شاری بەغدای داگیركرد، لەو هەڵمەتەدا خان ئەحمەد خانی ئەردەلانیش بەشداریكرد و توانی شاری كەركوك داگیربكات، هەروەها بەمەبەستی داگیركردنی ناوچەكانی میرنشینی سۆران، هێرشی كردە سەر ناوچەكانی ژێر دەستی میرەبەگ له میرنشینی سۆران و چەندین جارێك له زێی بچووك پەڕییەوە وچەند شەڕێك ڕویدا، بەڵام خانزادە خاتوون و سەربازانی میرنشینی سۆران لەدژیان ڕاوەستا و توانیان خان ئەحمەد خان و قزلباشەكانی سەفەوی تێكبشكێنن، ئەگەرچی بەشێكی ناوچەكانی میرنشینی سۆران لەسەرەتاد لەلایەن خان ئەحمەد خانەوە دەستی بەسەرداگیرا، بەڵام ئەمە درێژەی نەكێشا، هەروەكو ئەسكەندەر بێك توركمان له باسی ڕووداوەكانی ساڵی ١٦٢٩زدا باسی هەڵمەتێكی سەربازانی میرنشینی سۆران بەسەركردایەتی خانزادەخاتوون دەكات كه بۆ سەر شاری كەركوك ئەنجامیانداوە، كه ئەوكاته شاری كەركوك لەلایەن سەفەوییەكانەوە داگیركرابوو (هەروتی، ٢٠١٨ ، ١٠٤،١١٦).

توێژەر سەعدی عوسمان هەروتی له كتێبەكەیدا بەناوی "خانزادی سۆران و ئەدەبی زارەكی" ئاماژە بە خانزاد خان دەكات، كه یەكەم ناوهێنانی ئەو لەسەرچاوە مێژووییە ڕەسەنەكاندا دەگەڕێتەوە بۆ ئەوكاتەی لەمیانەی ڕووداوەكانی یاخیبوونی "بەكر سوباشی"دا ناوی خانزاد هاوشانی چەند سەركردیەیەكیتری ناوچەكە و چەند بەرپرسێكی دەوڵەتی عوسمانی دەهێنێت، هێەم هەواڵەی كه نووسراوە دەڵێت خانزاد خاتوون و چەند سەركردەیەكی سۆران، كه ئەمەش دەرخەری ئەم ڕاستیەیه خانزاد خاتوون سەركردەی گەورە و دیاری سۆران بووە (هەروتی، ٢٠١٨، ١٠٤، ١١٦). هەروەها گەریدەی عوسمانی ئەولیا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

چەلەبی زۆر پێی سەرسام بووە کە لە سەردەمی حوکمڕانی سوڵتان موورادی چوارەمدا، ژنێکی کورد بە ناوی خانزادی میری سۆران فەرماندەیی هەریر و سۆران لە پارێزگای شارەزووری دەکرد. سەرەڕای ئەوەی میرنشینی سۆران خۆی ویلایەت و حکومەتێك نەبوو، بەڵام سوپایەکی زۆر گەورەی هەبوو کە نزیکەی ٤٠-٥٠ هەزار سەربازی تێدابوو، لەنێویاندا ١٢ هەزار پیادە و ١٠ هەزار ئەسپ سوارهەبوون (Çelebi, 2000, 373).

ئەم نموونەیە ناوازە بوو کە خانزاد وەکو سەرکردەیەکی سەربازی سەرکەوتووانە هێرشی دەکردە سەر قەڵا سەفەوییەکانی هێمادان و دێرگەزین، هەربۆیە ناوی خانزادەخاتوون بە ئافرەتێك لێهاتو و گەورە لەنێو مێژوو و ئەدەبیاتی کوردیدا ماوەتەوە لە زۆرێک لە گۆرانی و شیعری کوردیدا یادی دەکرێتەوە، بە تایبەت لە شیعری کلاسیکیدا (الصويركي، ٢٠٠٠، ٢٥٤).

بەمجۆرە حوکمڕانی خانزاد خاتوون وەکو ئافرەتانیتری کورد لە پێشوودا درێژەی کێشا تاکو هاتنە سەردەسەڵاتی کوڕەکەی بەناوی ئەحمەد خان لە ساڵی ١٦٤٨ز، هەروەها خۆشی ڕۆژانە بڕی ١٢٠ قروشی بۆ بڕابۆوە و مانگانە لە خەزێنەی دارایی ویلایەتی مووسڵەوە وەریدەگرت (BOA.TSMA.E.1062.06, 1648,1)[9]، کە ئەمە هەم وەکو خانەنشینییەك و وەکو پاداشتێك بوو بۆ خانزادە خاتوون لەلایەن ئیدارەی دەوڵەت و سوپای هومایۆنی عوسمانییەوە بۆ دابینکردنی خۆراك و پێداویستی کۆشکی خانزادە خاتوون. ئەوەی جێگای ئاماژەیە ئەم موچەیەی هەر لە ساڵی ١٦٢٩ تاکو ساڵی ١٦٥٨ز پێدراوە (BOA.TSMA.E.1079.56, 1658,1).[10]

لە ناو کۆمەڵگای کوردی دەرفەتی دەرکەوتنی ئافەرتانی نەتەوەیتریش دەربکەون، وەکو چیرۆکی کەیغان کە لە گەشتنامەکەی ڕیچ بۆ کوردستاندا بە وردی باسی لێوەدەکات، کە لەسەرەتادا توانیویەتی بۆ ماوەی چەندین ڕۆژ لە زۆرانبازی و شەڕی پاڵەوانانەی سوپای عوسمانیدا چەندین کەس بکوژێت، دواتریش لەمەیدانی فەقێ ئەحمەدی دارەشمانەدا شکست دەهێنێت و بەڵێنی شوێپێکردنی دەدات لەپای نەکوژرانی. دواتریش کەیغان دێتەوە دارەشمانە و لەنەبوونی فەقێ ئەحمەددا، گوندی دارەشمانە لە دەستدرێژی ٤٠٠-٥٠٠ پیاوی هۆزی بڵباس بپارێزێت و وەکو سەرکردەیەکی سەربازی دەربکەوێت، ناوبراو دوو کوڕی لە فەقێ ئەحمەددا هەبووە، بەناوەکانی "بوداخ کەیغان" و "باباسلێمان" کە میرەکانی بابان نەوەی بابا سلێمانن (ڕیچ، ٢٠٠٢، ٢٦٧-٢٦٩).

هەروەها ریچ لەسەردانی بۆ کوردستاندا لەبارەی ئازایەتی ئافرەتانی کوردەوە دەدوێت، کە دەڵێت:

"بەڵگەش لەسەر ئازایەتی ئافرەت کەم نییە لە ئافرەتی کورد دا.. فەیزوڵافەندی هاتە لام و بانگی نۆکەرێکی خۆی کرد و پێی گوتم کە ئاخۆ هیچ شتێکی سەیر و نامۆ دەبینم؟ منیش هیچم بەدی نەکرد و وەکو کوڕێکی چاپوك ئەوم بینی، بەڵام پێی


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

گوتم ئەمە کوڕنییە، بەڵکو بەکارترین نۆکەریشە، کە پیاو بڕواناکات، ڕەوشتیشی بێگەردە، بەڵکو بۆتە مایەی شەرفەمەندیش بۆ ئافرەتان. ئازایەتییەکەشی لەسەروی ئازایەتی پیاوەوەیە، هێشتا کچیشە. ڕۆژێکیان تورکێك ویستبووی دەستی بۆ درێژبکات، بەڵام ورگی هەڵدڕیبوو، وتبووی ئەگەر گەورەکەشم بیەوێ شتی وام لەگەڵدا بکات، سێ و دووی لێناکەم ورگی دەدڕم. شانازایش بەوە دەکات کە چەند جارێك هێرشی کردۆتە سەر تۆپێکی داگیراوە، بێ ئەوەی بگەڕێەوە، یان ڕمەکەی بهاوێ، تا گەیشتۆتە سەر سەربازە تۆپچییەکە، جل و بەرگی پیاوانەی لەبەرکردبوو، شاڵێکی ئاوریشمیشی لەسەرەوە پێچابوو. باڵایەکی زراڤی پێوەبوو، تەمەنی هەر لەنێوان ٢٥-٣٠ ساڵی دەبوو، سەروسیمایەکی کوردانەی هەبوو، هەتاو بردربووی" (ڕیچ، ٢٠٠٢، ٢٦١-٦٢٦).

خودی ئەم زانیارییانەش دەرخەری ئەو ڕاستییەن کە لە نێو ئافرەتانی کوردیش دا چەندین سەرکردەی سەربازی و لێهاتوو پەیدابوونە، هەروەها لە مەیدانی شەڕدا ئافرەتانیش وەکو پیاوان ڕۆڵییان بینییوە و ئازایەتییان نواندووە.

**باسی دووەم: ڕۆڵی سەربازییانەی ئافرەتی کورد لەدوای ڕووخانی میرنشینە کوردییەکان لە سەدەی ١٩ زاینیدا:**

لەدوای نەمانی میرنشینە کوردییەکانیش، ئافرەتانی کورد لەنێو سوپای دەوڵەتی عوسمانی و هێزە کوردییەکاندا ڕۆڵییان بینیوە، بۆنموونە قەرەفاتم "فاتمە ڕەش"[١١] کە لە شەڕی قرم لەدژی ڕووسەکان لە قارس و ئەرزەڕۆمدا توانیویەتی سەرکردایەتی کەتیبەیەکی ٥٠٠ سەربازی کورد بکات و زەرەرێکی زۆر لە سوپای ڕووسەکان بدات، ناوبراو خەیاڵ و مێشکی ڕۆژئاواییەکانی داگیرکردبوو (زکي بك، ٢٠٠٠، ٢٤٧)، تەنانەت ڕۆژنامەی نیۆرك تایمزی ئەمریکی بابەتێکی لەبارەی قەرەفاتم لە ساڵی ١٨٧٧بڵاوکردەوە بەناونیشانی ئافرەتە جەنگاوەرە ئەفسانەییەکەی کوردستان " the redoubtable female warrior of Kurdistan "، هەروەها ڕۆژنامەی وەقایع لە ژمارە ٧٣٠ لە ڕێکەوتی ١٨٧٧/١١/٤ز بەمشێوەیە باسی قەرەفاتم دەکات

" پێشتر باسمان لە شازادەیەکی کورد کەردووە، کە بە تەنها سەرکردایەتی سەربازی هێزێکی دەکرد، ئێستاش هەواڵەکانی ئەو لە ئەستەنبۆڵ "ئەستانە" بڵاوبۆتەوە، کە ئەم شازادەیە ناوی قەرەفاتمە، کاتێ: عوسمانییەکان هێرشیان کردە سەر گوندی "قەزویم تەبە" ئەوا ناوبراو بووەتە سەرکردەی هێزێکی سەربازی بوو، ناوبراو خەڵکی بروجە، ئەو جوانێکی دەوڵەمەند و نیشتمان پەروەرە و پەرەوەردەیەکی خولاسەی ئیسلامی هەیە، ئەو هێزێکی ٥٠٠ کەسی پێکهێناوە کە بریتین لە خۆبەخشانی وڵاتەکەی" (زکي بك، ٢٠٠٠، ٢٤٧).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەروەها لە ساڵانی ناوەڕاستی سەدەی ١٩ز دا (ماما پوورە حەلیمە)ی پشدەر و (ماما قەرە نێرگز) لە هۆزی شوان، کە دوو ژنی ناسراو و ئازای کوردبوون لە باشوری کوردستاندا (ئیزەدی، ٢٠٠٢، ٤٤٠) هەروەها ماما پرشەنگ خان لە هۆزی میلیتان ، هەروەها شەمسەخان و پەریخان و مریەم خان و فەسلەخاتوون کە بەشدارییان لەشەڕی خوێناوی و سەخت دژی هێزەکانی سوڵتانی عوسمانی کردووە، کە دەیەویست خێڵە کوردەکان ملکەچ پێبکات (لیرخ، ٢٠٠٨، ٣٨-٣٩)· هەروەها ئافرەتانی هۆزە کۆچەرییەکانی وەکو هۆزی هەمەوەند بەشدارییان لەجەنگدا دەکردوو، تەواو چەکدار و ئەسپسواربوون (سۆن، ٢٠٠٧، ٥١) هەربۆیە ئەم گەریدە ئەڵمانییە ژنی کوردی بە ژنی ئەڵمانی چواندووە، کە هەردەم لەدوای مێردەکانیان بوون و یارمەتیان داون بەتایبەتی لەکاتی شەڕدا(عومەر، ٢٠١٤، ٢٠٣).

ئەمەش دەریدەخات، ژنانی کورد بۆ پاراستنی عەشیرەت و زێدی خۆیان، ئامادەی ڕووبەڕووبوونەوە و شەڕکردن بوون لەگەڵ دەوڵەتانی زلهێزی ئەوکاتی ناوچەکە ، کە بریتی بوون لەدەوڵەتی عوسمانی و دەوڵەتی ئێران. لە قۆناغەکانی دواتریشدا ئافرەتانی وەکو عادیلە خانم و قەدەم خێر لەناو کورداندا دەرکەوتوون، بەتایبەتی لەناو کۆمەڵگای کوردیدا وەکو سەرکردەیەکی سیاسی و کارگێڕی ڕۆڵێکی بەرچاوی بینیوە، ئەوا عادیلە خانم (١٨٥٩-١٩٢٤)[١٢] بووە، ماوەیەك لە شاری سنە ژیاوە، دواتر بەهۆی هاوسەرگیرکردنی لەگەڵ عوسمان پاشای جاف هاتوەتە شاری هەلەبجە و لەوێ نیشتەجێ بووە، لەساڵی ١٩٠٩ لەدوای کۆچی دوایی هاوسەرەکەی بووە بە قایمقامی هەڵەبجە. مێجەرسۆن لەساڵی ١٩٠٠ز سەردانی سنوورەکانی کوردستانی کردووە و لە شاری هەڵەبجە چاوی بە عادیلە خانم کەوتووە و لەبارەیەوە دەڵێت "ئەو دەسەڵاتەی هەیەتی بەهۆی کاریگەری ئەو چەکانەی دەستییەتی کە بەکاری دەهێنێت" (Bengio, 2016, 2). ئەمەش ئەو ڕاستییەمان بۆ دەردەخات کە عادیلە خانم هێزی سەربازی جافەکانی لەدەستدا بووە و توانیویەتی وەکو سەرکردەیەکی سیاسی و کارگێڕی و سەربازی خۆی بنوێنێت. دواتر عادیلەخانم لەلایەن ئینگلیزەکانەوە نازناوی خانم بەهادور "شازادەی پاڵەوانان"ی پێبەخشرا، ئەویش بەهۆی ڕزگارکردنی ژیانی چەندین سەربازی بەریتانی کە لە شاری هەڵەبجە جێگیربوبوون (الصويركي، ٢٠٠٠، ٣٧٦).

لەم تەوەرەیەدا بەدیار دەکەوێت ئافرەتانی کورد خاوەنی پێگەیەکی گەورەبوونە لەناو کۆمەڵگاکەیان، کە هەم لە لایەنی سیاسی و سەربازی. هەر ئەمەش وایکردووە ئافرەتانی کورد بەچاوێکی بەرز و گەورە سەیربکرێن، بەتایبەتی لە قۆناغە جیاوازەکاندا ڕۆڵێ کاریگەر و بەرچاویان لە نێو میرنشین و کۆمەڵگا کوردییەکان بینیوە و بوونەتە هۆی ڕاگرتنی حوکمڕانی و دەسەڵاتی میرنشینەکان، ئافرەتان خاوەنی پێگە و کەسایەتییەکی بەهێز و قارەمانییەتی زۆر بوونە، هەربۆیە خانزادی سۆران و کەیغان و قەرەفاتم و عادیلەخانم و چەندان ئافرەتانیتری ئەوکاتی نموونەی باڵای ئافرەتانی نێو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

میرنشـین و کۆمـەڵگای کـوردین ،کـە لـەڕووی سیاسـی و سـەربازییەوە لەوکاتیـدا لـەنێو میرنشین و کۆمـەڵگای کوردی ئەوکاتیـدا دەرکـەوتوون. تەنانـەت لەسـەر ئاسـتی هێـزە نێـو دەوڵەتی و ناوچەییەکانیشدا بایەخیان پێدراوە و بونەتە بابەتی قسەوباسیان.

**تەوەرەی دووەم: ڕۆڵی زانستیانەی ئافرەتی کورد لەنێوان سەدەی ١٧ تا ١٩ی زایینیدا:**

**باسی یەکەم: دروستکردنی کتێبخانە و مزگەوت و قوتابخانەکان وەکو ناوەندێکی زانستی**

هەر لە سەردەمانی زووەوە لەنێو کۆمەڵگا کوردییەکاندا ئافرەتان ڕۆڵێکی باڵایان هەبووە لە بەرەوپێش بردنی زانست و ئایین لە کوردستاندا. بۆ ئەمەش چەندین توێژینەوەی زاسـنتی لـە چوارچێوەی نامـەی ماسـتەر و تێـزی دکتـۆرا و توێژینـەوەی زانسـتی جۆراوجـۆر نووسراون کە ئاماژە بەو ڕۆڵەی ئافرەتان لە بواری ئاینی و بواری زانستی دەکەن. بەتایبەتی ئافرەتانی کورد ڕۆڵیان هەبووە لە خزمەتی فەرموودە و گێڕانەوەیان، هەروەها وانەی بابەتە ئاینییەکانیان بە فێرخوازانیان گوتەوەتەوە، تەنانەت بەشدارییان لە دروستکردنی قوتابخانە و مزگەوت کردووە. بەگشتی ئەم ڕۆڵەی ئافرەتان لە قۆناغەکانیتریشدا بەردەوامبووە و زانسـت و ئـاین هاوتـەریبی یـەکتری لەلایـەن ئافرەتـانی کـوردەوە گرنگییـان پێـدراوە. لـە قۆناغەکانی دواتریشدا وە لە خزمەتکردنی لاینی زانستیدا ئافرەتانی کورد ڕۆڵی بەرچاوییان بینیووە، بۆنموونە لەنێو ئافرەتە کوردەکانی دەوڵەتی ئەیوبیشدا[١٣] چەندین ئافرەتی لێهاتوو هەڵکەوتوون، بەتایبـەتی لەلایـەنی سیاسی و خزمـەتکردنی بـواری ئـاین و زانسـت، بۆنموونـە سەفیە خاتون یاخود "ضەیفە خاتون"[١٤] کە خێزانی مەلیك زاهیر و کچی مەلیك عادل[١٥] بوو. کە ماوەی شەش ساڵان حوکمڕانی شاری حەلەبی کرد تاکو کوڕەکەی بەناوی "مەلیك عەزیز" تەمەنی پێڕاگەیشت بووە حوکمڕانی شاری حەلەب (زرکلي، ٢٠٠٢، ٢١٦). لە ساڵی ١٢٣٥ز مەدرەسەی فیردەوسی لەشاری حەلەب درووستکرد، کە لەسەر ئەرکی خۆی مووچەی مامۆستایانی مەدرەسەکەی دەدا، ئەمە لەکاتێدا چەندین مزگەوتیشی نۆژەنکردەوە و مزگەوتی تریشی لە حەلەب درووستکرد (علي، ٢٠٠٥، ١١٦). نەك هەر ئەمە، بەڵکو چەندین ئافرەتی دیکەی زانستخواز و پاڵپشتیکاری زانست لەوکاتەدا دەرکەوتن، لەوانە ست شام[١٦]، کە دامەزرێنەری قوتابخانەی "البرانیة"یە لە دیمەشق (البرزنجي، ٢٠١٠، ١٤٣).

لەسەردەمی حوکمڕانی میرنشینە کوردییەکانی سەردەمی عوسمانیدا بەشێك لە ئافرەتانی کورد سەرەڕای هەبوونی ڕۆڵی سیاسی و سەربازی و کارگێڕییانەیان، ئەوا ڕۆڵیان لە بەرەوپێشبردنی زانستیشدا هەبووە، ئەویش بەهۆی گرنگیدانیان بە لایەنی ئاینی و زانستی، هەروەها گرنگیدانیان بە درووستکردنی قوتابخانە و ئاوەدانکردنەوەی مزگەوتەکان و هاوکاریکردنی مامۆستایان و زانایانی ئەوکاتی، هەربۆیە ئافرەتانی کورد لە دەرەوە و ناوەوەی کوردستانیش دا لە بوارە جیاجیاکاندا ڕۆڵیان بینیووە، بەتایبەتیش لە خزمەتکردنی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

زانست و زاتسخوازیدا، بۆنموونە زەینەب خاتوونی خێزانی مەلا ئیدریسی بەدلیسی[17] لەدوای کۆچی دوایی هاوسەرەکەی، مزگەوتێك بەناوی ئیدریسییە و سەرچاوەیەکی کانی لە ناوچەی ئەیوبییە لە ئەستەنبۆڵ درووست دەکات وەکو وەقفێکی خێرخوازی بۆ مێردەکەی (ÖZCAN, 2000, 485).

ئەم ڕۆڵەی ئافرەتان لە قۆناغەکانی دواتریشدا لە نێو میرنشین و کۆمەڵگا کوردییەکاندا بەردەوامبوو، هەروەکو خانزاد خاتون لە ساڵی ١٠٧٠ك/ ١٦٥٩ز کتێبخانەیەك و مەدرەسەیەکی بەناوی خۆی کردۆتەوە، کە ئەم ڕاستییەش محەممەد عەلی قەرەداغی بە وەرگرتن لە دەستنووسێکدا بە ژمارە (٢٠٢٧٨) لە (دار صدام للمخطوطات) ئاماژەی بۆ کردووە (قەرەداغی، ١٩٩٨، ٨٥). تەنانەت خانزاد خاتوون لەگەڵ گرتنە دەستی دەسەلات، ئەوا چەند مزگەوتێکیشی ئاوەدان کردۆتەوە (هەروتی، ٢٠١٨، ٩٠). لەگەڵ ئەمەش دا محەممەد عەلی قەرەداغی ئاماژە بە دەستنووسەکیتریش دەکات بە کۆدی (٩٠٨٣) کە ئاماژە بۆ ئەوە دەکات ئافرەتێکیتریش بەناوی ست رضیة لەساڵی ١١٨٢ك/ ١٧٦٨ز کتێبخانە و مەدرەسەی بەناوەوە هەبووە (قەرەداغی، ١٩٩٨، ٨٥).

هەروەها لە شاری کۆیە[18] مزگەوتێك هەیە کە لەلایەن ئافرەتێکەوە دامەزراوە بەناوی مزگەوتی دایە خەجێ، لەم مزگەوتەدا چەندین کەڵە زانا تێیادا خوێندووە، لەوانە شێخ جامی لە ساڵی ١١٤٢ك/ ١٧٣٠ز لەو مزگەوتەدا خوێندویەتی (قەرەداغی، ١٩٩٨، ١٥٥).

شوێن پەنجەی ڕۆڵی ئافرەتانی کورد لەدەرەوەی کوردستانیش لە خزمەتکردنی زانست دا دەبینین، لەگەڵ ئەوەی بۆچوونی جیاواز لەبارەی محەممەد عەلی پاشای میسرەوە هەیە، کە هەندێك لە سەرچاوەکان بە ئەلبانی و خەڵکی شاری (قەواله)ی دەناسێنن، بەڵام سەرچاوەیتر بە سوود وەرگرتن لە بابەتێکی نێو ڕۆژنامەی "المصر" لە ڕێکەوتی ١٩٤٩/١١/٢٥ بە ناونیشانی "ولي العهد حدثني عن ولي النعم..." کە تیایدا بە هێنانەوەی چەند بەڵگەیەك، ڕەچەڵەکی محەممەد عەلی پاشای دەگەڕێننەوە بۆ کوردەکانی شاری دیاربەکر، کە باوکی محەممەد عەلی پاشای میسر لە دیاربەکرەوە چووە بۆ شاری قەوالەی ئەلبانیا(عوني، زاید، عوض، ٢٠١١، ١٠١-١٠٢). تەنانەت چەندین ساڵ پێش چاپ بوونی ئەم کتێبەش، ئەوا سەرچاوەیتر ئاماژە بە کورد بوونی محەممەدی عەلی پاشای میسر دەکەن و باسی ڕۆڵی زانستخوازی زەینەبی کچی محەممەد عەلی پاشای میسر دەکەن، کە لە ساڵی ١٨٢٨ز لە قاهیرە لەدایکبووە، ناوبراو هاکاری چەندین مزگەوتی کردووە، هەروەها هاوکاری زانایانی ئاینی کردووە و مووچەی مانگانەی بۆ زانایان فیقهی هەر چوار مەزهەبەکە دابینکردووە. لەگەڵ ئەمەش دا وەقفی بۆ مزگەوتی ئەزهەر و چواردە مزگەوتیتر بەناوەکانی مزگەوتی حوسێنی، مزگەوتی سەیدە نەفسیە، مزگەوتی سەیدە زەینەب..هتد هەروەها چەندین تەکیەی وەکو تەکیەی نەقشبەندی و تەکیەی کالتەکی مولی (الصويركي، ٢٠٠٠، ٣٠٥-٣٠٦).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەموو ئەو بابەتانەی لەسەرەوە باسکران دەرخەری ئەو راستییەن کە ئافرەتانی کورد شانبەشانی پیاوان ڕۆڵییان بینیوە لە بەرەوپێشبردنی زانست لە ناو کۆمەڵگای کوردیدا، ئەویش بەدروستکردنی قوتابخانە و مەدرەسە و دروستکردنی مزگەوت و هاوکاریکردنی زایان و زانستخوازان. کە ئەم تایبەتمەندییەش ئافرەتانی کورد هەر لەکۆنەوە هەیانبووە و زانست بەشێك بووە لە لاپەنەکانی ژیانیان.

**باسی دووەم: ڕۆڵ و دەرکەوتنی ئافرەتانی کورد لە زانستە جۆربەجۆرەکانی ئەوکاتیدا**

ئافرەتانی کورد جگە لە لایەنەکانی سیاسی و سەربازی و خزمەتکردنی زانست و زانیاری، ئەوا چەندی ئافرەتی زانستخواز و زانا لەناو کوردان دەرکەوتن کە خزمەتێ‌ی زۆریان لەبوارە جیاوازەکاندا کرد، بەتایبەتی لە بابەتەکانی فەرمودەناسی و مێژوو و شیعر و ئەدەبیات کردووە، بۆنموونە لە نێو بنەماڵەی ئەییوبیدا چەندین ئافرەتی فەرمووەدەناس و زایانی ئاینی دەرکەوتن، بۆ نموونە: موئنیسەی کچی مەلیك عادل کە لەساڵی ٦٠٣ك/١٢٠٥ز لەدایکبووە و یەکێك لەو ئافرەتانەبوو بووە پسپۆڕ و شارەزا لەبواری فەرمووەدەناسی و گێڕانەوەی فەرمووەدەکانی پێغەمبەری ئیسلام، هەروەها ست نەعیم حەررانی کە لەدایکبوی ساڵی ٦٣٨ك/١٢٤٠ز ئەویش یەکیك بوو لەو ئافرەتانەی پسپۆڕی بواری فەرمودەناسی بوو، وە لە ساڵی ٧٢١ك/١٣٢١ز لە تەمەنی ٨٣ ساڵیدا کچی دوایی کردووە، هەروەها فاتیمەهی کچی بەدرح محەممەد کوڕی جەمال یوسف کوڕی عەبدوڵلا کوڕی عومەر کوڕی عەلی کوڕی خدری کوردی گۆرانی کە لەساڵی ٧٩٤ك/١٣٩١ز لەدایکبووە و لەساڵی ١٤٦٨ز کۆچی دوایی کردووە، هەروەها جویرییە عێراقی کوردی کە لەساڵی ١٤٥٨ز کۆچی دوایی کردووە، ئەوانیش بەشێك بوون لەو زانا ئافرەتانەی رۆڵێکی بەرچاویان لە زانستە ئیسلامییەکانی ئەوکاتیدا هەبووە، (فتاح، عبوش، ٢٠١٩، ٣٤، ٣٥، ٦٢، ٦٥-٦٦).

ئافرەتانی کورد بەر لەهاتنی عوسمانییەکانیش بۆ کوردستان ئەوا بەشێکیان خزمەتی بەرچاویان لە بورای زانستدا کردووە، بۆنموونە زەینەب کچی عەجمی گۆرانی کوڕی یوسف کوڕی عەبدوڵلا کوڕی عومەر کوڕی عەلی کوڕی خدر، ناوبراو لەخانەوادەیەکی زانستی و ئاین پەروەر ژیاوە، بەتایبەتی گرنگیان بە زانستی فەرمووده داوە، ناوبراو لە سەدەی ١٥ز کۆچی دوایی کردووە، هەروەها فاتیمە ئوم حەسەن گۆرانی، کە ئەویش ناوی راستەقینەی خۆی فاتیمە کچی بەدر کوڕی محەممەد کوڕی جەمال کوڕی یوسف کوڕی عەبدوڵلا کوڕی عومەر کوڕی عەلی کوڕی خدری کوردی گۆرانییە، فاتیمە لەدەوروبەری ساڵانی ١٣٩١ز لەدایکبووە و لە ساڵی ١٤٦٨ز کۆچی دوایی کردووە (فتاح، عبوش، ٢٠١٩، ٦٥،٦٦).

بەگشتی لە سەردەمانی کۆندا کچان زۆر بەکەمی هەبوون بخوێنن، وە هەندێك کات هەبووە کە ئافرەتانی خاوەن زانستە شەرعییەکان وانەیان بە قوتابیانی کوڕ دەگوتەوە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(قەرەداغی، ١٩٩٨، ١١)، بەڵام لەگەڵ ئەمەشدا چەندین ئافرەتی زانای کورد لە زانستی فەرموودە و زانستە ئیسلامییەکاند دەرکەوتن، بۆنموونە: فاتیمە خاتوون کچی بەدر محەممەد کوری جەمال یوسف، ناوبراو لەماوەی ساڵانی ١٤٠١-١٤٥٦ز ژیاوە، یەکێك بووە لەو کەسانەی بەدوای زانستدا گەڕاوە و بڕوانامەی زانستی (إجازة العلوم) لەسەر دەستی ئیبن سدیق و ئیبن قەوام وەرگرتووە (الصويركي، ٢٠٠٠، ٥٣٤). هەروەها سەلما جەزەری کچی محەممەد کوڕی محەممەد کوڕی جەزەری کە بە (أم الخير) ناسراوە، ناوبراو لەساڵی ١٤٢٧ز ناوبراو یەکێك بووە لەوانەی قورئان خوێنێکی ناودار و قورئانی لەبەرکردووە و شاعیرێکی ناودار بووە و بەزمانەکانی فارسی و عەرەبی شیعری نووسیوە (الصويركي، ٢٠٠٠، ٣٢٣).

لەم ماوە مێژوییەدا ئافرەتانی کوردی ناموسڵمانیش لەو ماوەیەدا ڕۆڵیان بنیوە، بۆ نموونە ئاسینات بارزانی کە لەماوەی ساڵەکانی ١٥٩٠-١٦٧٠ز ژیاوە، ناوبراو کچی شەموئیل بارزانی بوو کە پیاوێکی ئاینی ناوداربوو، ئاسیناتی کچی لەسەر زانست و خوێندنەوەی تەورات پەروەردەکرد، هەربۆیە دواتر ئاسینات بووە یەکێك لەو ئافرەتە ناودارانەی لە شاری موسڵ وانەی خوێندنەوەی تەورات بە خەڵکیتری جولەکە بدات (ئیزەدی، ٢٠٠٢، ١٦٢-١٩٠). تەنانەت لەدوای کۆچی دوایی هاوسەرەکەی، بووە یەکەم حاخامی مێینە لە مێژووی نوێدا، هەروەها قوتابخانەیەکی تایبەت بە فێرکردنی منداڵانی جولەکەی دامەزران ( Bengio, 2016, 4).

دەرکەوتنی ئافرەتان تەنها لە بابەتی زانستە ئاینییەکان بەگشتی و فەرموودەناسی بەتایبەتی نەبوو، بەڵکو لەبواری مێژوو و ئەدەبیاتیشدا ڕۆڵیان هەبووە، بۆنموونە: ماهـ شەرەفخانم، ناسراو بە (مەستورەی کوردستانی)، ڕۆژئاواییەکان بە یەکەم مێژوونووسی ئافرەتی دادەنێین لە ڕۆژهەڵاتی ناوەڕاست ناوبراو مێژوونوسی و شاعیر و نووسەر بووە (Joseph, Nağmābādī, 2005, 359). مەستورە لە ساڵی ١٨٠٣ز لە شاری سنەی پایتەختی ئەردەلانییەکان لەدایکبووە و لە سالی ١٨٤٤ز کچی دوایی کردووە. مەستورە کچی حەسەن بەگ کوڕی محەممەد ئاغای وەزیری کوردستان لە هۆزی قادرییە. باوکی بەڕێوەبەری خەزێنەی میرنشینی ئەردەلان بوو، هەروەها هاوسەرەکەشی خەسرۆ ناکام والی ویلایەتی ئەردەلان لە کوردستانی ژێردەستی ئێران بوو، کە ئەویش بە شاعیر ناسرابوو. ناوبراو لەگەڵ قووڵبوونەوە لە شیعر و ئەدەبیاتدا، ئەوا لەبواری مێژووشدا ڕۆڵێکی بەرچاوی بینیوە و خاوەنی کتێبی (مێژووی کوردستان)ە. سەرچاوەکان ئاماژە بۆ ئەوە دەکەن کە مەستورەی ئەردەڵانی خاوەنی بەرهەمی ئاینییە و لە بابەتەکانی زانستی ئیسلامییشدا بەرهەم و نوسینی هەبووە (الصويركي، ٢٠٠٠، ٥٧٢-٥٧٣ ؛ زكي بك، ١٩٤٥، ٢٤٨-٢٤٩). هەروەها حەیران خانی کچی کەریم خانی دونبلی، یەکێکیترە لەوشاعیرانەی لەو کاتەدا ژیاوە، ناوبراو لە نەخچەوان لە وڵاتی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

قەوقازی ئێستادا لەدایكبووە، دواتریش چۆتەوە ناوچەكانی ئورمیە (ڕەزاییە)، ناوبراو شاعیرێكی ناوداربوو كە بەزمانی فارسی شیعری دەنووسی (الصويركي، ٢٠٠٠، ٢٤٢).

یەكێكیتر لەو ئافرەتانەی لەوسەردەمیدا دەركەوتوون، ئەوا سریە خانمە، كە لەساڵی ١٨١٤ز لە دیاربەكر لەدایكبووە، ناوبراو لەگەڵ خێزانەكەیدا چۆتە بەغدا و دواتر گەڕاوەتەوە زێدی خۆی، ئینجا بۆ جاری دووەم دەچێتە ئەستەنبوڵ و تا كۆتایی تەمەنی لەوێدا دەمێنێەوە. سریە خانم یەكێك بووە لەو ئافرەتانە كوردانەی لەبواری شیعر و ئەدەبیاتەوە ڕۆڵی هەبووە، ناوبراو شیعری بەزمانەكانی توركی و فارسی نووسیوە (الصويركي، ٢٠٠٠، ٣١١ ؛ زكي بك،١٩٤٥، ٢٣٧). هەروەها عائیشە تەیموری بوو، خودی بنەماڵەی تەیمورییەكان لە بنەڕەتدا خەڵكی باشوری كوردستانن و لەسەردەمی محەممەد عەلی پاشای میسر چوون بۆ میسر، عائیشە لەماوەی سالانی ١٨٤٠-١٩٠٢ز ژیاوە. باوكی ناوبراو بەرپرسی دیوانی خدێوی ئیسماعیل بوو "دەكاتە پێگەی وەزیری دەرەوە" فاتیمە لەبواری شیعر و ئەدەبیاتدا دەستێكی بالای هەبووە و بەزمانەكانی توركی و عەربی و فارسی شیعر و بڵاوكراوەی هەیە، هەروەها دیوانێكی شیعری بەناونیشانی "حلیلة الطراز" هەیە، هەروەها بەرهەمێكیشی بەناوی "نتائج الأحوال في الأقوال والأفعال" بەزمانی فارسی هەیە، هەروەها دوو ەبرهەمیتر بەناوەكانی "شكۆڤە" و "دیوان عصمت" كە ئەمانەش دیوانی شیعرین و بەزمانی توركین. (مصطفی، ٢٠١٣، ١٨).

فاتیمەی كوردی یەكێكیترە لەو ئافرەتانەی لەبواری زانستە ئیسلامییەكان و تەسەوفدا ڕۆڵی هەبووە، ناوبراو لەماوەی ساڵەكانی ١٨٨٦-١٩٦١ز ژیاوە و لەسەردەستی باوكی زانستە ئیسلامییەكانی خوێندووە، بەتایبەتی بابەتی فیقهی خوێندووە، هەروەها لە بواری تەسەوفدا ڕۆڵی بنیوە و سەر بە نەقشبەندی بووە. لە سەدەی بیستەمدا وەكو مامۆستا لە قوتابخانەی كچان وانەی گوتوەتەوە (الصويركي، ٢٠٠٠، ٥٣٤-٥٣٥).

لێرەوە ئەو ڕاستییەمان بۆ دەردەكەوێت كە ئافرەتانی كورد لە لایەنی زانستیدا ڕۆڵێكی بەرچاویان هەبوو و لە زانستە جۆرەبەجۆرەكاندا دەركەوتوون، ئەوەی جێگای ئاماژەیە ئافرەتانی كوردی ناموسڵمانیش وەكو زانا و كەسانی زانستخواز دەركەوتوون، هەروەها ئافرەتانی كورد توانیویانە ببن بە ئافرەتی پێشەنگ لە ڕۆژهەلاتی ناوەڕاستدا، هەروەكو مەستورەخانی ئەردەلان هەلگری ئەم نازناوەیە

**ئەنجام:**

لە نووسینی ئەم توێژینەوەیەدا گەیشتین بە چەند ئەنجامێك، لەوانە:

یەكەم: ئافرەتانی كورد هەر لەكۆنەوە لەلایەنی سەربازی و زانستیدا شانبەشانی پیاوان ڕۆڵیان هەبووە، هەر ئەمەش وایكردووە لە هەمیشە ئافرەتان لەنێو كۆمەڵگای كوردیدا خاوەنی ڕێز و پێگەیەكی تایبەتی بن.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

دووەم: ئـەو ئافرەتانـەی کـە وەکـو سـەرکردەیەکی سـەربازی ناسـراون، لەهـەمان کـاتیش دا خزمـەتێکی زۆری لایـەنی زانسـتییان کـردووە، بۆنموونـە خـانزاد خـاتون سـەرەڕای ئەوەی سەرکردەیەکی سـەربازی لێهـاتوو بـووە، لەهەمانکـاتـدا خزمـەتێکی بەرچاوی لایـەنی زانسـتی و ئـاینیش کـردووە، هـەروەها بـەهۆی پێگـە سـەربازییەکەیەوە کاریگـەری لەسـەر دەوڵەتی عوسمانی داناوە و مووچەی تایبەتی لە سوپای هومایونی عوسمانیدا بۆ بردراوەتەوە.

سێیەم: ئافرەتـانی کـورد جگـە لـەو زانسـت و بـوارەی کـە خزمـەتیان تێـداکردووە، لەهەمانکاتـدا بـە ئافرەتـانی یەکـەم و پێشـەنگ لـە ڕۆژهـەڵاتی ناوەڕاسـتدا هـەژمارکراون، هەروەکو ماهـ شەرەفخانم "مەستورەی ئەردەلانی" بە یەکەم مێژوونووسی ئـافرەت دادەنرێت لە ڕۆژهەڵاتی ناوەڕاستدا.

چوارەم: ئافرەتانی کـورد لـە دەرەوە و نـاوەوەی کوردسـتان، لـە خزمـەتکردنی زانسـتدا ڕۆڵێکی بەرچاویان هـەبووە، چ بـەهۆی دروسـتکردنی قوتابخانـە و مزگـەوتـەوە بووبێـت، یـاخود بـەهۆی خوێنـدنیان لـە زانسـتە جۆربـەجۆرەکانی ئەوکاتییـەوە بووبێـت، تەنانـەت مووچـەی مامۆستایان و زانایانی ئەوکاتیشیان دابینکردووە.

پێنجـەم: ڕووخـانی میرنشـینە کوردییـەکانی سـەردەمی دەوڵـەتی عوسـمانی نـەبووە بەربەرست لەبەردەم دەرکـەوتنی سـەربازییانە و زانسـتیانەی ئافرەتـانی کـورد، بـەڵکو ئافرەتـانی کورد لەدواتردا بوونە جێی باسی گەریدە و ڕۆژنامە خۆرئاوا.

شەشـەم: ئازایـەتی ئافرەتـانی کـورد لـە مەیـدانی جەنگـدا یەکێکـە لـە تایبەتمەندییـەکانی ئافرەتـانی کـورد، هـەروەکو قـەرەفاتم و خـانزادی میـری سـۆران و ئـەو ئافرەتـەی لەلایـەن کلۆدیـۆس جیمس ڕیچـەوە باسـی لێوەدەکرێت کـە نموونـەی بـاڵای ئـەم بابەتـەن، هـەروەها گەریـدەکانیتریش باسـی هـەمان ئازایـەتی ئافرەتـان دەکـەن کـە لـەکاتی شەڕەکاندا شانبەشانی پیاوەکانیان بەشداری شەڕ دەکەن.

حەوتەم: لە نێو کۆمەڵگای کوردی دا دەرفەت بۆ ئافرەتانی کوردی ناموسڵمانیش هەڵکەوتووە و توانیویانە لەلایەنی زانسـتیدا خۆیان بـەرەو پێش ببـەن و لـەدوای پێگەیشـتن و پێشـکەوتنیاندا وەکـو مامۆسـتایەکی ئـاینی لـە بابـەتی ئـاینی جوولەکـەدا وانـە بڵێنـەوە و خزمەت بە ئاین و کلتوری خۆیان بکەن.

**لیستی سەرچاوەکان:**

**بەڵگەنامە:**

BOA.TSMA.E.1062.06, 1648,1
BOA.TSMA.E.1079.56, 1658,1

**دەستنووس:**

Çeleb, Evliya. (2000) Evliya Çeleb, Seyahatnamesi, Topkapı Sarayı Kütüphanesi (Awliya Chalabi Travel Book in the Topkapı Sarayı Library). Book IV. İstanbul: Topkapı Palace.

**ساڵنامەی عوسمانی:**

سالنامەی کارگێڕی ویلایەتی موسڵ، ١٣٢٥، ٢٢٢.

**کتێب:کوردی:**

ئیزدی، میهرداد. (٢٠٠٢). ئایین و تایفە ئاینیەکان لەکوردستاندا. وەرگێڕانی: کامەران فەهمی. سلێمانی: بڵاوکراوەی مەکتەبی بیروهۆشیاری(ی.ن.ك).

بایەزیدی، مەلا مەحمود. (٢٠١٥). داب و نەریتی کورد. وەگێڕانی شوکریە ڕەسول ئیبراهیم، چ٢. تاران: چاپخانەی پەنجەرە.

ڕیچ، کلدیۆس جیمس. (٢٠٢٢). گەشتنامەی ڕیچ بۆ کوردستان. هەولێر: ئاراس.

سۆن، مێجەر ئی. بی. (٢٠٠٧). چەند سەرنجێك دەربارەی هۆزەکانی کوردستانی خواروو. وەرگێڕانی نەجاتی عەبدوڵڵا. سلێمانی: بڵاوکراوەی بنکەی ژین.

قەرەداغی، محەمەد عەلی. (١٩٩٨). بوژاندنەوەی مێژووی زانایانی کورد لەڕێگەی دەستخەتەکانیانەوە. بەغدا: چاپخانەی ومیض.

محەمەد، ئاکۆ برهان. (٢٠١٨). میرنشینە کوردییەکانی سەردەمی عەباسی. سلێمانی: چوارچرا.

هاملتن. أ.م. (٢٠١٣). ڕێگایەك بە کوردستاندا. وەرگێرانی: عەلی عەبدولڕەحمان عەسکەری. هەولێر: خانەی موکریانی.

هەروتی، سەعدی عوسمان. (٢٠١٨). خانزادی سۆران و ئەدەبی زارەکی. هەولێر: چاپخانەی زانکۆی سەلاحەددین.

بایرەقدار، محەممەد. (٢٠٠٩). ئیدریسی بەدلیسی. وەرگێڕانی: شکور مستەفا. هەولێر: چاراس.

تەیب، جەمال فەتحوڵا. (٢٠٠٨). کۆیە ١٩١٨-١٩٥٨ "لێکۆڵینەویەکی مێژوویی سیاسییە". چاپی دووەم، هەولێر: چاپخانەی شەهاب.

**عەرەبی:**

ابن شداد، بهاءالدين. (١٩٣٤). النوادر السلطانية والمحاسن اليوسفية (سيرة سلاح الدين). قاهرة.

الأربيلي، ابن خلكان. (١٩٦١). وفيات الأعيان. مجلد ٥.

الأصفهاني، عماد الدين. (١٩٧٩). البرق الشامي، أسطنبول، جلد٤.

البرزنجي، تريفة أحمد. (٢٠١٠). إسهامات العلماء الأكراد في بناء الحضارة الإسلامية خلال القرنين السابع والثامن الهجريين. بيروت: دار الكتب العليمية.

بيات، فاضل. (٢٠٠٧). الدولة العثمانية في المجال العربية. بيروت: مركز دراسة وحدة العربية.
الدملوجي، صديق. (١٩٩٩). امارة بهدينان الكردية أو اماره العمادية. ط٢، أربيل: ئاراس
ديللافاليه، بترو. (٢٠٠٦). رحله ديللافاليه إلى العراق. بيروت: لدار العربية للموسوعات.
زركلي، خيرالدين. (٢٠٠٢). الأعلام. مجلد الثالث، بيروت: دار العلم للملاين.
زكي بك، محمد أمين. (١٩٤٥). مشاهير الكرد وكردستان في العهد الإسلامي. بغداد: مطبعة التفيض الأهلية.
الصويركي، محمد علي. (٢٠٠٠). معجم العلماء الكرد. سليمانية: ژين.
علي، محمد كرد. (٢٠٠٥). خطط الشام. بيروت: مؤسسة العلمي.
عوني، درية. زايد، محمود محمد. عوض، مصطفى محمد. (٢٠١١). الأكراد في مصر عبر العصور. طبعة الأولى.
فتاح، فوزية يونس، عبوش، فرهاد حاجي. (٢٠١٩). المرأة الكردية ودورها في خدمة الحديث النوبي الشريف من قرن (٦-٩هـ / ١٢-١٥م). زاخو: مركز زاخو للدراسات الكردية.
لرخ ، ب. (٢٠٠٨). دراسات حول الكورد الايرانيين وأسلافهم الكلدانيين الشماليين، ترجمة عبدي حاجي، ط٣. السليمانية: منشورات بنكەی ژين.
نەبەز، جەمال. (٢٠٠٣). الأمير الكردي مير محمد رواندزي، ترجمة: فخري شمس الدين. أربيل: اراس.
يوسف، عبدالرقيب. (٢٠٠١). الدولة الدوستكية. أربيل: اراس.
يوسف، محمد خير رمضان. (١٩٩٢). المرأة الكردية في التاريخ الإسلامي تراجم لأميرات الكردية... ومحدثات عالمات. بيروت: دار القادري.

**ئینگلیزی:**

Al-Zaʿbi, Fa'iza Mahmood Ahmed. (2003). Marriage Rituals in Egypt and Belad El-Sham. MA Thesis, Yarmuk University.
Bryce, James. (1876). Transcaucasia and Ararat. London: Macmillan and Co.
Joseph, Suad. Nağmābādī, Afsāna. (2005). Encyclopedia of Women and Islamic Cultures: Family, Law and Politics.
Milingen, Major Frederick. (1870). Wild Life Among the Koords. London: *Publisher Hurst and Blackett*.

**گۆڤار و جۆرنال کوردی:**

ئەحمەد، سامان حسێن. (٢٠٢١).' کیان و پێگەی ژن لە کۆمەڵگەی کوردیدا لە سەرەتای سەدەی نۆزدەوە تا ناوەڕاستی سەدەی بیستەم'. *گۆڤاری تەوار*، ژمارە ٧٥.
عومەر، موحسین ئەحمەد. (٢٠١٤). 'کورد و نەستۆری لە سەفەرنامە ویاداشتەکانی ئۆژێن بۆرێ دا'. *گۆڤاری ئەکادیمیای کوردی*، ژمارە ٢٩.

**ئینگلیزی:**

Ahmed, Bzhar Othman, Nori, AbdulWahed Jalal. (2020). ‘*The Life and Political Role of Kurdish Women in the Ottoman Empire*’. *IIUM JOURNAL OF RELIGION AND CIVILISATIONAL STUDIES*. Volume 3, Issue 2.

Bengio, Ofra. (2016). ‘Game Changers: Kurdish Women in Peace and War’. The Middle East Journal. Volume 70, Number 1.

**ماستەنامە و تێزی دکتۆرا:**

مصطفى، نازدار جليل. (٢٠١٣). كتابة التاريخ ادى الكورد في الدولة العثمانية في قرنين ١٨-١٩، أطروحة دكتوراه، أربيل: جامعة صلاح الدين.

هۆمەر، بەختیار مستەفا. (٢٠١٦). "بارودۆخی کۆمەڵایەتی باشووری کوردستان لە سەدەی نۆزدەهەمدا". (تێزی دکتۆرا، زانکۆی ڕاپەڕین).

Al-Zaʿbi, Fa’iza Mahmood Ahmed. (2003). “Marriage Rituals in Egypt and Belad El-Sham”. MA Thesis, Yarmuk University.

Anjum, Drakhshan . (2002). “State and Civilization under the Syro-Egyptian Ayyubids (1171-1250)”. PhD Thesis, Aligarh Muslim University Aligarh (India).

**ئینساکلۆپیدیای ئیسلامی:**

ÖZCAN, ABDÜLKADİR. (2000). İDRÎS-i BİTLİSÎ. Volume 21.

**پاشکۆ:**

**پاشکۆی ژمارە یەك: پێدانی بڕی ١٢٠ قروش وەکو مووچەی مانگانە بۆ خانزادی سۆران.**

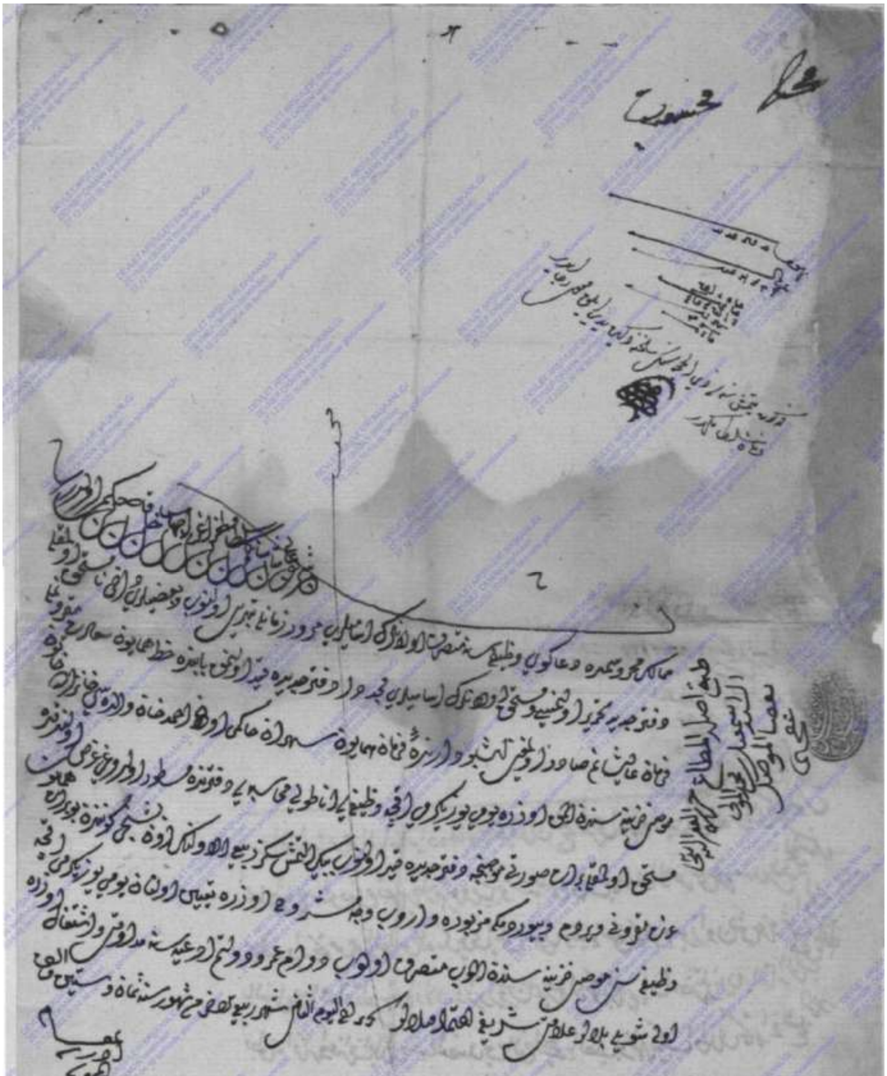

**پاشكۆی ژماره دوو: پێدانی برێك له پاره له بودجه‌ی سوپای هومایۆنی عوسمانییه‌وه بۆ دابینكردنی خۆراك و پێداویستی كۆشكی خانزاده خاتوون**



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

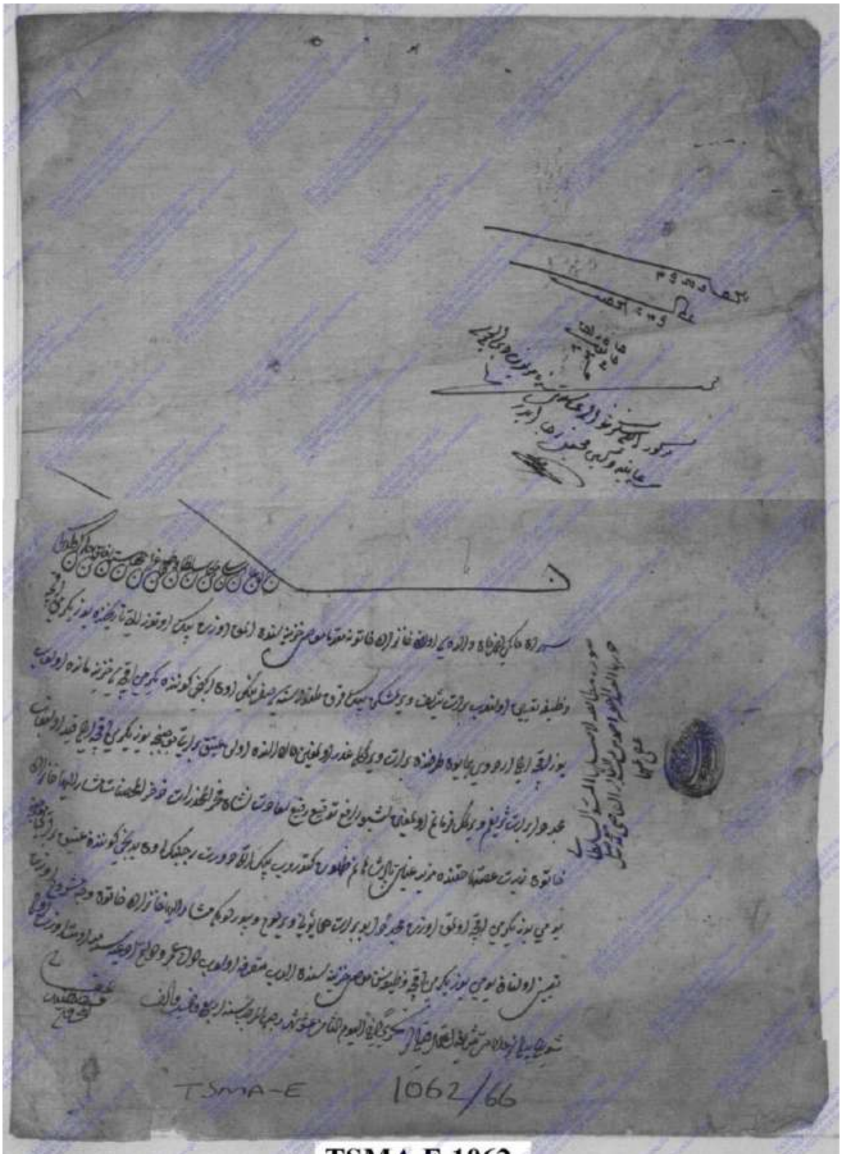


TSMA.E.1062

**پەراویز:**

---

١ مەلا مەحموودی بایەزیدی: لەساڵی ١٧٩٧ز لە شاری بایەزید لە دایکبووە، هەندێکیتر پێیان وایە لەساڵی ١٧٩٩ز لەدایکبووە، خاوەنی کتێبی "داب و نەریتی کورد"ە، کە لەساڵەکانی ١٨٥٨-١٨٥٩ز نووسیویەتی، دەستنووسی ئەم کتێبە لە کتێبخانەی ستالیکۆڤ – شدرین، لەشاری پێترسبۆرگ پارێزراوە. کتێبێکیتری بەناوی "چیرۆکی لەیل و مەجنون" لەساڵی ١٨٥٨ز لە ئەرزەرۆم نووسیوە، کە ئەوکاتە لەنێو ئەدەبیاتی فارسی و تورکی و عەرەبیدا باوبوو. هەروەها کتێبەکیتری سەبارەت بەزمانی کوردی هەیە بەناونیشانی "رسالة تحفة النحلان في الزمان کوردان"، کە ئەمەشی لەساڵی ١٨٦٦-١٨٦٧ز لە شاری ئەرزەرۆم نووسیوە. سەبارەت بە ساڵی کۆچی دوایی بایەزیدی بیروڕای جیاواز هەیە، هەندێك پێیان وایە لەساڵی ١٨٦٠ز کۆچی دوایی کردووە، بەڵام بەگوێرەی دەستنووسی کتێبەکەی بێت، ناوبراو لە ساڵی ١٨٦٧ز کۆچی دوایی کردووە. بایەزیدی بەمەبەستی بەدەستهێنانی زانست سەردانی شاری تەبرێزی کردووە، هەربۆیە بایزیدی خاوەنی زانستێکی زۆربوو لە زمان و ئەدەبیاتی زمانەکانی تورکی و فارسی و عەرەبی و کوردی. هەروەها زانستە ئیسلامییەکان و بابەتی مێژووی خوێ"دووە، ناوبراو یەکێك بووە لەزانا گەورەکانی سەردەمی خۆی، لەساڵی ١٨٥٦ز دەچێتە شاری ئەرزەرۆم، کە ئەوکاتەئەم شارە بۆ دەوڵەتی عوسمانی وە لە کوردستاندا گرنگی و بایەخی خۆی هەبووە (الصويركي، ٢٠٠٦، ٦٨٦-٦٩٠).

٢ کلۆدیۆس جیمیس ریچ : لە ڕێکەوتی ٢٨-٣-١٧٨٧ لە فەرەنسا لە دایکبووە، زمانەکانی فارسی و تورکی عوسمانی و عەرەبی و ئستالی و فەرەنسی زانیوە، دواتر لەگەڵ کۆمپانیای هیندی ڕۆژهەڵاتی بەریتانی کاریکردوە. هەر بەو هۆیەشەوە لە ساڵی١٨٢٠ هاتۆتە ناوخاکی دەوڵەتی عوسمانی و تەنانەت باشوری کوردستانیش گەڕاوە. کلۆدیۆس (ڕیچ، ٢٠٠٢، ٢٣-٢٥).

٣ جیمس برەیس: لەساڵی ١٨٣٨ز لەدایکبووە و لەساڵی ١٩٢٢ز کۆچی دوایی کردووە، بڕوانە (Bryce, 1910, 699).

٤ دەوڵەتی دۆستەکی یاخود دەوڵەتی مەڕوانی (٩٨٣-١٠٩٣) لەلایەن میر بەد کوڕی حوسێن کوڕی دۆستەک (٩٨٣-٩٩٠)، پاش شەڕە درێژخایەنەکان، شانشینی دامەزرێنرا. پایتەختی ئەم دەوڵەتە شاری میافارقین بووە دەکەوێتە باکوری کوردستان لە تورکیا، خودی بنەماڵەی مەروانیش لە نەوەی مەروان کوڕی کاکەوەی هاتوون کە دوای کوشتنی میر بەد حوکمڕانییان کردووە. بۆ زانیاری زیاتر (محەممەد، ٢٠١٨، ١٠٥-١١٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

[5] دەوڵەتی ڕەوادی لەماوەی ساڵانی (٩٥٤-١٠٧١ز) حوکمڕانیکرد، ئەم دەوڵەتە لەسەردەمی عەباسییەکان یەکێك بوو لە هێزترین حوکمڕانییە کوردییەکان کە لە شارەکانی تەبریز و ئازەربێخان و ئەردەبیل و وۆرمێ و مەراغە و میانا حوکمی دەکرد. خودی ناوی ئەم دەوڵەتەش دەگەڕێتەوە بۆ هۆی "رەوادی" کە ئیبن خەلەکان ئەربیلی لە باسی رەوادییەکاندا بە کورد دەیانناسێنێت، ئەم دەوڵەتە دامەزرێنەرەکەی ناوی محەممەدی کوڕی حوسێن ڕەوادی بوو (محەممەد، ٢٠١٨، ١١٨).

[6] لورستان بە ناوی عەشیرەتی لوری کورد ("ستان" بە واتای "خاکێک") ناونراوە. لە سەرەتای سەدەی ١٦ز دا دوو لقی هۆزی لور هەبوون، ئەوانش: لورستانی گەورە لە ژێردەستی سەفەوییەکان، و لوری بچووک لە ژێر دەسەڵاتی عوسمانیدا (بیات، ٢٠٠٧، ٣٥٨).

[7] میرنشینی سۆران: یەکێکە لەمیرنشیە بەهێزەکانی باشوری کوردستان، ئەولیا چەلەبی باس لە بەهێزی ئەم میرنشیە لەسەردەمی خۆیدا دەکات کە هاوکاتە لەگەل ماوەی حوکمڕانی خانزادی میری سۆران، ئەو پێی وایە ئەم میرنشیە زۆر بەهێزە و خاوەنی پەنجا تا شەست هەزار سەربازی ئازا و لێهاتووە، لە هەموو دەرفەتێکدا لەتوانایان دا هەیە هێرش بکەنە سەر ئێران، ئەوکاتیش جوگرافیای ئەم میرنشینە گەورە بووە و تاکو هەولێریشی گرتۆتەوە و بە بەشێك لە میرنشینی سۆران هەژمار کراوە (Çelebi, 2000, 685).

[8] خانزاد خاتوون کچی عومەر بەگی میری سۆرانە، لەدوای کوژرانی باوکی دەسەڵاتی وەرگرتووە و نزیکەی ٢٢ ساڵ حوکمڕانی کردووە (هەروتی، ٢٠١٨، ١٠٧)، بەڵام بەڵگەنامەکانی عوسمانی و دەستنووسی ئەولیا چەلەبی پێمان دەڵێت کە ناوبراو تاکو ساڵانی ١٦٤٨ز حوکمی کردووە و ئینجا کوڕەکەی هاتۆتە شوێنی (BOA.TSMA.E.1062.06, 1648,1; Çelebi, 2000, 373).

[9] بینینی دەقی بەڵگەنامەکە، بڕوانە پاشکۆی ژمارە (یەك).

[10] بۆ بینینی دەقی بەڵگەنامەکە بروانە پاشکۆی ژمارە (دوو).

[11] قەرەفاتم "فاتمە ڕەش" لەدایکبووی ساڵی ١٨٥٤ز، ناوبراو خەڵکی بروجە، لەشەڕی نێوان عوسمانی و رووسەکاندا بەشدارییەکی کاری کردووە وتەوانیویەتی ببێتە فەرماندەی هێزێکی ٥٠٠ سەربازی کوردی (الصویرکي، ٢٠٠٠، ٥٣٢).

[12] عادیلەکە خانم، ژنە سەرکردەیەکی کوردە کە بووەتە یەکەم قایمقامی ئافرەت لە مێژووی حوکمڕانی باشوری کوردستاندا، ناوبراو لەساڵی ١٨٥٩ لەدایکبووە و لەنەوەی بابانەکانە، بۆ خوێندن چووەتە شاری سنە، لەساڵی ١٨٩٥ز لەگەڵ عوسمان پاشای کوڕی محەممەدی پاشای جاف "حەمەپاشای جاف" هاوسەرگیری کردووە، ماوەیەك قایمقامی هەڵەبجە بووە، لەسەردەمی حوکمڕانییەکیدا چەندین ئاوەدانکاری بۆ شاری هەڵەبجە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کردووه و  بازاڕ و باخچەی بۆ شارەکە درووستکردووه، لەگەڵ درووستکردنی دادگایەك بۆ هەلەبجە، لەساڵی ١٩٢٤ کۆچی دوایی کردووه (زکي بك، ٢٠٠٠، ٢٤٤؛ الصويركي، ٢٠٠٠، ٣٧٦).

١٣ دەوڵەتی ئەیوبی: ئەم دەوڵەتە دەگەڕێتەوه بۆ ساڵی ١١٧١ز لەلایەن سەلاحەددینی ئەیوبییەوه دامەزرێنرا. ناوی ئەم دەوڵەتە دەگەڕێتەوه بۆ نەجمەدین ئەیوبی باوکی سەلاحەددین، کە باوك و باپیرانی (شادی) لە ناوچەی دوینی نزیك شاری کەرخ لە ڕۆژهەڵاتیئازەربێجان دەژیان. شادی باپیرەی سەلاحەدین خزمەتێکی زۆری دەوڵەتی شەدادی کردووه، کە ئەم دەوڵەتەش بە ڕەچەڵەك کوردن. دواتر کۆچ دەکەن بەرەو عێراق دێن و لە تکریت دەبێتە کاربەدەست، هەروەها ئەسەدین شێرکۆی مامی سەلاحەدین دەبێتە هاوکاری براگەورەکەی نەجمەدین لە حوکمڕانی شاری تکریت دا. ئەم بنەماڵەیە لە تکریت زۆر ناوداربوون، هێندەی پێنەچوو عیمادەدین زەنگی مووسڵ لەگەڵ خەلیفەی عەباسی "ئەلموستەرشیدبیلا" کێشەیان درووست دەبێت، سەرئەنجام نەجمەدین ئەیوب هاوکاری عیمادەدین زەنگی دەکات لە ڕاکردنی بۆ مووسڵ، هەروەها ڕووداوێکیتریش لەوکاتەدا ڕوویدا کە بریتی بوو لە کوژرانی خمزێکی بەهرۆزی فەرماندەی سەربازی سوڵتان غیاسەدینی سەلجوقی بووله بەغداد، ئەم خزمەی بەهرۆز ویستی لەشاری تکریت دەستدرێژی بکاتە سەر ئافرەتێکی بێدەسەلات، هەربۆیە ئەسەدین شێرکۆ کوشتی. لێرەوه ڕووداوەکە لەدادگای بەغدا زیاتر گەوره کرا و بڕیاری دەستگیرکردن بۆ هەردوو برا ئەیوب و شێرکۆ دەرچوو، بەڵام بەرلەوەی دەستگیر بکرێن شاری تکریتیان لە ساڵی ١١٣٨ز بەرەو مووسڵ بەجێهێشت. خودی سەلاحەددینیش لەهەمان شەو لەدایك دەبێت (أنجم، ٢٠٠٢، ٣٠-٣٦؛ محەممەد، ٢٠١٨، ٤٥-٤٧؛ الأربيلي، ١٩٦١، ٢٨؛ بهاءالدين، ١٩٣٤، ٤-٥).

١٤ سەفیە خاتون یاخود "ضەیفە خاتون" کچی مەلیك عادل و بوکی سەلاحەددین ئەیوبییە، لەساڵی ١١٨٥ز لە شاری حەلەب لەدایکبووه، ناوبراو بە زانستخوازی و بابەتیئ اینی و حوکمڕانێکی بەهێز بەناوبانگ بوو، لەدوای ئەوەی مێردەکەی "مەلیل زاهیر غازی" لەساڵی ١٢١٦ز کۆچی دوایی کرد، ئەوا توانی حوکمڕانی حەلەب بکات بۆ ماوەی شەش ساڵ تاکو کوڕەکەی مەلیك عەزیز پێڕاگەیشت (البرزنجي ، ٢٠١٠، ٣١٥ ؛ زركلي، ٢٠٠٢، ٢١٦).

١٥ مەلیك عادل: برای سەلاحەدینی ئەیوبییە، ناوی سەیفەدین ئەبوبەکری کوڕی ئەیوبە، لەساڵی ٥٤٠ك/١١٤٥ز لە دیمەشق لەدایکبووه، لەگەڵ سەلاحەددین چووە بۆ میسر و دواتریش لەمیسر وەکو حوکمڕانێك ماوەتەوه، بەتایبەتی لەکاتی هەڵمەتەکانی سەڵاحەددین بۆ بەرەنگابوونەوەی هەڵمەتی خاچییەکان بەردەوام لەمیسرەوه هاوکاری



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

هەماهەنگی لەگەڵ سەلاحەددیندا کردووە. لەدوای کۆچی دوایی سەلاحەدینی ئەیوبیشدا چەندین جار بەرەنگاری هەڵمەتی خاچپیەکانی کردووە. ناوبراو لە ساڵی ٦١٥ك/ ١٢١٨ز کۆچی دوایی کردووە (الأصفهاني، ١٩٧٩، ٥٧، ١٢١، ١٣٧-١٣٨؛ Al-Zaʿbi, 2003, 41).

١٦ ست شام یاخود عصمةالدین، ناوی راستەقینەی زمرود خاتون کچی ئەیوب، خوشکی سەلاحەدینی ئەیوبییە، لە ساڵی ٦١٦ك/ ١٢١٩ز کۆچی دوایی کردووە، هەمیشە هانی خوێندن و زانستی داوە، دایکی زانای ناودار حسامەدین عومەر کوڕی لاجینە، کە یەکێك بووە لەو زانایانەی لەلای سەلاحەددین ئەیوبی جێگای و پێگەیەکی تایبەتی هەبووە (یوسف، ١٩٩٢، ١٥-١٨).

١٧ مەلا ئیدریسی بەدلیسی: ناوی تەواوی مەولانا حیکمەدین کوڕی شێخ حوسامەدین بەدلیسییە، ناوبراو بە مەلا ئیدریسی بەدلیسی ناسراوە، بەدلیسی زمانەکانی تورکی و فارسی و عەرەبی بەباشی زانیوە و بۆ خوێندنی زانستە ئیسلامیەیکان چەندین شار و شوێن گەڕاوە، لەدواتر لەسەروبەندی بڵاوبوونەوەی هزری شیعی و فراوانخوازییەکانی دەوڵەتی سەفەوید، ڕۆڵێکی بەرچاوی بینی لە ڕاکێشانی میرە کوردەکان بۆ لای دەوڵەتی عوسمانی (Bayrakdar, 2009, 11-15).

١٨ ئەگەرچی پێناسە و وەسفی زۆر بۆ شاری کۆیە کراون، بەڵام ئێمە دەڕوانینە سەرچاوە عوسمانییەکان کە باسی شاری کۆیە دەکەن، بەتایبەتی لە ساڵنامەکی عوسمانیدا کە بەروارەکەی دەگەڕێتەوە بۆ سەردەمی ژیانی حەمە ئاغای کۆیە و بەمشێوەیە باسی شاری کۆیە دەکات "کۆیە لەباکوری لیوای شارەزورە، قەزای کۆیە ١٨ کاتژمێر لە کەرکوکەوە دورە، لەم قەزایەدا دوو ناحیە هەیە بەناوەکانی (شەقڵاوە " بالیسان"). خەڵکی قەزای کۆیە بەشتی کوردن، تەنها هەندێك مەسیحی هەیە کە لە گوندی هەرمۆتە (لەساڵنامەکەدا بە أرموطة ناوی هاتوە) دەژین و نیو کاتژمێر لەشاری کۆیە دوورە. لەم گوندەدا ١٠ ماڵی کلدانی هەن، لەشاری کۆیەدا بازرگانی توتن بە شێوەیەکی زر فراوانە، ئەم شارە لە دامێنی چیای ئەیوب سوڵتان (هەیبەت سوڵتان)ە، وە سەرچاوەی ئاوی ئەم شارە لە شاخ و دەشتی کۆیەوە هەیە. لەم شارەدا (١) دانە حکومەت قۆناغی (کاروانسەرا)، وە یەك دانە قشڵەی هومایۆنی وە (١) دانە ردیف دبوبی، وە یەك دانە جامع (مزگەوت) وە (١٠) دانە نوێژگە (مصلی) هەیە. هەروەها شەش قوتابخانەی منداڵان و سێ مەدرەسە و سێ تەکیە و ١٤٢٠ ماڵ هەیە و ٤٢٠٠ کەس لە کۆیە دەژین. هەروەها ٣٤٠ دوکان و (٥) قاوەخانە و (٨) سوختە و (٣) حەمام و (١) فرن و یەك بنکەی ئاسایش هەیە. هەروەها لەڕێی زێی بچوکەوە بەهۆی ئەسکەلەی تەق تەق (شوێنی ڕاوەستانی بەلەم) ئەوا گرنگترین و پڕ ئیشترین ڕێگای بازرگانی هەیە. شاری کۆیە


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پێگەیەکی گرنگی هەبوو، ئەویش بەهۆی هەڵکەوتەی شوێنی شارەکە، کە لەبازرگانیدا پێگەیەکی باشی هەبوو، هەروەها لەڕووی باشی و زۆری بەرهەمە کشتوکاڵییەکانەوە، تەنانەت بازرگانی توتن و میوە لە نێوان شاری کۆیە و بەغدا و تەنانەت بۆ شارەکانیتری وەکو هەولێر و کەرکوك و سنە و سابلاغ ئەنجام دەدرا (ساڵنامەی ویلایەتی موسڵ، ١٣٢٥، ٢٢٢؛ تەیب، ٢٠٠٨، ٥٣-٥٤).

## ڕۆڵی زانستی و سەربازی ئافرەتانی کورد لە سەدەکانی ١٧ تا ١٩ زاینیدا "توێژینەوەیەکی مێژووییە"


**الملخص:**

على مر التاريخ كانت للمرأة جهود ومكانة متباينة، ونجد ان اهميتهن وآثارهن وإهتماماتهن الاجتماعية والسياسية والعلمية وحتى العسكرية فيها الكثير من المتغيرات من فترة إلى أخرى. وكانت للمرأة في المجتمع الكردي مكانة بارزة في مختلف المجالات ولاسيما في عهد الامارات الكردية خلال العهد العثماني ١٥١٤-١٨٥١، بل وحتى ما بعد سقوط الامارات. كانت للمرأة الكردية سواء في داخل كردستان أو خارجها جهود عديدة ومواقف مشهودة وخاصة في النواحي السياسية والعسكرية والعلمية، إذ نجد ظهور العديد من النساء القياديات والمشهورات ذوات الأثر البارز على المجتمع الكردي، بل نجد في صفحات التاريخ بأن المجتمع الكردي أعطى المجال لبروز المرأة الأجنبية أيضاً. وكمثال على ذلك نجد (كيغان) التي ظهرت في الامارة البابانية كشخصية مؤثرة وبارزة، وقد أشاد الكثير من الرحالة بالدور البارز والمكانة المرموقة للمرأة في المجتمع الكردي وكيف كن يساندن ويؤازرن الرجال في شتى نواحي الحياة المختلفة.

ففي المجال العلمي برز العديد منهن مثل ماه شرفخانم (مستورة الأردلاني) حيث كانت لها اهتمامات في مجالات التاريخ والأدب الكردي، وفي المجال العسكري برز العديد منهن مثل (خانزاد خاتون) في الامارة السورانية وكذلك نجد ظهور (قره فاتم) داخل السلك العسكري للدولة العثمانية، ولاسيما خلال الحروب العثمانية – الروسية.

إن لدى بعض الباحثين الأجانب رأي مفاده أن مكانة المرأة الكردية لم تكن فعالة ولم تكن بالمستوى المطلوب لأنهن لم يتمكن من الخروج من بيوتهن ولم يتم اعطاءهن المجال لإبراز مكانتهن ودورهن، وعلى حسب قول هؤلاء الباحثين فإن غيرة

الرجال على زوجاتهم كانت أحد الأسباب الرئيسية لمنعهن من الخروج وممارسة النشاطات الخارجية المختلفة.

بشكل عام حاولنا في سياق هذا البحث إبراز الدور العلمي والعسكري للمرأة الكردية داخل الامارات والمجتمع الكردي من القرن ١٧ الى ١٩ الميلادي وذلك من خلال البحث الأكاديمي لإبراز العديد من النساء العالمات والقياديات الكرديات.

**مفتاح الكلمة**: *المرأة، الكرد، كردستان، القائد، الامارة.*

**Abstract:**

Throughout history, the role and position of women in societies has been changed. Their social, political, scientific and military influence has changed in different communities. During the of Ottoman Empire (1514-1851) and after the fall of the Kurdish emirates, Kurdish women inside and outside Kurdistan have played a major and important role, especially in the military and scientific aspects. These women were mostly in the political, military and scientific fields. Kurdish society has even provided opportunities for foreign women to appear, such as Kayghan, who gained influence in the Baban emirate. Some of the sources testify to the greatness and influence of women's position in Kurdish society, how Kurdish women stand alongside their men in several aspects of their lives. In the scientific aspect, several Kurdish women such as Mah Sharaf Khanum (Mastura Ardalani) appeared at that time, who was known the first woman historian and very known poet, in addition, these opportunities have also been created for non-Muslim Kurdish women. Kurdish women have emerged as military leaders, such as Khanzad Khatun “the Princess of Soran emirate” and Qarafatm “Black Fatm” with the Ottoman army in the Caucasian war against the Russians. However, some foreign researchers believe that the position of Kurdish women has been weak and they have not been given the opportunity to do their activity. They even believe that Kurdish men are dirty-hearted towards women and did not allow them to go out and do their work.

In general, this study is a scientific attempt to show the political and military role of Kurdish women in the Kurdish emirates and societies from the 17th to 19th centuries. While, many Kurdish women scholars and military leaders appeared inside and outside Kurdistan by that time.

**Keywords**: *Women, Kurds, Kurdistan, Leader, Empire.*

# میرنشینی بابان و داگیرکاریی عوسمانی لە قەسیدەیەکی سالم دا

پ. د. هیمداد حوسێن بەکر و پ.د.سەردار ئەحمەد حەسەن
زانکۆی سەلاحەدین-- کۆلێژی پەروەردە- زمانی کوردی/هەرێمی کوردستانی عیراق

**پوختە:**

لە مێژووی نەتەوەییماندا و لە سەردەمی میرنشینە کوردییەکاندا زۆر داستان و سەرگوزەشتەی مەزن لە پێناو مانەوەو دیاریکردنی شوناسدا روویانداوە، کە بەوپەڕی ئازایەتییەوە رووبەرووی هێزی دوژمن و داگیرکەر بوونەتەوەو بە هۆی نەبوونی چاپەمەنی و کتێب، ئەدەبیات و بە تایبەتی شیعری شاعیرانی ئەو رۆژگارە بوونەتە تۆمارێك بۆ گێرانەوەی ئەو قارەمانیەتی و نەبەردییانە. سەردەمی میرنشینی بابان سەردەمێکی پڕ لە ئاژاوەو پشێوی ناوخۆیی و هەرێمی بوو.لە ماوەی سەدەو نیوێکدا بە بەردەوامی سیاسەتی داگیرکارانەی رۆم و عەجەم لە لایەك و لە لایەکی دیکەوە نەبوونی هۆشیاری نەتەوەیی و ململانێی ناوخۆیی خێزانیی میر و پاشاکان بوونە هۆکار بۆ رووخان و لەناوچوونی ئەو میرنشینە.لەو دەمەدا نالی و سالم و کوردی، وەکو سێکوچکەی شاعیرانی بابان شێوەزاری کرمانجی ناوەڕاستیان بەکارهێناوە. (سالم) یەکێکە لە شاعیرانی ئەو سەردەمە هاوکات لەگەڵ رووداوەکانی ئەو سەردەمە ژیاوەو لە نزیکەوە خزمایەتی و ئاگاداری رووداوەکان بووە و هەڵویێستی هەبووەو ئاوارەو دەربەدەر بووە.ئەو قەسیدەیەی لەم تۆژینەوەیەدا کارمان لەسەر کردووە،دوا شەڕی نێوانی عوسمانی و بابانەکان بووە بە سەرکردایەتی عەزیز بەگی بابان.

شاعیر باسی ئازایەتی و بارودۆخی کۆمەڵایەتی شاری سلێمانی کردووە.تۆژینەوەکە لە دوو بەش پێکهاتووە. بەشی یەکەم بۆ دەرکەوتن و رووخانی میرنشینەکەو باری ئەدەبی ئەو سەردەمەو شێوازی شیعری سالم کراوە. لە بەشی دووەمدا پەیوەندی شیعر و مێژوو و شرۆڤەی قەسیدەکە لە رووی هونەرییەوە کراوە.

**پەیڤێن سەرەکی:** *میرنشینی بابان، داگیرکاری، عوسمانی، قەسیدە، سالم.*

**پێشەکی:**

لە مێژووی ئەدەبیاتی میللەتانی رۆژهەلآتیدا و بە تایبەتی فارسەکان ئەو مێژووە لەسەر بنەمای میرنشینە فەرمانڕەواکانی دەسەلآتی سیاسی ئێراندا دەنووسنەوە و ئاماژە بە خاڵە جەوهەرییەکانی گۆڕانکاری لە فۆرم و ناوەڕۆکی بزاڤی شیعر و ئەدەبیاتی خۆیاندا دەکەن،کە بوونەتە خاڵی وەرچارخانی تازە.دەکرێ ئەو ئەزموونە لە ئەدەبی کوردییشدا لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەندێ باردا سوودی لێوەربگیرێ، چونکە دیارە کۆی گشتی ئەو میرنشیانانە لاپەڕەکانی مێژووی نەتەوەییمان پێکدێنن.

لە میتۆدی لێکۆڵینەوەکەماندا بنەماکانی میتۆدی مێژوویی لەبەرچاوگیراون.بە تایبەتی رووداوە مێژووییەکان بوونەتە سەرچاوەیەك بۆ بڕیار ودیدو بۆچوونە ئەدەبییەکان.

سنووری لێکۆڵینەوەکەمان بەگشتی ساڵانی فەرمانڕەوایی میرنشینی بابان لەخۆدەگرێت و بە تایبەتییش رۆژانی داگیرکاری عوسمانی بۆ شاری سلێمانی لە چوارچێوەی قەسیدەکەی (سالم)ی شاعیردا،کە ئاوێنەنمایەکی ئەو رۆژانەن.

بنیادی لێکۆڵینەوەکە لە دوو پاژی سەرەکی و هەریەکەشییان چەند سەرەتەوەرێکی لە خۆگرتووە. لە پاژی یەکەمدا هەندێ زانیاری لەبارەی مێژووی ئەو میرنشینە و دۆخی رۆشنبیریی و ئەدەبیی ئەو سەردەمەو کەسایەتییە سەرەکییەکانی شیعریی ئەو سەردەمە،کە بە سێکوچکەی بابان(نالی و سالم و کوردی)ناسراون خراوەتەروو. لە تەوەرەیەکی دیکەدا شێوازی شیعریی سالم هەڵوەستەی لەسەر کراوە. لە پاژی دووەمدا پەیوەندی شیعر و مێژوو و هەندێ لە رەگەزەکانی هونەرییەکانی چیرۆك لەو قەسیدەیە پیادەکراوەو شرۆڤەی بۆ کراوە.

**پاژی یەکەم:**

**١-١: دەرکەوتن و رووخانی میرنشینی بابان(١٦٤٩-١٨٥٠ز)**

لە کۆتایی سەدەی شازدەهەم و سەرەتای سەدەی حەڤدەهەمدا بارودۆخی ناوچە کوردەوارییەکە ئاڵۆز ببوو و سەرەتای دامەزراندنی میرنشینە کوردییەکان بوو. شەڕ و ململانێی رۆمی عوسمانی و سەفەوی رۆژ بەرۆژ فروانتر دەبۆوە، تاوەکو لە شەڕی چاڵدێران(١٥١٤ز)گەیشتە لوتکەو بە هۆیەوە ناوچەکەیان لە نێوانی خۆیاندا دابەشکرد و کوردستانیش لەت لەت بوو و بەشی زۆرینەی بەر دەوڵەتی عوسمانی کەوت. دوای ئەوەیش رێکەوتننامەی قەسری شیرین(زەهاو) لە ١٦٣٩ کۆتایی بە خەونی کورد هێنا و لەم ناوەشدا یەکێ لەو میرنشینانە میرنشینی بابان زیانی زۆری بەرکەوت و وەك بەرداشی نێوان رۆم و عەجەم زەرەرمەند بوو. سەرەتای دامەزراندنی ئەم میرنشینە زۆر روون نییە، بەڵام زۆربەی مێژوونووسان کۆکن لەسەر ئەوەی بە دەرکەوتنی فەقێ ئەحمەدی دارەشمانە، کە نازناوی (بەبە)ی بەخۆیەوە هەڵگرتبوو دوای خۆیشی بە نەوەکانی دوای خۆی مایەوە. بەهۆی ناکۆکی ئەو لەگەڵ میرنشینی سۆران و ئەردەڵانەکان توانی دەسەڵاتی خۆی لە ناوچەکەدا بچەسپێنێ. لە نێو میرەکاندا سلێمان پاشای بەبە لە چارەکی کۆتایی سەدەی حەڤدەهەمدا فەرمانڕەوایەتی میرنشینی بابانی گرتۆتەدەست، بە یەکێک لە میرە بەهێزەکانی بابانەکان دادەنرێت،کە توانی دەسەڵاتی خۆی بەسەر ناوچەی شارەزووردا بسەپێنێت، هەربۆیە لونگریک لە بارەی ئەم میرەوە گوتویەتی:((ئەم میرە بە دامەزرێنەری



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ڕاستەقینەی میرنشینەکە دادەنرێت، ئەم خاوەن کەسایەتییەکی دیارو ناسراو بوو لە شارەزووردا))(قەفتان، ١٩٦٩،ل٣٠-٣١).

ئیبراهیم پاشا(١٧٨٢-١٨٠٣ز) بە دامەزرێنەری شاری سلێمانی دادەنرێ. لەپاڵ شەڕ و بنیاتنانی لەشکردا حەزی لە ئاوەدانی و دروستکردنی تەلار و مزگەوت بوو.

لە دوای ئیبراهیم پاشا ئەورەحمان پاشا بە فەرمانی والی بەغدا(سلێمان پاشا ١٧٧٨-١٨٠٢ز) ئەوڕەحمان پاشا بووە بە پاشای ئەو ناوچەیە،کە ئامۆزای ئیبراهیم پاشا بووەو بە رەمزی ئازایەتی و بۆ ماوی دووساڵ لە بەرامبەر سوپای عوسمانیدا شەڕی کردو تەنانەت ئازایەتییەکەی کەوتۆتە ناو فۆلکلۆر و ئەدەبی سەرزاری و (عەلی بەردەشانی١٧٦٨-١٨٠٩ز) وەکو شاعیرێکی میللی ناوچەی مەرگەو پشدەرێ بەیتی ئەوڕەحمان بەبەی لەسەر هۆنیوەتەوە و باسی غیرەت و ئازایەتی پاشا و سوارەکانی بەبە دەکات:

هەرجارێ شیری دەکێشا،

هەمووی دەهاتنە تەماشا.

عالەم ئالأیە چاوەشە،

مەردە عەبدورڕەحمان پاشا. (ئۆسکار مان، ٢٠١٣، ل٤٣٢).

ئەورەحمان پاشا(١٧٨٩-١٨١٣ز) پلانی وردی بۆ سەربەخۆیی کوردستان هەبووە، ریچ دەڵێ:(ئەورەحمان پاشای حاکمی پێشووی سلێمانی کاتێ،کە دەیویست سەربەخۆیی کوردستان بەدەست بهێنێ، هەموو ئەم دەربەندانەی قایم کردبوو،بەلأم کە (سلێمانە بچکۆلەی پاشای بەغداد)،بەسەریا سەرکەوت هەموو قایمکارییەکانی تێکشکاند.)(ریچ،٢٠٠٢،ل٧٢).

سەبارەت بە ئەورەحمان پاشا د.سادق شەرەفکەندی دەڵێ:(یەکەمین بزووتنەوەی گرینگی کورد لە چەرخی١٩دا،بزووتنەوەی میرنشینی بابان بە ڕێبەرایەتیی عەبدولرەحمان پاشا لە ساڵی ١٨٠٦دا بوو.)(شەرەفکەندی،٢٠١٢،ل٢١). ئەم میرە بە پچڕ پچڕی ٢٤ ساڵ حوکمی کردووە.درێژترین ماوە لە حوکدا بووە.کەسایەتییەکی ئازاو چاونەترس بووەو کاریگەریی بەسەر والی بەغدا و کرماشاندا بووەو هەموو خەسڵەتێکی سەرۆك و رابەرایەتی تێدا بووە. ئەم میرە خۆی تەنیا بە میری بابان نەدەزانی بەڵکو خۆی بە میری کوردان دەزانی و سەردەمی ئەو بە گوتەی ئەدمۆنس سەردەمێکی تەواوی سەربەخۆی کوردیی بوو( زکادمومدز،٢٠١٢،ص٩٦).ئەو ناووناوبانگە لە دوای خۆیشی بۆ ماوەیەکی زۆر مایەوەو بە تایبەتی کەسایەتی ئەحمەد پاشای کوڕی چووبووەوە سەر باوکی.

مەحمود پاشا(١٨١٣- ١٨٣٤ز)، کوڕی ئەوڕەحمان پاشا بەبۆچوونی بەشێك لە توێژەرانی مێژوو، زیاتر دۆستایەتی ئێرانی کردووەو (سالم)، لە رۆژانی دەسەلآت و ئاوارەییدا یاوەری کردووە.بە پێچەوانەی عەبدوللا پاشا، هەمیشە دۆستی نزیك و چاوساغی سوڵتان و

ئۆردوی تورکی عوسمانی بووە.ئەگەرچی خۆی مەحمودپاشا مەیلی بۆ پاشای بەغدا هەبووە، بەڵام واپێدەچێ بەغدا زۆر باوەڕیان پێی نەبووبێ هەروەکو باسی خەم و موعاناتی خۆی بۆ ریچ دەربڕیوە بەوەی بە هۆی ستراتیژی ناوچەکە بەدەست ئێران و عوسمانییەکانەوە گیری خواردووە. (ریچ،٢٠٠٢،ل٨٥). باوکی سالم وەکو خانەوادەی ساحیێبقڕان لەگەڵ هەندێ لە بابانەکان پێوەندییەکی باشی نەبووەو هەر بۆیە، کە سلێمان پاشا دەسەڵاتی لە مەحمودپاشای برا گەورەی زەوت کرد باوکی سالم بە ناچاری لەگەڵ مەحمود پاشا ئاوارەی ئێران بووەو پەنایان بۆ شای قاجار بردووە.(مارف،٢٠١٥، ل٩).

سلێمان پاشای بابان بەبێ کێشە میرایەتی لە مەحمود پاشای برا گەورەی زەوت کرد. لە سەردەمی ئەودا لەشکرکێشی عوسمانی و سەفەوی نەبوو، هەربۆیە زیاتر ئارامی باڵی بەسەر ناوچەکەدا کێشا بوو و ئاوەدانی زۆرتر بووە لە دروستکردنی بینای مزگەوت و تەنانەت لە سەردەمی ئەودا سەرای سلێمانی دروستکراوە بۆ کارگێری میرنشینەکە.

دوای ئەو کوڕەکەی ئەحمەد پاشا(١٨٣٨-١٨٤٧) فەرمانڕەوایی گرتۆتە دەست و بە یەکێ لە میرە ئازاو زیرەك و رۆشنبیرەکانی بابانەکان دادەنرێ. (لە ١٨١٢ جارێکی دی لە دژی دەوڵەتی عوسمانی راپەڕینێکی نوێی دەست پێکرد و تا نزیکی بەغدای گرت.)(زەکی، ١٩٣٩ ،ل٥١). لە سەردەمی ئەو دا پرۆژەی ئاوی سەرچنار جێبەجێکراوە.کتێبخانەیەکی لە مزگەوتی گەورە کردۆتەوە و بەپەرۆشەوە کتێبی بۆ پەیداکردووە.حەزی بە رۆشنبیریی ئەوروپی و سەردەمیانە کردووە. هەر بۆیە نالی شاعیر قەسیدەی بۆ نووسیوەو ستایشی سوپاکەی و رێکپۆشی جلوبەرگ و ئازایەتیان کردووە.کاتێکیش بانگکراوە بۆ بەغدا ناردویانە بۆ یەمەن و وەکو میری ئەوێ ماوەتەوەو دواتر چووەتە پاریس و هەرلەوێش مردووە.

نالی لە قەسیدەیەکدا هەم باسی لاواندنەوەو غەمباری خۆی بۆ دادپەروەی سلێمان پاشاو مردنەکەی و هەم هاتنە سەرحوکمی ئەحمەد پاشا دەردەبڕێ:

تا سولەیمانان نەبوونە صەدری تەختی ئاخیرەت،
(ئەحمەدی موختار)ی ئێمە شاهی تەخت ئارا نەبوو
قیصصە بێ پەردە و کینایەت خۆشە: شاهی من کەوا
عادیلێ بوو قەت عەدیلی ئەو لە دنیادا نەبوو، (مودەڕیس،١٩٨٥،ل٣٦٩)

راستییەك هەیە چاوپۆشیی لێناکرێ ئەویش ئەوەیە، میرەکان ئەوەندە لە حوکمیش نەماونەتەوە فریای ئەوە بکەون داڵدەی شاعیران بدەن و خزمەتی رەوتی رۆشنبیری و مێژووی ناوچەو رەگ و ریشەی بنەماڵەکانیان بپارێزن. هەر بۆیە ئەمە ئەوەی لێدەکەوێتەوە، ئەگەر شاعیرانی دیاری ئەو سەردەمە ئاوارەی تاران و ئەستەمبوڵ بوون لەبەر ئەوە نەبووە میرەکان بەربەرەکانیان کردبن و ناچارییان بکەن سنووری میرنشینەکە بەجێبهێڵن، بەڵکو خودی شاعیرەکان خۆیان نەیانتوانیوە لە ژێر جەور و ستەمی بێگانەدا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ژیان بەسەر ببەن و چاویان بەرایی نەداوە ببینن ئەو کوشتن و جەردەو تالآنی و بێڕێزییە ببینن یان لە ئەنجامی شەڕ و ناکۆکی بەینی میرەکاندا بووە. ئەمەش ئەوەی لێدەکەوێتەوە، هێشتا هۆشیاری نەتەوەیی لای میرەکان گەلآڵە نەبوو بوو، زیاتر بەناوی خزمەتی ئایین و پاراستنی بەرژەوەندیی کەسی و بنەماڵەییەوە بوو. هۆشیاری شاعیرەکان خۆیان وەکو هەوڵی تاکەکەسی و گرنگی زمان وەکو بنەمایەکی بەهێز و ناسنانەی نەتەوەیی جێگەی بایەخ بووە.

## ٢-١: قوتابخانەی شیعریی بابان

لە سەردەمی میرایەتی ئەو میرنشینەدا بەڵگەیەکی ئەوتۆ بەردەست نییە پشتگیریی میرەکان بۆ رۆشنبیریی کوردی هەبێ ، بەڵکو هەوڵەکان خۆکردی و تاکەکەسیی بوون، بەڵآم کردنەوەی مزگەوت و خانەقایش ئەگەر لە روانگەی خزمەتی ئایینیشدا بوو بێت، بەڵآم دواجار مەڵبەندی خوێندن بوون و فەقێ و مەلاکانی ئەو شوێنانەبوون فێری زمان و ئەدەبیاتی عەرەبی و فارسی بوون و بوون بە شاعیر و تا رادەیەکی زۆریش لاسایی رەوتی شیعری ئەوانیان کردۆتەوە. ئەحمەدی مەلا ناوی ناون (شاعیرانی حوجرە)(مەلا،٢٠٢٠، ل١٧٢)، بەو پێیەی دەرچووی رۆشنبیریی حوجرە بوون، ئەم حوجرانە بۆ ماوەی چەندین سەدە لە کوردستاندا مەڵبەندی خوێندەواری بوون، دەرچووی ئەو حوجرانەیش خەریکی رۆشنگەریی نەتەوەییەوە نەبوون هێندەی خەریکی پابەندی تەریقەتەکان و مەعریفەی ئیسلامی بوون. وەك چۆن دێر و کڵێساکان لە سەدەکانی ناوەڕاستدا تا ریێنیسانس مەڵبەندی خوێندنی مەسیحییەت بوون.

پێشەنگەکانی شیعری کوردی ئەم قوتابخانەیە،کە زۆرجار بە سێکوچکەی قوتابخانەی شیعریی بابان ناسراون (نالی،سالم،کوردی) دەرکەوتن و رێچکەیەکی تازەی شیعرییان بە شێوەزاری کرمانجی خواروو داهێنا،کە پێشتر بەو شێوەزارە نەبوو و تەنانەت وەکو پێویستییەکی زمانی شیعریی ناچاربوون بە شێوەزای گۆران(هەورامی) شیعرییان دەنووسی،کە تا ئەو دەمە ئەو شێوەزارە باوبوو. ئەمەش بەو مانایە نییە کە ئەم شێوەزارە بۆەتە شێوەی نووسینی باو ئاسایی سەردەمەکە. نەخێر، ئەو نامانەی بەردەستن لە بەینی میرو تەنانەت شێخ و مەشایەخاندا زۆربەی کات بە زمانی فارسی بوو. ئەمەش بەڵگەیەکە،کە کۆمەڵی کوردەواری تا ئەو دەمە وەکو پێویست گرنگی و بایەخی زمانی نەتەوەیی نەزانیوەو خەڵکی عەوامیش نەخوێندەوار بوو و خوێندنی ئایینییش لە حوجرەکاندا بە زمانی عەرەبی و فارسی بوو و ئەو رۆشنبیرییە ئیسلامییەش بنچینەی رۆشنبیری و ئەزموونی شاعیرانی کلاسیك بووە.

لە نێو میرەکانی باباندا سەردەمی ئەوڕەحمان پاشای بابان (بە درەوشاوەترین سەردەمی گەشانەوەی میرنشینی بابان لە قەڵەم دەدرێت.چونکە سەرەڕای ئەوەی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

سەرکردەیەکی هەڵکەوتووی مەیدانی جەنگ بووە هەر لە سەردەمی ئەمیشدا زانا و ناودارەکانی کوردستان بۆ قەڵەمڕەوی بابان بانگهێشت کراون و خانەقا و مزگەوت و شوێنی دەرس وتنەوەیان بۆ دابین کراو وردە وردە وەرسووڕانی فەرهەنگی و کۆمەڵایەتی دەرکەوت و زەمینەش بۆ خەملین و سەرهەڵدانی شێوە دیالێکتی ((سلێمانی)) رەخسا،کە دواتر ئەم شێوەزمانە، لەسەر دەستی شاعیرانی سێکوچکەی بابان نالی و سالم و کوردیدا زیاتر گەشایەوە...)(حەمەباقی،(٢٠٠٢)،ل٤٢).

راستە شیعر لەسەر بنەمای خەیاڵ و سۆز و ئەندێشەی شاعیر بنیاتنراوە،مەرج نییە رەگدانەوەی تەواوی واقیع بێت، بەڵام سۆزی راستەقینەو هەڵوێستی نەتەوەیی و داگیرکاریی عوسمانییەکان لە شیعری چەند شاعیرێکی کلاسیکی ئەو سەردەمەدا دەرکەوتووە، کە دەکرێ وەك دۆکیۆمێنتێك لەبەرچاو بگیرێ. بۆیە ئەو قەسیدەیەی عەبدولڕەحمان بەگی ساحێبقڕان (سالم) نموونەیەکی زیندووی ئەو هەست و سۆزو هەناسەساردی ئەو پێشەنگەی شیعریی قوتابخانەی شیعریی بابانە دەرهەق بە داگیرکاری و لە هەمان کاتدا ورەی بەرز و بەرەنگاربوونەوەی سوارەکانی ئەو میرنشینەو خەڵکەکەیە بەرامبەر بە یەکێ لە میرەکانی ئەو میرنشینە.

پێشەنگ و دەسپێکی ئەو هەوڵە، واتا بەکارهێنانی ئەو شێوەزارە لە مەلا خدری شارەزوورییەوە(نالی١٨٠٠-١٨٧٧ز)(خۆشناو،٢٠١٧، ل٥٥) یەوە دەست پێدەکات. لەو دەمەدا، کە زمانی کوردی لەلای رۆناکبیرەکانی ئەو رۆژگارە وەکو پێویست جێگەی بایەخ نەبوو و ئاستی هوشیاری خەڵك لاواز بوو،تەنانەت شاعیر و میرەکانیش نامەیان بە زمانی فارسی دەنووسی و تەنیا زمانی کوردی بۆ شیعر بەکاردەهات و تا ئەو دەمە هەندێ لە شاعیرە دیارەکانی وەکو (مەولەوی١٨٠٦-١٨٨٢ز)یش نامەی بە زمانی فارسی بۆ شێخەکانی هەورامان دەنووسی. نالی ئەو رێچکەیەی شکاندو بە هێزێکی زۆرەوە وتی:

کەس بە ئەلفازم نەڵێ خۆ کوردییە خۆکردییە

هەر کەسێ نادان نەبێ خۆی طالیبی مەعنا دەکا (مودەڕیس،١٩٨٥،ل١٠٧).

ئەم بیرکرنەوەیە هەنگاوێکی تازەیە بۆ خۆناسین و گەڕان بەدوای ناسنامەدا. نالی شێوەزاری کرمانجی خوارووی کردە شێوەزاری نووسینی شیعری سەردەم و لەپاڵ ئەوەشدا هەوڵی سوود وەرگرتنی لە وشەی شێوەزارەکانی دیکەش وەرگرتووە،کە ئەمەیان بەلای ئێمەوە رێکەوت نییەو هەستی نەتەوەیی و گرنگی زمانە لای شاعیر لە پرۆسەی داهێناندا. دووربینی شاعیرە لە فەرهەنگسازی زمانی و بە ستانداردکردنی زمانی نەتەوەیی. ئەو زمانە شیعرییەی (نالی) پێی نووسیوە شێوەی ناو شاری سلێمانی نییە، بەڵکو زمانێکە لەگەڵ پێکهاتەی شارەکەو فرە خێڵ و فرەپیشەو فرە رەنگی شارەکەدا دەگونجێ. بەو پێیەی لەگەڵ دروستبوونی شارەکە لەلایەن ئیبراهیم پاشای بابان و بە تایبەتی دوای گواستنەوەی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

میرنشینەکە لە ئەردەڵانەوە بۆ شاری سلێمانی لە ١٧٨٤ ز بەشێك لە وەستاو پیشەگەرەکان لە شارەکانی رۆژهەڵاتی کوردستانەوە هاتوونەتە شارەکەو ئەمەش بێگومان کاریگەریی بەسەر ئەو شێوەزارەو دەوڵەمەندیی زمانی شیعرییەکەیشییەوە بووە.غەزەلەکانی نالی هێندە قووڵ و ناسکی و دەسڕەنگینییان پێوە دیارە تا ئێستایش لە زۆر رووەوە تۆژینەوەی لەبارەوە دەکرێت.

مستەفا بەگی ساحیبقران کوردی(١٨١٢- ١٨٥٠ز)، یەکێکە لە شاعیرە بە توانا و خۆشسەلیقەکانی ئەو دەورەیە و حەمەنوری عومەر کاکی شێوازی ئەو لە سیماکانی شێوازی (روونی و کورتبڕی و لێدوانی بەرامبەری)دا دەبینێتەوە.(عومەرکاکی،٢٠٠٨، ل١٢٥-١٣٣). حاجی قادری کۆیی وەها وەسف و سەنای (کوردی) دەکا،کە شاسواری بێ وێنەی رەوانبێژی و زمان و هونەری شیعرە:

شەهسواری بەلاغەتی کوردان

یەککە تازی فەساحەتی بابان

مستەفایە تەخەللوسی (کوردی)

غەزەلی کردە بەربوتی کوردی

ناوی (ساحێبقڕان)ی خاسی ئەوە

چونکە لەم عەرسە ئەسپی ئەو بەدەوە (میران و شارەزا،٢٠١١،ل٢١٧)

مستەفا بەگی کوردی، وەکو شاعیرانی کۆنی کوردی و فارسی ئەو قاڵبە شیعرییانەی سەردەمەکەی خۆی بەکارهێناوە، لە غەزەل و قەسیدە و بەیت و لە هونەرەکانی رەوانبێژییشدا تێهەڵکێش و مولەممەع و هونەرەکاتی دی بەکارهێناوەو وەکو ئەوانیش کێشی عەرووزی عەرەبی بەکارهێناوە. بێجگە لەوەی بە زمانی فارسییش چەندین غەزەلی نووسیوە.چونکە زانینی زمانی دیکەی غەیرە کوردی بۆ نووسینی شیعر یەکێك بووە لە شانازییەکانی شاعیرانی کۆن. شیعرەکانی (کوردی) لە رووی ناوەرۆکەوە دەربڕینە لە شڵەژانی دەروونی و پەرێشانی و عەشق و شەیدایی ئەو. ئەمەشی هەمووی لە قاڵبی شیعریی بۆ عەشقی (قادر) دەبڕیوە.

(کوردی)یش وەك شاعیرانی سەردەمی بابان دەردی دڵ و سۆزی دەروونی خۆی بۆ رووخانی میرنشینەکە و ئاوارەیی ناچارەکی خۆی دەربڕیوە:

زەمانی فیرقەتی یارانە ئەمشەو

لە چاوەی چاو کە خوێن بارانە ئەمشەو

زەمانە رۆژی کردینە شەوی تار

سەفای (ئەستانە) و (تاران)ە ئەمشەو

بە باڵای دڵ،کە کاڵای غەم بڕاوە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وەکو تەختی بەبە وێرانە ئەمشەو (حەمەبۆر،٢٠١٠،ل٥٢١)

عەبدولرەحمان بەگی ساحیبقران سالم(١٨٠٠- ١٨٦٦ز)،هاوکات لەگەڵ (نالی) ژیاوەو لە رووی بەکارهێنانی زمانییەوە شوێنپێی نالی هەڵگرتووە.ئەگەرچی لە رووی هونەری شیعرییەوە تاراددەیەك سەبکی(شێوازی) شیعرییان جیاوازەو (نالی) سەبکی عیراقی و (سالم) سەبکی هیندی بەکارهێناوە. هەردووکیان لە رۆژانی فەرمانڕەوایی سلێمان پاشای بابان( و ئەحمەد پاشای کوڕیدا ژیاون. ئەمەش لە شیعرەکانیاندا دەردەکەوێت، نالی دەڵێت:

ئەم تاقمە مومتازە کەوا خاصەیی شاهن ئاشووبی دڵی مەملەکەت و قەلبی سوپاهن (مودەڕیس،١٩٨٥،ل٢٦)

دیارە لەم شیعرەدا بە شان و شەوکەتی سوپاکەی سلێمان پاشای باباندا یان ئەحمەد پاشای کوڕیدا لە بەژن و باڵای رێك و جلی سەربازی و بەرزەفتیانەوە هەڵدەدات.

**٣-١: شێوازی شیعریی سالم**

سالم شاعیرێکی وردبین بووەو لە شیعرەکانیدا شێوازی ئەوی پێدەناسرێتەوە.د.مارف خەزنەدار پێیوایە سالم بە شێوەیەك لە شێوەکان هەوڵیداوە درێژە بەو شێوازەی شیعری نالی هاوڕێی بدات، بە تایبەتی لە وێنەی شیعریدا ئەو وردبینییە وەکو لایەنێکی رەوانبێژی درێژە پێبدات و دەڵێ:(وێنەکان لە تەرکیزەوە دەباتە فراوانی و درێژەپێیدان)( خەزنەدار،١٩٨٤،ل١٩٠).

سالم لەو شاعیرانەیە تێگەیشتن لە شیعرەکانی ئاسان نین، واتا دەشێ خوێندنەوەی جیاوازی بۆ بکرێ و خوێنەر تووشی بیرئاڵۆزی دەکات، ئەمەش بۆ خۆی دیاردەیەکی شێوازگەرییە یان بە واتایەکی دی لادان لە ئاستە جیاوازەکانی زمان و دەستەواژەی زمانی لە شیعری (سالم)دا زۆرەو ئەو لادانە لە ئاستی وشەڕۆنان و دەنگی و رستەسازیدا دەردەکەوێت. ئەوەی تێبینی دەکرێت نەوەك هەر ئەو، شاعیرانی دیکەش لەو دەمەداو بە تایبەتییش (سالم) بە دوای ئەو وشەو زاراوانەدا گەڕاوە،کە لە زمانی ئاساییدا بەکارنایەن بەڵکو لە نێو فەرهەنگە کۆنەکاندا هەن و کەم بەکاردێن و ماوەیەکی زۆریان بەسەردا تێپەڕیوە.ئەم شێوازە رەقەی سالم بەشێکی زۆری لەوەوە سەرچاوەی گرتووە،ئەو لە شیعرەکانیدا پێڕەوی شێوازی یان سەبکی هیندی کردووە.سروشتی ئەم شێوازەش وەك باسکراوە وردەکاری و وشەبازی و میتافۆر و پارادۆکسی زۆری تێدایە،کە خوێنەر تووشی سەرسوڕمان دەکات.ئەم دیاردەیە لە شیعری فارسیشدا هەر بەو جۆرەیەو (سالم)یش تا رادەیەکی زۆر بە لاسایی ئەوان لەلایەك و رەنگە ئەو بارودۆخە پڕ لە کارەسات و خەفەتی ناکۆکی و ناتەبایی میرانی بابان و داگیرکارییە لە رووی دەروونییەوە کاریگەرییەکی خراپی لای شاعیر دروستکردووە.ئەو قەسیدەیەی ئێمە ئەو تۆژینەوەیەمان لەبارەوە کردووە نموونەیەکی زیندووی خەم و کەسەری (سالم)ە بۆ نەهامەتییەکانی ئەوێ رۆژێ.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوەی کوردی

زمانی شیعری و هونەریی ئەو بزووتنەوە شیعرییەی بابان لەدوای خۆیشی کاریگەری و رەنگدانەوەی لەسەر بەشەکانی دیکەی کوردستان بە تایبەتی لای شاعیرانی رۆژهەلاتی کوردستان وەکو (وەفایی١٨٤٤-١٩٠٢ز )و مصباح الدیوان (ئەدەب)١٨٥٩-١٩١٢ز و حەریق(سالحی کوڕی مەلا نەسرولڵا ١٨٥٦-١٩٠٩ز)دا دیارەو تەنانەت گوڕ و تین و تاوی ئەو بزووتنەوە شیعرییە لە دوای خۆیشی لای شاعیرانی رێنیسانسی رۆشنبیریی کوردیی لە سەدەی نۆزدەهەمدا وەکو حاجی قادری کۆیی(١٨١٧-١٨٩٧ز) و ئەوانی دی بەردەوام بێت. زێدەڕۆیی نییە کە بڵێین، بزووتنەوەی شیعری نوێی کوردیش لە سەرەتای سەدەی بیستەمەوە وەکو پیرەمێرد(١٨٦٧ - ١٩٥٠) و شێخ نوری شێخ سالح(١٨٩٦- ١٩٥٨) و گۆران(١٩٠٤- ١٩٦٢) درێژەپێدەری ئەو قوتابخانە شیعرییەن.

**پاژی دووەم: شیعر و مێژوو و شرۆڤەی قەسیدەکەی سالم**

**١-٢: شیعر و مێژوو**

پێوەندییەکی بە هێز لە نێوانی شیعرو مێژوودا هەیە. هەر لە دێر زەمانەوە ئەو پێوەندییە سەرنجی فەیلەسوف و بیرمەندانی یۆنانی راکێشاوە و لە بەرهەمەکانیاندا ئاماژەیان بۆ کردووە.دەسپێکی ئەو فەیلەسووفانەی بەرهەمی بۆ تیۆری ئەدەبی و رەخنەی ئەدەبی تەرخانکردووەو دیدی فەلسەفی خۆی بۆ دەقی ئەدەبی سەردەمەکەی خۆی تەرخانکردووە ئەویش ئەرستۆیە و لە بەشی نۆیەمی کتێبی(هونەری شیعر)دا، بە ناونیشانی (راستەقینەی شیعری و راستەقینەی مێژوویی)دا دەڵێ:

جیاوازی نێوان مێژوونووس و شاعیر ئەوە نییە،کە یەکێکیان بە پەخشان دەنووسێ و ئەوەی تر بە شیعر لەوانەبوو بەرهەمەکەی (هێرۆدۆتس) بە شیعر بنووسرایە، بەلآم لەگەڵ ئەوەشدا چ بە کێش بنووسرایەو چ بێ کێش، هەر مێژوو بوو. جیاوازییەکە لەوەدایە یەکێ باسی شتێ دەکا، کە رووی داوەو ئەوەی تر باسی شتێ دەکا، کە لەوانەیە روو بدا. هەر لەبەر ئەمەشە شیعر لە مێژوو فەلسەفیتر و بەهادارترە.چونکە شیعر بایەخ بە راستەقینەی هاماوو گشتی دەدا،کەچی مێژوو مامەڵە لەگەڵ راستەقینەی تایبەتی دەکا)(ئەرستۆ،٢٠١١، ل٣٧).

جێگەی گومان نییە بە درێژایی مێژوو شیعر بەشداری لە نووسینەوەی مێژوو و بنیاتی کلتوری نەتەوەکاندا کردووەو تەنانەت فەیلەسەف و زاناکانییش لە بوارە جیاوازەکانی دەروونناسی و کۆمەڵناسی و زمانناسی و چەندین بواری دیکەدا ئامادەیی هەیە و فەیلەسوفەکانی وەکو ئەفلاتون و ئەرستۆ و هۆراس و دیکارت و نیچە و چەندانی دی سەرقاڵی دنیای فەنتازی و ئەفسووناوی شیعر بوون و قسەیان تێداکردووە.خودی شاعیرەکان خۆشیان لە رووداوە کاریگەرەکانی سەر کۆمەڵ و بزاڤی رۆشنگەری رۆڵی کارایان هەبووەو هەیە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بۆ ئەدەبی کوردییش تا ماوەیەکی زۆر شیعر هەموو رووبەری ئەدەبی کوردیی ئێمەی گرتبووەوە.بەهۆی کزی هۆشیاری و نەخوێندەواری و نەبوونی چاپ و رۆژنامەو کتێبەوە شیعر رۆڵی سەرەکی بینیوە و وەکو تۆمارێك مێژوو و بارودۆخی کۆمەڵایەتی و ئابووری و سیاسی و رۆشنگەریی لە ئەستۆ گرتووە و شاعیرەکان بوونەتە رێبەر و چاوساغی نەتەوەکەیان.

**٢-٢: شرۆڤەو شیکاریی قەسیدەکەی سالم**

سالم هاوسەردەمی هەندێك لەمیرەکانی بابان بووە (هاوچەرخی مەحمود پاشاو سلێمان پاشا ،برایان ئەحمەد پاشاو عەبدوڵا پاشا بووە ،ئینجا لەنێو کۆنگرەی ململانێکانیشدا بووە ،بەڵام لە هۆنراوەکانی شتێك لە لایەنگیری بۆ باڵێك و دژایەتی باڵێکی دیکە بەدی ناکرێت .تەنها ئەوە نەبێت کە ئەو خۆشەویستی و دڵسۆزی تەواوی بۆ وڵاتەکەی و بابانەکان هەبووە)(دەشتی ،٢٠٢١ ، ١٨). ئەو خۆشەویستی و دڵسۆزییەشی لەقەسیدەکانی بەگشتی و ئەو قەسیدەی باس لە دواشەڕی بابان و عوسمانیەکان دەکات بەتایبەتی ڕەنگی داوەتەوە (سالم) لەسلێمانی لەدایك بومو هەرلەوێش گەورە بوە .شارەکەی و وڵاتەکەی خۆی تاڕادەی پەرستن خۆش ویستوە.

نەمانی دەسەڵاتی کوردی ،کارێکی قووڵی لەدڵ و دەروونی سالم کردووەو بەم بۆنەیەوە چەند قەسیدەیەکی سیاسی درێژی هەڵبەستووە ،قەصیدەکان ئەگەرچی لەکاتی جیاواز و بەبۆنەی جیاوزەوە دانراون،بەڵام هەموویان پێکەوە بەستراون. هەموویان یەك بابەت پێك دەهێنن، لەدەوری ئەو مەینەتییە نەتەوایەتییەدا دەخولێنەوە، کە دوای هاتنی دەسەڵاتی ڕاستەوخۆی تورك توشی ناوچەکە بووە . ڕەنگە ئەو لەهەمو کەس باشتر هەلومەرجی ناوچەی سلێمانی لەژێر دەسەڵاتی تورکی داگیرکەردا گێڕابێتەوە .

قەسیدەکان بەشێوەیەکی گشتی نالەباری و کوێرەوەری شاری سلێمانی و خەڵکەکەی دەخەنە ڕوو و دەریدەخەن، کە عوسمانییەکان چەند دژی مرۆڤ ومرۆڤایەتیین و دوورن لە هەموو بەهایەکی مرۆڤایەتی، لەناو هەمووقەسیدەکاندا(شەڕی عەزیز بەگ لەگەل لەشکری تورك) تراژیدیاییێکە بۆخۆی، وێنەی ئەو شەڕەمان بۆ دەکێشێ. هەرکەسێ بیخوێنێتەوە وێنەی شەڕەکەی دێتەبەرچاو و وادەزانێ سالم خۆی لەناو جەرگەی شەڕەکەدا بووەو کامیرایەکی بەدەستەوەبووە زۆر بە وردی وێنەی گشت دیمەنەکانی گرتووە.ئەو شیعرانەی سالم پەیوەستن بە بارودۆخی کۆتایی حوکمڕانی بابانەکان، کە پڕیەتی لە نەهامەتی و شەڕو کارەساتی جەرگبڕو خوێناوی، کە هەرگیز سلێمانی نەهامەتی وماڵوێرانی وای بەخۆیەوە نەبینیوە.

پەرێشانی خەڵکی سلێمانی
بەدە ئەحوالی ئەشخاصێ کە خاصی موڵکی بابانن
لەبێدادی فەلەك هەریەك سەراسیمەو هەراسانن

جەوانانی سەهی قەد بەسکە داماون لەبێ چیزی

لەژێر باری غەما هەریەك لە خەمدا  میثلی چەوگانن

لە بابانا پەریشان خاطر و بێ کەس

بە جەمعییەت سیە بەختانە  وەك گێسویی خوبانن

هەروەکو بەسەرناوەکەیدا دەردەکەوێ لە وەصفی پەرێشانی نۆکەرانی بابان دوای ڕۆیشتنی عەبدوڵا پاشا بۆ قوستەنتین،سالم ئەم قەصیدەی دوای لێخرانی عەبدوڵا پاشا و کێشانەوەی بۆ بەغداو دورخستنەوەی بۆ ئەستەمبۆڵ هۆنیوەتەوە. والی بەغدا ئیسماعیل پاشای بە موتەصەڕیفی سلێمانی داناوە (ئەمین،١٩٩٨،ل١٩٧)

ئیسماعیل پاشا ئۆردوی تورکی هێناوە،بنکەو بارەگای لە سلێمانی داناوە بۆئەوەی شوێنەواری دەسەڵاتی بابان نەهێڵێ.دامودەزگای  پێشوی گۆڕیوەو هی تازەی لە جێگا داناون . عەزیزبەگی ئەوڕەحمان پاشا سەری دانەنواند و کەوتە خۆ ئامادەکردن بۆ بەرهەڵستی و دەرکردنی ئۆردووی تورك .حسین بەگی برای و محەمەد ئەمین بەگی کوڕی عوسمان بەگی برازای و هەندێ لەبەگزادەکانی تری بابان و هەندێ لە سوارەی هەمەوەند و هۆزەکانی تر بوون بەهاودەنگی (س،پ،ل٢٠٠)

زۆر کەس لەوانەی لە سەردەمی دەسەڵاتی باباندا خاوەن پلەو پایەو دەسەڵات و ئیمتیاز بوون لابراون و لێیان قەوماوە .ئەمەش کاری کردۆتە سەر باری ژیانیان (س.پ.ل١٩٧)

سالم لەم قەصیدەیەدا باسی چەند شتێ دەکا:

١-خراپی باری ژیان و هەلومەرجی گوزەرانی (هەڵبژادەی )دانیشتوانی سلێمانی،بنەماڵەی میرەکان و کاربەدەست و موچەخۆرەکانی دەزگای بابان.... ئەمانە بەجۆرێ لەنازو نیعمەت کەوتون.کەوتونەتە سواڵ و ناچاربوونی شوانی،گاوانی،حەماڵی و عەللافی..بکەن.

٢-هەندێکی تریش لەترسی زوڵم و زۆری دەسەڵاتی تورك لەشاردا خۆیان گۆشەگیر کردوە خۆیان داوەتە خانەقاو مزگەوت و خۆیان بەنوێژو خوێندنی قورئانەوە خەریك کردووە و هەندێکی تریش لەدێهاتی دەوروبەری سلێمانی دا خۆیان حەشارداوەو،هەندێکی تریش ئاوارەو دەربەدەری شوێنان بوون.

٣-لەو سەردەمەشدا وەکو هەموو سەردەمێك تاقمێکی قازانج پەرست و دووڕوو خۆیان لە دەسەڵاتی داگیرکەر نزیك خستۆتەوە بوونەتە هاوکارو چاوساغیان.لەگەڵ (دایکی بەرخ ) شیوەنیان کردوەو لەگەڵ گورگ  گۆشتیان خواردوە .سالم جنێوی قوڕسی بەمانە ئەدا کەلە (ئەوضاعی )ئەوسای سلێمانی شادو ئاسوودەبوون .

٤- (کاسبکارانی شار ) کە لە نائارامی درێژخایەنی سەردەمی دەسەلان ونەمانی ئاسایشی گشتی و تایبەتی ،دیارە ئەوەندە بێزار بون ،هاوکاریان لەگەڵ دەسەڵاتی داگیر کەر کردووە .سالم ئەمانتە بە ( بانی ئەم کارە ) واتە ئۆباڵی ئەو مەینەتیە لەگەردنی ئەواندا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

توند ئەکا ، ڕاستییەکەی ئەوان بەرپرسی ئەو ڕوداوە نەبون ،چونکە ئەمە ئەنجامی سیاسەتی ناوەندی دەوڵەتی عوسمانی بووە نەك پیلانی (کاسبەکانی شار )

٥-هەندێ بیرو بۆچوونی سالم سەبارەت بە(ڕەعیەت ) و( پیشەکار) لەم شیعرەداو لە شیعرەکانی تریشیدا هەیە.لەگەڵ تێگەیشتنی ئەم زەمانەدا ناگونجێن،بەڵام هەمو بیروبۆچونی دەبێ ببرێتە زەمانەو زەمینی خۆی و بەسەنگ و تەرازوی ئەو سەردەمەو لەچور چێوەی هەلومەرجی سیاسی ،کۆمەلایەتی،ئابوری، فەرهەنگی ...ئەوساکەدا بکێشرێن ،نەك بە ئێستاو لەهەلومەرجی ئێستادا (س.پ.ل ١٩٧-١٩٨).

٦-ستایشی عەزیز بەگ

٧-سالم قەصیدەیەکی درێژی تەرخان کردووە بۆ ستایشی عەزیز بەگی بابان (عەزیز بەگ کوڕی ئەو ڕەحمان پاشاو ،برای مەحمود پاشاو سلێمان پاشاو ،مامی ئەحمەد پاشاو عەبدوڵلا پاشا بووە .کەتورك دەستی بەسەر سلێمانی دا گرتووە عەزیز بەگ سەری بۆ دا نەنواندون . بەربەرەکانی کردوون و خەریکی ڕێکخستنی بەرگری بووە.سەرەتای قەصیدەکەی بەم جۆرە دەست پێدەکات :

دەکا دنیایی پڕ شۆڕش دایم فیتنەها پەیدا

بە نەیرەنگ و فسون هەردەم لەهەر موێ وەغا پەیدا

پەناهم شەهسوارێکە گوزەرکا گەر بە ئەلبورزادەکا نوکی سمی ئەسپی لەخارا توتیا پەیدا

(ئەو سوارچاکە ئەگەر بەشاخێکی یەکجار بڵندو سەخت سەربکەوێ کەشاخی ئلبورزە ،سمی ئەسپی ئە سوارچاکە کە بەبەردی خارا دەکەوێ وای وورد دەکا دەبێ بە توتیا .هەروەها ئەگەر شمشێر هەڵکێشێ ڕوناکییەك پەیدا دەبێ شەوی یەڵدا ڕووناك دەکاتەوە ) (خەزنەدار،٢٠٠٣، ١٥٧)

لەسەهمی حەملەیی ئەو ، بۆ عەدو هەرجا حەزەر لازم

لەدەس ئەو بو کراسی ڕۆمیان شێوەی قەبا پەیدا

دەبێ گەر بێتە مەیدان وەکو بەبری بەیان ساتێ

لیباسی ڕوو بەهی دەردەم لەئەندامی گیا پەیدا

ئەگەر ئاوی بەقای نۆشی بێ دوژمن فائیدە نادا

لەمەوجی جەوهەری تیغی حرووفی لابەقا پەیدا

باسەکەی وەکو لەسەرەوەدا نوسراوە بە موبالەغە دەس پێدەکا و لەسەرانسەری قەصیدەکەدا ئەوەندە بەئازایەتی و لێوەشاوەیی و سورچاکی عەزیز بەگدا هەڵدەدا دەگاتە ڕادەی هەڵنانێکی بێ تام ، بەڵام بێگومان ئەم هەڵوێستەی سالم ، هەڵوێستێکی سیاسی بووە و جێگای ڕێزلێنانە. سالم بەتەمای هیچ پاداشتێکی ماددی نەبوو لەعەزیز بەگ ، لەو کاتەدا ئەو نەك هەر دەسەڵاتدار نەبوو بەڵکو شۆڕشگێڕێکی یاخی بووە لە دەسەڵاتی زاڵی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

تورك و دواتر لەهى ئێرانیش. سالم باسی عەزیز بەگ ئەکا وەکو قارەمانی نەتەوەیی کورد لەبەرامبەر تورکی داگیرکەردا. لەو ڕۆژەدا ئازایەتییەکی بێ وێنەبووە کەسێ زات بکا بە چەك یا بە قەڵەم بچێ بەگژ دەزگای حوکمڕانی عوسمانیدا، ئەمە لە دوو لاوە غەزەبی بەسەر ئەو کەسەدا باراندوە : یەکەمیان غەزەبی دەسەڵاتی داگیرکەر، کە ئەبوو بەهۆی گیران و دەربەدەری و بێبەشی لەهەموو ئیمتیازەکانی نزیکایەتی لە حوکم . دووەمیان غەزەبی دژایەتی خەلیفەی موسڵمانان کە لەو سەردەمەدا لەبەرچاوی زۆر کەس بەتایبەتی پێشەوایانی دینی (ئیتاعەت) ی واجیب و فەرز بووە.

دوای دوور خستنەوەی میرەکانی بابان بۆشایی سەرکردایەتی دروست بوو، سالم لە شیعرەکەیدا بە ئاشکرا باسی ئەمە ئەکا و لەخوا ئەپاڕێتەوە عەزیز بەگ ڕزگاربکا یا بیگێڕێتەوە بۆ ئەوەی سەرکردایەتی موڵکی بابان بگرێتە دەس و لەدەس تورك دەری بهێنێ و ڕەواجی بۆ پەیدا بکا .(١٩٩)

عەزیزم وا لەناو چاهە خوداوەند نەجاتی دەی

لەچیهرەی ئەو بکا یەعقوبی دڵ ڕەمزی صەفا پەیدا

خودایا موڵکی بابان بێ ڕەواج و قەڵبە ،سا لطفی!

بە ئیکسیری وجودی ئەو وەك میسك بەها پەیدا (ئەمین،١٩٩٨،ل١٩٩)

شەڕی سوارەی بابان و ئۆردوی ڕۆم

ئیسماعیل پاشا یەکەمین حاکمی بێگانە بوو لەسلێمانی ،عەزیزبەگی ئەوڕەحمان پاشا سەری دانەنواند و کەوتە خۆ ئامادەکردن بۆ بەرهەڵستی و دەرکردنی ئۆردووی تورك ،حسین بەگی برای و محەمەد ئەمین بەگی کوڕی عوسمان بەگی برازای و هەندێ لەبەگزادەکانی تری بابان و هەندێ لە سوارەی هەمەوەند و هۆزەکانی تر بوون بەهاودەنگی (ئەمین،١٩٩٨،ل٢٠٠)

عەزیز بەگ و سوارەکانی هەموو ڕۆژێ لەدەورووبەری سلێمانی دا پەلاماری سەربازەکانی تورکیان ئەدا .هێزەکانی تورکیان شپرزە کردبوو .ئیسماعیل پاشا تەنگاو بوو ،موشیر نامیق پاشا هێزی زیادو هەندێ تۆپی نارد بۆ بەهێزکردنی ئۆردووەکەی سلێمانی ،بەڵام عەزیز بەگ بەردەوام بوو لە شاڵاوەکانی .(س.پ:ل٢٠٠).

عەزیز بەگ بەنیازی گرتنەوەی سلێمانی خۆی سازدا ،لەمەشدا محەمەد ئەمین بەگ و کوڕەکانی سلێمان پاشا :قادربەگ و حەسەن بەگ و چەند کەسێکی کە لە بەگزادەکانی بابان هاودونگ و هاوکاری بوون. پێدەچێ هەندێ لە بابانەکان لەناو هێزی (نیزام)دا بووبن بۆ فێڵ بەڵێنی هاوکاریان پێدابێ بەڵام لەکاتی شەڕە کەدا بەڵێنەکەیان بەجێ نەهێنابێ ..(س.پ:ل٢٠٠).

هێزی عەزیزبەگی بابان بەکۆمەڵ هێرشیان بۆناو سلێمانی کرد. ئیسماعیل پاشای تورك بەرپەرچی دانەوە،بەتوندی تۆپ بارانی کردن و،سەربازەکانی تورك ناو کۆڵانەکانیان لێگرتن . شەڕێکی قورس قەوما سوارەی بابان لە ئاگری تۆپ و تفەنگی تورك زەرەرێکی زۆریان پێگەیشت و شپرزە وپەرێشان بوون. ژمارەیەکی زۆر کوژران. و ژمارەیەکی زۆریش گیران ڕەوانەی ئەستەمبۆڵ کران .(س.پ:ل٢٠١٠).

پیرەمێرد لە کورتەباسێکی ئەم شەڕەدا ، وەکو شەڕەکەی خستۆتە مانگی ناوجەژنانی ١٢٦٦ك/١٨٥٠ز وە ماوەی گەمارۆدانی لەشکری تورك وباسی فێڵەکەشی کردووە ،ئەڵێ: (عەزیز بەگی مامی ئەحمەد پاشا عوسیانی کرد و پەنجاو یەك ڕۆژ دەوری سلێمانی بەست . ئاخری بە فێڵ و بەناوی عەسکەری ئەحمەد پاشا و دەستەو دائیرەی مورتەدەکانەوە –واتە بەناوی نیزامیەکانی ئەحمەد پاشاوە –کاغەزیان نووسی :وەرە ئێمە تەسلیم ئەبین: ئەویش بە دڵپاکی و بێ باکیی هاتە سەر قشڵەو تۆپخانە ،لەپڕ دەستڕێژی تۆپ و تفەنگیان لێکردن زۆریان لێ کوشتن. هەمزەی مەسرەفی باپیرم لەو شەڕەدا یانزە برازاو کەسوکاری کوژرا. (ئەمین،١٩٩٨،ل٢٠١).

ئیسماعیل پاشای قایمقامی سلێمانی و ئەفسەرە داگیر کەرەکانی تورك لە ٢٩ ی ڕەجەبی ١٢٦٦ك /حوزەیرانی ١٨٥٠ ز دا بۆ پاکانەکردن و ئافەرین محەمەد بەگی کوڕی خالید بەگ و کوڕەکانی عەبدوڵا ،عەبدوڕەحمان و حسێن، کە ماوەی چل ڕۆژ بە (٣٠٠) سوارەوە لەسەنگەری توركدا دژی عەزیز بەگ جەنگیبوون.

ئەمە دوایین شەڕی بابان بوو لەگەڵ دەوڵەتی عوسمانی ،عەزیز بەگ لەگەڵ ژمارەیەکی کەم دەرباز بوو.ماوەیەك وێڵ و سەرگەردان لە ناوچەکانی سنوری ڕۆم و عەجەم دا سوڕایەوە ،حکومەتی عوسمانی داوای لە ئێران کرد ،حاکمی کرماشان ،عەزیز بەگ دەربکا ،عەزیز بەگ لە هیچ لایەکەوە هیوای نەما بوو،سەرەنجام بەتەنیا ڕێگای ئەستەمۆڵی گرت و خۆی بدابە دەستەوە ،لە جێگایەکی دوور لە کوردستان دەسبەسەر دایاناو موچەیەکی مانگانەیان بۆ بڕیەوە.

میرەکانی بابان لە کوردستان دورخرانەوە، ئەگەرچی زۆریان پلەو پایەی دەوڵەتیان پێبەخشین،بەڵام هەتا مردن نەیانهێشت جارێکی کە پێ بنێنەوە سەر خاکی کوردستان . (ئەمین،١٩٩٨،ل٢٠٢)

سالم ئەم شەڕەی بە قەسیدەیەکی درێژ هۆنیوەتەوە،دیمەنی شەڕەکە وەکو شەڕێکی نەتەوەیی دژی دەسەڵاتی داگیرکەر و عەزیز بەگ وەکو قارەمانێکی نەتەوەیی شەڕی بەرەنگاری بێگانە باس دەکا .

ئەم قەصیدەیە چەند بابەتێکی گرنگی تێدا کۆکراوەتەوە :



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

١-گلەیی لەرۆژگار:سالم سەرەتای قەصیدەکەی بەسکاڵا دەس پێدەکا .چەند جارێ ،فەلەك ،گەردوون، رۆژگار ،ئاسمان ، دەهری دون ، دوبارەئەکاتەوە،ئەوەی سەر کورد هاتووە دەبەستێتەوە بەبڕیاری فەلەکەوە .پێ ئەچێ سالم باوەڕی بە (قەدەر) هەبووبێ . (خەزنەدار ،٢٠٠٣ ).

( دواهێرشی سوپای تورکی عوسمانی بۆسەر شاری سلێمانی پایتەخت و داگیرکردن و روخاندنی میرنشین کارەساتێکی گەورە بوو. هەموونەریت و رەوشت و ئەدگارێکی نەتەوەیی شێواند لایەنی سایکۆلۆجی لە هەمووشتێکی دیکە زیاتر دەروونی هاوولاتییە دڵسۆزو نیشتمانپەروەرەکانی هەڵتەکاند وتووشی ڕەشبینییێکی کوشندە بوون . (خەزنەدار،٢٠٠٣ ،١٤٦)

(سالم یەکێك بوو لەوکەسانە ی بەچاوی خۆیان دیمەنی شەڕو شۆڕی ناوشاریان دیبوو . پیاو دەتوانێ بەخەیاڵ بلێ شاعیر لەناوەڕاستی سەدەی نۆزدەم وەکو پەیامنێرێك خۆی لەناو جەنگەوە دیوە ،ئەوەی چاوی پێ کەوتووە ، شیعریانە یاخود بەشیعر گێڕاویەتیەوە )(س.پ، ل١٤٦ ). سالم ئەوەندە بە وردی جەنگەکە دەگێڕێتەوە، کە دەیبیستی باوەڕناکەی گەر بلێن خۆی بەشداری شەڕەکەی نەکردووە.

ئەهلی بابان گریەکەن بۆ خانەدان و ئاغەتان

نیمی مەحبووس ، نیمی مەقتول ، نیمەیی مەنفی کران

کەوڵ بەدۆش ،یا خەرقەپۆش بن تاج و کەشکۆڵ هەڵگرن

رووکەنە ئەملاکی (پیترو) بچنە شاری خامۆشان

ئاگری نەکبەت لە خەرمەنهایی تالع کەوتووە

شەمعی دەوڵەت هەر تەرەف  دەکرا هەمووخامۆش کران

(ڕوودەکاتە خەڵکی سلێمانی و پێیان دەڵێ شین وشەپۆڕ بکەن بۆ پیاو ماقولآنتان، ئەوانەی هەنێکیان خرانە بەندیخانەوە،هەندێکیان کوژران و هەندێکیان ئاوارەکران.ئەوەی ماوەتەوە وەکو دەروێش کەوڵو خەرقە لەبەربکەن و کەشکۆڵی خۆتان وتانجی میرنشین هەڵگرن و رووبکەنە ولاتی پیتر (مەبەستی پیتری گەورەی قەیسەری ڕوسیایە ).بۆئەوەی لەو ئاقارە دوورانە کۆتایی بەژیانتان بێ،چونکە ئاگری نەکبەت بەربۆتە خەرمانی بەخت،ڕووناکی دەسەلآتی دەوڵەت لەهەموو لایەك کوژایەوە )(خەزنەدار،٢٠٠٣، ١٤٧)

تورك وەك تیلکی زەعیف و کورد ئەسەد خوو پێش

جەنگجۆ بوون یەك بەیەك هەرسوو وەکو بەبری بەیان

سڕی مەخفی ڕۆمیان زانیوتە بۆ زاهیر دەبوو

نووکی ڕم دەیخوێند لە دڵ یا تاهەمووڕازی نیهان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شــاعیر هەوڵــی ئەوە دەدا لەجەنگــی ناوشــارئەوە بخاتەروو،جەنگــاوەری کــورد لەبەکارهێنــانی چەکــدا شــارەزا بــووە، لەم شــیعرەدا ســالم پشــتی بە موبــالەغەی شــیعریی بەستووەو تورك بە تولە سەگی بێ تواناو، کورد بە شێر دەچوێنێ، بەڵام لە ڕاستیدا سوپای عوسـمانی لە کـورد بەهێزتـر بـووە. ڕاسـتە لەشـکری عوسـمانی بەهێزبـوون، بەڵام ئـازایەتی و قارەمـانی کـورد شێرئاسـا هـاتە مەیـدان بەرامـبەر ئەو هێـزە گەورەیەی تـازەترین چەکـی سـەردەمیان هەبـووە خـۆی لەخۆیـدا نمـوونەی دلیـری و چاونەترسـییە،جگە لەوە ئەمە ناپـاکی بوو،کە هێـزی شۆڕشـگێڕانی شـکاند (خـالید بەگـی کـوری مـحەمەد ئەمـین بەگ) بەخـۆ بەهێزەکەیەوە پشتی لەشکری عوسمانیان گرت و شوڕشگێڕانیان هەڵخەڵەتاند:

دەرپەڕین باز مەیلی ئیقدامیان نەبوو لەو بیدعەتە

حەسرەتا یەك دڵ نەگەینە شیوەکەی گردی گوڵان

مەیلی لانیان بوو وەکو کەروێشکی پاش ڕاو هاتنەوە

دەرنەچو و چابوو بەحەملەی دێڵە کەهیا کەوڵ کران

سێ بلۆك پشتی گرت و سونگی دەوران هاتنە پێش

حەسرەتا باز هەم نەیانزانی نیزام وا بێ حەیان

سەربلۆکیان (خاڵەکەی هەورامی) و (قالەی شەریف)

هەم ڕەفیقیان بوو (عەزیزە حیزەکەی ) چووچیان

ئاهی ئەم حاکمانە تەحقیقە ئەگەر نەگرێ نیزام

قەومی نوحیش دەچنە جەننەت بێ شك و شوبهە و گومان

سەرفی نەقدی رووحی شیرین بوو هەتا پەروەردە بوون

بەچکە گورگ ئاسا لەئاخیر چوونە کۆزی دوودمان

فەرقی فەخری میرەڵایی گەییە بەهرام و ئەسەد

کەوتە قەعری چاهی غەم لەو حاڵە میری بازیان

باز وەکو بازی تەوار دەورێکی کردو هاتەوە

دەوری کەهیا وشاری گرت دیسان بەرارای نۆکەران .

لێرەدا شـاعیر باسـی کەمتەرخەمـی یـاخود خیـانەتی ئەو سێ سـەرۆك بلـۆکە دەکات،باسـی ئەوە دەکـات،کەچۆن سـوودمەند بـوون و پەروەردە کـراون دواجـار وەکـو بەچـکە گـورگ خیانەتیان کردووە:

بــووبە جێــی بەبــرو غەزنەفەر کــووچە کــووچە ناوســوقاق

ســەر محەلــلە ڕەنگــی بێشــەی گــرت لە نێــزەی جانســتان

ڕەنگــی ســەحرای مەحشــەری بــوو شــیوەکەی لای پیرمەســوور

گرمەگرمــی تــۆپی ڕۆمــی هەوهەوەی ســوارەی بەبــان

بووبەجــــاروبی محەلــــلە هەرتەرەف پەنــــجەی پەڕیــــو

پەی کــراو بــێ پــێ لەمەیــدان پەهلەوانــی پــاڵەوان

(ســەن ســەن )ی ســوارەی نیــزام و (گەل ئــۆڵان) ی تــورك ئوشاغ

بگرەبگــرەی کــورد زمــان وئــاخ ئــاخی تورکمــان

قەهرنــاك و ســـەر بە رەهـــنە ئـــاتەش ئەفشـــان حەمـــلەوەر

جەنگ جۆ بوون یەك بەیەك هەرسوو وەکو بەبری بەیان

بەختــی ســووتێ ســالەڕێی هەق ،حەق حەقــی لــێ وەرگــرێ

بەدنــمەك گیــری نــمەك بــی وەك ئەوان دایــان بەمــان

بـــۆمەداری نـــان عەشـــیرەت قەت مەدارێکـــی نەبـــوو

ئاشــەکەی تەبعــی بەئــاوی کەیــدی ڕۆمــی هــاتەدان

شــێری بێشــەی مــوڵکی بابــان بــوو عەزیــز ئەممــا دڕێــغ

وەك گــڕی دا موســکی بــێ قەومەکەی زوو هەڵوەشــان

گەرچــی میســـرە شـــارەزوور ئەممـــا خـــراپە بـــێ عەزیـــز

ڕوودەدا لەم خەلـــقە ئـــاخر حـــالەتی کەنعانیـــان

ســافەلەك کەیخوســـرەوی خـــوێنی ســیاووش گــوم مەکە

ڕۆســـتەمی ســـانی عەزیـــزە مـــوددەعی توورانیـــان

دیـــدە نابینـــایە وەك یەعقـــووب لەهیجرانـــی عەزیـــز

تــۆ خــودا ســاحیب مەکــان و تــۆی خــودایە لامەکــان

کەوکەبـــی بەختـــی لەچاهـــا وابەپـــرتەو بێـــتە دەر

شەعشــە عەی ئەمــری مــونەووەر کــا زەمــین و ئاســمان

جەنگەڵـــی شـــەهبازی بـــازی بازیـــانی بـــاز نەوی ی

فــش هەڵات کەهیــا لەســەر بەیــزەی تەمەع وەك ماکیــان

(وەســفی دیمەنێکــی شــەڕەکە دەکــا لە دەوروبەری گەڕەکــی پیرمەســووری سلێمانی.گرمە گرمــی تــۆپی دوژمــن و هەوهەوەی هانــدانی ســوارەی بابــان بــۆ هێرشــبردن کردبووی بە ڕۆژی مەحشــەر ، لەو جەنــگەدا ئەوەنــدە دەســت و پەنجە ی پەڕیو زۆر بــوو وەکــو گســکێك بــوو بە بــا کۆڵانەکــانی گســك دەدا .ســەربازی کــوردو تــورك بەرامــبەر بــوون و تێکترنجــابوون و هەڵمەتیــان بــۆ یەکتــری دەبــرد. قیــژو هــۆڕو هــاوار ســەری کــاس لادەکــرد سەربازی سوارەی تورك بەزمانی خۆی (سەنسەن) ی بوو واتە تۆ....تۆ و کوڕە تورکیش (گێل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئۆلان ) ی بوو واته کوڕە وەرە .جەندرمەی تورك ناڵە ناڵیان بوو کەچی کەچی کورد بگرە بگرەی بوو )(خەزنەدار،٢٠٠٣، ١٥٥).

(لەکۆتایی قەسیدەکەدا شاعیر باس لەسەرکردەی جەنگەکە عەزیز بەگی بابان دەکا، بەشێری ناو دارستانی وڵاتی بابانی دادەنێ. لەدواییدا ئاخ وداخی بۆ هەڵدەکیشێ لەبەر ئەوەی لەم شەڕەیدا سەرنەکەوت. ئینجا شاعیر دەکەوێتە بزواندنی سۆز بەداهێنانی وێنەی شیعری.میسرو شارەزوور بەرامبەر بەیەکتریان دادەنێ بەراوردیان دەکا ، بەڵام دەڵێ شارەزوور بێ عەزیز بەگی بابانە، ئەمە نابێ ڕوبدا ،چونکە میسر بێ عەزیزی میسر (پووتیفار)ی وەزیری فیرعەون نەبووە.بەم جۆرە کوردی بابان دەربەدەرو ئاوارە بوون وەك کەنعانیانی فەلەستینی کۆنیان لێهات.)(خەزنەدار ،٢٠٠٣، ١٥٥).

لێرەدا سالم مەبەستی لە عەزیزی میسر پۆتیفار نییە، بەڵکو مەبەستی لە حەزرەتی یوسف)ە، چونکە میسر لەسەردەمی پۆتیفاردا ژیانیان ناخۆش بوو، نەبوون ونەدار بوون، لەژێر چەپۆکی پیاوانی ئاینییدا بوون، لەسەردەمی یوسف دا ژیانیان گۆڕاو بەرەو خۆشی چوون.جگە لەوە کەنعانیەکانی فەڵەستینی کۆن هیچ پەیوەندییان بە پۆتیفارەوە نەبوو، بەڵکو دوای وون بوونی یوسف ژیانیان ناخۆش بوو و ئاوارەو دەربەدەربوون.(سالم)یش دەڵێت:

دیدە نابینایە وەك یەعقووب لەهیجرانی عەزیز

تۆخودا ساحیب لامەکان و تۆی خودایە لامەکان

(عەزیز بەگ کوڕی عەبدولڕەحمان پاشای بابان و مامی ئەحمەد پاشای دوامیری بابان بوو. ئازایەتی ئەم سوارچاکە لە کۆمەڵی سلێمانیدا بووە بە چیرۆك و خەڵکی وەك نموونەی قارەمانیەتی و نیشتمان پەروەری دەیگێڕنەوە و عەزیز بەگ هاوڕێی نزیکی سالم بووە،جگە لەوە برادەریەتی لەگەڵ بنەماڵەی ساحێبقڕان بووە، ماوەیێك هاوکارو برادەری مەحمود بەگی ساحێبقڕانی خزمی سالم بووە، ئەوەی پێویستە لێرەدا بوترێ ئەوەیە بنەماڵەی ساحێبقڕان بە چەکمە ڕەق ناوبانگیان دەرکردووە ئەمانە لە وێنەی سوارچاك و جەنگاوەرەکانی چینی سەوەی کۆمەڵی ئەوروپای سەدەکانی ناوەڕاستیان دەکرد )(س.پ،ل ١٥٥).

سالم لە قەسیدەکەدا عەزیز بەگی کردووە بە سەرکردەو قارەمانی جەنگەکە. (لەدوای ڕووخانی میرنشین چوونی ئەحمەد پاشا بۆ ئەستەموول دەسەڵاتی عوسمانی (عەبدوڵا پاشا)ی بەپلەی قایمقام لە سلێمانی دامەزراند. بێگومان خەڵکەکە لەم لایەنەوە بوون بە دووبەشەوە ، هەندێکیان بەپیاوی دەسەڵاتی تازە وەك تاوانبار بەرامبەر کوردایەتی دەکەوتنە بەرچاو ، بەشێکی دیکەیان خەباتیان دەکرد لەپێناوی گەڕاندنەوەی دەسەلاتی بابان . عەزیز بەگی بابان و مەحمود بەگی ساحێبقڕان سەرۆکایەتی ئەم تاخمەیان دەکرد. وادەردەکەوێ عەبدوڵا پاشای قایمەقام لایەنگری دەسەڵاتی عوسمانی بووبێ و هەڵسوکەوتی لەدژی عەزیز

بەگ بوو. عەزیز بەگ ومەحمود بەگ لەدواییدا یەکتریان گرت و بەهۆی یارمەتی عەشیرەتی هەمەوەند و هەندێ عەشیرەتی تری ئەو ناوە ڕێکەوتن بچنە مەیدان لەدژی عوسمانی لەدووشەڕی گەورەدا لەنزیك کریچنەو لەدەربەندی بازیان بەشداریان کرد بۆئەوەی ڕێگە لە لەشکری والی بەغدا بگرن و نەگاتە سلێمانی. هەرچۆنێ بێ مەحمود بەگ بەفێڵ لە کەرکوك دەکوژرێ ،دەسەڵاتی عوسمانی ئازاری زۆری هەمەوەندان دەدا لەدوایدا عەزیز بەگ لەبانی مەقان ڕێگە لە لەشکری بەغدا دەگرێ لەم شەڕەدا سەرناکەوێ ئەویش دەکوژرێ)(س.پ،ل ١٥٦). لەڕاستیدا عەزیز بەگ نەکوژراوە و دوای سەرپەرشتی شەڕی سلێمانی کردووە لە دژی عوسمانیەکان، بەڵام دواجارخیانەتیان لێدەکرێت و شکست دێنن و عەزیز بەگ لەو شەڕەش ڕزگاری دەبێت.

٣-٢: ڕەگەزەکانی چیرۆك لە بنیاتی قەسیدەکەدا:

ڕووداو و وەسف و کەسایەتی لە تراژیدیای سلێمانیدا

ڕووداو یەکێکە لە توخمە گرینگەکانی بنیاتنانی چیرۆك و لە تەکنیکی چیرۆکدا بە بەشێکی گرینگ دادەنرێت ئەمەش بۆ بایەخ و خودی ڕووداو دەگەرێتەوە، ئەمەش پەیوەستە بە چیرۆك و دراماو ڕۆمانەوە، چونکە ناکرێت بەسەرهاتێك هەڵبژێرین، کە خالی بێت لە رووداو.ڕووداویش جۆری پالەوان و شوێن و کات وەکو ڕەگەزی بنچینەیی چیرۆك لە قەڵەم دەدرێن و هەموو ئەوانەش لەوە سەرچاوە دەگرن، کە ڕووداو خۆی تێکەلی ژیانی مرۆڤە، بۆیە زۆرجار ڕووداو کار لە مرۆڤ دەکات کاریگەری بەسەر مرۆڤەوە بەجێ دەهێلێ، لەوانەیە هەندێکجار بە شێوەیەك کار لە مرۆڤ بکات ڕێرەوی ژیان و پلانی بۆ ژیان بگۆڕێ. رووداو بریتیە لەو زنجیرە گۆڕانەی، کە بەسەر رەوشی کەسەکاندا دێت لە پێوەندی و کارلێکردنیان لەگەل شتەکانی دەوروبەری و دەبێتە ئەو تەوەرەی،کە ڕەگەزەکان بە دەوریدا دەسورێنەوە، چونکە ((ڕووداو بە بڕبڕەی پشتی چیرۆك دادەنرێ، جا ئەو ڕووداوە واقعیی بێت یان یان تێکەلکردنی خەیال و واقیع بێت .))( حەسەن،٢٠٠٦،ل١١) هەندێجار ڕووداو واقعین وهەلقولاوی ژیانی ڕۆژانەن و رەنگدانەوەی کۆمەلگەی نووسەرە، نووسەر ڕووداوەکە لە کۆمەلەوە وەردەگرێت،بەلام وەك خۆی نایخاتە ڕوو. هەروەها خستنە ڕووی ڕووداوەکان لە خودی نووسەر لە چنینی ئەو ڕووداوانەوە ئاراستە دەکرێت .

**کەسایەتی:**

کەسایەتی لەگەڵ ڕووداودا کار لە یەکتری دەکەن. جاری وا هەیە ڕووداو کار لەسەر کەسایەتییەکان دەکات وڕێرەی ژیانیان دەگۆڕێت.جاری وایش هەیە، کە کەسایەتییەکان کاریگەری و قورسایی خۆیان لەسەر ڕووداوەکاندا دادەنێن وڕێچکەی ڕووداوەکان بەرەو ئەو شوێنە دەبن،کە خۆیان مەبەستیانە.((هیچ جیاوازی نیە لەگەڵ کەسایەتی کەتواری لە کاریگەربوون بە ئەزموونەکان و لە تێپەربوون بە ڕووداوەکانی

چیرۆك یان ڕۆماندا، به نەرێنی یاخۆ ئەرێنی بێت له گەشەكردنەكەی، كه بەرەو بالابوون یان بەرەو نەمان بڕوات، ئەوكەسایەتییەی،كه لەكۆتایی چیرۆك یان رۆماندا دەیبینین هەمان ئەو كەسایەتییانیەن، كه لەسەرەتادا بینیومانە. ئەو گۆرانكارییەی، كه ڕوویداوه ئەنجامی ئەو ئەزموونەیه، كه بەسەریدا هاتووه به باش و خراپییەوه.)) ( رەحمان،٢٠١٤،ل٤١).

گرینگی كەسایەتی له رووداو كەمتر نییەو به چەند شێوە دەردەكەوێت. كەسێتی سەرەكی شاكەسەكه و كەسێتی لاوەكیەكان .((كەسێتی بریتیه له كۆی چەند عونسوری بیۆلۆژیكی وكۆمەلایەتی كه رەفتاری تاقه كەس، لەوانی تر جیا دەكاتەوه ,ئەو كارەش له رێگای میراتگری یان مەلبەندی ژیانی كۆمەلایەتیەوه ,سەر هەلدەدا. واته كەسایەتی پێك دێت . ئاكامی هاوكێشەی نێوان رەفتاری مرۆڤ و مەلبەندی ژیانه .))( محەمەد،١٩٩٨،ل١٥٤ )،هەروەها (( كارەكتەر ئەو كەسەیه، كه ئەركی بزواندنی رووداوی له سەرە،تووشی تەنگ و چەڵەمەو ئازار و ئەشكەنجه دەبێ،بەلام نابێت ئەوه لەبیر بكرێت،كه زاراوەی (پالەوان)بۆ هەموو كارەكتەرێك ناگونجێ له چیرۆكدا ، بەو پێیەی له حیكایەتدا بەكار هێنراوه.))( س.پ،ل١٥٤ ). جیرارد جینێت پێی وایه ((پالەوان ئەو كارەكتەرەیه،كه چیرۆك گێرەرەوه دەیخاته ژێر گەردەبینەوه، نەك ئەو كەسەی كاری له ڕادەبەدەر دەكات)) (س.پ،ل١٥٤).

**تراژیدیای سلێمانی**

گشت تراژیدیایەك به رووداو دەست پێدەكات و ڕوداوەكەی ئەو تراژیدیایه بەم شێوەبووە،

ڕاسته ئاوڕەحمان پاشای بابان ناوبانگی هەبووه و زۆرجار بەسەر لەشكری عوسمانیەكاندا زاڵبووه، بەلام ئازایەتی عەزیز بەگی كوڕی گەورەترین مێژووی تۆماركردووەو هەرگیز سەری بۆ داگیركەری تورك دانەنواندووه.(لەدوای ڕووخانی میرنشین چوونی ئەحمەد پاشا بۆ ئەستەموول دەسەلاتی عوسمانی (عەبدولا پاشا)ی بەپلەی قایمقام لەسلێمانی دامەزراند،بێگومان خەڵكەكه لەم ڕووەوه بوون به دووبەشەوە،هەندێكیان بەپیاوی دەسەلاتی تازه وەك تاوانبار بەرامبەر كوردایەتی دەكەوتنه بەرچاو،بەشێكی دیكەشیان لەپێناوی گەڕاندنەوەی دەسەلاتی كورد خەباتیان دەكرد. عەزیز بەگی بابان و مەحمود بەگی ساحێبقڕان سەرۆكایەتی ئەم تاخمەیان دەكرد. وادەردەكەوێ عەبدولا پاشای قایمەقام لایەنگری دەسەلاتی عوسمانی بووه و هەڵسوكەوتی لەدژی عەزیز بەگ بوو. عەزیز بەگ ومەحمود بەگ دواتر یەكیان گرت و بەهۆی یارمەتی عەشیرەتی هەمەوەند و هەندێ عەشیرەتی تری ئەو ناوه ڕێكەوتن بچنه مەیدان لەدژی عوسمانی و له دوو شەڕی گەورەدا لەنزیك كریچنەو لەدەربەندی بازیان بەشداریان كرد بۆئەوەی ڕێگه له لەشكری والی بەغدا بگرن و نەگاته سلێمانی. هەرچۆنێ بێ مەحمود بەگ بەفێڵ لەكەركوك دەكوژرێ،دەسەلاتی عوسمانی ئازاری زۆری هەمەوەندان دەدا لەدوایدا عەزیز بەگ لەبانی مەقان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

ڕێگە لە لەشکری بەغدا دەگرێ لەم شەڕەدا سەرناکەوێ ئەویش دەکوژرێ)(خەزنەدار،٢٠٠٣، ١٥٦) لەڕاستیدا عەزیز بەگ نەکوژراوە و دوایی سەرپەرشتی شەڕی سلێمانی لە دژی عوسمانیەکان کردووە، بەڵام دواجار خیانەتیان لێدەکرێت و شکست دێنن و عەزیز بەگ لەو شەڕەشدا ڕزگاری دەبێت. دوای لابردنی عەبدوڵاپاشا والی بەغدا تورکێك لەجێگای دادەنێت.(دوای ڕۆیشتنی عەبدوڵا پاشا بۆ قوستەنتین ، سالم ئەم قەصیدەی دوای لێخرانی عەبدوڵا پاشا و کێشانەوەی بۆ بەغداو دورخستنەوەی بۆ ئەستەمبۆڵ هۆنیوەتەوە. والی بەغدا ئیسماعیل پاشای بەموتەصەڕیفی سلێمانی داناوە) (ئەمین،١٩٩٨، ١٩٧). دەسەڵاتی ئیسماعیل پاشا بووە مایەی هەراسانی خەڵك وبێزاربوونیان لەهەڵس و کەوتی تورکان لەوکاتەدا عەزیز پاشا بەخۆ بەهێزێکەوە دەوری سلێمانی گرت بەهیوای ئەوەی سلێمانی ئازاد بکات:

پەناهم شەهسوارێکە گوزەرکا گەر بە ئەلبورزا

دەکا نوکی سمی ئەسپی لەخارا توتیا پەیدا

ئەگەر خورشیدی تیغی بێ بەسەرشەودا شەبەیخوون کا

دەکا بە بەرقی یەك پەرتەو لەیەڵدادا زیا پەیدا

بەحوجەت نێزە گەر لێدا ،سوپەر وەك کاغەزی قەندە

بەهەر چهربێ لەگەڵ بازویی ئەو حوکمی قەضا پەیدا

بەبادی سمی ئەسپی گەر بکا جەولان لە مەیانا

دەکا عومری عەدوو وەك سوبحدەم وەزعی فەنا پەیدا

(ئەو سوارچاکە ئەگەر بەشاخێکی یەکجار بڵندو سەختدا سەربکەوێ، کە شاخی ئەلبورزە، سمی ئەسپی ئەو سوارچاکە،کە بە بەردی خارا دەکەوێ وای ورد دەکا دەبێ بە تووتیا. هەروەها ئەگەر شمشێر هەڵکێشێ ڕوناکییەك پەیدا دەبێ شەوی یەڵدا ڕووناك دەکاتەوە)(خەزنەدار،٢٠٠٣، ١٥٧) عەزیز بەگ بەنیازی گرتنەوەی سلێمانی خۆی سازدا ، لەمەشدا محەمەد ئەمین بەگ و کوڕەکانی سلێمان پاشا :قادربەگ و حەسەن بەگ و چەند کەسێکی کە لە بەگزادەکانی بابان هاودەنگ و هاوکاری بوون. پێئەچێ هەندێ لەبابانەکان لەناو هێزی (نیزام) دا بووبن بۆ فێڵ بەڵێنی هاوکاریان پێ دابێ بەڵام لەکاتی شەڕە کەدا بەڵێنەکەیان بەجێ نەهێنابێ .(س،پ).

دەرپەڕین باز مەیلی ئیقدامیان نەبوو لەو بیدعەتە

حەسرەتا یەك دڵ نەگەینە شیوەکەی گردی گوڵان

مەیلی لانیان بوو وەکو کەروێشکی پاش ڕاو هاتنەوە

دەرنەچو و چابوو بەحەملەی دێلە کەهیا کەوڵ کران



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

سێ بلۆك پشتی گرت و سونگی دەوران هاتنە پێش

حەسرەتا باز هەم نەیانزانی نیزام وا بێ حەیان

سەربلۆکیان (خالەکەی هەورامی) و (قالەی شەریف)

هەم ڕەفیقیان بوو (عەزیزە حیزەکەی ) چووچیان

ئاهی ئەم حاکمانە تەحقیقە ئەگەر نەگرێ نیزام

قەومی نوحیش دەچنە جەنەت بێ شك و شوبهە و گومان

سەرفی نەقدی رووحی شیرین بوو هەتا پەروەردە بوون

بەچکە گورگ ئاسا لەئاخیر چوونە کۆزی دوودمان

فەرقی فەخری میرەلایی گەیە بەهرام و ئەسەد

کەوتە قەعری چاهی غەم لەو حالە میری بازیان

باز وەکو بازی تەوار دەورێکی کرد و هاتەوە

دەوری کەهیا وشاری گرت دیسان بەرارای نۆکەران

هێزی عەزیزبەگی بابان بەکۆمەڵ هێرشیان بۆناو سلێمانی کرد.ئیسماعیل پاشای تورك بەرپەرچیدانەوە، بەتوندی تۆپبارانی کردن و سەربازەکانی تورك ناو کۆلانەکانیان لێگرتن . شەڕێکی قورس قەوما، سوارەی بابان لە ئاگری تۆپ و تفەنگی تورك زەرەرێکی زۆریان پێ گەیشت و شپرزە وپەرێشان بوون.ژمارەیەکی زۆر کوژران.محەمەد ئەمین بەگ بە گوللە بریندارببوو ،بەزەحمەتێکی زۆر لەشار دەرباز بوو .خۆی گەیاندە ئاواییەکی دووری شار ،بەلام چونکە برینەکەی کاریگەر بوو پاش (٣) ڕۆژ مرد .(ئەمین،١٩٩٨،٢٠٠)لەم شەڕەدا سوارچاکی کورد دلێریەکی زۆری نواند لەشکری تورك لەدەستیان دادو فوغانیان بوو:

تورك وەك تیلکی زەعیف و کورد ئەسەد خوو پێش

جەنگجۆ بوون یەك بەیەك هەرسوو وەکو بەبری بەیان

سری مەخفی ڕۆمیان زانیوتە بۆ زاهیر دەبوو

نووکی ڕم دەیخوێند لە دڵ یا تا هەموو ڕازی نیهان

بوویە جێی بەبرو غەزنەفەر کووچە کووچە ناوسوقاق

سەر محەللە ڕەنگی بێشەی گرت لە نێزەی جانستان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ڕەنگـــی ســـەحرای مەحشـــەری بـــوو شـــیوەکەی لای پیرمەســـوور

گرمەگرمـــــی تـــۆپی ڕۆمـــــی هەوهەوەی ســــوارەی بەبـــــان

بــــــوو بە جـــــاروبی محەلــــــلە هەرتەرەف پەنـــــجەی پەڕیــــو

پەی کـــــراو بـــێ پـــێ لەمەیـــدان پەهلەوانـــی پـــاڵەوان

(ســەن ســەن )ی ســوارەی نیــزام و (گەل ئـۆلان) ی تــورك ئوشاغ

بگرەبگـــرەی کـــورد زمــــان وئـــاخ ئـــاخی تورکمـــان

لەگەڵ ئەو هەمـــوو نەبەردی و چاونەترســـییەی ســـوارچاکانی کـــورد شـــەڕەکە بە شکســـتی کـــورد کۆتـــایی هـــات،ئەو شکســـتەش لەبەر بێتوانـــایی نەبـــوو، بەڵکـــو ئەو دەردە کوشندەی، کە لە دێر زەمانەوە بەرۆکی کوردی گرتووە ئەویش خیانەتە،خیانەتی هەندێ لە فەرمانـدەو بەگەکـان شکسـتی بەو نەبەردیـیە هێنـا.ئەو شـەڕە مەزنە بەهـۆی خیـانەت کارەساتێکی گەورەی بەخۆیەوە بینی، کە هەرگیز سولەیمانی شتی وای نەدیبوو:

گەرچـی پێشـا پـێش بەهەیـبەت بـوون ئـازا چـوونە پـێش

حەســـرەتا بـــاز هەم نەیـــانزانی نیـــزام وا بـــێ حەیــان

پیشـــی دەمیـــان شـــیلکی تـــۆپ پشـــتی ســـەر ئەو ئـــاگرە

گەییەچەرخـــی هەفتەمـــین لەو عـــانەدا ئـــاە و فوغـــان

گـوێ فەلەك کەڕ بـوو لەبەر نـاڵەی نەفیـری ئەهلـی شار

لامەکـــانی گـــرت ســـەدای نـــاڵەو فوغـــان و ئەلئەمـــان

مــــوددەعی کــــویربێ نیــــزام ئیفلیج،مەکــــان زێــــڕو زەبەر

(میـری سـورداش)و (ئەمیـنە)ی پیـاوی هەردوو ئەنگـوان

گەر عەشـیرەت گـریەکەن هەریەك هەتـا دەمـرن کەمە

کوشـتنی میـیر بـای موخـالیف بـوو بەشـەمعی دوژمنـان

ڕۆژی قەتــل ئەمــڕۆیە ئەلــحەق (وا حوســێنی) پــێ دەوێ

بـــــۆئەدای تـــــازی سەراســـــەر نیلگــــوونە ئاســــمان

(میری سورداش و ئەمینی پیاوی دەکوژرێن،سالم ڕوودەکاتە خەڵکی و دەڵێ هەتا مـردن گەر بـۆ کوشـتنی میـری سـورداش بگـرین و شـیوەن بـکەن هێشـتا کەمە. ئەم کارەســـاتە بوویەخۆشـــی بـــۆ دوژمنـــان ....ئەمـــڕۆ بەراســـتی ڕۆژی کوشـــتن و خـــوێن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ڕشتنه.لەخۆدانێکی گەرەکە وەکو ئەو (واحوسینی )یەی بۆ شەهیدی کەربەلا دەکرێ لەم تازیەدا ئاسمان لەشین و شەپۆڕدایە )(س.پ، ١٥٢)

ساعیقەو بەرقی نەدامەت زولمەتی دا شەرق و غەرب

بەردە بارانە بەمەخسووسی لەسەر مولکی بەبان

چاوی عیبرەت هەڵبرە ئەی دڵ لە وەزعی دەهری دون

سەیرکە تورکی دەلەك چی کرد بە زومرەی کوردزمان

عەرسەیی مەیدانی چەرخە ئێستە جەولانگاهی بووم

بوو بە لانەی زاغی بەدخوو ،ئاشیانەی باڵەبان

باس لەو تۆپ باران و هێرشە تایبەتە دەکات،کە تورکەکان بەتایبەتی لەگەڵ میرنشینی بابانیان کردووەو لەشکری تورك چی بەرامبەر خەڵکی کورد کردووە تەنیا لەبەر ئەوەی سەریان بۆ تورك دانەنواندووە

(وەسفی دیمەنێکی شەڕەکە دەکا لەدەوروبەری گەڕەکی پیرمەسووری سلێمانی.گرمە گرمی تۆپی دوژمن و هەوهەوەی هاندانی سوارەی بابان بۆ هێرشبردن کردبووی بە ڕۆژی مەحشەر ، لەو جەنگەدا ئەوەندە دەست و پەنجە ی پەڕیو زۆر بوو وەکو گەسکێك بوو بەبا کۆڵانەکانی گسك دەدا. سەربازی کوردو تورك بەرامبەر یەکتری بوون و تێکترنجا بوون و هەڵمەتیان بۆ یەکتری دەبرد. قیژەو هۆڕو هاوار سەری کاس دەکرد سەربازی سوارەی تورك بەزمانی خۆی (سەنسەن) ی بوو واتە تۆ...تۆ و کوڕە تورکیش (گێل ئۆلان ) ی بوو واتە کوڕە وەرە .جەندرمەی تورك ناڵە ناڵیان بوو کەچی کورد بگرە بگرەی بوو )(س.پ، ١٥٥)

(لەکۆتایی قەسیدەکەدا شاعیر باس لەسەرکردەی جەنگەکە عەزیز بەگی بابان دەکا. بەشێری ناو دارستانی وڵاتی دادەنێ.

سالم ئەوەندە بە ووردی جەنگەکە دەگێڕێتەوە، کە دەیبیستی باوەڕناکەی گەر بلێن خۆی بەشداری شەڕەکەی نەکردووە. ئەو کارەساتەی، کە ڕوویدا ناتوانرێت هەزم بکرێ، بۆیە ڕوو دەکاتە خەڵکی شاری سلێمانی و دەڵێت :

ئەهلی بابان گریەکەن بۆ خانەدان و ئاغەت

نیمی مەحبووس، نیمی مەقتول ، نیمەیی مەنفی کران

کەوڵ بەدۆش ،یا خەرقەپۆش بن تاج و کەشکۆڵ هەڵگرن

ڕووکەنە ئەملاکی (پیترو) بچنە شاری خامۆشان

ئاگری نەگبەت لە خەرمەنهایی تالع کەوتووە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

شەمعی دەوڵەت هەر تەرەف دەکرا هەمووخامۆش کران

لەگەڵ ئەو ماڵوێرانییەش شاعیر هەردەم هەوڵی داوە ترسنۆکی و بەد ڕەوشتی لەشکری تورك پیشان بدات .

تورك وەك تیلکی زەعیف و کورد ئەسەد خوو پێش

جەنگجۆ بوون یەك بەیەك هەرسوو وەکو بەبری بەیان

ك سڕی مەخفی ڕۆمیان زانیوتە بۆ زاهیر دەبوو

نووکی ڕم دەیخوێند لە دڵ یا تاهەمووڕازی نیهان

لەم شیعرەدا سالم لەڕووی دڵسۆزی و موبالەغەی شیعرییەوە تورك بە تولە سەگی بێ تواناو، کورد بە شێری نەڕی بەهێز دەچوێنێ،بەڵام لە ڕاستیدا وانەبووە، بەڵکو سوپای عوسمانی لە کورد بەهێزتر بووە. لەبەرئەوە جەنگاوەرانی بابان نەیانتوانیوە بەرهەڵستی بکەن و شار لەلایەن ئەو بێگانەیە داگیرکراوە )(خەزنەدار،٢٠٠٣، ١٥١)

باسەکەی وەکو لەسەرەوە نوسراوە بەموبالەغە دەس پێدەکا و لەتەواوی قەصیدەکە دا ئەوەندە بە ئازایەتی و لێوەشاوەیی و سوارچاکی عەزیز بەگ دا هەڵدەدا دەگاتە ڕادەی هەڵنانێکی زێدەڕۆ ،بەڵام بێگومان ئەم هەڵوێستەی سالم ،هەڵوێستێکی سیاسی بووە و جێگای ڕێزلێنانە. لەڕاستیدا شیعر خۆی زیادەڕۆیی تیایە، بەڵام لێرەدا شاعیر گەر زێدەڕۆیشی کردبێت ئاساییە، چونکە شەڕێکی نابەرابەر بووە، عەزیز بەگ وسوارەکانی ڕووبەڕووی لەشکرێکی خاوەن چەکی تازە بوونەتەوە ئەگەر ئازایەتی و فیداکاری نەبووبێت چی وایکردووە لەشکری تورك وا بە پەند ببەن و زەندەقیان ببەن،گەر خیانەت نەبوایە جۆرێکی دی دەبوو:

سێ بلۆك پشتی گرت و سەنگی دەوران هاتنە پێش

حەسرەتا باز هەم نەیانزانی نیزام وا بێ حەیان

سەرفی نەقدی ڕووحی شیرین بوو هەتا پەروەردە بوون

بەچکە گورگ ئاسا لەئاخیر چوونە کۆزی دوودمان

فەرقی فەخری میرەلایی گەییە بەهرام و ئەسەد

کەوتە قەعری چاهی غەم لەو حاڵە میری بازیان

باز وەکو بازی تەوار دەورێکی کرد و هاتەوە

دەوری کەهیا وشاری گرت دیسان بەرارای نۆکەران .

لێرەدا باسی کەمتەرخەمی یاخود خیانەتی ئەو سێ سەرۆك بلۆکە دەکات.

(پیرەمێرد لە کورتە باسێکی ئەم شەڕەدا ،وەکو شەڕەکەی خستۆتە مانگی ناوجەژنانی ١٢٦٦ك/١٨٥٠ز ەوە ماوەی گەمارۆدانی لەشکری تورك وباسی فێڵەکەشی کردووە.دەڵێ (عەزیز بەگی مامی ئەحمەد پاشا عوسیانی کرد و پەنجاو یەك ڕۆژ دەوری



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

سلێمانی بەست . ئاخری بە فێڵ و بەناوی عەسکەری ئەحمەد پاشا و دەستەو دائیرەی مورتەدەکانەوە واتە بەناوی نیزامیەکانی ئەحمەد پاشاوە کاغەزیان نووسی: وەرە ئێمە تەسلیم ئەبین: ئەویش بە دڵپاکی و بێ باکیی هاتە سەر قشڵەو تۆپخانە ،لەپڕ دەستڕێژی تۆپ و تفەنگیان لێ کردن زۆریان لێ کوشتن هەمزەی مەسرەفی باپیرم لەو شەڕەدا یانزە برازاو کەسوکاری کوژرا . خۆشی بەبینداری گیرا. لە چوخمەکەی حەساری ماڵی کاك ئەحمەدی شێخ حەپس بوون. شەو پەنجەرەیان شکاند و ڕایان کرد ))(ئەمین،١٩٩٨، ٢٠١)خیانەتکردنەکە لە چەند لایەکەوە بووە پشتگیری کردنی محەمەد بەگی خالید بەگ بەخۆ سوارەکانی بۆ تورکەکان گەورەترین خیانەتکاری بوو لەو جەنگەدا (ئیسماعیل پاشای قایمقامی سلێمانی و ئەفسەرە داگیر کەرەکانی تورك لە ٢٩ ی ڕەجەبی ١٢٦٦ك /حوزەیرانی ١٨٥٠ ز دا بۆ پاکانەکردن و ئافەرین محەممەد بەگی کوڕی خالید بەگ و کوڕەکانی عەبدوڵا ،عەبدوڕەحمان و حسێن ،کەماوەی چل ڕۆژ بە (٣٠٠) سوارەوە لەسەنگەری تورك دا دژی عەزیز بەگ جەنگیبوون ،شەهادەتنامەیەکیان نووسیووە .هەر ئەمانەش فێڵیان لێ کردووە.

ئەمە دواین شەڕی بابان بوو لەگەڵ دەوڵەتی عوسمانی ،عەزیز بەگ لەگەڵ ژمارەیەکی کەم دەرباز بوو .ماوەیەك وێڵ و سەرگەردان لە ناوچەکانی سنوری ڕۆم و عەجەم دا سوڕایەوە ،حکومەتی عوسمانی داوای لە ئێران کرد ،حاکمی کرماشان ،عەزیز بەگ دەربکا ،عەزیز بەگ لە هیچ لایەکەوە هیوای نەما بوو ،سەرەنجام بەتەنیا ڕێگای ئەستەمۆڵی گرت و خۆی بدابەدەستەوە ،لەجێگایەکی دوور لە کوردستان دەسبەسەر دایان ناو موچەیەکی مانگانەیان بۆ بڕیەوە .)(ئەمین،١٩٩٨، ٢٠٢).

سالم ئەم شەڕەی بەهەڵبەستێکی درێژ هۆنیوەتەوە ،دیمەنی شەڕەکە وەکو شەڕێکی نەتەوەیی دژی دەسەڵاتی داگیرکەر و عەزیز بەگ وەکو قارەمانێکی نەتەوەیی شەڕی بەرەنگاریی بەرامبەر بە بێگانە باس دەکا.

گەرچی پێشا پێش بەهەیبەت بوون ئازا چوونە پێش

حەسرەتا باز هەم نەیانزانی نیزام وا بێ حەیان

پیشی دەمیان شیلکی تۆپ پشتی سەر ئەو ئاگرە

گەییەچەرخی هەفتەمین لەو عانەدا ئاە و فوغان

گوێ فەلەك کەڕ بوو لەبەر ناڵەی نەفیری ئەهلی شار

لامەکانی گرت سەدای ناڵەو فوغان و ئەلئەمان

موددەعی کویربێ نیزام ئیفلیج،مەکان زێرو زەبەر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(میـری سـورداش)و (ئەمیـنە)ی پیـاوی هەردوو ئەنگـوان

گەر عەشیرەت گریەکەن هەریەك هەتا دەمرن کەمە

کوشـتنی میـی بـی موخـالیف بـوو بەشـەمعی دوژمنـان

ڕۆژی قەتـل ئەمـڕۆیە ئەلـحەق (وا حوسـێنی) پـێ دەوێ

بــۆئەدای تــازی سەراســەر نیلگــوونە ئاســمان

(میری سورداش و ئەمینی پیاوی دەکوژرێن ،سالم ڕوودەکاتە خەڵکی و دەڵێ هەتا مردن گەر بۆ کوشتنی میری سورداش بگرین وشیوەن بکەن هێشتا کەمە ئەم کارەساتە بووبەخۆشـی بـۆ دوژمنـان....ئەمڕۆ بەراسـتی ڕۆژی کوشـتن و خـوێن ڕشـتنە .لەخـۆدانێکی گەرەکە وەکو ئەو (واحوسینی )یەی بۆ شەهیدی کەربەلادەکرێ لەم تازیەدا ئاسمانلەشین و شەپۆڕدایە ) (خەزنەدار،٢٠٠٣، ١٥٢)

(ذکر محاربەی بندگان میری جلیل الشان عزیز بگی بابان باطائفە رۆمیان )

لــێم گەریــن بــا گۆشــەگیربم دەســتە ئەژنــۆ ،کەف زەنــان گێژەلــووکەی بــای نەدامەت تــاری کــرد ســەفحەی جیهــان بەزمــی ســەیدی ئــێمە ،ســەیادی فەلەك کــارێکی کــرد ڕەنــگە بــالای تیــر قەدانمــان بێــتە تەرکیبــی کەمــان زیعفــی تــالع جــازییە وەك کارەبــا ،بــۆ خــوێن و دەم سەیری چیهرەی بەختی من کەن ،بووبەڕەنگی زەعفەران

سـالم هەمـوو بوارەکـان دەبـڕێ تـا دەگـاتە ئەو مەیـدانەی، کە نیشـتمان پەروەرو مێژوونووسەکان ئەسپ و قەلەمی خۆیان تیایا دەخەنەکار.(کارەساتە بەناوبانگەکەی عزیز بەگی بابان لەگەڵ ڕۆمیەکان بە (٨٥) دێڕەشیعر ئەیخاتە شریتێکی سینەماوە ،لەکۆشکی سولەیمانی دا تروسـکە لەهەمـو رونـاکیەك ئەبڕێـت و ئەم ئەو شـریتەت بـۆ ئەخـاتە سـەر مەکینەی قسەکردن ،تۆ هەم چاوت لە بگرەو بەردەی نەبەردی پاڵەوانان ئەبێت، هەم گوێت لە شریخ و هۆڕی تۆپ و تفەنگ )(سەجادی ،١٩٥٢، ٢٤٣)

ســالم وەك تراژیــدی نووســێکی بەتوانــاو بەتەکنیکــی گێــڕانەوە ئەو کارەساتەمان بۆ دەگێڕێتەوەو بەم شێوەیە دەس پێدەکات:

لێم گەرین با گۆشەگیربم دەستە ئەژنۆ ،کەف زەنان

گێژەلووکەی بای نەدامەت تاری کرد سەفحەی جیهان

بەزمی سەیدی ئێمە ،سەیادی فەلەك کارێکی کرد

ڕەنگە بالای تیر قەدانمان بێتە تەرکیبی کەمان

زیعفی تالع جازیبە وەك کارەبا ،بۆ خوێن و دەم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

سەیری چیهرەی بەختی من کەن ،بووبە ڕەنگی زەعفەران

( ئەم کارەساتە لەساڵی (١٨٥٠)دا بووە. چونکە لە ئاخروئۆخری ١٢٦٦ ی هیجری سوڵتان عبدالعزیز خانی عوسمانی داوای لە ناصرالدین شا – شای ئیران کرد، کە پێکەوە دەست بکەن بەیەکا بۆ لەناوبردنی ئەمارەتی بابان .لەلایەن حکومەتی ئیرانەوە غولام شا خانی ئەردەلان نێررا بۆ سولەیمانی.لەم هەرایەدا عەزیز بەگ دەربەدەر بوو. چوو بۆ زەهاو لەوێوە بۆناو عەرەبەکان)(سەجادی ،١٩٥٢، ٢٤٣).

دەردی دڵ و لانە تێکچوونی خوی و مەردوم باس دەکا:

دل لە محنەت کەیلە تابی  سەیری ناوشارم نیە

عەینی چاوم خوێنی تێزاوە لەداغی مەردمان

دواتر باسی گولولەلێژی بەرەی بابان وکوژاندنەوەی شەمعی نگینیان و چەپگەردی روزگاری چەپگەرد بەرامبەر بەوان و کوردان لەدەست کارەساتی تورکان دەکات:

ساعیقەو بەرقی نەدامەت زوڵمەتی دا شەرق و غەرب

بەردە بارانە بەمەخسووسی لەسەر موڵکی بەبان

چاوی عیبرەت هەڵبرە ئەی دڵ لە وەزعی دەهری دون

سەیرکە تورکی دەلەك چی کرد بە زومرەی  کورد زمان

عەرسەیی مەیدانی چەرخە ئێستە جەولانگاهی بووم

بوو بەلانەی زاغی بەدخوو ،ئاشیانەی باڵەبان

ئەوانەی ناسازو ناهەموارن هاتونەتە پێشەوە،ئەوانەی خاوەنی شوێن و پایەبوون سەرەکانیان لەو ناوە هەڵئەخناوە .ئەمانەش هەمووکارەساتی ڕۆمی بوو چونکە :

حاکمی ڕۆمی لەسەر تەختی سلێمانی درێغ

کەوتە دەستی دێوی دوون میهری سلێمان ئەلئەمان

گوللە تۆپ وەك تۆپی قامیش بو لەئاقار غیرەتێ

تەبعی جۆیای بەزمی شیلك بو لەجێ سینە کەمان

تورك وەکو تیلکی زەعیف و کورد (اسد) خو هاتنە پێش جەنگجو بوون یەك بەیەك هەرسو وەکو بەبری بەیان  (سەجادی،١٩٥٢ ، ٢٤٥)

ئینجا عزیز بەگی بابان ئەلاوێنێتەوە و باسی هەتیوی شارەزوور ئەکاو دوایی شیعرەکانی بەوە دێنێ:

چنگی شابازی بازی بازانی باز نەبی

فش هەڵات (کەهیا ) لەسەر بیزەی تەمەع وەك ماکیان ! (سەجادی ،١٩٥٢، ٢٤٦)

ئەم تراژیدیایە کەسایەتی زۆری بەخۆیەوە دیوە لە کەسایەتی سەرەکی و لاوەکی. شاکەسی سەرەکی ئەم داستانە عەزیز پاشای بابانە،کە لە هەموو ڕوویەکەوە ڕۆلێکی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

بەرچاو و قارەمانانەی لەم شەڕەدا بینیوە.(عەزیز بەگ کوڕی عەبدولڕەحمان پاشای بابان و مامی ئەحمەد پاشای دوامیری بابان بوو ،ئازایەتی ئەم سوارچاکە لەکۆمەڵی سلێمانیدا بووە بە چیرۆك و خەڵکی وەك نموونەی قارەمانیەتی و نیشتمان پەروەری دەیگێڕنەوە زعەزیز بەگ هاوڕێی نزیکی سالم بووە ،جگە لەوە برادەریەتی لەگەڵ بنەماڵەی ساحێبقڕان بووە ماوەییێك هاوکارو برادەری مەحمود بەگی ساحێبقڕانی خزمی سالم بووە، ئەوەی پێویستە لێرەدا بوترێ بنەماڵەی ساحێبقڕان بە چەکمە ڕەق ناوبانگیان دەرکردووە، ئەمانە لە وێنەی سوارچاك و جەنگاوەرەکانی چینی سەرەوەی کۆمەڵی ئەوروپای سەدەکانی ناوەڕاستیان دەکرد)(خەزنەدار،٢٠٠٣، ١٥٥).

لەسەهمی حەملەیی ئەو ، بۆ عەدو هەرجا حەزەر لازم

لەدەس ئەو بو کراسی ڕۆمیان شێوەی قەبا پەیدا

دەبێ گەر بێتە مەیدان وەکو بەبری بەیان ساتێ

لیباسی ڕوو بەهی دەردەم لەئەندامی گیا پەیدا

ئەگەر ئاوی بەقای نۆشی بێ دوژمن فائیدە نادا

لەمەوجی جەوهەری تیغی حرووفی لابەقا پەیدا

(کاتێ، کە گلۆڵەی بابانەکان دەکەوێتە لێژی و وەزعی سلێمانی تێکدەچێ و عوسمانییەکان دەست دەکەن بەستەم و زۆرداری، ئەمە کار دەکاتە سەر سالم و بە شیعر هەستی خۆی بەرامبەر بەو کارەساتە ناخۆشانە دەرئەبڕێ. ئەم ستەم و زۆردارییە وای لێدەکات، کە سەری خۆی هەڵبگرێ و ئاوارە ببێ و بڕوا بۆ تاران .)(عارف،١٩٨١، ٤٣).

لە دەریای مەعرەکە تیغی نەهەنگی گەر نمایان بێ

لەناو ئۆردوی تورکانا دەبێ شین و صەدا پەیدا

عەزیزم وا لەناو چاهە خوداوەند نەجاتی دەی

لەچیهرەی ئەو بکا یەعقوبی دڵ ڕەمزی صەفا پەیدا

خودایا موڵکی بابان بێ ڕەواج و قەڵبە ،سا لطفێ !

بە ئیکسیری وجودی ئەو وەك میسك بەها پەیدا (ئەمین،١٩٩،١٩٩٨)

(لەکۆتایی قەسیدەکەدا شاعیر باس لە سەرکردەی جەنگەکە عەزیز بەگی بابان دەکا.بە شێری ناو سەرنەکەوت. ئینجا شاعیر دەکەوێتە بزواندنی سۆز بەداهێنانی وێنەی شیعری. میسر و شارەزوور بەرامبەر بەیەکتریان دادەنێ بەراوردیان دەکا، بەڵام دەڵێ شارەزوور بێ عەزیز بەگی بابانە، ئەمە نابێ ڕووبدا، چونکە میسر بێ عەزیزی میسر (پووتیفار)ی وەزیری فیرعەون نەبووە. بەم جۆرە کوردی بابان دەربەدەرو ئاوارە بوون وەك کەنعانیانی فەلەستینی کۆنیان لێ هات.)(خەزنەدار ،٢٠٠٣، ١٥٥). لێرەدا سالم مەبەستی لە عەزیزی میسر پۆتیفار نییە، بەڵکو مەبەستی لە حەزرەتی (یوسف)ە،چونکە میسری



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەسەردەمی پۆتیڤاردا ژیانیان ناخۆش بوو، نەبوون ونەداربوون، لەژێر چەپۆکی پیاوانی ئاینییدا بوون،لەسەردەمی یوسف دا ژیانیان گۆڕاو بەرەو خۆشی چوون. جگە لەوە کەنعانیەکانی فەڵەستینی کۆن هیچ پەیوەندییان بە پۆتیڤارەوە نەبوو، بەڵکو دوای ون بوونی یوسف ژیانیان ناخۆش بوو و ئاوارەو دەربەدەربوون.سالمیش دەڵێت:

دیدە نابینایە وەك یەعقووب لەهیجرانی عەزیز
تۆخودا ساحیب لا مەکان و تۆی خودایە لامەکان

دیارە لەو تراژیدیایە گەلێ کەسایەتی تر هەن و ڕۆلی بەۆچاویان هەبووە و لەشەڕەکەدا زیانی زۆریان بە دوژمن گەیاندووە، لەوانە میری سورداش و ئەمینی پیاوی میر، کە هەردووکیان لە شەڕەکەدا دەکوژرێن:

موددەعی کویربێ نیزام ئیفلیج، مەکان زێڕو زەبەر
(میری سورداش)و (ئەمینە)ی پیاوی هەردوو ئەنگوان
گەر عەشیرەت گریەکەن هەریەك هەتا دەمرن کەمە
کوشتنی میر بای موخالیف بوو بەشەمعی دوژمنان
ڕۆژی قەتل ئەمرۆیە ئەلحەق (وا حوسێنی) پێ دەوێ
بۆئەدای تازی سەراسەر نیلگوونە ئاسمان

کات و شوێن

شوێن شاری سلێمانییە. کە دوای لابردنی عەبدوڵا پاشا عەبدی پاشا والی بەغدا ئیسماعیل پاشای تورك بەهێزێکەوە دەنێرێت بۆ سەرپەرشتی سلێمانی، کە دەبێتەمایەی ناڕەزایی خەڵك:

شارەزوور بەحرو سلێمانی لەسەر ئەو گەمیە ڕەنگ
بۆ شکستی وەك نەهەنگ بوو فیتنەیی ئاخر زەمان
ڕاستە گەردوون چابوو کە بۆ ڕەنگی بەد ڕیتن وەلێ
نارژێنێ ڕەنگی بەم ڕەنگە بە موددەی سەد قڕان

لەڕووی شوێنەوە بازنەکە بچووکتر دەکاتەوەو بەشێکی شەڕەکە دەباتە لای گردی مامەیارە، کە بەگردی گولانی ناو دەبات:

دەرپەڕین باز مەیلی ئیقدامیان نەبوو لەو بیدعەتە
حەسرەتا یەك دڵ نەگەینە شیوەکەی گردی گولان

لێرەدا مەبەستی لە گردی گولان گردی مامە یارەیە،ئینجا گەرمی شەڕەکە دەباتەوە بۆلای دارەکەی پیرمەسوور،کە ئەو ناوچە ئەوەندە خەڵکی لێکوژراوە بۆتە سەحرای مەحشەر

بووبە جێی بەبرو غەزنەفەر کووچە کووچە ناوسوقاق


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

سەر محەللە ڕەنگی بێشەی گرت لە نێزەی جانستان

ڕەنگی سەحرای مەحشەری بوو شیوەکەی لای پیرمەسوور

گرمەگرمی تۆپی ڕۆمی هەوهەوەی سوارەی بەبان

(وەسفی دیمەنێکی شەڕەکە دەکا لەدەوروبەری گەڕەکی پیرمەسووری سلێمانی.گرمە گرمی تۆپی دوژمن و هەوهەوەی هاندانی سوارەی بابان بۆ هێرشبردن کردبووی بە ڕۆژی مەحشەر، لەو جەنگەدا ئەوەندە دەست و پەنجەی پەڕیو زۆر بوو وەکو گەسکێك بوو بە با کۆڵانەکانی گسك دەدا. پاشان باسی پێکهاتنی کورد وتورك ئەکا ،یەکەیەکە ناوی هەندێ کەس دێنێ و داخە دڵی ئەوە ئەخوا، کە چۆن لەناو شاری سلێمانی دا ئەو دەریای خوێنە هەستاوە ؟ هەراو هۆریای کوردان و تورکان لەگەڕەکی چوارباغ دەست پێ ئەکا:

غەڵبە غەڵبی هەر بکوژ هەڵسا لە دەشتی چوارباغ

قادری دەللاکە هەر شەو تاسەحەرگە پاسەبان

کات وەك پیرەمێرد باسی دەکات سالی (١٨٥٠ ز) ەو (سەجادی)یش هەمان ساڵ بەساڵی کارەساتەکە دادەنێت. (پیرە مێرد لە کورتە باسێکی ئەم شەڕەدا، وەکو شەڕەکەی خستۆتە مانگی ناوجەژنانی ١٢٦٦ك/١٨٥٠ز ەوە ماوەی گەمارۆدانی لەشکری تورك وباسی فێڵەکەشی کردووە.دەڵێ: (عەزیز بەگی مامی ئەحمەد پاشا عوسیانی کردو پەنجاو یەك ڕۆژ دەوری سلێمانی بەست.)(ئەمین،١٩٩٨، ٢٠١). ئەم کارەساتە لە (١٨٥٠)دا بووە، چونکە لە ئاخروئۆخری ١٢٦٦ ی هیجریی سوڵتان عبدالعزیز خانی عوسمانی داوای لە ناصرالدین شا — شای ئیران کرد،کە پێکەوە دەست بکەن بەیەکا بۆ لەناوبردنی ئەمارەتی بابان.لەلایەن حکومەتی ئیرانەوە غولام شا خانی ئەردەلان نیررا بۆ سولەیمانی .لەم هەرایەدا عەزیز بەگ دەربەدەر بوو چوو بۆ زەهاو لەوێوە بۆ ناو عەرەبەکان )(سەجادی ،١٩٥٢، ٢٤٣).

نەوبەهاری من خەزانە،وەقتەکەی سوبحم تەمووز

پرتەوی ماهە غەم و،چاکی دەروونم وەك کەتان

شاعیر کاتەکە وردتر دەکاتەوەو بەمانگی تەمووزی داناوە، کە گەرمەی هاوینە، بەڵام لەو بۆتە خەزان.

ئەو قەسیدەیەی سالم، کە ئێمە کاری لەسەر دەکەین شەڕی بابان و عوسمانیەکان (ذکر محاربە میر جلیل الشان عزیز بیگ بابان با طائفە رومی سنە ١٨٤٩/١٢٦٦ و تسخیر ولایت بابان بدست رومی اسماعیل پاشا)( حلمی،١٩٨٨، ٥٧). ئەو قەسیدەیە، کە (مێژوویێکی راستی ڕووخانی حکومەتی (بەبە) و لە دەسچوونی سەربەخۆیی کوردستانی عێراقە .حەکایەتێ کە وەکو شریتی سینەما بەسەرهاتی کوردەکانی ئەو دەورەمان پیشان ئەدا، وە کارەساتێ کە لە شاری سلێمانیی ڕوویداوە بۆمان ئەگێڕێتەوە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

)(حلمی،١٩٨٨، ٥٧). قەسیدەکە (قەسیدەیەکی جەنگی وسوارچاکییە، باس لە ڕووداوەکانی شۆڕش و جەنگی قارەمانانەی عەزیز بەگی بابان لە دژی تورك لە سلێمانی،دوا بەدوای کۆتایی هێنان بەحوکمڕانی بابانەکان دەکات. قەسیدەکە نوونییە و لە (١٠١) دێڕی شیعری پێکهاتووە.بەو هۆیەی ناسناوی شاعیر لە کۆتایدا دیار نییە گومانی بۆ ئەوە دەچێت ناتەواو بێت.ئەم قەسیدەیە یەکێکە لە قەسیدە هەرە گرنگ و تۆکمە و پتەو داڕێژراوەکانی سالم.تەنانەت لە شیعری کوردیدا لەباری ڕوخسارو ناوەرۆکەوە،وەکو نموونەیەك بۆ قەسیدەی کوردیی کلاسیك کەم وێنەیە.کێشە عەروزییەکەی بریتییە لە ڕەمەلی هەشت هەنگاوی مەقسوور (فاعیلاتون فاعیلاتون فاعیلاتون فاعیلان ).دیڕەکانی سەرەتاو دەسپێکی بەم جۆرەیە)(دەشتی،٢٠٢١، ٣٧٧).

لێ گەڕێن با گۆشەگیربم، دەستەو ئەژنۆ کەفزەنان
گێژەلووکەی بای نەدامەت تاری کرد سەفحەی جیهان

**ئەنجام:**

١- سالم ئەو قەسیدەیەی، کە تەرخان کردووە بۆ باسی ئەو شەڕەی، کە بەسەرکردایەتی عەزیز پاشا لەبەرامبەر تورکی داگیرکەر.سالم کە باس لەو شەڕەدەکات وەك دلسۆزێك و نیشتمانپەروەرێك باس لە شەڕەکە دەکات. هیچ مەرامێکی تری نەبووە ڕاستە لە هەندێ شوێندا زێدەڕۆیی دەبینرێت،بەڵام بەموبالەغە دانانرێت چونکە شەڕێکی نابەرامبەر بووە.

٢- لەم شەڕەدا نەبەردی وا نوێنراوە،کە تورکەکان لە ئاستیا چۆکیان لەرزیوەو ئەوەندەی نەماوە بەتەواوەتی بشکێن،بەڵام دەستی خیانەت فریایان کەوتووەو لەو میحنەتەدا ڕزگاری کردون، واتە سەرکەوتنی تورك و شکستی عەزیز پاشا بەهۆی کەمتەرخەمی هەندێ فەرماندەو خیانەتی هەندێ لەبەگ و میرەکان بووە.

٣- سالم زۆر بە وردی وەسفی ڕوداوەکە دەکات وەك ئەوە وایە خۆی بەشداری لە شەڕەکەدا کردبێت و کامیرایەکی زۆر پێشکەوتووی پێ بووبێ و وێنەی گشت دیمەنەکانی گرتبێت . بۆیە ئەم قەسیدەیە خۆی لە خۆیدا بابەتێکی زۆر دەوڵەمەندە بۆ دروستکردنی فلیمێکی سینەمایی.

٤- سالم بە وردی باسی کاتی شەڕەکەو ئەو شوێنانەمان بۆ دەکات، کە شەڕیان تێدا ڕوویداوە وەك پیرمەسوور،گردی گوڵان،چوارباغ و گەلێ شوێنی تر.

٥- شاعیر باس لەو بارودۆخە خراپە دەکات،کە ئەو جەنگە کاولکارییە بەسەر سلێمانیدا هێناوە و چۆن کاروباری ناوچەکە دراوەتە دەست خەڵکانێکی کاسەلێس و مشەخۆر و چۆن خەڵکانێك دەربەدەربوون و گوزەرانی ئەوانەی ماونەتەوەش زۆر خراپە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

سەرچاوەکان:

به زمانی کوردی:


- ئەرستۆ(٢٠١١)،هونەری شیعر(شیعرناسی)،و:عەزیز گەردی،چ٢، سلێمانی.
- ئەمین، نەوشیروان مستەفا(١٩٩٨)،میرایەتی بابان لەنێوان بەرداشی رۆم و عەجەمدا،چ٢،چاپەمەنی خاك،سلێمانی.
- ئۆسکار مان(٢٠١٣)،توحفەی موزەفەرییە، ساغکردنەوە و هێنانەسەر رێنووسی کوردیی،عەلی نانەوازادە،چاپخانەی حاجی هاشم،لە بلآوکراوەکانی ئەکادیمیای کوردی ، هەولێر
- بهار، محمد تقی (ملك الشعرا)(١٣٤٩)،سبك شناسی یا تاریخ تطور نثر فارسی،چاپ سوم، چاپخانه سپهر،تهران.
- حەسەن،محەمەد ئەحمەد(٢٠٠٦)، بینای رووداو لە چیرۆکدا،گ رامان،ژ ١١٥،هەولێر.
- حەمەباقی، محەمەد(٢٠٠٢)، میرنشینی ئەردەلآن، بابان، سۆران لە بەڵگەنامەی قاجاریدا ١٧٩٩-١٨٤٧ز، دەزگای ئاراس،هەولێر.
- حەمەبۆر،محەمەد مستەفا(٢٠١٠)،دیوانی کوردی، ب١، چاپخانەی ئاراس،هەولێر.
- حلمی،رەفیق(١٩٨٨)،شعرو ئەدەبیاتی کوردی ،چاپخانەی ز سەلاحەدین،هەولیر،
- خەزنەدار،د.مارف(١٩٨٤)، لە بابەت مێژووی ئەدەبی کوردییەوە، بەغدا.
- خەزنەدار،د.مارف(٢٠٠٣ )، مێژووی ئەدەبی کوردی ،ب٣، دەزگای ئاراس ، هەولێر.
- خەیات،کاروان عوسمان(٢٠١٢)، بەشێك لە دیوانی سالم ،چاپخانەی چوارچرا .
- خۆشناو، هێمن عومەر(٢٠١٧)، نالی لە بەڵگەنامەکانی عوسمانی دا، لە بلاوکراوەکانی دەستنووسخانەی زانکۆی سۆران بۆ پاراستن و ساغکردنەوە.
- دەشتی،د.عوسمان(٢٠٢١)،سالمی ساحێب قران،چاپخانەی رۆژ هەلات،هەولێر.
- رەحمان،عەبدولا(٢٠١٤)، بنیاتی گێرانەوە، چاپخانەی موکریانی،هەولێر.
- ریچ، کلاودیوس جێمس(٢٠٠٢)،گەشتنامەی ریچ بۆ کوردستان ١٨٢٠، و: محەمەد حەحەباقی، چ٣، دەزگای ئاراس،هەولێر.
- زەکی، محمدامین(١٩٣٩)،تاریخ سلیمانی و ولآتی، بغداد.
- سەجادی،عەلائەدین( ١٩٥٢)،مێژووی ئەدەبی کوردی، چاپخانەی مەعاریف،بەغدا.
- شەرەفکەندی،د.سادق(٢٠١٢)،کورتە مێژووی بزووتنەوە نەتەوایەتییەکانی کورد،و: تەها عەتیقی،چ٢،هەولێر.
- عارف،د.محمد نوری( ١٩٨١)،تێکستی ئەدەبی کوردی ،ب٢،چاپخانەی زانکۆی سلێمانی، سلێمانی.

- عومەرکاکی،حەمەنوری(٢٠٠٨)،شێواز لە شیعری کلاسیکیی کوردیدا نیوەی یەکەمی سەدەی نۆزدەیەم(لە ناوچەی سلێمانی)،مەلبەندی کوردۆلۆجی،چاپخانەی تیشك، سلێمانی.
- قەرەداغی،محەمەد عەلی(٢٠١٠)،بەرکوتێك لەخەرمانی شیعری سالم ،دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس ،هەولێر.
- قەفتان، توفیق(١٩٦٩) ، مێژووی حوکمدارانی بابان لە قەڵاچۆلانەوە تا دروست کردنی شاری سلێمانی (١٠٨٠-١١٩٩ك/١٦٩٩-١٧٨٤ز)،،بەغدا.
- مارف، عومەر ئیسماعیل(٢٠١٥)،مەحمود پاشای بابان(١٨١٣- ١٨٤١ ز) ،چاپخانەی یاد،سلێمانی.
- مەلا، ئەحمەد(٢٠٢٠)،لە ریێنیسانی فەڕەنسییەوە بۆ شکستی ریێنیسانسی کوردی لە مەعریفەی تاکڕەهەندەوە بۆ کرانەوە،چاپخانەی ئەندێشە،سلێمانی.
- محەمەد،د.ئیبراهیم قادر(١٩٩٨)، لێکۆڵینەوەی کورتە چیرۆکی کوردی لە کوردستانی باشووردا ١٩٧٠-١٩٨٠، کۆلیژی ئاداب- زانکۆی سەلاحەدین،(نامەی دکتۆرا).
- مودەریس،مەلا عەبدولکەریمی(١٩٨٥)،پیاچوونەوەی محمدی مەلاکەریم، چ٢، انتشارات صلاح الدینی ئەیوبی،ارومیە.
- میران،سەردار حەمید و شارەزا،کەریم(٢٠١١)،دیوانی حاجی قادری کۆیی،انتشارات کوردستان،سنندج.

**بە زمانی عەرەبی:**

- ادموندز،سي.جي(٢٠١٢)،کورد،ترك،عرب، سياسة ورحلات و بحوث عن الشمال الشرقي من العراق ١٩١٩-١٩٢٥، ترجمة جرجيس فتح اللة،دار اراس للطباعة والنشر و منشورات الجمل.

## Baban Emirate and Ottoman Occupation in a Salim's poem

**Abstract:**

In our national history and during the time of the Kurdish emirates, many great stories have happened in order to survive and determine the identity, which bravely faced the enemy and invaders. Due to the absence of publishing and books, literature especially poetries of that era have recorded those bravery stories . The Baban Emirate was a period of internal and regional chaos. During a century and a half, the occupation policies of the Romans and foreigners on the one hand and the lack of national consciousness and internal family conflicts of the emir and kings on the other hand caused the fall of that emirate. Nali, Saleem and Kurdi, like the triangle of Baban poets, used the Central Kurdish dialect. Salim was one of the poets of that time who lived with

the events and was closely aware of them. He had his own stances about the events which caused him to live in exile. The current study highlights the poetry which was on the last conflict between the Babans and Ottoman Empire under the leadership of Aziz Bagi Baban.

The poet sheds light on the courage and social conditions of Sulaimani. The study consists of two parts. The first part is devoted to the appearance and fall of the emirate, the literary situation of that time and the style of Salim's poetry. In the second part, the relationship between poetry, history and artistic interpretation of the poem is discussed.

## إمارة بابان والاحتلال العثماني في قصيدة سالم

**الملخص:**

في تاريخنا ا لوطني وفي زمن الإ مارات الكرد ية ، حدثت العد يد من القـصص العظيـمة من أ جل البقاء وتحد يد الهو ية ا لتي واجهت بشجاعة العدو والغزاة. ونظرا لغياب النشر والكتب فقد سجل الأدب وخاصة شعراء تلك الحقبة تلك القصص الشجاعة. كا نت إمارة با بان فترة فوضى داخلية وإقليمـية. خلال قرن ونصف ، تسببت سياسات الاحتلال من قبل الرومان والأجا نب من ناحية وانعدام ا لوعي ا لوطني والصراعات الأسرية الداخلية للأمير والملوك من ناحية أخرى في سقوط تلك الإمارة. نالي وسليم وكردي ، مثل مثلث شعراء با بان ، ا ستخدموا اللهجة الكرد ية المركزية. كان سالم من شعراء ذ لك الوقت ا لذين عاشوا الأحداث وكانوا على دراية بها عن كثب. كانت له مواقفه الخاصة من الأحداث التي جعلته يعيش في المنـ فى. تـ سلط الدرا سة الحال ية الـ ضوء عـ لى الـ شعر ا لذي كان عن الـ صراع الأ خير بين البا بانيين والإمبرا طورية العثمانية بقيادة عزيز باغي بابان.

يلقي الشاعر الضوء على شجاعة السليمانية وظروفها الاجتماعية. تتكون الدرا سة من جزئين. خـ صص ا لجزء الأول لظـ هور الإ مارة و سقوطها ، والو ضع الأد بي في ذ لك الو قت ، وأ سلوب شعر سالم. في الجزء الثاني ، تناقش العلاقة بين الشعر والتاريخ والتفسير الفني للقصيدة.

**الكلمات الدالة:** *بابان, الامارات الكردية, الشعراء, الاحتلال العثماني, سالم.*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# ڕۆڵی میرگەهێن کوردی لە سەرهەڵدانی شیعری کلاسیکیی کوردیدا (بۆتان ـ بابان) بە نموونە

**پ. د. عوسمان دەشتی**
بەشی زمانی کوردی- فاکەڵتیی پەروەردە- زانکۆی کۆیە/ هەرێمی کوردستانی عیراق
**پ. ی. د. دەریا جەمال حەوێزی**
بەشی زمانی کوردی- فاکەڵتیی پەروەردە- زانکۆی کۆیە /هەرێمی کوردستانی عیراق

**پۆختە:**

دامەزراندنی میرنشینە کوردییەکان بە سەرکردایەتی بنەماڵە کوردە دەسەڵاتدارەکان لە چوارچێوەی ئیمپراتۆریەتی عوسمانی و ئێراندا بووە هۆی بوونی ئەوەی لە دەوڵەتە کوردییەکان تا ڕادەیەک لە ئازادی و سەربەخۆیی بەهرەمەند بن، ئەمەش جۆرێک لە سەقامگیری سیاسیی خوڵقاند کە لە بەرامبەردا ڕێگەی بە دامەزراندنی شارەکان و خۆشگوزەرانی ژیانی ئابووری و کۆمەڵایەتی دا، و بەم شێوەیەش سەرهەڵدان و گەشەسەندنی لە بوارەکانی پەروەردە و ئەدەب و کولتووردا بەدوای خۆیدا هێنا. بۆ نمونە؛ دەبینین حاکم و میرەکانی کورد لە هەردوو ناوچەی (بۆتان و بابان)، دەستیان بە دروستکردن و دامەزراندنی مزگەوت و قوتابخانەی ئایینی و ناوەندی پەروەردەیی جۆراوجۆری کرد، سەرپەرشتی کارەکانیان کرد، هەروەها خەرجکرنی دارایی و ڕەخساندنی دەرفەتی خوێندن بۆ هەر کەسێک کە پێویستی پێیانە. کارەکتەری ناسراوی وەك (مەلای جزیری /١٦٤٠-١٥٦٧)، کە زمانی کوردی-بۆتانی وەک زمانێکی ئەدەبی بۆ شیعر و داهێنان وەرگرتووە، ئیلهامی لە هەموو ئەو هونەر و شێوازە ڕیتۆریکیانەی کە لە ئەدەبیاتی ڕۆژهەلاتی (عەرەبی و فارسی)دا هەبوون وەرگرتووە. بە مەبەستی دروستکردن و دەستپێکردنی ئەزموونێکی نوێ لە مێژووی ئەدەبی کوردیدا سوودی لێ وەرگرتن و دامەزراند؛ کە بریتییە لە دامەزراندنی پایەکانی قوتابخانەی کلاسیک لە شیعر و ئەدەبی کوردیدا لە سەدەی حەڤدەهەمی زایینیدا. لە لایەکی تریشەوە شاعیر (نالی شارەزووری /١٨٠٠-١٨٧٧) هەوڵیدا ئەزموونەکە بە شێوەیەکی داهێنەرانە لە چوارچێوەی میرنشینی بابانیدا دروست بکاتەوە و ناوەندی داهاتووی ببوو بە شاری سلێمانی، بۆ تەواوکردنی نیوەکەی تری نەخشەی قوتابخانەی کلاسیکیەت بو بە شێوەزاری کوردی-بابانی، ئەویش بە سود وەرگرتن لە شێواز و هونەرە ڕیتۆریکییە ئەدەبییە عەرەبی و ئیسلامییەکان وەک پێشتر لەلایەن ئەلجەزیریەوە ناسێندرا بۆ بازنەی شیعر و ئەدەبی کوردی لە ماوەی سەدەی حەڤدە و نۆزدەهەمدا. ئەمەش لەلایەن شاعیرانی ئیلهامبەخش و پێشەنگ جزیری و نالی ئەنجامدرا.

**پەیڤێن سەرەکی:** *شیعری کلاسیک، بابان، بۆتان، نالی، جزیری*

**پێشەکی:**

میرایەتییە کوردییەکان لە مێژووی سەدەکانی نوێدا (سەدەی ١٦ تاوەکو سەدەی ١٩)، وەکو چۆن لە مێژووی سەدەکانی کۆن و ناوەڕستیشدا ڕۆڵێکی مەزن و دیاریان لە دیرۆک و ژیان و شارستانییەتی ناوچەکەدا گێڕاوە. شارستانییەت بە واتای پەرەسەندنی شار و بازێڕ و ئاوەدانی و بووژانەوەی ژیانی هزری و ڕووناکبیری لە ئەنجامی حوکمڕانییەکی بەردەوام و سەقامگیری سیاسیدا. یەکێک لە لە ڕووە گەشەکانی پێشکەوتن و ژیانی شارستانی هەر گەڵ و نەتەوەیەک لە هەر ڕۆژگار و سەردەمێکدا بووژانەوە و پێشکەوتنی چاند و ئەدەب و زانست و ژیانی ڕووناکبیرییە.

لەم ڕووەوە هەردوو میرایەتی دێرینی کوردی، (میرایەتی بۆتان لە سەدەکانی ١٥ و ١٦)دا، هەروەها (میرایەتی بابان لە سەدەکانی ١٨ و ١٩) دا، ڕۆڵێکی مەزن و مێژووییان گێڕاوە لە پێشکەوتن و پەرەسەندنی زانست و خوێندەواری و چاند و ئەدەبی کوردیدا بە تایبەتیش لە سەرهەڵدان و پایەداربوونی قۆناغ و قوتابخانەی شیعری کلاسیکیی کوردیدا. بۆ نموونە دەورەی یەکەم و دەستپێکی شیعری کلاسیکیی کوردی (( قوتابخانەی کوردی (کرمانجی) باکوور . بۆتانی )) لە ناوەڕاستی سەدەی شازدەهەمەوە لە ژێر چەتری میرایەتی (جزیرا بۆتان) و لە ئامێزی ( خانەدانی عەزیزان ) دا، لەسەر دەستی مامۆستای یەکەمی شیعری کلاسیکیی کوردی، ( شێخ ئەحمەدێ جزیری/١٥٦٨ . ١٦٤٠ ز ) سەری هەڵداوە و دەمەزراوە. هەر ئەمەش وای کردووە کەوا ئەدەبیاتی کوردی بۆ یەکەمجار لە مێژوودا ببێتە خاوەنی ئەدەبێکی بەرز و هونەری توکمە و پێشکەوتوو کەوا شان لە شانی ئەدەبی میللەتانی ڕۆژهەڵات ( عەرەب، تورک، فارس ) بدات. ئەنجا هەر ئەم ڕێنیسانسە ئەدەبی و ڕۆشنبیرییە بوو کە لەدوای شێخی جزیریش لەسەردەستی نەوەی پێشینی ئەم قوتابخانەیە لە وێنەی مەلای باتەیی و ئەحمەدێ خانی و پەرتۆیی هەکاری و بەکربەگێ ئەرزی و ... بۆماوەی دوو سەدە بەردەوامی هەبێ.

لە سەدەکانی ١٨ و ١٩ داو لە ژێر قەلەمڕەوی میرایەتی بابانـدا و لە ئەنجامی ئاوەدانی و پێشکەوتنی خوێندەواری و زانست و زانیاری بەهاندان و پشتیوانی و لە ژێر سایە و سێبەری ( بنەماڵەی میرەکانی بابان )دا و لە ناوەند و پێگەی میرایەتییەکە دا ( قەڵاچوالان . سلێمانی)، دووبارە بووژانەوەیەکی ئەدەبی و ڕووناکبیری بە پیت و دەوڵەمەند و درەوشاوە هاتە ئاراوە، کە وەکو دەورەی دووەم و تەواوکەری قوتابخانەکەی بۆتان بوو، ئەمیش لەسەردەستی بەرەی یەکەمی شاعیرانی کلاسیکی کوردی (( قوتابخانەی کوردیی ( کرمانجی ) ناوەڕاست . بابان ))، بە تایبەتیش شاعیری پێشەنگ و بلیمەت و قافڵە سالاری قوتابخانەکە (( مەلا خدری شارەزووری . نالی/١٨٠٠ . ١٨٧٧ ز )) پایەدار بووە و لە دوای ئەویش پۆلێک لە شاعیرانی نەوەی یەکەم و هاوسەردەمی نالی، لە وێنەی؛ سالمی ساحێبقڕان،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

مستەفا بەگی کوردی، مەلاوەسمان، نەفعی ... تانوپۆی قوتابخانەکەیان تەواوکردووە و لە ڕووی هونەری و داهێنانەوە بە ترۆپکیان گەیاندووە، کە لە دوای ئەوانیش بۆ ماوەی زیاتر لە یەک سەدە بەردەوامی هەبووە. بە مجۆرە دەبینین هەردوو میرایەتییە کوردییەکە لە بۆتان و باباندا ڕۆڵێکی مەزن و کاریگەریان هەبووە لە چەکەرەکردن و سەرهەڵدان و سەرهەڵدان و پەرەسەندنی هەردوو لقی قوتابخانەی شیعری کلاسیکیی کوردی ( بۆتانی و بابانی )دا.

لێرەوە ئەم توێژنەوەیە هەوڵێکە بۆ شیکردنەوە و نیشاندانی ڕۆڵی هەردوو میرایەتی کوردیی ناودار ( بۆتان و بابان )، لە سەرهەڵدان و بوژانەوەی قوتابخانەی ئەدەبی کلاسیکیی کوردی، بە هەردوو لق و هەردو دەورەکەیەوە، کەوا تەواوکەری یەکترین بەم شێوەیە:

قوتابخانەی شیعری کلاسیکیی کوردی

| دەورەی یەکەم | دورەی دووەم |
|---|---|
| شیعری کلاسیکیی | شیعری کلاسیکیی |
| کوردیی باکوور(بۆتانی) | کوردیی ناوەڕاست (بابانی) |

باسەکە بە شێوەیەکی گشتی لە دوو بەش و چەند بڕگە و بابەتێک پێکدێت بەم شێویە:

**. بەشی یەکەم:**

١. میرایەتی بۆتان، کورتەیەکی مێژوویی.

٢. ژیانی زانستی و ڕۆشنبیری لە هەرێمی جزیرا بۆتاندا.

٣. مەلایێ جزیری وەکو پێشەنگی شاعیرانی قوتابخانەی شیعری کلاسیکیی کوردیی ( لقی بۆتانی ).

**. بەشی دووەم:**

١. کورتەیەکی مێژوویی لە بارەی (میرایەتی بابان)ەوە.

٢. ژیانی زانستی و ڕووناکبیری لە قەڵەمڕەوی میرایەتی باباندا.

٣. نالی وەکو پێشەنگی شاعیرانی قوتابخانەی شیعری کلاسیکیی کوردی (لقی بابانی).

**وشە سەرەکییەکان:** قوتابخانەی شیعری کلاسیکی کوردی، بۆتانی . مەلایێ جزیری، بابان و بابانی . نالی.

**بەشی یەکەم**

**(١) میرایەتی بۆتان، کورتەیەکی مێژووی:**

هەرێمی جەزیرەی بۆتان لە ڕووی جوگرافییەوە ناوچەیەکی کەونارای گرینگ و ستراتیژییە، لە نێوان وڵاتی شام و تورکیا و عەرەبستان دایەو جێگەی دڵی لە خاکی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کوردستانی گەورەدا گرتۆتەوە. پایتەختەکەی شاری جزیرەیە کە لە سەردەمانی کۆندا بە (جزیرة الاكراد . بيت قردو) ناسراوە. ناوی بۆتان لە (بوختان . بوهتان)ەوە هاتووە، کەوا هۆزێکی ناودار و ناسراوی ناوچەکە بوون، بە درێژایی چوارپێنج سەدە دەسەڵات و میرایەتی ناوچەکەیان بەدەستەوە بوو. هەرێمی بۆتان بەتایبەتیش پایتەختەکەی جزیرە، کە شارێکی دێرۆکی و کۆنی کوردانە، لە ڕابردوودا ناوەندێکی ئابووری و بازرگانی و پردی پێکەوەگرێدان بووە لە نێوان ناوچەکانی ئیران و شام و عیراق و تورکیادا. (کۆمەکا ڤەکۆلەران، ٢٠٢٠، ١٣).

لە ڕاستیدا هەرێمی جزیرە و بۆتان وەکو مێژوونوسەکان باسیان کردووە هەم لە ڕووی جوگرافیا و هەم لە ڕووی مێژووییەوە بەلانکە و نیشتیمانی دایک و ڕەسەنی کوردان دەژمێردرێت (عزت، ٢٠١١، ٤٣).

خوولی دووەمی میرایەتی بۆتان لە دوای کۆتایی هاتنی دەسەڵاتی ئەتابەگییەکانەوە لە نیوەی یەکەمی سەدەی سێزدەهەمی زایینی لەسەر دەستی سلێمانی کوڕی خالیدەوە دەست پێدەکات. میر سلێمان کەسایەتییەکی بە دەسەڵات بووە لە هۆزی بۆتان و بە باپیرە گەورەی میرانی میرنشینەکە دادەنرێت. لەو سەردەمەدا و لە دوای ئەویش کوڕەکەی، میر عەبدولعەزیزی کوڕی سلێمان کوڕی خالید، یەکەمین کەسێک بووە کەوا فەرمانڕەوایی بۆتانی کردووە و لە ساڵی (١٢٨٦)دا میرنشینەکەی دامەزراندۆتەوە (تۆفیق، ٢٠٠١، ١٤٤). هەروەها ناسناو و شۆرەتی بنەماڵەی (عەزیزان . ئازیزان)، کەواتا ناوەڕاستی سەدەی نۆزدە لە پلەوپایەی دەسەڵات و میرایەتی لەو هەرێمەدا ماونەتەوە، لەم میر عەبدولعەزیزەوە داکەوتووە و ماوەتەوە (محەمەد، ٢٠١٨، ٦٧). ئەوەی لێرەدا بۆ ئێمە گرینگە، ئەو میر و فەرمانڕەوایانەی بۆتانن کە ماوەی باسەکەی ئێمە دەیانگرێتەوە واتە هەریەک لە:

. میر محەمەد کوڕی بەدربەگ.

. سوڵتان محەمەدی کوڕی میر محەمەد.

تا دەگاتە:

. میر شەرەفی کوڕی خان ئەبدال.

واتە ئەو میر و مەزنانەی لە نێوان ساڵانی (١٥٧٠ بۆ ١٦٠٠ی زایینی) لەسەر زینی دەسەڵاتدابوون (هروری، ٢٠٠٤، ٤٨). یەکێک لە شوێنەوارە هەرە ناودارەکانی جزیرە لەو سەردەمانەدا شوورە و قەڵاتی شاری جزیرەیە کە بە (کەلها جزیرێ و بورجا بەلەک) ناسراوە و کەوا مەڵبەند و پێگەی حوکمڕانی میرەکانی بۆتان بووە و لە ساڵی (١٥٩٦) دا لەسەر دەستی میر شەرفدا ئاوەدان و نۆژەن کراوەتەوە. لە پاڵ نۆ مزگەوت و مەدرەسەی مەزن و ئاوەدان کە (مەدرەسا سۆر) یەکێکە لەو خوێندنگە ئاینییە ناودارانە بووە، کەوا جزیری

شاعیری ئێمە بەشێکی ژیان و خوێندن و ڕۆژگاری زێڕینی زانست و سۆفیایەتی و شاعیریەتی تیادا بەسەر بردووە. (سمایل، ٢٠٢٢، ٤٩٧.٤٨٧)

**٢. ژیانی زانستی و ڕۆشنبیری لە هەرێمی جزیرا بۆتاندا:**

میرایەتییە کوردییەکان لە ڕابردوودا بەگشتی، لەگەڵ ئەوەی دامەزراوەی خێڵەکی و دەرەبەگی بوون، بەڵام لە ناوەڕۆکدا لە شێوەی دەوڵەتۆکەیەکی نیمچە سەربەخۆی خاوەن پایە و دەسەڵات بوون. میرە کوردەکان لە سۆنگەی جوامێری ئاینداری و خوا پەرستییەوە برەویان بە خوێندەواری و زانست و پەروەردە داوە و پشتیوانی و پشتگیری تەواویان لە مەلا و زانا و ڕابەرەکانی شەریعەت و تەریقەت لە ناو کۆمەڵدا کردووە، بۆیە ناوەند و پایتەختی میرایەتییەکان لە جزیرە و بەدلیس و ئامێدی، ڕەواندز و قەڵاچوالان و سلێمانی و سنە و ئەردەلان ... هەمیشە مەکۆی زانست و ڕۆشنبیری بوون و ئەم هەرێمانە هەمیشە تەژی بوون لە مەلا و زانا و دانا و خەڵکانی خوێندەوار و ڕۆشنبیر (ئامێدی، ١٩٨٠، ١٦٤). حاجی قادری کۆیی نەمر (١٨٩٧.١٨١٦) زۆر بە دروستی تەعبیری لەم واقیعە کردۆتەوە کاتێک دەڵێ:

حاکم و میرەکانی کوردستان
هەر لە بۆتانەوە هەتا بابان
یەک بەیەک حافیظی شەریعەت بوون
سەیید و شێخی قەوم و میللەت بوون

تەنانەت وا ڕێکەوتووە کەوا میر و پاشا و خانە کوردەکان خۆیان شاعیر و نووسەر و خەڵکی خوێندەوار و زانا و دانا بوون. خاوەنی کتێب و دیوان و تەلیفات و کتێبخانە و ئەرشیفی ناوازە و دەوڵەمەند بوون. هەر بۆ نموونە بزانن کەو گەڕیدەی عوسمانی (ئەولیا چەلەبی) لەکاتی ڕووخانی میرایەتی بدلیس لەسەر دەستی ئەحمەد پاشای والی عوسمانی لە ساڵی (١٦٥٥)دا، چۆن باس لە گەنجینەی کتێب و دەستخەت و ئەرشیف و کتێبخانەی تایبەتی (خان ئەبدال) دەکات؛ باری حەوت وشتر کتێبی دەنسقە و بایەخدار کە مۆری خانیان پێوە بوو، جگە لە حەفتاوشەش بەرگ کتێبی فارسی و عەرەبی و تورکی لە دانانی عەبدال خان خۆی لەگەڵ سەدوپێنج پارچە و نامیلکەی جۆربەجۆر کە زۆربەیانی بە زمانی فارسی نووسی بوو ... (ناکام، ١٩٧٩، ٢٨٥.٢٧٨). لە ڕاستیدا مرۆڤ کە ئەو ڕوومال و کەشفەی ئەولیا چەلەبی بۆ کتێبخانە و ئەرشیفی ئەبدال خان کردوویەتی دەبینی و دەخوێنیتەوە، سەری سووڕ دەمێنێ و هۆش و بیری ڕادەوەستێ!.

لە سەدەکانی پازدە و شازدە و حەڤدەیەمدا بەهۆی ئارامی و سەقامگیری سیاسی لە هەرێمی جزیرەدا بووژانەوە و ئاوەدانی ڕووی لە ناوچەکە کردووە و بەوپێیە زانست و زانیاریش پێشکەوتووە. میرەکان بایەخیان بە دروستکردن و ئاواکردنەوەی مزگەوت و حوجرە و مەدرەسە و بنکەی فێرکردن و ئاینداری دەدا، هەروەها چاودێریان دەکرد و مووچە و بەرات و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وەقفیان بۆ تەرخان دەکرد، مێژوو پێمان دەڵێت کەوا ((میر و پسمیرێت بۆتان گەلەک گوهدایە بەلاڤکرنا ڕۆشنبیری و نەهێلانا نەزانینێ برێکا ئاڤاکرنا مەدرەسا، خوێندنگەهو مزگەفتان، مەزخاندنا سەرمایەکێ مشە ئوبێ دەستگرتن ل زانان، دانان و ڕۆشنبیران و ل خوێندنگەهێت شاگردێت کورد. لوما شاگرتێت کورد ل هەر چار کەنارێت کوردستانێ سەر تێ دکر، ژبۆ دویماهی ئینان بخویندنا خوە ئو خوێندن نامە وەرگرتنێ)) (ئامێدی، ١٩٨٠، ٣١)

مەسەلەی بایەخدانی میرانی جزیرە و بۆتان بە ئاوەدانکردنەوەی مەدرەسە و مزگەوت و فێرگە ئایینییەکان لە مێژوودا شتێکی سەرنج ڕاکێشە، وا باس دەکرێت کەوا ((تەنیا لە سەدەی حەوتەمی کۆچیدا (٨٠) مزگەوتی گەورە و گچکە لە دەڤەری جزیرەدا هەبوونە)) (حسن، ١٩٨٩، ٢٤-٢٦). لە پاڵ ئەوەشدا بە دەیان کتێبخانەی مەزن و دەوڵەمەند لە ناوچەکانی جزیرەدا هەبووە کە دەوڵەمەندبوون بە سەرچاوەی هەمە چەشنەوە (محەمەد، ٢٠٠٠، ٩٤) هەر بۆیە لە مێژووی نوێدا ئەم دەڤەرە بە دەیان زانا و دانای ناوداری لە بوارە جیاوازەکانی زمان و ئەدەب و فیقهو تەفسیر و مێژوودا پێشکەش بە جیهانی ئیسلامەتی کردووە. ئەوانەی لەبارەی میرگەهێ جزیرا بۆتانیان نووسیوە ئاماژەیان بۆ فاکتەری ئاو و هەوای ئەم دەڤەرە کردووە، لەسەر کراوەیی و لایەنی هزری و ڕۆشنبیری دانیشتوانەکەی، تا ئەوەی لە خەڵکی ناوچەکانی دیکە باشتربوونە لە بواری زانست و تێگەیشتن و ئەدەب و تێڕوانین و لێکۆڵینەوەدا، لە پاڵ بوارەکانی بازرگانی و پیشەسازی و کاسبکاری و زیرەکی و لێهاتوویی بە هەموو شێوەیەکەوە (چالی، ٢٠٠٨، ٥٨).

## (٣) مەلایێ جزیری، وەکو پێشەنگی شاعیرانی قوتابخانەی شیعری کلاسیکی کوردی (لقی بۆتان):

جزیری، سەردەفتەری شاعیرانی کوردە و بە مەزنترین و ناودارترین شاعیری کورد دەژمێردرێت لە مێژوودا. خەڵکی هەرێمی بۆتانە و لە شاری جزیرەدا هاتۆتە دونیا، لە نیوەی دووەمی سەدەی شازدە و نیوەی یەکەمی سەدەی حەڤدەدا ژیاوە (١٥٦٨-١٦٤٠).

سەبارەت بەو سەدەم و ڕۆژگارەی کەوا جزیری تیادا ژیاوە سەیدا عبدالرقیب یوسف دەڵێت: هۆیێ دەرکەفتنا سبەهیا مێژوویا کوردستانا سیاسی و نو لە چەرخا دەها کۆچی و شازدەهێ زایینیدا ئەوا کو ژ جەنگا (چالدیران) سالا (٩٢٠ک - ١٥١٤ز)دا لە نێڤ بەینا تورک و ئیرانیان دا یانی ژ یەکەتیا کوردان، میرانێن کورد ل کوردستانا ناوەندیدا ل ژێر حکمێ تورکاندا وەرگرتنا هندەک ژ مافێ نەتەوایەتییان لە نێڤ دەولەتا عوسمانیا تورکاندا (یوسف، ١٩٧١، ٦).

جزیری ڕۆڵەی ئەم چەرخەیە کە گیانی ئازادی و خۆبەڕێوەبەری و نەتەوە و نیشتیمانپەروەری تاڕادەیەک وەکو باسکرا، لە هەرێمی جزیرە و بۆتاندا بوژاوەتەوە. ئەو بە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

دابی مەلا و زانایانی کورد لە سەرەتاوە لە ناوچەکانی کوردستاندا گەڕاوە، زانست و زانیاری وەرگرتووە و لە هەر دوازدە عیلمەکانی شەریعەت و ئیسلامەتیدا بووە بە زانایەکی باڵا دەست و لە زمانەکانی عارەبی و فارسی و تورکیدا تاقە سوارە بووە لە مەیدان، بۆیە بەو سێ زمانەو بە کوردیش کە زمانی پەسندی خۆی بووە، شیعر و هۆنراوەی داناوە کە لە بەلاغەت و ڕەوانی و پاراویدا بێ نموونەن (هەژار، ١٣٥٩، ٢٢). ئەو ڕۆژگارێکی تەمەنی لە سەردەمی میر شەرەفی کوڕی خان ئەبدالدا (١٥٨٥-١٥٩٦ حوکمڕانی کردووە) بەسەر بردووە. میر شەرەف لە میرە ناودارەکانی خانەدانی ئازیزان بووە، کەوا میر شەرەفخانی بدلیسی (١٥٤١-١٦٠٤ز) لە شەرەفنامەدا زۆر بەشان و باڵیدا هەڵدەڵێ و دەڵێ: زۆر پیاوێکی دەست و دڵ و دەروون پاکە، فەقێ و مەلای زۆر خۆش دەویێن، زۆر مەدرەسە و مزگەوتی تازەی لە شاری جزیرە ئاوا کردۆتەوە. یەکێک لەو مەدرەسانە مزگەوتی سووری پێ دەڵێن، لە پەنای شورەی شارە و کەوتۆتە لای ڕۆژئاواکەی، مەوقوفەجاتێکی زۆر پڕ داهاتی بۆ ئەو مزگەوتە داناوە، تا لە پاش نەمانی خۆیشی مزگەوت هەر لە برەو دابێ و هەمیشە مەلا و فەقێی تێدابێ ... جزیری هەر لەو مزگەوتەدا دەرس بێژ و پێش نوێژبووە. گەلێک مەلای لەو مزگەوتەدا ئیجازە داوە و دیارە هەر لەوێش مردووە و لە مزگەوتەکەدا نێژراوە (هەژار، ١٣٩٥، ٢٢). جزیری نێوانی لەگەڵ میر شەرەفدا زۆر خۆش بووە کە لە سایە و سێبەری ئەودا ژیاوە بۆیە ناوداترین قەسیدەی ستایشی لە دیوانەکەیدا بۆ ئەو هۆنیوەتەوە:

ئەی شاهنشاهێ عوءظظەم حەق نگەهدارێ تەبی

سوورەیی (انا فتحنا) دۆر و مادارێ تەبی

هەر کنارێ پێڤە وەرگێڕی عنانێ هممەتێ

زوهرە بێ پەیکێ تەو و کەیوان رکێبدارێ تەبی

مەلا لە درێژەی قەسیدەکەیدا لە خوا دەخوازێت کە ئەو میرە کوردەی جزیرە کە ڕەواج بە خوێندەواری و بەدین و بە ئیسلام دەدات و یارمەتی مزگەوت و مەلا و فەقێیان دەدات تاوەکو دەرسی قورئان و حەدیسان بڵێنەوە، خوا هەر پایە بەرز و باڵا دەستی بکات:

نەی تنێ تەبریز و کوردستان ل بەر حوکمێ تەبن

سەد وەکی شاهێ خوراسانێ د فەرمانێ تەبی

گەر چ دەرئیقلیمێ رابع هاتی تەختێ سەلطەنەت

پاشاهێ هەفت ئیقلیمان سەلامکارێ تەبی (دۆسکی، ٢٠١١، ٣٠٤)

لە پێش جزیریدا لە نێو خوێندەوار و ڕۆشنبیری کوردان ئەدەبێک زاڵ بووە کە لەسەر ڕێوشوێن و تەقالیدی ئەدەبی عەرەبی و ئیسلامیدا دامەزرابوو، بە زمانی فارسی و عەرەبی بوو، هەر لەو ڕۆژگارەدا زمانی فارسی، زمانی شیعر و ئەدەبیات بوو لە سەرتاسەر قەڵەمڕەوی دەوڵەتی عوسمانیدا. وەکو لە پێشەوە گوترا، جزیریش شارەزایی تەواوی لە ئەدەبیاتی ئیسلامی و زمانەکانی عەرەبی و فارسی و تورکیشدا هەبوو، بەڵام بە هۆی ئەو کەشوهەوا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

ئازادی و سەربەخۆیییەی کە میران و میرایەتی بۆتانی لەو سەردەمەدا تیادا ژیاوە و هەروەها لە سۆنگەی بووژانەوەی شار و ئاوەدانی و پێشکەوتنی زانست و زانیاری و خوێندەواری لە هەرێمی جزیرەدا، سەرەڕای ئەو ئارامییە سیاسییەی کەوا باڵی بەسەر هەموو دەڤەری بۆتاندا کێشابوو لە سایەیدا گیانی نەتەوەیی و وڵاتپەروەری سەری هەڵدابوو، تەنانەت هەستی نەتەوە خوازی و نیشتیمانپەروەری و کورد بوون لەلای جزیری خۆیشی چەکەرەی کردبوو تا ئەوەی بانگی هەرتاکێک لە خوێندەوارانی گەلەکەی بکات و بڵێت:

گەر لوئلوئی مەنثور ژ نەظمێ تو دخوازی

وەر شعرێ مەلێ بین تە ب شیراز چ حاجەت

ئەنجا ئەم هەڵومەرج و هۆکار و فاکتەرە خوودی و بابەتیانە هەموو پێکەوە بوون بەهۆکارگەل و فاکتەرێکی بەهێز تا ئەوەی جزیری دەسپێشخەری بکات و زمانی کوردی هەڵبژێرێت و لەو چوارچێوەیەشدا شێوەزاری ماڵباتی ئەزیزان (بۆتانی) بکاتە زمانی شیعر و غەزەل و قەسیدەکانی بەو شێوەزارە بهۆنێتەوە. جزیری وەکو داهێنەر و کارساز هاتووە پەیڕەوی لە هونەر و فۆرمەکانی شیعری کلاسیکی عەرەبی کردووە و، لەسەر ڕێوشوێنەکانی ئەوان ڕۆیشتووە، یاساکانی عەرووز و بەلاغەت وکێش و سەروای شیعری عەرەبی پەیڕەو کردووە، بەڵام لە ڕێگەو لە بۆتەی زمانی کوردییەوە ئەم کارەی کردووە. واتە زمانە شیعرییەکەی کوردییە لەناو کوردیش شێوەزاری ئاخاوتنی بۆتانییە، هەرئەمەش بووە وای کردووە کەوا کوردی بۆتانی لەو قۆناغەداو دواتریش ببێت بە زمانی یەکگرتووی ئەدەبی کوردی و شاعیرانی دوای خۆی لەسەر هەمان ڕێچکە و ڕێباز بۆ ماوەی دوو سەدە بەردەوامبن.

جزیری بەم هەنگاوەی تاقیکردنەوەیەکی تازەی لە ئەدەبی کوردیدا داهێناوە و دوابەدوای جەنگی چاڵدیران لە ساڵی (١٥١٤ز)دا ڕێنیسانسێکی لە ئەدەبی کوردیدا لە هەرێمی جزیرە و بۆتاندا بەرپاکردووە. کۆمەڵێک بابەتی تازەی لە رووی ڕوخسار و ناوەڕۆکەوە هێنایە ناو ئەدەبی کوردییەوە. کە لایەنی ڕوخسارەکەی خۆی لە پەیڕەوکردنی کێشی عەرووز و یەکێتی قافیە و ڕەوانبێژی شیعری عەرەبی . ئیسلامی (عەرەبی و فارسی و تورکی) دا خۆی دەنوێنێت و لایەنی ناوەڕۆکیش خۆی لە داهێنانی هونەری جوانکاری و مەبەستەکانی شیعرەوە بە دیاردەکەوێت کەوا جزیری لە چوارچێوەی سۆفیزمی ئیسلامیدا سامانێکی بەنرخی داهێناوە (خەزنەدار، ٢٠٠٢، ٢٦٣). بەم پێیە یاسا و دەستوور و پێوەرە ئەدەبییەکانی جزیری لە پاڵ زمانە کوردییە ئەدەبییەکەیشی بوون بە یاسا و ڕەگەزی سەرەکی لە ئەدەبی کلاسیکی کوردیدا کە دواتر شاعیرانی ئەم قوتابخانە ئەدەبییە لە سەرەتاسەری کوردستان لە سەری ڕۆیشتوون و پێڕەویان لێ کردۆتەوە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

جزیــری کە بە (شـێخی جزیــری) دەناســرێت و لە واقیعیشــدا بەڕاســتی (شـێخی شاعیرانی کوردە)، هەروەکو زڤنگی دەڵێت؛ دیوانێکی بۆ بەجێ هێشتووین کە لە مەزنترین پلەکانی پاراوی ڕەوانبێژی دایە لە زمانی کوردیدا و شان لە شانی دیوانی حافزی شیرازی و جامی و ئیبن الفارض و فزوولی دەدات لە زمانەکانی دیکەدا (الزڤنگی، ٢٠١٣، ١٤). هەر لەو سەرچاوەیەدا هاتووە کەوا جزیری لە ناوەڕاستی سەدەی هەڤدەیەم، هاوچەرخی میر شەرەفخانی کوڕی میــر ئەبـدال بـووە کەوا سەردەسـتەی میرانـی ماڵبـاتی ئـازیزان و بـۆ مـاوەیەکی درێـژ فەرمانڕەوای میرگەهێ جزیرە و بۆتان بووە. هەر ئەویش مزگەوت و مەدرەسەی سووری ئـاوەدان کـردۆتەوە کە لە سـەردەمی میر شـەرەفی کـوڕی میـر بەدر لە سـاڵی (١٥٠٨ز) بـۆ یەکەمجـار دروست کرابوون (سمایل، ٢٠٢٢، ٤٩٤). بەڵام میر شەرەفی میر ئەبداڵ دووبارە نۆژەن و ئـاوەدانی کـردۆتەوە و چەنـدین گونـد و کـێڵگە و باغـاتی لەسـەر ئەو خوێنـدنگەیە وەقـف کـردووە کەوا جزیــری تیــادا مامۆســتا و ســەیدا بــووە تــاوەکو لە ژیانــدا بــووە دەرس و دەوری تیــادا گوتۆتەوە، ئەنجا لە دوای مەرگ و مردنیشی هەر لەو مزگەوت و مەدرەسەیەدا نێژراوە.

لێرەدا وەکو لە بەراییدا ئـامـاژەی پێدراوە، جزیری قەسـیدەیەکی لە پەسـن و پیـادا هەڵگوتنی میری جزیرە (شەرەفخانی کوری میر ئەبدال)دا هۆنیوەتەوە کەوا لە بەشێکیدا هاتووە:

ئەی شاهنشاهی موعەظظەم حەق نگەهدارێ تە بی
سوورەیی (انا فتحنا) دۆر و مادارێ تەبی
هەر کنارێ پێڤە وەرگێڕی عنانێ هممەتێ
زوهرە بێ پەیکێ تەو و کەیوان ڕکێبدارێ تەبی
دائما مەنزلگەها سوورا تەبت بورجا شەرەف
طالعێ فەرخوندەو و بەختێ سەعید یارێ تە بی
ماهتابا دەوڵەتێ یەک پەرتەوەک شەمعا تە بت
ئافتابا ڕەفعەتێ بەرقەک ژ ئەنوارێ تە بی
لامعێ فەتحا ئەزەل بەرقێ ژ بەرتاجێ تە دت
کەوکەبا سەعدا ئەبەد نەجمەک ژ سەییارێ تە بی
بەرقێ سوببووحی کو ئیشراقێ ل سەدجانان ددت
ئەوکو کەشفا دل دکت ڕەمزەک ژ ئەسرارێ تە بێ
ڕایەتا فەتحێ ب نەصرا (لم یزل) مەنشوور بوو
شەهسوارێ فەڕڕێ سوبحانی عەلەمدارێ تە بی
نەی تنێ تەبریز و کوردستان ل بەر حوکمێ تەبن
سەد وەکی شاهێ خوراسانێ د فەروارێ تە بی
گەر ج دەر ئیقلیمێ رابع هاتی تەختێ سەلطەنەت
پادشاهێ هەفت ئیقلیمان سەلامکارێ تە بی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

تا لە کۆتاییدا دەڵێت:

مە ب عەیش و نووش و شاهی ئەو فدا عومرێ تە بت

چەندە کێ ساڵەک موجەددەت بێت و بێ زارێ تەبی

هەر کەسێ نە ژ جان دوعا گۆ و ثەنا خوانێ تە بت

گرتیێ قەیدا تەو و ئامانجێ نووبارێ تە بێ

مەدرەکێ علمێ ضەمیری شەممەیەک وەصفا تە هات

وەرنەکی عالم ب شەئنێ قەدر و مقدارێ تە بی

قەست و داخوازا (مەلێ) دائم ژ جان و دل ئەڤە

هەر د بەندا خدمەتێ پێشدەستێ دیدارا تەبی (دۆسکی، ٢٠١١، ٣٠٣-٣٠٥)

هەروەها جزیری قەسیدەیەکی دیکەشی لەسەر مەدح و ستایشی میر شەرەفخان داناوە کە لێرەدا ئاماژە بۆ چەند دێرێکی دەکەین:

خانی خانان لامعێ نەجما تە هەر پڕ نوور بی

کەشتیا بەختێ تە (أز) بایێ موخالف دوور بی

کەوکەبا سەعدا شەرەف دنێڤ بورجا تە بت

داتنێ ژ چەرخێ بەلا شوبهی مەهێ مەنظوور بی

لەو زیارەت ئاستانێ تێت شەمسا دەوڵەتێ

داسەحەرگاهان ژ دیدارا شەریف پوڕ نووربی

ئەختەرا تە ژ پەردەیا غەیبێ ئەگەر بێتن ظوهوور

دێ بتن (نصف النهار)ە وەرشەبێ دەیجووربی

(أیه الکرسي) و (أنعام) هەیکەلا تۆخا تەبن

بێ نیهایەت پوڕ موراد و بێ عەدەد مەنصوور بی

هەرکنارێ وەرگەڕینی پێڤە عەزم و هممەتێ

ڕایەتا فەتحێ ب نەصرا (لم یزل) مەنشوور بی

خەیمەتا نوورا عنایەت ظللێ مەمدوودێ تە بت

سوورەیێ (أم الکتاب) ماداری حەضرەت سووربی

پاشی نەوشیروان دبێم دێ حاکمێ عادل تویی

مثلی حاتەم دێ ب دانێ دەرجەهان مەشهووربی

ما جزیرێ شوبهێ دارێ تەختێ هەفت ئقلیم بت

هەم ب حوکم و سەلطەنەت ئەسکەندەر و فەغفوور بی

تاوەکو لە کۆتاییدا دەڵێت:

ما لسانێ من دوعا گوویێ ل دەرحەق وەصفێ خان

مەظهەرێ سرڕا کەلامی وەک درەختا طوور بی

هەر د مەدحێ تەو ثەنائێ سینەو قەلبێ (مەلێ)

بی تەفاوت قولزوما پوڕ لوئلوئی مەنثوور بی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ژ ئاستانێ دەولەتێ غائب نەبی جارەک (مەلا)
دا ژ فەرمانێ موکەرڕەم دەم ب دەم مەئموور بی (دۆسکی، ٢٠١١، ٣٠٧)

**بەشی دووەم**

## (١) کورتەیەکی مێژوویی لە بارەی (میرایەتی بابان)ەوە:

لە ڕۆژئاوای زنجیرە چیای زاگرۆسەوە و لە ناوچەکانی پشدەر و مەرگە و شاربژێڕ و قەرەداغ و شارەزوورەوە، وەکو سەرچاوە مێژووییەکان باسی دەکەن، خانەوادەی (بابانەکان) لە سەدەی چواردەی زایینی بەدواوە جڵەوی حوکمڕانیان لەو ناوچانەدا گرتۆتە دەست. زنجیرەی سێیەمی ئەو بنەماڵەیە لە ساڵی ١٦٧٠ زایینیدا لە (قەرەچوالان . قەڵاچوالان)، وەکو مەڵبەند و پێتەختی میرنشینەکەیان نیشتەجێ بوون. دوای ئەوە لە ساڵی ١٧٨٤دا پایتەختەکەیان گواستۆتەوە سلێمانی و لەو ماوە زەمانیەدا کە پایتەختی میرایەتی لە قەڵاچواڵان بووە ١١ میر و مەزنی بابانەکان حوکمڕانیان کردووە (بابان زادە، ٢٠٢١، ١٥١). هەر لەو ماوەیەدا کە سەدەیەکی زیاتر خایاندووە سنووری نفووز و دەسەڵاتی میرانی قەڵاچوالان لە سنەوە تا نزیک بەغدا و لەوێشەوە تا سنوورەکانی موسڵ و دیاربەکری گرتۆتەوە. بەڵام وەکو (لۆنگریک) دەڵێت؛ هەرێم و میرایەتی قەڵاچوالان هەمیشە وەکو شانۆیەکی ئامادەکراو بووە تاوەکو هەردوو دەوڵەتی تورک و ئێرانی هەرکاتێک ویستیان بێن و ڕۆڵی خۆیان تیادا نمایش بکەن و هۆکارەکانی شەڕ و گێچەڵی تیادا بچێنن (لونگریک، ١٩٦٨، ٢١٥).

لەسەردەمی مەحمود پاشای یەکەمدا (١٧٧٨ تا ١٧٨٣ حوکمڕانی کردووە)، بەهۆی کۆمەڵێک فاکتەری ڕامیاری و کارگێڕی و جوگرافییەوە، بڕیار لەسەر ڕاگواستنی پایتەختی میرایەتی دراوە لە قەڵاچوالانەوە بۆ سلێمانی. لە ڕۆژگاری ئیبراهیم پاشا بە دواوە (١٧٨٣ تا ١٨٠٣حوکمڕانی کردووە)، سلێمانی دەبێتە مەڵبەندی تازەی میرایەتی بابان. لە دروستکردنی شاری تازە دا پێڕەوی لە پلان و پرۆژە و نەخشەسازی شاری نوێ و مۆدێرندا کراوە. ڕەچاوی کەرتەکانی ئاوەدانی لە شوێن و پێگەی سەرای حکومەت و مزگەوت و بازاڕ و خان و کاروانسەرا و حەمام و دۆکان و شوێنەکانی دیکە کراوە. تا ئەوەی لە ئانوساتی دروستکردنی پایتەختی تازەدا هەشت مزگەوتی گەورە و ناودار لە شارەکەدا دروستکراون (جەعفەر، ٢٠١٤، ٧٧.٧٥).

میرایەتی بابان لە سلێمانی لەگەڵ هەموو ئاڵۆزییەکان و بارودۆخی سیاسی و سەربازی و هەڵکشان و داشکاندا، تاوەکو ناوەڕاستی سەدەی نۆزدەهەم (١٨٥١) بەردەوام بووە. لەو ماوەیەدا میر و پاشای بە دەسەڵات و بەهێزی تیادا هەڵکەوتووە کە توانیویانە حوکمی بەغدا بکەن، وەک ئەوەی لە هێز و دەسەڵاتی ئاوڕەحمان پاشای بابان و مەحمود پاشای کوڕیدا بە دیاردەکەوێت. وەکو لەم بارەوە دیسان لۆنگریک دەڵێت ئەمە یەکێک لە خاسیەت و تایبەتمەندییە سەرنجڕاکێشەکانی ئەم میرایەتییە بووە لەو سەردەمەدا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

(لونگریک، ١٩٦٨، ٢٧٨). ئاوڕەحمان پاشای بابان (کە ماوەی ٢٤ ساڵ بەشێوەی پچڕ پچڕ حوکمڕانی کردووە)، ویستویەتی دەسەڵاتێکی سەربەخۆ لە شێوەی دەوڵەتۆکەیەک، دوور لە نفووز و دەسەڵاتی واڵی عوسمانی لە بەغدا و خانی ئێرانی لە کرماشان دەبمەزرێنێت، بۆیە سەردەمەکەی بە یەکێک لە درەوشاوەترین سەردەمانی بابانییەکان ئەژمار دەکرێت.

لە میرە ناودارەکانی دوای ئەو، هەریەکە لە مەحمود پاشای کوڕی و سلێمان پاشای برای و ئەحمەد پاشای کوڕی سلێمان پاشا ناویان دێت، کە تیایدا نفووز و دەسەڵاتی میرایەتی تاڕادەیەک لە پێشکەوتن و سەقامگیریدا بووە. (شێخ ڕەزای تالەبانی/١٨٣٧.١٩١٠)، بە دروستی تەعبیری لەو ڕۆژگارە کردۆتەوە و کاتێک دەڵێت:

لە بیرم دێ سلێمانی کە دارولمولکی بابان بوو
نە مەحکوومی عەجەم نە سوخرەکێشی ئالی عوسمان بوو
لەبەر قاپی سەرا سەفیان دەبەست شێخ و مەلا و زاهید
مەتافی کەعبە بۆ ئەرپابی حاجەت گردی سەیوان بوو
لەبەر تابووری عەسکەر ڕێ نەبوو بۆ مەجلیسی پاشا
سەدای مۆزیقەو و نەققارە، تا ئەیوانی کەیوان بوو
دریغ بۆ ئەو زەمانە، ئەو دەمە، ئەو عەسرە، ئەو ڕۆژە
کە مەیدانی جرید بازی، لە دەوری کانی ئاسکان بوو
بە زەربی حەملەیێ بەغدایی تەسخیر کرد و تێی هەڵدا
سولەیمانی زەمان، ڕاستت ئەوێ باوکی سولەیمان بوو
عەرەب ئینکاری فەزلی ئێوە ناکەم، ئەفزەلن ئەمما
سەلاحەدین کە دنیای گرت لە زومرەی کوردی بابان بوو
قوبووری پڕ لە نووری ئالی بابان، پڕ لە ڕەحمەت بێ
کە بارانی کەفی ئیحسانیان وەک هەوری نیسان بوو
کە (عەبدوڵلا پاشا) لەشکری والی (سنە)ی شڕکرد
(ڕەزا) ئەو وەختە عومری پێنج و شەش، تیفلی دەبستان بوو (شوان، ٢٠٢١، ٧٤)

**(٢) ژیانی زانستی و ڕۆشنبیری لە قەڵەمڕەوی میرایەتی باباندا:**

بنەماڵەی میرەکانی بابان وەکو شەڕەفخان باسیان دەکات کەوا کۆمەڵێکی ئایین پەروەر و بڕوادار بوون، بۆیە لە ڕێوشوێنی ئیسلامەتی لایان نەداوە و گەلێکیشیان پیاوی خودایی و خوێندەوار لێ هەڵکەوتووە (بدلیسی، ٢٠١٧، ٤٥٨). ئەنجا لە دەڤەری باباندا هەر لە سەرەتاوە تا کۆتایی بە سەدان زانای ئایینی، شاعیر و ئەدیب، فەلەکناس و پیاوی دانا و شێخی تەریقەت هەڵکەوتوون. میرەکانی بابان سەرەڕای سەرقاڵیان بە کێشەکانی ناوەخۆیی و بەرگریکردن لەبەردەم لەشکرکێشییە دەرەکییەکان، بایەخ و گرنگیان بە خوێندەواری و مزگەوت و مەدرەسە و زانایان داوە (بابان زادە، ٢٠٢١، ٣١٠). بۆ نموونە سلێمان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

پاشای مەقتوول (لە ١٧٥١ بۆ ١٧٦٥ حوكمڕانی كردووە)، لە قەڵاچوالان زۆر پەرەی بە زانست و خوێندەواری و دروستكردنی حوجرە و مزگەوت و خوێندنگەی ئایینی داوە، مەوقووفاتێكی زۆری لە زەوی و خانوو و خان و دوكان و تیمارات بۆ خزمەتی مزگەوت و مەدرەسەكان لە تەواوی سنووری میرایەتییەكە تەرخان كردووە، بە تاتیبەتی بۆ مزگەوت و مەدرەسەكانی قەڵاچوالان و گوڵعەنبەر و كۆیە و هەولێر و كەركوك و مەریوان ... بە جۆرێكی وا كە ئەم وەقفنامەیە لە لایەن دەیان مەلا و زانا گەورەكانی سەردەمەكەیدا مۆركراون و ئەم وەقفنامەیە لە ئێستادا وەكو بەڵگەنامەیەكی مێژوویی ماوەتەوە (عبدالسلام، ٢٠٠٨، ١٩). سەبارەت بە برەوپێدانی زانست و خوێندەواری لە لایەن میرەكانی بابان لە سەردەمی قەڵاچوالاندا شێخ محەمەدی خاڵ دەڵێت؛ (میران و فەرمانڕەوایانی بابان زانست پەروەر بوون و بەچاوی ڕێزەوە لە شیعر و ئەدەبیاتیان دەڕوانی، هاوكار و پشتیوانی زانا و شاعیران بوون، مزگەوت و مەدرەسەیان دروست دەكردن، پەرەیان بە بواری خوێندەواری دەدا، هەر بۆیە كۆمەڵێكی زۆر لە زانا و دانایانی ناودار و هەڵكەوتە لەو سەردەمەدا پێگەیشتوون كە لە مێژوودا ناویان دەركردووە لە وێنەی شێخ مارفی نۆدێ (١٧٥٢-١٨٢٦)، مەولانا خالیدی شارەزووری (١٧٧٨-١٨٢٦)، موفتی زەهاوی (١٧٩٣-١٨٩٠)، لەگەڵ دەیان و سەدان تر لە زانایان و ئەدیبانی بەرزنجەیی و چۆری و مەردۆخی و قزڵجییەكان (الخال، ٢٠٢١، ج٧، ٢٣٦). هەروەها لە درێژەی باسەكەیدا دەڵێت؛ (قەڵاچوالان شاری زانست و زانایان بووە، لە شارەكانی كوردستانەوە ڕوویان تێ دەكرد و چەندان مزگەوت و مەدرەسەی لێ بووە ... كتێبخانەی گەورەی بابانەكان لە قەڵاچوالان شەش هەزار بەرگ كتێبی دانسقەی عەرەبی و فارسی تێدابوو، سەرباری ژمارەیەكی زۆری دەستنووس. بابانەكان نووسەر و خەتخۆشانیان دەناردن بۆ شار و شوێنە دوورە دەستەكانی وەكو قاهیرە و مەكە و سەنعا و ئەسفەهان، هەم لە پێناوی كتێب كڕین یاخود ڕوونووس كردنەوەی كتێبە دانسقەكان) (الخال، ٢٠٢١، ج٧، ٢٦٣).

ئاوڕەحمان پاشای بابان، وەكو لە پێشەوە باسی هاتووە، یەكێك لە ناودارترین میرەكانی بابانە لە سەردەمی سلێمانیدا، هەموو مەرجەكانی فەرمانڕەوایەتی تیادا كۆببووییەوە. لە پاڵ ئەوەشدا پیاوێكی زانا و لە خواترس و دیندار بووە و زانست و زانایانی خۆش ویستووە و خزمەتی ئایینی زۆركردووە. كەسێكی پایە بەرزی وەكو مەولانا خالیدی شارەزووری، ڕەنجووری شاعیری ناودار و عەلی بەردەشانی شایەری تایبەتی میرنشینن، گەلێكیان بە شان و شەوكەتی ئەو میرە و كاروكردەوەكانی لە بواری زانست پەروەریدا هەڵگوتووە كەوا بریتی بوون لە مانە:

. دروستكردنی مزگەوت و مەدرەسەی تازە لە ناوچە جیاجیاكاندا.

. هێنانی مەلا و زانا ناودارەكان بۆ سنووری قەڵەمڕەوەكەی و دابینكردنی خەرجی و بژێوی بۆیان.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

. کڕین و نووسینەوەی کتێب و سەرچاوە گرنگەکانی خوێندنی مەلایەتی و وەقف کردنیان.

ئاوڕەحمان پاشا لە سەرەتای دەستبەکاربوونەوە مزگەوتێکی گەورەی بەناوی خۆیەوە دروستکردووە، مەلا و زانای گەورەی بۆ هێناوە، کتێب و سەرچاوەی گرینگی بۆ پەیداکردووە و تەنانەت خۆیشی ناوە ناوە دەرسی بە فەقێکانی مزگەوتەکەی گوتۆتەوە. مەحمود پاشا کوڕی ئاوڕحمان پاشا (لە ١٨١٣ بۆ ١٨٣٤ حوکمڕانی کردووە)، لە سەردانێکیدا بۆ بەغدای پایتەخت و بۆ لای داود پاشای والی، کە دەبینێ مەولانا خالید ئەو خۆشەویستی و پێگە گرنگەی لەلای دەسەڵاتداران و زانا و دانایان و خەڵکی بەغدا دا هەیە، تکای لێدەکات کە بگەڕێتەوە سلێمانی و لە سلێمانیش مزگەوت و خانەقایەکی تایبەتی بۆ دروست دەکات و مەوقووفاتێکی زۆریشی بۆ خزمەتی مزگەوت و مەلا و فەقێکانی تەرخان دەکات (خاڵ، ٢٠٢١، ج٦، ١٥-١٦).

ئەحمەد پاشای کوڕی سلێمان پاشا (لە نێوان ١٨٣٨ تا ١٨٤٧ حوکمڕانی کردووە)، لە دەورانی دەسەڵاتی خۆیدا کتێبخانەی بابانەکان لە سلێمانی و لە مزگەوتی گەورەدا دامەزراندۆتەوە و بە دەیان دەستنووس و سەرچاوەی گرینگی بۆ پەیداکردووە. تەنانەت لە دوای دورخرانەوەشی لە کوردستاندا و لەو کاتانەدا کە والی عوسمانی بووە لە یەمەن و ئەرزەڕۆم و ئەدەنە، ناوە ناوە کتێب و سەرچاوەی دانسقەی بۆ کتێبخانەی بابانەکان لە سلێمانی ناردۆتەوە (عەبدوڵڵا، ٢٠٢٢، ٢١).

ئەحمەد پاشا ماوەیەکیش لە دوای دورخرانەوەی لە ئەستەمبوڵ ژیاوە بەرلەوەی بکرێتە والی و موتەسەریفی چەند شارێک، زۆر لە پیاوە ناودارەکانی کورد چاویان پێی کەوتووە و ستایشی پیاوەتی و ڕێزداریان کردووە. لەوانە شاعیری ناودار (نالی) چاوی پێی کەوتووە، هەروەها شێخ ڕەزای شاعیریش هەم سەردان و دیدەنی کردووە هەم شیعریشی بەسەردا هەڵگوتووە لە پێشەوە تێکستەکەیمان هێناوەتەوە. تا ئەوەی زانایەکی زمانەوانیی فەڕەنسی بەناوی (خۆدزکۆ)، بە یارمەتی ئەو کتێبێکی ناوداری لەمەڕ فیلۆلۆژی زمانی کوردی داناوە.

لێرەدا وەکو ئەنجامگیری دەتوانین بڵێین، لەگەڵ هەموو ئەو شەڕ و ئاڵۆزی و ناکۆکی و دووبەرەکی و لەشکرکێشی  هەردوو ئیمپڕاتۆڕیای ناوچەکە (عوسمانی و ئێرانی) بۆ سەر سلێمانی و تەواوی میرنشینەکە کە لە ئارادا هەبوو، لایەنێکی پڕشنگدار و شارستانی لە ڕەوشت و کار و کردەوەی میرەکانی باباندا هەبوو، هەنگاوی پیرۆز و مەزنیان ناوە لە خزمەتکردن بە زانایان و ئاوەدانکردنەوەی حوجرە و مزگەوت و خوێندنگەکان، لە پشتگیری و پشتیوانی خوێندن و خوێندەواریدا هیچ درێغیان نەکردووە. ڕێزیان لە زانایان گرتووە و بە چاوی پیرۆزی و خێروفەڕەوە سەیریان کردوون. وەک ئەوەی (ڕیچ) لە

گەشتنامەیکەیدا ئەوەمان بۆ باس دەکات کەوا مەحمود پاشا و براکانی لە حزووری مەولانا خالید دا بە پێوە دەوەستان و لە خزمەتیدا بوون و قلیانیان بۆ دادەگیرساند. ئەنجا هەر مەحمود پاشا بوو خانەقایەکی بۆ دروست کردبوو، هەموو عەسرانێکیش دەچوو بۆ سەردانی (ریج، ٢٠٠٨، ٣٠١).

**(٣) نالی، پێشەنگی شاعیرانی قوتابخانەی شیعری کلاسیکی کوردی (لقی بابان):**

نالی (مەلا خدری ئەحمەدی شاوەیسی شارەزووری)یە لە نێوان سالانی (١٨٠٠ بۆ ١٨٧٧)دا ژیاوە. سەرەتا لە ناوچەکانی قەرەداغ و هەڵەبجە و سنە دا خوێندوویەتی، لە پاشاندا گەڕاوەتەوە سلێمانی لە مزگەوتی ئاوڕەحمان پاشای باباندا درێژەی بە خوێندن داوە. ئەو بە فەقێیەتی لە قەرەداغ و سنە و سلێمانی لەلای مەلا و زانا ناودارەکانی کوردستاندا خوێندویەتی تاوەکو ئیجازەی وەرگرتووە. لە دواییدا لە خانەقای مەولانا خالید دا جێگیربووە، کە بەم دواییانە ساغ بۆتەوە کەوا پەیوەندی خزمایەتیشی لەگەڵ دا هەبووە (موفتی، ٢٠٢٠، ١٣٣). نالی لە سەردەمی فەرمانڕەوایەتی مەحمود پاشا، سلێمان پاشا مامی مەحمود پاشا و، ئەحمەد پاشای کوڕی سلێمان پاشا دا، پێگەیشتووە و شانوشکۆی وەکو زانایەکی دیار و مەزن شاعیرێکی بەرجەستە بەدیارکەوتووە. بابانەکان ڕێزیان لێگرتووە و پلە و پایەیەکی بەرزیان بۆ داناوە.

لە سەرەتای سەدەی نۆزدەدا و لە هەرەتی دەرکەوتنی نالی، شیعر و ئەدەبی کوردی، لە فۆلکلۆر و ئەدەبی میللی و ئەدەبی هونەری و نووسراو دا، لە هەموو ناوچەکانی دەوروبەری سلێمانی (شارەزوور و قەرەداغ و بازیان)دا بە دیالێکتی گۆران بووە، کە بە هۆی پشتیوانی میرایەتی ئەردەلان سەدان ساڵ بوو ئەم ئەدەبە بەم دیالێکتە لە ئارادا بووە، تەنیا لە ناوچەکانی شارباژێڕ و باکووری سلێمانیدا نەبێت کە بەشێک بووە لە سنوور و قەڵەمڕەوی دیالێکتی کوردی ناوەندی (موکریانی). کە ئەمە هەر خۆیشی شێوەی ئاخاوتنی خێزان و بنەماڵەی میرەکانی بابان خۆیشیان بووە (خەزنەدار، ٢٠٠٣، ٣٠). بۆیە لەگەڵ پەرەسەندنی هێز و دەسەڵاتی میرایەتی و جیگیربوونی لە شاری سلێمانیی پایتەختی تازەدا، گۆرانی وەکو زمانێکی ئەدەبی دێرین و باو بەرە بەرە گلۆڵەی کەوتۆتە لێژی و زمانێکی ئەدەبیی تازە (بابان) لەسەر بنەمای دیالێکتی موکریانی، کە شێوە ئاخاوتنی بابانەکان و شارباژێڕ بووە، هاتۆتە ناوەوە و وردە وردە لەسەر حیسابی گۆڕانی جگە لە سلێمانیی پایتەخت، لە ناوچەکانی هەڵەبجە و قەرەداغ و کەرکوک و گەرمیانیشدا کە لە قەڵەمڕەوی میرایەتی بابان بوون، پەرەی سەندووە و بۆتە باو وەکو لە قسەکانی (جویس بلۆ)شدا هاتووە، خودی ئاوڕەحمان پاشا پشتیوانی ئەدیب و هونەرمەند و شاعیرانی کردووە و هانی داون بۆ ئەوەی پشت بکەنە گۆرانی و داواشی لێکردوون ڕووبکەنە (سۆرانی)، (بلو، ٢٠١٦، مدارات کرد).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

دیاره وەکو زانراوە (نالی) شاعیری پێشەنگ و پایەبەرزی ئێمەش، ماوەیەک خوێندکاری مەدرەسە و مزگەوتی ئاوڕەحمان پاشا بووە و لەوێ ئیجازەی وەرگرتووە. ئەنجا وەکو شێخ محەمەدی خاڵ دەڵێت؛ لەم ساڵانەی دواییدا لەکاتی ئاوەدانکردنەوەی مزگەوتەکەدا چەند دانە دەستنووسی شیعری نالی دۆزراونەتەوە کەوا بە دەستخەتی خودی خۆی بووە (الخال، ٢٠٢١، ج٧، ٢٥٣).

لەسەرەتادا دەستپێشخەری رووکردنە زمانی ئەدەبی بابانی بەر لە نالی و هاوڕێکانیشی، لە ئەدەبی میللیدا بۆ (عەلی بەردەشانی/ ١٨٠٩.١٧٦٧) دەگەڕێتەوە، کە مەنزوومەیەکی ناوداری بە ناونیشانی (بەیتی ئاوڕەحمان پاشای بابان)دا لە وەسفی میری بابان و شەڕ و ئازایەتی و نەبەردییەکانیدا هۆنیوەتەوە. لە ئەدەبی هونەری و نوسراویشدا هەرکام لە (ڕەنجووری/ ١٨١٠.١٧٥٠) و (ئیبن الحاج/ ١٧٧٠.١٧٠٠) پێشتر ئەم ئەزموونەیان تاقیکردۆتەوە، بەڵام ئاڵوگۆڕە گرینگ و بنەڕەتی و ڕاستەقینەکە لەسەر دەستی نالیدا رووی داوە.

نالی هەوڵیداوە، وەکو ئەوەی پێشتر مەلای جزیری کردوویەتی، هەموو ئەو فۆرم و تەکنیک و هونەرەکانی شیعر کە لە ئەدەبی دێرینی عەرەبیدا هەبوون، لە ڕێگەی ئەدەبی فارسیدا هەڵیان بهێنجێت و لە دوایە بە دەستڕەنگینی و وەستاکارانە بەو زمانە ئەدەبییە تازەیە، سامانێک لە شیعری کوردی کلاسیکمان بۆ بخاتەوە. تا ئەوەی شاعیرانی هاوڕێی و هاوسەردەمی لە وێنەی (سالمی ساحێبقران/ ١٨٦٩.١٨٠٥)، (مستەفا بەگی کوردی/ ١٨٥٩.١٧٨٢)، (نەفعی/ ؟ـ١٨٤٧)، (مەلا وەسمان/ ١٨٨٩.١٨٠٦) پێڕەویان لەم ڕێبازە کردووە و ئەزموونەکەی نالیان دەوڵەمەندکردووە.

دیارە ئەم ئەزموونەی ئەدەبی کوردی ناوەڕاست (بابان) کە لە باوەشی میرایەتی باباندا و بەشێوەیەکی بەهیز لەسەرەتای سەدەی نۆزدەدا سەری هەڵداوە، لە شێوەی دایکبوونێکی تازە و نوێ بووە بۆ شیعری کلاسیکی کوردی، لە هەمان کاتیشدا درێژەپێدەر و تەواوکەری باڵەکەی دیکە بوو کە لە نیوەی دووەمی سەدەی شازدەدا لە بۆتاندا سەری هەڵدابوو. هەروەها چۆن جزیری شێوە ئاخاوتنی ماڵباتی ئازیزان و ناوچەی بۆتانی کردۆتە زمانی شیعر و زمانی ئەدەبی یەکگرتووی ئەو ئەزموونە ئەدەبییە، بە هەمان پێوودانگ نالیش شێوە ئاخاوتنی بنەماڵەی بابانەکان و میرایەتی بابانی کردۆتە زمانی شیعر و زمانی ئەدەبی یەکگرتووی ئەزموونە ئەدەبییەکەی.

لێرەدا لە باسی پەیوەندی نزیکی نالی لەگەل میرەکانی باباندا ئەم برگەیەیە لە ئەمین زەکی بەگ وەردەگرین کە دەڵێ؛ مەرحووم نالی لەم دەورەیەدا بوو (مەبەستی دەورەی سلێمان پاشای بابان ئەحمەد پاشای کوڕی سلێمان پاشایە) مەنظوومەیەکی شیرینی تەعزیە و تەبریک بۆ ئەحمەد پاشا نووسیوە (زەکی، ٢٠٠٦، ١١٤). کە ئەمە دەقی تێکستەکەیە:

تا فەلەک دەوی نەدا . صەدکەوکەبی ئاوا نەبوو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

کەوکەبەی میهری موبارەک طەلعەتی پەیدا نەبوو
تا نەگریا ئاسمان و، تەم وەڵاتی دانەگرت
گوڵی چەمەن ئارا نەبوو، هەم لێوی غونچە وانە بوو
تا چەمەن پیرا لەسەر ئەصلی درەختی لانەدا
فەرعی تازە خوڕڕەم و بەرز و بوڵند باڵا نەبوو
تا (سولەیمانان) نەبوونە صەدری تەختی ئاخیرەت
(ئەحمەد موختار)ی ئێمە شاهی تەخت ئارا نەبوو
قیصصە بێ پەردە و کینایەت خۆشە: شاهی من کەوا
عادیلێ بوو قەت عەدیلی ئەو لە دنیادا نەبوو
بۆ نشینگەیی مورغی ڕووحی ئەو کە عالی فیطرەتە
جێگەی خۆشتر لە ڕەوضەی (جنة الماوى) نەبوو
وەک قیاسێکی کە موثبەت بێ، نەتیجەی بێتەجێ
حەمد و لیللا شەه کە عالي جا بوو، خالی جا نەبوو
شاهی جەم جا (نالیا) (تاریخ جم) تەئریخییە
دا نەڵێن لەم عەصرە دا ئەسکەندەری جەم جا نەبوو (مدرس، ١٩٧٦، ٣٧٠)

هەروەها نالی لە وەسفی سوپا و سەربازانی ئەحمەد پاشای باباندا گوتوویەتی:

ئەم طاقمە مومتازە کەوا خاصصەیی شاهن
ئاشووبی دڵی مەملەکەت و قەلبی سوپاهن
صەف صەف کە دەوەستن بەنەظەر خەططی شوعاعن
حەڵقە کە دەبەستن وەکو خەرمانەیی ماهن
نەرگس نیگەهو ساق سەمەن، کورتە بە نەفشەن
موو سونبول و ، ڕوومەت گوڵ و، هەم لالە کولاهن
گوڵزاری دەر و دەشتن و غیلمانی بەهەشتن
ئاهوو صەف و، ئاتەش بە کەف و، تیزنیگاهن
صەحرا بە تەجللی دەکەنە وادییی ئەیمەن
قامەت شەجەرو ، مەظهەری ئەڵطافی ئیلاهن
گەه طاوس و، گەه کەبکن و، گەه بۆ قەڵەموونن
گەه ئاتەش و، گەه شوعلە، گەهێ دوودی سیاهن
لالە بە بەدەن، ئەطڵەسی ئەخضەر کە لەبەرکەن
نەوڕەستە گوڵن، بەستە لەگەڵ دەستە گیاهن
تا دەڵێ:
(نالی) بەخودا حەیفە دەرەنجێنی دڵی خۆت
ئەم طاقمە مەخصوصە هەموو صاحیبی جاهن (مدرس، ١٩٧٦، ٣٤٠)

**ئەنجام:**

١. دامەزراندنی چەند میرگەهـ و قەوارەیەكی سیاسی و نیمچە سەربەخۆ، لەلایەن چەند بنەماڵەیەكی حاكم و فەرمانڕەوای كوردان و باڵكێشانی ئارامییەكی سیاسی و سەقامگیر لەو ناوچانەدا، بوو بە مایەی گەشەسەندنی شار و بازێڕ و پێشكەوتنی ژیانی ئابوری و شارستانی. هەر بەو پێیەش بوو بە مایەی بڵاوبوونەوەی خوێندەواری و پێشكەوتنی ژیانی ڕۆشنبیری و ئەدەبی.

٢. میر و مەزنەكانی كورد لە هەرێمی بۆتان و باباندا لە سۆنگەی خواپەرستی و ئایینداری یادانایی و تێگەیشتن بوبێت، زۆر بایەخیان بە زانست و زانیاری و بڵاوكردنەوەی فەرهەنگ و ڕۆشنبیری داوە. لە سنوری هەردوو میرایەتیدا، مزگەوت و مەدرەسە و خوێندنگەیان ئاوەدان كردۆتەوە، ڕێزیان لە مەلا و زانایان گرتووە، كەشێكی لەباریان بۆ پەروەردە و فێربوون ڕەخساندووە، بودجە و ماڵیات و مەوقووفاتی مشەیان لەو پێناوەدا بە خەرج داوە.

٣. لە میرگەهی بۆتاندا و بەتایبەت لە ڕۆژگاری میر شەڕەفی كوڕی میر ئەبدالدا، كەشوهەوایەكی شارستانی و ڕۆشنبیری وا هاتۆتە پێشەوە، تاوەكو دانایەكی وەكو جزیری دەستپێشخەری بكات، هەم زمانی كوردی . ناوچەی بۆتان، بكات بە زمانی شیعر و ئەدەب و زمانی یەكگرتووی ئەدەبی لە هەموو ناوچەكەدا، هەمیش هونەرەكانی ئەدەبی كلاسیكی ڕۆژهەڵات (عەرەبی و فارسی) بێنێتە ناو شیعر و ئەدەبیاتی كوردی و بەم كارەش دەرگا لەسەر دامەزراندنی قوتابخانەی شیعری كلاسیكی كوردی بكاتەوە.

٤. لە سنووری قەڵەمڕەوی میرایەتی باباندا و لە زەمان و زەمینەیەكی جیاوازدا، بەڵام لە سایەی هەمان هەلومەرج و كەشوهەوای سیاسی و شارستانی و ڕووناكبیری ژێر دەسەڵاتی میرەكانی باباندا، هەمان سیناریۆ دووبارە دەبێتەوە و نالی شارەزووری دەستپێشخەری دەكات لە هێنانەكایەی ئەزموونێكی تازە لە ئەدەبی كلاسیكی بە كەرەستە و دیالێكتی كوردی ناوەڕاست (بابان).

٥. بەم شێوەیە لە سنوور و قەڵەمڕەوی هەردوو ئەزموونی حوكمڕانی خۆماڵیی كوردی (بۆتان و بابان)دا، دوو ئەزموونی ئەدەبی پێشەنگ لەسەر دەستی دوو مرۆڤی بلیمەت و دوو شاعیری هەڵكەوتە مەلای جزیری و نالی، قوتابخانەی شیعری كلاسیكی كوردی بە هەردوو باڵ و هەردوو لقی (بۆتانی) و (بابانی)یەوە لەسەدەكانی حەڤدەهەم و نۆزدەهەمدا دادەمەزرێت و بەرپا دەبێت.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

سەرچاوەکان:


١. ئامێدی، صادق بهاءالدین، ١٩٨٠، هۆزانڤانێت کورد، لە چاپکراوەکانی کۆڕی زانیاری عیراق، بەغدا.

٢. بابان زادە، کامەران جەمال، ٢٠٢١، میرنشینی بابان، ناوەندی ڕێنوێن، سلێمانی.

٣. بدلیسی، شەرەفخان، ٢٠١٧، شەرەفنامە، وەرگێڕ: سەلاحەدین ئاشتی، بنکەی ژین، سلێمانی.

٤. بلو، جویس، ٢٠١٦، الادب الكوردی المكتوب، قراءة وترجمة: عبدالكريم عته، موقع مدارات كرد.

٥. توفيق، د.زرار صديق، ٢٠٠١، كردستان فی القرن الثامن الهجری، دار موكريانی، اربيل.

٦. جەعفەر، مامۆستا، ٢٠١٤، سلێمانی ـ ململانێی گروپە کۆمەڵایەتییەکان، چاپخانەی ڕۆژهەڵات، هەولێر.

٧. خەزنەدار، د.مارف، ٢٠٠٢، مێژووی ئەدەبی کوردی، ب٢، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، هەولێر.

٨. حسن، سلام طه، ١٩٨٩، جزيرة ابن عمر في القرنين السادس و السابع، رسالة ماجستير، جامعة صلاح الدين، اربيل.

٩. خاڵ، شێخ محەمەدی، ٢٠٢١، نالەی دەروون، کۆ بەرهەمی شێخ محەمەدی خاڵ، جزمی دووەم (٦)، ناوەندی هزری و ڕۆشنبیری خاڵ، سلێمانی.

١٠. الخال، الشيخ محمد، ٢٠٢١، البيتوشی ـ الشيخ محمد الخال، ج٧، مركز الخال الفكري و الثقافي، السليمانية.

١١. دۆسکی، تەحسین ئیبراهیم، ٢٠١١، دیوانی مەلایێ جزیری، دەزگەها سپیرێز، چاپا دوێ، دهۆک.

١٢. زەکی، محەمەد ئەمین، ٢٠٠٦، تاریخی سلێمانی وە وڵاتی، ئامادەکردنی: ڕەفیق سالح، بنکەی ژین، سلێمانی.

١٣. الزڤنگی، احمد بن الملا محمد، ٢٠١٣، العقد الجوهري فی شرح ديوان الشيخ الجزيري، نوبهار، ئیستامبۆل.

١٤. سمایل، عەباس سلێمان و نەجیبە زرار هۆرمزیار، ٢٠٢٢، چەند بابەتێکی کولتووری کوردی، لە بڵاوکراوەکانی ئەکادیمیای کوردی، هەولێر.

١٥. شوان، ئەمین، ٢٠٢١، دیوانی شێخ ڕەزای تاڵەبانی، لە بڵاوکراوەکانی ئەکادیمیای کوردی، هەولێر.

١٦. عەبدوڵڵا، دکتۆر نەجات، ٢٠٢٢، گەڕان بەدوای مرواری، کتێبی یەکەم، لە بڵاوکراوەکانی ئەکادیمیای کوردی، هەولێر.

١٧. عبدالسلام، د. عماد، ٢٠٠٨، مركز ثقافية مغمورة في كردستان، دار موكرياني، اربيل.

١٨. عزت، الدكتورة فائزة محمد، ٢٠١١، الكرد في اقليم الجزيرة و شهرزور في صدر الاسلام، مطبعة خانى، دهوك.

١٩. كۆمەکا ڤەکۆلەران، ٢٠٢٠، کورد و هەرێما جزیرا فوراتێ، سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی.

٢٠. لونگريک، المستر ستيفن هيمسلي، ١٩٦٨، اربعة قرون من تاريخ العراق الحديث، مطبعة المعارف، بغداد.

٢١. محەمەد، د. ئاکۆ بورهان، ٢٠١٨، مێژووی میرنشینە کوردییەکان لە چاخی نوێدا، خانەی چاپ و بڵاوکردنەوەی چوارچرا، سلێمانی.

٢٢. محمد، ئاكۆ برهان، ٢٠٠٠، الحياة العلمية في دياربكر و جزيرة ابن عمر في القرن الخامس الى القرن السابع الهجرى، رسالة ماجستير، جامعة صلاالدين، اربيل.

٢٣. موفتی، عوسمان ڕەشاد، ٢٠٢١، زەینەب خان و چەند بیرەوەرییەک، خانەی موکریانی بۆ چاپ و بڵاوکردنەوە، هەولێر.

٢٤. هەژار، ١٣٥٩، دیوانی مەلای جزیری، سروش، تاران.

٢٥. هرورى، د. صلاح محمد سليم، ٢٠٠٤، امارة بوتان في عهدالامير بدرخان، اربيل.

٢٦. يوسف، عبدالرقيب، ١٩٧١، ديوانا كرمانجى، مطبعة الادب، النجف الاشرف.


## دور الامارات الكوردية في انبثاق مدرسة الشعر الكلاسيكي الكوردي إمارتا ( بۆتان و بابان) نموذجاً


**الملخص:**

أدى تأ سيس إ مارات كورد ية تحت زعا مة عائلات كرد ية حاك مة في ذ طاق الامبرا طوريتين العثمانية والايرانية، أدى الى و جود ما يشبه دو يلات كورد ية تتمتع بشيء من الحرية والا ستقلال مما خلق نوعا من الا ستقرار السيا سي سمح بدوره بتأ سيس ا لمدن وازد هار الحياة الاقتصادية والاجتماعية، وبالتالي أ حدث نهوضاً وتطوراً في مجالات التعليم والأدب والثقافة ۰ ونرى بأن الحكام والأمراء الكورد في كل من إقليمي (بۆتان و بابان) على سبيل المثال؛ قد تبنوا إيجاد وتأ سيس الجوا مع وا لمدارس الدينية ومرا كز التعليم المختلفة، والا شراف على عملها والانفاق عليها بسخاء وتوفير فرص التعليم والدرا سة لكل من يحتاجها ۰ فقد أدى هذا الوضع من جهة، الى خلق نهضة أدبية وثقافية را ئدة في نطاق إمارة بو تان ومركزها التاريخي مدينة الجزيرة على يد الشاعر الصوفي والعارف الرباني العتيد (مەلای جزیری / ١٥٦٧-١٦٤٠)، حيث تبنى الكورد ية -البوتانية كلغة أدبية للشعر والا بداع، مستلهماً كا فة الفنون والأ ساليب البلاغية الموجودة في الآداب الشرقية (العربية والفارسية)، فقد إستفاد منها ووظفها من ا جل خلق





Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وتدشين تجربة جديدة في تاريخ الأدب الكوردي؛ ألا وهو تثبيت أركان المدرسة الكلاسيكية في الشعر والادب الكوردي وذلك في القرن السابع عشر الميلادي. ومن جهة أخرى، إنبرى الشاعر (نالى شارەزووری /١٨٠٠-١٨٧٧) ليعيد التجربة وبشكل خلاق في نطاق الامارة البابانية ومركزها العتيد مدينة السليمانية، ليستكمل النصف الاخر من الخارطة الأساسية للمدرسة الكلاسيكية عن طريق تبني الكوردية-البابانية، مستفيداً أيضا من الأساليب والفنون البلاغية الأدبية العربية والاسلامية كما سبق أن استقدمها الجزيري الى نطاق الشعر والادب الكوردي. وبهذا فقد شكلت الامارتان الكورديتان في كل من بوتان وبابان الأرضية الخصبة والتاريخية لانبثاق مدرسة الشعر الكلاسيكي الكوردي بشقيها البوتاني والباباني خلال القرنين السابع عشر والتاسع عشر؛ وذلك على يد الشاعرين الملهمين والرائدين الجزيري ونالي

## The Role of the Kurdish Emirates in the Emergence of the School of Classical Kurdish Poetry: Two Emirates (Batan and Baban) as an Example.

**Abstract:**

The establishment of Kurdish emirates under the leadership of ruling Kurdish families within the scope of the Ottoman and Iranian empires led to the existence of what resembled Kurdish states enjoying some degree of freedom and independence, which created a kind of political stability that in turn allowed the establishment of cities and the prosperity of economic and social life, and thus brought about a rise and development in the fields of education and literature and culture. We see that the Kurdish rulers and princes in both regions (Botan and Baban), for example; adopted the creation and establishment of mosques, religious schools, and various educational centers, supervising their work, spending on them generously, and providing education and study opportunities for everyone who needs them. The well-known divine character (Malay Jaziri / 1640-1567), who adopted Kurdish-Botani as a literary language for poetry and creativity, drawing inspiration from all the arts and rhetorical methods found in oriental literature (Arabic and Persian). He benefited from and employed them in order to create and inaugurate a new experience in the history of Kurdish literature; which is to establish the pillars of the classical school in Kurdish poetry and literature in the seventeenth century A.D. On the other hand, the poet (Nali Sharazoori /1800-1877) endeavored to recreate the experience creatively within the scope of the Babani Emirate and its future center had become the city of Sulaymaniyah, to complete the other half of the basic map of the classicism school by adopting Kurdish-Babani, also benefiting from Arabic and Islamic literary rhetorical styles and arts as previously introduced by Al-Jaziri to the scope of Kurdish poetry and literature during seventeenth and nineteenth centuries. This was done by the inspiring and pioneering poets Al-Jaziri and Nali.

# ڕۆشنبیری زمان و ئەدەبی کوردی لە سایەی میرنشینی  بۆتان و میرنشینی بابان دا

**پ. د. پەخشان سابیر حەمەد**

بەشی زمانی کوردی -فاکەلتی ئاداب-زانکۆی سۆران /هەرێمی کوردستان عێراق

**پوختە:**

زمان و ئەدەبی کوردی بەشێکی بنچینەیی مێژووی کورد پێکدەهێنن،بەوەی هەنگاو بە هەنگاو لەگەڵ ڕێڕەوی دەسەڵاتە کوردییەکان ڕۆیشتون ،بە تایبەتتریش لە سەردەمی میرنشینەکاندا بونەتە ئاوێنەی دەربڕین لە بارودۆخ و ڕووداوە دیارەکانی نەتەوەی کورد،لە پاڵ مێژوودا توانیویانە بەشێک لە نەهامەتیەکان هەڵبگرن و لە یادەوەری کورددا بیچەسپێنن، بۆ ئەوەی دیوەکەی تری مێژوو بخەنە ڕوو.

تاقە ناوەندی فێرکردن لەو سەردەمانەدا مزگەوت بووە،کە ناوەندی خوێندن و بڵاوکردنەوەی ڕۆشنبیری بووە و چەندین ڕۆشنبیر و ڕووناکبیر و زانا و دانای کوردی پێگەیاندووە،ئەمەش ئەوە دەگەێنێت کە پێگەی مزگەوت هاوشانی قوتابخانە و زانستگاکانی ئەمڕۆ بوون  و هەموو ئەرکێکی فێربوونییان گرتۆتە ئەستۆ ئەمە لەلایەکەوە و لەلایەکی ترەوە بایەخدانی میری میرنشینە کوردییەکان بە فێربوون و ڕۆشنبیری کوردی دەگەێنێت،کە هەندێک لەو میرانە خۆیان  مامۆستا و شاعیریش بوون،ئەگەرچی خوێندن لەو ناوەندانە بە زمانی کوردی نەبووە ،چونکە سەرچاوەی ڕۆشنبیری و فێربوونیان بە زمانی کوردی لەبەردەستدا نەبووە،تەنیا سەرچاوە بە زمانەکانی عەرەبی و فارسی بەردەستبوون،بەڵام ئەم سەرچاوانە بوونەتە بناغەی نووسین بە زمانی کوردی و لەوەوە داهێنانەکانیان بە زمانی کوردی چەکەرەی کردووە ،کە فەرهەنگێکی دەوڵەمەندی زمانی کوردی دەنوێنن.سەرباری گێڕانەوە سەرزارەکییەکانی نێو خەڵک کە بوونەتە بەشێک لە ئەدەبی فۆلکلۆری وەک: حیکایەت و داستان و گۆرانی میللی،بەڵام ئەوەی مایەی سەرنجە هیچ سەرچاوەیەکی سەربەخۆ نییە،کە باس لە پرۆسەی فێرکردن وڕێڕەوی خوێندن لە سایەی ئەم میرنشینانە بکات،جگە لە پەراوێزی هەندێک لە سەرچاوە مێژووییەکان نەبێت ،یان چەند ریزێک لە نێو دەقە مێژووییەکان بەدیدەکرێت ،یان هەندێ ئاماژە لە نێو دێر و بەیتی شاعیرانی ئەم سەردەمانە و دواتریش،کە ئەمانیش ناتوانن تینوێتی لێکۆلەر بشکێنن،بەڵام دەبنە شایەدحاڵی ڕووداوەکان.

**وشە کلیلیەکان:** *میرنشینە کوردییەکان، ڕۆشنبیری،ئەدەبی کوردی، زمان، فێربوون، ئەحمەدی خانی، نالی، خوێندنی ئایینی*

**پێشەکی:**

لەگەڵ سەرهەڵدان و درووستبونی هەر میرنشینێکدا چەتری ڕۆشنبیری کوردی و بایەخدان بە زمان و ئەدەبی کوردی زیاتر هەڵدراون ،هەرچەندە مێژووی میرنشینە کوردییەکان بە ووردی نەنوسراونەتەوە ،بە بەراوورد بە نووسینەوەی مێژووی فارس و تورک و عەرەب و نەتەوەکانی تری دەوروبەر کە بایەخێکی زۆریان بە نووسینەوەی مێژووی خۆیان داوە،لە پاڵ ئەوەشدا مەگەر لە پەراوێزی بابەتە مێژووییەکاندا ئاماژەیەک یان چەند دێرێک لە بارەی پرۆسەی فێرکردن و زمان و نووسینی کوردی خرابێتە ڕوو،بۆیە هەست بە بوونی حەلقەی وون بوو دەکرێت ئەمە لە لایەکەوە و لە لایەکی ترەوە زمانی نووسینی فەرمانەکانی میرنشینەکان بە زمانی کوردی نەنوسراون،کە کاریگەریی زۆری لەسەر ڕێڕەوی نووسین کردووە،چونکە میرە کوردەکان ستراتیژیەتێکی تایبەتیان بۆ ئەم بابەتە نەبووە،تەنیا شاعیران ئەرکی ڕەوشتیی و ئەدەبیان خستۆتە خزمەتی زمان و نووسینی کوردی ،درکییان بە مەترسییەکانی بەردەم زمانی کوردی کردووە،لەم ڕوانگەیەوە لێکۆڵینەوەکەمان بۆ ((ڕۆشنبیری زمان و ئەدەبی کوردی لە سایەی میرنشینی بۆتان و میرنشینی بابان دا)) تەرخانکردووە،کە لێکۆڵینەوەیەکی بەراووردکارییە لە نێوان مامەڵەی میرنشینەکان لە تەک زمانی کوردی و ئەدەبەکەیدا و ڕێژەی بایەخدان بەم زمانە .

لێکۆڵینەوەکە بە پێی ڕێبازی _شیکاریی_ڕەخنەیی_نووسراوە،و بایەخی لێکۆڵینەوەکە لەوەدایە کە:

١ـ هەڵسەنگاندن بۆ فێربوون و ڕێڕەوی خوێندن لە سایەی میرنشینەکان دەکات.

٢-زمان و گەشەی زمانی کوردی لە میانی میرە کوردەکان چۆن بووە،دیاریدەکات.

٣_ئەدەبی کوردی بە گشتی و شیعر بە تایبەتی بە چ شێوازێک نووسراوە.

٤_میرەکانی سەر بە میرنشینەکان تا چەند ڕۆڵیان لە بنیادنانی شوێنی فێربوون هەبووە وتا چەند بەشدارییان لە پێشخستنی زماندا کردووە.

٥-حوجرەی مزگەوتەکان و مەلای ئایینی چ جۆرە بەشدارییەکیان لە ڕێڕەوی پرۆسەی فێرکردندا هەبووە.

ئەم لێکۆڵینەوەیە هەوڵ دەدات وەڵامی ئەو پرسیارە جەوهەرییە بداتەوە کە بابەتی زمان و ئەدەبی کوردی لە چوارچێوەی میرنشینەکاندا، سەربەخۆ تاوتوێ کراون ،یا لە پاڵ بابەتە مێژووییەکان و لە پەراوێزی گێڕانەوە مێژووییەکاندا باسییان لەبارەوە کراوە.

لێکۆڵینەوەکە بێجگە لە پێشەکی و دەروازەیەک لە : (***_زمان و ئەدەب...دیوەکەی تری مێژووی میرنشینەکان***)دەدوێت ،کە بە هۆی فراوانی بابەتەکە تەنیا کار لەسەر دوو میرنشین دەکات ،ئەوانیش: (میرنشینی بۆتان و میرنشینی بابان)ن.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لە پاڵ خستنەڕووی گرنگترین ئەنجامەکانی لێکۆڵینەوەکە و پوختەکەی بە هەردوو زمانی عەرەبی و ئینگلیزی،لە کۆتایشدا ئەو سەرچاوانەی بوونەتە مایەی دەوڵەمەندی لێکۆڵینەوەکە لە لیستێکدا خراونەتە ڕوو.

١- دەروازە

میرنشینە کوردییەکان لە نێو پانتایی دوو ئیمپراتۆریەتە زلەکەی عوسمانی و سەفەوی بوون،کە کاریگەرییەکی زۆر و نەرێنیان بەسەر میرنشینەکانەوە هەبووە،میرنشینی بۆتان ،هەکاری،سۆران،بابان لە سایەی عوسمانلی و ئەردەلان و موکریان لەسایەی دەوڵەتی سەفەوی بوون،ئەمەش ببووە مایەی سیاسەتێکی ناجێگیر،بەڵام (کورد لە ئەدەبدا ئازاو بوێر بوو هەر زوو جزیری و خانی و نالی و مەحوی دروشمی ناسنامەیان بەرزکردەوە،بەڵام لە سیاسەت و حوکمڕانی خۆخۆربوون چەندان کادری یەک بنەماڵە کەوتنە کودەتا لەسەریەک کردن،خودی دەستەواژەی میرنشین حوکمڕانیەکی ویراسی بنەماڵەیی بوو،دۆست نەبوو لەگەڵ ناسنامە(سەلام ناوخۆش:٨)چونکە بە پێی ئاخاوتنی د.فوئاد حەمە خورشید لە کتێبی (زمانی کوردی و دابەشبوونی جوگرافیانەی دیالێکتەکانی)دا کە(سەرباری دەرکەوتنی هەندێ دەوڵەت و میرنشینی کوردی سەربەخۆ یا نیمچە سەربەخۆ ،بە تایبەتی لە سەردەمە ئیسلامیەکان،بەڵام ئەمە دەرفەتی ئەوەی نەدا زمانی یەکگرتووی کوردی پێشبکەوێت،بەڵکو دیالێکتەکان زیاتر زەقکرانەوە ئەمەش بە هۆی سیمای ناوچەگەرێتی کە میرنشینەکانی پێ ناسرابوون و کە بووە مایەی هاندانی شێوە ئاخاوتنی ناوچەیی باو لە هەرێمەکەدا) (فوآد حمة خورشيد،١٩٨٣: ٢٨)،

بایەخدانی کورد بە لایەنی فێرکردن دەگەڕێتەوە بۆ چەندین سەدە،هەر لە سەدەی سیانزەهەم و چواردەیەمەوە،بزووتنەوەیەکی ڕۆشنبیری دیار لە کوردستان هەبووە،کە قوتابخانەی وەک:قوبان لە ئامێدی ،یەکێک بووە لە بەناوبانگترین قوتابخانەکان لە بادینان (کاوە فریق،١٩٨٥: ١٨٨)

زمانی عەرەبی هەر لە سەرەتاوە وەکو زمانی قورئان و حەدیس و زانستەکانی ئاین و شەریعەتی ئیسلام ،سەرچاوەی یەکەمی خوێندەواری بووە لە کوردستان و بەو هۆیەش بەشی هەرە زۆری شاعیر و ئەدیب و زانا و دانایانی کورد لە بەراییدا مەلا و زانای ئایینی بوون(عوسمان دەشتی:٧١)و زمانی فارسی لە هەموو خوێندنگا و مەدرەسە ئایینیەکانی کوردستاندا وەکو زمانی فەرهەنگ و شیعر و ئەدەب،هەمیشە ئامادە بووە و دەستی یەکەمی سەرچاوەکانی زمان و ئەدەبی فارسی بە تایبەت بەرهەمەکانی(سەعدی و حافز و جامی و مەولانا )بەشێک بوون لە بەرنامەکانی خوێندن (ئەمین عەلی ،١٩٧٣: ٧٢).

پێش دامەزراندنی میرنشینەکان گەلی کورد زمانێکی ئەدەبی تایبەت بە خۆی نەبوو،زانایان و هۆشمەندەکانی کورد ناچاربوون بە هەردوو زمانی عەرەبی و فارسی

بنوسن،بەڵام لە سەردەمی میرنشینە کوردییەکاندا ئەوە گۆڕا،شێوە زمانی کرمانجی بووە زمانی ئەدەبی کوردی لە بەشەکانی باکوور و ناوەندی کوردستان،ئەوەش لە دەوروبەری سەدەی یانزەیەمەوە ،ئەگەر گەشەکردنی کەلتووری بەتلیس لەو سەدەیەدا لەبەرچاو بگرین ئەوە لەوانەیە ئەوێ ئەو شوێنە بوبێ کە شێوە زمانی کرمانجی تێدا وەک زمانێکی ئەدەبی سەربەخۆ پێگەیشتبێ،لە هەمان سەردەمی مێژوویشدا شێوە زمانی گۆرانی وەک زمانێکی ئەدەبی لە کوردستانی بچوکدا(کوردستانی ئێرانی ئێستا)سەریهەڵدا و بووە زمانی ڕەسمیی کۆشک و سەرای میرەکانی ئەردەڵان کە هانی شاعیرەکانیان دەدا پێی بنوسن.

لە کوردستانی باشوریشدا (کوردستانی ئێستای عیراق)شێوە زمانی سۆرانی بووە زمانی ئەدەبی زۆربەی کوردان ئەوەیش لە ئەنجامی هەوڵ و کۆششی میر عەبدولڕەحمان پاشای بابان لە کۆتایی سەدەی هەژدەدا،هەروەها سۆرانی وەک زمانی ئەدەبی تەشەنەیکرد بۆ کوردستانی ڕۆژهەڵاتیش دوای ئەوەی کە شێوە زمانی گۆرانی لە لایەن پاشاکانی قاجارەوە قەدەغەکرا (سەعد بەشیر،٢٠٠٤: ١١) هەرچەندە(لە سەرەتای سەدەی شازدەدا ئەو دوو ئیمپراتۆریەتەی عوسمانی و سەفەوی نەیانهێشتووە هەرێمە کوردییەکان ئاسایشێکی تا ڕادەیەک دوورودرێژ بە خۆوە ببینن چونکە شار و دێهاتەکانی کورد هەمیشە گۆڕەپانی زنجیرەیەک شەڕی خوێناوی درێژ بوون لە نێوان ئەم دوو هێزە زەبەلاحەدا)(سەعد بەشیر: ٦٧)

لە شەرەفنامەدا ئاماژە بەوە کراوە کە بەتلیس سەرەڕای هێرش و پەلاماردانی ،بەڵام لە باسکردنی خوێندنگا و مزگەوتەکانی کە چەندین زانا لە بوارە جیا جیاکاندا پێگەیاندبوو وەک بواری مێژوو و فیقهو تەفسیر و فەلسەفەی سۆفیگەری و زمان، گەلێ کەسایەتی سۆفی و شاعیر و زانایانی وەک :عەبدولڕەحیمی بەتلیسی پسپۆڕ لە فیقهو تەفسیر،محەمەد بەیڕەقعی پسپۆڕ لە فیقهو زمان،حیسامەدین چەڵەبی پسپۆڕ لە سۆفیگەری و کوڕەکەی مێژوونووس و دیپلۆمات ئیدریسی حەکیم هەبوون(شەرەفخانی بتلیسی:٣٤٩،٣٥٥)

خۆی لە خۆیدا دەرکەوتنی شەرەفخانی بتلیسی مێژوونوس و ئەحمەدی خانی شاعیر لە نێوان سەدەی شازدە و حەڤدەدا ڕووداوێکی فەرهەنگی و کلتووری زۆر بایەخدار بوو،چونکە لە لایەک(شەرەفخان تەختی میراتی بۆ کوڕەکەی خۆی بە جێهێشت بۆ ئەوەی دەست بەتاڵ بێ بۆ نووسینی گۆڕانکارییە سیاسیە گرنگەکانی کە لە کوردستان ڕوویان دەدا ئەویش بە باسکردنی مێژوی میرنشینە کوردیەکان بە درێژایی پێنج سەدە[لە نێوان سەدەی دەیەم و سەدەی شازدەیەمدا)،وازهێنانی شەرەفخان خۆی لە خۆیدا نیشانەیەکە بۆ هەستکردن بە گرنگێتی نوسین بۆ خۆی و بۆ غەیری خۆشی،شەرەفخان سەردانی گەلێ لەو میرنشینانەی کردووە و زۆر لە میر و مێژوگێڕەوەی دیوە و گەلێ کتێبیشی خوێندۆتەوە) (سەعد بەشیر:١١٨_١١٩)، چونکە خوێندەوارمان کە شادەمارمانن لە فێرگەی داگیرکەراندا زمان و ئەدەبیاتی بێگانەیان پێ خوێندراوە و ڕەسەنی و پێکەوتویی و پایەبەرزی خۆیان و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

نزمی گەلانی ژێر دەستەیان فێرکردوون و زمان و دڵ و دەست و قەڵەمیان بۆ خۆشەویستی ئاغا و خێزان و خزمی ڕاهێندراوە و دادراوە و ئەوسا پێیان سپێراوە،نەخوێندەوارە ساویلکە و بەستەزمانەکەیان بۆ بەردەست و بێ هەست بکەن (شەرەفخانی بتلیسی ،٣٥_٣٦)،لە لایەکی ترەوە ئەحمەدی خانی کە پیاوێکی ئایینی و شاعیرێکی گەورەو هۆشمەند بووە و تەنانەت بۆتە هێمای سەربەخۆیی نەتەوەی کورد ،بە جۆرێک(شیعرەکانی لە لایەن مامۆستا و خوێندکار و خەڵکە ڕەمەکیەکەشدا ئەزبەر کرابون وەک چۆن سورەتی قورئان لەبەر دەکران)(سەعد بەشیر:١١٨)بە واتای شەرەفخانی بتلیسی و ئەحمەدی خانی دوو جەمسەری ڕۆشنبیری کوردییان لەو سەردەمەدا پێکهێناوە،تاکو ئێستاش بەردەوامی هەیە، شەرەفنامە و مەم و زین هاوتا بوون لە کاریگەری و هۆشیار کردنەوەی میللەتی کورد و پێگەیاندنی ،لە کاتێکدا شەرەفنامە بە زمانی فارسی نوسراوە و مەم و زین بە کرمانجی سەروو،ئەویان بە پەخشان و دەقێکی مێژووییە و ئەوی تریان شیعرە ، چونکە هەردوکیان بناغەیەکیان بۆ کورد پێکهێنا و بوونە ناسنامەی نەتەوەیی ،ئەکادیمی _ی.ئوربیللی،دەڵێ:کاتێ دەڵێن شاعیرو نوسەر نزیکن لە میللەتەکەیان و پەیوەستن بە میللەت و جەماوەر،یەکسەر دەبێ سێ شاعیر بە بیر بێنینەوە:فردۆسی ئێرانی و روستافیللی جۆرجی و ئەحمەدی خانی کوردی (عزالدین مصطفی،١٩٧٩: ٩)هەرچەندە سەدەی حەڤدەهەم کە خانی تێدا ژیاوە سەدەیەکی پڕ لە ململانێی توند بوو لە نێوان میرنشینەکان و ئیمپراتۆریەتی فارسی و عوسمانی کە دەیانویست کوردستان داگیر بکەن.

زاناکانی ئایینی لە تەک میر حوکمی ئیمارەتەکەیان کردووە،وەک چۆن نیکیتن_Nikitine باسی دەکات ،لەو زانایانەی کە پایەی تایبەتیان لای ئیمارەت هەبووە،لەسەرجەم ناوچەکانی کوردستان دوو زانان :ئەوانیش:مەلای خەتێ(لەدایکبوی ١٧٨٥ز)و مەلا یەحیای مزوری(١٨٣٩ز کۆچی دوایی کردووە) (جەمال نەبەز،٢٠١٩: ٥٨)،لە کاتێکدا چەندین تۆمەت وەک چۆن دراوەتە پاڵ مەلای خەتێ ،بە هەمان شێوە ئاراستەی مەلا یەحیای مزوریش کراوە،هەرچەندە هەردووکیان زانا و لێهاتوو و پڕ مەعریفە بوون.

محەمەدئەمین زەکی بەگ(١٨٨٠_١٩٤٨)لە کتێبی (خولاسەیەکی تەئریخی کورد و کوردستان) دا دەڵێ:

(دائیر بە لەهجەی سنە وەسیقەیەکمان بە دەستەوە نییە،بەڵام زمانی هەورامی_گۆرانی_بە گوێرەی غەزەلیاتی و داستانە موهەیج و پڕ مەعناکانی شوبهە ناکرێ ،کە ئەدەبیاتێکی واسع و شیرینی هەیە،والی ئەردەلان لە سەرای خۆیدا بە سورەتی خسوسی تەشویق و تەشجیعی شیعر و ئەدەبیاتی ئەم زمانە ئەکا و بێ شک ئەم لەهجەی شیعرە ،لە زمانی خەڵق جوێیە)(محەمەد ئەمین زەکی،١٩٣١: ٢١١)

لێرەدا پەنجە بۆ ڕاستیەکی مێژوویش درێژ دەکرێ، ئەویش ئەوەیە کە میرەکانی ئەردەڵان زیاد لە زۆربەی میرانی کورد پشتی شیعر و شاعیرانیان گرتووە وبرەویان بە وشەی جوانی داوە،ڕەنگە هەر دەنگدانەوە و ڕەنگدانەوەی ئەمەش تینی بە گوڕی شیعری ناو جافی سەردەمی وەسمان پاشا و خانمیش دابێ،کە لەو سەردەمەدا هەڵبجە مەڵبەندی شاعیران بووە (عـــزەدین مســـتەفا،١٩٨٨: ٢٥) تەنیـــا مێژونوســـی ئـــافرەتی ڕۆژهەڵاتـــی ناوەڕاســـتی ســـەدەی نـۆزدەیەمە،کە سـەرباری شـاعیرێتی،لە بـواری زانسـتە ئیسلامیەکانیشـدا شـارەزایی هەبـووەو بەرهەمی زۆری جێهێشتووە.

خوسرەوخانی گەورەی والی ئەردەڵان(؟ __ ١٧٩١ز)هێشتا خۆی لە ژیاندا بووە،کە قازی مـحەمەد مەلا شــەریفی ئەردەڵانــی بــۆ نوســینەوەی مێــژوی ئەردەڵان ڕادەســپێرێت،ئەویش مێژویەکی بە ناوی(زبدة التواريخ)دەنوسێت،دوای ئەویش محەمەد ئیبراهیم ئەردەڵانی لەسەر داوای ئەمـانوڵلا خـانی گەورەی والـی ئەردەڵان(١٧٧٥__١٨٢٤ز)ڕاسپێردراوە ئەمیش مێژویەکی بە شێوەیەک نوسیوە کە وەک تەواوکەری مێژوەکەی شەرەفخانی بتلیسی وایە،لەو کاتەوە دەست پێ دەکـات کە (شـەرەفنامە)دوایی دێـت و نـاوی نـاوە (ذیـل شـرفنامە)واتە پاشـکۆی شــەرەفنامە ،دوای ئەمــانیش چەنــدین مێژونوســی تــر دەرکەوتــون و(لــب تواریخ),(تــاریخ اردلان)،(حدیقـــە ناصـــری)،(تحفە ی ناصـــری)یان نوســـیوە(محەمەدی حەمە بـــاقی:پەراوێزی ژمـارە_١: ٢٩)بە زمـانی کـوردی نەنوسـراون بەڵام ناوەڕۆکەکەیـان لە خزمەتـی ڕۆشـنبیری کوردیدایە.

هەرچەندە سەرەتا ململانێ لە نێوان هەردوو میرنشینی ئەردەڵان و بابان هەبوو ،بەڵام لە کۆتایی سەدەی هەژدەیەم و نۆزدەیەمدا نزیکبونەوەیەکی زۆر و خزمایەتی و تێکەڵیەکی هەمە لایەنە لە ناویانـدا دروسـتبوە، هەر بـۆیە لە کـاتی لێقەومانـدا پەنایـان بـۆ یەکتـر بردووە،دواجـاریش کە خـۆری مـاڵبـاتی ئەردەڵان بەرەو ئـاوابون دەچێـت ،ماهشـەرەفخانم لەگەڵ خەڵکێکـی زۆر ئەردەڵان بە جێـدەهێڵن و لە پـایتەختی بابانـدا پێشـوازیان لێـدەکرێت(ئارام عەلی،٢٠١٩).

میرنشـــینە کوردیەکـــان بەوە جیـــا دەکـــرانەوە کە بە گشـــتی سروشـــتێکی سێکوچکەداری (بنەماڵەیی_فیوداڵیزمی_ئایینی)بوونە،لە نێوانیاندا چەندین میری بە توانا و بەهێزی تیا هەڵکەوتووە،...،بەتـایبەتی لە ڕووی فراوانخوازی و دەسـتداریان کە وڵاتـی زلهێزی دەوروبەر حیسـابیان بـۆی کـردووە،بە تـایبەتی میر مـحەمەدی ڕەوانـدزی و میـر بەدرخـان پاشـای بۆتان و میر عەبدولڕەحمان پاشای بابان(ئاکۆ بورهان، :٧)ئەمە لە لایەک و لە لایەکی ترەوە لە ڕووی مەعریفە و گرنگیدان بە زانسـت و فێربـوون ،هەرچەنـدە لەمەیانـدا میـر مـحەمەدی ڕەواندزی زیاتر خەریکی شەڕوشۆڕ بووە،بە پێی سەرچاوە مێژووییەکان تەنانەت درووسـتکردنی مزگەوت و پردیش زیاتر بۆ پاڵپشتی بەرژەوەندیخوازییەکانی بووە،نەک پێشخسـتنی میللەتە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ڕەشوڕووتەکەی،بۆ ئەم مەبەستە کاوس قەفتان دەڵێ:( میری سۆران وولاتەکەی پڕکردبوو لە قەلا ،پردێکی زۆری لەسەر ڕووبارەکان درووست کرد[کە بۆ هاتوچۆی سەربازەکان بوو]بەلام قوتابخانە،مزگەوتێک،حوجرەیەکی نەکردەوە، ئەو هەموو شەڕو شۆڕانەشی ئەیکردن زیانێکی زۆری بۆ میللەتەکە هێنا و بێزاری کرد)(کاوس قەفتان:٥٥)کەچی لە هەندێ سەرچاوەی تردا بیروڕای تر خراوەتە ڕوو،بۆ نموونە:جەمال نەبەز لە کتێبی _میری کورد_دا دەڵێ: لە ئیمارەتی سۆران مزگەوت و قوتابخانەی زۆر هەبوون ئەمە میری کۆرە ئەیکرد،بەلام جگە لە زۆربوونی ژمارەیان شتێکی دیکە نەبوو،بوونی ئەم قوتابخانانە بە مانای ئەوە نایەت ئاستی ڕۆشنبیری بەرز بوبێتەوە،یان لانی کەم ئەم قوتابخانانە میللەتیان لە نەخوێندەواری و نەزانی پاراستووە،چونکە میری کۆرە دەسەلاتدارێکی نەزان نەبووە،بەڵکو ڕۆشنبیرێکی ئایینی بنەڕەتی هەبووە(جەمال نەبەز، ٢٠١٩ :٧٣_٧٤)،ئەم ڕایە لەگەڵ ڕاکەی(نیکیتن)یەکدەگرێتەوە کە ئاماژەی بە درووستکردنی قوتابخانەی زۆر لە لایەن (میر محەمەد)ەوە کردووە بەلام ئەویش ناوی قوتابخانە و ژمارەی قوتابخانەکانی نەخستۆتە ڕوو.

لە ١٨٦٧دا میرنشینی ئەردەلان کۆتایی پێهێنراوە،میرنشینی بابان دوا میرنشین بووە،ئەم دوو میرنشینە دەورێکی گرنگیان لە گەشەی زمان و ئەدەبی کوردیدا هەبووە و بەشی شێریان بەردەکەوێت لە خزمەتی کلتوور و فەرهەنگی زمانی کوردیدا،بۆتان و هەکاریش بە پلەی دووەم دێت و میرنشینی سۆران بە پلەی سێیەم،ئەمە و(میرنشینەکانی ئەردەلان و بابان هەمیشە بە جمک دادەنێن،هەرچەندە ئەمەش پێناساندنێکی خۆشە،بەلام ناتوانین لەگەڵیدا بین بە هۆی جیاوازیانەوە لە ساڵی لەدایکبوونیان کە چەند سەد ساڵێک دەبێ،ئەگەر زاراوەکانی خزمایەتیشیان بۆ بەکاربەرین ناتوانین تەنانەت بە براشیان لە قەڵەم بدەین،چونکە هەندێ ناوچەی میرنشینی ئەردەلان لە سەدەکانی زووی دامەزراندنی بوون بە زەوی و موڵکی بابان)(ی.ئی.ڤاسیلیەڤا:٤٥)

هاوکات جگە لە دەستێوەردانی دەرەکی و هەروەها سیاسەتی ناوەندگەرایی(سێنترالی)دەوڵەتی عوسمانی بۆ کۆتایی هێنان بە دەسەلاتی تەواوی میرنشینە کوردییەکان و گەڕانەوەی دەسەلاتی ناوەنگەری دەوڵەتی عوسمانی بۆ ناوچە دوورە دەستەکان،هەموو ئەمانەش بوونەتە مایەی ئەوەی کە ئەم میرایەتییەی کوردیش لە بارببرێت و کۆتایی بە دەسەلات و حوکمڕانیەتی بهێنرێت (ئەحمەد باوەڕ،٢٠١٧: ١٣).

سلێمانی یەکەمین شاری کورد بوو،کە مەدرەسەی عیلمانی یانی(مەکتەبی ڕوشدیە)ی تێدا کرایەوە،لە ساڵی ١٨٩٣ دەستی بە کار کرد،قوتابخانەیەکی دووهەمین بوو ،بۆ ئەو قوتابیانە کرایەوە کە مەدرەسەی ئاساییان تەواو دەکرد و دەیانویست لە سوپادا دامەزرێن(جۆیس بلاو،٢٠١٥: ٢١)و یەکەم کتێبی چاپکراوی کوردیش لە دیاربەکر لە ساڵی

١٨٩٩ بلاوكراوەتەوە (نەجاتی عەبدوڵلا،٢٠٢٢: ١٤٥)چونكە ئەو كتێبە بەناو كوردییانەی لە نێوان ساڵانی ١٧٨٧_١٨٩٢ بلاوكراونەتەوە بە ئەلف و بێی زمانی تر بوون،تەنیا شیعر بۆ گوێدانە چاپكردن و بوون بە كتێب،هەر لە سەدەی دوازدەهەمەوە بە زمانی كوردی نووسراوەتەوە،هەرچەندە زمانێكی تێكەڵ بووە ،بەڵام بنچینەكە كوردی بووە.

واتە سلێمانی (لە ماوەیەكی زۆر كورتدا بووە مەڵبەندی رووتێكردنی زانایان و رووناكبیران و شاعیرانی هەرە گەورەی ئەو رۆژگارەی كوردەواری وەك:شێخ مارفی نۆدێی (١٧٥٣_١٨٣٨)، و مەولانا خالیدی نەقشبەندی ١٧٧٩_١٨٢٧ز......هتد،بە هەموشیان فەرهەنگێكی دەوڵەمەندیان خستە سەر خەرمانی فەرهەنگ و ئەدەبی كوردی(محەمەد حەمە باقی،٢٠٠٢: ١٥_١٦)،هەرچەندە زۆربەی كتێبەكانی مەولانا بە فارسی نوسراون (بۆ زانیاری لە بارەیانەوە بڕوانە:مەلا عەبدولكەریمی مودەڕیس،٢٠١١: ٥٦_٥٧)، ئەوەی مایەی سەرنجە كە شێخ مارفی نۆدێی نامەی بە زمانی عەرەبی كە بە مەزەندەی نەوشێروان مستەفا بۆ مەحمود پاشای بابان نوسیبێت (نەوشێروان مستەفا،١٩٩٨: ١٥٣)، هەر لەبەر ئەوەشە كە (ئەحمەدی)نوسیوە تا كاكە ئەحمەدی كوڕی فێری زمانی عەرەبی بێت،بەڵام بۆ نامە بە زمانی عەرەبی بۆ میرێكی كورد دەنوسێت،ئەمە مایەی پرسیارە.

لە ناوچەی بابان لە سلێمانی ،دوانزە سوارەی مەریوان لە كاتی شەڕدا تەپڵ و ئامێرە مۆسیقایەكانیان بەكاردەهێنا (فەرهاد پیرباڵ:٩٧)كە ڕەنگدانەوەیەكی فراوانییان لە نێو بەیت و شیعری میللی و ....هتد هەیە،ئەمە جگە لەو بەیت و داستانە جوانمەردانەی وەك:سوارۆ(شەریف هەمەوەند)،عەزیز و تەكش ،دمدم،.....هتد (كامەران موكری،١٩٨٤: ٦٥ تا ٦٩).

لەگەڵ كۆتایهاتنی دەستەڵاتی ناوخۆی میرنشینە كوردییەكان(بابان ١٨٤٧، بۆتان ١٨٤٧،هەكاری ١٨٤٨،بادینان ١٨٤٨،ئەردەلان ١٨٦٨)لە هەمان كاتدا كۆتایی بە دەستەڵاتی سەرۆكهۆزەكانیش هات،كە تا ئەو دەم دەستەڵاتی ناوخۆی كۆمەڵی كوردەوارییان لە بندەستدا بوو (نەجاتی عەبدوڵلا،٢٠٢٢: ٦٩)

هەر لە سەرەتادا دەوڵەتی عوسمانی خزمەتگوزارییە فێركردنەكانی نەخستە ئەستۆی خۆی ،بۆیە دام و دەزگا فێركارییەكانی نەخستە ئەستۆی خۆی ،دام و دەزگا فێركارییەكان پەیوەست بوون بە كتاتیب و قوتابخانە ئاینییەكان ،كە ئەركی پەروەردە و فێركردنیان لە ئەستۆ گرتبوو (ابراهیم خلیل،١٩٩٢: ٣٣٣)،ئەم كەمتەرخەمییەی دەسەڵاتی عوسمانی كاریگەریی خراپ و نەرێنی خستە سەر كوردستانیش و ڕێژەی نەخوێندەواری بە پێی كات زیادی دەكرد،تەنانەت تا كۆتاییەكانی سەدەی نۆزدەهەم بەردەوامی هەبوو،وەنەبێت ئەمە تاكە هۆكاری بەرزبوونەوەی ڕێژەی نەخوێندەواری بێت لە كوردستان ،بەڵكو خۆشیان خەریكی كار و كەسابەت بوون ،كەمێكییان نەبێت كە خولیای فێربوونییان هەبووە.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

هەر لەبەر ئەوەشە حاجی قادری کۆیی هاوێشەیەک دەخاتە ڕوو کە هاوسەنگی تێدا بەدی ناکات،دەڵێ:

کتێب و دەفتەر و تەئریخ و کاغەز
بە کوردی گەر بنوسرایە زمانی
مەلا و میر و شێخ و پادشامان
هەتا مەحشەر دەما ناوونیشانی

بە لەناوچوون و هەڵوەشاندنەوەی میرنشینە کوردییەکان پرۆسەیەک دەستی پێکرد ،سەرباری نائومێدی ،کورد وورده وورده درکی بە بایەخی فێربوون و خوێندن و ڕۆڵییان لە بنیادنانی وڵات و پێشکەوتنیدا کرد،هەرچەندە(سەر لە نوێ بە تایفە و عەشیرەت کردنەوەی کوردستان،کە هاوکات بوو لەگەڵ پرۆسەی بەناوبانگی سەرهەڵدان و دەرکەوتنی شێخەکان بۆ ڕابەرایەتی کردنی کۆمەڵگەی کوردی ،لە ناوبردنی خاڵەکانی لە دەورکۆبونەوەی کۆمەڵگەی کوردی و نەتوانینی ئەوەی کە بە تەواوەتی بۆشایی دەسەڵات پڕ بکرێتەوە(ئەتەش سەبری:١٠٧) .

ئەگەر کورد لە دەوری یەکگرتووییدا کۆببونایەتەوە ،بە سایەی میرنشینەکانیانەوە دەیانتوانی بەشدارییەکی چالاکتر نەک تەنیا لە سیاسەت،بەڵکو لە ڕۆشنبیری و خوێندن و خوێندەواری دا بکەن.

**٣_زمان و ئەدەب...دیوەکەی تری مێژووی میرنشینەکان**

**٢ـ میرنشینی بۆتان**

سەرچاوەکان جگە لە زانیارییەکی کەم نەبێت لەبارەی مێژووی میرنشینەکە لە ماوەی سەدەی هەژدەهەم، شتێکی تریان نییە، کە دوای ساڵی ١٢٤٧ز درووستبووە،هەر خۆی (مێژوی سەرهەڵدان و دروستبوونی هەندێک لە میرنشینەکان تەمومژاوین،وەک مێژوی میرنشینی بۆتان،کە مێژونوسەکان تەنیا لەسەر ئەوە ڕێککەوتون کە _سلێمان کوڕی خالید_یەکەم میر بووە،کە فەرمانڕەوایی ئەم میرنشینەی کردووە) (صلاح هروری،٢٠٠٠: ١٦)و شاری جەزیرە ناوەندی میرنشینەکە بووە و (چوار میر فەرمانڕەواییان کردووە ،لەوانە میر ئەبدال باوکی میر بەدرخان بەگ،بەناوبانگترین میرەکانی بۆتان(کامیران عبدالصمد، ٢٠٠٦ : ١١٥)،میر بەدرخان یەکێک بووە لەوانەی کە کاروکردەوەکانی لە پێناو میرنشینی بۆتان دا مایەی سەرنج بووە، (بەدرخان بەگ کە نەوەو نەتیرەی یەکێک لە کۆنترین ماڵباتی کوردستانە و لە ساڵی ١٨٢١ میری بۆتان بووە،ئەم ڕێباز و ڕێچکەیەی گرتەبەر لە کێشەی فیودالیانەی نێوان میرانی کوردو سوڵتاندا و یەکەمین کەسە کە مەوداو ڕەهەندی نەتەوەیی بەم کێشانە بەخشی و وەکو باوکی ناسیونالیزمی کورد لە مێژودا جێی خۆی گرت)(کرێس کۆچێرا، ٢٠٠٦: ١٣) ڕۆشنبیری میر بەدرخان دواتریش هەر لە نێو ڕۆشنبیری


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

زمان و ئەدەبی کوردیدا ڕەنگیداوەتەوە، بەوەی کە یەکەمین ڕۆژنامەی کوردی لە لایەن نەوەی بەدرخان [مەدحەت بەگ بەدرخان] لە ساڵی ١٨٩٨ بەناوی کوردستان لە قاهیرە دەرچووە و ژمارەیەک لە نەوەکانی میر بەدرخان لە بزاڤی نەتەوەیی کوردا بەشداریان کردووە و کەم و زۆر دەوری گرنگیان گێڕاوە(بۆ زانیاری زیاتر بڕوانە: کریس کۆچێرا،٢٠٠٦)دوای ڕوخانی میرنشینی سۆران و بادینان ،نە کەسایەتیەک ،نە هێزێکی بەتوانا کە کورد لە دەوری کۆببنەوە لە گۆڕەپانەکەدا بەدینەدەکرا ،جگە لە میرنشینی بۆتان و میر بەدرخان نەبێت(صلاح هروری:٦٠)،لە کاتێکدا میر بەدرخان هاوسەردەمی میر محەمەدی ڕەواندزی بووە و مالمسانژ بە (باوکی بزوتنەوەی نەتەوەیی کورد)ناوزەدی کردووە،میر بەدرخان لە جەزیرە بووە ،کە (مەم و زین)ی (ئەحمەدی خانی)یش هەر لە جەزیرە دا بووە،ڕووداوەکانی ئەم داستانە شیعرییە لە دەوری جەزیرە سوڕاوەتەوە ولەبەر دەستی میرە بۆتانییەکانیش بووە،کە بەوە ناسراون باوەشیان بۆ نوسەر و شاعیران ئاوەڵا بووە،بە تایبەتیش کاریگەری لەسەر میر بەدرخان هەبووە،کە قوتابی بۆ دەرەوە شاند دەکرد تا پسپۆڕی لە دروستکردنی چەک بهێننەوە(مالمسانژ: ٣٩)،بۆیە(دەسەڵاتی عوسمانی هەوڵی دەدا میر بەدرخان بخاتە ژێر ڕکێفی خۆیەوە،بە ڕێگای ئاشتی،بۆیە حافیز پاشا لە شوێنی کارەکەی لە ئەرزەڕۆم( مەلا مەحمودی بایەزیدی)ڕاسپارد بە ئەنجام دانی ئەم کارە لەگەڵ میر بەدرخان ،....،هەوڵەکەی مایەی ڕەزامەندی بوو)(جلیلی جلیل، :١٣٢) تەنانەت دوای دانوستانی حکومەتی عوسمانی لە ئەرزەڕۆم لەگەڵ مەحمود خان مەلا مەحمودی بایەزیدی کاری وەرگێڕانی بۆ کردووە ،چونکە مەحمودخان جگە لە زمانی کوردی ،زمانی تری نەزانیوە(جەلیلی جلیل:سەرچاوەی پێشوو).

میر بەدرخان هەمیشە هەوڵی پاراستنی زمانی کوردی داوە،تەنانەت کاتێک لە تاراوگەش بووە، نەوەکانی کۆکردۆتەوە و پێی وتون:(دەترسم زمانەکەتان لە نێو تورکاندا وون بکەن ،ئەگەر زمانەکەتان وون بکەن ،وڵاتی بۆتانیش وون دەکەن،بۆیە دەمەوێ لەگەڵ خێزان و منداڵەکانتان بە زمانی باب و باپیرانتان بئاخفن،ئەوەی وا نەکات منداڵی من نییە) (مالمسانژ:١٧).

حاجی قادری کۆیی لە ئەستەنبۆڵ ماوەیەکی دوورودرێژ ژیا،بە بنەماڵەی بەدرخانیەکان گەیشت و بوو بە مامۆستای تایبەتی کوڕەکانی ئەو خانەوادەیە،لە لای ئەوان دیپاجەی (مەم و زین)ی ئەحمەدی خانی خوێندەوە(دیوانی حاجی:١٣)و هەر لە ئەستەنبۆڵ واتە لە غوربەتی بووەتە دۆستی گیانی بەگیانی (کەیفی)ی شاعیر،حاجی لە هەندێ لە شیعرەکانیدا ئاماژەی بە میرنشینی بۆتان داوە ،دەڵێ:

خاکی جزیر و بۆتان ،یەعنی وڵاتی کوردان

سەد حەیف و سەد مخابن ،دەیکەن بە ئەرمەنستان.....(دیوانی حاجی:٨٥)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

یان:

کوا والی سەنەندوج،بەگزادەیی ڕەواندوز

کوا حاکمانی بابان،میری جزیر و بۆتان..........(دیوانی حاجی:٨٦)

ئەحمەدی خانی هێز و شیانێ میرێ جزیرێ و ناڤداریا وی د نێڤ عەرەب و ترک و فرسا دە دڤان مالکێ ژیری دە ددە کفشێ و دبێژە جهێ شەهنازی و سەرەفرازیا گەلێ کوردە(عبدالفتاح علی،١٩٨٨: ١٢٨)دەما دبێژی:

کو پادشەک زەمانێ سابق

ڕابوو د حکومەتا خوە فائق

.......................................................

ڕۆم و عەرەب عەجەم د فەرمان

مشهود ب ناڤێ میرێ بوهتان

(حاجی قادری کۆیی)ش درکی بە مەترسیەکانی دوای میر بەدرخان کردووە ،بۆیە دەڵێ:

بەدرخانیو لەسەر لاچێ لەمەو پاش

لە هەر لایی دەتان هاڕن وەکو ئاش

هێرشی عوسمانیەکان بە پێشڕەوی عوسمان پاشا بۆ سەر جەزیرەی بۆتان ،بە مەبەستی لەناوبردنی حکومەتی سەربەخۆی میر بەدرخان لە نێو گۆرانی و لاوکی چەندین لاوکبێژ و گۆرانیبێژ تۆمارکراون ،نموونەی:سەعید ئاغا،عەزیز ئاغا،مریەم خان ،کاوێس ئاغا،و چەندینی تر(عبدالفتاح علی،١٩٨٥: ١٥٤)کە ئەمانەش وەکو دەقی گۆرانی مێژوویی دەبنەپاڵپشت بۆ هەندێک لێکدانەوەیی ڕووداوە مێژووییەکان،بۆ نموونە کاوێس ئاغا لە وەسفی میر بەدرخان و ئازایەتیەکەی دبێژە:

لێ لێ میرۆ لێ لێ میرۆ لێ لێ میرۆ لێ لێ میرۆ لێ میرۆ

ملێ خانی خۆش ملێ خانێ

بەژنا بەدرخان بەگ زراڤا مینا بنا تلا بنا ریحانێ

شەمۆیێ دێرشەوی کرا گازی:

وەسمان پاشا کوچک باب

دەستێ بابێ تیلێ میرێ بۆتا شێرێ کوردا

بتە نایێ گرێدانێ

دە لۆ لۆ .....لۆ لۆ

لەمەتێ دەنگێ تۆپان و جبەخان و لەپەیمەتێ

حەیفە بۆ مخابنا دلێ مە دمینێ

کوچکێ کۆشتەرێ ڕۆمیا کەتنە شارێ جزیری بۆتا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەیلۆ بابۆ ل من خراب دکن جێ یێ ئاغان و عەشیرەتێ.

.(عبدالفتاح علی،١٩٨٥: ١٥٦)

ئەمە لاوکێکی دورودرێژە و بە ووردی بەسەرهاتە مێژووییەکە دەگێرێتەوە و دەکرێ بۆ پاڵپشتی دوو لایەن سوودمەند بێت،یەکەمیان: خودی لایەنە مێژووییەکە و چۆنیەتی بەسەرهات و بەراووردکردنی بە گێڕانەوەی نێو خودی مێژوو بە ڕووە زانستەکەی، دووەمیان: وەکو لاوک لە ڕووە ئیستاتیکا و هونەر و ڕەگەزەکانی لاوکی مێژوویی و کاریگەریی بەسەر بەرهەمەکانی تردا ،یا سوودوەرگرتن لێی بۆ دامەزراندنی لاوکی هاوشێوە،واتە بێجگە لە ناوەڕۆکەکەی ،تەکنیکی گێڕانەوەکانیش بایەخی تایبەت بە خۆیان هەیە.

مەلا خەلیل (١٧٥٦_١٨٤٣ز)لە شاری سێرت مودەریس و دەرس بێژی فەرهەنگ و مەعاریفی ئیسلامەتی بووە و چەند کتێبی بە زمانی کوردی هەیە ،وەکو :( نهج الانام)لە زانستی عەقیدەو ئایدیۆلۆجیدایە و لەسەرزار ڕەوانە،وەکو _نوبهار_ی ئەحمەدی خانی وایە ،مەلا خەلیل گەورەترین و بەناوبانگترین زانای دینیی ڕۆژگاری سەدەی ١٨ و هاوتای(محەمەد ئیبنو ئادەم)و(مەلا یەحیای مزوری)بووە ،عبدالرقیب یوسف لە (دیوانا کرمانجی)دا نوسیویەتی:تا ٣٠ کتێبی (مەلا خەلیل)م دیوە و دەزانم هەیە(محەمەد ساڵح:٥٢٧) ،مەلا یەحیای مزوری پایەیەکی بەرزی لە زانستدا هەبوە و بە(شیخ الکل فی الکل)ناسراوە،مەلا یەحیا لەسەر داخوازا(زوبەیر پاشایێ کوڕێ ئیسماعیل پاشایی)میرێ ئامێدیێ مەلا یەحیا ل سالا ١٨٠٨ز شەرحەکب زمانێ فارسی ل سەر شعرا مەلایێ جزیری (مەغبەچەیێن مەیفرۆش)دانایە(تەحسین دۆسکی، ٢٠١٨: ١٤)،هەروەها شێخ نورالدینی بریفکانی(١٧٩٥_١٨٥٨)کە لە ڕێگەی فەقێیەتیەوە چۆتە فێرانکۆی شاری ئامێد لای عەلامەی زانای ناودار مەلا یەحیا مزوری خوێندویەتی کە لە مەعاریفی ئیسلامیدا بەناوبانگ بووە و مرید و تۆبەکاری حەزرەتی مەولانا خالید بووە(محەمەد ساڵح:٧٨١).

شێخ یوسف تۆپچی ئۆغلو کە (دناڤ گوتنێت خۆدا زۆر تەحسیبێ سەرخاندن و زانینا زمانێ زگ ماکی دکێشێت بە تایبەت سەر ڤێ بیروباوەڕێ یە کو ل گۆتن و نوسینێت مەزهەبی دا نابێت تنێ بە زمانێ عەرەبی بەهرە بێتە ڤەرگرتن،بەڵکو زمانێ زگماکی بە تایبەت زمانێ کوردی(کرمانجی)د بێت کار بینن و هێندێ بشێن ژ کار ئینانا زمانێ بیانی خۆ بپارێزن)(محەمەد ساڵح:٥٣٣)،شێخ یوسف زۆر کوردپەروەر بووە و بایەخی بە زمانی زگماکی داوە و لە شیعرێکیشیدا لە پاڵ نرخاندنی زمانی کوردی ناوی(ئەحمەدی خانی)و(مەلا خەلیل)و(مەلا باتە)یشی هێناوەو دەڵێ:

من ژ عەرەبی و سافە هم کرییە

پاشی ب زمانێ کورمانجی نڤیسییە

مەگەر کۆری بکورمانجی نزانی

چەند کیتاب گوتنە ئەحمەدی خانی

یوسف_زلێخا و مەم و زین

نوبهارا فەسیح ب ئەلفازێ شەکەرین

بزانی تو(نهج الانام)جەلیلە

بکورمانجی تەئلیفا (مەلا خەلیل)ە

نە (شێخ باتەهێ) خودان قەلبێ مونەوەر

بکورمانجی گوتییە مەولودا پێغەمبەر (محەمەد ساڵح:٥٣٣)

یوسف تۆپچی وەک چۆن شانازی بە زمانی کوردی دەکا ،بە هەمان شێوە شانازی بەو سامانە مەعریفیەش دەکات کە کورد هەیەتی،ئەویش لەبەر زۆر و زەبری تورکانی عوسمانلی چۆتە ئێران و لەوێ ژیاوە.

(مەلا مەحمودی بایەزیدی) ( ١٧٩٧_١٨٥٨ )ش کەسایەتیەکی ڕۆشنبیر و زمانزانی سەردەمەکەی بووە و (لە ناو کوردەواریدا وەک زانایەکی ئایینی و مامۆستایەکی لێهاتوو ناوبانگی دەرکردبوو،گەلێک بەرهەمی شاعیرانی تورک و عەجەمی وەرگێڕاوەتە سەر زمانی کوردی ،وێڕای ئەدەب لە مەیدانی لێکۆڵینەوەی زمانیشدا بەرهەمی زۆرە ،تایبەت دەربارەی ڕێزمان ،هەروەها زۆر شارەزای داب و نەریت و مێژوی کوردان بووە)(کەمال مەزهەر، ١٩٨٦: ٢٢٣)،کاتێک ژابا لەسالانی(١٨٣٦_١٨٦٩) ز قونسولی ئیمپراتۆریەتی ڕوس بووە لە تورکیا و لە ئەرزەرۆم لەسەر ویستی ئەکادیمی ب.ئا.دورن دەستی کردووە بە فێربوون و لێکۆڵینەوەی زمانی کوردی و هەروا کۆکردنەوەی مەبەست لە بارەی وێژاوەری و ئەدەب و فۆلکلۆر و زمان و ئەتنۆگرافیای نەتەوەی کورد و بە وێنێیەکی تێکڕایی و گشتی،بە تایبەت زۆر تەقەلای داوە دەسنوسراوەکان بە زمانی کوردی جەم بکاتەوە، بۆ بەجێهێنانی ئەم کارە فەرهەنگی و زانینانە مەلا مەحمودی بایەزیدی  یارمەتیەکی زۆرو بەکەڵکی (ژابا)ی داوە،گەلێ بەرهەمی کوردی بۆ سازداوەو بە دەس بۆی نوسیوەتەوە وزۆری لە فارسیەوە بۆ وەرگێڕاوەتە سەر زمانی کوردی (محەمەد ساڵح،١٣٦٤: ٥٥٧)گەلی کورد بە پاراستنی گەلێک لایەنی بەنرخی سامانی ڕووناکبیریدا تا ڕادەیەکی زۆر قەرزاری مەلا مەحمودی بایەزیدیە ،گەر هاوکاریی مەلا مەحمودی بایەزیدی و ژابا  نەبوایەتا ئێستەش بەشێکی بەنرخ لە گەنجینەی ئەدەبی کوردی سەدە ناوەنجیەکان نەدەزانرا(کەمال مەزهەر:٢٢٣).

سەردەمی میرنشینەکان جگە لە ئاخافتن و هەندێک شیعر نەبێت کە بە زمانی کوردی بوون، ئەگەر نا بە پەخشان نوسین باو نەبووە، یەکەمین کەسێک کە بە پەخشان نوسیبێتی دەگەڕێتەوە بۆ نیوەی دووەمی سەدەی نۆزدە ،کە (مەلا مەحمودی بایەزیدی) بووە و (عادات و ڕسومەتنامەی ئەکرادیە)ی بە پەخشان نوسیوە،کە دەلالەت لە هۆشیاری و لێزانی مەلا مەحمودی بایەزیدی دەکات،کە لە لایەن د.شوکریە ڕەسول وەرگێڕدراوەتە سەر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شێوەزاری کرمانجی خواروو،بە ناوی(داب و نەریتی کوردەکان)و لە ساڵی ١٩٨٢ چاپ و بڵاوکراوەتەوە.

مەلا مەحمودی بایەزیدی لە(عادات و رسومەتنامەی ئەکرادیە)دا بە شانازییەوە ئەوە دەگێڕێتەوە کە کورد بێزیان نایە بە زمانی تورکی کتێب و دانراوەکانی خۆیان بنوسن،دەڵێ:

(د نێڤ ئەکراداندا مەکتوب و کاغەزێد وان فارسی العبارە دبن،خووندنا تورکی و زمانی ترکی کێم دزانن،کتێبێد زمانی ترکی ل نک وان موعتەبەر نینن )پ.لێرخ ڕۆژهەڵاتناسی رووس سەدەی ١٩م،دەڵێ:( کورد لە نامە گۆڕینەوەی نێو خۆیاندا زمانی فارسی بەکاردێنن)(فەرهاد پیربال:٨٣)،ئەمەش ئەوە دەگەیەنێت کە(خەڵکی کورد تەنانەت میرەکانیش لە ڕقی ستەمی تورک نەیانویستوە بە تورکی بنوسن،ئەم دیاردەیەش هەر لە زەمانی شەرەفخانی بەتلیسی یەوە،واتە لە سەدەی شازدەهەمەوە هەبووە،لەوانەیە پێشتریش ،چونکە میر شەرەفخان شەرەفنامەکەی بە فارسی نووسیوە نەک بە تورکی)(سەرچاوەی پێشوو)،چونکە تورک لە فەرهەنگی ڕۆشنبیری کوردیدا ڕەمزی زوڵم و زۆر و دڕندەیی و ستەم بووە،ئەم ڕقە لە بۆشاییەوە نەخولقاوە،بەڵکو لە ئاکامی ئەزمونێکی دورو درێژی ئەو میرنشینایە کە هەم تورک بۆتە هۆکاری سەرەکی رووخانیان و هەمیش خێرنەدیویی و بەدینەهێنانی خەونەکانیان و بوونەتە بەربەستی گەشەسەندنییان.

هەروەها مەلا مەحمودی بایەزیدی یەکەم ڕوناکبیری کوردە (شەرەفنامە)ی وەرگێڕاوەتە سەر زمانی کوردی ،لە دەوروبەری ١٨٥٨ یا ١٨٥٩لەو کارەی بۆتەوە،کە ژابا یەکسەر ناردوویە بۆ پێتەربوگ،ئەم کارە بەنرخە بە دەستوخەتی بایەزیدی خۆی ئێستە وا لە کتێبخانەی گشتی سەلتیکۆڤ شێدرین لە شاری لینینگراد پارێزراوە(محەمەد ساڵح:٥٦٣)، بایەزیدی خۆی شەرەفنامەی زۆر بەرز نرخاندووە ،لەبەر پڕ بایەخیی  وەریگێڕاوەتە سەر زمانی کوردی،دوو جاریش وەرگێڕدراوەتە سەر زمانی عەرەبی، لە لایەن محەمەد عەلی عەونی و مەلا جەمیل ڕۆژبەیانی. هەرچەندە شەرەفخانی بدلیسی (١٥٤٣_١٦٠٢) شەرەفنامەی بە زمانی فارسی نوسیووە، کە زمانی نوسین و کتێب بووە لەو سەردەمەدا،بەڵام مێژوی قۆناغێکی گرنگی لە فەوتان ڕزگارکردووە،شەرەفخان هەر زوو درکی بەو بۆشاییە کردووە ،کە کورد تاقە میللەت بوون لەو ناوچەیە کە مێژوویان نەنوسرابێتەوە،بۆیە بڕیاریداوە لە سەرەتای ئیسلام تا سەردەمی خۆی بخاتە دووتوێی کتێبێک و تێیدا بایەخی بە ژیانی میرە کوردەکان و مێژوەکەیانی داوە،هەژار موکریانی لە پێشەکی وەرگێڕانەکەیدا ڕۆڵی بەرز دەنرخێنێت ودەڵێ: (هەبوە و نەبوە تەنیاوتەنیا شەرەفخانێک لە دەوروزەمانێکا هەڵکەوتومو ڕێکەوتوە و لێرەو لەوێ چی نوسراوی دوژمن و بێگانان چاوپێکەوتوە و چی بە پەرژوبڵاوی لە پیرە پیاوی سەردەمی خۆی و لە چیرۆک وانی دیوەخان بیستوە،تێکی خستون و ڕێکی خستون و بە پێی


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

توانـا و بەش بە حـاڵی خـۆی هـیچ درێغـی نەکـردووە،بەڵام بە زمانێـک نوسـیویەتی کە هاوزمانەکـانی تێ ناگەن،بریـا بە کـوردی بوایە،خۆزیـا کـوردیش تێـی بگەیشـتایە) (هەژار موکریـانی،١٩٧٢: ١٠)، هەروەهـا (محەمەدئەمـین زەکـی ڕەخـنەی لە شـەرەفخانی بدلیسـی گرتووە بەوەی شەرەفنامەی بە زمانی فارسی نوسیوەو هیچ پاساوێکی بۆ ئەم کارەی نەبووە ،چونکە کتێبەکەی مێژوی نەتەوەیی میللەتی کوردە پێش هەر میللەتێکی تر) (محەمەد ئەمـــــین زەکـــــی،٢٠٠٥: ٣٥٧)، لەگەڵ ئەوەی ئەمـــــین زەکـــــی زمانەکــــــانی عەرەبی،تورکی،فارسی،فەرەنسی دەزانی،هەمـوو ئەم زمانـانەش لە کوردی بڵاوتـرن ،نوسـین بەم زمانانە ناودەنگی باشتری دەهێنا،بەڵام نوسەر ڕێگەی ئەحمەدی خانی و مەلای جزیری گرت و بڕیاریدا مێژوی نەتەوەکەی بۆ کورد بنوسێت، تەنانەت وەک خۆی ئاماژەی پێداوە و دەڵێ: هەنـدێ لە هاوڕێکـانم ئـارەزوی ئەوەیـان دەکـرد نوسـینەکانم بە زمـانی عەرەبـی یـا تـورکی بنوسـم،بەڵام مـن نەمکـرد،ئەگەر بمکـردایە کـارێکی بـاش نەبوو،شـیاو نیـیە نوسـەرێکی کـورد،مێژوی کـورد و کوردسـتان کە داینەنـاوە جـگە بـۆ کوردەکـان خۆیـان نەبێـت،بە زمانێک بێت،جگە لە زمانی نەتەوەکەی خۆی) (محەمەدئەمین زەکی:١٧)

دوای چەنـــدین ڕووداو*بـارودۆخەکە بــۆ میــر شــەرەف جێگیربــوو،بە ئاراســـتەی بڵاوکـردنەوەی دادپەروەری و خۆشـگوزەرانی هەنگـاوی نـا ،لە بـاکوری میرنشـینەکە و لە سـامانی خـۆی (مەدرەسـا سـور)ی دروسـت کـرد،ئەم قوتابخـانەیە ژوری بـۆ مامۆسـتا و قوتـابی تێدابوو،مامۆسـتای بەهـرەدار لە زانسـت و هـونەرە هەمەجۆرەکـان وانەیـان تێـدا دەوتەوە ،شەرەفخانی بدلیسی ستایشی (میر شەرەف)یکردووەو دەڵێ:کەسێکی دەست و دڵ و دەروون پاکە،فەقێ و مەلای زۆر خۆش دەوێن،زۆر مەدرەسە و مزگەوتی تازەی لە شاری جزیر سازداوە کە یەکێک لەو مەدرەسـانە مزگەوتی سوری پێ دەڵێن،لە پەنـای شورەی شارەوەو کەوتۆتە لای ڕۆژئاواکەی،مەوقوفەجـاتێکی زۆر و پـڕ داهـاتی بـۆ ئەو مـزگەوتە دانـاوە،کە لە پـاش نەمانی خۆشی مـزگەوت هەر لە بەرەودا بێ و هەر فەقێ و مەلای تێدا بێ، زەڤەنگی ئـاماژەی بەوە داوە کە شاعیری ناودار مەلای جزیری (١٥٦٧_١٦٤٠) یەکێـک بووە لە مامۆستاکانی ئەم قوتابخانەیە و قەسیدەیەکیشی لە ستایشکردنی میر شەرەف نووسیوە(أحمد بن الملا محمد ،د.ت :١٥٢)

خەف وان ڕەشاندن دل خەدەنگ

تەشبیهێ تیرێن خان شەرەف

تەنانەت گەلێک ئیجازەی مەلایەتیشی بەخشیوە،(مەدرەسەی سۆر گەورەترین ئەو نۆ مەدرەسـەیە بـووە کە لەو سـەردەمەدا لە مـزگەوتە بەناوبانگەکـانی ئەو شـارەدا بوون)(مـارف خەزنەدار،ب٢: ٢٩١)،ئـارامگەی مەلای جزیـری لە شـاری جزیـرە و لە مەدرەسـەی سـۆرە و لە هەندێک لە شیعرەکانی ئاماژە و باسکردن و ستایشی میرنشینی بۆتان بەدیدەکرێت،وەک:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

گوڵێ باغێ ئیرەمی بوهتانم

شەبچراغێ شەبێ کوردستانم

بە تایبەتی کە دیالۆگی لەگەڵ میری بۆتان(میر عیمادەدینی جزیری)نوسیوە، لە کاتێکدا(هەر خودی عیمادەدین کە فەرمانڕەوای میرنشینەکە بووە لە نێوان ١٦٣٤_١٦٣٩ دا و کەسایەتیەکی ئازا و دلێر بووە،شاعیریش بووە لە هەمان کاتدا ، نامەی شیعری لەگەڵ جزیری هەبووە)(أحمد بن الملا:٨٩٥)، کەلێنێکی گرنگی لە مێژوی ئەدەبی کوردی پڕکردۆتەوە،لە کۆتاییەکەی دەڵێت:

د بەحرا قولزوما میران

ب غەوواسی گوهەر چینم

د بەحسا شەرح و تەفسیران

تو دەریایان وە نابینم

ژ میر و بەگلەر و چیران

غولامێ میر عیمادینم............(دیوانی جزیری)

د.مارف لەم بارەیەوە دەڵێ:ئەوەی بە ناوی میرەوە وتراوە،هەر شێوازی مەلای جزیری پێوە دیارە،ئەگەر میر شاعیر بوایە و بەدیدەکرا،مەسەلەکە هەر چۆنێ بێ،ئەم دیالۆگە شیعرییە لە بەرهەمە جوان و ڕەنگینەکانی ئەدەبی کۆنی کوردییە(مارف خەزنەدار،ب٢: ٣٤٩).

ئەو قوتابخانانەی لە جەزیرە لە سەردەمی میرنشینی بۆتان دروستکراون بریتین لە :قوتابخانەی میر ئابدال،سەری مەیدانی،پرایاغا،مەسحەفی ڕەش،سەرێ سورێ(جلادت بدرخان،١٩٩٨: ٩٧_٩٨)،میر بەدرخان زۆر هانی بەدەستهێنانی زانستی دەدا و ئارەزوی ئەوە بوو خەڵکان زانستە جۆراوجۆرەکان بەدەست بێنن ،چەشنی میرەکانی تر چەندین قوتابخانەی دروستکرد،بیری لەوە دەکردەوە خوێندن بباتە دەرەوەی حوجرەی مزگەوتەکان،خۆیشی قوتابی هەبووە(صلاح هروری، :٨٨) ،

(شوێنێکی وەکو بایەزید مزگەوتی گەورەو جێگەی خوێندنی بەرچاوی لێ بووە،ئەحمەدی خانی[١٦٥٠_١٧٠٧] لە یەکێ لەو مزگەوتانە کە مزگەوتی مرادییە بوو خراوەتە بەر خوێندن)(مارف خەزنەدار،ب ٢، ٢٠١٠: ٣٦٧)دواتر خۆیشی وانەی بە منداڵانی کورد وتۆتەوە و ئەمە وایکردووە هەست بە بۆشاییەک لە ڕۆشنبیری فێربوون دا بکات و فەرهەنگی (نوبهار)بۆ زارۆکان بە عەرەبی و کوردی بە مەبەستی فێربوونی زمانی عەرەبی بنوسێت.

خانی هەستی بەو بۆشاییە کردووە کە نەبونی کتێب بە زمانی کوردی دروستیکردووە،کە ئەوپەڕی هەستکردنە بە بەهای کتێب و نوسین بۆ سەرکەوتنی هەر میللەتێک،بۆیە دەڵێ:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەنواعی میلەل خودان کتێبن

کرمانج تەنێ د بێ حسێبن

خانی لە سایەی مەم و زین دا ئەم پرسە و هۆکارەکانی دروستبونی ئەم پرسەیشی لە زۆر شوێندا وروژاندووە

زۆڵ و زۆر وێـــژی تورکـــانی ملهـــوڕی عوســـمانلی و شـــیعر و هـــۆنراوە هەســـت و ڕۆح بزوێنەکانی(شـێخ ئەحـمەدی جزیری)و(فەقیـێ تەیـران)و(مەلای بـاتە) (١٦٧٥_١٧٦٠) و(عەلـی حەریری )[(١٥٣٠_١٦٠٠][عەلی حەریری بە کۆنترین شاعیر شاعیری کورد دادەنرێت کە باسی ستەمی تورکی کردبێت] یش کاریان لە شێخ ئەحمەدی خانی کردووە(محەمەد سالح:٤٠٨)، کە لە (مەم و زین) ناوی هێناون ،کو دبێژە:

بینا ڤە ڕوحا مەلێ جزیری

پێ حەی بکرا عەلی حەریری

کەیفەک وە بدا فەقیهێ تەیران

حەتتا ب ئەبەد بمایە حەیران

کەواتە ئەم سـیانە ناوبـانگێکی زۆریـان هەبـووەو هاوشـانی یەکترین،هەروەهـا خـانی لە باسکردنی دوژمنانی کورددا دەڵێ:

ئەڤ ڕۆم و عەجەم بوان حەسارن

کرمانج هەمی لە چار کەنارن

شـاعیر (ئیسـماعیل بایەزیـدی)یش لە قەڕنـی یانزەمینـدا ژیاوەو لە موقەللیـدینی (ئەحـمەدی خـانی)یە ،(نەفەحـاتی گوڵ)شـاە ئەسـەرێکی ئەدەبیە(محەمەدئەمـین زەکـی،٢٠٠٥: ١٩٨)،و (شەریف خانی جۆلەمێرگی)ش کەیەکێ لە ئومەرای (بتلیس)بوو کە قەڕنی دوانزەمینی بۆ پـڕ کـردووینەوە،بە کرمـانجی و فارسـی زۆر ئەشـعار و غەزەلیـاتی هەیە(محەمەدئەمـین زەکی:١٩٩).

(هەسـتی نەتەوەیـی لەو ڕۆژگـارەدا بـۆتە هـۆی بە کـوردیکردنی ڕۆشـنبیری و خوێنـدەواری بە لای مەلای بـاتەیی[١٦٧٥_١٧٦٠] ئەمە پـێچەوانەی ئەوە نەبـوو زمـانی ڕەسـمی ئاپینی ئیسلام عەرەبی بێ) ( مارف خەزنەدار،ب٢: ٤٨٥)

کلتوری ئەدەبی میرنشینی بۆتان وایکرد پێگەیەکی دیاری لە زۆربەی چالاکییە میللـی و نەتەوایەتیەکـان هەبێـت،میر و کارەکانیـان و قەلا و قەسـر و.....هتـد،ئەمانە لە گـۆرانی و داسـتان و ئەفسـانە میللییەکـان ڕەنگـی دابۆوە،تـا گەیشـتە پـلەیەک نـاوی میرەکـانی پەیوەسـت بـوون بە حیکـایەتی میللـی و گـۆرانی مێژویـی و تەنـانەت ئەفسـانەکانیش،ڤەگێڕەکان چەنـدین چیـرۆک و گـۆرانی میللییـان لە بارەیـانەوە هەڵچنـی (عبدالفتاح علی، ١٩٨٨ :١٣٠)،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

تورکەکـان ئەوەنـدەیان ئـارەزوو کـردووە کە کـورد بە نەزان و نەخوێنـدەواریی بمێننەوەو تێنەگەیشتوو بن ،کە ئەو جێگایانەی کە تورکی لێ ساکینە،لە ناحیە و لە دێهاتیشیا مەکتەبیان لێ کردووەتەوە،لەو جێگایانەی کە بە کوردستان ئەژمێردرێن،نەوەک لە دێهات و ناحیە،لە قەزاکانیش مەکتەبێ کە کەڵکی بێ،نەیانکردووە،بۆ خاتری کورد دائـیمەن بە نەزان و کـوێریی بمێنـنەوە و ئەسـیری زوڵـم و غەدداری ئەوان بن(فەرهـاد پیربـاڵ:١٠)،سەرەتا کورد بە دەستی تورک و عەجەم ،دواتر عەرەبیشی هاتۆتە سەر ،کورد لە چەندین لاوە بەرەنگاری لە خۆیی و زمان و ناسنامەکەی کە هەمیشە لە ژێر مەترسیدا بووە،کردووە،هەردەم تروسکایی هیوا لە کلاورۆژنەی مێژوویدا سەرەتاتکێی لەگەڵیاندا چێکردووە،وەک ئەحمەد موختاری جاف(١٨٩٨_١٩٣٥) دەڵێ:

لانەواز و بێکەس وەمەزلوومن ئێستە قەومی کورد

گا بە دەستی تورکەکان گا بە دەستی ئێرانەوە

..........................................................................................

ئەمڕۆ با وابێ بەڵام ڕۆژێ ئەبێ ئەولادی کورد

دێنەوە مەیدان بە عـیلم و سـەنعەت و عیرفـانەوە......(دیوانی ئەحـمەد موختـاری جاف،٢٠١٩ : ١٨٢)

کەواتە(حـوجرە بـۆ کـورد وەک کۆلۆمبس دەرکەوت،ناسـنامەی کوردبـوون_ی دۆزیەوە:وڵاتـی لە دوو بەشـەوە کـردە یەک،ئـایینی لە دووەوە کـردە یەک،نووسـینەکانی تەرەمـاخی ،مەلا باتەیی،حوسـێنی قـازی،ئەمین فەیـزی بەڵـگەی حاشـا هەڵنەگـرن لە دروستکردنی کەسێتی کوردی)(سەلام ناوخۆش،٢٠١٩: ٤).

لە مزگەوتـی گەورەی ئـامەد هەشـتا حەلـقەی خوێنـدن لە یەک کاتـدا هەبوو،سەرباری قوتابخانەی تر،کە جەخت لەسەر زانستە ئاینیەکان دەکاتەوە،قوتابخانە لە (وان)و(ماردین)و(بـدلیس)هەبووە،لەپاڵ کتێبخـانەی فـراوان و دەوڵەمەنـد لە کوردسـتان هەبوون،وەک:کتێبخـانەی ئـامەد و بـدلیس و ئەوانـی دیکە(ئەولیـا چەلەبـی:٢٨٢_٢٨٤)، ئەمە نیشانەی ئەوەیە کە کورد لە بنەڕەتدا میللەتێکی تامەزرۆی خوێندن و فێربوون بوون ،بەڵام ژینگە و بارودۆخ زۆربەی کات لە بەرژەوەندی کوردا نەبوون.

**٣- میرنشینی بابان**

ئەهلی بابان گریە کەن بۆ خانەدان و ئاغەتان

نیمی مەحبوس،نیمی مەقتوول،نیمی مەنفی ***سالم کران***

درووسـتبوونی ئەم میرنشـینە دەگەڕێتەوە بـۆ سـەدەی شـانزەهەم و هەوڵەکـانی میر (پیربوداق)،هەر لە گوندی دارەشمانەوە تا دەوروبەری کەرکوکی دەگرتەوە،قۆناغی دواتر بە دەستوەردانی عوسمانی و ئێرانیەکان لە کاروباری میرنشین و ململانێ لە پێناو دەسەڵات لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

نێوان میرەکاندا دەناسرا،بەڵام ڕۆڵی میرنشینەکە جارێکی تر لە سەدەی حەڤدەهەم و تایبەتتر دوای سوڵتان محەمەدی چوارەم(١٦٤٨_١٦٨٧ز)کە قەڵاچوالانی بەخشیە یەکێک لە نەوەکانی بنەماڵەی بابانیەکان بوژایەوە،قەڵاچوالان وەکو پایتەختی میرنشینی بابان تا نێوان سالانی ١٦٧٠_١٧٨٤ز مایەوە،تا ئیبراهیم پاشا شاری سلێمانی درووست کرد و ناوەندی پایتەختەکەی لە ساڵی ١٧٨٤ز گواستەوە بۆ سلێمانی ،بە پێی سەرچاوە مێژووییەکان گەیشتە لوتکەی سەرکەوتن و پێشڕەوی لە سەردەمی میر عەبدولڕەحمان پاشا کە هیواخواز بوو حکومەتێکی سەربەخۆ درووست بکات و هەمیشە لە پێناو ئەمەدا هەوڵی دەدا،عەبدولڕەحمان پاشا بەناوبانگ بوو بە گرنگی دانی زۆری بە زانست و زانا و قوتابخانە،هەروەک چۆن بە زوهد و ئایین پەروەری وەسفدەکرا(عبدالقادر ابن رستم،١٣٦٦: ١٤٢).

میرە کوردەکان لە چوارچێوەی میرنشینەکانیاندا گرنگیان بە فێربوون داوە ، میرەکانی بابان بایەخێکی زۆریان بە قوتابخانە و کتێبخانەکان داوە،(عەبدولڕەحمان پاشای بابان کە شەش جار فەرمانڕەوایی وەرگرتووە،زانا و شەیدایەکی زانست و زانایان بووە،مامۆستایەکی سەرکەوتوو بووە و بۆ چەندین ساڵ پیشەی مامۆستایەتی کردووە) (محەمەدئەمین زکی، ١٩٥١ :١٣١)

عەبدولڕەحمان پاشا خزمەتی شەریعەتی دەکرد،زانایانی خۆش دەویست و ڕێزی پیاوچاکانی دەگرت ،دوو مزگەوتی گەورەی لە سلێمانی دروست کرد،کە نیشانەی پابەندبونی بوو بە ئایین ،و ئەم دوو مزگەوتەش پارێزگاریان لە ئاوەدانکردنەوە کرد،ئیبراهیم پاشا سلێمانی دروست کرد و عەبدولڕەحمان پاشاش ئاوەدانی کردەوە(حسین ناظم بیگ:٢٨٥_٢٨٦)،لە ئاکامدا هەر خۆی دروستکردنی مزگەوت ،واتە لە پاڵیشیدا خوێندن و دابینکردنی شوێنێک بۆ زانست و مەعریفە ،ئەگەرچی زیاتری مەعریفەی ئایینی بووە،بەڵام زمان و ئەدەبیش خۆیان لە نێو ئەو مەعریفەیەدا دەدۆزییەوە.

پێوانەی فێربوون و خوێندەواری پەیوەست بووە بە ژمارە و قەبارە و شوێنی مزگەوتەکان ،(مزگەوتەکانی شار و ناوچە لە لایەن پاشاکانی بابانەوە سەرپەرشتی دەکران و لە خەزێنەی میرنشین هەرچی پێویست بوایە پێیان دەبەخشرا)(مارف خەزنەدار،٢٠١٠ ،ب٣: ٣٠)،

بۆ ئەم مەبەستە لە ڕۆژگارانی هەر لە مێژینەوە وا باو بووە،فێرکردن وبارهێنان لە (حوجرە) لای مەلا گەورە گەورەکان بەدی دەهات ،بەمجۆرە :گەنجان و لاوانی دە دوانزە ساڵانە،کەمتر یان بەتەمەنتر دەچونە فەقییەتی و لە حوجران لای مەلا و مامۆستای مودەریسی شار و ئاوایی خەریکی خوێندن و نوسین و بەدەستهێنانی زانست ئەبوون(محەمەد ساڵح،١٣٦٤: ٤٢٦)


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەڵگەنامەیەکی سلێمان پاشا (١٧٦٤کۆچی دوایی کردووە)ئەوە دەردەخات کە چەند بایەخی بە قوتابی و مامۆستاوقوتابخانە لە میرنشینی بابان داوە(قوتابخانەکانی قەڵاچوالان و مامۆستا و قوتابی و مزگەوت و میوانخانە و بانگخواز و وەرگێڕ و قوتابخانەی گوڵعەنبەر و مامۆستا و قوتابی ،...و قوتابخانەکانی کۆیە و هەولێر و مامۆستاکانیان،هەردوو ئەو قوتابخانانەی لە کەرکوک درووستی کردوون)(الخال،د.ت:١٨)،بەڵام بوونی کوردستان بە گۆڕەپانی شەڕ و ململانێ لە نێوان عوسمانی و سەفەوییەکاندا کاریگەریی لەسەر ڕێڕەوی خوێندن و فێربوون لەم ناوچەیەدا هەبووە،کەچی میرنشینی بابان لە پاڵپشتیکردنی زانست و زانیاری و زانا و دانایان درێغی نەکردووە، بەڵگەی ئەمەش بوونی ئەم هەموو مزگەوتە ناودارانەی لە سلێمانیدا بەدیدەکرا وەک: (مزگەوتی گەورە،مزگەوتی مەڵکەندی،حاجی ئەحان،حاجی شێخ ئەمین،عەبولڕەحمان پاشا[نالی لەم مزگەوتەدا حوجرەیەکی هەبووە تا ئەو کاتەی سلێمانی جێهێشتووە]،هەمزاغا،عبدالرحمن پاشا[ئەمڕۆ بە مزگەوتی شێخ بابە عەلی ناسراوە و سەید عبدالکریم بەرزنجی دەرسی وتۆتەوە،مەولانا خالید و موفتی زەهاوی_ش دەرسیان وتۆتەوە]، مزگەوتی عەزیزاغا،مزگەوتی قامیشان،مزگەوتی بن تەبەق،خانەقای مەولانا خالید)(عمر عبدالرحیم،١٩٨٥: ١٠٦)،خۆی لە خۆیدا بوونی مزگەوت لەو سەردەمەدا واتە بوونی فەقێ و قوتابی لە هەمان کاتدا ، گەرچی ئامانج لایەنە ئایینیەکە بوبێت بە پلەی یەکەم بەڵام لە کۆتاییدا بەدەستهێنانی زانست و مەعریفە بووە.

لە قوتابخانە ئایینیەکاندا قوتابی قۆناغەکانی(سوختە،فەقێ،موستەعید)دەبڕی ،تا پلەی مەلایەتی بەدەستدەهێنا،(کورد زۆر سودی لەم قوتابخانە ئایینیانە وەرگرتووە،قوتابیان وانەیان لەبارەی زمانەکانی عەرەبی و فارسی وەرگرتووە،گرنگتر لەمەش فێری شیعری کوردی و ئەدەبیاتی کوردی و شیعری حەماسی دەبوون،دەبووە مایەی وورووژاندنی هۆشیاری نەتەوایەتی( مارتن فان،١٩٩٨: ١٤)، دوای بڕینی ئەم قۆناغانەش هەردەم ڕێی دوور و پڕ زەحمەتیان بڕیوە بۆ بەدەستهێنانی زانیاری زیاتر و فێربوونی چڕتر،ئەوەتا (نالی)بۆ تەواوکردنی خوێندن ڕوو دەکاتە سلێمانی،لە مزگەوتی سەید حەسەن لەلای زانای بەناوبانگ مەلا عەبدوڵڵای ڕەش خوێندنی تەواو دەکا و ئیجازەی دوازدە عیلمی وەردەگرێ و ئاموشۆی خانەقا دەکا،کە بە خانەقای مەولانا ناسرابوو وەک خۆی لە شیعریدا دەریدەبڕێ.

نالی لە ژیانیدا دوو ڕێچکەی گرتووە،یەکێ عیلم ،یەکێ ئەدەبیات ئیتر گوێی بە هیچی تر نەداوە و لەلایەکی تریشەوە شانازی بەوە کردووە کە کوردەو بە کوردی شیعری وتووە ،وەک چۆن شیعری بە فارسی و عەرەبیش ووتوە(محەمەد ساڵح،٣٢٤):

فارس و کورد و عەرەب هەرسێم بە دەفتەر گرتووە

نالی ئەمڕۆ سێ مولکە دیوانی هەیە (دیوانی نالی: ٥٧٧ )



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەوانەیە وەکو نەریتی ئەو سەردەمە(نالی)ش هەندێ شوێنی کوردستان گەڕابێ بۆ خوێندن،بەڵام بە مەلایی لە مزگەوتی سەید حەسەن هەتا دوارۆژی ژیانی لە سلێمانی لە حوجرەی ئەو مزگەوتە بووە و ژوورێکی تایبەتی خۆی هەبووە،پاش ئەو نەگبەتییەی بەسەر بابانەکاندا هات لە سلێمانی دەرچوو و نەگەڕایەوە(مارف خەزنەدار،٢٠١٠،ب٣: ٦٤)،هەر بە حەسرەتی نەمانی میرنشینی بابان و ستەمی تورکە عوسمانلییەکان ناتوانێ بەرەو سلێمانی بگەڕێتەوە،ناچار دەچێتە ئەستەنبوڵ لای ئەحمەد پاشای بابان و لە خاکی غەریبیی سەری دەنێتەوە،هەمیشە سۆز و تاسەی بۆ ئەو ڕۆژانە بوو، بۆیە لە چامەکەی ئاماژە بۆ ئەو حوجرەیەی خوێندنی دەکات ،کە متوی ببوو ،دەڵێ:

واصیل بکە عەبیری سەلامم بە حوجرەکەم

چیی ماوە چیی نەماوە لە هەیوان و تاق و ژوور؟... (دیوانی نالی: ١٩٥)

لە وەڵامی هەموو ئەو پرسیارە پڕ لە سۆزانەی نالی ،سالم(١٨٠٥_١٨٦٩) لە چامە درێژەکەیدا سەرباری باسکردنی شەڕی دەسەڵاتی عوسمانی و کوردە بابانەکان ،بە ووردیش وەڵامی پڕ لە سۆزی هەموو پرسە گرنگەکانی نالی دەداتەوەو دەڵێ:

لەوسایەوە کە حاکمی (بابان)بەدەرکران

نەیدیوە کەس لە چیهرەیی کەس جەوهەری هونەر

.........................................................................

جێی تورکەکانی ڕۆمە دەر و ژووری خانەقا

غافڵ هەموو لە جایی موریدانی با خەبەر

.........................................................................

شارێکە پڕ لە زوڵم و مەکانێکە پڕ لە شین

جاییێکە پڕ لە شۆر و وڵاتێکە پڕ لە شەڕ

...............................................................

دڵ نایەڵێ بڵێم چییە سامانی حوجرەکەت

هەر تاری عەنکەبووتە حیجابی بیرون و دەر

...............................................................

تو خودا بڵێ بە حەزرەتی نالی : دەخیلی بم

بەم نەوعە قەت نەکا بە سولەیمانییا گوزەر

(سالم) سیفەت لە بێ کەسییا با نەبێ هیلاک

مـن کـردم ئەو نەکا لە غەما خوێنی خۆی هەدەر...(دیوانی سالم،٢٠١٥ ب١ : ٣٣٣_ و لاپەڕەکانی تر ).

تەنانەت بنەماڵەی سالم لە سایەی دەسەڵات و لە پاڵ بابانەکاندا خاوەن پلە و پایە و دەستڕۆیشتووبون،لە هۆنراوەکانیدا ئەوە بەدیدەکرێت،کە وڵاتەکەی خۆی زۆر خۆشویستوە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

و به دڵ و به دەروون عاشقی بووە،بەڵام لە لایەک بە هۆی باری نالەباری ناو میرنشینەکە و دووبەرەکی بەردەوامی بابانەکان لە ناو خۆیاندا،لە لایەکی دیکە بە هۆی ئەوەی بەشێکی خانەوادەکەیان لە ئێران بوون،سالم بە ناچاری دووچاری کۆچ و ڕەو دورکەوتنەوە لە وڵات بووە،کە ئەمە زۆر ئازاری پێگەیاندووە(عوسمان دەشتی:١٦)، هەروەها سالم ماتەمنامەی هەموو بۆ ئازادی و سەربەستیی لەدەستچووی نەتەوەی کورد بووە کە هۆی لەناوبردنی میرنشینی بابان و ڕووخانی پایتەختە ڕەنگینەکەی شاری سلێمانی لە لایەن دەسەڵاتی تورکی عوسمانیەوە بووە(فەرهاد پیرباڵ،٢٠٢١:١١٥)،بۆیە دەڵێ:

ئەلویداع ئەی مولکی بابان ئەلویدع

ئەلویداع ئەی جانی جانان ئەلویداع

موستەعیدم بۆ بیلادی رافیزی

ئەلویداع ئەی ئەهلی ئیمان ئەلویداع

وەک ئەسیری تورکمەن دەمبەن بە زۆر

ئەلویداع ئەی شاهی خوبان ئەلویداع........(دیوانی سالم،٢٠١٥: ٣٩٨_ ٣٩٩)

وەک چۆن ماڵئاوایی لە مانگی ڕەمەزان دەکرێت،بەمشێوەیە سالم ماڵئاوایی لە میرنشینی بابان کردووە،لەوانەیە(سالم) و بنەماڵەکەیشی قوربانی یەکێک لە باڵەکانی ململانێی نێو بابانەکان دووچاری ئاوارەیی بوبێت،بەمشێوەیە ئاماژە بە ئاوارەبوونی خۆی لە ئێراندا دەکات و دەڵێ:

بە عەقڵ ئەو ڕۆژە پێم زانی دەفەوتێ

کە سالم عازیمی موڵکی عەجەم بوو...(دیوانی سالم:٦٤٠)

سالم چەندین قەسیدە و شیعری نوسیوە کە دەچێتە خانەی شیعری مێژوویی، توانیویەتی هەندێ لایەنی مێژوویی میرنشینی بابان بخاتە ڕوو،وەک:(شین ولاواندنەوەی مەحمود بەگ،شەڕی بابان و عوسمانیەکان،وەڵامنامەکەی بۆ نالی)(عوسمان دەشتی:١٩).

وەکو ڕۆشنبیری و هەڵسەنگاندنی ڕۆشنبیری سەردەمەکەی و شانازیکردن ،سالم ناوی کۆمەڵێک شاعیری ناوداری هێناوەو دەڵێ:

لە ڕۆژی ئیمتیحانا دیم بەرابەر ڕوئیەتی مەعشووق

کەمەر بەستەی هونەر هاتن لە تیپی عیشقبازانا

لە یەک لا(نالی و مەشوی)لە لایێ(سالم و کوردی)

لە هەنگامەی هونەر گەرمی تکاجۆبوون لە (مەولانا)

لە مەیدانی بەلاغەتدا بە سواری مەرکەبی مەزمون

بە کوردی هەریەکە تازی سوارێ بوون لە بابانا....(دیوانی سالم:١٣١_١٣٢)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

سالم دەقێکی ٤١ بەیتی تەرخان دەکات بۆ عەبدوڵلا پاشای بابان ،برای عەبدولڕەحمان پاشای بابان و جەخت لەسەر هاتنەوەی بۆ سلێمانی دەکات و باسی چەندین قۆناغ و چۆنیەتی هاتنەوەکەی دەکات و لە کۆتاییدا دەڵێت:

پێی وتم دوێ شەو لە کونجی میحنەتا واضیح سەروەش:

وا چراغی دوودمانی ئەهلی بابان هاتەوە

ئەهلی دانش(حاتمی بخشش)بە ئەبجەد کەن حیساب

با نەڵێن:کانی کەرەم کەی بوو بە بابان هاتەوە......... (محەمەد عەلی،٢٠١٠: ١٠٥_١٠٧)

ئەوەی جێگەی سەرنجە(نالی)ش چەشنی سالم (دوای ئەو هەموو کارەساتانەی میرانی بابان دڵ و دەم و قەڵەمی نایهێنێ لە گوڵێ کاڵتر بە میرانی بابان بڵێت و چ دوور و چ نزیک هۆی ڕووخان ناخاتە ئەستۆی میرانی بابان)(محەمەد عەلی:١٤٧)،کە ئەم کارە بەرانبەر میری میرنشینەکانی تریش نەبۆتە مایەی سەرنج،شاعیرانی کورد هەردەم ڕیز و خۆشەویستی تایبەتیان بۆ میرەکان هەبووە.

لە هەموو گرنگتر ئەوەیە کە ئەم زمانە ئەدەبییە یەکگرتووەی ئەمڕۆ کورد پێی دەنووسێ ،میراتی میرنشینی بابانە ،هەر لە ڕۆژانی پەیدابوونی ئەم میرنشینەوە ،شێوەی خوارووی زمانی کوردی بووە زمانی ڕەسمی میرنشینەکە،بۆ یەکەم جار شاعیرانی کورد لە کوردستانی خوارووا ، بە زاراوەی ئەم ناوچەیە هەڵبەستی نشتیمانیان بەسەر گەلی کورد و تێکۆشانی و میرنشینی بابان و ئامانجەکانیدا هەڵدا ،شان بەشانی شیعرە دڵدارییەکانیان ،شانازیان بە پاڵەوانی کوردەوە کردووە و بۆ ڕووخانی میرنشینی بابان فرمێسکیان ڕشتووە (مارف خەزنەدار،١٩٦٧: ٣٦).

باشترین نموونەش غەزەلەکەی (نالی)یە (کە بۆ سلێمان پاشای بابانی وتوەو ڕۆژی وەفاتی تیا دیاری کردوەو پیرۆزبایی لە ئەحمەد پاشای کوڕی کردوەو سلێمان پاشای بابانی گەیاندۆتە ڕادەی جەمشید و شانازیی بەو سەردەمەوە کردوە کە ئەو تیا فەرمانڕەوا بوە، ئەمەش تەنیا پەیوەندی دۆستی و خۆش ویستن و بە شانازییەوە باس کردنی فەرمانڕەوای وڵات لەو سەردەمەدا بە وڵات ویستن ئەدرێتە قەڵەم،بێجگە ئەوە کە بایەخی دیاری کردنی تەئریخیشی بێتەپاڵ ،ئەوەش خۆی شێوەیەکە لە شێوەکانی شانازی کردن(عەبدولکەریمی مدرس،١٩٧٦: ٦٤).

لەم شیعرەدا مەدح و شانازیکردنە بە هەردووکییان(سلێمان پاشا و ئەحمەد پاشا ،شاعیر توانیویەتی ئەم دوو جەمسەرە کۆبکاتەوە و شیعرێکیشی بۆ پاسەوانی تایبەتی پاشا لە سوپای میرنشینی باباندا نوسیوە،کە ئەمین فەیزی لە کتێبی (ئەنجومەنی ئەدیبانی کورد)کە لە ساڵی ١٩٢٠ بڵاوبۆتەوە،دەڵێ:ئەم تاقمە مومتازە عەسکەری حکومەتی بابانە کە لە زەمانی ئەحمەد پاشادا تەنزیم و تەنسیق کراون( مارف خەزنەدار،ب٣: ١٤٢)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

محەمەد ئەمین زەکی لە باسی مردنی سلێمان پاشا و هاتنەسەر تەختی ئەحمەدبەگی گەورەدا ئەم شیعرەی شیوەن و پیرۆزبایی نالی بە نموونە هێناوەتەوە(محەمەد ئەمین زەکی،١٩٣١: ١٥٧)،ئەم کارەی ئەمین زەکی لەلایەکەوە پشت بە شیعر بەستن بۆ ساغکردنەوەی مێژوو و لە لایەکی ترەوە سەلماندنی ئەو ڕاستییەیە کە ئەم شیعرەی نالی بۆ ئەو مەبەستە نوسراوە و تەئریخەکەش ساڵی ١٢٥٤ دەکات(عزەدین مستەفا،١٩٨٨: ٢٥)،واتە شیعر و ڕۆشنبیری نێو شیعر لە سایەی میرنشینەکاندا بە گشتی و میرنشینی بابان بە تایبەتی دوو جەمسەری کاریگەریان هەیە:یەکەمیان خزمەت بە شیعر و شێوازی نووسین لەو سەردەمانەدا دەکات، دووەمیان :دەکرێ لە پشت هەندێ دەقی شیعریی مێژووی پاشا و میر و هەندێ لە ڕووداوە گرنگەکان بە ووردی بخوێندرێتەوە.

(ئەحمەد پاشا چوارەمین پاشای میرنشینی بابان لە ساڵی ١٨٥٣سەری لە پاریس داوە و میوانی ڕۆژهەڵاتناس_خۆدزکۆCHODZKO بووە،چەند باسێکی زمانەوانی و چەند چیرۆکێکی بە زمانی کوردی بۆ خۆدزکۆ نووسیوە و لە ساڵی ١٨٥٧ دا لە شێوەی نامیلکەیەکدا بڵاوکراوەتەوە)(فەرهاد پیرباڵ: ٩٩)،

عەلی بەردەشانی شاعیری میللی ،مێژوونوسی ڕاپەڕینەکانی عەبدولڕەحمانی پاشا بووە،بە شیعر ڕووداوەکانی داڕشتووە،ئەم شاعیرە بە شیعرەکانی باسی ئازایی و قارەمانێتی میرەکانی بابانیشی دەردەبڕی(عزەدین مستەفا،١٩٧٣: ١٦)،باسی ئەوڕەحمان پاشا و شەڕەکانی بە هەڵبەست بڵاوئەکردەوەو هەستی میللی پێ ئەخرۆشان(عزەدین مستەفا:٣٨_٣٩).

(سالم)(١٨٠٥_١٨٦٩)یش چەندین دەقی کاریگەری بۆ ئەم میرنشینە نوسیوە ،گۆڕانکارییەکانی سەردەمی میرنشین و دوای میرنشینی خستۆتە ڕوو،دەڵێ:

لەو ساڵەوە حاکمانی بەبە دەربەدەرکران

نەیدیوە کەس لە چەهرەی کەس جەوهەری هونەر.......(دیوانی سالم: ٣٣٣ )

لە شیعری دێریندا ناو هێنانی تورک بە واتای(یاری دڵڕەق)هاتووە و تورکانە بە واتای (زاڵمانە،ستەمکارانە،بێبەزەییانە،دڵڕەقانە) (محەمەد نوری،٢٠٠٧: ٢٠٩_٢١٠) هەروەک سالم دەڵێ:

مییانت بەستووە تورکانە بۆ قەتلم لە مەستیدا

تەحەمول کە زەمانێ با ببۆسم دەستی شمشێرت.....(دیوانی سالم:١٧٨)

یان وەک لە دەقێکی کوردی دا هاتووە:

دەڵێن زۆر توند و بەدخوو تورکی یەکجار مەست و بێباکی

بە توندی و مەستیی و بەدخوییتا دیارە لە یارانی....(دیوانی کوردی:٥٩)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کورد لە سەردەمی دەسەڵاتی عوسمانی هێندە زوڵم و زۆریان لەم دەسەڵاتە بینیوە ،بەجۆرێک کە هۆکاری سەرەکی ڕووخانی میرنشینەکانیش هەر فرۆفێڵی ئەم دەسەڵاتە بووە ،

حاڵەتی سیاسی لە میرنشینی بابان جێگیر نەبووە،بە هۆی دەستتێوەردانی بەردەوامی عەجەمەکان لە کاروباری ناوخۆییدا و چاندنی تۆوی دووبەرەکی لە نێوان بنەماڵە فەرمانڕەواکان،هەر کاتێک میرێکی بەهێز دەسەڵاتی وەرگرتبێت،هەوڵیان داوە میرێکی ڕکابەری سەر بە خۆیانی بۆ بدۆزنەوە(لونگریک، :٢٨١)،بەڵام سەرباری هەموو ئەو بارودۆخە سیاسیە نالەبارە، لە کاتی ئەم میرنشینەدا زمان و ئەدەبی کوردی پەرەی سەند،بەتایبەتی لە کۆتایی سەدەی شانزەوە تاکو نیوەی یەکەمی سەدەی هەژدە،دروستبونی قوتابخانەی شیعری کلاسیکی کوردی کە نالی و کوردی،جگە لە هەبوونی مەلا وەسمان کە ئەویش هاوشانی ئەم شاعیرانە بووە،ئەمە و هەڵکەوتنی(مەحوی ) کە ئەویش ڕێچکەشکێن بوو،توانی زمانی شیعری سۆفیگەری درووست بکات پەرە بە ئەدەبیاتی کوردی بدات،هەر ئەو بناغەی زمانەش بوو،کە تا ئێستا بەردەوامی هەیە،فایەقی تاپۆ دەڵێ:

بە مەعموری کە مەشهوری جیهان بوو خاکی کوردستان

هەموو ویرانەیە ئێستا لە زوڵم و وەحشەتی تورکان........(فەرهاد پیربال،٢٠٢١: ٢٢٧).

لە هەڵبەستەکانی عەلی بەردەشانی و نالی و سالم و کوردی دا ئەوەمان بۆ دەردەکەوێ کە میرنشینی بابان تا چ ڕادەیەک هەستی نەتەوایێتی بزواندووە و بڵاوکردۆتەوە،نەک هەر لە دڵ و دەروونی شاعیرەکاندا بەڵکە لە هەست و ناخی میللەتەکەش دا،هەتا ئەمڕۆش میللەتی کورد شانازی بە دوازدە سوارەی میری بابانەوە دەکا(کاوس قەفتان،١٩٨٥: ٢١)

ئەوەتا (نالی) کە(یاخییەکی سەردەمەکەی خۆی بووە ،هەر لە ڕەخنەگرتنی لە ڕەوشی ئایینی و کۆمەڵایەتی و ووتنی شیعری بێپەردە و ئەڤین و خۆشەویستی ئاشکرا ،تا دەگاتە گۆڕینی زمانی ئەدەب و شیعری کوردی لە شێوەزاری گۆرانەوە بۆ شێوەزاری بابان،یان ناوچەی سلێمانی ،هەروەها زۆر شتی تازە و داهێنانی تر کە لای شاعیرانی کلاسیکی پێش نالی و دوای (نالی)یش بە ماوەیەکی زۆر نەبووە)(ساڵح،٢٠٢٢: ١٠٩)،بۆیە حاجی قادری کۆیی بەمشێوەیە دەیناسێنێت:

شەهسواری بەلاغەتی کوردان

یەکە تازی فەصاحەتی بابان........(دیوانی حاجی قادری کۆیی:٢١٩)

بۆ سەریەرزی نەتەومو بۆ نەمریی(نالی)یش ئەوەندە بەسە کە لەگەڵ ئەو هەموو فارسیزانی و عەرەبی و تورکی زانینەیدا،ڕێگای شیعر وتنی بە کوردی گرتووەتەبەر و.......قوتابخانەیەکی بۆ شیعری کوردی داناوە، دەیانی وەک :کوردی و مەحوی و ناری و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**بێخود و ئەدیبانی تر دوای کەوتون و بەهرەیان لێ وەرگرتووە )(مدرس،دیوانی نالی ٦٤:)،کە بە قوتابخانەی شیعری بابان ناسراوەو جگە لەوەی کە چەندین شاعیری کورد ڕێچکەی شێوازی نووسینی (نالی)یان گرت،دواتر قوتابخانەی شیعری موکریانیش لاسایی هەمان شێوازە نوسینیان کردەوە،کەوەفایی وئەدەب و حەریق و ئەدیب لە پێشڕەوانی ئەم قوتابخانەیە بوون .**

لەبەر ئەوەی بەر لە نالی و سالم و بەر لە چەرخی گەشی بابانەکان ،بە زاراوەی سلێمانی شیعر نەوتراوە،تا ئەو سەردەمە شیعری کوردی لە کوردستانی ڕۆژهەڵاتدا لەسەر کێشی پەنجەی خۆماڵی و بە زاراوەی(گۆرانی)و لە کوردستانی ڕۆژاوادا لەسەر کێشی خۆماڵیش و عەرەبیش و بە زاراوەی کرمانجی سەروو بووە،شیعری کوردی لەسەر کێشی عەرووزی عەرەبی و بە زاراوەی سلێمانی زادەی شارستانەتیی سەردەمی بابانەکان و دەستکردی نالی و سالم و پاش هاتوەکانی ئەوانە)(عبدالکریمی مدرس: ٦٥).

شێخ ڕەزای تاڵەبانی شاعیر لە پارچەیەکی ٨ بەیتیدا هەموو شانازییەکانی بە سلێمانی وەک پایتەختی میرنشینی بابان تۆمار دەکات و دەڵێ:

لەبیرم دێ سلێمانی کە دارولمولکی بابان بوو
نەمەحکومی عەجەم،نەسوخرەکێشی ئالی عوسمان بوو
لەبەر قاپی سەرا،سەفیان دەبەست شێخ و مەلا و زاهید
مەتافی کەعبە بۆ ئەربابی حاجەت ،گردی سەیوان
لەبەر تابووری عەسکەر ڕێ نەبوو بۆ مەجلیسی پاشا
سەدای مۆزیقە و نەققارە تا ئەیوانی کەیوان بوو.........(دیوانی شێخ ڕەزا:٣٧ )

بەکارهێنانی دەستەواژەی(لەبیرم دێ)وەکو کلیلی کردنەوەی بیرەوەرییەکانی و گەڕانەوەی بۆ نێو ڕووداوەکان و وەسفکردنی سەربەخۆیی شاری سلێمانی لە کاتێکدا(لەو سەدانەی میرنشینی بابانی تێدا درووست بووە دوو ئیمپراتۆریەتی گەورە لە کایەدا بوون ،هەردووکیشیان بە تیژی لە پێناوی دەستگیرکردنی ڕۆژهەڵاتی نزیکدا هەوڵیان دەدا،لە ڕۆژهەڵاتی نزیکیشدا کوردستان بە گشتی و میرنشینی بابان بە تایبەتی ،لە پێشی پێشەوە لەناوجەرگەی ئەم زۆرانبازیەدا بوو،....لەبەرئەوەی ئەم میرنشینە کەوتبووە نێوان ئەم دوو ئیمپراتۆریەتەوە)(کاوس قەفتان،١٩٨٥: ٩).

لە بەیتەکانی دواتردا خۆزگە بۆ ئەو سەردەم و ڕۆژانەدا دەخوازێت کە شکۆی بابان لە گۆڕەپانەکەدا بووە و دەڵێ:

درێغ بۆ ئەو زەمانە،ئەو دەمە،ئەو عەسرە، ئەو ڕۆژە
کە مەیدانی جریدبازی ،لە دەوری کانی ئاسکان بوو
...........................................................................

قوبووری پڕ لە نووری ئالی بابان،پڕ لە ڕەحمەت بێ

کە بارانی کەفی ئیحسانیان وەک هەوری نیسان بوو

کە عەبدوڵا پاشا لەشکری والیی سنەی شڕ کرد

(ڕەزا) ئەو وەختە عومری پێنج و شەش توفڵی دەبستان بوو.....(دیوانی شێخ ڕەزا)

لە کاتێکدا شێخ ڕەزا وەکو شاعیر هیچ کات نەک ستایشی کەسی نەکردووە ،بەڵکو هەر کەس و لایەنێک شتێکی نەشیاوی بەرانبەر کردبێت،جنێو بارانی کردووە،ئەگەر بڕوای تەواوی بەو ووشە و دەستەواژانە نەبوبێت ،کە ئاراستەی ئالی بابان و سەردەمی بابانی کردووە، هەرگیز ئەم دەقەی بەرهەم نەدەهێنا،بۆیە ئەم شیعرەی شکۆمەندی بابانەکان نیشان دەدات ئەمە لە لایەک و لەلایەکی تریشەوە شاعیر وەک خۆی لە بەیتی کۆتایی ئاماژەی پێداوە ،تەمەنی لەو کاتانەدا لە نێوان ٥_٦ ساڵیدا بووە،(ئەمە تاکە بەڵگەیەکە تەمەنی شێخمان بۆ ڕوون بکاتەوە)(تاقانە،٢٠١٠: ٤٢)کە ئەوەی لە دڵی چەسپاندووە(پاشاکانی ئەم میرنشینە خاوەنی ئامانج و هیوا و هەستی نەتەوایەتی خۆیان بوون ، هەمیشە چاویان لەوەوە بوو کە میرنشینی بابان بکەنە بەردی بناغەی دامەزراندنی دام و دەسگایێکی گەورەی کوردی سەربەخۆ)(کاوس قەفتان:١٠)

لە سەردەمی (حاجی قادری کۆیی)یشدا هەر هەمان ڕۆم و عەجەم دەستیان بەسەر خاکی وولاتەکەیدا گرتووە و لە نێوانی خۆیان دابەش کردووە(میران،شارەزا،١٩٨٦: ٢١)،حاڵەتە دەروونییەکەی ناوەوەی دەخاتە ڕوو و دەڵێ:

لە مابەینی کڵاو سوور و کڵاو ڕەش

پەرێشانین دەبینە میسلی گای بەش

حاجی بەهۆی نیشانەیەکی کلتووری هەردوو ڕۆم و عەجەمی ناساندووە،کە کڵاوسوور تورکە عوسمانیەکان و کڵاو ڕەش ئێرانییە قاجارییەکانن.

کاتێ حاجی ئاوڕێکی لە میللەتەکەی خۆی دەدایەوە ،دەیبینی نەک بەرەو ڕزگاری دەچوو ،بەڵکو ئەو میرنشینانەی کە هەشیبوون، لەناوچووبوون و حکومەتی میرەکانی بابان و سۆران و بادینان و ئەمارەتەکانی کوردستانی سەروو، بەتەواوی ناوچەکانیان خرابوونە سەر دەوڵەتی عوسمانی و بنەماڵەی بەدرخانیەکانیش تێکۆشانێکی گەرمیان دەکرد بۆ دەستخستنی مافە نەتەوەییەکانی گەلی کورد(مەلا کەریم،١٩٦٠: ٢٠)، ئەمە ناخی حاجی وێران کردبوو ،بۆیە دەڵێ:

لە ڕۆما کەوتە بەرچاوم کەسێکی هائیم و حەیران

بە هەیئەت تێی گەییم کوردە بە شێوەی ئەهلی کوردستان

کە چوومە خدمەتی پرسیم:برادەر خەڵکی کام جێگای؟

لە کام لا هاتووی؟ گریا،گوتی:بابان،گوتم :بابان؟.........(دیوانی حاجی:٩١)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەم دوو بەیتەی حاجی کۆی باری دەروونی کورد لە سایەی میرنشینی بابان گەلالە دەکرێت،بەوەی خەڵکیش نەپەرژاوەتە سەر خوێندن و فێربوون، هێندەی ژیانیان بە کۆلەمەرگی بەڕێکردووە.

میرەکانی بابان سەرباری ئەو هەموو ئەرک و شەڕوشۆڕ و ململانێیە،بایەخیان بە ئەدەبیات داوە،جگە لە بایەخدان بە خەت خۆشی وخەڵکیان ناردووە بۆ شوێنی دوور کتێبێک یا دەستنوسێک بنوسنەوە،خەرجی کەسەکەو هاتوچۆیان بۆ سەرف دەکرد تا کارەکەی ئەنجام دەدا،لە کاتێکدا جاری وا هەبووە کاتێکی زۆریان پێ چووە،ئەمەش خۆشەویستی میرەکان بۆ ڕۆشنبیری دەردەخات ،کە میرانی بابان خاوەن کتێبخانە بوون،لەگەڵ دروستبوونی شاری سلێمانی کتێبەکانیان گواستۆتەوە بۆ مزگەوتی گەورە و شێخ مارفی نۆدێ یان کردۆتە مامۆستا و سەرپەرشتی کتێبخانەکە،ئەمەش سەرنجی دەوروبەری ڕاکێشاوە و لە زۆر شوێنەوە بە مەبەستی فێربوون هاتون و سەردانی کتێبخانەکەیان کردووەو چەندین نەوە سودمەند بوون و بە هۆیەوە هۆشیار بونەتەوە،لە(١٧٥٨_١٨٢٢)بە سەردەمی زێڕینی مزگەوتی گەورە دادەنرێ،چونکە لەوکاتەدا شێخ مەعرووفی نۆدێ و باوکی،لەوێ دەرسیان گوتۆتەوە،شێخ مەعرووفی نۆدێ بە هۆی باوکییەوە گەیشتۆتە قەلاچوالانی بابانەکان،ئینجا لە سلێمانی دەیان قوتابیی پێگەیاندووە)(فەرهاد پیربال:٩٦).

دوای ڕوخانی میرنشینە کوردییەکان و جێبەجێکردنی سیاسەتی ناوەندی لە لایەن دەوڵەتی عوسمانیەوە،سەردەمێک دروست دەبێت،کە تێیدا شێخ و تەریقەت و سۆفیگەری ڕۆڵی بەرچاویان لە نێو کۆمەڵگای کوردیدا دەبێت،(مەحوی)یش یەکێک بووە لەو شاعیرانەی لەو سەردەمەدا دەرکەوتووە،ناوبانگ و کەسایەتی مەحوی بە جۆرێک بەرز بۆتەوە کە وایکردووە خودی سوڵتان ببینێت و خانەقای بۆ نۆژەن بکاتەوە و پەیوەندی بەردەوامی لەگەڵدا دروست بکات(بژار عوسمان،٢٠٢٢ : ١١٥)

لەبەر ئەوەی(حاڵەتی سیاسی میرنشینی بابان جێگیر نەبووە،بە هۆی دەستێوەردانی بەردەوامی عەجەمەکان لە کاروباری ناوخۆییدا و چاندنی تۆوی دووبەرەکی لە نێوان بنەماڵە فەرمانڕەواکان ،هەرکاتێک میرێکی بەهێز دەسەڵاتی وەرگرتبێت ،هەوڵیان داوە میرێکی ڕکابەری سەر بە خۆیانی بۆ بدۆزنەوە)(لۆنگریک:٢٨١)،بۆیە زۆربەی کات میرنشینی بابان لە نێو شەڕوشۆڕدا بووە ،نەپەرژاوەتە سەر بایەخدانی زیاتر بە ڕێڕەوی خوێندن و فێربوون.

**ئەنجام:**

حوجرە بەشێکی چالاکی مزگەوتەکان بووە،چونکە سەرچاوەی خوێندن و زانست و فێربوون بوون ،تەنانەت شوێنی فێربوونی زمان و کەرەستەکانی نوسین بە گشتی و شیعر بە تایبەتی ،واتە بە تەواوی بێجگە لە پێگە ئاینییەکە ،دامەزراوەیەکی پەروەردەیی لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

چوارچێوەی مزگەوتدا بوون، ئەمە وایکردبوو حوجرە بنچینەیەک بۆ خوێندن و ئارەزووی فێربوون بنیاد بنێت.

_بە هۆی بارودۆخی سیاسی و کۆمەڵایەتی کورد،کە کاریگەریەکی زۆری بەسەر لایەنی رۆشنبیری و فەرهەنگی کوردەوە هەبوو،نەخوێندەواری تا ماوەیەکی دووروودرێژ زۆرینەی کۆمەڵگەی گرتبۆوە،ئەمەش وایکردبوو رێژەوی فێربوون کز بێت.

هەندێک لە میرە کوردەکانی ئەم میرنشینانە نەک تەنیا هانی نوسین و خوێندەوارییان داوە،بەڵکو بەشێکیان خۆیان مامۆستا و نوسەر و تەنانەت شیعریشیان نوسیوە و بوونەتە پاڵپشتی بۆ پرۆسەی فێرکردن،سەرباری سەرقاڵبوونیان بە بەرگریکردن و شەڕوشۆڕ لە لایەک و ململانێی ناوەخۆش لە لایەکی ترەوە،نموونەی:میر شەرەف،شەرەفخانی بتلیسی،میر عیمادەدینی جزیری، لە میرنشینی بۆتان ، بەڵام میرەکانی بابان زیاتری هاندەری خوێنەواری و مەعریفە و زانست بوون،نەک خۆیان شیعر و بەرهەمیان بوبێت.

شاعیرەکان بەرگرییەکی زۆریان لە زمانی کوردی کردووە،هەرچەندە نوسینی فەرمانەکانی میرنشینەکان بە زمانی فارسی بووە،بەڵام زمانی تورکی هێندە پەسەند نەبووە بە بەڵگەی لە شیعر و نوسینیشدا زۆر بەکارنەهاتووە،زیاتری فارسی و عەرەبی بەکارهاتووە،شاعیرێکی وەکو مەلای جزیری دەیویست ئەوەی شیعری فارسی پێیگەیشتووە لە داهێنان، بیگوازێتەوە بۆ نێو زمانی کوردی لە ڕێی شیعرەوە،بۆ ئەوەی لە بازنەی دەسەڵاتی تورکی و فارسی _لە ڕووی سیاسی و ئەدەبیەوە_ ئەدەبی کوردی بباتە دەرەوەی ئەم بازنەیە،لە پاڵ ئەمەشدا ئەحمەدی خانی سەرباری گرتنەبەری ڕێچکەکەی مەلای جزیری ،قوتابخانەیەکی نەتەوەیی سەربەخۆ بوو. ئەمە وەک میرنشینی بۆتان ، (نالی)ش لە میرنشینی باباندا پێشڕەوی قوتابخانەیەکی ئەدەبی کرد ،کە کاریگەرییەکانیان هێشتا بەردەوامی هەیە.

درووستبوونی نیمچە ستانداردێکی کوردی دەگەڕێتەوە بۆ ئەو مۆدێلە نووسینانەی لە کاتی میرنشینی باباندا پەیڕەو دەکران،چونکە پێش ئەوە بە دیالێکتی هەورامی گۆرانی_بوو،لە هەمان کاتدا ئەم هەوڵانە بنچینەیەکیا درووست کرد و تا ڕادەیەک بازنەی زمانی نوسینیان فراوانکرد.

_ململانێی هەردوو ئیمپراتۆریەتی عوسمانی و سەفەوی و سەرقاڵکردنی میرە کوردەکان کاتێک بە شەڕ و کاتێکی تر بە چاندنی تۆوی دووبەرەکی لە نێوانیاندا بووە مایەی بە فیرۆچوونی کاتێکی زۆر لەسەر حیسابی بنیادنانی دەوڵەت و بووژاندنەوەی ،ئەمانە هەمیشە خەریکی دروستکرنی بەربەست بوون لەبەردەم میرە کوردەکاندا ،کورد لە نێوان بەرداشی ڕۆم و عەجەمدا ئەمسەر و ئەوسەری دەکرد و چارەنووسی نادیار بوو.

دووری خــــوازەیی نێــوان میرنشـــینەکان لە ڕووی بیرکـــردنەوە و بەڕێــوەبردنی میرنشینەکان ،بووە مایەی زەقکردنەوەی شێوە زاری ناوچەیی ،ئەمە کاریگەریی نەرێنی لەسەر گەشەی زمانی کوردی هەبوو، نەیتوانی کورد لە دەوری زمانێکی یەکگرتوو کۆبکاتەوە،ئەگەر ڕۆڵی شاعیرەکان نەبوایە، زمانەکە پەرتەوازەتر دەبوو.

شاعیرەکان لە خۆشویستنیان بۆ میرەکانی میرنشینی بۆتان و بابان ستایشیان کردوون ، و بە پەرۆش بوون بۆیان،چونکە وەکو شاعیر درکیان بە مەترسیەکانی سەر میرنشینەکان کردووە،شیعرەکانیان بوونەتە بەڵگەی مێژوویی و لە زۆر کاتدا پشتیان پێ دەبەستریت، زۆرترین شیعر لە لایەن سالمی ساحێبقران بووە، ئەمە جگە لە وەڵامنامەکەی بۆ چامە شیعرییەکەی نالی کە کتێبێکی مێژووییین بۆ خۆیان.

**سەرچاوەکان :**

**بە زمانی کوردی**


١. بژار عوسمان احمد(٢٠٢٢)،ژیانی مەحوی لە نێو بەڵگەنامەکانی عوسمانی و بڵاوکردنی دوو شیعری مەحوی بە زمانی عوسمانی بۆ یەکەمجار،گۆڤاری ئاژین، ژمارە ٣،سۆران.

٢. تەحسین ئیبراهیم دۆسکی(٢٠١٨)،شەرحا دیوانا مەلایێ جزیری،بەرگێ ئێکێ،کۆمەڵگەها فەرهەنگی یا ئەحمەدی خانی،سۆران.

جویس بلاو و ئەوانی تر،(٢٠١٥)،سێ وتار لەسەر ئەدەبیاتی کوردی،وەرگێڕانی: حسێن محەمەد زادە،پەخشانگای زانستی کۆلێج،سنە.

٣. جەمال نەبەز(٢٠١٩)،میری کورد_میر محەمەدی ڕەواندزی ناسراو بە میری کۆرە،وەرگێڕانی:سەردار محەمەد عەلی ڕەواندزی،چ١،چاپخانەی ڕۆشنبیری،هەولێر.

٤. دیوانی حاجی قادری کۆیی(١٩٨٦)،لێکۆڵینەوەو لێکدانەوەی:سەردار حمید میران و کەریم مستەفا شارەزا،پێداچونەوەی:مەسعود محەمەد.

یوانی سالم(٢٠١٥)،بەرگی یەکەم و بەرگی دووەم،بنکەی ژین،سلێمانی.

٥. دیوانی مەلای جزیری(٢٠١٤)،شەرحی هەژار،پەخشانگای پانیز،تهران.

٦. دیوانی نالی(١٩٧٦)،لێکۆڵینەوەو لێکدانەوەی:مەلا عبدالکریمی مدرس و فاتح عبدالکریم،محمدی مەلا کەریم پیاچۆتەوە،چاپخانەی کۆڕی زانیاری کورد،بەغدا.

٧. سدیق سالح(٢٠٠٥)،سەرجەمی بەرهەمی محەمەدئەمین زەکی بەگ،یەکەم بەرگ،بنکەی ژین،چاپخانەی شڤان،سلێمانی.

٨. سەعد بەشیر ئەسکەندەر(د.)(٢٠٠٤)، سەرهەڵدان و ڕوخانی سیستەمی میرنشینی لە کوردستان،جەوهەر کرمانج کردوویە بە کوردی،چاپی یەکەم،چاپخانەی داناز،سلێمانی.

٩. سەلام ناوخۆش(٢٠١٩)،پەخشانی ئیسلامی کوردی_١٥٩١_١٩٢١،چاپی یەکەم،سلێمانی.

١٠. شرفخانی بدلیسی(١٩٧٢)،شرفنامە، وەرگێڕانی:هەژار،چاپخانەی نعمان،نەجەفی پیرۆز.

١١. عبدالفتاح علی یحیی(١٩٨٨)،بورجا بەلەک د جزیرا بۆتان دا،گۆڤاری ڕۆشنبیری نوێ،ژمارە ١١٧،بەغدا.

١٢. عمر عبدالرحیم(١٩٨٥)،بە بۆنەی تێپەڕبوونی دووسەدساڵەی سلێمانیەوە،گۆڤاری کاروان،ژمارە ٢٩،هەولێر.

١٣. عوسمان دەشتی(د.)(٢٠٢١)،سالمی ساحێبقران_باس و لێکۆڵینەوە،چاپخانەی ڕۆژهەڵات،هەولێر.

١٤. عیزەدین مستەفا ڕەسوڵ(د.)(١٩٧٣)،عەلی بەردەشانی_ژیان و بەرهەمی،گۆڤاری کۆلێجی ئەدەبیات،ژمارە ١٦،بەغدا.

١٥. عیزەدین مستەفا ڕەسوڵ(د.)(١٩٨٨)،ئەمین زەکی و ئەدەب،گۆڤاری ڕۆشنبیری نوێ،ژمارە ١١٩،بەغدا.

١٦. فەرهاد پیربال(٢٠٢١)،تورک بە دیدی کورد : کێیە؟ کورد بە دیدی تورک :چیە؟،چاپخانەی مایا،سلێمانی.

١٧. کامەران موکری_محەمەد ئەحمەد تەها(١٩٨٤)ئەدەبی فۆلکلۆری کوردی،بەشی یەکەم،چاپخانەی زانکۆی سەلاحەدین،هەولێر.

١٨. کاروان عوسمان خەیات(ڕێبین)(٢٠١٩)، کۆبەرهەمی ئەحمەد موختار جاف،چ١،ئینشاراتی ڕۆژ،سنە.

١٩. کاوس قەفتان(د.)(١٩٨٥)،چەند لێکۆڵینەوەیەک لە مێژوی بابان_سۆران_بۆتان،د.کەمال مەزهەر ئەحمەد پێشەکی بۆ نوسیوە،چاپخانەی الحوادث،بەغدا.

٢٠. کریس کۆچێرا(٢٠٠٦)،کورد لەسەدەی نۆزدە و بیستەمدا،وەرگێڕانی:حەمەکەریم عارف،چ٣،چاپخانەی وەزارەتی پەروەردە،هەولێر.

٢١. کەمال مەزهەر(١٩٨٣)،مێژوو،

٢٢. مارف خەزنەدار(د.)(٢٠١٠)،ب٣،نیوەی یەکەمی سەدەی نۆزدەهەم_١٨٠٠_١٨٥٠،چ٢،چاپخانەی ئاراس،هەولێر.

٢٣. مارف خەزنەدار(د.)(٢٠١٠)،مێژوی ئەدەبی کوردی،ب٢،سەدەکانی چواردەم_هەژدەم،چ٢،چاپخانەی ئاراس،هەولێر.

٢٤. محمد امین زەکی(٢٠٠٥)،کورتەی مێژووی کورد و کوردستان،د.کەمال مەزهەر پێشەکی نوسیوە،چ٢،بەغدا.

٢٥. محەمەد حەمە باقی(٢٠٠٢)،میرنشینی ئەردەلان _بابان_سۆران_لە بەڵگەنامەی قاجاریدا_١٧٩٩_١٨٤٧ز ، چاپخانەی وەزارەتی پەروەردە،هەولێر.

٢٦. محەمەد سالح ئیبراهیمی محەمەدی(شەپۆل)(١٣٦٤)،ژیناوەری زانایانی کورد لە جیهانی ئیسلامەتی یا گەنجینەی فەرهەنگ و زانست،چاپخانەء مهارت،تهران.

٢٧. محەمەد عەلی قەرەداغی(٢٠١٠)،بەرکوتێک لە شیعری سالم،چەپکێک شیعری بڵاونەکراوەی سالم_پاشکۆیەکی دیوانی نالی.
٢٨. محەمەد نووری عارف(د.)(٢٠٠٧)،فەرهەنگی دیوانی شاعیران،چاپخانەی ئاراس،هەولێر.
٢٩. محەمەدئەمین زەکی بەگ(١٩٣١)،خولاصەیەکی تەئریخی کورد و کوردستان،ب١،بەغدا.
٣٠. مەلا عەبدولکەریمی مودەڕیس(٢٠١١)،یادی مەردان ،بەرگی یەکەم،چاپخانەی ئاراس،هەولێر.
٣١. نەوشێروان مستەفا ئەمین(١٩٩٨)،میرایەتی بابان لە نێوان بەرداشی ڕۆم و عەجەمدا،چ٢،سلێمانی.
٣٢. ی.ئی.ڤاسیلیەڤا(١٩٩٧)،کوردستانی خواروی ڕۆژهەڵات لە سەدەی حەڤدەوە تا سەرەتای سەدەی نۆزدە(کورتەیەکی مێژووی میرنشینانی ئەردەڵان و بابان)،وەرگێڕانی:ڕەشاد میران،هەولێر.
٣٣. ئاراس محەمەد سالح(د.)(٢٠٢٢)،نالی و زمانی کوردی،گۆڤاری ڕامان،ژمارە ٢٩٥_٢٩٦، هەولێر.
٣٤. ئارام عەلی مستەفا(پ.ی.د.)(٢٠١٩)،ماهشەرەفخانمی ئەردەڵانی(مەستورەی کوردستانی)مێژونوس و نووسەر(١٨٠٥_١٨٤٧ز)ژیان و سەردەمەکەی،گۆڤاری زانکۆی گەشەپێدانی مرۆیی،بەرگی٥،ژمارە ٢.
٣٥. ئاکۆ بورهان(٢٠٢٢)،مێژوی میرنشینە کوردییەکان لە چاخی نوێدا،چاپی دووەم،چاپخانەی چوارچرا،سلێمانی.
٣٦. ئەتەش سەبری(٢٠٢٢)،کۆتایی سەربەخۆیی کورد_ڕووخاندنی میرنشینە کوردییەکان لە ئیمپراتۆریەتی عوسمانیدا،وەرگێڕانی لە ئینگلیزییەوە:محەمەد حەمە ساڵح تۆفیق،گۆڤاری ئاژین،ژمارە ٣،سۆران.
٣٧. ئەحمەد باوەڕ(٢٠١٧)،مێژووی خانەقی _مێژووی میرایەتی باجەڵان مەلا محەمەدی جوانڕۆیی،چاپخانەی تاران.
٣٨. ئەحمەد تاقانە(٢٠١٠)،شێخ ڕەزای تاڵەبانی_کەڵە شاعیری خۆرهەڵاتی ناوەڕاست،چ٢،چاپخانەی ئاراس،هەولێر.
٣٩. ئەمین عەلی موتابچی(١٩٧٣)،شاعیرانی کورد و ئەدەبیاتی فارسی،گۆڤاری کۆلێجی ئەدەبیات ،ژمارە ١٦،بەغدا.

**بە زمانی عەرەبی**

٤٠. ابراهيم خليل أحمد(١٩٩٢)،حركة التربية و التعليم في موسوعة الموصل الحضارية،المجلد الرابع،الموصل.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

_جلادت بدرخان(١٩٩٨)،الحياة الجامعية في كردستان،ترجمة:هجار ابراهيم،مجلة متين،العدد٧٥،دهوك.

٤١. جليلي جليل(١٩٨٧)،من تاريخ الامارات في الامبراطورية العثمانية _في النصف الأول من القرن التاسع عشر،ترجمة:محمد عبدو النجاري،بيروت.

٤٢. حسين ناظم بيك(٢٠٠١)،تاريخ الامارة البابانية،ترجمة:شكور مصطفى و محمد الملا عبدالكريم المدرس،ط١،مطبعة وزارة التربية،أربيل.

٤٣. صلاح هروري(٢٠٠٠)،امارة بوتان في عهد الأمير بدرخان ١٨٢١_١٨٤٧_دراسة تاريخية_سياسية،ط١،مطبعة خبات،دهوك.

٤٤. عبدالفتاح علي يحيى(١٩٨٥)،بوتان و البوتانيون و الاغنية الكردية التاريخية،مجلة كاروان،العدد ٢٩،أربيل.

٤٥. عزالدين مصطفى رسول(د.)(١٩٧٩)،أحمد خاني_١٦٥٠_١٧٠٧_شاعرا"،مفكرا"،فيلسوفا"،و متصوفا"،بغداد.

٤٦. فوآد حمة خورشيد(١٩٨٣)،اللغة الكردية _التوزيع الجغرافي للهجاتها،مطبعة الوسام،بغداد.

٤٧. كاميران عبدالصمد الدوسكي(٢٠٠٦)،كردستان في العهد العثماني _في النصف الأول من القرن التاسع عشر ،ط١،الدار العربية للموسوعات،بيروت،لبنان.

٤٨. كاوه فريق أحمد(١٩٨٥)،الحالة الثقافية في كوردستان،مجلة كاروان،العدد ٣٥،أربيل.

٤٩. مارتن فان بروسن(١٩٩٨)،المجتمع الكردي _العرق_القومية _مشاكل اللجوء،ترجمة: عزالدين البيرموس،مطبعة الشريعة.

٥٠. مالميسانژ(١٩٩٨)،بدرخانيو جزيرة بوتان و محاضر اجتماعات الجمعية العائلية البدرخانية،ترجمة:شكور مصطفى،أربيل.

٥١. محمد الخال(د.ت)،الشيخ معروف النودهي،بغداد.

٥٢. ن.أ.خالفين(١٩٦٨)،الصراع على كردستان_المسألة الكردية في العلاقات الدولية خلال القرن التاسع عشر،ترجمة:د.أحمد عثمان أبوبكر،بغداد.

٥٣. أحمد بن الملا محمد الزفنكي(١٩٥٩)،العقد الجوهري في شرح ديوان الشيخ الجزري،ج٢ ،مطبعة رافدين ،قامشلو.

٥٤. ستيفن هيمسلي لونكريك(١٩٨٥)،أربعة قرون من تاريخ العراق الحديث،ط٦ ، بغداد.

**به زمانى فارسى**

٥٥. عبدالقادر ابن رستم باباني(١٣٦٦)،تاريخ و جغرافياى كردستان موسوم به _سير الاكراد،چاپخانهء ارزنك،تهران.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

**الملخص:**

ان الكرد أقاموا امارات متعددة على أرض كردستان و كانت كل امارة ذات سيادة مستقلة ،أو شبه مستقلة،أدت كل امارة من الامارات دورا" بارزا" سياسيا" و اجتماعيا" في التاريخ الكردي ،مثل الامارات:بوتان،بابان ،أردلان،سوران،هكاري،بهدينان و موكرياني.

ان عملية التعليم في ظل هذه الامارات الكردية كانت في المساجد،و المساجد له دور كبير في التعليم و يمثل مركزا يتمحور حوله طالبي العلم ،و كانوا يتعلمون اللغات أيضا الى جانب المعرفة الدينية،و خاصة اللغات الفارسية و العربية لان مسيرة التعلم كان يعتمد على المصادر الفارسية و خاصة امهات الكتب مثل:كلستان و بستان ل_سعدي الشيرازي و أشعار حافظ ،و الثقافة العربية خاصة النحو و الفقه و الشريعة و الأدب و العروض العربي،و الشعر عند الكرد هو العنصر الوحيد الذي كتب باللغة الكردية منذ القرن الثاني عشر ، و لكن المكاتبات بين الامراء باللغة الفارسية على الأكثر و اللغة العربية أحيانا،مع ان للامراء الكرد دور بارز في المسيرة التعليمية لأن أكثرية الامراء كان لهم خلفية ثقافية و بعضم يكتبون الشعر أيضا، أو لهم المامات فنية .

و لكن عملية التدوين جاء متأخرا من هذه الناحية ،لذلك نجد في طيات النصوص التاريخية أسطر حول عملية و أماكن التدريس و التعلم ،و لا يوجد مصادر مستقلة يخبرنا عن سير التعليم و كيفية اجراءها في ذلك الوقت،من أجل البحث عن الحلقات المفقودة للنصوص الخاصة بالتعليم،خصصنا البحث ل(( ثقافة اللغة و الأدب الكردي في ظل امارتي بوتان و بابان))،و يتكون البحث اضافة الى مقدمة و مدخل ، مناقشة: اللغة و الأدب كوجه آخر للامارات الكردية و بالأخص امارتي بوتان و بابان_هذا مع عرض أهم الاستنتاجات و قائمة المصادر و ملخص البحث باللغتي العربية و الانجليزية.

**كلمات الدالة:** *الامارات الكردية، الثقافة، الأدب الكردي،التعلم، احمد خاني، نالي ،التعليم الديني*

**Abstract:**

The Kurds established a number of emirates on the land of Kurdistan, and each emirate was sovereign, independent, or semi-independent. Each of the emirates played a prominent political and social role in the Kurdish history. Those were the emirates of Botan, Baban, Ardalan, Soran, Hakkari Bahdinan, and Mokeriani.

Education under these Kurdish emirates was in the mosques, which great role in education as they represented a center around which the seekers of knowledge revolve. People used to learn languages in mosques in addition to religious sciences, especially the Persian and Arabic languages because a good number of the important sources were in Persian, for example, Gulistan and Bustan by Saadi Al-Shirazi, the poetry of Hafez, and the Arabic books on culture, grammar, jurisprudence, Sharia, literature, and prosody. The Kurdish poetry has been the only thing written in the Kurdish language since the twelfth century. However, correspondence between the princes were in the Persian language at most and the Arabic language sometimes. The Kurdish princes had a prominent role in the educational process because most of them

had a good cultural background and some of them also wrote poetry, or took interest in arts.

Nonetheless, the recording process came late in this regard. We may find in historical texts some lines about the teaching process and the places of teaching and learning, but there are no independent sources telling us about the progress of education and how it was conducted at that time. In order to find the missing parts in the texts related to education, we devoted this research to the culture of Kurdish language and literature in the time of the emirates of Botan and Baban.

The research consists of an introduction and a discussion about language and literature as another aspect of the Kurdish emirates, especially the emirates of Botan and Baba. There is also a section about the most important conclusions, then the research end with a list of references and the abstract in Arabic and English.

**Keywords:** *Kurdish emirates, culture, and literature; learning; Ahmed Khani, Nali; religious education.*

# ڕۆڵی میرنشینە کوردییەکان لە گەشەسەندنی ڕۆشنبیری و ئەدەبیاتی کوردیدا
# میرنشینەکانی ئەردەڵان و بابان بەنموونە

**پ. ی. د. لوقمان رەئوف عەلی**
بەشی کارگێڕی کار- پەیمانگەی تەکنیکی کوردستان (سلێمانی) / هەریمی کوردستانی عیراق
**پ. ی. د. سروشت جەوهەر حەویز**
بەشی زمانی کوردی- فاکەڵتی پەروەردە- زانکۆی کۆیە/هەریمی کوردستانی عیراق

**پۆختە:**

ئەم توێژینەوە بەناونیشانی(ڕۆڵی میرنشینە کوردییەکان لە گەشەسەندنی ڕۆشنبیری و ئەدەبیاتی کوردیدا میرنشینی ئەردەلان و بابان بە نموونە) باسکردنە لە ڕۆڵی هەردوو میرنشینی ئەردەڵان و بابان لە گەشەسەندنی ئەدەبیات و بڵاوکردنەوەی ڕۆشنبیری لەسەردەمی دەسەڵاتیاندا، بەمانایەکی تر کارکردنە لەسەر ئەو هەوڵ و کارانەی ئەم دوو میرنشینە لە پێناو هەنگاونان بەرەو شارستانییەت و ڕۆشنبیرکردنی خەڵکی و سود وەرگرتنیان لە کایە جیاوازەکانی میرنشینەکەدا، جگە لەمەش تۆمارکردن و پاراستنی مێژوو ئەدەبیاتی کوردو خستنەگەڕی توانا مرۆییەکان، لەپێناو رەخساندنی زەمینەیەکی لەبار بۆ گەشەدان بە کۆمەڵگە.

گرنگی ئەم توێژینەوە لەوەدایە کە هەموو ئەو هەوڵ و کارانەی لەسەرەتای میرنشینی ئەردەڵان و بابان دا، لەپێناو گەشەدان بە بە ئەدەبیات و ڕۆشنبیری دەناسێنێت، جگەلەمەش ئەو بەرهەمانەی کە لەم میرنشینانە ماوەتەوە، ئەگەرچی کەمن، بەڵام بەنرخ و گەوهەرن و بوونەتە بنەمایەکی سەرەکی ڕێبازی کلاسیکی کوردی.

**پەیڤێن سەرەکی:** *میرنشین، ئەردەڵان، بابان، ڕۆڵ، ئەدەب، ڕۆشنبیری.*

**پێشەکی:**

ڕۆشنبیری ئاوێنەیەکە باری کۆمەڵایەتی و بیری هەر گەلێک بەپێی قۆناغەکەی پیشاندەدات و دەبێتە هۆکارێک بۆ خستنەڕوو و ناساندنی پێکهاتەو بەهاکانی، بەمەش یەکەیەکی ڕێکخراوەو کار لەسەر بەرز ڕاگرتنی زمان و ئەدەب و بەها باڵاکانی کۆمەڵگە دەکات، هەر بۆیە کە باس لە ڕۆشنبیری لە ناو هەردوو میرنشینی ئەردەلان و بابان دەکەین، ڕاستەوخۆ پەیوەست دەبێتەوە بە شارستانییەت و ئەو هەنگاوانەی کە لەرێگەیەوە بوونەتە ناسنامەی میرنشینەکان.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ئەم تـوێژینەوەیە باسـکردنە لە ڕۆڵـی ڕۆشـنبیری لە بونیادنـانی رۆشـنبیری لەم دوو میرنشـینەو گەشـەدان بە کـۆمەڵگەو هۆشـیاری مرۆڤەکـان، بەتـایبەتی میرەکـان، لەپێنـاو ناساندنی نیشتمان و هەستکردن بە تاک و ئازادی و بەشداریکردن لە ژیانە کۆمەڵایەتی و سیاسیەکەو هەوڵدان بۆ گۆڕینی عەقڵیەتی خێڵەکی بۆ شارستانییەتی.

میرنشـینە کوردییـەکان لەگـەڵ دروسـتبوون و گرتنەبـەری دەسـەڵات، بـە گشـتی کاریان بۆ کۆی پرسەکان کردووە، یەکێک لەم کارانەش شیعرو ئەدەبیاتی کوردی بووە.

میرنشینی ئەردەڵان بەدرێژایی مێژووی حوکمڕانی خۆی، چەند هەنگاوی گرنگ و کەشی لە باری بۆ ئەدەب ئەدەبیات و ڕۆشنبیری ڕەخساندوە، لەلایەک لەپێناو هۆشیاری و ڕۆشنبیرکردنی کۆمەڵگە، لەلایەکی ترەوە نیشاندانی ناسنامەی میرنشینەکە بووە.

بەهەمان شێوە میرنشینی بابان لەماوەی فەرمانڕەوایی میرنشیتنەکەدا، هەرچەندە مـاوەی دەسـەڵاتیان لـە چـاو میرنشـینی ئەردەڵانـدا زۆر نـەبووە، بـەڵام زمـان و ئـەدەبی کـوردی پەرەسـەندنێکی باشی بـەخۆوە دیـوە، ئەمەش بەهـۆی ئەوەی لەلایـەک دروسـتکردنی کەشـی ئەدەبی و شیعریی، لەلایەکی ترەوە ئەدەب یەکێک بووە لە بنەماکانی فێربوون و فێرکردن.

ئامانجی لێکۆڵینەوە: دیاریکردنی ڕادەی گرنگیدانی میرنشینەکان بە ئەدەب و ڕۆشـنبیری ، ڕۆڵـی میرنشـینەکان لە گەشـەکردنی ئـەدەب بەگشـتی و مزگەوتەکـان وەک سـەرچاوەی خوێنـدەواری و ڕۆشـنبیریی بەتـایبەتی، دەرخسـتنی ڕادەی بەهێـزی ئـەدەبی سـەردەمی میرنشینەکان، ناساندنی شیعرو ئەدەبیات و دیاریکردنی بنەماکانی لەم قۆناغەدا. ناسـنادنی هەوڵی میرەکان، لەپێناو بڵاوکردنەوەی خوێندەواری و ڕۆشنبیریی.

ڕێبـازی لێکـۆڵینـەوە: لـە نوسـینی ئـەم لێکۆلینەوەیـەدا پـەیڕەوی ڕێبـازی مێژوویـی ، وەسفی شیکاری کراوە .

ئەم لێکـۆڵینـەوەیە کـار کـردنە لەسـەر ڕۆڵـی میرنشـینەکانی ئەردەڵان و بابـان، لـە بارەی گەشەی ئەدەب و گرنگیدان بە شیعرو برەودان بە بواری ڕۆشنبیری، بۆیـە پێکـدێت لـە دوو بەش:

لە بەشـی یەکەمـدا بـاس لەڕۆڵـی میرنشـینی ئەردەڵان و سـەرچاوەی گەشـەو فـراوان بوونی ئەدەب و ڕۆشنبیری و مێژوو، ئاین و قوتابخانە.....تاد لـەم سـەردەمانەدا دەکـات، لـە بەشـی دووەمیشـدا بـاس لـە گەشـەپێدانی ئەدەبـی میرنشـینی بابـان دەکـات لەگـەڵ سـەرچاوەی گەشەو فراوان بوونی ئەدەب و ڕۆشنبیری و شیعرو ڕۆڵی شیعر لەم میرنشینانە دەکات، لەگەڵ کردنەوەی شوێنی تایبەت بە چالاکی و هاندانی خەڵک و ڕۆڵی لەسەر ڕۆشنبیری هاووڵاتییـان و خستنەرووی پێگەو ڕۆڵی هەریەکە لەم میرنیشینانە، پاشان بەراوردی هەردوو میرنشینەکە لەم ڕاونگەوە کراوە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**یەکەم: ڕۆڵی میرنشینی ئەردەڵان لە گەشەسەندنی ئەدەبیاتی کوردیدا**

میرنشینی ئەردەڵان یەکێک بوو لە میرنشینە کوردییەکان و حکومەتێکی نیمچەسەربەخۆ بووەو نزیک بە( ٧٠٠ساڵ) (١١٦٩ -١٨٦٧) فەرمانڕەوایی بەشێک لە کوردستانی کردووە. تاوەکو بەر لەدامەزرانی شاری سنە لە ساڵی( ١٦٣٦ز)، ناوەندی حکومەتەکەیان زۆرتر هەورامان، قەڵای پاڵەنگان و قەڵای مەریوان بووە)( عبدالصمد، "نور الانوار فی کرامات ذراری سیدالمختار ، ١٣٦٩)

میرنشینی ئەردەڵان یەکێک بووە لە میرنشینە بە هێزەکانی کورد، چونکە بەدرێژایی فەرمانڕەوایی خۆی، دەسەڵاتێکی فراوانی هەبووە، چونکە زۆر ناوچەو شاری خستووەتە ژێر ڕکێفی خۆی، جگەلەمەش سکەی خۆیان هەبووە و سەردەمێک بە تەواوی سەربەخۆبووەو تا ماوەیەکی زۆر بە هیچ شێوەیەک لە وتارەکانیاندا باسی هیچ کەسێکیان تێدا نەکردووە و بەناوی خۆیانەوە وتاریان خوێندووەتەوە، واتە نە بەناوی سوڵتانی عوسمانییەوە، نەبە ناوی شای سەفەوییەوە، وتاریان خوێندووەتەوە، واتە تا ڕادەیەکی زۆر سەربەست و سەربەخۆ بوون، بەڵام هەندێک کاتیش بەهۆی هاتنی هەندێک میری لاواز و بێ توانا و ناکۆکی ناوخۆ، بەرەو لاوازی چوون و لە دوای ماوەیەکیش هەر بەو هۆیەوە چونەتە ژێر ڕکێفی دەوڵەتی سەفەوی و تا ساڵی (١٨٦٨ز) بە تەواوی لەناوچووە.

لە دوای ساڵی (١٦٣٩ز) ڕێکەوتنی زەهاو، کوردستان بە تەواوی بوو بە دوو بەشەوە، بەشێکی لە ژێر دەستی دەوڵەتی سەفەویەوەو بەشەکەی تریشی لە ژێر دەستی دەوڵەتی عوسمانی مایەوە، هۆزەکانی کەلهوڕ و ئەردەڵانیش بوونە بەشێک لە سەفەوی و تەنها ناوچەی ئامێدی و جزیرە بۆ ماوەیەکی باش بە نیمچە سەربەخۆیی مابوونەوە.

میرنشینی ئەردەڵان بە درێژایی ئەو ماوەیەی کە حوکمرانی کردووە، لەگەڵ ئەو ململانێ و ناکۆکیانەش کە هەبوون، بەڵام وەک پێگەی دەسەڵات و بەڕێوەبردنی میرنشینەکە، کۆمەڵێک ئەرک بووبوونە بنەمای حوکمرانی میرنشینەکە، لەوانە (خوێندن، ڕۆشنبیری، ئابوری، سەربازی، ......تاد) ئەگەرچی حکومەت، یان میرەکان خۆیان نەبووبوونە کارئەکتەری سەرەکی و ڕاپەڕاندنی ئەم کارانە، بەڵام ڕۆڵێکی سەرەکییەکان هەبوو لە گەشەسەندن و هەوڵدان بۆ بڵاوکردنەوەی خوێندن و ڕۆشنبیری، چونکە بەشێک لە میرو کوڕەکانیان خۆیان هەم خوێندەوارو ڕۆشنبیر و هەم شاعیرو نوسەر بوون.

کەواتە میرنشینی ئەردەڵان لەپێناو گەشەدان بە بواری ڕۆشنبیری و پێگەی کەسی خوێنەوارو شارەزا، چەند هەنگاوێکی گرتوەتەبەر:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**یەکەم: نوسینەوەی مێژوو**

لەسەردەمی ئەم میرنشینەدا یەکێک لەو خاڵە دیارو چالاکانەی کە سەریهەڵدا، یاخود بوونی هەبووە، درێژەدان بوو بە نوسینەوەی مێژوو، یان نوسینی کتێبی مێژوویی لە دوای شەرەفخانی بەدلیسییەوە، بەمەش ئەم هەنگاوە دەچێتە ڕیزی ئەو هەنگاوە دیارانەی، کە مێژوو نوسە دیارەکانی جیهان و ڕۆژهەڵات ، وەک زەینەفون و سترابۆن و .....تاد لەبواری مێژوودا گرتویانەتەبەر، چونکە"بۆ یەکەمجار لە مێژووی کوردستاندا مێژوونوسانی کوردستانی ئەردەڵان ڕێبازی شەرەفەدین خان بەتلیسییان درێژەپێداو وێرای نوسینی پاشەرۆک لەسەر شەرەفنامە، چەندان مێژوو و جوگرافیای میرنشینی ئەردەڵان نوسیوە"(بیر ئانینی مەستورەی ئەردەڵان، ٢٠٠٥: ١٧) لەناو ئەم کارە مێژووییانەشدا مێژونوسێک سەریهەڵداوە، کە پێشتر وێنەی نەبووە، ئەویش مێژوونوسێکی ژن بووە و بە پاڵپشتی بنەماڵەو خێزانەکەی و کەشی لەباری میرنشینەکە، مێژووی ئەردەڵانی نوسیوە، بۆیە"مەستورە بەنوسینی مێژووی ئەردەڵان، بە یەکەم ژن دەژمێردرێ، کەلەسەر ڕێبازی میر شەرەفەددین ڕۆیشتووە"( بیر ئانینی مەستورەی ئەردەڵان: ١٧) ئەم ڕۆڵەی مەستورە وەک ژن لەو سەردەمانەی کە ژن بەتەواوی لە ژێر باری داب و نەریت و لایەنە کۆمەڵایەتییەکاندا خەفەکرابوو، ئەم کارانەی کردووە، ئەمەش ئاستی ڕۆشنبیری و ڕۆڵی میرنشین و هاوسەرو خێزانەکەی دەردەخات، لەوسەردەمەدا بە زمانی (کوردی، عەرەبی و فارسی) بەرهەمی هەبووە.

ئوگینا واسیل ئاوا وەرگێری (مێژووی ئەردەڵان) بۆ ڕوسی لە بارەی مەستورەدا دەڵێ"لە تیرەو هۆزەکانی ڕۆژهەڵاتی ناوەڕاست و نزیکدا، ئافرەتێکی دیکەی وەک مەستورە، کە هەم شاعیرێکی بەتواناو مێژوونوسێکی لێهاتووبووە، وێنەی نەبووە، بەڕاستی سەدەی نۆزدەهەم ژنی ڕۆشنبیری وەک مەستورەی بەخۆوە نەدیووە)( قەرەداغی،دیوانی مەستوورە،٢٠٠١: ١١) ئەم بۆچوونەش ڕۆڵ و پێگەی مەستوورەی ئەردەڵان دەردەخات کە لەو تەمەنە کەمەیدا پێشکەشی کردووە.

ئەوەی ئەم کارەی گرنگ و بە بایەخ کردووە، ئەوەیە کە تا ئەو سەردەمە، لەلایەک کاری لەم شێوەیە نەکرابوو، لەلایەکی ترەوە مێژوو لە قاڵبی گێڕانەوە دەرنەچووبوو، بەڵام لەم سەردەمەدا مێژوو بووبە زانست و نوسین و کارکردن لەسەر بەڵگەو ڕووداوەکان، جگەلەمەش یەکێکی تر لە هۆکارەکان، دەگەڕێتەوە بۆئەوەی کە مەستورە دەڵێت"هەر لەسەرەتای خوێندەواری خۆمدا کتێبی مێژووییم زۆر دەخوێندەوەو هۆگری بابەتە مێژووییەکان بووم"( بیر ئانینی مەستورەی ئەردەڵان : ١٨)

سەبارەت بە وردی و باسکردن لەڕووداوەکان، ماجدی مەردۆخ ڕۆحانی دەڵێت"خەسرەوخانی گەورە لە ساڵی (١١٧٠) بۆتە حاکمی کوردستان، لەولاشەوە کە دەزانین محمد ئاغا ساڵی (١٢٥٠)عەمرەی خوای کردووە، ئەمەشمان بۆ دەردەکەوێ کە ئەو پیاوە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دەوری نەوەد ساڵ ژیاوە، کەسێ لە مێژووەکەی مەستورە وردبێتەوە، دەبینێ کە ئەو کتێبە وردبینییەکی زۆری لە ڕووداوەکانی شەست حەفتا ساڵی پێشتر لە ژیانی نوسەرەکەدا هەیە، بێ شک هۆکاری سەرەکی ئەم تایبەتییە محمدئاغایە"( بیر ئانینی مەستورەی ئەردەڵان :٢٤) کەواتە میرکانی ئەردەڵان بە گشتی لە ڕوانگەی ڕۆشنبیری و خوێندەوارییەوە ڕۆڵیان لە هاندان و ڕۆشنبیرکردندا هەبووەو بەرهەمەکەشی ئەم شاکارانەیە، کە بوونەتە بارستایی ئەدەب و مێژووی کوردی.

جگەلەمەش میرنشینی ئەردەڵان دووەمین میرنشینی کوردە، کە دەکەوێتە دوای میرنشینی بەتلیس و مێژووی فەرمانڕەوای خۆی بە ڕێکوپێکی تۆمارکردبێ، ئەگەر بیرەوەرییەکانی (مەئموون بەگی کوری بێگە بەگ) وەک لە مێژووی فەرماڕەوایانی ئەردەڵان، بەیەکەمین سەرچاوەی مێژوویی وەربگرین، کە ساڵی (٩٨٥-١٥٧٧ز)، واتە (٢٠) ساڵ پێش تەواوکردنی شەرەفنامە – ١٥٩٦) نوسیبێتی، ئەوا میرنشینی ئەردەڵان دەبێتە یەکەمین میرنشینی کوردی کە مێژووەکەی لەلایەن مێژوونوسانی ئەردەڵانەوە سەرلەبەری نوسرابێتەوەو مەستورە شەشەمین کەسە کە مێژووی ئەردەڵانی نوسیوەتەوە، واتە لەدوای(مەئموون بەگ، شەرەفخان، مەلا محمد شریف، محمد ئیبراهیم ئەردەڵانی، خەسرەوبەگی ئەردەڵان) ( بیر ئانینی مەستورەی ئەردەڵان : ٧٧)

جگە لەمانەش ئەمانوڵلاخانی ئەردەڵان (١٧٧٥-١٨٢٤ز) خەسرەوخانی ناکام (١٨٠٠-١٨٣٢) دەستیان بە نوسینەوەی مێژووی فەرمانڕەوای ئەردەڵان کردووە، هەروەها لە شاری سنە کە پایتەختی میرنشینەکەبوو، بە دەیان شوێنەوار هەن، کە سەردەمەکەیان دەگەڕێتەوە بۆ سەردەمی میرنشینی ئەردەڵان، لەگەڵ ئەمەشدا لاسایی و کاریگەری سەفەوی و زەندی و قاجەرەکانی پێوە دیارە، بۆیە لە بواری ئەدەبیات و مێژوودا بە هەمان شێوە لەگەڵ ڕەوتی ئەم سەردەمانەدا هەنگاویان ناوە، بۆ نموونە"لەبواری نوسیندا تەنیا لە نێوان ساڵانی (١٢١١ک م تا ١٣١٩ک م) شەش کتێبی بە نرخی مێژوویی بە ناوی (زوبدەتول تواریخ)، (لوبول تەواریخ)،(تاریخ ئەردەڵان)، (حەدیقەی ئەمانوڵلاهی) ،(حەدیقەی ناسری)، (توحفەی ناسری)دەنوسرێت، تا بزوتنەوەی مێژوونوسی سەردەمی قاجارەکان لە کوردستان دووبارە بەرهەم بێتەوە. کەمن ئەو تەقەلایە ناوئەنێم (بزوتنەوەی مێژوونوسی سنە" (بیر ئانینی مەستورەی ئەردەڵان : ١١٦)، بەدەر لە کەسە نوسەرو مێژوونووسەکان(میرەکانی ئەردەڵان لەسەردەمی دەسەڵاتدارێتی خۆیانەوە مێژوونوسانیان بە نوسینەوەی بنەماڵەی ئەردەڵان ڕاسپاردووە .( حەمە باقی، میرنشینی ئەردەڵان بابان سۆران لە بەڵگەنامەی قاجاریدا، ٢٩:) جگەلەمەش پاراستنی چەندین دۆکۆمێنت و بەڵگەی بەبایەخ و نوسین لای ئەم میرنشینە، بووەتە خەم و بەرپرسیاریەتی ڕۆشنبری و ئەدەبی.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دووەم ئەدەب:

لەسەردەمی میرنشینی ئەردەڵاندا ئەدەب و کاری نوسین، گرنگی زۆری پێدراوە، لەلایەک لەپێناو پێگەیاندنی نەوەیەکی رۆشنبیرو ئەدەب دۆست، لەلایەکی ترەوە بەخشینی سیمایەکی رۆشنبیری بە میرنشینییەکە، بۆیە هەم لەناو دەسەڵات، هەم لەو شوێنانەی کە وەک شوێنی خوێندن و زانست بەکارهاتوون، ئەدەب یەکێک بووە لەبابەتەکانی پێگەیاندن.

ئاشکرایە کە مەستورە نەیویستووە شوو بە خەسرەوخان بکات، لەم بارەوە میرزا عەلی ئەکبەر، مونشی دەڵێت"مەستورە لە هەموو بارێکەوە خۆی وەک پیاو دەزانی، نەیدەویست ئەو مێردکردنە قبوڵ بکات و تا ئەوەی خوالێخۆشبوو خەسرەوخان بە بیانوی جۆربەجۆر باپیری بەرێزو باوکی هێژای مەستورەی خستە بەندەوە، بێجگە لەمەش پەنجاهەزار تمەنیانی لێیان وەرگرت، بەڵام مەرجی رزگاربوونیان لە بەندیخانە بەوەدانا کە ئەوکیژەی بۆ مارە بکەن"( بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان :١٩).

ئەگەر هاوسەرگیرییەک بەم مەرامەوە گرێدرابێت، ئەی ئەوە چ هۆکارێک بوو وای لە مەستورە کرد، کە بە هێزترین شین بۆ هاوسەری بە شیعر بنوسێت، لە مێژووی شیعری شینی هاوسەردا، کەواتە دوای هاوسەرگیری و ناسینی خەسرەو وەک کەسێکی رۆشنبیرو شاعیر و رەخساندنی گەشەی ئەدەبی و شیعریی، ئەو مەبەست و نیازە خراپەی گۆڕی بۆ ناسین و بەقەدری مەستورە، بۆیە لە ناو کۆشک و دەسەڵاتدا کەشی ئەدەبی و کتێبخانە رۆڵێکی گرنگیان پێداوەو بە هۆشییەوە مەستورە، بە پشتیوانی هاوسەرەکەی توانیویەتی هەم شیعری باش بنوسێت، هەم لە بوارەکانی تریشدا رۆڵی هەبێت، چونکە(خەسرەوی والی کە هاوسەری مەستورە بووە شیعری نوسیوەو نازناوی (ناکام)بووە)( ببادیە، استاد ملا محی الدین ساڵحی، ١٣٨٠)، بەمانایەکی تر ئەگەر میرانی ئەردەڵان رۆشنبیر نەبوونایە، ئەوا کەسێکی رۆشنبیری وەک خەسرەوخانی لێهەڵنەدەکەوت، بۆیە کۆڕو کۆبوونەوەو شیعرو وتارو...تاد سیمایەکی دیاری میرنشینییەکەبووە.

لەبواری ئەدەبی دا  مەستورەی ئەردەڵانی کتێبێکی تایبەت کردووە بە نوسەرانی کورد کە ناوی ناوە (مجمع الادبا) (بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان :٢٥) ئەمەش ئەوە دەردەخات کاری ئەدەبیات و نوسین یەکێک بووە لە کارەکانی میرنشین، بەو پێیەی ئەم هەموو نوسەرو شاعیرەی تێداهەڵکەوتون، لەلایەک میرنشین پاڵنەربوو، لەلایەکی ترەوە سەرچاوەی ئەمانەش مزگەوت و ژینگە رۆشنبیرییەکە بووە.

محمد عەلی قەرەداغی دەڵێت"مەستورە زۆرێک غەزەلی ناسک و رەوانی لێ ماوەتەوە، هەندێک لە شیعرەکانی بۆ مێردەکەی (خەسرەوخانی والی)گوتووە، کە ئەویش شاعیربووەو شیعریان گۆڕیوەتەوە" (قەرەداغی،دیوانی مەستوورە،٢٠٠١: ٩)، هەروەها رۆخانی دەڵێت(مەستورە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

زۆرێک غەزەلی ناسک و ڕەوانی لێ ماوەتەوە هەندێک لە شیعرەکانی بۆ هاوسەرەکەی (خەسرەوخانی والی) گوتووە، کە ئەویش شاعیربووەو شیعریان گۆڕیوەتەوە)( ڕۆخانی، مێژووی ناودارانی کورد، ٢٠١١: ٣٦٣) "ژیانی مەستورە لەسەردەمی گەشەو ناوبانگی میرەکییە کوردییە فیودالەکانی ئەودەمە بووە. کە شیعر و ئەدەبیاتی کوردی لەگەڵ گەشەی ئەواندا گەش بوو، لەگەڵ هەرەسی ئەوانیشدا بوکایەوە" (بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان : ٣٥). ئەمەش بەهۆی ئەوەی لە حەرەمی دەسەڵاتدا، شیعرو ئەدەبیات بایەخی زۆری پێدراو لەو ڕێگەیەوە شاعیرو ڕۆشنبیریان پێگەیاندوە، ئەم کلتورەش لای گەلانی ئێران هەبووە، بۆ نموونە لەسەردەمی (فەتحعلی شای قاجار)دەیان شاعیری ژن لە حەرەمیدا کۆڕیان بەستووە، لەمەش گرنگتر هەر سێ ژنەکەی (تادس خان، دڵشاد خان، کانی باجی) شاعیری دەرباری شاپورن، ئەمە جگە لە چەند شاعیرێکی تر، بۆیە ڕۆڵی ژن و شاعیر لە میرنشینی ئەردەڵاندا، لە ژێر کاریگەری و نزیکی ئەم سەردەمانەدا، شیعرو ئەدەبیات گرنگی و بایەخی زۆری پێدراوەو ئەستێرەی درەوشاوەش مەستورەی ئەردەڵانییە، یاخود (ئەمانوڵلاخانی) ئەردەڵان (١٨٢٥) بە چاوێکی وردبین تەماشای زانست و ئەدەبی دەکرد، بارەگای والی جێگەی شاعیرو نوسەرو زانایان بوو) (خەزنەردار،ب٤، ٢٠٠١: ١٢)، یان لەسەردەمی (خەسرەوخانی کوڕی ئەمانوڵلا )ی ئەردەڵان بوو بە نێوەندێکی گرنگ و گەورەی شیعرو ئەدەب، والی خۆی شاعیرێکی ناسراوبوو. (خەزنەردار،ب٤، ٢٠٠١: ١٢)

محمد عەلی قەرەداغی دەڵێت" خاتوو مەستورە وەک لە دەستنوسەکانیدا دەردەکەوێ، هەموو شێوە خەتێکی زۆر جوان نوسیوەو دیارە لەم بوارەشدا دەستێکی باڵای هەبووە"(قەرەداغی،دیوانی مەستوورە، ٢٠٠١: ٩)، کەواتە مەستورە جگە لەئەدەب و مێژوونوسین، خەتخۆش و جواننوسی سەردەمی خۆی بووە، جگەلەمەش لەناو بنەماڵەکەیدا شاعیرو نوسەری تر هەبوون، بۆنموونە میرزا فەتحوڵلای خورەم وەزیری کە مامی دایکی مەستورە بووەو سەرداری خەسرەوخانی گەورەبووە، بەڵام پاڵی داوەتە لوتفعەلی خانی زەندەوە، دواتر دەکەوێتە چنگی ئاغا محمد خان و چاوی هەڵدەکۆڵێ، بۆیە ڕووداوەکاتە شیعر نوسین و شاعیرێکی زۆرباشی لێ دەرچووە بە تایبەتی)( بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان:٢٥)جگەلەمیش میرزا عبدالباقی(شیدا) پورزای بابی مەستورە، شاعیرێکی باشبووەو لە سەردەمی خۆیدا، کەسی بە شاعیر نەزانییوە.( بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان :٢٥)

**سێیەم: ئاین:**

لەبەرئەوەی قۆناغی یەکەمی پرۆسەی فێرکردن لە مێژووی کورددا، بریتی بووە لە خوێندن لە مزگەوت و بنکە ئاینییەکان، بۆیە مزگەوت ڕۆڵێکی گرنگی بینیوە لە پێگەیاندن و فێرکردن و پاراستنی دەقەکان، جگەلەمەش میری میرنشینەکان، لەپێناو بەهێزکردنی پێگەی میرنشینەکان، گرنگی و بایەخیان پێداوە، بۆیە لە کۆی میرنشینە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کوردییەکاندا گرنگیدان بە مزگەوت و تەریقەتەکان خاڵێکی دیار بووە، چونکە ئاین و ئاینداری باڵی کێشابوو بەسەر کۆمەڵگەی کوردیدا، لەسەردەمی میرنشینی ئەردەڵانیشدا، چەندین مزگەوتی گەورەو جیاواز کرانەوەو کران بە قۆناغی جیاوازی خوێندن، بەوەی لە فەقێیایەتیەوە بۆ بوون بە ئیمام و وتاربێژ، لەم سۆنگەوە(مزگەوتی داروئحسان کە لە ماوەیەکی کەمدا بوو بە ناوەندێکی گرنگی خوێندەواری، هەروەها کتێبخانەیەکی دەوڵەمەندی هەبووە )(باقی، ٢٠٠٢، ٣٢) مزگەوتی دارولئیحسان لەسنە یەکێک بووە لە بنکە سەرەکی و گەورەکانی خوێندن و وەک ئاست لە ئاستی زانکۆدا بووە بۆ بڕینی ئاستی خوێندن، چونکە بڕوانامەی بە زانابوون داوە بە دەرچووەکانیان، مەردۆخی دەڵێت"(مزگەوتی دار ئەلئحسان بە مزگەوتی جامیع (گەورە) ناسراوە، چەند گوندی ئاخلچیان و چەند باخێکی لەسەر وەقفکراوە بۆ ئاوەدانکردنەوەو بژێوی فەقێکان و مامۆستایان و مجەوری مزگەوتەکە کراوە، بەڵام ئەو داهاتە بۆ خۆشگوزەرانی کەسانی دیکە بەکاردێت.( مەردۆخ ، مێژووی کوردو کوردستان،٢٠١١ : ٢٨٨) هەروەها دەڵێت" لە شارو گوندەکانی دەوروبەرو قەزاکانی سەر بە سنە زیاتر لە هەزار شێخ و مزگەوتمان هەیە، ژمارەی مزگەوتەکانی شار بریتین لە (٥٢) مزگەوت) ( مەردۆخ،مێژووی کوردو کوردستان،، ٢٠١١: ٢٨٧)جگەلەمەش مەستورەی ئەردەڵانی لە کتێبی (عەقاید)ی وەک(ڕۆشنبیرێکی عارف شێوە ئیسلام ناسێکی خاوەن بیروباوەڕبوو، (بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان :٢١) بڕوام وایە پەروین ئیعتسامی شاعیری دیاری فارسی کە پلەو پایەیەکی لە میژووی ئەدەبی ئێراندا بۆ دانراوە، هەمان ڕێگەو کاری مەستورەی ئەردەڵانی ئەنجامداوە .

مەستورە کتێبێکی بەناوی(شەرعیات)یان(رسالەی شەرعییە)نوسیووەو یەکێکە لەو کتێبانەی کە دەخرێتە بواری زانستی ئیسلامی لە کوردستاندا)( بیر ئانینی مەستورەی ئەردەڵان:٤٣)، کتێبی(شرعیات)ی مەستورە لە ساڵانی (١٢٥٥-١٢٦٢) نوسراوە، مەستورە دەڵێت"لە ڕۆژێکدا کە گلۆڵەی بەختم لە بێ وەفایی دەوران کەوتبووە لێژی، کۆشکی بەختم بەدەستی گەردوونی نا لەبار رووخابوو" (بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان:٤٨) ، هەموو ئەمانەش هۆکارەکەی رەخساندنی کەشی رۆشنبیری بووە لەلایەن میرانی میرنشینەوە،بۆیە بە هۆی بایەخدانی میرنشین بە بواری ئاین و زانا ئاینییەکان کەسێکی وەک (شێخ عبدالقادری مهاجر) یەکێک بووە لە زانا گەورەکانی جیهانی ئیسلامی لە ساڵی (١٢٣٩) دەستی بە وانە وتنەوە کردووە لە مزگەوتی(دارو ئەلئحسان)، بەڵام لە ساڵی ١٢٧٠ بە هۆی هاتنی فیتنە سنە جێدەهێڵێت و ڕوودەکاتە سلێمانی و ساڵی (١٣٠٥)، کۆچی دوایی دەکات.( بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان:٤٦)،_مزگەوتی والی یەکێکی ترە لەو مزگەوتانەی سنە و بە (دار ئەلئەمان) ناسراوە، والی (١٢٦٨) لە لایەن ئەمانوڵلاخان بنیادنراوە، هەروەها چەندین مزگەوتی تر وەک (هاجەرە خاتوون)، هەموو ئەمانەش بەپێی ئاست و پێگەی خۆیان رۆڵیان هەبووە.

جگەلەمەش لەمەسەلە ئاین و ئایندارییشدا، تەریقەتی نەقشبەندی ڕۆڵێکی دیارو کاریگەریان هەبوو لە پێگەیاندنی فەقێ و زانای ئاینی لەم سەردەمەدا و سەردەمی دواتریشدا، بەشێوازێک زۆر کەس و مەلاو زانان و نوسەرو شاعیریان پێگەیەندوە.

**چوارەم قوتابخانە:**

قوتابخانەش ئەگەرچی هەندێک درەنگ سەریهەڵدابێت، بەڵام شانبەشانی مزگەوتەکان رۆڵی خۆیان گێڕاوە، بۆ نموونە لە شاری سنە و دەوروبەری نزیکەی (٢٠ بیست) قوتابخانە بوونی هەبووە، هەروەها(بارودۆخی مەعریفەو ئەساسی مەعریفی کوردستان تارادەیەک سەرنجڕاکێشە، چونکە کەسانی چینی یەکەم، کەلە شوێنێکی کۆمەڵگەدان و دەسەڵاتی کوردستان لە دەستی ئەواندایە، نە خوێندەوارو هیچ بەهرەیەکی زانستی و ئەدەبیان نییە، ئەم چینە دژی مەعریفەو پێشکەوتنن و ناخوازن کوڕەکانی کۆمەڵگە پێش خۆیان بکەونەوە، لەبەرئەمە زانست بە دژی دین و ئیسلامیەت دەناسێنێت و بە چەندین بیانوی جۆراوجۆر لەمپەر لە ڕێگەی خوێندن و پێشکەوتن دروست دەکەن.) (مەردۆخی، مێژووی کوردو کوردستان،٢٠١١ : ٢٩٤) ئەگەرچی لەپێناو مانەوە لەدەسەڵات و دروستنەبوونی کەست بەتوانا ڕێگری کرابێت، بەڵام لەپاڵ ئەمەشدا توانیویانە چەندین کەسی بەتاوانا دروستبکەن، تەنانەت لە خودی میرنشێنەکانیشدا رۆڵیان هەبووە.

**دووەم: ڕۆڵی میرنشینی بابان لە گەشەسەندنی ئەدەبیاتی کوردیدا**

میرنشینی بابان لەسەرەتای سەرهەڵدانیانەوە، هەوڵیانداوە بنەمایەک بۆ زانست و رۆشنبیری بونیادبنێت، چونکە بە پێگەی میرنشین و دەسەڵاتیان داناوە، هەربۆیە هەمیشە ڕێزیان لە مەلاو زاناکان گرتووەو لەهەر شوێنێک بەڕادەی پێویست ئاوەدانی لێبووبێت، مزگەوت و حوجرەیان کردووەتەوەو موچەو هاوکاری بۆ دابینکردون و کتێبخانەیان بۆ کردوونەتەوە، دەرئەنجامی ئەم هەنگاوەش چەندین مەلاو زانای رۆشنبیری وەك مەلا حەیدەری مۆکەبەیی، مەلا محەمەدی ئیبن الحاج هەزارمێردی، مەلا عەبدولای بێ تووشی، شێخ حسێنی گڵەزەردەی، شێخ مارفی نودێ، شێخ عەبدولای خەرپانی، موفتی زەهاوی، مەلا خدری نالی، مەولانا خالیدی نەقشەبەندی ..تاد پێگەیشتوون و رۆڵیان لە بوارە جیاوازەکاندا هەبووە.

میرنشینی بابان هەر لە سەرەتای دروستبوونییەوە، بەهەمان شێوەی میرنشینی ئەردەڵان هەوڵیداوە، پێگەی خوێندن و رۆشنبیری بەهێزبکات، لەڕێگەی کردنەوەی مزگەوتەکان و گرتنە ئەستۆی خەرجی و بەرپرسیاریەتییەکان، بۆ نموونە د.مارف خەزنەدار دەڵێت"لە سەدەی شازدەو پاش دابەشکردنی کوردستان لە (جەنگی چاڵدێران ١٥١٤) بیری ڕزگاری نەتەوایەتی بە شێوەیەکی تازە چرۆی دەکرد، مەبەستمان لەسەر کوردایەتییە لە ناوەوە، واتە هەوڵی مەلا کوردەکان، بۆ بەکوردی کردنی زانستە ئیسلامییەکان، ئەگینا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەوڵ و کۆششی دەرەوەش لە ناوەوەیە، بۆیە کوردی نوسین وەکو ئەو بزوتنەوە ڕۆشنبیریەی کە ژاپا لە ئەرزەڕوم لە ناوەڕاستی سەدەی نۆزدە سەرۆکایەتی دەکرد"( خەزنەدار،مێژووی ئەدەبی کوردی،بەرگی ١،٦٧:٢٠٠١)

جگەلەمەش هەر لە سەرەتای سەدەی هەژدەهەمەوە میرنشینی بابان توانیویەتی ڕۆڵی گرنگ لەرووی رۆشنبیری و دەسەلات و....تاد ببینێت، یەکێک لە هۆکارەکانی سلێمان پاشای گەورەی قەلاچۆلان لەخواترس بووەو گرنگییەکی زۆری بە مزگەوت و خویندن داوە، لەسەردەمی مەحمود پاشاوە تاوەکو سالی (١٨٣٤) زمان و ئەدەبی کوردی زۆر پەرەیسەندووە، ئەم ئەزموونەش لەگەڵ گەورەبوونی میرنشینەکەو گواستنەوەی بۆ سلێمانی فراوانتربوو، بۆیە(شاری سلێمانی هەر لەسەرەتای دروستبوونیدا گەلێک شت پێکهات، شار لەسەر بناغەی زانین و شارستیانیەتی دروستکرا، بەچەشنێک کە لە شاری تازە پێشکەوتوو بچێت و هونەری ئەرخیتێکچەری ئەو سەردەمەی رۆژهەلاتی تیادا بەکارهێنرا)( رەسوڵ، سەرنجێ لە زمان و ئەدەبی یەکگرتوو،١٩٧١: ٢٦)ئەم هەنگاوەش لەپێناو بەخشینی سیمایەکی شارستانیەت بە سلێمانی، دوابەدوای ئەمەش مەسەلەی خوێندن و رۆشنبیری کارێکی سەرەکی و پێویستە بگیرێتەبەر، لەم بارەوە د. عیزەدین مستەفا رەسوڵ دەڵێت( لەرووی زانست و خوێنەوارییشەوە هەر لەسەرەتاوە چەند مزگەوت دروست کراو مزگەوتی گەورە بوو بە مەڵبەندی خوێندن و بەسەرپەرشتی پاشای بابان و لە پارەی میرنشینی رێ و شوێن بۆ گوزەرانی سەدان فەقێ دانرا، کە لە هەموو کونجێکی کوردستانەوە دەهاتن)( رەسوڵ، سەرنجێ لە زمان و ئەدەبی یەکگرتوو ، ١٩٧١،:٣٠)

هەروەها د. عیزەدین مستەفا رەسوڵ دەڵێت(فەقێی زانستخوازو زیرەک بۆ خوێندن، مەلای لێهاتوو و هەڵکەوتوو بۆ دەرس وتنەوە روویان کردە ئەم مەڵبەندە، دیسان ئەوەش ئاشکرایە کە ئەو مەلا گەورانە لە کوێوە هاتوون و بۆچ؟ چۆن هەندێکیان لەسلێمانیدا پێگەیشتن و بەناو هەموو ولاتانی ئیسلامیدا ناوبانگیان بلاو بووەوە، هەر لەم بارەیەوە کێشەی نێوان تەریقەتی قادری و نەقشبەندی بەشقلێکی پێشکەوتنی شار دەزانرێ) (رەسوڵ، سەرنجێ لە زمان و ئەدەبی یەکگرتوو ،١٩٧١ :٣٠)، کەواتە مزگەوتەکان و خوێندن لەم شوێنانە و هەوڵدان بۆ هێنانی مامۆستاو کەسی بەتوانا، یەکێک بوو لە هەوڵەکان بۆ گەشەسەندنی رۆشنبیری و خوێندەواری، لەم بارەوە د. عیزەدین مستەفا دەڵێت(گەر شێخی نۆدێ لەدەوری باباندا بەیەکێ لە کۆڵەکەکانی زانست بزانرێ، ئەوا کاک ئەحمەدیش لەم دەورەدا بەوەی تەریقەت و زانینی لەیەکدا، وایکرد کە ئەم مەشخەڵە نەکوژێتەوە، تەنانەت بەڵگە زۆرە کە پاش روخانی بابانیش هەر بە کوردی دەرسی دەوتەوە) (رەسوڵ، سەرنجێ لە زمان و ئەدەبی یەکگرتوو ،١٩٧١ :٣٥)، چونکە هەم لە قەلاچۆلان رۆڵی هەبوو لە بواری ئاینی و زانستیدا، هەم لەگەڵ گواستنەوەو دروستکردنی مزگەوتی گەورەدا رۆڵی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

هەبوو، چونکە برایم پاشا لەگەڵ خۆی هێنای بۆ شاری سلێمانی و کردی بە مامۆستای مزگەوتی گەورە.

جگەلەمەش بەدەر لە مامۆستا، هەوڵیانداوە سەرچاوەی بەنرخ و پێویست بۆ ئەم مەبەستە دەستەبەربکەن، هەربۆیە (میرەکانی بابان پیاوی خەت خۆشیان دەنارد بۆ هەر شوێنێک، کە بیانبیستایە کتێب، یاخود دەسخەتێکی بەنرخی لێیە، خەرجی ئەوکەسە و هاتوچۆیان دەدا، کە جاری وا بووە ساڵێکیان پێچووە هەتا دەهاتنەوە،چونکە ئەوسا چاپخانە نەبووەو هاتوچۆش بەپێ یان ئاژەڵ بووە، دەچوون بۆ تاران و بەغداو قاهیرەو سەنعاو شام، تابوونە خاوەن گەورەترین کتێبخانە لەکوردستاندا، لەگەڵ دروستکردنی سلێمانیدا هەمووی هێنرایە مزگەوتی گەورەو شێخ مارفی نۆدێیان کردە مامۆستا و سەرپەرشتی کتێبخانە، تا وای لێهات هەموو خەڵکی دەهاتن بۆ فێربوون)( میرنشینی بابان (zaniary.com)

لە ماوەی دەسەڵاتداریی ئەم میرنشینەدا، زمان و ئەدەبی کوردی زۆر پەرەیسەند، لەلایەک نوسین و خوێندەواری زۆر بوو، لەلایەکی تریشەوە نوسەرو شاعیر هەڵکەوتن، بۆیە دەرئەنجامی ئەم هەوڵدان و پەرەسەندنەش قوتابخانەی شیعری کلاسیکی کوردی بە کرمانجی خوارو بەرابەرایەتی نالی و سالم و کوردی هاتەئاراوەو دواتریش شاعیرانی لوتکەی وەک مەحوی هاتنەئاراوە، لەم روانگەشەوە نوسین و ئەدەبیات لە دیالێکتی گۆرانەوە گۆڕراوەو کرمانجی خواروو بوو بە زمانی ئەدەب و نوسین و زۆر لە شاعیرانی تریش هەر لەسە ئەو ڕێچکەیە ڕۆیشتن و پەیڕەوییان کرد و پەرەیان بەو زمانە ئەدەبییە دا، بەشێوازێک تاوەکو ئەمڕۆ ئەو بنەما پتەوەی ئەم کەسانە دایاننـاوە، هەر لە گەشەو بەرەوپێشچووندایە،بۆیە بەگشتی ئەو فێرخوازانەی ڕۆڵیان هەبوو لەبەرەوپێشچوونی رۆشنبیری لەم سەردەمەدا، بەهۆی:

١) بواری ئەدەبی:

ئەگەرچی ئەوەی وەک مێژوو لەبارەی ئەدەبی کوردییەوە دەخرێتەروو، دواجار دەرئەنجامی خوێندن بووە لەمزگەوتەکان و لەم ڕێگەیەوە هانگاویان بۆ نوسین و شیعر ناوە، بۆنموونە لە کۆتایی سەدەی شازدە و لەساڵی(١٥٩١) عەلی تەرەماخی زانستی سەرفی عەرەبی بە کوردی نوسیوەتەوە، جگە لەمەش (شێخ مارفی نۆدێ) (١٧٥٣-١٨٣٨)بۆ مەبەستی فێرکردنی زمانی عەرەبی فەرهەنگۆکێکی عەرەبی – کوردی بە قسەی کێش و قافیەدار دانا بۆ ئەحمەدی کوڕی (کاک ئەحمەدی شێخ ١٧٩٢-١٨٨٧) فێری عەرەبی ببێ، لە پاشاندا چووە ناو بەرنامەی خوێندنی قوتابخانەی ئاینی لە هەموو ناوچەکانی خوارووی کوردستان، جگە لە میش ( ( مەلا یونسی هەڵکەتەینی) کەلەساڵی(١٧٨٥) مردووە، سێ نامەی لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

زانستی صەرفدا، بە کوردی نوسیوە ( تصریف، ظرف، ترکیب) (خەزنەدار،مێژووی ئەدەبی کوردی،بەرگی ١: ٦٩)

لەگەڵ بەسلێمانی هەر لە سەرەتاوە پێگەیەکی گەورەیش خوێندەواری دروستکرد، ئەگەرچی لە سەردەمی میرنشینی بابان چەندین مزگەوت و حوجرە و خانەقای تێدابووە کە مامۆستایانی گەورەی وەك (شێخ مارفی نۆدێی، مەولانا خالیدی نەقشبەندی، کاك ئەحمەدی شێخ، شێخ عومەر قەراغی) لەو مزگەوت و حوجرانە گەورەبوون و دواتر بوونەتە مامۆستا بۆ نەوەکانی دوای خۆیان، هەم ڕێچکەو بنەمای شیعرو ئەدەبیاتیان بونیادناو زاری دیالێکتی کرمانجی خواروویان کردە زاری نوسین و ئەدەبیات، لەناو ئەم کەسایەتیانەشدا کە ئەنجامی ئەم پرۆسەی فێربوون و ڕۆشنبیریکردنی میرنشینی بابان بریتین لە کەسانی وەک نالی، سالم، کوردی و بە شیعرەکانیان مێژوویەکی گەورەی ئەدەبیاتیان تۆمارکردوە، بەڵام پێش ئەمەش مزگەوتی لێبووەو بە پێی پێگەی خۆی ڕۆڵی هەبووە.

جگەلەمەش مەولانا خالید یەکێکە لەو ئەستێرە هەرە گەشانەی کە لە ئاسمانی وێژەی کوردیدا هەتاهەتایە دەدرەوشێتەوەو بەبێ شک بەرزترین هۆنەری کوردی سەدەی خۆیەتی، بەڵام لەبەرئەوەی هۆنراوە کوردییەکانی بەتەواوی کۆنەکراوەتەوە، لەبەرئەوەیە کەمتر لە وێژەی کوردیدا ناسراوەو کەمتر باسی لێوەکراوە)، جگەلەمەش گەلێک هۆنراوەی بە زمانی عەرەبی و فارسی و کوردی نوسیوە.( بۆرەکەیی، مێژووی وێژەی کوردی، ٢٠٠٨: ٥٥٤) لەم بارەشەوە (د. مارف خەزنەدار)دەڵێت(شێخ خالید دەستی شیعری هەبوو، نازناوی شیعری (نووری) بوو، شیعری فارسی زۆربوو، لە پلەیەکی بەرزدابوو، بەڵام شیعری کوردی (دیالێکتی گۆرانی زۆر کەم بوو) (خەزنەدار، مێژووی ئەدەبی کوردی ،ب٣: ٢٦)

بەدەر لەوەی مزگەوت و مەلاکان کاریان لەسەر ڕۆشنبیری و پێگەیاندنی خەڵکی کردووە ( بابانییەکان زمانی کوردییان کردبووە زمانی میرنشین و خوێندن لە پاڵ زمانەکانی تری وەک فارسی و عەرەبی، بەوپێیەی زمانی زانست و مەعریفەبوون، لەگەڵ ئەوەشدا گرنگیان بە زمانی تورکی نەداوە)( عبدالصمد، کوردستان العثمانیه فی النصف الاول من القرن التاسع العشر، ٢٠٠٠: ٤٨)، کەواتە ئەوەی هۆکاری سەرەکی بووە بۆ بەهێزبوونی زمانی کوردی و گەشەکردنی بیری و کلتوری میرنشینەکان بوون، چونکە د. مارف دەڵێت(بەم جۆرە دەبینین قوتابخانەی ئاینی دورەپەرێز وەستاوە لە زمانی کوردی و کلتوری کورد، بەڵام ئەوەندە هەبوو، دڵسۆزی و هەستی بەشێک لەو خوێندەوارانەی کەلەم قوتابخانە ئاینییە دەرچوون، ئاوڕیان لە زمانی کوردی و خوێندەواری نەتەوەکەیان داوەتەوەو نوسینیان کردووە بەکوردی)(خەزنەدار، بەرگی١ ،٢٠٠١: ٦٩)، بەڵام لەگەڵ ئەمەشدا بەشێک

لە میرەکان و دەسەڵاتدارەکان، هەوڵیانداوە منداڵەکانیان خوێنەوارو ڕۆشنبیربن، لەم بارەوە د.مارف دەڵێت"گەلێ لە بنەماڵە کاربەدەست و دەوڵەمەندەکانی کورد مامۆستاو میرزای تایبەتیان بۆ فێرکردنی منداڵیان ڕادەگرت، زۆرجار هەر ئەم مامۆستاو میرزایە دەوری نوسەر، یا سکرتێری دەبینی لەلای ئەو کاربەدەستەگەورەیە، ماڵ و دیوەخان و کۆشک و سەرای ماڵەگەورەکان هەمیشە ئەمجۆرە خوێنەوارانەیان لێ بوو، وەکو سەراو دیوەخانی والیانی ئەردەڵان و هی تریش"(خەزنەدار،بەرگی١ ،٢٠٠١: ٧٠)

لەگەڵ ئەمەشدا خەڵکەکەی لەگەڵ ئەوەدابوو کە فێری خوێندن و خوێندەواری ببێت و لایەنی ڕۆشنبیری بەرەوپێش ببات، هەربۆیە(د.مارف خەزنەدار)دەڵێت"شاری سلێمانی یەکێکە لەو ئاوەدانیانەی کوردستان، خەڵکەکەی بە هەوەس و چاو بەبزەو پێکەنینن، حەز بە بەزم و ڕەزم و ئاهەنگ و گۆرانی و مۆسیقاو ڕابواردن دەکەن، گەلێ ئاوازی شیرین و گۆرانی میللی سەرزاری کوردەواری لەوێ سەریهەڵداوە، قسەی نەستەقێک لە ناو کۆمەڵی کورددا هەیە دەڵێ: (گۆرانی لە سابلاغ (مهاباد)لە دایک دەبێ و لە سلێمانی پێدەگا). پاشاکانی بابان بایەخێکی زۆریان بە گۆرانی و مۆسیقا دەدا و بە چاوێکی گرنگ تەماشایان دەکرد، لە دیوەخانی خۆیاندا کۆڕی مۆسیقا و گۆرانیان دەبەست)(خەزنەدار،ب٣، ٢٠٠١: ١٩)لە ئاهەنگەکانیشدا بەشدار دەبوون (ڕیچ)لەم بارەیەوە دەڵێت: (ئەوگۆرانیانەی لەو ئاهەنگەدا بیستومەو وشەو ئاوازی هەموویان وێنەی غەم و نالەباری و جگەرسوتان بوون) (خەزنەدار،ب٣، ٢٠٠١: ١٩).

لەراستیدا جگە لەئەدەب و نوسین لەسەردەمی بەشاربوونی سلێمانی، بەشێوەو جۆری جیاواز کار لەسەر لایەنەکانی تر کراوە، لەم بارەوە (د. مارف خەزنەدار)دەڵێ: (هونەری شانۆگەری لە سلێمانی بە شێوەیەکی سەرەتایی لە ناوەوە بوو، لە بەهاراندا هەر سنفێک لە سنفەکانی بازاڕ سەردانی دەرەوەی شاریان دەکرد، یاسایەکیان هەبوو، یەکێک دەبوو بە پاشا جلی پاشایان لەبەر دەکرد، وەزیرو کاربەدەستیان بۆ دادەنا ....)(خەزنەدار،ب٣، ٢٠٠١: ١٩) جگەلەمەش تەنها گرنگی و بایەخیان بەمانە نەداوە، بەڵکو لەبارەی بایەخدان بەدەستنوس: (خەزنەدار)دەڵێت: (هونەری دەرهێنانی دەسنووس لە ناوچەی سلێمانی لە کن فەقێ و مەلاکان پێشکەوتوبوو، ئەمە جگە لە دەسنووسی تۆماری زانستەکانی عەرەبی و ئاینی ئیسلامی، بەڵکو دەرهێنانی هونەری دەسنووسە، لەو کتێبانەی ناوەڕۆکەکانیان چەند پەراوێزێکیان هەیە، هەر پەراوێزەی بریتییە لە کتێبێکی سەربەخۆ) (خەزنەدار،ب٣، ٢٠٠١ :١٩)

لەگەڵ هەموو ئەمانەشدا ئەدەبی میللی و فۆلکلۆر، بەشێکی سەرەکی و گرنگ بوون و ڕۆڵی سەرەکیان هەبووە لە تەواوی کایەکاندا، بۆیە لەپێناو گەیاندنی مەبەستەکان و گواستنەوەی ئەزموونەکان، ئەدەبی فۆلکلۆر یەکێک بووە لە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هۆکارەکانی پەروەردەو فێرکردن و بایەخی زۆری پێدراوە، لەم روانگەوە (د. مارف خەزنەدار)دەڵێ:(لە ناوچەی سلێمانی (بابان) و کەرکوک(گەرمیان)و هەموو ناوچەکانی دیکەی باشووری کوردستان سنە(ئەردەڵان) سابڵاغ(مهاباد) و هەولێرو ڕواندز(سۆران)لە سەدەی هەژدەم و سەرەتای سەدەی نۆزدەم، ئەدەبێکی میللی سەرزاری دەوڵەمەند بە شیعرو پەخشان لە ناوەوە بوو. ناوچەی سلێمانی لەو ڕۆژگارەدا لە هەموو لایەکەوە دیالێکتی گۆرانی دەورەی دابوو) (خەزنەدار،ب٣: ٣١)

یەکێکی تر لەو کەسایەتیانەی کە رۆڵی هەبووە لەئەدەب و رۆشنبیریکردندا بریتی بووە لە شێخ حسێنی قازی (١٧٩٥-١٨٦١) شاعیر، زانای ئاینی و نوسەری کوردی سەدەی هەژدە و نۆزدەیە خاوەنی چەندین کتێبی فارسی، عەرەبی و کوردییە، لەوانە (مەولوونامە)یەتی.

٢) ئاین:

بەوپێیەی گەلی کورد بەگشتی ئاینی ئیسلام بووەتە ناسنامەی ئاینی، بۆیە میرەکان بایەخی زۆریان پێداوە، جگەلەمەش وەک رێگەیەک بۆ فێربوون و پێگەیاندنی هاوولاتیان سەیریان کردووە، (د.مارف خەزنەدار)دەڵێت:(یەکەم مەڵبەندی خوێندەواری لە ناو نەتەوە موسڵمانەکانی ڕۆژهەلاتی ناوەڕاست مزگەوت بوو، خوێندن بە شێوەیەکی گشتی بە زمانی عەرەبی بوو، لە کوردستان و ولاتانی ئیسلامدا مزگەوت وەک جێگەی عیبادەت بیناکرا، لەگەڵ ئەوەشدا خوێندەوارانی پێدەگەیاند، مەرج نییە ئەوەی لە حوجرە بیخوێندایە دەبوو بە مەلا، بۆیە دەبینین هەر مەبەسی عیبادەت و خوێندنی زمانی عەرەبی و زانستییە ئیسلامییەکان بوو دەیبرد بۆ ئامانجێکی دیکە، ئەویش پێگەیاندنی کەسی خوێندەواری بوو)(خەزنەدار،بەرگی ٣: ١٨)

دانیشتوانی ناوچەی سلێمانی هەر لە دروستکردنی شاری سلێمانییەوە لە سەردەمی بابانەکاندا لە حوجرەی فەقێ و مزگەوتەکانەوە دەستیان پێکرد و هاتن لەگەڵیدا تا سەردەمی عوسمانییەکان.( بابان،سلێمانی شارەگەشاوەکەم،٢٠١٢: ١٣٤)

دیارە مزگەوت وێڕای ئەوەی کە شوێنێکی ئاینی پیرۆز و شوێنی عیبادەت و خواپەرستی و زانستە، شوێنێکی گرنگی خزمەتگوزارییشە و لە گوندەکاندا بەتایبەتی ئەرکی دیوەخان و میوانخانە و شوێنی کۆبوونەوەی دانیشتوانی ناوچەکە بووەو لە شۆڕشی گەلەکەشماندا مزگەوت هەمیشە لانە و جێگەی حەوانەوەی پێشمەرگە بووە، کوردیش وەک میللەتێکی موسوڵمان بایەخ و گرنگی داوە بە مزگەوت و هەمیشە لەگەڵ دروستکردنی دێهاتەکان و لە ئاوەدانکردنەوەیان دا مزگەوتیان دروستکردووە. بێجگە لە مزگەوت لە سلێمانی تەکیە و خانەقاش هەبووە، تەکیە بۆ قادرییەکان کە حاجی شێخ مارفی نۆدێ هێناویتیە ناوچەی سلێمانییەوە و لە بنچینەدا شێخ قادری گەیلانی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

دایمەزرانـدووە. خانەقـاش بـۆ نەقشـبەندیەکانە کە مەولانـا خالیـد هێنـای کە ئەویش لە مەولانا عەبدوڵلای دەهلی وەریگرتبوو.

لە سـاڵی (١٨٢٠) مسـتەر ریـچ کە هـاتووە بـۆ سـلێمانی دەڵێـت: (سـلێمانی پێـنج مزگەوتی تێدابووە، وەک(مزگەوتی حاجی شێخ ئەمین،مزگەوتی (عەزیزئاغای مەسرەف) لە ناو بازاڕ (بابان،سلێمانی شارەگەشاوەکەم،٢٠١٢: ٤٤١)، بۆیە سلێمانی دوای دروستبوونی بووبە مەنزڵگاو مەڵبەنـدی دوو پیـاوی ئـاینی پیـرۆز، کە هەریەکەیش بـوون بە ڕابەری ڕێڕەوێکـی ئاینی (قادری و نەقشبەندی)( بابان،سلێمانی شارەگەشاوەکەم،٢٠١٢: ٤٧)

ئەم هەنگـاوەش دەرەوەی شـارو شـوێنە دوورەکانیشـی گرتـۆتەوە، وەک مەدرەسـەی دینی (شاە غازیە) ئەحمەد پاشا لە کەرکوک دروستی کرد، بەڵام جۆری خوێنـدن و ئاسـتی پێگەیاندنەکەیان جیاوازبوو، ئەمەش لەو سۆنگەیەوە بووە، کە خزمەتکردنی مامۆستایانی ئاینی لەبەرچاوگیراوە.

( هەر میرێکـی بابـان هـاتبێ خزمەتـی مامۆسـتاو پیـاوی ئـاینی و زانایانی لە پێش هەمـوو شـتێکی دانـاوە، بـۆیە بەهـۆی خـزمەت و هانـدانەوە ئەو زانـا گەورانە لە نـاوچەی سـلێمانیدا هەڵیانـداوە)( بابان،سـلێمانی شارەگەشـاوەکەم،٢٠١٢: ١٠٥)لە ڕاستیشـدا پـاڵنەری ئـاینی زیـاتر زاڵبـووە بـۆ بەردەوامـی خوێنـدن و پێگەیانـدن، چـونکە بەپێـی فەرمـوودە هەرکەسێک ڕێگەی زانست بگرێتە بەر، خوا هەمووی بە خێرو چاکە بۆ دەنوسێ.

حاجی شێخ مارف و مەولانا خالید هاوچەرخی یەک بوون و کاتێک کە میستەر ریچ هاتووەتە سلێمانی لە سەردەمی فەرمانڕەوایی مەحمود پاشای باباندا، باسی ئەم دوو زاتە گەورەیە ئەکات. مامۆستا مەلا محەمەدی قزڵجی لە نامیلکەیەکی بەنرخدا کە لە ساڵی ١٩٣٨ دەری کـردووە بەنـاوی (التعریـف بمسـالجد السـلیمانیە و مدارسـها الـدینیە) بـاس لە مزگەوتەکانی شاری سلێمانی ئەکات کە تا ئێستا ماون.

شـێخ مـارفی نـۆدی لە سـاڵانی (١٧٤٩ – ١٨٣١) لە سـەردەمی سـلێمان پاشـا ژیـاوە (صـابر، النـودهی وجهـوده النحـویە، ٢٠٠٠) یەکێـک بـووە لەو کەسـانەی کە بـێ گوێـدانە سـەختی ژیـان و بـارودۆخی نـاوچەکە لە مزگەتەکـان (حوجرەکان)دەسـتی بە خوێنـدن کردووەو بەسەرکەوتووی پلەکانی بڕیووە، هەرچەندە ئەم شوێنانە شوێنی فەرمی حکومی نەبـوون، بەو مانـایەی مۆڵەتیـان هەبووبێـت، بەڵام وانەکـان لە مـزگەوت و حوجرەکانـدا دەخوێنران (رشید، الشیخ معروف النودهی البرزنجی و رحلە العلمیە فی کوردستان، ، ٢٠٠١: ٥١٥) لە فێرخوازەکانی بریتین لە کاک ئەحمەدی شێخ، شێخ موفتی زەهاوی، شێخ بابارسوڵ بەرزنجی، شێخ حسێن قازی) ئەمە جگە لە چەندین بەرهەم لە بواری ئـاینی و زمانەوانی و ئەدەبی، جگەلەمەش میرەکانی بابان (گرنگیان بە زانست و زاناکان داوەو پرس و ڕایان لە کاروباری میرنشیندا پێکردوون و لە کۆبونەوە زانستییەکاندا بەشداریان پێکراوەو ڕێزیان

لێ گیراوە، بەپێی ئاستی زانست و توانایان و هەندێک جاریش نێردراون بۆ دەرەوەی کوردستان، بەمەبەستی هێنانی سەرچاوەی زانستی دەگمەن، کە تائێستا لە کتێبخانەی ئەوقافی سلێمانی هەندێکیان پارێزراون، هەروەها خوێدنگەی تایبەتیان بۆ کردونەتەوە.)(د.کمال طاهر: ٥١٦)

مەولانا خالیدی نەقشبەندی یەکێکی ترە لەو کەسانەی کە لەرێگەی خوێندنی مزگەوت و حوجرەکانەوە پێگەیشتووەو لە ئەنجامی ئەنجامدانی چەند گەشتێکی ئاینی بۆ سنە و تاران و پاشان هیندستان. لە وڵاتی شام پێگەو پایەی میری بەدەستهێناوە، لەگەڵ ئەمەشدا کۆمەڵێک بەرهەمی لە بوارە جیاوازەکاندا هەیە، لەوانە،ئاینی و نزیکەی هەژدە پەڕاوی سەبارەت بە فقهی ئیسلامی ڕێ و ڕچەی ئیسلام بە زمانی عەرەبی و فارسی نوسیوە.( بۆرەکەیی ،مێژووی وێژەی کوردی، ٢٠٠٨: ٥٥٣)، لەم ڕوانگەوە مزگەوت و قوتابخانە، یاخود (مەدرەسە)ی مزگەوتەکان و ژووری فەقێ و مەلاکان بوون، بڕوانامەی ( بەکالۆریۆس و ماستەرو دکتۆرا)(ئیجازە) پێدانی فەقێ بووە، کە خوێندنی تەواوکردووە لەسەر دەستی مامۆستاکانیاندا، مامۆستاکانیش هەبوون لە ئاڕادەی بە کالۆریۆسدا بوون، هەبوون لە ئاڕادەی ماستەرو دکتۆرا.(بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ٢٠١٢ :١٣٥)

لەراستیدا (ئامانج لە مزگەوت و حوجرە لە دوای بە ئیسلامبوونی کورد بۆ مەبەستی ئاینی بووە، بۆیە حوجرەی خوێندنی مزگەوتی کوردەواری دەیویست ئەم ئامانجانە بهێنێتە دی :

١- ئامادەکردنی مەلا بۆ پێش نوێژی و وتارخوێنی و ئامۆژگاری خەڵکی .

٢- پێگەیاندنی مەلای گەورەی وا، کە ناوبانگیان تەنیا لە کوردستاندا نەبووە، بەڵکو لە هەموو گێتی ئیسلام دەنگیاندایەوە.

لەبەشی دووەمی ئەم خوێندەوارانە ئەم کەسانە پەیدابوون .

١- بەشێکی کەم لەم خوێندەوارە گەورانە خوێندەواری خۆیان، کە مەلایانە بووە لەگەڵ زمانی کوردی گونجاندووەو شیعرو نوسینیان بە زمانی کوردی هێناوەتە ناوەوە .

٢- بەشێکی کەمتریش لەمانە هەموو ژیانی خوێندەواریان بۆ زمان و ئەدەبی کوردی تەرخانکردبوو، پلەی زانستی ئاینیان لە لوتکەدابووەو لە ڕیزی خوێندەوارە هەرە گەورەکان بوون)( خەزنەدار، مێژووی ئەدەبی کوردی، بەرگی یەکەم، ٢٠٠١، ٦٤)بەدەر لە مزگەوتەکان حوجرەکایش بەشێکی جیاوابوون لەناو مزگەتەکان و ئەمەیان تایبەتکردبوو بە فەقی، یان ئەوانەی خوێندویانە، نەک تەنها پەرستش، لەم بارەوە د. مارف خەزنەدار دەڵێت(حوجرە لە مزگەوتدا هەم جێی ژیان، هەم وانە وتنەوە بووە، لە دەرەوەی مزگەوت وەک لە دوکان یان ژووری لاێک هەبووە، ئەمە قوتابخانەی ئاینی بووە، لە هەموو شارو گوندێک هەبووە)( خەزنەدار، مێژووی ئەدەبی کوردی، بەرگی یەکەم،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکولینێن کوردی

٢٠٠١: ٦٤)یــاخود دەڵێت"(هەتــا منــداڵی مەلاو شــێخە گەورەکــان خۆشــیان دەنێــردرانە قوتابخـانەی مەلای تـر بـۆ خوێنـدن، پلەکـانی خوێنـدن لە قوتابخـانە ئاینیەکانـدا وەکـو لای خوارەوە بوو:

١- پلەی سەرەتایی: دەستی بە خوێنـدن دەکـردو قوتابیـان پـێ دەوت، فێـری ئەلـف بێـی عەرەبـی دەکران.

٢- پلەی سوختەیی: پلەی فێربوونی سەرەتاکانی دەستوری عەرەبییە، ئینجـا دەسـتی دەکـرد بە سەرەتاکانی فقهە.

٣- پلەی موستەعیدی : دەستی دەکرد بە فێربوونی زاراوەی زانستی قورس.

لەپـاش تەواوکـردن باوەڕنـامە (اجـازە)ی وەردەگـرت و دەبـوو بە مەلا.)( خەزنەدار، مێــژووی ئەدەبــی کــوردی، بەرگــی یەکەم، ٢٠٠١: ٦٦)، د. مــارف خەزنەداردەڵێت:((بەڕاســتی دەتوانین پایەی خوێنـدەواری لە هەر وڵاتێـک لەدەورانـی پێش سـەدەی بیسـتەم بە پێـی زۆری و کەمـی مـزگەوت بەراورد بکەیـن، هەروەک لە ئێسـتادا قوتابخـانە نیشـانەی خوێنـدەوارییە و پێشکەوتنی کۆمەڵێکی ئادەمیزاد بە ژمارەی قوتابخانە بەراورد دەکرێ)( خەزنەدار، مێژووی ئەدەبی کوردی، بەرگی ٣، ٢٠٠١: ١٨).

جگەلەمەش(مەلا ئەبوبەکر پاش ئەوەی لە سەفەرێکی دوورودرێژ لە وڵاتی میسر و شام و عەرەبستان دەگەڕێتەوە بۆ کوردستان لە قوتابخانەی (جامع سور) کە ئەمیـر حەمـزەی بابــانی دروســتی کردبــوو، خــۆی بە دەرس وتــنەوە خەریــک دەکــات و میرەکــانی بابــان عادەتێکیـان بووە لە زانایـانی ئـاینی ڕێزیـان دەگـرت، هەر لەو قوتابخانەیشدابوو کە کتێبـی (ئەلــوزوح)ی نوســی کە یەکــێکە لە ســەرچاوەکانی نــامیلکەی شــەرعیاتی مەســتورە)( بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان :٤٢).

هەروەهـا د. مـارف خەزنەدار دەڵێت" لە شاری سلێمانیدا گەلـێ یادگـاری بە نرخـی پاشـاکانی بابـان تـا ئێسـتا مـاونەتەوە، ئەو یادگـارانە لەو مزگەوتـانە دەبینـین، کە دروسـتیان کـردوون، هەر لەو مزگەوتـانە گەلێـک شاعیری کـورد پێگەیشـتوون، ئەمەش وەنەبـێ تەنهـا لە شـار بـووبێ، بەڵکـو لەهەمـوو ناوچەکـانی وڵاتـی سـلێمانی مزگەوتەکـانی شـار لەلایەن پاشاکانی بابانەوە سەپەرشتی دەکران و لە خەزێنەی میرنشین هەرچی پێویست بوایە پێیـان دەبەخشرا"( خەزنەدار، مێژووی ئەدەبی کوردی، بەرگی ٣، ٢٠٠١ ، ١٨)

٣) خوێندگە:

یەکەم فێـرگە کە بابانییەکـان بنیادیـان نـابێ، فێـرگەی شـارە بچـوکەکەی (مەرگە)بــووە، چــونکە لە ســەردەمی فەقــێ ئەحــمەدی دارەشــمانەدا ئەم مەرگەیە یەکەم مەڵبەنـدی میرنشـینەکە بـووە، فەقـێ ئەحـمەد بـۆ خۆشـی هەر پەروەردەی فێـرگەو مەدرەسـەی دینی بووە، کەسانی وەک ئیبراهیم کوڕی مەولانا ئەحمەدی ئـالانی زانـای بەناوبانـگ و مەلا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

عومەر ئەنجامی ئەم فێرگەبوون).( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم،٢٠١٢، ١٣٨)، دواتر کاتێک لە سالانی (١٦٤٤)ز ماوەت بەیەکجاری بۆتە مەڵبەندی میرنشینی بابان، ئەم شارە خوێندنگەی تێدابووە و ڕۆڵی گرنگی بینیوە لە بلاوکردنەوەی ڕۆشنبیری و زانستدا، مەلا موسا کە نازناوی (علامە الزمان) بووە، مودەرسی ئەم مەدرەسەیەبوو)( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ٢٠١٢، ١٣٨)(جگە لەمیش لە دێی مەرویَ لە هەرێمی ئالان و نزیک ماوەت فێرگەی مەزن و ئاوەدانی لێبووەو کۆمەڵێک مودەرسی تێدابووە. جگە لەمەش (مەدرەسەی بێتوش و گەناو و بەلاتا، شوێنی فێربوون و زانستی ئەو ڕۆژگارە بوون، هەروەها خوێندنگەی گوندی کەنارو ڕەشەکانی و شابادین و بالخ و موکەبەو قەرەداغ و بیارە .....تاد، هەروەک چۆن مەدرەسەی خورماڵ و بەرزنجە دوو مەڵبەندی ڕۆشنبیری ئەو ڕۆژگارە بوون و هەمیشە جمەیان هاتووە، لە مەلاو فەقێ)( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ١٣٩)، دواتر لە قەلاچوالانیش لە سالی (١٦٦٩ز) دەسەلاتی میری بابان زیاتر پەرەی سەند، لەسەردەمی سلێمانی و بەبەدا باری ڕۆشنبیری و زانست زۆر لە گەشەو پێشکەوتندابووە، هەر لە ڕۆژگاری ئەمدا قوتابخانەکانی قەلاچوالان سەریانهەڵداوە و بۆ هەریەکیان مەلاو مودەرسیان داناوەو کتێبخانە بەنرخەکەش بەرەو پێشچووەو بەکتێبی نایاب و بەقیمەت دەوڵەمەندکراوە، هەر لەم سەردەمەدا قەلاچوالان چەند مودەرسێکی بەناوبانگی هەبوون لەوانە (مەلا محەمەدی غەزالی و مالا جامی چۆڕی و شێخ محمد وەسیمی گەورە، کە شێخ حەسەنی گڵەزەردە یەکێکە لە قوتابییەکانی)( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ١٣٩) کەواتە ئەم زانان و مودەڕسانە لەو سەردەمەدا لە چ شوێنێک پێگەیەنراون، ئەو سەرچاوانەی کە بوونەتە هۆی پێگەیاندنیان لە کوێ بوون، کەواتە بوونی ئەم زاناو مودەڕسە دیارانە، بەڵگەی گرنگیدان و بایەخدانە بە مزگەوت و خوێندنگەو ڕۆشنبیری لەو سەردەمەدا.

مەلا مەحمود دەڵێت: ( بەڕاستی چەرخی زێرین و پێشکەوتوو بۆ ڕۆشنبیرو زانست، سەردەمی سلێمان پاشای گەورە بوو، کە بە سلێمان پاشای مقتول بەناوبانگە، کەلە دەوروبەری (١٧٥١ز) بووەتە فەرمانڕەوای بابان و زۆر هەوڵی خزمەتکردنی زانست و زانایانی داوە .( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ١٤٠) کەواتە هەریەکەیان بەپێی سەردەمی خۆی هەوڵی بۆ دابینکردنی پێداویستی و خزمەتکردنی خوێندنگەو مامۆستایان و قوتابیان داوە.

لەسەردەمی بابانەکان کۆمەڵێک خوێندنگە هەبوون، بێگومان جۆری ئەم خوێندنگانەش بەپێی شوێن و کاتەکان ڕۆڵ و کاریگەریان هەبووە، بەگشتی ئەم خوێندنگانەش بریتین لە :

١- خوێندنگەی مزگەوتی گەورەی قەلاچوالان:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

هەرلەیەکەم ڕۆژی سەرهەڵدانی بابانەکانەوە دەستی پێکردووەو زانای گەورەو بەناوبانگ دەرسیان وتۆتەوە وەک(مەلا برایمی بەرزنجی، مەلا محمد وەسیمی گەورە، مەلا جامی چۆڕی، ....تاد)( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم،٢٠١٢ ،٤٨)

٢- خوێندنگەی مزگەوتی گەورەی سلێمانی:

پاش گواستنەوەی پایتەخت لە قەڵاچوالانەوە مزگەوتی گەورەی سلێمانی بووە خوێندنگەو بنکەی سەرەکی فێربوون. بەتایبەتی لە ساڵەکانی (١٧٨٥-١٨٢٢) بە جۆرێک پەرەی سەندووەو لە گەشەدابووە، کە ژمارەی قوتابییە پلەبەرزەکانی گەیشتە (٧٠)حەفتا و زیاتر، ئەمە جگە لە قوتابی سەرەتایی، باشترین بەڵگە بۆ ئەم ڕاستییە کتێبەکەی (شێخ مارفی نۆدێ) خۆیەتی، کە بۆ والی بەغدادی نوسیوە)( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم،١٤٢)دوای گواستنەوەکەش شێخ مارفی نۆدێ لە قەڵاچوالانەوە هاتە سلێمانی و بوو بە مامۆستای مزگەوتی گەورە، بووە مەرجەع بۆ هەموو کاروبارێکی دین، جگە لەوانەش بوویە رابەری ڕێڕەوی قادری و مزگەوتی گەورە بوو بە مەرکەزێکی ئەم ڕێڕەوە )( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم،٤٨)

٣- خوێندنگەی مزگەوتی ئەورەحمان پاشا:

ئەم مەدرەسەیە دواتر بە مەدرەسەی (شێخ ئەبوبەکر) دواتر بە مەدرەسەی مزگەوتی (باباعلی) ناسراوە، پاشا لە گەڕەکی گۆیژە دروستیکردووە، بۆ ماوەیەک ڕاوێژو مەڵبەندێکی ڕۆشنبیری و زانستی پێشکەوتووبووە)، یەکەم مامۆستای، زانای بەناوبانگ (عەبدولکەریمی بەرزنجی)بووە، چەندین زاناو ڕۆشنبیرو شاعیرو ئەدەب دۆست پێگەیشتوون وەک : مەلا برایمی بیارەیی، شێخ عەلی بەرزنجی، مەولانا خالیدی نەقشبەندی، کە دواتر بۆتە مامۆستای مزگەوتەکە.( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم،١٤٥)

٤- خوێندنگەی خانەقای مەولاناخالیدی نەقشبەندی:

دروستکردنی مزگەوتی گەورە لەلایەن ئیبراهیم پاشا، هەروەها مزگەوتی (حاجی شێخ ئەمین ) دواتر خانەقای مەولانا خالید لەلایەن ئەحمەد پاشاو مزگەوتی (شێخ ئەورەحمانی ئەبوبەکر ( بابە عەلی قەرەداغی)و مزگەوتی سەید حەسەن لە لایەن ئەورەحمان پاشاوە دروستکران (بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ١٠٨) ئەمەش هەنگاوێکی گرنگ بوو بۆ هۆشیاری و خوێندەواری کردنی خەڵکی.

ئەم خوێندنگەیە (محەممەد پاشای کوڕی ئەورەحمان پاشا لە دەوروبەری ساڵی(١٨١٧) بۆ مەولاناخالیدی نەقشبەندی دروستیکرد، زۆر موڵک و ماڵی لەسەر وەقف کرد تاوەکو پێداویستی مامۆستاکان و قوتابیانی پێ دابینبکرێ، بەیەکێک لە مەڵبەندە گرنگەکانی ڕۆشنبیری و خوداناسی جیهانی ئەو سەردەمە دانراوە لە هەموو لایەکەوە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خەڵک ڕووی تێکردووە، تەنانەت لە وڵاتانی تریش خەڵکی بۆ هاتووە.( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ١٤٥)

٥- خوێندنگەی مزگەوتی سەید حەسەن:

ئەم مزگەوتە ئەورەحمان پاشای بابان دروستیکردووە (١٧٨٩-١٨١٣) ماوەیەکیش بەناوی خۆیەوە بووەو هەر خۆشی بوو کە دەرسی تێدا دەوتەوە، بۆ دابینکردنی خەرجی و پێداویستی، زەوی و زارەکانی ( کانی مسلم) و (کانی دۆمان) و چل دوکانی لەسەر وەقف کردووە، چوار خانوشی بۆ مودەرس و مەلاو مجەورو بانگبێژ بونیادناوە، مەدرەسەکە شەش ژووربووە، چواری بۆ فەقێ و قوتابییەکان تەرخان کراوە، نالی یەکێک بووە لە قوتابییەکانی ئەم خوێندنگەیە)( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم،١٤٦)

٦- خوێندنگەی مزگەوتی موفتی لە سلێمانی:

یەکێک بوو لە مەڵبەندکانی ڕۆشنبیری سلێمانی سەردەمی بابان و نیمچە زانکۆیەکی گەشەدارو پڕ قوتابی و زانا بووە)( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ١٤٧)

٧- خوێندنگەی مەڵکەندی:

پێش دروستکردنی شاری سلێمانی هەبووە، بەڵام لە سەردەمی بابانەکاندا بایەخی پێدراوەو (مەلا ئەورەحمانی نۆتشە و مەلا ئەحمەدی کوڕی) بەڕێوەیان بردووەو دەرسیان تێدا وتۆتەوە.

٨- خوێندنگەکانی حاجی حان و حاجی شێخ ئەمینی خاڵ.

جگە لەم مەدرەسانە، حوجرەش شوێن و قۆناغێکی خوێندن بووە، بۆیە سەردەمی بابانەکان چەندین حوجرە بوونیان هەبووە، جگە لە حوجرەکان، چونکە دەیان حوجرە لەمزگەوت و ماڵان و شوێنی تایبەتدا هەبوون، مامۆستا بە پارەیەکی کەم کە لە کەس وکاری هەر قوتابییەکی وەردەگرت، حوجرە بریتیبوو لە تەنها ژوورێک کە بەپێی توانای مەلاکە دەگۆڕا و جۆری دەرس وتنەوە زۆر فەرقی هەبوو، بەزۆری یەکەیەکە دەرس بە قوتابی دەخوێنرا، بەڵام هەندێ حوجرەی کۆن هەبوون، وەک حوجرەی(مەلا عەزیزی زلزلەیی، کە پیاوێکی وەک ئەمین زەکی خوێندویەتی ، خواجە ئەفەنی و (١٨٦٠-١٨٩٠)، حاجی مەلا ... تاد) گەلێ حوجرەش هەبوون ژن داینـاون وەک (مەلا فاتم، ناجییەخان، مەلا ئامینە، مەلا رەعنا).

باسکردن لەم مزگەتانەش لەپێناو دەرخستنی ڕۆڵ و پێگەی مزگەوتەکان و بایەخ پێدانی میرەکانە بە خوێندن و خوێندەواری و ناساندنی نەوەیەکی نوسەرو ڕۆشنبیرە، کە دەرئەنجامی ئەم قۆناغەی میرنشینەکان بووە.

٤- کتێبخانە:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەر لە سەرەتاوە لە قەڵاچوالان لە ناو مزگەوتی قەڵاچوالاندا کتێبخانەیان کردۆتەوە، هەر بۆیە دوای بنیادنانی شاری سلێمانی گواستویانەتەوە بۆ مزگەوتی گەورەی سلێمانی، وەک:

١- خوێندنگەی مزگەوی گەورەی قەڵاچوالان کتێبخانەیەکی بەناوبانگی هەبووە.

٢- کتێبخانەی مزگەوتی گەورەی سلێمانی لەگەڵ دروستکردنی، (شێخ مارفی نۆدێ) دەرسی تێدا وتۆتەوەو ئەمینداری کتێبخانەکەش بووە، هەردەم لە کتێبخانەکەدا بووە، چونکە میرەکانی بابان بەهەموو هێزو توانایەکیانەوە چاودێری خوێندنگەو قوتابخانەیان دەکرد، لە هەر شوێنێک بیانبیستایە کە کتێبخانەی نایاب هەیە، چەرچی و پیاوی خۆیان دەنارد، ئەوانە دەگەیشتنە بەغداد و موصل و وان و ئیستەنبوڵ و مەککەو مەدینەو قاهرە و دیاربەکرو یەمەن و سەدەها زەرکەفتی نایاب و بێ وێنەیان ڕاگواستووە.( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ١٤٣)، جگەلەمەش(ئەحمەد پاشا دوا میری بابان کە برایە ئاستانەدا لە وێوە بە والیەتی ناردیان بۆ یەمەن، لەوێوێشەوە پەیتا پەیتا دەستنوس و کتێبیان دەنارد بۆ کتێبخانەی مزگەوتی گەورەو کتێبخانەکانی تری مزگەوتەکان دەنارد، تەنانەت کتێبی (مسالک الابصار ) لە باسی مێژوودا (١٤) بەرگ بووە لە هیچ شوێنێکی تر دەستنەدەکەوت هەمووی ناردەوە بۆ سلێمانی).( بابان، سلێمانی شارە گەشاوەکەم، ١٠٦ )

ئەگەر ئەم مەدرەسەو مزگەوت و حوجرانە فێرخوازێکی کەمیشی پێگەیاندبێت، دەستەبژێربوون و هەریەکەیان لە بوارێکی دیردا بوونەتە ئەستێرەیەکی گەشی ئەدەبیات و رۆشنبیریی کوردو سەرچاوەیەکی بەنرخ بۆ لێکۆڵەران لە بوارە جیاوازەکاندا.

بەراورد لە نێوان میرنشینی ئەردەڵان و بابان لە ڕوانگەی ئەدەبی و ڕۆشنبیرکردنەوە

یەکەم: لێکچوون

١- لە هەردوو میرنشینەکەدا میرەکان کاریان بۆ پێگەیاندن و بڵاوکردنەوەی زانست و خوێندەواری کردووە.

٢- لە هەردووکیاندا میرەکان خۆیان ڕۆڵەکانیان خستۆتە بەرخوێندن و کاریان لەسەر ئەدەب و زانست کردووە.

٣- هەردووکیان داهاتیان بۆ بواری ئەدەب و ئاین خەرجکردووە.

٤-لەهەردوولا مزگەوت و حوجرەو مەدرەسە بونیادنراوە، بەمەبەستی خوێندن و ئایندارى و رۆشنبیریی.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**دووەم: جیاوازی**

١- میرنشینی ئەردەڵان زووتر و زۆرتر برەوی بە لایەنی ڕۆشنبیری داوە، ئەمەش بەهۆی پەیوەندی و نزیکی لە شاکانی قاجارو سەفەویەکان و لەم ڕوانگەوە کاریگەریان لە سەر میرنشینەکە هەبووە.

٢- لە میرنشینی ئەردەڵاندا مێژوو نوسین و ئەدەب بە پلەی یەکەم کاریان لەسەر کراوە، بەڵام لە میرنشینی باباندا زیاتر کار لەسەر شیعر کراوە.

٣- ڕۆشنبیرو زاناکانی میرنشینی ئەردەڵان، کاریگەریان لەسەر ڕۆشنبیرو مەلاکانی میرنشینی بابان هەبووە.

**ئەنجام:**

١- لە میرنشینی ئەردەڵاندا بەرهەم و کاری ئەدەبی و ڕۆشبیری گەلانی ئێرانی ڕەنگیداوتەوە، ئەمەش بەهۆی کاریگەری شارستانییەتی ئێرانەوە بووە، لەگەڵ ئەمەشدا یەکێک لە کارە لەپێشینەکەیان گرگیدان بووە بە ئەدەبیات و ڕۆشنبیریی

٢- میرنشینی بابان بە هۆی درەنگ بەشارکردنی شاری سلێمانی و کەمی ماوەی دەسەڵاتی، کەمتر بەرهەمی ئەدەبی و کاریگەری لەسەر بووە، لەگەڵ ئەمەشدا کاریان لەسەر ڕۆشبیری و گەشەکردنی ئەدەبیات کردووە.

٣- هەردوو میرنشین مزگەوتیان کردۆتە شوێنی پەرستن و خوێندەواری و پێگەیاندنی ڕۆشنبیر.

٤- کۆڕو شیعر خوێندنەوە یەکێک بووە لە خواست و کارەکانیان لە هەردوو میرنشین و لە کۆشکەکانیاندا سازیانکردووە.

٥- مەستورەی ئەردەڵانی یەکەمین ژنە لە مێژوودا، کە مێژووی تۆمار کردبێت.

٦- گرنگیدان بە مزگەوتەکان و دیاریکردنی چەند مزگەوتێک بە پێی پێگەو ئاستی ڕۆشنبیری و خوێندەواری، وایکردووە چەندین شاعیری بەناوبانگمان لە ئەدەبی کلاسیکدا بێتە بەرهەم.

٧- گرتنەئەستۆی خەرجی مزگەوتەکان، لەپێناو پێگەیاندنی خوێندەواری و ڕۆشنبیر لە هەردوو میرنشینەکەدا.

**سەرچاوەکان:**

١- بیرئانینی مەستورەی ئەردەڵان، ڤستفالی مەستورەی ئەردەڵان، هەولێر، ٢٠٠٥.

٢- بابان، جەمال ، سلێمانی شارەگەشاوەکەم، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، چاپی دووەم،٢٠١٢.

٣- بۆرەکەیی، سدیق ،مێژووی وێژەی کوردی، بەرگی دووەم، دەزگای ئاراس، هەولێر، ٢٠٠٨.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

٤- ڕۆخــانی، باباشــێخی مەردۆخ ، مێــژووی نــاودارانی کــورد، و:ماجــدی مەردۆخ ڕۆحــانی، کوردستان ، سنە ،٢٠١١.

٥- ڕەسوڵ، د.عزەدین مستەفا ، سەرنجێ لە زمان و ئەدەبی یەکگرتوو ،چاپخانەی سلمان الاعظمی،بەغدا،١٩٧١.

٦_خەزنەدار، د.مارف ، مێژووی ئەدەبی کوردی، بەرگی یەکەم، دەزگای ئاراس، هەولێر، ٢٠٠١.

٧- خەزنەدار، د.مارف ، مێژووی ئەدەبی کوردی، بەرگی دووەم، دەزگای ئاراس، هەولێر، ٢٠٠٢.

٨- خەزنەدار، د.مارف ، مێژووی ئەدەبی کوردی، بەرگی سێیەم، دەزگای ئاراس، هەولێر، ٢٠٠٣.

٩- حەمە باقی، محەمەد ، میرنشینی ئەردەڵان بابان سۆران لە بەڵگەنامەی قاجاریدا، دەزگای ئاراس، هەولێر،٢٠٠٢.

١٠- قەرەداغــی، مــحەمەد عەلــی ،دیــوانی مەســتوورە،دەزگای چــاپ و بڵاوکــردنەوەی ئــاراس، هەولێر،٢٠٠١.

١١-مەردۆخ، شێخ محمد مەردۆخی کوردستانی، مێژووی کوردو کوردستان، وەگێرانی زانەر محمد، چاپخانەی ڕۆژ هەڵات، هەولێر، ٢٠١١.

بیانی:

١- سید عبدالصم، د توداری"نور الانوار فی کرامات ذراری سیدالمختار" سنندج، ١٣٦٩.

٢- ببادیە، سرود، استاد ملا محی الدین سالحی، انتشارات کردستان، سنندج، ١٣٨٠.

٣- صابر، محمد، النودهی وجهوده النحویه، مطبعه جامعەالصلاح الدین ،ط١، ٢٠٠٠.

**نامەی ماستەر:**

١- عبدالصمد، کامیران ، کوردستان العثمانیه فی النصف الاول من القرن التاسع العشر، رساله ماجستیر،جامعه الصلاح الدین، ٢٠٠٠.

**گۆڤار:**

١- رشید، د.کمال طاهر ، الشیخ معروف النودهی البرزنجی، و رحله العلمیه فی کوردستان، گۆڤاری توێژەر، بەرگی ١، ژمارە١، ٢٠٠١.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**الملخص:**

تصف هذه الدراسة دور كل من إمارة أردلان و بابان في تطوير الأدب و نشر الثقافة خلال فترة حكمهما، و بعبارة أخرى، العمل على جهود هاتين الإمارتين للتحرك نحو الحضارة وتنوير الناس والاستفادة من الجوانب المختلفة للإمارة، بالإضافة إلى تسجيل وحماية تاريخ الأدب الكردي.

أهمية هذا البحث هي أن كل هذه الجهود والإجراءات في بداية الإماره اردلان و بابان من أجل تطوير الادبيات و الاثقافه، بالإضافة إلى ذلك، لا تزال الأعمال في هذه الإمارات ، على الرغم من أنها قليلة ، لكنها ذات قيمة و ضرورية وأصبحت المبدأ الرئيسي للمنهج كلاسيكي كردي.

**الكلمات الرئيسية:** *الاماره، أردالان ، بابان ، لغة ، الأدب ، الثقافة.*

**Abstract:**

This research is about the role of the two emirates of Ardalan and Baban in the development of literature and the spread of culture during their rule, in other words, work on the efforts of these two emirates in order to move towards civilization. Protecting Kurdish literature and using human resources in order to create a favorable environment for the development of society.

The importance of this research is that it introduces all these efforts at the beginning of the Ardalan and Baban Emirates in order to develop literature and culture.

**Key words:** *Empire, Ardalan, Baban, Roll, Literature, Culture.*

# ڕەنگڤەدانا بەرخومدانا کەلا دمدم د فۆلکلۆرێ کوردیدا و بەراوردکرنا ئەوێ لگەل ژێدەرێن دیرۆکی

**پ. د. حسین عثمان عبدالرحمن**

پشکا زمانێ کوردی- ڤاکولتییا زانستێن مروڤایەتی- زانکویا زاخو/ هەریما کوردستانا عیراق

**پۆختە:**

ئەدەبیات ب چەمکێ خوە یێ بەرفرەهڤە، ب قۆناغێن جیاواز، گەلەک بابەتان ب خوەڤە دگریت و لسەر گەلەک تەوەران ڕادوەستیت و خوە ل گشت بوار و ڕویدانێن جڤاکی دکەتە خودان، ڕەخنەگر ژی ب پشتبەستن ب تیۆرێن ڕەخنەییێن جۆراوجۆر، ژ گۆشەنیگایێن جیاواز، کار لسەر ئەوان تەوەر و ناڤەڕۆکان دکەت، هەتاکو بشێت لایەنێ دروستێ ڕویدانان، هەست و هزر و دیتنێن نڤیسەران ئاشکرا بکەت. ئێک ژ ئەوان بابەتێن کو بوویە ناڤەڕۆکا ژانرێن ئەدەبی و خوە ل ڕویدانێن مێژوویی کریە خودان، ئەدەبێ بەرخومدانێیە. ب بوچوونەکا دی ئێک ژ ئەوان داستانێن نەتەوەییێن کوردان، داستانا (کەلا دمدم)ە کو ب درێژاهییا ڕویدانێ یێ چوویە د هزر و بیرێن کورداندا و بوویە ئالاڤێ گەلەک داستان، چیرۆک، ڕۆمان، بەیت، هوزان و سترانان.

بابەت ل ژێر ناڤێ (**ڕەنگڤەدانا بەرخومدانا کەلا دمدم د فۆلکلۆرێ کوردیدا و بەراوردکرنا ئەوێ لگەل ژێدەرێن دیرۆکی**) هاتییە بەرهەڤکرن. بێگومان ئەڤ جۆرە بابەتە بەهرا پتر د ژانرێ داستانیدا، ڕۆلێ خوە دگێریت و ڤەگێر ب وەسفێن ڕیالیستییا تێکەل ب خەیالێ، ئەوان ڕویدانان ڤەدگێریت.

لەوڕا ئەڤ ڤەکۆلینە ب فۆکسخستن ل سەر تەوەرێ (بەرخومدانێ) دێ ل ئەڤێ ڕویدانا مێژوویێ ڤەکۆلیت و ب پرسیارێن؛ ئایا د داستانێدا پرسێن نەتەوەیی هاتینە باسکرن؟ ئایا تەوەرێ بەرخومدانێ یێ زالە؟ ئایا ئەڤ داستانە تێکەلی ڕویدانێن خەیالی بوویە؟ ئەڤ داستانە ب چ شێوە د فۆلکلۆرا کوردی و د ژێدەرێن مێژوویيدا ڕەنگڤەدایە؟ و ...هتد، دێ پتر ئەڤێ داستانێ ڕووهنکەتن.

**پەیڤێن سەرەکی:** *داستان، کەلا دمدم، بەرخومدان، خانێ لەپزێرین، عەبدال خانێ موکری.*

**پێشەکی:**

هزرا بەرخومدانێ هەردەم پەیوەست بوویە ب ئازادی و خوەڕزگارکرنێڤە. واتە ب هەر شێوەیەکی بیت، تاک ژ بن بارێ نەهامەتی و دیلی، ژ بن بارێ داگیرکارییا هزری و

مەزهەبی، ژ بن باریٚ چەمکێن مەترسیدارێن رامیاری و ئابووری و ...هتد و هەر فشارەکا دەرەکی یان ناڤەکی بیت. کەواتە هەر پێنگاڤەکا ژ بۆ دەرچوون ژ بن ئەوی بار و فشاری دهێتە هاڤێتن، بزاڤەکا گرنگ و جهیٚ پویتەدانێیە.

**١. ناڤۆنیشانیٚ ڤەکۆلینیٚ:**

ئەڤ ڤەکۆلینە ژێر ناڤیٚ (رەنگڤەدانا بەرخودانا کەلا دمدم د فۆلکلۆریٚ کوردیدا و بەراوردکرنا ئەویٚ لگەل ژێدەرێن دیرۆکی) هاتییە بەرهەڤکرن.

**٢. گریمانا ڤەکۆلینیٚ:**

گریمانا سەرەکییا ئەڤیٚ ڤەکۆلینیٚ، ئەنجامێن بەراوردکرنا داستانا کەلا دمدما فۆلکلۆری و ژێدەرێن دیرۆکییە، کو تا چ رادە نێزیکی ئێکن و چ زێدەیی یان کێمکرنەک دناڤبەرا ئەواندا هەیە. هەروەسا رێژا راستییا ژێدەرێن دیرۆکی د باسکرنا بەرخودانا قارەمانێن کەلا دمدم چەندە؟

**٣. ئەگەریٚ هەلبژارتنیٚ:**

ئەگەریٚ سەرەکییٚ هەلبهارتنا ئەڤیٚ ڤەکۆلینیٚ، هویر بوونە د کویراتییا ناڤەرۆکا رویدانێن داستانا کەلا دمدمدا و چەوانییا بەرگری و بەرخودانا ئەوانە.

**٤. سنووریٚ ڤەکۆلینیٚ:**

سنووریٚ ڤەکۆلینیٚ، چارچووڤیٚ رویدانێن داستانا کەلا دمدم، هەر ژ دەستپێکیٚ هەتا دویماهیکێیە و پێکۆل هاتییەکرن د ئەویٚ چارچووڤێدا راستییا گشت رویدانان نیشان بدەت.

**٥. پرسا ڤەکۆلینیٚ:**

پرسا سەرەکییا ئەڤیٚ ڤەکۆلینیٚ، خالا ب هەڤ گەهشتنا هەر دوو ڤەگێرانێن فۆلکلۆری و ژێدەرێن دیرۆکی د ڤەگێرانا رویدانێن داستانا کەلا دمدمدایە.

**٦. رێبازا ڤەکۆلینیٚ:**

ئەڤ ڤەکۆلینە ل دویڤ بنەمایێن رەخنا دەرەکی و ب پشت بەستن ب هندەک ژ بنەمایێن رەخنا مێژوویی، کار ل سەر ئەڤیٚ ڤەکۆلینیٚ کرییە.

**٧. پەیکەریٚ ڤەکۆلینیٚ:**

ڤەکۆلین ژبلی پۆختە ب هەر سیٚ زمانان و پێشەکییٚ، ژ دوو بەندان پێکهاتییە؛ بەندیٚ ئێکیٚ باس ل ئەدەبیاتا بەرخودانیٚ و بنەمایێن ئەویٚ دکەت و د بەندا دوویێدا رەنگڤەدانا ئەوان بنەمایان د داستانا کەلا دمدما فۆلکلۆری و ژێدەرێن مێژوویی هاتییەکرن. ل دویماهیکیٚ ژی ب ئەنجام و لیستا ژێدەران ب دویماهیک دهێت.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەندێ ئێكێ:

A. ئەدەبیاتا بەرخودانێ: Literature Resistance

خویایە كو بەرخودان، ب واتایێن: بەرگری، سەرهلدان، خەباتا بێ ڕاوەستیان، بەرڤانی ژ دۆزەكا پیرۆز و سەرنەچەماندن ل هەمبەر هەر هێزەكا دژبەر دهێت؛ لێ وەك ئەدەبیات؛ بریتییە ژ وەسفا شەڕ و شەڕكەران ل هەمبەری داگیركەران. یان بەرهەنگاربوونەكا نەتەوەیی ل هەمبەر گشت زێدەگاڤییێن دەرەكی یان زۆرداریا ناڤخۆیی، ب پشتبەستن ب هزرا نەتەوەیی و هێزا ناڤخۆیی، ب هەمی چین و توێژ و ڕەگەزانڤە.

هەرچەندە ئەڤ كارە د دەمەكێ دیاركریدا و ب هێزەكا چەلەنگڤە دهێتە ئەنجامدان، لێ ئەگەر خوەڕاگربوون و پالپشتی لگەل نەبیت، بەرخودان بەر ب شكست و ژناڤچوونێ دچیت و گشت خەباتكار ب خائین و گشت خائین ب خەباتكار دهێنە هژمارتن. زێدەباری ئەڤێ چەندێ هەڤدژیا بیروباوەرێن ڕامیاری، ئابووری، پەروەردەیی ژی ڕەنگە هەبن و ببنە هۆكارێن بەرخودانان و وەك دژبەر ئەو هزرێن چەوت و شاش بهێنە ڕەدكرن. هەلبەت گشت ئەڤ دژبەرییە و بەرەنگاربوونە وەك ئەدەبیات، دچیتە د چارچووڤەیێن ژهەڤ جیاوازێن (چیرۆك، داستان، ئەفسانە، ستران، ڕۆمان...هتد)ندا.

ئێك ژ ئەوان ژانر و شێوازێن تایبەت ب هزرێن بەرخودانێڤە، داستانە؛ سەبارەت داستانێ ژی دهێتە گۆتن كو " بریتییە لە چامەیەكی چیرۆكئامێزی پڕ لە سروود و پێهەلدان، كە ڕووداوی پالەوانبازی دەگێڕێتەوە، وەسفی سەركێشی ئەفسووناوی و سەرسوڕهێنەر دەكات و پالەوانەكانی مرۆڤی ئازا و لە خۆبردوو و سەركەوتوون لە مەیدانی جەنگ و ژیاندا، پشت بە ڕەگەزی سەرسوڕهێنەر و لە عەقلبەدەر و خەیال دەبەستێت، لەگەل ڕەگەزەكانی واقعی ئاوێزانیان دەكات و كارێكی مەزنی لێ بەرهەم دەهێنن." [1]

د هەر بەرخودانەكێدا پەیامەكا ناڤخۆیی و پەیامەكا دەرەكی یان جیهانی هەیە، د پەیاما ناڤخۆییدا ڕزگاربوونا نەتەوەیەكییە و د پەیاما جیهانیدا ژی ڕابوون و كۆلنەدان و خوەنەچەماندن ل هەمبەر دوژمن و داگیركەرانە. كەواتە " پێویستییەكانی ئەدەبی بەرگری (جەنگاوەر) و (پەیڤ) و (جەنگە) و بێ ئەمانە ئەدەبی بەرگری بوونی نییە." [2] زێدەباری هندێ كو د ئەدەبیاتا فۆلكلۆرێ كوردیدا ژی جەخت لسەر ئەڤێ چەندێ هاتییە كرن كو د گۆتنێن مەزناندا هاتییە: (شەڕ داوەتا مێرانە.) یان ژی (بەرخێ نێر بۆ سەربڕینە.) هەردەم تاكێ كورد یێ هێلایە د بەرهەڤی و ئامادەباشییا بەرخودان و شەڕیدا.هەلبەت د ئەدەبیاتا داستانییا بەرگرییێدا، نابیت ژبیر بكەین كو دەستخستن لسەر لایەنێ هەست و سۆزییا خوینەری، هێزا بەرگری و كاریگەرییا ئەوان پەیڤ و دەستەواژان زۆرتر لێدكەت، لەورا هندی نڤیسەر یان هوزانڤان ڕاستەوخۆ بچیتە د ناخێ ڕویدانانەدا و جۆرێ بەرخودان و بەرگرییێ وێنە بكەت و د وەسفێن خوەدا،یارییان ب پەیڤان بكەت و ڕیالیستێ تێكەلێ خەیالەكا بهێز



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

و نەكویر بكەت- ب ڕەنگەكی كو نەبیتە ئەفسانە- كاریگەرییا هزر و مەرەما ئەوی دێ زێدەتر بیت و پەیام دێ زویتر گەهیتە خوینەری و گوهداری و كاریگەری ژی دێ پتر لێهێت.

لێ داستانا قارەمانییێ چییە؟ " ئەو داستانانەن، كە وێنەی شەڕ و جەنگ و بەرخودانی ڕۆلەكانی نەتەوە پیشان دەدات، كە لە پێناو مافی ڕەوای گەل و نەتەوەكەی یان بەرژەوەندی گشتی خەبات دەكات. ئەم داستانانە لە مێژووی هەر نەتەوەیەكدا خاوەنی پلە و پایە و ئاستێكی بەرزی وەرگرتنیان لە لایەن كۆمەڵەوە هەیە"[3]كەواتە داستان هەلگرێ پەیاما ئازادی و سەرخوەبوونێیە د چارچووڤەیێ شەڕ و بەرخوەدانێدا و هەر نەتەوەیەك ب شانازیڤە ئەڤان داستانان ژ بۆ نفشێن خوە ڤەدگێڕیت و دپارێزیت، هەتاكو د هیچ سەردەمەكیدا، ئازادییا نەتەوەییا ئەوان نەكەڤیتە د مەترسییێدا.

**B. بنەمایێن ئەدەبیاتا بەرخوەدانێ، د داستانا نەتەوەییا (كەلا دمدم)دا:**

١. بەرپرسیارەتی

٢. پاراستنا بیروباوەرێن ئایینی و مەزهەبی

٣. خەلاتێ شەهید بوونێ

٤. وەسفا مێرانی و بوێرییێ

٥. وەسفا قارەمانێ سەرەكی

٦. وەسفا چەك و شێوازێ لێكدانا شەڕكەران

٧. وەسفا جهێ شەڕی

٨. بیرتیژی و بلیمەتییا سەركردێ بەرخوەدانێ

٩. هەبوونا خائینان

١٠. هاندانا بەرگرییێ

١١. وەسفا زولم و زۆرداریا دوژمنی

١٢. تولڤەكرن

١٣. دەست دانەهێلان ژ بەرخوەدانێ

١٤. پاراستنا ناموسێ

١٥. گەشبینی و هیڤی ب پاشەڕۆژێ

١٦. هەڤخەمی لگەل هەژاران

١٧. بەرخوەدانا ڕیتمی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

بەندێ دوویێ:

**A. ڕەنگڤەدانا بەرخوەدانا کەلا دمدم د فۆلکلۆرێ کوردیدا و بەراوردکرنا ئەوێ لگەل ژێدەرێن دیرۆکی**

ڤەگێران و باسکرنا ڕویدانان، د ئەدەبیاتێدا، ژانر و چارچووڤەیێن خوە یێن تایبەت هەنە. ئێک ژ ئەوان ڕێکێن کو ڤەگێڕ ژ بۆ گەهاندنا هزر و مەرەمێن خوە دگریتەبەر، داستانەو هەر وەکی هاتییە گۆتن؛ "هەر هزرەک، خەیالەک، بابەت و ڕویدانەک کو ژ هەژی ڤەگێڕانێ بیت، داستانە، ... کەواتە ڕویدانەکا ڕیالیستی، خەیالییە کو ل دویڤ ڕێکخستنا دەمێ ڕویدانێ، دهێتە گۆتن."[4] و هەر ژ بەر ئەڤێ چەندێ دێ شێین بێژین، وەک چارچووڤەیەکا مەزن، دێ شێت ببیتە هەلگرا ڕویدانێن ڕیالیستی و ڕویدانێن خەیالی و ب تێکەلکرنا ئەڤان ڕویدانان، خوینەری پتر ب خوەڤە گرێ ددەت؛ ب ڕەنگەکی ب باسکرنا ڕویدانێن ڕیالیستی، خوینەری نێزیکی ڕویدانان و ب باسکرنەکا خەیالی، خوینەری دهینیتە دناڤ ڕویداناندا؛ ب شێوازەکی کو خەیالێن نقیسەر و خوینەری تێکەلی هەڤ دبن.

ئێک ژ ئەوان داستانێن قارەمانییێن د ئەدەبیاتا کوردیدا سەنگ و بهایەکێ زۆر هەی و ڕویدانێن خەیالی و ڕیالیستییێن داستانی، تێکەلی هەڤبووین و ب درێژاهییا ژیێ خوە، خوینەرێ کورد ب خوەڤە گرێدای، داستانا (**کەلا دمدم**)ە.

داستانا کەلا دمدم، داستانەکا بەرخوەدانا ڕیالیستی مێژوویییە کو دناڤبەرا سالێن١٦٠٩ و ١٦١٠دا ل کەلا دمدم و ژ لایێ (ئەمیرخانێ برادۆست)ی یێ ناڤدار ب (خانێ لەپزێرین) و (ئەبدال خانێ موکری)ڤە هاتییە تۆمارکرن[5].ئەڤ داستانە ب داستانەکا خوەڕاگری، کۆلنەدان، بەرگری ژ ئاخ و نەتەوا کورد دهێتە نیاسین و ب درێژاهییا دیرۆکێ د سینگێ تاکێن نەتەوەپەرستدا هاتییە پاراستن و بوویە پشکەک ژ ئەدەبیاتا فۆلکلۆر، کلاسیک و نوییا کوردی و د ستران، هوزان، چیرۆک و ڕۆماناندا ڕەنگڤەدایە.

ئەرکێ ئەڤێ ڤەکۆلینێ، دیارکرنا هندەک لایەنێن بەرخوەدانا کەلا دمدمە د داستان و سترانێن فۆلکلۆریدا. هەژییە بێژین کو ئەڤ داستانە ب گشتی تێکەلی ئەفسانە و بابەتێن خورافی بوویە، لێ ب گشتی ڕویدان و کارەسات و بەرخوەدانێن قارەمانانەیێن خانێ لەپزێرین و هەڤالێن ئەوی ب دروستی هاتیینە نیشاندان.

**B. بنەمایێن بەرخوەدانێ د داستانا کەلا دمدمدا:**

**١. بەرپرسیارەتی:**

ئەگەر ئەم لسەر بنەمایێن ئەدەبیاتا بەرخوەدانێ بڕاوەستین، ڕاستەوخۆ هزرا سەرەکی دێ بەر ب تەوەرێ (بەرپرسیارەتییێ)ڤە چیت، کو ئێک ژ خالێن هەرە گرنگێن ئەدەبیاتا بەرخوەدانێیە. چونکی بەرپرسیارەتی ب خوە بەرخوەدانەکە ل هەمبەر داگیرکەران؛ هزرێن شاشێن بەلاڤبوویی د جڤاکیدا و ئاڤاکرن و دروستکرنا جڤاکەکێ نموونەیی، ژ بۆ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

جیهانا نموونەیی، د چارچووڤەیێ مرۆڤایەتییێدا. لەورا دێ شێین ببێژین هزرا ڤەهاندنا ستران، بەیت و هوزانێن ئەڤێ داستانێ ب خوە، بەرخوەدانا ڤەگێرپیە، کو د چرکەساتێن هزرا ئەڤی کاریدا، هەستێ نەتەوەییێ خوە بەرجەستە و دیارکرییە.

بۆ نموونە (فەقییێ تەیران/ ١٥٤٩-1631) د نڤیسینا بەیتا کەلا دمدمدا و تاکەکێ نەتەوەییێ بەرپرسیار،ب ئەڤی رەنگی ئەڤی داستانی ڤەدگێریت و پشتی چەندین دێران ــ ٢٤ دێرــ دێ چیتە سەر بابەتێ سەرەکی:

رابوو خانێ زێرین زەندە
صوبحێ ڤەکر دەربەندە
خەلقێ جندی دخوەندە
رەشـاندن زێـر و قەنـدە
زێـــڕ و خلـــعەت دا وانە
کامل کو بوو دیوانە
گۆ هەر چی ب ئیمانە
صوبحێ وەرنە مەیدانە[٦]

ڕاسـتەوخۆ بـاس ل سـەرهلدانا خـانێ لەپزێڕین و چەوانییا سـەرەدەریکرن لـگەل سەربازێن خوە دکەت.

هەلبەت د درێژاهییا داستانێدا گەلەک جاران مفا ژ هزرا ئایینی وەرگرتییە و وەک بەرخوەدانەک ل هەمبەری هێزا دوژمنی بکار هینایە. بۆ نموونە ل دووماهیکا شەڕی و کوشتنا خانی و هەڤالێن ئەوی، دبێژیت:

شەهید بوون چوون ژ خودێرا
ئەڤ رەنگە گۆڤەند گێرا
خـان و ئەڤ خەلقێ وێـرا
بەحەشـت و حـوری ژێـرا
...
هەمـی کوشـتن ب خـوەران
شـەهید بـوون چـوونە باغان
...
وان حەمـی روو سـپی بـن
مـوقیم ل نـک نەبـی بـن
دجەننەتـا بـاقی بـن
مەهـدەرچیێ (فەقـی) بـن[٧]

**٢. پاراستنا بیروباوەرێن ئایینی و مەزهەبی:**

حەلال کـریە طاهـایێ
مەزهەبێ ڤە بکێـر نـایێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەم دمـــرن نــائێنە رایـــێ
ئـاخرەت خۆشترە ژ دونیـایێ
قەدا ل دونیـــایێ ب کـەڤــی
دێ رووڕەش بـن لـنـک نەبی
قەبوول نەکن ڤی مەزهەبی
حەمیـــان گـۆ بــلا ڤەبـــی
...
ل ســـەر خـــاطرا عـــوممەرە
د ری یـــــا پێغەمـــــــبەرە
خــوە بکــن کەر بــکەرە
رووسپی بن دا د مەحشەرە[8]

هەلـبەت هوزانڤـان دوو گۆشـەنیگایان د ئەڤێ بەرخوەدانێدا بەرجەسـتە دکەت. یا ئێکێ باسکرنا داستانێیە و یا دوویێ فۆکس خستە لسەر مەزهەبێ داگیرکەران، کو بێگومـان نەهێلانا بەلاڤکرنـا مەزهەبەکێ جیـاواز ژ یێ خـوە و ئەوی مەزهەبیـرەددکەت، ڕاستەوخۆ دچیتە د چارچووڤەیێ بەرخوەدانێدا. هەرچەندە نابیتژبیر بکەین کو د پەرتوکا مێژوویيدا و ژ گۆشەنیگایا ئایینیڤە، ب دەمارگیرییا مەزهەبی هاتییە باسکرن.[9]

**٣. خەلاتێ شەهید بوونێ:**

شەهید بن تەرکا دنێ کن
نـاڤەکێ ژ خـوەڕا چـێکن
بەسســە کەلـێ ئاسـێکن
ڕابـن ڤێکـڕا هەر لـێکن[10]

خویایە ژ پڕ بهاترین بنەمایێن جیهانا ئیسلامێ، شەهیدبوونە د ڕێکا خودێدا. هەر ل سـەر ئەڤی بنەمایی، هانـدانا شەڕی و بەرگریکرن ژ ئـاخ و ناموسـا خوە، بەرزتـرین خـالا بەرخوەدانێ و شەهیدبوون د ئەڤێ ڕێکێدا ژی، دیاری و خەلاتەکە ژ لایێ خودێڤە. زێدەباری هنـدێ کـو ڕێـژا بەرخـوەدان و خۆڕاگرییـا ئەوان د کەلێـدا ب ئەڤێ ڕاددا شـەهید بـوونێ، ب مەزنترین پلەیا باوەریێ دزانیت.

**٤. وەسفا مێرانی و بوێرییێ:**

ژ خـــالێن دیتـــرێن بەرخـــوەدانێیە کـــو ڤەگێـــڕ زۆر ب جـــوانی وەســـفا مێرانـــی و خوەگوریکرنـا خـانێ لەپزێـڕین و گشـت ئەوان کەسـان دکەت، ئەوێـن د کەلێـدا لـگەل خانی بەرگریکرین:

"شـێرەک بـن بیشـێ نـڕیە
نـــڕین ژ شـــێری هـــاتیە
خانێ سۆر چوو شەڕی وییە
بنـــێ بیشـــی ســـەکنیە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شـێرێ مەزن دەرکەفتیـیە

خـان وی شـێری خـۆریە

شاهێ عەجەم زۆر ترسیە"[11]

هەر ئەڤ بوێرییە بوو ئەگەرێ هندێ کو دورهێلێ دەستهەلاتدارییا ئەوی زێدە ببیت و شاە ب خوە پویتەی ب ئەوی بکەت:" پشتی کو ئەمیرخان مولەتا زڤرینێ بۆ دەڤەرا خۆ وەرگرتی، ئەو دلسوزی و پویتەدانا کو شاهی پێکری، بوو ئەگەر کو ڕۆژ بۆ ڕۆژی پلەیێن پێشڤەچوونێ ببڕیت و لسەر هەموو هەڤکویفێن خۆ بلندتر لێبهێت.ئەوی چەند دەڤەرێن دیتر ژ میرێن کوردان یێن سەر ب دەولەتا ئوسمانیڤە ستاندن و ئێخستنە ژێر چەنگێ خۆ." [12]

یان دەمێ وەرسفا خان و سەربازێن ئەوی د کەلێدا دکەت:

تۆپێد مەزن گرەگـرە

برجێد بەلەک خرەخرە

ڕەودا شـێران نرەنـرە"[13]

هەلـبەت (شـێر) وەک وەسـفا سـەرکردەیی، چـاڤچنووک نەبـوون، دلوڤـانی، خوەگووریکەر، هێز و خۆراگرێ، گەلەک جاران د ئەڤێ داستانێدا، ژ لایێ ڤەگێڕانڤە هـاتییە دووبـارەکرن و خـان ب گشـت سـوپایێ خـوەڤە و هەروەسـا ئەو شـێرە ژنـێن د ئەوێ کەلێدا ژی هەر ب شێر هاتینە وەسفکرن.

**٥. وەسفا قارەمانێ سەرەکی:**

ژ بـۆ بلنـد کرنـا ورە و ئازایەتییـا شـەڕکەرێن خـوە، قارەمـانێ سـەرەکی بـاس ل زیرەکـاتی، مێرینـی و ب جەرگبوونـا خـوە د مەیـدانا شـەڕیدا دکـەت، لەورا ئەو ب خوەپەسـنا خوە دکەت و ژ بۆ شەڕ و بەڕەڤانییێ، هەڤالێن خوە هان ددەت:

ئەز خـــانم خـــانە میـــرە

سـەرێ مـن سـندانێ تیـرە

سـینگێ مـن مەرتالێ شیرە

ئەز خـــانم خـــانێ میـــران

سـەرێ مـن سـندانێ تیـران

سینگێ من مەرتالێ شیران[14]

خـــانم خـــانێ لەپزێـــرینم

مەلەڤـــانێ بەحرێـــت شـــینم

مێڤـــانێ شـــاهێ ئەمیـــنم[15]

یـان دەمـێ خـان عەبـدال وەسـفا خـوە دکـەت و خـوە وەک خـانێ مـوکری، ددەتە نیاسین:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەز خانم خانێ موکری مه

ڕەقاســـەیێ ب مســـری مه

مێڤـــانێ خەلیفـــێ× مه[١٦]

**٦. وەسفا چەک و شێوازێ لێکدانا شەڕکەران:**

ئەڤ خالە بەندە ب جۆرێ چەکان و چەوانییا خوە لێکدان و بەرهەڤبکرنێ بۆ شـەڕیڤە. لەورا ژ بـۆ ئەڤـێ چەنـدێ ڤەگێـڕ ب دروسـتی جۆرێ خـوە لێکـدان و چەکێن شـەڕکەران نیشـان ددەت و د پرۆسێسـا شـانازیکرنا خـوینەران ب قارەمـانێن داسـتانێن خـوە، پێنگاڤەکا ب هێزتر دهاڤێژیتن:

کۆمێـد لاویـان وێ ڕابـوون

سـیلاح ل مـلان دوتـا بـوون

ڕەختـێ زێـڕین گرێـدابوون

کومزری سەردا کێشا بوون

پشت دەرگەهان ڕاوەستا بوون

هیڤیا ئەمرێ خانان مابوون[١٧]

...

خـان ژ کەلـێ هـاتە دەرە

جەوشـەنەک زێـڕین ل بەرە[١٨]

**٧. وەسفا جهێ شەڕی:**

د وەسفا کەلا دمدمدا، چ ژ بۆ ترسا دوژمنان و چ ژ بۆ بلند کرنا وەرەییا شـەڕکەران و نیشـاندانا شـارەزایی و بلیمەتییا کـوردان د ئاڤاکرنـا کەلێـدا، وەسـفێن جـوان و شـێوازێ دروستکرنا کەلێ داینە دیارکرن:

دمـدم ئینـا بەر کـۆلانێ

پـاله و فێـرس بەردانـێ

چێـدکەن جهـێ مەیـدانێ

...

پێنسەد مرجن پێنسەد لهاز

سەر دمدمی بوو گازەگاز

...

خانێ کوردان وێ چێدکرن

بەر سمتن رساس تێ دکرن

دا خـوە بەر تۆپـان بگـرن[١٩]



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٨. **بیرتیژی و بلیمەتییا سەرکردێ بەرخوەدانێ:**

بێگومان ئەڤە ژی ب ئێک ژ خالێن هەرە گرنگ د داستانێن بەرخوەدانێدا دهێتە هژمارتن، چونکی ڕاستەوخۆ بەندە ب ڕێبەرایەتییا سەرکردەیڤە و ڕێڕەو و پاشەڕۆژا بزاڤا بەرخوەدانێ، د جۆرێ هزرکرن و پلانێن ئەوی دایە.

بۆ نموونە دەمێ ل گەل پاشای دچیتە نێچیرێ و پاشا ل خەو دچیت و خان دمینیتە هشیار و مێشەک ژ دفنا پاشای دەردکەڤیت و ... هتد، پشتی ژ خەو ڕادبیت و باس ل ڤەدیتنا خەزینەکێ، د خەوا خوەدا دکەت، خان ئەوی سەردادبەت:

خەون نیـــنە ئەو خەیـــالە
خەیـــالا خـــزینە و مـــالە
خەونە رۆژکا پووچ و بەتالە
...
شـاهی بێـژم تەعبیـر چییە
خەونـــرۆژکە تە دیتیـــیە
خەونێـد رۆژێ تەعبیـر نییە
بەر شـاهی بەرزە کـــریە[٢٠]

ب ئەڤێ چەندێ و ل دویڤ پلانا خوە یا دەستپێکی دچیت و دەمێ دزڤرنەڤە کۆشکێ، خانب بیرتیژییا خوە و ب هەجەتا گوستیرکێ، خاترا خوە ژ پاشای دخوازیت و بەر ب ئەوی جهێ پاشا لێ نقستی دزڤریتەڤە:

بەرەک ژ کەلەکێ راکریە
کولـۆزەک ژێ دەرکەفتیـە
دەرێ کولـــۆزێ ڤەکـــریە
کـــاخەزەک تێـــدا دیتـــیە
کاخەز سەر ئێک نڤیسیە
خـانی کـاخەز هەلگـرتیە
پـاخلا چەپـێ حەشـاندیە
لـۆت بەر لـۆتێ بشـکفتیە
هــات و گەهشــتە شــاهیە
هەمـی ژ شـاهی ڤەشارتیە[٢١]

کو بێگومان ئەڤە بەردەوامییا پلانا خانییە کو ب پلان و بیرتیژییا خوە، پێنگاڤ ب پێنگاڤ بەر ب ئارمانجا خوەڤە دچیت.

هەلبەت ئەڤ چەندە د ڤەگێڕانا مێژوویا (ئەسکەندر بەگێ مۆنشییێ تورکمان)ی د پەرتوکا (عـالەم ئـارایێ عەباسی)ا ئەویژیـدا، دەمێ بـاس ل بیرتیـژی و زیرەکاتییا خـانی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

دکەت، ڕاستەوخۆ بەرخوەدان و بەرگرییا نەتەوەییا خانی باسدکەت. هەرچەندە ڕاستەوخۆ پەسنا زیرەکی، بیرتیژی، بهێزی و بلیمەتییا خانی دکەت:

" ئەمیرخان ژی ب سەرڤە خۆ وەکو کەسەکێ فیدایی نیشا ددا و ب ژێرڤە ژی ژ دەمارگیریا مەزهەبی و یان شەرارەتا ناخێ، دگەل میرێن قزلباش یێن وێ دەڤەرێ، کەرب و کین هەلگرتبوو و خەیالا سەربەخۆیی و خوەسەریێ کەفتبوو د مێشکێ ویدا. "[٢٢]

یا خود دەمێ هزر د ئاڤا کرنا کەلێدا دکەت، دایکا خانی ئامۆژگارییا ئەوی دکەت کو:

رۆژێکە ژ یێد خودێ دایێ
دایکا خانی دبێتە خانی
تو رابە هەرە دیوانا شایی
ئەردی ژێ بخوازە هندی چەرمێ گایی
...
خانی گۆت: هەرێ شایی هەرێ شایی
بدە من ئەردی تەمەد چەرمێ گایی
ئەردێ مە سیران سەر ڤەدایی
دا بکەم نژیار و ئاڤایی
دا نەمینم بێ دوومایی[٢٣]

و پاشا ژی گۆهدارییا داخوازییا ئەوی دکەت و ئەوی عەردی ددەتێ:

من دا تە ئەرد تەمەد چەرمێ گامێشە
بۆ خوە بکە کۆلکێ مێشە
بێ قەرقەشە و بێ ئارێشە[٢٤]

لێ د ژێدەرێن مێژوویدا چیرۆکا ئاڤاکرنا کەلێ، ب ڕەنگەکێ دیترە:

" ئەمیرخان داخواز ژ شاه عەباس کر کو مۆلەتێ بدەتێ قەلایەکا ب هێز بۆ بەرسینگگرتنا هێرشێن ئوسمانیان ئاڤا بکەت، چونکی کالا ئورمێ (توپراق قلعه) کو ژ ئاخێ هاتبوو چێکرن بەرگری تێدا نەدهاتە کرن. ئەسکەندەر بەگێ مونشی دنڤیسیت کو هزرا (سەربەخوویی و ئیستبدادی) ل جەم ئەمیرخان پەیدا ببوو، لەورا بەری بەرسڤا داخوازا وی بگەهیت، دەست ب چێکرنا ڤێ کەلێ لسەر چیایەکێ بلند ل ١٨ کیلومەتریا رۆژئاڤا ئورمێ کر، کو د بنەرەتدا کەلەکا سەردەمێ ساسانیان و ژ دوو کەلا پێک دهات بناڤێن دمدم و جمجم. "[٢٥]

یان ژی دەمێ شاه، پشتی گەلەک شکەستنان، وەک فێلەکێ تانجا خوە بۆ خانی دهنێریت و داخواز دکەت بکەتە سەرێ خوە، لێ خان ئەوی تانجی دشکێنیت و ب توندی بەرسڤا شاهی ددەت :



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەز وی تانجی قەبوول ناکەم
خوە ژ خودێ و رەسوول ناکەم
کورمانجیێ بێ ناڤ ناکەم[٢٦]

هەلبەت ئەڤ چەندە ل دویماهیکا شەڕی و دەمێ خوە ڕادەست دکەن، بەری ژ کەلێ بهێنە دەری، پیلانەکێ دادڕێژن و خانێ لەپزێڕین و خان عەبدال ب مەرەما کوشتنا پاشا و جێگرێ ئەوی ژ کەلێ دهێنە خوار " خانێ کوردان لەشکەرێ خوە هەمی بەر دەرگەهێ کەلێ کۆم کر و پیلانا خوە بۆ وان گۆت. گۆت ئەم دێ ب رەنگێ تەسلیمبوونێ دەرکەڤن. پاشی دێ ل ناڤ خیڤەتێن عەجەمان بەلاڤ ببین. ئەز دێ بچم بن خیڤەتا شاهی، خانێ موکری ژی دێ بچیت بن خیڤەتا خەلیفە. دەما من شەرهەلێخست، هوون ژی دەست ب شیری بکەن. هەتا دەنگێ شیرێ من نەهێت کەس دەست ب شەری نەکەت."[٢٧]

دێ سـەر خیڤەتـان بەلاڤ بـن
سـپێدێ دگەل دەنگـێ مـن رابـن
ب خەزایـێ جـان فیـدا بـن
...
وەکی مێڤانی بەلاڤ بن سەر خیڤەتانە
ژ خـوە نەڤەکەن چەکـانە
بـاوەرێ نەدەن ڤـان سـانە[٢٨]

ئەڤ چەندە و پیلانا خانی د ژێدەرێن مێژوویێدا ژی هاتییە دووپاتکرن: " هەر دوو خانێن کورد، ئەمیر خانێ لەپ زێرین و خان ئەبدالێ موکری، پیلانەک دانا بوو کو دناڤ قزلباشاندا دەمەکێ گونجایی پشتی کوشتنا میر و سەرکردێن وان خۆ رزگار بکەن یان ب مێرانی بهێنە کوشتن. هەر دوو نڤیسەرێن کو برەنگەکێ بەرفرەە رووданا کەلا دمدم نڤیسینە، ئانکو ئەسکەندەر بەگێ مونشی و مەلا جەلالەدینێ یەزدی مونەجەم باشیێ شاه عەباس، بەحسێ ڤێ پیلانا خانێن کورد دکەن. و د نڤیسن کو ئەڤ بابەتە، ژ ئەنجامێ ڤەکۆلینا دگەل گرتیێن کورد، پاش کوشتنا خانان، ب دەست وان کەفتبون."[٢٩]

**٩. هەبوونا خائینان:**

ئەڤ خالە تەمام بەروڤاژییا خالێن بەرەڤانییێە. چونکی هندەک جاران، د ڕێڕەوا بەرخـوەدان و بەرەڤەنیکرنێـدا، خـائینەک سـەرهلددەت و ژ بـۆ بەرژەوەنـدییێن خـوەیێن تاکەکەسی،ب دژی نەتەوە و هەڤالێن خوە ڕادبیت و هەڤکارییا دوژمنان دکەت:

نـێ مەحمـوودێ ئالەکـانی
کولکەک بێت سەر ئەزمانی
بـوو خەریمـێ مـالا خـانی
حـالێ خانـان کـر بەیـانی


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەو مەحموودکێ باب نەمایی
کاخەزەک تیرێ پێچایی
ئاڤێتە خیڤەتا شایی[30]

بێگومان ئەڤ جۆرە کەسە نە جهێ باوەرییا خوەییانە و نە یێ دوژمنان و ژبەر هندێ یان ژ لایێ خوەییان، یان ژ لایێ دوژمنانڤە دهێتە کوشتن و ب خرابترین شێوە دهێنە سزادان:

شاهی گۆت دێ بینن و دێ بینن
تۆپا مەزنن هون خشینن
مەحموودکی تێ بحەشینن
برجێد کەلێڤە پەقینن
دا چ جار خولام سەرێ
باخوویێ خوە ڤێ نەیینن[31]

هەرچەندە ئەڤ ڕویدان و خیانەتە د ژێدەراندا نەهاتیە باسکرن و ب تنێ باس ل هێرشێن بەردەوامێن قزلباشان بۆ سەر کەلا ( سولق) کو ئاڤا کەلێ دابین دکر و دهێتە گرتن و سەرئەنجام پشتی شەڕێن دژوار ل گولانا سالا (١٦١٠)ێ، بورجێن کەلێ و سەروکانییا ئاڤێ دکەڤیتە دەستێ قزلباشاندا، هاتییەکرن.[32]

**١٠. هاندانا بەرگرییێ:**

د ئەڤێ خالێدا، هەبوونا وریان زۆر یا گرنگە، کو بێگومان خانێ لەپزێرین د دروستکرنا وەریاندا گەلەک یێ شارەزا بوویە، بۆ نموونە ل دەستپێکا شەڕی و پشتی دوژمنی کەمپا خوە دانای، کورێ ئەوی (عەبدال بەگ)ی بەرێ خوە دا دوژمنی و تڕسیا:

" هەوارە ئەڤ چ زەمانە
چ عەجەمە دۆر مە دگرن
ژ خیزێد چەمان پترن
ژ بەلگێد دارا بۆشترن

لەوڕا خانێ لەپزێرینی گۆت

" عەڤدال بەگ بابۆ نەتڕسە
ئەو عەجەمن پڕ حنێرن
خیڤەتا خالی ڤەدگرن
هند سەمەرن، هند حێشترن
هند شڤانن، هند گاڤانن
هند خەربەندێد دەوارانن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەمی تێرا بابێ تە نابن
عەسکەر نینە بازرگانە
تێت ژ وەلاتێ سۆرانە
بابێ تە پلنگێ چیانە"[٣٣]

یان دەمێ خوارن و ڤەخوارن گەلەک کێم بووی، دێهلەک لبەر دیوارێ کەلێ زا و ئەوی ژی ژ شیرێ ئەوێ، فرینێ ماستی چێکر و بۆ شاهی فرێکر، هەتاکو ئەوان ب خاپینیت و ورەیا دوژمنی بینیتە خوارێ و یا خەلکێ کەلێ زێدە بکەت. هەلبەت سەرەڕای خالا ورەیێ، ئەڤ حیلەیە دچیتە د چارچووڤەیێ بیرتیژیێدا، چونکی شاە دبێژیت:

" وەی دمدمو بەرێ پانە
هەفت سالە من دۆر لێ پێچانە
سالا هەفتێ خانێ کوردان
بۆ من ڕێ دکەت فرینێ مهانە
...
شاهی گۆت:
لەزبکەن و بلەزینن
تەنگێد دەوارا بشدینن
ئەڤ خانە دێ مە برینن."[٣٤]

واتە ب ئەڤێ چەندێ ترس و لەرز کەڤتە دلێ دوژمنی و هزرا ڕەڤینێ کرییە.

فەرە ببێژین زێدەباری هندێ کو خانی سەرەڕای بکارهینانا حیلەیەکێ، ل گەل هندێ ژی وەک باشییەک ل هەمبەری ئەوی شاهی ئەنجامدایە؛ لێ ئەڤ چەندە ب تەمامی بەروڤاژی د پەرتووکا مێژوویێدا هاتییە باسکرن و هەردەم خانی تاوانبار دکەن کو کەسەکێ تێکدەرە و خرابییان دکەت: " ئەمیرخان ب چ ڕەنگان گوە نەددا نامە و پەیامێن حەسەن خان و میرێن قزباش لسەر سەربادان و سەرهلدانێ یێ بەردەوام بوو...دەمێ حەسەن خان و میرێن قزلباش گەهشتینە نیڤ فەرسەخییا کەلێ، ل جهەکێ گونجایی ئوردو دانان. کورد چوونە د کەلێدا و توپ و تڤەنگ دهاڤێتنە لەشکەرێ میران."[٣٥] و ب ئەڤێ چەندێ شەڕخوازییا خانێ لەپ زێڕین دووبارە دکەنەڤە، چونکی د بەردەوامییا بابەتێ خوەدا دبێژیت، کو د دانوستاندناندا خانی " بهانەیێن نامەعقول دئینیت و دەرگەهێ ئاشناییێ دگریت."[٣٦]

زێدەباری ئەڤێ چەندێ هندەک جاران، ماندی دبوو و ورەیا ئەوی دهاتە خوارێ و مفا ژ هێز و ورەیا دایکا خوە (لەعیخان)ێ وەردگرت:

" هەرێ دایێ هەرێ دایێ
تو بکە تەدبیر و رایێ


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەوار چـــوون قـــۆلێ بەغـــدایێ

بـــێ هیڤـــیمە ئیمـــداد نـــایێ

دایکا خانی دبێت خانی:

خـــانۆ کـــورێ دێـــلە شـــێرێ

دەســـت بـــدە شـــیری هەرە گێـــرێ

خودێ بەرخێ نێر دا بۆ کێرێ" [٣٧]

یـا خـود د دەمـێ ئاڤاکرنـا کەلێـدا دایکـا خـانی خـودان ڕۆلە و کـورێ خـوە ژ موکومبوونا کەلێ پشتڕاست دکەت:

دایکـا خـانی ب تەخمیـنە

خـانۆ! رابە دەسـت هەلیـنە

تـو دەسـتەکێ تۆپـان بیـنە

کەلا خوە پێ ب جەربینە[٣٨]

ب بوچوونەکـا دی، دایکـا خـانی ب ئەڤـێ چەنـدێ و ب پشتڕاسـت بـوون ژ بهێزییـا کەلێ، ورەیا خانی و سوپایێ ئەوی بلند دکر.

**١٠.وەسفا زولم و زۆرداریيا دوژمنی:**

ئەڤ خـالە، ب ئێـک ژ خـالێن ئاسـاییێن هەڤڕکـی و دوژمنکـارییا دوژمنـان دهێـتە هژمـارتن، چـونکی دوژمـن هـیچ دەمەکـی ب چـاڤێ دلوڤـانی و بەزەییـێ بەرێ خـوە نـادەتە هەڤـڕکێن خـوە و ئەو کەسـێن بەرەڤـانییێ دکەن، لەوڕا ب هۆڤـانە و تونـدترین شـێوە سەرەدەرییێ لگەل خەباتکاران دکەت.

ئەڤ هۆڤاتییە د داسـتانا کەلا دمدمـدا، ژبلـی شـەڕ و شـێوازێن شـەڕی و توپهاڤێتنێن ئەوان د دەمەکیدا زێدەتر دبیت، کو کانی و سۆلینێن ئاڤا کەلێ، دکەڤنە دەستێ ئەواندا و ب هیچ ڕەنگەکی هزر ل ژن و زارۆکێن دناڤ کەلێدا ناکەن:

سـۆلین و ئـاڤ خـراب کـرن

کـۆپەک تێـدا مـرار کـرن

سـریج ژ خـوینێ سـۆر کـرن

هنـدی گـانە هنـد حێشـترن

سەر سۆلینان سەر ژێ کرن

سـرینجە تـژی خـوین کـرن

...

خوینێ ناڤ ئاڤێ کەف داڤە

هاڤینە بێهنمرار کەفتە ناڤە

مـن حەیفـا مندالێـد سـاڤا[٣٩]



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

و ب ئەڤێ چەندێ ئاڤا ڤەخوارن و نڤێژان ژ گشت خەلکێ کەلێ هاتە پیسکرن و برین و رێرەوێ شەرێ ب تمامی گۆهارتن و بوو ئەگەرێ هندێ کو هندەک ژن و زارۆک، خوە ب دەست دوژمنیڤە بەردەن.

هەلبەت ئەڤ هۆڤاتییا شەری، د پەرتووکێن مێژوویيدا ب ئەڤی رەنگی هاتییە ڤەگێران کو شاه دبێژیتە (اعتمادالدوله حاتەم بەگ) کو: " ئەگەر کاروبارێ وی ب ئاشتی و گفتگوێ چارەسەر نەبوو، ئەمیرخان لسەر سەرپێچییا خۆ یێ بەردەوام بوو، ئاگرێ سەرهلدانا وی ب ئاڤا کەرب و کینا سزادانێ ب ڤەمرینیت و دەڤەرێن وی لسەر جەلالیان پارڤە بکەت، دا جەلالی ل وان دەڤەران ئاکنجی ببن، دەست بهاڤێژنە ژناڤبرن و نەهێلانا سەرپێچیکارێن کوردێن دیتر."[40]لەورا ژی ب سەرکەفتن د شەریدا، دلۆڤانی ب هیچ کەسەکی نەبرن و خوە ئەوێن بەری چەند هەیڤان خوە رادەست کرین ژی، هەمی کوشتن. " پاش ڤێ کوشتارێ، شەرکەرێن قزلباش بەر بوونە گیانێ کوردان و نە بتنێ شەرکەرێن کورد، بەلکو هەر کەسێ دەستێ قزباشان گەهشتیێ، ژ وان ژی ئەو جەلالیێن گەهشتینە ئەمیر خانێ برادۆست، هەموو کوشتن، هەتا ئەو کوردێن بەری شەش مەهان ژی خۆ دابوونە دەست و ل ئوردویا قزلباشان بوون و ببوونە شاهسیڤەن و خزمەتا قزلباشان کربوون، ژی هاتنە کوشتن . هەر کەسێ مابوو د کەلا ناڤین (نارین کەلێ)دا ژی خوینا وان هاتە رشتن."[41].

**١١. تولڤەکرن:**

ئەڤ چەندە ب تایبەتی د دەمەکیدا دیار دبیت کو کەلێ ئاڤا دکەتو داخوازا هۆستا و بەرهۆستایان ژ شاهی دکەت و پشتی ب دووماهیک هینانا کاریو پشتراست بوون ژ موکومییا کەلێ و کێشانا بورییێن ئاڤێ و پاراستنا نهێنییا جهێ ئاڤێ، هەمیان ژبلی (مەحموود)یدکوژیت و دبێژیتە شاهی کو ئەو پالە هەمی یێن رەڤین:

رۆژا دمـــــدم نیڤـــی کــــری
ســۆلینە و کــانی بەرزە کــری
ســەرێ پێنســەد هۆســتان بــری
تنێ دەنگ مەحموودی نەکری"[42]

و پشتی هینگێ هەم وەک تولڤەکرن و هەم پێداویستییێن کەلێ، کاروانی و بازرگانێن شاهی دگریت و دشەلینیت و هەمییان دکوژیت:

" پــایزە بەفــرێ کێــری ئالانــدن
خویســـــارێ کــــانی پانگانــــدن
خــانی بازرگانێد شــاهی شــەلاندن
پــایزە بەفــرێ کێــری ســپی کــرن
خویســـــارێ کــــانی تێرکـــــرن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خانی بازرگانێد شاهی رویس کرن

پایزه بەفرێ کێری و مل مشتن

خویساری کانی هەلمشتن

خانی بازرگانێد شاهی کوشتن"[٤٣]

سەبارەت ئەڤێ چەندێ هاتییە گۆتن کو" کورد دا فەوج فەوج ژ کەلێ هێنەدەر و هەر قزلباش یان جەلالییەکێ کو بۆ ئینانا هندەک پێدڤیاتیان نێزیکی وان ببا، دیتبان دا کوژن و تشتێ وی تالان کەن."[٤٤] کەواتە ئەڤ چەندە ب بەردەوامی ژ لایێ سوپایێ خانیڤە دهاتە ئەنجامدان، هەتا شەڕ هێدی هێدی بەرفرەه بووی.

**١٢. دەست دانەهێلان ژ بەرخومدانێ:**

(پشتی سوپایێ خانی گەلەک ژ جەلالییان کوشتین و محەمەد پاشای داخوازا خوینا ئەوان دکری و بزاڤ کری تولێ بستینیت. خەلکێ ئەوی جوق جوق هەتا بن دیوارێ کولێ دچوونە پێش و ژ لایێ دیتر ژی کورد بو بەرگریێ دهاتنە پێش و ژ هەر دوو لا شەرکەر دهاتنە کوشتن و دهاتنە برینداركرن، هەتاکو کار ژ دلپێڤەبوون و لێبوورینێ دەرباز بوو و دناڤبەرا واندا شەر و لێکدان پەیدا بووی.)[٤٥]پەرتووکا مێژوویی ب ئەڤی ڕەنگی گونەهان دئێخیتە ستوهێ خانێ لەپ زێڕین، لێ باس ل مەرەما سەرەکی و دانانا کەمپا عەسکەری ل هەمبەر کەلێ و داگیرکرنا ئەوێ ناکەت.

مەلا تەیبۆ بلەزینە

کاخەزان بنڤیسینە

ناڤ ئیسلامێ بگێرینە

عەجەمی دۆر مە گرتینە

مە شەرە، چ سولح نینە[٤٦]

یان ژی پشتی نامە هنارتی و کەس د هەوارا خانیدا نەچووی، بەرگرییا خوە خورتتر لێکر و دەمێ ئاڤ کێم لێهاتی ژی هەر لسەر بەرگرییا ب هێزا خوە مابوون:

هەی خانۆ، سەرە هیڤیێ

تو نەکێشە ڕەزیلیێ

دەست بدە شیری هەرە زەڤیێ

...

هەی خانۆ سەرە دەولەتێ

تو نەکێشە ڕەزالەتێ

دەست بدە شیری هەرە داوەتێ[٤٧]

ئەڤ چەندە هەتا دویماهیکا شەری هەر یا بەردەوامە، ب ڕەنگەکی کو د ژێدەرێن مێژوویيدا باس ل مرنا ب سەربلندییا ئەوان دهێتە کرن، " کوردێن دیتر دگەل ئەمیر خانێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

لەپ زێرین، شیرێن خۆ هەلکێشان و ژ کوینێ هاتنە دەر و هێرش برنە سەر قزلباشان و ژمارەیەکا زور ژێ کوشتن. لێ ژمارا زۆرا قزلباشان بوو ئەگەر کو شەرکەرێن کورد چ رێکێن رزگار بوونێ ب دەست نەکەڤن و ئەمیر خانێ لەپ زێرینێ برادۆست و ئەبدال خانێ موکری و شەرکەرێن کوردان تا دووماهی کەس ب بەرخوەدانەکا مێرانە و د شەرەکێ نابەرابەردا هاتنە کوشتن."[٤٨]

**١٣. پاراستنا نامویسێ:**

ئەڤ چەندە ژی دچیتە د خالا بەرخوەدانێدا و د ئەڤێ داستانێدا، ئەڤ خالە زۆر بوێرانە هاتییە ناسکرن و ژنێن کورد، پشتی خوە گوریکرنەکا زۆر، ل دووماهیکا شەڕی سۆزێ ددەنە خانی کو ئەگەر ئەو د شەڕیدا شکەستن، خوە تەسلیم نەکەن و خوە بکوژن. کو بێگومان هندەک ژەهرێ ڤەدخۆن و هندەک ب لاندکڤە خوە د کەلێدا دهاڤێژن و ب ئەڤی رەنگی ناموسیا کوردان دپارێزن:

" خان دبێژیت ڤان زەریانە
خەملن رەنگێ حۆریانە
من هوون هەمی دەستوور دانە
زەریا خانی گۆت:
کەپێ ستیان بڕی بیت
سەرکۆکێ وان تڕاشی بیت
پاش خانان مالداری نابیت
...
ئەم ستینە چل پترن
تاسێد ژاهرێ ژێک وەرگرین
یەک ڤەخۆین چار پێ بمرین"[٤٩]

یان ئەوێن زارۆکێن ساڤا هەین، ب لاندکڤە خوە د کەلێدا دهاڤێژن:

" وان لاندک خوەڤە شداندن
خوە د حەوالاندا فڕاندن
جەرگێ ڤان خانان کڕاندن"[٥٠]

ب تنێ بویکا خانی کو ب کوری دوو گیان بوویە، ژەهرێ ڤەناخۆت، دا کو ئەو کور تولا بابێ خوە بستینیت:

" زەریا خان عەبدال تەرلانە
حەملێ وێ حەملێ کورانە
وەرناگریت فینجانانە
سەر دبەت مالێد بابانە


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

کور ڤەدکەن تۆلێد بابانە" [51]

یا خود دەمێ خانێ موکری، بەری ژ کەلێ دەربکەڤیت، هەڤژین و زارۆکێن خوە دکوژیت:

"خانێ کوردان گۆتە خانێ موکری:
تو ئەو نینی یێ ل دەڤی
هەچی گاڤا شەر هەلکەڤی
یەقین ئەڤە تو دێ ڕەڤی
موکری گۆت: تە ژ بەر منە
من حەرام بن مال و ژنە
خوە دگەل تە بدەم کوشتنە
خانێ موکری دزڤریتە
ژنێ دگەل کوری دکوژیتە
گوڕی ژ هناڤان ڕادبیتە" [52]

هەلبەت هندەک دمیننە ساخ و د ژێدەرێن مێژوویيدا ب ئەڤی ڕەنگی باس ل ئەوان گرتییان دکەن " ژن و زارویێن ئەمیرخان ژی ب ئێخسیری برنە ئوردوگایێ شاە عەباس ل مەراغێ و ل ١١ تەموزا ١٦١٠ دانانە بەر سینگێ شاە عەباس " [53]

**١٤. گەشبینی و هیڤی ب پاشەڕۆژێ:**

ئەڤ چەندە بەهرا پتر د خەون و پلانێن خانێ لەپزێریندا خوەیا دبن، دەمێ د خەونێدا دبینیت کو ڕۆژ و هەیڤ هەردوو دهێنە مالا ئەوی و مەلا ئەوێ خەونێ ب ئەڤی ڕەنگی ڕاڤە دکەن: " تو دێ گەنجخانەیەک گەلەک مەزن بینی. تو دێ بشێی ب سایا وێ گەنجخانێ هەفت سالان شەڕێ دەولەتێ بکەی. مشەخت، مێرکوژ و مێرخاس دێ ل دۆرا تە کۆم ببن" [54]

" خان د ڕێکێ زڤریە
دۆل و ملکان سەرکەفتیە
تەختەنا موکرێ کریە
گرکێ گەنجێ کۆلاییە
بەرەک ژ کەلەکێ راکریە
کولوزکەک ژێ دەرکەفتییە
کاخەزەک تێدا دیتییە" [55]
" کاخەزا خوە ئینایە
دەستێ مەلا راکرییە
مەلایی کاخەز خوەندییە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەر خوەندنێ را کەنییە

گەنجخانەیە تە دیتیە

بەلێ من و تە ب نیڤییە"[٥٦]

یان ژی دەمێ داخوازا عەردی ژ شاهی دکەت:

" رۆژەکە خـــــودێ دایـــــــیە

خـــان چـــوو دیوانـــا شـــاهییە

خـــانۆ بێــژە تە ژ مـــن چیـــیە؟

خانی گۆت: هەرێ شایی هەرێ شایی

بدە من عەردی تەمەد چەرمێ گایی"[٥٧]

ئەڤ چەندە د ئاڤاکرنا کەلێدا بەرجەستەتر دیار دبیت، بێگومان بەرخوەدان د لوتکا بندەستییێدا کارەکێ گەلەک ب زەحمەتە؛ لەورا پشتی لگەل دایکا خوە پلانا چێکرنا کەلێ و رزگاربوون ژ بندەستییێ دای، دەست ب چێکرنا کەلێ دکەت. هۆستایان ژ دەڤ شاهی دهینیت و لدویڤ پلانەکا بەرعاقل کەلێ ئاڤا دکەت و هەمی تشتان تێدا بەرهەڤ دکەت. هەرچەندە د ژێدەرێن دیرۆکیدا باس ل کەڤناتییا کەلا دمدم دهێتە کرن: " دناڤ کوردواندا یا بەربەلاڤە کو ل وی جهێ کەل لێ چێکری، بەری ئیسلامێ و سەردەمێ ساسانیاندا ل هەمان جە، کەلەک لێ هەبوو کو ناڤێ وێ (دمدم) بوو، کو ب دەربازبوونا سال و دەمان هەرفتبوو."[٥٨]هەلبەت ئەڤە بەروڤاژی هزرا ئاڤاکرنا کەلێ ل سەر رووبەرێ چەرمێ گایەکییە.

**١٥. هەڤخەمی لگەل هەژاران:**

دەمێ ئەو ئافرەت ب زارۆکڤە خوە دکوژن یان ژەهرێ ڤەدخۆن:

" خـان زڤـری ژنـاڤ زەریـانە

وێ دادرێـــژیتن رۆنـــدکانە

حەیفـم منداڵێـد کـورانە

من هەفت کور کرنە زاڤا

گــورێ رادبیـــت ژ هناڤـــا

حەیـفا مـــن منــدالا ســاڤا

خـان تێـت و دکەتە گـری

ژ هناڤــان دچیــتن گــورێ

حەیفا من مندالا کوری"[٥٩]

یان ل دووماهیکا بەرگرییێ و نەمانا خوارن و ڤەخوارنێ، دەمێ سەربازێن خوە د مان و بەرەڤانیکرنا کەلێدا یان چوونا بەر ب کەمپا دوژمنیڤە ئازاد دکەت:

" خانـان وێ گرتـی دیـوانە



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

روح شرینە، عەوفەک گرانە
هەچـــی مـــال و ژن دڤێـــتە
بلا بچیت مـن دەستوور دانە
...
هەچـــی دڤێـت مـــال و ژنە
بـــلا نەهێـــت دگەل مـــنە
بـۆ مـن ژی خـودێ مەزنە"[٦٠]

**١٦. بەرخودانا ڕیتمی:**

د کارێن ئەدەبیدا، کارکرن ل سەر هەست و سۆزان ژ بۆ کاریگەرییا پتر و لەزگین، ڤەگێڕان هان ددەت کو هندەک ڕویدان و تەوران ب شێوازەکی باس بکەت کو کاریگەیریێ لسەر هەست و سۆزێن خوینەری بکەت، یا خود هندەک جاران ڕویدان ب ڕەنگەکییە کو پڕە ژ کارەسات و دیمەنێن دلتەزین، کو بێگومان باسکرنەکا ئاساییا ئەڤان دیمەنان، ڕاستەوخۆ کاریگەرییێ دئێخیتە سەر خوینەری. ئەڤ چەندە د ئەڤێ داستانێدا، گەلەک ب زۆری دهێتە دیتن. واتە جۆرێ ڕێکخستنا پەیڤ و دەستەواژەیان، هەلئێخستنا ڕیتما شەڕی، مفا وەرگرتن ژ ئەوان پەیڤێن چووینە د چارچووڤەیێ بەرگرییێدا، وەکی (دم دم، شێر، خان، شاهێ عەجەم، شیر،توپ و تفەنگ، چیا، لەشکەر، گورمە گورم، کەل، بورج، ڕەخت، خەزا، جەوشەن، زری، و...هتد.) کو ڕاستەوخۆ کاریگەرییا ئێخستییە سەر تۆن و ڕیتما دەقی و خوینەر ب خواندن یان گوهدارییا ئەڤی داستانێ، ڕاستەوخۆ دچیتە د چارچووڤەیێ بەرگرییێدا و پتر هەست ب هەبوونا خوە دکەت. زێدەباری ئەڤێ چەندێ، چیرۆک ب خوە، وەک ڕویدانەکا مێژوویی و ناڤەڕۆکا ئەوێ، جۆرێ بەرگرییا ژن و زەلامان ل کەلێ و ل مانا خوە، پڕە ژ هەستێ ڕیتمییا بەرخودانێ و هەر ئەڤە بوویە ئەگەرێ هندێ کو سترانا ئەڤێ داستانێ ڕاستەوخۆ بچیتە د چارچووڤەیێ سترانێن شەڕی و بەرخودانێدا:

شـــێر ســـەر خـــانی دا هـــاتیە
دەســـــتێ ڕاســـــتێ دا دەڤـــــیە
شـــێری دەســـــتێ وی خـــــواریە
دەســـتێ چەپـــێ شـــێر گـــرتیە[٦١]
...
پێنســـەد مـــرجن پێنســـەد مـــاهۆل
ســـەر دمـــدمی بـــوو گۆلەگـــۆل
دێ تێکەل بن کورد و موغول[٦٢]
...
دمــــــــدمۆ بەرێ کــــــــۆلایی

پێنســەد تــۆپ پــێکڤە لێــدایی
بەر ســـــەر بەری نەهەژیــــــایی[٦٣]
...
ســــبەیە دەمـــــێ ســــــحارێ
متربـــــان پـــــف کـــــر نقـــارێ
خـــانێ ســـۆر مەشـــیا حیســـارێ
شـــێر ژ کەلان هـــاتن خـــوارێ
ســـــبەیە دەمــــێ ســـــەحرایێ
بـــــوو پیکەپیکــــــا زڕنـــــایێ
خـــان دەرکەڤــتن بــۆ خەزایــێ[٦٤]

**ئەنجام:**

١. بەرخودانا هزری د ئەڤێ داستانێدا، زۆر یا بهێزە.

٢. بەرخودانا نەتەوەییا ڤەگێڕان ئەڤ داستانە زیندی هێلایە.

٣. ئەڤ داستانە پڕە ژ هەستێ نەتەوەیی و بەرخودانێ.

٤. ڕۆلێ ژنا کورد، وەک وەفادار ب ئاخ و ناموس و پرسا خوەیا نەتەوەیی، ب دروستی هاتییە بەرجەستەکرن.

٥. بیرتیژییا کوردان د جۆرێ ئاڤاکرنا کەلێدا و بەرەنگاریکرن ل هەمبەری دوژمنان زۆر یا دیارە.

٦. هۆڤاتییا دوژمنان، وەک بابەتەکێ ڕیالیستی ب دروستی هاتییە وێنەکرن.

٧. گەلەک ڕویدانێن ژێدەرێن مێژوویی و داستانا کوردی وەکی ئێکن یان تەواوکەرێن ئێکن.

٨. د ژێدەرێن مێژووییدا ژی وەکی یێن فۆلکلۆری، وەک ئێک باس ل مێرانی و شەرکەرییا خانی و هەڤالێن ئەوی دهێتەکرن.

٩. ڕیتما بەرخودانێ، د ئەڤی داستانیدا زۆر یا بهێزە.

**لیستا ژێدەران:**


١. سەعید دێرەشی، دیوانا فەقیێ تەیران، چاپا ئێکێ، چاپخانا وەزارەتا پەروەردێ، دەزگەهێ سپیرێز- دهوک، هەولێر، ٢٠٠٥.

٢. د.عبداڵە یاسین ئامێدی، هۆنراوەی بەرگری لە بەرهەمی چەند شاعیرێکی کرمانجی سەروودا (١٩٣٩-١٩٧٠ ز)، چاپی یەکەم، چاپخانەی وەزارەتی دروەردە، هەولێر، ٢٠٠٥.

٣. پ.ە.د.عەلی تەتەر نێرویی، ئەمیر خانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێ دا، چاپا ئێکێ، چاپخانا Kalkan، وەشانخانا سپیرێز/ دهوک، تورکیا، ٢٠١٨.




Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٤.د.کەیفی ئەحمەد، بنیاتی هونەریی داستان لە ئەدەبی فۆلکلۆری کوردیدا (بە نموونەی زاری کرمانجی نێوەڕاست)، چاپی یەکەم، ئنستیتیوی کەلەپووری کورد- سلێمانی، سلێمانی، ٢٠١٩.

٥.محمد رضا نظری دارکولی، راهنمای داستان نویسی، چاپ اول، انتشارات اریابان، تهران، ١٣٩١.

## پەراویز:

---

١. د. کەیفی ئەحمەد، بنیاتی هونەریی داستان لە ئەدەبی فۆلکلۆری کوردیدا (بە نموونەی زاری کرمانجی نێوەڕاست)، چاپی یەکەم، ئنستیتیوی کەلەپووری کورد- سلێمانی، سلێمانی، ٢٠١٩، ل (١٤٨).

٢. د. عبداله یاسین ئامێدی، هونراوەی بەرگری لە بەرهەمی چەند شاعرێکی کرمانجی سەروودا (١٩٣٩-١٩٧٠ ز)، چاپی یەکەم، چاپخانەی وەزارەتی مروەردە، هەولێر، ٢٠٠٥، ل (٢٤).

٣. د. عبداله یاسین ئامێدی، هونراوەی بەرگری لە بەرهەمی چەند شاعرێکی کرمانجی سەروودا (١٩٣٩-١٩٧٠ ز)، ....، ل (٢٤).

٤. راهنمای داستان نویسی، محمد رضا نظری دارکولی، چاپ اول، انتشارات اریابان، تهران، 1391، ص (11).

٥. پ. ە. د. عەلی تەتەر نێرۆەیی، ئەمیر خانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێ دا، چاپا ئێکێ، چاپخانا Kalkan، وەشانخانا سپیرێز/ دهوک، تورکیا، 2018، ل (107).

٦. سەعید دێرەشی، دیوانا فەقیێ تەیران، چاپا ئێکێ، چاپخانا وەزارەتا پەروەردێ، دەزگەهێ سپیرێز- دهوک، هەولێر، ٢٠٠٥، ل (١٨٦ و ١٨٧)٦

٧. هەمان ژێدەرێ، ل (١٩٨ و ١٩٩). ٧

٨. سەعید دێرەشی، دیوانا فەقیێ تەیران،... ل (١٨٥ و ١٨٦).

٩. پ.ە.د.عەلی تەتەر نێرۆەیی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێدا، ... ل (٩٣).

١٠. سەعید دێرەشی، دیوانا فەقیێ تەیران،... ل (١٨٦).

١١. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، چاپا ئێکێ، ژ وەشانێن سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی، ٢٠١٩ ، ل(٨٤).

١٢. هەمان ژێدەر، ل (١٥٥).

١٣. هەمان ژێدەر ، ل (١٣٢ و ١٣٣ ).

١٤. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل (١٦٧ و ١٦٨ )

١٥. هەمان ژێدەر، ل (١٧٢)

×. ئلياس خەليفێ قەرەداغلو (پ.د.د. عەلی تەتەر نێروەیی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێ دا، .... ل (١٠٣) . )

١٦. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل (١٧٢).

١٧. هەمانژێدەر ، ل(١٦٨).

١٨. هەمان ژێدەر، ل (١٧٣).

١٩. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل(١٠٠-١٠٣).

٢٠. ژێدەرێ بەرێ، ل (٩٠).

٢١. ژێدەرێ بەرێ، ل (٩٢).

. پ.د.د. عەلی تەتەر نێروەیی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێ دا، .... ل (١٥٦).22

٢٣. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی... ل (٩٥).

٢٤. هەمان ژێدەر، ل (٩٦).

٢٥. پ.د.د. عەلی تەتەر نێروەیی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێ دا، ....، ل (٩٥ و ٩٦).

٢٦. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین،... ل (١٣٢).

٢٧. هەمان ژێدەر، ل (١٦٩).

٢٨. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین،... ل (١٧١).

٢٩. پ.د.د. عەلی تەتەر نێروەیی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێ دا، ....، ل (١٠٣).

٣٠. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین، ل (١٤٠).

٣١. هەمان ژێدەر، ل (١٤٠ و ١٤١).

٣٢. پ.د.د. عەلی تەتەر نێروەیی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێ دا، ....، ل (١٠٢ و ١٠٣)

٣٣. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین،... ، ل (١٣٥).

٣٤. ژێدەرێ بەرێ، ل (١٣٨ و ١٣٩).

٣٥. پ.د.د.عەلی تەتەر نێروەیی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێدا، ... ل (١٥٩).

٣٦. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل (١٣٨و١٣٩).

٣٧. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل(١٥٥).

٣٨. هەمان ژێدەر، ل (١٠٧).

[39]. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکیل (١٤٣و ١٤٤).
[40]. پ.ە.د.عەلی تەتەر نێرویی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێدا، ... ل (١٦٠).
[41]. هەمان ژێدەر، ل (١٠٦).
[42]. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل(١٠٤)
[43]. هەمان ژێدەر، ل(١١٢)
[44]. پ.ە.د.عەلی تەتەر نێرویی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێدا، ... ل (١٥٩).
[45]. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی ، ل (١٦٠).
[46]. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی ، ل (١٤٧).
[47]. هەمان ژێدەر، ل (١٥٦).
[48]. پ.ە.د.عەلی تەتەر نێرویی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێدا، ... ل (١٠٥).
[49]. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل (١٦٣ و ١٦٤ )
[50]. هەمان ژێدەر، ل (١٦٤).
[51]. ژێدەرێ بەرێ، ل(١٦٤).
[52]. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل(١٦٦).
[53]. پ.ە.د.عەلی تەتەر نێرویی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێدا، ... ل (١٠٧).
[54]. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی، ل (٨١).
[55]. هەمان ژێدەر، ل (٩١ و ٩٢ ).
[56]. یاشار کاپلان، داستانا کەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەکۆلینەکا ئەدەبی و دیرۆکی،ل (٩١ و ٩٢).
[57]. هەمان ژێدەر، ل(٩٥).
[58]. پ.ە.د.عەلی تەتەر نێرویی، ئەمیرخانێ لەپ زێرین و کەلا دمدم دناڤبەرا مێژوو و ئەفسانێدا، ... ل (١٥٦).


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

[٥٩]. ياشار كاپلان، داستانا كەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەكۆلینەكا ئەدەبی و دیرۆكی ، ل (١٦٥).

[٦٠]. ياشار كاپلان، داستانا كەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەكۆلینەكا ئەدەبی و دیرۆكی ، ل (١٦٥ و ١٦٦ ).

[٦١]. ياشار كاپلان، داستانا كەلا دمدم و خانێ لەپزێرین ڤەكۆلینەكا ئەدەبی و دیرۆكی، ل (٨٤).

[٦٢]. همان ژێدەر، ل (١٠٠).

[٦٣]. هەمان ژێدەر، ل (١٢٠).

[٦٤]. هەمان ژێدەر، ل (١٦٩ و ١٧٠).


**الملخص:**

يتناول الادب في مفهومه الشامل ومراحله المتنوعة الكثير من المواضيع وتقف على الكثير من المحاور ويتطرق الى عموم المجالات والاحداث الاجتماعية. يعمل الناقد من جهته بالاعتماد على النظريات النقدية المتنوعة ومن وجهات النظر المختلفة على تلك المحاور لكي يستطيع بيان الجانب الحقيقي للاحداث واراء ووجهات نظر الكتاب. احدى المواضيع التي اصبحت محتوى لجميع الانواع الادبية واهتم بالاحداث التاريخية، ادب المقاومة. واحدى الملاحم القومية الكوردية، هي ملحمة (قلعة دم دم) التي دخلت من خلال الاحداث في اراء الكورد واصبحت اداة للعديد من الملاحم، القصص، الروايات، الشعر والاغاني.

تم اعداد البحث تحت عنوان (**انعكاس مقاومة قلعة دم دم في الفلكلور الكوردي ومقارنته مع المصادر التاريخية**). بلا شك هذا الموضوع ياخذ دوره اكثر في الملحمة والراوي بالاوصاف الواقعية المتداخلة مع الخيال يروي تلك الاحداث.

لهذا يبحث هذه الورقة بالتركيز على محور (المقاومة) في الاحداث التاريخية ويبين الملحمة من خلال اسئلة؛ هل تناولت الملحمة المسائل القومية؟ هل محور المقاومة مسيطر؟ هل تداخلت الملحمة مع الاحداث الخيالية؟ كيف انعكست هذه الملحمة في الفلكلور الكوردي والمصادر التاريخية؟ و...الخ.



**الكلمات المفتاحية**: *ملحمة، قلعة دم دم، مقاومة، خاني لب زيرين، عبدال خان الموكري.*

**Abstract:**

Literature in its broad concept, at different stages, includes many subjects and focuses on many topics and takes ownership of all fields and social events, and the critic works on these topics from different perspectives based on various critical theories contents, so that it can reveal the true side of events, feelings, thoughts and views of the writers. One of the subjects that has become the content of literary genres and has taken over historical events is the literature of resistance. In another opinion, one of the Kurdish national stories is the story of Kala Damdam, which has entered the minds of Kurds throughout history and has become the subject of many stories, stories, novels, verses, poems and songs.

The article is entitled (Reflection of the Resistance of Kala Damdam in Kurdish Folklore and Comparison with Historical Sources). Of course, this kind of subject plays its role in the fiction genre and the translator tells these events with realistic descriptions mixed with imagination.

Therefore, this research will investigate this historical event by focusing on the theme of resistance. Are national issues mentioned in the story? Is the theme of resistance dominant? Was this story mixed with fictional events? How is this story reflected in Kurdish folklore and historical sources? etc., will further explain this story.

**Central words:** *Dastan, Kala Damdam, Barkhudan, Khane Lepzerin, Abdul Khane Mukri.*

# میر و میرگەهـ د روانگەها خانیدا

م. ژیهات قادر حەسەن

فاکولتی زانستێن مروڤایەتی، پشکا زمانی کوردی، زانکۆیا زاخۆ/ هەرێما کوردستانا عیراق

**پۆختە:**

هەر د سەردەمێن کەڤندا وەسف و پەسنا میران ئێك ژ مەبەستێن سەرەکیێن هۆزانێ بوویە، لێ ل گەل بۆرینا دەمێ، ئەڤێ مەبەستێ گوهۆڕینێن مەزن ب خۆڤە دیتن. د ئەدەبیاتا کوردیدا ب تایبەتی د هۆزانێدا ئەڤ گوهۆڕین و وەراره دهێتەدیتن، ئانکو دشێین بێژین ئێدی ب تنێ ژ وەسف و پەسنا میران بەرەڤرەخنەگرتن ل میر و کاربدەستێن میران چوو. د پڕانییا قوناغێن ئەدەبیاتا کوردیدا ئەڤ چەندە ژ بابەتێن هەر گرنگ بوویە ب تایبەتی د قوناغا هۆزانا کلاسیکیدا.

د ناڤ هۆزانڤانێن کلاسیکێن کورداندا گەلەك هۆزانڤانان گرنگی دایە وەسفا میران و ب شێوازێن جۆراوجۆر باسکرینە. ئەڤ گوهۆڕینە گەلەك ب شێوەیەکی ڕۆهن و ئاشکرا ل جەم خانی دهێتە دیتن، بزاڤ دێ هێتەکرن بزانین تا چ ڕاددە ئەحمەدێ ستایشا میران کریە و تا چ ڕاددەڕەخنە ل ئەوان گرتییە. ئایا خانی شیایە ل گۆرەی ئاستێ پێدڤی باسێرەوشت و تیتالێن باش و خراب ل جەم میران بکەت؟ تا چ ڕاددە گرنگی ب ئەڤی بابەتی دایە؟ هەر ژبەر ئەڤێ چەندێ مە بزاڤکرڤەکۆلینەکێ ل ژێر ناڤونیشانێ (میر و میرگەهـ د ڕوانگەها خانیدا) ئەنجامبدەین بۆ بەرجەستەکرنا ئەوان گوهۆڕین و داهێنانێن ل جەم خانی دهێنەدیتن. د ئەڤێڤەکۆلینێدا میتۆدا (وەسفی شرۆڤەکاری) هاتییەپەیڕەوکرن.

**پەیڤێن سەرەکی:** *میر، میرگەهـ، خانی، میرگەها بۆتان، مەم، زین*

١. پێشەکی:

ب درێژاهیا مێژوویا مرۆڤایەتییێ میری جهەکی تایبەت هەبوویە د ناڤ جڤاکیدا و بەردەوام بزاڤ هاتییەکرن ژ لایێ پڕانییا کەسێن جڤاکی ببنە کەسێن نیزیکی میری، هەر میرەکی هەبیت ژی ب درێژییا دیرۆکێ بزاڤکرییە پتریارێزە و هژمارا کەسانە ل دۆر خۆ خڕڤەبکەن ژ بلی ئەوان بزاڤێن دهاتنەکرن بۆ دویرئێخستنا ئەوان کەسێن کو دژی میری بووینەیانژی دژی هندەك هزرێن ئەوی بووینە. بەردەوام میران بزاڤدکر سنوورێن ل بن دەسەلاتا خۆ بەرفرەهبکەن و ئەو دەڤەرێن د کەڤنە د بن دسەلاتا ئەویداژی د خزمەتا ئەوی و دەسەلاتێدا بن.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ب درێژاهییا قوناغا هۆزانا کلاسیکییا کوردی، پڕانییا هۆزانڤانان هۆزان ب خوەشمرۆڤی و جوامێرییا میری‌ڤەهاندینە و بەردەوام بزاڤکرییە ب جوانترین شێواز جوانترین وەسفێ بدەنە میران ب تایبەت ئەو میرێن کو د سەردەمێ ئەویدا بووینە، کەواتە دشێین بێژین وەسف و ب تایبەتی وەسفا میری بوویە ئێک ژ بابەتێن گرنگێن هۆزانا کلاسیکییا کوردی، ئێک ژ هۆزانڤانێن گرنگ ئەوێن گرنگی ب ڤەهاندەنا هۆزانێ ب میران داییی (ئەحمەدێ خانی) یە، لێ تشتێ خانی ژ هۆزانڤانێن دیتر جوادکەت ئەو کو خانی بزاڤنەکرییە ب تنێ وەسفا میری ب باشی بکەت، بەلکو ل گەلەك جهان د هۆزانێن خۆدا چ ب شێوەیەکراستەوخۆیان نەڕاستەوخۆ باس ل کێماسی و خرابیێن میرانژی کرییە ب تایبەت میرێن کوردان. ژبەر ئەوان گوهۆڕین و جوداهیێن د هۆزانا خانیدا هاتینەدیتن، مە ئەڤ بابەتە ژبۆ ئەڤێڤەکۆلینێهەلبژارتییە.

١-١- ناڤونیشانێڤەکۆلینێ:(میر و میرگەه د ڕوانگەها خانیدا)، ئەڤڤەکۆلینە هەولدانەکە بۆ بەرجەستەکرنا شێواز و چاوانییا باسکرنا خانی ل میران.

١-٢-ڕێبازاڤەکۆلینێ: د ئەڤێ ڤەکۆلینێدا پشتبەستن ل سەر ڕێبازا (وەسفی ـ شرۆڤەکاری) هاتییەکرن.

١-٣-ئەڤ ڤەکۆلینە ل سەر ئەڤێ گریمانەیێ هاتییە ئاڤاکرن کو (خانی) شیایە گوهۆڕینەکا بەرچاڤ بێخیتە شێوازێ وەسفکرن و ڤەگێڕانا لڤین و سەرەدەرییێن میرێن میرگەهێن کوردان.

١-٤-پرسیارێن ڤەکۆلینێ:

أ- ئایا ئەحمەدێ خانی پەسنا میران کرییە؟

ب- ئایا ئەمەدێ خانی ڕەخنە ل میران گرتییە؟

ت- ئایا ئەحمەدێ خانی باسێ ڕەوشت و دابونەریتێن میر و میرگەهان کرییە؟

١-٥-ئارمانجا ڤەکۆلینێ: دەستنیشانکرنا ئەوان شێوازێن خانی باسێ میر و میرگەهان کری.

پەیکەرێڤەکۆلینێ: ئەڤڤەکۆلینە ل سەر دوو تەوەرێن سەرەکی هاتییەدابەشکرن، تەوەرێ ئێکێ تایبەتە ب میرگەه و ئەگەرێن دامەزراندنا میرگەهان ل گەل ئەگەرێن دامەزراندن و ژناڤچوونا ئەوان و ل دویڤدا باسێ میرگەهێ بۆتان کو هاتییەکرن ژبەرکو خانی پتر باسێ میرێن ئەڤێ میرگەهێ کرییە ل گەل ئەگەرێن دامەزراندن و ژناڤچوونا ئەوێ. د تەوەرێ دوویێدا گرنگی ب میر و میرگەه د ڕوانگەها خانیدا هاتییەدان و گرنگترین شێواز و سیماییێن میران ل جەم خانی ل گۆرەی هۆزانێن ئەوی هاتینەباسکرن.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٢. میرگەه و دامەزراندنا میرگەهان:

هەر ئێکی چاڤخشاندنەک د هەلومەرج و بارودۆخێن دیرۆکییێن مللەتێ کوردانـدا کربیت، باش دزانیت کو ئەڤ مللەت دکەڤندە و نهاژی، خودان ئازادییەکا ناڤخۆیی بوویە، یـێ ڕژدبـوویە ل سـەر سـەربەخۆبوونا خـۆ دهەمـوو بوارەکیـدا، پاراسـتن ل سـەر ئەوێ سـەربەخۆبوونێ کرییە هەتـا دووماهییێن سـەدێ سـێزدێ مشـەختی/ نۆزدێ زایینـی ل گەل هندەک جوداهیین کێم د ئەوێ سەربەخۆبوونێدا، هندەک جاران د سەدەیێن ناڤیندا چانس هاریکاربوویە و شیایە هەتا ڕادەیەکی باش سەربەخۆبوونا دەرەکی دەستبێخیت هەتاکو ل هنـدەک دەڤەرێـن وەلاتـێ خـۆ یـێ نەمربیت، بەلێ ئەو بـارودۆخ گەلەک ڤەناکێشیت ژبەر هندەک فاکتەرێن ناڤخۆیی و دەرەکی و ئەگەرێن جڤاکی و سیاسی، زێدەباری بارودۆخێن گشتی ئەوێن گەلەک جاران دەرفەتا سەربەخۆبوونا دەرەکی ژێ وەرگرتی، ناچارکری بتنێ خودان سەربەخۆییەکا ناڤخۆیی بیت وخۆ تەرخانبکەت بۆ بەرەڤانیکرنێ ژ ئەوی سروشتی د هەموو سەردەمێن کەڤن و دوور ودرێژدا. (زکي، ١٩٤٥، ٣٦٢)

بـەری دروسـتبوونا میرگـەهێن کـوردی ل دەڤـەرێن کـوردان هنـدەك دەسـەلاتێن سیاسیێن کوردی ل نیڤا ئێکێ ژ چەرخێ چوارێ کۆچی/ چەرخێ دەهێ زایینی دیاربوون، گەلەك ڤەکۆلەر و گەڕۆکان د ڤەکۆلینێن خۆدا ئەوێن دەربارەی مێژوویا سیاسییا ئەڤان دەڤەران ب تایبەتئەو دەڤەرێن کورد لێ ئاکنجی دبوون وەکو هەرێمێن چیایی، ئەرمینی، ئاران، جزیرێ و خۆزستان.(حسن، ٢٠١١، ١٩) کەواتە بەری بزاڤێن دروستکرنا میرگەهان، کوردان ل دەڤەرێ دەسەلات هەبوویە ب تایبەت ئەوان دەڤەرێن پتریا ئاکنجییێن ئەوان کورد بووینە، ژبەر هندێ ئەڤ چەندەژی بوویەڕێخۆشکەرەك کورد هزر د دامەزراندنا میرگەهاندا بکەن. بەری ئەڤی ماوەی ژی ئانکو د سەردەمێن بۆریدا هندەك دەسەلات دیاربووینە و ب چەنـدێن لڤـین و بـزاڤێن لەشـکەری و سیاسـی ل دەڤەرێڕابووینە،ڕەنگـە ئـەڤ بزاڤەژیڤەدگەڕیان بۆ هندێ کو کوردژی وەکو لایەنێ نەڕازیبوویە ل دەڤەرێ و وەکو هۆشدارییەکێ بەرامبەری دەسەلاتدارێن دەڤەرێ بکارئینایە، ئەڤ بزاڤە دزڤرن بۆ دەستپێکا چەرخێ دوویێ کۆچی/ هەشتێ زایینی.(توفیق، ١٩٩٤، ١٢٠ – ١٤٥) ل دویڤ ئەڤێ چەندێ ئەم دشێین بێژین ئەڤە دەستپێکا دەرکەڤتنا بزاڤێن کوردی بوویە ل دەڤەرێن لێ ئاکنجی دبوون بۆ دروستکرنا ڕێڤەبەرییێن ناڤخۆیی ل دەڤەرێ، کەواتە ئەڤ چەندە ل ماوەیێن د دویڤداژی دیار و بەردەوامبوون ل سەر شێوازێ دیاربوونا هندەك هێزێن سیاسی هەتاکو گەهشتییە ئەویڕادەی گەلەك میرگەهێن کوردی بهێنە دامەزراندن ژلایێ سەرۆکێن هۆزێن مەزنێن کوردانڤە و دەسەلاتا ناڤخۆییا دەڤەرێ د کەڤیتە د دەستێن میرێن میرگەهاندا.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دامەزراندنا میرگەهێن کوردی د چەند قوناغێن جودا دا بوویە و د هەر قوناغەکێدا ژی چەند میرگەهەکێن جیاواز و ل دەڤەرێن جیاواز پەیدابوویینە، هندەك ژ ئەوان میرگەهان بۆ ماوەیەکی کێم د مان و دهاتنە ژناڤبرن، هندەك ژ ئەوانژی بۆ ماوەیەکی درێژ د مان، هندەك میرگەهێن دی هەبوویینە جارەکێ د هاتنە ژناڤبرن و پشتی ماوەیەکی هەر ل سەر دەستێ هەمان بنەمالا دەسەلاتدار جارەکا دی دووبارە دهاتەڕاگەهاندن، ئانکو میرگەهێن کوردی هەبوویینە د قوناغێن جودا دا دەربازبوویینە. کەواتە ئەم دشێین بێژین ((بنەڕەتی زۆربەی میرنشینە کوردییەکان لە هۆزیکەوە سەرچاوەی گرتووە، بەلام بوونە بەشێك لە هۆز و بنەماڵەی فەرمانڕەوا لە ناو ئەندامانی ئەو هۆزە و فیدراسیۆنە هۆزایەتیەدا، وەکو دەمارگیریی پەیوەندیی نێوانیان پاراستووە))(لەشکری، ١٩٩٩، ٢٣). هەروەسا گرنگە ئەم ئەوێ چەندێ ژی بزانین (( لە کاتی گەڕاندنەوەی دەسەلاتی میرنشینەکان بۆ دەسەلاتی هۆز، دەبێت ئەوە لە بەرچاو بگیرێت، کە هۆز لە سەدەکانی ناوەڕاست و دواتر لە کوردستان بە شێوە تەقلیدیەکەی نەبووە، واتە بگەڕێتەوە بۆ دەسەلاتییەك بنەماڵە و نەوەی یەك خێزان، بەڵکو لە یەك شوێن نیشتەجێ بوون و پەیڕەویان لە یەك سەرۆك کردووە))(تاقانە، ٢٠٠٨، ١١٨) ئانکو ب رێکا سەرکردەیێن بهێزیان بنەمالەکا بهێز گەلەك هۆز دهاتنەخرڤەکرن بەلێ وەك ئێك هۆز ل ژێر ئێك ناڤی سەرەدەری ل گەل دهاتەکرن.

ئێکەمین دەرکەڤتنا دەسەلاتێن کوردیێن رێکخستی ب شێوازێ میرگەه، ل سەردەمێ عەباسییان بوویە، دهێتە گۆتن کو د ئەڤی سەردەمیدا سیە و پێنج میرگەه هەبوویینە (زکی، ١٩٤٥، ٣٦٢) هندەك ژ ئەڤان میرگەهان کێم باس ل ئەوان هاتییەکرن وەکی: دەسەلاتا عەیشانی ٣٠٠ – ٣٥٠ك/ ٩١٢ – ٩٦١ (رۆژبەیانی، ١٩٩٦، ٤٣ – ٤٤) و دەسەلاتا دەیسەم کورێ ئیبراهیمێ کوردی ٣١٥ – ٣٤٥ك/ ٩٢٦ – ٩٥٦ ز (توحدی، ١٩٩٢، ١٤) هەروەسا چەندین میرگەهێن دی ل سەردەمێ عەباسییان هەبوویینە و دەسەلات ل دەڤەرێن جیاواز دکر، ژ ئەوانژی: میرگەها رەوادی (٣٣٧ – ٤٦٣ ك/ ٩٤٨ – ١٠٧١ز ، میرگەها شەدادی (٣٤٠ – ٥٩٥ ك/ ٩٥١- ١١٩٨ ز، میرگەها حەسنەوی (٣٤٨ – ٤٠٦ك/ ٩٥٩ – ١٠١٥ ز ، میرگەها مەروانی (٣٧٣ – ٤٨٩ ك/ ٩٨٣ – ١٠٩٦ ز، میرگەها عەنازی ٣٨١ – ٥١١ ك/ ٩٩١ – ١١١٧ز و میرگەها هەدبانی ٤٣٧ – ٥٣٤ك/ ١٠٤٦ – ١١٣٩ز (حسن، ٢٠١١، ٣٦ - ٥٦) هەژییە بێژین کو هەر ئێك ژ ئەڤان میرگەهان دەسەلات ل دەڤەرەکا جیاوازیاکو کورد لێ ئاکنجی دبوون دکر.

هەر سەردەمەکی میرگەهێن کوردی هاتینە دامەزراندن، ژبەر هندەك ئەگەران بوویە، دامەزراندنا میرگەهێن کوردی د سەردەمێ عەباسییاندا ژی ئەگەرێن خۆ هەبوویینە، بێگومان هەر میرنشینەکێ ئەگەرێن تایبەت هەبوویینە لێ ب شێوەیەکی گشتی ئەم دشێین د ئەڤان خالێن ل خوارێدا پوختبکەین:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

١. لاوازی و ژناڤچوونا دەولەتا عەباسی

٢. لاوازییا بارودۆخێ سیاسی، کارگێری و ئابووری

٣. ئێکگرتنا کوردان پێخەمەت سەرکردایەتییا هۆزێن کوردی

٤. سروشت و جهێ جوگرافییێ کوردان (مرعی، ٢٠٠٥، ١٣٣، ٢٢٧ و ٣٣٧)

هەلبەت ئەگەرێن ژناڤچوونێ ژی وەکی ئەگەرێن دامەزراندنێ،ڕەنگە هەر میرگەهەکێ ئەگەرێن خۆیێن تایبەت هەبن، لێ ب شێوەیەکی گشتی ئەم دشێین بێژین ئەڤێن ل خوارێ گرنگترین خالێن ژناڤچوونا میرگەهێن ئەڤی سەردەمی بوو:

١. ململانێیا ناڤخۆیی ل سەر دەسەلاتێ.

٢. پشتبەستن ب هێزێن ژ دەرڤە بۆ ئێکلاکرنا ئاریشەیێن ناڤخۆیی.

٣. نەبوونا گیانێ ئێکگرتنێ د ناڤبەرا میرگەهاندا.

٤. عەقلییەتا هۆزایەتی.

٥. کریار و ڕەفتارێن هندەك ژ میرێن کوردان.

٦. سیستەمێ پشتاوپشتییێ دەسەلاتێ

٧. هاتنا سەرلجۆڤییان و پەیڕەوکرنا سیاسەتا مەرکەزی.

٨. شەڕ و ململانێیا میرگەهێن کوردی ل گەل هێزێن هەڤسنوور. (عەبدوللا، ٢٠١٢، ١١٠ — ١٤٩)

قوناغەکا دیتر ژ دەرکەڤتن و دامەزراندنا میرگەهێن کوردی ل سەردەمێ عوسمانییان بوو، د ئەڤی ماوەیداژی هژمارەکا زۆر ژ میرگەهان هاتنەدامەزراندن، ژ گرنگرین ئەوان میرگەهان: میرگەها بابان، میرگەها ئەردەلان، میرگەها فەزلەوی، میرگەها سۆران، میرگەها بەهدینان، میرگەها داسنی، میرگەها هەکاری، میرگەها بۆتان، میرگەها بەدلیس، میرگەها کلس، میرگەها موکری، میرگەها لۆرییا بچووك، میرگەها پازۆکی و... (بەدلیسی، ٢٠٠٦، ٤٤- ٤٤٣). ئەڤان میرگەهانژی وەکی میرگەهێن سەردەمێ عەباسییان ئەگەرێن دامەزراندنێ هەبووینە، ژ گرنگترین ئەڤان ئەگەرانژی ئەڤێن ل خوارێنە:

١. سروشتێ جوگرافییێ کوردستان

٢. خەزا سەربەخۆبوونا ئابووری و دارایی

٣. ژ هەڤڤەقەتیانا کەلتوورێ فەرمانڕەوایەتی ل هەرێمێن کوردان ل چەرخێن بەری ئەڤی سەردەمی

٤. ڕژێما هۆزایەتی و ڕۆلێ ئەوان بەرامبەری شالاو و هێرشێن دەرەکی

٥. قەلا و شورەیێن بەرەڤانییێ

٦. مفا وەرگرتن ژ سەردەمێن لاوازییا دوژمنی

٧. دبلۆماسییەتا هندەك ژ میرێن کوردان (بابانزادە، ٢٠١٢، ٤٤ — ٥٩)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٣ . میرگەها بۆتان:

میرگەها بۆتـان ئێـك ژ میرگـەهێن مـەزن، گـرنـگ و ب نـاڤودەنگێن كوردان بـوو. میرگەها بۆتان تایبەتمەندییەكا مێژوویی هەیە ژ ناڤ هەموو میرگەهێن كوردی ژبەر دوو خالێن گرنگ:

١. كەڤناتییا مێژوویی.

٢. تەمەنـدرێژی هـەتاكو ب شـێوەیەكی دابـڕای و ژ هەڤقەڤـقـەتیایی بیـت و ب سـەر یەكـە و قـــەوارەیێن جیاوازڤـــە بیـــت و هـــەتا نیڤـــا ئێكـــێ ژ چـــەرخێ بیســـتێ بەردەوامبوو.(الجافی،https://sotkurdistan.net/)

میرگەها بۆتان سنوورەكی جوگرافییێ بەرفرەه بخۆڤە دگرت، هەر ژ مووسل هـەتا دگەهیتـە دەریاچـەیا وانـێ و ژ دەڤـەرا هـەكاری هـەتا دیاربـەكر، گەلـەك دەڤـەرێن چیـایی و دەڤەرێن سروشتەكی بـاڵكێش هـەی بخۆڤە دگرتن كو ب زۆزان دهێتە ب نـاڤكرن. میرێن میرگەها بۆتانڤەدگەڕن بۆ هۆزا بوهتی . بوختی. میرگـەها بۆتـان ژ میرگـەهێن كوردیێن گەلـەك كەڤنـە و مێژوویـەكا دوور و درێـژ هەیـە، ب درێژییـا دیرۆكـا خـۆ تووشـی گەلـەك ئاستەنگ و بەربەستێن مەزن بوویە وەكـی: هێرشێن سـەلجۆقییان، میرێن مووسـل (سـەردەمێ عیمادەدین زەنگی)، مەغوول، هۆزێن تورك: قەرەقۆینلۆ و ئاققۆینلۆ، سەفەوییان و هەتا ژناڤبرنا ئەوێ ل سەردەستێ عوسمانییان ل ساڵا ١٨٤٧ێ. هژمارەكا گەلـەك زۆر ژ میـران فـەرمانڕەوایی ل دەڤـەرا مێژوویـا بۆتـان كرییـە ب درێژییـا سـەدەیێن بـۆری، د مـاوەیێ دەسـەڵاتدارییا ئەوانـدا سەردەم هەبوونە گەشەپێدان و پێشـكەڤتن بخۆڤە دیتییە و هەبوونە پاشڤەچوون و لاوازی بخۆڤە دیتییە. (الجافی،https://sotkurdistan.net/ ) كەواتە دشێین مێژوویا میرگـەها بۆتـان ل سەر سێ قوناغێن جودا دابەشبكەین:

١. مێژوویا سەردەمێ عەبباسییان.

٢. مێژوویا سەردەمێ دەسەلاتدارییا مەغول، تورك و توركمانان.

٣. مێژوویا سەردەمێ عوسمانییان. (توفیق، ٢٠٠٧، ٢٨)

دیرۆكـــا دەســـتپێك و دامەزرانـــدنا ئـــەڤێ میرگـــەهێ نـــەیارۆهن و ئاشـــكەرایە، دیـرۆكنڤیس دەربـارەی سـالا دامەزرانـدنا ئـەڤێ میرگـەهێ نەگەهشـتینە چ ڕێككـەڤتنان. (هـروری، ٢٠٠٦، ١٩)، هنـدەك دیـرۆكنڤیس دبێـژن: پشـتی حكوومـەتا زەنگـی دەسـت ب سـەر دەولەتا ئەیووبیدا گرتی، ل سالا ٥٥٦ك/ ١١٦١ز ئەڤ میرگەهە هاتییەدامەزراندن، پشـتی دەولـەتا زەنگی لاوازبـوویی ژبـەر مرنا عیمـادەدینێ زەنگـی و پەیـدابوونا هـەڤڕكییێ د ناڤبـەرا هـەردوو كـورێن وی نـورەددین و سـەیفەددینیدا. (زكـی، ١٩٨٥، ٣٩) هنـدەكێن دیتـر سـالا ٧٠٠ك/١٣٠٠ز وەكو سالا دامەزراندنا میرگەها بۆتان ددەنە دیاركرن. (ساكا، ١٩٨٣، ٤٠) بەلێ ل دۆر ئێكەم میـرێ ئـەڤێ میرگـەهێ، دیرۆكنـاس گەهشـتینە ئێـك بۆچـوونێ ئـەوژی (سـلێمان كـورێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

خالدی)بوویە، ئەڤی میری سێ کور ل پشت خۆ هێلان، ئەوژی: میر عەبدولعەزیز، میر ئەبدال و میر بەدر.

سێ بنەمالێن حوکومدارییێ ل بۆتان پەیدادبن، بەلێ بنەمالا "ئازیزان" ژ هەموویان بهێزتر و گرنگتربوو و پشتی ماوەیەکی مالباتێن دیژی دکەڤنە دبن دەسەڵاتا مالباتا ئازیزاندا کو میر عەبدولعەزیز دەسەلات لێدکر.(هروری، ٢٠٠٦، ١٩) پێزانین دەربارەی پڕانییا میرێن دەسەلاتداری ل میرگەها بۆتان کرین گەلەك دکێمن، میر شەرەفخانێ بەدلیسی د پەرتووکا خوە (شەرەفنامە)دا ناڤێ بیست و ئێك میران ئینایە و ناڤێ دوازدە میرێن دیتر د هندەك ژێدەرێن دیتردا دهێنە دیتن، ل گەل ئەڤێ چەندێ ژی پێزانین دەربارەی پڕانییا ئەوان دکێمن هەتا دگەهیتە سەردەمێ دەسەلاتدارییا (میر بەدرخان) زێدەباری هندێ ناڤێ گەلەك میران هەتا نۆکە دیارنینە و سال و ماوەیێ حوکومڕانییا ئەوان میرانژی دیارنینە. سیستەمێ دەسەلاتداری ل ئەڤێ میرگەهێ ب شێوازێ پشتاوپشت بوو ئانکو ژ بابی بۆ کوری بوو.(هروری، ٢٠٠٦، ٢٥)

دەمێ میر بەدرخان ل سالا ١٨٢١د ژییێ هەژدە سالیێدا دەسەلاتا میرگەهێ وەرگرتی، بارودۆخێ میرگەهێ گەلەکێ ئالۆزبوو، ژبەرکو میرێن بەری ئەوی میرگەه پشتگوە هاڤێتبوو، لەوما گەلەك هۆزێن سنوورێ میرگەهێ ژ بن دەسەلاتا میرگەهێ دەرکەڤتبوون، زێدەباری ململانێیا د ناڤبەرا بنەمالا دەسەلاتداردا کو ئۆسمانییان بخۆژی پشتەڤانییا ئەڤێ ململانێ دکر و ژبەرکو دووبەرەکییا ئەوان د بەرژەوەندییا ئۆسمانییاندا بوو. (ڕەش، ١٩٩٦، ١٠٩) میرگەها بۆتان گەلەك گوهۆڕین ل سەر دەستێ میر بەدرخان بخۆڤەدیتن، ب تایبەت د ناڤبەرا سالێن (١٨٤٢ – ١٨٤٦)دا میرگەهەکا گەلەك بهێز و شیان بوو، ب تایبەت پشتی میر بەدرخان حکوومەتەکا کوردییا سەربخۆڕاگەهاندی و سنوورێن ئەوێ گەهاندینە دەردۆرێن مووسل، ئامەد، سنە و وێرانشەهر. د ئەڤێ قوناغێدا میر بەدرخان مەرەمێن سیاسی و ئابوورییێن میرگەهێڕێکخستن و هەتا ئەوی ڕاددەی سەربخۆبوونا خۆ ژ دەولەتا ئۆسمانیڕاگەهاندی و ئەڤ چەندەژی بوو جهێ مەترسییێ بۆ دەولەتا ئۆسمانی و هەر ژ دەستپێکێ بزاڤکر میر بەدرخان ژ ئەڤێ سەربخۆبوونێ دویربکەن ب بهانەیێن جودا جودا هەتا ل سالا ١٨٤٧ێ هاتییە ژناڤبرن. (هروری، ٢٠٠٦، ١٢٥ – ١٢٦)

هەلبەت گەلەك ئەگەر هەنە بۆ ژناڤچوونا هەر میرگەهەکێ، دشێین گرنگترین ئەگەرێن ژناڤچوونا میرگەها بۆتانژی د چەند خالەکاندا بدەینە دیارکرن، ئەوژی ئەڤێن ل خوارێنە:

١. یاخیبوونا ئاشوورییێن سنوورێ میرگەها بۆتان ئەگەرەکی سەرەکیبوو بۆ هەلوەشاندنا میرگەها بۆتان.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٢. هێرشا ئۆسمانییان، پشتی ئۆسمانییان گەلەك بزاڤکرین ب رێکێن ئاشتیانە میر بەدرخان ژ راگەهاندنا سەربخۆبوونێ دویربکەن و میرراژینەبوویی، ناچاربوون هێرشکرە سەر میرگەهێ و میرگەه هاتە ژناڤبرن.
٣. ئێکنەگرتنا میر و سەرۆکهۆزێن ئەوی دەمی ل گۆرەی ئاستێ پێدڤی، زێدەباری هاریکارییا گەلەك سەرۆکهۆزێن مەزن ل گەل دەولەتا ئۆسمانی.
٤. رۆلێ دەولەتێن بیانی وەکی بریتانیا بۆ هاریکارییا لەشکەرێ ئۆسمانییان.(هروری، ٢٠٠٦، ١٢٦ – ١٤٨)

٤- میر و میرگەه د روانگەها خانیدا:

**١-٤ ستایشکرنا میران:**

د ئەدەبیاتا کەڤنا فارسیدا گەلەك مەسنەوی هەنە و گەلەك هۆزانڤانێنفارسرابووینە ب ڤەهاندنا داستان و سەرهاتییان ب شێوازێ هۆزان، پتریا جاران ئەوان قالبێ مەسنەوی بکارئینایە، دیارە خانی ژی هەر ل دویڤ شۆپ و شێوازێ ئەوان چوویە. د ئەدەبیاتافارسیدا ئەوان نەریتەك هەبوو و ل دەستپێکا هەر داستانەکێ دیباجە هەبوویە. د دیباجێدا ل دەستپێکێ وەسف، ستایش و سوپاسییا خودایێ مەزن دکر، د دویڤدا دا ستایش و وەسفا پێغەمبەری کەن، پشتی ستایشا پێغەمبەری باس ل ئەگەرێڤەهاندنا بەرهەمێ خۆ دکر و ددا دیارکرن بۆچی ئەڤ بەرهەمە نڤیسییە، هەمو جارانژی د دیباجێدا پەسن و وەسفا میریان حاکمەکی ئەوی سەردەمێ خۆ دکر و هەموو جارانژی دگۆتن ئەڤی شاهی یان ئەڤی حاکمی هاریکارییا مە کرییە داخواز ژ مە کرییە داکو ئەم ئەڤی بەرهەمێ خۆ بنڤیسین.

خانی بۆ گەلەك تشتان ل دویڤ شۆپا ئەوان هۆزانڤانێن فارس چوویە، بەلێ د دیباجێدا پشتی ستایشا خودێ و پێغەمبەری خانی دهێت باس ل کوردان و ئاریشێن کوردان ل ئەوی سەردەمی و سەردەمێن بەری هنگی دکەت ئەڤەژی تشتەك گەلەك دەگمەنە د بەرهەمێن کلاسیکییا دەڤەرێدا، پشتی ئەڤێ چەندێژی دهێت باسێ ئەگەرێڤەهاندنا مەم و زینێ دکەت، بەلێ نە وەك هۆزانڤانێن فارس، خانی نابێژیت چ میریان چ حاکمان هاریکارییا من کرییەیان داخواز ژ من کرییە هەتا من مەم و زین نڤیسی، بەلکو ئەو دبێژیت ئارمانجا من ب تنێ خزمەتکرنا ئەدەبیاتا کوردییە، ژبەر هندێ ئەم نابینین کو خانی د دیباجێدا باس و وەسفا میر و دەسەلاتدارێن میرگەهێن سەردەمێ خۆ کربیت، ئەڤە بخۆژی دبیتە ئێك ژ تایبەتمەندییێن مەم و زینا ئەحمەدێ خانی، بەلێ گرنگە ئەم بزانین خانی ل کیڤە ستایشا میری دکەت، ئەوژی دەمێ دەست ب نڤیسینا چیرۆکا مەم و زینێ دکەت:

گۆ: پادشەهەك زەمانێ سابق
رابوو د حوکوومەتا خوە فائق
ئەجناسێ مللەل موطیع و مونقاد


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەسلا وی عەرەب ئەمیرێ ئەکراد

تەختێ وی جزیر و بەختێ مەسعوود

طالع قەوی و مەقامێ مەحموود

رۆم و عەرەب و عەجەم د فەرمان

مەشهوور ب ناڤێ میرێ بوهتان

ئاباتێ عظام و جەد و والد

مەنسووب و موسەلسەلێ د خالد

جەببارێ فەلەک ژ وی حەذەرکار

مەسلوول ژ سەللێ سەیفێ جەببار

زیبەندەیێ مولک و زەینێ دین بوو

ناڤێ وی ئەمیر (زەینەدین) بوو

(خانی، ٢٠٠٥، ٧١ و ٧٢)

ل ڤێرێ کو خانی ستایشا دەسەلاتدار و میرێ ئەوی سەردەمی دکەت ئەو سەردەمێ سەرهاتی و چیرۆکا مەم و زینێ تێدا پەیدابووی، وەسا ددەتە دیارکرن کو زین کچا ئەوی میرێ بۆتان بوویە، نە ب تنێ دبێژیت میر، بەلکو ناڤێ ئەوی ژی دئینیت وەکو پادشایەك و وەسا ددەتە دیارکرن کو دەسەلاتا ئەوی گەلەك زۆر بوویە و میرەکی گەلەك ب هێز و شیان بوویە هەتا ئەوی ڕاددەی مللەتێن دیێن وەکی: ڕۆم، عەرەب و عەجەم ژی ل ژێر فەرمانا ئەوی بووینە و ب کەسەکی گەلەك بلیمەت و خودان شیان ددەتە دیارکرن و ب ئەڤان هیز و شیانان شیایە دەولەت و دەسەلاتەکا گەلەك مەزن و بهێز دروستبکەت، خەلک ژی گەلەک ژێ د ترسییا، ناڤێ ئەوی میری ژی (زەینەدین) بوو.

پشتی دویڤچوونا ژێدەرێن مێژوویی‌و ل گۆرەی گۆتنا (تەحسین ئیبراهیم دۆسکی) د مێژوویا میرگەها بۆتاندا چ میر نەبووینە ب ناڤێ (میر زەینەدین) هەتا میر شەرەفخانێ بەدلیسی ژی د شەرەفنامێدا چ میرێن میرگەها بۆتان ب میر (زەینەدین) نەداینە دیارکرن، لێ وەکو دیار ئەڤ چەندە ب ڕێکا داستان و سەرهاتییان گەهشتییە ئەحمەدێ خانی. ب شێوەیەکی گشتی ئەم دشێین بێژین ئەڤە نیشانا هندێیەکو ئەحمەدێ خانی باوەری هەبوویەد وەختێ خۆدال دەمێ بۆری میرێن باش، دادپەروەر و بهێز هەبووینە، بەلێ ب هیچڕەنگەکی پەسنا میر و دەسەلاتدارێن سەردەمێ خۆ نەکرییە، بەلکو پەسنا ئەوان میران کرییە ئەوێن ب ڕێکا سەرهاتی، چیرۆك و چیڤانۆکان گەهشتینە ئەوی ئەوێن خەلکی باسێ دادپەروەری و هێز و شیانێن ئەوان کرین، ل ڤێرێ خانی ڕاناوەستیت، بەلکو بەردەوامییێ ددەتە پەسنا هێز، شیان و دادپەروەرییا میری:

میری ژ وی ڕا ب زەین مووەصەف

زینەت ژ وی ڕا ب دین موعەررەف



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئاثـــارێ شــــجاعەتا وی شـــاهی

داگرتـــی ژ مـــاهێ تـــا مـــاهی

مــــــاهییەتێ وی مەدارێ دونیــــــا

شــــاهییەتێ وی شـــعارێ عوقبـــا

موحتـــاجێ مـــەخاوەتا وی حاتـــەم

مـــەغلووبێ شـەجاعەتا وی روســتەم

حاتــــەم ژ کــــەمالێ هممــــەتا وی

تۆمــــارێ ســــەخاوەتا خــــوە گرتــــی

عــەقل و هونــەر و ســەخا و مەیــدان

ضــەبط و نەســەق و نظــام و دیــوان

دینــــداری و دەولەت و دیــــانەت

سەرداری و صەولەت و صیانەت

مەشـحوون ژ هەر یەکـی خەزینـەک

مەکنـوون ژ هەر یەکـی دەفینـەک

(خانی، ٢٠٠٥، ٧٢)

دەمێ ئەم سەحدکەینە ئەڤان چەند دێرێن خانی تەرخانکرین بۆ ستایشا میری، ژبلی مەزناهی و دەسەلاتا میری دێ بینین ئەو گرنگترین بنەماییێن دەولەتێ و هەبوونا میرگەهەکا بهێز و خودان دەسەلاتەکا باش و رێکخستی بۆ مە ددەتە دیارکرن، وەکی بەری نۆکە مە دیتیڕاستە ئەحمەدێ خانی باسێ هێز و دەسەلاتا میری دکەت و دبێژیت دڤەرەکا مەزن ئێخستییە بن دەسەلاتا خۆ، بەلێ ئەو ل ڤێرێ ب تنێڕاناوەستیت و وەسا ددەتە دیارکرن کو ئەو میرە کەسەکی دانا، شارەزا و دینداربوو، ناڤودەنگێ ئەوی گەلەك بەربەلاڤبوو ل جیهانێ، کەسەك بوو کو هەموو ژێڕازیبوون، ژبلی هندێ کەسەکی خودان دەسەلاتبوو، کەسەکی مەردبوو و گەلەك چاڤدێرییا هەژاران دکر ئانکو پلە و پایە ل دەڤ ئەوی گەلەك گرنگ نەبوون.

خانی ب رێکا کۆمەکا پەیڤان بهێزترین خالێن سەرکەڤتنا میرگەهەکێ بۆ مە دەستنیشاندکەت، وەکی: عەقل: هەبوونا کەسێن ب عەقل و شارەزا د دەسەلاتێدا، هونەر: هۆزان و هەموو ئەدەبیاتێ ب خۆڤە دگریت، سەخا: بەخشین و کەرەم، مەیدان: ئاماژەیە بۆ هەبوونا هێزەکا لەشکەرییارێکخستی، زێدەباری پەیڤێن دیتر (**ضەبط و نەسەق و نظام و دیوان**) سیستەمێن دەولەتدارییێ هەموو ل ڤێرێ هاتینە دیارکرن، هەروەسا باسێ هەبوونا دینداریێ دکەت و ب دیتنا ئەوی هەبوونا دەولەت یان میرگەهەکا سەرکەڤتی و بهێز پێدڤییە ئەڤ خالە تێدا هەبن. ل ڤێرێ خانی ب رێکاڤەگەڕیان بۆ دەمێ بۆری بۆ خەلکی ددەتە دیارکرن د سەردەمێن بۆریدا مە میرێن دادپەروەر و سەرکەڤتی هەبووینە و هەموو مەرج



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

و تایبەتمەندییێن ئەوان بۆ مە ددەتە دیارکرن و ستایشەکارێکوپێکیا میری دکەت و مەزناتی و پلەوپایەیا ئەوی بۆ مە ددەتە دیارکرن.

### ٢-٤ بەرجەستەکرنا مەزناتی و شکۆمەندییا میران:

هەر چەندە ئەڤ بابەتە نێزیکی خالا ئێکێیە، لێ ب شێوەیەکی گشتی د ناڤەرۆکا خۆدا دوو بابەتێن جودانە. ئەحمەدێ خانی ل گەلەك جهێن مەم و زینێ بزاڤکرییە ب ئاوایێن جۆراوجۆر مەزناتی و شکۆمەندییا میرگەها بۆتان ل سەردەمێن کەڤن بدەتە دیارکرن. ئێك ژ ئەوان هەلویستان دەمێ ئەحمەدێ خانی باسێ شەهیانا (تاجدین و ستی)یێ دکەت، ب تایبەت دەمێ دبێژیت:

ئەنواعێ تەجەممول و مەلابس
ئەلوانێ جەواهر و نەفائس
سەد جاریە و دو سەد بەنی چوون
زەربەفت لباس و زەربەنی چوون
ناقە ب قطار و دەر ب قنطار
یاقووت ب بار و زەر ب خەروار
خارج ژ تەعەددودا حسابان
خارق ل تەقەییودا کتابان

(خانی، ٢٠٠٥، ١٤٧ و ١٤٨)

ل ڤێرێ ددەتە دیارکرن کو هەمی پێدڤیاتییێن جوانکارییان، جلوبەرگێن ب بها و رێکوپێك و گەلەك جۆرێن زێڕان د ئەوێ شەهیانێدا هەبوون، هەروەسا سەد جاریە و دوو سەد بەنی و خزمەتکارژی ل وێرێ د ئامادەبوون، ئەو جلوبەرگێن ئەوان کرینە بەر خۆژی داڤێن زێڕی تێدابوون، زێدەباری هاتنا کۆمەکا حێشتران کو تژی بارێن ئەوان پڕبوون ژ دیارییێن ب بها و زێڕان، گەلەك پارە، زێڕ و تشتێن گرانبەها هەبوون هەتا ئەوی ڕاددەی چ کەس نەشێت چ حسابێ بۆ بکەت و بێهژماربوو، چ کەس نەشێت د چ پەرتووکانداژی دەرببڕیت و بگونجینیت. هەروەسا باسێ ئامادەبوونا هژمارەکا زۆرا خەلکی دکەت، گەلەك ژ خەلکی دهاتنەپێش ب تنێ داکو ئەڤێ مەزناتییێ ب چاڤێن خۆ ببینن. کەواتە ل ڤێرێ ئەم دشێین بێژین خانی ڤیایە ب رێکا شەهیانا ستییێ مەزناهی و شکۆمەندییا میرگەها بۆتان و شیانێن مەزنێن ئابوورییێن میرگەهێ بۆ مە بدەتە دیارکرن، دەمێ دبێژیت:

نەدهاتە تەعەققول ئەڤ جهازە
نەدبوون موتەحەممل ئەو جەمازە
ڤێ دەبدەبەئێ وە کرنە عاشق
بوو زەلزەلە ڕاکرن خەلائق


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شـەكرى ژ مـوذەككەر و مـوئەننەث

(فى الجملە) مـوزەييەن و مـولەببەس

تەشــبيهى ب بەحــرێ پـوڕ تەمەووج

جــونبش دكــرن غەرەض تەفەرروج

(خانى، ٢٠٠٥، ١٤٨)

ل جهەكێ ديژى خانى مەزناهى و شـكۆمەندييا ميرگەها بۆتان ددەتە خۆياكرن، ئەوژى دەمێ باسێ باخچەيێ ميرێ بۆتـان دكـەت و ئـەوى دڤێت بدەتـە دياركرن ل سـەردەمێ ميـرێن بـەرى ئـەوى سـەردەمى (ميـرێن بەرى خـانى) چەنـدين ئاڤـاهيێن مەزن و باخچـەيێن پێشـكەڤتى، ب ڕەوش و ڕێكوپێك هەبووينە ب تايبـەت ل سـەردەمێ ئـەوى ميرێپەيوەنـدييا د ناڤبەرا (مـەم و زيـن) ل سـەردەمێ ئـەوى هاتييەڕويدان، دبيت ژى نـه ب ئـەوى ڕەنـگ و شـێوازى بيت، بـەلێ هـەر چاوەبيت ب ئـەوى شـێوازى گەهشـتييە خـانى و خـەلكێ هەڤـدەمێن خـانێو ئـەويژى هۆسـا دايـەدياركرن كـو ل سـەردەمێن كـەڤنميرگەها بۆتـان ئـەڤ مـەزناهى و شكۆمەندييە هەبوويە. خانى د شيا ئێكسەر باسێ ژڤانێ د ناڤبەرا (مەم و زينێ) ل باخچێ ميرى بكـەت، بەلێ ل دەستپێكێ چەند دێرەكان بۆ وەسفا باخچێ ميرى تەرخاندكەت و دبێژيت:

باغــەك وە هــەبوو ئــەمير زەيــدين

بــاغێ ئرەمــێ دچــوو ب مــزگين

هــەر دوحــە ژ وى و هــەر طويــوورەك

يــەك قەصــرە ژ جەننــەتێ و حــوورەك

بـۆ شوشــتنێ دەســت و پــێ و چاڤـان

كەوثەر كربــوو مەيلــێ رضــوان

هەرمســەر ب مــەقامێ ســدرە ســەروەك

مانەنــدى فرشــتە هــەر تــەذروەك

تەشــبيهى مــەمێ دلــێ صــەنەوبەر

ســەد پــارە ژ عشــقێ قــەددێ عەرعــەر

نــارنج و تــۆرنجێ شــوبهى زينــێ

زەربــــوويى ژ عللــــەتا ئــــەڤينێ

ســێڤ و روطــەب و ئــەنارێ بوســتان

لێــڤ و ذەقــەن و ئــەنارێ پوســتان

شمشــاد و چنــار و هەمقــەدەم بــوون

خــوەش ســايە و ڕوو عــەلى هەمــەم بــوون

(خانى، ٢٠٠٥، ٢١١ و ٢١٢)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولينێن كوردى

مەرەما ئەوی میری باخچەك هۆسا هەبوو مینا باخچێ ئیرەمێ بوویە کو د قورئانێداژی هاتییە باسکرن کو بەهشتا ئیرەمێ هەیە و دبێژیت ئەڤ باخچە ژ ئەوێ بەهشتێ ژی خۆشتربوو، هەرچەندە دبیت ئەڤ پەسنە ژ ڕاددەیێ ئەوی باخچەی زێدەتربیت، بەلێ هەرچاوەبیت ئەوی ڤیایە مەزناهی و ڕەوش و خۆشیا ئەوی باخچەی بۆ مە بدەتە دیارکرن. ل گۆرەی گۆتنا خانی ئاڤەکا پاقژ تێدا هەبوو زێدەباری گەلەك جۆرێن بالندەیان و قەسرەکا گەلەك مەزن. هەروەسا هەموو جۆرێن داروباران و جوانییا باخچەی ژی ب جوانییا عەشقا د ناڤبەرا مەم و زینێدا وەسفدکەت ل گەل هەبوونا هەموو جۆرێن فێقی ل ئەڤی باخچەی. خانی ل ڤێرێ ب تنێڕاناوەستیت و د بەردەوامییا وەسفا باخچەیدا دبێژیت:

زەرریــن قــەدەحێ د مەســتێ لــەبریز
رەیحــان و بنەفشــە جوملــە نــوخیز

مەجموعـــەتێ خەضـــرەوات و ئـــەزهار
شـــیرازەئێ سەلســـەبیل و ئـــەنهار

صـــەحنا رەزی موجمـــەلا کتابـــەك
هـەر قەطعـە و فەصـلە فەصـلێ بابـەك

گۆیـــا ب ئـــەدەب ئـــەدیبێ تـــەنجیم
سەرصـــەفحەئێ بـــاغی شـــوبهی تـــەقویم

جـــەدوەل کربـــوو ب حـــەللێ ســـیماب
شـــەنگرەف صـــفەت گـــولێ د ســـیراب

ئـــــەطراف ژ ســـــونبول و رەیـــــاحین
ئـــەلوان ژ خوطـــووطێ ســـەبز و مشـــکین

هەریـــەك دکـــرن بـــەیانێ ئـــەحکام
بـــەختێ ســـیەە و ســـفید ئـــەعلام

(خانی، ٢٠٠٥، ٢١٢)

کەواتە ل ڤێرێ ئەڤ ماندیبوونا خانی هەموو ژبۆ هندێیە بۆ مە مەزناهی و سەرنجڕاکێشییا ئەڤی باخچەی ب هەبوونا شێوازێ جیاوازێ باخچەی بدەتە دیارکرن.

**٤-٣ ڕەخنەگرتن ل میر و کاریدەستێن میران:**

ئەحمەدێ خانی نە ب تنێ ستایشا میران کرییە و ڕەوشتێن ئەوان پۆزەتیف باش داینە دیارکرنە، بەلکو داستانا مەم و زین بخۆژی ژبۆ نیشاندنا زولم و زۆرییا میرییە ئانکو ڕەخنەگرتنە ل ڕەوشتێ میری، ئێك ژ ئەوان جهێن ئەحمەدێ خانی ب



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شێوەیەکیڕاستەوخۆڕەخنێ ل میری دگریت ئەو جهە دەمێ میر ل گەل تاجدینی دئاخڤیت و باسێ بەکرۆکی دکەت و دبێژیتە تاجدینی:

ئـــەم قســـمێ ئـــەمیر قســـمێ ئاشـــین
پـوڕ فـەتل و گـەڕین و پـێش و پاشـین
ناچـــارە ژ بـــۆ مـــە ئاشـــڤانەك
(لا بـــد) ژ بـــۆ مـــە دەرگەڤانـــەك
هنـــدی ب حوکوومـــەتێ دکـــین دەور
گەە عەدلە ژ بۆ مە کار و گەە جەور
هـەر چەنـدە بـەکر وەلـەد زینایـە!
ئاشـــێ مـــە ژ وی ب فـــەتل و بایـــە
ئـــەڤ زومـــرە کـــو ظـــالم و عـــەوانن
سووباشـــی و شـــەحنە دەرگـــەڤانن

(خانی، ٢٠٠٥، ١٧٠)

ل ڤێرێ دبێژیت ئەم میر وەکی ئاشینە، فەتل و با، پێش و پاشین، هەر جار بۆ لایەکی دزڤڕین، هەمی جاران ئاشڤانەك بۆ مە دڤێت و ژبلی ئاشڤانی دەرگەڤانەك ژی بۆ مە دڤێت کو هەرجار ل بەر دەرگەهی بیت. هندی ئەم حوکمی دکەین، جار زولمێ دکەین و هندەك جاران عەدالەت و دادپەروەرییێ پەیڕەودکەین، هەروەسا ل سەر زاردەڤێ میری دبێژیت: ڕاستە ئەم دزانین (بەکرۆك) کەسەکی خرابە و ئنیەتا ئەوی نەیا سافییە، لێ ئەوە سیستەم و حکوومەتا مە بڕێڤەدبەت.

ئاشـێ د مـە ظالمـان دگێـڕن
دەخلـێ د مـە ظالمـان دهێـرن
ئاشـێ مـە ئەگـەر چ وەقفـێ عامـە
گـــەوری تـــژی گارســـێ حەرامـــە
وی گارســـی حـــارثەك دچینـــت
ئـــەڤ حارثـــە بـــۆ مـــە دێ هلینـــت
ئـــەڤ عادەتـــە نینـــە خاصـــێ میـــران
نـــابینی ل بـــەر دەرێ فـــەقیران
وان ژی هـــەمی پاســـبان ژ صـــانن
ئـەو ژی هـەمی قسمێ دەرگـەڤانن

(خانی، ٢٠٠٥، ١٧٠)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ئانکو ئەڤ کەسێن خرابن ئاشێ مە زالمان دگێڕن،ڕاستە ئەڤ حوکمە بۆ هەمی خەلکییە، بەلێ گەورییا ئەڤی ئاشی (حوکمی) تژییە ژ گارسێ حەرام، ئانکو مەرەم پێ ئەوە ئەڤ تشتێ د سیستەم و دەولەتا مە دا هەمی نە تشتێ باشە، بەلکو گەلەک خالێن لاواز و حەرام هەنە و کێماسی ژی تێدا هەنە، بەلێ ئەڤ زولم و زۆردارییا د دەولەتا مەدا پێدڤی ب کەسەکییە کو ب دریت و ل گۆرەی دیتنا میری کەسێن باش ئەڤێ چەندێ ناکەن لەوما هەمی دەمان پێدڤی ب مرۆڤێن خرابن. ئەو کەسێن ل دەوروبەرێن ئەوان و کارێن ئەوان بڕێڤەدبەن و کارێن خراب دکەن، هەمی وەکی سەیانە. ژبلی هندێ خانی باسێ بەکرۆکی دکەت، بدیتنا ئەوی میر جاران عادلن و جارانژی زالمن، ئەڤە نابیتەڕامانێ ئەوێ چەندێ ژبەرکو میرە هەمووو جاران ئەو کارێن ئەو دکەن کارێن باشن، بەلکو گەلەک جاران کارێن خراب دکەن، ل ڤێرە خانی ڕەخنێ ل ڕەوشتێن میران و میرگەهان دگریت.

ل جهەکی دی ژی خانی ڕەخنێ ل میران دگریت، دەمێ میر زەینەدین دبیتەڕێگر د ڕێکا پێکگەهشتنا (مەم و زین)ێ، تاجدین پەیامەکێ ل گەل کەسەکی بۆ میری دهنێریت و دبێژیتێ:

گۆتێ: هەرە بێژە میر و ئاغان
بینەندەڤەناکوژن چراغان
میرێ مە ئەگەر چ دووربینە
ئیرۆ وی د چاڤی نوور نینە
ئەم چار برا هەبوون د صادق
هەر چار ل خدمەتا وی عاشق
ئنصافە کو زێدەتر ژ سالێ
مەم مائیە بێ خودان ژ چالێ

(خانی، ٢٠٠٥، ٢٧٠)

ل ڤێرێ تاجدین ڕەخنێ ل میری دگریت و دبێژیتێڕاستە توو کەسەکی زانا، زیرەك و شارەزای، ڕاستە توو کەسەك دووربینی و هزرا هەر تشتی دکەی، لێ نۆکە تو یێ کەڤتییە د شاشییاندا و توو یێ خەلەتییێ دکەی، پێدڤییە ل خۆ بۆڤڕی و خۆ ژ ئەڤان خەلەتییانڕزگار بکەی، نابیت حوکمێ تە ب ئەڤی شێوازی بیت و هۆسا زولمێ بکەی، ب تایبەت دەمێ دبێژیت:

دوژمن ل مە شانە دۆست غەمگین
فەرضە مرنا چەکۆ و تاجدین
مەم گەر چ کو زێدە پوڕ گوناهە
لێ عاشقە، عشق پادشاهە
حوکمێ توو نەکە ل پادشاهان


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ظـولمێ تـو مەكــە ل بـێ گوناهــان

ئـەم هێڤـی دكـەن مـەمێ رها كـەت

دەردێ دلـــێ مــــەمێ دەوا كـــەت

(خانى، ٢٠٠٥، ٢٧٠)

هەر ل سەر ئەڤی بناغەی، خانی ئـەوان كاربدەست و بەرپرسێن ل دەوروبـەرێن میـری دكەتە دوو دەستە، دەستەیا خراب و دەستەیا باش، ب دیتنا خانی ئەو دەستەیا باش، كارێن باش یێن میری بڕێڤەدبەن و كارێن باش ژێ چێدبن، دەستەیا خرابژی كارێن خراب یێن میری بڕێڤە دبەن و گەلەك جاران ئەو بخۆ دبنە ئەگەر كو میر كارێن خراب و نە د بەرژەوەندییا جڤاكیدا ئەنجامبدەت، ل ڤێرێ خانی باسێ مەم و تاجدین و برایێن تاجدینی دكەت:

لـــێكن ژ خـــەوادمێ د مومتـــاز

ســەد لاوێ ســەهی قــەد و ســەرئەڤراز

هــەر یــەك د مــەقامێ حوســنێرۆژەك

هــەر یــەك ب كــەلامێ سینە سـۆژەك

(خانى، ٢٠٠٥، ٨١)

مەرەم پێ ئەوە، ئەو زەلام و خزمەتكارێن ل دەوروبەرێن ئەوان، گەلەك كەسێن ب رێكوپێك بوون، زێدەباری هندێ كەسێن خودان ئاخفتن خۆش و باش و گۆتنێن جوان و لێكدای بوون، ئانكو وەسفا ئەوان دكەت ب دیتنا خانی ئەو كەسێن گەلەك باشبووینە ئەوێن خزمەتا ئەوان دكر، ئانكو باسێ دەستەیا باش یا خزمەتكارێن دەوروبەرێن میری دكەت و ل گۆرەی دیتنا ئەوی ئەڤ چەندەژی ل دویڤ میری و شێوازێ میری دمینیت، میر دشێت كەس و كاربدەستێن باش دەردۆرێن ئەوی بن و میر دشێت كەس و كاربدەستێن خراب ل دەردۆرێن ئەوی بن. هەر د بەردەوامییا گۆتنێن خۆ دا خانی پتر باسێ تاجدینی دكەت و دبێژیت:

تاجــدین دوو بــرا هــەبوون د قــەللاش

مانەنـــدی دو شـــاهبازێ جـــەمماش

دائـــم دلـــێ دوژمنـــــان دســـۆتن

یـــەك عـــارف و یـــەك چـــەكۆ دگـــۆتن

ئــەمما وی ژ جوملــە خــاص و عامــان

ژەو چەنـــدی بـــرا و بابـــا و مامـــان

لاوەك كریـــوو بـــرا ژ بـــۆ خـــوە

نـێ ئــەز غەلــەطم چـرا ژ بــۆ خــوە

(خانى، ٢٠٠٥، ٨٢)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

لڤێرێ خانی باسێ تاجدین و برایێن ئەوی دکەت پەسنا ئەوان دکەت، مەرەما خانی تاجدین و برایێن ئەوی ژ ئەوان کەسێن باشن ل دوروبەرێن میری و کارێن باش ئەنجامددەن و ب باشی د خزمەتا میریدانە.

د وەسفا کەسێن خرابدا ئەوێن ل دوروبەرێن میری، ئەحمەدێ خانی (بەکرۆک)ی دکەتە نموونە و ئەوی ب ئیبلیسی وەسفدکەت، ل گۆرەی گۆتنا ئەحمەدێ خانی، بەکرۆک بوویە ژێدەرێ گەلەک خرابی و کارێن خراب، هەروەسا بوویە ئەگەر میر گەلەک کارێن خراب ئەنجامبدەت، دەمێ دبێژیت:

(القصـــە) ب ئقتضـــائێ خلقـــەت
میـرێ ب کـەمال و عـزز و رفعـەت
ڕاگـــرت ژ بـــۆ خـــوە دەرگەڤانـــەک
فـــەتتانێ زەمانـــە صـــەی پصـــانەک
دائـــم ل دەرێ وی قـــاپۆچی بـــوو
قـەللاع و قـەلاش و قـاوەچی بـوو
ئـــەمما ب نەســـەب نەمـــەردێ بوهتـــان
بـــەلکی موتەوولـــدێ ژ بوهتـــان
ئەصـلێ وی دبـێن ژ مـەر گەڤـەڕ بـوو
مـەحچا وی بەشـەر ب شـۆر و شـەڕ بـوو
نـــاڤێ وی مونـــافقی بـــەکر بـــوو
بـــەلکی ژ بـــەلووقیا بـــەتر بـــوو
مـــەنناع و موذەبـــذەبین و ئبلـــیس
خـــەدداع و خەبەربـــەزین و تـــەلبیس
شـــاگردێ شـــەئامەتا وی شـــەیطان
شـــەرمەندە ژ گوهتنـــا وی بوهتـــان

(خانی، ٢٠٠٥، ١٦٨ و ١٦٩)

### ٤-٤ دابونەریتێن میران:

د مەم زینا ئەحمەدێ خانیدا، هندەك جاران ب شێوەیەکیڕاستەوخۆ و هندەك جاران نەڕاســتەوخۆ باســێ گەلــەك دابونــەریت، هــزر و تێگەهشــتنا میــرێن ســەردەمێن کــەڤن دهێتەکرن. ئێك ژ ئەوان ل دەستپێکا داستانا مەم و زینێ بۆ مە دیاردبیت ئەوژی دەمێ باسێ ئەسل و نەژادێ میرێ بۆتان دکەت و ل گۆرەی گۆتنا خانی میرێن کوردان پتریا جاران



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ئەسل و نەژادێ خۆ نەدزڤڕاند بۆ کوردان بەلکو خۆ د گەهاندنە سەحابی و جەنگاوەرێن کەڤن، ب تایبەت دەمێ دبێژیت:

ئەجناسێ ملـەل موطیـع و مونقـاد
ئەسـلا وی عەرەب ئەمیـرێ ئەکـراد
تەختێ وی جزیـر و بەختێ مەسعوود
طـالع قەوی و مەقـامێ مەحمـوود
رۆم و عەرەب و عەجەم د فەرمـان
مەشـهوور ب نـاڤێ میـرێ بوهتـان
ئابـاتێ عظـام و جەد و والـد
مەنسـووب و موسەلسـەلێ د خالـد

(خانی، ٢٠٠٥، ٧١)

دەمێ ئەم ئەڤان دێران دبینین، بۆ مە دیاردبیت کو خانی دبێژیت میرێن بۆتان ئەسل و نەژادێ خۆ د گەهاندە (خالد کورێ وەلید) و د گۆتن ئەم د ئەسلدا عەرەبین، دیارە ل ئەوی سەردەمی بۆ ئەوان شانازی بوو و هەر ل سەر ئەڤی بنەمایی خەلکێڕێز لێگرتییە، خانی ژی بۆ مە وەسا ددەتە دیارکرن کو ئەڤ نەریتە د کەڤندا ل جەم میرێن کوردان هەبوویە و ژ نەریتێن هەرە گرنگ بوویە ل ئەوی سەردەمی.

ئێک ژ نەریتێن دیێن خانی بۆ مە ددەتە دیارکرن ئەوژی (نێچیر)ە، کو د کەڤندا دگۆتنێ (نێچیرا شاهانە) یانژی (نێچیرا میری) مەرەم پێ ئەو نێچیرەیاکو میر دچوونێ. د سەردەمێن کەڤندا سالێ جارەکێ میر بۆ ماوێ چەند ڕۆژەکان دچوونە نێچیرێ، د ئەڤان نێچیراندا سەرباز، مرۆڤێن مەزن و جەنگاوەرێن زیرەك ل گەل میری دچوون، خانی بۆ مە ددەتە دیارکرن کو ئەڤ نەریتە ل جەم میرێن کوردانژی هەبوویە و دبێژیت:

کەر کەر د چەرین ل کووە و دەشتان
رەف رەف دفـڕین د نێـڤ بهشـتان
(القصـه) ب ئقتچـا زەمـانی
بـوو فرصـەتێ عـەیش و کـامرانی
فەصـلا بگـەڕن ل گەشـت و سـەیران
نێچیـرێ بکـن ژ وەحـش و طـەیران
میـرێ کـو فەلـەك مـوطیعێ فـەرمان
گـۆ: صوبحە نەبوویە قەومێ بوهتـان
ڕابەسـتی سـلاح و گـورز و شمشـیر
(بالجملـه) د گـەل مـە بێنـە نێچیـر

(خانی، ٢٠٠٥، ٢٠٨ و ٢٠٩)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

خانی ب تێروتەسەلی باسێ ڕێوڕەسم و دابونەریتێن چوونا نێچیرێ دکەت، ل دەستپێکێ دبێژیت سەردەم بۆ سەردەمی کەیف و خۆشییێ ببەن کو مەرەم پێ وەرزێ بوهارێیە و دەمێ نێچرێیە. دبیت ل ئەوی دەمی بارودۆخ گونجایی بوویە لەوما فەرمان ل مللەتێ خۆ کر و گۆتێڕابن ئەم بچینە نێچیرێ، هەموویان چەك، شمشێر و پێدڤیاتییێن خۆیێن نێچیرێ ئامادەکرن، ل ئەوی دەمی ئەم دشێین بێژین میری نە ب تنێ داخوازکر ل گەل بچنە نێچیرێ، بەلکو ئەڤ چەندە کرە فەرمان:

حاضر نەبتن کەسەك د صەیدێ
ئەو دێ بمرت د بەند و قەیدێ
خەلقێ کو حەتا ب صوبحێ کاذب
حاضر کربوون بساط و راتب
فەجرێ کو نەمایە وان عەلامەت
ڕابوو د وێ شەهرێ دا قیامەت
میران فکرن عوقاب و بازی
شێران دبرن پلنگ و تازی

(خانی، ٢٠٠٥، ٢٠٩)

ل ئەوی دەمێ میران فەرمان ددا، خەلك هەموو مژویلی ئامادەکارییێن نێچیرێ دبوو هەتا بەرێ سپێدێ، ژبەرکو هەر کەسەکی نەچیت دێ هێتە سزادان، دەمێ دبوو سپێدە هند خەلك ئامادە دبوو هەروەکی قیامەتڕابووی، هەروەسا باز و تاژی و گیانەوەرێن تایبەتب نێچیرێ ل گەل خۆ دبرن و خەپسە و قەرەبالغەکا زێدە چێدبوو، هەتا ئەوی ڕاددەی کەس د باژێڕیدا نەما و هەموو ل گەل میری چوونە نێچیرێ، دشێین بێژین خانی ب شێوازەك گەلەك جوان و بالکێش باسێ ئەڤی نەریتێ نێچیرێ دکەت زێدەباری باسکرنا مەزناتی و شکۆمەندییا میری، تشتێ گرنگ ل ڤێرێ خانی دڤێت ب ئاشکەرایی بۆ مە بدەتە دیارکرن کو نەریتێ نێچیرێ ل دەڤ میرێن کوردان هەبوویە و ڕۆژەك هەبوو هەموو خەلك ب شێوەیەکرێکوپێك ل گەل میری دچوونە نێچیرێ. د فەردەوامییا گۆتنێن خۆدا خانی دبێژیت:

دەررندە و ئادەم بەهائم
فەردەک قە نەما د شەهری قائم
دام و دەد و ئادەمی و حەیوان
طفل و صەبی ئاشڤان و رەزڤان
(القصە) قەبیلەیا رجالان
(فی الجملە) کەسەک نەما د مالان
بوو حەشر گەهەک ل صەیدێ گاهان
شەفقەت نەکرن ل پێ گوناهان

(خانی، ٢٠٠٥، ٢٠٩)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئێك ژ نەریتێن دیێن بالكێش، ئەوێن ئەحمەدێ خانی بۆ مە باسدكەت، ئەوژی سەرەدەرییا میرێن جزیرا بۆتان ل گەل گیانەوەران، دەمێ میر ژ نێچیرێ دزڤریت، خانی باسێ سەرەدەرییا میری ل گەل ئەوان گیانەوەران دكەت ئەوێن ل نێچیرێ هاتینە گرتن، دەمێ دبێژیت:

میر گۆ كو ڤەكن ئەڤان غەزالان
پابەند مەكن ئەوان شەپالان

تێك بەردەنە باغی وان وەكی گەیر
دا ئەم بكرن هەرۆ ل وان سەیر

خەلقێ كو غەزال و گوور و خەرگووش
خوەش گرتی ل سەر مل و دەر ئاغووش

ئانین هەمی میری تژژی رەز كر
ئاغول كو شڤانی تژژی پەز كر

(خانی، ٢٠٠٥، ٢٢٨ و ٢٢٩)

دەمێ میر ژ نێچیرێ دزڤریت، داخوازێ ژ خەلكی دكەت ئەو غەزالێن گرتین پێ پابەند نەكەن و بەردەنە ناڤ ناخچەی داكو ئەم هەر رۆژ تەماشەی ئەوان بكەین و چێژێ ژ دیتنا ئەوان ببەین، فەرمان ل خەلكی كر ئەو گیانەوەرێن گرتین هەموویان بەردەنە د ناڤ باخچەیێ ئەویدا، باغێ میری ژی تژی گیانەوەربوو،رەوش و جوانییەكا دیتر دا باخچەی، ئەڤە بۆ مە وەسا ددەتە دیاركرن كو میرێن كەڤن حەز ژ كوشتنا گیانەوەران نەدكر، هەتاكو دەمێ دچوونە نێچیرێ و ئەو گیانەوەرێن بۆ چێژێ گرتین ئازاد دكرن، نەدهێلا خەلك بكوژیت، ئەڤجا ئەگەر وەسا بیتیان نە، خانی بۆ مە هۆسا ددەتە دیاركرن.

ئێك ژ نەریتێن دیتر ئەوێن كو خانی باسدكەت كو ب دیتنا ئەوی ل جەم میران هەبوویە، ئەوژی یاریا (شەترەنج)ێیە، ب دیتنا خانی و ل گۆرەی ئەو تشتێ گەهشتییە ئەوی، د كەڤندایاریا شەترەنجێ بوویە نەریتەك گرنگ ل جەم میران و گەلەك جاران شەرتانێ ل سەر ئەڤێیارییێ دكرن و هندەك جارانژی مینا جۆرە شەرەكی بوو د ناڤبەرا دوو كەساندا، ل ڤێرێ خانی ب تایبەت باسێ ئەوی دەمێ دكەت دەمێ میری بریاردایاریا (شەترەنجێ) ل گەل (مەم)ی بكەت و ل گەل هندێ مەرجانژی بۆ دادنێت. رۆژا بەری هنگی میر بریارێ ددەت كو سوباهی دێیارییێ كەن و خانی دبێژیت:

روونشت و گۆتە پیشەكاران
هوون گازی بكن نەدیم و یاران

تەنها مەمێ ژ مەرا بخوونن
تاجدینی ل گەل برا مەخوونن

پشتی چەند دێرەكان خانی دبێژیت:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

ئەو چەند شەراب و قەند و شەككەر
ئەو چەند گولاب و مسك و عەنبەر
ئینان و د مەجلسێ گەڕاندن
كەیفێ د خوە سەر ب سەر گهاندن
ئەنجامێ تەكەللوم و خەبەردان
كێشا كو ب ساطرەنج و نەردان
میر گۆتە مەمێ ب كین و كەربە
ئیرۆ مە د گەل تە جەنگ و حەربە
ڕابە ژ مەڕا وەرە موقابل
بێ شەك ب تە ڕا ئەزم موجادل
شەرطێ مە د گەل تە ئەی سەرەفراز
هەر چی تە د ڤێ ژ بۆ مە دلخواز

(خانی، ٢٠٠٥، ٢٤٤ و ٢٤٥٠)

دیارە ئەڤێ چەندێ ژی دابونەریتێن خۆ هەبووینە، لەوما میرڕۆژا بەری هنگی مەمێ ئاگەهدار دكەت و ئەو جهێ كو دێیاری لێ هێتەكرن هاتە ئامادەكرن و جۆرەها جۆرێن مسك و عەنبەران لێ هاتنە ڕەشاندن، خەلك ژی هاتە خواندن بۆ ئامادەبوون و تەماشەكرنا یاریا ئەوان ژبلی تاجدینی و برایێن ئەوی، هەروەسان دبێژیتە مەمێ ئەگەر توو ل سەر من ب سەركەڤتی تە چ دڤێت دێ دەمە تە و تە خەلاتكەم. ئەڤ نەریتنە و چەندین نەریتێن دیتر خانی بۆ مە ددەتە دیاركرن وەكی (خۆشگوزەرانی، یاری، مۆسیقا، كەیف و خۆشی، ئاهەنگ و شەهیان و ...هتد) كو د ناڤ میرێن سەردەمێن كەڤندا هەبووینە.

**ئەنجام:**

١) ل گەلەك جهان د داستانا مەم و زیندا، خانی پەسنا میران كرییە ب تایبەت میرێن میرگەها بۆتان.

٢) د مەم و زینا خانیدا شكۆمەندی و مەزناتییا میران دهێتەدیتن و هندەك جاران باشێ شكۆمەندییا میرگەهان ژی هاتییەكرن.

٣) ئەحمەدێ خانی نە ب تنێ پەسنا میران كرییە، بەلكو گەلەك جاران ڕەخنێ ل گەلەك دابونەریتێن میران دگریت ب تایبەت ئەوان میرێن ل سەردەمێ بوویەرا مەم و زینێ دەسەلاتداربوون.

٤) ژ گرنگترین دابونەریتێن میرێن سەردەمێن كەڤن ئەوێن ئەحمەدێ خانی باسكرین (نەژاد، نێچیر و یاریا شەترەنج)ێ بوون.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

**لیستا ژێدەران:**

**أ. ب زمانێ کوردی:**

١. ئەحمەدێ خانی، مەم و زین، بەرهەڤکرن: تەحسین ابراهیم دوسکی، دەزگەهێ سپیرێزێ چاپ و وەشانێ، چاپا ئێکێ، چاپخانا وەزارەتا پەروەردێ، هەولێر، ٢٠٠٥.

٢. حەیدەر لەشکری، دەسەڵاتی میری کورد لە سەدەکانی ناوەڕاست، گۆڤاری شانەدەر، ژ: ٩ ، ١٩٩٩.

٣. د.سەلاح محەمەد سەلیم هروری، میرگەها بۆتان، دەزگای وەرگێڕان، چاپی یەکەم، چاپخانەی منارە، هەولێر، ٢٠٠٦.

٤. کامەران جەمال بابانزادە، دامەزراندنی چەند میرنشینێکی کورد لە هەردوو سەدەی ٨ و ٩ ك/ ١٤ و ١٥ ز، بڵاوکراوەی ئەکادیمیای کوردی، چاپی یەکەم، چاپخانەی حاجی هاشم، هەولێر، ٢٠١٢.

٥. کامەران عەزیز عەبدوڵلا، هۆکارەکانی سەرهەڵدانی میرنشینە کوردییەکان لە سەردەمی عەبباسیدا، بڵاوکراوەی ئەکادیمیای کوردی، چاپی یەکەم، چاپخانەی حاجی هاشم، هەولێر، ٢٠١٢.

٦. کورد و کوردستان لە ئنسکلۆپیدیای تورکیدا (قاموس ئەعلامی تورکی) ، وەر: ئەحمەد تاقانە، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، چاپی یەکەم، بێچاپخانە، هەولێر، ٢٠٠٨.

٧. محەمەد جەمیلرۆژبەیانی، مێژووی حەسنوەیهی و عەییاری، دار الحریه للطباعة، ط١، بغداد، ١٩٩٦.

٨. میر شەرەفخانێ بەدلیسی، شەرەفنامە، وەر: مامۆستا هەژار، دەزگای چەپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، چاپی سێهەم، بێ چاپخانە، هەولێر، ٢٠٠٦.

**ب . ب زمانێ عەرەبی:**

**پەرتووک:**

١. د.فرست مرعي، الامارات الكردية في العصر العباسي ٣٥٠ – ٥٥١١/٩٦٠ – ١١١٧م، دار سپیرێز للطباعة و النشر، الطبعه الاولى، مطبعة وزارة التربية، اربيل، ٢٠٠٥.

٢. زرار صديق توفيق، الكورد فى العصر العباسي و حتى مجئ البويهيين، مؤسسه موكرياني للبحوث و النشر، الطبعه الاولى، مطبعة مؤسسة ئاراس، أربيل، ١٩٩٤.

٣. قادر محمد حسن، الامارات الكوردية فى العهد البويهي – دراسة فى علاقاتها السياسية و الاقتصادية (٣٣٤ – ٤٤٧ ە/ ٩٤٥ – ١٠٥٥ م) ، مؤسسه موكرياني للبحوث و النشر، الطبعة الاولى، مطبعة رۆژهەلات، أربيل، ٢٠١١.

٤. محمد أمين زكي، خلاصة تاريخ الكرد و كردستان من أقدم العصور التاريخية حتى الان، ترجمة: محمد علي عوني، جزء الاول، الطبعة الثالثة،بيروت، ١٩٨٥.

٥. المطران اسحق ساكا، السريان ايمان و حضارة، الجزء الرابع، الطبعة الاولى، حلب، ١٩٨٣.
٦. معالي محمد أمين زكي، تاريخ الدول و الامارات الكردية فى العهد الاسلامي، ترجمة: محمد علي عوني، الطبعه الاولى، مطبعه السعادة، مصر، ١٩٤٨.

گۆڤار:

١. كونيرەش، انتفاضةيزدان شير البوطاني (١٨٥٤ – ١٨٥٥)، مجلة متين، العدد ٥٧، تشرين الاول، دهوك، ١٩٩٦.

ج – ب زمانێ فارسی:

٢. كليم الله توحدي، حركت تاريخي كرد به خراسان،ج ١، ط١، مشهد، ١٩٩٢.

سايتێن ئينتەرنێتی:

١. د. قبات شيخ نواف الجافي، إماره بوطان..جوهره الإمارات الكردية: https://sotkurdistan.net/

## الأمير والإمارة في منظور خاني

**الملخص:**

وصف ومدح الامراء منذ القدم كانتا من احدى المقاصد الرئيسية للقصيدة، ولكن مع مرور الزمن، شهدت تلك المقاصد تغييرات كبيرة، ويمكننا أن نشاهد هذه التغييرات والتطورات في الأدب الكوردي عامة و في القصيدة خاصة، ويمكننا أن نقول بأنها قد بدأت بوصف ومدح الامراء واتجهت نحو نقد الامراء وأعوانهم، وفي معظم مراحل الأدب الكوردي كان لهذا الموضوع أهميته الكبيرة وخاصة في مرحلة الشعر الكلاسيكي .

وقد أهتم الكثير من الشعرا الكلاسيكيين الكورد بموضوع وصف ومدح الامراء وتحدثوا عنه بأشكال مختلفة، ويمكننا أن نبين هذا التغير بشكل واضح عند الشاعر خاني، حيث حاولنا أن نعرف إلى أي مدى قام بمدح الامراء و الى أي مدى قام بنقدهم، وهل تمكن خاني أن يتحدث عن الأخلاق والعادات السلبية والايجابية عند الامراء بشكل مطلوب؟ الى أي حد أهتم بهذا الموضوع؟ ولذلك حاولنا أن نكتب بحثا تحت عنوان (الأمير والإمارة في منظور خاني) لكي نبين التغييرات والإبداعات التي انجزه خاني في هذا الموضوع، وفي هذا البحث تم الاعتماد على المنهج (الوصفي والتحليلي).

**الكلمات المفتاحية:** *الامير، الامارة، خاني، امارة بوطان، مم، زين.*

**Mir and Mirdom in Khani's Vision**

**Abstract:**

Since antiquity the praising of Mirs has been one of the themes of poetry but with the passage of time, this has changed. In Kurdish literature and specifically in poetry, this change has been clearly observed. That is to say praising Mirs has shifted to criticizing them and their valets. This has been one of the essential aspects of Kurdish poetry, particularly in the classic poetry .

In Kurdish classic poetry, many poets commended Mirs and addressed them in a variety of ways. This shift is clearly observed in Khani's poems. In this study, an attempt will be made to figure out to what extent Ahmede Khani praised Mirs and to what degree he criticized them. Has Khani been able to successfully address the ethics and bad and good traits of Mirs? How much attention did he pay to this subject matter? Therefore, we attempted to conduct a study under the title of "Mir and Mirdom in Khani's Vision" to prove the shits and creativity adopted by Khani. Descriptive analytical approach is employed in this study.

**Keyword**: *Prince, Principality, Principality of Bhutan, Khani, mam, zeen.*

# ڕەنگدانەوەی بارودۆخی میرنشینی بابان لە ئەدەبی کوردیدا

م. ی. نێچیروان جاسم ولی
زانکۆی سەلاحەددین/ هەرێمی کوردستانعێراق

**پوختە:**

لە سەردەمی میرنشینی باباندا زۆر گرنگی بە بواری زانست و فێربوون و ڕۆشنبیری دراوە. لە پاڵ ئەوەی ئەدەبی میللیی کوردی لە کۆمەڵگەی ئەو ڕۆژگارەدا پێگەی خۆی هەبووە, لەگەڵ ئەوەشدا چەندان کەڵە شاعیری خاوەن دیوان و شیعری بەرز هاتوونەتە گۆڕەپانی ئەدەبی کوردییەوە و ئەدەبەکەیان بووژاندووەتەوە. ئەدەبی ئەو ڕۆژگارە لە ڕووی شێوە و ناوەڕۆکەوە سیمای تایبەتی خۆی هەبووە. بەشێک لە ناوەڕۆکی شیعری کوردیی سەردەمی بابانەکان سەرەڕای ئەوەی لەخۆگری مەبەستە شیعرییەکانی وەک: دڵداری, سۆفیزم, سروشت, داشۆرین...هتد بووە, بەڵام ئاوڕیشی لە کەسایەتییە ناودار و ڕووداوە سیاسییە گرنگەکانی ئەو ڕۆژگارەش داوەتەوە و شاعیران تێڕوانین و بۆچوونی خۆیان بە شیعر لەبارەی ئەو کەسایەتی و ڕووداوانەوەوە خستووەتە ڕوو. بەمەش شیعری کوردیی سەردەمی بابانەکان بووەتە ئاوێنەیەکی باڵانوێنی ئەو ڕووداوانەی لەو سەردەمە مێژووییەدا ڕوویان داوە.

شاعیران وەک کەسانی ڕۆشنبیر و ئاگاداری سەردەمەکەیان بوونەتە گێڕەرەوەی بەشێک لە ڕووداوەکانی ئەو سەرزەمینەی تێیدا ژیاون و لە ناواخنی شیعر و دووتوێی دیوانەکانیاندا تۆماریان کردووە و بەشێک لە مێژوویان بۆ ئێمە نووسیوەتەوە. لە ڕوانگەی پەیوەندیی پتەوی نێوان مێژوو و ئەدەب و بەرجەستەبوونی کەسایەتی و ڕووداوە مێژووییەکانی سەردەمی بابان لە ئەدەبی کوردیدا ئەم توێژینەوەیەمان تەرخان کردووە بۆ نیشاندانی ڕەنگدانەوەی بارودۆخی میرنشینی بابان لە ئەدەبی کوردیی ئەو سەردەمەدا.

ئەو دەقە شیعرانەی ئەو سەردەمە چەند لاپەڕەیەک لە مێژووی یەکێک لە میرنشینە کوردییە ناودارەکانی مێژووی نوێی نەتەوەکەمان بۆ ڕوون دەکەنەوە و دەبنە تەواوکەری ئەو مێژووەی لە پەرتووکە مێژووییەکاندا نووسراوەتەوە و هەندێک ڕووداوی ئەو ڕۆژگارەمان بۆ ڕوون دەکەنەوە و چەند گۆشەیەکی ژیانی بەشێک لە کەسایەتییەکانی میرنشینەکەمان دەخەنە بەرچاو.

**پەیڤێن سەرەکی:** *میرنشینی بابان، ئەدەبی میللی، شیعر، کەسایەتی، ڕووداو*

**پێشەکی:**

ئەم توێژینەوە ڕووناکی دەخاتە سەر ڕەنگدانەوەی بارودۆخی سیاسی و ڕووداوەکانی سەردەمی میرنشینی بابان لە ئەدەبی میللی و شیعری بەرزی شاعیرانی سەدەکانی هەژدە و نۆزدە و سەرەتای سەدەی بیستدا و ئەو دەقە ئەدەبییانە شی دەکاتەوە, کە بارودۆخی میرنشینەکەمان بۆ ڕوون دەکەنەوە و ئەو مێژووەی لە ناخی ئەو دەقانەدایە هەڵیدەهێنجێنێت و یارمەتیمان دەدات بۆ ڕۆشنکردنەوە و تۆمارکردنی چەند لایەنێکی مێژووی نەتەوەکەمان.

ئامانجی توێژینەوەکە: ئەم توێژینەوەیە ئامانجی ئەوەیە دەقی ئەدەبی کوردی هاوبەشی پێ بکات لە نووسینەوەی مێژووی میرنشینێکی گرنگی کورد, ئەویش میرنشینی بابانە.

سنوور و کەرەستەی توێژینەوەکە: بریتییە لە بەیتی میللی و شیعری بەرزی شاعیرانی سەدەی هەژدە و نۆزدە و سەرەتای سەدەی بیست بە زاری گۆران و کرمانجی ناوەڕاست.

پێکهاتەی توێژینەوەکە: ئەم توێژینەوەیە لە دوو بەش پێکهاتووە:

بەشی یەکەم:

تەوەرەی یەکەم: بنەماڵەی بابانییەکان و دامەزراندنی میرنشینی بابان

تەوەرەی تەوەرەی دووەم: ڕووخاندنی میرنشین

بەشی دووەم:

تەوەرەی یەکەم: ڕەنگدانەوەی بارودۆخی میرنشینی بابان لە ئەدەبی میللیی کوردیدا

تەوەرەی دووەم: ڕەنگدانەوەی بارودۆخی میرنشینی بابان لە شیعری بەرزی کوردیدا

لە کۆتاییی توێژینەوەکەدا گرنگترین ئەو ئەنجامانەی پێی گەیشتووین, خستوومانەتە ڕوو.

**بەشی یەکەم:**

**تەوەرەی یەکەم: بنەماڵەی بابانییەکان و دامەزراندنی میرنشینی بابان**

وشەی بابان وەک چەمکێک, کە بووەتە ناوی ئەو بنەماڵە فەرمانڕەوایەی مێژووی کورد و دواتریش بووەتە ناوی میرنشینێک بۆچوونی جیاوازی لێ هاتووەتە کایەوە, بە جۆرێک:

١_ بۆچوونێک پێی وایە (فەقێ ئەحمەدی دارەشمانە) توانیویەتی خەڵکێکی زۆر لە دەوری خۆی کۆ بکاتەوە و ناسناوی (بەبە, بابە, باب)ی بۆ خۆی داناوە و کەسایەتی و پێگەی پێ بەرز بووەتەوە و دوای خۆی (سلێمان بەبە) لەسەر ڕێچکەی باوکی ڕۆیشتووە. (بابان, ١٩٧٦, ٣٥).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

٢_ ڕایەکی دیکە ئەوە دەخاتە ڕوو, کە میرەکانی بابان ((خۆیان بە بەگزادەی تیرەیەکی عێلی کرمانج داناوە گوایە ناویان (بەبە_بابان) بووە)). (قەفتان, ٢٠٠٤, ٣٠٣). خاوەنی ئەو ڕایە بۆچوونێکی دیکەش باس دەکات, کە وشەی بابان لە ((خانەدانی بەبەی پێشووی موکری وە یا ڕاستەوخۆ لە (بابە سولەیمان) ناوداری خانەوادەییەوە داهاتووە)). (قەفتان, ٢٠٠٤, ٣٠٣).

٣_ بۆچوونێکی دیکە بنەچەی وشەکە بۆ ئایینی یارسانی دەگەڕێنێتەوە و تیشک دەخاتە سەر ئەوەی ((پێدەچێت لە سەرەتاوە بابانەکانیش لە پێگەی ئایینییەوە ئەو پلەوپایەیان دەستکەوتبێت. (پیر نەزەر) یەکێک بووە لە میرانی بەرایی میرنشینەکە, بە پێشگری (پیر) ناوی هێنراوە)). (بابانزادە, ٢٠١٢, ١٤٨).

٤_ بۆچوونێک ئەوە ڕوون دەکاتەوە وشەی بابان بۆ ((میر (پیربۆداق) دەگەڕێتەوە کە دامەزرێنەری میرنشینەکەیە)). (محەمەد,٢٠٢٢, ١٢٤).

جگە لەم بۆچوونانە بۆچوونی دیکەش هەیە, هەریەکەیان ڕیشە و بنچینەی ناوی بابان بۆ وشەیەک دەگەڕێننەوە.

لەبەر ئەوەی میر (((بۆداق بەبە) سەرداری یەکەمی بابانە)) (قەفتان, ٢٠٠٤, ٣٠٣). بۆیە بووەتە ناوی بنەماڵە و ناوی میرنشینەکەش و لەو کاتەوە زیاتر ناوی بابان بڵاو بووەتەوە بەتایبەتی لەگەڵ ((سەرهەڵدانی دەوڵەتی صەفەویدا ٩٠٧ک/١٥٠١ز و وەرچەرخانی دەوڵەتی عوسمانی بە لای فراوانخوازیدا لە ڕۆژهەڵاتی ناوەڕاستدا دوای جەنگی چاڵدێران. ئیتر ئەم ناوچەیەش وەکو هەموو شوێنەکانی تری کوردستان لە ستراتیجی گشتی هەردو هێزی گەورە بایەخی پەیدا کرد. ناوی بابانیش تێکەڵاوی ڕووداوەکانی ناوچەکە بوو)) (ئەمین, ١٩٩٨, ٣٥)).

ڕووداوە سیاسییەکانی ناوچەکە و دەوروبەری کوردستانی ئەوسا ڕۆڵی هەبوو لەوەی ناوی بابان بڵاو ببێتەوە, بە جۆرێک بڵاوبوونەوەی ناوەکە لە ڕووی سەردەم و جوگرافیاوە ((لە سەدەی دەیەمی کۆچییەوە هەم وەکو ناوی ئێل بۆ هەندێ لەو تیر و هۆزانەی لە ناوچەکانی نێوان زێی بچووک و ڕوباری سیرواندا ئەژیان و هەم وەکو ناوی شوێن بۆ هەندێ لەو شوێنانەی کەوتبووە ئەم ناوچەیە وەکو: پشدەر, مەرگە, سورداش, سەرچنار, شارباژێڕ, شارەزور, قەرەداخ بەکارهاتووە)) (ئەمین, ١٩٩٨, ٣٥)).

کەواتە وشەی بابان کە بۆ بنەماڵەی بابان دەگەڕێتەوە, بەڵام ((بنج و بناوانی خێزانی بابانەکان نادیارە)) (بەسڕی, ٢٠٠٢, ١٦). واتە سەرەتا و سەرهەڵدانیان بە تەواوی دیار نییە. ئەم بنەماڵەیە بناغەدارێژەر و دامەزرێنەری میرنشینەکەن و بنەماڵە و خانەوادەی بابان ((سەرجەم پێنج خانەدان بوون, سەرەتای حوکمیان لە سەدەی نۆیەمی کۆچییەوە دەست پێکردووە)) (قەفتان, ٢٠٠٤, ٣٠٣). واتە لە کۆتاییەکانی سەدەی پازدە و سەرەتاکانی سەدەی شازدە لە چوارچێوەی قەوارەیەکی سیاسی ئەویش میرنشینە دەرکەوتوون. ئەم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

میرنشینە پێنج بنەماڵە فەرمانڕەواییان کردووە. هەر یەک ئەم بنەماڵانەش لە ڕووی شوێن و سەردەم و چەندێتی و چۆنییەتیی فەرمانڕەواییەوە لە یەکتر جیاواز بوون.

**بنەماڵەی یەکەم (١٥٠١_١٥١٦):**

میر بۆداق کوڕی ئەبدال بەگ دامەزرێنەر و یەکەم فەرمانڕەوای بنەماڵەی یەکەمی بابانەکانە. لە سەردەمی فەرمانڕەواییی ئەودا ((بناغەی میرنشینەکەی چەسپاندووە و هەوڵێکی زۆری داوە قەڵەمڕەوی بابانەکان بەرفراوان بکات و بە کەسێکی ئازا و نەبەرد و پیاوەتی و سەرکەوتوو وەسف کراوە)). (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٢٦). قەڵەمڕەوی میرنشین لە سەردەمی ئەم میرەدا لە ((گوندی دارەشمانەوە لە قەزای پشدەری لیوای سلێمانی دەستی پێکردووە و هێزە شەڕکەرەکانی کۆ کردووەتەوە بۆ دەستگرتن بەسەر ڕووبەرێکی فراوانی ناوچەکانی دەوروبەری)) (الوائلي, ٢٠١٢, ٧٤).

ئەو فراوانخوازییەی میر بووە هۆی ئەوەی ((مەڵبەندی لارجانی لە زەرزا ساند و سیوی لە سۆران جودا کردەوە و سندوسی لە قزڵباش پاک کردەوە و قەڵای مارانی ساز دایەوە و بە میر لیوای خۆی سپارد و هۆزەکانی موکری و بانەی_ بە خواهێشت و بەزۆری_ خستە بەر فەرمانەوە و شارباژێڕی لە دەست ئەردەڵان دەرێنا و خستیە سەر وڵاتی خۆیەوە و هەر مەڵبەندێ کە سەندبووی, کوێخا و گزیری سەر بە خۆی لێ دانان و تەپڵ و ئاڵای دادگەری و سەربەخۆیی, ئاوازەی دا و شەکایەوە و کەرکووکی سەر بە بەغداشی کردە باجدەری بابان و پاسەوانی لەسەر دانان)) (بەدلیسی, ٢٠٠٦, ٣٥٨). میر لە فراوانخوازییەکەی بەردەوام دەبێت و بە مەبەستی داگیرکردنی میرنشینی سۆران هێرش دەکاتە سەریان و میری میرنشینەکە هەڵدێت, بەڵام جارێکیان (پیر بۆداق لەگەڵ هەندێک لە پیاوەکانیدا دەچن بۆ ڕاو, سەیدی کوڕی شا عەلی هێرش دەکاتە سەریان و خۆی پیاوەکانی دەکوژێت لە ١٥١٤)) (الوائلي, ٢٠١٢, ٧٤).

لەبەر ئەوەی میر کوڕی نەبوو, بۆیە فەرمانڕەواییەکە بۆ برازاکەی ((بە ناوی میر بۆداق کوڕی ڕۆستەم بڕاوەتەوە)) (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٢٧)). ئەم میر بۆداقە میرێکی بێ دەسەڵات و بێ توانا بووە و نەیتوانیوە جێگەی مامی پڕ بکاتەوە, بۆیە ((لەبەر دەستەوەستانی, ئاغا و نۆکەرانی بەردەستی لە فەرمانی دەرچوونە دەر و لە پاش دوو ساڵ مەزنایەتیکردن پڕ لە کەمایەسی, لە داخان وە زگی دا و وەچەی بابان لە ئارادا نەما و نۆکەران جێیان گرتنەوە)). (بەدلیسی, ٢٠٠٦, ٣٥٩). بە مردنی ئەو میرە بنەماڵەی یەکەمی بابانییەکان کۆتایی هاتووە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**بنەماڵەی دووەم (١٥١٦_١٥١٩):**

دوای مردنی میر بۆداق کوڕی ڕۆستەم میرێکی دەرەوەی بنەماڵەی یەکەم دەسەڵات دەگرێتە دەست, ئەویش پیر نەزەر کوڕی بارامە. ئەم میرە دامەزرێنەری بنەماڵەی دووەمی بابانەکانە و میرێکی ئازاد و سەربەست و دادپەروەر و دەست کراوە بووە, لەبەر ئەوە ((هەموو ژێر دەستانی لە دەست و پێوەندییەوە هەتا سوپایی و ڕەشایی و بۆرە پیاو و بەناو و بێ ناو, لە دڵ و هەناوەوە خۆشیان ویستووە و سەرکەوتنی ئەویان لە خوا ویستووە)) (بەدلیسی, ٢٠٠٦, ٣٥٩) و لەگەڵ ئەوەشدا ئەم میرە سنووری میرنشینەکەی فراوان کردووە و ((کفری خستووەتە ژێر ڕکێفی خۆیەوە)). (حسین, ٢٠٠٠, ١١) و خستوویەتییە سەر میرنشینی بابان. بە مردنی ئەم میرە میرنشینەکە دەبێتە دوو بەش و هەر بەشێکی کوڕێکی فەرمانڕەوایی کردووە.

**بنەماڵەی سێیەم (١٥١٩_١٥٣٣):**

بە مردنی میر پیر نەزەر بنەماڵەی سێیەمی بابانییەکان دەسەڵات دەگرنە دەست و دامەزرێنەری ئەم بنەماڵەیە میر سلێمان کوڕی پیر نەزەرە, کە ناوچەیەکی گەورەی فەرمانڕەواییەکەی باوکی لە ژێر دەسەڵاتیدا بووە. لەگەڵ براکەی, کە ناوی میر ئیبراهیم بوو ((ماوەیەکی زۆر پێکەوە نێوان خۆش و دۆستی گیانی بوون. لە ئەنجامدا دوو زمان و کەتن گێڕان خۆیان دەناو خزاندن و لە یەکتریان ترازاندن و دۆستایەتی بوو بە دوژمنی و بەگژداچوونەوە)) (بەدلیسی, ٢٠٠٦, ٣٦٠). ئەم دوژمنایەتی و ململانێیە بەوە گەیشت ((میر سلێمان میر ئیبراهیمی لە ١٥٢٨ کوشت و بەشی ئەوی لە وڵاتی بابان خستە ژێر دەسەڵاتی خۆیەوە)) (الوائلي, ٢٠١٢, ١٢٨).

**بنەماڵەی چوارەم (١٥١٩_١٥٣٣):**

میر ئیبراهیم دامەزرێنەری بنەماڵەی چوارەمی بابانەکانە, سەردەمی ئەم میرەش هاوکاتە لەگەڵ بنەماڵەی سێیەمی بابانەکان, لەبەر ئەوەی بە مردنی پیر نەزەر میرایەتی بابان لەنێوان میر سلێمان و میر ئیبراهیم دابەش دەکرێت و میر ئیبراهیم ناوچەیەکی کەمتری لە میر ئیبراهیمی برای بەر دەکەوێت. لە سەرەتادا هەردووکیان بە ئاشتی و تەبایی ژیاون, بەڵام لەبەر ململانێ و ناکۆکیی نێوان هەردووکیان لە ساڵی ١٥٢٨ میر ئیبراهیم دەکوژرێت و سێ کوڕی لە پاش بەجێ دەمێنێت: ((حاجی شێخ و میرە و میر سولەیمان. حاجی شێخ لە پاش کوژرانی بابی, زێد و هەمەدەمی بەجێ هێشت و ڕووی کردە وڵاتی عەجەم و چووە شا تەهماسپ, بەڵام زۆر ڕووی خۆشی لە شا نەدی و بە نائومێدی گەڕایەوە)) (بەدلیسی, ٢٠٠٦, ٣٦٠). ئەم میرە میرێکی بەدەسەڵات و خاوەن هێز بووە و سێ جار هێرشی سەفەوییەکانی شکاندووە. ئەم میرە لە کاتی سەردانێکی بۆ بەغدا لە ڕێگەدا کەوتووەتە بۆسەی کوردانی ناوچەی مەرگە و کوشتوویانە (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٢٩). لەم شەڕەدا میرەی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

برایشی لەگەڵیدا کوژراوە و پاشان سلێمانی برای مردووە و دوای خۆی دوو کوڕی بەناوەکانی بۆداق و سارم بەجێ هێشتووە.

دوای کوژرانی حاجی شێخ، بۆداقی کوڕە گەورەی ((لەلایەن سوڵتان سلێمانی قانوونی کرایە فەرمانڕەوای میرنشینەکە و بە شێوازێکی ڕێکوپێک وڵاتی بەڕێوەبرد و یەکسانی و دادپەروەری بڵاو کردەوە)) (محەمەد، ٢٠٢٢، ١٢٩). دوای ماوەیەک حسێن بەگی کوڕی میر سلێمان داوای میرایەتی کردووە، بەڵام میر بۆداق ئامادە نەبووە دەستبەرداری دەسەڵاتەکەی ببێت، هەرچەندە حسێن بەگ بە یارمەتیی میرنشینی بادینان دەسەڵاتی گرتە دەست. لەو سەروبەندەدا لە لایەن عوسمانییەکانەوە بەڵێنی پێ درا و میرنشینەکەی پێ بەخشرایەوە (بەدلیسی، ٢٠٠٦، ٣٦١). لە بەرانبەردا حسێن بەگ چووە ئەستەنبوڵ و ئەویش متمانەی سوڵتان سلێمان قانوونی وەرگرت، بەڵام میر بۆداق ملکەچی لادان نەبوو لە میرایەتی، بۆیە سوڵتان فەرمانی بە بایەزید دا بۆداق بکوژێت و سەرەکەی بۆ سوڵتان بنرێت (الوائلي، ٢٠١٢، ١٢٨).

پاش کوژرانی میر بۆداق لە لایەن سوڵتانی عوسمانییەوە ((میر خدر بەگ کوڕی سلێمان بەگ فەرمانڕەوایەتیی میرنشینی بابانی لە لایەن سوڵتانی عوسمانییەوە پێدرا)) (محەمەد، ٢٠٢٢، ١٣١). ئەم میرە لەبەر ئەوەی تەمەنی بۆ میرایەتی بچووک بووە، لەبەر ئەوە دوای ئەوەی ((میرە بەگی موکری لە قزلباش هەڵگەڕاوە و هاتە بەر فەرمانی عوسمانی. ناوچەی مەرگە لە خدر بەگ سێندرایەوە و درا بە یەکێک لە کوڕانی و لەسەر ئەمە بۆ ماوەیەک شەڕ و هەرا لەنێوان خدر بەگ و میرە بەگ دەگەڕا، لەو بەینە خدر بەگ بەر مەرگ کەوت)) (بەدلیسی، ٢٠٠٦، ٣٦٤).

بە کۆتاییهاتنی سەردەمی خدر بەگ فەرمانڕەوایی بنەماڵەی چوارەمی بابان کۆتایی هاتووە و دواتر بە دەسەڵات گرتنەدەستی فەقێ ئەحمەدی دارەشمانە فەرمانڕەوایی بنەماڵەی پێنجەمی بابان دەست پێدەکات.

**بنەماڵەی پێنجەم (١٦٥٠_١٨٥١):**

فەقێ ئەحمەدی دارەشمانە بە دامەزرێنەری بنەماڵەی پێنجەمی بابان دادەنرێت و بەو سەرکەوتنەی بەسەر کوڕەکانی کاکەمیردا ناوچەی مەرگە و پشدەری یەک خستەوە و دەسەڵاتی خۆی بەسەردا سەپاند و ((میرنشینەکەیشی گوێزایەوە بۆ گوندی دارەشمانەی ناوچەی پشدەر)) (نازم بەگ، ٢٠١٢، ٢٣). کەواتە فەقێ ئەحمەد ناوەندی فەرمانڕەوایی بابانی لە مەرگەوە بۆ دارەشمانە گواستەوە و ((فەقێ ئەحمەد ڕۆژ بە ڕۆژ هێزی پەیدا کرد و دەستوپێوەندی زیاد کردن و چەند ئاوەدانییەکی خستە ژێر دەستەوە، بانگی بنەماڵەی بابان و زیندووبوونەوەی بە کوردستاندا بڵاو کردەوە)) (حوزنی، ٢٠١١، ٤٦٢).

فەقێ ئەحمەد میرێکی ئازا و دلێر بووە و لە ساڵی ١٦٦٣ لە چەند شەڕێکدا بەشداری کردووە و ئازایەتی و نەبەردیی خۆی نیشان داوە, کە بووەتە جێگەی سەرنجی دەسەڵاتدارانی عوسمانی و بەفەرمی گوندی دارەشمانە و ناوچەی پشدەریان پێ بەخشیوەتەوە. (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٣٢). فەقێ ئەحمەد جێگەی متمانەی عوسمانییەکان بووە, بۆیە ئەمە هاندەری بووە بۆ بەهێزبوونی دەسەڵاتەکەی و مەبەستە فراوانخوازییەکەی و ((لە بەشی ئێرانەوە ناوچەکانی گەورک و مەنگوڕ و مامش و وجاخ و هەروەها لە لایەکی تریشەوە ناوچەی بیتوێن هەتا دەگاتە کۆیسنجەق خستە ژێر دەسەڵاتی خۆیەوە, بۆ ئەمە قەت خوێنی نەدەرشت, چونکە لەبەر عەدالەت و کردەوەی شیرینییەوە خەڵکی خۆیان دەکرد بچنە ژێر سایە و دەسەڵاتییەوە)) (خەزنەدار, ٢٠١٤, ٣٧). فەقێ ئەحمەد سیاسەتێکی دادپەروەرانەی پەیڕەو دەکرد و لای خەڵک خۆشەویست بووە و خاوەنی ڕۆشنبیریی سەردەمی خۆی بووە, بە مردنی فەقێ ئەحمەد, بۆداقی کوڕی جێگەی گرتەوە.

میر بۆداق دوای باوکی دەسەڵات و فەرمانڕەوایی گرتە دەست و لە ئازایی و نەبەردی و دلێری و دادپەروەری هاوچەشنی باوکی بووە, بە جۆرێک ((پەیتا پەیتا خەڵکی و عەشائیری ئاکۆ و بلباس و ئالان و ماوەت هاتنە ژێر دەسەڵاتییەوە و بەمەش ڕۆژ بە ڕۆژ سنووری وڵاتەکەی و نفوزی خۆی پەرەی سەند)) (قەفتان, ١٩٦٩, ١٦). ئەم فراوانخوازییە وای کرد ((ناوەندی حوکمڕانی گواستەوە بۆ ماوەت)) (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٣٣).

میر بۆداق ئاگاداری بارودۆخی خەڵکی سەر بە میرنشینەکەی بوو بەو پێیەی ((زستانان لە دارەشمانە دائەنیشت..., بەڵام بەهاران و هاوینانی لە ماوەت ئەبردە سەر, نیازیش لەم کردەوەیەی تەنیا ئاووهەوا گۆڕین و خۆشەویستیی سروشت بوو, بەڵکو نیازی لەمە ئەوەش بوو ئاگای لە حاڵ و دۆخی میللەتەکەی بێت)) (قەفتان, ١٩٦٩, ١٧) بەم کارە سۆز و سەرنجی گەلەکەی بۆ خۆی ڕادەکێشا.

بە مردنی میر بۆداق, فەرمانڕەوایی کەوتە دەستی میر سلێمانی کوڕی, ئەم میرەش میرێکی ئازا و خاوەن دەسەڵات بووە و لە هەوڵی فراوانکردنی دەسەڵاتەکەی بووە, چونکە ((دوای ئەوەی دەستی بەسەر ناوچەکانی قزلجە و سرۆچکدا گرت, جڵەوی هەڵمەتەکانی ڕووەو قەرەداغ و بازیان و شارەزوور وەرگێڕا, بە داگیرکردنی ئەم ناوچانەش چوارچێوەی حوکمی خۆی فراوان کرد)) (نازم بەگ, ٢٠١٢, ٣٤). بە هۆی ئەوەی کەسایەتییەکی لێهاتوو و چاکساز بووە, بۆیە ((بابا سلێمان بە دامەزرێنەری ڕاستەقینەی میرنشینی بابان هەژمار دەکرێت)) (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٣٤). یەکێک لەو بۆچوونانەی کە باس لە بنچینەی ناوی بابان, وشەکە بۆ ئەم (بابا سلێمان)ە دەگەڕێنەوە.

هەوڵەکانی ئەم میرە بە ئاراستەی سەربەخۆخوازی بووە, دەیویست بگاتە دامودەزگایەکی سەربەخۆ. داگیرکردنی میرنشینی ئەردەڵانیش هەنگاوی یەکەمی ئەو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوەی کوردی

مەبەستە بووە و دەوڵەتی عوسمانی سڵی لێ دەکردەوە و دەترسا بەتەنیا هێرش بکاتە سەری (قەفتان, ٢٠٠٦, ١٠_١١). ئەم میرە نەک تەنیا لەگەڵ عوسمانییەکان, بەڵکو لەگەڵ ئێرانییەکانیش لە ململانێدا بوو, ئەمەش لە ڕوانگەیەکی ئایینی و مەزهەبییەوە بوو ((وای دەبینین خیانەتکاران بەرانبەر دین و سووکایەتی بە مەزهەب دەکەن, لەم خاڵەوە وای بۆ دەچوو دوژمنایەتیکردن و شەڕ لەگەڵکردنیان ئەرکێکی دینی سەرشانیەتی)) (نازم بەگ, ٢٠١٢, ٣٥). هۆکاری سەربەخۆخوازی و فراوانخوازی وای لەم میرە کرد پایتەخت و ناوەندی دەسەڵاتی لە ماوەتەوە بۆ قەڵاچوالان گواستەوە, لەبەر ئەوەی قەڵاچوالان شوێنێکی تا ڕادەیەک سەخت و دژواری هەبووە و دوژمن نەیتوانیوە بەئاسانی داگیری بکات.

دوای فەرمانڕەوایی سلێمان پاشا, چەندان میری دیکە درێژەیان بە فەرمانڕەوایی دەسەڵاتی بابانییەکان داوە, هەندێکیان میری خاوەن دەسەڵات و توانا بوون. جگە لە لایەنی سەربازی, خەریکی ئاوەدانکردنەوەی میرنشینەکە و فراوانخوازی بوون, هەروەها میری بێ توانا و لاوازیش هاتوونەتە سەر دەسەڵات, ئەمەش وای کردووە میرنشینی بابان چەند ساڵێک بکەوێتە ژێر دەسەڵاتی ڕاستەوخۆی عوسمانییەکان (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٣٩). هەرچی قەڵاچوالانی پایتەختە تازەکەی میرنشینە, ئەوا پتر لە سەد ساڵ مەڵبەندی میرنشینی بابان بووە, تا لە ساڵی ١٧٨٤ ئیبراهیم پاشا شاری سلێمانی ئاوا کرد و کردی بە مەڵبەندی میرنشین, قەڵاچوالان ڕووخێندرا و خەڵک داروپەردووی خانووەکانیان بۆ ئاواکردنی خانووە نوێیەکانیان لە سلێمانی هێنا (یوسف, ٢٠٠٢, ٥).

قەڵاچوالان سەرەڕای گرنگی قەڵاکەی و بایەخی شوێنەکەی, بەڵام هەندێک کەموکورتی هەبوو, چونکە لە شوێنێکی چەپەک و لاڕێ و دوور لە ڕێگای هاتوچۆ بوو, وزەی پەرەسەندن و گەورەبوونی نەبوو, نزیک ئێران و لە ژێر چەپۆکیدا بوو (بابان, ٢٠١٢, ٢٦_٢٧). ئەم هۆکارانە وای لە یەکێک لە میرەکانی بابان کرد بیر لە دروستکردنی شارێکی نوێ بکاتەوە بۆ کردنی بە پایتەختی میرنشینەکە, لەبەر ئەوە ئیبراهیم پاشا, کە بنیاتنەر و دروستکەری شاری سلێمانی بوو, سەردەمی منداڵی لەبەر چەند هۆیەکی ڕامیاری لە بەغدا ژیاوە, بۆیە ((لە شوێنێکی (دواکەوتووی وەک قەڵاچوالانی ئەوسای لە چاو بەغدای ئەو ڕۆژەدا) هەڵی نەکرد, لە ڕاستیدا دەشیویست ناو و شۆرەتێک بۆ خۆی و بۆ بنەماڵەکەی وەدەست بهێنێت ئەمانە بوون بە هۆی ئەوەی برایم پاشا قەڵاچوالان بەجێ بهێڵێت و بێ لەم دیو شاخی گۆیژەوە لە دامێنیدا لە نزیک دێی (مەڵکەندی)ی ئەوسادا لە ساڵی (١٧٨٤) شاری سلێمانی دروست بکات)) (بابان, ٢٠١٢, ٢٧).

دوای ئەوە شار فراوان بووە و ((دانیشتووانی قەڵاچوالان دوو هەزار ماڵ زیاتر دەبوون, خۆ ئەگەر نەڵێین گشتیان, دەڵێین زۆربەیان قەڵاچوانیان جێ هێشتووە و ئەوانیش دوای پاشا کەوتوون و هاتوونەتە سلێمانی, هیچ گومان لەوەشدا نییە, کە لەملاولاشەوە هەر خەڵکی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوەی کوردی

بۆ هاتووە)) (بابان, ٢٠١٢, ٤٢). بەم جۆرە شارەکە ئاوەدان کراوەتەوە و خانوو و مزگەوت و خانەقا و بازاڕ و لەشکرگا و بەندینخانە و بازاڕ و گەرماو ...ی تێدا دروست کراوە. لەوە بەدواوە بووەتە ناوەندی زانست و فێرکردن و ڕۆشنبیری و ئەدەب و سۆفیزم و میرەکانی بابان تا ڕووخاندنی میرنشینەکە تێیدا فەرمانڕەواییان کردووە.

**تەوەرەی دووەم: هۆیەکانی ڕووخاندنی میرنشینی بابان:**

چەند هۆیەک بۆ ڕووخاندنی میرنشینەکە هەبوون, ئەمەش بۆ دوو لایەن دابەش دەبن:

**أ_ هۆکارە ناوخۆییەکان:**

هەندێک لە هۆکارەکانی ڕووخاندنی میرنشینی بابان پەیوەست بوو بە ناوخۆی میرنشینەکە و ناکۆکیی نێوان میرەکان و بنەماڵەی بابانەکان.

١_ هەڵکەوتەی جوگرافیی میرنشین: سەرەڕای ئەوەی لە مێژووی میرنشینەکە و لە سەردەمی جیاوازدا چەند پایتەختێکی هەبووە, کە دواترینیان سلێمانی بوو. بەشێکی ئەم جێگۆڕکێیە لەبەر دەسەڵاتگرتنە دەست بووە لە لایەن پاشای تازە و هەروەها تا لە هێرشی دوژمن دوور بن, بەڵام لەگەڵ ئەوەشدا هەر لە مەترسیی دوژمن ڕزگاریان نەبووە, لەبەر ئەوەی شوێنی میرنشینەکە بە جۆرێک هەڵکەوتبوو, کەوتبووە نێوان هەردوو دەوڵەتی عوسمانی و ئێرانی.

٢_ناکۆکیی ناوخۆیی: لەگەڵ ئەوەی میرەکانی بابان, بەتایبەتیش میرەکانی دوایین بنەماڵە, هەموویان لە چوارچێوەی یەک خانەوادە بوون و خزم و کەسوکاری نزیکی یەکتری بوون, بەڵام لەگەڵ ئەوەشدا ململانێی توندیان لەگەڵ یەکتریدا هەبوو بۆ دەسەڵات گرتنە دەست و بەشێک لە میرەکان سوپای عوسمانی و ئێرانییان دەهێنایە سەر یەکتری و پیلانیان لە دژی یەکتری دەگێڕا بۆ ئەوەی فەرمانڕەوایی و کورسیی دەسەڵات بۆ خۆیان بێت, بۆ نموونە ئەو کاتەی مەحموود پاشای کوڕی عەبدولڕەحمان پاشای بابان خەریکی شەڕ بوو لەگەڵ محەمەد پاشای سۆران ((سلێمان بەگی برای مەحموود پاشا, دەستی خۆی وەشاند و هەندێک لە سوپای کاکی هەڵگێڕایەوە و هات لەسەر کورسیی براکەی دانیشت)) (بابان, ٢٠١٢, ٨٣).

٣_ بایەخنەدان بە پێویست بە لایەنی سەربازی: هەرچەندە لەگەڵ دروستکردنی شاری سلێمانی سەربازگە دروست کراوە, بەڵام زۆربەی میرەکان وەک پێویست بایەخیان بە بواری سەربازی نەداوە بە مەبەستی بەرگریکردن لە میرنشینەکە. تەنیا ((ئەحمەد پاشای بابان نەبێت کە ئەویش لە کۆتاییەکانی سەردەمی میرنشینەکە بووە و پێڕانەگەیشت سوپایەکی تۆکمەی تەواو بەرهەڵستی سوپای عوسمانی پێ بکات, کە هەرچەندە مەشق و زانستی نوێی جەنگی فێری سوپاکەی کردبوو)) (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٨٧).

ب_هۆکارە دەرەکییەکان:

جگە لە هۆکارە ناوخۆییەکانی ناو میرنشینەکە هەندێک هۆکاری دەرەوەی میرنشینەکە هەبوو، کە هۆکاری سەرەکی بوون بۆ ڕووخاندنی میرنشینەکە و دەسەڵاتیان.

١_ پەیاننامەی دووەمی ئەرزڕۆم: ئەم پەیاننامەیە لەنێوان نوێنەرانی هەردوو عوسمانی و ئێرانی و بە چاودێری دەوڵەتە گەورەکانی: بەریتانیا و ڕووسیا ئیمزا کرا (ئەمین، ١٩٩٨، ١٩٩). ئەم پەیاننامەیە لە هەشت مادده پێکهاتبوو بە مەبەستی دیاریکردنی سنووری نێوان هەردوو دەوڵەتەکە و لە ماددەی دووەمی پەیاننامەکەدا هاتووە: ((دەوڵەتی ئێران بەتوندی بەڵین دەدا کە واز لە هەموو خواستەکانی حۆی بەرانبەر شار و ویلایەتی سلێمانی بهێنێت)) (ئەمین، ١٩٩٨، ٢٥٨). بەمەش کاربەدەستانی ئێرانی یارمەتیی میرەکانی بابانیان نەدەدا، کە پێشتر چەندان جار هانایان بۆ بردبوون.

٢_ سیاسەتی بەناوەندیکردنی دەسەڵات: میرنشینە کوردییەکان لەنێویشاندا میرنشینی بابان سەر بە والیی بەغدا و دەوڵەتی عوسمانی بوو و لەسەر پاشای بابان پێویست بوو لە کاتی شەڕدا پاڵپشتی والیی بەغدا بێت و ((سوپا بنێریت بۆ یارمەتیدانی کە داوای دەکرد، ساڵە و ساڵیش شتێک خەرجی بۆ ئاستانە بڕوات)) (بابان، ٢٠١٢، ٦٧). کەواتە میرنشینەکان جۆرێک لە سەربەخۆییان هەبوو، بەڵام دوای ئەوەی دەوڵەتی عوسمانی پەیڕەوی سیاسەتی بەناوەندیکردنی دەسەڵاتی کرد و ئەمەش بووە هۆی کۆتاییهێنان بە میرنشینەکان.

٣_ململانێی میرنشینی بابان لەگەڵ میرنشینە کوردییەکانی دیکە: لەبەر ئەوەی قەڵەمڕەوی میرنشینی بابان هاوسنوور بوو لەگەڵ میرنشینە کوردییەکانی دیکە بە تایبەتی ((ململانێ و شەڕی نێوان میرنشینی بابان لەگەڵ میرنشینی ئەردەڵان بووە هۆی لاوازی زیاتری میرنشینەکە)) (محەمەد، ٢٠٢٢، ١٨٨). هەروەها عەبدولڕەحمان پاشا هێرشی کردە سەر میرنشینی بادینان و تەفروتونای کرد، (خەسرەو، ١٩٥٧، ٢٦).

هەموو ئەو هۆکارانە وای کرد میرنشینەکە بەرەو بێهێزی بڕوات و والیی بەغدا هێرش بکاتە سەر میرنشینەکە و لەو کاتەدا ئەحمەد پاشا ڕای کرد بۆ ئێران و لەوێوە چوو بۆ ئەستەنبوڵ و پاشان عەبدوڵڵا پاشا کراوە بە قائمقامی سلێمانی و دوای چوار ساڵ بۆ بەغدا بانگ کراوە و بۆ ئەستەنبوڵ نێردراوە (قەفتان، ٢٠٠٩، ٢٤٤). بە جۆرە میرنشینەکە لە لایەن عوسمانییەکانەوە ڕووخێنراوە و سلێمانی کەوتە ژێر دەسەڵاتی ڕاستەوخۆی عوسمانییەکان و دوای عەبدوڵڵا پاشا، دەسەڵاتداری تورک بوونەتە فەرمانڕەوای شارەکە.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**بەشی دووەم:**

کەسـایەتییە دیارەکـان و ڕووداوە گرنگەکـانی مێـژووی کـورد جـگە لەوەی لە لایەن مێژوونووسـانەوە لە دووتـوێی کتێبە مێژووییەکـان تۆمـار کـراون, بەڵام بەشـێکی ئەو کەسـایەتی و ڕووداوانە چـوونەتە نێـو دیـوانی شـیعر و دێـڕی شـاعیران و بەیتـی بەیتبێـژان و بوونەتە بابەتی چیرۆک و ڕۆمان و شانۆش. واتە ئەو کەسایەتی و ڕووداوانە بوونەتە کەرەستە و نـاوەڕۆکی دەقە ئەدەبییەکـانی میللەتەکەمـان و لە ڕێـگەی ئەو دەقە ئەدەبییـانەوە بە بەشێک لە مێژووی نەتەوەکەمان ئاشنا دەبین.

ئەدەبـی کـوردی لە کـۆنەوە جـگە لە ئەرکـی ئیسـتاتیکی و چێژبەخشـین, کۆمەڵێک ئەرکی دیکەشی بەجێ هێناوە یان کۆمەڵێک ئەرکی دیکەی پێ سپێردراوە, یەکێـک لەو ئەرکـانەش تۆمـارکردنی ڕووداوەکـانی مێـژوو و پیشـاندانی کەسـایەتییە مێژووییەکانی کورد بووە, کە ئەمەش بووەتە تۆمارێک دەکرێت لەوێوە سەیری ئەو دەقە ئەدەبییانە بکەین و هەندێک لە ڕووداوەکانی لێوە هەڵبهێنجێنین.

بارودۆخی میرنشینی بابان بووەتە کەرەستە و بابەتی زۆر ژانری ئەدەبی کوردی, بە ئەدەبی فۆلکلۆر و میللی و بەرزیشەوە. هەندێک لە شاعیرانمان لە ڕۆژگاری میرنشینەکە ژیـاون و ڕووداوەکـانی ئەوێ ڕۆژیـان تـێکەڵ بە هەسـت و سـۆز و خەیـاڵی شـاعیرانەی خۆیـان کردووە و لە دوو توێی دیوانەکانیان ڕەنگرێژیان کردووە و هەندێک لەو شاعیر و نووسەرانە لە دوای سـەردەمی بابانەکـان هـاتوون بەشـێک لەو ڕووداو و کەسـایەتییانەی میرنشـینەکەیان لە شیعرەکانیان یادداشت کردووە, لەوانە: حەمدی, قانع..هتد.

لە فۆلکلـۆری کوردیـدا: بەیتـی کـاکەمیر و کـاکەشێخ لە بەشـێک لە مێـژووی بابانەکـان دەدوێت و سـەبارەت بە ژانـری چیرۆک دەکرێت ئـامـاژە بە چیرۆکـی (دوانـزە سـوارە مەریوان) و (مەحموود ئاغای شیوەکەڵ)ی پیرەمێرد و (مـامە یـارە)ی جەمـال بابـان بـدەین و لە شانۆنامەش شانۆنامەی (فەقێ ئەحمەدی دارەشمانە)ی تەڵعەت سامان نموونەیەکی بەرچاوە.

**تەوەرەی یەکەم: ڕەنگدانەوەی بارودۆخی میرنشینی لە ئەدەبی میللیی کوردیدا:**

مەبەست لە ئەدەبی میللی ((ئەو ئەدەبەیە, کە بە شێوەیەکی ئاسان ئامادە کراوە, لە تێگەیشـتنی زۆریـنەی خەڵکـی نـزیکە, سـەرزاری بێـت, یـان نووسـراو, خـاوەنەکەی ڕۆژگارەکەی دیارە, بە فۆڕمی جۆراوجۆر گوزارشت لە پێویستییەکانی کۆمەڵگە دەکات)) (عەبـدوڵلا, ٢٠١٤, ٩٣) ئەدەبـی خـاوەنەکەی دیـارە و شـەقڵی سـەردەم و کـاتی هـاتنە ئـارای دەقەکەی پێوە دیارە. واتە دەبێتە بەڵگەی ڕووداوەکانی سەردەمی خۆی لە ڕووی شوێنیشەوە کـاریگەریی نـاوچە و دیـالێکتی نـاوچەکەی پێوە دەبینرێت. زمـانی نووسـینی ئەم فـۆڕمە ئەدەبییە زمانێکی ئاسانە و زۆرینەی خەڵک تێی دەگەن, لەمەوە ئەدەبی بەرز جیا دەبێتەوە, چـونکە ئەو وردەکـاری و چنیـنە نـاوازەیەی لە دەقەکـانی ئەدەبـی بەرزدا هەیە لە ئەدەبـی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

میللیدا بەرچاو ناکەوێت. لەگەڵ ئەوەشدا ئەدەبی میللی بەشێکی گرنگی ئەدەبی نەتەوە پێکدەهێنێت و زۆر لایەنی مێژوویی ئەو سەردەم و بارودۆخەی تێدا هاتووەتە ئاراوە بۆمان روون دەکاتەوە.

یەکێک لەو ژانرانەی ئەدەبی میللی, کە گرنگییەکی زۆری هەیە, بەیتە. ئەم ژانرە وەک ژانرێکی هونەرێکی شیعری خۆماڵییە ((زمانی میللییە و ڕستەی ساکارە و زۆربەی خەڵک تێی دەگات, کێشی خۆماڵی (سیلاب)ە و قافیەی ڕەنگاوڕەنگە و لەسەر بنجی بەند (کۆپلە) دادەمەزرێت)) (خەزنەدار, ٢٠١٠, ١٩١). بە هۆی ئەوەی زمانی دەربڕینی سادەیە, بۆیە ((هیی سەردەمی بەر لە سەرهەڵدانی ئەدەبیاتی هونەری بەرزە)) (عەبدوڵلا, ٢٠١٤, ١٩١).

یەکێک لەو بەیتانەی بووەتە تۆمارێکی گرنگی بارودۆخی سەردەمی بابانەکان, بەیتی (ئەوڕەحمان پاشای بابان)ە, کە خاوەنەکەی (عەلی بەردەشانی)یە (١٧٦٧_١٨٠٩). ئەم بەیتە میللییە لە ڕووی قەوارەوە زیاتر لە (٢٩٤) دێڕە و بە زمانێکی سادە و تا ڕادەیەک ناوچەیی نووسراوە. لە ڕووی کێشەوە لەسەر کێشی خۆماڵی (٧ بڕگەیی)یە و سەرواى ڕەنگاوڕەنگە. لە ڕووی ناوەڕۆکەوە ((بەتەواوی ئاوێنەی دەوری بابانە, هەر ئەوە نییە کە تەنیا لە ڕووی ڕووداو و شەڕ و کارەساتی ڕۆژانە دەرخستن و نەخشە کێشانەوە بووبێتە ئاوێنە, بەڵکو لە ڕووی بیروڕا و جۆری بیرکردنەوە و هەستی خەڵکی دەربڕین و خستنە ڕووی مەسەلە گرنگەکانی سەردەمیشەوە)) (ڕەسووڵ, ١٩٨٠, ٥٥).

بە سەرنجدان و وردبوونەوە لەو بەیتەدا, چەند گۆشەیەکی سەردەمی فەرمانڕەوایی عەبدولڕەحمان پاشامان پیشان دەدات, کە بەردەشانی خۆی لەو سەردەمەدا ژیاوە.

بەردەشانی لە سەرەتای بەیتەکەدا جگە لەوەی خۆی دەناسێنێت, لەگەڵ ئەوەشدا وەسفی پاشا دەکات:

ئەزم عەلی بەردەشانی
لەنگم نەکەی لە زمانی
بەیتێ دەڵێم بە ڕەوانی
مەدحی پاشای کوردستانی (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٢٢_٢٢٣)

ئەم وەسفەی بەردەشانی بۆ عەبدولڕەحمان پاشا کردوویەتی لەوەوە هاتووە ((ئەم میرە بەهێزترین و ئازاترین میری بابان بوو)) (بابان, ٢٠١٢, ٧٣). هەروەها ئەم میرە هەردەم ویستی فراوانخوازی هەبووە و هەوڵی داوە زۆرترین ڕووبەر بخاتە ژێر قەڵەمڕەوەکەیەوە.

بەردەشانی زیاتر مەبەستەکەی ڕوون دەکاتەوە و ئەو پاشایەمان پێدەناسێنێت:

مەردە عەبدولڕەحمان پاشا
پاشای بەبان, جیهانگیری



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ڕەنگ ڕۆستەمی, زاڵی پیری

لەنێوان میران, پاشا میری (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٢٣)

خاوەنی بەیت عەبدولڕەحمان پاشا لە ئازایەتیدا بە ڕۆمی زاڵ دەیچوێنێت, ((ئەم پاشا گەورەیە لە هەرە پاشا گەورەکانی میرنشینی بابان دەژمێردرێت, کە ناوی بە زرنگی و نیشتمانپەروەری دەرکردووە)) (خەسرەو, ١٩٥٨, ٢٦) و ئەم میرە لە ساڵی ((١٧٨٩ پلەی میری میرانی پێ بەخشرا)) (بابان, ٢٠١٢, ٧٤), بۆیە بەردەشانی بەو چەشنە دەریدەخات کە لەناو میرەکان دیارە.

بەردەشانی خۆی وەک ئامۆژگاریکەرێکی پاشا دەردەخات, کە پاشا لە بەغدا یاخی ببێت, چونکە والیی بەغدا چوار ساڵ پاشای لە بەغدا هێشتبووەوە, بۆیە بەردەشانی پێی دەڵێت گوێ لە ڕاوێژی ئەو بگرێت:

تەحا بە ڕا و تەگبیری

ڕانابوێرم بە فەقیری

ناکەم خزمەتی وەزیری

نانی دەستێنم بە شیری (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٢٣)

ئەمە جۆرە هاندانێکە بۆ ئەوەی پاشا لە بەغدا دوور بکەوێتەوە و زیاتر سەربەخۆیی بپارێزێت و گرنگیی بە میرنشینەکەی بدات. لەو سەروبەندە و لە ساڵی ١٨٠٤ لەسەر داوای والیی بەغدا, عەبدولڕەحمان پاشا بە سوپاکەیەوە ڕووی کردووەتە بەسرە و زوبێر بۆ بەرەنگاربوونەوە جووڵانەوەی وەهابییەکان, هەرچەندە زۆربەی سوپاکە لە گەرما و تێنوێتییەدا خنکان, بەڵام بەسەرکەوتوویی بۆ سلێمانی گەڕایەوە و نەچووە لای والی (بابان, ٢٠١٢, ٧٤).

بەردەشانی ئەم هەڵوێستەی پاشا بەرز دەنرخێنێت و بە جۆرێک لە یاخیبوون و سەربەخۆخوازی دادەنێت:

یاغی دەبم ئینشائەڵڵا

تەوەکول و تەعالەڵڵا

ئافەرین و بارەکەڵڵا

هەی کورە بەبەینە هەڵڵا (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٢٣)

لەو کاتەی عەبدولڕەحمان پاشا و سەلیم بەگی برای بۆ حیللە نێردراون و لەوێ دەست بەسەر کرابوون, محەمەد پاشا فەرمانڕەوایی کۆیە و هەریری پێ درابوو. عەبدولڕەحمان پاشا ئەمەی پێ ناخۆش بوو, بۆیە لە هەلێک دەگەڕا تا لەوی ببات, ئەوە بوو والی داوا لە عەبدولڕەحمان دەکات لە کەرکووک ئامادە بێت, ئەویش ((بە هێزەکانییەوە لە مەنزڵگەی بەت (بەط)ی نزیکی خورماتوو, کە باریان لێ خست, هێرشی بردە سەر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

محەمەد پاشای ناوبراو و تاقمەکەی, محەمەد پاشای لەگەڵ گەورە پیاویدا کوشت)) (نازم بەگ, ٢٠١٢, ٢٠٤_٢٠٥). بەردەشانی بەو جۆرە ئەو ڕووداوە دەگێڕێتەوە:

بەبە هاتن بە لمێشت
غیرەتیان دەبەست لە پشت
حەمەد بەگی کۆییان گوشت
دەستی لە بەغدایە شووشت
کوشتنی بە چ قەرار بوو
پاشای بەبان سەردار (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٢٤)

لەم شەڕەدا محەمەد پاشای کۆیە نەک هەر خۆی و پیاوەکانی لەناو چوون, بەڵکو ((هێزەکەشی زۆر بەخراپی تێکشکاند ... هەموو کەلوپەلێکی سەفەر و چەک و چۆڵێکی جەنگی لێ برا (نازم بەگ, ٢٠١٢, ٢٠٥). بەردەشانی بەم چەشنە ڕووداوەکە دەخاتە ڕوو:

کۆیی گیران کێ هەڵات
لەوان کۆیی دە بەدبەخت
خەلاس ناکەن ڕوحی سەخت
ئەسپ و ئێستر ڕەشمە ڕەخت
کەلەپوور و ماڵی نەغد
وەرگیران نەخت بە نەخت (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٢٥)

ئەم ڕووداوە بووە هۆی ئەوەی والیی بەغدا سوپا بنێرێتە سەر عەبدولڕەحمان پاشا, بۆیە ((ئەویش خۆی بۆ ئامادە کرد لە دەربەندی بازیاندا, هەرواش بوو, چەند ڕۆژێکی نەبرد سوپای عەلی پاشا هات و خالید بەگی برای برایم پاشا و ئامۆزای ئەوڕەحمان پاشا خۆی لەگەڵیاندا, لەوێشدا شەڕێکی گەرم هەڵگیرسا, ئەوڕەحمان پاشا بۆ ئەوەی زیاتر خەڵک نەدا بە کوشت و وڵات وێران نەبێن بەرەو سلێمانی گەڕایەوە و لەوێوە بۆ سنە و میرنشینی بابان بەم جۆرە درایە دەست خالید پاشا)) (بابان, ٢٠١٢, ٧٤). بەم جۆرە بەردەشانی لەسەر زاری والیی بەغدا باسی دەسەڵات گرتنە دەستی خالید پاشا دەکات:

یا خودای ئەوەل و ئاخیرەتێ
خالید پاشان بۆ بخەلەتێ
دایدەنێین بە حاکمی دەوڵەتێ
ئەو لێی دەبینێ فرسەتێ (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٢٧)

بەردەشانی باسی ئەو کوشتارە زۆرە دەکات, کە سوپای والیی بەغدا و خالید خستیانە ناو خەڵکەوە:

وا نابێ فێڵی وەزیران



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

چەند کەسی کوشتن بە شیران
شیران نەیکردن قوتار
پیاوی کۆم و پیر و خوار    (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٣١)

ئەم شەڕ و کوشتارە زۆرە لە تۆڵەی ئەو شکستە گەورەیە بوو, کە سوپای عەبدولڕەحمان پاشا تووشی سوپای والیی کردووە لە پردێ, بۆیە بەردەشانی لە باسی ئەو شەڕەدا  و زیانی دوژمن دەڵێت:

لێی بە قڕ چوو هەزار کەس
هەزار کەس لێی بوو بە قڕ
لە زێیەی دابوو بێ بڕ
نقومبوون وەک کدووی خڕ    (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٢٩)

شکستی عوسمانییەکان بە جۆرێک عەبدولڕەحمان پاشا ((بەشێکی گەورەی لێ لەناوبردن و ئەوانەی دیکەش پەرش و بڵاو بوونەوە و هەڵاتن. زۆربەی هەڵاتووەکانیش کە خۆیان بە ئاوی زێ دا ژێر ئاو کەوتن)) (نازم بەگ, ٢٠١٢, ٢٠٨).

ئەنجامی ئەو شکستە هێرشی عوسمانییەکانی بە هاوکاری خالید پاشا بۆ عەبدولڕەحمان پاشا لێ هاتە کایەوە:

لەشکر دەشکا خوار و ژوور
بەجێی هێشتن کەلەپوور
ئینتیقامی پردی سوور
ئینتیقامی شا و میران    (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٣١)

دوای ئەو شکستە, عەبدولڕەحمان گەیشتە سنە و گوزەرانی دابین کرا زیاتر لە جارێک نێردراو ڕەوانەی لای عەلی پاشا کرا, تکاکاری بوون پلەوپایە و فەرمانڕەوایی بۆ عەبدولڕەحمان پاشا بگێڕێتەوە, بەڵام عەلی پاشا ڕەت کردەوە. بەردەشانی لەسەر زاری فەرمانڕەوای ئەوسای ئێران دەڵێت:

پیاوی دەنێرمە ڕەجایە
خزمەت وەزیری بەغدایە
پیاوی هاتووە بە موتڵەق
گەییە کن شای دەقاودەق
شام! بۆت بکەم قسەی هەق
وەزیر وەکو بەردی ڕەق    (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٣٣)

بەردەشانی جگە لە باسی عەبدولڕەحمان باسی سەلیم بەگی برایشی دەکات, کە لەو ڕۆژگارە ڕۆڵی هەبووە:

سەلیم بەگ میری میران

پەسەندی شا و وەزیران

چەند کەسی کوشتن بە شیران

ڕوو وەرناگێڕێ لە تیران (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٣٩)

بەردەشانی باس لە کوژرانی سەلیم بەگ لە شەڕێکدا دەکات و سەرەخۆشی لە عەبدولڕەحمان پاشا دەکات:

ئەی هاوار میرمان ئەنگوات

پاشا سەرت سەلامەت (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ٢٣٩)

بەردەشانی لە ڕێگەی بەیتی ئەوڕەحمان پاشای بابان هەندێک گۆشەی ژیانی عەبدولڕەحمان پاشا و سەردەمەکەی و بارودۆخی میرنیشنەکەیمان پیشان دەدات, هەرچەند زیاتر جەختی لەسەر عەبدولڕەحمان پاشا کردووە, هەر ئەمە وای کردووە لە بەیتێکی دیکەشدا بە ناوی (ڕاوێ پاشای) باسی چوونە ڕاوی عەبدولڕەحمان پاشا دەکات و لە دوورەوە شینە شاهۆی دیوە:

ڕەحمان پاشا خۆی سەرڕاوە

لە دوورەوەی دەدین شاوە (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ١٢٠)

بەردەشانی باسی خانەدانی و سورچاکی پاشا دەکات:

هات بەیداغ و تەپڵ و بازی

پێنجسەد سواری دەکارسازی

کێ مەردە بە خۆی دەنازی

پاشا پێی دەکات ڕمبازی (بەردەشانی, ٢٠٠٦, ١١٧)

ئەم بەیتەش هەندێک لایەنی دیکەی ژیانی عەبدولڕەحمان پاشای لە ئاوێنەی ئەدەبی کوردی بۆ خستینە پێش چاو و کەمێک ئەو کەسایەتییەی پێ ئاشنا کردین.

**تەوەرەی دووەم: ڕەنگدانەوەی بارودۆخی بابان لە شیعری بەرزی کوردیدا:**

شاعیرانی کورد ئەوەندەی بۆیان لوابێت لە دووتوێی دیوان و لە چوارچێوەی دەقە شیعرەکانیاندا باسی سەردەمەکەی خۆیان کردووە. ئەگەر شیعری کوردی لە سێ سەدەی ڕابردوو بە نموونە وەربگرین, دەبینین زۆر ڕووداوی مێژوویی ئەو ڕۆژگارانەی بۆ تۆمار کردووین, بە جۆرێک ((ئەگەر بڕیار بێت پشت بە سەرچاوەیەکی بەهێزی مێژووی کۆنمان ببەستین, دەبێت شیعری کلاسیکی بخەینە بەرایەوە, لەنێو هەر دیوانێکدا مێژووی کۆمەڵایەتی و سیاسی و ئەدەبی کەموزۆر بەرچاو دەکەوێت)) (عەبدوڵلا, ٢٠٢٢, ٦). لەبەر ئەوە دیوانی شاعیرانمان دەتوانن ڕۆڵیان لە ڕوونکردنەوەی ڕووداوەکانی مێژووی میللەتەکەماندا هەبێت و بۆشایی و کەلێنێک لە مێژوومانددا پڕ بکەنەوە. لە کاتێکدا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

بەشێک لەو شاعیرانە لەناو ڕووداوەکان یان لە نزیکەوە ئاگاداریی ئەو ڕووداوانە بوون و هاوسەردەمیان بوونە و نەیانتوانیوە لە ئاستیاندا بێ هەڵوێست بن, بۆیە هەستی خۆیان بە شیعر دەربڕیوە, بەڵام ئەوەی باسیان کردووە گێڕانەوەیەکی ڕووتی مێژوو نییە, بەڵکو شیعرەکانیان بە ڕەنگی ڕووداوەکانی ئەو ڕۆژگارە ڕەنگرێژ کردووە.

بارودۆخی سەردەمی میرنشینی بابان بووەتە هەوێنی چەندان پارچە شیعری شاعیرانی ئەو قۆناغەی ئەدەبی کوردی و زۆر وێنەی ئەو ڕۆژگارەمان پیشان دەدەن. میرەکانی بابان لە پاڵ ئەو هەموو ناکۆکی و ململانێی ناوخۆیی و ئەو هەموو شەڕانەی لەگەڵ سوپای عوسمانی و ئێرانیدا کردوویانە, بەڵام بەپێی توانای خۆیان و بارودۆخی ئەو سەردەمە ((هەر میرێکی بابان هاتبێت خزمەتی مامۆستا و پیاوی ئایینی و زانایانی لە پێش هەموو شتێکەوە داناوە)) (بابان, ٢٠١٢, ١٠٥). بۆ ئەم مەبەستەش مزگەوت و حوجرەیان کردووە و مووچە و بژێویان بۆ مەلا و مامۆستا و فەقێیەکان دابین کردووە و تەنانەت مامۆستایان لە شوێنەکانی دیکەوە بۆ وانەگوتنەوە هێناوە. ئەمە بووەتە نەریتێک و ((نەوە بە دوای نەوەی میرانی بابان ئەم ڕەوشتەیان پیادە و پەیڕەو کردووە, جا بە هەر شێوەیەک بووبێت, چۆن بۆیان گونجابێت, بوە شێوەیەکی گشتی ڕۆژ بە ڕۆژ پەرەیان بەم ڕەوشە داوە)) (سەید قادر, ٢٠٢١, ٥١).

ئەم ڕەفتار و ڕەوشتەی بابانییەکان وای کردووە شاعیرانی ئەو سەردەمە ئەو نەریتە بەرز بنرخێنن و ستایشی میرەکان بکەن, بۆیە حاجی قادر (١٨١٦_١٨٩٧) ستایشی میری میرنشینەکانی کوردستان دەکات:

حاکم و میرەکانی کوردستان      هەر لە بۆتانەوە هەتا بابان

یەک بە یەک حافیزی شەریعەت بوون      سەییدی قەوم و شێخی میللەت بوون

(حاجی قادر, ١٧٠٧, ١٨١)

شێخ ڕەزا (١٨٣٦/١٨٣٧_١٩١٠) لە ستایشی میرانی باباندا دەڵێت:

سائیل بە غینا نائیل ئەکا بەخششی کەمتان

ئالی بەبە یاخوا نەڕزێ دەستی کەرەمتان

(شێخ ڕەزا, ٢٠١٠, ٨٦)

دڵسۆزی و پەرۆشیی میرانی بابان بۆ زانایان و بایەخدانیان بە زانست و فێربوون وای کردووە خوێندەوار و زانستخواز لە میرنشینەکەدا زۆر بن, لەبەر ئەوە نالی لە وەسفی پایتەختی میرشینەکەدا دەڵێت:

ئەهلێکی وای هەیە هەموو ئەهلی دانشن

هەم نازیمی عوقوودن و هەم نازیری ئوموور (نالی, ١٣٨٩, ١٩٣)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ئەم بایەخدانانەی میرەکان بووەتە هۆکارێک شاعیران تێکەڵ ڕووداوەکانی ڕۆژگاری خۆیان ببن و ئەمەش لە شیعرەکانیان ڕەنگی داوەتەوە, چونکە هەندێک شاعیرانی سەردەمی بابان بەتایبەتی سالم و کوردی, کە ئامۆزای یەکدین و ڕووداوەکانی میرنشینەکە کاریگەریی ڕاستەوخۆی بەسەریانەوە هەبوو, چونکە بنەماڵەکەیان ((دەستڕۆیشتوو بوون و هەمیشە لە دەسەڵات و لە بابانەکانەوە نزیک بوون)) (دەشتی, ٢٠٢١, ١٣). نەک هەر هێندە, بەڵکو کوردی سەرۆکێکی بەڕێوەبەر و بەرپرسیاری دەسەڵاتی بابان بووە لە قزڵجە, هەروەک سالمی ئامۆزای کوردیش بە وەها کارێک بووە لە شیوەکەڵ (مستەفا, ٢٠١٠, ٢٨٩).

کەواتە شاعیران ئەو ڕۆژگارە ئاوێتەی ڕووداوەکانی نیشتمانەکەیان بووبوون و بە شیعر زۆر لایەنی ئەو سەردەمەیان بۆ دەرخستووین.

١_ عەبدولڕەحمان پاشای بابان: ئەم میرەی بابان میرێکی سەرکەوتوو و سەربەخۆخواز بووە, بۆیە ((داوای لە بابی عالیی ئەستەنبوڵ کرد لە جیاتی بەغدا ڕاستەوخۆ باج بە ئەستەنبوڵ بدات)) (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٧٠) ئەمە واتە لە ژێر فەرمانی والیی بەغدا نەبێت, لەبەر ئەوە ئەم ویستە سەربەخۆخوازییە وای کردووە ((گێچەڵی زۆری پێ بکەن و شەڕ و ڕووداوی زۆر سەخت و خوێناوی لە ناوچەی بابان ڕوو بدات)) (حەمە باقی, ٢٠٠٢, ٤٢). لێهاتوویی عەبدولڕەحمان پاشا وای کردووە لەناو زنجیرەی میرەکانی بابان بە یەکێک لە درەوشاوەترین سەردەمەکانی بابان دابنرێت.

والیی بەغدا ئەم میرەی لە ساڵی ١٧٩٧ بانگ کرد بۆ بەغدا و چوار ساڵ لەوێ هێشتییەوە و لەوێوە ناردیە حیللە و دەستبەسەری کرد (بابان, ٢٠١٢, ٧٤). ئەو کاتەی عەبدولڕەحمان پاشا لە حیللە بوو, ڕەنجووری (١٧٣٤_١٨٠١) ئەم ڕووداوەی تۆمار کردووە:

شەهزادێ جە نەسل بەگزادەی بابان
جە نەوەی ئۆجاغ مالیک ڕیقابان
والی ویلایەت گشت کوردستانەن
ئیسم شەریفش عەبدوڕەحمانەن
ستارەی بەختش قیران نەحسەن
جە حیلەی دنیا نە حیللە حەبسەن (ڕەنجووری, ١٩٨٣, ٢٠٦)

شاعیر باس لە مەزنیی پاشا دەکات بە نەوەی بەگزادەی بابان و والیی کوردستان ناوی دەهێنێت, لەبەر ئەوەی هەمیشە هەوڵی داوە میرنشینەکەی سەربەخۆ و بەرفراوان بێت, بۆیە ((دەسەڵات فراوانی سنووری میرنشینەکەی لە ڕۆژگاری ئەودا تا ڕادەیەک لەوە دەچوو کە پاشای هەموو کوردستان بێت)) (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٧٠). شاعیر ئەم پاشایە بە بێبەخت دادەنێت, چونکە لە حیللە دەستبەسەر کراوە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

کاتێک سوڵتان مەحموودی دووەم بووە دەسەڵاتداری عوسمانی فەرمانی لابردنی سلێمان پاشای والیی بەغدا درا، بەڵام ((سلێمان پاشا یاخی بوو لە تورکەکان و بۆ دامرکاندنەوەی ئەمەش بابی عالی فەرمانی دا بە ئەوڕەحمان پاشا ئەویش بە لەشکرێکەوە چووە سەری و بەغدای داگیر کرد)) (خەسرەو، ١٩٥٧، ٢٧). پاشا بەغدای لە یاخیبوون پاراست و شارەکە کەوتەوە ژێر فەرمانڕەوایی ئەو سەردەمەی عوسمانییەکان. لە پاداشتی ئەم کارە عەبدولڕەحمان پاشا فەرمان دەرچوو ببێتە والیی بەغدا، بەڵام ناوبراو ئەم فەرمانەی ڕەت کردەوە و ((پاشایەتیی نیشتمان و میرنشینی خۆی نەگۆڕییەوە بە والێتیی بەغدا)) (خەسرەو، ١٩٥٧، ٢٧). شێخ ڕەزا ئەم سەرکەوتن و ڕەتکردنەوەی والێتییەی لە دێڕە شیعرێکدا خسووەتە ڕوو:

به زەربی حەملەیێ بەغدایی تەسخیر کرد و تێی هەڵدا

سولەیمانی زەمان ڕاستت ئەوێ باوکی سولەیمان بوو (شێخ ڕەزا، ٢٠١٠، ٩٥)

شاعیر ئەوەمان پێ دەڵێت پاشا بە ئاسانی بەغدای خسووەتە ژێر دەستی خۆیەوە و تووڕی هەڵداوە و نەیویستووە، بۆیە باوکی سولەیمان، کە مەبەست عەبدولڕەحمان پاشایە، بەڕاستی لە هێز و سەخاوەتدا وەک سلێمانی پێغەمبەری سەردەمی خۆیەتی.

٢_ سەردەمی فەرمانڕەوایی مەحموود پاشای کوڕی عەبدولڕەحمان پاشا: لە کۆتاییەکانی فەرمانڕەواییی عەبدولڕەحمان پاشا و پێش ئەوەی بمرێت ((سەرانی عەشایەر و پیاوماقوڵان و کوێخای گوندەکان کۆبوونەوە و مەحموود بەگی کوڕە گەورەیان بەجێنشینی ئەوڕەحمان پاشا هەڵبژاردووە)) (حەمە باقی، ٢٠٠٢، ٦٩). پاش ئەوە بۆ ئەوەی بەڕەسمی لە لای والیی بەغداوە بناسرێت ((نووسراوێکیان بۆ والیی بەغدا نووسی. والیی بەغدا ئەوساکە سەعید بەگ بوو، میری نوێی بابانی پەسەند کرد و پلەی میری میرانی پێبەخشی)) (محەمەد، ٢٠٢٢، ١٧٥).

ڕۆژگاری ئەم میرە بە یەکێک لە سەردەمە لاوازەکانی فەرمانڕەوایی بابان دادەنرێت، ئەمەش لەبەر ئەو شەڕ و ناکۆکی و ململانێیە زۆرەی لە ناوەوە و دەرەوەی میرنشینەکە هەبوو، کە میرنشینەکەی بەتەواوی لاواز کردبوو و وای کردبوو ((میر مەحموود نەیدەتوانی میرنشینەکەی لە دەستتێوەردانی هەر یەکێک لە والیی بەغدا و کاربەدەستانی ئێرانیی قاجاری بپارێزێت)) (محەمەد، ٢٠٢٢، ١٧٥). ئاکامی ئەم دەستتێوەردانانە بووە هۆی مەحموود پاشا چەند جارێک لە پاشایەتی لا ببرێت.

لە دیوانی مستەفا بەگی کوردیدا (١٧٨٢_١٨٥٩) لە ژێر ناونیشانی شیعرێکدا نووسراوە: کارەساتی ڕووخاندنی مەحموود پاشای بابان، ئەم شیعرە باسی یەکێک لەو جارانە کردووە، کە مەحموود پاشا لە فەرمانڕەوایی دوور خراوەتەوە.

خەبەرێکم بدەنێ ئەهلی خەبەر حەشرە مەگەر

ڕۆژ کەوا ئەمڕۆ لە مەغریب سەری هێناوەتە دەر

(کوردی, ٢٠١٠, ١٣٦)

شاعیر لابردنی پاشا وەک ڕۆژی دوایی وێنا دەکات, ئەمەش دەرخەری ئەوەیە شەڕ و کارەساتێکی زۆر ڕووی داوە, چونکە زۆربەی لابردنی میرەکان بە شەڕ بووە.

شاعیر ساڵی ڕوودانی ئەو کارەساتەی تۆمار کردووە:

ثەبتی تأریخی لە نێو بەحری حوروفا ئەلەمە

سەر بە سەر سەیری بکەن سەیرە هەتا سەر یەکەدەر

خەوە یان وەسوەسەیە یا کە بە ڕەئیولعەینە

ئەم عەلاماتە کەوا دێنە ئەبەمەددی نەظەر

(کوردی, ٢٠١٠, ١٣٦)

نیوە دێڕی سێیەم ئەگەر بە ڕینووسی کۆن بنووسرێت و بەپێی حیسابی پیتی ئەبجەدی دەکاتە ساڵی ١٢٣٩ی کۆچی ئەمەش بەرانبەر لەگەڵ ١٨٢٤ی زایینی, کە کارەساتەکە لە سلێمانی قەوماوە (مستەفا, ٢٠١٠, ١٤١). ئەم کارەساتە بەو جۆرە ڕووی داوە, کە داود پاشای والیی بەغدا ((لەو ساڵەدا (١٨٢٤) محەمەد پاشای کوڕی خالید پاشای برازای بە هێزێکەوە ناردە سەری, مەحموود پاشا توانی بەرگری و شەڕی نەمابوو, ولاتەکەی وێران بوو, ناچار ڕووی کردە لای قزڵجە. (بابان, ٢٠١٢, ٨٢_٨٣) بەم پێیە مەحموود پاشا لە میرنشینەکە دوور خراوەتەوە و کوردی ئاواتەخواز بووە بگەڕێتەوە:

دائیما دەستی دوعا بەندم و شایەد زوو زوو

(شا)ی سەفەرکەردیی من بێتەوە بێ عیجز و ضەرەر

(کوردی, ٢٠١٠, ١٣٦)

یەکێک لە سیما دیارەکانی ڕۆژگاری فەرمانڕەوایی مەحموود پاشا شەڕ و ململانێی بوو لەگەڵ عەبدوڵلا پاشای مامی, بە جۆرێک چەندان جار سوپای بێگانەیان هێناوەتە سەر یەکتری, بۆیە ئەمە وا لە کوردی دەکات بڵێت:

ئەهلی تەقوا لێرە بۆ گەردش, ئەگەر بوونە هەوێن

زەڕپەرست لەملان و شیعری گێرەشێوێنیش لەوێن

جووتەزا, مام و برازا شیر لە یەکدی ساو دەدەن

جارێ دەرباری ئەمان و و گا لەوێ بارێ لەمێن

(کوردی, ٢٠١٠, ٤٢٧)

ئەمە دەرخەری ئەو هەمـوو نـاکۆکی و ناتەبـاییە زۆرەی نێـوان مەحمـوود پاشـا و عەبـدوڵلا پاشـایە, کە هەریەکەیـان جارێـک عوسـمانییەکان و جارێـک ئێرانییەکانیـان هێنـاوەتە سەر یەکتری و لەسەر ئەمە ڕەخنەی لێ گرتوون. ئەمە سەرەڕای ئەوەی مەحموود



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پاشا (خۆی و عەبدوڵڵا پاشای مامی و عوسمان و سلێمانی برای, چووبوونە لای خواناسی گەورە (شێخ خالیدی سلێمانی) و هەرسێکیان سوێندیان خواردبوو, کە لایەنگر و پشتیوانی مەحموود پاشا بن)) (ڕیچ, ٢٠١٢, ١٥٢), بەڵام لەگەڵ ئەوەشدا عەبدوڵڵا پاشا هەر دەستبەرداری پیلانگێڕان دژی مەحموود پاشا نەبووە, ئەمەش بەتەواوی بووبووە هۆی لاوازکردنی میرنشینەکە و زیان گەیاندن بە دانیشتووانەکەی.

٣_ هاتنە سەر تەختی ئەحمەد پاشا: دوای مردنی سلێمان پاشا, ئەحمەد پاشای کوڕی فەرمانڕەواییی میرنشین وەردەگرێت. ئەم میرە کەسێکی وریا و ئازا و دادپەروەر بووە. نالی (١٨٠٠_١٨٧٧) لە شیعرێکدا باسی کۆچی دوایی سلێمان پاشا و دەسەڵاتگرتنە دەستی ئەحمەد پاشا دەکات:

تا سولەیمانان نەبوونە سەدری تەختی ئاخیرەت

ئەحمەدی موختاری ئێمە شاهی تەخت ئارا نەبوو

(نالی, ١٣٨٩, ٣٨٢)

ئەمەش ئەوە دەگەیەنێت هەتا سلێمان پاشا لەو دونیادا نەبووە جێنشینی تەختی پاشایی, ئەوا لەم دونیادا ئەحمەد پاشا تەختی پاشا بۆ ئامادە نەکرا.

چەند ساڵێکی کەمی سەردەمی فەرمانڕەواییی سلێمان پاشا دەشێت بە هۆی ((مەرگی بەرودوای فەتح عەلی شا و عەباس میرزا کوڕی تا ڕادەیەک و بۆ ماوەیەکی کورتی چەند ساڵە, دەستتێوەردانی ئێرانی لە کاروباری ناوخۆی میرنشینی بابان کەمتر کردبێتەوە, بەو بۆنەیەشەوە شەڕ و دوژمنایەتیی ئەندامانی بنەماڵەی بابانیش خاو بووبێتەوە)) (حەمە باقی, ٢٠٠٢, ١١٩) ئەمە بووەتە هۆکارێک دادپەروەریی سلێمان پاشا دەربکەوێت و (نالی)یش دەڵێت:

قیسسە بێ پەردە و کینایەت خۆشە, شاهی من کەوا

عادیلێ بوو قەت عەدیلی ئەو لە دنیادا نەبوو (نالی, ١٣٨٩, ٣٨٣)

شاعیر ساڵی مردنی سلێمان پاشا و گرتنە دەستی دەسەڵات لە لایەن کوڕەکەیەوە لە دێڕێکدا تۆمار دەکات:

شاهی من جەم جا ((نالیا)) (تاریخ جم) تەئریخیە

دا نەڵێن لەم عەسرەدا ئەسکەندەری جەم جا نەبوو

(نالی , ١٣٨٩, ٣٨٥)

بە کۆکردنەوەی ئەو ژمارانەی بەرانبەر هەر پیتێکی گرێی (تاریخ جم) دانراون دەکاتە ساڵی ١٢٥٤ی کۆچی, ئەمەش بەرانبەر ساڵی ١٨٣٨ی زایینییە, کە ساڵی مردنی سلێمان پاشا و چوونە سەر تەختی ئەحمەد پاشایە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٤_ سوپای بابان لە سەردەمی ئەحمەد پاشا: دوای ئەوەی ئەحمەد پاشا دەستبەکار دەبێت زیاتر بایەخی بە ڕێکخستن و چەسپاندنی کاروباری میرنشینەکەی و بەرقەراربوونی ئاسایش داوە, لەبەر ئەوە ((لەسەر شێوەی نوێ ٤ تیپی هەزار کەسی پێکهێناوە و پلەی سوپایی دیاری کردوون)) (حەمە باقی, ٢٠٠٢, ١٢٠). ئەم شێوازە لە دامەزراندنی سوپا و دروستکردنی سەربازگە و ڕاهێنانی سەرباز لەوەو پێش بەو جۆرە نەبووە, چونکە ئەحمەد پاشای بابان لە سەرچنار سەربازگەی دروست کردبوو و لە فەرەنساوە پسپۆڕی بۆ ڕێکخستنی سوپاکەی و مەشقپێکردنیان هێناوە و لەگەڵیشیدا چەکی نوێی بۆ دابین کردبوون (بابان, ٢٠١٢, ٦٢). نالی لە شیعرێکدا باسی ئەو سوپایەی کردووە و دەڵێت:

ئەم تاقمە مومتازە کەوا خاسسەیی شاهن

ئاشووبی دڵی مەملەکەت و قەلبی سوپاهن (نالی, ١٣٨٩, ٣٥٠)

شاعیر باسی ئەو کەسانە دەکات, کە لەنێو سوپادان و دەرباری ئەحمەد پاشان, ئەو کەسانە هەڵبژێردراون, بۆیە بوونەتە هۆی دەنگوباس و هەرا لەنێو مەملەکەت و بوونەتە کەسانی خۆشەویستیی نێو سوپا.

سەف سەف کە دەوەستن بە نەزەر خەتتی شوعاعن

حەلقە کە دەبەستن وەکوو خەرمانەیی ماهن (نالی, ١٣٨٩, ٣٥١)

شێوەی ڕێکوپێکی ئەم سوپایە لە ڕەوەستانیان دەردەکەوێت, کە شاعیر وا وێنای دەکات لە کاتی ڕاوەستاندا وەک هێڵی ڕووناکی ڕێک و ڕاستن و لاری و خوارییان تێدا نییە, کە بە ئەڵقەش دەوەستن وەک خەرمانەی دەوری مانگ وان.

کوردیی شاعیر باسی لایەنێکی دیکەی ئەو سوپایە دەکات و دەڵێت:

بە (حاضر باش)ی فەوجی غوصصەی نالەم

وەکو زیلەی ئەوەڵ شەیپوورە ئەمشەو (کوردی, ٢٠١٠, ٤٩٦)

(حاضر باش) فەرمانێکی سەربازییە و گرێی (فەوجی غوصصە) زیاتر ئەوەی ڕوون کردووەتەوە, ئەمەش ئەوە دەگەیەنێت سوپای بابان ئەم فەرمانەی عوسمانی تێدا بەکارهێناوە (مستەفا, ٢٠١٠, ٩٥)

شێخ ڕەزا لەبارەی ئەو سوپایەی بابانەوە دەڵێت:

لەبەر تابووری عەسکەر ڕێ نەبوو بۆ مەجلیسی پاشا

سەدای مۆزیقە و نەققارە تا ئەیوانی کەیوان بوو

(شێخ ڕەزا, ٢٠١٠, ٩٥)

شاعیر باسی کۆمەڵێک چەمکی وەک (تابوور, عەسکەر, مۆزیقە, نەققارە) دەکات, کە ڕێکوپێکی سوپاکە دەردەخات و واتە مارشی سەربازی هەبووە و ئامێرە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

مۆسیقاییەکانی تێدا بەکارهاتووە ئەمەش ((بەڵگەی بوونی سوپا و لەشکری ڕەسمی و خاوەن سیستەمی سەربازی بووە)) (صالح, ٢٠١٩, ١٤٠_١٤١) کەواتە ئەو سوپایەی ئەحمەد پاشا ئەو کات پێکیهێنابوو, تایبەتمەندییەکانی سوپایەکی سەردەمییانەی تێدا بووە.

٥_ شەڕی نێوان عەبدوڵڵا پاشا و والیی سنە: عەبدوڵڵا پاشا برای ئەحمەد پاشا بوو و لە سەردمی ئەحمەد پاشای برایدا یەکێک بووە لە کەسە دەسەڵاتدارەکانی نێو بنەماڵەی بابان. ئەحمەد پاشا کە گرنگییەکی زۆری بە ئاسایشی میرنشینەکەی داوە, بۆیە ئەوانەی نیازی تاوانیان هەبوو لە شار دەرفەتیان پێ نەدەرا و دەچوونە دەرەوەی شاری سلێمانی و ((خۆیان لەناو خێڵاتی هەورامانـدا دەشاردەوە, ئەو سەرخێڵانە کە تاوانباران پەنایان بۆ دەبردن, ملکەچی ئەحمەد پاشا نەدەبوون و ئەوانەیان بە دەستەوە نەدا)) (نازم بەگ, ٢٠١٢, ٣٧٣). لەبەر ئەوە ئەحمەد پاشا هێزێکی ناردە هەورامان و ئەم هێزە دارەکانی هەورامانی بڕییەوە و خانووەکانیان ڕووخاند, کاتێک ئەم هەواڵە بە دەسەڵاتدارانی ئێران گەیشت ((والیی سنە بە هێزێکی گەورەوە هێرشی بردە سەر سلێمانی, کە ئەحمەد پاشا بەوەی زانی, هێزێکی بە سەرکردایەتیی عەبدوڵڵا پاشای برای نارد بۆ بەرەنگاریی هێزە هێرشبەرەکە. هەردوو هێزەکە لە مەریوان بە یەک گەیشتن و چەند شەڕێک لەنێوانیاندا ڕووی دا, بە تێکشکان و پاشەکشەی والیی سنە کۆتایی پێهات)) (نازم بەگ, ٢٠١٢, ٣٧٤). شێخ ڕەزا ئەم شکستەی والیی سنەی لە دێڕێکدا تۆمار کردووە:

کە عەبدوڵڵا پاشا لەشکری والیی سنەی شڕ کرد

ڕەزا ئەو وەختە عومری پێنج و شەش تیفڵی دەبستان بوو

(شێخ ڕەزا, ٢٠١٠, ٩٥)

شێخ ڕەزا لە ساڵی (١٨٣٦ یان ١٨٣٧) لە دایک بووە, بەو پێیە ئەو سەرکەوتنەی عەبدوڵڵا پاشا ساڵی ١٨٤٢ یان ١٨٤٣ بووە.

٦_ ڕووخاندنی میرنشین: کۆتاییهێنان بە دەسەڵاتی بابان لە ئەنجامی کۆمەڵێک هۆکاری ناوخۆیی و دەرەکییەوە بوو, دەکرێت بڵێین پەیانامەی دووەمی ئەرزڕۆم لە ١٨٤٧ یەکێک بوو لە هۆکارە کاریگەرەکان بۆ ڕووخاندنی میرنشینەکە, لەبەر ئەوەی ئەم پەیماننامەیە ((بناغەی سیاسەتی هاوبەشی هەردوو دەوڵەتی داڕشت. پاشاکانی بابان ئیتر بواری موناوەرەو ئەمبەر و ئەوبەریان نەما)) (ئەمین, ١٩٩٨, ١٩٩). لەو سەروبەندەدا والیی بە سوپاکەوە هێرشی کردە سەر میرنشینەکە. سەرەتا ئەحمەد پاشا زۆر متمانەی بە سوپاکەی هەبوو, چونکە لە پێنج تابووری مەشقپێکراو و هێزە خێڵەکییەکان پێکهاتبوو (نازم بەگ, ٢٠١٢, ٣٧٤) هەردوو سوپاکە لە نزیک کۆیە بە یەک گەیشتن و والیی بەغدا داوای ڕێکەوتنی کرد, بەڵام ئەحمەد پاشا ڕەتی کردەوە. بە هۆی بڵاوبوونەوە هەندێک دەنگۆ لەنێو سوپای میری باباندا, لە ئەنجامدا سوپاکەی شکستی هێنا و پەرتەوازە بوو و خۆی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پەناهەندەی ئێران بوو و لەوێوە ڕووی کردە ئەستەنبوڵ. (محەمەد, ٢٠٢٢, ١٨٤). بەم جۆرە فەرمانڕەوایی ڕاستەوخۆی بابانەکان کۆتایی پێهێنرا و میرنشینەکە ڕووخێنرا.

ئەم ڕووداوە کارێکی یەکجار گەورەی کردووەتە سەر دڵ و دەروونی شاعیران و بە شیعر گوزارشتیان لەو بارودۆخە کردووە. سالم (١٨٠٥_١٨٦٩) لە چەند شیعرێکدا وێنەی ئەو ڕۆژگارەمان پێ نیشان دەدات:

تورکی قورصی خۆر کە طالع بوو, طولووعی کرد بە ڕەقص

کەوکەبەی ماهی موڕادی ئەهلی بابان بوو نیهان

(سالم, ٢٠١٥, ٥٢٦)

شاعیر ئاماژە بەوە دەدات کاتێک خۆری دەسەڵاتی تورکەکان هەڵهات و مانگی فەرمانڕەوایی بابان ئاوا بوو. سالم لە باسکردنی ڕووخاندنی دەسەڵاتی بابان بەردەوام دەبێت و دەڵێت:

صاعیقە و بەرقی نەدامەت ظوڵمەتی دا شەرق و غەرب

بەردەبارانە بە مەخصووصی لەسەر موڵکی بەبان

(سالم, ٢٠١٥, ٥٢٦)

شاعیر بەوردی ئەوە دەستنیشان دەکات, ڕۆم و عەجەم, ڕۆژهەڵات و ڕۆژئاوا ڕۆڵیان هەبووە لە ڕووخاندنی میرنشینەکە, ئەمەش لەبەر ئەوەی ((سالم زۆر هۆشیارانە وێنەی ئەو ڕۆژگارەی گرتووە و لە نزیکەوە ئاگاداری ڕووداوەکان بووە)) (صالح, ٢٠١٩, ١٠٦).

کوردیی شاعیر بەتەواوی لە دەسەڵاتی تورکەکان پەشێو و بێزار بووە و دەڵێت:

عەجەب مەگرە نە هەر ڕۆی ڕۆی عەجەممە

پەشێوی ظوڵمی ڕۆمی نانەجیبم (کوردی, ٢٠١٠, ٣٠٧)

ئەو بارودۆخە تازەیە بووەتە هۆی پەرێشانیی خەڵک و داروەدستە و نزیکەکانی بنەماڵەی بابان و سالم دەڵێت:

بەدا ئەحواڵی ئەشخاصێ کە خاصەی موڵکی بابانن

لە بێ دادیی فەلەک هەر یەک سەراسیمە و هەراسانن

(سالم, ٢٠١٥, ٥٧٦)

ئەو کەسانەی, کە وا گرفتار و داخدارن یەکجار زۆرن لە میرنشینەکە و خۆیان بە بێکەس دەزانن:

لە بابانا گرفتارن, پەرێشان خاطر و بێ کەس

بە جەمعییەت سیەهبەختانە وەک گێسووی خوبانن

(سالم, ٢٠١٥, ٥٧٧)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوە کوردیەکان

لەگەڵ ئەوەی زۆرینەی خەڵکی میرنشینەکە زۆر خەفەتبارن, بەڵام لەگەڵ ئەوەدا هەندێک کەس لەو سەردەمە بەو بارودۆخە تازەیە خۆشحاڵ بوون:

لە ئەوضاعی سولەیمانی, ئەوانەی شاد و ئاسوودەن

لە فەرعا نوطفەیی حەیضن, لە ئەصڵا جینسی شەیطانن

(سالم, ٢٠١٥, ٥٨٧)

سالم ئاماژە بەوە دەدات ئەوانەی بەو بارە سەخت و ناخۆشەی پایتەختی میرنشین دڵشاد و خۆشحاڵن, لە ڕەگەزی شەیتانن و لە نوتفەیەکی پاک نین. ئەو کەسانەی سالم بەو چەشنە باسیان دەکات, ڕوونی دەکاتەوە مەبەستی چ جۆرە کەسانێکە:

لە ئەصڵا بانیی ئەم کارە کاسبهای شەهری بوون

لە ئەمری فیتنە ئەنگێزا, سەراسەر, میثلی مەڕوانن

(سالم, ٢٠١٥, ٥٨٧)

ئەوانەی ئاژاوەگێڕن و دڵخۆش بەو بارودۆخە کاسبەکانی شارن, کە لە ئاژاوەگێڕیدا وەک (مەڕوانی کوڕی حەکەم)ن, کە لە مێژووی موسڵماناندا لە زیاتر لە سەردەمێکدا ڕۆڵی خراپی گێڕاوە.

٧_ بەرگریکردنی عەزیز بەگ: لە کاتی داگیرکردنی سلێمانی و ڕووخاندنی میرنشینی بابان, هەندێک لە دانیشتووانی میرنشینەکە خەریکی بەرگری و بەرەنگاربوونەوەی دەسەڵاتی تورک بوون. یەکێک لەو کەسانە عەزیز بەگ بوو. ((عەزیز بەگ کوڕی ئەوڕەحمان پاشا و برای مەحموود پاشا و سلێمان و مامی ئەحمەد پاشا و عەبدوڵڵا پاشا بوو)) (ئەمین, ١٩٩٨, ١٩٨). لەو کاتەی تورکەکان هێرشیان هێناوەتە سەر سلێمانی, عەزیز بەگ سەری بۆ دانەنواندوون و بەربەرەکانێی کردوون. سالم باس لە ئازایەتی و نەبەردیی عەزیز بەگ لەو ڕۆژگارەدا دەکات و دەڵێت:

جیهان گەر ڕووبەڕووی من بێ, بە خوونڕێزی ظەفەر نابا

دەکەم بۆ حیرزی جان و دڵ بە چالاکی پەنا پەیدا

(سالم, ٢٠١٥, ١٦٤)

شاعیر ئەوە دەخاتە ڕوو ئەگەر لەو بارودۆخە سەختەدا هەموو جیهان بەرەو ڕووم بێن بۆ کوشتنم, ئەوا ناتوانن, چونکە پەنایەکی ئازا و لێهاتووم هەیە, کە عەزیز بەگە. هەرچەندە ناوبراو ئازا و قارەمان بووە, بەڵام سەرکەوتوو نەبوو, بۆیە سالم دەڵێت:

وەلێ طالیع نەبوو, پۆشیدەیە جەوهەر لە ڕووی دونیا

بە مەردانی دلاوەر, حاصلی کۆشش, جەفا پەیدا (سالم, ٢٠١٥, ٧٢)

لەبەر ئەوەی شاعیر داوا لە خودا دەکات, بە هۆی عەزیز بەگەوە میرنشینی بابان بەها و ڕەواج پەیدا دەکات:

خودایە موڵکی بابان بێ ڕەواج و قەڵبە، سا لوطفێ
به ئیکسیری وجوودی ئەو بکا وەک موو بەها پەیدا

(سالم، ٢٠١٥، ٧٣)

عەزیز بەگ لە سەردەمی عەبدوڵڵا پاشادا دەسەڵاتداری بازیان بووە، شەی تورکەکانی کردووە، بەڵام ((هاوڕێکانی عەزیز بەگ خیانەتیان لێ کرد و ئەنجام عەزیز بەگ شەڕەکەی دۆڕاند، لەگەڵ قادر بەگ بە دیلی گیرا)) (مودەرریس، ٢٠١٥، ٥٢٣).

کوردی تێڕوانینی خۆی لەبارەی عەزیز بەگەوە دەخاتە ڕوو:

مەجنوون ئەگەر لە جوانیی لەیلا ناوی کرد
من شێتی تاکی جوانیم و لاوی مەردی پاک

(کوردی، ٢٠١٠، ٢٦٤)

شاعیر عەزیز بەگ وەک لاوێکی مەرد و پاک باس دەکات، ئەمەش پێچەوانەی بەشێک لە هاوڕێکانی بووە، کە ناپاکییان لەگەڵی کرد.

سالم زیاتر جەخت لەسەر ئازایەتیی عەزیز بەگ دەکاتەوە و دەڵێت:

شێری بێشەی موڵکی بابان بوو عەزیز، ئەمما دریغ
وەک گڕێی داموسکی بێ، ئاو قەومەکەی زوو هەڵوەشان

(سالم، ٢٠١٥، ٥٤٨)

شاعیر پێی وایە هەرچەندە عەزیز بەگ شێری بێشەی میرنشینی بابان بوو، بەڵام ڕیزی گەلەکەی شێواو بوو، بۆیە وەک گرێیەکی شل زوو هەڵوەشایەوە.

٨_ فەرمانڕەواییی عەبدوڵڵا پاشا لە ژێر سایەی عوسمانییەکان: دوای ڕووخاندنی میرنشینی بابان لە ساڵی ((١٨٤٨ نەجیب پاشای والیی بەغدا، ئەحمەد پاشای بابانی بە یەکجاری لێ خست و عەبدوڵڵا پاشای برای لە جێگای ئەو دانا بە قائیمقامی سلێمانی)) (ئەمین، ١٩٩٨، ٢٠٠). هەرچەندە پێش ساڵی ئاماژەپێدراو عەبدوڵڵا پاشا بۆ ماوەیەک فەرمانڕەوای بابان کردبوو. بە لابردنی ئەحمەد پاشا، سلێمانی بووە شارێکی ڕاستەوخۆ سەر بە دەوڵەتی عوسمانی و میری میرنشین بوو بە قائیمقام و بەم جۆرە بارودۆخێکی تازە هاتە ئاراوە.

موڵکی بابان پڕ لە غەوغا، خاکی کوردستان خەراب
مایەیی فیتنە و فەساد و ماجەرا بوو ئاسمان (سالم، ٢٠١٥، ٥٢٠)

ئەو بارودۆخە تازەیە بە جۆرێک بووە کە میرنشینەکە پڕ لە ئاژاوەیە و خاکی کوردستان وێران بووە و بێ بەختییەکەیان بووەتە هۆی فیتنە و ماڵوێرانی.

ئەو سەردەمەی عەبدوڵڵا پاشا دەسەڵاتداری سلێمانی بوو، ناوبراو تەنیا بە ڕووکەش دەسەڵاتدار بوو، هەموو کاروبارێک هەر ژێر دەستی تورکەکان بووە، بەڵام لەگەڵ ئەوەشدا کوردی پێی دەڵێت، کە لەسەر ڕێچکەی میرەکانی پێشتر فەرمانڕەوایی بکات:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

حاكمی چا بە، طەریقی عەدلداری پێش گرە
چونكە حوكمت ڕادەبووری حەیفە زۆرداری مەكە

(كوردی، ٢٠١٠، ٣٣)

شاعیر ئەوە دەردەخات میرەكانی پێش ئەو، میری دادپەروەر بوون و پێویستە ئەویش وەك ئەوان بێت، دیارە فەرمانڕەواییكردنی ناوبراو دوور بووە لە دادپەروەری، بۆیە شاعیر ئەوەی بە بیر هێناوەتەوە، كە ستەمكار نەبێت و لەبارەی دەسەڵاتەكەیەوە گلەیی لێ دەكات:

حاكمی نابێ بە دادی بێكەساندا ڕابگەی؟
داوی دڵ دەپسێ، والی شاد، لەگەڵ حاشا دەكەی

(كوردی، ٢٠١٠، ٢٧٠)

شاعیر داوا دەكات بە فریای بێكەسان ڕابگات، لە كاتێكدا كە دەسەڵاتەكەی والیی خۆشحاڵ دەكات و حاشا لەوانی دەكەیت. كوردی لەو گلەییە بەردەوام دەبێت و دەڵێت:

تۆ كە سوڵتانی جیهان و پادیشاهی عالەمی
دادی مەظلوومان بپرسە، حەیفە بێدادی مەكە

(كوردی، ٢٠١٠، ١٥)

ئەمەش هەر دیسان نادادیی فەرمانڕەوایی ئەو سەردەمە نیشان دەدات.

٩_ لابردنی عەبدوڵڵا پاشا و ئاوارەبوونی بابانەكان: دوای ماوەیەك لە فەرمانڕەوایی پاشا، بەڵام لە ساڵی ((١٨٤٩ نامیق پاشا والیی بەغدا، عەبدوڵڵا پاشای بانگ كرد بۆ بەغدا، لەوێ گلی دایەوە، ئیسماعیل پاشای دانا بە قائیمقامی سلێمانی)) (ئەمین، ١٩٩٨، ٢٠٠). ئەو دەسەڵاتە ڕووكەشە لە سەردەمی عەبدوڵڵا پاشا هەبوو، ئەویش نەما و ڕاستەوخۆ سلێمانی لە لایەن توركەكانەوە بەڕێوە دەبرا. ئەمەش بووە هۆی ئەوەی ئەحمەد پاشا و عەبدوڵڵا پاشای برای و كەسانی دیكە سەر بە میرنشینی بابان لە سلێمانی دوور خرانەوە (بابان، ٢٠١٢، ١٠٠).

ئەو بارودۆخە سەرنجی شاعیرانی ڕاكێشاوە و بە شیعر هەڵویستی خۆیان دەربڕیوە. یەكێك لەوانە سالمە، بۆیە دەڵێت:

لەو ساوە حاكمی بە ستەم دەربەدەر كرا
نەیدیوە كەس لە چیهرەیی كەس جەوهەری هونەر

(سالم، ٢٠١٥، ٣٣٣)

شاعیر ئاماژە بەوە دەدات لەو كاتەی فەرمانڕەوایی بابان دەربەدەر كران، هێز و توانا بە ڕووی هیچ كەسەوە دیار نەماوە. سالم بەردەوام دەبێت و دەڵێت:

جوز گاهی ئاە و گریە لە ئەییامی ڕۆمییا
نەمدیوە وا ببێ لە فەرەحدا لەبێ بەشەر (سالم، ٢٠١٥، ٣٣٤)


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

لەو ڕۆژگارەی کە تورکەکان دەسەڵاتیان گرتووە دەست مەگەر بۆ هاوار و گریان نەبێت, دەنا کەس بۆ خۆشی و پێکەنین دەمی ناکاتەوە.

ئەو بارودۆخە تازەیە بووە هۆی ئاوارەییی میران و شاعیران و تەنانەت خەڵکی ئاساییی میرنشینەکە, بۆیە کوردی دەڵێت:

لە ئەستانەی غەریبی و بێ کەسیدا

کە بێ ئاستانەیی سەرباری من بوو (کوردی, ٢٠١٠, ٤٤٢)

شاعیر لەو دێڕەدا ئاماژەدان بە ئاوارەیی و نامۆییی ئەحمەد پاشا لە ئەستەنبوڵی پایتەختی دەوڵەتی عوسمانی.

هەر لەبارەی ئەو بارودۆخەوە کوردی دەڵێت:

ڕوو لە قیبلەی مصطفەفایە دڵ بەرەو ئەستانەیە

ئاستانەی ئەحمەد موختاری بابانی دەوێ (کوردی, ٢٠١٠, ٢٦٩)

ئەمەش دەرخەری ئاوارەبوونی ئەحمەد پاشایە و ئەوە نیشان دەدات, پاشای ناوبراو پەیوەندیی بە شاعیرانەوە هەیە.

ئەحمەد پاشا, کە لە ئەستەنبوڵ بووە, لەوێ دەسەڵاتدار و خاوەن پلەوپایە بووە و ((گەلێک لە پیاوە ناودارەکانی کورد کە لەوێ بوون ئاموشۆیان دەکرد و ستایشی پیاوەتی و یاریدەدانی خەڵک و ڕووخۆشییان بە شیعر هۆنیوەتەوە)) (بابان, ٢٠١٢, ١٠١_١٠٢). هەر لەبەر ئەوەش شێخ ڕەزا لە ستایشی ئەحمەد پاشادا دەڵێت:

یەعنی هەمنامی نەبی حەزرەتی ئەحمەد پاشا

فەخری دین, کانیی حەیا, بەحری کەرەم کۆهی وەقار

(شێخ ڕەزا, ٢٠١٠, ٥٧)

لێرەدا شاعیر ئەحمەد پاشا بە دەریای بەخشش و چیای گەورەیی نیشان دەدات, کە لە ئەستەنبوڵیش بەخشش و مەزنیی خۆی هەبووە.

سالم بە هۆی ئەو بارودۆخەوە نالەبارەوە بۆ دەرەوەی نیشتمان سەری خۆی هەڵگرتووە و دەڵێت:

الوداع ئەی موڵکی بابان الوداع

الوداع ئەی جایی جانان الوداع

موستەعیدم بۆ بیلادی رافضی

الوداع ئەی ئەهلی ئیمان الوداع (سالم, ٢٠١٥, ٣٩٨)

ئەو بارودۆخە کە هاتبووە ئاراوە شاعیری ناچار کردووە بە نابەدڵی و خەمبارییەوە بەرەو ئێران بکەوێ ڕێ.

ئەو ڕۆژگارە تازەیەی بابان بوو بووە هۆی ئەوەی تەنانەت خەڵکی ئاسایی ڕوو بکەنە دەرەوەی بابان و لەوێش پەرێشان و سەرگەردان بن, بۆیە حاجی قادر دەڵێت:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

لە ڕۆما کەوتە بەرچاوم کەسێکی هائیم و حەیران

بە هەیئەت تێی گەیم کوردە بە شێوەی ئەهلی کوردستان

کە چوومە خدمەتی پرسیم برادەر خەڵکی کام جێگای؟

لە کام لا هاتووی؟ گریا گوتی بابان، گوتم: بابان؟

کەواتە ئەو کوردانەشی کە بە هۆی بارودۆخی تازەی بابانەوە ئاوارەی دەرەوەی نیشتمان بوون زۆر دڵتەنگ و خەمبارن.

١٠_ موژدەی گەڕانەوەی عەبدوڵڵا پاشا: پاش ئەوەی عەبدوڵڵا پاشا لە فەرمانڕەوایی لا دەبرێت و بۆ ئەستەنبوڵ دوور دەخرێتەوە. عەبدوڵڵا پاشا ((لە کاتی هەڵگیرسانی شەڕی (قرم)دا لەنێوان ڕووسیا و دەوڵەتی عوسمانی لە ساڵی (١٨٥٤)دا، ڕێگەی پێدەدرێت کە بگەڕێتەوە بەغدا، تا بێتەوە کوردستان و بەناوی جیهادەوە لەشکر کۆ بکاتەوە و بۆ پاراستنی سنوورەکانی عوسمانی، نەبادا ئێران کەڵک لەم هەلە وەربگرێت و پەلاماری خاکی دەوڵەتی عوسمانی بدات)) (ئەمین، ١٩٩٨، ٢٢). لەو کاتەدا دەنگۆی ئەوە بڵاو دەبێتەوە عەبدوڵڵا پاشا لە ئەستەنبوڵ دەگەڕێتەوە و دەبێتەوە دەسەلاتداری سلێمانی، بەلام والیی بەغدا ڕەشید پاشای گوێزلگلی (چاویلکە لە چاو) لای خۆی دەیهێڵێتەوە و لە بەغدا گلی دەداتەوە، بۆ ئەمەش دوو بیانووی هەبوو:

یەکەم: گەڕاندنەوەی میرێکی بابان بۆ ناوچەکە ئەوە دەگەیەنێت دەسەلاتی تورک لە بەڕێوەبردنی کاروباری ناوچەکە سەرکەوتوو نەبووە.

دووەم: ئەمە ببێتە هاندەرێک بۆ ئەوەی گەورەکانی کورد ئەم هەلە بقۆزنەوە و لە دەوڵەت هەڵبگەڕێنەوە (ئەمین، ١٩٩٨، ٢١١).

سالم ئاگاداری ئەو دەنگۆیە بووە و بە شیعرێک باس لە هەواڵی هاتنەوەی عەبدوڵڵا پاشا دەکات و دەڵێت:

پێی وتم شەو لە کونجی میحنەتا، واضیح، سرووش:

وا چراغی دوودمانی ئەهلی بابان هاتەوە (سالم، ٢٠١٥، ٨٣٣)

شاعیر ئاماژە بەوە دەدات دوێنێ شەو سرووشیان پێداوە، کە چرای بنەماڵەی بابان هاتەوە تا تاریکیی دەسەلاتی تورکەکان بڕەوێنێتەوە، ئەو چرایەش لە ئەستەنبوڵەوە دێتەوە:

بەرق وەش بۆ موڵکی مەورووثی لە قوسطەنطینەوە

حاکمی مەنفی بە ئەمری صەدر و سوڵطان هاتەوە

(سالم، ٢٠١٥، ٨٣٤)

سالم دڵنیا نییە لەو دەنگۆیەی بیستوویەتی بۆیە دەڵێت:

من بە شەک دەموت: نەجاتی کەی دەبێ پاشا لە ڕۆم؟



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دڵ وتی: سالم یەقینت بێ, بە قورئان هاتەوە

ئەهلی دانش, حاتەمی بەخشش بە ئەبجەد کەن حیساب

با نەڵێن: کانی کەرەم کەی بوو بە بابان هاتەوە؟!

(سالم, ٢٠١٥, ٨٤١)

شاعیر بە گومانەوە لە گەڕانەوەی عەبدوڵلا پاشا دەدوێت, هەرچەندە لە لایەن دڵییەوە دڵنیایی وەرگرتووە. کاتی بڵاوبوونەوەی ئەو دەنگۆیە لەو شیعرەدا دیاری کراوە, بەوەی بەپێی لێکدانەوە و کۆکردنەوەی پیتە ئەبجەدییەکان دەکاتە ساڵی ١٢٧٠ی کۆچی ئەویش بەرانبەر بە ساڵی ١٨٥٤ی زایینی. لەو سەروبەندەدا والیی بەغدا عەبدوڵلا پاشا بۆ ئەستەنبوڵ دەنێرێتەوە, بەمە ناوبراو نابێتەوە دەسەڵاتداری سلێمانی و ئەو مۆزدەیەی شاعیر نایەتە دی.

**ئەنجام:**

١_ بارودۆخی میرنشینی بابان کاریگەریی ڕاستەوخۆی بەسەر شاعیرانی ئەو ڕۆژگارەوە هەبووە, بەشێکی زۆریان هاوسەردەمی ڕووداوەکان بوون و لەو ڕۆژگارەدا ژیاون.

٢_ شاعیران ستایشی کارە باشەکانی میرەکانیان کردووە و ڕەخنەیان لە ناکۆکی و دووبەرەکیی نێوانیان گرتووە و ناڕەزاییان دەربڕیوە.

٣_ ئەو دەقانەی بەردەستن باسی بارودۆخی میرنشینی بابان دەکەن لە سەردەمی میرەکانی بنەماڵەی پێنجەمی بابان.

٤_ عەبدولڕەحمان پاشای بابان لە ئەدەبی میللی و شیعری بەرزی شاعیران باسی کراوە.

٥_ جگە لە باسکردنی میرەکان, ڕووداوە گرنگەکانی میرنشینەکەش لە دەقەکان ئاماژەیان پێ دراوە.

٦_ ڕووخاندنی میرنشین بارودۆخێکی سەخت و ناخۆشی بۆ شاعیران هێناوەتەوە کایەوە و بە شیعر گوزارشتیان لە ناڕەزاییبوونی خۆیان کردووە.

٧_ بەشێک لە شاعیران بە حیسابی کۆکردنەوەی پیتە ئەبجەدییەکان ساڵی هەندێک لە ڕووداوەکانی نێو میرنشینیان بۆ تۆمار کردووین, لەوانە: دەست بەسەرداگرتنی بەغدا لە لایەن عەبدولڕەحمان پاشا, مردنی سلێمان پاشا و ئەحمەد پاشا, مۆزدەی گەڕانەوەی عەبدوڵلا پاشا...هتد.

**سەرچاوەکان:**

الوائلي, عبد ربه سكران ابراهيم (٢٠١٢)، تاريخ الامارة البابانية الكردية دار الثقافة والنشر الكردية, بغداد

ئەمین, زیاد محەمەد (٢٠٠٦)، دیوانی بەردەشانی, چاپخانەی وەزارەتی پەروەردە, هەولێر

ئەمین، نەوشیروان مستەفا، میرایەتی بابان لەنێوان بەرداشی ڕۆم و عەجەم دا، چاپی دووەم، چاپەمەنیی خاك
بابان، جمال، اصول اسماء المدن والمواقع العراقية، الجزء الاول، مطبعة المجمع العلمي، بغداد
بابان، جەمال (٢٠١٢) سلێمانی شارە گەشاوەکەم، بەرگی یەکەم و دووەم، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، هەولێر
بابان، جەمال (٢٠١٨)، بابان لە مێژوودا و گەورە پیاوانی بابان، چاپخانەی ئەندێشە، سلێمانی
بابانزادە، کامەران جەمال (٢٠١٢)، دامەزراندنی چەند میرنشینێکی کورد لە هەردوو سەدەی (٨ و ٩ک_ ١٤ و ١٥ز دا)، چاپخانەی حاجی هاشم، هەولێر
بەدلیسی، میر شەرەف خان(٢٠٠٦)، شەرەفنامە، و: هەژار، چاپی سێیەم، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، هەولێر
بەسری، میر(٢٠٠٢)، ناودارانی کورد، و: عەبدولخالق عەلائەدین، دەزگای چاپ و پەخشی سەردەم، سلێمانی
حسين، سعدى عثمان (٢٠٠٠)، إمارة بابان في النصف الأول من القرن الثامن العشر، مطبعة جامعة صلاح الدين، أربيل
حەمە باقی، محەمەد (٢٠٠٢)، میرنشینی ئەردەڵان، بابان، سۆران لە بەڵگەنامەی قاجاریدا، چاپخانەی وەزارەتی پەروەردە. هەولێر
حەمە بۆر، محەمەد مستەفا (٢٠١٠)، دیوانی کوردی، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، هەولێر
حوزنی، حوسێن (٢٠١١)، سەرجەمی بەرهەمی حوسێن حوزنی، بەرگی یەکەم، چاپی دووەم، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، هەولێر
خەزنەدار، عەلی (٢٠١٤)، میرنشینی بابان، چاپی دووەم، چاپخانەی کاروخ
خەزنەدار، مارف (٢٠١٠)، مێژووی ئەدەبی کوردی کوردی، بەرگی یەکەم، چاپی دووەم، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، هەولێر
خەسرەو (١٩٥٧)، قارەمانی میرنشینی بابان عبد الرحمن پاشا، هیوا، بەغدا
دەشتی، عوسمان (٢٠٢١)، سالمی ساحێبقران_ باس و لێکۆڵینەوە، چاپخانەی ڕۆژهەڵات، هەولێر
ڕەسوول، عیزەددین مستەفا (١٩٨٠)، شیعری کوردی_ بەرهەمی شاعیرانی، چاپخانەی الحوادث، بەغدا
ڕیچ، کلۆدیۆس جمیس (٢٠١٢)، گەشتانەی ڕیچ بۆ کوردستان ١٨٢٠، و: محەمەد حەمە باقی، چاپی پێنجەم، چاپخانەی خانی، دهۆک



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

سەید قادر، شاهۆ عوسمان (٢٠٢١)، چاپی دووەم، چاپخانەی چوارچرا، سلێمانی
صالح، ئاراس محەمەد (٢٠١٩)، سلێمانی لە شیعری شاعیرانی سەدەی نۆزەدا، چاپی دووەم، ناوەندی سارا، سلێمانی
شارەزا، کەریم مستەفا، سەردار حەمیران (٢٧٠٧)، دیوانی حاجی قادری کۆیی، سنە
عەبدوڵلا، ئیدریس(٢٠١٤)، ئەدەبی میللیی و فۆلکلۆریی، بەرگی یەکەم، چاپخانەی حاجی هاشم، هەولێر
عەبدوڵلا، ئیدریس(٢٠١٤)، ئەدەبی میللیی و فۆلکلۆریی، چاپخانەی حاجی هاشم، هەولێر
عەبدوڵلا، حەیدەر (٢٠٢٢)، ئەدەب وەک مێژوو، هەولێر، هەولێر
عەبدولکەریم، مەلا عەبدولکەریمی مودەڕریس، فاتیح (١٣٨٩)، دیوانی نالی، بڵاوکردنەوەی کوردستان، سنە
فیدا، محەمەد (١٩٨٧)، فەقێ ئەحمەدی دارەشمانە، ئەمینداریێتیی گشتیی ڕۆشنبیری و لاوان، بەغدا
قەفتان، تۆفیق (١٩٦٩)، مێژووی حوکمدارانی بابان لە قەڵاچوالان، چاپخانەی سلمان الاعظمي، بەغدا
قەفتان، سالح (٢٠٠٩) سێ لێکۆڵینەوەی مێژوویی، چاپخانەی سەردەم، سلێمانی
قەفتان، کاوس (٢٠٠٦)، چەند لێکۆڵینەوەیەک لە مێژووی بابان و سۆران و بۆتان، چاپی دووەم، ئۆفسێتی ڕاز
محەمەد، ئاکۆ بورهان (٢٠٢٢)، مێژووی میرنشینە کوردییەکان لە چاخی نوێدا، چاپی دووەم، چاپخانەی چوارچرا، سلێمانی.
مستەفا، شوکور (٢٠١٠)، دیوانی شێخ ڕەزای تاڵەبانی، دەزگای چاپ و بڵاوکردنەوەی ئاراس، هەولێر
مەلا کەریم، عەبدولکەریمی مودەڕریس، فاتیح عەبدولکەریم محەمەد (٢٠١٥)، دیوانی سالم، سلێمانی
نازم بەگ، حسێن (٢٠١٢)، مێژووی میرایەتیی بابان، و: حسێن حەسەن کەریم، سدیق سالح، بنکەی ژین، سلێمانی
یوسف، عبد الرقیب (٢٠٠٢)، قەڵاچوالان پایتەختی میرنشینی بابان، هەزارمێرد، هەولێر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

## الإنعكاس الأوضاع إمارة بابان في الادب الكوردي

**الملخص:**

هذا البحث الموسوم ب(الإنعكاس الأوضاع إمارة بابان في الادب الكوردي) يتكون من المقدمة وفصلين ونتائج البحث و قائمة المصادر.

حاول البا حث في ا لمحور الأول للاف صل الأول أن يظ هر تأريخ الأ سرة البابا نية وتأ سيس إمارتهم في كوردستان. الأسرة البابانية كانت أ سرة عريقة حكمت كورد ستان حوالي ثلا ثة قرون تقريبا من خلال خمسة أسر المتتالية. ركز الباحث في المحور الثاني للافصل الأول عن ا سباب إلغاء الامارة و قسمت الاسباب الى الاسباب الداخلية والخارجية.

في ا لمحور الأول للاف صل الـ ثاني تـ سلطنا الـ ضوء عـ لى كيف ية الإنع كاس الأ حداث والأ شخاص التابعة إ مارة با بان في الأدب الـ شعبي الـكوردي. وفي ا لمحور الـثاني للافـصل الـثاني نبين الإنعكاس الأو ضاع أ مارة في الـ شعر الـكوردي خلال ثلا ثة قرون الما ضية و نذكر نماذجية الـ شعرية لتوضيح الموضوع.

وفي اخر البحث نشيرنا ألى اهم نتائج البحث ا لتي حصلنا علي خلال هذا البحث و بعد ذلك يأتي قائمة المصادر.

**الكلمات الدالة:** *إمارة بابان, الأدب الشعبي, الشعر, الأوضاع, الشخصية*

**Abstract:**

This research is tagged with (Reflection of the conditions of the Baban Emirate in Kurdish Literature) and it consists of an introduction, two chapters, research results and a list of sources.

In the first axis of the first chapter, the Researcher tried to show the history of the Baban's family and establishment of their emirate in Kurdistan. The Baban's family was an ancient that ruled Kurdistan for almost three centuries through five successive families. The researcher focused in the second axis of the chapter on the reasons for the abolition of the Emirate, and the reasons were divided into internal and external reasons.

In the first axis of the second chapter, we shed light on how the events and people of Baban Emirate are reflected in Kurdish folk literature. In the second axis of the second chapter, we show the reflection of the situation in Kurdish poetry during the past three centuries, and we mention the poetic models to clarify the subject.

At the end of the research, we refer to the most important research results that we obtained during this research, and after that comes the list of sources.

**Keywords**: *Baban Emirate, Popular Literature, Poetry, Personality, Accident.*



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# رولێ میرێن هوزانڤان د ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجیا سەریدا
## - میرگەهێن بەهدینان و هەکاری وەك نموونە-

**د. پروین رووف هادی**
پشکا زمانێ کوردی- کولیژا زمانان- زانکویا دهوك/ هەرێما کوردستانا عیراق

**پۆختە:**

ئەدەبیاتا کلاسیکیا کوردی دناڤ باوەشا میرگەهێن کوردیدا سەرهلدایە، لەورا ئەڤێ قوناغا دیروکیا مللەتێ کورد ب شێوەیەکێ گشتی کاریگەریا خوە ل سەر ئەدەبیاتا کلاسیکیا کوردی و هوزانڤانێن کورد هەبوویە، نەخاسمە هندەك ژ میرێن کوردان سەرەڕای حوکمرانی و دەستهەلاتدارییا میرگەهێن خوە گرنگییەکا مەزن ب ئەدەب و رەوشەنبیریێ دایە، تەنانەت کو هندەك ژ وان رولەکێ مەزن د نڤیسین و ڤەهاندنا هوزانێدا هەبوویە و خودان بەرهەم و دیوان بوون.

ئەڤ ڤەکولینە جەخت ل سەر پەیدابوونا قوناغێن ئەدەبیاتا کلاسیکیا کوردی ل دویف میرگەهێن کوردی دکەت، هەورەسا ئەو میرێن هوزانڤان و دیارکرنا رۆلێ وان دبیاڤێ ئەدەبیات و رەوشەنبیرییێدا، دیسان ئەزموونا شیعرییا ئەڤان میرێن هوزانڤان دهێتە دیارکرن و هوزان و بەرهەمێن وان ژلایێ روخسار و ناڤەروکێڤە دهێنە دیارکرن، و ئایا دناڤ بەرهەمێن واندا بەرژەنگێن سیاسی و حوکمرانیێ دیارن یان ژی سەربورا وان یا هوزانکی دووری سیاسەت و دەستهەلاتداریێ بوو؟ یان ژی ل دویف رێباز و شوپا هوزانڤانێن مەزن چ ل سەردەمێ خوە یان یێن بەری خوە چووینە، و ئەو ب کێژ هوزانڤانێن مەزنێن کورد یێن هەڤچاخ یان بەری خوە کاریگەر بووینە؟

ل دووماهیێ گرنگیا ڤەکولینێ د وێ چەندێ دایە، کو دبیت خوینەر نزانیت کو هندەك ژ هوزانڤانێن کلاسیکیێن کورد میر بوون و قوناغەك ژ ژیانا خوە ژبو دەستهەلاتداریێ تەرخان کرینە، لێ دبیاڤێ ئەدەبیدا ژی دەستەکێ دەستهەل هەبوون تایبەت د نڤیسینا هوزانێدا، و دڤێ ڤەکولینێدا دێ رولێ وان ب باشتر هێتە دیار کرن.

**پەیڤێن سەرەکی:** *ئەدەبیاتا کلاسیکی، میرگەهێن کوردی، میرێن هوزانڤان، بەهدینان، هەکاری.*



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

**پێشەکی:**

ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجیا سەری دهێتە هژمارتن ئێک ژ قوناغێن سەرەکی و گرنگ د مێژوویا سەرهلدانا ئەدەبیاتا کوردیدا، دیروکا ڤێ ئەدەبیاتێ ل گەل دیروکا میرگەهـ و دەولەتێن کوردی سەرهلدایە و دناڤ ڤان میرگەهاندا هندەك ژ میران ژبلی سیاسەت و فەرمانڕەواییا میرگەهان رۆلەکێ باش د بیاڤێ ئەدەبیاتێدا گێڕایە، نەخاسمە رۆلێ وان میرێن هوزانڤان د میرگەهێن بەهدینان و هەکاری. ئەڤ ڤەکولینە دێ روناهیێ بەردەتە سەر رۆلێ میرێن ڤان هەردوو میرگەهان د ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجییا سەریدا.

**ناڤونیشانێ ڤەکولینێ:** ڤەکولین ل ژێر ناڤونیشانێ (رۆلێ میرێن هوزانڤان د ئەدەبیاتا کلاسیکییا کرمانجیا سەریدا بەهدینان وهەکاری وەك نموونە).

**ڕێبازا ڤەکولینێ:** ئەڤ ڤەکولینە ل دویف ڕێبازا وەسفی شروڤەکاری هاتە ئەنجامدان.

**ئارمانجا ڤەکولینێ:** دیارکرنا لایەنێ رەوشەنبیری و رەوشا ئەدەبیاتی ل دەف میرێن هوزانڤان د میانێ حوکمرانیا واندا ل میرگەهێن کوردی.

**پرسیارێن ڤەکولینێ:** ئایا رەوشا ئەدەبیاتا کرمانجیا سەری دناڤ میرگەهێن کوردیدا ب چ رەنگ بوویە؟ ئایا میرێن کورد بتنێ گرنگی ب بەلاڤکرنا زانست و زانینێ دایە یان ژی رۆل د ڤەهاندنا هوزانێدا هەبوویە؟ ئەرێ ڤان میرێن هوزانڤان بەرهەم هەبووینە؟ ئەرێ د کیژ میرگەهێن کوردیدا پتر میرێن هوزانڤان هەبوون و خودان هوزان و دیوان بوون؟ ژێدەر و سەرچاوەیێن وان بو ڤەهاندنا هوزانێ چنە؟ ئایا بەرژەنگێن حوکمرانیا وان د بەرهەمێن واندا دیارن؟

**ئاستەنگێن ڤەکولینێ:** ئەڤ بابەتە ئێك ژ وان بابەتانە، کو هەتا نوکە ژێدەر و سەرچاوەیێن کێم ل سەر هەنە؛ ژبەرکو بەهرا پتر ژڤان میران سەرەڕای کو ژێدەر و زانیارییێن دیروکی ل سەر هەنە لێ زانیارییێن ئەدەبی ل سەر وان زور دکێمن، هەتا هندەك ژ وان هوزانڤانان هەتا نوکە بەرهەمێن وهان نەهاتینە دیتن و دبیت ل پاشەروژێ دیار ببن.

**پەیکەرێ ڤەکولینێ:** ڤەکولین ژ دەروازەیەکێ و دوو تەوەرێن سەرەکی پێکهاتیە، تەوەرێ ئێکێ بەحسێ میرێن هوزانڤان یێن میرگەها بەهدینان د ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجییا سەریدا هاتیە کرن، تەوەرێ دووێ تایبەتە ب میرێن هوزانڤان یێن میرگەها هەکاری د نڤیسین و دانانا دیوانان ب زمانێ کوردیدا.

**دەروازە:**

پشتی ژناڤچوونا دەولەتا عەبباسی وەلاتێن موسلمانان ل سەر هژمارەکا دەولەت و میرگەهێن جوراوجور دا دابەش بوون و دناڤ واندا چەندین میرگەه ل کوردستانێ بوون، دناڤ کوچکێن وان میرگەهاندا هژمارەك ژ هوزانڤان و ئەدیبان هەبوون، د پەرتووکا


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

شەرەفنامەدا هاتیە کو باپیرێ وی میر شەرفخانێ بەدلیسی ددەمێ دەرکەفتن و شەڕاندا هژمارەکا مەزن ژ هوزانڤان و ئەدیبان دگەل خوە دبرن.

ددەستپێکا سەدەیێ شازدێدا کوردستان دکەڤیتە ل ژێر دەستهەلاتا دەولەتا عوسمانیدا ئەوژی پشتی میرێن کوردان ل سالا ١٥١٥ پەیمانەك دگەل سولتانێ عوسمانی گرێدای تێدا دانپێدان ب سەربەخوییا میرگەهێن کوردی د چوارچووڤێ ئیمپراتوریا عوسمانیدا هاتە کرن، د بەرامبەردا میرێن کورد پشکداریێ د شەرێن دەولەتا عوسمانی دژی دوژمنێن وێدا بکەن(هروتی، ٢٠٠٨، ل٦٣)، لێ هەرچەندە کوردستان ب فەرمی بوو پارچەیەك ژ ڤێ دەولەتێ لێ وەلاتێ کوردان نەکەفتە ژێر کاریگەریا زمانێ تورکی ئەوژی ژبەر دوو ئەگەران: ئێك: هەتا وی سەردەمی و دەمەکێ درێژ پشتی هینگێ ژی زمانێ فارسی زمانێ هوزان و ئەدەبیاتێ بوو نەکو زمانێ تورکی و یا دووێ: ل گورەی پەیمانا کوردان کو میرێن کورد دگەل دەولەتا عوسمانی گرێدای دەستهەلاتا عوسمانی مافێ دەستێوەردانێ دکاروبارێن میرگەهێن کوردیدا نەبوو، لەورا میرگەهێن کوردان ژلایێ میر و حاکمێن کوردان ڤە دهاتنە برێڤەبرن وان گرنگی ب ئاڤاکرنا مزگەفت و مەدرەسەیان ددا و زانا و مەلا ژ ناڤخو و دەرڤەی کوردستانێ دئینان، ئەڤێ چەندێ کاریگەریا ل سەر پەیدابوونا گەشەکرنەکا زانستی و ئەدەبی هەبوو، هەر دڤی دەمیدا دەستپێکێن نڤیسینێ ب زمانێ کوردی پەیدا بوو (دوسکی، ٢٠٠٨، ل٢٦).

هەرچەندە بەدلیسی ئاماژەدایە کو هوزانڤانێن کورد ل سەدەیێ ٩ کوچی/١٤زهوزان ڤەهاندینە، لێ ئەوی ناڤێ چ ژ وان هوزانڤانان نەئینایە، ئێکەم هوزانڤانێ کورد ئەوێ ناڤێ وی د ژێدەراندا هاتی میر یەعقووب بەگێ زرکی یە ئەوێ میراتیا ل میرگەها دەرزینی دکر و ل سالا ١٥٧٩مریە و بو ماوێ ٢٥ سالان حوکم کریە. شەرەفخان دیار دکەت کو ئەڤ کەسە مروڤەکێ سوفی بوو و د هوزانێن ویدا رامانێن (الوحدة المطلقة) ددیار بوون (بدلیسی، ٢٠٠٦، ج١، ص٢٣٩)، پتریا هوزانێن وی ب زمانێ کوردی بوون لێ بەرهەمێ وی د بەرزەنە و هەتا نوکە نەهاتینە دیتن، ب ڤی رەنگی ل سەدەیێ ٩-١٠کوچی/ ١٥-١٦زایینی دەستپێکا ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجیبا سەرییە و ئەڤ ئەدەبیاتە بو ئێکەمین جار دناڤ میرگەهێن کوردی و ل سەر دەستێ میرەکێ کورد پەیدا بوویە.

هەر د قوناغا دەستپێکا کلاسیکێن کرمانجدا دشێن ئاماژەیێ ب هندەك هوزانڤانێن دی بدەین کو ب تنێ هوزانەك یان چەند دانەیەك ژ بەرهەمێن وان گەهشتینە مە وەك حەمیدی شاعرێ کوچکا میرێ بەهدینان سولتان حسێن بەگی (مرن ١٥٧٣ز) (دوسکی، ٢٠١٩، ل٢٣) و ئەحمەدێ کاتب کو نڤیسەرێ دیوانا میر قوباد بەگێ بەهدینان(مرن١٥٨٤) بوو (بادی، ٢٠٢١، ل٢٥٠). پشتی ڤێ قوناغێ چەندین هوزانڤانێن دی دهێن وەکی مەلایێ جزیری، فەقیێ تەیران و عەلیێ حەریری ئەحمەدێ خانی و مەلا رەمەزانێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

عەبباسی هاتن کو ئەڤە ب دروستی قوناغا داهێنانا ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجییا سەرییە (گولی، ٢٠١٦، ل٤٠)، پشتی هینگێ ب ١٠٠ سالان ئانکو ل نیڤا دووێ ژ سەدەیێ ١٨ و نیڤا ئێکێ ژ سەدەیێ ١٩ هوزانڤانێن کرمانجی د قوناغا چاڤلێکرنێڕا بورینە، ئانکو چاڤلێکرنا هوزانڤانێن بەری خوە، وەك پەرتوویێ هەکاری چاڤ ل مەلایێ جزیری کریە و فەق رەشیدێ هەکاری بو فەقیێ تەیران و حارسێ بەدلیسی بو فەقیێ تەیران. (دوسکی، ٢٠٠٤، ل٨-٩)

**١- رولێ میرێن هوزانڤان یێن میرگەها بەهدینان د ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجیدا**

دسەردەمێ نویدا بیاڤێ ئەدەبیاتێ نەخاسمە هوزانێ بەلاڤبوونەکا باش ب خوەڤە دیتیە و بوویە جهێ گرنگیدانەکا مەزن ژلایێ میرێن هەمی میرگەهـ و دەولەتێن کوردانڤە، و "پێشڤەچوونەکا خورت هاتە مەیدانێ و کارتێکرنەکا بهێز ژلایی ئەوان میر و پاشایانڤە لێ هاتە کرن ب پەیدا کرنا ژێدەرێن زانستی و ئەدەبی ل بەردەستێ وان یان ژی ب دانا خەلات و دیاریان ئەوێن بو هەمی تەخ و چینێن جڤاکی دهاتنە پێشکێش کرن، نەمازە چینا هوزانڤانان، لەڕا دێ بینین هوزانڤان دەرکەفتن و داهێنان د بەرکارێ خوەدا دکرن". (دێرەشی، ٢٠١٥، ل٢٨)

ئاشکەرایە میرگەها بەهدینان پێگەهـ و مەلبەندەکێ رەوشەنبیری یێ مەزن بوو دهەمبێزا وێدا کو پایتەختێ وێ باژێرێ ئامێدیێ بوو، پویتەپێدانەکا مەزن ب بەلاڤکرنا زانست و زانینێ دهاتە دان، لەوڕا چەندین مەدرەسەیێن زانستی و ئایینی هاتینە ڤەکرن مینا مەدرەسەیا قوبەهان و سەییدخان و مورادخان و ئیمام قاسم و مەیدان و مزگەفت مەزن(ریکانی٢٠٢٠، ، ١٢-٢٠). هەر سەبارەت ئەڤێ چەندێ بەدلیسی دبێژیت کو "بەهدینان جهێ زانان و چاکێن دیندارە، لەوڕا میرێن بەهدینان گەلەك مەدرەسە و مزگەفت ئاڤا کرینە کو خەلکێ زانان و پرپەرهەم بەرێخوە ددەنێ و مفایێ ژ زانستێ د وان مەدرەسەیاندا دبینن".(البدلیسی، ٢٠٠٧، ج١، ص١٣٦)، ئێك ژ وان قوتابخانەیێن رۆلەکێ بەرچاڤ د رێڤەبرنا ئەدەبیاتا ڤێ دەڤەرێ هەبوو مەدرەسەیا قوبەهان بوو ئەوا ژلایێ میر سولتان حسێنێ وەلی هاتیە ئاڤاکرن کو "مینا زانینگەهەکا خواندنێ یا مەزن بوو ل هەمبەر زانینگەها ئەزهەر یا مسری بوو و پەیوەندی دگەل هەبوو و هژمارەکا مەزن ژ پەرتووك و ژێدەرێن زانستی تێدا هەبوون" (بادی، ٢٠٢١، ل٤٦).

ژڤەرێژا ئەڤا بووری هەر زوی چەندین هوزانڤان دناڤ میرگەها بەهدیناندا پەیدا بوون ؛ ژبەرکو ئەڤ ڤەکولینە تایبەتە ب وان هوزانڤانان کو میرێن میرگەهێ بوون، لەوڕا دێ ب کورتی ئاماژەیی ب هندەك هوزانڤانێن پێشەنگێن بەهدینان دەین کو بووینە بەرێ بناخەی ژ بو هوزانا کلاسییکی ل ڤێ میرگەهێ وکەڤنترینێ وان هوزانڤانەکە ب ناڤێ (حەمیدی) کو د سەردەمێ سولتان حسێنێ وەلیدا ژییایە و هوزانەك ژ ٢٨ مالکان ب زمانێن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

(کوردی، عەرەبی، فارسی و تورکی) ڤەهاندییە. هەروەسا هوزانڤان ئەحمەدێ کاتب کو نڤیسەرێ میر قوباد بەگی بوو و هوزانەك بتنێ ژ بەرهەمێ وی گەهشتیە مە و ئەڤ هەردوو هوزانە ژ کەسێن نزیکی میران بوو( دوسکی، ٢٠١٩، ل٢٣و١٢٨)، هەر ل سەدەیێ شازدە ئاماژە ب میرێ بەهدینان قوباد بەگی هەنە کو هوزان ڤەهاندبن لێ هەتا نوکە ئەڤ هوزانە نەهاتینە دیتن (کەشکول،www.qalamos) ، هەروەسا ل ناڤەراستا سەدەیێ ١٧ مەلا رەمەزانێ عەبباسی پەیدا بوو، کو ژ ناسناڤێ وی دهێتە زانین کو ئەو ئەندامەکی مالباتا میرێن بەهدینان بوو و ژ بەرهەمێ وی ژی ب تنێ ئێك هوزان گەهشتیە مە(گولی، ٢٠١٦، ل٤٢)، و ژڤان نموونەیان دهێتە زانین ژمارەیەکا باش ژ هوزانڤانان ل بەهدینان پەیدا بووینە و خودان بەرهەم بوون، لێ ژ بەر بارودوخێ کوردستان تێدا بوری ناڤێن گەلەگ ژ وان و بەرهەمێن ون نەگەهشتینە مە.

١- **محەمەد تەییار پاشا**: ئێك ژ میرێن هوزانڤان یێن کلاسیك ل میرگەها بەهدینان و دناڤبەرا ١٧٨٤-١٨٢١ز ژیایە، ناڤێ وی ب دروستی محەمەد تەییار کوڕێ ئیسماعیل پاشا کورێ بەهرام پاشا کورێ زوبەیر کوڕێ کورێ سەعیدخانێ دوویێ کوڕێ یووسف بەگی کوڕێ سەعیدخانێ ئێکێ کوڕێ سەییدخان کوڕێ قوباد بەگ کوڕێ سولتانی حسێنێ یێ ناڤدار ب حسێنێ وەلی یە(ریکانی، ٢٠١٩، ل٦٦٧).

محەمەد تەییار بچووکترین کورێ ئیسماعیل پاشای بوو، پشتی مرنا بابێ وی ل سالا ١٧٩٨ وەسیەت کر کو ئەو دەستهەلاتێ ل میرگەهێ وەربگریت، و هەر تشتەك بکەڤیتە ژێردەستێ وی، لێ ئەڤ چەندە بوو ئەگەرێ نەڕازیبوونا برایێ وی موراداخانی و ژ ئەنجامێ ڤێ چەندێ ململانێیەکا دژوار دناڤبەرا واندا پەیدا بوو و د ئەنجامدا موراداخانی شیا هەر دوێ سالێدا تەییار پاشای لابدەت، و تەییار پاشا بەرەڤ کەلا قومرێ ل دەڤەرا بەرواریان چوو و خوە ئاسێ کر و پشتی چەندین شەڕان دووماهیێ ل سەر وێ یەکێ رێکەفتن، کو موراداخان ببیتە میرێ ئامێدیێ و محەمەد تەییار پاشا ببیتە میرێ ئاکرێ، پاشی دناڤبەرا سالێن ١٨٠٠-١٨٠٤ ببوو میرێ دهوکێ، و ل سالا ١٨١٣ میرێ زاخو بوو(ریکانی، ٢٠١٩، ل٦٥٩).

ئەو دەمێ میر محەمەد تەییاری تێدا ژیای قوناغەکا پڕی زانست و ئەدەبیات بوو، ل باژێرێ ئامێدیێ هژمارەکا زانایێن مەزن بەرچاڤ بوون وەك: مەلا مەحموودێ بەهدینی و مەلا یەحیایێ مزووری و مەلا صالحێ ئاکرەیی و کومەکا هوزانڤانێن کلاسیك ژێ پەیدا بوون، مینا مەلا مەنسوورێ گێرگاشی و بەکر بەگێ ئەرزی و سەیفیێ شوشی و گەلەکێن دی (بادی، ٢٠٢١، ل ١٣٨-١٣٩). ژلایەکێ دیڤە ڤەکرنا قوتابخانە و ناڤەندێن زانستی ژلایێ میرێن ئامێدیێڤە و هاندانا وان ژبو بەلاڤکرنا زانستێن شەرعی و ئایینی و ئەدەبی پێنگاڤەکا مەزن بوو دهاتە دیتن، لەورا دێ بینین کو میر محەمەد تەییار ژ ڤێ رەوشێ بێ ئاگەهـ نەبوو و ڤی هوزانڤانی وەکی گەلەکێن دی شەیدایێ مەلایێ جزیری بوویە و ژ ئەنجامێ ڤێ چەندێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دانەیەك ژ دیوانا وی ب رێنڤیسەكا جوان و ب دەستێ خوە نڤیسیە و ل دووماهیا دەستنڤیسا خوەدا ب ڤی رەنگی خوە دایە نیاسین:" حقیر التقصیر محمد طیار بن اسماعیل باشا العباسی أصلاً العمادی وطناً". ئەڤ دەستخەتە ل سالا ١٢١٣ك/١٨١٥ز نڤیسیە ول پەرتووكخانا مەلا تەهایێ كورێ شێخ مەزهەرێ مایی هاتیە پاراستن. (محمد طیار باشا، ١٢٣١مش، ل١٤٥).

دەربارەی ئەزموون و سەربورا وی یا ئەدەبی گەلەك زانیاری بەردەست نینن، لێ ژ هوزانێن وی یێن بەردەست دهێتە زانین كو هوزانڤانەكێ دەستهەل و شارەزایە. مەلا ئەنوەرێ مایی د پەرتووكا (أكراد فی بهدینان) دبێژیت" محەمەد تەییار پاشا هوزانڤان و تورەڤان بوویە، وی هوزان ب زمانێن كوردی و فارسی هەنە، ئەز ل سەر هندەك هوزانێن وی یێن كوردی ب رێنڤیسا وی یا جوان هەلبوویمە و من دیتیە كو د نازك و جوان و ب ریتمەكت خوەشە، وی هندەك هوزانێن مەلایی جزیری كرینە پێنج خشتەكی و داهێنانا خوە یا شعری ب جوانترین خەمل دیار كریە".(المایی، ٢٠١١، ص٢٢٠-٢٢١).

محەمەد تەییار پاشای د هوزانین خوەدا ناسناڤێ (غەریبی) بو خوە هەلبژارتیە، سەبارەت ئەگەرێ هەلبژارتنا ئەڤی ناسناڤی دوو بوچوون هەنە، هندەك دبێژن ژبەركو ئەوی بو ماوەیەكی ژ باژێرێ خوە دوور بوویە لەورا ناسناڤێ (غەریبی) هەلبژارتیە، لێ ب باوەریا سەعید دێرەشی دبێژیت كو محەمەد تەییار پاشا میراتگرێ شەرعیێ میرگەها بەهدینان بوول ێ دەلیڤە و كاودانان نەهێلایە ئەو ب میراتیێ شاد ببیت، لەورا ئەوی خوە د وەلاتێ خوەدا ب (غەریب) و تەنگەزار دیتیە(دوسكی، ٢٠١٩، ١٤٧؛ دێرەشی، ٢٠١٧، ل٩).

هەروەسا ڤی هوزانڤانی هژمارا (٩٢) وەك ناسناڤەكێ دی بو خوە هەلبژارتیە و ئەڤ هژمارە ل دویف هژمارا حسابا ئەبجەدی دبیتە هژمارا پەیڤا (محەمەد) كو ناڤێ هوزانڤانییە(بادی، ٢٠٢٠، ل ١٦٣).

ژبەرهەمێن ئەڤی میری، ژبلی نڤیسینا دانەیەكا جوان ژ دیوانا مەلایێ جزیری، دیوانەكا شیعرییا تەمام هەیە، كو ژ ٩٢ لاپەران پێكهاتیە و هوزانێن وێ ل دویف ئەلفوبێیا ئەبجەدی هاتینە رێزكرن، و سەرجەمێ هوزانێن وی ١٥٢ هوزانن كو ٩٢ ژێ قەسیدەنە و ٣٢ چوارینن و ٢٨ ژی پێنج خشتەیینە. (دوسكی، ٢٠١٩، ل١٤٧).

ل دووماهیا دیوانا خوە نڤیسەرێ دەستخەتی ئەڤ گوتنە ب زمانێ فارسی نڤیسیە" تمام شد غزلیات جانفدای غمزدای غریبی قدس سرە العزیز، كمالات أو از شرح مستغنی است چنانكە مشهورند= غەزەلێن جانفیدایێ خەمگینێ غەریبی (قدس سره العزیز) ب داوی هات، شروڤەیا رەوشا وان یا هێژا پێدڤی نینە چونكە ئەو ب خوە گەلەك بناڤودەنگن".(دوسكی، ٢٠١٩، ل١٥٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

محهمهد تهیاری پاشای پتریا هوزانێن خوه ب زمانێ فارسی نڤیسینه، ژ سهرجهمێ هوزانێن وی بتنێ (٩) هوزان ب زمانێ کوردینه و یێن دی ب فارسی ڤههاندینه، پێنج ژ هوزانێن کوردی پێنج خشتهکینه کو چوار ژ وان ل سهر غهزهلێن مهلایێ جزیرینه و یا پێنجێ ل سهر غهزهلهکا پهرتوویێ ههکاری ڤههاندییه، ئهڤه رامانا وێ ئهوه کو زور ب مهلایێ جزیری داخبار بوویه، ههروهسا هوزانێن پهرتوویێ ههکاری ژی کو ل وی دهمی میراتی میرگهها ههکاری دکر گههشتبوونه دهستێ وی و ئهوی ئاگهه ژ هوزانڤانێن سهردهمێ خوه ههبوو.

ب گشتی میرێن بهههدینان بایهخدانهکا مهزن ب مهلایێ جزیری دایه، نهخاسمه ئهو میرێن هوزانڤان کو ژێدهر و سهرچاوهیێن وان بوویه د ڤههاندنا هوزانێدا، سهبارهتێ ڤێ چهندێ دکتور محهمد عهلی قهرهدلغی دبێژیت" بایهخدانی میرانی عیمادییه به دیوانی مهلایی جزیری ئهو بایهخدانهی که دوو فلیقانه و دووسهرهیه و له لایهکهوه زانا و کهلهمهلامانی ئهو سهردهمه ههر کهسێ ل ئاستی خویهوه به شێوهیهك له شێوهکان خزمهتی پارچهیهك یان چهند پارچهیهك یان بگره سهرجهمی شیعرهکانی مهلایی جزیریان کردووه و به بیروبوچوونی خویان شهرحیان کردووه و مانایان لێکداوهتهوه".(قهرهداغی، ٢٠٠٦، ل٩).

بو نموونه د پێنج خشتهیهکێدا ل سهر هوزانا مهلایێ جزیری دبێژیت:

بێ غهمێ عشقێ (غهریبی) چ حاصل ژێ مهلێ
دلبهرا عشوه پهری زولف و سهلاسل ژ مهلێ
مهششها نازك و مهستانه وبر دل ژ مهلێ
هاته دهستێ مه د رهقصێ ودگو: بل ژ مهلێ
دهست ب کهس دی د سهمایا کو (مهلا) تێ نادم (دوسکی، ٢٠١٩، ل ١٦١)

ههر د پارچه غهزهڵهکا دیدا د چوارچووڤێ پێنج خشتهکی ل سهر غهزهلهکا مهلایێ جزیری ڤههاندییه شیایه ب هوزانا خوه یا بهێز دهربرینێ ژ بابهتێ عشق و ڤیانێ بکهت:

ب غهریبی دلێ مهسروور صیفهت
رهقصی سهرخوهش و مهخموور صیفهت
مهستیا بادهئێ ئهنگوور صیفهت
ڤ (مهلێ) سوڕ پهرییا حور صیفهت
سهد مهلك دهست ب دهستن چهپ و راست

(دوسکی، ٢٠١٩، ل ١٥٩)

ههروهك دیار بووی کاریگهریا مهلایێ جزیری ل سهر محهمهد تهییاری ئاشکرایه و دبیت ژ ئهگهرێ ڤێ کاریگهری و داخباربوونێ دهست ب ڤههاندنا هوزانێ کربیت نهخاسمه ئهوی دانهیهك ژ دیوانا جزیری ب دهستخهتێ خوه نڤیسیه، د هوزانێن ویدا دیار دبیت کو وی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

هەولدایە ژلایێ شێواز و دارێتنا هوزانێڤە چاڤ ل جزیری بکەت و گەلەك پەیڤ و زاراڤ ژ جزیری وەرگرتینە. کەواتە جزیری ئیلهام و ژێدەرێ وی یێ شیعری بوویە.

ژلایەکێ دیڤە د پێنج خشتەکییەکا دی ل سەر غەزەلەکا میرێ هەکاری مستەفا بەگی ڤەهاندییە و تشتێ سەرنجراکێش دڤێ هوزانێدا تێکهەلکرنا بەرهەمێ دوو میرێن هوزانڤانە، ئێك ل بەهدینان و یێ دی ل هەکاری:

دوو ئەفعان رەنگێ رەشتوزن سەرێ زولف

دوو هندو مەستێ جانسوزن سەرێ زولف

دوو جادوو سحرئاموزن سەرێ زولف

ژبادێ صوبحێ ئالوزن سەرێ زولف

وەیا مەستن ژ بێهنا مسکێ ئەذفەر

نزانم ئەڤ چییە دەردێ هناڤان

مە نینە صەبر و راحەت وەقت و گاڤان

(غەریبی) ئەم کەتن وان بەند و داڤان

یەقین (پەرتۆ) نەظەر کربوو ل چاڤان

کو ما مەستە وەکو مەخموور و ئەبتەر

(دوسکی، ٢٠١٩، ل١٥٧).

دیارە ئێك ژ ساخلەتێن ڤەهاندنا قالبێ پێنج خشتەکی ئەوە، کو هوزانڤانێ ئێکێ یێ کاریگەرە ب هوزانڤانێ دووی و دناڤ ئەڤی میرێ هوزانڤاندا دیار دبیت کو ئەو ب پلا ئێکێ ب مەلایێ جزیری کاریگەرە و ب پلا دووێ ب پەرتۆیێ هاکاری داخبارە.

هەروەك بەری نوکە هاتیە دیارکرن کو ناسناڤێ خوە یێ شیعری کریە غەریبی؛ ژبەرکو ماوەیەکێ ژ ژیانا خوە دووری بازێرێ ئامێدیێ بوراندیە و ئەڤ هەستێ غەریب و دەربەدەریێ رەنگڤەدانا خوە دناڤ هوزانا ویدا کریە:

ژارم ژ دەستێ فورقەتێ      دیسا ل من سەردا غەمان

کوشتم ب دەردێ حەسرەتێ      من صەبر و طاقەت قەط نەمان

راحەت مەبر یەکسەر ژ دەست      جوهنێ خومار و مەی پەرەست

رەشمار ب گەڕ هاتن د مەست      هەژیان ل دور سەلوا جوان

و ل دووماهیا ڤێ شیعرێ فیغان و فەریادێن خوە ژ دەردێ زەحمەت و نەخوەشییا دوور بوونێ ددەتە دیارکرن:

فەریاد و ئەفغان من غەریب      هەر تێن ژ بەر جەورا رەقیب

مە ژ زەحمەت و هیجرا حەبیب      نالی گەهانە ئاسمان

(دوسکی، ٢٠١٩، ل١٥٣)

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ئەڤ جورە هوزانا دچیتە دچوارچووڤێ هوزانا (خەریبیێ)دا و ئیکە ژ وان بابەتان، کو ژ کەڤندا هوزانڤانێن کلاسیک د هوزانێن خودا باس کرینە" ئەڤ خەریبییە ژ جهی یان دەمی، ئەڤ هەستکرنە پشتی دوورکەفتن و ژێکجودابوونێ دهێت، هەروەسا پتر ژ هەمی مروڤان هوزانڤان خودان هەستەکێ نازکە و ئەو دزانیت ب دروستی بشێت ئەڤی هەستێ گرێدای ب بیرهاتنێن ویڤە ل هەر جهەکی و هەر دەمەکی وەسف بکەت".(دوسکی، ٢٠٢٢، ل٢٩٢)

هەر ژ کاریگەریا ڤێ خەریبیا خوە بو باژێرێ ئامێدیێ د هوزانەکا خودا ب زمانێ فارسی داخوازێ ژ بایێ سپێدێ دکەت کو سلاڤێن وی دگەل خو بو خوەشتڤیێن وی ل باژێری ببەت:

ای نسم سحر امروز مبارك بادی

که نویدی برخسته ز یاران دادی

من نمی دانم که تاتار رسیدی امروز

یا که از جانب احباب سر عمادی

(دوسکی، ٢٠١٩، ل١٤٨-١٤٩)

(ئەی بایێ سپێدێ ئەڤرو تو بایەکێ پیروزی، تە مزگینیەك ژ یاران بو من ئینایە، ئەز نزانم کو تو ئەڤرو وەك تەتەر هاتی یان ژلایێ خوشتڤیێن ل سەرێ ئامێدیێ؟).

هەروەسا بابەتێ پێگوتنی ژی دهوزانێن ویدا دیارن، مینا ئەو هوزانا ب مرنا شێخ عەبدولرەحمانێ شۆشی گوتی و تێدا ئاماژە ب سالا مرنا وی ژی دایە:

مفخر صوفیه عبدالرحمن

مردم باصره انسانی

فیض باب از مدد شیخ قصیر

ناهج و معتقد گیلانی...

غفر الله له مولانا

الباری بالرحمه و الرضوان

زین تغابن بطلب لفظ غرام

سال تاریخ وفاتش دانی

(دوسکی، ٢٠١٩، ل١٤٧)

و پەیڤا غرام ب حسابا ئەبجەدی ل هەمبەر سالا ١٢٤١مش/١٨٢٦زایینی دهێت و ئەڤە سالا مرنا شێخ عەبدولرەحمانێ شۆشییە.

تشتی بالکێش ئەوە کو دهوزانێن محەمەد تەییاریدا هیچ بەرژەنگێن سیاسی و حوکمرانییا وی ناهێنە دیتن، لێ بتنێ د هوزانەکا خودا ئاماژە حوکمێ برایێ خوە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

مورادخانی دایە دەمی هاتیە سەر تەختێ میراتیا میرگەها بهدینان، هەرچەندە ژ ژێدەرێن مێژوویی دهێتە زانین کو پەیوەندیێن هەردوو برایان نەخوش بوون، لێ د ڤێ هوزانێدا دهێتە زانین دبیت پشتی کوهەردوو برا پێکهاتبن ئەڤ هوزانە ڤەهاندبیت؛ چونکە ژ بابەتێ هوزانێ دیارە کو کەیفخوەشی پێڤە دیارە و داخوازا پاراستنا برایێ خوە و ب سەرکەفتنا وی ژ خودێ دخوازیت، لێ د دێرەکێدا گلەییێ، دکەت کو ئەو بو ئاهەنگا دانانا مورادخانی بو سەر تەختی نەهاتیە ڤەخواندن! و ئەڤ هوزانە ژی ب زمانێ فارسی ڤەهاندییە:

مژده باد ای دل که دیگر نوبت عشرت رسید
غنچه اقبال و دولت د عمادی بشکفید
یعنی نجل پادشاه کامران سلطان مراد
پرور دین محمد صاحب بخت سعید...
آیت (فالله خیر حافظاً) حرزش بود
رایت (نصر من الله) پیش او باد برید
چونکه عمری شد غریبی من دعاگویم مدام
شرط نبود از وفاداری فراموشم کنید

(دوسکی، ٢٠١٩، ل١٤٨).

مزگینی بو تە ئەی دل کو ئێدی نوبەتا خوەشیان هات و پشکوژا ئیقبالێ و دەولەتێ ل ئامێدیێ بشکفت، ئانکو سولتان موراد کورێ مەزنێ پاشایێ کامیران، پەیرەوێ دینێ محەمەدی و خودانێ بەختێ شاد... ئایەتا (فالله خیر حافظاً) وی بپارێزیت و ئالایێ (نصر من الله) ل دەف وی وەکو نامەبەرەکی بیت، ئەی غەریبی ئەڤە تەمەنەکێ ئەز بەردەوام دوعایان دکەم، مانە مەرجە کو ژ وەفاداری هەوە ئەز ژبیر نەکربام!)

**٢- میر ئیسماعیل پاشا کورێ میر محەمەد تەییار پاشا:**

ئەڤ میرە دناڤبەرا سالێن ١٨٢٢-١٨٣٢ میراتی ل کەلا ئاکرێ دکر، ل سالا ١٨٣٦ ئیسماعیل پاشای میراتیا میرگەها بەهدینان وەرگرتیە و هەتا سالا ١٨٤٢ بەردەوام بوو، ئانکو ئەو دووماهیک میرێ بەهدینانە، پشتی کەفتنا میرگەهێ ژی ئەو چەندین پوست د دەولەتا عوسمانیدا وەرگرتبوون، دناڤبەرا سالێن ١٨٥١-١٨٥٢ و بو ماوەیێ سالەکێ ببوو والیێ شەهرەزورێ پاشی ڤەگەریا بەغدایێ و ل سالا ١٨٦٣ هەر بو ماوەیێ سالەکێ ببوو قایمەقامێ باژێرێ مووسل و ل ١٨٦٩-١٨٧٠ ببوو موتەسەرفێ (پارێزگەرێ) کەربەلا.(رێکانی، ٢٠٢٢، ل١١٧-١٢٠

سەبارەت رۆلێ وی وەکو هوزانڤان و نڤیسەر، ئیسماعیل ئێک ژ وان میران بوو کو گەلەک گرنگی ب نڤیسنیا ئەدەبیات و هوزانێ دایە و بەلگە ژی بو ڤێ چەندێ ئەوی دانەیەک ژ دیوانا مەلایێ جزیری ب دەستێ خوە نڤیسیە، هەروەسا ئەوی هوزانێن چەندین



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

هوزانڤانێن کلاسیك یێن کورد و فارس و تورکان ب دەستخەتەکێ جوان نڤیسیە، وەکو دیوانا فوزوولی و مەولانا ب زمانێ تورکی و حافزێ شیرازی و جامی و سەعدیێ شیرازی ب فارسی و هوزانێن لاغەری ب زمانێ کوردی. لێ ئەوی هەولا نڤیسینا هوزانێ نەدایە و بتنێ هەتا نوکە ئێك هوزانا وی ب زمانێ فارسی هاتیە دیتن و ب گوتنا (من کلام اسماعیل العباسی) ئاماژە دایە کو ئەڤ هوزانە ژ ڤەهاندنا وی ب خویە. و ددێرا دووماهیا وێدا هاتیە:

گفتم اش سمع کن این پند مشو با افسون

هرچە داری شە من دارد و تاج اش افزون

(اسماعیل پاشا، دەستنڤیس، ١٢٦٠مش).

**دوو: رولێ میرێن میرگەها هەکاری د ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجیا سەریدا:**

ب گشتی دناڤ دیروکا ئەدەبیاتا کلاسیکیا کوردیدا، نەخاسمە ئەدەبیاتا کرمانجییا سەریدا، قوناغەك ژ ئەڤی ئەدەبیاتی دناڤ باوەشا میرگەها هەکاریدا پەیدا بوویە، لەورا دێ بینین کو هژمارەك ژ میرێن هەکاری، ژبلی میراتی و دەستهەلاتا سیاسی گرنگی ب زانست و زانین ب تایبەتی د بیاڤێ ئەدەبیات و نڤیسین و هوزانێ دایە، هەتا کو هندەك ژ وان دیوانەکا تەمام یا هوزانێ هەیە و هندەك ژوان چەندین پارچەیێن هوزانێن وان هاتینە دیتن، لێ ژبەر کاودان و باروودوخێن نەخوش و نالەبار یێن کوردستانێ بەرهەمێ وان بەرزە بووینە، لەورا دڤێ ڤەکولینێدا دێ هەول دەین ئەڤ قولاچکا تاریا دناڤ ئەدەبیاتا کرمانجییا سەریدا روون بکەین ب دیارکرنا رۆلێ میرێن هەکاری دڤەهاندنا هوزانێدا و بابەت و ناڤەرۆکێن هوزانێن وان دیار بکەین.

کومەکا مەزن ژ میرێن میرگەها هەکاری گرنگی و پویتەیەکا مەزن ب زانست و زانینێ ب گشتی و ئەدەبیاتێ ب تایبەتی داینە، و هندەك ژ وان دەستەکێ باش د نڤیسینا هوزانێدا هەبوو، هەر ئێك ژ وان ل دویف زانیارییێن بەردەست و بەرهەمێن وان ئەوێن بەردەست دێ ئاماژە ب رۆلێ وان دەین.

**١- میر عمادەددینێ هەکاری:** ئێك ژ وان میرێن هوزانڤانە کو بو ماوەیەکێ دناڤ میرگەهەها هەکاریدا حوکم کریە، ناڤێ وی عمادەددین کورێ یەحیا بەگ کورێ زەکەریا خان بەگییە، دناڤبەرا سالێن ١٦٣٤-١٦٣٩ حوکم کریە.(گولی، ٢٠١٧، ص٧٥-٧٦)، و هەروەك میرزا محەمەدێ یازچی دبێژیت ئەو "میرەکێ خودان شیان د میرگەهەکە بهێزدا بوو"(یازجی، ٢٠١٢، ٦٧). دەمێ بابێ میر عمادەددینی مری هێشتا ئەو و برایێن وی زاروك بوون، و هەروەك د ژێدەراندا هاتی مام و کەسوکارێن وی ستەمەکا مەزن لێکرن و ئەو بو ماوەیەکێ درێژ دناڤبەرا دەولەتا عوسمانی و سەفەوی و میرگەهێن کوردیدا دەربەدەر بوو، لێ ل سالا ١٦٣٣ شیا باژێرێ جولەمێرگێ کو پایتەختێ میرگەهێ بوو بستینیت و خوە وەك میر راگەهاند.(یازجی، ١٤٠١هـ.ش، ٢١، ص٧٠٤- ٧٢١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ئەڤ میرێ هوزانڤان هەڤچاخێ مەلایێ جزیری بوو، دیارە پەیوەندییەکا هەڤالینی یا بهێز دناڤبەرا واندا هەبوو،بەلگە ژێ ئەو دانوستاندنا هوزانکییە ئەوا دناڤبەرا هەردوویاندا کو ددیوانا مەلایێ جزیریدا دهێتە دیتن. ئەڤ دانوستاندنا هوزانکی دهێتە هژمارتن وەك ئێکەم دانوستاندنا هوزانکی د ئەدەبیاتا کوردیدا دناڤبەرا مەلایێ جزیری و میرەکێ هوزانڤاندا هاتیە ئەنجامدان، ئەڤی میری شیایە ددارشتن و ڤەهاندنا ئەڤێ هوزانێ وەسا بهێز داریژیت، کو ئاستێ هوزانا خوە بگەهینیتە ئاستێ هوزانا مەلایێ جزیری.

ددەستپێکا هوزانێدا جزیری ب سلاڤەکا گەرم دەستپێدکەت و پەسنا میری عیمادەددینی دکەت و وی هێژای هەمی ناسناڤێ بەرز و بلند دبینیت:

سەلاما مـن ثـەناخوانی سەحەرگەهـ گەوهەر ئەفشان بت

ب خدمەت عەرض سولتانی عـەبیر و عەنبـەر ئەفشـان بـت

ب صوورەت ئەمرێ سولطانی سـەرئەلقابێ زەرئەفشـان بـت

(جزیری، ٢٠٢٢، ٣١١)

میر بەرسڤا وی ب سلاڤەکا پڕی بێهنێن خوەش و گولاڤان ددەت کو دلێ مروڤان پێ خوەش بیت، ل ڤێرێ دیار دبیت کو میر عمادەددین ب دیتنا جزیری کەیفخوەش بوویە:

سـەلاما صـانعی قـادر مەلا دا پێ موعەططەر بی

موفەڕڕەح بت مە لێ خاطڕ پەیاپەی لێ موکەڕڕە بێ

ژجامـا خـاطرێ عـاطڕ مـە ژێ ئایینـە ئـەنوەر بێ

(جزیری، ٢٠٢٢، ٣١١)

دڤێ دانوستاندنا هوزانکیدا وەسف و پەسنەکا مەزن دناڤبەرا هەردوو هوزانڤاناندا هاتیە ئالوگور کرن، دەمێ میر پەسنا جزیری دکەت دبێژیت ئەی مەلا تو د هەرێما ئاخفتن و زمانیدا وەکو شاهانی و خودان شیان و دەستهەلاتداری، گیان و روحی ددەیە پەیڤان و ب رامانـان زینـدی دکـەی، ژ هـوزانێن تـە شـەکر دبـارن، سـالوخەت و سـیفەتێن جـوانی و جادوگەرییێ ددەیە پەیڤێن خوە، و وەکو گەوهەرێن ب نرخ و بەها دروست دکەی:

د ئیقلیمـێ سـوخەن خاقـان رەوان بـەخش و شـەکەر ریزی

ژنەیشـەکەر ل ئـەوراقان ب جـانڕا عەنبـەر ئـامیزی

ژسـیمین سـاعد و سـاقان ب سـەححاری گوهـەر ریـزی

(جزیری، ٢٠٢٢، ٣١٨)

ب ڤی رەنگی میری داخباریا خوە بو جزیری دیار کریە، د راستیدا جزیری ژێ پەسـن و مـەدحا هوزانـا وی دکـەت دەمـا دبێژیـت تـو دچییـە د کووراتیـا دەریایـا رامـان و زانینانـدا و دوڕ و گەوهەران ژێ دەردئێخی و د چێکرن و ڤەهاندنا هوزانێدا تو یێ هویربینی، شارەزاییا تە د هوزانێدا هندە زور کو تو دچاڤ نقاندنەکێدا دکاری سەد هوزانان بڤەهینی، د ڤێ گوتنێدا دیار دبیت کو میر عمادەددینی دەستهەلیەکا مەزن د ڤەهاندنا هوزانێدا هەبوویە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

و هوزانا وی تا وی رادەی بهێز بوویە کو جزیری پێ داخبار ببیت، بێ گومان ئەڤ گوتنا جزیری راستە؛ چونکە بەرسڤدانا میری ب رەنگەکێ ئێکسەر و ب شێوەیێ هوزانەکا رێکخستی و بهێز رامانا شارەزاییا مەزنا میر عمادەددنی د هوزانێدا ددەت:

ب غەوواصی ب سەححاری تە دوڕ ئانین ژ بەحرەینێ
ژ شەعرا تە شەکەر باری ژ مصرێ تا ب غەزنەینێ
ب دیقەتبین سەد ئەشعاری د بێژی (طرفة العین)ێ

(جزیری، ٢٠٢٢، ٣١٨)

دداویا ئەڤێ دانوستاندنێدا میر عیمادەددینی ب ئاشکەرایی ئاماژە ب داخباربوونا خوە ب جزیری دایە و ئەو وەك ماموستایێ خوە دایە نیاسین:

دباغێ لەفظ و مەعنایێ سوخەن من سەروێ ئازادە
ژ ڤێ ئیملا و ئینشایێ مە لەوحێ دل نوما سادە
ژ حوسنێ رەونەقەك دایێ کو شێخ ئەحمەد مە ئوستادە

(جزیری، ٢٠٢٢، ٣١٨)

هەروسا جزیری ب جوانترین پەیڤ بەحسا میری کریە و ب سەر هەمی میر و بەگلەر و ئاغایان دانایە، پشتی ناڤئینانا میری دبێژیت کو ئەو شانازیێ دبەت کو خزمەتکارێ میر عمادەددینییە:

دبەحرا قولزوما میران ب غەواصی گوهەر چینم
د بەحثا شەرح و تەفسیران تو دەریایان وەنابینم
ژ میر و بەگلەر و چیران غولامێ میر عمادینم

(جزیری، ٢٠٢٢، ٣١٨)

د ژێدەراندا هاتیە، کو میر عمادەددین د حوکمێ خوەدا کەسەکێ توند و دلڕەق بوو و دلوڤانی ب هەڤڕکێن خوە نەدبر، " د سەرێ وی دا مەزنی و غروورەك هەبوو کو جاران ناهێتە سالوخدان...وی دەستێ خوە دانا سەرتەختی و موکوم گرت و خەلك ب هێزا شوێرێ قەهرا خوە چەماند، د زانین و دادی و حوکم و سیاسەتێدا ئەو گەهشتبوو کەمالێ، ژ ترسا بەرچاڤا سیاسەتا وی میرێن رەخ ودوران بندەستی وی ببوون، ئەوی باوەری ب کەسەکێ دی ژبلی خوە نەبوو.."(یازجی، ٢٠١٢، ل ٦٨).

سەرەڕای ئەڤێ چەندێ میر عمادەددینی هەستەکێ نازك د ڤەهاندنا هوزانێدا هەبوو، لێ هەتا نوکە بتنێ شەش هوزانێن وی هاتینە دیتن کو چوار ژێ ب زمانێ کوردینە و دوو ب زمانێ فارسی هاتینە دانان. میر عمادەددینی د هوزانێن خوەدا ناسناڤێ (صەبووری) بکاردهینا (مزووری، ٢٠١٢، ل٦٢) کو رامانا کێشانا هەدارێ ل سەر نەخوەشیان ددەت، و دبیت هەلبژارتنا ئەڤی ناسناڤی؛ ژبەر وێ زولمێ بیت ئەوا وی د زاروکی و گەنجاتیا خوەدا ژلایێ کەسوکار و میرێن دەردورێن خوە دیتی، هەروەسا ژ هوزانەکا وی دیار دبیت کو ئەوی گەلەك خەم و


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کوڤان دیتینە و دلێ وی ژ ئێش و زانان بریندار بوویە، هەردەم گازندە ژ بەدبەختیا خوە کریە، لێ ئەو ل سەر وان خەم و کەسەران یێ بێهنفرەه بوو، لەورا ئەوی ناسناڤێ (صەبووری) بو هوزانێن خوە هەلبژارتیە:

دلێ مەجرووحێ من پڕ ژانە دیسا
تژی دەرد و غەم و کوڤانە دیسا
نەشێم دەرمان بکەم دەردێ دلێ خو
حەکیمان بینە سەر لوقمانە عیسا
هەچی دی صوورەتا دلدار و دلبەر
بیە حەیران د چار و کەفتە لیسا
بەلێ من زانیە بەدبەختیا خو
چرایێ من حەتا صوبحێ نەئیسا
لوطفا تە عەجەب مامە صەبووری
نەگو حالت چییە دەفتەر نقیسا

(دوسکی، ٢٠١٩، ل٣٦).

ئێک ژ هوزانێن وی هوزانەکا مەلایێ جزیری د چوارچووڤێ پێنج خشتەکیدا دارشتیە و ئەڤە ئاماژەیەکا دییە، کو ئەو ب ڤی هوزانڤانێ مەزن داخبار بوویە. و د پارچەیا دووماهیێ ژ پێنج خشتەکیا خوەدا دبێژیت:

پڕ د عشقێدا مەحووین مە نەمان ئەسل و رەهەك
وەکی تە مەست و خوماری کێ دییە خان و شەهەك
لەو صەبووری ژ سەرو قامە نە هشیارە گەهەك
ژئەزل ئەح ب مەلێ دایە ژ عشقێ قەدەحەك
تا ئەبەد مەست و خەرابین ژ مەیا وێ قەدەهێ

(دوسکی، ٢٠١٩، ل٣٤)

ژلایەکێ دیڤە، ئەوی دوو هوزانێن دی ب زمانێ فارسی ڤەهاندینە، ئەڤە عەدەتەکێ هوزانڤانێن کورد بوو کو شارەزاییەکا مەزن د زمانێ فارسیدا هەبوون و هەول دان کو هوزانان ب ڤی زمانی ژی بڤەهینن. د هوزانەکا خوەدا دبێژیت:

ای بمثل روی تو همچو مه بر فلك
مدح لب لعل تو ورد زبانێ مەلەك..
پیش تو جان باختن لی مرا کار لیك
عشق تو بر کبش کرده زهم باز فك
ملك صبوری شود مقتل درگاه تو


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

نذر تو خواهد كند جا هزاران چه پك

(دوسكی، ٢٠١٩، ل٣٧)

هەروەسا میر عیمادەددینی گرنگییەكا مەزن ب زمانێ كوردی ددا و هندەك ژێدەر دبێژن كو ئەو هندەك جاران فەرمانێن خوە ب زمانی كوردی دنڤیسین، ئەڤە رامانا وێ چەندێیە كو وی زمانێ كوردی وەك زمانێ دەستهەلات و كارگێرییێ ژی بكار هینایە. (یازجی، ١٤٠١، ج٢، ص١١٧٨).

قوناغەكا گرنگ ژ ژیانا میر عیمادەددینێ هەكاری ل سالا ١٦٣٥ دەستپێدكەت، دەمێ سولتانێ عوسمانی موورادێ چوارێ (١٦٢٢-١٦٣٩) بریار دای هێرشەكا مەزن ببەتە سەر دەولەتا سەفەوی، نامەیەك بو میر عیمادەددینی هنارت و فەرمان لێكر كو دگەل وی پشكدار بیت، لێ میری داخوازیا وی رەدكر و "ب شێوەیەكێ زڤر بەرسڤا وی دا"، لەورا سولتانی بریاردا ل سالا ١٦٣٨ لەشكەرەك هنارتە سەر هەكاری و دشەریدا میر عیمادەددین شكەست و بەرەڤ حەلەبێڤە چوو، لێ ل وێرێ هاتە دەستەسەركرن و بو باژێرێ ئیستانبوولێ هاتە هنارتن و بو دەمێ حەفت سالان د زیندانێدا ما(گولی، ٢٠١٧، ل١٦٦-١٦٩؛ كاپلان، ٢٠٢٢، ل١٧).

دناڤ ئێك ژ هوزانێن ویدا ئاماژە ب ژیانا وی یا زیندانێ هاتیە كرن و سەروبەر و رەوشا خوە یا دەروونی دیار دكەت كو د خەم و حەسرەت و نالینێدا ژیایە، هەروەسا دڤێ هوزانێدا سیمایێن (هوزانا زیندانێ) پێڤە دیارە؛ چونكە سێ جاران پەیڤا زیندان و دوو جاران پەیڤا (حەبس) بكار ئینایە، هەروەسا پەیڤێن (قەید)، (چال) بكار ئینانە و ئەڤە ژی پەیڤ و دەربڕینێن گرێدای ب زیندانێنە، و هەروەك ئەو ب خوە دبێژیت كو ئەو بو ماوەیەكێ درێژ دزیندانێدا مایە و كەفتیە "دناڤ ژەهرا خەماندا".

گەلەك شوبهەتی ماروونێ ب دوم مایيم دزندانێ

دزندانێ ب دۆم مایيم ددەڤ مارێ غەمان دایيم.

د دووماهیا هوزانێدا پتر تەكەزێ ل سەر زیندانیبوونا خوە دكەت و ناسناڤێ خوە دهینیت و دبێژیت كو صەبووری د حەبسێدا مایە:

كەمان كێشا كەمانداران

دبارن تیر وەكی باران

ل قەبرێ مە بریندران

دوێ حەبسێ و كوڤانێ

صەبووری ما د حەبسێدا

ب دووم مایيم د قەیدێدا

وەكی دنێری دچالێدا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

دەرینە وی ژ زیندانێ.

(دوسکی، ٢٠١٩، ٣٤-٣٥)

ل ڤێرێ دیار دبیت، کو میر عیمادەددین میرەکێ هوزانڤان و رەوشەنبیر بوویە، ژبلی کو میرگەها هەکاری ل سەردەمێ ویدا د رەوشەکا بهێزدا بوو، دبیاڤێ ئەدەب و ڤەهاندنا هوزانێدا ژی دەستەکێ بالا یێ نڤیسینێ هەبوویە، و دڤی بیاڤیدا دکارین ئاماژە ب ڤەهینووکا دیروکا هەکاری بدەین کو ب فەرمانا وی ل سەر دەستێ کاتبێ وی (تومەرخانێ یازچی) هاتیە نڤیسین، و ئەڤ بەرهەمە هەمی ب شێوەێ هوزان و ب زمانێ فارسی هاتیە نڤیسین کو ژ نێزیکی ١٠٥٠٠ دێران پێکدهێت. (یازجی، ١٤٠١، ج١، ل١٧).

٢- **مستەفا خان بەگێ هەکاری**:پەرتوویێ هەکاری هوزانڤانەکێ بەرنیاسە لێ کێم جاران وەکو میر ل میرگەهەکێ هاتیە دنیاسین، رولەکێ مەزن دمیرگەها هەکاری دا هەبوویە، لێ دگەل هندێ ژی بیاڤەکێ مەزن ژ ژیانا خوە بو زانین و ئەدەبیاتێ تەرخانکریە، لەورا دێ ل ڤێرێ گرێدانەکێ دناڤبەرا ژیانانا وی سیاسی و ئەدەبی دروست کەین، ئایا وەکو میر چ رول دناڤ نڤیسین و ڤەهاندنا هوزانێدا هەبوویە؟ ئایا سەربورا وی یا هوزانێ دمیانێ حوکمرانییا ویدا ب چ رەنگ بوویە؟ و بابەتێن هوزانێن وی ژلایێ روخسار و ناڤەروکێڤە ب چ شێوە بوویە؟

مستەفا بەگ کورێ عەبدوللاهـ خان کورێ ئیبراهیم خان کورێ محەمەد بەگێ هەکارییە، ئەوی بو ماوەیەکێ درێژ ئانکو پتر ژ ٤٥ سالان حوکم کریە. (گولی، ٢٠١٧٨١-٨٢)، سەبارەت مێژوویا ژدایکبوونا وی هەتا نوکە د چ ژێدەراندا ئاماژە پێ نەهاتیە دان، لێ ماموستا تەحسین دوسکی گومانێ دبەت کو وی ددێرەکا هوزانا خوەدا ئاماژە ب دیروکا بوونا خوە کریە. پەرتو دبێژیت:

پەرتووی رەملا تە قەنجە دا نەکی شەکوا خەطان

یازدە و حەفتێ سەعادەت دانیە لەححانێ فەرەح (دوسکی، ٢٠١٧، ل٢١)

دڤێ هوزانێدا پەرتو بەگ دبێژیت کو: ئەوی پەرتو بەختێ تە یێ باشە و چ گازندەیان ژ خەلەتیێن خوە نەکە. لەورا ئاوازبێژێ کەیفێ یازدە و حەفتێ خوشبەختی داینەتە. و ل دویف دیتنا ماموستایێ ناڤبری یازدە و حەفتێ ئاماژەنە بو سالا ١١٧٠ و دبیت ئەڤە سالا ژدایکبوونا پەرتویێ هەکاری بیت، و ئەڤ سالە دکەڤیتە هەمبەر سالا ١٧٥٦-١٧٥٧ز. و دەمێ بزانین کو ئەوی ل سالا ١٧٨٣ دەست ب میراتیێ کری هینگێ ئەو سالا ماموستای گوتی دێ بەرعاقل بیت. و ئەگەر دیروکا ژدایکبوونا وی راست بیت هینگێ ئەوی د تەمەنێ ٢٥-٢٦ سالیدا حوکم ل میرگەها خوە وەرگرتیە.

ژێدەرێ سەرەکیێ کو پشتراست کری کو میر مستەفا بەگ هوزانڤان بوو و ناسناڤێ وی (پەرتو) بوو پەرتووکا (مختصر أحوال الامراء)ـە کو ب ژلایێ میرزا محەمەدێ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

یازجی ب زمانێ فارسی هاتیە نڤیسین، و ل سالا ١٩١٤ کەسەکی ب ناڤێ محەمەد تەییار کورێ محەمەد تەییار کو دبیتە نەڤیێ نەڤیێ پەرتوی هاتیە نڤیسین. (یازجی، ٢٠١٢، ص٨٥)، هەروەسا زانا و سیاسەتمەدارێ مەزن عەبدولرەحیم رەحمیێ هەکاری ژی د گوتارەکا خودا ل رۆژنامەیا کوردستان ل ١٩١٩ دیار کریە کو ل "میرگەها هەکاری چەندین زانا دەرکەفتینە و بووینە کانیێن زانینێ مینا: ئەحمەدێ خانی، مەلایێ باتەیی، و مستەفا بگ یێ بەرنیاس ب (پەرتو) و گەلەکێن دی" (کوردستان، ١٩١٩، ل٨؛ طاهر، ٢٠١٩، ل ٥٠١). و پەرتو پەیڤەکا فارسییە ب رامانا (پەژنا تیروژکێ یان روناهیێ). (ئامێدی، ١٩٨٠، ل ٣٦٠). د دێرەکا هوزانێدا دبێژیت:

پەرتویی پەرتویێ نار و شەرارا ئاتەشێ عشق

ژ سەری تا ب قەدەم پێتەك مثلێ شەرەرێ (دوسکی، ٢٠١٧، ل٢٥٧)

دبیت ئەڤ ناسناڤە ئاماژەیەکا سوفیانە بیتن مەبەست ژێ ڤەپەشینا پەژنا تیروژکێن روناهیێ ژ ئاگرێ ڤیان وی بو ذاتێ خودایێ مەزن، هەروەکی ئەوی ددێرا سەریدا گوتی کو ئەو ژ سەری هەتا پێیان د ڤی ئاگریدا سوتیە.

هەرچەند ە کو پێزانین سەبارەت هوزانڤانی و سەربورا وی یا ئەدەبیی کێمن ژی لێ پێزانین دەربارەی ژیانا وی وەکو میر و سیاسەتمەدار کێم نینن، پشتی مرنا بابێ وی ب چوار سالا ئەوی ل سالا ١٧٨٣ حوکم ژ برایێ خوە کەریم خانی وەرگرتیە. (یازجی، ٢٠١٧، ل ٨٣)، هەروەسا دهێتە زانین کو ل دەمێ وی تەختێ میراتیێ وەرگرتی سەروبەر و بارودوخێ وەلاتی دکاودانەکا خراب و پڕی ئاژاوەدا دبوری، لەورا ئەڤە بو هوکا رکو دەمێ وی میراتی وەرگرتی وی دڤیا دەستهەلاتا خوە ب شێوەیەکێ بهێز بو خەلکی بدەتە دیارکرن، هەرکەسەك هزرەکی بو دەستهەلاتا وی بکەت، " ژ عەقل و سیاسەتا وی موفسد و بەرهنگارێن وی بنئەمر و گوهدار ببوون، دزانینا ناڤخویی و دەرڤەیی و (ظاهری) و (باطنی) ئەو خودان کەمال بوو، کەسەکی نەدوێریا بەرسڤا وی بدەت، زانا و دەروێش هوگرێن وی بوون".(یازجی، ٢٠١٧، ل ٨٣).

سەرەرای ڤێ چەندێ ل سالا ١٨٢٢ پەرتو تووشی یاخیبوونەکێ ژلایێ کورێ خوە (محەمەد نەسیرخانی) بوو و ب هاریکاریا هندەك هوزێن کوردان بابێ خوە ژ حوکمی لادا و ل گوندەکی زیندان کر، لێ حوکمێ نەصیرخانی گەلەك نەڤەکێشا و پشتی بورینا شەش هەیڤان مر، جارەکا دی پەرتوی دەستهەلاتا خوە ڤەگەڕاند هەتا ئەوژی ل سالا ١٨٢٥ مری. (گولی، ٢٠١٧، ص١٠٢-١٠٤).

د هوزانەکا خودا پەرتو بەحسێ رەوشا خوە دکەت دەمێ کورێ وی دژی وی راوەستیای، و دڤێ هوزانێدا پەرتو گلە و گازندەیان ژ مروڤێن سەردەمێ خوە دکەت، ژ هەبوونا بێ وەفاییێ دنالیت، و دبێژیت کو حەیف و مخابن ئەو دلێ وی یێ وەکی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

گەنجینەیا هێڤیان لێ مخابن بەرەڤ بێ ئومێدی و مرنێڤە برن. هەروەسا پەرتو خوزییان بو سەردەمێ گەنجییێ دخوازیت کو دەمێ هێشتا ل سەر هێزا خوە، و ئەڤە رامانا وێ چەندێ یە کو ئەوی ئەڤ هوزانە ددەمێ پیری و بناڤسالڤەچوونێدا نڤیسییە، و دبیت د ئەڤێ هوزانێدا ئاماژە ب یاخیبوونا کورێ خوە محەمەد نەسیر خانی کربیت:

نەخلا بالا تە بەرێ خوە بێ تەلەف بوو حەیف حەیف

سەروا نازك بوو، ژ نازان بەرطەرەف بوو حەیف حەیف..

ئەو دلێ نازك ب سەد نەوعان مەکربوو پەروەرش

لێ ژبو تیرا نەظەربازان هەدەف بوو حەیف حەیف

دل م سندووقەك تژی گەوهەر ژ ئومێدان هەبوو

ڤی دەمی گەوهەر هەمی مثلێ خەزەف بوو حەیف حەیف..

مایە پەرتو دنێڤا نەحسییا وەقتێ پیریێ

نووجوانی چوو، زەمانەك پڕ شەرەف بوو حەیف حەیف

(دوسکی، ٢٠١٧، ل ١٦٩)

ژلایێ ئەدەبیڤە، مستەفا بەگی بتنێ ئێك دیوان هەیە کو ژ ١٨٩ هوزانان پێکهاتیە، ١٠ ژوان قەسیدەنە و ١٧٦ غەزەلن و ٢ چوارینن و غەزەك ب زمانێ فارسیە، و ژلایێ سەروایێڤە هوزانێن خوە ب هەی پیتێن ئەلفابێیا عەرەبی و کوردی ڤەهاندینە، بتنێ هەردوو پیتێن (ذ، ظ) یێن عەرەبی و پیتا (ژ) یا کوردی بکار نەئینایە. و ژلایێ کێشێ ڤە بەهرا پتر ژ کێشێن عەروزا عەربی بکار هینایە " و لە ئەدەبی کوردیدا کەم شاعیر هەیە ٩ بەحری عەروزی لە شیعردا بەکار هێنابێت". (خەزنەدار، ٢٠٠٢، ب٢، ل٤١٢).

ژلایێ ناڤەروکێڤە پرانییا بابەتێن هوزانا وی بابەتێن ئایینی وەکو موناجات و نەعتا پێغەمبەری و "ئەگەر شاعیرانی کورد بو پیروزباهی سەرەتای دیوانەکانیان بە یەك دوو قەسیدەی مەدحی خودا و پێغەمبەر رازاندبێتەوە، پەرتو نێزیکەی سێ یەکی دیوانی بریتیە لە قەسیدە و پێنجین و چوارین، ئەمانە دچنە ناو نموونەی شیعری هەرجوانی کە بە زمانی کوردی بێژرابێ". (خەزنەدار، ٢٠٠٢، ب٢، ل٤١٢). لەورا ژ هوزانێن وی دهێتە زانین کو ئەو کەسەکێ دیندار بوویە و یێ ل سەر زانستێن سوفیگەریێ یێ ئاگەهدار بوویە، " ئەو ژ ژیانا زانستی و مەدرەسەیێ دوور نەبوویە و ئەو باش ئەگەهدار بوو ل سەر زانستێن شەرعی تشتێ هندێ دگەهینیت کو دبیت ل سەر دەستێ زانا و مەلایێن سەردەمێ خوە هاتبیتە پەروەردەکرن، وتەریقەتا نەقشبەندی ژی ژ شێخێن وی سەردەمی وەرگرتبیت". (دوسکی، ٢٠١٧، ل٢٢). هەروەك ئەو ب خوە ب شێوەیەکێ ئاشکرا د هوزانەکا خوەدا دبێژیت کو ئەو ژ پەیرەوێن تەریقەتا نەقشەبەندییە:

پەرتوا حینا تە گرت دامانێ پیرێ نەقشەبەند



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هاتە گوشی دل ژ غەیبێ (أفرح) وە (لا تخف).

(دوسکی، ٢٠١٧، ل ١٦٨).

ب ڤی رەنگی دیار دبیت کو پەرتو هەم میر و هوزانڤان و هەم زانایەکێ شەریعەتی و سوفی بوویە.

د بابەتێن موناجات و نەعتێدا پەرتوی هوزانێن بهێزڤەهاندینە، کو د پارچە قەسیدەیەکا خوەدا ب ناڤێ خودایێ مەزن دەستپێدکەت و شیان و هێزا وی ددەتە دیار کرن، و جوانی و دلوڤانیا خودایێ مەزن دیار دکەت کو نەبتنێ دایە مروڤان بەلکو دایە هەموو چێکریێن خوە ل سەر روویێ ئەردی، و ئەڤ جوانکاریا داهێنانێ ئەوا دڤێ گەردونێدا هەیە ژ جوانیا سیما و سیفاتێ خودایێ مەزنە:

سەرنامەیی فەتحێ ئین موناجات

چێکر مە ژبو قەضایێ حاجات

دیباجە ب ناڤێ ئسمێ ئەللاهـ

دانی مە ژبو رەجائێ دلخواه..

ئەی خالقێ ئەرض و ئاسمانان

ئەی راحمێ پیر و نەوجوانان..

ئەی رازقێ موئمنان و کافر

حوسنا تە د جوملەیان باهر

گەر ئینس و ئەجننە و نەباتات

زیر روح و طویوور و با جەمادات

یەکسەر هەمی مەظهەرێ سیفاتن

مرئاتێ سیفاتێ پاکێ ذاتن

(دوسکی، ٢٠١٧، ل ٥٩).

هەر د غەزەلەکا دی یا موناجاتێدا دبێژیت، کو میر و پاشامە و ژ هەمی مولك و مالێ دونیایێ بێمنەتم لێ ئەگەر رەحم و دلوڤانیا خودایێ مەزن هەبیت بو من ب هەمی پارە و مالێ دونیایێ دئینیت:

پەرتویی ژ میر و پاشان یەك قورش نینە مننەت

حینا هەبت ژ جانان یەك ذەررەیەك عینایەت (دوسکی، ٢٠١٧، ١٠).

ئێك ژ تایبەتمەندیێن دی یێ هوزانا پەرتوی کاریگەریا وییە ب مەلایێ جزیری، تا رادەیەکێ کو تاما شیعرا جزیری ل سەر دیوانا وی زالە، ئەوی هوزانێن خوە ل سەر دەریایێن مەلایێ جزیری ڤەهاندینە و پەیڤ و گوتن و بێژەیێن وی ژ بو سەنگی بکار ئینایینە، و گەلك جاران هوزانێن خوە ل سەر سەروایا مەلایێ جزیری ڤەهاندییە. (ئامێدی، ١٩٨٠، ل٣٦٣)،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

بو نموونە پەرتوی د هوزانەکا ب چارچووڤێ (موسەمەط) و ب کێشا رەجەزا هەشت تەفعیلەیا (مستفعلن، مستفعلن، مستفعلن، مستفعلن) ڤەهاندیە کو ژلایێ روخسارێ و ناڤەروکێڤە ب تەمامی چاڤ ل مەلایێ جزیری کریە:

ئاهێ ژ دەردێ دل نەکت، هەر چی نەدی ئازارێ چەرخ

دەربێ ل نیڤا دل ددەت، لامع سیفەت نووبارێ چەرخ

(جزیری، ٢٠٢٠، ل٩٦)

**پەرتوو ژی هەر ل سەر رێچکا جزیری دبێژیت:**

سەد ئاه و سەد فریادە من ئیرو ژ ڤێ مەککارە چەرخ

ئەو حیلەسازا پیرەژەن ئەو ماکرا سەححارە چەرخ

(دوسکی، ٢٠١٧، ل ١٢١).

**د نموونەیەکا دیدا جزیری دبێژیت:**

ئەووەل کو یارێ دا مە یەك ذەررەیەك عینایەت

قسمەت مە خەمر و جامە ددەفتەرا هیدایەت

حوسن و جەمالێ جانان نا دێرتن تو پایان

هەر چی نەبت بیدایەت ئەسلەن نەهن نیهایەت

(جزیری، ٢٠٢٠، ل ٧٥)

**د بەرامبەر دا پەرتوویێ هەکاری ب هەمان روخسار و ناڤەروکڤە دبێژیت:**

ئیروکە عشقێ دلبەر د دل کر وەکر سرایەت

سێسەد زەبان گویا نەشێن بکن ریوایەت

حوسن و جەمالێ جانان حوبب و ئەڤینیا من

هەردوو د بێ زەوالن ئەوان نەهن نیهایەت.

(دوسکی، ٢٠١٧، ل ١٠٨)

ژڤێرێ دیار دبیت، کو ژێدەرو ئیلهاما پەرتویێ هەکاری داریێتنا هوزانێدا هەم ژلایێ روخسار و هەم ژلایێ ناڤەروکێڤە مەلایێ جزیری بوویە، ب ڤی رەنگی دئەدەبیات کرمانجیا سەریدا پەرتویێ هەکاری وەکو میرەکێ هوزانڤان دچیتە دقوناغا چاڤلێکرنێدا کو ب پلا ئێکێ یێ کاریگەربوویە ب مەلای جزیری.

**٣- میر محەمەد بەگێ کورێ (محی السنة) بەگێ هەکاری:** ئەو ژ ئێك ژ میرێن هوزانڤانە و ناسناڤێ وی (عەلائی)یە، ئێك ئاماژە ب هوزانڤانبوونا وی د پەرتووکا (مختصر أحوال الامراء) دا هاتیە، پێزانین سەبارەت میر محەمەد بەگی زور کێمن لێ ژ ژێدەران دهێتە زانین کو ئەو ل سالا ١٨١٧ میر بوو.( یازجی، ٢٠١٢، ص٧١). هەتا نوکە چ بەرهەمێن وی نەهاتینە دیتن ژبلی هوزانەکێ ب زمانێ فارسی کو دداوییا وێدا ئاماژە ب ناسناڤێ خوە دایە:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

بظاهر چون (علائی) دور شد از سرو رعنائی

پریشان گفت و گو چون بید مجنونست پنداری

(رێکانی، ١٤٠١، ١٩٧)

( هەرچەندە عەلائی ب سەرڤە ژ سەروا جوان دووره لێ د دانوستاندنێ داد ێ هزر کەی ئەو وەکو بییەکا پەریشانە)

٤- **میر عەبدوللاهـ خان بەگ**، ئەو کورێ ئیبراهیم بەگ کورێ محەمەد بەگییە، و بابێ پەرتویێ و نەڤیێ عەلائییێ هەکارییە، ل سالا ١٧٨٠ مریە. (گولی، ٢٠١٧، ل ٨١)، سەرەڕای کو ماوەیەکێ میراتی ل هەکاریان کریە لێ پێزانین ل سەر ژیانا وی یا کەسایەتی و سیاسی زور دکێمن، ئێکەم ژێدەر کو بەحسێ وی کربیت پەرتووکا (مختصر أحوال الامراء)ـە کو دبێژیت:" ئەو مروڤەکێ عارف و دلپاك و خودێناس بوویە لەوڕا ناسناڤێ وی یێ شعری (عارف) بوو".(یازجی، ٢٠١٢، ل ٧٨). ئێك ژ وان میرێن هەکاری بوو یێن گرنگی ب ئەدەب و هوزانێ دایە لێ مخابن تەنها هوزانەکا وی ب زمانێ فارسی هاتیە دیتن و د سەریدا نڤیسیە (من کلام عارف عباسی)، و د دێرا دووماهییێدا دبێژیت:

حال (عارف) ز خیالات بناگوش چو گل

امشب ای بزم حریفان چو خیال دهنست

(رێکانی، ٢٠٢٠، ل ٩).

٥- **عەبدوللاهـ بەگێ هەکاری**: کوڕێ پەرتویێ هەکارییە، و ناسناڤێ وی یێ هوزانێ (مەستی) بوو (یازجی، ٢٠١٧، ل٨٣)، گورێ وی ل باژێرێ جولەمێرگێیە و ل سەر کێلیا وی هاتیە نڤیسین:" هذه روضة المرحوم السلطان.. عبدالله خان ابن مصطفی خان بك العباسی.. سنة ١٢٣٢هـ". (گولی، ٢٠١٧، ص ٢٩٦)، ئانکو (ئەڤە میرگا رەحمەتی سولتان عەبدوللاهـ کورێ مستەفا خان بەگێ عەبباسییە.. سالا ١٨١٦ز). محەمەد تەییار دبێژیت کو ئەو جێگرێ بابێ خوە بوو و حوکم ل باژێرکێ ئەلباکێ دکر، لێ ئەو هێشتا بابێ وی ساخ مربوو و کوڕەکێ بچووك ل دویڤ خوە هێلایە ب ناڤێ نووروللاهـ بەگ. (گولی، ٢٠١٧، ص٨٣). هەرچەندە عەبدوللاهـ بەگ هوزانڤان بوو و "د زانین و سیاسەتێدا خودان کەمال بوو". (یازجی٢٠١٢، ل ٨٣) لێ هەتا نوکە چ بەرهەمەکێ وی نەهاتیە دیتن.

٦- **میر شەرەفخان**: ژێدەرێ ئێکانە بەحسێ ڤی میری کری مەلا مەحموودێ بایەزیدییە کو د پەرتووکا (جامعێ رسالە و حیکایەتاندا) دبێژیت، کو شەرەفخان "ئێك ژ میرێن هەکاریانە و ژ دووندەها عەبباسییە" (بایەزیدی، ١٢٧٧مش، ل١٦)، ل سالا ١٦٩٠ هاتیە دونیایێ و ل سالا ١٧٤٨ ل جولەمێرگێ مریە، و بایەزیدی دبێژیت کو وی گەلەك هوزان ب زمانێن کوردی و فارسی

هەنە.(بایەزیدی، ١٢٧٧مش، ل١٦)، لێ ئەوی ئاماژە ب هیچ ژوان نەدایە و تا نوکە ژی چ بەرهەمێن وی نەهاتینە دیتن.

ژئەڤا بوری دیار بوو، کو پتریا رێژەیا میرێن هوزانڤان ل میرگەها هەکاریدا ل سەدەیێ ١٨ و ١٩ پەیدا بووینە، نەخاسمە سەردەمێ مستەفا خان بەگی کو باپیر وباب و کورێ وی ئێك ل دویف ئێك میر و هوزانڤان بوون.

**ئەنجام:**

١- ب گشتی ئەدەبیاتا کلاسیکیا کرمانجیا سەری د هەمبێزا میرگەهـ و دەولەتێن کوردیدا د بزاڤەکا ئەدەبی و رەوشەنبیریا خورتدا بوویە، چەندین هوزانڤانێن مەزن ژێ دەرکەفتینە و هژمارەکا وان میرێن خودان دەستهەلات بوون کو حوکم ل میرگەهێن کوردی کرینە.

٢- میرێن هوزانڤان رولەکێ مەزن د بەلاڤکرنا زانین وزانستێدا هەبوو، تایبەت د بیاڤێ نڤیسینا هوزانێدا دەستەکێ باش یێ نڤیسینێ هەبوون و هوزان ب زمانێ کوردی و هندەك ژی ب زمانێ فارسی نڤیسینە.

٣- دڤێ ڤەکولینێدا دیار بوو،کو هندەك ژ میرێن هوزانڤان دیوانێن تەمام یێن هوزانێ هەبوون مینا: پەرتویێ هەکاری و محەمەد تەییار پاشایێ بەهدینانی، و هندەك ژی چەند پارچەیێن هوزانان هەبوو، و هندەکێن دی بتنێ ناڤ و ناسناڤێن وان ژێدەر و بەلگەنامەیێن دیروکیدا دیارن.

٤- دهوزان و بەرهەمێن ڤان هوزانڤاناندا دیار بوویە گەلەك ب هوزانڤانێ مەزن مەلایێ جزیری داخبار بووینە و پێ کاریگەر بووینە و ژ ئەنجامێ ڤێ چەندێ هندەك ژ وان دیوانا وی ب دەستێن خوە نڤیسینە، دبیت ل ژێر ڤێ کاریگەریێ وان هوزان ڤەهاندبیت.

٥- تشتێ بالکێش د ناڤەروکا هوزانێن ڤان میراندا دیار دبیت، کو هیچ بەرژەنگێن سیاسەت و حوکمرانیا وان دهوزانێن خوەدا دیار نەکرینە، ژبلی هندەك لایەنێن کێم ژ ژیانا خوە، بەلکو بابەتێن خوە بو سوفیگەری و بابەتێن ئایینی و دلداری...هتد تەرخانکرینە.

٦- دڤەکولینێدا دیار دبیت، کو هەردوو میرگەهێن بەهدینان و هەکاری سەرکێشێن هوزانڤانێن میر بوویە، ئانکو دناڤ هەمی میرگەهێن کورداندا ب گشتی بتنێ میرێن ڤان هەردوو میرگەهان گرنگی ب ڤەهاندنا هوزانێ و دانانا دیوانان داینە.

**لیستا ژێدەران:**

**أ- دەستنڤیس:**

١- اسماعیل پاشا، کەشکولا اسماعیل پاشای (دەستنڤیس). دانەیەك ل دەف هێرش کەمال رێکانی پاراستیە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٢- نڤیسەرێ نەدیار، کەشکول (دەستنڤیس). ئەرشیڤخانەیا نشتیمانی ل بەرلین https://www.qalamos.net/receive/DE1Book_manuscript_00044986.
٣- محمد طیار پاشا، دیوانا مەلایێ جزیری، (دەستنڤیس). دانەیەك ل دەڤ هێرش کەمال رێکانی پاراستیە.

ب- پەرتووك

- ب زمانێ کوردی:

١- اسماعیل بادی، مەدرەسەیا قوبەهان و رولێ وێ د پێشڤەبرنا ئەدەبیاتا کلاسیکا کوردی، ناڤەندا خانی، دهوك، ٢٠٢١.
٢- تەحسین ئیبراهیم دوسکی، باغێ ئیرەم، سەنتەرێ ڤەکولینێن کوردی، زاخو، ٢٠١٩.
٣- تەحسین ئیبراهیم دوسکی، دیوانا پەرتو بەگێ هەکاری، ئەکادیمیای کوردی، هەولێر، ٢٠١٧.
٤- تەحسین ئیبراهیم دوسکی، گولزار، دەزگەهێ پالو، دهوك، ٢٠٢٢.
٥- تەحسین ئیبراهیم دوسکی، ل دور ئەدەبێ کرمانجی ل سەدەیێ ١٨ و ١٩، کورێ زانیاری کورد، هەولێر، ٢٠٠٤.
٦- دیوانا مەلایێ جزیری، ساخکرن: تەحسین ئیبراهیم دوسکی، کتێبخانا جزیری، دهوك، ٢٠٢٠.
٧- سەعید دێرەشی، شاعرێ مەزن محەمەد تەیار پاشا میرێ بەهدینا، کوڤارا دیروك، هژمار ١٤، دهوك، ٢٠١٧.
٨- سەعید دێرەشی، کوتاهیا میرگەها بەهدینان، کوڤارا دیروك، هژمار ٩، دهوك، ٢٠١٥.
٩- صادق بهاءالدین ئامێدی، هوزانڤانێت کورد، کورێ زانیاری کورد، بەغداد، ١٩٨٠.
١٠- عبدالرحمن مزووری، میرعمادەدینێ هەکاری (صەبوری)، کوڤارا پەیڤ، هژمار ٦٠، دهوك، ٢٠١٢.
١١- عبدالرحیم رەحمی هەکاری، تضیق انکشاف، روژنامەیا کوردستان، استانبول، ١٩١٩.
١٢- مارف خزنەدار، میژووی ئەدەبی کوردی، ب ٢، ئاراس، هەولێر، ٢٠٠٢.
١٣- محەمەد عەلی قەرەداغی، بایەخدانی میرانی ئامێدی بە روشنبیری لە دەڤەری بادینانادا، ئاراس، هەولێر، ٢٠٠٦.
١٤- مەلا مەحموود بایەزیدی، جامعێ رسالە و حکایتان، بترسبورك، ١٢٧٧مش.
١٥- میرزا محەمەدێ یازجی، مختصر أحوال الامراء- وەرگێران: نزار ایوب گولی، سپیرێز، دهوك، ٢٠١٢.
١٦-



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

١٧- نـزار ايـوب گـولى، ژ هوزانڤـانێن كـەڤنێن بەهـدينان مـەلا رەمـەزانێ عەبباسـى، كوڤـارا ديروك، ژماره ١٢، دهوك، ٢٠١٦.

١٨- هێرش كـەمال رێكـانى، شـاعرەكێ دى ژ كلاسـيكێن كـوردى ميـر عەبدوللاهـ خـان بەگێ هەكارى، كوڤارا رووگەهـ، ژماره ١٠-١١، دهوك، ٢٠٢٠.

١٩- هێرش كـەمال رێكـانى، عەشـيرەتێن بەهـدينان ١٥١٤-١٩١٨، سـەنتەرێ بێشـكچى، دهـوك، ٢٠١٩.

٢٠- هێرش كـەمال رێكـانى، گـەنجينەيا بەهدينان، بەرگێ ئێكێ، پروژەيێ بەندەر، تـەهران، ٢٠٢٠.

٢١- هێرش كـەمال رێكـانى، مير و شاعرێ كورد محەمەد بەگێ هەكارى (علائى)، كوڤـارا كەشكول، شماره: ٧، سال:٢، مهاباد، ١٤٠١هـ. ش.

- ب زمانێ عەرەبى:

١- أنور المايى، الاكراد فى بهدينان، ط٣، مطبعة خانى، دهوك، ٢٠١١.

٢- تەحسين ئيبراهيم دوسكى و حمدى عبدالمجيد السلفى، معجم الشعراء الكرد، سبيرێز، دهوك، ٢٠٠٨.

٣- سعدى عثمان هروتى، كوردستان و الامبراطورية العثمانية، موكريانى، اربيل، ٢٠٠٨.

٤- شرفخان البدليسى، شرفنامه: ترجمة: محمد على عونى، دار الزمان، بيروت، ٢٠٠٧.

٥- نزار ايوب گولى، اماره هكارى فى العهد العثمانى، سبيرێز، دهوك، ٢٠١٧.

٦- هوگر طاهر توفيق، الكرد بحوث و دراسات فى تاريخهم الحديث و المعاصر، سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولينێن كوردى، زاخو، ٢٠١٩.

- ب زمانێ فارسى:

١- تمرخانى يازجى، ميرنامه حكاريان، تصحيح: خالد سادينى، پيوند، وان، ١٤٠١هـ.ش.


## دور الأمراء الشعراء في ادبيات الكرمانجية العليا الكلاسيكية امارتي بهدينان و هكاري نموذجاً


**الملخص:**

لقد ظهر الادب الكوردي في أحضان الامارات الكوردية، لذلك فقد أثر مرحلة الامارات في التاريخ الكوردي على أدبه، لا سيما وان بعض الامراء أهتموا بنشر العلم والادب في اماراتهم وبدؤوا بكتابة الاشعار ووضع الدواوين جنباً الى جنب قيامهم باعباء السياسة والحكم.

يركز هذه البحث على مراحل ظهور الادب الكوردي في الامارات الكوردية، كما يلقي الضوء على امراء الشعراء وبيان دورهم في مجال الادب والشعر، مع التركيز على تجاربهم الشعرية




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولينێن كوردى

وآثارهم من حيث الشكل والمضامين. وهل انعكست تجارب الامراء السياسية والإدارية في آثارهم الشعرية؟ وهل انتهج هؤلاء نهج الشعراء الذين سبقهم، ومن هم أبرز الشعراء الذين أثروا على شعر هؤلاء الامراء.

وفي الأخير تكمن أهمية هذا البحث في ان الكثير من القراء لا يعرفون لحد الآن ان بعض الشعراء الكورد الكلاسيكيين كانوا أمراءً و خصصوا مراحل من حياتهم للحكم وإدارة اماراتهم، و في نفس الوقت كان لهم يد طولى في الادب عموماً والشعر خصوصاً. ويساعد هذا البحث في تكوين صورة أوضح لهولاء الشعراء.

**مفاتيح البحث:** *الأدب الكلاسيكي، الامارات الكوردية، الامراء الشعراء، بهدينان، هكاري.*

## The Role of Prince Poets in the Northern Kurmanji Kurdish Classical Literature Hakkari and Bahdinan as an example

**ABSTRICT:**

The Kurdish classical literature emerged in the embrace of the Kurdish emirates. Hence, this period of history had an influence on the Kurdish classical literature and poets. It is worth mentioning that several Kurdish princes, in addition to their political and power positions, had an influential role in composing poetry and had published their own poetry collections.

This research stresses on the developing stages of Kurdish classical literature in accordance with the Kurdish emirates. Besides, it focuses on the prince poets showcasing their role in the literary and cultural fields. The paper studies the poetics of their works in terms of style and content. It addresses a manifold question about poetry written by prince poets. Did their poems include political and authoritative inclinations? Or were their poems devoid of such inclinations? Did they follow their contemporaries and their writings as a blueprint for writing theirs? Or did they follow their poetic ancestors? Most significantly, which prominent poets, from the two mentioned groups earlier, influenced them the most?

This research is significant for its aspiration to familiarize the readers with a number of Kurdish classical poets who were princes and had dedicated a stage of their lives to authority. This research highlights their prolific abilities and noteworthy role in writing poetry.

**Keywords**: *classical literature, Kurdish emirates, prince poets, Bahdinan, Hakari.*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# ڕەنگدانەوە و ڕۆڵی یوفیمیزم لە گوتاری میری بۆتان لە چوارچێوەی "مەم و زین" ی ئەحمەدی خانیدا

**پ.هـ.د. خالد مغدید کانبی**

بەشی کوردی - کۆلێژی پەروەردەی مەخموور - زانکۆی سەلاحەدین/ هەرێمی کوردستانی عیراق

**پ.هـ.د. شاین حمدامین صادق**

بەشی کوردی- کۆلێژی پەروەردەی مەخموور - زانکۆی سەلاحەدین /هەرێمی کوردستانی عیراق

**پوختە:**

یوفیمیزم وەك چەمكێكی زمانی لە زمانەوانی كارەكیدا، تێرمێكە ڕێگە دەدات بە بەكارهێنانی پەیڤێكی جوان و سەرنجڕاكێش؛ لە بڕی وشە و دەستەواژەی ناخۆش و تابۆیی و قەدەغەكراوەكانی ناو كۆمەڵگە، جا بەهۆكاری ئایینی، سیاسی، جڤاكی ...تاد بێت. لەم سۆنگەیەوە گرنگی ئەم توێژینەوەیە لەوەدا خۆی پات دەكاتەوە كە بەكارهێنانی یوفیمیزم لە زۆربەی بوارەكانی ژیاندا بەكاردێت، بۆیە ئەدەب و هونەریش لێی بێ بەش نین. بەوەی كە زۆرجار ئەدیب پەنا بۆ دەربڕینە یوفیمیزمەكان دەبات، بۆ ئەوەی پەیامەكەی بەشێوەیەكی ناڕاستەوخۆ بگەیەنێت، بە واتایەكی دیكە بەهەمان مانا، وەلێ بە فۆرمێكی جیاواز و شێوازێكی نەرم و نیانتر، بە ڕەچاوكردنی لایەنی هەست و سۆز و خۆ بەدووورگرتن لە بەكارهێنانی وشە قەدەغەكراوەكان. دەكرێ لە كورتترین پێناسەدا بڵێین: یوفیمیزم بریتییە لە دەربڕینێكی تاڵ لە توێكڵێكی شیریندا.

"مەم و زینی خانی" یش وەک بەرهەمێكی ئەدەبی دەگمەن بێگومان بێبەش نییە لە شێواز و دەربڕینە یوفیمیزمەكان. هۆكاری هەڵبژاردنی ئەم ناونیشانە؛ بۆ گرنگی بەكارهێنانی یوفیمیزم لەم چیرۆكە شیعرییەدا بەدەردەكەوێت، چونكە ئەم بەرهەمە پێشاندەری گوتاری میری بۆتانە. لەم توێژینەوەیەدا بە پشت بەستن بە میتۆدی (شیكاری لێكسیكی سیمانتیكی) هەوڵدەدرێت گوتاری میری بۆتان لە ڕوانگەی بەكارهێنانی دەستەواژە یوفیمیزمەكان شرۆڤە بكرێن. هەمدیس ڕۆڵ و گرنگی دەستەواژە یوفیمیزمیەكان لە گەیاندنی پەیامی سیاسیدا دەخرێنەڕوو. كە ئاخۆ تاچەند پەیڤ و تێرم و دەربڕینە یوفیمیزمیەكان دەبنە هۆكاری ڕەواندنەوەی دەربڕینە تابۆ و دیسفیمیزمیەكان . بۆ ئەم مەبەستەش هەوڵدراوە وشە لێكسیكیەكان دابەشی سەر چەند گروپێک، وەكو: خواستنی وشە لە زمانی بێگانە، بەكارهێنانی مێتافۆر و دركە بكرێت. یەكێک لە ئەنجامەكانی ئەم راڤەكردنە بۆ گوتاری میری بۆتان لەم دەقە ئەدەبییەدا، بریتییە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەبەکارهێنان و خواستنی وشە لە زمانی بێگانە، وەکو: لە زمانەکانی عەرەبی و فارسی، بەئامانجی خۆلادان لە دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان، ئەمەش بە مەبەستی ڕەواندنەوەی شەڕانگێزی سیاسی و کەنفلیکتی زمانی و شەرم و ترس.

**پەیڤێن سەرەکی:** *گوتاری میری بۆتان، مەم و زینی ئەحمەدی خانی، یوفیمیزم، دیسفیمیزم، تابو.*

---

**پێشەکی:**

هەروەکو دەزانین کە زمان دیاردەیەکی ئالۆزە، چونکە زمان فرە ڕەهەندە، وەکو: ڕەهەندی ئایینی، سیاسی، کۆمەلایەتی ، دەروونی و ...تاد. بەو مانایەی ئەگەر زمان نەبوایە لێک تێگەیشتن زۆر زەحمەت دەبوو. شایەنی باسە هەموو گۆڕانێك لە ئاستەکانی هزری، ڕۆشنبیری، ئابووری، سیاسی، کۆمەڵایەتی ... لە کۆمەڵگەدا، ئەوا بێگومان گۆڕانی زمانی بەدوادا دێت و کاریگەری لە زماندا دەبێت. بەو واتایەی کە زمان ڕەنگدانەوەی بەرهەمی هزر و کلتور و ڕۆشنبیری ئەو کۆمەڵگەیەیە کە قسەی پێ دەکەن. ئەمەش پرسی پەیوەندی لەنێوان زمان و کۆمەڵگەدا دێنێتە ئاراوە. چونکە پەیوەندییەکی تەواوکارییە و بەبێ یەکتر هەڵناکەن.

بەو پێیەی زمان دیاردەیەکی کۆمەڵایەتیە؛ مرۆڤەکان بۆ پەیوەندیکردن بەکاری دێنن. هەروەك ئاشکرایە پەیوەندی دروستکردنیش بەشێوازی ڕێزگرتن و نەرم و نیانی و هەڵبژاردنی وشە و دەستەواژەی جوان و سەرنج ڕاکێش سەرکەوتووتر دەبێت. بە واتایەکی دیکە بۆ دروستکردنی هەر جۆرە پەیوەندییەکی ئایینی، سیاسی، ڕۆشنبیری، کۆمەڵایەتی، ئەوا پەنا دەبرێتە بەر ڕەچاوکردنی لایەنی دەروونی بەرانبەر و هەوڵدەدرێت لەڕێگەی وشەی جوان و سەرنجراکێش و ڕێزگرتن سەرنجی وەرگر رابکێشرێت، لەولاشەوە دووركەوتنەوە لە دەربڕینە تابۆ و قەدەغەکراوەکان خاڵی سەرەکییە.

یەکێک لەو دیاردە نوێیانەی کە زمانەوانی بەگشتی؛ زمانەوانی کارەکی بەتایبەتی لە ئێستادا خۆی پێوە خەریککردووە، بابەتی یوفیمیزمە. یوفیمیزم؛ ئەگەرچی لە نێو کارە ئەکادیمی و زانستییەکانی جیهان دا بایەخ و پێگەی تایبەتی هەیە و لە زۆرێک لە زمانەکاندا بووەتە ماددەیەکی خام بۆ لێکۆڵینەوە زانستییەکان لەبوارەکانی سیاسی، ئابووری، کۆمەڵایەتی، ئەدەبی و زمانی. چونکە چەمکی یوفیمیزم لە نێو تەواوی کایەکانی ژیاندا، ڕەنگدانەوەی هەیە و دەکرێ لە هەر شوێن و کاتێکدا، لەهەر کار و کردوە و قسەیەکدا هەست بە بوونی بکەین، دەکرێ بە کورتترین پێناسە بۆ ئەم چەمکە بڵێین: یوفیمیزم بریتییە لە دەربڕینی قسەیەکی تاڵ لە توێکڵێکی شیریندا. هەر لەم سۆنگەیەوە دەتوانین هۆکارەکانی بەکارهێنانی یوفیمیزم لە هۆکاری ئایینی، پیشە

مەترسییەکان و زاراوە پزیشکییەکان و گوتارە سیاسییەکان و ڕاپۆرتە ڕۆژنامەوانییەکان و ناوی ئەندامەکانی لەش و .....تاد. کۆبکەینەوە.

لەم توێژینەوەیەدا بە پشت بەستن بە میتۆدی (شیکاری لێکسیکی سیمانتیکی) هەوڵی شیکردنەوە و دەستنیشانکردنی گوتاری میری بۆتان لە ڕوانگەی بەکارهێنانی دەستەواژە یوفیمیزمیەکان دراوە. هەروەها ڕۆڵ و بایەخی دەستەواژە یوفیمیزمیەکان لە گەیاندنی پەیامی سیاسیدا دەخرێنەڕوو. لە شرۆڤەکردنی گوتاری میری بۆتان لە " مەم و زینی خانی "دا توێژەران پشتیان بە چاپی ڕەسەنی (مەم و زینی ئەحمەدی خانی) ساڵی ١٩١٩ – ئەستەمبوڵ بەستووە، کە پێشەکی و لە چاپدانەوەی لەلایەن نەجاتی عەبدوڵڵاوە کراوە، لە دووتوێی کتێبکدا لە ساڵی ٢٠٠٨ لەلایەن دەزگای ئاراس لە هەولێر بە ژمارە سپاردنی ٦٨٩ ، بە قەبارەی ١٧١ لاپەرە لە چاپدراوە.

سنووری توێژینەوە بریتییە لە دەستنیشانکردنی چەمکە یوفیمیزمییەکان لە گوتاری میری بۆتان، لە چوارچێوەی "مەم و زینی ئەحمەدی خانی"دا. بۆ ئەم مەبەستەش هەوڵدراوە وشە لێکسیکییەکان دابەشی سەر چەند گروپێک، وەکو: خواستنی وشە لە زمانی بێگانە، بەکارهێنانی مێتافۆر و درکە بکرێت.

هۆکاری هەڵبژاردنی ئەم بابەتە بۆ ئەوە دەگەڕێتەوە کە چەمکی یوفیمیزم لە ئێستادا بابەتێکی سەردەمیانە و زیندووە لەنێو زمانەوانی کارەکیدا. بەهۆی کەمی کارکردن لە زمانی کوردیدا لەسەر ئەم چەمکە نوێیەی زمانەوانی، هەروەها مەم و زین کە سەروەتێکی گرنگی نیشتمانی و نەتەوەیی میللەتی کوردە. وەك ئاشکرایە کە زمان و شێوازی خانی لەو پەڕی هونەری بەرز و ئیستاتیکا و دەربڕینێکی تایبەتی هەیە. لەم سۆنگەیەوە کە یوفیمیزمیش هەڵاوێردکردن و دانانی پەیڤ و دەستەواژەی جوان و سەرنجراکێش و دوورکەوتنەوەیە لە کەنفلیکت و کرێتی و شەڕانگێزی.

گرفتی توێژینەوە لەوەوە سەرچاوە دەگرێت کە ئایا تا چ ڕاددەیەك خانی لە مەم و زین دا پەیڕەوی یوفیمیزمی بۆ مەبەستی کرێتی و تاڵی و ناشیرینییەکانی گوتاری میری بۆتان کردووە. ئاخۆ ئەو دەقەی خانی دەکرێ لە گەڵ چەمکێکی ئەو سەردەمە نوێیەی زمانەوانییدا بگونجێت کە یوفیمیزمە، یان چۆن بتوانین دەقە ئەدەبییە بەرز و مێژووییەکانمان بە نەوەکانی ئێستامان بگەیەنین. دەکرێ لە دەقی مەم و زین دا خانی هەوڵی کەمکردنەوەی کەنفلیکت و شەڕانگێزی و ململانێ سیاسی، کۆمەڵایەتی و ئایینی دابێت.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

### ١ – یوفیمیزم (چەمک و زاراوە):

#### ١ – ١ – زاراوەی یوفیمیزم:

یوفیمیزم لە بنەڕەتدا زاراوەیەکی یۆنانییە، پێکهاتووە لە (eu) کەبە مانای باش، هەروەها (pheme) بەواتای ئاخاوتن دێت، بەیەکەوە بەمانای ئاخاوتنی باش یان جوان، هێمنی بپارێزە یان بەکارهێنانی وشە بۆ نیشانەی باش یان جوان دێت. [ناوخۆش، ٢٠١٢: ٦٩]. لە زمانی کوردیدا جگە لە زاراوەی یوفیمیزم هەریەکە لە تێرمەکانی ((جوان بێژی))[مەعروف، ٢٠١٣: ٢٤٩] هەروەها ((جوانی دەربڕین)) [فەرەج، ٢٠١٣: ١٣٤] بەکاردێت. وەلێ توێژەران پێیان وایە کە زاراوەی یوفیمیزم وەکو خۆی بەکاربێت و پێویست ناکات وەربگێردرێت، چونکە یوفیمیزم دەستەواژەیەکی زانستییە لە بواری زماندا، پێوستە بە ڕەچاوکردنی لایەنی فۆنەتیکی و فۆنۆلۆجی زمان بەکاربێت.

زاراوەی یوفیمیزم لە زمانە جیاوازەکان بەشێوەی جیاواز هەوڵی ناساندن و وەرگێرانی دراوە، هەروەکو لە زمانی روسیدا (эвфемизм - ئێفێمیزم) بە رەچاوکردنی لایەنی فۆنەتیک و فۆنۆلۆجی زمانەکە دەردەبڕدرێت، بەو مانایەی کە سودیان لە وشە رەسەنەکە وەرگرتووە و وەریان نەگێراوە [سێنیچکینە، ٢٠٠٨: ٦]. کە چی لە زمانی عەرەبیدا (حسن التعبیر، الاسلوب الحکیم) کە بەمانای ((ئەوەیە قسەکەر هەر کاتێک وشەیەك دەردەبڕێت؛ دوو واتا و مەبەستی هەیە، یەکەمیان: واتەی نزیکی نا سەرەکی، مانای دووەم: بریتییە لە واتای سەرەکی. لەلای گوێگر مانایە ناسەرەکییەکە ڕوونە. وەلێ مانا سەرەکییەکە ناڕوون و نائاشکرایە و دەچێتە چوارچێوەی گریمانەکردن))[هاشمی، ١٩٤٣: ٣٠١]. هەروەها لە زمانی فارسیشدا بە هەمان شێوە هەوڵی وەرگێرانی دراوە و ((حسن تعبیر)) بەکاردێت [ئیبراهیمی، ٢٠١٢: ٦٤٤].

#### ١ – ٢ – چەمکی یوفیمیزم:

لە زمانی کوردیدا زۆربەی دەربڕینە قەدەغەکراوەکان پەیوەندیان بە (مردن، سێکس، نەخۆشی کوشندە، کفر)ەوە هەیە. کە ناوهێنانیان بە بڕوای کۆمەڵگەی کوردی کاریگەرییەکی دەروونی نێگەتیڤیان لەسەر قسەکەر و گوێگر هەیە، بۆیە کەسی قسەکەر هەوڵدەدات وشەی هاوواتا بەکاربێنێت، بۆ ئەوەی کەسی بەرانبەر هەست بە دڵگرانی و کەنفلیکت نەکات [شەمس، ٢٠٠٦: ١٢٨]. لەگەڵ ئەمەشدا ئەو وشە تابۆیانە بونەتە هۆی دەوڵەمەندکردنی زمانی کوردی، چونکە ناوێك چەندین ناوی دیکەی لێنراوە، ئینجا بەهۆی ترس یان شەرم، ڕێزگرتن یان هەر هۆکارێکی دیکە بێت. نیشانە بۆ نیشانەکراو دادەنرێت، بێگومان ئەمەش بەپێی سەردەم دەگۆڕێت، بۆ نمونە: دەرپێی کورت: جلی ژێرەوە. لیباس: ئەندەرەوەی [حوسێن، ٢٠١٠: ٣٦].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

کەواتە یوفیمیزم بریتییە لە پیشاندانی جوانی و جوان نووسین و هەبوونی هیوا و ئومێد لە درکاندنی هەر پەیڤێك بەوەی ئومێدێك لە پشت وشەکە هەیە. یوفیمیزم بریتییە لە ((وشەیەك یان دەربڕینێك کە جێگەی وشەیەکی دیکە دەگرێتەوە، بۆ دۆخێکی دیاریکراوی وەکو شەرم، ترس، یان دوورکەوتنەوە لە کەنفلکت و ململانێ بۆ نموونە: تەمبەڵ لەبڕی گەمژە)) [ئۆژێگێڤ، ٢٠١٢: ٨٣١]. یوفیمیزم، چەمکێکی زمانەوانی و کۆمەڵایەتی و شارستانییە، بۆ ڕێزگرتن و خۆ بە دوور گرتن لە دەربڕینی قورس و روشێنەری حەیا و زۆرجار لە سنووری ئەدەب دەردەچێت و دەچێتە خانەی خۆبردنە پێش.

نزیك بەم مەسەلەیە ئالان و بێریج دەربارەی یوفیمیزم دەڵێن: ((قسەکەر پەیڤی یوفیمیزم بەکاردەهێنێت لە شوێنی وشە و دەربڕینی ناپەسەند و بۆ مەبەستی نەهێشتنی شەرم و ڕێزگرتن لە کەسی گوێگر)) [ئالان و بێریج، ٢٠٠٦: ٣٣]. ئەوەی شایەنی باسە یوفیمیزم؛ لەئێستادا لە زۆربەی کایەکانی ژیان وەك ئایینی و سیاسی و کۆمەڵایەتی و رۆشنبیری چالاکە و بەکاردێت. یوفیمیزم هەڵبژاردنی وشە و واتایە؛ بۆ رەچاوکردنی باری دەروونی گوێگر، یان گۆرینی پەیڤێکە بە وشەیەکی دیکەی جوان و سەرنجڕاکێش. واتە لە رێگەی باسکردنی سیفەتی شتێك بەشێوەیەکی ناراستەوخۆ، لەو دەربڕینانە دەبێت کە دوو واتایان هەیە، واتایەکی بنچینەیی و مانایەکی مەبەست. واتا بنچینەییەکە تارادەیەک تابۆیە، کەواتە دەکرێ ببێژین یوفیمیزم واتای دروستە بۆ واتای مەبەست.

ئەوەی راستی بێت بابەتی یوفیمیزم لە زمانی کوردیدا بابەتێکی نوێیە، لەگەڵ ئەوەی لە زمانەکانی روسی و عەرەبی و ئینگلیزی؛ زۆر دەمێکە لە بواری زمانەوانی کارەکیدا کاری لەسەر کراوە. هەندێک پێیان وایە کە یوفیمیزم کە جێگرەوەی تابۆیە، بەڵام ئەوەی شایەنی هەڵوەستە لەسەرکردنە هەر یەکە لە تابۆ و یوفیمیزم دوو چەمکی سەربەخۆ و جیاوازن. هەروەکو یوفیمیزم ((رێگەیەکە بۆ جوان بەکارهێنانی وشە و دەربڕینی ناپەسەند و نەگونجاو لەلایەن کۆمەڵگاوە، بەشێوەیەك کە لایەنی نێگەتیڤی دەربڕینەکان پەردەپۆش دەکات و کاریگەری خراپ بۆ گوێگر کەم دەکات. کەچی پێچەوانەکەی بۆ تابۆ ڕاستە)) [واردۆخ، ١٩٨٦: ٢٣٨].

هۆکاری بەکارهێنانی یوفیمیزم بۆ ئەوە دەگەڕێتەوە کاتێك بابەتە تابۆییەکان رێگری کلتوری و کۆت و بەندی کۆمەڵایەتی دەبنە هۆی دەربڕینیان، ئا لێرەدا لە زمانەوانیدا بابەتی (جوانی دەربڕین – حسن التعبير - Euphemism) دێتە پێشەوە. بەو پێیەی یوفیمیزم دەبێتە جێگرەوەی دەربڕاوە تابۆییەکان. بە واتەیەکی دیکە؛ یوفیمیزم رێگایەکە لە زماندا بۆ خۆ بە دوورگرتن لە گوتنی راستەوخۆی شتە بێگومانەکان بەکاردێت. نەگوتنی ئەم دەستەواژە تابۆییانە لەبەر ئەوە نییە کە ناتوانرێت بگوترێت، بەڵکو لەبەر ئەوەیە کە خەلکی قسە دەربارەی ئەم شتانە ناکەن، یاخود ئەگەر ئەم شتانە قسەیان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەسەرکرا، ئەوا بەشێوەیەکی زیرەکانە، یان فێڵبازانە قسەیان لەسەر دەکرێت [فەرەج، ٢٠١٣: ١٣٤-١٣٥].

١ – ٣ – جۆرەکانی یوفیمیزم:

لەنێو سەرچاوەکانی زمانناسیدا توێژەران یوفیمیزم دابەشی سەر چەند جۆرێک دەکەن، ئەوانەی خوارەوە گرینگترین جۆرەکانی یوفیمیزمن:

١- یوفیمیزمی ئاشکرا: بەشێوەیەکی ڕوون و ئاشکرا دەردەبڕدرێت و هیچ یارییەکی زمانی تێدانییە و، وشە و دەربڕینی جوان لەبڕی پەیڤی دیسفیمیزم و تابۆ بەکاردێت، ئەمەش بۆ ڕێزگرتن لە کەسایەتی خۆی و بەرانبەرەکەی جا لەبەر هۆکاری ئایین و ترس و شەرم یان هەر هۆکارێکی دیکە بێت [مستەفا، ٢٠١٣: ٤٣]. وەکو: شەکری شکاند لەبڕی درۆی کرد، چوون بۆ دەستشۆر لەجیاتی چوون بۆ تەوالیت، نووستن لەبڕی سێکس کردن، بەکاردێن. ( وشەی دیسفیمیزم لە بنەڕەتدا پەیڤەکا یۆنانییە، لە دوو بەش پێک دێت، بەشی یەکەمیان (Dys) بەواتای خراپ و دووەمیان (Pheme) بە واتای ئاخاوتن دێت، هەردوو وشەکە بەیەکەوە بەمانای (ئاخاوتنی خراپ) دێت. بۆیە دەکرێ بڵێین: دیسفیمیزم: پێچەوانەی یوفیمیزمە، بریتییە لە بەکارهێنانی ئەو وشە و دەربڕینە تابۆییانەی کە بەشێوەیەکی توندتر و خراپتر بۆ مەبەستی دروستکردنی کاریگەرییەکی نێگەتیڤانە لەسەر گوێگران بەکار دێت).[مستەفا، ٢٠١٣ : ٥١].

٢- یوفیمیزمی شاراوە: شاردنەوەی تابۆیەکە بەشێوەیەکی ناراستەوخۆ، زیاتر لەبواری بازرگانی و سیاسی بەکاردێت. ئەمجۆرەی یوفیمیزم هەڵگری ناڕاستی و فێڵبازییە و بۆ ئامانجی خراپ بەکاردێت، هەروەکو لە زمانی کوردیدا وشەی (گەندەڵی، بە هەدەردانی سامانی دەوڵەت) لەجیاتی پەیڤی (دزین) بەکاردێت. بەو مانایەی پەیڤی (دزیکردن) وێنەیەکی ناشیرین و ناخۆش بۆ گوێگر دروست دەکات. هەروەها لەبواری سیاسیشدا وشەی (ڕزگارکردن) لەجیاتی (داگیرکاری) بەکاردێت، هەروەکو ئەمریکا لە ساڵی ٢٠٠٣ کە عێراقی داگیر کرد، ناوی لێنا ئازادکردنی عێراق [ژێدەری پێشوو: ٤١].

ئەمجۆرە یوفیمیزمە ڕۆڵێکی گرنگ دەبینێت لە گوتاری سیاسیدا، چونکە دەبێتە هۆکاری کەمکردنەوە و نەهێشتنی کەنفلیکت و شەرانگێزی نێوان دوو لایەن ((سیاسەتمەداران هەوڵدەدەن بۆ ئەوەی خۆیان بەدوور بگرن لە بەکارهێنانی هەر شێوازێکی زمانی کە ببێتە مایەی شەرمەزاری و بێزێزی و کەنفلیکت و شەرانگێزی سیاسی، تایبەت لە گوتاری سیاسید؛ پەنا دەبەنەبەر دەربڕینە یوفیمیزمەکان)) [فێرناندێز، ٢٠١٨: ٢٨]. واتە لە جیاتی دەربرینە دیسفیمیزم و تابۆییەکان گوتاربێژ هەوڵدەدات لە ڕێگەی یوفیمیزمی هەمان زمان یان قەرزکراو یاخود ئیدیۆم و میتافۆرێکی جوان و سەرنج ڕاکێش هەڵبژێرێت،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەمەبەستی رازیکردن و کەمکردنەوەی کەنفلیکت و شەڕانگێزی لەگەڵ لایەنی بەرانبەر، تایبەت ئەو هێزانەی نایارن لە ڕووی ئایینی، سیاسی، ئابووری ...تاد.

**٢ – دەستەواژە یوفیمیزمییەکان لە دەقی "مەم و زین"ی خانیدا:**

**٢ – ١ – شرۆڤەکردنی دەستەواژە یوفیمیزمییەکان وەکو گوتاری میری بۆتان لە "مەم و زین"دا**

گوتاری "میری بۆتان" لە چوارچێوەی "مەم و زین"ی "ئەحمەدی خانی"دا بابەتێکی نوسراو و ئاماژەپێکراوی ڕاستەوخۆ نییە، بەڵکو خانی بەشێوەیەکی ناڕاستەوخۆ؛ بیروڕا و ئایدۆلۆژیاکان، لەژێر ئەو پەیامە سیاسی و کۆمەڵایەتییەی کە لە مەم و زیندا هەیە دەردەبڕێت. ئەوەی شایەنی باسە "مەم و زین" ڕاستە دەقێکی ئەدەبی و ئەڤینییە، بەڵام لە ناوەڕۆکدا سەرلەبەری دەقەکە؛ پەیامێکی سیاسی و کۆمەڵایەتی لە خۆ دەگرێت، بۆیە توێژەران لە نێو ئەو پەیامەدا هەوڵیانداوە ئایدۆلۆژیای میر ببینین و لە زاری "خانی"یەوە دەستنیشانی دەستەواژە یوفیمیزمییەکانی بکەن. لەو سەردەمەدا کە خانی دەست بەنوسین دەکات تەمەنێکی کەمی هەیە، دەتوانین بڵێین کە خانی دوای داگیرکارییەکانی عوسمانی نوێنەرایەتی میر و میرنشینەکانی کردووە.

پاڵپشت بە سەرچاوە مێژووییەکان "خانی" لە تەمەنی (١٠)ساڵان بووە؛ ئەو کاتەی کە (بدلیس و هەکاری و ئامێدی) لەژێر دەسەڵاتی کورداندا نەمان و، لە ساڵی (١٦٦٠ز) کەوتنە ژێر دەسەڵاتی عوسمانییەکان. دواتر عوسمانییەکان بە سەرکردایەتی (ملک ئەحمەد پاشا) زاوای (سلطان مراد) لە ساڵی (١٦٦٦ز) هێرشێکی فراوان دەکەنە سەر میر(عبدال خان) کە میری بدلیس بوو، لە ئەنجامدا کوشتارێکی زۆری لێ دەکەوێتەوە و هەموو شتێک لەناو دەبەن و میر(عبدال خان) بە حاڵ ڕزگاری دەبێت. بۆیە خانیش کە ئەوکات تەمەنی لە (١٤)ساڵان تێپەڕی کردووە و دێت "مەم و زین" دەکاتە بەهانەیەك؛ بۆ خستنەڕووی پرۆژە نیشتیمانییەکەی لە دژی ئەو بارودۆخە سیاسی و جڤاکییەی کە کورد لەو سەردەمەدا تێی کەوتبوو، لە ژێر چەپۆکی دوژمناندا دەتلایەوە[خانی،١٩٩٠: ١٤-١٥].

هەروەکو خانی لەسەرەتای "مەم و زین"دا دێتەگۆ و دەبێژێت: ((شرحا غم دل بکم فسانە – زینی و ممی بکم بهانە))[خانی، ٢٠٠٨: ٥١]. دەکرێ ببێژین کە "خانی" زۆر ڕاشکاوانە وەکو میرێك کە ئاوات و ئارەزووی ئازادی بوبێت، دێتە گۆ و لە زۆر شوێن بەناوی کوردان قسەدەکات. بەواتایەکی دیکە یەکێک لە هۆکارەکانی نوسینی مەم و زینیش؛ دەکرێ بۆ ئەوە بگەڕێنینەوە کە لەسەرەتاکانی ئەو دەقە ئەدەبییە باس لە "میر زیندین" دەکات و، گەورەیی و دەست ڕۆیشتوویی و ناوبانگ و دەسەڵاتی وەک لە دەقە فۆلکلۆرییەکەدا هەیە دەگێڕێتەوە. ئەم بابەتە زیاتر هانی خانی داوە کە کارێك بکات و ڕێنیشاندەر بێت بۆ ئەوەی کوردان بتوانن جارێکیتر لە پەرتەوازەیی و چەقبەستوویی نێوخۆ

ڕزگاریــان ببێــت، بەوەی کە نەیــانتوانیووە؛ ســەرکردەیەک بۆخۆیــان دابنــێن و لەژێــر فەرمانڕەوایی ئەو سەرکردەیەدا کوردەکان یەکبخەن.

بۆئەوەی هەمـوو ئەوانە لە دەقێکـی ئەدەبیـدا دابڕێژێت؛ خـانی هـاتووە "مەم و زیـن"ی کـردووەتە بەهـانە بۆ ئەوەی ببێـتە ڕێنیشـاندەرێك بـۆ یەکـدەنگی و یەکگـرتوویی کـوردان، لەهەمان کاتیشدا ببێتە سەرمەشق لە دامەزراندنی زمانێکی ستاندارد و یەکگـرتوو بۆ پرۆژە نیشـتیمانییەکەی لە بـواری سیاسـی و کۆمەڵایەتیـدا. بە واتـایەکی دیـکە؛ گوتـاری میـری بۆتـان لەنێو مەبەسـتە سیاسـی و جڤاکیەکەی ئەحمەدی خانی دا ڕەنگـی داوەتەوە. چـونکە وەك باسـمان کـرد؛ ئەو سـەردەمەی خـانی دەسـت بەنوسـین دەکـات، میـر و میرنشـینەکان و خـاکی کـوردان کەوتوونەتە ژێر دەسـەڵاتی عوسـمانییەکان، بۆیە خـانی ڕۆڵـی سـەرکردە لەو بوارەدا دەبینێت و دەست بە نوسینی مەم و زین دەکات.

هەر لەو ڕوانــــگەیەوە دەتــــوانین دەســــتەواژە یوفیمیزمییەکــــان لە ســــەرەتای دەستپێکـردنی مەم و زین دەستنیشان بکـەین وەك ئەوەی لە (دیباجە)کەدا دەڵێت:

بی نقش تە نقش خامە خامە بــی نــام تە نــامە ناتمــامە

[خانی، ٢٠٠٨: ٣٥].

کاتێک خانی لە سەرەتای دەستپێکـردنی مەم و زیندا بەنـاوی خـودای گەورە دەست پێدەکات و دەڵێت: ((سر نامە نامە نام اللە – بی نام وی ناتمامە واللە)) [خـانی، ٢٠٠٨: ٣٥]. دواتریش لەم دێرەی سـەرەوەدا بە ئەدەبەوە باس لەوە دەکـات کە ئەگەر ئەو بەرهەمە بە نـاوی تۆ نە نەخشێندرێت ئەوا خامەکەم خام دەبێت. خانی لە بەکارهێنانی وشەی (خام)ی دووەمـدا کە مەبەست (کەم و کورِی و نادروستی) دێت، پەیڤێکـی یوفیمیزمی شاراوەی بەکـاربردووە و، لەگەڵ خوای گەورەدا بەو پەڕی ئەدەب و شەرمەوە؛ ڕازی دڵی خۆی دەخاتەڕوو.

ادبارا مە وی کـها کمالـی آیە بــوە قابــل زوالــی

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٥]

پەیڤــی (ادبــارا) لەجیــاتی بەدبەختــی، بەختــی ڕەش وەك یــوفیمیزمی شــاراوە بەکارهاتووە. ئەمە جگە لەوەی خانی هەوڵیداوە وشـەیەکی عەرەبی لەبـری وشـەیەکی تـابۆی کوردی وەکو بەختی ڕەش، یان بەدبەختـی بەکاربێنێت، هۆکـارەکەش بۆ ئەوە دەگەڕێتەوە کە زۆرجــار پەیــڤە بێگانەکــان کــاریگەری نەرێنیــان کەمتــرە وەك لە دەســتەواژە ڕەسەنەکان، هەروەها هۆکاریشە بۆ خۆ بەدوورگـرتن لە دروسـتبوونی ململانێ و شـەڕانگێزی. وشـەی ئیـدبار هەروەك ئاماژەمـان پێیـدا لە بنچینـەدا لە زمـانی عەرەبـی وەرگیـراوە و بەمانـای ((پشـت تێکـردن، نەهـات، ڕوو وەرگێـران، بەخـت وەرگەڕان، نەهـاتی، بەدبەختــی)) دێـت [موکریانی، ٢٠٠٥: ١٢]. واتە خانی مەبەستییەتی ئەو بێ چارەییەی کوردان ڕوون بکاتەوە.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

نەقد مە دبو بە سکە مەسکوک     نەدما و هە بی رواج و مشکوک

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٥].

نووسەر مەبەستییەتی باس لە زمانی کوردی و کێشە و مەینەتەکانی کوردان بکات. ئەوەی ئێمە گەرەکمانە بەکارهێنانی وشەی (مەشکووک)ە کە وەك یوفیمیزمێکی شاروە لەجیاتی پەیڤی (عەیبدار)ە کە تابۆیە بەکارهاتووە. مەشکووک لە بنەرەتدا وشەیەکی عەرەبییە و بەمانای ((بەدگومان))[حمەکریم ٢٠٠٤: ٤٢٧] دێت. دەربڕینی وشەی بێگانە لە بڕی پەیڤی رەسەن و خۆماڵی زۆرجاران هۆکارە بۆ کەمکردنەوە و دوورکەوتنەوە لە گرژی و ئاڵۆزی و کەنفلیکت و، لەولاشەوە وەك دەربرینێکی یوفیمیزم هەژماردەکرێت.

غمخواری دکر ل مە یتیمان   تینانە در  ژ دست لئیمان

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٥].

پەیڤی (لەئیم) لە بنەرەتدا لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بەمانای ((نەگریس، قرچۆک، بەد رەسەن، ...))[موکریانی، ٢٠٠٥: ٥٦] دێت. وشەی لەئیم لە بڕی ئەوکەسەی کە پیاوەتی لەدەست نایەت بەکارهاتووە، واتە وەك یوفیمیزمێکی شاراوە لەبڕی وشەیەکی دیسفیمیزم خواستراوە. چونکە گەروا نەبوایە ئەوکات جۆری گوتارەکە دەبووە هۆکاری دروستبوونی کەنفلیکت و شەرانگێزی. بێگومان خواستنی پەیڤی بێگانە لەبڕی وشەی رەسەن و جۆرێکە لە بەکارهێنانی یوفیمیزم و دوورکەوتنەوە لە دەربڕینی دەستەواژە تابۆ و دیسفیمیزمیەکان.

غالب نە دبو لسرمە اڤ روم     نەدبونە خرابە د دست بوم

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٥]

خانی پەیڤی (غالب)ی لە زمانی عەرەبی خواستووە و لە بنەڕەتدا بەمانای((زاڵ)) دێت [هەژار، ٢٠٠٨: ٤٣]، لەجیاتی دەربڕینێکی تابۆیی بەکاری بردووە، بەمەبەستی دوورکەوتنەوە لە کەنفلیکت و شەرانگێزی. بۆیە دەشێ وشەی (غالب) وەك یوفیمیزمێکی شاراوە هەژماربکرێت، بەو مانایەی کە یەکێك لە شێوازەکانی بەکارهێنانی یوفیمیزم خواستنی وشەی بێگانەیە و بەکاربردنییەتی لەبڕی پەیڤ و دەستەواژە خۆماڵییەکان.

تبعیت وان اگر چە عارە     او عار ل خلق نامدارە

ناموسە ل حاکم و امیران     تاوان چیە شاعر و فقیران

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٦]

وشەی (عار) لە بڕی شەرمە، نەنگە، لە زمانی عەرەبیدا خواستراوە. لەم دەقەدا وەك یوفیمیزمێکی ئاشکرا بەکارهاتووە، چونکە بەشێوەیەکی روون و ئاشکرا هەست بە خۆلادان لە ململانێی زمانی دەکرێت. هەروەها پەیڤی (ناموس) لە بڕی وشەی ((زۆرشەرمە)) بەکارهاتووە [هەژار، ٢٠٠٨: ٤٣] و دەبێتە یوفیمیزمێکی شاراوە، چونکە ئەم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دەربڕینە بەشێوەیەکی ناراستەوخۆ ڕەخنە و تانەیە بۆ دەسەڵاتداران و شەرمەزارکردنیانە. ئەم شێوازەی یوفیمیزمەش دەبێتە هۆکارێك بۆ خۆ بەدوورگرتن لە ململانێ و دەربڕینی وشە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان.

لورا کو جهان وکی عروسە وی حکم ددست شیر روسە

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٦].

پەیڤی (شیری روس) لەبڕی ((شمشێری هەڵکێشراو)) [خانی، ٢٠٠٨: ٤٣] بەکارهاتووە بۆ بەدەست هێنانی ئەم بووکە (جیهان) حوکم و فەرمانی لە ژێر هێزی شمشێرە هەڵکێشراوەکانی لەشکرێکی بەهێزدایە، بەومانایەی شیری روس لەبڕی دەستەواژەیەکی دیسفیمیزم هاتووە. بۆیە دەکرێ ئەم دەستەواژەیە بە یوفیمیزمێکی شاراوە هەژماربکرێت، چونکە بەم دەربڕینە نووسەر دوور دەکەوێتەوە لە بەکارهێنانی وشە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان و دروستبوونی کەنفلیکت.

از مامە د حکمتا خدیدا کرمانج ددولتا دنیدا

آیا بچی وجهی مانە محروم با لجملە ژبو چە بونە محکوم

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٦].

خانی لەم دوو دێرەدا ئەو پەیامە سیاسییە ئاراستە دەکات و وشەی (حکمەت) بەکار دەهێنێت بۆ ئاماژە پێکردنی وشەکانی (محروم، محکوم)، چونکە نەیویستووە ڕاستەوخۆ بڵێت کە کورد سزادراون و لە نوسین و حوکمڕانی و زمانی خۆیان بێبەشکراون، بەڵکو هاتووە سەرسوڕمانی و سەرگەردان خۆی دەردبڕێت و مەسەلەی سزا و بێبەشی کوردی بە حیکمەتی خودا داناوە و، پرسیارێکی فەلسەفی دەوروژێنێ و پەیڤی (حیکمەت)ی وەکو یوفیمیزمێکی شاراوە بەکارهێناوە، کە تیایدا گوتاری سیاسی و کۆمەڵایەتی ئاراستەکردووە.

کرمانج دبن بخون ملطخ وان ژیک ڤەدکن مثال برزخ

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٦].

وشەی (برزخ) لەم دێرە شیعرەدا ئاماژەیە بۆ بەردەوامی تووڕەیی خانی لەوەی کە کورد بووەتە قوربانی لەنێوان عەجەم و ڕۆم، "برزخ" بەواتای (( ناڤریک، پەردەیەکە لە نێوان دوو شتدا، ناوبڕە))[موکریانی، ٢٠٠٥: ٥٨]. هەروەها بە مانای (ژیانی ناو گۆڕ)یش دێت کە پارچە ئەرزێکی تەنگ و تاریکە و مرۆڤ تیایدا ژیانی نییە و حەشریش نەکراوە، نوسەر لەم دێرەدا کوردی وا وێنا کردووە کە لەنێوان ڕۆم و تاجیکییەکاندا خەڵتانی خوێن دەکرێن و دەکوژرێن، بۆ ئەم مەبەستە پەیڤی بەرزەخی وەکو یوفیمیزمێکی شاراوە دەرخستووە، لەم دێرە شیعرانەی خانیدا زۆر بە ڕوونی ئەو گوتارە سیاسیانەی سەردەمی بێ دەسەڵاتی کوردان دیارە و دەتوانین ئایدۆلۆژیای میرە کوردەکان لە زاری خانییەوە هەست پێبکەین.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

لو پیکفه همیشه بی تفاقن          دائـم ب تمـرد و شـقاقن

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٦].

بەکارهێنانی وشەی (تمرد) لەبڕی سەرکێشی و نەچوونە بەرفەرمان بەکارهاتووە. نووسەر هەوڵیداوە پەیڤێکی عەرەبی لەجیاتی وشەیەکی ڕەسەنی کوردی بەکاربێنێت، هەروەها خۆی بەدوور بگرێت لە کاریگەرییە نەرێنییەکان و دەربڕینیە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان، بەمەش دەبێتە دەربڕینێکی یوفیمیزمی شاراوە. وشەی تەمەروود لە زمانی عەرەبیدا بەمانای ((یاخیبوون، مل نەدان)) دێت [حمەکریم، ٢٠٠٤: ١١٤]. هەروەها وشەی (شقاق)یش بەهەمان شێوە وەك یوفیمیزمێکی شاراوە د هێتە هەژمارکردن، چونکە لەبڕی (دووبەرەکی) کە دەستەواژەیەکی تابۆیە؛ بەکارهاتووە. پەیڤی (شقاق) کە لە بنەرەتدا لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە بەمانای ((ناکۆکی، دووبەرەکی، دوژمنایەتی، نەیاری)) دێت [موکریانی، ٢٠٠٥: ٢١٨]. بۆیە لەم دێرەدا هەریەکە لە وشەکانی (تەمەروود، شقاق) وەک دوو دەربڕینی یوفیمیزمی شاراوە بەکارهاتوون و هۆکارن بۆ دوورکەوتنەوە لە دروستبوونی کەنفلیکت و خۆبەدوورگرتن لە دەربڕینە تابۆ و دیسفیمیزمەکان. بە واتایەکی دیکە گەر لە شوێنی ئەم دوو پەیڤە عەرەبییە، نووسەر سودی لە وشە خۆماڵییەکان وەرگرتبا، بێگومان ئەوکات بە پێچەوانەوە ململانێ و شەرانگێزی دروست دەبوو.

گردی هبوا مە اتفاقک          ڤیکرا بکرا مە انقیادک

روم و عرب و عجم تمامی          همیان ژ مرا دکر غلامی

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٧]

وشەی (غلامی) ئەگەرچی وشەیەکی تابۆیە بەڵام خانی لێرەدا لەبری واتای ژێردەستەیی و خزمەتکار بەکاری هێناوە و بۆیە وشەی (غولام) دەبێتە یوفیمیزمێکی ئاشکرا، چونکە کەمتر کەنفلیکت و شەرانگێزی و تەنگژەی سیاسی و کۆمەڵایەتی دروست دەکات، خانی لێرەدا دیسان پێشانی هەڵوێستی نیشتیمانی و نەتەوەیی خۆیمان پێدەڵێت و لەداخی ئەو بارودۆخە ناهەموارەی ئەو سەردەمە، خۆزگە و خواستەکانی خۆی وەکو گوتاری ئەو کاتەی کورد دەردەخات.

ئەگەر سەیری ئەو بەیتە شیعریانەی خانی بکەین بەر لە دەستپێکردنی چیرۆکی "مەم و زین" تایبەت هۆکاری نوسینی؛ کە لە چەند دێڕێکدا ڕوونی کردۆتەوە، هەست بەوە دەکرێت کە چەندین وشە و دەستەواژەی جوان و سەرنجراکێش لەبڕی دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمییەکان بەکاردێنێت، بێگومان ئەم شێوازی هەڵاوێردکردنە دەچێتە خانەی یوفیمیزمی شاراوە و ئاشکراکان. سەرباری تووڕەیی خانی بۆ نەزانین و نەفامی میللەتی کورد، دێت بە زمانێکی ئەدەبی جوان، بە دەربڕینێکی یوفیمیزمیانە وەها شاکارێك دەخولقێنێت کاتێک دەڵێت:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خانی ژ کمال بی کمالی        میدانا کمالی دیت خالی

[خانی، ۲۰۰۸: ٤٧].

پەیڤی (کمال) کە لە بنەڕەتدا لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بەمانای (تەواوی) دێت. وەلێ خانی وشەی (کمال)ی دووەمی بەشێوەی نەرێ بەکاربردووە و مەبەستی بێ مەعریفەیی و نەزانینە. کە ئەمەش خۆی لە خۆیدا یوفیمیزمێکی شاراوەیە و بە ئامانجی دوورکەوتنەوە لە گرژی و تەنگژە سیاسی و نەتەوەیی و کۆمەڵاتییەکان بەکاریهێناوە. هەر لە هەمان بابەت دا خانی دەبێژێت:

انواع ملل خدان کتیبن        کرمانج تنی دبی حسیبن

[خانی، ۲۰۰۸: ٤٧].

وشەی (بی حسیب) کە خانی لێرەدا بۆ مەبەستی بێبەش و دەست بەتاڵ بەکاری بردووە و، لەبری ئەو مەبەستانە کە رواڵەتێکی ناشیرینیان هەیە و نوسەر وشەیەکی عەرەبی خواستووە و یوفیمیزمێکی شاراوەی لێ بەرهەم هێناوە. گەورەیی خانی لێرەدا کە باسی کەم و کوڕی میللەتەکەشی دەکات، نایەوێت بە زمانێکی کرێت ڕووبەڕووی کەم و کوڕییەکان ببێتەوە و ڕێزیان لێ دەگرێت. هەروەکو لە دواتردا دەڵێت:

یعنی نە ژ قابل و خبیری        بلکی بتعصوب و عشیری
حاصل ژ عناد اگر ژ بیداد        اڤ بدعتە کرخلاف معتاد
دا خلق نەبیژتن کو اکراد        بی معرفتن، بی اصل و بنیاد

[خانی، ۲۰۰۸: ٤٧].

هەریەکە لە پەیڤەکانی (تەعەصوب، عناد، بێ مەعریفەت) دەربڕینی توندن و دەچنە چوارچێوەی بەکارهێنانی تابۆ، هەروەها هۆکارن بۆ دروستبوونی کەنفلیکت و شەڕانگێزی و ململانێی زمانی. وشەکانیش سەرجەمیان لە زمانی عەرەبی وەرگیراون و ماناکانیشیان ڕوون و ئاشکران. ئەم دەستەواژانە گوزارشت لە سەرسەختی و دەمارگیری نەتەوەیی خانی دەکەن کە لە بەر نووسینی ئەم پەرتووکە چەند ئازار و نەخۆشی چێشتووە، لە پێناو ئەوەی کە خەلکانی تر(بێگانەکان ) نەبێژن گەلی کورد بێ زانست و بێ پەرتووکن.

بی بهره نە او ژ عشقبازی        فارغ ژ حقیقی و مجازی

[خانی، ۲۰۰۸: ٤٧].

لەبری ئەوەی کە خانی بڵێت (بێ پار، بێ بەش)، هاتووە وشەی (بەهرە)ی نەرێ کردووە و مەبەستە ناشیرینییەکەی پێ داپۆشیووە و پۆشاکێکی یوفیمیزمانەی شاراوەی بەبەردا کردووە. خانی هەر لەو بەیتە شیعریانەی کە هۆکاری نوسینی "مەم و زین"ی تێدا باس کردووە، گەلێک پەیڤی دیکەی یوفیمیزمی بەکارهێناوە، کە دەتوانین هەندێکیان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بخەینە ڕوو وەکو: (یتیم) کە لەبنەڕەتدا بۆ مەبەستی بێ باوکی بەکاردێت، بەڵام خانی بۆ مەبەستی بێ خودانی کوردان بەکاری هێناوە؛ واتە نەبوونی سەرکردەیەك یان دەوڵەتێکی سەربەخۆ. ئەمەش ئەو ئایدۆلۆژیا سیاسییەی خانی دەردەخات کە نوێنەرایەتی کورد و میرەکانی کردووە لە کاتێکدا کە دەسەڵاتیان نەماوە و دوچاری پەرتەوازە و لەناوچوون هاتوون.

فی الجمله نه جاهل و نزانن　　بلکی د سفیل و بی خدانن

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٨].

پەیڤی (سەفیل) لە بنەرەتدا لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بەمانای ((هەرزە، سوک، گرزە، حیزە بخۆ، کنۆس، جیوەلەک، هەرچی و پەرچی، دلسڤک، وەینەک، بەترف، بلّح، دوون، نزم))دێت [موکریانی، ٢٠٠٥، ١٩٨] دێت. وەلێ لەم دەقەدا بەکاریگەری کەرەسەکانی رستە و مانای کۆنتێکستی دەکرێ ببێژین لەبڕی (چارە رەش، بێ بەختی) بەکارهاتووە. لە هەردووك باردا پەیڤی (سەفیل) بە یوفیمیزمێکی شاراوە هەژمار دەکرێت و هۆکارە بۆ خۆ بەدوورگرتن لە ململانێی زمانی و کەنفلیکت و شەڕانگێزی و دوورکەوتنەو ە لە دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان.

| | |
|---|---|
| گردی هبویا مەژی خدانک | عالی کرمک لطیفه دانک |
| علم و هنر و کمال و اذعان | شعر و غزل و کتاب و دیوان |
| اڤ جنس ببا لباوی معمول | اڤ نقد ببا لنک وی مقبول |
| من دی علما کلام موزون | عالی بکرا لبان گردون |

[خانی، ٢٠٠٨: ٤٨].

خانی لەم بەیتانەدا ئاماژە بە نەبوونی دەوڵەت و کیانێکی سیاسی دەکات. نوسەر زۆر بە وردی و لێزانانە وەسفی حاڵی کوردان لە بێ سەرکردەیی و دەوڵەتێکی کوردی دەکات، هەروەها بە ئەگەرەوە یوفیمیزمێکی شاراوەی سیاسی و کۆمەڵایەتی دەدرکێنێت و، دووردەکەوێتەوە لە ململانێی زمانی و شەڕانگێزی سیاسی و نایەوێت دەستەواژە و دربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان بە زەقی بەکار ببات، بۆ ئەوەی کە دەسەڵاتدارانی داگیرکەری عوسمانی زەفەری پێ نەبەن. خانی ئەو ڕەخنەیە بەوە ئاراستە دەکات کە ئەگەر ئێمە سەرکردە و کیانێکمان هەبوایە و سەرپەرشتی ئەو نوسینەیان بکردبا، ئەوا من لەوەی ئێستا هەیە جوانتر و پرچێژتر دەمنوسی و ئەدەب و شیعرم دەگەیاندە بڵندترین پایە لەسەر ئەدەبیاتی دوژمنانمان، ئەمەش هەمدیس ئەو ئایدۆلۆژیا سیاسییەی خانیمان بۆ دەردەخات کە لە غیابی میرنشین و میرە کوردەکان بووەتە ئەرکی سەرشانی ئەو.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**٢ – ٢ – شرۆڤەکردنی دەستەواژە یوفیمیزمییەکان وەکو بابەتە ئەڤینی و کۆمەڵایەتییەکان لە"مەم و زین"دا:**

ئەگەر چی تا ئێرە شیکردنەوەی ئەو چەمکە یوفیمیزمیانە بوو کە لە پەیام و ئایدۆلۆژیا سیاسی و کۆمەڵایەتییەکانی خانیدا هەبوو، کە وەکو گوتاری میر و میرنشین شرۆڤە کرا ، بەڵام دەبێ ئاماژە بەوەش بکەین کە بابەتە ئەڤینی و کۆمەڵایەتییەکانی نێو "مەم و زین"یش دەکرێ بە ئایدۆلۆژیایەکی کۆمەڵایەتی و سیاسیانە لێکبدەینەوە و لەم بابەتەشدا گەلێك پەیڤی "یوفیمیزم" لەبری دەستەواژە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان بەکارهاتووە، کە لێرە بەدوا هەوڵدەدرێت دەستنیشان بکرێن.

خانی لە باسی جوانی ئەڤینیدا جیاوازی لەنێوان خۆشەویستی و هەوەسبازیدا دەکات و دەڵێت:

لی عاشق و بوالهوس جدانه	هن فائده خواز ژبووی جانان

[خانی، ٢٠٠٨: ٥٧].

بەکارهێنانی وشەی (بوالهوس) لەبری ~~نەزان~~ چاولەدەر، ناڕاستی لە دڵداریدا بەکارهاتووە. دەکرێ ئەم پەیڤە وەك یوفیمیزمێکی ئاشکرا هەژمار بکرێت. بەم دەربڕینە نووسەر خۆی بەدوورگرتووە لە دەربرینە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان.

هرچند کو بیحد و قیاس بون	عامی و خوادم و خواص بون

[خانی، ٢٠٠٨: ٥٨]

خانی هەوڵیداوە پەیڤی (خوادم) لەبری (خزمەتکاران) بەکاربێنێت. ئەم وشەیە دەشێ وەك یوفیمیزمێکی ئاشکرا مامەڵەی لەگەڵدا بکرێت. ئەگەرچی ئەم دوو پەیڤە بۆ یەك مانا و مەبەست بەکاردێت، وەلێ لەنێو کۆمەڵگەی کوردیدا وشەی (خادم) پەسەندترە، هەروەکو ئەو کەسەی کە خزمەتی مزگەوت دەکات پێی دەڵێن (خادمی مزگەوت). هەربۆیە نووسەر هەوڵیداوە وشەیەکی بێگانە لەبری پەیڤێکی رەسەنی کوردی بخوازێت، بەمەبەستی کەمکردنەوەی ململانێی زمانی و کەمکردنەوەی لایەنی نەرێنی.

باژیر و کلات و خانی بردان	تشبیه بە نژدیان و جردان

[خانی، ٢٠٠٨: ٦١]

خانی لە باسی گۆڤەند و نەورۆزدا، تایبەت لەم دێڕەدا پەیڤی (نژدەیان – نەژدییان) مەبەست لێی کەسانی خراپ و تالانکەرە. نەژدی لە فەرهەنگی زمانی کوردیدا بەمانای ((نزیک، ماڵی تالانی)) دێت [هەژار، ٢٠١٠: ٨٨٣]. بۆیە دەکرێ (نژدەیان) وەک یوفیمیزمێکی شاراوە هەژماربکرێت، چونکە بەشێوەیەکی ناڕاستەوخۆ و شاراوە وەسفی ئەو کەسانە دەکات کە هەوڵی تالانکردن دەدەن.

اتراب و کواعبی دعذرا	مردان و مراهقی دزیبا

[خانی، ٢٠٠٨: ٦١]



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خانی له وەسفی ئافرەت و جوانیاندا پەیڤی (کەواعب)ی عەرەبی لەبڕی سینگی ئافرەت بەکاردێنێت. لەزمانی عەرەبیدا یەکێک لەواتاکانی کەواعیب ((مەمک قیتان))ە [خانی، ٢٠٠٨: ٧٠]. بێگومان ئەمجۆرە دەربڕینە ناراستەوخۆیە دەبێتە یوفیمیزمێك لەجۆری شاراوە. هەروەك ئاشکرایە کە وشە سێکسییەکان دەربڕینیان بەشێوەیەکی ڕاستەوخۆ دەبێتە تابۆ، بەکارهێنان و دانانی پەیڤی دیکەی خۆماڵی یان بێگانە لەشوێنیان دەبێتە یوفیمیزم. بۆیە نووسەر هەوڵیداوە وشەیەکی عەرەبی بەکاربێنێت و خۆی بەدووربگرێت لە دەستەواژە تابۆ و دیسفیمیزمییەکان.

وی گوت دو شهلوند شداد ایرو لقی خلقی بونه جلاد

[خانی، ٢٠٠٨: ٦٣]

لەم دێڕەدا پەیڤی (شداد) لەبڕی زاڵم بەکارهاتووە. نووسەر هەوڵیداوە لەبڕی وشەی ڕەسەنی کوردی، پەیڤێکی عەرەبی بەکاربێنێت، مەبەست لێی دوورکەوتنەوە لە کەنفلیکت و شەڕانگێزی و بەکارهێنانی دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمەکانە. بۆیە ئەم دەربڕینە وەك یوفیمیزمێکی شاراوەی سیاسی هەژمار دەکرێت.

هن مؤتلفن هنك مخالف هن مختلفن هنك مؤالف

[خانی، ٢٠٠٨: ٦٤]

بەکارهێنانی پەیڤی (مخالف) لەبڕی وشەی دژ بەکارهاتووە. مەبەست لێی هەندێك لە دوژمن و ناحەزانی کوردانە کە بەشێوەیەکی ڕاستەوخۆ و ئاشکرا ناوی نەبردوون. ئەمجۆرە دەربڕینە دەبێتە یوفیمیزمێکی شاراوەی سیاسی، هەروەها هۆکارە بۆ خۆ بەدوورگرتن لە بەکارهێنانی دەستەواژە تابۆیی و دیسفیمیزمییەکان و دوورکەوتنەوە لە ململانێی سیاسی.

ئاخر کو ژ حدی چویە در جور جوری لمە عاقبت نمادور

[خانی، ٢٠٠٨: ٦٩].

بەکارهێنانی وشەی (جەور) لەبڕی ستەم وەك یوفیمیزمێکی ئاشکرا بەکارهاتووە. بێگومان ئەمجۆرە دەربڕینە هۆکارە بۆ دوورکەوتنەوە لە کەنفلیکت و دەربڕینە تابۆ و دیسفیمیزمییەکان، ئەمە جگە لەوەی پەیامە سیاسییەکەش لە شەڕانگێزی بە دووردەبێت.

هرچی وە حباندی ای پریزاد حسناوە دکت ژبووە منقاد

[خانی، ٢٠٠٨: ٦٩]

پەیڤی (مونقاد) لە بنەڕەتدا لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بەمانای (بەگوێ، فەرمانبەر، باربەر، گوێ لە مست) دێت [موکریانی، ٢٠٠٥: ٤٠٧]. ئەم دەربڕینە دەبێتە یوفیمیزمێکی شاراوەی سیاسی، هۆکاری ئەوەی ئەوەی کە لە بڕی وشەی خۆماڵی نووسەر پەنای بردووەتە بەر پەیڤی عەرەبی ئەمەش دورکەوتنەوەیە لە بەکارهێنانی وشە و دەربڕینی

تابۆ و دیسفیمیزمییەکان. ئەمە جگە لەوەی وشە عەرەبییەکە کاریگەری نەرێنی کەمترە لە وشە ڕەسەنە کوردییەکە.

وی دلە بی فصال محتال صبحی خوە کهاندە پیش رمال

[خانی، ٢٠٠٨: ٧٣].

(دلە) مەبەست لێی فێڵبازە، بۆیە دەبێتە یوفیمیزمێکی شاراوە. نووسەر بەمجۆرە دەربڕینە خۆی لە دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمییەکان بەدوورگرتووە. هەروەها ئەمجۆرە یوفیمیزمە هۆکارە بۆ دوورکەوتنەوە لە کەنفلیکت و ململانێی سیاسی و شەڕانگێزی. هەروەها پەیڤی (رمال) کە لە بنەڕەتدا لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە بەمانای ((فاڵچی، خیزفرۆش، زیخ فرۆش)) دێت [موکریانی، ٢٠٠٥: ١٧٦]. لەم دەقەدا زیاتر مانای یەکەم مەبەستە، نووسەر هەوڵیداوە وشەیەکی عەرەبی لەبری پەیڤێکی خۆماڵی کوردی بەکاربێنێت، کە مەبەست لێی دوورکەوتنەوە لە دەربڕینە تابۆییەکەیە، چونکە وشەی (فاڵچی) لە زمانی کوردیدا بە هۆکاری ئایینی و کلتووری لە کۆمەڵگەی کوردیدا، واتایەکی نەشیاو و دەربڕینی بە ئاشکرا ناپەسەندە و بە تابۆ هەژماردەکرێت. بۆیە دەکرێ ببێژین (رمال) وەك یوفیمیزمێکی شاراوە هەژماردەکرێت.

قارورە و حقە نشتر و کیس هلکرتن اوا خبیثە تلبیس

[خانی، ٢٠٠٨: ٧٥]

وشەی (خەبیث) لە بنەڕەتدا لە زمانی عەرەبیدا وەرگیراوە و بەواتای (شتی زۆر پیس، زۆرخراپ) دێت. بەو مانایەی دەبێتە دیسفیمیزم، چونکە کاریگەرییە نەرێنییەکەی زیاترە لە وشە خۆماڵییە کوردییەکە. پەیڤی (تلبیس) کە بەمانای ((پێ لەبەرکردن، ڕووکێش کردن، شاردنەوە)) دێت [موکریانی، ٢٠٠٥: ٩٢]. وەلێ لەم دەقەدا بە واتای (خۆڵ لەچاوی خەڵککردن، چەواشەکاری، فێڵبازی) دێت. واتە ئەم وشەیە دەکرێ وەك یوفیمیزمێکی شاراوەی سیاسی هەژماربکرێت، چونکە هۆکارە بۆ دوورکەوتنەوە لە ململانێی سیاسی و شەڕانگێزی و خۆ بەدوورگرتن لە دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمییەکان.

دائم لدری وی قابوجی بو قلاع و قلاش و قاوجی بو

[خانی، ٢٠٠٨: ٩٣]

(قلاع) مەبەست لێی کەسانی خراپە و لە بنەڕەتدا لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بەمانای ((هەڵکێش، هەڵکەن، لە ڕەگ و ڕیشە دەرهێنەر)) دێت [موکریانی، ٢٠٠٥: ٣١٠]. وەلێ لەم دەقەدا مانای لێکسیکی و مەبەست لەیەکەوە دوورن. پەیڤی (قلاع) دەکرێ وەك یوفیمیزمێکی شاراوە هەژماربکرێت، چونکە مانای مەبەست بەشێوەیەکی ڕوون و ئاشکرا نەهاتووە، کە مەبەست لێی دوورکەوتنەوە لە بەکارهێنانی دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکانە. هەروەها وشەی (قلاش) لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بەواتای ((بێکارە،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هیچ و پووچ، بێ باک، بێمار، ڕووت)) دێت [سەرچاوەی پێشوو، هەمان لاپەڕە]. پەیڤی قلاش بەهەمان شێوە یوفیمیزمێکی شاراوەیە، هۆکارە بۆ خۆپاراستن لە دەربڕینی تابۆ و دیسفیمیزم و دوورکەوتنەوە لە کەنفلیکتی زمانی و شەڕانگێزی سیاسی.

مـأذون بـکە طـورة دطـرار داحکم بکن لشاھـ و خوندکار

[خانی، ٢٠٠٨: ٩٧].

پەیڤی (طرار) کە لە بنچینەدا لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بە واتای ((ڕێگر و دز)) دێت [خانی، ٢٠٠٨: ١٣٢]. نووسەر هەوڵیداوە خۆی بەدوور بگرێت لە بەکارهێنانی دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمیەکان، بەمەستی دروست نەبوونی کەنفلیکت و ململانێی سیاسی پەنای بردووتە بەر بەکارهێنانی وشەی بیانی لەبڕی پەیڤی ڕەسەن و خۆماڵی کوردی. واتە وشەی طرار دەبێتە یوفیمیزمێکی شاراوە.

سیف و رطب وانار بستان لیف و ذقن وانار پستان

[خانی، ٢٠٠٨: ١١٠].

پستان کە بەواتای ((مەمک)) دێت [خانی، ٢٠٠٨: ١٥٤]. وەك یوفیمیزمێکی ئاشکرا لەم دەقەدا بەکارهاتووە. بەمەبەستی خۆ بەدوورگرتن لە بەکارهێنانی دەستەواژە تابۆییەکان، تایبەت لە وەسفی لەش و لاری ئافرەتدا، بەهۆکاری کۆمەلایەتی نووسەر پەیڤی (پستان)ی بەکارهێناوە.

زینا کو دوصد پری پرستار حورا کو ممو ژبو گرفتار

[خانی، ٢٠٠٨: ١١٤]

لەم دەقەدا (پرستار) بەمانای خزمەتکار دێت، وەلێ لە فەرهەنگدا بە واتای(( خەمخۆر، یاریدەدەری نەخۆش)) دێت [هەژار، ٢٠١٠: ١١٨]. کەواتە وشەی (پرستار) لەم نیوە دێرە دا یوفیمیزمە، چونکە هۆکارە بۆ دوورکەوتنەوە لەم حاڵەتە دەروونییەی کە لەلای تاك لە کاتی بەکارهێنانی وشەی (خزمەتکار) دروست دەبێت. بۆیە شاعیر بۆ ئەوەی خۆی بەدوور بگرێت لەم واتا تابۆییە، وشەی پرستاری بەکارهێناوە. هەروەها واتای بەکار هاتوو و لێکسیکی ئەم پەیڤە لەیەکترەوە دوورن، جۆری یوفیمیزمەکەش شاراوەیە.

البتە خوە دی بکت حراست ناکت چو قبوليا نجاست

[خانی، ٢٠٠٨: ١١٥].

(نجاست)یش یەکێکە لەو پەیڤە یوفیمیزمیانەی کە شاعیر بەکاریهیناوە، کە مەبەست لێی (پیسی)یە، هەروەها لە فەرهەنگدا بەواتای ((گلاوی، پیسی))هاتووە.[نظام الدین، ٢٠٠٠: ٧١٣]. خانی لێرەدا بۆ ئەوەی خۆی لە وشە تابۆکان ڕزگار بکات، وشەیەکی عەرەبی هێناوە و مانا فەرهەنگییە ئاشکرایەکەی پێ داپۆشیووە و یوفیمیزمێکی شاراوەی لێ هەڵێنجاوە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

یعنی خبری دهردو یاران نمام و حسود و حیلەکاران

[خانی، ٢٠٠٨: ١٢١].

لەم دێرە شیعرەدا (نمام) بە واتای (دووزمانی)دێت، ئەم وشەیە لە زمانی عەرەبییەوە وەرگیراوە و لەفەرهەنگیش بە مانای ((قسەگێڕەوە، قسەچین، پاشدوو، دووڕوو)) هاتووە [موکریانی،٢٠٠٥: ٤٢٩]. خانی لەبری قسەیەکی تاڵ بە مانا کوردییەکە، وشەیەکی عەرەبی هێناوە و یوفیمیزمێکی شاراوەی دروستکردووە، چونکە واتا کوردییەکان دەبنە تابۆ و جۆرێك لە کەنفلیکتی سیاسی یان کۆمەڵایەتی دروست دەکەن.

سی دست ژ میر برن تمامی مفسد فکری ژوی مقامی

[خانی، ٢٠٠٨: ١٢٤].

خانی وەك هەموو جار لە دربڕینەکانیدا هەوڵیداوە تا بکرێ خۆی لە قسە زبر و تاڵەکان لابدا و تابۆکان بە توێکڵێکی شیرینی یوفیمیزمانە پەردەپۆش بکات، لەم دێرەشدا بە ئاشکرا دیارە کە خانی وشەی (مفسد) کە وشەیەکی عەرەبییە و بەکاری هێناوە، بە واتای ((دووزمانی، خراپی، گەندی))[موکریانی،٢٠٠٥: ٣٩٤]. هەروەها جۆری یوفیمیزمەکەش شاراوەیە.

رابونە ممی دوصد غضنفر مم رابویە پی بدست خنجر

[خانی، ٢٠٠٨: ١٢٥].

(غضنفر) یەکێکی دیکە لە وشە یوفیمیزمییەکانی مەم و زینی خانییە، کە لە فەرهەنگی زمانی عەرەبی بە واتای ((شێر)) هاتووە.[نضام الدین، ٢٠٠٨: ٥١٠]. گومان لەوەدا نینە کو ل ئیدیۆمی زمانێ کوردیدا یەکێك لە ماناکانی شێر دڕندەیە، خانیش لەم دێرە شیعرەدا بە واتای دڕندە (غضنفر)ی بە کارهێناوە و نەیویستووە ڕاستەوخۆ پەیڤە تابۆیەکە پێشان بدات، بەڵکو لە ڕێگای خواستنی وشەیەك لە زمانێکی تر یوفیمیزمێکی شاراوەی خستۆتە ڕوو.

مسمار کرن بدو ژ غفلت هشیار کرن عدو بصولت

[خانی، ٢٠٠٨: ١٣٣].

وشەکانی (دوژمن، ناحەز، نەیار، بەدخواز، بەرچەپ) لە فەرهەنگدا لە بەرامبەر پەیڤی (عدو)هاتووە[موکریانی،٢٠٠٥: ٢٥٩]. لێرەدا خانی لەبڕی بەکارهێنانی ئەو پەیڤە تابۆییانە هاتووە لە زمانی عەرەبی (عدو)ی وەرگرتووە و بەرگێکی شاراوەی یوفیمیزمانەی پێ بەخشیووە. هەروەها پەیڤی (بصولت)لە هەمان ئەو دێرە شیعرە، بە مانای ((هێرش، هێز، توانایی، هەڵمەت، زەبر و زەنگ، سام، هەڵکوتانە سەر))دێت[سەرچاوەی پێشوو: ٢٣٣]. کە بە هەمان شێوەی پێشو خانی یوفیمیزمێکی شاراوەی بە خواستنی وشەیەکی عەرەبی لە بڕی هەموو ئەو پەیڤە تابۆیانەی لەسەرەوە باسمان کرد بەکارهێناوە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

خصی کونشی ببی مقابل       درمان چیه شربتا هلاهل

[خانی، ٢٠٠٨: ١٣٥].

لەم دەقەدا پەیڤی (شربت) لەبڕی ژەهر خواستراوە وەك یوفیمیزمێكی شاراوە. هەروەك دەزانرێت ڕاستەوخۆ ناوهێنانی وشەی ژەهر دەبێتە تابۆ. نووسەر هەوڵیداوە خۆی بەدووربگرێت لە دەربڕینی راستەوخۆ بەمەبەستی دووركەوتنەوە لە دروستبوونی كەنفلیكت و ململانێی زمانی.

استادی دڤیتن و تامل       اخفاء و تغافل و تحمل

[خانی، ٢٠٠٨: ١٣٥].

لە دەقی "مەم و زین"ی خانیدا گەلێك تەكنیكی جوانكاری و یوفیمیزمی لە خۆ گرتووە، یەكێكی تر لەو وشانەی بۆ دەربڕینێكی جوان بەكاری هێناوە پەیڤی (تغافل)ە كە لە فەرهەنگدا بە واتای((ناخۆشكردن، خۆنابەلەد كردن، خۆناشارەزاكردن، خەلەتان)) دێت [موكریانی، ٢٠٠٥: ٨٧]. بەڵام لە دێرەدا لە بری وشەی (خۆگێل كردن) هاتووە، لە بنەڕەتدا وشەیەكی تابۆیە و خانی لە زۆربەی هەرە زۆری شیعرەكانی بۆ ئەوەی كەنفلیكت دروست نەبێت كەسایەتی خۆی لە وشەی نەشیاو و نابەجێ بپارێزێت، هاتووە یوفیمیزمێكی شاراوە یان ئاشكرای بە پێی مەرج و هۆكارەكانی بەكارهێناوە.

تەصنیع كرنوی هندە تەشنیع       بەستن وی ل شیرێ شبهێ تەرصیع

[خانی،٢٠٠٨: ١٣٥].

لەم دەقەدا نوسەر هەوڵیداوە پەیڤێكی عەرەبی لەبری وشەیەكی ڕەسەنی خۆماڵی كوردی بەكاربهێنێ، بە مەبەستی پەردەپۆشكردن و خۆبەدووركرتن لە ململانێێ زمانی وەك لە پەیڤی (تەشنیع) كە لە بنچینەدا لەزمانی عەرەبی وەرگیراوە و بە واتای (( جنێودان، كاری ناشیرینكردن))دێت [موكریانی،٢٠٠٥: ٨٢]. یەكێك لە شێوازەكانی بەكارهێنانی یوفیمیزم وەرگرتنی وشەی بێگانەیە و دانانییەتی لە شوێنی وشە خۆماڵییە ڕەسەنەكە، بە مەبەستی كەمكردنەوە و لابردنی لایەنە نەرێنییەكان. بۆیە دەكرێ بڵێین ئەم پەیڤە یوفیمیزمێكی شاراوەیە.

اڤ كرب والم اگرتە ناڤی       زینی و ممی ژدل خوە باڤی

[خانی،٢٠٠٨: ١٣٦].

(الم) وشەیەكی دیكەی یوفیمیزمی شاراوەیە كە خانی لەم دێرەدا بەكاریهێناوە و، لە زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بە واتای((ئێش، ئازار،سوێ، دەرد، ئۆف، سروشك، ئەشكەنجە))هاتووە[موكریانی، ٢٠٠٥: ٣٧]. ئەم جۆرە خواستنە وادەكات واتا تابۆییەكەی لە ڕواڵەتدا كاڵ ببێتەوە و مانا یوفیمیزمیەكەی زاڵتر ببێت.

میرن هەنە عاقلن عزیزن       لی سادە دلن د بی تمیزن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

[خانی،٢٠٠٨: ١٣٧].

لەم دێرە شیعرەی خانی لە مەم و زیندا وشەی (بی تمیزن)مان بە بەر چاو دەکەوێت کە لەبنەڕەتدا لە (تمیز)ی زمانی عەرەبی وەرگیراوە و بەواتای ((جیاکردنەوە، پالاوتن، لێککردنەوە)) لە فەرهەنگدا هاتووە [کریم،٢٠٠٦: ١٤١]. نوسەر لەم دەقەدا هەوڵیداوە بە بەکارهێنانی پێشگری (بێ) وشەی تمیز نەرێ بکات و واتاکەی پێچەوانەی واتا بنەڕەتییەکەی پێشان بدات. لەو حاڵەتەدا دەبێتە یوفیمیزمێکی شاراوەی سیاسی، چونکە لەم دێرەدا لەباسی (میر)ەکاندا پەیامێکی سیاسی لە پشتەوەیە و، هەر بۆیە هاتووە سەرەتا بە پیاهەڵدان بە میرەکان دەستی پێکردووە و ویستوویەتی لە پاڵ ئەمەشدا ڕەخنە لە کەم و کوڕییەکانیان بگرێت و، لە چوارچێوەی وشەی بێ تەمیزدا ئەوە بخاتە ڕوو کە ناتوانن چاکە و خراپەی خۆیان لێک جیا بکەنەوە.

هرچی کو دبیژنی غرض دار       باور دکن او براستی خوار

[خانی،٢٠٠٨: ١٣٧].

لێرەدا خانی پەنای بۆ بەکارهێنانی وشەی (خوار) بردووە، کە وشەیەکی خۆماڵی کوردییە لە دیالێکتی کرمانجی ناوەڕاست و بە واتای (( چەوت، نالەبار لە دۆستی و مامەڵەدا))[هەژار، ٢٠١٠: ٢٤٧]. ئەمەش دەوڵەمەندی و شارەزایی خانی پێشان دەدات لە دیالێکتەکانی زمانی کوردی و، بۆیە گەلێکجاریش لەبری پەنابردنە بەر وشەی بێگانە، پەیڤی پەتی کوردی بۆ کەمکردنەوەی کاریگەری واتا تابۆییەکان وەك یوفیمیزمێکی ئاشکرا بەکارهێناوە. کە مەبەست لێی ڕەخنە گرتنە لە خراپ بەڕێوەبردنی ئیدارەی ئەوکاتی میرنشین.

دسپیرنە ڤان کسان اموری       او تیخنە دولتی قصوری

[خانی، ٢٠٠٨: ١٣٧].

وشەی (قصوری) کە لەم دێرەدا بە واتای (کەم و کوڕی یان گەندەڵی) هاتووە و لە فەرهەنگیش بە واتای ((کورتهێنان، بەشنەکردن)) دێت[کەریم،٢٠٠٦: ٩٦٨]. بەگشتی خانی زۆر زانایانە یاری لەگەڵ بەکارهێنانی ئەو پەیڤانە بۆ مەبەستی بەرجەستەکردنی یوفیمیزم دەکات، لێرەشدا کە دەقەکە خۆی باس لە کەم و کوڕی دەسەلاتدارانی ئەو سەردەمە دەکات و پەیڤی (قصوری) بە ئامانجی ڕەخنەگرتن بەکار دەهێنێت، بەڵام دوور لە شەڕانگێزی و کاردانەوەی خراپ. بۆیە دەکرێ ئەمەش وەکو یوفیمیزمێکی شاراوە هەژمار بکرێت.

او سرمە دچاڤ وی تە کشا       حتا توندی وی دل نە اشا

[خانی،٢٠٠٨: ١٣٨].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لەم دێڕەدا وشەکانی (سرمە )کە بە واتای (کل) دێت و (کشا) بە مانای (ڕژان، هاتنەخوار) هاتووە، وەك دەگوترێت ئەستێرە کشان، هەردوو پەیڤەکە بەیەکەوە (سرمە کشا)یان (سرمە کشان) واتا کلی لە چاو هاتە خوارێ، ئەمەش بە گریان و فرمێسك ڕشتن ئەو کردارە ڕوودەدات، لێرەدا خانی لەبڕی گریان و فرمێسك هاتووە ئەو دوو وشەیەی بەکار هێناوە، چونکە تەواو مانای دێرەکە ئەوەیە کە دەڵێ: (( تە ئەو کل د چاڤی وەراند، هندی تو نەدیتی دلێ وی یێ تەنا بوو، وەکو تو دیتی دەست ب ژانا کر)[خانی، ١٩٩٠: ٣٣٤]. ئەمەش وادەکات کە بڵێین نوسەر وشەیەکی کوردی بۆ مەبەستی دەربڕینێکی یوفیمیزمییانەی ئاشکرای بەکارهێناوە و، نەیویستووە ڕاستەوخۆ باسی گریان و فرمێسك بکات کە جۆرێک لە حاڵەتی ناخۆشی دەروونی دروست دەکات.

وان ترک کرن سرای فانی    او چونە جهان جاودانی

[خانی،٢٠٠٨: ١٤٠].

جاوید، جاویدان کە لە فەرهەنگدا بە مانای((بەردەوام، دایم، دایمی، هەمیشە، هەمیشەیی، هەتاهەتایی، نەمر، پایەدار))دێت، جاویدان لە بنەڕەتدا لە وشەی (جاڤیتان)ی پەهلەوییەوە هاتووە.[ پور، ٢٠٠٨: ٤٢٩]. ئەم وشەیە لەبری (مردن) لەلایەن خانی بەکارهێنراوە، چونکە کۆی واتای دێرەکە پێمان دەڵێت:(( وان دنیا هێلا و چونە ئاخرەتێ))[خانی، ١٩٩٠: ٣٤٣]. ئەمەش ئەوە دەگەیەنێت کە نوسەر بۆ ئەوەی وشەی مردن بەکار نەهینێت و ڕەچاوی حاڵەتی دەروونی بەرامبەر لەم کارەساتە بکات، هاتووە جاویدانی کردۆتە یوفیمیزمێکی شاراوە و جۆرێك لە ئیستاتیکای بە شیعرەکەی داوە.

اینامە دری ژ ڤی حجابی    اڤ زرە گهاندە افتابی

[خانی، ٢٠٠٨: ١٤١].

(حجاب) کە لە فەرهەنگدا بەمانای ((پەردە، چادر، شەرم، ئابڕوو)) [موکریانی، ٢٠٠٥: ١٢٣].هاتووە، بەڵام نوسەر لەم دێرە شیعرەدا بۆ مەبەستی نەدیتن و تاریکایی بەکاریهێناوە و مانای یوفیمیزمی شاراوەی بەبەردا کردووە.

شاهم بمرا مبە منازع    از بومە بحصیا خوە قانع

[خانی،٢٠٠٨: ١٤٢].

خانی لەم دێرە شیعرەدا لە بەکارهێنانی وشەی (منازع) واتای (کێشە و بەربەستی) بەرجەستە کردووە، کە لە بنەڕەتدا بە مانای ((ناکۆکی، ڕکابەرایەتی، بەربەرەکانێ، کێبڕکێ))دێت[کەریم،٢٠٠٦: ١٣٤٩]. ئەگەر سەیر بکەین دەبینین کە نوسەر وەك لە زۆربەی بەکارهێنانە یوفیمیزمییەکاندا وشەی بێگانەی بەکارهێناوە، بەهەمان شێوە لە بابەتی وەسیەتی زین بۆ میردا وشەی منازعی بەکارهێناوە و، نەیویستووە کە وشە تابۆ

کوردییەکان بەکاربهێنێت و، جۆرێک لە قسە ڕەقی زین بەرامبەر میر پێشان بدات و بەمەش یوفیمیزمێکی شاراوەی دروست کردووە.

داضن نەبری کو اڤ مثالە　　یاقول ضعیفە یا بطالە

[خانی، ٢٠٠٨: ١٤٦].

خانی لێرەدا هاتووە لەبری وشەکانی بێ بنچینە و بێ ناوەڕۆک، وشەکانی (ضعیف و بطال)ی بەکارهێناوە، بێگومان بەکارهێنانی پەیڤەکانی (بێ بنچینە و بێ ناوەڕۆک) دەچنە خانەی وشە تابۆکان، بۆیە لەم سۆنگەیەوە خانی ئەم دوو وشە عەرەبییەی هێناوە و جۆرێک لە سوککردنی باری دەروونی بە بەرامبەر بەخشیووە و بە یوفیمیزمێکی ئاشکرا دایپۆشیوون.

زین بو سببی جنونیاتە　　میر بو سببی زبونیاتە

[خانی،٢٠٠٨: ١٤٧].

وشەکانی (جنون و زبون) لەو دێرەدا یوفیمیزمن، لەبەر ئەوەی لە بری دەربڕینەکانی ((شێت و بێدەسەلات یان کز و لاواز یان بێچارە و فەقیر))هاتووە[هەژار، ٢٠١٠: ٣٨٥]. لێرەدا باسێکیتر دێتە پێشەوە و پێویستە ئاماژەی پێ بکرێت، ئەویش ئەوەیە کە ئەگەر لە ڕووی ئەدەبییەوە یوفیمیزمییەکەی باس بکەین دەچنە چوارچێوەی ئاشکرا، بەڵام ئەگەر بە ڕوویەکی گشتی وەریبگرین ئەوا جنون هەر ئاشکرا دەمێنێتەوە، بەڵام زبون دەبێتە یوفیمیزمێکی شاراوە.

اڤ میر و وزیر یا مجازی　　اڤ شعبدە و خیال بازی

[خان،٢٠٠٨: ١٤٨].

پەیڤی (شعبدە) لەم دەقەدا لەبڕی فێڵکردن بەکارهاتووە. نووسەر هەوڵیداوە خۆی بەدوور بگرێت لە دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمییەکان. وشەی شعبدە لە بنەڕەتدا لە زمانی عەرەبی بەمانای ((هەڵەپاسی، ساختەچییەتی، جەربەزەیی، فرت و فێل)) دێت [موکریانی، ٢٠٠٥: ٢١٦]. پەنابردنە بەر بەکارهێنانی پەیڤ و دەستەواژەی بێگانە لەجیاتی دەربڕینە خۆماڵییەکان لە بنەڕەتدا یەکێکە لە شێوازەکانی بەکارهێنانی یوفیمیزم. بۆیە دەکرێ ببێژین پەیڤی شعبدە دەبێتە یوفیمیزمێکی شاراوە.

میری کو مرن هبت نە میرە　　معزولی هبت اوی اسیرە

[خانی، ٢٠٠٨: ١٤٨].

لەم دەقەدا (معزولی) بەمەبەستی لەکاردوورخستنەوە دەربڕاوە. خانی هەوڵیداوە بە سود وەرگرتن لە زمانی عەرەبی خۆی بەدووربگرێت لە دەربڕینە تابۆ و ناپەسەندەکانی کۆمەڵگە. پەیڤی (معزولی) لە زمانی عەرەبیدا بەواتای ((دەرکراو، لەکار لادراو)) دێت [خانی، ٢٠٠٨: ٢١٩]. بۆیە ئەم دەربڕینە وەك یوفیمیزمێکی شاراوە دەکرێ هەژماربکرێت. کە



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

نووسـەر هەوڵیـداوە بەشـێوەیەکی شـاراوە و ناراسـتەوخۆ پەیـامی نەمـان و مردنـی میـر و کاربەدەستان بخاتە ڕوو.

حیوان صفت ام بکین زنای　　بیهودە د مسکنی فنایی

[خانی،۲۰۸: ۱٤۹].

وشـەی (زینـا) کە لەبـڕی سـێکس کـردن لەدەرەوەی خێزانـداری بەکاردێـت، بەکاریگەری ئـایینی ئیسلام هـاتۆتە نێو زمـانی کـوردی و نووسـەر هەوڵیـداوە لەبەر لایەنـی شـەرم و کـاریگەری کلتـوری کـۆمەڵایەتی خـۆی ببورێـت لە دەربـڕینە تـابۆیی و دیسفیمیزمییەکان سەبارەت بەم باسە. بۆیە پەنا دەباتە بەر یوفیمیزمێکی ئاشکرا.

تردامن و سرنگون و مردود　　شرمندە بچینە پیش معبود

[خانی،۲۰۰۸: ۱٤۹].

(تـردامن) لەجیـاتی داوێـن پیسـی بەکارهـاتووە. هەروەکـو ئاشـکرایە یەکێـك لە جۆرەکـانی بەکارهێنـانی یـوفیمیزم؛ بـریتییە لە وشـەیەکی ڕەسـەنی خۆمـاڵی لەجیـاتی دەربڕینێکـی تـابۆیی یـان دیسـفیمیزمی هەمـان زمـان. بەو مانـایەی خـانی ئەمجـارە لەجیـاتی پەنـابردنە بەر زمـانی عەرەبـی و فارسـی هەوڵیـداوە سـود لە زمـانی کـوردی ببینێـت. دەکـرێ ببێـژین وشـەی تەردامەن وەک یـوفیمیزمێکی ئاشـکرا هەژماردەکرێـت. پەنـابردنە بەر ئەم یوفیمیزمەش بۆ هۆکاری کۆمەڵایەتی و شەرم دەگەڕێتەوە.

اوژی د ریا مدا شهیدە　　تحقیق بکن کو او سعیدە

[خانی،۲۰۰۸: ۱۵۲].

لەم دەقەدا پەیڤـی (شـهید) وەك یـوفیمیزمێکی ئاشـکرا لەجیـاتی تـابۆی مـردن و کوشـتن بەکارهـاتووە. وشـەی شـەهید لەبنەڕەتـدا لە زمـانی عەرەبـی و بەکـاریگەری ئـایینی ئیسلام هاتۆتە نێو زمـانی کـوردی و وەرگیـراوە. نووسـەر لێرەدا بەبەکارهێنـانی وشـەی شـەهید هاوکـات پەیڕەوی کلتـوری ئـایینی ئیسـلام و ڕەچـاوی بـاری دەروونـی بەرانبەر و بەرزکـردنەوەی پایەی عیشق لەنێو کلتوری کوردیدا دەکات.

زنهـار ژ مشـهدا کـو مـم تـی　　البـتە ژ مرقـدا کـو ام تـی
گاڤا کو دچینە نیڤ صعیدی　　کلبی مە بتن لبر وصیدی

[خانی،۲۰۰۸: ۱۵۲].

پەیڤەکـانی (مـرقەد، مشـهەد، صـعید) وەک یـوفیمیزمێکی شـاراوە لەجیـاتی وشـەی (گـۆڕ) خواسـتراون. ئەوەی جێگـەی سەرنجە هەریەکە لەم وشانە لەبنەڕەتدا لە زمـانی عەرەبـی وەرگیـراون (مەرقەد، مەشـهەد) ((قەبـر، جێـی خەو)) [خـانی، ۲۰۰۸: ۲۲۷]، (صـەعید) ((قەبـر)) [خـانی، ۱۹۹۰: ۳۸۳]. هەروەکـو ئاشـکرایە وشـەی گـۆڕ یەکێکە لە دەربـڕینە تابۆییەکـان لە کلتـوری کوردیـدا، بۆیە نووسـەر هەوڵیـداوە سێ وشـەی جیـاوازی بـۆ هەمـان واتـا بەکاربێنێـت،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

کەچی پەیڤی (گۆڕ)ی نەدرکاندووە. ئەم نمونەیە وامان لێدەکات کە بڵێین خانی زۆر وردبووە لە هەڵبژاردنی پەیڤە یوفیمیزمییەکان. هەمدیس هەوڵی جدی خانی لەم دوو دێڕە بەدەردەکەوێت لە خۆپاراستن لە دەربڕینە تابۆیی و دیسفیمیزمییەکان.

القصه شهید عشق جلاد　　مقتول ستم قتیل بیداد

[خانی،٢٠٠٨: ١٥٣].

(بیداد) کە بەمانای (زاڵم، جەلاد) دێت. خانی هەوڵیداوە خۆی لەم دەربرینە تابۆییانە ببوورێت، بەمەبەستی کاریگەری دروستکردن و دوورکەوتنەوە لە واتا تابۆییەکە. وشەی بیداد دەکرێ وەك یوفیمیزمێکی شاراوە هەژماربکرێت. هەروەك دەزانرێت پەیڤەکانی زاڵم و جەلاد زیاتر مەبەستی سیاسی لە پشتەوەیە و بۆ کەسانی خاوەن دەسەڵات بەکاردێت. لەم سۆنگەیەوە خانی نەویستووە ڕاستەوخۆ کاربەدەستان بە زاڵم ناوزەند بکات، بۆیە بەشێوەیەکی نەرمتر و بە وشەی بیداد هەوڵدەدات کەنفلیکت و شەرانگێزی سیاسی ڕوونەدات.

کای ماللک مللک جسم و جانی　　از باغچه و تو باغبانی

[خانی، ٢٠٠٨: ١٥٤].

لەم دێرە شیعرەدا نوسەر وشەی (باغچە)ی لە زاری زینەوە بەکارهێناوە و بە پێی واتای تەواوی دێرەکە بێت ئەم وشەیە لەبەرامبەر هەموو ئەندامەکانی لەشی خۆی درکاندووە و، بە مەمی گوتووە کە من باغچەمە و تۆش باغەوانی. خانی ئەم وشەیەی بۆ مەبەستی یوفیمیزمێکی شاراوە لە بەرانبەر چەندین پەیڤ لە لەشی مرۆڤ بەکاربردوە و مەمیش کە کراوەتە (باغبان)؛ واتە خاوەنی زین و هەموو ئەندامەکانی لەشی. خانی زۆر زانایانە هاتووە ئەم دەربڕینە جوانەی دروست کردووە و، ڕەچاوی کلتوور و داب و نەریتی کوردەواری و ئیسلامیشی کردووە، هەر ئەمەش بۆتە هۆی دروست بوونی وشەیەکی یوفیمیزمیانەی وەها.

**ئەنجام:**

١ - گوتاری "میری بۆتان" لە چوارچێوەی "مەم و زین"ی "ئەحمەدی خانی"دا بابەتێکی نوسراو و ئاماژەپێکراوی ڕاستەوخۆ نییە، بەڵکو خانی بەشێوەیەکی ناڕاستەوخۆ؛ بیرورا و ئایدۆلۆژیاکان لەژێر ئەو پەیامە سیاسی و کۆمەڵایەتییەی کە لە مەم و زیندا هەیە دەربڕیووە.

٢ — زۆربەی دەستەواژە یوفیمیزمییە بەکارهاتووەکان لە گوتاری میری بۆتان لە چوارچێوەی "مەم و زین"ی خانی دا بەشێوەی خوازراو لە زمانی بێگانە وەرگیراون. کە زمانەکانی عەرەبی بە ژمارە یەک و فارسی بە ژمارە دوو لە ڕیزی ئەو زمانانەن کە خانی وشەی لێ خواستوون.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٣ – بەشی هەرە زۆری ئەو وشە یوفیمیزمیانەی بەکارهاتوون، یوفیمیزمی شاراوەن.

٤ – ئەو پەیڤ و دەستەواژانەی بۆ مەبەستی یوفیمیزم لەم دەقەدا بەکارهاتوون، بە ئامانجی دوورکەوتنەوە لە کەنفلیکت و شەڕانگێزی بووە، هەروەها ڕەچاوکردنی باری دەروونی بەرانبەر و خوێنەریش، یەکێکی دیکە بووە لە بەکارهێنانی یوفیمیزم.

٥ – هۆکارەکانی بەکارهێنانی یوفیمیزم لەم دەقە ئەدەبییەدا بریتیبوون لە هۆکاری( ئایینی، سیاسی، کۆمەڵایەتی، ڕۆشنبیری).

**لیستی ژێدەرەکان:**


١- پوور، هەژار عەبدوڵڵا (٢٠٠٨)، فەرهەنگی هەژیر (فارسی - کوردی) بەرگی یەکەم و دووم، چاپخانەی موکریانی، چاپی یەکەم، هەولێر.

٢- حوسێن، ڕێژنە مەعروف (٢٠١٠). ڕۆڵی شێوەزارە کۆمەڵایەتییەکان لە دەوڵەمەندکردنی فەرهەنگی کوردیدا، ماستەرنامە، کۆلێژی زمان، زانکۆی سەلاحەدین، هەولێر.

٣- خانی، ئەحمەد(١٩٩٠). مەم و زین، ڤەکولین و شرۆڤەکرنا: محەمەد ئەمینێ ئوسمان، چاپخانەی جاحظ، چاپی یەکەم، بەغداد.

٤- خانی، ئەحمەد (٢٠٠٨). مەم و زین، پێشەکی و لە چاپدانەوەی: نەجاتی عەبدوڵڵا، دەزگای ئاراس، چاپی یەکەم، هەولێر.

٥- خانی، ئەحمەد (٢٠٠٨). مەم و زین، پەراوێزنووسینی: هەژار، دەزگای ئاراس، چاپی دووەم، هەولێر.

٦- شەمس، هێمن عەبدولحمید (٢٠٠٦). شێواز و دەربڕین لە بۆنە کۆمەڵایەتییەکاندا، ماستەرنامە، کۆلێجی پەروەردە، زانکۆی کۆیە.

٧- فەرەج، شاخەوان جەلال (٢٠١٣). تابۆ وەک نموونەیەکی پەیوەندی نێوان زمان و کلتور، چاپخانەی بینایی، چاپی یەکەم، سلێمانی.

٨- کەریم، رزگار(٢٠٠٦). فەرهەنگی دەریا (عەرەبی - کوردی)، بەرگی یەکەم و دووەم، چاپخانەی مەهارەت، چاپی یەکەم، تاران.

٩- مستەفا، موحسن حسێن (٢٠١٣). یۆفیمیزم د زمانێ کوردیدا، ماستەرنامە، کۆلێژی ئاداب، زانکۆی دهۆک.

١٠- موکریانی، گیو (٢٠٠٥). فەرهەنگی نۆبەرە، فەرهەنگێکی (عارەبی – کوردییە)، چاپخانەی ئاراس، چاپی یەکەم، هەولێر.

١١- مەعروف، ئارام عەبدولواحید (٢٠١٣). ڕێزگرتن لە زمانی کوردیدا، چاپخانەی لەریا، چاپی یەکەم، سلێمانی.

١٢- ناوخۆش، سەلام (٢٠١٢). بەریەککەوتنی زمانەکان (کۆمەڵە نووسینێکی زمانەوانی)

١٣- نظام الدين، فاظل (٢٠٠٧). فەرهەنگی شیرین (عەرەبی - کوردی)، چاپخانەی شڤان، چاپی چوارەم، سلێمانی.

١٤- هاشمی، ابراهیم بن مصطفی (١٩٤٣). جواهر البلاغة فی المعانی والبیان و البدیع، طبع الأول، بیروت.

١٥- هەژار، عبدالرحمن شرفکندی (٢٠١٠). هەنبانە بۆرینە فرهنگ (کوردی - فارسی)، چاپخانەی انتشارات، چاپی شەشەم، تاران.

١٦- ئیبراهیمی، عەبدوڵڵا (٢٠١٢). کاوە "فەرهەنگی فارسی – کوردی" بەرگی یەکەم، چاپخانەی ئاراس، چاپی یەکەم، هەولێر.

17- Allan. K & Burridge. K. (2006). Forbidden Words Taboo and Censoring of Language. Cambridge: Cambridge University Press.

18- Wardhaugh, R. (2006). An Introduction to Sociolinguistics. Massachusetts: Blackwell Publishing Ltd.

19- Fernandez, E. C. (2018). "Euphemism as A Discursive Strategy in US Local and State Politics", Journal of Language and Politics, 40(1), pp. 5-26.

20- Ожегов, С. И. (2012).Толковый Словарь Русского Языка: терминов и фразеологических выражений. Москва: Московское издательство Мир и образование.

21- Сеничкина, Е.П. (2008). Словар эвфемизмов русского языка. Москва: Флинта: наука.

## استخدام حسن التعبير في خطاب أمير بوتان في سياق " مەم وزين " لأحمدي خاني التأثير و الانعكاس

**ملخص:**

حسن التعبیر، کمفهومٍ لغوي في علم اللغة التطبيقي، مصطلحٌ يسمح باستخدام كلماتٍ جميلةٍ وجذابةٍ بدلاً من الكلمات والعبارات المكروهة والمحظورة في المجتمع؛ لأسباب دينية أو سياسية أو اجتماعية أو غير ذلك، وتركّز هذه الدراسةُ على هذا الفن اللغوي، وتكمن أهميتها في أن حسن التعبیر يُستخدم كثيراً في مجالات متعددة في الحياة، ويأتي الأدب والفن على رأس هذه المجالات، حيث يميل الأدباء كثيراً إلى استخدام العبارات حسن التعبیر لإيصال رسائلهم بصورة غير مباشرة، بحيث تعطي نفس المعنى الذي يريده الأديب ولكن بعبارة مرنة، مع مراعاة المشاعر، والابتعاد عن الكلمات المحظورة، وبتعبير آخر: حسن التعبیر هو التعبير عن المعنى المرّ بالكلمات الماتعة.

ولا شك أن "مەم و زین الخاني"، كعملٍ أدبيٍّ رفيعٍ، لا يخلو من الأساليب والتعابير المُتَلَطِّفة، واختيارُ هذا الموضوع يعود إلى أهمية حسن التعبیر في الأدب بصورةٍ عامةٍ، وفي "مەم وزین الخاني" بصورةٍ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خاصةٍ؛ لأن هذا العمل الأدبي يعكس خطاب أمير بوتان، وتحاول هذه الدراسة تحليل خطاب الأمير، والتركيز على التعابير المُتَلَطِّفة من منظور المنهج التحليلي المعجمي الدلالي، وكذلك إظهار دور التعابير المُتَلَطِّفة في إيصال الرسائل السياسية، ومدى تأثيرها في تقليل الآثار السيئة للتعابير المكروهة والمستهجنة، ومن هذا المطلق تم تقسيم الكلمات المعجمية على عدة مجموعات، مثل: استعارة الكلمات من اللغات الأجنبية، واستخدام المجاز، والجناس، ومن النتائج المتوخاة من هذا التحليل لخطاب الأمير هو استخدام واستعارة الكلمات من اللغات الأجنبية كالفارسية والعربية؛ لغرض الانصراف عن استخدام التعابير النابية والمكروهة، وبالتالي إخماد نار العداوة السياسية.

**الكلمات المفتاحية**: *حسن التعبير، خطاب أمير بوتان، مەم وزين أحمدي خاني، ديسفيميزم ، تابو.*

## The Role of Euphemism in the Discourse of the Prince of Botan in the Context of Ahmedi Khani's "Mem û Zin"

**Abstract**:

Euphemism as a linguistic concept in practical linguistics which allows the use of beautiful and attractive statements instead of unpleasant, taboo and prohibited words and phrases in societal milieu, be it religious, political, social reasons, etc. The significance of this study is that the use of euphemism is used in many areas of life, so literature and art are not exempt from it. The writer often resorts to euphemisms to convey her/his message indirectly within a different form, in a more flexible manner, taking into consideration the emotional aspects thus avoiding the use of forbidden words.

Mam and Zin of Khani, as a literary work, is not devoid of euphemisms. The reason for choosing this title is due to the importance of using euphemisms in literature, especially Ahmedi Khani's "Mem û Zin", because it reflects the discourse of the Prince of Botan. In this study, based on the method of semantic lexical analysis, an attempt is made to identify and analyze the discourse of the Prince of Botan in terms of the use of euphemisms. The role and significance of euphemisms in conveying political messages is presented as well. Hence, to what extent do euphemisms dispel taboo expressions and dysphemism? For this purpose, an attempt has been made to divide the lexical statements into several groups, such as borrowing words from a foreign language, using metaphors and perception. One of the consequences of this interpretation of the discourse of the Prince of Botan in this literary text is the use and borrowing of words from foreign languages, such as Arabic and Persian to avoid taboo expressions and dysphemisms.

**Keywords:** *Prince of Botan discourse, Ahmedi Khani's "Mem û Zin", Euphemism, Dysphemism, Taboo.*

# هەولێن شێخ حەسەنێ ئادانی (١١٩٤ – ١٢٤٦)ز بۆ چێکرنا قەوارەیەکی سەربەخۆ
# (ل دویف ئەدەبیات و کەلتووری ئێزدیان)

**کۆڤان رێسان حەسەن**

سەرۆکاتییا زانکۆیا دهۆك/ هەرێما کوردستانا عیراق

**شمال خمو خضر**

زانکۆیا دهۆك - سەنتەرێ بێشکچی بۆ ڤەکۆلینێن مرۆڤایەتی/ هەرێما کوردستاناعێراق

**پوختە:**

شێخ حەسەنێ کورێ ئادی (یێ دوویێ) کورێ ئەبو بەرەکات کورێ سەخەر کورێ موسافر یێ ناڤدار ب (شێخ حەسەنێ ئادانی)، ل دەوروبەرێن سالا (١١٩٤)ز ژ دایکبوویە، هزرمەند و نڤیسەر بوو، پەرتووکا پیرۆزیا ئێزدیان (جەلوە) نڤیسییە و گەلەک قەول و بەیتێن ئێزدیان ڤەهاندینە کو ب شێوەیەکی زارەکی ب رێکا قەولبێژ و ئۆلدارێن ئێزدیان هەتا رۆژا مە یا ئەڤرۆ ژ بەرەباب بۆ بەرەبابی هاتینە ڤەگوهاستن و وەکە تێکستێن پیرۆز هاتینە زانین، هەروەسا ئەو وەک بابچاک ژی دهێتە بناڤکرن، لەورا د ناڤ ئێزدیاندا وەک کەسایەتییەکا پیرۆز هاتییە ناسکرن و مەزارگەهـ بۆ هاتینە ئاڤاکرن و مریدێن خۆ هەتا ئەڤرۆ ژی دناڤ ئێزدیخانێدا هەنە.

پشتی شێخ حەسەنێ ئادانی ڤیایی قەوارەیەکی سەربەخۆ ئاڤا بکەت، جڤاتەک ب ناڤێ خۆ ل لالش دامەزراند کو ژ چل کەسایەتی و دەروێش و بابچاکان پێکدهات، ئەڤ چەندە بوو بەرێ بنیاتێ ژ بۆ ریفۆرمکرنا گەلەک لایەنێن دینی و کارگێرییێن ئێزدیان و پلە و پۆستێن دەولەتبوونێ ل هەرەمێ ئایینییێ ئێزدیان زێدەکرن، وەک: شێخێ وەزیر، میر حەج، پێشئیمام، نەقیب، چاویش، خزنەدار و رەوانەکرنا تاووسێ (هێمایەکێ پیرۆزێ ئێزدیانە) و قەوال و ئۆلداران بۆ ناڤ ئێزدیان ل سەر ئاستێ کوردستانا مەزن ب مەبەستا خرڤەکرنا باجێ و خورتکرنا پەیوەندیان دناڤبەرا ئێزدیاندا و پێکڤەگرێدانا وان ب پەرستگەها لالشڤە.

ژبەر ئەنجامدانا کار و ریفۆرم و ب هێزکرنا پێگەهێ خۆ، بەدرەدین لۆلۆ والیێ موسل (١٢٠٩-١٢٦٢)ز، ژێ ترسیایە و ب هەول و بزاڤێن خۆ بوویە هەڤرکێ سەرسەختێ ژناڤبرنا ڤی کیانی، ئەو ب چێکرنا لالشێ تۆمەتبار کرییە بۆ جهگرتنا مەکەهێ وەکو بەهانەیەک بۆ ژناڤبرنا ڤی کیانی، هەر ب ڤێ رێکێ سەرکەفتن ئینایە و هەولێن شێخ حەسەن ژ ناڤبرینە، ئەو ل سالا (١٢٤٦)ز ب دەستێن هەڤرکێن خۆ ل موسل هاتییە سێدارەدان،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

نەخاسمە ژی ئەڤە د دەمەکیدا بوویە کو شێخ حەسەنێ ئادانی و مالباتا وی هەڤڕکی دگەل ناڤخوەیا ئێزدیان ژ چقێ شەمسانییێ لسەر دەستهەلاتدارییا ئێزدیان و لالش هەبووینە و ئەدەبیات و کەلتوورێ ئێزدییان ئەڤان بوویەر و ریفۆرم و هوورگلییان دناڤ خۆدا پاراستییە.

د ئەنجامدا دیار دبیت کو شێخ حەسەنێ ئادانی ڤیایە قەوارەیەکی سەربەخۆ یێ کوردی ل کوردستانێ ئاڤا بکەت، سەنتەرێ وێ ل لالش و دەوروبەران بیت و دەڤەرێن دی پێکڤە گرێدەت دا کو خەلک د هەمی رەهند و ئالییێن ژیانێدا ب سەرفرازی دناڤ مللەتاندا ل رۆژهەلاتا ناڤین بژیت، لێ هەڤڕکییا ناڤخۆییا ئێزدیان و نە هاریکاریکرنا کوردێن دی چونکی بەدرەدین لۆلۆ وەکو کارەکی دژی ئیسلامێ دابوو خویاکرن ئەڤ هەولێن وییێن نێزیکی ئاڤاکرنێ بووین ژ ناڤبرن.

**پەیڤێن سەرەکی:** *شێخ حەسەنێ ئادانی، قەوارەیێ سەربەخۆ، نووژەنکرن، باوەری، ئەدەبیاتا ئێزدیاتییێ، بەدرەدین لۆلۆ.*

---

**پێشەکی:**

ئەڤ ڤەکۆلینە یا لژێر ناڤێ (هەولێن شێخ حەسەنێ ئادانی (١١٩٤ – ١٢٤٦)ز بۆ چێکرنا قەوارەیەکی سەربەخۆ- ل دویف ئەدەبیات و کەلتوورێ ئێزدیان) ژ پێشەکی و دوو پشکان پێکدهێت، د پشکا ئێکیدا کو گرێدایی ژیانا شێخ حەسەنێ ئادانییە، بەحسێ ژیانا جڤاکی، ئایینی، رەوشەنبیری و ئەدەبی دکەت. پشکا دوویێ: میرگەها ئادیان و هەولێن شێخ حەسەنێ ئادانی ژ بۆ بنیاتنانا سەربەخۆ ژلایێ کارگێری، پەیوەندیان، ئابووری، لەشکەری، هەڤڕکییا شێخ حەسەنێ ئادانی و بەدرەدین لۆلۆیێ موسلی و ژ ناڤچوون و ئەگەرێن ژ ناڤچوونا کیانێ سەربەخۆ، هەروەسا سەرژنوویی ئاڤابوونا میرگەهێ بخۆڤەدگریت.

**پشکا ئێکێ:- ژیانا شێخ حەسەنێ ئادانی**

**١. ژیانا جڤاکی**

حەسەن کورێ ئادی کورێ ئەبولبەرەکات کورێ سەخەر کورێ موسافرێ هەکارییە. (الکتبي، ١٩٧٣، ل٣٣٤)، هەکار ژی ب دوو واتایان، ئێک: وەکو دەڤەر (ابن خلکان، ١٩٧٢، ل٢٥٤) دوو: وەکو ئێل (بدرخان، ١٩٣٣، ل١٥)، (ابن المستوفي، ١٩٨٠، ل١٦٤) هەتا نها هەکاری وەکو ئێل ل ناڤ ئێزدیان ل دەڤەرا شێخان هەیە.

د قەولێ (قەندیلا) دا ناڤێ وی و بابێ وی وەسا دهێت:

میران ژ مەلك شێخسن پرسی یە،

ئەو شێخسنێ ئیبن ئادی یە. (Hecî, 2002, l.329)



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ژ بەر کو ژ چقێ ئادانییێ ژ چینا (شێخ) بوویە، لەورا ناسناڤێ (شێخ) و (ئادانی) چۆیە دگەل ناڤێ وی و بوویە (شێخ حەسەن، شێخ حەسەنێ ئادانی). د قەسیدا شێخ عەبدلقادر هاتییە:

شیخادی، مەلک شێخ سن ب شێخینی قەبلاند،

عەرش و کورسی بۆرا خەملاند. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب٢، ل٦٧٧)

لێ گەلەك جاران ئێزدی ناڤێ وی سڤك دکن و (شێخ سن) بکاردئینن. ل ڤێرێ، تێکەلی دگەل ناڤێ خوداوەندێ (سن/ سین) دروست دبیت، خوداوەندێ (سن/ سین) گەلەك ژ شێخ حەسەن کەڤنترە و د داستانا گلگامێشدا ژی ناڤی وی هاتییە (الهيتي: ١٩٩٥) ئەڤ خوداوەند ل جەم سۆمەریان ب (سوین) و ل جەم ئەکەدیان ب (سین) ب خوداڤەندێ هەیڤێ هاتییە ناسکرن. (لابات و سنايزر: ٢٠٠٦، ل٣٢٩)، لێ دەمێ ئێزدی سورێ د بەدەنا شێخ حەسەندا دبینن ب فریشتە دهەژمێرن، هەر ب وی خوداوەندی بناڤدکەن. د قەولێ کوفیادا هاتییە:

کۆڤیا تەیە مەزنە،

لێ جەما دبوون مۆمنە،

پیرێ لبنانۆ زەینەت ب سورا مەلک شێخ سنە. (البسطامي، ٢٠٠٠، ل٣٨)

سەبارەت جهێ ژ دایکبوونا وی، دیرۆکنڤیس دبێژن: ((ئەو ل گوندەکی ب ناڤێ لالش ژ دایکبوویە.)) (ابن المستوفي، ١٩٨٠، ل١١٦) هەروەسا دیرۆکنڤیس (ياقوت الحموي) لالش وەکو گوند دزانیت. (الحموي، ١٩٧٧، ب٥، ل٢٨) ئەو گوندەک بوو سەر ب پەرستگەها لالشڤە، نها بتنێ شینوارێ گوندی د دیارن. تێکستێن ئێزدیاتییێ ژی وێ چەندێ دسەلمینن کو شێخ حەسەن ژ لالشە هەروەکو د قەولێ سلاڤ و سەد سلاڤ دا هاتی:

شێخێ منۆ ژ لالشێ،

قەولێ تە ئەم خلاس کرین ژ خشێ. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٥٨)

دیارە شێخ حەسەن ل لالش و دەوروبەران ژیایە، چونکی هەتا ڤێگافکێ پاشماوەیێن وییێن ژیانێ وەکو ئاڤاهی ل لالش مایینە، هەرەوسا ژی گوندێ وی ب ناڤێ (حەسەنی) ل سێرییانا ناحیا باعەدرێ و قەزا شێخان و ناحیا ئەلقوش هەیە و مەزارێ وی ژی لێ هەیە و توافا وی ژی دکەن و گوندەکی دی هەر بناڤێ (شێخ حەسەن) دناڤبەرا گوندێ پیر موس و گوندێ خورکێدا مایە، لێ نها موسلمان تێدا دژین.

سەبارەت دیرۆکا ژ دایکبوونا وی، نڤیسەر میهرداد ئیزەدی دبێژیت: ((لە دایکبوی دەوروبەری ساڵی ١١٩٥ز))یە. (ئیزەدی: ٢٠٠٢، ل٦٦)

شێخ حەسەنێ ئادانی، گەلەک ناسناڤ هەبووینە، هەر سەردەمەکی و د هەر گهۆرینەکا د سەر کەسایەتی و ژیانا ویدا هاتی ((ناسناڤ ل گۆرەیی وی بارودۆخی هەلبژارتییە یان بۆ هاتییە گۆتن.)) (شەمۆ، ٢٠١٢) دیسان هندەك ناسناڤ وەکو سالۆخدان و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ستاییش د ناڤ ئەدەبیاتا ئایینێ ئێزدیاندا بۆ هاتینە گۆتن، چ ژ ئەوان ناسناڤان بێ ئەگەر و بنەما نەبووینە، واتە: پترییا ناسناڤێن بۆ وی هاتینە گۆتن ژ زیرەکی و شیانێن وی بووینە، دبیت د هندەک ژ وان ناسناڤاندا زێدەرۆیی هاتبیە کرن، چونکی هندەک ژ وان ستاییش و سالۆخەتدانن، ژ ناسناڤێن وی: شێخ حەسەن، شێخ سن، مەلك شێخ سن، شێخێ حەسەنی سولتان، شێخێ حەسەنی فەقیر، شێخێ حەسەنی سەید، شێخێ حەسەنی مەزن، شێخێ حەسەنی دل بریندار، شێخێ حەسەنی ئەحمەر، شێخێ حەسەنی جەلال، شێخێ حەسەنی ئەسەد، برینداری مێران، میرێ قەلەندەران (Hecî, 2002, l. 320-322) باخۆ، هۆستا، خوندکار، شێرەسوار (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٥٨-٤٦٩) شێخێ سونەتێ، شێخێ سورێ، شێخ سنێ شێخا (ن)، شێخ سنێ باب گول (Hecî, 1996, l. 58) خودانێ سدقێ، خودانێ خلمەتێ، خودانێ قەلەم و دەفتەرێ، (حەبیب الله)، خەتخوون، شێخێ شفاتێ، ئیمامێ زەمانی. (حەجی: ١٩٩٧، ل١٣٤ - ١٣٧) شێخێ کوردا و (تاج العارفین). (الکتبي، ١٩٧٣، ل٣٣٤). هەروەکو د قەولێ شێخێ حەسەنی دا هاتی:

شێخێ حەسەنی مەزنە،

بابێ قەلپێ مۆمنە،

قاپییا مرازا یا مەلک شێخ سنە،

ئەو جییێ گلیان و گازنە. (البسطامي، ٢٠٠٠، ل٢٨)

شێخ حەسەن ب مەزناهییا خۆڤە بوویە جهێ مراز حاسلکرنێ و دەرگەهێ وی بۆ هەر کەسەکییێ ڤەکری بوویە ئەگەر گازندە گەهاندبنێ.

سەبارەت خێزانا وی، ناڤێ چەند زارۆکێن وی ماینە، ئەو ژی: ((شێخ موس، شەرفەدین، ئیبراهیمێ ختمی، شێخێ ئێتیمان.)) (جندي، ١٩٩٨، ل٦٢) نقیسەر (عزەدین باقەسری) دبێژیت (زەینەدین) ژی کورێ وییە. (باقسري: ٢٠٠٣، ل١٤) ئەڤ زارۆیێن وی د ناڤ ئێزدیاندا د پلەیا بابچاکاندانە و مەزار و نیشانگەهێن وان ل پەرستگەها لالش و دەڤەرێن ئێزدیان هەنە، هەتا ڤێگافکێ ژی ژ وێ بنەمالێ و مریدێن وی ل ناڤ ئێزدیان هەنە.

## ٢. ژیانا ئایینی

ژیانا شێخ حەسەن یا ئایینی چەند لایەنەکان ب خوەڤە دگرت، وەک: دەروێش (قەلەندەر)، بابچاک، خودان (خوداوەند)، فریشتە. د لایەنێ سۆفیگەرییێدا ئەوی شەش سالان خوە د چلەخانێدا خلوە کرییە، ئەو ژی پەرستگەهەکا بچووکە د هندروو پەرستگەها لالشدا دیرۆکەکا دوویر و درێژ هەیە و بۆ بەری زایینێ ڤەدگەریت. (یووسف، ٢٠٠٢، ل٦-١٢) جهێ خلوەیا بابچاکان بوویە و چلەیێن هاڤین و زڤستانێ رۆژی گرتینە و ئەدەبیاتا ئایینی



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ڤەهاندینە و گۆتینە، شێخ حەسەن ژی ئەڤ چەندە ئەنجامدایە، د ڤی بواریدا ((ئەو نە کێمی ئیبن ئەلعرەبی و حەلاج و ئیبن روشد بوویە.)) (الدوسكي: ٢٠٠٧، ل١٨)

شێخ حەسەن وەکو بابچاک ((خاسەکی ئێکجار گەش و پایە بلندە د نێڤ خاسێد ئێزدیادا.)) (سلێمان و جندی، ١٩٧٩، ل١٢٣) گەلەک مەزار ل دەڤەرێن ئێزدیان هەنە، ژ وان: مەزارەکی وی ل پەرستگەها لالش ل نێزیکی کانییا سپی، ل دەڤەرا باشیك و بەحزانێ (مطر: ٢٠٠٥، ل٣٢٧) ل گوندێ مشرفێ ل بابیرێ، ل گوندێ قەسرکێ، ل گوندێ رکئاڤا و گوندێ کەلەبەدرێ ل کۆمەلگەها شاریا، ل گوندێ بۆزان، ل گوندێ حەسەنییێ ل باعەدرێ، ل گوندێ بێبان، ل قەزا شێخان. (ابو روژ: ٢٠٠٠، ل١٣٩) ل گوندێ مەحموودا ل کۆمەلگەها مەهەتێ و ل گوندێ گابارا ل قەزا شنگالێ. (الحسني: ١٩٨٧، ل١٢٢) ل گوندێ داکا مەزن هەنە، ئەڤە هەمی ل هەرێما کوردستان و عێراقێ، هەروەسا مەزار و نیشانگەهەکا وی ل باکوورێ کوردستانێ ب تایبەتی ل ئاقارێ باتمانێ ل گەلییێ هەشیشانێ و گوندێ هەجرێ ب ناڤێ شێخ سن و مەزارەکی دی ب ناڤێ شێخێ حەسەن ل ئاقارێ ئێلەهێ ل گوندێ بازیوانێ، ئێك ژی ل گوندێ زێوێ د قونتارا چیایێ رەماندە هەنە. ئانکو ل باکوورێ کوردستانێ ب تنێ پتر ژ چار مەزارێن وی هەنە، سالانە ل بەر گەلەک ژ ڤان مەزارگەهان تواف و هەلکەفتێن ئایینی دهێنە گێران.

تێکستێ (درۆزێ) کو تێکستەکی رێبەرییێ خاس و بابچاکین ئێزدیانە، جهەکی ژیانا وی کو گوندێ (حەسەنییێ)یە د سەلمینیت:

ب قەدرێ جڤاتا بۆزا...

شێخ حەسەن ل حەسەنیێ،

بەر کەرەمەتا شێخ مەهمەدی دۆغاتی و حەگی فێرس کەی. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب٢، ل٩٦٣)

هەر ژلایێ ئایینیڤە، شێخێن شێخ حەسەن و مریدێن وی ب بەرفرەهی ل دەڤەرێن ئێزدیان مایینە و ئەو دبنە شێخێن میرێن ئێزدیان، واتە: دبنە شێخێن شێخان.

ژلایێ باوەرییێڤە، شێخ حەسەنێ ئادانی ب خودانێ پێنووس و دەفتەرێ دناڤ ئێزدیاندا دهێتە ناسکرن، ئانکو ئەوی زانییە بخووینیت و بنڤیسیت:

د دەستێ مەلک شێخ حەسەندا قەلەما ئیمانێ،

شێخوبەکر سەکنی لسەر بەرێ سکانێ. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٥٠٣)

لەورا ژی تەمامکرن بۆ هەمان کارێ وی ب (خەتخوون) هاتییە بناڤکرن، مەزارەك ب ناڤێ خەتخوون ل گوندێ بۆزان هەیە و زارۆکێن بچووك ل بەر ڤەدشێرن.

ئێزدی ل وێ باوەرێنە شێخ حەسەن سوڕ (سوڕا باتنێ/ حلول) هەبوو، ئانکو ڤەگوهاستنا ساخلەتێن خودایی ژ بۆ لەشێ مرۆڤی، لەوران ژی ناسناڤێ (مەلك) دایینە پال ناڤێ وی و ب (مەلك شێخ سن) ب ناڤ کرینە، دەمێ پەیڤا (مەلك) دگەل ناڤێ خاس و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بابچاكەكى دئينن؛ ل وى دەمى ئێزدى وى مينا (فريشتە) ناس دكن. (خيراڤايى: ٢٠٠٨، ل١١١)، ئانكو ((پيرۆزييەكێ د دەنێ و د ئينە رێزا ملياكەتا.)) (سلێمان و جندى، ١٩٧٩، ل١٢٢)

چى بازيەكى مەزنە،

وێ كەفتييە داڤا منە،

من نەدزانى سوڕا مەلك شێخ سنە. (سلێمان و جندى، ١٩٧٩، ل١٤٣)

**٣. ژيانا رەوشەنبيرى و ئەدەبى**

شێخ حەسەن، ئێك ژ هزرمەند و نڤێسەرێن خودان شيان بوو، ((وێژە و تێكستێن دەروێشى و خودێناسيێ و لايەنگر و مريدێن خۆ هەنە.)) (الكتبي، ١٩٧٣، ل٣٣٤)، هەروەسا شەش سالان خۆ د چلەخانێدا خلوەكرييە و پەرتووك نڤيسينە ((زانا و وێژەوان و هونەرمەند بوە، خاوەنى گەلێك نوسراويش بوە. لە زانست و دەروێشكاريى دا. شەش سالێك لە سەر يەك چوەتە پەناوە و خەريكى دانانى نوسراوێك بوە، كە ناوى ناوە (الجلوه لاهل الخلوه)، ئەو نوسراوە تا ئيستايش وونە و نە دۆزراوەتەوە.)) (فتاح: ١٩٦٩، ل١١) تێكستێن پيرۆزێن ئێزديان ڤێ چەندێ د سەلمينن:

مەلك شێخ سن جەلەوێ دخوينە

چەندى لێ دمەيزينە

مێرەكى ژ خوە مەزنتر نابينە (خەلەف: ٢٠٠١، ل١٥٦)

شێخ حەسەن كەسايەتييەكا وەسا بوو گەلەك شانازى ب خۆ برييە و ژ بۆ وان بابەتێن د جەلوێدا نڤيسين كەس ژ خۆ مەزنتر و شارەزاتر نە ديتييە، ئەڤ خۆ مەزن ديتنە د دەمەكيدا بوويە كەسى باوەرى ب هندێ نەبوويە كو كورد د شێن تشتێن باش بنڤيسن و ئەنجامبدەن، ئانكو ئەڤ چەندە وەكو بەرسڤەكێ بوويە و د هەمان دەمدا بۆ كوردان بخۆ ژى بوويە كو ل همبەر خەلكەكى خۆ كێم نەبينن، لێ هەلبەت لسەر بنەمايەكى زانستى، ئەڤ چەندە د هۆزانا كلاسيكدا ژى ديار دبيت ل دەمێ مەلايێ جزيرى داخوازێ ژ كوردان دكەت هۆزانێن وى بخوينن و بەرێ خۆ نەدەنە بەرهەمێن فارسان.

سەبارەت ناڤەرۆكا پەرتۆكا وى، كەس چ ژێ نزانيت، لێ ديسان بۆچوون هەنە ((بە تەواوى تەرخان كراوە بۆ روون كردنەوە و جۆرى پێشاندانى و چۆنيەتى خوداوەندەكەيان ئەوى ناوى تاووسى مەلائيكەتانە.)) (وەهبى بەگ، ٢٠١٠، ل٥٤). نڤيسەر (صديق دەمەلوجى) دبێژيت: ئەگەر جەلوە ب كۆپييا خۆيا رەسەن گەهشتبا مە؛ دێ مە گەلەك تشتێن دى لسەر شێخ حەسەن زانيبانە. (دەمەلوجى، ٢٠١٠، ل١٤٧) هەر د ڤێ بياڤيدا (د. كاميران محەمەد نەبى) دبێژيت: شێخ حەسەن ((ب فەلسەفەيەكا (ب هزرەكا) كوردانەيا خۆمالى ڤيايە د مرۆڤ و، جيهانى و، هەبوون و، سروشتى بگەهيت و. بزانيت كا چاوان درست بوينە؟!!))



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلينێن كوردى

(نەبی: ٢٠٠٥، ل٣٨) دهێته گۆتن کو شێخ حەسەن ژبلی ڤێ پەرتووکێ گەلەک پەرتووکێن دی ژی دانایینە، بەلێ مخابن نەماییەنە و ب ئەگەرێ هەوێن شەری یێن د سەردەمێ بەدرەدین لۆلۆدا ب سەر پەرستگەها لالشدا هاتین ژناڤچووینە. (الدملوجي، ٢٠١٠، ل١٤٧)

تیکستێن ئێزدیاتییێ د سەلمینن شێخ حەسەن ل جەلسا کانیا سپی د رووینشت و خواندن و نڤیسین دکر:

چەندی دلێ من دکەت حسێبێ،

گیانێ من گۆری مەلک شێخ سن رونێتە جەلسا کانییێ،

وێ دکێشت قەلەمێ وێ دخونت کتێبێ. (سلێمان و جندی، ١٩٧٩، ل١٧٧)

هەروەسا ناڤێ وی دگەل یێ شیخ هادی و شێخ شەمس لسەرێ دەستخەتێ مشوورا (پیر خەتی پسی پیر بۆتار) دهێت، ئەو مشوورا د وی سەردەمیدا ل جەلسەیا کانیا سپی ل پەرستگەها لالش هاتییە نڤیسین. (سلیمان، ١٩٩٤، ل١٠٣) ژ تێکستێن ئێزدیاتییێ دیار دبیت هەر ژ کەڤندا قەولبێژان یا ڤیایی بەرێ مللەتان و پاشی ئێزدیان بدەنە خواندن و نڤیسینێ دا د ژیانا خۆدا د سەرکەفتی بن، ئێزدی د هەمی داخوازی و دوعایێن خۆدا د گشتگیرن، واتە؛ دوعایێن خێرێ ل دەستپێکێ بۆ بەرامبەری خۆ پاشان بۆ خۆ دخوازن، لەورا ژی دبێژن: یارەبی تو هەفتی و دوو ملەتان بسترینی، پاشی مە، د قەولێ فەرزا دا ژی هاتییە:

دبێژمە وە گەلی مللەتا،

بگرن قەلەما مەلک شێخ سن و ڤان خەتا،

مەلک شێخ سن دێ ل وە کەت نەجاتا.

دبێژمە وە گەلی ئۆمەتێ،

بگرن قەلەما مەلک شێخ سن و ڤێ خەتێ،

مەلک شێخ سن دێ ل وە کەت نەجاحەتێ. (شەمسانی، ٢٠٢٢)

ژبلی بەرهەمێن وی، د ناڤا ئەدەبیاتا دینێ ئێزدیاندا گەلەک تێکست ب کەسایەتی و کار و بوویەرێن وی هاتینە ڤەهاندن، هەروەسا ناڤێ وی ب شێوەیەکێ گەلەک بەرفرەهـ د تێکستێن دیدا دهێتە دیتن.

ئەڤە هندەک ژ وان تێکستانە ب وی هاتینە ڤەهاندن، وەک: قەولێ مەلک شێخ سن (سلێمان و جندی، ١٩٧٩، ل١٢٣-١٢٦)، قەولێ سلاڤ و سەد سلاڤ، قەولێ شێخێ حەسەنی (البسطامي، ٢٠٠٠، ل٢٨-٢٩)، قەولێ فروارا مەلک شێخ سن، قەولێ مال و مێرا، قەسیدا کەس نەتێ. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٥٧-٤٩٣) هەبوونا گەلەک تێکستێن تایبەت ب کەسایەتی و شیانێن شێخ حەسەنڤە بەلگەیەکە لسەر گرانییا هێزا کەسایەتییا وی لسەر دەڤەرێ ب گشتی و ئێزدیان ب تایبەتی.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەروەسا ناڤێ وی ژی د هژمارەکا زۆر یا تێکستێن ئەدەبیاتا ئایینێ ئێزدیاندا هاتییە، ژ وان: قەولێ قەرەفرقان، قەولێ خودانێ مالێ، قەولێ قازی عەسکەر (قەولێ ئاشقۆ)، قەولێ ئەبابەکرێ ئۆمەرا، قەولێ شەرفەدین، قەولێ شێشمس (قەولێ مەستم ژ قەدەهێ)، قەولێ شێخ و ئاقوب، قەولێ ئۆمەرخالا و هەسن چناری، قەولێ ستیا ئێس، قەولێ بەیگۆیا، قەسیدا عەبدولقادر، قەسیدا ناسردین (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١: ل١٩٧، ٣٦٤، ٣٨١، ٤٢١، ٤٧٣، ٥٠٠، ٥١٢، ٥٣٥، ٥٤٦. ب٢: ٥٨٠، ٦٧٧، ٦٨٠)، قەولێ کۆفیا (البسطامي، ٢٠٠٠، ل٣٧-٤٠)، قەولێ هەسەدێ ئال تەوری (سلێمان و جندی، ١٩٧٩، ل٧٤-٧٩)، دوعایا ئۆغرێ، خزێمۆک (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب٢، ل١٠٤١، ١٠٥٠)، لاڤژ (حەسەن، ٢٠٠٠، ل١٥) و شەهدا دینی. (جندی، ١٩٩٨، ل١٥٤)

**پشکا دوویێ:- میرگەها ئادیان و هەولێن شێخ حەسەن ژ بۆ بنیاتنانا قەوارەیەکی سەربەخۆ**

ئێزدیان د چارچۆڤەیێ میرگەهاندا دەستهەلاتداری ل دەڤەرێن خۆ کرییە، شەرفخانێ بەدلیس د پێشەکیا شەرەفنامێدا بەحس ل وان میرگەها کرییە یێن ئێزدییان سەروەرییا وان دکر، وەک: میرگەها دونبلی، مەحموودی، کلس. لێ د پێشەکیا شەرفنامێدا ناڤێ میرگەها داسن و خالتیا هاتییە.

مەلا جەمیل رۆژبەیانی د پەرتووکا (چوار دەولەتی کوردی)دا باسێ فەرمانرەوایا دونبولی (دوملی) ل تەورێز و دوروبەرێن وێ دکەت و دبێژیت: ئەم دونبولییانە لە بنەرەتا زمانیان گورانی و رچی (رەگی) ئایینیان (ئێزەدی = یەزیدی) بووە بۆ زۆر هەرێم پەلییان وەشاندووە لە قووچانی خوراسانەوە تا دەرسیم و ئاگری داغ و هەر لە چیای داسن و دەشتی شام و سنجارەوە کەوتوونە ئازەربایجان و تەفلیس گورجستان. (رۆژبەیانی، ٢٠٠٠، ل١٠).

میرێن عەشیرەتا دنبلی، د بنیاتدا ئێزدی بووینە، پشکەک ژ ئەوان باوەر گهۆربووینە و پشکا دی لسەر باوەرییا خۆ مانە. (البدليسي، ٢٠٠٦، ل٢٩٣) وەک ژێدەر ئاماژێ پێدکەن کو (میرنشینی دونبوڵی) وەک حکومەتێکی کوردی سەدەکانی ناوەڕاست، کە مەڵبەندەکەی شاری (خۆی) بووە لە پەیڕەوانی ئێزدی بوون.)) (ئەنوەر، ٢٠١٨، ل٤٣) لسەر میرگەها مەحموودی ژی شەرەفخانێ بەدلیسی دیاردکەت عەشیرەتێن ل دوروبەرێن مووسل هەر ئێک ژ داسنی، خالتی، بسیانی (البسیانیە) و هندەک ژ بەختیا، مەحموودی و دونبلی لسەر باوەرییا ئێزدیانە. (البدليسي، ٢٠٠٦، ل٦٠) هەتا نها ژی ئەڤ ئێل د ناڤ ئێزدیاندا مایینە. ((ئێزدیان پشکداری د دامەزراندنا گەلەک میرگەهێن کورداندا کرییە، لێ مخابن دورووبەران هەردەم هەول د دان و پلان دادرشتن بۆ ژناڤبرنا وان میرگەهان.)) (زیان، ١٩٩٩، ل٧٢) هەر ژبەر هندێ ((حوکومدارییا گەلەک ژ ڤان میرگەهان ژ بازێرەکی نە پتر بوو، ژبلی میرگەها شێخان کو لسەر شوونوارێ میرگەها داسن هاتبوو دامەزراندن.)) (بۆزانی، ٢٠١١، ل١٥) لدویف بۆچوونا هندەک نفیسەران ((دگۆتنە ئێزدییێن شێخان ب تنێ داسنی.)) (جەعفەر، ١٩٩٩، ل١٠٨)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

١. میرگەها ئادیان (شێخان)

ئەڤ میرگەهە درێژەپێدانا میرگەها داسنیان بوو، دەڤەرێن دکەڤنە دناڤبەرا زابێ مەزن و خابوور دیجلەدا بخۆڤەدگریت، ئەڤ میرگەهە ل شێخان بوویە ((بنەکۆکا ئێزدیان ل بادینان ل شێخان بوویە، ئەڤ دەڤەر لاندکا پەیدابوونا ئایینێ وان بوویە، سەرەڕایی هەبوونا وان ل گەلەک دەڤەرێن دی، بەری میرگەها بادینان ئەو ژ کۆمەکا ئێلان پێکدهاتن دگۆتنێ: هەکاری.)) (آمیدي، ٢٠٠٠، ل١٩٧) ئەڤ میرگەهە د سەردەمێ شیخادییێ موسافر و شیخادییێ دوویێدا بەرفرەهـ بوویە هەتا گەهشتییە سنوورێن موسل، لێ مەغولان شیخادییێ دوویێ گرتییە و ل سالا ١١٢٢ز بوویە جانگۆری، پشتی وی کورێ وی (شێخ حەسەن) درێژی ب ڤێ میرگەهێ دایە. (جزیري، ٢٠١٩، ل٧٣) ل وی دەمی هندەکان چ ژ قاتانییێ، یان شەمسانییێ دڤییا شێخ حەسەن ژ مەزناتی و سەرۆکاتییێ بێخن، شێخ فەخرێ ئادیان وەکو زانا و قەولڤانەکی هەرە دیارێ ئێزدی ژ شەمسانییێ ئەڤ چەندە پێ نەخۆش بوو و تێکستەک بناڤێ (سلاڤ و سەد سلاڤ) ڤەهاند و تێدا خۆ کێمکر، ب ڤێ خۆ کێمکرنێ، ئەو ڕایی و تەگبیرێن دژی شێخ حەسەن ژناڤبرن:

سلاڤ و سەد سلاڤ،

هەی مەلەکۆ شیرین کلام،

یا مەلک شێخ سن! تو باخۆ، ئەز بم غولام. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٥٧-٤٥٨)

ل ڤێرێ، شێخ فەخرێ ئادیان وەکو ڕێزگرتن خۆ کێمی شێخ حەسەن کرییە، د راستییێدا ئەو زانا و مەزنەکی هەرە دیارێ ئێزیدخانێ بوو، هەر ئەڤ رۆلێ کاریگەرێ شێخ فەخرێ ئادیان بوو ب کەسایەتییا خۆ یا بهێز و زانا بوویە ئەگەرێ سەرەکییێ ل هەڤهاتن و پێکهاتنا چینێن ئێزدیان و شەر و نەخۆشی دناڤبەرا واندا ب داوی هاتی (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٦١-٤٦٣)، چونکی بەری هینگێ هەڤڕکی و کوشتن دناڤبەرا واندا دروست ببوو، هەر ژ بەر ڤێ چەندێ، ئەوی تێکستێ (شێخێ حەسەنی سولتانە) (البسطامي، ٢٠٠٠، ل٢٨-٢٩) ژێ گۆت. ئانکو ((شێخ حەسەن جیێ بابێ خۆ شیخادیێ دووێ گرت بۆ سەرۆکاتی و ڕێبەریا ئێزدیان.)) (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٨٩) ناڤێ ڤێ میرگەهێ، د سەردەمێ شێخ حەسەندا بناڤێ (ئادانییێ) بوو. (باقسري، ٢٠٠١، ل١٨) چونکی ئەو ڕێبەر و سەردارەکی مەزن بوو و ئێزیدخان پێ سەکنی و ستارە دبوو:

ئەسەح، تو مەلک شێخ سنی،

سەردارەکی مەزنی،

سونەتخانە ب ناڤێ شیخادی و مەلک شێخ سن سەکنی. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٦١)

پاشی کورێ وی (شەرفەدین) ل سالا (١٢٤٦)ز، بوویە میرێ چیایێ شنگالێ و وەلاتێ خالتانییێ ل باکووورێ کوردستانێ و چەندین کاروبار لێ ئەنجامداینە (بازو، ٢٠١٧، ل٩٨)، ژ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وان: گرنگیدانا ب چاندنا داران، عمبارکرنا ئاڤێ، زێدەکرنا شکەفتان، زاڤکرنا زێرەڤانان، گرنگیدانا ب دراڤی و دروستکرنا سندۆقەکێ، دەرئێخستنا سیستەمێ باجێ (دەهێکییێ). (بازو، ٢٠١٧، ل١٠٢) هەتا نها ژێ شێخێن شەرفەدینان ل ناڤ ئێزدیان هەنە، سەرەڕایی هندێ ((پێشیمامێ بابێ شێخ و پێشیمامێ عەشیرا چێلکان ژ بنەمالا شەرفەدین دهێنە راکرن.)) (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٧٩)

**٢.هەولێن شێخ حەسەن ژ بۆ بنیاتنانا قەوارەیەکی سەربەخۆ**

**٢-١.ژلایێ هەرەمیڤە**

شێخ حەسەنێ ئادانی، زێدەتر وەکی دەرویش و بابچاک و خودانێ پەرتووکا پیرۆزیا ئێزدیان (جەلوە) دهێتە ناسکرن، لێ ئەوی هزرێن نەتەوەیی و سیاسی ژێ هەبووینە، شێخ حەسەن ((رێبەریا ئێزدیان کرییە و داخازا دەستهەلاتداریەکە سەربەخۆ ل کوردستانێ کرییە.)) (سلۆ: ٢٠٠٥، ل١٥٥) ئانکو ل بەر بوو کیانەکی سەربەخۆ، یان ژێ بێژن: دەولەتەکا رامیاری دامەزرینیت (الرويشدي، ١٩٧١، ل٣٦) ئەڤ چەندە ژ ئەنجامدانا کارێن وی دیار دبیت، ژ وان: هندەك پلە د جڤاتا ڕۆحانیدا زێدەکرن و بۆ هندەکان ژێ ناسناڤ زێدەکرن، ئانکو هەرەمێ ئایینی و جڤاکی سەرژنوویی دارژتەڤە و ریفۆرم کر، وەکی: وەزیر، نقیب، پێشیمامێ مەلک شێخ سن، چاویش، خزنەدار. (Hesen, 2010, l. 3-4) و هەر ئێک ژ وان خودان ئەرکێن خۆیێن تایبەت و دیارکرینە، و ب ڤی رەنگی:

٢-١-١. **شێخێ وەزیر،** پلەیەکا گرنگە د ئێزدیاتییێدا، ئەو نوونەرایەتییا شێخ شەمسێ ئێزدین ئەمیرێ شەمسانی دکەت، ئەندامەکێ دیاریێ جڤاتا روحانیانە، بەشدارییێ د چەندین رێ و رەسمێن جەژن و هەلکەفتێن ئێزدیاندا دکەت، وەک: سەماکێشانێ، قەنتارێ، شەڤ بەراتێ، سەردەرییا مەزارێ شێخ شەمس ل پەرستگەها لالش، دگەل گەرا تاووسێ دچیتە شنگالێ (شێخێ وەزیر، ٢٠٢٢) دەمێ شێخ حەسەن ڤیایی کیانێ سەربەخۆ چێکەت، ناسناڤێ (وەزیر) دا دگەل ناڤێ شێخ شەمس و بوو شێخێ وەزیر. (Hasan, 2010, l. 3) لەورا هەر کەسەکی ببتە سەردەرییێ مەزارگەهێ شێخ شەمس ل پەرستگەها لالش، ناسناڤێ (شێخێ وەزیر) دکەفتە سەر.

٢-١-٢. **پێشیمام، یان پێشیمامێ مەلک شێخ سن،** ئەڤ پلەیە ل دوو جهان رۆلێ خۆ دگێریت، ئێک: پێشیمامێ باشیکێ کو ژ شێخێن مەلک شێخ سنە و د گەلەک رێ و رەسمێن ئێزدیاتییێدا رۆلەکی سەرەکی دگێریت، ژ وان: سەماکێشانێ ل پەیی فەقیرێ ب تانج و حلە (ئەڤ فەقیر نوونەراتییا شیخادی دکەت) دچیت، د شەڤا شەڤ بەراتێدا رۆلەکی سەرەکی دگێریت. (باقسري، ٢٠٠٣، ل٨٩، ١٦٤-١٦٥) دوو: پێشیمامێ ئیختیارێ مەرگەهێ (بابێ شێخ) ژ شێخێن شەرفەدینە، ئانکو هەر ژ بنەمالا شێخ حەسەنە، د رێ و رەسماندا د پێشییا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بابێ شێخدا برێڤەدچیت، ئانكو بوویە ئەندامەک ل مەحفەلا مەلک فەخرەدین (شێخ فەخرێ ئادیان) یا شەمسانیان و ئەو یێ ئادانی بوو، ئەڤ چەندە ژی پشتی پێكهاتنا وان هاتییە پەیرەوكرن. (باقسري، ٢٠٠١، ل٢٠)

دەستا ژ تەریقەتێ بەرنەدەن،

مەلک شێخ سن پێشیمامێ خوە كەن،

عەین ل بەیزا قوبلەت كەن.                (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٣٥٠)

جەگەرخوین د فەرهەنگا خۆدا سەبارەت پێشیمام دبێژیت: ((پێش مام. یا پێش ایمامە. مامێ كو د دی پێش. یا ایمامێ كو د كەڤی پێش ایزیدی تەنێ ولۆ دبێژن.)) (جگەرخوین، ١٩٦٢، ل١٧٨) هەروەسا هندەک كاروبارێن تایبەت ب شێخێن شێخ حەسەن هاتینە سپاردن و هەتا رۆژا ئیرۆ ژی بەردەوامن، وەک: مەهرپرینێ. (عبود، ١٩٩٤، ل١٤١) و كاروبارێن تایبەت ب نڤیسین و پەرتووكا جەلوێ. (البناء، ١٩٦٤، ل٩٥)

٢-١-٣. **نەقیب**، پلەیەكە د روحانییەتا ئێزدیاندا، د سەردەمێ شێخ حەسەندا وەک پلەیا لەشكەری ل مەحفەلێ هاتییە زێدەكرن. (Hasan, 2010, l. 4) هەروەسا ((ل دوماهیكا چەرخێ نۆزدێ، یان ل دەستپێكا چەرخێ بیستێ هندەک پلە ژ دەستێ بنەمالا ئادانییێ هاتنە دەرئێخستن، ژ وان: نەقیبێ تاووسا عنزەل ژ بۆ بنەمالا پیرێن هاجالی ل دەڤەرا باعەدرێ هاتییەدان. دیسان سەردەریا كانیا سپی ژی ل پەرستگەها لالش ژ دەستێ شێخێن مەلک شێخ سن هاتە دەرئێخستن و ب مجێورێن ئێسڤنێ كو پیرێن پیر بوالن هاتییەدان.)) (حەجی، ٢٠٠٥، ل٨٢)

٢-١-٤. **چاویش**، كەسایەتییەكە ژیانا خۆ بۆ خزمەتا ئێزدیاتییێ و پەرستگەها لالش تەرخان دكەت، چ جاران جۆتبوونێ ناكەت و ژنێ نائینیت، چاویش وەكو زاراڤ، ب واتایا لەشكەر (جندی) دهێت، د سەردەمێ شێخ حەسەندا هاتییە زێدەكرن ((ناڤێ چاویش دانا سەر خلمەتكارەكی هەرە زیرەک و زانا و هەتا ڤێگافكێ بناڤێ بابا چاویش دهێتە ناسكرن، ئەو ژی ل مەحفەلێ زێدەكر. (Hasan, 2010, 3) د دەستپێكێدا چاویش وەكو لەشكەر د لایەنێ نەتەوەیی و رامیاریدا ل هەرەمی هاتە زێدەكرن، لێ پاشی ئەڤ كەسایەتییە ژ بۆ بیاڤێ ئایینی هاتییە ڤەگوهاستن و ناسناڤێ (بابا) یێ روحانی و رێزگرتنێ چۆیە دگەل ناڤێ وی و بوویە خلمەتكارەكی بیاڤێ ئایینی.

٢-١-٥. **خزنەدار**، ئەو كەسایەتییەیە كاروبارێن دارایی و دراڤی د دەستیدا، خزنەدارێ سەردەمێ شیخادیێ موسافر ل پەرستگەها لالش پیر ئیسیبییا بوو، ڤێگافكێ ژی زێوا وی (جهێ وی یێ پیرۆز) ل دەرێ گەلییێ لالشە، هەروەسا مەزارەكی وی ل هندرو پەرستگەها لالش ژی هەیە و نیشانەكا وی ل دەرگەهێ زمزمێ هەیە، سەرەڕایی هندێ تێكستێن تایبەت ژی ب وی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

هەنە. بنەمالا پیر ئیسیبیا ل ناڤ ئێزدیان هەنە و ل دەڤەرا شێخان بنەجهن، د رێ و رەسمێن جەژن و هەلکەفتێن ئێزدیاندا، کەسایەتییەک ژ بنەمالا پیر ئیسیبیا نوونەرایەتییا وی دکەتن.

**٢-٢.ژلایێ کارگێریڤە**

شێخ حەسەنێ ئادانی، مەحفەلەك (جڤاتەك) د پەرستگەها لالشدا دامەزراند و ئەڤ مەحفەل ژ چل ئەندامان ژ بابچاك و دینداران پێکدهات:

عاشقۆ! یی مۆمنە،

ئاخافت بوو ژ مەحفەلێت مەزنە،

عاشقۆ! دا بدەیین مەدەهێت مەلک شێخ سنە. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٣٨١-٣٨٢)

هەر ژبەر هندێ شێخ حەسەن ب شێخێ (چل شێخان) و (میرێ قەلەندەران) دهێتە بناڤکرن:

شێخێ حەسەنی مەزنە ...

میرێ قەلەندەرا. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٦٤)

ئەڤ ناڤێن وانن: حاجی محمد الکفرزمانی، اسماعیل ابن قابلە، شمس محمد الدومشقی، خذز کوردی، حماد البواجی، پیر بوب البارزانی، ابو بکر الدوشی، پیر بوب ابن حمید شیخ مطر، حاجی علی السیترانی، شیخ جمیل، شیخ زریب، علی موکانی، شیخ علی الکافی عبدالحمید، حاجی حسن الماردانی، شیخ عرفات الهکاری، محمد (نیرنی)، محمد انور (جنی)، شیخ عیسی ابن سعید البدوی، حسن الکان، علی بو بکران (بکلان)، پیر بوال سیدری، پیر دلی بیبادی، علی موکانی، عمر الخوبی، حاجی مکی، حاجی البراعیل، عیسی البوری، شیخ حسن الجناری، عمر خالان، غریب مکاکل اربیلی، بوب الخوانی، خطیب عیسی، پیر خل الصهرکی، محمد البیواتی (البیوائی/ البیبونی)، بوب الایسانی، موسی السریر، محمد شهری، محمود الخندقی و سلیمان البابکر(سلیمان ابن بکر). (مشوورا خەتی پسی پیر بوتار/ دەستخەت) کەسایەتی و ئەندامێن د مەحفەلا شێخ حەسەندا جهێ خۆ دگرت ساخلەتێن خۆ هەبوون و یا هەرە دیار، دڤیا یێ دەروێش و قەلەندەر با:

هەکە میرێ دەرویش نەی قەلەندەرە،

نەی ب عەبادەتە نەی ب فەرە،

پر گۆتنەکی دوو خەبەرە،

ل ئاخرەتێ ل دیوانا شیخادی و مەلک شێخ سن نە شفات هەیە نە مەهدەرە.

(سلێمان و جندی، ١٩٧٩، ل٧٨)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

### ٢-٣. ژلایێ پەیوەندیان و ئابووریڤە

شێخ حەسەنێ ئادانی، پەیوەندییێن خوە دگەل میرگەهێن دیێن ئێزدیان بهێزکرینە و پەرەپێدایە، ل پێ ئەدەبیات و کەلتوورێ ئێزدیان هەفت میرگەهـ هەبووینە، ب ئەڤی رەنگی:

- میرگەها شنگال، میرێ وێ شەرفەدین بوو.
- میرگەها حەلەبێ (کلس)، میرێ وێ شێخ مەند بوو.
- میرگەها سۆران، میرێ وێ شێخ مەهمەدی باتنی بوو.
- میرگەها حەریر، میرێ وێ هەسن مەمان بوو.
- میرگەها تەورێزێ، میرێ وێ شێشمس بوو.
- میرگەها دیاربەکر، میرێ وێ شێخوبەکر بوو.
- میرگەها بادینان (ئامیدیێ)، میرێ وێ ئامادین بوو. (Hasan, 2010, l. 4)

ئێک ژ ئەوان میرگەهان یا حەلەبێ بوویە، شێخ مەند کورێ شێخ فەخرێ ئادیان کو ب (شێخ مەند پاشایێ حەلەبێ ناسیارە) سەرکردایەتییا ئەوێ میرگەهێ کرییە. (البدلیسي، ٢٠٠٦، ل٢٢٤) هەروەسا ((ئەو دامەزرێنەرێ (میرنشینی کلس) بە خۆی و بنەمالە و هۆز و ئەندامەکانی میرنشینەکەیەوە، ئێزدی بوو ڕوویان لە شام و میسر کردووە.)) (ئەنوەر، ٢٠١٨، ل٤١) شەرەفخانێ بەدلیسی د دەتە دیارکرن کو مەند ب رێکا ئەیوبییان بوویە حاکمێ کلس پشتی هێزا ئەوی زێدەبوویی و پشکەکا مەزن ژ کوردان لدۆر کۆمبووین، د ئالییێ کارگێری و لەشکەریدا بلندترین پلە بدەستخۆڤەئینایە و ب میرێ میران هاتییە بناڤکرن. (البدلیسي، ٢٠٠٦، ل٢٢٤)

بهێزکرنا پەیوەندیان دگەل ڤان میرگەهان یا ئاسان بوو، چونکی میرێن وان د ئێزدی بوون، ژبەر ڤێ چەندێ ((شێخ حەسەن دڤییا ئێکگرتنێ دناڤبەرا میرگەهێن ئێزدیاندا دروست بکەت و بێخیتە د چارچۆڤێ قەوارەیەکی سەربەخۆدا دا دەڤەرێ بکەتە د ژێر دەستهەلاتدارییا خۆدا.)) (باقسري، ٢٠٠١، ل١٨) هەروەسا هەڤال ژ پلەیێن بلند بۆ خۆ د میرگەهێن دیدا دروستکرینە و ((والیێن وی ژی ل هندە هەرێمان هەبوون.)) (جانکورد: ٢٠٠٩، ل٩١) ئانکو شێخ حەسەن زەمینە خۆشکرییە کارەکێ نەتەوایەتی بکەت، ب ڤان کارێن ئەوی کرین هەولدایە ((جزیرە و شاخەکانی هەکاریدا شەنگ و شۆخی فەرمان ڕەوایی باپیرانی خۆی (کوردایەتی) زیندوو بکاتەوە و بەرەبەرە پەرەیش بە دەستهەلاتی خۆی بدات.)) (فتاح: ١٩٦٩، ل١٢)

وەرن دا وە شبهەتی بوکا بخەملینن،<br>
سندرووکێت سۆر و زەر بۆ وە دەرینن،<br>
حەق رێیا شیخادی و مەلک شێخ سن سەر خوە بقەبلینن. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ٤٧٤)



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دیسان ب رێیا تاووسان وەکو رێ و رەسمەکا ئایینی ((لە ناو هەموو نیشانەکانی هەرە گرینگ، ئەوەی لە هەموویان زیاتر ناوبانگی دەرکردوە هیمای تاووسە.)) (وەهبی بەگ، ٢٠١٠، ل٩١) سەرەدان بۆ گەلەك دەڤەر و وەلاتێن دەوروبەر کرینە، چونکی تاووسێن ئێزدیان هەفت تاووس بوون سالێ جارەکێ، یان دوو جاران، ژ پەرستگەها لالش بەر ب چەند دەڤەر و وەلاتانڤە دچۆن، وەک: تاووسا سوریا: دچو دەڤەرێن: قامشلۆ، حەسەکێ، حەلەب، لازقیە، دگۆتنێ: تاووسا شام. یا ئەنازۆلێ: دچۆ ئورفە، دیاربەکر، ماردین، ئەنتاکیا، سیواس، سێرت و دگۆتنێ: تاووسا زۆزانان. یا عەجەمان: د چۆ تەورێزێ، یا روسیا: دچۆ ئەرمینیا، جۆرجیا و روستوف. دیسان تاووسێن: مەرگەها شێخا، دەڤەرا هەکاریان، شنگالێ ژی ژ بۆ دەڤەرێن ئێزدیان یێن ل عێراقێ بوون. (الحسني: ١٩٨٧، ل٤٢ – ٤٤) و (سلێمان: ١٩٨٥، ل٢٧ – ٥٠)

ب ڤێ گەریانا تاووسان و دەرئێخستنا سیستەمێ دەهێکییێ (باجێ/ ئانکو ژ دەهان ئێک) بۆ پەرستگەها لالش ژلایێ ئابووریڤە مفا دگەهاندە وان، چونکی سەرەڕایی ئاراستەکرنا شیرەتان و جێبەجیکرنا رێ و رەسمێن ئایینی، پارە کۆم دکرن. (زەند: ١٩٧١، ل٢٨)

چی سوارەکی هۆی بێ خشە،

ماش و جەنبەقی تێن ژ لالشە. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ٤٦٨)

ڤێگافکێ تاووسێن ژ دەرڤەیی وەلاتی ژبەر دروستبوونا سنووران ناچن، لێ یێن کوردستانێ هەتا نها ژی د بەردەوامن، پتریا رێ و رسم و کاروبارێن ئایینی و کارگێری و جڤاکی ب قەول وەکو جۆرەکی ئەدەبیاتا دینێ ئێزدیان هاتینە دیکیۆمێنتکرن، لەورا لسەر بنەمایێ هەبوونا سەبەقەیێن قەولی مرۆڤ ب سەر کاروبارێن کارگێری و جڤاکی و ئایینییێ ئێزدیاندا هەل دبت کو سیستەمێ باج کۆمکرنێ ژی ئێک ژ وان بوویە.

ژلایەکێ دیڤە، گرنگیدانا شێخ حەسەن بۆ لایەنێ ئابووری و کۆمکرنا باجێ و خێراتان ل دەڤەرێن باکوورێ رۆژهەلاتێ موسل مەترسی لدەف بەدرەدین لۆلۆیێ ئەرمەنییێ موسلی (الرویشدي، ١٩٧١، ل٢٧) دروستکر، لەورا بەدرەدین لۆلۆ هەولدا وان جهان کۆنترۆل بکەت ژ پێخەمەت هندێ دەست ب سەر لایەنێ ئابووریدا بگریت و ئەو باج و خێرات بۆ وی بچن. (دناني، ٢٠٠٥، ل٢٩-٣٠)

### ٢-٤. ژلایێ لەشکەریڤە

شێخ حەسەنێ ئادانی، هندەک ریفۆرم دبیاڤێ هەرەمێ ئایینیدا کرن و ژ لایێ ئابووریڤە پارە کۆمکرن و سیستەمێ دەهێکییێ بۆ لالش د سەر جڤاکێ ئێزدیدا سەپاند وەکو دەستپێکەک بۆ چێکرنا لەشکەرەکی ((بەر ب لایێ لەشکەری چۆ و لەشکەرەك ژی پێکئینایە و بوویە خودان لەشکەر.)) (الختاري: ٢٠١١، ل٩١) هەر ژبەر ڤان کارێن وی



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

((میرێن مووسلێ پر ژ وی دترسییا.)) (جانکورد: ٢٠٠٩، ل٩١) لەورا هەڤڕکی دناڤبەرا وی و والییێ موسل (بەدرەدین لۆلۆ)دا دەستپێکر:

سلاڤێت مە ل مەلک شێخ سنە،

مێردارۆ یی مەزنە،

یا مەلک شێخ سن! ژ هەیبەتێ تە دمرن زۆر دژمنە. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ٤٥٨)

نڤیسەر (سوادي عبدمحمد الرويشدي) دبێژیت: لایەنگرێن شیخادی یێ مسافر ل دەڤەرێن چیایی ل نێزیک موسل دژیان و نەخوەشی ل دژی میرگەها بەدرەدین لۆلۆ دروست دکرن و ل سالانێن (١٢٤٢-١٢٤٥)ز ب هەولێن لەشکەری ژ بۆ گرتنا موسل رابووینە. (الرويشدي، ١٩٧١، ل٣١) ئەڤا رویشدی دیار دکەت چ راست یان نە، وێ چەندێ دیار دکەتن شێخ حەسەن لەشکەرەک هەبوویە.

٣. هەڤڕکییا شێخ حەسەن و بەدرەدین لۆلۆ

پشتی شێخ حەسەنێ ئادانی گەلەک پێنگاڤ ژ چەند لایەنەکانڤە هاڤێتین و خۆ ژ بۆ دروستکرنا قەوارەیەکی سەربەخۆ یان دامەزراندنا دەولەتەکێ بەرهەڤکری، ناڤ و دەنگێ وی گەلەک بەلاڤ بوو:

شێخێ منۆیی تەمام،

زکرێ تە ژ شەرق هەتا ب شام. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ٤٥٨)

بەدرەدین لۆلۆ ل وی دەمی ژ کوردان ترسییا. (البناء: ١٩٦٤، ل٤٤) لێ ئەوی ب مەبەست ئەڤ هەڤڕکی کرییە د چارچۆڤەیەکێ ئایینیدا و هەستێ موسلمانان لڤاند و تۆمەت بۆ شێخ حەسەنی ئادانی دروستکرن و کرنە بەهانە دا پێ شەرێ وی بکەت و دا کەسێ دی ژبلی ئێزدیان پشتەڤانییێ ل بنیاتنانا ڤی کیانی نەکەت (Hesen, 2010, I.4)، ئەڤە ژی ب ئاشکەرایی د قەولێن ئێزدیاندا خویا دبیت:

بەدرەدین وە دبێژی یە

هەی شێخ سنویی بن ئادی یە

تە لالشەك ئاڤاکری یە

تە ریا حەجاجا ژ مەکەهێ بڕی یە

شێخسن وە د بێژی یە

ب وی کەم ئێکی بێری یە

حەجا مە لالشە و کانیا سپی یە

حەجە و شك تێ نی یە (دناني: ٢٠٠٣، ل٢٤)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

پشتی هەڤڕکییا دناڤبەرا شێخ حەسەن و بەدرەدین لۆلۆ دا دروستبوویی، نەخاسمە ژی ((لسەر سنووریٚ باکووریٚ موسل، دوژمناهی دناڤبەرا واندا زێدەبوو و ئەڤ گەفە زێدەبوون هەتا د ئەنجامدا هێرشان دناڤبەرا هەردوو لایەناندا دەستپێکری.)) (دناني، ٢٠٠٣، ل٢٢)

خەتە ژ موسلە،

پرس بکەن ژ ئێدلە،

بۆ شێخ سنیٚ باب کولە. (دناني، ٢٠٠٣، ل٢٣)

ئەڤ چەندە د دەمەکیدا بوو ((هەڤڕکی د ناڤخۆیا ئێزدیاندا هەبوو، ژ ئەنجامیٚ ویٚ هەڤڕکییێ، شێخ حەسەن قەستا باشیک و بەحزانیٚ کر، ب دوویرکەفتنا شێخ حەسەن، میرگەهـ لاواز بوو، بەدرەدین لۆلۆ ئەڤ چەندە ب دەرفەت زانی و ب ئاسانی سەرکەفتن ب سەر شێخ حەسەندا ئینا.)) (دناني، ٢٠٠٣، ل٢٢)

لالش یا بۆر، دیوان یا بۆر، مەرگەهی یا بۆر،

هەی برینداریٚ مێرانۆ... (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ٤٦٣)

### ٤. ژناڤچوونا کیانیٚ شێخ حەسەن یێ سەربەخۆ

شێخ حەسەنیٚ ئادانی ژ ئەنجامیٚ شەر و ناکۆکییێن ناڤخۆیا ئێزدیان یێن دناڤبەرا مالباتا وی وەک (ئادانی) و شەمسانیاندا روویداییێن ژ لالش ب دل برینداری چۆ باشیک و بەحزانیٚ:

شێخیٚ حەسەنی دل بریندارە،

ل بۆریٚ محنەتیٚ یی سوارە. (البسطامي، ٢٠٠٠، ل٢٨-٢٩)

ڤەگێرانێن سەرزارییێن ئێزدیان دبێژن: بەدرەدین لۆلۆ هەر بەلا خۆ ژێڤەنەکر، ئاگەهدارکر کو بچتە مووسل، شێخ حەسەن رازیبوو بچیت، بەلیٚ بەری بچیت، گۆتە جڤاتا خۆ: دیٚ چمە مووسل، بەلیٚ هووین جارەکا دی من نابینن. جڤاتا وی گۆتیٚ: نەچە. گۆت: دڤێت ئەز بچم و ئەڤە قەدەرا منە، ئەز بەدرەدین باش ناس دکەم، مرۆڤەکی بێبەخت و خائینە، چۆ مووسل و هەر ئێکسەر ژلایێ ویڤە هاتە گرتن و زیندانکرن و ئەشکەنجەدان دا کو ژ هزرێن خۆ پاشکەزببیت، لیٚ چ چارە پێنەکرن. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٩٠) دناڤ ئەدەبیاتا ئایینیٚ ئێزدیاندا دوو قەسیدە ژ بۆ زیندانکرنا وی بناڤیٚ (شەرفەدینە دینیٚ منە) و (کەس نەتیٚ) هاتنە ڤەهاندن:

کەس نەتیٚ، کەس نەتیٚ،

دیٚ ژ وەرا بێژم قسەتیٚ،

بۆ شێخ سنیٚ سونەتیٚ. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٨٩)

بەدرەدین لۆلۆ ((بە هاریکاری (دەستەی شیعەکان)ەوە توانی (شێخ حەسەن) بگریٚ و پاشان لە ناو (قەلآ)ی موصل دا بیخنکێنیٚ و بزوتنەوەکەی لە بێکەدا گۆڕ بکات.))



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

(فتاح: ١٩٦٩، ل١٣) ژێدەر دیار دکەن ((ل دەمێ شێخ حەسەن هاتییە کوشتن ژییێ وی ٥٣ سال بوون.)) (الکتبي، ١٩٧٣، ل٣٣٥)

بەلێ چی بوو، چی کرییە،

ستێرا رەش رژییە،

موسل وەردگەرییە. (دناني، ٢٠٠٣، ل٢٤)

نڤیسەر (پیر خدر سلێمان) سەبارەت کوشتنا وی دبێژیت: ((شێخ حەسەن ب خیانەت هاتە گرتن و کوشتن.)) (سلیمان: ١٩٩٣، ل٥٧) لێ نڤیسەر (عزەدین سەلیم باقەسری) لسەر زارێ ئێزدیان و پشت بەستن ب تێکستێن ئێزدیان دبێژیت: ((شێخ حەسەن خۆ ب ژەهرێ کوشتییە.)) هەروەکی (بەیتا مەلک شێخ حەسەن) دبێژیت:

حەفت قەدەح ژەهرە،

شێخ حەسەن ڤەدخوارە،

خەبەرەک نە دهاتە زارە. (باقسري، ٢٠٠١، ل١٦)

شارەزایێن ئێزدیاتییێ دبێژن: تێکستێ (فروارا مەلک شێخ سن) ب قەدەم گوهاستنا (وەغەرکرنا) شێخ حەسەن هاتییە گۆتن (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٧١) تێدا دبێژیت:

ڤەدا ستێرا بەرێ سبێ، عەزیزۆ ڤەدا،

مێر و مەلەکە با دکەنە کەکێ شێخ زێندین ژ عەرشێت سەمەدا،

بلا ئەو فەقیر بێن بێت خەرقە و حلەکانی د بەردا،

ئەو سولتان شیخادییە میرێ منۆ ژ ئەول هەتا ب ئەبەدا. (رەشۆ، ٢٠٠٤، ب١، ل٤٧١)

بەدرەدین لۆلۆ ب کوشتنا شێخ حەسەن و نەهێلانا بزاڤا وی رانەوەستیایە، بەلکو ((سوپایەکی گەورەی بە مەبەستی لێدانی پاشماوەی یەزیدیەکان بردووتە سەریان.)) (ئەلوەنی، ١٩٩٩، ل٥٤) هەروەسا ژی ((گەلێك هەڵمەتی بردە سەر کەس و کار و پەیڕەوانی (شێخ حەسەن) لە (لالش)دا. لە دوا هەڵمەتی دا کو لە سالی (٦٥٢)ك بو، گەلێکی لێ کوشتن و گەلێکیشی لێ گرتن بە دییل سەد کەسی لی کردن بە داراو سەد کەسیشی لێ سەربڕین. سەرۆکەکەیشیانی پارچە پارچە کردو بە سەر دەرگاکانی موصلەوە پارچەکانی هەڵواسین.)) (فتاح: ١٩٦٩، ل١٣) سەرەڕایی هندێ هەمی ئایین رێزێ ل قەبران دگرن، لێ ((بەدرەدین لۆلۆ د هێرشا خۆدا بۆ سەر پەرستگەها لالش سندرووکا شیخادییێ موسافر ل سالا ١٢٥٤ خرابکر و هەستیکێن وی سۆتن.)) (عبود، ١٩٩٤، ل٨٣) هەروەسا پەرستگەها لالش و مەزارگەهێن وان یێن دی ژی خرابکرن. (بوتاني، ٢٠٠٠، ل٤٢) ژبلی ئەڤێ هێرشا وی، ژبەر کو شنگال جهەکێ جوگرافی و ئابووری دگەل موسل هەبوویە، لەورا ئەو ب گرنگترین پشکێن موسل هاتییە زانین، بەدرەدین لۆلۆ ئەو ژی گرتییە. (شمیساني: ١٩٨٣، ل١٧٥)

پشتی ژ ناڤبرنا شێخ حەسەن ئادانی، کورێ وی شەرفەدین درێژی ب میرگەها خوە ل شنگال دایە. (جزیری، ١٩٩٩، ل٧٣)، لێ نڤیسەر عزەدین باقەسری دبێژیت: سەرۆکاتییا میرگەها گشتییا ئێزدیان بۆ چقێ قاتانییێ (بنەمالا میرێن ئێزدیان یێن نها) هاتییە ڤەگوهاستن و شێخ مەهمەدێ باتنی بوو میرێ وێ و ب میرگەها شێخان هاتە بناڤکرن. (باقسري، ٢٠٠١، ل١٩)

**٥. ئەگەرێن ژ ناڤچوونا کیانێ سەربەخۆیێ شێخ حەسەنێ ئادانی**

نڤیسەر و ڤەکۆلەرێن مێژوویی، سەرنەکەفتنا شێخ حەسەن لسەر بەدرەدین لۆلۆ ژ بۆ چەند ئەگەران ڤەدگەرینن، ژ وان یێن سەرەکی:

**٥-١. ئەگەرێن ناڤخۆیی**

- ئێک ژ ئەگەرێن ناڤخۆیی ئەو بوو، بەری میرگەهـ ژلایێ رامیاریڤە بگەهیت، لەز و بەز د راگەهاندنا کیانیدا هاتە کرن، ئەو ژی ژبەر هندێ بوو دا مفایی ژ شکەستنا دەولەتا عەباسی وەرگریت. (باقسری، ٢٠٠١، ل١٨)
- ئێزدیان ب خۆ پشتەڤانییا شێخ حەسەنێ ئادانی نەکر، چونکی ئەڤێ هەڤرکییێ و شەری د دەمەکیدا دەستپێکر، هەڤرکی و شەر و ناکۆکی دناڤبەرا چینێن ئێزدیان (ئادانی، شەمسانی و قاتانییێ) دا لسەر دەستهەلاتدارییا ئێزدیان هەبوو. (دناني: ٢٠٠٣، ل١٤ – ٣٣)، (حەجی: ٢٠٠٥، ل٧٢ – ٩٢)، (Hesen, 2010, l.1-9). ئانکو هەڤرکی پتر لسەر گهۆرینێن ئایینی یێن کەڤن و ئینانا تشتێن تازە بوو، نڤیسەران (خدرێ سلێمان و خەلیلێ جندی) لسەر زارێ ئێزدیان بۆچوونەکا دی دبێژن: ((شێخ حەسەن دڤییا هندەک تشتێد تازە و نو د ئاینێ ئێزدیا بکەت!، بەلێ شێشمس ب ڤێ چەندێ قایل نەبو.)) (سلێمان و جندی، ١٩٧٩، ل١٢٢)
  - روویێ ڤێ دنیایێ نە قەول مایە نە وەحدە،
  - گەلەک خەلک ب بستەیی سەر رێیا شێخ ئادی گاڤدە. (Hecî, 2002, l.285)
- ئەڤ هەڤرکی ((ئێک ژ مەزنترین هەڤرکییان بوو د دیرۆکا ئێزدیان یا نوویدا لسەردەمێ شێخ حەسەنێ کورێ شێخ ئادییێ کورێ ئەبو ئەلبەرەکات.)) (باقسري، ٢٠٠١، ل٧)، لێ ب بۆچوونا (صديق الدملوجي) شەر و هەڤرکییا ئێزدیان یا دناڤبەرا دوو گرۆپاندا پشتی مرنا بەدرەدین لۆلۆ بوو ((هەکە ل چاخێ وی با، ئەوی دێ کارییا هێژ کوشتن و فرمانا خوە لسەر ئێزدیان بەرفراتر و ب هێزتر کربا و د ئەنجامدا کارەسات وێ هێژ خرابتربا.)) (حەجی، ٢٠٠٥، ل٧٧)
- لاوازبوونا هەستێ نەتەوەیی ل دەف ئێزدیان پشتی شەر و ناکۆکی دناڤبەرا وان بخۆدا دروستبوویی، نەخاسمە ژی دناڤبەرا شەمسانی و ئادانیاندا. (Hasan, 2010, l.7)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- ژلایێ دەروونیڤە کارتێکرن ل هەستێن شێخ حەسەن هاتە کرن دەمێ زانی هەمی هێزا ئێزدیان پشتەڤانییێ لێ ناکەت و نە دگەل و بۆچوون و بزاڤا وینە. (Hasan, 2010, l.7)
- دەمێ شێخ حەسەنێ ئادانی هەفت سالان خۆ د چلەخانێدا خلوەکری ب مەبەستا نڤیسینا پەرتۆکا (جەلوە)، ل وی دەمی ڤالاهییا کارگێری و رامیاری دروستبوو، ئانکو ژ هەڤبۆچوون و مریدێن خۆ دوویر کەفت، ئەڤ کار ژ بۆ ئێزدیان ب تەڤایی ئاشکەرا نەبوون کا شێخ حەسەن چ دکەتن، ئانکو ((نە ئاشکەرایا ئایدیۆلۆژی و گهۆرینێن شێخ حەسەن و ئارمانجا گهۆرینێن وی بۆ پترییا ئێزدیان نەخاسمە ژی شەمسانییان.)) (باقسری، ٢٠٠١، ل١٨) بەدرەدین لۆلۆ ئەڤ چەندە بۆ خۆ ب دەرفەت زانی هێرشێ بکەت.
- نە رێک و پێکییا سیستەمێ کارگێری دناڤ میرگەهێدا سەرەڕایی وەرگرتنا باجێ ژ ئێزدیان. (Hasan, 2010, l.7)

**٥-٢. ئەگەرێن دەرەکی**

- شەرکرن دگەل بەدرەدین لۆلۆ. (Hasan, 2010, l.7)
- شێخ حەسەن سنوورێ میرگەها خۆ بەرفرەهـ کر و هەر هەفت میرگەهێن ئێزدیان ب میرگەها ئادیانڤە ل لالش گرێدان، ئەڤە بوو ئەگەرەک بەدرەدین لۆلۆ ژێ بترسیت. (Hasan, 2010, l.7)
- ژلایێ لەشکەریڤە ((لەشکەر و چەکەکی وەسا مەزن و رێکخستی نەبوو بەر سینگێ هێرشێن مەزن بگریت.)) (دناني، ٢٠٠٣، ل٢٩)
- بەدرەدین لۆلۆ ب عەقلانە هەڤرکییا خۆ ب ئایینیڤە گرێدا و هەستێ موسلمانان لڤاند کو ((ئەڤا شێخ حەسەن دکەت ئایینییە.)) (دناني، ٢٠٠٥، ل٢٨) لەورا کوردێن موسلمان پشتەڤانی لێنەکر، لێ بەری هینگی ((شێخ حەسەن جهێ خۆ د ناڤ کورداندا هەبوو و هەر ژبەر هندێ ژی ب شێخێ کوردان هاتە بناڤکرن.)) (باقسري، ٢٠٠١، ل١٠) نە ب تنێ پشتەڤانی لێنەکر، بەلکو ((موسلمانێن دڤەرێ پەیوەندی ب شیعەیان کر.)) (الرويشدي، ١٩٧١، ل٤)

**٦. سەرژنوویی ئاڤابوونا میرگەهێ/ میریاتییا شەرفەدین**

پشتی ب دوماهیک هاتنا شێخ حەسەن و خرابکرنا پەرستگەها لالش و سندرووکێن کەسایەتییێن ئێزدیان یێن پیرۆز و کوشتنا گەلەک کەسایەتی و سەرۆک هۆزێن ئێزدیان ل دڤەرا شێخان و دەوروبەران ژلایێ بەدرەدین لۆلۆڤە، هەستێ وان برینداربوو و ئێزدیان ژی وەکو بەرەڤانی ژ خۆ و باوەرا خۆکرن دەست دانەنایە، د دەستپێکێدا ژی شەرفەدین (کورێ شێخ حەسەن) میرگەهـ ڤەژاندیەڤە، قەولڤانێن ئێزدیان وەکو پشتەڤانی و بەرخودانی و جهگرتنا شێخ حەسەن قەسیدەیەک بناڤێ (شەرفەدینە دینێ مەیە) ب ڤێ چەندێ ڤەهاندییە ژ پێخەمەت هندێ ئێزدیان هشیارکەتەڤە و دەست ژ ئایین و باوەرا خۆ



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەرنەدەن و د خۆراگربن ((کورێ شێخ حەسەن وەکو هنارتییەک ژ پێخەمەت دلنیابوونا ئێزدیان کاروبارێن وان گرتینە دەست کو ل دژی پاشایێ مووسل راوەستیت و داخوازا خۆراگرییێ ژ ئێزدیان کرییە.)) (بوتانی، ٢٠٠٠، ل٤٢)

شەرفەدینە ب گۆسک و گولی،

سوار بوو ل هەسپێ دندلی،

جێشێ وەک غەرزێ کولی. (بوتانی، ٢٠٠٠، ل٤٢)

جەوابێ بدەنە کوردستانێ،

بلا قائیم کەن ئیمانێ،

شەرفەدین میرە ل دیوانێ. (Casim, 2000, l. )

223

قەسیدا (شەرفەدین/ شەرفەدینە دینێ منە) ب شێوەیەکێ باش ئەڤێ چەندێ دیار دکەتن کو شەرفەدین میریاتییا خۆیا راگەهاندی و ب میر و سەر عەسکەر هاتییە بناڤکرن و و ب جل و بەرگێن لەشکەرییێ وی سەردەمیڤە ب لەشکەرەکێ زۆر یێ هاتییە دەڤەرێ و داخوازا خۆراگرییا ئێزدیان و بهێزکرنا ئیمانێ یا ژ وان کری:

هەسپی بۆزە زینی ل سەرە،

تو ژ مغارێ وەرە دەرە،

شەرفەدین سەر عەسکەرە. (Casim, 2000, l. 222-)

223

شەرفەدین پەیامەکا ئایینی یا ئاراستەیی ئێزدیان کری پشتی کو بەدرەدین پیرۆزیێن وان ژناڤبرین، د تێکستێ شەرفەدیندا دیار دبیت؛ شەرفەدین دڤێت بێژیتە ئێزدیان ئەڤا بەدرەدین لۆلۆ دکەت ل دژی کەسەکی وەکی بابێ من شێخ حەسەن ب تنێ نینە، بەلکو دژی وە هەمیان و دژی ئێزدیاتییێیە.

تێکست بەحسێ بوویەر و شەر و روویبریبوونا شەرفەدین دگەل بەدرەدین لۆلۆ ناکەت، تنێ راگەهاندنا میریاتییێ ژلایێ ویڤە دیار دکەت سەرەڕایی داخوازا وی ژ بۆ خۆراگرییا ئێزدیان و پشتراستکرنا وان کو هیڤی و ئۆمیدێن وان نەمرن شەرفەدین دێ رێکا بابێ خۆ گرت و بەرەڤانییێ ژ وان کەتن، لەورا بەدرەدین لۆلۆ ل سالا ١٢٣٧ز، لەشکەرەکی بهێز ئامادەکر و ب سەر شنگالدا گرت و ئابلۆقەکر، ل وی دەمی سالەح نەجمەدین ئەیوبی والییێ شنگال بوو، شەر و پێکداداان دناڤبەرا هەردوو لایەناندا دروست بوون، خەلکێ شنگال پشتەڤانییا سالەح نەجمەدین ئەیوبی کر و ل دژی بەدرەدین لۆلۆ راوەستیان کو شنگالێ ب زۆری ژ وان بستینیت، د دوماهیکێدا سالەح نەجمەدین ئەیوبی،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بەدرەدین لۆلۆ شکاند پشتی کو هەمی خەلکێ شنگالێ ب کورد و عەرەب و ئێزدی و مەسیحی پشتەڤانی ل سالەح نەجمەدین ئەیوبی کری. (بازو، ٢٠١٧، ل٩٤-٩٦)

ئێزدی، شەرفەدین وەک بابچاکەکی خۆ دهەژمێرن، هەتا ڤێگافکێ، مەزارگەهێن شەرفەدین ل گەلەک جهان هەنە، ژ وان: مەزارەکی وی ل پەرستگەها لالش و هەروەسا ژی بنەکۆکا میرگەها وی هێژی ل شنگال مایە و گەلەک کاروبارێن ئایینی و کەل و پەلێن تایبەت ب شەرفەدینڤە دناڤ ئێزدیاندا ل شنگال مایینە، وەک: دەهێکی، بیرا وی، شەربک، خان مەزەل، گەنجینە، مغار (شکەفت)، شیلان (مطبخ). (یوسڤانی، ٢٠١٨، ل٤١-٤٦)

**ئەنجام:**

- بنەمالا شێخ حەسەنێ ئادانی، ژلایێ روحانیڤە ئێک ژ مالمەزنێن ئێزدیان بوون، ژلایێ کارگێری و دەستهەلاتێڤە ژی سەرکێشییا ئێزدیان کرینە، میرگەها ئادیان د دەست واندا بوو.
- شێخ حەسەنێ ئادانی د چەند لایەنێن جوداجودا دا رۆلێ خۆ دیتییە، و د وان لایەناندا گەهشتییە پلەیەکا بلند، وەک، ئایینی، رەوشەنبیری، کارگێری و نەتەوایەتی.
- د لایەنێ ئایینیدا، بابچاک بوویە و مەزارگەهـ و مریدێن خۆ ل ناڤ ئێزیدخانێ هەبووینە، هەتا نۆکە ژی مایینە.
- د لایەنێ رەوشەنبیری و ئەدەبیدا، پەرتووک نڤیسینە و قەول و قەسیدە ب ناڤێ وی هەنە، ژ ئەنجامێ شەر و جینۆسایدێن هاتینە سەرێ ئێزدیان، بەرهەمێن وی هندابووینە، لێ ناڤ و کار و خەباتێن وی، د گەلەک تێکستێن دیدا هاتینە پاراستن و هەروەسا تێکستێن تایبەت ژی پێ هاتینە ڤەهاندن.
- د لایەنێ کارگێریدا، جڤاتەک ل پەرستگەها لالش دامەزراندییە ژ چل دەروێش و قەلەندەران پێکدهات، پەیوەندییێن خۆ د گەل میرگەهێن دییێن ئێزدیان و بهێزکرینە و سیستەمێ باجێ (دەهێکی) دناڤ ئێزدیاندا پەیداکرییە.
- د لایەنێ نەتەوایەتیدا، هەولدایە قەوارەیەکی سەربەخۆ دامەزرینیت و ژ پێخەمەت ڤێ هزرا خۆ، ریفۆرم د هەرەمێ ئایینی و جڤاکییێ ئێزدیاندا کرییە و چەند پلە زێدەکرینە، یان ژی ناسناڤ ل هندەکێن دی زێدەکرینە کو دگەل سیستەمێ دەولەتێ بگونجیت.
- بەدرەدین لۆلۆیێ موسلی ژ شێخ حەسەنێ ئادانی ترسیایە راگەهاندنا دەولەتەکی بکەت، لەورا بوویە هەڤرکێ سەرسەختێ وی و شەر دگەل کرییە و ژ ناڤبرییە. بەدرەدین لۆلۆ ب ئەڤێ سەرکەفتنێ نەسەکنییە، ب رەنگەکی هۆڤانە د سەر پەرستگەها لالشدا گرتییە و سندرووکا شیخادی خرابکرییە و هەستیکێن وی سۆتینە.
- شکەستنا شێخ حەسەنێ ئادانی ل بەرامبەری بەدرەدین لۆلۆ، چەندین ئەگەرێن خۆ هەبووینە، یێن هەرە دیار: شێخ حەسەن هندی بەدرەدین لۆلۆ لەشکەر و چەک نەبوو،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هەروەسا شەمسانیان ژی پشتەڤانی ل شێخ حەسەن نەکر، چونکی ناکۆکی ناڤبەرا بنەمالا وی و بنەمالا شەمسانیاندا هەبوو، دیسان ئێزدیان ب خۆ ژی ب تەڤایی پشتەڤانی ل شێخ حەسەن نەکر، چونکی ئەو گهۆرینێن د هەرەمێ ئایینی و جڤاکیدا کرین ب دلێ گەلەکان ژ وان نەبوو.

**ژێدەر:**

**١.پەرتووک**

**١-١. ب زمانێ کوردی**


- بازو، شکر خضر مراد (٢٠١٧)، تاريخ شنگال القديم (٣٥٥٠ق.م – ١٥١٥م)، الطبعة الاولى، من منشورات مكتبة خاني، دهوك.
- بدرخان، کامیران (١٩٣٣)، نڤیژین ایزیدیان، چاپخانا (الترقي)، دمشق.
- بۆزانی، خێری (٢٠١١)، میر جەعفەرێ داسنی، چاپا ئێکێ، ژ وەشانێن ریڤەبەریا گشتی یا کاروبارێن ئێزدیان – هەولێر، چاپخانا رۆشنبیری، هەولێر.
- جگەرخوین (١٩٦٢)، فەرهەنگا کوردی – جگەرخوین، چاپا ئێکێ، چاپخانا ارشاد، بەغدا.
- حەسەن، رێسان (٢٠٠٠)، لالش د سترانا دیرۆکی یا کوردی دا، چاپا ئێکێ، چاپخانا وەزارەتا پەروەردێ، هەولێر.
- رۆژبەیانی، مەلا جەمیل (٢٠٠٠)، چوار دەوڵەتی کورد – چوار دەولەتی فەرامۆشکراوی نەناسراو – دونبولی، شاهێنی، شوانکارە، مینەتشاهی، چاپی یەکەم، چاپخانەی وەزارەتی رۆشنبیری، هەولێر.
- رەشۆ، خەلیل جندی (٢٠٠٤)، پەرن ژ ئەدەبێ دینێ ئێزدیان، بەرگێ ئێکێ، چاپا ئێکێ، دەزگەهێ سپیرێز - دهۆك، چاپخانا وەزارەتا پەروەردێ، هەولێر، ٢٠٠٤.
- رەشۆ، خەلیل جندی (٢٠٠٤)، پەرن ژ ئەدەبێ دینێ ئێزدیان، بەرگێ دووێ، چاپا ئێکێ، دەزگەهێ سپیرێز - دهۆك، چاپخانا وەزارەتا پەروەردێ، هەولێر.
- زەند، کەریم (١٩٧١): ئایین و باوەر لە کوردستان دا، چاپخانەی کامەرانی، سلێمانی.
- سلێمان، خدر (١٩٨٥): گوندیاتی - ئالیەکی ئەنترۆپۆلۆجی، چاپخانا (الحوادث)، بەغدا.
- سلێمان و جندی، خدر و خەلیل (١٩٧٩)، ئێزدیاتی لبەر رۆشنایا هندەک تیکستێد ئایینێ ئێزدیان، چاپا ئێکێ، چاپخانەی کۆری زانیاری کورد، بەغدا.
- فتاح، شاکر (١٩٦٩): یەزیدی یەکان و ئایینی یەزیدی، چاپخانەی کامەران، سلێمانی.
- وەهبی بەگ، توفیق (٢٠١٠)، پاشماوەی ئاینی میثرایی لە هاترا، وەرگێران لە ئینگلیزیەوە: شێخ برهان بەرزنجی، ژ وەشانێن رۆشنبیری و لاوان، چاپخانەی رۆشنبیری، هەولێر.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- ئیزەدی، میهرداد (٢٠٠٢): ئاین و تایفه ئاینی یەکان له کوردستان، وەرگێران له ئینگلیزی یەوە: کامەران فەهمی، چاپی یەکەم، بڵاوکراوەکانی مەکتەبی بیر و هۆشیاری (ی. ن. ك)، سلێمانی.
- ئەنوەر، دکتۆر کەیوان ئازاد (٢٠١٨)، مێژووی دەرکەوتنی ئاینەکانی ئێزدی و کاکەیی، چاپی یەکەم، بلاوکراوەی کتێبخانەی هەژار موکریانی، چاپخانه تاران، هەلەبچە.
- ئەلوەنی، نەجم (١٩٩٩)، ئایینی ئێزیدی له نیوان چەند جەمسەری و بڕوای یەکتا پەرستیدا، چاپی یەکەم، چاپخانەی زانکۆی سەلاحەددین، هەولێر.

### ١-٢. ب زمانێ کوردی (ب پیتێن لاتینی)

- Hecî, Bedelê Feqîr (2002): bawerî û Mîtologiya Êzidîyan – çendeha têkist û vekolîn, çapa êkê, çapxana Hawar, Dihok.

### ١-٣. ب زمانێ عەرەبی

- ابن المستوفي (١٩٨٠): تاريخ اربل، حققه و علق عليه: سامي بن السيد خماس الصقار، القسم الاول، دار الرشيد، العراق.
- ابن خلكان، ابي عباس شمس الدين (١٩٧٢)، وفيات الاعيان و ابناء انباء الزمان، حققه: الدكتور احسان عباس، المجلد الثالث، دار صادر، بيروت.
- البدليسي، شرف خان (٢٠٠٦)، شرفنامة، الجزء الاول، ترجمة الى العربية: محمد علي عوني، راجعه و قدم له: يحيى الخشاب، الطبعة الثانية، دار الزمان، سوريا.
- البسطامي، ريسان حسن (٢٠٠٠)، بازيد البسطامي الاختيار عند الايزيدية، الطبعة الاولى، مطبعة وزارة الثقافة، اربيل.
- البناء، هاشم (١٩٦٤): اليزيديون، الطبعة الاولى، مطبعة الامة، بغداد.
- الحسني، عبدالرزاق (١٩٨٧): اليزيديون في حاضرهم و ماضيهم، الطبعة الحادية عشرة، مكتبة اليقضة العربية، مطبعة سومر، بغداد.
- الحموي، ياقوت (١٩٧٧)، معجم البلدان، المجلد الخامس، دار صادر، بيروت.
- الختاري، داود مراد (٢٠١١): معبد لالش و المراسيم الايزدية، من منشورات ديوان اوقاف المسيحين و الديانات الاخرى، بغداد.
- الدملوجي، صديق (٢٠١٠)، اليزيدية، الطبعة الثانية، (بدون مكان الطبع).
- الدوسكي، انس محمد شريف (٢٠٠٧): حوار مفتوح مع رابطة المثقفين الايزديين، الطبعة الاولى، مطبعة هاوار، دهوك.
- الرويشدي، سوادي عبدمحمد (١٩٧١)، امارة الموصل في عهد بدرالدين لؤلؤ ١٢٠٩-١٢٦١م، الطبعة الاولى، مطبعة الارشاد، بغداد.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- الكتبي، محمد بن شاكر (١٩٧٣)، فوات الوفيات و الذيل عليها، المجلد الاول، تحقيق الدكتور احسان عباس، دار صادر، بيروت.
- باقسري، عزالدين سليم (٢٠٠٣)، مەرگەهـ - الايزدية – الاصل – التسمية – المفاهيم- الطقوس –المراسيم و النصوص الدينية، الطبعة الاولى، من منشورات مركز لالش، مطبعة خبات، دهوك.
- جزيري، علي (٢٠١٩)، الكرد الايزيديون، الطبعة الاولى، من مطبوعات الاكاديمية الكوردية، مطبعة جامعة صلاح الدين، اربيل.
- جندي، الدكتور خليل (١٩٩٨)، نحو معرفة حقيقة الديانة الايزيدية، الطبعة الاولى، مطبعة رابوون، السويد.
- دناني، شمو قاسم (٢٠٠٥): مشاهير من الكورد الايزديين، من منشورات مركز لالش الثقافي و الاجتماعي، الطبعة الاولى، مطبعة خبات، دهوك.
- شميساني، د. حسن (١٩٨٣): مدينة سنجار من الفتح العربي الاسلامي حتى الفتح العثماني، الطبعة الاولى، منشورات دار الآفاق الجديدة، بيروت.
- عبود، زهير كاظم (١٩٩٤)، لمحات عن اليزيدية، الطبعة الاولى، من منشورات مكتبة النهضة، المطبعة العاني، بغداد.
- لابات، رينية و سنايزر، موريس و آخرون (٢٠٠٦): سلسلة الاساطير السورية، ديانات الشرق الاوسط، ت: مفيد عرنوق، دار علاء الدين، الطبعة الثانية، دمشق.
- مطر، سليم و آخرون (٢٠٠٥): موسوعة المدائن العراقية، مركز دراسات الامة العراقية، بغداد.

**٢.گۆڤار**

**٢-١.ب زمانێ كوردى**

- جانكورد (٢٠٠٩): گۆتنەكە كورت ل سەر ئۆلا ئێزیدیێ، گۆڤارا مەتین، ژمارە ١٧٨، دهۆك.
- حەجى، بەدەلێ فەقیر (١٩٩٧): قەولێ خودانێ مالێ، گۆڤارا لالش، ژمارە ٧، دهۆك.
- حەجى، بەدەلێ فەقیر (٢٠٠٥): هەڤركییا شەمسانى و ئادانى و قاتانیێ ل سەر میریاتیا ئێزدیان، گۆڤارا لالش، ژمارە ٢٢، دهۆك.
- خەلەف، عەلۆ شێخ (٢٠٠١): قەولێ ئۆمەرخالە و هەسن چنارى، گۆڤارا لالش، ژمارە ١٦، دهۆك.
- سلۆ، سەعید (٢٠٠٥): فەرهەنگا مە، گۆڤارا لالش، ژمارە ٢٢، دهۆك.
- یووسف، عەبدولڕەقیب (٢٠٠٢): دۆزینەوەى پەرستگەى كۆنى ئێزیدییەكان – بەر لە زایین، گۆڤارا ڕامان، ژمارە ٧٨، هەولێر.
- یوسڤانى، حەیدەر عەرەبۆ (٢٠١٨)، چەند زانیاریەك ل دۆر مەرگەها شەرفەدین، گۆڤارا مەحفەل، ژمارە ١٠.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردى

**٢-٢.ب زمانێ کوردی (ب پیتێن لاتینی)**

- Casim, Îvan Derwêş (2000): Sirûda Şerfedîn bi zimanê Mûzîkî, govara Laliş, jimare 13, Dihok.
- Hecî, Bedel Feqî (1996): komeka têkistêt ola Êzdiya, govara Laliş, jimare 6, Dihok.
- Hesen, Rêsan (2010): Şêx Hesen û hizra pêkînana dewleteka Kurdî, govara Mehfel, jimare 1, Dihok.

**٢-٣. ب زمانێ عەرەبی**

- ابو روز (٢٠٠٠): نبذة تاريخية حول قصبة عين سفني – الشيخان، مجلة لالش، العدد ١٢، دهوك.
- آميدي، كاوة فريق احمد شاوةلي (٢٠٠٠)، امارة بادينان ١٧٠٠-١٨٤٢ دراسة سياسية اجتماعية ثقافية، الطبعة الاولى، مؤسسة موكرياني للطباعة و النشر، مطبعة خبات، دهوك.
- باقسري، عزالدين (٢٠٠١): الشيخ حسن و الصراع الشمساني الاداني، مجلة لالش، العدد ١٦، دهوك.
- باقسري، عزالدين سليم (١٩٩٩): الشيخ آدي و النظام الديني الايزدي، مجلة لالش، العدد ١١، دهوك.
- بوتاني، الدكتور عبدالفتاح علي (٢٠٠٠)، ملاحظات اولية عن الايزدية و الايزديين، مجلة لالش، العدد ١٢، دهوك.
- خيراڤايى، شكري رشيد (٢٠٠٨): فلسفة الموت في بعض المعتقدات و الاديان، مجلة لالش، العدد ٢٨، دهوك.
- دناني، شمو قاسم (٢٠٠٣)، الصراع بين الشيخ حسن و بدرالدين لؤلؤ، مجلة لالش، العدد ٢٠، دهوك.
- زيان، عدنان (١٩٩٩)، الامارات الكوردية الايزدية، مجله گولان العربي، العدد ٤٢.
- سليمان، خدر بير (١٩٩٤)، ضوء على مخطوطة – مشورات الايزدية، مجلة لالش، العدد ٢-٣، دهوك.
- سليمان، خدر بير (١٩٩٣)، لالش، مجلة لالش، العدد ١، دهوك.
- شنگالي، شيخ حجي سمو (٢٠٠٠): مزارات الايزدية في جبل سنجار، مجلة لالش، العدد ١٣، دهوك.

**٣.چاڤپێکەفتن:**

- چاڤپێکەفتنەك دگەل فەقیر حەجی فەقیر شەمۆ، ل مالا وی ل باعدرێ، ل رۆژا ٢٧/ ١٢/ ٢٠١٢.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- چاڤپێکەفتنەک دگەل شێخ دەشتی زەیدین شەمسانی، ل مالا وی ل خانکێ، ل رۆژا ٢٠٢٢/١٢/١٢.
- چاڤپێکەفتنەک دگەل شێخێ وەزیر ل پەرستگەها لالش، ل رۆژا ٢٠٢٢/١٢/٢٧.
٤.نامەیێن ئەکادیمی:
٤-١. ب زمانێ کوردی
- نەبی، کامیران محەمەد (٢٠٠٥)، قۆناغێن وەرارا هزرا نەتەوایەتی د هوزانا کوردی دا، ناما دکتۆرایێ، زانکۆیا صەلاحەددین، هەولێر.
٤-٢. ب زمانێ عەرەبی
- الهيتي، قصي منصور عبدالكريم (١٩٩٥): عبادة الاله سين في حضارة بلاد وادي الرافدين، رسالة ماجستير، كلية الاداب، جامعة بغداد.
٥. دەستخەت
- مشورا پیر خەتیب پسی پیر بوتار، دەستخەت، ل سالا ١٢٧٨ز ل پەرستگەها لالش هاتییە نڤیسین، نها ئەو د ئەرشیفێ زانکۆیا دهۆکدا ل بن هژمارا ١٤ یا ١٩٩٧/٩/٧ دا پاراستییە.

## محاولات شيخ حسن الآداني ١١٩٤ – ١٢٤٦م لتأسيس كيان مستقل
## (حسب الادب و التراث الايزدي)

**الملخص:**

ولد شيخ حسن بن آدي بن صخر بن مسافر الهكاري الملقب ب(شيخ حسن الآداني) في سنة ١١٩٤م، وهو من عائلة الآداذية من طبقة الشيوخ الأيزدية، و كان كاتباً و رجلاً صالحاً و متصوفاً و ألف كتاب الأيزدية المقدسة (جلوة)، و له عدد من الأقوال و الادبيات الدينية الأيزدية، كما له اعمال في الجانبى الديني و الاجتماعي؛ و لهذا اصبح شخصاً مقدساً في المجتمع الأيزدي، و بنىت بأسمه بعض المزارات الدينية و له مريدون و مؤيدون الى يومنا هذا.

قام شيخ حسن الآداني ببعض الاصلاحات الاجتماعية و الدىنىة من اجل اقامة كيان مستقل على مستوى كوردستان، و الى حد ما تم تطبىق تلك الاصلاحات التى هي اضافة بعض المراتب و المناصب الدينية و الادارية للأيزدية مثل مرتبة: شيخ الوزير، امير الحج، بيشيمام، نقيب، جاويش، خزندار (أمين الصندوق). و أسس مجلساً في معبد لالش يتكون من (٤٠) اربعين شخصية و الدراويش و الأولياء الصالحين، و قام الربط بعض الامارات الكوردية بمعبد لالش كمركز رئيسي لسلطة تلك الامارات، و قام أيضاً بارسال طاؤوس (السنجق) كرمز ديني مقدس مع القوالين و رجال الدين الى المناطق الأيزدية المختلفة في تركيا و سوريا بهدف تقوية العلاقات بين الأيزدية، و اصدار النظام العشري (دەهێکی) و اخذ رسوم الجباية (الضرائب) لصالح معبد لالش، و هذه الخطوات أصبحت أساساً لتشكيل كيان مستقل.

بعد محاولات الشيخ حسن الآداني لتأسيس كيان مستقل من خلال تلك الاصلاحات خلقت مخاوف لدى بدرالدين لؤلؤ الموصلي(١٢٠٩-١٢٦٢)م، اذ أصبح منافساً و منازعاً قوياً لمحو كيانه، لذا التهم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

الشيخ حسن، و قال بأنه يريد ان يكون معبد لالش بديلا لمدينة مكة المكرمة حتى لا يتم دعم هذا الكيان من قبل المسلمين، هكذا استغل بدرالدين لؤلؤ الجانب الديني لمصلحته، وكذلك استغل الصراع الديني والقتال القائم آنذاك بين شيوخ الأدانية والقاتانية على السلطة، والأصلاحات الدينية التي أجراها الشيخ حسن، و بهذه الطريقة أنتصر بدرالدين لؤلؤ على الشيخ حسن.

**الكلمات الدالة**: *شيخ حسن الآداني، كيان مستقل، اصلاحات، الاعتقاد، الأدب الديني الأيزدي، بدرالدين لؤلؤ.*

**Attempts by Sheikh Hassan Adani 1194-1246 AD to Establish an Independent Entity (According to Yazidi Literature and Heritage)**

**Abstract:**

Sheikh Hassan is the son of Adi son of Sakhar son of Musafir Hakkari, who is known as (Sheikh Hassan Adani) was born around 1194 and is from the Adani branch belonging to the Sheikh caste. He is a well-known Ezidi spiritual leader and an author for the Ezidi's holly book (Jilwah) and many other religious texts and verses (Qawl u Qasida). He remains as a sacred figure among the Ezidi community for his religious devotedness leaving behind followers to the day. In return to his commitments and leadership, Ezidis have established shrines for him in their communities.

Sheikh Hassan Adani has made reformation in various social and regions aspects to create an independent entity at the Kurdistan level through increasing administration and religious positions and ranks such as Sheikhi Wazeer, Mir Hajj, Peshimam, Naqeeb, Chaweesh and Khaznadar in the Ezidi administration, social and religious hierarchy. He also established a council consisting of forty members including religious leaders as well as connecting some of the Kurdish emirates with Lalish. Moreover, sending out Taws (a holy symbol of Ezidis), Qawal and religious men to other Ezidi communities in Iran, Turkey and Syria to strengthen the relationship among the Ezidis, issuance of the tax system for Lalish which became the building block for establishing an independent entity.

Those attempts of Sheikha Hassan created a fear and discomfort for Badr Al-Din Lu'Lu' (1209 – 1262) which led him to become a major opponent and aimed at demolishing the independent entity through accusing Sheikh Hassan by uplifting Lalish to replace Mecca i.e., he used religion to discourage Muslims in supporting Sheikh Hassan and his plans for the unity of Ezidis. Simultaneously, there was a disagreement on religious reform as well as among the Ezidi authorities which exacerbated the negative impact and eventually led to a failure of the unity plans.

**Keywords**: *Sheikh Hassan Adani, independent entity, reform, faith, Ezidi literature, Badr Al-Din Lu'Lu'.*

# ڕەنگدانەوەی مێژووی میرانی کورد لە شیعری حاجی قادری کۆییدا

د. یەدوڵڵا پەشابادی

بەشی زمان و ئەدەبی کوردی/توێژینگەی کوردستانناسی- زانکۆی کوردستان (سنە) /ئێران

**پۆختە:**

حاجی قادری کۆیی (١٨١٧-١٨٩٧) وەکوو شاعیرێکی نەتەوەیی و ڕۆشنبیر لە نێو بازنەی ئەدەبی کوردی لە سەدەی نۆزدەدا، گرنگایەتییەکی زۆری بە مێژوو و وێژە و زانست داوە. لە نیوەی دووهەمی تەمەنی ئەدەبی و فیکریی خۆیدا ئاوڕی لە زانیاران و میران و شاعیران و ناودارانی کورد داوەتەوە و خاڵە گرنگەکانی کارنامەیانی بە کورتی تۆمارکردووە. ئەم لێکۆڵینەوەیە بە شێوازی وەسفی-شیکاری دەیهەوێ ئاماژە و لایەنە مێژووییەکانی پەیوەندیدار بە ماڵەمیرانی کوردەوە لە شیعری حاجی قادردا لێکبداتەوە و بە هەڵێنجان و دەرخستنی نموونە شیعرەکانی، دەست بداتە بەراوردکارییەکی زانستی لەگەڵ ئەوەیدا کە لە سەرچاوە مێژووییەکانی وەکوو شەرەفنامەدا هاتووە. بەو نیازەی بتوانێ هەندێک لە سەرچاوەکانی فیکر و هزری قووڵی حاجی بدۆزێتەوە. حاجی قادر جگە لە لایەنی ئەدەبی و هونەری کە یەکێک لە ڕەهەندەکانی شیعری ئەم شاعیرەیە، بۆ هەر بوارێک لە مێژووی میران و تۆمارکردنی ناو و یادی شاعیران و گەورە مرۆڤانی کورد هەوڵیداوە و تایبەتمەندییەکی گرنگی ئەو میر و شاعیر و ئەدیبانەی تۆمارکردووە. لە گرنگترین ئاکامەکانی ئەم توێژینەوەیە دەتوانین پەنجە بۆ ئەوە ڕابکێشین کە کتێبی شەرەفنامەی بەدلیسی و هەندێ لە دەسنووسەکانی تر، لە کەنار ڕۆژنامە و گۆڤاری تورکی و ئەورووپیدا کە لە ئەستەموول دەستی کەوتووە، سەرچاوەی ڕۆشنبیری و ئاگاداریی بوون و توانیویەتی زۆرێک لە بارودۆخی سەردەم و ناوونیشانی میران لە شیعری خۆیدا بە چاوێکی ڕەخنەگرانەوە تۆماربکات.

**پەیڤێن سەرەکی:** *حاجی قادری کۆیی، مێژوو، میرانی کورد، شیکاریی بەراوردکارانە.*



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

### ١- پێشەکی:

خوێندنەوەی بەرهەمی گشتیی گەلێک، لەگەڵ دابودەستوور و یاسا و ڕێسا و پاشخوانی هزری و مێژوویی ئەو گەلەدا سیمایەکی بەربڵاوی ئەو گەلەمان پێدەنوێنێت. ئەدەب بەتایبەت ئەدەبی پێبەند بە گەل و نیشتمان (الأدب المتزم/الأدب المتعهد) زیاتر ئەم ڕەنگ و بۆنە وەردەگرێت و زێدەتر ئەو ئەرکە جێبەجێ دەکات. لە بەستێنی ئەدەبێکی وەهادا دەتوانین چاوێک بخشێنین بە سەر دەورانگەلی مێژوویی و هەوراز و نشێوگەلی ڕابردووی گەلدا. لەم چاوخشاندنەدا کەند و کۆسپ و بەرهەڵست و کزی و گەشەی گەل و هۆز و نیشتمانمان بۆ روون دەبێتەوە. لە پاش ئەو روون بوونەوەیە بۆمان هەیە دەرسی عیبرەت وەربگرین و خاڵە لاوازەکان بگوێزینەوە بۆ زێدەکردنی خاڵە بەهێزەکان و کەموکووڕی و ناتەواوییەکانی ڕەوتی شارستانیەت و پڕاوپڕبوونەوەی گەل و نیشتمان و لەو ڕێگایەوە مایەی هێز و دەسەڵات و پێشکەوتنی زیاتر دابین بکەین. ناوبانگدەرکردنی حاجی قادر وەکوو شاعیرێکی نیشتمانی پێشینەیەکی دووردرێژی هەیە (بڕوانە: سەجادی، ١٣٩٥: ٣٣٤).

حاجی قادری کۆیی ئاوێنەیەکی فەرهەنگی و مێژوویی و سیاسی و تەنانەت ئابووریشی لە سەدەی نۆزدەدا ئامادە کردووە بۆمان. کاتێک لەم ئاوێنەدا ڕابردوو و بارودۆخ و ئاستی هزر و ڕۆشنبیری و تێگەیشتنی گەل سەیر دەکەین، پەی بە زیرەکی و تیژباڵیی بیر و ڕوانینی ئەم شاعیرە ئاگایە دەبەین. شیعر لە سەردەمی حاجیدا بووبووە چەکێک بۆ بەرگری لە فەوتان و لەناوچوون (حەداد، ٢٠٠٤: ١٥٢)؛ بە هۆی ئەوەی کە ئمپراتووریی عوسمانی بڕیاری کۆکردنەوە و لابردنی میرنشینە کوردییەکانی دا، هەستی کزی و کەوتنە پەراوێزەوە، باڵی بە سەر زمان و فەرهەنگ و ئەدەبیشدا کێشا.

حاجی قادر هەم وەکوو شاعیرێکی نیشتمانپەروەر و کوردپەروەر و هەم لە چەشنی زانا و سیاسەتوانێکی دڵسۆز دەناسرێت (خەزنەدار، ٢٠٠٤: ١٢٨/٤). حاجی قادر بەرامبەر بە داگیرکەران هەڵوێستێکی روون و ئاشکرای هەبووە و داوای پێکهێنانی قەبارەیەکی دیار و بوونێکی ڕاستەقینەی کردووە (دلێر، ١٩٩٨: ١٨٧). بە خوێندنەوەی شیعری حاجی جگە لەوانە زۆر بابەت و لایەنی مێژوویی و فەرهەنگی و نەتەوەییمان بۆ روون دەبێتەوە کە لە نێویاندا لایەنی مێژوویی؛ بە مێژووی میری و مێژووی ئەدەبیشەوە دوو ڕەهەندی ئەم بابەتەیە کە لەم کورتە لێکۆڵینەوەیەدا ئاوڕێک لە یەکەمیان دەدەینەوە.

#### ١-١. شرۆڤەی بابەت و پرسیارە سەرەکییەکانی لێکۆڵینەوە

لەم وتارەدا دەمانەوێ بە لێکۆڵینەوە و لێکدانەوەی شیکارانە لەسەر بنەمای شێوازی تەوسیفی-شیکاری ئاماژە مێژووییەکانی نێو شیعرەکانی حاجی قادر شرۆڤە بکەین. بۆ ئەم مەبەستە سەرەتا بە خوێندنەوەی شیعرەکانی حاجی سەرجەم گەواهـ و شایەتە شیعرییەکانیمان هەڵهێنجاوە و ئینجا بە ڕاڤە و بەراوردکاری لەگەڵ داکەوتی

مێژووییدا شرۆڤەمان کردوون تا بزانین حاجی قادر لە چ لایەنگەلێکەوە ئاوڕی لە مێژووی میرانی کورد داوەتەوە و چ تایبەتمەندی و چ ڕەهەندێکی بۆ گرنگ بووە. تەنانەت بەو نیازەی بەڵکوو بتوانین هەندێ لە سەرچاوەکانی ڕۆشنبیری و تێگەیشتنی حاجی لە بەستێنی مێژوودا بدۆزینەوە.

**٢-١. پێشینەی لێکۆڵینەوە**

لێکۆڵینەوە و توێژینەوە سەبارەت بە خودی حاجی قادری کۆیی و شیعری، وە نەبێ کارێکی تازەبابەت و بێ ڕچە بێت. حاجی قادر لەو کەسایەتی و کۆڵەکەگەلەی ئەدەبی کوردییە کە لە زۆر لایەن و بە زۆر بۆنەوە ئاوڕی لێ دراوەتەوە و کتێب و وتار و لێدوان و بابەت و تێزی لەسەر نووسراوە و هۆی سەرسوڕمانی زۆر لێزان و لێکۆڵەر لە جوغرافیای کوردستان و لە ئاستی جیهانیشدا بووە. لە یەکەم ڕۆژنامەی کوردییەوە (کوردستان-قاهیرە) تاکوو ئێستاکەش نموونە شیعر و بابەتی سەبارەت بە حاجی ڕازێنەری لاپەڕەکان و کۆڕ و کۆبوونەوەکان بووە. جگە لە پێشەکییەکانی سەرجەم چاپەکانی دیوانەکەی و جگە لە ئەوەی لە کتێبەکانی مێژووی ئەدەبدا سەبارەت بە حاجی هاتووە، هەندێ کتێب و وتار لەم بوارەدا شیاوی ئاماژەن:

ڕەنگە وەکوو یەکەمین بابەتی نووسراو سەبارەت بە حاجی ئەو بەشە بێ کە ڕەفیق حیلمی لە کتێبە بەنرخەکە خۆی *شیعر و ئەدەبیاتی کوردی*دا نووسیویە کە بەرگی یەکەمی کە حاجی قادریش دەگرێتەوە لە ساڵی ١٩٤١ لە بەغدا چاپ بووە. حیلمی بە «بولبولی نیشتمانپەروەری کورد» ناوزەدی دەکات (حیلمی، ٢٠١٠: ٨٧). بە ڕای حیلمی هەوای نیشتمانپەروەری هەر لە مناڵییەوە کەتۆتە سەر حاجی و بە هاوتای نامیق کەماڵ شاعیری وەتەنپەروەری تورکی دادەنێت (حیلمی، ٢٠١٠: ٨٧). هەروەها جەختی لەسەر شارەزایی حاجی بە نیسبەتی مێژووی کورد و میرومەزنانی کردووە (حیلمی، ٢٠١٠: ٨٩). دوای ئەوە لێکۆڵینەوەی دیکە سەبارەت بە حاجی ڕەنگە کورتە وتارێک بێت کە محەمەدتەوفیق وردی لە ساڵی ١٩٤٤دا لە ژێر ناونیشانی «دۆزینەوەی گەنجینەیەک» لە *گۆڤاری گەلاوێژ*دا، وێڕای چەند شیعرێکی تازەدۆزراوەی حاجی، چەند خاڵێکی زۆر کورتی تێدا نووسیوە. محەمەدی مەلاکەریم دوو کتێبی لەم بوارەدا پێشکەش کردووە؛ یەکەمیان *حاجی قادر شاعیری قۆناغێکی نوێیە لە ژیانی نەتەوەی کورد* (١٩٦٠) کە لێکدانەوەیەکی ورد و شیکارییەکی بەپێزی هەندێ بابەتە لە شیعرەکانی حاجیدا، وەکوو «حاجی و زمانی کوردی» (ل. ٢٤)، «شیعر لای حاج» (ل. ٤٣)، «گەل و نیشتمانپەروەری و هەستی نەتەوایەتیی حاجی» (ل.٧١)». کتێبەکەی تری بە ناونیشانی *هەنگاوێکی تر بە ڕێگادا بەرەو ساغکردنەوەی دیوانی حاجی قادری کۆیی*(١٩٨٩)، گەرچی زۆرتر بۆ بۆچوون و تێبینییەکانی خۆی سەبارەت بە شێوە خوێندنەوەی هەندێ وشە و جیاوازیی دەسخەتەکانی شیعری حاجی تەرخانی کردووە،

بەڵام لە دوو توێیدا هەندێ کورتە ئاماژەی بە گرنگیی میران و ئاوڕدانەوەی حاجی لە باسی مێژوویی خستۆتە نێو وتەکانی خۆیەوە. بێ گومان لێکۆڵینەوەیەکی تێروتەسەلتر و هەمەلایەنتر بە دەستی مەسعوود محەمەد نووسراوە کە لە سێ بەرگدا بە ناوی *حاجی قادری کۆیی* لە ساڵانی ١٩٧٤ هەتا ١٩٨٤ بەم لاوە پێشکەشی کردوون. شیاوی ئاماژەیە کە خالید دلێر (١٩٩٨) وەکوو پاشکۆیەک بۆ کارەکەی مەسعوود محەمەد کتێبێکی بە ناو *ستەمکردن لە حاجی قادری کۆیی تاوانە* ئاراستە کردووە کە زۆر ڕەخنەی جیددیی لەو کارە گرتووە. مەریوان وریا قانع جگە لەوەی کە تێزی دوکتۆراکەی لە سەر حاجی قادرە، لە چەند شوێندا نووسینی سەبارەت بە حاجی ئاراستە کردووە کە یەکێکیان وتارێکە لە ژێر ناونیشانی «مەنفای کورد لە نێوان سێ نەوە و سێ ئەزموونی مانا جیاوازدا» و ساڵی ٢٠٠١ نووسیویەتی. گرنگترین خاڵی ئەم نووسینەی مەریوان پەیوەندیدارە بە جێگەوپێگەی شوێن بەتایبەت نیشتمان و هەستی شاعیر بەرامبەر بەم چەمکەوە. ڕێبوار سیوەیلیش لە *کتێبی حاجی قادر* (٢٠١٦)دا دیاردەی کات و شوێن و دەرکەوتە و کاریگەریی ئەم دوو دیاردەیەی لە شیعری حاجی قادردا لە ڕوانگەیەکی فەلسەفییانەوە شی کردۆتەوە. وەک دەردەکەوێ ئەم لێکۆڵینەوەیەی بەردەست چڕدەبێتەوە بە سەر کۆکردنەوەی زانیارییەکانی پرژوبلاوی نێو شیعری حاجی لەمەڕ میران و گەورەماڵانی پێشینەوە کە بە شێوەیەکی تەکووز و یەکجێ لەو لێکۆڵینەوە ناوبراوانەدا نابینرێت.

**١-٣. ئامانج و شێوەی لێکۆڵینەوە**

ئامانجی سەرەکیی ئەم لێکۆڵینەوەیە کە بە شێوەی وەسفی-شیکاری ئەنجام دەدرێت، خستنە پێش چاو و دیاری کردنی زانیاری و ئاماژەکانی حاجی و لێکدانەوەی فەرهەنگ و سیمای کوردە لە بەستێنی میر و حاکماندا بەو شێوەی کە لە شیعری حاجی قادردا دەرکەوتووە.

**٢- تەوەری باس**

هیچ گومانێکی تێدا نییە کە حاجی قادر دڵسۆز و خەمخۆری ڕاستەقینەی خاک و زێد و زمان و فەرهەنگ و کەلەپووری خۆی بووە و تەواوی ژیان و مانی بۆ ئەم ئامانجە تەرخان کردووە. وەک دەڵێن لە پێناو خزمەت کردن بە میللەتی خۆیدا لە پێشەنگی ئەو شاعیر و قەڵەمبەستانەوەیە کە شیعریان لە ڕێی قازانجی گەل و نیشتماندا بەکارهێناوە (الصویرکی الکردی، ٢٠٠٨: ٢/٨). هەر بۆیەیە کە خۆی جەخت دەکاتە سەر ئەوەی کە چیدی بۆ ئاگادارکردنەوە و ڕێ نیشان دان کارێک نەماوە نەیکا:

قوڕی کوێ کەم بە سەر خۆما لە غوربەت! خەوم نایێ لە داخی موڵک و میللەت
(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٢٧)



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ەینی ئەم بە تەنگهاتنەی جارێکی تر دەربڕیوە و گەرچی زەن دەکا کە بەهرەی نابێ بەڵام بەڵێن دەدا کە دەست لە چاکەبێژی و ڕێنوێنیی خەڵک هەڵنەگرێت:

قوڕی کام جێ بکەم بە سەر خۆدا! ئەمە لێم بوویتە عیللەتی سەودا

بە قسەی چاکە دەستیان دەگرم تەرکی ناکەم بە لۆمە تا دەمرم

(کۆیی، ١٣٩٠: ١٩٦)

باسی مێژوو و فەرهەنگ و بنەماڵەی میران یەکێ لە گرنگترین بابەتەکانی شیعری حاجی قادرە کە ناوەناوە لە شیعرەکانیدا پرشەی داوەتەوە. بە پێی گێڕانەوە و بۆچوونی هەندێ لە لێکۆڵەران (بڕوانە: محەممەد، ١٩٧٣: ٦٧) کەم وا هەیە حاجی قادر بە نیسبەتی ڕووداو یا هەواڵێکی پەیوەندیدار بە میرنشینان و بەتایبەت بابانەوە کەمتەرخەم بووبێت. لە ڕوانگەی حاجییەوە کوردستان پێش لە دەستبەسەراگرتنی حکوومەتە زۆرکارەکانی دەوروپشتی، خاوەن قەوارەیەکی دیاریکراوی سیاسیی بووە (مەلاکەریم، ١٣٩٩: ٧٦). حاجی بە شێوەیەکی جیددی گرنگیی بەم بابەت داوە و گوتارێکی بۆ خۆی پێکهێناوە. گوتاری نەتەوەخوازیی حاجی قادر لە ژیانی ڕۆشنبیری و شاعیرێتیی خۆیدا لە سێ قۆناغدا دەرکەوتووە کە ئەو سێ قۆناغە لە بەستێنی سێ چەشنی ئەدەبیی غەزەل و قەسیدە و جووتسەروادا ڕەنگیداوەتەوە (Yaqoobi, 2019: 182). لەو سەردەمەدا نەهامەت و پەشێویی حاڵی کوردستان لە چاوی حاجییەوە بە هۆی نەبوونی ئەو قەوارە سیاسی و حوکمە خۆماڵییەوە بووە (مەلاکەریم، ١٣٩٩: ٧٨). حاجی زۆر هەوڵی داوە کە میرایەتی و سەربەخۆیی هەر بمێنێت و تەنانەت بنەماکانی ئەو چەمکەشی دیاری کردووە کە دوانیان «شیر» و «قەڵەم»ە. ئەوی شیاوی سەرنجە ئەوەیە کە قەڵەم و شیر لە بیر و هزری حاجیدا دوانە و تەواوکەری یەکترن (سیوەیلی، ٢٠١٦: ٢٦٣) بەتایبەت لە پێناو پێکهێنانی ئەو ئامانجە مەزنەدا ئەو دوو ئامرازە بەلایەوە هۆکاری سەرکەوتن و مان و ژیانن. بەڵام مخابن دەڵێ:

شیر و قەڵەم شەریکن لەم عەسرەدا، دریغا شیرم قەڵەمتراشە و کالانییە قەڵەمدان!

(کۆیی، ١٣٩٠: ٩٨)

دیسان لەسەر ئەم مەبەستە جەختدەکاتەوە:

بە شیر و خامە دەوڵەت ئەمن خامەم هەیە شیر نادیارە

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٥١)

حاجی خۆی لە باری هزری و تیۆرییەوە بۆ پێکهێنانی ئەو مەبەستە ئامادەیە، کەچی مەیدانی ڕەهەندی چەکدارییەکەی خاڵی دەبینێت.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

### ۱-۲. ناونیشانی پەیوەندیدار بە حاکمان و میرانی کورد لە شیعری حاجیدا

لە خوێندنەوەی ڕەخنەگرانەی شیعری حاجی قادر لە بواری ئەم بابەتەوە، دەبێ ئاماژە بەوەی بکەین کە ناونیشان و تایبەتمەندیی تاقمێک لە میرانی کورد لە شیعری حاجیدا تۆمار کراون. دیارترین شیعری حاجی کە ئەم سەردێڕەی تێدا هاتبێ، شیعری: «حاکم و میرەکانی کوردستان/هەر لە بۆتانەوە هەتا بابان»ە (کۆیی، ۱۳۹۰: ۲۱۲) کە هەندێ لە بابەتی سەبارەت بە ئەم دوو میرنشینەی خستۆتە ڕوو. شیاوی شرۆڤەیە کە لە شیعری حاجیدا بۆتان و جزیر پەیوەستن پێکەوە؛ واتە میرنشینێک بە ناو میرنشینی جزیروبۆتان لە شیعری حاجیدا شوناسی هەیە. ئینجا کە جزیر یا بۆتان بە تەنیا دێت، هەر هەمان چەمک دەگرێتەوە. لە ئەم شیعرەدا دوو میرنشینی بۆتان و میرنشینی بابان ڕاستەوخۆ دەرکەوتوون (بۆ زێدەتر شارەزابوون لە پێشینە و مێژووی ئەم دوو میرنشینە بڕوانە: بدلیسی، ۲۰۰۶: ۳۱-۳۲ و ۳۵۷-۳۶۵). میرنشینی بۆتان لە شیعرێکی تریدا بە شێوەی «میری جزیروبۆتان» (کۆیی، ۱۳۹۰: ۹۶) هاتووە. لە میرنشینی جزیروبۆتاندا ئەدیب و شاعیری زۆر هەڵکەوتوون؛ شاعیرانی وەکوو عەلی حەریری و مەلای باتەیی و مەلای جزیری و فەقێ تەیران لە نێو جوغرافیای شوێنکاتیی ئەو ئەمارەتەدا ژیاون (أزون، د.ت.: ۹). هەروەها میرنشینی سۆرانیش لەوانەیە کە حاجی ئاماژەی پێکردووە (بۆ زانیاری لە مێژووی کۆنینی ئەم میرنشینە بڕوانە: بدلیسی، ۲۰۰۶: ۳۳۶-۳۵۶):

لە مەجمووعی دووەل سۆران و بۆتان　　　لە سایەی ئەم کتێبە ناسراوە

(کۆیی، ۱۳۹۰: ۱۱۸)

شیاوی ئاماژەیە کە «ئەم کتێبە» مەبەستی کتێبی *مەوزینی* ئەحمەدی خانییە کە لە چەند بەیتدا باسی لێوە کردووە. لە شیعری «خاکی جزیروبۆتان یەعنی وڵاتی کوردان/سەد حەیف و سەد مخابن، دەیکەن بە ئەرمەنستان» (کۆیی، ۱۳۹۰: ۹۳)دا، جگە لە ناوی میرنشینی جزیروبۆتان (بڕوانە: بدلیسی، ۲۰۰۶: ۳۱-۳۲، هەروەها ۱۷۱-۲۰۹)، ناوی میرنشینی بابان (کۆیی، ۱۳۹۰: ۹۶) و میرنشینی ئەردەڵان (بە شێوەی والیی سەنەندەج (کۆیی، ۱۳۹۰: ۹۶) بۆ ئاگاداری لە ڕەگەز و سیمای میرنشینی ئەردەڵان بڕوانە: بدلیسی، ۲۰۰۶: ۱۳۱-۱۴۲)، میرنشینی ڕواندز (بە شێوەی بەگزادەی ڕەواندز (کۆیی، ۱۳۹۰: ۹۶)) هاتوون. میرنشینی بابان لەم بارەوە لە شیعری حاجیدا زۆرترین پاتبوونەوەی بەرکەوتووە؛ بۆ نموونە شیعری شانۆتەوەری «لە ڕۆما کەوتە بەر چاوم کەسێکی هائیم و حەیران/بە هەیئەت تێی-گەییم کوردە، بە شێوەی ئەهلی کوردستان» (کۆیی، ۱۳۹۰: ۱۰۰-۱۰۲) یەکسەر لە دەوری ئەم میرنشینە دەسووڕێتەوە و تێیدا چەند جارێک ناوی بابان هاتووە. میرنشینی ئەردەڵانیش جارێکی تر بە جەخت کردن لە سەر نازناوی میریەتی لە شیعری حاجیدا هاتووە: «موهەلهەل، ئەردەشێر و دەیسەمی شێر/قوباد و باز و میری ئەردەڵانی» (کۆیی، ۱۳۹۰: ۱۵۲).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

حاجی ئاماژەی بە میرنشینی کۆیەش کردووە و بەتایبەتی ناوی قۆچ پاشای لێ هێناوە: «لە قۆچ پاشاوە تا ئێستا ئەمیرێک/لە کۆی پەیدا نەبوو، یاخود وەزیرێک» (کۆیی، ١٣٩٠: ٢٥١). ئاکامی ئەم باسە دەبێتە ئەوە کە بنەماڵەی میرانی بابان، ئەردەڵان، جزیروبۆتان، سۆران، ڕەواندز و کۆیە لە شیعری حاجیدا خراونەتە بەر باس و ئاماژە و ڕەهەندێکی داب و شارستانیەتیان باس کراوە. هەروەها هاتنی وشەی «گۆران» لە شیعری حاجیدا ڕەنگە هێمایەک بێ بۆ ئەوەی کە خەڵکی گۆرانیش سەردەمانێک میرایەتی و فەرمانڕەوایی تایبەت بە خۆیان بووە:

هەر کە تاجی نایە سەر تەختی لە کوردستان دەبێ     خەرج و پیتاکی لە سەر گۆران و سۆران دادەنێ

(کۆیی، ١٣٩٠: ١٨١)

## ٢-٢. ئاماژەی جوغرافیایی بە میرنشینان

حاجی هەندێ وشەی سەرەکیی بۆ ناساندن و باسکردنی میرانی ئاراستە کردووە کە لە دوو توێی ئەم وشەکلیلانەدا ئاقاری جوغرافیایی هەندێ لە میرنشینەکان و بە گشتی هەندێ ڕووی جوغرافیایی و سنووری وڵاتمان بۆ ڕوون دەبێتەوە؛ وەکوو ئەوەی کە لە بەیتی «حاکم و میرەکانی کوردستان/هەر لە بۆتانەوە هەتا بابان»، لە قاڵبی خواستنێکی ئاراستەییدا، باسی جوغرافیاشی تێ ئاخنیوە؛ چونکە کاتێ ئاماژەی «بەرەو»، واتە دیاری کردنی لایەنی تێدایە، لە زاتی خۆیدا مەبەست و چەمکێکی جوغرافیایی لەخۆگرتووە و دەوروبەری بۆتان هەتا دەوروبەری بابان دەخاتە ژێر ئاماژەکەی. جارێکی تر عەینی ئەم سنووردارکردنە لە شیعری حاجیدا دەبینین کە گەرچی لە باسی شاعیراندایە، بەڵام بە هەر شێوەیەک جوغرافیای فەرهەنگیی کوردمان بۆ ڕوون دەکاتەوە:

سادە هەر ناویان بکەم ئیملا     ئەم کتێبە بچووکە بەش ناکا
هەر لە شیرازەوە هەتا بابان     پاکی یەک نەزمە پێی دەڵێن گۆران
هەر مووسڵ هەتا حەددی بابان     بەیتیان کردووە وەکوو جافان
بەسیە بێ عاری ئەی گەلی خزمان!     لەم هەموو بەیتی میللەتی خۆمان
ئەگەر ئێمە و سنە و سولەیمانین     ناوی یەکیان بە چاکی نازانین

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٢٣)

حاجی لێرەدا باس لە زۆربوونی تەنانەت ناوی ئەو کەسانە دەکات کە لەم دیوانە شیعرەیدا ناگونجێت. ئینجا سنوور دیاریدەکات و لە گرنگی‌نەدان و کەمتەرخەمیی گەلی کورد گلەیی دەکات. شیاوی لێکدانەوەیە کە وەکوو چۆن لە شەرەفنامەدا میرشەرەفخان (٢٠٠٦: ٢١) سنوورمان بۆ دیاری دەکات، حاجیش هەر بەو شێوازە لە شیرازەوە هێڵێکمان بۆ ڕادەکێشێ کە جوغرافیای فەرهەنگیی زمان و وێژەی کوردیمان بۆ نەخش بکات. هاوکات گلەوگازندەشی لە خەڵک، خۆشی لەگەڵدا بێ، لە بیر ناچێ کە ئەو هەموو بەرهەمە ئەدەبییە ناوودەنگێکیان لە ناودا نەماوە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

### ٣-٢. تایبەتمەندی و وەسفی میرانی کورد

حاجی قادر گەورە و خانەدانی کوردی بە ئازا و بەجەرگ و دلێر وەسف کردووە و زۆر جار بۆزێدەڕۆیی هەندێ لەم تایبەتمەندییانەی لە شیعری خۆیدا پاراستووە. وەک چۆن لە شیعری شانۆشێوەی «لە ڕۆما کەوتە بەر چاوم کەسێکی هائیم و حەیران»دا میران و حاکمانی بە «پڵنگ و شێری ئازا» ناوبردووە:

لە پێشا خاکی مە لانەی پڵنگ و شێری ئازا بوو

ئەمێستا مار و مێروو، گورگ و ڕێوی لێی دەکەن سەیران

(کۆیی، ١٣٩٠: ١٠١)

وەسفێکی وەها سەبارەت بە میرومەزنانی کورد لە شەرەفنامەشدا هاتووە؛ کاتێ لە باسی میرانی جزیردا بە مەردی و نەبەردی و مەیدانداری و چاپکسواری ناویان دێنێت (بڕوانە بدلیسی، ٢٠٠٦: ١٧١). چەمکی هێز و دەسەڵاتداری و جەربەزەیی لە باسی میرانی بابانیشدا زێدەتر لە هەر شوێنێک هاتووە و لە باسی ئازایەتیشدا دەڵێن ڕۆستەم لە حاندیاندا ناتەوان بووە (هەروەها بڕوانە: هەمان: ٣٥٧). ئەم بەیتە لە وەسفی حاکمانی جێگری حاکمە کوردەکانیش خاڵی نییە و تایبەتمەندی و خەسڵەتی ئەوانیشی بەدەستەوە داوە. هەروەها ئەوی شیاوی باسە، ئەوەیە کە حاجی «ڕابردوو»ەکەی لە بیر نەکردووە و جەختی لەسەری کردۆتەوە؛ بەو واتایە کە مخابن ئەمێستاکە ئەو بارودۆخە نەماوە و ئەو میر و حاکمانە نەیانتوانی لە بەرامبەر ڕەشەبای نەیارانەوە خۆڕابگرن. وەسفی حاجی لێرە سیمای میرنشینی بابان لە وەڵامنامەکەی سالم بۆ شیعرنامەکەی نالیمان دێنیتەوە یاد کە دەیگوت:

لەو ساوە حاکمی، بە ستەم دەربەدەر کران    نەیدیوە کەس لە چیهرەیی کەس جەوهەری هونەر

(سالم، ٢٠١٥: ٣٣٣/١)

ڕەهەندێکی هێژای وەسفی میران و حاکمان کە لە شیعری حاجیدا ڕەنگی داوەتەوە، سیمای شادی و خۆشحاڵی بووە کە لەوانەوە تەشەنای سەندووە بۆ هەموو خەڵک:

لە وەقتی خۆی هەموو شا بوون، سەراپا بێخەم و شا بوون

لە جوودا حاتەمی تایی، لە شەڕدا ڕۆستەمی مەیدان

(کۆیی، ١٣٩٠: ١٠١)

جگە لە شابوون و دەسەڵاتداربوون، بەخشس و کەرەم و جەربەزەیی لە مەیدانی شەڕدا لە تایبەتمەندییەکانی تری ئەو میرومەزنانەیە کە حاجی باسی کردوون. ئەم خەسڵەتە لە نێو بنەماڵەی میراندا زۆرتر لە هەمووان وەپاڵ بابانەکان دراوە و میرشەرەفخان (بدلیسی، ٢٠٠٦: ٣٥٧) حاتەمی تایی لە حاند ئەماندا زۆر بێدەسەڵات و دەسقووچاو دەزانێت.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

هەروەها لە شرۆڤەی زێدەتری ئەم بەیتەدا دەتوانین بڵێین کە گەشاندنەوە و تەمی خەم ڕەواندنەوە وەکوو خەسڵەتێکی ڕەسەن بۆ میرانی سۆران نێوزەد کراوە (بدلیسی، ٢٠٠٦: ٣٣٨).

تایبەتمەندییەکی تر کە حاجی بۆ میرومەزنانی کورد ئاماژەی پێدەکات، دین-پارێزی و مافدارییە:

حاکم و میرەکانی کوردستان          هەر لە بۆتانەوە هەتا بابان
یەک بە یەک حافیزی شەریعەت بوون          سەییدی قەوم و شێخی میللەت بوون

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢١٢)

یا وەکوو لەم شیعرەیدا:

سلامُ اللهِ منّی کلَّ یوم          لە ئەسحابانی ساحیب غیرەت و دین

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٢٧)

کە بەم تەوسیفانەوە دەچێتە سەر باس کردن لە گەورەکانی کورد. لە بەیتی پێشەوەشدا جەختی لە سەر ئەوەش کردووە کە هەموو «شەریعەتپارێز» بوونە. ئەوە لە حاڵێکدا بووە کە حاکم و میرانی ئمپراتووریی عوسمانی بە گورگ و دز و ڕێگر وەسف دەکات و بەم کارەی بەراوردێکی سیفاتی مرۆڤانە و تایبەتمەندیی مرۆڤدۆستی و ئایین-پەروەری لە نێو گەلاندا دەکات:

موقتەزای ئاب و هەوای خاکی دیاری ڕۆمە          ئەهلی سووتاوی مەیە، بەستەیی ئاوازی نەیە

حاکمی ڕێگری مەعموورەیە، قازیی دزی ڕۆژ          وزەرا و وکەلای گورگە، ڕەعییەت گەلەیە

(کۆیی، ١٣٩٠: ١٤٦)

حاجی قادر وێڕای لێدوان و باس کردن لە میران و میرنشینانی کورد، ڕووی ڕاستینەی دەوڵەتی عوسمانیی خستۆتە بەر چاو و پەردەی لە سەر کردە دزێوەکانیان هەڵداوەتەوە (بۆرەکەیی، ٢٠٠٨: ٦٢٨/٢؛ هەروەها بۆ ئەم بابەتە لە شێعری حاجیدا بڕوانە: کۆیی، ١٣٩٠: ٧٨-٧٩، ١٨٠-١٨٤، ١٩٩). لەم شیعرانەی حاجیدا ئێمە چاومان بە بەرزیی ئاستی مرۆڤدۆستی و عەدڵی بنەماڵەی میران بەتایبەت بەرامبەر بە خەڵکانی تر ئاشنا دەبێتەوە. ئەڵبەت نابێ ئەوەشمان لە بیر بچێت کە حاجی قادر بۆ خۆی لە نیشتمانپەروەری و گەل-دۆستیدا لە ڕق و ناحەزی بە نیسبەتی گەلی باڵادەست بەدوورە و نەکەوتۆتە داوی ڕەگەزپەرستییەوە (سیوەیلی، ٢٠١٦: ٢٩٢). حاجی زۆر خولیای ئاوەدانیی وڵات و پێشکەوتنی نیشتمانی خواستووە و ئاواتی ئەوەی لە دڵدا بووە کە نیشتمانەکەی ئەویش بە وێنەی پێتەختی عوسمانی واتە ئەستەمبووڵ گەشە بکات و پێشکەوێت (سوبحان، ٢٠١٨: ٩٧).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خاڵێکی تر لەم بابەتە کە حاجیش زۆر بە لایەوە سەیرە، ئەوەیە کە خەڵکی عێراق بە کورد و نەکوردیەوە زۆرتر بێگانەپەرستن و بە ئاستەم لە دەوری کەسایەتییەکی خۆیان کۆدەبنەوە:

عەجەبا بۆ چی ئەهلی موڵکی عێراق    ئیتتیفاقی بەدەل دەکەن بە نیفاق!

بۆ ئەمیرانی غەیرە دەبنە گزیر    نەک لە خۆیان یەکێکی بێتە ئەمیرا!

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٣٤)

شەڕ و پێکدادان و ناتەبایی لە نێو ئەو خەڵکەدا شتێکی ئاسایی بووە.

هەیبەت و دەسەڵاتی ماددی و مەعنەویی میرانی کورد بەتایبەت لە هەمبەر کەسانێکەوە کە خەڵکیان فریودەدا و قازانجی خۆیان لە سەرووی هەموو شتێکەوە دەدیت، تایبەتمەندییەکی ترە کە لە شیعری حاجیدا هاتووە:

حاکم و میرانی کوردستان    هەر لە بۆتانەوە هەتا بابان

یەک بە یەک حافیزی شەریعەت بوون    سەییدی قەوم و شێخی میللەت بوون

سەیید و شێخەکان لە ترسی ئەوان    مونزەوی بوون و زاکیری ڕەحمان

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢١٢-٢١٣)

حاجی لەم بەیتانەدا جەختی لەسەر ئایینپارێزی و ڕاستیخوازیی میران و حاکمان دەکاتەوە. سیفەتی سەربەخۆیی میرومەزنانی کورد لە شیعری حاجیدا دیاردەیەکی حاشاهەڵنەگرە و بە داخوکەسەرێکی زۆرەوە یادی ئەو ڕۆژانە زیندوو دەکاتەوە:

کوا ئەو دەمەی کە کوردان ئازاد و سەربەخۆ بوون؟

سوڵتانی موڵک و میللەت، ساحیبی جەیش و عیرفان؟

(کۆیی، ١٣٩٠: ٩٦)

**٤-٢. بنەماکانی میرایەتی**

**حاجی هەندێ لە بنەما و دابودەستوورەکانی میرایەتی و مەزنایەتیمان بۆ دیاری دەکات. لەوانە یەکگرتوویی و یەکسانیی هەموو تاکێکی کۆمەڵگایە:**

لەم بەینە ئیتتیفاقێ پەیدا بکەن بە مەردی    فەرقی نەبێ شوان و جووتیار و میر و گاوان

گەر هیچ نەبێ بە ئۆین تابیع بە دەوڵەتێ بن    بێگانە چاکە دوشمن نەک دوشمنی لە خۆتان

(کۆیی، ١٣٩٠: ٩٥)

لە ڕوانگەی حاجییەوە لە هەر بارودۆخێکدا یەکگرتوویی گرنگترین کۆڵەکەی نیشتمان و میللەتە:

ئیتتیحادی بە ئیتتیفاقی ئەنام    سوپەرە بۆ حەوادیسی ئەییام



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(کۆیی، ۱۳۹۰: ۱۹۲)

واتە یەکگرتوویی و یەکڕیزیی هەموو خەڵک لە هەمبەر ڕووداو و کارەساتەکانی ڕۆژگارەوە، وەکوو قەڵغانە و دەیانپارێزێت. دیسان جەخت لەسەر دەور و گرنگایەتیی ئەو یەکگرتووییە دەکاتەوە و دەڵێ:

بۆ ئەگەر دەستی یەکتری بگرن          وەک سکەندەر جیهان هەموو دەگرن

(کۆیی، ۱۳۹۰: ۱۹۲)

حاجی زۆر جار جەختی لەسەر یەکگرتوویی و هاودڵی کردووە؛ بۆیە پێی وایە کە گەر کوردان ئەو دۆزە گرنگە ڕادەست بکەن، وەکوو ئەسکەندەری مەقدوونی دەسەڵاتیان هەموو جیهان دەگرێتەوە.

**٢-٥. دوژمنانی میرومەزنان**

حاجی وەکوو پزیشکێکی شارەزا و حاڵزان و خۆماڵی دەردێکی تری بۆ دیاری کردووین؛ لەوەیدا کە هۆکارێکی کزی و سستیی میرنشینان چی بووە و لە کوێوە سەریهەڵداوە:

عولەمامان بە قەولی بێ سەر و پا     پاکی خنکا لە بەحری وشکی هەوا
سەنعەتێک فێر نەبوون لە پاش تەحسیل     سەیری چۆن بۆ مەناهی بوونە دەلیل!
یەک بە یەک بوونە خائینی دەوڵەت     خائینی موڵک و دوشمنی میللەت

(کۆیی، ۱۳۹۰: ۲۳۳)

حاجی بۆمان دەگێڕێتەوە کە نەزانی و بێکاریی زانایان کە زۆرتر هەندێ شێخ و مەلای مەبەستە و فێرنەبوونی کار و پیشەیەک، بوو بە هۆی کشان بەرەو ڕەزالەت و خراپەکاری و خیانەت بە گەل و نیشتمان.

**٢-٦. میرانی بێناونیشان یا ناونیشانون**

دیاردەیەکی زەق کە لە شیعری حاجیدا بە ڕاشکاوی خۆی دەنوێنێت، داخ و کەسەر دەربڕینە لە نەمان و فەوتانی زانیاری و بابەت و زۆر دیاردە و لایەنی فەرهەنگی و مێژوویی و سیاسی و ئەدەبیی کورد. ئەویش بەس لەبەر نەنووسران و تۆمار نەکران بووە. بۆیە لەو شیعرەیدا کە بە «ئەگەر کوردێک قسەی بابی نەزانی» (کۆیی، ۱۳۹۰: ۱۵۲) دەست-پێدەکات، هۆکاری ئەم فەوتان و لەناوچوون و بێناونیشان بوونە باس دەکات:

کتێب و دەفتەر و تەئریخ و کاغەز     بە کوردی گەر بنووسرایە زەبانی
مەلا و شێخ و میر و پادشامان     هەتا مەحشەر دەما ناو و نیشانی

(کۆیی، ۱۳۹۰: ۱۵۲-۱۵۳)

لێرەدا زۆر زانایانە حاجی ئەم بابەتە دەداتە بەر خەنجەری نەشتەرگەری و شیی-دەکاتەوە. هۆکاری نەمان و فەوتانی میرات و کەلەپوور و زۆر ڕەهەندی مێژووی نیشتمانی و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

میللیمان بۆ تۆمارنەکران و نەنووسین بە زمانی خۆمان دەگەڕێنێتەوە. لەگەڵ ئەوەشدا تانووت دەگرێتە ئەو کەسانە، چ خەڵکی ئاسایی و چ میر و حاکمانی کورد (ئەم بابەتە شیاوی لێکۆڵینەوەیەکی جیاوازە)، کە لە هەمبەر زمان و فەرهەنگی خۆیان کەمتەرخەمن و خولیای ڕاگرتن و پاراستنی میراتی بابوکالیان نییە:

هەر کوردە لە بەینی کوللی میللەت　　بێ بەهرە لە خوێندن و کیتابەت

بێگانـــە بـــە تەرجەمەی زەبـــانی　　ئەسـراری کتێبـی خەڵقـی زانـی

یەکســـەر عولەمـــا، درشـــت و وردی　　نـاخوێننەوە دوو حەرفـی کـوردی

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٥٧)

لە ڕوانگەی حاجییەوە، نووسین و خوێندن بە زمانی زگماک دەبێتە هۆی سەرفرازی، و ژیان و مانەوەی گەل و کەلەپوور دەستەبەردەکات (بڕوانە: سەجادی، ١٣٩٥: ٣٥٠). لەم نێوەندەدا خەڵکی کورد و میران و مەزنانی کورد لە سۆنگەی کەمتەرخەمی و گرنگی‌نەدان بەم بابەتەوە لەتمەی زۆریان لە خۆیان و کەلەپووریان داوە. بانگێشتی حاجی بۆ بەس کردن و کۆتایی هێنان بەم ڕەوتە و وریابوونەوەی جەماوەرە. حاجی لەم بوارەدا وەکوو پەیڕەوێکی ئەحمەدی خانی دێتە ئەژمار؛ چونکە حاجی قادر لە باری فیکری نەتەوەیی و پێشکەوتوویی سیاسییەوە دوای ئەحمەدی خانی (١٦٥٠-١٧٠٦) بە نەفەری دووهەم دادەنرێ و تەنانەت لە چەند ڕەهەندیشەوە پێش خانی دەکەوێت (مەلاکەریم، ١٩٨٩: ٣٧٧). نابێ ئەوەش لەبیر بکەین کە وەک هەندێ لە لێکۆڵەران ئاماژەیان پێکردووە (أوزون، د.ت.: ٢٠) حاجی قادر بە پڕجۆش‌وخرۆشترین پەیڕەوی ئەحمەدی خانی ناوی دەرکردووە.

لە شوێنێکی تردا حاجی دیسان ئەم نەشتەرگەرییە کارناسانەیە دێنێتە ئاراوە و پەنجە بۆ هۆکارە سەرەکییەکە ڕادەکێشێ:

ئەم فەســـیحانە پـــاکی بـــێ‌نـــاون　　باعیســـی پێـــت بڵـــێم: نەنووســـراون

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٢٤)

گەرچی ئەمە لە باسی شاعیراندا دەردەبڕێ، بەڵام بابەتەکەی هەموو تەوەرێکی فەرهەنگی و مێژوویش دەگرێتەوە. داخ و حەسرەتی حاجی قادر لەم بابەتەوە زۆر بەتینە:

گوتی بۆ غوربەت و ڕووتی نییە ئەفغان و هاوارم　　لە داخی حاکمی خۆمە، لە شان و شەوکەتی

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٠٠)

خاڵێکی تر کە حاجی لە بیری نەکردووە و شیاوی لێکۆڵینەوەشە، ئەوەیە کە کورد بەو هەمووە دەردی نەنووسین و نەخوێندن بە زمانی خۆیەوە، توانیویە تا ڕادەیەکی زۆر ئەو سامان و کەلەپوورە دەوڵەمەندە بپارێزێت و هەندێکی بگوێزێتەوە بۆ نەوەکانی دواتر:

ئەمە هەر کوردە لایقی تەحسین　　بێ کتێب و موعەللیم و نووسین

(کۆیی، ١٣٩٠: ٢٢٥)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

بەڕاستی کامە گەل و هۆز لە درێژایی مێژوودا بێ ئەوەی بە زمانی خۆی بخوێنێ و بنووسێ، توانیویە تا ئەو ڕادەیە لە مێژوودا بمێنێتەوە و لە ژێر چەپۆکەسەرێ و تەوژمی لێشاو و تۆفانی ڕۆژگاراندا خۆی ڕابگرێت؟ خاڵێکی گرنگ کە لە ئاماژەکەی حاجیدا هاتووە و ئەم ڕاستییە ناوازەیەمان بۆ دەسەلمێنێ ئەوەیە کە کورد لەم ڕووەوە شیاوی پەسندان و ستایشکردنە.

### ٧-٢. میرومەزنانی کوردی بە ناوی غەیری کوردەوە زەوتکراو

حاجی قادر سەبارەت بە مێژوو و زمان چەند تێبینیی لە شیعریدا بە جێهێشتووە بۆمان. یەکێ ئەوەیە کە ناوی کەسانێک بە شێوازێک باس دەکا کە هەندێ کەس بە کوردی نەزانیون یا مۆرکی کوردبوونیان بەرەو کزی ڕۆیشتبێ:

سەلاحەددین و نووردەدینی کوردی عەزیزانی جزیر و مووش و وانی
موهەلهەل، ئەردەشێر و دەیسەمی شێر قوباد و باز و میری ئەردەلانی
ئەمانە پاکیان کوردن، نیهایەت لەبەر بێ دەفتەری ون و بوون و فانی
(کۆیی، ١٣٩٠: ١٥٢)

جەختکردنی حاجی لەسەر کورد بوونی ئەمانە دەتوانێ بە دوو هۆکار بووبێت؛ یەک ئەوەی کە هەندێ کەس نەیانزانیبێت کە ئەم کەسانە کورد بووبێتن و حاجی بیرئانینێکی بۆ دانابێتن؛ دوو ئەوەی کە فەرامۆش کرابێت و بەتایبەت گەلانی تر بە ناوی خۆیان یا لانی کەم بە ناوی ئیسلامەوە هێندە باسی ئەم کەسانەیان کردبێت کە مۆرکی کوردبوونیان بەرەو کزی و نەمان ڕۆیشتبێت. ئەمە نیشان دەدات کە حاجی شارەزای سەرچاوە مێژووییە باوەڕپێکراوەکان وەکوو شەرەفنامە بووە (بۆ پشتڕاستکردنەوەی ئەم بابەتە بڕوانە: بدلیسی، ٢٠٠٦: ٣٩، ٤١٦). دیسان حاجی نەنووسران و بێدەفتەر و دیوان بوونی کورد بە هۆکاری سەرەکیی ئەم دەردە دەزانێت.

### ٨-٢. میرنشینانی کورد وەکوو کۆڵەکەی مانەوەی دراوسێکان

حاجی قادر هەروەها پەنجەی بۆ بابەتێک ڕاکێشاوە کە ڕەنگە لە زاتی خۆیدا بە چاکە و خاڵێکی بەهێز بناسرێت و بنوێنرێت؛ کەچی کاتێک لێی ورد دەبیتەوە، دیوەکەی تری نەرێنی و هێمای باوەڕبەخۆنەبوون و بەدەردی خۆ نەخواردن دەدا بە دەستەوە. ئەویش کەڵک و فایدەی میرانی کوردە بۆ حکوومەتەکانی دەوروبەریان. لەم بارەیەوە دەڵێ:

لە ڕیزی زەبر و زەنگی وان کەسێکی تر نەبوو بە شیر و حیشمەتی کوردە کە ماوە دەوڵەتی
(کۆیی، ١٣٩٠: ١٠١)

نەک هەر دەوڵەتی ئێران کە لەم بەیتەی حاجیدا ناوی هاتووە، لە چەندین سەردەمی هەستیاری مێژووییدا دەوڵەتی عوسمانیش مان و نەمانی بەستەی میرومەزنان و خانەدانی کورد بووە.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوەی کوردی

### ٣- ئەنجام

بە لێکدانەوەی ڕەنگدانەوەی مێژووی میرانی کورد لە شیعری حاجی قادردا، دەتوانین لە چەند تەوەردا ئەنجامەکەی بخەینە پێش چاو:

- حاجی قادر تا ڕادەیەکی زۆر و بە شێوەیەکی باوەڕپێکراو و بەڵگەمەند شارەزای مێژووی میران و حاکمانی کورد بووە.
- ئەو میرنشینانەی حاجی باسی لێکردوون، ئەمانەن: میرنشینی بابان، ئەردەڵان، جزیروبۆتان، سۆران، کۆیە و ڕەواندز.
- حاجی قادر بە شێوەیەکی نەڕاستەوخۆ ئاماژەی بە پێکهاتەی گۆران وەکوو بنەماڵەیەکی میری کردووە.
- چەند تایبەتمەندی و خەسڵەتی فەرهەنگی و کۆمەڵناسانەی سەبارەت بەم میرنشینانە باس کردووە؛ وەکوو مەردی و نەبەرد و جەربەزەیی، ئازایی و دلێری، دڵاوایی و کەرەم. لەم سۆنگەوە بە کەسانی وەکوو ڕۆستەم و حاتەم وەسفی کردوون.
- هەندێک خاڵی نەرێنی و خەسڵەتی نەشیاویشی لێیان باس کردووە؛ وەکوو نەگریسی و ناتەبایی و بێگانەپەرستی و یەکنەگرتوویی.
- هەندێک ناونیشان و شوناسی کەسایەتییە کوردەکانی سەردەمانی کۆنینی ژیاندۆتەوە.
- حاجی وێڕای دەربڕینی داخ و کەسەرێکی زۆر جەخت لەسەر ئەوە دەکات کە زۆرێک لە بابەتی فەرهەنگی و مێژوویی و ئەدەبیی کورد و کوردستان لەبەر نەنووسران و تۆمارنەکران و بە وتەیەکی تر نەخوێندن و نەنووسین بە زمانی خۆ فەوتاوە.
- چەند هێمایەکی جوغرافیایی بۆ دیاری کردنی سنوور لە شیعری حاجیدا هاتووە.
- میرومەزنانی کورد لە سەردەمانی جیاجیادا پاڵپشت و هۆکاری مانەوە و ژیانی دەوڵەت و حکوومەتانی دراوسێ بوون.

### سەرچاوەکان

#### أ) کوردی


- بدلیسی، میر شەرەفخان (٢٠٠٦). شەرەفنامە. وەرگێڕانی هەژار. چاپی سێهەم، هەولێر: ئاراس.
- بۆرەکەیی، سدیق (سەفی زادە) (٢٠٠٨). مێژووی وێژەی کوردی. بەرگی ٢. چاپی دووەم، هەولێر: ئاراس.

- حەداد، عەبدوڵا محەمەد (٠٠٤). مێژووی شیعر و ئەدەبیاتی کوردی لە شاری هەولێر. گۆڤاری زانکۆی سلێمانی، ژمارە ١٣، بەشی B، لل ١٤٧-١٨٣.
- حیلمی، ڕەفیق (٢٠١٠). شیعر و ئەدەبیاتی کوردی، ٢بەرگ لە یەک بەرگدا، چاپی دووهەم، هەولێر: ئاراس.
- خەزنەدار، مارف (٢٠٠٤). مێژووی ئەدەبی کوردی. بەرگی ٤. چاپی یەکەم، هەولێر: ئاراس.
- دلێر، خالید (١٩٩٨). ستەمکردن لە حاجی قادری کۆیی تاوانە. سلێمانی: سەفوەت.
- سالم، عەبدولڕەحمان بەگ (٢٠١٥). دیوان. ساغکردنەوە و لێکدانەوەی مەلا عەبدولکەریم مودەڕڕیس و فاتیح عەبدولکەریم و محەمەدی مەلاکەریم. بەرگی ١. سلێمانی: ژین.
- سوبحان، کامەران (٢٠١٨). لە خەیاڵەوە بۆ خۆڵ. هەولێر [: بێ ناونیشان].
- سەجادی، عەلائەدین (١٣٩٥). مێژووی ئەدەبی کوردی. چاپی دووهەم، سنە: کوردستان.
- سیوەیلی، ڕێبوار (٢٠١٦). کتێبی حاجی قادری کۆیی. چاپی یەکەم، هەولێر: ئاکادیمیای کوردی.
- سەعید، نەوزادوەققاس (١٩٩٦). بزووتنەوەی شیعری لە کۆیە لە سەدەی نۆزدەهەمدا. نامەی دوکتۆرا، زانکۆی بەغدا.
- کۆیی، حاجی قادر (١٣٩٠). دیوان. لێکۆڵینەوە و لێکدانەوەی سەردار حەمید میران و کەریم مستەفا شارەزا. چاپی یەکەم، سنە: کوردستان.
- محەمەد، مەسعوود (١٩٧٣). حاجی قادری کۆیی. بەرگی ١. بەغدا: کۆڕی زانیاریی کورد.
- مەلاکەریم، محەمەد (١٩٨٩). هەنگاوێکی تر بە ڕێگادا بەرەو ساغکردنەوەی دیوانی حاجی قادری کۆیی. بەغدا: وەزارەتی ڕۆشنبیری.
- مەلاکەریم، محەمەد (١٣٩٩). حاجی قادری کۆیی شاعیری قۆناغێکی نوێیە لە ژیانی نەتەوەی کورد. چاپی یەکەم. سنە: کوردستان.

ب) عەرەبی

- أوزون، محمد (د.ت.). بداية الأدب الكردي. ترجمة دلاور زنكي. [نسخة ألكترونية دون مشخصات النشر].
- الصويركي الكردي، محمدعلي (٢٠٠٨). الموسوعة الكبرى لمشاهير الكرد عبر التاريخ. المجلد ٢. الطبعة الأولى، بيروت: الدار العربية للموسوعات.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ج) English

Yaqoobi, Abdulkhaliq (2019). "The Progressive Process of Kurdish Nationalist Discourse in Haji Qadir Koyi's Poetry". Critical Literary Studies, Vol. 11, No. 1, Autumn and Winter, Pp175-183.

### تجلي تأريخ أمراء الكرد في شيعر حاجي قادر الكويي

**الملخص:**

اهتمَّ حاجي قادر الكويي (1817-1897) كشاعر شعبيّ مثقّف في الأدب الكردي بالتاريخ و الثقافة و التكنولوجيا. فإنَّه قد عُنِيَ فى الفترة الثانية من عمره الشعري بالعلماء و الأمراء و العشراء الكرد و ضبطَ أهمَّ ميزاتهم و خدماتهم. يسعَى هذا البحث في ضوء المنهج التوصيفي – التحليلي إلى العناية بأبعاد شعر حاجي التاريخية ذات العلاقة بأُسرة الأمراء و الحكّام و الفحص عن ميزاتهم و خصائصهم الحكومية و الاجتماعية في غضون أشعاره و يحاول الغور في مصادر حاجي قادر و ينابيع بنات أفكاره. كان حاجي ذا علاقة وثيقة بالصحف و أخبار التكنولوجيا الواصلة من أوروبّا و في خلال ذلك يُشير إلى أنجازات الأمراء الكرد و دورهم في العصور المختلفة و اهتماماتهم بأمر الشعر و الأدب.

**الكلمات الرئيسة:** *حاجي قادر الكويي، التأريخ، الأمراء الكرد، التحليل المقارن.*

### The manifestation of the history of the Kurdish princes in the poetry of Haji Qadir al-Koyi

**Abstract:**

Haji Kadir al-Koyi (1817-1897), as a popular poet who was educated in Kurdish literature, was interested in history, culture and technology. In the second period of his poetic life, he was concerned with the Kurdish scholars, princes, and associates, and identified their most important features and services. This research seeks, in the light of the descriptive-analytical approach, to pay attention to the historical dimensions of Haji's poetry related to the family of princes and rulers, and to examine their governmental and social features and characteristics within his poems, and tries to delve into the sources of Haji Qadir and the springs of his ideas. Haji was closely related to newspapers and technology news arriving from Europe, and in the meantime he referred to the achievements of the Kurdish princes and their role in different eras, and their interests in poetry and literature.

**Keywords:** *Haji Qadir Al-Koyi, history, Kurdish princes, comparative analysis*.

# بررسی جایگاه ایل زعفرانلو در درگیری‌های نظامی و چالش‌های سیاسی عصر افشار

**د. علی رحمتی**
تاریخ/ جمهوری اسلامی ایران

**چکیده:**

به‌رغم همۀ موفقیت‌های نظامی و سیاسی در عرصه‌های خارجی در عصر افشار، درون کشور مملو از کنش‌ها و واکنش‌های ایلات و طوایف مختلف در قالب درگیری‌های نظامی و چالش‌های سیاسی بود.

به نظر می‌رسد ایل زعفرانلو یکی از ایلاتی است که در درگیری‌ها و چالش‌های عصر دولت افشار حضوری جدی و اثرگذار داشته است. بررسی جایگاه ایل زعفرانلو در تحولات نظامی و سیاسی ایران و نتایج حاصل از آن، محور اصلی این پژوهش است. این ایل که از نیرومندترین ایلات کرد خراسان شمرده می‌شد با مجموعۀ کوشش‌های رهبران آن توانست برخی از معادلات سیاسی و نظامی را در مخالفت و سپس در موافقت با حکومت نادرشاه و جانشینانش به‌هم‌ریخته و در نهایت به یکی از متحدان اصلی دولت افشاریه تبدیل شوند.

شاید تاکنون مطالعه و پژوهش قابل استنادی در خصوص نقش پررنگ ایل زعفرانلو در تحولات عصر افشار انجام نشده باشد. در پژوهش حاضر تلاش می‌شود با استفاده از روش توصیفی– تحلیلی و از طریق جستجو در متون تاریخی و اسناد گوناگون این نقش مورد بررسی و تحلیل قرار گیرد. نتیجۀ بررسی‌ها و مطالعات گوناگون در این متون و اسناد تاریخی نشان می‌دهد که طوایف مختلف وابسته به این ایل به‌عنوان والیان، فرمانروایان، سرداران، وزرا و پیش‌قراولان سپاه نادر و جانشینانش به‌خصوص در نبرد با افغان‌ها، عثمانی‌ها و سایر نبردهای خارجی و داخلی، حضوری فعال داشته‌اند. علاوه بر این کردهای زعفرانلو در شورش‌های داخلی همواره در کنار حکومت افشار بوده‌اند و در سرکوب‌ها نقش داشتند.

**کلید واژه‌ها:** *افشار، ایل زعفرانلو، خراسان، کردها، نادرشاه*

**مقدمه:**

تشکیل دولت افشاریه به دنبال هرج‌ومرج‌های ناشی از سقوط سلسلۀ صفویه، یکی از تحولات مهم تاریخ ایران شمرده می‌شود. در نتیجۀ قدرت‌یابی نادرشاه افشار، ایران دوباره اتحاد خود را به دست آورد و توانست انسجام و یکپارچگی خود را حفظ کند. ایلات



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

مختلف و به‌ویژه ایلات ساکن در خراسان، بازوی اصلی نادرشاه در به دست آوردن موفقیت‌های مختلف داخلی و خارجی بودند.

یکی از این ایلات که در تحولات سیاسی و نظامی عصر نادری نقش بسزایی داشت، ایل[1] زعفرانلو و طوایف[2] مختلف وابسته به آن بود. این ایل که به دنبال تحولات سال‌های پایانی حکومت صفویه در گسترهٔ کوهپایه‌های ولایت خبوشان خراسان مستقر شده بودند؛ در سال‌های آغازین حرکت نادر، نخست مخالفتهایی با او نمودند اما با توجه به تمهیداتی که نادر در تعامل با ایلات و طوایف اندیشیده بود، به‌زودی به یکی از متحدان اصلی او تبدیل شدند. مسألهٔ اصلی در پژوهش حاضر این است تا نقش‌وجایگاه این ایل و کوشش رهبران آن در تحولات عصر نادر و جانشیناش مورد تجزیه‌وتحلیل قرار گیرد.

شاید تاکنون در مورد نقش ایل زعفرانلو در تحولات این دوره از تاریخ ایران، پژوهشی مستقل و همه‌سویه صورت نگرفته باشد. منابع عصر افشار از جمله عالم آرای نادری اثرمحمد کاظم مروی، جهانگشای نادری نوشتهٔ میرزا مهدی خان استر آبادی و نیز پژوهش‌های جدید و از آن میان در جلد اول کتاب حرکت تاریخی کرد به خراسان در دفاع از استقلال ایران اثر کلیم‌اله‌توحدی و کتاب ایل‌ها و طایفه‌های عشایری خراسان تالیف سیدعلی میرنیا، به‌صورت کلی نقش کردهای خراسان را در تحولات سیاسی نظامی عصر افشار مورد توجه قرار داده‌اند؛ با این حال تاکنون پژوهشی که اختصاصاً کوشش‌های سیاسی و نظامی این ایل را در درگیری‌های نظامی و سیاسی آن دوره نمایان کند، انجام نشده است. در پژوهش حاضر کوشش می‌شود تا با بررسی منابع اصلی و تحقیقات جدید و به‌ویژه استفاده از اسناد گوناگون شامل فرامین، قباله‌ها و مکاتبات تاریخی، این نقش مورد بررسی و تحلیل قرار گیرد.

**پیشینهٔ تاریخی کردها در خراسان**

تعیین این که کردها دقیقاً از چه تاریخی در خراسان بوده‌اند کار دشواری است. برخی از منابع به وجود کردها در خراسان در قرون نخستین اسلامی اشاراتی کرده‌اند. یکی از اصحاب تحقیق بر این عقیده است که طایفهٔ کرد از اوایل اسلام در خراسان بوده است (شاکری ١٣٦٢، ص. ٥٥). ابومسلم خراسانی را از لحاظ قومی کرد می‌دانند (یاسمی ١٣٦٣، ص. ١٣٦). مسعودی در التنبیه والاشراف، خراسان را در کنار مناطق یکی از سکونتگاه‌های کردها معرفی می‌کند (مسعودی [بی‌تا]، ص. ٧٨). اصطخری هم در کتاب مسالک و ممالک خود در بخش مربوط به خراسان به وجود کردها اشاره می‌کند (اصطخری ١٣٤٧، ص. ٢١٦). ابن حوقل درست همان مطالب استخری را تکرار کرده است. (لسترنج ١٣٣٧، ص. ٤٥٣). این منابع به اتفاق آراء تصریح می‌نمایند که کردهای چادرنشین سرگردان در غرب خراسان بوده‌اند. آنها به سه منطقه برای سکونت این قبایل اشاره



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

کرده‌اند. اولین منطقه شامل مناطقی بیابانی، حدفاصل شهرها و روستاهای قهستان، یعنی ایالت هم جوار کرمان معرفی کرده است می‌نویسد: «سایر شهرهای قهستان که نام بردیم جزء سردسیر می‌باشند و همهٔ شهرها و قرای این ایالت از هم پیوسته نیست. در بیابان‌های میانهٔ شهرها و مسیرها اکراد و دامداران که صاحبان شتر و گوسفند هستند سکونت دارند.» (پاپلی یزدی ۱۳۷۱، ص. ۷۶). همچنین در معرفی ناحیهٔ جوزجان می‌نویسد: « [اندخود] شهر کوچکی است واقع در بیابان که هفت قریه دارد و آن خانه‌های اکراد است که گوسفند و شتر دارند ... در زمستان قشلاق و ییلاق می‌کنند.» (ابن حوقل ۱۳۴۵، ص. ۴۰).

جغرافی‌دانان در هر دو مورد به شیوهٔ زندگی چادرنشینان پرورش دهنده شتر و گوسفند اشاره کرده‌اند و در آن فواصل راه‌های خراسان سخن می‌گوید، می‌نویسد: « از نیشابور تا آخر حد خراسان در طرف قومس قریه الاکراد واقع در نزدیکی اسدآباد هفت منزل و از قریه الاکراد تا دامغان ۵ منزل و از نیشابور تا سرخس ٦ منزل ... .» ممکن است مورد توجه قرار گیرد، اطلاعات «یاقوت» (الحموی الرومی [بی‌تا]، ص. ۲۱). در مورد دژ «جور اقیل» که به عنوان یک محل سکونت کردها قابل توجه است. هرچند از کردها به عنوان گروه‌های قومی در این‌جا یادی نشده است (کولسینکف ۱۳۸۱، ص. ۸٤).

حضور نیروهای کرد در لشکرکشی‌های برخی از شاهان به این ناحیه نیز خود می‌تواند مؤید وجود اکراد در ناحیه خراسان باشد. مثلاً در تاریخ بیهقی آمده است که وقتی سلطان مسعود غزنوی امیرطغرل سلجوقی را در حدود قوچان تعقیب می‌کرد تعدادی کرد در لشکر او بوده‌اند. (بیهقی ۱۳۵٦، صص. ۸۰٤-۸۰۲). نوشته‌های تیمورگورکانی تحت عنوان «منم تیمور جهانگشا» که در مسیر لشکرکشی خود به جانب قوچان به جماعتی برخورد کرده که خود را کرد معرفی کرده بودند (بریون ۱۳۷۲، ص. ۱۵۹).

با توجه به این نوشته‌ها در مورد حضور کردها در خراسان، به نظر می‌رسد کردها قبل از صفویه نیز در خراسان ساکن بوده‌اند.

در اواخر سدهٔ هشتم هجری قمری کلاویخو کشیش و جهانگرد اسپانیایی به قصد دیدار با تیمور گورکانی عازم سمرقند شده، در نزدیکی‌های نیشابور به طوایف کرد برخورد کرده مرکب از چهارصد چادر که به گله‌داری اشتغال داشتند (کلاویخو ۱۳٤٦، ص. ۱۸۸). در این‌جا کلاویخو تصریح می‌کند که این گروه کرد بوده‌اند و بخصوص چون در چند روز بعد در دره تجن به چادر جغتائی‌ها برخورد می‌کند و آن‌ها را توصیف می‌نماید معلوم می‌دارد که گروه‌ها را از هم تمیز می‌داده است (پاپلی یزدی ۱۳۷۱، ص. ۷۸).

ظاهراً این چادرنشینان که در زمرهٔ طوایف کوچ‌رو بوده و در مناطق مختلف ایران و از آن میان خراسان پراکنده بودند (روشنی زعفرانلو ۱۳۸۱، ص. ۱٤۵). در جریان



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لشکرکشی‌ها به جهت استفاده از احشام آن‌ها کوچ داده می‌شوند. در زمان سلطان ابوسعید تیموری نیز هزار خانوار از صحرانشینان کرد را که از ظلم و ستم ترکمنان شمال غربی ایران از هستی ساقط شده بودند به یورت‌ها و چراگاه‌های خراسان کوچانیده شدند (شهبازی ۱۳۶۹، صص. ۵۹-۶۱). این کردان کوچانده شده به خراسان قبل از عصر صفویه به خراسان کوچانده شدند (رحمتی ۱۳۹۶، صص. ۲-۵). قبل از دورهٔ صفویه تعداد معدودی کرد در خراسان بوده‌اند ولی از زمان شاه اسماعیل (و شاه طهماسب) و شاه عباس است که شمار کردان در خراسان افزایش یافته است. از آن جایی که خراسان جزء اولین مناطقی بوده که مورد تجاوز مهاجمان و متجاسران شرقی واقع شده است، پادشاهان صفوی به‌ویژه کردها را به شمال خراسان کوچانده‌اند. بنابراین در شمال خراسان به گروه‌های مختلف قومی و زبانی برخورد می‌کنیم که پدران آنها یا از روی رغبت و یا از روی اجبار به صورت گروهی و برای حفاظت از سرحدات شمالی به این نواحی کوچانده شده‌اند، که بزرگترین آنها کردها هستند (پاپلی یزدی ۱۳۶۷، ص. ۳۶).

شاه اسماعیل صفوی در ایام سلطنت خود ۴۵۰۰ خانوار از طوایف قهرمانلو[۳]، ماميانلو[۴]، پالکانلو و صوفیانلو[۵] را به خراسان کوچاند و در مناطقی از دامنه‌های شاه جهان مرو، شاه جهان خبوشان و هزار مسجد درگز، کلات و درهٔ درونگر (درون) اسکان داد. (پاپلی یزدی ۱۳۷۱، ص. ۷۸). در سال ۹۱۸ ه. ق شاه اسماعیل صفوی یکی از امراء مقتدر خود به نام بیرام بیگ قرامانی (قهرمانلو) را به حکومت خراسان و بلخ منصوب نمود (متولی حقیقی ۱۳۹۰، ص. ۴۳ و ۱۲۴؛ میرنیا ۱۳۶۸، ص. ۴۹).

شاه طهماسب یکم صفوی در سال ۹۶۰ ه. ق منصب امیرالامرائی تمام کردهای داخل ایران را به یکی از رؤسای طایفهٔ سیاه منصوری به نام خلیل خان بیگ داد و گروهی سیاه منصوری را به خراسان کوچاند و در شهرهای اسفراین و مرو اسکان داد (رحمتی ۱۳۷۹، ص. ۱۰۲). ازدیگر گروه‌های مهاجر کرد به خراسان توسط شاه طهماسب کردهای چگنی بودند که درحد فاصل نیشابور و قوچان اسکان داده شدند (رحمتی ۱۳۹۶، ص. ۲-۶). که از نفوذ خاصی برخوردار بوده‌اند؛ به طوری که حاکم خبوشان شخصی به نام اغلان بوداغی چگنی یکی از امرای کرد بوده است (اسکندر بیگ ۱۳۵۰، صص. ۱ و ۱۴۱-۱۳۹).

عصر شاه عباس اول عصر جابه‌جایی ایلات و طوایف است. وی دست به نقل و انتقال بسیاری از ایلات ایران زد؛ از جمله دهها هزار خانوار کرد را به خراسان کوچاند. حضور کردها در خراسان باعث فروکش کردن حملات ازبکان شد. شاه عباس یکم در برابر این خدمات شاه علی خان منصب امیرالامرائی کردها و لقب شاه قلی سلطان را به او داد (متولی حقیقی ۱۳۹۰، ص. ۱۲۴). در سال ۱۰۱۸ ه. ق حکومت الکای هرات و مرو و چهچهه و مهنه و باورد و نساء و درون را نیز به او سپرد و چهل هزار خانوار اکراد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

چمشگزک[٦] را که سه‌سالی در ورامین الکا داشتند کوچانیده در ناحیهٔ مزبوره سکنی داد (اعتماد السلطنه ۱۳۷۳، صص. ۱ و ۱۵۳).

در دوران سلطنت شاه سلطان حسین انحطاط و فروپاشی سلسلهٔ صفویه آغاز شد. براساس کتاب مطلع الشمس برای اولین بار منطقهٔ شمال خراسان در زمان شاه سلطان بین ایلات و طوایف مختلف کرد تقسیم شد.

«در سلطنت شاه سلطان حسین که امور دولت مختل گردید اکراد آخال نشین از تاخت و تاز اورگنجی و بخارائی شوریده روی به کوه و معلق‌های سخت گذاشتند و در آن زمان ولایت قوچان و شیروان و بجنورد و سملقان مسکن طایفهٔ گرایلی بود. اکراد برای اینکه یورتی به جهة خود بدست آورند، بنای زد و خورد را با طایفهٔ گرایلی گذاشتند و در اندک زمانی آن‌ها را از محالات مزبور خارج ساخته، قراخان پسر محراب بیک بن شاه‌قلی سلطان که وکیل اکراد چمشگزک و در معنی ایلخانی این طایفه بود بر این نواحی استیلا یافت و شیروان را یورت قرار داده تمام چهل هزار خانوار اکراد چمشگزک را که زعفرانلو[٧] و شادلو[٨] و کاوانلو[٩] و عمارلو[١٠] و قراچورلو[١١] باشند، در یورت‌های قوچان و شیروان و بجنورد مضافات ساکن ساخت، چنانچه از چناران علیا تا چناران سفلی که در حوالی بجنورد است به زعفرانلو اختصاص یافت. کاوانلو را به سمت مشهد مقدس انداخت و به این معنی که از اول خاک چولای خانه که در شمال مشهد واقع و قلعه یوسف خان که در چهار فرسخی سمت شمال قوچان است امتداد داد، یورت طایفهٔ جانی قربانی باشد و کوه شمال چشمه گل اسب معروف به چشمه گیلاس که کوه عمارت نام دارد و یک سمت آن کلات و درگز است و سمت دیگر جلگه که خط راه قوچان به مشهد در آن واقع است مسکن کاوانلو شود (اعتماد السلطنه ۱۳۷۳، صص. ۱ و ۱۵۳) و عمارلوها در بلوک ماروسک نیشابور (بیت ۱۳٦۵، ص. ۳۸٤). در نواحی میاندشت اسفراین و میامی مابین سبزوار دامغان ساکن شدند (مروی ۱۳٦۹، صص. ۳ و ۹٦٤).

آنچه مهم است، آنست که از دورهٔ صفویه و بخصوص بعد از آن شاه عباس عده‌ای از کردان را به خراسان کوچاند. تعداد کردها و قدرت آن‌ها در خراسان آنچنان مهم شد که در دوره‌ای طولانی از اواخر صفویه، دورهٔ نادری، زندیه و در زمان فتحعلی شاه قاجار بسیاری از جهانگردان و برخی از نویسندگان ایرانی، شمال خراسان کنونی را کردستان یا کردستان شمال شرقی نام نهادند (مروی ۱۳٦۹، صص. ۱ و ۳، ۵۵ و ۵۸ و ٦۰ و ٦۲ و ٦٦ و ۷۷ و ۷۸ و ۸۰ و ۱۱۲۱ و ۱۱۹۳). قلمرو کردستان از چندین دره تشکیل شده است که در حقیقت در شمال سبزوار واقع شده‌اند و از طرف شرق تا هرات امتداد دارد. با طول معادل ۱۰ تا ۱۲ روز راه و با عرض متوسط ۲ تا ۳ روز، قسمت اعظم این منطقه توسط کردان مسکون است (لمبتون ۱۳٦۲، ص. ۲۷۸).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

فریزر می‌نویسد: «اگر از جنوب غربی شهر کنونی گرگان خطی به سمت جنوب کشیده و آن را تا ناحیهٔ بسطام و شاهرود امتداد دهید، تقریباً حدود غربی ناحیه کردنشین را بر روی نقشه معین کرده‌اید که تمامی آن ... به کردستان شمال شرقی اشتهار داشت.» (فریزر ۱۸۲۵م، صص. ۴۲-۴۴).[۱۲]

تمام مورخان و جهانگردانی که از اواخر دورهٔ صفویه تا قاجاریه به شمال خراسان مسافرت کرده‌اند جمعیت این خطه را کرد زبان دانسته‌اند. باید دانست که حتی در زمان صفویه و افشاریه درصد مهمی از این کردان، چادرنشین بوده‌اند. منتهی در طول زمان این درصد کاهش یافته است.

بیشتر کوچندگان کرد به سبب شیوه زندگی عشیره‌ای به نواحی سرسبز خراسان، به ویژه نواحی کوهستان شمال خراسان رفتند و شمار بزرگی از آنها هم که در ده و شهر مسکن گزیده بودند رفته رفته با اقوام ترک، ترکمن و فارس خراسان در آمیختند.

به رغم طبقه‌بندی‌هایی که از ایلات و طوایف کرد می‌توان کرد آنها بر خلاف کردهای ساکن درکردستان عثمانی و ایران صفویه، که عمدتاً سنی بودند، همگی شیعه مذهبند و به عنوان نتیجه‌گیری می‌توان گفت عمدهٔ آنها توسط شاهان صفوی در خراسان اسکان داده شدند.

## اتحادیهٔ چمشگزک [۱۳]

چمشگزک یا چامشگزک نام یکی از ایل‌های بزرگ و امرای حکومتگر قوم کرد شیعه مذهب است (بدلیسی ۱۳۷۷، ص. ۱۶۲). اولیاء چلبی، نام ناحیهٔ تحت قلمرو چمشگزک ها، که به ولایت چمشگزک معروف است در مناطق دیاربکر و جنوب ارزنجان زندگی می‌کردند که امروزه در کردستان ترکیه قرار گرفته اند، آورده است (چلبی ۱۳٦٤، ص. ۲۲۲).

بعد از تاجگذاری شاه اسماعیل اول در تبریز، در سال ۹۱۲ ه. ق حاجی رستم بیگ چمشگزک به خدمت شاه اسماعیل اول رسید. شاه نیز ناحیه‌ای از توابع عراق را در عوض ولایت چمشگزک به او داد (بدلیسی ۱۳٦٤، ص. ۱٦٤). اما همزمان جنگ چالدران مابین شاه اسماعیل اول صفوی و سلطان سلیم اول عثمانی درگرفت و حاجی رستم که در رکاب شاه اسماعیل اول بود کشته شد. عمدهٔ امیران و طوایف تحت نظر اتحادیهٔ چمشگزک به نواحی غربی ایران مهاجرت نمودند (چلبی ۱۳٦٤، ص. ۲۲۲). شاه عباس در سال ۱۰۱۱ ه.ق چهل هزار خانوار از آنها را به منظور جلوگیری از حمله ازبکها به مرهای خراسان کوچاند. از این پس سراسر شمال خراسان در اختیار چمشگزکها قرار گرفت (اعتمادالسلطنه ۱۳۷۳، صص. ۱، ۱۵۹- ۱٦۰).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوە کوردی

براساس نتایجی که از بررسی اسناد و منابع تاریخی به دست آمده، اتحادیۀ چمشگزک از ۵ ایل تشکیل می‌شد، ایل زعفرانلو در رأس آنان قرار داشت.

**ایل زعفرانلو از ظهور صفویه تا استقرار در خراسان:**

ایل زعفرانلو بزرگترین ایل کرد ساکن در خراسان بود. این ایل از جمله ایلات اثرگذار می‌باشد که در شکل‌گیری دولت صفوی نقش اصلی داشته است (سومر ۱۳۷۱، ص. ۱۸۹) و می‌توان از آن به‌عنوان یکی از ۳۲ ایل که بازوان اصلی سلسلۀ صفویه بودند، نام برد (سومر ۱۳۷۱، ص. ۱۹۰). با تاجگذاری شاه اسماعیل اول در تبریز، رستم بیگ نواحی دیاربکر و وان را که در تصرف چمشگزک بود به شاه اسماعیل سپرد (بدلیسی ۱۳٦٤، صص. ۲۱۷-۲۲۰) و با هدایایی رهسپار دربار شاه اسماعیل شد و سپس شاه، حکومت قسمتی از نواحی عراق را به رستم بیگ واگذار کرد و نورعلی خلیفه جانشین رستم بیگ گردید. او مدتی بعد، ستم و تعدی به ایل را در پیش گرفت و جمعی رعیت و امیرزادگان را به قتل رسانید. از این رو مخالفت عمومی مردم با او آغاز شد. ناگزیر چند نفر را نزد رستم بیگ فرستادند تا از او استمداد بجویند. در این اثناء شاه اسماعیل به عزم جنگ با سلطان سلیم، به قصد تصرف تبریز رو به این شهر آورد. حاجی رستم که در یام و محلی از منطقه مرند نزد سلطان سلیم رفته بود، در همان روز با نوه و چهل نفر از مردان صاحب نام ایلش به فرمان سلطان از دم تیغ گذرانده شدند (بدلیسی ۱۳٦٤، صص. ۲۲۰-۲۱۷).

پس از کشته شدن حاجی رستم به دست سلطان سلیم، شیعیان آناطولی (سومر ۱۳۷۱، ص. ۳۳) و جمع کثیری از قبایل ساکن در عثمانی که در آن جا مورد اذیت و آزار قرار می‌گرفتند به ایران مهاجرت کردند (باستانی پاریزی ۱۳۵۷، ص. ۳۳). از جمله ایل چمشگزک که از شیعیان کرد درسیم بودند و در جنوب ارزنجان زندگی می‌کردند؛ تعداد هزار خانوار به خدمت دولت صفوی درآمدند و پس از مهاجرت نقش مؤثری در تشکیل و قوام دولت صفوی داشته‌اند (مینورسکی ۱۳٦۸، ص. ۱۹٦).

موج اصلی مهاجرت کردهای زعفرانلو به خراسان در زمان شاه عباس اول آغاز شد (متولی حقیقی ۱۳۹۰، ص. ٤۲). در اواخر دوران حکومت صفویان و دوران سلطنت شاه سلطان که امور دولت مختل شده بود، طوایف کرد اسکان یافته در درۀ آخال مورد تجاوز شدید ازبکان، ترکمانان، اورگنجی‌ها و بخارایی‌ها قرار گرفتند. با توجه به عدم حمایت کافی دولت از این مرزبانان بی اجر و مزد آنها ناگزیر شدند به مناطق جنوبی‌تر درۀ آخال شوریده در یورت قوچان و شیروان و بجنورد مضافات ساکن شدند. چنان‌که از چناران علیا تا چناران سفلی که در حوالی بجنورد است به زعفرانلو اختصاص یافت (اعتماد السلطنه ۱۳۷۳، صص. ۱ و ۱۵۳).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

قبایل و طوایف کرد زعفرانلو، خبوشان را آباد کردند. مدنیت بیشتر به این طرف میل کرد و شیروان تابع خبوشان شد (اعتماد السلطنه ۱۳۷۳، صص. ۱ و ۱۵۳). این طایفهٔ کرد خراسانی که در قوچان می‌نشینند از طایفهٔ شقاقی آذربایجان محسوب می‌شوند. اکراد ساکن قوچان در شقاقی آذربایجان هم به همین اسم موسوم و معروف هستند (قاجار ۱۳۶۳، ص. ۱۰).

براساس نتایجی که از بررسی اسناد و منابع تاریخی به دست آمده، ایل زعفرانلو از ۳۲ طایفه تشکیل می‌شد که عبارتند از: «باچیانلو[14]، بادلانلو[15]، بریوانلو[16]، پالکانلو، پهلوانلو، پیرانلو، توپکانلو[17]، جلالی، چپانلو[18]، چوکانلو، خالتانلو، دلیکانلو، رشوانلو[19]، رودانلو، زاخوری، زیدانلو[20]، سرحدی، شاطرانلو، شروانلو[21]، شیخ امیرانلو، صوفیانلو، عربگیرانلو، قهرمانلو، کوخ بینیکلو[22]، هودانلو، کم کیلانلو، کیکانلو[23]، بیچرانلو[24]، بیواره‌ای، میلانلو[25]، نامانلو[26] و سیوکانلو.» (رحمتی ۱۳۹۶، صص. ۲، ۱۰-۹۱). طایفهٔ شیخ امیرانلو در رأس آنان قرار داشت.

- **ایل زعفرانلو از سقوط اصفهان تا ظهور نادرقلی افشار**

با حمله افغانان به اصفهان و سقوط سلطنت شاه سلطان حسین صفوی در سال ۱۱۳۵ ه. ق، طهماسب میرزا فرزند او، بعد از فرار از اصفهان با عنوان شاه طهماسب دوم مدعی سلطنت ایران شد. در سال ۱۱۳۶ ه. ق شاه طهماسب، محسن سلطان سیاه منصور را به خراسان فرستاد تا در آنجا با ملک محمود سیستانی و خوانین کرد و ترک تماس بگیرد و پیغام شاه طهماسب را به آنان اعلام کند. ملک محمود سیستانی که بر مشهد حکم می‌راند از پذیرفتن نمایندهٔ شاه طهماسب سرباز زد ولی خوانین کرد و ترک خراسان در خبوشان حمایت خود را از شاه اعلام کردند. شاه طهماسب تصمیم گرفت خود شخصاً روانه شرق گردد. او پس از گردآوری نیرو از گیلان و مازندران به استراباد رفت (مروی ۱۳۶۹، صص. ۱ و ۶). در استراباد فتحعلی خان قاجار با نیروی خود به او پیوست و به مقام سپهسالاری سپاه رسید (متولی حقیقی ۱۳۸۷، ص. ۱۳۷). شاه طهماسب، حسنعلی بیگ معیر الممالک را به خبوشان فرستاد تا در آنجا با کردها و با نادر در ابیورد تماس بگیرد و پیغامش را به آنان ابلاغ کند (توحدی ۱۳۸٤، ص. ۲۷۳).

خراسان به عنوان یکی از مراکز مهم قدرت ولایت پرآشوب و مغشوشی به شمار می‌رفت و با دربرداشتن بسیاری از ایلات و طوایف قدرتمند می‌توانست زمینهٔ مناسبی برای حمایت از شاه طهماسب باشد و همچنین مردم خراسان که به خاندان صفویه وفادار بودند (حزین لاهیجی ۱۳۷۵، ص. ۱٤۱) سبب آمدن شاه طهماسب به خراسان شد. شاه طهماسب در روزهای آخر سال ۱۱۳۸ ه. ق، بعد از ورود به اسفراین به خبوشان رفت (استرابادی ۱۳۶۶، ص.

۷۲٦). در بجنورد نجف قلی خان شادلو (بامداد ۱۳۷۱، صص. ٦ و ۲۷۹) و در گرمخان نجف سلطان قراچورلو با نیروهای خود به او پیوستند (رحمتی ۱۳۷۹، ص. ۷۲). شاه طهماسب با سپاهش در ییلاق کردهای چمشگزک (زعفرانلو) منزل گزیدند (اوری و دیگران ۱۳۷۹، صص. ۷، ٤٦-٤٥). نادر در معیت دو تا پنج هزار سوار کارآمد کرد و ترک که تربیت کرده بود، رهسپار خبوشان شد (حدیث نادرشاهی ۱۳٥٦، ص. ۱٥۸).

حسادت و نگرانی خان قاجار از کردها (اوری و همکاران ۱۳۹۱، صص. ۷، ٤٦-٤٥) به کشته شدن نجف قلی خان شادلو انجامید (استرابادی ۱۳٦۸، ص. ٥۷). قتل خان کرد، خشم کردها را از شاه طهماسب و فتحعلی خان بر انگیخت (قراچورلو ۱۳۷۸، ص. ٦). با رقابت نادر با فتحعلی خان قاجار، کردها متوجه نادر شدند و او را در جنگ مشهد با ملک محمود سیستانی یاری کردند. در جریان سلطه نادر بر مشهد و تسلیم ملک محمود، فتحعلی خان در مشهد به قتل رسید (توحدی ۱۳۸٤، صص. ۲۸٥-۲۸٤). خبر فتح مشهد برای شاه طهماسب مژده بزرگی بود. نادر از سوی شاه طهماسب منصب حاکم خراسان را یافت (قدوسی ۱۳۳۹، ص. ۸۳). مناسبات نادرقلی با شاه طهماسب بر سر ازدواج با دختر سام خان زعفرانلو وکیل کردهای خراسان و حاکم خبوشان قابل دوام نبود، شکاف عمیقی بین نادرقلی و شاه طهماسب پدید آمد (اشرافیان؛ آرونوا ۱۳٥٦، ص. ٦۲). استرابادی می‌نویسد: «نادر پس از فراق از کار مشهد کسی برای عقد گوهر مقصود که سابقاً در یام‌تپه خواهشمند آن معامله شده بودند روانه شد... خفیه در صدر اخلال برآمد شاه طهماسب را به خواستگاری این مطلب ترغیب و به جناب نادری رقیب نمودند.» (استرابادی ۱۳٦۸، صص. ۸٥-۸٤). طهماسب میرزا به خبوشان رهسپار شد، نادر در مشهد تنها ماند. وزیران و اطرافیان طهماسب میرزا برای از بین بردن نادر به کوشش خود افزودند. نادر به محض آگاهی یافتن از این اوضاع و اقدامات طهماسب میرزا با شتاب هرچه تمام‌تر به خبوشان آمد و آنجا را تحت محاصره قرار داد و پس از شکست سختی که به کردهای هوا خواه طهماسب میرزا و وزیرانش در نزدیکی قوچان وارد کرد، شاهزاده چاره‌ای جز آنکه با نادر از درسازش درآید نداشت و حاضر شد که بعد از نادر به مشهد بیاید (قدوسی ۱۳۳۹، صص. ۸٥-۸٤). هنوز مراسم استقبال طهماسب میرزا در مشهد خاتمه نیافته بود، دوباره کردان خبوشان و سکنه کلات و درگز به سرکردگی شکر بیگ باچوانلو علم طغیان برافراشتند و ابراهیم خان برادر نادر را در تنگهٔ ابیورد به محاصره انداختند. نادر به اتفاق طهماسب میرزا پس از محاصره و تصرف خبوشان به ابیورد روی آورد و ابراهیم خان را از محاصره نجات داد و سپس شورشیان را تا درگز تعقیب کرد. بعد از مصالحه نادر با شکر بیگ، نادرعلت شورش را از او جویا شد. طبق نوشتهٔ محمد کاظم او در جوابش گفت: «در بدایت احوال که کسی با تو یار و برادر نبود این غلام در کمال ادارت و اخلاص خدمت نموده، جان‌فشانی و سربازی در



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

راه تو نمودم و به تفصیل الهی که فرمانروای ممالک خراسان شدی ولایت خبوشان را به تصرف خود درآوردی. محمد حسین خان زعفرانلو و رضاقلی بیگ کپنک لو (کوخ بینک لو) که مکرر [با تو] محاربات نموده، در مقام عناد و خلاف درآمدند، به تربیت آنها پرداخته، صاحب اختیاری ولایت را به ایشان عطا فرمودی.» (مروی ۱۳٦۹، صص. ۱ و ۱۰۸). از گفتار شکربیگ باچوانلو پیداست که او خود را همسنگ سام بیگ وکیل کردهای چمشگزک میدانسته، و پس از اشاراتی به خدماتش به نادر از ابتدا تا بهحال که موجب پیروزیها او در فتح خراسان و خبوشان گردید چنین انتظاری نداشت. محمد کاظم مینویسد: «عرض ایشان مطمح نواب صاحبقران افتاده، آنها را به خلاع فاخره و تشریفات ملوکانه از کمر و خنجر طلای مرصع به در و یواقیت سرافراز ساخته، بنا به حقوقگزاری سابقه جبین ایشان را بوسیده، نوازشات از حد فزون نمود... .» (مروی ۱۳٦۹، صص. ۱ و ۱۰۸). در جنگهای خونینی که بین کردهای زعفرانلو و نادر برسر ازدواج با دختر سام خان روی داد، آنها چارهای جز آشتی با نادر نداشتند و سرانجام محمد حسین خان زعفرانلو تدارک همشیرهٔ خود را با نادرقلی دید. به قول محمد کاظم که مینویسد: «با موازی یکصد نفر کنیزان آفتاب سیما و غلامان قمر طلعت یوسف لقا و یک هزار و دویست رأس اسب و یکصد و بیست هزار گوسفند و چهار صد جمازه کوه پیکر که بار آنها تماماً جهاز و اسباب دختر... روانه درگاه صاحبقرانی کرد.» (مروی ۱۳٦۹، صص. ۱ و ۷۹-۷۵). نادرقلی که به آرزویش رسیده بود توانست خوانین کرد ایل زعفرانلو و طوایف آن را با خود متحد کند. محمد کاظم مینویسد: «صاحبقران... و عتبه بوسی شاه عالم پناه مشرف... بعد از فرمان لازمه الاطاعه محمد حسین خان زعفرانلو موازی سه هزار کس به اتفاق شید قلی سلطان و محمد رضا خان بادلو و حاتم خان زعفرانلو روانه دربار عالی نمود که آمده به خدمات اشتغال نمودند.» (مروی ۱۳٦۹، صص. ۱ و ۸۰).

- **اتحاد زعفرانلوها با نادرقلی افشار**

نادر پس از اتحاد با کردها به جنگ افغانها رفت. در جنگ اول نادر با افغانان در سال ۱۱٤۱ ه. ق، بیست هزار کس از سپاهیان کرد و ترک نادر را همراهی کردند (مروی ۱۳٦۹، صص. ۱ و ۹۳). در نبرد دوم نادر با افغانان ابدالی در کافرقلعه طوایف ایل زعفرانلو نقش بسزایی داشتند.

در نبرد مهماندوست که در سال ۱۱٤۲ ه. ق بین نادر و اشرف افغان روی داد، اشرف افغان با شکست فاحشی روبرو شد (پناهی سمنانی ۱۳٦۸، ص. ۸). نادر امرا و خوانین و سران طوایف را که در این پیروزی نقش داشتند مورد شفقت قرار داد. محمد کاظم از رضاقلی خان کوخ بینکلو و محمدرضا خان بادلانلو دو سردار ایل زعفرانلو نام میبرد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(مروی ۱۳۶۹، صص. ۱ و ۱۱۲). نادر پس از اتمام کار اشرف افغان، در سال ۱۱۴۳ ه. ق با سپاهش که عمدتاً خراسانی بودند به سوی غرب شتافت. زعفرانلوها در جنگهای اول و دوم نادر با عثمانی‌ها در ملایر و همدان حضور پررنگی داشتند. در سومین جنگ نادر با عثمانی‌ها، فرماندهی میمنۀ ارتش ایران با سرداران کرد زعفرانلو از جمله رضا قلی خان زعفرانلو بود (مروی ۱۳۶۹، صص. ۱ و ۱۴۰-۱۳۹). در نتیجۀ این جنگ عثمانی‌ها شکست خوردند و تبریز در تاریخ ۲۷ محرم ۱۱۴۳ ه. ق به دست ایرانیان افتاد.

رسیدن خبر طغیان ابدالی‌ها در هرات نقشه نادر را در غرب ایران به کلی به هم زد و او به ناچار باعجله از راه قزوین و تهران عازم خراسان شد. دیگر بار نادر توانست به پشتیبانی ایلات خراسان از جمله طوایف ایل زعفرانلو که محمد حسین خان زعفرانلو در رأس آنان بود، به هرات لشکرکشی کند. در جنگی که در کافر قلعه در نزدیک هرات روی داد افغانان شکست خوردند و به دارالسلطنه هرات عقب نشستند. در این جنگ رضا قلی بیگ کوخ بینگلو فرماندهی سپاه ایل زعفرانلو را عهده‌دار بود (مروی ۱۳۶۹، صص. ۱-۱۷۱) و محمد حسین خان جزء مشاوران ارشد نادر قلی بود (توحدی ۱۳۸٤، ص. ۳۸٤). در ادامه محاصره هرات، مردم هرات ذوالفقار خان را از شهر بیرون رانده، به حکومت اللهیار خان دست نشانده نادر تسلیم شدند.

نادر پس از پایان کار افغانان به مشهد بازگشت، در روز هفتم ۱۱٤٤ ه. ق از مشهد به سوی گرگان حرکت کرد. در روز ورود او به گرگان خبر رسید که روس‌ها گیلان را تخلیه کرده‌اند. بدین ترتیب نادر بیش از دوهزار خانوار از طوایف ایل عمارلو، یکی از ایلات اتحادیۀ چمشگزک را در رودبار و توابع اسکان داد تا سد معبری در برابر روس‌ها باشد (قدوسی ۱۱۳۹، ص. ۲۹۳). انتقال کردهای عمارلو به گیلان به فرماندهی ولی خان عمارلو، برای پاسداری از مرزهای گیلان و مانع شدن از بازگشت مجدد روس‌ها به گیلان انجام شد. ولی خان عمارلو به حکومت رودبار منصوب شد. او پیش از رسیدن به حکومت رودبار در پادگان تهران مستقر بود و امنیت تهران تا قم و اراک را به عهده داشت (توحدی ۱۳۶۸، ص. ۳۷۳). در همین سال بعد از فارغ شدن از روس‌ها، نادر با کنار زدن شاه طهماسب و به تخت نشاندن پسر شیرخواره‌اش شاه عباس سوم، منجر به شورش بختیاری‌ها و کشته شدن احمد خان بختیاری حاکم دست نشانده نادر شد (استرابادی ۱۳۶۸، ص. ۱۱۰). نادر برای خواباندن شورش، قوای زعفرانلو، بیات و جلایر را تحت امر طهماسب قلی خان جلایر، رضا قلی خان کوخ بینگلو و حاجی سیف الدین خان بیات روانه کرمانشاه کرد و خود با سپاهی عظیم روانه تنبیه شورشیان بختیاری شد و آنها را سخت گوشمالی و تسلیم کرد (مروی ۱۳۶۹، صص. ۱ و ۲۴۳). نادر با سرعت به غرب شتافت و بغداد را به محاصره درآورد و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

روابط احمد پاشا را با دربار عثمانی از جانب شمال و جنوب قطع کرد و بغداد را محاصره کرد (شمیم ۱۳۷۳، صص. ۳۴-۳۳).

در سال ۱۱۴۵ ه. ق در جنگ اول نادر با توپال پاشا سردار عثمانی، رضا قلی خان کوخ بینگلو، دولو خان توپکانلو (توحدی ۱۳۶۸، ص. ۹۵۹) و محمد رضا خان بادلو در رأس سپاه ایل زعفرانلو قرار داشتند (مروی ۱۳۶۹، صص. ۱ و ۲۶۱).

در سال ۱۱۴۶ ه. ق در جنگ دوم نادر با توپال پاشا، طوایف ارسانلو، باچوانلو، پالکانلو، بیچرانلو، میانلو، نامانلو از زیرشاخه‌های ایل زعفرانلو نقش داشتند (توحدی ۱۳۸۴، ص. ۹۷۴). در همین سال با شورش محمد خان بلوچ در فارس و خوزستان، نادر سرداران کرد و ترک خراسان را مأمور دفن فتنه محمد خان بلوچ کرد (مروی ۱۳۶۹، صص. ۱ و ۳۴۳). محمد خان بلوچ که هرگز منتظر رسیدن نادر نبود با نخستین حمله سواره نظام ارتش نادر که از کردهای زعفرانلو و مروی و عربهای خزیمه و لالوئی خراسان بودند، درهم شکست و محمد خان به لار گریخت (لارودی ۱۳۷۰، ص. ۱۱۵؛ مروی ۱۳۶۹: صص. ۱ و ۳۴۶). در تعقیب محمد خان بلوچ وی دستگیر و تحویل به نادر شد و در اصفهان به قتل رسید (استرابادی ۱۳۶۸، صص. ۳۰۴-۳۰۳). در همین سال نادر، طهماسب قلی خان جلایر و احمد خان کرد مروی با دوازده هزار نفر از سپاهیان ایلات و طوایف کرد و ترک خراسان به جنگ سرخای خان لزگی فرستاد و پس از شکست، او را به سوی کوه‌های داغستان متواری کردند( مروی ۱۳۶۹، صص. ۱ و ۳۶۹) در ادامه جنگهای قفقاز، طوایف ایل زعفرانلو به فرماندهی جعفر سلطان زعفرانلو مأمور محاصره گنجه شدند (توحدی ۱۳۸۴، ص. ۶۲۷). در سال ۱۱۴۷ ه. ق با تهدید حمله ازبکان و ترکمنان به خراسان، نادرقلی افشار، شیدقلی خان شادلو، محمدحسین بیگ بادلو و دیگر خوانین خراسان را مأمور دفع آنان کرد. استرابادی می‌نویسد: «در سال ۱۱۴۷ ه. ق که نادر مشغول نبرد با عثمانی‌ها در قفقاز بود، ایلبارس خان والی خوارزم، حسین وکیل یموت را با سه هزار نفر از ترکمن‌ها مأمور تاخت و تاز به خراسان کرد؛ این نیروها به دو گروه تقسیم شدند. گروهی به سمت جلگه مانه و گروه دیگر به سمت آلاداغ و سملقان که مسکن طوایف کرد بود حمله کردند. غارت و چپاول این عده باعث شد تا حکام منطقه با جمع‌آوری نیرو در غیاب نادر به جنگ ترکمن‌ها رفته و عدهٔ زیادی از آنها را کشته و اسیر نمایند.» (استرابادی ۱۳۶۸، ص. ۲۴۸). نادرقلی افشار به مناسبت این پیروزی‌ها، فرمانی خطاب به خوانین کرد خراسان صادر کرد و از بابت شکست ترکمنان آنان را مورد عنایت و شفقت خود قرار داد (پیوست سند شماره ۲، ۱۱۴۷ قمری).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوە کوردی

• **نقش و جایگاه ایل زعفرانلو در تشکیل سلسله افشار**

نادر پس از بیرون راندن ترکها و روسها از سراسر ایران و سرکوب کردن شورش‌های داخلی افغانان غلزایی و ابدالی و استراباد و اعاده آرامش و امنیت به مردم مملکت، در حالی که مرزهای قطعی کشور به جز قندهار به حال طبیعی خود درآمده بود (شعبانی ۱۳۶۹، صص. ۱ و ۸۵)، در فکر دستیابی کامل به تاج و تخت برای خویش بود، اما حتی به بهترین و نزدیکترین خویشان و دوستانش هم چیزی بروز نداد. محمد کاظم از نیت باطنی نادر ذکری به میان نمی‌آورد، اما مجموعه عوامل موجود و اقدامات بعدی نشان می‌دهد که چنین تصمیمی با طبع پرماجرای نادر سازگار نیست و در عرف سیاسی هم نمی‌تواند مورد قبول باشد. نادر به خوبی می‌دید که سلاله صفوی، نه تنها قدرت واقعی را از دست داده‌اند، بلکه دیگر درمیان اکثر بزرگان فئودال نیز اعتبار و حیثیتی ندارند (پیکولو سکایا و همکاران ۱۳۵۳، ص. ٦٠٠).

نخستین دعوت‌نامه‌ها به خراسان ارسال شدند، اولین آن برای ابراهیم خان برادر نادر که حاکم مشهد بود، دومی برای سام خان وکیل کردهای خراسان، پدرزن نادر بود و سومی برای طهماسب قلی خان جلایر ارسال شد. آمدن نمایندگان به ویژه از خراسان که بسیاری از آنان سران ایلات و طوایف کرد، ترک و عرب خراسان بودند و از جمله باقر خان سیر سپرانلو حاکم کازرون نام می‌برد (گاتوغی گوس ۱۳٤۷، ص. ۳۲). نادر زمینه را چنان آماده ساخته بود که لکهارت می‌نویسد: «... تمامی عرض کردند که ما را پادشاهی و صاحب اختیاری بدون آن حضرت نمی‌شاید.» (لکهارت ۱۳۵۷، ص. ۱٤٤). اینکه شرکت‌کنندگان در شورای دشت مغان چاره‌ای جز انتخاب نادر نداشتند، موضوعی است که غالب تاریخ‌نویسان معاصر نادر به آن اشاره کرده‌اند. سرانجام با پافشاری نمایندگان ایران در مجلس مغان، عهدنامه‌ای مفصل در این باب تنظیم و مهمور گردید که پادشاهی از این پس به نادرشاه و فرزندان او پشت به پشت باقی بماند و مردم از آن روی‌گردان نشوند (توحدی ۱۳۸٤، ص. ٦٥٦).

نادر پس از تاج‌گذاری در دشت مغان، مینا خان بیواره‌لو را به حکومت قزوین منصوب کرد (توحدی ۱۳۸٤، ص. ۹٤۳). نادرشاه پس از ورود به اصفهان در سال ۱۱٤۹ ه. ق، حاتم بیگ بادلانلو از اعیان و بزرگان زعفرانلو را به ایالت دارالسلطنه اصفهان تعیین فرمود و او به لقب ارجمند خانی سرفراز گردید (مروی ۱۳٦۹، صص. ۲ و ٤۸۱). حاتم خان بادلانلو که مردم اصفهان آرزوی آمدنش را داشتند، برای پشتیبانی از سپاه نادرشاه در لشکرکشی به هندوستان، ۵ هزار من سرب، ۵ هزار تفنگ چخماقی و ۱۲ هزارتومان مالیات تهیه و ارسال داشت (فلور ۱۳۹٦، صص. ۷۸-۸۵). در همین سال نادرشاه سپاهیان ترک و کرد خراسان ازجمله طوایف ایل زعفرانلو را به فرماندهی حاجی خان کرد حمزکانلو، مأمور محاصره



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

قندهار کرد (مروی ۱۳۶۹، صص. ۲ و ٤٨٦). هنگام طولانی شدن محاصره قندهار، زعفرانلوها همچنان در زمره سپاه اصلی ارتش نادر بودند (مینورسکی ۱۳۸۱، ص. ٦۱). در زمانی که حسین شاه افغان در قندهار در محاصره بود، از امیر بلخ کمک خواسته بود و او با سپاهی عازم قندهار و یاری دادن به حسین شاه شد که این خبر به نادرشاه رسید. نادر پسرش رضاقلی میرزا را به فرماندهی ۱۲ هزار نفر خراسانی سروقت بلخ فرستاد. محمدحسین خان زعفرانلو و دیگر امرای خراسانی به همراه رضاقلی میرزا عازم بلخ شدند و با شکست سپاه بلخ، آنجا را تصرف کردند و با گذشتن از جیحون به سوی بخارا پیشروی کردند. رضاقلی میرزا پادشاه ازبک را نیز در آنجا شکست داد و فتوحات درخشانی را به دست آورد اما نادر به او فرمان داد که هر چه زودتر بازگشته و به او ملحق شود (توحدی ۱۳۸٤، ص. ٦٨٩). درهمین سال نادرشاه طی حکمی شاهوردی بیگ را به ریاست طایفۀ صوفیانلو یکی از طوایف ایل زعفرانلو منصوب کرد و او را مأمور تدراکات حمل و نقل و خواروبار ولایات نمود (پیوست سند شماره ۳، ۱۱۵۰ قمری).

پس از فتح قندهار، نادرشاه به هندوستان لشکرکشی کرد. پس از اینکه چندماهی از رفتن نادرشاه به هندوستان گذشت و خبری از او بازنیامد، وسوسه سلطنت رضاقلی میرزا را بیش از پیش به وجدآورد و با سرکردگان ترک و کرد از جمله محمدحسین خان زعفرانلو، شاه طهماسب و شاهزادگان صفوی را در سبزوار به قتل رساند( مروی ۱۳۶۹، صص. ۲ و ۷٦۹).

در سال ۱۱۵۱ ه. ق هنگام جنگ نادرشاه با سپاه محمدشاه گورکانی، آرایش جنگی ارتش ایران در چهارستون بود که ستون چهارم سواران گارد شاهی و کوهستانی‌های کلات و کردهای زعفرانلو بودند (هنوی ۱۳۶٥، ص. ۲۰۲). نادرشاه پس از شکست محمدشاه گورکانی وارد دهلی شد. در فتح‌نامه هندوستان که از هند برای پسرش نایب‌السلطنه ارسال داشته از نقش کردهای خراسان، از جمله صفی خان چپانلو یکی از طوایف زعفرانلو در پیروزی ارتش ایران نام می‌برد و می‌نویسد: «... بالاخره صفی قلی خان چمشگزک چپاولو از نیزداران زعفرانلو خود را به ناصرخان مذکور رسانیده او را مجروح نموده و به خدمت بندگان اقدس ما حاضرنمود... .» (حدیث نادرشاهی ۱۳۵٦، ص. ۱۱۱). درهمین سال حاتم خان با توجه به اینکه مردی لایق و درستکار بود، بعد از کشته شدن ابراهیم خان به دست لزگی‌ها توسط رضاقلی میرزا، از حکومت اصفهان معزول گردید (هنوی ۱۳٤٦، صص. ۱۸۳-۱۸٤).

نادرشاه هنگام بازگشت از هند به هرات آمد و برای لشکرکشی به ترکستان، اولین مأموریت را به سران کرد و ترک خراسان داد (مروی ۱۳۶۹، صص. ۲ و ۷۸۷) و پس از



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شکست سپاهیان ابوالفیض خان پادشاه ازبک و ایلبارس خان والی خیوه، ترکستان و خوارزم را به ایران ملحق کرد (لکهارت ۱۳۵۷، صص. ۲۳۶-۲۳۷).

در سال ۱۱۵۵ ه. ق هنگامی که نادرشاه در داغستان مشغول جنگ با لزگی‌ها بود، ازبکها در بلخ به رهبری عصمت الله خان و یک پیشوای مذهبی شورش کردند. نادرشاه، محمدحسین خان زعفرانلو حاکم خبوشان و برادرش الله وردی خان را مأمور دفع شورش کرد (لارودی ۱۳۷۰، ص. ۲۲۳) و پس از شکست شورشیان، عصمت الله پادشاه ترکستان کشته شد و درویش مذکور دستگیر و سیاست شد (استرابادی ۱۳۶۸، ص. ۳۸۰).

در سال ۱۱۵۸ ه. ق نادرشاه از دوصبیه (دختران) محمدحسین خان زعفرانلو را به عقد امام قلی میرزا پسر کوچک خود و یکی را به ابراهیم خان پسر کوچک برادر، درآورد (حدیث نادرشاهی ۱۳۵٦، ص. ۳۳).

نادر شاه در پایان سال ۱۱۵۹ ه. ق کهلاً تعادل روحی خود را از دست داده بود و از هیچ ظلم و ستمی برای گرفتن مالیات از مردم ایران خودداری نمی‌کرد. نویسندگان کتاب دولت نادرشاه افشار آورده‌اند که: «نادرشاه مالیات سنگینی در حدود ٤۰۰ الف به چادرنشینان خبوشان بست. خان‌های کرد یعنی محمد جعفر خان مژدکانلو و ابراهیم خان کیوانلو و غیره که در قشون نادر خدمت می‌کردند، پنهانی با یکدیگر قرار گذاشتند که همراه با سپاهیان خویش به خبوشان بگریزند و چنین کردند و در قوچان به محمد حسین خان پیوستند. دامنه قیام وسعت گرفت و تلاش برای سرکوبی آن به نتیجه نرسید. کردهای قیام کننده کار خود را بر دفاع محدود نکرده، غالباً به قشون شاه نیز حمله می‌کردند گله‌های اسبان شاه را می‌ربودند و آنها را در کوهها پنهان می‌کردند.» (مروی ۱۳٦۹، صص. ۳ و ۱۱۹۳).

با مرگ نادرشاه در سال ۱۱٦۰ ه. ق خوانین ایل زعفرانلو از جانشینان نادرشاه جهت تداوم سلسلهٔ افشاریه حمایت نمودند. بر اساس نتایجی که از بررسی اسناد و منابع تاریخی به دست آمده است، از مجموعه ۳۲ طایفهٔ ایل زعفرانلو، هجده طایفه در تشکیل و استقرار سلسلهٔ افشاریه نقش داشتند.

- **نقش و جایگاه ایل زعفرانلو در تداوم سلسله افشاریه**

با مرگ نادرشاه در سال ۱۱٦۰ ه. ق، کردان زعفرانلو به علیقلی خان پیوستند. اقدامات علیقلی خان در کشتار بازماندگان نادرشاه، کردان را خشمگین کرد و آنها را که در سلطنتش ذی‌دخل بودند به تمرد واداشت (بازن ۱۳٦۵، صص. ۵۳-٥٤). به سبب مخالفت کردان زعفرانلو، عادل شاه همراه شاهرخ به خبوشان رفت تا او را شفیع قرار دهد (مرعشی



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

۱۳۶۲، ص. ۹۷). اما کردان آنان را به شهر راه نداده ناامید بازگرداندند. علیقلی خان نیز با ستیز با آنان برخاست (گلستانه ۱۳۵٦، ص. ۲۲).

هنگامی که علیقلی خان از مازندران برای سرکوبی برادرش ابراهیم میرزا راهی غرب شد شاهرخ میرزا درخراسان به معاونت کردان چمشگزک به سلطنت نشست (مرعشی ۱۳۶۲، ص. ۹۸).

ابراهیم خان بعد از پیروزی برعلیقلی خان، برادرکوچکش حسین بیک و محمدرضابیگ قراچورلو را به خراسان فرستاد تا شاهرخ را متقاعد کنند در اصفهان تاج‌گذاری نماید. خوانین و سرداران خراسان از جمله زعفرانلو مخالفت کرده، رفتن شاهرخ به جانب عراق صلاح ندانسته و اعلام کردند اگر ابراهیم خان برعقیده خود صادق است می‌تواند در این مراسم در مشهد شرکت کند (قدوسی ۱۳۳۹، ص. ٤۱٥). ابراهیم میرزا که تیر تدبیر خود را خطا دید، نیت خود را آشکار کرد. در تبریز به تخت نشست و در جنگی که در حوالی سمنان بین سپاه او و سپاه شاهرخ روی داد، ابراهیم میرزا شکست خورد و بعد به قتل رسید. در این جنگ کردان زعفرانلو جانب شاهرخ را گرفتند (مفتون دنبلی ۱۳٥۰، صص. ۱-۳).

وقتی کار سلطنت شاهرخ یکرویه شد، میرزامحمد را به خراسان فراخواند. چون نیت قتل او را کرد مخالفت عمده ایلات و طوایف خراسان و از جمله زعفرانلوها را برانگیخت که به خلع او از سلطنت و به تخت نشاندن میرزا محمد انجامید (مرعشی ۱۳۶۲، ص. ۱۱۰). وقتی امیر علم خان خزیمه به امر میرزا محمد، شاهرخ را دستگیر و نابینا کرد (متولی حقیقی ۱۳۸۳، ص. ۱۲۷) خشم کردهای زعفرانلو را برانگیخت. آنها از درگز و شمال خبوشان حرکتکرده به فرماندهی جعفرخان کرد میلانلو حاکم چناران، میرزا محمد را دستگیر و نابینا نموده و به جای شاهرخ به زندان افکنده و شاهرخ را بیرون آوردند و به تخت نشاندند (توحدی ۱۳۹٦، ص. ۲۱٤).

در سال ۱۱۶۳ ه. ق، وجود نفاق و اختلاف میان سران خراسان، احمدشاه درّانی هرات را پس از نه ماه محاصره متصرف شد و به‌سوی مشهد روانه گردید. به نظرمی رسد احمد شاه درّانی به پیشنهاد امی رعلم خان عرب عزم تسخیر خراسان را کرد (حسینی جامی ۱۳۸٤، ص. ۱٦۳). با مقاومت سخت کردان زعفرانلو مواجه شد (حسینی خاتون آبادی ۱۳٥۲، ص. ٥۷۰). امیرعلم خان با استفاده از موقعیت و اتحاد با بعضی از امرای کرد توانست درجنگی که در کنار مشهد با جعفرخان میلی زعفرانلو نمود، او را دستگیر و نابینا و زندانی ساخت. امیرعلم خان به دنبال این پیروزی‌ها همشیرۀ دولی خان شادلو حاکم بجنورد را به همسری خویش درآورد. درحالی‌که بعضی از امرای کرد با وی درحال جنگ بودند (توحدی ۱۳۹٦، صص. ۱ و ۲۱٥). در سال ۱۱٦۷ ه. ق احمدشاه درّانی برای بار دوم متوجه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرى زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردى

خراسان و مشهد شد.کردان که از برخورد امیرعلم خان با جعفر خان کرد ناراضی بودند، اطراف او را رها کردند و او را به قتل رساندند (متولی حقیقی ۱۱۸۳، ص. ۱۲۹).

احمد شاه پس از تسلیم کردن دولت و بازماندگان نادرشاه برآن شد تا خوانین کرد را نیز سرکوب کند. وی در این راستا به آبادی گناباد در نزدیکی مشهد برای سرکوبی عوامل جعفرخان کرد، سپاهی فرستاد که کاری از پیش نبردند و مجبور به عقب‌نشینی شدند. اما در یورش بعدی شش هزار تن از نیروهای افغانی غفلتاً برسر جماعت کرد ریخته قریب به ده هزار نیزه سر از کردان به اردوی احمدشاهی بردند (گلستانه ۱۳۵٦، ص. ۳۱).

رقابت دو فرزند شاهرخ، نادر میرزا و نصرالله میرزا باعث پریشانی اوضاع خراسان شده بود. خوانین زعفرانلو جانب نصرالله میرزا را گرفتند. احمدشاه با آگاهی از این تحولات خراسان، آخرین سفر جنگی خود به خراسان را در سال ۱۱۸۳ ه. ق آغاز کرد و مشهد را به محاصره درآورد. محاصره مشهد به علت مقاومت‌های جانانه سپاه کردهای خراسان از نصرالله میرزا به درازا کشید. اما با رفتارهای ناهنجار شاهرخ میرزا با خوانین کرد، کردها از وی رنجیده شده از او جدا گشتند و به مساکن خود بازگشتند که باعث تن‌دادن شاهرخ به مصالحه با احمدشاه افغان شد (توحدی ۱۳۹٦، صص. ۱ و ۲۱۱).

چندی بعد شاهرخ میرزا طبق نقشه، نصرالله میرزا را نزد کریم خان زند به شیراز فرستاد. او بعد از مرگ کریم خان، به خراسان بازگشت و مورد پشتیبانی ممش خان کرد زعفرانلو قرار گرفت و وارد مشهد شد. نادر میرزا با شنیدن این خبر با سپاهیان افغان به مشهد حمله کرد (غفاری ۱۳٦۹، صص. ٦۳۸- ٦٤۱). نصرالله میرزا با کمک و موافقت ممش خان به جنگ با برادر پرداخت و بر وی فاتح گردید. نادر میرزا به شهر توس فرار کرد (قدوسی ۱۳۳۹، ص. ٤۳۵).

در سال ۱۲۰۰ ه. ق پس از فوت نصرالله میرزا، شاهرخ، نادر میرزا را به مشهد فراخواند و به نیابت سلطنت خویش منصوب نمود، ولی ممش خان زعفرانلو اجازه نداد که نادر میرزا یک شب را با این منصب به سحر برساند. وی شبانگاهان به مشهد تاخت و آن شهر را از چنگ نادر میرزا خارج ساخت و خود تا ۵ سال حاکم بلامنازع این شهر بود (ملکم ۱۳٦۲، صص. ۲ و ۳۱۸).

در سال ۱۲۱۰ ه. ق با نزدیک شدن خان قاجار به خراسان، بسیاری از حکام و خوانین محلی این ایالت به اردوی او ملحق شدند (خسروی ۱۳٦٦، صص. ٦٦- ۷۳). با مرگ آقامحمدخان در سال ۱۲۱۱ ه. ق، ممش خان زعفرانلو از نادر میرزا حمایت و مشهد را متصرف شد (شمیم ۱۳۷۳، ص. ۲۳۰). در اواخر سال ۱۲۱٤ ه. ق فتحعلی شاه قاجار برای



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

تصرف خراسان به آن منطقه لشکر کشید و پس از اینکه نادر میرزای افشار اظهار اطاعت کرد، ممش خان کرد زعفرانلو با او صلح نمود و به تبعیت دولت قاجار درآمد.

**نتیجه‌گیری:**

بررسی مجموعهٔ منابع، پژوهش و نیز اسناد تاریخی عصر افشاریه نشانگر این واقعیت است که ایلات و طوایف متعدد خراسان در تشکیل و سپس تحکیم حکومت افشاریه، نقش‌اساسی داشته‌اند. در میان این ایلات و طوایف، ایل زعفرانلو به عنوان یکی از بزرگترین ایلات پنجگانه کردهای خراسان در زمرهٔ متحدان اصلی نادرشاه و جانشینانش بوده‌اند و همواره در جنگ‌ها و لشکرکشی‌های نادر با عثمانی‌ها، هندوستان و قفقازیه نقش پیش‌قراول داشته‌اند.

کردهای زعفرانلو در شکست ملک محمودسیستانی در مشهد، افغانان ابدالی در هرات و نبردهای چهارگانهٔ نادر با اشرف افغان، جنگهای سه‌گانه با عثمانی‌ها و نیز در لشکرکشی نادر به هندوستان و داغستان با همراهی هزاران نفر نیروی آمادهٔ خود حضور فعال داشته‌اند. علاوه بر این ایل زعفرانلو در سرکوبی محمدتقی‌خان شیرازی در فارس، لزگی‌ها در داغستان و پیرمحمدخان در بلوچستان و تداوم سلسله افشار نقش نمایانی ایفا کرده‌اند. محمدحسین خان زعفرانلو، شکربیگ باچوانلو، رضا قلی خان کوخ بینکلو، محمدرضا خان بادلانلو، حاتم خان، ولی خان عمارلو، محمدحسین بیگ بادللو، شاهوردی بیگ صوفیانلو، صفی چپانلو، نوروز خان باچوانلو، محمد صادق خان میلانلو و ... در زمرهٔ مهم‌ترین صاحب منصبان و متحدان نادر از ایل زعفرانلو بوده‌اند. نادر نیز در برابر این همکاری‌های ایل زعفرانلو حکومت مناطقی چون قفقاز، اصفهان، فارس، خوزستان، قزوین، آذربایجان و ولایات خبوشان، رادکان، سبزوار، مشهد در ایالت خراسان را به سران این ایل سپرد. امروزه گروههایی از کردهای زعفرانلو در مناطقی چون گرجستان، افغانستان، هندوستان، آذربایجان و ایالتهای مرکزی ایران حضور دارند که در نتیجهٔ سیاستهای نادر در این مناطق اسکان داده شده بودند.

**کتابنامه:**

**الف. کتابهای فارسی**


ابن حوقل، محمد. ۱۳۴۵، صورة الارض. ترجمهٔ جعفر شعار [تهران]: بنیاد فرهنگ ایران.

استرابادی، میرزا مهدی خان. ۱۳۶۶، دره نادری تاریخ عصرنادرشاه. به اهتمام سید جعفر شهیدی. چاپ دوم، تهران: انتشارات علمی و فرهنگی.

استرابادی، میرزا مهدی خان. ۱۳۸۸، فرهنگ ترکی به فارسی سنگلاخ. مقدمه، تصحیح و تحشیه دکتر حسین محمدزاده صدیق، تبریز: یاران.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

اسکندر بیگ ترکمان. ۱۳۵۰، عالم آرای عباسی. به اهتمام ایرج افشار. ج ۱ و ۲، تهران: چاپ گلشن.

اشرافیان، ک. ز و آرونوا، م. ر. ۱۳۵٦، دولت نادر شاه افشار. چاپ دوم، ترجمه حمید امین [تهران]: انتشارات شبگیر.

اصطخری، ابواسحاق ابراهیم بن محمد الفارسی. ۱۳٦۸، مسالک و ممالک. به کوشش ایرج افشار، ج ۱ و ۲، تهران: توس.

اصطخری، ابواسحاق حق ابراهیم. ۱۳۷۰، مسالک و ممالک. به کوشش ایرج افشار، تهران: بنیاد موقوفات افشار.

اعتمادالسلطنه، محمدحسن خان. ۱۳۷۳، مطلع الشمس. به اهتمام تیمور برهان لیمودهی، تهران: بنیاد موقوفات افشار.

اوری، پیتر و دیگران. ۱۳۹۱، تاریخ ایران کمبریج از نادرشاه تا زندیه. چاپ سوم. ج ۷، ترجمهٔ دکتر تیمور قادری [تهران]: انتشارات مهتاب.

بازن، پادری. ۱۳٦۵، نامه‌های طبیب نادرشاه. ترجمهٔ علی اصغرحریری [تهران]: شرق.

بامداد، م. ۱۳۷۱، شرح حال رجال ایران در قرن ۱۲ و ۱۳ و ١٤ هجری. ج2و4و6، تهران: زوار.

بدلیسی، ش. ۱۳٦٤، شرفنامه بدلیسی. چاپ اول، تهران: انتشارات موسسه مطبوعاتی علمی.

برهان، (ابن خلف) محمد حسین. ۱۳۱۹، برهان قاطع. تهران: موسسهٔ مطبوعاتی فریدون علمی.

بریون، مارسل. ۱۳۷۲، منم تیمور جهانگشا. چاپ چهارم. ترجمهٔ ذبیح الله منصوری [تهران]: کتابخانهٔ مستوفی.

بیهقی، ابوالفضل. ۱۳۵٦، تاریخ بیهقی. تصحیح علی اکبر فیاض، مشهد: دانشگاه فردوسی.

پاپلی یزدی، محمدحسین. ۱۳۷۱، کوچنشینی در شمال خراسان. چاپ اول، ترجمهٔ اصغر کریمی [مشهد]: آستان قدس رضوی.

پناهی سمنانی، ا. ۱۳٦۸، نادرشاه بازتاب حماسه و فاجعه ملی. چاپ اول، بی‌جا: کتاب نمونه.

پیکولوسکایا، ن. و و دیگران. ۱۳۵۳، ازدوران باستان تا پایان سده هجدهم میلادی. ترجمهٔ کریم کشاورز [تهران]: انتشارات پیام.

توحدی، ک. ۱۳۸٤، نادر صاحبقران بر مبنای اسناد خطی. چاپ اول، سنندج: ژیار.

توحدی، ک. ۱۳۹٦، حرکت تاریخی کرد به خراسان. چاپ سوم. ج ۱، مشهد: چاپخانهٔ دانشگاه مشهد.

توحدی، ک. ۱۳٦٤، حرکت تاریخی کرد به خراسان در دفاع از استقلال ایران. ج ۲، مشهد: دانشگاه مشهد.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

چلبی، اولیاء. ١٣٦٤، سیاحتنامه اولیا چلبی، کرد در تاریخ همسایگان (سیاحتنامه اولیاء چلبی). چاپ اول. ترجمه فاروق کیخسروی [ارومیه]: صلاح الدین.
حزین لاهیجی، شیخ محمدعلی. ١٣٧٥، تاریخ و سفرنامه حزین. تحقیق و تصحیح علی دوانی، تهران: مرکز اسناد انقلاب اسلامی.
حسینی جامی، محمود. ١٣٨٤، تاریخ احمدشاهی. به کوشش دکتر غلامحسین زرگری نژاد، تهران: دانشگاه تهران.
حسینی خاتون آبادی، سیدعبدالحسین. ١٣٥٢، وقایع السنین و الاعوام. تصحیح محمد باقر بهبودی، تهران: بی‌جا.
حسینی فسائی، حاج میرزاحسین. ١٣٦٧، فارسنامه ناصری. ج ١ و ٢. تصحیح و تحشیه از منصور رستگار مهتایی، تهران: امیرکبیر.
الحموی الرومی بغدادی، ا. بی‌تا، معجم البلدان. ج ٣، بیروت: دار صادر.
خسروی، م. ١٣٦٦، جغرافیای تاریخی ولایت زاوه (تربت حیدریه). چاپ دوم، مشهد: آستان قدس رضوی.
دهخدا، ع. ١٣٥٦، لغتنامه دهخدا. ج ٢، تهران: چاپخانۀ فرهنگ.
رحمتی، ع. ١٣٩٦، بررسی و شناخت ایلات و طوایف کرد در خراسان. چاپ اول. ج ٢، بجنورد: بیژن یورد.
رحمتی، ع. ١٣٩٤، فرهنگ قومی شهرها و آبادی‌های خراسان شمالی. بجنورد: بیژن یورد.
زرین کوب، عبدالحسین. ١٣٩٠، تصوف ایرانی در منظر تاریخی آن. مترجم مجدالدین کیوانی [تهران]: سخن.
زکی بیگ، محمد امین. ١٣٧١، کرد و کردستان. چاپ اول. ج ٢، ترجمۀ روشن اردلان [تهران]: انتشارات توس.
سومر، فاروق. ١٣٧١، نقش ترکان آناطولی در تشکیل و توسعه دولت صفوی. چاپ اول، ترجمۀ دکتر احسان اشراقی و دکتر محمد نقی امامی [تهران]: نشر گسترده.
سهام الدوله بجنوردی، یار محمد خان. ١٣٧٤، سفرنامه‌های سهام الدوله بجنوردی. چاپ اول. به کوشش قدرت الله روشنی زعفرانلو، تهران: علمی و فرهنگی.
شاکری، ر. ١٣٦٢، اترکنامه تاریخ جامع قوچان. تهران: امیرکبیر.
شعبانی، ر. ١٣٦٩، تاریخ اجتماعی ایران در عصرافشاریه. چاپ دوم. ج ١، تهران: انتشارات نوین.
شمیم، ع. ١٣٧٣، از نادر تا کودتای رضا خان میر پنج. چاپ دوم، بی‌جا: انتشارات مدبر.
شهبازی، ع. ١٣٦٩، مقدمه‌ای بر شناخت ایلات و عشایر. چاپ اول، تهران: نشر نی.
غفاری کاشانی، ا. ١٣٦٩، گلشن مراد. به اهتمام غلامرضا طباطبائی مجد، تهران: زرین.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

فلور، ویلم. ١٣٩٦، حکومت نادرشاه (به روایت منابع هلندی). چاپ اول. مترجم دکتر ابوالقاسم سری [تهران]: انتشارات توس.

قاجار، ناصرالدین شاه. ١٣٦٣، سفرنامه ناصرالدین شاه به خراسان سال ١٣٠٠ قمری. به اهتمام محمدحسن خان اعتمادالسلطنه، تهران: ذرالطباعه دولتی.

قدوسی، م. ١٣٣٩، نادرنامه. چاپ اول، مشهد: چاپخانه خراسان.

کلاویخو. ١٣٤٦، سفرنامه کلاویخو. چاپ دوم، ترجمۀ مسعود رجب نیا [تهران]: ترجمه و نشر کتاب.

کولسینکف، آ. ای. ١٣٨١، ایران در آستانه یورش تازیان. ترجمه م. ر، یحیایی، [تهران]: آگاه.

گاتوغی گوس، آبراهام. ١٣٤٧، منتخب یادداشتها. ترجمۀ عبدالحسین سپنتا و استیفان هانانیان [تهران]: انتشارات وحید.

گلریز، س. ١٣٣٧، مینو درباباب الجنة قزوینی. تهران: دانشگاه تهران.

گلستانه، ابوالحسن. ١٣٥٦، مجمل التواریخ. تصحیح مدرس رضوی، تهران: دانشگاه تهران.

گمنام. ١٣٥٦، حدیث نادرشاهی. تصحیح، تحشیه و تعلیقات از دکتر رضا شعبانی، تهران: دانشگاه تهران.

لارودی، ن. ١٣٧٠، زندگانی نادر شاه پسر شمشیر. چاپ دوم، تهران: انتشارات ایران زمین.

لسترنج. ١٣٣٧، جغرافیای تاریخی سرزمین‌های خلافت شرقی. ترجمۀ محمود عرفان [تهران]: علمی و فرهنگی.

لکهارت، ل. ١٣٥٧، نادرشاه. چاپ دوم. مشفق همدانی، تهران: امیرکبیر.

لمبتون، آن ک. بی. ١٣٦٢، تاریخ ایلات ایران. ترجمۀ علی تبریزی [تهران]: مجموعۀ کتاب آگاه.

متولی حقیقی، ی. ١٣٨٣، افغانستان و ایران، پژوهش پیرامون روابط سیاسی و چالش‌های مرزی از احمدشاه درّانی در ایران تا احمدشاه قاجار. چاپ اول، مشهد: بنیاد پژوهش‌های اسلامی.

متولی حقیقی، ی. ١٣٨٧، خراسان شمالی. چاپ اول، مشهد: انتشارات آهنگ قلم.

مرعشی صفوی، میرزا محمدخلیل. ١٣٦٢، مجمع التواریخ. تصحیح عباس اقبالی، تهران: چاپخانۀ احمدی.

مروی، محمدکاظم. ١٣٦٩، عالم آرای نادری. چاپ دوم. تصحیح محمدامین ریاحی، تهران: نشرعلم.

مسعودی، علی ابن الحسین. بی‌تا، التنبیه و الاشراف. به تصحیح عبدالله اسماعیل العاوی، قاهره: دارالصاوی.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

مفتون دنبلی، عبدالرزاق بن نجفقلی. ۱۳۵۰، تجربه الاحرار و تسلیه الابرار. ج۲-۱. تصحیح حسن قاضی طباطبائی، تبریز: تاریخ فرهنگ ایران.

ملکم، سرجان. ۱۳٦۲، تاریخ ایران. ترجمه میرزا اسماعیل حیرت [تهران]: یساولی فرهنگسرا.

میرنیا، سیدعلی. ۱۳٦۸، ایلها و طایفه های عشایری کردایران. چاپ اول، مشهد: موسسه آموزشی و انتشاراتی نسل دانش.

مینورسکی. ۱۳٦۸، .سازمان اداری حکومت صفوی با تحقیقات و حواشی و تعلیقات. تهران: امیرکبیر.

مینورسکی. ۱۳۸۱، ایران در زمان نادرشاه. چاپ اول، ترجمه رشید یاسمی [تهران]: دنیای کتاب.

هژار (شرفکندی)، ع. ۱۳۸۵، فرهنگ کردی به فارسی هەژار. تهران: سروش.

هنوی، جونس. ۱۳٦۵، زندگی نادرشاه. چاپ سوم، ترجمه اسماعیل دولت شاهی [تهران]: بنگاه ترجمه و نشر کتاب.

یاسمی، ر. ۱۳٦۳، کرد و پیوستگی نژادی و تاریخی او. تهران: امیرکبیر.

ییت، چارلز ادوارد. ۱۳٦۵، سفرنامه خراسان و سیستان. چاپ اول، ترجمه قدرت الله روشنی زعفرانلو و مهرداد رهبری [تهران]: یزدان.

**ب. مقالات:**

روشنی زعفرانلو، قدرت الله. ۱۳۸۱، « طوایف کرد خراسان»، مجموعه مقالات تاریخی، اجتماعی، ادبی، جغرافیائی، زیرنظر سید محمد دبیر سیاقی، *اشراقی نامه*، قزوین: حدیث امروز.

متولی حقیقی، یوسف. ۱۳۹۰، «تاملی پیرامون علل و چگونگی مهاجرت کردها به خراسان»، ماهنامۀ مهاباد، سال یازدهم، شماره ۱۲٤.

**ج. پایاننامه:**

رحمتی، علی. ۱۳۷۹. «نقش ایلات و طوایف بجنورد در دفاع از استقلال ایران»، پایاننامۀ کارشناسی ارشد، رشته تاریخ دانشگاه آزاد اسلامی واحد تهران مرکزی.

**د. نسخه خطی:**

ابن غریب جرمغانی. ۱۱۸۱ ق، دیوان ابن غریب. چاپ نشده،کتابخانۀ شخصی علی رحمتی.

مهرو، سیاوش. بی‌تا، فرهنگ کرمانجی مهرو. چاپ نشده، کتابخانۀ شخصی سیاوش مهرو.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

**ه. اسناد**

سند شماره ۱. سال ۱۱۵۰ ه. ق، (مرکز اسناد ملی ایران، شماره تنظیم ۱۰۸۰۰۲، شماره کارت ۱۳۲، اندازه سند ۵۱*۲۹ سانتیمتر).

سند شماره ۲. سال ۱۱۵۰ ه. ق، کتابخانۀ شخصی کلیم الله توحدی.

سند شماره ۳. سال ۱۱۴۸ ه. ق، برگرفته از کتابهای نادرنامه، نادر صاحبقران و ایلها و طایفه‌های عشایری خراسان: (قدوسی، ۱۳۳۹: ۳۰۷-۳۰۲؛ میرنیا، ۱۳۶۹: ۸۸-۸۶ و توحدی، ۱۳۸٤: ٦٦١-٦٥٨).

سند شماره ٤. سال ۱۱۳۸، کتابخانۀ شخصی علی رحمتی.

**و. منابع لاتین:**

FRASER, J. B, 1825. *Narrative of a Journey into Khorassan in the year 1821 and 1822*. London.

**پیوستها**

[1] ایل (Clan): ایل در جامعۀ عشایری ایران عبارت است از اتحادیه‌ای سیاسی متشکل از تیره‌ها و طوایف عشایری که به اتکای وابستگی‌های خویشاوندی (نسبی،سببی و آرمانی )و یا در برۀ زمانی خاص، بنا به مصالح و ضرورتهای سیاسی و اجتماعی باهم متحد شده و تشکیل یک ایل را می‌دهند. معمولاً ایلات دارای سرزمینی و قلمرو ایلی خاص خود بوده و تحت رهبری و مدیریت شخصی یا سمت ایلخان یا ایل‌بیگی اداره می‌شدند (آشتی ۱۳٦٦).

[2] طایفه (Tribe): طایفه در جامعۀ عشایری ایران عبارت از یک واحد اجتماعی سیاسی متشکل از چند تیره عشایر (در عربی حموله) است و در سلسله مراتب رده‌های ایلی،مهمترین و مشخص‌ترین رده به شمار می رود. در سلسله مراتب اجتماعی عشایر ایران، اکثر طوایف بین ایل و تیره (حموله) قرار می گیرند اما طوایفی نیز وجود دارند که به هیچ ایلی وابسته نبوده و طایفه مستقل نامیده می‌شوند. طایفه یک سازمان اجتماعی- سیاسی دارای ساختار رده‌بندی است. آنان ممکن است یکجانشین، کوچندۀ کامل و یا نیمه کوچنده باشند و یک طایفه چنانچه سازمان سیاسی و اجتماعی خود را حفظ کند، کوچنده یا ساکن باشد، فرقی نمی کند و بازهم «طایفه» محسوب می شود.طایفه در اصل زیر مجموعۀ ایل می باشد که غالباً با هم خویشاوندی دور یا نزدیک دارند و در چند نسل پیش به نیای مشترک می رسند. (تکمیل همایون و بلوک باشی ۱۳۸۸، صص. ۸-۱۵)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوەی کوردی

۱. قهرمانلو (Qahremanlu): افراد این ایل از جنوب آناتولی آمده‌اند. مسکن اولیۀ آن‌ها قره‌مان بوده است (تاج بخش ۱۳۷۳، ص. ۲۵).

۲. ماميانلو (Mamianlu): وجه تسمیه این طایفه، ریشه در نام مامیان یکی از طوایف ساکن در اطراف کوه قره‌جق در محال اربیل دارد (مردوخ ۱۳۷۹، ص. ۱۳) و معنی کردی آن مادربزرگ است (مهرو [بی‌تا]، ص. ۱۳٦).

۳. صوفیانلو (Sufianlu): پیروان فرقۀ صوفی و از حامیان خاندان صفویه بودند (زرین کوب ۱۳۹۰، ص. ۳۸).

٤. چمشگزک (Chameshgazak): اطلاق عنوان چمشگزک که ترکها چاموش می‌گفتند به خاطر داشتن کفش‌های چاروخ بوده است (توحدی ۱۳۸٤، ص. ۹٦۲). در ترکی معنی پا افزار معینی را گویند (استرابادی ۱۳۸۸، ص. ۱۹۵). چموش بر وزن خموش، اسب و استر مخفف چاموش هم است که نوعی از کفش و پای افزار باشد (برهان ۱۳۱۹، ص. ۳۹۳). اولیای چلبی نام ناحیۀ تحت قلمرو چمشگزک، که به ولایت چمشگزک معروف است جمشید گنزک دانسته است، که غلام ثروتمند جمشید، شاه اساطیری ایران آن را بنا کرده بود و بعدها به چمشگزک تغییر یافت و نسب این ایل را به جمشید پادشاه اساطیری ایران می‌رساند (چلبی ۱۳٦٤، ص. ۲۲۲).

۱. زعفرانلو (zafaranlu): اصل واژۀ زعفرانلو، زا خورانلو است، به معنی دارندگان دام‌های چراگاهی، دارندگان خورندگان سبزی و علف و معنی پیروز شدن هم می‌دهد (مهرو [بی‌تا]، ص. ۷۰).

۲. شادلو (Shadloo): وجه تسمیه، شادلو ریشه در نام محمدبن شداد ، سرسلسلۀ شدادیان دارد که در اربیل و گنجه ساکن بودند و تا سال ۵۹۵ هجری قمری حیات خود را ادامه دادند (یاسمی ۱۳٦۳، ص. ۱۸۲).

۳. کاوانلو (Kavanlou): وجه تسمیه طایفۀ کاوانلو ریشه در نام کاوه آهنگر دارد که منسوب به درفش کاوه آهنگر دارد (دهخدا ۱۳٤۱، صص. ۱۳ و ۲۳۵٤).

٤. عمارلو (Amarlu): در زبان کردی کرمانجی "ئامار" یا "آمار" به معنای "انبار و ذخیره" است که منسوب به شهر انبار در نزدیکی مداین می‌باشند (توحدی ۱۳٦٤، صص. ۲ و ۱۹۳).

۵. قراچورلو (Gharachorlo): معنی شمشیر دو لبه دراز است (دهخدا ۱۱٤۱، صص. ۱۱ و ۱۷٤۸) و معنای دیگر آن صاحبان شمشیرهای سیاه آبدیده است (مهرو [بی‌تا]، ص. ۱۱۲).

[۱۲] Fraser, 1825, pg. 42-44



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

[13] Chameshgazak

۱. باچیانلو (Bachianlu): باچیانلو (باچ + یایِ نسبت+ الف و نون جمع+ لو) لو جمع پسوندی است ترکی، که نسبت مالکیت و مکان را می‌رساند و بنابراین هر یک از نام‌های ایلات و طوایف دوبار پسوند نسبت گرفته‌اند، یک بار کردی و یک بار ترکی. پس اصل نام باچ است و بدون تردید صفتی مشهور بود که به این گروه از کردها اطلاق شده است (توحدی ۱۳٦٤، صص. ۲ و ۱٦۳).

۲. بادلانلو (Badelanlu): منسوب به منطقه‌ای به نام "بادل" درکردستان عراق است (هژار ۱۳۸۵، ص. ۳۹).

۳. بریوانلو (Berivanlu): یک واژهٔ کردی است به معنی برادران؛ عجله و شتاب (هژار ۱۳۸۵، ص. ۵۳).

٤. توپکانلو (Tupkanlu): وجه تسمیه توپکانلو معروف به توپان که جمع توپان است و توپ در کردی کرمانجی به معنای انبوهی از جمعیت یا درختان به کار می‌رود. این خود می‌رساند که توپان مرکب از انبوهی از تیره‌های فراوان بوده است (توحدی ۱۳٦٤، صص. ۲ و ۱۷۱).

۵. چپانلو (Chapanlu): چپه، نام یکی از روستاهای دهستان سیوکانلو، بخش مرکزی، شهرستان شیروان است (رحمتی ۱۳۹٤، ص. ۱۵۰).

٦. رشوانلو (Rashvanlu): گلریز در مورد وجه تسمیه این طایفه می‌نویسد: «می‌گویند در اصل رشمه (رشوه) بند بوده و از کثرت و استعمال رشوند شده.» (گلریز ۱۳۳۷، ص. ۸۵۹). توحدی معتقد است رشمه در کردی کرمانجی به طناب ظریف و رنگارنگی گفته می شود که سابق به جای کمربند از آن استفاده می‌شده است (توحدی ۱۳٦٤، صص. ۲ و ٦۷).

۷. زیدانلو (Zeydanlu): نام عشیرهٔ کرد در کردستان است (هژار ۱۳۸۵، ص. ۳۹۳) و نام رشته‌کوه طولانی در شمال بدلیس است و اهالی کرد ساکن این کوه به همین نام نامیده شده‌اند (زکی بیگ ۱۳۷۱، ص. ٦۷).

۸. شروانلو (Sharvanlu): این واژه دگرگون‌شده شیروانلو و ساکنان اولیه شهرستان شیروان خراسان هستند (رحمتی ۱۳۹٤، ص. ۱۸).

۱. کوخ بینکلو (Kookh bineklou): وجه تسمیه کوخ بینکلو همان کوخ در برابر کاخ است. بعضی از مردم عوام کوخ‌نشین‌ها را کلوخ‌نشین می‌گویند، یعنی خورده پاها، رعایا کم بضاعت، مردمانی که با کلوخ و خاک سروکار دارند و از طریق کشاورزی مختصر زندگانی خود را اداره می‌کنند (توحدی ۱۳٦٤، صص. ۲ و ۲۰۱).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ فەکۆلینێن کوردی

٢. کیکانلو (Keikanloo): مسعودی که در قرن سوم هجری می‌زیست، در مروج الذهب به این واژه اشاره دارد و می‌نویسد: «الکیکان ببلاد آذربایجان.» (مسعودی [بی‌تا]، صص. ١ و ٢٦٤).

٣. بیچرانلو (Bicaranlu): ترکیبی از دو واژهٔ کردی و ترکی است، به معنی همراه با سپاهیان به‌کار می رود (مهرو [بی‌تا]، ص. ٢٧).

٤. میلانلو (Milanlu): پیدا نیست که کلمهٔ میلان از "که" یا "چه چیزی" گرفته شده است. برخی از میلانی‌ها می‌گویند: چون مردی میلی نام این را پایه نهاد، از این روز آن را میلان نامیدند و برخی دیگر باور دارند که از مل به معنی کوه گرفته شده است (کلانتری ١٣٤٥، ص. ٢٥٧).

٥. نامانلو (Namanlu): این واژه ریشه در قلعه نامان در ترکیه دارد و بعضی آن را برگرفته از نام غاری معروف به "غه واخه نه مان" یا "غار نه ماه" در کنار روستای نامانلو می‌دانند که در طول سال نه ماه برف دارد (رحمتی ١٣٩٦، صص. ٢ و ١١٦). در کردی سورانی به معنی نهادیم آمده است (هژار ١٣٨٥، ص. ٧٩٦).

## لێکۆڵینەوەی پێگەی عەشیرەتی زەعفەرانلۆ لە ناکۆکییەکانی لەشکەری و کێشە سیاسییەکانی سەردەمی ئەفشاریان

**پوختە:**

وێڕای گرنگی ڕژێم و جێنشینی سیاسی لە جیهانە دەرەکییەکان لە سەردەمی ئەفشاردا، پڕن لە عەشیرەت و مەزهەب و مەزهەب لە چوارچێوەی ڕژێم و کایە سیاسییەکاندا.

لە ڕوانگەی میرساد ئەلزەفەرانلو کە یەکێکە لە نمونە گرنگەکانی سەردەمی دەوڵەت و سەردەمی دەوڵەت، ئامادەبوون و کاریگەرییەکی جددی لە بنەچەی خۆی. سەرۆکایەتی ئەنجومەنی یاسای زەعفەران لە نیزامی ئێران و ئاڵوگۆڕە سیاسییەکان و دەرئەنجامی ئەوەش، میحوەری سەرەکی ئەم ڕەوتە. خەڵکی ئێران، پارێزگاکانی کوردی خوراسان، لە لایەن کۆمەڵێک ڕێبەری ئایینی، کە هاوئاهەنگن لەگەڵ پرەنسیپەکانی هاوکێشە سیاسی و سیستماتیکییەکان، لە ناکۆک و ڕێککەوتن لەگەڵ حکومەتی نادرشان و جانشینەکان لە خۆیدا یەکدەگرن مێژوو، و لە کۆتاییدا، لە کۆتاییدا، لە شێوەی دەوڵەتێکی یەکگرتوو و ڕەسەن.

شەید تەکنون توێژەرێکی زانا و دەسەڵاتدارە، بەتایبەتی لە نوسینی بەرنگ ئیل زافەرانلو، لە سەردەمی گۆڕانکارییەکانی سەردەمی ئەفشار ئەنجامدا. لە ئێستادا پێویست

ناکات کەڵک لە میتۆدی وەسفیی-شیکاری و شێوازی لێکۆڵینەوە لە دەقە مێژووییەکان و ئیسباتەکانی گوناگۆن وەربگیرێت کە نووسینەوەی سەرچاوە و شیکردنەوەی بڕیارەکەیە. دەرەنجام و خوێندنەوەکانی گوناگۆن لەم دەقانە و زنجیرە مێژووییەکانی مەزهەبە جۆراوجۆرەکان و ملکەچییان لەم کتێبەدا بەناونیشانی وەلییان و فەرمانڕویان و سەردەران و وەزیر و پێشقارولان، سەباحێکی دەگمەن و جانشینانش بەتایبەتی لە نەبەرد لەگەڵ ئەفغانییەکان و عوسمانییەکان و نەبەردەکانی دیکە، داشهەندی ناوخۆیی و دەرەکی. جگە لەوەش زەعفەرانی زەعفەران لە کەنارەکانی ناوەوەی حەموارە لە کەناری حکومەتی ئەفشار بۆهەند و لە تابوتخانەی نەقش دەشتەندداپە.
**پەیڤێن سەرەکی:** *ئەفشار، عەشیرەتی زەعفەرانلۆ، خۆراسان، کورد، نادرشاه.*

## The Presidency of the Zaafaranlu Council in the Nizami and Political Councils of the Afshar Era

**Abstract**:

In spite of the importance of the regime and political successions in the external worlds during the Afshar era, they are full of tribes and sects and sects within the framework of the regime and political spheres.

In the view of Mirsad Al-Zafaranlu, which is one of the most important examples of the era of the state and the era of the state, a serious presence and influence of its origin. The Presidency of the Zaafaran Law Council in Iran's regime and political changes and the results of that, the main axis of this trend. The people of Iran, the provinces of the Kurd of Khorasan, are united by a group of religious leaders, who are in harmony with the principles of political and systemic equations, in disagreement and in agreement with the government of Nadershah and the Jansheens in his history, and in the end, in the end, in the form of a united, original state.

Shayid Taknon is a scholarly and authoritative researcher, especially in the inscription of Barrang il Zaafaranlu, during the transformations of the Afshar Anjam era. At present, there is no need to make use of descriptive-analytical methods and the method of investigation in historical texts and attributions of the Gunagon, which is the inscription of the source and the analysis of the decision. Conclusions and readings of the Gunagon in these texts and historical chains of various sects and subordinated to them in this book titled Waliyan, Farmanruyan, Sardaran, Ministers and Peshqarulan, a rare sabbah and Janshinansh in particular in Nabard with Afghans, Ottomans and other Nabardha, internal and external dashhand. In addition, the saffron saffron is in the inner shores of Hamwara in the canary of the government of Afshar Bohand and in the sarcophagus of Naqsh-e Dashtand.

**Keywoords**: *Afshar, Ayl Zaafaranlu, Khorasan, Kurdha, Nadershah*



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

قلمرو ایران در عصر نادرشاه

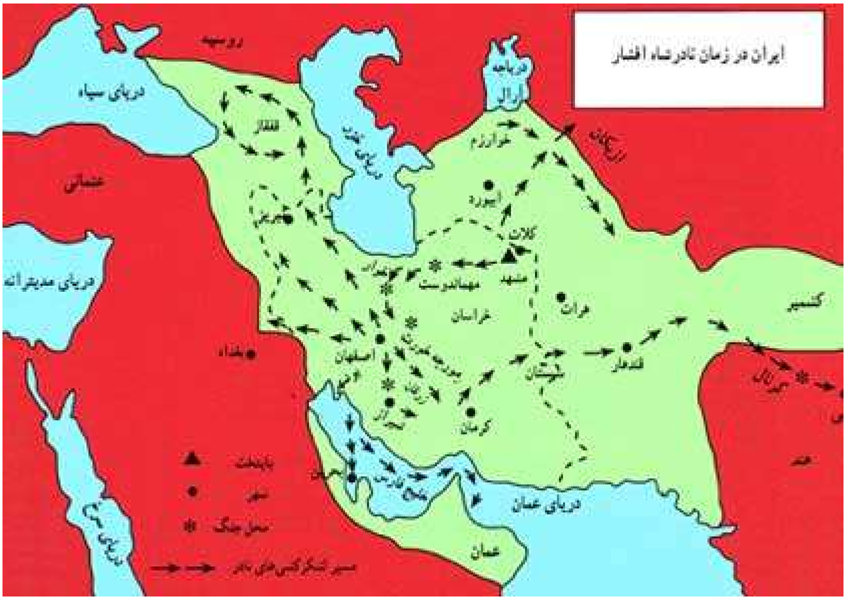


برگرفته از کتاب ایران در دورهٔ آخرین فاتح شرق (نادرشاه)

تصویر ۱

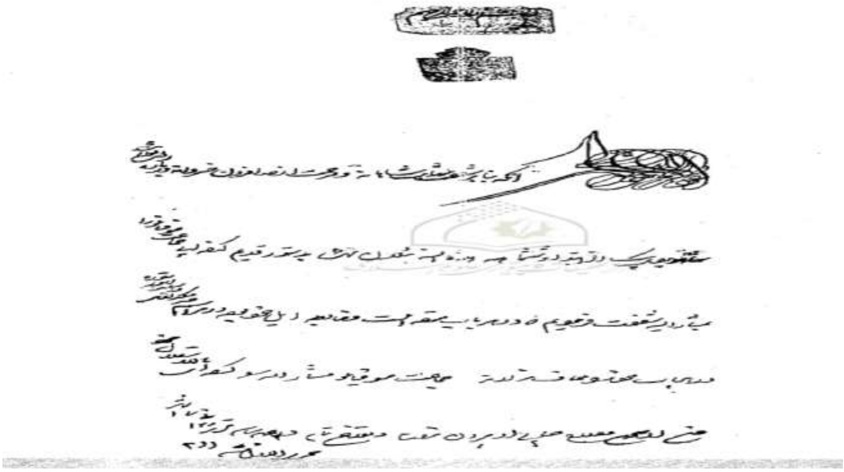

فرمان اعطای کدخدایی طایفهٔ صوفیانلو به شاهوردی‌بیگ در سال ۱۱۵۰ ه. ق

**تصویر ۲**

**فرمان نادرشاه به محمد حسین خان کرد زعفرانلو بیگلربیگی و حاکم ایل جلیل چمشگزک**

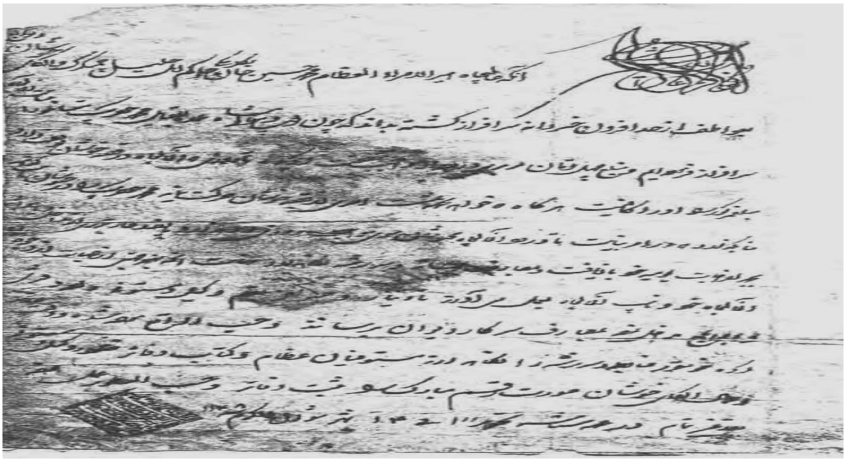

**برگرفته از کتابخانۀ شخصی کلیم الله توحدی**

**تصویر ۳**

**میثاق‌نامه دشت مغان در سال ۱۱٤۸ قمری**

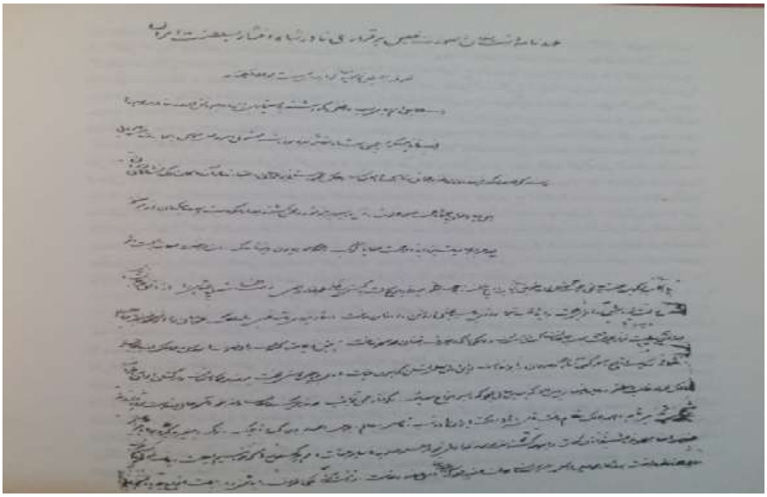

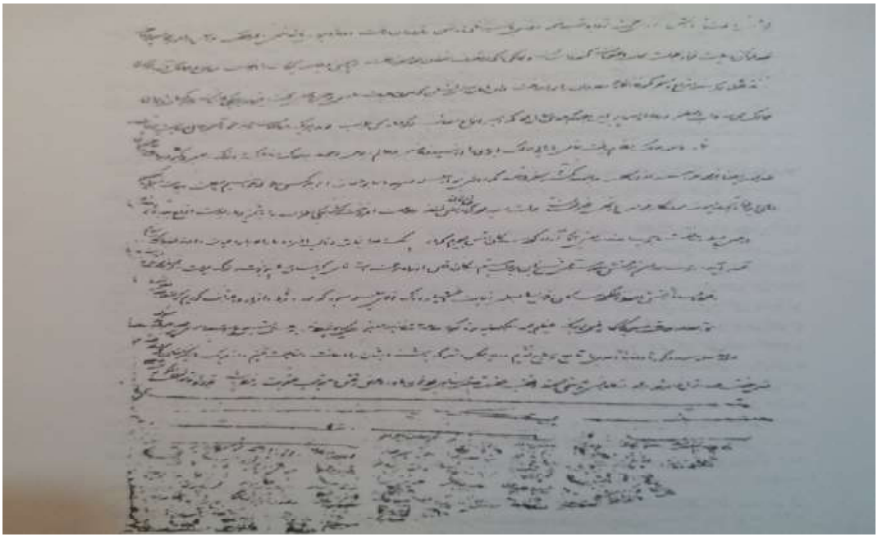

**تصویر ٤**

**فرمان شاه طهماسب دوم به محمد صادق خان میلانلو قورچی‌باشی، درخصوص تیول قصبه سنخواست، در سال۱۱۳۸ قمری**

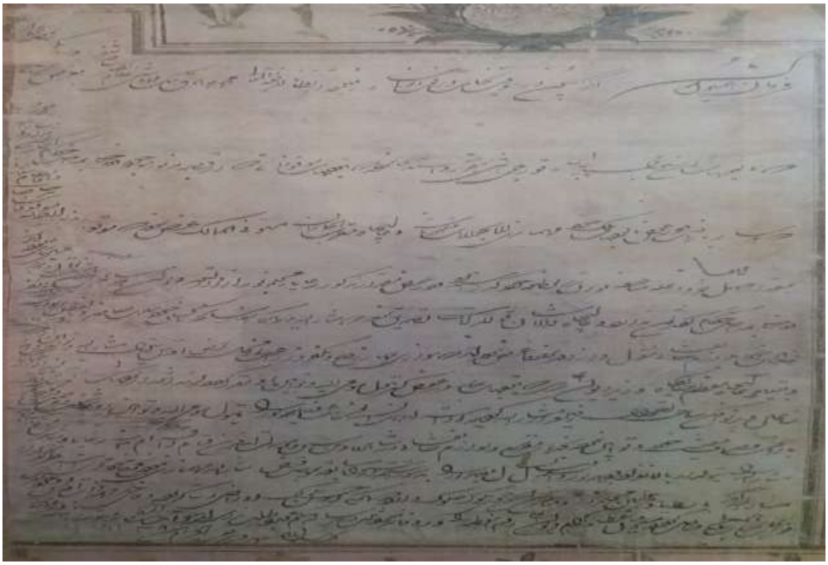

**برگرفته از کتابخانۀ شخصی علی رحمتی**



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# اهمیت ژئوپولیتیک مناطق کردنشین ایران در قرون نهم و دهم هجری

**یووسف تەکین**

جامعة دوكوز إيلول- قسم التاريخ والفنون الإسلامية/ الجمهورية التركية

**سلیمه افراسیابی**

قسم تاریخ ایران- دانشگاه الزهرا(س)/ جمهوری اسلامی ایران

**چکیده:**

کردها از جمله اقوام مطرح در ایران هستند که در صحنه های مختلف سیاسی، اقتصادی، فرهنگی، اجتماعی تاثیرگذار هستند. این اقوام با درگیریهای سیاسی داخلی و گاهی نبود یا عدم توجه حکومت مرکزی قدرت سیاسی می یافتند و حکومتهای کوچک محلی را تشکیل دادند. با هجوم اقوام مغول و از بین رفتن حکومت مرکزی در ایران اقوام کرد قدرت بیشتری یافتند. از انجا که در غرب ایران ساکن و هم مرز با سرزمینهای همسایه ایران هستند، از این رو درگیر تعاملات و نزاعها میشوند. با این وجود این قدرتگیری حکومتهای کرد در غرب ایران چه نفعی برای ایران در قرن نهم و دهم هجری داشت؟ ژئوپولیتیک مناطق کرد نشین چه اهمیتی برای ایران داشت؟ این مقاله بر ان است تا ژئوپولیتیک مناطق کردنشین را مورد بررسی قرار دهد تا از رهیافت این بعد جغرافیای تاریخی تاثیر موقعیت‌های جغرافیایی و همچنین تصمیم‌گیری‌های سیاسی در پیدایش و تکوین فضای جغرافیایی مناطق کردنشین را مورد ارزیابی قرار دهد. این مقاله جهت آگاهی از سیر تحولات ژئوپولیتیک تاریخی مناطق کرد نشین ، با بهره‌گیری از متون تاریخی و منابع جغرافیایی به عنوان مهم‌ترین ابزارهای تحقیق، سعی در تبیین زوایای مختلف آن با روش تحلیل تاریخی دارد.

**کلید واژه:** *ژئوپولیتیک، مناطق کردنشین، تیموریان،آق قویونلو، قره قویونلو،*

**مقدمه:**

مناطق کردنشین ایران اکثرا در سرزمینی کوهستانی و صعب‌العبور است که این موقعیت خاص جغرافیایی، همواره مانعی ارتباطی برای این سرزمین بوده است. در این منطقه، هر قدر از جنوب و شرق به سمت شمال و غرب پیش برویم بر ارتفاع کوهها افزوده می‌شود و این مسئله خود، بر راههای مواصلاتی و حتی بر سیر مکانی تحولات تاریخی این منطقه تأثیر گذاشته است. بنابراین توجه به جغرافیای تاریخی کردستان نه تنها مسئله‌ای مهم در



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

جغرافیا است بلکه از این جهت نیز که جغرافیای تاریخی سرزمینی، با این اهمیت راهبردی را بررسی می‌کند دارای اهمیت فراوانی است. شکل گیری حکومتها مستلزم عواملی است که مکان و جغرافیا از جمله آنها است. جغرافیا عامل اصلی نیست اما در پیشبرد اهداف سرنوشت ساز به ویژه در بدو شکل گیری و استقرار یک حکومت موثر است. شناخت مراتع، دشتها و رودخانه برای دام و کشاورزی، ارزیابی موقعیت دشمن، دژها و قلعه‌ها و راههای مواصلاتی از مواردی بودند که همواره در طول تاریخ مورد توجه قبایل و حکومتها بود. کردها مجموعه قبایلی پراکنده در غرب ایران بودن که بسیاری از انها ییلاق و قشلاق داشتند البته ایالت کردستان بیشتر اقوام کرد در انجا ساکن بودن ولی تعدادی در ایالت آذربایجان، عراق عجم و عرب پراکنده بودند. از این‌رو در این مقاله نگارندگان از کلمه مناطق کُردنشین استفاده کرده اند.کتاب و مقالات زیادی در مورد اقوام کرد در تاریخ ایران نوشته شده است از جمله پژوهشی درباره جایگاه کُردهای جزیره و دیاربکر در حکومت آق‌قویونلو نوشته یزدان فرخی و آرش امین‌پور(1398)، مناسبات قبایل کرد با اتحادیه نظامی قراقوینلو نوشته یزدان فرخی و آرش امین‌پور(1394)، اما تاکنون مقاله ای در مورد اهمیت ژئوپولیتک مناطق کردنشین ایران در قرن نهم و دهم هجری نگاشته نشده است.

ژئوپولیتیک که از دو واژه ژئو به معنای زمین و پولیتیک به معنای سیاسی تشکیل شده است (عزتی، 1371: 49) علمی است که به مطالعه تاثیر عوامل جغرافیایی در تصمیم‌گیری‌های سیاسی صاحبان قدرت می‌پردازد(مجتهدزاده، 1379: 23). از دیدگاه تاریخی، تردیدی نیست که گرایش‌های ژئوپولیتیک از هنگامی آغاز گردید که قدرت‌های بزرگ با گرایش‌های جهانی پدیدار آمد (مجتهدزاده، 1381: 123). البته لازم به ذکر است که در طول تاریخ مواردی فارغ از پشتوانه فکری قاعده‌مند با علم امروزی است چنانچه در بسیاری موارد پایتخت آنجا شکل میگرفت که مأمن اصلی قبیله بود و از موقعیت‌یابی همه‌جانبه امروزی استفاده نمی‌شد و مجبور می‌شدند پایتخت را عوض کنند که می‌توان به جا به جایی پایتخت حکومت صفویان اشاره داشت.

سرزمین ایران به جهت برخورداری از موقعیت‌های ژئوپولیتیکی و همچنین با سابقه تمدنی و فرهنگی چند هزار ساله، همواره در مسیر تاریخ بوده است چراکه اساساً ژئوپولیتیک و شیوه های استراتژیک از عوامل تحولات تاریخی هستند (بای، 7، 1388).

ژئوپولیتیک در مفهوم تاریخی و سنتی آن به معنای تقابل تاریخی قدرتها در کنترل و مالکیت سرزمین‌هاست که در آن نیروی سیاسی هر طرف در منازعه برای رسیدن به اهداف خود از بازنمایی‌های گوناگون استفاده می‌کنند. بنابراین موضوع ژئوپولیتیک تاریخی، مطالعه تاثیر مکان بر سرنوشت تاریخ و تمدن است که گفتمان آن براساس روش-



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

های نوین پژوهشی همان رویکرد ژئوهیستوریک (جغرافیای تاریخی) بر نظام‌های سیاسی تاریخی است (همان،1388: 11). اما برجستگی جغرافیا در جغرافیای تاریخی عوامل تاریخی را کمرنگ و گاهاً نادیده می‌گیرد و نتیجه جغرافیای تاریخی که تعامل جغرافیا و تاریخ باید باشد را از بین می‌برد و جغرافیا، عامل پیش بینی شده در حوادث تاریخی به عنوان امری مسلم حاکم خواهد شد و اینگونه پیوند جغرافیا و تاریخ از بین می‌رود.

از دید نگارندگان محصول جغرافیای تاریخی تعامل بین انسان و مکان است به گونه ای که انسان بر مکان و مکان بر انسان اثرگذار باشد. رخداد تاریخی ایجاد و تطور جغرافیایی حاصل شود و پویایی جغرافیا و تاریخ باید در آن محسوس باشد. حال با چنین رویکردی به ژئوپولیتیک مناطق کردنشین توجه شده است در این معنا نتیجه‌ی پیوند زمان، مکان و انسان تاریخ حوادث سیاسی است.

این مقاله با بهره‌گیری از منابع و پژوهشها ابتدا سعی در تبیین جغرافیای تاریخی و ژئوپولیتیک مناطق کردنشین ایران دارد سپس به حیات سیاسی کردها در دوره تیموری و ترکمانان میپردازد و در اخر به تقابل ژئوپولیتک و قدرت در مناطق کردنشین میپردازد.

### 1-حکومتهای سیاسی ایران در دو قرن 15و 16 / از سال 779 ه.ق تا 978 ه.ق:

سقوط دولت ایلخانان، ایران را وارد دوره‌ای از بی ثباتی و پراکندگی سیاسی نمود. در پی مرگ ابوسعید ایلخان در سال ۷۳۶ ه.ق. نیروهای متعدّدی به رقابت بر سر کسب قدرت و تصاحب میراث ایلخانان پرداختند. در نتیجه، کشور ایران میان چندین دولت محلّی تقسیم شد؛ وضعیتی که بیش از نیم قرن و تا پایان قرن هشتم/ سالهای اولیه قرن ۱۵ ادامه یافت. از حکومتهای محلی که بسیار قدرت گرفتند کردها بودند. کردها نیز که از قدیم‌الایام در غرب فلات ایران زندگی می‌کردند، در قالب امیرنشین‌های لرستان، کرمانشاه (گوران)، اردلان، مُکری، بابان، سوران، بدلیس، حکاری و ... خود را مجدداً سازماندهی کردند. در این میان هجوم ترکمن‌های قراقویونلو و آق‌قویونلو و جنگهای جانشینی آنان که عمدتاً مناطق کُردنشین را در بر میگرفت، منجر به کوچ اجباری بعضی ایلات به مناطقی دیگر می‌شد. از طرف دیگر ایلات کُرد نیز از مناقشات داخلی ترکمنان استفاده کردند و شروع به بازپس‌گیری مناطقی کردند که قبلاً به تصرف ایلات مغول و تُرک در آمده بود.

### 2-پیشینه جغرافیای تاریخی ایالت کردستان در قرون اسلامی تا قرن 15میلادی

در قرون نخستین اسلامی کردستان از مناطق شناخته شده بود و زیر مجموعه ایالتهای دیگر قرار داشت. کردستانات در حوزه ایالت جبال که خود ناحیه وسیعتري را شامل مي شد ، قرار گرفت .مورخان از ایالت جبال با عنوان کوهستان و عراق عجم نیز یاد کرده اند. ایالت جبال از نقطه نظر تقسیمات اداري و سیاسي شامل بخش هایي از استان کردستان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

،کرمانشاه، همدان ، مرکزي ، اصفهان و تهران است .ابن حوقل در صوره الارض از کردستان با عنوان جبال یاد کرده و شهرهاي کرج ابودولف، بروجرد، نهاوند، شهرزور، حلوان ، قزوین و چند شهر دیگر را در زیر مجموعه قلمرو آن ذکر کرده است علاوه بر این در توصیف منطقه ارمنیه ، آذربایجان و اران اشنویه به عنوان یك شهر کردنشین یاد شده است (ابن حوقل ، ۱۳٤ : 101 ) یعقوبي نیز در البلدان همانند ابن‌حوقل از کردستان با عنوان استان جبل یا عراق عجم یادکرده و از جمله شهرهاي آن دینور، نهاوند، حلوان و چند شهر دیگر را نام مي برد( یعقوبي، بي تا : ٤٣). جیهاني در اشکال العالم از کردستان با عنوان کوهستان و اقلیم چهاردهم یاد کرده و از شهرهاي آن بروجرد ، نهاوند ، سیمره ، همدان ، قم و کاشان نام مي برد(جیهاني، ۱۳٦۸ : ٥۷۲). مقدسي در تعبیري مشابه از این منطقه با عنوان کوهستان یاد کرده و به ذکر برخی شهرهای آن پرداخته است(مقدسی، 1364: 67). اصطخری در مسالک و ممالک با عنوان دیار کوهستان یا جبال از کردستان یاد کرده است و

حدود جغرافیایی ان را شرح میدهد(اصطخری، 1340: 96)

**۳-جغرافیای تاریخی مناطق کردنشین در ایران قرن ۱۵ و ۱٦**

اگرچه در عصر بعضي از حکومتهاي مستقل ایراني تقسیم بندي فوق دستخوش تغییراتي آن هم به صورت جزئي شد اما کلیت این تقسیم بندي بیشتر بدان دلیل که کردستان و نواحي تابعه آن در این اعصار در حوضه قدرت خلیفه و بغداد بودند تا اواسط دورۀ سلجوقیان استوار ماند .از اواسط حکومت سلجوقیان و در عصر سلطان سنجر کردستان طي یك تقسیم بندي جدید به عنوان ایالت کردستان مستقل شد.(مستوفي ، ۱۳۳٦ : ۱۲۰) گزارش حمدالله مستوفي جغرافی نگار مشهور قرن ۸ه.ق / ۱۵ . میلادی در نزهه القلوب، کردستان بخشي از ایالت جبال و مرکز آن شهر بهار و تعداد ولایت آن ۱٦ مورد است.

کردهای صحرانشین بسیار بودند و در مناطق غربی ایران پراکنده بودند در قرن 8 در نهاوند در سه ناحیه ملایر، اسفیدهان و جهوق کردهای صحرانشین بسیار بودند و سالیانه 12 هزار گوسفند مقرری داشتند(همان: 83). در شهر سلماس(همان: 97) اقوام کُرد وجود دارد و بسیاری از اقوام کرد که به صورت پراکنده در شهر و مناطق ایران ساکن بودند یا ییلاق و قشلاق داشتند.

نخسین منابع محلي که کردستان را نه از نقطه نظر اداري و سیاسي بلکه با تکیه بر عنصر نژاد و کرد بودن و بر اساس میزان و چگونگي پراکندگي کردها تعریف کرده اند. شرف نامه بدلیسي به عنوان نخستین تاریخ محلي که به توصیف جغرافیاي منطقه کردستان و تشریح ویژگیهاي تاریخي و اجتماعي جامعه کُرد پرداخته حدود این سرزمین را از یك سو تا خلیج فارس و استان فارس و از دیگر سو تا ارمنستان موصل و دیاربکر و از سوي دیگر تا عراق عجم و آذربایجان مي داند . وي در تقسیم بندي خود ایالت و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

جمعيت هاي لر را نيز شاخه اي از كردها به شمار آورده و بر همين مبنا سرزمين اكراد را سكونت لرها را نيز جزء مناطق كردنشين محسوب كرده است (بدليسي ، ١٣٦٤ : 23).

به گزارش قلقشندي كردها در قرن هشتم در دره ها و كوههاي جبل كه از همدان آغاز مي شود و به سليستي ختم مي شود يعني در كردستان و نواحي مختلف آذربايجان و بين النهرين در ايالت دياربكر ، موصل ، اربل، ميافارقين ، موش و غيره پراكنده بودند(القلشقندی، 1380: 184-185). البته باید توجه داشت که بسیاری از از کردها عشایر بودند و نمی توان مکان جغرافیایی دقیقی برای سکومنت انها در نظر گرفت ولی همه در غرب ایران ییلاق و قشلاق داشتند.

٤-حيات سياسى كردها دوره تيموريان

اوضاع نابسامان و هرج و مرج ايجاد شده در ايران بعد از سقوط ايلخانان مغول و فقدان وحدت سياسي و نبود يك قدرت بزرگ موجب ايجاد فضاي آشفته سياسي و ركود اقتصادي شد و در نهايت به نارضايتي مردم انجاميد در نتيجه مردم آمدن و ظهور يك قدرت بزرگ را طلب مي كردند تا در سايه اين قدرت بزرگ بتوانند آرامش و امنيت را برقرار سازند . تيمور در اينچنين فضايي تهاجم خود رابه ايران آغاز كرد .كردستان و قبايل كرد نيز همچون ساير مناطق ايران از يورشهاي تيمور در امان نماندند .قبايل كرد و روساي آنها در قبال يورشهاي تيمور فاقد وحدت رويه بوده و به فراخوار موقعيت و جايگاه خود واكنش هاي متفاوتي نسبت به اين رخداد نشان دادند. تيمور 3 يورش بزرگ و متناوب به ايران انجام داد. نخست يورش 3 ساله از 788-790ه.ق يورش پنج ساله 794-798ه.ق و يورش هفت ساله از 802-807 ه.ق(میرجعفری، 1375: 1214).

يورش نخست تيمور كه در واقع به بهانه راهزني و مختل بودن امنيت مناطق مركزي ايران از جمله حمله به كاروان حجاج توسط ملك عزالدين حاكم لر كوچك صورت گرفت خيلي زود به نواحي غربي ايران كشيده شد و تيمورلنگ پس از سركوبي حاكم لركوچك و احمد جلايري در نخجوان و مسلط شدن بر آذربايجان به منطقه جغرافيايي كردها رسيد . اگر چه ملك عزالدين حاكم وقت منطقه وان و قلعه آن پس ار مقاومتي كوتاه تسليم تيمور شد اما اهالي منطقه به مقاومت و مقابله پرداخته و پس از ٢٧ روز مقاومت سرانجام امير تيمور دستور تخريب قلعه وان را صادر كرد .سپس تيمور در راستاي سياست اصلي خود بدين صورت كه امراي مناطقي را كه داوطلبانه تسليم مي شدند و اظهار انقياد مي كردند به امارت همان منطقه منصوب مي كرد ملك عزالدين شير را به عنوان حاكم مطلق العنان كردستان منصوب كرد (شامی، 1363: 104؛Şâmî,1987:153; یزدی، 1336:1/560،581؛ حافظ ابرو، 1380: 2/ ٦٥٥،606).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

یورش دوم بـه ایـران مشهور بـه یـورش پـنج سـاله بـین سـالهای 799-794 ه.ق صـورت گرفت. در طی این یورش کردستان نیز مورد تهاجم قرار گرفت . تیمور در سال ۷۹۵ ه.ق بعد از فتح مازندران و سمنان و دامغان و ري عـازم سلطانیه شد و از آنجا بـه سمت بغداد مقر حکومت احمد جلایري عزیمت کرد . در این ضمن تیمور سپاهي را به فرماندهي پیر محمد و فرزندش محمد سلطان عـازم کردسـتان و نـواحي مختلـف آن کـرد . در واقـع هـدف تیمـور پاکسازي مسیر بغداد از وجود امراي سرکش کرد بـود . در طـي ایـن حملات هـر کـس اظهـار ایلي میکرد گرامي داشته مي شد و هر کس که سرپیچی میکرد ولایتش غـارت مـي شـد . منـابع خبر از اظهار ایلي و اطاعت ایلات و سرکردگان کرد در طي این هجوم مـي دهنـد . ابراهیم شاه از امراي بزرگ کردستان نسبت به تیمور اظهار ایلي کرد و این ماجرا حـاکي از آن است که امراء و سرداران کرد به قدرت تیمور پي برده بودند و همچنین بـر ایـن حقیقـت واقف بودند که یاراي مقابلـه بـا او را ندارنـد لـذا از در صلح و سـازش بـا او درآمدنـد(شـامی، 1363: 130-129؛ یزدی، 1336: 730؛ میرخواند، 1339: ٦/ 4784).

دور دوم لشکرکشي امیرتیمور به کردستان در پي آگاهي شخصي او و از غـارت و چپاول کاروانهـاي مصر و شام و همچنین اموال تجار مکه و مدینه بوسیله اهـالي قلعه تکریت صورت گرفت لذا او بـراي دفـع ایـن غائلـه در ۷۹٦ ه.ق عـازم کردسـتان شـد .حاکمـان اربیل و موصل نسبت به تیمور اظهار انقیاد کردند.اما اهالي قلعه تکریت به رهبري امیرحسن نامي مدتي چند در مقابل تیمور و سپاهیانش ایستادگي کردنـد . امـا تیمـور سرانجام قلعـه را فـتح و دستور بـه قتـل اهـالی داد و قلعـه بـا خـاک یکسـان شد(شـامی، 1363: 145؛ یـزدی، 1336: 736، سـمرقندی، 1372: 686، میرخوانـد، 1339: 4801؛ یوسـف والـه قزوینـی، 1380: 198) تیمور بعد از فتح قلعـه تکریـت عـازم کرکـوک شـد و حـاکم انجـا نسبت بـه تیمـور اطاعـت کـرد. همچنـین حاکمـان مـاردین و رقـا نیـز از تیمـور اطاعـت کردنـد(شـامی، 1363: 471؛ سمرقندی، 1372: 751؛ میرخواند، 1339: 4809).

اگر چه تیمور به هنگامي که روانـه سرکوبي حـاکم مصر و شام شد از حـاکم ماردین سلطان عیسي خواستار کمك نظامي براي مقابله با مصر و شام شد اما سلطان عیسي از فرمان تیمور سرپیچي کرد و لذا تیمور قبل از حرکت به سمت شامات با سفر بـه مـاردین و تسخیراین شهر سلطان عیسي را منکوب کرد سلطان عیسي نیز بـا توجـه بـه قـدرت زیـاد امیر تیمور بناچار نسبت بـه او اظهـار ایلـي کـرد(یزدی، 1336: 753؛ سمرقندي ،1372 : 690؛ والـه اصفهانی، 1380: 204) در واقـع تیمـور اندیشـه فـتح مصـر و منطقـه شـامات را در سـر داشـت بخصوص آنکه حاکم مملوك مصر نسبت به تیمور اظهار ایلي نکرده بود و دشمنان تیمـوري را یعني یوسف اق قویونلو و احمد جلایر را پناه داده بود .لذا بر آن شد تـا حکـام و منـاطق سـر راه را به انقیاد و تصرف خود درآورد . اگرچـه در پـیش گـرفتن سیاسـت همـدلي و سـازش بـاعث


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

مي شد، پيمان اتحاد و انقياد امراي مسير راه كه سران كرد نيز جزء انها بودند با تيمور مستحكم تر و قوي تر باشد نيازي نبود تا اين مناطق به جنگ انقياد تيمور را پذيرا شوند . اما در سالهاي پاياني يورش ٥ ساله اكراد نسبت به تيمور تغيير مزاج دادند بصورتي كه در مناطق مختلف دست به شورش عليه تيمور زدند .سرآغاز اين شورشها كشته شدن فرزند تيمور يعني عمر شيخ والي مملكت فارس و عراق عجم در نزديكي قلعه خرماتو در چهار منزلي بغداد توسط كردان آن منطقه بود كه تيمور بعد از اين حادثه فرزند ديگرش پيرمحمد را به جانشينی او برگزيد و نعش شاهزاده را به شهر كش برد( يزدی، 1336: 753؛ سمرقندی، 1372: 690؛ ميرخواند، 1339: 4809؛ واله اصفهانی ، 1379: 204) درست در هيمن زمان اهالی ماردين عليه تحصيلدار مالياتي تيمور دست به شورش زدند و او را به قتل رساندند كه ظاهر اين طرح با هماهنگي سلطان عيسي حاكم ماردين كه به دليل شكست از تيمور كينه او را به دل داشت و درصدد استفاده از فرصت پيش آمده يعني مرگ پسر تيمور بود صورت گرفته بود .تيمور دستور سركوبي سلطان عيسي را صادر كرد اما شورش حاكمان كُرد به اينجا ختم نشد بلك ملك عزالدين حاكم جزيره كه قبلاً نسبت به تيمور اظهارايلي كرده بود نيز عليه تيمور شورش كرد كه در نتيجه اين شورش تيمور جزيره را غارت كرد. تيمور بعد از تاراج جزيره عازم ماردين شد و ويرانی زيادی را در اين منطقه به بار اورد و سلطان صالح برادر حاكم ماردين را جايگزين عيسی نمود(شامی، 1363: 149-150؛ يزدی ، 1336: 759-757؛ ميرخواند 1339: 693-696). در واقع حاكمان كرد منطقه با استفاده از مشكلات به وجود امده بر سر راه تيمور يعني مرگ فرزند و بازگشت او به سمرقند سر به شورش برداشته بودند اما خيلي زود اين شورشها سركوب و حاكمان دوباره نسبت به تيمور اظهار ايلي كردند در منابع دورة تيموري اشاره اي به حوادث كردستان بين يورش ٥ ساله و ٧ ساله نشده است و منابع اطلاعي از كردستان در اين دوره پر اشوب به دست نمي دهند.

يورش هفت ساله كه در واقع آخرين حلقه از سلسله يورشهاي تيمور به خاك ايران بود در واقع به قصد منكوب كردن مصر و پاسخ به دعوت امير نشينهاي اناطولي از تيمور براي رهايي آنها از زير يوغ عثماني بود(ميرجعفری، 1375: 102). با اين وجود منابع از حضور تيمور دركردستان سال ٨٠٣ ه.ق بعد از فتح ممالك شام گزارش داده اند . در جريان اين يورش همچون يورش ٥ ساله حاكم ماردين بار ديگر عليه تيمور شورش كرد بدين صورت كه او از انجام تعهدات خود نسبت به امير تيمور كه همكاري با او جهت حمله به شام بود سرپيچي كرد و به پشتيباني قلعه مستحكم خود عليه تيمور شورش كرد . لذا تيمور دستور تخريب و حمله به قلعه را صادر كرد اما تضرع اهالي ماردين از تيمور و تسليم نمودن كليدهاي قلعه به تيمور سبب بخشش آنها از سوي تيمور شد .از سوي ديگر نيز اختصاص دادن زمان زيادي جهت


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

تسخیر قلعه ماردین در جریان شورش سودمند نبود چرا که تیمور قصد سرکوب مصر و حمله به گرجستان و مغلوب کردن عثمانیها داشت(شامی، 1363: 238؛ 9، یزدی، 1336: 2/ 1091؛ سمرقندی، 1372: 784؛ حافظ ابرو ، 1380: 1/ 929) از طرفی حاکم قلعه ماردین نمی توانست خطر چندانی برای تیمور داشته باشد. حاکم ماردین نیز با وجود چندین بار شورش و ایجاد دردسرهاي براي تیمور در بازگشت تیمور از فتح شامات مورد عنایت و شفاعت تیمور واقع شد و وي نیز در عوض دختر خود را به نامزدي امیر مظفربن ابابکر فرزند میرانشاه درآورد .تیمور سپس حکومت ممالك عراق ، بغداد، کردستان، ماردین ، دیاربکر و قبیله اویرات را به ابابکر فرزند میرانشاه داد و آذربایجان را به برادر او یعني عمر میرزا داد(شامی، 1363: 265-266؛ یزدی، 1336: 1228؛ سمرقندی، 1372: 969). در واقع اخرین گزارشي است که منابع از حضور امیر تیمور در کردستان مي دهند چرا که تیمور در بازگشت به سمرقند و در جریان حمله به چین در سال ۸۰۷ ه ق درگذشت و کردستان در حوضه قلمرو میرانشاه فرزند تیمور قرار گرفت.

**ه-حیات سیاسی اقوام ، کُرد در دوره آق قویونلو ها و قرا قوینلوها**

با مرگ تیمور ایران زمین بار دیگر به عرصه و هرج و مرج و رقابت میان امیرزادگان تیموري و ترکمانان مدعي قدرت مبدل گشت .در شرق هر یک از فرزندان تیمور در گوشه اي از قلمرو پهناور و در ایالتي اعلام استقلال نمودند در نتیجه این موضوع درگیري و کشمکش میان جانشینان او بالا گرفت و مانع از استمرار قدرت عصر تیمور در دوران فرزندان او شد از سوي دیگر در غرب ایران نیز امراي آق قوینلو و قراقوینلو نیز که از زمان تیمور پایه هاي قدرت خود را استحکام بخشیده بودند ، حال با مرگ تیمور شروع به بسط قلمرو خود کردند همانطور که ذکر گردید تیمور اندکي قبل از مرگش عراق ، بغداد، کردستان، ماردین ، دیاربکر و قبیله اویرات را به ابوبکر میرزا تفویض کرد وحکومت آذربایجان را در اختیار عمر میرزا قرار داد .اما اندکي بعد از مرگ تیمور ابوبکر میرزا در جدال با احمد جلایر که در صدد بازپس گیري قلمرو از دست رفته خود بود شکست خورد و پس ازترک عراق به نزد برادرش عمر میرزا در آذربایجان رفت اما اندکي بعد میان دو برادر نیز ناسازگاري و اختلاف پدیدار گشت، زیرا هر دو مدعی قدرت بودند و به راستی دو پادشاه در یك اقلیم نگنجد در جدال میان دو برادر ابوبکر میرزا بر عمر میرزا غالب گشت(حافظ ابرو، 1380: 73، روملو، 1384: 1309/1؛ میرجعفری، 1381: 146؛ 170) ابوبکر میرزا اگر چه تبریز را فتح و مدتی هم در انجا حکومت کرد اما حکمرانی وی دولتی مستعجل بیش نبود ودر نبرد با قرا یوسف ترکمان آذربایجان را از دست داد و مجبور به فرار به خراسان و سپس سیستان شد بدین سان آذربایجان در نتیجه ستیز و کشمکش میان فرزندان و نوادگان تیمور خیلي زود از دست تیموریان بیرون رفت و قراقوینلوها قدرت گیري خود را در مناطق



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شمال غربي و غرب ايران آغاز كردند تلاشهاي شاهرخ و بعدها ابوسعيد نيز در راستاي احياي قدرت تيموريان در مناطق غربي مثمر ثمر واقع نشد و بعد از مرگ ابوسعيد كه توسط اوزن حسن آق قوينلو از ميان رفت براي هميشه قدرت تيموريان از مناطق غربي ايران رخت بربست و گستره جغرافيايي تحت سلطه تيموريان به منطقه محدودي در شرق ايران تقليل يافت و اين چنين بود كه از امپراطوري گسترده عصر تيمور نشاني جز يك حكومت محلي باقي نماند . لذا گستره جغرافياي محل سكونت كردها نيز در حوضه فرمانروايي تركمانان آق قوينلو و قراقوينلو قرار گرفت. از اين پس كردستان و نواحي مختلف آن دائماً ميان اين دو قدرت دست به دست شد.

نكته حائز اهميت اين است كه حكام و امراء كرد در اين عصر نيز همچون دورة تيموريان براساس منافع و شرايط و مقتضيات زماني جبهه گيري و اعلام موضع ميكردند و با توجه به شرايط حاكم به قدرتهاي مختلف گرايش پيدا مي كردند .بطوري كه گاه يك يا چند امير كرد به يك حاكم و حكومت و در مقابل يك يا چند امير كرد ديگر به حاكم رقيب گرايش داشتد و در منازعات موجود رو در روي هم قرار گرفتند.

قراقوينلو كه ابتدا در اطراف درياچه وان و حوالی سنجار و شوش و موصل ساكن بودند(بهرام نژاد، 1384: 21؛ ميرجعفری، 1381: 270). در زمان قرايوسف يكی از قدرتمندترين امرای اين سلسله موفق شدند ولايات آذربايجان- عراق عرب با تمام توابع و از عراق عجم تا قزوين و حدود همدان و از دياربكر تا زنجان و ترجان و اسپيرا و قراحصار را تحت تسلط خود دراوردند كه حوضه جغرافيايی تعداد زيادی از قلاع كردستان را در تصرف داشتند(بهرام نژاد، 1384: 21).

در سال 813ه.ق در نبرد اسد كه ميان قرا يوسف و سلطان احمد جلايري رخ داد در سپاه دو طرف نيروهايي از در نبرد كردها حضور داشتند .به گزارش حافظ ابرو در زبده التواريخ در سپاه قرايوسف شمس الدين بدليسي و ملك عزالدين شير و در سپاه احمد جلاير شاه منصور از سران كرد حضور داشت .كه اين جنگ سرانجام با كشته شدن احمد جلايری پايان گرفت(حافظ ابرو، 1380: 3/ 401؛ روملو، 1384: 1/ 178)اما همين مورخ در جای ديگری از كتابش می نويسد كه به هنگام لشكركشی شاهرخ به آذربايجان و وقوع جنگ «الشكرد» امرای كرد نسبت به امير تيموری اظهار انقياد كردند(حافظ ابرو، 1380، 751/1).

مرگ قراء يوسف قراقوينلو در آستانه حمله شاهرخ به تبريز سبب ايجاد هرج و مرج در سرزمينهاي قراقوينلوها شد .و فرزندان و نوادگان قرايوسف هر كدام به شهر و دياري گريختند. سياستهاي شاهرخ مبني بر ايجاد حكومتي دست نشانده در تبريز به موفقيت منجر شد در اين اوضاع توام با هرج و مرج، آق قوينلوها كه در حال محكم تر كردن پايه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

هاي قدرت خود بودند ، فرصت را مغتنم شمرده و به قلمرو قراقوينلوها تعرض نمودند .در اين راستا عثمان بيگ آق قوينلو به قلمرو كردهاي سليماني و زرقي تعرض كرد و

هشت قلعه از قلعه هاي اكراد و سه هزار خانوار ازكردها را به تصرف خود درآورد .و پسرش با يزيد بيگ را به حكومت آن نواحي منصوب كرد .از سوي ديگر امير اسكندر كه بعد از بازگشت شاهرخ به هرات به تبريز بازگشت و اوضاع همراه با هرج و مرج حكومت و پايتخت را سروسامان داد .اسكندر بعد از بازيابي اقتدار خود بر آن شد كه سرزمينهايي راكه آق قوينلوها تصرف كرده بودند بازپس گيرد، لذا او با همكاري و كمك شيخ حسن كُرد چمشگزكي كه از ملازمان و مقربان دستگاه اسكندر ميزرا بود امراي كرد بدليس- اخلاط -وان -دستان را كه به عثمان بيگ آق قوينلو گرويده بودند . در الشگرد با لطايف الحيل دستگير و زنداني ساخت و بعد هم عزم تسخير بدليس كرد، كه در حاكميت امير شمس الدين بيگ قرار داشت .اما اسكندر به دليل استحكام زياد قلعه بدليس موفق به فتح آن نشد و حتي وساطت امير شمس الدين بيگ حاكم بدليس نيز براي تسخير قلعه موثر نيفتاد لذا اسكندر به سوي اخلاط رفت اما موفق به فتح اين شهر نيز نشد، دومين تلاش اسكندر برای فتح بدليس ناكام ماند(ابوبكر طهرانی، 1356: 96-98؛ روملو، 1384: 1/ 249؛ قزوينی، 1383: 351)اسكندر بعد از انكه در فتح بدليس و اخلاط ناكام ماند امير شمس الدين بيگ را به خاطر كينه ای كه از او به دل داشت كشت، زيرا او به هنگام حمله شاهرخ به تبريز در زمان قرايوسف جانب شاهرخ را گرفته بود(بدليسی، 1364: 475) قساوت و بی رحمی‌های اسكندر در مواجهه با كردها بخصوص كه در اخلاط و بدليس از خود نشان داده بود سبب شد تا شيخ حسن كرد از اسكندر مايوس و به دولت شاه بيگ امير كرد بپيوندد. دولت شاه كه در جبهه آق قوينلوها بود و شفاعت شيخ حسن توسط او نزد علی بيگ آق قوينلوها مورد قبول واقع شد بدين ترتيب اقدامات بي رحمانه و برخورد خصمانه و بدور از منطق اسكندر سبب شد تا كردها به جبهه مقابل و دشمن قراقوينلوها رانده شوند .و او نتوانست از نيروها و امرای كُرد در راستاي منافع و حفظ موقعيت خود استفاده كند ، اسكندر ميرزا به كشتن شمس الدين بسنده نكرد بلكه او ملك محمد حكاري پسر اميرعزالدين شير را نيز كه به همراه شمس الدين هنگام حمله شاهرخ نسبت به او اظهار ايلي كرده بود را نيز سركوب كرد(حافظ ابرو، 1380: 1/ 254).

با جلوس جهانشاه بر سر سرير سلطنت قراقوينلوها دورة اعتلاي قراقوينلوها يك بار ديگر همچون عصر قراء يوسف آغاز شد .امير مذكور حكومت نسبتاً طولاني داشت اما متاسفانه منابع تاريخ نگاري آنچنان اشاره اي به اوضاع كردها و نقش امراء و قبايل كُرد در اين برهه ننموده اند ، بجز انكه در بيان برخي حوادث به صورت فرعي و گذرا به نام چندين تن از امراء آنها اشاره شده است كه خاستگاه قبيله اي آنها نامشخص و مبهم است



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

جهانشاه در واقع آخرین سلطان قدرتمند قراقوینلوها بود و بعد از او حکومت قراقوینلوها در سراشیبي سقوط قرار گرفت. وقایع عصر او به جنگ آق قوینلوها ابتدا با جهانشاه آق قوینلو و سپس اوزون حسن آق قوینلو گذشت در طي این جنگها سرداران و فرماندهان کرد نیز حضور داشتند که مناطق کردنشین دائماً میان آنها دست به دست مي شد به گزارش منابع الوند میرزا فرزند اسکندر میرزا قراقوینلو بعد از اینکه علیه عموي خود معین جهانشاه شورید به اربیل کردستان حمله کرد و آنجا را به تصرف خود درآورد .الوند میرزا بعد از شکست از عموي خود به جهانشاه آق قوینلو پناه برد و جهانشاه قراقوینلو نیز سپاهي به فرماندهي امیرعربشاه از سرداران و فرمانداران کُرد براي تصرف ارزنجان و تهدید جهانشاه آق قوینلو مبني بر تحویل و استرداد الوند میرزا روانه آنجا کرد . این سردار کُرد موفق به شکست آق قوینلوها در ماردین را به تصرف قراقوینلوها درآورد(طهرانی، 1356: 180). اما ماردین مدت زیادي در تصرف قراقوینلوها باقي نماند بلکه خیلي زود جهانشاه آق قوینلو آن را پس گرفت . دیاربکر نیز به تصرف آق قوینلوها درآمد .امیرعربشاه سردارکُرد حتي در جریان لشکرکشي جهانشاه قراقوینلو با جهانشاه آق قوینلو که به او پیوسته بود علیه اوزون حسن نیز شرکت داشت که بنابه گفته ابوبکر طهراني عربشاه بدلیل انکه از رویایی با اوزون حسن ترس و وحشت داشت فرار کرد(همان: 159). همچنین ابوبکر طهراني در جاي دیگري در کتابش از فرمانده و سردار کرد به نام حاجي بیگ گاورودي خبر مي دهد که در جریان استمداد وکمك جهانشاه آق قوینلو براي مقابله با برادرش اوزون حسن از جهانشاه قراقوینلو، جهانشاه سپاهی را به فرماندهی گالودی به یاری او فرستاد(همان: 409؛ حسین بیگ روملو، 1384: ٦٦٤) گاورودی در نبرد مشهور سنجق از فرماندهان سپاه قراقوینلو بود(طهرانی : 1384: 427). این امیر کرد پس از مرگ جهانشاه قراقوینلو به خدمت پسرش حسنعلی میرزا درامد و به خاطر درایت و کفایت فوق العاده ای که در اداره امور داشت به امارت تمام بلاد عراق منسوب شد(طهرانی ، 1356: 441؛ روملو، 1384: 1/ 677). گاورودی در جریان حمله ابوسعید تیموری در قم که برای فتح آن ناحیه بدانجا رفته بود دستگیر شد و با وجود اینکه نسبت به ابوسعید اظهار اطاعت انقیاد کرد خزانه و اسباب او مصادره و خود او به خراسان و به درگاه ابوسعید فرستاده شد(طهرانی، 1356: ٤٤٥).

هر چند نقش آفریني و تاریخ تحولات کردها در دوران قراقوینلوها، محدود به فعالیت هاي این چند سردار کُرد در دربار سران قراقوینلو نبوده اما متاسفانه تاریخ این عصر در مورد کُردها اطلاعات بیشتري بدست نمي دهند .با شکست جهانشاه قراقویونلو از اوزون حسن در نبرد سنجق و کشته شدن او به عمر حکومت قراقوینلوها خاتمه داده شد فرزندان جهانشاه اگر چه مدتي در قلمرو حکومت اجدادي خود بودنداما آنها خیلي زود از میان رفتند و آق



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ فەكۆلینێن كوردی

قوينلوها كه با جلوس اوزون حسن بر سرير سلطنت به دوران اوج و اعتلاي خود رسيده بودند درصدد گسترش فتوحات خود در نواحي مختلف برآمدند .

نقش آفريني و ورود قبايل كُرد در اتحاديه تركمان آق قوينلو را بايد از همان آغاز شكل گيري اين اتحاديه يعني عصر عثمان بيگ دانست .هنگاميكه عثمان بيگ نسبت به تيمور اظهار اطاعت كرد و به ملازمت وي درآمد و قلعه مستحكم ماردين را تسخير كرد . فرزندش ابراهيم بيگ را جهت تسخير حصن كيف و توابع آن فرستاد و حاضر شد سالانه مال و لشكر به سلطان حصين كيف ملك اشرف تركمان بدهد ابراهيم پس از حصين كيف روانه سليمانيه شد و بعضي پايگاههاي آنجا را غارت كرد و آن منطقه را به تصرف خود درآورد(بابامردوخ، 1372: 3/ 363) اما همين امرا كه نسبت به عثمان بيگ اظهار اطاعت كرده بودند به هنگام درگيري و جنگ ميان قرايوسف و عثمان بيگ جانب قراء يوسف را گرفتند (طهراني، ١٣٥٦ : 59) در واقع اين امراى كُرد كه در صدد حفظ موقعيت و جايگاه خود بودند و در جنگها همواره جانب قدرت برتر را ميگرفتند اين بار نيز همچون دفعات قبل چون مي دانستند كه قدرت قراء يوسف برتر و بيشتر است جانب او را گرفتند .خصلت و ويژگي بارز خود را يكبار ديگر بروز دادند .عثمان بيگ بعد از اينكه نبردش با قراء يوسف به مصالحه انجاميد ، به قصد انتقام از موضع گيري امراء كرد در جريان جنگ او با قراء يوسف ، به ماردين حمله كرد و آنجا را مورد محاصره قرار داد. مجدالدين عيسي حاكم وقت ماردين از سلطان حكيم كه با عثمان بيگ دشمني داشت استمداد كمك كرد اما اين طلب استمداد و كمك نيز مانع از شكست او نشد و حكم او به همراه حاجي بيگ كرد در اين نبرد كشته شدند(طهرانى، 1356 :٦٧ ؛ روملو، ١٣٨٤ : 7135).

بعد از آن عثمان بيگ چندين بار ماردين را مورد يورش و غارت قرار داد .عثمان بيگ بعد از حمله به ماردين،حاكم چمشگزگ را كه دچار توطئه و اختلاف خانوادگي بود مورد حمله قرار داد. عثمان بيگ باتوسل به يكي از نزديكان پير حسين كه از ظلم و تعدي شيخ حسين حاكم چمشگزگ متاثر بود وارد چمشگزك شد و آنجا را بعد از تسخير و تصرف به برادرزاده اش نورعلي بيگ سپرد(طهرانى، 1356: 94 ؛Tihrani,2014:70). عثمان بيگ بعد از تسخير چمشگزگ به سرزمين كردهاي رزقي وسليماني هجوم برد و پايگاه آنها در ميافارقين و ترجيل و هشت قلعه ديگر را با سه هزاز خانوار به تصرف خود درآورد و با يزيد بيگ پسر خود را به حكومت آن نواحي گماشت .امراء كُرد كه ناتوان از مقابله با عثمان بيگ بودند به تشويق و تحريك شيخ حسن چمشگزك حاكم بركنار شده به تحريك حاكم چمشگزك و اسكندر ميرزا قراقوينلو پرداخته و از آنها ياري و استمداد خواستند اما اسكندر ميرزا همه امراء كُرد را دستگير و زنداني نمود در نتيجه شيخ حسين از اسكندر مايوس شد و به دولت شاه بيگ حاكم اگيل از ديگر امراء كُرد كه در دولت عثمان بيگ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

بود پناه برد وي با شفاعت اين امر كرد نسبت به عثمان بيگ اظهار اطاعت و فرمانبرداری كرد و عثمان بيگ كه با پيوستن اين امرای كرد ميتوانست اتحاديه خود را قدرتمندتر كند با آغوش باز شيخ حسن را پذيرفت و او را مورد لطف و عنايت خود قرار داد(طهرانی، 1356: 99). اين در حالي بود كه اتحاد و انسجام خود اين قبايل و سران كرد مي توانست قرار داد به يک كانون قدرت تاثيرگذار در منطقه تبديل شود كه حداقل آنها را براي دفاع از خود بي نياز از ساير قدرتها سازد .بعد از مرگ عثمان بيگ و در عصر سلطان حمزه آق قوينلو بود كه كردها بار ديگر در سلسله نبردهاي ميان كه مابين او « خاتونيه » آق قوينلوها و قراقوينلوها به نقش آفريني پرداختند .بدين صورت كه سلطان حمزه در جنگ با اصفهان بيگ قراقوينلو درگرفت با فرستادن ديپلماتي به نزد حاكم كرد حصين كيف به نام ملك خلف دوستان قديمي او بود و ابدال بيگ حاكم جزيره كه در ابتداء تابع قراقوينلوها بود اما به سبب تعدي و ظلم درخواست كمك كرد .اين دو امير كرد به لشكر حمزه ميرزا پيوستند.

در واقع مشخص نيست كه كردها و فرماندهان و سران آنها كه همواره به فكر حفظ موقعيت و جايگاه خود بودند و براي حفظ اين جايگاه و موقعيت همواره با قدرتهاي برتر و بزرگتر اتحاد و اتفاق مي كردند ،اين بار جانب حمزه ميرزا و آق قوينلوها را كه نسبت به قراقوينلوها ضعيف تر بودندگرفتند.آنها نميخواستند حاكميت قدرتمندی شكل گيرد پس با استفاده از برتری جغرافيايی و جنگاوری جانب اق قوينلو را گرفتند تا از قدرتمند شدن قراقوينلو جلوگيری كنند. اينگونه حيات سياسی انها به خطر نمی‌افتاد .

بعد از صلح آمِد كه مابين جهانگير ميرزا و سلطان حمزه منعقد شد كردها و امراء آنها به آق قوينلوها خيانت كردند و به همين دليل اوزون حسن به كُردها يورش برد و آنان را غارت كرد و اموال آنها را به يغما برد. موضع گيري و جبهه گيري كردها حتي بعد از اين عجيب تر نيز مي شود چرا كه با حركت جهانشاه آق قوينلو از آذربايجان به سمت خراسان، اوزون حسن كه فرصت را مناسب دانسته بود و به آذربايجان حمله برد در حين حركت به سوي آذربايجان بود كه امراء كُرد به استقبال او شتافتند به روايت طهراني شمس الدين بدليسي و ملك صاصوني و ابراهيم بيگ سليماني به استقبال او رفتند و يك ماه در خدمت و ملازم او بودند اوزون حسن منطقه حكومتي شيخ حسن چمشگزكي رابه دليل مخالفت او مورد حمله قرار داد اما چندي بعد اين امير كرد نيز تسليم و مطيع اوزون حسن گرديد(طهرانی ، 1354: 130، 214، 228؛36 2014:).

در اين ميان آنچه قابل تامل است برخورد دوگانه، متناقض كردها و حكام آنها در قبال اوزون حسن مي باشد از يك طرف غارت و كشتار كردها توسط اوزون حسن و از سوي ديگر استقبال و ملازمت امراي كُرد از اوزون حسن كه درست مدتي كوتاهي بعد از اين



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ فەكۆلینێن كوردی

کشتار رخ داد .قبایل و سران کُرد بیش از هر چیز به حفظ جایگاه و موقعیت خود می اندیشیدند . در همین زمان کُردها دچار اختلافات خانوادگي بودند این امر خود مانع از قدرت گیري آنها مي شد و سران آق قویوینلو نیز بر این اختلافات دامن مي زدند نمونه این اختلافات خانوادگي یا اختلافات داخلي میان امراي حصن کیف و قتل ملك خلف بود که اوزون حسن با دامن زدن به آن این سلسله کرد تبار حصن کیف را ساقط کرد.

در دوران اوزون حسن که قدرت آق قوینلوها به اوج اعتلاي خود رسید کُردها همچون سایر هم پیمانان اتحاد آق قوینلوها با توجه به قدرت زیاد اوزون حسن فرصت خودنمایي و یا شورش علیه دولت مرکزي را پیدا نکردند.

اگر چه کاترینوزنو سفیر ونیزي که مدتي در دربار اوزون حسن بود در سفرنامه خود کُردها را عامل شورش اغورلور محمد فرزند اوزون حسن که مادري کرد نژاد داشت معرفي مي کندو مي نویسد که کردان در صدد بودند با پراکندن تخم نفاق عظمت حکومت آق قوینلوها برهم بزنند و با شایعه مرگ اوزون حسن پسرش را وادار به شورش علیه پدرش کردند (جوزفا باربار و دیگران ،1349 : 236) اما منابع دیگر دورة آق قوینلوها حتي تواریخ عصر صفویه این گفته زنو را تایید نکرده اند و سخني از اینکه کردها عامل این شورش باشند به میان نیاورده اند و معلوم نیست که این حرف کاترینو زنو تا چه حد قابل اطمینان باشد؟ اوزون حسن در سال 837 ه.ق دو تن از شاهزادگان آق قوینلو به نامهاي حمزه و جهانگیر میرزا را در راس سپاهي روانه کردستان نمود در واقع هدف اوزون حسن از این لشکرکشي تثبیت اقتدار خود در کردستان بود تا مبادا حاکمان کُرد علیه او دست به توطئه بزنند در طي این حمله ابراهیم بیگ والي بدلیس با فرستادن مادر خود به عنوان نائب ، شفاعت صاحبقران را بدست آورد .همچنین امراء ترکمان توانستند چندي از قلاع و شهرهاي جزیره بدلیس -شوش و اخلاط را فتح بعد تصرف کنند(طهرانی، 1356: 542؛ روملو، 1384: 737/1) از این جریان منابع به هیچ گونه تقابل و تعامل اوزون حسن با کردها اشاره نمي کنند.

با مرگ اوزون حسن میان فرزندان او بر سر دستیابي به تاج و تخت پدر اختلاف درگرفت و این اختلافات و درگیریها قدرت آققوینلوها را به انحناء برد این اختلافات و جنگها به گونه اي بود که از این طایفه از 882 تا 907 ه.ق که شاه اسماعیل به قدرت رسید هشت تن به قدرت رسیدند و مي توان گفت که مهمترین و برجسته ترین ویژگي حکومت آق قویونلوها بعد از مرگ اوزون حسن بخصوص در سالهاي پایاني این حکومت مستجعل و زودگذر بودن حاکمیت سلاطین این سلسله بود.

اگر چه بعضي از مورخین معتقدند کهکُردها بعد از مرگ اوزون حسن و آغاز روند تدریجي ضعف آق قوینلوها تا حدودي استقلال خود را بدست آوردند .اما واقعیت انست که

کُردها این بار نیز همچون ادوار قبل بدلیل عدم درک درست از اوضاع سیاسي و مقتضیات زمان خود و غفلت از اختلافات داخلي سران آق قوینلو نتوانستند از فرصت پیش آمده براي تثبیت موقعیت خود بهره ببرند و نه تنها از این فرصت جهت اتحاد و ایجاد حکومت بهره نبردند بلکه به اختلافات خود دامن زدند در واقع تاریخ کُردها بعد از مرگ اوزون حسن نیز همچون ادوار قبل از آن تکرار دگر باره جبهه بندي و همکاري انان با امراء مختلف جهت پیشبرد اهداف شخصي و قبله‌اي خود بود نخستین حضور کُردها در حوادث بعد از مرگ اوزون حسن در جریان جنگ میان مراد بیگ آق قوینلو با خلیل سلطان آق قوینلو ،کُردها در سپاه مراد بیگ ایفاي نقش کردند(روملو، 1384: 1/ 810) به نظر مي رسد علت حمایت کردها از مرادبیگ کینه اي بود که از خلیل سلطان به دل داشتند چرا که کردها قبل از این از مقصود بیگ که دشمن خلیل سلطان بود حمایت کرده بودند و به این دلیل این مي بایست توسط خلیل میرزا قلع و قمع شدند و حال که مراد بیگ مخالف خلیل سلطان بود کردها از او حمایت مي کردند .کردها بعدها در جنگ قدرت میان خلیل سلطان و برادرش یعقوب نیز به صورت غیر منسجم حضور داشتند بدین صورت که چگیني ها از یعقوب و چشمگزکي ها از خلیل سلطان حمایت مي کردند. منصور بیگ چگیني از امراي عالي رتبه یعقوب بیگ و سهراب بیگ چشمگزك که از امراي خلیل سلطان بود که خلیل سلطان بعد از شش ماه اریکه قدرت را به یعقوب واگذار نمود(روملو : ۱۳۸۴،۸۱۳)

از دیگر امراي کُرد که در رقابت میان امراء نقش آفریني کردند امیرعزالدین شیرکُرد مي باشد او در جنگي که میان صوفي خلیل و سلیمان بیگ بیژن از امراي بزرگ ترکمان در حوالي وان رخ داد شرکت داشت صوفي خلیل با اعزام نماینده اي به نزد عزالدین شیرکرد از او یاري خواست او نیز با نیروهاي خود به صوفي خلیل ملحق شد( طهراني ، 1356: ۴۳؛ خنجی، ۱۳۸۲:۱۲۳ ؛ Woods,1999,156-157; Khachatrian, 2003:37-58, .(Sümer, 1992: 117-127;

**٦-تقابل ژئوپولیتیک و سیاست در مناطق کردنشین**

مناطق کردنشین کوهستانی و صعب العبور بود. یکی از مواردی که اهمیت این مناطق را افزایش می‌دهد علاوه بر کوهستانی و صعب العبور بودن وجود قلاع هستند. در مناطق کُردنشین قلاع بسیاری ساخته شده است اگرچه برخی از قلعه‌ها مانند مثل کلات یا الموت نبود ولی پیشروی نیروهای متخاصم کُند می‌کرد. چهار قلعه ظَلم، پَلَنگان، مریوان و حسن‌آباد به تناوب دارالملک کردستان بوده که در زمان خود، از قلاع محکم عالم بوده‌اند و هیچ یک از سلاطین روزگار، نتوانسته‌اند آنجا را به غلبه تسخیر کنند(وقایع‌نگار، ۱۳۶۴: ۲۷ - ۳۰) علاوه بر قلعه‌های مذکور در کردستان قلعه‌های



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بسیاری همانند قلعه زیویه، کرفتو، قم‌چقای بیجار، و در حوالی شهر سنندج قلعه‌های؛ کسوانان آساوله، قلعه باباریز، قلعه کهنه و قلعه زاگرس قرار داشتند (زارعی، 1386: 76).

جدای از ایالت کردستان در ماردین،دیاربکر و اخلاط نیز قلعه‌های مستحکمی وجود داشت که به سختی تسخیر میشدند. بنابراین هم از قلعه‌ها و نیروهای کُرد برای مقابله با دشمن استفاده میکردند. ظاهرا قلعه‌ها علاوه بر اینکه نظامی بودند شهر بودند به عنوان مثال قلعه حسن آباد در تابستان مورد استفاده حاکمان محلی کُرد قرار داشته است. وضعیت طبیعی و اقلیمی منطقه هم مؤید این نظر است با توجه به شرایط سیاسی که در دورهٔ صفوی و پیش از آن در این منطقه ایران ایجاد شده، مردم و وابستگان والیان اردلان در این قلعه ساکن شده‌اند، به طوری‌که حدود تعداد خانه‌های ساخته شدهٔ آن را دو هزار و جمعیتی در حدود دوازده هزار نفر تخمین زده‌اند (Vasilyeva, 2000:4) . یا در خفتبان از ایالت کردستان قلعه‌ای محکم در کنار آب زاب است (مستوفی،1336: 128).

قلعه‌ها یا دژ شهرها مکانی مناسب بودند انها در بالای یک منطقه قرار داشتند و بر وسعت زیادی از مناطق پایین مسلط بودند. برای تامین مواد غذایی و آب در حالت عادی مشکل نداشتند به ویژه قلعه‌هایی که از ان اب رودخانه عبور می‌کرد و در طول سال ذخیره می‌کردند.

پس قلعه‌ها پایگاهی محکم برای حاکمین در قدرت بود چنانچه تیمور قلعه ماردین را به عنوان پایگاهی محکم برای حمله به مصر و شامات در نظر داشت ولی حاکم مادرین خیانت کرد و تیمور در حمله ناکام ماند. همچنین اسکندر میرزا به سبب وجود استحکامات قلعه‌ها در بدلیس، وان و اخلاط نتوانست انجا را تسخیر کند و بر فتوحات اق قوینلو بیافزاید.

در دوره ترکمانان بنابر انچه در کتاب دیاربکریه است اقوام کُرد مدام از دستورات سرپیچی میکردند و ادعای قدرت داشتند در نتیجه بارها مورد تعرض تیموریان و ترکمانان قرار گرفتند(طهرانی: 57) یکی از پایگاههای اصلی کردها در غرب ایران ماردین بود. در این دوره ماردین، دیاربکر تحت تسلط اق‌قوینلوها بود. این دو شهر مرز با عثمانی بودند در نتیجه اهمیت زیادی داشتند. علاوه بر اینکه به لحاظ سیاسی اهمیت داشتند به لحاظ تجاری نیز مورد توجه بازرگانان داخلی و خارجی بود. با این وجود ماردین و دیاربکر از حملات در امان نبودند(طهرانی: 57).

قدرتهای زیادی به دنبال برقراری ارتباط با کردها بودند علاوه بر اینکه اقوام جنگجویی بودند بر مناطق استراتژیک مسلط بودند. اوزون حسن در صدد بود تا با دیپلماسی و اقدامات پیشگیرانه در برابر پیوستن برخی از قدرتهای کرد منطقه به حکومت قراقویونلوها صورت دهد. وی موفق شد تا شیخ حسن چمیشگزک را با خود



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

متحد نماید(طهرانی، 1356: 222). افزون براین وی مجبور شد تا در ناحیه شمال پایتخت خود کردهای ولایت مردیسی به رهبری عیسی بیگ دولتشاه و نواحی ارزنجان به رهبری علی طوقان فرزند عربشاه آیین‌لو را تنبیه کند(طهرانی، 1356: 240-242).

حتی در جریان تصرف آمِد به دست اوزون حسن کردهای آق کچلو و قراکچلو و جماعت کردان اگیل از جهانگیر جانداری کردند در نتیجه این جنگ به صلح منجر شد(طهرانی، 1356: 235). همچنین اوزون حسن با کمک کردهای محمودی موفق شد ناحیه الباق از منطقه جزیره را تصرف نماید(بدلیسی، 1377: 301).اوزون حسن از نیروهای محلی یعنی کردها با فرماندهی امرای کرد استفاده میکرد تا بر فتوحاتش افزوده شود وی حتی امرای کرد را در جنگها مقابل یکدیگر قرار میداد چنانچه برای الحاق ناحیه الباق از کردهای محمودی علیه کردهای بختی استفاده کرد. کردها که بیشتر در مناطق سخت و صعب العبور بودند میتوانستند عملکرد بهتری در جنگها علیه یکدیگر داشته باشند.

اقوام کُرد اتحاد قوی نداشتند. هر کدام با گروهی از ترکمانان متحد بودند. آنها پراکنده و عشایر بودند در نتیجه اتحاد به سختی اتفاق میافتاد. گروهی که در نزدیکی قلمرو قراقوقونلو قرار داشتند با انها متحد بودند و اقوامی که در نزدیکی اق قویونلوها بودند با انها متحد بودند(فرخی و امین‌پور،1398: 103) . هیچکدام از ترکمانان در پی حذف کامل اقوام کرد برنیامدند. این اقوام نیروهای کمکی محسوب نمی شدند بلکه نیروهای محلی قدرتمندی بودند که مناطق تحت تسلطشان محفوظ میماند.

**نتیجه:**

در دوره ترکمانان حکومتهای کرد شکل گرفتند. این حکومتها اگر چه مناسبات زیادی باهم داشتند و گاهی هم مرز بودند مثل حکومت بابان و اردلان ولی اتحاد قوی برای شکل گیری حکومت واحد وجود نداشت که این امر نیازمند پژوهش دیگر است. جغرافیای ثابتی شاید نداشتند به ویژه با مهاجرت اجباری توسط حکومتهای قدرتنمند. تلاقی جغرافیا و قوم جنگجوی کرد یک منطقه قدرتمند را شکل داد. سه ضلع مثلث در ژئوپولیتیک در منطقه کرد نشین ایران شکل گرفت، 1- جغرافیای مناسب (کوهستانی، اب و هوای مناسب، قابل کشاورزی، محل عبور کاروانهای تجاری، ساخت قلعه-های نظامی یا دژشهر)، 2-اقوام کرد و قدرت طلب(جنگجو)، 3-زمان مناسب. شکل گیری اولیه حکومتهای محلی به دلیل عدم حکومت مرکزی قدرتمند بود. حکومتهای تیموری و ترکمانان هرگز در پی حذف اقوام کُرد نبودند بلکه آنها را در یک سیاست دو گانه تضعیف قدرت و حمایت از انها در مرزهای ایران در برابر دشمنان قرار دادند. با توجه به موقعیت جغرافیایی در سیاست گذاری  نقش پررنگ و برجسته ای ایفا کردند و باعث شد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

دژی انسانی و قدرتمند ایجاد کنند و در فراز و فرود روابط دیپلماتیک همواره نقشی معنادار ایفا کردند. حد فاصله میان مرز ترکمانان قلعه‌های اقوام کرد قرار داشت. این قلعه‌ها تنها نظامی نبودند و برخی از انها دژ شهر بودند. ترکمانان مجبور بودند که با اقوام کُرد متحد باشند تا از مناطق جغرافیایی صعب العبور مناطق کردنشین در امان باشند و همچنین از انها در جنگ علیه دشمنانشان استفاده کنند. ظاهرا قراقویونلوها با اقوام کُرد اتحاد بیشتری داشتند. امرای سلیمانی و رزقی که اقوام ضعیفی بودند اما حاکمین قراقویونلو را همراهی میکردند. اتحاد کُردها با حاکمین هم‌عصر باعث شد در فراز و فرود جریانات سیاسی و جنگها حضوری فعال داشته باشند و در برخی جنگها امرای کُرد پیشرو باشند. اقوام کُرد در جریانات سیاسی رشد کردند و اهمیت و موجودیت خود را در غرب ایران درک کردند تا حکومت قدرتمندی مثل اردلان روی کار امد و بسیاری از اقوام کُرد را متحد کرد و دژی محکم و با اهمیت در برابر عثمانی در دوره صفویه قرار گرفت.

**فهرست:**

اصطخری،، ابراهیم، (1346)، مسالک الممالک به اهتمام ایرج افشار، تهران: بنگاه ترجمه و نشر کتاب.

ابن حوقل،(1345)، صوره الارض، ترجمه جعفر شعار، تهران: بنیاد فرهنگی ایران.

روحانی، بابامردوخ، (1371)، تاریخ مشاهیر کُرد، به کوشش ماجد مردوخ روحانیف تهرات: سروش.

بای، یارمحمد، (1388)، ژئوپولیتیک تاریخی ایران، تهران: انتشارات دفتر پژوهشهای فرهنگی، چاپ اول.

بدلیسی، شرف خان، (1364)، شرفنامه (تاریخ مفصل کردستان) به اهتمام ولادیمیر ولییامینوف زرنوف، تهران: نشر اساطیر.

بهرام‌نژاد، محسن، (1384)، سرگذشت قراقوینلوها و آق‌قوینلوها، تهران: موسسه فرهنگی اهل قلم،

جیهانی،، ابوالقاسم، (1368)، اشکال العالم، ترجمه علی بن عبدالسلام، تهران: آستان قدس رضوی.

جوزفا باربار و دیگران ،( ۱۳۴۹)، سفرنامه ونیزیان ایران، ترجمه منوچهر امیری، تهران: نشر خوارزمی.

حافظ ابرو، شهاب‌الدین، (1372)، زبده التواریخ، تصحیح و تعلیقات سیدکمال حاج سیدجوادی، تهران: نشر نی .خنجی، روزبهان، (1382)، عالم‌ارای امینی، تهران: نشر میراث مکتوب.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

روملو، حسین بیگ، (1384)،احسن‌التواریخ، به کوشش عبدالحسین نوایی، تهران: انتشارات اساطیر.
زارعی، محمدابراهیم، (1386)، *سیمای میراث فرهنگی، صنایع دستی و گردشگری کردستان*، سنندج، سازمان میراث فرهنگی، صنایع دستی وگردشگری استان کردستان.
سنندجی، میرزا شکرالله، (۱۳٦٦)، *تحفه ناصریدر تاریخ و جغرافیای کردستان*، به کوشش حشمتاله طبیبی، تهران، امیرکبیر.
سمرقندی،کمال‌الدین عبدالرزاق، (۱۳۷۲)، مطلع السعدین و مجمع البحرین، به اهتمام عبدالحسین نوایی، تهران: پژوهشگاه علوم انسانی و مطالعات فرهنگی.
شامی، نظام‌الدین (۱۳٦۳)، ظفرنامه، به تصحیح فلیکس تاور، به کوشش پناهی سمنانی، تهران: بامداد.
عزتی، عزت‌الله، (۱۳۷۱)، ژئوپولیتیک، تهران: انتشارات سمت.
طهرانی، ابوبکر، (۱۳٥٦)، دیاربکریه، تصحیح نجاتی لوغال و فاروق سومر، تهران: کتابخانه طهوری.
القلقشندي، ابوالعباس احمد،(1380)، جغرافیاي تاریخي ایراندر قرن نهم ه. ق، ترجمه محبوب الزویري، تهران، وزارت امور خارجه،
مجتهدزاده، پیروز، (۱۳۷۹)، ایده‌های ژئوپولیتیک و واقعیت‌های ایرانی، تهران: انتشارات نی، چاپ اول.
مجتهدزاده، پیروز، (۱۳۸۱)، جغرافیای سیاسی، سیاست جغرافیایی، تهران: انتشارات سمت، چاپ اول.
مستوفی، حمدالله،(۱۳۳٦)، نزهه القلوب، تصحیح محمد دبیرسیاقی تهران: بی‌جا.
مقدسی، محمد، (۱۳٦٤)،احسن التقاسیم فی معرفه الاقالیم، محقق علی نقی منزوی، تهران: کومش.
میرجعفری،حسین، (۱۳۸۱)، تاریخ تیموریان و ترکمانان، تهران: انتشارات سمت و دانشگاه اصفهان.
میرخواند،محمد بن خاوند شاه، (۱۳۳۹)، تاریخ روضه الصفا فی سیره الانبیا و الملوک والخلفا، جلد٦، تصحیح جمشید کیانفر، تهران: نشر اساطیر.
واله اصفهانی، محمد یوسف، (۱۳۸۰)، خلدبرین، به کوشش میرهاشم محدث، تهران: مرکز نشر میراث مکتوب.
وقایع‌نگار کردستانی، علی‌اصغر، (۱۳٦٤)، *حدیقه ناصره در تاریخ و جغرافیای کردستان*، محمدرئوف توکلی، تهران: ارژنگ.

یزدی،شرف‌الدین علی، (۱۳۸۷)، ظفرنامه، تصحیح و تحقیق سعید میرمحمدصادق و عبدالحسین نوایی‌فر، تهران: کتابخانه ، موزه و مرکز اسناد مجلس شورای اسلامی.

## منابع انگلیسی و ترک

Khachatrian, Alexander, (2003), The Kurdish Principality of Hakkariya (14th-15th Centuries), Iran & the Caucasus , 2003, Vol. 7, No. ½, published by: Brill, pp. 37-58.

Sümer, Faruk, (1992), Kara Koyunlular, C.1, Türk Tarih Kurumu Yayınları, Ankara.

Vasilyeva, E.I., (2000), The Kurdish City of Sanandaj, Ardalan's Capital' Paris.

Şâmî, Nizamüddin, (1987), Farsça’dan Çeviren: Necati Lugal, 2.Baskı, Türk Tarih Kurumu Basımevi, Ankara.

Tihrani, Ebu Bekr-i, (2014), Çeviren: Mürsel Öztürk, Türk Tarih Kurumu Yayınları, Ankara.

John E., Woods, (1999), The Aqquyunlu: Clan, Confederation, Empire, Publisher: University of Utah Press,p.156-157.

## The geopolitical importance of the Kurdish regions of Iran in the 15th and 16th AD

**ABSTRACT:**

Kurds are among the prominent ethnic groups in Iran who are influential in various political, economic, cultural, and social scenes. These ethnic groups gained political power due to internal political conflicts and sometimes the absence or inattention of the central government and formed small local governments. With the invasion of the Mongol tribes and the destruction of the central government in Iran, the Kurdish tribes gained more power. Since they live in the west of Iran and border with the neighboring lands of Iran, they are involved in interactions and conflicts. Nevertheless, what was the benefit of this gaining power for the Kurdish governments in the west of Iran for Iran in the 15th and 16th AD? How vital was the geopolitics of the Kurdish regions for Iran? This article aims to investigate the geopolitics of the Kurdish regions in order to evaluate the impact of geographical positions and political decisions in the emergence and development of the geographical space of the Kurdish regions from the perspective of historical geography. In order to know about the historical geopolitical developments of the Kurdish regions, this article tries to explain its various angles by using historical texts and geographical sources as the most important research tools.

**Keywords:** ***geopolitical, Kurds, Kurdish regions, political decisions, Iran***

# الدول والإمارات الكُردية في العصرين الوسيط والحديث

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# تقديم

أ. د. هوگر طاهر توفيق
أ. م. د. نزار أيوب حسن

هناك مقولة منتشرة في الأوساط الأكاديمية والعامة بأنه "لم يكن للكُرد دولة في التاريخ"، أو أن الدول والإمارات الكُردية في العصور السابقة كانت أشباه دول فاقدة لقرارها المركزي، انتشرت هذه الفكرة بقوة خلال عصر ظهور الدول القومية في القرنين التاسع عشر والعشرين؛ نظراً لعدم تمكن الكُرد من تأسيس دولتهم القومية على أرضهم التاريخية "كُردستان".

استناداً على هذه الفكرة والاتجاه التاريخي فطن مركز زاخو للدراسات الكُردية الى عقد مؤتمره السابع حول موضوع "الدول والإمارات الكُردية في العصرين الوسيط والحديث"، بهدف الغور في حياتها وحضارتها وتأثيراتها. وأدناه ملخصاً تاريخياً عن تلك الدول والإمارات الكُردية التي كانت جغرافية كُردستان متنفساً ومسرحاً لها:

-١-

## الدويلات الكُردية في العصر الوسيط الإسلامي

ظهرت في عصر الخلافة العباسية خمس دويلات كُردية كانت تتمتع باستقلال ذاتي في إدارة شؤونها الداخلية والخارجية، وأدت دوراً سياسياً مهماً في أحداث كُردستان خلال تلك المدة، وهي:

١. الدويلة الروادية (٢٣٠-٤٤٦هـ/٨٤٤-١٠٥٤م) في أذربيجان بشرق كُردستان التي عرفت أنها أقدم دويلة كُردية في المشرق الإسلامي، وكانت عاصمتها مدينة تبريز. يقول المؤرخ ابن الأثير عنهم:" ظهرت الأكراد الروادية في أذربيجان وهم من أشراف الأكراد". ومن أبرز أمرائهم " محمد بن حسين الروادي الكُردي، ديسم بن إبراهيم الكُردي الروادي، ابي الهيجاء بن مملان".



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٢. الدويلة الشدادية الكُردية في اران-يريفان- بشمال شرق كُردستان (٣٤٠-٤٤٦هـ/٩٥١-١٠٥٤م)، إذ استطاع الكُرد الشدادية أن يقيموا لهم دويلة مستقلة في منطقة اران وهي إحدى المقاطعات التابعة لإقليم أذربيجان وأرمينيا، ومن أبرز أمرائهم "محمد بن شداد الكُردي، مرزبان بن محمد الكُردي، أبو الحسن علي بن موسى لشكري".

٣. الدويلة الحسنوية الكُردية في همدان (٣٣٠-٤٠١هـ/٩٤١-١٠١٥م) في شرق كُردستان ومن أبرز أمرائهم" حسين البرزكاني، حسنوية بن حسين البرزكاني الكُردي، بدر بن حسنويه".

٤. الدويلة العيارية (العنازية) (٣٨٠-٤٤٦هـ/٩٩٠-١٠٥٤م) في مدينة حلوان-زهاو بالقرب من مدن (جلولاء، وخانقين، وقصر شرين) في جنوب كُردستان. ومن أمرائهم" أبو الفتح محمد بن عياز، أبو الشوك-الشوق بن أبو الفتح محمد بن عياز".

٥. الدويلة الدوستكية-المروانية الكُردية (٣٧٣-٤٤٦هـ/٩٨٣-١٠٥٤م) في دياربكر بشمال كُردستان وكانت هناك مدن كثيرة تابعة لها منها(اسعرد-خيزان-حصن الزوق-حصن كيفا-ارزن-فاقان-ديار ربيعة-جزيرة ابن عمر-ميافارقين-رأس العين-ملازكُرد-ارجيش-نصيبين...الخ). يعود الفضل في تأسيس هذه الدولة إلى(باد بن دوستك الكُردي) زعيم الكُرد الحميدية وكنيته (أبو عبدالله أبو شجاع)، وقد قال عنه المؤرخ ابن الأثير :"كان يغزو كثيراً بثغور دياربكر، وكان عظيم الخلقة، وله بأس وشدة...كان جواداً يذبح الغنم الذي يطعم به الناس فظهر عليه اسم الجواد واجتمع عليه الناس، وكلما حصل له شيء من الغنيمة أخرجه[أي وزعه على أصحابه] فكثر أصحابه... وقد ساعده على نجاح حكمه...حب قومه من الأكراد له وعدله..."، وقال عنه المؤرخ الفارقي:"كان جباراً من الرجال". ومن أمرائهم: "باد بن دوستك، أبو علي حسن بن مروان الكُردي، أبو النصر احمد بن مروان الكُردي (نصر الدولة)".

اسقطت أغلب هذه الدويلات الكُردية على اليد السلاجقة الأتراك عند اجتياحهم للعالم الإسلامي في أواخر عصر الخلافة العباسية.

-٢-

## الإمارات الكُردية في العصر الحديث

تعرضت كُردستان في القرنين الثالث عشر والرابع عشر الميلاديين إلى غزوات المغول التتار، وقد تم تدمير أغلب المناطق الكُردية على يد تيمورلنك (١٣٣٦-١٤٠٤م) الذي أخضع العديد من الإمارات الكُردية لحكمه. أعقب الغزو المغولي ظهور دولتين تركمانيتين حكمتا كُردستان وهي دولة "القرة قوينلو" أصحاب الخروف الأسود وكانت عاصمتها تبريز وحكمت خلال المدة (١٣٨٠-١٤٦٨م)، ودولة "الاق قوينلو" أصحاب الخروف البيض" وكانت عاصمتها "دياربكر" وحكمت خلال المدة (١٣٧٨-١٥٠٨م). ثم خضعت كُردستان بعد ذلك لحكم الامبراطورية الفارسية الصفوية التي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أخضعت الجزء الشرقي من كُردستان والامبراطورية العثمانية التي تحكمت في الجزء الأكبر من كُردستان. فكانت من أبرز نتائج المعركة الفاصلة بين الإمبراطوريتين في سهل جالديران بشمال كُردستان عام ١٥١٤ هو تقسيم كُردستان الى جزئين بين الدولتين الصفوية الإيرانية والعثمانية وقد استمر هذا التقسيم حتى القرن العشرين.

خلال السنوات الأولى من العصر الحديث وحسب المؤرخ والأمير الكُردي شرفخان البدليسي حكمت كُردستان في القرن السادس عشر في الجزئين الصفوي والعثماني ما مجموعه (٤٨) إمارة كُردية، كما أوردها في كتابه الشهير الشرفنامة والذي انتهى من تأليفه عام ١٥٩٦-١٥٩٧، لعل أبرزها تلك التي ذكرها في الفصل الثاني من كتابه وهي الإمارات التي قال عنها "في ذكر عظماء حكام كُردستان الذين وإن لم يكونوا قد ادعوا السلطنة والاستقلال إلا أنهم انفردوا أحياناً بالخطبة وضرب النقود باسمهم" وهذه الإمارات هي:" أردلان، هكاري، العمادية، الجزيرة، حصنكيف".

كانت لهذه الإمارات الكلمة العليا في الحياة السياسية في كُردستان من القرن السادس عشر وحتى منتصف القرن التاسع عشر، ولعل أبرز ما ميز العديد من تلك الإمارات هي حضارتها التي كانت تضاهي بها العديد من الدول في ذلك الوقت ومنها حضارة إمارة بدليس كما يرويها الرحالة التركي اوليا جلبي في رحلته إلى هذه الإمارة في عام ١٦٥٥ عندما كان يحكمها الأمير عبدال خان، فقد ذكر اوليا جلبي العديد من المرافق الحضارية لهذه الإمارة منها: القصور، الجسور، الينابع، والحلي، والمكتبات، والأسواق...الخ، حتى أنه قال جملة مشهورة في حقها وهي:" فهذا أنا السائح الذي أقوم بالسياحة لمدة أربعين سنة لم أشاهد مثل هذه الأشياء في أي مكان آخر".

موضوع الحضارة الكُردية وهو الأكثر أهمية، نظراً لكونه غير مبحوث في العديد من جوانبه، وهو أن حضارة هذه الدول والإمارات الكُردية تعدّ موضوعاً هامشياً إلى الآن عند الخوض في تاريخ الحضارة الكُردية. فالحضارة تلقي الضوء على المستوى الفكري والعمراني التي وصلت إليها أي أمة، وتقاس الأمم والشعوب بمدى تطور حضاراتها عبر التاريخ وبالتالي مستوى تفهمها لواقعها الحالي وما قدمته للإنسانية، دون أدنى شك كان للكُرد حضارتهم خلال ذلك العصر، فما تراه العين من آثار حضارية هي كثيرة ربما لا يمكن حصرها وكتابتها، فكُردستان تقع على جبل من الآثار التاريخية، إلا أن ما يؤخذ على حضارة الكُرد حينذاك أنه لم يتم تدوين آثارها بالشكل الذي يعبّر عنها ويكشف عن حقيقتها ودورها التاريخي سواء في كُردستان أم في خارجها.

المهم في الأمر بأن هذه الإمارات الكُردية وعلى الرغم من تقلص عددها واختفاء الكثير منها إلا أن العديد من هذه الإمارات ظلت قائمة تحكم مناطقها حتى منتصف القرن التاسع.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

## سقوط الإمارات الكُردية في منتصف القرن التاسع عشر

شهد النصف الأول من القرن التاسع عشر وقوع ثلاث حركات كبرى قادها الأمراء الكُرد ضد الدولة العثمانية، كان هدف تلك الإمارات توسيع حدودها الجغرافية والحصول على مزيد من الاستقلالية في قراراتها.

الحركة الأولى: هي تلك التي قادها الأمير عبد الرحمن باشا باباني (١٧٨٩-١٨١٣)، إذ يعد من أقوى الأمراء الذين حكموا إمارة بابان طيلة عمرها الطويل الذي امتد لحوالي خمسة قرون، تولى الإمارة في سنة ١٧٨٩ وعزل من منصبه لأكثر من ست مرات نتيجة للخلافات داخل الأسرة الأميرية وتدخل الدولتان العثمانية والإيرانية في شؤونها. وصلت قوته ما بين سنوات ١٨١٠-١٨١٢ إلى أن طلب منه أن يتولى ولاية بغداد ولكنه رفض، توفي عبد الرحمن بابان سنة ١٨١٣ بشكل مفاجئ. دخلت الإمارة بعده في عهد ضعف فقد تولى سدة الحكم فيها أمراء ضعفاء كما أن بروز الإمارة السورانية في عهد الأمير محمد السوراني قد أثر عليهم كثيراً، وانتهت حكم هذه الإمارة في سنة ١٨٥١.

يقول الشاعر الكُردي الشيخ رضا الطالباني (١٨٣٥-١٩٠٩) عن هذه الإمارة:

له بيرم دێ سولەيمانى كه دار و مولكى بابان بو

نه مەحكوومى عەجەم نه سوخرەكێشى ئالێ عوسمان بوو

أي ما معناه باللغة العربية:

أتتذكر بأن السليمانية كانت مركز[حكم] وملك بابان

لم تكن تحكمها العجم ولم تكن تابعة لآل عثمان

أما الحركة الثانية: فهي تلك التي قادها الأمير محمد السوراني (ميرێ گەورە-ميرێ كورە) (١٨١٣-١٨٣٦) في البداية عمل على تصنيع السلاح ولاسيّما صناعة المدافع، وبعد أن وحد جبهته الداخلية قاد حرباً على الدولة العثمانية وتمكن من ضم أغلب أراضي إمارات بابان وبهدينان وبوتان وضم ماردين في أيار ١٩٣٣، وتذكر عدد من المصادر التاريخية أن جيشه بلغ في تلك الأثناء (١٣٠) ألف مقاتل. بعد تلك الانتصارات الكبيرة قادت الدولة العثمانية حملة كبيرة بقيادة رشيد محمد باشا على الأمير محمد بك ونتيجة لعدم تكافئ القوتان تمكن الجيش العثماني من القضاء على الأمير محمد وإمارته سوران بحلول سنة ١٨٣٦.

لقد كتب القنصل البريطاني جيمس برانت عن محمد الرواندوزي في سنة ١٨٣٥:" تساءلت كيف وصل إلى هذه الدرجة من الصفاقة في مقاومة رشيد محمد باشا، الذي كان مزوداً بالسلطة الممنوحة له من السلطان. فرد الحاج [رجل من الكُرد] بقوله: إنه لا هو ولا آباؤه قد خضعوا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولينێن كوردى

في يوم من الأيام للباشوات أو دفعوا ضرائب للسلطان وأنه لم يستطع أن يفهم لماذا ينبغي إجباره على ذلك الآن، وهو لذلك يقاوم قدر استطاعته".

أما الحركة الثالثة: فهي تلك التي قادها الأمير بدرخان (١٨٣٨-١٨٤٧) أمير إمارة بوتان ضد الدولة العثمانية في أربعينات القرن التاسع عشر، فبعد أن تمكن من توحيد أغلب الإمارات الكُردية في شمال كُردستان ضمن حلف كُردي وظهرت نواياه في مزيد من التوسع والاستقلالية، جردت الدولة العثمانية حملة كبيرة عليه بقيادة (عثمان باشا) في أيار ١٨٤٧ وبلغ عدد قواته (٢٥) ألف مقاتل، أما قوات بدرخان بك فقد بلغت (١٥-١٧) ألف مقاتل، لم يتمكن بدرخان بك من الصمود أمام الهجمات العثمانية القوية، فاضطر إلى الاستسلام للجيش العثماني في ٢٠ تموز ١٨٤٧ والذي قام بدوره بإرساله إلى اسطنبول ثم تم نفيه إلى جزيرة كريت بعد ذلك استقر في دمشق حتى وفاته في عام ١٨٦٨.

بهذا الحدث الكبير انتهى العصر الإماراتي في كُردستان وخضعت كُردستان بصورة مباشرة الى حكم الدولة العثمانية، وأخيراً يمكن تلخيص أبرز الأسباب التي أدت الى سقوط الإمارات الكُردية، وهي:

١. ضعف عدد الإمارات منذ أواخر القرن الثامن عشر وبداية القرن التاسع عشر.
٢. الصراعات الداخلية داخل الأسر الأميرية جعلت الواحد يتربص بالآخر.
٣. صراع الإمارات الكُردية فيما بينها أدت بالنهاية إلى إضعافها جميعها.
٤. تأثرت الإمارات الكُردية بالسياسية الدولية آنذاك حيث تحولت كُردستان إلى ساحة للصراع بين الدول الأوربية لاسيّما روسيا التي وصلت إلى حدود كُردستان الشمالية وبريطانيا التي كانت تدافع عن مصالحها في الدولة العثمانية.
٥. نتيجة ضغط الدول الكبرى على الدولة العثمانية عمدت إلى تطبيق سياسة مركزة الدولة العثمانية والتي كانت من أبرز نتائجها سقوط جميع الإمارات الكُردية في كُردستان.

المهم في هذا العرض التاريخي المقتضب ليس بيان تاريخ هذه الدول والإمارات الكُردية، بقدر التأكيد على أن أرض الكُرد "كُردستان" كانت في أيدي الكُرد ويحكمها الكُرد وأسسوا عليها دول وإمارات، حتى وإن كانت تابعة لامبراطورية أو دولة كبرى مثل الدولة العباسية أو الصفوية الإيرانية أو العثمانية، فالكُرد وعلى مر العصور كانوا أصحاب هذه الأرض التي سميت في المصادر التاريخية على اسمهم "كُردستان" وهذا هو بيت القصيد.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# أطباء الدويلات والمدن الكوردية ودرهم في تقدم علم الطب

أ. د. خضير عباس المنشداوي

قسم التاريخ، جامعة زاخو/ إقليم كردستان العراق

**الملخص:**

للأسف الشديد ان التاريخ العلمي للكورد لم ينال الاهتمام والعناية من قبل الباحثين والمؤسسات العلمية التي تهتم بتاريخ الكورد حيث يبدو واضحا الاهتمام بالجوانب السياسية والإدارية وعلى الرغم من أهمية تلك الجوانب إلا ان التركيز على تلك الجوانب واهمال التاريخ العلمي للكورد يُعد اضرار في تاريخ الكورد.

تأتي هذه الدراسة لتسلط الضوء على العشرات من أطباء الدويلات الكوردية والمدن الكوردية مع ذكر اهم مؤلفاتهم والتحليل العلمي لها للكثير من المفاهيم والمعالجات الطبية التي توصل لها أولئك الأطباء وكانت من المصادر الأساسية للمعرفة الطبية سواء على مستوى الحضارة الإسلامية او على الفكر الطبي الغربي فقد سبق الأطباء الكورد غيرهم من الأطباء في التوصل الى إنجازات وابتكارات طبية أضافوها الى المعرفة الطبية ومنها على سبيل المثال:

-التوصل الى معرفة نظريات ومفاهيم طبية جديدة ورائدة في مجال علم الطب ومنها النظرية التي تتعلق بحالة النبض التي مفادها انه هنالك حالات نادرة جدا عند الناس يكون النبض مختلف ما بين اليد اليمنى واليد اليسرى من ناحية الضعف والقوة.

- كانوا من الأوائل الذين توصلوا الى فكرة تفتيت الحصى عن طريق المهبل باستخدام الخصائص الفيزيائية للماس وذلك.
- كانوا من الأوائل الذين بحثوا في أمراض الجدري والحصبة وفرقوا بينهما وفق أسس علمية دقيقة.
- اوضحوا الكثير من أساليب المعالجات النفسية منها سماع الغناء اللذيذ الملائم، ومجالسة المحبوبين من الأهل والأصدقاء، سماع الأخبار السارة وأشباه ذلك.
- كانوا من أوائل الأطباء الذين الفوا مؤلفات تكون بمثابة دليل طبي لمعالجة الحالات المرضية الطارئة التي قد تحدث في حالة عدم وجود طبي لمعالجة

- البحث في علم الاجنة وفق صيغ تقترب من الحالات المعاصرة فقد وصفوا حالات الجنين في الرحم وعلامات نموه وتطوره، كذلك حددوا الوقت الملائم لسقوط النطفة من الرجل للمساعدة على حالة الحمل.
- تمكنوا من معالجة مختلف الحالات المرضية، ومنها على سبيل المثال المرض المسمى ماذيا وهو الجنون السبعي.
- التمكن من معالجة حالة السكتة الدماغية وفق معالجات ناجحة للغاية، حتى انهم في بعض الأحيان تمكنوا من إعادة الحياة لمن اعتقد ان السكتة الدماغية قد غلبت عليه ومات.

انه من الواجب القومي والإنساني علينا ان لا نهمل أولئك الأطباء ومؤلفاتهم المتضمنة لعشرات بل المئات من الإنجازات والمعالجات والأفكار الكبية التي توصل لها الأطباء الكورد التي بدورها أصبحت من المصادر المهمة للمعرفة الطبية وتركت الأثر الواضح على الفكر الطبي المعاصر.

**الكلمات الدالة:** *الكُرد، الامارات الكردية، الطبّ، الحضارة، العصر الاسلامي.*

## تَمْهِيدٌ:

كان للدويلات والمدن الكُردية دورا متقدما في تطور الحضارة الإسلامية عامة والحضارة الإنسانية عامة فقد انجبت تلك الدويلات والمدن الكوردية العشرات من العلماء سواء علماء كورد او من العلماء الذين كانوا من ضمن تلك المدن وتحت رعاية تلك الدويلات وكانت لهم انتاجات علمية متميزة في جميع العلوم والفنون التي شكلت الأساس لتلك الحضارة.

ومن تلك الدويلات والامارات الكوردية على سبيل المثال الدولة الأيوبية، والدولة المراونية، والدولة الحسناوية، ومن والإمارات: الهذبانية، والشدادية، والارتقية، والبهدنانية، والجوانية، والسورانية، والاردلانية، والبابية، والبوتاذية، والبرسيكانية، والقمرية، والمهرانية، وغيرها من الأمارات الكوردية الأخرى.

إضافة الى ذلك كان للمدن الكوردية أيضا دورا متميزا في تقدم الفكر العلمي، ومن تلك المدن الكوردية: شهرزور، إربل، دينور، قرميسين، سيروقان، حلوان، داقوقا، ديار بكر، ميافارقين، حصن كيفا، جزيرة ابن عمر، ماردين، نصيبين، ارزن، سنجار، العمادية، عقرة، بدليس، خلاط، منازكرد، سلماس، اورمية، شيرناخ، اورفا، وغيرها من المدن الكوردية الأخرى.

وكانت تلك الدويلات والمدن موطنا لقبائل كردية كان لها دور كبير في الإدارة والسياسة والعلم ومن تلك القبائل الكوردية: الداسنية، الماراذية، الهكارية، البرزيكاذية، الشازنجانية، الجلالية، الكيكاذية، الهزباذية، المرواذية، المهراذية، الجوبية، وغيرها من القبائل الكوردية الأخرى♦.

لقد انجبت المدن علماء يشار لهم بالبنان في مختلف العلوم والفنون وتركوا لنا أفكارا ومسائل ومعالجات ومؤلفات أصبحت من المصادر الأساسية لتقدم الفكر العلمي في الحضارة الإسلامية وحضارة الغرب وكانت اثارها واضحة على الفكر العلمي المعاصر.

و من ضمن اوائك العلماء مجموعة من الأطباء الذين اغنوا بأفكارهم ومفاهيمهم ومعالجاتهم ومؤلفاتهم الطبية علم الطب وعلم الصيدلة وساهموا مساهم حقيقية في تقدم تلك العلوم ، ومن أولئك الأطباء:

## المبحث الأول: الأطباء الكورد وأطباء المدن الكوردية:

### أبو حنيفة الدينوري احمد بن داود (ت ٢٨٢هـ/ ٨٩٥م):

من أوائل العلماء الموسوعيين الذين بحثوا في مختلف العلوم والفنون وا جادوا في تلك العلوم اجادة تامة، ومن تلك العلوم: الطب والرياضيات من حساب وجبر ومثلثات وهندسة إضافة الى علوم الفلك، كذلك كان الدينوري من أوائل العلماء المسلمين الذين اهتموا بدراسة علم النبات ويعد كتاب الموسوم: (كتاب النبات) من المصادر الأساسية في دراسة علم النبات وعلم الحيوان (ابن النديم،١٩٩٧م، ص١١٦؛ أبو الحيان التوحيدي ،١٩٧٠،ص٥٩؛ القفطي، ١٩٨٢م، ج٣، ص٩٣؛الذهبي،١٩٨٥م،١٣/ ٢٢؛الصفدي، ٢٠٠٠م،١/ ٨٥٠؛ احمد محمود خليل، بيروت ٢٠١٣م؛ صالح شيخو الهسيناني ، دهوك ٢٠١٦م،ص٧٣؛المنشداوي ، ٢٠١٨ ، ص٤٢٦-٤٢٧).

من الدينوري في علم الطب:

- رسالة في الباه•

### - اسحق بن علي الرهاوي (كان حيا قبل سنة ٣١٩هـ/ ٩٣١م)

اسحق بن علي الرهاوي ولد في مدينة الرُها من اعمال الجزيرة، وكان من المهتمين بدراسة كتب اليونان الطبية وخاصة مؤلفات جالينوس في علم الطب ( أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص ٣٤٢؛ عبوش،٢٠٠٤م،ص ١٦٢ ).

من مؤلفاته في علم الطب والصيدلة:

- أدب الطبيب
- النبض الصغير
- تركيب الأدوية بحسب أمراض الأعضاء من الرأس الى القدم

### أبو العلاء صاعد بن الحسن الرحبي الجزري (ت بعد سنة٤٦٤هـ /١٠٧١م)

من أطباء مدينة الرحبة والمتميزين في صناعة الطب وذلك لذكائه وتقدمه في مجال العلم والمعرفة (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص ٣٤٠).

من مؤلفات الرحبي الجزري في علم الطب :

- كتاب التشويق الطبي

**أبو العباس احمد بن محمد بن يحيى البلطي (كان حيا قبل سنة ٣٦٨هـ/٩٧٨م)**

أبو العباس البلدي من مدينة بلط القريبة من الموصل، كان من المتمكنين من علم الطب من حيث العلاج والمداواة، واهتم على وجه الخصوص بالجوانب الطبية التي تتعلق بالحمل وا لولادة وعلاج الحالات التي قد تتعرض لهنّ الحوامل او الأطفال حديثي الولادة، فقد تطرق الى الكثير من الأمور المهمة في ذلك المجال منها علامات الحمل والإسقاط وا لولادة وحالات تعسر ا لولادة إضافة الى مباحث متطورة في علم الاجنة (ابن سينا،٢٠١٤م،ص٧٤،أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص ٣٤٢).

من مؤلفاته في علم الطب:

- كتاب تدبير الحبالى والأطفال والصبيان وحفظ صحتهم ومداواة الامراض العارضة لهم•.

**أبو سعيد عبيد الله بن جبرائيل بن عبيد الله بن بختيشوع النصراني (ت حوالي سنة ٤٥١ هـ/ ١٠٥٩م)**

من الأطباء البارزين في صناعته الطبية بمدينة ميا فارقين وبقي بها طيلة حياته، وعالج عدد كبير من المرضى ورجال الدولة. قال عنه ابن ابي اصيبعة: (فاضلا في صناعة الطب مشهور بجودة الاعمال فيها متقنا لأصولها وفروعها ومن جملة المتميزين من أهلها والعريقين من اربابها) (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٢١٤؛ السامرائي، ١٩٨٤م، ١/٣٩٣-٣٩٤).

من مؤلفاته في علم الطب:

- مناقب الأطباء
- الروضة الطبية
- التواصل الى حفظ التناسل
- نوادر المسائل من علم الأوائل في الطب
- تذكرة الحاضر وزاد المسافر في الطب
- الخاص في علم الخواص في الطب
- رسالة في بيان حركة النفس
- الطهارة ووجوبها

**ابن دينار الفارقي (ت ٤٥٦هـ/١٠٦٣م)**

من الأطباء والصيادلة الذين عاشوا في ديار بكر أيام اميرها نصر الدولة المرواني وعمل في بيمارستان المدينة طبيبا وصيدلانيا في وقت واحد وكانت له خبره بصناعة وتركيب الأدوية، وأشاد به ابن ابي اصيبعة حيث قال: (كلن فاضلا في صناعة الطب جيد المداواة خبيرا بتأليف الادوية)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

(أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٣٢٩؛ السامرائي، ١٩٨٤م،٤٧٦/٢ ؛فؤاد البستاني، بيروت ١٩٨٧م،ص ٣٢٢-٣٣٣؛كحا لة ، ١٩٧٥م،٨٦/٢؛هيـكل، والـ ياس مليحة، ١٩٩١م، ص٧٧؛ ا كو محـ مد بر هان، ٢٠١٢م، ص٢٢٠):

من ابن دينار الفارقي في علم الطب:

- كتاب الاقراباذين في تركيب الادوية
- كتاب الشراب الديناري

**زاهد العلماء أبو سعيد منصور بن عيسى النسطوري النصيبي الفارقي (ت٤٩٠هـ/١٠٩٦م)**

كان زاهد العلماء من المقربين الى نصير الدولة بن مروان، وعالج حالات كثيرة، منها: انه تمكن من معالجة احدى بنات نصير الدولة من حالة مرضية نادرة ومزمنة، وبعد نجاحه في المعالجة قرر نصير الدولة ان يكافئ زاهد العلماء ما يعادل وزن ابنته ذهبا، ولكن الطبيب زاهد العلماء رفض استلام تلك المكافئة المجزية واقترح ان يقوم الأمير بالإيعاز بإنشاء بيمارستان في ميافارقين (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م، ص٣٢٩؛الـ فارقي، ١٩٥٩م،ص٢٠٦؛البـ غدادي، ١٩٤٥م، ٤٣٧/٢؛ هيـكل، والـ ياس مليحة، ١٩٩١م، ص١٥٦؛ الـ سامرائي، ١٩٨٤م،٥١٠/٢؛ ا كو محـ مد بر هان، ٢٠١٢م، ص١٧٥؛عبد الرقيب يوسف،٢٠٠١م،ص٣٨٥؛ سوادي،١٩٨٩م،ص١٣٩).

من مؤلفاته لا في علم الطب:

- كتاب امراض العين ومداواتها
- كتاب البيمارستانات
- مقدمة في علم الطب
- الفصول والمسائل والجوابات الطبية
- في الأمراض ومداواتها
- كتاب فيما يجب على المتعلمين لصناعة الطب علمهِ

**بالمظفر نصر بن محمود بن المعرف العين زربي (كان حيا سنة ٥٣٤هـ/ ١١٣٩م)**

كان من المـهتمين بدراسة عـلوم الـطب والـصيدلة اضافة الى عـلم الكيمـياء والعـلوم الفلسفية (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م، ص٥٧٣؛أ بن خلكان،١٩٦٨م،٧٤/٦؛البيهـقي، ١٩٤٩م، ص ١٥٢-١٥٤؛الصفدي صلاح الدين خليل بن أيبك، ١٩١١م،ص٢٠٤؛ هيكل، والياس مليحة، ١٩٩١م، ص١٠٨-١٠٩).

من العين زربي في علم الطب:

- كتاب المختارات في الطب

**محمد بن محمد الجزري (ت ٥٣٤هـ/ ١١٣٩م)**


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

من أطباء جزيرة ابن عمر ترك مجموعة من المؤلفات ومما وصل لنا من مؤلفاته في علم الطب ( السخاوي شمس الدين، ١٣٥٣هـ، ٢/ ١١؛ الهسيناني، ٢٠١٦، ص٤٤٩):

- الطب النبوي

**محمد بن عمر بن عطاف الجزري (ت ٥٣٤هـ/ ١١٣٩م)**

و لد ون شأ في جز يرة ا بن ع مر، و قد أ شاد بمعرف ته الطب ية الـ كثير من ا لمؤرخين و منهم الذهبي فقد وصفه بانه من الحاذقين في الطب ( الذهبي،١٩٩٢م، ٢٠/ ٥٤؛ اكو محمد برهان، ٢٠١٢م، ص٢٢٠).

وترك لنا مجموعة من المؤلفات في علم الطب منها:

- كتاب الطب النبوي
- الاقراباذين في الطب

**موفق الدين ابن العين زربي (من علماء منتصف السادس الهجري)**

جمع بين أكثر من علم وفن اضافة الى علم الطب كان من المبدعين في علم المنطق وعلم الفلك، وكانت نشأته وولادته في عين زربة ثم انتقل بغداد ومنها الى مصر وأصبح من أكثر أطباء مصر علما في وقته وكانت له معالجات صائبة وتجارب نافعة إضافة الى توا فد عديه مجموعة من طلبة العلم في مجال علم الطب ا لذين أصبحوا فيما بعد من شيوخ علم الطب (أبن أبي ا صيبعة ،١٩٧٥م، ص٥٧٠ ؛النقشبندي،١٩٨١م،ص٢٧٠).

من مؤلفاته في علم الطب:

- الكافي في صناعة الطب
- مقالة في الحصى وعلاجها
- المجربات في الطب على شكل الكناش•
- شرح كتاب الصناعة الصغيرة لجالينوس
- رسالة في ضرورة وجود الطبيب الفاضل

**أبو المؤيد محمد بن محمد بن الصائغ العنتري الجزري (ت ٥٧٠هـ/١١٧٤م)**

كان طبيبا م شهورا وعا لما مذكورا من علـ ماء الجز يرة، وذ كر ع نه با نه كان حـ سن المعالجة جيد التدبير، وكان خبيرا في وصف وتركيب الأدوية، كذلك كان من المهتمين بدرا سة ع لم الف لك والهيـ ئة إ ضافة الى ع لم الفلـ سفة والمنـ طق (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م، ص ٣٨٩-٣٩٩؛الـ صفدي صلاح ا لدين،١٩٦٩م،٤/ ٣٨٦-٤٨٤؛البـ غدادي إسماء يل با شا،١٩٤٥م،١/ ٢،٥٦٢/ ٢٧٠؛الزركـ لي، ١٩٦٩م،٧/ ٢٤١؛الهـ سيناني صالح شيخو، ٢٠١٦م، ص٣٦٩،٢٨٦؛ هيكل، والياس مليحة، ١٩٩١م، ص٢٦٧) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

من محمد الصائغ الجزري في علم الطب:

- كتاب الاقراباذين في الأدوية المركبة

**موفق الدين اسعد بن أبي الفتح الياس بن المطران (ت ٥٨٧هـ/ ١١٩١م)**

كان من ضمن الأطباء الذين قربهم السلطان الناصر صلاح الدين يوسف بن أيوب الأيوبي وتقدم عنده ونال غاية الاحترام والتقدير حتى انه اعتنق الإسلام على يده الذي بدوره زوجه أحد حظايا داره واسمها جوزة. وكان للسلطان حسن اعتقاد في ابن المطران لا يفارقه في سفر او حضر (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٦٥١-٦٥٩؛ المقريزي، ١٩٩١م، ٩٨/٢؛ احمد عيسى، ١٩٨٢م، ص١٣٥؛ اكو محمد برهان، ٢٠١٢م، ص٢٦٥) .

من مؤلفاته في علم الطب والصيدلة:

- المقالة الناصرية في تدبير الصحة
- المقالة النجمية في التدابير الصحية
- بستان الأطباء وروضة الألباء•
- كتاب آداب طب الملوك
- الأدوية المفردة

**الشيخ السديد رئيس الأطباء أبو منصور عبد الله بن الشيخ السديد ابي الحسن علي ابي المنصور شرف الدين (ت ٥٩٢هـ/ ١١٩٥م)**

لقب بشيخ الأطباء وكان قد اشتغل على الطبيب أبي نصر عدنان بن العين زربي في جزيرة ابن عمر، ثم أصبح علم من اعلام الطب وتنقل في خدمة الخلفاء والأمراء ثم لازم السلطان صلاح الدين الأيوبي الذي أحسن اليه كثيرا واعطاءه مقاما كبيرا يتناسب مع مكانته العلمية، وكان السلطان يأخذ بنصائحه الطبية وعلاجاته التي يصفها له، وأوكلت له أيضا مهمة الأشراف على البيمارستان النوري الكبير في دمشق (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص ٥٧٢-٥٧٦؛ المنذري،١٩٨٨، ٢٢٣/١-٢٢٤ ؛شمس الدين الذهبي، ١٩٦٤م، ١٠٥/٣؛ اكو محمد برهان، ٢٠١٢م، ص٢٥٦).

**فخر الدين أبو عبد الله محمد بن عبد السلام بن عبد الرحمن المارديني (ت ٥٩٤هـ/ ١١٩٧م)**

كان من اسرة علميه فقد كان ابوه قاضيا على ماردين وجده قاضيا على دُنيّسر، اقام فخر الدين بن عبد السلام الماريدني في مدينة حيني سنين كثيرة، وكان في خدمة نجم الدين بن ارتق، وتوافد عليه طلبة العلم ومنهم سديد الدين محمود بن عمر الطبيب الذائع الصيت حيث لازمه في مدينة حيني وقرأ عليه صناعة الطب، وكان له مجلس لتدريس الطب، وكان لا يأخذ ثمن عن التدريس ويقول: (العلم لا يباع اصلاً).وقد حاول الملوك والامراء التقرب اليه للإقامة عندهم ومنهم الملك الظاهر غازي بن الملك الناصر لدين الله الذي طلب من فخر الدين الماريدني



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

الإقامة عنده فاعتذر اليه وعاد الى ماردين (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٤٠٢- ٤٠٣ ؛الصفدي صلاح الدين ، ١٩٦٩م، ٢٥٥/٣ ؛القفطي جمال الدين ، ١٩٠٣م، ١٩٧٣م، ص٢٩١-٢٩٢ ؛ ابن العبري، ١٩٥٨م،ص٢٣٩ ؛البغدادي إسماعيل،١٩٤٥م،٢،٢٣٢ ؛ هيكل، والياس مليحة، ١٩٩١م، ص١٧٠).

من مؤلفاته في علم الطب:

- تصحيح كتاب القانون في الطب
- شرح قصيدة ابن سينا في الطب

**أبو النجم بن ابي غالب بن فهد بن منصور النصراني الشفائي الحوراني ويعرف بالعيار (ت ٥٩٩هـ /١٢٠٢م)**

كان طبيبا مشهورا في زمانه، جيد المعرفة بعلم الطب، له معالجات طبية جيدة، وهو في الأصل من قرية شفا من ارض حوران، وكان من ضمن أطباء الملك الناصر صلاح الدين يوسف بن أيوب وأصبح من المقربين له وكان يتردد الى دوره ويعالج من يحتاج الى معالجة (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٦٦١؛ الصفدي صلاح الدين، ١٩٦٩م،١٨٩/٢٦ ؛ هيكل، والياس مليحة، ١٩٩١م، ص٦٨؛ كحالة،١٩٧٧م،٧٦/١٣؛ لويس شيخو،١٩٨٣م، ص ١٠٤-١٠٥).

من مؤلفاته في علم الطب:

- كتاب الموجز في الطب العلمي والعملي

**قطب العارفين جمال الدين محمد بن إبراهيم الماريديني (من علماء القرن السابع الهجري الثالث عسر الميلادي).**

من المهتمين بدراسة علم الطب وكانت له معرفة في معالجة مختلف الحالات المرضية ( أبن حجر العسقلاني، ١٩٥٧م، ٦٣/٣ ؛النقشبندي، ١٩٨١م،ص١٥١).

من مؤلفاته في علم الطب:

- رسالة في الصناعة الطبية

**جمال الدين محمد بن إبراهيم الماريديني (القرن السابع الهجري)**

من أطباء ماردين ترك مجموعة من المؤلفات المهمة (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص١٥١-١٥٢).

من المؤلفات في الطب:

- الرسالة الشهابية في الصناعات الطبية

وتتكون تلك الرسالة من ثمانين بابا تناول فيها الامراض التي تعرض لجسم الانسان وعلاجها مبتدأ بأمراض الرأس مرورا بباقي امراض البدن والعلامات الدالة على الامراض ومنها الامراض المنذرة بالموت، كذلك ذكر فيها المعالجات بالأغذية ثم الادوية.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

**فخر الدين رضوان بن محمد بن علي الساعاتي (ت ٦٠٤هـ/ ١٢٠٧م)**

من علماء الدولة الأيوبية الذين اجادوا في أكثر من علم وفن منها علم الطب والفلك والموسيقى والغناء. وقد لازم سلاطين وملوك الدولة الأيوبية وقدم خدماته العلمية لهم،

كذلك خدم الملك الفائز بن الملك العادل ابي بكر بن أيوب وأصبح وزيرا له، وخدم أيضا الملك المعظم عيسى بن الملك العادل بصناعة الطب، وأصبح وزيرا له وكان ينادمه ويضرب له بالعود (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م، ص٦٦١-٦٦٢؛ ا بن سعيد الأندلسي، ١٩٦٧م، ص١٨٨؛ ياقوت الحموي، ١٩٩٣م، ١٤٢/١١؛الأتروشي شوكت، ٢٠٠٦م،ص٢١٠).

**من مؤلفاته في علم الطب:**

- تكملة كتاب القولنج• لابن سينا
- الحواشي على كتاب القانون في الطب

**مهذب الدين أبو الحسن علي بن هبل الآمدي المعروف بابن هبل البغدادي الخلاطي (ت ٦١٠هـ/ ١٢١٣م)**

كان من ضمن المشتغلين بعلم الطب وقد أحسن فيه وأجاد وانه سافر الى بلاد الروم ونظرا لمكانته العلمية وخاصة في علم الطب فان صاحب الروم كيكاوس بن كيخسرو استقبله وأكرمه كثيرا حتى انه قد توفي في ارض الروم، وكان قد اهتم بدراسة الطب من الناحية النظرية والعملية وأكد على أثر المزاج على الكثير من الحالات المرضية إضافة الى تأكيده على أهمية العلاج بالأغذية قبل الأدوية (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م، ص٤٠٧-٤١٠؛٤٤؛ ا بن العبري غريغوريوس الملطي،١٩٨٦م، ص٢٥٠؛الغساني أبو العباس، ١٩٧٥م، ٣٤٣/٢؛البغدادي إسماعيل، ١٩٤٥م، ١٦٢٢/٢؛القفطي،١٩٠٣م،ص٢٣٨-٢٣٩؛الصفدي صلاح الدين،١٩١١م،ص٢٠٥؛ ا بن العبري، ١٩٥٨م، ص٤٢٠؛السامرائي،١٩٨٤م، ص١١١؛كحالة ،١٩٧٥م، ٢١/٧).

**من ابن هبل الخلاطي في علم الطب:**

- الطب الجمالي
- المختار في الطب

**شمس الدين أبو عبد الله محمد بن عبدان اللبودي (ت ٦٢١هـ/ ١٢٢٤م)**

من حكماء وأطباء الدولة الأيوبية واتقن الحكمة والطب وخدم الملك الظاهر غياث الدين غازي بن الملك الى ان توفي الملك الظاهر في (سنة ٦١٣هـ) وبعدها اتجه الى دمشق واقام بها يدرّس الطب ويعالج المرضى في البيمارستان الكبير النوري الى سنة وفاته (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٤٠٧٦٦٢-٦٦٣).

**من مؤلفته في علم الطب:**



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- رسالة في وجع المفاصل

- شرح كتاب المسائل الطبية لحنين بن اسحق.

**إسحاق بن علي الرهاوي (الربع الأول من القرن السابع الهجري)**

من أطباء مدينة الرها ومن المهتمين بدراسة علم الطب وعلم الصيدلة (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٣٤٢؛ عبوش،٢٠٠٤م، ص ٨٦).

من مؤلفاته في علم الطب:

- أدب الطبيب
- الكناش في تركيب الأدوية

**حسنون الرهاوي (ت ٦٢٥هـ/ ١٢٢٧م)**

من أطباء الرها اهتم بدراسة علم الطب من الناحية النظرية والعملية. ( ابن العبري، ١٩٨٦م، ٤٤٢-٤٤٣).

من مؤلفاته في علم الطب:

- المختار في الطب النظري والعملي

**مهذب الدين عبد الرحيم بن علي بن حامد ويعرف بالدخوار (ت ٦٢٨هـ / ١٢٣٠م)**

كان من أطباء الدولة الأيوبية الذين يشار لهم بالبنان وذلك سعة علمه ومعرفته الطبية، وكان شيخه في الطب فخر الدين المارديني حيث درس على يديه ولازمه كثيرا، وان مهذب الدين الدخوار فيما بعد أصبح من كبار الأطباء وتوافد عليه طلبة العلم للأخذ عنهم، ومنهم موفق الدين ابن ابي اصيبعة صاحب كتاب: (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٤٨٢).

لقد خدم مهذب الدين السلاطين الأيوبيين وقد لهم ولعوائهم الكثير من الخدمات الطبية ،ومنهم الملك العادل الذي كان قد انزله منزلة عالية تستحق مكانته الطبية. كذلك انه عالج زوجة الملك العادل ام الملك الصالح إسماعيل من علة مستعصية كانت بها. يضاف الى ذلك انه في سنة اثنتي عشرة وستمائة عالج الملك الكامل ابن الملك العادل، وقد ولاه السلطان رئاسة أطباء مصر بأسرها وبلاد الشام (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٧٢٨-٧٣٦؛الصفدي صلاح الدين،١٩٦٩م،٢/٣١٥-٣١٦؛ شمس الدين الذهبي،١٩٦٤م،١١٢/٥؛النعيمي عبد القادر، ١٩٩٠م، ١٠٠/٢؛كحالة ، ١٩٧٧م،٢٠٩/٥؛الأتروشي شوكت ،٢٠٠٦م،ص٢٥٦).

من مؤلفاته في علم الطب والصيدلة:

- كتاب الجنينية في الطب
- اختصار كتاب الحاوي في الطب
- مقالة في الاستفراغ



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

- المسائل الطبية
- مقالة في ترتيب الأغذية اللطيفة والكثيفة

**عبد الولي بن قراتكين ابن عبد الله السنجاري الآمدي (ت ٦٢٩هـ/ ١٢٣١م)**

ابن قراتكين من الأطباء الذين اتجهوا الى مدينة سنجار واقام فيها وخدم في عمله في مجال علم الطب عماد الدين زنكي حاكم سنجار (ت ٥٩٤ هـ/١١٩٧م) وابنه قطب الدين محمد (ت٦١٦هـ/١٢١٩م) ثم شاهنشاه ابن قطب الدين بعد وفاته، ونظرا لمكانته الطبية وحرصه على ضمان معالجة المرضى في سنجار فقد أنشأ مدرسة للطب فيها، وقد غادر سنجار بعد ان استولى عليها الملك الاشرف ( عام ٦١٧ هـ/١٢٢٠م) فقد اتجه الى آمد وتوفي فيها. ( اله سنياني موسى، ٢٠٠٥م،ص١٨٧-١٨٨).

**من عبد الولي السنجاري في علم الطب:**

- الحالم في الطب
- كتاب الباه
- الأرجوزة في الباه
- ارجوزة في التشريح
- شرح كتاب القانون
- اختصار المسائل في الطب لحنين بن اسحق.

**رضي الدين أبو الحجاج يوسف بن حيدرة الرحبي الجزري (ت ٦٣١هـ/١٢٣٣م)**

ولد رضي الدين الجزري في جزيرة ابن عمر (سنة ٥٣٤هـ) ونشأ بها وتنقل ما بين نصيبين والرحبة، وتقدم في علم الطب وذاعت شهرته حتى انه اجتمع بالملك الناصر صلاح الدين يوسف بن أيوب فحسن موقعه عنده وخصص له في كل شهر ثلاثين دينار وجعله مختصا بالمعالجة في قلعة القاهرة إضافة عمله في البيمارستان الناصري ( أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص ٦٧٢-٦٧٥؛الصفدي صلاح ١٩٦٩م، ٢٣١/١٢؛ شمس الدين الذهبي ، ١٩٥٨م،٦٣٠/٢؛ احمد عيسى ، ١٩٨١م، ص٧٩؛ خوشناو سلام، ٢٠٠٦م، ص١٧٠).

**من مؤلفاته في علم الطب:**

- اختصار المسائل الطبية لحنين بن اسحق

**سديد الدين داود بن ابي البيان (ت ٦٣٤هـ/ ١٢٣٦م)**

من الأطباء اليهود الذين كانوا ضمن رعاية الدولة الأيوبية عمل في البيمارستان الناصري بالقاهرة وكان من اشهر زمانه في تركيب الأدوية ومعرفة مقاديرها وأوزانها على ما ينبغي (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٥٨٤؛الاتروشي شوكت. ٢٠٠٦م، ص٢٧١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

من مؤلفاته في علم الطب:

- كتاب الإقرابان في الادوية المركبة
- تعاليق طبية على كتاب العلل والأعراض لجالينوس.

**سديد الدين أبو الثناء محمود بن عمر بن محمد الحانوي الجزري ويعرف بابن رقيقة (ت ٦٣٥هـ/ ١٢٣٧م)**

ولد ابن رقيقيه الحيني الجزري في مدينة حيني♦ ونشأ بها وذلك (سنة ٥٦٤هـ) وقد أخبر بذلك ابن ابي اصيبعة الذي بدوره ترجم له ترجمة وافية (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٧٠٣-٧١٧) .وكان من تلامذة الطبيب الشيخ فخر الدين محمد عبد السلام الماريديني فقد صحبه كثيرا واشتغل عليه بصناعة الطب وبقية العلوم الأخرى. إضافة الى ذلك ونظرا لمكانته العلمية العالية فقد حضي أيضا برعاية واهتمام من الكثير من السلاطين والامراء منهم الملك المنصور محمد صاحب حماة ابن تقي الدين عمر، والملك الأوحد نجم الدين أيوب بن الملك العادل ابي بكر بن أيوب صاحب خلاط الملك الأشرف أبا الفتح موسى ابن الملك العادل وقد اوكل له الاشراف الطبي على الدور السلطانية بالقلعة وان يواظب أيضا معالجة المرضى بالبيمارستان الكبير الذي انشأه الملك العادل نورالدين بن زنكي واطلق له أموالا وارزاقا كثيرة، (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص ٧٠٣-٧١٧؛أبن شاكر الكتبي، ١٩٨٤م،١٦٧/٢١؛ ابن العماد الحنبلي، د.ت،١٧٧/٥؛البغدادي إسماعيل ، ١٩٤٥م،٢،٤٠٥؛ الاتروشي شوكت، ٢٠٠٦م،ص٢٦٦).

من ابن رقيقة الجزري في علم الطب:

- لطف السائل وتحف المسائل في الطب
- شرح كتاب القانون في الطب لابن سينا
- الاشتباه في ادوية الباه
- الغرض المطلوب في تدبير المأكول والمشروب
- مسائل واجوبتها في الحميات
- ارجوزة في الفصد
- القصيدة الباهية في الطب

**نفيس الدين أبو القاسم هبة الله بن صدقة بن عبد الله المعروف بالقاضي نفيس الدين (ت٦٣٦هـ/ ١٢٣٨م)**

كان من ضمن أطباء الدولة الأيوبية الذين كانوا من المهتمين بطب العيون واشتهر بصناعة الكحل، وولاه الملك الكامل ابن الملك العادل رئاسة الطب بالديار المصرية، إضافة الى ذلك كان يقوم بمهمة علاج العيون في البيمارستان الناصري،وكان له مجموعة من الأبناء الذين



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ساروا على نهج ابيهم في طب العيون وصناعة الكحل وأصبحوا أيضا من الأطباء المتميزين في صناعتهم الطبية (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص٥٦٨).

**كمال الدين ابن يونس موسى بن يونس الإِرْبِلِيّ ٦٣٩هـ/١٢٤١م)**

كان كمال الدين ابن يونس الإِرْبِلِيّ من العلماء الموسعين الذين جمعوا بين أكثر من أربعة وعشرين علما وكان على معرفة تامة بتلك العلوم، ومنها علم الحساب والجبر والمثلثات والهندسة والفلك والكيمياء والطب والصيدلة وغيرها من العلوم الأخرى.

وتوافد عليه طلبة العلم من داخل العالم الإسلامي وخارجه أولئك الطلبة الذين أصبحوا فيما بعد من كبار العلماء (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص٤١٠-٤١٢ ؛الصفدي صلاح الدين ،١٩٦٩م، ٣١٧/٥؛ شمس الدين الذهبي،١٩٩٢م،٨٥/٢٣؛طوقان، ١٩٦٦م،ص٣٩٤؛ ابن كثير ،١٩٩٠م،١٥٨/١٣ ؛هونكه،١٩٦٩م ؛ص٤٥٢ ؛المنشداوي، ١٩٩٩م،ص٥١٦ ؛المدرس علد الكريم،١٩٨٢م،ص٥٩١-٥٩٨).

**من كمال الدين الإربلي في علم الطب:**

- مفردات الفاظ القانون في الطب

**أبو منصور بن ابي الفضل بن غازي رشيد الدين الصوري (ت ٦٣٩هـ/١٢٤١م)**

كان من المهتمين بدراسة علم الطب وعلم الصيدلة والعمل على تركيب الأدوية وعلى وجه الخصوص الادوية النباتية وذلك لخبرته الواسعة أيضا بعلم النبات. وقد خدم بصناعته الطبية وخبرته في تركيب الادوية الملك العادل أبا بكر بن أيوب وحتى انه رافقه كثيرا في اسفاره ومنها رحلته الى مصر (ت٦١٢هـ/١٢١٦م) وبقي في خدمته الى ان توفي الملك العادل ثم خدم بعده ولده الملك المعظم عيسى بن ابي بكر وكان مقربا له وبقي في خدمته الى ان توفي الملك المعظم وملك بعده ولده الملك الناصر داود بن الملك المعظم فقربه أيضا واعتمد عليه فيما يتعلق بالأمور الطبية حتى انه فوض له رئاسة الطب وكان له مجلس للطب يحضره كبار الأطباء وطلبة العلم (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص٧٠٣).

**من مؤلفاته في علم الطب والصيدلة:**

- كتاب الفرائد والوصايا الطبية
- كتاب الأدوية المفردة

**رشيد الدين أبو سعيد بن موفق الدين يعقوب النصراني (ت ٦٤٦هـ / ١٢٤٨م)**

كان متميزا في صناعة الطب خبيرا بعلمها وعملها، ونظرا لمكانته العلمية ومعرفته الطبية الواسعة فكان له شأن كبير في الدولة الأيوبية، فكان مقربا من الملك المعظم صاحب دمشق، وكذلك الملك الكامل محمد الذي قدم له الهبات الكثيرة، ثم اتصل بالملك الصالح نجم


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الدين ايوب ، وكان مقدما عنده وجعله من ضمن اطبائه (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص٦٩٩-٧٠٣؛ الاتروشي شوكت، ٢٠٠٦م،ص٢٦٦،فتحي مصطفى ، ٢٠٠١م،٢٠٠١م ، ٢٣٦/٣) .

من مؤلفاته في علم الطب:

- كتاب عيون الطب

- رسالة في التعاليق على كتاب الحاوي في الطب للرازي.

**فتح الدين احمد بن عثمان بن ابي الحوافر (ت ٦٥٧هـ/ ١٢٥٨م)**

من مشاهير أطباء العيون في مصر وخدم الملك الكامل محمد وابنه الملك الصالح نجم الدين ألف له كتابه الموسوم :( نتيجة الفكر في علاج امراض البصر) وكان ذلك الكتاب يتكون من سبعة عشر بابا تناولت مختلف الأمورا لتي في امراض العين وعلاجاتها إضافة فصول منه تختص بالأمور التشريحية الخاصة بالعين (فتحي مصطفى ، ٢٠٠١م،٢٠٠١م، ٥١/٣).

من مؤلفاته في علم الطب:

- نتيجة الفكر في علاج امراض البصر

**جمال الدين عثمان بن يوسف بن حيدرة الرحبي الجزري (ت ٦٥٨هـ/١٢٥٩م)**

درس على مجموعة من شيوخ الطب وفي مقدمتهم ابيه يوسف بن حيدرة الرحبي الذي كان متميزا بذلك العلم وتنقل ما بين دمشق والديار المصرية وعمل في البيمارستان الكبير الذي اذ شأه الملك العادل نورالدين زنكي وبقي يعمل به سنين كثيرة (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص٦٩٩؛ صلاح الدين الصفدي، ١٩٦٩م، ٣٤٢/١٩؛البستاني، ١٨٧٦م، ٩١/٣؛مطفى الجيوسي، ٢٠٠٥م،٢٨).

من جمال الدين الجزري في علم الطب:

- المعالجات في الطب

**رشيد الدين أبو الوحش بن فارس ابي الخير بن ابي سليمان بن ابي المنى بن ابي فانة بن بأبي حليقة (ت ٦٦٠هـ/١٢٦١م)**

من أطباء الدولة الأيوبية وخدم بعلمه مجموعة من سلاطينها وملوكها، وكان مولده بقلعة جعبر وذلك في سنة احدى وتسعين وخمسمائة، وكان أبيه من فرسان الدولة الأيوبيين المتقدمين عندها وكان ساكنا بدار يقال لها دار ابن الزعفراني عند باب الرها، وكانت هذه الدار ملاصقة لدار السلطان وتوفرت فرصة ان التقى رشيد الدين أبو حليقة عندما كان عمرة ثمان سنين ان يلتقي بالملك الكامل الذي لاحظ عليه امرات الذكاء والنبوغ فقال الملك لأبيه: ولدك هذا ولد ذكي لا تعلمه الجندية فالأجناد عندما كثيرون، وأنتم بيت مبارك. فجهزه وسيره الى دمشق لقراءة الطب). وبعد دراسته للطب أصبح من كبار أطباء الدولة الأيوبية وخدم الملك



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

الكامل وهو الذي لقبه بلقب أبي حليقةثم بعده ولده الملك الصالح نجم الدين أيوب ثم بعده ولده الملك المعظم ترشاه.

وكان الملك الكامل هو الذي أطلق على رشيد الدين لقب أبو حليقة وذلك لكونه كانت حلقة في اذنه وقد بقيت تلك الحلقة مرافقة له طيلة حياته ( أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص٥٩٢) (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص٥٩٠-٥٩٨؛ابن شاكر الكتبي، ١٩٦٤م، ٥٢٣/٢؛كحالة، ١٩٧٥م،١٦١/٤؛لويس شيخو ،١٩٨٣م ، ٤٥-٤٦٤٦) .

من مؤلفاته في علم الطب:

- المختار في ألف عقار في الأدوية المفردة
- الأمراض وأسبابها وعلاماتها ومداواتها
- مقال في حفظ الصحة
- مقالة في ضرورة الموت
- مقالة ان الملاذ الروحانية اذ من الملاذ الجسمانية

**شرف الدين أبو الحسن علي بن يوسف ابن حيدرة الرحبي الجزري (ت ٦٦٧هـ/)١٢٦٨م)**

كان من اسرة طبيه فكما ذكرنا سابقا فان جده حيدرة بن الرحبي الجزري وابيه شرف الدين يوسف ابن حيدرة الرحبي الجزري من كبار الأطباء الذين انجبتهم جزيرة ابن عمر. وأخذ الطب عن ابيه وصبح علما بارزا في علم الطب وكان من ضمن الأطباء العاملين في البيمارستان الكبير الذي أنشأه الملك العادل نورالدين زنكي، كذلك تولى تدريس الطب في المدرسة التي اوقفها الشيخ مهذب الدين عبد الرحيم بدمشق (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص٦٧٥-٦٨٢؛البغدادي إسماعيل ، ١٩٤٥،١/٤٣٩؛البستاني، ١٨٧٦م، ٩١/٣؛هيكل ،الياس مليحة، ١٩٩١م، ص٤٦).

من مؤلفاته في علم الطب:

- كتاب خلق الإنسان وهيئة أعضائه ومنفعتها
- تعليقات على كتاب القانون في الطب
- تعليقات على شرح مسائل حنين الطبية

**الصاحب نجم الدين يحيى بن شمس الدين محمد بن عبدان اللبودي (ت ٦٧٠هـ/ ١٢٧١م)**

كان من كبار أطباء الدولة الأيوبية وكانت له المنزلة العليا عند ملكوها وسلاطينها وذلك لخبرته ومقدرته الطبية الواسعة، فقد كان من مقدمي أطباء الملك المنصور إبراهيم ابن الملك المجاهد بن أسد الدين شيركوه بن شاذي صاحب حمص وكان يعتمد عليه في صناعة الطب، وزادت منزلته عنده حتى جعله وزيرا له وفوض اليه الكثير من أمور الدولة واعتمد عليه وكان لا يفارقه في السفر او الحضر. وبعد وفاة الملك المنصور ( سنة ٦٤٣هـ/١٢٤٥م) توجه الحكيم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولينێن كوردى

ابن اللبودي الى الملك الصالح نجم الدين أيوب ابن الملك الكامل وهو با لديار المصرية، وجعله من أطبا ئه واو كل له مهمة الا شراف على ا لديوان بالإ سكندرية وبعدها أ صبح ناظرا على ا لديوان بجميع الاعمال الشامية (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م،ص٦٦٢-٦٦٨؛ ا بن العبري، ١٩٨٦م، ص٤٨١؛ أ بن شاكر الكتبي، ١٩٨٤م، ٤٢٩/٢؛ الأتروشي شوكت ،٢٠٠٦م، ص ٢٨٧):

من مؤلفاته في علم الطب:

- تدقيق المباحث الطبية
- مختصر الكليات من كتاب القانون في الطب

**أبو الفضل لقمان بن كمال الدين سليمان الحتيتي الأسعردي**

جمع أ بو الفضل الأ سعردي بين الطب والصيدلة و ترك لنا مجموعة من الكتب في موضوعها ومادتها.

من مؤلفاته في الطب والصيدلة:

- اختصار المسائل في الطب لحنين بن اسحق
- تهذيب شرح الفصول في الطب لأبقراط
- الطب بحسب حروف المعجم

**مجير الدين بن كاسو الاسعردي**

من اطباء مدينة أ سعرد درس الطب في المدرسة المستنصرية في بغداد على يد شيخه الطبيب مجد ا لدين ا بن الصباغ ( أ بن الفوطي، ١٩٦٥م، الترجمة ٦٤٠؛ ناجي معروف،١٩٥٩م،ص ٢٤٨).

**شمس الدين أبو العشائر هبة الله بن زين بن حسن بن جميع الإسرائيلي**

من أطباء الدولة الأيوبية الذين خدموا الملك الناصر صلاح الدين بن يوسف بن ا بي أيوب وحظي في أيامه وكان رفيع المنزلة عنده عالي القدر واعتمد عليه كثيرا في الأمور الطبية. وكان قد اخذ الطب عن شيخ الطب الموفق ا بي نصر عدنان بن العين زربي (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م،ص٥٧٦-٥٧٩؛ زهير حميدان،١٩٧٥م،١٨٥/٣؛الأتروشي شوكت ، ٢٠٠٦م، ص٢٦١).

من مؤلفات مجير الدين الجزري في علم الطب والصيدلة:

- الارشاد لمصالح الانفس والاجساد
- التصريح بالمكنون في تنقيح القانون في الطب
- مقالة في علاج القولنج
- مقالة في الحدبة•
- الرسالة السيفية في الأدوية المملوكية



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- مقالة في الليمون وشرابه ومنافعه
- رسالة في طبع الإسكندرية وحالها وهوائها ومياهها وأحوال أهلها.

**عماد الدين أبو عبد الله محمد بن عباس ابن احمد الدُنيسري (ت ٦٨٦هـ/ ١٢٨٧م)**

ولد في مدينة دُنيسر وهي ناحية من الجزيرة قرب ماردين ونشأ بها وا شتغل بعلم الطب إضافة الى العلوم الدينية ومنها علم الفقه وعلوم الادب واللغة، وانتقل من الجزيرة الى مصر ثم منها الى بلاد الشام، وكان مقربا من ملوك وسلاطين الدولة الأيوبية، وتولى العمل في البيمارستان الكبير النوري بدمشق (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م،ص٧٦١-٧٦٧؛ ياقوت الحموي، ١٩٧٥م، ٤٧٨/٢؛ أ بن العماد الحنبلي، د.ت،٣٩٧/٥؛النعيمي عبد القادر ، ١٩٩٠م، ١٣٢/٢؛ الحارثي، ٢٠٠٧م، ص ٣٩٨).

من مؤلفاته في علم الطب والصيدلة:

- نظم كتاب نظم الترياق الفاروقي في الطب
- كتاب في شرح تقدم المعرفة لأبقراط
- المقالة المرشدة في درج الادوية المفردة

**احمد بن علي بن محمد بن صالح الإِرْبِلِيّ (من القرن الثامن الهجري/ الثاني عشر الهجري)**

من أطباء اربل اهتم بدراسة علم الطب من الناحية النظرية والعملية (زهير حميدان، ١٩٧٥م، ٥٥/٤).

من المؤلفات الطبية التي تركها احمد الإربلي:

- الكفاية في الطب

**جمال الدين محمد بن إبراهيم الماريني (من أطباء القرن الثامن الهجري/ الثاني عشر الميلادي)**

من أطباء مدينة ماردين وليس هناك معلومات عن حياته ولكن من خلال كتابه في علم الطب الذي وصل لنا ظهرت بوضوح مكانته الطبية فقد تضمن ذلك الكتاب ثمانين بابا بحث بها في كل ما يتعلق بجسم الانسان وحالاته المرضية ابتدأ من الرأس الى أسفل القدم مرورا بجميع أجزاء الجسم حيث تكلم عن الحالات المرضية والعلامات الدالة عليها والعلاجات المناسبة لها بما فيها العلاج بالأغذية، كذلك ذكر أيضا الامراض والحالات التي تنذر بالموت ( النقشبندي ،١٩٨١م،ص ١٥٢).

ومن مؤلفاته الطبية التي وصلت لنا:

- الرسالة الشهابية في الصناعة الطبية*

**شمس الدين محمد بن يوسف ابن الحشاش الجزري (ت ٧١١هـ /١٣١١م)**



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

من أطباء جزيرة ابن عمر الذين جمعوا بين علم الطب والصيدلة وخاصة فيما يتعلق بالأعشاب والنباتات الطبية حيث انتقل الى مصر وبها ذاع شهرته الطبية وخبرته في الأعشاب الطبية ( الأسنوي، ١٩٧٠م، ٣٨٣/١؛ابن قاضي شهبة، ١٩٨٧م،٢/ ؛كامل قادر أسود، ٢٠١٤م، ص ١٩٠).

**علاء الدين علي بن ركن الدين محمد بن عيسى بن مسعود الإِرْبِلِيّ (ت بعد سنة ٧١٥هـ/١٣١٥م)**

من علماء اربل الذين اهتموا بدراسة علم الطب فقد اخذ علم الطب عن ابيه ركن الدين الإِرْبِلِيّ الذي كان من أطباء اربل المتميزين. ونظرا لمقدرته وسعة علمه في مجال علم الطب فأصبح أحد مدرسي الطب في المدرسة المستنصرية، وقام بتدريس الطب وتوافد عليه طلبة العلم وكان يجلس في ايوان الطب اتجاه المدرسة المستنصرية، كذلك تردد عليه المرضى للمعالجة نظرا لخبرته الطبية الواسعة ( الفوطي ، ١٩٦٥م، ١٢١/٤ ؛ناجي معروف ، ١٩٥٩م، ص ٢٤٧-٢٤٨).

**عز الدين حسن بن احمد الإِرْبِلِيّ (ت ٧٢٦هـ/ ١٣٢٥م)**

عز الدين الإِرْبِلِيّ من أطباء اربل الذين اهتموا بدراسة العلوم الطبية والعلوم الفلسفية، انتقل من اربل الى ماردين ثم تبريز وبعدها دمشق حيث استقر فيها وذعت بالحكيم ( الصفدي صلاح الدين ، ١٩٩٨م،٥٧٥/٢ ؛ابن تغري بردي ، ١٩٥٦م،٦٥/٥؛ كامل اسود قادر، ٢٠١٤،ص١٩٠).

من مؤلفاته في علم الطب:

- روضة الجليس ونزهة الانيس
- ارجوزة في الدرياق الفاروق

**الجزري الحصكي (ت بعد سنة ٧٢٦هـ/ ١٣٢٥م)**

من أطباء جزيرة ابن عمر لا تتوفر عنه معلومات تذكر إلا اسم كتابه الذي تركه في علم الطب وهو الكتاب الموسوم:

- خاص الخواص في الطب

**أبو عبد الله محمد بن حسن بن احمد المقدسي الكُردي**

من الأطباء الذين تنقلوا ما بين القدس ومكة وقد ذاع صيته وتوافد على الناس للمعالجة وذلك نظرا لخبرته الطبية الواسعة ( السخاوي شمس الدين، ١٢٥٣هـ، ٢١٩/٧؛ كامل اسود قادر، ٢٠١٤، ص١٩٠؛ إبراهيم الرباتي،٢٠٠٤م ص ١٩٠).

**عزّ الدين أبو النجم بدر بن احمد بن محمود الاسعردي**

عزّ الدين الاسعردي جمع بين علم الطب والصيدلة وكانت له معرفة واسعة في الأدوية وتركيبها وفوائدها العلاجية، قال عنه ابن الفوطي: (كان عارفا بالأدوية والعقاقير وعمل الترياق الكبير وله تركيبات غريبة).وقد تمكن من تركيب مختلف أصناف الادوية بما فيها المعاجين والسفوفات• والربوبات• وغيرها، وكانت له قابلية حفظ قوية حتى انه تمكن من حفظ جميع الأدوية



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وتركيباتها ونسبها وخصائصها ونسب تكوينها والتي ذكرها ابن سينا في كتاب القانون (ابن الفوطي، ١٩٦٥م، ٤٣/٤).

من مؤلفاته في علم الطب والصيدلة:

- الأدوية وتركيبها التي ذكرها ابن سينا

**أبو الفداء إسماعيل بن أيوب أبو الفداء الملك المؤيد صاحب حماة (ت ٧٣٢هـ/١٣٣١م)**

أبو الفداء من العلماء البارزين الذين جمعوا بين أكثر من علم وفن منها علوم التاريخ والجغرافية والطب والصيدلة إضافة الى علم الطب البيطري. وكانت له دراية واسعة في علم الطب ويظهر ذلك من معالجاته ومؤلفاته الطبي، (ابن شاكر الكتبي، ١٩٦٤م،١٦/١؛ ابن حجر العسقلاني، ١٩٥٧م،٣٧١/١؛المقريزي، ١٩٥٨م،٣٥٢/٢؛المقريزي، ١٩٩١م، ٦٢/٢؛ قادر محمد ٢٠٠٩م، ص٢٩١).

من مؤلفات أبو الفداء الملك المؤيد في علم الطب والصيدلة:

- كتاب في الطب
- الكناش في الطب
- كتاب الموازين في الأدوية
- رسالة العشق الإلهي والطبيعي

**شمس الدين محمد بن إبراهيم بن ساعد السنجاري (ت ٧٤٩هـ/١٣٤٨م)**

ابن ساعد السنجاري كان من العلماء الذين يشار لهم بالبنان فقد جمع بين أكثر من علم وفن منها علوم الرياضيات والكيمياء وعلم الجمال إضافة الى علم الطب والصيدلة، وتولى في مصر بعد الانتقال اليها أرقي المناصب العلمية ومنها الأشراف على ١٠٥-الشوكاني محمد بن علي: البدر الطالع بمحاسن من بعد القرن التاسع القاهرة، ١٣٤٨هـ.

البيمارستان المنصوري في القاهرة. (الشوكاني، ١٣٤٨ هـ،٧٩/٢؛ حمد عيسى، ١٩٨٢م،ص٣٥٤؛المنشداوي ، ١٩٨٣م،ص٢١١-٢٥٥؛ المنشداوي ، ١٩٨٨م، ص ٢٧٩-٣٠٤).

من مؤلفات ابن ساعد السنجاري في علم الطب والصيدلة:

- غنية اللبيب عند غيبة الطبيب
- كشف الرين في أحوال العين
- النورية في الكحل
- نهاية القصد في صناعة الفصد
- روضة الالباء في اخبار الأطباء
- شرح الفصول في الطب لأبقراط



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

- مختصر كتاب القانون في الطب لابن سينا

**داود بن ناصر الدين الموصلي الحصفكي (ت ٨٢٠هـ/ ١٤١٧م)**

كان من ضمن أط باء بلاد الـ شام و له معا لجات طب ية مه مة ( كا مل ا سود قادر، ٢٠١٤،ص١٨٩).

من مؤلفاته في علم الطب:

- روضة الألباء في تاريخ الأطباء

**شمس الدين محمد بن محمد بن علي العمري الجزري الشهير بابن الجزري (ت٨٢٣هـ/١٤٢٠م )**

من أط باء جز يرة ا بن ع مر ( الـ سخاوي،١٣٥٣ هـ،٢٢٥/٩ ؛الزركلي،١٩٦٩م،١٦٣/٧ ؛كحا لة ،١٩٧٥م،٢٩١/١١):

من مؤلفاته في الطب:

- الطب على حروف المعجم

**غياث الدين محمد بن علاء الدين بن هبة الله بزواري (كان حيا سنة ٨٧١هـ/١٤٦٦م).**

من مؤلفاته في علم الطب:

- زبدة قوانين العلاج

وذلك الكتب خصصه المؤلف للأمراض وعلاجها، وقد رتبه على أربعة عشر بابا وكل باب تضمن الكثير من الفصول.فرغ من تأليف المؤلف في سنة ٨٧١هـ/ ١٤٦٦م، ومن ذلك المخطوط نسخة نفيسة في خزانة المتحف العراقي محفوظة تحت رقم: (١٢٢٤٣)، ونسخة أخرى محفوظة تحت رقم: (٤٥٥٥) ( النقشبندي، ١٩٨١م،١٧٣-١٧٤).

**عبد الغني بن موسى بن احمد الجزري المشهور بعماد الكردي (ت بعد سنة ٩٠٠هـ/ ١٤٩٤م)**

من علماء جزيرة ابن عمر اهتم بأكثر من علم وفن منها العلوم الفلسفية وعلم الطب ( السخاوي، ١٣٥٣هـ،٢٤٤/٤ ؛محمد تمين زكي، ٢٠٠٢م، ٢٨/٢).

**محمود بن احمد بن حسن مظفر الدين الأمشاط العينتابي العيني (ت سنة ٩٠٢هـ/ ١٤٩٦م)**

من أطباء وعلماء مدينة عينتاب وعرف بابن الامشاطي نسبة الى جده لأبيه الذي كان يتاجر ببيع الامشاط، جمع بين أكثر من علم وفن منها علم المساحة وعلم الطب وعلم الجمال إضافة الى ابحاثه التي تتعلق بدراسة النفط من حيث خصائصه والأماكن التي يوجد بها تحت الأرض، تولى التدريس بجامع ابن طولون بالقاهرة، وكان له دورا مهما في تقدم المعرفة الطبية (نظم العقيان ص١٧٤ ؛كحالة ، ١٩٧٥م،٢/)١٨٨).

من مؤلفاته في علم الطب:

- تأسيس الصحة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

- ما يحتاج له في السفر من الأمور الطبية
- المنجز في الشرح الموجز لابن النفيس

**علاء الدين بن ولي الدين الإِرْبِلِيّ المشهور بابن ولي الدين (ت ٩٢٦هـ/ ١٥١٩م)**

كان من أطباء اربل الذين اهتموا بدراسة علم الطب من الناحية النظرية والعملية وكانت له معالجات صائبة ( شمس الدين الذهبي،١٩٩٢م،٣٩٨/٥؛طاش كبري زادة ،١٩٦٨م،١٣٢/٢ .

**ظاهربن إبراهيم السنجاري**

من أطباء سنجار الذين كانت لهم معرفة ودراية في علم الطب كذلك مساهمته في التأليف في مجال علم الطب ( محمد امين زكي، ٢٠٠٢م،٢٤٥/١).

**من مؤلفاته في علم الطب:**

- الإيضاح لبينة الإصلاح في الطب

**ادريس بن حسام الدين علي بن عبد الله البدليسي (ات ٩٣٠هـ / ١٥٢٣م)**

ادريس البدليسي كان من أطباء بدلس الذين يشار لهم بالبنان لسعة معرفته الطبية في مجال التأليف والعلاج (إسماعيل البغدادي، ١٩٤٥م،ص٨٤٠-٨٤١؛الهسيناني صالح ،٢٠١٦م،ص١١٣ ؛كحالة ،١٩٧٥م،٢١٧/٢).

**من ادريس البدليسي في علم الطب:**

- الإباء عن مواقع الوباء رسالة في الطاعون
- رسالة في النفس

**المبحث الثاني: الإنجازات الطبية للعلماء الكرد وعلماء المدن الكردية:**

ساهم علماء الكرد وعلماء المدن الكردية مساهمة فعالة في تقدم علم الطب من خلال ما اضافوه من نظريات وأسس ومفاهيم ومعالجات طبية كان لها الدور المتميز من تقدم المعرفة الطبية ، ومن تلك الأفكار والمعالجات الطبية التي توصل لها أولئك العلماء:

- دراسة علم الطب من الناحية النظرية والعملية وا جراء مختلف العمليات على الكثير من الحالات المرضية (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص ٤٠٩،٤٩٤،٥٩٣،وغيرها ؛ابن ساعد السنجاري،١٩٨٨م ،ص ٦٢،٧١،٧٩).
- وضعوا الكثير من الأفكار الطبية ومنها على سبيل المثال: ليس كل الأمراض تقبل المداواة، ولو قبلت الأمراض كلها المداواة لما مات أحد ( ابن ساعد السنجاري ،١٩٦٨م، ص١٨).
- التوصل الى معرفة نظريات ومفاهيم طبية جديدة ورائدة في مجال علم الطب ومنها النظرية التي تتعلق بحالة النبض التي مفادها انه هنالك حالات نادرة جدا عند الناس ان يكون النبض


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

مخت لف ما بين ال يد اليم نى وال يد الي سرى من ناح ية ال ضعف وال قوة (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م،ص٧٣٢ ؛ثابن ابن قرة،١٩٨٩م،ص٢٧٥)

- يرجع لهم الفضل في تدوين المعلومات الخاصة بكل دواء حيث كان يكتب على علبة او قنينة الدواء اسمه ومنافعه ومقدار الشربة (أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م،ص٥٩٣).
- التحذير من النوم في النهار لكون له اثار سلبية على صحة الإنسان وإنه رديء يبخر الفم، ويبلد الذهن ويفسد اللون. وإن كان الإنسان قد تعود على نوم الظهر فمن الممكن تركه بالتدريج حفاظا على الصحة (ابن ساعد السنجاري،١٩٨٨م، ص٦٢).
- توصلوا الى معرفة أكثر حالات الاسهال، ومنها: الاسهال العام، والاسهال المزمن، والاسهال الناتج عن قرحة الأمعاء، والاسهال الناتج عن رطوبة في المعدة أو الأمعاء، واسهال الدم (ابن ساعد السنجاري،١٩٨٨م،ص٧١).
- كانوا من الأوائل الذين بحثوا في أمراض الجدري والحصبة وفرقوا بينهما وفق أسس علمية دقيقة (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م،ص٢٩٩؛ال فروق في الا شتباهات في العلل ص٧٧ ؛ثا بت ا بن قرة،١٩٨٨م،ص٢٧٧).
- اهتموا بدراسة علم الباه، وأوضحوا وفق أسس تجريبية فوائد الجماع ومضاره (أ بن أ بي اصيبعة،١٩٧٥م،ص٣٢٩).
- اهتموا بشكل واضح بالمعالجات الطبية الخاصة بالحمل والولادة، ومنها علامات الحمل والاسقاط والولادة، وأسباب عسر الولادة، وحالات احتباس المشيمة بعد الولادة، وغيرها من الحالات الأخرى (أ بن أ بي ا صيبعة ،١٩٧٥م،ص٣٢٩؛ المنشداوي،٢٠١٢م،ص٢٩- ٣٠؛ الفاضل العبيد،١٩٨٩م،ص٢٧٣).
- البحث في علم الاجنة وفق صيغ تقترب من الحالات المعاصرة فقد وصفوا حالات الجنين في الرحم وعلامات نموه وتطوره، كذلك حددوا الوقت الملائم لسقوط النطفة من الرجل للمساعدة على حالة الحمل ( أبن أبي أصيبعة ،١٩٧٥م، ص ٢٩٨،٣٢٩ ؛المنشداوي،٢٠١٢م، ص ٢٧).
- تمكنوا من معالجة مختلف الحالات المرضية، ومنها على سبيل المثال المرض المسمى ماذيا وهو الجنون السبعي• ( أبن أبي أصيبعة ،١٩٧٥م، ص٧٣٢).
- التمكن من معالجة حالة السكتة الدماغية وفق معالجات ناجحة للغاية، حتى انهم في بعض الأحيان تمكنوا من إعادة الحياة لمن اعتقد ان السكتة الدماغية قد غلبت عليه ومات (أبن أبي أصيبعة ،١٩٧٥م، ص٢٩٦ ؛المنشداوي ، ٢٠١٢م،١٤٨-١٥٠ ؛حكمت نجيب ،١٩٧٧م،ص١٥٠ ).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

- العمل على تشريح العين والتطرق الى الحالات المرضية التي تتعرض لها وطرق معالجة تلك الحالات (أ بن أ بي أ صيبعة ،١٩٧٥م، ص٣٤١؛ ا بن ساعد ال سنجاري، ١٩٨٨م، ص ٦٨ ؛م نى البزم،١٩٩٩م،ص١١).
- ابتكار مقدح جديد ومتطور لقدح العين وكان ذلك المقدح مجوفا وله عطفة ليتمكن في وقت القدح من امتصاص الماء ويكون العلاج به ابلغ، وذلك الابتكار يرجع للطبيب سديد الدين بن رقيقة الجزري (أبن أبي أصيبعة ،١٩٧٥م، ص٧٠٣ ؛ثابت ابن قرة،١٩٨٩م ،ص ٧٥)
- البحث بدقة في الأمراض الجلدية وحالاتها وعلاجها، ومنها حالة البياض او حالة الصفرة التي تظهر على البدن (أبن أبي أصيبعة ،١٩٧٥م، ص٢٩٨-٢٩٩ ؛ثابت بن قرة،١٩٩٨م،ص٣٥).
- معالجة حالات وجع المفاصل والنقرس وفق معالجات صحيحة ذات نتائج جيدة (أ بن أ بي أ صيبعة ،١٩٧٥م، ص٢٩٧)؛ ا بن سينا،٢٠١٤م،٣٩٤؛التكريتي، ١٩٩٠م،،ص١٠٩ وما بعدها ؛المجوسي ، ١٢٩٤هـ، ٣٩٢/١؛٤٤٥/٢).
- التمكن من تشخيص حالات تولد الحصى في الكلى والمثانة ومعالجة بعض تلك الحالات. (أبن أبي أصيبعة ،١٩٧٥م، ص٢٩٨؛ ثابت ابن قرة،١٩٨٩م،ص١٨٠ ؛المنشداوي، ٢٠١٢م، ص١٢٨ ).
- كانوا من الأوائل الذين توصلوا الى فكرة تفتيت الحصى عن طريق المهبل باستخدام الخصائص الفيزيائية للماس وذلك بفضل الطبيب ابن ساعد السنجاري (ا بن ساعد ال سنجاري، ١٩٦٨م،ص١٤).
- كانوا من الأطباء الأوائل الذين ساهموا في تأليف الكتب التي تتضمن الصفات والشروط الأخلاقية والأدبية التي يجب ان يتسم بها الأطباء لكون ادب الطبيب يعد جزءا مكملا للعلاج ( القفطي،١٩٠٣م،ص ٣٢٨؛ عبوش،٢٠٠٤م،ص ١٦٢ ).
- التأكيد على أهمية المعالجة بالغذاء وذكروا انه متى أمكن مداواة مرض بتقدير الغذاء ولا يتعرض للدواء فذلك أفضل وإذا احتيج الى الدواء فيكتفي بالأدوية الغذائية ما أمكن، فان كان ولا بد من دواء فليكن بالأدوية اللطيفة ( ابن ساعد السنجاري، ١٩٨٨م، ص٦٧).
- توصلوا معرفة حقيقة أثر الأوهام على نفسية الإنسان، فقد ربطوا بين الأوهام والانفعالات النفسية وصحة الإنسان، حيث أوضحوا ان للأوهام أثر كبير فب الانفعالات النفسية التي تتبعها اثار بدنية، فمثلا ان الإنسان الصحيح التميز يمكنه المشيء على جذع ممدود على الأرض، ويعجز عن ذلك إذا ارتفع على شاهق لتوهمه انه سوف يقع (ابن ساعد السنجاري، ١٩٨٨م، ص٧٦ ؛ مادة البقاء في اصلاح فساد الهواء والتحرز من ضرر الأوباء ص٣١٥-٣٢٩) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- معالجة الحالات النفسية الصعبة العلاج وذلك عن طريق علاجات نفسية أيضا ويعد هذا من الأساليب المبتكرة والاصيلة في أساليب المعالجات النفسية (ابن ساعد السنجاري، ١٩٨٨م، ص٧٦؛المنشداوي،٢٠١٢م، ١٤٤-١٤٧؛المقدسي ، ١٩٩٩م، ص٣١٥ ).
- اوضحوا الكثير من أساليب المعالجات النفسية منها سماع الغناء اللذيذ الملائم، ومجالسة المحبوبين من الأهل والأصدقاء، سماع الأخبار السارة وأشباه ذلك (ابن ساعد السنجاري، ١٩٨٨م، ص٧٨؛ هونكه ، ١٩٨١م ، ص٨٤).
- كانوا من أوائل الأطباء الذين الفوا مؤلفات تكون بمثابة دليل طبي لمعالجة الحلات المرضية الطارئة التي قد تحدث في حالة عدم وجود طبي لمعالجة تلك الحالات، لذا يمكن ان نعتبر تلك الكتب تدخل ضمن ما يسمى بعلم الإسعافات الأولية (أبن أبي أصيبعة ،١٩٧٥م، ص٥٧١).
- كان الأطباء الكُرد من الأوائل الذين بحثوا بحالة الأمراض الوافدة ومنها مرض الطاعون كما هو الحال بالكتاب الموسوم : (الإباء بمواقع الوباء في مرض الطاعون) لإدريس البدليسي. (صالح شيخو الهسيناني ، دهوك ٢٠١٦م،ص٧٣).

**الخاتمة والنتائج:**

لقد أسهمت الدويلات والمدن الكوردية مساهمة فعالة في تقدم علم الطب والمعالجات الطبية من خلال الأطباء التي نبغوا في تلك المدن والذين توصلوا الى أفكار ونظريات ومعالجات طبية تمت الإشارة لها من خلال بحثنا ، فقد أصبحت الكثير من انجازاتهم

في مجال الطب من المصادر الأساسية للمعرفة الطبية المعاصرة، وقد تمكنوا من معالجة مختلف الحالات المرضية ومنها الحالات النادرة كما هو الحال بحالة الجنون السبعي، كذلك تمكنوا التفريق ما بين الحالات المرضية المتداخلة من حيث الأسباب والأعراض كما هو الحال بين حالتي الجدري والحصبة.

التأكيد على ضرورة الأحتراز من حالات الأمراض الوافدة كما هو الحال بحالة الطاعون وكونه من الأمراض المميتة السريعة العدوى والانتشار، كذلك يمكن أن نشير انهم تعاملوا مع الأدوية وصناعتها وحفظها وتناولها وفق أسس علمية تقترب كثير من أسس التعامل مع الأدوية وفق مفهوم علم الصيدلة المعاصر فيرجع لهم الفضل في التأكيد على تدوين المعلومات الخاصة بكل دواء حيث تكتب المعلومات على علبة او قنينة من اسمه ومقدار الشربة ومنافعه.

ان المعرفة الطبية التي قدمها الأطباء الكُرد وأطباء الدويلات والمدن الكُردية تشكل جاذبا مهما من جوانب المفاهيم المعاصرة لعلم الطب لكون تلك المعارف كانت تسير وفق أسس علمية دقيقة تقوم على مبدأ الملاحظة والتجربة.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولينێن كوردى

**المصادر والمراجع:**

**المصادر:**


١-ابن أبي اصيبعة، موفق الدين احمد بن القاسم: عيون الأنباء في طبقات الأطباء، تحقيق: نزار رضا، بيروت، ١٩٧٥م.

٢-ابن الأثير، ابو الحسن عز الدين بن علي: الكامل في التاريخ، دار الكتاب العربي، بيروت ١٩٨٦م.

٣-ابن بطوطة محمد بن إبراهيم اللواتي: رحلة أبن بطوطة، بيروت، ١٩٦٠م.

٤-ابن تغري بردي: النجوم الزاهرة في ملوك مصر والقاهرة، القاهرة، ١٩٥٦م.

٥-ابن الجزار القيرواني احمد بن إبراهيم بن ابي خالد: الفروق بين الاشتباهات في العلل، تحقيق: رمزية الأطرقجي، بغداد، ١٩٨٩م.

٦-ابن حجر العسقلاني شهاب الدين أحمد بن علي: انباء الغمر بأبناء العمر، القاهرة ،١٩٧٢م.

٧-ابن خلكان شمس الدين احمد بن محمد: وفيات الأعيان وأنباء أبناء الزمان، تحقيق: إحسان عباس، بيروت، ١٩٦٨م.

٨-السنجاري شمس الدين محمد بن إبراهيم ابن الأكفاني، ارشاد القاصد الى اسنى المقاصد في العلوم، مصر ١٩٠٠م، كذلك طبعة القاهرة، ١٩٦٨م.

٩-ابن ساعد السنجاري: غنية اللبيب عند غيبة الطبيب، تحقيق: صالح مهدي عباس، بغداد، ١٩٨٨م.

١٠-ابن سعيد الأندلسي أبو الحسن علي بن موسى بن محمد: الغصون اليانعة في محسن شعراء المائة السابعة، تحقيق: إبراهيم الابياري، القاهرة،١٩٦٧م.

١١-أبن سينا ابو علي الحسين بن عبد الله: معجم الأمراض والمصطلحات الطبية، دراسة وتحقيق: خضير عباس المنشداوي، الأردن ١٤٣٥هـ/٢٠١٤م.

١٢-ابن شاكر الكتبي محمد بن شاكر: عيون التواريخ، تحقيق: فيصل السامر ونبيلة عبد المنعم داود، بغداد، ١٩٨٤م.

١٣-ابن شاكر الكتبي: فوات الوفيات، تحقيق: احسان عباس، بيروت، ١٩٦٤م.

١٤-ابن العبري غريغوريوس الملطي: تاريخ الزمان، نقله للعربية: اسحق ارملة، بيروت، ١٩٨٦م.

١٥- ابن العبري، تاريخ مختصر الدول، بيروت، ١٩٥٨م.

١٦-ابن العماد الحنبلي أبو الفلاح عبد الحي: شذرات الذهب في اخبار من ذهب، بيروت.

١٧-ابن الفوطي أبو الفضل عبد الرزاق بن تاج الدين احمد، تلخيص مجمع الآداب في مجمع الألقاب، تحقيق: مصطفى جواد، بغداد، ١٩٦٥م.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٨-ابن الفوطي: الحوادث الجامعة والتجارب النافعة في المائة السابعة، تحقيق: مصطفى جواد، بغداد ،١٩٣٢م
١٩-ابن قاضي شهبة، تقي الدين بن احمد: طبقات الشافعية، تحقيق: عبد الحليم خان، بيروت،١٩٨٧م.
٢٠-ابن كثير، أبو الفداء عماد الدين اسماعيل، البداية والنهاية، مكتبة المعارف بيروت ١٩٩٠م.
٢١-ابن المجوسي علي بن العباس: كامل الصناعة الطبية، القاهرة،١٢٩٤هـ.
٢٢-ابن المستوفي، شرف الدين ابي البركات المبارك بن احمد: تاريخ إربل، تحقيق: سامي الصقار، بغداد،١٩٨٠م.
٢٣-ابن النديم احمد بن أبي يعقوب: الفهرست، تحقيق: رضا تجدد، طهران، ١٩٧٠م.
٢٤-أبو حنيفة الدينوري، احمد بن داود: كتاب النبات، تحقيق: برنهارد لفين، فرانز شتاير بفيسبادن، ١٩٧٤م.
٢٥-ابو حيان التوحيدي، علي بن محمد بن العباس: المقابسات، تحقيق: محمد توفيق حسين، بغداد ١٩٧٠م.
٢٦-الأسنوي جمال الدين بن محمد: طبقات الشافعية، بغداد،١٩٧٠م.
٢٧-البغدادي إسماعيل باشا: إيضاح المكنون في الذيل على كشف الظنون عن اسامي الكتب والفنون، إستانبول ،١٩٤٥م.
٢٨-البغدادي: هدية العارفين في أسماء الكتب والمؤلفين، بغداد، ١٩٤٥م.
٢٩-البلدي احمد بن محمد بن يحيى: تدبير الحبالى والأطفال والصبيان وحفظ صحتهم ومداواة الأمراض العارضة لهم، تحقيق: محمود الحاج قاسم محمد، بغداد، ١٩٨٠م.
٣٠-البيهقي أبو الفضل ظهير الدين علي بن زيد: تاريخ حكماء الإسلام، تحقيق: محمد كرد علي، دمشق ،١٩٤٩م.
٣١- حاجي خليفة مصطفى بن عبد الله: كشف الظنون عن اسامي الكتب والفنون، إستانبول ،١٩٤٣هـ.
٣٢-الحراني ثابت بن قرة: الذخيرة في الطب، تحقيق: احمد مزيد المزيدي، بيروت، ١٩٩٨م.
٣٣-الخوارزمي الكاتب أبو عبد الله محمد بن احمد بن يوسف: مفاتيح العلوم، القاهرة ،١٣٤٢هـ.
٣٤-الذهبي شمس الدين محمد بن احمد بن قايماز: تاريخ الاسلام، مصر،١٩٧٧م.
٣٥-الذهبي: سير اعلام النبلاء، تحقيق: بشار عواد معروف وآخرون مؤسسة، الرسالة، بيروت ١٩٩٢م.
٣٦-الذهبي: العبر في خبر من غبر، الكويت،١٩٦٤م.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٣٧-الذهبي: المختار من تاريخ ابن الجزري المسمى ( حوادث الزمان وأنبائه ووفيا الأكابر والأعيان من أبنائه)، تحقيق: خضير عباس المنشداوي، لبنان ،١٩٨٨م.
٣٨-السخاوي شمس الدين محمد بن عبد الرحمن: الضوء اللامع لأهل القرن التاسع، القاهرة، ١٣٥٣هـ.
٣٩-الشوكاني محمد بن علي: البدر الطالع بمحاسن من بعد القرن التاسع القاهرة، ١٣٤٨هـ.
٤٠-الصفدي، صلاح الدين خليل بن أيبك بن عبد الله، الوافي بالوفيات، تحقيق: إحسان عباس، بيروت ١٩٦٩م.
٤١-طاش كبري زاد أحمد بن مصطفى: مفتاح السعادة ومصباح السيادة، القاهرة ١٩٦٨م.
٤٢-الفراهيدي الخليل بن احمد: كتاب العين، التحقيق: إبراهيم السامرائي، مهدي المخزومي، بغداد، ١٩٨٠-١٩٨٤م.
٤٣-الفراهيدي: معجم الأمراض والعلل، تحقيق: خضير عباس المنشداوي، مصر ٢٠١٨م.
٤٤-الفيروزآبادي مجد الدين محمد بن يعقوب: القاموس المحيط، رتبه ووثقه: مأمون شيحا، بيروت، ٢٠٠٩م.
٤٥-القفطي جمال الدين ابي الحسن علي بن يوسف،تاريخ الحكماء، ليبسك،١٩٠٣م
٤٦-القلقشندي، شهاب الدين ابو العباس احمد بن علي: صبح الاعشى، بيروت ١٩٨٣م.
٤٧-المقدسي، محمد بن احمد التميمي: مادة البقاء في اصلاح فساد الهواء والتحرز من ضرر الوباء، تحقيق: يحيى شعار، القاهرة، ١٩٩٩م.
٤٨-المقريزي تقي الدين احمد بن علي: السلوك لمعرفة دول الملوك، تحقيق: محمد مصطفى زيادة، القاهرة ،١٩٥٨م.
٤٩-المقريزي: كتاب المقفى الكبير، بيروت،١٩٩١م.
٥٠-المنذري زكي الدين عبد العظيم بن عبد القوي: التكملة لوفيات النقلة، تحقيق: بشار عواد معروف، بيروت،١٩٨٨م.
٥١-النعيمي عبد القادر بن محمد: الدارس في تاريخ المدارس، بيروت،١٩٩٠م.
٥٢-ياقوت الحموي، شهاب الدين ابو عبد الله الرومي ،معجم البلدان، بيروت ١٩٧٥م

**المراجع:**

١-الأتروشي، شوكت عارف: الحياة الفكرية في مصر خلال العصر الأيوبي، الأردن ،٢٠٠٦م.
٢-احمد إسماعيل شكر رسول، الامارة الشدادين الكردية في بلاد الشام
٣-أنور المائي، الاكراد في بهدينان، الطبعة الثالثة، دهوك، ٢٠١٣م.
٤- بابان، جمال: أصول أسماء المدن والمواقع العراقية، المجمع العلمي الكردي بغداد، ١٩٧٦م.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٥-الدبابيري، حكيم عبد الرحمن: مدينة خلاط دراسة في تاريخها السياسي والحضاري، أربيل، ٢٠٠٥م.
٦-البزم، منى: الوسيط في امراض العين، دمشق ،١٩٩٩م.
٧-البستاني، فؤاد،: دائرة المعارف، بيروت،١٨٧٦م.
-التكريتي راجي عباس،الظهار والفصال في التراث العربي،بغداد، ١٩٩م.
٨-توفيق، زرار: القبائل والزعامات القبلية الكردية في العصر الوسيط، أربيل، ٢٠٠٧م.
٩-جرنفيل، فريمان: التقويمان الهجري والميلادي، ترجمة: حسام محيي الدين الالوسي، بغداد،١٩٧٠م.
١١-جواد، مصطفى: جاوان القبيلة الكردية المنسية ومشاهير الجاواوين، بغداد، ١٩٧٣م.
١٢-الجيوسي، مصطفى الجيوسي: موسوعة العلماء العرب والمسلمين واعلامهم، الأردن ،٢٠٠٥م.
١٤-الحارثي، عبد الله ناصر: *الاوضاع الحضارية في اقليم الجزيرة، بيروت ،٢٠٠٧م.*
١٥-حجار، أكرم، موجز امراض الاذن والانف والحنجرة، دمشق،١٩٨٩م.
١٦-حسن، قادر محمد: إسهامات الكرد في الحضارة الإسلامية، دهوك، ٢٠٠٩م.
١٧-حميدان، زهير: اعلام الحضارة الاسلامية في العلوم الاساسية والتطبيقية، دمشق، ١٩٧٥.
١٨-خليل، احمد محمود: تاريخ الكرد في العهود الإسلامية، بيروت، ٢٠١٣م.
١٩-خليل، عماد الدين: الإمارات الأرتقية في الجزيرة والشام
٢٠-خوشناو، سلام حسن طه: جزيرة ابن عمر، هولير، ٢٠٠٦م.
٢١-الدملوجي، صديق: إمارة بهدينان او إمارة العمادية، الموصل، ١٩٥٢م.
٢٢-رسول، احمد إسماعيل شكر: الامارة الشدادية الكردية في بلاد الشام، أربيل، ٢٠٠١م.
٢٣-الزركلي، خير الدين الزركلي: الاعلام، الطبعة الثالثة، بيروت ١٩٦٩م.
٢٤-زكي محمد امين زكي: تاريخ الدول والامارات الكردية، ترجمة: محمد علي عوني، مصر ١٩٤٨م.
٢٥-زكي، محمد امين: مشاهير الكورد وكوردستان، ترجمة: سائحة زكي بك، دمشق، ٢٠٠٢م.
٢٦-السامرائي، كمال: مختصر تاريخ الطب العربي، بغداد،١٩٨٤م.
٢٧-طوقان، قدري حافظ: تراث العرب العلمي في الرياضيات والفلك، بيروت ١٩٦٦م.
٢٨-العباسي، محفوظ محمد عمر العباسي: امارة بهدينان العباسية، الموصل ،١٩٦٩م.
٢٩-عبوش، فرهاد حاجي: المدينة الكوردية، دهوك، ٢٠٠٤م.
٣٠-العلياوي، عبد الله: كردستان في عهد المغول؛ الدولة الدوستكية في كردستان الوسطى ١٤١٧هـ/١٩٩٧م.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٣١-عيسى، احمد: تاريخ البيمارستانات في الإسلام، الطبعة الثانية، بيروت ،١٩٨١م.
٣٢-عيسى، معجم الأطباء، الطبعة الثانية، بيروت، ١٤٠٢هـ/١٩٨٢م.
٣٣-الفراهيدي الخليل بن ا حمد، كتاب العين: التحقيق: إبراهيم السامرائي، مهدي المخزومي، بغداد، ١٩٨٤م.
٣٤-الفراهيدي، معجم الأمراض والعلل: تحقيق: خضير عباس المنشداوي، مصر ٢٠١٨م.
٣٥-فرشوخ، محمد امين: موسوعة عباقرة الاسلام في الفلك والعلوم البحرية وعلم النبات وعلم الميكانيك، بيروت ١٩٩٥م
٣٦-كحالة، عمر رضا: : معجم المؤلفين، دمشق،١٩٧٥م.
٣٧-المائي، أنور: الاكراد في بهدينان، الطبعة الثالثة، دهوك، ٢٠١٣م.
٣٨-مجموعة من الباحثين: الموسوعة الطبية الحديثة، ترجمة: احمد عمار وآخرون، القاهرة ،١٩٧٠م.
٣٩-محمد، اكو برهان: الحياة الثقافية في ديار بكر في العصر العباسي، أربيل، ٢٠١٢م.
٤٠-محمد، سوادي عبد: الأحوال الاجتماعية والاقتصادية في بلاد الجزيرة، بغداد،١٩٨٩م.
٤١-محمود، احمد عبد العزيز محمود، الإمارة الهذبانية الكردية في أذربيجان واربيل والجزيرة الفراتية
٤٢-المدرس، عبد الكريم محمد: علماؤنا في خدمة العلم والدين، بغداد ١٩٨٢م.
٤٣-مرعي، فرست: الإمارات الكردية في العصر العباسي، دهوك، ٢٠٠٥م.
٤٤-معروف، ناجي: تاريخ علماء المستنصرية، بغداد،١٩٥٩م.
٤٥-المنشداوي خضير عباس: العالم الموسوعي كمال الدين ابن يونس الإربلي وأثره في تقدم الفكر العلمي، ضمن كتاب تاريخ أربيل ودورها الحضاري، اربيل، ٢٠١٤م.
٤٦-المنشداوي، الفكر العلمي عند أبو حنيفة الدينوري، مجلة جامعة زاخو، المجلد السادس، العدد الثاني، ٢٠١٨.
٤٧-المنشداوي: معالجات طبية إسلامية، الأردن، ٢٠١٢م.
٤٨-نعمة الله، هيكل، والياس مليحة: موسوعة علماء الطب، بيروت،١٩٩١م.
٤٩-النقشبندي، أسامة ناصر: مخطوطات الطب والصيدلة والبيطرة في مكتبة المتحف العراقي، بغداد،١٩٨١م.
٥٠-الهسيناني، صالح شيخو: علماء الكورد وكوردستان، دهوك ٢٠١٦م.
٥١-الهسنياني، موسى مصطفى: سنجار دراسة في تاريخها السياسي والحضاري، أربيل ٢٠٠٥م.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٥٢-هونكه، زيغريد، شمس العرب تسطع على الغرب، ترجمة: فاروق بيضون، الطبعة الثانية، بيروت، ١٩٦٩م.

٥٣-يوسف، عبد الرقيب: حضارة الدولة الدوستكية في كردستان الوسطى أربيل، ٢٠٠١م.

**الهوامش:**

---

- عن المدن والدويلات والقبائل الكوردية ، أنظر: مصطفى جواد، جاوان القبيلة الكردية المنسية ومشاهير الجاوانين ؛فرست مرعي، الإمارات الكردية في العصر العباسي؛ محفوظ محمد العباسي، امارة بهدينان العباسية؛ عماد الدين خليل ، الإمارات الأرتقية في الجزيرة والشام ؛ احمد عبد العزيز محمود، الإمارة الهذبانية الكردية في أذربيجان واربيل والجزيرة الفراتية ؛عماد الدين خليل الامارة الارتقية ؛ احمد إسماعيل شكر رسول، الامارة الشدادين الكردية في بلاد الشام ؛زرار توفيق، الكورد في العصور الوسطى؛ كوردستان في القرن الثامن الهجري ؛صديق الدملوجي، إمارة بهدينان او إمارة العمادية ؛ أنور المائي، الاكراد في بهدينان؛ عبد الله العلياوي كردستان في عهد المغول ؛عبد الرقيب يوسف، الدولة الدوستكية في كردستان الوسطى ؛ جمال بابان، أصول أسماء المدن والمواقع العراقية .
- البَاه: النِّكاحُ، الحُظوةُ في النِّكاحِ؛ ومن الكلامِ: طلبنّ الجاهَ إذ فاتهُنَّ الباه ، البَاه: الجِماع ، النكاح وبآهها: جامَعها ( الفراهيدي ، ١٩٨٠م ، مادة : باه؛ الفيروز ابادي، ٢٠٠٩ ،مادة : بوه ).
- صنف ذلك الكتاب للوزير ابي الفرج يعقوب بن يوسف المعروف بابن كلس وزير الحاكم الفاطمي العزيز بالله((أبن أبي اصيبعة ،١٩٧٥م، ص ٣٣٣).
- كناش: كلمة سريانية معناها الجامع او الحاوي( فنديك ادوارد، ١٨٨٦م، ٧٦/١).
- نسخة خطية من ذلك الكتاب محفوظة في خزانة المتحف العراقي تحت رقم: ١٠٨٦١( النقشبندي،١٩٨١م،ص٤٤).
- القولنج: اعتقال الطبيعة لانسداد المعي المسمى قولون ( أبن سينا، ٢٠١٤م، ص ٣٣٤؛ الخوارزمي الكاتب، ١٣٤٢هـ، ص٨٩).
- حاني: مدينة معروفة بديار بكر فيها معدن الحديد ومنها يجلب إلى سائر البلاد ( ياقوت الحموي ،١٩٧٥م،٢٠٨/٢).
- الحَدّبةُ: وتسمى أيضا رياح الأفَرْسية وهي زوال الفقرات إما الى داخل الظهر او الى قدام، وهو حدبة المقدم، وقوم يسمونه التقصيع.(أبن سينا،٢٠١٨م).
- من ذلك المخطوط ثلاث نسخ خطية محفوظة في خزانة المتحف العراقي محفوظة تحت الأرقام: (٢٢٤٣٧-٨٠٣٥،٦-١، ٢٠٦٧) ( النقشبندي ،١٩٨١م،ص ١٥١-١٥٢).
- السَفُوفٌ: كل دَواء يؤخذ غير معجون فهو سَفُوفٌ بفتح السين مثل سَفُوفِ حبّ الرُّمان ونحوه والاسم السُّفّةُ والسَّفُوفُ واقْتماحُ كل شيء يابس سَفٌّ والسَّفُوفُ اسم لما يُسْتَفّ( ابن منظور ،١٩٥٥م، مادة: سفف).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

- الرُّبُّ: هو دبْسُ كل ثَمَرَة وهو سُلافةُ خُثارَتِها بعد الاعتصار والطَّبْخِ والجمع الرُّبُوبُ والرِّبابُ ومنه سقاءٌ مَرْبُوبٌ إِذا رَبَبْتَه أَي جعلت فيه الرُّبَّ وأَصْلَحتَه به( المصدر السابق، مادة: ربب).
- المانيا بحسب ما ذكره ابن سينا: المانيا هو الجُنون السبعي، وأن المادة الفاعلَّة للجُنون السبعي هو من جَوْهَر المادة الفاعلَّة للمالنخوليا، لأن كليهما سوداويان، إلا أن الفاعل للجُنون السبعي سوداء محترق عن صفراء، أو عن سوداء، وهو أردأ. وأكثر ما يكون المانيا إنما يكون بحصولها في مقدم الدَّماغ وجَوْهَره، لأنّ وصوله إلى الدَّماغ كوصول مادة قرانيطس، والمانيا كله اضطراب وتوثّب وعبث وسبعيه ونظر لا يشبه نظر الناس، بل أشبه شيء به نظر السِباع، ويفارق صنفاً من قرانيطس يشبهه في جُنون صاحِبه، بأنّ هذه العلَّة لا يكون مَعها حُمًّى في أكثر الأمر، وقرانيطس لا يخلو عنها. معجم الأَمْراض والمصطلحات الطبية ص ٣٥٢-٣٥٣؛ عن الفرق بين المانيا و قرانيطس، انظر: ابن الجزار القيرواني، الفروق بين الاشتباهات في العلل ص٣٣-٣٤.

## Doctors of Kurdish states and cities and their dirhams in the advancement of medical science


**Abstract:**

Unfortunately, the scientific history of the Kurds did not receive the attention and care of researchers and scientific institutions that are interested in the history of the Kurds, as it seems clear that they are interested in the political and administrative aspects.

This study comes to shed light on dozens of doctors of Kurdish states and Kurdish cities, with a mention of their most important books and scientific analysis of many of the medical concepts and treatments reached by those doctors, and they were among the main sources of medical knowledge, whether on the level of Islamic civilization or on Western medical thought, as the Kurdish doctors preceded Other doctors have contributed to medical achievements and innovations that they added to medical knowledge, including, for example:

-Reaching knowledge of new and pioneering medical theories and concepts in the field of medical science, including the theory related to the state of the pulse, which states that there are very rare cases in people where the pulse is different between the right hand and the left hand in terms of weakness and strength.

-They were among the first to come up with the idea of breaking up stones through the vagina using the physical properties of diamonds.

-They were among the first to research smallpox and measles and differentiate between them according to accurate scientific bases.

They explained many methods of psychological treatments, including listening to appropriate and delicious singing, sitting with loved ones among family and friends, listening to good news, and the like.

-They were among the first physicians to write books that serve as a medical guide for treating emergency medical conditions that may occur in the absence of a medical treatment.

-Research in embryology according to formulas that approach contemporary cases. They described the conditions of the fetus in the womb and the signs of its growth and development. They also determined the appropriate time for the fall of the sperm from the man to help the pregnancy.

-They were able to treat various medical conditions, including, for example, the disease called Mania, which is the seven-fold insanity.

-Being able to treat stroke cases according to very successful treatments, so that sometimes they were able to restore life to those who thought that the stroke had overcome him and died.

It is a national and human duty that we must not neglect those doctors and their writings that contain dozens, but hundreds of achievements, treatments and great ideas reached by Kurdish doctors, which in turn became an important source of medical knowledge and left a clear impact on contemporary medical thought.

**Keywords**: *Kurds, Kurdish emirates, medicine, civilization, Islamic era.*

**پۆختە:**

مخابن هەتا نوکە مێژوویا زانستییا کوردان و گرنگیدانا کوردان ب لایەنێ زانستی ژلایێ ڤەکولەر و سازیێن زانستیڤە هاتیە پشتگەهئێخستن، و پتر تەکەزییا خوە دانانیە سەر لایەنێ سیاسی و کارگێری و ئەڤێ چەندێ زیانەکا مەزن ل پێگەهێ زانستیێ کوردان دایە.

گرنگییا ڤێ ڤەکولینێ د هندێدایە کو روناهی بەردایە سەر دەهان ژ نوژداران د میرگەهـ و باژێرێن کورداندا، دگەل دیارکرنا گرنگترین بەرهەم و پەرتووکێن وان، وئەو چارەسەرییێن وان نوژداران ژ بو چەندین نەخوشیان دیتینە، و گەلەك ژ ئەنجامێن نوژدارێن کوردستانێ گەهشتینێ ل سەر ئاستێ جیهانا ئیسلامی وروژئاڤا ژی پێشەنگ بوون. ژ گرنگترین وان ئەنجامان:

- پەیداکرنا زانیارییێن نوی و دەگمەن د بوارێ نوژداریدا، ژ وان بیردوزا جیاوازییا لڤینا دەمارێن خوینێ د دەستێ راست و چەپێدا.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

- هندەك نوژدارێن كورد ئێكەم كەس بوون كو هزر د شكاندنا بەركێ گولچیسكێن ژنان ب رێكا دهمەنا وان كرین، ئەوژی ب رێكا بكارئینانا هندەك ساخلەتێن فیزیكیێن ئەلماسی.
- نوژدارێن كورد ژ پێشەنگێن ڤەكولینێ ل سەر نەخوشیێن خوڕیكان و ئێشا زراڤ بوون.
- ژلایێ نەخوشیێن دەرونیڤە ڤان نوژداران ئاماژە ب ئارامبوونا دەرونێ نەخوشی دایە ب رێكا بهیستنا موزیكێ یان تێكهەلیا دگەل خوشتڤییان و گوهلێبوونا دەنگوباشێن خوش و دلڤەكەر.

لەوڕا ئەركەكێ نەتەوەیی و مروڤایەتییە كو ئەوان نوژداران و بەرهەمێن وان كو ب دەهان و سەدانە ژبیر نەكەین، و روناهیێ بەردەینە سەر شاكارێن نوژدارێن كورد كو بووینە ژێدەر ژ بو زانستێ نوژداریێ و كاریگەریا خوە ل سەر نوژدارییا ئەڤرو ژی هەیە.

**پەیڤێن سەرەكی:** *كورد، میرگەهێن كوردی، نوژداری، شارستانی، سەردەمێ ئیسلامی*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م)

أ. د. فرهاد حاجي عبوش

قسم التاريخ – كلية العلوم الإنسانية- جامعة دهوك إقليم كُردستان/ العراق

**الملخص:**

تعد الألقاب ظاهرة حضارية إنسانية عرفتها معظم الشعوب والأمم منذ أقدم العصور ثم تطورت كبقية الظواهر حتى غدت ظاهرة عالمية تمتلك خاصية التراكم عبر الثقافات، والكُرد واحداً من تلك الأمم التي عرفت هذه الظاهرة وتأثرت بها، حيث من المعروف أن بلاد الكُرد شهدت قيام العديد من الإمارات الكُردية في القرنين (٤-٥ هـ/١٠-١١م)؛ اللذان يعدان من أهم القرون في التاريخ الإسلامي بالنسبة للكُرد، حيث تجلى فيهما بروزهم السياسي والحضاري من خلال قيامهم بتأسيس الإمارات في بلادهم، والتي أصبحت من القوى السياسية التي تحسب لها حسابها واتخذت مكانتها بين القوى الإسلامية الأخرى في المنطقة.

اتخذ الأمراء الكُرد العديد من الألقاب الرسمية أُسوةً بأمراء وملوك الدول والإمارات الإسلامية الذين سبقوهم أو عاصروهم، وتلك الألقاب على درجة كبيرة من الأهمية في دراسة تاريخ الكُرد الإسلامي، لأنها تعكس الأوضاع السياسية السائدة في مناطق حكم هؤلاء الأمراء، وتوضح شخصية الأمير وقوته ونفوذه وتظهر منجزاته الحضارية، وتبين نظرة الخلفاء والأمراء المعاصرين له إليه.

رغم كثرة الدراسات التي تناولت التاريخ السياسي للكُرد في العصر الوسيط، إلا أن هناك العديد من المواضيع التي لم يتوقف عندها المؤرخون والباحثون الكُرد، ومن بينها موضوع دراستنا (ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م)، الذي لم يلق عناية كبيرة من قبل المؤرخين والباحثين الكُرد، فلم يكتب فيها شيئاً، على الرغم من كونها وردت في مؤلفاتهم إلا أنهم لم يقفوا على دلالاتها ولم يُظهروا أهميتها السياسية والدينية إلا بشكل عابر، وحسب علمنا لا توجد أية دراسة أكاديمية تهتم بدراسة ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية بشكل خاص.

لذا جاءت الدراسة (ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية) لتسليط الضوء على أهم تلك الألقاب خلال القرنين (٤-٥ هـ/١٠-١١م)، كما تهدف هذه الدراسة إلى توضيح مدلولات تلك الألقاب، ومعرفة أهمية اللقب والأسباب التي جعلت الخلفاء العباسيين يمنحون

تلك الألقاب للأمراء، ونتائج ذلك راجع إلى أن اللقب أصبح يشكل عاملاً مهماً في إثبات الشرعية لسلطة هؤلاء الأمراء ، وأيضاً لضمان سيطرت العباسيون وبقاء نفوذهم في تلك الإمارات التي نشأ فيها حكم مستقل أو شبه مستقل عن مركزية الخلافة في بغداد، بدليل أن ألقابهم المضافة إلى مفرد تي الدين والدولة قد جمعت السلطتين الدينية والسياسية تحت أيديهم. وتكمن أهمية الموضوع في كونها تكشف لنا بوضوح ميول الأمراء ونزعاتهم، كما لا نبالغ في القول إن دراسة الألقاب في الإمارات الكُردية يساعد على تصحيح بعض الحقائق التاريخية التي ذكرها المؤرخون، حيث إن الألقاب لها علاقة بتفسير الظواهر الدينية والاجتماعية والأحداث السياسية.

**الكلمات الدالة:** *تاريخ الكُرد الإسلامي- ألقاب الأمراء الكُرد – دلالاتها الدينية – السياسية.*

**المقدمة:**

شهدت بلاد الكُرد خلال العهد البويهي (٣٣٤-٤٤٧ هـ/٩٤٥-١٠٥٥م) قيام العديد من الامارات والزعامات الكُردية فيها، بسبب السياسة اللامركزية التي أنتهجها أمراء آل بويه الأوائل، الى جانب أسباب أخرى كثيرة كضعف وتفكك الدولة العباسية، حيث ساءت أحوالها، وأزداد نفوذ الأمراء البويهيين وتدخلوا في شؤون الدولة، ولم يبق بيد الخليفة غير السلطة الدينية، أما السلطة الفعلية فقد أصبحت بيد هؤلاء الأمراء وقادة الجيش، وذلك ما نتج عنه إرباكاً سياسياً وإدارياً واقتصادياً للدولة العباسية، حيث دب الخلاف بين الأمراء وتجزأت إلى حكومات متفرقة، ثم دخلوا في صراعات داخلية طاحنة فيما بينهم، مما شجع بعض الأمراء التابعين لهم على الخروج عن طاعتهم والاستقلال عنهم، ومنهم زعماء القبائل الكُرد؛ الذين استغلوا فرصة انقسام البويهيين، فأقاموا إمارات في مناطقهم، وتمكنَّوا من بسط نفوذهم على أجزاء واسعة من الأراضي التي بحوزتهم.

رغم كثرة الدراسات التي تناولت التاريخ السياسي للكُرد في العصر الوسيط والزاخر بالمعلومات عن تطورات وخفايا ذلك التاريخ، إلا أن هناك العديد من المواضيع التي لم ينل اهتمام المؤرخين والباحثين، ومنها موضوع " ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م)"، في كونها توضح جانباً مهماً من تاريخ الكُرد في العصور الاسلامية التي لم يركز عليه المؤرخين، وجاء مبعثراً في المصادر المعاصرة والمتأخرة عن حقبة الدراسة، وبمعنى آخر لم يتم التطرق الى هذا العنوان حسب علم صاحب الدراسة المتواضعة، ولم تكتب فيه بحوث علمية تشفي الغليل.

يعد موضوع " ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م)" من الموضوعات المهمة في تاريخ الكُرد الاسلامي، في كونها تكشف لنا بوضوح ميول

الا مراء ونزا عاتهم، كما لا نبالغ في القول أن دراسة الألقاب في الإمارات الكُردية يساعد على تصحيح بعض الحقائق التاريخية التي ذكرها المؤرخون، حيث إن الألقاب لها علاقة بتفسير الظواهر الدينية والاجتماعية والأحداث السياسية.

أما الإطار الزماني المحدد بالقرنين (٤-٥ هـ/١٠-١١م)، اللذان يعدان من أهم القرون في التاريخ الإسلامي بالنسبة للكُرد، حيث تجلى فيهما بروزهم السياسي والحضاري من خلال قيامهم بتأسيس الإمارات في بلادهم، وأصبحت تلك الإمارات من القوى السياسية التي تحسب لها حسابها واتخذت مكانتها بين القوى الاسلامية الأخرى في المنطقة، وصارت مستقلة ذات السيادة والسلطان.

قسمت الدراسة الموسومة " ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية خلال القرنين (٤-٥ هـ/١٠-١١م)" الى المقدمة والخاتمة، فضلاً عن ثلاثة مباحث، خصص المبحث الأول منها للحديث عن اللقب في اللغة والاصطلاح وموقف الاسلام منه بشكل موجز، بينما ركز المبحث الثاني على أسباب منح الالقاب للأمراء الكُرد خلال القرنين (٤-٥ هـ/١٠-١١م)، أما المبحث الثالث فتناول ألقاب الأمراء الكُرد مع بيان دلالاتها الدينية – السياسية، والذي قسم بدوره إلى أربع محاور، خصص الأول لألقاب الأمراء الروادية، وتطرق الثاني إلى ألقاب الأمراء الحسنويهية البرزيكانية، بينما أهتم المحور الثالث بدراسة ألقاب الأمراء المروانية الدوستكية، في حين تناول المحور الرابع والأخير ألقاب الأمراء العنازية الشاذنجانية.

اعتمدت الدراسة على عدد غير قليل من المصادر والمراجع، والتي قدمت مادة علمية أغنت الدراسة، ومنها حسب تسلسلها الزمني: كتاب " تجارب الأمم وتعاقب الهمم" لمسكويه (ت: ٤٢١هـ/١٠٣٠م)، وكتاب "سفر نامه" للرحالة ناصر خسرو (ت:٤٨١هـ/١٠٨٨م)، وكتاب "ذيل تجارب الامم" للروذراوري، (ت:٤٨٧هـ/١٠٩٤م)، وكتاب" تاريخ الفارقي" لابن الازرق الفارقي (ت: بعد ٥٧٧هـ/ ١١٨١م)، وكتاب "المنتظم في تاريخ الملوك والامم" لابن الجوزي (ت:٥٩٧هـ/١٢٠٠م)، وكتاب "الكامل في التاريخ" لابن الاثير (ت ٦٣٠ هـ/ ١٢٣٣ م)، وكتاب " مرآة الزمان في تواريخ الأعيان" للسبط ابن الجوزي (ت: ٦٥٤هـ/ ١٢٥٦م)، وكتاب "الأعلاق الخطيرة في ذكر أمراء الشام والجزيرة" لابن شداد (ت:٦٨٤هـ/١٢٨٥م)، وكتاب "البداية والنهاية" لابن كثير (ت:٧٧٤هـ/١٣٧٢م)، بالإضافة الى ذلك تمت الإفادة من عدد من المراجع التي تتفاوت في أهميتها وصلتها بالموضوع، كانت لبعضها أهمية كبيرة في إتمام هذه الدراسة، منها: كتاب "الامارات الكُردية في العصر العباسي الثاني" للدكتور فرست مرعي، وكتاب "الامارات الكوردية في العهد البويهي" للدكتور قادر محمد حسن، وكتاب "الألقاب الاسلامية في التاريخ والوثائق والآثار" للدكتور حسن باشا، وغيرها من المصادر والمراجع التي وردت في آخر الدراسة.

**المبحث الأول - اللقب في اللغة والاصطلاح وموقف الاسلام منه بشكل موجز:-**

اللقب من الناحية اللغوية بمعنى النّبزُ، اسم غير ما سُميّ به، والجمع الألقاب، وقد لقبه بكذا فتلقب به (الفراهيدي،١٤١٠هـ: ١٧٢/٥؛ ابن منظور، ١٩٩٩ :٣٠٧/١٢)، وعلى هذا قالوا: إن النّبزُ واللقب واحد ( ابن قتيبة،١٩٧٨ :٤١٦؛ الطبري، ١٩٩٥ :٣٦٧/٢١؛ ابن عطية،١٩٩٣ :١٥٠/٥)، في حين ذهب آخرون إلى أن النّبزُ غير اللقب، فالنّبزُ هو قذف بالمكروه أو بما يكره، أما اللقب فقد يدل على المدح والذم ( النيسابوري، ١٤١٦هـ: ١٥٦/٦ ؛ الخطيب الشربيني، ١٨٦٩: ٦٨/٤)، أي أن هناك فرقاً بين كلمتي اللقب والنّبزُ، ذلك أن اللقب يشمل المدح والذم، أما النّبزُ فهو يذكر عيوبه أي يرتبط بالناحية السلبية فقط، ولهذا يرى البعض أن اللقب ضربان " ضرب على سبيل التشريف، كألقاب الخلفاء والسلاطين، وضرب على سبيل التعيير، وهو المقصود في الآية الكريمة وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ " (سورة الحجرات، آية ١١؛ الأصفهاني، ١٤٠٤: ٤٥٢)، أي لا تدعوا الرجل إلا بأحب أسمائه إليه، كما قيل بأن اللقب يطلق لـ" ثلاثة أضرب: ضربٌ مدح، وضربٌ ذم، وضربُ تلقّبُ الإنسان لفعل يفعله" (ابن فارس، ١٩٩٧ :٥٦). وهناك من يرى بأن اللقب يحتمل تفاسير أخرى إضافة لما سبق، فقد يكون خالياً من المدح أو الذم، فيأتي على سبيل تعريف الشخص بلقب المُعَين يُعرف به ولا يُعرف بغيره، ومنه تعريف بعض علماء اللغة مثلاً كسيبويه (ت:١٨٠هـ/ ٧٩٦م) والمبرد (ت:٢٨٦هـ/ ٨٩٩م)؛ لأنه لا يقصد به تنقص أو ذم، بل محض التعريف مع رضا مسمى به (محافظة وقزق، حزيران ٢٠١٣ : ٢٠٦).

ويبدو أن هناك تقارباً كبيراً بين اللغة والاصطلاح في تعريف اللقب، فقد عرفه الجرجاني (ت:٨١٦هـ/ ١٤١٤م) بأن اللقب " ما يسمى به الإنسان بعد اسمه العلم، من لفظ يدلُ على المدح أو الذم لمعنى فيه" (٢٠٠٣: ١٩٠)، وعرفه ابن حجر العسقلاني (ت:٨٥٢هـ/ ١٤٤٨م) بقوله:" اللقب لفظ يشعر بضعةٍ أو رفعة، لان اللفظ يشعر بذلك لدلالته على المعنى، والمعنى هو في الحقيقة هو المقتضي للضعة والرفعة" (١٩٥٩: ٢٢٢/١١)، أما الخطيب الشربيني (ت:٩٧٧هـ/١٥٧٠م) فقد عرفه بقوله: " اللقب اسم ما يدعى الاسم به يشعر بضعه المسمى أو رفعته، والمقصود به الشهرة، فما كان مكروهاً ذهي عنه" (١٩٩٤: ١٤٢/٦). وإن اللقب عملياً هو اسم ضم إلى الاسم الحقيقي، وغالباً ما يغلب اللقب على الاسم فلا يعرف الشخص إلا به.

من الثابت أن وجود الألقاب قديم جداً، ولا يستبعد أن يكون وجودها مع وجود الإنسان، كقِدَم وجود الأسماء، فقد ثبت تلقيب الأنبياء بألقاب معروفة ومشهورة، فتلقب إبراهيم(عليه السلام) بـ(الخليل)، وموسى(عليه السلام) بـ(الكليم)، وعيسى(عليه السلام) بـ(المسيح)، وغيرها من الأنبياء (عليهم الصلاة والسلام)، كما عُرِفَت الألقاب قبل الإسلام، حيث شاعت في العصر الجاهلي، حتى شغلوا بها تفاخراً وتنابزاً (القلقشندي، ١٩٧٨: ٤١٥/١؛ عبد الرحيم، د.ت: ١٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

والآية وحيدة التي أشارت إلى الألقاب هي في قوله تعالى:﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِنْ نِسَاءٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴾(سورة الحجرات، آية ١١)، وأشارت كتب الحديث والتفسير الى سبب نزول الآية، وأكدت على أن أهل الجاهلية كانوا يسمون الرجل بأسماء عدة، فدعا الرسول(ﷺ) رجلاً باسم من تلك الأسماء، فقالوا: يا رسول الله إنه يغضب من هذا الاسم، فنزلت الآية الكريمة (ابن ماجه، د.ت: ١٢٣١/٢-١٢٣٢؛ أبو داود، د.ت: ٤٦٨/٢-٤٦٩؛ الطبري، ١٩٩٥ :٣٠٠/٢٢).

أقرّ الإسلام بعض الألقاب وحرَّم ما كان سيئاً منها، أي أن الألقاب هي على نوعين: الحسنة منها وهي التي يرضى صاحبها إذا دُعي بها، وألقاب مكروهة منهيٌ عنها وهي التي لا يرضاها الشخص إذا دُعي بها، وقد أباح الإسلام النوع الأول وندب إليه فيما نهى عن النوع الثاني. وإن الرسول(ﷺ) لقب بعض أصحابه: فتلقب أبا بكر بن أبي قحافة(ت:١٣هـ/٦٣٥م) بـ(الصديق)، ولقب عمر بن الخطاب(ت:٢٤هـ/٦٤٥م) بـ(الفاروق)، ولقب عثمان بن عفان(ت:٣٥هـ/٦٥٦م) بـ(ذي النورين)، وغيرهم من الصحابة (رضي الله عنهم) (القلقشندي، ١٩٧٨: ٤١٥/١؛ عبد العال، ٢٠٠٩: ٢١؛ الجيشي،٢٠٢١: ٧٣-٨٢)، فكان اللقب في معناه يدل على العمل القائم به صاحبه فلذلك كان يُلَقب به أو عن صفة موجودة في صاحبها ولذلك يُلَقب بها.

## المبحث الثاني- أسباب منح الألقاب للأمراء الكُرد خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م):

إن العلاقات السياسية للإمارات والزعامات الكُردية مع الخلافة العباسية كانت ودية دائماً، وذلك بسبب العامل الديني الذي رسم تلك العلاقات، حيث كانوا يدينون للخليفة العباسي، ويظهروا احتراماً له أمام رعيته بسبب الطابع الديني الذي يسود المجتمعات قاطبة آنذاك، فكانوا يخطبون له على منابر إماراتهم، ويضربون النقود باسمه، ويدفعون له جزءاً من خراج إماراتهم، حتى يحصلوا على مرسوم اعتراف الخلافة العباسية بولايتهم، مع منح الألقاب وعهود التولية لهم(للمزيد عن ذلك ينظر: حسن، ٢٠١١: ٧٥-٨٧).

ويبدو أن كثرت الألقاب الممنوحة من الخلفاء العباسيين إلى أمراء وحكام الدويلات والإمارات الإسلامية قد تعرض الى انتقادات من قبل المؤرخين، حيث وصفها البيروني(ت:٤٤٠هـ/١٠٤٨م) بأنها كاذبة وبأنها السبب في ضياع هيبة الخلافة وضعفها، إذ قال:" وبنو العباس، لما لقبوا أعوانهم بالألقاب الكاذبة، وسوُّوا فيها بين الموالي والمعادي، ونسبوهم إلى الدولة بأسرهم، ضاعت دولتهم، فإنهم أفرطوا في ذلك..." (١٣٧٩ هـ.ش:١٧١)، في حين ذكر الصابئ (ت:٤٤٨هـ/١٠٥٦م) كلام الخليفة العباسي القائم بأمر الله (٤٢٢-٤٦٧هـ/١٠٣١-١٠٧٥م) عن كثرة هذه الألقاب أنه قال:" لم تَبقَ رُتبةً لِمستحقٍ" (د.ت: ١٦٩)، كما انتقد الوزير نظام الملك الطوسي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(ت:٤٨٥هـ/١٠٩٢م) كثرة الألقاب الممنوحة إذ قال:" فكثرت الألقاب كثرة هائلة، وكلّما كثرت ذهب بهاؤها، وقلّت أهميتها..."( ٢٠٠٧: ١٨٥). ويتضح مما سبق بأن كثرة الألقاب ومنحها دون تمييز أو تقدير الحقيقي إلى المانح كان دليلاً على ضعف الخلافة العباسية آنذاك.

أما بالنسبة إلى أسباب منح الألقاب لأمراء الإمارات والزعامات الكُردية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م) فيعود إلى أن اللقب أصبح يشكل عاملاً مهماً في إثبات الشرعية لسلطة هؤلاء الأمراء لا سيما في العصر العباسي، ويأتي في مقدمة تلك الأسباب؛ السبب الديني، حيث ظهر في القرن (٤هـ/ ١٠م) الشيعة الفاطميين في بلاد المغرب ومصر وأدعو بالخلافة، وألقت تلك الادعاءات بظلالها على السلطة الدينية للعباسيين، وأصبحوا يجارونهم في منح الألقاب ودرجات الشرف، أي أن كلتا الخلافتين؛ العباسية في بغداد والفاطمية في القاهرة كانتا تتنافسان في مجال منح الألقاب في محاولة منهم لتأكيد وتعزيز مكانتهما الدينية آنذاك، حيث كانت المكانة الدينية للخلفاء العباسيين لم تزل عظيمة في ذلك الوقت، ولذلك كان الأمراء الكُرد يعترفون بالسيادة العليا للخليفة وينظرون إليه على أنه السلطة الروحية المطلقة التي يجب ذيل تعضيدها للحصول على الشرعية في الحكم (البيروني، ١٣٧٩هـ.ش: ١٧١؛ محي الدين، ٢٠١٦: ١٢٦-١٢٧).

إن ضعف الخلفاء العباسيين وعجزهم في إدارة الدولة، كان سبباً آخراً لمنح الألقاب للأمراء الكُرد، حيث إن ذلك الضعف أدى إلى عدم قدرة الدولة العباسية الحكم على الأقاليم الإسلامية، ومن ضمنها بلاد الكُرد، لذلك أغدقوا الألقاب على أمرائهم في محاولة منهم لضمان استقرار الأوضاع هناك، وبقاء نفوذهم في تلك البلدان؛ التي نشأ فيها حكم مستقل أو شبه مستقل عن مركزية الخلافة في بغداد، وبالمقابل نجد أن أمراء الكُرد يتهافتون إلى تلك الألقاب الرسمية، لأنهم شعروا بالحاجة إلى تقوية سلطانهم بها، بدليل أن ذلك اللقب عادة ما كان يرافقه الامتيازات، فاللقب المضاف إلى مفردتي الدين والدولة إنما يقصد به أن الخليفة قد جمع السلطتين الدينية والسياسية تحت أيديهم( حسن، ٢٠١١: ٥٧-٦٧).

كما أن سوء الأوضاع الاقتصادية في الدولة العباسية كان سبباً آخر لمنح الألقاب للأمراء الكُرد، فالخليفة هو مصدر الألقاب والتكريمات والتي كانت تمنح مقابل الهبات النقدية والهدايا النفيسة، وجزء من خراج إماراتهم، فضلاً عن ذكر اسم الخليفة العباسي على المنابر، مع ضرب اسمه على نقودهم، حتى يحصلوا على الألقاب وعهود التولية لهم(للمزيد عن ذلك ينظر: حسن، ٢٠١١: ٦٢-٦٧).

ويرجع اسباب منح الخليفة العباسي ألقاباً رسمية إلى الأمراء بشكل عام وأمراء الكُرد بشكل خاص إلى تقليد العباسيين للممارسات التشريفية الفارسية القديمة، ويؤكد البيروني على ذلك من خلال حديثه عن ملوك الفرس وألقابهم عندما قال:" ... ومُلحق بأسمائهم ألقابهم، إذ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هم المُختصون بذلك دون سائر الملوك، فإن غيرهم، وإن وجد له لقب، فهو عام لطبقته، يشترك هو فيه، وغيرهُ من القائمين مقامه، والألقاب العامة توازي لقب الشاهاذشاهية للفرس"، ثم استكمل البيروني روايته حول ملوك الفرس وألقابهم بقوله:" وأما الألقاب الخاصة، فليست قبل دولة الإسلام إلا للفرس..." (١٣٧٩هـ.ش:١١٥، ١١٨).

## المبحث الثالث- ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية – السياسية:

كان المجتمع الكُردي في العصر الإسلامي الوسيط، بصورة عامة، يتكون من عدد كبير من القبائل والعشائر والطوائف، موزعة على أقاليم عديدة من بلاد الكُرد، كإقليم الجبال الغربي، وإقليم الجزيرة، وإقليم أذربيجان وأرمينيا وأران، وإقليم لورستان، وغيرها، وبرزت في مطلع القرن (٤هـ/ ١٠م) العديد من تلك القبائل والعشائر، لا سيما في عهد السيطرة البويهية على مقاليد الخلافة العباسية، خلال الحقبة (٣٣٤-٤٤٧ هـ/٩٤٥-١٠٥٥م)، وحظيت بممارسة دور فعال في سير الأحداث، وأثبتوا وجودهم بشدة، واستطاعت الكثير منها في تكوين وتأسيس إمارات وكيانات سياسية كُردية كبيرة وصغيرة، ومعترفة بها من قبل الخلافة العباسية، ومن أهمها: الإمارة الشدادية (٣٤٠-٥٩٥ هـ/٩٥١-١١٩٨م) في إقليم أران، والإمارة الروادية (٣٤٣-٤٦٣ هـ/٩٥٤-١٠٧٠م) في إقليم أذربيجان، والإمارة الحسنويهية البرزيكانية (٣٤٨-٤٠٦هـ/٩٥٩-١٠١٥م) في غربي إقليم الجبال وشهرزور، والإمارة المروانية الدوستكية (٣٧٢-٤٧٨هـ/٩٨٢-١٠٨٥م) في إقليم الجزيرة، والإمارة العنازية الشاذنجانية (٣٨١-٥١١ هـ/٩٩١-١١١٧م) في غربي إقليم الجبال وشهرزور أيضاً، والإمارة الهذبانية (٣٨٧-٥٢٥هـ/٩٩٧-١١٣١م) في أربل وتوابعها، وغيرها من الامارات والزعامات الكُردية التي أنشأت على أساس قبلي(للمزيد عنها ينظر: أحمد، ١٩٩٤: ٢٥٣-٢٧٠؛ مرعي، ٢٠٠٥: ١٢٥-٤٢٤؛ توفيق، ٢٠٠٧: ١٨-١٩٥؛ حسن، ٢٠١١: ٢٣-٥٦).

ويبدو أن تلك الإمارات ظهرت نتيجة للتطورات السياسية والتحولات الاقتصادية والاجتماعية التي شهدتها الدولة العباسية خلال القرن (٤هـ/١٠م)، علاوة على توفر شروط قيام الإمارات المحلية في بلاد الكُرد، حيث القبائل الكُردية المُتنفذة، والمناطق الجبلية الوعرة، والإمكانات الاقتصادية الكافية، وتكاتف الكُرد حول زعماتهم القبلية، فضلاً عن بُعد مناطقهم عن بغداد مركز الخلافة العباسية (للمزيد عن ذلك ينظر: حسن، ٢٠١١: ٥٧-٧٢).

أما بالنسبة إلى ألقاب الأمراء الكُرد فقد تلقب معظم من حكم الإمارات والزعامات الكُردية خلال القرنين (٤-٥ هـ/١٠-١١م) بلقب الأمير أو الملك، حيث أشار ابن فضل الله العمري (ت:٧٤٩هـ/١٣٤٨م) إلى أن الأمراء الكُرد قد جمعوا بين لقب "الأمير" ولقب "الملك" (٢٠٠٣: ٣/٢٦٠)، كما أكد برنارد لويس (ت:٢٠١٨م) بأن لقب " الملك" هو اللقب الرسمي، إذ ظهر في الكتابات والعملات النقدية في المنتصف القرن(١٠م/٤ هـ) بعد أن فقدت سلطة الخلافة المركزية



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

للإمبراطورية الإسلامية تحكمها على الولايات والأقاليم؛ والتي حكمها حكام، بدءوا كحكام وراثيين وسرعان ما تحولوا إلى أسر حاكمة( ١٩٩٣: ٨٨-٨٩). وذلك ما نجده عند ديسم بن ابراهيم الكُردي (ت:٣٤٥هـ/٩٥٦م) الذي أعلن نفسه أميراً على أفراد قبيلته الهذبانية وقبائل أخرى، ثم شكل سلطة الديسمية (٣١٥-٣٤٥هـ/٩٢٧-٩٥٦م) في أذربيجان وبعض مناطق أرمينية وآران؛ والتي كانت تعد من السلطات السياسية الكُردية المبكرة التي ظهرت بين الكُرد في تلك الفترة (مسكويه،٢٠٠٣: ٢٤٩/٥-٢٥٣؛ ابن الأثير، ٢٠١٢: ١٨٤،١٠٧؛ سعيد، ٢٠١٤: ٦٧٣-٦٧٥؛ بيكوف، ٢٠٢٠: ١٠٥-١١١).

وعلى الرغم من أن المعلومات عن ألقاب الأمراء الكُرد خلال حقبة الدراسة، كانت قليلة وغير مفصلة، إذا ما قورنت بالمعلومات الواردة عن ألقاب الأمراء في الإمارات الإسلامية في المشرق والمغرب، فقد كانت مجرد إشارات عابرة ومتناثرة هنا وهناك، حيث لم تذكر المصادر التاريخية ألقاب كثير من أمراء الإمارات والزعامات الكُردية، فضلاً عن عدم ذكر دلالات تلك الألقاب الدينية – السياسية، ولكن ذلك لا يعني الإقلال من أهمية تلك المعلومات، لأنها لعبت دوراً بارزاً في بيان الأحداث السياسية والاجتماعية لكثير من الامارات والزعامات الكُردية خلال تلك الحقبة. وذلك ما سوف يتضح لنا من خلال الوقوف على ما ورد وذكر من الألقاب ودلالاتها السياسية والدينية:

## أولاً- ألقاب الأمراء الروادية:

ظهرت الإمارة الروادية في المنتصف القرن (٤ هـ/١٠م) في إقليم أذربيجان، وينسب أمراء تلك الإمارة إلى الكُرد الروادية؛ التي هي بطن من قبيلة الهذبانية الكبيرة والمعروفة (للمزيد عنها ينظر: ابن خلكان،١٩٦٨: ١٣٩/٧؛ توفيق،٢٠٠٧: ٩٧-٩٩؛ حسن،٢٠١١: ٣٦-٣٩)، ولم تسعفنا المصادر التاريخية بمعلومات كافية عن أمراء تلك الإمارة وخاصة عن ألقابهم، باستثناء أمير واحد وهو الأمير وهسوذان بن محمد الروادي (٤١٦-٤٥١هـ/١٠٢٥-١٠٥٩م)، حيث دونّ ناصر خسرو(ت:٤٨١هـ/١٠٨٩م) ألقابه التي كانت تذكر في الخطبة في تبريز سنة (٤٣٨هـ/١٠٤٧م) وهي:" الأمير الأجل سيف الدولة وشرف الملة أبو منصور وهسوذان بن محمد مولي أمير المؤمنين" (سفرنامه، ١٩٧٠: ٣٨)، وتدل تلك الألقاب على أن الأمير وهسوذان كان واسع السلطة والنفوذ في إقليم أذربيجان وله روابط حسنة مع الخلافة بدليل قول " مولي أمير المؤمنين"، ولقب سيف الدولة يعد من ألقاب المدح والتعظيم والتفخيم التي كانت تُمنح للأمراء وقادة الجيش، وينسجم مع لقب شرف الملة ومكانة الأمير وهسوذان، من حيث حمايته بلاد الإسلام من غارات الروم والأرمن والروس نظراً لوقوع بلاده على تخوم دار الحرب(السيد،٢٠١١: ٤١١؛ حسن، ٢٠١١: ٨٢؛ النقشبندي، ٢٠١٢: ١٢٢،١١٢-١٢٤).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ومما يجدر ذكره أن المصادر التاريخية لا تمُدنا بمعلومات عن اسم الخليفة والسنة الذي لقب الأمير وهسوذان بتلك الألقاب، إلا أن حمد الله مستوفي(ت:٧٥٠هـ/١٣٤٩م) قد أشار إلى أن الخليفة العباسي القائم بأمر الله (٤٢٢-٤٦٧هـ/١٠٣١-١٠٧٥م) قد عهد له بحكم المناطق التي في حوزته من إقليم أذربيجان (١٣٦٢: ٧٥)، واستناداً إلى ذلك يرجح أن الخليفة القائم بأمر الله؛ هو الذي لقب الأمير وهسوذان بتلك الألقاب.

كما لقب الأمير وهسوذان من قبل الشاعر قطران الأزدي التبريزي(ت:٤٣٨هـ/١٠٤٧م) في أشعاره بـ" سير دولت" أي أمين الدولة، و" ستون دين ودولت" أي عماد الدين والدولة"، و" جراغ طرطريان" أي مصباح العروش( كسروي، ١٣٨٨ه: ١٨٢-١٨٣؛ النقشبندي، ٢٠١٢: ١١٢)، وتدل تلك الألقاب التي كان يوصف بها الأمير وهسوذان من قبل ذلك الشاعر على علو هيبته وازدياد نفوذه، وكان لها مدلول عسكري بجانب ما تحمله بداخلها من معاني النصرة والفوز، وإلى جانب معانيها الدينية، حيث إن لقبا عماد الدين والدولة من ألقاب التعظيم والتفخيم التي يشترك فيها أرباب السيوف والأقلام جميعاً، حيث كانت تُمنح للأمراء والوزراء والقضاة في العصر الإسلامي(القلقشندي، ١٩١٥: ٦/٤٢، ٦١؛ السيد، ٢٠١١: ٥٨٣).

### ثانياً- ألقاب الأمراء الحسنويهية البرزيكانية:

ظهرت الإمارة الحسنويهية في غربي إقليم الجبال وشهرزور في المنتصف القرن (٤هـ/١٠م)، وتنسب الى البرزيكان؛ التي هي من القبائل الكُردية الكبيرة والمعروفة (للمزيد عنها ينظر: مرعي،٢٠٠٥: ١٢٥-٢٢٠؛ النقشبندي، ٢٠١١: ١٣١-٢٠٤؛ توفيق، ٢٠١٣: ١٦٥-١٨٣)، لا تمُدنا المصادر التاريخية بمعلومات كافية عن ألقاب أمراء تلك الامارة، بإستثناء الأمير بدر بن حسنويه (٣٦٩-٤٠٥هـ/٩٧٩-١٠١٤م) الذي لقب في سنة (٣٨٨هـ/٩٩٨م) من قبل الخليفة العباسي القادر بالله (٣٨١-٤٢٢هـ/٩٩١-١٠٣١م) بلقب "نصرة الدولة" وعهد إليه أعماله في إقليم الجبال، وعقد له اللواء وحملت إليه الخلع الجميلة، ويظهر بأن بدراً لم يرغب في ذلك اللقب وسأل أن يلقب بناصر الدولة فأجابه الخليفة فيما بعد ولقبه بـ" ناصر الدين والدولة" (الروذراوري، ٢٠٠٣: ٦/١٨٦؛ ابن الجوزي،١٩٩٢: ١٥/٨-٩؛ ابن الاثير، ٢٠١٢: ٧/٥٠١؛ ابن كثير، ١٩٩٨: ١٥/٤٧٨).

ويظهر أن لقب " ناصر الدين والدولة" من ألقاب المدح والتعظيم والتفخيم التي كانت تُمنح للملوك والأمراء في عصر الدولة العباسية، وأنها ذو مغزى ديني ودنيوي، فـ "ناصر الدين" يدل على أهمية شأن الأمير بدر من الناحية الدينية نظراً لخدماته في ذلك المجال، حيث يعد الأمير بدر من أبرز أمراء عصره وأشهرهم ذكراً في مجال خدمة الدين وإعلاء شأن الاسلام (للمزيد عن دوره الديني ينظر: ابن الجوزي،١٩٩٢: ١٥/١٠٤-١٠٦؛ سبط ابن الجوزي،٢٠١٣: ١٨/٢٣٢-٢٣٠؛ حسن،٢٠١١: ٧٧-٧٩؛ الشمراني، ٢٠٢٠: ١٦-٢٧)، وبناءً على ذلك أضاف

الخليفة كلمة " الدين" الى لقبه. أما إضافة كلمة " الدولة" الى لقبه فقد أعطاه مغزاً دنيوياً، ويعد إعترافاً من جانب الخليفة بخدماته السياسية للدولة الاسلامية، كما يدل اللقب على علو شأن الأمير بدر بين أمراء عصره، إذ يعد من الأمراء القلائل من غير البويهيين ممن حصل على إعتراف الخليفة والتقليد بحكم مناطقهم في ذلك العصر(النقشبندي،٢٠١١: ١٨١-١٨٤؛ السيد،٢٠١١: ٩٣٦؛ حسن،٢٠١١: ٧٧-٧٩).

كما لقب الأمير بدر بن حسنويه بلقب آخر وهو "الأمير الأجل"؛ حيث وجد ذلك مكتوباً على قنطرة كاشكان؛ التي تقع في غرب إيران بين خرم آباد وانديمشك، فكان النص كالآتي:" بسم الله الرحمن الرحيم، هذا ما أمر ببنائه الأمير الأجل أبو النجم بدر بن حسنويه بن الحسين، أطال الله بقاءه، في سنة تسعة وثمانين وثلاثمائة، وفرغ منه في سنة تسعة وتسعين وثلاثمائة على رسول الله وآلة كلهم "، وكان لقب "الأمير الأجل" قد أطلق في العصور الأسلامية الأولى على أصحاب النفوذ من رجال الدولة؛ الذين يتمتعون بنفوذ وسلطات واسعة. (البدليسي،٢٠٠١: ١١٤؛ الباشا،١٩٨٩: ١٢٦؛ النقشبندي،٢٠١١: ٣٢٨-٣٢٩؛ حسن،٢٠١١: ٧٩).

## ثالثاً- ألقاب الأمراء المروانية الدوستكية:

ظهرت الإمارة المروانية الدوستكية في إقليم الجزيرة في النصف الثاني من القرن (٤هـ/١٠م)، وتنتمي أمراؤها إلى قبيلة الجهاربختية الكُردية (للمزيد عنها ينظر: التكريتي، ١٩٧٠: ٥٥-١٤٠؛ مرعي،٢٠٠٥: ٢٢٣-٣٢٨؛ توفيق، ٢٠١٣: ٢٠٦-٢٣٨)، وكان أمراء الإمارة المروانية على علاقة جيدة وودية مع الخلافة العباسية وحصل بعضهم على الاعتراف والتقليد والألقاب، منهم الأمير باد بن دوستك الكُردي (ت:٣٨٠ هـ /٩٩٠م) مؤسس الإمارة، حيث ذكر أحد الباحثين بأنه لما استولى باد الكُردي على آمد وميافارقين في سنة (٣٥٨هـ/٩٦٨م) حظي باعتراف أمراء الإمارات المجاورة وكناه الخليفة بـ"أبي شجاع" وخطب في المنابر بأسمه وأسم الخليفة(موكرياني، ١٩٦٢: ١٣-١٤) دون أن يشير ذلك الباحث الى المصادر التي استقى منها تلك المعلومة، حيث لم نجدها في المصادر المتاحة لدينا، ولعله أخذ عن بعض المصادر الفارسية التي لم يصرح بها، لا سيما أنه كان مترجماً لبعض الكتب الفارسية.

ويبدو أن الأمير ممهد الدولة أبي منصور بن مروان(٣٨٧-٤٠١هـ/٩٩٧-١٠١٠م) هو أول من لقب من الأمراء المروانيين من قبل الخلفاء العباسيين، حيث أكدت بعض المصادر بأنه راسل الخليفة العباسي القادر بالله وأعلن ولاءه له، فجاءه التشريف من الخليفة ومن الملك البويهي بهاء الدولة(ت:٤٠٣هـ/١٠١٣م) وولده (الفارقي،١٩٥٩: ٨٦؛ ابن شداد، ١٩٧٨: ٣/١/٣٣٤؛ التكريتي، ١٩٧٠: ٧٧)، ولقب " مُمَهِّد الدولة" يقصد به الذي يمهد الملك ويُدَوِّخها، وكانت من الألقاب الرفيعة والعظيمة التي تُمنح لكبار الرجال العسكريين كنواب السلطنة والأمراء والملوك

في العصر العباسي(القلقشندي،1915: 6/ 30؛ الباشا،1989: 509-510؛ السيد،2011: 849).

أما الأمير أحمد بن مروان (401-453هـ/1010-1061م) فقد أوردت المصادر التاريخية عدة ألقاب لذلك الأمير، حيث أشارت إلى أنه لقب في سنة (403هـ/1013م) من قبل الخليفة العباسي القادر بالله بلقب" نصر الدولة وعمادها ذي الصرامتين" مع إرساله الخلع والتشريف والمنشور بحكم منطقة دياربكر جميعها(الفارقي،1959: 108؛ ابن الجوزي،1992: 15/ 92؛ ابن شداد، 1978: 3/1/ 351-352)، كما لقب في نفس السنة من قبل الخليفة الفاطمي الحاكم بأمر الله (386-411هـ/996-1021م) بلقب " عز الدولة و مجدها ذي الصرامتين" مع إرساله الكثير من الهدايا والتحف والخلع(الفارقي،1959: 109)، ويبدو أن إضفاء الألقاب على الأمير أحمد بن مروان كان جزءاً من عملية الصراع والتنافس بين الخلافة العباسية والفاطمية، ومحاولة كل منهما جر الأمير إلى جانبها أو كسب وده على أقل التقدير، ولكن الأمير فضل أخذ اللقب الذي منحه الخليفة العباسي القادر بالله "نصر الدولة وعمادها ذي الصرامتين"(مرعي،2005: 284؛ البامرني،2016: 65-66).

كما ذكر ناصر خسرو ألقاباً أخرى للأمير أحمد بن مروان، حيث زار مدينة ميافارقين في سنة (438هـ /1047م)، وأكد بأن اسم ذلك الأمير يذكر في الخطبة:" الأمير الأعظم عز الإسلام سعد الدين نصر الدولة وشرف الملة أبو نصر أحمد" (سفرنامه، 1970: 42)، وعلاوة على ذلك، وجدت ألقاباً أخرى للأمير أحمد بن مروان مكتوبة على سور ميافارقين منها: لقب " نصر الدولة أبو نصر مولى أمير المؤمنين أطال الله بقاءه وعز نصره"، ولقب " الأمير السيد الأجل نصر الدولة اختيار"، ولقب " سعد الدين نصر الدولة ركن الملة مجد الأمة شرف الأمراء أبو نصر أحمد بن مروان" وغيرها (للمزيد عن ذلك ينظر: التكريتي، 1970: 84-85؛ يوسف،2001: 2/ 336-340).

يتضح مما سبق بأن تلك الألقاب كان لها مغزى ديني ودنيوي، وأنها ساعدت الأمير أحمد بن مروان في توطيد نفوذه في المنطقة وازدياد هيبته في الداخل والخارج، وأن ألقابه المضافة إلى كلمتي "الدين" و" الإسلام" لها مدلولات دينية تتعلق بدور الأمير أحمد في خدمة الدين الإسلامي وتطبيق الأحكام الدينية في بلاده، فضلاً عن شيوع الأمن والرفاهية الاقتصادية التي شهدتها إمارته إبان حكمه (للمزيد عن خدماته الدينية ينظر: الفارقي،1959: 108، 114-115؛ ابن الجوزي،1992: 16/ 70-71؛ البامرني،2016: 128-131)، بينما ألقابه المضافة إلى كلمة "الدولة" فتُعد اعترافاً من جانب الخليفة بخدماته السياسية للدولة الإسلامية، كما يدل على علو شأنه بين أمراء عصره، أما الألقاب المضافة إلى "شرف" فتدل على حفظه لشرف المسلمين من الأخطار الخارجية الموجهة من دار الحرب، نظراً لوقوع إمارته على ثغر من الثغور المهمة ضد


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

ا لروم البـ يزنطيين، وأ نه عـ مر تـ لك الثـ غور وعزز ها و ضبطها وأمنـ ها(التكريتي، ١٩٧٠: ١٣٨-١٣٩؛ حسن،٢٠١١: ٨١).

أشار عدد من الباحثين الى بعض الألقاب التي تلقب بها أ مراء آ خرين في الإ مارة المروانية، دون ذكر المصادر التي استقوا منها تلك المعلومات من جهة، كما أنهم لم يشروا إلى ا سم الخليفة والسنة التي وردت فيه تلك الألقاب من قبل الخلافة العباسية من جهة أ خرى، ومنهم: الأ مير أ بو الحسن محمد بن نصر الدولة أ حمد بن مروان، كان ولياً للعهد في آمد سنة (٤٥٣ هـ/ ١٠٦١م) وا لذي لقب بـ"سعد الدو لة"(زامباور،١٩٨٠: ٢٠٧؛ الشهابي، ١٩٩٥: ٤٨)، والأ مير أ بو القا سم نصر بن نصر الدولة أحمد بن مروان(٤٥٣-٤٧٢هـ/١٠٦١-١٠٧٩م) الذي لقب بـ "نظام الدولة" (الشهابي، ١٩٩٥: ١٩٣؛ لين بول، ٢٠٠٦: ١٤١)

## رابعاً- ألقاب الأمراء العنازية الشاذنجانية:

نشأت الإ مارة العنازية في النصف الثاني من القرن (٤ هـ/١٠م) في غربي إقليم الجبال وشهرزور أيضاً، وقد قامت هذه الإ مارة كسابقتها على أ ساس قبلي، فأمرائهم ينتمون إلى قبيلة الشاذنجان الكُردية(للمزيد عنها ينظر: مرعي،٢٠٠٥: ٣٣١-٤٢٤؛ النقشبندي،٢٠١١: ٢٠٥-٢٥٤؛ توفيق،٢٠١٣: ١٨٤-٢٠٥)، ولا تسعفنا المصادر الإ سلامية بإ شارات صريحة حول منح من قبل الخلافة العباسية ألقاب لامرائها، ولكن بعض المصادر ذكرت ثاني أ مرائهم بلقب "حسام الدولة أبو الشوك فارس بن محمد بن عناز"(٤٠١-٤٣٧هـ/١٠١١-١٠٤٦م) (ابن الأثير، ٢٠١٢: ٧/٦٧٤، ٧٩٠؛ابن الفوطي،١٩٦٤: ٤/٢/١١٣٦-١١٣٧؛ البدليسي،٢٠٠١: ١٢٠) دون أن تمُدنا بمعلومات عن أسم الخليفة والسنة الذي لقب الأ مير أ بو الشوك فارس بذلك اللقب، واستناداً إلى ما وردت عند ا بن الأ ثير(ت:٦٣٠هـ/١٢٣٢م) في حوادث سنة (٤١٤هـ/١٠٢٤م) يمكن القول إنه لُقبَ قبل سنة (٤١٤هـ/١٠٢٤م) ومن قبل الخليفة العباسي القادر باللّه.

ويظهر أن الألقاب المضافة للدولة كـ"حسام الدولة" كانت تعد من ألقاب الفخرية والرفيعة التي كانت تُ منح لـ قواد الجيش والنواب السلطنة والأ مراء والملوك في العصر الإ سلامي(نظام الملك،٢٠٠٧: ١٩٣؛ القلقشندي،١٩١٥: ٦/٤٦؛ البا شا،١٩٨٩: ٢٥٨-٢٥٩؛ السيد، ١٩٩٠: ٨٦).

إلى جانب الألقاب السابقة كانت هناك ألقاب أخرى لأ مراء الإ مارات الكُردية الأ خرى، إلا أن المصادر التاريخية لم تذكر معلومات حول تلقيبهم من قبل الخلافة العباسية، ومنهم: الأ مير أ بو النجم بدر بن ورام الكُردي الجاواني (٤٥٥-٤٧١ هـ/١٠٦٣-١٠٧٨م) أ حد أ مراء الإ مارة الجاوانية (٣٩٢-٦٥٦هـ/١٠٠٢-١٢٥٨م) الذي لقب بـ"سيف الدولة"( ابن الأ ثير، ٢٠١٢: ٨/٢٧٠؛ توفيق،٢٠٠٧: ٦٢)، كما ذكر أحد الباحثين ألقاب بعض الأ مراء الشدادية دون الإ شارة إلى المصادر التي استقى منها

معلوماته، منهم: الأمير فضلون بن محمد بن شداد(٣٧٥-٤٢٢هـ/٩٨٥-١٠٣١م)، الذي لقب بـ"الملك المنصور"، والأمير الفضل الثالث بن الفضل الثاني بن شاور بن فضلون بن محمد بن شداد (ت: بعد٤٨١هـ/١٠٨٨م) آخر أمراء الإمارة الشدادية، الذي لقب بـ"الملك المظفر"( السيد، ٢٠١١: ٧٩٤، ٨٧٠).

**الخاتمة:**

توصلنا من خلال دراستنا لموضوع " ألقاب الأمراء الكُرد ودلالاتها الدينية السياسية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م)"، إلى عدة نتائج منها:

أولاً- الألقاب ظاهرة قديمة قدم الإنسانية، وهي اسم غلب على المُسمى بعد اسمه الأول، وقد ورد ذكرها في القرآن الكريم، إذ أشار إلى العديد من الأنبياء بألقابهم، وهو ما يدلل على شيوعها في المجتمعات القديمة. ولما جاء الإسلام اعتنى بالألقاب فرغب في بعضها إذا كان القصد التعريف بها ليتميز عن غيره بقصد عدم الذم، ومنع من بعضها التي فيها نوع من العيب والسخرية.

ثانياً- أوضحت الدراسة بأن ظاهرة الألقاب بدأت في العالم الإسلامي منذ أن أصيبت مؤسسة الخلافة العباسية بالضعف، فأخذ الولاة يبادرون بالمطالبة بالألقاب الفخرية لإظهار مكانتهم وإبراز فضلهم على الخلافة باعتبار أنها تحتاج إلى دعمهم ومساندتهم، وبلا شك فإن اعتراف الخلافة قد أدى إلى تقوية مركزه السياسي داخلياً وخارجياً.

ثالثاً- كشفت الدراسة أن الألقاب قد شغلت حيزاً واضحاً واهتماماً كبيراً في حياة الأمراء الكُرد على اختلاف إماراتهم وزعاماتهم، ونقلت لنا جوانب مهمة من الأحداث التاريخية التي كانت سائدة آنذاك فكانت بمثابة مرآة عكست واقع الأحداث التي عاشها الإمارات والزعامات الكُردية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م)، كما كانت تلك الألقاب الفخرية والنعوت التشريفية التي اتخذها الأمراء الكُرد، هي امتداد لألقاب الأمراء في العصر العباسي.

رابعاً- يعد منح الألقاب وعهود التولية أو التقليد من قبل الخلافة العباسية لبعض أمراء الكُرد، مظهراً من مظاهر العلاقة الودية بين الطرفين، كما تعبر في الوقت نفسه عن مظهر التبعية الاسمية والمذهبية، واعترافاً من جانب الخلافة بخدمات ودور أولئك الأمراء في أحداث وتطورات عصرهم.

خامساً- كثرة الألقاب الممنوحة من جانب الخلفاء العباسيين إلى الأمراء الكُرد خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م) يعود إلى أن ضعف الخلفاء العباسيين وعجزهم في إدارة الدولة المترامية الأطراف، كما أن منحهم الألقاب كان تحدياً لسلطة الفاطميين التي منحت الألقاب ودرجات الشرف إلى


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

مؤيديها، وأيضاً لضمان سيطرتهم وبقاء نفوذهم في تلك الإمارات التي نشأ فيها حكم مستقل أو شبه مستقل عن مركزية الخلافة في بغداد، كما أن سوء الأوضاع الاقتصادية في الدولة العباسية كان سبباً آخر لمنح تلك الألقاب، إلى جانب تقليد العباسيين إلى ممارسات تشريفية فارسية قديمة.

سادساً- كان للأمراء الكُرد نصيب لا بأس بها من الألقاب التي ذكرها المصادر التاريخية، وذلك لدورهم الكبير ومكانتهم في المجتمع، وكان الأميران بدر بن حسنويه وأحمد بن مروان من أكثر الأمراء الكُرد استخداماً للألقاب، وذلك بسبب إنجازاتهما السياسية والدينية والعمرانية، فضلاً عن مكانتهما ونفوذهما بين الأمراء عصره.

سابعاً- كانت الألقاب الأمراء الكُرد وعاء يستوعب الأحداث السياسية والاجتماعية والدينية في الإمارات والزعامات الكُردية خلال القرنين (٤-٥هـ/١٠-١١م)، وأن عدداً كبيراً من تلك الألقاب تطورت في العصر الحديث من باب اللقب إلى الاسم مثل (صلاح الدين وحسام الدين وسيف الدين) وغيرها.

ثامناً- أظهرت الدراسة أن الغالب على ألقاب الأمراء الكُرد الطابعين الديني والدنيوي، لذلك كانت مضافة إلى مفردتي الدولة والدين لتعطي دلالة واضحة على جمع بين السلطتين السياسية والدينية تحت أيديهم، وأن ألقاب مضاف كلمة " الدولة" هي أكثر من ألقاب مضافاً كلمة " الدين"، وذلك دليل على أن الأمراء الكُرد كانوا من رجال السياسة المُحنكين.

تاسعاً- من التوصيات الناتجة عن هذه الدراسة، نأمل أن يكون بداية لمشاريع بحثية أخرى للباحثين ليأخذوا طريقهم في إماطة اللثام عن تلك الألقاب لبقية الأمراء والزعماء الكُرد في العصر الإسلامي.

**قائمة المصادر والمراجع:**

**القرآن الكريم**

**أولاً- المصادر الاولية :**

١- ابن الأثير، عزالدين أبو الحسن علي بن أبي الكرم الجزري (٢٠١٢م)، الكامل في التاريخ، بيروت: دار الكتاب العربي، حققه وأعتني به: عمر عبد السلام تدمري.

٢- الأصفهاني، الراغب (١٤٠٤هـ)، مفردات غريب القرآن، د/م، ط٢.

٣- البدليسي، الأمير شرف خان بن الأمير شمس الدين بن شرف خان الروذكى (٢٠٠١م)، شرفنامه، أربيل: ط٢، مؤسسة موكرياني للطباعة والنشر، ترجمة: محمد جميل الملا أحمد الروذبيانى.
٤- البيروني، أبو الريحان محمد بن أحمد الخوارزمي (١٣٧٩ هـ.ش)، الآثار الباقية عن القرون الخالية، همدان: تحقيق وتعليق: برويزاذ كائي.
٥- الجرجاني، السيد الشريف علي بن محمد بن علي الحنفي (٢٠٠٣م)، التعريفات، القاهرة: مكتبة القرآن، ضبط نصوصها وعلق عليه: محمد علي أبو العباس.
٦- ابن الجوزي، أبو الفرج عبد الرحمن بن علي بن محمد القرشي (١٩٩٢م)، المنتظم في التاريخ الملوك والأمم، بيروت: دار الكتب العلمية، دراسة وتحقيق: محمد عبد القادر عطا ومصطفى عبد القادر عطا.
٧- ابن حجر العسقلاني، شهاب الدين أحمد بن علي بن محمد (١٩٥٩م)، فتح الباري في شرح صحيح البخاري، بيروت: دار المعرفة.
٨- الخطيب الشربيني، محمد بن أحمد (١٨٩٦م)، السراج المنير في الإعانة على معرفة بعض المعاني كلام ربنا الحكيم الخبير، القاهرة .
٩- (١٩٩٤م)، مغني المحتاج إليه إلى معرفة ألفاظ المنهاج، بيروت: دار الكتب العلمية.
١٠- ابن خلكان، أبو العباس شمس الدين أحمد بن محمد (١٩٦٨م)، وفيات الأعيان وأنباء أبناء الزمان، بيروت: دار صادر، حققه: إحسان عباس.
١١- أبو داود، سليمان بن الأشعث (د.ت)، سنن أبي داود، بيروت: المكتبة العصرية، تحقيق: محمد محي الدين عبد الحميد.
١٢- الروذراوري، ظهير الدين أبو شجاع محمد بن الحسين (٢٠٠٣م)، ذيل تجارب الأمم، بيروت: دار الكتب العلمية.
١٣- سبط ابن الجوزي، شمس الدين أبو المظفر يوسف بن قزأوغلي التركي(٢٠١٣م)، مرآة الزمان في تواريخ الأعيان، بيروت: دار الرسالة العالمية، حققه وعلق عليه: محمد أنس الخان وكامل محمد الخراط.
١٤- ابن شداد، عز الدين أبو عبد الله محمد بن علي بن إبراهيم الأنصاري (١٩٧٨م)، الاعلاق الخطيرة في ذكر أمراء الشام والجزيرة، دمشق: وزارة الثقافة والإرشاد القومي، حققه: يحيى عبارة.
١٥- الصابئ، أبو الحسن هلال بن المحسن بن إبراهيم الحراني(د.ت)، الوزراء أو تحفة الأمراء في تاريخ الوزراء، د/م: مكتبة الأعيان، تحقيق: عبد الستار أحمد فراج.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

١٦- الطبري، محمد بن جرير (١٩٩٥م)، جامع البيان عن تأويل آية القرآن، بيروت: دار الفكر، تحقيق: صدقي العطار.
١٧- ابن عطية، عبد الحق بن أبي بكر الأندلسي (١٩٩٣م)، المحرر الوجيز في تفسير الكتاب العزيز، بيروت: تحقيق: عبد السلام محمد.
١٨- ابن فارس، أبو الحسين أحمد بن فارس بن زكريا القزويني الرازي (١٩٩٧م)، الصاحبي في فقه اللغة العربية ومسائلها وسنن العرب في كلامها، د/م: الناشر محمد علي بيوض.
١٩- الفارقي، أحمد بن يوسف بن علي بن الأزرق (١٩٥٩م)، تاريخ الفارقي، القاهرة: الهيئة العامة لشؤون المطابع الأميرية، حققه وقدم له: بدوي عبد اللطيف عوض.
٢٠- الفراهيدي، أبو عبد الرحمن خليل بن أحمد (١٤١٠هـ)، العين، د/م: ط٢، مؤسسة دار الهجرة للنشر، تحقيق: مهدي المخزومي وإبراهيم السامرائي.
٢١- ابن فضل الله العمري، شهاب الدين أحمد بن يحيى القرشي العدوى(٢٠٠٣م)، مسالك الأبصار في ممالك الأمصار، أبو ظبي: المجمع الثقافي للنشر، تحقيق: أحمد عبد القادر الشاذلي.
٢٢- ابن الفوطي، كمال الدين أبو الفضل عبد الرزاق بن أحمد (١٩٦٤م)، تلخيص مجمع الآداب في معجم الألقاب، دمشق: تحقيق:مصطفى جواد.
٢٣- ابن قتيبة، عبد الله بن مسلم بن قتيبة الدينوري (١٩٧٨م)، غريب القرآن، مصر: دار الكتب العلمية، تحقيق: أحمد الصقر.
٢٤- القلقشندي، أبي العباس أحمد بن علي (١٩١٥م)، صبح الأعشى في صناعة الإنشا، القاهرة: مطبعة الأميرية.
٢٥- ابن كثير، عماد الدين أبو الفداء إسماعيل بن عمر القرشي (١٩٩٨م)، البداية والنهاية، جيزة: دار الهجر، تحقيق: عبد الله بن عبد المحسن التركي.
٢٦- ابن ماجه، أبي عبد الله محمد بن يزيد القزويني (د.ت)، سنن ابن ماجه، بيروت: دار الفكر، تحقيق: محمد فؤاد عبد الباقي.
٢٧- مسكويه، أبي علي أحمد بن محمد بن يعقوب (٢٠٠٣م)، تجارب الأمم وتعاقب الهمم، بيروت: دار الكتب العلمية، تحقيق: سيد كسروي حسن.
٢٨- ابن منظور، محمد بن مكرم بن علي بن أحمد الأنصاري (١٩٩٩م)، لسان العرب، بيروت: ط٣، دار إحياء التراث العربي، تصحيح: أمين محمد عبد الوهاب ومحمد صادق العبيدين.
٢٩- ناصر خسرو، أبو معين الدين القبادياني المروزي (١٩٧٠م)، سفرنامه أو رحلة ناصر خسرو، بيروت: ط٢، دار الكتاب الجديد، ترجمة: يحيى الخشاب.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

٣٠- نظام الملك، أبي علي الحسن بن علي بن إسحاق الطوسي (٢٠٠٧م)، سير الملوك أو سيا ست نامه، إربد: ط٢، ترجمة عن الفارسية: يوسف بكار.
٣١- النيسابوري، الحسن بن محمد (١٤١٦هـ)، غريب القرآن ورغائب الفرقان، بيروت: تحقيق: الشيخ زكريا عميرات.

**ثانياً- المراجع العربية والمعربة:**

١- أحمد، جمال رشيد (١٩٩٤م)، لقاء الأسلاف الكُرد واللان في بلاد الباب وشيروان، د/م: رياض الريس للكتب والنشر.
٢- البا شا، حسن(١٩٨٩م)، الألقاب الإسلامية في تاريخ والوثائق والآثار، القاهرة: الدار الفنية للنشر والتوزيع.
٣- الدبامرني، كارزان محمد حسين رشيد (٢٠١٦م)، الأمير الكُردي نصر الدولة المرواني، دهوك: دار سبيريز للطباعة والنشر.
٤- توفيق، زرار صديق(٢٠٠٧م)، القبائل والزعامات القبلية الكُردية في العصر الوسيط، أربيل: مؤسسة موكرياني.
٥- حسن، قادر محمد (٢٠١١م)، الإمارات الكوردية في العهد البويهي- دراسة في علاقاتها السياسية والاقتصادية (٣٣٤-٤٤٧هـ/ ٩٤٥-١٠٥٥م)، أربيل: مطبعة رؤذهةلات.
٦- زامباور، المستشرق (١٩٨٠م)، معجم الأنساب والأسرات الحاكمة في التاريخ الإسلامي، بيروت: دار الرائد العربي، أخرجه وترجمه: زكي محمد حسن بك وحسن أحمد محمود وسيدة إسماعيل كاشف وحافظ أحمد حمدي وأجمد ممدوح حمدي.
٧- السيد، فؤاد صالح (٢٠١١م)، معجم ألقاب السياسيين في التاريخ العربي والإسلامي، بيروت: مكتبة حسن العصرية.
٨- (١٩٩٠م)، معجم الألقاب والأسماء المستعارة في التاريخ العربي والإسلامي، بيروت: دار العلم للملايين.
٩- الشهابي، قتيبة (١٩٩٥م)، معجم ألقاب أرباب السلطان في الدول الإسلامية من العصر الراشدي حتى بدايات القرن العشرين، دمشق: منشورات وزارة الثقافة في الجمهورية العربية السورية.
١٠- عبد الرحيم: محمد (د.ت)، خفايا ألقاب الآباء، بيروت: دار الراتب الجامعية.
١١- لويس: برنارد (١٩٩٣)، لغة السياسة في الإسلام، د/م: دار قرطبة للنشر والتوثيق والأبحاث، ترجمة: إبراهيم الشتا.


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٢- لين بول، المستشرق الإنكليزي إستانلي(٢٠٠٦م)، تاريخ الخلفاء والسلاطين والملوك والأمراء والأشراف في الإسلام من القرن الأول حتى القرن الرابع عشر الهجري/ العاشر إلى التاسع عشر الميلادي، بيروت: الدار العربية للموسوعات، ترجمه للفارسية: عباس إقبال، ترجمه عن الفارسية: مكي طاهر.

١٣- محي الدين: خانزاد صباح (٢٠١٦م)، علاقة الدولة الفاطمية بالكُرد(٣٥٨-٥٦٧هـ/٩٦٨-١١٧١م) دراسة سياسية حضارية، د/م: المكتب الجامعي الحديث.

١٤- مرعي: فرست (٢٠٠٥م)، الإمارات الكُردية في العصر العباسي الثاني ٣٥٠-٥١١هـ/٩٦٠-١١١٧م، اربيل: مطبعة وزارة التربية.

١٥- النقشبندي، حسام الدين علي غالب(٢٠١٢م)، أذربيجان إيران في العصر السلجوقي (٤٢٠-٦٢٤هـ/ ١٠٢٩-١٢٢٧م) دراسة في أحوالها السياسية والإدارية والعسكرية، السليمانية: مؤسسة الزين.

١٦- (٢٠١١م)، الكُرد في لُرستان الصغرى (الشمالية) وشهرزور خلال العصر الوسيط (٣٤٨-٥١١هـ/٩٥٩-١١١٧م) دراسة سياسية وحضارية، السليمانية: مؤسسة الزين.

١٧- يوسف، عبد الرقيب (٢٠٠١)، الدولة الدوستكية في كُردستان الوسطى، الجزء الثاني- القسم الحضاري، أربيل: ط٢، دار ئاراس للطباعة والنشر.

**ثالثاً- المصادر والمراجع الكردية والفارسية:**

**أ- المصادر والمراجع الفارسية:**

١- حمد الله مستوفي، حمد الله بن أبي بكر بن محمد بن نصر مستوفي قزويني (١٣٦٢هـ)، نزهة القلوب، تهران: دنياى كتاب، بسعى واهتمام وتصحيح: طاي ليسترلنج.

٢- كسروي، أحمد (١٣٨٨هـ)، شهر ياران طمنام، تهران: ضاب دوم، مؤسسة انتشارات نطاة.

**ب- المراجع الكردية:**

١- توفيق، زرار صديق (٢٠١٢م)، كورد وكوردستان له رۆژگارى خيلافەى ئيسلاميدا (١٦-٦٥٦ك/٦٣٧-١٢٥٨ز)، هەولێر: چاپى سسێەم، چاپخانەى رۆژهەلات.

٢- موكريانى، حسين حزنى (١٩٦٢م)، دێرێ كى پێ شكەوتن، هەولێر: چاپى دووه مين، چاپخانەى كوردستان.

**رابعاً- الرسائل الجامعية غير منشورة:**

١- التكريتي، محمود ياسين أحمد( ١٩٧٠م)، الإمارة المروانية في ديار بكر والجزيرة، بغداد: رسالة ماجستير، جامعة بغداد، كلية الآداب.

٢- عبد العال، شيماء محمد جمعة( ٢٠٠٩م)، الوظائف الرئيسية والألقاب في العصر الإسلامي من فترة (٣٥٨هـ الى ٩٢٣هـ)،المنيا- مصر: رسالة ماجستير، جامعة المنيا، كلية دار العلوم.

**خامساً- البحوث والمقالات:**

١- بيكوف، أ. أ. ،(٢٠٢٠م)، عملات الأمير ديسم ابراهيم الكُردي، ترجمة عن الروسية: مصلح البوتاني، تقديم ومراجعة: زرار صديق توفيق، طؤظارا ذين، سليَماني، بنطةهيَ ذين، ذمارة (١١).

٢- الجيشي، باسم صالح نجم (٢٠٢١ م)، أسماء وكنى وألقاب الرسول (صل الله عليه وسلم) للخلفاء الراشدين (رضي الله عنهم)، السامراء: مجلة الملوية للدراسات الآثارية والتاريخية، المجلد (٨)، العدد (٢٤).

٣- سعيد، عمر أحمد (٢٠١٤م)، إمارتا العيشانية وديسم الكُردي في إقليم أذربيجان (٣٠٠-٣٧٥ هـ/٩١٢-٩٨٥م)، مجلة أبحاث كلية التربية الأساسية، المجلد (١٣)، العدد (٢).

٤- الشمراني، أمال بنت صالح (٢٠٢٠م)، الأمير أبو النجم ناصر الدولة بدر وإصلاحاته الداخلية (٣٦٩-٤٠٥هـ/٩٧٩-١٠١٤م)، مجلة عصور، المجلد (١٩)، العدد (١).

٥- محافظة، حسين علي- قزق، حسين يوسف (٢٠١٣م)، في الألقاب الإسلامية دراسة لغوية تاريخية، الأنبار: مجلة جامعة الأنبار للعلوم الإنسانية، العدد (٢)، حزيران.

## ناسناڤێن میرێن كورد ورامانێن وان یێن ئاینی وسیاسی ل چەرخێن (٤-٥مش/ ١٠-١١ز)

**پۆختە:**

دانانا ناس ناڤان دیاردەیەكا شارستانێ مروڤی یە پتر یا گەل ومللەتان د دیروكێ دا بكارهینایینە، پاشی ئەڤ دیاردە بەر بەلاڤ و جێگربویە وبویە دیاردەیەكا جیهانی د ناڤ كەلتورێ مروڤایەتی دا، وملەتێ كورد ئێك ژوان مللەتان بویە یێن ڤێ دیاردێ جهێ خودا ناڤدا كری وكارتێكرنەكا دیار لێ كری، كو یا زانایە چەندین میرنشینێن كوردی ل چەرخێن (٤-٥مش/ ١٠-١١ز) ل وەلاتێ كوردا پەیدا بون، هەتا كو ئەڤ هەردوو چەرخە بوینە گرنكترین چەرخ د دیروكا كوردا ئیسلامی دا، ژ بەر دیاربونا رولێ وانێ سیاسی وشارستانی برێكا دامەزراندنا وان میرنشینێن ئەوێن بوینە هندەك هێزێن سیاسی وجهێ خو د ناڤ كورەپانا سیاسی یا ئیسلامی دا كری لدەڤەرێ وپێ گەكێ دیار بدەست خوڤە ئینایی.

میرێن كوردان ژی وەك هەمی میری و شاهێن میرنشینێن و دەولەتێن ئیسلامی یێن بەری وان وهەڤ جەرخێن وان چەندین ناسناڤ بو خودانان یان بدەست خوڤە ئینانن ژلا یێ خیلا فەتا عەباسی ڤە كو یی هاتنە بەخشین ژ بەر رولێ وانا یێ كاریگەر، بێ گومان ڤان ناسناڤا بهایەكێ مەزن هەیە ژ بو ڤەكولینا دیروكا كوردا یا ئیسلامی، ژ بەر كو وەك خودیكەكێ یە بارودوخێ

سیاسی یێ دەڤەرێن دەستەهلاتا وان بو مە ڤەدگهوێزن، هەروەسا کە سایەتیا میری وهێزا وی و دەستهەلات ودەستکەفت وکارو چالاکێن وی یێن شارستانی بو مە ددەنە دیارکرن، دیسان بەرخودا هلویستێ خەلیفە ومیرێن هەڤجەرخێن وی ژی دهێتە دیارکرن.

سەرەرای هەبونا گەلەک ڤەکولینا لدور دیروکا کوردا یا سیاسی ل چەرخێن ناڤین، بەلێ هێشتا چەندین بابەت ژێ مانە کو دیروک نڤیس و ڤەکولەرێن کورد بەحس لێ نەکریە، ژ وان بابەتان بابەتێ ڤێ ڤەکولینێ یە " ناسناڤێن میرێن کورد ورامانێن وان یێن ئاینی وسیاسی ل چەرخێن (٤-٥ مش/ ١٠-١١ز)"، کو ئەڤە ئێک ژوان بابەتانە گرنگیەکا باش بێ نە هاتیە دان ژ لایێ دیروک نڤیس و ڤەکولەرێن کورد ڤە و چو لسەر ناهتیە نڤێسین یان ژی بلەزد سەر ڤان ناسناڤان را چوینە یێ کو رامانێن وان یێن ئاینی وسیاسی بدروستی بدەنە دەرهینان ودیارکرن، هەروەسا لدیف پێ زانێن مە هەتا نهو چو ڤەکولینێن ئەکادمی لدور ناسناڤێن میرێن کوردا ورامانا وان یا ئاینی و سیاسی بشێوەکێ تایبەت نە هاتینە نڤێسین.

ژ بەر ڤێ چەندێ ئەڤ ڤەکولینە هەولدا نە کە بو ئێخستنا سیناهیەکێ ل سەر گرنکترین وان ناسناڤێن ئاینی وسیاسی یێن میرێن کوردان وەگرتین یان دانای نە سەر خو ل چەرخێن (٤-٥ مش/ ١٠-١١ز)، هەروەسا ئەڤ ڤەکولینە هەولدا نە کە بو دیارکرنا راما نا وان نا سناڤان وگرنکیا پێ دا وان نا سناڤەیان ژلا یێ خەلیفێن عەباسی ڤە بو میرێن کوردان، وئەگەرێن وێ چەندێ، ودیسان دیارکرنا ئەنجامێن ڤێ پێدانێ کو یا دیارە ئەو ناسناڤ هوکارێ دانپێدانێ بویە بو بدەستهەلاتا میران ژلایێ خیلافەتێ ڤە بتایبەت لسەردەمێ عەباسیان. هەروەسا ئەڤ چەندە هیماو گرنتیا مانا دەستهەلاتا عەباسی ل وان دڤەرێن میرنشین ئێمچە سەربەخو لێ پەیدابوین بو نمونە کو ئەو ناساڤین پاشکری ئاینی ودەولەتێ پێڤە راماناوی ئەوە کو هەردوو دەستهەلاتێن ئاینی وسیاسی ل دەستێ میران دانە، دیسان ژلایەکێ دیڤە گرنگیا ڤی بابەتی بو وێ چەندێ دزڤریت کو حەزێن میرێن کورد وخواستنێن وان یێن سیاسی تێدا دیاردبیت، هەروەسا نابیتە زێدە رەوی هەکەر ئەم بێژین کو ڤەکولین لسەر ناساناڤێن میرێن کورد دبیتە هوکارەک بو راستڤەکرنا گەلەک شاشێن ویرەکێ یێن هندەک مێژوونڤیسا ڤەگێراین، ژبەر کو ناسناڤان پەیوەندی بهەمی دیاردەیێن ئاینی وکومەلایەتی وریدانێن سیاسی ڤە هەیە.

**پەیڤێن سەرەکی:** *مێژوویا کورد یا ئیسلامی، ناسناڤان میران، ئاماژەیێن ئایینی و سیاسی، میرگەهێن کوردی، سەردەمێ ئیسلامی.*



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

**Titles of Kurdish princes and their religious-political connotations During the two centuries (4-5 AH / 10-11 AD)**

**Abstract:**

Surnames are a human civilizational phenomenon that most peoples and nations have known since ancient times, and then developed like the rest of the phenomena until it became a global phenomenon that has the property of accumulating across cultures, and the Kurds are one of these nations that knew this phenomenon and was affected by it, as it is known that the country of the Kurds witnessed the establishment of many Kurdish emirates in the two centuries (4-5 AH / 10-11 AD). That are considered among the most important centuries in Islamic history for the Kurds, as their political and civilizational prominence was evident in them through their establishment of the Emirates in their country, and those Emirates became among the political forces that reckoned with and took their place among the other Islamic forces in the region.

The Kurdish princes took many official titles, similar to the princes and kings of the Islamic states and emirates who preceded or lived with them, and these titles are of great importance in the study of Islamic Kurdish history, because they reflect the prevailing political conditions in the areas ruled by these princes, and clarify the personality of the prince, his power, influence show his civilizational achievements, show the view of the caliphs and princes contemporary to him.

Despite the large number of studies that dealt with the political history of the Kurds in the Middle Ages, there are many topics that Kurdish historians and researchers did not stop at, and among these topics is the subject of our study (the titles of the Kurdish princes and their religious-political connotations during the two centuries (4-5 AH / 10-11 AD). This topic did not receive much attention from the Kurdish historians and researchers, and nothing was written about it, so they may have rushed through these titles without caring about explaining their implications, or some of them might stop a little to write something simple about them, and as far as we know, there is no academic study concerned with studying the titles of princes The Kurds and their religious-political connotations in particular.

Therefore, this study came as an attempt to shed light on the most important religious-political titles adopted by the Kurdish princes during the two centuries (4-5 AH / 10-11 AD). The study reveals the reason for granting the Abbasid caliphs these titles to these princes, and the results of that are due to the fact that the title has become an important factor in proving the legitimacy of the authority of these princes, especially in the Abbasid era, and

also to ensure the control of the Abbasids and the survival of their influence in these emirates that arose. It has an independent or semi-independent rule from the central caliphate in Baghdad, as evidenced by the fact that their titles added to the terms religion and state brought the religious and political powers under their hands. The importance of this topic lies in the fact that it clearly reveals to us the inclinations and tendencies of the princes, and we do not exaggerate in saying that the study of surnames in the Kurdish emirates helps to correct some historical facts mentioned by historians, as surnames are related to the interpretation of religious and social phenomena and political events.
**Key Words**: *The Islamic History Of The Kurds - The Titles Of The Kurdish Princes - Their Religious-Political Implications, The Kurdish Emirates, The Islamic Era*

# تمرد الأمير شروه بن مم

أ. د. درويش يوسف حسن

قسم التاريخ - كليةالعلوم الانسانية– جامعة دهوك/ إقليم كردستان العراق

**ملخص البحث:**

تتناول هذه الدراسة فترة قصيرة و غامضة من تاريخ الإمارة المروانية، بحيث لم تتجاوز سنة، وهي فترة انتقالية مابين مقتل الامير ابو منصور سعيد بن مروان سنة ( ٤٠١ هـ/ ١٠١٠م) وبداية ولاية اخيه نصر الدولة أحمد بن مروان، اذ قام خلال تلك الفترة أحد رجال هذه الإمارة، وهو (شروه بن مم) بالانقلاب على السلطة الشرعية وقتل الامير المرواني ابو منصور الملقب ب ( ممهد الدولة) وتفرد بحكم الإمارة، بعد استيلائه على مركز الحكم مدينة ميافارقين. كما حاول القضاء على الامير احمد بن مروان المنفي في مدينة اسعرد. غير أن والي مدينة ارزن الخواجا ابو القاسم الاصفهاني تصدى للإمير شروه وطموحاته وامالهم، واستطاع ان يعيد الحكم الى الاسرة المروانية من جديد.

**الكلمات الدالة**: *الامير شروة، نصر الدولة، ممهد الدولة، ميافارقين، أبو القاسم الاصفهاني.*

**المقدمة:**

حفل العصر البويهي بأسماء العديد من الامارات الكردية المشهورة، وأن ظهور تلك الإمارات بشكل لافت، مايدل على التسامح البويهي تجاه الكرد، ومن بين تلك الإمارات على سبيل المثال الشدادية و الحسنوية و العنازية والهمذانية والامارة المروانية، وبلغ من هذا التسامح البويهي تجاه الكرد الى حد ( مستوى) دفع بأحد مؤرخي البويهيين بالقول ان دولتهم كانت مقرونة بدولة الاكراد. وبالرغم من ان البويهيين في بداية الامر قد دخلوا في صراع عسكري مع مؤسس الإمارة ( باد بن دوستك) الا ان العلاقات بين امراء البويهيين و حكام الإمارة قد تحسنت ووصلت الى مرحلة متقدمة خاصة في عهد ممهد الدولة المرواني.

وتأتي اهمية هذه الدراسة ان الإمارة المروانية قامت في ارض كردستان، وهذه التسمية أو التعبير كانت شائعة وسائدة في هذا العصر، لأن اراضي الإمارة وخاصة في عهد أبو علي الحسن و اخيه ممهد الدولة، كانت تشمل المناطق الواقعة بين ميا فارقين وامد، و بالتحديد مقاطعة ميافارقين والتي كانت تعرف بأسم كردستان، ثم اتسعت اراضي هذه الإمارة فيما بعد حتى ادخلت

ضمن حدودها مدينة الرها، وهذا ماصرح به احد نواب الامير نصر الدولة المرواني اثناء الاجتماع به و قال له ( ان كردستان بأجمعها في حالة صعبة). ومن المحتمل ان اراضي هذه الإمارة كانت تدخل ضمن حدود كردستان التي اشار اليها المستوفي القزويني لانه يشير بان حدودها اي ( كردستان) يتصل أو يسير الى دياربكر، فضلاً عن ذلك عندما قتل جلال الدين منكبرتي في احدى قرى ميافارقين، يشير المؤرخ السالف الذكر أنه قتل في كردستان بمعنى ان التسمية موجودة و شائعة وان ميافارقين كانت ضمن حدودها.

وتسعى هذه الدراسة القاء الضوء على فترة حكم الامير المتمرد ( شروه –شروين) بعد العثور على عدد من المسكوكات التي ضربها في ميافارقين لان العملة تعد احدى أهم المصادر الاساسية لدراسة التاريخ فهي تبين الجوانب الغامضة وتضيف اليه معلومات مهمة مالم يذكره المؤرخون سواء عمداً او اهمالاً أو لاسباب سياسية وغيرها.

قسم هذا البحث الى مبحثين، تناول الاول نبذة عن الامارة المروانية ودور الامير شروه ووالده ( مم) في حكم الإمارة واحداثها. أما المبحث الثاني تم التطرق الى تمرد شروه بشكل مفصل وكيفيه قتله الامير المرواني، وتفرده بالسلطة وجوانب من سياسته وكذلك اخفاقه في حركته ومقتله.

**المبحث الاول:**

**نبذة عن الامارة المروانية ودور الامير شروه ووالده فيها:**

من المعروف ان الإمارة المروانية، الشبه مستقله، قامت في منطقة دياربكر وبالتحديد في مدينة حصن كيفا وميافارقين وارزن، ثم اتسعت شيئاً فشيئاً حتى ضمت مدن اخرى مثل نصيبين و جزيرة ابن عمر والرها وغيرها من البلدات.

ويعد الامير باد بن دوستك المؤسس الاول لهذه الامارة، الذي تمكن بفضل شجاعته وكرمه من جمع عدد كبير من ابناء العشائر الكوردية مثل البشنوية و الحميدية فضلاً عن أبناء قبيلته الحاربختية، المقيمة في منطقة حيزان و المعدن، واعتمد عليهم في إقامة إمارته ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٤٩ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/ ٤١٥- ٤١٦).

استغل الامير باد بن دوستك الظروف السياسية غير المستقرة التي تمر بها بلاد الجزيرة، حيث كان الحمدانيون حينذاك قد قرب نهايتهم، فضلاً عن وفاة الامير البويهي عضدالدولة في اواخر سنة (٣٧٢هـ / ٩٨٣م) اقوى الامراء في بلاد الجزيرة و العراق، حينذاك فأستطاع الامير باد في تلك الفترة من السيطرة على مدينة ميافارقين و نصيبين و امد، وتمكن من تحقيق النصر على البويهيين في معركة باجلى ( قرية على نهر الخابور) في سنة ( ٣٧٣هـ/٩٨٤م) ( ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/ ٤١٥- ٤١٦ ؛ قادر محمد حسن، ٢٠١١، ١٢٥) وكانت المعركة الاخيرة مع البويهين البدايات الاولى



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

لنشأه الإمارة الدوستكية – المروانية، إذ بسط بعده سيطرته على منطقة دياربكر، وأصبح الطريق مفتوحاً امامه للتوجه الى الموصل، وا ستولى عليها في سنة (٣٧٣ هـ/ ٩٨٣م) بمساعدة اهلها رغبة منهم في التخلص من الحكم البويهي. ( ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/ ٤١٥- ٤١٦ ؛ ابن العبري، ١٩٩٧، ١٥١ ؛ ابراهيم مرجونة، ٢٠١٠/ ٣١٨).

لم يحالف الحظ الامير باد بن دوستك، إذ وقف ضده كل من البويهيين و الحمدانيين، ثم ا ستعان الا خيرون بالعقيليين، وطلب منهم المساعدة العسكرية حيث قتل الا مير باد بيد الحمدانيين في منطقة من خارج الموصل سنة (٣٨٠هـ/ ٩٩٠م) بعد ان حكم دياربكر قرابة ثمان سنوات ( الروذراوري، ٢٠٠٣، ٦/ ١٠٨ ؛ الفارقي، ٢٠١٤، ٤٥١- ٤٥٢). ووصف احد المستشرقين دولة الامير باد بقوله :(( وقد وصلت الدولة الدوستكية – المروانية على عهد باد بن دوستك الى مرحلة كبيرة من الرخاء و الا ستقرار وكانت نموذجاً ممتازاً للدويلة المستقلة استقلالاً ذاتياً)) (Huqh kennedy, 2004 p.260)

بعد مقتل الامير باد بن دوستك سنة ( ٣٨٠هـ/ ٩٩٠م) توجه ابن اخته الامير ابو علي الحسن بن مروان الى حصن كيفا، مقر إقامة الامير باد ، وطلب من زوجة خاله، ان تسمح له بالدخول و اعلمها بما حدث عن مقتل خاله باد، واتفق معها على إعادة تنظيم قواته من جديد، و القيام بإعادة السيطرة على مناطق نفوذهم، كما طلب منها الزواج منه، فوافقت على ذلك، وبذلك تمكن الامير ابو علي المرواني من فرض سلطته على جميع املاك خاله ودانت معظم البلاد ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٥٣ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/ ٤٤٤) وبذلك تحول الحكم من الاسرة الدوستكية الى الاسرة المروانية.

وأستطاع الامير ابو علي الحسن بن مروان من تسلم زمام الامور و السلطة بعد خاله، بحكم انه كان قائد ومقدم جيش باد، فضلاً عن شجاعته، و استغلاله الفرصة المناسبة بالذهاب مسرعاً الى مقر حكم الإمارة -حصن كيفا- وبسط سيطرته عليها بشكل سلمي، كما و علينا ان لاننسى ان الذي ساعده ايضاً ابناء عشيرته الحاربختية وكان لوالده (مروان) ثلاثة ابناء اخرين وهم ( سعيد وا حمد و كك) بالاضافة الى كبيرهم ابو علي الحسن، ولكل من هولاء الابناء جماعة تؤيده، ولهم خبرة في الحروب و القتال وشاركوا في جميع حروب باد ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٥٣ ؛ الهمداني، ٢٠٠٨، ٢٨٦).

وأول عمل قام به الامير ابو علي الحسن المرواني، انه ترك حصن كيفا لاحد نوابه، وتوجه الى مدينة ميافارقين وسيطر عليها، بعد سماعه من أنباء عن توجه الامراء الحمدانيين للاستيلاء على المدينة، لكن أبا علي سبقهم، وحارب الحمدانيين و أنتصر عليهم ثم جعل من مدينة ميافارقين عاصمة لإمارته، بعد ان بسط سيطرته على مدينة امد و الحصون المجاورة ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٥٣ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/٤٤٤).

بقي ابو علي الحسن يحكم الإمارة المروانية قرابة سبع سنوات، حيث تمكن خلال فترة حكمه، من إقامة علاقات حسنة مع القوى السياسية المعاصرة له، فكانت علاقاته طيبه مع الخليفة الفاطمي العزيزبالله ( ابو الفداء، ١٩٩٧، ١/ ٤٧٠) كما كان لة اتصالات مع الامبراطور البيزنطي ( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٤، ١٨/ ٦٧).

بالرغم من ان الامير ابو علي الحسن المرواني تمكن من احكام قبضته على زمام الا مور، الا انه قتل نتيجة مؤامرة دبرها زعيم مدينة امد يدعى (عبد البر) مع احد أعوانه يدعى (ابو طاهر يوسف بن دمنه)، اثناء ذهاب الامير ابو علي الحسن الى مدينة امد سنة ( ٣٨٧هـ/ ٩٩٧م) لإقامة عرسه هناك، وخلال عبور الامير من باب الماء ( احد ابواب مدينة امد) قتل علي يد ابن دمنه ثم اغلق المتامرون ابواب المدينة، ثم رميت رأسه و جثته الى الخارج، فأخذها شروه و عاد بها الى ميافارقين، وتولى اخاه ابو منصور سعيد بن مروان حكم الإمارة ولقب ب ( ممهد الدولة) وذلك في اواخر سنة ( ٣٨٧هـ/ ٩٩٧م) (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٠ – ٤٦١ ؛ ابن العبري، ١٩٩٧، ١٥١).

بعد ان استلم الامير ممهد الدولة أبو منصور المرواني السلطة، اول عمل قام به هو أحكام قبضته على ميافارقين، واستولى على الاموال والخزائن الموجودة فيها، ثم فرض سيطرته على جميع مناطق نفوذ الإمارة عدا مدينة امد ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٢)، حيث اصبحت المدينة تحت سيطرة (عبد البر وابن دمنه)، ثم انقلب الاخير على عبد البر ودبر خطة وأغتاله، رغم انه كان صهره، ثم تفرد ابن دمنه بحكم امد، كما وارضى، الامير ممهد الدولة ، حيث اتفق معه على ارسال مبلغاً كبيراً من المال له مع ذكر اسمه في الخطبة وسك العملة باسمه مقابل الاعتراف بحكمه على امد، (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٣) أما الامير ممهد الدولة فقد كان على درجة من الذكاء و السياسة فلم يرد ان يدخل معه في حرب، لانه عرف انه أحكم قبضته على المدينة وانه كسب رضا اهالي امد، ووزع عليهم الاموال وأحسن اليهم ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٤ ؛ Huqh kennedy, 2004, p.260).

وبعد ان وطد ممهد الدولة دعائم ملكه، حسن علاقاته الخارجية مع القوى السياسية المعاصرة له، فاتصل بدار الخلافة العباسية، التي بعثت اليه التشريف، كما راسل الامراء البويهيين البارزين وهم بهاء الدولة وابنه فخرالملك، وفتحت علاقات مع الخلافة الفاطمية التي ارسلت اليه الهدايا (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٦). كما كان للامير ايضاً اصلاحات على النواحي الداخلية وخاصة الاعمال العمرانية منها تجديده لسور ميافارقين وتشييد الكثير من المباني و التحصينات وغيرها ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٦ ؛ ابراهيم مرجونة، ٢٠١٠، ٣٣٧؛ محمود ياسين التكريتي، ١٩٧٠، ١٨٤).

ظل الامير ممهد الدولة يحكم الإمارة المروانية حتى سنة ( ٤٠١هـ/ ١٠١٠م) حيث قتل في هذه السنة على يد حاجبه شروه وهو ما سنعالجه في المبحث الثاني.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

وقبل الحديث عن دور الامير ( مم وابنه شروه) في أحداث الإمارة المروانية على عهد الاميرين ( ابو الحسن علي واخيه ممهد الدولة) لابد من الإشارة الى ملاحظة مهمه وهي ان المصادر المعاصرة لفترة الإمارة بل وحتى كتب التراجم لم تقدم اية معلومات عن سيرة ( مم وابنه شروه) ومكان إقامتهم الاولى هل كانوا من اهالي مدينة ميافارقين؟ أو قدموا اليها من مدينة اخرى مجاورة، ولم نعثر ايضاً الى اسم العشيرة الكردية التى ينتسبون اليها.

ومع عدم توفر النصوص التاريخية بشأن ذلك فنرجح ان الامير ( مم) أما ان يكون منتسباً الى احدى العشائر الكردية التي انضمت تحت لواء الامير ( باد بن دوستك) وهم الحاربختيه و البشنوية و الحميدية، أو من احدى العشائر الكردية القاطنة في ميافارقين، لكن الباحث يميل الى الرأي الاول اي انه ينتسب الى القبيلة الحاربختية، ومن المحتمل جداً ان ( مم) شارك مع الامير (باد) في حروبه حتى مقتله، ثم انضم الى قوات الامير أبو علي الحسن المرواني، ومما يدعم رأينا في ذلك، ان الامير ابو علي اسند اليه منصب (الحاجب) وهو وظيفة مهمة وخطيرة ولايسند الإ لشخص ذو أمانه وخبرة لان حياة ومصير الحاكم او الامير بيديه، والاهم من ذلك هناك رواية مهمة لاحد المؤرخين القريبين من مركز الإمارة إذ يشير: (( وكان مم شيخاً مقداماً مجرباً شهماً من الرجال قد حنكته التجارب وبقي يسوس دولة أبي علي ويدبرها احسن تدبير)) (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٥٤).

ومن جهة اخرى ان الامير ابو علي المرواني كان يعتمد على (مم) في إدارة الاماكن و المراكز الحساسة في إمارته حيث جعله والياً على برج الملك (أحد ابراج ميافارقين) ، بالإضافة الى ذلك لما توجه الامير ابو علي الى امد لإقامه عرسه هناك في سنة ( ٣٨٧هـ/ ٩٩٧م) عين الامير (مم) مكانه في حكم ميافارقين، وفي نفس الوقت جعل ابنه شروه حاجباً له مكان والده (الفارقي، ٢٩١٤، ٤٦٠). وهذه المناصب المهمة التي شغلها ( مم وابنه شروه) في دولة الامير ابي علي دلالة واضحة على مكانة هذه الاسرة، ومحل ثقة الامير بهم.

وتبين من اسم الاميرين ( مم و شروه) انهما من الكرد، لان ( مم) تسمية يسخدمه أو يتلفظه الكرد فقط، للدلالة اعلى التخفيف أو التحبب ومعنى ( مم) يدل على ان اسمه كان (محمد)، نفس الشيء مع ابنه شروه فأسمه الحقيقي هو أبو شجاع شروين بن محمد، ويستدل ذلك من الدراسة التي اجراها احد المستشرقين لمجموعة من النقود المضروبة في ميافارقين في عهد الإمارة المروانية، وأحدى هذه القطع النقدية عليها اسم الامير بهذه الصيغة أي أبو شجاع شروين بن محمد (Stefan Heidemann, ARAM,9-10,1997-1998,p.600

وتجدر الإشارة ان اسم (شروين بن محمد) لم يرد في المصادر التاريخية، انما ورد بصيغة ( شروه بن مم) ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٠ ؛ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/ ٤٤٥ ؛ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق١/ ٣٣٦، ٣٣٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

بينما انفرد احد المستشرقين بذكر اسمه ( أبو شجاع برويز ابن محمد) ( زامباور، ٢٠٢٢، ٢٠٧). لكن يبقى الاسم الصحيح هو أبو شجاع شروين بن محمد استناداً الى ماورد في العملة النقدية التي ضربت في عهده.

وفيما يخص دور (مم وشروه) في احداث الإمارة المروانية يرجع الى عهد الامير أبو علي الحسن، سبق ان اشرنا ان الامير ابو علي الحسن عين (مم) حاجباً له واعتمد عليه في إدارة دولته، كما كان بمثابة مستشار عنده ويعمل برأيه عند الشدائد، وخير مثال على ذلك لما شق اهل ميافارقين عصا الطاعة على الامير ابو علي في سنة ( ٣٨٤ هـ/ ٩٩٤م) وذلك لميلهم لحكم الحمدانيين، فبعد ان زادت قلاقلهم ومشاكلهم وتعديهم على رجال الامير، فأراد الاخير ان يقضي عليهم بالقوة ويهاجمهم، اشار عليه حاجبه ( مم) ان يتركهم الى يوم العيد، فلما خرج الناس للعيد والصلاة، اغلق عليهم الباب، ولاتمكن من الدخول الا من تريد الايقاع به، ونفذ الامير خطته، ونجح في دخول المدينة، وقبض على شيخ ميافارقين المدعو (محمد بن ابي الصقر)، والقى به من على السور، وقبض على من كان معه، واستباح المدينة هو وجيشه فأستسلم اهلها خوفاً من انتقامه، وبهذه الطريقه احكم سيطرته على المدينة، وحكم بلا منازع وظلت الامور هادئه في المدينة حتى نهاية حكمه ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٥٦ – ٤٥٧ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/ ٤٤٤).

برز دور شروه لاول مرة في الاحداث التي شهدتها الإمارة كانت في سنة ( ٣٨٧هـ/ ٩٩٧م) لما اراد الامير ابو علي في هذه السنة الذهاب الى مدينة امد لإقامه زفافه هناك من بنت الامير الحمداني سعد الدولة، وقبل ذهاب الامير الى امد عين (مم) نائباً على ميافارقين إثناء غيابه، وأخذ معه شروه وجعله حاجباً له مكان والده، وسار الامير ابو علي مع اخوته واقاربه قاصداً امد ولما وصلوا الى تل علوي بالقرب من امد استراحوا هناك، وهنا قدم اليه زعيم امد ( عبدالبر)، فاستقبله الامير المرواني بحفاوة بالغه وخلع عليه وقدم للامير مايلزمه، ثم انفرد شروه بزعيم امد، واستطاع ان يوقع بين الامير المرواني وعبدالبر بعد ان اقنع الاخير بأن الامير المرواني قادم للايقاع بأهل امد كما فعل باهالي ميافارقين قبل ذلك. ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٠ – ٤٦١).

والسؤال الذي يطرح نفسه لماذا قام شروه بهذه الدسيسه؟. هل كان يطمح في السلطة ويرغب ان يأخذ الحكم من بني مروان؟ أم عمل بهذه الدسيسة لنقل السلطة الى اخ الامير ابو منصور سعيد لانه حسب اشارة احد المؤرخين كان المنصور سعيد أحب اليه من أخيه ابو علي الحسن ( الفارقي، ٢٠١٤ ، ٤٦٠). وعلى ما يبدو ان هدفه من هذه الدسيسة هو القضاء على حكم ال مروان، فأستشعر بان الامير ابو علي كان قوياً وشخصاً مهيباً فأراد ان يقتله بيد اخرين، ويتبرأ من الجريمة، ثم يسلم السلطة الى اخيه، الذي قد يكون شخصاً ضعيفاً حسب رأيه، ويتحيل عليه،

فيما بعد، حينما يقوي نفوذه في دولته، ثم يدبر مقتله، وهذا ما حدث فيما خطط شروه وحقق ما كان ينوي عليه.

على اية حال تأمر شروه وعبدالبر وابن دمنه، وقتلوا الامير المرواني أبو علي الحسن عند أبواب امد سنة (٣٨٧هـ/ ٩٩٧م) وعاد شروة بعد التخلص من الامير المرواني مع قوات الامير المقتول، واعلم اخاه ابو منصور، الذي تولى السلطة بعده ولقب ب ( ممهد الدولة). وتولى السلطة بحضور شروه ووالده مم ، وابناء اسرة الامير، ثم عين شروه حاجباً له ومنحه صلاحيات واسعة في دولته ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٢ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/٤٤٥). ولم تتحدث المصادر بعد تولي ممهد الدولة الحكم أية معلومات، عن والد شروه (مم) ودوره في الاحداث الجارية، وهل انه استلم منصباً اخراً أم لا؟ لان ابنه شروه تولى وظيفة الحجابة محله، يظهر انه اصبح شخصاً طاعناً في السن ولم يستلم أي منصب في عهد ممهد الدولة، ولهذا يكتنف الغموض حول مصيره.

**ثانياً :**

**تمرد الامير شروه وتوليه السلطة:**

وفي الوقت الذي تمكن شروه من تدبير خطة لاغتيال الامير ابو علي الحسن المرواني، وبالتخطيط مع زعيم امد عبدالبر ورجاله، خاف ان ينفرد اعوانه بالسلطه دونه، ثم الانقلاب عليه (مرجونه،٢٠١٠، ٣٣٤) ومن اجل ان ينفي التهمة عنه، تقرب من الامير المرواني ابا منصور سعيد وسلم حكم الإمارة اليه كما اشرنا.

ومن جهه اخرى سارت الامور والاحداث في مدينة امد لصالح شروه، حيث دبر ابن دمنه مؤامرة داخلية وتمكن من قتل عبدالبر، وتفرد ابن دمنه بحكم مدينة امد دون منافس، ثم اتصل بشروه حتى يقنع الامير المرواني ممهد الدولة للأعتراف بسلطته على امد مقابل مبلغ كبير من المال يدفعه سنوياً له وان يحكم باسم الامير المرواني ( الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٤ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/٤٤٥).

ومنذ ان تولى ممهد الدولة حكم الامارة المروانية، تقرب من شروه، وسلم جميع امور امارته اليه، وأحبه حباً شديداً واطلعه على نسائه وجواريه وبلغ درجة التقرب بينهما حتى قال الامير لشروه (( روحي دون روحك يا أبا شجاع ويومي قبل يومك)) (الفارقي،٢٠١٤، ٤٦٦). وازدادت سلطة شروه الى درجة كبيرة حتى وصفه المؤرخون بانه اصبح قائد جيوشه واحد كبار أمراءه ( ابن فضل الله العمري، ٢٠١٠، ٢٦/ ١٨٦ ؛ المقريزي، ٢٠٠١، ١/ ٣٠٤).

وبلغ من نفوذ شروه في الإمارة، انه عين احد اصحابه مسؤولاً على شرطة ميافارقين يدعى ( ابن فيلوس)، رغم ان الامير ممهد الدولة كان لايحب هذا الشخص ويكرهه، وهم أن يقتله، الا انه احتراماً لشروه أبقاه في منصبه (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٦ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/ ٤٤٥). وعندما علم ابن

فيلوس ان ممهد الدولة يكرهه ويحقده ويضمر له الشر، اخذ من جانبه يفكر في قتل الامير، فسعى في الايقاع بينه وبين شروه وقال له: (( اعلم ان حياتي مقرونة بحياتك وأعلمك ان قد صح عندي ان رأي الامير قد فسد فيك وفي وهذا التقريب كله من الامير لك مكر، وخديعة الى أن يتم مايريد ثم يبطش بنا...فقال له شروه وما الرأي؟ قال: نقتله وتأخذ لنفسك والا هلكنا جميعاً)) (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٦).

وبالرغم أن شروه رفض خطة ابن فيلوس بقتل الامير ممهد الدولة ، واكد له ان الامير انعم عليه وقدمه على سائر امرائه واطلعه على نسائه وجواريه، فما يمكنني الغدر به ، خاصه وان اهالي ميا فارقين جميعهم علموا مكانتي عند الامير (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٧ ؛ ابن شداد، ١٩٨٧، ٣٣٧/٣).

يظهر ان ابن فيلوس نجح في تثبيت هذه الفكرة في نفس شروه ، اي قتل الامير المرواني، بعد ان ألحَّ عليه بالقول: ((مهجتك احب اليك من قربه ومحبته ، ولم يزل يردد هذا في نفسه ايا ما حتى اثبته في نفس شروه)) (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٧ ؛ ابن شداد، ١٩٨٧، ٣٣٧/٣) ، وعلينا ان لا ننسى ان ابن فيلوس ذكر لشروه قبل ذلك عبارة أخرى وهي ((نقتله وتأخذ لنفسك)) اي بعد قتل الامير سينقل السلطة اليك ، وهذه العبارات التي ذكرها ان فيلوس اثناء الاجتماع السري بينهما اثرت كثيرا على نفسية شروه ، خاصة وان هذا الرجل حسب وصف احد المؤرخين ((كان جلدا حازماً ذا رأي وجلد)) ، (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٧).

بعد أن تمكن ابن فيلوس من اقناع شروه بقتل الأمر ممهد الدولة ، حاول الاول الامر ان يقتله عن طريق سقيه السم ، لكنه لم يفلح في ذلك (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٧) ، واخيرا دبر شروه مع صديقه ابن فيلوس خطة سرية لقتل الامير ، عن طريق دعوته إلى قلعة الهتاخ (احدى قلاع دياربكر بالقرب من ميافارقين) وهذه القلعة اقطعه الامير لحاجبه شروه ، وأعد الاخير وليمة ضخمة من المأكل والمشرب ومغنيات ، كما وأمر شروه ابن فيلوس ان يرتب جماعة من اصحابهم بحراسة شديدة على باب القلعة لا يسمحون لاحد من أصحاب الأمير أن يدخلوا القلعة في تلك الليلة ، وكان مع الامير عدد من ابناء عمومته ، وبعد تناولهم الطعام والشراب سكر الجميع وكان شروه يأخذ كل من سكر من اقرباء الأمير الى اماكن خاصة داخل القلعة ، ويسجنهم ويخبرهم ان ذلك من أوامر الامير ، ولم يبق مع الامير سوى مغنين وثلاثة نفر وعلى رأسهم خادم الامير الخاص المدعو (مشرق) وبعد ذهاب الامير الى سريره ، وغلب عليه النوم ، قال ابن فيلوس لشروه هذا فرصتك لقتل الامير ، لكن شروه رفض ذلك ، وطلب من ابن فيلوس ان يقدم هو لقتل ممهد الدولة ، وشارك الاثنان في الجريمة وقتلوه في أواخر سنة (٤٠٠ هـ / ١٠٠٩ م) (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٧ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨، ٤٤٥/٧ ؛ ابن خلكان، ١٩٩٨، ١٨٧/١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

وبعد ان تخلص شروه وصديقه من الامير ممهد الدولة ، القى القبض على خادمه (مشرق) ثم ايقض الجند الذين يثقون به واعلمهم بما حدث ، وسجن اقرباء الامير الموجودين ، ثم توجه شروه في وقت السحر الى ميافارقين واخذ معه (مشرق الخادم) حتى يخبر حراس قصر الامير بفتح الباب ، وعن طريق خادم الامير دخل شروه ميافارقين ، وفاجأوا اهلها باستيلائهم على قصر بني حمدان ، وهو المركز الاداري للمدينة ، وعلى الخزائن والجند. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٨ ؛ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق٣٣٩/١ ؛ Stefan, Heidemann, 1998, p. 602).

وبعد سيطرة شروه على ميافارقين ، ارسل مجموعة من جنده الى مدينة اسعرد حتى يقبضوا على اخ الامير المقتول ، وهو احمد بن مروان ، الذي كان منفيا فيها من قبل اخيه الامير ، وفي نفس الوقت ارسل قوات اخرى للسيطرة على باقي قلاع وحصون الامارة ، وتمكنت تلك القوات من تسليم جميع القلاع والبلاد بخاتم الامير ، ولم يبقى سوى مدينة ارزن التي يحكمها حينذاك الوالي خواجا ابا القاسم الاصفهاني ، الذي كان يحكم المدينة منذ عهد ابو علي الحسن واخيه الممهد (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٩؛ محمود ياسين التكريتي، ١٩٧٠، ٨٢- ٨٣).

واثناء توجه قوات شروه للقبض على الامير احمد بن مروان ، ارسل ايضا جيشا اخراً بقيادة عبدالرحمن بن الورد الدونبلي الى ارزن لكي يخدع اميرها ابا القاسم ويستولي على المدينة ، لكن عبدالرحمن لم يتمكن من التأثير على ابا القاسم ، وارسل الاخير بشكل سري ، الى الامير احمد بن مروان طالبا منه المجيء الى ارزن قبل وصول قوات شروه ، وفعلا تمكن الامير احمد من ان ينجي بنفسه ، ووصل الى ارزن سالما ، ورغم محاولات قوات شروه مهاجمة ارزن لكن ابا القاسم استطاع ان يهزمهم ويطاردهم الى ان انسحبوا الى ميا فارقين. (ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق١/ ، ٣٤٢ - ٣٤٣).

وبعد انسحاب قوات شروه من حول ارزن ، جمع حاكمها ابا القاسم اهالي المدينة والعساكر وسلم حكم ارزن ودياربكر للأمير احمد بن مروان ، بحضور القاضي والشهود ووصل العشائر الكردية في المنطقة الى ارزن ، واعلنوا جميعهم ولاءهم للامير احمد بن مروان ودخلوا في طاعته. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧٠ ؛ابن الاثير، ١٩٩٨، ٧/٤٤٦).

قبل ان يدخل الامير احمد بن مروان في مواجهة عسكرية مع شروه ، استحلف رؤساء العشائر الكردية في ارزن واطرافها ، ان يكونوا مساندين للأمير وان لا يطلبوا شيئا حتى يقضي على شروه وتمرده ، وبعد موافقتهم على ذلك ، بدا الامير احمد بالتجهيز للقتال ضد شروه ، واول هجوم عسكري على ميافارقين ادى الى اندحار شروه ، ثم قامت قوات الامير بنهب اطراف المدينة وحصلوا على غنائم كثيرة ، حيث وزعهم على قواتهم. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧٠ ؛ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق٣٤٣/١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وفي الهجوم الثاني للأمير احمد بن مروان مع والي ارزن الخواجا ابا القاسم ، حول اطراف ميافارقين ، ندم شروه على تمرده ، ولم يبقى امامه وسيلة اخرى سوى توزيع الاموال على اهالي ميافارقين والاحسان عليهم ، حتى لا يقفوا ضده في داخل المدينة ، كما اشار عليه حليفه ابن فيلوس بمراسلة ملك الروم ويطلب مساندته ، وبعث له الهدايا والتحف ، وعندما علم اهالي ميافارقين ، بذلك ضاق صدرهم ، ولعنوا شروه وابن فيلوس وثبت لديهم ان شروه يريد تسليم المدينة الى ملك الروم والايقاع بالمسلين. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧١؛ ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق١/٣٤٤).

ولم يكتف شروه بما اقدم عليه من مراسلة ملك الروم ، بل اجرى اتصالات مع حاكم مدينة آمد (ابن دمنه) وحليفه في قتل الامير المرواني ابو علي ، وطلب منه ان يحفظ عنده الاموال والمجوهرات التي سيبعثها اليه ، على سبيل الوديعة ، فوافق ابن دمنه على طلبه وتعهد له ان يبقى محفوظا عنده ولا يسلمه الى احد. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧١).

ولما سمع اهالي ميافارقين بما عمله شروه ، ازدادت بسخطهم على شروه وابن فيلوس ، وظهرت حالات القلق والتذمر عند اهالي ميافارقين ، لذا استغل الاهالي عندما حضر ابن فيلوس لصلاة الجمعة ومعه خلق كثير ، وهاجموه فهرب الى قصر شروه واحتمى به ، وطلب منه تسليم ابن فيلوس لأنه رأس الفتنة والفساد ، ولما رفض طلبهم ، ذشب قتال بين الاهالي وقوات شروه ، لذا ترك شروه قصره وفر هاربا الى برج الملك (احدى ابراج ميافارقين الحصينة) وتحصن بها ، اما ابن فيلوس فقد قبض عليه وقتل ثم جر الصبيان جثته في المدينة ومثلوا بها ، ودخل الاهالي قصر شروه ونهبوا ممتلكاتها. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧١ - ٤٧٢ ؛ ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق١/٣٤٥ - ٣٤٦).

وفي تلك الفترة عاشت ميافارقين حاله من عدم الاستقرار والفوضى والقلق ، ومن ناحية اخرى خاف شروه على نفسه ، لان الاوضاع صارت لغير صالحه ، لذا توسل بشيوخ ميافارقين ووجهائها ، وطلب منهم الامان على نفسه فأمنوه، وطلب منهم ان يتوسطوا لدى الامير احمد بن مروان ، واجتمع شروه مع وجهاء المدينة في منزل احد اغنيائها واشرافها يدعى ابو الطيب محمد بن عبيد بن المحور ، وطلب منهم شروه ان يقسموا له طلب الامان من الامير احمد بن مروان ، وبعد خروج شروه من هذا الاجتماع ، لامه الناس ، ونهبوا قصر العتيق (مقر شروه) وهدموه ، رغم ما نهاهم ابو الطيب بالكف عن اعمال السلب والنهب. (ابن شداد، الاعلاق، ٣/ق١/٣٤٦).

وبسبب استمرار الفوضى السائد في ميافارقين ، راسل شيوخ المدينة الامير احمد بن مروان ، ودعاه الى الاجتماع بهم من اجل الصلح والنظر في مصير شروه ، فحضر الامير المرواني واجتمع مع شيوخ ميافارقين في ظاهر المدينة ، وطلب احمد بن مروان تسليم شروه اليه ، لكنهم رفضوا ذلك، واشاروا اليه بانهم منحوا الامان على شروه وماله ، وعاد الامير المرواني الى ارزن ، في حين اضطربت احوال ميافارقين وحصل خلاف بين اعيانها ، مما دفع بابي الطيب المحور بالنأي عن هذا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الا مر ، وذ هب الى بيـ ته دون تدخـ له في هذا المو ضوع. ونتيـ جة لـ تأزم الاو ضاع في ميا فارقين ، اخـ تار وجهاء المدينة شخصا آخرا للنظر في اصلاح الامور ، وهو (ابو طاهر ابن الحمامي) الذي وصف با نه كان رجلا محتر ما ، لكنه لم يستطيع ان يفـعل شيئا بـسبب ا ختلاف في وجهات النـظر حول ا مر ( شروه) وتـسليمه للأ مير المروا ني ، فاذسحب ا بن الحـ مامي ايضا من هذا الا مر واعـتزل في بيـ ته ، فاجتمع اعيان المدينة مرة اخرى حول شخصيه اخرى معروفة لدى اهل ميافارقين ، وهو ا بو الحسن احمد بن وصيف ، الذي كان مقدما ومشرفا على سوق القماش ، وكان لا بي الحسن هذا صديق يدعى (ابن ابي الريحان) وكان للأخير جماعة واتباع يقفون معه ويؤازرونه ، فاتفق ا بن وصيف مع ا بن ا بي الريحان لـ تولي الا شراف عـ لى حـ فظ المديـ نة وحمايتـ ها من الـلصوص وا صحاب الفـ ساد. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧٢ ؛ ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق١/٣٤٦ – ٣٤٧).

ومن جهة اخرى استفاد احمد بن مروان من الفوضى السائدة في ميا فارقين ، وعاد ثانية الى مها جمة المديـ نة وحا صرها وقـ طع ا لميرة عنـ ها ، و عانى اهـ لها الـ شدائد ، فـ خاف ا بن و صيف ان يتصل اهلها بألامير المرواني ، ويسلمون اليه المدينة، ويبقى هو العدو ، لذا را سل ا بن وصيف ا حمد بن مروان وطلب مـنه الصلح ، شريطه ان يكتب الا مان له ، وبعد موافقة الأ مير المروا ني عـلى عقد الصلح معهم ، اجتمع ابن وصيف مرة اخرى بشيوخ المدينة في الجامع ، وطلب منهم ، المشورة في حل هذه المشكلة الذي قال لهم: ((الى كم ذصبر تحت الحصار والى متى نحن فيه وقد خربت بيوتنا واملاكنا ...)) الا ان اعيان المدينة اصروا على موقفهم بعدم تسليم شروه للا مير المروا ني، وبسبب البرد والثلج انسحب احمد بن مروان مع قسم من قواته في شهر تشرين الثاني الى ارزن ، مع تركه قـ سم من جيـ شه لإبـ قاء الحـ صار عـ ليهم ، وبـ قى الا مر هـ كذا حـ تى انـ تهى شهر شباط و عاد الا مير المرواني ثانية الى تشديد الحصار على المدينة واجبارهم على التسليم ، عندئذ استـ شار ا بن وصيف ثانية وجهاء المدينة واخبرهم ان هذا الا مير مـ صر على اقتحام المدينة عنوة ، وطلب منهم الموافقة على تسليم المدينة بشكل سلمي وقال لهم: (( فلا نتلف انفسنا من ا جل شروه)) أي ذضحي باهلنا وممتلكاتنا من اجل شروه ، فوافقوا على اجراء الصلح مع الامير ، وعن طريق وفدهم المفاوض ابدوا استعدادهم على تسليم المدينة وفتح ابوابها له ولقواته شريطة الامان على اهلها والعفو عن شروه ، رضي احمد بن مروان ، على شروطهم ، وهكذا سيطر الامير المرواني على مدينة ميا فارقين ، ودخلها في آخر شهر سنة (٤٠١ هـ / ١٠١٠ م) حيث نزل دار شروه ، لان دار الا مارة قد خربت ، ثم جاءه شروه نازلا من برج الملك ، وبعد مدة قصيرة القي القبض على شروه ونقله الى قلعة هتاخ وقتل هناك ، وقتل ايضا عدد من اتباعه ، كما طرد من المدينة جماعة من ا هل الفـ ساد والفتن ، وا ستقرت ا حوال ميا فارقين بعد هذه الا حداث ، ثم جعلها عا صمة لإمارته. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧٣ – ٤٧٤ ؛ ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق١/٣٤٧ – ٣٤٨).

وبعد ان انتهينا من عرض تاريخي لتمرد شروه على سيده ، علينا توضيح اشكالية هذا التمرد من ناحية التحديد الزماني والمكاني ، ودوافع قيامه بهذا العمل ، وهل كان لهذا الثائر علاقات سياسية مع جهات خارجية من اجل اضفاء الشرعية على حكمه ؟ وهل ان رؤساء العشائر ووجهاء المنطقة ورجال الدين وعلماؤها وغيرهم من الفئات التي ساندوه ووقفوا الى جانبه اضافة الى ذلك هل يمكن ان نعد احد امراء الامارة المروانية ؟

بالنسبة للفترة الزمنية التي اعلن فيها شروه نفسه اميرا محل الامير ممهد الدولة غير واضحة هل هي سنة (٤٠٠ هـ او ٤٠١ هـ / ١٠١٠ م) معظم المؤرخين اشاروا انها كانت سنة (٤٠١ هـ / ١٠١٠ م). بينما حددها احد المؤرخين المحليين بشكل دقيق حيث ذكر ان شروه قتل الامير ممهد الدولة في آخر سنة (٤٠٠ هـ /١٠٠٩ م) ويشير كذلك ان احمد بن مروان دخل مدينة ميافارقين في آخر شهر من سنة (٤٠١ هـ / ١٠١٠ م) واستلمها من وجهائها بشكل سلمي ، ثم امر بعد مدة قصيرة بقتل شروه في قلعة الهتاخ. (الفارقي، ٢٠١٤ ، ٤٦٧ ، ٤٧٣ – ٤٧٤). مما سبق يتضح ان فترة حكم شروه امتدت قرابة سنة كاملة أي من نهاية سنة (٤٠٠ هـ / ١٠٠٩ م) الى نهاية (٤٠١ هـ / ١٠١٠ م).

اما المدن والبلدات التي حكمها شروه خلال فترة حكمه ايضا غير معلومة لكن الاشارات التي وردتها في المصادر ، تظهر ان شروه بعد قتله الامير ممهد الدولة سيطر على مدينة ميافارقين وجعلها مركزا لحكمه ، وبقيت المدينة تحت سيطرة نفوذه حتى مقتله ، فضلا عن ذلك ، فهناك اشارة ايضا في احد المصادر تظهر ان شروه تسلم جميع القلاع والبلاد بخاتم الامير ولم يبقى غير مدينة ارزن ، إذ كان يحكمها الخواجا ابا القاسم ، فضلا عن مدينة آمد حيث كان يحكمها صديق وحليف شروه ، وهو ابن دمنه (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦٨ – ٤٦٩ ؛ ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق١/٣٣٩، ٣٤١ ؛ ابن الاثير، ١٩٩٨/٧/٤٤٥). اذن يمكن القول ان معظم مناطق نفوذ الامير ممهد الدولة دخلت تحت سيطرة الامير شروه عدا ارزن وآمد ، اما مصير مدينة اسعرد فغير واضحة هل سيطرت عليها قوات شروه ام لا ؟ علما ان الامير احمد بن مروان تركها ، بعد مقتل اخيه ، فلا نعلم هل عين شخصا عليها قبل مغادرته للمدينة ام لا ؟ ومن المرجح لم يسيطر عليها شروه بحكم قربها من ارزن.

اما الاشكالية الاخرى في هذا التمرد ، وهي لماذا قام شروه بهذا الانقلاب على سيده الامير المرواني ؟ يظهر ان الدافع الشخصي و طموحه للسلطة كان السبب الاول للقيام بتمرده هذا ، فقد سبق انه هو الذي اشار على عبدالبر زعيم آمد للقيام بقتل الامير المرواني ابو علي الحسن ، فلما نجحت خطته بالقضاء على هذا الامير ، شجعته ايضا القيام بالتمرد على ممهد الدولة وقتله ، خاصة وكان له نفوذ وسلطة قوية في عهده ، بحكم اطلاق يده على جميع الامور ومن ضمنه جعله حاجبا خاصا له ، ووصل درجة الصداقة بينهما انه اطلعه على نسائه وجواريه، ومما دفعه وشجعه ايضا للقيام بقتل الامير المرواني ، ابن فيلوس صاحب الشرطة ، حين قال له ((نقتله وتأخذ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

لنفسك)) أي التفرد بالحكم ، كما قال له ايضا حين تردد على قتله ((مهجتك احب اليك من قربه ومحبته)) أي ان استلامك للحكم والسلطة افضل من قرب الامير ومحبته اليك ، ولم يزل شروه يردد هذه العبارة في نفسه عدة ايام ، حتى ثبت في نفسه باتخاذ القرار النهائي وهو قتل الامير ،أي من اجل السلطة والتفرد بالحكم. (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٦ - ٤٦٧ ؛ابن شداد، ١٩٧٨، ٣/ق١/٣٣٦ - ٣٣٧).

ومن جهة اخرى اراد شروه ان يخرج من عزلته ، واجرى اتصالات مع القوى السياسية الكبرى المعاصرة له ، من اجل اضفاء الشرعية على حكمه من جهة ، وكذلك طلب المساعدة منهم ان دعت الحاجة اليه ، ولهذا راسل الامبراطور البيزنطي وارسل له الهدايا الفاخره وتحف واعرب عن استعداده في تسليم المدينة له (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧١). ويتضح من احدى القطع النقدية التي ضربها شروه في ميافارقين ، انه اعرف بالتبعية لكل من الحاكم البويهي بهاء الدولة (٣٩٧ - ٤٠٣ هـ / ٩٨٩ - ١٠١٢ م). والخليفة العباسي السني القادر بالله (٣٨١ - ٤٢٢ هـ / ٩٩١ - ١٠٣١ م). مثلما فعل الحكام المروانيين السابقين له حيث ضرب اسماؤهم على عملته. (Stefan, Heidemann, 1988, p. 599).

وما دمنا بصدد الحديث عن العملة التي ضربها شروه ، خلال فترة حكمه ، التي وصلت قرابة سنة كاملة ، فإنها القت الاضواء على عدة امور من حوادث هذا التمرد من الناحية التاريخية ، حيث كانت شخصية شروه قبل ذلك يكتنفها الكثير من الغموض منها انها كشفت اسم هذا الثائرالحقيقي وكنيته وهو ابو شجاع شروين بن محمد ، في حين ان المصادر تذكر بصيغة (شروه بن مم) ، كما ان هذه العملة تظهرانه اتخذ لقب الامير في قصر ضحيته ، كما اتخذ اثباتا رسميا على السيادة أي سك النقود - وبما ان شروين يملك خزينة ميافارقين ، ولذا كانت لديه الوسائل الكافية لسك عملة تحمل اسمه - ويظهر من الكتابات الموجودة على عملته ، انه ضربها من مدينة ميافارقين في سنة (٤٠١ هـ /١٠١٠ م) ، وضرب هذا العملة على غرار العملات المروانية السابقة بنفس الوزن تقريباً وهي (٤,٨٥) غرام و (٢٧ ملم) أي قطر الدائرة. ( Stefan, Heidemann, 1988, p. 599, 600, 603).

بالرغم من ان شروه نجح في قتل الامير المرواني وجعل نفسه حاكما مكانه وكذلك ضرب عملة نقدية باسمه بالإضافة الى فتح علاقات سياسية مع القوى الخارجية مثل الخلافة العباسية والبويهيين والروم. الا ان الاحداث برهنت انه لم يكن يملك قاعدة شعبية داخلية تؤازره وتقف الى جانبه ، ورغم انه كان ينتمي الى الكرد ، لكنه في نفس الوقت لم تكن لديه روابط عائلية مع الاسرة المروانية الحاكمة ، كما انه لم يكن يعرف كزعيم او رئيس عشيرة مهمة له اتباع كثيرة وقفوا الى جانبه (Stefan, Heidemann, 1988, p. 604). بل وقفت جميع العشائر الكردية الى جانب الامير المرواني وحلفوا له انهم سيساعدونه حتى ينتقم من قاتل اخيه (الفارقي،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٢٠١٤، ٤٧٠). مما يتضح ان العشائر الكردية في منطقة دياربكر قد ايدوا انتقال السلطة بين افراد الاسرة الحاكمة بالوراثة وليس اغتصاب السلطة من قبل شخص آخر عن طريق قتل الملك او الحاكم (Stefan, Heidemann, 1988, p. 604).

وفيما يتعلق بمسألة وقوف بعض وجهاء وشيوخ ميافارقين مثل ابو الطيب وابن الحمامي وابن وصيف البزاز الى جانب شروه في الايام الاخيرة من تمرده ، فان هذا لا يعني انهم ساعدوه ووقفوا الى جانبه ضد الامير احمد بن مروان ، بل ان هؤلاء قاموا بدور الوساطة بين الطرفين من اجل انهاء حالة الفوضى التي تشهدها المدينة ، وحماية ميافارقين من السلب والنهب ، واصحاب الفتن ، ولما اشتد الحصار على المدينة ، سلموا شروه الى الامير المرواني الذي بدوره امر بقتله وصلبه (الفارقي، ٢٠١٤، ٤٧٢ - ٤٧٤).

**الخاتمة:**

بعد الانتهاء من كتابة هذا البحث عن تمرد شروه توصل الدراسة الى الملاحظات الختامية التالية:

١- اوضحت الدراسة ان الامير باد بن دوستك وضع اللبنات الاساسية للإمارة المروانية، ثم اكملته مابناه ابن اخته ابو علي الحسن بن مروان، بعد مقتل خاله باد بن دوستك اثر تعاون عدة قوى أقليميه في بلاد الجزيرة.

٢- كشفت الدراسة ان مناطق نفوذ الإمارة خلال فتره هذا البحث هي المنطقة الجغرافية المحصورة مابين امد وميافارقين ( كردستان) مع مدينة حصن كيفا، بالإضافة الى القلاع والحصون الواقعة في هذه البقعه، ولم يتسع نفوذ الإمارة الا في عهد نصر الدولة المرواني.

٣- بينت الدراسة ان الاميرين المروانيين ابو علي الحسن واخيه ممهد الدولة اللذين حكمتا الإمارة المروانية ( احدى وعشرون سنة) ذهبا ضحية مؤامرة دبرها شروه بن مم من اجل الوصول الى الحكم.

٤- اظهرت الدراسة ان شروه قام بهذا التمرد أو الانقلاب بحكم اتصاله المباشر من الاسرة المروانية، فقد ورث عن والده وظيفة الحجابة، واطلع على خفايا الامور في بلاط المروانيين، مما مكنه من استدراج الامير المرواني الى اقطاعه في قلعة الهتاخ ثم اغتياله بالاتفاق مع صاحب شرطته.

٥- بالرغم من ان شروه تمكن من القضاء على الامير المرواني ممهد الدولة، وسك العملة باسمه وباسم الخليفة العباسي والامير البويهي، كما راسل الامبراطور البيزنطي، الا انه لم يحصل على سند شعبي ودعم للعشائر الكردية، ولهذا فشل في مشروعه ولم يحتفظ بالسلطة سوى سنة او اقل من ذلك.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٦- اوضحت الدراسة ان شروه لم يكن لديه اية روابط عائلية او حتى مصاهرة مع الاسرة المروانية، وبسبب عدم امتلاكه أي حجة للوصول الى السلطة، فلذلك لا يمكن إضافته او عده ضمن قائمة حكام الإمارة المروانية رغم انه بقي في الحكم قرابة سنة.

**قائمة المصادر و المراجع:**


- ابن الاثير، ابو الحسن علي بن محمد بن محمد الشيباني الجزري ( ت٦٣٠هـ/ ١٢٣٢م)
- الكامل في التاريخ، راجعه محمد يوسف القاق، دار الكتب العلمية (بيروت: ١٩٩٨).
- الروذراوري، محمد بن الحسين بن محمد الملقب يظهير الدين (ت ٤٨٨هـ/ ١٠٩٥م).
- ذيل تجارب الامم، دار الكتب العلمية، منشورات محمد بيعون ( بيروت: ٢٠٠٣).
- ابن خلكان، احمد بن محمد بن ابراهيم ( ت٦٨١هـ/ ١٢٨٢م)
- وفيات الاعيان وانباء ابناء الزمان، تحقيق يوسف علي طويل، دار الكتب العلمية، ( بيروت: ١٩٩٨).
- سبط ابن الجوزي، شمس الدين يوسف بن قزاوغلي، ( ت٦٥٤هـ/ ١٢٥٦م)
- مرآة الزمان في تواريخ الاعيان، تحقيق محمد انس وكامل محمد الحراط، مؤسسة الرسالة، ( دمشق: ٢٠١٣).
- ابن شداد، عزالدين محمد بن علي بن ابراهيم ( ت٦٨٤هـ/ ١٢٨٥م)
- الاعلاق الحطيرة في ذكرا مراء الشام و الجزيرة، تحقيق يحيى عبارة، وزارة الثقافة و الارشاد، (دمشق: ١٩٧٨).
- ابن العبري، ابو الفرج غريغوريوس بن اهرون الملطي ( ت٦٨٥هـ/ ١٢٨٦م)
- تاريخ مختصر الدول، وضع حواشيه خليل المنصور، دار الكتب العلمية، (بيروت: ١٩٩٧).
- الفارقي، احمد بن يوسف بن علي ابن الازرق (ت بعد ٥٧٧هـ/ بعد ١١٨١م)
- تاريخ ميافارقين، تحقيق كريم فاروق الخولي ويوسف بالوكن، نوبهار ( اسطنبول: ٢٠١٤).
- ابو الفداء، عمادالدين اسماعيل بن علي بن محمود الايوبي (ت ٧٣٢هـ/ ١٣٣١م)
- تاريخ ابي الفداء ( المختصر في اخبار البشر)، علق عليه محمود ديوب، دار الكتب العلمية، ( بيروت: ١٩٩٧).
- ابن فضل الله العمري، شهاب الدين احمد بن يحيى ( ت ٧٤٩هـ/ ١٣٤٨م)
- مسالك الابصار في ممالك الامصار، تحقيق كامل سلمان الجبوري ومهدي النجم، دار الكتب العلمية ( بيروت: ٢٠١٠).
- المقريزي، تقي الدين احمد بن علي ( ت٨٤٥هـ/ ١٤٤١م)

- إتعاظ الحنفا بأخبار الأئمة الفاطميين الخلفا، تحقيق محمد عبدالقادر عفا، دار الكتب العلمية (بيروت: ٢٠٠١).
- الهمداني، ابو الحسن محمد بن ابي الفضل عبدالملك ( ت٥٢١هـ/ ١١٢٧م)
- عنوان السير في محاسن اهل البدو، تحقيق شايع الهاجري، دار الغرب الاسلامي، ( تونس: ٢٠٠٨).


**قائمة المراجع:**

**التكريتي، محمود ياسين**
١- الإمارة المروانية في دياربكر و الجزيرة، رسالة ماجستير، غير منشورة، كلية الاداب، ( بغداد: ١٠٧٠).
٢- حسن، قادر محمد
٣- الإمارات الكوردية في العهد البويهي، مؤسسة موكرياني، ( اربيل: ٢٠١١)
٤- زامباور، ادوارد فون
٥- معجم الانساب و الاسرات الحاكمة، ترجمة زكي محمد حسن بك و حسن احمد محمود، نور حوران للدراسات و النشر، ( دمشق: ٢٠٢٢).
٦- مرجونة، ابراهيم محمد
٧- تاريخ الاكراد، دراسة سياسية و حضارية في ظل الخلافة العباسية، مؤسسة شباب الجامعة، ( الاسكندرية: ٢٠١٠).

Kennedy, Hugh
8- The Prophet and the Age of the Caliphates (London: 2004) Heidemann, stefan
9-A new Ruler of the marwanid Emirate in 407/ 1010 and further considerations on the Legitimizing power of Regicite, ARAM, 9-10 (1997-1998)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

12) Mayyafāriqīn, (401-403)

13) Mayyafāriqīn, (403?)

14) Mayyafāriqīn, 403

نماذج العملة النقدية التي اصدرت في عهد
شروه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# یاخیبوونا میر شروەیێ کورێ مەمی


**پۆختە:**

ئەڤ ڤەکۆلینە بەحسا سەردەمەکێ کورت و نەزەلالا دیرۆکا میرنشینا مەروانیان دکەت، کو ژ سالەکێ دەرباس نەبوو، کو د ناڤبەرا کوشتنا میر ئەبوو مەنسوور سەید بن مەروان د سالا (٤٠١ هجری / ١٠١٠ میلادی) و دەستپێکا ئەمرێ برایێ وی نەسر ئەل-دەولە ئەهمەد بن مەروان، وەک کو د وێ سەردەمیدا یەک ژ زلامێن ڤێ میرنشینێیە، و ئەو (شروەیێ کورێ مەم)ی ل دژی دەستهلاتداریا رەوا دەرکەتیە و ئەمیرێ مەروانی ئەبوو مەنسوور ب ناسناڤێ ئەبوو مەنسوور دکوژیت. (مومەهد ئەل-دەولە)، و وی حوکمێ میراتییێ، پشتی دەستەسەرکرنا ناڤەندا حوکومەتێ، باژارێ مەیافارقینێ، دەستنیشان کر. هەر وها هەول دا میر ئەحمەد بن مەروانێ کو ل باژارێ ئەسرادێ سرگوونکری بوو ژ هۆلێ راکەت. بەلێ والیێ باژارێ ئارزانێ ئەل-خەوجە ئەبوو ئەل-قاسم ئەل-ئیسفەهانی ب میر، خوەستەک و هێڤیێن وی رە روو ب روو مایە و کاری جارەک دی دەستهلاتداریێ ل مالباتا مەروانیان ڤەگەرینیت.



**پەیڤێن سەرەکی:** میر شروە، نەسر ئەلدەولە، مۆمەهد ئەلدەولە، مەیافارەقین، ئەبوولقاسم ئەلئەسفەهانی.


## Prince Shruh bin Mam rebelled


**Abstract**:

This study deals with a short and ambiguous period of the history of the Marwanid emirate, which did not exceed a year, which is a transitional period between the killing of Prince Abu Mansur Saeed bin Marwan in the year (401 AH / 1010 AD) and the beginning of the mandate of his brother Nasr al-Dawla Ahmed bin Marwan, as during that period one of the men This emirate, and he is (Shrouh bin Mam) by turning against the legitimate authority and killing the Marwani Emir Abu Mansur, nicknamed (Mumahd al-Dawla), and he singled out the rule of the emirate, after his seizure of the center of government, the city of Mayafariqin. He also tried to eliminate Prince Ahmed bin Marwan, who was exiled in the city of Asrad. However, the governor of the city of Arzan, Al-Khawaja Abu Al-Qasim Al-Isfahani, confronted the prince, his ambitions, and his hopes, and was able to restore the rule to the Marwanid family again.



**Key words**: *Prince Shrwa, Nasr al-Dawla, Momahd al-Dawla, Mayafaraqin, Abu al-Qasim al-Isfahani.*

# أثر الصراعات الداخلية للإمارة العنازية على سياستها العامة

## ٣٨٠-٥٤٤٦/٩٩٠- ١٠٥٤م

ا. د. بشار اكرم جميل

قسم التاريخ- كلية الاداب- جامعة الموصل/ العراق

**الملخص:**

كان للصراعات الداخلية في الإمارة العنازية دور كبير وواضح على سياستها العامة ، فقد شكلت علاقة الإمارة العيارية مع القوى الخارجية محوراساس من محاور سياستها ، وربما علاقتها بالخلافة العباسية تأتي في مقدمة تلك العلاقات ، والتي لم تكن على افضل وجه كون الإمارة العنازية قد نشأت خارج إرادة الدولة العباسية ، كما أن قيام تلك الإمارة كان في وقت ضعف الدولة العباسية وتحكم البويهيين في مقدراتها ، ولا سيما في حكم الخليفة العباسي القادر بالله (٣٨١-٥٤٢٢/٩٩١-١٠٣١م) والخليفة القائم بأمر الله (٤٢٢-٥٤٦٧/١٠٣١- ١٠٧٥م) ، فقد استغل ابو الفتح محمد بن عناز ذلك الضعف فأسس إمارته في منطقة حلوان العراق والتي شملت مدن كثيرة فيما بعد ، إلا انه توجب على ذلك الأمير الكردي إقامة علاقات مع الخلافة العباسية كونها الممثل الروحي للمسلمين .

إن المحور الاساس الذي سيؤكد عليه البحث هو الصراعات الداخلية على السلطة بين ابناء الإمارة ، والتي انعكست على سياسة الإمارة العامة وعلاقاتها مع الامارات الاخرى فضلاً عن علاقتها مع البويهيين الحكام الحقيقيين من الجانب السياسي مقابل الخليفة العباسي الذي مثل الدولة العباسية روحياً .

**المبحث الأول: الجغرافية والنشأة:**

رغم اختلاف المؤرخين في تسمية حكام تلك الإمارة إلا ان ارجح الآراء اشارت الى تسميتها بالعيارية والتي تبناها مؤلف كتاب "الشرفنامة في تاريخ الدويلات الكردية" (البدليسي،١١٩،١٩٩٠) ، فيما ضبط ابن الاثير الاسم بعناز(١٩٩٧،ج٥ و ج٦) ، وضبطه ابن خلدون تحت اسم عنان(٥٤٧/١٩٨٨،٣) ، وقيل انهم سموا بالعنازيون نسبة الى تربيتهم للماعز ، إلا ان الارجح هو تسميتهم بالعيارين نسبة الى مؤسس الاسرة محمد العيار ، إذ تعني كلمة العيار عند الكورد الداهية او الفطن الذكي ، ولهذا اعتبروا ان هذا الاسم اصح من عناز الذي قالوا انه خطأ(شرفخان،٤٥،٢٠٠٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

لقد ساعد في قيام الإمارات والدويلات الكردية في تلك المدة التي رافقت حكم الخلافة العباسية التفاف بعض الفئات حول بعض القادة مما يعكس ايمان تلك الفئات ان ذلك القائد كان يتحسس مشاكلهم بصورة اكثر واقعية من الآخرين ، وشكلت حادثة مقتل الخليفة المتوكل على الله العباسي (٢٣٢-٢٤٧هـ/٨٤٧-٨٦١م) على يد قادة جيشه الاتراك بداية مشاكل الدولة العباسية مما ادى الى ظهور بعض الدويلات والإمارات الإسلامية والتي استقلت عنها ومن بين تلك الدويلات والإمارات الإمارة العيارية والتي تأسست شمال غرب بلاد فارس وبالتحديد في منطقة حلوان جنوب غرب إقليم الجبل(الدينوري،١٣٣،١٩٦٠) وفي شهرزور الواقعة على الجهة الجنوبية الشرقية من مدينة السليمانية الحالية على الحدود (الايرانية العراقية) ، وكانت السلطات الكردية الحاكمة في تلك المناطق كما في غيرها من اماكن سيطرة الكُرد غير خاضعة لحكم الخلفاء العباسيين(بولاديان،٢٠١٣، ١٤٥).

وقامت الإدارة الجديدة للمنطقة بقيادة بني عناز بنقل عاصمتها إلى مدينة حلوان ، وفي الوقت الذي كانت نهاية بني حسنويه[1] حتمية بسبب كثرة الحروب والمشاكل التي عصفت بها ، فبعد ان توفى مؤسس الإمارة الحسنوية حدث صراع بين ابنائه على خلافته مما اضعف الإمارة الكردية وفتح الباب امام التدخل البويهي الذي حقق الانتصار على قوات فخر الدولة احد ابناء حسنويه فيما انصاع الابن الاخر نصير الدولة لأوامر البويهيين وتحالف معهم ليستفاد من ذلك في توسيع حدود دولته حتى سيطرت على املاكه قوات بني عيار (عناز)(حسن،٢٠١١ ، ٧٨).

حدد الجغرافيون والمؤرخون موضع مدينة حلوان تارة في إقليم الجبال وتارة في التقسيمات الإدارية للعراق ، ويصف اليعقوبي الطريق من بغداد إلى حلوان بالقول: " من اراد من بغداد إلى حلوان اخذ من جسر النهروان ذات اليسار فصار إلى دسكرة الملك وبها منازل لملوك الفرس عجيبة البناء جليلة حسنة... " ، كما وصفها المؤلف نفسه بأنها " مدينة جليلة كبيرة وأهلها اخلاط من العرب والعجم من الفرس والاكراد وافتتحت ايام عمر بن الخطاب ﵁ " (١٤٢٢هـ،٧٣).

**المبحث الثاني : الصراعات والسياسة العامة للإمارة:**

اسهمت الإمارات الكردية بدور فعال في التاريخ الإسلامي وفي الحضارة الإسلامية بشتى ميادينها ، فضلاً عن الحفاظ على مصالحهم حسب الظروف الراهنة آنذاك ، فكان لأغلبها دور مشرف في نصرة الإسلام ، كما اسهمت في تقريب وجهات النظر بين القوى الإسلامية في المنطقة ، ومن بين تلك الإمارات الإمارة العنازية والتي قامت على ارض حلوان في العراق وهي متعددة الخيرات وأهم مايميز منازلها انها مبنية من الطين مع بعض الابنية المبنية من الحجارة(زكي،٤٤،١٩٤٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو فەکولینێن کوردی

اتسمت سياسة الإمارة العنازية منذ تأسيسها بالصداقة مع جيرانها والإمارات الأخرى حيناً وبالعداء والحروب أحيان أخرى ، إلا ان ماميز حكمها هو كثرة الصراعات الداخلية والتي اسهمت في تحديد سياستها العامة ، وأول من تسلم حكم الإمارة ابي الفتح محمد بن عناز والذي لاينتمي الى القبيلة (البزريكاذية) الحسنويون الذين سبق ان حكموا في تلك المناطق ، واتخذ الامير العنازي مدينة حلوان مقراً له ، فيما كانت عاصمة ملكه في قومش[٢] تارة وفي شهرزور تارة اخرى ، وفي رواية ان ابو الفتح محمد بن عناز (٣٨٠-٤٠١هـ/٩٩٠-١٠١١م) كان صديقاً لأبو الفوارس بهستون بن ذرير (صاحب الشرطة) ، والذي يسارع لنجدته كلما تعرض لخطر(حسن،٥٣،٢٠١١) ، وقد صادف ان هاجمت قوة قادمة من الجبل ابو الفتح محمد فاستنجد بأبو الفوارس بهستون والذي امده بجند من اهله واصحابه ، وبعد عودته نزل بمدينة الخالدية[٣] التي كانت إحدى إقطاعاته وصادف نزوله ان هاجمت مجموعة من خيل بني سيار حضيرة ابقار بالخالدية وسرقت مجموعة كبيرة منها وعبرت بها شرق ديالى ، فما كان من بهستون الا ان تحرك مع اخويه الاعرابي والفارضي نحو اولئك السراق واشتبكوا معهم إلا ان بهستون تعرض لطعنة توفى على اثرها ، فحملت جثته الى الخالدية ومن ثم دخلت بغداد لتقام مجالس العزاء على روحه (ابن مسكويه ، ٢٠٠٠، ٧ /٤٦٨).

وكانت للأمير ابي الفتح محمد مع زهمان بن هندي صاحب خانقين منازعات كان المنتصر فيها ابي الفتح محمد ، إلا ان ذلك الامر انتهى بالصلح بينهما وتقرب ابو الفتح محمد من زهمان واولاده حتى اطمئنوا فأعتقلهم جميعاً وسجنهم في قلعة البردان[٤] ، فتفرق على اثر ذلك اصحاب زهمان فملك عليهم ابو الفتح محمد ، إلا ان ذلك الأمر لم يدم طويلاً فقد تمكن اولاد زهمان من كسر قيودهم وحاولوا السيطرة على القائمين على حراستهم ومن ثم السيطرة على القلعة ، إلا ان الحراس نادوا على اصحابهم وتمكنوا من قتل اولاد زهمان الثلاثة أمام ابيهم الذي نقل على اثر ذلك الى بيت سُجن فيه حتى توفى بعد ايام قليلة (مسكويه ، ٢٠٠٠ ، ٧ / ٤٠٠) .

كان لابي الفتح محمد بن عيار (عناز) دور ايجابي في مجال تقوية العلاقات السياسية مع البويهيين ، ففي سنة ٣٨٩هـ/٩٩٨م اشترك ذلك الأمير في الحملة التي وجهها بهاء الدولة البويهي بقيادة ابي جعفر الحجاج نائبه على العراق لمحاربة بني عقيل في الموصل ، فبفضل قوة الامير ابي الفتح في حلوان ومساعدته العسكرية للبويهيين حصل اعتراف منهم لذلك الامير فقلدوه على اثره حماية الدسكرة ، وحينما دخل صاحب الجيش ابو جعفر الى املاك بني عقيل رتب امورها ومنع السلب والنهب كما منع الاعتداء على سكانها ، ومن ثم خرج لتتبع اثار ابن مزيد الذي هرب الى موضع يسمى (شق المعزى) ، فلحقته الجيوش وعلى راسها كبار القادة ومنهم ابو الفتح محمد بن عناز ، وحالما وصلت تلك القوات الى الموضع الذي يتواجد فيه ابي مزيد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شاهدته وهو يضع حلله وعدته توقفوا وضربوا خيامهم وتهيئوا للحرب ، وكان ابن مزيد قد راسل ابوا لهوا اسود بن سوادة الشيباني ومعه ابي الفتح محمد بن عناز لكي يتآمروا على ابي جعفر وينسحبوا من المعركة بعد بدئها ، وهو ماحصل فعلا حينما ترك ابي الفتح الجيش وانسحب من المعركة وتبعه عدد من الكُرد ، ليبقى ابا جعفر في ثلاثين مقاتل من اقاربه فقط ، بعد ان كان قد جلب له ابي الفتح محمد قبل انسحابه مائتي فارس من الأكراد الشاذنجانية ومائتي فارس من الكورد الجاوانيين ، ونتيجة لذلك الانسحاب خسر ابي جعفر المعركة امام ابن مزيد(مسكويه ، ٢٠٠٠ ، ٧ /٤٨٩).

كما ساعد العنازيون في سنة ٣٩٧هـ/١٠٠٧م بهاء الدولة البويهي[٥] في القبض على ابو العباس بن واصل ، فقد القى القبض عليه ابو الفتح محمد بن عناز في مرقد علي بن ابي طالب ﷺ وسلمه الى اصحاب بهاء الدولة(ابن الجوزي ، ١٩٩٢ ، ١٥ /٥٧؛ ابن الجوزي،١٣٥٨هـ،٧ /٢٣٦) ، كما اسهم الاكراد ومنهم العنازيون في تخليص مدينة دقوقا[٦] من حكم شخصان نصرانيان سيطرا عليها واستعبدا سكانها ، فما كان من علية القوم الا ان اجتمعوا الى رجل يُدعى جبرئيل وقالوا له انك تمتلك القوة والشجاعة ونحن نساعدك للقضاء على هذان النصرانيان ، وفعلا هاجمت تلك القوة دقوقا وانتصرت واصبح جبرئيل هو الحاكم حتى استلم الحكم بعده المُقلد ثم محمد بن عناز ثم قراوش لينتقل بعدها الحكم الى فخر الدولة ابي غالب ليعود بعدها جبرئيل الى البلد ، وحال وصوله اجتمع مع أمير من الاكراد أسمه موصك بن جكويه[٧] وقررا مهاجمة فخر الدولة وابعاده عن السلطة ، إلا ان بدران بن المقلد استطاع بعد ذلك ان يبعد امير الاكراد موصك ومعه جبرئيل عن حكم دقوقا(ابن الاثير،١٩٩٧،٧/ ٤٩٤؛ابن الطقطقي،٧٨،١٩٧٧).

وكان ابو الفتح محمد بن عناز قد استولى على قرميسين والتي كانت من املاك ابا النجم بدر الحسنوي خلال انشغال الاخير بمعارك استرداد املاكه من ابنه الأمير هلال الذي استولى على السلطة بمساعدة بعض الكرد والجند بعد ان اسر والده في معركة جرت بينهما في الدينور عام ٤٠٠هـ/١٠١٠م ، إلا انه رفض قتل والده ولم يصغ لتحريضات جنده له ودعوتهم له لقتل والده ، فأظهروا لده التنازل عن العرش له وطلب منه ان يعطيه قلعة ليقضي باقي ايامه فيها ، وفعلاً منحه إحدى قلاع الجبل ومبلغ من المال ، فاستقر الأمير بدر فيها وعمرها وحصنها وبدأ بمراسلة من يؤيده من الامراء الكرد لاسترداد حكمه من ابنه هلال ، كما اضطر ابا النجم للاستعانة بالسلطان البويهي بهاء الدولة (٣٨٨-٤٠٣هـ/٩٩٨-١٠١٣م) والذي ارسل له جيشاً مجهزاً بأفضل الاسلحة بقيادة وزيره فخر الملك ابي غالب والذي هزم جيش هلال(ابن الاثير،١٩٩٧،٧/ ٤٩٥؛ابن خلدون ،١٩٧٨،٤/ ٦١٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

وقبل بدء المعركة حاول عيسى بن شاذي ان يثني هلال عن الخروج للقتال والدخول في طاعة السلطان البويهي بهاء الدولة وتقديم الهدايا له حتى يتراجع عن مساعدته لأبيه ابا النجم لكنه رفض واتهمه بالخيانة وقتله ، وما ان حل الليل حتى باغت هلال جيش الوزير فخر الملك فكان الجيش البويهي بالمرصاد لهلال وجيشه حتى تمت هزيمته ، فحاول هلال استرضاء الامير البويهي فكتب له رسالة قال فيها " إنني ماجئت لقتال وحرب ، إنما جئت لأكون قريباً منك ، وأنزل على حكمك ، فترد العسكر عن الحرب ، فإنني ادخل في الطاعة "(ابن الاثير،١٩٩٧ ، ٥٧/٨) .

وعلى أثر ذلك وافق الوزير فخر الملك على الصلح مع هلال وارسل رسالة الى ابي النجم بدر يخبره بما حصل ، لكن راودته الشكوك في نية ابنه هلال وقال انها خدعة ، فعادت الحرب مرة ثانية بين هلال والوزير فخر الملك ، فوقع هلال اسيراً لكنه توسل بأن لا يتم تسليمه لأبيه فوافق الوزير مقابل الحصول على القلعة التي كانت تحت سيطرة الأمير هلال ، وحال دخوله فيها نهبها وأسر هلال وسجنه في شهرزور ثم قتله عام ٤٠٥هـ/١٠١٥م بأمر من شمس الدولة البويهي ، كما قتل والده في نفس العام خلال حصاره حصن كوسجة الذي طال كثيراً دون نتيجة ، فقرر اصحاب ابي النجم قتله حتى يرتاحوا من ذلك الحصار ، وسرقوا الكثير من المقتنيات الموجودة في الحصن وفروا تاركين جثته ملقاة على الارض حتى أمر الحسين بن مسعود الكردي رجاله فكفنوه ودفنوه في مشهد الخليفة علي بن ابي طالب ﷺ (ابن الاثير،١٩٩٧، ٧/ ٥٩٦) .

ولم ينتهي الأمر بمقتل ابي النجم بدر ، بل تم ملاحقة حفيده طاهر بن هلال والذي طالب بأملاك جده ابا النجم بدر ، وقد عمل السلطان شمس الدولة البويهي على ملاحقته حتى القى القبض عليه وزجه في السجن واستولى على املاكه واملاك جده ، وما لبث ان قتل بعد خروجه من السجن بمؤامرة دبرها له الامير ابو الشوك بن عناز الكردي واصبحت املاك الإمارة الحسنوية تابعة للدولة العنازية الكردية(ابن خلدون،١٩٨٨ ،٦٩٢/٤).

وفي سنة ٤٠١هـ/١٠١١م توفى ابو الفتح محمد بن عناز بحلوان[٨] بعد ان حكم لعشرين سنة ليتولى حكم الإمارة بعده ابنه ابو الشوك فارس بن محمد الملقب بحسام الدولة (٤٠١-٤٣٥هـ/١٠١١-١٠٤٤م) ، وكان ابو الشوك ووالده ابو الفتح من كبار قادة الدولة الحسنوية وقد شقا عصا الطاعة وثارا عليها ، وقتل ابو الشوك فارس طاهراً واستولى على املاكه ، كما خاض ابو الشوك حسام الدين الحرب ضد علاء الدين بن كاكويه الذي غزا همدان وما يجاورها ، وتابع زحفه الى دينور لكن جيشه تقهقر فعاد مسرعاً نحو حلوان واستنجد بالوزير شرف الدولة ، والذي ما ان سمع به علاء الدين حتى سحب قواته عائداً نحو همدان(بولاديان،٢٠١٣،هامش رقم ٣١ / ١٢٠) .

وفي سنة ٤٢٠هـ/١٠٢٩م وقف ابو الشوك حسام الدين بوجه الغز الأتراك الذين شنوا هجوماً عنيفاً على دينور في ذلك العام فجهز جيشاً بقيادة اخيه ابي الفتح للتصدي لهم ، وقد تصدى



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

ذلك الجيش لهجوم الغز وشتت شملهم الأمر الذي اسهم في علو شأنه ورفعة مكانته ، وحينما سمع الخليفة العباسي القادر بالله (٣٨١-٤٢٢ه/٩٩١-١٠٣١م) في بغداد بذلك النصر خلع عليه بسيف مرصع واطلق عليه لقب حسام الدولة ، وفي سنة ٤٢١ه/١٠٣٠م تمكن حسام الدولة من الاستيلاء على ولاية قومش ، ولم يزل يوسع بلاده حتى ضم إليها سنة ٤٣٠ه/١٠٣٩م قرميسين (كرمنشاه) وبلاد الجبل ومدن أخرى واتخذ ابنه ابي الفتح ولياً لعهده ، إلا ان ولي العهد ذاك والذي كان والياً على دينور نيابة عن ابيه بدأ يتطاول على الامراء المجاورين له ، فغزا قلعة بكورا واحتلها كما احتل حصن بيزارشاه ونواحي سند وصامغان ومدن اخرى من يد اخيه مهلهل ، إلا ان اخيه مهلهل انتصر عليه وسجنه حتى مات في سجنه(ابن الاثير،٧،١٩٩٧/ ٥٧٤؛ بولاديان،٢٠١٣،هامش رقم ٣١/ ١٢٠).

وخلال حكم حسام الدولة ابو الشوك كانت مدينة دقوقا تخضع لحكم ابي الماجد مهلهل بن محمد بن عناز ، فارسل حسام الدولة ابو الشوك ولده سُعدى [٩] لقتال عمه وانتزاع المدينة منه سنة ٤٣١ه/١٠٣٩م ، فحاصرها إلا ان جنود المهلهل قاتلوا بشراسة ، فاستدعى سُعدى والده حسام الدولة ابو الشوك ليساعده في حصارها ، فنقب سورها ودخلها عنوة وذهب اصحابه بعض البلد ، وسيطروا على سلاح الكرد وثيابهم ، وا قام حسام الدولة ليلة هناك ليعود بعدها الى حلوان والبندنيجين[١٠] خوفاً من ضياعها من يده ولاسيما بعد ان هاجم اخاه سرخاب بن محمد بن عناز على عدة مواضع من ولايته بعد ان حالف الجاواذنية ضده ، فأرسل حسام الدولة رسالة الى جلال الدولة يطلب فيها المساعدة فارسل اليه جنداً فحموا بلاده(ابن الاثير،٨،١٩٩٧/ ٢١).

وفي سنة (٤٣٧ه/ ١٠٤٥م) توفى ابو الشوك فارس بن محمد بن عناز بقلعة السيروان[١١] فوقف الكرد مع اخيه مهلهل بن محمد ضد ابنه سُعدى(ابن الوردي،١،١٩٩٦/ ٣٢٩) ، وقد تسلم مهلهل بن محمد الحكم سنة (٤٣٧-٤٤٤ه/١٠٤٥-١٠٥٢م) متخذاً من شهرزور مقراً له ، وبعد ان سجن طغرل بك السلجوقي اخيه سرخاب بن محمد توجه إليه سنة ٤٤٢ه/١٠٥٠م ليتوسط فيه لإطلاق سراحه ، وفعلاً استجاب السلطان السلجوقي لمطلبه واطلق سراح سرخاب ، وكان مهلهل يكنى بابي ماجد والذي تولى على عهد أخيه حسام الدولة ابو الشوك حكم مدينة بكورا ، وقد جرى بينه وبين ابو الشوك حروب كثيرة انتهت باسره لابي الشوك ووفاته في سجنه ، كما هاجم مهلهل بعد وفاة ابي الشوك ابنه سُعدى وانتزع منه جميع بلاده(بولاديان،٢٠١٣،هامش رقم ٣٥/ ١٢١).

وفي شهر شعبان من سنة (٤٣٧ه/١٠٤٥م) استنجدت زوجة صاحب قلعة بلوار التي يحكمها الكُرد بمهلهل بن محمد بن عناز بعد ان علمت انها عاجزت عن حمايتها ، وذلك لصد هجوم ابي الفتح بن ابي الشوك الذي فتح عدة مدن وقلاع حتى وصل الى بلوار ، وحينما وصل الرسول الى مهلهل سأله هل وصل ابي الفتح بن ابي الشوك الى القلعة بنفسه ام عسكره ، فأخبره الرسول ان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ابن ابي الشوك عاد وترك عسكره هناك ، فسار مهلهل اليها فوجد ان ابي الفتح قد عاد اليها ايضاً ، فسار عنها ليوهم ابي الفتح ان غايته ليست القلعة ثم انحرف وعاد إليها ليلتقي الجمعان في معركة كبيرة لمس منها ابو الفتح تغير اصحابه عليه فولى هارباً ، وقتل جيش مهلهل من بقى من جند ابي الفتح ثم لاحقه حتى القي القبض عليه وحبس لدى مهلهل(ابن الاثير،١٩٩٧، ٧/ ٧٩٦).

وفي سنة (٤٣٨هـ/١٠٤٧م) استولى ابو الماجد مهلهل بن محمد بن عناز على ورث ال حسنويه حينما هاجم بدر بن طاهر الحسنوي وانتزع منه كرمنشاه واصبحت تحت املاك الإمارة العنازية الكردية بعد ان كانت تابعة لدولة بني حسنويه ، كما دحر جيش إبراهيم ينال[١٢] الذي جاء لمساعدة بني حسنويه سنة ٤٤٣هـ/١٠٥١م(ابن مسكويه،٦،٢٠٠٠/ ٤٦٦) ، وكان مهلهل بن محمد بن عناز قد توجه قبل عام من ذلك التاريخ اي سنة ٤٤٢هـ/١٠٥٠م الى السلطان طغرلبك وقدم له فروض الطاعة ، فأقره على بلاده ومنها السيروان ودقوقا وشهرزور والصامغان ، وكان طغرلبك قد اطلق سراح اخو مهلهل واسمه سرخاب بن محمد بن عناز ليؤازر اخاه(ابن الوردي،١،١٩٩٦/ ٣٤١).

وحينما تخلص سرخاب بن محمد بن عناز من سجنه التحق بحكومة ماهكي(وهي عشيرة كردية تسكن حوالي كرمنشاه وحليلان) ، وكان سرخاب قد استفاد من المنازعات بين اخيه حسام الدولة ابو الشوك فارس بن محمد وبين علاء الدولة كاكويه فاستولى على داكوكا (داقوق) ، وحينما اغار إبراهيم ينال على جيش ابي الشوك حسام الدين وهزمه انتهز سرخاب الفرصة وسار الى ابنه سعدي وانتزع منه بندنيجين (مندلي) وغنم امواله ، ثم اودعه السجن بعد حروب دامية بين الجانبين ، ومالبث ان نشبت بين سرخاب وابنه ابي عسكر معارك انتهت بانتصار ابي عسكر على ابيه ولا سيما بعد ان استعان بقبيلة ماهكي الكردية ، وحالما اسروا لده ارسله إلى إبراهيم ينال والذي سمل عينيه وعاقبه ، وبعد ذلك تشفع له اخاه مهلهل بن محمد فتم الإفراج عنه ومنحه قلعة ماهكي ، وهناك من اشار انه قتل في نفس العام إبراهيم ينال(الذهبي ،٢٩،١٩٩٣/ ٣٣٤).

وبعد ان احتمى سُعدى بن ابي الشوك بإبراهيم ينال الذي امده بجيش من الغز استطاع ان يسيطر على حلوان ويقيم الخطبة فيها لإبراهيم ينال ، لكنه مالبث ان فرح بنصره حتى هاجمه عمه مهلهل وطرده من حلوان فلم يبقى له الا ان يشن غارات السلب والنهب على بلاد عمه سرخاب ، إلا ان سرخاب ظفر به وسجنه وبقى فيه حتى انقذه ابنه ، وحالما تخلص من السجن هاجم حلوان مرة ثانية وسيطر عليها ، كما منحه السلطان السلجوقي طغرلبك قلعة رادندبين[١٣] ، إلا ان تلك الانتصارات اعقبتها حروب بينه وبين مهلهل انتهت بانتصار مهلهل عليه واسره ورفض طلباً لطغرلبك للإفراج عنه(ابن الجوزي،١٩،١٩٩٢/ ٩١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

وحينما ادرك طغرلبك ان مهلهل وسرخاب معاً لن ينفعانه بعد اليوم فسلم حكم الإمارة إلى الأمير ابي منصور بدر بك بن مهلهل وسيره بجيش لقتال مهلهل فاشتبكا وخاضا حرب دامية لم تنتهي بانتصار احد ، وتمكن بدر بك من تجميع قواته وتحقيق انتصاراته وضم مناطق عدة ومنها ممتلكات الأمير سُعدى وانتزعها منه شيئاً فشيئاً حتى استولى عليها بشكل تام سنة (٤٤٦هـ/١٠٥٤م) فانهارت سلطة الحسنويين (البرزيكانية) وبنو عنان واصبحت حكومة تابعة للدولة السلجوقية وتقلد زمام حكمها بدر بيك بن هلال واخذ يدير شهرزور وحلوان ودينور(ابن الوردي،١٩٩٦،١/٣٤١).

وتولى سرخاب بن بدر بن مهلهل والذي كان يكنى بأبي الفوارس والمعروف بابن ابي الشوك ولاية شهرزور وقوما ، وعمل في سنة ٤٩٥هـ/١١٠١م على غزو قلعة جقندكان والتي خرجت عن طاعتهم منذ مدة طويلة فاسترجعها بما يمتلكه من قوة كبيرة ومعدات هائلة ، وكان ابو الفوارس قد تولى حكم الإمارة بعد وفاة ابيه ولاسيما بعد مساندة طغرلبك له ليتولى إدارة الحكم في شهرزور وخفتيذكان (دربنديخان) ودكوكا (داقوق) ، وفي سنة ٤٩٥هـ/١١٠١م تعرضت بلاد ابو الفوارس لهجوم احد امراء التركمان المدعو القرابلي سلغرو الذي اراد الرعي في اراضي بلاد سرخاب إلا انه منع من ذلك فغضب وعاد ليجلب المساعدة من قومه التركمان ويهاجم سرخاب ، وفعلاً عاد الى بلاد سرخاب بقوة كبيرة ، إلا ان سرخاب صد هجومه وهزمه ، كما عاود القرابلي الهجوم وهزم مرة ثانية ، إلا انه لم ييأس فعاود الهجوم بجيش كبير جداً لينتهي الهجوم بانتصاره ، حتى قيل ان نحو الف رجل من الاكراد قد قتلوا بعد مرور اربعة ايام من القتال ، وفي تلك الاثناء انتهز احد قادة سرخاب والذي كان اميراً على قلعة خفتيذكان الفرصة وخرج عليه وسيطر على تلك المنطقة وسرق ماموجود في القلعة من الذخائر والمعدات(بولاديان،٢٠١٣،١٢٣).

وحينما ادرك السلطان برك ياروق بن ملك شاه السلجوقي (٤٨٧-٤٩٨هـ/١٠٩٤-١١٠٥م) خطورة الأمر جهز حملة عسكرية لمحاربة الأمير الثائر ، وانتصرت عليه وحصلت منه على مئة الف دينار ذهب ، ولم يبق لأبي الفوارس سرخاب غير شهرزور وداقوق ، وصادف ان تحارب الأمير الثائر مع احد قادته وقتل احدهما الاخر ، فارسل القاتل رسالة يبين فيها فروض الطاعة لسرخاب ووعده بتسليم القلعة على ان يغفر له جريرته فطمأنه سرخاب واسترد قلعته ، وفي سنة ٤٩٩هـ/١١٠٥م توغل بلك بن بارام بن ارتق في املاك سرخاب بن بدر بن مهلهل ، فحاصره سرخاب ثلاث مرات متتالية واخفق في جميعها ثم صالحه واعاد إليه القلعة(ابن الاثير،١٩٩٧،٨/٤٧٦).

وبعد وفاة سرخاب بن بدر بن مهلهل تسلم الحكم اخيه ابا منصور بن بدر والذي نهض ببلاده شهرزور زراعياً واقتصادياً وبالغ في عمرانها وادارها في استقلال تام حوالي العشرين عام، وبقي حكم البلاد في يد تلك الاسرة حوالي المئة والثلاثين سنة ، أما نهاية العياريين فكانت على يد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

طغرلبك حينما انتصر عليهم في معركة نهر سيروان والذي يطلق عليه ايضاً نهر ديالى (حسن ، ٢٠١١، ٩٧ ؛ بولاديان،٢٠١٣، ١٢٣).

**الاستنتاجات:**

١- الإمارات الكردية عموماً نشأت تحت راية الإسلام وهي جزء لايتجزأ من الدولة العباسية ، إلا ان ضعف سلطة الخلافة في الأطراف اسهمت في حدوث انقطاع في العلاقة بين تلك الإمارات مع بغداد.

٢- الموقع الجغرافي للإمارة العنازية مهم واكسبها دور كبير في تاريخ المنطقة .

٣- الإمارة العنازية عانت من مسألة استفحال امر البويهيين وسيطرتهم على الساحة السياسية وعلى القرار السياسي في بغداد .

٤- الصراع على السلطة كان السمة الابرز في سياسة الإمارة الداخلية والذي انعكس سلباً على ديمومتها وبقاءها.

٥- رغم المشاكل الداخلية إلا ان الإمارة العيارية كانت تمتلك قوة عسكرية كبيرة .

٦- حاول امراء تلك الإمارة كسب ود البويهيين لدرجة انهم شاركوا في المعارك التي خاضها البويهيين.

**المصادر والمراجع:**

**أولاً : المصادر الاولية:**


١- ابن الاثير: ابو الحسن علي بن ابي الكرم محمد بن محمد بن عبد الكريم بن عبد الواحد الشيباني عز الدين (ت ٦٣٠هـ)

- الكامل في التاريخ ، تحقيق:عمر عبد السلام تدمري، دار الكتاب العربي، بيروت١٩٩.

٢- البدليسي ، شرف خان(ت ١٠١١هـ).

- شرفنامة في تاريخ الدول والإمارات الكردية ، ترجمة : محمد علي عوني ، مراجعة : يحيى الخشاب ، دار الزمان ، ط٢ ، ٢٠٠٦.

٣- ابن الجوزي، جمال الدين ابو الفرج عبد الرحمن بن علي بن محمد(ت ٥٩٧هـ)

- المنتظم في تاريخ الملوك والامم ،تحقيق:محمد عبد القادر عطا،دار الكتب العلمية،بيروت،١٩٩٢

٤- ابن خلدون، ابو زيد ولي الدين عبد الرحمن بن محمد بن محمد الحضرمي(ت ٨٠٨هـ)

- ديوان المبتدأ والخبر في تاريخ العرب والعجم والبربر ومن عاصرهم من ذوي الشأن الاكبر ،تحقيق خليل شحادة، دار الفكر،بيروت١٩٨٨.

٥- الدينوري ، ابو حنيفة احمد بن داؤد(ت ٢٨٢هـ).




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

الأخبار الطوال، تحقيق: عبد المنعم عامر، دار إحياء الكتاب العربي، القاهرة، ١٩٦٠.
٦- الذهبي،شمس الدين ابو عبد الله محمد بن احمد بن عثمان بن قايماز(ت٧٤٨ه)
- تاريخ الاسلام ووفيات المشاهير والأعلام،تحقيق عمر عبد السلام تدمري،بيروت١٩٩٣
٧- ابن الطقطقي ، محمد بن علي بن طباطبا (ت ٧٠٩ه).
- الفخري في الاداب السلطانية والدول الإسلامية ، تحقيق : عبد القادر محمد مايو، دار القلم العربي،بيروت،١٩٧٧ .
٨- ابن القلانسي،حمزة بن اسد بن علي بن محمد ابو يعلى(ت٥٥٥ه)
- تاريخ دمشق،تحقيق سهيل زكار،دار حسان للطباعة والنشر،دمشق١٩٨٣.
٩- ابن كثير ، ابو الفداء إسماعيل بن عمر بن كثير القرشي(ت ٧٧٤ه).
- البداية والنهاية،تحقيق:علي شيري،دار إحياء التراث العربي،بيروت ١٩٨٨.
١٠- ابن مسكويه،ابو علي احمد بن محمد بن يعقوب (ت٤٢١ه)
- تجارب الأمم،تحقيق ابو القاسم إمامي،سروش٢٠٠٠ .
١١- ابن الوردي،ابو حفص عمر بن مظفر بن عمر بن محمد بن ابي الفوارس (ت٧٤٩ه)
- تاريخ ابن الوردي،دار الكتب العلمية،بيروت ١٩٩٦ .
١٢- ياقوت الحموي،ابو عبد الله ياقوت بن عبد الله الرومي(ت٦٢٦ه)
- معجم البلدان،دار صادر،بيروت١٩٩٥.
١٣- اليعقوبي ، احمد بن إسحاق بن جعفر بن وهب بن واضح(ت ٢٩٢ه) .
- تاريخ اليعقوبي،دار الكتب العلمية،١٤٢٢ه.

**ثانياً : المراجع العربية والمعربة:**

١- إسماعيل ، فرست مرعي
- الا مارات الكرد ية في العـصر العبا سي الـثاني ٣٥٠-٥١١ه/ ٩٦٠-١١١٧م درا سة سيا سية حـضارية، سيريز ،٢٠٠٥ .
٢- بولاديان ، أرشاك
- الأكراد في حقـبة الخلا فة العبا سية في الـقرنين ١٠ و ١١م، تر جمة: الكـسندر كشيـشيان، دار اراس للطباعة والنشر، ط٢، اربيل٢٠١٣.
٣- حسن ، قادر محمد .
- الإ مارات الكورد ية في العـ هد الـ بويهي درا سة في علاقات ها السيا سية والاقت صادية (٣٣٤-٤٤٧ه/٩٤٥-١٠٥٥م) ، مؤسسة مركز ياني ، اربيل،٢٠١١.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٤- زكي ، محمد امين
- تاريخ الدول والإمارات الكردية في العهد الإسلامي، تعريب : محمد علي عوني ،مطبعة السعادة،القاهرة،١٩٤٨ .
٥- المهدي ، دعاء محمد يوسف
- الامارات الكردية وعلاقتها بالقوى السياسية في بلاد العراق والشام في القرنين الرابع والخامس الهجريين ، رسالة ماجستير،جامعة القاهرة،٢٠٠٧ .

## الهوامش:

(١) بني حسنويه: دولتهم الحسنوية وهي إمارة كردية حكمت غرب ايران وشمال بلاد مابين النهرين، حكمت للفترة (٣٥٠-٤٣٩هـ/٩٦١-١٠٤٧م) وعاصمتها مدينة دينور الواقعة شمال شرق مدينة كرمنشاه الحالية في ايران ، سميت بالحسنوية نسبة الى حسنويه بن حسين والذي كان رئيس قبيلة برزيكاني الكردية . (زكي،١٢٦،١٩٤٨) .

(٢) قومش : وتسمى قوماش في بعض الاحيان ، كما تسمى قوما .(زكي،١٢٧،١٩٤٥) .

(٣) الخالدية: قرية من اعمال الموصل ينسب اليها ابو عثمان سعيد وغيره والخالديان الشاعران المشهوران . ينظر : ياقوت الحموي،٢،١٩٩٥/٣٣٨ .

(٤) قلعة البردان : وهي في اقصى بلاد بني عقيل ، وقيل هي في السماوة دون الجناب وبعد الحني من جهة العراق . ينظر :(ياقوت الحموي،١،١٩٩٧/٣٧٥) .

(٥) بهاء الدولة البويهي : هو ابو نصر فيروز بن عضد الدولة بن بويه ، وهو امير البويهيين في العراق وفارس وكرمان ، ومدة حياته (٣٦٠-٤٠٢هـ/٩٧١-١٠١٢م) . ينظر : (ابن كثير،١١،١٩٨٨/٤٠٠) .

(٦) دقوقا: وتسمى ايضاً دقوقاء بفتح اوله وضم ثانيه ، وهي مدينة بين اربل وبغداد ، وكان لها ذكر في الاخبار والفتوح وفيها إحدى وقعات الخوارج . ينظر : ابو عبد الله ياقوت الحموي ، معجم البلدان ، بيروت ، د/ت ، ج٢ ، ص٤٩٥ .

(٧) موصك: وهو امير الاكراد الذي اتفق مع امير مدينة دقوقا وساعده في الدفاع عن مدينته بوجه فخر الدولة . (الذهبي،١٩٩٣،ج٤١،ص٢٣٢) .

(٨) حلوان : وهي اخر حدود السواد مما يلي الجبال من بغداد . (ياقوت الحموي،٢،١٩٩٥/٢٩٠)

(٩) سعدي: هو سعدي بن حسام الدولة ابي الشوك ، كان يتولى على عهد والده حكم مدينة مندلي (بندنيجين) والتي اغار عليها عمه سرخاب وانتزعها منه ، وحينما توفى والده وتولى عمه مهلهل الحكم لجأ سعدي إلى إبراهيم ينال ليعيد إليه حكمه ، فأمده بجيش كبير من الغز فاغار على حلوان وسيطر عليها .(ابن كثير،١٢،١٩٨٨/٧٥) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

(10) البندنيجين: وهي بلدة مشهورة في طرف النهروان من ناحية الجبل في اطراف بغداد ، وهو اسم يطلق على عدة محال متفرقة غير متصلة البنيان وكل واحدة منفردة ، إلا ان نخلها متصل واكبر محلة فيها تسمى باقطنايا . ينظر (ياقوت الحموي،١،١٩٩٥/٤٩٩) .

(11) السيروان: بلد في الجبل أو كورة في الجبل وهي كورة ماسبذان ، كان يحكمها الفرس حتى ارسل سعد بن ابي وقاص جيش بقيادة ضرار بن الخطاب الفهري اليها ففتحها . ينظر ( ياقوت الحموي،١٩٩٥،ج٣،ص٢٩٦)

(12) إبراهيم ينال: وهو اخ طغرلبك لأمه ، وكان جندياً مطيعاً لأخيه حتى سنة ٤٣٧ه/ حينما ارسله طغرلبك الى همذان والمناطق الغربية المجاورة لها لإخضاعها لنفوذ السلاجقة إلا ان نفسه حدثته على التمرد والسيطرة على المدينة والانفراد بحكمها ، وقد بقى الأمر على حاله حتى تحرك طغرلبك لينهي تمرد اخيه بنفسه سنة ٤٤١ه/١٠٥٠م وما ان اقترب منها حتى ارسل الى اخيه يطلب منه الاستسلام فاستسلم وعفا عنه . ينظر (ابن القلانسي،١٤٦،١٩٨٣) .

(13) رادندبين : ربما هي الراوندين في كتاب الكامل في التاريخ (ابن الاثير،١٩٩٧، ٩/ ٥٧٠) ، إلا ان تعريفها لم يرد في معجم البلدان ولعلها الراوندان وهي قلعة حصينة وكورة طيبة معشبة من نواحي حلب( ياقوت الحموي،٣،١٩٩٥/١٩).

**پوختە:**

پەیوەندی میرنشینی خەلافەت لەگەڵ زلهێزە دەرەکییەکان میحوەرێکی سەرەکی سیاسەتەکەی پێکدەهێنا و ڕەنگە پەیوەندییەکەی لەگەڵ خەلافەتی عەباسی لە پێشەنگی ئەو پەیوەندیانەدا بێت، کە بە باشترین شێوە نەبوون چونکە میرنشینی خەلافەت لە دەرەوەی ئیرادەی... دەوڵەتی عەباسی، هەروەک چۆن دامەزراندنی ئەو میرنشینە لە سەردەمی لاوازی دەوڵەتی عەباسیدا بوو بویدەکان دەستیان بەسەر تواناکانیدا گرت، بە تایبەت لە کۆتایی دەسەڵاتی خەلیفەی عەباسی ئەلقائیم خودا و سەرەتای فەرمانڕەوایی لە خەلیفەی قادر بیلا.لەگەڵ خەلافەتی عەباسی کە نوێنەری ڕۆحی موسڵمانان بوو.

هەروەها توێژینەوەکە باس لە پەیوەندی میرنشین لەگەڵ بویدەکان دەکات، کە لە لایەنی سیاسییەوە فەرمانڕەوای ڕاستەقینە بوون، بە پێچەوانەی خەلیفەی عەباسی کە لە رووی ڕۆحییەوە نوێنەرایەتی دەوڵەتی عەباسی دەکرد، جگە لەوەش ئەو میرنشینە پەیوەندی سیاسی لەگەڵدا هەبووە دەسەڵاتەکانی دیکە، و سیاسەتی ناوخۆیی و ڕێگاکانی چارەسەرکردنی کێشە ناوخۆییەکانی دەوڵەت و خەبات بۆ دەسەڵاتیش باس دەکرێن.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**Abstract:**

Summary: The Emirate Al_Ayariah formed a relationship with the external forces a basic axis from its policy axes ,and maybe its relationship with Abbasid Caliphate which comes in the introduction of these relationships , which it was not the perfect way because the Emirate Al_Ayariah have arisen out of will of the Abbasid Caliphate , as that the establishment of that emirate was in time of the Abbasid state weakness and controlling of Buyids of its supplies and properties , especially in the end of the rule of the Abbasid Caliph Al _ Qaem for Allah , Abu Al_ Fateh Mohammed Bin Anaaz exploited that weakness so he established his state in the area of Halwan Al_Iraq which included many cities later , however ,the kurdish prince had to establishing relations with the Abbasid Caliphate as it the spiritual representative of Muslims . The research will also deal with the emirate's relationship with the Buyids who where the real rulers from the political side beside the Abbasid Caliph who represented the Abbasid state spiritually , besides that the emirate has political relations with other powers ,it will also be touched upon the internal policy and ways to address the state's inner conflicts and the struggle for power

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# أخبار الحسنويين الكُرد أصحاب الإمارة الحسنوية من خلال كتاب الكامل في التاريخ لإبن الأثير
## دراسة تاريخية

أ. د. خطاب إسماعيل أحمد
قسم التاريخ- فاكولتي العلوم الانسانية جامعة زاخو/ إقليم كردستان العراق

**ملخص البحث:**

الغرض من هذا البحث دراسة تاريخ الحسنويين الكُرد، وأبرز أخبارهم والأحداث التي كان لهم دور فيها، من خلال كتاب الكامل في التاريخ لابن الأثير (ت: ٦٣٠هـ/ ١٢٣٣م)، وهو يعد من المصادر المهمة لتاريخ الأمم والشعوب والإمارات والدول في العصر الوسيط، فمن تلك الإمارات (الإمارة الحسنوية)، التي ذكر ابن الأثير أخبارها، إذ أسرد في ذكر أخبار حسنويه بن حسين الكُردي، مؤسس الإمارة الحسنوية والتي سُميت نسبةً إليه، وأبنائه وأحفاده وأحفاد أبنائه الذين كان لهم دور كبير على أرض الواقع آنذاك.

وتهتم هذه الدراسة ببيان منهج ابن الأثير في تناول أخبار الحسنويين، ومصادره في ذلك، وطبيعة تعامله مع مصادره عن الحسنويين، ومن ثم إيراد ما ذُكر في المصادر الأخرى عن الحسنويين سواءً السابقة أو المعاصرة أو اللاحقة لابن الأثير، وأخيراً إيراد تفاصيل أخبار الحسنويين لدى ابن الأثير في كتابه (الكامل في التاريخ).

من أبرز الموضوعات التي تم التطرق لها في هذه الدراسة هي: أمراء الحسنويين الذين تولوا زمام الحكم في الإمارة الحسنوية، لا سيما حسنويه وابنه بدر بن حسنويه، ودورهم على مستوى العلاقات الداخلية والخارجية، وطبيعة علاقتهم مع الأمراء البويهيين التي إتسمت بالمد والجزر، والخلافة العباسية، فضلاً عن طبيعة العلاقة بين أمراء الأسرة الحسنوية نفسها، وطبيعة علاقتهم مع شعبهم، والقبائل الكردية المجاورة لا سيما العنازيين وهم من الكُرد، تلك العلاقة التي كانت تتسم بالعداء الدائم، ويظهر من خلالها أسباب سقوط الإمارة الحسنوية، ومقتل معظم أُمرائها، وقد ركَّزت الدراسة على إيراد كل المعلومات الوارد ذكرها عند ابن الأثير، في كتابه (الكامل في التاريخ)، مع ترتيبها بصورة تُمَكِّنُ من تكوين صورة واضحة عنهم.

هذا وقد قُسمت هذه الدراسة على المحاور الآتية: أولاً. إعطاء نبذة تعريفية مختصرة عن ابن الأثير، وبعدها نبذة عن كتابه الكامل في التاريخ، ومنهجه في التأليف فيها، وبيان لطبيعة ذكر ابن الأثير أخبار الحسنويين الكُرد وإمارتهم في كتابه (الكامل في التاريخ)، فضلاً عن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

تخصيص عنوان عن مصادر أخبار ابن الأثير عن الإمارة الحسنوية، وبعدها ذكر المصادر التي وردت فيها أخبار الحسنويين، وأخيراً ذكر تفاصيل أخبار الإمارة الحسنوية من خلال كتاب (الكامل في التاريخ) لابن الأثير.

**الكلمات الدالة:** *الخلافة العباسية، الحسنويين، ابن الاثير، البويهيين، العنازيين.*

---

**المقدمة:**

يهدف هذا البحث إلى دراسة تاريخ الحسنويين الكُرد، وأبرز أخبارهم والأحداث التي كان لهم دور فيها، من خلال كتاب الكامل في التاريخ لابن الأثير (ت: ٦٣٠هـ/ ١٢٣٣م)، وهو يعد من المصادر المهمة لتاريخ الأمم والشعوب والإمارات والدول في العصر الوسيط، فمن تلك الإمارات كانت (الإمارة الحسنوية)، التي ذكر ابن الأثير أخبارها، إذ أسرد في ذكر أخبار حسنويه بن حسين الكُردي، مؤسس الدولة الحسنوية والتي سُميت نسبةً إليه، وأبنائه وأحفاده وأحفاد أبنائه الذين كان لهم دور كبير على أرض الواقع آنذاك.

ذكر ابن الأثير أخبار الحسنويين إبتداءً من سنة (٣٥٩هـ/ ٩٧٠م)، لـ(٢٤) مرة، إذ سلط ابن الأثير فيها الضوء على أربعة شخصيات من الأسرة الحسنوية، وهم: حسنويه بن حسين الكُردي، وبدر بن حسنويه بن حسين، وهلال بن بدر بن حسنويه، وطاهر بن هلال بن بدر بن حسنويه، وهذا ما ستركز الدراسة عليه.

آخر حدث مهم عن الحسنويين ورد ذكره عند ابن الأثير يعود إلى سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م)، وهذا يعني بأن الحكم الفعلي للإمارة الحسنوية قد استمر مدة (٥) عقود ونصف العقد من الزمن، ولكنه في الوقت نفسه لا يعني أن آثار الحسنويين قد إنقطعت بعد هذه المدة، إذ يبدو أن آثار الحسنويين قد بقيت بعد ذلك بحوالي ثلاثة عقود ونصف من الزمن، لا سيما أن ابن الأثير قد ذكر ضمن أحداث سنة (٤٣٩هـ/ ١٠٤٨م)، أنه عندما توفي صاحب قلعة سرماج وهو من ولد بدر بن حسنويه، وبعد وفاته سُلمت القلعة للسلاجقة.

كذلك ستهتم هذه الدراسة ببيان منهج ابن الأثير في تناول أخبار الحسنويين، ومصادره في ذلك، وطبيعة تعامله مع مصادره عن الحسنويين، ومن ثم إيراد ما ذُكر في المصادر الأخرى عن الحسنويين سواءً السابقة أو المعاصرة أو اللاحقة لابن الأثير، وأخيراً إيراد تفاصيل أخبار الحسنويين لدى ابن الأثير في كتابه (الكامل في التاريخ).

يُعَدُّ كِتابا (تجارب الأمم وتعاقب الهمم) لابن مسكويه (ت: ٤٢١هـ/ ١٠٣٠م)، و(ذيل تجارب الأمم) لظهير الدين الروذراوري (ت: 488 هـ/ 1095م)، المصدران الرئيسان اللذان نقل عنهما ابن الاثير معلوماته وأخباره عن الحسنويين، كما صرَّح هو بذلك بنفسه.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

وأبرز المصادر الأخرى إلى جانب ابن الأثير التي إهتمت بذكر تفاصيل مهمة عن الإمارة الحسنوية، هي كتاب (البداية والنهاية) لابن كثير (ت: ٧٧٤هـ/ ١٣٧٣م)، وكتاب (العبر وديوان المبتدأ والخبر...) لابن خلدون (ت: ٨٠٨ هـ/ ١٤٠٦م)، فضلاً عن مجموعة من المصادر والمراجع الأخرى.

من أبرز الموضوعات التي تم التطرق لها في هذه الدراسة هي: ما ورد عن أمراء الحسنويين الذين تولوا زمام الحكم في الإمارة الحسنوية، ودورهم على مستوى العلاقات الداخلية والخارجية، وطبيعة علاقتهم بالأمراء البويهيين، والخلافة العباسية، فضلاً عن طبيعة العلاقة بين أمراء الأسرة الحسنوية نفسها، وطبيعة علاقتهم مع شعبهم، والقبائل الكردية المجاورة لا سيما العنازيين وهم من الكُرد أيضاً، تلك العلاقة التي كانت تتسم بالعداء الدائم، وكذلك أسباب سقوط الإمارة، ومقتل معظم أُمراءها، وقد ركزت الدراسة على إيراد كل المعلومات الوارد ذكرها عند ابن الأثير، في كتابه (الكامل في التاريخ)، مع ترتيبها بصورة تُمَكِّنُ من تكوين صورة واضحة عنهم.

هذا وقد قُسمت هذه الدراسة على المحاور الآتية: أولاً. إعطاء نبذة تعريفية مختصرة عن ابن الأثير، وبعدها نبذة عن كتابه الكامل في التاريخ، ومنهجه في التأليف فيها، وثالثاً. بيان لطبيعة ذكر إبن الأثير أخبار الحسنويين الكُرد وإمارتهم في كتابه (الكامل في التاريخ)،، فضلاً عن تخصيص عنوان عن مصادر أخبار ابن الأثير عن الإمارة الحسنوية، وبعدها ذكر المصادر التي وردت فيها أخبار الحسنويين، وأخيراً ذكر تفاصيل أخبار الإمارة الحسنوية من خلال كتاب (الكامل في التاريخ) لابن الأثير.

وقد تم إعتماد مصادر عديدة في هذه الدراسة أبرزها، كتاب (تجارب الأمم وتعاقب الهمم) لابن مسكويه، وكتاب (ذيل تجارب الأمم) للروذراوري، وكتاب (المنتظم في تاريخ الملوك والأُمم) لابن الجوزي، وكتاب (تاريخ الإسلام) للذهبي، و(البداية والنهاية) لابن كثير، وكتاب (العِبر) لابن خلدون، فضلاً عن إعتماد كتب البلدانيين مثل كتاب (معجم ما استعجم...) للبكري، و(معجم البلدان) لياقوت الحموي وغيرها للتعريف ببعض المدن والقلاع والأماكن، وكتب التراجم مثل كتاب (الوافي بالوفيات) للصفدي، و(سير أعلام النبلاء) للذهبي وغيرها للتعريف ببعض الشخصيات الوارد ذكرها في الدراسة، فضلاً عن بعض المراجع الحديثة مثل كتاب (خلاصة تاريخ الكرد وكردستان) لمحمد أمين زكي، وكتاب (الأكراد في حقبة الخلافة العباسية) لأرشاك بولاديان، وكتاب (الدول والإمارات الكردية) لفرست مرعي وغيرها.

## ١- نبذة تعريفية بإبن الأثير

هو أبو الحسن علي بن أبي الكرم محمد بن محمد بن عبد الكريم بن عبد الواحد الشيباني، المعروف بابن الأثير الجزري، الملقب عز الدين، ولد بجزيرة ابن عمر[1]، ونشأ بها (ابن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خلكان، ١٩٠٠، ٣٤٨/٣). في الرابع من شهر جمادى الأولى سنة (٥٥٥ هـ/ ١١٦٠م)، وقد جاء لقبه بالجزري نسبةً إلى هذه الجزيرة، وأما لقبه عز الدين فجاء جرياً على عادة عصره، وأما ابن الأثير فهو نسب يعود إلى والده (الخالدي، ٢٠٠٩، ١٣٩). الذي كان أثيراً عند الأتابك قطب الدين مودود بن عماد الدين زنكي صاحب الموصل (ت: ٥٦٥هـ/ ١١٧٠م)، وشقيق الأتابك نور الدين محمود صاحب الشام وحلب (ت: ٥٦٩هـ/ ١١٧٤م)، وهذه الأثرة عنده جعلته يتبوأ مناصب عالية في مملكته أبرزها عاملاً على جزيرة ابن عمر، ومتولي ديوان الخراج فيها (ابن الأثير، ١٩٦٣، ٢٧٠/١)، فعندما سار إلى الموصل مع والده وأخويه، وسكن فيها وسمع بها من أبي الفضل عبد الله أحمد الخطيب الطوسي ومن فيه طبقته، وقدم بغداد مراراً حاجاً ورسولاً من صاحب الموصل، وسمع بها من الشيخين أبي القاسم يعيش بن صدقة الفقيه الشافعي، وأبي أحمد عبد الوهاب بن علي الصوفي وغيرهما، ثم رحل إلى الشام والقدس وسمع هناك من جماعة، ثم عاد إلى الموصل ولزم بيته للتفرُّغ للعلم والتأليف، وكان بيته مجمع الفضل لأهل الموصل والواردين عليها (ابن خلكان، ١٩٠٠، ٣٤٨/٣).

كان ابن الأثير حافظاً للتواريخ المتقدمة والمتأخرة، وخبيراً بأنساب العرب وأخبارهم وأيامهم ووقائعهم، صنَّف في التاريخ كتاباً كبيراً سمَّاه (الكامل في التاريخ) إبتدأ فيه من أول الزمان إلى آخر سنة (٦٢٨هـ/ ١٢٣١م)، وهو من خيار التواريخ (ابن خلكان، ١٩٠٠، ٣٤٨/٣).

توفي ابن الأثير بمدينة الموصل في شهر رمضان سنة (٦٣٠هـ/ ١٢٣٣م) (السبكي، ١٩٩٣، ٢٩٩/٨). عن (٧٥) سنة من العمر، وكان يوجد قبر في الجانب الأيمن من مدينة الموصل إلى وقت قريب، يسمى بقبر البنت، لكن أُكتُشفَ لاحقاً أنه كان قبر المؤرخ الشهير إبن الأثير، وقد تعرَّض ذلك القبر للتدمير والإزالة من قبل عصابات داعش الإرهابية، خلال فترة إحتلالها لمدينة الموصل ما بين سنوات (٢٠١٤-٢٠١٧م).

### ٢- نُبذة عن كتاب (الكامل في التاريخ) ومنهجية التأليف

يُعد كتاب الكامل في التاريخ من أهم وأبرز كتب التاريخ الإسلامي العام، فهو يتضمن التاريخ العام منذ بدء الخليقة أول الزمان حتى عصره، إذ انتهى عند آخر سنة (٦٢٨هـ/ ١٢٣٠م)، تناول في كتابه الكامل تاريخ العالم القديم حتى ظهور الإسلام، وتاريخ العالم الإسلامي منذ ظهور الإسلام حتى عصره، والتزم في كتابه بالمنهج الحولي في تسجيل الأحداث، فهو يسجل أحداث كل سنة على حدة، وأقام توازنًا بين أخبار المشرق والمغرب وما بينهما على مدى سبعة قرون وربع قرن، وهو ما أعطى كتابه طابع التاريخ العام، وفي الوقت نفسه لم يُهمل الحوادث المحلية في كل إقليم، وأخبار الظواهر الجوية والأرضية من غلاء ورخص وقحط وأوبئة وزلازل (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٦/١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

تكمن أهمية كتاب (الكامل في التاريخ) أن ابن الأثير إستكمل فيه ما توقف عنده تاريخ الطبري في سنة (٣٠٢هـ/ ٩١٤م)، وهي السنة التي انتهى بها كتابه (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٦/١)، فبعد الطبري لم يظهر كتاب يغطي أخبار حقبة تمتد لأكثر من ثلاثة قرون، ولم يكن ابن الأثير في كتابه هذا ناقلاً للأخبار أو مسجلاً للأحداث فحسب، وإنما كان محللاً بارعاً وناقداً بصيراً؛ إذ حرص على تعليل بعض الظواهر التاريخية ونقد أصحاب مصادره، وناقش كثيراً من أخبارهم (الخالدي، ٢٠٠٩، ١٤٠).

لقد أطلق ابن الأثير في البداية على كتابه تسمية (المستقصى في التاريخ) (إبن الأثير، ١٩٦٣، ١٢؛ آميدي، ٢٠٠٦، ٤٩)، ويبدو أنه بعد أن إستكمل كتابته رأى بأن ذلك الإسم لا يتناسب مع طبيعة زخم المعلومات التي تناولها في كتابه هذا، لذا قرَّر أن يسميه بإسم (الكامل في التاريخ)، إذ قال ابن الأثير عن إختياه لهذا الإسم: "وقد سميته إسماً يناسب معناه وهو الكامل في التاريخ" (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٩/١).

وقد أرجع ابن الأثير سبب تأليفه لهذا الكتاب إلى عدة أسباب، لا سيما منها، أن المؤرخين قد أرَّخ كلٌ منهم إلى زمانه، وجاء بعده من ذيَّل عليه، وأضاف المتجددات بعد تاريخه، والشرقيُّ منهم قد أخلَّ بذكر أخبار الغرب، والغربيُّ قد أهمل أحوال الشرق، فكان الطالب إذا أراد أن يطالع التاريخ إحتاج إلى مجلدات كثيرة، وكتب متعددة، مع ما فيها من الإخلال والإملال، وقد علَّل ابن الأثير أنه لما رأى هذا الأمر، فإنه شرع في تأليف تاريخ جامع لأخبار ملوك الشرق والغرب وما بينهما، ليكون تذكرةً له يُراجعه خوفاً من النسيان، وأتى فيه بالحوادث والكائنات من أول الزمان، متتابعةً يتلو بعضها بعضاً إلى وقته (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٦/١).

أما منهجية ابن الأثير العامة في كتابه (الكامل في التاريخ)، فقد شرحها في بداية الكتاب، ذلك أنه لّما رأى من سبقه من المؤرخين من يذكرون الحادثة الواحدة في سنين، ويذكرون منها في كل شهر أشياء، فتأتي الحادثة مقطَّعة لا يُحصل منها على غرض ولاتفهم إلا بعد إمعان النظر، لهذا فقد قام هو بجمع الأخبار والروايات التي تتعلق بالحادثة الواحدة في موضع واحد، وذكر كلَّ شيء منها في أي شهر أو سنة كانت، فأتت متناسقة متتابعة، وذكر في كل سنة لكل حادثة كبيرة ومشهورة ترجمةً تخصُّها، فأما الحوادث الصِّغار التي لا يُحتمل منها كل شيء ترجمة، فإنه قد أفرد لجميعها ترجمة واحدة في آخر كل سنة، ثم يذكرها تحت عنوان (ذكر عدة حوادث)، ويذكر في آخر كل سنة من توفي فيها من مشاهير العلماء والأعيان والفضلاء (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٧/١).

أما أهمية كتاب (الكامل في التاريخ) بالنسبة لتاريخ الكُرد في العصر الإسلامي (الوسيط)، فيُعد من الكتب التي تأتي في المقدمة بالنسبة للمصادر التاريخية، التي تتضمن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

معلو مات شاملة، و نادرة في ذ فس الو قت عن تاريخ الـ كرد وبلاد هم، فـ قد إ هتم بـ نواحي الحـ ياة السياسية والعسكرية، وكذلك الحضارية، بأسلوب ومنهجية أكثر سلاسةً وتقدُّماً عمَّن سبقه من الكُتّاب والمؤرخين (آميدي، ٢٠٠٦، ٥١؛ وينظر: كب، ١٩٨١، ٩١).

وقد جاءت إحصائيات كتاب (الكامل في التاريخ) عن تاريخ الكُرد عموماً بالشكل الآتي: إذ وردت لفظ تا (الأ كراد)، و( كردي) أكـ ثر من (٢٥٠) مرة، وورد ذ كر إ سم (٢١) قبيـ لة كرد ية بـ صراحة، فـ ضلاً عن تناو له لمعلو مات قيِّمة عن دو لتين كرديتين هـ ما: الدو لة المروانـ ية، والدو لة الأيوبـ ية، فـ ضلاً عن ذ كره لمعلو مات مهـ مة عن (٥) إ مارات كرد ية، و من بيـ نها الإ مارة الحـ سنوية موضوع هذه الدراسة (آميدي، ٢٠٠٦، ٥١).

## ٣- طبيعة ذكر إبن الأثير لأخبار الحسنويين الكُرد وإمارتهم في كتابه (الكامل في التاريخ)

لقد ذكر ابن الأثير أخبار الحسنويين وأُمرائهم في (٢٤) حدثاً من خلال كتا به (الكا مل في التاريخ)، منها ذكر أخبار الحسنويين بعناوين رئيسة في (١٠) مرات، و(١٤) مرة فإنه ذكر أخبار الحسنويين ضمنياً مع أحداث أخرى.

**أولاً- الأخبار الرئيسة الـ(١٠) المتعلقة بأخبار الحسنويين، التي ذكرها ابن الأثير في كتابه (الكا مل في التاريخ) هي:**

أ. ذكر ابن الأثير عنوانان رئيسان يتعلقان بأخبار **حسنويه بن حسين** الكردي، هما:

١.١. الحدث الأول جاء في سنة (٣٥٩هـ/ ٩٧٠م)، تحت عنوان (ذكر مسير ابن العميد إلى حسنويه) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٧/٣١٩).

١.٢. أما الحدث الثاني فقد جاء ضمن أحداث سنة (٣٦٩هـ/ ٩٨٠م) بعنوان (وفاة حسنويه الكردي) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٧/٣٨٨).

ب. معظم الأخبار الرئيسة الأخرى خُصصت لبدر بن حسنويه[2]، وذلك لدوره الكبير في الأحداث الخارجية، والداخلية، ولشخصيته السياسية الفذة في الأحداث، وكذلك لطول مدة إمارته، إذ جاءت (٦) من العناوين الرئيسة الخاصة بالحسنويين مدونةً باسم بدر بن حسنويه الكردي، وتلك العناوين هي:

١.١. (ذكر قتل أولاد حسنويه سوى بدر)، ضمن أحداث سنة (٣٧٠هـ/ ٩٨١م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٧/٣٩٣).

١.٢. (ذكر الحرب بين بدر بن حسنويه وعسكر شرف الدولة)، ضمن أحداث سنة (٣٧٧هـ/ ٩٨٨م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٧/٤٣٠).

١.٣. (ذكر قصد بدر بن حسنويه ولاية رافع بن مقن)، ضمن أحداث سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٤٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

١.٤. (ذكر مسير عميد الجيوش إلى حرب بدروصلحه معه)، ضمن أحداث سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤١/٨).

١.٥. (ذكر الخلف بين بدربن حسنويه وابنه هلال)، ضمن أحداث سنة (٤٠٠هـ/ ١٠١٠م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٥٥/٨).

١.٦. العنوان الرئيسي الأخير الذي أورده ابن الأثير عن الحسنويين، والمتعلق ببدر بن حسنويه، فقد جاء تحت عنوان (ذكر قتل بدر بن حسنويه وإطلاق ابنه هلال وقتله)، كما هو واضح فإن ابن الأثير أورد إسم أميرين من أُمراء الحسنويين في هذا الموضوع هما: (بدر بن حسنويه)، وابنه (هلال بن بدر بن حسنويه) ضمن أحداث سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨٢/٨).

ج. في حين ذُكر هلال بن بدر في عنوان رئيسي واحد، وجاء ذكر إسمه إلى جانب إسم والده بدر بن حسنويه، تحت عنوان واحد وهو: (ذكر قتل بدر بن حسنويه وإطلاق ابنه هلال وقتله)، وهو عنوان مكرر تم ذكره سابقاً (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨٢/٨).

ح. أما العنوانان الرئيسان الآخران الواردان عند ابن الأثير، والمتعلقان بالحسنويين، فقد خصصهما ابن الأثير **لطاهر بن هلال** حفيد بدر بن حسنويه:

١. جاء الأول تحت عنوان (ذكر إستيلاء **طاهر بن هلال** على شهرزور)، وذكره ضمن أحداث سنة (٤٠٤هـ/ ١٠١٤م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨١/٨).

٢. الثاني تحت عنوان (ذكر قتل طاهر بن هلال بن بدر) على يد أبو الشوك سنة (٤٠٦هـ/ ١٠١٦م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٩١/٨).

**ثانياً**- أخبار الحسنويين الضمنية التي ورد ذكرها في كتاب (الكامل في التاريخ)، فكانت بحسب الترتيب التاريخي، وكما يأتي:

١.١. ذكر ابن الأثير نبذة من أخبار الحسنويين تحت عناوين أخرى بصورة عرضية، منها أنه أشار بصورة عرضية إلى حادث مجيء عبد الرزاق وبدر إبنا حسنويه إلى بختيار بن معز الدولة، معونةً له، تحت عنوان (ذكر مسير عضد الدولة إلى العراق)، ضمن أحداث سنة (٣٦٦هـ/ ٩٧٧م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٦٥/٧).

١.٢. ذكره لمراسلة فخر الدولة لأبي النجم بدر بن حسنويه، يأمره بإصلاح حاله مع محمد بن غانم البرزيكاني، تحت عنوان (ذكر عصيان محمد بن غانم) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤١٢/٧).

١.٣. ذكر أن بدر بن حسنويه أتى فخر الدولة عندما وصل إلى همذان، وذلك تحت عنوان (ذكر مسير فخر الدولة إلى العراق، وما كان منه)، ضمن مواضيع سنة (٣٧٩هـ/ ٩٩٠م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٣٨/٧).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١.٤. وردت الإشارة إلى بدر بن حسنويه، تحت موضوع (ذكر وفاة خوا شاذة)، ضمن أحداث سنة (٣٨٥هـ/ ٩٩٥م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٧٣/٧).

١.٥. ذكر ابن الأثير خبراً عن تقديم بدر بن حسنويه المساعدة لبهاء الدولة[3] بعد وقوعه في ضيق عندما عزم المسير إلى واسط، فذكر بأن بهاء الدولة بعد أن قلّت المؤونة لديه، فإنه إستمد العون من بدر بن حسنويه، والذي بدوره أنفذ إليه شيئاً قام ببعض ما يريده، وقد ذكر هذا الخبر تحت عنوان (ذكر مسير بهاء الدولة إلى واسط ما كان منه)، ضمن أحداث سنة (٣٨٨هـ/ ٩٩٨م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٩٦/٧).

١.٦. ذكر ابن الأثير أن أمر بدر بن حسنويه كان قد عظم ضمن أحداث سنة (٣٨٨هـ/ ٩٩٨م)، وعلا شأنه، ولُقِّبَ من ديوان الخليفة بلقب ناصر الدين والدولة، وقد ذكر ذلك عرضياً تحت عنوان (ذكر عدة حوادث) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٩٨/٧).

١.٧. من الموضوعات العرضية التي ذكرها ابن الأثير، أنه ذكر شخصاً إسمه أبو القاسم بن بختيار، كان قد لحق ببدر بن حسنويه وبعدها قصد البطيحة[4]، بعد أن إستولى أبي علي بن إسماعيل على شيراز، وجاء ذلك ضمن موضوع يحمل عنوان (ذكر مُلْك بهاء الدولة فارس وخوزستان)، في أحداث سنة (٣٨٩هـ/ ٩٩٩م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٦/٨-٧).

١.٨. ذكر ابن الأثير موضوع هروب الوزير أبو العباس الضبي، وزير مجد الدولة بن فخر الدولة بن بويه من الري إلى بدر بن حسنويه، فأكرمه بدر بن حسنويه، تحت عنوان (ذكر عدة حوادث)، وذلك ضمن أحداث سنة (٣٩٣هـ/ ١٠٠٣م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٢٦/٨).

١.٩. ذكر ابن الأثير موضوع إمداد بدر بن حسنويه لأبو جعفر الحجاج بجيش كبير، الذي كان جمع جيشاً كبيراً، فسار به أبو جعفر لحصار بغداد، وذلك ضمن موضوع (ذكر حصر أبي جعفر الحجاج بغداد)، وذلك في أحداث سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٨/٨).

١.١٠. ذكر أنه عندما إستولى أبو العباس على الأهواز، أنه أتاه مدد من بدر بن حسنويه ثلاثة آلاف فارس فقوي بهم، تحت ضمن أحداث سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م)عنوان (ذكر قتل أبي العباس بن واصل) صاحب البصرة، ضمن أحداث سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٠/٨).

١.١١. ذكر ابن الأثير حدثاً مهماً كان لبدر بن حسنويه دوراً محورياً فيه، ألا وهو مساعدة بدر بن حسنويه لوالدة مجد الدولة بالقبض عليه، وسجنه بالقلعة، وتنصيب أخاه شمس الدولة في المُلك، وصار الأمر إليها، وعاد بدر إلى بلده وبقي شمس الدولة في الحكم نحو سنة، وذلك ضمن موضوع يحمل عنوان (ذكر القبض على مجد الدولة وعوده إلى ملكه)، وذلك ضمن أحداث سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م) أيضاً (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٦/٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١.١٢. من المواضيع التي ذكرها ابن الأثير والتي لها علاقة ببدر بن حسنويه، أن وزير مجد الدولة أبو العباس أحمد بن إبراهيم الضبي، قد قصد بروجرد[5] وهي من أعمال بدر بن حسنويه، وكان سبب مجيئه إليها، أن أم مجد الدولة بن بويه إتهمته أنه سمَّ أخاه فمات، فلما مات أخاه طلبت منه (٢٠٠) دينار، لتنفقها في مأتمه، فلم يعطها، فأخرجته، لذا فقد قصد بروجرد، وذلك ضمن موضوع يحمل عنوان (ذكر عدة حوادث)، ضمن أحداث سنة (٣٩٨هـ/ ١٠٠٨م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٤٩-٥١).

١.١٣. أشار ابن الأثير إلى لجوء أحد الشخصيات المهمة وهو أبو الهيجاء محمد بن عمران بن شاهين، كان بعد موت أبيه قد تمزَّق في البلاد، تارةً كان بمصر وتارةً كان عند بدر بن حسنويه، وتارةً بينهما، وذلك تحت عنوان (ذكر وفاة صدقة صاحب البطيحة)، ضمن أحداث سنة (٤١٢هـ/ ١٠٢٢م)، لكن يظهر أن حادثة لجوء أبو الهيجاء إلى بدر بن حسنويه كانت قبل هذه السنة، مع ذلك فقد أوردها ابن الأثير ضمن أحداث هذه السنة من دون بيان تاريخ ذلك اللجوء (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/١٣٤).

١.١٤. الحدث الأخير الذي ورد ذكره في كتاب الكامل في التاريخ لابن الأثير، بعد إنقطاع لذكر أخبار الإمارة الحسنوية، فإنه ذكر خبراً بأنه بعد أن توفي صاحب قلعة سرماج، وهو من ولد بدر بن حسنويه، فإن القلعة سُلمت بعده إلى إبراهيم بن ينال، وسير ابراهيم بن ينال بعدها وزيره إلى شهرزور فأخذها، وقد أورد هذا الخبر وهو الأخير عن الحسنويين، ضمن أحداث سنة (٤٣٩هـ/ ١٠٤٩م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٢٧٧).

يتبين مما سبق أن ابن الأثير قد ذكر أخبار الحسنويين بطريقتين مختلفتين، مرةً خصَّص لهم عنواناً رئيسياً، وقد جاء ذلك (١٠) مرات، ومرةً أخرى جاءت أخباره عن الحسنويين، بصورة عرضية تحت عناوين مختلفة وجاء ذلك (١٤) مرة، فيما يتعلق بالعناوين الرئيسة فقد جاء إثنان منهما خاصاً بـ(حسنويه بن حسين الكردي) مؤسس الإمارة الحسنوية، في حين جاءت (٦) عناوين ببدر بن حسنويه الكردي، وعنوان واحد لهلال بن بدر ورد ذكره إلى جانب ذكر والده بدر بن حسنوية، وعنوانان عن طاهر بن هلال بن بدر بن حسنويه الكردي.

ويظهر من هذه الإحصائية أن ثلثا العناوين االرئيسة التي جاءت في كتاب الكامل في التاريخ عن الحسنويين، فقد خُصِّصت لبدر بن حسنويه، في حين أفرد ابن الأثير عنوانين خاصين لـ(حسنويه بن حسين الكردي)، الذي يُعد مؤسس الإمارة الحسنوية، وهو والد بدر بن حسنويه، وكذلك بالنسبة لـ(طاهر بن هلال بن بدر)، بينما ورد ذكر (هلال بن بدر) ضمن عنوان واحد فقط.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هذا ومما يجدر الإشارة إليه أن تواريخ هذه الأحداث، قد إنحصرت بصورة رئيسة بين سنتي (٣٥٩-٤٠٥هـ/ ٩٧٠م-١٠١٥م)، وهو تاريخ نهاية الإمارة الحسنوية وذلك بعد مقتل (بدر بن حسنويه)، مع ذكر خبرين آخرين، أحدهما: ضمن أحداث سنة (٤١٢هـ/ ١٠٢٢م)، وهي ذكره لحادثة لجوء أبو الهيجاء إلى بدر بن حسنويه والتي كانت قبل هذه السنة، ومما شك فيه أنها كانت في حُقبة ما قبل مقتل بدر بن حسنويه أي أنها كانت في سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م) أو ما قبلها، مع ذلك فقد أوردها ابن الأثير ضمن أحداث هذه السنة من دون بيان تاريخ ذلك اللجوء (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/١٣٤). والحدث الآخر وهو الأخير من الأخبار عن الحسنويين، وهو منقطع نسبياً عن الأحداث المهمة، وبعيد زمنياً عن فترة حكم الأمراء الحسنويين، وهي ذكره لحدث إستيلاء إبراهيم ينال على أملاك الحسنويين، بعد وفاة صاحب ضمن أحداث قلعة سرماج، وكان ذلك الأمير من أفراد الأسرة الحسنوية كما ذكرا ابن الأثير ذلك، ولكن من دون ذكر لإسمه، وذلك ضمن أحداث سنة (٤٣٩هـ/ ١٠٤٨م) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٢٧٧).

فإذا تم إحتساب تاريخ الأحداث التي كان للحسنويين دورٌ فيها لا سيما أُمرائهم وكان أبرزهم بدر بن حسنويه، بين سنتي (٣٥٩-٤٠٥ هـ/ ٩٧٠-١٠١٥م)، فإن المدة الزمنية للأحداث التي إستغرقها ابن الأثير في ذكر أخبار الحسنويين قد إمتدت لـ(٤٦) سنة هجرية، وبالمقابل تمتد لمدة (٤٥) سنة ميلادية.

لقد ذكر ابن الأثير أخبار الحسنويين خلال أحداث (١٦) سنة متفرقة، جاء ذكره لخبر واحد خلال أحداث كل سنة، ما عدا سنة (٣٨٨هـ/ ٩٩٨م) فإنه ذكر خبرين عن الحسنويين، وسنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م) فقد ذكر (٥) أخبار عن الحسنويين، وأخيراً سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م)، فقد ذكر أخبار ثلاثة أمراء ضمن موضوع واحد عنونه باسم أميرين من أُمراء الحسنوية هما: بدر بن حسنويه وابنه هلال بن بدر، وقد ذكر إلى جانب هذين الأميرين ضمن ذلك العنوان أخبار أمير ثالث من الحسنويين وهو: الأمير طاهر بن هلال بن بدر، وكانت هذه السنة كارثية بالنسبة للأُمراء الحسنويين إذ قتل فيها الجد (بدر بن حسنويه)، والإبن (هلال بن بدر)، ووقع الحفيد (طاهر بن هلال) في الأسر ليقتل في سنة (٤٠٦هـ/ ١٠١٦م)، وكان ذلك إيذاناً بزوال حكم الإمارة الحسنوية في هذه السنة، لهذه الأحداث الجسام التي لحقت بأُمراء الأسرة الحسنوية.

في حقيقة الأمر فإن الأخبار المهمة بالحسنويين، التي ذكرها ابن الأثير عن الأمراء الحسنويين، هي التي تتعلق بالأمير (حسنويه بن حسين الكردي) والذي حكم عشر سنوات ما بين (٣٥٩-٣٦٩هـ/ ٩٧٠-٩٨٠م)، والأمير (بدر بن حسنويه) الذي حكم بين سنوات (٣٦٩هـ-٤٠٥هـ/ ٩٧٠-١٠١٥م)، فقد خصَّص له ابن الأثير معظم الأخبار التي ذكرها عن الحسنويين، وذلك لطول مدة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

حكمه التي إستمرت لـ(٣٦) سنة، وهي تمثل نحو (٨٥٪) من عُمر الإمارة الحسنوية، ومن خلال أخبار هذين الأميرين يمكن تكوين فكرة عن الإمارة الحسنوية.

أما الأميران الآخران للحسنويين وهما: هلال بن بدر، وابنه طاهر بن هلال، فقد جاء ذكرهما في خِضَمْ الأحداث التي شارك فيها بدر بن حسنويه لا سيما ابنه هلال، أما طاهر فأبرز خبر ذكره عنه ابن الأثير هو إستيلائه على منطقة شهرزور، سنة (٤٠٤هـ/ ١٠١٤م)، ومقتله بعدها بسنة واحدة على يد نسيبه أبو الشوك بعد أن خدعه (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/ ٩١).

أما عن العلاقات الخارجية للأُمراء الحسنويين، فقد كانت علاقاتهم بين مد وجزر مع الأمراء البويهيين، بدءً من علاقات حسنويه بن حسين الكردي مؤسس الإمارة الحسنوية بالأمير البويهي (ركن الدولة) أبو علي الحسن بن بويه (ت: ٣٦٥هـ/ ٩٧٦م)[6]، وبعده إبنه حكم ابنه (عضد الدولة البويهي) (ت: ٣٧٢هـ/ ٩٨٣م)[7]، وبعد وفاة حسنويه بن حسين الكردي يتولى الأمير بدر بن حسنويه الإمارة الحسنوية، يكون هو الآخر في علاقاته بين مد وجزر مع الأمراء البويهيين، الذين كانوا في حالة معاداة مع بعضهم البعض، لهذا كان على بدر بن حسنويه مراعاة تلك التوازنات فيما بين أُمراء الأُسرة البويهية، لتلافي معاداتهم لكن مع ذلك فإن علاقاته الجيدة مع طرف، كان يعد بمثابة معاداة من الطرف الآخر من الأُمراء البويهيين، ومن الأُمراء البويهيين الذين كانوا بعلاقة بالإمارة الحسنوية، هو (مؤيد الدولة أبو منصور بويه بن ركن الدولة)[8]، الذي كان خليفة أخيه عضد الدولة في حكم إقليم الجبال إلى وفاته سنة (٣٧٣هـ/ ٩٨٤م)، و(فخر الدولة علي بن ركن الدولة)[9]، الذي ملك الري ونواحيها، (وعز الدولة بختيار بن معز الدولة بن بويه)[10]، و(شرف الدولة بن عضد الدولة)[11]، و(مجد الدولة بن فخر الدولة بن ركن الدولة)[12].

**٤- مصادر أخبار ابن الأثير عن الإمارة الحسنوية:**

يُعد كتاب (تجارب الأُمم وتعاقب الهمم)، لابن مسكويه (ت: ٤٢١هـ/ ١٠٣٠م)، المصدر الأهم والمعاصر لعصر الإمارة الحسنوية، لذا فإن ابن الأثير قد إعتمد عليه في نقل معظم أخباره عن الحسنويين، وقد صرَّح بذلك بكل وضوح، إذ قال ابن الأثير بعد ذكره لموضوع وفاة حسنويه الكردي سنة (٣٦٩هـ/ ٩٨٠م)، وقصد عضد الدولة أخاه فخر الدولة وأخذ بلاده، فقال: "هذا آخر ما في تجارب الأُمم، تأليف أبي علي بن مسكويه" (ابن الأثير، ٧/ ٣٨٩).

وابن مسكويه كان أحد مؤرخي الدولة البويهية، إذ شارك بنفسه في إحدى الحملات التي وجهها ركن الدولة البويهي سنة (٣٥٩هـ/ ٩٧٠م)، لغرض القضاء على الإمارة الكردية، التي أسَّسها حسنويه بن حسين الكردي قبل عشر سنوات (مرعي، ٢٠٠٥، ١٤٠).

لقد بدأ ابن مسكويه بذكر الإمارة الحسنوية في كتابه (تجارب الأُمم) منذ هذه الحملة سنة (٣٥٩هـ/ ٩٧٠م)، في الوقت الذي تم فيه إغفال ذكر أخبار الإمارة الحسنوية قبل ذلك التاريخ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

من قبل ابن مسكويه، لذا فإن التسجيل الحقيقي لأخبار الإمارة الحسنوية، قد إبتدأ بهذه الحملة العسكرية للبويهيين على الإمارة الحسنوية في عهد مؤسس الإمارة حسنويه، لهذا فإن مصادره عن أخبار الإمارة الحسنوية في هذه الفترة كانت من مشاهداته المباشرة للأحداث ومعاينته الشخصية لها، فضلاً عن نقل الأخبار من أشخاص آخرين كانوا مشاركين في تلك الحملة، مثل الوزير أبي الفضل بن العميد قائد الحملة البويهية على الحسنويين (مرعي، ٢٠٠٥، ١٤٠).

لذا جاءت أخبار ابن الأثير عن هذه الفترة من عُمر الإمارة الحسنوية، لا سيما خلال عهد مؤسس الإمارة الحسنوية (حسنويه بن حسين الكردي)، متشابهةً تماماً مع ما ذكره ابن مسكويه، مع وجود تغيير بسيط في التعبير اللغوي (آميدي، ٢٠٠٦، ٢٤٠).

يعد الروذراوري (ت: ٤٨٨هـ/ ١٠٩٥م)، الذي ذيَّل على كتاب (تجارب الأُمم وتعاقب الهمم) لابن مسكويه، في كتاب سماه (ذيل كتاب تجارب الأُمم)، وهو الجزء الثالث المُكمل لكتاب (تجارب الأُمم) لابن مسكويه، الذي دوَّن فيه الأحداث التاريخية للسنوات (٣٦٩-٣٨٩هـ/ ٩٧٠-٩٩٩م)، ويليه في نفس الكتاب (ذيل كتاب تجارب الأُمم)، قطعة من تاريخ هلال الصابي الكاتب، الذي دوَّن الأحداث التاريخية إلى سنة (٣٩٣ هـ/ ١٠٠٣م)، وبطبيعة الحال لمَّا كانت ولادة الروذراوري سنة (٤٣٧ هـ/ ١٠٤٥م)، فإنه لم يكن من المعاصرين لأحداث الإمارة الحسنوية، كما كان الحال بالنسبة لابن مسكويه الذي كان معاصراً لها.

إن مما يؤخذ على الروذراوري أنه لم يُفصح عن مصدره في نقل الأخبار، هذا وقد إستهل الروذراوري كتابه بذكر الأخبار عن الإمارة الحسنوية، فجاء الخبر الأول الذي إستفتح به كتابه بعنوان (ذكر ما جرى عليه أمر عضد الدولة عند توجهه إلى الجبل) وهو يقصد بذلك توجهه نحو أراضي الإمارة الحسنوية، والخبر الثاني كان مباشراً بذكر موضوع قبض عضد الدولة على بعض أولاد حسنويه (الروذراوري، د/ت، ٩/٣). وقد نقل ابن الأثير أخبار الحسنويين عن الروذراوري إلى آخر أحداث سنة (٣٨٩هـ/ ٩٩٩م)، وقد قال ابن الأثير عن ذلك: "إلى ههنا آخر من في ذيل الوزير أبي شجاع رحمه الله" (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٧/٨).

أما أخبار الحسنويين بعد سنة (٣٨٩هـ/ ٩٩٩م)، فقد نقلها ابن الأثير عن هلال الصابي إلى أحداث سنة (٣٩٣هـ/ ١٠٠٣م).

**٥- المصادر التي وردت فيها أخبار الحسنويين:**

**أ.** يُعد كتاب (صلة تاريخ الطبري)، لعريب بن سعد القرطبي (ت: ٣٦٩هـ/ ٩٨٠م)، أقدم مصدر ورد فيه ذكر الحسنويين وإن كانت إشارة واحدة، فإن أهميته يعود إلى أنه من الناحية التاريخية كان معاصراً لفترة حُكم حسنويه بن حسين الكردي، لهذا فقد ورد في كتابه (صلة تاريخ الطبري) موضوع واحد عن الإمارة الحسنوية ضمن أحداث سنة (٣٦٦هـ/ ٩٧٧م)، إذ ذكر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

حدث إرسال حسنويه بن حسين الكردي، إبنيه عبد الرزاق وبدر مع ألف فارس لمساعدة بختيار بن معز الدولة في صراعه مع عضد الدولة بين واسط وبغداد، ولكنهما عندما رأيا ضعف بختيار في تدبير الأمور، فإنهما كاتبا أباهما حسنويه بن حسين، يعلمانه بذلك لهذا فقد تراجع عبد الرزاق بن حسنويه عند جَرْجَرَايا[13]، أما بدر فإنه بقي معه حياءً من مفارقته وتركه مبكراً، إلى أن خضع بختيار لعضد الدولة، وأعلن ولائه له، فإنصرف عنه بدر بن حسنويه آنذاك (القرطبي، ١٣٧٨ هـ، ١١/٤٥٦-٤٥٧)، فإن ابن الأثير لم يعتمد هذا المصدر ربما لأنه لم يكن بالإمكان الحصول عليه آنذاك، لأن هذا الكتاب تم تأليفه في بلاد الأندلس، كما يظهر من لقب المؤلف (القرطبي) أنه كان من أهل قرطبة في بلاد الأندلس.

ب. كتاب (تكملة تاريخ الطبري) لأبي الحسن الهمداني (ت: ٥٢١ هـ/ ١١٢٧م)، أورد معلومة واحدة عن الأمراء الحسنويين، فقد ذكر خبر ذهاب عبد الرزاق وبدر إبنا حسنويه في ألف فارس لنصرة بختيار بن معز الدولة، ضد عضد الدولة (أبو الحسن الهمداني، ١٩٥٨، ٢٣٥). وقد جاءت هذه المعلوم متشابهةً عمَّا ذكره عريب بن سعد القرطبي في كتابه (صلة تاريخ الطبري)، وهذا يدل على أن أبو الحسن الهمداني قد نقل هذه المعلومة منه.

ت. كتاب (التذكرة الحمدونية) لبهاء الدين البغدادي (ت: ٥٦٢ هـ/ ١١٦٧م)، وردت في هذا الكتاب مسألة قبض هلال على والده بدر بن حسنويه، فذكر أن هلال بن بدر عندما ألقى القبض على والده بدر بن حسنويه، قال الناس في ذلك ما شاؤا، فمن مُنكر لفعله مستفظع، ومن مُصوِّبٍ له عاذره، لذا طلب هلال عندها من أبو الحسن علي بن نصير الكاتب، إنشاء كتاب يُبيِّن فيه عذر هلال، ويُحسِّنْ أثره، فكتب له أبو الحسن كتاباً بذلك (بهاء الدين البغدادي، ١٤١٧هـ/ ٦/٣٦٨-٣٧٠).

ث. كتاب (المنتظم في تاريخ الملوك والأُمم) لابن الجوزي (ت: ٥٩٧ هـ/ ١٢٠١م)، ذكر ابن الجوزي عدة معلومات متفرقة عن الحسنويين، أولها تتعلق بوفاة حسنويه بن حسين الكُردي (ابن الجوزي، ١٣٥٨هـ، ٧/١٠١). والقتال الذي دار بين بدر بن حسنويه وجيش شرف الدولة البويهي، تلك المعركة التي إنتهت بانتصار بدر بن حسنويه، وإستيلائه على الجبل وأعماله (ابن الجوزي، ١٣٥٨هـ، ٧/١٣٦). وذكر ابن الجوزي ضمن أحداث سنة (٣٨٦هـ/ ٩٩٦م)، حجم الأموال التي أنفقها بدر بن حسنويه في تلك السنة لتُدفع إلى الأُصيفر والتي بلغت (٥٠٠٠) دينار، بدلاً عمَّا كانه يُجبيه من الحُجّاج في كل سنة (ابن الجوزي، ١٣٥٨ هـ، ٧/١٨٧). وذكر تولية بدر بن حسنويه من قبل عضد الدولة البويهي أمر الجبل بعد وفاة حسنويه والد بدر (ابن الجوزي، ١٣٥٨هـ، ٧/٢٧١).

أبرز ما ذكره ابن الجوزي عن بدر بن حسنويه، هو ذكره لمقدار نفقاته وصدقاته، إذ ذكر بأن جراياته وصدقاته كانت متصلة، على الفقهاء والأشراف والقُضاة والشهود والأيتام والضعفاء، وتفاصيل نفقات بدر بن حسنويه عند ابن الجوزي هي:

- أنه كان يصرف كل سنة (١٠٠٠) دينار الى عشرين رجلا يحجون عن والدته، وعن عضد الدولة لأنه كان السبب فى ملكه.
- وكان يصرف فى كل سنة (٣٠٠٠) دينار إلى الأساكفة والحذّائين بين همذان وبغداد ليقيموا للمنقطعين من الحاج الأحذية.
- وكان يصرف الى تكفين الموتى كل شهر (٢٠٠٠٠) درهم، ويُعمِّر القناطر.
- واستحدث فى أعماله (٣٠٠٠) مسجد وخان للغرباء.
- ولم يمر بدر بن حسنويه بماء جار إلا بنى عنده قرية.
- وكان ينفق كل سنة من الصدقات على أهل الحرمين وخفر الطريق ومصالحها (١٠٠٠٠٠) دينار.
- وكان ينفق على عمارة المصانع وتنقية الآبار، وجمع العلوفة فى الطريق.
- وكان يُعطي سكان المنازل رسوماً لقيامها، ويحمل الى الحرمين والكوفة وبغداد، ما يفرق على الاشراف والفقهاء والقُرّاء والفقراء وأهل البيوتات، فلما توفي إنقطع ذلك، وأثرأحوال أهله ووقف أمر الحج، وكان يكثر من الصلاة والتسبيح، ولا يقطع برّه عن أحد لذنب، فان مات أعاد ذلك على ولده.
- وكان يرتفع إلى خزانته فى كل سنة بعد المؤن والصدقات (٢٠٠٠٠) درهم لأنه كان يُعَمِّرُ الأماكن ويَعْدِلْ.
- وكان له من الدَّواب المرتبطة (١٧٠٠)، وفي الحشر (٢٠٠٠٠) رأس (ابن الجوزي، ١٣٥٨ هـ، ٧/٢٧١-٢٧٢).

وأخيراً أورد ابن الجوزي خبر مقتل بدر بن حسنويه على يد قوم سمّاهم بـ(العيارين)، ليلة (٢٧) رمضان من سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م) (ابن الجوزي، ١٣٥٨هـ، ٧/٢٧٦).

ج. كتاب (معجم الأدباء)، لياقوت الحموي (ت: ٦٢٦ هـ/ ١٢٢٩م)، ذكر ياقوت في هذا الكتاب عدة أخبار وردت فيها ذكر أمراء الحسنويين، لا سيما حسنويه الكردي، وابنه الأمير بدر بن حسنويه الكردي، منها أنه ذكر خبر لجوء أبو العباس المُلقَّب بالكافي الأوحد وزير فخر الدولة البويهي، الذي ذكر أنه مات سنة (٣٩٩هـ/ ١٠٠٩م)، ببروجرد من أعمال بدر بن حسنويه (ياقوت الحموي، ١٩٩٣، ١/١٧٥). وذكر سبب هروب أبو العباس الضبي إلى بروجرد، بعد أن إتهمته أم مجد الدولة، أنه سمَّ أخاه، فطلبت منه (٢٠٠) دينار لتنفقه في مأتمه، فلم يفعل وإلتجأ إلى بروجرد، وهي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

من أعمال بدر بن حسنويه الكردي ( ياقوت الحموي، ١٩٩٣، ١٧٦/١). وفي خبر آخر نقله ياقوت الحموي عن ابن مسكويه كما صرَّح هو نفسه بذلك، عن دخول حسنويه الكردي في صراع مع سهلان بن مسافر، وهزيمته أمام حسنويه، وذكر مسألة مسير الوزير ابن العميد إلى حسنويه، ووفاة ابن العميد، وتولي ابنه أبي الفتح قيادة جيش ركن الدولة البويهي مكانه، وتوصُلِهِ إلى عقد صلح مع حسنويه مقابل أموال دفعها له حسنويه، وقد بلغ حجم تلك الأموال (١٠٠٠٠٠) دينار ( ياقوت الحموي، ١٩٩٣، ١٩٠٢/٤-١٩٠٤).

ح. كتاب (معجم البلدان) لياقوت الحموي أيضاً، (ت: ٦٢٦هـ/ ١٢٢٩م)، لقد ذكر ياقوت في كتابه هذا اسم بدر بن حسنويه مرتين، وذلك في معرض تعريفه بقلعة (دزيز) ( ياقوت، ١٩٩٥، ٤٠٤/٣). وقلعة (سرماج) (ياقوت، ١٩٩٥، ٢٠٥/٣).

خ. كتاب (المختصر في أخبار البشر) لأبي الفداء (ت: ٧٣٢هـ/ ١٣٣٢م)، ورد في هذا الكتاب خبر واحد عن الحسنويين، وهو عن إستيلاء عضد الدولة على بلاد حسنويه الكُردي، ضمن أحداث سنة (٣٦٩هـ/ ٩٨٠م) (أبو الفداء، د/ت، ١٢١/٢).

د. كتاب (نهاية الأرب في فنون الأدب) للنويري (ت: ٧٣٣ هـ/ ١٣٣٣م)، ذكر النويري خبرين عن الحسنويين، أحدهما: عن حسنويه بن حسين الكُردي، وذلك حول موضوع إستيلاء عضد الدولة على ولاية حسنويه، مثل: نهاوند، والدينور، وعدة قلاع، وأخذه ما كان فيها من ذخائر حسنويه، وكانت جليلة القدر بحسب تعبيره (النويري، ١٤٢٣هـ، ٢١٩/٢٦-٢٢٠). أما الخبر الثاني فيتعلق ببدر بن حسنويه، وذلك عن لجوء أبو القاسم بن بختيار إليه، ومن ثم توجهه عبر أراضي الحسنويين إلى البطيحة (النويري، ١٤٢٣هـ/ ٢٤١/٢٦).

ذ. كتاب ( تاريخ الإسلام) للذهبي (ت: ٧٤٨هـ/ ١٣٤٨م)، ذكر الذهبي أربع أخبار عن الحسنويين، بصورة مختصرة جداً، لا تتجاوز بعضها سطراً واحداً، وهي:

- ذكره للمعركة التي دارت بين جيش شرف الدولة وبدر بن حسنويه، والتي إنتهت بانتصار بدر بن حسنويه، وإستيلائه على بلاد الجبل (الذهبي، ١٩٩٣، ٤٨٢/٢٦).
- خبر إنفاق بدر بن حسنويه (٩٠٠٠) دينار على الحجاج، لتدفع إلى الأُصيفر، بدلاً عمّا كان يأخذه من الحجاج العراقيين (الذهبي، ١٩٩٣، ١٩/٢٧).
- الخبر الثالث ذكره ما عهد به الخليفة العباسي القادر بالله لبدر بن حسنويه وتوليه على الجبل (الذهبي، ١٩٩٣، ٢٣/٢٧). لكن دون الإشارة إلى اللقب الذي منحه الخليفة القادر لبدر بن حسنويه، وهو لقب (ناصر الدين والدولة)، وهي مسألة مشهورة ومتفق عليها، لكن مع ذلك أغفلها الذهبي.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- ذكر حادثة محاولة أبو العباس بن واصل صاحب البصرة اللجوء إلى بدر بن حسنويه في بلاد الجبل، هرباً من فخر المُلك، لكنه قُتل في واسط سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م)، لذا لم يتمكن من الوصول إلى بدر بن حسنويه للإحتماء به (الذهبي، ١٩٩٣، ٢٧/ ٣٤٨).

ر. كتاب (البداية والنهاية) لابن كثير (ت: ٧٧٤هـ/ ١٣٧٣م)، ذكر (٥) أخبار عن الحسنويين، وهي:

- ذكره لوفاة حسنويه سنة (٣٦٩هـ/ ٩٨٠م)، فذكر أنه كان قد إستولى على نواحي البلاد الدينور وهمدان ونهاوند مدة (٥٠) سنة (ابن كثير، ١٩٨٨، ١١/ ٣٣٤).

- ذكره لخبر توجه عضد الدولة بجيشه إلى بلاد حسنويه، وإستيلائه عليها، وأخذه محاصيله وذخائره، وكانت كثيرة جداً، وحبس بعض أولاده وأسر بعضهم (ابن كثير، ١٩٨٨، ١١/ ٣٣٦).

- ذكر ابن كثير ضمن أحداث سنة (٣٨٨هـ/ ٩٩٨م)، خبر حصول بدر بن حسنويه على لقب (ناصر الدين والدولة) من الخليفة العباسي القادر بالله[14]، ومما ذكره ابن كثير عن بدر ين حسنويه أنه كان كثير الصدقات (ابن كثير، ١٩٨٨، ١١/ ٣٧١).

- ذكره لخبر هروب أبو العباس الضبي وزير مجد الدولة بن فخر الدولة، من الرَّي إلى بدر بن حسنويه فأكرمه في سنة (٣٩٣هـ/ ١٠٠٣م) (ابن كثير، ١٩٨٨، ١١/ ٣٨١).

- ذكر ابن كثير معلومات كثيرة عن شخص بدر بن حسنويه، وسياسته، وصدقه، وأن الخليفة العباسي القادر بالله قد كنّاه بأبي النجم، ومنحه لقب (ناصرالدولة)، وعقد له لواءً، وكانت معاملته وبلاده في غاية الأمن والطِيبة، ومن ثم ذكر حجم ما كان ينفقه بدر بن حسنويه من الأموال:

- كان بدر بن حسنويه يُصرف كل جمعة (٢٠٠٠٠) درهم على الفقراء والأرامل.
- وينفق كل شهر (٢٠٠٠٠) درهم في تكفين الموتى.
- ويصرف كل سنة (١٠٠٠) دينار إلى عشرين شخصاً يحجُّون عن والدته، وعن عضد الدولة، لأنه كان السبب في تمليكه.
- و(٣٠٠٠) دينار في كل سنة يُخَصّصُها للحدادين والحذَّائين، لأجل المنقطعين بين همذان وبغداد، يصلحون الأحذية ونعال دوابهم.
- كان بدر بن حسنويه يُنفق كل سنة (١٠٠٠٠٠) دينار إلى الحرمين، صدقةً على المجاورين، وعمارة المصانع، وإصلاح المياه في طريق الحجاز، وحفر الآبار.
- وذكر ابن كثير أن بدر بن حسنويه ما اجتاز في طريقه وأسفاره بماء إلا بنى عنده قرية، وعُمر في أيامه من المساجد والخانات ما يذيف على (٢٠٠٠) مسجد وخان، هذا كله خارجاً عمّا يُصرف في ديوانه من الجرايات والنفقات والصدقات، والبر والصلاة، وعلى أصناف الناس من الفقهاء والقُضاة والمؤذنين والأشراف، والشهود والفقراء والمساكين والأيتام والآرمل.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرى زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

• كان بدر بن حسنويه على ما ذكر ابن كثير، كثير الصلاة والذِّكر، وكان له من الدَّواب المربوطة في سبيل الله، وفي الحشر ما ينيف على (٢٠٠٠٠) دابة.

• ومما ذكره ابن كثير عن بدر بن حسنويه، هو عن وفاته فذكر أنه توفي سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م)، عن (ذيف وثمانين) سنة، ودُفن في مشهد علي، وذكر أنه ترك من الأموال (١٤٠٠٠) بدرة و(نيفاً وأربعين) بدرة، البدرة عشرة آلاف، ثم ختم ابن كثير كلامه عن بدر بن حسنويه بقوله: "رحمه الله" (ابن كثير، ١٩٨٨، ٤٠٧/١١). إن مما يلفت النظر أن معلومات ابن كثير هذه تشبه كثيراً ما ذكره ابن الجوزي، وهذا ربما يعني أنه أخذ هذه المعلومات من ابن الجوزي، بإعتبار أن ابن الجوزي كان قد توفي قبل ابن كثير بـ(١٧٧) سنة.

ز. كتاب (العبر وديوان المبتدأ والخبر في أيام العرب والعجم والبربر ومن عاصرهم من ذوي السلطان الأكبر) لابن خلدون (ت: ٨٠٨ هـ/ ١٤٠٦م)، الأخبار التي أوردها ابن خلدون عن الحسنويين هي في الغالب التي نقلها عن ابن الأثير، الذي كان مصدره الأهم في النقل عنه.

إن ما يميز ابن خلدون عن باقي المصادر، أنه يُعد المصدر الوحيد الذي ذكر الحسنويين باسم الـ(دولة)، وقد إستخدم ابن خلدون هذا المصطلح مرتين:

- المرة الأولى: قوله: "وفي سنة ثمان وثمانين إبتدأت دولة بني حسنويه الأكراد بخراسان" (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٥٤٦/٣).

- المرة الثانية: لإستخدامه مصطلح الدولة في وصف الحسنويين، أنه خصَّص لذلك عنواناً رئيسياً في كتابه (العِبَرْ)، وهو قوله: "الخبر عن دولة بني حسنويه من الأكراد القائمين بالدعوة العباسية بالدينور والصامغان، مبدأ أمورهم وتصاريف أحوالهم" (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٦٤٨/٤).

تُعد الأخبار والروايات التي ذكرها عن الحسنويين هي الأهم، من حيث كثرتها، إلى جانب ثلاثة مصادر أخرى هي:

• كتاب (تجارب الأُمم وتعاقب الهمم) لابن مسكويه (ت: ٤٢١هـ/ ١٠٣٠م).
• كتاب (ذيل تجارب الأُمم) للروذراوري (ت: ٤٨٨هـ/ ١٠٩٥م).
• كتاب (الكامل في التاريخ) لابن الأثير (ت: ٦٣٠هـ/ ١٢٣٣م)، وهو موضوع هذه الدراسة.

لكن إن مما يؤخذ على ابن خلدون، وقوعه كثيراً في الخطأ، عند ذكر أسماء (المدن)، و(الأشخاص)، و(القبائل) وغيرها من المسميات.

س. كتاب (شذرات الذهب في أخبار من ذهب) لابن العماد الحنبلي (ت: ١٠٨٩هـ/ ١٦٧٨م)، ذكر ابن العماد الحنبلي روايتين عن بدر بن حسنويه، وهما:


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

• ذكره لحدث محاولة الأمير أبو العباس أحمد بن واصل اللجوء إلى بدر بن حسنويه في بلاده، إلا أنه قُتل بواسط قبل أن يتمكن من الوصول إلى وجهته، وذلك ضمن أحداث سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م) (ابن العماد الحنبلي، ١٩٨٦، ٤/ ٥١٠).

• ذكر ابن العماد الحنبلي مسألة حصول بدر بن حسنويه على لقب (ناصر الدولة)، ومن ثم ذكر مقدار ما كان ينفقه بدر بن حسنويه في أمور شتى، ومما ذكره أن بدر بن حسنويه إستحدث في أعماله (٣٠٠٠) مسجد وخان للغرباء ضمن أحداث سنة (٤٠٥ هـ/ ١٠١٥م)، أثناء حديثه عن موضوع وفاة بدر بن حسنويه (ابن العماد الحنبلي، ١٩٨٦، ٥/ ٢٩).

ش. يُعد كتاب (شرفنامة) في تاريخ الإمارات الكردية، لشرفخان البدليسي (ت: ١٠١١هـ/ ١٦٠٣م)، واحداً من المصادر الكردية عن الحسنويين، ولكن ما كتبه عن الحسنويين، كان من خلال ذكر أسماء خمسة من أُمرائهُم، بما لا يتجاوز صفحتين، إفتتح الفصل الثاني من كتابه بعنوان (في ذكر حُكام الدينور وشهرزور الذين إشتهروا باسم حسنويه) (البدليسي، ٢٠٠٦، ١/ ٦٦)، يظهر من إستخدام شرفخان لكلمة (ذكر) تأثره بأسلوب المصادر القديمة في الكتابة، مثل ابن مسكويه، وابن الأثير، وابن كثير، وابن خلدون وغيرهم، هذا وقد بدأ شرفخان بحسنويه بن حسين، ومن ثم ابنه بدر بن حسنويه، وهلال بن بدر، وطاهر بن هلال، وبدر بن طاهر بن هلال، وذكر بدر بن طاهر بن هلال بسطر ونصف، وتفاصيل ذلك فيما يأتي:

• حسنويه بن حسين: ذكر شرفخان البدليسي، بأنه لا يخفى على متتبعي أحوال العالم، ودارسي تواريخ الأكابروالأصاغر من الأمم، أن حسنويه بن حسين، بإتفاق المؤرخين، كان معاصراً لركن الدولة بن حسن بن بويه الديلمي، وقد إرتفع شأنه، وطار صيته في الآفاق في عهده، ومع ذلك فقد عصى ركن الدولة؛ إذ وقع بينهما خلاف شديد، أفضى أخيراً إلى امتشاق الحسام بينهما، وهو يقصد بالحسام هنا أي إستخدام السيف، إذ جرَّد ركن الدولة حملة عسكرية كبيرة بقيادة وزيره ابن العميد على حسنويه خلال سنة (٣٥٩هـ/ ٩٧٠م)، فتمكن حسنويه من إرجاع هذه الحملة من حيث أتت، من غير إراقة قطرة من الدماء، بفضل دهائه وحسن سياسته، إذ كان من الأثرياء العظام لا تعد أمواله ولاتحصى، فكان يتصدق كل سنة بمبلغ كبير من المال في سبيل الله، وفي وجوه الخير الكثيرة، وقد توفي يوم السبت الموافق لـ(٣) من شهر ربيع الأول، سنة (٣٦٩هـ/ ٩٨٠م) (البدليسي، ٢٠٠٦، ١/ ٦٧).

هذا كُلُّ ما كتبه شرفخان البدليسي عن شخص حسنويه، الذي يُعد مؤسس الإمارة الحسنويه، والتي سُميَّت بهذا الإسم نسبةً إلى إسمه.

• بدر بن حسنويه: ذكر شرفخان عنه، أنه تولّى الحُكم بعد وفاة والده، فَعَظُمَ شأنه وعلا قدره سنة (٣٨٨هـ/ ٩٩٨م)، حتى إن بغداد أنعمت عليه بلقب ناصر الدولة، وكانت حدود دولته تمتد من



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

الدينور حتى الأهواز، وخوزستان وبروجرد، التي ذكرها شرفخان البدليسي بصيغة (مروجرد)، وأسد آباذ ونهاوند، وتناول جميع هذه البلاد وما بينها من الجبال والصحارى والسهول، وأخيراً في سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م)، زحف على قلعة كوسجد، فحاصر بها حسين بن منصور فطالبه جيشه بفك الحصار عند إشتداد الشتاء وطول أيام الحصار، فلم يبال بهم، وشدَّد الحصار، وبينما الأمر كذلك إذ بطائفة من الجوزقان تزحف على المحاصرين، فاضطروا إلى رفع الحصار والهروب (البدليسي، ٢٠٠٦، ١/ ٦٧). لقد إستخدم شرفخان مصطلح الدولة للإشارة إلى حُكم بدر بن حسنويه، وهو المصدر الثاني بعد ابن خلدون، إستعمل كلمة (الدولة)، في الإشارة إلى أُمراء الحسنويين، لا سيما حين ذكره لبدر بن حسنويه.

- هلال بن بدر: ذكر شرفخان البدليسي أنه لم يكن بينه وبين أبيه وِدٌّ وصفاء، فقد نشب بينهما خلاف سنة (٤٠٥ هـ/ ١٠١٥م)، فأفضى ذلك إلى القتال والحروب، وأخيراً قبض على هلال في الحرب التي دارت رحاها مع فخر المُلك الوزير ببغداد، وزجَّ به في أعماق السجون (البدليسي، ٢٠٠٦، ١/ ٦٧). ولمَّا كان جلال الدولة بن بهاء الدولة بن عضد الدولة بن ركن الدولة حاكم بغداد، ترامى إليه أن شمس الدولة بن فخر الدولة بن ركن الدولة حسن بن بويه صاحب همذان، يطمع في الإستيلاء على بلاد بدر، فبادر إلى إطلاق سراح هلال وعيَّنه قائداً لحملة عسكرية قوية تعضيداً ومعاونةً له؛ لاسترداد مُلكه الموروث، فوقعت حروب شديدة ومعارك طاحنة بينه وبين شمس الدولة في ذي الحجة سنة (٤٠٥ هـ/ ١٠١٥م)، فَقُتل هلال في ساحة الوغى وإنتهى أمره (البدليسي، ٢٠٠٦، ١/ ٦٧).
- طاهر بن هلال: مما ذكره عنه أنه كان قد لجأ إلى شهرزور حينما كان والده مُعتقلاً بها، وذلك خشية أن يبطش به جده، وبعد فترة من الزمن جاء مُجتاحاً بلاد جده، فوقع في يدي شمس الدولة، وزجَّ به في السجن، ولبث فيه إلى سنة (٤٠٦ هـ/ ١٠١٦م)، وأطلق سراحه، وقُتل في العام نفسه في المعركة التي جرت بينه وبين أبي الشوك (البدليسي، ٢٠٠٦، ١/ ٦٨)، لكن المصادر لم تذكر أن طاهر بن هلال قُتل في المعركة مع أبي الشوك، فالذي ذكرته أنه قُتل أي طاهر بن هلال على يد أبي الشوك غيلةً بعد أن أمّنهُ وزوَّجه بأُختِهِ (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٩١/٨).
- بدر بن طاهر بن هلال: تولّى الحُكم مُستقلاً في الدينور، وقرميسين على سبيل الإستقلال بعهد من إبراهيم ينال سنة (٤٨٨هـ/ ١٠٩٥م) (البدليسي، ٢٠٠٦، ١/ ٦٧).

## ٦. أخبار الإمارة الحسنوية من خلال كتاب (الكامل في التاريخ) لابن الأثير

لقد تأسست الأمارة الحسنوية بصورة فعلية منذ سنة (٣٥٠هـ/ ٩٦٢م) بحسب أرجح الآراء (مرعي، ٢٠٠٥، ١٣٦) ، على يد حسنويه بن حسين الكُردي لذا سُميت بالإمارة الحسنوية نسبةً إلى حسنويه هذا الذي يُعد المؤسس الفعلي للإمارة، في الوقت الذي ذهب فيه المؤرخ الكردي الشهير



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

محمد أمين زكي إلى رأي آخر، ألا وهو أن تاريخ تأسيس الإمارة الحسنوية يرجع إلى سنة (٣٣٠هـ/ ٩٤٢م)، عاداً بذلك الأمير حسين زعيم العشيرة البرزيكانية، واضع أساس هذه الإمارة (زكي، ٢٠١٧، ٢١١)، هذا وقد ذكر زكي هذا الرأي من غير إيراده لدليل على ذلك، لهذا لا يمكن إعتماده، فضلاً عن أن المصادر المتقدمة لا تذكر ذلك مثل ابن الأثير الذي يُعد كتابه شاملاً لذكر أخبار الإمارة الحسنوية.

أن مما يلفت النظر هو إختلاف الدراسات الحديثة حول تسمية الإمارة، إذ ذكروها بصيغ مختلفة، فمحمد أمين زكي ذكرها بصيغة (الحسنويئية) (زكي، ٢٠١٧، ٢١١)، وذكرها فرست مرعي بصيغة (الحسنوية) (مرعي، ٢٠٠٥، ١٣٣)، بينما ذكرها كرفان آميدي بصيغة (الحسنويهية) (آميدي، ٢٠٠٦، ٢٣٩)، وذكرها المستشرق أرشاك بولاديان بصيغة (الحسنويهيين) (بولاديان، ٢٠١٣، ١١٤)، وذكرها لازاريف بصيغة (الحسنويهية، ٢٠١١، ٥٢)، وسبب ذلك أن المصادر القديمة لم تذكر لفظة حسنويه مقترنةً بـ(الـ) التعريف، لهذا هذه التسميات هي نتيجة لإجتهادات كل طرف، وربما الصيغة الأصح ان كلمة حسنويه إذا جاءت مجردة من (الـ) التعريف، يلفظ الحرف الأخير (هاءً) من دون وضع نقطتين عليه، أما إذا أُدخل على كلمة (حسنويه)، (الـ) التعريف، فتوضع على حرف الـ(هاء) نقطتان، لذا عند إقتران كلمة (الحسنوية) بكلمة (الإمارة)، بهذه الصيغة (الإمارة الحسنوية)، عندها يُلفظ الحرف الأخير (هاءً)، وإن كان عليها نقطتان، أما إذا وضعت كلمتا (الإمارة الحسنوية) في جملة وأُستُكملت قراءة الكلمتان في الجملة عندها تلفظ (تاءً)، بحسب قواعد اللغة العربية.

لقد بدأ ابن الأثير بذكر أخبار الحسنويين من عام (٣٥٩هـ/ ٩٧٠م)، في حين أغفل ذكر أخبار حسنويه مؤسس الإمارة قبلها بعشر سنوات أي منذ عام (٣٥٠هـ/ ٩٦٢م)، وذلك ربما بسبب عدم توفر المعلومات عن تلك الفترة، وسيراً على ما سار إليه من سبقه وممن نقل عنهم ابن الأثير مثل ابن مسكويه، في (تجارب الأُمم)، ولم يُشر ابن الأثير إلى الحسنويين بإسم الإمارة أو الدولة، وإنما أشار إليهم بصيغ أخرى مثل (بلد حسنويه) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣١٩/٧)، و(أصحاب الأطراف كحسنويه) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٦٥/٧)، و(قلاع حسنويه) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٨٩/٧)، (وأعمال بدر بن حسنويه) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٥١/٨)، لهذا فقد ذهب بعض الباحثين المعاصرين إلى وصف حُكم الحسنويين بالحكم الذاتي (بولاديان، ٢٠١٣، ١١٨)، وفيما يأتي تفاصيل أخبار ابن الأثير عن الحسنويين.

❖ أول خبر ذكره ابن الأثير عن الحسنويين، أنه ذكر قيام ركن الدولة البويهي بتوجيه حملة عسكرية كبيرة، بقيادة وزيره ابن العميد ومعه إبنه أبو الفتح ابن الوزير ابن العميد، نحو بلاد الحسنويين بهدف قتالهم، وذلك في شهر محرم من سنة (٣٥٩هـ/ ٩٧٠م)، رغم أن حسنويه كان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

قد قوي أمره، واشتدت شوكته قبل ذلك، فكان يفرض الجباية على القوافل التجارية، إلا أن ركن الدولة لم يُحرك ساكناً ضد حسنويه، لسببين:

١. لإنشغال ركن الدولة البويهي "بما هو أهم منه" بحسب ما ذكر ابن الأثير (٢٠٠٦، ٣١٩/٧)، وذلك لإنشغاله بمد سيطرته على مزيد من أراضي الدولة العباسية، وهو ما كان سبباً كافياً ليكون له أعداء، لذا كان ركن الدولة مشغولاً بتلك الصراعات (مرعي، ٢٠٠٥، ١٤٢).

٢. السبب الآخر أن الحسنويين كانوا يقفون إلى جانب الديلم، في حالة حدوث صراع مع الخراسانيين، وهو أمرٌ كان في صالح ركن الدولة البويهي.

لكن بسبب الحرب التي حدثت بين الديلم بقيادة سهلان بن مسافر، والحسنويين الكُرد ونتيجة لهزيمة الديلم أمام حسنويه هزيمة مُذلة ومنكرة، مما أغاض ركن الدولة الذي كان هو الآخر من الديلم، لذا جهَّز حملة عسكرية كبيرة، ووضعها تحت قيادة وزيره ابن العميد، بهدف أخذ ثأر الديلم من الكُرد الحسنويين، بتوجيه ضربة قاصمة لهم، لكن بسبب الظروف التي رافقت الحملة، من وفاة ابن العميد الذي كان يعاني قبل ذلك من المرض، وتولي إبنه أبو الفتح الذي لم يكن على قدر المسؤولية، فإنها إنتهت بالصلح مع حسنويه الكُردي، مقابل أموال طائلة دفعها حسنويه لأبي الفتح[15]، ورجع بعدها أبو الفتح إلى الري (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣١٩/٧)، ربما كان سبب إسراع أبو الفتح بحل المشكلة مع الحسنويين وإن كان صُلحاً، ليُسرع بالرجوع إلى الري، لكي يتولى الوزارة مكان أبيه، قبل أن تُسند إلى شخصٍ آخر.

❖ ليعود ابن الأثير بعد مرور (٧) سنوات من الحدث الأول الذي ذكره عن الحسنويين، فيذكر أخباراً عن دخول حسنويه في تحالف مع بختيار بن معز الدولة البويهي، وابن بقية، وفخر الدولة، وأبي تغلب بن حمدان، وعمران بن شاهين وغيرهم ضد عضد الدولة، وكانوا يظهرون لعضد الدولة (الشتم القبيح)، حيث توجه بختيار إلى واسط لمحاربة عضد الدولة، وذكر ابن الأثير أن حسنويه كان وعده أنه يحضره بنفسه لنصرته، وكذلك أبو تغلب بن حمدان فلم يفِ أيٌّ منهما بوعده بحسب ما ذكره ابن الأثير (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٦٥/٧)، ليرجع ابن الأثير فيذكر أن بختيار عندما كان مُقيماً بواسط أتاه عبد الرزاق وبدر إبنا حسنويه، في نحو ألف فارس معونةً له، فلما وصلا إليه أظهر بختيار المقام بواسط، ومحاربة عضد الدولة من هناك، فاتصل بعضد الدولة أنه نقض الشرط، ثم توجه بختيار إلى بغداد، عندها رجع إبنا حسنويه عنه إلى أبيهما (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٦٦/٧).

❖ في الخبر الثالث لابن الأثير عن الحسنويين، فإنه خصَّص عنواناً رئيسياً، عن وفاة حسنويه الكُردي، سنة (٣٦٩هـ/ ٩٨٠م)، ذكر فيه وفاة حسنويه بن الحسين الكُردي البرزيكاني بقلعة سرماج، ومن ثم ذكر كيفية توسيعه لحدود إمارته، بأنه كان أميراً على جيش من البرزيكان


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

يسمونه البرزينية، وكان خالاه ونداد وغانم إبنا أحمد أميرين على صنف آخر منهم يسمون العيشانية، وكان قد غلبا على أطراف نواحي مدن (الدينور)[16] و(همذان)[17] و(نهاوند)[18] و(الصامغان)[19] و(بعض أطراف أذربيجان إلى حد شهرزور) نحو خمسين سنة، وكان يقود كل واحد منهما عدة ألوف، فلما توفي غانم سنة (٣٥٠هـ/ ٩٦٢م) تولَّى إبنه أبو سالم ديسم بن غانم مكانه بقلعته (قسنان)[20] إلى أن أزاله أبو الفتح بن العميد واستصفى قلاعه المسماة (قسنان) و(غانم أباذ)[21] وغيرهما، وتوفي ونداد بن أحمد سنة (٣٤٩هـ/ ٩٦١م)، فقام مقامه إبنه أبو الغانم عبد الوهاب إلى أن أسره الشاذنجان وسلَّموه إلى حسنويه فأخذ قلاعه وأملاكه (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٨٨/٧).

ومن ثم أشاد ابن الأثير بشخص حسنويه الكُردي بأنه كان مجدوداً، حسن السياسة والسيرة، ضابطاً لأمره، ومنع أصحابه من التلصُّص، وبنى قلعة (سرماج)[22] بالصخور المهندمة، وبنى بالدينور جامعاً على هذا البناء، وكان كثير الصدقة بالحرمين إلى أن مات في هذه السنة (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٨٨/٧).

وذكر بعدها مصير أبناء حسنويه الكُردي السبعة، وإفتراق أمرهم ومعاداتهم لبعضهم بعد وفاة أبيهم حسنويه، فبعضهم إنحاز إلى فخر الدولة، وبعضهم إلى عضد الدولة، وهم: أبو العلاء، وعبد الرزاق، وأبو النجم بدر، وعاصم، وأبو عدنان، وبختيار، وعبد الملك (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٨٨/٧).

وأخيراً ذكر أخبار إثنين من أبناء حسنويه الكُردي، وهما بختيار وبدر إبنا حسنويه بعد وفاة أبيهما، كان بختيار بقلعة سرماج ومعه الأموال والذخائر، فكاتب عضد الدولة ورغب في طاعته، ثم تلوَّن عنه وتغيَّر، لذا أرسل عضد الدولة إليه جيشاً فحاصره وأخذ قلعته وكذلك قلاع غيره من إخوته، وإصطنع من بينهم أبا النجم بدر بن حسنويه، واتخذه حليفاً وقوَّاه بالرجال، فضبط بدر بن حسنويه تلك النواحي، وكفَّ عادية من بها من الأكراد بحسب تعبير ابن الأثير، وإستقام أمره وكان عاقلاً (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٨٨/٧).

كان حسنويه بحنكته السياسية قد تمكن من الوقوف بوجه ركن الدولة، وعضد الدولة ابن ركن الدولة، ولكن بعد وفاته، كما ذهب ابن كثير إلى أنه لما توفي حسنويه، اختلف أولاده، من بعده وتمزَّق شملهم، وتمكن عضد الدولة من أكثر بلادهم، وقويت شوكته في ذلك الأرض (ابن كثير، ١٩٨٨، ٣٣٥/١١).

❖ الحدث الرابع الذي ذكره ابن الأثير عن الحسنويين، هو ذكره لموضوع قتل أولاد حسنويه من قِبَلْ عَضِدْ الدولة سِوى بدراً، فذكر أنه لمَّا خلع عضد الدولة على بدر، وأخويه عاصم وعبد الملك، وفضَّل بدر وقدَّمهُ عليهما، وولاَّه أمر الأكراد، حسده أخواه على ذلك، لذا شقا عصا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الطاعة لأخيهما بدر، فاستمال عاصم جماعة من الأكراد المخالفين، فاجتمعوا عليه، عندها أرسل عضد الدولة جيشاً فأوقعوا بعاصم ومن معه فانهزموا، ووقع عاصم في الأسر، وأُدخل إلى همذان وهو راكبٌ جملاً، ولم يُعرف له خبر بعدها، وتعرَّض أولاد حسنويه إلى القتل على يد عضد الدولة، ما عدا بدر، فقد تركه عضد الدولة البويهي وأقرَّه على عمله، ثم أشار ابن الأثير إلى بعض صفات بدر بن حسنويه، أنه كان: عاقلاً لبيباً حازماً كريماً، حليماً، وقبل الإنتهاء من سرد هذه الأخبار عن أمراء الأسرة الحسنوية، قال ابن الأثير: "وسيرد من أخباره ما يعلم به ذلك إن شاء الله" (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٩٣/٧).

❖ وفي خبرٍ خامس لابن الأثير عن بدر بن حسنويه، ذكره ضمنياً عند ذكره لخبر عصيان محمد بن غانم البرزيكاني[23] لفخر الدولة، بناحية كوردر[24] من أعمال قُم، وقد ذكره ابن خلدون بصيغة "إنتفاض محمد بن غانم على فخر الدولة" (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٦٠٧/٤)، وأخذه غلات السلطان، ومن ثم إمتناعه بحصن الهفتجان[25]، وتجمع البرزيكان حوله، فأرسل فخر الدولة إليه جيشاً لقتاله وذلك في شوال من سنة (٣٧٣هـ/ ٩٨٤م)، فهزم محمد بن غانم جيش فخر الدولة البويهي، فأرسل فخر الدولة حملة أخرى من الرَّي إلى محمد بن غانم البرزيكاني، فهُزم الجيش البويهي مرةً هذه المرة أيضاً، عندما لم يتمكن فخر الدولة من هزيمة محمد بن غانم البرزيكاني، أرسل إلى بدر بن حسنويه، ينكر عليه ذلك ويأمره بإصلاح الحال مع محمد بن غانم البرزيكاني، ففعل بدر ذلك وراسل محمد بن غانم فاصطلحوا أول سنة (٣٧٤هـ/ ٩٨٥م)، وبقي الحال على ما هو عليه من السلام إلى سنة (٣٧٥هـ/ ٩٨٦م)، فجهَّز فخر الدولة جيشاً آخر وللمرة الثالثة خلال ثلاث سنوات، لمقاتلة محمد بن غانم البرزيكاني، أُصيب محمد بن غانم هذه المرة بطعنة، أُخذ على إثرها أسيراً، فمات في الطريق بسبب جرحه الذي أُصيب به أثناء المعركة مع جيش فخر الدولة البويهي (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤١٢/٧).

❖ الخبر السادس عند ابن الأثير عن الحسنويين، يتعلق ببدر بن حسنويه صاحب الحظ الأوفر من المعلومات عنه في المصادر ولا سيما ابن الأثير، وذلك أن خصَّص ابن الأثير عنواناً خاصاً به، وهو (ذكر الحرب بين بدر بن حسنويه وعسكر شرف الدولة)، من أحداث سنة (٣٧٧هـ/ ٩٨٨م)، إذ جهَّز شرف الدولة في هذه السنة جيشاً كبيراً بقيادة قراتكين الجهشياري، للتوجه لقتال بدر بن حسنويه في بلاده، وسبب هذه الحملة من قِبل شرف الدولة ضد بدر بن حسنويه، وذلك لوقوف بدر إلى جانب فخر الدولة عم شرف الدولة، ضد شرف الدولة، لذا فقد غضب عليه شرف الدولة، فعندما إستقر له الأمر ببغداد، تفرَّغ لمواجهة بدر، وكان في نفس الوقت ممتعضاً من قراتكين أيضاً لأنه كان قد تجاوز الحد في التحكم والإذلال، وحماية الناس على نوَّاب شرف الدولة، لذا كان من رأي شرف الدولة أن يضرب قراتكين وبدر بن حسنويه أحدهما بالآخر، فإن إنتصر قراتكين على بدر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

فقد شفى غليله منه، وإن إنتصر بدر فقد إستراح من قراتكين، فتوجه الجيش نحو بدر وتجهَّز بدر له، وجمع من العسكر، وإلتقيا على وادٍ بقرميسين، فلما بدأ القتال دبَّر بدر حيلةً أوهم فيها قراتكين وجيشه بالهزيمة أمامهم، الذي إنهزم من ساحة المعركة حتى إختفى عن الأنظار، فظنَّ قراتكين وأصحابه أن بدر قد إنتهى أمره وإنهزم، لذا إطمأنوا حتى أنهم نزلوا عن خيولهم، وتفرَّقوا في خيامهم، فلم يلبثوا إلا ساعةً حتى كرَّ عليهم بدر فجأةً، فلم يُتح لهم فرصةً لركوب خيولهم، فأكب عليهم وقتل منهم عدداً كبيراً، وإستولى على جميع ما في عسكرهم، أما قراتكين فقد نجا مع نفر من غلمانه، فهرب إلى أن وصل جسر النهروان، وأقام به حتى اجتمع إليه المنهزمون من أفراد جيشه، وبعدها دخل قراتكين بغداد، مذلولاً مكسوراً، إنتهى به المطاف في النهاية بأن تخلَّص منه شرف الدولة بعد أن دبَّر له حيلةً، قتله شرف الدولة على إثرها، أما بدر بن حسنويه فقد إستولى بعد إنتصاره في هذه المعركة على أعمال الجبل وما والاها، وقويت شوكته (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٣٠/٧).

❖ الخبر السابع أيضاً عن بدر بن حسنويه، وقد ذُكر سابقاً أن بدر بن حسنويه كان من المؤيدين لفخر الدولة، حتى أن تمسكه بموقفه هذا تسبب بغضب شرف الدولة عليه، وكان نتيجة ذلك أن جرَّد عليه شرف الدولة حملة عسكرية كبيرة قبل سنتين، ولكن لم يُكتب لها النجاح، لذا في سنة (٣٧٩هـ/ ٩٩٠م)، عندما عزم فخر الدولة السير إلى العراق، فما أن وصل فخر الدولة إلى همذان، حتى أتاه بدر بن حسنويه مدداً له (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٣٩/٧). وذلك لما بينهما من الموالاة والتحالف، والمصالح المشتركة.

❖ لقد كان من أبرز صفات بدر بن حسنويه، أنه كان يأوي الشخصيات القيادية الهاربين من الأمراء المعادين للحسنويين أو المعادين لحلفائهم، إذ ذكر ابن الأثير أن أبو نصر بن خواشاذه وكان من أعيان قادة عضد الدولة البويهي، أنه لمَّا هرب من عضد الدولة إلى البطائح، كاتبه أعداء عضد الدولة وهم كلٌ من: بهاء الدولة، وفخر الدولة، وصمصام الدولة[26]، وكذلك بدر بن حسنويه، كلٌ منهم يستدعيه للجوء إليه، ويبذل له ما يريده، وأخيراً فإن خواشاذ كان قد عقد العزم على اللجوء إلى فخر الدولة، فقصده ولكنه توفي في الطريق قبل أن يصل إليه (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٧٣/٧)، ومن هذا يظهر بأن بدر بن حسنويه كان قد بلغ من القوة، حتى يتمكن من إيواء الهاربين من الأمراء البويهيين المعادين له، ويقبلهم كلاجئين سياسيين في بلاده.

❖ من أخبار بدر بن حسنويه عند ابن الأثير، أن بهاء الدولة عندما توجه إلى واسط، سنة (٣٨٨هـ/ ٩٩٨م)، وذلك لمساعدة أبي محمد بن مكرم، ومن معه من الجند، بمشورة من أبو علي بن إسماعيل، فتوجه بهاء الدولة إلى واسط على كره وضيق، فنزل بالقنطرة البيضاء، وضاق الأمر ببهاء الدولة بأن إنقطعت المؤونة عنه، حتى أشرف بهاء الدولة على الهلاك، فطلب المساعدة من بدر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

بن حسنويه، الذي قدم له شيئاً من المؤونة ما ساعده على سد بعض إحتياجاته (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٩٦/٧).

❖ كان أمر بدر بن حسنويه قد عَظَمَ، وعَلا شأنَهُ، ولُقِّبَ من ديوان الخليفة العباسي، بلقب (ناصر الدين والدولة)، وذلك في عام (٣٨٨هـ/ ٩٩٨م)، وقد ذكر ابن الأثير هذا الخبر عن بدر بن حسنويه تحت عنوان (ذكر عدة حوادث)، ومن ثم أشاد ابن الأثير بصفات بدر بن حسنويه، فذكر بأنه كان كثير الصدقات بالحرمين، ويكثر إخراج الأموال وصرفها على العرب بطريق مكة ليكفوا عن أذى الحجاج، وكذلك مما ذكره في هذا الصدد، أن بدر بن حسنويه منع أصحابه من الفساد وقطع الطريق، لذا فقد عظمت مكانته في قلوب الناس وسار ذكره بذلك (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٩٨/٧).

❖ أيضاً في خبر آخر لابن الأثير عن بدر بن حسنويه، ضمن أحداث سنة (٣٨٩هـ/ ٩٩٩م)، ذكر بإنه إلتحق به أحد إبني بختيار، وهو أبو القاسم بن بختيار، ذلك أن إبني بختيار وهما: أبو نصر بن بختيار، وأبو القاسم بن بختيار كانا قتلا صمصام الدولة أخي بهاء الدولة، مما تسبب بحدوث صراع بينهما، كان نتيجته أن مال أصحاب إبني بختيار بشيراز إلى بهاء الدولة، لذا بعد أن إستولى أبو علي بن إسماعيل على شيراز هرب إبنا بختيار، فلحق أبو نصر ببلاد الديلم، وأما أبو القاسم بن بختيار فلحق ببدر، ثم قصد البطيحة، فلما فتح أبو علي شيراز كتب إلى بهاء الدولة بذلك فسار إليها ونزلها، فقام بنهب قرية الدودمان وإحراقها، وقتل كل أهلها، وأخرج جثة أخاه صمصام الدولة وجدَّد أكفانه، وحُمل إلى التربة بشيراز فدُفِنَ بها، وإستولى بهاء الدولة على كرمان، وإلى هنا كان إعتماد ابن الأثير على الروذراوري في كتاب (ذيل تجارب الأمم)، في نقل أخباره عن الحسنويين، وقد ذكر ذلك ابن الأثير بقوله: "إلى ههنا آخر ما في ذيل الوزير أبي شجاع رحمه الله" (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٦-٧).

❖ أيضاً هنا يذكر ابن الأثير قصة لجوء سياسي أخرى، لإحدى الشخصيات المهمة من البويهيين إلى بدر بن حسنويه، وذلك في سنة (٣٩٣هـ/ ١٠٠٣م)، ضمن أحداث متفرقة ذكرها ابن الأثير تحت عنوان (ذكر عدة حوادث)، أنه هرب في هذه السنة الوزير أبو العباس الضبي وزير مجد الدولة بن فخر الدولة بن بويه من الرَّي إلى بدر بن حسنويه، فأكرمه بدر (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٢٦/٨).

يظهر من كثرة أحداث اللجوء السياسي هذه إلى بلاد الحسنويين، من قبل الوزراء والقادة والأُمراء البويهيين، لا سيما في عهد بدر بن حسنويه الكُردي، أنه كان يتمتع بسمعة طيبة في قبول اللاجئين إليه وإكرامهم، وعدم إرجاعهم إلى بلدانهم قسراً مهما واجهه من ضغوط، فضلاً



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

عن دلالة ذلك على مدى القوة التي بلغها بدر بن حسنويه، وأنه كان يُعد نفسه نظيراً للأُمراء البويهيين، ولم يكن يخشاهم.

❖ كان أمر بدر بن حسنويه قد بلغ من القوة، بأن إستدعى أبو جعفر بن الحجاج، وجمع له جيشاً كبيراً، ووجههم نحو بغداد وذلك سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م)، وسبب ذلك كما يذكر ابن الأثير أن أبا جعفر كان نازلاً على قلج حامي طريق خراسان، وكان قلج مبايناً لعميد الجيوش فاجتمعا لذلك، فلما توفي قلج هذه السنة، جعل عميد الجيوش أبا الفتح بن عناز مكانه على حماية الطريق، وكان عدواً لبدر بن حسنويه، فأدى ذلك إلى حقد بدر بن حسنويه على ابن عناز لما بينهما من العداوة (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٩/٨).

❖ في السنة ذاتها (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م)، لاحق بدر بن حسنويه أبو الفتح بن عناز بعد لجوءه إلى رافع بن محمد بن مقن، ونزل ابن عناز عنده حين أخذ بدر بن حسنويه منه حلوان وقرميسين، لذا قبل أن يُجهِّز بدر جيشاً لملاحقة ابن عناز بولاية ابن مقن، فإنه أرسل إليه يذكره بمودة أبيه وحقوقه عليه، ويَعتِبُ عليه لإيواءه خصمه ابن عناز، ويطلب منه أن يُبعده ليدوم على العهد والمودة القديمة، ولكن رفض رافع بن مقن ذلك الطلب، لذا فقد أرسل بدر بن حسنويه جيشاً إلى أعمال رافع بالجانب الشرقي من نهر دجلة، فنهبوها، ونهبوا دار رافع بالمطيرة[27] وأحرقوه، وإستولوا على قلعة البردان وكانت لرافع ففتحوها أيضاً، وأحرقوا ما كان بها من الغلات، وطمّوا بئرها، فلحق أبو الفتح بن عناز بعميد الجيوش ببغداد، فخلع عليه وأكرمه، ووعده بنصره، وقد ذكر ابن الأثير هذا الخبر بعنوان خاص سمّاه (ذكر قصد بدر ولاية رافع بن مقن) (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٠/٨).

❖ حدثين مهمين كان لبدر بن حسنويه دورٌ فيهما، ذكرهما ابن الأثير في كتابه (الكامل في التاريخ)، أحدهما يعود إلى سنة (٣٩٦هـ/ ١٠٠٦م)، ولكن ذكره ابن الأثير ضمن أحداث سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م)، وهو إمداد بدر بن حسنويه لأبي العباس بن واصل صاحب البصرة بـ(٣٠٠٠) آلاف فارس، عندما إستولى أبو العباس على الأهواز، وهذا يعني بأنهما كانا متحالفين مع بعضهما، والحادثة الأخرى هي حادثة محاولة أبو العباس بن واصل صاحب البصرة، اللجوء إلى بدر بن حسنويه، الذي كان في صراع مع بهاء الدولة (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٠/٨). ذكر ابن الأثير أن أبا العباس بن واصل سار من الكوفة، وعبر دجلة وهو عازمٌ على اللحاق ببدر بن حسنويه، فوصل إلى خانقين، فكان بها جعفر بن العوام وكان في طاعة بدر، فأنزله وأكرمه، وطلب منه التعجيل في المسير إلى بدر وعدم التريث، لأن هناك من يطلبه للقبض عليه، لكنه لم يستمع إلى نصيحة ابن العوام فاعتذر بالتعب، والحاجة إلى الإستراحة ونام، وقد وصل خبره إلى أبي الفتح بن عناز، وكان في طاعة بهاء الدولة، وكان قريباً منهم، فإغتنم ابو الفتح الفرصة، وسار إليه بخانقين، وكان أبو العباس لا يزال بها ولم يغادرها، فحاصره، وألقى القبض عليه، وأخذه إلى بغداد، ومن هناك أرسله



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

عميد الجيوش إلى بهاء الدولة، فلقيهم في الطريق قاصد من بهاء الدولة يأمره بقتله، فقُتل وحُمل رأسه إلى بهاء الدولة وطِيْفَ به بخوزستان (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤١/٨).

❖ وحدث في نفس السنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م) حادث رابع، ألا وهو مسير عميد الجيوش إلى حرب بدر وصلحه معه، وسبب توجه هذا الجيش نحو بدر بن حسنويه، أنه كان في نفس بهاء الدولة حقدٌ على بدر بن حسنويه، وذلك لما قام به بدر من تقديم العون لأبو العباس بن واصل صاحب البصرة، أثناء حربه مع بهاء الدولة، لذا لمَّا قُتل أبو العباس، أمر بهاء الدولة عميد الجيوش بالتوجه نحو بلاد حسنويه، وأعطاه مالاً لينفقه على ذلك الجيش، فلمَّا وصل جيش بهاء الدولة بقيادة عميد الجيوش إلى جند يسابور، أرسل إليه بدر، رسالة إستخدم فيها حنكته السياسية، فقال له: "إنك لم تقدر على أن تأخذ ما تغلَّب عليه بنو عقيل من أعمالكم، وبينهم وبين بغداد فرسخ حتى صالحتهم، فكيف تقدر على أخذ بلادي وحصوني مني ومعي من الأموال ما ليس معك مثلها، وأنا معك بين أمرين: إن حاربتك فالحرب سجال، ولا نعلم لمن العاقبة، فإن إنهزمت أنا لم ينفعك ذلك، لأنني أحتمي بقلاعي ومعاقلي، وأنفق أموالي وإذا عجزت فأنا رجلٌ صحراوي، صاحب عمد أبعد ثم أقرب، وإن إنهزمت أنت، لم تجتمع وتلقى من صاحبك العسف، والرأي أن أحمل إليك مالاً تُرضي به صاحبك ونصطلح" (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤١/٨-٤٢)، فأجابه إلى ذلك وصالحه وأخذ منه ما كان أخرجه على تجهيز الجيش وعاد عنه (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٢/٨).

❖ ومن أخبار الحسنويين عند ابن الأثير، حادث خامس في السنة ذاتها سنة (٣٩٧هـ/ ١٠٠٧م)، كان لبدر بن حسنويه دورٌ محوري وكبير فيه، وهو تدخله إلى جانب والدة مجد الدولة ضد إبنها مجد الدولة، إذ كانت أم مجد الدولة بن فخر الدولة بن بويه صاحب الرَّي، وبلد الجبل، قد قبضت عليه، فكانت هي الحاكمة الفعلية في جميع أعمال إبنها، ولكن عندما تولى الخطير أبو علي بن علي بن القاسم الوزارة لمجد الدولة، فإنه أخذ يخوِّف إبنها منها، لذا خرجت أُم مجد الدولة بعد ذلك من الرَّي إلى القلعة، فمع وضعها تحت المراقبة، فإنها إستطاعت الهروب بحيلةٍ ما حتى لجأت إلى بدر بن حسنويه، لتستعين به في ردِّها إلى الرَّي، فلبَّى بدر بن حسنويه طلبها وسار معها إلى الرَّي، وجاءها ولدها شمس الدولة، وعساكر همذان، فحاصروا الرَّي، وجرى بين الطرفين "قتال كثير مدة" (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٦/٨)، ثم تمكن بدر من الدخول إلى مدينة الرَّي، وأسر مجد الدولة فقيدته أمُّه، وسجنته بالقلعة، وأجلست أخاه شمس الدولة في المُلك، وصار الأمر إليها، عند ذلك عاد بدر إلى بلده وبقي شمس الدولة نحو سنة، وبعد أن تنكَّر شمس الدولة لوالدته وتغيَّر عليها، رأت أُمُه بأن أخاه مجد الدولة ألين منه، وأكثر سلميةً، لذا أعادته إلى المُلك مرةً أخرى، وسار شمس الدولة إلى همذان، ولم يكن بدر راضياً على هذا التصرف، إلا أنه لم يتدخل في البداية لإنشغاله بتحرُّك ولده هلال ضده، وصارت أم مجد الدولة تتحكم بالمسائل الداخلية والخارجية،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

حتى أنها كانت تجيب على رسائل الملوك، فلما أرسل شمس الدولة إلى بدر بن حسنويه يطلب منه أن يمده بالجند، فأرسل إليه الجند فسار بهم شمس الدولة إلى قُم، فحاصرها، ولكن أهلها دافعوا عنها، فتمكن عساكر مجد الدولة من الدخول إلى المدينة فإنشغلوا بالنهب، لذا واجههم العامة من أهل المدينة، حتى أنهم قتلوا منهم (٧٠٠) رجل، وإنهزم الباقون إلى معسكرهم، ثم قبض هلال بن بدر على أبيه فتفرق الجمع كله (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٤٧/٨).

❖ الخبر الأكثر ألماً عن الحسنويين كان في سنة (٤٠٠هـ/ ١٠١٠م)، وهو الخبر الأطول الذي ذكره ابن الأثير عن الحسنويين، وذلك للخلاف الشديد الذي حدث بين بدر بن حسنويه وإبنه هلال، ذكر ابن الأثير حدوث حرب بين بدر بن حسنويه الكُردي وإبنه هلال، وسبب ذلك أن بدر كان أبعد ابنه هلال عنه، وذلك أن أُم هلال كانت من الشاذنجان، فاعتزلها أبوه عند ولادته، فنشأ هلال بعيداً عن أبيه، لذا كان لا يحب والده لذلك السبب، وفي نفس الوقت قرَّب بدر إليه إبنه الآخر عيسى، لهذا كان هلال يخرج عن كلام أبيه، فرأى بدر أنه من الأفضل إبعاده عنه لما فيه من الشدة فأقطعه الصامغان، وكان ذلك القرار في مصلحة هلال أكثر، مما سهَّل على هلال بأن ينفرد بنفسه عن أبيه (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٥٥/٨).

لذا كان أول ما فعله هلال أنه أساء إلى ابن الماضي صاحب شهرزور، الذي كان موافقاً لأبيه بدر فنهى بدر ابنه هلالاً عن معارضته، فلم يسمع قوله وأرسل هلال إلى ابن الماضي يتَهدَّدُهُ، فأعاد بدر مراسلة ابنه وتهدَّدَهُ هو الآخر، إن تعرض لشيء مما هو لابن الماضي، فكان جواب نهيه أنه جمع عسكراً وحصر شهرزور ففتحها، وقتل ابن الماضي وأهله وأخذ أموالهم، فلما ورد على بدر أخبار ذلك أزعجه وأقلقه تصرف هلال هذا، وأظهر السخط على هلال، عندها عمد هلال إلى إفساد جند أبيه عليه، فأخذ يستميلهم إلى جانبه ويبذل لهم من المال الكثير، فكثر أصحاب هلال لإحسانه إليهم وبذله المال لهم، وأعرض الناس عن بدر لإمساكه المال عنهم، فسار كل واحد منهما إلى صاحبه فالتقيا على باب الدينور، فلما برز الجمعان إلى بعضهما عندها إنحاز الكُرد إلى هلال، فأُخذ بدر أسيراً وحُمل إلى ابنه فأُشير على هلال بقتله، وقالوا: لا يجوز أن تستبقيه بعدما أوحشته، فقال: ما بلغ من عقوقي له أن أقتله، وحضر عند أبيه وقال له: أنت الأمير وأنا مدبر جيشك، فخادعه أبوه بأن قال له: لا يسمعن هذا منك أحد فيكون هلاكنا جميعاً، وهذه القلعة لك والعلامة في تسليمها كذا وكذا، واحفظ المال الذي بها فإنك الأمير مادام الناس يظنون بقاءك، وأريد أن تفرد لي قلعة، أتفرغ فيها للعبادة، ففعل ذلك وأعطاه جملة من المال، فلما استقر بدر بالقلعة عمَّرها وحصَّنها، وراسل أبا الفتح بن عناز عدوَّه اللدود سابقاً، وأبا عيسى شاذي بن محمد وهو بأسادأباذ، يقول لكل واحد منهما: ليقصد أعمال هلال ويشعثها، فسار أبو الفتح إلى (قرميسين) فملَّكها، وسار أبو عيسى إلى (سابور خواست) فنهب حلل هلال، ومضى إلى (نهاوند)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

وبها أبو بكر بن رافع، فاتبعه هلال إليها ووضع السيف في الديلم، فقتل منهم أربعمائة نفس منهم تسعون أميراً، وأسلم ابن رافع أبا عيسى إلى هلال فعفا عنه، ولم يؤاخذه على فعله وأخذه معه، وأرسل بدر إلى الملك بهاء الدولة يستنجده، فجهَّز فخر الملك أبا غالب في جيش، وسيَّره إلى بدر فسار حتى وصل إلى نيسابور خواست، فقال هلال لأبي عيسى شاذي: قد جاءت عساكر بهاء الدولة فما الرأي، قال: الرأي أن تتوقف عن لقائهم وتبذل لبهاء الدولة الطاعة وترضيه بالمال، فإن لم يجيبوك فضيِّق عليهم وانصرف بين أيديهم، فإنهم لا يستطيعون المطاولة، ولا تظن هذا العسكر كمن لقيته بباب نهاوند، فإن أولئك ذلَّلَهُمْ أبوك على ممر السنين فقال: "غششتني ولم تنصحني وأردت بالمطاولة، أن يقوى أبي وأضعف أنا وقتله" (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٥٦/٨)، وسار لينقض على عسكرهم ليلاً، فلَّما وصل إليهم وقع الصوت فركب فخر الملك في العساكر، وجعل عند أثقالهم من يحميها وتقدم إلى قتال هلال، فلما رأى هلال صعوبة الأمر ندم، وعلم أن أبا عيسى بن شاذي نصحه، فندم على قتله، ثم أرسل إلى فخر الملك يقول له: "إني ما جئت لقتال وحرب، إنما جئت لأكون قريباً منك، وأنزِل على حُكمك، فترد العسكر عن الحرب فإنني أدخل في الطاعة"، فمال فخر الملك إلى هذا القول، وأرسل الرسول إلى بدر ليخبره بما جاء به، فلَّما رأى بدر الرسول سبَّه وطرده، وأرسل إلى فخر الملك يقول: "إن هذا مَكرٌ من هلال، لَّما رأى ضعفه، والرأي أن لا تُنَفِّسَ خِنَاقَهُ" (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٥٧/٨)، فلمَّا سمع فخر الملك الجواب قويت نفسه، وكان يتهم بدر في الميل إلى ابنه وتقدَّم إلى الجيش بالحرب فقاتلوا، فلم يكن بأسرع من أن أُتِيَ بهلال أسيراً، فقبَّل الأرض وطلب أن لا يسلمه إلى أبيه، فأجابه إلى ذلك وطلب علامته بتسليم القلعة، فأعطاهم العلامة فامتنعت أمه ومن بالقلعة من التسليم، وطلبوا الأمان فأمَّنهم فخر الملك، وصعد القلعة ومعه أصحابه، ثم نزل منها وسلَّمها إلى بدر بن حسنويه، وأخذ ما فيها من الأموال وغيرها وكانت عظيمة، قيل: كان بها أربعون الف بدرة دراهم، وأربعمائة بدرة ذهباً سوى الجواهر النفيسة، والثياب والسلاح وغير ذلك، هذا وقد أكثر الشعراء من ذكر هذا فمما قال مهيار من الشعر بهذا الشأن (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٥٧/٨):

| | |
|---|---|
| فظنُّوك تعبأ بحملِ العراق | كأنْ لم يروك حملْتَ الجبالا |
| ولو لم تكنْ في العلو السماءُ | لما كان غنمك منها هلالا |
| سريت إليه فكنت السرار | لـ ـه ولـ بدر أبـ يه كمـ ـالا |

❖ من أخبار الحسنويين، إستيلاء طاهر بن هلال بن بدر بن حسنويه على شهرزور، سنة (٤٠٤هـ/ ١٠١٤م)، حيث كان بدر قد سلَّمها إلى عميد الجيوش، فجعل فيها نوَّابه، ففي هذه السنة توجه طاهر بن هلال إلى شهرزور، فقاتل من بها من عساكر فخر المُلك، وأخذها منهم في شهر رجب من سنة (٤٠٤هـ/ ١٠١٤م)، فلما سمع الوزير فخر المُلك ذلك، أرسل إلى طاهر يعاتبه على



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ذلك، ويأمره بإطلاق من أسر من أتباعه، ففعل طاهر ذلك، وبقيت شهرزور بيد طاهر إلى أن قتله أبو الشوك، وأخذها منه وجعلها لأخيه هلال (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٨١).

❖ تعد سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م) السنة التي إنتهى بها حُكم الأُمراء الحسنويين بصورة فعلية، فزالت إمارتهم من الوجود، إذ قُتل فيها بدر بن حسنويه على يد أتباعه، في حين قُتل ابنه هلال على يد شمس الدولة البويهي، وقد ذكر ابن الأثير تفاصيل مقتلهما وسبب ذلك، إذ ذكر ذلك تحت عنوان خاص به سمَّاه بـ(ذكر قتل بدر بن حسنويه وإطلاق ابنه هلال وقتله)، فذكر أنه في هذه السنة قُتل بدر بن حسنويه أمير الجبل، وكان سبب قتله أنه توجَّه بجيشه في فصل الشتاء إلى الحسين بن مسعود الكُردي، ليستولي على بلاده بحصن (كوسحد)[28]، فاستاء أصحاب بدر منه لذلك، فعزموا على قتله لذلك، فحذَّره بعض خواصه منهم وعرَّفوه على المتآمرين على قتله، إلا أنه لم يهتم بذلك، فكان رده: "فمن هم الكلاب حتى يفعلوا ذلك"، فكل ما فعله أنه أبعدهم، فلما خرج بدر وجلس على تلٍ، ثاروا عليه فقتله طائفة منهم تسمى بالجورقان[29]، ونهبوا عسكره وتركوه وساروا لوجههم، فنزل الحسين بن مسعود من حُصنِهِ، فرآى بدر بن حسنويه مقتولاً وملقىً على الأرض، لذا أمر الحسين بن مسعود بتجهيزه، وحمله إلى مشهد علي (رض)، ليدفن فيه، ثم ذكر ابن الأثير بعضاً من أوصاف بدر بأنه كان عادلاً، كثير الصدقة والمعروف، كبير النفس، عظيم الهمة (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٨٢-٨٣). ولما قَتَلَ الجورقان بدر بن حسنويه هربوا إلى شمس الدولة ودخلوا في طاعته (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٨٣).

أما أمر هلال بن بدر بن حسنويه، وكيفية مقتله من قبل شمس الدولة، فإنه حينما قُتل بدر بن حسنويه كان ابنه هلال محبوساً عند الملك سلطان الدولة[30]، واستولى شمس الدولة على بعض بلاد بدر بن حسنويه، فلما علم سلطان الدولة بذلك أطلق سراح هلال بن بدر وجهَّزهُ بجيشٍ ليستعيد ما استولى عليه شمس الدولة من بلاده، فتوجَّه هلال على رأس ذلك الجيش إلى شمس الدولة، فالتقى العسكران في شهر ذي القعدة من سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م)، واقتتلا فانهزم أصحاب هلال ووقع هو في الأسر وقُتل على إثرها، وعادت العساكر التي كانت معه إلى بغداد على أسوأ حال (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٨٣).

وأيضاً أشار ابن الأثير إلى خبر وقوع طاهر بن هلال حفيد بدر بن حسنويه في أسر شمس الدولة في هذه السنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م)، فذكر بأن طاهر بن هلال بن بدر كان هارباً من جدِّه بنواحي شهرزور، فلما عرف بمقتل جدِّه بادر بطلب مُلكِهِ، حدثت حربٌ بينه وبين شمس الدولة بسبب ذلك، وقع فيها طاهر في الأسر وحُبس، وأخذ شمس الدولة منه ما كان قد جمعه بعد أن ملك نائباً عن أبيه هلال بن بدر، وكان مقدار ذلك كبيراً وحمله شمس الدولة معه إلى همذان (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٨٣).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

❖ بعد مقتل بدر بن حسنويه وابنه هلال بن بدر بسنة واحدة فقط، تعرَّض طاهر بن هلال بن بدر للقتل سنة (٤٠٦هـ/ ١٠١٦م)، على يد نسيبه أبي الشوك، وقد ذكر ذلك ابن الأثير تحت عنوان (ذكر قتل طاهر بن هلال بن بدر)، أنه في هذه السنة قام شمس الدولة بن فخر الدولة بن بويه، بإطلاق سراح طاهر بن هلال بن بدر بن حسنويه، من السجن بعد وقوعه في الأسر في السنة السابقة، وذلك بعد أن إستحلفه على الطاعة له، فلما اجتمع معه طوائف، فقوي طاهر بن هلال بهم، حارب أبا الشوك فهزمه، وقتل سعدي بن محمد أخو أبي الشوك، ثم إنهزم أبو الشوك منه مرةً أُخرى، وهرب إلى حلوان، فتوسط أبو الحسن بن مزيد الأسدي بينهما، حينها كان طاهر مُقيماً بالنهروان، وتصالح مع أبا الشوك وتزوَّج أخته، ويبدو أن أبا الشوك كان يريد بهذه الزيجة، أن يؤمِّن طاهر بن هلال حتى تسنح له الفرصة بقتله، وقد حدث ذلك فعلاً، فلما أمَّنه طاهر بن هلال قتله أبو الشوك، ليأخذ بثأره منه لقتله أخيه سعدي، وحمله أصحابه ودفنوه بمشهد التبن (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٩١/٨).

ذكر ابن خلدون أن طاهر دُفن بمقابر بغداد، وإستولى أبا الشوك بعد ذلك على سائر الأعمال التي كانت لطاهر بن هلال ونزل الدَّينور (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٦٩٣/٤).

❖ رغم أن بدر بن حسنويه كان قد قُتل سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م)، فإن ابن الأثير قد ذكر اسم حسنويه مرتين، ضمن أحداث سنة (٤١٢هـ/ ١٠٢٢م)، المرة الأولى عند حديثه عن الصراع بين صدقة صاحب البطيحة، وأبو الهيجاء محمد بن عمران بن شاهين، فذكر ابن الأثير، أن أبو الهيجاء بعد موت أبيه قد تمزَّق في البلاد، تارةً بمصر، وتارةً عند بدر بن حسنويه، وتارةً بينهما (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ١٣٤/٨)، رغم أن حادثة لجوء أبو الهيجاء كانت بطبيعة الحال أثناء فترة حُكم بدر بن حسنويه، وكان ذلك بكل الأحوال في سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م) أو قبلها، لأن بدر كان قد قُتل في تلك السنة، لكن مع ذلك أشار ابن الأثير إلى تلك الحادثة خلال ذكر لأحداث هذه السنة.

أما الخبر الآخر الذي ورد فيه ضمنياُ اسم بدر بن حسنويه عند ابن الأثير، فقد ذكره تحت عنوان (ذكر عدة حوادث)، فذكر أنه في هذه السنة حجَّ الناس من العراق، وكان قد إنقطع سنة (٤١٠هـ/ ١٠٢٠م)، وسنة (٤١١هـ/ ١٠٢١م)، فلمَّا كان سنة (٤١٢هـ/ ١٠٢٢م)، قصد جماعة من أعيان خراسان السلطان محمود بن سبكتكين، وقالوا له: أنت أعظم ملوك الاسلام وأثرك في الجهاد مشهور، والحج قد انقطع كما ترى والتشاغل به واجب، وقد كان بدر بن حسنويه وفي أصحابك كثير أعظم منه، يسير الحاج بتدبيره وماله عشرين سنة، فاجعل لهذا الأمر حظاً من إهتمامك، فتقدَّم إلى أبي محمد الناصحي قاضي قضاة بلاده، بأن يسير بالحاج وأعطاه ثلاثين ألف دينار يعطيها للعرب سمى النفقة في الصدقات (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ١٣٥/٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

❖ الخبر الأخير لابن الأثير الذي أورد فيه ذكر اسم بدر بن حسنويه، فمتأخر جداً، إذ يرجع إلى سنة (٤٣٩هـ/ ١٠٤٨م)، وهو يأتي بعد (٣٤) سنة من مقتل بدر بن حسنويه، وإنتهاء أمر الإمارة الحسنوية، إذ ذكرا بن الأثير تحت عنوان (ذكر مُلك إبراهيم ينال قلعة كِنْكِوَرْ[31] وغيرها) إن صاحب قلعة سرماج توفي وهو من ولد بدر بن حسنويه، وسُلِّمَتْ القلعة بعده إلى إبراهيم ينال، وأرسل إبراهيم ينال وزيره إلى شهرزور فأخذها وملَّكها (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٨/٢٧٦-٢٧٧).

كانت هذه مجموع أخبار الحسنويين عند ابن الأثير، والتي ذكرها بصورة متفرقة، وذلك بحسب ترتيب السنين، وهو المنهج الحولي الذي كان القدماء يؤلفون كتبهم على أساسه، وقد إهتمت هذه الدراسة بجمعها في مكان واحد، بدلاً من أن تكون متناثرة في ثنايا أجزاء متعددة، وترتيبها بهذه الصورة مما يسهل على القراء تكوين فكرةٍ واضحة عن الإمارة الحسنوية.

## الخاتمة

**توصلت الدراسة إلى مجموعة من النتائج، فيما يأتي أبرزها:**

١. يُعد كتاب الكامل في التاريخ من أهم وأبرز كتب التاريخ الإسلامي العام، فهو يتضمن التاريخ العام منذ بدء الخليقة أول الزمان حتى عصره، إذ انتهى عند آخر سنة (٦٢٨هـ/ ١٢٣٠م)، تناول في كتابه الكامل تاريخ العالم القديم حتى ظهور الإسلام، وتاريخ العالم الإسلامي منذ ظهور الإسلام حتى عصره، والتزم في كتابه بالمنهج الحولي في تسجيل الأحداث، فهو يسجل أحداث كل سنة على حدة، وأقام توازنًا بين أخبار المشرق والمغرب وما بينهما على مدى سبعة قرون وربع قرن، وهو ما أعطى كتابه طابع التاريخ العام.

٢. تكمن أهمية كتاب (الكامل في التاريخ) أن ابن الأثير إستكمل فيه ما توقف عنده تاريخ الطبري في سنة (٣٠٢هـ/ ٩١٤م)، وهي السنة التي انتهى بها كتابه، فبعد الطبري لم يظهر كتاب يغطي أخبار حقبة تمتد لأكثر من ثلاثة قرون، ولم يكن ابن الأثير في كتابه هذا ناقلاً للأخبار أو مسجلاً للأحداث فحسب، وإنما كان محللاً بارعاً وناقداً بصيراً؛ إذ حرص على تعليل بعض الظواهر التاريخية ونقد أصحاب مصادره، وناقش كثيراً من أخبارهم.

٣. إن أهمية كتاب (الكامل في التاريخ) بالنسبة لتاريخ الكُرد في العصر الإسلامي (الوسيط)، فيُعد من الكتب التي تأتي في المقدمة بالنسبة للمصادر التاريخية، التي تتضمن معلومات شاملة، ونادرة في نفس الوقت عن تاريخ الكرد وبلادهم، فقد إهتم بنواحي الحياة السياسية والعسكرية، وكذلك الحضارية، بأسلوب ومنهجية أكثر سلاسةً وتقدُّماً عمَّن سبقه من الكُتّاب والمؤرخين.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٤. لقد ذكر ابن الأثير أخبار الحسنويين وأُمرائهم في (٢٤) حدثاً من خلال كتابه (الكامل في التاريخ)، منها ذكر أخبار الحسنويين بعناوين رئيسة في (١٠) مرات، و(١٤) مرة فإنه ذكر أخبار الحسنويين ضمنياً مع أحداث أخرى.

٥. تبين من الدراسة أن ابن الأثير قد ذكر أخبار الحسنويين بطريقتين مختلفتين، مرةً خصَّص لهم عنواناً رئيسياً، وقد جاء ذلك (١٠) مرات، ومرةً أخرى جاءت أخباره عن الحسنويين، بصورة عرضية تحت عناوين مختلفة وجاء ذلك (١٤) مرة.

٦. أن تواريخ هذه الأحداث، قد إنحصرت بصورة رئيسة بين سنتي (٣٥٩-٤٠٥هـ/ ٩٧٠م-١٠١٥م)، وهو تاريخ نهاية الإمارة الحسنوية وذلك بعد مقتل (بدر بن حسنويه).

٧. لقد بدأ ابن الأثير بذكر أخبار الحسنويين من عام (٣٥٩هـ/ ٩٧٠م)، في حين أغفل ذكر أخبار حسنويه مؤسس الإمارة قبلها بعشر سنوات أي منذ عام (٣٥٠هـ/ ٩٦٢م)، وذلك ربما بسبب عدم توفر المعلومات عن تلك الفترة، وسيراً على ما سار إليه من سبقه وممن نقل عنهم ابن الأثير مثل ابن مسكويه، في (تجارب الأُمم)، ولم يُشر ابن الأثير إلى الحسنويين بإسم الإمارة أو الدولة، وإنما أشار إليهم بصيغ أخرى مثل (بلد حسنويه).

٨. في حقيقة الأمر فإن الأخبار المهمة بالحسنويين، التي ذكرها ابن الأثير عن الأمراء الحسنويين، هي التي تتعلق بالأمير (حسنويه بن حسين الكردي) والذي حكم عشر سنوات ما بين (٣٥٩-٣٦٩هـ/ ٩٧٠-٩٨٠م)، والأمير (بدر بن حسنويه) الذي حكم بين سنوات (٣٦٩هـ-٤٠٥هـ/ ٩٧٠-١٠١٥م)، فقد خصَّص له ابن الأثير معظم الأخبار التي ذكرها عن الحسنويين، وذلك لطول مدة حكمه التي إستمرت لـ(٣٦) سنة، وهي تمثل نحو (٨٥٪) من عُمر الإمارة الحسنوية، ومن خلال أخبار هذين الأميرين يمكن تكوين فكرة عن الإمارة الحسنوية.

٩. يُعد كتاب (تجارب الأُمم وتعاقب الهمم)، لابن مسكويه (ت: ٤٢١هـ/ ١٠٣٠م)، المصدر الأهم والمعاصر لعصر الإمارة الحسنوية، لذا فإن ابن الأثير قد إعتمد عليه في نقل معظم أخباره عن الحسنويين، ويعد الروذراوري (ت: ٤٨٨هـ/ ١٠٩٥م)، الذي ذيَّل على كتاب (تجارب الأُمم وتعاقب الهمم) لابن مسكويه، في كتاب سماه (ذيل كتاب تجارب الأُمم)، وهو الجزء الثالث المكمل لكتاب (تجارب الأُمم) لابن مسكويه، الذي دوَّن فيه الأحداث التاريخية للسنوات (٣٦٩-٣٨٩هـ/ ٩٧٠-٩٩٩م)، ويليه في نفس الكتاب (ذيل كتاب تجارب الأُمم)، قطعة من تاريخ هلال الصابي الكاتب، الذي دوَّن الأحداث التاريخية إلى سنة (٣٩٣هـ/ ١٠٠٣م).

١٠. تعد سنة (٤٠٥هـ/ ١٠١٥م) السنة التي إنتهى بها حُكم الأُمراء الحسنويين بصورة فعلية، فزالت إمارتهم من الوجود، إذ قُتل فيها بدر بن حسنويه على يد أتباعه، في حين قُتل ابنه هلال على يد شمس الدولة البويهي.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**قائمة المصادر والمراجع:**

**أولاً- المصادر:**


١. ابن الأثير: أبو الحسن علي بن أبي الكرم (١٩٦٣م)، التاريخ الباهر في الدولة الأتابكية في الموصل، تحقيق: عبد القادر طليمات، دار الكتب الحديثة، القاهرة.

٢. ابن الأثير: أبو الحسن علي بن أبي الكرم (٢٠٠٦)، الكامل في التاريخ، تحقيق: محمد يوسف الدقّاق، دار الكتب العلمية، ط٤، بيروت.

٣. البكري: أبو عبيد عبد الله بن عبد العزيز بن محمد الأندلسي (١٤٠٣هـ)، معجم ما استعجم من أسماء البلاد والمواضع، عالم الكتب، بيروت.

٤. بهاء الدين البغدادي: محمد بن الحسن بن محمد بن علي بن حمدون، أبو المعالي (١٤١٧هـ)، التذكرة الحمدونية، دار صادر، بيروت.

٥. البدليسي، شرفخان (٢٠٠٦)، شرفنامة -في تاريخ الدول والإمارات الكردية، ترجمة: محمد علي عوني، دار الزمان، دمشق.

٦. ابن الجوزي: عبد الرحمن بن علي بن محمد أبو الفرج (١٩٩٢م)، المنتظم في تاريخ الملوك والأمم، تحقيق: محمد عبد القادر عطا، مصطفى عبد القادر عطا، دار الكتب العلمية، بيروت.

٧. أبو الحسن الهمذاني: محمد بن عبد الملك بن إبراهيم بن أحمد (١٩٥٨)، تكملة تاريخ الطبري، تحقيق: ألبرت يوسف كنعان، المطبعة الكاثوليكية. بيروت.

٨. الحميري، أبو عبد الله محمد بن عبد الله بن عبد المنعم (١٩٨٠م)، الروض المعطار في خبر الأقطار، تحقيق: إحسان عباس، مؤسسة ناصر للثقافة، ط٢، بيروت.

٩. ابن خلدون: عبد الرحمن بن محمد بن محمد (١٩٨٨م)، ديوان المبتدأ والخبر في أيام العرب والعجم والبربر ومن عاصرهم من ذوي السلطان الأكبر، تحقيق: خليل شحادة، دار الفكر، ط٢، بيروت.

١٠. ابن خلكان: أبو العباس شمس الدين أحمد بن محمد بن إبراهيم بن أبي بكر البرمكي الإربلي (١٩٠٠م)، وفيات الأعيان وأنباء أبناء الزمان، تحقيق: إحسان عباس، دار صادر، بيروت.

١١. الذهبي: شمس الدين أبو عبد الله محمد بن أحمد بن عثمان بن قَايْماز (١٩٩٣م)، تاريخ الإسلام ووفيات المشاهير والأعلام، تحقيق: عمر عبد السلام التدمري، دار الكتاب العربي، ط٢، بيروت.

١٢. الذهبي: شمس الدين أبو عبد الله محمد بن أحمد بن عثمان بن قَايْماز (٢٠٠٦م)، سير أعلام النبلاء، دار الحديث، القاهرة.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

١٣. الروذراوري: ظهير الدين (د/ت)، ذيل تجارب الأُمم، تحقيق: هـ، ف، آمدرور، دار الكتاب الإسلامي، القاهرة.
١٤. الزمخشري: أبو القاسم محمود بن عمرو بن أحمد، جار الله (١٩٩٩م)، الجبال والأمكنة والمياه، تحقيق: أحمد عبد التواب عوض المدرس بجامعة عين شمس، دار الفضيلة للنشر والتوزيع، القاهرة.
١٥. السبكي: تاج الدين عبد الوهاب بن تقي الدين (١٤١٣هـ)، طبقات الشافعية الكبرى، تحيقق: محمود محمد الطناحي وعبد الفتاح محمد الحلو، هجر للطباعة والنشر والتوزيع، ط٢، د/م.
١٦. السيوطي: عبد الرحمن بن أبي بكر، جلال الدين (٢٠٠٤م)، تاريخ الخلفاء، تحقيق: حمدي الدمرداش، مكتبة نزار مصطفى الباز، د/م.
١٧. الصفدي: صلاح الدين خليل بن أيبك بن عبد الله (٢٠٠٠م)، الوافي بالوفيات، تحقيق: أحمد الأرناؤوط وتركي مصطفى، دار إحياء التراث، بيروت.
١٨. صفيّ الدين: عبد المؤمن بن عبد الحق، ابن شمائل القطيعي البغدادي، الحنبلي (١٤١٢هـ)، مراصد الاطلاع على أسماء الأمكنة والبقاع، دار الجيل، بيروت.
١٩. ابن العماد الحنبلي: عبد الحي بن أحمد بن محمد العَكري، أبو الفلاح (١٩٨٦م)، شذرات الذهب في أخبار من ذهب، تحقيق: محمود الأرناؤوط، دار ابن كثير، دمشق-بيروت.
٢٠. ابن العمراني: محمد بن علي بن محمد (٢٠٠١م)، الإنباء في تاريخ الخلفاء، تحقيق: قاسم السامرائي، دار الآفاق العربية، القاهرة.
٢١. أبو الفداء: عماد الدين إسماعيل بن علي بن محمود بن محمد ابن عمر بن شاهنشاه بن أيوب، الملك المؤيد، صاحب حماة (د/م)، المختصر في أخبار البشر، المطبعة الحسينية المصرية، د/م.
٢٢. القرطبي: عريب بن سعد (١٣٨٧هـ)، صلة تاريخ الطبري، دار التراث، ط٢، بيروت.
٢٣. القزويني: زكريا بن محمد بن محمود (د/ت)، آثار البلاد وأخبار العباد، دار صادر، بيروت.
٢٤. ابن كثير: أبو الفداء إسماعيل بن عمر القرشي البصري الدمشقي (١٩٨٨م)، البداية والنهاية، تحقيق: علي شيري، دار إحياء التراث العربي، د/م.
٢٥. ابن مسكويه: أبو علي أحمد بن محمد بن يعقوب (٢٠٠٠م)، تجارب الأمم وتعاقب الهمم، تحقيق: أبو القاسم إمامي، سروش، ط٢، طهران.
٢٦. النويري: أحمد بن عبد الوهاب بن محمد بن عبد الدائم القرشي التيمي البكري، شهاب الدين (١٤٢٣هـ)، نهاية الأرب في فنون الأدب، دار الكتب والوثائق القومية، القاهرة.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٢٧. ياقوت الحموي: شهاب الدين أبو عبد الله ياقوت بن عبد الله الرومي (١٩٩٥م)، معجم البلدان، دار صادر، ط٢، بيروت.

ثانياً- المراجع:

٢٨. آميدي: كرفان محمد أحمد (٢٠٠٦)، الكرد في كتابات المؤرخ ابن الأثير الجزري، دار سبيريز للطباعة، دهوك.

٢٩. بولاديان: أرشاك (٢٠١٣)، الأكراد في حقبة الخلافة العباسية، ترجمة: ألكسندر كشيشيان، دار أراس للطباعة والنشر، أربيل.

٣٠. الزركلي: خير الدين بن محمود بن محمد بن علي بن فارس (٢٠٠٢م)، الأعلام، دار العلم للملايين، ط٥، د/م.

٣١. زكي: محمد أمين (٢٠١٧)، خلاصة تاريخ الكرد وكردستان من أقدم العصور التاريخية حتى الآن، ترجمة: محمد علي عوني، دار الزعراب ودار نور حوران للدراسات والنشر والترجمة، دمشق.

٣٢. كب. هـ. أ. ر (١٩٨١)، علم التاريخ، ترجمة: إبراهيم خورشيد وآخر، بيروت.

٣٣. مرعي: فرست (٢٠٠٥)، الإمارات الكردية في العصر العباسي الثاني ٣٥٠-٥١١هـ/ ٨٦٠-١١١٧م، دار سبيريز للطباعة والنشر، دهوك.

ثالثاً- البحوث والدوريات:

٣٤. أحمد: خطاب إسماعيل وآخر (٢٠٢٠)، العلماء الجزريون (جزيرة ابن عمر) خلال القرون (٥-١٠هـ/ ١١-١٦م)، بحث منشور ضمن أعمال مؤتمر (الكُرد والجزيرة الفراتية – تاريخ وحضارة ولغة وأدب)، مركز زاخو للدراسات الكردية، جامعة زاخو.

٣٥. الخالدي: أنور (٢٠٠٩م)، منهج الكتابة التاريخية في القرن (٧هـ/ ١٣م) – ابن الأثير أنموذجاً، بحث منشور في مجلة المنارة، جامعة آل البيت، الأردن، مج١٥، العدد ١.

٣٦. شترك: (د/م)، مادة (البطيحة)، دائرة المعارف الإسلامية، إبراهيم زكي خورشيد وآخران، مطبعة الشعب، القاهرة.

**الهوامش:**

---

(1) ذكرها السُبكي بصيغة الجزيرة العُمرية (السبكي، ١٩٩٣، ٢٩٩/٨)؛ وقد كانت تسمى قبل ذلك بتسميتين هما: تسمية جزيرة الأكراد وهي التسمية الأصلية والقديمة لها، ومن ثم أُطلق عليها تسمية دجلة ذلك بعد أن أُجري الماء إليها وربما ذلك في القرن (٢هـ/ ٨م) (احمد وآخر، ٢٠٢٠، ٢٤٩)، والتسمية



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الثالثة التي بقيت المدينة تسمى، بذلك عُرفت بها في المصادر وإشتهرت بها هي: تسمية جزيرة ابن عمر، وذلك نسبةً إلى الشخص الذي قام بإعادة بنائها وترميمها وتوسيعها، وهو عبد العزيز بن عمر البرقعيدي، وبرقعيد هي بلدة من أعمال الموصل من جهة نصيبين (ابن الأثير، ١٩٩٧، ١٧٩/٢).

(2) لقد جاء ذكر (بدر بن حسنويه) في دائرة المعارف الإسلامية بالصيغة الآتية: "بدر بن حسنويه أبو نجم ناصر الدين، أنير الكُرد، إعترف به عضد الدولة البويهي أميراً على كردستان" (نيكيتين، د/م، ٤٠٦/٦).

(3) بهاء الدولة (ت: ٤٠٣هـ/ ١٠١٣م): هو أَحْمد بن فناخسرو السُّلْطَان بهاء الدولة أَبُو نصر ابْن السُّلْطَان عضد الدولة ابْن بويه توفّي بأرجان فِي جُمَادَى الأولى سنة (٤٠٣هـ)، وَله اثْنَتَانِ وَأَرْبَعُونَ سنة، وَكَانَت أَيَّامه (٢٢) سنة ويومين، توفي بعلة الصرع وَولي بعده ابْنه سُلْطَان الدولة وَولي بهاء الدولة السلطنة ببغداد (الصفدي، ٢٠٠٠، ١٩٠/٧).

(4) البَطِيحَة: بفتح أولها، وكسر ثانيها، وبالحاء المهملة، وهي ماء مستنقع لا يرى طرفاها من سعتها، ما بين واسط والبصرة، وهي مغيض دجلة والفرات، وكذلك مغايض ما بين البصرة والأهواز، يقال تبطّح السّيل إذا سال سيلاً عريضاً (البكري، ١٤٠٣هـ، ٢٥٩/١؛ الزمخشري، ١٩٩٩، ٥٠)؛ وبذلك سُمّيت بطائح واسط لأن المياه تبطّحت فيها، أي سالت واتّسعت في الأرض، وهي أرض واسعة بين واسط والبصرة، وكانت قديماً قرى متّصلة وأرضاً عامرة (ياقوت الحموي، ١٩٩٥، ٤٥٠/١)؛ وجاء تعريف البطيحة في دائرة المعارف الإسلامية بأن كُتاب العرب عادةً يُطلقون اسم البطائح، وهي جمع البطيحة على المسيل المتسع الذي على المجرى الأدنى للرافدين (دجلة والفرات)، فيما بين واسط والبصرة جنوباً، ويقال أحياناً بطائح واسط أو بطائح البصرة، نسبةً إلى هاتين المدينتين المتجاورتين (شترك، د/ت، ٣٣٣/٧-٣٣٤).

(5) بَرُوجِرْد: بالفتح ثم الضم ثم السكون، وكسر الجيم، وسكون الراء، ودال: بلدة بين همذان وبين الكرج، بينها وبين همذان ثمانية عشر فرسخا وبينها وبين الكرج عشرة فراسخ، وبروجرد بينهما (ياقوت الحموي، ٢٠٠٦، ٤٠٤/١).

(6) رُكْن الدَّوْلة ابن بُوَيْه (٢٨٤-٣٦٦هـ/ ٨٩٧-٩٧٦م): هو الحسن بن بويه بن فناخسرو الديلميّ، ركن الدولة، من كبار الملوك في الدولة البويهية، كان صاحب أصبهان والري وهمذان وجميع عراق العجم، إستوزر أبا الفضل ابن العميد، ثم ابنه أبا الفتح. واستمر في الملك (٤٤) سنة وشهراً و(٩) أيام، وهو والد عضد الدولة (فناخسرو)، ومؤيد الدولة (بويه)، وفخر الدولة (عليّ) قسَّم عليهم الممالك في حياته، وتوفي بالريّ (ابن الجوزي،١٩٩٢، ١٤/ ٢٤٩؛ الصفدي، ٢٠٠٠، ٣١٥/١١؛ الزركلي، ٢٠٠٢، ١٨٥/٢).

(7) عَضُدُ الدَّوْلَةِ (ت: ٣٧٢هـ/ ٩٨٣م): هو أَبُو شُجَاعٍ فَنَّاخِسْرُو، صَاحِبُ العِرَاقِ وَفَارِسَ، ابْنُ السُّلْطَانِ رُكْنِ الدَّوْلَةِ حسنِ بنِ بُوَيْهِ الدَّيْلَمِيّ، تملَّك بِفَارِسَ بَعْدَ عمِّه عِمَادُ الدَّوْلَةِ، ثُمَّ كَثُرَتْ بلاَدُهُ، واتسعَتْ ممَالِكُهُ، وَسَارَ إِلَيْهِ المُتَنَبِّي وَمدحَهُ، وَأَخَذَ صِلاَتِهِ، قصدَ عَضُدُ الدَّوْلَةِ العِرَاقَ، وَالتَقَى ابنَ عَمِّهِ عزَّ الدَّوْلَةِ وَقَتَلَهُ، وتملَّك وَدَانَتْ لَهُ الأُمَمُ (الذهبي، ٢٠٠٦، ٢٨٧/١٢).

(8) مؤيد الدولة (ت: ٣٧٣هـ/ ٩٨٤م): هو بويه أبو منصور، الملقب مؤيد الدولة بن ركن الدولة كان وزيره الصاحب بن عباد، فضبط مملكته، وأحسن التدبير، وكان قد تزوج بنت عمه زبيدة بنت معز الدولة أبي



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

الحسين، وتوفي بجرجان، وكانت علته الخوانيق، وكان عمره (٤٣)، وإمارته سبعة وستين شهراً وخمسة وعشرين يومًا (ابن الجوزي، ١٣٥٨هـ، ٣٠٢/١٤؛ الصفدي، ٢٠٠٠، ٢٠٤/١٠).

(9) فَخر الدولة (ت: ٣٨٧هـ/ ٩٩٧م): هو ابن بويه عَليّ بن الْحسن الْملك فَخر الدولة أَبُو الْحسن ابْن الْملك ركن الدولة بن بويه صَاحب الرّيّ ونواحيها (الصفدي، ٢٠٠٠، ٢١٦/٢٠).

(10) عز الدولة (ت: ٣٦٧هـ/ ٨٧٨م): هو أبو منصور بختيار بن معز الدولة أحمد بن بويه الديلميّ، ولي الأمر بالحضرة بعد وفاة أبيه معز الدولة في يوم الثلاثاء لاثنتي عشرة ليلة بقيت من شهر ربيع الآخر سنة (٣٥٦هـ/ ٩٦٧م)، وقتل في يوم الأربعاء لاثنتي عشرة ليلة بقيت من شوال سنة (٣٦٧هـ/ ٨٧٨م) بقصر الجص، وكان أبو منصور بختيار بن معز الدولة قد تقلد إمرة الأمراء سنة (٣٤٨هـ/ ٩٦٠م) (ابن العمراني، ٢٠٠١، ٣٠٣)؛ وكان سنه يومئذٍ (٣٦) سنة، وكانت مدة إمارته (١١) سنة وشهوراً (ابن الجوزي، ١٩٩٢، ٢٥٦/١٤)

(11) شرف الدولة (ت: ٣٧٩هـ/ ٩٩٠م): هو ابن عضد الدولة، كان يميل الى الخير وازال المصادرات وكان مرضه الاستسقاء وفساد المزاج فامتنع من الحمية ووافق هواه فى التخليط، فتوفي عصر يوم الجمعة ثانى جمادى الآخرة من سنة (٣٧٩هـ/ ٩٩٠م)، وحُمل الى المشهد بالكوفة فدفن فى تربة عضد الدولة، وكان مدة عمره (٢٨) سنة و(٥) اشهر ومدة ملكه ببغداد سنتان وثمانية أشهر (ابن الجوزي، ١٩٩٢، ٣٤٠/١٤).

(12) مجد الدولة: هو أبو طالب رستم بن فخر الدولة، كان صاحب الري وما اليها له حروب وحوادث مع علاء الدولة بن كاكويه الديلميّ، حتى استولى محمود بن سبكتكين صاحب غزنة على كثير من بلادهما، له اخبار في الكامل حوادث سنة (٣٨٧هـ/ ٩٩٧م). وقد آل أمره الى أن اعتقله طغرلبك سنة (٤٣٤هـ/ ١٠٤٣م) ووسع عليه (ابن العمراني، ٢٠٠١، ٣٠٦).

(13) جَرْجَرَايا: بفتح الجيم، وسكون الراء الأولى، هي: بلد من أعمال النهروان الأسفل بين واسط وبغداد من الجانب الشرقي، كانت مدينة وخربت مع ما خرب من النهروانات (ياقوت الحموي،١٩٩٥، ١٢٣/٢).

(14) القادر بالله: إسمه أحمد بن إسحاق بن المقتدر، ويكنى: أبا العباس، واسم أمه تمني مولاة عبد الواحد بن المقتدر، وكانت من أهل الدين، ولد في يوم الثلاثاء التاسع من ربيع الأول سنة (٣٣٦هـ/ ٩٤٨م)، وتقلَّد الخلافة بعد أن قبض الطائع للَّه وخُلع (ابن الجوزي، ١٩٩٢، ٣٥٣/١٤؛ السيوطي، ٢٠٠٤، ٢٩٤).

(15) كانت تلك الأموال خمسين ألف دينار نقداً، وجمع حسنويه من الدَّواب والبغال وسائر التحف، ما بلغ مقداره مائة ألف دينار. (ابن مسكويه، ٢٠٠٠، ٣١٤/٦).

(16) الدينور: مدينة من أعمال الجبل قرب قرميسين، يُنسَبُ إليها خلق كثير، وبين الدينور وهمذان نيف وعشرون فرسخاً، ومن الدينور إلى شهرزور أربع مراحل، والدينور بمقدار ثلثي همذان، وهي كثيرة الثمار والزروع ولها مياه ومستشرف (ياقوت الحموي، ١٩٩٥، ٥٤٥/٢).

(17) همذان: هي مدينة مشهورة من مدن الجبال، قيل: بناها همذان بن فلوج بن سام بن نوح، عليه السلام. ذكر علماء الفرس أنها كانت أكبر مدينة بأرض الجبال (القزويني، د/ت، ٤٨٣)؛ وذكر عنها بأنها مدينة من عراق العجم من كور الجبل، كبيرة جداً فرسخ في مثله، محدثة إسلامية، ولها أربعة أبواب، وهي كثيرة المياه والبساتين والزروع (الحميري، ١٩٨٠، ٥٩٦).

(18) نَهَاوَنْد: هي مدينة عظيمة في قبلة همذان بينهما ثلاثة أيام، ذُكر أنها سميت نهاوند، لأنهم وجدوها كما هي، ويقال: إنها من بناء نوح، عليه السّلام، أي نوح وضعها وإنما اسمها نوح أوند فخففت وقيل نهاوند، وهي أعتق مدينة في الجبل، وكان فتحها سنة ١٩، ويقال: سنة ٢٠ (ياقوت الحموي، ١٩٩٥، ٣١٣/٥).

(19) صامَغَان: بفتح الميم والغين المعجمة، وآخره نون، كورة من كور الجبل في حدود طبرستان، واسمها بالفارسيّة بميان (ياقوت الحموي، ١٩٩٥، ٣٩٠/٣؛ صفي الدين، ١٤١٢هـ، ٨٣٠/٢).

(20) قسنان: أو قسان، أو سنان هي قلعة، ويبدو أنها من قلاع الجبل، فلم يُعثر لها على تعريف في كتب البلدانيين، وقد ذكرها ابن خلدون بصيغة (بسان) (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٦٠٣/٤).

(21) قلعة غانم أباذ: لم يُعثر لها على تعريف في المصادر، وذلك يعني عدم شهرتها، ولكن ذكر ياقوت الحموي توضيحاً لمعنى كلمة (أباذ) بقوله: أباذ اسم العمارة بالفارسية (ياقوت الحموي، ١٩٩٥، ٣٨/١) وهذا ربما يُلقي الضوء على بيان معناها، وتعني القلعة التي بناها غانم بن أحمد أخو ونداد بن أحمد وهما أميرا قبيلة العيشانية، وخالا حسنويه بن حسين الكردي (ابن الأثير، ٢٠٠٦، ٣٨٨/٧).

(22) سَرْماجُ: هي قلعة حصينة بين همذان وخوزستان في الجبال، كانت لبدر بن حسنويه الكردي صاحب سابور خواست، وهي من أحصن قلاعه وأشدّها امتناعا (ياقوت، ١٩٩٥، ٢١٥/٣؛ صفي الدين، ١٤١٢هـ، ٧٠٩/٢).

(23) محمد بن غانم البرزيكاني: هو ابن خال حسنويه بن حسين الكردي، أي ابن خال والد بدر بن حسنويه (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٦٠٧/٤).

(24) كوردر: لم يُعثر له على على تعريف في المصادر.

(25) حصن الهفتجان: لم يُعثر له على على تعريف في المصادر.

(26) صمصام الدولة (ت: ٣٨٨هـ/ ٩٩٨م): هو ابن عضد الدولة، خرج عليه أبو نصر بن بختيار فأراد الصعود إلى القلعة، فلم يفتح له حافظها، فراسل الأكراد وتوثق فيهم وسار معهم بخزائنه وذخائره، فلما بعدوا به عطفوا فنهبوا جميع ما صحبه وهرب، فوافاه أصحاب ابن بختيار فقتلوه، وذلك في ذي الحجة من سنة (٣٨٨هـ)، وكانت مدة عمره (٣٥) سنة، و(٧) أشهر، وترك رأسه في طست بين يدي ابن بختيار، فقال: هذه سنة سنها أبوك (ابن الجوزي، ١٩٩٢، ١٥/ ١٠).

(27) مَطِيرَةُ: بالفتح ثم الكسر، فعيلة من المطر، ويجوز أن يكون مفعلة اسم المفعولة من طار يطير: هي قرية من نواحي سامرّاء وكانت من متنزّهات بغداد وسامرّاء (ياقوت الحموي، ١٩٩٥، ١٥١/٥)؛



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وذكرها الحميري معرفةً، المطيرة: قرية بقرب بغداد نزلها المعتصم حين خرج من بغداد مرتاداً إنشاء مدينة بسبب تضييق الأتراك على أهل بغداد، فبنى سر من رأى، وحين بناها أقطع الأفشين خيذر بن كاوس الأسروشني في آخر البناء مشرقاً على مقدار فرسخين، وسمى الموضع المطيرة (الحميري، ١٩٨٠، ٥٤٣).

[28] حُصِنْ كوسحد: لم يُعثر له على تعريف في المصادر، وقد ذكره ابن خلدون خطأً باسم (حصن كوسجة) (ابن خلدون، ١٩٨٨، ٦٩٢/٤)، وقد ذكرها شرفخان البدليسي بصيغة (كوسجد) (البدليسي، ٢٠٠٦، ١/ ٦٧).

[29] ورد ذكرها عند شرفحان البدليسي بصيغة (الجوزقان)، ويبدو هذه التسمية الصحيحة، وذلك بحرف (الزاي)، وليس (الراء)، بدليل عدم ورود قبيلة في المصادر بإسم (جورقان)، ولكن ورد باسم (جوزقان) بحرف الـ(زاي)، إذ ذكر ياقوت الحموي أن جُوزَقَانُ: بفتح الزاي والقاف، وآخره نون: من قرى همذان، والجوزقان أيضا: جيل من الأكراد يسكنون أكناف حلوان (ياقوت الحموي، ١٩٩٥، ١٨٤/٢).

[30] سُلْطَان الدولة (ت: ٤١٣هـ/ ١٠٢٣م): هو أَبُو شُجَاع سُلْطَان الدولة ابْن بهاء الدولة أبي نصر ابْن عضد الدولة ابْن بويه ولي السلطنة وَهُوَ صبي لَهُ عشر سِنِين بعد أخيه بهاء الدولة وَبعثت إِلَيْهِ الْخلْع من جِهَة الْخَلِيفَة وَتُوفِّي بشيراز رَحمَه الله تَعَالَى سنة (٤١٣هـ)، وَكَانَت سلطنته ضَعِيفَة (الصفدي، ٢٠٠٠، ٦٩/١٦)؛ توفي عن (٣٢) و(٥) أشهر (ابن الجوزي، ١٩٩٢، ١٦٥/١٥).

[31] كِنْكِوَر: بكسر الكافين، وسكون النون، وفتح الواو: بليدة بين همذان وقرميسين وفيها قصر عجيب يقال له قصر اللصوص ذكر في القصور، وهي الآن خراب (ياقوت الحموي، ١٩٩٥، ٤٨٤/٤؛ صفي الدين، ١٤١٢هـ، ١١٨٢/٣)؛ وقال القزويني عنها بأنها بليدة بين همذان وقرميسين في فضاء واسع، طيبة الهواء عذبة الماء صحيحة التربة كثيرة الخيرات والثمرات (القزويني، د/ت، ٤٤٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# ڤەگێرانێن حەسنەوەیییێن کورد خودانێن میرگەها حەسنەوەیی ب ڕێکا پەرتووکا (الکامل فی التاریخ) یا (ئیبن ئەسیر)ی


**پۆختە:**

ئارمانجا ئەڤێ ڤەکۆلینێ ئەوە کو ب ڕێکا پەرتووکا (الکامل في التاریخ) یا (ئیبن ئەسیر)ی (م.: ٦٣٠ هـ. / ١٢٣٣) ڤەکۆلینێ ل دیرۆکا کوردێن حەسنەوەیی و نووچە و بوویەرێن دیارێن ئەوێن ئەوان ڕۆل تێدا هەین، بکەین. ئەڤە ئێک ژ پەرتووکێن گرنگە بۆ دیرۆکا نەتەوە، گەل، میرنشین و دەولەتان د سەردەمێن ناڤین دا، و د ناڤ ئەوان میرنشینان دا؛ (میرنشینا حەسنەوەیی)یە، کو نووچەیێن ئەوان ژ هێلا ئبن ئەل-ئاتهیر ڤە هاتی دەستنیشان کرن.

ئەڤ ڤەکۆلینە ب راڤەکرنا نێزیکاتیا ئیبن ئەسیری د دەربارێ نووچەیێن حەسنەوەییان دا و ژێدەرێن وییێن د وی واری دا، چاوانیا دانووستاندنێن وی ب چاڤکانییێن وییێن ل سەر حەسنەوەییان را، و پشترە ڕێزکرنا تشتێن کو د چاڤکانییێن دیدا ل سەر حەسنەوەییان هاتنە بەحس کرن.

ژ مژارێن هەری گرنگێن کو د ڤێ ڤەکۆلینێدا هاتنە دەستگرتن ئەڤەنە: میرێن حەسەنوییێن کو دەستهلاتداریا میرنشینا حەسەناوی گرتبوون سەر خوە، ب تایبەتی حەسەنوەیە و کورێ وی بەدر بن حەسەنوەیە و رۆلا وان د ئاستا تێکلییێن ناڤخوەیی و دەرڤە دا. جەوهەرێ پەیوەندیا وان ب میرێن بوویيانرا کو ب هەرکین و هەرکین و خیلافەتا عەبباسیان ڤە دهاتە دیار کرن، ژ بلی خوەزایا پەیوەندیا د ناڤبەرا میرێن مالباتا حەسەنوی ب خوە دا، و خوەزایا تێکلیا وان ب گەلێ خوە را، و ئەشیرێن کوردێن جینار، ب تایبەتی ژی عەنازی، کو کوردن، ئەو پێوەندیا کو ب دژمناتیا هەردەمی ڤە دهاتە ناسکرن و ژ بەر وێ ژی سەدەمێن رووخانا میرنشینا هەسەناوی و کوشتنا پرانیا میرێن وێ دیار دبە. ئەل-ئاتهێر، د پرتووکا خوە دە (ئەل-کامل د دیرۆکێ دە)، ب رێکووپێککرنا وێ ب ئاوایەکی کو دبە کو وێنەیەک زەلال ژ وان را چێببە.

ئەڤ ڤەکۆلینە ل سەر پشکێن ژێرین هاتیە دابەشکرن: یەکەم. ب کورتی داناسینا داناسینا ئبن ئەل-ئەشر، و پاشێ نهێرینەک ل سەر پرتووکا وییا تەڤاهی ل سەر دیرۆکێ، مەتۆدۆلۆژیا وی د نڤیساندنا وێ دا، و راڤەکرنا جەوهەرێ ئبن ئەل-ئەسیر کو بەهسا هەسەنیێن کورد و سەرۆکاتیا وان د پرتووکا خوە دە کریە. (د دیرۆکێ دە تەمام)، هەر وەها سەرناڤەک ل سەر ژێدەرێن نووچەیا ئیبنول-ئەسیر ل سەر دەستهلاتداریا هەسەنان ڤەقەتاندیە و پشترە بەهسا چاڤکانیێن کو تێ دە نووچەیێن هەسەنەوی هاتنە بەهس کرن، و د داویێ دە ژی هوورگلییێن ڤێ نووچەیێ ئانیە زمان. نووچەیێن میرنشینیا هەسەنوی ب رێیا پرتووکا (ئەل-کامل د دیرۆکێ دە)یا ئیبن ئەسیر.



**پەیڤێن سەرەکی:** *خیلافەتا عەباسی، حەسنەوی، ئیبن ئەسیر، بووەیهی، عەنازی.*





Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**The news of the Hasanids, the Kurds, the owners of the Hasanids, through Ibn al-Atheer's book Al-Kamil in History, a historical study**

**Abstract:**

The purpose of this research is to study the history of the Hasanween Kurds, and their most prominent news and events in which they had a role, through the book Al-Kamil in History by Ibn Al-Atheer (d.: 630 AH / 1233 AD), which is considered one of the important sources for the history of nations, peoples, emirates, and states in the medieval era, and among those The emirates (the Hasanawi emirate), whose news was mentioned by Ibn al-Atheer, as he recounted the news of Hasanawayh bin Hussein al-Kurdi, the founder of the Hasanawi emirate, which was named after him, and his children, grandchildren, and great-grandsons who had a major role on the ground at the time.

This study is concerned with explaining Ibn al-Atheer's approach in dealing with the Hasanawis' news, his sources in that regard, the nature of his dealings with his sources on the Hasanawiyyin, and then listing what was mentioned in other sources on the Hasanawis, whether previous, contemporary, or subsequent to Ibn al-Atheer, and finally providing the details of Ibn al-Athir's Hadiths. In his book (The Complete History.

Among the most prominent topics that were addressed in this study are: the Hasanawi princes who assumed the reins of power in the Hasanawi emirate, especially Hasanawayh and his son Badr bin Hasanawayh, and their role at the level of internal and external relations, and the nature of their relationship with the Buyid princes that was characterized by ebbs and flows, and the Abbasid caliphate, In addition to the nature of the relationship between the princes of the Hasanawi family itself, and the nature of their relationship with their people, and the neighboring Kurdish tribes, especially the Anazis, who are Kurds, that relationship that was characterized by permanent hostility, and through it appears the reasons for the fall of the Hasanawi emirate, and the killing of most of its princes. All the information mentioned by Ibn Al-Atheer, in his book (Al-Kamil in History), with its arrangement in a way that enables a clear picture of them to be formed.

This study was divided into the following axes: First. Giving a brief introductory overview of Ibn al-Athir, and then an overview of his complete book on history, his methodology in authoring it, and an explanation of the nature of Ibn al-Athir's mention of the Kurdish Hasanids and their leadership in his book (The Complete in History), as well as allocating a title on the sources of Ibn al-Athir's news about the Hasanic rulership And then he mentioned the sources in which the news of the Hasanawis were mentioned, and finally he mentioned the details of the news of the Hasanawi emirate through the book (Al-Kamil in History) by Ibn Al-Atheer.

# نساء بني مروان في تاريخ ميافارقين للفارقي (ت بعد٥٥٧٧/١١٨١م)

م. د. هدار سليم صالح
قسم التاريخ- كلية التربية الاساسية- جامعة دهوك / إقليم كردستان العراق

**الملخص:**

شكلت مساهمة النساء في الحياة السياسية والحضارية في المدن والبلدان والقرى الكوردية اهمية خاصة في تاريخ امارة بني مروان، وذلك ما اثبتته النصوص التاريخية، والتي سعت الدراسة الى استخراجها من خلال كتاب تاريخ ميا فارقين للمؤرخ ابن الازرق الفارقي (ت بعد ٥٧٧ هـ/ ١١٨٠م)،حيث وجدت الدراسة تراجم العديد من النساء الكورديات، لا سيما نساء بني مروان ، فضلا عن عدد اخر من النساء اللواتي عشن في ميافارقين وامد وبعض مدن اقليم الجزيرة الفراتية حيث الغالبية الكوردية، واللاتي برز دورهن في بعض المرافق الحياتية الخاصة بتاريخ تلك المدن والقرى الكوردية، وقد وجدت الدراسة ان ذلك الدور كان له الأثر في تثبيت دعائم السلطة المروانية داخلياً، كما كان دعماً للامراء المروانيين في علاقاتهم الخارجية، فضلاً عن القيمة الحضارية والعمرانية لهن على الرغم من قلة اعمالهن في ذلك المجال.

**الكلمات الافتتاحية:** الفارقي ، نساء بني مروان، المصاهرات، العمرانية.

**المقدمة:**

إن التعريف بدور النساء في إمارة بني مروان يعد من الجوانب التاريخية المهمة لا سيما واننا امام مساهمة فعالة على أصعدة مختلفة استطاعت النساءمن خلال سعيهن كسب مكانة بارزة في الحياة السياسية والاجتماعية والحضارية، وذلك كان دافعا رئيسيا لاختيار الموضوع، لاسيما وأن المؤرخ الفارقي عاصر العديد من تلك النسوة ،ووقف عن قرب على نشاطاتهن في الحياة اليومية،ونقل أخبارهن من رواة موثوقين وقفوا عن قرب على سير حياة البعض منهن ،الى جانب أنه لم يتطرق حسب معرفة الباحثة حتى الان أي من الباحثيين لدور النساء في الحياة السياسية والحضارية بصورة منفصلة ، وذلك ما يشكل اهمية الموضوع والدراسة، وعلى الرغم من وجود دراسات سابقة حول الأوضاع العامة في الامارة قريبة من الموضوع، الا انها لم تخصص بابا خاصا عن دور النساء.

شمل الاطار المكاني للدراسة، مدن امد وميافارقين وبعض مدن الجزيرة الفراتية، بينما الاطار الزماني فتحدد بصورة عامة (٣٨٠-٥٤٨٠/ ٩٩٠- ١٠٩٠م)، اما الاطار الموضوعي فانه يرتكز



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بالمحددات المبينة في عنوان الدراسة(دور نساء بني مروان من خلال مرويات ابن الازرق الفارقي)، فيما يتعلق بدور النساء من الناحيتين السياسية والحضارية.

قسمت الدراسة الموسومة (دور نساء بني مروان من خلال مرويات ابن الازرق الفارقي الى ثلاث قسم مباحث، خصص المبحث الاول لتتبع سيرة المؤلف ونشأته العلمية، فضلا عن نبذة عن كتابه ومنهجه ، بالإضافة الى اهمية الكتاب، وفترة تأليفه.

اما المبحث الثاني فقد تناول ملخصاً عن تاريخ الامارة المروانية من عهد مؤسسها الى سقوط الامارة،اما المبحث الثالث فقد تطرق الى نساء بني مروان وسيرتهن ودورهن السياسي واهم الاعمال التي قاموا بها في ظل الامارة المروانية ،كذلك تطرق المبحث الى دور الزواج السياسي في سيرالاحداث في تلك الحقبة التاريخية .و تابع المبحث النشاط الحضاري للنساء والاعمال العمرانية التي قمن به والتي برز دورهن في بناء العديد من المشاهد العمرانية.

**المبحث الاول**

**سيرة ابن الازرق الفارقي**

١-اسمه ونسبه:

هواحمد بن يوسف بن علي بن الازرق ،(الفارقي،٢٠١٤،ص١٩؛ ابن شداد،١٩٧٨،١/٣/١/ ٢٧٨-٢٧٩)،وقد ورد اسمه بالمختصر عند بعض المؤرخين حيث عُرف بابن الأزرق الفارقي،(ابن خلكان، ١/١٩٧/ ١٧٧؛ الصفدي، ٤٧/١/١٩٦١؛ ابن كثير ،٣٢٤/١١/١٩٨٧). وذلك نسبة الى جده ابن الازرق، والمؤلف نفسه أكد على أسم جده في كتابه (و جدي الرئيس علي ابن الازرق)، (الفارقي،٢٠١٤،ص١٩)، ومع ذلك فان الفارقي بدون إضافات هو ما يعتمده غالبية المؤرخين ،(السمعاني١٩٨٨،١٢٢/١/-٣٣٤؛ ابن الاثير ،٤٧/١/٢٠٠٢ -٤٠٥) وجاء اسمه بتلك الصيغة نسبة الى ميافارقين،وهو الاسم المختصر المتعارف عليه وما اعتمدته الدراسة ايضاً.

٢- ولادته ونشأته

ولد الفارقي حسب ما كتبه المؤرخ بخط يده في ميافارقين في شهر شوال من سنة (٥١٠هـ/ ١١٠٦م) ،(الفارقي،٢٠١٤،ص١٩)،اما ما يخص نشأته فلم تتوفر اية معلومات عن طفولته ونشأته وحياته الاجتماعية، كونه لم يترجم لنفسه ،فضلا عن ذلك انه لم يرد في التراجم سوى بعض المعلومات القليلة عن حياته،لا سيما تلك التي تتعلق بجده الذي كان من أعيان ميافارقين والذي كان قد تقلد مناصب كثيرة مما ساهم في نشأة الفارقي بشكل يتناسب مركز جده،حيث ساهمت تلك المكانة في انماء قدراته العقلية والعلمية، بدليل افساح المجال امامه للقيام برحلات الى المدن التي كانت مراكز علمية.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ومن جهة اخرى نلاحظ ان الوظائف التي شغلها جده وعلاقاته مع كبار الشخصيات ورجال الدولة في ميافارقين،كان لها دور في فتح الافاق امام الفارقي والاهتمام بالتاريخ عن طريق الروايات التي سمعها من والده، والتي اصبحت فيما بعد مصدراً من مصادر كتابه تاريخ الفارقي. وكانت الرغبة الذاتية للتعليم عنده من اهم العوامل التي دفعته للحصول على العلم والوصول الى ما وصل اليه .

٣- تكوينه العلمي:

عكف الفارقي منذ سن مبكرة على التعليم، حيث انه نشأ في بيت معروف ومن عائلة كريمة، عرفت اصولها بالمشاركة في تحصيل العلم وكانت اسرته احدى الاسر التي انعمت بعطف حكام الدولة المروانية،،فكانت لاسرته دور في المكانة التي وصل لها من خلال تشجيعهم له في تلقي العلوم ليس بميافارقين فحسب بل جاب الافاق سماعا للشيوخ، فضلا عن حبه وشغفه للقراءة والمطالعة منذ العقد الثاني من عمره، وبعد ان اصبح شاباً سلك مسلك اقرانه في متابعة دراسته، ونجد ذلك من خلال رحلاته الى ماردين سنة (٥٢٩ هـ/١١٢٤م) وكانت تلك الرحلة تعتبر اول رحلة له (الفارقي ،٢٠١٤، ص٢٥ ؛للمزيد عن رحلاته ينظر : كوجر،٢٠١٠ ،ص٢٥-٢٦)، كما وزار الكثير من المدن والمناطق وكان هدفه من تلك الرحلات الاستزادة من العلوم.

جَدَّ الفارقي في طلب العلم ، فتمكن من ان يتلقى علومه على ايدي كبار شيوخ عصره وعلمائه ،ممن اشاد لهم بالعلم والدين والمعرفة انذاك، كعلوم القران والحديث الشريف والفقه واللغة والنحو وغيرها من فنون المعرفة المتداولة في عصره، واشارت المصادر الى عدد كبير ممن اخذ عليهم الفارقي، وكان لعلوم القران والحديث الشريف الجانب الرئيسي الذي احتل معظم تكوينه الفكري ومن ابرز شيوخه في ذلك المجال ابو منصور الرزاز(ت٤٦٢-٥٣٩هـ/١٠٦٩-١١٤٤م)، والشيخ ابي محمد بن بنت الشيخ (ت٤٦٤-٥٤٢ هـ/١٠٧١-١١٤٧م)،والشيخ عبد الوهاب الخفاف(ت٤٨٢-٥٥٦ هـ/١٠٨٩-١١٦٠م)،ابن قاضي القضاة الدامغاني (ت٤٩٠-٥٦٨ هـ/١٠٩٦-١١٧٢م)،القاضي كمال الدين الشهرزوري(ت٤٩٢-٥٧٢ هـ/١٠٩٨-١١٧٦م) ،الحافظ ابن عساكر (ت٤٩٩-٥٧١ هـ/١١٠٥-١١٧٥م)،(الفارقي،٢٠١٤،ص٢٠)

اما بالنسبة للمناصب التي شغلها الفارقي خلال فترة حياته، فقد استلم منصب القضاء في ميافارقين، وكان اول منصب تقلده، وكانت هناك اشارة بشأن ذلك في المصادر التاريخية اولها ما اشار اليه ابن الفوطي(ت٧٢٣هـ/١٣٢٣م) بقوله (عماد الدين احمد بن يوسف بن علي بن الازرق الفارقي القاضي...)، (مجمع،١٤١٦/٢/٣١)، وجاءت إشارة أخرى بنفس الطريقة في كتاب الإعلان بالتوبيخ للسخاوي (ت٩٠٢ هـ/ ١٤٩٧م) حينما ذكر اسم كتابه ونسبه الى الفارقي بقوله:(...



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

لا حمد بن يو سف بن ع لي بن الازرق القا ضي)،وهذا يدل ع لى ان جده كان قا ضيا( السخاوي،١٩٨٣،ص١٣٣).

كذلك تولى الفارقي وظيفة الا شراف او ناظر الاوقاف اكثر من مرة، وكانت لتلك الوظيفة شأن كبير لكونها مؤسسة دينية واقتصادية، وكانت قد انتشرت بشكل وا سع في نها ية العصر الوسيط القرن (٦ هـ/١٢م)،اي الحقبة التي عا شها المؤلف، وكان الفارقي قد توارث تلك الوظيفة ا با عن جد(التكريتي ،١٩٨١،ص٣٣٩). تشير المصادر انه تولاها اول مرة في سنة (٥٤٣ هـ /١١٤٨م)،في عهد الامير حسام الدين تمرتاش(٥١٦-٥٤٧هـ/ ١١٢٢-١١٥٢م)،وذلك للمكانة البارزة التي حظي بها المؤرخ عنده فأختاره لتلك الوظيفة، اما المرة الثانية التي تولى فيها هذا المنصب كانت في سنة(٥٦٢ هـ/١١٩٦م) حيث تولى نظارة حصن كيفا،( الفارقي،٢٠١٤، ص٢٤) ،يبدو ان المؤرخ لنزاهته واما نته وسمعة جده اختير لتلك الوظيفة والتي من شروطها(اما ان يكون ولي بالامانة،واما ولي ببذل ،واما ولي بضمان)(ابن مماتي،١٩٩١،ص٢٩٨).اي كل ما يتعلق بالايرادات المالية والمصرفية في كافة الدواوين(الماوردي،١٩٩٤،ص٣٣٧)

وفي احداث سنة (٥٦٣هـ/١١٦٧م) أشار الفارقي الى توليه النظر في اوقاف دمشق:((ووصلت الى دمشق سابع عشر شهر رمضان ولقيت المولى كمال الدين الشهرزوري.. واقمت بدمشق.. ورد الي النظر في اوقاف دمشق بظاهرها وأقمت بدمشق))،(الفارقي،٢٠١٤،ص٢٤)،وفي سنة (٥٤٤هـ/١١٤٩م)تولى منصب السفارة حيث اصبح سفيرا في الموصل عن حسام الدين تمرتاش في بيع الحديد،(الفارقي،٢٠١٤،ص٢٥)، وتولى السفارة سنة(٥٤٨-٥٤٩هـ/١١٥٣-١١٤٩م)الى ملك الابخاز واني والدربند❖، وقد اشار الفارقي الى ذلك بقوله: ((... انني كنت سافرت الى مدينة تفليس واقمت بها شتوتا في خدمة ملك الابخاز وصاحب تفليس وخرجت معه في العسكر)) ،(الفارقي،٢٠١٤،ص٢٥). وهناك اشارة من احد المؤرخين الغرب بان الفارقي كان متعينا في بلاد الكرج من قبل الملك ديمتر بن داود دون الافصاح عن نوع الوظيفة التي كان يشغلها هناك (Minorsky,1953,pp,28-29)

٤-وفاته:

اختلف المؤرخون في تحديد سنة وفاة الفارقي، الا ان الراجح حسب ملاحظة كتبها الفارقي بخط يده على كتاب احياء علوم الدين للامام الغزالي(ت٥٠٥هـ/١١١١م) ((طالعه ... احمد بن يوسف.. سنة سبع وسبعين وخمسمائة وهذا ما اشاد به محقق كتاب الفارقي بأن تاريخ وفاة الفارقي بعد سنة (٥٧٧هـ/١١٧٦م)، (الفارقي ،٢٠٠٤،ص٢٥).

❖كتاب تاريخ ميافارقين



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

قدم الفارقي في كتابه تاريخ ميافارقين وامد معلومات قيمة عن المدينتين، فضلاً عن بعض المدن الأخرى التي قام المؤلف بزيارتها وما شاهد فيها من احداث، كما عرض معلومات دقيقة عن تاريخ وثقافة العصر الذي عاش فيه اي القرن (٦هـ/١٢م)،كما ورد فيه سيرة الخلفاء والامراء والوزراء، وكان للحياة العامة والعمرانية نصيب من ذلك الكتاب، ولقد اورد ابن شداد(ت ٦٨٤ هـ/١٢٨٥م)في كتابه الاعلاق الخطيرة اقدم رواية عثرت عليها بخصوص كتاب الفارقي بقوله:((... ذكر احمد بن يوسف بن علي بن الازرق صاحب تاريخ ميافارقين وامد..)) ،(ابن شداد،١٩٧٨/٣/١/٢٢٨-٢٧٩).

❖الدربند:هو باب الابواب ينسب اليه الحسن بن محمد بن علي بن محمد الصوفي البلخي المعروف بالدربندي .للمزيد ينظر:ياقوت الحموي،١٩٥٧،٢/٤٤٩

يقع الكتاب في جزئين بحسب ما أشار المؤلف نفسه الى ذلك :((وخرج قبر دانيال عليه السلام وقد ذكرنا ذلك في الجزء الاول من كتابنا)) (الفارقي،٢٠١٤،ص٦٦)،وعند حديثه عن هجرة المسلمين الى الحبشة: ((هاجروا الى النجاشي....))، (الفارقي،٢٠١٤،ص٦٨)، الا انه لم يذكر سنة تأليف الكتاب وسنة انتهائه منه، ولا توجد بحسب علمنا رواية تاريخية تدل على ذلك،ما عدا إشارة يستشف من خلالها انه انتهى من تأليف كتابه في اواخر سنة (٥٧٢هـ/١١٧٦م)، وذلك عند ذكره احداث تلك السنة ((ونذكر من وليها بعد ذلك ملكا بعد ملك الى الان وهي سنة اثنتين وسبعين وخمسمائة للهجرة))،( الفارقي، ٢٠١٤، ص٢٦)، وذلك ما يجعلنا نفترض ان تأليفه للكتاب جاء في مرحلة متأخرة من حياته، ويرجح ان سبب ذلك يعود الى انشغاله بالوظائف التي تولاها ليس في مدينة ميافارقين فقط انما في غيرها من المدن ايضاً.

منهج المؤلف في كتابة تاريخ ميافارقين

اتبع الفارقي في كتابه منهج (التواريخ المحلية)، الذي يركز بالدرجة الأساس على مدينة معينة ويدون حولها التفاصيل على اغلب الأصعدة، وذلك النمط من التدوين التاريخي ظهر كنتيجة حتمية للتطورات السياسية التي شهدها العالم الإسلامي في العصر العباسي، لاسيما فيما يتعلق بتوسع الرقعة الجغرافية للدولة، والتي شملت مدن وامصار كثيرة، مما ادى على ذلك الأساس فقد ركز المؤرخ بشكل اساسي على مسقط راسه والتي هي مدينة ميافارقين، وعادة ذلك النوع من الكتابة التاريخية يُرجع العديد من الباحثين بداية ظهورها الى صدر الاسلام بالخلافة الى اتباع السياسة غير المركزية وبالتالي ظهور العديد من الدويلات، (الفارقي، ٢٠١٤ص٦؛ العزاوي ،١٩٨٨،ص٤١)، حيث مع تركيزه على ميافارقين اهتم بسرد المعلومات عن بني مروان وامارتهم باعتبارها ظهرت جديدة على مسرح الاحداث السياسية، كما اهتم بسرد اخبارهم على جميع الاصعدة وتابعها الى وقت زوال سلطتهم في مدينة ميافارقين .

المبحث الثاني:نبذة مختصرة عن الامارة المروانية

فرضت الامارة المروانية نفسها على كتاب الفارقي بشكل ملحوظ، والاسباب التي دفعت الفارقي الى الاهتمام بتاريخ الامارة هو دور أمرائها السياسي والعسكري، فضلا عن انجازاتها الحضارية ،على ذلك الاساس إرتأت الدراسة عرض نبذة مختصرة من تاريخها بدءاً من مؤسسها الاول الامير باد بن دوستك(٣٦٧-٣٨٠هـ/٩٧٧-٩٩٠م)،وحتى اخر من بقي من امرائها وهو ناصر الدولة منصور (ت٤٧٢-٤٨٩هـ/ ١٠٧٩-١٠٩٦م) .

تعتبر الامارة المروانية واحدة من اهم الامارات التي ظهرت على مسرح الاحداث السياسية والتي حكمت جزءا مهما من اقليم الجزيرة الفراتية في القرن (٥هـ/١١م) قرابة اكثر من قرن اي ما بين (٣٧٣-٤٧٩هـ/٩٨٣-١٠٨٦م)،وكانت ديار بكر المركز الرئيسي لنشوء تلك الامارة وبالتحديد حصن كيفا وميافارقين وارزن بالاضافة الى نصيبين وجزيرة ابن عمر والرها وماردين وغيرها.

يعتبر الامير باد بن دوستك(٣٨٠-٣٧٣ه/٩٨٣-٩٩٠م) المؤسس الحقيقي الامارة المروانية والذي حكمها على مدى سبع سنوات(٣٧٣-٣٨٠هـ/٩٨٣-٩٩٠م)، وذكر ذلك الفارقي قائلا ((اول من ملك من الاكراد)) ،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٩ )، ووصف احد المستشرقين حكم الامير باد بن دوستك بقوله: ((وقد وصلت الامارة الدوستكية المروانية في عهد باد الى مرحلة من الرخاء والاستقرار...))، (hogh kennedy,2004,p266:)، وبعد مقتل باد بن دوستك سنة (٣٨٠هـ/٩٩٠م)، تولى ابو علي الحسن بن مروان(٣٨٠-٣٨٧ه/٩٩٠-٩٩٧م)حكم الامارة بعد زواجه من زوجة خاله باد (الفارقي،٢٠١٤ ،ص٦٠؛ الروذراوي،١٩١٦/٣/١٧٨)،حيث تمكن من السيطرة على ممتلكات الامارة الدوستكية، وبذلك انتقل الحكم من بني دوستك الى بني مروان سنة (٣٨٠هـ/٩٩٠م)، (الفارقي،٢٠١٤،ص٦٠) وفي سنة ( ٣٨٧هـ/٩٩٧ م) قتل الامير ابي علي الحسن بن مروان ،(للمزيد عن مقتله ينظر :الفارقي ،٢٠١٤ ،ص٧٤-٧٥؛ ابن شداد ١٩٧٨/٣/١/٣٢٨-٣٢٩)،وبمقتله اضطربت الاحوال في مدينة آمد ،الى ان تولى حكمها الامير ممهد الدولة ابو منصور(٣٨٧--٤٠١هـ/٩٩٧-١٠١٠م) .(الفارقي،ص٧٥؛ زامباور ،١٩٥١ /٢/٢٠٦؛سحر،٢٠٠٩،ص٣٣٤) والذي اعتبر ثاني امير مرواني يحكم الامارة بعد مقتل اخيه ابي علي سنة (٣٨٠هـ/٩٩٠م) .واتخذ ميافارقين عاصمة له، (الفارقي،٢٠١٤، ص٧٧-٧٨)، انتعشت الامارة في عهده (الفارقي،٢٠١٤،ص٩٠-٩١) وتمكن من اقامة علاقات مع الخليفة العباسي في بغداد،والفاطمي في القاهرة، والامبرطور البيزنطي واشار الفارقي الى ذلك ((بان الامير المرواني استقبل الامبراطور البيزنطي باسل الثاني.. .))، (الفارقي،٢٠١٤،ص٨٤؛ الانطاكي ،١٩٩٠،ص٢٤٧) ولقد دام حكمه اربع عشر عاما، وجاءت نهايته سنة (٤٠١هـ/ ١٠١٠م)حيث قتل جراء مؤامرة داخلية قام بها اثنان من اعوانه المقربين شروة(ت٤٠٢ه/١٠١١) وابن فيلوس من اجل الاستفراد بحكم الامارة، (الفارقي،٢٠١٤ ،ص٩٠-٩٢؛ابن الاثير ،٢٠٠٢/٧/١٧٩؛ ابن شداد ،١٩٧٨ /٣/ ١/ ٣٣٦-٣٤٠؛ قادر؛١٩٩٩، ص٣٤-٣٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

كأمتداد للاحداث بعد مقتل ممهد الدولة، حاول شروة القضاء نهائيا على اسرة بني مروان وانهاء حكمهم، فعمد على ارسال قوة عسكرية الى مدينة اسعرد(١)لالقاء القبض على اخو ممهد الدولة الامير المرواني احمد بن مروان (٤٠١-٤٥٣ه/١٠١٠-١٠٦١م)، الا ان محاولته اخفقت لان الامير احمد كان قد ترك اسعرد الى ارزن لملاقاة واليها الخواجا ابا القاسم (للمزيد عنه ينظر ابن شداد/٣٤٢/١/٣)،فعلم الاخير بما حدث للامير ممهد الدولة، وسعى لإنقاذ الامير احمد وبالتالي مبايعته بالحكم وذلك في سنة(٤١٠ه/١٠١٠م)، وبذلك تمكن الامير من التخلص من شروة، (الفارقي ،٢٠١٤،ص٩٥؛ابن الاثير،١٧٩/٧/٢٠٠٢؛ابن شداد،١٩٧٨/١/٣/ ٣٤٢).

وفي سنة(٤٠١هـ/١٠١٠م)، استقر حكم الامير نصر الدولة في آمد وميافارقين وتمكن من السيطرة على جميع ديار بكر، (الفارقي، ٢٠١٤، ص١٢٤؛ ابن شداد،١٩٧٨/١/٣/٣٥٧)، ونجح في اقامة علاقات سياسية مع ملوك وامراء البلدان المجاورة،كمراسلة الملك العزيز بن بويه(٤٤١ه/١٠٤٩م)،وكذلك ابو القاسم الحسين بن علي المغربي(ت٤٢٨ه/١٠٣٦م)(٢) الذي استوزره بعد ذلك،قائلا:((انه لم يوزر الملك، ولا لخليفة اكفا منه رجلا...))(الفارقي،٢٠١٤،ص٤٨٤-٤٨٥؛ابن الاثير١٨٠/٧/٢٠٠٢ ؛ابن شداد،١٩٧٨/١/٣/ ٣٥٢-٣٥٣؛ التكريتي ،١٩٨١،ص٩٠)

واصبح للامارة المروانية مكانة سياسية مهمة في عهد الامير نصر الدولة بين الدول والامارات الى ان وافته المنية سنة( ٤٥٣ هـ/١٠٦١م)بعد حكم دام احدى وخمسين سنة، (الفارقي،٢٠١٤،ص٥٠٥ ؛ ابن الاثير، ٢٠٠٢ /٨/٢٠١؛ ابن شداد،١٩٧٨/٣/٣٦٦؛التكريتي،١٩٧٠،ص٩٣ ،كليفورد،١ ،١٩٩٥،ص٨٨.).

بعد وفاة الامير نصر الدولة، تولى نظام الدين ابو القاسم( ٤٥٣-٤٧٢هـ/١٠٦١-١٠٧٩م)حكم الامارة المروانية، شهد الامير نظام الدين اول حدث سياسي عندما تمرد عليه اخوه الاكبر سعيد(٤٥٣-٤٥٥ ه /١٠٦١ -١٠٦٣م)، باعتباره الوريث الشرعي لحكم الامارة بحكم انه الاكبر سنا، وعندما فشل بابعاد وازاحة اخيه عن الحكم،اضطر الى الالتجاء الى السلطان السلجوقي، طغرلبك (٤٢٩-٤٥٥هـ/١٠٣٧-١٠٦٣م)فسير الاخير سنة (٤٥٥هـ/ ١٠٦٣م) قوات عسكرية معه بقيادة أحد امرائه واتجه نحو ميافارقين، (الفارقي،٢٠١٤، ص٥٠٧؛ ابن شداد،١٩٧٨/٣ /١/٣٦٧؛التكريتي،١٩٧٠،ص٩٧)،اما بالنسبة للامير نظام الدين فانه لم يقابل العساكر السلجوقية بالقوة،على العكس اراد مداراته بالسياسة،بارساله الوزير ابن جهير(ت٤٨٣ هـ/١٠٩٠م) الى الامير سعيد واقناعه بالتراجع عن الهجوم قائلا له:((لا يكون قلع هذا البيت على يديك))،وانتهى الخلاف بمصالحة الامير سعيد مقابل اعطائه مبلغا من المال، ويسلم اليه آمد،(الفارقي٢٠١٤،ص٥٠٧؛ ابن شداد،١٩٧٨/١/٣، ص٣٦٧) ،ويمكن القول بان ما حدث انفا قد يكون اول اتصال بين السلاجقة والمروانيين.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

تجدد في سنة(٤٦٠هـ/١٠٦٧م) الخلاف بين الامير نظام الدين واخيه سعيد، الا ان الامير نظام الدين تمكن انهاء ذلك الخلاف بتنصيب اخيه سعيد على آمد، (الفارقي،٢٠١٤،ص٥٠٩؛ابن شداد،١٩٧٨/ ٣/ ١/٣٦٧؛ ابن الاثير، ٢٠٠٢/٨/٢٩٥؛ ابن خلدون،١٩٧٩/٤/٣٢٠؛ ابن الوردي، ١٩٩٦/١/٣٧٠) وفي سنة ( ٤٧٢ هـ/١٠٧٩م) توفي الامير نظام الدين بعد حكم دام تسع عشرة سنة،(الفارقي، ٢٠١٤، ص٥٠٩؛ ابن شداد،١٩٧٨ /٣/١/٣٨٠) .

تولى الأمير ناصر الدولة منصورحكم الامارة المروانية في سنة( ٤٧٢-٤٨٩هـ/١٠٧٩-١٠٩٦م)، ونصب الاخير ابو طاهر سلامة الانباري، وزيرا للامارة، الا انه لم يستمر في الوزارة فترة طويلة،على الرغم من قول الفارقي:

(١)مدينة تقع شمالي دجلة وتقع جنوب آمد وتبعد عن ميافارقين مسيرة يوم ونصف ينظر: (ابو الفداء،١٨٥٠،ص٢٨٩)،

(٢)للمزيد عن الوزير المغربي ينظر :(ابن الاثير،٢٠٠٢/٧/ص٣٦٧؛الجاجرمي،٢٠٠٩، ص١٢٠-١٢٧)

(( ساس الملك احسن سياسة))،(الفارقي،٢٠١٤، ص٥١٨)،حيث نافسه الطبيب ابو سالم ،واستطاع الطبيب ان يستغل علاقة زوجته بزوجة الامير ناصر الدولة الذي من خلالها نجح في الوصول الى منصب الوزارة،بعد وشايته بالوزير الانباري عند الامير وكانت النتيجة ايداع الانباري في السجن (الفارقي،٢٠١٤ ، ص٥١٨) ، وكان ذلك ايذانا بضعف الدولة وسقوطها فيما بعد،حيث استمر حكم الامارة الى سنة ٤٧٨ هـ/١٠٩٣م)وكان اخر امرائها الامير ناصر الدولة ابو المظفر منصور (٤٧٢-٤٧٨هـ/١٠٧٩-١٠٨٥م)، واشار ابن شداد ان وفاته كانت :((اخر ولاية بني مروان))(ابن شداد،١٩٧٨/٣/١/٤٠٤؛سحر ،٢٠٠٩،ص٣٥٨).

المبحث الثالث: نساء بني مروان في تاريخ ميافارقين للفارقي:

تشكل دراسة دور المرأة وتتبع انجازاتها في الامارة المروانية اهمية بالغة في كشف بعض الجوانب الحضارية من تاريخ الامارة، وتبين هذه الدراسة دور المرأة السياسي والاجتماعي والانجازات الحضارية لهن فيها،وتكشف عن دورهن في توثيق وتقوية دعائم العلاقات السياسية سواء بين افراد الامارة او بينها وبين الاطراف المحيطة بها ،بالاضافة الى نشاطهم في مجال العمارة والتي ما يزال جزء منها ماثلا الى الان ، وكانت تلك الانجازات المعمارية شاهدا على ما قدمتها سليلات آل مروان، ومع ندرة المعلومات وعدم اهتمام المصادر التاريخية بتتبع ذلك المجال ، الا ان هناك حالات جمة يمكننا ان نلتمسها ونستخرجها ضمن تفاصيل الاحداث.

وفيما تخص دور المرأة المروانية في النواحي السياسية، فكان لها اهتمام بارز في معالجة الاوضاع السياسية الداخلية، وهناك اشارة من الفارقي الى بعض النساء اللواتي كانت لهن الاثر

الواضح في رسم سياسة الامارة بالاضافة الى تدخلهن في شؤون الحكم ، منها زوجة الامير باد بن دوستك المتنفذة في حكم حصن كيفا اثناء غياب زوجها ،وكان الامير باد قد سلم امور القلعة بأكملها اليها، وفي سنة( ٣٨٠هـ/٩٩٠م)، والتي من خلال سلطتها القوية انتقلت حكم الامارة الى الامير ابو علي الحسن بن مروان بعد مقتل زوجها، (الفارقي،٢٠١٤، ص٤٥٣؛ ابن الاثير،٢٠٠٢ /٧/ ٤٤٤-٤٤٥؛ ابن العبري،١٩٩٧،ص١٥١).

امابالنسبة للمصاهرات السياسية داخل البيت المرواني فهناك العديد من الدراسات التاريخية التي تتناول موضوع المصاهرات السياسية في التاريخ الاسلامي اثناء الحقبة التاريخية الخاصة بفترة الدراسة ، ولكن لم نعثر على اية دراسة مستقلة تتناول هذا الموضوع في الامارة المروانية بشكل خاص، لذا ارتأينا في هذه الدراسة ان نسلط الضوء عل ذلك الجانب بشكل اساسي. فكان لزواج النساء المروانيات بالامراء داخل البيت المرواني اثره الواضح في تماسك الاسرة المراودنية الى حد ما، والتقليل من التوترات الداخلية والفتن التي غالبا ما كانت تضعف سياسة الامراء اثناء الحكم ، وكذلك كان لتلك المصاهرات اثره في توحيد جبهتهم امام اعدائهم، وذلك ما نلحظه في مرويات الفارقي بذكره اكثر من مرة زواج الاميرات المروانيات من آل مروان، وعلى ما يبدو ان الامراء المروانيين حرصوا على مصاهرة بعضهم بعضاً لتقوية الصلات الداخلية فيما بينهم،فمتانة تلك الصلات تمنح الامراء القوة والصلابة في إدارة شؤون الامارة، وفي أحيان كثيرة اتخذت تلك المصاهرات طابعاً سياسياً وذلك ما يبين بان الغرض من هكذا الزواج هو سياسي بالدرجة الاول، و بدى ذلك واضحا من خلال ما ذكره الفارقي ، في عهد نصر الدولة المرواني قام بتزويج ابي دلف بن ابي علي حسن بن مروان وكانت امه بنت سنحاريب ملك السناسنة (نجد ان المؤلف لم يذكر اسم الاميرة التي تزوجها ابي دلف)،(الفارقي،٢٠١٤،ص٤٦٢) وكذلك ذكره بقيام الامير نصر الدولة بتزويج ابنة ابن عمه (هند بنت علي بن منصور بن كك) من ابن عمه مزربان بن بلاشو بن كك ( الفارقي، ٢٠١٤،ص ٥٠٥ ) ،ويبدو من خلال ما سبق ان غاية الامير نصر الدولة من ذلك الزواج هو المحافظة عل ملك بني مروان ،وكذلك الحال بزواج الامير ابراهيم بن نصر الدولة،والاميرة فاطمة بنت الامير ابي دلف سنحاريب ابن الامير علي بن الحسين بن مروان،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٣٨)،واشار الفارقي ان ذلك الزواج تكلل بانجاب الامير ابا الفوارس شاذريك،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٣٨)

اشار مؤرخنا ايضا الى تمكن بعض النساء المروانيات من التدخل في شؤون الحكم، والى نفوذهن الكبير ومدى تأثيرهن على ارباب الدولة، كزوجة الامير ناصر الدولة المرواني الاميرة (ست الناس)، والتي كان لها تاثير كبير وواضح على زوجها الامير ناصر الدولة بقدرتها على اقناعه بالموافقة على رفع شأن ومنزلة ابي سالم الطبيب وتكريمه بتسليمه امور البلاد وجعله وزيرا للامارة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

المروانية بدل الوزير ابي طاهر الانباري، وكان ذلك بناء على طلب زوجة الطبيب من ست الناس بعد ان استطاعت ان تتقرب لها، (الفارقي،٢٠١٤،ص ٥١٨ ؛ابن شداد،١٩٧٨ /١/٣/ ٣٨٤).

كما كان لنساء بني مروان تأثير بتغير الكثير من قرارات الامارة ولهن القدرة على تغيير مجريات الاحداث داخل الامارة المروانية ، لاذهن كُنَ محل احترام وتقدير الكثير من السلاطين والوزراء، لذا كانت طلباتهن تجاب من قبلهم دون اي تردد، وذلك ما وجدناه من خلال اولى المشاكل التي واجهت الامير نظام الدين بتمرد اخيه الاكبر الامير سعيد بن نصر الدولة ،وذلك عندما عندما لم يستطع ازاحة اخيه الامير نظام الدين ،لجأ الى طلب مساعدة السلطان السلجوقي الب ارسلان() الذي نزل الى بلاد الجزيرة الفراتية وبالتحديد في قرية الحرشفية،على شاطئ نهر دجلة، وكان يرافق السلطان في حملته تلك الوزير نظام الملك(ت٤٠٨-٤٨٥ه/١٠١٧-١٠٩٢م) وقصد الاخير ميافارقين، ولما علم نظام الدين بدخوله المدينة، استقبله بحفاوة واجتمع به بالقصرالاميري، وشاركتهم الاجتماع زوجة نظام الدين الست عزيزة بالاضافة الى اخواته الست زينب والست زبيدة، (الفارقي،٢٠١٤،ص،٥٠٦ ؛ابن شداد١٩٧٨/٣/١/٣٨٥-٣٨٦).

اسفر ذلك الاجتماع بخروج الامير نظام الدين برفقة الوزير نظام الملك لمقابلة السلطان السلجوقي الب ارسلان في قرية الحرشفية،واثناء خروجهم ،طلبت زوجة الامير نظام الدين الست عزيزة واختاه الست زبيدة والست زينب من الوزير السلجوقي بالمحافظة على حياته واعادة الامير اليهم سالما الى امارته، فتعهد الوزير لهما بذلك قائلا لهم : ((والله لاخذنه منكن اميرا واعيده اليكن سلطانا))(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٠٦ ؛ابن شداد،١٩٧٨/٣/١/٣٥٧) .

ومن الجدير بالاشارة اليه ان ذلك الاجتماع ضم شخصية أخرى وهي الست رحيمة والدة الوزير المرواني،عيسى بن فضل النصراني، وكان العماد الاصفهاني(ت٥٩٧ هـ/١٢٠٠) قد انفرد بمعلومات مكملة عن ذلك، حين اشار انه قابل امرأة اخرى في ميافارقين وهي والدة وزير الأمير المرواني عيسى بن فضل النصراني ، تدعى الست رحيمة فيشير علم الدين الشاتاني(ت٥٧٩ه/١١٨٣م ) الى ذلك ان الوزير السلجوقي حين التقاها قال لها: ((انت الست رحيمة، قالت: بل الامة المرحومة،...)) (الاصفهاني ،١٩٥٩/٢/٨٦) .

خرج الوزير السلجوقي والامير نظام الدين الى الحرشفية،وبعد وصولهم الى مجلس السلطان الب ارسلان أكرم الاخير الامير المرواني نظام الدين، ومن جهته تعهد نظام الدين بتقديم اموال كثيرة للسلطان، وفي تلك الاثناء كانت الست زبيدة اخت الامير نظام الدين قد اعطت لابنها الامير احمد الذي رافق والده في مقابلة السلطان، مبلغ كبير من المال وطلبت منه ان يحتفظ بذلك المال عنده، وان لا يبين للامير نظام الدين بما لديه من اموال ،الى ان يتاكد من نفاذ ما معه من الاموال ،عندئذ تستطيع تقديم تلك الاموال للامير نظام الدين، وبالفعل تعرض



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

الامير نظام الدين الى ضايقة مالية لانه كان قد صرف ما معه من اموال ،فانقذه ابن اخته زبيدة باعطائه المال الذي اعطته اياه والدته(الفارقي،٢٠١٤،ص٥١١)، وفي ذلك إشارة واضحة الى حسن التدبير لدى بعض نساء آل مروان.

يبدو ان الست زبيدة كانت قد ايقنت بما سوف يتعرض له الامير نظام الدين من موقف حرج في مجلس السلطان السلجوقي بعد نفاذ كل ما يملك من اموال ،فعالجت الموقف قبل حدوثه، فنجح الامير نظام الدين في تبيض ماء وجهه امام السلطان ونفذ ما وعد به الوزير السلجوقي نظام الملك باعطاء السلطان الخلع والهدايا الثمينة،ومن ثم اعاده الوزير مقر امارته ميافارقين،وقال له:((أني ضمنت لاهلك اني اعيدك اليهم سلطاناً وما لنا غير سلطان واحد ولكن انت سلطان الامراء ولقبه بذلك)) (الفارقي ،٢٠١٤، ص٥١١ ؛ ابن شداد،١٩٨٧/٣/١/٣٧٥)

كما اشار الفارقي ايضا الى مصاهرة اخرى داخل البيت المرواني وتحديدا بين الامير ابو نصر بن ابا الفوارس شاذريك بنت الامير ناصر الدولة منصور وانجب منها ابنا سماه حسين ،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٣٩) ،وفي موضع اخر ذكر الفارقي بان الامير ناصر الدولة منصور لما مات فانه خلف الامير تاج الدولة محمد وبنتا تزوجها الامير ابو نصر بن ابي الفوارس(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٣٥)،ولم يذكر المؤلف اية معلومات عنها ولا حتى ذكر اسمها، وهناك رواية اخرى لهذا النوع من الزواج تتطرق اليها الفارقي عند ذكره زواج الامير علي بن ابي الفوارس بالاميرة زينب بنت الرئيس موسك الاكبر ابن الرئيس ابي عبد الله بن موسك ،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٣٩)

من جهة اخرى نجد حرص الامراء المروانيين على ضمان ملك بني مروان بتقوية نفوذهم في المنطقة وضم مناطق نفوذ اخوتهم الى مناطق نفوذهم ، عن طريق الزواج من ارامل اخوانهم وابناء عمومتهم او اقاربهم،كما هو الحال مع الامير ابو علي حسن بن مروان عند قيامه بطلب الزواج سنة( ٣٨٠هـ/٩٩٠م) من ارملة خاله بعد مقتل اباد بن دوستك، وكانت غايته من ذلك الزواج حماية مناطق نفوذ الامارة واعطاء الشرعية لحكمه،(الفارقي،٢٠١٤،ص٤٥٣) . كذلك الحال في احداث سنة (٤٦٠ هـ/١٠٦٧م) حيث قصد الأمير نظام الدين امد بعد وفاة اخيه الامير سعيد وتقدم الى زوجة اخيه الست عزيزة بنت زنك بن أوان ونجح في اقناعها بالزواج به بعد وفاة زوجها صاحب ديار بكر وتسليمه ديار بكر،وقال لها:((الاولاد اولادي وانا لك ،فسلمت اليه امد فملكها .... )) ،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥١٢؛ ابن شداد ،١٩٧٨/٣/١/٣٧٠)، وذلك ما يرجح ان الامراء المروانيين كانوا على دراية بأهمية تلك المصاهرات، وذلك النوع من الزواج لدعم سلطانهم وتقوية الاواصر والصلات الداخلية، فضلاً عن أهمية ذلك لتوسيع السلطات والنفوذ السياسي والجغرافي والحفاظ عليه.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هناك اشارة اخرى من المؤرخ بخصوص ذلك النوع من الزيجات، وهو زواج الامير ابو دلف بن ابي الفوارس شاذريك من ابنة الامير احمد بن نظام الدين ،وعلى ما يبدو ان ذلك الزواج لم يستمر طويلا ، بسبب موت الاميرة ،مما جعله بعد وفاة زوجته التقدم للزواج من اختها سروة بنت الامير احمد، وبعد وفاة ابي دلف تزوج اخوه الامير ابراهيم من زوجته سروة ورزق الامير ابراهيم من زوجته سروة بولدين هما احمد بك وابو الفوارس،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٣٩)،ونجد هناك مثال اخر عن ذلك النوع من الزواج وهو زواج الاميرة سروة بنت الامير بهرام بن نظام الدين من زوج عمتها (الست فاتة) الرئيس ابو عبد الله محمد بن موسك،بعد وفاة عمتها،وكانت الاميرة سروة قد انجبت من زوجها الرئيس ابو عبدالله ولدا سمي موسك الا انة لم يكتب له ان يعيش طويلا قال عنه الفارقي ((مات في زماننا))(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٣٦) .

كما كان الامراء المروانيين يحرصون على تزويج بناتهم من ولاتهم من الامراء، كما هو الحال بزواج الاميرة فاتة ابنة الامير نظام الدين من الامير مجاهد ابا القاسم هبة الله بن موسك،امير بدليس،وكان الامير نظام الدين قد اعطاه اياها،الا ان ذلك الزواج لم يكتمل بسبب موت الامير مجاهد، فتزوجت اخوه الرئيس ابو عبد الله محمد بن مسك وبقيت عنده مدة وماتت وقيل:(انه سقاها سما وماتت) (الفارقي٢٠١٤، ص٥١٧).

كما اشار الفارقي الى نساء مطلقات تم تزوجيهن مرة ثانية، وفي ذلك دلالة على ان الزواج من النساء المطلقات في تلك الحقبة لم يكن عيبا ،خاصة اذا كانت من طبقة الامراء او من العائلات ذات الحسب والنسب او لمصلحة ما، وذلك ما حصل مع الامير تاج الدولة بن ناصر الدولة وتحديدا في سنة (٥٠٢هـ/ ١١٠٨م)عند دخوله ميافارقين حيث تزوج من الست خطافة بنت الامير بهرام بن نظام الدين، وكانت قبله متزوجة من الامير محمد الدويني(٤٩٣-٤٩٨هـ/١١٠٣-١١٠٨م) ، وبعد طلاقها من زوجها الدويني تزوجها ابن عمها تاج الدولة، (الفارقي، ٢٠١٤، ص ٥٣٦)، وكامتداد للموضوع ذكر المؤرخ بان الاميرة خطافة ماتت سنة (٥٤٠هـ/١١٤٥م) في ارزن ودفنت في ميافارقين في مسجد الصخرة، وفي سنة( ٥٥٤ هـ/ ١١٥٩م) مات تاج الدولة بارزن ودفن الى جانب زوجته، (الفارقي،٢٠١٤،ص ٥٣٦).

كانت هناك زيجات سياسية اخرى في الامارة المروانية وهي المصاهرات مع الاقاليم المجاورة، فكان للزواج خارج البيت المرواني نصيب في الامارة المروانية، وكانت المصاهرات السياسية في تلك الحقبة على الاغلب تهدف في جوهرها للحفاظ على المصالح المبنية على اساس من الرغبة في الاستيلاء على البلاد او الاستحواذ على مدينة من المدن،او محاولة التقوي بقوة الصهر من وراء ذلك الزواج. او لحل النزاعات واقامة التحالفات السياسية من خلال تلك المصاهرة، اي ان الهدف



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الاسمى من تلك المصاهرات هو توطيد علاقاتهم وابعاد مخاطرهم ، وكذلك ترصين سلطانهم عل الامارات ومحاولة اتساعها على حساب الامارات الاخر المجاورة .

مثال ذلك عندما قام مؤسس الامارة ابو علي حسن ابن مروان بالزواج من ارملة خاله المعروف بـ(الامير باد الدوستكي) اثناء هجوم الاخير على الموصل سنة (٣٨٠هـ/٩٩٠م)،ولما عاد الامير ابو علي بن مروان مندحرا مكسورا ،دخل بجيشه الى قلعة الاميرة الدوستكية زوجة الامير باد، وسرد لها ما حدث واخبرها بمقتل زوجها،وأعرب ايضا عن مخاوفهم من قواتهم ضدهم، وطلب منها الزواج من أجل اظفاء الشرعية في الحكم، ووعدها بان تشاركه في الحكم، فبذلك تمكن من ضم امد ومافارقين وجميع القلاع المحيطة بينها، ويفهم من النص ان تأسيس الامارة المروانية بدأ مع تلك المصاهرات السياسية، فكان لذلك الزواج دور بارز في توطيد حكم الامير المرواني ابو علي حسن بن مروان، (الفارقي،٢٠١٤، ص٤٥٣-٤٥٤؛ ابن شداد، ١٩٧٨ /٢/٣، /٣٣٣؛ ابن الاثير،٢٠٠٢ /١٧٨/٧؛ التكريتي،١٩٧٠، ص١٤٨).

ولم يكن الاختلاف الديني والعقائدي يشكل عائقاً امام الزواج السياسي ،وبدى ذلك واضحا في احداث سنة( ٣٨٢هـ/٩٩٢م) فكان لا بد للامارة المروانية من توطيد علاقاتها مع الارمن لضمان السلام، وبالتالي تجنب الامارة من الدخول في حرب معهم، لذلك نجد ان الامير ابو علي حسن بن مروان طلب الزواج من ابنة سنحاريب ملك السناسنة الارمني(الفارقي،ص٤٥٣) ، وفي موضع اخر ذكر الفارقي بان الامير ابو علي حسن بن مروان قام سنة( ٣٨٦هـ/٩٩٦م)بطلب يد الاميرة ست الناس،بنت الامير سعد الدولة شريف بن سيف الدولة بن حمدان(ت٣٥٦ه/٩٦٧م) وشقيقة ابي الفضائل بن سعد الدولة الحمداني (ت٣٨١ه/ ٩٩١م) ، بمهر قدره ٢٠٠٠٠٠ درهم ،ويكون الامير المرواني بذلك الزواج قد امن حدوده واذهى اية عداوة مع الحمدانيين واعطى نوعا من التضامن وتبادل العلاقات،الا ان الزواج لم يتم حيث اغتيل الامير ابي علي حسن بن مروان(٣٨٧هـ/٩٩٨م) ((الفارقي، ٢٠١٤، ص٤٥٩؛ ابن الاثير، ٢٠٠٢/ ٧/ ١٧٨؛ زكي ،٢٠٠٦، عبد الرقيب ،٢٠٠١، ص٦٠؛ ص١٢٥ )

أشار الفارقي في موضع اخر الى المصاهرات السياسية الخارجية، في عهد الامير نصر الدولة المرواني والذي سار على خط سلفه عندما حاول حماية الامارة من العقيليين، بطلبه الزواج سنة (٤١٧هـ/١٠٢٦) من الاميرة هناء ابنة شرف الدولة قرواش بن المقلد العقيلي (٣٩١-٤٤٢هـ/١٠٠٢-١٠٥٠م)، ويذكر الفارقي تفاصيل ذلك الزواج بان الامير نصر الدولة بنى لها منزلا ال جانب قصر الحكم، (الفارقي، ٢٠١٤، ص٤٨١؛ ابن شداد؛ ١٩٧٨/ ٣/ ١/ ٢٥٤-؛ ٢٥٥؛ عبد الرقيب،٢٠٠١،/٢/٥٥؛ زكي، ٢٠٠٦، ص١٣٢)، وكذلك زواجه من الاميرة الفضلونية بنت فضل بن منوجهر صاحب ولاية اران وارمينية العليا وأشار الفارقي بان الامير نصر الدولة رزق منها الامير سعيد وشاهنشاه



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

(الـ فارقي، ٢٠١٤، ص٤٨١؛ ابن شداد،١٩٧٨، ج٣،ق١،ص٢٥٤-٢٥٥)، بالاضافة الى زواجه من ابنة سنحاريب ملك السناسنة الارمني،والتي كانت زوجة اخيه،وجاء زواجه منها بعد مقتل الامير ابو علي حسن بن مروان (الفارقي،٢٠١٤، ص٥٠١؛ ابن شداد،١٩٧٨/٣/١/٢٥٤-٢٥٥) وعلى ما يبدو ان استمرار ذلك الزواج كان له تأثيره الايجابي في العلاقات بين الكورد والارمن.

فضلاً عن ماورد في كتاب الفارقي عن النساء ضمن الاطار السياسي الاجتماعي المتعلق بالزواج، فانه قد تعرض الى ذكر دور بعض النساء داخل الامارة المروانية اللاتي تمكن من تنفيذ عمليات القتل والاغتيال، فكانت اغلب عمليات الاغتيال تتم على يد بعض النساء او بتدبير منهن، منها اغتيال الامير سعيد بن نصر الدولةسنة(٤٦٠هـ/١٠٦٧م)،من قبل جارية بناء على طلب الامير نظام الدين بن مروان(الفارقي،٢٠١٤ ،ص٥١٢؛ابن شداد،١٩٧٨/٣/٢/٣٨٢)

أما على الصعيد الحضاري والعمراني فانه على الرغم من قلة مساهمتهن في البناء المعماري داخل الامارة الا ان ذلك لا يعني عدم وجود بعض الحالات التي تطرق اليها الفارقي في كتابه ،حيث كان لنساء بني مروان الى حد ما دوروا سهام في مجال الفن المعماري كبناء قبب الاضرحة، الا ان الفارقي لم يقدم تفاصيل دقيقة عن تلك القبب، وكانت هناك اشارتين فقط من المؤرخ، الاولى ذكران الاميرة ست الناس بَنَت سنة (٤٨٦ه/ ١٠٩٣م) قبة في امد على راس القصر وكانت قد بنتها لزوجها الامير ناصر الدولة منصور بن مروان، فضلا عن ذلك اشار الفارقي ان الاميرة ست الناس ايضا دفنت فيها،(الفارقي،٢٠١٤ ،ص، ٥٣٥؛ابن شداد١٩٧٨،ج٣،ق١،ص٢٧٤-٢٦٦) ،والاشارة الاخرى من الفارقي ان بنت نصر الدولة المرواني ( ست الملك)بَنَت هي الاخرى قبة الى جانب الجامع بالميدان سنة( ٤٥٦ هـ/١٠٦٣م)ونقلت جثمان والدها نصر الدولة الى تلك القبة،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٠٥؛ ابن خلكان،١٩٧٧/١/١٧٨ابن شداد١٩٧٨/٣/١/٣٦٦) وكان الامير نظام الدين ايضا دفن في تلك القبة (عبد الرقيب،٢٠٠١/٢/٣٠٠) .

تطرق الفارقي ضمن مروياته في كتابه الى بعض الجوانب المهمة لدور النساء في الامارة المراونية ،وعلى الرغم من كونها معلومات غير واضحة لاسيما عن النساء المروانيات، الا انه على الرغم من بساطتها تعطينا بعض ملامح الحياة الاجتماعية والسياسية لهن داخل الاطار العام لتاريخ الامارة، حيث سرد المؤرخ في اكثر من موضع معلومات مختصرة عنهن، مع التطرق الى تفاصيل سيرهن بشكل واضح، مكتفياً بذكر اسمائهن دون ذكر اية معلومة أخرى، وفي بعض الأحيان يكتفي بذكر اسمائهن مختصراً، خاصة عند حديثه عن الامراء المروانين وما كان لهم من اولاد ، نجد بان الفارقي فقط يذكر اسمائهن ،وهذا ما جاء عند ذكره سيرة الامير نصر الدولة المرواني ذكران له من البنات ثلاثة وكانت ست الملك اكبر بناته ولم تتزوج ، والثانية زبيدة زوجة الامير ابو الفوارس احمد، والثالثة زينب تزوجت ابن عمها الرئيس موسك بن محمد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

بن كك،(الفارقي،٢٠١٤،ص٥٠٦؛ابن شداد،١٩٧٨/٣/١/٢٧٤-٢٦٦)، من جهة اخرى ذكر الفارقي ان الامير بهرام بن نظام الدين كان له من البنات اثنين الست (سروة) والست خطافة، (الفارقي،٢٠١٤ ،ص٥٣٦؛)،وفي موضع اخر ذكر الفارقي ان الامير نظام الدين بن نصر الدولة لما مات خلف الامير ناصر الدولة منصور وبنتا هي الست فاتة، (الفارقي، ص٥٣٥).

**الخاتمة:**

١- أظهرت الدراسة جوانب مهمة من سيرة المؤرخ الفارقي والتي أشار اليها بنفسه في كتابه (تاريخ الفارقي ميافارقين - امد)، لاسيما تلك التي يتخللها بعض الضبابية وذلك لندرة المعلومات حولها، كما ان الدراسة استطاعت من الوقوف على بعض الملامح المهمة من حياته المهنية وأبرزت اهم المناصب الإدارية التي تولاها. والتي وضحت جوانب غامضة من حياته وأسرته.

٢- كما القت الدراسة الضوء على الدور الذي لعبته بعض الاسر الحاكمة في ميافارقين ، وكان تركيز المؤرخ على الامارة المروانية ودورها في الجانب السياسي والاقتصادي والاجتماعي .

٣- وجدت الدراسة ان الفارقي لم يهمل التطرق الى الاعمال التي لعبت النساء دوراً بارزاً فيها، باعتبارهن شريحة مهمة في المجتمع، وركز الفارقي على النساء اللاتي كان لهن دور سياسي واجتماعي وحضاري في ميافارقين سواء كن امهات الامراء او اخواتهن او زوجاتهن، اي أن اغلب النساء اللاتي ذكرهم الفارقي كانوا من الطبقة الحاكمة، ومع قلة المعلومات وندرتها وحتى في إن وجدت كانت مختصرة جداً، الا ان ذلك لايعني غياب دورهن في الحياة السياسية والعامة داخل امارة بني مروان، وما يؤخذ على الفارقي انه اخذ معلوماته من شخصيات عاصروا الامارة،الا انه لم يُسهب في ذكر اخبارهن، لاسيما سيرهن.

٤- وجدت الدراسة ان الفارقي لم يهمل التطرق الى الجوانب الاجتماعية في ميافارقين، لاسيما من خلال تقديمه معلومات مهمة عن المصاهرات السياسية داخل الاسرة المروانية او معلوماته عن الزيجات السياسية خارج الامارة المروانية .

٥- كما وقفت الدراسة على بعض الملامح العمرانية التي ساهمت نساء بني مروان في اقامتها، وعلى الرغم من قلتها وندرة المعلومات عنها الا ان كتاب الفارقي كان قد ذكر بعضها، واستطاعت الدراسة من ان تحيدها عن المجالات الأخرى وتذكرها.

**قائمة المصادر والمراجع:**


أبن الاثير:عز الدين ابو الحسن علي بن ابي الكرم محمد بن محمد الجزري (ت٦٣٠هـ/١٢٣٢م)

١-الكامل في التاريخ،تحقيق خليل مأمون شيحا ،دار المعرفة ،(بيروت:٢٠٢)

الاصفهاني:عماد الدين صفي الدين الكاتب(ت٥٩٧هـ/١٢٠٠م)

٢-خريدة القصر وجريدة العصر،قسم شعراء الشام،تحقيق شكري فيصل ،المطبعة الهاشمية،(دمشق ١٩٥٩:)
الانطاكي:يحيى بن سعيد بن يحيى الانطاكي(ت٤٥٨هـ/١٠٦٨)
٣- تاريخ الاذ طاكي الم عروف بـ صلة تاريخ اوتي خا،تحقيق ع مر ع بد ال سلام تدمري،جروس برس،(طرابلس:: ١٩٩٠)
بوزورث،كليفورد .أ.
٤- الا سرات الحاك مة في ال تاريخ الا سلامي درا سة في ال تاريخ والاذ ساب ،تر جمة ح سين ع لي اللبودي،ط٢، مؤسسة الشراع العربي،(الكويت:١٩٩٥)
التكريتي،محمود ياسين احمد
٥-الامارة المروانية في ديار بكروالجزيرة،رسالة ماجستير غير منشورة مقدمة ال كلية الاداب ،جامعة بغداد،(بغداد:١٩٧٠)
الجاجرمي:ابو المعالي المؤيد بن محمد
٦-نكت الوزراء،تحقيق نبيلة عبد المنعم داود،شركة المطبوعات للتوزيع والنشر،ط٣،(بيروت:٢٠٠٩)
حسن،قادر محمد
٧-الا مارات الكورد ية في العـ هد الـ بويهي درا سة في علاقاتـ ها السيا سية والاقتـ صادية ،ر سالة ماجستير،كلية الاداب،جامعة صلاح الدين،(اربيل:١٩٩٩)
ابن خلدون:ابو زيد عبد الرحمن بن محمد (ت٨٠٨هـ/١٤٠٥م)
٨- تاريخ ابن خلدون المسم(كتاب العبر ،وديوان المبتدأ وا لخبر ،في ايام العرب والعجم والبر بر ومن عاصرهم من ذوي السلطان الاكبر)،مؤسسة جمال للطباعة والنشر،(بيروت:١٩٧٩)
ابن خلكان:ابو العباس احمد محمد ،(ت٦٨١هـ/١٢٨٢م)
٩-وفيات الاعيان وانباء الزمان،تحقيق احسان عباس،ط٢،دار صادر،(بيروت:١٩٧٧)
الروذراوي:ابو شجاع محمد بن حسين بن عبد الله الوزير ظهير الدين(ت٤٨٨هـ/١٠٩٥م)
١٠- ذيل تجارب الامم،مطبعة شركة التمدن بمصر المحمية،(القاهرة:١٩١٦)
زامباور:ادوارد فون
١١-معجم الاذ ساب والا سرات الحاك مة في الـ تاريخ الا سلامي،ترجمة زكي محمد حسن وحسن احمد محمود،مطبعة جامعة فؤاد الاول،(القاهرة:١٩٥١)
زكي بك،محمد امين
١٢-تاريخ الدول والا مارات الكردية في العهد الا سلامي،نقله ال العربية محمد علي عوني ،ط٢،دار الشئوون الثقافية العامة ،(بغداد:٢٠٠٦)

سالم:سحر السيد عبد العزيز
١٣-تاريخ الاكراد،مؤسسة شباب الجامعة،(اسكندرية:٢٠٠٩)
السخاوي:شمس الدين محمد بن عبد الرحمن (ت٩٠٢ه/١٤٩٧م)
١٤-الاعلان بالتوبيخ لمن ذم التاريخ،دار الكتاب العربي،(بيروت:١٩٨٣)
السمعاني:ابو سعد عبد الكريم بن محمد بن منصور التميمي(ت٥٦٢ه/١١٦٦م)
١٥-الانساب،تقديم وتعليق عبد الله عمر البارودي،دار الجنان،(بيروت:١٩٨٨)
ابن شداد :عز الدين محمد بن علي بن ابراهيم،(ت٦٨٤ه/١٢٨٥م)
١٦-الا علاق الخ طيرة في ذ كرا مراء الـ شام والجزيرة،تحق يق يحي زكر يا عبارة،منـ شورات وزارة الثقافة والارشاد القومي،ج٣،(دمشق:١٩٧٨)
الصفدي:صلاح الدين خليل بن ايوب بن ايبك(ت٧٦٤ه/١٢٦٥م)
١٧-الوافي بالوفيات باعتناء هلموت ريتر،ط٢،فرانزشتاينز،(بفيسبادن:١٩٦١)
ابن العبري:ابو الفرج جمال الدين ابن تاج الدين الملطي (ت ٦٨٥ه/١٢٨٦م)
١٨-تاريخ مختصر الدول،وضع حواشيه:خليل المنصور ،دار الكتب العلمية،(بيروت:١٩٩٧)
العزاوي،عبد الرحمن حسين
١٩-التاريخ والمؤرخون في العراق(٢٣٤-٤٤٧ه/٩٤٥-١٠٥٥م)،دار الشؤون الثقافية العامة ،(بغداد:١٩٩٢)
الفارقي:احمد بن يوسف بن علي بن الازرق(ت بعد٥٧٧ه/بعد١١٨١م)
٢٠-تاريخ الفارقي،تحقيق يوسف الدكن،(نوبهار:٢٠١٤)
ابو الفداء: عماد الدين اسماعيل بن علي بن محمد بن شاهنشاه بن ايوب (ت٧٣٢ه/١٣٣١م)
٢١-تقويم البلدان،دار الطباعة السلطانية،(بيروت:١٨٥٠)
ابن الفوطي:كمال الدين ابو الفضل عبد الرزاق بن احمد السباعي(ت٧٢٣ه/١٣٢٣م)
٢٢-مجـ مع الاداب في معـ جم الالـ قاب،تحقيق محـ مد الـ كاظم،وزارة الثقافة،الار شاد الاسلامي،(طهران:١٤١٦)
ابن كثير:عماد الدين ابو الفداء اسماعيل بن عمر القرشي(ت٧٧٤ه/١٣٧٢م)
٢٣-البداية والنهاية،تحقيق احمد ابو ملحم وعلي الساتر ومهدي ناصر الدين وفؤاد السيد،ط٣ندار الكتب العلمية،(بيروت:١٩٨٧)
كوجر:سكفان محمد سعيد
٢٤- الفارقي ومنهجه من خلال كتابه تاريخ ميافارقين وامد،مطبعة سبيريز،(اربيل:٢٠١٠)
الماوردي:ابي الحسن علي بن محمد بن حبيب(ت ٤٠٥ه/١٠٥٨م)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٢٥-الاحكام السلطانية والولايات الدينية،تحقيق خالد عبد اللطيف السبع العلمي ،ط٣،دار الكتاب العربي،(بيروت:١٩٩٤)

ابن مماتي:شرف الدين الاسعدي المهذب بن زكريا(ت ٦٠٦هـ/١٢٠٩م)

٢٦- قوانين الدواوين،تحقيق عزيز سوريال عطية،مكتبة مدبولي،(القاهرة:١٩٩١)

ابن الوردي:زين الدين عمر بن مظفر بن عمر (ت ٧٤٩هـ/١٣٤٨م)

٢٧-تاريخ ابن الوردي،دار الكتب العلمية ،(بيروت:١٩٩٦)

28-Studies In Caucasian History,toylor s foreign press,(London:1953)

Kennedy Hugh-Minorsky:v

29-The Prophet and The Age of The Caliphates(,London:2004)

**پۆختە:**

طشكدارييا ئافرةتص ل ذيانا سياسي وشارستاني لناث باذصرووةلات وطوندصن كوردان بتايبةتي ل مصدوويا مصرنشينا (بني مروان)ظرنظيةكا تايبةت هةبوو،ئةث ضةندص ذي يا هاتية دووباتكرن ل ناث تصكستصن مصدوويي، كوثص ثةكولينص بزاثكريية لناث طةرتوكا (تاريخ ميافارقين)يا مصدوونثصس(ابن الازرق الفارقي) (٥٧٧ك/١١٨٠ ز) دةربصخيت .

ثص ثةكولينص وةسا ديت كو ظةلةظ ذ ثرة وةرظصرانصن ئةوةان ئافرةتصن دورد،نةخاسم ئافرةتصن (بني مروان)،زصدةباري ذمارةكا ديتر ذ ئافرةتصن كو ل (ميافارقين)و(ئامةد)ص ذيايصن وهندةك ذ باذصرصن هةرصما ظزيرتا فراتص كو زوربةيا ئةوان ئاكنجيصن ئةوان باذصر وطوندصن دوردان.

ئةنجامص ئةفص ثةكولينص ئةوبوو،كو رولص ئافرةتا كورد كاريطةرييا مةزن هةبوو لسةر شةنظست وستوينصن دةسهةلاتا نافخوييا (مةروانييا)هةروةسا رولص ئةوان طشتةثانيةك بوو بو شاهصن مةروانييا ذلايص طةيوةنديصن وان يصن دةثةر،زصدةباري ئةو بهايص شارستاني و ئاثةدانكرنص يص ئةوان ئافرةتان،سةرةرايص وان يصن دةرثة،زصدةباري ئةو بهايص شارستاني وئاثةدانكرنص يص ئةوان ئافرةتان سةرةرايص كارو بةرهةمصن وان يصن كصم ل وان هةردوو بياثصن ناثبريدا.

**Abstract:**

The contribution of women to political and civil life in Kurdish cities, countries and villages was of particular importance in the history of the Emirate of Bani Marwan, as proven by historical texts. The study sought to extract its importance through the book “The History of Mayafariqin” by the historian Ibn Al-Azraq Al-Fariqi (after 577 AH / 1180 AD). This study found the biographies of many Kurdish women, especially the women of Bani Marwan, as well as a number of other women who lived in Mayafariqin, Amed, and some cities of the Euphrates region, where the majority are Kurds, and whose role has highly appreciated in some life facilities, related to the history of those



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

Kurdish cities and villages. The study found that this role had an impact on consolidating the foundations of the Marwanid authority internally, and it was also a support for the Marwanid princes in their external relations, as well as the cultural and urban value of them despite their lack of work in that field

مشجر ال مروان

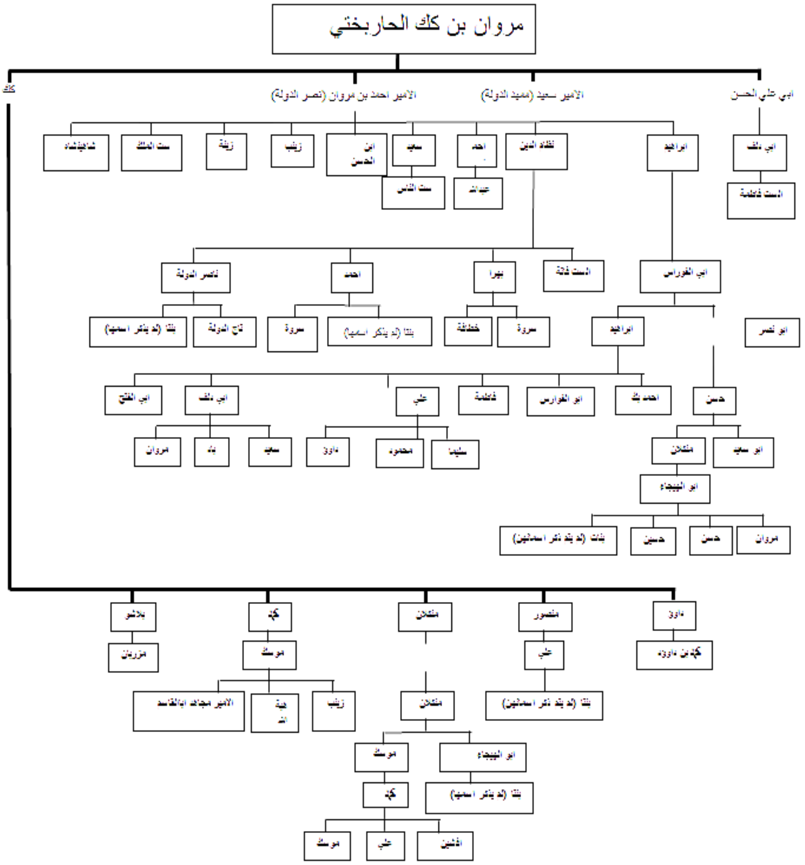




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

# الأمير أحمد بن مروان رائد التأسيس للعمل الإنساني في الإمارة المروانية الكردية

**ا.د. علي أحمد أجقو**

جامعة باتنة1 / الجمهورية الجزائرية

**الملخص:**

يعتبر الامير ناصر الدولة أحمد بن مروان (٤٠١-٤٥٣هـ/١٠١٠-١٠٦١) من أشهر الأمراء الذين تعاقبوا على حكم الامارة المروانية. تميزت فترة حكمه بسياسة إنسانية متقدمة تمثلت في ترسيخ حق اللجوء اذ فتح باب الامارة لاستقبال الغرباء (اللاجئين) ، الترحيب بهم، توفير العيش اللائق بهم وبمكانة كل واحد منهم وفوق ذلك التعهد بعدم تسليمهم لطالبيهم بأي حال من الأحوال، حتى غدت حواضر الإمارة خاصة آمد وميفارقين ملاذا آمنا لهؤلاء الذين من بينهم الملك الأمير، الوزير، العالم ، طالب العلم والتاجر و وفر الأمان والرعاية لكل من يقصد إمارته من طلاب العلم ومن عامة الناس.

وبخصوص اللاجئين، نجد الأمير يرفض طلب تسليمهم مهما كان السبب، وهو بذلك يؤسس لمبدأ عدم التسليم ئالقصري للاجئين والذي لم يتم العمل به إلا في اتفاقية عام ١٩٥١، أي بعد أكثر من ٩٠٠ سنة. وهناك مسألة مهمة تحسب للأمير المرواني وهو حرصه على تعزيز سياسة حسن الجوار وعدم التدخل في الشؤون الداخلية للدول وحل الخلافات بالطرق السلمية.

**الكلمات المفتاحية**: *الإمارة المروانية، الأمير أحمد بن مروان، العمل الإنساني، اللاجئين، حسن الجوار، التعايش السلمي*

## أولا : مقدمة:

يعود تاريخ ظهور الإمارة[1] المروانية إلى سنة ٣٧٢هـ/٩٨٢ والتي استمر حكمها إلى غاية سنة ٤٧٨هـ/١٠٨٦، وكانت عاصمتها آمد في ديار بكر حاليا ثم ميافارقين. وقامت بدور سياسي وحضاري متميز في آمد وما جاورها (ميافارقين، أرزن، حصن كيفا، خلات، ملاذ كرد وأرجيش) وأثبتت أمراؤها مقدرة سياسية خلال حكمهم، الذي كان مميزا في الجوانب الحياتية المختلفة: الاقتصادية، الاجتماعية، الثقافية، العلمية وأيضا الإنسانية.

ومن أمرائها المتميزين الأمير نصر الدولة أحمد بن مروان (٤٠١-٤٥٣ هـ/١٠١٠-١٠٦١)، الذي حكم أكثر من خمسين سنة.

لقد بدأ هذا الأمير عهده بإعادة تنظيم شؤون الإمارة على قواعد متينة، مما ساهم في تعزيز امنها واستقرارها وترسيخ مبدأ التسامح الديني والعيش المشترك بين جميع مكوناتها من مسلمين ومسيحيين، اتجهت جهوده بعد ذلك لتعزيز مكانة الإمارة في مختلف المجالات، سياسيا، اجتماعيا، اقتصاديا، علميا، ثقافيا وأيضا إنسانيا.

ألا تعد الإمارة المروانية إذا سباقة في مجال التأسيس للعمل الإنساني والتعايش السلمي بين الشعوب والأمم من القوى الغربية ؟ الإجابة على هذا التساؤل ستكون حجر الزاوية في هذا البحث

**ثانيا: نشأة الإمارة المروانية:**

تعود بدايات تأسيس الإمارة المروانية إلى سنة ٣٧٢ هـ/٩٨٢ وظلت قائمة إلى غاية سنة ٤٧٨هـ/١٠٨٦، وكانت عاصمتها آمد ثم ميافارقين. وقامت بدور سياسي وحضاري متميز في آمد وما جاورها (أنظر الخريطة)، وأثبت أمراؤها مقدرة سياسية خلال مدة حكمهم، الذي كان مميزا في جميع مناحي الحياة.

**الشكل: الخريطة السياسية للإمارة المروانية**

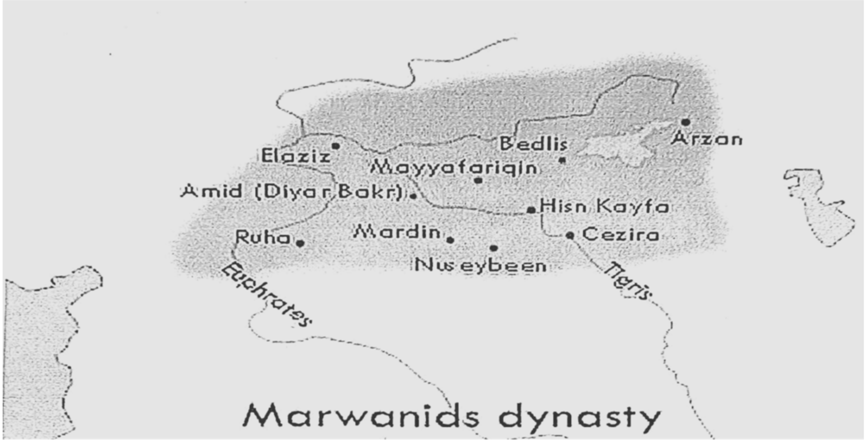


**١- نبذة تاريخية مختصرة عن مؤسس الإمارة:**

مؤسس الإمارة المروانية كما يذكر الفارقي في تاريخه[٢] يسمى باد بن دُوستك، وهو أبو عبد الله الحسين بن دُوسْتِك، وكان يمتاز بالحنكة وبرجاحة العقل وكرم الطبع، وقد التفّ حوله المعجبون به، فهاجم أرجيش، وكانت أول مدينة تدين لسلطانه، كما أقام علاقات ودّية مع الملك


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

البويهي عضد الدولة، تكللت بتقديمه مساعدات قيّمة للجيش البويهي بغية كسر شوكة خصمه الأمير الحمداني أبي تغلب.

وحينما دخل البويهيون الموصل سنة ٣٦٨هـ جاء أبو عبد الله الحسين والذي يلقب بأبي شجاع وأيضا بباد للقاء عضد الدولة، وما إن اجتمع به حتى فطن إلى أنه لن يبق عليه، وكان ظنه صائباً[3]: فقد ذكر ابن الأثير أن عضد الدولة قال بعد أن خرج باد من مجلسه: " له بأس وشدة، وفيه شر، لا يجوز الإبقاء على مثله ". وأمر بالقبض عليه، لكن كان أبو شجاع قد غادر المدينة سراً، ولحق بجيشه، وسرعان ما تعاون البويهيون والحمدانيون للقضاء عليه، فخابت مساعيهم، ثم هاجم أبو شجاع الموصل، وخاض معركة ضارية ضد بني بويه والحمدانيين وبني عقيل، وجرح في المعركة ، ثم قُتل، وكان ذلك سنة ٣٨٠ هـ / ٩٩٠ م، و " وحُملت جثّته إلى الموصل... وصُلّي عليها بالموصل، ودُفنت، ولحق أهل الموصل من الحزن عليه والأسف لقتله ما لا يوصف، وعملوا عليه المآتم والنّدب والبكاء"[4].

وبعد وفاته تولى القيادة خلفا له ابن أخته أبو علي حسن بن مروان، وكان هذا الأخير شهماً جريئاً، ودارت معارك بينه وبين الحمدانيين جنوباً، وبينه وبين الأرمن شمالاً، هذا إلى جانب صراعه مع الدولة البيزنطية من ناحية الغرب. وكان ينوب عنه في شؤون الحكم سياسي كردي موهوب يدعى مَمْ، قال في شأنه الفارقي: " وكان شيخاً مقداماً مجرّباً شهماً من الرجال، قد حنّكته التجارب، وبقي يسوس دولة أبي علي ويدبّرها أحسن تدبير"[5]. واغتيل أبو علي سنة ٣٨٧ هـ / ٩٩٧، وتولّى الإمارة من بعده الأمير سعيد بن مروان، ولقبه ممهّد الدولة، وفي عهده نالت الدولة المروانية الاعتراف من قبل القوى السياسية الكبرى حينذاك؛ إذ أرسل الخليفة العباسي القادر بالله وفداً رسمياً لتهنئته، كما اعترف بها كل من الملك البويهي بهاء الدولة في العراق وفارس، والخليفة الفاطمي الحاكم بأمر الله في مصر، واجتمع ممهّد الدولة بالإمبراطور البيزنطي باسيل سنة ٣٩٠هـ في المنطقة الحدودية بين الدولتين، واتفقا على التفاهم والتحالف. واغتيل ممهّد الدولة حوالي سنة ٤٠١هـ بمؤامرة دبّرها حاجبه شَيرُوه بن مَمْ، وتعرّض كيان الدولة للخطر، فقد حاول شيروه الاستئثار بالحكم والقضاء على الأسرة الحاكمة، أي الأسرة المروانية، لكن رؤساء العشائر الكردية وقفوا إلى جانب الأمير ناصر الدولة أحمد بن مروان، فتولّى الحكم بعد أخيه ممهّد الدولة، وبدأ معه عهد القوة والازدهار في الإمارة.

وفيما يلي أسماء الأمراء الذين تعاقبوا على حكم الإمارة المروانية:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

جدول: الأمراء الذين تعاقبوا على حكم الإمارة المروانية

| ر | اسم الأمير | الكنية | مدة الحكم | | المصير |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | تولية | مغادرة | |
| ١ | أبو عبد الله الحسين بن دستك | أبوشجاع أو باد | ٣٧٢هـ | ٣٨٠هـ | قتل في معركة |
| ٢ | حسين بن مروان | أبو علي | ٣٨٠هـ | ٣٨٧هـ | اغتيال سياسي |
| ٣ | سعيد بن مروان | ممهد الدولة | ٣٨٧هـ | ٤٠١هـ | اغتيال سياسي |
| ٤ | أحمد بن مروان | نصر الدولة | ٤٠١هـ | ٤٥٣هـ | وفاة طبيعية |
| ٥ | نظام الدين نصر | نظام الدولة | ٤٥٣هـ | ٤٧٢هـ | تنازل بالإكراه |
| ٦ | ناصر الدولة بن نظام الدين | المنصور | ٤٧٢هـ | ٤٧٨ هـ | وفاة طبيعية |

المصدر: أعد من طرفنا اعتمادا على معلومات مستقاة من مراجع متعددة

## ٢.- نبذة عن شخصية الأمير أحمد بن مروان ومنهجه في إدارة شؤون الإمارة:

### أ) نبذة عن شخصيته:

يعتبر الأمير أحمد بن مروان الملقب بناصر الدولة ناصر الدولة (٤٠١-٤٥٣ هـ/١٠١٠-١٠٦١)، الذي آل إليه حكم الإمارة على إثر اغتيال أخيه أبو منصور سعيد بن مروان الملقب بممهد الدولة سنة ٤٠١ هـ/ ١٠١١، واستمر حكمه إلى سنة ٤٥٣ هـ/١٠٦١، من أشهر الامراء المروانيين. بدأ بتنظيم أمور دولته على قواعد متينة، فعيّن الولاة والموظفين على أساس من الكفاءة والإخلاص، ليعيد إلى الإمارة هيبتها ، ويوطّد حكمه على دعائم من العدل والمساواة، ويهيّئ لسكان الإمارة حياة يسودها الهدوء والاستقرار، وأعاد الأمور إلى نصابها بعد أن تزعزعت بشدة إثر اغتيال سلفه وأخيه ممهّد الدولة.

لقد ارتبط بروز الإمارة المروانية محليا و إقليميا بالأمير ناصر الدولة أحمد بن مروان، الذي لعب دورا مهما في ازدياد قوة الإمارة واتساع نفوذها وتنوع علاقاتها وازدهار حركتها الثقافية والعلمية والعمرانية والإنسانية، و هو ما أكسب المروانيون احترام المسلمين و غير المسلمين وتقديرهم، كما يؤكد على ذلك غالبية المؤرخين والباحثين، ومن بينهم ابن الأثير مشيدا بسيرة الأمير أحمد بن مروان في رعيته: " وسيرته في رعيته أحسن سيرة " وأيضا الفارقي واصفا ابتعاد الأمير ناصر الدولة في حكمه عن الطغيان: " وعظُم شأن نصر الدولة، وكبُر أمره، وتقرّرت مملكته، وفعَل الخير، وعدَل في الناس،... وفعَل من الخير ما لم يفعله أحد من بيته وأهله "[٦].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ويتميز الأمير بحرصه الشديد على التدقيق في اختيار وزرائه و موظفي إمارته: فقد أشارت المصادر التاريخية إلى اثنين من وزرائه كانا على درجة عالية من الكفاءة والإخلاص، أحداهما الوزير أبو القاسم الحسن بن علي المغربي صاحب الديوان والشعر والرسائل والتصانيف المشهورة، و الوزير الآخر هو أبو نصر بن جهير الملقب بفخر الدولة.

وقد توفي نصر الدولة سنة ٤٥٣هـ، وكان عمره نيّفاً وثمانين سنة، ودفن في جامع المحدثة وقيل في القصر بالسدلي، إلى أن بنت ابنته ست الملك القبة الموسومة بهم وذلك في سنة ٤٥٦هـ، ونقلت رفاته إليها[٧].

وقد حكم قرابة ثلاث وخمسين سنة[٨]، وخلف من الذكور نيفاً وعشرين ولداً، وتلاه في الملك من بعده ولده نظام الدين، ونافسه أخوه الأمير سعيد مستعيناً بالسلاجقة، وظل شأن الدولة المروانية يتناقص، تارة بفعل التناحرات الداخلية، وأخرى بتأثير أطماع السلاجقة، و سقطت العاصمة ميّافارقين بين أيديهم سنة سنة ٤٧٨ هـ/ 1086.

وهكذا طويت صفحة الإمارة المروانية ككيان سياسي بعد أن عمرت مئة وست سنوات ، رغم أن أمراءها استطاعوا بدهاء تجنيب إمارتهم الكثير من الصراعات المدمرة بفعل سياسة التعايش السلمي التي انتهجوها، خاصة نصر الدولة.

### ب) منهجه في إدارة شؤون الإمارة:

#### ١-سياسيا:

نشأت الإمارة المروانية في منطقة جغرافية استيراتيجية تتقاطع فيها مصالح القوى الإقليمية الفاعلة الإسلامية والمسيحية، ورغم ذلك نجح الأمير أحمد بن مروان في ضمان أمن بلاده وسلامتها وتعزيز مركزها السياسي، وذلك بفضل السياسة الرشيدة التي انتهجها طوال فترة حكمه وكانت على ما يبدو من هندسة وزيره السياسي أبو القاسم المغربي، والقائمة على:

-نسج علاقات خارجية متوازنة مع القوى الكبرى خاصة العباسيين، البيزنطيين والفاطميين.

-المصاهرة السياسية والتي تقوم على أساس الزواج من بنات الأمراء[٩] حيث كان زواج الأمير من أربع نساء ثلاث منهن بنات ملوك و أمراء. وبالفعل فقد كان زواجه من:

- الفضلونية بنت الأمير فضلون، أمير الإمارة الشدادية.
- السيدة بنت شرف الدولة قرواش، أمير الموصل.
- أرملة أخيه الأمير حسن بن مروان ابنة سحاريب ملك الساسانة.
- الفرجية وهي جارية مصرية[١٠]. وهي الوحيدة التي كانت من عامة الناس، وتسبب زواجه منها في عدم رضا زوجاته وخاصة الفضلونية[١١].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

-الحياد الإيجابي إزاء دول الجوار المتعادية، حيث نجد الأمير يتجنب الانضمام إلى التحالفات المتعادية: البويهيون، الحمدانيون، الفاطميون، البيزنطيون والأرمن.

وبفضل هذه السياسة الحكيمة كسب احترام القوى المجاورة وعلى رأسها الخلافة العباسية، و نجح أيضا في تجنّب الانضمام إلى التحالفات، حيث بنى سياسة قائمة على الحياد وعدم التدخل في الصراعات والنزاعات الدائرة بين مختلف القوى في المنطقة، والعمل على تجنّب الحروب بكل الوسائل، وحلّ المشاكل عن طريق التفاوض.

وكان الأمير نصر الدولة يشرف بنفسه على رسم سياسة الإمارة الداخلية والخارجية مستفيدا من خبرة وزرائه خاصة الوزير المغربي الضليع في رسم السياسات الخارجية والخبير في العلاقات بين الأمم[١٢].

٢- عدليا:

لقد آمن الأمير بالمقولة الشهيرة أن العدل أساس الملك، ومن ثمة نجده حريصا على إقامة العدل بين رعيته وكل من يعيش في إمارته. وقد أجمع المؤرخون على عدالة المير وحرصه على محاربة الظلم والانتصار للمظلومين: فعلى سبيل انتصاره لخادمه ضد آمر جيشه أبو حكيم الحديثي، حينما أتاه شاكيا بعد أن ضربه الأخير فشج رأسه[١٣]، وأيضا أنه ما ظلم أحد من رعيته طيلة حكمه ولا تعرض أحد للمصادرة ما عدا أبو بكر بن بحري وذلك بسبب صداقته مع صاحب السناسنة، حيث قصد الأمير بعض من يعاديه، وقال: أن هذا واطأ صاحب السناسنة وربما سلم إليه البلد، فكبس بيته فوجد فيه سلاحا كثيرا فاتهم بذلك وصودر، فبلغت مصادرته أربعمائة ألف دينار و أبقى لورثته بعد ذلك ثمانون ألف دينار، و إلا لم يعرف أن نصر الدولة أخذ من أحد الدرهم الفرد" [١٤].

٣- اجتماعيا:

لم يدخر أي جهد في الاهتمام بمصالح السكان، توفير العيش الكريم لهم والسهر على إشاعة الأمن و أيضا على ترسيخ مبدأ التسامح الديني والعيش المشترك بين جميع مكونات المجتمع المرواني من مسلمين، ومسيحيين.

٤- علميا وثقافيا:

أ) علميا: شهدت الإمارة في عهده ازدهارا علميا وثقافيا كبيرا نضجت فيه العلوم على اختلاف تخصصاتها وصارت حواضر ديار بكر مثل آمد وميافارقين مراكز علمية وثقافية تشد لها الرحال من مختلف الأمصار من قبل العلماء وطلاب العلم والتجار، حيث يطيب للجميع فيها المقام نظير ما يجدون من رعاية أميرية ومجتمعية كريمة.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

وظلت هاتين الحاضرتين مقصدا خاصة للعلماء، الأدباء والشعراء يفيدون إليهما من كل حدب وصوب، كما يؤكد ذلك ابن الأثير قائلا: "وكان نصر الدولة مقصداً للعلماء من سائر الآفاق، وكثروا ببلاده، وقصده الشعراء، وأكثروا مدحه، وأجزل جوائزهم"[١٥] . كما ظلت مجالسها وحلقاتها العلمية مقصدا لطلاب العلم. هذه المؤسسات التعليمية مكنت من تخريج إطارات رفيعة المستوى وفي مختلف التخصصات، ساهمت بفاعلية في تسيير إدارة دواوين الإمارة المختلفة وخاصة في مجال القضاء والإفتاء والإمامة.

ب) **ثقافيا:** وتبعا للشهرة التي نالها الأمير أحمد بن مروان كونه راعي الآداب والفنون، راح بلاط الإمارة يستقطب أعدادا كبيرة من مشاهير الشعراء والأدباء والكتاب لإلقاء قصائد التغني بأمجاد الإمارة المروانية ومدح أميرها. ومن بين كبار الشعراء الذين نالوا الحظوة عند الأمير، نذكر منهم أبو الحسن علي بن محمد التهامي، الذي خصه بقصيدة مدح نورد منها البيت التالي:

إنْ قال: لا، فهي آلاء مضاعفةٌ ❖❖❖ وإن يقل نَعَماً أفضتْ إلى نِعَـمِ

وكان لناصر الدولة شعراء عديدون يلازمون بلاطه، منهم ابن الظريف الفارقي، وابن السوادي، وابن الفطيري، والشاعر الكبير الأمير حسين بن داود البَشْنَوي، والمَنازي، ولم يكن الشعراء وحدهم هم الذين أعجبوا بنصر الدولة وعهده الزاهر، بل شاطرهم العلماء الشعور ذاته، وكذلك أصحاب الفن.

وما يجدر ذكره أن المؤسسات التعليمية في الإمارة ساهمت في تخريج علماء ساهموا بفاعلية في تسيير إدارة دواوين الإمارة المختلفة وخاصة في مجال القضاء والإفتاء والإمامة.

**٥- عمرانيا:**

إلى جانب اهتمامه بالمجالات الأخرى، لم يهمل الأمير ناصر الدولة الجانب العمراني، فقد اهتم بالكثير من المشاريع العمرانية، منها بناء مدينة النصرية على ضفة نهر باطمان، وصرف اهتمامه إلى بناء المساجد والجسور وقنوات المياه، والتحصينات الدفاعية، ولا سيما في المناطق المتاخمة للحدود البيزنطية. وقرّر تشييد قصر ملكي فخم في العاصمة ميّافارقين، يدل على أبّهة الأمير، فحشد له المهندسين ورجال العمارة والفن، وأجرى في حيطانه وسقوفه الذهب، وعمل فيه ما لا نظير له، وزوّده بكل أسباب الراحة والعيش الرغيد، واشتمل القصر على قاعات للاجتماعات والاحتفالات، وأجرى إليه قناة الماء من رأس العين، وعمل فيه البرك والحمّام[١٦].

وقد كان للحركة العمرانية التي قادها الأمير، بموازاة مع الحركة السياسية، الاقتصادية، الاجتماعية، التعليمية والثقافية والإنسانية، الدور الكبير في إقرار الأمن والاستقرار في أنحاء الإمارة وخاصة في أهم حاضرتيها وهما آمد وميافارقين.

**ثالثا: إسهامات الأمير أحمد بن مروان في مجال العمل الإنساني:**

اشتهرت الإمارة المروانية في عهد هذا الأمير الذي يقول عنه الفارقي بأنه "حصل كهفا لمن التجأ إليه" وذلك بالسياسة التي انتهجها والمتمثلة في فتح باب الإمارة لطالبي اللجوء للاجئين والترحيب بهم والعطف عليهم، وتوفير العيش اللائق بمكانتهم، حتى غدت حواضر الإمارة خاصة آمد وميافارقين أرض لجوء وملاذاً آمناً ذائع الصيت في المنطقة كلها إسلامية كانت أم مسيحية.

وقد وجدنا من بين هؤلاء اللاجئين الملك، الأمير، الوزير والعالم بالإضافة إلى الأصناف الأخرى من طلاب العلم، التجار والناس العاديين. والأكثر من ذلك أن الأمير اتخذ قرارا بعدم إمكانية تسليم هؤلاء مهما كانت الأسباب والتداعيات: فقد رفض رفضا قاطعا، على سبيل المثال، الطلب الملح المقدم من صهره شرف الدولة قرواش حاكم الموصل بتسليم اللاجئ السياسي الشهير أبو القاسم المغربي وسليمان بن فهد[17]، فكان رده واضحا: " لا أسلمهما أبدا"[18]. وقد تسبب هذا الرفض في توتر العلاقات بين ناصر الدولة وصهره والد زوجته السيدة[19] من جهة ومع الخليفة العباسي من جهة أخرى[20].

إن انسانية الأمير وحرصه على تحقيق العدل وحسن المعاملة مع الرعية وتوفير الأمن، تحقّق الازدهار الاقتصادي، بحيث أصبحت الإمارة المروانية، وخاصة مركزيها آمد وميافارقين، واحة وارفة الظلال يقصدها التجّار، الصنّاع، أهل العلم، الشعراء وطالبي اللجوء، وهذا ما يؤكده الفارقي قائلا: " وانعمرت ميافارقين أيام نصر الدولة، وقصدها الناس".

**١- إرساء وتكريس المبادئ السياسية والقيم الإنسانية:**

من اسهامات الأمير أحمد بن مروان التي لم تحض باهتمام الباحثين هي اسهامات الأمير في جانب مهم والمتمثل في إرساء وتكريس المبادئ السياسية والقيم الإنسانية والخيرية وتفعيلها على أرض الواقع، في الوقت الذي كان جيرانه يهملونها تماما.

**أ) المبادئ السياسية:**

**١- إرساء وتكريس مبدأ التعايش السلمي بين الدول:**

إيمانا منه بأهمية هذا المبدأ في العلاقات بين الدول، كان الأمير المرواني غالبا ما يلجأ، عند تعرض بلاده لمشاكل خارجية ذات طابع سياسي أو عسكري، إلى التفاهم وحل تلك المشكلات بالطرق السلمية متجنبا استخدام القوة بقدر الإمكان: فقد كان يدفع شر الخصوم عن طريق التفاهم والتعويض المالي، حيث كان يطلب من قادة جيشه ورجال حكومته تقدير المبلغ الذي سيكلف خزينة الإمارة في حال الدخول في صراع مسلح مع خصمه، فيقوم بعرض المبلغ على الخصم تفاديا للدخول في الحرب معه. وبهذه الطريقة التي تعتبر غريبة نوعا ما دفع خطر أعدائه و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أرجعهم عن مهاجمة إمارته أكثر من مرة، على الرغم من قدرته في أحيان كثيرة على مجابهتهم بالقوة، و هذا ما يؤكده ابن كثير بقوله:" وكان كثير المهادنة للملوك إذا قصده عدو أرسل إليه بقدر ما يصالحه به فيرجع عنه"[٢١]، وبالفعل وكما يروي الفارقي أنه دفع إلى بوقا وناصغلي قائدي الغز المهاجمين لديار بكر عام ٤٣٣ هـ/١٠٤٢ خمسين ألف دينار تجنبا للدخول معهم في صراع مسلح[٢٢]، كما دفع أيضا مبلغ ١٥ الف دينار إلى قرواش[٢٣]، بالرغم من فشله في محاصرة الجزيرة ونصيبين فشلا ذريعا، من صداق ابنته السيدة إذهاء للعداوة وحلا للمشكلة[٢٤] وحفاظا على الأرواح والممتلكات والمنجزات السياسة والحضارية. واستمرت هذه السياسة في عهد من جاء بعده:فقد أعطى ابنه الأمير نظام الدين طغرل بك السلجوقي خمسين ألف دينار ثمنا للعدول عن مهاجمة ميافارقين، وبالفعل عاد طغرل بك، مع قواته، من حيث أتى[٢٥]، وسلمت المدينة.

و هذه السياسة السلمية التي انتهجتها الأمير نصر الدولة في تعامله مع جيرانه أفضت عمليا من جهة إلى ضمان أمن واستقرار ورخاء الإمارة نيفا وخمسين سنة وهي مدة حكم الأمير نصر الدولة، ومن جهة أخرى ضمنت تأمين حدود الإمارة من اعتداءات الدولة البيزنطية المدمرة لفترة طويلة بفعل سلسلة من اتفاقيات السلام وعدم الاعتداء والصداقة وحسن الجوار، لم يتم خرقها من قبل البيزنطيين إلا مرة أو مرتين في مدة ١٠٦ سنوات[٢٦] والتي هي عمر الإمارة المروانية.

**٢- تكريس مبدأ حسن الجوار:**

لقد كانت الدول المجاورة والممثلة بالخلافة العباسية، والخلافة الفاطمية، والدولة البيزنطية تعترف بالإمارة المروانية و تتعامل معها بندية و اهتمام واحترام، وتقدّر مناخ الأمن والاستقرار السائد فيها والانسجام بين مكوناتها، فراحت تخطب ودّها، وتقيم معها أفضل العلاقات. ومما يؤكد ذلك أن ممثلي هذه الدول المجاورة وصلوا إلى العاصمة مَيّا فارقين في زيارة رسمية كموفدين من حكوماتهم في يوم واحد سنة ٤٠٣هـ/١٠١٣ للاعتراف بالأمير نصر الدولة أميرا على الإمارة، حسب ما جرت به الأعراف الدبلوماسية في ذلك الوقت، مصحوبين بالهدايا والتحف الثمينة، وهذا دليل واضح على أمرين اثنين: أولهما حنكة الأمير المرواني في بناء علاقات سياسية متوازنة مع دول الجوار المتعادية. و ثانيهما الأهمية الاستراتيجية التي كانت تحظى بها الإمارة المروانية، وتأثيرها في التوازنات الإقليمية والحسابات العسكرية.

ومما زاد في سرور الملك نصر الدولة مصادفة وصول الوفود مع الانتهاء من بناء القصر الملكي، ومع إطلالة عيد الأضحى. ولقد وصف الفارقي جزءا من تلك الأحداث السياسية الهامة التي كانت الإمارة المروانية مسرحا لها والمتمثلة في اجتماع ممثلي دول الجوار: " في ذي الحجّة من سنة ثلاث وأربعمائة، قبل العيد بثلاثة أيام، وصل خادم من خدم الخليفة القادر بالله، ومعه حاجب من سلطان الدولة ابن بويه يسمّى أبا الفرج محمد بن أحمد بن مَزْيَد، ووصل معهما الخُلَع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرى زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

والتشريف والمنشور بديار بكر أجمع من الخليفة والسلطان، ولُقّب بنصر الدولة وعمادها ذي الصّرامتين ". وفي عشيّة ذلك اليوم وصل رسول من خليفة مصر، وهو الحاكم بأمر الله أبو علي منصور، وورد معه من الهدايا والتحف والألطاف شيء كثير، ولقّب نصر الدولة بعزّ الدولة ومجدها ذي الصّرامتين، فخرج كل من في الدولة إلى لقائه، ودخل البلد. ومن بُكرة ذلك اليوم ورد رسول من ملك الروم باسيل الصقلّي وكان ملك القسطنطينية، فخرج الناس إلى لقائه، ووصل معه من القُود والجنائب والتحف ما لا يوصف ". " وكان اليوم الرابع للعيد، وجلس نصر الدولة لهناء العيد على التّخْت، وحضر رسول الخليفة والسلطان، فجلسوا على اليمين، وحضر رسول مصر، ورسول ملك الروم، فجلسا على الشمال، وحضرت الشعراء والقرّاء، وكان يوماً عظيماً وعيداً مشهوداً، وقرئت المناشير على الناس بحضور الرسل والأمراء، ولبس الأمير الخلع، وخلع على الرسل من الخلع ما لم يمكن أن يكون مثلها "[٢٧].

ومما لا شك فيه أن السياسة الحكيمة التي رسمها نصر الدولة لإمارته كانت سبب ذلك الاهتمام، فقد قامت سياسته على الحياد وعدم التدخل في الصراعات والنزاعات الناشبة في المنطقة، وتجنّب الحروب بكل الأثمان.

**ب) القيم الإنسانية والخيرية:**

اشتهرت الإمارة المروانية في عهد هذا الأميرة بسياستها الإنسانية المتمثلة في الترحيب بكل من يطرق باب الإمارة وخاصة المظلومين، حتى غدت حواضر الإمارة ملاذاً آمناً تتناقله الألسن وتلهج بالثناء على شخص الأمير ناصر الدولة.

**١- القيم الإنسانية:**

لقد أصبحت الإمارة المروانية وخاصة مركزيها آمد وميافارقين، "واحة وارفة الظلال"، يؤمها المضطهدون من كل حدب وصوب: فكانت مقصدا للتجّار، الصنّاع، طلبة العلم، العلماء، الشعراء والأدباء، كما يؤكد ذلك الفارقي بقوله: " وانعمرت ميافارقين أيام نصر الدولة، وقصدها الناس والتجار وجماعة من كل الأطراف، واستغنى الناس في أيامه، وكانت أحسن الأيام ودولته خير الدول".

**أ) إرساء وتكريس حق اللجوء واللجوء السياسي:**

لم يتمتع بالأمن والحرية والعدالة قوما في هذه الفترة مثلما تمتع سكان الإمارة المروانية وذلك بفضل عدالة أمرائها وإنسانيتهم ولا سيما نصر الدولة، الذي سبقت إمارته كثير من الدول وأعني الغربية فرنسا على وجه التحديد التي يتغنى حكامها بأنها أرض لجوء، في إرساء وتكريس مبدأ اللجوء كحق وكقيمة انسانية وحضارية إسلامية، وذلك بسبب ما توفر في هذه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

الإمارة من مقومات اللجوء كما يقول ابن الأثير وآخرون كثيرون:" وكانت بلاده آمن البلاد و أطيبها و أكثرها عدلا"[28].

إن سياسة هذا الأمير، القائمة على العدل والإنسانية في الشأن الداخلي كما في الخارجي، قد جلبت الأنظار في الأقطار الأخرى المجاورة بل وحتى البعيدة وخاصة الإسلامية، مما كانت سببا في هجرة كثير من الباحثين عن العدالة والأمن والاستقرار ومن مختلف الشرائح: فقد تحولت، وبدون مبالغة، آمد وميافارقين إلى مدينتي لجوء بامتياز (Villes d'asile par excellence /Cities of refuge par excelence)، إذ قصدها عدد غير قليل من اللاجئين السياسيين والذي نجد فيهم الأمير والوزير والملك والعالم والطالب (طالب العلم). وقد كان هؤلاء يجدون الاستقبال الحسن والاحترام اللائق والرعاية الكريمة، وقد أشار الفارقي إلى ذلك بقوله:"... وقصده الناس وحصل كهفا لمن التجأ إليه"[29]. وبجانب هذه الفئة قدم إلى الإمارة كثير من التجار و أصحاب المهن والحرفيين و أقاموا فيها، فارين من أعمال السطو والمصادرة وغيرها من المظالم في بلدانهم.

ومن اللاجئين إلى الإمارة المروانية من فئة السياسيين والعلماء سوف نعرض لعينة من السياسيين وبالمقابل سنذكر بالتفصيل العلماء اللاجئين للإمارة مع ذكر مناطق لجوئهم:

- **السياسيين**، قدم إلى الإمارة المروانية عديد اللاجئين السياسيين نذكر منهم على سبيل المثال لا الحصر:

- الأمير عبد العزيز البويهي، الذي كان سبب لجوئه أنه لما توفي والده جلال الدولة البويهي عام ٤٣٥ هـ/١٠٤٥ ولم يكن حاضرا في بغداد ليخلف والده في الحكم، انتهز الفرصة أبن عمه أبي كاليجار ونصب نفسه أميرا، فحاول الأمير عبد العزيز استعادة السلطة فلم يفلح ولم يجد من يساعده أو يستقبله، فتوجه إلى الإمارة المروانية طالبا من أميرها نصر الدولة حمايته، فواساه في محنته وعطف عليه وقدره تقديرا يليق بمكانته و أغدق عليه الأموال و وفر له سبل الراحة والاستقرار[30]. ولما توفي في ميافارقين أمر الأمير نصر الدولة عام ٤٤١هـ/١٠٤٩ بنقل جثمانه إلى الكوفة ليدفن هناك[31].
- أبو القاسم المغربي وهو ابن الوزير أبو الحسن على بن الحسن المغربي وزير المعتز ومن بعده الحاكم، لقد تم استقبال هذا اللاجئ السياسي أحسن استقبال، و انتهى به المقام ليصبح وزيرا للأمير نصر الدولة ومن أكفأ الوزراء[32]. وحينما طلب شرف الدولة قرواش أمير الموصل من الأمير ناصر الدولة تسليمه له رفقة سليمان بن فهد رفض رفضا قاطعا قائلا: " لا أسلمهما أبدا"[33].

- ابن جهير الموصلي، هو الآخر لقي رعاية كريمة من الأمير نصر الدولة و أنعم عليه بمنصب الوزارة.
- ابن خان التركي، لجأ إلى الإمارة غاضبا من والده فوجد في الإمارة المروانية ملجأ هو ومن معه من فرسان والبالغ عددهم ألف فارس، و أقام بها مدة ثم انتقل إلى حلب بدعوة من أميرها عطية بن صالح بن مرداس.
- الوزير البويهي، عميد الدولة أبو سعيد، لجأ غلى الإمارة المروانية عند اعتزله السياسة و أقام بجزيرة بوتان حتى وفاته سنة ٤٣٩هـ/١٠٤٨.
- ولي العهد أبو القاسم عبد الله المقتدر بالله، لقد أصبح خليفة عباسي بعد وفاة جده القائم بأمر الله، و قد لجأ إلى الإمارة المروانية بعد استيلاء الباساسيري[٣٤] على السلطة في بغداد سنة ٤٥٠هـ/١٠٥٨ و إقامة الخطبة في مساجدها للخليفة الفاطمي بمصر[٣٥]، وقد أرسلت أم الخليفة و ولي العهد وغيرهما إلى الإمارة المروانية سرا، ثم أعيدوا إلى بغداد عام ٥٤٥٢/١٠٦٠. لقد حظي ولي العهد ومن معه باستقبال لائق اذ تم انزالهم بقصر الأمير وخصص لهم راتبا يوميا قدره خمسون دينارا وحملهم عند رجوعهم إلى بغداد بأغلى الهدايا والتحف قدرت قيمتها بمائتي ألف دينار[٣٦]. وفي هذا الصدد يقول الفارقي:" وخرجت السيدة ومعها أبو العبّاس محمد بن القائم – وهو الذخيرة أبو المقتدى- فقصدت السيدة ميّافارقين ومعها الذخيرة صغيراً، وخرج نصر الدولة إلى لقائهم، فأنزلهم واحترمهم وأضافهم، وأنفذهم إلى آمد، وأنزلهم في القصر، وتقدّم بما يحتاجون إليه "[٣٧].

- **العلماء**، قد قدم إلى حواضر الإمارة المروانية خاصة آمد وميافارقين، من أنحاء البلدان الإسلامية مشرقا ومغربا، مائة وثمانون عالمًا[٣٨]، منهم علماء أتقنوا أو تخصصوا بأكثر من علم من العلوم الدينية والأدبية والإنسانية. وكانت غالبية هؤلاء العلماء قدموا من مناطق المشرق الإسلامي.

- **المشرق الإسلامي**: فقد قدم من هذه المناطق إلى الحاضرتين المذكورتين سبع وثمانون عالمًا[٣٩]. وقد يكون سبب وفودهم الظروف الدينية التي سادت في بلادهم، وما عاناه الشافعية من تضييق لفترة معينة، مما دفعهم إلى الهجرة والتوجه إلى الديار المروانية حيث الحرية، العلم والهدوء وحسن الاستقبال والرعاية، إضافة إلى كثرة الحروب في المنطقة التي لا تتوقف بسبب الصراع بين الدويلات التي ظهرت في المنطقة مثل السلجوقية و الغزنوية ...

و مما يجدر الإشارة إليه في هذا الصدد أن عدد العلماء القادمين من بغداد حاضرة الخلافة الإسلامية بلغ واحد وعشرون عالمًا، فكون بغداد مركزا حضاريًا وعلميًا لم يمنع علماءها من الهجرة إلى الحواضر المروانية، وأن يحلوا في المرتبة الثالثة بالنسبة لعدد العلماء الوافدين إلى هذه الحواضر. ولعل السبب في ذلك هو انتشار المذهب الشيعي في العراق خلال القرن الخامس



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

الهجري بسبب حكم البويهيين فيها مما سبب هجرة علماء بغداد إلى آمد وميافارقين التي كان المذهب السني سائدًا فيهما، هذا بالإضافة إلى رغبة علماء بغداد في الرحلة في طلب العلم للقاء علماء الديار المروانية والتحاور معهم والاستفادة من علمهم.

- **الجزيرة الفراتية**: ويأتي في الدرجة الثانية بالنسبة لعدد العلماء الوافدين إلى آمد وميافارقين العلماء القادمون إليها من بقية إقليم شمال الجزيرة الفراتية، الذين بلغ عددهم تسع وأربعون عالمًا. وقد يكون سبب كثرة تنقل هؤلاء العلماء القرب الجغرافي من جهة، ولوجود علماء لهم مكانتهم ويستحقون الرحلة إليهم للاستفادة من علمهم، هذا إضافة إلى تعرض بعض مدن شمال الجزيرة الفراتية لغارات البيزنطيين واضطرار علمائها للهجرة من مدنهم إلى أماكن أكثر أمنا وليس أفضل من آمد وميافارقين.
- **الحجاز**: يأتي علماء بلاد الحجاز الوافدين من الناحية العددية بعد علماء بغداد فقد بلغ عددهم إثنا عشرة عالمًا[٤٠]، ويرجع السبب في قلة عددهم لكون الحجاز منطقة جذب للعلماء الوافدين، وذلك بسبب وجود الأماكن المقدسة بها، ووفود العلماء إليها في كل موسم من كافة أرجاء العالم الإسلامي، إضافة إلى عامل المجاورة الذي كان علماء العالم الإسلامي جميعًا يرغبون فيه، وذلك للمجاورة في الأماكن المقدسة، ولذلك قلت رحلتهم إلى خارج مكة والمدينة.
- **مصر**: أما مصر فقد قدم منها سبع علماء، وقد يكون السبب في ذلك استغناء علماء مصر بما عندهم من علماء يمكن التعلم على أيديهم، وتلقي العلم عنهم، هذا إضافة إلى رحلتهم إلى الحجاز للحج وللمجاورة، ولقاء العلماء فيها وإلى بغداد مركز الحضارة الإسلامية، وغير ذلك[٤١].
- **اليمن والمغرب الإسلامي** : أما اليمن والمغرب الإسلامي فيأتيان في المرتبة الأخيرة، فلم يفد منهما إلى الديار المروانية إلا عالمان[٤٢]، وقد يكون السبب في ذلك بالنسبة لليمن أنها كانت منطقة صراع بين أنصار الفاطميين وأعدائهم، ورحل أكثرهم إلى مصر ودمشق وبغداد لتلقي العلم فيها لأهمية هذه المناطق لكونها مراكز للحضارة الإسلامية، أو إلى الحجاز لأنها مركز المسلمين الديني ومركز العلماء المجاورين، وهذه الأسباب تصح أيضًا إلى قلة الوافدين من المغرب والأندلس[43].

ومما تجدر الإشارة إليه في هذا الصدد أن الإمارة المروانية لم تمنح حق اللجوء فقط لكل من يطلبه وخاصة من البلدان الإسلامية وإنما دعمته بتطبيق عملي يعطي لحق اللجوء قيمته وهو "مبدأ عدم التسليم القصري للاجئين" Principle of non-compulsory extradition of refugees)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وهو مبدأ يظهر ويطبق يطبق لأول في الإمارة المروانية في عهد الأمير أحمد بن مروان، حيث لم تظهر اتفاقية تتعلق بوضع اللاجئين إلا عام ١٩٣٣والتي لم تحظ بالتصديق على نطاق واسع من قبل الدول الأطراف[٤٤]. ويجب انتظار ما بعد الحرب العالمية الثانية لتصاغ اتفاقية متعلقة بوضع اللاجئين عام ١٩٥١ والبرتوكول الوحيد التابع لها عام ١٩٦٧، وهذا ما مثل العنصر المركزي في النظام الدولي لحماية اللاجئين والنص على "عدم التسليم القصري أو الإعادة القصرية" للاجئ بأي صورة من الصور إلى اي بلد يكون معرضا فيه لخطر الاضطهاد سواء كان بلد المنشأ أو لبلد آخر. وهذا المبدأ يجد تطبيقه بحرفية، كما ذكرنا سالفا، في رفض الأمير أحمد بن مروان تسليم ابو القاسم المغربي إلى حاكم الموصل أو إلى الخليفة في بغداد.

يتضح مما سبق أن الإمارة المروانية في عهد الأمير أحمد بن مروان كانت متقدمة بنحو ٩٢٣ سنة على كيانات المنطقة والكيانات الأوروبية المجاورة وبقية العالم فيما تعلق بحق اللجوء و ب. ٩٤١ سنة فيما تعلق بتطبيق مبدأ عدم التسليم القصري للاجئين.

و لما ذاعت شهرة نصر الدولة وتناقلت الألسن أخبار عدالته و إنسانيته تجاه اللاجئين وعطفه على الفقراء والمحرومين، بل وحتى الطيور، أقبل الشعراء على ديوان الإمارة ليتغنوا بنصر الدولة و يخلدوا مآثره بقصائد شعرية رائعة وصادقة.

ألا تعد الإمارة المروانية الكردية سباقة، في هذه الفترة، في مجال التأسيس للعمل الإنساني في أبرز مجالاته من القوى الغربية المهمة مثل فرنسا وبريطانيا وغيرهما ؟ ما سبق استعراضه لا يدع مجالا للشك للباحث الموضوعي.

**ب) ترسيخ مبدأ التسامح الديني:**

لقد قامت سياسة نصر الدولة على مبدأ التسامح الديني[٤٥] بين سكان الإمارة المروانية والذين كانوا متوزعين بين مذاهب شتى وديانات شتى وأعراق شتى، ورغم ذلك سادت فيما بينهم روح التسامح والتضامن، مما جعل سكان الإمارة يعيشون في انسجام تام، حيث لم تحدثنا المصادر عن وجود صراعات مذهبية أو دينية.

وبالفعل كانت هذه السياسة كفيلة بإقامة جسور من الحوار بقصد التفاهم وجسور من التسامح والتعايش بقصد العيش المشترك. و مما يجدر ذكره في هذا الصدد أنه كان للمسيحيين ديرا في آمد يقيمون فيه طقوسهم واحتفالاتهم الدينية بكل حرية[٤٦].

**٢- القيم الخيرية:**

لم يدخر الأمير ناصر الدولة جهدا طوال مدة عهده تكريس كل القيم الخيرية التي جاءت بها الشريعة الإسلامية الغراء كرعاية الفقراء والمحرومين و أيضا الطيور..



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

أ) رعاية الفقراء والمحرومين:

ومن مظاهر حرصه على رعاية الفقراء وتوفير العيش الكريم لهم أنه لم يتأخر خلال سبع سنوات تقريبا عن توزيع جريب من الحنطة على هذه الفئة يوميا في جامع ميافارقين[٤٧].

ب) رعاية الطيور:

ومما يجدر ذكره في سياق الحديث عن انجازات هذا الأمير غير التقليدية في مجال العمل الخيري، أن خيريته واذ سانيته لم تقتصر على " غير البشري"[٤٨] بل شملت "الغير غير البشري"[٤٩]، والمقصود هنا الطيور في الجبال، التي كان الأمير يأمر برعايتها زمن تساقط الثلوج، وبكيفية غير معهودة عند جيرانه من الأمراء والملوك المسيحيين بل وغير معروفة نهائيا ناهيك عن كونها محل تنظيمات وتشريعات.

والواقع أن العناية بالطيور لم تنفرد بها هذه الإمارة، بل وجدت منذ بزوغ فجر الإسلام وتأسست منذ أن وجد الوقف الخيري: فنجد الخليفة الأموي عمر بن عبد العزيز الذي كان يأمر بنثر القمح على رؤوس الجبال لإطعام الطيور، حيث بلغه أن الطيور تجوع في فصل الشتاء بسبب الثلوج التي تغطي قمم الجبال ، وأن الناس يصطادونها بسبب حاجتها إلى الحبوب، فأمر بفتح مخازن الحبوب ونثر ما يكفيها طوال فصل الشتاء، فكانت الطيور في ضيافته طوال الشتاء طيلة حكمه[٥٠]: ففي بلاد الشام مثلا كانت تخصص دور لبعض الطيور كطائر اللقلق، طائر بلارج، طائر الحمام[٥١]، وفي فاس المغاربية، في القرن السابع الهجري، كانت هناك أوقافا لشراء الحبوب وإطعام الطيور في الأوقات الحرجة، بل والأكثر من ذلك أن طيور اللقلق كانت تعالج في أماكن خاصة سميت ب"المستشفيات"[٥٢] إذا تعرضت للانكسار أو الأذى، فكان الطير يحمل إليها من أجل العلاج، التضميد والإطعام[٥٣] وأما في الجزائر فيتطوع سكان بعض المناطق الجبلية، كجيجل، ميلة وتيزي وزو، التي تشهد تساقط الثلوج بكثافة، ويتوزعون على مجموعات للصعود إلى الجبال والمرتفعات، محملين بأكياس من القمح لنثرها في قمم الجبال.

يستعمل سكان هذه المناطق وسائل عدة فى نثر الحبوب للطيور: فمنهم مثلا من يستعمل قارورات ماء فارغة، ويربطها على الأشجار بشكل عكسي، ومنهم من ينثر الحبوب فى الهواء الطلق عن طريق آلات كتلك المخصصة لإطعام الدواجن بحيث تتساقط الحبوب، فيما ينثر آخرون القمح في أماكن محددة تُمكن أكبر عدد ممكن الطيور من الوصول إليها بسهولة. ويبدو أن هذا التقليد توارثه سكان هذه المناطق منذ الوجود العثماني في الجزائر. وأما في اسطنبول فما زالت آثار تلك البصمات الخيرية تجاه الطيور موجودة في بعض الأماكن مثل مسجد السليمانية و مسجد أيازما ومباني أخرى حيث يمكن ملاحظة الدور المخصصة للطيور[٥٤].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

وعلى كل يمكننا القول أنه حينما كانت الأمم تتلهى بقتل الطيور و تصطادها بدون ضوابط، كان الإسلام قد نظم لها شرائع وأقر لها حقوقا. ولعل ما رسخ حضور الطيور وزاد من الاهتمام بها عند الحكام المسلمين، كما هو الشأن بالنسبة للأمير نصر الدولة، يعود للمكانة المتميزة التي احتلتها الطيور في القرآن الكريم، حيث ذكرت كلمة طير وطائر عشرون مرة و في خمسة عشرة سورة.

وباختصار يمكن القول أن الإمارة المروانية قد تميزت، في عهد الأمير ناصر الدولة، بسبقها في التأسيس لحق اللجوء، حيث غدت ملاذاً آمناً لعدد غير قليل من اللاجئين السياسيين في ذلك العصر، فيهم الملك والأمير والوزير، فكان ناصر الدولة يرحّب بهم، ويعطف عليهم، ويبالغ في إكرامهم، ويوفّر لهم العيش اللائق بمكانتهم ويرفض تسليمهم لطالبيهم، وهذا ما يؤكده الفارقي بقوله: " وقصده الناس من كل جانب، وحصل كهفاً لمن التجأ إليه "[55].

وربما مثل هذه التصرفات "الرحموية" تجاه الغير البشري والغير غير البشري التي ميزت عهد هذا الأمير و أمراء قبله وبعده هي التي دفعت الأمريكية كرستين ستيلت(Kristen A. Stilt) للقول:" لقد بني الإسلام على مبادئ الرفق والرحمة والعطف والعدل، والتي تعد من الأمور الجيدة، هذه المبادئ التي تنتشر من خلال نصوص الدين في القرآن والسنة، وأيضا من خلال ما جاء في التاريخ الإسلامي."

**رابعا: استنتاج:**

لقد كان الأمير المرواني نصر الدولة أحمد بن مروان من كبار أمراء الدويلات الإسلامية التي نشأت على هامش الخلافة العباسية الإسلامية وبقيت تعترف بها ولم تتمرد عليها، بالنظر للإنجازات التي حققها في الميدان العلمي والثقافي في مدن الإمارة خاصة آمد وميافارقين واللتين غدتا حاضرتين علميتين يشد إليهما الرحال لوجود الكثير من رجال الفقه، الفكر والعلم من الآمديين ومن الوافدين، الذين ساهموا مساهمة بارزة في ازدهار الإمارة.

ورغم ما يمكن أن يقال عن هذا الأمير ودوره في الاستقرار السياسي والأمني وفي ازدهار الحركة العلمية والثقافية في آمد ورعايته للعلماء وطلاب العلم المحليين والوافدين، رعاية قل نظيرها في هذه الفترة التي ضيق فيها على العلماء والذين لم يجدوا من ملجأ آمن سوى هذه الإمارة وبجوار أميرها، إلا أن هناك اسهامات مهمة لهذا الأمير لا تقل أهمية عن الأولى والتي لم يتم ابرازها وتسليط الضوء عليها من قبل الباحثين، تكمن في رعاية الجانب الإنساني، الذي يبقى له الفضل في الاهتمام به وإيلائه أهمية كبيرة لم يسبقه إليه أحد قبله ليس في الشرق بل في الغرب المسيحي أيضا: فقد فتح باب إمارته للاجئين من سياسيين وعلماء وحتى الأشخاص العاديين، فتحولت الإمارة المروانية لأرض لجوء(Land of refuge) بكل ما يحمل المصطلح من



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو فەکولینێن کوردی

معنى، حيث وفرت سلطات الإمارة لهؤلاء اللاجئين كل أسباب الرعاية وكرم الضيافة، ليس ذلك فحسب بل سمح لهم بتولي المناصب العليا في الإمارة، بحيث أصبح بعضهم وزراء لعل أبرزهم الوزير الأديب ابا القاسم المغربي.

وبذلك تكون الإمارة المروانية الكردية أسبق بما يزيد على تسع قرون في التأسيس لحق اللجوء كحق انساني وفوق ذلك إقرار "مبدأ عدم الإعادة القصرية" للاجئين إلى أوطانهم في حالة الخطر على حياتهم والذي لم يتم إقراره إلا عام ١٩٥١، واعتبار أرض الإمارة أرض لجوء، قبل فرنسا، التي لم تدع هذه الصفة وتفاخر بها غيرها من البلدان، وخاصة الأوروبية، إلا بعد ما يسمى الثورة الفرنسية عام ١٧٨٩.

ومن جهة أخرى بذل هذا الأمير جهودا مضنية في إرساء مبدأ التعايش السلمي بين الدول ونبذ الصراعات والحروب والدعوة إلى حل الخلافات مهما كانت معقدة بالطرق السلمية وعن طريق الحوار وتوقيع معاهدات عدم الاعتداء وحسن الجوار.

بعد كل هذا، ألا يستحق هذا الأمير أن نطلق عليه لقب راعي العمل الإنساني والخيري والتعايش السلمي، وعلى إمارته صفة أرض اللجوء الإنساني والتعايش السلمي؟ بكل موضوعية، بالنظر للأوضاع السائدة في هذه الفترة، يستحق الأمير اللقب عن جدارة وتستحق الإمارة الوصف بلا منازع.

## خامسا: المصادر و المراجع:


- ابن الأثير، أبو الحسن عز الدين علي بن أبي الكرم محمد الجزري الشيباني، الكامل في التاريخ، طبعة دار الكتاب العربي، بيروت، ط١، ١٤٠٣هـ/١٩٨٣.
- جاي س. جودوين-جيل، اتفاقية ١٩٥١ المتعلقة بوضع اللاجئين والبرتوكول التابع لها، United Nations Audiovisal Library of International Law , 2010
- ابن الجوزي، المنتظم في تاريخ الملوك والأمم، تحقيق محمد عبد القادر عطا، مصطفى عبد القادر عطا، دار الكتب العلمية، بيروت، ط١، ١٩٩٢م..
- ابن كثير عماد الدين، البداية والنهاية، تحقيق عبد الله عبد المحسن التركي، ط١، القاهرة ١٤١٩ه/١٩٨٩.
- المعرفة، نصر الدولة، متوفر على الموقع الإلكتروني: https://www.marefa.org
- محمد عبد الرحمن مسعد الرشيدي، تاريخ آمد وحضارتها من القرن الخامس الهجري إلى القرن السابع الهجري، رسالة ماجستير غير مطبوعة، جامعة الزقازيق، مصر، ٢٠٠٨.
- مهى قمرالدين، الطيور..أنواعها ومعانيها، مجلة القافلة، ماي-يونيو ٢٠١٨، متوفر على الموقع: qafilah.com
- الشيخ محمد، قيم في الحضارة العربية الإسلامية، الرابطة المحمدية للعلماء، المغرب، متوفر على الموقع : https://www.arrabita.ma/blog




Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- عا شور م صطفى، "أو قاف المر ضى" صفحات الر حمة في الحـ ضارة الإ سلامية، م توفر ع لى المو قع: https://islamonline.net
- عبد الرقيب يوسف، الدولة الدوستكية في كردستان الوسطى، مطبعة اللواء، بغداد، ط١، ١٩٧٢.
- الفارقي، أحمد بن يوسف بن علي بن الأزرق، تاريخ الفارقي ، تحقيق بدوي عبد اللطيف عوض، مراجعة شفيق غربال، المطابع الأميرية، القاهرة، دار الكتاب اللبناني، بيروت، ط١، ١٣٧٩هـ/١٩٥٩.
- قيس عبد اسماعيل، الأمير نصر الدولة أحمد بن مروان ودوره في ازدهار إمارة بني مروان ٤٠١-٤٥٣هـ، مجلة الجامعة العراقية، ٥، ج٣، ٢٠٢١.

**الهوامش:**

---

[١] سنستعمل في هذا البحث مصطلح الإ مارة دون سواه لأننا نجد أنه الأنسب للمرحلة، ولم نستعمل مصطلح الدولة، رغم أن الفارقي استعمله، وذلك أولا لأن الإمارة المروانية جزء لا يتجزأ من الخلافة العباسية وأمراؤها لا يذكرون ذلك، ومن جهة أخرى مصطلح الدولة مصطلح مرتبط أكثر بالعصر الحديث.

[٢] الفارقي، أحمد بن يوسف بن علي بن الأزرق، تاريخ الفارقي ، تحقيق بدوي عبد اللطيف عوض، مراجعة شفيق غربال، المطابع الأميرية، القاهرة، دار الكتاب اللبناني، بيروت، ط١، ١٣٧٩هـ/١٩٥٩.

[٣] ابن الأثير، الكامل في التاريخ، ج ٩، دار الكتاب العربي، بيروت، ط٤، ١٤٠٣هـ/١٩٨٣، ص ٣٥.

[٤] نفس المصدر.

[٥] الفارقي، المصدر السابق، ص ١٧٣.

[٦] الفارقي، مصدر سابق، ص ١٧٣

[٧] نفس المصدر، ص. ١٧٧.

[٨] الفارقي، مصدر سابق ص١٧٧.

[٩] عبد الرقيب يوسف، الدولة الدوستكية في كردستان الوسطى، ج١، مطبعة اللواء، بغداد، ط١، ١٩٧٢م.

[١٠] قيس عبد اسماعيل، الأمير نصر الدولة أحمد بن مروان ودوره في ازدهار إمارة بنب مروان ٤٠١-٤٥٣هـ، مجلة الجامعة العراقية، ٥، ج٣، ص٤٤٦.

[١١] نفس المرجع.

[١٢] كان وزيرا في مصر ثم اعتقل و تمكن من اللجوء الى العراق، عند أبيه أبو حسين علي بن الحسين المغربي الذي كان هو الآخر وزيرا في مصر، وبعد فترة توفي الأب. فذهب أبو حسين علي من بغداد الى الموصل عند شرف الدولة قرواش حاكم الموصل ولكنه اعتقل في البداية ثم اطلق سراحه أخيراً فذهب الى ميا فارقين وفي الطريق التقى به بدران شقيق قرواش فأعاده إلى الموصل وأودعه السجن ثم أطلق سراحه فذهب الى أحمد بن مروان في ميا فارقين، الذي عينه وزيراً لإمارته وجعله الآمر الناهي في الإمارة وأعطاه صلاحيات واسعة ويقال بأنه لا أفهم وأقوى وأعظم من هذا الوزير أو يكون أحد قد سمع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

بمثله على الإطلاق من بين وزراء العصر ورجالات الدولة، أنظر: الفارقي، المصدر السابق، ص ١٤٣ وما يليها.

١٣ الفارقي مصدر سابق، ص ص ١٤٩-١٥٠

١٤ ا بن كثير ع ماد ا لدين، البدا ية والنها ية، تحق يق ع بد الله ع بد المح سن التر كي، ط١، ال قاهرة ١٤١٩هـ/١٩٨٩، ١٥/٧٨٤.

١٥ ابن الأثير، مصدر سابق، ص٣٥.

١٦ الفارقي، مرجع سابق، ص ١٠٨.

١٧ الفارقي، نفس المرجع، ص١٥٤.

١٨ الفارقي، مصدر سابق، ص ١٥٤.

١٩ عبد الرقيب يوسف، مرجع سابق، ص٢٣٢.

٢٠ نفس المرجع، ص ٢٣٣.

٢١ ابن كثير، مصدر سابق، ج١٥، ص٧٨٣

٢٢ ا بن ا لجوزي، المنتظم في تاريخ الملوك والأمم، تحقيق محمد عبد القادر عطا، مصطفى عبد القادر عطا،ط١، دار الكتب العلمية، بيروت، ج١٦، ١٩٩٢م، ص٧٠.

٢٣ عبد الرقيب يوسف، الدولة الدوستكية...، مرجع سابق، ٢٤٦.

٢٤ نفس المرجع.

٢٥ الفارقي، مصدر سابق، ص ص ١٨٧-١٨٨.

٢٦ عبد الرقيب يوسف، الدولة الدوستكية...، مرجع سابق، ص ٢٤٨.

٢٧ الفارقي، مصدر سابق، ص ص ١٠٩-١١٠.

٢٨ ابن كثير، مصدر سابق، ص.٧٨٣.

٢٩ الفارقي، مصدر سابق، ١٥٤.

٣٠ الفارقي، مصدر سابق، ص ١٤٤.

٣١ نفس المصدر، ص ١٤٥.

٣٢ نفس المصدر ، ص ص ١٢٩-١٣٠

٣٣ نفس المصدر ، ص.١٣٠.

٣٤ أبو الحارث الملقب بالمظفر، ملك الأمراء أرسلان التركي، ينظر: الذهبي شمس الدين، سير أعلام النبلاء، طبعة بيت الأفكار، الطبقة الرابعة والعشرون، ج. ١٨، ص١٣٢.

٣٥ نصر الدولة، المعرفة، متوفر على الموقع الإلكتروني:https://www.marefa.org

٣٦ الفارقي، مصدر سابق، ص ١٥٣ وما يليها.

٣٧ الفارقي، مصدر سابق، ص ١٥٢.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرى زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

[38] محمد عبد ا لرحمن م سعد الرشيدي، تاريخ آ مد وحضارتها من القرن ا لخامس الهجري إلى القرن السابع الهجري، رسالة ماجستير غير مطبوعة، جامعة الزقازيق، مصر، ٢٠٠٨، ص ١٩٢.

[39] نفس المرجع، ص.١٩٤.

[40] نفس المرجع.

[41] محمد الرشيدي، المرجع السابق، ص ١٩٥.

[42] نفس المرجع.

[43] نفس الرجع، ص ١٩٦.

[44] جاي س. جودوين-جيل، اتفاقية ١٩٥١ المتعلقة بوضع اللاجئين والبرتوكول التابع لها، United Nations Audiovisal Library of International Law , 2010, p.4.

[45] عبد الرقيب يوسف، الدولة الدوستكية...، مرجع سابق،٢٢٢ .

[46] محمد الرشيدي، تاريخ آمد... مرجع سابق، مرجع سابق، ص ١٧٣.

[47] نفس المرجع، ص ١٧٠.

[48] الشيخ محمد، قيم في الحضارة العربية الإسلامية، الرابطة المحمدية للعلماء، المغرب، متوفر على الموقع https://www.arrabita.ma/blog:

[49] نفس المرجع.

[50] المعرفة، نصر الدولة، المرجع السابق.

[51] م هى ق مرا لدين، الط يور.. أنواع ها ومعاني ها، مج لة القاف لة، ماي-يوذ يو ٢٠١٨ ، م توفر ع لى الموقع: https:// qafilah.com

[52] عا شور م صطفى، "أو قاف المر ضى" صفحات الر حمة في الحـ ضارة الإ سلامية، م توفر ع لى المو قع: https://islamonline.net

[53] نفس المرجع

[54] مهى قمر الدين، الطيور..، مرجع سابق.

[55] الفارقي، مصدر سابق، ص ١٥٢.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

## Mîr Ehmed Bin Merwan, pêşengê avakirina xebatên mirovahî li Mîrnişîna Merwanî ya Kurd

**Berhevkirinî:**

Mîr Nasir El-Dewle Ehmed ibn Merwan (401-453 hicrî / 1010-1061) yek ji mîrên herî navdar e ku li pey hev mîrnişîniya Merwaniyan hukum kiriye. Desthilatdariya wî bi siyasetek mirovahî ya pêşkeftî bû ku di yekkirina mafê penaberiyê de tê temsîl kirin, ji ber ku wî deriyê Îmaratê ji pêşwazîkirina kesên biyanî (penaberan) re vekir, pêşwaziya wan kir, jiyanek minasib ji wan re peyda kir û rewşa her yek ji wan wan, û bi ser de jî soza ku ew bi tu awayî wan nedin destê lêgerên xwe, heta ku bajarên Îmaratê bi taybetî demdirêj û ji hev cuda nebin

Derbarê penaberan de, em dibînin ku Emîre daxwaza radestkirina wan, çi dibe bila bibe, red dike û bi vî awayî prensîba nevegerandina penaberan, ku tenê di Peymana 1951-an de, ango piştî zêdetirî 900-an, hatiye cîbicîkirin. salan. Mijareke girîng a Mîr Merwanî heye, ew jî dilgiraniya wî ye ji bo pêşxistina siyaseta cîrantiya baş, ne destwerdana di karûbarên navxweyî yên dewletan de û çareserkirina nakokiyan bi rêyên aştiyane.

**Peyrén sereke :** *Mîrnişîna Merwaniyan - Mîr Ehmed Bin Merwan - Karê Mirovî - Penaber - Cîrantiya Baş - Hevjiyana Aştiyane*

## Prince Ahmed bin Marwan, the pioneer of the establishment of humanitarian action in the Kurdish Marwanide Emirate

**Abstract :**

Prince Nasir al-Dawla Ahmad ibn Marwan (401-453 AH / 1010-1061) is considered one of the most famous princes who successively ruled the Marwanide emirate. His policy was characterized by an advanced humanitarian policy represented in the consolidation of the right to asylum, as he opened the door of the Emirate to receive strangers (refugees), welcoming them, providing a decent living for them and the status of each one of them, and on top of that a pledge not to hand them over to their seekers in any way, until the cities of the Emirate became especially long-term and separated. A safe haven for those who include the king, the prince, the minister, the scholar, the seeker of knowledge and the merchant.

With regard to the refugees, we find that the Emir refuses the request for their extradition, whatever the reason, and thus establishes the principle of “non-extradition of refugees”, which was only implemented in the 1951 Convention, that is, after more than 900 years.

There is an important issue that counts for this prince, which is his keenness to promote the policy of good neighborliness, non-interference in the internal affairs of countries, and to resolve differences by peaceful means.

**Key Words :** *The Marwanid Emirate - Prince Ahmed bin Marwan - Humanitarian Work - Refugees - Good Neighborhood - Peaceful Coexistence*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# الامارات الكردية في كتاب مرآة الزمان في تواريخ الأعيان لسبط ابن الجوزي- دراسة تحليلية مقارنة

ب. د فرست مرعي إسماعيل
قسم التاريخ – كلية اداب – جامعة زاخو – اقليم كردستان العراق
أ.عبدالخالق عبدالله عثمان
قسم التاريخ – كلية اداب – جامعة زاخو – اقليم كردستان العراق

**الملخص:**

هذا البحث يتعلق با لدول والا مارات الكرد ية في كتاب مرآة الزمان لسبط ا بن ا لجوزي الذي يتضمن (٢٣) جزءاً، فتاريخ سبط ابن الجوزي مهم جداً في تسليط الضوء على تاريخ الكرد في ديارهم كردستان وفي المناطق الاخرى التي وصل إليها نفوذ الكرد في الدولتين الايوبية والمملوكية. فموضوع بحثنا مهم لأنه أي السبط يذكر روايات مهمة لم ترد في المصنفات التاريخية الاخرى رغم أهميتها ومعا صرتها للاحداث، وهذا يتأتى من أ نه ذقل روا يات من كتب قد فقدت بفعل عوادي الزمن، ورغم البحث عن العديد من الامارات الكردية التي ظهرت في العصور الوسطى ( الا سلامية) أمثال: الهذبانية والروادية والحسنوية والدوستكية والمروانية والعنازية والشدادية، فإذنا لم ذستطع الاحاطة إلا بثلاث إمارات وهي: الدوستكية والمروانية والحسنوية بحسب كثرة الروا يات ا لتي دونها السبط في تاريخه، وليس حسب التسلسل التاريخي.

**الكلمات الافتتاحية:** *سبط ا بن ا لجوزي، كتاب مرآة الزمان، ا لدول الكرد ية، الا مارات الكرد ية. دراسة مقارنة*

## تمهيد: عوامل ظهور الامارات الكردية

كا نت حاد ثة مقـ تل الخليـ فة العبا سي المتو كل سنة ٢٤٧ هـ/٨٦١م عـ لى أ يدي قواده الأ تراك (اليعـ قوبي، ١٨٨٩، ٢/٦٠١ – ٦٠٢؛ المـ سعودي، ١٩٨١، ٣٢٩؛ ا بن خـ لدون، د، ت،٣/ ٢٨٠) بدا ية الانحطاط والتشرذم الذي أصاب الخلافة العباسية على حد وصف ابن خلدون ( ا بن خلدون، د، ت، ٣/ ٢٨٠ – ٢٨٣)، فـضعفت الدو لة و بدأت سلـ سلة من حوادث الـ تدخل في شؤونها عـ لى أ يدي قادة الجند الاتراك، التي كان لها صداها الوا سع في ذفوس زعماء الأ قاليم، فبدأت حوادث ا لخروج عن سيطرة الخلافة مع الإبقاء على الولاء الإسمي للخليفة في المرحلة الأولى فقط، (اليعقوبي، ١٨٨٩،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٦٠٥/٢؛ المسعودي،١٩٨١، ٣٣٤ ٣٤٣)، أي بعبارة أخرى تغلب كل رئيس على ناحيته وانفرد بها، حيث بدأت دولة بني الصفار الفارسية بالظهور عام ٢٥٣ هـ/٨٦٧م بعد الاستيلاء على إقليم سجستان[١] وبعض أجزاء إقليم خراسان[٢]، كما بدأ أمر ابن طولون (ت ٢٧٠ هـ/٨٨٤م)[٣] بالظهور، إذ ما إن جاءت سنة ٢٦٤ هـ/٨٧٧م حتى ملك فضلاً عن ملك مصر(اليعقوبي: ٦٢٤/٢؛ ابن العبري، ١٤٨؛ ابن خلدون،د،ت، ٣٠١/٣)، وملك بنو سامان أواخر سنة ٢٦٠هـ/٨٧٤م بلاد ما وراء النهر( ابن خلدون، د، ت، ٣١١/٣).

وعلاوةً على ذلك فقد ظهرت حركات أخرى تنادي بالخلافة وإسقاط الخلافة العباسية بأي شكل من الأشكال، كحركة الزنج[٤] التي ابتدأ أمرها في الظهور سنة ٢٥٥هـ/٨٦٨م ، وحركة القرامطة[٥] في سنة ٢٧٦ هـ/٨٨٩م،ودعوة أبي عبد الله الشيعي إلى البيعة لعبيد الله الذي سماه بالمهدي في إفريقية عام ٢٨٦هـ/٨٩٩م.(ابن كثير، ١٩٩٠، ٨١/١١؛ ابن حماد، د، ت، ٣٦).

ومن جانب آخر فإن عملية عزل وقتل الخلفاء جرت على قدم وساق، وأصبحت من الأمور الشائعة في تلك الحقبة الحرجة من عمر الخلافة العباسية (عصر التدخل التركي)، فالخليفة المنتصر (ت ٢٤٧هـ/٨٦١م) دس له السم قبل أن تبلغ ولايته ستة أشهر(السيوطي، ١٩٩٨م،٣١٣)، وذبح المستعين (ت ٢٤٨ هـ/٨٦٢م) بعد عزله( السيوطي، ١٩٩٨م، ٣١٣؛ بن العبري،١٤٦)، أما المعتز (ت ٢٥٢هـ/٨٦٦م) فقد مات عطشاً (ابن العبري،١٤٧؛ السيوطي، ٣٠٨)، فيما مات المهتدي (٢٥٥هـ/٨٦٩م) بعد عصر خصيتيه (السيوطي، ١٩٩٨، ٣١٠).

وعندما عجز الخلفاء العباسيون عن معالجة هذا الوضع المتردي الذي ازداد سوءاً يوماً بعد يوم، أقدم الخليفة الراضي (٣٢٢-٣٢٩هـ/٩٣٣-٩٤٠م) على إجراء معيّنٍ ظناً منه أنه الوسيلة لوقف هذا الانحدار، أو توقع منه العلاج، فكان سبباً لزيادة الفوضى والإضطراب، ففي سنة ٣٢٤هـ/٩٣٥م استحدث الخليفة الراضي منصب (أمير الأمراء)[٦]، واختار له أقوى المتنافسين على السلطة وهو ابن رائق[٧] ، ونقل إليه معظم صلاحيات ومهام الخليفة، فكان ذلك مدعاة إلى زيادة الصراع بين المتنافسين، حتى وصل الأمر إلى أن تدرج على هذا المنصب في سنة واحدة (٣٢٩هـ/٩٤٠م) أربعة أمراء، وفي أكثر الأحيان ما كان لأحدهم أن يصل إلى هذا المنصب إلا بعد أن يقضي على خصومه المتنافسين له على هذا المنصب (ابن الاثير، ١٩٨٣، ١٩٢/٥ – ١٩٥؛ ابن العبري، د، ت، ١٥٥؛ ابن كثير، ١٩٩٠، ١١/ ١٨٤ – ١٨٥).

في هذا الوقت أخذت اسرة من الديلم[٨]، بالظهور على مسرح الأحداث في الهضبة الإيرانية في جنوب بحر الخزر (قزوين) وهي تنتمي إلى رجل يدعى بويه[٩]، وهم ثلاثة إخوة هم: علي بن بويه، الحسن بن بويه، أحمد بن بويه[١٠].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وقد ساعدت الصراعات والمنافسات التي حدثت بين زعماء الأقاليم في الهضبة الإيرانية، وتدخل القادة الأتراك في شؤون الخلافة العباسية في بغداد على بروز رئيس الأسرة البويهية أبي شجاع علي بن بويه بن فناخسرو، فضلاً عن صفاته الشخصية من ذكاء وفطنة ومعرفة بكيفية كسب الرجال، التي لخصها مسكويه بقوله: "كان السبب في ارتفاع علي بن بويه وبلوغه ما بلغ سماحة كثيرة كانت في طبعه وسعة صدره، واقترب بهذا الخلق الشريف خلق آخر أشرف منه، وهي شجاعة تامة كانت له واتصل بجميع ذلك اتفاقات محمودة ومولد سعيد"، (مسكويه،١٩٨٧، ٢٧٧/١). الأمر الذي مكنّه من السيطرة على إقليم فارس، كما تمكن أخوه أحمد والحسن من السيطرة على الأهواز والعراق فيما بعد.

لكن أحداث عام ٣٣٤هـ/٩٤٥م في بغداد، جاءت لتعطي البويهيين الفرصة الذهبية للدخول إلى بغداد، حيث دخل أحمد بن بويه بغداد في جمادي الآخر ٣٣٤هـ/٩٤٦م، فلقي الخليفة المستكفي وبايعه على السمع والطاعة، عندئذ لقبه الخليفة بمعز الدولة، فيما منح أخاه الثاني لقب عماد الدولة، ومنح أخاه الثالث الحسن ركن الدولة، وهي الألقاب التي اشتهروا بها( مسكويه، ١٩٨٧، ٨٥/٢؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٣١٤/٦). ومنذ ذلك التاريخ دخلت الخلافة العباسية تحت السيطرة البويهية.

لقد شهد النصف الثاني من القرن الثالث وبداية القرن الرابع الهجريين/ التاسع والعاشر الهجريين أحداثاً جساماً في تاريخ الخلافة العباسية، تمثلت في ظاهرة قيام زعماء الأطراف بعمليات إنفصال عن الخلافة وذلك بسبب ضعف الخلافة العباسية لأسباب موضوعية لا حاجة للتفصيل فيها وتكوين كيانات خاصة بهم (إمارات) تعترف بالخلافة العباسية اعترافاً رسمياً، ومن مظاهر هذا الاعتراف: ذكر إسم الخليفة في خطبة الجمعة وضرب إسمه على السكة، فضلاً عن إرسال بعض الأموال إلى مقر الخلافة.

في حين أن بعض زعماء هذه الإمارات لم يعترفوا بالخلافة، بل شنّوا عليها حملات عسكرية بغية القضاء عليها مثل مرداويج أمير الإمارة الزيارية.

ولم يكن الزعماء الكرد بدعاً عن الناس في هذا المجال، فهم فضلاً عن استغلالهم للظروف التي كانت تمر بها الخلافة العباسية، فإن النظام القبلي الهرمي الذي كان أساس الحياة الإجتماعية عند الكرد ساعد دون شك في بلورة تنظيم إداري يقف على رأس الهرم الأمير، وهو نفسه شيخ القبيلة، أو من خلال عدة إتحادات قبلية أو عشائرية تكون الزعامة لشيخ القبيلة الكبيرة، وتكون وراثية فيما بعد في أسرته.(مرعي، ٢٠١٥، ١٣٣).

وكانت قوة هذه الإمارة تعتمد على قوة القبيلة، التي انبثقت عنها وعلى عدم وجود منافسين لها، سواءً على الزعامة أو على الأراضي التي تستغلها القبيلة في الرعي، فضلاً عن الحنكة


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

السياسية التي يتمتع بها زعيم القبيلة[11] –الأمير لاحقاً- ومدى قدرته على تفريق وتشتيت جهود خصومه، وهذا ما كان يلاحظ في السياسة التي اتبعها الأمير (حسنويه بن الحسين البرزيكاني) مع البويهيين لعب بذكاء لعبة تفريق وتشتيت كلمة البويهيين، (مسكويه، ١٩٨٧، ٢/٣٦٥ – ٣٦٦)، ولكن الآية انعكست بوفاته، حيث استغل البويهيون تلك السياسة ذاتها ضد أبنائه مما أدى إلى تشتيت شملهم وتفريق كلمتهم.(مسكويه، ٢/٤١٤ – ٤١٦).

**المبحث الاول: الامارة الدوستكية**

لا يذكر المؤرخ يوسف بن قِزأوغلي بن عبدالله المعروف بسبط ابن الجوزي (٥٨١ – ٦٥٤هـ/١١٨٦ -١٢٠١م) معلومات تفصيلية عن كيفية تأسيس الدول والامارات الكردية مثل بعض المؤرخين الآخرين كجده ابن الجوزي البغدادي (المتوفى سنة ٥٩٧هـ/١٢٠١م) في كتابه المنتظم في أخبار الملوك والأمم، وابن الاثير الجزري(المتوفى سنة٦٣٠هـ/١٢٣٣م) في كتابه الكامل في التاريخ، وابن كثير(المتوفى سنة ٧٧٤هـ/ ١٣٧٢م) في كتابه البداية والنهاية وغيرهم، وإنما يتطرق بين الحين والآخر الى القول: بأن الاكراد قد ملكوا أو سيطروا (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٢/١٨) إذ لا يتطرق الى معلومات تشفي الغليل. وبشأن تطرقه الى بداية تأسيس الامارة الدوستكية المنسوبة الى الحسين بن دُوستَك المعروف ب(باذ) يقول:" وفيها ملكت الاكراد ديار بكر وميافارقين وسببه أنه كان بجبال حيزان رجل كردي يقال له أبو عبد الله الحسين بن دوستَك، ولقبه باد، اجتمع إليه خلق كثير، وكان يقطع الطريق، ويشن الغارات على ديار بكر، فلما مات عَضُد الدولة قوي أمره، وكان مقامه في بلد حيزان[12] والمعدن[13]، فحدث نفسه بالملك، وضايق ميافارقين وكاتب أهلها ووعدهم بالجميل وحلف لهم فأجابوه، وجاء ففتحوا له الباب وكانوا من الديلم في جورٍ عظيمٍ، فدخلها وولاها أخاه أبا الفوارس، وشرع في فتوح البلاد.( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٢/١٨).

واختلفت المصادر في تسميته ولقبه، فضلاً عن اسم قبيلته، ولم تسعفنا في تحديد زمن ولادته أو نشأته الأولى، فيذكر الروذراوري أن (باد) لقبه أما اسمه فهو أبو عبد الله الحسين بن دوشنك ينتمي إلى الأكراد الحميدية.( الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٨٤).

أما الفارقي[14] فقد أشار إلى اسمه ولقبه وانتمائه القبلي بقوله: "كان باد بن دوستك (الحاريختي) –وهو أبو عبد الله الحسين بن دوستك وإنما لقبوه باد (الفارقي، ١٩٧٤، ٤٩ – ٥٠)، بينما ذكر ابن الأثير روايتين بهذا الخصوص، الأولى: تتضمن أن لقبه "باذ الكردي" (ابن الاثير، ٥/٤٥٩ – ٤٦٠)، (بالذال) واسمه "أبو عبد الله الحسين بن دوستك، وهو من الأكراد الحميدية" (الفارقي، ١٩٧٤، ٤٩ – ٥٠)، أما الرواية الثانية فقد ذكر نقلاً عن بعض أصدقائه من الأكراد الحميدية ممن يهتم بأخبار باذ: "أن باذاً كنيته أبو شجاع، واسمه باذ، وأن أبا عبد الله هو الحسين بن دوستك، وهو أخو باد..." .( ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥/٤٦٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

بعدها يشير سبط ابن الجوزي الى أن صمصام الدولة[١٥] لن يقبل بقيام كيان كردي أو قوة كردية، تسيطر على هذه المنطقة المهمة والحيوية بالنسبة للدولة البويهية :" فبعث إليه صمصام الدولة جيشاً مع رجل يقال له: أبو حرب، فكسره باذ وغنم عسكره، فبعث إليه صمصام الدولة أبا الحسن علي بن الحسين المغربي والد الوزير المغربي، فنازل ميافارقين وكان باذ يُغير عليه وينهب عسكره فعاد إلى الموصل، وكان واليها أبو القاسم بن سعدان، فأصلح بين باذ وصمصام الدولة على بعض ديار بكر، وعاد باذ إلى الغارات...". (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٢/١٨).

وبعد وفاة صمصام الدولة ولى السلطنة البويهية أخوه بهاء الدولة[١٦] الذي حاول القضاء على باذ والحد من نفوذه وولي بهاء الدولة فجهّز إليه جيشاً مع قائد يقال له : ابن الطائي، فالتقى باد على طور عابدين[١٧] الرأس المطل على نصيبين، واقتتلوا، فقتل أبو الفوارس أخو باذ، فحمل إلى ميافارقين، فدفن بقبة تعرف بقبة أبي الفوارس، وانهزم باد إلى حِيزان، وكان أولاد ناصر الدولة بحلب، فجاء أبو طاهر وأبو عبد الله - ابنا ناصر الدولة - يريدان الملك، فقصدوا باذ وهو يهرب من مكان إلى مكان فضايقوه إلى طور عبدين، فاراد أن يغير فرسه بآخر، فوقع فمات، وقيل: كان به رمق، فقتلوه".( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٢/١٨).

ومن جانبه فإن سبط ابن الجوزي يشير الى صهر له يدعى (مروان بن كسرى) كان له ثلاثة أولاد من أخت باذ وهم كل من :أبو علي الحسين، وسعيد، وأحمد، وولد آخر، وكانوا من أهالي قرية تدعى (كرماص) تقع بين مدينتي إسعرد والمعدن، وكانوا من سادتها، فلما خرج خالهم باذ التحقوا به وشاركوا في معظم الوقائع التي اشترك فيها ، فلما قُتِل باذ في صراعه مع بني حمدان، صاح ابن أخته أبو علي الحسين بمقاتلي خاله وقال: هَلُمّ إليّ ، فلمّا اجتمعوا إليه هجم بهم على بني حمدان وهزمهم شر هزيمة وذهبهم وأخذ أموالهم، وجاء الى حصن كَيفا، وكانت زوجة خاله باذ فيها وهي ديلمية فتزوجها، وسار بها الى مدينة ميا فارقين وغيرها من الحصون ففتحها، وأحسن السيرة فيها .( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٢/١٨ ).

والغريب أن سبط ابن الجوزي هو المصدر الوحيد الذي ذكر والد مروان باسم (كسرى) ولم يرد هذا الاسم في بقية المصادر الإسلامية التي أشارت الى الدولة أو الامارة الدوستكية أو المروانية: كالروذرواري (المتوفى سنة٤٨٨هـ/١٠٩٥م) في كتابه الذيل (على تجارب الامم)، والفارقي( المتوفى بعد سنة٥٧٧ هـ/١١٨٢م) في كتابه ( تاريخ ميا فارقين وآمد)، وابن الجوزي (المتوفى سنة٥٧٩ هـ/١١٨٤م) في كتابه (المنتظم في أخبار الامم والملوك)، وابن الاثير ( المتوفى سنة٦٣٠هـ/١٢٣٣م) في كتابه ( الكامل في التاريخ) وغيرهم.

وهناك إشارة مهمة وهو أن سبط ابن الجوزي يورد رواية حول كيفية مقتل الامير باذ، وهذه الرواية تتقاطع مع الرواية المذكورة في غالبية المصادر التاريخية ما عدا رواية (الفارقي)،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو فەکولینێن کوردی

فضلاً عن إشارته الى إسم إبن أخت باذ بالقول( أبو علي الحسين)، علماً أنّ إسمه في بقية المصادر التاريخية (أبو علي الحسن):" لما قُتِلَ باذ؛ كان له صهرٌ على أخته يُقال له: مروان بن كسرى، وكان له من أخت باد أولاد أبو علي الحسين وسعيد وأحمد وولد آخر، وكانوا من قرية يقال لها: كرماص بين إشعرُد[١٨] والمَعْدِن وكانوا رؤساءها، فلما خرج باذ خرج معه بنو أخته فكانوا معه في وقائعه، فلما قُتِل باذ صاح أبو علي الحسين بأصحاب باذ: إليَّ فاجتمعوا إليه، فحمل على بني حمدان، فانهزموا أقبح هزيمة، وذهبهم وأخذ أموالهم، وجاء إلى حصن كيفا(١٩)، وبه زوجة خاله باذ، وكانت من الديلم، فدخل الحصن وتزوج بها، وسار إلى ميا فارقين وغيرها من الحصون ففتحها، وأحسن السيرة، وكان إخوته في خدمته، وأحبه الناس، وتم له فتح الحصون في سنة ثمانين وثلاث مئة".( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٨/ ١٣).

ومن جهة أخرى يذكر السبط رواية أخرى حول مقتل الامير باذ بن دُوستَك الكردي تخالف ما ذكره سابقاً، ففي حوادث سنة ٣٨٠هـ/٩٩١م يذكر بأن معركة قد جرت بين باذ وبين ابني ناصر الدولة إبراهيم والحسين، والسبب ذلك أنه لما وصل ابنا ناصر الدولة الى الموصل وهما يعاذيان نقصاً في اموال والرجال ، طمع فيهما الامير باذ، وكاتب أهله، فأجابه بعضهم، فحشد وجمع، وسار إليها في ستة آلاف من االكرد، ونزل في الجانب الشرقي من الموصل ( نينوى الحالية)، لذلك خاف ابنا ناصر الدولة وطلبا المدد من أبو الذواد محمد بن المسيب أمير بني عقيل، الذي طلب منهم بالقول:" أريد الجزيرة بأسرها، وسمى غيرها، يقصد نصيبين، فوافقا على ذلك، لذلك سار أبو الذَّؤاد على رأس الفي فارس من بني عقيل، إلى مدينة بلد الواقعة في شمال مدينة الموصل على بعد سبعة فراسخ (٤٢كم) إلى الجانب الغربي، وعبر مقاتلوا بني عقيل نهر دجلة إلى الجانب الشرقي لملاقاة الامير باذ وجيشه وهو لا يعلم بأمرهم وأنه قد احيط به من الجانبين بنو حمدان وبنو عقيل، ولما كان مشغولاً بحرب ابني ناصر الدولة وأهل الموصل، فلما صار بنو عقيل معه في أرض واحدةٍ خاف أن يعبر إليه ابنا ناصر الدولة، ويكبسه أبو الذؤاد في بني عقيل، فتحول من مكانه إلى الجبال الواقعة شرقيّ نهر دجلة،( جبل باعذرى – ألقوش) وأدركه بنو عُقيل، واختلط الناس، فتشاغل بعضهم بالرحيل، ولما أراد الامير باذ الانتقال الى فرس آخر أسرع فحول رجله من ركابٍ الى ركابٍ، فلم يلحق، فسقط لثقل جسمه، فانكسرت عظام ترقوته، وعندما عرف بنو أخته وعلى رأسهم أبو علي الحسن بن مروان، ما جرى لخالهم تحركوا نحوه وهو جاثم على الارض، فقالوا تحامل واثبُتْ حتى تلحق بالجبل وتتخلص من هذه المصيبة، ولكنه طلب منهم الرحيل بالسرعة الممكنة، لأنه لا يستطيع الحراك، ولئلا يلحق بهم فرسان العرب من بنو حمدان وبنو عقيل وعدد فرسانهم لا يتجاوز (٥٠٠) فارس، فتركوه لمصيره وانسحبوا باتجاه جبل باعذرى، بعد أن قدموا عدداً من الضحايا،" وبنو عقيل في آثارهم، فبطحوا منهم جماعة)، أي أسقطوا منهم جماعة. (سبط



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٤١/١٨ – ٤٢). أما مقاتلي الامير باذ فقد قتل عدد منهم وفر الباقون باتجاه الجبل شرقي نهر دجلة، باتجاه فرسان بنو مروان لا يلوون على شيء، أما مصير باذ فقد كان في الرمق الاخير وجاء اليه أحد فرسان بني حسان وهو لا يعرفه فقتله وسلبه، ثم عرفه فيما بعد، فقطع رأسه وأخذه معه الى الموصل وخبأه، وقال: من يشتري مني رأس الامير باذ؟ فلما بلغ ذلك مسامع ابني ناصر الدولة أشتريا الرأس مقابل قرية ومال كبير دفعاه لقاتل باذ، بعدها تم قطع يده ورجله اليمنى ونقلتا الى بغداد فتم أشهارهما، فيما تم صلب باقي جسده على باب دار الامارة في الموصل، لذلك ثار عامة أهل الموصل وقالوا:" هذا رجل غازٍ، ولا يحِلُ المُثلة به، فحنط وكُفِن، ودُفِنّ بعد أن صلى عليه، وظهر من محبة العوام له شيء كثير". (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٤٢/١٨ - ٤٣).والى هنا ينتهي حكم الامارة الدوستكية سنة ٣٨٠هـ/٩٩١م).

## ثانياً: الدولة المروانية

لا يشير سبط ابن الجوزي الى كيفية تأسيس الدولة المروانية، مثلما لم يشر في البداية الى حكم الامارة الدوستكية إلا ضمناً، حيث يقول بهذا الصدد:" وسار أبو علي بن مروان من فوره إلى حصن كيفا، وكانت فيه زوجة باذ الديلمية، فقال لها: قد بعثني خالي في مُهِمة ففتحت له الباب، فأعلمها بقتله، وتزوجها، ورتب اصحابه فيها، ونزل ففتح الحصون(القلاع) حصناً بعد حصن، حتى رتب أمور الحصون كلها، وسار إبراهيم والحسين ابنا ناصر الدولة إلى ديار بكر والرأس معهما، فوجدا ابن مروان قد أبرم أمور الحصون، فعدلا إلى قتاله، فهزمهما، وأسر أبا عبد الله الحسين، ومضى أبو طاهر إلى آمد، فأحسن ابن مروان إلى الحسين وأكرمه وأطلقه فصار إلى أخيه وأشار عليه بموادعة ابن مروان، والانكفاء عن ديار بكر إلى غيرها، ومصالحة ابن مروان، فامتنع أبو طاهر عليه، وأبى إلا محاربته، وجمع جمعاً عظيماً من بني عقيل وغيرهم، ثم سار إليه ومعه أخوه الحسين فهزمهما، وأسر الحسين ثانياً، فأساء إليه وضيق عليه، وقال: ما رأيت إحساني إليك حتى هلك وقاتلني ؟! وأقام مدة أسيراً حتى كاتبه العزيز صاحب مصر( الخليفة الفاطمي) فيه، فأطلقه، فمضى إلى مصر، وولاه العزيز مدينة صور( احدى مدن لبنان) بالساحل، ومات هناك، وبقي له ولد يكنى أبا محمد، وهو من قواد المغاربة. ( سبط ابن الجوزي،٢٠١٣، ٤٣/١٨)

وأما أبو طاهر فإنه انهزم إلى نصيبين فجاء إليه أبو الذواد محمد بن المسيب أمير بني عقيل، فأسره ومعه جماعةٌ، فضرب عنق أبي طاهر صَبراً ومن كان معه، وسار في بني عقيل، فسيطروا على الموصل وأعما لها، وكاتب بهاء الدولة بإعلان تبعيته له من خلال إرسال والٍ من قبله، فبعث إليه أبا الحسن بن حمدويه، ومات أمير بني عقيل أبو الذؤاد في سنة ٣٨٥هـ/٩٩٥م.(سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٤٣).


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

بعدها ينتقل سبط ابن الجوزي الى صفحة أخرى من صفحات الامارة المروانية، وكيفية تحكم أبو على مروان في عاصمة ملكه (ميا فارقين)، بمساعدة حاجبه (تيمور)، بعد أن قضى على بعض المناوئين له،" وفيها حكم أبو علي بن مروان على ميا فارقين وكان أهلها قد طمعوا فيه وفي أصحابه ،وأهانوهم وغموا بعضهم فشكا إلى حاجبه تيمور - وكان صاحب رأي فقال له : إنك لا طاقة لك بهم وإن كاشفتهم قهروك قال : فما الحيلة؟ قال: أمهلهم إلى يوم العيد، فإذا خرجوا إلى المُصلى فأمسك عليهم الأبواب، وأدخِلْ مَنْ تُريد وا طردْ مَن تُريد فصبر إلى يوم العيد، وأظهر زينةً عظيمةً، وجنائب[٢٠] وعُدة، وخرج الناس إلى المصلى، ولم يركب، هو وأظهر أنه مريض، وأوقف أصحابه على الأبواب، فلما حصلوا في المُصلّى أباح لأصحابه ذهبهم، ورمى بجماعة منهم: من الأسوار، واختار هو من أمِن منه، وفرق الباقين في البلاد، فماتوا في الطرقات عطشاً وجوعاً، وأخذ أموالهم، فهابه الناس واستقام أمره. ( سبط ابن الجوزي،٢٠١٣، ٧٤ – ٧٥).

ولمقارنة هذه الرواية بغيرها من الروايات، يلاحظ الباحث أن هناك سوء تفسير في المسألة، فبعد أن تمكن الأمير أبو علي الحسن بن مروان من دفع غائلة الحمدانيين وخطرهم عن مدينتي ميافارقين وآمد، فإنه حاول تثبيت حكمه في هاتين المدينتين باتباع سياسة حكيمة تجلت في ترضية ومهادنة جميع طبقات المجتمع، غير أن سياسته هذه لم يكتب لها النجاح في ميافارقين إلى سنة ٣٨٤هـ/٩٩٤م، وهذا ما جعله يشتكي إلى حاجبه "مم"[٢١] من سوء تصرفات أهالي ميافارقين معه ومع أتباعه ذاكراً له: "إن هؤلاء مالي بهم طاقة، ولا هؤلاء تحت حكمي، ولا لي معهم أمر..."(الفارقي، ١٩٧٤، ٦٦)، وقد تطرق الفارقي إلى السبب الذي جعل أهالي ميافارقين يتذمرون من سياسة الأمير أبي علي بن مروان بقوله: "لأن أهل ميافارقين كانوا ميالين إلى بني حمدان، ورغبوا فيهم دون غيرهم"(الفارقي،١٩٧٤، ٦٦) ، وللتأكيد على هذا الأمر أورد دليلاً فمن هذا الوجه كان الشُراب – السكارى الذين يشربون الخمر- والجهال ربما يستطيلون على الجند وأصحاب الأمير إدلالاً عليهم)،(الفارقي،١٩٧٤، ٦٦).

واستمرت العلاقة بالتدهور بين الجانبين، ومما زادها سوءاً أن الأمير أبا علي تأثر من حادثة اعتداء على أحد أبناء عمومته عندما دخل إلى السوق، حيث راث فرسه في السوق، وهذا ما جعل أهل السوق إلى إجباره على تنظيف السوق وحمل الروث بنفسه وإلقائه خارجاً، وقد علق الفارقي على هذه الحادثة بقوله: "وكان من أهل البلد متى استطال عليهم جندي أو – كردي- ضرب في وسط السوق حتى يكاد يتلف بغير إذن الأمير ولا وال".(الفارقي،١٩٧٤، ٧٦)، وقد جعلت هذه الحادثة الأمير أبا علي يفكر في البطش بهم، واستشار حاجبه (مم) حول إيجاد خطة للإيقاع بهم، فكان جواب (مم)، بأنه ليس لديك القدرة على فعل شيء ضدهم، وإنما عليك التحلي بالصبر،( الفارقي، ١٩٧٤، ٦٧)، فلما أصر عليه، وضع له حاجبه خطة وهي أن عليه الانتظار إلى يوم العيد،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

فإذا جاء العيد وخرج الناس للصلاة خارج سور المدينة، وعندئذ عليه أن يغلق الباب دونهم، وبعدها بإمكانه قتل من يشاء واعتقال من يريد.(الفارقي،١٩٧٤، ٦٧؛ ابا الاثير،١٩٨٣، ٤٨٥/٥؛ ابن خلدون، د، ت، ٣١٦/٤).

ولما حلّ يوم العيد نفذ الأمير خطته، وخدع الناس، وتظاهر بأنه يريد الخروج من البلد لأداء الصلاة حسب المعتاد، وأول إجراء اتخذه هو إلقاء شيخ المدينة ومقدميها (محمد بن أبي الصقر)، وعند ابن خلدون ( أبو الأصفر)،( الفارقي،١٩٧٤، ٦٧؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٤٨٥/٥؛ ابن خلدون، د، ت، ٣١٦) من فوق السور، وقتل جماعة من أتباعه وطرد قسماً آخر منهم من المدينة، وهكذا تمكن بهذا الأسلوب من السيطرة على المدينة وتثبيت سلطته فيها، حيث هابه الناس، ولم يبق له منافس في المدينة، واستتب له الوضع إلى آخر عهده.(الفارقي،١٩٧٤، ٦٧).

ويبدو أن أهالي مدينة ميارفارقين في تلك الحقبة، لم يكونوا كرداً، أو أنهم أُجبروا على تركها، وإنما كانت الطبقة الحاكمة التي تضم الأمير وحاشيته وأتباعه من الجند ( كرداً فقط). ويتجلى هذا واضحاً في إشارة ابن الأزرق الفارقي إلى إحدى نقاط الخلاف بين الأمير وأتباعه من جهة، وأهالي مدينة ميافارقين من جهة أخرى: "وكان من أهل البلد متى استطال عليه جندي أو - كردي- ضرب في وسط السوق..." .(الفارقي، ١٩٧٤، ٦٧).. وقد توهّم المؤرخ الكردي ( محمد أمين زكي) عندما عد أبو الصقر شيخ ميافارقين أحد قواد الأمير أبو علي الذين اقتحموا المدينة من الداخل. (أمين زكي، ١٩٦١ ، ١٠٥)، والصحيح ما أثبتناه في المتن.

ومن جهة أخرى فقد ذكر سبط ابن الجوزي ترجمة مفصلة لحياة الامير الكردي أبو الحسن بن مروان، وذكر إسمه الصحيح فضلاً عن تلقيبه ب( صاحب ميا فارقين) لأول مرة في مصنفه. (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٩٧/١٨)، ولأهمية هذه الترجمة وإلقائها الضوء على كثير من الحوادث التي مر بها الامير الكردي ولم يُشِر إليها مصنفنا في المظان الاخرى سيتم إدراجها:" أبو علي الكردي، الأمير، صاحب ميافارقين قد ذكرنا بدايته وما فعل بأهل ميا فارقين أو إخراجهم من البلد، فلما تمكن من ديار بكر أرسل إلى حلب فخطب ست الناس بنت الأمير سعد الدولة شريف بن سيف الدولة بن حمدان، ونقدها مئتي ألف درهم، وشرطوا عليه أن يدخل بها في آمد ويكون مُقامه بها، فبعث إليها أعيان نساء ديار بكر وفي جملتهم بنت الخطيب أبي طاهر محمد بن عبد الرحيم بن نباتة، وجهزت العروس أحسن جهاز، وخرجت من حلب، وخرج الأمير أبو علي الحسن من ميافارقين إلى آمد ليدخل بها هناك، فوصلت العروس إلى الرها، فنزلت بظاهرها، وقد بعث إليها عسكراً عظيماً يتلقاها، وكانت ليلة مقمرة، فخرجت من المخيم في ضوء القمر، فسمعت قائلاً يقول تسمع صوته ولا ترى شخصه : (من المنسرح)

لهفي على فارس فُجِعتُ به        ارملني قبل ليلة العُرسِ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

فارتاعت وعادت إلى الخيمة وهي حزينة، فقالت لها بنت ابن نباتة : ما الذي بكِ؟ فأخبرتها، فقالت: لا تتوهمي، فكأني بك غداً مَلِكَةَ دياربكر، فسمعت قائلاً يقول من وراء الخيمة: قد بقي إن تّم. فزدادت وهماً، وفي نسخة أخرى هماً، وسارت يومين، وإذا بغبرة قد أقبلت من أصحاب الامير، فقالت لها أبشري، فلما قَرُبوا خَبّروا أن الامير قُتِلَ على باب آمِد، فرجعتِ المرأة الى حلب، وعاد النساء الى ميافارقين". ( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٩٧).

وسبب قتله أنه بعد خروجه من مدينة ميافارقين أبقى حاجبه (ممو) فيها، واستصحب معه ولده (شروه)، وجعله حاجباً له مؤقتاً وسار بمقاتليه ومعه إخوته، فقال أخوه أبو نصر أحمد في نفسه وقد لاقوا من الوحل والطين شدةً: لئن مكنني الله لأبنين هنا جسراً يعبر الناس عليه، وساروا حتى وصلوا إلى تل العلوية قريباً من آمد فنزل الأمير أبو علي هناك، فخرج إليه عبد البر شيخ آمد، فقدم له هدايا وتُحفاً كثيرةً، وخلع عليه الأمير، فانفرد به (شروه بن ممو الحاجب)، وكان يحب الأمير أبا نصر، ويكره أبا علي، فقال له: أيها الشيخ، لا تغتر بإكرام الأمير إيَّاك، فإن هذا خديعة منه، ، وما جاء إلا ليوقع بكم كما أوقع بأهل ميافارقين، فخذوا حذركم فقال عبد البر: نحن عبيد الأمير، وتحت طاعته، وحكمه فينا نافذ، ثم أقام الى آخر النهار، واستأذن الأمير في دخول البلد ليحصل ما يحتاج إليه البلد للقائه، وقد حصل في نفسه من كلام شروه شيء، فلما دخل البلد جمع المقدمين والشطار وقال : قد علمتم جَوْرَ هذا الامير وظلمه وما فعله بأهل ميافارقين وعرّفهم ما قال الحاجب، وقال: إذا دخل البلد غداً نثرت عليه الدنانير، فيشتغل بها أصحابه، فأكفونا أمره، ومن باشر القتل فهو أمير المدينة، وتحالفوا على ذلك، فلما طلع الفجر ركب الأمير، وجاء يدخل من باب الماء، فصار في موضع ضيق لا يمشي فيه إلا واحد بعد واحد، فنثر عبد البر على وجهه كفاً من دنانير، فغطى وجهه بكمه، فوثب أبو طاهر يوسف بن دِمنة، فصار خلفه على الفرس، وضربه بسكين في خاصرته، ثم مالوا عليه بالسيوف، فقتلوه وقتلوا جماعةً من الذين دخلوا معه البلد، ولم يدخل معه (شروه) وأحد من إخوته، وركبت العساكر، فرموا برأسه وجُثّته الى مدينة أرزن[٢٢] فدُفِن فيها، وبني على ضريحه قُبةُ، ووخلفه في الحكم أخوه أبو نصر ولقب بممهد الدولة، وفُوض الامور الى شروه وأبيه، وجاء مروان الكردي أبو الأمراء وكان قد عمي ومعه زوجته أم أولاده، فأقام عند قبر إبنه أبي علي، والقبة واقعة في رأس المسجد، شرقي الجسر.(سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٨/٩٩).

وخلف أبو علي المقتول ولداً له إسمه الفضل - وقيل: سنحاريب - وكنيته أبو دُلَفْ وكان صغيراً فنشأ مع أعمامه فلما بلغ سن الرشد زوجه عمه نصر الدولة ابنته فاطمة، فأولدها بنتاً سماها فاطمة، وأقام ممهد الدولة مالكاً لديار بكر غير مدينة آمد، وبعث إلى حلب حيث



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الحمدانيين، لكي يخطب ستّ الناس على النقد الذي تزوجها عليه أخوه، وحملت فيما إلى ميافارقين، فدخل بها. (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٨/٩٧ – ٩٩)

فيما تشير مصادر أخرى الى الحادث بطريقة مغايرة، على أساس أن العلاقات بين الدولة المروانية والدولة الحمدانية كان يشوبها التوتر، وذلك في أعقاب الصراع الذي جرى بين الجانبين، وراح ضحيته عدد من الأمراء، فما أن استقر الوضع للأمير أبي علي بن مروان حتى حاول تحسين العلاقة مع بني حمدان عن طريق الزواج منهم، حيث أرسل في أواخر سنة ٣٨٦هـ/٩٩٦م جماعة من أشراف قومه إلى مدينة حلب لكي يخطبوا له ست الناس بنت الأمير سعد الدولة شريف بن سيف الدولة الحمداني، وقد رحب الأمير الحمداني بهذه الرغبة، وأبدى موافقته، فتمت الخطوبة على مهر قُدر بمائتي ألف درهم،(الفارقي، ١٩٧٤، ٧٢؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥/٤٨٥)، وهذه خطوة لها أبعاد سياسية، تدل على حنكة ودهاء أبي علي الحسن بن مروان.

وكان الأمير أبو علي قد أبدى رغبته في إقامة حفلة العرس في مدينة آمد (دياربكر)، وأنه لهذا الغرض غادر ميافارقين بصحبة (شروه بن مم) في طريقهم إلى ديار بكر.(الفارقي، ١٩٧٤، ٧٤)، ولما وصل الموكب إلى إحدى ضواحي دياربكر وهو ماء مدينة حاني أمطرت السماء عليهم، فسار الأمير ونزل على تل عال حيث خيم هناك، وجاء لاستقباله شيخ آمد ومقدمها عبد البر.(الفارقي، ١٩٧٤، ٧٥)، فاجتمع بالأمير الذي أحسن استقباله وخلع عليه، وقبل أن يغادر الموضع، انفرد به شروه بن مم الحاجب وقال له إن هذا الاستقبال الجيد والتقدير الكريم الذي لقيته من جانب الأمير، إنما هو خدعة مبيتة، لأنه لم يأت إلى دياربكر إلا ليوقع بكم كما أوقع سابقاً بأهالي ميافارقين، وهكذا رجع عبد البر، وقد انطلت عليه خدعة شروه.(الفارقي، ١٩٧٤، ٧٥) ، ولم تورد مصادرنا دوافع شروه من هذه المؤامرة على سيده أبي علي الحسن بن مروان.

فلما دخل شيخ البلد ديار بكر جمع أتباعه ووضع لهم خطة لاغتيال الأمير بمجرد دخوله المدينة، وقد أشار الفارقي إلى هذه الخطة بقوله: "إذا دخل – يعني الأمير أبو علي- في الباب فأنا أشغله عنكم بالنثار[٢٣] عليه، وأما أنتم فاضربوه بالسيوف، ونغلق الباب وقد كفينا أمره، ومن باشره منكم بالقتل كان أمير المدينة..."(الفارقي، ١٩٧٤، ٧٦)، بينما ذكرها ابن الأثير بصيغة أخرى ولعله استقى بعض أجزاء هذه المؤامرة من مصادر أخرى، إذ يقول نقلاً عن لسان مقدم المدينة عبد البر: "قد صح عزم الأمير على أن يفعل بكم مثل ما فعله بأهل ميافارقين، وهو يدخل من باب الماء الذي يشرف على نهر دجلة ويخرج من باب الجهاد، فقفوا له في الدركاه (الباب في اللغة الكردية) وانثروا عليه هذه الدراهم، ثم اعتمدوا بها وجهه، فإنه سيغطيه بكمه، فاضربوه بالسكاكين في مقتله..."( ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥/٤٨٥؛ ابن خلدون، د، ت، ٤/ ٣١٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

وفي اليوم التالي وعندما دخل الأمير أبو علي مدينة ديار بكر من باب الماء، نفذت الخطة، ونثر عبد البر الدراهم في وجهه، وتولى قتله (أبو طاهر يوسف بن دِمنة) عن طريق ضرب رأس الأمير بعاقوفة[٢٤] كانت بيده، وفي رواية عن طريق ضربه بالسيف في خاصرته( الفارقي، ١٩٧٤، ٧٧)، وتم قتل الأمير وبعض أتباعه ممن دخلوا معه المدينة، أما أخوه أبو منصور وأفراد جيشه، فكانوا خارج المدينة، فلما قتل الأمير وقع الهرج والمرج، تقدم شروه وقال يا قوم: "اعلمونا بالخبر! إن كان صاحبنا حياً فعرفونا، فرمى برأسه إليه وجثته فأخذها شروه..."(ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥/٤٨٥) ، وأعلم أخوه الأمير منصور بذلك فعاد بالجيش إلى ميافارقين، وتم نقل جثة الأمير أبي علي إلى مدينة أرزن حيث دفن فيها، وبنيت على ضريحه قبة، واستقر عندها والده أبو الأمراء مروان وزوجته فهو قد عمي من الحزن عليه، وكان قتله في أواخر سنة ٣٨٧هـ/٩٩٧م. (الفارقي، ١٩٧٤، ٧٧؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥/ ٤٨٥؛ ابن العبري، د، ت، ١٧٣؛ ابن خلدون، د، ت،٤/ ٣١٦).

وفي آخر المطاف يذكر سبط ابن الجوزي أن الامور قد تفاقمت بينه وبين قرواش حاكم الموصل" وفيه فسد الحال بين قرواش صاحب الموصل وأبي نصر بن مروان صاحب ميافارقين، وسببه أن قرواشاً زوج ابنته أبا نصر وحملها إليه، فأقامت عنده مدة فأضارها وهجرها فكتبت إلى أبيها تطلب نقلها إليه، فنقلها، ثم كتب أبو المنيع يطلب صداقها عشرين ألف دينار، ويطلب منه منه تسليم مدينة نصيبين، وجمع جمعاً كبيراً من الأكراد وغيرهم، ونزل برقعيد بمرج الروم، وبعث قرواش فحاصر نصيبين، فقاتله من بها، وطال عليه الأمرُ، وضاقت به الميرة، فقال أبو الحسن بن الجلبان لابن مروان: لا طاقة لك بهذا الرجل، فاجعل المِنة لك عليه. فقبل منه، وأعطاه نصيبين، ومن صداق ابنته عشرة آلاف دينار، واصطلحا". ( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٨/ ٣٤٧ – ٣٤٨).

وفي الاخير يذكر سبط ابن الجوزي ترجمة لسيرة حياة الامير أحمد بن مروان الملقب ب(نصر الدولة) أمير ميافارقين ودياربكر، يبدو أنها نقلها من تاريخ الفارقي، ولكن عند المقارنة بين الكتابين يلاحظ الباحث أن هناك معلومات وردت في تاريخ سبط ابن الجوزي ولم ترد في تاريخ الفارقي، إذ يقول:" قد ذكرنا بداية أمرهم ومقتل أخاه ممهد الدولة في سنة إحدى وأربع مئة، وإقامة أحمد مقامه، ولقبه القادرُ ( الخليفة العباسي) نصر الدولة، واستولى على ديار بكر وميافارقين وله اثنتان وعشرون سنة، فأقام والياً ثلاثاً وخمسين سنة، وأحسن السيرة، وعمر الثغور وحصّنها، وأمنت الرعية في زمانه، ووَزَر له أبو القاسم المغربي[٢٥] مرتين، وعنده مات، ووزر له فخر الدولة محمد بن جَهير وكان عنده الحبل الياقوت الأحمر الذي كان لبني بويه، اشتراه من ورثة الملك أبي منصور بن أبي طاهر، وأنفذه إلى طغرلبك مع هدايا كثيرة تساوي ثلاث مئة ألف دينار، ومعها مئة ألف دينار عيناً، وهذا الحبل الياقوت هو الذي قدمه السلطان للخليفة لما نزل من الحديثة واجتمع به في البهو، وكان أبو نصر مُدارياً للملوك ، إذا قصده عدو يقول: كم مقدار ما



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

تنفق لرده؟ إذا قيل له : مئة ألف دينار مثلاً ، بعث بها إلى العدو ليدفع شره وأمن على عسكره من المخاطرة. وكان جواداً سخياً، والرعية معه آمنون على أموالهم وحريمهم، وتزوج عدةً من بنات الملوك، ولم يتنعم أحدٌ من الملوك مثل تنعمه، كان في قصره ثلاثة آلاف جارية عمالات، يبلغ شرى( شراء) الواحدة من ألف دينار إلى خمسة عشر ألف دينار، وملك خمس مئة سُرِّية ( جارية) سوى توابعهنَّ وخمس مئة خادم وكان في مجلسه من الأواني والآلات والجواهر ما تزيد قيمته على مئتي ألف دينار، ورأى من الالتذاذ بالدنيا والراحة ما لم يره غيرُه ورخصتِ الأسعار في زمانه، وتظاهر الناس بالأموال، ووفد إليه الشعراء، وسكن عنده العلماء ،والزُّهَّاد، وبلغه أن الطيور تخرج من الجبال إلى القرى في الشتاء فتصاد، فتقدم بفتح الأهراء، وأن يُحمَلَ إليها من الحب ما يُشبِعُها عنه ، فكانت الطيور في ضيافته طول عمره، ولا يتجاسر أحد أن يصيد طيراً. ؟".( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٩/١٢٥).

يبدو أنّ هناك مبالغة من قبل المصادر في عدد جواري الامير أحمد بن مروان( نصر الدولة) والحياة الخاصة التي كان يعيشها، فضلاً عن ذلك في عدد الآلآت والجواهر النفيسة التي كان يملكها.

و تجدر الاشارة إليه أن رسل ثلاثة من الخليفتين العباسي والفاطمي وملك الروم البيزنطي قد حضروا الى عاصمة ملكه مرةً واحدةً "وبعث له القائم بأمر الله الخلع السنية، وفيها الطوق والسواران ما عدا التاج، وكان فيها فرش بمركب ذهب من مراكب الخليفة، وجاءه من مصر هدايا وتحف وخلع واجتمع ولقبه صاحب مصر عن الدولة، وجاءه رسول ملك الروم بالهدايا والتحف، واجتمع الكل عنده، فأحضرهم وجلس في قصره، وأجلس رُسُل الخليفة عن يمينه، ورسل صاحب مصر عن شماله والرومي بين يديه، ولبس خلعة الخليفة، وأعطى الرسل عطاءً عظيماً، ومالاً كثيراً، وخلعاً سنية، فانصرفوا شاكرين، وأوقف الأوقاف على أبواب البر والصدقات وأدار رسوم ميافارقين، وقصده الشعراء، وامتدحه التهامي بقصائد.( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٩/١٢٥ — ١٢٦).

ومن جانبه يذكر السبط بأنه قد اطلع على تاريخ ميافارقين بقوله:" ورأيتُ في تاريخ ميافارقين أن الملك العزيز بن بويه وفد عليه، وقدَّمَ له الحبل الأحمر الياقوت، ومصحفاً بخط علي عليه السلام، وقال له: قد حملت إليك الدنيا والآخرة. فقبل الجميع، وقدم له أموالاً كثيرة، وتحفاً عظيمة، وأنزله بأسعرد، فأقام بها إلى أن توفي مُكرَّماً، وحمل تابوته إلى الكوفة، فدفن عند أهله، وكان أبو نصر مع لذاته واشتغاله بما كان فيه لم تفته صلاة الفجر في وقتها طول عمره، ولا ظلم أحداً من خلق الله تعالى ولا تعدى على أحد، ولا مد عينيه إلى حريم أحد، ولا خلا بامرأة ليست له بمحرم. وقيل لبعض أصحابه : قد قيل: إن أيام نصر الدولة كانت ثلاثاً وخمسين سنة.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

فقال : لا، بل مئة وست سنين. قيل : وكيف؟ قال: لأن لياليه كانت أحسن من أيامها. ( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٩/١٢٦).

وبمقارنة ما ذكره السبط حول تاريخ ميافارقين لتاريخ الفارقي، يمكن القول بأنه بعد أن استقر الوضع للأمير أبي نصر، وسيطر على مقاطعة ديار بكر ما عدا مدينة آمد، وصل في شهر ذي الحجة سنة ٤٠٣هـ/١٠١٣م قبل عيد الأضحى بثلاثة أيام رسول من قبل الخليفة العباسي القادر بالله، ومعه حاجب الملك البويهي سلطان الدولة بن عضد الدولة أبو الفرج محمد بن أحمد بن مزيد، حاملين معهما الخلع والتشريف والمنشور بإمارة مقاطعة ديار بكر بأجمعها من الخليفة والسلطان معاً (الفارقي، ١٩٧٤، ١٠٨؛ ابن شداد، ١٩٨١،ج٣، ق١، ص٣٥١)، فضلاً عن منحه لقب (نصر الدولة وعمادها ذي الصرامتين) ( الفارقي، ١٩٧٤، ١٠٨).

ومن لطائف القدر أن رسول الخليفة الفاطمي الحاكم بأمره، قد وصل في عشية ذلك اليوم ومعه الخلع والتحف والهدايا، كما لقب الأمير نصر الدولة بن مروان من قبله أيضاً (بعز الدولة ومجدها ذي الصرامتين).( الفارقي، ١٩٧٤، ١٠٩)، وفي صباح اليوم التالي وصل رسول من الملك البيزنطي بسيلوس الثاني ومعه القود[٢٦] والجنائب[٢٧] والتحف ما لا يوصف على حد وصف ابن الأزرق الفارقي( الفارقي، ١٩٧٤، ١٠٩ – ١١٠)، وفي اليوم الرابع أهل هلال عيد الأضحى المبارك، فجلس نصر الدولة على السرير الملكي لتقبل تهاني الناس له، وجلس على يمينه رسول الخليفة العباسي والسلطان البويهي، فيما جلس رسولا ملك مصر وملك الروم على يساره وقُرأت المناشير التي أرسلها الخليفة والملوك بحضور الأمراء والقادة، ولبس الأمير الخلع، وخلع الأمير على الرسل من الخلع الثمينة ما لا تقدر بثمن( الفارقي، ١٩٧٤، ١١٠). وهذا ما جعل الفارقي يمدح نصر الدولة ويثني على تقديرا لدول الثلاث الكبرى له واعترافها به قائلاً: "وحصل له الاسم عند الخلفاء وغيرهم من الملوك، ولم يكن أسعد منه غيره..."( الفارقي، ١٩٧٤، ١٧٦ – ١٧٧).

وفي السياق نفسه يذكر السبط رواية لا تجدها في المصادر الاخرى، وهي أن منجماً جاء من بلاد الهند، فأكرمه الامير وقال له يوماً:" أيها الأمير يخرج على دولتك بعدك رجل قد أحسنت إليه وأكرمته، فيأخذ الملك من ولدك، ويقلع البيت، ولا يلبث إلا مدةً يسيرةً ويؤخذ، وكان الوزير ابن جهير واقفاً على رأسه، فرفع رأسه إلى الوزير وقال: إن كان هذا صحيحاً فهو هذا الشيخ، فقبل ابنُ جَهير الأرض وقال الله الله يا مولانا، ومن أنا؟ قال: بلى، إن ملكت فأحسن إلى ولدي. وكان ابن جهير قد اطلع على الخزائن والذخائر وارتفاع البلاد، فقال ابن جهير لبعض أصحابه من يوم ما قال المنجم ما قال: وقع في قلبي صحة كلامه فكان كما قال...". (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٩/١٢٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

فلما مات الأمير في التاسع والعشرين من شهر شوال سنة ٤٥٣ هـ/ المصادف ٦ تشرين الاول١٠٦١م دفن بجامع المحدثة[٢٨] بميافارقين، ثم بنت له ابنته ست الملك قُبةً بجانب الجامع، ونُقل إليها، وكان قد عهد إلى ولده نظام الدين أبي القاسم نصر بن أحمد بدلاً من أخيه الاكبر أبو الحسن سعيد، وكان ابن جهير المذكور آنفاً في نبؤة المنجم الهندي هو الوزير، فبايع ابن جهير والناسُ أبا القاسم نصر بن أحمد، واستقر الأمر له، ولم ينازعه أحدٌ من بني أعمامه وإخوته، ثم نازعه أخوه سعيد، فلم يقدر عليه فسار إلى باب السلطان السلجوقي طُغْرُلْبَك طالباً الدعم منه ، للحلول محل أخيه في دِفة الحكم، فأرسل معه جيشاً يقدر بخمسة آلاف فارس، فنزلوا على باب ميافارقين، فخرج الوزير ابن جهير إلى الامير سعيد بن أحمد بن مروان فتمكن من عقد الصلح بين الاخوين بعد أن منح بعض المال والاقطاعات للأخير، وتمكن من صرف جيش السلطان طغرلبك عن ميافارقين، وأقام سعيد عند أخيه مُكرَّماً .( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٢٧/١٩).

وفي سنة٤٥٥ هـ /١٠٦٣م بعث الخليفة العباسي القائم بأمر الله رسولاً الى الامير نظام الدين يطلب منه ارسال الوزير ابن جهير إليه، فجهزه في أحسن زي وأجمل جهاز، وبعث معه بالتحف والهدايا والأموال، فاستوزره الخليفة، فكان بنو مروان يفتخرون ويقولون: وَزَرَ لنا ابنُ المغربي وزير الحاكم خليفة مصر، ووزر وزيرنا للخليفة. ثم كان زوال أمر بني مروان على يد ابن جهير سنة ٤٧٧هـ/١٠٨٤م". (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٢٧/١٩).

وفي شهرمحرم سنة ٤٧٧هـ/١٠٨٥م تُوفِّي سعيد بن مروان صاحب آمد، وكان أخوه نصر بميافارقين، ويقال: إن الامير نصر إتفق مع أبي الفرج الخازن على أن يُسقي سعيداً السُم، فسقاه، فلما شربه أحس به، فقال لأصحابه: إقتلوا هذا الكلب، فقد سقاني السم، فقتلوه، ولم يظفر نصر من آمد بطائل وكان لسعيد ولد صغير اسمه مسكويه، فأجلسوه مكان أبيه، وإنحرف أهل البلاد على نصر وسبوه، ونفروا منه.( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٢٥٧/١٩).

لما مات سعيد أخو نصر مسموماً أقام أهل آمد ابنه مكانه، وكان صغيراً، وقام بأمره أبو علي بن البغل القاضي، وخطب له واستدنى أميراً من الغُز – كان بتلك الديار ومعه جماعة – إلى آمد، وتقوى بهم خوفاً من نصر فراسل نصر زوجة أخيه والدة الصبي المتآمر، وأطمعها في تزويجه بها، وبذل لها مالاً، فأجابته وتوافقا على القبض على القاضي، فدخل القاضي يوماً على ولدها على عادته فقبضت عليه، ووثب أهل البلد إلى دار القاضي ونهبوها، وكان فيها شيء كثير للتجار في الأمصار وودائع، وبعثت إلى نصر، فجاء وقرب من آمد، وعلم بَرَّجان أميرُ الغُزّ، فهرب، فوقع به قوم من بني تميم، فأسروه، وجاء نصر إلى باب الهُوَّة ففتحت له، ودخل القصر، وأحضر وجوه البلد وطيب قلوبهم، وقرر على القاضي خمسة وثلاثين ألف دينار، واعتقله على أدائها، وجاء بنو تميم ببرجان، فابتاعه منهم، وبعث به إلى ماردين فرمي من أعلى سورها فمات.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ولما اجتاز نظام الملك وزير السلطان السلجوقي ملكشاه مدينة ميا فارقين، قام باعتقال شقيق الامير نظام الدين (سعيد) وبعث به إلى الهياج لأن نظام الملك منحه هدايا وأموالاً حتى يستميل إليه دون أخيه سعيد،

وبخصوص مرور السلطان السلجوقي (ألب أرسلان) في منطقة ديار بكر، قاصداً ملاذكرد لقتال ملك الروم البيزنطي (رومانوس الرابع) خرج إليه أبو الحسن سعيد بن مروان وخدمه، وكان مستوحشاً من أخيه نظام الدين، فلما وصل السلطان إلى ميافارقين خاف منه نظام الدين، فدخل إليه نظام الملك إلى القصر، فسأله عن أخيه سعيد، فأخبره أنه قد التجأ إلى السلطان، وكان في نية السلطان أن ينصره، وقدَّم لنظام الملك من الجواهر والأموال والتحف شيئاً كثيراً، وخرج أخوات نظام الدين وبناته وزوجته، فمسكوا بذيل نظام الملك وقالوا: قد استجرنا بالله وبك. فقال: والله لأخرجَنَّه من عندكم أميراً، ولأعيدنه سلطاناً. ثم خرج نظام الدين مع نظام الملك إلى السلطان الب ارسلان، وقدَّم له من الأموال والجواهر ما ملأ عينه، فقال له نظام الملك: إن الحريم قد تمسّكن بي في عوده إليهم كما تريد، فقال السلطان: قد حلفتُ لأخيه سعيد، فقال: دعني وإيَّاه وركب السلطان إلى الصيد، وبعث نظام الملك إلى سعيد فقيده وحمله على بغل إلى الهياج، فاعتقل فيه، وعاد السلطان من الصيد، فخلع على نظام الدين خلع السلطنة، وردَّه إلى ميا فارقين، وقال له نظام الملك: ضمنتُ لأهلك أني أعيدك إليهم سلطاناً، وما لنا غير سلطان واحد، ولكن أنت سلطان الأمراء ولقبه بذلك، وعاد إلى ميا فارقين، وغادر السلطان وطالت مدة سعيد في الحبس، فكتب سعيد إلى أخيه يستعطفه ويُرقِّقه ويحلف له، فاستدعاه إلى ميافارقين، وأحسن إليه وأطلقه، وكان ينادمه ويشربان ويتنادمان معاً، فجاء خادم له يدعى (فروخ) في إحدى الليالي فقال: قد جاءتك الفرصة للتخلص من أخيك الأمير نظام الدين، هو نائم سكران، قُم فاقتُلْهُ، وتحكم بالبلاد، فقال له: ويلك يكون أخي ابن عجب، وأنا ابن الفضلونية[٢٩] وأغدر به، لا والله لا يكون هذا الامر أبداً، ثم انتبه نظام الدين وتحادثا، معاً وسلمه مدينة آمد، فأخرج وأقام بها، وندم نظام الدين على تسليم آمد إليه. ( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٩/ ٢٥٥ – ٢٥٦).

ففي الوقت الذي كان بامكان سعيد (ابن الحرة)أن يقتل أخاه الأمير نظام الدين، غير أنه أخوه الامير نظام الدين( ابن الجارية) كان على العكس منه، فقد ندم على تسليم مدينة آمد الى أخيه سعيد، فاستدعى جارية حسناء ودفع إليها منديلاً وقال: إذا كان أخي معك في ذلك الوقت فادفعي إليه هذا المنديل، ووعدها أن يتزوجها، وبعث بها إلى سعيد، فشغف بها شغفاً عظيماً، فلما كان معها في بعض الليالي ناولته المنديل، فمسح به مذاكيره، فسقطت ومات وعادت آمد إلى سيطرة نظام الدين من جديد، ولم يبق له منازع، وبالتالي أصبح أخوته وبنو عمه رهن إشارته و تحت حكمه.( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٩/ ٢٥٦ – ٢٥٧).

و مما تجدر الإشارة إليه، أنه كان لفرسان الدولة المروانية، دور كبير في انتصار المسلمين بقيادة السلطان السلجوقي ألب أرسلان على الروم البيزنطيين بقيادة الامبراطور رومانوس الرابع في معركة ملاذكرد عام ٤٦٣هـ/١٠٧١م

وكان السلطان السلجوقي ألب أرسلان قد تولى الحكم بعد وفاة عمه طغرل بك، وقد حاول احتلال الجزيرة الفراتية وبضمنها مدينة حلب كتمهيد للتقدم نحو الجهات الجنوبية من بلاد الشام، ولكنه أخفق في مهمته أمام أسوار حلب المنيعة بالرغم من ضخامة جيشه، ولكنه مع هذا تمكن من إرغام سيد حلب محمود بن نصير، زعيم قبيلة كلاب العربية على تقديم الطاعة له (ابن الاثير، ١٩٨٣، ٢٤٥/٦)، وبعدما عبر أرسلان نهر الفرات ووصل إلى مدينة خوي[٣٠]، تلقى معلومات تفيد بتحرك جيش بيزنطي عملاق، يقوده الملك رومانوس الرابع ديوجينيس ١٠٦٧-١٠٧١م شخصياً.

وكان السلطان ألب أرسلان قد غيرّ إتجاهه بالحال، وسيرّ أثقال الجيش مع زوجته ووزيره نظام الملك إلى همدان، أما هو فقد قاد ما تبقى من جيشه ووصل إلى منطقة ديار بكر، والتحق به الأمير سعيد بن نصر الدولة حاكم آمد ونزلا معا على الحرشفية[٣١]، على شاطئ نهر دجلة( الفارقي، ١٩٧٤، ١٨٧).

أما ملك الروم فقد وصلت مقدمة جيشه الضخم، الذي بلغ عدده حوالي مائتي ألف رجل على خلاف بين المؤرخين إلى مدينة (خلاط)، وقد طلب السلطان ألب أرسلان من ملك الروم المهادنة، فقال: لا هدنة إلا في الري(ابن الاثير، ١٩٨٣، ٢٤٦/٦) يقصد بها عاصمة السلاجقة، وهنا لم يبق أمام السلطان من مفر إلا أن يقاتل الروم، رغم قلة عدد جيشه وعدم إستطاعته طلب النجدة لبعده عن الري، ولكن يظهر أن الأمير نظام الدين بن نصر الدولة المرواني قد أنجده بقوة كبيرة من المقاتلين الكرد، لإنقاذه من هذا المأزق الخطير حيث يقول سبط ابن الجوزي بهذا الصدد: "وكان قد اجتمع عليه عشرة آلاف من الأكراد، وإنما اعتماده بعد الله تعالى على الأربعة ألف الذين كانوا معه"( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٢٣٦/١٩)، بينما ذكر ابن أبي الهيجاء أن السلطان ألب أرسلان عندما سمع بحشود الروم البيزنطيين لم يتمكن من جمع العساكر لضيق الوقت وقرب العدو، فسار بمن معه من العساكر وهم خمسة عشر ألفاً فقط، منهم عشرة آلاف من الأكراد( ابن أبي الهيجاء، ١٩٩٣، ١١٨ – ١١٩)؛ وهذا دليل على المشاركة الكردية الكبيرة في هذه المعركة الفاصلة التي كانت أحد أسباب الغزو الصليبي للمشرق الإسلامي فيما بعد.

ومهما يكن من أمر فقد إصطدم الجيشان في معركة فاصلة، في موضع يعرف بالرهو بين مدينتي خلاط ومناذكرد، في شهر ذي القعدة سنة ٤٦٣ هـ/١٠٧١م وأسفرت نتيجتها عن هزيمة

ساحقة للبيزنطيين، وتم أسر ملكهم رومانوس الرابع، فضلاً عن وقوع آلاف القتلى البيزنطيين. (ابن الجوزي، ١٩٩٢، ١٢٥/١٦؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٢٤٧/٦).

ويذكر الفارقي بأن السلطان ألب أرسلان بعد انتصاره في المعركة، عاد إلى أذربيجان وجعل مدينتي خلاط ومناذكرد تحت حكمه المباشر من خلال تعيين واليين من قبله على هاتين المدينتين؛ وهكذا خرجت هاتان المدينتان عن حكم الإمارة المروانية ( الفارقي، ١٩٧٤، ١٩٠).

ففي الوقت الذي كان على السلطان ألب أرسلان، أن يكافئ الإمارة أو الدولة المروانية ممثلة بأميرها نظام الدين، التي ساندته في هذه اللحظة الحرجة من التاريخ الإسلامي، قام بالسيطرة على مدينتين وعين عليها واليين من قبله، ولعله بهذا الإجراء حاول تشديد قبضته على هذه المنطقة الحيوية لما تشكله من مفتاح للتقدم داخل الأراضي البيزنطية في مرحلة لاحقة.

ولما مات نظام الدولة سنة ٤٧٢هـ/١٠٧٩م ولي بعده ناصر الدولة منصور، ودفن عند أبيه نصر الدولة، وخلف ثلاثة أولاد: منصور وبهرام وأحمد، وكان وزيره أبو طاهر ابن الأنباري فدبر الملك، وكان قد تقدم عند الأمير طبيب يقال له: أبو سالم، وكان عطاراً بسوق العطارين بميافارقين، فتقدم عليه، حتى أشار عليه بالقبض على ابن الأنباري، وولى منصور الطبيب فاستبد بالأمور، وكتب أبو نصر بن محمد بن جهير إلى السلطان السلجوقي ملكشاه، يخبر بما في الخزائن والقلاع التابعة للدولة المروانية من الأموال والجواهر، ويقول: أنا خدمتُ فيها مدةً وأعرفها، فجهّز إليه العساكر ومضى فحصر ميافارقين وآمد، وقصد منصور باب ملكشاه وبعث ملكشاه إلى أرتُق بك، فساعد ابن جهير، وضايقوا ميافارقين، وقطعوا أشجارها وشفع الأمراء في منصور، فقالوا للسلطان: بأنه أي الامير منصور بن نظام الدين سوف يقنع بمدينة بميافارقين، وتكون آمد وباقي البلاد لنا. ولكن وزير المنصور الطبيب النصراني (أبو سالم الطبيب) في ميافارقين وجماعة من الأمراء، كتبوا إلى الامير منصور، وقالوا له: لا تنزل عن ملكك، فلو أقاموا عشر سنين ما قدروا علينا. فرجع عن ذلك الرأي، وطالبه السلطان بتسليم آمد، فامتنع.( سبط ابن الجوزي،٢٠١٣، ٣٤٩/١٩).

ويبدو للباحث أن توقعات المنجم الهندي قد جاءت في محلها رغم أنّ المنجمين كذابين وإن صدقوا، عندما ذكر بأن أحد الاشخاص المقربين من الأمير المرواني سوف يقوم بإسقاط الامارة وتسليمها الى آخرين، وبالفعل يذكر سبط ابن الجوزي أن الوزير (محمد بن محمد بن جهير) هو الذي أطمع السلطان ملكشاه في مملكة بني مروان على حد تعبير سبط ابن الجوزي،" وتحدث على بني مروان، وأطمعه في مملكتهم، فأزالها، وفتح ميافارقين وآمد وديار بكر، وخطب له على المنابر بها، وكان يبعث بالأموال إلى ولده عميد الدولة من ميافارقين، وعميد الدولة عند السلطان. وكان مما أنفذ له مائدة بلور، دورها خمسة أشبار، وقوائمها منها، وأقداح بلور ليس لها قيمة، وبعث إليه

خُفاً من ذهب فيه الشبحة التي كانت لنصير الدولة، وكانت مئة وأربعين حبة لؤلؤ، وزن كل حبة مثقال وزيادة، وفي وسطها الحبل الياقوت، وقطع بلخش( نوع من الجوهر يُؤتى به من بَلْخَشان الواقعة في بلاد التُرك في آسيا الوسطى)، قيمة الجميع ثلاث مئة ألف دينار.( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٩/٤٢٧).

واستولى الوزير المرواني السابق ابن جهير على أموال ديار بكر، وأخذ من الوزير المسيحي أبي سالم الطيب ألفي ألف دىنار( مليونا دينار) سوى الجواهر واليواقيت، ولما بلغ السلطان ملكشاه هذا الأمر إستدعاه إلى بابه، ففكر بعصيان الأوامر، ثم فكر، فعلم أنه لا يقدر على ذلك وابنه (عميد الدولة) موجود عند السلطان، فجاء إليه وقد رجع من مدينة حلب الى العاصمة، حيث ولى السلطان ديار بكر للعميد (قوام الدين أبي علي البلخي)، فسار إليها، وكان فقيهاً عفيفاً، فكان يجلس للدرس من بكرة إلى قريب الظهر، ثم يمضي إلى الديوان فيقضي أشغال الناس إلى العصر، وأظهر العدل والإحسان.( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٩/٤٢٧

ويستطرد سبط ابن الجوزي بالحديث عن نهاية الدولة المروانية، ومحاولة الأمير منصور بن نظام الدولة إنقاذ ما يمكن إنقاذه عندما يقول:" وذكرنا قصد صاحب ميافارقين (الامير الاخير منصور) باب السلطان( ملكشاه) وأنه لم يلتفت عليه لخسة نفسه، فلما فتحت بلاده قال السلطان قولوا له: إيش يريد؟ فجاءه الرسول فقال: إيش تريد حتى يعوضك السلطان؟ فقال: نريد حربة تقع في صدره تخرج من ظهره، فقيل للسلطان: قد طلب حربى (قرية تقع قرب بغداد) ارتفاعها ثلاثون ألف دينار، فأقطعه إياها، فأقام بها حتى مات ملكشاه.

وكان أبو سالم الطبيب قد حبس الوزير أبا طاهر بن الأنباري بميافارقين، فأطلقه ابن جهير، وبعث به إلى حصن كيفا وبها خادم يقال له: ياقوت، وناظر يقال له : الحسن علي بن الأزرق، فقيل لفخر الدولة: إن ابن الأنباري قد عرف أموال بني مروان وذخائرهم، فإن أطلقته ربما مضى إلى السلطان وأخبره بما وصل إليك، فبعث إلى ياقوت الخادم وابن الأزرق يأمرهما بقتله، فقال ابن الأزرق للخادم: هذا رجل كبير القدر، وربما عزل ابن جهير من البلاد فلا تقتله، قال: وكيف أعمل؟ قال: أظهر موته وأخفه فقال الخادم لابن الأنباري: تمارض أياماً. ففعل وعاده الناس والأطباء، ثم أظهر موته، وأخرج جنازة وصلى عليها الناس، وكتب إلى ابن جهير بذلك، وأثبت موته على القاضي، ثم ظهر ابن الأنباري بعد مفارقة ابن جهير البلاد، ولم يأخذ أحد من الوزراء من الأموال والجواهر ما رأى ابن جهير من بلاد بني مروان، ولم تزل الأقدار تتقلب به حتى عاد إلى الموصل فمات بها.( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٤٢٧ – ٤٢٨).

وكان قد سأل السلطان لما رأى تغيره عليه، أن يأذن له في المقام بالموصل، فأذن له، فمرض في رجب، وتُولّي، فحمل أمراء بني عقيل جنازته إلى تل التوبة شرقي الموصل، فدفن به.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وهكذا سقطت الدولة المروانية بعد أن حكمت أكثر من قرن بسبب فساد وزراء الدولة، والصراع الذي كان يجري بين أمراء البيت المرواني.

**ثالثاً: الامارة الحسنوية**

مما لا شك فيه أن الباحث يحار في المعلومات التي يوردها سبط ابن الجوزي، حول الامارات الكردية موضوعة البحث، فهو لا يذكرها بالصيغة المتعارف عليه عند المؤرخين حسب التسلسل التاريخي أي بنظام السنوات مثل غالبية المؤرخين كالروذرواري والفارقي وابن الاثير وابن كثير وابن خلدون، أو حتى بصورة موضوعية كالمسعودي واليعقوبي، وإنما يذكر نتفاً هنا وهناك، وهذا ينطبق على الامارة الحسنوية.

فلم يبدأ في ذكر كيفية تأسيس الإمارة وسنوات حكمها، بل ذكر إشارات عابرة الى المهام التي كان الأمير بدر بن حسنويه يتولاها والمساعدات والمنح التي كان يمنحها لمن يحتاجها من الأمراء والعامة.

ففي سنة٣٧٠هـ /٩٨٠م قام عضد الدولة البويهي بالسيطرة على بعض قلاع الكرد في إقليم الجبال، وقبض على عددٍ منهم، بعدها نزل منطقة النهروان في طريقه الى بغداد، وطلب من الخليفة العباسي الطائع لله أن يستقبله عند دخوله الى بغداد، إذ لم تكن العادة جارية أن يتلقى الخلفاء العباسيون الأمراء والسلاطين. (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٧/٥٣٩).

ويبدو أن رواية السبط كانت مقتضبة جداً الى درجة أنها لم تشِر الى الامراء الحسنويين بعد وفاة والدهم حسنويه سنة ٣٦٩ هـ/٩٧٩م، لذا كان لا بد من الرجوع الى المصادر التاريخية الاخرى لاماطة اللثام عن هذه الحركة، التي قام بها عضد الدولة للقضاء على الكيان الكردي، في إقليم الجبال دون رغبة أخيه ركن الدولة.

ومن جانب آخر فقد إستغل عضد الدولة الفرصة، التي أُتيحت له بوفاة حسنويه للتحرك من جديد بقصد إزلة الإمارة الحسنوية، التي طالما استغلت الخلافات الشخصية بين أبناء الأسرة البويهية، لتعزيز مكانتها وفرض نفوذها على الجزء الأكبر من إقليم الجبال، حيث تراكمت إثر ذلك ثروة كبيرة سال لها لعاب عضد الدولة. (مسكويه، ١٩٨٧، ٢/٤١٥ – ٤١٦).

ومما زاد في حراجة موقف أبناء حسنويه، أن الشقاق قد دَبّ في صفوف حلفائهم البويهيين أيضاً، لذا بدأ عضد الدولة بالتحرك وتنفيذ فرصة إزالة الإمارة الحسنوية، فبعث خازنه أبا نصر خورشيد يزديار مع رسائل إلى كل من فخر الدولة ومؤيد الدولة وقابوس بن وشمكير(٣٢) أملاً في التفاهم وإزالة أسباب الخلاف، حتى تتضافر كل الجهود في محاربة أبناء حسنويه للسيطرة على ممتلكاتهم لا سيما وأن الانقسامات التي ظهرت بينهم، أدت إلى إنحياز بعضهم إلى عضد الدولة، وكان من بين هؤلاء بختيار بن حسنويه الذي كان مستولياً على (قلعة سرماج) وهي قلعة أبيه



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وفيها أمواله وذخائره، فاتصل بعضد الدولة ورغب في طاعته ثم غيّر رأيه، بينما انضم بعض إخوته وهم: عبد الرزاق وأبو العلاء وأبو عدنان إلى جانب فخر الدولة وساروا إليه في همدان فأكرمهم ولم يهتم بنداءات أخيه عضد الدولة حول توحيد الجهود لإزالة الإمارة الكردية.

لذا سرعان ما جهزّ عضد الدولة جيشاً كبيراً، يعاونه عدد من القواد وسار به إلى إقليم الجبال( الروذراوري، ١٩١٦، ١٠/٣)، وما أن اقتربت جيوشه من همدان، حتى استأمن إليه قواد فخر الدولة ووزيره ورجال حسنويه فضعف أمر فخر الدولة وغادر همدان التي دخلتها جيوش عضد الدولة، وهرب إلى بلاد الديلم ثم إلى جرجان ملتجئاً إلى قابوس بن وشمكير، وسيطر عضد الدولة على ما كان بيد فخر الدولة من مدن مثل: همدان والري وما بينهما من تلك النواحي وسلمها إلى أخيه مؤيد الدولة، الذي صالحه وجعله خليفته ونائبه في تلك البلاد(الروذراوري، ١٩١٦، ١٠/٣). ثم قصد عضد الدولة بلاد الامير الكردي حسنويه، حيث تمكن من احتلال مدن: نهاوند والدينور، فيما أرسل قائده أبا الوفاء طاهر بن محمد في ذي الحجة سنة ٣٦٩هـ/٩٧٩م للسيطرة على قلعة سرماج، الذي حاصرها واستولى عليها واعتقل بختيار بن حسنويه وأخذ أموال القلعة وما فيها من ذخائر، كما سيطر على قلاع أخرى تعود لأولاد حسنويه وغنم منها أموالاً كثيرة.(الروذراوري، ١٩١٦، ١٠/٣؛ الذهبي، د، ت، ٥١٣/٤).

أما بقية أبناء حسنويه فقد اتصلوا بأحد قواد عضد الدولة أبو نصر خواشاذه[٣٣] أثناء مسيرة الجيش البويهي ما بين حلوان وقرميسين (كرمنشاه) عارضين عليه الطاعة والولاء، حيث تم وضعهم مع أتباعهم من الكتاب ووجوه الأكراد في بعض خيم المعسكر (خركاه) تحت حراسة مشددة خوفاً من فرارهم، ثم أصدر عضد الدولة أوامره بالقبض على بعض أولاد حسنويه وهم كل من: عبد الرزاق وأبو العلاء وأبو عدنان وبختيار فضلاً عن بعض خواصهم من الكتاب ووجوه الأكراد، بينما استدعى الإخوة الباقين وهم: بدر وعاصم وعبد الملك، حيث اصطنع عضد الدولة أحدهم وهو (بدر) وأحسن إليه وولاه زعامة الأكراد البرزيكانيين وأتباعهم، وخلع عليه سيفاً وحزاماً من ذهب وحمله على فرس مسرج بسرج من ذهب، فضلاً عن منحه لقب حاجب[٣٤]، بينما خلع على عاصم وعبد الملك بـ(الدراعة)[٣٥] والديباج والسيف بالحمائل وأركبا على فرسين بسرجين مذهبين، في حين قتل بقية المعتقلين من أبناء حسنويه وأتباعهم الأكراد ونهبت أموالهم، إذ يشير الروذراوري إلى هذا الحدث بقوله: "... ووضع على كل من كان من المقبوض عليهم من الأكراد السيف ونهبت حلالهم" (الروذرواري، ١٩١٦، ٩/٣؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٤٣٩،/٥)، ويقول في موضع آخر: "وقتل جميع أولاد حسنويه"( الروذرواري، ١٩١٦، ١٢/٣).

إن التكريم الخاص الذي حظى به الامير بدر، من قبل عضد الدولة البويهي في زعامة الكرد البرزيكانيين وأتباعهم دون أخويه عاصم وعبد الملك، أثار حسدهما وحفيظتهما(الروذرواري،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٩١٦، ٩/٣ ؛ ابن الأثير،١٩٨٣، ٤٤١/٥- ٤٤٢)، مما جعل أحدهم وهو عاصم إلى شق عصا الطاعة واستمالة بعض الكرد الذين لم يرضوا بالوضع الجديد تحت السيطرة المباشرة للبويهيين، فما كان من عضد الدولة إلا أن جهز جيشاً كبيراً أُنيط قيادته بأبي الفضل المظفر بن محمود[٣٦] الذي تمكن من تمزيق القوة الكردية المعارضة وتم أسر عاصم، الذي أركب على جمل لابساً دراعة ديباج[٣٧]، واختفى عن الأنظار منذ ذلك الوقت، حيث قتل هو وجميع إخوته ما عدا بدر. (الروذراوري، ١٩١٦، ١٢/٣ ؛ ابن الأثير،١٩٨٣، ٤٤٢/٥).

وفي حوادث سنة٣٨٥هـ/٩٩٥م غضب بهاء الدولة على مقدم الجيوش أبو نصر الديلمي، فطلب منه كل من فخر الدولة والامير بدر بن حسنويه في القدوم إليهما، حيث ضمن له الامير الكردي بعض القلاع مع تقديم مبلغ سنوي يقدر بمئة ألف درهم، ولكن لم يحالف الحظ الا للقائد البويهي، فمرض بمرض القولِنج بالبطيحة ومات.( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٨٥).

وفي سنة٣٨٧هـ/٩٩٧م بعد موت فخر الدولة بن ركن الدولة، وتولية إبنه أبو طالب رستم الامر بعده، أُستشير الامير الكردي بدر بن حسنويه لمكانته الكبيرة عند الأمراء البويهيين حول انتزاع مدينة جرجان ومنطقة طبرستان من يد الامير قابوس بن وشمكير، فكان جوابه: إنّ الامير الذي ورث هذا المال والملك حديث السن (عمره أربع سنوات)، ولا وجه لإضاعة المال فيما لا تعلم عواقبه، والصواب أن يترك هذا الأمر على حاله الى حين بلوغه، فإن خرج نجيباً على ما عُهد من خلائق آبائه قَدَرَ على ارتجاع ما أُخذ منه، وإن ضَعُفَ لم تكونوا قد جمعتم عليه ذهاب ماله وأعماله، فخالفوه...". ( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٠٣).

وبعد مخالفة نصيحة الأمير بدر حسنويه، وخسارتهم في استرجاع مدينة جرجان، ووقوع تلك الاموال العظيمة بيد صاحب جرجان (قابوس)، إستقر رأي السيدة وبدر بن حسنويه على القبض على القائد البويهي أبو علي حمولة المنافس للوزير القدير أبو العباس الضبي وسجنه، حتى يتم في الأخير تقرير مصير مدينة جرجان، وفي الاخير بعد هروبه من السجن تم قتله بعصر خصيتيه. (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٠٣ – ١٠٤).

وفي شهر شوال سنة٣٨٨هـ/٩٩٨م جلس الخليفة العباسي القادر بالله، لرسل الامير البويهي أبي طالب رستم بن فخر الدولة والامير الكردي بدر بن حسنويه- بإشارة من السلطان بهاء الدولة، وذلك لأن بدر بن حسنويه خدم بهاء الدولة عند مقامه بمدينة القنطرة البيضاء الواقعة في إقليم الاهواز، وحمل إليه الميرة والعلوفة والتجهيزات التي كان بأمس الحاجة إليها، وأظهر له الطاعة والموالاة، وطلب بهاء الدولة من الخليفة أن يبعث له ولابنه رستم وللامير الكردي بدر الخلع السلطانية والعهد، حيث أرسل مبعوثه (أبو القاسم مادرجواران، كما بعث الامير الكردي ( بدر بن حسنويه) رسوله المدعو(أبو القاسم يوسف بن كج) قاضي الدينور، فمنح الخليفة لقب مجد الولة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرى زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

وكهف الامة الى رستم بن فخر الولة، ومنح لقب ناصِرًا الدين والدولة الى الامير الكردي بدر بن حسنويه، وبعث إلى كليهما الخلع المعهودة والعهد. (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١١٠).

وفي شهر محرم سنة٣٨٨هـ/٩٩٨م تعرض عرب بنو هلال – وكانوا حوالي ٦٠٠ فارس - لحجاج البصرة الذين انفصلوا عن حجاج العراق عند الموضع المعروف بالشاج، فأخذوا أموالهم وجمالهم، وأفلت من دخل البصرة على أقبح حالٍ من العري والجوع والعطش، فيقال: إنهم أخذوا منهم مئة ألف دينار. ( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٨/ ١٦٦).

وفيها سار بدر بن حسنويه إلى الري معاوناً للسيدة أم مجد الدولة على عودتها إلى موضعها، ومرتباً لشمس الدولة أبي طاهر في الإمارة عوضاً عن أخيه مجد الدولة.

وكان الخطير أبو علي القاسم بن علي قد منع السيدة أم مجد الدولة من التصرف، وقبض يدها، وأوحش مجد الدولة منها، ووضع الديلم، حتى قالوا: ما للنساء والملك؟ وكان وزيرها أبو سعد بن الفضل بالري فأخافه فهرب فصعدت السيدة إلى القلعة وتحصنت بها، فرتب الخطير تحتها جماعة يمنعونها من الخروج، فكانت في صورة المعتقلة، وكانت لها جارية تشبهها، فكانت تنزل كل يوم تأخذ لها من نهر تحت القلعة وتصعد فألِفَ الموكلون، وأرسلت السيئة إلى قوم من أهل الرسداق فيهم عصبية وفتوة، فواتثقتهم على حملها إلى بلاد بدر بن حسنويه، فجاؤوا فنزلوا على النهر كأنهم عابروا سبيل، ونزلت وبيدها الجرة كأنها الجارية، وركبت دابة، وساروا بها إلى بلد بدر بن حسنويه، وذلك في سنة سبع وتسعين، وكان في نفس بدر من الخطير(أبو علي القاسم بن علي)، فأكرمها بدر، وسار بنفسه معها، وكان ابنها شمس الدولة بهمذان، فوافاها بعساكر همدان وقبل بدر بين يديه الأرض، وساروا إلى الري، فأطلق الخطير الأموال، وإستخلف الديلم، ووقع القتال وجرى على الري أمر عظيم من الحريق والنهب والقتل، وظفر بدر بالخطير، فقبض عليه، وقبضت السيدة على ابنها مجد الدولة، وأصعدته إلى القلعة، وأقعدت شمس الدولة ابنها على السرير وعادت إلى ما كانت عليه، وعاد بدر إلى بلاده، وأخذ الخطير معه وعذبه حتى مات، وتغيّرت أخلاق شمس الدولة، وتمكنت منه المرة السوداء(مرض يصيب الدم) فرجع إلى همذان وساست السيدة الملك، ودبرت الأمور أعظم من الرجال، وكانت تجلس من وراء سترٍ خفيف، والعارض والوزير جالسان بين يديها يخاطبانها وتخاطبهما، وهما ينتقدان الأمور، وكانت قد عزمت على القبض على شمس الدولة، فهرب الى قُم.(سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٦٦ – ١٦٧).

وبمقارنة ما ذهب إليه السبط بغيرها من المصادر، يلاحظ أن السبط قد جاء بمعلومات لا تتوفر في المصادر الاخرى، ووهنا ربما يعني أنه قد أخذها من مصادر قد تكون مفقودة. ففي سنة ٣٨٧هـ/٩٩٧م توفي فخر الدولة، فتولى حكم الدولة ابنه أبو طالب رستم، ولم يكن قد بلغ سن الرشد بعد(الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٩٧؛ ابن الأثير، ١٩٨٣، ٥/٥٢٥)، فتولت والدته (السيدة) تسيير أمور الدولة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

نيابةً عنه، فيما ولى أخوه شمس الدولة أعمال همدان وقرميسين إلى حدود العراق،(ابن الأثير، ١٩٨٣، ٥/٥٢٥)، وكان يساعد السيدة في تسيير أمور الملك الوزيران: أبو العباس الضبي الملقب بالكافي الأوحد، وأبو علي بن حمولة الملقب بأوحد الكفاءة، وكان الإثنان حسب رواية الروذراوري على خصام(الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٩٧)، فمن جهة بسط أبو علي ابن حمولة يده في منح الأموال بغية استمالة الجند إليه، وقد نجح في ذلك إلى حد كبير، بينما كان غريمه أبو العباس الضبي على العكس من ذلك، ولكن منزلته مع هذا كانت كبيرة بسبب قدمه في الوزارة(الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٩٧).

وفي سنة ٣٨٧هـ/٩٩٧م تمكن السلطان محمود بن سبكتكين من هزيمة آخر أمراء الدولة السامانية عبد الملك بن نوح، وسيطر على خراسان وأزالها من الوجود، وكتب بذلك إلى الخليفة العباسي القادر بالله (٣٨١-٤٢٢ هـ/٩٩١-١٩٨٣م)، فما كان من الخليفة إلا أن كتب إليه عهداً بالولاية على خراسان والجبال والهند وطبرستان وسجستان ولقبه بيمين الدولة وناصر الملة نظام الدين ناصر الحق نصير أمير المؤمنين( الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٣٢٣؛ ابن الأثير، ١٩٨٣، ٥/٥٣٤).

وعليه فقد أرسل يمين الدولة محمود بن سبكتكين، رسولاً إلى السيدة شيرين زوجة فخر الدولة إثر تسلمها مقاليد (الحكم) في الري، متوعداً ومهدداً بالزحف عليها، ولما كانت السيدة على ثقة عظيمة برجاحة عقل الأمير الكردي ( بدر بن حسنويه) وحسن تصرفه في أوقات المحن والشدائد، "حيث كانت لا تحل ولا تعقد إلا بمشاورة بدر"( الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٩١)، لذا أسرعت بالكتابة إليه تسأله الرأي والمشورة، فكان جوابه بأن عليها إيفاد رسول يمين الدولة إليه، ليتولى هو شخصياً الرد المناسب على الرسالة، فكان جوابه أنه رتب "طوائف الأكراد وأصناف العساكر وأمرهم أن ينزلوا بحللهم بطول الطريق، من باب الري إلى سابور خواست، ويظهر عند اجتياز الرسول بهم عددهم وأسلحتهم ويأخذوا زينتهم، ويسيروا به من حلة إلى حلة ومن عسكر إلى عسكر..."( الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٩١ ). ولما رأى الرسول هذه الإجراءات الحازمة المنبثة على جانبي الطريق، والإستعداد المنقطع النظير للحرب هاله الأمر، لذا طلب منه الأمير بدر إبلاغ سيده بأن إتباع طريق السلم والمهادنة مع أصحاب (الري) خير من التهديد والحرب، فكان للأمير بدر مثلما أراد حيث كفّ يمين الدولة عن الحرب، وأخلد إلى السلم والموادعة(الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٩١ ).

ومن جانب آخر فرغم إعتماد السيدة خاتون شيرين على الأمير بدر، وعدم البت في أي أمر دون مشورته (الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٩٩)، إلا أن بعض توجيهاته وردوده على بعض الرسائل الموجهة من السيدة إليه بخصوص بعض الأمور التي لها مساس بأمن دولة الري، قد ذهبت أدراج الرياح، وتحملت الري تبعات ذلك، وهذا يبدو جلياً في الصراع القديم الذي بدأت بوادره تلوح في الأفق، حينما إستشار فخر الدولة قبل وفاته وزيره الصاحب بن عباد، بخصوص إعادة شمس الدولة قابوس


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بن وشمكير إلى جرجان وتمليكها إياه، ولكن الصاحب رد هذا الرأي "وعظمها في عينه فأعرض عن الذي أراده، ونسي ما كان بينهما من الصحبة في خراسان، وأنه بسببه خرجت البلاد عن يد قابوس، والملك عقيم". فلما مات فخر الدولة، كتب أهل جرجان(٣٨) إلى قابوس وهو بنيسابور(٣٩) يستدعونه لتولي أمرهم مثلما كان في السابق، وعند ورود هذه المعلومات إلى (الري)، ونظراً لخطورتها وظهور خلافات في الرأي في كيفية معالجتها، فقد كوتب الأمير بدر بن حسنويه كالعادة في مثل هذه الحوادث الجسام بغية معرفة وجهة نظره والحل الذي يرتأيه (الروذراوري، ١٩١٦، ٢٩٧/٣). ، فكان جوابه السديد على حد قول الروذراوري: "... إن الأمير الذي ورث هذا الملك حدث السن – لا ينبغي أن يضيع ماله وذخائره في ما لا تتحقق عواقبه ومصايره، والصواب أن نترك على حاله..."( الروذراوري،، ٢٩٨/٣)، ولكنهم مع هذا لم يسمعوا إلى هذه النصيحة القيمة، فسرعان ما قاد الوزير أبو علي بن حمولة الذي كان يمني نفسه بإمارة جرجان جيشاً اتجه به نحو قابوس ولكنه خسر المعركة أمام قابوس، ورجع منهزماً إلى الري، فكان من رأي السيدة والأمير بدر عزل الوزير ابن حمولة وسجنه(الروذراوري، ١٩١٦، ٢٩٩/٣)، وجرت بهذا الخصوص أمور وحوادث كثيرة أدت إلى عزل الوزير ابن حمولة الخطير وإرساله مخفوراً بصحبة كاتب بدر أبو عيسى سافري بن محمد إلى قلعة استوناوند(٤٠) إذ قتل هناك فيما بعد على يد أحد الأشخاص الذين أرسلوا خصيصاً لهذه المهمة من الري( الروذراوري، ١٩١٦، ٢٩٩/٣؛ ياقوت الحموي، ١٩٧٩، ٧٣/٢٠)، ومما يجدر ذكره أنه كان هناك خلاف شديد بين الأمير بدر وبين الوزير ابن حمولة (الصابي، ١٩٧٧، ٤٥٣)، حيث كان الأمير بدر لا يخاطب ابن حمولة بالوزير، في الوقت الذي كان يمتنع ابن حمولة من مخاطبة بدر بسيدنا( الصابي، ١٩٧٧، ٤٥٣)، ولكن هذا الخلاف تطور إلى عداء مكشوف من جانب الوزير، حيث قام بحث أمراء الأطراف على معاداة بدر والتهوين من شأنه وقوته، فضلاً عن إرسال الرسائل إلى إبنه (هلال) يحرضه فيها على تحدي والده ومقاطعته، فكان ذلك من أسباب خروج هلال على والده (الصابي، ١٩٧٧، ٤٥٣). إذ يورد سبط ابن الجوزي رواية مقتضبة بهذا الخصوص جاء فيها:" وفيها قبض هلال بن بدر بن حسنويه على أبيه في سنة٤٠٣هـ" .( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٨٢/١٨).

أما الأمير بدر فإنه رأى أنه من الافضل له أن يوقف الوزير الخطير عند حده، حيث أرسل إليه غلاماً ومعه سيف مجرد بدون غمد، وأمره بأن يضعه أمامه ولا ينبس ببنت شفة وينتظر جوابه، الذي لم يتأخر كثيراً، إذ أدخل الوزير الخطير قلمه في المحبرة ثم سلمه إلى الغلام وقال هذا جوابي لبدر بن حسنويه (مرعي، ٢٠٠٥، ١٧٢ – ١٧٣).

يفهم من هذا النص بأن الأمير بدر هدد الوزير الخطير بالقتل بالسيف، إن لم يتراجع عن غيه، أما جواب الوزير فيتجلى بأنه باستطاعته التأثير عليه، بواسطة هذا القلم من خلال تحريض أمراء الأطراف ضده، بل حتى إثارة إبنه هلال عليه(مرعي، ٢٠٠٥، ١٧٣)، وهذا ما وقع

فعلاً(الصابي، ١٩٧٧، ٤٥٣)، أما الأمير بدر فقد تمكن من استغلال هزيمة الوزير الخطير أمام قابوس بن وشمكير الزياري، وتمكن من عزله وقتله فيما بعد بدعم من السيدة زوجة فخر الدولة ( الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٩٩؛ ياقوت الحموي، د، ت، ٢٠/٧٣). وفي ذي الحجة سنة ٣٨٤هـ/٩٩٤م اعترض الأصيفر المنتفقي الأعرابي ( الصابي، ١٩٧٧، أ٤٩٠) أمير العرب طريق الحجاج القادمين من العراق والمشرق ما بين زبالة[٤١] و الثعلبية[٤٢] ومنعهم من المرور إلا بدفع مبلغ كبير من المال( ابن الجوزي، ١٩٩٢، ١٤/ ٣٦٩ ) متعذراً بأن الدراهم التي أرسلها الخليفة العباسي إليه، كانت مزورة ويريد التعويض عنها( ابن الجوزي، ١٩٩٢، ١٤/ ٣٦٩؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥/ ٥٠٦ – ٥٠٧)، ولم يكن بإمكان الحجاج تلبية طلبه، وطالت فترة اعتراضهم مما حدا بهم إلى الرجوع من حيث أتوا بسبب ضيق الوقت وعدم تمكنهم من أداء شعائر ومناسك الحج في تلك السنة.(ابن الجوزي، ١٩٩٢، ١٤/ ٣٦٩؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥/ ٥٠٦ – ٥٠٧).

وفي سنة ٣٨٥ هـ/٩٩٥م قام الأمير بدر بوضع مبلغ تسعة آلاف دينار، كمنحة منه لتقديمها إلى أمير العرب الأصيفر الأعرابي كتعويض عما يأخذه من حجاج الركب العراقي، حتى يسمح لهم بالمرور إلى الديار المقدسة وأداء المناسك (ابن الجوزي، ١٩٩٢، ١٤/ ٢٧٠؛ الذهبي، ٢١)، غير أن الروذراوري يذكر رواية أخرى تختلف عن سابقتها، سواء في توقيت دفع المبلغ أو مقداره يقول بهذا الصدد ما نصه: "وحمل بدر بن حسنويه خمسة آلاف دينار مع وجوه القوافل الخراسانية، لتنصرف في خفارة الطريق عوضاً عما كان يجيء من الحاج في كل سنة، وجعل ذلك رسماً زاد فيه من بعد حتى بلغ تسعة آلاف دينار...". ( الروذراوري، ١٩١٦، ٣/٢٨٧)، وفي إشارة إلى قنوات أخرى للصرف لم ترد في مصادر أخرى يقول: "وكان يحمل مع ذلك ما ينصرف في عمارة الطريق ويقسم في أولاد المهاجرين والأنصار بالحرمين ويفرق على جماعة من الأشراف والفقهاء أهل البيوتات في مدينة السلام [بغداد] بما تكمل به المبلغ عشرين ألف دينار في كل سنة، فلما توفي، انقطع ذلك حتى أثر في أحوال أهله ووقف أمر الحج". ( الروذراوري، ١٩١٦، /٣/ ٢٨٧).

ومن جانبه يذكر سبط ابن الجوزي رواية يتيمة، حول موضوع الأصيفر الاعرابي جاء فيها:"وفي سنة٣٨٥هـ بعث بدر بن حسنويه الكردي خمسة آلاف دينار، تدفع الى قاطع طريق الحج (الاصيفر الاعرابي)؛ عوضاً عما كان يأخذه من الحجاج القاصدين لبيت الله الحرام، وجعل ذلك رسماً عليه أي بعبارة أخرى تعهد بدفع هذا المبلغ سنوياً لتأمين طريق الحج الى مكة المكرمة، واستمرت الأمور على هذا النحو الى سنة ٤٠٣هـ".( سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ١٨/٨٠).

وفي سنة ٣٨٨ هـ/٩٩٨م ونظراً للأعمال الجليلة، التي قام بها الأمير بدر بن حسنويه لخدمة المسلمين، الذي وصفه ابن كثير بأنه: "كان من خيار الملوك بناحية الدينور وهمدان، وله سياسة وصدقة كثيرة". ( ابن كثير، ١٩٩٠، ١١/٣٥٣؛ ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥/٦٠٤).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

لذا فقد كوفئ الامير بدر بن حسنويه لقاء خدماته الكبيرة، وصدقاته من قبل الخليفة العباسي القادر بالله (٣٨١-٤٢٣هـ/٩٩١-١٠٣١م) فكنّاه بأبي النجم، وعهد له بحكم المناطق التي تحت إمرته في غربي إقليم الجبال، وعقد له لواء وحملت إليه الخلع السلطانية (الروذراوري، ١٩١٦، ٣١١/٣) ولقب بـ (نصرت الدولة).( الروذراوري، ١٩١٦، ٣١١/٣)، ولكنه لم يكن يرغب في هذا اللقب "فإنه كان سأل أن يلقب بناصر الدولة" (الروذراوري، ١٩١٦، ٣١١/٣؛ ابن الجوزي،١٩٩٢، ٩/١٥). ، ثم لبيت رغبته من قبل الخليفة، حيث لقب (بناصر الدين والدولة).( الروذراوري،١٩١٦، ٣١١/٣؛ ابن الجوزي،١٩٩٢، ٩/١٥. ابن الاثير، ١٩٨٣، ٥٣٣/٥) سنة ٣٨٨هـ/٩٩٨م، ويبدو أن هذا التكريم جاء حسب ما يذكرالروذراوري: " سؤال بهاء الدولة وكتابه"( الروذراوري،١٩١٦، ٣١١/٣؛ ابن الجوزي،١٩٩٢، ٩/١٥)، وهذا ما يتطابق مع ما ذكره السبط في روايته.

ومما يجدر ذكره أن جميع الألقاب التي منحتها الخلافة العباسية، للأمراء البويهيين وغيرهم أو لوزرائهم تكاد تخلو من الصبغة الدينية ما عدا لقب الأمير (بدر ناصر الدولة والدين)، ( ابن خلدون، د، ت، ٤٨٥/٤)، في الوقت الذي كان معتدياً سدة الخلافة العباسية القادر بالله المعروف بتشدده السني الواضح.

**الخلاصة:**

مما تقدم يبدو أنه يمكن بناء تصور واضح على طريقة معالجة سبط ابن الجوزي لموضوع الامارات الكردية وفق ما يلي:

١- لم يتطرق السبط الى الدول والامارات الكردية التي ظهرت في العصر الإسلامي بالطريقة التي سار عليها مؤرخون آخرون مثل بداية تأسيسها والامراء والقادة الذين تبوأوا مقاليد الحكم فيها. ولكنه ذكر روايات مهمة لم ترد إلا في تاريخه التي يشير الى أنه نقلها من تاريخ ميافارقين لمؤرخ المدينة ( ابن الازرق الفارقي).

٢- ذكر السبط روايات في غاية الاهمية مثل مشاركة الكرد في معركة ملاذكرد الفاصلة بين المسلمين من الترك والكرد بقيادة السلطان السلجوقي ألب أرسلان، والروم البيزنطيين بقيادة الامبراطور رومانوس الرابع في سنة ٤٦٣هـ/١٠٧١م.

٣- تطرق السبط الى دور بعض وزراء الدولة المروانية الذي كان لهم دور في إسقاطها من خلال نقل معلومات عن غناها وازدهارها الاقتصادي، الى السلطنة السلجوقية

٤- أشار السبط الى تاريخ الامارة الحسنوية بصورة مقتضبة، حيث ذكر روايات مهمة عن شجاعة وذكاء الامير القدير ( بدر بن حسنويه)، علماً بأنه لم يتطرق البتة الى دور والده ( حسنويه) في تأسيس الامارة، فضلاً عن دور إخوته الآخرين إلا ما ندر.

٥- وبخصوص الامارة العنازية فإنه أي السبط ذكر ثلاث أو أربع روايات يتيمة لا تعطي تصوراً واضحاً بحيث تساعد على تكوين تصور واضح عن هذه الامارة التي شغلت مساحة لا يستهان بها في منطقة شهرزور والمناطق المحيطة بها.

**المصادر:**


-عز الدين أبي الحسن علي بن محمد بن عبد الكريم الجزري (١٩٨٣).

-الكامل في التاريخ، حققه وضبط أصوله وعلق حواشيه: علي شيري، دار إحياء التراث العربي، بيروت.

الأصفهاني، أبو الفرج علي بن الحسين (د، ت).

- تاريخ سني ملوك الأرض والأنبياء، دار مكتبة الحياة، بيروت.

ابن أعثم، أبو محمد أحمد الكوفي، (١٩٧٠).

- كتاب الفتوح، حيدر آباد، الدكن، مجلس دائرة المعارف العثمانية.

- البدليسي، شرفخان، (١٩٥٣).

- الشرفنامة، ترجمة: جميل بندي الروزبياني، مطبعة النجاح، بغداد.

- نفس الكتاب، ترجمة وتحقيق: محمد علي عوني(١٩٥٨)، دار إحياء الكتب العربية، القاهرة.

ابن تغري بردي، جمال الدين أبو المحاسن يوسف بن تغري بردي الأتابكي، (د، ت).

- النجوم الزاهرة في ملوك مصر والقاهرة، وزارة الثقافة والإرشاد القومي، مصر.

ابن الجوزي، جمال الدين أبو الفرج عبد الرحمن بن علي بن محمد (١٩٩٢م).

- المنتظم في أخبار الأمم والملوك، تحقيق: محمد عبد القادر عطاء مصطفى عبد القادر عطا، راجعه وصححه: نعيم زرزور، دار الكتب العلمية، بيروت.

ابن حماد، عبد الله بن محمد بن علي،(د، ت)

- أخبار ملوك بني عبيد وسيرتهم، تحقيق ودراسة: التهامي نقرة وعبد الحليم عويس، دار الصحوة، القاهرة.

ابن حوقل، أبو القاسم بن حوقل النصيبيني، (١٩٧٩).

- صورة كتاب الأرض، دار مكتبة الحياة، بيروت.

ابن خرداذبة، أبو القاسم عبيد الله بن عبد الله (١٨٩٩).

- المسالك والممالك، أعادت طبعه بالأوفسيت عن طبعة بريل، ليدن، مكتبة المثنى، بغداد.

ابن خلدون، عبد الرحمن بن محمد بن محمد (د، ت).





Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

- العبر وديوان المبتدأ والخبر في أخبار العرب والعجم والبربر ومن عاصرهم من ذوي السلطان الأكبر.
- المقدمة، دار الجيل، بيروت.
ابن خلكان، أبو العباس شمس الدين أحمد بن محمد بن أبي بكر (د، ت).
- وفيات الأعيان وأنباء أبناء الزمان، تحقيق: إحسان عباس، دار الفكر، بيروت.
ابن خياط، أبو عمرو خليفة العصفري (١٩٨٥م).
- تاريخ خليفة بن خياط، تحقيق: أكرم ضياء العمري، دار طيبة، الرياض.
الدينوري، أبو حنيفة أحمد بن داود (د، ت).
- الأخبار الطوال، تحقيق: عبد المنعم عامر، مراجعة د. جمال الدين الشيال، أعادت طبعه بالأوفست مكتبة المثنى، بغداد.
الذهبي، أبو عبد الله شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان بن قايماز (١٩٩٣).
- تاريخ الإسلام ووفيات المشاهير والأعلام، تحقيق: عمر عبد السلام تدمري، دار الكتاب العربي، بيروت.
- تهذيب سير أعلام النبلاء، أشرف على تحقيق الكتاب: شعيب الأرناؤوط، هذبه أحمد فايز الحمصي، مؤسسة الرسالة الطبعة الثانية.
- كتاب دول الإسلام، مطبعة جمعية دائرة المعارف العثمانية، حيدر آباد، الدكن.
- سير أعلام النبلاء، تحقيق د. بشار عواد معروف، مؤسسة الرسالة، بيروت.
- العبر في خبر من غبر، حققه وضبطه: أبو هاجر محمد السعيد بن بسيوني زغلول، دار الكتب العلمية، بيروت.
ابن رسته، أبو علي أحمد بن عمر (١٨٩١).
- الأعلاق النفيسة، مطبعة بريل- ليدن، أعادت طبعة بالأوفست مكتبة المثنى، بغداد.
الروذراوري، أبو شجاع محمد بن حسين بن عبد الله الوزير ظهير الدين (١٩١٦).
- ذيل تجارب الأمم، مطبعة شركة التمدن، مصر المحمية.
سبط ابن الجوزي، شمس الدين المظفر يوسف قزاوغاي ابن عبدالله(١٩٩٠).
- مرآة الزمان في تاريخ الأعيان، دراسة وتحقيق: جنان جليل محمد الهموندي، الدار الوطنية، بغداد.
السيوطي، جلال الدين عبد الرحمن بن أبي بكر (١٩٩٨م).
- تاريخ الخلفاء، دراسة وتحقيق: عبد القادر عطا، مؤسسة الكتب الثقافية، بيروت.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ابن شداد، عز الدين محمد بن علي بن إبراهين (١٩٨١).
- الأعلاق الخطيرة في ذكر أمراء الشام والجزيرة، حققه: يحيى عبارة، منشورات وزارة الثقافة والإرشاد القومي، دمشق.
الصابي، أبو إسحاق إبراهيم بن هلال (١٩٧٧).
- المنتزع من كتابي التاجي، تحقيق: محمد حسين الزبيدي، بغداد.
الطبري، أبو جعفر محمد بن جرير (د، ت).
- تاريخ الرسل والملوك، تحقيق: محمد ابو الفضل إبراهيم، دار المعارف، مصر.
ابن العبري، أبو الفرج جمال الدين غريغوريوس الملطي (د، ت).
- تاريخ مختصر الدول، تحقيق: صالحاني الدومينكي، دار المشرق، بيروت.
الفارقي، أحمد بن علي بن الأزرق (١٩٧٤).
- تاريخ الفارقي، حققه وقدم له: بدوي عبد اللطيف عوض، دار الكتب اللبناني، بيروت.
ابن الفوطي، أبو الفضل كمال الدين عبد الرزاق البغدادي (١٩٦٢).
- تلخيص مجمع الآداب في معجم الألقاب، تحقيق: مصطفى جواد، المطبعة الهاشمية، دمشق.
- الحوادث الجامعة والتجارب النافعة في المائة السابعة، المنسوب إلى ابن الفوطي، تحقيق: مصطفى جواد، مطبعة الفرات، بغداد.
الفيروزآبادي، مجد الدين بن يعقوب البكري (١٩٩٦).
- القاموس المحيط، بإشراف محمد نعيم العرقسوسي، مؤسسة الرسالة، بيروت.
ابن العماد، أبو فلاح عبد الحي بن العماد الحنبلي (د، ت).
- شذرات الذهب في أخبار من ذهب، دار إحياء التراث العربي، بيروت.
القلقشندي، أبو العباس أحمد بن علي (١٩٨٧).
- صبح الأعشى في صناعة الإنشا، شرحه وعلق عليه وقابل نصوصه: محمد حسين شمس الدين، دار الكتب العامة، بيروت.
الكتبي، محمد بن شاكر (د، ت).
فوات الوفيات والذيل عليه، تحقيق: إحسان عباس، دار صادر، بيروت.
ابن كثير، أبو الفداء عماد الدين إسماعيل بن كثير الدمشقي الشافعي (١٩٩٠).
- البداية والنهاية، منشورات مكتبة المعارف، بيروت.
المسعودي، أبو الحسن علي بن الحسين بن علي (١٩٨٣).
- مروج الذهب ومعادن الجوهر، دار الاندلس، بيروت.
ياقوت الحموي، شهاب الدين أبي عبدالله ياقوت بن عبدالله الرومي (١٩٧٩)


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

- معجم البلدان، دار صادر، بيروت.

**المراجع:**

الخطيب، مصطفى عبد الكريم (١٩٩٦)

- معجم المصطلحات والالقاب التاريخية، مؤسسة الرسالة، بيروت.

دائرة المعارف الإسلامية (١٩٩٦)

- سترك، مادة الديلم، ترجمة: ابراهيم الشنتاوي وزملائه، دار الشعب، القاهرة.

زكي، محمد أمين (١٩٦١)

- خلاصة تاريخ الكرد وكردستان، ترجمة: محمد علي عوني، مطبعة صلاح الدين، بغداد.

مرعي، فرست (٢٠٠٥)

- الامارات الكردية في العصر العباسي الثاني، دار سبيريز، دهوك.
- الشيخ عبد الحميد البيزلي الريكاني سيرة ومواقف، مجلة الحوار، أربيل، العدد ١٨١، خريف ٢٠٢٢.

**الهوامش:**

---

١. سجستان: ناحية كبيرة وولاية واسعة واسم مدينتها زرنج، والمسافة بينها وبين هرات ٨٠ فرسخاً (٤٨٠ كم) وأرضها كلها رملة سبخة، وقال الاصطخري: أرض سجستان سبخة ورمال حارة بها نخيل ولا يقع بها الثلج، وقال حمزة في اشتقاقها واشتقاق أصفهان: إن إسباه وسك اسم للجند والكلب مشترك وكل واحد منها اسم للشيئين فسميت أصبهان والأصل أسباهان وسجستان والأصل سكان وسكستان لأنهما كانتا بلدتي الجند. أنظر: ( ياقوت، 1979، ٣/١٩٠)؛ وحالياً تطلق على سجستان اسم بلوشستان وتقع أراضيها في إيران وباكستان وأفغانستان.

٢. خراسان: تطلق كلمة خراسان في اللغة الفارسية القديمة على البلاد الشرقية واستمرت هذه التسمية حتى أوائل القرن الرابع الهجري/العاشر الميلادي، أما البلدانيون المسلمون فقد أطلقوا خراسان بوجه عام على جميع الأقاليم الإسلامية في شرق المفازة والصحراء حتى حد جبال الهند. ينظر: (هوتسما، خراسان، ٨/ ٢٨٢)؛ أما حافظ أبرو فقد ذكر في تاريخه أن خورسان يعني آفتاب ماذند ومعناه بالعربية شبيه الشمس. ينظر: حافظ أبرو: تاريخ حافظ أبرو، ١٩٨٢، ٢/ ص١٢؛ فيما أورد محمد معين في مادة خراسان من معجمه كلمتين (خورآستان مشرق) وتعني بلاد الشمس المشرقة. ينظر: (محمد معين، تهران، ١٣٦٣ شمسي، ٥/ ٤٨٦)؛ وخراسان مقسمة حالياً بين ثلاث دول هي افغانستان وإيران وتركمنستان، ينظر:( دائرة المعارف الإسلامية، ج٨، ص٢٨٢.

٣. ابن طولون: هو أبو العباس، الأمير، صاحب الديار المصرية والشامية والثغور، تركي مستعرب، كان شجاعاً جواداً حسن السيرة، يباشر الأمور بنفسه موصوفاً بالشدة على خصومه وكثرة الإثخان والفتك فيمن عصاه، بنى الجامع المنسوب إليه في القاهرة، ومن آثاره قلعة يافا في فلسطين. ينظر:( الزركلي، ١٩٩٣، ١/١٣٧.

٤. الزنج: جماعة من الرقيق السود، تواجدت في العراق بالمنطقة الممتدة ما بين البصرة وبحر فارس (الخليج العربي) في النصف الأول من القرن الثالث الهجري، عمل أفرادها في الزراعة وأعمال السخرة، ارتبطت باسمهم صورة تعرف باسم ثورة الزنوج قادها رجل من أهل فارس اسمه علي بن محمد، ادعى أنه من سلالة زين العابدين بن الحسين وأعلن إمامته في البحرين ثم انتقل إلى منطقة البصرة، وثار على الخلافة العباسية



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

سنة ٢٥٥هـ/٨٦٩م في خلافة المهتدي محمد واستطاع أن يلحق الهزائم بجيوش الخلافة عدة مرات، وقام أتباعه بأعمال شنيعة في البصرة وضواحيها كالقتل والتخريب، حتى تراوح عدد القتلى إلى أكثر من مليون، انتهت هذه الحركة بمقتل المدعي علي بن محمد وعدد من قادته سنة ٣٧٠هـ/٨٨٣م من قبل أحمد الموفق شقيق الخليفة العباسي. ينظر: (الطبري، د،ت، ٩/ ٤٧٠ وما بعدها).

٥. القرامطة: فرقة من غلاة الشيعة الإسماعيلية نشأت في الكوفة بالعراق، تنسب إلى حمدان بن قرمط، لقب بذلك لقرمطة في خطه أو في خطوه، وكان في ابتداء أمره أكاراً من أكرة سواد الكوفة، تميزت حركتهم بالتنظيم الدقيق، تمكنوا من إنشاء دولة لهم في البحرين بقيادة أبو سعيد الجنابي، وامتد نفوذهم ليشمل الأحساء والشام وشكلوا خطورة على الخلافة العباسية. أنظر: (الأشعري، ١٩٥٨، ٩٨)؛ (البغدادي، ١٩٩٠، ٢٨٢، ٢٨٣).

٦. أمير الأمراء: القائد العام للجيش، منصب استحدثه الخليفة العباسي الراضي بالله سنة ٣٢٤هـ لما أخذ صغار قادة الجند يتدخلون في شؤون الخلافة، حيث فوض الخليفة الأمر إلى محمد بن رائق شريطة أن يقوم بتوفير الأموال التي تحتاجها الخلافة. ينظر: (الموسوعة العربية الميسرة بإشراف محمد شفيق غربال، ، ١٩٦٥، ١/ ٢٢٩؛ (السامرائي، ١٩٨٨، ص٧٧؛ ابن الأثير،١٩٨٣، ٥/ ١٨٥؛ ابن تغري بردي، د،ت، ٣/ ٢٥٨؛ ابن خلدون، د،ت، ٣/ ٤١١).

٧. ابن رائق: صاحب واسط والبصرة، طلبه الخليفة العباسي الراضي ليقلده منصب أمير الأمراء سنة ٣٢٤هـ، قتله ناصر الدين الحمداني سنة ٣٣٠هـ. ينظر: (ابن خلدون،د،ت، ٣/ ٤٠٢، ٤٠٣، ٤١١؛ المنجد في الأعلام، ١٩٩٢، ٨).

٨. الديلم: جزء جبلي من إقليم الجيلان، يحده من الشمال بحر الخزر (قزوين) ومن الجنوب نواحي قزوين وجزء من الري، ويحده من الشرق طبرستان ومن الغرب أذربيجان وبلاد الران، تسكنه قبيلة تعرف بالديلم، وكان ملوك الديلم ينتمون إلى أسرة جستان ويقيمون في الطرم، وكان الديلم وثنيين إلى أن أسلموا في أيام الحسن بن زيد العلوي سنة ٢٥٠هـ، ولغتهم تختلف عن اللغات الفارسية والأرمنية والرازية. ينظر: ابن حوقل، ، ٣١٨-٣٢٠؛ ابن رسته، ١٨٩٧، ١٥١؛ إيوار، ١٩٩٠، ٩/ ٣٦٧).

٩. بويه: أسرة ديلمية ذكروا لأول مرة أيام الداعي الزيدي الناصر الأطروش، ومن بعده أيام ولديه أحمد وجعفر، وكان من الذين خرجوا مع الناصر من وجوه الديلم على بن بويه، وعندما قاتل أولاد الناصر أحمد وجعفر السامانيين برز من بينهم أبو شجاع بويه بن فناخسرو. أنظر الزيدي: محمد حسن: المنتزع من كتاب التاجي لأبي إسحاق الصابي، بغداد، ١٩٧٧، ص٥٤؛ وقد اختلف في نسبهم فقال ابن خلكان نقلاً عن الصابي إنهم يرجعون في نسبهم إلى بهرام جور بن يزدجر الملك الساساني. أنظر (ابن خلكان: وفيات الأعيان، ١/ ٣٥)، فيما ادعى البعض نسبتهم إلى العرب. أنظر (البيروني: الآثار الباقية، ٣٨)؛ وقد حسم ابن خلدون الأمر ذاكراً بأن هذه الأنساب موضوعة، وضعها من لا يعرف طبائع الأنساب في الوجود، واستبعد أن يكونوا من غير الديلم ثم تكون لهم رياسة الديلم لأن الرئاسة على قوم لا تكون في غير أهل بلدهم. أنظر ابن خلدون: العبر، ٣/ ٨٢٦؛ أما الأصفهاني وهو من أكثر المؤرخين معرفة بأصول ملوك الفرس، فرغم أنه يجعل للبويهيين أصلاً يرجع إلى الملك الساساني بهرام جور، إلا أنه يتراجع في موضع آخر ذاكراً أن علي بن بويه كان زعيماً لإحدى قبائل الديلم تسمى شيرذيل أوندان، تقيم في قرية كياس كاليش في ديلمان. ينظر (الأصفهاني، د، ت، ٢٤١-٢٤٣).

١٠. ثلاثة إخوة أولاد بويه بن خسرو قامت الدولة البويهية على أيديهم، وقد لقبوا من قبل الخليفة العباسي المستكفي (ت ٣٣٨هـ/٩٤٩م) بألقاب عماد الدولة لعلي بن بويه، وركن الدولة للحسن بن بويه، ومعز الدولة لأحمد بن بويه. ينظر: (مسكويه، ، ٢/ ٨٥؛ ابن الأثير،١٩٨٣، ٦/ ٣١٤؛ ابن خلدون، د، ت، ٣/ ٤٢٠).

١١. زعيم القبيلة الكردية يقابل الشيخ في القبيلة العربية، علماً بأن زعيم القبيلة الكردية الآن يسمى آغا وهي لفظة مغولية تعني الاخ الكبير دخلت الى اللغة الكرية من الفارسية التي تعني السيد.ينظر: (مرعي،٢٠٢٢، ١٦٦).

١٢. حيزان: بلد من دياربكر فيه شجر وبساتين ومياه غزيرة. (ياقوت الحموي، ١٩٥٥م، ٢/ ٣٣١).

١٣. المعدن: بلد من دياربكر ينظر: (ابن شداد، ١٩٩٧م، ١/ ١٣٩).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

[14]. الفارقي: هو أحمد بن يوسف بن علي بن الأزرق ولد بمدينه ميا فارقين في شهر شوال سنة ٥١٠هـ/١١٦م، تولى عدة مناصب في مدينته وفي مناطق أخرى، ألف كتاباً تحت عنوان: تاريخ ميا فارقين، توفي بعد عام ٥٧٧هـ/١١٨١م.( الفارقي ، ١٩٧٤، ص٣١-٣٥).

[15]. صمصام الدولة: أبو كاليجار المرزبان بن عضد الدولة بن ركن الدولة، ولى المملكة بعد موت أبيه عضد الدولة، فلم ينجح أمره، وغلب عليه أخوه شرف الدولة وقهره وحبسه وسمل عينيه، فاستمر محبوساً إلى أن مات أخوه شرف الدولة، فنزل من الحبس وهو أعمى، وانضم إليه أناس وسار إلى فارس وملك شيراز، ولكن خرج عليه ابن عمه أبو نصر بن بختيار وقتلوه يعد ذلك وكان ذلك سنة ٣٨٨هـ، وكان عمره يوم قتل خمساً وثلاثين سنة، ومدة حكمه تسع سنين وأشهر. ينظر: (ابن الأثير،١٩٨٣، ٥٣٢/٥؛ ابن كثير، ، ٣٢٥/١١؛ ابن تغري بردي، د، ت، ١٩٨/٤، ١٩٩).

[16]. بهاء الدولة: أبو نصر ، أحمد بن عضد الدولة ابن بويه ، ملك العراق. مات في جمادى الآخرة ، سنة ثلاث وأربعمائة بعلة الصرع المتتابع كأبيه ، توفي بأرجان في سن اثنتين وأربعين سنة وتسعة أشهر. وكانت أيامه أربعا وعشرين سنة ، وتملك ابنه سلطان الدولة أبو شجاع. وكان بهاء الدولة خاضعا للسلطان محمود بن سبكتكين ، مداريا له. وقام ابنه بعده اثنتي عشرة سنة ، وأخذت الدولة البويهية تتناقص. وقيل : بل كان ملك بهاء الدولة اثنتين وعشرين سنة ويومين . (الذهبي، ١٩٨١، ١٨٦/١٧).

[17]. طور عبدين: طور بلدة في أعمال نصيبين في بطن الجبل المشرف عليها المتصل بجبل الجودي، ينظر: (أبو شامة، ١٩٩٧، ١٨).

[18]. إسعرد: بلدة تابعة الى دياربكر تقع شرقيها. ينظر: (أبو شامة، ١٩٩٧، ١٣٨/١).

[19]. حصن كيفا: بلدة عظيمة مشرفة نهر دجلة، من ديار بكر. (ياقوت الحموي، ١٩٧٩، ٢٦٥/٢).

[20]. الجنائب: جمع جُنَيبة، وهي الدابةُ التي تقاد، ينظر: (ابن منظور، ١٩٧٩، ٢٣٤/١).

[21]. مم: حاجب الأمير علي، ويبدو أن اسمه تصغير للفظة محمد في اللغة الكردية، ومع هذا فإن المصادر لم تترجم لحياته. ينظر (الفارقي: ١٩٧٤ ، ٦٦).

[22]. أرزن: مدينة مشهورة قرب خلاط، ولها قلعة منيعة، ينظر: (ياقوت، ١٩٧٩، ٣٥/١).

[23]. النثار: نثر الشيء ينثره نثراً نثاراً، رماه متفرقاً، ينظر: (الفيروزآبادي، ١٩٩٦، ٦١٦).

[24]. العاقوفة: وهي القفافة (كرمانة) خشبة في رأسها حجنة يحد بها الشيء كالمحجن. أنظر (الفارقي، ١٩٧٤، ٧٧ هامش ١).

[25]. أبو القاسم المغربي: صاحب أرزن: شيخ العشائر الكردية ومدبرها، كان مقدماً في الأكراد وموسوماً في الشجاعة، مهد للأمير نصر الدولة في امتلاك آمد سنة ٤١٥هـ/١٠٢٤م وأخلص له وكان وزيره ومدبر الدولة، وصاحب سياستها توفي سنة ٤١٥هـ/١٠٢٤م. ينظر (الفارقي، ١٩٧٤، ٩٣، ٩٤، ١٠٤؛ ابن شداد، ١٩٨١، ج٣، ق١، ص٣٤١، ٣٤٢).

[26]. القود: بضم القاف وسكون الواو، جمع الأقود وهو من الخيل الطويل العنق؛ والقود بفتح القاف وسكون الواو: الخيل الذي تقاد بمقاودها ولا تركب، وتكون مودعة معدة لوقت الحاجة إليها. ينظر (الفارقي، ١٩٧٤، ١١٠، هامش ١).

[27]. الجنائب: جمع جنيبة، وهي الناقة، ينظر (الفارقي، ١٩٧٤، ١١٠، هامش ٢).

[28]. المحدثة: رباط بظاهر ميافارقين. ينظر:(ابن خلكان، د،ت، ١٧٨/١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

٢٩. والفضلونية بنت فضلون بن منوجهر صاحب آران وأرمينية إحدى زوجات الامير نصر الدولة، وعجب إحدى جواريه. (سبط ابن الجوزي، ٢٠١٣، ٢٥٦/١٩).

٣٠. خوي: بلد مشهور من أعمال أذربيجان، ينسب إليها الثياب الخوئية، ينظر (ياقوت، ١٩٧٩، ٤٠٨/٢).

٣١. الحرشفية: قرية تقع في ربض ديار بكر على شاطئ نهر دجلة، ينظر (الفارقي، ١٩٧٤، ١٨٧).

٣٢. قابوس بن وشمكير: أمير من بني زيار، خلف أخاه بيستون في حكم جرجان وطبرستان سنة ٣٦٦هـ، شارك مع حسام الدولة في السيطرة على جرجان، وكان قد نظر في النجوم فرأى أن ولده يقتله، وكان يتوهم أنه ولده دارا، لما يرى من مخالفته له ولا يخطر بباله منوجهر، وكان هلاكه على يد منوجهر سنة ٤٠٣هـ. ينظر: (ابن الأثير، ١٩٨٣، ٤٤٥/٥-٤٤٦؛ ابن كثير، ١٩٩٠، ٣٥٠/١١).

٣٣. أبو نصر خواشاذه: أحد أعيان قواد عضد الدولة، هرب في أخريات أيامه إلى منطقة البطائح جنوب العراق، وقد كاتبه كل من بهاء الدولة وفخر الدولة وصمصام الدولة وبدر بن حسنويه، كل منهم يستدعيه ويبذل له ما يريد، ولكنه رفض، توفي سنة ٣٨٥هـ. أنظر ابن الأثير، ١٩٨٣، ٥١١/٥.

٣٤. الحاجب: لقب من ألقاب التشريف يقوم مقام مدير التشريفات العام حالياً، وهو منصب استحدثه الخليفة الأموي معاوية بن أبي سفيان رضي الله عنه بعد حادثة الخوارج التي استهدفت حياته، بجانب منع ازدحام الناس على بابه، وقد اقتدى العباسيون بالأمويين في مسألة الحجابة، وكان في أيامهم تنافس منصب الوزارة. ينظر (الصالح، ١٩٨٩، ٣٠٦، ٣٠٧؛ الخطيب، ١٩٩٦م، ١٣٨).

٣٥. الدراعة: جبة مشقوقة المقدم على هيئة المعطف القصير مطرزة بالأكمام والأطراف، أنظر (الخطيب، ١٩٩٦، ١٧٧).

٣٦. أبو الفضل المظفر بن محمود: أحد قواد عضد الدولة البويهي، أصبح حاجباً في عهد ابنه صمصام الدولة، تمكن من درء خطر القرامطة عن بغداد وانتصر عليهم في معركة حاسمة سنة ٣٧٥هـ حيث أسر زعيمهم أبو قيس مع قواد آخرين، حيث ضربت عنقه، أينظر:( الروذراوري، ١٩١٦، ١٢/٣، ١٠٩، ١١٠).

٣٧. دراعة ديباج: دراعة تم العريف بها سابقاً، ديباج: أعجمي معرب وأصل الديباج بالفارسية ديوباف أي نساجة الجن. ينظر: (الجواليقي، ١٩٩٠م، ص٢٩١).

٣٨. جرجان: مدينة عظيمة بين طبرستان وخراسان، ينظر (ياقوت، ١٩٧٩، ١١٩/٢).

٣٩. نيسابور: مدينة عظيمة من مدن خراسان، قيل في سبب تسميتها أن سابور مر فيها وفيها قصب كثير فقال: يصلح أن يكون هنا مدينة، فقيل لها نيسابور. ينظر (ياقوت، ١٩٧٩، ٣٣١/٥)؛ (القزويني،د، ت، ٤٧٣).

٤٠. استوناوند: ورد في هامش ذيل تجارب الأمم للروذراوري بأنها قلعة استوناوند، وهي قلعة مشهورة بدنباوند من أعمال الري (طهران حالياً)، قيل إنها عمرت منذ ثلاثة آلاف سنة ونيف، وكانت في أيام الفرس معقلاً للمصمغان ملك تلك الناحية، ومعنى المصمغان مس مغان، والمس الكبير، ومغان المجوس، معناه كبير المجوس. ينظر (ياقوت، ١٩٧٩، ١٧٦/١).

٤١. زبالة: بضم أوله، منزل معروف بطريق مكة من الكوفة، ينظر (ياقوت، ١٩٧٩، ١٢٩/٣، ١٣٠).

٤٢. الثعلبية: بفتح أوله، من منازل طريق مكة من الكوفة، ينظر (ياقوت، ١٩٧٩، ٧٨/٢).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

## میرنشینێن كوردی د پەرتووكا ( مرآة الزمان في تواريخ الأعيان لسبط ابن الجوزي) خواندنەكا شروڤەكاری و هەڤبەركاری

**پوختە:**

ئەف ڤەكولینە گرێدای دەولەت و میرنشینێن كوردیە د پەرتوكا خودیكا زەمانی یا نەڤیێ ئیبن جەوزی كو ٢٣ بەشان بخو ڤە دگریت، دیروكا ئیبن جەوزی گەلەك یا گرنگە بو بەرچافكرنا دیروكا كوردا لناڤ عەردێ وان كو كوردستانە و هەروەسا بو دەڤەرێن دی ژی كو دەستهەلاتداریا كوردا گەهشتیێ لسەر دەمێ هەردوو دەولەتێن ئەیوبی و مەمالیكا، بابەتێ ڤەكولینا مە گەلەك یێ گرنگە چونكی نەڤیێ ئیبن جەوزی ئاماژە ددەت هندەك ریوایەتێن گرنگ كو د هندەك پەرتوكا دا هاتبون و ئەو پەرتوكە ژبەر بورینا دەمی ژنافچوینە و نەماینە، سەرەرای كو ڤەكولینێ لسەر چەندین میرنشینێن كوردی دكەت ئەڤێن چەرخێن ناڤین یێن ئیسلامی دیاربوی وەك : هەزبانی و رەوادی و حەسنەوی و دوستەكی و مەروانی و عەنازی و شەدادی، لێ ئەم نەشیاین زێدەتر ژ سێ میرنشینا بەحس بكەین ژبەر وان ریوایەتێن زێدە ین كو نەڤیێ ابن جەوزی نڤیسی د پەرپوكا خو یا دیروكی دا ئەوژی : دوستەكی و مەروانی و حەسنەوی، هەلبەتە ئەڤە نە ل دویف رێزبەندیا دیرۆكی یە.

**پەیڤێن سەرەكی:** ئیبن جەوزی، پەرتووكا میرئلت ئەلزەمان، میرگەهێن كوردی، دەولەتێن كوردی، هەڤبەركاری.

## The Kurdish emirates in the mirror of time in notable history The tribe of Ibn al-Jawzi - a comparative analytical study

**Abstract:**

This research is related to the Kurdish states and emirates in the book "Mirror of Time" by the tribe of Ibn al-Jawzi, which includes (23) parts.

The subject of our research is important because it is which tribe mentions important narratives that were not mentioned in other historical compilations despite their importance and contemporary events. They are: Al-Hathbaniyah, Al-Rawadiyah, Al-Hasanawiyyah, Al-Dostakiya, Al-Marwaniya, Al-Anaziah, and Al-Shaddiyah. We were only able to comprehend three emirates, namely: The Dostakiya, the Marwaniya, and the Hasanawiyyah, according to the many narrations recorded by the tribe in its history, and not according to the historical sequence.

**Keywords**: *Sabit inb AL-Jawzi, Miraat AL-Zaman, Kurdish states, Kurdish emirates. A comparative study*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

# الإمارات الكردية في مسالك الابصار لابن فضل الله العمري (ت: ٧٤٩هـ/ ١٣٤٩م)

أ.م. محمد علي صالح الشرابي

قسم التاريخ - كلية الآداب – جامعة الموصل/العراق

**الملخص:**

يعتبر ابن فضل الله العمري من أهم مؤرخي العصر المملوكي. كتب موسوعة علمية تاريخية تناولت جوانب عديدة من تاريخ الشرق الإسلامي. كرس موضوعًا كاملاً لبلد الأكراد، فحدّد مناطق انتشارهم، وإقامتهم، وأهم قبائلهم، وأبرز الإمارات الكردية في عصره التي عاش معها أو سمع عنها أو نظر إليها. بين قوتهم ومواردهم. وعلاقتها بالقوى الإقليمية المعاصرة مثل المماليك والمغول.

**كلمات مفتاحية:** *كتاب مسالك الأبصار، الإمارات والقبائل، الأكراد، العصر المملوكي*

**المقـــدمة:**

يُعد ابن فضل الله العمري واحد من اهم مؤرخي العصر المملوكي في القرن (٨هـ/ ١٤م)، كتب موسوعة علمية تعد احدى اهم الموسوعات التاريخية، تناولت جوانب عديدة من تاريخ بلاد الشرق، وخصص مبحثا كاملا لبلاد الكرد، فحدد مناطق انتشار وسكن الكرد واهم القبائل والامارات الكردية التي عاصرها، وسمع بها او زارها واطلع على احوالها، ويعد من ابرز المصادر التي وصلت الينا وبينت طبيعة الامارات الكردية، وعلاقتها مع القوى الإقليمية التي سيطرت على المشهد السياسي بعد الاجتياح المغولي المدمر، الذي احدث ابلغ الأثر في بلاد المشرق، ولم تكن بلاد الكرد بمنجى من هذا الطوفان المغولي المدمر، الذي أصاب اهم المراكز الحضرية في بلاد الكرد، مثل اربل التي كانت قد بلغت اوج ازدهارها في عصر مظفر الدين كوكبري، فغدت قبلة العلماء واسست المدارس ودور الحديث واستقطاب ابرز العلماء .

وبعد الاجتياح المغولي بسنوات اخذت الحياة تعود الى تلك البلاد، وبرزت امارات واسر اضحى لها دورا واضحا في الحياة السياسية، وعلاقات مع دولة المماليك والدول الأخرى، قدم العمري معلومات قيمة عن تلك الامارات والقبائل والبلاد التي سيطرت عليها، مثل شهرزور حيث اكراد الخريسة كما يسميهم العمري، ويذكر ان الاجتياح اضطر العديد من اكراد البابرية الى النزوح نحو بلاد الشام ومصر، ويذكر العديد من قبائل الاكراد الأخرى مثل الجولمركية واميرهم



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شمس الدين في العقر والعمادية والزيبارية والهكارية، الذين كانت لهم الخفارة الى جبل الجزيرة والبختية والحميدية والكلالية والزرارية وغيرهم.

وقد تم تقسيم البحث على مبحثين، تناول المبحث الأول: المؤرخ بن فضل الله العمري، وكتابه مسالك الابصار، اما المبحث الثاني: فقد تناول ابرز الامارات والقبائل الكردية التي ذكرها ابن فضل الله العمري.

## المبحث الاول:

ينسب ابن فضل الله العمري الى بيت علم وفضل، يرجع نسبهم الى الخليفة الثاني عمر بن الخطاب رضي الله عنه، وقد ساق نسبه الحافظ ابن حجر العسقلاني قائلا: "أَحْمد بن يحيى بن فضل الله بن مجلي بن دعجان بن خلف بن نصر ابْن مَنْصُور بن عبيد الله بن يحيى بن مُحَمَّد بن أبي بكر بن عبيد الله بن أبي بكر ابْن عبيد الله بن أبي سَلمَة بن عبيد الله بن عبد الله بن عمر الْعَدوي الْعمريّ" (ابن حجر، ١٩٧٢، ٣٩٣/١). وكانت لأسرة ابن فضل الله مكانة كبيرة في العصر المملوكي اذ تناوب العديد من افراد الاسرة على تقلد وظائف مهمة لدى سلاطين المماليك في مصر والشام .

كان ابرز افراد الاسرة يحيى بن فضل الله بن مجلي والد العلامة احمد بن يحيى، فقد ولد في الكرك في سنة ٦٤٥ ه اخذ العلم عن مكي بن علان وغيره من العلماء، وحدث بشيء كثير من العلوم وامتاز بحسن الخط، مما سهل له الامر في العمل بديوان الانشاء في سنة ٦٦١ه، تحت اشراف أخيه شرف الدين عبد الوهاب، حتى اتقن الصنعة فانتقل الى حمص ومكث فيها مدة، ثم عاد الى دمشق وانتقل بعدها الى القاهرة، وبقي يقلد ويعزل في دمشق والقاهرة حتى توفي سنة ٧٣٨ه (ابن،حجر،١٩٧٢، ١٩٣/٦).

وصفه ابن حجر قائلا :"وَكَانَ سعيد الحركات وَرَأى من السَّعَادَة فِي أَوْلَاده وأملاكه ووظائفه وَطول عمره مَا لم يُشَارِكهُ فِيهِ أحد وَكَانَ قَلِيل الْأَذَى كثير الانجماع عَن النَّاس وكَانَ صَدرا مُعظما وقوراً كَامِل الْعقل حسن الصيانة تَارِكًا لمعاشرة النَّاس خَبِيرا بوظيفته بديع الْكِتَابَة جزل الْعبارَة كثير الْأَنْوَار خرج لَهُ أَبُو الْحُسَيْن بن ايبك معجماً سمعناه من شَيخنَا برهَان الدّين التنوخي بِسَمَاعِهِ مِنْهُ وَكَانَ لَا يكَاد يتَكَلَّم إِلَّا جوَابا وَله نظر جيد وَكَانَت وَفَاته فِي ثامن شهر رَمَضَان سنة ٧٣٨ وَدفن بالقرافة ثمَّ نقل تابوته إِلَى دمشق وَدفن بالصالحية بعد مَوته بأشهر" (ابن حجر، ١٩٧٢، ١٩٤/٦)

ومن اعلام الاسرة اخوه القاضي علاء الدين علي بن يحيى بن فضل الله، كان قد عمل لدى السلطان الناصر في مكان أخيه شهاب الدين، فكان يدخل على السلطان يقرأ البريد وينفذ الاشغال على قاعدة أخيه، وبقي على ذلك وحين توفي والده، باشر اعماله الى وفاة الناصر قلاوون



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(ت ٧٤١هـ ١٣٤١م ) واستمر بوظائفه في عهدي الملك المنصور ( وتقلد السلطة لمدة شهرين في عام ١٣٤١م وتوفي فيها) وفي عهد الملك الاشرف علاء الدين كجك ( تقلد السلطة في عام ١٣٤١م وتوفي في ١٣٤٥م)، زادت مكانته واغدقت الأموال عليه حتى قيل عنه افضل من كتب خط الثلث (الصفدي، ٢٠٠٠، ١٩٩/٢٢).

والأخ الثاني القاضي بدر الدين محمد بن يحيى، صاحب ديوان الانشاء بالشام صحب أخيه علاء الدين الى مصر، شغل ديوان الانشاء في مصر عوض أخيه وبعدها، نقل الى الشام في عهد السلطان الناصر إسماعيل، وكان له ديوان الانشاء وباشر في سنة ٧٤٣ه، قال عنه الصفدي: كان عاقلا وادعا كثير الاطراق والصمت، وأحبه الناس وخضع له الامراء والاكابر توفي سنة ٧٤٦ه، خرج في جنازته نائب الشام والامراء والقضاة والعلماء، ودفن بتربة والده بجبل الصالحية (الصفدي، ٢٠٠٠، ١٣٨/٥).

اما ما يخص صاحب مسالك الابصار، فقد اختلفت المصادر في سنة ولادته، الا ان الأرجح انها كانت في شوال سنة سبعمائة للهجرة، أخذ العلوم على عادة أبناء العلماء وكبار رجال الدولة، فقرأ العربية على الشيخ كمال الدين بن قاضي شهبة، ومن ثم على شمس الدين بن مسلم والفقه على القاضي شهاب الدين ابن المجد، واخذ عن شيخ الإسلام ابن تيمية الفقه وعلى ابن الزملكاني، وسمع الحديث بدمشق من ابن الحجار وست الوزراء، وابن ابي الفتح ورحل الى الحجاز ومصر ولإسكندرية واجاز له جماعة (الصفدي، ٢٠٠٠، ١٦٤/٨).

وقد أشاد ابن حجر به قائلا: وكان يتوقد ذكاء مع حافظة قوية وصورة جميلة واقتدار على النظم والنثر حتى كان يكتب من راس القلم ما يعجز عنه غيره مع سعة الصدر وحسن الخلق وبشر المحيا (ابن حجر، ١٩٧٢، ٣٩٣/١)، وقال ابن قاضي شهبة أن: له تصانيف كثيرة أدبية وباع طويل وبراعة في الادب وكان يشبه بالقاضي الفاضل في زمانه وله مصنفات عديدة بعبارة جيدة وكان حسن المذاكرة سريع الاستحضار جيد الحفظ فصيح اللسان جميل الاخلاق يحب العلماء والفقراء (ابن قاضي شهبة، ١٤٠٧ه، ١٨/٣).

ووصفه الصفدي قائلا" "صدق اخلاق وسعة صدر وبشر محيا رزقه الله أربعة أشياء لم ارها اجتمعت في غيره وهي الحافظة قلما طالع شيئا الا وكان مستحضرا لأكثره والذاكرة التي اذا أراد ذكرى شيء من زمن متقدم كان ذلك حاضرا كأنه انما مر به بالأمس والذكاء الذي تسلط له على ما اراج وحسن القريحة في النظم والنثر ...(الصفدي، ٢٠٠٠، ١٦٣/٨)، وذكر له صفات أخرى واضاف الله له الى ذلك كله حسن الذوق الذي هو العمدة في كل فن وهو احد الادباء الكملة الذين رايتهم واعني بالكملة الذين يقومون بالأدب علما وعملا في النظم والنثر ومعرفة بتراجم اهل عصرهم ومن تقدمهم على اختلاف طبقات الناس وبخطوط الافاضل واشياخ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الكتابة ...ولم ار من يعرف تواريخ ملوك المغل من لدن جنكيز خان وهلم جرا ومعرفته وكذلك ملوك الهند والأتراك وما معرفة المما لك والمسالك وخطوط الأقاليم ومواقع البلدان وخواصها فانه فيها امام وقته".

وقد تقلد وظائف عدة من أهمها كاتب ديوان الانشاء بمصر ودمشق، ولما ولي ابوه كتابة السر كان هو يقرا كتب البريد على السلطان، الا انه اغضب السلطان حين اعترض على تولية ابن القطب القبطي على كتابة السر في دمشق سنة ٧٤٠ه، وكتب له كتاب التوقيع بالوظيفة وطلب منه السلطان ان يكتب فيه زيادة معلومة، فامتنع بن فضل الله العمري، وقال: خدمتك علي حرام فاشتد غضب السلطان عليه حتى سأل والده السلطان العفو وقدم العذر والاعتراف بخطأ ابنه، فأمر السلطان ان يلزم بن فضل الله العمري بيته وبعد وفاة ابيه، رجع مرة أخرى الى خدمة السلطان فأرسل الى دمشق يباشر عمله في ديوان الانشاء، بعد ان استحلفه الناصر على المناصحة وبقي على رأس عملة ثلاث سنوات، حتى عزل بأخيه بدر الدين وبقي بطالا في دمشق، الى وفاته في يوم عرفة من سنة ٧٤٩ه (ابن حجر، ١٩٧٢، ١/٣٩٣-٣٩٥).

ولابن فضل الله العمري العديد من المؤلفات منه مسالك الابصار، وفواصل السمر في فضائل عمر في أربعة مجلدات والتعريف بالمصطلح الشريف، وله ديوان في المدائح النبوية (ابن قاضي شهبة، ١٤٠٧ه، ٣/١٧).

اما كتاب مسالك الابصار الذي يعد موسوعة علمية وتاريخية ذات أهمية كبيرة، لا تقل أهمية عن المؤلفات الموسوعية التي ظهرت في العصر المملوكي، ورغم المدح والثناء الذي طال بن فضل لله العمري، كان الجزء الأكبر من ذلك بسبب مكانته العلمية، وقربه من السلاطين وعمله في الوظائف السلطانية، الا ان سفره الخالد مسالك الابصار، غدا هو العمل الذي خلد مؤرخنا الكبير، وعد ذلك السفر الكتاب الأبرز الذي عول عليه من جاء بعده بسبب المعلومات القيمة والنادرة، التي سطرها فيه وقد ارجع بن فضل الله العمري سبب تأليف الكتاب الى أسباب موضوعية، أشار اليها في مقدمة الكتاب منها ان النفوس لا يصلحها الا التنقل من حال الى حال، والتوقل على شرفات الشد والارتحال للاطلاع على الغرائب والاستطلاع للعجائب (٢٠١٠، ١/١٠٧).

وأشار الى افتقار زمانه الى معلومات جديدة عن الأقاليم فقال: "ولقد طالعت الكتب الموضوعة في أحوال الأقاليم وما فيها، فلم اجد من بين احوالها، ومثل في الافهام صورها، لان غالب تلك الكتب لا تتضمن سوى الاخبار القديمة واحوال الملوك السالفة، والأمم البائدة، وبعض مصطلحات ذهبت بذهاب أهلها، ولم يبق في مجرد ذكرها عظيم فائدة، ولا كبير امر وخير القول اصدقه، والناس بزمانهم اشبه منهم بابائهم" (العمري، ٢٠١٠، ١/١٠٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وأشار الى انه سوف يقدم معلومات واخبارا، تتميز بأنها الأشهر والاظهر عن كل بلد وحال كل مملكة وما عليها، هي وأهلها في وقته من اجل تقريبها لأفهام من يكتب لهم عن مصطلحات ومعاملات كل بلد (العمري، ٢٠١٠، ١٠٩/١)، من اجل إعطاء صورة متكاملة عن كل بلد حتى تكون تلك الصورة أمام أعينهم بالمشاهدة والعيان، واشترط ان يدون ما تحقق له مما عرفه هو بشخصه، وما شاهده واذا لم يره نقل ممن يعرف أحوال تلك البلاد ممن شاهد بعينه او سمعه من الثقات، الذي التقى بهم، وهم اعيان الثقات من ذوي التدقيق في النظر والتحقيق للرواية واستكثر منهم عن السؤال عن مملكة، حتى يأمن تغفل الغفلاء وتخيل الجهالات الضالة، وتحرف الافهام الفاسدة (العمري، ٢٠١٠، ١٠٩/١). وأشار الى مصدر اخر من مصادره وهي الكتب والمصنفات الموثوقة، التي دونت في اخبار البلدان فنقل منها تقسيم الأقاليم وبعض اخبار الملل والدول ومشاهير الاعلام، وهذا من اجل اكمال كتابه وان هذه المعلومات كانت حسب ما وصف كالطراز في الثوب والخال في الخد.

والزم نفسه بذكر ما اشتملت عليه مملكة كل سلطان، جملة وتفصيلا على ما في المدينة التي هي قاعدة الملك، والغالب في تلك المملكة من أوضاعها وقال: "ولا اعني ذوي الممالك الصغار اذ كانوا في سلطان قاهر عليهم، بل الذكر لكل سلطان يستحق اسم السلطنة، لاتساع ممالك وأعمال، وكثرة جنود واموال ويتغطى بذيله من لعله يكون في مملكته، من ذوي الممالك الصغار كصاحب حماه مع صاحب مصر، وأشار الى ان لم يأل جهدا في تصحيح ما كتبته بحسب الطاقة، من غير استيعاب ولا تطويل ولم اذكر ملوك الكفار ولم يذكر غير الممالك العظيمة من ممالك الإسلام، ويعود ويؤكد انه لم يذكر أي خبر منقول الا بعد التدقيق والتفحص، ولا خبر غريبا او عجيبا الا وذكر ناقله، حتى تكون العهدة على الناقل حوفا من الانكار، كون كثيرا من الحقائق قد يقع انكارها لنقصان العقول على قاعدته التي، تقول: الذي يعرف الجائز والمستحيل، يعلم كل مقدور بالإضافة الى قدرة الله الذي له بدائع الصنعة" (العمري، ٢٠١٠، ١٠٩/١-١١٠).

ومع كل ذلك يعد كتابه موسوعة علمية، لا تحتوي على الاحداث التاريخية فقط، بل يقدم استعراضا حضريا فهو يذكر الجوانب الحضارية عند الشعوب في مختلف الامصار، وذطالع في حديثه عن الممالك ذكر لأوضاع الملوك والوظائف وارباب الرتب العالية وما لهم من ارزاق، وزي الناس ولباسهم، وطعامهم، والميزان والمكيال والعملة، واستعراض الجيوش وتسليحها وعددها وعدتها، ومخصصات أهلها، ومقدار كل منها، وما تنتجه اراضي الممالك من بقلها وفومها واشجارها وأنواع المعادن وقيمتها، وقد قسم كتابه الى قسمين، الأول: في الأرض، والثاني: في سكان الأرض، وقد جاء ذكر الكرد في الفصل الأول من الباب الرابع من المجلد المطبوع من مسالك



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الابصار، وكما تقدم فقد تحققت الشروط التي جعلت العمري يذكر الكرد وهي الإسلام والسلطان القاهر المستقل عن غيرهم.

**المبحث الثاني:**

كما ذكرنا كان كتاب العمري موسوعة علمية تناولت الانسان والأرض، لقيت شعوب البلاد الإسلامية اهتماما كبيرا في بلاد المشرق، ولما كان الاكراد عنصرا مهما من تركيبة سكان المشرق الإسلامي في عصر بن فضل الله العمري، فقد افرد لهم فصلا كاملا تحدث عنهم وعن مناطق سكناهم وابرز قبائلهم وامرائهم، وما تميزت به بلادهم وما حوت من ثروات وعلاقتهم مع جيرانهم ودورهم في احداث عصرهم آنذاك، وعلى الرغم مما كتب عن الاكراد في كتب الجغرافيين العرب بقيت قليلة، ونقل احدهم عن الاخر، وما يميز بن فضل الله وجود نصوص جديدة، ذات قيمة علمية غلب عليها السجع كونه عمل في ديوان الانشاء .

حدد العمري جنس الاكراد، فقال: هم جنس خاص من نوع عام، وهم بالقرب من العراق وبلاد العرب، دون توغل في بلاد العجم، ويسكنون بلاد الجبال وهي الجبال الحاجزة بين ديار العرب وديار العجم، وابتداءها جبال همدان وشهرزور وانتهاؤها صياصي الكفرة بلاد التكفور وهي مملكة سيس (أي مملكة ارمينا الصغرى قرب اضنه الحالية)، وأشار الى انه لن يذكر من عشائرهم الا من كان بهم خبيرا، ولم يسم منهم الا البيوت المشهورة من بيوت ملك او امارة (٢٠١٠، ١٩٧/٣).

ويشير العمري الى ان اغلب الاكراد الذين لهم مأثر ودور هم في شرق نهر دجلة، اما الذين غرب نهر دجلة الى الفرات فهم قليل وغير محتفل بهم الا ما كان من اكراد ماردين والجزيرة، كان ابرزهم إبراهيم بن علي المسمى العزيز مالو، الذي كان له شوكة قوية اجتمعت عليه جموع كثيرة، وبعد وفاته لم يكن من خلفه يسد مكانه (العمري، ٢٠١٠، ١٩٧/٣).

إنَّ ابرز الامارات والقبائل الكردية التي ذكرها العمري هي التي كانت الى الشرق من نهر دجلة وفيما يلي ذكر ابرزها:

**أولا** - الكورانية في همدان وشهرزور وقال عنهم انهم اهل شوكة وحمية ويقمون في مكان يقال له (ريا موست) ومكان اخر يقال له (رشك) واميرهم الأمير محمد وعددهم يفوق الخمسة الاف مقاتل

**ثانيا**- الكلالية وديارهم (درانك) ونهاوند الى شهرزور واميرهم سيف الدين صبور، وعددهم الف مقاتل واميرهم يحكم من جاورهم من الاكراد ويطيعه أبناء قبيلته بسبب صدق كلامه وحسن سيرته، ومن الكلالية قوم اخرون يقمون في (دقوق) وعددهم الف مقاتل ومنهم من يستقر في (باشنة) بنواحي أذربيجان وكانوا اكثر الكلالية عددا، ويشير الى ان العديد منهم هاجر الى مصر والشام بسبب تعدي الكفار عليهم وان بقي منهم جماعة في بلادهم. (العمري، ٢٠١٠، ١٩٨/٣).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

**ثالثا**- النركلية وهم أصحاب شجاعة وحيلة ويقارب عددهم الفان واميرهم جمال الدين بالان وهو حاكم بلاد كنكور [1] وما جاورها.

**رابعا**- واشار العمري الى قبيلة البابيرية واللوسة وهم سكان إقليم شهرزور وكانوا اهل قوة وسطوة ومكانة الا انهم غادرو بلادهم بفعل غزوات المغول والتتر بعد احتلال بغداد واخلوا ديارهم واستقروا كغيرهم من اهل السواد في مصر وبلاد الشام ويقول العمري معبرا عن حزنه لما اصابهم "وتفرقت منهم الأحزاب واصابتهم الاوصاب وعظم فيهم المصاب ولكل اجل كتاب" وسكن مساكنهم قوم يقال لهم( الخرسكية). (العمري، ٢٠١٠، ٣/١٩٨).

**خامسا**- اكراد (السيولية ) وهم بين شهرزورا شنة[2] ويبلغ عددهم الفي رجل وهم ذوو شجاعة وحمية، وهم قسمان امير القسم الأول( مورك ابن عزالدين محمود )، وقسم بأمرة الأمير (داود بدران).

**سادسا**- الغرباوية ويسكنون بلاد (بستار) ويسيطرون على أجزاء واسعة من بلاد اربل وعددهم يفوق الأربعة الاف نفر، واميرهم (أبو بكر الملقب بسيف الدين).

**سابعا**- الحسنانية وصفهم العمري قائلا (ذوو انفس قوية وينقسمون على ثلاث بطون وهم نحو الالف، اكبر بطونهم طائفة عيسى بن شهاب الدين كراي، والثاني نفر يقال لهم البلية والأخر يعرف بالجاكية وكان الأمير عبد الله بن شهاب الدين زنكي امير النفرين وثالث بطونهم لفخر الدين امير قيم وتختص الحسنانية ببلاد (الكركار) وتشاركهم الغرباوية في الخفارة المأخوذة بدربند). (٢٠١٠، ٣/١٩٩).

وهنا نجد العمري يذكر عن اكراد منطقة الجبلين من اعمال أربيل ان القوم كانوا يقدمون الولاء لدولتين المغولية والمملوكية و يدارون القوتين فهم في الشتاء يعاملون التتر بالمجاملة، وفي الصيف يعينون سرايا الشام ويقول ان عددهم كعدد الكلالية واميرهم (تاج الدين الخضر سليمان) وكان ذا بنان وقد وفد الى بلاد مصر في عهد المنصور قلاوون وقد عاد أولاده الى بلادهم بعد وفاة ابيهم مع امراء اخرين من امراء الاكراد منهم عز الدين سنقر والمبارز بن شجاع الدين من المازنجانية، وبهاء الدين بن جمال الدين خوش من الحميدية بسبب اهمال امرهم بعد وفاة قلاوون (٢٠١٠، ٣/١٩٩).

**ثامنا**- المازنجانية ويقيم هولاء في اربل وينسبون الى الحميدية واميرهم منهم وهم اهل عزم في الشدة والرخاء ولا يقل عددهم عن الف مقاتل ويذكر انهم من اكثر الكرد تشبها بأعيان الممالك الإسلامية من حيث اللباس اذا كان اميرهم من امراء الخلافة العباسية، لقب بمبارز الدين وهو لقب رسمي اطلق عليه من ديوان الخلافة ونقل العمري عن شاهد عيان في وصف مبارز الدين : " كان ذا شجاعة وصبر وتحمل ومكر وعقل وفكر و تدبر وسياسة وتثبت ورياسة ولا يهمل عدوا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لصغره وحقارته، ولا يهاب من أراد به سوءا لعظمته وجسارته ونقل العمري عن شاهد العيان قول ابن الصلايا[٣]: "توسمت في هذا الشاب سعادة لم اتوسمها في احد فكان كما توسمه، اذا قام في التتر في ذلك المقام وتمكن ابن يافث وتشتت اهل الإسلام ولم يبق من الرجال القادرين على القتال الا سكان الجبال، فما اعجز الكفار استئصالهم وتحققوا ان سهامهم لا تنالهم عاملوهم بالمكر والخديعة، وهادنوهم على تخلية الخراج سدا للذريعة." (العمري، ٢٠١٠، ٣/٢٠٠).

ويضيف العمري انه قد عين ملك على أربيل واعما لها لشدة مقاومته واضيفت الى مملكته عقر سوس وغيرها من البلاد وجعل مقدم خمسمائة ونال قومه سعادة وكثر امراء عشيرته كونهم في النسب سواء وكان على قوته وسطوته حتى بلغ التسعين من العمر وصادف حسن الاقدار في تمكنه من كل عدو قصده ولا هم ملك من ملوك المغول في الغدر به الا عجل الله فناء ذاك الملك ولم يبلغ أحدا ما بلغه ملكه وكثرة رجاله ولا تمنع جباله، وبعد وفاته خلفه بعض أبنائه منهم عز الدين ومن بعده اخوه نجم الدين خضر، ويفصل العمري في الحياة الرغيدة التي كان عليها من الرفاهية وما ترك له ابوه من حاشية وغاشية وعقار وماشية، وكان له مكانه في الدولتين (المغولية والمملوكية ) ورتبة عالية في الجهتين، وانبساط في للذات، وشرف بالعرض وذات يد لا تقصر في ادب، ولا تبالي بلاغتها بما تنفق من كنوز الفضة والذهب. (٢٠١٠، ٣/٢٠١).

**تاسعا**- السهرية في بلاد( شقلاباد) ولهم قلعتي خفتيان[٤] وما بينها الى الدست( والدربند) ويصفهم العمري انهم مشهورين باللصوصية ولا يبلغ عددهم الف رجل وبلادهم عصية واشهر معالم بلادهم نهر الزاب الذي يشق جبليين شاهقين مما يولد هدير الماء صوتا يفزع،وعقد على الزاب ثلاث قناطر اثنتان بالحجر والجير والثالثة من الخشب ويفصل العمري بدقة صنعة تلك القناطر العجيبة التي تمر عليها الدواب والاحمال وللسهرية الخفارة ويفرضون الضرائب على من يعبرها ويقول (وهم اهل غدر وخديعة، وقبائح شنيعة، لا يستطيع المسافر مدافعتهم فيه بل ترضية سلامته بنفسه وينقل عن احد الأشخاص وهو ( شمس الدين محمد بن ساعد)، ان نسب احد من الاكراد الى الجن فهم هؤلاء حقا، واميرهم (الحسام بن عمقيان). (٢٠١٠، ٣/٢٠٢).

عاشرا- الزرزارية وتعني ولد الذئب، يقول العمري :ولهم عددا جم وامراء واغنياء وفقراء ويبلغ عدد رجالهم خمسة الاف وتميزو بوجود التوافق بينهم، ومنهم من عرف بالزهد ممن يشار اليهم، وفقهاء يعتمد عليهم بالفتوى ويسكنون من مرت[٥] الى جبل خنجرين المشرف على (اسنة) وامتاز جبلهم بكونه شديد الارتفاع باردا جدا ويجذب الغيوم كالمغناطيس، ولهم الخفارة في تلك النواحي، ولهم كذلك بلاد ملاز كرد والرستاق ذات القلاع والضياع واميرهم ( نجم الدين بن باساك) خلفه أبنائه في امرة تلك النواحي ولهم الطاعة على عشيرتهم وامتازوا بحسن سيرتهم. (٢٠١٠، ٣/٢٠٣).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

احد عشر- الجولمركية: يقول العمري انهم من بني امية من مروان بن الحكم ونسبتهم الى مكان اقامتهم

وكان اغلبهم قد فر الى الجبال بعد غلبة بني العباس عليهم وامتنعوا واستغنوا بهذه الجبال وابتعدوا عن مخالطة الناس طلبا للسلامة فانخرطوا في سلك الاكراد واميرهم (عماد الدين بن الأسد بن مشكلان)، وعددهم ثلاثة الاف، وكانوا أصحاب ثروة معدنية اذ ظهر في بلادهم معدن اللازورد فأخفى ذلك خوفا من المغول رغم مناعة بلاده التي تعد من امنع البلاد،ومن ملوكهم الاخرون بهاء الدين بن قطب الدين وله ابن عم له يقال له شمس الدين داود، كان معاديا ومحاربا للمغول، فلما اعجزهم منحوه ارض عطايا وهبات من اجل الدخول في طاعتهم، والنزول من معقله، فخصص له دارا عظيمة، حولها بستانا احتوى مختلف الأشجار المثمرة قدّر العمري غلته ما يفوق عشرون الف دينار بالسنة، وبعد وفاته عاد ابنه الى عداوة المغول وحاربهم ورجع الى معقل عشيرته الحصين، فاخذ خراج بلاده، يقطع منه ما شاء لجنوده، ويأخذ الخفارة على جميع طرق أذربيجان من تبريز الى نخجوان[٦] وعرف ملكهم بحسن التدبير والإدارة وكان عنده من الكتاب والمشدين والنواب والوكلاء وعرف بالكرم اذ يقدم طعامه بلا ملح حتى يتمكن من الاكل منه من كان في صلحه او في عداوته (٢٠١٠، ٣/٢٠٤).

اثناعشر- الزيبارية قال العمري ان عددهم خمسمائة رجل ويقطنون الزيبار وللزيبارية سوق خاص لهم في بلدهم، وكانوا في حالة حرب مع قبيلة المازنجاذية، واستقرا مرهم وكان لهم اميران الأول إبراهيم بن الأمير محمد الزامي وكان له مكانة مرموقة في عهد الخلافة العباسية، والأمير الثاني الشهاب بدر الدين برش، واما الهكارية فقال انهم مقيمون ببلاد العمادية وعددهم يزيد على أربعة الاف محارب وكان لهم اميران احدهما الأمير ابي بكر والأخر الأمير علي يعرف وا لداهما بالطراوشي وكان الأمير الأول مستقلا يحكم بقوة واستقلال وحسن تدبير متخذا من مناعة الجبال حصنا منيعا، وله الجم الغفير من الاتباع والنواب والجنود، وبقي مستقلا عن القوى المحيطة والمعاصرة له حتى دبر له احد حكام الموصل النصراني البرقوطي مكيدة وحيلة اشترك بها بعض افراد قبيلته الذين حسنوا له النزول والوثوق بحاكم الموصل أدت بالأخير الى سجنه والاحتياط عليه حتى حاول الفرار فقتل اثناء تلك المحاولة، واستقل الأمير في حكم الهكارية حتى مات، وللهكارية الخفارة على أماكن كثيرة من بخارى الى جبل الجزيرة مما تدل على قوة الامارة واتساع نفوذها. (٢٠١٠، ٣/٢٠٥-٢٠٦).

ثلاث عشرة- البستكية وهم يقطنون القمرانية وكهف داود، ورغم قلة عددهم الذي يقارب خمسمائة رجل، الا انهم كما يقول العمري رجال شجعان حماة رماة كرماء، طعامه مبذول لكل قادم، واميرهم مقيم بالقمرانية (٢٠١٠، ٣/٢٠٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

اربع عشرة- البختية ويقطنون من قبل، يقول العمري انهم كانوا يضاهون الحميدية في المكانة الا انهم اكثر من حيث العدد والامراء وكثرة القبائل قد اصابهم في عصره مصائب أدت الى هلاك امراءهم وتشتت كبرائهم وتفرق جمعهم المعهود،ولم يبقى منهم الا القديل منهم وقد تفرقوا بين القبائل، ومن ابرز قبائلهم "لسندية وهو أكثر شعبهم عددا، وأوفرهم مددا، يبلغون ثلاثين ألف مقاتل مختال مخاتل والمحمدية، وكان أميرهم شروين، لا تزيد على ستمائة رجل، والراستية كانوا أولى عدد وعدد وجمع ومدد إلى أن نزح أميرهم البدر بن كيايك من ذلك البلد، بالأهل والولد، إلى متعة وقد تشتت شملهم، وتفرق جمعهم، عدتهم لا تزيد في بلد الموصل، لا تزيد على ألف رجل، وأميرهم علاء الدين كورك بن إبراهيم، ولا ينقص من بلد العقر في خمسمائة وأميرهم عمر بن أبي علي وموسى بن بهاء الدين، والدينلية وهم يسكنون الجبل المقلوب، والمختار مطلوبون بالخفارة أميرهم كلتي، ولا تزيد عدتم على ألف متفرقين في البلاد، متمزقين في كل واد" (٢٠١٠، ٢٠٦/٣-٢٠٧).

**الخاتمة:**

من خلال ما قدمه العمري من معلومات حول الامارات والقبائل الكردية، يمكن للباحث ان يؤشر العديد من الملاحظات من أهمها:

١. وقوعها بين قوى متصارعة أدت الى ضعف تلك الامارات ومحاولة توازن المواقف في علاقتها مع هذه القوى (المغول والمماليك)، وان كانت تميل في الاغلب الى مؤازرة المماليك.

٢. الامر الاخر كثرة المنافسات و الصراعات الداخلية ووجود اكثر من امير واحد لنفس القبيلة او العشيرة.

٣. عدم توحد تلك الامارات والقبائل في اتحادات إدارية، وتفشي الحروب المستعرة فيما بينها.

٤. كانت قوة تلك الامارات والقبائل والعشائر تكمن بوجود الموانع الطبيعية كالجبال والوديان والانهار التي اغرت العديد من تلك الامارات في عدم الرضوخ لغيرها مما زاد في الفرقة.

٥. توفر الامطار والثلوج مما أدى الى غنى تلك الامارات من الناحية الاقتصادية وتوفر المزروعات ولأشجار المثمرة والثروة الحيوانية.

٦. كذلك توفر المعادن الثمينة جعلت تلك البلاد مطمعا للمغول فكانوا يحيكون المؤامرات من اجل السيطرة على هذه البلاد.

**المصادر:**

البغدادي (١٤١٢هــ)، عبد المؤمن بن عبد الحق، مراصد الاطلاع، الطبعة الأولى، دار الجيل، بيروت.

١. الحموي(١٩٩٥م)، ياقوت بن عبد الله الرومي، دار صادر، بيروت.

٢. ابن حجر العسقلاني (١٩٧٢م)، أبو الفضل أحمد بن علي بن محمد بن أحمد، الدرر الكامنة في أعيان المائة الثامنة، تحقيق: محمد عبد المعيد خان، مجلس دائرة المعارف العثمانية، ط٢ - صيدر آباد/ الهند.

٣. الذهبي، (٢٠٠٣م)، شمس الدين أبو عبد الله محمد بن أحمد بن عثمان بن قَايْماز، تحقيق: بشار عوّاد معروف، دار الغرب الإسلامي.

٤. الصفدي، صلاح الدين خليل بن أيبك (٢٠٠٠م)، الوافي بالوفيات، تحقيق: أحمد الأرناؤوط وتركي مصطفى، دار إحياء التراث، بيروت.

٥. العمري، أحمد بن يحيى بن فضل الله القرشي العدوي العمري، شهاب الدين ابن فضل الله (٢٠١٠م)، مسالك الأبصار في ممالك الأمصار، تحقيق كامل حسين الجبوري، دار الكتب العلمية، بيروت.

٦. ابن قاضي شهبة، أبو بكر بن أحمد بن محمد بن عمر (١٤٠٧هـ)، طبقات الشافعية، تحقيق: الحافظ عبد العليم خان، عالم الكتب، بيروت.

الهوامش:

---

[١] بليدة بين همذان وقرميسين (الحموي، ١٩٩٥، ٤/ ٣٦٣).

[٢] بلدة من طرف أذربيجان من جهة اربل (البغدادي، ١٤١٢هـ،١/ ٨٥)

[٣] محمد بن نصر بن يحيى بن صلايا نائب الخليفة على أربل (الذهبي، ٢٠٠٣م، ٨٤٦/١٤).

[٤] قلعتان عظيمتان، من أعمال إربل (البغدادي، ١٤١٢هـ، ٤٧٥/١).

[٥] هي قرية بينها وبين أرمية منزل واحد في طريق تبريز (الحموي، ١٩٩٥م، ١٠٠/٥).

[٦] بلد بأقصى أذربيجان (الحموي، ١٩٩٥م، ٢٧٦/٥).

**The Kurdish emirates in the book of Masaliq al-Absaar by Ibn Fadlallah Al-Omari**

**Abstract**:

Ibn Fadlallah Al-Omari is considered one of the most important historians of the Mamluk era. He wrote a historical scientific encyclopedia that dealt with many aspects of the history of the Islamic East. He devoted an entire topic to the country of the Kurds, so he identified the areas of their spread, their residence, their most important tribes, and the most prominent Kurdish emirates in his era that he lived with, heard about, or looked at their conditions and between their strength and resources.

And its relationship with contemporary regional powers such as the Mamluks and Mongols.
**Keywords:** Al-Omari, *the book of Masaliq al-Absaar , Emirates and Tribes, the Kurds*

## میرگەهێن کوردی د پەرتووکا (مسالک الابصار) یا ئیبن فەچلوللاهێ عومەریدا ٧٤٩مش/١٣٤٩ز

**پۆختە:**

أبن فەزل اللە العمری دئێتە هەژمارتن ئێک ژ گرنگترین مێژوونڤیسێن چەرخێ مەملووکی، ئنسکلوپیدیایەك مێژووی زانستی نڤیسیە وتێدا میژووا روژهەلاتا ئیسلامی باس کریە، وبابەتەکێ درووست تەرخان کریە ژبوو وەلاتێ کوردان، وجهێ وان دەستنیشان کریە،وجهێ ئاکنجیبوونا وان وگرنگترین هوزێن وان، هەروەسا گرنگترین میرگەهێن وان ل وی سەردەمی، وهێزا وان دیارکریە دگەل ژێدەرێن وان یێن ئابووری،وپەیوەندیا وان بهێزێن هەریمی، وەك مەمالیک ومەغولان.
**پەیڤێن سەرەکی :** *عومەری، پەرتوکا مسالک الابصار، میرگەه وهوز، کورد، چەرخێ مەملوکی.*

# منهج المؤرخين فى تناول تاريخ الأكراد: ابن خلدون نموذجاً دراسة تحليلية ونقدية

ا. د. عبد الغنى عبد الفتاح زهرة

قسم التاريخ والحضارة -كلية الدراسات العليا - جامعة الأزهر/ جمهورية مصر العربية

**الملخص:**

اهتم ابن خلدون بالأكراد فى تاريخه المعروف العبر ديوان المبتدأ والخبر في تاريخ العرب والبربر ومن عاصرهم من ذوي الشأن الأكبر، وكذلك فى مقدمته المعروفة بمقدمة ابن خلدون، فبدأ بذكر موقعهم الجغرافى، وأراضيهم وجبالهم، ثم انتقل إلى تاريخهم منذ عصر صدر الإسلام حتى عصره، كما اهتم بمشاركتهم فى الأحداث السياسية حتى أدوارهم الصغيرة عندما يكونون جزءً من جيش، أو فرقة فى حملة أحد القادة، مثل فرقة الأكراد فى جيش نورالدين محمود برئاسة أسد الدين شيركوه، أو محاولة لإقامة إمارة أو دولة، مثل محاولة الأكراد الحميدية بقيادة أبو الحسين المعروف بباد إقامة دولة بالموصل سنة ثلاثمائة وسبع وستين هجرية، وذكر بعض الإمارات الكردية منذ نشأتها وحتى نهايتها، مثل إمارة بنى مروان فى ديار بكر، ودولة بنى أيوب فى مصر والشام، كما تتبع الشخصيات البارزة منهم التى رحلت إلى البلدان المختلفة، مثل خراسان والهند والعراق ومصر والشام وبلاد المغرب، وقد وافق ابن خلدون المؤرخين فى معظم رواياته، وخالفهم فى بعض الروايات، كما يتميز بأنه نقل بعض الروايات المعاصرة له برؤيتها بنفسه، مما يعطيها قيمة تاريخية هامة.

ولم يغفل ابن خلدون ذكر بعض الجوانب الحضارية للأكراد مثل اهتمامهم بالعلم والشعراء، وما كانت عليه بلادهم من أحوال اقتصادية واجتماعية.

وقد اخترت ابن خلدون نموذجاً لأنه ينتمى إلى بلاد المغرب، فأردت أن أبحث فى مدى اهتمام المغاربة لتاريخ دول وطوائف المشرق، ومنهم الأكراد، ومدى اهتمامهم بتحرى الصدق والأمانة فى ذكر تاريخهم، وهو ما نتناوله بإذن الله فى صفحات البحث.

**الكلمات الدالة:** *ابن خلدون - الأكراد - المقدمة- دولة بنى مروان- ديار بكر*

**تمهيد: ابن خلدون ومكانته العلمية**

العلامة ابن خلدون عبد الرحمن بن محمد بن خلدون الحضرميّ، ولد في تونس سنة ٧٣٢ هـ- ١٣٣٢ م، ينحدر من أصل أندلسي إشبيلي، تلقى العلم على عدد كبير من العلماء الاندلسيين الذين هاجروا إلى تونس.

وفي شبابه اجتذبه بلاط بني مرين في فاس للخدمة فيه فقد أتيح له الاتصال هناك بالوزير لسان الدين ابن الخطيب خلال فترة نفيه مع سلطانه إلى المغرب وقد توطدت بين الرجلين صداقة متينة ظهرت

بوضوح في تلك الترجمة التي أفردها له ابن الخطيب في كتابه «الاحاطة في أخبار غرناطة» بعد عودته الى وطنه قال فيه:

مفخر من مفاخر التخوم المغربية- أي ابن خلدون- شرح البردة شرحا بديعا دل على غزارة حفظه وتفنن إدراكه ولخص كثيرا من كتب- ابن رشد وعلق للسلطان أبي سالم في العقليات تقييدا مفيدا في المنطق، ولخص محصل الامام فخر الدين الرازيّ، وألف كتابا في الحساب، وشرع في شرح الرجز الصادر عني في أصول الفقه بشيء لا غاية فوقه في الكمال»[1] .

شغل أجداده في الأندلس وتونس مناصب سياسية ودينية مهمة، وكانوا أهل جاه ونفوذ، نزح أهله من الأندلس في منتصف القرن السابع الهجري، وتوجهوا إلى تونس، وكان قدوم عائلته إلى تونس خلال حكم دولة الحفصيين .ويتعقب ابن خلدون أصوله إلى حضرموت ، وذكر في موسوعته كتاب العبر المعروفة باسم " تاريخ ابن خلدون " أنه من سلالة الصحابي وائل بن حجر[2].

وانغمر ابن خلدون في حياة سياسية حافلة سواء في بلاط المرينيين بفاس، أو الحفصيين في تونس إلا أنه اعتزل السياسة وآثر الانطواء بعد مقتل صديقه ابن الخطيب في سجنه فقد ملّ السياسة وانسحب من الحياة العامة واختلى أربع سنوات ٧٧٦- ٧٨٠ هـ- في قلعة بني سلامة في ولاية وهران غربي الجزائر وفي تلك الخلوة كتب «المقدمة» والتي اشتهرت بمقدمة ابن خلدون والتي قال عنها هو: « سالت فيها شآبيب الكلام والمعاني على الفكر حتى امتخضت زبدتها وتألفت نتائجها، على ذلك النحو الّذي اهتديت إليه في تلك الخلوة»[3].

وعاش ابن خلدون بعد ذلك مدة طويلة ارتحل خلالها الى الشام ومصر حيث ولي منصب قاضي القضاة المالكية، في مصر عدة مرات، وتصادف أيضا وجوده في دمشق عند ما حاصرها المغولي تيمور لنك. وتمكن من الخروج قاصدا تيمور لنك، متوسلا إليه إنقاذ المدينة. وبعدها عاد ابن خلدون الى مصر وتوفي فيها سنة ٨٠٨ هـ/ ١٤٠٥م، ومن أشهر مؤلفاته في التاريخ: «التعريف بابن خلدون ورحلته شرقا وغربا» وكتاب «العبر وديوان المبتدإ والخبر في تاريخ العرب والبربر ومن عاصرهم من ذوي الشأن الأكبر». وهو الكتاب الذى يدور بحثنا حوله.[4]

وهو يقع في سبعة مجلدات وأولها المقدمة وهي المشهورة أيضا بمقدمة ابن خلدون، وتشغل من هذا الكتاب ثلثه، وهي عبارة عن مدخل موسع لهذا الكتاب وفيها يتحدث ابن خلدون ويؤصل لآرائه عن علم التاريخ والجغرافيا والعمران والفلك وأحوال البشر وطبائعهم والمؤثرات التي تميز بعضهم عن الآخر.

ويناقش ابن خلدون العمران البشري بشكل عام مبينا أثر البيئة في البشر وهو ما يدخل حاليا في علم الاتنولوجيا والانثروبولوجيا، ويتطرق لأنواع العمران البشري تبعا لنمط حياة البشر وأساليبهم الإنتاجية قائلا: "ان اختلاف الأجيال في أحوالهم انما هو باختلاف نحلتهم في المعاش." مبتدئا بالعمران البدوي باعتباره أسلوب الإنتاج الأولي الذي لا يرمي إلى الكثير من تحقيق ما هو ضروري للحياة: ".ان أهل البدو المنتحلون للمعاش الطبيعي. وانهم مقتصرون على الضروري الأقوات والملابس والمساكن وسائر الأحوال والعوائد".



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ثم يخصص الفصل الثالث من المقدمة للدول والملك والخلافة ومراتبها وأسباب وكيفية نشوئها و سقوطها، مؤ كدا أن الدعا مة الأسا سية للحـ كم تكـ من في العـ صبية. والعـ صبية عـ نده أ صبحت مقو لة اجتماعية احتلت مكانة بارزة في مقدمته حتى اعتبر ها العد يد من المؤرخين مقولة خلدونية بحتة، وهم محقون في ذلك لأن ابن خلدون اهتم بها اهتماما بالغا إلى درجة أنه ربط كل الأحداث الهامة والتغييرات الجذرية التي تطرأ على العمران البدوي أو العمران الحضري بوجود أو فقدان العصبية.

ويركز ابن خلدون على الصناعة جاعلا منها السبب الأساسي في الازدهار الحضاري:(ان الصنائع انما تكتمل بكمال العمران الحضري وكثرته. ان رسوخ الصنائع في الأمصار انما هو برسوخ الحضارة وطول أمدها).

وامتاز ابن خلدون بسعة اطلاعه على ما كتبه القدامى على أحوال البشر وقدرته على استعراض الآراء ونقدها، ودقة الملاحظة مع حرية في التفكير وإنصاف أصحاب الآراء المخالفة لرأيه. وقد كان لخبرته في الحياة السياسية والإدارية وفي القضاء، إلى جانب أسفاره الكثيرة من موطنه الأصيل تونس وبقية بلاد شمال أفريقيا إلى بلدان أخرى مثل مصر والحجاز والشام، أثر بالغ في موضوعية وعلمية كتاباته عن التاريخ وملاحظاته.

وبسبب فكر ابن خلدون الدبلوماسي الحكيم، أرسل في أكثر من وظيفة دبلوماسية لحل النزاعات بين زعماء الدول: مثلا، عينه السلطان محمد بن الأحمر أمير غرناطة سفيرا له إلى أمير قشتالة للتوصل لعقد صلح بينهما، وكان صديقا مقربا لوزيره لسان الدين ابن الخطيب. وكان وزيرا لدى أبي عبد الله الحفصي سلطان بجاية، وكان مقربا من السلطان أبي عنان المرينى قبل أن يسعى بينهما الوشاة. وبعد ذلك بأعوام استعان به أهل دمشق لطلب الأمان من الحاكم المغولي القاسي تيمورلنك، وتم اللقاء بينهما. وصف ابن خلدون اللقاء في مذكراته. إذ يصف ما رآه من طباع الطاغية، ووحشيته في التعامل مع المدن التي يفتحها، ويقدم تقييما متميزا لكل ما شاهد في رسالة خطها لملك المغرب الخصال الإسلامية لشخصية ابن خلدون، أسلوبه الحكيم في التعامل مع تيمورلنك مثلا، وذكائه وكرمه، وغيرها من الصفات التي أدت في نهاية المطاف لنجاته من هذه المحنة، تجعل من التعريف عملا متميزا عن غيره من نصوص أدب المذكرات العربية والعالمية. فنحن نرى هنا الملامح الإسلامية لعالم كبير واجه المحن بصبر وشجاعة وذكاء ولباقة. ويعتبر ابن خلدون مؤسس علم الاجتماع.

**اهتمام ابن خلدون بتاريخ الأكراد**

كان من الطبيعى أن يهتم مؤرخو المشرق بتاريخ الأكراد، نظراً للجوار وقربهم من بلاد الأكراد، ولكن اهتمام علماء المغرب وعلى رأسهم ابن خلدون بتاريخ الأكراد يرجع لعدة أسباب أهمها:

أولاً: الدور المؤثر للأكراد فى الأحداث التاريخية فى العصور المختلفة، فى المناطق التى عاشوا واستقروا بها، أو ارتحلوا منها، ويصل صداها إلى بلاد المغرب والأندلس.

ثانياً: تأسيسهم لبعض الدول التى ساهمت فى الدفاع عن العالم الإسلامى، مثل الدولة الأيوبية التى كان لها دور كبير فى طرد الصليبيين من بلاد المشرق.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ثالثاً: دورهم فى مساندة بعض الأمراء والحكام، وإسقاط البعض الآخر، لفت إليهم أنظار المؤرخين عند حديثهم عن هذا الحاكم أو ذاك.

وكانت بداية حديث ابن خلدون عن الأكراد فى مقدمة كتابه، وتحدث فيها عن الموقع الجغرافى لجبال الأكراد التى نسبت إليهم، فقال عنهم: وفي شرقيّ بلاد خوزستان جبال الأكراد متّصلة إلى نواحي أصبهان وبها مساكنهم ومجالاتهم وراءها في أرض فارس وتسمّى الرّسوم[٥].

**الفتح الإسلامى لبلاد الأكراد.**

وبدأ ابن خلدون حديثه عن تاريخ الأكراد بالفتح الإسلامى لهذه البلاد فى عصر أمير المؤمنين عمر بن الخطاب، فذكر فى كتابه العبر: إن عبد الله بن المعتمر بعث ربعي بن الأفكل بعهد عمر إلى الموصل ونينوى وهما حصنان على دجلة من شرقيها وغربيها، فسار في تغلب وإياد والنمر وسبقوه إلى الحصنين فأجابوا إلى الصلح وصاروا ذمة. وقيل بل الّذي فتح الموصل عتبة بن فرقد سنة عشرين وأنه ملك نينوى وهو الشرقي عنوة. وصالحوا أهل الموصل وهو الغربي على الجزية وفتح معها جبل الأكراد وجميع أعمال الموصل وقيل إنما بعث عتبة بن فرقد عياض بن غنم عند ما فتح الجزيرة على ما نذكره والله أعلم[٦].

وأشار ابن خلدون إلى وجود جموع أخرى للأكراد فى جنوب العراق بالقرب من البصرة، فقال: كان أمر أمراء الانسياح لما فصلوا إلى النواحي، اجتمع ببيروذ بين نهر تيري ومنادر من أهل الأهواز جموع من الأعاجم أعظمهم الأكراد، وكان عمر قد عهد إلى أبي موسى أن يسير إلى أقصى تخوم البصرة ردءا للأمراء المنساحين، فجاء إلى بيروذ، وقاتل تلك الجموع قتالا شديداً، وقاتل المهاجر بن زياد حتى قتل. ثم وهن الله المشركين فتحصّنوا منه في قلّة وذلّة، فاستخلف أبو موسى عليهم أخاه الربيع بن زياد وسار الى أصبهان مع المسلمين الذين يحاصرونها حتى إذا فتحت رجع إلى البصرة. وفتح الربيع بن زياد بيروذ وغنم ما فيها ولحق به بالبصرة وبعثوا إلى عمر بالفتح والأخماس[٧].

وأشار ابن خلدون إلى الأكراد فى حدث آخر فى فتوحات المسلمين، ولكنه لم يحدد مكان تواجدهم، أو اسم زعيمهم فقال: وكان عمر قد اجتمع إليه جيش من المسلمين فبعث عليهم سلمة بن قيس الأشجعي ودفعهم الى الجهاد على عادته وأوصاهم، فلقوا عدوا من الأكراد المشركين، فدعوهم إلى الإسلام أو الجزية، فأبوا وقاتلوهم وهزموهم وقتلوا وسبوا وقسّموا الغنائم، ورأى سلمة جوهرا في سفط فاسترضى المسلمين وبعث به إلى عمر فسأل الرسول عن أمور الناس حتى أخبره بالسفط فغضب وأمر به فوجئ في عنقه، وقال: أسرع قبل أن تفترق الناس ليقسّمه سلمة فيه فباعه سلمة وقسمه في الناس وكان الفص يباع بخمسة دراهم وقيمته عشرون ألفا[٨].

**الأكراد فى العصر الأموى**

كان أول حدث للأكراد ذكره ابن خلدون فى العصر الأموى مساندة بعض جموعهم لثورة عبدالرحمن بن الأشعث[٩] ضد الحجاج بن يوسف الثقفى والى العراق من قبل الخليفة الأموى عبدالملك بن مروان، فقال: وحمل عبد الملك بن المهلّب على أصحاب عبد الرحمن فكشفوهم. ثم حمل أصحاب الحجّاج من كل جانب فانهزم عبد الرحمن وأصحابه وقتل عبد الرحمن بن أبي ليلى الفقيه، وأبو البحتري الطائي ومعلّى بن الأشعث نحو سجستان ويقال إنّ بعض الأعراب جاء إلى الحجّاج فدلّه على طريق من وراء معسكر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

ابن الأشعث فبعث معه أربعة آلاف جاءوا من ورائه، وأصبح الحجّاج فقاتله واستطرد له حتى ذهب معسكره وأقبلت السرية من الليل إلى معسكر ابن الأشعث وكان الغرقى منهم أكثر من القتلى، وجاء الحجاج إلى المعسكر فقتل من وجد فيه وكان عدّة القتلى أربعة آلاف منهم: عبد الله بن شدّاد بن الهادي وبسطام بن مصقلة وعمر بن ربيعة الرقاشيّ وبشر بن المنذر بن الجارود وغيرهم. (ولما سار) ابن الأشعث إلى سجستان أتبعه الحجاج بالعساكر، وعليهم عمارة بن تميم اللخمي، ومعهم محمد بن الحجّاج فأدركوه بالسوس فقاتلوه وانهزم إلى سابور واجتمع إليه الأكراد وقاتلوا العساكر قتالا شديدا فهزم، وخرج عمارة ولحق ابن الأشعث بكرمان فلقيه عامله بها وهيأ له النزول فنزل. ثم رحل إلى زرنج فمنعه عامله من الدخول[10].

كما يشير إلى أنهم لم يستسلموا بعد مقتل عبدالرحمن بن الأشعث، فيروى: كان الحجاج قد حبس يزيد وإخوته سنة ست وثمانين وعزل حبيب بن المهلب عن كرمان، فأقاموا في محبسهم إلى سنة تسعين. وبلغه أنّ الأكراد غلبوا على فارس فعسكر قريبا من البصرة للبعث وأخرج معه بني المهلب وجعلهم في فسطاط قريبا منه ورتّب عليهم الحرس من أهل الشام[11].

**الأكراد فى العصر العباسى**

كان تناول ابن خلدون للأكراد فى العصر العباسى يشير بشكل غير مباشر أنهم لم يكونوا مؤيدين لدولتهم، ولذلك قاموا بثورات وحركات تمرد ضدهم، فيقول: وولى (أبو جعفر المنصور) سنة سبع وأربعين على الكوفة محمد بن سليمان مكان عيسى بن موسى لما سخطه بسبب العهد. وولّى مكان محمد بن سليمان على البصرة محمد بن السفّاح فاستعفاه ورجع إلى بغداد فمات، واستخلف بها عقبة بن سالم فأقرّه. وولّى على المدينة جعفر بن سليمان، وولّى سنة ثمان وأربعين على الموصل خالد بن برمك لإفساد الأكراد في نواحيها، وعزل سنة تسع وأربعين عمه عبد الصمد عن مكة، وولّى مكانه محمد بن إبراهيم. وفي سنة خمسين عزل جعفر بن سليمان عن المدينة، وولّى مكانه الحسن بن زيد بن الحسن. وفي سنة إحدى وخمسين عزل عمر بن حفص عن السّند وولّى مكانه هشام بن عمرو الثعلبيّ، وولّى عمر بن حفص على إفريقية.

وورد على المنصور انتقاض الموصل والجزيرة وانتشار الأكراد بها، وسخط موسى بن كعب فأشار عليه المسيّب بن زهير بخالد بن برمك فقال: كيف يصلح بعد ما فعلنا؟ فقال: أنا ضامنه فصفح له عما بقي عليه، وعقد له على الموصل، ولابنه يحيى على أذربيجان. وسارا مع المهدي فعزل موسى بن كعب وولاهما. قال يحيى: وبعثني خالد إلى عمارة بقرضه وكان مائة ألف، فقال لي: أكنت لأبيك صديقا؟ قم عني لا قمت. ولم يزل خالد على الموصل إلى وفاة المنصور[12].

وفي سنة أربع وعشرين (بعد المائتين) ولّى المعتصم على الموصل عبد الله بن السيد بن أنس الأزدي وكان سبب ولايته أنّ رجلا من مقدّمي الأكراد يعرف بجعفر بن فهرجس كان قد عصى بأعمال الموصل، وتبعه خلق كثير من الأكراد وغيرهم، وأفسدوا البلاد فبعث المعتصم لحربه عبد الله بن السيد بن أنس فقاتله وغلبه وأخرجه منها بعد أن كان استولى عليها، ولحق بجبل دانس وامتنع بأعاليه، وقاتله عبد الله وتوغّل في مضايق ذلك الجبل، فهزمه الأكراد وأثخنوا في أصحابه بالقتل، وقتل إسحاق بن أنس عم عبد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الله فبعث المعتصم مولاه إتياخ في العساكر إلى الموصل سنة خمس وعشرين وقصد جبل داسن فقاتل جعفرا وقتله وافترق أصحابه، وأوقع بالأكراد واستباحهم وفروا أمامه إلى تكريت[١٣].

ولفت الأكراد انتباه ابن خلدون عندما شاركوا في محاربة الزنج الذين تمردوا على الدولة العباسية (٢٥٥-٢٧٠هـ/٨٦٩-٨٨٣م)، فتحدث عن دورهم تحت عنوان:

**أخبار الزنج مع أغرتمش**

ثم ولي أغرتمش مكان تكين البخاري ما يتولاه من أعمال الأهواز فدخل تستر في رمضان ومعه مطر بن جامع، وقتل جماعة من أصحاب أبان كانوا مأسورين بها. ثم سار إلى عسكر مكرم، ووافاه هناك عليّ ابن أبان والزنج، فاقتتلوا ثم تجازوا لكثرة الزنج، ورجع عليّ إلى الأهواز وسار أغرتمش إلى الخليل بن أبان ليعبروا إليه من قنطرة اربل وجاءه أخوه عليّ وخاف أصحابه المخلّفون بالأهواز، فارتحلوا إلى نهر السروة وتحارب عليّ وأغرتمش يوما ثم رجع عليّ إلى الأهواز ولم يجد أصحابه، فبعث من يردّهم إليه فلم يرجعوا. وجاء أغرتمش وقتل مطر بن جامع في عدّة من القوّاد.

وجاء المدد لابن أبان من صاحبه الخبيث فوادعه أغرتمش وتركه. ثم بعث محمد بن عبيد الله إلى أبكلاى ابن الخبيث في أن يرفع عنه يد ابن أبان فزاد ذلك في غيظه، وبعث يطالبه محمد بالخراج ودافعه فسار إليه، وهرب محمد من رامهرمز إلى أقصى معاقلة، ودخل عليّ والزنج رامهرمز وغنموا ما فيها. ثم صالحه محمد على مائتي ألف درهم، وترك أعماله. ثم استنجده محمد بن عبيد الله على الأكراد على أنّ لعليّ غنائمهم، فاستخلف عليّ على ذلك مجلز وطلب منه الرهن فمطل وبعث إليه الجيش فزحف بهم إلى الأكراد. فلما نشب القتال انهزم أصحاب محمد فانهزم الزنج، وأثخن الأكراد فيهم، وبعث عليّ من يعترضهم فاستلبوهم وكتب عليّ إلى محمد يتهدّده فاعتذر وردّ عليهم كثيرا من أسلابهم، وخشي من الخبيث وبعث إلى أصحابه مالا ليسألوه في الرضا عنه، فأجابهم إلى ذلك على أن يقيم دعوته في أعماله ففعل كذلك[١٤].

**دور الأكراد في الإمارات والدول المستقلة في العصؤ العباسي**

اهتم ابن خلدون في تاريخه بالدور المؤثر للأكراد سلباً أو إيجاباً في تأسيس الدول المستقلة، والمساهمة في استقرارها أو ضعفها وسقوطها بعد ذلك، وكانت بداية حديثه عنها هو دورهم في دولة بني حمدان، فقال:

**ابتداء دولة بني حمدان**

وفي سنة اثنتين وتسعين عقد المكتفي على الموصل وأعمالها لأبي الهيجاء عبد الله بن حمدان بن حمدون العدويّ التغلبيّ فقدمها أوّل المحرّم وجاء الصريخ من نينوى بأن الأكراد الهدباذيّة ومقدّمهم محمد بن سلّال[١٥]، قد أغاروا على البلاد وعاثوا، فخرج في العساكر وعبر الجسر إلى الجانب الشرقيّ، ولقيهم على الحارد فقاتلهم وقتل من قوّاد سليمان الحمداني ورجع عنهم، وبعث إلى الخليفة يستمدّه، فأبطأ عليه المدد إلى ربيع من سنة أربع (وتسعين ومائتين)، فلما جاءه المدد سار إلى الهدباذيّة وهم مجتمعون في خمسة آلاف بيت، فارتحلوا أمامه واعتصموا بجبل السّلق المشرف على الزاب، فحاصرهم وعرفوا حقّه فخذ له أميرهم محمد بن سلال بالمراسلة في الطاعة والرهن، وحثّ أصحابه خلال ذلك في المسير إلى أذربيجان،



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

واتّبعهم أبو الهيجاء فلحقهم صاعدا إلى جبل القنديل فنال منهم، وامتنعوا بذروته. ورجع أبو الهيجاء عنهم فلحقوا بأذربيجان، ووفد أبو الهيجاء على المكتفي فأنجده بالعسكر وعاد إلى الموصل. ثم سار إلى الأكراد بجبل السّلق فدخله وحاصرهم بقنّته، وطال حصارهم واشتدّ البرد وعدمت الأقوات، وطلب محمد بن سلال النجاة بأهله وولده، فنجا واستولى ابن حمدان على أموالهم وأهليهم وأمّنهم. ثم استأمن محمد بن سلال فأمّنه وحضر عنده وأقام بالموصل وتتابع الأكراد الحميديّة مستأمنين، واستقام أمر أبي الهيجاء بالموصل. ثم انتقض سنة إحدى وثلاثمائة فبعث إليه المقتدر مؤنسا الخادم فجاء بنفسه مستأمنا ورجع إلى بغداد، فقبله المقتدر وأكرمه. وبقي ببغداد إلى أن انتقض أخوه الحسين بديار ربيعة سنة ثلاث وثلاثمائة. وسارت العساكر فجاءوا به أسيرا. فحبس المقتدر عند ذلك أبا الهيجاء وأولاده، وجمع إخوته بداره ثم أطلقهم سنة خمس وثلاثمائة[16].

وفي سنة ثمان وثلاثمائة ولّى المقتدر أبا الهيجاء عبد الله بن حمدان على طريق خراسان والدرّنور، وفيها ولي على دقوقا وعكبرا وطريق الموصل بدرا الشرابي. وفي سنة تسع ولّى المقتدر على حرب الموصل ومعونتها محمد بن نصر الحاجب، فسار إليها وأوقع بالمخالفين من الأكراد المادرانية[17].

وكان في هذه السنة (ثلاث عشرة وثلثمائة) ولي الخليفة المقتدر على الموصل أبا الهيجاء عبد الله بن حمدان وابنه ناصر الدولة خليفة فيها، فأفسد الأكراد والعرب بأرض الموصل وطريق خراسان وكانت إليه، فكتب إليه ابنه ناصر الدولة سنة أربع عشرة بالانحدار إلى تكريت للقائه، فجاءه في الحشد وأوقع بالعرب والأكراد الخلالية وحسم علّتهم[18].

وينتقل بعد ذلك ابن خلدون إلى الحديث عن الإمارات التى أسسها الأكراد، ويطلق عليها لقب دولة، ولكنها لم تصل إلى ذلك، فكان مبالغة منه، ويبدأ بدولة بنى باد وبنى مروان فيقول:

**ابتداء دولة باد وبني مروان بالموصل**

قد تقدّم لنا أنّ عضد الدولة استولى على ملك بني حمدان بالموصل سنة سبع وستين، ثم استولى على ميافارقين وآمد وسائر ديار بكر من أعمالهم، وعلى ديار مضر أيضا من أعمالهم سنة ثمان وستين وولّى عليها أبا الوفاء من قوّاده، وذهب ملك بني حمدان من هذه النواحي وكان في ثغور ديار بكر جماعة من الأكراد الحميدية مقدّمهم أبو عبد الله الحسين بن دوشتك، ولقبه باد وكان كثير الغزو بتلك البلاد وإخافة سبلها. وقال ابن الأثير حدّثني بعض أصدقائنا من الأكراد الحميدية أنّ اسمه باد وكنيته أبو شجاع وأنّ الحسين هو أخوه وأنّ أوّل أمره أنه ملك أرجيش من بلاد أرمينية فقوي أهـ[19]. ولما ملك عضد الدولة الموصل حضر عنده وهمّ بقبضه، ثم سأل عنه فافتقده وكفّ عن طلبه.

فلما مات عضد الدولة استفحل أمره واستولى على ميافارقين، وكثير من ديار بكر، ثم على نصيبين. وقال ابن الأثير: سار من أرمينية إلى ديار بكر فملك ثم ميافارقين، وبعث صمصام الدولة إليه العساكر مع أبي سعيد بهرام بن أردشير فهزمهم وأسر جماعة منهم، فبعث عساكر أخرى مع أبي القاسم سعيد بن الحاجب فلقيهم في بلد كواشى وهزمهم، وقتل منهم وأسر، ثم قتل الأسرى صبرا. ونجا سعيد إلى الموصل وباد في اتباعه فثار به أهل الموصل نفورا من سوء سيرة الديلم فهرب منها ودخل باد وملك الموصل.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وحدّث نفسه بالمسير إلى صمصام الدولة ببغداد وانتزاع بغداد من يد الديلم واحتفل فيه ولقيهم باد في صفر من سنة أربع وسبعين فهزموه وملكوا الموصل.

ولحق باد بديار بكر وجمع عليه عساكر. وكان بنو سيف الدولة بن حمدان بحلب قد ملكها معهم سعد الدولة ابنه بعد مهلكه، فبعث إليه صمصام الدولة أن يكفيه أمر باد على أن يسلّم إليه ديار بكر، فبعث سعد الدولة إليه جيشا فلم يكن لهم طاقة، وزحفوا إلى حلب فبعث سعد الدولة من اغتاله في مرقده بخيمته من البادية وضربه فاعتل وأشفى على الموت، وبعث إلى سعد وزياد الأميرين بالموصل فصالحهما على أن تكون ديار بكر والنصف من طور عبدين لباد، ورجع زياد إلى بغداد وهو الّذي جاء بعساكر الديلم وانهزم باد أمامه. ثم توفي سعد الحاجب بالموصل سنة سبع وسبعين فتجدّد لباد الطمع في ملكها، وبعث شرف الدولة على الموصل أبا نصر خواشاذه فدخل الموصل واستمدّ العساكر والأموال فأبطأت عنه فدعا العرب من بني عقيل وبني نمير وأقطعهم البلاد ليدافعوا عنها. واستولى باد على طور عبدين وأقام بالجبل، وبعث أخاه في عسكر لقتال العرب فانهزم وقتل. وبينما خواشاذه يتجهّز لقتال باد جاءه الجند بموت شرف الدولة. ثم جاء أبو إبراهيم وأبو الحسين ابنا ناصر الدولة بن حمدان أميرين على الموصل من قبل بهاء الدولة، وبقيت في ملكهما إلى سنة إحدى وثمانين[20].

ثم يتحدث عن باد مرة أخرى فى الجزء الرابع فيكرر بعض ما ذكره هنا لربط الأحداث ببعضها ثم يواصل الحديث عنه حتى مقتله، فيقول:

**خبر باد الكردي ومقتله على الموصل**

كان من الأكراد الحميدية بنواحي الموصل ومن رؤسائهم رجل يعرف بباد، وقيل باد لقب له، واسمه أبو عبد الله الحسين بن ذوشتك، وقيل باد اسمه وكنيته أبو شجاع ابن ذوشتك. وإنما أبو عبد الله الحسين أخوه. وكان له بأس وشدّة وكان يخيف السابلة، ويبذل ما تجمع له من النهب في عشائره فكثرت جموعه. ثم سار إلى مدينة أرمينية فملك مدينة أرجيش. ثم رجع إلى ديار بكر، فلما ملك عضد الدولة الموصل حضر عنده في جملة الوفود وخافه على نفسه فعدا وأبعد في مذهبه، وبلغ عضد الدولة أمره فطلبه فلم يظفر به. ولما هلك عضد الدولة سار باد إلى ديار بكر فملك آمد وميافارقين.

ثم ملك نصيبين فجهز صمصام الدولة العساكر إليه مع الحاجب أبي القاسم سعيد ابن محمد فلقيه على خابور الحسينية من بلاد كواشي فانهزم الحاجب وعساكره، وقتل عليه أصحابه فكتب إلى خواشاده عامل الموصل فمنعهما، فكتب إليهما بالرجوع عنه فلم يجيبا، وأغذا السير إلى الموصل حتى نزلا بظاهرها. وثار أهل الموصل بالديلم والأتراك الذين عندهم وخرجوا إلى بني حمدان. وزحف الديلم لقتالهم فانهزموا وقتل منهم خلق، وامتنع باقيهم بدار الإمارة ومن معه على الأمان إلى بغداد، وملكوا الموصل. وتسايل اليهم العرب من كل ناحية. وأراد أهل الموصل استلحامهم فمنعهم بنو حمدان، وأخرجوا خواشاده وبلغ الخبر إلى باد وهو بديار بكر بملك الموصل، وجمع فاجتمع إليه الأكراد البثنوية أصحاب قلعة فسك، وكان جمعهم كثيرا.

واستمال أهل الموصل بكتبه فأجابه بعضهم، فسار ونزل على الموصل، وبعث أبو طاهر وأبو عبد الله ابنا حمدان إلى أبي عبد الله محمد بن المسيب أمير بني عقيل يستنصرانه. وشرط عليهما جزيرة ابن عمر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ونصيبين فقبلا شرطه. وسار أبو عبد الله صريخا، وأقام أخوه أبو طاهر بالموصل وباد يحاصره. وزحف أبو الراود في قومه مع أبي عبد الله بن حمدان، وعبروا دجلة عند بدر، وجاءوا إلى باد من خلفه. وخرج أبو طاهر والحمدانية من أمامه، والتحم القتال ونكب بباد فرسه فوقع طريحا، ولم يطق الركوب وجهض العدو عنه أصحابه فتركوه فقتله بعض العرب، وحمل رأسه إلى بني حمدان ورجعوا ظافرين إلى الموصل وذلك سنة ثمانين وثلاثمائة[21].

ثم يتحدث بعد ذلك عن دولة بنى حسنويه ودورهم فى الأحداث فيقول:

**وفي سنة ثمان وثمانين ابتدئت دولة بني حسنويه الأكراد بخراسان.**

ولما كانت سنة سبع وتسعين جمع أبو جعفر وسار لحصار بغداد وأمدّه ابن حسنويه أمير الأكراد، وذلك أنّ عميد الجيوش ولّى على طريق خراسان أبا الفضل بن عنّان، وكان عدوّا لبدر بن حسنويه فارتاب لذلك، واستدعى أبا جعفر وجمع له جموعا من أمراء الأكراد منهم هندي بن سعد وأبو عيسى شادي بن محمد، ورزام بن محمد وكان أبو الحسن عليّ بن مزيد الأسدي انصرف عن بهاء الدولة مغاضبا له، فسار معهم وكانوا عشرة آلاف وحاصروا بغداد وبها أبو الفتح بن عنّان شهرا. ثم جاءهم الخبر بانهزام ابن واصل بالبطيحة الّذي سار عميد الجيوش إليه فافترقوا، وعاد ابن مزيد إلى بلده وسار أبو جعفر إلى حلوان وأرسل بهاء الدولة في الطاعة وحضر عنده بتستر فأعرض عنه رغبا لعميد الجيوش[22].

ثم يعود للحديث عنهم فى موضع آخر فيقول:

**(دخول بني حسنويه في الطاعة وبداية أمرهم)**

كان حسنويه بن حسن الكرديّ من جنس البرزفكان من الأكراد من طائفة منهم يسمّون الذولنية وكان أميرا على البرزمكان خاله ونداد، وكان ابنا أحمد بن علي من طائفة أخرى من البرز، فكانوا يسمون العيشائية وغلبا على أطراف الدّينور وهمذان ونهاوند والدّامغان وبعض أطراف أذربيجان إلى حدّ شهرزور، وبقيت في أيديهم خمسين سنة. وكانت تجتمع عليها من الأكراد جموع عظيمة. ثم توفي عام ست وخمسين وثلاثمائة. وكانت له قلعة بسنان وغانم أبار وغيرها، فملكها بعده ابنه أبو سالم غنم إلى أن غلبه الوزير أبو الفتح بن العميد. وتوفي ونداد سنة تسع وأربعين وثلاثمائة وقام ابنه عبد الوهاب أبو الغنائم مقامه، وأراد الشاذنجان، وأسلمه إلى حسنويه فاستولى على أملاكه وقلاعه. وكان حسنويه عظيم السياسة حسن السيرة، وبنى أصحابه حصن التلصّص، وهي قلعة سرماج بالصخور المهندسة، وبنى بالدّينور جامعا كذلك، وكان كثير الصدقة بالحرمين. ثم توفي سنة تسع وستين وثلاثمائة وافترق أولاده من بعده، فبعضهم صار إلى طاعة فخر الدولة صاحب همذان وأعمال الجيل، والآخرون صاروا إلى عضد الدولة، وكان بختيار منهم بقلعة سرماج ومعه الأموال والذخائر، فكاتب عضد الدولة بالطاعة، ثم انتقض. فبعث عضد الدولة عسكرا فحاصروه وملكوا القلعة من يده والقلاع الأخرى من إخوته. واستولى عضد الدولة على أعمالهم واصطنع من بينهم أبا النجم بن حسنويه، وأمدّه بالعسكر فضبط تلك النواحي، وكفّ عادية الأكراد بها واستقام أمرها[23].

وقام ابن خلدون بالحديث عن دولة بنى حسنويه بالتفصيل منذ نشأتها، نظراً لأهميتها، فيقول:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**(الخبر عن دولة بني حسنويه من الأكراد القائمين بالدعوة العباسية بالدينور والصامغان ومبدإ أمورهم وتصاريف أحوالهم)**

كان حسنويه بن الحسين الكردي من طائفة الأكراد يعرفون بالريزنكاس، وعشيرة منهم يسمّون الدويلتية، وكان مالكا قلعة سرياج وأميرا على البررفكان. وورث الملك عن خاليه ونداد وغانم ابني أحمد بن عليّ، وكان صنفهما من الأكراد يسمون العبابيّة[٢٤] وغلبا على أطراف الدينور وهمذان ونهاوند والصامغان، وبعض نواحي أذربيجان إلى حدود شهرزور فملكا ها نحوا من خمسين سنة، ولكل واحد منهما ألوف من العساكر، وتوفي ونداد بن أحمد سنة تسع وأربعين وثلاثمائة وقام مقامه ابنه أبو الغنائم عبد الوهاب إلى أن أسره الشاذنجان من طوائف الأكراد، وسلّموه إلى حسنويه فأخذ قلاعه وأملاكه.

وتوفي غانم سنة خمسين وثلاثمائة فقام ابنه أبو سالم دسيم مكانه بقلعة فتنان إلى أن أزاله أبو الفتح بن العميد، واستصفى قلاعه المسمّاة بستان وغانم أفاق وغيرهما.

وكان حسنويه حسن السيرة ضابطا لأمره، وبنى قلعة سرماج بالصخور المهندسة وبنى بالدينور جامعا كذلك، وكان كثير الصدقة للحرمين. ولما ملك بنو بويه البلاد واختصّ ركن الدولة بالريّ وما يليه كان شيعة ومددا على عدوه فكان يرعى ذلك.

ويغضي عن أموره إلى أن وقعت بين ابن مسافر من قوّاد الديلم وكبارهم وقعة هزمه فيها حسنويه، وتحصّن بمكان فحاصره فيه وأضرمه عليه نارا فكاد يهلك. ثم استأمن له فغدر به وامتعض لذلك ركن الدولة وأدركته نغرة العصبية، وبعث وزيره أبا الفضل بن العميد في العساكر سنة تسع وخمسين وثلاثمائة فنزل همذان وضيّق على حسنويه، ثم مات أبو الفضل فصالحه ابنه أبو الفتح على مال ورجع عنه.

(وفاة حسنويه وولاية ابنه بدر)

ثم توفي حسنويه سنة تسع وستين وثلاثمائة وافترق ولده على عضد الدولة لقتال أخيه محمد وفخر الدولة. وكانوا جماعة أبو العلاء وعبد الرزاق وأبو النجم بدر وعاصم وأبو عدنان وبختيار وعبد الملك. وكان بختيار بقلعة سرماج ومعه الأموال والذخائر فكاتب عضد الدولة ورغب في طاعته، ثم رغب عنه فسيّر إليه عضد الدولة جيشا وملك قلعته وغيرها من قلاعهم. ولما سار عضد الدولة لقتال أخيه فخر الدولة وملك همذان والريّ وأضافهما إلى أخيه مؤيّد الدولة، ولحق فخر الدولة بقابوس بن وشمكير.

عرّج عضد الدولة إلى ولاية حسنويه الكردي فافتتح نهاوند والدّينور وسرماج وأخذ ما فيها من ذخائره، وكانت جليلة المقدار وملك معها عدّة من قلاع حسنويه ووفد عليه أولاد حسنويه فقبض على عبد الرزاق وأبي العلاء وأبي عدنان، واصطنع من بينهم أبا النجم بدر بن حسنويه وخلع عليه وولّاه على الأكراد وقوّاه بالرجال فضبط ملك النواحي وكفّ عادية الأكراد بها. واستقام أمره فحسده أخواه، وأظهر عاصم وعبد الملك منهم العصيان، وجمعا الأكراد المخالفين وبعث عضد الدولة العساكر فأوقعوا بعاصم وهزموه وجاءوا به أسيرا إلى همذان، ولم يوقف له بعد ذلك على خبر، وذلك سنة سبعين وثلاثمائة وقتل جميع أولاد حسنويه وأقرّ بدرا على عمله.

(حروب بدر بن حسنويه وعساكر مشرف الدولة)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ولما توفي عضد الدولة وملك ابنه صمصام الدولة ثار عليه أخوه مشرف الدولة بفارس، ثم ملك بغداد. وكان فخر الدولة بن ركن الدولة قد عاد من خراسان إلى مملكة أصفهان والريّ بعد وفاة أخيه مؤيد الدولة، ووقع بينه وبين مشرف الدولة فكان مشرف الدولة يحقد عليه. فلما استقرّ ببغداد وانتزعها من يد صمصام الدولة، وكان قائده قراتكين الجهشياري مدلا عليه متحكّما في دولته، وكان ذلك يثقل على مشرف الدولة، جهّزه في العساكر لقتال بدر بن حسنويه يروم إحدى الراحتين، فسار إلى بدر سنة سبع وسبعين وثلاثمائة ولقيه على وادي قرميسين. وانهزم بدر حتى توارى ولم يتلقوه ونزلوا في خيامه، ثم كرّ بدر فأعجلهم عن الركوب، وفتك فيهم واحتوى على ما معهم. ونجا قراتكين في فلّ إلى جسر النهروان فلحق به المنهزمون، ودخل بغداد واستولى بدر على أعمال الجبل وقويت شوكته واستفحل أمره. ولم يزل ظاهرا عزيزا وقلّد من ديوان الخلافة سنة ثمان وثمانين وثلاثمائة أيام السلطان بهاء الدولة ولقّب ناصر الدولة. وكان كثير الصدقات بالحرمين، وكثير الطعام للعرب بالحجاز لخفارة الحاج، وكفّ أصحابه من الأكراد عن إفساد السابلة فعظم محله وسار ذكره[٢٥].

(مسير ابن حسنويه لحصار بغداد مع أبي جعفر بن هرمز)

كان أبو جعفر الحجّاج بن هرمز نائبا بالعراق عن بهاء الدولة، ثم عزله فدال منه بأبي عليّ بن أبي جعفر أستاذ هرمز، وتلقّب عميد الجيوش فأقام أبو جعفر بنواحي الكوفة، وقاتل عميد الجيوش فهزمه العميد. ثم جرت بينهما حروب سنة ثلاث وستين[٢٦] وثلاثمائة، وأقاما على الفتنة والاستنجاد بالعرب من بني عقيل وخفاجة وبني أسد، وبهاء الدولة مشتغل بحرب ابن واصل في البصرة. واتصل ذلك إلى سنة سبع وتسعين وثلاثمائة وكان ابن واصل قد قصد صاحب طريق خراسان وهو قلج، ونزل عليه واجتمعا على فتنة عميد الجيوش. وتوفي قلج هذه السنة فولّى عميد الجيوش مكانه أبا الفتح محمد بن عنّان عدوّ بدر بن حسنويه. وفحل الأكراد المسامي لبدر في الشؤون وهو من الشاذنجان من طوائف الأكراد، وكانت حلوان له فغضب لذلك بدر ومال إلى أبي جعفر، وجمع له الجموع من الأكراد مثل الأمير هندي بن سعدي، وأبي عيسى سادي بن محمد وورام بن محمد وغيرهم. واجتمع له معهم علي بن مزيد الأسدي. وزحفوا جميعا إلى بغداد ونزلوا على فرسخ منها. ولحق أبو الفتح بن عنّان بعميد الجيوش، وأقام معه ببغداد حاميا ومدافعا إلى أن وصل الخبر بهزيمة ابن واصل وظهور بهاء الدولة عليه، فأجفلوا عن بغداد. وسار أبو جعفر إلى حلوان ومعه أبو عيسى، وراسل بهاء الدولة، ثم سار ابن حسنويه إلى ولاية رافع بن معن من بني عقيل يجتمع مع بني المسيب في المقلّد، وعاث فيها لأنه كان آوى أبا الفتح بن عنّان حين أخرجه بدر من حلوان وقرميسين، واستولى عليها فأرسل بدر جيشا إلى أعمال رافع بالجناب ونهبوها وأحرقوها. وسار أبو الفتح بن عنّان إلى عميد الجيوش ببغداد فوعده النصر حتى إذا فرغ بهاء الدولة من شأن ابن واصل وقتله، أمر عميد الجيوش بالمسير إلى بدر بن حسنويه لإعانته على بغداد وإمداده ابن واصل [٢] فسار لذلك[٢٧]، ونزل جنديسابور وبعث إليه بدر في الصلح على أن يعطيه ما أنفق على العساكر فحمل إليه ورجع عنه.

(انتقاض هلال بن بدر بن حسنويه على أبيه وحروبهما)

كانت أمّ هلال هذا من الشاذنجان رهط أبي الفتح بن عنّان وأبي الشوك بن مهلهل، واعتزلها أبوه لأوّل ولادته فنشأ مبعدا عن أبيه، واصطفى بدر ابنه الآخر أبا عيسى وأقطع هلالا الصامغان، فأساء مجاورة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ابن المضاضي صاحب شهرزور وكان صديقا لبدر فنهاه عن ذلك فلم ينته وبعث ابن المضاضي يتهدّده فبعث إليه أبوه بالوعيد فجمع وقصد ابن المضاضي وحاصره في قلعة شهرزور حتى فتحها، وقتل ابن المضاضي واستباح بيته. فاتسع الخرق بينه وبين أبيه، واستمال أصحاب أبيه بدر، وكان بدر نسيكا فاجتمعوا إلى هلال وزحف لحرب أبيه والتقيا على الدّينور، وانهزم بدر وحمل أسيرا إلى ابنه هلال فردّه في قلعته للعبادة، وأعطاه كفايته بعد أن ملك الحصن الّذي تملكه بما فيه. فلما استقرّ بدر بالقلعة حصّنها وأرسل إلى أبي الفتح بن عنّان وإلى أبي عيسى سادي بن محمد بأستراباذ، وأغراهما بأعمال هلال، فسار أبو الفتح إلى قرميسين وملكها.

وأساء الديلم[28] فاتبعه هلال إليها ووضع السيف في الديلم. وأمكنه ابن رافع من أبي عيسى فعفا عنه وأخذه معه، وأرسل بدر من قلعته يستنجد بهاء الدولة فبعث إليه الوزير فخر الملك في العساكر، وانتهى إلى سابور خواست. واستشار هلال أبا عيسى بن سادي فأشار عليه بطاعة بهاء الدولة وإلّا فالمطاولة وعدم العجلة باللقاء فاتهمه وسار العسكر ليلا فكبسه. وركب فخر الملك في العسكر وثبت، فبعث إليه هلال بأني إنما جئت للطاعة. ولما عاين بدر رسوله طرده وأخبر الوزير أنها خديعة فسرّ بذلك، وانتفت عنه الظنة ببدر، وأمر العساكر بالزحف فلم يكن بأسرع من مجيء هلال أسيرا فطلب منه تسليم القلعة لبدر فأجاب على أن لا يمكن أبوه منه، واستأمنت أمّه ومن معها بالقلعة فأمّنهم الوزير وملك القلعة، وأخذ ما فيها من الأموال يقال أربعون ألف بدرة دنانير، وأربعمائة ألف بدرة دراهم سوى الجواهر والثياب والسلاح، وسلّم الوزير فخر الملك القلعة لبدر وعاد إلى بغداد.

(استيلاء ظاهر بن هلال على شهرزور)

كان بدر بن حسنويه قد نزل عن شهرزور لعميد الجيوش ببغداد، وأنزل بها نوبة، فلمّا كانت سنة أربع وأربعمائة، وكان هلال بن بدر معتقلا سار ابنه ظاهر الى شهرزور، وقاتل عساكر فخر الملك منتصف السنة وملكها من أيديهم. وأرسل إليه الوزير يعاتبه ويأمره بإطلاق من أسر من أصحابه ففعل، وبقيت شهرزور بيده.

(مقتل بدر بن حسنويه وابنه هلال)

ثم سار بدر بن حسنويه أمير الجيل الى الحسن بن مسعود الكردي ليملك عليه بلاده، وحاصره بحصن كوسجة، وأطال حصاره فغدر أصحاب بدر وأجمعوا قتله. وتولّى ذلك الجورقان من طوائف الأكراد فقتلوه وأجفلوا فدخلوا في طاعة شمس الدولة بن فخر الدولة صاحب همذان وتولّى الحسين بن مسعود تكفين بدر ومواراته في مشهد عليّ. ولما بلغ ظاهر بن هلال مقتل جدّه وكان هاربا منه بنواحي شهرزور، جاء لطلب ملكه، فقاتله شمس الدولة فهزمه وأسره وحبسه بهمذان، واستولى على بلاده، وصار الكرية والشاذنجان من الأكراد في طاعة أبي الشوك.

وكان أبوه هلال بن بدر محبوسا عند سلطان الدولة ببغداد فأطلقه وجهّز معه العساكر ليستعيد بلاده من شمس الدولة، فسار ولقيه شمس الدولة فهزمه وأسره وقتله، ورجعت العساكر منهزمة إلى بغداد. وكان في ملك بدر سابورخواست والدّينور وبروجرد ونهاوند وأستراباذ وقطعة من أعمال الأهواز



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

وما بين ذلك من القلاع والولايات. وكان عادلا كثير المعروف عظيم الهمّة. ولما هلك هو وابنه هلال بقي حافده ظاهر محبوسا عند شمس الدولة بهمذان.

(مقتل ظاهر بن هلال واستيلاء أبي الشوك على بلادهم ورياستهم)

كان أبو الفتح محمد بن عنّان أمير الشاذنجان من الأكراد، وكانت بيده حلوان وأقام عليها أميرا وعلى قومه عشرين سنة. وكان يزاحم بدر بن حسنويه وبنيه في الولايات والأعمال بالجبل. وهلك سنة إحدى وأربعمائة وقام مكانه ابنه أبو الشوك، وطلبته العساكر من بغداد فقاتلهم وهزموه، فامتنع بحلوان إلى أن أصلح حاله مع الوزير فخر الملك لمّا قدم العراق بعد عميد الجيوش من قبل بهاء الدولة. ثم إنّ شمس الدولة بن فخر الدولة بن بويه أطلق ظاهر بن هلال بن بدر من محبسه بعد أن استحلفه على الطاعة، وولّاه على قومه وعلى بلاده بالجبل، وأبو الشوك صاحب حلوان والسهل، وبينهما المنافسة القديمة، فجمع ظاهر وحارب أبا الشوك فهزمه وقتل سعدي بن محمد أخاه. ثم جمع ثانية فانهزم أبو الشوك أيضا وامتنع بحلوان وملك ظاهر عامّة البسيط، وأقام بالنهروان. ثم تصالحا وتزوّج ظاهر أخت أبي الشوك فلمّا أمّنه ظاهر وثب عليه أبو الشوك فقتله بثأر أخيه سعدي ودفنه أصحابه بمقابر بغداد، وملك سائر الأعمال ونزل الدّينور.

ولما استولى علاء الدولة بن كاكويه على همذان سنة أربع عشرة وأربعمائة عند ما هزم عساكر شمس الدولة بن بويه واستبدّ عليه، سار الى الدّينور فملكها من يد أبي الشوك، ثم إلى سابور خواست وسائر تلك الأعمال. وسار في طلب أبي الشوك فأرسل إليه مشرف الدولة سلطان بغداد وشفع فيه فعاد عنه علاء الدولة. ولمّا زحف الغز إلى بلاد الريّ سنة عشرين وأربعمائة وملكوا همذان وعاثوا في نواحيها إلى أستراباذ وقرى الدّينور، خرج إليهم أبو الفتح بن أبي الشوك وقاتلهم فهزمهم وأسر منهم جماعة. ثم عقد الصلح معهم على إطلاق أسراهم ورجعوا عنه. ثم استولى أبو الشوك سنة ثلاثين وأربعمائة على قرميسين من أعمال الجبل، وقبض على صاحبها من الأكراد الترهية وسار اخوه إلى قلعة أرمينية فاعتصم بها من أبي الشوك، وكانت لهم مدينة خولنجان، فبعث إليها عسكرا فلم يظفروا وعادوا عنها. ثم جهّز آخر وبعثهم ليومهم يسابقون جندهم، ومرّوا بأرمينية فنهبوا ربضها، وقاتلوا من ظفروا به، وانتهوا إلى خولنجان فكبسوها على حين غفلة واستأمن إليهم أهلها وتحصّن الحامية بقلعة وسط البلد فحاصروها وملكوها عليهم في ذي القعدة من السنة[٢٩].

ثم ينتقل إلى الحديث عن دور الأكراد فى القضاء على الدولة الفاطمية فى مصر وكان يطلق عليها الدولة العلوية، نظراً لاختلاف المؤرخين حول صحة نسبتها إلى السيدة فاطمة الزهراء رضى الله عنها فيقول:

**انقراض الدولة العلوية بمصر وعود الدعوة العبّاسية إليها**

ولأوّل خلافة المستضيء كان انقراض الدولة العلويّة بمصر، والخطبة بها للمستضيء من بني العبّاس في شهر المحرّم فاتح سنة سبع وستين وخمسمائة قبل عاشوراء، وكان آخر الخلفاء العبيديّين بها العاضد لدين الله من أعقاب الحافظ لدين الله عبد المجيد، وخافوا المستضيء معه ثامن خلفائهم، وكان مغلبا لوزارته. واستولى شاور منهم وثقلت وطأته عليهم فاستقدم ابن شوار من أهل الدولة من الإسكندرية.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

وفرّ شاور إلى الشام مستنجدا بالملك العادل نورا لدين محمود بن زنكي من آقسنقر، وكان من مماليك السلجوقية وأمرائهم المقيمين للدعوة العبّاسية. وكان صلاح الدين يوسف بن نجم الدين أيوب بن الكردي هو وأبوه نجم الدين أيوب وعمّه أسد الدين شيركوه في جماعة من الأكراد في خدمة نورا لدين محمود بالشام، فلما جاء شاور مستنجدا بعث معه هؤلاء الأمراء الأيوبيّة وكبيرهم أسد فأعاده إلى وزارته، وقتل الضرغام، ولم يوف له شاور بما ضمن له عند مسيره من الشام في نجدته[30].

وكان للأكراد دور فى الدفاع عن منطقة الموصل ضد القوى التى تسعى للسيطرة عليها ونشر الفساد بها مثل طائفة الغز، فأشار ابن خلدون إلى ذلك فقال:

**استيلاء الغز على الموصل**

كان هؤلاء الغزّ من شعوب الترك بمفازة بخارى، وكثر فسادهم في جهاتها فأجاز إليهم محمود بن سبكتكين، وهرب صاحب بخارى وحضر عنده أميرهم أرسلان بن سلجوق فقبض عليه وحبسه بالهند، ونهب أحياءهم وقتل كثيرا منهم فهربوا الى خراسان وأفسدوا ونهبوا فبعث إليهم العساكر فأثخنوا فيهم وأجلوهم عن خراسان.

ولحق كثير منهم بأصبهان وقاتلوا صاحبها وذلك سنة عشرين وأربعمائة. ثم افترقوا فسارت طائفة منهم إلى جبل بكجار عند خوارزم ولحقت طائفة أخرى بأذربيجان وأميرها يومئذ وهشوذان فأكرمهم، ووصلهم ليكفّوا عن فسادهم فلم يفعلوا. وكان مقدّموهم أربعة: توقا وكوكناش ومنصور ودانا فدخلوا مراغة سنة تسع وعشرين [وأربعمائة] ونهبوها وأثخنوا في الأكراد الهدبانيّة، وسارت طائفة منهم الى الريّ فحاصروها وأميرها علاء الدين بن كاكويه واقتحموا عليه البلد وأفحشوا في النهب والقتل، وفعلوا كذلك في الكرخ وقزوين. ثم ساروا إلى أرمينية وعاثوا في نواحيها وفي أكرادها. ثم عاثوا في الدينور سنة ثلاثين. ثم أوقع وهشوذان صاحب تبريز لجماعة منهم في بلده وكانوا ثلاثين ومقدّمهم، فضعف الباقون وأكثر فيهم القتل. واجتمع الغزا لذين بأرمينية، وساروا نحو بلاد الأكراد الهكّاريّة من أعمال الموصل فأثخنوا فيهم، وعاثوا في البلاد. ثم كرّ عليهم الأكراد فنالوا منهم وافترقوا في الجبال وتمزّقوا. وبلغهم مسير نيال أخي السلطان طغرلبك وهم في الريّ وكانوا شاردين منه فأجفلوا من الريّ، وقصدوا ديار بكر والموصل سنة ثلاث وثلاثين واربعمائة ونزلوا جزيرة ابن عمر، ونهبوا باقردى وبازبدى والحسنية وغدر سليمان بن نصير الدولة بن مروان بأمير منهم، وهو منصور بن عزعنيل فقبض عليه وحبسه، وافترق أصحابه في كل جهة. وبعث نصير الدولة بن مروان عسكرا في اتباعهم، وأمدهم قراوش صاحب الموصل بعسكر آخر، وانضم إليهم الأكراد البثنويّة أصحاب فتك فأدركوهم فاستمات الغزّ وقاتلوهم. ثم تحاجزوا، وتوجّهت العرب إلى العراق للمشتى، وأخربت الغزّ ديار بكر، ودخل قراوش الموصل ليدفعهم عنها لما بلغه أن طائفة منهم قصدوا بلده. فلما نزلوا برقعيد عزم على الإغارة عليهم، فتقدّموا إليه فرجع إلى مصانعتهم بالمال على ما شرطوه[31].

وينتقل بعد ذلك ابن خلدون إلى الحديث عن دولة كردية أخرى كانت أكثر قوة وشهرة ممن سبقها، لذلك نالت حيزاً كبيراً من اهتمامه، بل وعبر من خلالها عن منهجه، وهو عدم الاهتمام بسرد الأحداث زمنياً مثل كثير من المؤرخين، بل بذكر الدول المتشابهة فى العنصر أو المذهب، وهو ما سيوضحه فى السطور التالية، فيقول:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

(الخبر عن دولة بني مروان بديار بكر بعد بني حمدان ومبادي أمورهم وتصاريف أحوالهم)

كان حق هذه الدولة أن نصل ذكرها بدولة بني حمدان كما فعلنا في دولة بني المقلّد بالموصل، وبني صالح بن مرداس بحلب، لأنّ هذه الدول الثلاث إنما نشأت وتفرّعت عن دولتهم، إلا أنّ بني مروان هؤلاء ليسوا من العرب، وإنما هم من الأكراد فأخّرنا دولتهم حتى ننسقها مع العجم. ثم أخّرناها عن دولة بني طولون لأنّ دولة بني طولون متقدّمة عنها في الزمن بكثير. فلنشرع الآن في الخبر عن دولة بني مروان وقد كان تقدّم لنا خبر باد الكردي واسمه الحسين بن دوشك، وكنيته أبو عبد الله وقيل كنيته أبو شجاع، وأنه خال أبي عليّ بن مروان الكردي، وأنه تغلّب على الموصل وعلى ديار بكر، ونازع فيها الديلم ثم غلبوه عليها وأقام بجبال الأكراد. ثم مات عضد الدولة وشرف الدولة. ثم جاء أبو طاهر إبراهيم وأبو عبد الله الحسن إلى الموصل فملكاها. ثم حدثت الفتنة بينهما وبين الديلم وطمع باد في ملك الموصل، وهو بديار بكر فسار إلى الموصل فغلبه ابنا ناصر الدولة، وقتل في المعركة، وقد مرّ الخبر عن ذلك كله. فلما قتل خلص ابن أخته أبو علي بن مروان من المعركة، ولحق بحصن كيفا، وبه أهل باد وذخيرته، وهو من أمنع المعاقل فتحيل في دخوله بأنّ خاله أرسله، واستولى عليه وتزوّج امرأة خاله. ثم سار في ديار بكر فملك جميع ما كان لخاله باد. وزحف إليه ابنا حمدان وهو يحاصر ميّافارقين فهزمهما. ثم رجعا إليه وهو يحاصر آمد فهزمهما ثانيا، وانقرض أمرهما من الموصل، وملك أبو علي بن مروان ديار بكر وضبطها، واستطال عليه أهل ميّافارقين، وكان شيخها أبو الأصغر فتركهم يوم العيد حتى اصحروا وكبسهم بالصحراء، وأخذ أبا الأصغر فألقاه من السور. وذهب الأكراد عامّة البلد، وأغلق أبو علي الأبواب دونهم، ومنعهم من الدخول فذهبوا كل مذهب، وذلك كله سنة ثمانين وثلاثمائة[٣٢].

(مقتل أبي علي بن مروان وولاية أخيه أبي منصور)

كان أبو علي بن مروان قد تزوّج بنت سعد الدولة بن سيف الدولة، وزفّت إليه من حلب وأراد البناء بها بآمد فخاف شيخها أن يفعل به وبهم ما فعل في ميّافارقين فحذّر أصحابه منه، وأشار عليهم أن ينثروا الدنانير والدراهم إذا دخل، ويقصدوا بها وجهه فيضربوه فكان كذلك. ثم أغفله وضرب رأسه واختلط أصحابه، فرمى برأسه إليهم، وكرّ الأكراد راجعين إلى ميّافارقين فاستراب بهم مستحفظها أن يملكوها عليه، ومنعهم من الدخول. ثم وصل مهد الدولة أبو منصور بن مروان أخو أبي علي إلى ميّافارقين فأمكنه المستحفظ من الدخول فملكه، ولم يكن له فيه إلا السكّة والخطبة، ونازعه أخوه أبو نصر فأقام بها مضيّقا عليه فغلبه أبو منصور، وبعثه إلى قلعة أسعرد فأقام بها مضيّقا عليه وأمّا آمد فتغلّب عليها عبد الله شيخهم أياما، وزوّج بنته من ابن دمنة الّذي تولّى قتل أبي علي بن مروان فقتله ابن دمنة، وملك آمد وبنى لنفسه قصرا ملاصقا للسور. وأصلح أمره مع مهد الدولة بالطاعة. وهادي ملك الروم وصاحب مصر وغيرهما من الملوك، وانتشر ذكره.

(مقتل مهد الدولة بن مروان وولاية أخيه أبي نصر)

ثم إنّ مهد الدولة أقام بميّافارقين، وكان قائده شروة متحكما في دولته. وكان له مولى قد ولّاه الشرطة. وكان مهد الدولة يبغضه ويهمّ بقتله مرارا. ثم يتركه من أجل شروة، فاستفسد مولاه شروة على مهد الدولة لحضوره. فلمّا حضر عنده قتله وذلك سنة اثنتين وأربعمائة ثم خرج على أصحابه وقرابته



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

يقبض عليهم كأنه بأمر مهد الدولة ثم مضى الى ميافارقين ففتحوا له يظنونه مهد الدولة فملكها، وكتب إلى أصحاب القلاع يستدعيهم على لسان مهد الدولة، وفيهم خواجا أبو القاسم صاحب أرزن الروم، فسار إلى ميّافارقين، ولم يسلم القلعة لأحد. وسمع في طريقه بقتل مهد الدولة فرجع من الطريق إلى أرزن الروم، وأحضر أبا نصر بن مروان من أسعرد، وجاء به إلى أبيهم مروان. وكان قد أضرّ ولزم قبر ابنه أبي علي بأرزن هو وزوجته فأحضره خواجا عنده، واستحلفه عند أبيه وقبر أخيه، وملك أرزن. وبعث شروة من ميّافارقين إلى أسعرد عن أبي نصر بن مروان، ففاته إلى أرزن، فأيقن بانتقاض أمره. ثم ملك أبو نصر سائر ديار بكر، ولقّب نصير الدولة، ودامت أيامه. وأحسن السيرة وقصده العلماء من سائر الآفاق وكثروا عنده. وكان ممن قصده أبو عبد الله الكازروني، وعنه انتشر مذهب الشافعيّ بديار بكر، وقصده الشعراء ومدحوه وأجزل جوائزهم. وأقامت الثغور معه آمنة، والرعية في أحسن ملكة إلى أن توفي[٣٣].

**منهج ابن خلدون فى حديثه عن الدولة الأيوبية**

سار ابن خلدون على منهج المؤرخين المشارقة فى ذكر الاختلاف حول نسب بنى أيوب، وذكر بعض من قال أنهم أكراد، أو أنهم غير ذلك، ولكنه اكتفى بذكر الاختلاف دون ترجيح أحد الآراء[٣٤]، وهو ما يخالف منهجه بصفة عامة الذى يقوم على النقد والتحقيق، وأشار هو بنفسه إلى ذلك فى المقدمة، فقال عنهم:

**دولة بني أيوب**

الخبر عن دولة بني أيوب القائمين بالدولة العباسية وما كان لهم من الملك بمصر والشام واليمن والمغرب وأولية ذلك ومصايره هذه الدولة من فروع دولة بني زنكي كما تراه وجدهم هو أيوب بن شادي بن مروان بن علي ابن الحسن بن علي بن أحمد بن علي بن عبد العزيز بن هدبة بن الحصين بن الحرث بن سنان بن عمر بن مرّة بن عوف الحميري الدوسيّ هكذا نسبه بعض المؤرخين لدولتهم قال ابن الأثير أنهم من الأكراد الروادية، وقال ابن خلكان شادي أبوهم من أعيان درين وكان صاحبه بها بهروز فأصابه خصي من بعض أمرائه وفرّ حياء من المثلة فلحق بدولة السلطان مسعود بن محمد بن ملك شاه وتعلق بخدمة داية بنيه حتى إذا هلك الداية أقامه السلطان لبنيه مقامه فظهرت كفايته وعلا في الدولة محله فبعث عن شادي بن مروان صاحبه لما بينهما من الألفة وأكيد الصحبة فقدم عليه ثم ولى السلطان بهروز شحنة بغداد فسار إليها واستصحب شادي معه ثم أقطعه السلطان قلعة تكريت فولى عليها شادي فهلك وهو وال عليها[٣٥].

ثم يذكر ابن خلدون بعض الأحداث التى وقف فيها الأكراد بجانب الدولة الأيوبية فى حروبهم ضد الصليبيين، أو مساندتهم لبعض الأمراء فى صراعهم على العرش بعد وفاة صلاح الدين ومن ذلك:

**حصار صور**

فجاءت عساكر الموصل وديار بكر وسنجار وسائر بلاد الجزيرة وجاء تقي الدين ابن أخيه من حماة ومظفر الدين كوكبري من حران والرها وكان أمداد المسلمين تصل في البرّ وإمداد الإفرنج في البحر وهم محصورون في صور محاصرين وكانت بينهم أيام مذكورة ووقائع مشهورة واقام السلطان بقية رجب لم يقاتلهم فلما استهل شعبان قاتلهم يوما بكامله، وبات الناس على تعبية، ثم صبحهم بالقتال ونزل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

الصبر وحمل عليهم تقي الدين ابن أخيه منتصف النهار من الميمنة حملة أزالتهم عن مواقفهم وملك مكانهم واتصل بالبلد فدخلها المسلمون وشحنها صلاح الدين بالمدد من كل شيء وبعث إليهم الأمير حسام الدين أبا الهيجاء السمين من أكابر أمرائه من الأكراد الخطية من أربل ثم نهض المسلمون من الغد فوجدوا الإفرنج قد أداروا عليهم خندقا يمتنعون به ومنعوهم القتال يومهم وأقاموا كذلك ومع السلطان أحياء من العرب فكمنوا في معاطف النهر من ناحية الإفرنج على الساحل للخطف منهم وكبسوهم منتصف شعبان وقتلوهم وجاءوا برءوسهم إلى صلاح الدين فأحسن إليهم والله تعالى أعلم[٣٦].

**حصار العزيز ثانيا دمشق وهزيمته**

ولما عاد العزيز إلى مصر عاد موالي صلاح الدين إلى أغرائه بأخيه الأفضل، فتجهز لحصاره بدمشق سنة إحدى وتسعين (وخمسمائة)، وسار الأفضل من دمشق إلى عمه العادل بقلعة جعبر، ثم إلى أخيه الظاهر غازي بحلب مستنجدا لهما، وعاد إلى دمشق فوجد العادل قد سبقه إليها واتفقا على أن تكون مصر للأفضل ودمشق للعادل، ووصل العزيز إلى قرب دمشق، وكان الأكراد وموالي شيركوه منحرفين عنه كما قدّمناه وشيعة للأفضل ومقدّمها سيف الدين أبو ركوش من الموالي وأبو الهيجاء السمين من الأكراد فدلسا للأفضل بالخروج إلى العزيز وواعداه الهزيمة عنه فخرجا في العساكر وانحاز إليهما الموالي والأكراد وانهزم العزيز إلى مصر وبعث الأفضل العادل إلى القدس فتسلمه من نائب العزيز وساروا في إتباعه إلى مصر والعساكر ملتفة على الأفضل فارتاب العادل وخشي أن لا يفي له الأفضل بما اتفقا عليه ولا يمكنه من دمشق فراسل العزيز بالثبات وأن ينزل حامية ووعد من نفسه المظاهرة على أخيه وتكفل له منعه من مقاتلته بلبيس فترك العزيز بها فخر الدين جهاركس في عسكر من موالي أبيه وأراد الأفضل مناجزتهم فمنعه العادل فأراد الرحيل إلى مصر فمنعه أيضا وقال له إن أخذت مصر عنوة انخرقت الهيبة وطمع فيها الأعداء والمطاولة أولى ودس إلى العزيز بإرسال القاضي الفاضل وكان مطاعا فيهم لمنزلته عند صلاح الدين فجاء إليهما وعقد الصلح بينهم على أن يكون للأفضل القدس وفلسطين وطبرية والأردن مضافة إلى دمشق، ويكون للعادل كما كان القديم ويقيم بمصر عند العزيز يدبر أمره، وتحالفوا على ذلك وعاد الأفضل إلى دمشق وأقام العادل عند العزيز بمصر انتهى والله أعلم[٣٧].

**حصن الأكراد واهتمام ابن خلدون بتاريخه**

كان من أواخر الأحداث التى اهتم بها ابن خلدون فى ذكره لتاريخ الأكراد هى الأحداث الخاصة بحصن الأكراد[٣٨]، وخاصة فى عصر دولة المماليك، حيث كان هذا الحصن مركزا لكثير من الصراع بين المسلمين والصليبيين خلال هذه الفترة، حتى تم فتحه على يد السلطان الظاهر بيبرس، وجعله مركزا لهجماته على الصليبيين وغيرهم من القوى المعادية له بعد ذلك فقال:

**فتح حصن الأكراد وعكار وحصون صور**

ثم سار السلطان سنة تسع وستين لغزو بلاد الافرنج وسرّح ابنه السعيد في العساكر الى المرقب لنظر الأمير قلاون وبيعلبكّ الخزندار وسار هو الى طرابلس فاكتسحوا سائر تلك النواحي لحصن الأكراد عاشر شعبان من السنة فحاصره السلطان عشرا ثم اقتحمت أرباضه وانحجر الافرنج في قلعته



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

واستأمنوا وخرجوا الى بلادهم وملك الظاهر الحصون وكتب الى صاحب الأستبار بالفتح وهو بطرسوس وأجاب بطلب الصلح فعقد له على طرسوس

والمرقب وارتحل السلطان عن حصن الأكراد بعد أن شحنه بالأقوات والحامية ونازل حصن عكا[٣٩] وا شتدّ في حصاره وا ستأمن أهله اليه وملكه ثم ارتحل بعد الفطر الى طرابلس وا شتدّ في قتالها و سأل صاحبها البرنس الصلح فعقد له على ذلك لعشر سنين ورجع الى دمشق ثم خرج آخر شوّال الى العليقة وملك قلعته بالأمان على أن يتركوا الأموال والسلاح وا ستولى عليه وهدمه و سار الى اللجون وبعث اليه صاحب صور في الصلح على أن ينزل له عن خمس من قلاعه فعقد له الصلح لعشر سنين وملكها ثم كتب الى نائبة بمصر أن يجهز عشرة من الشواني الى قبرس فجهزها ووصلت ليلا الى قبرس والله أعلم.

**استيلاء الظاهر على حصون الإسماعيلية بالشام**

كان الإسماعيلية في حصون من الشام قد ملكوها وهي مصياف والعليقة والكهف والمنيفة والقدموس وكان كبيرهم لعهد الظاهر نجم الدين الشعراني وكان قد جعل له الظاهر ولايتها ثم تأخر عن لقائه في بعض الأوقات فعزله وولى عليها خادم الدين بن الرضا على أن ينزل له عن حصن مصياف وأرسل معه العساكر فتسلموه منه ثم قدم عليه سنة ثمان وستين وهو على حصن الأكراد وكان نجم الدين الشعراني قد أسنّ وهرم فاستعتب وأعتبه الظاهر وعطف عليه وقسم الولاية بينه وبين ابن الرضا وفرض عليهما مائة وعشرين ألف درهم يحملانها في كل سنة ولما رجع سنة تسع وستين وفتح حصن الأكراد مرّ بحصن العليقة من حصونهم فملكه من يد ابن الرضى منتصف شوّال من السنة وأنزل به حامية ثم سار لقتال التتر على البيرة كما يذكر ورجع الى مصر فوجد الإسماعيلية قد نزلوا على الحصون التي بقيت بأيديهم وسلموها لنواب الظاهر فملكوها وانتظمت قلاع الإسماعيلية في ملكة الظاهر وانقرضت منها دعوتهم والله سبحانه وتعالى أعلم[٤٠].

**الأكراد فى بلاد المغرب والأندلس**

رغم قلة الوجود الكردى فى بلاد المغرب والأندلس وخاصة على مسرح الأحداث السياسية، إلا أن ابن خلدون ذكر ما وصل إليه من أحداث لهم، وخاصة فى مواجهة العدوان الأسبانى الصليبى على مسلمى الأندلس، وهذا يدل على حسن تتبعه للأحداث، وذكرها أياً كان من قام بها، وقد أورد حادثتين للأكراد فى بلاد المغرب والأندلس، وهما:

**(الخبر عن مهلك الحاجب المزوار وولاية ابن سيد الناس مكانه ومقتل ابن القالون)**

هذا الرجل محمد بن القالون المعروف بالمزوار، لا أدري من أوّليته أكثر من أنه كرديّ من الأكراد الذين وفد رؤساؤهم على ملوك المغرب أيام أجلاهم التتر عن أوطانهم بشهرزور عند تغلّبهم على بغداد سنة ست وخمسين وستمائة، فمنهم من أقام بتونس، ومنهم من تقدّم إلى المغرب فنزلوا على المرتضى بمراكش فأحسن جوارهم. وصار قوم منهم إلى بني مرين وآخرون إلى بني عبد الواد حسبما يذكر في أخبارهم.

ومن المقيمين بالحضرة كان سلف ابن عبد العزيز هذا إلى أن نشأ هو في دولة الأمير أبي زكريا الأوسط صاحب الثغور الغربية، وتحت كنف من اصطناعه. واختلط بأبنائه وقدم في جملة ابنه السلطان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أبي بكر إلى تونس مقدّما في بطانته ورئيسا على الحاشية المتسمين بالدخلة، وكان يعرف لذلك بالمزوار. وكان شهما وقورا متديّنا وله في الدولة حظ من الظهور، وهو الّذي تولى كبر السعاية في الحاجب بن القالون حتى ارتاب بمكانه. ووفد إلى أبي عمران سنة إحدى وعشرين وسبعمائة كما قدّمناه. وولّاه السلطان الحجابة مكانه فقام بها مستعينا بالكاتب أبي القاسم بن عبد العزيز لخلوّه هو من الأدوات. وإنما كان شجاعا ذا همة. ولم يزل على ذلك إلى أن هلك في شعبان سنة سبع وعشرين وسبعمائة، وأراد السلطان على الحجابة محمد بن خلدون جدّنا الأقرب فأبى، ورغب في الإقالة فأجيب جنوحا لما كان بسبيله منذ سنين من الصاغية في السكون والفرار من الرتب[41].

**الحادثة الثانية للأكراد في الأندلس**

ولثلاث عشرة من ربيع الثاني (٦٨٤هـ) عقد للأمير أبي يعقوب لمنازلة جزيرة كيوثر، فصمد إليها وقاتلها واقتحمها عنوة. وفي ثاني جمادى عقد لطلحة بن يحيى بن محلى، وكان بعد مداخلته أخاه عمر في شأن مالقة سنة خمس وسبعين وستمائة خرج إلى الحجّ، فقضى فرضه ورجع، ومرّ في طريقه بتونس واتهمه الدعي ابن أبي عمارة كان بها يومئذ فاعتقله سنة اثنتين وثمانين، ثم سرّحه ولحق بقومه بالمغرب. ثم أجاز الأندلس غازيا في ركاب السلطان، فعقد له في هذه الغزاة على مائتين من الفرسان وسرّحه إلى إشبيلية ليكون رتبة للمعسكر وبعث معه لذلك عيونا من اليهود والمعاهدين من النصارى، يتعرّفون له أخبار الطاغية شانجة وأمير المسلمين أثناء ذلك يغادي شريش ويراوحها بالقتال والتخريب، ونسف الآثار، وبث السرايا كل يوم وليلة في بلاد العدو، فلا يخلو يوما عن تجهيز عسكر أو اغزاء جيش، أو عقد راية أو بعث سرية، حتى انتسف العمران في جميع بلاد النصرانيّة، وخرّب بسائط إشبيلية وليلة، وقرمونة واستجة وجبال الشرق وجميع بسائط الفرنتيرة. وأبلى في هذه الغزوات عيّاد العاصمي من شيوخ جشم، وخضر الغزي أمير الأكراد بلاء عظيما[42].

وختاماً:

نذكر أن ابن خلدون اهتم بتاريخ الأكراد اهتماماً كبيراً في كتابه، وأورد الكثير من الأحداث كما ذكرنا، إلا أنه تجاهل ذكر بعض الأحداث ربما لأنه رآها لا تفيد القارئ في تاريخه، أو أنها ليست أحداثاً هامة، مثل بعض حالات التمرد ونشر الفساد في بعض المناطق، أو ربما لم تصل إلى مسامعه، ولم يقرأها في كتب من سبقوه، وخاصة بعد وفاة ابن الأثير، أكثر مؤرخ اعتمد عليه في تاريخ المشرق.

ويؤخذ على ابن خلدون أنه في بعض الأحيان كرر بعض الأحداث في أكثر من موضع في كتابه، وخاصة في ذكر الدول والإمارات، وكان من الأفضل أن تذكر في موضع واحد بكل تفاصيلها ليلم بها القارئ مرة واحدة، بدلاً من ذكر بعض أحداثها في موضع، ثم يعيدها مع ذكر أحداث أخرى في موضع آخر، كما حدث مع دولة باد وبني حسنويه، ولكن الكتاب في مجمله تضمن الكثير من تاريخ الأكراد، وكان نافذة هامة أطل منها أهل المغرب والأندلس على أخبار إخوانهم في المشرق ومنهم الأكراد.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

والله الموفق

أ.د/عبدالغنى عبدالفتاح زهرة

أستاذ ورئيس قسم التاريخ والحضارة بكلية الدراسات العليا جامعة الأزهر.

**الهوامش:**

(١) ج٣ ص٣٧٧.

(٢) هو وائل بن حجر بن ربيعة بن وائل بن يعمر الحضرمي. كَانَ قيلا من أقيال حضرموت، وَكَانَ أبوه من ملوكهم.

وفد عَلَى رسول الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ رسول الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قد بشر أصحابه بقدومه قبل أن يصل بأيام، وقال: " يأتيكم وائل بن حجر من أرض بعيدة، من حضرموت، طائعا راغبا فِي الله عَزَّ وَجَلَّ وَفِي رسوله، وهو بقية أبناء الملوك ".

فلما دخل عَلَيْهِ رحب بِهِ وأدناه من نفسه، وقرب مجلسه وبسط لَهُ رداءه، وأجلسه عَلَيْهِ مع نفسه، وقال: " اللَّهُمَّ، بارك فِي وائل وولده " واستعمله النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الأقيال من حضر موت وأقطعه أرضا، وقال للنبي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إن أهلي غلبوني عَلَى الَّذِي لي، قَالَ: " أنا أعطيك ضعفه "، ونزل الكوفة فِي الإسلام، وعاش إلى أيام معاوية، ووفد عَلَيْهِ فأجلسه معه عَلَى السرير. ابن الأثير- أسد الغابة فى معرفة الصحابة - ج٥ ص٤٠٥.

(٣) العبر وديوان المبتدأ والخبر ج٧ ص٦٣٩.

(٤) الزركلى- الأعلام ج٣ ص٣٣٠.

(٥) في بعض النسخ رموم ومعناها محال الأكراد ومنازلهم. بلغة أهل فارس. وهي مواضع بفارس. ج١ ص٨٠. ياقوت الحموى- معجم البلدان ج٣ ص٧١.

(٦) ج٢ ص٥٤٥.، وقد وردت هذه الأحداث فى الكامل لابن الأثير ج٢ ص٣٤٩، وربما نقلها منه ابن خلدون مع تغيير طفيف فى بعض الكلمات.

(٧) ج٢ ص٥٦٦.

(٨) العبر ج٢ ٥٦٧. وقد ورد هذ الخبر بالتفصيل عند الطبرى ولكنه لم يذكر مكانهم أو اسم زعيمهم أيضاً، تاريخ الأمم والملوك ج٢ ص٥٥٨.

(٩) عبد الرحمن بن الأشعث بن قيس الكندي من القادة الشجعان الدهاة. هو صاحب الوقائع مع الحجاج بن يوسف الثقفي. سيَّره الحجاج بجيش لغزو بلاد رتبيل (ملك الترك) فيما وراء كجستان، فغزا بعض أطرافها، وأخذ منها حصونًا وغنائم، وكتب إلى الحجاج بن يوسف الثقفي يخبره بذلك وأنه يرى ترك



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

التوغل في بلاد رتبيل إلى أن يختبر مداخلها ومخارجها. فاتهمه الحجاج بالضعف والعجز، وأمره بالمُضيِّ في الفتح، وإن لم يفعل فأخوه إسحاق بن محمد أمير الناس. فاستشار عبد الرحمن من معه، فلم يروا رأي الحجاج، لما فيه من التعجُّل، واتفقوا على نبذ طاعته، وبايعوا عبد الرحمن وخلعوا الحجاج وعبد الملك بن مروان، وزحفوا نحو العراق لإزاحة الحجاج عنه، وساروا إلى البصرة بعد أن هزموا جيشًا للحجاج، ودخلوها، وخرج الحجّاج منها. ثم دخلوا الكوفة، فعاد الحجاج إلى البصرة، وكتب إلى عبد الملك يطلب المدد منه، فأرسل إليه جيشًا من الشام عليه ابنه وأخ له. وأمرهما بأن يفاوضا ابن الأشعث، ويَعِداه بولاية خراسان أو أي ولاية أخرى، ويقبل إقالة الحجاج من العراق، وتسوية أهل العراق بأهل الشام في العطاء، فإذا لم يقبل أهل العراق هذا، فليجتمع أهل الشام تحت إمرة الحجاج وليحاربوهم. ولم يقبل أهل العراق ذلك ورفضوه اعتقادًا منهم أن المدد سينقطع عن أهل الشام فيغلبوهم، ولم يحدث ما ظنُّوه، ودخل جند الشام تحت إمرة الحجاج، فحاربوا أهل العراق حربًا شديدة، وهزموهم في موقعة دير الجماجم سنة ٨٣هـ/ ٧٠٢م، مع مواقع أخرى عديدة حدثت بين الطرفين. وهرب ابن الأشعث إلى كجستان مع فلول جيشه، وأمَّن الحجاج أهل العراق، فعاد إليه عدد كبير منهم. ظل ابن الأشعث يقاوم بعوث الحجاج، وكان قد عقد عهدًا مع رتبيل أن يؤيده إذا هزمه الحجاج، فلجأ إلى رتبيل عندما هزمه الحجاج، فساوم الحجاج رتبيل على تسليمه مقابل إعفائه رتبيل من الجُعل الذي كان يقدِّمه إليه، وانتهى الأمر بأن سلَّم رتبيل ابن الأشعث ميتًا إلى الحجاج، ويقال إن الأشعث ألقى بنفسه من مكان مرتفع فقتل. وتفرقت فلول جيشه في خراسان. ابن كثير البداية والنهاية ج٩ ص٤٠ وما بعدها.

(١٠) العبر ج٣ ص٦٤. وقد أشار الطبرى بمزيد من التوضيح هذه الحادثة، ومساندة الأكراد لعبدالرحمن بن الأشعث، فقال: قال ومضى ابن الأشعث والفل من المنهزمين معه نحو سجستان فأتبعهم الحجاج عمارة بن تميم اللخمي ومعه ابنه محمد بن الحجاج وعمارة أمير على القوم فسار عمارة بن تميم إلى عبدالرحمن فأدركه بالسوس فقاتله ساعة من نهار ثم إنه انهزم هو وأصحابه فمضوا حتى أتوا سابور واجتمعت إلى عبدالرحمن بن محمد الأكراد مع من كان معه من الفلول فقاتلهم عمارة بن تميم قتالا شديدا على العقبة حتى جرح عمارة وكثير من أصحابه ثم انهزم عمارة وأصحابه وخلوا لهم عن العقبة ومضى عبدالرحمن حتى مر بكرمان. ج٣ ٦٤٠.

(١١) ج٣ ص٨١.

(١٢) ج٣ ص٢٥٤.

(١٣) ج٣ ص٣٣٤. وذكر ابن الأثير هذه الحادثة بالتفصيل. الكامل ج٦ ص٦٠.

(١٤) العبر ج٣ ص٣٩٨. وقد وردت هذه المعركة بتفاصيل أكثر عند الطبرى فى تاريخه ج٥ ص٥٢٦.

(١٥) ذكر ابن الأثير أن اسمهم الْأَكْرَادَ الْهَذْبَانِيَّةَ، وَمُقَدَّمَهُمْ مُحَمَّدَ بْنَ بِلَالٍ. الكامل ج٦ ص٥٤٧.

(١٦) العبر ج٣ ص٤٤٤.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

(١٧) ج٣ ص٤٨٣.

(١٨) ج٣ ص٤٨٤.

(١٩) الكامل ج٧ ص٤٠٢. وهنا يذكر ابن خلدون صراحة أنه نقل من ابن الأثير.

(٢٠) العبر ٣ ص٥٨٣.

(٢١) ج٤ ص٣٢٢.

(٢٢) العبر ج٣ ص٥٤٦.

(٢٣) ج٤ ص٦٠٥.

(٢٤) ذكر ابن الأثير لها اسم آخر فقال: «في هذه السنة- ٣٦٩- توفي حسنويه بن الحسين الكردي البرزيكاني بسرماج، وكان أميرا على جيش من البرزيكان يسمّون البرزينية، وكان خالاه: ونداد وغانم ابنا أحمد أميرين على صنف آخر منهم يسمّون العيشانية» ج٨ ص٧٠٥.

(٢٥) ج٤ ص٦٨٩.

(٢٦) الصحيح ان هذه الحروب وقعت سنة ٣٩٣ وليس ٣٦٣.

(٢٧) العبارة مشوشة والمقصود ان بدرا كان عونا لابن واصل وهو عدو بهاء الدولة!

(٢٨) صواب العبارة أن يقول واستمال الديلم، ولعله خطأ فى النسخ.

(٢٩) ج٤ ص٦٩٤

(٣٠) ج٣ ص٦٤٩.

(٣١) ج٤ ص٣٣٣.

(٣٢) ج٤ ص٤١٠.

(٣٣) ج٤ ص٤١٢. وقد ورد ذكر أبو الفداء هذه الدولة بالتفصيل مع اختلاف فى بعض الأحداث والأسماء عن ابن خلدون . المختصر فى أخبار البشر ج٢ ص١٢٦ وما بعدها.

(٣٤) أفضل من أورد هذا الاختلاف حول نسبهم هو ابن خلكان، ورجح أنهم أكراد، فقال: السلطان صلاح الدين أبو المظفر يوسف بن أيوب بن شاذي، الملقب الملك الناصر صلاح الدين صاحب الديار المصرية والبلاد الشامية والفراتية واليمنية؛ وقد تقدم في هذا الكتاب ذكر أبيه أيوب وجماعة من أولاده وعمه أسد الدين شيركوه أخيه الملك العادل أبي بكر محمد، وجماعة من أولاده وغيرهم من أهل بيته؛ وصلاح الدين كان واسطة العقد، وشهرته أكبر من أن تحتاج إلى التنبيه عليه.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

اتفق أهل التاريخ على أن أباه وأهله من دوين، بضم الدال المهملة وكسر الواو وسكون الياء المثناة من تحتها وبعدها نون، وهي بلدة في آخر عمل أذربيجان من جهة أران وبلاد الكرج، وأنهم أكراد روادية، بفتح الراء والواو وبعد الألف دال مهملة ثم ياء مثناة من تحتها مشددة وبعدها هاء والروادية: بطن من الهذبانية بفتح الهاء والذال المعجمة وبعد الألف نون مكسورة ثم ياء مشددة مثناة من تحتها وبعدها هاء، وهي قبيلة كبيرة من الأكراد. وقال لي رجل فقيه عارف بما يقول، وهو من أهل دوين: إن على باب دوين قرية يقال لها أجدانقان، بفتح الهمزة وسكون الجيم وفتح الدال المهملة وبعد الألف نون مفتوحة وقاف مفتوحة وبعد الألف الثانية نون أخرى، وجميع أهلها أكراد روادية، ومولد أيوب والد صلاح الدين بها، وشاذي أخذ ولديه أسد الدين شيركوه ونجم الدين أيوب وخرج بهما إلى بغداد، ومن هناك نزلوا تكريت، ومات شاذي بها، وعلى قبره قبة داخل البلد.

ولقد تتبعت نسبتهم كثيراً فلم أجد أحداً ذكر بعد شاذي أبا آخر، حتى إني وقفت على كتب كثيرة بأوقاف وأملاك باسم شيركوه وأيوب، فلم أر فيها سوى شيركوه بن شاذي، وأيوب بن شاذي، لا غير؛ وقال لي بعض كبراء بيتهم: هو شاذي بن مروان.

ورأيت في " تاريخ حلب " الذي جمعه القاضي كمال الدين أبو القاسم عمر بن أحمد المعروف بابن العديم الحلبي بعد أن ذكر الاختلاف في نسبهم فقال: وقد كان المعز إسماعيل بن سيف الإسلام ابن أيوب ملك اليمن ادعى نسباً في بني أمية وادعى الخلافة. وسمعت شيخنا القاضي بهاء الدين عرف بابن شداد يحكي عن السلطان صلاح الدين أنه أنكر ذلك وقال: ليس لهذا أصل أصلاً.

قلت: ذكر شيخنا الحافظ عز الدين أبو الحسن علي بن محمد المعروف بابن الأثير الجزري صاحب التاريخ الكبير في تاريخه الصغير الذي صنفه للدولة الأتابكية ملوك الموصل، في فصل يتعلق بأسد الدين شيركوه، ومسيره إلى الديار المصرية فقال: كان أسد الدين شيركوه ونجم الدين أيوب، وهو الأكبر، ابنا شاذي من بلد دوين، وأصلهما من الأكراد الروادية قد قدما العراق، وخدما مجاهد الدين بهروز بن عبد الله الغياثي شحنة بالعراق. وفيات الأعيان ج٧ ص١٣٩ وما بعدها.

(٣٥) العبر ج٥ ص٣٢٦.

(٣٦) ج٥ ص٣٧١.

(٣٧) العبر ج٥ ص٣٨٥.

(٣٨) كان حصن الأكراد من أهم الحصون فى العالم الإسلامى، حتى أنه إذا قيل الحصن فقط فهم أنه حصن الأكراد، وقال عنه ياقوت: وحصن الأكراد: هو حصن منيع حصين على الجبل الذي يقابل حمص من جهة الغرب، وهو جبل الجليل المتصل بجبل لبنان، وهو بين بعلبك وحمص، وكان بعض أمراء الشام قد بنى في موضعه برجا وجعل فيه قوما من الأكراد طليعة بينه وبين الفرنج، وأجرى لهم أرزاقا، فتديروها بأهاليهم ثم خافوا على أنفسهم في غارة فجعلوا يحصنونه إلى أن صارت قلعة حصينة منعت الفرنج عن كثير من غاراتهم، فنازلوه فباعه الأكراد منهم ورجعوا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

إلى بلادهم وملكه الفرنج، وهو في أيديهم إلى هذه الغاية، وبينه وبين حمص يوم. معجم البلدان- ج٢ ص٢٦٤. وقد توفي ياقوت سنة ٦٢٦هـ قبل أن يسترد المسلمون الحصن من يد الصليبيين.

(٣٩) الصواب عكار كما ورد في كثير من المصادر، ولعله خطأ من الناسخ.

(٤٠) العبر ج٥ ص٤٤٩.

(٤١) العبر ج٦ ص٤٩٣.

(٤٢) ج٧ ص٢٧٥.

## رێبازا مێژوونڤیسان د توومارکرنا مێژوویا کوردان، ئیبن خەلدوون وەك نموونە: خواندنەکا شیکاری و رەخنەیی


**پۆختە:**

ئیبن خە لدوونی د هەردوو پەرتووکێن خوەدا (الـ عبر) و (المقد مە)دا بەحـ سێ بەحـ سێ کوردان و جـ هێ جوگرافـ و ئەرد و چیاییێن وان کر یە پا شی چوویە د ناڤ مـ ێژوویا وان هەر ژ سەردەمێ دەر کەفتنا ئیـ سلامێ کر یە، و گرنـ گی ب رولێ وان د روودا نێن سیا سی، خوە روودا نێن بچووك ژی، دایە. چ رولێ وان وەك سەرکردەیێن سەربازی دناڤ لە شکەرێن ئیـسلامیدا بیت یان وەك سیاسەتمەدار و دامەزرێنەرێن دەولەت و میرگەهان بیت.هەروەسا ئیبن خەلدوونی لا یەنێ شارستانیا کوردان ژی ژبیر نەکریە و روناهی بەردایە سەر لایەنێ ئابووری و جڤاکی یێن کوردان ژی.

ئەڤ مێژوونڤیـ سە هاتـ یە هەلـ بژاراتن چونکە ئەو خەلکێ روژئا ڤایێ وەلا تێ ئیـ سلامییە و گرنگی ب روودان و دیروکا موسلمانێن روژهەلاتی و دناڤ واندا ب کوردان دایە.

**پەیڤێن سەرەکی:** *ئیبن خەلدوون، کورد، المقدمە، دەولەتا مەروانی، دیاربەکر.*


## Historians' Approach to the History of the Kurds: Ibn Khaldun as an Analytical and Critical Study


### Abstract

Ibn Khaldun cared about the Kurds in his well-known lessons of history, *Diwan al-Mubtada wa al-Khabar* in the important history of the Arabs and Berbers and their contemporaries, as well as in his introduction known as *The Introduction of Ibn Khaldun*. So, he began by mentioning their geographical location, their lands and their mountains, then he moved to their history from

the era of the inception of Islam until its era. He also mentioned their participation in political events: their small roles when they are part of an army, or their roles in a division in a leader’s campaign, such as the Kurdish division in the army of Nur al-Din Mahmud headed by Asad al-Din Shirkuh, or their attempt to establish an emirate or a state, such as the attempt of the Hamidian Kurds led by Abu al-Hussein known as Bad in the establishment of a state in Mosul in the year three hundred and sixty-seven AH. Besides, he mentioned some Kurdish emirates from their inception to end, such as the emirate of Bani Marwan in Diyarbakir, and the state of Bani Ayyub in Egypt and the Levant. Furthermore, he followed the Kurdish prominent personalities who migrated to different countries, such as Khorasan, India, Iraq, Egypt, the Levant and the countries of the Maghreb. Ibn Khaldun agreed with the historians in most of his novels, and disagreed with them in some others.

Ibn Khaldun did not neglect to mention some of the cultural aspects of the Kurds, such as their interest in science and poetry, and the economic and social conditions of their country.

This study chose Ibn Khaldun as a model because he belongs to the countries of the Maghreb. So it will investigate the extent of Moroccans' interest in the history of the countries and sects of the East, including the Kurds, and the extent of their interest in seeking honesty in mentioning their history.

**Keywords:** *Ibn Khaldun - the Kurds - introduction - the state of Bani Marwan - Diyarbakir*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# أتابكية لورستان الكُردية من خلال رحلة ابن بطوطة

**أ.د. خطاب إسماعيل أحمد**

قسم التاريخ- فاكولتي العلوم الإنسانية- جامعة زاخو/ إقليم كردستان العراق

**ا.م.د. توفيق رشيد يوسف**

قسم الإجتماعيات، كلية التربية الأساس جامعة زاخو/ إقليم كردستان العراق

**الملخص:**

تهدف هذه الدراسة إلى بيان أصل اللور، وجغرافية بلادهم، والأوضاع السياسية والاقتصادية والإجتماعية والثقافية بأتابكية لُرستان، من خلال الأخبار والمعلومات التي قدَّمها ابن بطوطة من خلال رحلته المشهورة برحلة ابن بطوطة، والتي تحمل عنوان (تحفة النُّظار في غرائب الأمصار وعجائب الأسفار).

وقد وصف ابن بطوطة أحوال أتابكية لورستان الكُردية، عند زيارته لها بشكل مفصل ودقيق، فجاءت معلوماته عن الجانب الحضاري أكثر من الجانب السياسي، إذ ذكر أسماء عدد من أمرائها، الذي أشار إلى بعضهم بصفة (سلطان)، وحددَّ عاصمتها بمدينة إيذج، وأشار إلى طبيعة علاقتها ببغداد في العصر المغولي، وذكر أسماء خمسة من مدنها هي: (إيذج) العاصمة، و(رامز)، و(ماجور)، و(تستر)، و(دزفول).

أما الجانب الحضاري فقد جاءت معلومات ابن بطوطة عنه غزيرة، إذ ذكر وجود عدد كبير من الزوايا التي سمَّاها بالمدارس، حيث قدَّر عددها بـ(٤٦٠) مدرسة، منها (٤٤) في مدينة إيذج العاصمة وحدها وذكر العمارة وتسوية الطريق من خلال إختراقها للجبال، كما ذكر أسماءبعض العلماء المشهورين في اتابكية لورستان.

**الكلمات الدالة:** *أتابكية، لورستان، رحلة، ابن بطوطة، تحفة النُّظار، الامارات الكردية*

**المقدمة:**

يُعد كتاب (تحفة النُّظار في غرائب الأمصار وعجائب الأسفار) المشهور بـ(رحلة ابن بطوطة)، من الرحلات المهمة في التاريخ، التي دوَّن فيها ابن بطوطة لمشاهداته للبلاد التي زارها خلال رحلته التي استغرقت نحو (٣٠) عاماً، على رحلات الأولى استمرت (٢٤) سنة، والثانية سنتان، والثالثة حوالي (٤) سنوات، يتحدث فيها أبن بطوطة عن أهلها وحُكامها وعلمائها، ومن أوصافه الدقيقة وصف أنواع الألبسة ودلالتها، والأطعمة وأنواعها.

لقد وصف ابن بطوطة أحوال أتابكية لورستان الكردية، عند زيارته لها بشكل مفصل ودقيق، بحيث يمكن للباحث تكوين تصوروا ضح عن أوضاعها السياسية والحضارية، جاءت معلوماته عن الجانب الحضاري أكثر من الجانب السياسي، فيما يتعلق بالأحوال السياسية في أتابكية لورستان، ذكر أسماء عدد من أمراءها، الذي أشار إلى بعضهم بصفة (سلطان)، وحدَّ عاصمتها بمدينة إيذج، وأشار إلى طبيعة علاقتها ببغداد في العصر المغولي، وذكر أسماء خمسة من مدنها هي: (إيذج) العاصمة، و(رامز)، و(ماجور)، و(تستر)، و(دزفول).

أما الجانب الحضاري فقد جاءت معلوماته عنها غزيرة، إذ كان من الأمور المهمة التي ذكرها ابن بطوطة عن الأحوال الحضارية لأتابكية لورستان، ذكره وجود عدد كبير من الزوايا التي سمَّاها بالمدارس، حيث قدَّر عددها بـ(٤٦٠) مدرسة، منها (٤٤) في مدينة إيذج العاصمة وحدها، وقد ذكر وجود أماكن للسكن والمبيت في تلك المدارس، فضلاً عن توفير الطعام للطلبة، وبعضها كان خارج مراكز المدن، وذكر العمارة وتسوية الطريق من خلال إختراقها للجبال، كما ذكر أسماء بعض العلماء المشهورين في اتابكية لورستان، مثل (نورالدين الكرماني)، الذي كان السلطان يزوره بنفسه.

وذكر بعضاً من العادات والتقاليد هناك، مثل ذكره لطبيعة (مآتمهم)، إذ أشار إلى أنواع خاصة من الملابس كانوا يلبسونها بذلك الخصوص، مع إختلاف ملابس السلاطين عن ملابس العامة، وذكر إستخدامهم لآلات السماع وهو يقصد بها الموسيقى في مآتمهم.

ذكر عدة أنواع من الطعام في أتابكية لورستان مثل (الخبز، واللحم، والحلويات، والأرز، والسمن، والدجاج)، ومما ذكره ابن بطوطة أن أهل لورستان كانوا يصنعون الدقيق (الطحين) من البلوط الذي كانوا يطحنونه، وأنه كانت توجد مطابخ في الأسواق لتوفير الطعام، وهي أشبه بالمطاعم في العصر الحالي، وفي هذا دلالة واضحة على مدى التقدم الحضاري في أتابكية لورستان، وربما كان توفير ذلك الطعام مجاناً.

وذكر أن أحد أمراء أتابكية لورستان، وهو الأمير أحمد، الذي كان يُقسم واردات الخراج على ثلاثة أقسام: ثلث للإنفاق على الزوايا والمدارس، وثلث للجيش، والثلث الأخير كان ينفقه على عياله وعبيده وخدمه، وهذا إن دل على شيء إنما يدل على كثرة أعدادهم.

ومن المعلومات التي ذكرها أنه كان يوجد مزار تربة زين العابدين علي لن الحسين بن علي بن أبي طالب (رضي الله عنه) في مدينة (تستر) كان الناس يقصدونه للزيارة وتقديم النذور.

لدراسة الموضوع بصورة علمية ودقيقة سيُقسم البحث عدة محاور هي: أصل اللور، والحدود الجغرافية لأتابكية لورستان، والأحوال السياسية في لورستان، وعلاقة لورستان بالخلافة العباسية، وإيلخانية فارس المغولية، وبيان الجوانب الإدارية في أتابكية لورستان بحسب رحلة ابن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

بطوطة، والحياة الإقتصادية والثقافية التي شملت (المدارس)، و(الزوايا)، و(العلماء)، فضلاً عن الجانب الحضاري وذلك خلال ذكر ابن بطوطة أبرز مدن وقرى لورستان مثل (إيذج)، و(تستر) و(رامهرمز)، و(دزفول)، و(ماجول)، والحياة الدينية والإجتماعية لأتابكية لورستان الكُردية، مثل ذكره للمساجد وأبزر العادات والتقاليد لا سيما أنواع الأطعمة والمأكولات التي ركز ابن بطوطة على ذكر تفاصيلها أكثر من غيرها، بل حتى أنه ذكر طريقة صناعة بعضها مثل الحلويات، فضلاً عن خاتمة وقائمة بالمصادر والمراجع في نهاية البحث.

يُعد كتاب (تحفة النُّظار في غرائب الأمصار وعجائب الأسفار)، الذي دوَّن ابن بطوطة فيها مشاهداته أثناء رحلته، وهو المشهور بـ(برحلة ابن بطوطة) المصدر الأساس في البحث، وكتاب (الشرفنامة) للبدليسي (ت١٠١١هـ/ ١٦٠٣م)، و(الكامل في التاريخ) لابن الأثير (ت٦٣٠هـ/ ١٢٣٣م))، و(نزهة المشتاق في إختراق الآفاق) للإدريسي (ت٥٥٩هـ/ ١١٦٦م))، و(معجم البلدان) لياقوت الحموي (ت١٢٢٩م)، و(البداية والنهاية) لابن كثير (ت١٣٧٣م)، و(آثار البلاد وأخبار العباد) للقزويني (ت٦٨٢هـ/ ١٢٨٤م)، هذا فضلاً عن غيرها من المصادر الأخرى، إلى جانب مجموعة من المراجع المهمة عن موضوع الدراسة، تم الإفادة منها كثيراً في الدراسة، وتفاصيل الدراسة هي:

**١. أصل اللور:**

لم يُشر إبن بطوطة (ت٧٧٩هـ/ ١٣٧٨م)إلى جغرافية لورستان، وأصول ساكنيها بشكل مباشر،لكنهبيَّن أنَّ حدود أتابكية لورستان الكُردية(٥٥٠-٥٨٢٧/١١٠٦-١٤٢٣م)، هي ما بين مدينتي إيذج وتستر،فذكر مملكة إيذج بـ"ملك إيذج وتستّر"(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٤)، ثم أطلق كلمة اللور على سكان المنطقة، التي تقع بين رامهرمز وماجول، والتي كانت هي أرض لورستان في الحقبة التي زار فيها لورستان(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص١٨)، فقد أشارأبو بكر الحازمي(ت٥٨٤هـ/ ١١٨٨م)إلى اللور بقولهِ: "اللور صقع عجمي، يُنْسَبُ إلى اللور، وهم جيلٌ من الناس نحو الأكراد" (زين الدين الهمداني،١٤١٥هـ، ص٨٠٠)، لم يشر إبن بطوطة إليهم على أنهم كورد بشكل مباشر، ولكن يفهم من كلامهِ عن أميرهم،أي رئيسهم بأنه لم يتقن العربية بشكل جيد(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٨)، وهذا يدعم القول بأنهم كورد، هناك من ربط بين الشعب اللولوي في جبال زاكروس، مع أقوام اللور في المنطقة نفسها(كراوند، ٢٠١٩م، ص١٢٧)، وأما ياقوت الحموي فقد حدد أصل اللور وجغرافيتهم بلُرستان وذلك بقولهِ: "وهو جيل من الأكراد في جبال بين أصبهان وخوزستان، وتلك النواحي تعرف بهم، فيقال: بلاد اللورّ، ويقال لها: لُرستان، ويقال لها: اللّور أيضاً" (ياقوت الحموي،١٩٩٥،ج٥، ص١٦)،وكذلك ذكُر أنه ربما يكون اسمها مشتقٌ من الجبال، حيث قال السمعاني (ت٥٦٢هـ/ ١١٦٧م): "وظني أنها جبال بها، يقال لها: لُرستان"(السمعاني، ١٩٦٢م،ج١١، ص٢٢٧)، وحدَّدها المؤرخ الإسلامي بأنهم قوم من الكُرد، وحدد جغرافيتها بكوردستان بقولهِ: "جيل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

من الأكراد فى جبال، بين أصفهان وخوزستان، تعرف بهم الناحية، ويقال لها كردستان" (صفي الدين ، ١٩٧٣م، ج٣، ١٢٠٢)، وهناك من يفصل بين اللور والكُرد، حيث يقول رشيد الدين الهمذاني (ت٧١٨هـ/ ١٣١٨م): "فتوجه الى العراق ، وأزل في طريقك الأكراد واللور" (د/ت، مج٢،ج١، ص٢٣٧)، يظهر من هذا النص، أنه نقل وصية جنكيزخان ربما لا يملك معلومات دقيقة عن الكُرد وعلاقتهم باللور.

ويرى شرفخان البدليسي أن سبب إطلاق كلمة اللور، على مجموعة القبائل الكُردية التي تقطن مضيق (كول)، كانت هناك قرية بإسم الكُرد في ذلك المضيق، وكان على مقربة من المضيق نفسهُ، هناك قرية اللور ونزحت إليها قبائل كوردية، لذا أطلق على جميعهم كلمة اللور(البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٣٠)، وسميت بلور (كول)،أي تسمية اللور هذه أُطلقت على الجماعات التي نزحت إليها (القزويني، ١٩٣٧م، ص٥٤٢). "ويقال: أنهم اجتمعوا في قرية في وادي مانرود تدعى الـ(كورد)، في حدود وادي تسمى كوردي، وأطلقو على لغتهم لوري كول(البدليسي، ٢٠٠١م، ١٢٥ ؛ كراوند، ٢٠١٩م، ص١٢٦)،وهؤلاء طائفةكثيرة العدد، ومنهم فرق مفرقة في البلاد"(العمري،٢٠٠٢م، ٢٧٥/٣)

لقد اختلف المؤرخونفي تحديد هوية اللور،فمنهم من أرجعهم إلى الكُرد(مينورسكي،١٩٦٨، ص٣٦؛ الكوراني، ١٩٣٩م، ص٢٣٢؛ زكي، ١٩٣١م، ص٤٥٥؛ إقبال، ٢٠٠٠م، ص٤٣٤)، ويقول ابن الاثير: "اجتمَعَ ببيروذ جمع عظيم من الأكراد"(الكامل في التاريخ،١٩٩٧،ج٢،ص٤٢٥)، وهي في وسط لورستان،أنها تسمى ببيروت من أعمال سوس(المقدسي، ١٩٩١، ج١، ص٤٠٥)، التي تقع غرب دزفول وجندي سابور، من مدن لورستان في عهد أتابكية لورستان الكبرى (ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢ ، ص٦٥)، كانت جنديسابور قصبة عامرة وبلدة قديمة،وتسمى بمصر الإقليم وأغلب سكانها من الأكراد(المقدسي، ١٩٩١، ج١، ص٤٠٨)،وينقسم الشعب اللوري إلى أربعة فرق، وثمانية عشر عشيرة وهي:(ساهى، أرسان، أركي، بيهي)، كانت تتكلم اللورية، ولكن لم تكن لورية في الاصل، هذا واللور الحاليون ينقسمون إلى أربعة أقسام كبيرة :

١. ماماساني: ينقسمونإلى أربعة بطون هي: (بكاش، جويدي، دشمنزاري، رستمي).
٢. كوهط، او كوهطاويى،وينقسمونإلى ثلاثة أقسام وهي: (أغاجاري، باوى، جكي)، وتنقسم هذه الأقسام بدورهاإلى فروع أخرى.
٣. بختياري: وينقسمونإلى قسمين هما:(جارلنك، وهفت لنك) والأخيرة كانت قوية جداً،وهم إلى الآن لا يزالون موجودون ويسكنون في تستر،وسبزكوه زرد كوه، وأصفهان، وكرمانشاه.
٤. اللور الاصليون: يتكون من أربعة فرق هي:(ترخان، ودلفان، وسلسلة، وبالا طيريوا)،وهم كورد أقحاح، يُطلق على أمرائهم الميرأو الأمير(زكي، ١٩٣٩م، ص٤٥٥)، ويحدد شرفخان البدليسي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

قبائل اللور الأصلية،بالذين ينتمون الى وادي اللور وهم:(كارانه،وزرهنطري،وفضلي، و ستوَند، وآلاني،وكاهكاهي،وخودكي،ودري،وبرارند،وماذكه دار،وأ ناركي، و سلكي،وأبو العبا سي، وعـلي مامسي،وكيجاي،وندروي) (البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٤١-١٤٢).

ويقيم اللور الأصليون بلورستان، وينقسمون في الوقت الحاضر إلى فئتين هما: (ڤشتكوة، وثيشكوة)، وينقسم كل منها إلى سبعة فروع، وعشائر الكية أيضاً قسم من شعب لورستان الكبرى، وهم أيضاً كورد أقحاح، ويسكنون الآن في شمال لورستان، ومن أقسام الكية هي: سلسلة، ودلفان، وباجلان، وزند، ومافى، وزنديو كاله (زكي، ١٩٣١م، ص٤٥٦)، والجدير با لذكر،أنَّ دالفان وتير خان، على مذهب الرافضة من طائفة أهل الحق الشيعية(زكي، ١٩٣١م، ص٤٥٧).

**٢. حدود أتابكية لورستان:**

حدد ابن بطوطة حدود أتابكية لورستان الكُردية، بمدينتي إيذج وتستر"ذكر ملك إيذج وتستّر"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٤)،أي تبدأ من تستر في الجنوب وتنتهي بإيذج في شمالها الشرقي، حيث وصف مدينة تستر أنها آخر الأراضي السهلية لأتابكية لورستان(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٠)،ولورستان الكبرى أكبر من لورستان الصغرى، حيث كانوا يسكنون في أقاليم مختلفة من فارس، وعراق العجم، وعراق العرب، وشولستان(إقبال، ١٩٨٩، ص٥٤٥)، والإشارة الأخرى التي ذكر فيها ابن بطوطة أنَّ نقطة إنطلاقه إلى أرض اللور كانت من مدينة البصرة،وكانت بلدة ماجولأول مدينة لورستانية دخلها ابن بطوطة (ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٠)، ومن ثم حدد حدود أتابكية لورستان من الجهة الشمالية بإقليم عراق العجم(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٠)،وقد توسعت حدود أتابكية لورستان، في عهد يوسف شاه الأول بن ألب أرغون(٦٧٣-٦٨٤هـ/ ١٢٧٥-١٢٨٥م)، حيث شملت (خوزستان)،و(كوه طيلوة)،و(و شهر فيروزان)، و(جرباد قان) (البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٣٣؛ إقبال، ١٩٨٩م، ص٥٤٦)،ولكن إبن بطوطة يجعل المدينتان الأخيرتان خارج حدود أتابكية لورستان، في عهد يوسف شاه الثاني، ويذكرها عندما يدخل حدود أصفهان، حيث يزور مدينة (بلدة أشتركان)، ومن ثم يصل إلىفيروزان ويصفها بالمدينة الصغيرة (ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٨).

ويحدد ابن بطوطة حدود جغرافية بلاد اللور، بحدود أتابكية لورستان السياسية، في عهد أتابك أفرسياب ابن أتابك احمد(٦٨٤-٦٩٦هـ/ ١٢٨٥-١٢٩٧م)،ويذهب إلى أن أفراسياب الثاني(٧٤٠-٧٥١هـ/ ١٣٤٠-١٣٥٠م)قد تولَّى الحكم بلورستان بعد أخيهِ يوسف شاه بن أحمد(٧٣٣-٧٤٠هـ/ ١٣٣٣-١٣٤٠م)(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٤)،وفي حقيقة الأمر فإن أفراسياب الثاني هو ابن يوسف شاه الثاني بن أحمد(زمبارو، ١٩٨٠م، ص٣٥٣)، و ليس أخوهُ كما توهَّم ابن بطوطة (١٩٩٦، ج٢، ص٢٤).وقد وتوسعت بلاد لورستان في عهد أتابك هزارأسب الأول بن أبي طاهر الفضلوي(٦٠٤-٦٢٤هـ/١٢٠٧-١٢٢٨م)، حتى بلغ إمتداها إلى مسافة أربعة فراسخ من أصبهان(أصفهان) (زكي،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

١٩٣٧، ص١٣٧)، وتوسعت حدودها في عهد شمس الدين ألب أرغون (٦٥٦-٦٧٢هـ/ ١٢٥٨-١٢٧٣م)، حتى وصلتإلى مدينة شوش (سوس)(زكي،١٩٣٧هـ، ص١٤١).

وأنَّ حدود أتابكية لورستان في عهد أفرسياب الأول (٦٩٦-٧٣٣هـ/ ١٢٩٧-١٣٣٣م)، قد إمتدت من همدان إلى بحر فارس، ووضع أبناء عمومته كحكام على البلاد الواسعة (howorth,1880,v3,p358-359)،وقد ضُمت خوزستان ومدينتا فيروزان، وجيربادیكان إلى حدود أتابكية لورستان الكبرى، في عهد يوسف شاه الأولبن الب أرغون(٦٨٧-٦٩١هـ/ ١٢٨٨-١٢٩٧م)،مكافاةً له في مشاركته في جيوش أباقاخان في خوزستان، وأثناء رجوعه تعرض إلى كمين رجال الديلم، ولكن يوسف شاه أنقذه من الموت(howorth, 1880,v3,p240)،وقد حدد ليسترنجحدود أتابكية لورستان بأنها تبدأ من تستر شرقاً وبإمتداد نهر (كارون)، وغرب أصفهان وينحدر نحو الخليج، وقد سمّيت باللور الكبرى، حسبما ذكر لي سترنج (١٩٥٤، ج٢ ، ص٢٧٩)، وكانت البصرة وخوزستان وفيروزان، جزءاً من أتابكية لورستان في نهاية عهد يوسف شاه الثاني(٧٤٠-٧٥٦هـ/١٣٤٠-١٣٥٥م)، وهي السنة التي زار فيها ابن بطوطة،أتابكية لورستان،وقد صرّح بذلك بنفسه بالقول: كان دخولي في عهد أتابك أفراسياب(٧٥٦-٧٨٠هـ/ ١٣٥٥-١٣٧٩م).

**٣. الأحوالالسياسيةفي لورستان:**

ذكر إبن بطوطة أثناء زيارتهِ إلى حاضرة مدينة إيذج بأنها"حضرة السلطان أتابك" (ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٤)،أي كانت عاصمة أتابكية اللور، ويقول ياقوت الحموي: بأنها مستقلة "وسلطانها يقوم بنفسه"،ويقصد بذلكمدينة إيذج(١٩٩٥،ج١،ص٢٨٨ )، ويؤكد ابن فضل اللهالعمري مؤرخ القرن (٨هـ/ ١٤م)،بأنهِا "كانت لها ملك وأتابكية"(٢٠٠٢م، ج٣،ص٢٧٥).

قامت حكومة أتابكية لورستان الكبرى ما بين(٥٥٠-٨٢٧هـ/ ١١٥٦-١٤٢٤م)، وعمرت (٢٧٧) سنة (زكي، ١٩٣٩،ص١٣٥)، وكان أول ظهور لحكام إيذج حاضرة الأتابكية، على مسرح الأحداث السياسية عام (٦٠٣هـ/١٢٠٦م)، عندما هرب جمال الدين قشتمر، مملوك خليفة الناصر لدين الله سنة (٥٧٥-٦٢٢هـ/ ١١٧٩-١٢٢٥م)،إلى أبي طاهر الفضلوي، صاحب لورستان الكبرى، وكان قشتمر صهراً للفضلوي، لذافقد آواه، ودخل في صراع مع الخلافة العباسيةبسبب صهره قشتمر،الى أن توفي ابي طاهر الفضلوي وجاء إبنه نصرالدين هزارأسب(٦٠٤-٦٢٦هـ/ ١٢٠٧-١٢٢٨م)(الدليمي، ٢٠٢٢، ص٣٠)،من المعلومٌأنَّ إبن بطوطة كان قد زار حاضرة أتابكية اللّور في القرن(٨هـ/١٤م)، وذلك من قولهِ: "وملك إيذج في عهد دخولي إليها السلطان أتابك أفراسياب ابن السلطان أتابك أحمد، وأتابك عندهم سمة لكل من يلي هذه البلاد من ملك، وتسمى هذه البلاد بلاد اللّور، وولى هذا السلطان بعد أخيه أتابك يوسف، وولى يوسف بعد أبيه أتابك أحمد" (١٩٩٦، ج٢، ص٢٥) من المعلوم أن إبن بطوطة من وفاة (٧٧٩هـ/ ١٣٧٨م)، ويظهر أنَّ إبن بطوطة زار أتابكية لورستان، في عهد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

أفرسياب الثاني(٧٤٠-٧٥٦هـ/ ١٣٤٠-١٣٥٥م) ابن يوسف الثاني(٧٣٣-٧٤٠هـ/ ١٣٣٣-١٣٤٠م) ابن احمد و(يسمى نصر الدين بير أحمد) (٦٩٦-٧٣٣/ ١٢٩٧-١٣٣٣م)، وليس أفرسياب الأول الذي حكم مابين حوالي(٦٨٧-٦٩٦ه/ ١٢٨٨-١٢٩٧م)، وأنَّأفرسياب الذي ذكرهُ ابن بطوطة،هو ابن يوسف شاه، وليس أخيه حسبماذكرهُ زمبارو(١٩٨٠م، ص٣٥٣)، وأمّا عن تاريخ وصول إبن بطوطة إلى لورستان فقد ذكر أنه "وفي تلك السنة توفي، وولى ابنه أتابك يوسف، عشرة أعوام، ثم ولى أخوه أفراسياب، ولما دخَلْتُ مدينة إيذج، أردتُ رؤية السلطان أفراسياب المذكور"(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٦)، يتبين أن إبن بطوطة كان قد وصل إلى مدينة إيذج سنة (٧٤٠ه/ ١٣٤٠م)، وهي السنة التي توفي فيها الأتابك يوسف شاه الثاني(٧٣٣-٧٤٠ هـ/ ١٣٣٣-١٣٤٠م)، وتمَّ تنصيب أفرسياب الثاني(٧٤٠-٧٥٦ه/ ١٣٤٠-١٣٥٥م) بن يوسف الثاني في العام نفسهِ.

لا توجد معلومات عن التاريخ الدقيق لنزوح القبائل، من بلاد الشام ولكنهم كانوا حوالي (٢٠٠) شخص من نسل الفضلوي،وهو رجل سني صادق، سكنوابلاد الشول في بداية الأمر، ثم هاجروإإلى أرض لورستان( شبنكارة، ١٩٦٥م، ص٢٠٦)، يعد أبوطاهر محمد بن علي بن ابي الحسن الفضلوي، مؤسس أتابكية لورستان(٥٥٠-٨٢٧هـ/ ١١٥٦-١٤٢٤م)، الذي جاء من جبل سماق في شمال حلب، وأسس أتابكية لورستان الكبرى سنة (٥٥٠ه/ ١١٥٦م)، وعمل في خدمة أتابك فارس التي كانت تحت حكم السلغريين (٥٤٣-٦٨٦ه/ ١١٤٩-١٢٨٧م)[1]، ضد حكام الشبنكاره(٤١٢-٦٥٨هـ/١٠٢١-١٢٥٨م)، وانتصر أبو طاهر الفضلوي على حكام الشبنكاره، فأقطعه أتابك فارس سنغر بن مودود (٥٤٣-٥٥٧ه/ ١١٤٩-١١٦٢م)، وأعجب أتابك سنغر وأقطعهُ مدينة (كوة طيلوة)، من بلاد لورستان لقاء إنتصارهِ، وأعطاه لقب الأتابكية وجواداً جواباً لطلبهِ (العدياوي، ٢٠٠٥، ص١٠٢-١٠٣)، وأخذ أبو طاهر يعمل بالتدريج في بسط سيطرته عليها سنة (٥٤٣ه/ ١١٤٩م)، بالسلم تارةً والقتال تارةً، وإتباع والسياسة، حتى تمكنمن إعلان إستقلال أتابكيته سنة (٥٥٥ هـ/ ١١٦٠م)، ومات في السنة نفسها، وتولى بعدهإبنه هزار أسب الحكم مكانه، من بين إخوتهِ الأربعة (بهمن، وعماد الدين، وبهلوان، ونصر الدين إيلو كوش)، بإتفاق الأخوة الأربعة(زكي،١٩٣٧، ص١٣٥-١٣٦)، وفي عهد هزارأسب(٦٠٤-٦٢٧ه/ ١٢٠٧-١٢٢٨م)، وفدت مجموعة من القبائل الكُردية، من جبل السماق وكان من بينها قبائل عربية أيضاً،مما علا شأن هزارأسب وإستقلاله بالأتابكية بشكل نهائي، من السلغرين وشبنكارة صاحباأتابكية فارس والشول(زكي،١٩٣٧، ص١٣٧)، ويعد هزارأسب بذلك المؤسس الحقيقي لأتابكية اللور الكُردية،إذ حصل على إعتراف من الخليفة الناصر لدين الله العباسي(٥٧٥-٦٢٢ه/ ١١٧٩-١٢٢٥م)، "وأصدر الخليفة أمراً بالإعتراف الرسمي بالأتابكية، ومنح هزارأسب لقب أتابك، وخلع وهدايا بموجب منشور" (القزويني، ١٩٣٧م، ص٥٤٢)،وبذلك أصبح لقب الأتابك رسمياً من


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

قِبل الخلافة العباسية، بعد أن كان لقباً فخرياً لحكام الأتابكية،وقد سمّاها المؤرخون المعاصرون بأتابكية الهزار أسبية(خضري بك، ١٩٣٤م، ص٤٥٩؛ فرطوس، ص٩٧، الداودي، ٢٠١٠م، ص٦٣).

**٤. علاقة لورستان بالخلافة العباسية:**

كان زعيم الاسرة اللورستانية يدعى أبو طاهر علي بن محمد فضلوي، نسبةًإلى جدهِ التاسع والذي كان يسمى بـ(فضلوية)، وكان أبو طاهر وأخيهِ يعملون في خدمة الخلافة، وقد أقطعه الخليفة الراضي لورستان، التي كانت تابعةًلأتابكية فارس(إقبال، ٢٠٠٠م، ص٤٣٣)، وكان أول خلاف بينأتابكية لورستان والخلافة نتيجة لإيواء أبي طاهر الفضلوي صاحب أتابكية لورستان الكبرى، جمال الدين قشتمر، مملوك الخليفة الناصر لدين الله سنة (٥٧٥-٦٢٢هـ/ ١١٧٩-١٢٢٥م)،وذكر ابن الأثير انَّ الحرب نشبت بين الخلافة، وصاحب لورستان أبي طاهر الفضلوي(١٩٩٧م،ج١٠، ص٢٤٩)، ولكن عادت العلاقة الى وضعها القديم، عندما توفي أبي طاهر الفضلوي، صاحب لورستان، ومجئ إبنه نصرالدين محمود هزارأسب الأول (الدليمي، ٢٠٢٢، ص٣١)، والجدير بالذكر أن قشتمر كان صهراً لأبي طاهر، ومن جانب آخر كان علاقته مع بعض رجال الدولة العباسية جيدة، منهم قطب الدين السنجري الناصري صاحب رامهرمز، كان قد تزوج من أُسرةأبي طاهر الفضلوي صاحب لورستان سنة (٥٩٠هـ/ ١١٩٤م)، وأصبح السنجري صاحب شحنكية واسط والحلة من قبيل الخلافة(ابن الفوطي، ١٩٩٥، ص١٦١).

يظهرأنَّ علاقات الأتابكية، كانتتعتمد بشكل عام على العلاقات الإجتماعية، وذلك عن طريق المصاهرة، حتى مع الخوارزميينإذ تزوج غياث الدين محمد خوارزمشاه، من إبنة هزارأسب الأول(٦٠٠-٦٢٦هـ/ ١٢٠٤-١٢٢٩م)(إقبال، ٢٠٠٠، ص٤٣٤)،وتحسنت العلاقة بين الخلافة وهزارأسب بن أبي طاهر الفضلوي، حيث إستعانت بهِ الخلافة في صد هجمات المغول(الجويني، ١٩٨٥، ج٢، ص٢٢)،ويبدو أن تحسن العلاقات مع الخوارزميين؟، يعود الى وجود علاقة الخوارزميين الجيدة مع الخلافة العباسية،فشاركأمراء الخلافة العباسية في التصدي لغزوات المغول(الجويني، ١٩٨٥م،ج٢، ص٢٢)، ولكن العلاقة مع الخلافة قد تحسنت بشكل كبير، بعد أن إعترفت الخلافة العباسية بأتابكية لورستان الكبرى في عهد هزارأسب(القزويني، ١٩٣٧م، ص٥٤٢؛ البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٢٩)، واستمرت العلاقات الطيبة مع الخلافة في عهد عماد الدين بن هزارأسب(٦٢٦-٦٤٦هـ/ ١٢٢٩-١٢٤٩م)(إقبال، ٢٠٠٠م، ص١٥٦)، ولكن العلاقة عادت مع الخلافة فساءت مرةً أخرى، بعد وفاة أتابك هزارأسب، ومجئ أتابك تكلة أو تكيلة بسبب حملاتهِ على الإمارات العباسية المجاورة لأتابكيته(البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٣٠؛ زكي، ١٩٣٧م، ص١٣٨-١٣٩).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

يبدو أن سبب التحاق أتابك تكلة اللوري بقوات هولاكو، هو للخلاف بين تكلة وأتابكية فارس ووشبنكارة، وتحالف الأخيرين مع الخلافة العباسية، مما دفع أتابك تكلة بالذهاب إلى جانب المغول ومشاركتهفي غزو بغداد(البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٣٠).

**٥. علاقة أتابكية لورستان الكُردية بإيلخانية فارس المغولية:**

هناك إشارة إلى وجود علاقة بين اللور والمغول عام (٦٤٣هـ/م١٢٤٦)،إذ شارك مندوب اللور في حفلة تتويج كيوك خان( howorth, 1880,v3,p56)، وتوجدإشارة أخرىعن علاقة قوية تربطأتابك يوسف شاه بأرغون خان(٦٨٣-٦٩٠ه/١٢٨٤-١٢٩١م)، حفيد هولاكو من أبيهِ،إذ يكلفه الأخير بألقاء القبض على شمس الدين الجويني (howorth, 1880, v3,p315؛ الطائي، ٢٠١٩، ص٦٣).

وفي الصراع بين أحمد تكودار وأخيهَ أرغون،فقد حُسمت المعركة لصالح الأخير لدعم يوسف شاه الأول اللوري لأرغون خان(howorth, 1880,v3,p358)

ينقل ابن بطوطة حكاية،يظهر منها وجود علاقات حسنة، بين المغول وأتابكية لورستان الكبرى، في عهد أحمد إذ "قَدِمَ السلطان أتابك أحمد مرّة على ملك العراق أبي سعيد، فقال: له بعض خواصّه إن أتابك يدخل عليك وعليه الدّرع، وظنّ ثوب الشّعر الذي تحت ثيابه درعاً، فأمرهم باختبار ذلك على جهة من الانبساط ليعرف حقيقته، فدخل عليه يوماً، فقام إليه الأمير جوبان، عظيم أمراء العراق، والأمير سويته أمير ديار بكر، والشيخ حسن الذي هو الآن سلطان العراق، وأمسكوا بثيابه كأنَّهم يمازحونه ويضاحكونه، فوجدوا تحت ثيابه ثوب الشعر، وراءه السلطان أبو سعيد، وقام إليه وعانقه وأجلسه إلى جانبه وقال له: (سن أطا)، ومعناه بالتركية: أنت أبي، وعوّضه عن هديّته بأضعافها، وكتب له اليرليغ، وهو الظّهير ألّا يطالبه بهديّة بعدها هو ولا أولاد"،يظهر من قول ابن بطوطة أنه كان يخلط بين بغداد وتبريز كمركز لإيلخانية فارس، فيعد بغداد مركزاً للإيلخانية.

ويشير هنري هورث الى زيارة أتابك أحمد، صاحب لورستان الكبرى إلى أبو سعيد آخر من جكم منإيلخانات المغول في تبريز ويشير إلى وجود كل من جوبان، وسناتي، والشيخ الحسن في مجلس أبو سعيد، ويقول:إنَّ هؤلاء أوعزواإلى وجود درع تحت ملابس أتابك أحمد، ثم أجلسه أبو سعيد بجاذبه، وقال:اجلس يا باتي(howorth, 1880,v3,p626)، وقد شارك الأمير الكبير نصر الدين بيرأحمد بن ألب أرغون (٦٩٦-٧٣٣ه/ ١٢٩٧-١٣٠٤م) مع غازان خان(٦٩٤-٧٠٣ه/ ١٢٩٤م-١٣٠٣م)، في حملته على بلاد الشام (howorth, 1880,v3,p483)، وذُكرأن أفرسياب هو الآخر ذهب إلى الإيلخان غازان خان للحصول على دعم منه،لإدارة لورستان الكبرى، ولكن لسوء الحظ إلتقى عند رجوعه بأردوكا قائد غازان خان، وأصحبه أردوكا مرةًأخرى إلى غازان خان، واشتكى لأفرسياب



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

لدى غازان خان، بأنه منع رجال أتابكيته مناءعطاء الضريبة والعلف لجيشه،لهذا فقد غضب غازان خان، وأمر بقتله وتولّى أخيه نصر الدين بير أحمد محله (howorth, 1880,v3,p407)

عندما وصل هولاكو إلى بلاد لورستان، كان يحكمهاثا لث حكامها وهو تكيلا بن هزار أسب(٦٤٦-٦٥٦ه/١٢٤٨-١٢٥٨م)، الذي شارك بدوره مع هولاكو في إسقاط بغداد، وأنعم عليه منصب تومان- أي فيلق(شبنكارة، ١٩٦٥م، ص٢٠٨)، هناك من رأى بأنه شارك في الحملة مضطراً (كاكةى، ٢٠١٣، ص١٠٩م)، ويذهب البدليسي إلى أن سبب رجوع تكلةمن بغداد، وهو أن هولاكو"نمى إليه أن أتابك تكلة تألم من مقتل الخلفة"(البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٣١)،ولكن يبدو أن تكيلا ندم على فعلته، عندما شاهد المغول يقتلون الخليفة، و ترك معسكر المغول ورجع إلى لورستان، لذا عندما علم هولاكو بذلك، بعث رجاله ورائه وعندما علم تكيلا فقد قصد أخيه شمس الدين ألب أرسلان، لطلب الشفاعة من معسكر المغول له، كان تكيلا قد تحصَّن في قلعة مانجشت، وعندما سمح له بتسليم نفسه إلى المغول، ترك القلعة وأ خذها المغول إلى تبريز وقتلوه هناك، وأعطيت قيادة الأتابكية إلى أخيه شمس الدين ألب أرسلان(٦٥٦-٦٧١ه/ ١٢٥٨- ١٢٧٢م)(البدليسي، ٢٠٠١م،ص١٢٩؛ howorth, 1880,v3,p140).

كان يوسف شاه الأول ألب أرغون (٦٧٢-٦٨٨ه/ ١٢٧٣-١٢٨٩م)، قد أُمِرَ من قِبَل أرغون خان،إيلخان المغول في فارس بإلقاء القبض على شمس الدين الجويني، صاحب ديوان المماليك في عهد هولاكو، وابنه أحمد تكودار(ابن الفوطي، ١٩٩٥، ص٤٧٤).

يبدو أنه كان يربط يوسف شاه بن ألب أرغون (٦٧٢-٦٨٨ه/ ١٢٧٣-١٢٨٩م)، بأباقا خان بن هولاكو(٦٦٣- ٦٨٠ ه/١٢٦٥-١٢٨٢م)، وابنه أحمد تكودار(٦٨١– ٦٨٣ه/ ١٢٨٢– ١٢٨٤م)، وأرغون خان(٦٨٣- ٦٩٠ه/١٢٨٤—١٢٩١م)، علاقة حسنة نتيجة لخوضهِ حروب كثيرة بجانب إيلخانات المغول في فارس(البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٣٣)، أنَّ العلاقة قد تدهورت بين الأتابكية وإيلخانية فارس، في عهد أتابك أفراسياب بن يوسف شاه(٦٨٨-٦٩٥ه/١٢٨٩-١٢٩٥م)، وذلك لكونه شخصية طامحة للإستقلال عن إيلخانية فارس،فقام بسلسلة من الإجراءات للإعلان عن إستقلاله، كإمتناعهَ عن دفع الضرائب لإيلخانية فارس (إقبال، ١٩٨٩م، ص٥٣٨؛ الدليمي، ٢٠٢٢، ص٣٣)، وأمر صاحب أصفهان بقراءة الخطبة بإسمهِ، وأرسل جيش يقودوهم أقربائه إلى حدود كرمان وفارس، لمحاربة المغول، وصمَّم على إحتلال تبريز عاصمة المغول(القزويني، ١٩٣٧م، ص٥٤٧؛ البدليسي، ٢٠٠١م، ص١٣٢)، في عهد الإيلخان كيخاتو خان.

يبدو أن العلاقة عادتإلى شكلها الطبيعي، على كانت عليها قبل حكم كيخاتو، لا سيما في عهد السلطان غازان خان، وترك أفرسياب أخيه نصرالدين أحمد في تبريز، ربما لطمأنة المغول على تأييدهِ لسياسة غازان خان،ولكن غازان خان قضى عليه، لسوء سيرة أفرسياب تجاه إيلخانية

فارس، وعيَّن محلهُ أخاه (القزويني، ١٩٣٧م، ص٥٤٨؛ إقبال، ١٩٨٩م، ص٥٣٨)،وقد ذكرابن بطوطة عنأتابك نصر الدين أحمد أخي الأتابك أفرسياب، أنه إبنه وليس أخيه، وذلك بالقول: وملك إيذج في عهد دخولي إليها، السلطان أتابك أفراسياب ابن السلطان أتابك أحمد،يظهر أن العلاقة بين لُرستان والمغول كانت جيدة، وذلك من قولهِ: "ويبعث منه هديّة لملك العراق في كلّ سنة، وربّما وفد عليه بنفسه"(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٤)، ويؤكد القزويني أنَّأفرسياب وأحمد كان أخوة، حيث سلم أفرسياب أتابكية لورستان، وعمل نصرالدين بير أحمد في أوردو(ديوان) إيلخانيةفارسبتبريز(١٩٣٧م، ص٥٤٦).

### ٦. الجوانب الإدارية لإتابكية لورستان:

جاء ذكر بعض مصطلحات الإدارية المستخدمة في عصرهِ،أنها كانت موجودة في أرض لورستان منها على سبيل المثال أتابك[2]، وأشار إلى جانب هذاإلى جملة من المصطلحات الإدارية الأخرى، في سياق كلامهِ عن إيذج، منها أنَّ "السلطان أتابك أفراسياب ابن السلطان أتابك أحمد، وأتابك عندهم سمة لكل من يلي هذه البلاد من ملك، وتسمى هذه البلاد بلاد اللّور... وقسم خراج بلاده أثلاثاً، فالثلث منه لنفقة الزوايا والمدارس، والثلث منه لمرتّب العساكر، والثلث لنفقته ونفقة عياله وعبيده وخدّامه"(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٤)، يلاحظ من النص تطرق ابن بطوطةإلى ذكرجملة من المصطلحات الإدارية، منها الخراج،هذا وقد ذكر ياقوت الحموي خراج إيذج بقولهِ: "ويفتتح خراجها قبل النّوروز الفارسي بشهر" (ياقوت الحموي،١٩٩٥،ج١،ص٢٨٨)، من المعلوم أنَّ ياقوت الحموي توفي سنة (٦٢٦هـ/١٢٢٩م)،وكانت أتابكيةلورستان تُحكم من قِبل هزارأسب آنذاك.

وقد عُرفتكلمة الأتابك أعلى أنها تعني: من يليالحكم هذه البلاد من ملك،ومن ثم أستخدم إبن بطوطة مصطلحاً إدارياً ككلمة الملك وهو من يترأس البلاد "وكان أحمد المذكور ملكاً صالحاً"وكان نصرالدين بير أحمد ذوميول مغولية، لذا عمل على نشر الثقافة المغولية،فقامبترتيب إدارة الأتابكية على غرار إيلخانية فارس،إذ عيَّن نائباً له، وقائداًللجيش (القزويني، ١٩٣٧م، ص٥٤٢؛ زكي،١٩٣٧، ص١٤٤؛ الدليمي، ٢٠٢٢، ص٣٠).

عينالأتابك بير أحمد (٥٠٠) شخص في إدارة الحساب، وتوزيع الأُعطيات والمساعدات، وكان يبعث هذه الأعطياتإلى شرق البلادوغربها(شبنكارة، ١٩٦٥م، ص٢٠٨).

ومن المصطلحات الإدارية الأخرى التي ذكرها ابن بطوطة في رحلته عن ي ذكرها ابن بطوطة في رحلته عن أتابكية لورستان، أنه ذكر كلمة (الأمير) وكررهاأكثر من مرة، وخصَّ بها من يجلس في ديوان الإيلخانية في عهد أبي سعيد بهادر (٧١٧-٧٣٦هـ/ ١٣١٧-١٣٣٥م)، فقال عن ذلك: "الأمير الجوبان عظيم أُمراء العراق، والأمير سويته، أمير ديار بكر"(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٥)، ولكن يلاحظ أن إبن بطوطة، قد سمىإيلخان فارس أبي سعيد بهادر بملك العراق فقال:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

"قدم السلطان أتابك أحمد مرّة على ملك العراق أبي سعيد" يبدو أن إبن بطوطة قد توهَّم في إستخدام هذا المصطلح في النص السابق، إذ أنه من المعلوم أنَّ المغول كانوا يستخدمون كلمة إيلخان بدلاً من كلمة الأمير أو السلطان، وأما بخصوص العراق فان إسم الإيلخانية كانت فارس، وكانت تحكم إيران والعرق،وبعضاً من بلاد الشام والأناضول، وأما المصطلح الآخر الذي ذكره إبن بطوطة وهو "القضاة والفقهاء والإشراف والأمراء، قد ذهبوا إلى دار السلطان"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٥)، وأما مصطلح الأشراف فهو من المناصب الإدارية التي ذكرها إبن بطوطة، ولكن لم يذكر المهمة التي كانت موكلة إليه، وذكر ابن بطوطة مصطلح آخر في ديوان إدارة الدولة، وهو رئيس الفقهاء وذلك بقوله: "ثم جاء فقيه كبير هو رئيس فقهاء تلك البلاد"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٨).

أورد ابن بطوطة كلمة الفقهاء أربع مرات، في سياق كلامهِ عن أتابكية لورستان، وفي مواقف مختلفة تارة في مسجد مدينة تستر(١٩٩٦، ج٢، ص٢٢)، وتارةً في ديوان الأتابكية "إن كبراء المدينة من القضاة والفقهاء والأشراف والأمراء، قد ذهبوا إلى دار السلطان للعزّاء"يبدو أن إبن بطوطة قد صاحب بعض الفقهاء، وقد عبَّر عن حُبهِ لهم، بذكرهِ في جميع المواقف منها في ديوان الأتابكية، وفضلاً عن ذلك ذكر مصطلح(رئيس الفقهاء)وذلك من خلال قولهِ: " جاء فقيه كبير هو رئيس فقهاء تلك البلاد، فقال لي السلطان: هذا مولانا فضيل، والفقيه ببلاد الأعاجم"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٨).

## ٧. الحياة الإقتصادية لأتابكية لورستان:

كانت الأوضاع الإقتصادية مزدهرةً بشكل عام، في عهد هزارأسب الأول (٦٠٤-٦٢٧هـ/ ١٢٠٧-١٢٢٨م)، في لا سيما في المجالين الزراعي والتجاري، وإتسعت معالم النهضة العمرانية، حيث بُنيت قرى ومدن ومؤسسات خيرية وتعليمية على طول البلاد(زكي،١٩٣٧، ص١٣٧)،وقد ذكر هورث أنَّ الأحوال الإقتصادية كانتمزدهرةً في الأتابكية على عهد هزارأسب ( howorth, 1880,v3,p358)، وأما في عهد نصرالدين بيرأحمد الذى حكم (٣٨) سنة،فقدأصبحتالأتابكيته موضع الحسد، لإرساء العدالة و توافرالسلع فيها بأنواعها(howorth, 1880,v3,p307)، وتطورتأحوال الرعية نحو الأحسن، وامتلأت خزائن الدولة(القزويني، ١٩٣٧م، ص٥٤٨)، وهذا يعني بأنَّالأتابكية كانت قد إزدهرت في مجال الزراعة، في عهد ألبأرغون أيضاً ( howorth, 1880,v3,p358)، يذكر هورث أنَّ النقود كانت تُضرب بإسم أتابك لورستان أفرسياب الأول(٦٨٨-٦٩٥هـ/ ١٢٨٩-١٢٩٥م) في تبريز (العياوي، ٢٠٠٥، ص١١٠؛ howorth, 1880,v3,p358)، وأما مدينة رامهرمز التي ورد ذكرها في رحلة ابن بطوطة بـ(رامز)فقد إشتهرت بدودة القز التي يصنع منها الأقمشة الحريرية، وكانت بها أسواق كانت قد بُنيت في عصر عضد الدولة البويهي(ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢ ، ص٢٧٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

١,١. الزراعة:

كانت لورستان غنية بالأمطار، لذا كانت تزرع الحبوب فيها، وربما كانت تصدرها عن طريق البحر، وهذا الذي يظهر من كلام إبن بطوطة عند كلامهِ عن نقل الحبوب من رامهرمز إلى ماجول عن طريق بحر فارس بقولهِ: "يجلبون الحبوب من (رامز) إلى (ماجول)"(١٩٩٦، ج٢، ص١٨)، ومما يدل أنَّ مناطق لورستان كانت تتساقط فيها الأمطار بكميات كبيرة،أنَّهم كانوا يملكون مزارع تعتمد على السقي الدائم او مايسقى من السماء،من خلال الأمطار الموسمية، في هوة، ولهم زراعية مائية كقصب سكر (ياقوت الحموي، ١٩٩٥م،ج١،ص٢٨٨) يظهر أن السبب الآخر لتوافر الحبوب في رامهرمز بوفرة، يعود إلى وجود سهول واسعة فضلاً عن تساقط الأمطار المناسبة(المقدسي، ١٩٩١، ٤٠٧).

ووردتإ شارة عند ابن بطوطة، تدل على وجود أدوات لرفع المياه لإرواء المحاصيل الزراعية،فعند زيارتهِ لمدينة تستر ذكر وجود البساتين والدّواليب على جانبي النّهر، والنهر كان عميقاً(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠) ووصف تستر عند وصوله إليها بأنها وأول الجبال، مدينة كبيرة، رائقة نضيرة، وبها البساتين الشريفة، والرياض المنيفة، ولها المحاسن البارعة، والأسواق الجامعة"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠)،وأمَّا ثمارهم وزروعهم، فإن الغالب على نواحي خوزستان كان وجود النخيل، والحبوب كانت من الحنطة والشعير والأرز فيخبزونه(ياقوت الحموي، ١٩٩٥م،ج٢،ص٤٠٥).

١,٢. صناعة السكر والحلويات:

كانت صناعة السكر والحلوى، من أبرزالتقاليد في منطقة لورستان، لا سيما بمدن (عسكر مكرم،وتستر والسوس)،فكانتاتُحمل إليهما القصب من النواح الأخرى، والذي كان في هذه المدن الثلاث من بلاد لورستان، إنما يكون بحسب الأكل لا أن يستعصر منه السكر، وعندهم عامة الثمار ما عدا الجوز (ياقوت الحموي، ١٩٩٥،ج٢،ص٤٠٥)،والسوس مدينة ليست بالكبيرة جداً، لكنها كانت متحضرة، ولها بساتين ونخل وقصب كثير كان يصنع منه السكر الكثير(الإدريسي، ١٩٨٩، ج١،ص٣٩٦)،توجد إشارات كثيرة في كتاب رحلة إبن بطوطة،عن صناعة الحلوى في المناطق التي زارها، فذكر صناعة السكر في مدينة تستر(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٣)، وكانت السوس هي الأخرى تنتج السكر وهي وقريبة من تستر(المقدسي، ١٩٩١، ص٤٠٧)،فقد ذكر ابن بطوطة كلمة (الحلواء) في سياق كلامهِ "والخبز واللحم والحلواء" يفهم من قولهأنَّ الحلواء كانتتُقدم مع الطعام،وفي تعبير آخر ذكرإبن بطوطةانَّتقديم الحلواء مع الطعام كان من العادات المتبعة في مدينة إيذجأيضاً(١٩٩٦، ج٢، ص٢٥)،وكانت تُصنَعُ أجود الحلواء في إيذج، وكانت تسمى بـ(فانيذ) وقد ذكرها ياقوت الحموي بقولهِ: "وفانيذها" (١٩٩٥م،ج١،ص٢٨٨)،وربما لشدة حبه لحلواء إيذج، فقد أشار إلى طريقة صنعها بقوله: "وحلوائهم منرَبّ العنب، مخلوطاً بالدقيق والسمن"(١٩٩٦، ج٢،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ص٢٠-٢١)، كانت صناعة الحلواء عملية أكثر تعقيداً من السكر،إمتهن سكان مدينة إيذج حِرَف كثيرة، مان أبرزها صناعة السكر، فقد وفرت فرص العمل لسكان المدينة"أحذق الأمة في إيجاد أنواع السكر"(ابن فقيه، ١٩٩٦م، ص٣٩٩)،ويصف المقدسي (ت٣٨٠هـ/ ٩٩١م) وجود حلويات رخيصة بقولهَ: "وحلاوات رخيصة"(١٩٩١، ج١، ٤٠٧)، ويبدو لكثرتها ووفتها وأما الصناعة الأخرى التي ورد ذكرها في رحلة ابن بطوطة وهي صناعة الدقيق الخبز بقوله: "وشجرها البلّوط، وهم يصنعون من دقيقه الخبز"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠-٢٥)،ربما قد بالغ ابن بطوطة في صناعة صنع الخبز،إذ هناك من يقول: "وعندهم من الحنطة والشعير شيءٌ كثير، والأرز وسائر أنواع الحبوب، وهم يطبخون الأرز ويتخذون منه خبزاً، يأكلونه ويفضلونه على الحنطة"(الحميري، ١٩٨٠، ص٥٦٠).

**٣ ,١ . الملابس:**

ورد في سياق رحلتهِ ذكر أتابكية لورستان، فأشارإلى نوع ثياب الكُرد اللوري يصنعون من الشعر، لاسيما أمرائهم، ويظهر ذلك عند حديثهِ عن أتابك أحمد بقوله: "وظنّ ثوب الشّعر الذي تحت ثيابه درعا"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠-٢٥)، وهناك إشارة من ابن بطوطة إلى وجود ملابس مصنوعة من القطن يلبسونها في أيام الحزن،وقد لبسوا فوق ثيابهم ثياباً، من خامة غليظة من القطن غير محكمة الخياطة، بطانتها إلى أعلى ووجوهها مماّ يلي أجسادهم، وعلى رأس واحد منهم قطعة خرقة أو ميزر أسود(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠-٢٧)،كانت صناعة الملابس القطنية من حرف أهل لورستان في تستر(المقدسي، ١٩٩١، ج١، ٢٧٧)،وأما النوع الآخر من الملابس التي ورد ذكرها في رحلته في أتابكية لورستان، وهي ثوب عامة الشعب مصنوعة من الصوف وصفها إبن بطوطة، بثوب الضعفاء يقصد بها انَّ الفقراء كانوا يلبسونها أيام البرد ويظهر ذلك من قولهِ: "عليه ثوب صوف شبه اللّبد، يلبسه بتلك البلاد ضعفاء الناس أيام المطر والثلج، وفي الأسفار"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠-٢٧)، وصناعة السجادة هي جزء من صناعات بلاد اللور، ولم يستغنِ إبن بطوطة عن ذكرها بقولهِ: " سجّادة خضراء ففرشت"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠-٢٧)،حتى أصبح ديباج إيذج مورد دخل للأتابكية،فكانت تُصدر الزائد منه عن حاجتهاالى خارج الأتابكية، حتى وصل ديباجها إلى الأرض المقدسة فكان "ينسج بها ديباج كسوة الكعبة" (الإدريسي، ١٩٨٩م، ج١، ص٣٩٦؛مؤلف مجهول،٢٠٠٢م، ص١٥٠)، يبدو انَّ تستر كانتينسج فيها الديباج وغيره من أنواع الحرير، والخزّ بالسوس والسّتور والفرش ببلاد بصنامن أرض اللور (الاصطخري، ٢٠٠٤، ص٨٩)أوبلورستان كما ذكر ياقوت الحموي (١٩٩٥،ج٥، ص١٦)،فقد إشتهرت مدينة تستر بصناعة الحريروالثياب(المقدسي، ١٩٩١، ٤٠٩) وهناك نوع آخر من الثياب ذُكرت بإسمالتلاليس وجلال الدوّاب، وقال:أنّأولاد الأمراء والوجهاء كانوا يلبسونها(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠-٢٦)، يبدو أن التلاليس هي الطلاليس، مفردها طلس:وهو شال أو منديل مستطيل الشكل، يضعه اليهود على أكتافهم في مراسيم مهمالدينية مثل صلاة الصبح، ويسمى الطاليس بالعبري طاليت



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

(الشامي، ٢٠٠٠م،ص٥٩)،و من المعلوم أنَّ اليهود كانوا جزءاً من المجتمع في مدينتي سوس وتستر،وهناك نوع من الثياب التستري يعرف بالثياب المروية(المقدسي١٩٩١م، ص٤١٦)، يبدو أن هذه الملابس كانت خفيفة بحيث كان يمكن الرؤية من خلالها.

**٤,١. الأسواق:**

عندما خرج إبن بطوطة من البصرة في طريقهِ إلى لورستان،ووصل إلى مدينة ماجول، كأول مدينة لورستانية فإنه يشير إلى سوق (ماجول) ووصفها بأنها كانت"صغيرة على ساحل هذا الخليج، الذي ذكرنا أنه يخرج من بحر فارس، وأرضها سبخة لا شجر فيها ولا نبات، ولها سوق عظيمة من أكبر الأسواق، وأقمت بها يوما واحداً"(١٩٩٦، ج٢، ص١٨) وفي وصفهِ لسوق تستر يشير إلى وجود طباخين يطبخون الطعام في السوق بقولهِ: "كيف تفعل هذا وتطبخ الطعام في السوق"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٣)، و من هذا يبدو أنه كان سوقاً كبيراً وذو إختصاصات كثيرة، ودكاكين متنوعة، لذا كان الطعام يطبخ في السوق، ووصفها بالأسواق الجامعة،أي مجموعة من الأسوق ذو تخصصات متنوعة(إبن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص١٨)، ثم يأتي ابن بطوطةعلى وصف أسواق تستر فيقول: "ولا مثيل لأسواقها في الحسن"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٢)، ربما لأنها كانت سوقاً مزدحمةً يزورها الناس من كافة الأرجاء، وذات خصائص كثيرة وقد قال المقدسي عنها:"لقد إستطبتها وإستحسنتها ترى اسواقاً سوية،وخصائص كثيرة يُرحل إليها من لامشرق والمغرب"(المقدسي،١٩٩١م، ص٤٠٩)، وقد وصف الإدريسي سوق تستر بأنَّها كانت متحركة وذلك بقولهِ وهي: " سوق متحركة، وبها بيع وشراء وهي رصيف متوسط، لمن جاء من فارس يريد العراق"(الإدريسي، ١٩٨٩، ج١،ص٣٩٨)، وكانت السوس قصبة عامرة طيّبة ولها أسواق بهيّة وأخباز حسنة(المقدسي، ١٩٩١م، ص٤٠٧)،التي تبعد عن تستر على مسيرةمرحلتين، أي نحو (٩٠) كم (الأصطخري، ٢٠٠٤،ص٩٦)، فقد زار إبن بطوطة مدينة رامز(رامهرمز)، ووصفها بأنَّها كانت مدينة حسنة، وزار مشايخها وظلَّ فيها يوماً واحداً على ما يبدو، لذا لم يتمكن من الخروجإلى زيارة أسوقها، حيث كانت بها أسواق عامرة، وخيرات كثيرة وجامع بهيٍّ، عنده أسواق في غاية الحسن(المقدسي، ١٩٩١م، ص٤٠٩).

**٨. الحياة الثقافيةلأتابكية لورستان (المدارس[3]والزوايا[4]):**

ذكر إبن بطوطة خلال مرورهِ بأراضِ أتابكية لورستان الكُردية،إسم المدرسة (١٢) مرة، وذكر إسم الزوايا (١١) مرةً أيضاً،بشكلٍمستقلٍ، وعبر إبن بطوطة عن رأيه تجاه المدارس والزوايا في الأتابكية بقولهِ: "وفي كلّ منزل من منازلها زاوية يسمونها المدرسة"(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٥).

ربما يعود سبب تسمية المدرسة في أتابكية لورستان، لأن المدارس كانت موجودة في بلاد الكُرد قبل الإسلام، حيث كانت هناك مدارس يهودية ونصرانية(عبوش، ٢٠٠٤، ص١٣٣)،وقد ذكر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ابن بطوطة أن مسيرة خروجهِ من عاصمة الأتابكية إيذج أذها استغرقت (١١) يوماً، وفي كل يوم كان يقف في إحدى مدارسها، ويبيت ويأكل فيها(١٩٩٦، ج٢، ص٢٨)،يفهم من كلام ابن بطوطة،أنّهُ في كل منزل من المنازل التي نزل بها، من المدن والقرى التابعة للأتابكية كانت توجد فيها مدرسة.

بالرغم من كثرة المدارس والزوايا، التي مرَّ بها إبن بطوطة، لكنه لم يذكر سوى أسماء قليلة منها ومن أشهر الزوايا والمدارس التي ذكرها:

١،١. **مدرسة السلاطين:** كانت خارج مدينة إيذج، وسميت بالسلاطين لوجود قبور أمراء الأتابكية فيها(١٩٩٦، ج٢، ص٢٨).إهتم أتابكيي لورستان إهتماماً كبيراً بالمدارس والزوايا العلمية،فكانت صرالدين بيرأحمد رجلاً محباً للعلم والعلماء، فقد بُني في عهدهِ (٤٦٠) زاوية(مدرسة) ومنها (٤٤) في إيذج عاصمة الاتابكية وحدها، وأوقف عليها أوقافاً جليلة (ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٤)،وكان يشمل بصدقاتهِ جميع الناس، بما فيهم العلماء والفقهاء(شبنكارة، ١٩٦٥م، ص٢٠٨).

١،٢. مدرسة الشيخ الامام الصالح المتفنّن (شرف الدين موسى بن الشيخ الصالح) في تستر (ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٢).

١،٣. **مدرسة (هلافيحان)**، كانتتقع على مسافة أربعة أميال من المدينة، وكانت مدرسة عظيمة، كان نهر تستر يمر عبرها (ابن بطوطة، ١٩٩٦،ج٢، ص٢٧).

١،٤. **مدرسة كريو الرّخ**:تقع في آخر بلاد الأتابكية، على حدود أصفهان(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٨).

وقد إهتم أمراء الأتابكية بإنشاء الزوايا،وقد ذكر ابن بطوطة أنه كانت توجد زاوية بين كل مرحلة وأخرى(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص١٩)، وذلك أن هذهِ الزوايا كانت تقوم بتوفير المأكل والمأوىلعابري السبيل(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص١٩)، كان يوجد في جميع الزوايا شيخ أو إمام و مؤذن و خادم للفقراء، والعبيد و كان الخدم يطبخون الطعام(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٠)،وقد ذكر ابن بطوطةأسماء بعض الزوايا منها:

٢،١. زاوية الدينوري في مدينة إيذج (ابن بطوطة١٩٩٦، ج٢، ص٢٤).

٢،٢. زاوية الضحوة بإيذج (ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٤).

٢،٣. زاوية زين العابدين علي بن الحسين بن علي بن أبى طالب:بها جماعة من الفقراء في تستر، وهم يزعمون أنها تربتهُ(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٢).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

### ١,٣. العلماء:

ذكر ابن بطوطة جملة من أسماء العلماء في أتابكية لورستان، فذكر أنَّه بإسماعيل من أولاد ابي زكريا الملتاني(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص١٩)، يبدو أنَّه من نسل المحدث زكريا بن محمد بن علي القرشي الأسدي، شيخ الاسلام بهاءالدين بن وجيه الدين بن كمال الدين أبو محمد الملتاني، ولد بقلعةكوث كرور من أعمال ملتان سنة (٥٦٦/ ١١٧١م)(الطالبي، ١٩٩٩م،ج١، ص٩٩)، وهناك من يرىبأنه أبو زكرياء صوابه زكرياء بهاء الدين (٥٧٩-٦٦٥هـ/ ١١٨٣-١٢٦٧م)، وهو خراساني الأصل الممثل الأساس للزاوية السّهروردية بالهند (التازي، ١٩٩٧، مج٢، ص ١٨، هامش رقم 69) كان محباً لمجالس العلماء والأدباء(إقبال، ٢٠٠٠م، ص٤٣٧؛ كاكةى، ٢٠٠١٣، ص١١٠)ونتيجة لحبهِ للعلماء ودعمهِ لهم، فقدأهدى شرف الدين فضل الله الحسيني نسخة من كتابهِ(معجم آثار ملوك العجم)(الحسيني، ٢٠٠٥، ص١٨)للأتابك نصرالدين بيرأحمد (٦٩٤-٧٣٣ه/ ١٢٩٥-١٣٣٣م) (إقبال، ١٩٨٩م، ص٥٤٩)، وأهدى أبو إسحاق بن محمود إينجو نسخة من كتابهِ (معيار نصرتي) الذي ألَّفه باللغة الفارسية إلى الأتابك نفسه سنة (٧٤٥ه/ ١٣٤٥م)، ثم كتاب تجار السيف لهندوشه سنجر النخشواني سنة (٧٤٤هـ/ ١٣٤٤م)، وهي ترجمة لكتابهِ المعروف بتاريخ الفخري لابن الطقطقي (إقبال، ١٩٨٩م، ص٥٤٩).

لقد أشارإبن بطوطة في سياق كلامه،إلى مجموعة من العلماء والشيوخ في مدينة تستر، كان قدإلتقى بهم مثل "الشيخ الإمام الصالح المتفنّن شرف الدين موسى، بن الشيخ الصالح الإمام العالم، صدر الدّين سليمان، وهو من ذريّة سهل ابن عبد الله، وهذا الشيخ ذو مكارم وفضائل لهُ زاوية" جمع بين العلم والدين والصلاح والإيثار(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٢).

يبدو أن شيخ شرف الدين موسى، كان يعمل كمدرس في تلك الزاوية، وإماماًللصلاة في أيام الجمعة،فكان يساعد الفقراء والمحتاجين في الوقت نفسه،وربما كان لزاويتهِ او مسجدهِ،إيرادات مالية،إذ كان لهُ خمسة عشرطالباً قدّموا من البصرة، وعشرُطلاب من عوّام تستر، الى جانب ذلككان خطيباًللمسجد،كان يعظ الناس بعد صلاة الجمعة بالمسجد الجامع، وأخذ على عاتقهِ مساعدة الفقراء والمحتاجين في المسجد(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٢ -٢٣).

ذكر إبن بطوطة في من خلال رحلتهِ،أسماء بعض الفقهاء في لورستان الكبرى،في زاوية شرف الدين موسى مثل"الفقيه شمس الدين السندي من طلبتها" (١٩٩٦، ج٢، ص٢٣)، وكان من الفقهاء الذين كانوا يبيتون في المسجد، ولكن المصادر لم تذكرشيئاً عن أصلهِ ودورهِ في الحياة العلمية.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وذكر ابن بطوطة شيخاًإسمه يحيى الخرساني(١٩٩٦، ج٢، ص٢٣)، والشيخ نورالدين الكرماني، وله النظر في جميع الزوايا، وكان يجلس في زاوية الدينوري ويدرس الطلاب فيها (١٩٩٦، ج٢، ص٢٣-٢٤).

٩. مدن وقرى لورستان:

هنالك مدن وقرى كثيرة في لورستان، كانت موجودةإبان زيارة ابن بطوطة إليها، لكن يلاحظ أنهُ ذكر المدن الكبيرة، كمدينة إيذج التي كانت حاضرة أتابكية لورستان الكُردية(٥٥٥-٨٢٧هـ/ ١١٦٠-١٤٢٤م)، وتستر، ورام هرمز، وقد اغفل عن ذكر مدن وبلدات أخرى ورد ذكرها في كتب الرحالة والجغرافيين.

لقد ورد ذكر إسم مجموعة من المدن القريبة من المدن التي زارها ابن بطوطة، لكنه أهمل ذكرها وقد حدد الأصطخري بعض المدن ومسافاتها بقولهِ: "من رامهرمز إلى عسكر مكرم ثلاثة مراحل، ومن عسكر مكرم إلى تستر مرحلة، ومنتستر إلى جندى سابور مرحلة، ومن جندى سابور إلى السوس مرحلة، ومن السوس إلى قرقوب مرحلة، ومن قرقوب إلى الطيب... ومن العسكر إلى إيذج أربعة مراحل"(٢٠٠٤،ص٩٦)، يلاحظ أن جندي سابور وعسكر مكرم والسوس التي تبعد عن إيذج عاصمة أتابكية لورستان بأربعة فراسخ والتي تسمى عروج(لسترنج، ١٩٥٤، ج٢، ص٢٨٠)، ومدينة لردكان أو لركان، والتي هي مشتقة من إسم اللور(لسترنج، ١٩٥٤، ج٢، ص٢٨٠)، ومدينة بروجرد وهي إحدى مدن لورستان، كانت تروي بمياه التي تخرج من دزفول، وكان أكثرية سكانها من الكُرد البختيارية (الداودي، ٢٠١٠م، ص٣٦)، قد أغفل ابن بطوطة عن ذكرها رغم أهميتها وقربها من إيذج العاصمة.

١,١. مدينة رامهرمز:

لقد ذكر ابن بطوطة هذه المدينة ثلاثة مرات، وبصيغة (رامز)، ويصفها بأنها مدينة جميلة وذات فواكه وأنهار (ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص ١٨) والعامّة يسمونها رامزكسلاً منهم عن تتمة اللفظة بكاملها، واختصاراً لرامَهُرْمُز، ومعنى رام بالفارسيّة المراد والمقصود، وهرمز أحد الأكاسرة، فكأنّ هذه اللفظة مركبة ومعناها: (مراد هرمز، أي أُمنية هرمز) (ياقوت الحموي، ١٩٩٥م، ج٣، ص١٧)، ويصفها ابن الفقيه بأنها "مدينة كبيرة نزهة، ذات نعم وفيرة، يجتمع بها التجار، تقع على الحد بين فارس وخوزستان" (١٩٩٦م، ص٥٣٤).

كان أهل رامهرمز يشربون من نهر طاب (ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢ ، ص٢٧٨)، والذي ينبع من تخوم أصفهان ويمر بتخوم لورستان، ومدينة إيذج، وتعرف اليوم بنهر جراحي كوردستان (الداودي، ٢٠١٠م، ص٣٠)، ومازالت رامرهرمز تعرف بهذا الاسم، وإنما سميت بهذا الإسم نسبةً إلى الملك هرمز حفيد أردشير بابكان الساساني (ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢ ، ص٢٧٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

### ١,٢. مدينة تستر:

هي ربما تعريب لـ(شوشتر)ومعناها الحسن والطيب واللطيف ( ياقوت الحموي، ١٩٩٥م، ج٢، ص٢٩)،أو تعريب لـ(ششتر) ( صفي الدين،١٩٧٣، ج٣، ص٢٦٢)، توجه ابن بطوطة نحو مدينة تستر، ورأى في طريقه قرى وبلدات الكُرد على طول الطريق،لكن من دون ذكر أسمائها، ويذكر محطات وقوفهِ في الزاوية، في كل مرحلة التي تدعم المسافرين بالأكل والإيواء، ثم يصل مدينة تستر ويقول: "وأول الجبال، مدينة كبيرة، رايقة نضيرة، وبها البساتين الشريفة، والرياض المنيفة، ولها المحاسن البارعة، والأسواق الجامعة، وهي قديمة البناء افتتحها خالد بن الوليد، وولّي هذه المدينة ينسب إلى سهل بن عبد الله، ويحيط بها النهر المعروف بالأزرق"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠)، ويعد نهر تستر من الأنهار المهمة، والذيينبع من جبال أصفهان، وكان يُعد من أعظم الأنهار في وقتها، وقد بُني عليهِ جسر في ذلك الوقت، وكان له باب بإسم شاذردان الذي بناهُ شابور ذو الأكتاف(الداودي، ٢٠١٠م، ص٣٠)، ويصف إبن بطوطة أبوابها بقولهِ: "والدّروازة عندهم الباب، ولها أبواب غيره شارعة إلى النهر، وعلى جانبي النّهر البساتين والدّواليب، والنهر عميق، وعلى باب المسافرين منه جسر على القوارب"(١٩٩٦، ج٢، ص٢١)،ويبدو أنَّه يقصد من الدروازة القنطرة، التي كانت كطاق العجيب على باب تستر من جانب النهر(ياقوت الحموي، ١٩٩٥م، ج٢، ص٤٠٥)، وقدر ذُكر أنَّ قنطرتها كانت تُعد من عجائب الدنيا (صفي الدين، ج٣، ص١٣٦).

### ١,٣. مدينة دزفول:

دزفول أي (قنطرة دز) أو قنطرة القلعة على نهر دز، جنوب جند يسابور، وسميت بذلك لأنه يقال بأن سابور الثاني كان قد بناها(ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢ ، ص٢٧٣)، وسمي نهر دزفول نسبةً إلى إسم المدينة،وكان النهر ينبع من مرتفعات أصفهان ولورستان، وأما فرعها الآخر فينبع من جبال البختيارية ويلتقي النهران عند مدينة بند قير(الداودي، ٢٠١٠م، ص٣٠)أي عسكرم مكرم كانت تعرف(رستقباذ)،وتسمى الآن ببند قير (ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢، ص٢٧٢)، لكن إبن بطوطة لم يتطرق إلى ذكرها على أنهامدينة مستقلة وقديمة وعامرة أثناء رحلته أليها، بل أشار إلى أحد أبواب مدينة تستر الذي كان يسمى بباب ديسبول، ويظهر ذلك من قولهِ: "ولها باب واحد للمسافرين، يسمّى دروازة دسبول، والدّروازة عندهم الباب"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٠)، ربما كان الباب الغربي لتستر كان يسمى بباب دزفول.

وذلك لان مدينة دزفول تقع على بعد ثمانية فراسخ أي حوالي (٤٨)كم، غربي تستر، وتسمى بقايا أطلالها اليوم بشاه آباد(ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢، ص٢٧٣) ولها نهر أيضاً.

### ١،٤. مدينة ايذج:

سماها ابن بطوطة بمال الأمير وحاضرة أتابكية لورستان الكبرى(١٩٩٦، ج٢، ص٢٣)، وهي أول مدن بلاد اللور، وكانت تسمى بمال الأمير اليوم ولاتسمى بإيذج (ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢، ص٢٨٠)، وقد ورد في لفظها الفارسي بـ(إيذه) (الداودي، ٢٠١٠م، ص٣٤)، ثم يأتي إبن بطوطة في وصف إيذج بقوله: "أنَّ أكثرها في جبال شامخة، وقد نُحِتَت الطرق في الصخور والحجارة، وسوّيت ووسعت بحيث تصعدها الدواب بأحمالها، وطول هذه الجبالوهي شاهقة، متّصل بعضها ببعض تشقّها الأنهار، وشجرها البلّوط"(١٩٩٦، ج٢، ص٢٤-٢٥).

وهي في وسط الجبال، يقع بها ثلج كثير يحمل إلى الأهواز والنواحي، وقنطرة إيذج من عجائب الدنيا المذكورة، لأنها مبنية بالصخر على واد يابس بعيد القعر( ياقوت الحموي،١٩٩٥،ج١،ص٢٨٨)، وتقع مدينةإيذج في رقعة بسيطة المكان، متاخمة للجبل المتصل بأصبهان، وبها متاجر وصنائع وأموال متصرفة وأسواق نافعة، وهي مدينة عجيبة(الإدريسي، ١٩٩٩م، ص٣٩٦)، أما من الناحية السكانية فكان أكثرية سكانها من الكُرد أيام الفتح الإسلامي(الداودي، ٢٠١٠م، ص٣٥).

### ١،٥. مدينة ماجول:

جاء ذكرها في رحلة ابن بطوطة بهذه الصيغة، وهي مدينة ماه شهر(mahshahr) على رأس خور موسى، والتي تقع في الخليج من جهة الشرق (التازي،١٩٩٧م، ٢مج، ص١٨، هامش رقم ٦٦)، وبعد إنطلاقه من مدينة ماجول إلى رامز، يشير إلى مدينة أخرى دون ذكر إسمها، بل يقول: فان سكانها من الكُرد وأصلهم من العرب يعيشون في بيوت مصنوعة من الشعر(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص١٨)، يبدو أنها مدينة أميدية، وموقعها في الطريق بين مدينة رامز وماجول( سحاب، ٢٠٠٦، ص٢٢)، والأرض التي في شمال دزفول وتستر، وشرقيهما كانت تعرف بصحراء اللور، وأهلها من قبائل اللور الكُردية(ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢، ص٢٧٤)، يذكرابن حوقل أنَّه لا توجد رمال في جميع أنحاء خوزستان، سوى أطراف تستر وجدي شابور وايذج(١٩٣٨، ج٢، ص٢٥٣).

### ١٠. القبور والمراقد الدينية في لورستان:

ذكر إبن بطوطة وجود قبور مقدسة في بلاد لورستان، كان يقصدها الزوّار للتبرك والتمجيد وذلك بقولهِ: "وبخارجها تربة معظّمة، يقصدها أهل تلك الأقطار للزيارة، وينذرون لها النذور، ولها زاوية بها جماعة من الفقراء، وهم يزعمون أنها تربة زين العابدين علي بن الحسين بن علي بن أبى طالب"(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص ٢٢)، يتبين من النص أنه كانيوجد نوعان من القبور،أغفل ابن بطوطة ذكر النوع الأول، وركّز على القسم الثاني في وجود زاوية في مسجد تستر بأنها تربة زين العابدين بن حسين بن علي (رض)، وهنالك إشاراتإلى وجود قبر محمد بن جعفر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الصادق وجماعة من الصالحين فيها (الهروي، ٢٠٠٢م، ص٨٣)،وينسب إليها قبر عبد الله التستري صاحب الكرامات(الداودي، ٢٠١٠م، ص٣٨)، و من كرامات لورستان ينسب إليها جماعة من ولد المهدي بن أبو جعفر المنصور في مدينة إيذج سنة (٧٤٥/١٢٧هـ م) (١٩٩٥،ج١، ص٢٨٨).

**١. الحياة الدينية والإجتماعية لأتابكية لورستان الكُردية**

**١,١. المساجد**

**٢. مسجد هلافيجان**

يُعد من العمائر التي أشار إليها ابن بطوطة على أنه رآها في أتابكية لورستان،كانت المساجد ذكر مقبرة الملوك التي كانت تسمى بـ(هلافيجان)، على بعد أربعة أميال إذ قال ابن بطوطة: "وهنالك مدرسة عظيمة، يشقّها النهر، وبداخلها مسجد تقام فيه الجمعة، وبخارجها حمّام، و يحفّ بها بستان عظيم وبها الطعام للوارد والصادر" (ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٧)،والغريب في قولهِ أن موقع المسجد الجامع كان داخل المدرسة، وكان من المعتاد في الزوايا والمدارس أنها كانت عبارة عن ملاحق بالمساجد (عبوش، ٢٠٠٤، ص١١٠)، وقد إتسعت معالم النهضة العمرانية على طول بلاد لورستان، في عهد هزار أسب الثاني،حيث انشاء مدن و قرى جديدة فضلاً عن المؤسسات الخيرية(زكي،١٩٣٧هـ، ص١٣٧).

**أ. مسجد تستر:**

أشار ابن بطوطة الى مسجد تستر الذي وصفه بالجامع، ووصف شيوخها وفقهائها دون الإشارة إلى موقع المسجد وحجمهوذلك بالقول: "وهو يعظ الناس بعد صلاة الجمعة بالمسجد الجامع" (١٩٩٦، ج٢، ص٢٢).

**ج. مسجد اشتركان**

ذكر ابن بطوطة أنه عندما خرج من إقليم لُرستان،فإنَّه وقف في مدينة اشتركان على حدود مدينة أصفهان،فأشار إلى مسجدها بقولهِ: "ولها مسجد بديع يشقّه النهر" (١٩٩٦، ج٢، ص ٢٩)،وتسمى بأشتر،مما ذكره السمعاني عنها، خروج جماعة من الزهاد والمتقشفين من اللور من مدينة أشتر في جبال أصفهان (السمعاني، ج١١، ص٢٢٧).

**د. جامع رامهرمز**

أشار ابن بطوطة إلى زيارة القاضي حسام الدين الملتاني، دون ذكر محل زيارتهِ في البيت أو الزاوية الخاصة بهِ(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص١٨)، علماًأنَّه كان يوجد فيالمدينة دار للكتب، على غرار دار الكتب في البصرة، يدرس فيها أصحاب العلم(ليسترنج، ١٩٥٤، ج٢ ، ص٢٧٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**١١. العادات والتقاليد الاجتماعية:**

لقد بقي إبن بطوطة فترة طويلة بين سكان الأتابكية،لكنه لم يُشِر إلى الطوائف الدينة أوالقومية لأهالي المنطقة،إلا نادراً، فقد ذكر أنَّالشعب الكُردي كان يوجد في أرض لورستان مرتين، في المنطقة الواقعة بين رامهرمز و ماجول ماه شهر(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٤)،ذكر تارةًأنهم يعيشون في الخيم وتارةً في القرى.

أما عن عاداتهم فقد ركز على المآتم وزيارة المرضى، ربما كانت تلك الأمور غريبةً عندهُ،إذ قال عند ذهابهِ لزيارة ابن أفرسياب لتفقدهأحوالهعند تمرضهِ،فرد عليهم افرسياب"إعملوا السماع حتى يرهج الفقراء، ويدعون لابن السلطان، فقلت له: إن أصحابي لا يدرون بالسماع ولا بالرقص" (ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٦)، لكن يبدو أنَّهقد توفي بسبب مرضه المذكور،لهذاحضر إبن بطوطة عزاءه في اليوم التالي، وشاهد منظراً غريباً وذلك وقد عبر عن ذلك بقولهِ: "وقد لبسوا التّلاليس وجلال الدَّواب، وجعلوا فوق رؤسهم التراب والتبن، وبعضهم قد جزّناصيته...لم أعهد مثله"(ابن بطوطة،١٩٩٦، ج٢، ص٢٦).

وكانت طريقة الإلقاء تبدو وكأنها تشبه المناقشة أو المحاضرة العلمية التي يتم فيها تبادل الأفكار، عن طريق الرسائل ورقائق الأوراق، التي يكتبها الحاضرون،للسؤال عن شيء غامض،أو إضافة معينة مما كان محل إعجابهوقد عبر عنها بقولهِ: "قرأ القرّاء أمامه بالتلاحين المبكّية، والنغمات المحرّكة المهيجة، وخطب خطبة بسكون ووقار، وتصرّف في فنون العلم، من تفسير كتاب الله، وإيراد حديث رسول الله، والتكلم على معانيه، ثم ترامت عليه الرّقاع من كل ناحية، ومن عادة الأعاجم أن يكتبوا المسائل في رقاع، ويرموذها إلى الواعظ فيجيب عنها(ابن بطوطة، ١٩٩٦، ج٢، ص٢٦).

وقد لبسوا فوق ثيابهم ثياباً خامة، من غليظ القطن غير محكمة الخياطة، بطائنها إلى أعلى وجوهها، ممّا يلي أجسادهم، وعلى رأس الواحد منهم قطعة خرقة أو ميزر أسود، وهكذا يكون فعلهم إلى تمام أربعين يوماً، وهي نهاية الحزن عندهم(١٩٩٦، ج٢، ص٢٨).

**الخاتمة:**

**أبرز النتائج المتمخضة عن الدراسة، نجملها في النقاط الآتية:**

١. لم يُحدد إبن بطوطة جغرافية لورستان،أو أصول ساكنيها بشكل مباشر،لكنهبيَّن أنَّ حدود أتابكية لورستان الكُردية(٥٥٠-٥٨٢٧/١١٠٦-١٤٢٣م)، بمدينتي إيذج وتستر، أي الحدود الجغرافية التي تقع بين هاتين المدينتين.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٢. لقد اختلف المؤرخون المعاصرون في تحديد هوية اللور، فمنهم من أرجعهم إلى الكُرد، فقسموهم إلى اللور الأصليون وهم: (كارانه، وزرهنطري، وفضلي، وستوَند، وآلاني، وكاهكاهي، وخودكي، ودري، وبرارند، ومانكه دار، وأناركي، وسلكي، وأبو العباسي، وعلي مامسي، وكيجاي، وندروي).

٣. كانت علاقات أتابكية اورستان،تعتمد بشكل عام على العلاقات الإجتماعية، وذلك عن طريق المصاهرة، حتى مع الخوارزميين على سبيل المثال: تزوج غياث الدين محمد خوارزمشاه، من إبنة هزار أسب الأول (٦٠٠-٦٢٦ه/ ١٢٠٤-١٢٢٩م).

٤. كانت الأوضاع الإقتصادية مزدهرةً بشكل عام بلورستان،لا سيما في عهد هزار أسب الأول (٦٠٤-٦٢٧ هـ/ ١٢٠٧-١٢٢٨م)، في لا سيما في ا لمجالين الزرا عي والت جاري، وإت سعت م عالم النه ضة العمرانية، حيث بُنيت قرى ومدن ومؤسسات خيرية وتعليمية على طول البلاد.

٥. كانت صناعة السكر والحلوى، من أبرز التقاليد في منطقة لورستان، لا سيما بمدن (عسكر مكرم، وتستر والسوس)،فكانتاتُحمل إليهما القصب من النواح الأخرى.

٦. كانت لورستان مشهورة بصناعة أنواع من الألبسة لا سيما الملابس القطنية منها، وكانت من حرف أهل لورستان في تستر خصوصاً، فضلاً عن ما كان يُصنع من الشعر، ويبدو انّه كان لكل مناسبة ملابس خاصة بها، فضلاً عن إختلاف ملابس الأمراء عن العامة.

٧. ذكر ابن بطوطة أسماء جملة من المدارس والزوايا والعلماء في لورستان، كان قد رأها بنفسه فقدم لنا وصفاً لها خلال كتابه الذي ضمنه أخبار رحلته تلك.

٨. ذكر ابن بطوطة خمسة مدن مهمة بلورستان هي: إيذج، وتستر، ورامهرمز، وماجول، ودزفول.

٩. وأخيراً ذكر إبن بطوطة وجود قبور مقدسة في بلاد لورستان، كان يقصدها الزوّار للتبرك والتمجيد.

**قائمة المصادر والمراجع:**

**أولاً- المصادر العربية:**


١- ابن الأثير:أبو الحسن علي بن أبي الكرم محمد بن محمد بن عبد الكريم بن عبد الواحد الشيباني الجزري، عز الدين (١٩٩٧م)،الكامل في التاريخ، تحقيق عمر عبد السلام التدمري، دار الكتاب العربي، بيروت.

٢- الإدريسي: محمد بن محمد بن عبد الله بن إدريس الحسني الطالبي (١٤٠٩ه)،نزهة المشتاق في اختراق الآفاق، ط١، عالم الكتب، بيروت: .

٣- الأصطخري: أبو اسحاق إبراهيم بن محمد الفارسي المعروف بالكرخي (٢٠٠٤م)،المسالك والممالك، الناشر دار صادر، بيروت.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٤- البدليسي: الامير شرف خان البدليسي (٢٠١٠م)، شرفنامه، ط٢، ترجمة وتحقيق محمد امين روزبيلني، مؤسسة موكرياني لل طبع والنشر، اربيل.

٥- ابن بطوطة: محمد بن عبد الله بن محمد بن إبراهيم اللواتي الطنجي، أبو عبد الله(١٩٩٦م)، رحلة ابن بطوطة (تحفة النظار في غرائب الأمصار وعجائب الأسفار)، أكاديمية المملكة المغربية، الرباط.

٦- الجويني: علاء الدين عطاء الملك بن بهاء الدين بن محمد الجويني(١٩٨٥م)، تاريخ فاتح العالم جيهانكشاي في تاريخ الخوارزميين والاسماعيلية الحشاشين و فتح مدينة بغداد على يد هولاكو، ترجمة محمد التونجي، المجلد الثاني، دار الملاح للطباعة والنشر، دمشق.

٧- الحميري: أبو عبد الله محمد بن عبد الله بن عبد المنعم (١٩٨٠م)، الروض المعطار في خبر الأقطار، ط٢، تحقيق: إحسان عباس، طبع على مطابع دار السراج، بيروت.

٨- ابن حوقل: محمد بن حوقل البغدادي الموصلي، أبو القاسم (١٩٣٨م)، صورة الأرض، دار صادر، أفست ليدن، بيروت.

٩- زين الدين الهمداني: أبو بكر محمد بن موسى بن عثمان الحازمي (١٤١٥هـ)، الأماكن أو ما اتفق لفظه وافترق مسماه من الأمكنة، تحقيق: حمد بن محمد الجاسر، دار اليمامة للبحث والترجمة والنشر.

١٠- السمعاني: عبدالكريم بن محمد بن منصور التميمي السمعاني المروزي، أبو سعد (١٩٦٢م)، عبدالرحمن بن يحيى المعلمي اليماني، مجلس دائرة المعارف العثمانية، حيدرآباد.

١١- صفي الدين: عبد المؤمن بن عبد الحق، ابن شمائل القطيعي البغدادي، الحنبلي(١٩٧٣م)، مراصد الاطلاع على أسماء الأمكنة والبقاع، دار الخليل، بيروت.

١٢- الطالبي، عبدالحي بن فخرالدين بن عبدالعلي الحسني الطالبي (١٩٩٩م)، نزهة الخواطر وبهجة المسامع والنواظر، دار ابن حزم، بيروت.

١٣- ابن فضل الله العمري: أحمد بن يحيى القرشي العدوي العمري، شهاب الدين(٢٠٠٢م)، مسالك الأبصار في ممالك الأمصار، المجمع الثقافي، أبو ظبي.

١٤- ابن فقيه: أبو عبد الله أحمد بن محمد بن إسحاق الهمداني المعروف بابن الفقيه الهمداني(١٩٩٦م)، البلدان، ط١، تحقيق: يوسف الهادي، عالم الكتب، بيروت: ١٩٩٦م.

١٥- ابن الفوطي: كمال الدين أبو الفضل عبد الرزاق بن أحمد المعروف بابن الفوطي الشيباني (٢٠٠٥)، الحوادث الجامعة والتجارب النافعة، تحقيق دكتور بشار عواد ودكتور عماد عبد السلام رؤف، منشورات رشيد قم.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٦- القلقشندي: أحمد بن علي بن أحمد الفزاري القاهري (١٩٩٧)، صبح الأعشى في صناعة الإنشاء، دار الفكر، دمشق.
١٧- المقدسي: أبو عبد الله محمد بن أحمد المقدسي البشاري ( ١٩٩١م)، أحسن التقاسيم في معرفة الأقاليم، ط٣، مكتبة مدبولي، القاهرة.
١٨- مؤلف مجهول (٢٠١١م)، حدود العالم، ترجمة: السيديوسفالهادي،الدارالثقافيةللنشر،القاهرة.
١٩- الهمذاني: رشيد الدين فضل الله الهمداني (د/ت)، جامع التواريخ، الايلخانيون تاريخ هولاكو، ترجمة: محمد صادق نشأة ومحمد موسى الهنداوي فؤاد عبد المعطي الصياد، دار الاحياء الكتب العربية مصر.
٢٠- ياقوت الحموي: شهاب الدين أبو عبد الله ياقوت بن عبد الله الرومي الحموي (١٩٩٥م)، معجم البلدان، ط٢، دار صادر، بيروت.

a. ثانياً- المصادر الفارسية:
٢. الحسيني: شرف الدين فضل الله قزويني (٢٠٠٥م)، المعجم في اثار ملوك العجم، كوشش محمد فتوحي، انجمن اثار ومفاخرفرهنكي، تهران.
٣. شبنكارةى: محمد بن علي بن محمد (١٩٨٥ز)، مجمع الانساب، تصحيح مير هاشم محدث، مؤسسة انتشارات امير الكبير تهران.
٤. القزويني: حمد الله المستوفي (١٩٣٧م)، تاريخ كزيدة، د/م.

a. ثالثاً- المراجعالعربية:
٥. إقبال: عباس (١٩٨٩م)، تاريخ ايران بعد الاسلام من بداية الدولة الطاهرية حتى نهاية الدولة القاجارية،(٢٠٥-١٣٤٣ه/ ٨٢٠-١٩٢٥م)، ترجمة: محمد علاء الدين منصور، مراجعة السباعي محمد السباعي،دار الثقافة للنشر والتوزيع القاهرة.
٦. إقبال: عباس (٢٠٠٠م)، تاريخ المغول منذ حملة جنكيزخان حتى قيام الدولة التيمورية، ترجمة عبد الوهاب علوب، المجمع الثقافي ابو ظبي.
٧. التازي: عبد الهادي (١٩٩٧م)، رحلة ابن بطوطة، قدم وحقق ووضع الخرائط وفهارست، عبد الهادي التازي،مطبوعات اكاديمية المملكة المغربية، المغرب.
٨. حيدر: عبد الرحمن فرطوس (٢٠٠٣)، الايلخان هولاكو دوره في نشأة وقيام الدولة الايلخانية دراسة تحليلية لسيرتهِ وعملهِ السياسي والعسكري،(٦١٣-٦٦٣ه/ ١٢١٦-١٢٦٥م)، أطروحة دكتورا مقدمة الى مجلس كلية الاداب جامعة بغداد. الطائي: سعاد هادي حسن ارحيم وشيماء فاضل العنبكي ووانعام صالح الربيعيوحنان شهاب الشمري (٢٠١٩م)، صفحات من تاريخ المغول القرن ٧-٥٨/ ١٣-١٤م، ط٢، عدنان للطباعة والنشر، بغداد.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

٩. الخضري بك: محمد (١٩٣٤م)، محاضرات تاريخ الامم الاسلامية - الدولة الاموية، مطبعة الاستقامة، ط٤، القاهرة.
١٠. الداودي، رمضان شريف (٢٠٠٤م)، لورستان الكبرى ٥٥٠-٨٢٧هـ/ ١١٥٥-١٤٢٤م دراسة في احوالها السياسية والحضارية، مؤسسة المكرياني للبحوث والنشر، عراق، اربيل.
١١. زكي: محمد أمين (١٩٤٨م)، تاريخ الدول والامارات الكُردية في عهد الاسلامي، مطبعة السعادة، مصر.
١٢. زكي: محمد أمين (١٩٣٩م)، خلاصة تاريخ كورد وكوردستان منذُ اقدم العصور التاريخة حتى الان، مطبعة السعادة، مصر.
١٣. زمبارو: (١٩٨٠م)، معجم الأنساب والاسرات الحاكمة، اخرجه زكي محمد حسن بك و حسن احمد محمود، دار الرائد، بيروت.
١٤. السحاب: محمد رضا (١٣٨١ش/ ٢٠٠٣ز)، اطلس عمومى اسران وجيهان، بخش وتحقيقات ومطالعات وجوطرافي: مؤسسة جوطرافيائى وكارتوطرافي سحاب، شركة جاب ريان، تهران.
١٥. الشامي: رشاد عبد الله (٢٠٠٠م)، الرموز الدينية في اليهودية، مركز الدرسات الشرقة جامعة القاهرة، القاهرة.
١٦. العلياوي: عبد الله (٢٠٠٥م)، كوردستان في عهد المغول،١٢٢٠-١٣٣٥م دراسة في التاريخ السياسي، العراق، السليمانية.
١٧. عبوش: فرهاد حاجي (٢٠٠٤م)، المدينة الكُردية القرن٤-٥٧/١٠-١٣م دراسة حضارية، مؤسسة سبى ريز للطباعة والنشر، دهوك.
١٨. الكوراني: علي سيدو (١٩٣٩م)، من عمان الى العمادية أو جولة في كوردستان الجنوبية، مطبعة السعادة، مصر.
١٩. كي ليسترنج (١٩٥٤م)، بلدان الخلافة الشرقية، ترجمة وتحقيق: بشير فرنسيس و كوركيس عواد، مطبعة الرابطة بغداد.
٢٠. مينورسكي(١٩٦٨م)، الاكراد ملاحظات وانطباعات ، ترجمة معروف خزندار، بغداد.

a. رابعاً- المجلات العلمية:

٢١. الدليمي (٢٠٢٢م)، مدينة ايذج دراسة في التاريخ، مجلة جامعة الانبار العلوم الانسانية، العدد (٢) مج (١).
٢٢. كاكةى(٢٠١٤م)، نبذة مختصرة عن ثلاث امارت كوردية، مجلة سردم، دار سردم للبطاعة والنشر،العدد ٣٩-٤٠، د/م.

٢٣. كراوند: قدرة الله (٢٠١٩م)، تحول مفهومى در لصطلاح لر ولرستان، بحث علمي، مجلة تاريخ اسلام، العدد (٣١).

خامسالمراجع الانكلير. ية: English Reference

1- Howorth, Henry (1880), The History of the Mongols from the 9th to the 19th century, Longmans Green co London.

**هوامش:**

(1) تأسست هذه الاتابكية في فارس على يد سنغر او سلغر، احد قادة التركمان في عهد السلاجقة وإنتهت سنة (٦٨٦ه/ ١٢٨٧م)، على يد ايلخانية فارس. (خضري بك، ١٩٣٤م، ص٤٥٨).

(2) الاتابكية من الاتابك وأما الامير الاتابك بمعنى النائب الكافل في رتبته في قيادة الاتابكية. القلقشندي، صبح الاعشى، ج٦، ص٣٥؛ وذهب البدليسي إلى تعريفها بأنها كلمة تركية مركبة من (اتا) اي (الاب) و(بك)،أي (الأمير) ومعناها أي (أبو الأمير) وكان في الاصل تطلق على من يتعهد بتربية أبناء السلاطين، ثم تلقب بها أمراء حكومات منها حكومة أتابكية لورستان الكُردية (البدليسي، ٢٠٠١، ص١٢٨).

(3) مفردها مدرسة التي تدرس فيها علوم مختلفة من القواعد والجدل والهندسة..... مدتها ثلاثة سنوات ويبيت الطلاب في داخل المدرسة حيث وجد المدارس في مدن كوردية قرون الميلادية الاولى أسسها الفرثيون والساسانيون والرومان وكان الباعث الاول لانشاء المدارس هي نشر الدين وظهرت فكرة انشاء المدارس في عهود الاسلامية بعد أن ازدحمت الجوامع بحلقات الدروس وتشير بعض الرويات القرن (٥ه/١١م) وكان لنظام الملك (٤١٨-٤٨٥ه/١٠٢٧-١٠٩٢م) دور بارز في إنشاء المدارس.عبوش، المدينة الكُردية، ٢٠٠٤، ص١٣٣-١٣٤

(4) الزوايا، مفردها زاوية وهي مأخوذة من فعل انزوى ينزوي ويأتي بمعنى اتخاذ ركن من اركان المسجد للاعتكاف او احد اركان الربط او المدرسة ثم اصبحت تطلق على الدار الصغيرة او مسجد صغير إذ لاتزال بعض المساجد الصغيرة تحمل أسم الزاوية. عبوش، المدينة الكُردية، ٢٠٠٤، ص١١٠.

**پۆختە:**

ئارمانجا ئەڤێ لێكۆلینێ ئەوە كو ب رێیا نووچە و ئاگاهایێن كو ئیبن بەتتووتە ب رێیا گەرا خوە یا ناڤدارا ئیبنی بەتتووتە دایە، كۆكا لۆریان، ئەردنیگاریا وەلاتێ ئەوان و شەرت و مەرجێن سیاسی، ئابووری، جڤاكی و چاندی یێن ئاتابەگێ لۆرستانێ راڤە بكەت. سەرناڤێ (تحفة النُّظار في غرائب الأمصار وعجائب الأسفار) دگریت.

ئیبن بەتتوتو د دەما سەرەدانا خوە یا ژ بۆ ئاتابەگێ كوردێ لۆرستانێ، ب ئاوایەكی بەرفرەهـ و راست دیار كر، لەورا ئاگاهیێن ئەوی ژ ئالیێ سیاسی زێدەتر ل سەر ئالیێ شارستانیێ بوون، ژ بەر كو ناڤێ چەند میرێن ئەوێ باسكربوون ، كو هن ژ ئەوان ب ناڤێ (سولتان) ب ناڤ كر و



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

پایتەختا ئەوێ باژارێ ئیزەج دیار کر، و ئاماژە ب جەوهەرێ پەیوەندیا ئەوێ ب بەغدایێ را د سەردەما موغۆلیدا کر، و ناڤێن پێنج باژارێن ئەوێ ئینان: (ئیزەج)، پایتەخت، (ڕامز)، (ماجۆر)، (تۆستەر) و (دزفول).

ژ ئالیێ شارستانییڤە، ئاگاهیێن ئیبن بەتتووتە ل سەر ئەوی گەلەک بوون، ژ بەر کو ئەوی بەحسێ هەبوونا هەژمارەکا مەزن ژ تەکییان کو ئەوی ژێ را دگۆتن دبستان، ژ بەر کو ئەوی هەژمارا ئەوان ب (٤٦٠) دبستانێن خوە تەخمین کر، کو (٤٤) ژ ئەوان دکەڤیتە باژێرێ ئیزەجێ و دەمێ دەربازبوون دناڤ چیایاندا باس ل ئاڤەدانی و بەرفرەهییا ڕێکان کرییە. هەروەسا باس هندەک زانایێن بناڤودەنگ ل ئەتابەکا لۆرستان کریە.

**پەیڤێن سەرەکی**: *ئەتابەگ، لورستان، گەروك، تحفة النظار، میرگەهێن کوردی*

## The Kurdish Atabegyya of Lorestan through Ibn Battuta's Journey

**Abstract:**

This study aims to explain the origin of the Lors, the geography of their country, and the political, economic, social, and cultural conditions in Lorestan's Atabeg, through the news and information provided by Ibn Battuta through his famous trip of Ibn Battuta, which bears the title (Tohfat alnozar fi kgaraeb alamsar wa ajayeb alasfar)

Ibn Battuta described the conditions of the Kurdish Atabeg of Lorestan, upon his visit to it, in a detailed and accurate manner, so his information was more about the civilized side than the political side, as he mentioned the names of a number of its princes, who referred to some of them as (Sultan), and identified its capital in the city of Izh, and referred to the nature of Its relationship with Baghdad during the Mongolian era, and he mentioned the names of five of its cities: (Idzh), the capital, (Ramez), (Major), (Tester), and (Dezful).

As for the civilized side, Ibn Battuta's information about him was abundant, as he mentioned the existence of a large number of corners that he called schools, as he estimated their number at (460) schools, of which (44) are in the city of Idj, the capital alone, and he mentioned architecture and the leveling of the road by penetrating the mountains, as well as He mentioned the names of some famous scholars in Lorestan Atabeg.

**Keyword**: *Atabeg, Lorestan,Journey,Ibn battute, Tohfat alnozar.*

# دور السلطان صلاح الدين القيادي في تأسيس واتساع الدولة الأيوبية وتماسكها

**د. عبدالباسط سيدا**
قسم اللغويات و علم اللغه- جامعه اوبسالا/ السويد

**الملخص:**

تعد الكتابة حول الدولة الأيوبية ١١٧١-١٢٥٠ التي تاسست على يد صلاح الدين الأيوبي من المواضيع الصعبة، وذلك بفعل الكثير المكرّر مما كتب في الموضوع من قبل المؤرخين والباحثين العرب والكرد والغربيين والأجانب عموماً. فقد قدم هؤلاء مادة غزيرة تناولت التفاصيل الخاصة بالجوانب التاريخية وتطور الأحداث والمساحة الجغرافية الواسعة التي غطتها تلك الدولة. كما بينت حيوية مكانتها في سياق الأحداث الكبرى التي شهدتها المنطقة أثناء الحملات الصليبية، وألقت الضوء على إسهامها في القضاء على الدولة الفاطمية في مصر، فضلاً عن إنجازاتها الإدارية والعمرانية ونظام الحكم الذي اعتمدته.

ولتجاوز هذا الأمر، ستركز الورقة البحثية المقترحة على دور الملكات التي اتسم بها صلاح الدين، والمزايا الخاصة التي شكّلت بتفاعلها ملامح شخصيته القيادية؛ هذا إلى جانب إبراز دور تربيته الأسرية، والبيئات الاجتماعية التي نشا فيها، والوظائف التي انيطت به، والفرص التي اتيحت له.

فقد ساعدت كل هذه العوامل في تبلور ملامح الفكر القيادي الاستراتيجي لدى صلاح الدين، وهو الفكر الذي مكّنه من التعامل الصبور المثمر مع التحديات الجسام التي تمثلت بصورة أساسية في الحملات الصليبية، والصراعات البينية بأشكالها المختلفة، سواء بين السنة والشيعة، أم بين أمراء الدولة الأيوبية نفسها، أو تلك التي كانت بين الدولة الأيوبية وحكام المناطق المجاورة لها.

ومن بين أهم ملامح الفكر المذكور ستتناول هذه الورقة:

١. السياسة التوازنية الحكيمة وبناء التحالفات.
٢. التركيز على الهدف الاساس واعتماد سياسة الحزم في التعامل مع العقبات.
٣. الحرص على اعتبار الخليفة العباسي مصدر شرعية الدولة.
٤. التركيز على البعد الإسلامي للدولة للتمكن من استيعاب سائر الخصوصيات المجتمعية.

٥. اعتماد الشورى وأخذ آراء العلماء وأصحاب التجربة بعين الاعتبار.

٦. الاهتمام بالنظام الإداري والجانب العمراني.

٧. الحرص على أهمية التكامل بين مختلف مناطق الدولة من دون التدخل المباشر في التفاصيل. أي اعتماد ما يمكن تسميته وفق المصطلح الحديث النظام الإداري اللامركزي أو الاتحادي.

٨. شجاعته وحنكته في قيادة المعارك.

٩. توزيع المهام ضمن الأسرة الأيوبية وبين قواده تحاشياً لصراعات بينية على السلطة.

١٠. التزام قيم التسامح والنزاهة والتواضع ومساعدة المحتاجين.

وما يؤكد أهمية الملامح الآتي على ذكرها، ودورها في اتساع نطاق الدولة الأيوبية، هو أنه بعد وفاة صلاح الدين دبت الخلافات بين أعضاء الأسرة الأيوبية، ودفعت الصراعات على السلطة بهم إلى الدخول في تحالفات متعارضة، والاستعانة بقوى معادية بغية الاستقواء بها في مواجهة المنافسين من أعضاء الأسرة نفسها، هذا إلى جانب الدورالسلبي الذي قام به المماليك.

وهذا ما ستحاول الورقة إلقاء الضوء عليه، وذلك في سياق المنهج الوصفي المقارن الذي ستعتمده لتحديد أوجه الخلاف بين مرحلة تأسيس الدولة الأيوبية في عهد صلاح الدين، ومرحلة الضعف في عهد الحكام المتنافسين من الأسرة الأيوبية، وهي المرحلة التي انتهت بزوال الدولة المعنية. وفي الختام، ستبحث الورقة في انعكاسات كل ذلك على كردستان.

**تمهيد:**

مصطلح الدولة من المفاهيم/المصطلحات التي تغيرت مضامينها عبر مختلف المراحل التاريخية. من دولة المدينة إلى الدولة الإقليمية والدولة الأمبراطورية، وصولاً إلى الدولة.الوطنية، ومن ثم الدول الأمبراطورية الدينية ومن ثم القومية ، والدولة الوطنية، ومن ثم الدولة الوطنية في مرحلة العولمة والنظريات الليبرالية، والعودة مجدداً إلى الدولة القومية أو الدينية والمذهبية.

وإذا أخذنا المعايير الحديثة التي تعتمد اليوم للتمييز بين الدولة وغيرها من الكيانات السياسية، فسنجد أنها بصورة عامة المعايير نفسها التي كان التوافق عليها بين الأطراف التي أسست لنظام عالمي جديد بعد معاهدة وستفاليا١٦٤٨، وإنشاء عصبة الأمم عامى١٩١٩، ومن ثم تأسيس الأمم المتحدة عام ١٩٤. ولكن هذه المعايير لم تأت من الفراغ، وإنما تبلورت خلال مختلف المراحل التاريخية القديمة منها التي سبقت معاهدة وستفاليا، والحديثة التي ظهرت بعدها، وأهم هذه المعايير هي: الإقليم والشعب أو الأمة، إلى جانب السلطة السياسية والمؤسسات، ومن ثم مفهوم السيادة.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

والتدقيق في هذه المعايير من جهة أهميتها ودورها في تشكيل الكيانات السياسية التي عُرفت، وتعرف اليوم، باسم الدول، يبين لنا أن هذه المعايير تتمثل في السلطة والمؤسسات السياسية المرتبطة بها التي تجسد صيغة من صيغ الإدارة السياسية للمجتمع الذي يخضع لتلك السلطة؛ ضمن إطار الحيز المكاني الذي تقوم عليه وتحكمه تلك السلطة.

أما مفهوم السيادة فهو مفهوم قانوني حديث نسبياً اعتمد بالتوافق بين الدول المؤثرة، خاصة تلك التي انتصرت في الحروب الإقليمية أو العالمية؛ هذا بينما كانت السيادة سابقاً خاضعة لمنطق القوة، وتتوقف على مدى قدرة كل دولة على توسيع دائرة نفوذها وانتزاع الاعتراف الصريح أو الضمني من الناس أو الرعايا الذين كانوا خاضعين لها.

والذي حدث في مراحل ضعف الامبراطوريات الكبرى التي سيطرت على مناطق واسعة تميزت بتنوعها الأقوامي والديني، وحتى المذهبي، هو أنه في مراحل ضعف السلطة المركزية كانت تتشكل دول فرعية خاضعة لسلطة سلالات محلية، أو سلطة القوى العسكرية التي كانت تستنجد بها السلطة المركزية في مراحل ضعفها لفرض هيمنتها وتأمين سلطتها، أما الدوافع التي كانت تشجع تلك القوى على القتال فقد كانت إما دينية مذهبية،. أو الرغبة في الحصول على المناصب والامتيازات والثروات.

وهكذا كانت تبرز سلالات محلية متنفذة ، تسيطرعلى مناطق معينة، وتحتفظ بقسط واسع من الاستقلال الذاتي مقابل الالتزام بواجبات الطاقة تجاه السلطة المركزية التي كانت تضفي عليها المشروعية التي تمكّنها من الحكم والتوسع.

وهذا ما شهدته الكثير من الدول الامبراطورية في العالم، ولكن هذه الخاصية. باتت خاصية رئيسة محورية في المراحل الأخيرة من الدولة العباسية التي عانت كثيراً من الصراعات ضمن أعضاء الأسرة الحاكمة، وكان غالباً بفعل الاختلاف حول أحقية الخلافة، والصراعات حول السلطة والثروة، حتى بات الخليفة العباسي مجرد رمز معنوي، يختبيء خلفه الحكام الفعليون في معظم المناطق التي كانت تخضع من الناحية الشكلية للخلافة العباسية بصفتها الرمزية.

وما أضعف الخلافة العباسيةأكثر هو نشوء الخلافة الفاطمية وتعاظم شأنها[1]، وهذه الأخيرة كانت شيعية (إسماعيلية) في حين أن العباسية كانت سنية. كما أن الخطر االفرنجي/الصليبي كان يمثل هو الآخر تحدياً من التحديات الكبرى التي واجهتها الدولة العباسية.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

## الظروف التي مكّنت صلاح الدين من تاسيس الدولة الأيوبية

استعان الخلافاء العباسيون في مرحلة ضعف دولتهم بالقوى العسكرية المختلفة[2]، وذلك للإبقاء على حكمهم واستمراريته في مواجهة الخصوم المنافسين في الداخل، وحماية نفوذهم في مواجهة الأخطار الخارجية الجدية التي كانت تمثلها الدولة الفاطمية من جهة؛ واهتمام الدول الغربية بالمنطقة، وسيطرتها على الساحل السوري تحت شعار تحرير بيت المقدس من جهة ثانية. و كانت العطيات والقرائن تشير إلى أن دائرة الاهتمامات والأطماع الغربية ستتسع لتشمل مصر، وربما شمال أفريقيا، وحتى شبه الجزيرة العربية، خاصة المناطق الساحلية والقريبة منها.

ولتجاوز كل ذلك، كانت هناك محاولات من قبل الحكام الخاضعين للخلافة العباسية، خاصة في العراق ومناطق الجزيرة، وبالتعاون مع الفقهاء، وبعض الفرق الصوفية لتعبئة الناس، والترويج لفكرة إحياء المذهب السني. ويُشار هنا بصورة خاصة إلى كل من نظام الملك الوزير الفارسي للسلاطين السلاجقة طغرل بك، وألب ارسلان، وملك شاه[3]، والغزالي الفقيه والصوفي المعروف[4]. وربما من المناسب أن نشير هنا إلى سيطرة البويهيين الشيعة على بغداد الأمر الذي مكّنهم من التحكّم في قرارت الخليفة العباسي. ولكن مع دخول السلاجقة القوي إلى بغداد عام ١٠٥٨م تم وضع حد للنفوذ البويهي، وبدأت المرحلة السلجوقية السنية التوجه. وكان من الواضح أن الخليفة العباسي نفسه كان يميل في هذا المجال إلى السلاجقة، فإلى جانب التماثل المذهبي بينهما، كان هناك موضوع التركيز على تحرير القدس، وذلك في إطار الأيديولوجية التي اعتمدت بهدف ضبط الأوضاع، وتعزيز القدرات، وسحب الشرعية من الخصوم، وذلك استعداداً لمواجهة المخاطر المتعددة المصادر[5].

ويُشار هنا بصورة خاصة إلى جهود نظام الملك ١٠١٧-١٠٩٢م الذي أنشا المدارس لتعميق أسس المذهب السني، وإعداد الكوادر الإدارية من السنة لتنظيم الأمور وضبطها.

كما أن عماد الدين الزنكي ١٠٨٤-١١٤٦م كان له دور بارز في هذا المجال، واستمر هذا التوجه بقوة وعلى نطاق واسع، في عهد حكم ابنه نورالدين ١١٧-١١٧٤م.

في هذه الأجواء وصلت أسرة شادي بن مروان والد نجم الدين ايوب واسدالدين شيركو الأيوبية الطموحة إلى بغداد في عهد السلطان السلجوقي مسعود؛ ويبدو أن أحد عمال السلطان ويدعى مجاهدالدين بهروز عين شادي آمراً على قلعة تكريت، حيث توفي شادي، فحل محله ابنه نجم الدين[6].

وبدأت الأسرة مشوارها في الشأن العام من قلعة تكريت، وشاءت الظروف أن يتم اللقاء بين الأسرة وعمادالدين الزنكي الذي حل عليهم ضيفاً عام ١١٣١م بعد انكساره في بغداد[7]، ويبدو أن عمادالدين وجد في الأسرة الأيوبية عوناً يستفيد منه في مشروعه المستقبلي الطموح الذي كان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

يمتد ليشمل بلاد الشام، وتحرير مدن الساحل الشامي من الصليبيين، وإحياء المذهب السني عبر إنهاء الخلافة الفاطمية في مصر.

وما يستنتج من الروايات الخاصة بتاريخ الأسرة الأيوبية وبداياتها، هو وجود نوع من التباين، وربما التكامل، بين نجم الدين أيوب وأسد الدين شيركو. إذ أن الأول كان يركّز على الحكمة والحنكة؛ في حين تميّز الثاني بمهاراته القتالية، وانجازاته الميدانية. وربما هذا ما يفسر سبب اقدام شيركو على قتل رجل في تكريت، الأمر الذي تسبّب في الاستغناء عن خدماتهما، ليغادرا مع أعضاء أسرتيهما، ويتوجها إلى عماد الدين الرجل الي استضافوه في وقت كان فيه بأمس الحاجة إلى المساعدة. وشاءت الأقدار، وفق الروايات، أن يتزامن قرار رحيلهم ، أو ترحيلهم، بناء على الروايات، مع ولادة يوسف الذي اشتهر أكثر في ما بعد بلقبه "صلاح الدين"[8] الذي سيكون له شأن كبير لاحقاً، ودور اساسي في توحيد بلاد الجزيرة الفراتية والشام ومصر. ليستعد لمواجهة الصليبيين في حروب كر وفر، ومعاهدات وهدن، إلى أن كانت المعركة الكبرى في حطين عام ١١٨٧،[9] وهي المعركة التي كانت مقدمة لتحرير غالبية مدن الساحل الشامي، وتحرير القدس نفسها التي طالما كانت الحلم الذي يرواد سائر المسلمين.

في هذه الورقة لن ندخل في تفاصيل انتصارات واخفاقات صلاح الدين الأيوبي،ولن نتوقف كثيراً عندنجاحاته التوحيدية، وحدود اتساع نطاق دائرة حكمه، ومشاريعه المستقبلية المتجددة؛ وإنما سنركز على المزايا الشخصية، والقدرات القيادية التي تميز بها؛ وخطواته الأساسية، واعتماده على القوة الناعمة، إلى جانب القوة الحازمة لبلوغ أهدافه، وحرصه على التوازنات، وحفاظه على جسور التواصل مع الأصدقاء والأعداء، والجمع بين الجانبين العسكري والمدني؛ حتى تمكن من إنشاء دولة مترامية الأطراف، ظلت باستمرار تضم قوميات وأديان ومذاهب مختلفة، تابعة، ولو بصورة شكلية للخلافة العباسية، ولكنها في الواقع الفعلي كانت موزعة بين أعضاء الأسرة الأيوبية، والمقربين منهم، واستطاعت أن تستمر متماسكة في حياة صلاح الدين، رغم كل التحديات التي واجهتها على المستويين الداخلي والخارجي.

ولكن مع وفاة صلاح الدين في دمشق بتاريخ ٤ آذار/ مارس١١٩٣،[10] تفاقمت الخلافات والمناكفات والصراعات بين أبناء صلاح الدين وأشقائه وبقية أفراد الأسرة الأيوبية ، لدرجة أن الأمور وصلت بينهم إلى درجة أنهم عقدوا الاتفاقيات مع الزعماء الصليبيين، ومع الزعماء المحليين في المناطق المجاورة لهم من أجل التغلب على التهديدات القادمة من جهة الأشقاء والأعمام والأقارب[11].

وقد اختلف المؤرخون حول ماهية وطبيعة الدولة التي أسسها صلاح الدين، وتعرضت للتفكك بعد وفاته. هل تعتبر دولة كردية أم أنها دولة السلالة الأيوبية؟ أم كانت مجرد سلطة


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أيوبية، أو حكم سلالة أيوبية استمر نتيجة توافر الظروف في حقبة معينة، سرعان مع تلاشت، وتحولت إلى مجرد ذكرى، وأصبح صلاح الدين نفسه إلى رمز لمقاومة الغزو الأجنبي، والحاكم المتمكّن الصالح العادل، القادر على لم الشمل والتوفيق بين المتخاصمين الطامحين في النفوذ السلطوي والجاه بمختلف أشكالهما؟

وبناء على المضامين المتعددة الخاصة بالدولة التي أشرنا إليها في بداية هذه الورقة، يمكننا أن نتحدث من باب المجاز عن الدولة الأيوبية[١٢]، أو حتى عن السلالة الأيوبية في نطاق الدولة التي أسسها، وجمع أطرافها صلاح الدين. ولكن أن نركز على الطابع القومي لدولة لم تتخل عن طابعها الديني الإسلامي السني، وتبعيتها للخلافة العباسية، فهذا فحواه أننا نفرض رؤية أيديولوجية حديثة على مرحلة كانت تسودها مفاهيم مغايرة، وتحركها سلوكيات تستلهم خططها وسياساتها من توجهات أيديولوجية وفكرية مغايرة.

الإشكالية المحورية التي تتمفصل حولها هذه الورقة تتمثل في الأسباب التي أدت إلى ارتباط الدولة الأيوبية، أو حكم السلالة الأيوبية بشخصية صلاح الدين، ودورها المتميز في النهوض بتلك الدولة، ومن ثم تراجع تلك الدولة، وتفككها مع مرض صلاح الدين ووفاته لاحقاً.

وكما أسلفنا، سنركز بصورة أساسية على الظروف والعوامل التي أعطت الفرصة لصلاح الدين، وأفسحت المجال أمامه؛ إلى جانب تناول صفاته الشخصية، ومعارفه وخبراته في الإدارة، ومهاراته العسكرية، بالإضافة إلى استفادته من حكمة وحنكة المقربين منه ممن أرشدوه باستمرار، سواء من الأهل المقربين أم من الأصدقاء والعلماء والمؤرخين والمستشارين الذين وقفوا إلى جانبه في مختلف الظروف لا سيما الصعبة منها، ونخص بالذكر هنا أولئك الذين وجدوا فيه شخصية كاريزماتية قادرة على فرض احترامها على العدو قبل الصديق.

## الظروف الموضوعية والمؤهلات الشخصية في حالة صلاح الدين:

الأمر الذي لا جدال حوله، هو أن العلاقة بين الظروف الموضوعية والمؤهلات الشخصية للقادة هي علاقة جدلية تفاعلية بين طرفيها. لا يمكن لشخصية قيادية مؤثرة أن تترك بصماتها على الأحداث، أو أن تثبت قدراتها القيادية في مرحلة ما، أو تساهم بصورة واضحة قوية في إحداث تغييرات نوعية في مجرى الأحداث من دون توفر العاملين المذكورين. فالظروف الموضوعية لا تؤدي بطبيعة الحال إلى ظهور القيادات التاريخية في ظل واقع عدم وجود من يمتلكون الخصائص التي تؤهلهم لأداء الأدوار الكبيرة التي تبلغ أحياناً حد الاستثناء أو المعجزة.

كما ان امتلاك المؤهلات والخصائص المتميزة لا يكفي لوحده من دون توفر الظرف التاريخي المناسب لبروز الشخصية القيادية الاستثنائية، لا سيما بالنسبة إلى المجتمعات التي لا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

تمتلك المؤسسات التي تساهم في إعداد القيادات، وتزوّدها بالخبرات والامكانيات المطلوبة لتأدية أدوار ترتقي إلى مستوى تطلعات الناس وطبيعة التحديات.

وفي مثال صلاح الدين الأيوبي، نلاحظ أن تفاعل العاملين كان في أوجه؛ الأمر الذي أدى من جهته إلى تألق شخصية قيادية تاريخية استثنائية، فرضت نفسها على الأحداث، وما زالت هذه الشخصية تثير اعجاب الشعوب والباحثين سواء في منطقتنا أم على المستوى العالمي؛ خاصة في دول أوروبا الغربية التي تمتلك تاريخاً مشتركا مع منطقتنا منذ أيام حروب الاسكندر المكدوني ٣٥٦ ٣٢٣ ق. م.، والحروب الصليبية ١٠٩٥-١٢٩١م، مروراً بالاستعمار الحديث، وصولاً إلى يومنا الراهن.

فالمرحلة التي وصلت فيها اسرة شاديجد صلاح الدين إلى العراق قادمة من أذربيجان[١٣]، كانت متخمة بالأحداث والاحتمالات. الخلافة العباسية كانت في أواخر أيامها، تعيش في المركز أزمة متسعصية بعد أن تمكن الولاة والسلاطين في مختلف المناطق التي كانت تابعة رسمياً لها من الاستقلال بمناطقهم، والتحكّم بمواردها وتوجهاتها. فكانت العلاقة بينها وبين الخليفة من الناحية الشكلية طبيعية، يضفي عليها الخليفة الشرعية، وهي التي من المفروض أن تدعم الخليفة، وتدافع عنه في مواجهة الأخطار الخارجية والداخلية، لا سيما اخطار الصليبيين والمغول. ولكن على الصعيدالإسلامي الداخلي كانت الدولة الفاطمية في مصر ٩٦٩ - ١١٧١م. تمثل تحدياً كبيراً بالنسبة إلى الخلافة العباسية. فالدولة الفاطمية كانت قد تمكنت من السيطرة على مناطق واسعة في شمال أفريقيا وعلى مصر، وكان لها نفوذ في منطقة في منطقة فلسطين، وتحاول الوصول إلى شبه الجزيرة العربية موطن الحرمين المقدسين[١٤].

فقد شاءت الظروف، كما أسلفنا، أن يتم التواصل بين والد يوسف (اسمه)- صلاح الدين (لقبه): نجم الدين وعماد الدين الزنكي قبل ولادة الأول في تكريت، ثم تطورت بعد أن قتل شيركو في تكريت عم صلاح الدين أحد الأشخاص المقربين من مجاهدالدين بهروز عامل السلطان مسعود ملكشاه في بغداد ، فطلب منهم بهروز ترك قلعة تكريت، والابتعاد عن المنطقة، فتوجهت الأسرة إلى عماد الدين الزنكي في الموصل ١١٣٧م، الذي يبدو أنه وجد في الأخوين: نجم الدين وشيركو من الصفات التي أقنعته بإمكانية الاعتماد عليهما في قلعة بعلبك ١١٣٩م، فكانت الرحلة بالنسبة لصلاح الدين، الذي يُقال أنه ولد ليلة إضطرارالأسرة للخروج من تكريت، مقدمة لبناء علاقة تاريخية مع بلاد الشام، ودمشق تحديداً[١٥].

ويبدو أن والد صلاح الدين وعمه قد تنبها باكراً للمواهب التي امتلكها صلاح الدين، فاهتموا بتعليمه واعداده الديني في العلوم الشرعية، والمعرفية خاصة في التاريخ، كما حرصت الأسرة في الوقت ذاته على اعدادهالبدني من خلال تدريبه على الفروسية ورمي القوس والصيد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وفنون القتال[١٦]. وبناء على المعطيات التي تذكرها كتب التاريخ، نستنتج أن صلاح الدين قد استفاد من والده من ناحية الصبر وبعد النظر، ومراعاة التوازنات والمعادلات التي كانت تتحكم في العلاقات بين القوى السياسية المؤثرة في تلك المرحلة، وذلك سواء ضمن الدولة الزنكية نفسها، أو على صعيد العلاقة بينها وبين الخلافة العباسية، وموقفها من الخلافة الفاطمية، والخطر الصليبي الذي كان يهدد ساحل بلاد الشام، بل كان يهدد حلب نفسها من خلال إمارة الرها ومنطقة الجزيرة[١٧].

وبناء على حصيلة التفاعل بين الظروف والمتغيرات السياسية في المنطقة، والمؤهلات الخاصة التي تميزت بها الأسرة الأيوبية، كلف نورالدين محمود، خَلَف عمادالدين الزنكي وابنه، اسد الدين شيركو بالتوجه إلى مصر لمساعدتها على مواجهة المخاطر الصليبية عام ١١٦٤، وإعادة شاور إلى الوزارة[١٨]. هذا في حين أن الهدف الأساسي بالنسبة إلى نورالدين كان يتمثل في القضاء على الخلافةالفاطمية، وإعادة مصر، ولو من الناحية الرسمية الشكلية إلى حضن الخلافة العباسية. وكان من الواضح أن القوى المتصارعة على حكم مصر، كانت على دراية بهذا الهدف، لهذا كانت مترددة بين طلب المساعدة لمواجهة الصليبيين، ومواجهة الخصوم الذين كان يستعدون للسيطرة من خلال الاعتماد على دعم الصليبيين، وبين خشيتها من تحكم نورالدين بمصر، وإنهاء الحكم الفاطمي فيها، وهو الأمر الذي حصل في نهاية المطاف.

ويبدو أن عم صلاح الدين، أسد الدين شيركو كان قد لاحظ المواهب القتالية والقيادية التي كان يتمتع بها ابن شقيقه صلاح الدين، لذلك أصر على اصطحابه معه إلى مصر ليكون إلى جانبه في الحملة العسكرية التي توجهت إلى هناك بأوامر نورالدين، وبناء على طلب وزير الخلفية الفاطمي شاور.

وكانت أولى المعارك التي شارك فيها صلاح الدين إلى جانب عمه أسد الدين شيركو، وكان عمره في ذلك الحين حوالي ٢٦ عاماً[١٩]. غير أن شاور حينما أدرك أن هدف حملة شيركو هو أبعد من موضوع إعادته إلى الوزارة مقابل الحصول على نسبة من دخل مصر، استعان بـ "أماالريك" ملك القدس ليحول دون رغبة نورالدين في إعادة مصر إلى دائرة الخلافة العباسية، فعادت الحملة الشامية الأولى من دون بلوغ أهدافها، وكذلك كان الأمر بالنسبة إلى الحملة الثانية.[٢٠]

ولكن الأمور أخذت منحى آخر في الحملة الثالثة التي أمرها بها نورالدين بعد تلقيه رسالة من الخليفة الفاطمي العاضد الذي كتب إليه بخط يده، "يناشده ألا يدع مصر تسقط في أيدي "أماالريك"، لأن العواقب ستكون وخيمة. كما أكد أن التعاضد الإسلامي يتطلب تجاوز الاختلافات المذهبية"[٢١]. وأصرّ شيركو مرة أخرى على أن يكون صلاح الدين معه في الحملة الجديدة، رغم أن الأخير كان قد قرر عدم التوجه إلى مصر بعد تجربتين أُصيب خلالهما بحالة من



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الإحباط، ولكن اضطر إلى مرافقة عمه بناء على الحاح الأخير، وربما بجهود اقناعية من جانب والده، وبتوجيه من نورالدين نفسه. ومما ينسب إلى صلاح الدين أنه قال لابن شداد حول ذهابه إلى مصر في تلك الحملة أنه كان أشبه بذهابه إلى قبره، حتى أنه قال لعمه شيركو الذي طلب منه الذهاب، بأنه لن يذهب حتى ولو أعطوه مُلك مصر، و"لكنه ذهب وأعطي مُلك مصر"[٢٢].

توجه صلاح الدين ضمن الحملة الشامية الثالثة بضغط من عمه ونورالدين، وذلكلدفع المخاطر الصليبية عنها. غير أن الهدف الأبعد لنورالدين من تلك الحملة كان، كما اشرنا إلى ذلك، على الأكثر هو التمهيد لإنهاء الخلافة الفاطمية التي كانت تعيش في واقع الحال أضعف مراحلها، إذ كان الحكم الفعلي بيد الوزراء الذين كان الخليفة الفاطمي يغدق عليهم لقب السلطان، مقابل حمايتهم له، والابقاء عليه حاكماً اسمياً في قصره، مقابل الشرعية التي يتسمدونها منه.

وهكذا ساعدت الظروف صلاح الدين، ومكّنته من أخذ الدور القيادي عبر منصب وزير الخليفة الفاطمي، ليثبت مع الوقت مؤهلاته القيادية الاستثنائية التي اعترف بها واحترمها الأصدقاء والأعداء؛ وباتت شخصية صلاح الدين على مدى أكثر من ثمانمائة عام مصدر استلهام لا للقادة العسكريين والسياسيين وحدهم، بل للأدباء والفنانين والناس العاديين أيضاً.

ويُشار في هذا المجال إلى عامل الموت الذي ساعد صلاح الدين، إذا جاز التعبير، وهو الأمر الذي تنّبه له الكثير من المؤرخين.

فبعد شهرين من تسلّم أسد الدين شيركو الوزارة في مصر، على إثر مقتل الوزير شاور الذي يعتقد بعضهم بأنه كان بناء على اتفاق بين كل من شيركو والخليفة الفاطمي العاضد، في حين أن هناك من يرى بأن صلاح الدين هو الذي كان وراء ما جرى لشاور[٢٣]،أصبح صلاح الدين هو الوزير في مصر نتيجة وفاة عمه شيركو[٢٤]، الأمر الذي فتح له الأبواب الواسعة أمامه، ليكون عملياً في موقع قيادة مصر في ظل الحاكم الفاطمي العاضد الضعيف[٢٥]؛ الذي توفي هو الآخر بعد اسبوع من اسقاط اسمه من الخطبة بناء على إلحاح نورالدين[٢٦]، ونتيجة اقتناع صلاح الدين بان الظرف قد بات مساعداً لذلك، وقد فتحت وفاة الخليفة الفاطمي المجال أمام صلاح الدين ليكون هو الحاكم الفاعلي، وليس الرسمي إذا صح التعبير،إذ بات يحكم باسم الخليفة العباسي. وكان صلاح الدين في هذا المجال حريصاً على التواصل المستمر مع الخليفة العباسي للحصول على إقرار بشرعية حكمه، هذا رغم أن تبعيته الأساسية كانت لنورالدين الذي كان من المفروض أن يكون هو من جانبه حلقة الوصل، أو السلطة الوسيطة بين صلاح الدين والخليفة العباسي.

أما تفسير موافقة القادة العسكريين والمتنفذين في الدولة المصرية سواء من الكرد والترك، أم من المماليك وغيرهم على أن يكون صلاح الدين هو الوزير بعد وفاة شيركو، فهناك من



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

يرى بخصوص هذا الحدث، بأنهم وافقوا على تولي صلاح الدين مهام الوزارة خلفاً لعمه، اعتقاداً منهم بأنه يفتقر إلى الخبرة والتجربة، وسيفشل في عملية الحفاظ على التوازنات مع نورالدين والصليبيين، وعلى المستوى المصري، الأمر الذي سيفسح المجال أمامهم للتحكّم به، ومن ثم بالدولة[27].

وكالعادة، تبدأ الخصومات بجهود من الحساد والوشاة والمتضررين بين القادة المتميزين ورؤسائهم؛ وهكذا كان الأمر بين صلاح الدين ونورالدين[28]، ويُقال أن الأخير أراد التوجه إلى مصر بحجة المساعدة في قتال الصليبيين. وقد أقلق هذا الخبر صلاح الدين وقواده في مصر، حتى أن هؤلاء، ومن بينهم تقي الدين ابن أخيه، أشاروا على صلاح الدين بضرورة عرقلة ذلك التوجه صراحة؛ وكاد صلاح الدين أن يأخذ برأي الجماعة لولا تدخل والده الذي كان صلاح الدين قد طلب الإذن من نورالدين ليتمكن من القدوم على إلى مصر، حتى يكون إلى جانبه مع عدد من أفراد أسرته، ليساعدوه في مهامه الجديدة الكبيرة. فقد تنبه نجم الدين للخطأ الذي أوشك أن يقع فيه ابنهصلاح الدين نتيجة سوء التقدير أو قلة التجربة، أوبفعل تأثره بحماس قواده، أو ربما بفعل النزعات الشخصية والاعتداد بالنفس فتدخل في اللحظة المناسبة، وطلب من ابنه أن يحافظ بكل احترام على علاقة الود والتبعية مع نورالدين، مبيناً لصلاح الدين بأن هذا الرأي ليس رأيه وحده، وإنما هو رأي خاله أيضاً ، خال صلاح الدين وهو شهاب الدين الحارمي الذي يُقال، كما ورد في ما تقدم، أن وزارة مصر كانت قد عُرضت عليه أيضاً، ولكنه امتنع عن القبول بها، واقترح اسم ابن اخته صلاح الدين ليكون هو الوزير. وطلب نجم أيوب من ابنه أن يكتب لنورالدين ما يؤكد استمراريته في تبعيته، والتزامه بالأمر الذي يراه. وما يُستنتج من الروايات التاريخية المتوفرة حول هذا الموضوع هو أن صلاح الدين أخذ بهذا الرأي في نهاية المطاف، وكان رأياً سياسياً حكيماً بعيد النظر، أنقذ صلاح الدين من اندفاعة غير محسوبة العواقب[29]. ولم يمر وقت طويل على تسلم صلاح الدين للوزارة حتى توفي نورالدين الزنكي في أيار/ مايو١١٧٤[30]، ومن ثم توفي أماليريك ملك القدس الصليبي في تموز/ يوليو ١١٧٤م[31]، ، الأمر الذي فتح المجال أمام صلاح الدين للتصرف باستقلالية بعد أن تحرر من سلطة نورالدين التوجيهية المرجعية، وحصول ضعف واضح في الجبهة المعادية له من جهة الصليبيين.

وباتت العلاقة الأساسية مع الخليفة العباسي في بغداد، الذي كان من الضعف إلى الحد الذي لم يكن بمقدورهالتدخل في أي شأن من شؤون إدارة صلاح الدين لمصر وغيرها من المناطق الخاضعة لسلطتهالفعلية، بل على النقيض من ذلك، كان الخليفة العباسي نفسه في حاجة إلى قوة صلاحالدين، واعتراف الأخير ولو شكلياً بسلطته، ليظهر في مظهر خليفة المسلمين الذي يشمل حكمه العراقوبلاد الشام ومصر وشمال أفريقيا، وبطبيعة الحال شبه الجزيرة العربية التي

ظلت دائماً الرمزية التي تحرص عليها كل خلافة إسلامية، لأنها مهد الإسلام، وموطن الحرمين المقدسين، في حين أن موضوع تحرير القدس كانت القاسم المشترك الذي يمثل توافق المسلمين من مختلف المذاهب حوله، والشعار الذي يشدّ عصبهم.

وبعد إنهاء الخلافة الفاطمية، ووفاة آخر خليفة فاطمي،والتطورات التي كانت على إثر وفاة نورا لدين، والضعف الذي تغلغل إلى دولته، غدا صلاح الدين هو الآمر الناهي في عمليات الإعداد لمعركة تحرير القدس والساحل الشامي، رغم وجود تباينات ومنغصّات هناك وهناك، تمكن الأخير من تجاوزها في نهاية المطاف، فوحد الصفوف والإمكانيات، ودخل في مواجهة مفتوحة طاحنة مع الصليبيين، وكان الانتصار الأكبر في حطين بتاريخ ٤- تموز/يوليو ١١٨٧[٣٢]، ولكن كل ذلك لم يكن له أن يتحقق لولا توفر جملة من الخصائص والفضائل المتميّزة التي تحلّت بها شخصية صلاح الدين، وتمكّن بفضلها من تحقيق انجازات كبرى، كانت، وما زالت، تثير الاعجاب، وتمثل موضع اعتزاز مختلف الأجيال رغم مرور كل هذا الوقت.

وهنا نكون قد وصلنا إلى دور العامل الذاتي الخاص بالشخصية [٣٣] في تفسير سر النجاح الذي حققه صلاح الدين الذي بلغ حد الإعجاز، هذا مع التأكيد مجدداً أهمية التفاعل بين هذا الجانب الذاتي والجانبالموضوعي الذي أعطى الفرصة لصلاح الدين ليثبت جدارته القيادية المتيزة.

فالانجازات الكبرى التي حققها صلاح الدين خلال فترة زمينة قصيرة تعد بحد ذاتها من المسائل التي تستوقف وتثير الإعجاب؛ فقد استطاع توحيد سوريا ومصر، وأُعلن نفسه سلطاناً على مصر وسورية بمباركة من الخليفة العباسي[٣٤]؛ واستطاع أن يُدخلمنطقة الجزيرة الفراتية ضمن دائرة حكمه؛ كما كان يسعى أجل الوصول إلى مناطق واسعة في شمال أفريقيا، هذا بالإضافة إلى اليمن، وأولى أهمية خاصةلحماية الحرمين المقدسين في شبه الجزيرة العربية.

هذا في الوقت الذي كانت فيه المنطقة تعج بالقوى الإقليمية والخارجية التي كانت تسعى للسيطرة، وتعمل وتوسيع دائرة حكمها.

فالوحدة السياسية التي تمكّن صلاح الدين من بنائها بين كل تلك المناطق، تؤكد رؤيته الاستراتيجية التي كانت تركز على أهمية توحيد طاقات شعوب المنطقة تحت راية جامعة وجدها مع الزنكيين في الإسلام السني، الذي كان يتمثل في الخلافة العباسية، وهي الخلافة التي كانت تعيش في ذلك الحين، وفق ما سلف ذكره، أضعف حالاتها. إذ كان الخليفة قد بات مجرد رمزية تضفي الشرعية على سلطة من استنجد بهم الخليفة ليحافظوا على حكمه في مواجهة المنافسين الطامعين في الخلافة أو السلطة. فكان الاعتماد على البويهيين أحياناً[٣٥]، والسلاجقة [٣٦]أحياناً أخرى ، وعلى الكرد في بعض الأحيان. وقد استمر وضع الخلافة العباسية على هذا المنوال خلال الدولة الأيوبية، ومن ثم تفاقم الوضع أكثر مع اتساع نطاق السلاطين، ولكن الضربة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

القاضية كانت على يد هولاكو لاحقاً الذي دخل بغداد عاصمة الخلافة عام ١٢٥٨م[٣٧]، ودمّرها، وقتل الخليفة العباسي نفسه، ليضع نهاية للخلافة العباسية بصورة قاطعة.

ولكن رغم كل ضعفها، كانت الخلافة المعنية (العباسية) تعتبر القاسم المشترك بين العرب والكرد والأتراك الذين كانوا يمثلون الغالبية السكانية في المناطق التي شملتها الدولة الأيوبية.

كان صلاح الدين حريصاً على عدم إثارة النزاع المذهبي بين السنة والشيعة، بل استمر فترة وزيراً للخليفة الفاطمي؛ وظل لوقت طويل يتريث في تنفيذ تعليمات نورالدين محمود الذي كان يطالبه بالإسراع في إنهاء الخلافة الفاطمية[٣٨]، والإعلان عن تبعية مصر للخلافة العباسية. فهو لم يجد في الشيعة مصدر تهديد على خططه في مقاومة الصليبيين، رغم حرصه على توحيد جميع الطاقات تحت خيمة شرعية الخلافة العباسية التي كانت تعيش في تلك المرحلة أضعف مراحها. أما علاقته مع الأقباط فلم تكن البداية جيدة، وربما كان ذلك بفعلانعكاسات الصراع مع الصليبيين، وكذلك بفعل تدخلات رجال الإدارة والمستشارين من الفقهاء السنة، ولكن العلاقة أصبحت أفضل لاحقاً، وعاد الكثير من الأقباط إلى الوظائف التي كانوا قد أبعدوا عنها[٣٩]. كما كان صلاح الدين حريصاً على علاقة طبيعية مع اليهود، ويُشار هنا إلى علاقته الخاصة مع أبي عمران موسى بن ميمون الطبيب والمفكر اليهودي، الذي كان قد هاجر إلى مصر من الأندلس حيث تتلمذ على العديد من العلماء والفلاسفة المسلمين، ومنهم ابن رشد[٤٠].

وفي الوقت ذاته، كان صلاح الدين مدركاً لأهمية التواصل مع الفرنجة/الصليبيين، رغم حالة الحرب القائمة بينه وبينهم. فقد كان يحاول الوصول إلى تفاهمات ومعاهدات معهم من شأنها اعطائه فرصة لاستعادة قواه، وإعادة تنظيم جيشه، وترتيب الأمور في مختلف المناطق التي كانت خاضعة لحكمه. وذلك من أجل قطع الطريق على المنافسين المحليين، والمصادرة على احتمالات قيام بعضهم بالتواصل مع الصليبيين ضده[٤١].

وفي الوقت ذاته، كان صلاح الدين يحرص على العلاقة الرسمية مع الخلافة العباسية، لذلك واظب على سياسة استمرارية التواصل مع الخليفة عبر الرسائل والوفود عبر الوفود ، ليؤكد تبعيته له، ويحصل في المقابل على ما يسبغ الشرعية على حكمه في مصر وسوريا[٤٢]. كما كان يطلب العون من الخليفة وقت اللزوم، متجاوزاً بذلك نورالدين، الأمر الذي دفع ببعضهم إلى اتهامه بكونه مغتصب للسلطة التي كانت من المفروض أن تكون وفق معاييرهم لنورالدين[٤٣]، الأمر الذي ربما ولّد الهواجس لدى نورالدين محمود نفسه، ولكن الأمور بين الرجلين لم تصل إلى حد الخصومة العلنية والنزاع المفتوح؛ وهو الأمر الذي حصل بعد وفاة نورالدين، إذ حاول بعضهم التمسك بورقة وارث نورالدين ابنه صالح الذي احتفظ به حكام حلب، بهدف استخدام شرعيته



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

للتشكيك في شرعية حكم صلاح الدين. وقد وصل الأمر بحكام حلب إلى حد التواصل مع الصليبيين لمساعدتهم ضد صلاح الدين، كما تواصلوا مع الحشاشين من أجل اغتيال صلاح الدين[44].

من جهة أخرى عُرف صلاح الدين بقدرته على إدارة الخلافات، ومهارته في الوصول إلى تفاهمات، وبناء العلاقات، واحترام الذات وإيجاد المخارج سواء ضمن الأسرة الأيوبية أم خارجها[45]. كما أشتهر بتسامحه في التعامل مع الخصوم والأعداء، لا سيما أصحاب الحاجة منهم.إذ لم يأمر صلاح الدين بقتل المدنيين، وأعفى عن أولئك الذين لم يتمكنوا من دفع الفدية في الكثير من المدن التي استردها من الصليبيين خاصة القدس[46].

كما أنه ظل ملتزماً بعهوده ووعوده حتى اعتبر هذا الأمر من بين نقاط الضعف عليه؛ إذ سمح مثلاً لقائد صليبيهو"جاي لوزنيان" بالتوجه نحو عكا وصور، الأمر الذي مكّنه من تنظيم المقاتلين من جديد، والإعداد لمواجهة صلاح الدين فيما بعد[47].

إلا أن مشروع صلاح الدين التوحيدي لم يكن له أن يكتمل من دون وجود قوة عسكرية كافية يعتمد عليها في معاركه المتواصلة مع الافرنجة/ الصليبيين، غير أن الامكانيات المادية للدولة لم تكن تسمح بإنشاء جيش دائم له هيكيليته المتكاملة؛ لذلك كان الاعتماد الأساسي على المتطوعين، وعلى رجال الزعماء المحليين، وحكام المدن والمناطق من الزنكيين والكرد وغيرهم، هؤلاء الذين كانوا يجتمعون تحت راية الإسلام، وبهدف تحرير القدس، وضرورة مواجهة القوى الخارجية التي كانت تهدد مقدسات المسلمين، وذلك بموجب جهود التعبئة التي كان يقوم بها الفقهاء، والأئمة من خريجي المدارس التي كان قد بدأ بها نظام الملك بإنشائها في بغداد وغيرها من المدن، ثم استمرت تلك السياسية في عهد عماد الدين الزنكي، وابنه نورالدين، وصلاح الدين الذي شجع من ناحيته إنشاء تلك المدارس في كل من سوريا ومصر.

فموضوع تحرير القدس كان موضوعاً للتعبئة، كما هو حال اليوم لدى العديد من القوى الإسلامية، هذا رغم أن هذه الأخيرة كانت مجرد مدينة من المدن الكثيرة التي سيطر عليها الافرنجة/الصليبيون في الساحل الشامي، وكانوا يتطلعون للسيطرة على مصر. بل كانوا قد سيطروا على رها نفسها، ليتمكنوا من تأمين خطوط الإمداد ما بين قواتهم والقسطنطينية. إلى جانب امكانية الامتداد من هناك نحو الشرق باتجاه العراق. ولكن بصورة اساسية كان التركيز الصليبي على مناطق الساحل، وذلك لسهولة عملية الوصول إليها بحراً من أوروبا.

والمشكلة التي عانى منها صلاح الدين باستمرار، لا سيما في المعارك الكبرى، تمثلت في الخلافات بين الأمراء، وعدم التزامهم بالخطط كما ينبغي. وانسحابهم مع قواتهم في الأوقات التي يريدونها، أو تناسبهم بحجة الظروف الطبيعية والإنشغال. وكل ذلك كان يستوجب


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شخصية قيادية صبورة، قادرة على تحمّل الجميع، وإيجاد حالة تكاملية بينهم، وهذا ما كان صلاح الدين يقوم به استناداً إلى المعطيات التاريخية المتوفرة. ولكنه كان في بعض الأحيان يواجه الإخفاق أو الهزيمة كما حصل عند تل الجزرة عام ١١٧٦م في المواجهة التي كانت بين جيشه وجيش "بلودين"[٤٨].

## صلاح الدين بين القوة الصلبة والقوة الناعمة

من الخصائص التي تميز بها صلاح الدين أنه لم يتخذ من القوة العسكرية وحدها وسيلة لتوسيع نطاق دولته، وتعزيز اركان حكمه؛ بل كان يحرص على الجمع بين القوة الصلبة والقوة الناعمة إذا صح التعبير. ومما ينسب إليه في هذا المجال قوله: "إنني لم أفتح البلاد بسيفي، وإنما بقلم الفاضل" أي القاضي الفاضل[٤٩].

ففي الميدان العسكري خاض الكثير من المعارك التي تشهد لها كتب التاريخ، وكان يقودها في معظم الأحيان بنفسه، ويُشرف على وضع الخطط وتنفيذها، وكان إلى جانب المقاتلين يشد من أزرهم، ويرفع من معنوياتهم.

ويُشار هنا إلى معركة حطين بصورة خاصة، والمعارك التي حررت مدن ساحل الشام.

ولكنه في الوقت ذاته كان يفرض احترامه عبر الاعفاء عن الأسرى، وارسال الهدايا إلى خصومه، وتقديم الأموال عند اللزوم إلى الزعماء المحليين، وترفعه عن الاستيلاء على الأموال لذاته. و يحرص على تنظيم الأمور الإدارية، وإنشاء المؤسسات الخدمية والانتاجية لتأمين احتياجات الناس، والإسهام في تنشيط الحركة التجارية، إلى جانب بناء االتحصينات العسكرية[٥٠].

وفي الوقت ذاته، كان يبني المدارس، ويشجع بناءها، ويقدر العلماء ورجال الدين ويحترمهم. بل كان هناك نوع من التفاعل بين القيادات العسكرية ورجال الدين، ولا غرابة في ذلك طالما أن الإسلام كان ايديولوجية الدولة، وهو الذين يجمع بين مختلف القوميات في الدولة المترامية الأطراف التي كان صلاح الدين يقودها من جبال كردستان شرقاً إلى ليبيا غرباً، ومن ديار بكر شمالاً إلى اليمن جنوباً.

من جهة أخرى، كان صلاح الدين حريصاً على التوازنات المجتمعية على مستوى الداخل وعلىمستوى العلاقات مع القوى الخارجية المؤثرة في الجوار.

## سياسة صلاح الدين في الإعتماد على الأقارب والثقاة

لقد أدرك صلاح الدين وهو في مصر أهمية الاعتماد على والده وأقربائه في إدارة شؤون بلد كبير بسكانه و موارده ومشكلاته وأهميته، فاستأذن نورالدين محمود ليسمح له بذلك. وقد اسهمت هذه الخطوة في إبراز السلالة الأيوبية التي أسسها صلاح الدين واستمرت في الفترة ما بين ١١٧١-١٢٥٠م. ولكن هذه الخطوة أسهمت من جهة أخرى في أضعاف الدولة الأيوبية بعد وفاة صلاح



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردى

ا لدين، إذتمزقت، و شهدت الخصومات بين الأ شقاء وابناء العمومة، ا لذين تحالفوا مع القوى المتربصة، خاصة مع الصليبيين ضد بعضهم بعضاً، الأمر الذي يؤكد مجددا أهمية ا لدور القيادي الذي قام به صلاح الدين حتى تمكن من توحيد طاقات المتنافسين.

واللافت في هذا المجال أ نه اعتمد على بعض الثقات من خارج إ طار الأ سرة الأيوبية، ويذكر من هؤلاء القاضي الفاضل، وعماد الأ صفهاني، وعيسى الهكاري الكردي، ومظفر ا لدين كوكبوري، وكمال الدين الشهرزوي، وبهاء الدين ابن شداد بصورة خاصة، إلى جانب العديد من القادة العسكريين والقضاة والعلماء، ولكن الحكم كان بيد أعضاء الأ سرة الأيوبية ا لذين أعطوا الأولوية للسلطة وامتيازاتها، وأهملوا مسألة الشرعية التي ركز عليها صلاح الدين كثيراً، .

كان صلاح ا لدين يحرص على الا ستماع إلى الرجال ا لذين كانوا يحيطون به من الموجهينوالمستشارين والفقهاء ورجال الدين، ويحترم آراءهم، ويتراجع في بعض الأحيان عن قرارته، حينما يشعر بأن املقريبين منه لا يوافقونه عليها. ويُشار هنا على سبيل المثال إلى أخذه برأي والده الذي نصحه بعدم الامتثال لرأي رجاله ا لذين توافقوا على منع وصول جيش نورا لدين إلى مصر، وذ لك خوفا منهم على مواقعهم. فوا لد صلاح ا لدين، كان يدرك أهمية السياسة التوازنية، وضرورة المحافظة على احترامه لإرادة نورالدين الذي كان يعد صلاح الدين في نهاية المطاف تابعاً له، وصل إلى مصر بناء على توجيتاته وتعلمياته وأوامره.كما كان صلاح ا لدين، يأخذ بآراء عبدالرحيم بن علي البيساني الملقب بالقاضي الفاضل، الذي كان يعتبر ذراع صلاح ا لدين الأيمن في إدارة الدولة واعتماد الإ صلاحات.وكان القاضي الفاضل من ناحيته يجد في صلاح ا لدين شخصية تاريخية في مرحلة مفصلية[51].

ولكن صلاح الدين لم يسلم من النقد سواء من جانب المعاصرين له، أو من قبل الباحثين في وقتنا الحاضر. فمن بين أ هم المنتقدين لـ صلاح ا لدين ممن عاصروه يشارهنا إلى ا بن الاثير،صاحب الكامل في التاريخ، الذي كان يرى، كما ورد سابقاً، بأن صلاح الدين قد اغتصب السلطة من نورالدين.

ومن بين ا لذين انتقدوا صلاح ا لدين في وقتنا المعاصر، يُشارهنا إلى حسن الأ مين في كتابه: صلاح الدين الأيوبي بين العباسيين والفاطميين والصليبيين، ا لذي يرى بأن طريقة صلاح الدين المتثملة في الاحتماء خلف راي الجماعة، كانت في واقع الأمر محاولة منه لتحميل الآخرين مسؤولية قراراته، فهو كان يريد أن يظهر بأن ما يفعله لا يمثل رايه الشخصي، وإنما هو رأي الجماعة الي توافقت على المصلحة العامة للدولة أو الأمة[52]، وينتقد اسلوب صلاح الدين في تكليف أعضاء أسرته بإدارة مختلف المناطق الدولة[53]، كما ينتقد أ ساليبه في المفاوضات مع الصليبيين وتنازله لهم عن بعض المناطق[54].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

## إدارة صلاح الدين

اعتمد صلاح الدين نظاماً إدارياً مرناً ولا مركزياً إذا جاز لنا استخدام هذه المصطلحات المعاصرة. فهم لم يكن يتدخل في تفاصيل حكم الولاة والسلاطين- الملوك، وهؤلاء كانوا في غالبيتهم من أبنائه وأشقائه وابنائهم، وهذه نقطة تسجل على صلاح الدين. ورغم تفهمهلنوازع الحكم، وطبيعة المنافسات التي قد تحدث بينهم نتيجة عوامل الحسد والغيرة، إلا أن الأمور كانت لا تسير وفق تطلعاته، وهذا ما أشار إليه من كانوا قريبين منه، ومنهم ابن شداد[٥٥].

ورغم تنقّل صلاح الدين المستمر بين مختلف المناطق، مع نزوعه الدائم نحو دمشق التي عاش فيها سنوات صباه وشبابه، وتوفي فيها عام ١١٩٣. كان حريصاً على متابعة شؤون الدولة، ومراقبة أوضاعها عبر نظام فاعل من العيون والمتابعين (المخابرات). كما كان يطلب من الولاة إرسال المقاتلين للمشاركة في المعارك المستمرة التي كان يخوضها بصورة خاصة مع الصليبيين، ومع القوى الأخرى سواء المحلية أو الخارجية منها التي كانت تشكل خطراً على أمن واستقرار الدولة.

من جهة أخرى، تمكن صلاح الدين بنزاهته وتواضعه، وحرصه الدائم على مساعدة الناس من المسلمين وغير المسلمين، من كسب احترام ودهم وأفئدتهم. وفي المقابل كان الجهود المضنية التي يبذلهافي عمليات للتخطيط للمعارك وقيادتها، والتفرغ للمفاوضات ومستلزماتها إلى جانب التفرغ لشؤون الحكم، ترهقه، وتضعفه صحياً.

ولكنه في جميع الظروف كان يحافظ على علاقاته الودية مع رجال دولته، ومع العلماء ورجال الدين والوجوه المجتمعية، ويحترم باستمرار مستشاريه ومساعديه في الدائرة الضيقة المحيطة به ، يستمع إليهم، ويتحمل انتقاداتهم، ويأخذه بما يراه سديداً من آرائهم، كل ذلك منحه قدرات إضافية مكّنته من ضمان دعمهم ومساندتهم له، الأمر الذي ساعده على تحمل المهام الجسام التي كانت تنتظره، والتحديات الكبرى التي كانت تواجهه.

## الأيوبيون بعد وفاة صلاح الدين

بعد وفاة صلاح الدين بدأت الخلافات بين أبنائه وأعمامهم، لا سيما الملك العادل الذي يستشف مما كُتب حوله من جانب المؤرخين بأنه كان مؤهلاً أكثر من غيره لقيادة الدولة الأيوبية، والمحافظة على تماسكها، والمواظبة في السياسية العامة التي كان صلاح الدين قد وضع أسسها، وهي سياسة الاستمرار في مواجهة الأطماع الصليبية، فهي هذه كانت هي التي تضفي الشريعة على الحكم الأيوبي، وهي التي كانت توحّد مواقف المسلمين، وتضمن دعمهم للدولة الأيوبية. ولكن الذي حصل هوأن الصراعات سرعان ما ظهرتبين أبناء صلاح الدين أنفسهم، خاصة بين الأفضل علي والعزيز عثمان، وهي الصراعات التي استطاع الملك العادل استغلالها ليبعدهما

على الحكم؛ ويتفرغ لمواجهة طموحات الملك الظاهر غازي الذي كان يحكم حلب، ونتيجة هذه الخلافات البينية ضمن الأسرة الأيوبية، اعتمد الملك العادل سياسة المهادنة مع الصليبيين في محاولة منه لضبط أمور الدولة الأيوبية في الداخل، الأمر الذي أدى من ناحيته إلى زيادة حدة المنافسات بين الأمراء والقادة الكرد والأتراك؛ وهي المنافسات التي كانت قد بدأت اصلاً بعد وفاة أسد الدين شيركو، وعودة الكثير من القادة العسكريين الأتراك، في ذلك الحين إلى مناطقهم، أو إلى الإقطاعيات التي كانوا قد حصلوا عليها، وذلك مع تولي صلاح الدين مهام الوزارة في مصر.

كما أدت الخلافات ضمن الأسرة الأيوبية إلى تزايد حدة أطماع القوى المجاورة في ممتلكات الدولة الأيوبية، وعودة التركيز الصليبي على موضوع استعادة القدس والمحافظة عليها عبر السيطرة على مصر. وقد بلغ الأمر بابن صلاح الدين الأفضل إلى الاستعانة بأمير سلاجقة الروم كيكاوس في مواجهة عمه، إلا أنه تراجع عن اتفاقه معه بعد أن تبين له أن الأمير السلجوقي كان يريد في واقع الحال السيطرة على بلاد الشام، وربما مصر لاحقا. ومع وفاة الملك العادل عام ١٢١٨م، عادت مشكلة الخلافات على الحكم بين أبنائه المعظم عيسى الذي كان يحكم في الشام الجنوبي، والأشرف موسى الذي كان يحكم في الشام الشمالي، والكامل الذي كان يحكم في مصر. وكان التحالف بين المعظم عيسى والأشرف موسى في مواجهة الكامل؛ وقد بلغ بهم الأمر إلى استعانة بالخوارزميين والصليبيين في مواجهة بعضهم بعضاً، وعقدوا الاتفاقيات مع الصليبيين، وتم تسليمهم بيت المقدس ثانية عام ١٢٢٩م؛ وكل ذلك أضعف الدولة الأيوبية من الداخل، وجعلتها خائرة القوى، عاجزة عن مواجهة القوى الخارجية المتربصة، وانتهى الأمر في مصر بسيطرة المماليك على الحكم عام ١٢٥٠م؛ لتبدأ مرحلة أفول الدولة الأيوبية، التي استمدت صيتها من قوة وحكمة وحنكة مؤسسها صلاح الدين، ولكن نقطة الضعف التي كانت تتمثل في النظام الإداري الفضفاض، وعدم وجود مؤسسات راسخة كان من شأنها ضبط الأمور، وتحقيق صيغة من التكامل بين أعضاء الأسرة الأيوبية عوضاً على التناحر من أجل السلطة؛ وربما كان لوفاة صلاح المبكرة دور في هذا الأمر، إذ لم يتمكن من التفرغ كما ينبغي لمسألة ترسيخ الحكم، ووضع المحددات التي كان من شأنها إدارة الخلافات ضمن الأسرة الأيوبية بصورة افضل.

ومع اسقاط الحكم الأيوبي في مصر من قبل المماليك، واسقاط الخلافة العباسية من قبل هولاكو، دخلت المنطقة مرحلة جديدة من الفوضى والدمار. لأن المغول انتشروا في المنطقة بأسرها، وقضوا على الكثير من الإمارات الأيوبية، سواء في منطقة الجزيرة أم في آسيا الصغرى وسورية.

ولكن مع انتصار المماليك على المغول عين جالوت عام ١٢٦٠، بدأت مرحلة جديدة، شهدت ظهور الدولة العثمانية التي حققت انتصارات في أسيا الصغرى وأوروبا، ثم دخلت في صراع عنيف



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

مع المماليك، وانتصرت عليهم في معركة مرج دابق بقيادة السلطان سليم الأول الذي تمكن من إلحاق هزيمة نكراء بجيش قانصوه الغوري وكان ذلك عام ١٥١٦.

وعلى إثر ذلك تمكن العثمانيون منالسيطرة على كامل المناطق التي كانت تقوم عليها الدولة الأيوبية في عز قوتها، وهكذا اصبحت الدولة الأيوبية مجرد ذكرى. ولكن في جميع الأحوال ظل اسم صلاح الدين موضع تقدير واعتزاز المسلمين، وظلت بطولاته وانجازاته في الميادين الإدارية والعمرانية والتعليمية وغيرها مادة ثرية استلهم منها الكتاب والباحثون والفنانون الكثير على مدىالقرون[٥٦].

أما ما مكّن الدولة العثمانية من البقاء على مدىنحو ستة قرون ١٢٩٩-١٩٢٤م، وهي مدة طويلة مقارنة بالعقود السبعة والنصف ١١٧٤-١٢٥٠م التي شكلت عمر الدولة الأيوبية بمراحلها المختلفة. فربما يجد تفسيره في النظام الإداري الذي اعتمدته، وهو النظام الذي كان يجمع بطريقة ما بين المركزية والاتحادية. يحترم الخصوصيات، ولكن شرط أن يلتزم الأمراء والمتنفذون المحليون بواجباتهم تجاه الدولة على صعيد دفع الضرائب، وتقديم الرجال للتجنيد أيام الحرب. كما أن الحكم باسم الخلافة في عهد السلطان سليم الأول ١٤٧٠-١٥٢٠م، أول سلطان عثمان حمل لقب "أمير المؤمنين"، و"خادم الحرمين الشريفين"، والاستمرار في سياسة مواجهة القوى الأوروبية دفاعاً عن أراضي المسلمين، بل الانتقال إلى سياسة الهجوم واحتلال مناطق من أوروبا، أعطى العثمانيين زخما من التأييد الداخلي في مختلف المناطق التي سيطروا عليها في آسيا وافريقيا، هذا إلى جانب الأصلاحات الإدارية والانجازات العمرانية في سواء في بلاد الشام أو في مصر، وبقية الدول في شمال أفريقيا. ولكن الأهم من ذلك هو تمكّن مؤسسات الدولة العثمانية من ضبط مسألة عمليات انتقال الحكم، وقطع الطريق على المغامرات الشخصية التي كانت موجودة بالتأكيد، إلا أنها لم تصل إلى حد المواجهات المفتوحة، والاستعانة بالأعداء لتصفية الحسابات الداخلية مع المنافسين من الأسرة الحاكمة.

أما بالنسبة لكردستان فقد باتت في معظمها جزءا من الامبراطورية العثمانية، وخضع قسم آخر منها للدولة الصفوية بعد معركة جالديران عام ١٩١٤م،وهي المعركة التي انتصرت فيها القوات العثمانية بقيادة السلطان سليم الأول على القوات الصفوية بقيادة إسماعيل الأول؛ ورغم ظهور االعديد من الامارات وحتى الكيانات التي عرفت باسماء الدول، إلا أن الأسباب التي أدت إلى اختفاء الدولة الأيوبية ظلت فاعلة، ونعني بها الخصومات الداخلية، والعجز عن التوافق على الأساسيات، وإدارة الخلافات حول الأمور الأخرى. وربما كان لهذا الأمر علاقة بالبنية الاجتماعية الاقتصادية، إلى جانب دور القوى المنافسة في الجوار الإقليمي التي كانت، وما زالت، تمتلك القدرة على التفاهم والتدخل لإحباط اي توجه استقلالي كردي.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

**الخاتمة:**

ما نستنتجه مما تقدم هو أن الشخصية القيادة المؤهلة تستطيع بفضل مهاراتها،وخصالها الحميدة، وبعد نظرها، وقدرتها على فهم المعادلات والحفاظ على التوزانات لصالح مشروعها الجامع، وترفعها عن المناكفات والأطماع الشخصية، أن تستفيد من الظروف التاريخية المؤهلة، وتستغل الخلافات بين القوى المتنافسة والمتصارعة الرامية إلى السيطرة والتوسع؛ وهذا ما حققه صلاح الدين بصبره، وتفانية واقدامه، وقدرته على التواصل مع الأصدقاء والمنافسين والأعداء من دون أن يتخلى عن توجهه الاستراستيجي. ولكن يبدو أن النظام الإدراي المرن الذي اعتمده في ميدان العلاقات مع مختلف مناطق دولته قد افقده قدرة التأثير المطلوب على الحكام، الذين بات كل واحد منهم يتصرف وكان سلطان أو ملك مستقل؛ وما ساهم في تأصيل هذه النزعة هو تسامح صلاح الدين مع أعضاء الأسرة الأيوبية من أبنائه وأشقائه وابنائهم. ولعل تفسير ذلك هو اعتقاده أن التزامهم بمشروعه سيكون كالتزامه، أو ربما رغبته في عدم دفع الأمور نحو التصعيد ومحاولة إدارة الخلافات بطريقة أهلية إذا صح التعبير، ليتمكن من التفرغ بصورة كاملة لمشروعه الأكبر.

ولكن الغياب السريع لصلاح الدين، حال دون ترتيب الأمور بصورة أفضل، فبرزت الخلافات التناحرية بين أعضاء الأسرة الأيوبية، وهي الخلافات التي انتهت بزوال الحكم الأيوبي.

وما يمكن أن يستخلص مما تقدّم، هو تأكيد أهمية السمات القيادية الاستثنائية التي تميّز صلاح الدين بها، وهي السمات بها التي تناولت ورقتنا قسما منها، ولكن على الجانب الآخر يمكننا أن نستفيد من أخطاء التجربة الأيوبية في واقعنا الحالي، وذلك عبر التركيز على ضرورة توزيع السلطات بين المؤسسات، وإيجاد صيغة من التكامل بينها، لتكون قادرة على معالجة الأخطاء، ومحاسبة المقصرين ضمن حدود القانون، والتفاعل المثمر مع المعادلات الإقليمة والدولية، والمحافظة على التوزان بين الإمكانيات والتطلعات.

**المراجع:**


١. العربية

١. الأمين، حسن. صلاح الدين الأيوبي بين العباسيين والفاطميين والصليبيين. ط١. بيروت: دار الجديد، ١٩٩٥.

٢. ابن الأثير. الكامل في التاريخ. أعتنى به أبو صهيب الكرمي. الرياض:، الرياض: بيت الأفكار الدولية، لا. ت.

٣. حتّي، فيليب، وآخرون. تاريخ العرب. ط١١. بيروت: دار الكشاف للنشر والطباعة والتوزيع، ٢٠٢٢.




Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

٤. رودافسكي، تمار. موسى بن ميمون. ترجمة جمال الرفاعي. ط١. القاهرة: المركز القومي للتربية. إشراف فيصل يونس. العدد ٢٠٩٥. ٢٠١٣.

٥. زكي، محمد أمين. خلاصة تاريخ الكرد وكردستان- تاريخ الدول والامارات الكردية في العهد الاسلامي. الجزء الثاني. تعريب محمد علي عوني. مصر: مطبعة السعادة، ١٩٤٨.

٦. زكي، محمد أمين. خلاصة تاريخ الكرد وكردستان- من أقدم العصور التاريخية حتى الآن. الجزء االأول. ترجمة محمد علي عوني. ط٢. مصر: ١٩٦١.

٧. سيد، أيمن فؤاد. الدولة الفاطمية في مصر-تفسير جديد. القاهرة: الهيئة المصرية العامة للكتاب. ٢٠٠٧.

٨. شداد، أبو المحاسن بهاء الدين. سيرة صلاح الدين الأيوبي المسمى النوادر السلطانية والمحاسن اليوسفية. القاهرة: مؤسسة هنداوي للتعليم والثقافة، ٢٠١٥.

٩. شرف خان البدليسي. شرفنامة في تاريخ الدول والإمارات الكردية. الجزء الأول. ترجمة محمد علي عوني ويحيى الخشّاب. مراجعة يحيى الخشّاب. دمشق: دار الزمان، ٢٠٠٦.

١٠. عاشور، سعيد عبدالفتاح. مصر والشام في **عصر الأيوبيين والمماليك**. بيروت: دار النهضة العربية. ١٩٧٢.

١١. عزام، عبدالرحمن. **صلاح الدين وإعادة إحياء المذهب السني**. ترجمة قاسم عبده قاسم. ط ٣، الدوحة: دار جامعة حمد بن خليفة للنشر. ٢٠١٦.

١٢. قاسم، عبده قاسم. **ماهية الحروب الصليبية**- الايديولوجية، الدوافع، النتائج. مصر: عين للدراسات والبحوث الإنسانية والاجتماعية. ١٩٩٣.

١٣. المصري، ايريس حبيب. **قصة الكنيسة القبطية**. الكتاب الثالث. الاسكندرية: مكتبة كنيسة مارجرجس باسبورتنج. لا. ت.

١٤. المقريزي. **السلوك لمعرفة دول الملوك**. تحقيق محمد عبدالقادر عطا. الجزء الأول. ط١. بيروت: منشورات محمد علي بيضون. دار الكتب العلمية. ١٩٩٧.

### ٢. الأجنبية

1. Man, John. *Saladin*. The Sultan who vanquished the crusaders and built an Islamic Empire. Boston: Da Capo Press, 2016.

2. Oskar Sjöström, Oskar. ”Saladin. Jerusalems befriare”, Militär Historia, 2020-1-16. https://militarhistoria.se/medeltiden/saladin-jerusalems-befriare (2023-1-26)

## الهوامش:

[1] . Oskar Sjöström, "Saladin. Jerusalems befriare", Militär Historia, 2020-1-16
تاريخ المشاهدة: ٢٦-١-٢٠٢٣

[٢]. استعان الخلفاء العباسيون في بعض الأحيان بالكرد ايضا للتحرر نسبيا من هيمنة السلاجقة . للمزيد حول هذا الموضوع راجع: محمد أمين زكي، خلاصة تاريخ الكرد وكردستان- من أقدم العصور التاريخية حتى الآن، الجزء االأول، ترجمة محمد علي عوني، ط٢، (مصر: ١٩٦١)، ص ١٤٥.

[٣]. عبدالرحمن عزام، صلاح الدين وإعادة إحياء المذهب السني، ترجمة قاسم عبده قاسم، ط ٣، (الدوحة: دار جامعة حمد بن خليفة للنشر، ٢٠١٦)، ص ٢٩.

للمزيد حول هذا الموضوع راجع: عصام محمد شبارو، السلاطين في المشرق العربي- معالم دورهم السياسي والحضاري- السلاجقة والأيوبيون، (بيروت: دار النهضة العربية، ١٩٩٤).

[٤]. عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٢٩.

[٥]. للمزيد حول هذا المواضع راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٢٦- ٣٣.

[٦]. شرف خان البدليسي، شرفنامة في تاريخ الدول والإمارات الكردية، الجزء الأول، ترجمة محمد علي عوني ويحيى الخشاب، مراجعة يحيى الخشاب، (دمشق: دار الزمان، ٢٠٠٦)، ص ٩٦. يعتقد شرفان خان أن اصل الأسرة الأيوبية ربما كان من رونده دوين في أذربيجان. ص ٩٦.

[٧]. عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٤٢.

[٨]. المرجع نفسه، ص ٤٢.

[٩]. Oskar Sjöström, المعطيات السابقة نفسهاتاريخ المشاهدة: ٢٦-١-٢٠٢٣.

[١٠]. عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٢٦٦.

[١١]. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٢٦٣-٢٧٣.

محمد أمين زكي، خلاصة تاريخ الكرد وكردستان- تاريخ الدول والامارات الكردية في العهد الاسلامي، الجزء الثاني، تعريب محمد علي عوني، (مصر: مطبعة السعادة، ١٩٤٨)، ص ٢٥٠-٢٥٥.

[١٢]. مصطلح الدولة بدلالاته القانونية والسياسية هو مصطلح حديث تبلور بعد نهاية الحروب الدينية في أوروبا، وهي الحروب التي انتهت بموجب معاهدة وستفاليا ١٦٤٨.

[١٣]. المقريزي، السلوك لمعرفة دول الملوك، تحقيق محمد عبدالقادر عطا، الجزء الأول، ط١، (بيروت: منشورات محمد علي بيضون، دار الكتب العلمية، ١٩٩٧)، ص ١٤٥.

[١٤]. للمزيد حول الدولة الفاطمية راجع: فيليب حتى وآخرون، تاريخ العرب،ط ١١، ( بيروت: دار الكشاف للنشر والطباعة والتوزيع، ٢٠٠٢)، ص ٧٠٢-٧١١.

[١٥]. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: عبدالرحمن عزام، صلاح الدين، ص ٤٠-٤٣.

١٦' Oskar Sjöström. المعطيات السابقة نفسهاتاريخ المشاهدة: ٢٦-١-٢٠٢٣



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٧. للمزيد حول حكمة وبعد نظر نجم الدين أيوب، والد صلاح الدين، السياسية، وقدراته الإقناعية وساليبه في معالجة الخلافات، واصلاح ذات البين، خاصة مع نورالدين محمود، ودوره في إقناع أهل دمشق بفتح مدينتهم أمام نورالدين، حفاظاً عليها من الخطر الصليبي راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، المعطيات ذاتها، ص ٥٣-٥٧.

١٨. للمزيد حول هذه الحملة وأسبابها وتفصيلاتها ونتائجها راجع: المرجع السابق نفسه، ص ٧٨-٨٤.

١٩ Oskar Sjöström, .المعطيات السابقة نفسهاتاريخ المشاهدة: ٢٦-١-٢٠٢٣

٢٠. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٨٠-٨٧.

٢١. المرجع نفسه، ص ٩٠.

٢٢. المرجع نفسه، ص ٩١.

٢٣. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: أبو المحاسن بهاء الدين شداد، سيرة صلاح الدين الأيوبي المسمى النوادر السلطانية والمحاسن اليوسفية، (القاهرة: مؤسسة هنداوي للتعليم والثقافة، ٢٠١٥)، ص ٢٩-٣٠.
عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٩٠-٩١.

٢٤. ومما أورده ابن شداد حول هذا الموضوع أن الآراء لم تكن متوافقة بين القادة العسكريين لاختيار صلاح الدين وزيراً، ويبدو أن المؤيدين لنورالدين كانوا يرشحون الأمير عين الدولة الياروقي. وكان هناك مرشحون آخرون منهم سيف الدين المشطوب وقطب الدين خسرو. ويُقال أن الخليفة الفاطمة عرض موضوع الوزارة على خال صلاح الدين شهاب الدين الحارمي، لكن الأخير اعتذر. وهناك من يعتقد أنه كان لكل من عيسى الهكاري وبهاء الدين قراقوش دور في ترجيح كفة صلاح الدين. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٩٤-٩٦.

٢٥ Oskar Sjöström,المعطيات السابقة نفسهاتاريخ المشاهدة ٢٦-١-٢٠٢٣
يرى اوسكار شوسترُم أأن سبب اختيار صلاح الدين وزيراً خلفاً لعمه أسد الدين أن القادة المتنافسين أعتقدوا أنه شاب قليل الخبرة، الأمر الذي سيكون سببا لفشله في مسألة ضبط السياساى التوازنية مع نورالدين.
غير أن وفاة نورالدين عام ١١٧٤ فجاءة، وبعد بعدة أشهر توفي أماالريكا Amalrik فتح المجال أمام صلاح الدين أكثر بعد أن تخلص من منافسين قويين. وتدخل الموت مرة أخرى ليساعد صلاح الدين، وذلك بوفاة الخليفة الفاطمي بعد اسبوع من رفع اسمه من الخطبة، الأمر الذي كان إيذاناً بزوال الحكم الفاطمي في مصر، وهذا فحواه اتساع نطاق سلطة صلاح الدين لتشمل مناطق في شمال أفريقيا.

٢٦. حول هذا الموضع يرى أبن اثير بأن صلاح الدين كان يماطل في موضوع قطع الخطبة للخليفة الفاطمي، وذلك في محاولة منه للحفاظ على التوزانات بينه وبين نورالدين، لأنه كان يتحسب لإمكانية قيام نورالدين بعزله. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: ابن الأثير، الكامل في التاريخ، أعتنى به أبو صهيب الكرمي، (الرياض:، الرياض: بيت الأفكار الدولية، لا. ت)ص ١٧٤٧.

٢٧ Oskar Sjöström, .المعطيات السابقة نفسهاتاريخ المشاهدة: ٢٦-١-٢٠٢٣

٢٨. حول الجفاء بين نورالدين وصلاح الدين، والشكوك المتبادلة بينهما راجع: ابن الأثير، المرجع نفسه، ص ١٧٤٧-١٧٤٨.

٢٩. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: المقريزي، المرجع نفسه، ص ١٥٤.
- شرف خان البدليسي، المرجع نفسه، ص ٩٨-٩٩.
- ابن الأثير، المرجع نفسه، ص ١٧٤٨.


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٣٠. عبد الرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ١٢٢.

٣١. المرجع نفسه، ص ١٢٧.

٣٢. للمزيد حول انتصار صلاح الدين في حطين راجع: عبدالرحمن عزام، صلاح الدين، المعطيات نفسها، ص ١٩٥-٢١٠.

٣٣ للمزيد حول مؤهلات وصفات صلاح القيادية راجع:

John Man," A Brief History of Leadership", pp. 237-248, in Saladin, The Sultan who vanquished the crusaders and built an Islamic Empire, (Boston: Da Capo Press, 2016).

وما يذكره جون في هذا المجال هو أن صلاح الدين كان يمتلك مهارات خاصة في ميدان حل المشكلات والقدرة على تجاوز الخلافات العائلية، وامكانية متابعة الناس، والقدرة على بناء العلاقات الشخصية، كما انه استفاد من تجربة والده، وكان ملتزما بالأسرة بصورة عامة.

إلى جانب ذلك تميزت شخصية صلاح الدين بالشجاعة والحذر والعفة والصبر والحرص على التواصل. ورغم صفاته القيادية وقدراته الفردية المتميّزة كان صلاح الدين يعطي أولوية خاصة للمستشارين والعلماء وللقادة وأعضاء الأسرة؛ يستمع إليهم ويستشير بهم، ويراعي الظروف والتوزانات. ويعتمد استراتيجية توحيد الطاقات في خدمة الهدف الرئيس.

٣٤. قاسم عبده قاسم، ماهية الحروب الصليبية- الايديولوجية، الدوافع، النتائج، (مصر: عين للدراسات والبحوث الإنسانية والاجتماعية، ١٩٩٣) ص ١٤٦.

٣٥. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: فيليب حتي،إدوارد جرجي، جبرائيل جبور، تاريخ العرب، ط١١، (بيروت: دار الكشاف للنشر والطباعة والتوزيع ، ٢٠٠٢)، ص٥٤٦-٥٤٩.

٣٦. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: المرجع نفسه، المعطيات نفسها، ٥٤٩-٥٥٦.

٣٧. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: المرجع نفسه، ص ٥٦٣-٥٦٦.

٣٨. للمزيد حول تاريخ نشوء وزوال الدولة الفاطمية وانتقالها إلى مصر راجع: أيمن فؤاد سيد، الدولة الفاطمية في مصر- تفسير جديد، (القاهرة: الهيئة المصرية العامة للكتاب، ٢٠٠٧).

وللمزيد حول الدولة الفاطمية في مصر خلال الفترة الأيوبية راجع: المرجع نفسه، المعطيانت نفسها، ص ٢٨٧-٣٠٩.

٣٩. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: ايريس حبيب المصري، قصة الكنيسة القبطية، الكتاب الثالث، (الاسكندرية: مكتبة كنيسة مارجرجس باسبورتنج، لا. ت.)، ص ١٥٥-١٦٢، ص ١٦٧-١٧٠.

٤٠. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: تمار رودافسكي، موسى بن ميمون، ترجمة جمال الرفاعي، ط١، (القاهرة: المركز القومي للتربية، إشراف فيصل يونس، العدد ٢٠٩٥، ٢٠١٣) ص ٢١-٤٣.

٤١. للاطلاع على جانب من هذه المفاوضات والمعاهدات راجع: فيليب، إدوارد جرجي، جبرائيل جبّور، المرجع نفسه، ص ٧٤٠-٧٤١.

٤٢. هذا رغم الفتور الذي كان يُقابل به من جانب الخليفة في بعض الأحيان، خاصة حينما أرسل وفداً بعد تحرير القدس. ويبدو أن الخليفةوالمقربين منه كانوا يشعرون بشيء من الحسد والتحسّب لتنامي قوة صلاح الدين،



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

وامكانية أن يقلب هذا الأخير الخلافة العباسية رأساً على عقب. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٢٢٤.

ومايستنتج من المصادر والمراجع التي تناولت العلاقات بين الخليفة العباسي وصلاح الدين هو أنه كان للرجال المحيطين بصلاح الدين دور كبير في هذا المجال، ويُشار هنا بصورة خاصة إلى كل من عماد الدين الأصفهاني والقاضي الفاضل.

٤٣. من هؤلاء المؤرخ ابن الأثير. حول هذا الموضوع راجع: قاسم عبده قاسم، في التعقيب الذي كتبه لكتاب عبدالرحمن عزام، صلاح الدين، المعطيات السابقة نفسه، ص ٢٨١.

٤٤. للمزيد حول تفصيلات هذا الموضوع راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ١٢٥-١٣٤.

45. John Man, Saladin, p 240.

٤٦. عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٢١٧-٢١٨.

٤٧. المرجع نفسه، ص ٢٢٧-٢٣١.

٤٨. للمزيد حول هذا الموضوع راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ١٦٥-١٦٦.

٤٩. المرجع نفسه، ص ١٨٩.

٥٠. فيليب حتي، إداورد جرجي، جبرائيل جبور، المرجع نفسه، ص ٧٤١-٧٤٢.

٥١. للمزيد حول القاضي الفاضل ودوره دولة صلاح الدين راجع: عبدالرحمن عزام، المرجع نفسه، ص ٩٧-١٠١.

٥٢. حسن الأمين، صلاح الدين الأيوبي بين العباسيين والفاطميين والصليبيين، ط١، (بيروت: دار الجديد، ١٩٩٥)، ص ١٢٦.

٥٣. المرجع نفسه، ١٣٢.

٥٤. المرجع نفسه، ص ١٢٥-١٢٦.

٥٥. أبو المحاسن بهاء الدين بن شداد، المرجع نفسه، ص ١٨٤-١٨٥.

٥٦. للمزيد من التوسع والتفصيلات الخاصة بالخلافات ضمن الأسرة الأيوبية، وانهيار الحكم الأيوبي في كل من مصر والشام والجزيرة، وذشأة دولة المماليك، وانتصار العثمانيين عليها لاحقاً راجع: سعيد عبدالفتاح عاشور، مصر والشام في عصر الأيوبيين والمماليك، (بيروت: دار النهضة العربية، ١٩٧٢).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**The role of Sultan Salah al-Din's leadership in the establishment and expansion of the Ayyubid state and its cohesion**

**Abstract:**

Writing about the Ayyubid Dynasty 1171-1250, which was established by Salah al-Din al-Ayyubi, is considered one of the difficult topics, due to the repetition of what was written by Arab, Kurdish, Western historiansand researchers in general. They provided a lot of material that dealt with the details of the historical aspects, the development of events, and the wide geographical area that the state covered. It also showed the vitality of its position in the context of the major events that took place in the region during the Crusades, and shed light on its contribution to the elimination of the Fatimid state in Egypt, as well as its administrative and urban achievements and the system of government it adopted. In order to overcome the above mentioned aspects , the proposed research paper will focus the way Salah al-Din was brought up which shaped his leadership personality. in addition to highlighting the role of his family in shaping his way of life, the social environments in which he grew up, the jobs that were assigned to him, and the opportunities that were available to him. All of these factors helped Salah ad-Din's to become a great leader with the ability to deal patiently and fruitfully with the grave challenges that were mainly represented in the Crusades, and intra-conflicts in their various forms, whether between Sunnis and Shiites, or between the princes of the Ayyubid state itself, or those were between the Ayyubid state and the rulers of its neighbouring regions Among the most important issues this paper will address the following:

1. A wise political balance and building alliances.
2. Focusing on the main goal and adopting a firm policy in dealing with obstacles.
3. Ensure that the Abbasid caliph is considered to be the source of the state's legitimacy.
4. Focusing on the Islam as dimension of the state to be able to accommodate all social aspects.
5. Adopting Shura and taking into account Olama (Muslim scholar)opinion and those with experience.
6. Paying attention to the administrative system and the urban aspect.
7. Ensure the importance of integration between the different regions of the state without direct interference in the details. the adoption of the decentralization or federal administrative system.
8. His courage and skill in leading battles.

9. The distribution of tasks within the Ayyubid family and among its commanders, in order to avoid intra-struggles over power.
10. Commitment to the values of tolerance, integrity, humility, and helping those in need.

That confirms the importance of the mentioned factors , and their role in expanding of the Ayyubid state, is that after the death of Salah al-Din, disputes arose between members of the Ayyubid family, and power struggles prompted them to enter into conflicting alliances, and to seek the help of hostile forces in order to gain strength from them in the face of competitors from among the members of the family. Add to it is the negative role played by the Mamluks.

This is what the paper will attempt to shed light on, in the context of the comparative descriptive approach that it will adopt to identify the differences between the stage of establishing the Ayyubid state during the reign of Salah al-Din, and the stage of weakness during the era of competing rulers from the Ayyubid family. I would say the struggle between the rivals led to the fall of the state in question.

In conclusion, the paper will examine the repercussions of all these on the Kurdish regions before the emergence of the Ottoman Empire.

# جهود السلطان صلاح الدين الأيوبي في نشرها المذهب السني الأشعرية أنموذجاً

**د. شريف مراد البوطاني**
Van Yüzüncü Yıl Üniversitesi, İlahiyat Fakültesi/ turkiye

**الملخص:**

لا شك أن تقدم الدول والإمارات لا تكون فقط من الناحية السياسية بل في جميع جوانب الحياة العلمية والاجتماعية والاقتصادية، والدولة الأيوبية التي كانت تهتم كثيراً بالجانب العلمي وصروحها الحضارية من مدارس ومعاهد، كان لحكامها وسلاطينها الدور الأكبر في خدمتها والإنفاق عليها وعلى أصحابها من العلماء والأساتذة وطلاب العلم، وفي مقدمتهم السلطان صلاح الدين الأيوبي الذي اعتمد على العلماء واصطحبهم في جهاده، واستمع إلى نصحهم مشورتهم، وأخذ برأيهم في كثير من الأحيان كما فعل في مصر؛ حيث جعل من جامع الأزهر الشريف منبعاً ونبراساً لعقيدة أهل السنة والجماعة- عقيدة الأشعرية-بعد بقائها زهاء قرنين من الزمن تحت حكم الفاطمية. ولأهمية الجانب الديني في حياة القائد صلاح الدين، كان كثيراً ما يطلب من علماء العقيدة وعلم الكلام أن يترددوا عليه، ويحضروا مجالسه لتقام بينهم المناقشات الجدلية، والمناظرات العلمية، وكان حثيثاً في سعيه في نشرها، حتى وصل الأمر به أن أمر بقراءة العقيدة الأشعرية على المآذن كل صباح، وخدمته لبيان وتثبيت هذه العقيدة واضحة للعيان.

**الكلمات الدالة:** الأيوبيون – علم الكلام– صلاح الدين –الأشاعرة– جهودهم.

**المقدمة:**

تعتبر موضوع العقيدة من المواضيع المهمة التي تهم المسلمين، ولها تأثير عظيم على الناحية الدينية والاجتماعية والاقتصادية والثقافية، وكان اهتمام الباحثين بمسالة العقيدة في الدولة الأيوبية قليلة؛ لذلك وقع الاختيار على هذا الموضوع، وأنصب الجهد قدر الإمكان لتغطية بعض الجوانب المهمة منه، وجاء تركيز البحث على دراسة العقيدة الأشعرية ودور السلطان صلاح الدين في نشرها، وجمع أهم المعلومات التي تخدم هذا الموضوع من بطون الكتب، وتم تقسيم البحث فضلاً عن الخلاصة والمقدمة إلى ثلاثة مباحث، تناول المبحث الاول:(أهم المدارس العقيدية) المدرسة الأشعرية؛ التي تنسب إلى الإمام أبي الحسن الأشعري إمام أهل السنة والجماعة. ومنهجه في

الاستدلال. أما المبحث الثاني كرس (للحديث عن السلطان صلاح الدين الأيوبي)، والمبحث الثالث الموسوم بـ( جهوده في نشر العقيدة الأشعرية) كرس هذا المبحث لإلقاء الضوء على دور السلطان صلاح الدين في نشر العقيدة الأشعرية، ثم أهم الخطوات التي قام بها. وأختتم البحث بأهم النتائج التي أفرزتها الدراسة.

**إشكالية البحث:** تدور إشكالية البحث حول الإجابة على الكثير من الأسئلة التي تدور في ذهن المهتم بهذا المجال، والتي تبحث عن دور السلطان صلاح الدين، وأهم أعماله في تدعيم أركانها في المجتمع. مثل:

- ما هو دور العلماء والأمراء في تثبيت عقائد الناس؟
- ما هو دور السلطان صلاح الدين في تثبيت دعائم تلك المدرسة؟
- ما هي الخطوات التي قام بها السلطان صلاح الدين ؟

**فرضيات البحث:** هل كان للأمراء وسلاطين الأيوبية دور في إنشاء المدارس عامة والمدارس العقيدية في بلاد الكرد وغيرهم؟ هل مارس العلماء والقادة مهن ذات مكانة في هذه الحقبة التاريخية؟ هل كانت هنالك مؤشرات تشير إلى دور السلطان صلاح الدين ومن معه من العلماء في البناء الاجتماعي والفكري والديني؟

**أهمية وأهداف البحث:** للإجابة على بعض التساؤلات التي تثبت انَّ علماء وأمراء وسلاطين الكرد لهم دور كبير على الجانب العلمي والاجتماعي والحضاري في هذه الفترة التاريخية، وأثبتوا وجودهم الروحي في خدمة المجتمع.

منهج البحث: من أجل تحقيق أهداف البحث أُعْتُمِدَ منهج البحث الوصفي التحليلي لتمحيص النصوص المستخدمة. وتوظيفها لخدمة مفردات الموضوع.

## أولاً- لمحة تاريخية عن الدولة الأيوبية

الباحث والمتتبع عن تاريخ الدولة الأيوبية يجد أن أغلب المصادر التاريخية تؤكد على أن أصول الأيوبيين تعود إلى جدهم أيوب ابن شادي بن مروان-أو-( شاذي) الذي ينحدر من قبيلة الروَّادية، وتعود نسبهم إلى أكراد روندة دوين أذربيجان( البدليسي،٩٦،٢٠٠٦)، والذي عينه السلطان مسعود السلجوقي محافظاً لقلعة تكريت، وبعد موته حل محله ابنه نجم الدين أيوب، الذي غادر تكريت مع أخيه أسد الدين شيركوه ليدخلوا في خدمة الأمير عمادالدين الزنكي، ومن بعده لخدمة نور الدين محمود فنالا ثقته وإعجابه؛ حتى أسند إلى أسد الدين منصب قيادة الجيش مع توليه حكومة حمص، وبعد ذلك أنتقل هو وابن أخيه صلاح الدين إلى مصر ثم نال منصب الوزارة بعد قتله للوزير شاور وزير الخليفة العاضد الفاطمي بإذن منه، وبعده تولى الوزارة ابن أخيه صلاح الدين الذي أستطاع بذكائه النادر أن يستولي على جميع أركان الدولة بعد وفاة العاضد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

الفاطمي، وبعد موت نور الدين محمود وحد السلطان صلاح الدين بين مصر وبلاد الشام، ثم توجه هو وأخوته وأقرباءه إلى جهاد الإفرنج، و فتح القدس وتحرير الكثير من البلاد الإسلامية، ولم يمضي الكثير من الوقت حتى انتصر صلاح الدين على النصارى وأعاد الأراضي المقدسة إلى حكم المسلمين السنة، ثم مد حكمه إلى أجزاء من العراق واليمن والحجاز ودامت حكم الدولة الأيوبية من ١١٧١م إلى ١٢٦٠م، ٥٦٦-٦٥٨ ه).[الصلابي، ١٩٩٤م، بتصريف].

إذن الدولة الأيوبية نشأت في مصر، وامتدت على رقعة واسعة من العراق والشام واليمن والنوبة وشمال إفريقيا، وكان مؤسسها الأول هو السلطان الناصر صلاح الدين، الذي بدأ وزيرًا للخليفة الفاطمي العاضد لدين الله، ونائبًا للسلطان نور الدين محمود على مصر في آن واحد، حتى صار المتصرف في جميع أمور البلاد وتركزت في يده جميع الصلاحيات، وأعاد مصر إلى حكم الخلافة العباسية السنية، كما تمكن من تجفيف جميع منابع التعليم الشيعية الفاطمية، وحولها إلى مراكز لتعليم المذهب السني، وبعد موته تم تقسيم دولته بين أخيه الملك العادل وأولاده الخمسة، وقد جرت على الدولة الأيوبية من سنن الله في كونه كما جرت على الدولة الأموية والعباسية حيث دب الخلاف بين أفراد الأسرة الحاكمة ونشب بينهم الاقتتال على الممالك والإمارات حتى انتهى دور الأيوبيين في السلطة. [ابن السبكي،١٩٨٦م، بتصريف ].

وقد لا أكون مبالغاً إذا قلت لقد قرأت في سيرة جميع أفراد الذين حكموا باسم الدولة الأيوبية فوجدت أن أغلبهم اتصفوا ببعض الصفات التي ينبغي أن يتوفر فمن يحكم المسلمين فكلهم كانوا على دراية علمية بالعلوم الشرعية وسياسة الحكم، وكانوا عادلين في حكمهم، وفي غاية السخاء والكرم، وأصحاب حلم ونباهة وحياء، وكانوا يحبون العلم والعلماء ويقربونهم من مجالسهم ويبالغون في تكريمهم، ولا يحيدون عن قواعد العدل والنّصفة قط، وإن كان لا يخلو الأمر من بعض الشواذ عن هذه القاعدة.

كما تميزت حياتهم الثقافية والاجتماعية بكثير من السمات التي ميزتها بشكل جلي وواضح عن غيرها من الدول والممالك الإسلامية في العصور الوسطى، حيث تأثرت كثيرًا بأجواء الحروب الصليبية ونهاية حكم الدولة العبيدية، مع تطلعهم إلى نهضة حقيقية، يتم من خلالها توحيد البلاد الإسلامية. فقد اهتموا كثيرًا بشؤون الحياة الثقافية والفكرية، فدعموا الشعر والأدب، وأكثروا من تعليم الدين والفقه، وهذا ما ساعد على ترسيخ أركان دولتهم، وتجذرت في عميق التاريخ، وهو ما ساعدهم على محو آثار المذهب الفاطمي العبيدي، فعمل الأيوبيون على إعادة نشر المذهب السني في البلاد الإسلامية التي كانت تحت حكمهم؛ لأنه المذهب الأصلي لغالبية المسلمين من العرب وغيرهم، وجاء عملهم هذا رداً على ما قام به الفاطميون من محاولتهم لتشييع جميع أهل السنة، وبكل الوسائل القسرية المتاحة وغيرها من الوسائل، وهذه الأجواء والظروف هي


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

التي أثرت على إنتاج الأدباء والكتاب والشعراء في عصرهم، كما اعتمدوا في دعوتهم إلى إحياء المذهب السني على طريقة مبنية على التفكير والعلم والدعوة العلمية الراشدة، وليس على قوة السلاح والإرهاب. [ الصلابي، ١٩٩٤م، ص.١٦٥ بتصريف].

وأما من الناحية الإدارة السياسية والاجتماعية والقضائية فقد عزل صلاح الدين أغلب القضاة الدولة الفاطمية والإسماعلية وعين بدلاً عنهم قضاةً من أهل السنة والجماعة؛ خاصة ممن كان على المذهب الشافعي، كما قام بالتخلص من جميع أثارهم العلمية- من الكتب والمخطوطات- التي كانت تعج بها الخزائن والمكتبات العامة، مما أدى إلى فقدان بعض المخطوطات والآثار المهمة النافعة مع الضارة من حقبة الفاطميين.

ومن أعظم أعمالهم على الإطلاق كثرة بناءهم للمدارس التي تهتم بتدريس الفقه الشرعي وإعادة إحياء الإسلام في حياة المسلمين وقلوبهم، وحثهم على الجهاد في مواجهة الصليبيين وإخراجهم من بيت المقدس، حتى غدا الجهاد منهجاً وسمة مميزة للعصر الأيوبي، وهذا ما ميزهم بكثرة بناءهم للقلاع الحربية في أغلب المناطق التي وقعت تحت سيطرتهم؛ خاصة قلعة صلاح الدين الشهيرة التي بناها في القاهرة قبيل وفاته، التي اشتهرت بفنها المعماري الرائع والجميل، كما بنى لها ملحقات كثيرة المساجد والقصور وإسطبلات الخيل، كم أهتموا بالعمران والبناء المدني اهتمامًا جيدًا، أما السلطان صلاح الدين فقد بنى العديد من المدارس الوقفية والمستشفيات والمساجد الكبرى، وقد تميز عهده رحمه الله بأنه كان من عادته بعد أن يفتح أي مدينة يبدأ بتأسيس المرافق العامة من مد للجسور وخط للطرقات وبناء للمعاهد والمدارس. [ابن شداد،١٤١٥هـ-١٩٩٤م، بتصريف].

## ثانياً- ما المقصود بالمدرسة الأشعرية في العقيدة؟

هي مدرسة إسلامية سُنيّة، يعود سبب تسميتها بهذا الاسم إلى إمامها ومؤسسها أبي الحسن الأشعري بن أبي بشر إسحاق بن سالم -( ٢٦٠-٣٢٤هـ/ ٨٧٤-٩٣٦م) وهو علي بن إسماعيل الأشعري - والذي ينتهي نسبه إلى الصحابي الجليل أبي الحسن الأشعري ، وهي عقيدة أهل الحق من أهل السنة والجماعة؛ الذين كوّنوا مدرستين، تخصصتا في تعليم عقيدة أهل الحق، وتشكل معها الماتريدية-نسبة للإمام أبي منصور الماتريدي الحنفي- هو محمد بن محمد بن محمود، (ت ٣٣٣ه/ ٩٤٥م)- أعظم مدرستين عرفهما الناس في التاريخ، وقد قال في شأنهما الإمام السبكي- رحمه الله تعالى-: "واشتغلوا بالردِّ على أهل البدع والأهواء! وهؤلاء الحنفيّة والشافعيّة والمالكية وفضلاء الحنابلة -ولله الحمد- في العقائد يدٌ واحدة كلهم على رأي أهل السنَّة والجماعة، يدينون الله تعالى بطريق شيخ السنّة أبي الحسن الأشعري-رحمه الله-، لا يحيد عنها إلَّا رَعَاع من الحنفية والشافعية، لحقوا بأهل الاعتزال، ورَعاع من الحنابلة لحقوا بأهل التجسيم، وبرَّأ الله المالكية فلم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

نرَ مالكيًّا إلَّا أشعريًا عقيدة. وبالجملة عقيدة الأشعريّ هي ما تضمنته عقيدة أبي جعفر الطحاويّ التي تلقَّاها علماء المذاهب بالقبول، ورضوها عقيدة". [ السبكي،١٩٨٦م، ٦٢].

ومن يتتبع البحث في عقيدة أغلب علماء الأمة الإسلامية سيجد أن أغلبيهم من أتباع المذهب الأشعري، وهذا ما دفع بابن عساكر إلى أن يجمع في كتابه "تبين كذب المفتري فيما نسب إلى الإمام الأشعري" أعداداً كبيرة من العلماء الأمة، قسمهم إلى خمس طبقات، وترجم لهم باستفاضة، وتفصيل دقيق، ولكن ابن السبكي يرى أن ابن عساكر لم يذكر من العلماء الأشاعرة إلا النزر اليسير والعدد القليل، ولو وفّى الاستيعاب حقه لاستوعب غالب علماء المذاهب الأربعة، ومن كبار هؤلاء الأئمة: البيهقي، والباقلاني، والقشيري، والجويني، والغزالي، والفخرالرازي، والنووي، والسيوطي، والعز بن عبد السلام، والتقي الدين، وابن العساكر، وابن حجر العسقلاني، وابن عقيل الحنبلي، وتلميذه ابن جوزي وغيرهم كثير، حتى إنهم مثّلوا جمهور الفقهاء والمحدثين من شافعية ومالكية وإحناف وبعض الحنابلة. [ابن عساكر،٧٥، وابن السبكي،١٩٨٦م، ٦٢].

بل هذا ما دفع بصاحبي كتاب" أهل السنة الأشاعرة شهادة علماء الأمة وأدلتهم" أن يقولا: إن" الأشاعرة و الماتريدية هم غالب الأمة.. ومذهب الأشاعرة ومن وافقهم من أهل السنة هو مذهب الذي عليه سواد الأمة وأكابر أهل الفضل فيها ..وما ذاك إلا لأنه الامتداد الطبيعي لما كان عليه الصحابة والتابعون وتابعوهم، فلم يبق عِلْمٌ من العلوم لم يكن لهم الريادة فيه، ولا تركوا باباً للمعرفة لم يلجوه، فكان لهم في كل علم من علوم الشريعة وغيرها القدح المعلى والجبين الأجلى.". [ السنان والعنجري، ٢٠١٠م، ٢٤٨].

## ثالثاً- منهج المدرسة الأشعرية في الاعتقاد والاستدلال

يتميز منهج علماء الأشاعرة في الدفاع عن عقائد الأمة والسلف الصالح بالاستدلال بالنقل والعقل، ويستخدمون أساليب المنطق وطريقة علماء الكلام في الاحتجاج والبرهان، وهم يقدمون النقل على العقل، ويثبتون ما جاء به القرآن الكريم، والسنة المطهرة على صاحبها أفضل الصلاة وأتم التسليم، ويعتقدون بجميع أوصاف الله ورسله كما جاءت في السنة النبوية، ويؤمنون باليوم الآخر وما يتعلق به من حساب وجزاء وثواب وعقاب، فمثلاً يقول في كتابه الإبانة: " وأن الجنة حق والنار حق، وأن الساعة آتية لا ريب فيها، وأن الله يبعث من في القبور، وأن الله تعالى مستو على عرشه كما قال ﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ [سورة طه:٢٠/٥]". ( الأشعري،١٤٣٠، ٢٠٤).

كما يستخدمون الأدلة العقلية والبراهين المنطقية في ردود هم على أهل الأهواء والضلال، ويستدلوا بها أيضاً على ما جاء به القرآن الكريم والسنة النبوية، ومن أهم مميزات منهج الأشاعرة أنه منهج يأخذ بالوسطية في القول بنفي الصفات عن ذات الله تعالى؛ التي يقول بها بعض الفلاسفة والمعتزلة، وبين إثبات الصفات والمبالغة فيها، وإثباتها وتجسيمها، وهو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

مذهب الكرامية والحشوية، ومن على شاكلتهم من أصحاب التشبيه والتجسيم. [ تتان، بد، ت، ٨٧/٨٦].

ويتميز أيضاً بأنه يقرر: "بأن الله هو وحده خالق كل شيء، وأفعال الإنسان داخلة يقيناً في هذا العموم". [ البوطي، ١٩٩٧م، ٤٨].

ويتميز أيضاً بأنه امتداد لمنهج السلف الصالح من الصحابة والتابعين، ومن سار على نهجهم من المحدِّثين والفقهاء وا لمتكلمين والصوفيين الصادقين، وهو منهج يعتمد في أصوله على القرآن والسنة النبوية الثابتة، ومنهجهم لا يناقض الأدلة العقلية وا لبراهين المنطقية العقلية، " وتسلسل علماءهم.. وهم جمهور علماء الأمة الإسلامية على مر السنين، بل كل أسانيد القرآن الكريم، وكتب الحديث المنقولة إلينا؛ مدارها على أهل السنة من الأشاعرة، وقليل من الأسانيد بالحنابلة الصوفية، ولا يوجد سند أبداً إلا متسلسلٌ بهم. [ الشاذلي، ٢٠١٥م، ١١/١٠ بتصريف].

ويتميز بكتب عقدية مسندة محفوظة، تحفظ بها أقوالهم العقدية وتشرحها، وتلك الأسانيد ثابتة متصلة لهذه الكتب، يروونها بالأسانيد المتصلة خلفهم عن سلفهم؛ ولهذا فلا ثقة بغير عقيدة أهل السنة وميراثها الزاخر بالعلم والمعرفة، والمستنير بنور الاتصال بسيدنا رسول الله -صلى الله عليه وسلم- وورثتِه من العلماء رحمهم الله تعالى". [ الشاذلي، ٢٠١٥م، ١٠/ ١١].

ويقول المقريزي في بيان حقيقة مذهب الأشعري: "وحقيقة مذهب الأشعري: -رحمه الله-، أنه سلك طريقا بين النفي الذي هو مذهب الاعتزال، وبين الإثبات الذي هو مذهب أهل التجسيم، وناظر على قوله هذا وا حتج لمذهبه، فمال إليه جماعة وعوّلوا على رأيه، منهم القاضي أبو بكر محمد بن الطيب الباقلانيّ المالكيّ و.. وغيرهم ممن يطول ذكره، ونصروا مذهبه وناظروا عليه وجادلوا فيه واستدلوا له في مصنفات لا تكاد تحصر، فانتشر مذهب أبي الحسن الأشعريّ في العراق من نحو سنة ثمانين وثلاثمائة، وانتقل منه إلى الشام، فلما ملك السلطان الملك الناصر صلاح الدين يوسف بن أيوب ديار مصر، كان هو وقاضيه صدر الدين عبد الملك بن عيسى بن درباس المارانيّ على هذا المذهب، قد نشآ عليه منذ كانا في خدمة السلطان الملك العادل نورالدين محمود بن زنكي بدمشق، وحفظ صلاح الدين في صباه عقيدة ألفها له قطب الدين أبو المعالي مسعود بن محمد بن مسعود النيسابوريّ، وصار يحفظها صغار أولاده، فلذلك عقدوا الخناصر وشدّوا البنان على مذهب الأشعريّ، وحملوا في أيام دولتهم كافة الناس على التزامه". [ابن المقريزي، ١٩٩٧م، ج٤/ ١٩٢].

يمكن القول: بأن منهج الأشاعرة يتميز عن مناهج الآخرين في الاعتقاد بالمبادئ العشرة لعلم التوحيد، أي الاعتقاد بأحدية ذاته وصفاته وأفعاله، وفي أقسام المضافات إلى الله تعالى،


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

وبالقواعد العقدية، ويتميز بالبعد عن التشبيه والتعطيل، والبعد عن التجسيم، بل منهج إثبات المعاني التي تليق بالله تعالى وفق ما ورد في لغة العرب الفصيحة.

**رابعاً- أهمية دور العلماء والأمراء في تثبيت عقيدة الناس**

لقد أثبتت الدراسات التاريخية أن عقيدة الناس دائماً مرتبطة بحكامهم وسلاطينهم من جهة، وبعلمائهم من جهة ثانية، فلولا العلماء لضاعت العقيدة الصحيحة بين الدعوات الباطلة، ولولا الحكام والسلاطين لقال مَنْ يشاء مَا يشاء في عقائد الناس، فكما يقولون: الناس على دين ملوكهم، وإذا اختلَّ أحد طرفي الميزان مالت كفة على كفة، وطغى جانب على جانب؛ لأن العوام من الناس لا يهمُّ أكثرهم أن يكونوا على أي عقيدة كانت، وأقرب مثال على ذلك ما كان عليه الناس في عهد خلفاء بني العباس الذين مال بعضهم إلى إجبار الناس على عقيدة الاعتزال، والقول بخلق القرآن، وافتتانهم لأهل العلم وعلى رأسهم الإمام أحمد بن حنبل، وكذلك في زمن الدولة الفاطمية العبيدية في مصر، فرغم وجود الجامع الأزهر الشريف، ووجود علماء من أهل السنة والجماعة إلاّ أن عقيدة الشيعة كانت طاغية على الجميع؛ لأن الحكام كانوا يعتنقون المذهب الشيعي الرافضي، وإن كان بعضهم ينكرونه في أنفسهم، ولولا ألطاف الله بهم، وتجديده صلاح الدين الأيوبي ومن بعده أولاده وأُمراؤه لطغت عقيدة الشيعة عليهم إلى الأبد. [الصلابي، ٢٠٠٦م، ١٣٩ بتصريف].

وقد يكون دور الحكام أكبر وأعظم في هذه الناحية من دور العلماء، خاصة إذا كانوا على طرفي نقيض، أما إذا كانوا على عقيدة واحدة يسعد الناس بكليهما، ويكون لهم الفضل في تثبيت عقائد الناس ومبادئهم، وهذا ما دفع الباحث المعاصر علي محمد الصلَّابي أن يقول: "إني وصلت في دراساتي للشخصيات الإسلامية أنه ما ظهر قائد رباني وحقق انتصارات ميدانية وأزاح شعارات كفرية إلا كان خلفه علماء وفقهاء يوجهونه ويرشدونه نحو الرأي السديد، وهذا ما حدث لصلاح الدين حيث كان اهتمامه بالعلماء والفقهاء عظيمًا."[ الصلابي، ٢٠٠٦م،١٤١].

وتذكر لنا كتب التاريخ أن القادة الثلاثة عماد الدين زنكي، ونور الدين محمود، وصلاح الدين الأيوبي وقف معهم عدد كبير من الدعاة والعلماء،" وكان على رأس هؤلاء المؤرخ بهاء الدين أبو المحاسن يوسف بن شداد (٥٣٩- ٦٣٢هـ/ ١٤٤٥- ١٢٣٤م)، والفقيه ضياء الدين عيسى بن محمد الهكاري (ت١١٨٩م-٥٨٥هـ)، والمؤرخ المعروف عبد الله بن محمد الأصفهاني المعروف بالعماد الكاتب (٥١٩-٥٧٩هـ/ ١١٢٥-١٢٠٠م) الذي كان قلمه-كما يصفه المؤرِّخون-أشد وأنكى على الصليبيين من سيوف المجاهدين؛ إذ به جمع صلاح الدين عساكر المسلمين، وبأسلوبه البديع المؤثر ألَّف بين قلوبهم، وحبَّب الاستشهاد إلى نفوسهم، وآية ذلك قوله: "وكان يأمرني بإجابة كتب الملوك في حالتَيْ سِلْمهم وحربهم، وما اجتمعت هذه العساكر الإسلامية إلا بقلمي...ويعد أبو علي محيي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الدين بن علي البياني العسقلاني (٥٢٦-٥٩٦هـ/١١٣٥- ١١٩٩م)، المعروف بالقاضي الفاضل- من أبرز من ساندوا السلطان صلاح الدين وتعاون معه في ميادين الحرب والسلم كان قال عنه السلطان صلاح الدين: " لا تظنّوا أنّى ملكت البلاد بسيوفكم، بل بقلم الفاضل". [أبو المحاسن، ٢٠١٠، ج١٥٧/٦].

مِن أشهر مَن وقفوا مع صلاح الدين الأيوبي في ميدان التعاون على صلاحِ الدِّين والدنيا وتحقيقِ النصر، وكان القاضي الفاضل يتميز بأنه موضعُ ثقة صلاح الدين، ومستشاره الأمين". [عويس، ٢٠٠٦م، ١١٤].

ومما سبق يتبّن لنا أن التعاونَ كان على أكمل وجهٍ بين رجالات الدولة الأيوبية من العلماء والدعاة والمفكرين من طرفٍ، وبين القادة والأمراء من طرف آخر، وكانت الانتصارات التي حققها الأبطال الثلاثة، واستمرارهم في الحفاظ على عقيدة أهل السنة والجماعة من العقائد الفاسدة نتيجة لهذا التعاون، وهكذا ينبغي أن يكون عليه العلماء والأمراء في كل دولة تريد لنفسها الريادة والسؤدد، وفي أي زمان، وفي أي مكان.

**خامساً- أهم ما اشتهر به السلطان صلاح الدين من ناحية العقيدة**

**أ- عُرفَ بحبه للعلم وبتعظيمه لشعائر الدين الإسلامي وخاصة القرآن الكريم**

وحبه للعلم والعلماء شيء معلوم سار به الركبان وتكلم به الحكماء، ورواه الكتّاب والرواة، فكان -رحمه الله- يحب العلم، ويشجع العلماء، ويبذل في طريقهما المال الكثير، فلم يكن يضني بمال أو جهد في سبيل نشره بين العامة والخاصة، بل ينفق الكثير في سبيل إصلاحه وإنعاشه في البلاد، فأنشأ الكثير من المدارس والأوقاف وقرّب من نفسه العلماء والشعراء والمحدّثين والفقهاء والمؤرخين، وقد قال عنه ابن شداد: "كان-رحمه الله- يحب سماع القرآن العظيم، ويستجيد إمامه، ويشترط أن يكون عالماً بعلم القرآن العظيم، متقناً لحفظه...وكان -رحمه الله تعالى- خاشع القلب رقيقه، غزير الدمعة، إذا سمع القرآن يخشع قلبه، وتدمع عينه في معظم أوقاته،...وكان-رحمه الله تعالى- متى سمع عن شيخٍ ذي رواية عالية وسماعٍ كثير، فإن كان ممن يحضر عنده استحضره وسمع منه، فأسمع من يحضره في ذلك المكان من أولاده ومماليكه المختصين به وكان يأمر الناس بالجلوس عند سماع الحديث إجلالاً له، وإن كان ذلك الشيخ ممن لا يطرق أبواب السلاطين ويتجافى عن الحضور في مجالسهم سعى إليه وسمع منه، تردد إلى الحافظ الأصفهاني بالإسكندرية، وروى عنه أحاديث كثيرة. وكان-رحمه الله تعالى- يحب أن يقرأ الحديث بنفسه وكان يستحضرني في خلوته ويحضر شيئاً من كتب الحديث ويقرؤها هو فإذا مر بحديث فيه عبرة رق قلبه ودمعت عينه... [ابن شداد،١٤١٥هـ- ١٩٩٤م].



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

وكان السلطان صلاح الدين صاحب عقيدة سليمة، يؤمن بالغيبيات والمعجزات، وكان -رحمة الله عليه- كثير التعظيم لشعائر الدين يقول ببعث الأجسام ونشورها، ومجازاة المحسن بالجنة، والمسيء بالنار، مصدِّقاً بجميع ما وردت به الشرائع، منشرحاً بذلك صدره، مبغضاً للفلاسفة والمعطلة ومن يعاند الشريعة، ولقد أمر ولده صاحب حلب الملك الظاهر بقتل شاب نشأ يقال له: السهروردي قيل عنه: إنه كان معانداً للشرائع مبطلاً، فطلبه أياماً فقتله،[ابن شداد،١٤١٥هـ- ١٩٩٤م، ص.٣٦-٣٧، والمقريزي، ١٩٩٧م، ج١/١٤٧-١٥٢]، وكان يوقِّر العلماء، ويحفظ لهم مكانتهم دائمًا.

**ب – تصوفه وزهده :** لقد عُرف بتصوفه على الطريقة القادرية ومن المعلوم أن زمن السلطان صلاح الدين الأيوبي كثر فيه الزهاد والمتقشفون بعد إنشائه لهم الكثير من خانقات ومدارس ورباط، ومن هذا المنطلق يذهب بعض الباحثين إلى ترجيح الرأي القائل بأن السلطان صلاح الدين كان صوفياً وعلى الطريقة القادرية؛ لأنه دخل على الشيخ عبد القادر الجيلاني وطلب منه الدعاء في إحدى غزواته، وتبارك به، وهذا ما دفع بالداعية الصادق العثماني أن يقول في موقع هسيربس: وتحت عنوان " *القائد الأشعري الصوفي صلاح الدين الأيوبي*" : الرجل الذي أعاد للقدس حريته...ولما مات الخليفة الفاطمي تولى صلاح الدين حكم مصر، وثبت ملكه؛ فقضى على عناصر الخيانة فيها، وتخلص من القوى التي هددت سلطانه، ونجح في إزالة الخلاف المذهبي بين المسلمين عن طريق القضاء على الخلافة الفاطمية ونشر المذهب السني الصوفي الأشعري".[العثماني، ٢٠٠٩م، ٨]. ويميل آخرون إلى القول بأنه لم يكن متصوفاً إنما تأثر بجماعته من الكرد عندما توجهوا إلى بغداد، وهذا ما رجحه الباحث حاتم الطحاوي في مقاله الذي يحمل عنوان" *البحث عن صلاح الدين الأيوبي في سيرة الظاهر بيبرس*" فقال: " كما تماست سيرة الظاهر بيبرس مع موقف صلاح الدين من التصوف، فأشارت إلى أنه لم يكن متصوفاً منذ البداية حتى مسيره ورفاقه الأكراد باتجاه الخليفة في بغداد، حيث قابلهم أحد المتصوفة وأمرهم بخلع ملابسهم وإلقاء سلاحهم، ومنحهم ملابس صوفية وسيوفاً خشبية ودرعاً من خشب الجميز. ويرى الباحث أن المصريين، أصحاب السيرة الظاهرية، لا زالوا يتذكرون الدور الكبير الذي لعبه صلاح الدين الأيوبي في نشر التصوف كوسيلة من وسائل تجفيف ينابيع الفكر الشيعي القادم مع الفاطميين، وكذا أمره ببناء العديد من الخانقاوات، واصطحابه للعديد من كبار المتصوفة في حروبه من أجل رفع الروح المعنوية لجنوده". [الطحاوي، ٢٠١٤، ٦]. وقد يكون السبب أيضاً ما ذكره ابن خلكان من أنه -رحمه الله- كان كثير العطايا للوافدين عليه خاصة من الصوفية، وكان يكرم وفادتهم إليه، ويرى أنه ينصر بدعاء هؤلاء القوم فقال: " وغشي الناس من سحائب الإفضال والإنعام ما لم يؤرخ من غير تلك الأيام، وهذا كله وهو وزير متابع القوم، لكنه يقول بمذهب أهل السنة، غارس في البلاد أهل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

الفقه والعلم والتصوف والدين، والناس يهرعون إليه من كل صوب ويفدون عليه من كل جانب".[ ابن خلكان، ١٩٩٤، ج٧/١٥٢].

وقال الشيخ عبد الله ناصح علوان عن السلطان صلاح الدين إنه: " كان رحمه الله- يكرم كل من يفد إليه من أرباب العلم وذوي الأقدار.. ويوحي إلى رجاله ألا يُغفلوا عمن يجتاز بالخيام من رجال العلم والتصوف. وقد مر به رجل مرة يجمع بين العلم والتصوف، وانصرف بعد لقاء الناصر صلاح الدين، ومضى على ذلك ليالٍ، وسأل السلطان عنه فعلم أنه مسافر، فظهر على وجهه أمارات العتاب، وقال: كيف يتركنا هذا الرجل وينصرف عنا من غير إحسان يمسه منّا؟ وشدد النكير على ذلك، فكتب إليه كاتبه كتاباً عنه، وكان كاتبه على معرفة به، فطلب منه الرجوع لمقابلة السلطان، فحضر الرجل واجتمع بصلاح الدين الذي رحب به وانبسط معه في الحديث، وأبقاه في ضيافته أياماً، ثم خلع عليه خلعة حسنة وأعطاه دابة يركبها، وثياباً كثيرة ليحملها إلى أهل بيته وجيرانه، وبعض المال، فانصرف الرجل عنه وهو في غاية السرور والانبساط..." [ علوان، ١٩٨٧م، ص ١٦٢].

وفي الحقيقة من يعود إلى كتب التاريخ يجد ظاهرة هامة كانت بادية على العصر الأيوبي وهي انتشار الطرق الصوفية والتكايا والزوايا التي ينقطع الزهاد فيها عن الدنيا للعبادة والطاعة حتى عده سمة مميزة لهذا العهد. ولعل سببها يعود إلى أن العامة وجدوا في التصوف الملجأ والمخلّص مما هم فيه من المحن والهموم، ولقد عظم اعتقادهم في مشايخ الصوفية وخصوصاً عندما بدأ الضعف يدب في جسم الخلافة العباسية.

إن مسألة صوفية صلاح الدين الأيوبي ليست مسألة غريبة على مَنْ نشأ في بيئة أغلب أهلها على عقيدة الأشاعرة ويسعون إلى الحصول على مرضاة الله تعالى، ومن أقرب طرقها طريق التصوف، بالإضافة إلى أن صلاح الدين تربى عند القائد الصوفي نور الدين محمود وعماد الدين زنكي الذي قيل عنه أنه كان يقرأ كتاب إحياء علوم الدين كله مع جنده وهم على الثغور وفي طريقهم إلى جهاد الفرنجة، ويصف لنا ابن خلّكان نور الدين زنكي هذا بأنه كان ملكاً عابداً زاهداً ورعاً مجاهداً في سبيل الله وقد لامه بعض أصحابه على تكريمه للصوفية فغضب غضباً شديداً وقال: "إني لا أرجو النصر إلا بأولئك، فإنما ترزقون وتنصرون بضعفائكم، كيف أقطع صلات قوم يقاتلون عني وأنا نائم على فراشي بسهام لا تخطئ، وأصرفها إلى من لا يقاتل عني إلا بسهام قد تصيب وتخطئ، وهؤلاء القوم لهم نصيب في بيت المال فكيف يحل أن أعطيه غيرهم".".[ ابن خلكان، ١٩٩٤، ج٥/١٨٨].

إذاً التصوف لم يكن يوماً وصمة عار يتهرب منه القادة والمجاهدون، وما سمعنا بنكرانها على المسلمين إلا في هذا الزمن الذي جاء فيه من يدعون أنهم من أتباع السلف؛ وهم في الحقيقة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو فەکولینێن کوردی

من خدموا أعداء الإسلام من البريطانيين وغيرهم، وساعدوهم على تمزيق الخلافة الإسلامية، وينكرون على المسلمين التصوف ويطلقون أحكاماً كفرية في حقهم خدمة للغرب وللإنكليز.

ومن المعاصرين من يصدرون أحكاماً عشوائية ويعملون على توجيه النقد غير المتبصر فيزعمون أن التصوف خمول وكسل ومظهر من مظاهر الضعف؛ فزلت بذلك أقلامهم، وكتبوا أن الصوفية لم نر لهم جهاداً ولم نقرأ لهم استشهاداً، وما جاء هذا الزعم إلا من المستشرقين –ومع الأسف- أخذها أذيالهم من المسلمين وأشاعوها بين الباحثين العرب المحدثين فصار ذلك هو الفهم السائد لدى الكثيرين وهذا مفهوم خاطئٌ، ومن الضروري تصحيحه؛ لأن المستشرقين صوَّروا للناس أن زهّاد المسلمين وعبَّادهم كانوا سلبيين ظانين أن زهد المسلمين كان يفصلهم عن الحياة وهو ظنٌ واهمٌ، فإنَّ زهَّاد المسلمين لم ينفصلوا عن الحياة، بل كانوا يتصلون بها، وكانوا يلبون دائماً نداء الوطن، ويتقدمون الصفوف المجاهدة طلباً للاستشهاد في سبيل الله، بل تذكر الروايات وكتب التاريخ أن أغلب سادة الصوفية من أمثال: عبد الله بن مبارك وأبو يوسف الغسولي، وإبراهيم بن أدهم، وشفيق البلخي، والشيخ رسلان الدمشقي العز بن عبد السلام، وفضل بن العياض الذين كانوا يخرجون إلى الجهاد، بل كان أغلبهم لهم رباط على الثغور يجلس فيه هو ومريديه يحرسون حدود دولة الإسلام.[ ضيف،١٩٩٥، ج٣/٤٠٣]

وكان من جليل أعمالهم أنهم إذا رأوا ملوكهم وأمراءهم يجهِّزون العدة للجهاد كان شيوخ التصوف يحرِّضون أتباعهم على المشاركة في رد العدوان عن البلاد، وكان الأتباع يخرجون بالأعداد الكثيرة ثقة بكلام وعلم شيوخهم، وطمعاً فيما عند الله من الثواب، كما فعل أبو الحسن الشاذلي سنة (١٢٥٨م- ٦٥٦هـ)، عندما" قدم إلى إسكندرية من المغرب، وصار يلازم ثغرها من الفجر إلى المغرب، وينتفع الناس بحديثه الحسن وكلامه المطرب"، [ ابن العماد، ١٩٨٦، ج٧/٤٨٢]. -مع أنه كان ضريراً-، كان يحرض أتباعه في المشاركة في معركة المنصورة سنة( ١٢٤٩ م- ٦٤٧ هـ)، فصوفية صلاح الدين علامة على زهده وصلاحه وتأييده من قبيل ربه –جل جلاله-، وليست وصمة عار كما يفهمه غلامان اليوم، وحديثِ الأنسان.

ج- **عُرف بعقيدته الأشعرية:** لقد نقل إلينا كتّاب السِّير والمؤرخون أن السلطان صلاح الدين الأيوبي –رحمه الله-كان على مذهب الإمام الشافعي، وعلى عقيدة الإمام الأشعري، وأهم ما كان يميز شخصيته عقيدته السنّية الأشعرية، وبأنه كان محباً للعلم والمعرفة، وطالباً لهما رغم جميع أشغاله، وكان حريصاً على العلم، وشديد الرغبة في سماع الحديث، والقاضي بهاء الدين المشهور بابن شدّاد يذكر لنا طرفاً من ذلك فيقول: "وكان –رحمة الله- عليه حسن العقيدة كثير الذكر لله تعالى- قد أخذ عقيدته على الدليل بواسطة البحث مع مشايخ أهل العلم وأكابر الفقهاء وفهم من ذلك ما يحتاج إلى تفهمه بحيث كان إذا جرى الكلام بين يديه يقول فيه قولاً



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

حسناً وإن لم يكن بعبارة الفقهاء فتحصل من ذلك سلامة عقيدته عن كدر التشبيه، غير مارق سهم النظر إلى التعطيل والتمويه جارية على نمط الاستقامة موافقة لقانون النظر الصحيح مرضية عند أكابر العلماء، وكان قد جمع له الشيخ قطب الدين النيسابوري عقيدة تجمع جميع ما يحتاج إليه في هذا الباب. وكان من شدة حرصه عليها يعلمها الصغار من أولاده حتى ترسخ في أذهانهم في الصغر، ورأيته وهو يأخذها عليهم وهم يلقونها من حفظهم بين يديه." [ابن شداد، ١٩٩٤م، ص٣٣].

وقد كان له اعتناء خاص بنشر عقيدة الإمام الأشعري -رحمه الله- بين أفراد دولته فقد قال السيوطي في كتابه *الوسائل إلى مسامرة الأوائل*: "أن السلطان صلاح الدين بن أيوب أمر المؤذنين في وقت التسبيح أن يعلنوا بذكر العقيدة الأشعرية فوظف المؤذنين على ذكرها كل ليلة إلى وقتنا هذا". [السيوطي، بد، ت، ص١٥]. أي إلى وقت السيوطي المتوفى سنة (٩١١هـ/ ١٥٠٦م). وعندما دخل إلى مصر استطاع أن يقضي على المذهب الشيعي بسهولة دون كبير عناء بالرغم من قدم هذا المذهب الذي كان له من العمر أكثر من مائتي عام بمصر؛ وذلك لأنه اتجه أولا إلى عقول الناس فأنشأ المدارس لأول مرة في مصر بحيث تمكنت في وقت قصير من إشاعة مذهب أهل السنة والإجهاز على المذهب الإسماعيلي دون ظهور أية بادرة اعتراض آنئذ، حتى أن بعض المؤرخين يقول: إن السبب في إنشاء المدارس بمصر هو مناهضة الشيعة ونشر السنة وإعداد أئمة يختصون بالوعظ فيها.

كما وجدت نصاً آخر عند المقريزي يقول: " ونشأ يوسف وعليه لوائح السعادة، وجالس مشايخ أهل الْعلم، فجمع له الشيخ الإِمام قطب الدّين أبو المعالي مسعود بن محمد بن مسعود النيسابوري عقيدة تحوي جميع ما يحتاج إِلَيه، فمن شدَّة حرصه عَلَيها كَان يعلمها صغَار أولاده ويأخذها عليهم ". [المقريزي، ١٩٩٧،ج١/ ١٤٩]. وفي هذا الكلام دليل على اهتمام السلطان صلاح الدين بعقيدته أولاً، ثم بعقيدة أولاده وأهل بيته ثانياً، وبعقيدة أفراد شعبه ورعاياه ثالثاً.

وقال في مكان آخر من كتابه"*المواعظ والاعتبار بذكر الخطط والآثار*": "أما العقائد فإن السلطان صلاح الدين حمل الكافة على عقيدة أبي الحسن علي بن إسماعيل الأشعري تلميذ أبي علي الجبائي، وشرط ذلك في أوقافه التي بديار المصرية... واستمرّ الحال على عقيدة الأشعريّ بديار مصر وبلاد الشام وأرض الحجاز واليمن وبلاد المغرب أيضا، لإدخال محمد بن تومرت رأي الأشعريّ إليها، حتى أنه صار هذا الاعتقاد بسائر هذه البلاد، بحيث أن من خالفه ضرب عنقه، والأمر على ذلك إلى اليوم.. فاستمرّ ذلك من سنة خمس وستين وستمائة، حتى لم يبق في مجموع أمصار الإسلام مذهب يعرف من مذاهب أهل الإسلام سوى هذه المذاهب الأربعة، وعقيدة الأشعريّ، وعملت لأهلها المدارس و الخوانك والزوايا والربط في سائر ممالك الإسلام، وعودي من



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

تمذهب بغيرها، وأذكر عليه." [ المقريزي، ١٩٩٧،ج٤/ ١٦٧-١٦٨]. ولا أظن أن أحداً سيفهم من كلام المقريزي السابق بأن السلطان صلاح الدين أجبر الناس على عقيدة الأشعرية بل نشر مذهبه بطرق سلمية حتى لينطبق عليه المثل الذي يرويه ابن الأثير بقوله: " لا ينتطح فيها عنزان"... وهذا إشارة إلى قضية مخصوصة لا يجرى فيها خلف ونزاع".[ ابن الأثير، ١٩٧٩،ج٥/٧٥].

وتذكر بعض الروايات التاريخية أن الشيخ النحوي محمد بن هبة[١] لما رأى اهتمام السلطان صلاح الدين بعقيدة الأشعري اهتماماً بالغاً ألف له رسالة وأسماها " *حدائق الفصول وجواهر الأصول* " وأهداها للسلطان فأقبل عليها وأمر بتعليمها حتى للصبيان في المكاتب وصارت تسمى بالعقيدة الصلاحية. [ ابن السبكي، ١٩٩٣، ج٧/٤٨٢].

لا شك أن المسلمين جميعاً مطالبون بأن يعتقدون في الله تعالى ورسله ما أمرهم به في كتابه، وأن يكونوا على تقوى منه، ويعبدوه حق عبادته، ويخشوه في السر والعلن، ويظنوا به -جلّ جلاله- الظن الحسن، ويعتمدوا عليه في كل شؤون حياتهم، وهذا يكون في حق قادتهم وأمراءهم أو جب، حتى يكونوا أسوداً كاسرة لا يعرفون الهزيمة، ولا يهابون الصعاب والأعداء والمنايا، ويخوضون ميادين الجهاد وقتال الأعداء بكل شجاعةٍ وبسالة، وقد ظهرت جميع هذه المظاهر الطيبة في شخصيته –رحمه الله تعالى بشكل ظاهر وجلي.

ولا غرابة في أن يكون السلطان صلاح الدين الأيوبي على عقيدة الإمام الأشعري الذي أجمع له العلماء من زمانه وإلى اليوم بعلو كعبه في هذا المجال، واعترفوا بفضله في بيان عقيدة السلف الصالح من الصحابة والتابعين بعد إن كادت أن تضيع بين عقائد القدرية والجهمية والجبرية والمعتزلة من المتكلمين والفلاسفة ..إلخ، فجاء الشيخ أبو الحسن وأظهرها للعيان وأزال عنها كل ما تعلقت بها من الضلالات، بالإضافة إلى أنه كان يعيش في منطقة أغلب أهلها على عقيدة الشيخ الأشعري، بل لم يقف عند اعتناقه للمذهب بل عمل على نشره، وخصص له المدارس والأساتذة والأوقاف، ونادى عليه في الإمارات.

### ثامناً- جهوده في نشر العقيدة الأشعرية ( عقيدة أهل السنة والجماعة)

السلطان صلاح الدين الأيوبي حامل لواء العقيدة الأشعرية بكل فخر واعتزاز، وأولاها عنايته الخاصة بها، وحارب من أجلها دولة كاملة، فحارب إبّان وزارته لمصر كل عقائد الشيعة التي كان الفاطميون ينشرونها، وقد استطاع أن يستأصل- بفضل الله وتوفيقه- جذور هذا المذهب، ولما فتح المدارس المتبعة لمذهب أهل السنة والجماعة هو من جاء بعده من أولاده وإخوانه (كالمدرسة الناصرية) و(المدرسة الكاملية) -التي بناها الملك الكامل بن العادل- أمر جميع طبقات الشعب أن يلتحقوا بهذه المدارس، ليدرسوا الدين الصحيح، ويتلقوا عقيدة أهل السنة والجماعة، بل عمل على انمحاق عقيدة الشيعة وزوالها عن أرض مصر والشام واليمن، فأزال دولة الفاطمية وعقيدتها، وأعاد


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

السلطة للخليفة العباسي السني، ثم اهتم اهتماماً بالغاً بإصلاح عقيدة المصريين، وأنشأ المدارس والزوايا للتدريس عقيدة السنة والمذاهب السنية الأربعة، وأبطل التعليم الشيعي في جميع أنحاء مصر خاصة في الأزهر الشريف، وأدخل فيها عقيدة أهل السنة والجماعة، وطلب من المدرسين أن يعلِّموا أطفال المسلمين العقيدة الصحيحة التي بها ينتصرون على الأعداء، بل وصل به الأمر بعد ذلك أن يقتل من تأكد أنه يبطن الإلحاد أو الكفر وينشره

**أهم خطواته في نشر عقيدة الأشاعرة**

لقد عمد المظفر صلاح الدين الأيوبي منذ دخوله إلى مصر على نشر مذهب أهل السنة والجماعة، وخاصة مذهب الإمام الأشعري، والطرق الصوفية، وذلك عندما بدأ ببناء المدارس التي تدرس المذهب السني، وبناء الأوقاف والكتاتيب لأيتام وفقراء المسلمين حتى يبني جيلاً جديداً؛ فيكون له يد بيضاء عليهم، فيأخذوا بعقيدة أهل السنة والجماعة، ويتركوا ما كانوا عليه سابقاً أيام الفاطميين، وجهوده هذه تظهر من خلال عدة خطوات قام بها وهي :

١- **القضاء على الدولة الفاطمية في مصر**، أعاد الحكم السني العباسي عليها، وطرد الصليبيين من القدس، ومسح كل الآثار التي تتعلق بعقائدهم الباطلة الفاسدة، والاهتمام بأهل المَصْرَيْنِ وتصحيح مفاهيمهما الخاطئة حول الإسلام وشريعته، ويقول في ذلك السيوطي: "وأخذ السلطان صلاح الدين في نصر السنة وإشاعة الحق، وإهانة المبتدعة والانتقام من الروافض، وكانوا بمصر كثيرين. ثم تجردت همته إلى الفرنج وغزوهم؛ فكان من أمره معهم ما ضاقت به التواريخ" [السيوطي،١٩٦٧م، ج٢/١٧]، والواضح من ذلك إن اعلان السلطان صلاح الدين الأيوبي الخلافة العباسية بمصر في سنة(١١٧٢م- ٥٦٧ه)، وأمره للخطباء أن يقطعوا خطبة العاضد ويخطبوا للمستضيء، هذا العمل في حد ذاته دعوة صريحة منه لنشر عقيدة أهل الحق من الأشاعرة و الماتريدية[٢]، ومحاربة غيرها من العقائد الباطلة.

٢- **إنشاء المدارس والزوايا والكتاتيب في جميع أنحاء مملكته الواسعة الأطراف**، وحتى بلغت أعدادها في العصر الأيوبي في الفسطاط والقاهرة ٢٢ مدرسة علمية، وكان هدفه من إنشاء تلك المدارس التوسع في نشر المذهب السني والعقيدة الأشعرية، ومناوأة وطمس المذهب الشيعي، و فك العزلة الثقافية التي ضربها الفاطميون على المصريين في عهدهم؛ لذا أمرَ بتعين علماء أهل السنة للتدريس فيها، ومنها على سبيل المثال: إنشائه مدرستين لتدريس فقه أهل السنة، هما المدرسة الناصرية، لتدريس الفقه الشافعي، والمدرسة القمحية لتدريس الفقه المالكي، كما بنى العدد الكثير منها في دمشق وحلب وغيرها من حواضر الشام، وفي مدينة القدس بعد تحريرها من الصليبيين، ثم اقتدى به في بناء المدارس بالقاهرة والفسطاط والإسكندرية وغيرهما من أعمال مصر وبالبلاد الشامية والجزيرة أولاده، وأمراؤه، ثم حذا حذوهم من ملك مصر بعدهم من ملوك



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

الترك وأمرائهم وأتباعهم، وقال المقريزي: "فلما انقرضت الدولة الفاطمية على يد السلطان صلاح الدين يوسف بن أيوب أبطل مذاهب الشيعة من ديار مصر، وأقام بها مذهب الإمام الشافعي، ومذهب الإمام مالك، واقتدى بالملك العادل نور الدين محمود بن زنكي، فإنه بنى بدمشق وحلب وأعمالهما عدّة مدارس للشافعية والحنفية، وبنى لكل من الطائفتين مدرسة بمدينة مصر"، ثم قال: " وأوّل مدرسة أحدثت بديار مصر: المدرسةُ الناصرية بجوار الجامع العتيق بمصر، ثم المدرسة القمحية المجاورة للجامع أيضا، ثم المدرسة اليوسفية التي بالقاهرة، ثم اقتدى بالسلطان صلاحِ الدينِ - في بناءِ المدارسِ بالقاهرة ومصر وغيرهما من أعمال مصر وبالبلادِ الشامية والجزيرةِ - أولادُه وأمراؤُه، ثم حذا حذوهم من ملوك مصر مَن بعدهم مِن ملوك الترك وأمرائهم وأتباعهم إلى يومنا هذا" [ المقريزي، ١٩٩٧،ج٤/ ٢٠٠]."وكان نظام الكتاتيب موجودًا في عهد صلاح الدين". [ علوان، بد، ت، ١٧١]. ويقول ابن جبير: من مآثر صلاح الدين ما أمر ببنائه من الكتاتيب لتعليم أبناء الفقراء والأيتام خاصة، وأجرى عليهم الجراية الكافية لهم.[ ابن جبير، بد، ت، ص ٢٥].

وكما مهد الطريق لمن يأتي من بعده في جعل جامع الأزهر الشريف على مذهب أهل السنة والجماعة بعد أن كان يُدرَّس فيه المذاهب الضالة لسنوات عديدة.

وهكذا نجد أن هذه الفترة حفلت بإنشاء المدارس وساهم في بنائها الجميع جنباً إلى جنب مع الجهاد المستمر ضد الصليبيين والفضل في ذلك يرجع إلى السلطان صلاح الدين الذي كان قدوة في هذا الأمر لرعاياه الذين أحبوا دائما أن يتشبهوا بحاكمهم ويقتدوا به في كل أعمالهم وتصرفاتهم ويتقربون إليه بعمل ما يعرفون أنه يرضيه ويدخل السرور على نفسه، وشهدت تلك المرحلة ازدهارًا كبيرًا في علوم الدين.

وكان -رحمه الله-يوقف على هذه المدارس أوقافاً تكفي للإنفاق على الفقهاء (المدرسين) والدارسين، هُيئت لهذه المدارس كل أسباب الراحة ووسائل العيش، ليتفرغ الدارسون والمدرسون تفرغاً كاملاً للعلم، وحقيقةً أسهمت تلك المدارس وبشكل واضح وملموس في إحياء علوم أهل السنة والعقيدة الأشعرية من خلال ما وفرته من تهيئة الجو المناسب للمدرسين والطلبة على حد سواء. حتى غدت تلك المدارس المركز الأول للإشعاع الفكري لأهل السنة. [ابن جبير، بد، ت، ص ٤٨].

**٣-الاهتمام بالوسائل التي تساعد على نشر عقيدة أهل السنة والجماعة في البلاد مثل المكتبات والأوقاف الاستثمارية**، ومصادرة كل الوسائل التي تمنع من نشرها، أو تقف حجر عسرة في طريق نشرها، كما فعل بكتب مكتبة العاضد الفاطمي، فبعد إنشائه للمدارس ووضعه لمناهج جديدة، وإنشائه للمكاتب شجع العلماء والمفكرين على البحث والتأليف، فقد أمر العلماء أن يكتبوا له كتباً جديدة في العقيدة لتعليم الصغار والكبار، فأراد بذلك التعمير من جهة، ونشر العلم من



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

جهة أخرى، واهتمامه بالعلم جعله يهتم بنشر وسائله المختلفة أيضاً، فأنشئ إلى جانب المساجد دور للعلم وبيوت للحكمة. أذشأها وجمع فيها أمهات الكتب، ولذا راجت لديهم سوق الكتب، وكان في مصر سوق كبير لها في الجانب الشرقي من جامع "عمرو بن العاص"، وأسواق أخرى عديدة، تضم أذفس الكتب وأ قيم الذخائر، كما كان يوجد بدمشق سوق كبير للكتب.[المقريزي، ١٩٩٧، ج١٤٢/٣].

وقد كانت لتلك المدارس والمكتبات والأوقاف أهمية أخرى بالإضافة لما ذكرناه، حيث كانت كل تلك المدارس الوقفية وما تبعها من مكتبات كبرى، كانت لها أوقاف استثمارية عُظمى حُبست عليها، وتعود غلتها عليها، مما ساهم في تطوير البلد، وتحسين الدخل الفردي، وتحقيق الوحدة والتكافل الاجتماعي بين المسلمين.

**٥- تقريبه للعلماء والفقهاء والمؤرخين والأدباء والشعراء وتكريمهم واحترامهم واستشارتهم وإعطاؤهم المكانة اللائقة بهم،** فكُتب التاريخ تذكر أن السلطان صلاح الدين كان كثير الحضور لمجالس العلم، حتى أنه كان يذهب إلى الإسكندرية مصطحبًا معه ولديه علي وعثمان لحضور مجلس الحافظ السلفي[٣] (ت.٥٤٧٨/٥٧٦)، وأعطى الوزارة للعالم الكبير كمال الدين الشهرزوري(ت ٥٥٨٤)، وجعل من الواعظ ابن نجا الحنبلي( ت.508 /-599 هـ) مستشاراً له، ووزيره القاضي الفاضل من أكابر الكتاب محبًا للعلم وأهله، ومن العلماء الذين كان يستشيرهم: نجم الدين الخبوشاني( ت.٥٥٨٧/١١٩٧)، والفقيه الشافعي، وهو الذي شجع صلاح الدين على إذهاء الدولة العبيدية وقطع الخطبة لهم، حيث بنى له صلاح الدين مدرسة وفوض تدريسها إليه، ومن الفقهاء الأمراء الفقيه عيسى الهكاري (ت. ٥٥٨٥/١١٨٩م) وكان جنديًا شجاعًا كريمًا، تفقه على الشيخ أبي القاسم البرزي واتصل بالأمير أسد الدين شيركوه، وكان يخاطب صلاح الدين بما لا يقدر عليه غيره. وكان رحمه الله لا يَقْدُمُ على شيء إلا بعد مشورة العلماء والحكماء، فقد قال القاضي ابن شداد: "وكان يجلس للعدل في كل يوم اثنين وخميس في مجلس عام يحضره الفقهاء والقضاة، ..وكان يفعل ذلك سفرًا وحضرًا" [ابن شداد، ١٩٩٤م،ج٤١/١]؛ لذا كتب الشيخ علي الصلابي في ذتائج بحثه" إن القيادة الفكرية والعلمية لم تكن في يد صلاح الدين، وإنما كانت مرتكزة عند العلماء والفقهاء، وبرز من أعوان صلاح الدين القاضي الفاضل الذي أخذ بيد صلاح الدين نحو تطبيق شرع الله، فعندما تكون القيادة الفعلية في الأمة للعلماء الربانيين والقادة العسكريين الذين ينقادون لأحكام الله يكون النصر حليفهم، ويمكّن الله لهم ما داموا على نهجه سائرين".[ الصلابي، ١٩٩٤م، ص.١٦٥].

**٤- إصلاح العقائد:** وذلك من خلال القضاء على المعتقدات الباطلة والمذاهب المنحرفة وأصحابها، فقد سبق الحديث في البحث كيف أنه عندما تولى الوزارة لعاضد الفاطمي في مصر في بداية



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شبابه كان يؤلمه حال البلاد، وما فيها من المعتقدات الباطلة التي لا تمت إلى عقيدة أهل السنة والجماعة بصلة أو نسب؛ لذا كان من البديهي أن يقوم الناصر صلاح الدين السني المذهب، الأشعري عقيدةً، والمتربي على تقوى الله وطاعته وعبادته والخشية منه تعالى، والثقة به، أن يهُبّ لمحاربة هذا المذهب الباطل، وأن يقضي عليه، ويمسح آثاره، ويجعل مكانه عقيدة أهل السنة والجماعة، وشجع جميع طبقات الشعب على الانضمام في صفوف طلبة العلم؛ ليدرسوا الدين الحق والعقيدة الصحيحة في المدارس التي فتحها سابقاً. وقد عدى الباحث محمد خير الطرشان إصلاح العقائد " من الأسباب التي جعلت صلاح الدين في هذا المستوى من القيادة الناجحة؟ في هذا المستوى من التألق؟ في هذا المستوى من الإصلاح؟ صلاح الدين قاد مجموعة من الإصلاحات على مستوى العقيدة، فقد كان شافعيَّ المذهب، أشعريَّ العقيدة، وكان رجلاً متصوفاً، وزاهداً في الدنيا. على مستوى الإصلاح العسكري :وضع خططاً لجيوشه، وكان أساس هذه الخطط الثبات في المعركة، والتسامح أيضاً. [ الطرشان،٢٠١٤م، ٢].

٥- **استطاع توحيد بلاد المسلمين بعد أن كانت متناحرة مفككة**، وهذه الدول التي استطاع ضمها تحت لوائه وقيادته هي: مصر، واليمن، وسوريا، الحجاز، وتهامة، وبالتالي استطاع بناء وتأسيس دولة قوية أحاطت بمملكة بيت المقدس وفلسطين والتي كانت خاضعة لسيطرة الفرنجة، كما استطاع تطوير دمشق وجعلها مدينة مزدهرة عظيمة، وكذلك دعم المعارف والعلوم واهتم بها واعتبرها جزءاً أصيلاً من نهضة الأمة الإسلامية، وجعل عقيدة الأمة كلها عقيدة واحدة بعد أن وحد بين أطرافها ووحد صفها في وجه الأعداء، وأزال الفوارق الطبقية من بينها، حتى قال صاحب كتاب موجز التاريخ الإسلامي: " وبعد موت نور الدين أخذ دمشق وكثير من بلاد الشام ٥٦٩ - ٥٧١ هـ/١١٧٣ - ١١٧٥ م وأرسل أخاد توران شاه فأخضع كل بلاد اليمن سنة ٥٦٩ هـ/١١٧٣ م. بذلك كون صلاح الدين جبهة إسلامية موحدة قوية بعد أن عانى المسلمون طويلًا من الفُرقة والضعف والتشتت فوقف بهذا الجيش في وجه الصليبيين، وانتصر عليهم انتصارًا حاسمًا في موقعة حطين المشهورة سنة ٥٨٣ هـ/١١٨٧ م فاسترجع بعدها بيت المقدس وطرد الصليبيين من معظم بلاد الشام بعد احتلال تجاوز التسعين عامًا. ويعد صلاح الدين من أعظم القواد المسلمين الذين وقفوا في وجه الصليبيين واستعادوا البلاد المغتصبة منهم. حدود دولة صلاح الدين بالإضافة إلى مصر والشام خضعت له سواحل طرابلس وتونس وبلاد النوبة والسودان، والحجاز واليمن".[ العسيري،١٩٩٦،٢٥٥-٢٥٦].

٦- **حبه وشغفه بالجهاد**،ومما ساعد على نشر عقيدة أهل سنة والجماعة جهاده الطويل -رحمه الله تعالى- ثم توليه على المدن المفتوحة بعض من أمرائه، ويساعدهم في وظيفتهم الكثير من العلماء والفقهاء، فقد قال القاضي ابن شداد: " وكان-رحمه الله- شديد المواظبة على الجهاد، عظيم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

الاهتمام به، ولو حلف حالف أنه ما أنفق بعد خروجه إلى الجهاد دينارًا إلا في الجهاد، وفي الإرفاد لصدق، وبر في يمينه، ولقد كان الجهاد قد استولى على قلبه وسائر جوانحه استيلاء عظيمًا، بحيث ما كان له حديث إلا فيه، ولا نظر إلا في آلته، ولا اهتمام إلا برجاله، ولا ميل إلا إلى من يذكره، ويحث عليه، ولقد هجر في محبته "الجهاد" أهله وولده ووطنه وسكنه، وقنع بالدنيا بالسكون في ظل خيمة تَهبُّ بها الرياح يمنة ويسرة، وكان الرجل إذا أراد أن يتقرب إليه يحثه على الجهاد.."؛ [ابن شداد، ١٩٩٤م، ١٦٥]، وكيف لا يحب الجهاد وهو الذي سطّر أعظم كتاب في الجهاد، وخاض أشرف المعارك ضد أعداء الإسلام والمسلمين، فحق له أن يقترن اسمه باسم الجهاد في كان أماكن الشرف .

**الخاتمة:**

إن أعمال السلطان صلاح الدين الأيوبي في خدمة الإسلام لا تخفى على كل عارف به أو بشيء من سيرته، وما قام به من أعمال عظيمة تجاه أمته ودينه، فشكل- مع شيخه نورالدين محمود زنكي ومن قبله عماد الدين زنكي- شوكة في حلق الصليبيين، أفشلوا مخططاتهم تجاه الدولة الإسلامية ودارت معارك عظيمة معهم حتى جاء صلاح الدين الأيوبي فوحد الشام ومصر والحجاز واليمن، وقاتل الصليبيين وهزمهم وحرر بيت المقدس، وأعاد للأمة قوتها ومجدها وعقيدتها، وقضى على الدولة الفاطمية وعقيدتها الباطلة في مصر وأعادها لأهل السنة والجماعة وفتح المدارس لدراسة المذاهب السنية ونشر عقيدة أهل السنة والجماعة- عقيدة الأشعري- وقام بإصلاح العقائد والتعليم، وعمل على تنشيط الاقتصادي الإسلامي، ونشر العدل والسلام في ربوع دولته التي ظلت تتسع وتمتد حتى شملت العراق وبلاد الكرد والشام واليمن ومصر وبرقة.

واليوم مع ما تعانيه الأمة من انقسام وتمزيق وشتات وضعفٍ، ويلعب بها الأعداء من الشرق والغرب، ويسرقون خيراتها، ويغتصبون أرضها، ويدنسون مساجدها، والعدو هو هو، والأمة هي هي، ولكن الأمة حاربت في ذلك الوقت تحت لواء الإسلام فانتصرت، وللأسف اليوم أغلب الحكومات الإسلامية ترفع شعارات القومية، وتعلن على رؤوس الأشهاد السلام والتطبيع مع الأعداء، لذا فمن الجدير أن يتم الإعلان- في المؤتمرات والمجلات العلمية، وفي كل مكان يتسنح الفرصة- عن ما يجب على الأمة أن تقول لقادتها ورؤساء حكوماتها الإسلامية والعربية: عليكم أن تتأسوا بالقائد المظفر صلاح الدين، وتنهجوا نهجه الإيماني الراسخ، وأن تصدقوا مع الله في سركم وعلنكم، وأن تجعلوا من الإسلام وشريعته دستوركم، وتوحدوا صفوفكم، وتكون على قلب رجل واحد، وتقوموا بواجبكم المقدس أمام الله تعالى ورسوله والمؤمنين والأجيال القادمة، وإلا فإنّ التاريخ والأجيال لن ترحمكم.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

رحم الله القائد صلاح الدين الذي أدى الرسالة وبلّغ الأمانة وجهاد في الله حق جهاده، وقضى على الكفر والشرك والإلحاد والعقائد الباطلة، وحرر المقدسات من براثن الصليبية الحاقدة، وسيظل حياً في قلوب المسلمين جميعاً.

وفي الختام نسأل الله تعالى أن يجزيه عن الإسلام والمسلمين بأعلى العليين في جنات النعيم، مع النبيين والشهداء والصالحين. وأن يهيئ للأمة صلاح الدين آخر يقوم بما قام به الأولى وما ذالك على الله بعزيز.

**قائمة المصادر والمراجع:**


- ابن الأثير، مجد الدين أبو السعادات المبارك بن محمد بن محمد ابن عبد الكريم الشيباني الجزري ابن الأثير (ت ٦٠٦هـ)، النهاية في غريب الحديث والأثر،تح: طاهر أحمد الزاوى وأخرون، المكتبة العلمية - بيروت، ١٣٩٩هـ - ١٩٧٩م.
- ابن السبكي، تاج الدين عبد الوهاب بن تقي الدين السبكي (ت ٧٧١هـ)، طبقات الشافعية الكبرى، تح: محمود محمد الطناحي د. عبد الفتاح محمد الحلو، دار هجر، ط: الثانية،١٩٩٣- ١٤١٣ه.
- تاج الدين عبد الوهاب بن تقي الدين ابن السبكي(ت ٧٧١ هـ)، ، معيد النعم ومبيد النقم، ط: الأولى، مؤسسة الكتب الثقافية، بيروت، ١٤٠٧هـ- ١٩٨٦م.
- ابن العماد، أبو الفلاح عبد الحي بن أحمد بن العماد العكبري (1089 – 1032هـ ١٦٢٣ ...)، شذرات الذهب في أخبار من ذهب، ت، محمود الأرناؤوط، ط: الأولى، دار ابن كثير، دمشق، ١٤٠٦هـ-١٩٨٦م.
- ابن جبير، محمد بن أحمد الأندلسي، رحلة ابن جبير، دار ومكتبة الهلال، بيروت، بد، ط، بد، ت.
- ابن خلكان، أبو العباس شمس الدين أحمد بن محمد بن إبراهيم( ت. 608 هـ-٦٨١ هـ)، وفيات الأعيان وأنباء أبناء الزمان، ت، إحسان عباس، دار صادر، بيروت، ط١، ١٩٩٤م.
- ابن شداد، بهاء الدين يوسف بن رافع أبو المحاسن(ت. 632 هـ/١٢٣٤م)، النوادر السلطانية والمحاسن اليوسفية، ت: جمال الدين ابن الشيال، ط: الثانية، مكتبة الخانجي، القاهرة، ١٤١٥هـ- ١٩٩٤م.
- ابن عساكر، فخر الدين( ٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ)، تبين كذب المفتري فيما نسب إلى الإمام الأشعري، ت: محمد زاهد الكوثري، طبعة المكتبة الأزهرية للتراث، مصر، بدون، ت، بد، ط.
- ابن كثير، عماد الدين أبو الفداء إسماعيل بن عمر(ت.١٣٧٣م)، البداية والنهاية، ت، عبد الله بن عبد المحسن التركي، ط١، دار هجر، دمشق، ١٤١٨هـ-١٩٩٧.
- الأشعري، علي بن إسماعيل (324 – 260 هـ/ ٨٧٤ - ٩٣٦ م) ، الإبانة عن أصول الديانة، ت: صالح بن مقبل العصيمي، دار الفضيلة، الرياض، ط:١، ٢٠١١م- ١٤٣٢ه.
- البدليسي، شرف خان ( ت.١٦٠٣م)، شرفنامه في تاريخ الدول والإمارات الكردية، ت، محمد علي عوني، ط٢، دار الزمان- سوريا دمشق، ٢٠٠٦م.
- الزركلي، خير الدين بن محمود بن محمد بن علي بن فارس، الزركلي الدمشقي (ت ١٣٩٦ هـ)، الأعلام، دار العلم للملايين، ط: الخامسة عشر - أيار / مايو ٢٠٠٢ م.




Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- السيوطي، جلال الدين عبد الرحمن بن أبي بكر بن محمد ( ت.٩١١)، الوسائل في مسامرة الأوائل، بد، ط، دار الكتب العلمية، بيروت، بد، ت.
- حسن المحاضرة في تاريخ مصر والقاهرة، تـ محمد أبو الفضل إبراهيم، ط: الأولى، دار إحياء الكتب العربية، القاهرة، ١٣٨٧هـ- ١٩٦٧.
- المقريزي، أحمد بن علي أبو العباس (٧٦٤-٨٤٥هـ/1364-1442م)، السلوك في معرفة دول الملوك، ت، محمد بن عبد القادر عطا، بد، ط، دار الكتب العلمية، بيروت، ١٤١٨هـ- ١٩٩٧.
- أحمد بن علي أبو العباس ابن المقريزي(٧٦٤-٨٤٥هـ/1364-1442 م)، المواعظ والاعتبار بذكر الخطط والآثار، ط: الأولى، دار الكتب العلمية، بيروت، ١٤١٨ه- ١٩٩٧.
-ابن تغري، يوسف أبو المحاسن جمال الدين(ت. ٨٧٤ه/ ١٤٧٠م)، النجوم الزاهرة في ملوك مصر والقاهرة، بد، ط، وزارة الثقافة والإرشاد القومي، ودار الكتب، مصر،١٣٨٣ه-١٩٦٣م.

**المراجع المعاصرة:**

- البوطي، محمد سعيد رمضان( ت.٢٠١٣م)، الإنسان مسير أم مخير؟، ط: الثانية، دار الفكر، دمشق، سوريا، ١٩٩٧م.
- الثُرباني، جهاد، مائة من عظماء أمة الإسلام غيروا مجرى التاريخ، ط: الأولى، دار التقوى، ليبيا،١٤٣١ هـ-٢٠١٠م.
- السنان، حمد، وفوزي العنجري، أهل السنة الأشاعرة شهادة علماء الأمة وأدلتهم، ط: الثانية، دار الضياء، الكويت، ١٤٣١ه- ٢٠١٠م.
- الشاذلي، وابل عبد الله، من جواهر عقيدة أهل السنة والجماعة، ط: الأولى، مكتب مِداد الفني، اسطنبول، تركيا، ١٤٣٧ه- ٢٠١٥م.
- الصلابي، علي محمد محمد، صفحات من التاريخ الإسلامي في الشمالي الإفريقي الدولة الفاطمية، بد، ط، مؤسسة أقرأ، مصر، ١٤٢٧ه- ٢٠٠٦م.
- العسيري، أحمد معمور، موجز التاريخ الإسلامي منذ عهد آدم عليه السلام (تاريخ ما قبل الإسلام) إلى عصرنا الحاضر ١٤١٧ هـ/٩٦ - ٩٧ م، بد ن- الرياض
- تتان، عبد الكريم، الأشاعرة من أهل السنة والجماعة، ط: الثانية، دار الفكر، دمشق، بد، ت.
- ضيف، شوقي، تاريخ الأدب العربي ، دار المعارف، مصر، ط١٠، ١٩٩٥.
- علوان، عبد الله ناصح( ١٤٠٨ هـ ١٩٨٧م)، أعلامنا صلاح الدين الأيوبي بطل حطين و محرر القدس من الصلبيين، ط: السابعة، دار السلام، القاهرة، ١٤٠٨هـ- ١٩٨٧م.
-عويس، عبد الحليم، المسلمون من التبعية والفتنة إلى القيادة وا لتمكين، ط: الأولى، دار العبيكان، الرياض، ١٤٢٧هـ- ٢٠٠٦م.

**المواقع الالكترونية**

- الأنصاري، مصطفى، مقال، صلاح الدين الأيوبي ونشأة الدولة الأيوبية، موقع إسلام لايت، منشور في ٢٠١٥، https://lite.islamstory.com/ar/artical/4031 .

– الطحاوي، حاتم، مقال، البحث عن صلاح الدين الأيوبي في سيرة الظاهر بيبرس، من جريدة الحياة، الرياض، رابط المقال: http://www.alhayat.com/article/509758/

– الطر شان، محـ مد خير، منهج القا ئد ال سلطان صلاح ا لدين في الإ صلاح، مـ قال، تاريخ النـ شر في2014/02/06، تاريخ الز يارة في ٢٠٢٣/٠٣/٨. https://towardsalahuldin.wordpress.com/.

– العثماني، الصادق، مقال، القائد الأشعري الصوفي صلاح الدين الأيوبي: الرجل الذي أعاد للقدس حريته، المقال: https://www.hespress.com/opinions/10921.html

– سرحان، محمد، مقال، الناصر صلاح الدين الأيوبي، موقع طريق الإسلام، http://iswy.co/e49j8


## الهوامش:

١ هو الشيخ العلامة الفقهية المتكلم تاج الدين محمد بن هبة الله بن مكي الحموي المولد، المصري الدار والوفاة، الشافعي الخطيب .مولده: ولد رحمه الله عام ٥٤٦ هجري الموافق ١١٥١ رومي بحماة.

٢ سبق ترجمته.

٣ أحمد بن محمد بن سلفة (بكسر السين وفتح اللام) الأصبهاني (٤٧٨ - ٥٧٦ هـ = ١٠٨٥ - ١١٨٠ م)، صدر الدين، أبو طاهر السِّلَفي: حافظ مكثر، من أهل أصبهان. رحل في طلب الحديث، وكتب تعاليق وأمالي كثيرة، وبنى له الأمير العادل (وزير الظافر العبيدي) مدرسة في الإسكندرية، سنة ٥٤٦ هـ فأقام إلى أن توفي فيها. الأعلام للزركلي. ج١/ص٢١٦.

## Ayyubid state and its Ash'ari school and the efforts of Sultan Saladin Ayyubi to spread it


**Abstract:**

There is no doubt that the progress of countries and principalities has been not only in the political aspect, but also in all areas of scientific, social and economic life, and it is the Ayyubid state and its civilizational structures that are very interested in the scientific aspect. Schools, institutes, universities, its rulers and sultans had the largest share in its service and expenditure, and they had scholars and professors. Relying on their advice and often relying on their opinion, as he did in Egypt, he recruited them in his jihad for the faith of the Sunnis and group - which is the Ash'ari faith - after surviving Al-Azhar University for nearly two centuries under the rule of Fatimid Ubaidis. Due to the importance of creed in the life of Saladin's leaders, he often asks scholars of creed and kalam to visit him and attend his councils, thus leading to polemical and scientific disputes. He was diligently trying to spread them until it occurred to him that he had ordered the Ash'ari creed to be read on the minarets every morning, and his service in clarifying and confirming this belief is evident. In this article, I discuss his efforts.



**Keywords**: *the Ayyubids - theology - Salah al-Din - the Ash'aris - their efforts.*

## دەوڵەتی ئەیوبی و قوتابخانەی ئەشعری و هەوڵەکانی سوڵتان سەلاحە دین ئەیوبی لەبلاوکردنەوەیدا


**پۆختە:**

گومانی تێدا نییە کە پێشکەوتنی وڵاتان و میرنشینەکان تەنیا لە لایەنی سیاسیدا نەبوە، بەڵکو لە هەموو لایەنەکانی ژیانی زانستی و کۆمەڵایەتی و ئابووریدا بونی هەبوە، دەوڵەتی ئەیوبیش یەکێک بوەلەومیرنشینیانەی کە زۆر گرنگی داوە بە لایەنی زانستی و شارستانی، هەربۆیە لە قوتابخانە وپەیمانگاکاندا فەرمانڕەواو سوڵتانەکانی ئەو میرنشینە گەورەترین ڕۆڵیان هەبوە لە خزمەتکردن و خەرجکردنی هاوکاری بۆ ئەو لایەنە، وەهەروەها خزمەتکردن و وگرینگی دان بە خاوەنەکانیان لە زانا و پرۆفیسۆر و خوێندکارو زانست پەروەران، بە سەرۆکایەتی سوڵتان سەلاحە دینی ئەیوبی، چونکە ئەو سەرکردە مەزنە پشتی بە زانایان دەبەستوو و هاوڕێیەتی دەکردن لەکاتی جیهادکردندا، وەهەروەها گوێی لە ئامۆژگاریەکانیان دەگرت وڕاوێژی پێدەکردن ڕاوو بۆچوونی ئەوانی وردەگرت، وەک ئەوەی پێشتر لە میسر ئەنجامی دابو، کە مزگەوتی ئەزهەری کردبوە سەرچاوەو چرایەک بۆ بیرو باوەڕی ئەهلی سوننە و جەماعەت و بیروباوەڕی ئەشعەری، دوای ژێر دەستەی ئەو مزگەوتە بۆ ماوەی نزیکەی دوو سەدە لە ژێر دەسەڵاتی عوبەیدی فاتمییەکان، وە بەهۆی گرنگی عەقیدە لە ژیانی سەرکردەی مەزن سەلاح دین زۆرجار داوای لە زانایانی عەقیدە و زانستی کەلام دەکرد سەردانی بکەن و بەشداری دانیشتنەکانی بکەن، بۆ ئەوەی گفتوگۆو مشتومڕی زانستی لە نێوانیاندا ڕووبدات، هەتا کار گەیشتە ئەوەی فەرمانی کرد بەخوێندنەوی بیروباوەڕی ئەشعەری لە لەبڵند گۆکان لەهەمو بەیانیەکدا، خزمەتەکەی ئەو سەرکردە مەزنە بۆ ڕوونکردنەوە و پشتڕاستکردنەوەی ئەم عەقیدەیە بە ڕوون و ئاشکرا دیاربو.



**پەیڤێن سەرەکی:** *ئەیوبیەکان، زانستی کەلام، سەلاحەدین، ئەشعەرییەکان، مەزهەبی سوننە*

# دور الاديرة العلمية في المناطق الكوردية في القرن ٣-٦هـ/ ٩-١٢م

**پ. هـ. د. شهلة برهان عبدالله**

قسم التاريخ – كلية الاداب – جامعة صلاح الدين – اربيل/ اقليم كردستان العراق

**الملخص:**

هذا البحث يتحدث عن دور الاديرة العلمية في المدن الكوردية في القرن ٣-٥٦/ ٩-١٢م، ويعتبر الاديرة في المدن الكوردية محور الحركة الفكرية والثقافية التي اغنت الحضارة الاسلامية باطروحاته ومؤلفاته، اذ ان حركة الرهبنة التي اعتمدت على العلم والدين معاً كان نتاجه بناء الاديرة واهتمام بالثقفات المختلفة ولا سيما اليونانية التي يعتبر بوابة للكل العلوم الاخرى التي كانت تدرس في تلك الاديرة، وان اديرة المدن الكوردية كانت سباقة في مجال العلم والمعلمين وساهمت بشكل رئيسي ومباشر في اغناء الثقافة والحضارة الاسلامية، وان السماحة والاهتمام من قبل الدولة الاسلامية كانت لها الفضل في ادامة تلك الاديرة واستمرارها عطائها، وبهذا يكون تلك الاديرة ساهموا بشكل مباشر وغير مباشر في اغناء الثقافة والحضارة الاسلامية.

**الكلمات الدالة:** *الاديرة، المدن، الكوردية، التعليم، الاسلامية*

**المقدمة:**

يعد الاديرة الى جانب كونه مكانا للعبادة، واحدة من اهم المراكز التعليمية لدى النصارى، اذ انتشرت بشكل واسع في المدن الكوردية في القرن الثالث الي قرن السادس الهجري، التاسع الى الثاني عشر الميلادي. ولعب هذه الاديرة دورا مهما في حياة النصارى العلمية ونظرا لاهمية الموضوع في تاريخ الحضارة الاسلامية، وعدم وجود دراسة اكاديمية مستقلة حسب اطلاعي، فمن الضروري ابرازا لدور التعليمي لتلك الاديرة اذ كانت لاتخلوا من وجود المكتبات لخزن المؤلفات الدينية والادبية التي يستمد منها الرهبان الكثير من المعلومات، لذا وجت من الظروري كتابة البحث في هذا الموضوع المهم في التاريخ الحضارة الاسلامية في المناطق الكوردية.

اما بالنسبة لأهم الصعوبات التي واجهتها خلال فترة البحث والتي تكمن في صعوبة الموضوع كونه من المواضيع الشائكة، بالإضافة إلى ندرة المصادر والمراجع التي تناولت الموضوع.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ولقد انتضم البحث في ثلاث محاور رئيسية، المحور الأول بعنوان التعريف بالدير وأقسامه ، والتعريف بالرهبان، ونشؤ حركة الرهبنة، وتناولت في المحور الثاني الحركة العلمية والفكرية في الديارات النصرانية، فتناولت المدارس الديرية، وهيئة التدريس، وأهم الأنظمة التي كانت تحكم سير العملية التعليمية، اما المحور الثالث فهو عن اهم المكتبات الديرة ومؤلفات الرهبان الذين اغنوا المكتبات في الحضارة الاسلامية. مع مقدمة وخاتمة وقائمة بأسماء المصادر والمراجع.

و اخيراً أرجو أن يسد هذا الجهد المتواضع جاذباً من تاريخ الحضارة الإسلامية في المدن الكوردية، وأن يكون لبنة متواضعة من صرح المعرفة التاريخية، واسأل الله التوفيق والسداد.

**المحور الاول// عوامل ظهور الديارات وانتشارها**

**اولاً// الدير في اللغة والاصطلاح:**

عَرَفت المعاجم العَربية لفظة الدير على إنها في الأصل الدار والجمع أديار (ابن منظور، بلا تاريخ، ١/ ١٠٤٢)، ود يار، وأد يرة ( ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٢/ ٤٩٥)، ودور، ود يور (ا بن فارس، ١٩٧٠م، ٢/ ٣١٨).

وا لدير هو خان النصرانية (الفيروزآ بادي، ١٩٧٨م، ٢/ ٣٣)، و هو المكان ا لذي يتعبد فيه الرهبان، كأدائهم الصلاة والتقرب إلى الله (كرد علي، ١٩٧٠م، ٦/ ٤). ويرجع أصل كلمة دير إلى اللغة الآرامية ومعناها البيت أو المنزل (زيات، ١٩٣٨م، ١٢). وغالباً ما يكون الدير في الصحاري، أو على رؤوس الجبال، أو مطل على الأودية أو على السهول الفسيحة الخضراء، وفي المناطق المنقطعة عن الناس ( ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٢/ ٦٣٩) و (ز يات، ١٩٣٨م، ٩) و ( سعيد، ١٩٨٠م، ٧٠). ويكون بالقرب من مصدر مائي (البكري، ١٩٤٥م، ١/ ٦٠٣)، ولا يكون في المدن الكبرى ، فإن كان فيها سُمِيَ كنيسة أو بيعة (دير) (ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٢/ ٦٣٩). وحبيب زيات يفرق في تسمية البيعة (الدير) والكنيسة وفقاً لما أورده المقريزي في قوله: ((الدير عند النصارى يختص بالنساك المقيمين به والكنيسة مجتمع عامتهم للصلاة)) (المقريزي، ١٩٧٠م، ٢/ ٥٠١).

ويشير كبر الدير إلى كثرة عدد رهبانه (الشابشتي، ١٩٨٥م، ٤٩)، فيكون أحياناً كبيراً كالمدينة (القرماني، بلا تاريخ، ٤٤٩)، فلا بد من احتوائه على عدد كبير من الرهبان مثل دير احويشا مدينة بديار بكر كبير وعظيم فية ٤٠٠ راهب في القلالي ودير باغوثا دير كبير جدا كثير الرهبان (ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٢٢، ٢٤).

ويقال للراهب الساكن في الدير ديراني ودَّيار (الزمخشري، ١٩٦٥م، ١/ ٣٩١) و ( ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م) و (ابن منظور، بلا تاريخ، ١٠/ ١٠٤٢)، وللراهبة ديرية وديرانية (العمري، ١٩٢٤م، ١/ ٢٦٠). ولابد أن يكون رئيس الدير مسئولاً عن إدارة شؤون الدير.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وغالباً ما تبنى الأديرة بعيداً عن المناطق المأهولة بالسكان لتتيح لرهبانها الخلوة والعزلة، إلا أن بعضها شُيِّد بالقرب من الأماكن المعمورة، لذا أُطلق عليها اسم العُمْر: وهي أماكن لسكن الرهبان وممارسة عباداتهم (عدناح، ١٩٣٩م، ٣) و (ابن عبدالحق، ١٩٥٤م، ٢/ ٥٤٩) و (زيات، ١٩٣٨م، ١٢) و (الطريحي، ١٤٠١هـ - ١٩٨١م، ١٥٩). ويذكر أن هذه التسمية جاءت من العُمْر وهو نوع من النخيل عُرف بثمرهِ المُسكر، لذا سُمي الدير بالعُمْر (الدينوري، ١٩٧٤م، ٣/ ٢٣). بينما يُرجّع البعض تسمية الدير إلى العُمْر لأن الإنسان يُعَّمر فيه ربهُ أي يعبده (السقاف، ١٩٥٤م، ٩٢).

وكانت الديارات مأوى لمن يلجأ إليها ومن يجتاز بها (بن سليمان، ١٨٩٩م، ٦٩) و (الشابشتي، ١٩٨٥م، ٢/ ٤٩)، والأكثر من ذلك إن رهبانها أقاموا دوراً لضيافة ومبيت الزوار وعابري السبيل، وتبنى هذه البيوت أحياناً فوق القلالي والكنيسة، فيكرموا مثواهم، ويقوموا على خدمتهم خير قيام (العمري، ١٩٢٤م، ١/ ٣٠٥)، ولا يباح للزوار الإقامة في صوامع الرهبان ذاتها (الشابشتي، ١٩٨٥م، ٢/ ٥٠)، لأنها محل العبادة.

وتُحصّن الديارات عادةً بالأسوار العالية والأبواب الحديدية، لحمايتها من الأعداء، وخوفاً من اللصوص، ويصل أحياناً ارتفاع جدارها إلى مائة ذراع (شتريك، ١٩٨٦م، ١٤).

ولم تقتصر الديارات على الرهبان فقط، بل كانت هناك أديرة للنساء (الراهبات) حيث صارت ديارا تهن فيما بعد شامخة البناء، واسعة الأرجاء، تحصنها البساتين والرياض، يقضين فيها أيامهن بالصلاة والعبادة، والتبتل إلى الله، والقيام بكافة الأعمال الصالحة (البكري، ١٩٤٥م، ٣٧٣) و (العمري، ١٩٢٤م، ١/ ٢٥٨) و (ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٢/ ٦٨١، ٦٩٢، ٧٠٩).

وكانت بعض الديارات سابقاً تقصد للاستشفاء من الأمراض لا سيما الخطرة منها، كالجذام والبرص، ويكون ذلك عن طريق الاستحمام بعيون الماء التي كانت قريبة منها (ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٢/ ٤٩٨) و (ابن عبدالحق، ١٩٥٤م، ١/ ٢٢٣) و (زيات، ١٩٣٨م، ١٠٠-١٠٢)، أو عن طريق استخدام المعادن الكبريتية التي وجدت إلى جوارها كما هو الحال في الدير الأعلى بالموصل، ويذكر أن هذه المعادن تبرئ من الجرب والحكة والبثور وتنفع المقعدين والزمني (ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٢/ ٤٩٨) و (السقاف، ١٩٥٤م، ١٢١) و (حبي، ١٩٦٩م، ١٥). ودير عباد يقع في مدينة ميافارقين فيه علاج طلسم الكلاب (الهروي، ١٤٢٣هـ، ٥٩) ودير الجب (ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٣٣٧) ودير سعيد (ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٣٤٧) ودير القيارة (ياقوت الحموي، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م، ٣٥٨) يقصدهم الناس للعلاج، ودير هزقل يقصده الناس لعلاج المجانين (الحميري، ١٩٨٠م، ٤٣٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**ثانياً// الرهبنة ونشوء الأديرة:**

لقد رافق انتشار المسيحية ظهور الرهبنة ونشوء الأديرة، وقد قامت الرهبنة على الزهد والتقشف الذي دعت إليهما معظم الأديان القديمة، وحضت الناس على اتباعها، وعلى الابتعاد عن المجتمع وما فيه من مظاهر الانحلال والتفسخ، والدعوة إلى الانعزال، وتكريس الحياة للعبادة فقط دون النظر إلى العلاقات الجنسية، ومظاهر الحياة المادية، فاعتبروا هذه الأمور مصدر الشرور، والآثام في العالم، وإنها مصدر المظالم والخطايا التي ينبغي تجنبها، فسكن هؤلاء الرهبان في البراري والقفار هرباً من الدنيا وشرورها، ليكرسوا أنفسهم للعبادة، فسكنوا أول الأمر في الكهوف، والمغاور، ثم بنوا الصوامع والقلايات المنفردة (السرياني، ١٨٧٧م، ٨٧ - ١٨٩) و (شلبي، ١٩٦٧م، ١٨٦)، وبعد ذلك توسعت فشملت أكثر من متعبد واحد، وكان من نتيجة ذلك إنشاء الأديرة، وتنسب بداية نشوئها إلى القديس المصري أنطوذيوس المعروف بأبي الرهبان (حوالي ٢٧٠م) الذي مال إلى التنسك، وأقام في صحراء النطرون بغربي مصر يعيش منعزلاً عن الناس (السرياني، ١٨٧٧م، ٨٦). وقد تأثر به عدد غير قليل من الناس فتبعوه إلى الصحراء ليعيشوا بقربه.

ونظمت كل مجموعة في ديروا حد يسكن كل أربعة منهم في غرفة منه، وكانوا يجتمعون في أوقات معينة للصلاة ولقراءة الكتاب المقدس، ثم توسعت هذه الأديرة بمرور الزمن، وأصبح يضم بين ٣٠-٤٠ راهباً، ووضعت له أسس لتنظيم الحياة الديرية، وأوجب على الرهبان النظام، وإطاعة رئيس الدير، والخضوع له، وفرض عليهم القيام بتوفير الطعام والكساء بأيديهم، ومنع الرهبان من مساهمتهم في الحياة العامة والزواج، ثم امتدت حركة الرهبنة، وإنشاء الأديرة إلى فلسطين وبلاد الشام، والمناطق الكوردية وآسيا الصغرى (السرياني، ١٨٧٧م، ٨٧). وأخذ الأباطرة، والمتدينين، والأمراء والأغنياء يتبارون ببناء الأديرة، وإيقاف الوقوف عليها، وإغداق الهبات إليها تقرباً إلى الله، وتكفيراً عن السيئات.

وقد كان الناس يولون هؤلاء الرهبان والراهبات التقدير البالغ لتقشفهم وعزوبتهم وعزوفهم عن الحياة الدنيا. ولا يخفى أن الأديرة كانت ملجأ ليس للرهبان، وإنما مأوى للعجزة، والفقراء، والبؤساء، وابن سبيل، حتى كان يؤمها المطاردون فكان الدير يرحب بهم، وأبوابه مفتوحة للمضطهدين، والمفكرين الذين يفرون من نكبات الدنيا ومآسيها.

وقد خدمت الأديرة الآداب والفنون، فكانت أبنيتها من روائع فن العمارة والزخرفة، كما خدمت العلوم والآداب فنسخوا الكتب، وألفوا في موضوعات كثيرة، في التأريخ والأدب والفلسفة واللاهوت والطب.

غير أن سعة انتشار الأديرة أدت إلى تسرب بعض عوا مل الضعف فيها، فقد ازدادت ثروتها، واتسعت أملاكها بفضل ا لهدايا والأوقاف، فاذشغل كثير من رؤسائها بإدارة الأ ملاك دون العبادة كما دخلها كثير من الرعاع والجهال والكسالى والمجان (شيخو، ١٩١٩م، ٧٩).

أ ما في الم ناطق الكورد ية ف قد انت شرت حر كة الره بة ع لى يد ال قديس أو جانيوس (أوجين)(Ogean) فسكنوا جبل ماردين، ونصيبين، وانقطع فريق منهم في جبل سنجار، وفي أ طراف المو صل، و لما ازداد عددهم تفرقوا إلى الـنواحي وعـمروا الأد يرة الـكثيرة، وأ شهرها د ير مارميخائ يل، وماريونان، ودير يونس، وهذه الأديرة قريبة من الموصل (السرياني، ١٨٧٧م، ٩١-٩٢) و ( شيخو، ١٩١٩م، ٧٨) دير باغوثا على شاطيء الدجلة بن الموصل وجزيرة ا بن عمر (ش. ياقوت الحموي، بلا تاريخ، ٢٤) دير ابيون في شرق دجلة بين جزيرة ابن عمر ودير ثمانين في مدينة ثمانين (ش. ياقوت الحموي، بلا تاريخ، ٢١).

ويبدو أن ا لدافع ا لذي د فع الأنقياء من النـصارى إلى حياة الزهد، والابتعاد عن ا لدنيا ومفا سدها وملاذ ها، والالتـجاء إلى بـناء الـصوامع والأد يرة، حـيث ذسبوا ذ لك إلى الم سيح ا لذين يروون عنه قوله: إنْ أردت أن تكون كاملاً فاذهب وبع أملاكك، واعط الفقراء فيكون لك كنز في السماء، وتعال اتبعني (شلبي، ١٩٦٧م، ١٨٧)، وكذلك اقتبسوا من سيرة المسيح ا لذي كان يصعد إلى الحـيل حيذها يريد أن يـصل أو يعـلم الجـموع، و من يوحـنا المعـمدان ا لذي كان يـعيش أكـثر أوقا ته في ا لبر اري ( شلبي، ١٩٦٧م، ١٨٧)، و قد يبدو إقبال الأنقياء على التر هب وعدم ا لزواج اقتداء بالمسيح الذي لم يتزوج، ولذلك أصبح من أهم صفات الراهب وشروط الرهبنة الابتعاد عن الزواج.

**ثالثاَ// نبذة عن الاديرة:**

لقد كانت الأديرة في المدن الكوردية، ولا تزال مأوى للعباد من النـصارى ومبعـثاً للدرا سة، والبـحث والـتأليف، ومنبـعاً من مـنابع الزهـد والتـقوى، ولـكن بمرورا لزمن أ صبحت بالإ ضافة إلى ذ لك أ ماكن للنزهة و مأوى للـشعراء وا لمجان، حـيث يلـجأون إلى ا لدير ليحتـسوا كؤوس الخـمر، ويقـو لون الـشعر الجمـيل، لما فـيه من ا لهواء العـذب، و ما تحيط به من ا لحدائق والبـساتين توحي للشعراء والمجان أسباب الراحة والمتعة (العمري، ١٩٢٤م، ١/ ٢٦٠) و (ابن أ بي أ صيبعة ١٩٥٦م، ٢/ ١٧٠) و (أ مين، ١٩٣٥م، ١/ ٣٥٠). و لو تـ صفحنا كـ تاب ا لديارات للشابـ شتي (ت٣٨٨ هـ / ٩٩٨م) ومـ سالك الأبصار لابن العمري (ت٧٤٩هـ/ ١٣٤٨م) لوجدنا حالة الأديرة في المدن الكورد ية في العصور العبا سية خاصة، وما كانت تعج الشعراء، والظرفاء، وكثرة ما قيل فيهم من الأ شعار في ا لديارات عن د ير زكي ودير علقمة ودير لبي مثلاً: "أنه كان يجتمع فيه نصارى، ولا يبقى أ حد ممن يحب اللهو إلاّ تبعهم، ويقيم الناس فيه الأيام، ويترفونه في غير الأعياد" (الأصبهاني، بلا تاريخ، ١٣، ٢٠، ٢٢).

وقام النساطرة في المناطق الكوردية بدور كبير في نشر الثقافة بإنشاء المدارس، ونقل ما عند اليونان إليهم، فنقلوا عن الكتب اليونانية إلى الفرس قبل الفتح الإسلامي، وإلى العرب بعده، فانشأوا مدرسة طبية في الرها، وبعد خرابها انتشر النساطرة في بلاد فارس، ونالوا نفوذاً سياسياً فيها، وأسسوا في جنديسابور من أعمال عربستان كلية طبية جديدة (ل. أ. سيديو، ١٩٤٨م، ٢٨٦). والتي نأتي الى ذكرها في المحور القادم.

يقول المستشرق ديورانت (ديورانت، بلا تاريخ، ١٣/ ١٧٧): كان المسلمون حكماء إذ تركوا المدارس الكبرى المسيحية أو الصابئية أو الفارسية قائمة خاصة في حران ونصيبين وجنديسابور، وغيرها، ولم يمسوها بأذى، وقد احتفظت هذه المدارس بأمهات الكتب الفلسفية والعلمية معظمها في ترجمته السريانية، وما لبثت أن ظهرت ترجماتها إلى العربية على أيدي النساطرة المسيحين، وقد بقيت هذه المدارس تؤدي عملها في العصور الإسلامية، وزاد اتصالها بالمسلمين في العصر العباسي (ابن أبي أصيبعة ١٩٥٦م، ١/ ١٧٥) و (ر. اسحق ١٩٤٨م، ٧٨)، وكانت تدرس فيها اللغة العربية وآدابها، الآرامية واليونانية والفارسية، وكانت تقام في الكنائس والبيع والديارات (ر. اسحق، مدارس العراق قبل الإسلام ١٩٥٥م، ٣٧)، وقد درّس في هذه المدارس المختلفة العلوم العقلية واللغة والنحو والشعر والتأريخ والجغرافية والموسيقى والهندسة والفلك والطب والمنطق والفلسفة وعلوم الدين، (اللاهوت) بالإضافة إلى اللغة العربية والآرامية واليونانية (شير، بلا تاريخ، ٧)، وقد ألحق بهذه المدارس خزائن الكتب والمكتبات (ابن النديم، بلا تاريخ، ٢٤٣) و (ر. اسحق، أحوال نصارى بغداد في عهد الخلافة العباسية ١٩٦٠م، ١٣٧).

ويبدو أن هذه المدارس كانت دينية خاصة بالنصارى، وتدرس فيها بالإضافة إلى العلوم الدينية اللغة السريانية واليونانية، لذا أصبحت من مراكز الثقافة اليونانية والسريانية حتى الفتح الإسلامي. واشتهرت بمدارسها منها مدرسة دير مار جبرائيل المعروف بالدير الأعلى على نهر دجلة في جوار الطابية العليا (بأشطابية) (نصري، ١٩١٣م، ١/ ١٩١) ومدرسة دير مار ميخائيل الواقع شمالي الموصل، ومدرسة النبي يونس (يونان) في نينوى، ومدرسة مار إيليا الجزري في غربي الموصل (الصائغ، ١٩٢٣م، ١/١٩٣، ٢/ ٤٤)، وكانت تدرس في هذه المدارس مختلف العلوم والفلسفة واللاهوت واللغات. وفي أوائل القرن السابع للميلاد اشتهرت مدرسة قنسرين على الفرات بتعليم فلسفة اليونان، وأبرز تلامذتها الأسقف ساويرس الذي نقل بعض علوم الفلسفة واللاهوت إلى السريانية، وبرز من تلامذته يعقوب الرهاوي، واضع علم النحو السرياني، وجورجيس المعروف بأسقف العرب فقد ترجم بعض كتب أرسطو (زيدان، بلا تاريخ، ٣/ ١٥٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وكان لهذه المدارس أثر كبير في نشر الثقافة، بما أنجبته من العلماء، والأدباء، والمؤلفين، وكان أبرزهم في العصر العباسي يوحنا بن ماسويه رئيس أعظم مدرسة في بغداد في العصر العباسي (طرازي، ١٩٤٦م، ٦).

كما اتخذوا لأنفسهم الأطباء من النصارى للإشراف على علاجهم، وفي العصر العباسي أكثر الخلفاء من إنشاء المستشفيات واختاروا لها الأماكن التي تمتاز بالهدوء، والهواء العليل والماء النقي (ابن أبي أصيبعة ١٩٥٦م، ١/ ٣٠٩-٣١٠). وجعلوا فيها أماكن خاصة بالرجال وأخرى للنساء، وخصصوا لكل مرض قاعات خاصة، ووضعوا للإشراف عليها أطباء متخصصين (حسن، ١٩٥٣م، ٢/ ٣١٦).

أما في ميادين الفلسفة فلم يكن للنصارى فلسفة أصلاً، وإنما جاءت إليهم عن طريق النقل والترجمة عن اليونانية، وبعد الفتح الإسلامي للعراق وفارس والشام نقلت من السريانية إلى العربية، وقد قام السريان بتدريس الفلسفة اليونانية في مدارسهم، وعلقوا عليها، وشرحوها، ولا سيما فلسفة أرسطو، وأفلاطون، وأبرز الفلاسفة السريان، القس سرجيوس الراسعني، ورهبان دير قنسرين الذين تعلقوا بدراسة فلسفة فيلوفونس الأسكندري الذي عاش في أواسط القرن السادس الميلادي، كما ترجم السريان الكتب الفلسفية التي تناولت حكم فيثاغورس في الفضيلة، وحدود أفلاطون وحكمه التي كتبها إلى تلامذه، والحدود عن الله، والإيمان والمحبة والعدل، وحكم الفلاسفة في النفس، ونصائح الفلاسفة (برصوم، ١٩٤٣م، ١٩١، ١٩٩).

**المحور الثاني// الحركة العلمية والفكرية في الديارات النصرانية المدن الكوردية**

**أولاً// مدارس الاديرة النصرانية:**

تعتبر الأديرة النصرانية من المراكز الثقافية المهمة بالنسبة للنصارى، إذ لم تقتصر الرهبنة على المسائل الدينية فحسب، بل أضحت الديارات منبراً للعلم والثقافة، فقد صاحبت المدارس النصرانية المناطق الكوردية الكنائس والديارات، وكانت بمثابة ملاحق لا بد من توفرها، فهي تمثل أماكن لتعليم القراءة والكتابة والواجبات الدينية والعديد من العلوم المعروفة آنذاك. ويطلق على المدارس الملحقة بالأديرة (أسكول) وهو أسم سرياني مأخوذ عن اللفظة اليونانية (اسحق، ١٩٤٨م، ٦٤)، ومنه أخذ المسلمين اللفظ (أسكول) فكان للدلالة على المدارس النصرانية أو المدارس الملحقة بالأديرة ( مايرهوف، ١٩٦٥م، ٥٣-٥٤) و ( بدوي، ١٩٨٠م، ٥٤)، وكانت أغلب هذه المدارس لاهوتية دينية (بدوي، ١٩٨٠م، ٥٣).

وقد أخذ الأساقفة المدن الكوردية على عاتقهم مهمة تشييد الكنائس والديارات في المدن والقرى التي كانت المدارس أحد مؤسساتها المهمة لتعليم رعاياها أصول القراءة والكتابة وسائر العلوم، حيث أُعتبرت الأشغال العقلية في الديارات أعظم حماية للنصارى إذ توفر لرهبانها أسباب



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

السكينة بين مختلف الكتب والمدرسين الأفذاذ (تسران، ١٩٣٩م، ١٥٦-١٧٥)، ويُذكَر أن أبناء القبائل العربية كانوا يذهبون إلى صوامع الرهبان ودياراتهم ليتعلموا القراءة والكتابة (جيبون، بلا تاريخ، ٣٣٤).

وتعتبر مدارس النصيبين ورها و حران من أهم المدارس النصرانية التي أُسست في المدن الكوردية لنشر العلوم الدينية والدنيوية. وتعتبر نموذجاً لبقية المدارس النصرانية كمدارس قنسرين (زيدان، بلا تاريخ، ٣/ ١٥٠) وباشوش (ابونا، ١٩٧٣م، ٢/ ١١٤)، وقد أُسست مدارس المناطق الكوردية في الفترة السابقة للإسلام، ويعود الفضل في تأسيسها مدرسة نصيبين إلى الأسقف يعقوب النصيبيني وكان الهدف الأول من إنشائها هو نشر اللاهوت اليوناني بين النصارى الذين يتكلمون السريانية (اوليري، ١٩٦٢م، ٦٣) و (الشكعة، بلا تاريخ، ١٣٩)، ومن أشهر معلميها أفرام السرياني الذي كان رئيساً للمدرسة وقد لعب دوراً كبيراً في شهرتها (اوليري، ١٩٦٢م، ٦٢) الذي بذل جهداً في بنائها وتوسيع صفوفها وصب اهتمامه بها (اوليري، ١٩٦٢م، ٦٢)، لتكون مكاناً للعلم إلى جانب الدين. الاسقف برصوصا (اوليري ١٩٦٢م، ٣٤) الذي كان احد مدرسي المدرسة وله دور كبير في بقائها واستمرارها (اوليري ١٩٦٢م، ٣٤) والمعروف أن المدارس والأديرة تُعَد مراكز التعليم والتدريب الأساسية التي تُخَرج قادة للكنيسة ولا سيما النسطورية (G. Morony n.d., 363).

وكانت هذه المدارس في وضع متقلب بين الأهتمام، والإهمال، حتى تفطرك (ايشوعياب الثالث ٦٥٠-٦٦١م)، أذ قام ببناء العديد من المدارس، فكان بدوره ينشد الى تعليم جميع الطلبة، وأن يكون الكتاب أنيساً للرهبان للتعرف على العديد من العلوم والمعارف (المرجي، بلا تاريخ، ٧١).

وشهدت المدارس مزيداً من الأهتمام في أيام البطريك (حنا نيشوع) الذي كتب مقالتين في المدارس وأهميتها (ادي شير، ١٩١٣م، ٢/ ٢٩٧)، تخص أحدى هاتين المقالتين دور المدرسة في التعليم ودورها في التربية (أبونا ١٩٧٠م، ٣٠٠)، ومن أهم نشاطهم ترجمة كتب لأرسطو طاليس والتعليق عليها (مظهر، ١٩٢٨م، ١٠)، وكتاب الايساغوجي أي ((المدخل الى مقولات ارسطو)) لغرفوريس (اوليري، ١٩٦٢م، ٨١).

ويظهر أن معلمي المدرسة حاولوا من خلال ترجماتهم للكتب الفلسفية إسناد مذهبهم في طبيعة المسيح (الحسين، ٢٠٠٤م، ٢٦٣)، وإن جل نشاطهم كان يرتكز على دراسة العلوم الدينية فضلاً عن تعليم اللغة السريانية واليونانية. وإن النشاط الثقافي فيها استمر أبان الفتح الإسلامي وبعده حتى العصر الأموي والعباسي، إذ كان لحركة الترجمة الواسعة التي شهدتها المدرسة دوراً كبيراً في نقل الأفكار الفلسفية والمنطقية إلى الفكر الإسلامي وذلك بحكم الامتزاج والتواشيح الحضاري الذي أثاره الجدل الفكري بين المسلمين وأهل البلاد المفتوحة.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وكانت مدرسة نصيبين دور كبير على الرهبان في المناطق الاخرى ايضا على سبيل المثال (ثيودور الكسكري) وهو من أهل كسكر أخذ طريقته في الرهبنة من باباي في مدينة نصيبين إلا أنه بعد عودته من هناك بنى ديراً ومدرسة (G. Morony n.d., 361)، وكان قد اشتغل مفسراً بها (أبونا ١٩٧٠م، ٣٠٥)، وكان قد ألف كتاباً أطلقَ عليه اسم (اسكوليون) وهو يضم العديد من المعلومات الفلسفية واللاهوتية والجدلية (ادي شير، ١٩١٣م، ٢/ ٢٩٤). وكان لنصيبين دورها في تعزيز العلم في مدارس كسكر، فبعد أن أُجبرَ جريجوري (gregorey) الكسكري إلى مغادرة نصيبين، أنشأ مدرسة التحق بها ٣٠٠ طالب في كسكر (G. Morony n.d., 360).

أما رها فقد احتوت على العديد من المدارس وكانت كبقية مدارس النصارى لأنها أُنشئت في الاديرة وقد لعبت دوراً مهماً في خدمة الثقافة قبل الإسلام وبعده فكانت قبل الإسلام تُدَرس العلوم الطبية والموسيقى إلى جنب العلوم الدينية (الحسين، ٢٠٠٤م، ٢٦٤) ويبدو أن المدرسة كانت وطيدة الأركان بين سكان ما بين النهرين وبلاد فارس ممن يتكلمون الفارسية، لذا ازدهرت مدينة الرها كمركز ديني ثقافي وفكري للكنيسة السريانية الشرقية (الحسين، ٢٠٠٤م، ٢٦٤).

أما بالنسبة لنشاط مدرسة الرها فإنها كانت تقوم على تشجيع حركة الترجمة للمصنفات الفلسفية اليونانية, وذلك لإتخاذها أدلة عقلية للرد على خصومهم من اليعاقبة (الحسين، ٢٠٠٤م، ٢٦٤)، ويبدو أن هذه المدرسة قد سارت في الاتجاه الذي سارت فيه مدرسة نصيبين من قبل. وقد بقيت هذه المدرسة تؤدي عملها حتى بعد مجيء المسلمين, وأصبحت مصدراً في العصور الإسلامية لتنمية المشروع الثقافي الذي بدأ بعد مجيء المسلمين وذلك لسعي المسلمين للحصول على تراث اليونان الثقافي, حيث استمدوا من هذه المدرسة ما كان يغذي جميع احتياجاتهم الثقافية والحضارية (الحسين، ٢٠٠٤م، ٢٦٤).

تعد مدرسة حران احدى المدارس الكبيرة والمشهورة في المناطق الكوردية، حيث كانت مركزاً للثقافة اليونانية، التي تمثلت بالدين اليوناني الوثني والفلسفة الافلاطونية (اوليري ١٩٦٢م، ٤١-٤٢)، فضلاً عن شهرتها في العلوم العقلية كالرياضيات والفلك (أمين، بلا تاريخ، ٢٥٨-٢٥٩)، واستمرت المدرسة في ممارسة نشاطها الفكري والعلمي حتى ظهور الإسلام، ومجيء الأمويين (إبراهيم، ١٩٨١م، ١٢). وأصبح في عهد المتوكل مقر الفلسفة والطب التي كانت قبلاً في الاسكندرية وانتقلت إلى أنطاكية فيما بعد (حتي، ١٩٤٩م، ١/ ٣٨٩).

فقد اشتهر منهم يعقوب الرهاوي (٦٤٠م – ٧٠٨م) الذي ترجم كثيراً من كتب الالهيات اليونانية، وذكر عنه أنه أفتى رجال الدين من النصارى، بأنه يحل لهم تعليم أولاد المسلمين التعليم الراقي، وهذه الفتوى دليل إقبال بعض أولاد المسلمين في ذلك العصر على دراسة الفلسفة، ويبدو أن رجال الدين قد ترددوا أول الأمر في تعليمهم (أمين،، فجر الإسلام ١٩٤٥م، ١٣٢).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

واستمرت المدرسة في تفوقها وذلك من خلال ما أفرزته من علماء في جميع المجالات، كالطب، والرياضيات، والفلك، وخرج منها العديد من المترجمين الذين برعوا في ميدان الترجمة في العصر العباسي الثاني (الحسين، ٢٠٠٤م، ٢٦٠)، من أمثال ثابت بن قرة، وسنان بن ثابت وعيسى بن اسيد (ابن النديم، ١٩٩١م، ٤٣٦).

وهكذا كان لمدرسة حران دوراً كبيراً في نشوء وتطور الحضارة الإسلامية، وذلك بما أخرجه ابناؤها من ترجمات إلى السريانية ثم إلى العربية، فكان ذلك يشكل مصدراً جديداً في أن يعتمد عليه المسلمين في نهضتهم العلمية اعتماداً كبيراً، إذ أصبحت المدرسة المنبع الرئيسي والأساسي الذي استمد منه المسلمين معلوماتهم عن الثقافة والحضارة الاغريقية، فقد تفوقوا على غيرهم بمعرفتهم وإتقانهم اللغة العربية، لذا كانت ترجمتهم أكثر دقة وإتقاناً حيث ترجموا معظم ما كان موجوداً من كتب يونانية، مما أصبح من اليسير على المسلمين اقتناءها هم المصنفات لعلوم اليونانية عن طريق مترجمي ونقلة مدرسة حران (الحسين، ٢٠٠٤م، ٢٦١-٢٦٢).

مدرسة اربل لقد أسس في اربل عددٌ من المدارس النصرانية، وتقدمت هذه المدارس بمدرسيها المشهورين وتخرج منها تلاميذ عديدون من أشهرهم الجاثليق مارطيمثاوس (ت٨٢٣م) وإن أبرز نشاطاته كان تبشيرية، ففي سنة (٧٨٠م) نصب أساقفة عديدين أرسلهم إلى البلاد النائية للتبشير، واهتم بإصلاح أمور الكنيسة إذ وضع ثمانية وتسعين قانوناً في الفرائض والأحكام بالاتفاق مع الآباء، وهو أول من كتب باللغة العربية، وله عدة مؤلفات منها كتاب في العلم والهيئة والنجوم، وكتاب الأحكام ورسائل كثيرة دينية في الدروس الفلسفية (اسحق، ١٩٥٥م، ١١٦-١١٧).

باشوش وهي احدى المدارس المهمة في المناطق الكوردية وتقع في منطقة جبلية بين نهري الخازر والزاب الكبير، وقد تخرج فيها عدد من الأساقفة والعلماء الذين برعوا في مجالات مختلفة من العلوم (ابونا، ١٩٧٣م، ٢/ ١١٤)، ومن أشهرهم إبراهيم برد شنداد الأعرج والبطريك طيمثاوس الأول (ابونا، ١٩٧٣م، ٢/ ١٠٩)

قنسرين يعد احدى المدارس المشهورة في المنطقة، برع في مجال تعليم الفلسفة اليونانية، ومن أبرز تلاميذتها الأسقف ساويرس الذي ترجم بعض العلوم الفلسفية واللاهوت إلى السريانية (زيدان، بلا تاريخ، ٣/ ١٥٠).

وفضلاً عن تلك المدارس الآنفة الذكر فقد اشتهرت مدارس أخرى وإن لم تكن بنفس القدر من الشهرة ولو لم تكن بقدر شهرة تلك المدارس مثل مدارس كركوك النصرانية (اسحق، ١٩٥٥م، ١١٢).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ومن المدارس الديرية التي حصلت على شهرة واسعة مدرسة دير باغوثا وهو دير كبير جدا كثير الرهبان على شاطيء دجلة بين الموصل و جزيرة ابن عمر به خزائن كتب النصارى وهي من المدارس الكبيرة، و عُدت بمثابة معهد من المعاهد العلمية الراقية حيث أنجبت العديد من الأطباء والمدرسين وتدرس فيها مختلف العلوم ومن رهبانه اطباء مشهورون (ش. ياقوت الحموي، بلا تاريخ، ٢٤).

ومن المدارس الواسعة الأخرى التي حصلت على شهرة واسعة مدرسة مار ماري الواقعة في دير قُنَّى ومدرسة مارعبدا في نفس الدير، وهي مدرسة جامعة عظيمة الشأن، تولى مهمة التعليم فيها ستون مدرساً (ادي شير، ١٩١٣م، ٢/ ٣٠) (نصري، ١٩٠٥م، ١/ ٩٥، ٩٦، ١٠٧). ويمكن أن تسمى باصطلاح اليوم كلية جامعة ( عواد، ١٩٣٩م ، ١٨٥)، فقد نبغ فيها العديد من العلماء والعظماء ومشاهير النصارى، أشهرهم الجاثليق مارآحي(ت: ٤١٥م) والجاثليق مار يابالاها(ت٤٢٠م) ( حبي، ١٩٨٨م، ٢٥٨) و (اسحق، ١٩٤٨م، ١٥) (قاشا، ١٩٨٢م، ٨٧) و (دي طرازي، ١٩٤٨م، ٢/ ٥١٣). وكانوا قد انتشروا في أصقاع البلاد ليبشروا بما تلقوه في مدرستهم الأولى ( عواد، ١٩٣٩م ، ١٨٥) و (اسحق ١٩٥٥م، ٦٣). وهذا يدل على أن المدارس لم تكن دينية خالصة بل شملت مختلف العلوم، وإنها كانت مراكز ثقافية حتى بعد الفتح الاسلامي.

أما المدارس الديرية التي اشتهرت في المدن الكوردية ، فمنها مدرسة دير الأعلى دوره في مجال التعليم أيضاً حيث اثنى المؤرخون على تقدم علوم ومدرسة هذا الدير، إذ كان يحتوي على خزانة كتب حافلة بالمؤلفات الطقسية وغير ذلك من المواضيع ومن أشهر مدرسيها عمانوئيل برشهاري اللاهوتي الشهير، وقد تخرج منها تلاميذ عرفوا بالفضل والأدب (الشابشتي، ١٩٨٥م، ٣٧٥)، ودرس في دير الزكي العلوم الدينية حيث كان رهبان الدير يدرسون علوم الدين ويتفقهون بها، ومن أشهر أساتذته المدفان الربان تاودوراً وكان يشرح لتلامذته الكتب اللاهوتية ومنها كتاب مارغريغوريويس التنزيزي اللاهوتي, ونشأ في هذا الدير عدد من الرهبان من أشهرهم أثيالا الكاتب الذي ألف مقالة جدلية في أواسط المائة التاسعة للميلادي (الشابشتي، ١٩٨٥م، ٣٨٥)، ورهبان دير قنسرين الذين اهتموا بدراسة فلسفة (فيليو فورنس الأسكندري) الذي عاش في أواسط القرن السادس الميلادي، كما ترجموا كتب فلسفية عديدة منها (حكم فيتاغورس) في الفضيلة، و(حدود أفلاطون وحكمته) التي كتبها إلى تلاميذه، و(الحدود عن الله)، و(الإيمان والمحنة والعدل)، و(حكم الفلاسفة في النفس)، و(نصائح الفلاسفة) (بر صوم، ١٩٤٣م، ١٩١، ١٩٩). ومن المدارس الديرية الأخرى مدرسة ديرمار ميخائيل التي أقام دعائمها مار ميخائيل التي أخذت تتقدم في معارج العلوم حتى بلغت على شهرة واسعة ((وأقام لها الرؤساء والمدبرين والمدرسين والقارئين والشمامسة والبوابين والطباخين والخبازين والخدم وعُينَ قارئان أحدهما يقرأ في النهار والآخر في الليل. وقد

نبغ فيها العديد من الفلاسفة واللاهوتيون والفقهاء واللغويون والشعراء والأُدَباء ممن حصلوا على شهرة وا سعة)) (الـ صائغ، ١٩٥٦م، ١/ ١٣ - ٢/ ٤٤) و (ا سحق ١٩٥٥م، ٦٧) و (ا لديوه جي، ١٩٨٢م، ١/ ٢٤٠).

د ير مار جبرائ يل المعروف با لدير الأعلى الوا قع على ذ هر دجـلة جوار الطابـية العلـيا المعروفة حالـياً (بأ شطابية) (ذ صري، ١٩٠٥م، ١/ ١٩١)، و تدعى هذه المدرسة (أم الفضائل) ( حبي ١٩٦٩م، ١٢).

ومدرسة دير مارمتي التي أخذت تسير سيراً مطرداً حتى صارت من المراكز العلمية المهمة وانتشرت فيها العلوم في العقد الثالث من القرن السابع الميلادي وا ستمرت على هذا الحال حتى أواخر القرن الثالث عشر للميلاد, وتخرج منها بطريركان، وستة مفارنة، وثلاثون اسقفاً (برصوم، ١٩٨٧م، ٢٠، ٥١٤).

ويذكر أن أغلب الديارات كانت مقتصرة قديماً على لغة واحدة وهي اللغة الكلدانية، وعلى دراسة الكتب المقدسة والتاريخ الكنسي والفلسفة، وقليل منها اهتمت بدراسة اللغة اليونانية والعربية وبعض العلوم المدنية الأخرى، ولكن ما أن سمت النهضة الفكرية في عهد الدولة العباسية (رسام، ١٩٦١م، ٢٥) حتى تغيرت أحوال الديارات وأخذت تشتمل على العديد من اللغات كالآرامية (ادي شير، ١٩١٣م، ٢/ ٧) و ( شيخو، ١٩١٩م، ٢/ ٣٨٩) والسريانية (دي بور، بلا تاريخ، ١٦) والفارسية (اسحق ١٩٥٥م، ٣٧).

أما في مجال العلوم فقد توسعت واشتملت على العديد منها: علم النجوم والمنطق والشعر والهندسة والفلك ( مايرهوف، ١٩٦٥م، ٥٣) والطب والمحاسبة والموسيقى (ابن العبري ١٩٦٧م، ٢٨٩، ٢٩١). أما الفلسفة فقد أقتصر تعليمها على بعض المنطق الأرسطو طالي ( مايرهوف، ١٩٦٥م، ٥٣)، وكذلك الحال بالنسبة للتعليم الطبي الذي اقتصر على أمهات المؤلفات لكل من أبقراط (عطية الله، ١٩٦٣م، ١/ ١٥) وجالينوس ( براورز، ١٩٨٨م، ١٩٥)، وكان علم الأخلاق والتاريخ الديني والمدني والجغرافية والقصص من بين العلوم التي دُرِست أيضاً في تلك المدارس (برصوم، ١٩٨٧م، ١٧).

**ثانياً// هيئة التدريس في المدارس الديرية:**

كان لابد من توفر كادر تدريسي في مدارس الأديرة، وذلك بحكم كونها مكاناً للتعليم والأستفادة من الكتب التي تتوفر فيها، وغالباً ما يكون رؤساء الأديرة هم القائمين بأدارة مدرسة الدير، وأبرز أساتذتها، ويُشتَرَط أن يكون أكثرهم ديناً، كحفظهم للعهدين القديم والجديد وأتقانها وتدريسها لطلاب الدير، فكانوا مُدَرِسين ومرشدين حيث تربعوا على منابر التدريس ليقوموا بمهامهم على أكمل وجه، كتثقيف الطلبة وتعليمهم العلوم الدينية والدنيوية (فييه، ٢٠٠٠م، ١٦٤-١٦٧) و (اسحق، ١٩٤٨م، ٢٠-٢٢). وكانت المدرسة الديرية بمثابة جمعية منظمة تقيدها



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

القوانين ويرأسها(الربان) أي المعلم، ويطلق عليه أيضاً (مفسر) ويقع على عاتقه شرح معنى الكتاب المقدس، ويكون هذا الشرح حرفياً وتأريخياً، و من واجبا ته الأ خرى إدارة شؤون المدرسة ومراقبة ما يدور فيها ويكون تحت إمرته العديد من الأ ساتذة ممن عُرِفوا بالعلم (ادي شير، ١٩١٣م، ٢/ ٢٧٣) و (ا سحق ١٩٥٥م، ٥٣). أ ما الـ قارئ فيـ قوم بـ تدريس طريـ قة الكـ تاب المـ قدس بد قة، و يدرس الأ صول الصحيحة للترتيل والنحو (الربيعي، ١٩٧٤م، ٣٩٨).

أما المدقق فيقوم بتدريس الفلسفة، والمهجىء يقوم بتدريس التهجئة أو التأ مل أو البلا غة لاتقان القراءة بصورة صحيحة، وكذلك يقوم بوضع الأسس، وتفسير الكلمات لوجود أ ختلاف ما بين اللغة الأرامـية العا مة والفـصحى (الربيعي، ١٩٧٤م، ١٩٩). لأن عدم التفرقة بينهما ربما يوقع القارىء في أخطاء كبيرة.

بينما تقع مهمة الأهتمام بالأمور المالية والأذضباط والعنا ية بمكتبة المدرسة على ا لمدبر (الربيعي، ١٩٧٤م، ٣٦٨)، الذي يكون بمثابة المسؤول الأول عن العناية بشوؤن المدرسة.

وهناك شخصيات لم تعن بالتعليم إلا أنها تُعد من الشخصيات التي لا بد من توفرها في تلك المدارس كالمدبر الذي يقوم بتنظيم أمور البيمارستان المستشفى التي كانت غالباً ما تلحق بمدارس الأديرة وأهم واجباته مراعاة المرضى والوقوف على راحتهم وتوفير كافة مستلزماتهم (ا بن الطيب، ١٩٥٧م، ٣/ ١٧٠), ومن صفاته الصدق والإلتزام بأوامر معلم الاسكول وعدم التصرف دون أذن منه (ابن الطيب، ١٩٥٧م، م١٨، ج٣/ ١٧١-١٧٢).

وخـ صص لـ كل مدر سة خازن (ا بن الطـ يب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٦٢)، يـ بدل كل سنة، ويـ كون للمدرسة بواب يتحلى بالتوا ضع والكلام الطـ يب عـ ند أ ستقباله الغرباء، سواء أ كانوا أغنياء أم فقراء، ولا يخاصم ولا يشاتم، ولايحقر أي إنسان، وعليه مراقبة الداخلين إلى الدير فلا يجوز له أن يُدخل من يأكل ويشرب في القلاية التي برسم الباب، ولا يأخذوا من أحد الا خوة (الرهبان) وديعة، ولا يسمح للاخوة أن يجتمعوا عند الباب لتداول الأحاديث غير المهمة أي ما لا يحتاج إليه الحديث، ويجب عليهم الحفاظ على أمانة الغرباء كأغراضهم الشخصية من ثياب وغيرها، فلا يجوز العبث بها أو تفتيشها (ا بن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٧٠-١٧١). وربما يفسر هذا الخرق الذي بدأ يدخل على نظام الرهبنة، فقد بدأ الرهبان يُراقَبون في دخولهم الى الأديرة وتراقب كافة تصرفاتهم.

**ثالثاَ// أنظمة المدارس الديرية:**

نظراً لضرورة تحديد العلاقة وتنظيمها بين المدارس الديرية والمحيط الخارجي كان لابد من وضع الأنظمة والقوانين التي تحافظ على نوع هذه العلاقة, ويعتبر الدير الأعلى في الموصل. من أهم الديارات التي وضعت فيها هذه القوانين وكان ذلك في القرن السادس والسابع الميلاديين (اوليري، ١٩٦٢م، ٦٧).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

ومن القوانين ما كان يخص المعلمين، وبما أن العملية التعليمية في الأديرة كانت عملية تربوية إنسانية، لذا أوجبت هذه القوانين على المعلم أن يراعي التلاميذ كما يراعي أبنائه، وأن يبذل قصارى جهده من أجل إيصال المعلومات إليهم. وإن أراد توبيخ أحدهم يجب عليه أن يستخدم الأسلوب اللطيف. ومن المفضل أن يسبق العقوبة والتوبيخ إشارة غير مباشرة من المعلم إلى التلميذ، لعل التلميذ يحاول أن يردع نفسه وينتبه الى أخطائه ويقومها بنفسه لأن التوبيخ العلني في نظرية أهل الديارات ربما يمزق قانون الوقار أو يشجع التلميذ الموبخ على التمرد (ابن العبري ١٩٦٧م، ٢٩١)، أي إن العملية التربوية التعليمية في الأديرة تشبه العملية التربوية المتبعة حديثاً التي ينصح بها علماء النفس.

ومن واجبات المعلم الأخرى هي إحترامه لبقية العلوم الأخرى التي يقوم بتدريسها غيره من المعلمين، ولا يجوز له احتقار بقية العلوم والإستهانة بها (ابن العبري ١٩٦٧م، ٢٩١).

كما يقع على المعلم واجب الإرشاد والنصح للقضاء على الشهوات الجسمانية والقضاء على الأهواء التي تحاول أن تجرفهم إلى الخطيئة, وبالتالي تعميق الأيمان في نفوسهم وترسيخه (ابن العبري ١٩٦٧م، ٢٩٣). وجعلهم رهباناً مخلصين في حبهم لله وممتثلين لأوامره.

أما داخل الدرس فعليه طرح الأسئلة السهلة البعيدة عن التعقيد لتمكن التلاميذ من الإجابة عليها دون وجل أو خوف وعلى المعلم أن لا يعتبر نفسه عالماً في كل شيء، لأنه بذلك يعرض نفسه إلى الإحراج في حالة عدم قدرته على جواب بعض التلاميذ (ابن العبري ١٩٦٧م، ٢٩١)، وبالتالي يصغر المعلم في نظرهم ويعتبرونه غير قادر على هضم المواد التي يقوم بتدريسها.

ويُمنَع المعلم من تعليم راهبة سواء كان في المدينة أو خارجها، ولا يسكن مع إمرأة وإن فعل ذلك يُطَرد من الجماعة (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٦٨). إذ يعتبر قد أخل بقوانين الأديرة.

ويتميز المعلم الصالح بالأبتعاد عن التباهي بنفسه، وببساطة مأكله وملبسه، وعدم ميله إلى البذخ، ويقتصر في أثاثه على الضروريات منها فقط، ويبتعد عن الحكام السياسيين قدر الإمكان، لأنهم بإعتقاده ظَلَمة والإختلاط بهم يؤدي إلى التخلق بأخلاقهم (ابن العبري ١٩٦٧م، ٢٩١). ولا يجوز له فتح مكتبٍ في المدينة ليلاً لأن ذلك يعيق أعماله داخل الدير ويسبب التقصير في أداء واجباته (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٦٧). وأن تكون غايته تعليم التلاميذ وتثبيت الإيمان في نفوسهم (المرجي، بلا تاريخ، ١٢٦-١٢٨) أي أن تكون المدرسة الديرية بمثابة مصنع للصالحين، فيكون المعلم ممن كرس حياته لخدمة الدين، من خلال تنشئة جيل مؤمن صالح.

وكانت أغلب المدارس الديرية تعهد إلى أحد الرهبان الأكفاء، وتخضع إلى زيارتين في السنة من قبل رئيس الرهبان، لئلا يتفشى فيها الفساد الإداري والقوانين التي وضعت لإدارة الدير (المرجي، بلا تاريخ، ١٢٨). أما القوانين التي طُبِقَت على الطلاب فهي طاعة التلاميذ للمعلمين



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

طاعة عمياء، كطاعة الأبناء لآبائهم (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٨٦). وخاصة إذا كان المعلم رئيس الدير، فعلى التلميذ أن يدرك أن خدمة الأب الروحاني تكون أشرف من خدمة الأب الجسداني (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٧٢). وأن يكون له مزيداً من الإحترام والتقدير، وأن لا يرفع يده على رئيس الدير، وإذا ما حصل ذلك من أحد التلاميذ يؤدب وينقل إلى دير آخر، وعليه أن يكون صائماً ناسكاً ولا يخالطه أحد في هذه الفترة ثم يعود بعد ذلك إلى ديره (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٧٢)، ويؤدب من يضبط سكراناً ثلاث مرات، أما من يزني (جيبون، بلا تاريخ، ٣٣٣). فيمهل سنة لكي يتوب ومن لم يتب يطرد من الدير، كما يطرد من ثلب رفيقه. وأن يتصرف مع أقرانه بكل إحترام فلا يتعجرف في سلوكه، ولا يغتر بمواهبه، وأن يتسامح مع مَن أخطأ منهم إذ طلبوا منه السماح وذلك لأن الإنجيل يحث على المغفرة إذ جاء فيه: ((إذا غفرتم للناس زلاتهم فأبوكم السموي يغفر لكم)) (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٧٢-١٧٣).

ويكون سكن الطلاب في المدارس الملحقة بالأديرة، وتُخَصَص لهم الأرزاق (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٩٦)، وتوفر لهم الملابس، ولا يسمح لهم مغادرة مدرسة الدير أو الدير نفسه أكثر من ثلاثة أيام، على أن لا يشرب فيها شراباً (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٧٥).

أي أن المدرسة تتكفل بكافة مستلزمات الطلبة، وربما يكون خروج الطلبة من الدير لغرض رؤية عوائلهم أو للوعظ الديني ولا يسمح لهم بالزواج، فهم التزموا بيمين على العزوبة (ادي شير، ١٩١٣م، ٢/ ١٧٥-١٧٦) و (اوليري ١٩٥٧م، ٩٨)، لأنهم سلكوا طريق الرهبنة، واحد شروطها عدم الزواج. أما الطعام فيجب أن يتناوله الطلبة سوية (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٩٦). كما مر ذكره في فصل سابق. وكانت المدارس الديرية تُخَرِج العديد من الرهبان (المرجي، بلا تاريخ، ٨٧).

**المحور الثالث// مكتبات ومؤلفات الاديرة:**

**اولاَ// مكتبات الديرية:**

غالباً ما كانت الأديرة النصرانية تحتوي على خزائن للكتب، إذ أنها لم تكن أماكن عبادة فحسب بل هي بمثابة مراكز ومعاهد علمية، ففيها يتلقي الرهبان أفانين العلوم، وكلما تقتضيه الأديرة من نظم، لذا كان من الواجب توفر خزانة للكتب، توضع في مكان خاص من الدير، ويقع على عاتق رهبان الدير المحافظة عليها وتوسيع نطاقها (ك. عواد، ١٩٨٦م، ٧٩) و (اسحق، ١٩٤٨م، ٦٣) و (مراد، ١٩٧٣م، ٤٩).

وكانت أهم الكتب الواردة إلى مكتبة الأديرة تأتي عن طريق: مؤلفات الرهبان أنفسهم أو ما يستنسخونه، إذ كان بعضهم ممن برع في مجال التأليف أو النسخ، أو مما يهدى إلى المكتبة من كتب، ويكون من ضمنها النذور والوقوف والهدايا التي تأتي من مختلف الجهات، بالإضافة إلى ما



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

يقتنيه الدير من كتب، فلا يخلوا الدير من خزانة للكتب سواء أكانت صغيرة أم كبيرة (ك. عواد، ١٩٨٦م، ٧٩).

وكان النظام في المدارس يشجع المتبرعين بالكتب، من خلال تثبيت أسمائهم على الكتب التي يهدونها للمكتبة، وفرضت هذه القوانين عقوبات قاسية على من يتهاون في تثبيت أسماء المتبرعين للكتب كالمدير أو الاخوة من الرهبان، ويكون ذلك من خلال طردهم من الاسكول (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٦٦). ويعتقد أن ذلك يشجع الناس في إقبالهم على التبرع بالكتب.

وتعتبر مكتبات الأديرة هي المكان الرئيسي الذي يمارس فيه الرهبان والقسس نشاطاتهم العلمية، كالتأليف والترجمة والإستنساخ (الشابشتي، ١٩٨٥م، ٣١)، وغالباً ما يقع على عاتق العجزة من الرهبان أو الذين يعانون من علة، أو الذين يجيدون الكتابة مهمة الاستنساخ (ابن الطيب، ١٩٥٧م، ٢/ ١٧٣) و (أبونا ١٩٧٠م، ١٨٤)، ومن الكتب التي تقع في أدراج هذه المكتبات الأسفار النفيسة والمصاحف الثمينة (الجاحظ، ١٩٠٧م، ٧١). وكانت أغلبها قد حُبِرَت بخط جميل تخالها سبائك من الفضة أو سلاسل من العقيان، وقد ورد أن شابو (المستشرق الفرنسي) قد أحصى نيفاً (براورز، ١٩٨٨م، ٨٤٧) وثلاثة آلاف من كتب النصارى في مختلف العلوم سواء أكانت دينية أم علمية أم أدبية، كانت في البيع والأديرة النصرانية، وكانت قد نقلت إلى سبع خزائن ووضعت في المكتبات الأوربية (اسحق، ١٩٤٨م، ٢٦).

واحتوت مكتبات الأديرة على المخطوطات لا سيما مخطوطات الكتب المقدسة التي اشتهرت بنقوشها المعبرة وزخارفها الجميلة الملونة، التي غدت بمثابة تحف ثمينة تتباهى بها المتاحف والمكاتب سواء أكان شرقاً أم غرباً، وكانت بصمات المصورين واضحة فيها فجعلوها بأحلى صورة، وكانت الأقلام البديعة للخطاطين قد أودعت على أوراقها أروع الخطوط (المرجي، بلا تاريخ، ٣٦-٣٧) و (برصوم، ١٩٨٧م، ٤١١).

وأقدم هذه المخطوطات هو إنجيل آرامي كُتِبَ على الرق عُثِرَ عليه في خزانة دير الربان هرمزد يرقى تاريخه إلى المئة العاشرة للميلاد. وإنجيل آرامي اخر كُتِبَ على الرق أيضاً لخزانة دير الربان هرمزد سنة ١٢٠٠م - ٥٩٧هـ كذلك كتب (المحاورات) المكتوبة بالآرامية التي كتبت سنة١٢٥٥م (ومقاله في السكوت) كتبت لخزانة هذا الدير أيضاً سنة ١٢٨٩م. وكان المتحف البريطاني قد احتوى على مخطوطة آرامية كتبت على الرق سنة ١٣٨٥م من دير الربان هرمزد. كما كان في خزانة أبريشة الكلدان في اسعرد نسخة من الإنجيل الآرامي الذي كتب في الدير ذاته، ويذكر أن نفائس هذه المخطوطات كان يحتفظ بها في غرفة صخرية داخل الدير (ك. عواد، ١٩٨٦م، ٩٤) و (عواد، أثر قديم في العراق دير الربان هرمزد ١٩٣٤م، ٥٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆلینێن کوردی

أما فيما يتعلق بموضوع تغليف (تجليد) الكتب فإنه ظهر أول مرة في أديرة الكنائس القبطية (القصيري ١٩٧٩م، ٤-٥)، وهو من الفنون التي أهتم بها رهبان الأديرة المصرية قبل الفتح الإسلامي ثم انتقل من هناك إلى باقي أنحاء العالم. وقد انتشرت أساليب التجليد على أيدي النساطرة فهم الذين ساهموا في نقله إلى كوردستان وبلاد فارس قبل الإسلام (القصيري ١٩٧٩م، ٥، ٧).

**ثانياً// أنواع الكتب التي احتوتها المكتبة الديرية:**

من البديهي أن تكون المكتبات الديرية تحتوي على العديد من الكتب المتنوعة، فقد تخرج منهاالعديد من العلماء والمؤلفين، فلا غرابة من احتواء الديارات على نفائس الأسفار وأمهات الكتب (المرجي، بلا تاريخ، ١/ ٩٠)، وسبق أن وضحنا أن هذه الأديرة لم تكن تمارس المجال الديني فحسب بل كانت بمثابة موسوعة لمختلف العلوم.

لذا صار من المعروف أن هذه المكتبات تحتوي على العديد من نوادر الكتب الدينية، فمثلاً كانت خزانة دير بيت عابي قد ضمت جملة صالحة من نسخ للكتاب المقدس (العهدين العتيق والجديد)، وكتب بعضها على الرق (المرجي، بلا تاريخ، ٥٩-٦٤)، كما أحتوت خزانة هذا الدير على نسخة مذهبة للإنجيل (المرجي، بلا تاريخ، ٩٥). أما مكتبة دير متي فقد تضمنت على نسخة نفيسة مصورة من الإنجيل كتبت بالآرامية (ك. عواد، ١٩٨٦م، ٨١). وعثر على نسخة أخرى للكتاب المقدس في خزانة باريس الوطنية كانت قد أُخِذَت من خزانة دير مار ميخائيل (الصائغ، ١٩٥٦م، ١/ ٩٣) و (ك. عواد، ١٩٨٦م، ٨٤). وهو أمر مسلم به إذ لابد من أن تكون مكنونات الديارات تحتوي على النسخ الثمينة للكتاب المقدس للمكانة الدينية التي تحتلها.

أما العلوم الأخرى التي أحتلت حيزاً كبيراً من خزائن الأديرة ومنها الكتب الطبية، إذ كان الأطباء الرهبان طبقة مهمة في الديارات المدن الكوردية، كذلك أهتم الرهبان بالعلوم الطبيعية لأنهم كانوا يسعون إلى توسيع مداركهم وثقافتهم، كما أستعانوا بالعلوم الفلسفية في شرح العقائد النصرانية والدعوة إليها (نصري، ١٩٠٥م، ١/ ٩٦) و (أبونا ١٩٧٠م، ٣٢-٣٣) و (اسحق، ١٩٤٨م، ٣٣).

واحتوت خزائن الديارات المدن الكوردية على الكتب المترجمة إذ لم تقتصر هذه الكتب على الآداب النصرانية حسب، بل شملت مؤلفات أرسطو وجالينوس وبقراط (أمين، ١٩٤٥م ، ٢/ ٦٠).

مما هو جدير بالذكر اهتمام نصارى العراق بالموسيقى الكنسية التي وضعها أُدباؤهم كالأناشيد البيعية والأدعية الخشوعية والموشحات التقوية التي تكون محكمة الوزن، مضبوطة القياس، حيث برع الرهبان في تأليفها كالراهب الموسيقي عنانيشوع والراهب داود بن بولس (ت٧٨٠م/١٦٤هـ) (المرجي، بلا تاريخ، ٩١-٩٢) و (اسحق، ١٩٤٨م، ٢٧). أما الراهب باباي فقد ذاع صيته



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

بما أغدق من كتب إلى خزانة دير بيت عابي وقد إشتهر بوقوفه و اهتمامه بالموسيقى (المرجي، بلا تاريخ، ١٢٥، ١٢٦)، فلابد أن تكون أغلب كتبه التي وضعت في مكتبات الأديرة تخص هذا الشأن.

ويقول الأبشيهي في ذلك: ((لاهل الرهبانية نغمات والحان شجية يمجدون الله تعالى ويبكون على خطاياهم ويتذكرون نعيم الآخرة)) (الابشيهي، ١٨٩٦م - ١٣١٤هـ، ٢/ ١٣١). وهذا يشير إلى أن المكتبات الديرية قد تضمنت الكتب التي تدرس الموسيقى الكنسية التمجيدية.

كما ضمت أغلب خزانات الديارات على الكتب التي تبحث في الفلك والتنجيم، أما كتب التاريخ فهي الكتب التي دونت من قبل بعض رهبان الأديرة والتي استهوتهم عملية البحث التاريخي، لا سيما في تدوين سِيَر القديسين والصالحين، سواء أكان استجواباً، أم عن طريق ما روي عنهم (المرجي، بلا تاريخ، ١٧).

**ثالثاً// مؤلفات الرهبان:**

اشتهر العديد من رهبان الديارات المدن الكوردية بالتأليف في المجالات المختلفة، ففي مجال اللغة السريانية اشهر يعقوب الرهاوي الذي اصبح فيما بعد واضع علم النحو السرياني (زيدان، بلا تاريخ، ٣/ ١٥٠) وهو من رهبان دير مار ميخائيل بإبداعِه في مجال الشعر، وله ديوان شعر آرامي عنوانه (حُسن السلوك) وقيل أن نسخته الأصلية كانت من مكنونات خزانة هذا الدير. ويعتبر الشاعر المعروف بابن الشعارة من جملة رهبان هذا الدير أيضاً، وله قصيدة آرامية مطولة (ك. عواد، ١٩٨٦م، ٨٥). كذلك برز من رهبان هذا الدير، مطران نصيبين مار إيليا، الذي كان من العلماء البارزين والأدباء المتقدمين، فقد صنف تاريخ الأزمنة، وهو من أنفس الكتب التاريخية التي وضعت في زمانه لاسيما لمطالعي تواريخ المشرق، وتوجد نسخته القديمة في خزانة الكتب السريانية في لندن، وله العديد من المقالات التي تتضمن الأدعية الخشوعية، وله كتاب في أصول النحو الآرامي، وأربعة مصنفات في الأحكام البيعية والميراث. وقام بوضع كتاب (البرهان في تصحيح الإيمان) وهو يشتمل على أربعة أجزاء وعشرة فصول، من أشهر مؤلفاته في العربية: الرسائل التي حبرها في الفقه والتوحيد والتثليث (نصري، ١٩٠٥م، ١/ ٤٦٣-٤٦٤) و (مجلة النجم، بلا تاريخ، ٧/ ١٦٣). وأبدع الراهب اصطفن في مجال الكيمياء، فقال عنه ابن النديم: ((هذا الرجل اصطفن (اسطيفانيوس)- كان بالموصل في عُمر يقال له ميخائيل وكان يحكى عنه أنه عمل الكيمياء. فلما مات ظهرت كتبه بالموصل فرأيت منها شيئاً وهو كتاب الرشد، وكتاب ما حدثناه، وكتاب الباب الأعظم، وكتاب الأدعية والقرابين التي تستعمل قبل صناعة الكيمياء، وكتاب الاختيار النجومي للصناعة، وكتاب التعليقات، وكتاب الأوقات والأزمنة)) (ابن النديم، ١٩١١م، ٥٠٥، ٥٠٦) و (ك. عواد، ١٩٨٦م، ٨٥)، وغريغور يونس اسقف حران كان عالما في الكيمياء (أبونا، تاريخ الكنيسة الشرقية ١٩٧٣م، ٢/ ١٠٨) (ابونا، ١٩٩٣م، ٢/ ١٠٨)، ولقد اهتم الرهبان بدراسة علم الفلك والتنجيم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

لمعرفة تغير الازمنة، الكسوف، الحر والبرد، وغير ذلك مما يتعلق بقرب الشمس وبعدها واتصال القمر بها وبالكواكب وهذا العلم مبني على جميع مايجري في العالم من حركة الكواكب، وبرز منهم ابيون البطريق وله كتاب في صناعة الاسطرلاب المسطح (ا.ابن النديم، ١٩١١م، ٤٣٤)، وكذلك ساويرا سابوخت له مقالة في الاسطرلاب (أبونا، تاريخ الكنيسة الشرقية ١٩٧٣م، ٢/ ٩٢).

أما رهبان دير قُنّى فقد أشتهر منهم أبو بشر متي بن يونس (ت٩٤٠م/٣٢٩هـ)، وهو ممن نشأ في أسكول مار ماري في هذا الدير، وكان قد تلقى تربيته الاولى كمعظم علماء النصارى في أحد المدارس الملحقة بالاديرة، ودرس في صفوفها زهاء أربعين عاماً العلم المنطقي، وقرأ عليه الناس المنطق فكان يجمع في حلقته كل يوم عدداً من الذين اشتغلوا بهذا العلم، وممن عني بالفلسفة ومن جملتهم الفيلسوف الأكبر الفارابي (ابن أبي اصيبعه ١٩٥٦م، ١/ ٢٣٥) و (اسحق ١٩٥٥م، ٥٩). ويقول عنه القفطي: ((متي بن يونس النصراني المنطقي أبو بشر نزل بغداد، عالم بالمنطق، شارح له، مكثر، مطيل للكلام، قصده التعليم والتفهيم، وعلى كتبه وشروحه إعتماد أهل هذا الشأن في عصره ومصره)) (القفطي، ١٩٢٦م، ٢١٢). وله مؤلفات كثيرة معظمها في شروح كتب أرسطو فكتب عنه سبعين سفراً وعَرَبَ غيرها من اللغة اليونانية والآرامية (ابن أبي اصيبعه ١٩٥٦م، ١/ ٢٣٥) و (برصوم، ١٩٨٧م، ٣٠٦) و (نصري، ١٩٠٥م، ١/ ٤٣١) و (المسعودي، ١٩٣٨م، ١٣٢). وبالتالي صار حجة في المنطق إذ انتهت إليه رياسة المنطقيين عصرئذ (ابن النديم، ١٩١١م، ٣٦٨) (ابن العبري، ١٩٨٣م، ٢٨٥) و (القفطي، ١٩٢٦م، ٢٨) و (بدوي، ١٩٨٠م، ٧٦) و (الشحات، بلا تاريخ، ٢٠٣) و (قاشا، ١٩٨٢م، ١٠٣) ويعول الناس على شرحه لكتب أرسطو المنطقية في وقتنا الحالي (المسعودي، ١٩٣٨م، ١٠٥). ومن جملة أعماله الأخرى مناظرته الكبرى في المفاضلة بين النحو والمنطق مع أبي سعيد السيرافي (أبو حيان التوحيدي، ١٩٣٩م، ١/ ١٠٧، ١٢٠).

أما المفريان ماروثا التكريتي (ت: ٦٤٩م) (G. Morony n.d., 373, 377, 378) فهو من رهبان دير مار متي، وقد عرف بمؤلفاته الدينية فقدد صنف العديد من خطب الأعياد، ويعتبر تفسير الإنجيل من خيرة مؤلفاته فضلاً عما كتبه من رسائل دينية (نصري، ١٩٠٥م، ١/ ٣٢٩، ٣٣٢) و (برصوم، ١٩٨٧م، ٢٨٠-٢٨١). ويذكر أن له ليتورجية (اسحق ١٩٥٥م، ٧١) وحساية (اسحق ١٩٥٥م، ٢٧)، كما نسبت إليه سيرة مار أحودا مة مطران تكريت (برصوم، ١٩٨٧م، ٢٨٦) و (يعقوب الثالث، ١٩٦١م، ٢٢٢).

كذلك اشتهر من رهبان دير مارمتي المطران سويريوس يعقوب بن عيسى بن مرقس شككو البرطلي (ت١٢٤١م/٦٣٩هـ) (اسحق ١٩٥٥م، ٧١)، الذي صنف العديد من الكتب ونظم قصائد جمعت بين جزالة الألفاظ ورقة المعاني أشهرها كتاب الرتب الكنسية، وكتاب الدياغالو الذي أدرج في صفحاته أصول اللغة والبيان والرياضيات والموسيقى وهو يقع في مجلدين، وله كتاب الموسيقى


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

الذي يتناول الألحان البيعية وأساليبها وناظميها وزمن دخولها في المعابد، وكتاب الكنوز الذي يُعَد من أنفس مؤلفاته في علم اللاهوت، وقد قسمه على أربعة أجزاء، فأبدع بالفلسفة الدينية (برصوم، ١٩٨٧م، ٤٠٤-٤٠٧) و (نصري، ١٩٠٥م، ٢/ ٧٣).

أما المطران غريغوريوس يوحنا البرطلي فهو أيضاً ممن ترهب في هذا الدير، وكان قد حبر ليتورجيه أبدع في انشائها تدل عن مدى إلمامه بالعلوم الكنسية (برصوم، ١٩٨٧م، ٢٩١، ٤٠٨).

ووضع الكاهن أبو نصر البرطلي (ت١٢٩٠م - ٦٨٩ه) أربعاً وتسعين حساية تدل على تضلعه في الآداب الكنسية، كما نظم قصيدة سباعية الوزن بلا قافية تقع في ست وثلاثين صفحة، تتضمن سيرة مارمتي الناسك، والمطران جبرائيل ابن القس يوحنا البرطلي (ت١٣٠٠م -٧٠٠ه) نظم سيرتي العلامة ابن العبري وأخيه برصوم الصفي في قصيدتين مطولتين أذاع فيهما محاسنهما ومناقبهما. وفي سنة (١٢٩١م-٦٩١ه) حبر ليتورجيه مسهبة بليغة وتسع حسايات حسنة الأسلوب رقيقة المعاني.

أ ما الم طران طيم ثاوس سوجدي (ت٥١٤ه/ ١١٢٠م)، والم طران بر كوتلا (ت٥٤٥ه/ ١١٥٠م)، والم طران صليبا (ت٦٠٩ه/ ١٢١٢م)، والمفر يان غريغور يوس متي الأول (ت٧٤٦ه/ ١٣٤٥م)، ف كانوا من جم لة ره بان د ير مارمتي ممن تتل مذوا ع لى أ يدي شيوخ ا لدير، فأ ضحوا من الكُ تاب الم عدودين والأُد باء ا لذين وق فوا أ ساس البلا غة، وحُ سن الت عابير (ا سحق ١٩٥٥م، ٧٣). ك ما بَرَعَ الراه بان راميشيوع وجبرائيل بتحقيق وتنقيح الكتب في قلالي ذلك الدير (يعقوب الثالث، ١٩٦١م، ٢٢٣).

أما مؤلفو دير بيت عابي فقد أشتهر منهم الرا هب عنا نيشوع (ت الاول الهجري/ السابع الميلادي) الذي أُنتُدِبَ من قبل الجاثليق يشوعياب الثا لث المعروف با لحديابي (ت ٥٨ه/ ٦٦٠م) ليقوم بتنظيم الصلوات الطقسية وترتيب الأ لحان البيعية فكا نت مصنفاته مطرزة الفصول وفريدة في فنها، وكان أروع مؤلفا ته سفره المعروف ب(فردوس الآ باء) وقد أد مج فيه سير الره بان و مآثرهم وأعما لهم، ورتبه ونظمه على أكمل وجه، وأضاف إليه أ شياء كثيرة، ومن مؤلفا ته الأ خرى كتاب القوانين ورسالة في ألفاظ الكتاب المقدس الغامضة وكُنّا شِهِ (نصري، ١٩٠٥م، ٢٥٠، ٢٦٢، ٢٦٥) و (ادي شير، ١٩١٣م، ٢) و (تسران، ١٩٣٩م، ١٥٩) و (اسحق ١٩٥٥م، ٧٤).

ويُعَد المرجي ممن نبغ في هذا الدير و ألف العديد من الكتب أبرزها كتاب الرؤساء الذي وضعه سنة (٢٢٦ه/ ٨٤٠م) و هو سفر جليل أث نى عليه المؤرخون الشرقيون، و هو يتضمن الحياة النسكية في نواحي دجلة في القرون الثلاثة الأولى وتاريخ مابين النهرين في ثلاثة قرون وما تضمنه من أعمال خطيرة بأسلوب منقطع النظير، لذا كان هذا الكتاب بمثابة منهلٍ لمن يهوى التاريخ الشرقي النصراني (نصري، ١٩٠٥م، ١/ ٢٧٩-٢٨٠) و (اسحق ١٩٥٥م، ١٦١) و (اسحق، ١٩٤٨م، ٩١).

وا شتهر سرجيس الر سعني (الح ميري، ١٩٨٠م، ٢٦٤-٢٦٥) كرا هب وطب يب الم ناطق الكوردية أحاط بجميع العلوم الإ سكندرية، ومن المحتمل أن يكون قد حصل على هذه العلوم من



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الإسكندرية، فقام بترجمة العديد من الكتب ولم تقتصر ترجمته على كتب الإلهيات والأخلاق والتصوف بل ترجم إلى جانبها كتب الطبيعة والطب والفلسفة (دي بور، بلا تاريخ، ١٩)، وهذا يدلل على التمازج والتنقيح الحضاري من خلال سعي الرهبان المناطق الكوردية وراء طلب العلم إلى مختلف البلدان.

ومما لاشك فيه أن هناك فئة من الرهبان العلماء الذين نبغوا في الديارات المدن الكوردية وأبدعوا في العديد من المجالات اللاهوتية والفلسفية واللغوية، غير أنه لا تتوفر معلومات تفصيلية عنهم. ومهما يكن من أمر فقد حاولت حسب المستطاع أن أوضح صورة الديارات المدن الكوردية وعناية الرهبان بالعلوم ونشرها آنذاك.

**رابعاً// العلوم الديرية في ظل الدولة العربية الإسلامية:**

لم يكن التسامح الإسلامي تجاه النصارى مقتصراً على الجوانب الدينية فحسب، بل شمل الجوانب العلمية والثقافية. فيذكر أن الفتوحات الإسلامية للعراق التي جرت عام (١٤هـ - ٦٣٢م) لم توقف الحياة العقلية او الدينية في المجتمع النصراني، بل ((تركت المجتمعات تتبع قوانينها وعاداتها وتسلك طريقها الثقافي الخاص)) (اوليري ١٩٥٧م، ١٣٧) طالما أنها أطاعت وأحترمت الشرع الإسلامي الحنيف.

لذا كان للفتح العربي الإسلامي وقدوم العرب إلى بلاد الرافدين الأثر الكبير في تغير الحياة الفكرية لدى النصارى، نتيجة للتمازج الثقافي والحضاري، الأمر الذي جعل الرهبان يقبلون تعلم اللغة العربية ودراسة آدابها، وبعد أن قطعوا شوطاً كبيراً في ذلك، أخذوا ينقلون علومهم إلى العربية، فأضافوا بذلك علومهم وأفكارهم إلى ما عند العرب المسلمين من علوم. فتَكَوَنَ بذلك تمازج ثقافي يختلف عن غيره مما كانت عليه الحضارات السابقة فصيغت بالطابع العربي والأسلوبين الإسلامي والنصراني (قاشا، ١٩٨٢م، ٧٦-٧٧). لذا باتت الديارات النصرانية تؤدي دورها على أحسن وجه كونها من المراكز الثقافية والعلمية المهمة لدى النصارى (ر. اسحق، ١٩٤٨م، ٨٦).

وبقي النصارى في عهد الدولة الأموية لا سيما الرهبان منهم يتمتعون بالحرية الفكرية واستمروا على متابعة نشاطاتهم العلمية والفلسفية (الفاخوري، ١٩٥٨م، ١٠٠) دون انقطاع. وما أن انتقلت الخلافة إلى بني العباس حتى تكاتف الرهبان المدن الكوردية وإخوانهم المسلمين العرب واختلطوا بهم، وكانوا يتسابقون في ممارسات نشاطاتهم العلمية والثقافية. فاقبلوا على ترجمة الكتب اليونانية وكانوا قد نقلوا علومها إلى لغتهم وحفظوها ودَرَسوها في مدارسهم. وكانت ديارات رهبانهم حافلة بخزائن الكتب النفيسة المنقولة عن عدة لغات. فهب النقلة يعربون هذه الأسفار ولم يتركوا سفراً معروفاً آنذاك ألا عربوه ونشروا نُسَخَهُ في البلاد (قاشا، ١٩٨٢م، ٩). فكان لذلك الأثر الأكبر في تطور العلوم والمعارف عصرئذ.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وبعد أن نشطت الهمم وانتشرت مختلف العلوم والفنون والآداب، غادر أُدَباء الآرامية مدارس الديارات وبرحوا مكاتب الكنائس، يدرسون اللغة العربية فتضلعوا فيها وأجاد عدد منهم في تعريب الكتب، وتأسيس معاهد التهذيب والمستشفيات، وحفلت خزائن الكتب بمصنفاتهم النفيسة (قاشا، ١٩٨٢م، ٩).

وكان لبعض الخلفاء العباسيين اليد الطولى في تكريم رهبان الديارات الذين كانوا قد نبغوا في العلوم فقد أكرم الخليفة المطيع بالله (٣٦٣. ٣٧٤هـ/٩٤٦-٩٧٤م) أحد رهبان دير قُنَّى وهو الجاثليق إسرائيل (ت٩٦٢ م/٣٥١هـ ) لعلمه ومناقبه الجمة (بن سليمان، ١٨٩٩م، ٩٨-٩٩) و (نصري، ١٩٠٥م، ١/ ٤٢٦).

و كان للخليفة القائم بأمر الله (٤٢٢-٤٦٧ هـ/١٠٣١-١٠٧٥م) دور في تنصيب الجاثليق سبريشوع الثالث (ت١٠٧٢م/٤٦٥هـ) وهو أيضاً من رهبان دير قُنَّى، وكان عالماً متضلعاً في الآداب الكنسية، ومنحه البراءة التي أيد فيها حقوقه وجاء فيها: ((أقامك سلطان المؤمنين جاثليقاً للنصارى القاطنين في بغداد مدينة السلام أو في كل البلاد والأقاليم ويعلن انك رئيسهم ورئيس الساكنين في بلاد المسلمين والذين يأتون أليها ويأمر بأن يطيع الجميع أقوالك)) (بن سليمان، ١٨٩٩م، ١٢١، ١٢٦) و (نصري، ١٩٠٥م، ١/ ٤٥٨ - ٤٥٩). وهذا يبين مدى التسامح والمحبة التي تغلغلت في قلوب المسلمين تجاه العلماء من رهبان النصارى. وتأييدهم على بذل المزيد من الجهود في سبيل الإرتقاء في مجال العلم فباتت الديارات منبعاً لازدهار العلوم.

**الخاتمة:**

من خلال كتابة البحث توصلنا الى اهم النتائج التالية:

لم يكن هدف الأديرة وخاصة في القرن ٣-٥٦/ ٩-١٢م هو العبادة المجردة بل أصبحت الأديرة مراكز علمية مرموقة نشطت في مجال التعليم والتأليف والبحث إذ أن الأديرة تكاد لاتخلوا من مدرسة للتعليم إلى جوار كنيسة الدير، ولم يكن خالية من المكتبات لخزن المؤلفات الدينية والعلمية، مما جعل الدير مؤسسة علمية بالدرجة الأولى علاوة على رسالته الدينية.

ان بقاء الدير في المناطق الكوردية كاحد العمائر المهمة خاصة بعد الفتح الاسلامي للمنطقة فان ذلك يدل على مدى التسامح الديني الاسلام، والاهم من ذلك فان تعاليم الدين الاسلامي السمح تركت لهم حرية العباد وممارسة شعائرهم والاحتفال بأعيادهم دون إزعاج وإن الأهم من ذلك أن المسلمين كانوا يشاريكونهم في مثل تلك الاحتفالات والأعياد.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

**قائمة المصادر والمراجع:**


الابشيهي، شهاب الدين محمد بن احمد. المستطرف في كل فن مستظرف. القاهرة، ١٨٩٦م – ١٣١٤هـ.

١) ابن أبي اصيبعه، موفق الدين أبي العباس أحمد بن القاسم بن خليفة بن يونس السعدي الخزرجي(٦٦٨هـ –١٢٧٠م). عيون الأنباء في طبقات الأطباء. بيروت: دار الفكر، ١٩٥٦م.

٢) ابن الطيب، أبو الفرج عبدالله ( ت ١٠٤٣ م ). فقه النصرانية، سلسلة مجموعة الكتاب النصارى الشرقيين (الكتاب العربي). المجلد: ١٧٦. لوفا، ١٩٥٧م.

٣) ابن عبدالحق، يصفي الدين عبد المؤمن البغدادي. مراصد الاطلاع على أسماء الأمكنة والبقاع. تحقيق وتعليق: علي محمد البيجاوي. بيروت: دار المعرفة للطباعة والنشر، ١٩٥٤م.

٤) ابن العبري، مار غريغوريوس يوحنا الملطي (٦٨٥هـ. ١٢٨٦م):

٥) ــــ. تاريخ مختصر الدول. تصحيح وفهرست: انطوان صالحاني اليسوعي. بيروت: دار الرائد اللبناني، ١٩٨٣م.

٦) ــــ. الاثيقون (فلسفةالاداب الخلقية). ترجمة: مار غريغوريوس بهنام، مطبعة الشباب. القامشلي، ١٩٦٧م.

٧) ابن فارس، أبى الحسن أحمد بن زكريا. معجم مقاييس اللغة. ط٢ . تحقيق وضبط: عبد السلام هارون. مصر: مطبعة: مصطفى البابي الحلبي وأولاده، ١٩٧٠م.

٨) ابن منظور، جمال الدين محمد بن مكرم الأنصاري(ت: ٧١١هـ). لسان العرب. بيروت: دار لسان العرب، بلا تاريخ.

٩) ابن النديم، (٣٨٣-٣٨٥هـ/ ٩٩٣-٩٩٥م). الفهرست(سلسلة روائع التراث العربي). بيروت: مكتبة خياط، بلا تاريخ.

١٠) ابن النديم، أبو الفرج محمد بن ابي يعقوب اسحق الوراق. الفهرست. تحقيق: رضا حداد. مطبعة دانشكاه، ١٩١١م.

١١) أبو حيان التوحيدي، أبو حيان علي بن محمد. الامتاع والمؤانسه. مصر، ١٩٣٩م.

١٢) أبونا، ألبير:

١٣) ــــ. أدب اللغة الآرامية. بيروت، ١٩٧٠م.

١٤) ــــ. تاريخ الكنيسة الشرقية من مجيء الاسلام حتى نهاية العصر العباسي. الموصل: المطبعة العصرية، ١٩٧٣م.

١٥) ادي شير. تاريخ كلدو وآثور. بيروت: المطبعة الكاثوليكية للأباء اليسوعيين، ١٩١٣م.

١٦) اسحق، روفائيل بابو:




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٧) ـــــ. مدارس العراق قبل الإسلام. بغداد: مطبعة شفيق، ١٩٥٥م.

١٨) ـــــ. تاريخ نصارى العراق منذ انتشار النصرانية في الأقطار العراقية إلى أيامنا. بغداد: مطبعة المنصور، ١٩٤٨م.

١٩) ـــــ. أحوال نصارى بغداد في عهد الخلافة العباسية. بغداد: مطبعة شفيق، ١٩٦٠م.

٢٠) الأصبهاني، علي بن الحسين بن محمد بن أحمد بن الهيثم المرواني الأموي القرشي، أبو الفرج الأصبهاني (المتوفى: ٣٥٦هـ). الديارات. بلا تاريخ.

٢١) أفرام الثاني، مار اغناطيوس. دير مار متي الشيخ ودير مار بهنام الشهيد. بيروت: المطبعة السريانية، ١٩٢٨م.

٢٢) أمين، أحمد. فجر الإسلام. ط٣. القاهرة: مطبعة لجنة التأليف والترجمة والنشر، ١٩٣٥م.

٢٣) أمين، أحمد. فجر الإسلام. مصر، ١٩٤٥م.

٢٤) اوليري، د. لاسي:

٢٥) ـــــ. مسالك الثقافة الإغريقية الى العرب. ترجمة: تمام حسن. مطبعة الرسالة - نشر مطبعة الانكلو المصرية، ١٩٥٧م.

٢٦) ـــــ. علوم اليونان وسبل انتقالها للعرب. مراجعة: زكي علي. ترجمة: وهيب كامل. مصر: مكتبة النهضة المصرية، ١٩٦٢م.

٢٧) بارتولد. تأريخ الحضارة الإسلامية. ط٣. ترجمة: حمزة طاهر. مصر: دار المعارف، بلا تاريخ.

٢٨) بدوي، عبدالرحمن. التراث اليوناني في الحضارة الإسلامية. ط٤. بيروت: دار القلم، ١٩٨٠م.

٢٩) براورز، بولس وآخرون. المنجد في اللغة والأعلام. ط١٦١. بيروت: دار المشرق، ١٩٨٨م.

٣٠) بر صوم، أغناطيوس أفرام الأول. اللؤلؤ المنثور في تأريخ العلوم والآداب السريانية. حمص، ١٩٤٣م.

٣١) برصوم، اغناطيوس افرام الأول. اللؤلؤ المنثور في تاريخ العلوم والآداب السريانية. ط٥. قدم له ونشره: يوحنا إبراهيم. حلب: متر بوليت، ١٩٨٧م.

٣٢) البكري، أبو عبيدالله بن عبدالعزيز. معجم ما استعجم من أسماء البلاد والمراضع. تحقيق: مصطفى السقا. القاهرة: مطبعة: لجنة التأليف والترجمة والنشر، ١٩٤٥م.

٣٣) بن سليمان، ماري (ت: القرن الثامن الميلادي). أخبار فطاركة كرسي المشرق من كتاب المجدل لعمرو بن متي. طبعة رومية الكبرى، ١٨٩٩م.

٣٤) تسران. نيافة الكردنيال خلاصة تاريخية للكنيسة الكلدانية. ترجمة: سلمان الصائغ. الموصل، ١٩٣٩م.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

٣٥) الجاحظ، أبو عثمان عمرو بن بحر (٢٥٥هـ). رسائل الجاحظ. ليدن: مطبعة بريل، ١٩٠٧م.
٣٦) جيبون، ادورد. اضمحلال الإمبراطورية الروماذية و سقوطها. راجعه و قدم له: احمد نجيب هاشم. ترجمة محمد أبو درة. دار الكتاب العربي للطباعة والنشر، بلا تاريخ.
٣٧) حاجي خليفة، مصطفى بن عبدالله الشهير بحاجي خليفة(١٠٦٧هـ/ ١٦٥٦م). كشف الظنون عن أسامي الكتب والفنون. دار المعارف التركية، ١٩٤١م.
٣٨) حبي، يوسف:
٣٩) ــــ. الدير الأعلى وكنيسة الطاهرة،. الموصل: المطبعة العصرية، ١٩٦٩م.
٤٠) ــــ. كنيسة المشرق الفجر الأصيل. بغداد، ١٩٨٨م.
٤١) حسن، حسن إبراهيم. تأريخ الإسلام السياسي والديني والثقافي والاجتماعي. ط٣. مطبعة مكتبة النهضة المصرية، ١٩٥٣م.
٤٢) حمارنة، سامي خلف. تاريخ العلوم الطبية عند العرب المسلمين. عمان: مطبعة الوطنية، ١٩٨٦م.
٤٣) الحميري، محمد بن عبد المنعم. الروض المعطار في خبر الاقطار. ط٢. تحقيق: احسان عباس. بيروت: مطبعة دار السراج، ١٩٨٠م.
٤٤) دي بور. تاريخ الفلسفة في الاسلام. ترجمة: محمد عبد الهادي ابو ريدة. القاهرة: مطبعة لجنة التاليف والترجمة والنشر، بلا تاريخ.
٤٥) دي طرازي، فيليب. خزائن الكتب العربية في الخافقين. بيروت: منشورات وزارة التربية الوطنية والفنون الجميلة، ١٩٤٨م.
٤٦) الدينوري، أبو حنيفة أحمد بن داود. النبات. شرح وتحقيق: برنهار ولفين. بيروت: دار القلم، ١٩٧٤م.
٤٧) الديوه جي، سعيد. تاريخ الموصل. بغداد: مطبوعات المجمع العلمي العراقي، ١٩٨٢م.
٤٨) الراوي، عاصم مراد ظاهر ابراهيم. ابن بطلان البغدادي وكتابه دعوة الاطباء (رسالة ماجستير). كلية التربية - جامعة الموصل، ٢٠٠٢م.
٤٩) الربيعي، جاسم صكبان علي. نصارى العراق في العصر الأموي (٤٠-١٣٢هـ /٦٦٠- ٧٥٠م) (رسالة ماجستير). كلية الآداب - جامعة بغداد، ١٩٧٤م.
٥٠) رسام، أفرام. تاريخ دير مار ميخائيل رفيق الملائكة. الموصل: مطبعة الشرقية الحديثة، ١٩٦١م.
٥١) الزمخشري، محمود بن عمر. أساس البلاغة. بيروت: دار صادر للطباعة، ١٩٦٥م.
٥٢) زيات، حبيب. الديارات النصرانية في الإسلام. بيروت: مطبعة الكاثوليكية، ١٩٣٨م.
٥٣) زيدان، جرجي. تأريخ التمدن الإسلامي. مراجعة وتعليق: حسين مؤنس. القاهرة: دار الهلال، بلا تاريخ.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٥٤) الـ سامرائي، كـ مال. مختـ صر تاريخ الـ طب العر بي. بـ غداد: منـ شورات وزارة الثقا فة والا علام، ١٩٨٤م.

٥٥) الـ سرياني، ا لخوري يو سف داود. مختـ صر المختـ صر في تواريخ الكنيـ سة. المو صل – الـ عراق: دار الأباء الدومنكيين، ١٨٧٧م.

٥٦) السقاف، أحمد محمد زين. الأوراق . ١٩٥٤م.

٥٧) الشابشتي، أبو الحسن علي بن محمد(ت: ٣٨٨ هـ – ٩٩٨م ). الديارات . ط٢. تحقيق: كوركيس عواد. بيروت: دار الرائد العربي، ١٩٨٥م.

٥٨) شتريك، مكسيمان. خطط بغداد وأنهار العراق القديمة. ترجمة: خالد إسماعيل علي. بغداد: مطبعة: المجمع العلمي العراقي، ١٩٨٦م.

٥٩) الشحات. السريان والحضارة الاسلامية. بلا تاريخ.

٦٠) شلبي، أحمد. مقارنة الأديان، اليهودية. ط٢. القاهرة: مكتبة النهضة العربية، ١٩٦٧م.

٦١) شيخو، لويس اليـ سوعي. النـ صرانية وآدابـ ها بين عرب الجاهـ لية. بيروت: مطبـ عة الآ باء اليسوعيين، ١٩١٩م.

٦٢) الصائغ، سليمان. تأريخ الموصل. مصر: المطبعة السلفية، ١٩٢٣م.

٦٣) الصائغ، سليمان. تاريخ الموصل. لبنان: مطبعة الكريم، ١٩٥٦م.

٦٤) الـ طبري، أ بو جعـ فر محـ مد بن جر ير( ت ٣١٠ هـ -٩٢٢م). تاريخ الأ مم والملوك. ط٢. بيروت: مطبعة المعارف، ١٩٦٥م.

٦٥) طرازي، الفيكنت فيليب دي. عصر السريان الذهبي. بيروت: مطبعة فرعون، ١٩٤٦م.

٦٦) الطريحي، محـ مد سعيد. ا لديارات والأمكـ نة النـ صرانية في الكو فة و ضواحيها. ط١. بيروت – لبنان، ١٤٠١هـ – ١٩٨١م.

٦٧) عدناح، ايـ شو(ت: نهـا ية الـ قرن الـ ثامن ا لميلادي). ا لديورة في ممـ لكتي الـ فرس والـ عرب. تر جمة: بولس شيخو. الموصل: مطبعة النجم، ١٩٣٩م.

٦٨) عطية الله، أحمد. القاموس الإسلامي. القاهرة: مكتبة النهضة المصرية، ١٩٦٣م.

٦٩) العلوجي، عبدالحميد. تاريخ الطب العراقي. بغداد: مطبعة أسعد، ١٩٦٧م.

٧٠) العلي، صالح احمد. معالم العراق العمرانية. بغداد: دار الشؤون الثقافية العامة، ١٩٨٩م.

٧١) العـ مري، ا بن فـ ضل الله(ت٧٤٩ هـ – ١٣٤٨م). مـ سالك الأبـ صار في المما لك والأمـ صار. تحقـ يق: أحمد زكي. دار الكتب المصرية، ١٩٢٤م.

٧٢) عواد، ميخائيل. دير قُنَّى موطن الوزراء ومعقل المسيحية في العراق. بيروت: مطبعة الكاثوليكية، ١٩٣٩م .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٧٣) الفاخوري، حنا. والجر. خليل،. "حركة النقل بعد الفتح الاسلامي." مجلة: المسرة، ١٩٥٨م.
٧٤) الفيروزآبادي، مجد الدين محمد بن يعقوب. القاموس المحيط والقابوس الوسيط في اللغة. بيروت: دار الفكر، ١٩٧٨م.
٧٥) فييه، جان موريس الدومنيكي. الآثار المسيحية في الموصل. راجعه ونقحه وصححه: البيرابونا. ترجمة ترجمة: نجيب قاقو. بغداد، ٢٠٠٠م.
٧٦) قاشا، سهيل. لمحات من تاريخ نصارى العراق. بغداد : مطبعة شفيق، ١٩٨٢م.
٧٧) القرماني، أبو العباس أحمد بن يوسف بن أحمد الدمشقي. أخبار الدول وآثار الأول في التاريخ. بيروت: عالم الكتب، بلا تاريخ.
٧٨) القزوييني، زكريا محمد بن محمود(٦٨٢ هـ - ١٢٨٣م). آثار البلاد وأخبار العباد. بيروت: دار صادر، ١٩٦٠م.
٧٩) القصيري اعتماد يوسف. فن التجليد عند المسلمين. بغداد: دار الحرية للطباعة، ١٩٧٩م.
٨٠) القفطي، جمال الدين أبي الحسن علي يوسف. تاريخ الحكماء. تحقيق: محمد أمين الخانجي. مصر: مطبعة السعادة، ١٩٢٦م.
٨١) قنواتي، جورج شحاتة. المسيحية والحضارة العربية. المؤسسة العربية للدراسات والنشر، بلا تاريخ.
٨٢) كرد علي، محمد. خطط الشام. ط٢. بيروت: دار العلم للملايين، ١٩٧٠م.
٨٣) كوركيس عواد:
٨٤) ــــ. أثر قديم في العراق دير الربان هرمزد. الموصل: مطبعة النجم، ١٩٣٤م.
٨٥) ــــ. خزائن الكتب القديمة في العراق (منذ اقدم العصور حتى سنة ١٠٠٠ هـ). ط٢. بيروت: دار الرائد العربي، ١٩٨٦م.
٨٦) ل. أ. سيديو. تأريخ العرب العام. ترجمة: عادل زعيتر. مصر: نشر البابي الحلبي، ١٩٤٨م.
٨٧) مايرهوف، ماكس. من الإسكندرية إلى بغداد. ط٢. ترجمة: عبدالرحمن بدوي. القاهرة: دار النهضة العربية، ١٩٦٥م.
٨٨) مجلة النجم. بلا تاريخ.
٨٩) مراد، موسى يونان. حركة الترجمة والنقل في العصر العباسي. ١٩٧٣م.
٩٠) المرجي، توما أسقف. كتاب الرؤساء. بلا تاريخ.
٩١) المسعودي، أبي الحسن علي بن الحسين( ت ٣٤٦ هـ - ٩٥٧م ). التنبيه والأشراف. تصحيح ومراجعة: عبدالله إسماعيل الصاوي. بغداد: مكتبة المثنى، ١٩٣٨م.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٩٢) المقريزي، تقي الدين أبو العباس احمد بن علي. المواعظ والاعتبار بذكر الخطط والآثار (المعروف بالخطط المقريزية). بغداد، ١٩٧٠م.
٩٣) نصري، بطرس الكلداني. ذخيرة الأذهان في تاريخ المشارقة والمغاربة السريان. الموصل: مطبعة الآباء الدومنيكيين، ١٩٠٥م.
٩٤) نصري، القس بطرس. ذخيرة الأذهان في تواريخ المشارقة والمغاربة السريان. الموصل، ١٩١٣م.
٩٥) الهروي، علي بن ابي بكر بن علي الهروي أبو الحسن (ت: ٦١١هـ/ ١٠٨٨م). الإشارات إلى معرفة الزيارات. القاهرة: مكتبة الثقافة الدينية، ١٤٢٣هـ.
٩٦) ول ديورانت. قصة الحضارة. ترجمة محمد بدران. الإدارة الثقافية بجامعة الدول العربية، بلا تاريخ.
٩٧) ياقوت الحموي، شهاب الدين أبي عبدالله (ت: ٦٢٦ هـ - ١٢٢٨م ). معجم البلدان. بيروت: دار صادر، بلا تاريخ.
٩٨) ياقوت الحموي، شهاب الدين أبي عبدالله. معجم البلدان. بيروت: دار صادر ودار بيروت، ١٩٥٤ - ١٩٥٧م.
٩٩) يعقوب الثالث، اغناطيوس. دفقات الطيب في تاريخ مار متي العجيب. زحلة: مطبعة الراسي، ١٩٦١م.
100) G. Morony. n. d., IRaQ After the Muslim Conquest.

## رۆڵی زانستی دێرکانی شارە کوردییەکان لە سەدەی ٣-٦ك/ ٩-١٢ز

**پۆختە:**

ئەم توێژینەوەیە کە ناونیشانەکەی (رۆڵی زانستی دێرکانی شارە کوردییەکان لە سەدەی ٣-٦ك/ ٩-١٢ز) باس لەو رۆڵە وانستایەنە دەکات کە دێرەکانی ناوچە کوردییەکان بینیویانە لە پەرەپێدانی زانست و زانیاری و بەرەو پێشبردنی شارستانییەتی ئیسلام لە لایەنی زانستی لە سەردەمە جیاوازەکانی دەوڵەتی عەباسی، لە راستیدا دەتوانیین بڵێین کە دێرەکان و پیاوانی ئاینی مەسیحی بە سەرەتا و کانیاو زانستی ناوچە کوردییەکان دادەندرێن دواتریش دەبن بە شیکەرەوەو رێکخەرو پردی پەوەندی زانستە جیاوازەکان لە رێگەی وەرگێرانەکانیان بۆ زمانی عەرەبی بەتایبەتی زانستی پزیشکی، هەر بۆیە دێرەکانی ناوچە کوردییەکان رۆڵ و دیارکەوتنی زانستیان جێگای گرینگی پێدانەو باس کردنە.

**پەیڤێن سەرەکی:** *دێرەکان، شار، کورد، زانست، ئیسلامی.*



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

**The Role of The Christian Monasteries of Kurdish Cities in the 3rd-6th Hijri Centuries/9th-12th A.D. Centuries**

**Abstract:**

This research, titled "The Role of The Christian Monasteries of Kurdish Cities in the 3rd-6th Hijri Centuries/9th-12th A.D. Centuries", discusses the importance of the role that the Monasteries of the Kurdish areas have seen in developing science and information and developing Islamic civilization by Science in the different eras of the Abbasid Caliphate, we can say that the Monasteries and Christian Religious men are beginning and the source of the science of the Kurdish regions and then become analysts, organizers, and bridges which connects the different sciences through their translations into the Arabic language, especially medical science, Therefore the Monasteries of the Kurdish regions and their sciences are precious and needs to be discussed.

**Keywords:** *Monasteries, kurd, the cities, science, Islamic.*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# دور علماء الكرد في تدوين ونشر العلوم الإسلامية النقلية والعقلية

د. عبدالباري عزيز عثمان

قسم اللغة العربية -جامعة يوزنجوييل- وان/ الجمهورية التركية

**ملخص البحث :**

أرسل الله تعالى دين الإسلام للبشرية جمعاء، فدخل الناس في هذا الدين أفواجا من شتى البقاع والألوان والقوميات . وكان الكرد ممن دخلوا في هذا الدين الجديد وأصبحوا من أشد المدافعين عنه عسكريا وعلميا وثقافيا . وقد شهد التاريخ الإسلامي بروز عدد كبير من العلماء الأجلاّء الكرد في شتى العلوم الإسلامية : كالفقه والتفسير والعقيدة والأصول والحديث وغيرها . وكان لعلماء الكرد هؤلاء دور عظيم وكبير وهام جدا في تدوين العلوم الإسلامية العقلية والنقلية منها ، وشرحها وكتابة التعليقات عليها . فقد كان علماء الكرد روادا في هذا المضمار عبر مراحل التاريخ الإسلامي .

ومن هؤلاء العلماء الفقيه الكردي يوسف بن أحمد الشهير بابن كج ، وشيخ الإسلام أبو الحسن علي بن أحمد يوسف الهكاري ، والإمام المحدث ابن الصلاح الشهرزوري الكردي ، والأصولي النحوي المقرىء ابن الحاجب الكردي ، والمؤرخ الفريد أبو العباس أحمد بن خلكان الكردي الأربيلي ، والأصولي الفقيه سيف الدين الآمدي وغيرهم الكثير من العلماء الكبار والمشهورين ممن تركوا لهم بصمة واضحة وأثرا عظيما في شتى العلوم الإسلامية عبر التاريخ الإسلامي .

وسنتطرق في بحثنا هذا - إن شاء الله - إلى هؤلاء العلماء العظام في كل علم من العلوم الإسلامية المتنوعة ، وما تركوه من آثار وبصمات على تلك العلوم العقلية والنقلية وعلى التراث والتاريخ الإسلامي .

**الكلمات المفتاحية:** *الإسلام - الكرد .علماء - تدوين ونشر - العلوم الإسلامية. يوسف الهكاري*

**المقدمة :**

أرسل الله تعالى دين الإسلام للبشرية جمعاء على اختلاف قومياتهم ولغاتهم وألوانهم ، فكان التاريخ الإسلامي نتاج كل الشعوب والقوميات المسلمة من عرب وكرد وفرس وترك وغيرهم ، والمتصفح للتاريخ الإسلامي سيجد فيه الكثير من الإنجازات والاختراعات والإبداعات والتآليف العلمية والثقافية والعقدية والسياسية والاقتصادية والعسكرية التي منحها وقدمها العلماء



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردی

والفقهاء من كافة القوميات واللغات والألوان ، لأنهم جميعا كانوا متحدين في نياتهم بالإخلاص والعمل في خدمة الإسلام والمسلمين ، والقيام بواجب الدعوة ونشر العلوم المختلفة والإسهام في بناء الحضارة الإسلامية وتطويرها.

و من هذه الشعوب الشعب الكردي الذي كان له مساهمة عظيمة في بناء الحضارة الإسلامية والتاريخ الإسلامي ، فكان منذ بدايات ظهور الإسلام مواكبا لركب الحضارة ومساهما ومشاركا في الدعوة والتأليف ونشر المعرفة ، حيث قدّم الشعب الكردي عبر التاريخ الإسلامي شهادات حية ومتنوعة في مختلف دروب المعرفة والعلم والثقافة ، الأمر الذي يدل على حبه للعلوم والمعرفة والاعتزاز بالإسلام دينا وعقيدة . وقد قام الكرد بأدوار عظيمة وهامة على مختلف الأصعدة الحضارية والدينية والعسكرية والسياسية والاجتماعية

ولجُهود علماء الكرد الجبارة منذ بدايات الإسلام وإلى يومنا هذا مكانة عظيمة في التاريخ الإسلامي . حيث أن لهم بصمات واضحةٌ وجليّةٌ في تقديمهم المعطيات العلمية العظيمة في كافة العلوم العقلية منها والنقلية ، وكان لهم أثر عظيم وواضح في المجالات العلمية المختلفة ، فكانت مؤلفات وكتب العديد من العلماء الكرد تُدرّسُ في أماكن مختلفة من العالم الإسلامي كالقاهرة ودمشق وبغداد وبدليس وآمد وشهرزور وغيرها من المدائن الإسلامية . ولكن من المؤسف أن بعض المؤرخين والكُتّاب الذين أعمتهم العصبية قد خانوا الأمانة العلمية وذلك عندما طمسوا حقائق ومآثر علماء الكرد وهُوياتهم متعمدين في إلحاق هؤلاء العلماء العِظام من الكرد إلى غيرهم من الأقوام والملل ، إما جهلا أو تجاهلا ، بل عند البعض كراهية وحقدا .

لقد برز من بين الكرد جيل من العلماء الأفذاذ الذين كانت لهم مساهمات عظيمة ومشاركات جليلة في نشر الحضارة الإسلامية ، وكانوا أي " علماء الكرد " دائما ممن يُشار إليهم بالبنان في كل صنف ونوع من العلوم الإسلامية : كالعقيدة ، والتفسير ، والحديث ، وأصول الفقه والفقه ، وغيرها من العلوم النقلية منها والعقلية . فمشاركة المسلم الكردي لم تكن بأقلّ من مشاركة غيره من الأقوام الأخرى من عرب أو عجم ، في حماية الدين الإسلامي ونشره والإسهام الجاد في بناء الحضارة الإسلامية على كافة الأصعدة الحضارية والثقافية والسياسية والعسكرية والفكرية والإنسانية لقد قدّم الكرد من خلال علمائهم ومفكريهم ومشايخهم وفلاسفتهم وأطبائهم نماذج بارزة تدل على حبهم للعلم والحضارة والتقدم .

والحركة العلمية والثقافية الإسلامية هي نتاج جهود مشتركة بين كافة الشعوب المسلمة على اختلاف قومياتهم وجنسياتهم وألوانهم ولغاتهم . لقد كانت كردستان تحت ظلال العهود الإسلامية منجما غنيا ونبعا غزيرا للعلماء والقضاة والفقهاء والعسكرين والأدباء ، ولا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

زالت إلى يومنا هذا ترفد العالم الإسلامي في أصقاع المعمورة بكبار رجالات الفكر والدين والسياسة والأدب .

وسأقف في بحثي هذا على أهم الشخصيات العلمية الكردية التي برزت وعلا نجمها ضمن كل علم من علوم الشريعة الإسلامية على وجه الخصوص : كالفقه والتفسير والعقيدة والحديث وغيرها من العلوم ، حيث أصبحوا ضمن كل علم من العلوم من الأعلام والمجتهدين والمراجع الأساسية في هذا العلم أو ذاك

ويتألف البحث من الأقسام التالية :

ـ المقدمة : التي تتناول مساهمة الكرد الفعالة في خدمة الإسلام والحضارة الإسلامية .

ـ المبحث الأول : ذكر بعض المؤلفات التي أُلفت في بيان تراجم وأسماء علماء الكرد .

ـ المبحث الثاني : أصناف رجالات الكرد في التاريخ الإسلامي :

أولا : القادة العسكريون . ثانيا : العلماء من القضاة والفقهاء والمحدثين

ـ الخاتمة : وتتضمن أهم نتائج البحث

**المبحث الأول : أهم المؤلفات في تراجم علماء الكرد:**

قام جمعٌ من العلماء والكتّاب والمفكرين الكرد بالكتابة والترجمة لأعلام الكرد ومؤلفيهم وقادتهم وعلمائهم ، وفيما يلي أسماء بعض هذه المؤلفات وذلك على سبيل الذكر والمثال لا الحصر :

١ ـ مشاهير الكرد وكردستان في العهد الإسلامي ، المؤرخ الكردي محمد أمين زكي بك بن الحاج عبدالرحمن ، راجعه ونقحه محمد علي عوني ، القاهرة ، مطبعة السعادة ، تاريخ الطبع ١٩٤٧.

٢ ـ علماؤنا في خدمة العلم والدين ، عبدالكريم المدرس، عناية محمد علي القره داغي ، الطبعة الأولى ، تاريخ الطبع ١٩٨٣ .

٣ ـ علماء الكرد ، نشر جمعية علماء كردستان ،بتقييد مصطفى سالم ، الرياض، السعودية ، مؤسسة الجريسي، ١٤١٢هـ ـ ١٩٩١م.

٤ ـ.إسهامات علماء كردستان العراق في الثقافة الإسلامية خلال القرنين الثالث والرابع عشر الهجريين ، محمد زكي حسين أحمد ، أربيل ، دار آراس ، الطبعة الأولى ، ١٩٩٩م.

٥ ـ تاريخ علماء الكرد ، طاهر بن عبدالله البحركي الأربيلي وهو باللغة الكردية ،أربيل ، مطبعة آراس ، ٢٠١٠م .

٦ ـ أعلام كرد العراق ، جمال بابان ،السليمانية ، مطبعة المديرية العامة بوزارة الثقافة، ٢٠٠٦ م

٧ ـ. معجم أعلام الكرد في التاريخ الإسلامي والعصر الحديث في كردستان وخارجها ، الدكتور محمد علي الصويركي ، السليمانية ، مؤسسة حمدي للطباعة والنشر ، ٢٠٠٦ م.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٨ ـ إسهامات العلماء الكرد في بناء الحضارة الإسلامية خلال القرنين السابع والثامن الهجريين ، تريفة أحمد عثمان البرزنجي، رسالة دكتوراه ، ٢٠٠٦ م .

٩ ـ علماء الكرد وكوردستان ، صالح شيخو رسول الهسنياني ، دهوك ، مطبعة هاوا ،٢٠١٢م .

١٠ ـ إسهامات العلماء الكرد في خدمة اللغة العربية والثقافة الإسلامية ، الدكتور سعيد محمد أحمد المحمد ، رسالة دكتوراه ، الطبعة الأولى ، بغداد، دائرة البحوث والدراسات في الوقف السني ، ٢٠١٣ م .

١١ ـ الكرد في الدينور وشهرزور خلال القرنين الرابع والخامس الهجريين ، حسام الدين علي غالب النقشبندي ،رسالة ماجستير ، بغداد ، كلية الآداب ، جامعة بغداد ، ١٩٧٥ م .

١٢ ـ الكرد الجاوانيين ودورهم السياسي والحضاري في العصر العباسي ، كاروان عبدالعزيز محمد علي ، رسالة ماجستير ، دهوك ، كلية الآداب ، ٢٠٠٣ م.

١٣ ـ الكرد في المعرفة التاريخية والإسلامية ، حيدر لشكري خضر ، رسالة ماجستير ، دهوك ، مطبعة سبيريز ، ٢٠٠٤ م.

١٤ ـ إسهامات الكرد في الحضارة الإسلامية ، قادر محمد حسن البشدري، رسالة دكتوراه ، دهوك ، كلية الآدادب ، ٢٠٠٩ م.

١٥ ــ عقد الجمان في تراجم العلماء والأدباء الكرد المنسوبين إلى مدن وقرى كردستان ، حمدي عبدالمجيد السلفي ، الإمارات العربية ، مكتبة الأصالة والتراث ، ٢٠٠٨ م.

وهذه المؤلفات إنما هي بعض ما كُتب وأُلّف عن تاريخ الكرد وعلمائهم وعظمائهم ، وهناك الكثير منها لا مجال لذكرها أو الوقوف عليها .

## المبحث الثاني : أصناف رجالات الكرد في التاريخ الإسلامي:

يمكننا أن نقسّم رجالات الكرد وعلمائهم الذين كان لهم دور بارز ومهم في نشر الحضارة الإسلامية وإغنائها بالمؤلفات الكثيرة والمهمة إلى صنفين اثنين حسب مقتضيات بحثنا هذا:

### الصنف الأول : القادة العسكريون:

برز من بين ظهراني الشعب الكردي قادة عظماء ، كانت لهم مواقف حاسمة في التاريخ الإسلامي ، و كان لهم دور مفصلي في الدفاع عن الإسلام والمسلمين ، وسنقف على بعض من أشهر هؤلاء القادة وهم :

أ ـ أبو مسلم الخراساني ( ١٠٠ ـ ١٣٧ هـ ـ ٧١٨ ـ ٧٥٥م ) ، وهو : عبدالرحمن بن مسلم والمشهور بلقب أبو مسلم الخراساني، وهو الذي تزعّم الحركة العباسية الدينية والسياسية التي انطلقت من خراسان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

فقضت على الدولة الأموية , وأنشأت الدولة العباسية على أنقاضها ، حيث كانت بغداد مقرا لخلافتها ،( الذهبي ،٢٠٠٤، ٦/٤٨ ـ ٧٣). قال عنه الشاعر أبو دُلامة :

أفي دولةِ المهدي حاولتَ غدرهُ   ألا إن أهل الغدر آباؤك الكرد (يعقوب ، ١٩٩٤، ص ٥٢). وبعد قيام الدولة العباسية سمت مكانة أبي مسلم ، حيث كان محبوبا لدى أتباعه ومُعظّما لديهم ، فخشي منه الخليفة العباسي أبو جعفر المنصور بسبب شعبيته حتى أمر بقتله . ( ابن حجر العسقلاني،٣،٢٠٠٢/٤٣٦) .

ب ـ السلطان صلاح الدين الأيوبي (٥٣٢ ـ ٥٨٩ هـ ـ ١١٣٧م ـ ١١٩٣م) . وهو من أشهر ملوك وقادة الكرد في التاريخ الإسلامي ، ومؤسس الدولة الأيوبية بمصر والشام والجزيرة والحجاز واليمن، كان بارعا في الفتوحات الحربية والسياسية والعلمية ، وكان له دور عظيم في رد الهجمات الصليبية ، وصاحب الانتصار العظيم في حطين سنة( ٥٨٣ هـ ـ ١١٨٧م) ، حيث كتب الكثير من الكُتّاب والمؤرخون عن حياته ، ومن أهم المؤلفات النوادر السلطانية لابن شداد .(ابن شداد،١٣١٧هـ ،ص ٥ ـ ٦ ). ولد القائد صلاح الدين في قلعة تكريت في العراق، ونشأ وترعرع ما بين الموصل والشام ومصر ، وتوفي بدمشق سنة(٥٨٩هـ / ١١٩٣م) . (الصلابي،٢٠٠٨،ص٦٤٢).

ج ـ أسد الدين شيركو : وهو عم الناصر صلاح الدين الأيوبي ، الذي كان من أبرز القيادات العسكرية ضمن جيش عماد الدين زنكي الذي تمكن من الوقوف في وجه الحملات الصليبية ، وأن يعيد مصر إلى حظيرة الأمة الإسلامية ، حيث عيّنه نورالدين زنكي قائدا للحملة العسكرية على مصر . توفي رحمه الله في مصر سنة (٥٦٤ هـ / ١١٦٨م ) . (الصلابي ، ٢٠٠٨ ، ص١٧٩).

**الصنف الثاني: العلماء والقضاة وحُماة العقيدة الإسلامية.**

هذا الصنف هو مدار بحثنا ، حيث سنقف على أهم الشخصيات العلمية والفقهية والأدبية ضمن كل فن من فنون التراث الإسلامي . فعلماء الكرد بالمئات بل بالآلاف ضمن التراث الإسلامي ولا مجال للوقوف عليهم ، وإنما سنشير إلى علمٍ واحدٍ أو أكثر مشهور ضمن كل فن وعلم إسلامي ، فعلماء الكرد وأدباؤهم شاركوا مشاركة فعالة في الحضارة الإسلامية ، واليقظة العلمية في ربوع الدولة الإسلامية وممالكها ومدائنها . وبإمكاننا أن نقسّم المجالات العلمية التي برز فيها الكرد وساهموا في تطويرها ونشرها ، بل وتركوا بصمات واضحة وجليّة على العلوم الإسلامية التالية:

**أولا :العلوم الدينية النقلية:**

**أ ـ علوم القرآن الكريم :** تُعد العلوم المتعلقة بالقرآن الكريم من أهم العلوم الإسلامية، لأنها تختص بدراسة وتفسير القرآن الكريم كلام الله تعالى الذي أنزله وحيا على رسوله محمدا صلى الله عليه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

وسلم . ولأنه المصدر الأول للتشريع الإسلامي في أخذ الأحكام منه ، فقد ظهرت العديد من العلوم التي تخدم القرآن الكريم : كالتفسير والتجويد وعلم القراءات . وكان لعلماء الكرد مساهمات بنّاءةٌ في هذه العلوم المتنوعة والتي تتعلق بالقرآن الكريم .

**علم القراءات :** فقد برز العديد من علماء الكرد في المجال ، حيث أولى الكرد القاطنون في مصر والشام وغيرهما عناية فائقة بعلم القراءات ، فقد برز من بينهم المقرىء الكردي ضياء الدين أبو العباس الإسعردي الفارقي الذي كان ماهرا في القراءات ، وتصدّر للإقراء، وكان فاضلا خيّرا توفاه الله في القاهرة سنة( ٦٦٥هـ / ١٢٦٧م) . ( أبو شامة ، ١٩٧٤م، ص ٢٤٠). ومن علماء الكرد أيضا في علم القراءات شيخ القرّاء محمد بن عمر بن حسين أبو عبدالله المتوفى سنة ( ٦٢٨هـ /١٢٣٠م) ، والذي كان من كبار القرّاء في عصره ، حيث أخذ علم القراءات عن الإمام أبي القاسم الشاطبي، كما أنه تصدّر الإقراء بدمشق .(الذهبي، ١٩٩٥، ٣/ ١٢٦٨).

ومن القرّاء الكرد المشهورين : الإمام المقرىء شمس الدين ابن الجزري محمد بن محمد بن يوسف الولود سنة( ٧٥١هـ / ١٣٥٠ م ). بدمشق ، حيث تفقه وطلب العلم والقراءات بدمشق، وبرز على وجه الخصوص في علم القراءات ، فقام بتأسيس مدرسة للإقراء سمّاها " دار القرآن الكريم الجزرية " . وله العديد من التصانيف في هذا العلم منها : " النشر في القراءات العشر " و " التمهيد في التجويد " و إتحاف المهرة في تتمة العشرة " والتي تقع في ألف بيت من الشعر . ( الشوكاني ، ١٣٥/١٩٨٨،٢٢).

كما اشتهر في دمشق المقرىء الملقن العالم : إلياس بن علوان ممدود الإربلي المتوفى( ٦٧٣ ه / ١٢٧٤م) ، الذي درس وقرأ في العراق وديار بكر ثم استقر في دمشق حيث تصدّر للإقراء في الجامع الأموي . قال عنه المؤرخ الذهبي :" كان حاذقا بتعليم القرآن، يقال ختم عليه ألف نفس ".( الذهبي ،٥٤٩/١٩٦٢،٢) . وقال الذهبي في مصدر آخر بأنه ختم عليه أربعة آلاف نفس . ولهذا النشاط الذي كان يتمتع به أصبح بارزا بين قُرّاء عصره وذلك لإتقانه علم القراءات .

وقد برز في هذا المجال من العلم الكثير من العلماء الكرد أمثال : الشيخ مجد الدين الكردي الزرزاري الإربلي في دمشق ، وإبراهيم بن داؤد بن نضر الهكاري الذي كان كثير التعبد والتواضع ، جاب مدينتي حلب وحماة طلبا للقراءات, ثم أقرأ مدة بدمشق.(قادر محمد حسن ،٢٠٠٩، ص٢١٦). كذلك المقرىء تقي الدين المقصاني الجزري الذي كان شيخ قرّاء عصره ، وقد استوطن دمشق . (الذهبي، ٥٧٩/١٩٦٢،٢).

**علم التجويد :** وفي علم التجويد ظهر العالم الكردي المجوّد محمد بن الحسن أبو عبدالله الإربلي المقرىء الضرير الذي كان يسكن القاهرة والمتوفى فيها سنة( ٧٠٠ه /١٣٠٠م). قال عنه الذهبي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الذي كان يحضر مجالسه : " جلست معه فوجدته عارفا بالفن، محققا للتجويد والأداء " . (الذهبي،١٩٩٩، ٣/١٤٥٩).

**علم التفسير :** أما في علم التفسير فقد برع العديد من علماء الكرد في هذا الفن من العلم ، ومن مشاهير علماء الكرد : تقي الدين أبو عمرو عثمان بن عبدالرحمن الكردي الشهرزوري، المعروف بابن الصلاح (643 – 577هـ- ١١٨١م - ١٢٤٥م )، الذي كان من فضلاء عصره في العديد من العلوم الدينية : كالتفسير والحديث والفقه والأصول والنحو .( الأسنوي، ١٩٨١، ٢/١٣٣). كما اشتهر في علم التفسير أيضا العالم الكردي مجد الدين أبو البركات الحراني المتوفى سنة( ٦٥٢هـ /١٢٥٤ )، ومن أشهر تصانيفه في هذا المجال كتابه : " أطراف أحاديث التفسير " . ( الدودي، بدون تاريخ طبع،١/٢٩٧ . ٢٩٨). ومنهم أيضا محمد بن يوسف بن عبدالله شمس الدين الجزري المتوفى سنة ٧١١هـ/١٣١١م ، الذي أخذ علم التفسير من جزيرة ابن عمر ، ثم غادرها إلى القاهرة، وألّف فيها كتابا بعنوان:" شرح منهاج البيضاوي". (الأسنوي،١، ١٩٨١/٣٨٤).ومنهم أيضا قاضي القضاة علم الدين الأخنائي المتوفى سنة ( ٧٣٢هـ/١٣٣١م) . والعالم أحمد بن اللبان الإسعردي والذي عُرف بالمصري والدمشقي .(ابن قاضي شهبة،٢،١٩٨٧/٢٠٥ . ٢٠٦).

والإمام محمد بن تيمية الحراني الكردي(ت٦٢٢ه /١٢٢٥م) ، وهو مفسر وواعظ وفقيه نزل أربيل سنة( ٦٠٤ه /١٢٠٧م )، له العديد من المؤلفات منها : التفسير الكبير والذي يقع في ٣٠ مجلدا ، وتخليط المطلب في تخليط المذهب في الفقه . قال عنه الإمام الذهبي : " كان إماما في التفسير ، إماما في الفقه ، إماما في اللغة " . (معجم المؤلفين،٩،١٩٩٣/ ٢٨٠).

فهذه الأسماء ما هي إلا بعض الأمثلة من مئات العلماء الكرد الذين برعوا في علوم القرآن الكريم من : قراءات وتفسير وتجويد . وللمزيد يمكن مراجعة بحثٍ بعنوان : " إسهامات علماء الكرد في علوم القرآن في القرنين السابع والثامن الهجريين للدكتور عرفان رشيد شريف، جامعة السليمانية ، كلية الشريعة .( عرفان رشيد، ٢٠١٣،ص ١٥٣. ١٦٣).

**ب - علم الحديث :** يُعد علم الحديث الشريف من أفضل العلوم الإسلامية بعد القرآن الكريم وعلومه ، فهو يهتم بالمصدر التشريعي الثاني ألا وهو أقوال وأفعال الرسول صلى الله عليه وسلم، لذلك اهتم العلماء بهذا العلم اهتماما عظيما ، فعظُمت منزلة العلماء المشتغلين بعلوم الحديث بين المسلمين.(الطيبي،١٩٧١،ص ٢٩ . ٣٠).

كان لعلماء الكرد دور عظيم وبارز في خدمة هذا العلم على وجه الخصوص، فعند التحري والتتبع في المصادر الإسلامية نرى أن نسبة علماء الكرد الذين تفرغوا للاهتمام بعلم الحديث وبرزوا فيه كبيرة ، ولم يقتصر هذا البروز لعلماء الكرد على الرجال فقط ، بل برز من بين


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ظهرا ني الكرد عا لمات كرد يات أيضا في مجال علم ا لحديث، وأغلبهن ينحدرن من أ سر م شهورة بالعلم والتدين مثل : آل أيوب والهكاريين والأسعرديين.

نقف أولا عند العالم الكردي المشهور وواضع علم مصطلح الحديث الإمام ابن الصلاح الشهرزوري، فهو : أبو عمرو عثمان ابن المفتي صلاح الدين عبدالرحمن بن عثمان بن موسى الكردي الشهرزوري الموصلي المعروف بابن صلاح ( ٥٧٧ ـ ٦٤٣ ه /١١٨١ ـ ١٢٤٥م ) . فهو أحد أبرز علماء الحديث ، تفقه على والده بشهرزور ، ثم انتقل إلى الموصل والقدس وبعدها إلى دمشق . (الزركلي،٢٠٠٢، ٤/ ٢٠٧). وقد تبوّأ ابن الصلاح مكانة مرموقة بين علماء عصره لأنه استوعب وبرع في العديد من العلوم الإسلامية : كالتفسير والحديث والفقه ، وقد شهد له بذلك علماء عصره . قال عنه ابن خلكان : " كان أحد فضلاء عصره في التفسير والحديث والفقه وأسماء الرجال وما يتعلق بعلم الحديث .... وله مشاركة في فنون عديدة ،وكانت فتاويه مسدّدة " .(ابن خلكان،١٩٩٤، ٣٢٣/٣).

ترك ابن الصلاح العديد من المؤلفات والكتب من أهمها : علوم الحديث أو معرفة أنواع علم الحديث، وهذا المؤلف مشهور بمقدمة ابن الصلاح ،وله أيضا : أدب المفتي والمستفتي، والأمالي

و شرح الوسيط في فقه الشافعية ، وطبقات الفقهاء الشافعية، والمؤتلف والمختلف في أسماء الرجال وغيرها . (الزركلي ،٢٠٠٢،٤/٢٠٧).

ومن علماء الكرد في هذا المجال أيضا: المحدث الصالح المعمّر عبدالله بن الحسن الهكاري ، الذي كان من مشاهير المحدثين الكرد ، حدّث ببلاد الشام ، وسمع منه المحدث الشهير الدمياطي ( صحيح البخاري ) . توفي سنة( ٦٥٢ هـ/١٢٥٤م) . (الذهبي،٢٣،١٩٨٩/٢٨١). وهناك العديد من أسماء علماء الكرد المحدثين مثل : غياث الدين الأيوبي الذي كان من فضلاء عصره، سمع الحديث وروى صحيح البخاري. والمحدث تقي الدين عبيد بن محمد الأسعردي ، وأحمد بن عبدالرحمن بن أحمد الشهرزوري الذي سمع علوم الحديث من ابن الصلاح الشهرزوري. (ابن حجر،١،١٩٩٣/١٧٦).

وكما قلنا آنفا أن البروز في هذا العلم لم يقتصر على رجالات الكرد ، بل برع واشتهر في علوم الحديث الكثير من نساء الكرد . ففي مصر برعت المحدثة الكردية فاطمة بنت ابن منصور الفارقي التي روت بالإجازة عن بعض شيوخها ، وكتب عنها بعض المحدثين . (قادر حسن،٢٠٠٩، ص ٢٢٤). وهناك العديد من النساء العالمات الكرديات المحدثات مثل : فخر النساء شهدة الدينورية، وأسماء بنت أحمد الهكاري ، وزينب بنت سليمان الأسعردي ، وفاطمة بنت أحمد الأيوبية ، وقطلومك بنت محمد الأيوبية ، وغيرهن الكثير . (يوسف،١٩٩٣،ص٥٧ ـ ٨٢). وعند تصفح كتب التاريخ والأعلام وتتبعها سنجد أن علماء الكرد في مجال الحديث قد اشتهروا في مصر والشام بغداد وغيرها من المدائن الإسلامية ، وأن عددهم كبير لا مجال للوقوف عليهم.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

ج - علم الفقه وأصوله : علم الفقه يبحث في الأحكام الشرعية العملية المستنبطة من أدلتها التفصيلية . وقد شهد المسلمون في عهودهم الأولى بروز مدارس فقهية متعددة ، ثم تحولت مع مرور الزمن إلى مذاهب فقهية مستقلة وهي التي تعرف بالمذاهب الأربعة . وقد برز لعلماء الكرد دور عظيم في خدمة هذه المذاهب الفقهية لا سيما المذهب الشافعي الذي غدا فيما بعد سمة خاصة بالكرد . فعلماء الكرد قاموا بخدمة المذاهب وعلى وجه الخصوص المذهب الشافعي -- الذي أصبح مذهب الكرد الغالب - داخل ربوع بلادهم وخارجها .

لقد برز من بين ظهراني الشعب الكردي فقهاء عظام أمثال الفقيه الشافعي الكردي يوسف ابن أحمد المشهور بابن كج ، حيث تذكر كتب الطبقات أن أول فقيه كردي على مذهب الإمام الشافعي هو القاضي أبو القاسم بن أحمد بن كج الدينوري (ت٥٠٤ه /١١١٠م). (السبكي،١٤١٣ هـ، ٤٩٢/٣). ولابن كج العديد من التصانيف والمؤلفات في الفقه . وقد فُضِّل ابن كج على كبار علماء وفقهاء الشافعية في زمانه ، خاصة على أبي حامد الإسفراييني الذي كان يسكن ببغداد ، لأن ابن كج كان أغزر منه علما وتفقها في المذهب الشافعي . ( السبكي،١٤١٣ه، ٤٩٢/٣).

ومن فقهاء الكرد المشهورين أيضا : محمد الكازروني أبو عبدالله ( ت٧٩٦ه/١٣٩٣م )، الذي كان من أئمة الفقه في زمانه ، سكن آمد وتفقه عليه جماعة منهم : أبو نصر المقدسي، والفقيه أبو بكر الشاشي ، وأبو المحاسن الروياني . وله مؤلف بعنوان : " الإبانة " ، وعنه انتشر المذهب الشافعي في كثير من بقاع بلاد الكرد كآمد وميافارقين وغيرهما . (ابن الأثير ،١٩٨٧،٧، ٦٦٤).

كما برز العالم الفقيه والأصولي الكردي سيف الدين الآمدي (ت ٦٣١ه/١٢٣٣م )، وهو فقيه وأصولي وباحث ولد في مدينة آمد ونُسب إليها . له نحو عشرين مصنفا منها : الإحكام في أصول تلأحكام، ومنتهى السُّول في علم الأصول ، ولباب الألباب ، ودقائق الحقائق . (المدرس ، ١٩٨٣، ٣٨٢).

والفقيه يحيى بن الحسين المزوري(ت١٢٥٠ه/ ١٨٣٤م )، وهو العالم العلاّمة ، وكان يُطلق عليه بشافعي زمانه، قال عنه إبراهيم فصيح في كتابه عنوان المجد : " ومن أعظم من أدركت عصره وأخذ عنه شيخي العلامة علامة العلماء واللج الذي لا ينتهي ، ولكل لج ساحل ، جامع المعقول والمنقول الولي الكامل مولانا ومقتدانا الشيخ يحيى المروزي العمادي " ( إبراهيم فصيح،١٢٨٦، ص ١٣٥ ).

وهو المجيز لأكابر علماء العراق . عاش في خدمة العلم أكثر من سبعين سنة ، له العديد من المؤلفات منها : " مجموعة الفتاوى " و " حواشيه على تحفة ابن حجر " و " والسراج



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الوهاج في شرح المنهاج " . (المدرس ، ١٩٩٣، ص ١٨٥). كما كان لفقهاء الكرد دور بارز خارج ربوع بلادهم ، فقد برزوا في المدائن والحواضر الإسلامية كالشام ومصر وبغداد والحجاز وغيرها :

**ففي الشام** برز الفقيه الكردي ابن الشهرزوري، وهو علي بن المسلم بن محمد السلمي الدمشقي (ت٥٣٣٥/ ٩٤٦م )، والذي لُقّب بجمال الإسلام ، حيث كان عالما بالتفسير والفقه وأصوله والفرائض، وكان من تلاميذ الفقيه القاضي أبي المظفر المروزي ، والشيخ نصر المقدسي في دمشق. (ابن الأثير،١٩٨٧،٢/٦١٢ - ٧١٢). كذلك لمع نجم الفقيه الكرد بدمشق كمال الدين سلار بن عمر بن سعيد الإربلي (ت ٥٧٦٠/١٣٥٨م ) ، الذي كان عليه مدار الفتوى بدمشق.

**أما في مصر:** فقد انتقل إليها الكثير من علماء وفقهاء الكرد مع السلطان صلاح الدين الأيوبي بسبب الحروب الصليبية ، ليكونا قريبين من السلطان صلاح الدين. وقد برز من الكرد الكثير من

العلماء والفقهاء أمثال : أبي الحسن الكردي علي بن سلار (ت ٨٤٥هـ-١١٥٣م)، الذي كان وزيرا للملك العبيدي الظافر ملك مصر والذي حكم مابين عامي ( ٥٤٢هـ ١١٤٩م - ٥٥٤٩- ١١٥٤م) . وأيضا الفقيه ضياء الدين أبو عمرو بن عثمان بن درباس الهذباني الكردي (ت ٥٢٠٦/ ٨٢١ م)، والذي كان أعلم الفقهاء بمذهب الإمام الشافعي في زمانه ، حيث شرح كتاب المهذب للشيرازي شرحا وافيا سمّاه " الاستقصاء لمذهب الفقهاء " ،كما أنه شرح كتاب اللمع للشيرازي في أصول الفقه في مجلدين . وأيضا الفقيه محمد عيسى بن أحمد الهكاري الملقب بضياء الدين (ت ٥٥٨٥/ ١١٨٩ م) . (السبكي، ١٩٤٦، ٧/٥٥٢).

**أما في مكة :** فقد برز اسم الفقيه الكردي محمد بن هيبة بن ثابت البذنيجي (ت ٥٢٥٠ /٨٦٤ م)، المولود في مندلي ، والذي كان من كبار أصحاب العالم والفقيه أبي إسحاق الشيرازي . أقام في مكة قُرابة أربعين سنة قضاها في الإفتاء والتدريس ، ومن مصنفاته كتاب : " المعتمد " الذي يقع في جزأين كبيرين . (ابن شهبة،٥١٤٣٠، ١/٢٧٢).

**وفي بغداد :** برز الكثير من فقهاء الكرد منهم : محمد بن قاسم بن المظفر بن علي الشهرزوري الذي ولد في أربيل سنة ٥٤٥٥ /١٠٦٣ م، وتفقه على يد الشيخ أبي إسحاق الشهرزوري ، رحل إلى العراق وبلاد خراسان والجبال ، تولى القضاء في أماكن عديدة من بلاد الجزيرة والشام ، رجع إلى الموصل وولي قضاء سنجار ، وكان يُلقّب بقاضي الخفقين لكثرة توليه القضاء في أماكن متعددة. (ابن الأثير ،(٢٩٨٧)،٢/٢١٦). ومن الفقهاء الكرد أيضا أبو العباس أحمد بن عمر بن الحسن الكردي المعروف بالوجيه ، قرأ الفقه بتبريز على فقيهها أبي عمرو ، استوطن بغداد حتى وفاته ، وكان مدرسا بالمدرسة النظامية ، وكان من أعيان الفقهاء المشهورين في بغداد ، توفي سنة( ٥٥٩١/١١٩٤م). (ملا طاهر،٢٠١٥، ١/١٠٣).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وعلى الرغم أن مذهب الكرد هو المذهب الشافعي على الغالب ، إلا أن بعض الفقهاء الكرد قد برزوا في المذاهب السنية الأخرى نتيجة احتكاك الكرد بالشعوب الأخرى ، كالفقيه الإمام أبو علي الحسين أحمد الآمدي (ت ٣٠٦ه / ٩١٨ م) الذي كان على مذهب الإمام مالك رضي الله عنه ، والفقيه سليمان المعافى الحرّاني (ت ٦٠٢ه /١٢٠٥ م) الذي كان على مذهب الإمام أحمد بن حنبل رحمه الله تعالى ، والفقيه أحمد بن داود الدينوري (ت ٢٨٢ه /٨٩٥ م) الذي كان على مذهب الإمام الأعظم أبي حنيفة النعمان . ( دوسكي،٢٠١٣، ص ٥ ـ ٨ ).

**د ـ علم التصوف :** يعتني علم التصوف بتزكية النفوس وتربيتها على الأخلاق الفاضلة وإبعادها عن الأخلاق الرديئة ، فهو كما يقال بأنه " علم الحقيقة " .( خليفة،بدون تاريخ طبع، ٤١٣/١). ويتمثل هذا العلم في الإعراض عن الدنيا والعكوف على العبادة والطاعة . وقد برز الكثير من الشخصيات الكردية في هذا النوع من العلم ، نذكر بعضا منهم : فمن المشهورين الصوفي الكردي الكبير أبو القاسم الجنيد (ت ٢٩٨ه/٩١٠ م)، وهو علم بارز من أعلام التصوف في القرن الثالث الهجري، وهو أبو القاسم الجنيد بن محمد الخزار القواريري، ولد ونشأ في العراق، كان شيخ وقته وفريد عصره وشيخ العارفين وقدوة السائرين وعلم الأولياء في زمانه . (الذهبي، ٢٠٠٣،٦/٩٢٤).

وفي دمشق اشتهر الشيخ صالح يوسف الكردي (ت٦٥٦ه/١٢٥٨م )، الذي كان يقيم بمسجد الربوة بدمشق، وكان دائم الذكر والصلاة والعبادة . كذلك الشيخ إسماعيل بن محمد بن أبي بكر بن خسرو الكوراني ، الذي هو من الصوفية الزهاد في بلاد الشام ، قال عنه أبو شامة : " كان من المشايخ المعروفين بالزهد والورع والعبادة والجد والعمل ، منقطعا عن الناس ، مؤثرا للتخلي، مشتغلا بنفسه وعبادة ربه والإقبال على آخرته، كثير التعري في ملبسه ومأكله ومشربه، يسأل العلماء عما يشكل عليه من أمر دينه ، قلّ أن يوجد مثله في زمنه" . (أبو شامة ،٢١٠، ١٩٧٤). أيضا الصوفي الكردي علي بن عثمان أمين الدين السليماني الإربلي، ولد في إربل وانتقل إلى بلاد الشام ثم إلى مصر ، كان جنديا ثم تزهد وصار أحد مشايخ الصوفية المعروفين ، وكان شاعرا ، توفي بمصر سنة( ٦٧٠ه/١٢٧١ م) . (قادر،٢٠٠٩، ص ٢٥٥). واشتهر من الكرد الهكاريين الخضر بن خليل الهكاري في مسلك التصوف والعبادة، الذي كان أيضا مؤذنا ومهتما بالحديث وروايته ، توفي بالقاهرة سنة( ٦٧٣ه /١٢٧٤م). ( المصدر السابق).

وهناك العديد والكثير من المتصوفة الكرد لا مجال للوقوف على أسمائهم أو ذكرهم ، لكن المتتبع لأحوال وأخبار شيوخ الكرد المتصوفة يرى أن غالبيتهم كانوا ملتزمين بقواعد الشريعة ولم يصدر منهم ما هو منافٍ للكتاب والسنة، بل الكثير منهم مع تصوفهم كانوا يشتغلون بالفقه والحديث وغيرها من العلوم .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

**ثانيا : العلوم العقلية أو الإنسانية .**

برز من بين الكرد في مجالات العلوم الإنسانية والعقلية الكثير من العلماء الأفذاذ ممن تركوا بصماتهم الواضحة والجليّة في الحضارة الإسلامية ، وساهموا من خلال مشاركاتهم العلمية ومدوناتهم ومؤلفاتهم في تشكل معالم العلوم الإنسانية ، وفيما يلي بعض الأمثلة ضمن العلوم المختلفة :

**أ ـ التاريخ والجغرافية :** في هذا المجال برع الكثير من علماء الكرد، نذكر منهم على سبيل المثال : العالم الجغرافي والمؤرخ الكردي أبو الفداء ( ٦٧٢ ـ ٧٣٢ ه ـ ١٢٧٣ ـ ١٣٣١م )، وهو إسماعيل بن علي بن محمود بن محمد بن عمر بن شاهنشاه بن أيوب أبو الفداء ، من وجهاء بني أيوب ، ولد في دمشق وتولى إمارة مدينة حماه السورية . تميز أبو الفداء بمكانة علمية مرموقة حيث برع في الفقه وأصوله وعلوم العربية والتاريخ والجغرافية والطب والتفسير .(الخليل،٢٠١٣، ص ٣٦٢). ترك أبو الفداء الكثير من المؤلفات القيمة ومن أشهرها :

-ـ المختصر في أخبار البشر، ويُعرف هذا المؤلف بتاريخ أبي الفداء، حيث ذكر فيه ما قبل الإسلام وتاريخ الإسلام حتى سنة( ٧٢٩ه /١٣٢٨ م) .

ـ تقويم البلدان ، وهو كتاب في الجغرافيا العامة ، يتناول فيه ذكر الأرض والأقاليم.

الكُنّاس، وهو عبارة عن مجموعة من الكتب المختلفة في النحو والتصريف.

( الزركلي،٥،٢٠٠٢/٢٠٣).

وهناك العالم الكردي أيضا : المبارك بن المستوفي (٥٦٤ ـ ٦٣٧ه/ ١١٦٨ ـ ١٢٣٩ م) ، وهو مؤرخ وعالم بالحديث واللغة والأدب ، ترك العديد من المصنفات منها : تاريخ إربل وهو مكون من مجلدين . (البرواري،٢٠١٣، ص ١١٨) .

كذلك المؤرخ والقاضي الكردي الكبير ابن خلكان (٦٠٨ ـ ٦٨١ه/١٢١١ ـ ١٢٨٢ م)، وهو أحمد بن محمد بن إبراهيم بن أبي بكر بن خلكان ، ولد في أربيل وهو ينتسب للبرامكة ، عاش واستقر في دمشق ، نبغ في الأحكام والفقه وأصول الدين ، تولى القضاء طويلا . من أهم مؤلفات ابن خلكان كتابه الشهير : " وفيات الأعيان وأذباء أبناء الزمان " . ويصنف كتاب ابن خلكان هذا كأحد أهم كتب علم التراجم والتاريخ، والتاريخ الأدبي بشكل خاص؛ إذ إنه يُمثل مُعجمًا في تراجم الأعلام من الخلفاء، والوزراء، والعلماء وغيرهم، جُمع فيه ما يزيد عن ٨٥٠ ترجمة لهؤلاء الأعلام، ومن جهة أخرى أدرج ابن خلكان في بعض تراجمه تاريخ العديد من الدول القديمة، منها: دولة السلاجقة، وتاريخ الصافريين، وتاريخ دولة العبيدية، وتاريخ الدولة الأيوبية وغيرها .

فهذه بعض النماذج من الكثرة الكثيرة من علماء الكرد في مجال الجغرافية والتاريخ والتراجم، ونرى من خلال ذلك أم ما خلّفه مؤرخو الكرد من نتاج في مجال التدوين التاريخي لهو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

مهم من حيث النوعية ، فكتاب " وفيات الأعيان" لابن خلكان يُعدُّ أشهر ما صُنّف في مجال التراجم الإسلامية ، كذلك الحال مع كتاب " المختصر في أخبار البشر" وكتاب " تقويم البلدان " لأبي الفداء اللذان يتميزان بنسق مرتب وجديةِ المعلومات المدونة فيهما .(قادر محمد،٢٠٠٩، ص ٢٧٢).

**ب - علوم اللغة العربية والأدب:**

لم يقتصر إسهام الكرد في الحضارة الإسلامية على العلوم الدينية والعلمية فقط ، بل كان لهم أثر كبير في مجال اللغة العربية وتطويرها ونشرها . فهذا هو اللغوي الكردي الشهير بابن الحاجب (....... ، ٥٥٧٠ /١١٧٤ م)، وهو أبو عمرو عثمان بن أبي بكر بن يونس الكردي الدويني الأصل، وذلك نسبة إلى بلدة دوين في كردستان العراق، ولد بمصر ويعرف بابن الحاجب ، حيث انتقلت أسرته إلى مصر مع الأيوبيين، وسكنت إسنا في الصعيد الأعلى . (الخليل،٢٠١٣،٣٥٥). كان ابن الحاجب ذو أخلاق رفيعة، وكان ثقة ومحبا للعلم وأهله ، درّس في مصر في المدرسة الفاضلية ، فقصده طلبة العلم وأخذوا عنه . بعدها ذهب إلى الإسكندرية وأقام بها حتى وفاته . (ابن خلكان،١٩٩٤، ٢٤٨/٣).

يُعدُّ ابن الحاجب من أبرز فقهاء مصر والشام في عهد الدولة الأيوبية ، تفقّه على مذهب الإمام مالك رضي الله عنه ، وتعمّق فيه حتى إذا شيخ المالكية في زمانه. و برز ابن الحاجب في العديد من العلوم الدينية ، وكذلك برع في النحو والصرف، وعُرف به أي بالنحو . وكان يميل في مذهبه النحوي إلى المذهب البصري ، ولكنه كان يخلفهم أحيانا . كذلك خالف ابن الحاجب سيبويه في العديد من آرائه النحوية . قال عنه ابن العماد الحنبلي: " وخالف النحاة في مواضع ، وأورد عليهم إشكالات وإلزامات تبعد الإجابة عنها، وكان أحسن خلق الله ذهنا " . (الحنبلي،١٩٨٦، ٤٠٦/٧).

ترك ابن الحاجب آثارا علمية كثيرة ومهمة ، فقد ألّف في النحو والصرف والفقه والأصول والقراءات والتاريخ والأدب ، ومن أبرز كتبه في النحو : " كتاب الكافية " و " كتاب الشافية " و " كتاب الإيضاح في شرح المفصل للزمخشري" و " كتاب الأمالي" و " وشرح كتاب سيبويه " و شرح المقدمة الجزولية " . وله في الفقه والأصول : كتاب منتهى السول ، والأمل في علمي الأصول والجدل ، إلى جانب مؤلفات أخرى في التاريخ والقراءات والأدب . توفي ابن الحاجب رحمه الله تعالى في الإسكندرية سنة ٥٦٤٦ ، ودفن فيها . (ابن كثير،١٣،١٩٨٨/٢٠٦).

وأيضا ممن برزوا في مجال اللغة والأدب من العلماء الكرد العالم والناقد الحسن بن بشر الآمدي، وهو أبو القاسم الحسن بن بشر بن يحيى الآمدي الذي ولد بالبصرة ونشأ فيها ، حيث تتلمذ على يد العلماء في البصرة ، ثم في بغداد حيث أخذ النحو عن أبي إسحاق الزّجاج ، والأخفش الصغير وأبي بكر السّراج وغيرهم . ( الخليل،٢٠١٣، ٢٤٤). قال القِفطي عن الآمدي : " هو أبو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

القاسم الحسن بن بشر الآمدي الأصل، البصري المنشأ ،إمام في الأدب ،، وله شعر حسن واتساع تام في علم الشعر ومعانيه رواية ودراية وحفظا، وصنّف كتبا في ذلك حسانا " . (القفطي،١٤٢٤هـ، ٣٢٠/١).

وتظهر معرفة الآمدي بالشعر في كتابين له نقديين هما : كتاب الموازنة بين شعر أبي تمام والبحتري، وكتاب تبيين غلط قُدامة ابن جعفر في نقد الشعر . وله مكانة في النحو من خلال مؤلفاته العديدة في هذا العلم مثل كتاب : فعلت وأفعلت . بيد أن مؤلفات الآمدي الأدبية هي الغالبة وهي تبلغ نحو أربعة وعشرين كتابا منها : كتاب المؤتلِف والمختلف في أسماء الشعراء ، وكتاب المنظوم، وكتاب تفضيل شعر امرئ القيس على الجاهليين، وكتاب معجم الشعراء ، وغيرها من الكتب . (الزركلي، ٢٠٠٢، ١٨٥/٢). توفي الآمدي رحمه الله تعالى سنة( ٣٧٠هـ / ٩٨٠ م).

وبرع في الأدب واللغة أيضا الإمام شرف الدين حسين بن إبراهيم الهذباني الكوراني الإربلي، الذي كان لغويا وأديبا وعلى معرفة كبيرة بكلام العرب ، حيث حفظ مقامات الحريري، وديوان المتنبي، والخطب النباتية ، توفي بدمشق سنة ٦٥٦هـ/١٢٥٨ م .(السيوطي،بدون تاريخ طبع، ٥٢٨/١).

وفي مصر برع العالم الكردي ضياء الدين بن إبراهيم السعردي الفارقي، الذي كان يُلقب بالنحوي الكبير، حيث كان متقنا للعربية ، وتصدّر لتعليم النحو والإقراء في القاهرة . توفي في القاهرة سنة ٦٦٥هـ /١٢٦٦ م، وكان مشهورا بالخير والصلاح . (الصفدي،٢٠٠٠، ٢٤٦/١٦).

وفي الشعر أيضا نبغ الكثير من علماء الكرد ، ففي دمشق ظهر الشاعر محمد بن عبدالعزيز بن عبدالرحيم بن رستم المشهور بالنور الإسعردي (ت ٦٥٩هـ/١٢٦٠م) ، وقد حُظي باهتمام الملك الناصر يوسف الأيوبي صاحب دمشق . وقد أصبح من كبار الشعراء لدى الملك الناصر يوسف الأيوبي .(قادر،٢٠٠٩، ص ٢٨٠).

ج . **علم الفلك** : برع العديد من علماء الكرد في مجال الفلك والهيئة، الأمر الذي يختص بمعرفة تركيب الأفلاك وأعداد الكواكب وأقسام البروج والمسافات ، وهو ما يطلق عليه بالأجرام السماوية البسيطة مع أشكالها وحركاتها وأوضاعها ، ( المصدر السابق ، ص ٢٩٣). وممن برع في هذا المجال من علماء الكرد الملك المؤيد صاحب حماه، الذي كان على دراية وعلم كبير بعلم الهيئة، وكانت له اليد الطولى في الهيئة . صنّف كتابا صغيرا بعنوان " الموازين" و" كتاب نوادر العلم " في مجلدين . (الزركلي،٢٠٠٢، ٣١٩/١).

واشتهر العالم الكردي جمال الدين عبدالله بن يوسف الإسعردي في صناعة الإسطرلاب، وكان يسكن دمشق، وانشغل بعلم الفلك حتى وفاته سنة(٧٣٤هـ/١٣٣٣م).(ابن حجر،١٩٩٢،٢/ ٤١٤).


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وأخيرا : ومن خلال مضى من النماذج التي ذكرناها من علماء الكرد وفقهائهم وأد بائهم نجد بأنهم بأن علماء الكرد مشهود لهم بالنظر والتحقيق وقبول الحق والانقياد له قديما وحديثا (قادر محمد ،٢٠٠٩، ص١٨٩) ،وهذا الأمر بشهادة بعض الكتاب والعلماء الإسلاميين منهم : الشيخ عبدالرحمن الكواكب (١٣٢٠هـ)، حيث يقول : " إم من خلق المصريين سهولة الإنقياد ولا سيما للحق، وكذلك علماء الشافعية الأكراد كلهم أهل نظر وتحقيق" . ( الكواكبي،١٩٨٢، ١٠٢). وذكر الشيخ محمد رشيد رضا (ت١٣٥٤هـ /١٩٣٥ م)، في مجلة المنار الأمر نفسه . (رشيد رضا ،١٣١٥،٥، ٣٠٤/).

فهذا الانقياد للحق جعل الكرد صابرين مثابرين وأصحاب المواقف التاريخية لا سيما في دفاعهم عن عقيدتهم والثبات عليها ، وعلى المذهب في الفروع والأصول . فالكرد لم يتأثروا بما حولهم وخاصة في موضوع التشيع الذي كان مجاورا لهم إلا قلة قليلة منهم تشيعوا نتيجة الظلم والاضطهاد والإجبار الذي لاقوه من الصفويين. وعلى هذا يقول المؤرخ الكردي محمد أمين زكي : " عامل الشاه عباس الأكراد السنة معاملة سيئة، فقد طلب منهم الدخول في المذهب الشيعي فرفضوا، مما أدى بالشاه عباس إلى قتلهم وتشريدهم إلى بلاد خراسان ليكونوا حاجزا بينه وبين الأوزبك. وقد قتل في أيامه سبعون ألف كردي ، ورحّل خمس عشرة ألف عائلة كردية " . ( زكي،١٩٣٦، ص ٢١١).

## الخاتمة:

بعد هذه الجولة السريعة والتقصي والبحث في موضوع دور علماء الكرد في نشر وتدوين العلوم الإسلامية ، والمساهمة البنّاءة في بناء وتطوير الحضارة الإسلامية ، وأن الكرد قد قدموا عبر تاريخهم المجيد صورا وشهادات حية على حبهم للعلم والمعرفة ، ومن خلال هذه النماذج القليلة التي ذكرناها في ثنايا البحث والتي هي فيض من غيض ، وجزء يسير جداً من مئات بل آلاف العلماء الكرد في كافة المجالات والميادين العلمية والحضارية نستنتج ما يلي :

١ . قام الكرد بأدوار حضارية عظيمة وهامة في مختلف المجالات السياسية والعسكرية والدينية والاجتماعية والعلمية .

٢ ـ ساهم الكرد من خلال العلماء والفقهاء والقضاء مساهمة فعّالة في بناء الحضارة الإسلامية ، وتفاعلوا مع الحضارات والشعوب المجاورة لهم فأخذوا منهم وأعطوهم .

٣ ـ برز علماء الكرد في كافة الاختصاصات والفنون العلمية ، واشتهروا في المدائن والحواضر الإسلامية كمصر والشام والحجاز وبغداد وغيرها ، علاوة على وطنهم وربوعهم كردسات .



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٤ ـ لم يقتصر مجهود العلماء الكرد على فن واحد من الفنون العلمية والدينية ، بل برزوا وبرعوا في كافة المجالات والعلوم النقلية والعقلية ، كالتفسير والفقه والحديث والعقيدة والجغرافية والتاريخ واللغة العربية وعلوم الفلك وغيرها .

٥ ـ لم يقتصر البروز العلمي والحضاري للكرد على الرجال فقط ، بل برزت الكثير من الكرديات العالمات والمحدثات الجليلات في بلاد الكرد وخارجها وخاصة في مصر والشام .

٦ ـ الحضارة الإسلامية هي نتاج الشعوب الإسلامية أجمع ، فكل شعب وأمة لها مشاركة ودور في عملية البناء والتطوير.

**المصادر:**


ابن الأثير،(١٩٨٧). الكامل في التاريخ، دار الكتب العلمية، بيروت .

ابن الأثير،(١٩٨٧). اللباب في تهذيب الأنساب، مكتبة المثنى، بغداد.

ابن تغري بردي،(١٩٩٢). النجوم الزاهرة في ملوك مصر والقاهرة، دار الكتب العلمية، بيروت.

ابن حجر العسقلاني،(٢٠٠٢). لسان الميزان، تحقيق عبدالفتاح أبو غدة ، ط١ ، دار البشائر الإسلامية ، بيروت .

ابن حجر،(١٩٩٣). الدرر الكامنة في أعيان المئة الثامنة، دار الجيل ، بيروت .

ابن خلكان،(١٩٩٤). وفيات الأعيان وأنباء أبناء الزمان ، تحقيق إحسان عباس، دار صادر، بيروت .

ابن شداد،(١٣١٧هـ). النوادر السلطانية والمحاسن اليوسفية، مطبعة الآداب ، مصر .

ابن قاضي شهبة،(١٩٨٧).طبقات الشافعية،دار الندوة الجديدة، بيروت.

ابن كثير ،(١٩٨٨). البداية والنهاية، تحقيق علي شيري، دار إحياء التراث العربي، بيروت .

أبو شامة،(١٩٧٤). الذيل على الروضتين تراجم رجال القرنين السادس والسابع، دار الجيل ، بيروت .

الأسنوي،(١٩٨١). طبقات الشافعية، تحقيق عبدالله الجبوري، دار العلوم، الرياض.

أمين زكي،(١٩٣٦). خلاصة تاريخ الكرد وكردستان، مطبعة السعادة، مصر .

حاجي خليفة، (بدون تاريخ طبع) . كشف الظنون عن أسامي الكتب والفنون، دار إحياء التراث العربي، بيروت .

الحنبلي،(١٩٨٦). شذرات الذهب، تحقيق محمود الأرناؤوط، ط١ ، دار ابن كثير ، دمشق .

الداودي،(بدون تاريخ طبع). طبقات التفسير، تحقيق علي محمد عمر، مطبعة وهبة ، القاهرة .

الذهبي ،(٢٠٠٤) . سير أعلام النبلاء، دار بيت الأفكار ، مكة ، السعودية .

الذهبي،(١٩٦٢). معرفة القرّاء الكبار على الطبقات والأعصار ، تحقيق محمد سيد جاد الحق، دار التأليف ، القاهرة .

الذهبي،(١٩٩٩). تاريخ الإسلام ووفيات المشاهير والأعلام، تحقيق عمر السلام تدمري، دار الكتاب العربي ، بيروت .
رضا كحالة،(١٩٩٣). معجم المؤلفين، مؤسسة الرسالة ، دمشق .
الزركلي،(٢٠٠٢). الأعلام، دار العلم للملايين، بيروت .
السبكي،(١٤١٣هـ). طبقات الشافعية الكبرى، دار هجر للطباعة، مكة .
السيوطي،(بدون تاريخ طبع). بغية الوعاة في طبقات اللغويين والنحاة، تحقيق محمد أبو الفضل إبراهيم، مطبعة عيسى البابي ، مصر .
الشوكاني،(١٩٨٨).البدر الطالع بمحاسن من بعد القرن السابع، ط ١، دار الكتب العلمية، بيروت .
الصفدي،(٢٠٠٠). الوافي بالوفيات، تحقيق أحمد الأرناؤوط و تركي مصطفى، ط١ ، دار إحياء التراث العربي، بيروت .

**المراجع الحديثة :**

إبراهيم فصيح، (١٩٦٢م). عنوان المجد في بيان أحوال بغداد والبصرة ونجد ، دار منشورات البصري، بغداد.
البرواري،(٢٠١٣). دور علماء الكرد في نشر المعارف الإسلامية وبناء الحضارة الإنسانية، بحث في مجلة جامعة زاخو ، المجلد ١ ، العدد ٢ .
دوسكي،(٢٠١٣). الكرد والمذهب الشافعي، مدارات ، ٧ .
الصلابي،(٢٠٠٨). صلاح الدين الأيوبي وجهوده في القضاء على الدولة الفاطمية وتحرير بيت المقدس، ط١، دار المعرفة ، بيروت .
الطيبي،(١٩٧١). الخلاصة في أصول الحديث، تحقيق صبحي السامرائي، مطبعة الإرشاد، بغداد .
قادر محمد،(٢٠٠٩). إسهامات الكرد في الحضارة الإسلامية ، مطبعة الحاج هاشم ، أربيل .
القِفطي،(١٤٢٤هـ). إنباه الرواة على أنباء الوعاة في طبقات اللغويين والنحاة، ط١، المكتبة العصرية ، بيروت .
الكواكبي ، (١٩٨٢). أم القرى ، دار الرائد العربي، بيروت.
المدرس،(١٩٨٣). علماؤنا في خدمة العلم والدين، ط١ ، منتدى اقرأ الثقافي، بغداد.
ملا طاهر،(٢٠١٥). حياة الأمجاد من علماء الأكراد، ط١ ، دار ابن حزم ، بيروت .
يوسف،(١٩٩٣). المرأة الكردية في التاريخ الإسلامي، ط١، دار القادري، بيروت .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

## رولی زانایێن کورد دنڤیسین وبەلافکرنا زانستێن ئیسلامی یێن دەڤۆکی وعەقلی

**پۆختە:**

خودایێ مەزن ئاینێ ئیسلامێ هنارت دابۆ مرۆڤایەتیێ ببتە روناهی ، ومللەتێن جودا جودا بکۆم کت هاتنە دناڤ ئاینێ ئیسلامی دا ، وژوان مللەتان مللەتی کۆرد بۆ، ودیڤدان بۆنە پاسەوان وبەرەڤان ژبۆ ڤی ئاینی ژلایێ لەشکەریڤە وهزریڤە وزانستیڤە ، وزۆر زانا وهزرڤان دڤادا رەوشەنبیریا ئاینی ڤە دەرکەتن ورولەکێ مەزن گێرایە، دبوارێ زانستێن ئیسلامی ڤە وەك تەفسیر وئوصول وفقهی وبوارێن زمانێ عەرەبی وڤان زانایێن کورد رولەکێ گرنك هەبۆ دپاراستنا ڤان زانستانڤە ونڤیسینێن وان وبەلافکرنا وان زانستاڤە، وگەلەك ژوان بۆنە ستێرێن گەش ددیروکا ئیسلامێ دا.

ژڤان زانایان میناکا یوسڤێ کورێ ئەحمەدی یێ بەرنیاس بئبن الگەج، وشیخ الاسلام الهکاری ( یوسف بن أحمد)، وموحەدسێ مەزن وئوسولێ مەزن (ابن صلاح الشهرزوری) و ومێژو نڤیسێ گەورە ( ابن خەلیکان ) وئامەدی وگەلەکێن دی.

دڤێ ڤەکولینێدا دێ تیشکێ بەردەینە سەر ژیانا چەند زانا وشارازایێن کورد یێن شینتبلێن خوە هێلاینە دمێژویا ئیسلامێ دا وکارێن وان بۆینە جهێ شانازیێ بۆ مللەتێ کورد وهەمی بوسولمانان .

**پەیڤێن سەرەکی:** *بوسولمانەتی، کورد، زانا، نڤیسین وبەلاڤکرن، زانستێن ئیسلامی*

## The role of Kurdish scholars in the codification and dissemination of Islamic translational and mental Sciences

**Abstract:**

Allah Almighty sent the religion of Islam to all mankind, so people entered into this religion regiments of various spots, colors and nationalities . The Kurds were among those who entered into this new religion and became one of its strongest defenders militarily,

scientifically and culturally . Islamic history has witnessed the emergence of a large number of distinguished Kurdish scholars in various Islamic sciences : jurisprudence, interpretation, doctrine, origins, Hadith and others . These Kurdish scholars had a great and very important role in codifying the Islamic mental and Translational Sciences, explaining them and writing commentaries on them .

Kurdish scholars have, been pioneers in this field throughout the stages of Islamic history .

These scholars include the famous Kurdish jurist Yusuf ibn Ahmad ibn Kaj, Sheikh of Islam Abu al-Hassan Ali ibn Ahmad Yusuf al-Hakkari, the modern Imam Ibn Salah al-shahrzuri al-Kurdi, the grammatical fundamentalist Ibn al-Hajib al-Kurdi, the unique historian Abu al-Abbas Ahmad ibn khalkan al-Kurdi Al-arbili, the imam involved in various sciences

and knowledge Ibn al-Athir al-Jazari al-Kurdi, the fundamentalist jurist Saif al-Din al-AMDI and many other great and famous scholars who left a clear imprint and a great impact on Islamic sciences throughout Islamic history .

In this research, we will look at these great scholars in each of the various Islamic sciences, and what traces and imprints they left on those mental and mental Sciences and on the Islamic heritage and history .

**Keywords**: *Islam-the Kurds .Scholars-blogging and publishing-Islamic sciences*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# آراء أحمد بن إسماعيل الكوراني في مصطلح الحديث من خلال كتابه الكوثر الجاري إلى رياض البخاري

**د. محسن إبراهيم أحمد الدوسكي**

قسم التاريخ- كلية العلوم الانسانية- جامعة دهوك/ إقليم كردستان العراق

**الملخص:**

الحمد لله رب العالمين، والصلاة على سيد المرسلين، وعلى آله وصحبه أجمعين، وبعد:

يعتبر العصر الأيوبي بدايات تدفق علماء الكرد للرحلة إلى بلاد مصر والشام لغرض العلم إفادة واستفادة واستمرت هذه الرحلات وزادت في العصر المملوكي وبعده العثماني، وكان لهؤلاء العلماء دور بارز في دفع الحركة العلمية في ديار الإسلام، فتتلمذ على أيديهم كثير من العلماء وزخرت المكتبة الاسلامية بتصانيفهم، بالإضافة إلى رحلات هؤلاء فقد انتشرت في تلك العصور مدارس جمة في كبرى المدن الكردية ففي حصن كيفا وديار بكر وأربل ورأس العين وغيرها من المدن الكردية وكانت تأوي الآلاف من طلبة العلم بين أروقتها، وكان لأمراء وقادة الكرد الدور السخي في دعم هذه المدارس وأوقفوا الكثير من الأراضي على هذه المدارس.

وكانت إحدى الروافد التي أسهم فيها علماء الكرد في إزدخار المكتبة الاسلامية هي خدمة الصحيحين فألفوا الكثير من الكتب شرحاً ودراسة في بيان خبايا صحيحي البخاري ومسلم، لذا كان المطلب الأول من البحث مخصصاً لذكر ماوقفت عليه من مصنفات علماء الكرد في خدمة صحيح البخاري.

ومن العلماء الذين كان دورهم بارزاً في القرن التاسع الهجري الامام أحمد بن إسماعيل الكوراني فقد خرج من بلاده وهو لم يزل شاباً يافعاً وتجول في معظم المراكز العلمية وذاع صيته وهو لم يكمل العقد الرابع من عمره، وألف مصنفات مهمة في التفسير والحديث والأصول تدل على علو كعبه في العلوم الشرعية، وكان سبباً في حصوله على مراتب علية عند سلاطين عصره سواء في مصر أو في بلاد الروم فكان المطلب الثاني من المبحث الأول عن حياته من شتى الجوانب.

وكانت مؤلفاته موضع إهتمام الباحثين فقد كتب عنه الكثير ومؤلفاته الكبيرة أصبحت مرتعاً للباحثين للحصول على الشهادات الجامعية وكذلك كتبت عنها الكثير من البحوث، إلا أن آراءه في علم مصطلح الحديث لم يكتب عنه أحد وهي متناثرة في كتابه الكوثر الجاري، حاولت جمعها في المبحث الثاني في هذا البحث المتواضع مع مقارنتها بأقوال غيره من العلماء الذين كتبوا في هذا العلم.

أرجو أن يكون ماقمت به خدمة لجهود هؤلاء العلماء و لهذا العالم الجليل، والتوفيق من الله وحده.

**الكلمات الدالة:** *الكوراني، الكوثر الجاري، مصطلح الحديث، علماء الكرد، صحيح البخاري*

**المقدمة:**

يعتبر الشيخ أحمد بن إسماعيل الكوراني (ت٨٩٣هـ) من العلماء الكرد الموسوعيين الذين تنوعت تصانيفهم في شتى العلوم، فألف في التفسير وفي الحديث وفي الأصول وفي القراءات وفي اللغة، ومن هذه الكتب كتابه في شرح صحيح البخاري الذي سماه (الكوثر الجاري على صحيح البخاري) وقد كتب عنه بعض الدراسات، والكتاب لم يزل بحاجة إلى دراسات أخرى متنوعة إذ أودع فيه المؤلف عصارة علمه في الفقه وكذلك في شرحه الأحاديث من نواحي متعددة.

لا نجد من بين مؤلفات الإمام الكوراني المطبوعة والمخطوطة كتاباً في مصطلح الحديث مع أنه ألّف في باقي العلوم، لذا رأيت أنه من المستحسن أن أستخرج هذه المسائل من كتابه المذكور مبيناً مدى علميته في هذا المجال أيضاً لذا تمت كتابة هذه الوريقات لأهميتها وإن كان الموضوع يتطلب جهداً ووقتا، وقد تم تقسيم البحث إلى مبحثين، فالمبحث الأول يكون عن الكرد وخدمة الجامع الصحيح ونبذة عن الامام الكوراني، ومن ثم تطرقت في المطلب الأول إلى بيان جهود علماء الكرد في خدمة صحيح البخاري فذكرت ما وقفت عليه من أسماء المؤلفين الكرد الذين اهتموا بصحيح البخاري، وفي المطلب الثاني تحدثت بإيجاز عن سيرة الامام الكوراني وإن كان قد كتب عنه الكثير قديماً وحديثاً إلا أن الكثير منهم قد وقعوا في الكثير من الأخطاء وكذلك تحامل بعض الباحثين عليه، وفي المبحث الثاني ذكرت مسائل المصطلح الواردة والمتناثرة في الكوثر الجاري مقارناً أقواله بأقوال غيره من العلماء ولا عجب في أن يكون الكوراني عالماً في الحديث كيف وأنه تتلمذ على يد أحد فطاحل هذا العلم وهو الحافظ ابن حجر العسقلاني (ت٨٥٢هـ) هذا وأرجو العلي القدير أن أكون موفقاً في هذه الدراسة، والله ولي التوفيق.

## المبحث الأول

## الكرد وخدمة الجامع الصحيح ونبذة عن الامام الكوراني

### المطلب الأول: جهود علماء الكرد في خدمة صحيح البخاري

من المعلوم لدى الباحثين أنه لم يخدم كتاب بعد كتاب الله عزوجل مثل ما بذل العلماء من جهود في خدمة صحيح البخاري، فقد بدأ إهتمام العلماء به منذ عهد مبكر، فمن العلماء من يذكر أن الامام أحمد بن نصر الداودي التلمساني (ت٤٠٢هـ) هو أول من شرح صحيح البخاري



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

ومنهم من يرى أن الامام أبا سليمان الخطابي (ت٣٨٨هـ) قد سبق التلمساني في شرحه صحيح البخاري في كتاب سماه (إعلام الحديث).

وإن كان قد سبقهما الامام محمد بن يعقوب المعروف بابن الأخرم (ت٣٤٤هـ) فألف المستخرج على الصحيحين وبهذا يعد ابن الأخرم أول من ألف مصنفاً على الصحيحين. (الذهبي،١٩٨٥، ٤٦٩/١٥) وإن كان قد اقتصر على المستخرج فقط وهو: أن يعمد حافظ إلى كتاب من كتب الحديث فيخرج أحاديثه بأسانيد لنفسه، من غير طريق صاحب الكتاب فيجتمع معه في شيخه أو من فوقه، ولو في الصحابي مع رعاية ترتيبه ومتونه وطرق أسانيده.(الصنعاني١٩٩٧، ٧٣/١).

وقد تفنن العلماء في خدمتهم للجامع الصحيح فمنهم من ألف في شرحه مهتما بالمسائل الفقهية ومنهم من أفرد بالتصنيف في تراجم رجاله ومنهم من اهتم بالجانب اللغوي، ومنهم من ألف في بيان تراجم البخاري لأبوابه، ومنهم من خصص مصنفه للدفاع عنه من حيث صحة الأحاديث المروية فيه، ومجالات أخرى كثيرة يطول ذكرها.

وكانت جهود علماء الكرد في خدمة صحيح البخاري كغيرهم من العلماء في مجالات متنوعة حيث شرحه البعض شرحاً وافياً لجميع الأحاديث الواردة فيه مبيناً شرح الألفاظ، ومستنبطاً الأحكام الفقهية، ومنهم من صنف في تراجم رجاله، وهكذا تنوعوا في خدمة الجامع الصحيح.

سنذكر في هذا المطلب ما وقفنا عليها من مصنفات علماء الكرد التي اهتمت بصحيح البخاري.

- رجال البخاري ومسلم، تأليف أحمد بن أحمد الهكاري كما يظهر من اسمه أنه في تراجم رجال صحيحي البخاري ومسلم والكتاب مخطوط في دار الكتب المصرية المصرية بخطه تحت رقم ٥٤٣. (الحسني١٩٨٧ ص٥٥).

وللهكاري كتاب آخر سماه العقد الجلي في حل إشكال الجامع الصحيح للبخاري وهو مخطوط أيضاً في باريس ولم نقف عليه.

- الأحاديث المخرجة في الصحيحين التي تكلم فيها بضعف وانقطاع، تأليف الامام عبد الرحيم بن الحسين بن عبد الرحمن الرازياني العراقي (ت٨٠٦هـ) ذكره حاجي خليفة في كشف الظنون فقال: ما ضعف من أحاديث (الصحيحين) والجواب عنها، وفيه فوائد، ومهمات. والكتاب لم يطبع بعد وكما يظهر من اسمه أنه في الدفاع عن الأحاديث التي تكلم فيه في الصحيحين. (الحسني١٩٨٧ص١٥٤).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

• ومن العلماء الكرد الذين خدموا صحيح البخاري مهتما بتراجم رجاله الامام شمس الدين محمد بن داود بن محمد البازلي العمادي الكردي (ت٩٢٥هـ) وكتابه غاية المرام في رجال البخاري إلى سيد الأنام (الحسني١٩٨٧ص٢٥٤).

وقال الحمصي: باشر نيابة القضاء بدمشق، ومشيخة المدرسة الشامية، وكان عالماً من أهل الفضل مفنناً. توفي بدمشق يوم السبت تاسع عشري شوال سنة ثلاث وعشرين وتسعمائة، وكان والده إذا ذاك حيا. (الغزي١٩٨٣، ١٩/١)

وقال الزركلي: كردي الأصل، من العماديّة. (الزركلي٢٠٠٢، ١٢٠/٦).

• ومن الذين خدموا صحيح البخاري من علماء الكرد الإمام الحصكفي، مُحَمَّد بن على بن مُحَمَّد بن عبد الرحمن بن مُحَمَّد بن حسن الْمَعْرُوف بِالْعَلَاءِ الحصكفي الْحَنَفِيّ الْمُفْتى بِدِمَشْق (ت ١٠٨٨هـ) لَهُ تعليقة على صَحِيح الْبُخَارِيّ. (البابانى١٩٥١، ٢٩٥/٢).

ومن العلماء المتأخرين الذين شرحوا صحيح البخاري محمد بن السيد علي بن رضا الملاطي رئيس محكمة الحقوق بديار بكر (ت ١٣١٦ هـ) له شرح سماه كيمياء السعادة في شرح الجامع الصحيح البخاري (البابانى١٩٥١، ٣٩٥/٢).

وكذلك شرح البخاري مع صحيح مسلم باللغة الكردية رشيد بك بابان (ت١٩٤٢م) وطبع في الثمانينات في بغداد بتحقيق الأستاذ محمد علي القرداغي. (المدرس،١٩٨٣، ص٦٧)

ومن كبار علماء الكرد الذين اهتموا بصحيح البخاري شرحاً لبيان ألفاظه ومهتماً بالمسائل الفقهية وآراء الفقهاء هو الامام أحمد بن إسماعيل البخاري، وسيأتي الكلام عليه.

**المطلب الثاني:**

ترجمة الامام الكوراني عصره ودوره فيه:

عاش الامام الكوراني في القرن التاسع الهجري وكان قرناً حافلاً بالأحداث وكان للكوراني وجوداً في تلك الأحداث لأنه كان على مقربة من أصحاب القرار سواء حينما كان في مصر وبلاد الشام أو بعد تنقله إلى الحياة في كنف سلاطين بني عثمان.

قدم الكوراني إلى بلاد الشام عام (٨٣٠هـ) ومن ثم انتقل إلى مصر وبقي أكثر من عقد ونصف في هذه الديار، وكانت بلاد الشام ومصر تحت الحكم المملوكي. (البقاعي، ٢٠٠١، ٦٠/١).

وقد كان للشهاب الكوراني علاقة بالسلطان المملوكي جقمق، حيث كان يصحبه ويتردد عليه كثيراً، حتى صار أحد خواص ندمائه.

كما كانت له علاقة بالملك قايتباي، إذ عاش في كنفه في عزة عظيمة، وحشمة وافرة، وجلالة تامة، فأكرمه ونال عنده القبول. (طاش كبري زادة بلا تاريخ ص٥٣).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

وبلغ ما بلغ من الوجاهة والشهرة حتى قال صاحبه البقاعي: وصحب الأكابر من الأمراء والمباشرين فحظي عندهم، وبعد صيته، ورتبت له المرتبات، وصار يعد من الأعيان في القاهرة. (البقاعي ٢٠٠١، ٦١/١).

وبعد انتقاله إلى بلاد الأناضول كانت له منزلة عظيمة عند سلاطين بني عثمان وحينما قدم مع محمد بن أرمغان الشهير بيكان، إلى بلاد الروم، ولما لقي يكان السلطان مراد خان فقال له السلطان: هل أتيت لنا بهدية؟ قال: نعم، معي رجل محدث ومفسر، قال: أين هو؟ قَالَ هُوَ بِالْبَابِ، فَأرْسل اليه السُّلْطَان فَدخل هُوَ عَلَيْهِ وَسلم ثمَّ تحدث مَعَه سَاعَة فَرَأى فَضله، فَأعْطَاهُ مدرسة جده السُّلْطَان مُرَاد الْغَازِي بِمَدِينَة بروسا ثمَّ اعطاه مدرسة جده السُّلْطَان بايزيد خَان الْغَازِي بِالْمَدِينَةِ المزبورة، وَكَانَ ولد السُّلْطَان مراد خان السُّلْطَان مُحَمَّد أَمِيرا فِي ذَلِك الزَّمَان ببلدة مغنيا وَقد ارسل اليه وَالِده عدَّة من المعلمين وَلم يمتثل امرهم وَلم يقرا شيأ حَتَّى انه لم يخْتم الْقُرْآن فَطلب السُّلْطَان الْمَذْكُور رجلا لَهُ مهابة وحدة فَذكرُوا لَهُ الْمولى الكوراني فَجعله معلما لولده. (طاش كبري زادة بلا تاريخ ص ٥١)

فهكذا أصبح مقرباً من السلطان ومؤدباً ومعلماً لابنه محمد الذي أصبح فيما بعد فاتح القسطنطينية.

وبعد أن استلم السلطان محمد بالفاتح كان الكوراني من المقربين له باعتباره شيخاً له.

وقد حصل بينهما منافرة كما يذكر صاحب الشقائق حيث يقول: وقد قلده السلطان قضاء بروسة مع تولية الأوقاف، وَبعد مُدَّة ارسل السُّلْطَان اليه وَاحِدًا من خُدَّامه بِيَدِهِ مَرْسُوم السُّلْطَان وَضمنَهُ امرا يُخَالف الشَّرْع فمزق الْكتاب وَضرب الْخَادِم فاشمأز السُّلْطَان لذَلِك فَعَزله ووَقع بَينهمَا منافرة فارتحل الْمولى الْمَذْكُور الى مصر وسلطانها يَوْمئِذٍ الْملك قايتباي فَأكْرمه غَايَة الاكرام ونال عِنْده الْقبُول التَّام وعاش عِنْده زَمَانا بعزة عَظِيمَة وحشمة وافرة وجلالة تَامَّة ثمَّ ان السُّلْطَان مُحَمَّد خَان نَدم على مَا فعله فارسل الى السُّلْطَان قايتباي كتاب السُّلْطَان مُحَمَّد خَان للْمولى الْمَذْكُور ثمَّ قَالَ لَا تذْهب اليه فَإِنِّي اكرمك فَوق مَا يكرمك هُوَ قَالَ الْمولى نعم هُوَ كَذَلِك الا ان بيني وَبَينه محبَّة عَظِيمَة كَمَا بَين الْوَالِد وَالْولد وَهَذَا الَّذِي جرى بَيْننَا شَيْء آخر وَهُوَ يعرف ذَلِك مني وَيعرف اني اميل اليه بالطبع فَإِذا لم أذهب اليه يفهم ان الْمَنْع من جانبك فَيَقَع بَيْنكُمَا عَدَاوَة فَاسْتحْسن السُّلْطَان قايتباي هَذَا الْكَلَام وَأَعْطَاهُ مَالا جزيلا وهيأ لَهُ مَا يحْتَاج اليه من حوائج السّفر وَبعث مَعَه هَدَايَا عَظِيمَة الى السُّلْطَان مُحَمَّد خَان فَلَمَّا جَاءَ الى قسطنطينية اعطاه السُّلْطَان مُحَمَّد خَان قَضَاء بروسه ثَانِيًا وَوَقع ذَلِك فِي سنة اثْنَتَيْنِ وَسِتِّينَ وَثَمَانمِائَة ودام على ذَلِك مُدَّة ثمَّ قَلّدهُ منصب الْفَتْوَى. (طاش كبري زادة، بلا تاريخ، ص ٥٢و٥٣).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

و شهد معه فتح القسطنطينية كما يذكر هو في الكوثر الجاري: و لما فَتَحَ الله القسطنطينية على المسلمين على يد السلطان ابن السلطان محمد خان بن عثمان نصره الله وكنا في ذلك الجيش بحمد الله. (الكوراني٢٠٠٨، ١/ ٢٩٠).

وحظي الكوراني بهذه المنزلة العظيمة عند سلاطين العثمانيين إلى حين وفاته، فلما توفي حضر السُّلْطَان بايزيد خَان الثاني جنازته وصلى عليه وَقضى دُيُونه فَكَانَت ثَمَانِينَ الْفا وَمِائَة الف دِرْهَم. (طاش كبري زادة بلا تاريخ، ص٥٥).

**اسمه ونسبه وكنيته ولقبه وولادته**

هو أحمد بن إسماعيل بن عثمان بن أحمد بن رشيد بن إبراهيم هكذا ذكر اسمه ونسبه المترجمون له (السخاوي بلا تاريخ،٢٤١/١ ) و(طاش كبري زاده:٥٣) و (البقاعي٢٠٠١، ١/ ٦٠) ومنهم من زَاد فِي نسبه يُوسُف قبل إِسْمَاعِيل (السخاوي، بلا تاريخ، ٢٤١/١).

غير أن صاحب كتاب كشف الظنون يذكر أن اسم جده هو محمد فيقول عندما يذكر الشروح على صحيح البخاري يقول: من شروح البخاري شرح المولى الفاضل أحمد بن إسماعيل بن محمد الكوراني (حاجي خليفة ١٩٤١ م:١ / ٥٥٢)

ولكن عند التحقيق والتدقيق في ذلك يظهر أن هذا وهم من صاحب كتاب )كشف الظنون( لأن جميع المترجمين له لم يختلفوا في أن اسم جده هو عثمان )الورميلي ٢٠١٨ م، مجلة جامعة زاخو ص ٤٩٥).

غير أن حاجي خليفة يكنيه بأبي العباس عندما يذكر اسم إحدى مؤلفاته فيقول كشف الأسرار عن قراءة الأئمة الأخيار لأبي العباس بن إسماعيل الكوراني المتوفى ٨٩٣ ه(حاجي خليفة ١٩٤١م ، ١٤٨٦/٢) و(الورميلي ٢٠١٨ م، مجلة جامعة زاخو ص٤٩٥).

أما ألقابه فكانت كثيرة حيث اشتهر بالكوراني ومنهم من لقبه بالشهرزوري والتبريزي والهمداني والقاهري والرومي ، وكذلك لقب بشهاب الدين وعالم بلاد الروم (المقريزي٢٠٠٢، ٢٥٩/١) و(طاش كبري زاده، بلا تاريخ ص ٥٣).

معظم الذين ترجموا له ذكروا بأنه ولد سنة (٨١٣هـ) وذكر البقاعي -وهو معاصره وصاحبه - أن ولادته كانت في قرية جلولاء من معاملة كوران. (البقاعي، ٢٠٠١، ٦٠/١) وأرخ المقريزي ولادته فِي ثَالِث عشر ربيع الأول سنة تسع بشهرزور (المقريزي٢٠٠٢، ١/ ٢٥٩) وفي الضوء اللامع: ولد فِي سنة ثَلَاث عشرَة وَثَمَانمِائَة بقرية من كوران. (السخاوي، بلا تاريخ، ٢٤١/١) وأخطأ من قال أنه ولد في قرية ((حلر)) من ديار بكر من بلاد الجزيرة (حمو٢٠١١،ص٢٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

**حياته العلمية:**

**رحلاته**

طلب الكوراني العلم في بداية حياته فدرس على علماء بلاده ثم سافر إلى بغداد وَحفظ الْقُرْآن وتلاه للسبع عَلى الزين عبد الرَّحْمَن بن عمر الْقزْوِينِي الْبَغْدَادِيّ الْجلَال وا شتغل وَحل عَلَيْهِ الشاطبية وتفقه بِهِ وَقَرَأَ عَلَيْهِ الشَّافِعِي وحا شية للتفتازاني وَأخذ عَنهُ النَّحْو مَعَ علمي الْمعَانِي وَالْبَيَان وَالْعرُوض (السخاوي، بلا تاريخ، ٢٤١/١) ورحل حصن كيفا فدرس على جلال الدين الحلواني علوم العربية (البقاعي٢٠٠١، ٦٠/١) وكذلك سافر إلى ديار بكر لطلب العلم، ودخل دمشق سنة (٨٣٠هـ) وهو لم يبلغ الثامنة عشر من عمره فتتلمذ على العلاء البخاري، ثم دخل إلى القاهرة عام (٨٣٥هـ) فأخذ العلم عن كبار العلماء فحضر دروس الحافظ ابن حجر العسقلاني في شرح البخاري، وكذلك ألفية الْعِرَاقِيّ ولازمه وأعجب به حتى أنه يلقبه في كتبه ب ( شيخ الاسلام) وَسمع فِي صَحِيح مُسلم أَو كُله على الزين الزَّرْكَشِيّ ولازم الشرواني كثيرا. (السخاوي، بلا تاريخ، ٢٤١/١)

**شيوخه.**

لكثرة رحلات الشيخ الكوراني إلتقى بجمع غفير من علماء عصره فأخذ عنهم العلم ومن المعلوم أن تلك الفترة كانت ثرية بالعلماء وهم مهرة في مختلف العلوم لذا تنوعت نتاجهم، ومن هؤلاء العلماء الذين أخذ عنهم الكوراني العلم وهم من جلة شيوخه هم:

**١. الحافظ أحمد بن علي بن حجر العسقلاني (ت٨٥٢هـ).**

يعد الحافظ ابن حجر من كبار المحدثين الذين التقى بهم الكوراني في حياته الدراسية والعلمية، وقد ذكر ابن حجر نفسه في كتابه أنباء الغمر بأبناء العمر أن الكوراني تتلمذ على يديه وحضر دروسه في القاهرة فقال: وهذا الكوراني كان قدم علينا من نحو عشر سنين طالب علم، فقرأ علي البخاري ودار على بعض الشيوخ (العسقلاني١٩٦٩، ١٥٩/٤).

وفي الضوء اللامع ذكر رحلته في طلب العلم وعمن أخذ العلم في المدن التي طاف بها، ثم ذكر دراسته في القاهرة في حدود سنة (٨٣٥هـ): فَأخذ عَن شَيخنَا بقرَاءَته فِي البُخَارِيّ وَشرح ألفية الْعِرَاقِيّ ولازمه. (السخاوي، بلا تاريخ١/٢٤١).

**٢. أحمد بن علي بن عبد القادر المقريزي:**

ولد بالقاهرة سنة: (٧٦٦ هـ) ونشأ بها، فحفظ القرآن الكريم، وتعلم العلوم، يعد من المؤرخين الكبار في القرن التاسع من مؤلفاته: السلوك لمعرفة دول الملوك، والمقفى الكبير، ودرر العقود الفريدة في تراجم الأعيان المفيدة، أخذ عنه الشهاب الكوراني الشاطبية في القراءات، و صحيح



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

مسلم، وقد شهد المقريزي بفضله وعلميته وإتقانه لكثير من العلوم فقال: قرأ علي صحيح مسلم، والشاطبية، فبلوت منه براعةً وفصاحةً ومعرفةً تامةً لفنونٍ من العلم، ما بين فقه وعربية وقراءات وغير ذلك. (المقريزي٢٠٠٢، ١/ ٢٥٩)

وأثبت محقق درر العقود أن المقريزي قال: وقرأ عليّ، وذكر قول السخاوي، وقال: ولعل ما أثبتناه هو الصواب.

وفي الضوء اللامع أن المقريزي قرأ عليه وعده من تلامذة الشهاب الكوراني، بل قال السخاوي: وَقد أَخذ عَنهُ الأكابر حَتَّى أَن المقريزي روى عَنهُ حِكَايَة عَن شَيْخه الْجلَال فِي فضل أهل الْبَيْت هَذَا مَعَ كَونه مِمَّن أَخذ عَنهُ كَمَا أسلفته، وغالب مَا نقلته عَنهُ من عقوده. (السخاوي، بدون تاريخ، (١/ ٢٤١) وإن كان المقريزي أكبر منه عمراً ولكن هذا يقع كثيراً عند المحدثين في رواية الأكابر عن الأصاغر، وبثناء المقريزي عليه بأنه من على معرفة تامة بفنون العلم، يبقى إحتمال ما ذكره السخاوي بأن يكون الكوراني من شيوخ المقريزي، وكِبَر العمر لا يضر كما أسلفنا.

توفي المقريزي في القاهرة سنة: (٨٤٥ هـ)

### ٣-عبد الرحمن بن محمد بن عبد الله الزركشي (ت٨٤٦هـ).

درس عليه الكوراني بالقاهرة وَسمع فِي صَحِيح مُسلم أَو كُله عليه. (السخاوي، بلا تاريخ١/ ٢٤١).

### ٤-عبد الرحمن بن محمد زين الدين الجزيري القزويني البغدادي، ولد وتوفي بجزيرة ابن عمر (٨٢٦هـ)

تلى السَّبع عليه الكوراني وَقَرَأَ عَلَيْهِ الْكَشَّاف وحاشيته للتفتازاني وَأخذ عَنهُ النَّحْو مَعَ علمي الْمعَانى وَالْبَيَان وَالْعرُوض. (الشوكاني، بلا تاريخ،١/ ٣٩).

### ٥-علاء الدين محمد بن محمد بن محمد البخاري الحنفي (٨٤١هـ).

لازمه الكوراني العلاء البخاري في دمشق وانتفع به، ورحل في صحبته إلى بيت المقدس، قرا عليه الكوراني الكشاف للزمخشري، وكذلك فاضحة الملحدين وناصحة الموحدين، ورسالة في الرد على الوجودية وهما للعلاء نفسه. (السخاوي،بلا تاريخ، ١/ ٢٤١).

### ٦-أبو الفتح علي بن أحمد بن إسماعيل القلقشندي (ت٨٥٦هـ).

وهو أيضاً من شيوخ الكوراني في القاهرة أخذ عن الفقه فدرس عنده الحاوي للماوردي، (الشوكاني، بلا تاريخ١/ ٤٠)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

**٧- محمد بن إبراهيم الشرواني (ت٨٧٣هـ).**

لازم الشرواني كثيراً وَقَرَأَ عَلَيْهِ صَحِيح مُسلم والشاطبية أثناء إقامته بالقاهرة. (الشوكاني١/٤٠).

**٨- محمد بن يوسف بن الحسن بن محمود الحلواني (ت٨٣٦هـ).**

حينما قدم الشهاب الكوراني من بغداد توجه إلى حصن كيفا وكان بها الجلال الحلواني فأقام عنده وأخذ عنه علوم العربية، وكان الكوراني يقدمه على العلاء البخاري. (البقاعي٢٠٠١، ١/٦٠).

هذه أسماء بعض من شيوخ الكوراني المعروفين لا شك أنه أخذ عن مشايخ كثر لكن المصادر التي ترجمت له اقتصرت على هؤلاء وقد ذكرنا أسمائهم دون الاطناب في ترجمتهم ومظانها كتب التراجم، واكتفينا بذكر ما درس عليهم الكوراني مع بيان البلد الذي تتلمذ عليهم.

**تلامذته**

**١- شكر الله الشرواني.**

ذكره صاحب الشقائق النعمانية فقال:

ارتحل من وَطنه الى بِلَاد الرّوم واتصل بِخِدْمَة السُّلْطَان مُحَمَّد خَان وتقرب عِنْده لاجل الطِّبّ وَكَانَ طَبِيبا حاذقا صَاحب مُرُوءَة وَكَانَت لَهُ معرفَة بالتفسير والْحَدِيث والعلوم الْعَرَبيَّة وَلما حج أَقَامَ بِمصْر مُدَّة وَقَرَأَ الحَدِيث على علمائها مِنْهُم الشَّيْخ السخاوي ونظراؤه وَسمع الحَدِيث بالروم من الْمولى احْمَد الكوراني وَكلهمْ اجازوه اجازة ملفوظة مَكْتُوبَة رَأَيْت صورا جازاتهم بخطهم وَكلهمْ شهدُوا لَهُ بِالْفَضْلِ وَالْعلم وَالصَّلَاح وَمَات فِي أَيَّام دولة السُّلْطَان مُحَمَّد خَان. (طاش كبري زاده، بلا تاريخ ص١٣٥)

**٢-علاء الدين علي بن عبد الله العربي الحلبي، المعروق بابن اللجام (ت٩٠١هـ).**

ولد بحلب وتتلمذ على يد علمائها، ثم قدم بلاد الروم، ولازم الكوراني وكان من خلص تلامذته. (طاش كبري زاده٩٢-٩٥) و (البابانى ١:٧٣٩).

**٣. السلطان محمد الفاتح ابن السلطان بن مرادخان بن محمد خان.**

ولد سنة (٨٣٦هـ) وهو الذي فتح القسطنطنسية عام (٨٥٧هـ) في الشقائق النعمانية: وَكَانَ ولد السُّلْطَان مرادخان السُّلْطَان مُحَمَّد أَمِيرا فِي ذَلِك الزَّمَان ببلدة مغنيا وَقد ارسل اليه وَالِده عدَّة من المعلمين وَلم يمتثل امرهم وَلم يقرا شيأ حَتَّى انه لم يخْتم الْقُرْآن فَطلب السُّلْطَان الْمَذْكُور رجلا لَهُ مهابة وحدة فَذكرُوا لَهُ الْمولى الكوراني فَجعله معلما لوَلَده وَأَعْطَاهُ بِيَدِهِ



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

قَضِيبًا يضْربهُ بذلك إِذا خَالف أمره فَذهب اليه فَدخل عَلَيْهِ والقضيب بِيَدِهِ فَقَالَ ارسلني وا لدك للتعليم وللضرب إِذا خَالَفت امري فَضَحِك السُّلْطَان مُحَمَّد خَان من هَذَا الْكَلَام فَضَربهُ الْمولى الكوراني فِي ذَلِك الْمجْلس ضربا شَدِيدا حَتَّى خَافَ مِنْهُ السُّلْطَان مُحَمَّد خَان وَختم الْقُرْآن فِي مُدَّة يسيرَة ففرح بذلك السُّلْطَان مرادخان. (طاش كبري زادة بلا تاريخ،ص٥١-٥٢).

**٤- محيي الدّين العجمي.**

كان من تلامذة أحمد بن إسماعيل الكوراني، تقلد مناصب عدة في الدولة العثمانية، وتولى القضاء بأدرنة، ومات بها، له مؤلفات عدة في الفقه وغيره. (طاش كبري زادة بلا تاريخ،ص ١٨٤).

**٥- ولايت بن أحمد بن إسحاق.**

ولد سنة (٨٥٥ هـ) قرأ الحديث على الملا الكوراني، وحج ثلاث مرات، وتوفي بمدينة قسطنطينية سنة:(٩٢٩ هـ) (طاش كبري زادة، بلا تاريخ، ص ٢٠٧).

**عقيدته ومذهبه الفقهي:**

كما يظهر جلياً في تفسيره لآيات الصفات وشرحه للأحاديث المتعلق بصفات الله تعالى أن الكوراني كان أشعري العقيدة وكان يذكر عبارة (مذهب السلف أسلم ومذهب الخلف أعلم وأحكم) ففي شرحه لحديث (أَنَّ اللَّهَ يَجْعَلُ السَّمَوَاتِ عَلَى إِصْبَعٍ وَالأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ ....الخ) يقول: إن الله يجعل السماوات على إصبع هذا الحديث من أحاديث الصفات، مذهب السلف الإمساك عن القول فيه، والتفويض إلى علمه تعالى، ومذهب الخلف: التأويل إلى معنى يلائم المقام ويوافق الأصول، ولا شك أن الناس إذا وصفوا إنسانًا بكمال القدرة يقال في كل أمر شاق: يفعله بإصبع واحدة، فالمراد تصوير كمال القدرة بأن أعظم الأجرام أهون عنده. (الكوراني٢٠٠٨، ٨/٢٥٠-٢٥١).

وأما مذهبه الفقهي فكما هو معلوم أنه كان شافعي المذهب ويظهر هذا في أكثر مصنفاته ويبدو أنه ألفها حينما كان شافعياً، ثم لما انتقل إلى خدمة سلاطين بني عثمان تحول إلى المذهب الحنفي بناءً على طلب السلطان كما يقول السيوطي: ورحل إِلَى الرّوم، فصادف من ملكهَا مُرَاد بن عُثْمَان حظوة. ثمَّ مَاتَ الشَّيْخ شمس الدّين الفناري فَسَأَلَهُ ابْن عُثْمَان أَن يتحنف وَيَأْخُذ وظائفه فَفعل.(نظم العقيان١٩٢٧: ص ٣٩)

**مؤلفاته**

للكوراني مؤلفات عدة وفي مختلف العلوم سنبدأ بما هو مطبوع ومن ثم سنختم بما هو لم يزل مخطوطاً فأما ما طبع:



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

١- الكوثر الجاري إلى رياض البخاري طبع في بيروت طبعتان إحداهما في دار إحياء التراث العربي عام في ١١مجلداً تحقيق أحمد عزوة عناية. والأخرى في دار الكتب العلمية في ١٢ مجلداً بتحقيق محمد بن رياض الأحمد.

٢-غاية الأماني في تفسير الكلام الرباني طبع في ٧ مجلدات في دار الحضارة عام ٢٠١٨، بتحقيق مجموعة من الأساتذة.

٣-الدرر اللوامع في شرح جمع الجوامع، طبع بتحقيق سعيد بن غالب كامل المجيدي، طبعه عمادة البحث العلمي في الجامعة الاسلامية بالمدينة المنورة في ٥ مجلدات عام ٢٠٠٨.

وأما مؤلفاته المخطوطة التي ذكرها محقق درر اللوامع في مقدمته عن الكوراني:

٤- العبقري في حواشي الجعبري، في القراءات، ألَّفه سنة: (٨٦١ هـ)، وهو حاشية على ((كنز المعاني)) للشاطبة في شرح ((حرز الأماني ووجه التهاني)) في القراءات السبع، لبرهان الدين إبراهيم بن عمر الجعبري توجد مخطوطة له في حيدرأباد بالمكتبة السعدية برقم: (١٤) في (٣٤٧) لوحة، تاريخ النسخ سنة (١٠٠٢ هـ)

٥-فرائد الدُّرر في شرح لوامع الغُرر: وهو شرح على قصيدة ((لوامع الغرر)) لأحمد بن محمد بن سعيد اليمني الشرعبي، وهي في القراءات السبع، على طريقة الشاطبية وزناً وقافية، وقد قام الشهاب بشرحها، وفرغ منها سنة (٨٨٤ هـ)، توجد منها نسخة بمكتبة عارف حكمت برقم: (٦٨)،

٦-كشف الأسرار عن قراءات الأئمة الأخيار: في القراءات أيضاً، شرح لنظم العلامة ابن الجزري، في أربعة وخمسين بيتاً، منه مخطوطة في المدينة المنورة مكتبة عارف حكمت ضمن مجموعة برقم (٦٨) قراءات في (٩٢) ورقة، بخط النسخ، ناسخها محمد بن علي سنة (٨٩٢ هـ) هي الثانية في هذه المجموعة.

٧-دفع الختام عن وقف حمزة وهشام: خاص بالقراءات، وهو شرحٌ لمنظومة الجعبري ((فرائد الأسرار من وقف حمزة وهشام))، وقد كتبه سنة (٨٦٨ هـ) منه نسخة بمكتبة لاله لي

٨-رسالة الولاء: (مواريث) وقد ألفها الشهاب سنة (٨٧٣ هـ)، ومضمونها رد على أحد العلماء المعاصرين له، وهو الملا خسرو الذي تولى قضاء استانبول مدة. ويوجد منها نسخ كثيرة في تركيا، منها نسخة في مكتبة كوبريلي ضمن مجموعة برقم: (١٦٠٩)

٩-المرشَّح على الموشَّح: حاشية على كتاب ((الموشَّح)) للخبيصي شرح فيها كافية ابن الحاجب في النحو، كتبها سنة: (٨٨٩ هـ) وقام بنسخها مخطوطته في تونس بدار الكتب الوطنية برقم (١٠٠٦) في (١٠٩) ورقة، بخط نسخ، وهي بخط المؤلف تاريخ نسخها (٨٨٧). (المجيدي٢٠٠٨، ٧٩/١).


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٠-الشافية في علم العروض والقافية: وهي قصيدة تقع في ستمائة بيت، أهداها إلى السلطان محمد الفاتح. (السخاوي بلا تاريخ،٢٤٢/١).

**ثناء العلماء عليه**

أصبح الكوراني في العقد الرابع من عمره من كبار العلماء وانتشر صيته بين العلماء في مصر والشام والعراق فكان موضع ثناء من ترجم فيقول معاصره المقريزي: ((وقرأ علي صحيح مسلم، والشاطبية، فبلوت منه براعة وفصاحة ومعرفة تامة لفنون من العلم، ما بين فقه وعربية وقراءات وغيرها)) (المقريزي٢٠٠٢، ٢٥٩/١)

وقال البقاعي: فاق في المعقولات والأصلين وغير ذلك، ومهر في النحو والمعاني والبيان، وبرع في الفقه... وناظر فذكر بالطلاقة والبلاغة والجرأة الزائدة والبراعة. (البقاعي٢٠٠١، ٦٠/١-٦١).

وقال الغَزِّي: ودأب في فنون العلم، حتى فاق في المعقولات، والمنقولات، واشتهر بالفضيلة، وقال: كانت أوقاته كلها مصروفة في التأليف والفتوى، والتدريس والعبادة، وتخرَّج به جماعة كثيرة. (الغزي١٩٨٣، ٨٢/١-٨٣).

ويقول الشوكاني: عالم بلاد الروم. (الشوكاني، بلا تاريخ،٣٩/١).

وفي الشقائق النعمانية: وَكَانَ رَحمَه الله تَعَالَى رجلا مهيبا طوَالًا كَبِير اللِّحْيَة وَكَانَ يصْبغ لحيته وَكَانَ قوالا بِالْحَقِّ وَكَانَ يُخَاطب الْوَزير وَالسُّلْطَان باسمه وَكَانَ إِذا لَقِي السُّلْطَان يسلم عَلَيْهِ وَلَا ينحني لَهُ ويصافحه وَلَا يقبل يَده وَلَا يذهب اليه يَوْم عيد الا إِذا دَعَاهُ. (طاش كبري زاده بلا تاريخ، ص٥٣).

**وفاته**

تُوُفِّيَ الشهاب الكوراني - رحمه الله - سنة ثلاث وتسعين وثمانمائة بالقسطنطينية (٨٩٣ هـ) وبها دفن، وقصة وفاته كما وردت في الشقائق النعمانية: ملخصها: أنه رَغِبَ -رحمه الله- في الإقامة خارج القسطنطينية أيام الربيع، فأمر بأن تنصب له خيمة يزوره فيها طلبته وتلاميذه، ومن أراد من الأمراء والوزراء، حتى كان يوم وفاته فصلى الفجر، ثم أتى خيمته واضطجع على جنبه الأيمن مستقبلاً القبلة، ثم صلى الظهر، ثم عندما رفع أذان العصر، وقال المؤذن: الله أكبر، قال: لا اله إلا الله، وخرجت روحه الطاهرة، رحمه الله تعالى وأسكنه فسيح جناته . (طاش كبري زاده بلا تاريخ، ص٥٤).

قال الغزِّي: كانت جنازته حافلة، حضرها السلطان فمن دونه، وكثر البكاء عليه، وتأسُّف الناس على فراقه، رحمه الله تعالى. (١٩٨٣، ٨٣/١).

المبحث الثاني

مسائل مصطلح الحديث في الكوثر الجاري

المطلب الأول: مسائل مصطلح الحديث المتعلقة بالسند:

كما ذكرنا أن الامام الكوراني يذكر في الكوثر الجاري أثناء شرحه على أحاديث صحيح البخاري علوماً كثيرة كشأن كثير من العلماء الذين شرحوا صحيح البخاري إلاّ أن مسائل المصطلح قليلة مقارنة بالمسائل الفقهية واللغوية، واستخرجنا هذه المسائل من شرحه المذكور لبيان مدى معرفته بهذا العلم لأنه لم يصنف فيه كما صنف في باقي العلوم، ومن المعلوم لدى أهل الشأن أن مسائل المصطلح ذكرها عند المتأخرين ليس إلا توضيحاً أو ترجيحاً أما التأصيل ففي غاية القلة لذا لا عتب على الكوراني لو قلنا أنه أورد هذه المسائل بين النقل وأحياناً الترجيح وهو دأب غيره، وسنذكر ما وقفنا عليها في كتابه من مسائل مصطلح الحديث مرتبة على قسمين: المسائل المتعلقة بالسند والمسائل المتعلقة بالمتن، وسنذكر في هذا المطلب ما تتعلق بالسند ثم نعلق ما تحتاج إلى تعليق من بيان رأي غيره من العلماء:

- قول الرواة حدثنا وأخبرنا:

في كتاب العلم في بَابُ قَوْلِ المُحَدِّثِ: أَخْبَرَنَا، وَحَدَّثَنَا: وَقَالَ لَنَا الحُمَيْدِيُّ: " كَانَ عِنْدَ ابْنِ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا، وَأَخْبَرَنَا، وَأَنْبَأَنَا، وَسَمِعْتُ وَاحِدًا، وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ الصَّادِقُ المَصْدُوقُ وَقَالَ شَقِيقٌ: عَنْ عَبْدِ اللَّهِ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ كَلِمَةً وَقَالَ حُذَيْفَةُ.

قال الكوراني: (كان عند ابن عُيينة)، (حدّثنا، وأخبرنا، وأنبأنا وسمعتُ واحدًا) قال ابنُ الصلاح والعراقي: هذا مذهبُ البُخاريّ وآخرين من المشايخ، وعليه معظمُ أهل الحجاز والكوفيين والزهري. وقال الشّافعي ومسلم: لا يقول حدّثنا إلّا إذا سَمِعَهُ من شيخه. (الكوراني ٢٠٠٨، ١/١٤٥).

ويقول أيضاً: فإن قلتَ: ذكره في الإسناد تارة لفظ: حدثنا، وتارةً: أخبرنا، وتارةً: سمعتُ؟ قلتُ: إما أنه لا يرى الفرْقَ بين هذه الألفاظ كما نُقل في كتاب العلم عن ابن عيينة، أو وقَع له كذلك. (الكوراني،٢٠٠٨، ١/٣٤).

أكثر العلماء على أن صيغ الأداء تختلف في الاستعمال حسب قراءة الطالب على الشيخ، ففي الجامع لأخلاق الراوي قَالَ الشَّافِعِيُّ: إِذَا قَرَأَ عَلَيْكَ الْمُحَدِّثُ فَقُلْ: حَدَّثَنَا وَإِذَا قَرَأْتَ عَلَيْهِ فَقُلْ أَخْبَرَنَا، وَهَذَا الَّذِي قَالَهُ الشَّافِعِيُّ مَذْهَبُ جَمَاعَةٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ وَرُوِيَ مِنَ الْمُتَقَدِّمِينَ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ جُرَيْجٍ الْمَكِّيِّ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَمْرٍو الْأَوْزَاعِيِّ وَكَانَ حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ وَهُشَيْمُ بْنُ بَشِيرٍ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ بْنُ هَمَّامٍ .... يَقُولُونَ فِي غَالِبِ حَدِيثِهِمُ الَّذِي يَرْوُونَهُ: أَخْبَرَنَا، وَلَا يَكَادُونَ يَقُولُونَ حَدَّثَنَا وَكَانَ غَيْرُهُمْ يَقُولُ: يَنْبَغِي أَنْ يُبَيِّنَ السَّمَاعَ كَيْفَ كَانَ، فَمَا سُمِعَ مِنْ لَفْظِ الْمُحَدِّثِ قِيلَ فِيهِ حَدَّثَنَا وَمَا قُرِئَ عَلَيْهِ قَالَ الرَّاوِي فِيهِ: قَرَأْتُ إِنْ كَانَ سَمِعَهُ بِقِرَاءَتِهِ وَيَقُولُ فِيمَا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

سَمِعَهُ بِقِرَاءَةِ غَيْرِهِ قُرِئَ وَأَنَا أَسْمَعُ وَقَالَ أَكْثَرُ أَهْلِ الْعِلْمِ: إِذَا كَانَ الْحَدِيثُ فِي الْأَصْلِ مَسْمُوعًا فَلِرَاوِيهِ أَنْ يَقُولَ مَا شَاءَ مِنْ حَدَّثَنَا وَأَخْبَرَنَا وَلَمْ يَرَوْا فِي ذَلِكَ فَرْقًا. (الخطيب البغدادي،١٩٨٩، ٥٠/٢).

وهذا الإستعمال من أبن عيينة وغيره من المتقدمين كان قبل أنْ يَشِيْعَ تَخْصِيْصُ أخْبَرَنا بما قُرِئَ عَلَى الشّيْخِ، فذكرَ الخطيبُ عَنْ محمّدِ بنِ رَافِعٍ، قَالَ :كَانَ عَبْدُ الرَّزّاقِ – وهو من المتقدمين –يَقُولُ :أخْبَرَنا حَتّى

قَدِمَ أحمدُ بنُ حَنْبَلٍ وإسْحَاقُ بنُ رَاهَوَيهِ فقَالَا لَهُ :قُلْ(( :حَدّثَنا))، فَكُلُّ مَا سَمِعْتَ مَعَ هؤُلَاءِ قالَ(( :حَدّثَنا))، وما كَانَ قَبْلَ ذَلِكَ قَالَ(أخْبَرَنا). (الخطيب، ١٤٣٢ه، ٤٦/٢).

وينقل أيضاً الكوراني في موضع آخر يبين المفاضلة بين هذه الصيغ عند الأداء، فيقول: قال ابنُ الصلاح: وخير ما يقال في هذا المقام: إنَ هذا اصطلاحٌ؛ إذ بيانُهُ لغةً عَنَاءٌ. ومن خَصَّ التحديث بالسماع فَلِقُوّةِ إشعاره بالمنطق والمشافهة. ثم اختلفوا في أقوى وجوه التحمّل، هي القراءة على الشَّيخ أو السماع منه، فذهَبَ أبو حنيفة وبعضُ السلف إلى ترجيح القراءة على السماع منه، ورُوي هذا عن مالك.

قال الشَّيخ ابنُ الصلاح: والصحيحُ أن السماع أعلى الدرجات وكذا قال العراقي، وقد بان لَكَ أن المرادَ من المحدّث في قول البُخاريّ باب قول المحدث؛ هو رواي الحديث، لا المحدث لغةً. وكيف يصحُّ لغةً حدّثنا فيما إذا كان الراوي هو القارئ على الشَّيخ، أو ضرورة للبخاري في بيان المحدث لغة، وقد نقلت أيضًا عن ابن الصلاح أنَّ هذا أمرٌ اصطلاحي. (الكوراني،٢٠٠٨، ١٤٥/١) وينظر أيضاً (ابن الصلاح،١٩٨٦، ص١٣٣وما بعده).

- **أصح الأسانيد:**

قال البخاري: أصحّ الإسناد مالك عن نافع عن ابن عمر. (الكوراني،٢٠٠٨، ٣٤/١).

وفي مقدمة ابن الصلاح بعد أن نقل قول الامام البخاري وَبَنَى الْإِمَامُ أَبُو مَنْصُورٍ عَبْدُ الْقَاهِرِ بْنُ طَاهِرٍ التَّمِيمِيُّ عَلَى ذَلِكَ: أَنَّ أَجَلَّ الْأَسَانِيدِ: " الشَّافِعِيُّ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ وَاحْتَجَّ بِإِجْمَاعِ أَصْحَابِ الْحَدِيثِ عَلَى أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ فِي الرُّوَاةِ عَنْ مَالِكٍ أَجَلُّ مِنَ الشَّافِعِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ، وَاللَّهُ أَعْلَمُ. (ص١٦).

وإن كان قد سبق هذا بقوله: وَلِهَذَا نَرَى الْإِمْسَاكَ عَنِ الْحُكْمِ لِإِسْنَادٍ أَوْ حَدِيثٍ بِأَنَّهُ الْأَصَحُّ عَلَى الْإِطْلَاقِ. عَلَى أَنَّ جَمَاعَةً مِنْ أَئِمَّةِ الْحَدِيثِ خَاضُوا غَمْرَةَ ذَلِكَ، فَاضْطَرَبَتْ أَقْوَالُهُمْ. (ص١٥).

- **الأحاديث المعلقة في صحيح البخاري:**

وفي الحديث الذي رواه البخاري في باب: ((لِيُبَلِّغِ العِلْمَ الشَّاهِدُ الغَائِبَ)) قَالَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ، قال الكوراني: ذكره تعليقاً عنه بقوله لما أسنده بعده، وقد رواه عنه مسندًا في باب الحج. قال ابنُ الصلاح: ما يذكره البخاري تعليقاً بصيغة الجزم، ليس من قبيل الضعيف، بل صحيح معروف الاتصال، وقد يفعل ذلك لكون الحديث مذكورًا في كتابه مسندًا متصلًا، وقد يفعل ذلك لأسباب أُخَر لا يصحبها خَلَلُ الانقطاع، فسقط ما يقال: إن مثل هذا التعليق يُسمى معضلًا. (الكوراني،٢٠٠٨، ١/٢٢٠).

وفي بيان تعريف التعليق وبيان حكمه في صحيح البخاري يقول في تعريفه:وهو أن يَذكر الحديثَ عمن لم يَلْقه، سواء أسقطَ واحدًا من الرجال أو السندَ كلَّه. وقال: قال رسول الله ﷺ إن كان الحديث مرويًا عن رسول الله ﷺ أو رفعه إلى الصحابي إن كان من قوله كقول البخاري: قال عمر: تَعَلَّموا قبل أن تَسُودوا. وهذا كثير في البخاري، وليس في مسلم بعد الخطبة تعليق إلا حديث واحد وهو حديث أبي الجهم بن الحارث بن الصِمّة في باب التيمم: "أقبل رسول الله ﷺ من بئر الحمل.

قال العراقي: ما في البخاري من التعليق إن كان مجزومًا به يُحكم بصحته، وإن كان بصيغة التمريض مثل يُذكر ورُوي ويقال ونُقل. فلا يُحكم بصحته.

قلتُ: مراده ما لم يوجد له أصلًا سند صحيح، وذلك أن في البخاري ما يكون له أصل صحيح، ويذكره بصيغة التمريض.

فإن قلتَ: ما وجه التسمية بالتعليق؟ قلتُ: قال ابن الصلاح: مأخوذ من الطلاق؛ لأن في كل واحدٍ منها قطع الإتصال.

فإن قلتَ: كيف يكون في البخاري ما ليس محكومًا بصحته، وقد قال: ليس في كتابي إلا ما صحَّ؟ قلتُ: قال ابن الصلاح: مراده مقاصدُ الكتاب وهو الأبواب دون التراجم ونحوها. (الكوراني،٢٠٠٨، ١/٤٤).

وقال أيضاً: في الحديث الذي رواه البخاري معلقاً وبصيغة التمريض في باب باب إِذَا بَيَّنَ الْبَيِّعَانِ وَلَمْ يَكْتُمَا وَنَصَحَا فقال: وَيُذْكَرُ عَنِ الْعَدَّاءِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ كَتَبَ لِى النَّبِىُّ ﷺ ((هَذَا مَا اشْتَرَى مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ)).

فعلق الكوراني على الرواية بقوله: ان البخاري إنما ذكره بلفظ: يُذكر، صيغة التمريض الدالة على الضعف. (الكوراني،٢٠٠٨، ٣٧٨/٤).

وهذا الذي ذكره الكوراني في حكم الأحاديث المعلقة في صحيح البخاري ذكر جميع من كتبوا عنها في الصحيح كما يقول د. الجديع: القول في معلقات البخاري كما يلي:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

أولاً: إذا علق الحديث بصيغة الجزم، بأن قال مثلاً: (قال النبي ﷺ) أو: (قال ابن عباس) فهو ثابت عنده.

ثانياً: إذا علق الحديث بصيغة الجزم إلى بعض رواة ذلك الحديث كأن يقول: (قال فلان) ويسوق طرفاً من آخر الإسناد؛ فهو صحيح منه إلى من سماه، أما من ذلك المسمى إلى منتهى الإسناد فيحتاج إلى كشف.

وهذا كحديث عفان بن مسلم المتقدم، فهو صحيح عند البخاري إلى عفان، لكنه من عفان إلى ابن عمر يحتاج إلى تحقيق ثبوته.

ثالثاً: إذا علق الحديث بصيغة التمريض، كقوله: (يروى، روي) ونحو ذلك من صيغ المبني للمجهول، فليس فيه حكم منه بثبوت المعلق، بل في إشعار بتعليله، فهو على الضعف حتى يتبين وصله من طريق ثابت.

وأما ما يعلقه البخاري لأجل الاختصار، فإنه يسوقه موصولاً في موضع آخر من الصحيح، فهذا ليس من قبيل المعلق الذي يتخلف عن شرطه؛ للعلم بمخرجه في نفس الصحيح. (الجديع٢٠٠٢، ٨٥٢/٢).

- **مراسيل الصحابة:**

وفي بيان مراسيل الصحابة يقول: فإن قلتَ: عائشة لم تدرك أوائل النبوة، كيف أخبرتْ عنها؟ قلتُ: إما سمعتْ من رسول الله ﷺ، أو من غيره، هذا من مراسيل الصحابة، مقبولٌ باتفاق العلماء إلا ما شذّ من أبي إسحاق الإسفراييني. (الكوراني،٢٠٠٨، ٤٥/١). ويقول أيضاً: مرسل الصحابي حجة بلا خلاف. (الكوراني،٢٠٠٨، ٢٠٠/٢))

المراد بمرسل الصحابي هو ما رواه الصحابي عن النبي ﷺ من غير أن يكون قد شهد الحادثة سواء كان صغيراً أو لم يكن أسلم بعد، وأكثر العلماء على أنه مقبول أما دعوى الاجماع فمحل نظر، يقول الصنعاني: مراسيل الصحابة مقبولة عندنا وعند المحدثين وعند الأكثرين من طوائف العلماء" وهذا كما عرفت على اصطلاح غير المحدثين أو الأكثر منهم فإنهم ليس المرسل عندهم إلا ما سلف رسمه أنه قول التابعي قال رسول الله ﷺ وقد تقدم دعوى ابن عبد البر الإجماع على ذلك تقدم للمصنف الاستدلال بإجماع الصحابة على قبول مرسل الصحابي وعن ابن جرير الطبري نقل إجماع التابعين.

قال زين الدين: وقد ادعى بعض الحنفية الإجماع عليه وهو غير جيد قال: فقد خالف فيه الإسناد أبو اسحق الإسفراييني، قلت لم ينفرد به الأستاذ بل قال القاضي أبو بكر الباقلاني: وصرح في التقريب بعدم قبول المرسل مطلقا وتقدم التعديل بأنه ليس لأجل الشك في عدالة الصحابة بل لأنهم قد يروون عن التابعي مغلوبة. (الصنعاني١٩٩٧، ٢٨٧/١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

• **المتابعة عند المحدثين:**

وفي تعريف المتابعة يقول: المتابعةُ عبارة عن الموافقة في السند والمتن كمتابعة عبد الله بن يوسف يحيى بن بكر؛ فإن كل واحد منهما شيخ البخاري، فاشتركا في بقية السند والمتن، فأشار إلى ذلك على وجه الاختصار، وهذه متابعة تامة. وقد يكون فوق شيخه كقوله هنا: (وتابعه هلال بن رداد عن الزهري) أي: تابع عقيلًا. (الكوراني،٢٠٠٨، ٤٦/١).

تعريف المتابعة عند المحدثين: هو أن يشارك الراوي غيره في رواية الحديث. وهي: نوعان:

١ - متابعة تامة: وهي أن تحصل المشاركة للراوي من أول الإسناد.

٢ - متابعة قاصرة: وهي أن تحصل المشاركة للراوي في أثناء الإسناد.

ومثال كليهما مع الشاهد مثَّلَ به الحافظ ابن حجر بمثال فيه المتابعة التامة، والمتابعة القاصرة والشاهد، وهو: ما رواه الشافعي في (الأم) عن مالك عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر أن رسول الله ﷺ قال: (الشهر تسع وعشرون، فلا تصوموا حتى تروا الهلال، ولا تفطروا حتى تروه، فإن غم عليكم فأكملوا العدة ثلاثين)

أما المتابعة التامة: فما رواه البخاري عن عبد الله بن مسلمة القعنبي عن مالك بالإسناد نفسه، وفيه: (فإن غم عليكم فاكملوا العدة ثلاثين).

وأما المتابعة القاصرة: فما رواه ابن خزيمة من طريق عاصم بن محمد عن أبيه محمد بن زيد عن جده عبد الله ابن عمر بلفظ: (فكمِّلوا ثلاثين).

وأما الشاهد: فما رواه النسائي من رواية محمد بن حُنَيْن عن ابن عباس عن النبيﷺ قال: (فإن غم عليكم فأكملوا العدة ثلاثين)، (القاري، بدون تاريخ، ص٣٤٥-٣٤٧).

• **المراد بحرف الحاء في الصحيحين:**

وفي بيان المراد بحرف (ح) التي تذكر في البخاري ومسلم كثيراً في السند يقول: اعلم أنه يقع في البخاري وفي مسلم أكثر لفظ (ح) كذا على طريق حروف التهجي، واختلف العلماء في ذلك: قال العراقي: والذي عليه عمل أهل الحديث أن القارئ ينطق بها على طريق الهجاء حاء مهملةً؛ إشارة إلى تحوُّل الإسناد وذلك إذا اجتمع على متن واحد إسنادان أو أكثر. وقال بعضُهم: إشارةً إلى الحديث يعني أن الحديث في هذا الإسناد هو حديث الإسناد الأول. قال ابن الصلاح: وجدتُ بخط الأستاذ أبي عثمان الصابوني، والحافظ أبي مسلم الليثي، والفقيهِ المحدث أبي سعيد بدل الحاء لفظ: صح. قال: وهذا حسنٌ؛ لئلا يُتوهم أن حديث هذا الإسناد سقط، ولئلا يُركبَ الإسنادَ الثاني على الأول مَنْ لا خبرة له فيجعله إسنادًا واحدًا. (الكوراني،٢٠٠٨، ٤٧/١).

أشار الكوراني إلى بعض الأراء التي ذكرت في معنى حرف الحاء التي تذكر في الصحيحين لكن قال السخاوي: وَنَحْوُهُ فِي كَوْنِهَا مِنْ حَائِلٍ لَكِنْ مَعَ النُّطْقِ بِذَلِكَ قَوْلُ الدِّمْيَاطِيِّ،



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وَقَدْ قرَأَ عَلَى بَعْضِ الْمَغَارِبَةِ، فَصَارَ كُلَّمَا وَصَلَ إِلَى (ح) قَالَ: حَاجِزٌ. وَهُوَ فِي النُّطْقِ بِمَعْنَاهَا خَاصَّةً مُوَافِقٌ لِمَا حَكَاهُ ابْنُ الصَّلَاحِ حَيْثُ قَالَ (وَقَدْ رَأَى بَعْضُ) عُلَمَاءِ (أُولِي الْغَرْبِ) حِينَ ذَاكَرْتُهُ فِيهَا، وَحَكَاهُ عَنْ صَنِيعِ الْمَغَارِبَةِ كَافَّةً (بِأَنْ) ؛أَيْ: أَنْ (يَقُولَا) مَنْ يَمُرُّ بِهَا (مَكَانَهَا الْحَدِيثَ قَطْ) أَيْ: فَقَطْ. وَحَكَى ابْنُ الصَّلَاحِ عَنِ الرُّهَاوِيِّ إِنْكَارَ كَوْنِهَا مِنَ الْحَدِيثِ.

ثم قال: ثُمَّ إِنَّهُ لَمْ يَخْتَلِفْ مَنْ حَكَيْنَا عَنْهُمْ فِي كَوْنِهَا حَاءً مُهْمَلَةً، بَلْ قَالَ ابْنُ كَثِيرٍ: إِنَّ بَعْضَهُمْ حكَى الْإِجْمَاعَ عَلَيْهِ. قَالَ: وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَوَهَّمُ أَنَّهَا خَاءٌ مُعْجَمَةٌ. أَيْ: إِسْنَادٌ آخَرُ.

وَكَذَا حَكَاهُ الدِّمْيَاطِيُّ أَيْضًا، فَقَالَ: وَبَعْضُ الْمُحَدِّثِينَ يَسْتَعْمِلُهَا بِالْخَاءِ الْمُعْجَمَةِ يُرِيدُ بِهَا آخِرًا وَأَخِيرًا. زَادَ غَيْرُهُ: أَوْ إِشَارَةً إِلَى الْخُرُوجِ مِنْ إِسْنَادٍ إِلَى إِسْنَادٍ. وَالظَّاهِرُ كَمَا قَالَ بَعْضُ الْمُتَأَخِّرِينَ: أَنَّ ذَلِكَ اجْتِهَادٌ مِنْ أَئِمَّتِنَا فِي شَأْنِهَا مِنْ حَيْثُ إِنَّهُمْ لَمْ يَتَبَيَّنْ لَهُمْ فِيهَا شَيْءٌ مِنَ الْمُتَقَدِّمِينَ. (٢٠٠٢، ٣/١١٣)

- استخدام صيغة (قال) في رواية البخاري عن شيوخه:

وفي رواية البخاري عن شيوخه بلفظ: (قال) يقول الكوراني: قال العراقي: ما عزاه البخاري إلى بعض شيوخه بلفظِ قال، فليس حكمُهُ حكم التعليق، بل حكم الإسناد المعنعَن (وقال عبد الأعلى) روايةُ البخاري عنه يقال تعليق، لأنه شيخ شيوخه. رَوَى عنه علي بن المديني وغيرُهُ من شيوخ البخاري. (الكوراني٢٠٠٨، ١/٦٣).

ولكن ليس كل ما قال البخاري عن شيوخه بلفظ (قال) يكون حكم التعليق، بل أحياناً يراد به على سبيل المذاكرة كما سيأتي قريباً. (الكوراني٢٠٠٨، ٧/٨).

- تعريف المشهور:

وفي بيان تعريف المشهور يقول: وأما المشهورُ الذي ذكره الحنفيةُ وهو أن يتواتر في القرآن الثاني (كذا فيه وهو خطأ، والصواب القرن الثاني) ليس له ذكر عند أهل الحديث. على أن قوله: المشهور ما زاد نَقَلَتُه على الثلاث. ليس ذلك شرطًا في كل طبقة. ألا ترى أن حديث "إنما الأعمال بالنيات" من عُمر إلى يحيى بن سعيد آحادٌ، ثم منه صار في حدّ الشهرة. (الكوراني٢٠٠٨، ١/٨٦).

الحديث المشهور عند الحنفية يختلف تعريفه عن غيرهم من الأصوليين: وهو عندهم ما رواه عن رسول الله ﷺ صحابي أو اثنان أو جمع لم يبلغ حد التواتر، ثم رواه عن هؤلاء جمع يؤمن تواطؤهم على الكذب، ورواه عنهم جمع مثله، أي: إن الحديث المشهور كان آحاديًّا في الطبقة الأولى من رواته، ثم تواتر في الطبقة الثانية والثالثة. (الزحيلي٢٠٠٦، ١/٢٠٨).

وبهذا يختلف المشهور عن المتواتر في العدد في الطبقة الأولى من الرواة، ففي المتواتر الجمع الذي يحيل العقل تواطؤهم على الكذب، وفي المشهور واحد أو اثنان أو جمع لم يبلغ حد التواتر.

ثم يقول الزحيلي: ويترتب على هذا الفرق اختلاف بين الفقهاء وعلماء الأصول في الأحكام، فالجمهور يعتبر الحديث المشهور في حكم حديث الآحاد، ويأخذ أحكامه، أما الحنفية فيرون الحديث المشهور له مرتبة مستقلة بين الحديث المتواتر وخبر الآحاد، وأنه يشترك مع المتواتر في تخصيص عام القرآن، والزيادة عليه، وأنه يقيد مطلقه، ويفيد الطمأنينة والظن القريب من اليقين، ويفسق جاحده ولا يكفر؛ لأنه مقطوع بوروده عن الصحابي، ولا يقطع بوروده عن رسول الله ﷺ، وهذا القسم غير مجموع بمفرده، وغير متفق على عدده. (الزحيلي٢٠٠٦، ٢٠٨/١).

وأما الحديث المشهور عند المحدثين فهو: ما رواه ثلاثة فأكثر في كل طبقة ما لم يبلغ حد التواتر. (الطحان٢٠٠٤، ص٣٠).

• **المذاكرة عند المحدثين:**

في كتاب العلم في بَابُ قَوْلِ المُحَدِّثِ: أَخْبَرَنَا، وَحَدَّثَنَا، وَقَالَ لَنَا الحُمَيْدِيُّ: " كَانَ عِنْدَ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قال الكوراني هو عبدُ الله بن الزُّبير، شيخُ البُخاريّ. نقل عنه بقال لأنَّه سمعه مذاكرةً. (الكوراني٢٠٠٨، ١٤٥/١).

والمراد بالمذاكرة عند المحدثين كما في شرح الموقظة: هي المجالس التي يجتمع فيها المحدِّثون لا لقصد الرواية والسماع، وإنما لقصد مراجعة محفوظهم، أو لإفادة بعضهم بعضًا غرائبَ الأحاديث وعواليَها ومستحسناتها، أو لحصر أحاديث الأبواب أو التراجم. (العوني٢٠٠٧، ص١٧٠).

فهي مداولة بين المحدثين للأحاديث مما يتَّصل بها بين الراوي وغيرِه؛ يذكِّر أحدُهما الآخرَ ما أرادا مذاكرته، ويستفيدان من بعضهما لما لم يكن عندهم من المرويات..

وفي كتاب التفسير في الباب الأول من سورة البقرة وفي الحديث الأول يقول البخاري: وقال لي خليفة، فعلق عليه الكوراني بقوله: هو ابن الخياط شيخ البخاري، والرواية عنه ب (قال)، لأنه سمع الحديث مذاكرة، (الكوراني٢٠٠٨، ٧/٨). وتتكرر هذا عند البخاري في الصحيح عشرات المرات .

• **القراءة على الشيخ:**

وفي باب القراءة والعرض على المحدث قال الكوراني: قال ابن الصلاح: أكثرُ المحدثين يسمي القراءة على الشَّيخ عرضًا. قال العراقي في وجه التّسمية: لأنَّ القارئ يعرض على شيخه، فعلى هذا عطف العرض على القراءة تفسير لئلا يتوهم من القراءة السماع؛ لأنَّه يقال في العرض: قرأ على فلان على طريقة السماع منه. (الكوراني٢٠٠٨، ١٤٨/١).

الطريقة الثانية التي يذكرها العلماء من طرق التحمل هي القراءة على الشيخ، وتكون على قسمين: الشيخ يتكلم ويحدث والطالب يسمع ويحفظ، والثاني: العكس الطالب هو الذي يقرأ

والشيخ يستمع، يعرض الطالب ما عنده على شيخه، فيقول: حدثك فلان عن فلان والشيخ يستمع، ويُسمِّيها أكثر قدماء المحدِّثين عرْضًا؛ لأن القارئ يعرضه على الشيخ سواء قرأ هو أم غيره وهو يسمع، وسواء قرأ من كتاب أو من حفظ، وسواء كان الشيخ يحفظه أم لا، إذا كان يمسك أصله هو أو ثقة غيره وهي رواية صحيحة باتفاق، خلافًا لبعض من لا يعتد به. ينظر: (الطيبي،٢٠٠٩،ص١٢٠).

- **تعريف المناولة:**

وفي باب ما يذكر في المناولة، قال الكوراني: المناولةُ لغةً: إعطاءُ شيءٍ من يدٍ إلى يدٍ من النَّول وهو العطاء. واصطلاحًا عند أهل هذا الفن: قسم من أقسام الأخذ والتحمُّل. وهي على قسمين؛ مقرونة بالإجازة وعاريةٌ عنها. فالأُولى أعلى أنواع الإجازة ولها صورٌ أعلاها أن يناوله شيئًا من سماعاته أصلًا أو فرعًا مقابلًا به، ويقول له: خذ هذا فإنه سماعي أو روايتي فاروه عني، وأما المناولةُ المجردة وهي أن يناوله شيئًا من سماعه ويقول: هذا سماعي أو روايتي ولم يقل له: اروه عني ونحوهما مما يدلّ على الإذن والإجازة. فذهَبَ الخطيب وطائفةٌ إلى جواز الرواية بها.

وقال ابنُ الصلاح: لا يعتد بها. وكذا قاله النووي في "التقريب" وإن ذَهَب إلى الجواز بعضُ أرباب الأصول. ثم اختلفوا في عبارة الراوي بطريق المناولة: هل يجوزُ له أن يقول: حدثنا فلان، وأخبرنا من غير ذكر المناولة أو لا بدله من ذلك؟ فذهب مالكٌ وآخرون إلى جوازه.

قال العراقي: والمختار الذي عليه عمل الجمهور واختاره أهلُ الورع: المنعُ من ذلك. وصورة ذكرها: أن يقول الراوي: أخبرنا فلانٌ مناولةً. وهل الروايةُ بها تحل محل السماع؟ فيه خلافٌ. قال ابن الصلاح: فالصحيحُ أنها دون السماع درجةً، وإن ذهب مالكٌ مع طائفةٍ إلى أنها في رتبة السماع. (الكوراني،٢٠٠٨، ١/١٥٣).

المناولة عند المحدثين هي: إعطاء الشيخ الطالبَ شيئا من مروياته مع إجازته له به صريحا أو كناية.

وأعلى صورها: أن يناول الشيخ الطالب العلم كتابا من سماعه أو مما قوبل على كتابه ويقول: هذا من سماعي أو روايتي عن فلان فأروه عني ونحو ذلك" وإنما كانت أعلاها لما فيها من التعيين والتشخيص باتفاق المحدثين.

وأدناها إذا لم تقترن بالمناولة إجازة ولا قال الشيخ المناول للطالب ارو عني ما في هذا الكتاب ولا نحو ذلك، وفي جواز الرواية بها خلاف بين العلماء، فذكر الامام النووي البطلان عن الفقهاء وا صحاب الأصول، وذكرا بن حجر في شرح النخبة أنها غير معتبرة عندَ الجُمهورِ.وخلافهم مبني على إشتراط الإذن في الرواية من الشيخ للطالب أو لا، فالذين يرون الجواز عندهم ان الإذن غير مشترط في الإخبار" إذ الأصل جواز إخبار الإنسان عن غيره وإن لم يأذن في


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

الإخبار عنه، إلا أن يكون أمرا خاصا به لا يجب اطلاع أحد عليه. ينظر: (العسقلاني، ص١٢٧) و(الصنعاني،١٩٩٧، ص٢٠٣).

- **باب متى يصح سماع الصغير**

يقول الكوراني: قال ابن الصلاح: استدل الجمهور بهذا الحديث على أن أقل زمان يجوزُ منه تحمل الحديث خمس. قال: والحق أنه ليس في الحديث ما ينفي الأقل منه، والمناط قدرةُ الصغير على الضبط وهي تتفاوت بحسب الفطرة. ثم حكى أن صبيًا كان عمره أربع سنين حُمل إلى المأمون الخليفة وكان قرأ القرآن ونظر في الرأي، وكان إذا جاع بكى.

فإن قلتَ: ترجم الباب على السماع وليس في الحديث ذكر السماع. قلت: هذا على دأبه من الاستدلال بالخفي، وذلك أنه جعل السماع مجازًا عن سائر وجوه التحمل، والمراد من الصغير ما دون البلوغ، فإنه الصغير شرعًا، فلا يَرِدُ أنَّ ابن عباس كان مراهقًا. (الكوراني،٢٠٠٨، ١/١٧٧).

بوّب البخاري هذا الباب في الصحيح وذكر حديث مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ قَالَ: ((عَقَلْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ مَجَّةً مَجَّهَا فِي وَجْهِي وَأَنَا ابْنُ خَمْسِ سِنِينَ مِنْ دَلْوٍ)) وكأنه ذهب إلى جواز سماع الصغير وهو ابن خمس سنين، ولكن هل يكون سن الخامسة ثابتاً ولا يصح سماع من هو دونه، قال السخاوي: وَهَذَا وَإِن كَانَ هُوَ المستقر عَلَيْهِ الْعَمَل أعنى التسميع لِابْنِ خمس فَالْأَصَحّ أَنه يعْتَبر كل صَغِير بِحَالِهِ فَمَتَى كَانَ فهما للخطاب ورد الْجَواب صححنا سَمَاعه، وَإِن كَانَ لَهُ دون خمس، وَإِن لم يكن كَذَلِك لم يَصح، وَإِن كَانَ ابْن خمسين، وَحَدِيث مَحْمُود لَا يُنَافِيهِ لكَونه يدل على ثُبُوته لمن هُوَ فى سنه، أَو فَوْقه وَلم يُمَيّز تَمْيِيزه وَلِهَذَا كَانَ الولى العراقى - وناهيك بورعه وتثبيته - يَقُول فِيمَا شَاهد قِرَاءَته وَهُوَ ابْن ثَلَاث: وَأَنا فى الثَّالِثَة: سمع فهم. (٢٠٠١،ص٨١-٨٢).

- **تعريف التدليس:**

وفي بيان التدليس يقول: أن التدليس إمّا أن يكون في الإسناد بأن يقول: قال فلان كذا، موهمًا أنه سمعه منه؛ وإمّا في شيخه بأن يذكره باسم أو كنية أو وصف لم يكن معروفًا به؛ ليتوهم منه علو الإسناد (الكوراني،٢٠٠٨، ٣/٣٨٧).

التدليس عند المحدثين هو: أن يروي الراوي عمن سمع منه ما لم يسمعه بلفظ يوهم السماع (كعن، وقال، وأن).

وقد ذكر العلماء أقساماً للتدليس وأهمها تدليس الاسناد وتدليس الشيوخ، والذي ذكره الكوراني هو تدليس الاسناد وصورته: أن يروي الراوي عن شيخ قد سمع منه بعض الأحاديث، لكن هذا الحديث الذي دلسه لم يسمعه منه، وإنما سمعه من شيخ آخر عنه، فيسقط ذلك الشيخ، ويرويه عن الشيخ الأول بلفظ محتمل للسماع وغيره، كـ "قال" أو "عن" ليوهم غيره أنه سمعه منه.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لكن لا يصرح بأنه سمع منه هذا الحديث، فلا يقول: "سمعت" أو "حدثني" حتى لا يصير كذابا بذلك، ثم قد يكون الذي أسقطه واحدًا أو أكثر. ينظر: (الطحان٢٠٠٤، ص٩٧).

- **بيان المبهمات في السند والمتن:**

من المسائل التي ذكرها علماء المصطلح في كتبهم هو بيان المبهم في الحديث سواء في السند أو المتن، ومما وقع فيه في السند عند البخاري وغيره هو ذكر الراوي باسمه من غير بيان اسم أبيه أو لقبه أو كنيته، فيذكر العلماء في بيانه إستناداً إلى روايات أخرى أو قرائن تدل على أنه فلان بن فلان المعني به في الحديث، وقد بين الكوراني كثيراتً من هؤلاء سنذكر نموذجين اثنين مما بينه:

الأول في باب الرَّمَلِ فِي الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ يقول البخاري: حَدَّثَنِى مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضى الله عنهما قَالَ سَعَى النَّبِىُّ ﷺ ثَلاَثَةَ أَشْوَاطٍ.

(محمد) كذا وقع غير منسوب، قال الغساني: قال الحاكم: هو محمد بن يحيى الذهلي، قال الغساني: إنه محمد بن رافع؛ لأن البخاري روى في باب عمرة القضاء عن محمد بن رافع عن سريج بن النعمان وقال ابن السكن: هو محمد بن سلام، والأظهر ما قاله الغساني. (الكوراني٢٠٠٨، ٤/٧٠).

الثاني: في باب تَقْبِيلِ الْحَجَرِ يذكر البخاري حديث: الزُّبَيْرِ بْنِ عَرَبِىٍّ قَالَ سَأَلَ رَجُلٌ ابْنَ عُمَرَ رضى الله عنهما عَنِ اسْتِلاَمِ الْحَجَرِ.

يقول الكوراني: السائل هو راوي الحديث؛ والزبير بن عربي، بيّنه رواية أبي داود الطيالسي قال: سألت ابن عمر. (الكوراني٢٠٠٨، ٤/٧٣).

- **الراوي المدلس إذا صرح بالتحديث**

كثيراً ما يذكر الكوراني في شرحه في بيان ما يذكر البخاري عند ذكر راوٍ موصم بالتدليس، ثم يذكر البخاري الرواية عن الراوي بما يدفع شبهة التدليس بذكر الراوي مصرحاً بالسماع أو التحديث، وسنكتفي بمثال واحد في هذه المسألة، ففي باب عُمْرَةِ التَّنْعِيمِ بعد ما ذكر الرواية عن سفاية عن عمرو بن أوس، ذكر البخاري بعد رواية الحديث: قَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً سَمِعْتُ عَمْرًا، كَمْ سَمِعْتُهُ مِنْ عَمْرٍو.

فقال الكوراني موضحاً قول البخاري في آخر الحديث: إنما ذكر هذا الكلام لأن الرواية الأولى كانت بعن، وسفيان يدلس، فدفع وهم التدليس بلفظ السّماع. (الكوراني٢٠٠٨، ١/١٧٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

- **عدالة الصحابة:**

الصحابة كلهم عدول، فلا يقدح الرواية عن المجهول. (الكوراني،٢٠٠٨، ٢٠٦/٤) وهذا من القواعد المهمة في كثير من الجوانب من عقدية وحديثية هو عدالة الصحابة، وأيضاً أن رواياتهم عن مجهول لا يذكرون اسمه لا يضر. والمسألة لا تحتاج إلى تعليق.

- **تزكية الشاهد:**

في نهاية حديث الإفك الذي رواه البخاري من حديث عائشة حينما اتهم صفوان بن المعطل قال ﷺ : ((وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلاً مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا)).

قال الكوراني: واعلم أن هذا نظير تزكية الشاهد. وهذا القدر كافٍ في التزكية عند الكوفيين والجمهور على أنه لا بد من التصريح بالعدالة. (الكوراني،٢٠٠٨، ٢٥٤/٥).

- **شرط البخاري أن لا يروي عن رجل له راو واحد:**

حديث سعيد بن المسيب عن أبيه في قصة أبي طالب الذي رواه البخاري، قال الكوراني: قال بعض الشارحين: فإن قلت: لم يرو عن المسيب إلا ابنه، وشرط البخاري أن لا يروي عن رجل له راو واحد، قلت: ربما كان هذا الشرط في غير الصحابي، قلت: قدمنا في أول الشرح أن هذا الكلام نُقل عن أبي بكر المغربي شارح البخاري، ورُد عليه بحديث ((إنما الأعمال)) إذ لم يروه من الصحابة إلا عمر، وكذا بعد عمر إلى يحيى بن سعيد. (الكوراني،٢٠٠٨، ٧١/٧).

وهذا الذي ذكره الكوراني من أن البخاري اشترط أن لا يروي عن رجل له راوٍ واحد ليس بصحيح قاله شيخه ابن حجر أيضاً في مقدمة فتح الباري فقال: وَأَن كَانَ للصحابي راويان فَصَاعِدا فَحسن وَأَن لم يكن الا راو وَاحِد وَصَحَّ الطَّرِيق إِلَيْهِ كفى قَالَ وَمَا ادَّعَاهُ الْحَاكِم أَبُو عبد الله أَن شَرط البُخَارِيّ وَمُسلم أَن يكون للصحابي راويان فَصَاعِدا ثمَّ يكون للتابعي الْمَشْهُور راويان ثقتان إِلَى آخر كَلَامه فمنتقض عَلَيْهِ بِأَنَّهُمَا اخرجا أَحَادِيث جمَاعَة من الصَّحَابَة لَيْسَ لَهُم الا راو وَاحِد انْتهى وَالشَّرط الَّذِي ذكره الْحَاكِم وَأَن كَانَ منتقضا فِي حق بعض الصَّحَابَة الَّذين أخرج لَهُم فَإِنَّهُ مُعْتَبر فِي حق من بعدهمْ فَلَيْسَ فِي الْكتاب حَدِيث أصل من رِوَايَة من لَيْسَ لَهُ الا راو وَاحِد قطّ وَقَالَ الْحَافِظ أَبُو بكر الْحَازِمِي رَحمَه الله هَذَا الَّذِي قَالَه الْحَاكِم قَول من لم يمعن الغوص فِي خبايا الصَّحِيح وَلَو استقرأ الْكتاب حق استقرائه لوجد جملَة من الْكتاب ناقضة دَعْوَاهُ. (العسقلاني ١٩٧٩ ص٣).

- **رواية البخاري عن الخوارج:**

وفي رواية البخاري عن عمران الحطان وهو خارجي قال الكوراني: فإن قلت: عمران بن حطان رئيس الخوارج، وهو الَّذي مدح ابن ملجم قاتل علي بابيات مشهورة؟ قلت: قيل إنه تاب عن ذلك، قال شيخنا: والبخاري يخرج حديث المبتدع إذا كان صادق اللهجة. (الكوراني،٢٠٠٨، ٣٣٣/٩).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

وهو موضوع مهم أسهب العلماء في الكتابة عنه وهو الرواية عن المبتدعة وكيف أن البخاري روى عن الخوارج، لا نريد هنا التفصيل عن رواية البخاري عن الخوارج لكن فقط سننقل ما أورده الحافظ ابن حجر في مقدمة الفتح عن عمران بن حطان ورواية البخاري عنه، فقال: عمرَان بن حطَّان السدُوسِي الشَّاعِر الْمَشْهُور كَانَ يرى رَأْي الْخَوَارِج قَالَ أَبُو الْعَبَّاس الْمبرد كَانَ عمرَان رَأس القعدية من الصفرية وخطيبهم وشاعرهم انْتهى والقعدية قوم من الْخَوَارِج كَانُوا يَقُولُونَ بقَوْلهمْ وَلَا يرَوْنَ الْخُرُوج بل يزينونه وَكَانَ عمرَان دَاعِيَة إِلَى مذْهبه وَهُوَ الَّذِي رثى عبد الرَّحْمَن بن ملجم قَاتل عَليّ عَلَيْهِ السَّلَام بِتِلْكَ الأبيات السائرة وَقد وَثَّقَهُ الْعجلِيّ وَقَالَ قَتَادَة كَانَ لَا يتهم فِي الحَدِيث وَقَالَ أَبُو دَاوُد لَيْسَ فِي أهل الْأَهْوَاء أصح حَدِيثا من الْخَوَارِج ثمَّ ذكر عمرَان هَذَا وَغَيره وَقَالَ يَعْقُوب بن شيبَة أدْرك جمَاعَة من الصَّحَابَة وَصَارَ فِي آخر أمره إِلَى أَن رأى رَأْي الْخَوَارِج وَقَالَ الْعقيلِيّ حدث عَن عَائِشَة وَلم يتَبَيَّن سَمَاعه مِنْهَا قلت لم يخرج لَهُ البُخَارِيّ سوى حَدِيث وَاحِد من رِوَايَة يحيى بن أبي كثير عَنهُ قَالَ سَأَلت عَائِشَة عَن الْحَرِير فَقَالَت ائْتِ بن عَبَّاس فَسَأَلَهُ فَقَالَ ائْتِ بن عمر فَسَأَلَهُ فَقَالَ حَدثنِي أَبُو حَفْص أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ إِنَّمَا يلبس الْحَرِير فِي الدُّنْيَا من لَا خلاق لَهُ فِي الْآخِرَة انْتهى وَهَذَا الحَدِيث إِنَّمَا أخرجه البُخَارِيّ فِي المتابعات فللحديث عِنْده طرق غير هَذِه من رِوَايَة عمر وَغَيره وَقد رَوَاهُ مُسلم من طَرِيق أُخْرَى عَن بن عَمْرو وَغَيره وَقد رَوَاهُ مُسلم من طَرِيق أُخْرَى عَن بن عمر نَحوه وَرَأَيْت بعض الْأَئِمَّة يزْعم أَن البُخَارِيّ إِنَّمَا أخرج لَهُ مَا حمل عَنهُ قبل أَن يرى رَأْي الْخَوَارِج وَلَيْسَ ذَلِك الإعتذار بِقَوي لِأَن يحيى بن أبي كثير إِنَّمَا سمع مِنْهُ بِالْيَمَامَةِ فِي حَال هروبه من الْحجَّاج وَكَانَ الْحجَّاج يَطْلُبهُ ليَقْتُلهُ لرأيه رَأْي الْخَوَارِج وقصته فِي ذَلِك مَشْهُورَة مبسوطة فِي الْكَامِل للمبرد وَفِي غَيره على أَن أَبَا زَكَرِيَّا الْموصِلِي حكى فِي تَارِيخ الْموصل عَن غَيره أَن عمرَان هَذَا رَجَعَ فِي آخر عمره عَن رَأْي الْخَوَارِج فَإِن صَحَّ ذَلِك كَانَ عذرا جيدا وَإِلَّا فَلَا يضر التَّخْرِيج عَمَّن هَذَا سَبيله فِي المتابعات وَالله أعلم. (العسقلاني١٩٧٩، ص٤٣٣).

- **المرسل والمنقطع:**

في تعريف المرسل والمنقطع يقول الكوراني: المشهور أن المرسل قول التابعي: قال رسول الله ﷺ كذا، والمنقطع قول من دون التابعي، ويطلق كل منهما على الآخر ما لم يتصل إسناده. (الكوراني،٢٠٠٨، ١٠/٣٢٣).

هذا الذي ذكره الكوراني في تعريف المرسل من أن التابعي إذا رفعه، هو الصحيح، وقد توهم البعض في تعريف المرسل حينما قالوا: هو ما سقط من سنده الصحابي، كالبيقوني في منظومته حينما قال: والمرسل ما منه الصحابي سقط. ينظر: (الحلبي٢٠٠٧، ص١٤)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

• **مراسيل الحسن البصري:**

في صحيح البخاري: في باب خَبَرِ الْمَرْأَةِ الْوَاحِدَةِ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ تَوْبَةَ الْعَنْبَرِيِّ قَالَ قَالَ لِي الشَّعْبِيُّ أَرَأَيْتَ حَدِيثَ الْحَسَنِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَاعَدْتُ ابْنَ عُمَرَ قَرِيبًا مِنْ سَنَتَيْنِ أَوْ سَنَةٍ وَنِصْفٍ فَلَمْ أَسْمَعْهُ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ .

قال الكوراني: أذكر على الحسن البصري كثرة روايته الحديث مرسلًا، وجعل سندًا لإنكاره كون ابن عمر مع جلالة قدره جالسه قريبًا من سنتين ولم يسمع منه إلا حديثًا واحدًا، قيل: كان المانع لابن عمر عن كثرة الرواية أنه كان مشتغلًا بالتأمل في القرآن، وأيضًا لم يكونوا يكتبون الحديث فكان بمرور الزمان يخاف النسيان. (الكوراني،٢٠٠٨، ١١/١٣٢).

مسألة سماع الحسن البصري من ابن عمر اختلف العلماء فيها، فذهب الحاكم وابن حبان إلى أنه لم يسمع منه شيئاً بل قال ابن حبان: لم يشافه ابن عمر. (الكوراني، ٢٠٠٨، ١/١٦٣).

وقال الحاكم: فليعلم صاحب الحديث أن الحسن لم يسمع من ابن عمر شيئاً قط.

وذهب علي بن المديني والامام أحمد ويحيى بن معين إلى أنه رآه وروى عنه ففي سؤالات ابن الجنيد قال رجل ليحيى بن معين وأنا أسمع: سمع الحسن من ابن عمر؟ قال: «نعم، قال الحسن: دخلنا على ابن عمر بالبطحاء. (يحيى بن معين، ١٩٨٨، ص٣١٥).

وذكر الدكتور حاتم العوني سبعة أحاديث رواها الحسن عن ابن عمر. (١٩٩٧، ٤/١٦٣٦ومابعده).

**المطلب الثاني: مسائل مصطلح الحديث المتعلقة بالمتن**

نتطرق في هذا المطلب إلى تلك المسائل الحديثية المتعلقة بالمتن التي أشار إليها الكوراني في كتابه الكوثر الجاري على رياض البخاري وهي قليلة مقارنة بتلك المتعلقة بالسند التي بحثناها في المطلب الأول، وسنذكر هنا تلك المسائل المعدودة التي أشار إليها الإمام الكوراني في كتابه المذكور. وهذه هي المسائل التي وقفت عليها:

• **هل زيادة الثقة حجة:**

في أكثر من عشرة موضعاً يذكر الكوراني أن زيادة الثقة مقبولة، ينظر: (الكوراني٢٠٠٨، (١/٦١ و١١٦ و٢/١٨٧).

وزيادة الثقة هي أن يروي جماعة حديثاً بإسناد واحد، فيأتي بعض الرواة الثقات فيزيد فيه زيادة لم يذكرها غيره من الرواة، سواء كانت الزيادة في السند أم في المتن، أم فيهما جميعاً، وتشمل ما إذا كان الثقة واحداً أم أكثر، أو إذا كانت الزيادة صحيحة أم ضعيفة.

وهكذا يذكر الكوراني الحكم في زيادة الثقة دون أن يذكر أن في المسألة خلاف يذكر السخاوي ستة أقوال للعلماء في حكمها لكنه يقول: واخْتُلِفَ فِي زِيادةِ الثِّقَةِ على أقوالٍ فذَهَبَ



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

الْجُمهورُ مِن الفُقهاءِ وأصحابِ الحديثِ كما حكاه الخطيبُ عنهم إلى قَبُولِها سواءٌ تَعَلَّقَ بها حكْمٌ شَرعيٌّ أم لا، وسواءٌ غَيَّرَتِ الحكْمَ الثابتَ أم لا، وسواءٌ أَوْجَبَتْ نقْصاً مِن أحكامٍ ثَبَتَتْ بخبَرٍ ليست فيه تلك الزيادةُ أم لا، وسواءٌ كانَ ذلك مِن شخْصٍ واحدٍ بأنْ رَواهُ مَرَّةً ناقِصاً ومَرَّةً بتلك الزيادةِ أو كانت الزيادةُ مِن غيرِ مَن رواه ناقِصاً.

ثم ذكر باقي الأقوال فقال: و (القولُ الثاني) أنها لا تُقْبَلُ مُطْلَقاً لا مِمَّنْ رَواهُ ناقِصاً ولا مِن غيرِه، حُكِيَ ذلك عن قومٍ مِن أصحابِ الحديثِ فيما ذكَره الخطيبُ في (الكفايةِ) وابنُ الصَّبَّاغِ في (العُدَّةِ).

و(القولُ الثالثُ) أنها لا تُقْبَلُ مِمَّن رواهُ ناقصاً وتُقْبَلُ مِن غيرِه مِن الثقاتِ، حَكاه الخطيبُ عن فِرقةٍ مِن الشافعيَّةِ، وهو المرادُ بقولي: (وقِيلَ لا مِنْهم). أيْ: لا تُقْبَلُ ممن رواه ناقصاً ثم رواه بتلك الزيادةِ أو رواه بالزيادةِ ثم رواه ناقصاً.

(قولٌ رابعٌ) أنه إنْ كانت الزيادةُ مُغَيِّرَةً للإعرابِ كان الخبرانِ مُتَعارِضَيْنِ، وإنْ لم تُغَيِّرِ الإعرابَ قُبِلَتْ، حكاهُ ابنُ الصَّبَّاغِ عن بعضِ الْمُتَكَلِّمِينَ.

وفيها (قولٌ خامِسٌ) أنها لا تُقْبَلُ إلاَّ إذا أفادَتْ حُكْماً.

وفيها (قولٌ سادسٌ) أنها تُقْبَلُ في اللفْظِ دونَ المعنى، حكاهما الخطيبُ.

- **وهم الراوي بسبب لفظ في الحديث:**

في شرح حديث زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ قَالَتْ لَمَّا جَاءَ نَعْيُ أَبِي سُفْيَانَ مِنَ الشَّأْمِ دَعَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ - رضى الله عنها - بِصُفْرَةٍ فِي الْيَوْمِ الثَّالِثِ، قال الكوراني: أم حبيبة هذه بنت أبي سفيان، أم المؤمنين، واسمها رملة، كذا في جميع النسخ، والظاهر أن لفظ: الشام، وهم من سفيان بن عيينة؛ لاتفاقهم على أن أبا سفيان مات بالمدينة، أو لفظ ابن ساقط من أبي سفيان، فإنّ يزيد مات بالشّام، وقد روي هذا الحديث من طريق مالك والثوري في أبواب العدة، وليس فيه ذكر الشام، وهذا هو الظاهر؛ فإن روايتها في العدّة حين توفي أبوها أبو سفيان فيبعد حذف الابن والله أعلم، وعلى هذا لفظ: جاء، أيضًا ليس في موضعه. (الكوراني،٢٠٠٨، ٣٠٧/٣).

نسبة الوهم لسفيان بن عيينة نفاه العيني فقال: يزِيل هَذَا الظّن أَن البُخَارِيّ روى الحَدِيث فِي (الْعدَد) من طَرِيق مَالك وَمن طَرِيق سُفْيَان الثَّوْريّ كِلَاهُمَا عَن عبد الله بن أبي بكر بن حزم عَن حميد بن نَافِع بِلَفْظ: (حِين توفّي أَبوهَا أَبُو سُفْيَان) ، وَفِيه تَصْرِيح بِأَن الَّذِي جَاءَ نعيه هُوَ أَبُو سُفْيَان لَا نعي ابْن سُفْيَان. فَإِن قلت: هما لم يذكرَا فِي روايتهما: من الشَّام؟ قلت: لَا يلْزم من عدم ذكرهمَا من الشَّام أَن يكون ذكر سُفْيَان بن عُيَيْنَة من الشَّام وهما، وَهُوَ إِمَام فِي الحَدِيث حجَّة ثَبت. (العيني، بدون تاريخ، ٦٦/٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

لكن الحافظ ابن حجر أثبت نسبة الوهم للراوي ولكنه رأى بأنه قد تكون الحادثة قد تكررت عند وفاة أبي سفيان ويزيد فقال في الفتح مبيناً تلك الطرق: وَفِي قَوْلِهِ مِنَ الشَّامِ نَظَرٌ لِأَنَّ أَبَا سُفْيَانَ مَاتَ بِالْمَدِينَةِ بِلَا خِلَافٍ بَيْنَ أَهْلِ الْعِلْمِ بِالْأَخْبَارِ وَالْجُمْهُورُ عَلَى أَنَّهُ مَاتَ سَنَةَ اثْنَتَيْنِ وَثَلَاثِينَ وَقِيلَ سَنَةَ ثَلَاثٍ وَلَمْ أَرَ فِي شَيْءٍ مِنْ طُرُقِ هَذَا الْحَدِيثِ تَقْيِيدَهُ بِذَلِكَ إِلَّا فِي رِوَايَةِ سُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةَ هَذِهِ وَأَظُنُّهَا وَهْمًا وَكُنْتُ أَظُنُّ أَنَّهُ حُذِفَ مِنْهُ لفظ بن لِأَنَّ الَّذِي جَاءَ نَعْيُهُ مِنَ الشَّامِ وَأُمُّ حَبِيبَةَ فِي الْحَيَاةِ هُوَ أَخُوهَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ الَّذِي كَانَ أَمِيرًا عَلَى الشَّامِ لَكِنْ رَوَاهُ الْمُصَنِّفُ فِي الْعِدَدِ مِنْ طَرِيقِ مَالِكٍ وَمِنْ طَرِيقِ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ كِلَاهُمَا عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ حَزْمٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ نَافِعٍ بِلَفْظِ حِينَ تُوُفِّيَ عَنْهَا أَبُوهَا أَبُو سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ فَظَهَرَ أَنَّهُ لَمْ يَسْقُطْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَمْ يَقُلْ فِيهِ وَاحِدٌ مِنْهُمَا مِنَ الشَّامِ وَكَذَا أَخْرَجَهُ بن سَعْدٍ فِي تَرْجَمَةِ أُمِّ حَبِيبَةَ مِنْ طَرِيقِ صَفِيَّةَ بِنْتِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْهَا ثُمَّ وَجَدْتُ الْحَدِيث فِي مُسْنَد بن أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ نَافِعٍ وَلَفْظُهُ جَاءَ نَعْيُ أَخِي أُمِّ حَبِيبَةَ أَوْ حَمِيمٍ لَهَا فَدَعَتْ بِصُفْرَةٍ فَلَطَخَتْ بِهِ ذِرَاعَيْهَا وَكَذَا رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ عَنْ هَاشِمِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ شُعْبَةَ لَكِنْ بِلَفْظِ إِنَّ أَخًا لِأُمِّ حَبِيبَةَ مَاتَ أَوْ حَمِيمًا لَهَا وَرَوَاهُ أَحْمَدُ عَنْ حَجَّاجٍ وَمُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرٍ جَمِيعًا عَنْ شُعْبَةَ بِلَفْظِ أَنَّ حَمِيمًا لَهَا مَاتَ مِنْ غَيْرِ تَرَدُّدٍ وَإِطْلَاقُ الْحَمِيمِ عَلَى الْأَخِ أَقْرَبُ مِنْ إِطْلَاقِهِ عَلَى الْأَبِ فَقَوِيَ الظَّنُّ عِنْدَ هَذَا أَنْ تَكُونَ الْقِصَّةُ تَعَدَّدَتْ لِزَيْنَبَ مَعَ أُمِّ حَبِيبَةَ عِنْدَ وَفَاةِ أَخِيهَا يَزِيدَ ثُمَّ عِنْدَ وَفَاةِ أَبِيهَا أَبِي سُفْيَانَ لَا مَانِعَ مِنْ ذَلِكَ وَاللَّهُ أَعْلَمُ.(العسقلاني١٩٧٩، ١٤٧/٣).

- **الحديث الشاذ بسبب لفظ الحديث:**

في الحديث الذي رواه البخاري في باب باب الْبَيْعِ وَالشِّرَاءِ مَعَ النِّسَاءِ عن عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ - رضى الله عنهما أَنَّ عَائِشَةَ رضى الله عنها سَاوَمَتْ بَرِيرَةَ فَخَرَجَ إِلَى الصَّلاَةِ، فَلَمَّا جَاءَ قَالَتْ إِنَّهُمْ أَبَوْا أَنْ يَبِيعُوهَا، إِلاَّ أَنْ يَشْتَرِطُوا الْوَلاَءَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((إِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). قُلْتُ لِنَافِعٍ حُرًّا كَانَ زَوْجُهَا أَوْ عَبْدًا فَقَالَ مَا يُدْرِينِى.

علق الكوراني على الحديث: جاء في رواية مسلم أنَّه عبد، واسمه مغيث، قال النووي: رواية الثِّقات أنَّه عبد، ورواية كونه حرًا شاذة لا يعتد بها. (الكوراني،٢٠٠٨، ٤٣٣/٤)

بين أن الرواية الشاذة لا تؤخذ بها، وهي رواية الراوي الثقة مخالفة من هو أوثق منه. وتمام قول النووي في شرح مسلم: وَأَجْمَعَتِ الْأُمَّةُ عَلَى أَنَّهَا إِذَا عُتِقَتْ كُلُّهَا تَحْتَ زَوْجِهَا وَهُوَ عَبْدٌ كَانَ لَهَا الْخِيَارُ فِي فَسْخِ النِّكَاحِ فَإِنْ كَانَ حُرًّا فَلَا خِيَارَ لَهَا عِنْدَ مَالِكٍ وَالشَّافِعِيِّ وَالْجُمْهُورِ.

وَقَالَ أَبُو حَنِيفَةَ: لَهَا الْخِيَارُ، وَاحْتَجَّ بِرِوَايَةِ مَنْ رَوَى أَنَّهُ كَانَ زَوْجُهَا حُرًّا، وَقَدْ ذَكَرَهَا مُسْلِمٌ مِنْ رِوَايَةِ شُعْبَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ لَكِنْ قَالَ شُعْبَةُ: ثُمَّ سَأَلْتُهُ عَنْ زَوْجِهَا، فَقَالَ: لَا أَدْرِي، وَاحْتَجَّ الْجُمْهُورُ بِأَنَّهَا قَضِيَّةٌ وَاحِدَةٌ وَالرِّوَايَاتُ الْمَشْهُورَةُ فِي صَحِيحِ مُسْلِمٍ وَغَيْرِهِ: أَنَّ زَوْجَهَا


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

كَانَ عَبْدًا، قَالَ الْحُفَّاظُ: وَرِوَايَةُ مَنْ رَوَى أَنَّهُ كَانَ حُرًّا غَلَطٌ وَشَاذَّةٌ مَرْدُودَةٌ لِمُخَالَفَتِهَا الْمَعْرُوفَ فِي رِوَايَاتِ الثِّقَاتِ، وَيُؤَيِّدُهُ أَيْضًا قَوْلُ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ عَبْدًا وَلَوْ كَانَ حُرًّا لَمْ يُخَيِّرْهَا، رَوَاهُ مُسْلِمٌ. (١٩٧٢، ١٠/١٤١).

- **المدرج في متن الحديث:**

في شرح حديث أبي هريرة الذي رواه البخاري قال: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لِلْعَبْدِ الْمَمْلُوكِ الصَّالِحِ أَجْرَانِ)) وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْلاَ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْحَجُّ وَبِرُّ أُمِّي، لأَحْبَبْتُ أَنْ أَمُوتَ وَأَنَا مَمْلُوكٌ.

يقول الكوراني في شرح قوله: (والذي نفسي بيده لولا الجهاد وبِرُّ أمي لأحببت أن أموت وأنا عبدٌ مملوكٌ) هذا من كلام أبي هريرة، وإنما جُعل المانع من أن يحب أن يموت مملوكًا الجهاد، لأن العبد لا يقدر عليه إلا بإذن سيده. وكذا الأم لا يجوزُ الجهاد إلا برضاها. وقال الخطابي: هذا من كلام رسول الله ﷺ، ولله أن يمتحن عباده بما شاء. وهذا الذي قاله لا يُوافَقُ عليه؛ فإن رسول الله ﷺ لم يكن له أم. وحَمْله على أمه الرضاعية، لا يقول به مَنْ له ذَوْقٌ. وأيضًا رتبته أجل من ذلك، ألا ترى أن من شرط النبوة الحريةُ، فكيف يتمنى الرق سيد الرسل، هذا، وقد صرّح الإسماعيلي ومسلم بذلك هكذا: والذي نفس أبي هريرة بيده لولا برُّ أمي.(الكوراني،٢٠٠٨، ١٩٣/٥).

المدرج: هو زيادة الراوي في الحديث ما ليس منه سواء في السند أو في المتن، وما ذكره الخطابي قاله أيضاً الكرماني والراجح أنه مدرج ، وقال ابن حجر: وَجَزَمَ الدَّاوُدِيُّ وابن بَطَّالٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ بِأَنَّ ذَلِكَ مُدْرَجٌ مِنْ قَوْلِ أَبِي هُرَيْرَةَ وَيَدُلُّ عَلَيْهِ مِنْ حَيْثُ الْمَعْنَى قَوْلُهُ وَبِرُّ أُمِّي فَإِنَّهُ لَمْ يَكُنْ لِلنَّبِيِّ ﷺ حِينَئِذٍ أُمٌّ يَبَرُّهَا وَوَجَّهَهُ الْكِرْمَانِيُّ فَقَالَ أَرَادَ بِذَلِكَ تَعْلِيمَ أُمَّتِهِ أَوْ أَوْرَدَهُ عَلَى سَبِيلِ فَرْضِ حَيَاتِهَا أَوِ الْمُرَادُ أُمُّهُ الَّتِي أَرْضَعَتْهُ اهـ. وَفَاتَهُ التَّنْصِيصُ عَلَى إِدْرَاجِ ذَلِكَ. (العسقلاني ١٩٧٩، ١٧٦/٥).

**أهم نتائج البحث:**

بعد الانتهاء من كتابة هذه الصفحات عن جهود علماء الكرد في خدمة الصحيحين وعن الامام الكوراني ومسائل مصطلح الحديث في كتابه الكوثر الجاري إلى رياض البخاري توصلنا إلى نتائج أهمها:

- أن لعلماء الكرد جهود مشكورة في خدمة صحيح البخاري من شتى النواحي فمنهم من ألف في ترجمة رجاله ومنهم من كتب تعليقات مهمة عليه ومنهم من فصل في شرحه من الناحية الفقهية واللغوية كما فعله الكوراني في الكوثر الجاري، ومنهم من شرحه باللغة الكردية كما قام به رشيد بك بابان.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- أن الكوراني من العلماء الكرد الذين رحلوا كثيراً في طلب العلم فبعد ولادته في جلولاء عام ٨١٣هـ، رحل وهو شاب لم يبلغ العشرين من عمره إلى بغداد وحصن كيفا وديار بكر ودمشق والقاهرة.
- أن الكوراني تتلمذ على يد كبار العلماء في عصره ومنهم الحافظ ابن حجر العسقلاني صاحب كتاب فتح الباري.
- أن الكوراني أصبح من العلماء المشهورين وهو لم يبلغ الأربعين من عمره فألف وعاشر كبار رجالات الدولة الاسلامية من سلاطين المماليك وسلاطين بني عثمان.
- شارك الكوراني في فتح القسطنطنية مع السلطان العثماني محمد الفاتح وكان السلطان قد تتلمذ على يديه وكان مربياً له.
- ألف الكوراني مصنفات عدة في كثير من العلوم فألف في التفسير وشرح البخاري وألف في أصول الفقه وفي النحو والقراءات.
- أودع الكوراني في كتابه الكوثر الجاري كثيراً من العلوم ففيه الاهتمام بالمسائل الفقهية وفي اللغة ومسائل في أصول الفقه.
- كذلك ذكر في كتابه الكثير من المسائل المتعلقة بمصطلح الحديث تدل على معرفته بهذا العلم، ولا غرابة فإنه قرأه على يد الحافظ ابن حجر في القاهرة.
- نجد أن للكوراني آراء في كثير من مسائل مصطلح الحديث وأنه على دراية تامة بهذا العلم ولأنه تتلمذ على يد الحافظ ابن حجر العسقلاني وهو من كبار المحدثين في عصره لذا كان بيانه لمسائل المصطلح يدل على علو كعبه وترجيحاته أيضاً دليل على ذلك.
- كما أن الكوراني ذكر في الكوثر الجاري مسائل الفقه واللغة وأصول الفقه فكذلك ذكر الكثير من مسائل مصطلح الحديث.
- لأهمية إستخراج هذه المسائل من الكوثر الجاري حتى نثبت أن الكوراني كان على دراية تامة بهذا العلم وإن كان في كثير من المواضع نقل هذه المسائل عن غيره من العلماء وهذا دأب أكثر العلماء من أئمة المذاهب وفي مختلف العلوم إلا أنه يرجح أحياناً وينتقد أيضاً.
- تطرق الكوراني في شرحه إلى مسائل مصطلح الحديث المتعلقة بالسند والمتن وأورد آراء المحدثين الذين صنفوا قبله في علم المصطلح.

**المصادر والمراجع:**


- الباباني، إسماعيل بن محمد أمين (١٩٥١) هدية العارفين أسماء المؤلفين وآثار المصنفين،ط١، أسطنبول، المطبعة البهية.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- البُستي، محمد بن حبان (١٩٧٦) المجروحين من المحدثين والضعفاء والمتروكين،ط١، ت محمود إبراهيم زايد، حلب، دار الوعي.
- البقاعي، إبراهيم بن حسن (٢٠٠١) عنوان الزمان بتراجم الشيوخ والأقران، ت: د.حسن حبشي، ط١، القاهرة، دار الكتب والوثائق القومية.
- الجديع، عبد الله بن يوسف (٢٠٠٣) تحرير علوم الحديث، ط١، بيروت، مؤسسة الريان.
- الحسيني، محمد عصام (١٩٨٧) إتحاف القاري بمعرفة جهود وأعمال العلماء على صحيح البخاري، ط١، دمشق، اليمامة للطباعة والنشر.
- الحلبي، علي حسن، (٢٠٠٧) التعليقات الأثرية على المنظومة البيقونية،ط٦، الدمام، دار ابن الجوزي.
- حمو، عمار محمد حسن(٢٠١١) الكوثر الجاري إلى رياض احاديث البخاري، تحقيق القسم الأول إلى نهاية كتاب الوتر،رسالة دكتوراه، قدمت إلى جامعة أم درمان الإسلامية، كلية أصول الدين،قسم السنة وعلوم الحديث، منشور في المكتبة الشاملة إلكترونياً.
- الحموي، محمد بن إبراهيم، (١٩٨٦) المنهل الروي في مختصر علوم الحديث النبوي تحقيق: محي الدين رمضان،ط٢، دمشق، دار الفكر.
- الخطيب البغدادي، (١٤٣٢ه) الكفاية في علم الرواية، تحقيق: ماهر ياسين الفحل، ط١، الدمام، دار ابن الجوزي.
- الخطيب البغدادي (١٩٨٩) الجامع لأخلاق الراوي وآداب السامع، ت: د. محمود الطحان، ط١، مكتبة المعارف، الرياض.
- الذهبي، أبو عبد الله محمد بن أحمد، (١٩٨٥) سير أعلام النبلاء، ت: مجموعة من المحققين بإشراف الشيخ شعيب الأرناؤوط، بيروت، مؤسسة الرسالة.
- الزحيلي، د. الدكتور محمد مصطفى (٢٠٠٦) الوجيز في أصول الفقه الإسلامي، ط٢، دمشق، دار الخير.
- الزركلي، خير الدين بن محمود، (٢٠٠٢) الأعلام، ط١٥، بيروت، دار العلم للملايين.
- السخاوي، محمد بن عبد الرحمن، بلا تاريخ، الضوء اللامع لأهل القرن التاسع، ط١، بيروت، مكتبة الحياة.
- السخاوي، محمد بن عبد الرحمن(٢٠٠٣) فتح المغيث بشرح الفية الحديث للعراقي، ت: علي حسين، ط١، مصر، مكتبة السنة.
- السيوطي، عبد الرحمن بن أبي بكر (١٩٢٧) ت: فيليب حتي، بيروت، المكتبة العلمية.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- الشهرزوري، عثمان بن عبد الرحمن، ابن الصلاح (١٩٨٦) معرفة أنواع علوم الحديث، ويُعرف بمقدمة ابن الصلاح،ت: نور الدين عتر، سوريا، دار الفكر.
- الشوكاني، محمد بن علي (بلا تاريخ) البدر الطالع بمحاسن من بعد القرن السابع، بيروت، دار المعرفة.
- الصنعاني، محمد بن إسماعيل، (١٩٩٧) توضيح الأفكار لمعاني تنقيح الأنظار، ت: أبو عبد الرحمن صلاح بن محمد بن عويضة، بيروت، دار الكتب العلمية.
- الطحان، محمود بن أحمد، (٢٠٠٤) تيسير مصطلح الحديث،ط١٠، الرياض، مكتبة المعارف.
- الطيبي، الحسين بن محمد (٢٠٠٩) الخلاصة في معرفة الحديث، ت: أبو عاصم الشوامي الأثري، عمّان، المكتبة الإسلامية.
- العسقلاني، أحمد بن علي بن حجر(١٩٦٩) إنباء الغمر بأبناء العم، مصر، المجلس الأعلى للشئون الإسلامية.
- العسقلاني، أحمد بن علي بن حجر(١٩٧٩) فتح الباري شرح صحيح البخاري، ت: محمد فؤاد عبد الباقي،ط٣ بيروت، دار المعرفة.
- العسقلاني، أحمد بن علي بن حجر، (٢٠٠٨) نُزْهَةُ النَّظَرِ فِي تَوضِيحِ نُخْبَةِ الْفِكَرِ فِي مُصْطَلَحِ أَهْلِ الأَثَرِ، ت: د. عبد الله بن ضيف الله الرحيلي، ط٢، المدينة المنورة، جامعة طيبة.
- العوني، حاتم بن عارف، (١٩٩٧) المرسل الخفي وعلاقته بالتدليس، ط١، الرياض، دار الهجرة.
- العوني، حاتم بن عارف، (٢٠٠٧) شرح موقظة الذهبي، ت: عدنان بن زايد الفهمي، بدر بن زايد الفهمي، ط١، الدمام، دار ابن الجوزي.
- العيني، محمود بن أحمد، بلا تاريخ، عمدة القاري شرح صحيح البخاري، بيروت، دار إحياء التراث العربي.
- الغزي، تقي الدين بن عبد القادر (١٩٨٣) الطبقات السنية في تراجم الحنفية، ت: د. عبد الفتاح محمد الحلو،ط١، حلب، دار الرفاعي.
- القاري، محمد، أبو الحسن نور الدين الملا الهروي، (بدون تاريخ) شرح نخبة الفكر في مصطلحات أهل الأثر، ت: محمد نزار تميم وهيثم نزار تميم، قدم له: الشيخ عبد الفتح أبو غدة، بيروت، دار الأرقم.
- الكوراني، أحمد بن إسماعيل (٢٠٠٥) الكوثر الجاري إلى رياض أحاديث البخاري، ت: أحمد عزو عناية، ط١، بيروت، دار إحياء التراث العربي.
- المدرس، عبد الكريم، (١٩٨٣)علماؤنا في خدمة العلم والدين، بغداد.

• المقريزي، أحمد بن علي (٢٠٠٢) درر العقود الفريدة في تراجم الأعيان المفيدة، ت: د. محمود الجليلي، ط١، بيرون، دار الغرب الاتتسلامي.
• النووي، يحيى بن شرف، (١٩٧٢) المنهاج شرح صحيح مسلم بن الحجاج، ط٢، بيروت، دار إحياء التراث العربي.
• يحيى بن معين، (١٩٨٨) سؤالات ابن الجنيد لأبي زكريا، ط١، ت أحمد محمد نور سيف، المدينة المنورة، مكتبة الدار.


## بابەت وبوچونێت احمد اسماعيل گورانی د (مصطلح الحديث) ێ دا
## د کتێبا وی (الكوثر الجاري الى رياض البخاري) دا


**پۆختە:**

د سەر دەمێ ئەیوبیا دا چونا زانایێت کوردا بۆ دەڤەرێت مسر وشامێ زێدە بو وئەڤ دیاردە بە ردە وام بو تا زە مانێ مەملوکیا و ل سەردەمێ ئوسمانیا بەرفرەهتر لێ هات وزانایێت کورد بەرێ خودا وەلاتێ حیجازێ وهەروسا چونە ب ئالیێ ئەنادولێ ژی ڤە.

ئێک ژوان زانایێت ناڤدار یێ هەر ژدەست پێکا ژیانا خو ژوەلاتێ خو دە رکەتی وبەرەف شامێ وپاشی ل مسرێ ودوماهیا ژی ل وەلاتێ ئەنادولێ خو جهبوی ئیمام احمدێ کورێ اسماعیل ێ گورانی بو یێ کو ل سالا ٨١٣ مشەختی بوی ول سالا ٨٩٣ مشەخی مری.

ئەڤی زانایێ ناڤدار ژیانا خو باریتر ژدەرڤەی کوردستانێ بوراند، ل وەلاێ مسرێ وشامێ و دوماهیێ ل ئەنادولێ ل بروسایێ واستانبولێ دەرباس کر.

دژیێ خودا ل دەسپێکێ دەرس ل دەف زانایێت ناڤدار یێت وی سەر دەمی خواند، ئێک ژوان یێ هەرێ ناڤدار ابن حجر العسقلانی بو.

هەر وسا ناڤبری هژمارەکا زێدە یا کتێبا دانان، دبارا پتر بابەتێت شەرعی دا وئێک ژ کتێبێت وی یێت زێدە بەلاڤەبوی دەنگێ وێ کتێبا وی (الكوثر الجاري) بو یا داناي دشروڤەکرنا حە دیسێت صە حیحا بوخاریدا.

دڤێ کتێبێدا ناڤبری ئاماژە یا ب زور بابەتا دای وەکی : زمان وفقه وعەقیدە .....هتد.

ژبە رکو ناڤبری دزوربەیا بابەتادا کتێب یێت دانایێن بەلێ د بوارێ (مصطلح الحديث) نە بت لە و من ڤیا ڤان بامتە کوم ب کەم دڤێ گوتارێ دا.

وبابەت هانە دابەش ۆرن بو ل سەر دوو پشکا:

پشکا ئێکێ بونە دوو: باس یەکێ ل دۆر بەشداریکرنا زانایێت کوردا دخزمەتا صە حیحا بوخاریدا وباسێ دووێ ل دۆر ژیانا ئیمامێ گورانی وبونا وی وگەریانێت وی وهەروسا سەیدا وقوتابیێت وی.




Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ویشکا دویٚ: دیٚ یا تەرخانکریبت بو بابەت وبۆچۆنێت گورانی د بواریٚ عیلمیٚ مصطلح الحدیث دا دشە رحا صە حیحا ئیمامیٚ بوخاری دا، هیڤیدارم خزمەتەکا بچویک بت بو دیارکرنا رەنج وبلیمەتیا ڤی ئیمامی وخودیٚ هاریکاربت.

**پەیڤێن سەرەکی**: *گۆرانی، (الكوثر الجاري)، (مصطلح الحديث)، زانایێن کورد، (صحيح البخاري).*

## The opinions of Ahmed bin Ismail Al-Kourani in the terminology of hadith through his book Al-Kawthar Al-Jari to Riyad Al-Bukhari

**Abstract**:

The Ayyubid era is considered the beginnings of the influx of Kurdish scholars, the journey to the countries of Egypt and the Levant for the purpose of knowledge, benefiting and benefiting, and these trips continued and increased in the Mamluk era and after the Ottoman era, and these scholars had a prominent role in advancing the scientific movement in the lands of Islam, so many scholars were taught by them, and the Islamic library was filled with their books. In addition to the trips of these people, many schools spread in those major Kurdish cities, in Hasankeyf, Diyarbakir, Erbil, Ras al-Ain and other Kurdish cities, and they housed thousands of students of knowledge among their halls, and the princes and leaders of the Kurds played a generous role in supporting these schools and endowed a lot of lands on these schools.

One of the tributaries in which Kurdish scholars contributed to the prosperity of the Islamic library was the service of the Two Sahihs, they wrote a lot of books, explaining and studying the secrets of Sahih al-Bukhari and Muslim. I mentioned what I found of the works of Kurdish scholars in the service of Sahih al-Bukhari.

Among the scholars whose role was prominent in the ninth century AH is Imam Ahmed bin Ismail Al-Kourani, he left his country while he was still a young man and wandered in most scientific centers and became famous while he had not completed the fourth decade of his life, and he composed important works on interpretation, hadith, and fundamentals, indicating the height of his heels in the legal sciences, and it was a reason for him to obtain high ranks among the sultans of his time, whether in Egypt or in the lands of the Romans.

His writings were of interest to researchers, as a lot was written about him and his great writings became a hotbed for researchers to obtain university degrees, as well as a lot of research was written about them, but his opinions in the science of hadith terminology were not written by anyone and they are scattered in his book Al-Kawthar Al-Jari, I tried to collect them in this modest research with comparing it with the sayings of other scholars who wrote in this science.

I hope that what I have done will serve the efforts of these scholars and this great scholar, and success is from God alone.

**Keywords:** Al-Gurani, Al-Kawthar Al-Jari, Hadith term, Kurdish scholars, Sahih Al-Bukhari.

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# التراث الثقافي والحضاري الكردي في كتابات الرحالة خلال القرن السابع عشر الميلادي، دراسة في كتابات الرحالة "أوليا جلبي" إلى كردستان ١٠٦٥هـ/ ١٦٥٥م

د. أحمد سعيد السيد زيدان

كلية الآداب-جامعة دمنهور /جمهورية مصر العربية

**الملخص:**

الهوية الكردية هوية مميزة، و لها أسس راسخة في تكوين الأمة الكردية، وتتفق الهوية الكردية فيما بينها على عدة أسس وهي وحدة اللغة، ووحدة التاريخ، ووحدة الثقافة، ووحدة المصير. ومن هذا المنطلق كان الباعث لاختيار موضوع الدراسة للتنقيب عن التراث الثقافي والحضاري الكردي كباعث من بواعث القومية الكردية، حيث أن التراث الكردي تراث مميز، والتمسك به وتنميته التنمية المستدامة يساعد على استمرارية الهوية الكردية، وخاصة مع زيادة التحديات في عصر العولمة، والذي تميز بتداخل الثقافات مع انتشار الإنترنت ووسائل التواصل الاجتماعي، وقد يتسبب في حال عدم أخذ الحيطة إلى تحلل القيم المجتمعية وبالتالي القضاء على الهوية المميزة للشعوب.

"أوليا جلبي" خلال رحلته إلى كردستان خلال القرن السابع عشر الميلادي، حيث سيتم تناول المظاهر الحضارية الكردية التي وصفها من خلال النقد والتحليل، وذلك من خلال دراسة موضوعات تتعلق بنمط الحياة والعادات والتقاليد، والحرف والصناعات الكردية، والتراث العمراني الكردي من تصميم للمدن والقلاع والبيوت، والفولكلور الكردي.

وفيما يلي سوف يتم تناول مظاهر الحياة في كوردستان خلال فترة الدراسة من خلال مبحثين أساسيين، يتعلق الأول منها، ببعض المظاهر الحضارية في كوردستان من خلال رؤية أوليا جلبي؛ وأما المبحث الثاني فيتعلق بالعلاقات بين الأكراد والعثمانيين، وذلك من خلال دراسة الظروف التي ارتبطت بهجوم العثمانيين على بدليس.

**الكلمات الدالة:** *الامارات الكردية، الرحلات، اوليا جلبي، بدليس، الحضارة*

**أدب الرحلات و اسبابه:**

منذ أن وطأت قدم الإنسان على هذه الأرض وهو يحاول جاهداً استكشاف ما يحيط به من أسرارها قاصداً التعرف على المجهول منها والسيطرة على ربوعها والاستفادة من خيراتها وأدواتها وكائناتها، فأخذ يتنقل من مكان إلى آخر في رحلة يومية استكشافية يتعرف فيها على ما يحيط



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

به من أراض غامضة ومناطق وعرة وموانع طبيعية في ظروف مناخية قاسية أحياناً؛ لأنه لم يتعود على مثلها في بيئته الأصلية. وكانت عدته في هذه الرحلة بدائية تعتمد على الطبيعة وما جابت به من دواب وحيوانات وأدوات صاحبته فيها لكشف المجهول. وقد استنهضت هذه المهمة قدراته البدائية المحدودة، فراح يفكر ويفكر في قهر الصعاب واجتياز الموانع والعقبات لتذليل الطبيعة ومكوناتها وأدواتها وكائناتها لخدمة أغراضه، ومطالبه، وتحقيق طموحاته، وآماله. وتبرز قيمة الرحلات كمصدر لوصف الثقافات الإنسانية، ولرصد بعض جوانب حياة الناس اليومية في مجتمع معيَّن خلال فترة زمنية محددة. ولهذا فللرحلات قيمة تعليمية حيث أنها أكثر المدارس تثقيفاً للإنسان وإثراء لفكره وتأملاته عن نفسه وعن الآخرين. وتصور كتابات الرحالة، أيا كانت توجهاتهم الفردية، ونزعاتهم الشخصية، تصور إلى حد كبير ملامح حضارة العصر الذي عاشوا فيه، كما تضيف الكثير من عناصر ثقافة البلدان التي ذهبوا إليها، وأحوال الشعوب التي اختلطوا بها، سواء كانت الرحلة فعلية أو من نسج قصص الخيال مثل رحلات السندباد البحري السبع التي وردت في حكايات ألف ليلة وليلة (جلبي، ٢٠٠٢، صـ ٥). ويدعم الرحالة كتاباتهم بانطباعاتهم الشخصية سواء كانت سلباً أو إيجاباً حسب الرؤى الخاصة بهم. وتسجل هذه الكتابات معلومات قيمة في فترات سابقة من الزمان فقد يغفلها كتاب التاريخ أو تندر الكتابة عنها، وهي وجهة نظر لها احترامها وفائدتها، فقد تركز أحياناً على مسائل دقيقة، كأن تكشف هذه الكتابات عن لغات مجهولة أو لهجات غير مسجله في كتب اللغات أو تراث شعبي غير مدون، أو تكتشف عادات وتقاليد نادرة في مناطق نائية بين فئات محدودة من أفراد الشعب أو قبائل تعيش في أقاليم مجهولة أو مجموعات بدائية لا تميل إلى الاختلاط وتؤثر الانعزال والانطواء عن العالم (جلبي، ٢٠٠٢، صـ ٧).

وأما العوامل التي دفعت الرحالة إلى القيام برحلاتهم المتعددة والطويلة في أرجاء المعمورة كثيرة ومنها (جلبي، ٢٠٠٢، صـ ٨- ١٠):

١- **طلب العلم:** تعتبر الرحلة من أهم وسائل طلب العلم والمعرفة والتفقه في الدين لدى المسلمين، فقد كان طلاب العلم بسبب ندرة الكتب ينتقلون بين المراكز العلمية والحضارية طلباً للعلم على يد مشاهير الفقهاء، والصوفية، والمحدثين، واللغويين، والفلاسفة، والرياضين، والمنجمين.

٢- **التجارة:** اتسع نطاق التجارة عند المسلمين اتساعاً لم يبلغه عند شعب آخر قبل اكتشاف أمريكا، فانتشرت قوافل المسلمين في معظم أنحاء العالم، وخاضت سفنهم البحار والمحيطات، وازدهرت على أيديهم الطرق التجارية بين بحار الصين وآسيا الوسطى وسواحل بحر البلطيق والأندلس وشواطئ المحيط الأطلسي والبحر المتوسط وساحل أفريقيا الشرقي، وجزر المحيط الهندي، وصحاري السودان. وكان التجار يحملون السلع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بين الأسواق المختلفة في العالم، ويقومون بالرحلات الطويلة في هذا المجال. وقد كان بعض التجار من طائفة الفقهاء ويجمعون بين التجارة وطلبة العلم من وراء رحلاتهم الطويلة تأكيداً للفائدة.

٣- **الحج:** وكان الحج من أهم العوامل التي دفعت بالمسلمين إلى الرحلة إلى بيت الله الحرام. وقد انتهز بعض الرحالة هذه الفرصة الطيبة لأداء المشاعر المقدسة ووصف رحلة الحج بما فيها من مشاق السفر ومتعة أداء الفريضة، وقد تحدث بعضهم عن الطرق التي سلكوها والأحداث التي صادفوها ودونوا مشاهداتهم وانطباعاتهم ممزوجة بمشاعرهم الروحية تجاه الأماكن المقدسة.

٤- **نشر الدعوة الإسلامية:** تجوّل بعض الرحالة المسلمين في بعض الديار غير الإسلامية بهدف نشر الدعوة الإسلامية، وقد تحملوا في سبيل ذلك مشاقاً كثيرة وعناءً بالغاً.

٥- **السياحة:** تعتبر الرغبة الشخصية في السفر والسياحة لإشباع هواية الاطلاع على البلاد الأخرى والشعوب الأخرى من أهم العوامل التي تدفع إلى السفر والترحال.

٦- **جمع المعلومات:** هناك نوع آخر من الرحلات وهي الرحلات التي يكلف بها الوالي أحداً من أتباعه لجمع المعلومات عن بعض المناطق التي يريد غزوها وعن بعض الجيوش التي يريد منازلتها. ويلاحظ من خلال الدراسة الحالية، أن الرحلة التي شارك فيها الرحالة أوليا جلبي في كوردستان، قد يكون سببها الأساسي هو جمع المعلومات عن بعض المناطق التي يرغب سيده في غزوها، كما سيتبين من صفحات الدراسة الحالية.

٧- **البعثات الدينية:** وهي البعثات التي أرسلت بطلب من بعض الحكام غير المسلمين. كالبعثة التي أرسلها الخليفة العباسي المقتدر بالله عام ٣٠٩ هـ/ ٩٢١م، إلى بلاد البلغار عندما طلب ملكها بعثة دينية بسبب دخول كثير من البلغار في الإسلام. وقد رأس هذه البعثة "ابن فضلان" الذي وضع كتاباً وصف فيه هذه البلاد وحضارتها، وعادات أهلها، وأحوالهم، وتجارتهم.

**الترجمة الخاصة للرحالة أوليا جلبي:**

أما عن الترجمة الخاصة بالرحالة "أوليا جلبي"، فهو "بن محمد ظلي" ولد في ١٠ المحرم ١٠٢٠هـ/ ٢٥ مارس ١٦١١م. كان أباه يعمل كرئيس للصياغ في قصور السلاطين الذين عاصرهم. وقد ساهم في زخرفة بوابة جامع السلطان أحمد الأول [١٦٠٣ – ١٦١٧م] الذي يقال له في اللغات الأوربية الجامع الأزرق. وشارك في بعض الحروب التي قام بها السلطان " سليمان القانوني" [١٥٢٠ – ١٥٦٦م] على حد قول "أوليا جلبي" نفسه في الجزء الأول من كتابه سياحتنامه. وقد عمر الأب طويلاً حتى قيل أنه ناهز ١١٧ عاماً حين وفاته في جمادى الآخرة ١٠٥٨ هـ/ يوليو ١٦٤٨م. أما



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ فەكولینێن كوردی

والدة الرحالة فهي أبخارية من القوقاز، وتنحدر من عائلة أباظة. ويرجع الفضل في تسمية "أوليا جلبي" بهذا الاسم إلى استاذه الأثير إلى نفسه "أوليا محمد أفندي"[١] الذي كان يعمل إماماً في البلاط السلطاني. ومعنى هذا الاسم في العربية "السيد الولي". أنهى "أوليا جلبي" تعليمه الأول في "كتاب الصبيان" ثم تتلمذ لمدة سبع سنوات على يد شيخ الإسلام "حميد أفندي". وبعد ذلك واظب على الدرس في مدرسة أخرى لمدة أحد عشر عاماً حيث حفظ القرآن الكريم وتعلم الترتيل والتجويد كما درس الشريعة الإسلامية وأتقن العربية والفارسية وأجاد الكتابة بهما، وقرأ تاريخ العرب وشغف بشعر "سعدي الشيرازي" [٦٩١ أو ٦٩٤ هـ/ ١٢٩١ أو ١٢٩٤م] و"جلال الدين الرومي" [ت ٦٧٢ هـ/ ١٢٧٣م] واستشهد بأشعارهما في كتاباته، وتعلمَّ من والده الأعمال اليدوية وصياغة الذهب والفضة (جلبي، ٢٠٠٢، صـ ١٠). وفي ليلة القدر من عام ١٠٤٥ هـ/ ١٦٣٦م اختير لترتيل القرآن الكريم في جامع أيا صوفيا بإستانبول، فلفت الأنظار إليه، وكان من نتيجة ذلك أن قدمه السلحدار[٢] "أحمد أغا" إلى السلطان "مراد الرابع" [١٠٣٢ – ١٠٤٩ هـ/ ١٦٢٣ – ١٦٤٠م] فأمر السلطان بإلحاقه بمدرسة القصر حيث تعلم الموسيقى، وفن الخط، وقواعد اللغة العربية. وقد ساعده ذكائه وفطنته، وروحه المرحة على التقرب من السلطان. وبعد أن واظب على الدرس في هذه المدرسة لمدة أربع سنوات حصل على رتبة جندي في الجيش العثماني وشارك في بعض المعارك على حد قوله في كتابه (جلبي، ٢٠٠٢، صـ ١٠، ١١).

عشق "أوليا جلبي" السفر والترحال منذ بلغ التاسعة عشر من عمره، وقد بدأ أولى جولاته في إستانبول والمناطق المحيطة بها في سنة ١٠٤٠هـ/ ١٦٣٠م، ثم جاب بعض مناطق الأناضول. ويقول أنه رأى رؤيه في المنام حفزته على السفر والترحال، وهي أنه رأى الرسول صلى الله عليه وسلم، فطلب منه الشفاعة والسياحة، فرد الرسول صلى الله عليه وسلم قائلاً اللهم يسر له الشفاعة والسياحة والزيارة والحج بالصحة والعافية. وهذه الرؤيا قاسماً مشتركاً بين الرحالة الأتراك تقريباً؛ فقد ذكرها الرحالة التتري الشهير "عبد الرشيد إبراهيم" الذي طاف تركستان وسيبريا، ومنغوليا، ومنشوريا، واليابان في مطلع القرن العشرين وألف كتاباً عن هذه البلاد بالتركية سماه "العالم الإسلامي في أوائل القرن العشرين".

تجول "أوليا جلبي" في مناطق عدة من الإمبراطورية العثمانية إما مرافقاً لبعض الولاة، أو الموظفين الكبار، أو حاملاً للبريد، أو مصاحباً لحاملي البريد، أو مشاركاً في بعض المعارك أو في إخماد بعض الفتن والقلاقل، فقد كان من قوات الفرسان العثمانية عندما تلقى تدريبة وهو في مرحلة الشباب في مدرسة القصر السلطاني (جلبي، ٢٠٠٢، صـ ١١). وقد أدى "أوليا جلبي" فريضة الحج عام ١٠٥٩ هـ/ ١٦٤٩م، وأرجأ الحديث عنها إلى الجزء التاسع من كتابه ولم يذكرها في سياقها الزمني مع أحداث الجزء الثالث. وقد عاش الرحالة ٧١ عاماً ميلادياً تقريباً، أنفق منها



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

نصف قرن على وجه التقريب يجوب مناطق كثيرة ويسجل مشاهداته وملاحظاته في كتابه "سياحتنامه" الذي يحتوي على عشر مجلدات ضخمة وضع آخر لمساته وتنقيباته عليها في أواخر أيامه. والمرجح أنه توفي في عام ١٠٩٤ هـ/ ١٦٨٢م ولا يعرف مكان وفاته بالضبط هل هو في مصر أم في تركيا. ويعتبر "أوليا جلبي" أشهر رحالة تركي، ومن أشهر الرحالة المسلمين عبر التاريخ وربما يأتي ترتيبه بعد "ابن بطوطة". ذاعت شهرته كرحالة في القرن السابع عشر الميلادي، واستحوذ على اهتمام الكتاب والباحثين والمستشرقين لأهمية كتاباته واتساع رقعة الديار التي خاض دروبها وسجل مشاهداته وانطباعاته عنها (جلبي، ٢٠٠٢، ص ١٢).

ولقد زار الرحالة "أوليا جلبي" بعض مناطق بلغاريا، والقازاق في روسيا، والبوسنة، والقيرم، وبلغراد. واشترك في الحرب ضد النمسا، وشاهد بوهيميا [النمسا – المجر] والسويد، حتى هولندا وفيينا. وطاف بمعظم ولايات الأناضول، كما زار الإفلاق والبغدان [رومانيا الحالية] وتراد سيلفانيا الشمالية، واليونان، والمورة، وكريت، وبلاد الأرناؤوط [ألبانيا الحالية]، والدولة الصفوية، والعراق، والحجاز، وسوريا، ومصر، والسودان، والحبشة (جلبي، ٢٠٠٢، ص ١٦).

وأما بالنسبة لأسلوب "أوليا جلبي" في الكتابة، فلقد قرأ كتب الرحلات العربية والفارسية التي ترجمت إلى التركية العثمانية، واستفاد من رحلة ابن بطوطة بنوع خاص، حيث يسير على منواله في الاهتمام بالأساطير الشعبية والخرافات والنوادر، كما تشبع بطريقته في وصف الآثار وتتبع الأحداث التاريخية وتناولها بالشرح والتحليل مضيفاً إليها شيئاً من مشاعره وانطباعاته. والملاحظ على "أوليا جلبي" أنه يتمتع بقوة الملاحظة وبفكر موسوعي ودقة في الملاحظة وتركيز في الاهتمام، وهو صادق في درجات اهتمامه وأمين في نقل المشاهد التي رآها أو التي ركز على رؤيتها، ويتمتع بأسلوب رصين لا يخل من طرافة وخيال خصب كان يمزجه بالمشاهد الواقعية؛ لأنه كان ينقل أحاسيسه وانفعالاته وانطباعاته عن المعالم الحضارية والبشرية التي استرعت انتباهه. ولقد نقل "أوليا جلبي" صوراً حيَّة وصادقة عن مشاهداته، وكانت هناك عاطفة قوية نحو ما يصف وما يصور سواء كانت هذه العاطفة مبعثها الحب والأعجاب أو البغض والكراهية (جلبي، ٢٠٠٢، ص ١٦، ١٧). وكان مغرماً بذكر المواقف الغريبة والنادرة، وشغوفاً بالحديث عن القصص والأساطير والخرافات الخيالية التي سمع بها مهما كانت شطحاتها؛ لأنها تشكل جزءاً من تراث الشعوب. وكان يركز أحياناً على النوادر والغرائب والعجائب ويأتي من أحوال البلاد بما يستغربه الناس، فيشيع الإثارة والبهجة ويجعل القارئ يستمتع بمتابعته. وهو مشاهد جيد يحمل بين جنباته روحاً مرحة وطبيعة قصصه لطيفة. وأسلوبه لا يخلو من الطرافة والجاذبية في عرض الأحداث وإيراد المعلومات. وتأثير عامل الخيال يبدو واضحاً في كتاباته؛ لأنه صاحب خيال خصب يعمله أحياناً. وقد قاده خياله في بعض الأحيان إلى المبالغة والمغالاة وهو يصور



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الأحداث ويجسدها وقد كان يتمتع بقدرة فائقة على التصوير والتجسيد. وكان يلجأ إلى تجسيد الأفكار بصورة وصفية رائعة وملموسة لأثبات ما يرمي إليه من معان وأفكار، ومن الأمثلة على تلك الأفكار، كما أوردها في كتاباته، ما يلي:

- رأيت عصفوراً طار من سطح منزل إلى سطح منزل آخر في مدينة "قارص" بأقصى شرق الأناضول فتجمد في الهواء. [يرمى من وراء ذلك إلى تصوير مدى ما بلغه الطقس من برودة في مدينة قارص؛ لأن درجة الحرارة في الماء قد تصل إلى ما دون العشرين أحياناً].
- إذا أكل الإنسان خروفاً ثم احتسى شربة ماء واحدة من مياه منابع شط العرب التي تمر بديار بكر بالأناضول، فإنه يجوع في التو واللحظة، [ومعنى هذا أنه يرمى إلى وصف مدى صفاء ونقاء وعذوبة وفائدة مياه منابع شط العرب].
- تشتهر منطقة "وان"[٣] في شرق الأناضول بالكرنب الذي تزن كرينتان منه حمل بعير، [وهذا مثال على المبالغة لتوضيح ما بلغة الكرنب في هذه المنطقة من كبر في الحجم] (جلبي، ٢٠٠٢، صـ ١٧، ١٨).
- اشترطت الأفعى التي سدت الثقب الذي حدث في سفينة نوح ومنعتها من الغرق عند قلعة سنجار في ديار بكر بالأناضول. أن يطعمها نوع بلحم إنسان. فجاء جبريل وأصدر أوامره بقتل الأفعى، وعدم تلبية طلبها؛ لأن الله هو الذي جعل نوحاً يتسبب في انقاذ السفينة من الغرق وليست الأفعى. [وهذا مثال على الأساطير الشعبية المرتبطة بالعقيدة] (فهرس المكتبة الوطنية الألمانية).

**ويرى الباحث أن ما يميز رحلة أوليا جلبي خلال فترة الدراسة، هي أولاً**، خبرة أوليا جلبي في مجال السفر والترحال ودقته في نقل الأحداث والتي جعلت من دراسته لأحوال كوردستان، ونقله لظروف الحياة بها، مصدراً هاماً لدراسة التاريخ. **وثانياً** أن أوليا جلبي تميز بالحيادية في نقل الأحداث، لدرجة أنه لم يجد من الحرج في وصف "عبدال خان" خان "بدليس"[٤] بصفات طيبة، وهو عدو سيده. كما أنه وصف الهمجية التي ترتبت على هجوم سيده "ملك أحمد باشا" على التراث الحضاري الكوردي في "بدليس"، وكنتيجة لهجوم سيده "ملك أحمد باشا" على خان "بدليس".

## المبحث الأول:

## بعض المظاهر الحضارية في كوردستان من خلال رؤية الرحالة أوليا جلبي في النصف الثاني من القرن السابع عشر الميلادي:

كانت رحلة "أوليا جلبي" إلى كوردستان، وهي موضوع الدراسة الحالية، ضمن مهمة رسمية، تم تكليفه بها من جانب أعلى الأوساط في الباب العالي حينذاك. وكان أوليا جلبي في خدمة الصدر الأعظم "ملك أحمد باشا" (١٦٠٤– ١٦٦٢م) (جلبي، ٢٠٠٢، صـ ١٩)، والذي أصبح والياً



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

على "ديار بكر"، ثم أناط به السلطان "مراد الرابع" مهمة القضاء على إمارة "بدليس" الكردية وأميرها "عبدال خان"، وكانت رحلات "أوليا جلبي" المكوكية إلى كوردستان، وبرفقة ""ملك أحمد باشا" إلا للتمهيد لهذا الغرض (جلبي، ٢٠٠٨، صـ٦، ٧). وتحرك "أوليا جلبي" من مدينة "اسكودار"[٥] التركية في اليوم الأول من شهر جمادي الأول عام ١٠١٥ هـ، متوجهاً إلى إيالة "وان"، وكان برفقته سبعة من الفرسان (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٦- ١٣). ولقد زار الرحالة "أوليا جلبي" عدداً من المدن والمناطق الحضارية الكردية، ومنها: "ملاطية، وديار بكر، وحزو، وبدليس". ولقد قدم الرحالة في رحلته وصفاً دقيقاً لمشاهداته الحضارية في تلك المدن، فتحدث عن عادات وتقاليد أهلها، وعن مبانيها، وقلاعها، وحياتها الاقتصادية، وهو الأمر الذي يعكس مدى الازدهار الحضاري التي عاشته تلك المدن الكردية، وهو الأمر الذي يعكس أيضاً الهوية الكردية المميزة.

**أولاً، في وصف قلاع وحصون كوردستان:**

يتحدث "أوليا جلبي" بوجه عام عن مدى قوة حصون المدن الكوردية، ففي "ملاطية"، أوضح أن المدينة تحاط بالجبال من جهاتها الأربعة، وبين الجبال توجد سهول فسيحة، وبنيت قلعة ملاطية على قطعة أرض منخفضة، ولا يوجد سور للقلعة خارج المدينة، ولكن مداخلها تسد ليلاً[٦]. أما في "ديار بكر"، فعلى العكس من قلعة ملاطية، فقد بنيت القلعة على قمة جبل (ألبنت)، ووصف أوليا جلبي الجبل بأنه جبل عالي ذو حجارة سوداء. وفي شرق القلعة وإلى الجهة الشمالية، توجد قمة عالية (تناطح السماء)، وبهذا فإن أحد جوانب القلعة عالي، بينما الجوانب الشمالية والغربية وجهة القبلة هي أرض سهلية. ووصف كذلك سور القلعة بارتفاع يصل إلى (٤٠) ذراعاً، ويبلغ عرض الأسس في الأسفل (١٠ أذرع). وسميت القلعة باسم (قرة أمد) وذلك لأنها بنيت من الحجارة السوداء. ولقد أسسها البناؤون على شكل مربع، وبشكل حيث تتقابل كل أبراجها ومسناتها مع بعضها البعض، وفي وقت الحصار يستطيع الموجودون في أبراجها مشاهدة بعضهم البعض، والتعاون فيما بينهم. وبما أن القلعة مبنية على صخور طبيعية وقمة جبلية واحدة، لذا لا يستطيع الأعداء أثناء الحصار من فتح ثقوب في قاعدتها أو التقرب منها كثيراً، والخوف الوحيد على سكان القلعة، من وجهة نظر "أوليا جلبي"، هو ضرب الحصار على أهلها، وإطالة أمده، وفرض المجاعة على سكان القلعة. وميز "أوليا جلبي" قلعة "ديار بكر" عن غيرها من القلاع، فهي لا تشبه باقي القلاع في تكوينها من ثلاثة أو أربعة طوابق، بل تتكون من طابق واحد متين البنيان، وله أربعة أبواب حديدية. ولقد أسست القلعة على صخور طبيعية صلبة وسوداء، بحيث لو ضربت بآلاف المطارق الحديدية فلا تؤثر فيها، كما أنها لا تنفجر بالنار، وهو أمر رآه "جلبي" غريب. ويقول "جلبي" كذلك أنه قام بقياس سور القلعة والبوابات جميعاً بخطواته، فوجدها (١١) ألف خطوة. ويشغل سراي الباشا الزاوية الشرقية من القلعة، وهي محصنة ومنيعة ووعرة، ولم يستطع "جلبي" من قياسها. وبجانب



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

قلعة "ديار بكر" الخارجية، فتوجد قلعة داخلية، ويتكون محيطها من أربعة آلاف خطوة، وتتألف القلعة من (١٥٠) غرفة، وعدد من قاعات الضيوف، وسراي كبير، ومؤسس هذا السراي هو "بيقلي باشا: ١٤٥٨- ١٥٣٣م" وزير السلطان سليم، وهو سراي كبير. وداخل السراي يوجد مضيف قديم، وعلى جدرانه نقوش ومناظر لا مثيل لها إلا في مكان مثل القاهرة بمصر. وبوجه عام، فالقلعة الداخلية متينة (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٤٥، ٤٦). أما قلعة "بدليس"، فيقول أوليا جلبي أنها تعود إلى "الاسكندر الأكبر"، ويسميها اليونانيين باسم "القلعة الكبيرة للإسكندر". وحكومة "بدليس" هي حكومة مستقلة تعود إلى إيالة "وان"، وفي حالة حدوث قتال، أو لأجل العمران في "وان"، يذهب جنود "بدليس" للمساهمة مع حاكم "وان" (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١١٥، ١١٦).

ويتبين من وصف "أوليا جلبي" لقلاع كوردستان، مدى حصانتها، ومدى تطور العمارة الكوردية في بناء تلك القلاع، وخاصة مع وصفه لقلعة "ديار بكر" الحصينة. ولعل اهتمام الأكراد بتحصين قلاعهم عائداً إلى الطبيعة الجغرافية، ولاعتبار هذه المنطقة من مناطق الثغور عبر المراحل التاريخية المختلفة.

**ثانياً، في وصف مدن كوردستان:**

وصف الرحالة التركي "أوليا جلبي" مدينة ملاطية، وأوضح أنه يوجد فيها (٥٢٦٥) بيتاً، وكانت ملبوخة بالطين، وكانت البيوت تتكون من طابقين، ومحاطة بالأسيجة. وتكثر في المدينة البيوت الواسعة التي تحتوي على حدائق ورياض داخلها. وبلغ عدد أحياء ملاطية (٣٢) حياً، وأشهرهم أحياء (الجمعة القديم، وحي الجامع الكبير، وحي الأمير عمر، وحي السراي، وحي البنات، وحي الخانقاة، وحي طوبطاشي، وحي قرخان، وحي جرمك، وحي المدخل المنقوش، وحي الفلاحين، وحي كوجك، وحي أعاراز، وحي الأكراد). ويوجد الأرمن في سبع أحياء من المدينة، ولا وجود لليهود بها، وبلغ عدد جوامع المدينة (٣٢) جامع، وكانت تصلى الجمعة في (١٢) منها، وأشهرها جامع (أولو). وأما بالنسبة للمساجد، فقد انتشرت في أزقتها، ووصل عددها ٢٠ مسجداً، وأقدمها داخل القلعة هو مسجد الأمير عمر، ومسجد قرة خان، ومسجد السراي، ومسجد البنات، ومسجد الخانقاة، ومسجد طوبداشي، ومسجد جرمك، والمسجد المنقوش، ومسجد الفلاحين، ومسجد بكداش أغا، والمسجد الصغير، ومسجد الأكراد. ووجد بالمدينة التكايا، ومنها تكية "غازي سيد الأبطال" داخل حديقة "اسبوزان" -حيث ولد السيد غازي هناك. ومنابع مياه المدينة عذبة وطيبة، وهي تنبع من جبل الفحم، وعيون دير المسيح. ووجد بالمدينة سبعة أسبلة مجاناً لشرب المياه (سبيل خانة). وكانت المدينة تضم عدد (١١) سرايا كبيرة، وبها أموال وبضائع كبار رجالاتها وأغنيائها. وأما بالنسبة للخانات[٧]، فكان أشهرها هو خان (مصطفى باشا السلحدار) والذي كان من معتمدي السلطان (مراد خان)، وضم هذا الخان عدد (١٧٠) غرفة، وكان يعلو سطحها القباب، ولها



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

بوابة حديدية كتبت عليها سنة صنعها. وكان بالمدينة سوق سلطانية عامرة، وكان يتوفر بها أنواع الأقمشة والأمتعة (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٨). وأما بالنسبة لمياه أبار ملاطية، فالمدينة كان بها ألفي بئر، ذوات ماء عذب للشرب ولسقي البساتين، ومن غير هذا العدد فلكل منهم بئره الخاص به يستعمله عند الحاجة، وحتى الذين لا يحتاجون لمياه الآبار، فلهم آبار في بيوتهم (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٠، ٢١).

ويتضح من وصف "أوليا جلبي" للمدينة مدى تقدم الحياة الحضرية بها، ويلاحظ ذلك في عدد المنازل، والحدائق الموجودة بها، وعدد المساجد الكبيرة بالمدينة، وعدد السرايات، والخانات والتي تعكس مقدار غنى أهلها.

وأما "ديار بكر"، فهي مدينة قديمة، وهناك معابد قديمة، وجوامع كبيرة في مركز المدينة، ويقول "أوليا جلبي" نقلاً عن مؤرخوا الروم أن الجامع الكبير بالمدينة، قد أسس في عهد النبي موسى، وهناك كتابات عبرية على أحد الأعمدة الداخلية البيضاء، وكان هذا المكان بمثابة معبد في جميع العصور المتداولة، ويقال أن هذا الجامع هو في مصاف الجامع الكبير في حلب، والجامع الأموي في الشام، والمسجد الأقصى في القدس، والأزهر في مصر، وآيا صوفيا في استانبول. كما أن هناك أدلة عديدة على أنه كان كنيسة ثم حول إلى جامع، فمنارة الجامع الكبير مربعة الشكل تظهر على أنها بنيت لتكون ملائمة للناقوس، وأن المنبر والمحراب هما من الشكل القديم، وتم تزيينه من الداخل بالأضواء والقناديل وفيها أعمدة صغيرة وكبيرة ترفع فوقها ثلاثة طوابق من البناية. وفي داخل هذا الجامع يوجد مسجد منفصل للشافعية ويصلى فيه الشافعية، علماً بأن إستانبول مذهبها حنفي، وأما الشيعة حينها وحالياً فمعظمهم ينتمون للشافعي (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٤٧). وللجامع الكبير أربعة أبواب، والباحة الخارجية منه مفروشة بالمرمر الأبيض، وفي وسط الباحة هناك حوض مزود بمزاريب المياه للتوضؤ فيها، وتحاط الجهات الأربع من الباحة بالمصاطب، ولقد فرشت تلك المصاطب بالمرمر، وبألوانه المختلفة كالسماقي، والزنبوري، والأصفر. وأعمدة المسجد العليا أصغر حجماً من أعمدته السفلى، وللباحة ثلاثة أبواب من الجهات الثلاثة، ولها منارة مربعة الأطراف. وتتسع الباحة لألف مصلي. وجميع سلالمها وسقوفها الداخلية لقببها مطعمة بالنحاس (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٤٧، ٤٨).

كما وصف "أوليا جلبي" كذلك مزارات "ديار بكر"، ومنها مزار قرب سراي الباشا، وهو لشخص وصفه بأنه " مبروك" وهو ابن "خالد بن الوليد"، ويؤرخ "أوليا جلبي" أنه عندما قام الصحابي "خالد بن الوليد" بالحملة على "ديار بكر" وانتزعها من قيصر الروم، وحكم هذه المنطقة، توفي ابنه هناك، ودفن في هذا المزار. ووصف مزار آخر لرجل له أكثر من (٤٠) ألف مريد، وهو مزار الشيخ "الرومي"، ووصفه "أوليا جلبي" بأنه "الشيخ الكبير المتدين وصاحب الكرامات الإلهية... إن


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هذا الرجل كان ثرياً جداً، وهو الذي جلب الشهرة لطريقة الخواجات الصوفية"، وهو أصلاً من أهالي "أرومية" في أذربيجان (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٧٢- ٧٥). كما أنه توجد في ديار بكر تكية للشيخ الرومي، وهي تكية عامة وليست خاصة، ويوزع فيها الطعام على جميع المسافرين والمهاجرين والفقراء (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥٢).

وأما في وصف متنزهات "ديار بكر"، فيقول أنه لا نظير لجما لها في العالم، ففي بداية الربيع، وبعد سكون الفيضانات، وبعد أن تصبح المياه رائقة، يتوجه الأغنياء والفقراء من أهالي "ديار بكر" مع نسائهم وأطفالهم إلى ضفاف النهر، وتقوم كل عائلة بنصب الخيام في المكان المخصص لها. ويقوم الأهالي بزراعة نوعاً من الريحان كحواجز بين بساتينها، وفي مدة شهر يرتفع الريحان بحيث لا يمكن رؤية الطرف الآخر منه. كما يقومون بصنع العرائش على الضفاف، ويضعون الريحان على السطح والأطراف الأربعة من العريشة، وبعد فترة التزهير، تقع البذور على الأرض وينبع منها جيل جديد من الريحان. وتكبر سيقان الريحان، وتستعمل بعد سبعة أو ثمانية أشهر كأعمدة للخيام، أو كدعائم، كما تستعمل عيدانها في إشعال النار، مما يبعث منها رائحة طيبة. وتستمر الأفراح والاحتفالات وتناول المأكولات والأغاني والتنزه على الضفاف لمدة سبعة أشهر كاملة. ويقوم الأهالي ليلاً وعلى جانبي النهر بإضاءة الشموع، وأنوع السراج، والفوانيس، ويقوم الأهالي بتثبيتها على قطعة خشبية ويقذفون بها إلى النهر مما يشكل منظراً خلاباً يصفه أوليا جلبي "فتتحول ظلمة الليل إلى وضح النهار". وأما متنزه "قوس"، فيصفه "أوليا جلبي" أنه قطعة من الجنة، حتى أن السلطان مراد الرابع عند زيارته لديار بكر، نزل في هذا المتنزه، وقضى وقته هناك، ويقول أوليا جلبي عن هذا المتنزه "أنه لا يمكن وصفه بالقلم ولا بالقول"(جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٧١). وأما الخانات، ففيها خانات عامرة مثل خان "حسني باشا"، ويصفه "أوليا جلبي" قائلاً "وكأنه قلعة". ويوجد كذلك خان التجار، ذو المنظر الجميل، وفيها عدة غرف للحرفيين. وأما الأسواق في "ديار بكر"، فمنها سوق "حسني باشا"، وسوق "العطارين"، والذي يتعطر به حتى المارون، وسوق "الدلالين"، وسوق "الحدادين"، وسوق "الصاغة"، ويقول "أوليا جلبي" عن أسواق "ديار بكر": "وباختصار فيها ستون سوقاً". وتصنع في "ديار بكر" أنواع السيوف، والمسدسات، والمعاول، والفؤوس، وفؤوس القتال، والخناجر، والرماح، والسهام، وبحيث تشتهر في الدنيا. وبجانب تلك الصناعات، فبها صناعات النحاس وتستخدم في صنع الأواني، أو الصاغة. وبها أيضاً صناعة الحلى الذهبية والأحجار الكريمة، ولهم فنانون ماهرون في الرسم (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥٥، ٥٦).

أما بنايات "بدليس"، فيتحدث أوليا جلبي عن خمسة آلاف بيت عامر وجميل موجودين داخل القلعة العليا والقلعة التي داخل السور. بخلاف البيوت المبنية على المرتفعات ذات الهواء العليل (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥). ويبلغ عدد مساجد بدليس ١١٠ مسجداً، فيقول "جلبي": "ويوجد في



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بدليس مائة وعشرة محراباً" وأكبرها هو الجامع القديم للسلطان "شرف الدين"، وقباب المسجد وجدرانه قوية، وفيه منارة عالية ومستقيمة ليس لها مثيل في بدليس، ولا في كوردستان كلها، وفقاً لوصف أوليا جلبي. وفي القلعة الشمالية لبدليس يوجد جامع بدليس، وكان كنيسة في السابق، وجعلها السلطان أوحد الله جامع، وهو جامع قديم بدون فناء وبدون منارة. والعديد من الجوامع الأخرى، إلا أن "جلبي" يعلق على جوامع "بدليس" قائلاً: "ومما يزيد جمالاً هو أن جميع هذه الجوامع مفروشة بالبسط العجمية وقطع اللباد الأصفهاني، وتشعل فيها مدافئ كبيرة، وتصرف عليها النقود من أموال الوقف، وتسد نوافذها وأبوابها في الشتاء فتصبح من الداخل دافئة كالحمام، وينكب داخلها العلماء وطلبة العلم، وحتى أن الماء في المرافق وأحواض الوضوء يكون دافئاً. أما طلاب العلم الذين ينهون دروسهم فيلعبون الشطرنج وهو مباح وفق المذهب الشافعي. ووصل عدد مدارس بدليس ٧٠ مدرسة (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١١٩- ١٢١).

وفي وصف بساتين "بدليس"، فيقول أوليا جلبي: "أنه وفقاً لسجل المسؤول عن توزيع المياه لدى الخان، فهناك عشرة آلاف بستان في "بدليس"، ويعيش سكان "بدليس" كباراً وصغاراً ووجهاء وفقراء مدة ثمانية أشهر كل سنة في البساتين، ويوجد داخل كل بستان حوض ومياه دافئة ومزراب وبيت جميل، ولقد احتلت تلك البساتين أرضاً واسعة ومتباعدة، والبساتين الجميلة تعود إلى المسيحيين اليعاقبة، وقد أحاطوها بأسوار عالية، وصنعوا فوقها أبراجاً تشبه القلاع، ولهم من البساتين ما تدر عليهم ألف قرش كل عام. وأحياناً يأتي الخان بنفسه إلى هذه البساتين للتنزه. وفي أي وقت ترتاد هذه البيوت الصيفية يأخذك العجب منها، إذ ما أن تدخلها حتى يهب عليك الروائح الطيبة.. . أما الطريق الذي يسمونه (شارع البساتين) فقد زرعت أشجار الكروم على جانبي الطريق، وثبتت على أعمدة من الجانبين مثل العرائش، وتتدلى منها عناقيد العنب بحيث تدخل المسرة إلى قلوب السائرين في ظلالها" (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٣٠).

وأما بالنسبة لأسواق "بدليس"، فبلغ عدد دكاكينها جميعاً ألفا ومئتا (٢٢٠٠) دكان. وأكثر أسواق بدليس بهاء هو سوق "خسرو باشا"، ولهذه القيصرية من طرفيها أبواب حديدية، وهي مبيضة من الداخل ومرتبة جداً. ويوجد أيضاً في "بدليس" سوق "الصاغة"، وهو مرتب جداً. كما يوجد أيضاً سوق "الدباغة"، وأن الجلود والألبسة الجلدية التي تصنع في بدليس لا مثيل في الدنيا، وأن النقوش والأصباغ التي تنقش عليها لا مثيل لها في هذه الصنعة. ومن أشهر أسواق "بدليس" أيضاً سوق "العلوة"، والذي يرد إليه الحرير والأقمشة الفاخرة، والمأكولات والمشروبات المختلفة إلى هذا المكان، وتوزن المنتجات بالقبان[8]، ويؤخذ منها العشر لخاص بالأمير، ثم تباع، ولا يستطيع أحد بيع الأشياء بأكثر من السعر المقرر(جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٢٢)، ويستدل من هذا الوصف الذي عكسه أوليا جلبي، مدى اهتمام المدن الكوردية بضبط الأسواق والمقاييس منعاً للغش.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

**في وصف حمامات كوردستان:**

وأما فيما يتعلق بحمامات ديار بكر، فقد وصفها "أوليا جلبي" بالجميلة والمنعشة، وأولها حمام "إيباريه" وهو حمام منعش. وبعد ذلك يأتي حمام "إيشريك" والذي ليس له مثيل في هذه الدنيا، وذلك بناء على ما وصفه "أوليا جلبي". وكذلك حمام "بهرام باشا" وهو من أهل غزة، وجلب المرمر والزبوري بالجمال، وجلب البنائين من القدس وغزة لتأسيس هذا الحمام الجميل، ويشبه هذا الحمام حمام الدفتردار في الشام، وحمام "عثمان" في منفلوط بمصر. وتوقد جميع هذه الحمامات بفضلات الحيوانات (الزبل) وتحمى تحت درجة عالية بحيث أن الإنسان لا يستطيع التحمل داخلها أكثر من ساعة. أما المدن الأخرى لبلاد الروم، فتوقد حماماتها بالحطب، فلا تصل إلى هذه الدرجة من الحرارة. ويقول "أوليا جلبي" أن استعمال الفضلات الحيوانية في الحمامات له فائدة أخرى وهو تقليل الفضلات داخل المدينة، علماً بأنه بلاد العرب تستعمل الأزبال في وقود الحمامات أيضاً (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥٩).

وفي ملاطية كان يوجد بالمدينة سبعة حمامات جيدة وجميلة، وبخلاف تلك الحمامات، كان يوجد في البيوت حمامات خاصة بعدد (٣٠٠) بيت (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٢، ٢٤). وفي بدليس، فبخلاف الحمامات العامة، فيوجد نحو ستمائة بيت من الأهالي يملكون حماماتهم الخاصة، وذلك لأنهم لا يرغبون في خروج نسائهم إلى الحمامات الخارجية، ويغضبون عند مشاهدة النساء في الأسواق (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٢٥). ويلاحظ هنا، أن عادات وتقاليد أهالي كوردستان كانت تتسم بالعفة، فالنساء لهم عزلتهم الخاصة في مجتمعهم بعيداً عن الاختلاط، حتى أن السير في الطرقات داخل المدن الكوردية كان بضوابط، كما سيتضح فيما يلي.

كان حمام الحديقة الخاص بخان "بدليس"، مستخدم به زجاج شبابيك من النوع الملون، وكانت أطر الشبابيك محفورة ومنقوشة، وهي مهداة للخان من خانات العجم في تبريز، وهذا التصميم الفني للحمام يدل على الاندماج الحضاري بين المدن الكوردية، وبين الحضارات المجاورة لها، فقد ملئت فسحات أطر الشبابيك بالعنبر الخام، فعندما تهب عليها الرياح تدخل الرائحة الطيبة للداخل.. . وفي وسط (الجامخانة) وهو مكان الاستحمام، ينزل الماء من ثلاثة أمكنة على شكل مزاريب. أما أرضية الحمام فهي مبنية من أحجار المرمر بشكل يشبه الفرش الأميري، وكل قطعة بلون من الألوان، وفي مركز الحوض توجد دفاقة للماء، وتقوم بدفع الماء لأعلى السقف الداخلي ثم ينزل الماء من جديد. وإذا خرجت من قاعة الحمام، وذهبت للطرف الآخر، تذهب إلى غرفة تسمى غرفة التبريد، وهي ذات قبة كبيرة فوقها، والماء الذي في حوضها ومزاريبها الوسطية دافئ، وجميع حيطانها من الكاش الصيني مع إدخال أجزاء صغيرة من المرمر، وآلاف من المشاعل تنزل من الجدران، ومن هذه الحجرة تتوجه إلى غرفة الحمام، وكأنك تدخل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

إلى بحر من الأنوار، إذ أعمدة، وفي داخل تلك الأعمدة يوجد البلور والزجاج السميك والقناديل والأنوار، والجزء العلوي منه قطعة واحدة من الزجاج، فعندما تضرب الشمس هذا الزجاج من الأعلى، تصبح الغرفة مضيئة كالنهار. وتحيط الحديقة التي تشبه الجنة بالجزء الخارجي من الحمام، وقاعة الحمام التي تغرد فيه آلاف البلابل والطيور ذوات الأصوات الشجية.... ويوجد في داخل الحمام حوض كبير مليء بالماء وينتشر على سطح الماء أوراق الورود والقرنفل التي تبعث رائحة طيبة في تلك الأنحاء، كما يوجد في داخل كل غرفة من غرف الحمام الصغيرة ماء في أجران من حجر المرمر، وقد صنعت بشكل فني بحيث يرغب المرء في مجرد مشاهدتها، وجميع أنابيب الماء في الحمام والطاسات التي تستعمل في الاستحمام مصنوعة من الذهب والفضة، والهواء الذي داخل الحمام هو عليل وصاف لدرجة أن المرء يشعر بعد جلسة قصيرة هناك بأن الشباب قد عاد مجدداً. وهناك قصائد شعرية كثيرة في موضوع الحمامات قد كتبت بخط جميل على حواشي القبة". ويعلق أوليا جلبي على جمال حمام خان بدليس قائلاً: "... فهذا الحسن وهذه الأبهة التي تشاهدها هنا لا مثيل لها. فهذا أنا السائح الذي أقوم بالسياحة لمدة أربعين عاماً، لم أشاهد مثل هذه الأشياء في أي مكان آخر". وعندما قدم السلطان (مراد الرابع) -بعد سيطرته على بغداد من الفرس عام ١٦٣٨م- إلى هذا الحمام للاستحمام، فرأى أن الماء البارد تفوح منه رائحة الورود، أما الحار فتفوح منه رائحة البخور.. ففرح بذلك كثيراً، وقال "ماذا يحدث لو كان في إستانبول خاصتي حمام مثل هذا". أما "ملك أحمد باشا"، والذي كان أوليا جلبي في صحبته، فقد قال عن هذا الحمام "لا وجود لمثل هذا الحمام في كل أرجاء الدنيا" (جلبي، ٢٠٠٨، ص ١٤٠- ١٤٣).

وأما حمامات (وان)، فمن أشهرها هو حمام "سلطان" الموجود قرب سوق الجامع، ويصفه "أوليا جلبي" بأنه حمام "منعش وجوه طيب". وكذلك يوجد الحمام المزدوج، والحمام المنقوش قرب مدينة تبريز. ويقول "جلبي" أنه: "حسب التقارير المعتمدة يدخل تلك الحمامات ستمائة شخص في الشهر الواحد".

ومن أمثلة المنشآت المعمارية في كوردستان، الجسور، ومنها جسر "باطمان"، ويقع قبل مدخل "حزو"؛ حيث تندفع المياه من تحته لدرجة أن صوته يملأ أذن الإنسان، ويقع الجسر عند مفرق طرق "ديار بكر"، و"ميافارقين"، و"حزو"، و"بدليس"، و"وان". ولقد قام أحد رجال الخير من العباسيين ببناء هذا الجسر، وصرف عليه ثلاثة آلاف كيس نقود من ماله الخاص، وقد جلب خيرة البنائين من أماكن عديدة لبناء هذا الجسر، وهو أكبر وأعلى وأقوى جسر من بين جسور الأناضول. وفي هذا المكان يكون الجبل في أحد طرفي النهر، بينما تكون الرمال في الطرف الآخر، ولقد رأى البناؤون أن أفضل طريقة هو أن يكون الجسر ذو قائم واحد، وقد حفروا أساسات عميقة وقوية من الطرفين. ويمتد الجسر بين الطرفين في حدود (١٧٣) خطوة. ويقارن "أوليا جلبي" هذا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الجسر مع جسر "موستار" في بلاد الهرسك، ويقول أن جسر "موستار" ذو فسحة واحدة أيضاً، ولكن لا يساوي هذا الجسر أي جسر آخر في جماله واستقامته وقوته. ولقد قام بناءوا جسر "باطمان" بتضييق وسطه كثيراً، كي لا يتم نقل الأحمال الثقيلة عليه، لذا يخاف الشخص من النظر لأسفل عندما يمر عليه، ولكن أطراف الجسر تكون واسعة (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٠٢، ١٠٣). وأما في "بدليس" فيوجد بها (١١) جسر، ووصفها "أوليا جلبي" أنها جسور جميلة ومحكمة (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٢٣- ١٢٤). وكذلك كان يوجد جسر كبير بناه السلطان (حسن) على بعد مسافة خمسة أميال أسفلا ملاطية، وكان ذو (٤٠) قائماً (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٢، ٢٣).

**ثالثاً، التعليم والحياة الثقافية في كوردستان:**

كان التعليم بوجه عام يتم في المساجد، إلا أنه كانت توجد بعض المدارس، فكان يوجد مدرسة لتعليم الصبيان في ملاطية (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٨). كما كانت توجد مدارس مخصصة لتعليم الأطفال كما في مدارس الأطفال في وان، فكان يوجد في وان حوالي ٢٠ مدرسة لتعليم الأطفال الحروف الأبجدية، وكان الأطفال الأذكياء يقرأون الفارسية بشكل جيد (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٤٠). كما كان يوجد مدرس في كل جامع يقوم بتدريس العلوم كما في مدارس الجوامع بديار بكر. ومن أشهر مدارس ديار بكر المدرسة المرجانية بالجامع الكبير، وكان لها أوقاف كثير، وترتب على ذلك أن أصبح لجميع حجراتها أرزاق مخصصة ولحم وشموع (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥١، ٥٢). ويقول "أوليا جلبي" أنه وصل عدد الزوايا في الجامع الكبير إلى ثمانون زاوية لتدريس العلوم فيها (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٤٧). وكانت بعض المدرس ذات تخصصات محددة، ويقول أوليا جلبي على مدرسة جامع النبي، أن طلاب العلم بها كثيرون، وكل من بدأ مراحل العلم فيها لم يصب باليأس في حياته. ويرى الباحث أن هذا الوصف يدل على تخصصات تشبه علم النفس. وكان علم البيان في مدرسة (إيباريه)، وعلم الكلام في مدرسة (جامع خسرو)، وعلم الفقه في مدرسة (سارولي)، وكان تعليم الصوفية في مدرسة (الشيخ الرومي)، وأما مدرسة التفسير فيتم تدريس تفاسير (الجريري، والطبري، وابن مسعود، وأبو ليث، والبغوي، والقاضي، والدليمي، وفيض الله الهندي، وأبو سعود). وأما علوم الحديث فكانت تتم في كافة الجوامع، ولكن كان يتميز في عصر أوليا جلبي إمام الجامع الكبير، والذي كان يشتهر بالإمام المجنون، والذي كان قد درس علم الحديث في الجامع الأزهر بمصر (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥١، ٥٢).

وفي (وان) كان يوجد بها مدارس عديدة ومنها، مدرسة جامع (أو لو)، ومدرسة (خورخوره)، ومدرسة (خسرو باشا)، ومدرسة (بوابة تبريز)، ومدرسة (عباس أغا)، ومدرسة (كيا جلبي) (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٤٠). ولقد اشترت (وان) بعلمائها وخاصة في الطب، ويصف أوليا جلبي أطباء "وان" بأنهم ذو ذكاء شديد، ومنهم (مسعود جلبي) في القلب ومعرفة النبض وهو لا مثيل له


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

في ذلك، ويصف الطبيب (الشيخ باي جلبي) بأنه لا مثيل له حتى في أثينا، واشتهرت (وان) أيضاً بجراحيها. وأما في (ملاطية) فيصف الرحالة أوليا جلبي مدى التقدم في الطب الذي وصلت إليه ملاطية؛ فهي مهنة أباءهم وأجدادهم، وهم ماهرون بها لدرجة أنه لا مثيل لهم بين الألمان والقرم. وكان في وقت الدراسة توجد سبعة دكاكين لعمليات الجراحة، وكان الأسطى (بشارت) الكوردي هو أكثرهم خبرة (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٢٧).

وأما بالنسبة للحياة الثقافية في كوردستان، وكان أهالي ملاطية متدينون؛ فهوم يصلون ليلاً ويصومون نهاراً (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٢٧)، وبجانب تدينهم، كان الناس في "ملاطية" يجتمعون في رياضها جماعات يتحدثون عن العلم ويقرأون الشعر ويروون القصص، وكان يوجد جماعات يتحدثون عن الأئمة ويروون سيرهم. وكان بعض الظرفاء يقومون بسرد النكات، وتقليد الناس (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٨، ٢٩).

وما يدل على ازدهار الحياة الثقافية في (ملاطية) أن "الجميلات قد اعتدن على كتابة بيت من الشعر أو شيء من الكلام المأثور على جوانب التفاحات قبل نضوجها وذلك بخيط من الشمع، وما أن تنضج التفاحات وتأخذ ألوانها الزاهية، تقمن بنزع الخيط الشمعي عنها فيبقى محل الخيط أبيض اللون، ويظهر الخط الأبيض الجميل للكتابة" (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٧، ٢٨). ويرى الباحث، أنه إن دل هذا الوصف على شيء، فإنما يدل على تعليم النساء في كوردستان، فكيف لهم كتابة أبيات الشعر، إلا لكونهم متعلمات.

وأما شعراء (وان) فكان الشخص الأول هناك هو "شاي أفندي" ويصفه "أوليا جلبي" بأنه (سلطان الشعراء الذي هو عريق في بحر العلم). وكذلك الشاعر (واني جاب)، والشاعر (مير سبهري) (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٤٤). وأما بالنسبة لشعراء أهل (ديار بكر) فقد وصفهم أوليا جلبي بأنهم "ضليعين، ذو لسان ذرب، بحيث يمكن اعتبار كل واحد منهم (فضولي) أو (روحي زمانه) (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥٦، ٥٧).

**رابعاً، العادات والتقاليد في كوردستان:**

كانت تركيبة سكان كوردستان مختلطة، فكان سكان "ديار بكر" على سبيل المثال خليط من الكورد، والتركمان، والعرب، والعجم، والأرمن. وكان سكان "ديار بكر" يتصفون بالحسن والجمال، وكان الناس يتحدثون بالكردية، والتركية، والعربية، والأرمينية (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٧٢). وكان سكان ملاطية يتحدثون بالكوردية، والتركمانية، وكان للتركمان لهجة خاصة بحيث لا يفهمها الأتراك بشكل جيد (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٢، ٢٤). وكان سن زواج النساء هو عشر سنوات، وهي عادة القومية الكردية حينئذ كما يتحدث أوليا جلبي. وبوجه عام فإن نساء كوردستان كانوا يتسمون بالعفة، فيقول أوليا جلبي في وصف نساء ديار بكر، أما نسائهم فيتصفن بالأدب والأخلاق



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الحميدة، وأن بناتهم لا يتوا جدن بالأسواق، ولو سارت أحدهم في السوق، فكان يوجه اللوم لها ولوالدها (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٧٢). كما كانوا يبنون حمامات خاصة في ديار بكر وصل عددها (١٤٠) حماماً، وذلك لأنه كان يمنع نسائها الخروج من المنازل (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥٧، ٥٨). ولم تكن تلك عادات "ديار بكر" وحدها، فكان أهالي (وان) متعصبون وأصحاب غيرة، وكانت نساؤهم لا تذهب للنزهات أو حفلات العرس أو الضيافات. وكانت أكثر بيوت (وان) بها حمامات خاصة بالنساء، وكان من عادات أهالي (وان) لا يتوجه رجال وان للحمامات فترات بعد الظهر، فكانت تلك الفترة مخصصة للنساء اللاتي لا يوجد في بيوتهن حمامات، وكان هناك طرق خاصة تسلكها النساء حينما يردن التوجه إلى الحمام، ولا يجوز أن يسير الرجال في تلك الطرق في تلك الأوقات، وإلا تعرض الرجال لعقوبة قاسية (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٤٣). وكان أمر الغيرة على النساء من عادات أهالي (ملاطية) أيضاً، فعندما يتحدث أوليا جلبي عن صفات ملبس نساء ملاطية، فقال: "والذي سمعته من الأصدقاء، أن النساء هنا تلبسن الملابس البيضاء وتضعن الحجاب، كما تضعن الطاقيات الذهبية والفضية على رؤوسهن وملابسهن المصنوعة من الحرير بالكامل"، كما كان "بملاطية" وقت زيارة "أوليا جلبي" سبعة حمامات عامة، وأما بالنسبة للحمامات الخاصة، فوصل عدده نحو ٣٠٠ حمام في البيوت (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٧٢). ومعنى هذا أن "أوليا جلبي" لم يتمكن من رؤية أي أحد من نساء أهل (ملاطية) وذلك لتعفف النساء، ولغيرة الرجال.

وأما بالنسبة لملابس أهالي كوردستان، فكانت نساء "ديار بكر" تتغطى جميعاً بالشراشف البيضاء، وتضعن الحجاب على الوجه، وتعتمرن الطاقيات ذوات الخيوط الذهبية أو الفضية وتلبسن الجزمات، وكانوا ذوات حلى ذهبية وفضية (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٧، ٢٨). وأما بالنسبة لأزياء الرجال في "ديار بكر"، فكانوا يلبسون أصناف عباءات ثمينة تصنع من الجلود، وكان كبار الرجالات والقادة يضعونها على أكتافهم. وأما متوسطو الحال فكانوا يرتدون الجوخ، ونوع آخر من الأقمشة اسمه (الكنتوش). وأما فقراء الحال، فكانوا يرتدون الجوخ اللندني (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٧، ٢٨).

وفي ملاطية، فكان الأغنياء يلبسون جلود السنور، والصوف. وفقراء الحال يلبسون الشال والشابك. ومتوسطو الحال يلبسون الجوخ وخامات ملاطية، ويلبسون الزبون الأزرق. أما نساء الأغنياء، فيضعن الحجاب المنمنم ويغطين رؤوسهم بالوشاح، أما نساء الفقراء فيضعن الوشاح الأبيض والحجاب والطاقية، وجميعهن تلبسن الأحذية الصفراء والحمراء. وأما في بدليس، فكان ينتشر لبس سترات السنور بين الوجهاء وأفراد الحاشية والخان، وأما متوسطو الحال فيلبسون (الشياق)، وكثير منهم يلبسون الجوخ السنوري والقنطوش. أما ملابس الفقراء منهم فهي من نوع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

بوغوص. وكانت النساء تلبسن الملابس البيضاء وتضعن الحجاب، كما تضعن الطاقيات الذهبية والفضية على رؤوسهن وملابسهن المصنوعة من الحرير بالكامل (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ١٧٢).

وأ ما بالن سبة لملا بس أ هل "وان"، ف كان ي لبس معظم هم (ا لجوخ)، وي ضعون الأحذ ية (ال سرمدية) في أرج لهم، وي ضعون ج لود ال سنور ع لى أك تافهم، ويتمنط قون حزا ماً خفي فاً من الحرير ويضعون فيه خنجراً، وكانوا يضعون عما مات قطيفة على رؤوسهم كبيرة جداً. وكا نت النساء ترتدين (الجزمات) الصفراء في أرجلهن، وتلبسن (المخشلات) الذهبية والفضية في أعناقهن (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٤٥).

ومن عادات أهالي كوردستان خلال تلك الفترة الزمنية، الاحتفال بيوم (نوروز)، فيقول أوليا جلبي في هذا الشأن وفي خضم حديثه عن أهالي وان: "أما في كورد ستان، فتشتهر جواميس (وان) بفخا مة الج سم، وبال سمنة والهي بة، بح يث يأ كل ا لجاموس الوا حد ب قدر ف يل، و لو تمت تربيتها لمدة عام فسيزيد حجمها عن حجم الفيل، ويقوم أهالي (وان) في يوم (نوروز) بإخراج هذه ا لجواميس والخ يول الأ صيلة، والج مال، والكباش من حظائرها، ويجعلونها تتقا تل مع بع ضها، ويقضون وقتهم في التمتع بها، والتفرج عليها" (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٤٨).

وفي ما يتعلق ب صفات أ هل كورد ستان، ف كان للطبي عة تأثير كبير ع لى صفات وهيئة أ هالي كورد ستان، فن ظراً ل صفاء الطبي عة في "د يار ب كر"، ف كان مع ظم سكانها متو سطو القا مة أقوياء، ويميلون إلى السمنة، ورشيقون، وكا نت تصل أعمارهم إلى السبعين أو الثمانين ولا يزا لون قادرين على العمل، وكان يصل بعضهم إلى المائة عام (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٥٦، ٥٧). وأ ما وجوه أ هالي (ملاطية)، وبسبب اعتدال المناخ وانتعاشه، فرجالهم أقوياء الجسد، مربوعة القا مة، وتصل أعمارهم إلى ٦٠ أو ٧٠ عاماً دون أن تسقط أسنانهم، وتبقى نضارة وجوههم واحمرارها على حا لها حتى بعد ت قدمهم في الع مر، و هم أقو ياء و ضخام الأج سام، وب سبب هذا الم ناخ الج يد فالأ هالي جمي لون ومهيبون. وأما بالنسبة لأهل (بدليس) فكان يوجد بها الكثير من الرجال المعمرين، بحيث يظن ا لمرء أنهم لا ي قدرون ع لى ال كلام، ول كنهم ي ستطيعون ر كوب الخ يل، وال ضرب بال سيف، وا لذهاب إلى السفر والتجارة، لا وبل الصيد. والعمر الاعتيادي لهم يكون بين الستين والخامسة والسبعون، وأما المعمرون فتصل أعمارهم ما ئة عام، بينما تكون وجوههم ن ضرة، و حمراء، وبيضاء. و هم ذو صحة ج يدة (ج لبي، ٢٠٠٨، صـ ١٢٣، ١٢٤). ومع نى هذا، و من خلال و صف "أول يا ج لبي"، فإ نه يت ضح أن طبيعة الحياة في كورد ستان كا نت منظ مة، ك ما أن العوا مل الطبيعية، و صفاء ا لجو، كان له انعكاس وتأثير على صحة أهالي كوردستان.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**خامساً، الزراعة والحرف والصناعات في كوردستان:**

تميزت كوردستان بوفرة محاصيلها، من حبوب وفواكه وخضروات، فكان يتم زراعة سبعة أنواع من القمح ذوي الحبوب الخشنة، وكذلك الشعير والباقلاء، في ديار بكر، والتي تميزت بخصوبة أراضيها وسعتها، فكانت مزارعها وافرة المحاصيل (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٦٩). وزرعت أنواع القمح أيضاً، والشعير والقطن ومختلف الحبوب، والخضروات والبصل والسبانخ في ملاطية (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٤). وأما بالنسبة لزراعة الفواكه في كوردستان، فكان بها أنواع متعددة من المشمش، والعرموط، والسفرجل، وعشرون نوعاً من التفاح، والعنب، وذلك في ملاطية. كما أن البطيخ في ديار بكر قد وصفه أوليا جلبي بأنه لا مثيل له في اللذة والحلاوة (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٧٠). ولقد تميزت مدن كوردستان بكثرة بساتينها، ففي ملاطية وحدها وجد سبعة آلاف وثمانمائة بستان، وستمائة بستان محاطة بسياج (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٥).

وأما بالنسبة للصناعة في كوردستان، فكان يوجد بها صناعات غذائية، ففي ملاطية كانت صناعات العسل الأبيض، والذي وصفه أوليا جلبي بأنه لا مثيل له في الدنيا، وكان في كل سنة تملأ منه مئات الألوف من القرب الحمراء من العسل الصافي وترسل إلى كبار رجالات استانبول. كما كان يتم صناعة مربى العسل ومربى السفرجل. بجانب صناعات حفظ العنب للشتاء، وصناعة الدبس (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٤، ٢٧). ومن مأكولات كوردستان، الخبز الأبيض، والمعجنات مع القشطة، خبز الموز، والعسل، والمن وهي حلوى ربانية تنزل من السماء على أوراق الشجر. ومن الصناعات الأخرى في كوردستان، صناعة الجلود الحمراء والملونة، وأنواع الخفاف والأحذية، بجانب صناعات السيوف والمسدسات والخناجر والسكاكين (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٦٩). ويتضح مما سبق أن سكان كوردستان كانوا يعملون في الزراعة، وصناعة المواد الغذائية، بجانب لعمل في التجارة، كما يعمل بعضهم في الوظائف الحكومية.

**المبحث الثاني:**

**بعض مظاهر العلاقات السياسية بين أمراء الأكراد والعثمانيين، الهجوم على بدليس نموذجاً:**

**أولاً: مقدمات الهجوم على بدليس:**

خلال زيارة "أوليا جلبي" إلى "بدليس" برفقة سيده "ملك أحمد باشا"، تحدث "جلبي" بكل احترام ووقار عن "عبدال خان"، وعن حفاوة الاستقبال وكرم الضيافة، ووصف ذلك بأوصاف في غاية الروعة. وقبل انصراف "ملك أحمد باشا" من بدليس عائداً إلى وان، انفرد مع "عبدال خان" ليتحدث معه ويقدم له النصح والإرشاد، ولقد انتقده عن أفعال سابقة قام بها "عبدال خان"، ومن تلك الأفعال أنه عندما استولى "مراد خان" على بغداد عام ١٦٣٨م وعاد إلى ديار بكر، لم يذهب



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

"عبدال خان" لرؤيته وتبريك غزوته، وكان السلطان قد غضب كثيراً، وطلب من "ملك أحمد باشا" أن يأخذ بالثأر من "عبدال خان" البدليسي. ويقول "ملك أحمد باشا" أنه حسب أوامر "مراد خان" قد جمع الجيوش، وتوجه إلى قلعة "ميا فارقين"، ولكن وجهاء المنطقة قد تدخلوا بينهم، ودفعوا (٧٠) كيس نقود وأشياء أخرى، وتم غض النظر عنه. ولقد طلب "ملك أحمد باشا" منه أن يكون على علاقة جيدة مع بكوات العشائر المجاورة له، وأن يعيش معها بسلام، وأن يؤدي الواجبات الملقاة عليه تجاه السلطان، وإلا فإنه "سيعرف الضرر" (جلبي، ٢٠٠٨، ص ١٦٤- ١٦٧).

**الدعوة للهجوم على "عبدال خان":**

لقد تطورت الأحداث سريعاً بعد لقاء "ملك أحمد باشا" مع "عبدال خان"، ويتحدث "أوليا جلبي" عن مؤامرة التخلص من خان بدليس بمرارة، فوصف من ذموا خان بدليس لدى "ملك أحمد باشا" بأنهم "ناس غدارون"، وأنهم تحدثوا بالكذب عن الخان، وأن خان "بدليس" لم يكن يعلم بما تضمره أنفسهم تجاهه. ويبدو أن "أوليا جلبي" كان مقتنعاً ومتعلقاً بـ "عبدال خان"، فعلى الرغم من عداوة سيده "ملك أحمد باشا"، إلا أن "أوليا جلبي" كان متزناً في رأيه تجاه خان بدليس، حيث أنه يرى أن خان بدليس برئ من التهم المنسوبة إليه، وأن سبب الفوضى هم أغوات "وان"، وبك "ملازكرد"، وبعض الإنكشارية (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٥٢). فيتحدث "أوليا جلبي" ويصف بدايات الدعوة للتخلص من خان بدليس، **قائلاً**: "إذا أراد الله شيئاً هيأ أسبابه، في ذلك اليوم كان الباشا مدعواً من قبل (عبدي أغا) قائد الإنكشارية، وكان جميع الوجهاء وأغوات (وان) والبكوات الكورد مجتمعين هناك سوياً، فأخذ الباشا رأي هؤلاء، فاشتكى الجميع بشدة من (الخان) وقالوا (يجب إزالته، وهو ملحد، فاسق، فاجر، لوطي، منجم، وكذاب، يستحق إهدار دم منذ أربعين عاماً) وتكلم أولئك الناس الغدارون، بكل تلك الأكاذيب عن الخان، وهو لم يكن على علم بكل ذلك، وحسب إرادة الله، انتهى أولئك الناس من كلامهم، فدخل البواب وقال: (يا سيدي لقد وصلت رسالة من والي أرضروم، طاوقجي مصطفى باشا، وهناك مع الرسالة بضعة رجال جرحى من الانكشارية وصلوا أيضاً)، فقال الباشا، أدخلهم إلى الداخل بسرعة، فدخل صاحب الرسالة وسلم على الحاضرين وسلم للباشا رسالة والي أرضروم، وكان قد كتب فيها ما يلي: (يا سيدي، يوجد تحت سلطة حكومتكم شقي من الأشقياء يدعى خان بدليس، لقد قام في الليل بالهجوم بعشرة آلاف مقاتل، على أملاك "محمد بك ملازكرد" الذي هو تابع لإيالتي، فقام بنهبهم، وقتل منهم حوالي ثلاثمائة مسلم بدون حق، كما نهب وبلع أربعين ألف رأس من الغنم لـ (شقاقي) (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٥٣)، وهذا الرجل موجود ضمن دائرة سلطتكم، وبدون شك أنتم تقدرون عليه وعلى رد هذا الظلم. .... فلو رغبتم في توجيه الجيش لهذا الشقي وقاطع الطريق، فإنني سأشترك معكم بعشرين ألف مقاتل، وأنا أنتظر أمركم). ففرح الجالسون مع الباشا بورود هذا الخبر وبدأوا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بالرقص" (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٥٢، ٢٥٣). لقد كانت الشكوى هي أن انكشارية أرضروم، وهم حراس الحدود، ويعملون بالتجارة أيضاً، وعندما وصلت أحمالهم إلى (بدليس) قاموا بأخذ الضرائب منهم، وأنهم اشتكوا من أن عدداً غفيراً من الكورد كانوا قد تجمعوا وألفوا جيشاً للهجوم على (محمد بك ملازكرد)، وتم الادعاء بأن هؤلاء الكورد قد رموا بأحمال الانكشارية، وأخذوا الدواب جميعاً على سبيل (السخرة)، ولقد توجه هؤلاء الجنود للخان وذلك وفقاً لروايتهم التي يذكرها أوليا جلبي- واستنجدوا به، ولكن فعل بهم التحقير والتذليل. وبذلك أصبحت التهمة التي وجهت إلى الخان "عبدال خان" هي قطع الطريق، وتجاوز حدود بلده وعبر إلى أرضروم، وقتل عدة مئات من الناس. وبناء على تلك التهمة، طلب "ملك أحمد باشا" إصدار فتوى من شيوخ الإسلام للمذاهب الأربعة، فكتبوها له، كما قام رجل الدين في (وان) بإصدار الفتوى الشرعية كتابة، وقام بختمها، ووضعها في أيدي الباشا، وقال للباشا: "أيها الزعيم، لتكن غزوتك مباركة، فاسحب سيف الغيرة، ونظف الأرض من هذا الشقي"، وقام بالدعاء للباشا، والثناء عليه (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٥٣، ٢٥٤). ومن هذا الوصف الذي يسوقه أوليا جلبي، وبناء على وصفه أيضاً، فإنه يتبين وجود مؤامرة ضد "عبدال خان"؛ حيث تجمع الخصوم جميعهم في وقت واحد، والغريب في الأمر أن الخصوم كانوا من الأكراد، وإن دل هذا الأمر إلى شيء فإنما يدل على روح الفرقة لتي كان يبثها العثمانيون بين زعماء الأكراد، وهو الأمر الذي سيتبين ملامحه فيما يلي.

ويصف أوليا جلبي سيده بالشخص العادل؛ حيث أصر على محاكمة "عبدال خان" محاكمة شرعية قبل التوجه لقتاله، وذلك بدعوته للحضور إلى "وان" مع "محمد بك ملازكرد" وبقية المشتكين، وفي حالة رفض الحضور، فحينها يتم إرسال الجيوش عليه، وعلى الرغم من رفض أعداء الخان، إلا أن الباشا أصر على موقفه، وانفض المجلس بعد ذلك (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٥٤).

وفي القلعة الداخلية لـ "وان" تم استدعاء جميع الأمراء والأعيان، وقالوا لنكتب رسالة إلى خان "بدليس"، فقام "أوليا جلبي" بكتابتها، وجاء فيها: "يا أحقر شخص في الدولة العثمانية، أيها الشخص الذي يسمى (عبدال خان)، يا قاطع الطريق الضل والأحمق، أنت لا تعرف الخجل، وقد فقدت الشرف، إنك تكذب وتدعي أنك من نسل (**السلطان أوحد الله العباسي**)، فتحتال وتغتر بذلك، ولكنك لعنة الله عليك، تختلط مع أهل الفتنة والفساد من الملحدين والرافضية والكورد اليزيدية، .... إن كل ما كنت قد قمت به، عندما كنت والياً لأرضروم، صفحت عنك وقلت مضى ما مضى، ولكنك لم تصلح نفسك رغم بلوغك هذا العمر، فتقوم باسم فرض الضرائب على المارة وعلى التجار، وتقوم بنهبهم وتأخذ الدواب من الناس، وتدخل أراضي (أرضروم)، وتقوم بنهب أربعين ألف رأس من الغنم من (محمد بك ملازكرد)، وتنهب الناس على أراضيه، وتقتل منهم ثلاثمائة شخص. ولقد قمت بجمع كل (اليزيديين والجكوانيين والخالتيين والروزكيين) حولك، وكل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

شخص يمر من جانبك تقوم بنهبه وتقطع ل أطرافه، فأصبحت قاطعاً للطريق ومتجاوزاً على جميع الأطراف. حتى أن رجال الدين الموجودين لديك، عندما يقومون بنصيحتك ويقولون لك لماذا تفعل هذا؟ فتجيبهم قائلاً (هذه كوردستان، ولكي يبقى الخوف بينهم، فإن هذا النهب هو شيء من قانون العباسيين). فعهد علي أن أقوم بتأديبك تحت حكم الدولة العثمانية بشكل، بحيث يصبح ذلك التأديب مثل الحلقات في أذنيك، .... لذا إذا وصلتك رسالتي هذه، لا تبق ساكناً، بل توجه أنت وقوادك لخدمة السلطان العثماني، وسلم الأموال والمواشي التي نهبتها إلى أصحابها، واحضر في (تحت وان) للمحاكمة، فوالله وبالله لن يمسك أحد. فيجب أن تتوجه إلى هناك، وإذا لم تحضر، فسيلحق الضرر بك وسيتم ذهب بلادك وسيمحى اسمك...." (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٥٦-٢٥٨).

وعندما وصلت رسالة الباشا إلى الخان، غضب الخان، **وينقل "أوليا جلبي" قائلاً في ذلك:** "وقد قرأت تلك الرسالة في مجلس (الخان)، فغضب الخان وقال (تباً... هل نحن مذنبون لتلك الدرجة حتى يتوجب قتلنا وينهبون بلادنا، وأن يرسلوا لنا كل هذا العتاب والتوبيخ؟ إنه أمر الله، يجب أن تكون اليدان في خدمة الرأس)[٩] قال هذا ثم أتكأ للحائط أمام أعين الرسول". وعلى الرغم من مظاهر إبداء الضعف أمام رسالة الباشا، فيستكمل أوليا جلبي تصرفات الخان بعد الرسالة، قائلاً عن الخان: "ولكنه أرسل رسائل عاجلة خفية، إلى بكوات الكورد وطلب منهم المساعدة، ومن جهة أخرى، فتح خزينة شرفخان على مصراعيها، وجهز سبعة عشر ألفاً من المقاتلين بالبنادق وبدأ بتعمير وتجديد القلاع والخنادق والمتاريس، وعين عشرة آلاف شخص للدوريات والحراسة خوف الهجوم الليلي من طرف الباشا، كما حضر من طرف أصدقاءه الكورد سبعة عشر ألفاً من حملة البنادق مع عشرة آلاف مقاتل من الفرس، وقام بتهيئة نفسه للقتال، ثم قام بإرسال رسالة إلى الباشا، تلك الرسالة التي تتساقط منها الدرر" (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٥٦- ٢٥٨).

يتضح من وصف "أوليا جلبي" لتصرفات الخان، وكأنه يريد أن يقول أن تصرفه منطقي في تجهيز المقاتلين وتأمين بدليس ويبرر ذلك بـ (خشية الهجوم الليلي)، كما أنه وفي موضع آخر يصف رسالة الخان إلى الباشا، بـ"تلك الرسالة التي تتساقط منها الدرر". وكأنه يريد أن يقول أن الخان لم يكن عاقاً للباشا ولكنه كان تحت طوعه.

وأما بالنسبة للرسالة التي أرسلها عبدال خان إلى باشا (وان)، فجاء فيها: "قبل كل شيء أشكر الخالق الذي لا مثيل له، والذي أعطى الإنسان العقل التام، وجعله أشرف وأعلى المخلوقات والذي اختاره لمعرفة الخير والشر ومعرفة نفعه وضره، ولكيلا ينخدع بأكاذيب المفسدين والحاسدين والماكرين والمحتالين، فإن الذين يحكمون الناس وتكون شؤونهم في أيديهم، يجب إجراء هذه الأمور بعدالة وحيادية وبدون مراعاة مكاسبهم الخاصة، وعدم أخذ آراء أولئك الناس الذين



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ذكرناهم. فهل يصح هذا، بانني ليس لدي ذنب بقدر ذرة واحدة، فتقوم أنت وحسب سوء الظن بجمع هذا البحر من الجيوش، وتريد الهجوم علي؟ ألا تصبح مسؤولاً عن هذا كله في يوم الحشر؟ تريد أن تتعرض مدينة بدليس وهي من الممالك العثمانية للهجوم والنهب والسلب، وأن تحطم أطفال الكورد تحت أقدام الظلم والقمع، فكيف ستجيب السلطان حول ذلك؟ فعندما كنت ضيفاً في بيتي، ووعدتني بكل هذه الوعود الجميلة وكلمتني بهذا الكلام الطيب، فكيف نسيت كل ذلك بهذه السرعة، ألم يقولوا (أن الكريم إذا وعد وفى؟) ففي ذلك اليوم الذي قلت لي (يا أخي الخان، إن شاء الله سأضيف سنجق "موش" على أملاكك في بدليس، وسأرد لك كل محاسنك) ... . إن الأكراد يتوجهون في فصل الصيف إلى مصيف (ملاز كرد)، و يذهب رجالنا لإحصاء رؤوس أغنامهم، وحسب القانون السلطاني يأخذون منهم ضريبة الغنم، ولكن (محمد بك) جلب معه جيشاً ووضع أصحاب الأغنام الكورد تحت رعايته ومنعهم من دفع ضريبة الغنم، وفي تلك المواجهة، حدث قتال بين الطرفين وقضى بضعة أشخاص نحبهم في القتال، وحول ذلك الموضوع استحصلنا الفتوى من المذاب الأربعة والفتاوى موجودة لدينا.. أما رجال الإنكشارية، فأردنا أخذ الضريبة الأميرية من أقمشتهم، ولكنهم امتنعوا عن دفع الضريبة، وهجموا بشكل فوضوي على حدائقي وقاموا بتجريح عدد من رجالي، وأن هذه المشكلة مكتوبة في السجل الشرعي الذي أرسلنا لكم مع الرسول. فإذا كان هؤلاء قد أتوا بالإضافة إلى أفعالهم غير القانونية، وقد نسجوا بعض الأكاذيب والأباطيل عني، وأنت تقوم بإرسال كل هذه الكلمات البذيئة لي، ولكن رغم إنني لا أرى أي ذنب لي، فإنني أطلب منكم اعتبار هذه الرسالة، رسالة توبة وندم من الذنب كمن لا ذنب له)، لأن صداقتنا ومحبتنا السابقة كثيرة، **<u>وأنتم وزير لخليفة رسول رب العالمين، (وخلفائه الراشدين المرشدين من بعده ووزراءه في عهده)</u>** ومن المفروض فيكم مساندة طرف العدالة، وأن لا تنسوا وعودكم وأقوالكم السابقة. إنني أحلفك برسول الله وخلفائه الأربعة وبرأس سلطانكم العظيم أن لا تهينوني بين الأقران وأن لا تكسروني، وها أنا أرسل لكم هذه الرسالة مع (زينل أغا) العائد لي لخدمتكم، وما ترونه مناسباً لإجراء الصلح مع المشتكين، أرجو أن تساعدوني في ذلك، أدعو لكم بالسلامة" (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٥٩- ٢٦١).

لقد تبين للباشا من رسالة الخان أن "محمد بك ملازكرد" لم يدفع ضريبة رعي لغنم للخان، بل وهو من بادر بمهاجمته. كما تبين له أيضاً أن الإنكشارية قد قاموا بشكل فوضوي بالهجوم على (مضيف) الخان، وكان من حقه أن يرد عليهم. وكان سؤال الباشا والذي وجهه إلى "زذيل أغا"، عن عدم حضور عبدال خان لديه لإجراء المحاكمة الشرعية؟ فكان رد "زذيل أغا" أن الخان قد تأثر كثيراً، ويرجو إجراء الصلح بينه وبين الإنكشارية، وأن الخان قد أرسله "زذيل أغا" نيابة عنه، ولخدمة الباشا في هذا الغرض. إلا أن وجهاء (وان) لم يرتضوا هذا الحديث، ووصفوا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

عبدال خان بالمخادع، وأن سوف يقوم بتدمير بيوتهم كما فعل مع "محمد بك ملازكرد"، وأضافوا أنه سيفعل في وقت الضيق ما فعله جده (شرفخان) عندما فر إلى بلاد العجم، **"وذلك لأن هؤلاء هم أعداء العائلة العثمانية منذ القدم"**. ووجد هؤلاء الوجهاء أنه ما دام وقد تجمع هذا الجيش، وسنحت له الفرصة فلنبادر بالهجوم والقضاء عليه. ولقد أطالوا في هذا الحديث، إلى أن قرر الباشا الهجوم على بدليس (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٦١، ٢٦٢). ويتضح من هذا الموقف أن الهجوم على بدليس ليس من أجل إعلاء كلمة الحق، ولكنه تربص بالخان، لأشياء تضمرها أنفسهم تجاه الخان، وما دامت الفرصة قد سنحت للهجوم على الخان، فمن وجهة نظرهم أنه لا يجب تضيعها.

**وهناك مسألة لا يجب إغفا لها**، فيرى الباحث أنه بتحليل ما ورد برسالة "ملك أحمد باشا" إلى "عبدال خان" أنه يقول في أحد المواضع نقلاً عن "عبدال خان"، قائلاً: **"وإنك تدعي أنك من نسل السلطان أوحد الله العباسي"**، وإن دل هذا على شيء فإنما يدل على نسب "عبدال خان" إلى سلاطين العباسيين. ومن خلال استقراء نص رسالة "عبدال خان" إلى "ملك أحمد باشا" فإنه يقول له: **"<u>وأنتم وزير لخليفة رسول رب العالمين، (وخلفائه الراشدين المرشدين من بعده ووزراءه في عهده)</u>"** ويلاحظ أنه تم وصف السلطان العثماني بخليفة المسلمين من جاب خان بدليس، والذي هو من نسل الخليفة العباسي، وإن دل هذا على شيء فإنما يدل استخدام السلاطين العثمانيين لهذا اللقب، وليس كما يشاع أن هذا اللقب استخدم فقط في أوقات ضعف الدولة العثمانية. فهذه الرسالة تحسم الجدل الدائر حول انتقال الخلافة من العباسيين إلى العثمانيين في أعقاب سيطرة سليم الأول على مصر عام ١٥١٧م.

**الهجوم على بدليس:**

قام الباشا بالتحرك بمعية ستة آلاف من العساكر (المحمودية) المنتخبة، وهم من الأكراد الذين يمتازوا بالقوة الجسدية، ووصل إلى قرية (جاي باشي) ونصب الخيام، واتخذ له مقراً هناك. ولقد نودي داخل المدينة بأن كل من يستطيع حمل السلاح، فعليه أن يتوجه إلى هناك، كما أرسل الرسائل إلى (٧٠) من بكوات السناجق وأمراء الجيش، ثم أرسل رسالتين خاصتين بيد الأغوات؛ حيث أرسل أحدهما بيد (أحمد أغا أرغنيلي) إلى والي أرضروم "طاوقجي مصطفى باشا" لإرسال نخبة قواته العسكرية. وأرسل الرسالة الأخرى إلى والي دياربكر الباشا " فراري مصطفى باشا" لكي يأتي مع قواته العسكرية المنتخبة. وبدأت بذلك أمواج قوات الجيش تتدفق يوماً بعد يوم وتتجمع أمام قلعة (وان) (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٢٦٣).

وعلى الرغم من أن الجانب الأكبر من جيش "ملك أحمد باشا" هم من الأكراد، إلا أن ما ذكره "أوليا جلبي" حينما قام الباشا وجمع حوله أغوات "وان" قبل القتال، وقال لهم: " يا أبنائي الأغوات، إنني أعلم بأنكم قد وعدتم بالتضحية بدمائكم من أجل الدولة، وقد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

خضتم حتى الآن عدة معارك بشجاعة، ولكن لأقل لكم، فلنفرض أن الكورد الذين هم معنا، انقلبوا جميعاً ضدنا، ورفعوا سيوفهم بوجهنا وهاجمونا معاً، وقمت أنا بمناداتكم (هيا يا أبناء قومي الغزاة) فماذا ستفعلون أنتم؟.. فقال الأغوات (أيها الوزير سنقدم رؤوسنا وأرواحنا إلى أن نصبح جميعاً فداء للدولة، وإلى أن نقتل سنقاتل)، وبهذه الكلمة، قرأ الباشا سورة الفاتحة ومسح وجهه بكفيه (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٨٢). وهذا الموقف وإن دل على شيء فإنما يدل على عدم ثقة الباشا في الأكراد بوجه عام، ويلاحظ كذلك أنه لم يجمع أحد من قادة الكورد والمفترض على الأقل أن منهم أهل ثقة، فعل سبيل المثال "محمد بك ملازكورد" وهو العدو اللدود لخان بدليس، إلا أنه لم يكن من بين الخاصة التي اختصها الباشا وانفرد بهم وقرأ معهم الفاتحة، وهو ما يعني أن الباشا لم يكن يثق بالأكراد بوجه عام، وأنه استخدمهم لهدف محدد وهو التخلص من خان بدليس.

**المعركة الحامية وهزيمة الخان:**

وصف الرحالة أوليا جلبي قوام الجيش الذي قام بمها جمة بدليس، وأوضح أنه في الرابع والعشرون من شهر رمضان لعام ١٠٦٥هـ، حضر القادة إلى خيمة الباشا، وقاموا بالدعاء له، فوجه كل منهم إلى المكان المخصص له، وكان حملة البنادق قد ذهبوا ليلاً إلى الكمائن التي خصصت لهم، وفي قلب الجيش، مع الباشا كان قد بقي ثمانية آلاف من الانكشارية، وأصحاب الطبول، والصكبانية، والساريجة، والمشاة المسلحون من (وان)، ثم ثمانية آلاف من العسكر المنتخب مع (بك محمودي) للميمنة، وستة آلاف مع (بك ملازكرد) للميسرة، وستة آلاف مع (شرف بك البايزيدي) في وسط الجيش، أما بكوات كل من (أرجيش، عادلجواز، موش، تكمان، قوروجان، باسين، عونيك، وخنس) فتوجهوا إلى الجانب الأيمن، كما توجه بكوات كل من (كارني، هيزون، سعرد، مكس، شروي، وكسان) إلى الجانب الأيسر، أما عساكر (هكاري) البالغة ١٢ ألف مقاتل، فشكلوا طليعة الجيش بصفة (جرخجي) وكانوا يسيرون أمام علم الباشا، أما القادة الكورد الآخرون مع عشرة آلاف مقاتل، بالإضافة إلى رجال الخدمات، مثل سائسي الخيول والسراجين والعاكمين وحاملي المشاعل وناصبي الخيام والطباخين، فشكلوا جميعاً مؤخرة الجيش، كما صدر أمر بتعيين الدوريات، فوقف رجال الجناح الأيمن لجيش (وان) في الجناح الأيمن للباشا، ورجال الجناح الأيسر في يساره، أما المشاة من قلعة (وان) ومشاة القلاع الأخرى، مع قوات المشاة التابعة لـ (هكاري)، وكذلك المقاتلين التابعين للثغور وهم ستة أفواج من الانكشارية، والمقاتلين من لابسي الجبب ورجال المدفعية الذين يشكلون جميعاً ١٢ ألف مقاتل من المشاة والذين كانوا يرفعون (٢٨) راية مع (٥٠) مدفعاً شاهانياً، وعدد (١٠) مدافع من نوع (قولومبورني)، وعدد (٤) مدافع من نوع (باليومز)، وكانت العساكر المنتقاة من (باشلي)، و(داشلي)، و(حسني)، و(الحسيني) يسيرون بتمهل على جانبي المدافع، ويسير خلفهم ثلاثة آلاف مقاتل من المشاة الفدائيين، وقد وقف الجميع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

على هذه الشاكلة لمدة ثلاث ساعات ونصف الساعة، فقام الباشا بلبس (الزرد)، وحمل سيف على كتفه، وقام بأداء ركعتين من الصلاة. وعندما بدأ جميع العساكر بالسير في سهل طريق (أووا)، كان الرقباء يسيرون بين صفوف الجيش ويقولون: "انتبهوا أيها الغزاة واعلموا، بأن هذا اليوم هو يوم كربلاء، إن العدو الماثل أمامكم هو عدو روحكم ودينكم، إنهم (يزيديون)، ولم تبق في الأمر ذريعة، اليوم هو يوم العثمانيين، فلا تكونوا غافلين". وعندما ظهرت أمام الجيوش سواتر خان (بدليس)، وحسب أوامر الباشا، تم رفع الأذان المحمدي لثلاث مرات، وقرعت الطبول الأميرية تسع مرات. وعندما وصل جيش الباشا إلى مرمى المدفعية، وقفوا وتوجه كل قائد إلى المكان المخصص له، وفي البداية تقدم (بك ملازكرد) إلى أمام (شاكر آغا) وزير الخان في جبل (دديوان)، وتوجه (بك كارني) إلى جبل (أويخ) لمواجهة (عرب خليل أغا)، وعندما وصل الخبر للباشا أنه أحيط بالمدينة من جهاتها الأربع، أمر المدفعية بالقصف.

كان النصر حليف قوات الباشا، ولقد فر "عبدال خان" بعد أن هيأ لكل واحد من أفراد عائلته من الأطفال والنساء فرساً أصيلاً، وأخذ الأشياء الثمينة جداً من أمواله. وتوجه مع خمسة آلاف مقاتل من أصحاب البنادق إلى جبال "مودكي"، وبالرغم من أن علاقته لم تكن جيدة مع "علي أغا المودكي" إلا أن مع ذلك توجه لطرفه، فوضع نسائه وأطرافه لديه، أما هو فقد خرج من عنده بعد أن خف حمله، وعندما وصل هذا الخبر للباشا، قام بإرسال (عدوه اللدود) محمد بك ملازكرد خلفه لتعقبه. ولقد تمكن الباشا من السيطرة على قلعة (بدليس) في الخامس والعشرين من شهر رمضان لعام ١٠٦٥هـ. إلا أن لم ينجح في اللحاق به (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٢٨٣- ٣٠٤).

**اعتراف "ملك أحمد باشا" عن أسباب الهجوم على بدليس:**

كان الدافع الرئيس لقيام الباشا بالهجوم على خان بدليس هو عدم قيام "عبدال خان" بمباركة سيطرة السلطان "مراد خان" على مدينة بغداد عام ١٠٤٨هـ، فتألم "مراد خان" من ذلك، وطلب من "ملك أحمد باشا" أن يأخذ بالثأر من خان بدليس، فكان ذلك هو الدافع الرئيسي للقيام بهذا الهجوم، وهو الأمر الذي أسر به "ملك أحمد باشا" إلى "أوليا جلبي" ونقلها "جلبي" بكل أمانه (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٣٠٢). وإن دلت هذه الرواية على شيء، فإنما تدل على إن الهجوم على "خان بدليس" كان مدبراً من جانب الباشا لشيء في نفسه، وأنه تظاهر أمام أغوات "وان" بالعدالة عندما طلب دعوة "عبدال خان" للمحاكمة في "وان"، بل أن الأكثر من هذا أنه نجح في خداعهم، لدرجة أنهم من طلبوا التعجيل بالهجوم على "بدليس" وهو يتظاهر بالتأني.

**تنصيب خان وان الجديد:**

يقول أوليا جلبي أن حضر إلى مجلس الباشا عدد من رجال الدين والشيوخ وكبار القوم ووجهاء بدليس، وكان يتقدمهم أولاد (عبدال خان)، وكان الأول هو (ضياء الدين بك) من زوجته



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بنت (زال باشا)، ثم الأكبر منه وهو (بدر الدين) من زوجته (عرب خانم) ثم (نور الدهر) من زوجة أخرى، فقبلوا أيدي الباشا وقام الباشا بتقبيلهم أيضاً، وأجلس (ضياء الدين بك) على جانبه الأيمن، و (بدر الدين بك) في الجانب الأيسر، ثم أجلس البكوات الآخرين في المجلس بالتسلسل. وفي هذا المجلس تم تنصيب (ضياء الدين بك) بصفته خان بدليس، وتم مبايعته (جلبي، ٢٠٠٨، ص ٣٠٧- ٣٠٩).

ولقد استولى الباشا على العديد من ثروات "عبدال خان"، ولقد وصفها أوليا جلبي بالتفصيل، ولكن ما يستوقف الباحث هو كمية المخطوطات التي تم الاستيلاء عليها، والتي تحتوي على موضوعات مهمة جداً، إلا أن الأمر المثير للاشمئزاز هو كيفية التعامل مع تلك الثروة العلمية، فجاء في وصف أوليا جلبي لتلك المخطوطات ما يلي: "... الأشياء الثمينة لـ(عبدال خان) والتي تم بيعها بحضور الباشا وبسعر رخيص. الأشياء هي: سبعة عشر مجلداً من القرآن الكريم كتبت بشكل منقوش للملوك وبخط (ياقوت المستعصمي)، وأحمد قرة حصاري، والشيخ بايزيد الولي، والشيخ قرة محمد، وعبد الله قريمي، وخالد أفندي أسكوداري، ودميرجي حسن جلبي وهو من طلاب قرة حصاري. وألف وثلاثمائة مجلد من التفاسير والكتب الثمينة..... وجميعها من التفاسير التي لا يمكن الحصول عليها حتى لدى شيوخ الإسلام. وألف وثلاثمائة مجلد من الأحاديث النبوية. ... وعدة كتب ثمينة أخرى... وألف مجلد من المخطوطات المتنوعة. .... وكتب عديدة أخرى منقوشة ومزينة. مع (٢٦٠) قطعة من المخطوطات، بحيث أن كل صفحة منها كانت تعادل مائة قرش .. ومعها مخطوطات للخطاطين القدامى، وكانت بعض تلك المخطوطات تتألف من ٦٠٠ صفحة، وكانت جميعها مخطوطات تعود لزمن السلطان (بايزيد).... وقد تم بيع هذه السجلات بشكل رخيص، بحيث لا يساوي ثمنها نقطة منها. وأحمال سبعة جمال من الكتب الثمينة والتي كانت تحمل ختم الخان. .... الفتوحات المكية تأليف الشيخ " محي الدين العربي"..... فتح مصر بخط السلطان "سليم خان" وهو من تأليف الكاتب "يوسف خان". ... من غير هذا كان ناك (٧٦) مجلداً من الكتب الفارسية والعربية والتركية من تأليف (عبدال خان) نفسه، مع (١٠٥) رسائل منوعة ومختلفة، كان معظمها باللغة الفارسية. مع مائتي مجلد من أطالس (مينور) والجغرافية (وبابا مونت) وكتب علم الهيئة والحكمة من مطبوعات الأفرنج، وكل من كان يراها كان يفقد وعيه لفرط جمالها، مع بضعة خرائط للعالم القديم والجديد، والتي كان يدور رأس الناظر عند النظر إليها، مع كل أنواع الأعشاب والنباتات التي كان الأطباء يحتاجونها. مع صور لجميع أعضاء جسم الإنسان، بحيث لا يستطيع أي ناظر من التمييز بينها وبين الأعضاء الحقيقية وكانت مصورة في بلاد الإفرنج. مع مائتي منظر ولوحة عجيبة كانت قد رسمت بأيدي العجم والإفرنج، وكل واحد منها كان مثالا للسحر الحلال، وكانت إحدى تلك اللوحات



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لمعركة بحرية بين مجموعتين من السفن الحربية، وكانت باختصار أشب ما تكون بأعمال السحر، إذ يظن المشاهد إليها أنها معركة حقيقية تقع أمام الأنظار. وكانت هناك أعمال لكبار الفنانين المشهورين العالميين...، بحيث كانت تجحظ أعين المشاهدين، ولا يشبعون من النظر إليها. .... وكانت من بينها صور نقشت على القماش... كما كان من بينها تخطيط بالقلم لـ (رضوان بك) من بلاد مصر والذي هو فريد زمانه" (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٣١١- ٣١٨). أما عن الحالة التي وصلت إليها تلك المخطوطات الثمينة، فيصف أوليا جلبي حالتها قائلاً: "نعم كانت هناك الآلاف من الأعمال الفنية الرائعة عالمياً، كانت قد وضعت في المزاد الرخيص، فكان يأتي مختلف أنواع الكورد، ومن الرعاع.... فكانوا يقلبون في هذه الصور واللوحات ويأخذونها من هذه الخيمة إلى تلك الخيمة للنظر إليها دون معرفة قيمتها الأصلية، ثم يعيدونها إلى أيدي الدلال، بعد أن تصبح مهلهلة ومجعدة. .. كانت هذه الأشياء الثمينة والنادرة التي تحدثنا عنها، تباع وتشترى أسوة بالفجل والجزر...." (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٣١٨). ويضرب أوليا جلبي مثالاً بمصير تلك المخطوطات النادرة، فيصف أحد التجار الذي قام بشراء نسخة من (الشاهنامة)[١٠]، حيث قام بتشويه جميع الصور النادرة في هذا الكتاب بحجة أن الصور محرمة، وقام بواسطة (سكين تركماني) بخلع العيون من جميع تلك الصور عن طريق حفرها وإحداث ثقوب في صفحات الكتاب، كما قام بقطع رؤوس بعض تلك الصور بواسطة السكين، أو بتشويه الوجوه الجميلة والملابس الفاخرة لتلك الصور... (جلبي، ٢٠٠٨، صـ ٣١٨، ٣١٩).

**وفي الختام**، فإنه يتبين من دراسة رحلة أوليا جلبي إلى كوردستان مدى التقدم والازدهار الحضاري الذي شهدته مدن كوردستان منذ القرن السابع عشر الميلادي، والتي تدل على تراث حضاري كوردي متميز عن الدولة العثمانية، فحافظ الأكراد على هويتهم عبر التاريخ، وتناقلت الأجيال تلك الهوية جيلاً بعد جيل. كما يتضح أيضاً من تلك الدراسة مدى حجم المؤامرة التي كان يهيئ لها العثمانيون للأكراد، ولم تفطن أنفس الأكراد لتلك المؤامرات، لدرجة أنهم ساعدوا "ملك أحمد باشا" في التخلص من خان "بدليس". وفي الوقت نفسه لم يكن "ملك أحمد باشا" يثق في الأكراد، فنجده في وقت المعركة يجتمع مع أهل جلدته ويتعاهد معهم في حال خزلان الأكراد له، مع العلم أن أوليا جلبي لم ينقل أي شيء يدعوه من الخوف من الأكراد، وإن دل هذا على شيء فإنما يدل على أمر في نفوس العثمانيين بوجه عام تجاه الأكراد.

## قائمة المصادر والمراجع


- أحمد، أحمد محمد، (٢٠٠٩)، **أكراد الدولة العثمانية تاريخهم الاجتماعي والاقتصادي والسياسي ١٨٨٠-١٩٢٣**، دار سبيريز.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

- أوليا جلبي الرحالة التركي، (٢٠٠٢)، **سياحتنامه مصر**، ترجمة محمد علي عوني، تحقيق عبد الوهاب عزام، أ حمد السعيد سليمان، تقديم ومراجعة أ حمد فؤاد متولي، القاهرة: دار الكتب والوثائق القومية.
- أوليا جلبي، (٢٠٠٨)، **رحلة أوليا جلبي في كوردستان عام ١٠٦٥هـ/ ١٦٥٥م**، ترجمة: رشيد فندي، أربيل: مطبعة، خاني- دهوك.
- سليمان، أحمد السعيد، (١٩٧٨)، **تأصيل ماورد في تاريخ الجبرتي من الدخيل**، القاهرة: دار المعارف.
- صابان، سهيل، (١٤٢١هـ/ ٢٠٠٠م)، **المعجم الموسوعي للمصطلحات العثمانية التاريخية**، الرياض: مطبوعات مكتبة الملك فهد الوطنية.
- عامر، محمود، (٢٠١٢)، "المصطلحات المتداولة في الدولة العثمانية"، **مجلة دراسات تاريخية**، عدد ١١٧.

**مواقع إلكترونية:**

- **فهرس المكتبة الوطنية الألمانية، على الربط الإلكتروني التالي:**
https://portal.dnb.de/opac.htm?method=simpleSearch&cqlMode=true&query=nid=102828732

**الهوامش:**

---

(١) أفندي: من الكلمة اليونانية [أفنديس Avandes]، دخلت اللغة العثمانية الأناضولية في وقت مبكر واستعملها العثمانيون في القرن الثالث عشر الميلادي، وكثر استعمالها بعد ذلك في العهد العثماني، واستعملها العثمانيون لقباً للرجل الذي يقرأ ويكتب، واستخدمت لقبا أيضاً لبعض كبار الموظفين، فقد كان يقال لرئيس الكتاب "رئيس أفندي" ولقاضي استانبول، استانبول أفنديس، أي أفندي استانبول، وكان لقباً للأمراء أولاد السلاطين، وأطلقت على مشايخ الإسلام، وكثيراً ما نقول أبو السعود أفندي، وكان العثمانيون يطلقونها على رؤساء الديانات الأخرى. كما كان الجيش العثماني يلقب الضابط بلقب أفندي حتى رتبة البكباشى، أما الملازمون واليوزباشيه [الألية العلالية] يلقبون بلقب أغا لا بلقب أفندي، كانت المرأة تلقب بلقب أفندي، فيقال [خانم أفندي] وكان يقال لزوجة السلطان [قادين أفندي] وربما الحقت كلمة أفندي بكلمة بك. وكانت كلمة أفندي تطلق في اللغة العربية على الكاتب الموظف في الدولة، وكان الروزنامجي في مصر هو رئيس الأفندية. "انظر، سليمان، أحمد السعيد، (١٩٧٨)، **تأصيل ماورد في تاريخ الجبرتي من الدخيل**، القاهرة: دار المعارف، ص٢٠".



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

(٢) سلحدار أغا: هو مدير موظفي الغرفة الخاصة، وكان يحمل سيف السلطان على كتفه في المراسم الخاصة، ويمشي وراءه. انظر: "صابان، سهيل، (١٤٢١هـ/ ٢٠٠٠م)، **المعجم الموسوعي للمصطلحات العثمانية التاريخية**، الرياض: مطبوعات مكتبة الملك فهد الوطنية، صـ ٣٥".

(٣) مدينة وان: هي مدينة قديمة على جانب بحيرة وان على طريق إيران وهي من أكبر المدن الكردية ترتفع نحو ١٧٥٠ متراً عن سطح البحر تحيط بها جبال مرتفعة تغطيها الثلوج معظم أيام السنة. انظر: "أحمد، أحمد محمد، (٢٠٠٩)، **أكراد الدولة العثمانية تاريخهم الاجتماعي والاقتصادي والسياسي ١٨٨٠-١٩٢٣**، دار سيبريز، صـ ٧٨".

(٤) تقع إمارة بدليس فى جنوب غرب بحيرة وان وتضم فى حكمها مدينة بدليس وتوابعها الصغيرة.

(٥) تقع مدينة "اسكودار" على الساحل الشرقي لمضيق البسفور في مقابل إستانبول.

(٦) تطرق الرحالة أوليا جلبي إلى أساس تسمية منطقة ملاطية بهذا الاسم؛ فيسميها العجم "اسبوزان"، أما التوركمان "مال آتية" والعرب "ملاطية"، ويسميها اليونانيون "رقبة". وأن أعيان المدينة يقولون أنها تسمى (مال آتيه) أي أن المال يأتي. **انظر**: "رحلة أوليا جلبي في كوردستان، المصدر السابق، صـ ٢٠، ٢١".

(٧) **خان: هو لقب الملوك والأمراء وسادة الأتراك، كما يعني منزلاً للمسافرين والتجار.** "انظر: عامر، محمود، (٢٠١٢)، "المصطلحات المتداولة في الدولة العثمانية"، **مجلة دراسات تاريخية**، عدد ١١٧، صـ ٣٧٢".

(٨) القبان: هو ميزان قديم يستعمل لوزن الأشياء الثقيلة، مثل وزن أكياس الحبوب أو صناديق الفاكهة. وقد توسع معنى القبان بين الشعوب في الشرق الأوسط، بحيث أصبح المحل الذي يستعمل فيه يسمى (القبان)، أو يسمى (العلوة). انظر: رحلة أوليا جلبي في كوردستان، المصدر السابق، صـ ١٢٢.

(٩) **يرى الباحث أن استخدام هذا التعبير دليل على إبداء الضعف أمام رسول الباشا، وللدلالة على شدة المصاب، وكنوع من استعطاف الباشا، عندما يتم وصف حال الخان عند استقبال رسالة الباشا.**

(١٠) الشاهنامة: أشهر ملحمة فارسية، كتبها الشاعر الفردوسي (٩٣٢- ١٠٢٠م) شعراً، وهي تتألف من ستين ألف بيت من الشعر، وهي في سيرة ملوك وأبطل الفرس. انظر: **رحلة أوليا جلبي في كوردستان**، مصدر سابق، صـ ٣١١.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

**Kurdish cultural and civilizational heritage in the writings of travelersduring A study in the writings of the traveler "Elia Chalabi" ,the seventeenth century to Kurdistan 1065 AH / 1655 AD**

**ABSTRAC**

The Kurdish identity is a distinct identity, and it has solid foundations in the formation of the Kurdish nation. From this point of view, the motive for choosing the subject of the study was to explore the Kurdish cultural and civilizational heritage as one of the motives of Kurdish nationalism, as the Kurdish heritage is a distinctive heritage, and adhering to it and developing it for sustainable development helps the continuity of the Kurdish identity, especially with the increasing challenges in the era of globalization, which is characterized by the interpenetration of cultures With the spread of the Internet and social media, it may cause the disintegration of societal values, and thus the elimination of the distinctive identity of peoples.

Heritage is the inheritance of parents and grandparents, and heritage is divided into tangible and intangible heritage. During the study, light will be shed on the bright spots of the tangible and intangible Kurdish heritage. The current study sheds light on the writings of the traveler "Elia Chalabi" during his trip to Kurdistan during the seventeenth century AD, where the Kurdish cultural manifestations that he described will be dealt with through criticism and analysis, by studying issues related to lifestyle, customs and traditions, Kurdish crafts and industries, and heritage. Kurdish urban design of cities, castles, houses, and Kurdish folklore.

The study deals with the aspects of life in Kurdistan through two main topics, the first of which relates to some aspects of civilization in Kurdistan through the vision of Elia Chalabi; As for the second topic, it is related to the relations between the Kurds and the Ottomans, by examining the circumstances that were associated with the Ottoman attack on Bidlis.

**Keywords**: *Kurdish emirates, travels, Ewliya Chalabi, Bitlis, civilization*

## کولتووریٚ رەوشەنبیری و شارستانیا کوردان د پەرتووکێن گەروکان ل سەدەییٚ هەڤدێدا
## خواندنەکا د گەریانا ئەولیا چەلەبی بو کوردستانیٚ ١٠٦٥مش/١٦٥٥ز

**پۆختە:**

نا سنامەیا کوردی نا سنامەیەکا جیاواز هەیە کو ل سەر چەند ستوونان ئا ڤا بوویە ئەوژی زمام، مێژوو، رەوشەنبیریا هەڤپشک کو ب هەڤرا شارستانیا کوردان ئاڤا دکەن.

کولتوور ئەو میراتە کو ژ باب و کالان مایە و بو دوو بەشان لێکڤە دبیت: کولتووریٚ ماددی و ییٚ نەماددی. و دڤیٚ ڤەکولینێدا دیٚ روناهیێ بەردەینە سەر هەردوو جورێن کولتوری د ناڤ کومەلگەها کوردان ل سەدەییٚ حەڤدیٚ دا ب رێکا خواندنە ڤەیا پەرتووکا ( سەیاحەتنامە) یا گەروکیٚ تورک ئولیا چەلەبی، و تیٚدا دیٚ بەحسیٚ دیاردەیێن شارستانیا کوردان و جوریٚ ژیان و دابو نەریتان و پێشە سازی و پیشەیێن خو مالیێن کوردان، هەروەسا کولتووریٚ ئاڤەدانیێ ل کوردستانیٚ ژلاییٚ دیزاینکرنا بایژر و کەلا و خانیان و فولکلوریٚ کوردی هێتە کرن.

**پەیڤێن سەرەکی:** *میرنشینێن کوردان، گەریان، ئەولیا چەلەبی، بەدلیس، شارستانی.*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# بهدينان في كتابات مؤرخي الموصل في القرن الثامن عشر ياسين بن خير الله العمري انموذجاً

أ. د. محمود صالح سعيد
كلية الاداب- جامعة الموصل /العراق

**الملخص:**

حظي تاريخ إمارة بهدينان في العهد العثماني باهتمام العديد من المؤرخين والرحالة الذين زاروا وكتبوا عنها نظراً لما تمتعت به الامارة من مكانة مهمة ونشاط عبر سنوات حكمها ، وكانت إمارة بهدينان تمثل واحدة من أبرز الامارات الكوردية التي ظهرت في العهد العثماني وكان لها ادواراً سياسية وحضارية مهمة وعلاقات بارزة مع المناطق المجاورة لها بما فيها ولاية الموصل . ونتيجة لهذه العلاقات فقد اهتمت الموصل بهذه الامارة وحظيت باهتمام من قبل الولاة والحكام ، مما استدعى قيام المؤرخين الموصليين بالكتابة عنها نظراً لقوة العلاقة بين الإمارة والموصل ، وترابط المصالح السياسية والاقتصادية بينهما لا سيما وأن التجارة كانت واحدة من أهم الروابط التي عزّزت العلاقة بين الموصل وإمارة بهدينان . ومن هذا المنطلق جاءت مؤلفات المؤرخ الموصلي ياسين بن خير الله العمري لتسلّط الضوء على جانب مهم من جوانب تاريخ إمارة بهدينان ، ولا سيما وأن مؤلفاته التي بلغت سبعة عشر مؤلفاً تضمن بعضها حديثاً متنوعاً عن إمارة بهدينان وتأريخها ، ولم يقتصر على الجانب السياسي فحسب بل شمل الجانب الاقتصادي والعلمي وفي هذا البحث محاولة لتسليط الضوء على جهود هذا المؤرخ الكبير الذي لا غنى لأي باحث في تاريخ المنطقة الاستغناء عن مؤلفاته .

**مفاتيح الكلمات** : *بهدينان ، ياسين العمري ، القرن الثامن عشر ، مؤرخو الموصل.*

## أولاً : ياسين العمري والمؤرخون الموصليون:

وصف كيمب ياسين العمري بأنه واحد من أربعة مؤرخين موصليين يعدون من ضمن المؤرخين المحترفين ( كيمب : ٢٠٠٧ ، ص١٤١-١٥٢) (*)،ولكن يبدو أن ياسين العمري هو أعظم مؤرخي الموصل على الاطلاق لما ألّف من نتاج تاريخي وأدبي من الصعب إن لم يكن من المستحيل التخلي عن مؤلفاته ونحن نكتب عن تأريخ المنطقة في القرن الثامن عشر.

إن ياسين العمري رغم تواضعه واعترافه بقصوره العلمي (الشرعي ) بالمقارنة مع أخيه الأكبر أمين العمري إلا أن المؤلفات الكثيرة التي تركها يجعلنا نقف باحترام وإجلال كبيرين لما



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

قدّم ، فمؤلفاته لم تقتصر على مدينة الموصل فحسب ، بل توجه إلى مختلف جهات المنطقة شمالاً وجنوباً ، إن ياسين العمري الذي نشأ في إسرة علمية ، مشهورة بعلمها ومكانتها الاجتماعية والاقتصادية والسياسية في مدينة الموصل ، تجعل من مؤلفاته قيمة كبيرة ، ولا شك أن والده خير الدين كان يمثّل أحد مصادر معرفته ، وكذلك أخية أمين ، صحيح أن ياسين العمري لم يكن كأخيه في العلم الشرعي إلا أن توجهه الصوفي وتعليمه ، أهّلاه لتبوء مكانة مهمة في حقل التاريخ ، ولا شك أن المدرس الوحيد الذي وصلتنا معلومات عنه والذي درّس ياسين العمري هو الشيخ عبد القادر الاربيلي الذي أشتهر بالموصل عام ١٧٨٩م ، إذ درّس في مدرسة الحاج زكريا التاجر في محلة شهر سوق بباب عراق ، وتلقّى العلم الشرعي ، الفقه تحديداً ، منه وحصل على أول إجازة ، وكان عمر ياسين العمري قد تجاوز الست وأربعون عاماً ، فكانت بداية ، وإن بدت متأخرة نسبياً ، إلا أن نتاجه مثّل قفزة علمية ومعرفية هامة في تاريخ الموصل وما جاورها من مدن وبلدات وقصبات ( كيمب ، ٢٠٠٧).

امتلك ياسين العمري ثقافة واسعة جداً ، ويبدو أن أخاه أمين ساعده في ذلك كثيراً (كيمب ،٢٠٠٧)، فقد عاشا في نفس الدار وتشاطرا الدار نفسه عقب وفاة والدهما في محلة باب عراق حتى سنة ١٧٧٧م ، ويعترف ياسين بعلم أخيه وفضله عليه ، فيقول عن أخيه أمين العمري :" أنا لست إلا قطرة في محيط ثقافته" (كيمب ، ٢٠٠٧، ص١٥٢).

لم يكن ياسين العمري مجرد مثقف منعزل عن محيطه بل دخل في خدمة الوزراء الجليليين أبرزهم الوالي سعد الله باشا بن حسين باشا الجليلي(١٨١٠-١٨١٢م) وكان إمامه الشخصي لأثني عشر سنة ، كما دبّر معيشته بتأليف الكتب والمدح للوزراء والأمراء والاعيان مُهدياً جميع كتاباته فاستحق لقب : مؤرخ البلاط الموصلي ، علماً أن تأليفه لم يكن بتكليف من أحد بل بدافعٍ شخصيٍ على أمل الحصول على مكافئة مالية من أصحاب المناصب ، ولم يستفد من كتب والده خير الله بعد ان استحوذ عليها أبناء أخيه أمين العمري ، فكان يعيش كفافاً حتى وصل به الأمر إلى بيع مسودة عمل تاريخي كبير كان يقوم بتصنيفه سنة ١٧٩٠م بسبب الحاجة ، ومع ذلك نجح ياسين العمري في تكريس جلّ وقته في الكتابة ، والعمل التاريخي ، حتى أصبح نتاجه التاريخي الواسع والثرّ مصدراً أساسياً من مصادر دراسة تاريخ الموصل والمنطقة حتى نهاية العصر الجليلي ، فهو المدون المحلي للعهد الجليلي بلا منازع (كيمب ، ٢٠٠٧).

ما وصلنا من مؤلفات لياسين العمري بلغت سبعة عشر مؤلفاً وهو عدد ضخم ليس جميعها متوفر أو متاح إذ أن ما وصلنا من مؤلفاته بلغت خمسة عشر مؤلفاً قسّمها الباحث البريطاني بيرسي كيمب إلى خمسة أصناف : تاريخ السلالات الحاكمة ، تاريخ حوليات (سنوية) ، معاجم التراجم ، التاريخ المحلي وتاريخ الاحداث . هذا فضلاً عن كتب في الادب : روضة المشتاق


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

ونزهة العشاق ، روض الادب ، وعيون الادب ، وكتاب في علم العروض : العذب الصافي في تسهيل القوافي ، وقصائد تشمل المديح والتاريخ وتفسير الاحلام وكتاب عن الصلاة والادعية : السيوف الساطعة ، ورسالة في الطب : الخريدة العمرية . كما استنسخ عدة كتب تعكس اهتماماً واضحاً في التصوف : اللمعة النورانية في حل مشكلات الشجرة النعمانية لصدر الدين القنوي (ت ١٢٧٣م) ، وكتاب : روض الرياحين في حكايات الصالحين لليافعي ، وكتاب : تحفة الراغبين في أمر الطواعين وهو مقتطف من بذل الماعون في أخبار الطاعون لأبن حجر العسقلاني ، وكتاب : الكشف عن مجاوزات هذه الامة للسيوطي ( في علم الحديث) ، وكتاب : مسائل الخلاف بين الامامين لمؤلف مجهول ، وكتاب : القلائد والفرائد ، لعبد الغني النابلسي (في الفقه) وقصيدة : تحفة المبتدي ، وقطعة ادبية بعنوان : اختلاج الاعضاء ( منسوبة للإمام جعفر الصادق) واستنسخ ايضاً : ديوان : صفي الدين الحلي (ت ١٣٤٩م) وكتاب : الدر النقي ( في الموسيقى) ( ترجمها مسلم اخي باب الموصلي لرسالة عبد المؤمن البلخي ) (كيمب ، ٢٠٠٧ ) ، وسوف نفصّل الكلام عن هذه المؤلفات في المحور الرابع بقدر تعلقها بامارة بهدينان حتى لا نخرج عن الهدف الاساس لهذا البحث .

**ثانياً : منطقة بهدينان أهمية الموقع والعلاقات الاقتصادية مع الموصل:**

ترجع تسمية بهدينان إلى شخص يدعى بهاء الدين وكان أحد حكّام القلاع في منطقة شمدينان التابعة لولاية وان ، وان هذه الاسرة نزحت إلى العمادية وتولت حكم الامارة هناك ، في حدود القرن الثالث عشر للميلاد ، فانتسبت الامارة إلى اسم زعيم الاسرة الامير بهاء الدين (البدليسي، ٢٠٠١ ؛ العباسي، ١٩٦٩) وهكذا فإن مصطلح بهدينان هو الاكثر شيوعاً في الكتابات التاريخية بينما مصطلح بادينان هو الاكثر شيوعاً بين سكان المنطقة نفسها من حيث اللفظ (كيمب ، ٢٠٠٧ ).

تمتعت امارة بهدينان بعلاقات اقتصادية وثيقة مع الموصل إبان العهد العثماني، فقد كانت مدينة الموصل تتمتع بعلاقات اقتصادية واسعة مع مختلف البلدان المجاورة ، وكانت ترتبط بطرق تجارية متعددة ومتنوعة ، وكان من بين هذه الطرق طريق تجاري شهير يربط بين الموصل والعمادية عبر بلدات القوش ودهوك ، فكان هذا الطريق يعد من أكثر الطرق التجارية أماناً، إذ أقيمت على الطريق العشرات من القرى العربية والكردية والمسيحية مما يدل دلالة واضحة على الامان الذين كان عليه الطريق على عكس الطريق المؤدي إلى ماردين الذي كانت تحفه الكثير من المخاطر ، وفي هذا الصدد يشير كيمب :" إلى أن المبادلات التجارية بين الموصل مع إمارة بهدينان كانت واسعة جداً في حين بقيت المبادلات التجارية مع شرقي كردستان ويقصد بها : السليمانية وراوندوز وكويه جق متواضعة " (كيمب ، ٢٠٠٧ ) وبالنظر لأهمية هذه العلاقات الاقتصادية والتجارية فقد وثّقها المؤرخ ياسين العمري في بعض كتبه ، وأشار إلى دور الاكراد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

المحليين المسلمين بإنه كان متواضعاً بالمقارنة مع المسيحيين واليهود والارمن ، فقد وردت إشارة في كتا به ز بدة الا ثر يبين فيها كما قال : " بالنسبة لأ مارة بهدينان لم يكن الا كراد المحليين المسلمين دور بالتجارة بل النشاط كان محصوراً على النصارى واليهود والارمن " (العمري ، ١٩٨٤، ص١١٣)، وهذا دليل على أن الاكراد لم ينشطوا بالتجارة بشكل كبير بل كانوا مزارعين بالدرجة الاساس .

كانت طبيعة العلاقات التجارية بين الموصل وبهدينان قائمة على أساس المبادلات التجارية الواسعة ، ففي حين كانت المبادلات التجارية مع شرقي كردستان : السليمانية وراوندوز وكويسنجق متواضعة، بقيت المبادلات التجارية مع بهدينان واسعة ، وكانت الطرق التجارية بينهما من أفضل الطرق التجارية ، وكانت الموصل تمثل مركز تجميع العفص وصوف الجبل ، واعتمدت الموصل وبهدينان على سلامة الطريق بينهما من أجل تحقيق الفائدة الاقتصادية بينهما ، ومما ساعد على توثيق الصلات التجارية بينهما أن نفوذ ولاية الموصل العسكري والسياسي كان خارج نطاق بهدينان في وقت كانت الامارة تابعة لحكم المماليك ببغداد في بعض الفترات وكان حرص حكام الموصل خاصة الجليليين على إدامة العلاقة مع المماليك أن يوطّدوا علاقاتهم مع إمارة بهدينان كي ما يغضبوا حكام بغداد ، ومع سقوط حكم المماليك في بغداد وانهيار الحكم الجليلي بالموصل تحولت إمارة بهدينان إلى حدود ولاية الموصل ، واندمجت معها ، فكانت هذه الخطوة طالع خير للتجارة بينهما واستطاعت الموصل ان تمد نفوذها وتحل محل بغداد في بهدينان وبالتالي الهيمنة على تجارة بهدينان والسيطرة على طريق سوريا التجاري (كيمب، ٢٠٠٧).

أدّت الموصل دائماً دور مدينة مركزية للتجارة مع البلدات المجاورة بما فيها بهدينان فكانت مختلف البضائع والسلع تأتي إلى المدينة ، وكان التجّار المواصلة يديرون التجارة معها ، وقد أشار العمري إلى أن المبادلات التجارية بين الموصل وبهدينان واسعة جداً والسلطات العثمانية كانت دائماً حريصة على ضمان أمن الطرق التي تربط الموصل بالعمادية وعقرة ودهوك ، والتأكيد على ضرورة استتباب الامن في هذه المنطقة الجبلية المهمة ، وكانت الموصل تتأثر بالنزاعات الكردية إلى حد كبير في تجارتها وكذلك حرفها (العمري ، ١٩٤٠) .

كانت أهم مواد التجارة بين الموصل وبهدينان هي مادة العفص ، إذ كان تجّار الموصل يجلبونها من الجبال ويشحنونها إلى سواحل البحر المتوسط والخليج العربي ، حتى كان يطلق عليه "العفص الموصلي" (كيمب ، ٢٠٠٧، ص٥١) الذي يمتاز بنوعيته الجيدة ، وقد قدّر الحاصل عام ١٨٣٠م بحوالي ١٠ الاف قنطار كان يصدر ربعه إلى حلب والباقي يجد طريقه إلى البصرة والهند وأوروبا ، وقسم لا بأس به يستخدم في الحرف داخل المدينة خاصة في دبغ الجلود ، أما محصول القطن فلم يستطع انتاج القطن أن يلبي متطلبات الصناعة المحلية ، فكان تجّار القطن يشترونه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

من جبال العمادية ، وفضلاً عن هاتين المادتين ، العفص والقطن ، فقد جهّزت إمارة بهدينان الموصل بمادة التبغ ، كما جهّزت بهدينان الموصل بجميع احتياجاتها من الخشب وفحم الخشب الذي له استعمالات متعددة للتدفئة والطبخ وبعض الصناعات والحرف وكان تجّار الموصل ينقلونه بأنفسهم (العمري ، ١٩٨٤ ؛ كيمب ، ٢٠٠٧ ) كما كانت بهدينان تنتج الصوف والجلود المدبوغة وحلوى منّ السما والعنب والزبيب والتفاح والعرموط والرمّان والجوز والخيار والعسل واللبن وكذلك الأواني الفخارية التي تستعمل في المدينة لحفظ الماء نقياً وبالمقابل جهّزت الموصل بهدينان بالحنطة والشعير والالبسة والقماش والقطن والتمور والملح والمنتجات الأوربية ، ويظهر من هذا النمط التداولي أن التجارة بين الموصل وبهدينان لم تكن في صالح أهل الموصل وتجارها لأن الاستيرادات فاقت الصادرات كثيراً لكن حين نضعها في إطار أوسع ، فإن هذا النمط من التبادل يوضّح دور الموصل كوسيط ناجح بين المناطق المنتجة والاطراف المستوردة ، وقد استفادت الموصل كثيراً من التجارة مع بهدينان كونها مركز تجمع للبضائع نحو المدن الأخرى .

كانت طرق التجارة التي ربطت الموصل بإمارة بهدينان من أهم الطرق التجارية التي تميزت بالحيوية والنشاط ، ذلك مثّلت بهدينان منطقة إنتاج للعفص غاية في الأهمية ، وكانت هذه الامارة ترتبط بصلات تاريخية مع الموصل منذ العصر الأتابكي ( الديوه جي ، ٢٠١٣) وطيلة العهد الجليلي ( رؤوف ، ١٩٧٥) حرصت الموصل على ادامة السلام مع امارة بهدينان وإدامة الطريق المؤدي إليها وكانت الاحداث الخاصة بالسلب والنهب قليلة جداً إذ انتشرت القرى والحقول بين الموصل وبهدينان مما يدل على حالة الامان التي كانت عليها .

كما ان تجارة بهدينان كانت معظمها مع الموصل وكانت تعد سوق رئيسية ، ويبدو أن عقرة (الجوادي ، ٢٠١٥) كانت في مقدمة مناطق بهدينان التي ترتبط بعلاقات تجارية وثيقة مع الموصل نظراً لقربها الجغرافي ، وكان العديد من سكان عقرة يتقنون اللغة العربية لكثرة ترددهم على الموصل ، كما إن أهل الموصل يقصدون عقرة للحصول على منتجاتهما حتى أنهم أطلقوا على عقرة ( كجك اسانبول) أي إستانبول الصغيرة ، فكانت منتجاتها الزراعية من قبيل العفص والرز العقراوي والقطن والجلود والرمان وشرابه والعسل والمنتجات الحيوانية من حليب ودهن ونحوها فضلاً عن الفواكه ( العمري ، ١٩٦٨) كالتين والعنب والتفاح والخوخ من أبرز المنتجات المصدر إلى الموصل وأسواقها ، كما اشتهر سكان عقرة ببعض الصناعات اليدوية حتى أن أسواقها كانت متخصصة ومقسمة حسب الحرف مثل سوق الصاغة والندافين والاحذية (الدوسكي ، ٢٠٠٦) ربما تحاكي بذلك أسواق الموصل القديمة التي تتميز بالتخصص أيضاً .

كان النزاع السياسي في إمارة بهدينان يؤثر بشكل كبير على العلاقات التجارية بين الموصل وبهدينان ، فقد تسبب وفاة والي العمادية سنة١٧٩٨م إلى تفجر نزاع داخل بيت الإمارة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

توقفت على إثره النشاط التجاري مع الموصل ، مما دفع الوالي الجليلي إلى محاولة التدخل ورأب الصدع بين المتخاصمين ، ولما لم يتم حسم الخلاف طلب والي بغداد علي باشا من محمد باشا الجليلي التدخل باسمه لتسوية الخلاف ، فتم تسوية الخلاف بإرسال الوالي الجديد مبلغ من المال وقدره مئة ألف قرش إلى بغداد ( العمري ، ١٩٤٠ ؛ لانزا ، ١٩٥٣).

وبعد نهاية الحكم المحلي في الموصل سنة ١٨٣٤م ونهاية الحكم المحلي في بهدينان انضمت الاخيرة إلى ولاية الموصل سنة ١٨٤٢م فنشأت روابط اقتصادية أكثر وثاقة من ذي قبل لكن الحقيقة لم يكن رأس المال المحلي المستفيد الاساسي منها بل رأس المال الاجنبي الذي نشط بدعم من القنصليات والشركات التجارية فقد أسست بريطانيا قنصلية لها في الموصل سنة ١٨٣٩م واستطاع رأس المال التجاري الاجنبي من التنافس بأفضلية مع رأس المال التجاري المحلي( كيمب ، ٢٠٠٧) سواء الموصلي أو البهديناني .

**ثالثاً : طبيعة العلاقات السياسية بين الموصل وبهدينان وفقاً لكتابات العمري:**

كان حين ينشب خلاف أو صراع على الامارة داخل الاسرة البهدينانية يلجأ البعض إلى الموصل بل في بعض الاحيان أهالي بهدينان يهربون إلى الموصل كما حدث حين حاول أحد أقرباء الامير بهرام بك تولى الحكم بدعم من والي بغداد فنشب النزاع بينه وبين ابن بهرام اسماعيل بك سنة ١٧٨٧م وكنتيجة للصراع هرب أهالي عقرة إلى الموصل طلباً للأمان ( العمري ، ١٩٤٠؛ كيمب ، ٢٠٠٧) .

لقد سعى ولاة الموصل من الجليليين إلى احتواء الساسة الكرد وتسوية الخلافات بسرعة حرصاً منهم على الصلات التجارية وأن لا تخلق المنطقة بؤر توتر قد تؤثر على النشاط الاقتصادي والسياسي لولاية الموصل ، ففي عام ١٧٣٧م حاصر حسين باشا الجليلي العمادية في أعقاب خلاف بينه وبينهم ، وتم الاتفاق على شروط أعيدت العلاقات بسرعة بينهما( العمري ، ١٩٤٠) ويؤكد العمري أنه طيلة حكم والي بغداد سليمان الصغير بقيت العلاقات بين الموصل والعمادية متوترة في ضوء جهود سليمان الصغير المستمرة لأن يضع ضغطاً على الجليليين باستخدام نفوذه مع الاكراد ( العمري ، ١٩٤٠ ) إن بغداد لم تكتف بالسيطرة على طرق التجارة الرابطة بين الموصل بأسواق سوريا بل أيضاً حاولوا عزل الموصل عن أراضيها الداخلية .

لقد اهتم العمري كثيراً بالصراعات الداخلية التي وقعت بين أمراء بهدينان وطمعهم بالسلطة وهي جزء من صراعات مستمرة داخل البيت البهديناني لحكم الامارة وقد أرجع العمري هذه الصراعات ، من بين الاسباب التي أدت إلى ضعف الامارة ومن ثم سقوطها ( العمري ، ١٩٤٠ ).

وعن طبيعة العلاقات بين الموصل وبهدينان يشير العمري إلى العلاقات الايجابية بينهما يذكر في حوادث عام ١٦٢٢م أن مراد خان بن علي العمري واخوه محمد بن علي العمري توجها نحو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

العمادية فأقاما في قلعة القمري إلى أن رحلت العجم من الموصل ( العمري ، ١٩٨٤) إلا ان العلاقات شهدت تدهوراً في مدة حكم الاسرة الجليلية (١٧٢٦-١٨٣٤م) ( الدوسكي ، ٢٠٠٦) لكن هذا التدهور في العلاقات لم يكن دائماً وعلى طول الخط إذ أن المصالح الاقتصادية والعلاقات الاجتماعية كانت وثيقة بين بهدينان والموصل بحيث بات من الصعوبة بقاء العلاقات بينهما منقطعة.

كما إن العلاقات السياسية بين أمراء بهدينان وولاة الموصل من الجليليين كانت تتأثر بطبيعة العلاقة بين الموصل وبغداد ، وكان في غالب الاحيان يتم الزج بإمارة بهدينان بهذا الصراع كما حصل حين هاجم حسين باشا الجليلي سنة ١٧٤٠م العمادية وذهب رساتيقها (قراها) وتم حصار العمادية لمدة شهرين ولم ينتهي الحصار إلا بعد دفع الامير بهرام باشا (١٦٩٥-١٧٦٨م) مبلغاً من المال إلى الوالي الجليلي على سبيل المصالحة ، فاستأنف السفر بين العمادية والموصل ( العمري ، ١٩٤٠).

وفي عهد محمد باشا الجليلي (١٧٨٩-١٨٠٦م) حرص على اضعاف ارتباط بهدينان بولاة بغداد وحاول كسب الامراء إلى صفّه وقد نجح في ذلك ، إذ نجح في تحسين علاقاته مع والي بغداد سليمان باشا الكبير (١٧٨٠-١٨٠٢م) مما أدى إلى تزايد نفوذ ولاة الموصل على إمارة بهدينان وأطرافها حتى وصل الأمر إلى تدخل والي الموصل في شؤون البيت البهديناني نفسه ( العمري ، ١٩٤٠ ).

وفي كتابه غاية المرام في ذكر محاسن بغداد دار السلام خصص العمري فصلاً كاملاً للحديث عن أمراء بهدينان بوصفهم تابعين لولاية بغداد ، ويقول أيضاً أن العمادية كانت من مضافات بغداد ، وكان على أمرائها أداء الضريبة السنوية لقاء اقرار حكام بغداد لهم بالحكم وإرسال الخلعة الرسمية ( العمري ، ١٩٦٨) ، ويورد في كتابه ذكر لأبرز أمراء بهدينان وعلمائها ، وفي هذا الصدد يصف العمري أمير بهدينان بهرام باشا والي العمادية بأنه :" عاقلاً فاضلاً فيه كرم أخلاق وحسن سياسة للرعية ، وكانت بلاد الاكراد والجبال والقبائل آمنين في أرغد عيش واهناه إلى ان توفي سنة ١١٠٢هجرية" (العمري ، ١٩٤٠، ص١٠٢) ، أما ابن بهرام اسماعيل باشا فيذكر فيما يذكر من سيرته أنه حارب الطامعين على السلطة ، وعاقب من ساند خصومه بالصلب ، وذكر ما دار بينه وبين إخوته من منافرة أدت به إلى طردهم من العمادية ، وقتله لأمير الشيخان وأخيه ، وهكذا يورد العمري أمراء بهدينان حسب الترتيب في تولي الامارة ، ويصف كل شخصية منهم بأبرز ما يتصف به من صفات ومزايا ، فيصف سلطان حسين بك ابن بهرام باشا بأن فيه :"جود وكرم وحسن خلق وسياسة " (العمري ، ١٩٤٠، ص١٠٣) ، أما خليل بك بن بهرام فيصفه بالشجاعة والاقدام لكن يتهمه بوقوفه وراء الفساد بين أبيه ووالي الموصل ، ويعترف العمري انه يجهل تاريخ وفاته ( العمري ، ١٩٤٠ ) ويخص محمد الطيار بك بن اسماعيل باشا بكلام خاص ، فقد ذكر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

العمري سيرة هذا الامير بعد أخوته وأخّره لأنه غلام، ووصفه بأن :" فيه شهامة وكرم نفس وحسن خلق لما توفي والده كان في سن الاحلام فملّكه أباه جميع ما يملك يداه من بسط وفرش وصفر وسلاح وتفنك ولؤلؤ ودراهم ودنانير وخيل بزينتها وما شاكل ذلك من حطام الدنيا ثم عهد له للملك من بعده ومات فتقوى عليه أخاه مراد خان وعزله من الملك " ( العمري، ١٩٤٠، ص١٠٦).

**رابعاً : ما جاء من ذكر لأمارة بهدينان في مؤلفات العمري:**

ففي التاريخ السلالي كان للعمري كتاب بعنوان : عنوان الاعيان في ذكر تواريخ ملوك الزمان، وهو مخطوط المكتبة الوطنية، برلين تحت الرقم ٩٤٨٤، يورد في الورقة ٣٠٣ في ترجمة السلطان محمود الاول الخبر الاتي : " في عام ١١٥٣ هـ / ١٧٤٠م سار حسين باشا الجليلي والي الموصل على رأس جنده وحاصر العمادية وسوف نتعرض لهذا الحدث في ترجمة الوزير المذكور" ( كيمب، ٢٠٠٧، ص١٥٤) وفي الفصل الأخير من هذا الكتاب يبحث العمري في السلالة الجليلية لكن الفصل الاخير مفقود، والكتاب تألف من مقدمة وثلاثة وأربعون فصلاً وخاتمة وقد أهداه إلى سعد الله بك بن حسين باشا الجليلي قبل توليه الولاية على الموصل (كيمب، ٢٠٠٧).

كما أورد كيمب ملاحظة مهمة حول الكتاب مفادها أن صديق بك الجليلي لما قام بنشر كتاب : غرائب الاثر في حوادث ربع القرن الثالث عشر عام ١٩٤٠ اتصل به عضو بارز من الاسرة العمرية طلب منه أن يقصي عن النشر مقاطع من المخطوط ينتقد فيها ياسين العمري الاكراد نقداً لاذعاً : ذلك لأن وجيهاً عمرياً في ذلك الزمان تزوج من فتاة من أسرة كردية وكنتيجة لهذا الرجاء تم سحب جميع النسخ المطبوعة لكتاب غرائب الاثر من المكتبات وانتزعت الصفحتان ٨١ و ٨٢ قبل أن تعاد النسخ إلى التداول، وهناك نسخة في مركز الشرق الاوسط ( كلية القديس انطون، اكسفورد) نجت من هذا التشويه الذي حلّ بأخواتها من نسخ هذا الكتاب (كيمب، ٢٠٠٧)، هذا فضلاً عن ذكره لأمارة بهدينان والاكراد جنباً إلى جنب مع اليزيدية في سنجار. إن كتاب غرائب الاثر في حوادث ربع القرن الثالث عشر وهو من نوع الكتب الاخبارية والذي أكمله العمري سنة ١٨١١م بعد تعيين سعد الله باشا الجليلي والياً على الموصل، إن معظم الاخبار التي سجّلها في كتاب الغرائب كان تاريخاً للعراق بما فيه : الموصل وبغداد والاكراد دائرة الاهتمام الرئيسية فيه، فيقدم ياسين العمري بصورة ممتعة الوضع السياسي للعراق منذ منتصف القرن الثامن عشر خاصة علاقات الموصل وحاجتها للاحتفاظ بعلاقات جيدة مع أكراد الجبل الذين يسيطرون على الارض المنتجة لمحصول العفص (كيمب، ٢٠٠٧). وينتقد العمري موقف أمير بهدينان زبير باشا (١٨٠٧-١٨٣٣م) الموالي لباشا بغداد سليمان الصغير فيقول :" وكفى جهالة بوالي العمادية حين أرسل له والي بغداد يأمره بإرسال عسكراً لمعونة أحمد باشا بن بكر افندي

فامتثل أمره وجمع العساكر من القبائل وسيرهم إلى محاربة أهل الموصل ومعونة أحمد باشا فقدموا جبل مقلوب وقراه التابعة للموصل وجعل عسكره يصادر أهل القرى ويأخذ الذخائر فكتب له آل عبد الجليل كتاباً وحذروه البغي فكتب إليهم الجواب ، ومن بعضه : فلنأتكم بجنود لا قبل لكم بها ولنخرجنكم منها أذلة وأنتم صاغرون ، وأمثال ذلك من التهديد والوعيد والقول الذي ليس بالسديد ( العمري ، ١٩٤٠ ).

وكتاب غاية المرام في محاسن بغداد دار السلام والذي نشره علي البصري سنة ١٩٦٨م تعتمد على مخطوطة في مكتبة المتحف العراقي رقم ٦٢٩٥ من ٤٣٤ ورقة وهي لعبد الغني الدروبي ومؤرخة سنة ١٩١٦ وهي مخطوطة معتمدة على مخطوطة ياسين العمري نفسه ، يتبين من عنوان الكتاب مكانة بغداد السامقة عند المؤلف وتقدم فصول الكتاب الاثنى عشر تفصيلاً عن بغداد ، خصّص الفصل الثاني عشر للمدن الواقعة تحت تصرف ولاية بغداد ، ومن بين هذه المدن الوارد ذكرها مدينة العمادية حيث يورد في صفحة ١٠٢ من الكتاب فصل كامل تحت عنوان : فصل في ذكر أمراء بهدينان " وذكر فيها بعض علمائها المتصفين بالعلم والرشاد والسداد" ( العمري ، ١٩٤٠، ص١١٠-١١١) ، وقدّم ياسين العمري وصفاً لأمارة بهدينان وأبرز الحرف والنشاط الزراعي والتجاري مع الموصل والأهم من كل ذلك يخبرنا العمري عن بعض آراء أهل الموصل باكراد الجبل ( كيمب ، ٢٠٠٧). كما إنه في الفصل المخصص لذكر أمراء بهدينان بوصفهم أمراء العمادية التابعة لبغداد جاء بذكر أمرائها ولم يغفل عن ذكر علمائها ومن الشخصيات التي أشار اليها العمري شخصية الشيخ محمود أفندي العمادي الشافعي مفتي العمادية وعالمها ومدرسها وجاء في ذكره أن للشيخ تصانيف عديدة ومحاسن مفيدة منها تفسير الفاتحة في مجلد كامل كتبه بدون تنقيط ، وذكر العمري من العلماء أيضاً : ملا عبد الله بن أحمد الريكاني الشافعي ، و ملا مصطفى الزياراتي وصفه بأنه علاّمة العلوم في عصره وفقيه لا يباريه فقيه أو أديب..، وكذلك ذكر من العلماء ملا أحمد الزيباري الذي وصفه العمري بأنه أحد العلماء الاعلام فرداً بالعلوم وفيه "حماقة" وشجاعة حتى كان ينكر على إسماعيل باشا أفعاله وحرّض بيرم بك على الخروج عليه وفي سنة ١١٩٧هجرية قدم الموصل ورأيته وهو يحمل سلاحاً حذراً من القتل ثم خرج من الموصل فتم رصده من إسماعيل باشا وتم القاء القبض عليه في جبل مقلوب وتلميذه شعيب معه وتم صلبهم في العمادية" ( العمري ١٩٤٠ ، ص١٠٩-١١٠) ، وكذلك جاء في كتابه من العلماء ذكر محمد الزياراتي وملا يحيى المزوري الذي يكيل له المديح فيصفه بأنه :" عالم العلوم بلا شقاق وحبر علماء الافاق مع تقوى وصلاح وزهد وعفاف وفلاح مدحه ببيت شعر جاء فيه :

في كل فن له فهم ومعرفة          فسل خبيراً به ينبيك بالخبر


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وقد قدم المزوري الى الموصل اشترى داراً وسكنها ودرّس بمدرسة الحاج زكريا التاجر وتتلمذ على يديه جماعة ، وسافر إلى الحج ولما عاد أرسل والي العمادية يستدعيه وحبب إليه العودة إلى وطنه في هذا الوقت كان محمد باشا الجليلي قد أحدث في جامعه ( يقصد جامع محمد الزيواني) مدرسة جعلها دار حديث فكان المزوري يدرّس بها الحديث ثم عاد إلى العمادية ، وبعدها رحل الى قبيلته مزوري وترك التدريس (العمري ، ١٩٤٠).

ومن العلماء الذين أوردهم في هذا الكتاب ايضاً : الحاج بير رجب العقراوي الزيباري وهذا الرجل الكريم كان له دور في المشاركة في طرد الفرنسيين من مصر الذين غزوها سنة ١٧٩٨م حين ذهب برفقة جماعة من الاكراد معه إلى الوزير العثماني يوسف باشا ، وكذلك شارك مع والي بغداد علي باشا في حصاره أهل جبل سنجار ومعه أربعمئة رجل (العمري ، ١٩٤٠) . وهكذا نلحظ أن العمري في ذكره لإمارة بهدينان في كتابه غرائب الاثر ركّز بشكل كامل على الامراء وأبرز العلماء ، إلا أن الملاحظ على هذا الكتاب تجنبه لذكر تجار بهدينان أو ذكر لأبرز الصناعات التي فيها .

وفي كتابه : زبدة الآثار الجلية في الحوادث الارضية لم يكتف العمري بذكر تاريخ إمارة بهدينان أو علاقاتها مع الموصل فقط بل اهتم أيضاً بإيراد معلومات قيمة حول علاقتها مع الامارات الكردية المجاورة ، فذكر أنه في سنة ١٧٩٤م توترت العلاقات بين إمارة بهدينان وإمارة بوتان وتطورت إلى صراع عسكري تمكنت إمارة بوتان من هزيمة قوات بهدينان قرب بلدة زاخو ( العمري ، ١٩٨٤). إن هذا الاهتمام بالإمارة البهدينانية يعكس اطلاعاً واسعاً واهتماماً بالغاص بهذه الامارة ليس كونها قريبة من الموصل فحسب بل إلى ادراكه اهميتها على مسرح التاريخ وتأثيرها الكبير على المنطقة .

الخاتمة:

حظي تاريخ إمارة بهدينان في العهد العثماني باهتمام العديد من المؤرخين والرحالة الذين زاروا وكتبوا عنها نظراً لما تمتعت به الامارة من مكانة مهمة ونشاط عبر سنوات حكمها وكانت إمارة بهدينان تمثل واحدة من أبرز الامارات الكوردية التي ظهرت في العهد العثماني وكان لها ادوار سياسية وحضارية مهمة وعلاقات بارزة مع المناطق المجاورة لها بما فيها ولاية الموصل . ونتيجة لهذه العلاقات فقد اهتمت الموصل بهذه الامارة وحظيت باهتمام من قبل الولاة والحكام ، مما استدعى قيام المؤرخين الموصليين بالكتابة عنها نظراً لقوة العلاقة بين الامارة والموصل وترابط المصالح السياسية والاقتصادية بينهما لا سيما وان التجارة كانت واحدة من اهم الروابط التي عززت العلاقة بين الموصل وامارة بهدينان .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو فەکولینێن کوردی

كان المؤرخ الموصلي يعد واحداً من اهم مؤرخي الموصل في القرن الثامن عشر على الاطلاق نظراً لغزارة المؤلفات التي كتبها خاصة في التاريخ بحيث بات من الصعوبة إن لم يكن من المستحيل تجاهل الرجوع الى مؤلفاته التي بلغت نحو سبعة عشر مؤلفاً وصلنا منها خمسة عشر مؤلفاً لا يزال اغلبها ينتظر التحقيق وبعضها جرى تحقيقها على يد مؤرخي بارزين امثال سعيد الديوه جي وعماد عبد السلام رؤوف ومحمد صديق الجليلي .

تناول المؤرخ ياسين العمري في مؤلفاته امارة بهدينان في بعض مؤلفاته ولم يقتصر على ذكر جانب دون آخر رغم ان التركيز كان على الجانب السياسي بشكل كبير إلا انه لم يغل الجانب الاقتصادي والعلمي حيث جاء في بعض مؤلفاته ذكراً لأبرز علماء بهدينان وصلتهم بالموصل وباحداث المنطقة ، ولا شك ان العمري كان منحازاً بشكل واضح الى الامراء الجليليين الذين اغدقوا العطاء له وكان هو نفسه احد افراد اشيتهم لذلك تضمنت بعض كتاباته عن بهدينان بالطعن والنقد خاصة في فترات كانت تشهد توتر بين الموصل وبهدينان فنجد انحياز العمري واضحاً للموصل وللامراء الجليليين على حساب العمادية وامراء بهدينان وهذا امر يمكن ان نجد له مبرراً واضحاً لا سيما وأنه من سكان الموصل وتربطه علاقات وطيدة بحكام الموصل ولم تكن علاقاته مع امراء بهدينان وثيقة ، كل هذا يدفع الباحث للتأكيد على " تحيز " العمري الواضح لصالح الموصل ومع ذلك لا يمكن الاستغناء عن مؤلفاته خاصة تلك التي تتحدث عن بهدينان وامراءها .

**المصادر:**


١- كيمب ، بيرسي . (٢٠٠٧). الموصل والمؤرخون الموصليون في العهد الجليلي ١٧٢٦-١٨٣٤ ، ترجمة : محب الجليلي وغانم العكيلي .الموصل. العراق: مركز دراسات الموصل.

٢- البدليسي ، شرف خان . (٢٠٠١). شرفنامه . ت: محمد جميل . اربيل . العراق : مطبعة وزارة التربية .

٣- الجوادي ، غسان (٢٠١٥) . مدينة عقرة في العهد العثماني من خلال مؤلفات مؤرخ الموصل ياسين بن خير الله العمري . مجلة جامعة زاخو . المجلد ٣ B . العدد الاول.

٤- الدوسكي ، (٢٠٠٦) بهدينان في أواخر العهد العثماني ١٨٧٦-١٩١٤ دراسة تاريخية . الموصل . العراق : جامعة الموصل .

٥- الديوه جي ، سعيد ، (٢٠١٣) تجارة في مختلف العصور . الموصل . العراق : دار ابن الاثير.

٦- رؤوف ، عماد عبد السلام . (١٩٧٥) الموصل في العهد العثماني فترة الحكم المحلي ١١٣٩-١٢٤٩هـ / ١٧٢٦-١٨٣٤م . النجف . العراق : مطبعة الاداب .

٧- العباسي ، محفوظ . (١٩٦٩) . امارة بهدينان العباسية . الموصل . العراق : مطبعة الجمهور.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٨- العمري ، ياسين بن خيرالله . (١٩٤٠) . غرائب الاثر في حوادث ربع القرن الثالث عشر . الموصل . العراق : مطبعة ام الربيعين .
٩- العمري ، ياسين بن خيرالله . (١٩٦٨) . غاية المرام في تاريخ محاسن بغداد . بغداد . العراق . دار السلام .
١٠- العمري ، ياسين بن خيرالله . (١٩٨٤) . زبدة الآثار الجلية في الحوادث الأرضية. تحقيق : عماد عبد السلام رؤوف . النجف . العراق : مطبعة الاداب.
١١- لا نزا ، دومنيكو ، (١٩٥٣) . الموصل في القرن الثامن عشر حسب مذكرات دومنيكو لا نزا ، ترجمة : روفائيل بيداويد ، الموصل . العراق .

هوامش:

(*) وهم كل من : عثمان الدفتري العمري ويحيى بن عبدو الجليلي وأمين بن خر الله العمري وياسين بن خير الله العمري

**Abstract**

The history of the Emirate of Bahdinan during the Ottoman era received the attention of many historians and travelers who visited and wrote about it due to the importance and activity the emirate enjoyed throughout the years of its rule. With its neighboring regions, including the state of Mosul. As a result of these relations, Mosul took care of this emirate and received attention from the governors and rulers, which necessitated that Mosul historians write about it due to the strength of the relationship between the emirate and Mosul and the interdependence of political and economic interests between them, especially since trade was one of the most important links that strengthened the relationship between Mosul and the Emirate of Bahdinan. From this point of view, the works of the Mosul historian Yassin bin Khairallah Al-Omari shed light on an important aspect of the history of the Emirate of Bahdinan, Especially since his writings, which amounted to seventeen books , some of which included various events about Bahdinan, were not limited to the political aspect only, but also included the economic and scientific aspects. The research is an attempt to shed light on the efforts of this great historian who is indispensable for any researcher in the history of the region to do without.

**Keywords:** *Bahdinan, Yassin Al-Omari, the eighteenth century, Mosul historians*

## Behdînan di nivîsarên dîroknasên Mûsilê de di sedsala hejdehan de

**Kurte:**

Dîroka Mîrnişîna Bahdînan a di serdema Osmaniyan de bala gelek dîroknas û gerokên ku serdana wê kirine û li ser wan nivîsandî ye, ji ber statû û çalakiyên girîng ên mîrnişîniyê di salên desthilatdariya xwe de dihewîne. dewleta Mûsilê. Di encama van peywendiyan de, Mûsil eleqeya xwe bi vê mîrnişîniyê re girt û bala walî û mîrên mîrnişînî wergirt, ku pêwîst bû dîroknasên Mûsilê li ser vê yekê binivîsin ji ber bihêzbûna peywendiya di navbera Mîrnişîn û Mûsilê de, û girêdayîbûna siyasî û siyasî. berjewendiyên aborî di navbera wan de, bi taybetî ku bazirganî yek ji girîngtirîn girêdan bû ku peywendiya di navbera Mûsil û Mîrnişîna Behdînan de bihêz kir. Ji vî alî ve, berhemên dîroknasê Mûsilê Yasîn bin Xêrallah El-Omerî ronahiyê didin ser aliyekî girîng ji dîroka mîrnişîniya Behdînan, bi taybetî ku pirtûkên wî, ku ji hivdeh pirtûkan pêk dihatin, ku hinek ji wan pirtûkên curbicur hene. behsa mîrnişîniya Behdînan û dîroka wê dike û tenê ji aliyê siyasî ve sînordar nebû, di aliyê aborî û zanistî de jî di vê lêkolînê de hewl tê dayîn ku ronîkirina hewlên vî dîrokzanê gewre. Ji bo her lêkolînerê dîroka herêmê pêwîst e ku dev ji nivîsên xwe berde.

**Peyvên Sereke**: *Bahdînan, Yasîn El-Omerî, sedsala hejdehan, dîroknasên Mûsilê.*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

# عوامل تراجع الامارة البابانية عن حالة الازدهار والتقدم في عهد امارة سليمان باشا (١٨٢٨-١٨٣٨)

**ا. د. نزار علوان عبدالله**
قسم التاريخ - كلية التربية - الجامعة المستنصرية/ العراق

**الملخص:**

لم يكن وضع الامارة البابانية يبشر بخير في عهد سليمان باشا الذي دام حكمه عشرة اعوام خلال الحقبة التاريخية الممتدة بين عامي ( ١٨٢٨ – ١٨٣٨ ) ، وقد اسهمت عوامل عدة في تراجع الامارة عن حالة الازدهار والتقدم الذي عاشته في عهودها الماضية منذ تأسيسها وحتى نهايات القرن الثامن عشر لعل ابرزها حالة عدم الاستقرار السياسي الناجم عن الصراع الاسري على الحكم بين سليمان باشا وشقيقه محمود باشا الذي كان يشكل تحديا لسلطة الاول وادارته ، والى جانب هذا العامل هناك عامل التدخلات الايرانية في شؤون الامارة لصالح هذا الطرف او ذاك ، فضلا عن تذبذب علاقات البابانيين بباشوية بغداد ، وتفشي مرض الطاعون الذي اجتاح السليمانية مركز الامارة عام ١٨٣١ والمناطق المحيطة بها ، الامر الذي جعل تلك العوامل سببا رئيسيا للكثير من المصائب والنكبات التي حلت بالامارة البابانية وادت الى الخراب والدمار الذي لحق بها حتى وجدت نفسها امام تدخلات ايران وتمويل جيشها المرابط في السليمانية ، كما ان الطاعون قتل نصف سكانها ، وهاجر من استطاع منهم الى راوندوز وكركوك واربيل والانحاء الشمالية من جبل حمرين، واستبيحت القرى ودمرت الاراضي الزراعية، بسبب الحروب والاقتتال الداخلي، وليس هذا فحسب بل اصبحت السمة البارزة للإمارة هي تزايد معدلات الفقر فيها وتدهور اوضاعها الاقتصادية، كل ذلك عجل في انهيارها عام ١٨٥١ .

**الكلمات الدالة:** *بابان,سليمان باشا,محمود باشا,بغداد,الطاعون.*

**توطئة:**

تأسست الامارة البابانية عام ١٥٠١ في المنطقة المجاورة لبحيرة اورميا ويعود اصلها الى عشائر بشدر ومؤسسها هو( بير بوداق بك ) الذي جمع قوة حربية تمكن بها من الاستيلاء على مساحة واسعة من البلاد المجاورة، فاستولى على ولاية لاريجان من عشيرة زرزا ، وسيوى وشياكرد السورانيتين، وانتزع ولاية شهر بازار من حكم اردلان ثم توجه الى كركوك الخاضعة الى ولاية بغداد ليضمها الى اراضيه، وبعد ذلك ارسل الامراء والحكام الى تلك المناطق لادارتها، اما اصل كلمة بابان فتعود الى مؤسس الامارة الذي يعتقد بان امه كانت تناديه به به – به به كه أي (يا صغيري) بعد ذلك تطورت هذه الكلمات الى بابان، وعندما خضع العراق للحكم العثماني عام ١٥٣٤ اعلنت امارة بابان تبعيتها وولائها الى الدولة العثمانية وعلى مدى تاريخ الامارة تربع على حكمها خمسة اسر استطاع احد امراء الاسرة الاخيرة وهو ابراهيم باشا (١٧٨٣ – ١٧٨٦ ) من نقل مركز الامارة من قلعة جوالان الى السليمانية التي بناها عام ١٧٨٤م ليجعل منها عاصمة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

لإمارته لتشهد ازدهارا وتطورا لكن هذا الازدهار والتطور لم يستمر طويلا لأنه تزامن مع الصراع الحاد على المنطقة بين الصفويين والعثمانيين، فضلا عن التغيير المستمر للأمراء البابانيين والمنافسة فيما بينهم على حكم الامارة مما جعل حالة عدم الاستقرار السياسي السمة البارزة عليها ، الامر الذي كان سببا من اسباب نهايتها على يد الدولة العثمانية عام ١٨٥١.

**اولا : أثر الصراع الأخوي على تدهور الحالة العامة في الامارة البابانية**

عندما توفي عبد الرحمن باشا عام ١٨١٣ الذي كان اميراً للامارة البابانية بين عامي ( ١٧٨٩ – ١٨١٣ ) تقدم اعيان كردستان وزعماء قبائلها إلى والي بغداد سعيد باشا ( ١٨١٣ - ١٨١٦ ) مطالبينه بتعيين اكبر ابنائه(*) محمود بك مكانه، فوافق الوالي العثماني على طلبهم، واصدر امراً بتعيينه حاكما على بابان وكوي وحرير مع منحه لقب باشا خلفاً لأبيه (**الكركوكلي**، (د.ت)، ص٢٦١-٢٦٢). مرسلاً اليه الخلعة اقراراً بحاكميته على السليمانية(**العزاوي**،٢٠٠٠، ص٢٠٠).

غير أن محمود باشا سرعان ما دخل في صراع طويل الأمد على الامارة مع عمه عبد الله باشا، وقد استمر هذا الصراع لسنوات عدة، واصبح الحكم فيه يتأرجح بين الاثنين، وقبل ان يستتب الأمر لمحمود باشا في امارته الثالثة دخل في صراع اخر مع امير سوران محمد باشا الراوندوزي ( ١٨١٣ – ١٨٣٧ )(*)، بعد ان قرر وضع حد لتجاوزات الأخير على امارته التي لو استمرت فأنها سوف تؤدي إلى تهديد كيانه السياسي في السليمانية ، فخرج على رأس قوة للقضاء عليه عام ١٨٢٨، واثناء قتاله للامير السوراني عند سورداش استغل شقيقه الاصغر سليمان بك انشغاله بتلك الحرب ليستدرج قسماً كبيراً من جيشه المرابط عند قلعة سكتان ويعود بهم إلى السليمانية ليستولي عليها وينتزع حكمها من اخيه الأكبر (**زكي**، ١٩٥١، ص١٥٢؛ **بابان**، ٢٠٠٤، ص١٢٩) ، دون ان يواجه أي مقاومة تذكر من أهلها، لأن حروب محمود بابان المستمرة قد انهكتهم واخذوا يتطلعون إلى أية شخصية بابانية تنقذهم مما هم فيه(**دهش** ، ٢٠٠٧، ص١٢٨).

وحين ادرك محمود باشا حراجة موقفه العسكري اتجه إلى قزلجه احدى قرى قضاء بنجوين، املاً في الحصول على مساعدات عسكرية من الحكومة الايرانية التي لم تتردد في تحقيق مطلبه(**بابان**، ١٩٩٣، ص٥٤) ، فجاءته قوة من اردلان مكنته من اجتياح السليمانية واستعادة حكمه، فما كان من سليمان بك إلا أن طلب المساندة من والي بغداد داود باشا (١٨١٧-١٨٣١) الذي امده بجيش لا يستهان به، ومنحه لقب باشا معترفاً به أميراً للامراء على بابان، فدارت معركة طاحنة بين الجيشين في قرة كول استمرت اياماً حتى انتهت باندحار محمود باشا وهروبه إلى ايران ودخول سليمان باشا السليمانية ظافراً بالنصر(**ناظم بك**، ٢٠٠١، ص٣٣١).

حاول محمود باشا بعد ذلك العودة إلى الحكم وقد نجح مرتين، ولكن في النهاية كانت مساندة داود باشا هي من رجحت كفة سليمان باشا على أخيه الذي قصد تبريز من اجل الحصول على الدعم والمساندة الايرانية مجدداً، بيد أنه لم يتمكن هذه المرة في اقناع الايرانيين بمساعدته، فاضطر إلى مغادرة ايران عام ١٨٣٤ والذهاب إلى استانبول التي استقر فيها (**زكي**، ١٩٥١، ص١٥٢-١٥٥).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

ورغم ان محمود باشا لم يعد يشكل خطراً حقيقياً على سلطة أخيه في السليمانية، إلا أن الصراع الأخوي الذي استنزف نصف المدة الزمنية لامارة سليمان باشا كان كفيلاً بجلب المآسي والويلات على الامارة ، وجعل سليمان في حالة ارتياب وقلق دائم(زكي، ١٩٤٨، ص٤٢١).

وفي هذا الصدد يقول لونكريك بأن النزاع بين محمود وسليمان لم يكن نزاعاً عاديا وأنما نزاعاً مبيداً ومستعراً تسبب في حالة من الاضطراب السياسي للامارة البابانية، وجلب لها الفقر والضعف والفوضى(لونكريك ، ١٩٨٥، ص٣٤٤) ، فالقتال المستمر اوهنها وانهك قواها المادية، وقاد السليمانية إلى الخراب والدمار، فلم تكن الخسائر المادية ولا المعنوية لتدخل تحت العد والاحصاء، بسبب ارتفاع معدلاتها، حتى وجد السكان انفسهم يعيشون في حياة بؤس مضن وفقر مدقع من جراء التحاسد والخصام الأخوي(زكي، ١٩٥١، ص١٥٣-١٥٤).

ويصف الرحالة فريزر السليمانية عاصمة الامارة الذي زارها في تشرين الثاني من عام ١٨٣٤ بقوله "**فأن باشوية السليمانية الصغيرة، غير الغنية مطلقاً ولا القوية، كانت فريسة لمجموعة من النكبات التي أنزلتها إلى حضيض التعاسة، فقد داهمتها ... النزاعات العائلية أي الحرب الأهلية الناشبة بين أخوين ينشدان التفوق والسلطة...**"( فريزر، ٢٠٠٦، ص٣٢ ).

هذا الوضع المرزي الذي عاشته الامارة البابانية طيلة عهد سليمان باشا من جراء النزاع الاخوي عجل بضعفها وشيخوختها، وجعلها مهيئة لأن تسقط مبكراً بيد العثمانيين، إلا أن مناعة جبالها والتناقض في العلاقات العثمانية – الايرانية واختلاف مصالحهما بشأن كردستان اجل القضاء عليها حتى عام ١٨٥١ (نوار، ١٩٦٧، ص١٣١-١٣٢ ).

**ثانيا : أثر تدخلات ايران على الواقع السياسي للامارة البابانية**

ان كثرة النزاعات الشخصية بين افراد العائلة البابانية الحاكمة، ولجوء العديد من امرائها إلى ايران لطلب المساعدة منها في دعم حكمهم كونها الأقرب جغرافيا إلى مركز الامارة في السليمانية ، جعل امارة بابان محل تدخل من السلطات الايرانية باستمرار، التي لم تتوانَ في مساندة هذا الطرف أو ذاك ضد خصمه، وكان الدعم الايراني احيانا يصل إلى أعلى المستويات، إذ كان الشاه يتدخل بنفسه في مسألة اعادة تنصيب الامراء البابانيين على الامارة اذا لزم الأمر(هروتي، ٢٠٠٨، ص١٥٥).

سعت ايران من وراء تلك التدخلات إلى اضعاف الامارة البابانية كقوة سياسية في المنطقة(دهش ، ٢٠٠٧، ص١٢٨) ، حتى تكون بحاجة دائمة لها، لأن انصرافها عن ايران معناه حرمان كرمنشاه واعيانها من الهدايا والخلع والرسوم التي كانوا يستوفونها سنويا من الامارة والتي تقدر قيمتها بـ١٦٠٠ تومان(زكي، ١٩٥١، ص١٣٨). والأهم من هذا هو ان عدم طاعة حكام بابان لإيران معناه اضعاف تأثيرها على حكومة بغداد، الأمر الذي لا تستطيع السكوت عليه، لأنها تريد أن تكون لها اليد الطولى في منطقة كردستان كي تبرر تدخلها في الشؤون الداخلية للدولة العثمانية من خلال التدخل في شؤون الامارات الكردية(نورس، ١٩٧٥، ص٢٢٥).

أن هذا التدخل الايراني في الحكومة البابانية يدل دلالة واضحة على مدى ما بلغته ولاية بغداد من الضعف، مما افسح المجال امام ايران لكي تمد نفوذها ليس إلى السليمانية فحسب ، بل إلى اغلب مناطق


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

كردستان، وهذا ما عبر عنه المنشئ البغدادي في رحلته إلى العراق عام ١٨٢١ التي زار فيها السليمانية اذ قال بأنه وجد كردستان داخلة في حكم العجم(**الحسيني، ١٩٤٨، ص٦١**).

وظ هر ذ لك ال تدخل الايرا ني ب شكل وا ضح ع ندما رف ضت ا يران الق بول بحـ كم سليمان باشا اميرا على الامارة عندما انتزعها من اخيه محمود باشا عام ١٨٢٨(**الكوراني، ٢٠١٢، ص١٠٠**)، فوقفت إلى جانب الأخير وزودته بحامية عسكرية تمكن بمساعدتها من دخول السليمانية واجبار سليمان باشا على الانسحاب منها(**الوائلي، ١٩٧٩، ص٢٤٦-٢٤٧**).

وازاء المحاولات المتكررة من سليمان باشا لاستعادة حكمه مع رجحان كفته، ومنحه الضمانات اللازمة لايران في الابقاء على حاميتها العسكرية بشكل دائم في السليمانية، جعلت ايران تذعن للأمر الواقع وتخلت عن حليفها محمود باشا، واعترفت بحكم سليمان باشا على امارة بابان(**دهش ، ٢٠٠٧، ص١٣٠**).

لكن تلك الحامية لعبت دوراً سلبياً في الابقاء على حكم سليمان باشا ضعيفاً ومكبلاً وخاضعاً لايران، ويصف فريزر الحالة في الامارة على أيام سليمان باشا عندما زارها في الأول من تشرين الأول ١٨٣٤ فيقول عنها كانت تابعة في هذا العهد لايران، وكان يحكمها محلياً سليمان باشا بن عبد الرحمن باشا بابان تحت اشراف حامية عسكرية ايرانية ترابط في السليمانية، ويعزو فريزر السبب الذي جلب الايرانيين إلى الامارة هو المنافسة على تولي الحكم بين سليمان ومحمود التي ادت بهما الى الارتماء في احضان ايران تارة والدولة العثمانية تارة أخرى، والتجائهما إلى التذبذب في الولاء مرات عدة حتى تدخل العجم لتسوية النزاع فاخذوا البلاد لانفسهم واكلوا خيراتها هم وجيشهم(**فريزر، ٢٠٠٦، ص٣١ و٥٤** ).

وقدر فريزر حجم القوة الايرانية المرابطة في السليمانية بـ اربعمائة رجل وثمانين مدفعياً مع خمسة مدافع عادية ومدفعي هاون، وحسب مشاهداته فقد حتم على الامارة المنكوبة الطالع ان تدفع الاتاوات لضباط تلك الحملة الذين كانوا يلجؤون احيانا إلى السلب والنهب عندما لا يحصلون على ما يكفيهم من الأموال(**فريزر، ٢٠٠٦، ص٣٢ و٤١** ).

وفي ظل ذلك التواجد الايراني في السليمانية، لم يعد هنالك أي نفوذ أو سطوة للباب العالي على حكم سليمان باشا، ويقول ديفيد مكدول في كتابه تاريخ الاكراد الحديث : "**بأن ايران ازاحت سيادة الأمر الواقع للدولة العثمانية إلى حد جعلها تنصب مخفراً في السليمانية**" (**مكدول، ٢٠٠٤، ص٨١**).

ويدعم كلام مكدول سائح بريطاني زار الامارة البابانية في تلك المدة ، ففي أول مواجهة له مع سليمان باشا شاهد شخصاً يمثل ايران يجلس على يمينه في مجلسه الخاص، ولم يذكر أنه شاهد اي ممثل للسلطان العثماني في السليمانية(**ادموندز، ٢٠١٢، ص٩٦**).

ومن المؤكد فأن تلك التدخلات والهيمنة الايرانية جلبت الوبال على الامارة واكملت مراحل الدمار الذي حل بها اثناء حكم سليمان باشا وسحقت ما بقي منها، وجعلت المملكة البابانية في تراجع مستمر(**لونكريك ، ١٩٨٥، ص٢٩٩**).

ويصور محمد امين زكي ما حل بالامارة البابانية ايام النفوذ الايراني حيث يقول : " كانت المملكة البابانية قد أفلت زمام حكمها من قبضة الامراء البابانيين وصارت سلطة الحاكمية خاضعة لـ ايران ...، فكانت تلك التي زعزعت ببأسها وقوتها على عهد عبد الرحمن باشا ... كيان بغداد واقلقتها، والفت



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الشؤون العراقية للأمراء البابانيين وارهبت ايران قد ذلت في هذا العهد تحت ايدي بضعة ألوف من جيش ايران وقد حل بها الدمار والبوار، وافضت بها الفتن الدائمة بين الامراء البابانيين انفسهم إلى أن تمنى بالويلات التي جعلتها بلقعاً يباباً"(زكي، ١٩٥١، ص١٥٤).

لم تنفك الامارة البابانية من النفوذ الايراني الذي خيم على واقعها السياسي والعسكري الا في عام ١٨٣٤ عندما قررت ايران سحب جيوش من السليمانية أثر وفاة حاكمها فتح عليشاه (١٧٧٢ – ١٨٣٤)، ونشوب الخلافات والمنازعات بين امرائه التي اضطرتهم للانسحاب من الامارة لتنعم بفترة قصيرة من الهدوء النسبي، إلا أن ذلك الهدوء لم يستطع أن يغير في الواقع شيئا نتيجة للتراكمات الثقيلة التي نخرتها(**الدرة**، ١٩٦٦، ص٨٣).

**ثالثا : أثر طاعون عام ١٨٣١ على تدهور الواقع الصحي للامارة البابانية**

لم تكن الامارة البابانية بمنأى عن تنامي ظاهرة الانشطة الوبائية المتصاعدة التي اجتاحت العراق خلال القرنين الثامن عشر والتاسع عشر، وكان النصف الأول من القرن الأخير هو الذي يحمل في طياته التاريخ الكارثي على الامارة ، بسبب تزايد الهجمات الوبائية وتوطنها المؤقت، والخسائر البشرية الفادحة التي نجمت عنها(**الجميلي**، ٢٠١٦، ص٢٨-٣٢)، ومن بين هذه الهجمات مرض الكوليرا الذي اصاب السليمانية بين عامي ١٨٢١-١٨٢٢، مخلفاً وراءه الموت لاعداد كبيرة من السكان، إذ كان يفني مئات الاشخاص يومياً(**هروتي**، ٢٠١٢، ص٦٣).

لكن الطاعون الذي وفد على السليمانية عام ١٨٣١ في عهد سليمان باشا هو الأكثر مأساوية في تاريخها الحديث، بعد ان أدى الى نتائج مريبة لم يسبق أن مرت بها الامارة في عهودها السابقة(**اغلو**، ٢٠٠٦، ج١، ص٤٧).

وتختلف المرجعيات التاريخية بشأن المصدر الذي جاءت منه عدوى طاعون ١٨٣١ فالبعض يرى ان عدواه جلبت من مصر وانتقلت إلى سوريا ثم إلى السليمانية ومنها إلى كركوك فبغداد، والبعض الأخرى يرى بأنها جاءت من ايران ثم خانقين ثم السليمانية (**الجميلي**، ٢٠١٦، ص٢٨-٣٢) ، بينما يرجعها الرحالة الانكليزي جيمس ريموند ولستيد الذي كان مقيماً في بغداد آنذاك إلى البحر الاسود، ومنه انتقلت إلى بلاد الرافدين(**ولستيد**، ١٩٨٤، ص ١٠١).

ومهما يكن من امر فأن المرجح بأن مدينة تبريز الايرانية هي مصدر وباء الطاعون الذي سرعان ما انتقل منها إلى السليمانية(**عبد الواحد**، ٢٠١٠، ص٥١) ، ثم اتجه إلى بغداد التي اختارها لتكون بؤرته الرئيسة لهجومه الكاسح على بقية مناطق العراق الأخرى(**كوك** ، ١٩٦٧، ج٢، ص١٤٥-١٤٦).

وكان لهذا المرض اثاره المدمرة على الامارة ، فقد انهك قواها البشرية والعسكرية والاقتصادية والصحية (**الوائلي**، ١٩٧٩، ص٢٦٢) ، وافنى ما يزيد على نصف سكانها وما يحيط بها من القرى، وهاجر من استطاع من السكان إلى اماكن اخرى تخف فيها وطأة الاعباء والاوزار متجها إلى راوندوز وكركوك واربيل وسائر المناطق الكائنة في الجبال، بعد ان لم يجد له معينا على البلوى(**فريزر**، ٢٠٠٦، ص٥٤) ، متخفيا في المغارات والكهوف، فلم يبق لدى أي احد امل بمواصلة الحياة، وقد وصل الأمر إلى حد لم يعد هنالك ما



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

يمكن ان يطلق عليه اسم بلدة أو قرية، فالعمليات التخريبية التي احدثها الوباء كانت فجيعة بمعنى الكلمة(**ناظم بك**، ٢٠٠١، ص٣٣٢).

وقد سجل فريزر مشاهداته عن الاثار التي لحقت بالسليمانية من جراء ذلك الطاعون فيقول: " **كانت مناظرها الحالية عبارة عن همس وسكون ووحدة ووحشة وانهيار غير طبيعي يحز في الفؤاد، فكأن الانسان حينما ينظر اليها، في وجه ميت عانى انواع الالام، وذاق مر العذاب، وكان يلوح ان هذه المدينة لم تر عهد طمأنينة وهدوء**"(**فريزر**، ٢٠٠٦، ص٣٦و٤٥).

**رابعا : أثر عدم الاسقرار السياسي لباشوية بغداد على ادارة شؤون الامارة البابانية**

خلال حاكميته للامارة البابانية عاصر سليمان باشا حقبتين تاريخيتين مختلفتين من حقب الحكم العثماني في العراق، الأولى هي السنوات الأخيرة من العهد المملوكي المتمثل بولاية داود باشا لبغداد، والثانية هي بداية عودة السيطرة العثمانية المباشرة على كافة الولايات العراقية المتمثلة بسلطة علي رضا باشا اللاظ ( ١٨٣١ ١٨٤٢ ) الذي اصبح والياً لبغداد اعتباراً من عام ١٨٣١ (**بابان**، ١٩٩٣، ص٥٣).

وفي كلا الحقبتين لم يكن لباشوية بغداد أي سطوة أو نفوذ على الامارة البابانية، وكانت العلاقة بين الاثنين محكومة بالضعف والتذبذب، وهذا ما يفسر التدخل المستمر لايران في شؤون بابان الداخلية(**العزاوي**، ص٢٠٤-٢٠٥)، فداود باشا كان يعاني من اضطراب الوضع في الامارة اشد العناء، إلا أنه لا يمتلك أي نفوذ عليها، لذا اتبع الطريق التقليدي وهو ضرب أمير باباني بأخر وهذا ما حصل في تعاطيه مع الصراع الدائر بين محمود باشا وأخيه سليمان باشا إذ نجده يدعم ويساند الثاني ضد الأول، لكن الأمور كانت تتعقد من جراء تلك السياسة، فمحمود باشا عاد إلى الحكم أكثر من مرة على أسنة الرماح الايرانية ودار بسبب ذلك صراع طويل على مركز الامارة في السليمانية مما اصاب المدينة في النهاية الدمار الشديد، لان ايران لم تكن تتورع من ارسال الجيوش التي تجتاح المنطقة وتجرف كل شيء امامها لإرجاع حليفها محمود باشا الى الحكم، وقد تسبب ذلك في خراب القرى والاراضي الزراعية، ناهيك عن حالة عدم الاستقرار في الادارة الذي انعكس سلباً على تسيير الشؤون الداخلية للامارة (**نوار**، ٩٧٣، ص٣٦١).

وحين تسلم علي رضا باشا اللاظ الإدارة العثمانية في بغداد حاول في البداية ان يخضع سليمان باشا لسلطته، فحرك جيشاً لمواجهته، ثم عاد ليتراجع عن موقفه ويقرر التفاهم معه(**نوار**، ١٩٦٨، ص١١٤-١١٥).

ويعزي تغيير موقف الوالي العثماني إلى المشاكل الحرجة التي كان عليه تصفيتها قبل ان يفكر بقضية اخضاع الامارة البابانية إلى نفوذه، ومن هذه المشاكل ثورة عبد الغني جميل في بغداد، وتمردات عزيز اغا في البصرة، وانهاء استقلال الامارة الجليلية في الموصل(**العزاوي** (د.ت)، **المجلد السابع**، ص٣٣ و ٣٥-٣٧ و ٢٠-٢٤).

وهكذا ثبَت سليمان باشا في حكم الامارة، وبدات علاقته تأخذ طريقها للتحسن مع باشوية بغداد(**الدوسكي**، ٢٠٠٣، ص٩٥) ، لاسيما بعد الانسحاب الايراني من السليمانية عام ١٨٣٤، وتعهدات علي رضا باشا اللاظ له بعدم الاستجابة لمحاولات منافسه محمود باشا في الوصول إلى منصب الامارة اذا استمر مطيعاً لأوامر بغداد(**الزهيري**، ٢٠٠٥، ص٦٢).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وفي ظل ذلك التقارب بين الاثنين بدأت حالة من الهدوء النسبي تخيم على الامارة ، الأمر الذي دفع والي بغداد إلى رفع توصية بحق سليمان باشا إلى الدولة العثمانية باكرامه، فما كان منها الا انعمت عليه بالخلع السنية والاوسمة الرفيعة تقديراً وتشجيعاً له، لكن قبل ان تجد تلك الرتب طريقها اليه، ادركه الأجل الموعود وانتقل إلى جوار ربه، لتنتهي مدة حكمه المرتبكة من بدايتها والتي كانت احد الاسباب الرئيسة في انهيار الامارة البابانية عام ١٨٥١ (**فائق بك**، ٢٠١٠، ص١٥٥).

**استنتاجات البحث:**

١- لم تكن ادارة سليمان باشا للامارة البابانية بالادارة المحنكة، ولم يضف حكمه عليها اي تقدم يذكر، وكانت السمة البارزة لاوضاعها هي حالة عدم الاستقرار السياسي الناجم من صراعه على السلطة مع اخيه محمود باشا .

٢- تدخلات ايران المستمرة في شؤون الامارة البابانية ووجود حامية عسكرية ايرانية في السليمانية بشكل دائم انعكس سلبا على الاوضاع الداخلية للمدينة ، كون ايران اصبحت لها اليد الطولى على بقاء سليمان باشا في الحكم من عدمه.

٣- كان عهد سليمان باشا فريسة لنكبات متتالية مرت بها الامارة البابانية مما جعله اسوأ عهودها التاريخية ، ومن بين ابرز تلك النكبات مرض الطاعون الذي اصاب السليمانية عام ١٨٣١، والذي كان سببا لفقرها وخرابها وموت وهجرة اعداد كبيرة من سكانها .

٤- ومن جراء المحن التي لحقت بالامارة البابانية ايام حكم سليمان باشا جعلتها تتراجع عن تطورها وازدهارها الذي نعمت به منذ تاسيسها عام ١٧٨٤ حتى مطلع القرن التاسع عشر، لتجد نفسها امام وضع اقتصادي واجتماعي مزري، الامر الذي عجل بانهيارها عام ١٨٥٠ .

**قائمة المصادر:**

**اولا : الكتب العربية والمعربة**


١- بابان ، اياد جمال ، اسرة بابان الكردية شجرتها التاريخية وتسلسل اجيالها، بيروت ، ( د.مط ) ، ٢٠٠٤ .

٢- بابان، جمال، بابان في التاريخ ومشاهير البابانيين، (د.م)، مطبعة الحوادث ، ١٩٩٣ .

٣- ناظم بك ، حسين ، تاريخ الامارة البابانية ، ترجمة : شكور مصطفى ومحمد الملا عبد الكريم المدرس ، اربيل ، مؤسسة موكرياني للطباعة والنشر ، ٢٠٠١ .

٤- مكدول ، ديفيد ، تاريخ الاكراد الحديث ، ترجمة : راج ال محمد، بيروت ، دار الفارابي ، ٢٠٠٤ .

٥- الكركوكلي، رسول ، دوحة الوزراء في تاريخ وقائع بغداد الزوراء، ترجمة : موسى كاظم نورس، بيروت، مطبعة كرم ، ( د.ت ) .

٦- كوك، ريجارد ، بغداد مدينة السلام ، ترجمة : فؤاد جميل ، مصطفى جواد ، بغداد ، مطبعة شفيق ، ١٩٦٧ ، ج ٢ .

٧- لونكريك ، ستيفن هيمسلي ، اربعة قرون من تاريخ العراق الحديث، ترجمة : جعفر الخياط، بغداد، (د.مط)، ط ٦، ١٩٨٥




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٨- هروتي ، سعدي عثمان ، كوردستان والامبراطورية العثمانية دراسة في تطور سياسية الهيمنة العثمانية في كوردستان ١٥١٤-١٨٥١، دهوك، مطبعة خاني، ٢٠٠٨.
٩- دراسات اكاديمية في تاريخ كردستان الحديث، عمان، دار غيدان للنشر والتوزيع، ٢٠١٢.
١٠- فائق بك، سليمان ، تاريخ بغداد، ترجمة : موسى كاظم نورس، بيروت، الفرات للنشر، ٢٠١٠.
١١- ادموندز ، سي.جي ، كورد وترك وعرب، ترجمة : جرجيس فتح الله، اربيل، دار اراس للطباعة والنشر، ٢٠١٢.
١٢- نورس، علاء موسى كاظم ، حكم المماليك في العراق ١٧٥٠-١٨٣١، بغداد، دار الحرية للطباعة، ١٩٧٥.
١٣- العزاوي، عباس ، شهرزور السليمانية (اللواء والمدينة)، بغداد، السالمي للطباعة الفنية الحديثة، ٢٠٠٠.
١٤- تاريخ العراق بين احتلالين العهد العثماني الثالث ١٨٣١-١٨٧٢، بيروت، الدار العربية للموسوعات، (د.ت)، المجلد السابع.
١٥- نوار، عبد العزيز سليمان ، داود باشا والي بغداد، القاهرة، دار الكاتب العربي للطباعة والنشر، ١٩٦٧.
١٦- تاريخ العراق الحديث من نهاية حكم داود باشا إلى نهاية حكم مدحت باشا، القاهرة، دار الكاتب العربي للطباعة والنشر، ١٩٦٨.
١٧- تاريخ العرب المعاصر مصر والعراق، بيروت، دار النهضة العربية، ١٩٧٣.
١٨- الجميلي، قاسم ، تاريخ العراق الوبائي في العهد العثماني الاخير ١٨٥٠-١٩١٨ دراسة في ضوء وثائق وارشيفات الخارجية والصحة الامريكية والبريطانية وارشيفات دولية أخرى، عمان، دار دجلة للنشر والتوزيع، ٢٠١٦.
١٩- الدوسكي ،كاميران عبد الصمد احمد ، كوردستان العثمانية في النصف الأول من القرن التاسع عشر، اربيل، مطبعة وزارة التربية، ٢٠٠٣.
٢٠- زكي، محمد امين ، مشاهير الكرد وكردستان في العهد الإسلامي، ترجمة : سانحه زكي بك، بغداد، مطبعة التفيض الأهلية، ١٩٤٥، ج٢.
٢١- تاريخ السليمانية، ترجمة : الملا جميل الملا احمد الروزبياني، بغداد، شركة النشر والطباعة العراقية المحدودة، ١٩٥١.
٢٢- تاريخ الدول والامارات الكردية في العهد الاسلامي، ترجمة : محمد علي عوني، مصر، مطبعة السعادة، ١٩٤٨.
٢٣- الدرة، محمود ، القضية الكردية، بيروت، دار الطليعة، ط٢، ١٩٦٦.
٢٤- اغلو، نجاة كوثر ، من حوادث كركوك ١٧٠٠-١٩٥٨، كركوك، (د.مط)، ٢٠٠٦، ج١.

**ثانيا : الرسائل الجامعية**

١-١ لزهيري، ر ناء بدالج بارح سين،ايا لة ب غداد في ع هدا لوالي ع لي ر ضاا للاظ ( ١٨٣١ – ١٨٤٢ ) ، رسالة ماجستير( غير منشورة ) ، كلية الاداب ، جامعة بغداد ، ٢٠٠٥.
٢-١ لوائلي، ع بد ر به سكران ا براهيم ، تاريخ الا مارة البابانية الكردية ، ١٧٨٤ – ١٨٥١ ، ر سالة ماج ستير( منشورة ) ، كلية الاداب ، جامعة القاهرة ، ١٩٧٩ .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

٣-د هش، كا مل جا سم ، الا مارة البابا ذ ية في العـ هد العثـ ماني ( ١٦٦٩ – ١٨٥١ ) ، درا سة تاريخ ية ، ر سالة ماجستير( غير منشورة ) ، كلية الاداب ، جامعة بغداد ، ٢٠٠٧.
٤-عبد الواحد ، وميض سرحان ذياب، موجات الاوبئة والقحط والكوارث الطبيعية في العراق ١٨٣٠ – ١٩١٧ ، رسالة ماجستير( غير منشورة ) ، كلية التربية ، الجامعة المستنصرية ، ٢٠١٠.

**ثالثا : كتب الرحلات**

٥-فريزر، جيمس بيلي ، رحلة فريزر الى بغداد سنة ١٨٣٤ م ، ترجمة : جعفر الخياط ، بيروت ، الدار العربية للموسوعات ، ٢٠٠٦ .
٦-ولستيد، جيمس ريموند ، رحلتي الى بغداد في عهد الوالي داود باشا ، ترجمة : سليم طه التكريتي ، بغداد ، مطبعة ثويني ، ١٩٨٤ .
٧-الحسيني، السيد محمد ا بن السيد ا حمد ، رحلة المنشى البغدادي ، ترجمة : عباس العزاوي ، بغداد ، شركة التجارة والطباعة المحدودة ، ١٩٤٨ .
٨-الكوراني، علي سيدو ، من عمان الى العمادية او جولة في كردستان الجنوبية ، اربيل ، دار اراس للطباعة والنشر ، ط٢ ، ٢٠١٢ .
٩-ريج، كلوديوس جيمس، رحلة ريج المقيم البريطاني في العراق عام ١٨٢٠ الى بغداد – كردستان – ايران، ترجمة : اللواء بهاء الدين نوري، بيروت ، الدار العربية للموسوعات ، ( د.ت ) .

**الهوامش:**

---

(*) كان لدى عبد الرحمن باشا عدد من الابناء غير محمود بك وهم كل من عزيز بك وعثمان بك وحسن بك وسليمان بك. ينظر: كلوديوس جيمس ريج، رحلة ريج المقيم البريطاني في العراق عام ١٨٢٠إلى بغداد – كردستان – ايران، ترجمة : اللواء بهاء الدين نوري، بيروت، الدار العربية للموسوعات،(د.ت)، ص١٣٢.

(*) محمد باشا الراوندوزي: هو احد امراء سوران ولد عام ١٧٨٣ في راوندوز ودرس فيها، وقد اشتهر بين الناس بلقب الأمير الكبير وباشا كويره، صار اميراً على سوران في الايام الاخيرة لأبيه وذلك عام ١٨١٣، اراد ان يحكم الامارة بالقوة ويوطد حكمه في جميع انحائها بالضرب على ايدي العابثين، فأخضع العشائر المجاورة لحكمه، لمزيد من التفاصيل، ينظر : محمد امين زكي، مشاهير الكرد وكردستان في العهد الإسلامي، ترجمة : سانحه زكي بك، بغداد، مطبعة التفيض الأهلية، ١٩٤٥، ج٢، ص١٤٧-١٤٨.

**Factors behind the decline of the Baban emirate from the state of prosperity and progress during the era of the Emirate of Suleiman Pasha(1838 – 1828)**

**Abstract:**

The situation of the Baban Emirate did not bode well during the reign of Suleiman Pasha, who ruled for ten years during the historical period (1828-1838). Several factors contributed to the Emirate's retreat from the state of prosperity and progress that it experienced in its past eras, from its foundation until the end of the century. The eighteenth, perhaps the most prominent of which is the state of political instability resulting from the family conflict over power between Suleiman Pasha and his brother Mahmoud Pasha, which was a challenge to the authority and administration of the former. The relations of the Babanis with the Pashawi of Baghdad, and the outbreak of the plague that swept Sulaymaniyah, the center of the emirate in 1831, and the surrounding areas, which made these factors a major cause of many calamities and calamities that befell the Baban emirate and led to the ruin and destruction inflicted on it until it found itself in front of Iran's interventions and the financing of its stationed army In Sulaymaniyah, and the plague killed half of its population, and those who were able to emigrated to Rawanduz, Kirkuk, Erbil and the northern parts of Jabal Hamrin, villages were liberated and lands were destroyed. Not only that, but the prominent feature of the emirate is the increase in poverty rates and the deterioration of its economic conditions, all of which hastened its collapse in 1851.

**Keywords**: *Baban, Sulaiman Basha, Mahmoud Basha, Baghdad, Plague.*

**پۆختە:**

دۆخی میرنشینی پاپا لە سەردەمی سلێمان پاشادا ئاماژەیەکی باشی نەبوو، کە دەسەڵاتەکەی بۆ ماوەی دە ساڵ لە ماوەی مێژوویی کە لە نێوان ساڵانی (١٨٢٨-١٨٣٨) درێژبووەوە، چەند هۆکارێک بوونە هۆی دابەزینی میرنشینی لە... دۆخی خۆشگوزەرانی و پێشکەوتن کە لە سەردەمەکانی ڕابردووی خۆیدا لە دامەزراندنیەوە تا کۆتایی سەدەی هەشتەم ئەزموونی کردووە، دە کە ڕەنگە دیارترینیان دۆخی ناسەقامگیری سیاسی بێت کە لە ئەنجامی ململانێی خانەدانی لەسەر دەسەڵات لە نێوان سلێمان پاشا و براکەیدا هاتۆتە ئاراوە مەحمود پاشا، کە تەحەدایەک بۆ دەسەڵاتی یەکەم و ئیدارەکەی پێکهێنا، جگە لەم فاکتەرە، فاکتەری دەستوەردانی ئێران لە کاروباری میرنشین لە بەرژەوەندی لایەنێک یان ئەو لایەنە هەیە، هەروەها هەڵاوسانی... پەیوەندییەکانی بابانی.لە پەشاڤیەی بەغدا و سەرهەڵدانی نەخۆشی تاعون کە شاری سلێمانی ناوەندی میرنشینەکەی لە ساڵی ١٨٣١ و ناوچەکانی دەوروبەری گرتەوە، ئەمەش وایکرد ئەو هۆکارانە ببێتە هۆکارێکی سەرەکی بۆ چەندین بەڵا و بەڵا کە بەسەر میرنشینی بابانیدا هات و بووە هۆی ئەو وێرانکاری و وێرانکارییەی کە بەسەریدا هات تا خۆی بینیەوە لەبەردەم دەستێوەردانەکانی ئێران و دارایی سوپاکەی کە لە سلێمانی جێگیرکرابوو هەروەک چۆن تاعون نیوەی دانیشتووانەکەی کوشت، و ئەوانەی دەیانتوانی کۆچ بکەن بۆ ڕەواندوز، کەرکوک، هەولێر، و... بەشەکانی باکووری چیای حەمرین، و گوندەکان پێشێل کران و زەوییە کشتوکاڵییەکان وێران کران. نەک هەر ئەوە، بەهۆی شەڕ و ململانێی ناوخۆییەوە، بەڵکو تایبەتمەندییە دیارەکەی میرنشین بوو بە زیادبوونی ڕێژەی هەژاری و تێکچوونی بارودۆخی ئابووریی، کە هەموو ئەمانە لە ساڵی ١٨٥١دا دارمانی میرنشینی خێراتر کرد.

**پەیڤێن سەرەکی**: *بابان، سلێمان پاشا، مەحمود پاشا، بەغدا، تاعون*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# الامارة البابانية دراسة في احوالها الداخلية وعلاقاتها الخارجية حتى عام ١٨٥١م (دراسة تاريخية)

أ. د. ثريا محمود عبد الحسن الخزعلي
أ. م. د. قحطان احمد فرهود المشهداني
قسم التاريخ – كلية التربية للعلوم الانسانية - جامعة ديالى /العراق

**الملخص:**

أ مارة با بان هي وا حدة من الإ مارات الكرد ية المهـ مة ا لتي ظ هرت في ج نوب كرد ستان وتمكنت من ان تحكم لعدة قرون، وكانت تحت سلطتها مناطق واسعة من كردستان.

استعرض البحث عدة مواضيع ، فسلطنا الضوء في البداية في البداية الى المراحل الاولى لنشوء الاسرة البابانية حتى الاسرة الخامسة ، ثم بعد ذلك اشرنا الى ابرز رجالات تلك الاسرة وسياسة بسط نفوذها واحكام سيطرتها على المناطق وكان من ابرزهم (بابا سليمان ، بكر بك ، خانة باشا ) وعرجنا الى موقف سليمان باشا ابو ليلة من الامارة والقضاء على حركة سليم بابان، كما تطرقنا الى التنافس الاسري داخل الاسرة البابانية الحاكمة بعد مقتل سليم بابان ، كما عرجنا الى العلاقة بين ولاة بغداد والاسرة البابانية في عهد محمود باشا وعبدالرحمن ، ولضرورة عكس الموقف الدولي تم التطرق الى موقف ايران من الصراع العثماني - البابانى وفي نهاية البحث استعرضنا النزاع ما بين ولاة بغداد والامارة البابانية وصولاً الى سقوط الامارة ونهاية عهد الاسرة البابانية .

**مفاتيح الكلمات:** *الكرد ، البابانيون، ايران، العثمانيون، بغداد*

**- تأسيس الإمارة البابانية حتى نهاية الاسرة الرابعة**

بدأ حكم الأسرة البابانية الأولى بالأمير بيربوداق بن ميرابدال، فتمكن من السيطرة على لارجان وسيوى وميشاكرد من السورانيين. كما استولى من القزلباش على ولاية سلدوز وأعاد ترميم قلعة ماران ونصب حاكماً عليها، ثم توسع جنوباً فسيطر على المناطق الممتدة من شهربازار إلى كركوك، ونصب عليها حكاماً تابعين له .( زكي، ١٩٤٥، ج١ ، ص١٤٧)

أدت طموحات بير بوداق السياسية ورغبته بالتوسع على حساب الغير، إلى جعل أمراء المناطق الكردية ينتهزون أية فرصة للتخلص منه، وهذا ما حدث عندما استغل سيدي بن شاه علي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أمير سوران فرصة خروج بير بوداق للصيد فنصب له كميناً أودى بحياته والمرافقين معه .( زكي ،١٩٥١ ، ص٤٥ )

ولعدم وجود وريث يخلفه في الحكم، فقد تولى ابن أخيه بوداق بن رستم إدارة شؤون الإمارة البابانية، فقد واجه حكمه الذي لم يستمر سوى سنتين العديد من المشاكل الداخلية.( البدليسي ، ٢٠٠٧، ص ٢٧٨-٢٧٩)

وبوفاة بوداق انتهى حكم الأسرة الأولى، لتنتقل مقاليد السلطة في الإمارة البابانية إلى بيرنظر أحد أمراء بير بوداق البارزين، الذي تمكن بفضل قيادته السياسية الناجحة من إعادة قوة الإمارة وهيبتها من جديد.( زكي، ١٩٥١، ص٤٦)

أمّا الأسرتان الثالثة والرابعة فقد كان هناك بعض التداخل بينهما بسبب التنافس على الإمارة، مما فسح المجال للتدخل في شؤونها. فبعد وفاة بيرنظر تولى حكم الإمارة وبالاتفاق كلٌ من سليمان ومير إبراهيم وهما من أتباع الأمير بير بوداق، لكن الخلافات نشبت بينهما إلى الدرجة التي جعلت كل واحد منهما يحاول التخلص من الآخر، وبالفعل تمكن سليمان من قتل مير إبراهيم والانفراد.( البدليسي ،٢٠٠٧، ص ٢٧٩)

ترك سليمان بعد وفاته أربعة أولاد هم حسين ورستم ومحمد وسليمان. وبهذا ظهرت أسرتان ظلتا تتنازعان على حكم الإمارة فيما بينهما.(العزاوي ، ٢٠٠٠، ص ١٨٠)

لجأ حاجي شيخ بعد مقتل والده إلى الشاه الإيراني طهماسب الاول (١٥٢٤-١٥٧٦) في محاولة لطلب المساعدة، لكنه فشل في مسعاه، ولم تفلح جهوده إلا بعد وفاة سليمان، وتمكن من السيطرة على كرسي الإمارة البابانية. (البدليسي،٢٠٠٧، ص ٢٧٩ )

دفعت تلك التطورات حسين بن سليمان إلى الاستعانة بالشاه طهماسب الذي ارسل ثلاث حملات عسكرية لمساعدته ، لكنها فشلت في التخلص من الأمير حاجي شيخ . ( زكي ،١٩٥١، ص ٤٧)

بعد احتلال بغداد عام ١٥٣٤ من قبل السلطان العثماني سليمان القانوني أراد حاجي شيخ التوجه الى بغداد من أجل تهنئة السلطان وتقديم فروض الطاعة. وفي طريقه قتل هو وشقيقه أمير من قبل أهالي منطقة مركة. ( زكي ، ١٩٥١، ص٤٨)

ترك حاجي شيخ بعد مقتله ولدين هما بوداق وصارم، وقد عهد السلطان سليمان القانوني الذي كان وقتها في بغداد عند سماعه نبأ مقتله، حكم الأمارة البابانية إلى ابنه بوداق .( زكي ، ١٩٥١، ص ٤٨)

أعتمد سليمان القانوني الإجراء القائم على أساس مبدأ المشاركة في الحكم، ( العزاوي ، ٢٠٠٠، ص١٨١)، الذي رُفض من قبل بوداق، ليتجدد القتال بينه وبين الامير حسين سليمان الذي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

انتهى بمقتل الأمير حسين بن سليمان، مما أغضب السلطان العثماني، فأصدر أمراً لجميع الأمراء المجاورين لبابان بالقضاء على بوداق ( **البدليسي** ، ٢٠٠٧، ص ٢٨١)، الذي لجأ هارباً إلى حاكم بهدينان، فبادر الأخير بتقديم التماس إلى السلطان سليمان القانوني للعفو عن بوداق، الطلب الذي وافق عليه السلطان من دون عودته لحكم إمارة بابان إذ منحه حكم سنجق عينتاب، أمّا إمارة بابان فمنحت إدارتها لشخص يدعى ولي بك.( **زكي** ، ١٩٥١، ص ٤٩ )

وعند لجوء أمير بك حاكم منطقة مكري الواقعة في إيران إلى السلطان مراد الثالث (١٥٧٤-١٥٩٥) بسبب خلافه مع الإيرانيين. أرادت الدولة العثمانية منح ادارة ناحية مركة إلى أحد أولاد أمير بك المكري. وقد أدت تلك المحاولة إلى وقوع صدامات بين الطرفين، نتج عنها مقتل خضر بك.( **البدليسي**،٢٠٠٧، ص٢٨٣ ؛ **العزاوي** ، ٢٠٠٠، ص١٨٢) وبوفاته فقدت الإمارة البابانية وحدتها، إذ انفردت العشائر التي كانت تعترف بسلطة الأمراء البابانيين في السابق، كلاً بإدارتها على الرغم من بقاء تبعيتها للدولة العثمانية، وارتباطها بإدارة ايالة شهرزور، كما احتفظت المنطقة باسم بابان. ( **حسين** ، ٢٠٠٠، ص١١-١٢ )

## الأسرة البابانية الخامسة

برزت إمارة بابان إلى الوجود من جديد بظهور شخصية فقي احمد، الذي يعد مجدد الإمارة البابانية في منطقة بشدر، ومؤسس الأسرة البابانية الخامسة التي ظلت تحكم إمارة بابان حتى منتصف القرن التاسع عشر الميلادي. ( **جودت** ، ١٣٠٩هـ ، ص ٢٤٢)

يدل لقب فقي على البعد الديني لزعامة فقي أحمد، لأن الشعب الكردي كان ينقاد ويتأثر بالعلماء ومشايخ الطرق الدينية. فضلاً عن دوره في المعارك الخارجية التي خاضتها الدولة العثمانية، مما دفع الأخيرة للاعتراف بسلطته على منطقتي بشدر ومركة والتي انتزعها من عمه كاكة مير، وبعد توحيدها برزت من جديد إمارة بابان، متخذاً من قرية داره شمانة التابعة لمنطقة بشدر مركزاً له ( **سون** ، ١٩٧٠، ص٢٢٥)

بعد وفاة فقي أحمد خلفه في حكم الإمارة ابنه خان بوداق، الذي توسعت في عهده الإمارة بانضمام مناطق شهربازاروماوت. (**قەفتان، ٢٠١٩ ، ل ١٨**)

في عام ١٦٦٤ نقل خان بوداق مركز الإمارة البابانية من داره شمانة إلى ماوت، إذ سرعان ما أدركته المنية في عام ١٦٦٩ ليخلفه ابنه بابا سليمان. لتبدأ في عهده مرحلة جديدة من تاريخ الإمارة البابانية. ( **بابان** ، ١٩٩٣ ، ص ٣٥ ؛ **بيك** ، ٢٠٠١ ، ص ٦٤-٦٥)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

-عهد بابا سليمان وترسيخ حكم البابان

بدأ نجم إمارة بابان بالصعود عندما تسلم بابا سليمان (١٦٦٩- ١٦٩٩) حكم الإمارة. اذ يعد المؤسس الحقيقي لها في عهد اسرتها الخامسة.( **لونكريك** ،١٩٦٢، ص ٥٥ ؛ **ادموندز** ، ١٩٧١، ص٥٥)

اعترفت الدولة العثمانية بسلطة بابا سليمان على منطقة قه لا جوالان في كردستان، ومنحه لقب الباشا حرصاً منها على الاحتفاظ بولائه للعثمانيين.( **رؤوف**، ١٩٩٤ ، ص٢٥٣)

اتخذ بابا سليمان من قه لا جوالان مركزاً للإمارة البابانية والتي بقيت حتى تم بناء مدينة السليمانية عام ١٧٨٤. وقد شملت حدودها مساحات واسعة من اراضي كردستان الجنوبية ولم يكتفِ بذلك بل اخضع مدينة كركوك مركز ايالة شهرزور لسيطرته عام ١٦٨٨.( **افندي** ، ١٩٧١، ص٢٩٦)

استغل إسماعيل باشا (١٦٩٠-١٧٠٤) والي بغداد حالة الضعف العسكري للقوات البابانية فتوجه عام ١٦٩٩ وبمساعدة ولاة حلب ودياربكر وقاد حملة عسكرية الى كردستان لاسترجاع المناطق التي سيطر عليها بابا سليمان ومحاولة تحجيم قوته العسكرية خوفاً من ان تستغل ايران محاولات امير بابان التوسعية داخل اراضيها للاستيلاء على اراضي داخل حدود الدولة العثمانية. وقد حققت الحملة نتائجها والقي القبض على بابا سليمان بعد هزيمة قواته ونقل الى ادرنة للإقامة فيها حتى وفاته عام ١٦٩٩، وبذلك انتهت حياة شخصية كردية كان لها الفضل في وضع حجر الاساس لإمارة قدر لها ان تؤدي ادواراً مهمة في تاريخ العراق والدولة العثمانية.( **جودت** ، ١٣٠٩هـ ، ج١ ، ص٣٤٣ )

-عهد بكر بك

تولى بكر بك (١٧٠٣- ١٧١٤) بن بابا سليمان حكم الإمارة البابانية في وقت اصبحت فيه تلك الإمارة قوة سياسية ( **حسين** ،٢٠٠٠، ص ٢٤)

شهدت حقبة حكم بكر بك اتساع حدود إمارة بابان، لتشمل مناطق واسعة امتدت من نهر ديالى ( سيروان) جنوباً حتى نهر الزاب الصغير (زي كويه) شمالاً، ومن طريق كفري-التون كوبري غرباً حتى الحدود الايرانية. مما ادت الى استفزاز والي شهرزور، لان غالبية تلك المناطق كانت خاضعة له ادارياً، وان اقتطاعها من قبل بكر بك يعني تحجيم نفوذ وسلطة الوالي سياسياً ادارياً. ومما زاد من توتر العلاقة بين الجانبين عدم اعتراف بكر بك بسلطة والي شهرزور، وفشل الأخير في التصدي لتلك المحاولات عندها اضطر الى الاستعانة بحسن باشا (١٧٠٤-١٧٢٤) والي بغداد لوضع حد لتصرفات بكر بك. ( **افندي**، ١٩٧١ ، ص٣٢٨)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وعلى الرغم من الاستعدادات التي اتخذها بكر بك لمواجهة قوات حسن باشا، الا ان فارق الامكانات التسليحية والخبرة العسكرية، وإصرار والي بغداد على ضرورة وضع حد لحركات العشائر، كانت عوامل اساسية في تحقيق الانتصار على القوات البابانية ، فالقي القبض عليه ثم قتله عام ١٧١٤، وبذلك انتهت مرحلة مهمة من تاريخ الإمارة البابانية ادت خلا لها دوراً مؤثراً في احداث منطقة كردستان الجنوبية ( البزاز ، ٢٠٠٠، ص ٤٣)

وبما ان ولدي بكر بك سليم وشير لم يبلغا سن الرشد وكذلك اولاد تيمور خان فقد تم تعيين متسلم وهو من غير الاسرة البابانية حاكماً للإمارة، واعادتها اداريا لايالة شهرزور. وبذلك فقد البابانيون الكثير من الامتيازات التي يتمتعون بها عندما كانوا يديرون شؤون امارتهم ( افندي ،١٩٧١، ص ٣٢٨)

لم يستطع الحاكم الجديد الحفاظ على أراضي الإمارة، فقد استغل احمد خان الزنكني الظروف الداخلية التي تمر بها الاسرة البابانية في اعقاب مقتل بكر بك ونجح في السيطرة على اجزاء عديدة من الاراضي البابانية دون ان يحرك الحاكم الجديد ساكناً. عندها قرر خانة بك بن تيمور خان الدفاع عن الإمارة، فجهز جيشاً من البابانيين الذين ابدوا استعدادهم للمهمة، ونجحوا في الانتصار على احمد خان الزنكني، وطرد قواته خارج الأراضي البابانية ، وتولى خانة بك حكم الإمارة عام ١٧٢١ . ( زكي ، ١٩٥١، ص ٦٧)

-خانة باشا وتوسع الإمارة البابانية.

بعد تولي خانة بك (١٧٢١- ١٧٢٧) حكم الإمارة البابانية شهدت فيه ايران انحلال الأسرة الصفوية ومن ثم سقوطها على يد الأفغان عام ١٧٢٢. مما ولد مخاوف لدى العثمانيين من احتمال اندفاع تلك القوات داخل الأراضي العثمانية وعليه وجهت استانبول أوامرها إلى حسن باشا والي بغداد الى تجهيز حملة عسكرية للسيطرة على مناطق شمال ايران القريبة منها تحسباً لأي طارئ، وتنفيذاً للأمر السلطاني تحركت عام ١٧٢٣ قوات حسن باشا، التي جمع أعدادها من عدة ايالات بالإضافة الى خانة بك المشاركة في تلك الحملة، التي تمكنت من السيطرة على كرمنشاه في السادس عشر من تشرين الاول ١٧٢٣، وبعدها كلف والي بغداد خانة بك بإخضاع إمارة اردلان.( زكي ، ١٩٥١، ص ٦٧)

وتقديراً لموقف خانة بك في اسناد القوات العثمانية وانجاز المهام الموكله اليه، قررت الحكومة العثمانية منحه رتبة ميرميران ، التي يطلق على حاملها لقب باشا ( جودت ، ١٣٠٩هـ ، ج١ ، ص٣٤٣) ، وبذلك اصبح خانة باشا من الشخصيات العسكرية والسياسية المعروفة في الدولة العثمانية التي لها اثرٌ ايجابي في مكانة الإمارة البابانية ، واشترك خانة باشا مع العثمانيين في حصارهم لمدينة همدان الى ان تمت السيطرة عليها في نهاية آب ١٧٢٤. ( البزاز ، ٢٠٠٠، ص ٥٦)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**سليمان باشا ابو ليلة ١٧٥٠- ١٧٦٢ والقضاء على حركة سليم بابان**

انعكست اثار الفوضى السياسية التي شهدها العراق للمدة من ١٧٤٧-١٧٥٠ على امراء آل بابان، وبالأخص سليم بابان الذي استغل ضعف السلطة المركزية العثمانية في بغداد .(**بابان ، ١٩٧٦، ص ٢٦٦**) وكان من الطبيعي ان تسترعي تلك الاعمال اهتمام الوالي سليمان باشا ابو ليلة. ففي عام ١٧٥٠م قاد حملة عسكرية لقتال سليم بابان. وعند وصوله منطقة دلي عباس بعث برسائل الى رجال الدين ومشايخ مناطق بابان وكوي وحرير ودرنة واربيل وزنكنة، دعاهم فيها الى عدم مناصرة سليم باشا وطالبهم بالوقوف الى جانب القوات العثمانية ومن يخالفه سيعرض نفسه ومنطقته لمواجهة عسكرية تكون في غير صالحة. (**العزاوي ، ١٩٥٥، ج٦، ص٢٥ ؛ العمري ١٩٧٤، ص١٠٧**)

التزم علماء الدين ومشايخ كردستان بدعوة سليمان ابو ليلة اما لتخوفهم من عقاب والي بغداد، او بسبب السياسة التي مارسها سليم باشا بحق سكان المنطقة، عندها اصبح موقف سليم صعباً، لاسيما بعد تفرق العديد من انصاره عند وصول القوات العثمانية الى منطقة كوك تبه. فأضطر سليم اللجوء الى ايران، ( **الكركوكلي ، ١٩٧٠، ص ١١٧**

وعند وصول والي بغداد الى نقطة قريبة من قه لاجوالان استقبله بحفاوة كبيرة امراء بابان معلنيين ولاءهم له وطاعتهم لأوامر السلطان العثماني، رافضين في الوقت نفسه تصرفات سليم باشا تجاه الدولة العثمانية ( **زكي ، ١٩٥١، ص ٧٥**). وبهذا تخلص البابانيون من اي أجراءٍ عسكري قد يتخذه سليمان باشا ضدهم تكون نتائجه سلبية على مستقبل كيان إمارتهم السياسي.

بعد فرض النظام المركزي في قه لاجوالان والمناطق المحيطة بها، تحركت قوات سليمان باشا باتجاه مدينة اربيل للقضاء على حاكمها قوج باشا احد حلفاء سليم باشا الباباني، فأحاطت القوات العثمانية بالمدينة من جميع جهاتها وحاصرتها مدة تسعة ايام (**العمري ، ١٩٧٤، ص ١٠٨**)، اضطر بعدها قوج باشا واتباعه الى الاستسلام، فقطع رأسه وارسل الى اسطنبول .( **الكركوكلي ، ١٩٧٠، ص ١١٧-١١٨**)

**عهد سليمان باشا بابان ١٧٥٠ - ١٧٦٤**

عندما اختير سليمان باشا حاكماً للإمارة البابانية منحه والي بغداد فضلاً عن قه لاجوالان صلاحيات ادارية واسعة ، اذ امتدت سلطته السياسية على مقاطعتي كوي وحرير اللتين كانتا جزءً من الإمارة السورانية وكذلك التون كوبري وزنكاباد وبدرة وجصان. وبذلك توسعت حدود الإمارة البابانية، الى الدرجة التي اصبح فيها امراء آل بابان القوة السياسية الوحيدة التي يتعامل معها العثمانيون في كردستان العراق.( **رؤوف ،١٩٩٤، ص ١٠٦-١٠٧**)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

لم تقف مكاسب سليمان ابي ليلة عند هذا الحد بل منح ال بابان مكسباً اضافياً تمثل بإعفاء الإمارة من الضريبة السنوية التي تدفعها الى خزينة بغداد طالباً من حاكمها انفاق تلك الاموال على الجانب العسكري.( **زكي ، ١٩٥١ ، ص٧٦ ؛ بيك ،٢٠٠١ ، ص١٠٦**)

ان هدف والي بغداد من تقوية الإمارة البابانية هو للاعتماد عليها في التصدي لعدو الدولة العثمانية المتمثل بالإيرانيين وذلك لما يتمتع به ال بابان من امكانية قتالية عالية، يمكن للعثمانيين من خلالهم حسم صراعهم العسكري مع ايران في حالة حدوثه.

قاد علي باشا في عام ١٧٦٢ حملة عسكرية لقتال سليمان باشا، الذي استعد هو الاخر لمواجهة قوات والي بغداد اذ هيأ ستة آلاف فارس وثمانية الاف مقاتل من المشاة سار بهم الى منطقة جبال قشقة (حمرين) لسد الطريق على قوات علي باشا ومنعها من التقدم نحو قه لاجوالان. غير ان الذعر دب في معسكر سليمان باشا بعد سماعهم وصول طلائع قوات علي باشا الى منطقة دلي عباس، عندها اضطر امير بابان الى الانسحاب داخل اراضي كردستان في محاولة منه لأبعاد الاشتباك مع قوات علي باشا، غير ان الأخير استمر في ملاحقتهم. وعند منطقة كوشك زنكي وقعت المعركة بين الجانبين أسفرت عن اندحار القوات البابانية وفرار سليمان باشا الى ايران ( **الكركوكلي، ١٩٧٠، ص١٣٦ ؛ لونكريك،١٩٦٢، ص ٢١٦**)

ولتجنب مركز الإمارة من خطر قوات الوالي توجه عددا من الامراء البابانيين وفي مقدمتهم احمد بك احد اخوة سليمان باشا لتقديم فروض الطاعة والولاء الى والي بغداد الذي امر بتعيين احمد بك حاكما على بابان وتيمور بن عثمان باشا السوراني على كوي وحرير ، وبذلك تقلصت حدود الإمارة البابانية. ( **رؤوف،١٩٩٤ ، ص ٧٢**).

لم يستمر علي باشا في ادارة ايالة بغداد طويلا، ففي العام ١٧٦٤ أُحيكت ضده مؤامرة اذ رُوجت إشاعات في بغداد تشير الى ان علي باشا استخدم القسوة تجاه آل بابان كونهم سُنة، في حين تساهل مع قبيلة الخزاعل الشيعية فأخذت تلك الأقاويل تنتشر بين اهالي بغداد، زادتها حدة ما اشيع بأن علي باشا فارسي الاصل وانه ينوي تسليم بغداد الى كريم خان الزند حاكم ايران. فانتهت تلك الاحداث بمقتل علي باشا عام ١٧٦٤ بعد قيام الفتنة في بغداد ضده من قبل عمر كهية الذي تسلم مقاليد السلطة في بغداد. ( **الوردي ، ٢٠٠٥،ج١، ص ١٥٦ ؛ نورس ، ١٩٧٥ ، ص٣٤-٣٥**)

جاءت الاحداث في بغداد لصالح سليمان باشا بابان الذي تربطه بعمر باشا والي بغداد الجديد علاقة وثيقة، فأصدر الأخير امراً بإعادة سليمان باشا من جديد الى حكم الإمارة البابانية، واسترجاع سلطته الادارية على كافة المناطق التي كانت ضمن نفوذه السياسي سابقا. الا ان سلطته سرعان ما انتهت عندما قتل عام ١٧٦٤ من قبل فقي إبراهيم. ( **بيك ، ٢٠٠١، ص١١٧-١١٩**)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**تنافس الاخوة البابان**

عين محمد باشا حاكماً على الإمارة البابانية بعد مقتل اخيه سليمان. وتزامن توليه السلطة مع حملة عمر باشا والي بغداد ضد قبيلة الخزاعل ومطالبته لأمير بابان المشاركة عسكرياً في تلك الحملة التي انظم اليها الفا مقاتل من البابانيين. (زكي،١٩٥١، ص ٨١) وكان لهم دوراً متميزاً في القتال، مما انعكس أيجاباً على مكانة الأمير محمد باشا لدى الوالي الذي لم يتردد في الموافقة على طلب امير بابان السماح لأخيه احمد بالعودة الى قه لاجوالان. (زكي ، ١٩٥١، ص٨١؛ بيك ،٢٠٠١ ، ص ١٢٣)

ولتخفيف عبء المسؤولية واشعاره بإعادة مكانته السياسية منح حاكم بابان أخاه احمد ادارة شؤون منطقتي كوي وقره داغ. غير ان نشوب الخصومة بين الاخوين وشكوك الاخير في نوايا اخيه محمد، جعلته يغادر منطقة مسؤوليته الى زنكاباد، طالباً في الوقت نفسه مساعدة الوالي عمر باشا، الذي منحه مقاطعات مندلي وبدرة وجصان. عندها اصبحت مكانته السياسية موازية لأخيه محمد كون ان توليه المسؤولية الجديدة جاءت بقرار من والي بغداد، وليس بتكليف شخصي من امير بابان التابع إدارياً لعمر باشا.(بيك ،٢٠٠١، ص ١٢٣)

ولتحجيم نشاط اخوته المعارض له بعد فقدان الثقة بهم، طلب امير بابان من اخيه احمد القدوم الى قزلجة. للتشاور معه في امور تخص الإمارة. وعند وصول احمد القي القبض عليه وسجن في قلعة سروجك وارسلت في الوقت نفسه قوة للقبض على اخيه محمود بك، الا ان الأخير غادر المنطقة الى بغداد قبل وصول القوة، طالباً حماية واليها عمر باشا، الذي احسن استقباله ومنحه حكم منطقة قزلرباط (السعدية). ( العزاوي ،١٩٥٥، ج٦، ص٤٧؛ بيك ، ٢٠٠١ ، ص٤٧ )

اراد عمر باشا من تصرفه هذا، احتضان الاخوة الثلاثة، وعدم اشعار أياً منهم بان مكانته لدى الوالي افضل من الآخر، وبالتالي يتحولون الى قوة معارضة تشكل تهديداً للنظام العثماني في بغداد، بفضل ما يمتلكونه من مكانه سياسية واجتماعية في منطقة كردستان.

أدى تصرف عمر باشا الاخير الى استياء امير بابان وفقدانه الثقة بالوالي، وبدأ بمراسلة كريم خان الزند. عندها اصدر عمر باشا أمراً عام ١٧٧٤ بعزل محمد باشا عن إمارة بابان وتعيين اخيه محمود بك مكانه وأمر الحاج سليمان اغا متسلم البصرة بالتوجه على رأس قوة عسكرية الى قه لاجوالان لتنفيذ ذلك، وعند معرفة محمد باشا بنوايا والي بغداد في حال رفضه للقرار، غادر قه لا جوالان الى مركز الإمارة الاردلانية داعيا كريم خان الزند مساعدته لاسترداد سلطته الادارية. (زكي ، ١٩٥١ ، ص٨٢ ؛ فائق، ١٩٦٢، ص١٤)

وفي مسعى فاشل، رفض عمر باشا وساطة حاكم ايران إعادة محمد الى منصبه السابق، مما دفع كريم خان عام ١٧٧٤ الى ارسال جيش الى كردستان لاسترجاع سلطة الامير محمد باشا



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

لكن القوة الايرانية منيت بهزيمة على يد القوات العثمانية في المعركة التي حدثت بالقرب من جبل سرسير. ( بيك ، ٢٠٠١، ص ١٦٥-١٦٧ ؛ العمري، ٢٠١٣ ، ص١٨٦ )

اتخذ كريم خان الزند من خسارة قواته في سرسير ذريعة لشن هجوم واسع على الأراضي العراقية، ففي عام ١٧٧٥ تجمعت قوات ايرانية كبيرة العدد وزعت على جبهتين، الأولى شمالية باتجاه منطقة كردستان، اما الثانية فكانت الجبهة الجنوبية التي كتنت مهمتها احتلال البصرة. ( الجادر، ١٩٩٠، ص٢٨-٣٠)

إزاء تلك التطورات الخطيرة وما رافقها من نتائج على مستقبل العراق في حالة تنفيذ الهجوم الايراني حاول والي بغداد ترضية كريم خان الزند فأصدر امراً بإعادة محمد باشا الى حكم الإمارة البابانية ثانيةً، أملاً في تهدئة الموقف المتأزم بين الدولتين العثمانية والايرانية. ( بيك، ٢٠٠١ ، ص١٢٧)

لم تجد تلك الاجراءات التي اتخذها عمر باشا نفعاً فقد استمرت الجيوش الايرانية بالاندفاع داخل الاراضي العراقية.(الكركوكلي ،١٩٧٠، ص١٥١، بيك ، ٢٠٠١،ص١٢٧ )

وفي محاولةٍ لإنقاذ الموقف، تم في عام ١٧٧٥ إقالة عمر باشا كونه اساس المشكلة، وتعيين امين باشا الجليلي بدلاً عنه، لكن الاخير توفي بعد وصوله بغداد، فخلفه مصطفى باشا الاسبيناقجي. الا ان اوضاع العراق ازدادت تدهورا، فبدل بعبد الله باشا عام ١٧٧٦، اما حسن اغا حاكم ماردين فأسندت اليه أيالة شهرزور ومنح رتبة باشا.( نورس،١٩٧٥، ص ٣٧-٣٨، بيك ، ٢٠٠١، ص١٣٢-١٣٤)

ولرفع معنويات واليَيّ بغداد و شهرزور من اجل الدفاع عن العراق، ارسلت اسطنبول خمسمائة كيس من النقود لدعم نفقات القوات العسكرية في جبهات القتال الشمالية والجنوبية مما شجعت الولاة على مواصلة قتالهم ضد الجيش الإيراني. اذ طلب حسن باشا والي شهرزور الجديد من محمد باشا امير بابان التوجه بقواته الى مركز إمارة اردلان، وامر احمد باشا متصرف كوي وحرير الى منطقة زهاب، لضرب القوات الايرانية داخل اراضيها بهدف تخفيف الضغط العسكري على المدن العراقية، وفي طريقه هاجم محمد باشا مدينة بانة وانتصر على حاكمها ، مما دفع بحاكم اردلان الى الخروج بقواته لمواجهة جيش امير بابان الذي حقق انتصاراً اخر على قوات اردلان في معركة نشبت بينهما في منطقة مريوان عام ١٧٧٧، فكرّمه والي بغداد لان ما حققه يعد انتصاراً للدولة العثمانية وهي تخوض حربا ضد الايرانيين. ( زكي، ١٩٥١، ص ٨٥)

اما احمد باشا فلم يكن موفقاً في مهمته، اذ أمر قواته المتوجهة الى زهاب بالتوقف قبل وصولها الهدف بحجة المحافظة على الحدود. ومن هناك اتصل بكريم خان الزند طالباً منه الموافقة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

على قبول لجؤه الى ايران، بعد ان وصلته انباء تفيد بان والي شهرزور حسن باشا قد اصدر أمراً بتعيين تيمور ثانيةً لإدارة شؤون منطقتي كوي وحرير. ( بيك، ٢٠٠١ ، ص ١٣٤)

كان لخسارة القائد خسروخان في معركة مريوان، ولجوء احمد باشا الى ايران دور في ارسال كريم خان الزند عام ١٧٧٨ حملة عسكرية جديدة الى منطقة كردستان بقيادة بلغ تعدادها اثني عشر ألف مقاتل وبرفقتها احمد باشا. ولاختلاف موازين القوى بين القوة المهاجمة والمدافعة عن قه لا جوالان، اضطر اميرها محمد باشا الى الانسحاب منها واللجوء الى تيمور باشا، عندها دخلت القوات الايرانية مركز الإمارة البابانية وتنصيب احمد باشا أميراً عليها. ( زكي ،١٩٥١، ص ٨٥)

**الإمارة البابانية في عهد محمود باشا**

بعد وفاة احمد باشا بابان عام ١٧٧٨انتقل حكم الإمارة البابانية الى اخيه محمود الذي سارع الى اسناد حسن باشا والي بغداد عسكرياً للقضاء على تمرد عجم محمد واحمد بن خليل. وعند اقتراب الأمير الباباني من بغداد انضمت اليه قوات الكهية عثمان اغا وسليمان الشاوي احد رؤساء شيوخ العبيد، وعشيرة العقيل فتمكنوا من تشتيت جموع المتمردين وملاحقتهم في مدن الخالص ومندلي ودكيرمان. فأضطر عجم محمد واحمد بن خليل الهرب الى لورستان واللجوء الى رئيس قبيلة الفيلية (بيك، ٢٠٠١، ص١٤٥)

ادت مشاركة القوات البابانية في القتال ضد المتمردين دوراً فاعلاً في القضاء عليهم، اذ الحقت الهزيمة بهم بعد مقتل احمد بن خليل وهروب عجم محمد الى ايران. فتم تكريم قائدهم عثمان بك بمنحه لقب باشا تقديراً لشجاعته والجهود التي بذلها مع قواته في تصفية المتمردين.( بيك ، ٢٠٠١، ص١٤٨)

في عام ١٧٨١ قاد والي بغداد سليمان باشا حملة عسكرية لقتال محمود بابان بسبب تمرده وعصيانه لأوامر الوالي وتحالفه مع عثمان اغا متسلم كركوك وقد انضمت الى جيش سليمان باشا قوة عسكرية من الموصل، فضلاً عن حسن بك بن خالد باشا بن سليمان الذي قرر سليمان توليه إمارة بابان بهدف التخلص من محمود، ومنحهُ رتبة باشا، كما قرر تعيين محمود بن تيمور حاكماً على كوي وحرير. وبهذا جُرد محمود من جميع صلاحياته الإدارية والسياسية .(لونكريك ،١٩٦٢، ص٢٤٨-٢٤٩)

على الرغم من استعدادات محمود باشا وابنه عثمان العسكرية الا انهم ادركوا صعوبة تحقيق انتصار على القوات المتقدمة لاسيما بعد انضمام العديد من امراء بابان الى جيش سليمان، عندها أرسل محمود وفداً من وجهاء كردستان للحصول على العفو والامان من سليمان الذي وافق على ابقاء محمود باشا على الإمارة البابانية ولكن بشروط قاسية تضمنت:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١-دفع ثلاثمائة كيس اقجة. (العزاوي ، ١٩٥٨، ص١٤١)

٢- التخلي عن كوي وحرير.

٣- طرد عثمان اغا من الإمارة البابانية

٤- ابقاء احد اولاد محمود باشا في بغداد رهينة.

ومن اجل تنفيذ تلك الشروط أرسل سليمان باشا الكبير الحاج سليمان بك الشاوي الى قه لاجوالان للتأكد من ذلك. ( بيك، ٢٠٠١ ، ص١٥٠-١٥١)

قرر سليمان باشا الكبير التخلص من محمود باشا لان بقاءه يشكل قلقا على الوجود العثماني في مناطق كردستان، فتوجه في عام ١٧٨٢على رأس قوة عسكرية لتنفيذ المهمة. وعند وصول القوات العثمانية الى كركوك ا قام محمود باشا وابنه عثمان تحصينات دفاعية في دربندبازيان، لإعاقة تقدم الجيش العثماني، عندها طلب والي بغداد من إبراهيم بك الالتحاق به بعد ان منحه اضافة الى كوي وحرير حكم قه لاجولان ولقب باشا، بهدف اضعاف مركز محمود العسكري وبالفعل اعلن العديد من الامراء البابانيين وبتأثير إبراهيم باشا، الانضمام الى قوات سليمان الكبير التي لم تَخُضْ اية معركة بسبب انسحاب محمود باشا، الذي قرر وعائلته مغادرة المنطقة الى ايران. ( الكركوكلي ،١٩٧٠ ، ص١٥٥)

بعد موت محمود باشا ، قرر ولداه عثمان وعبد الرحمن العودة الى العراق وعند وصولهما العمادية كتب عثمان رسالة الى والي بغداد طالباً منه منحهما العفو والامان، فوافق ، وعند وصولهما، منحهما سليمان باشا ادارة نواحي قزلرباط وعلي اباد وخانقين. ( الكركوكلي ،١٩٧٠ ، ص١٥٥)

**ظهور عبد الرحمن باشا وتعاقبه على حكم الإمارة البابانية**

بعد وفاة عثمان باشا عام ١٧٨٨، وتعيين إبراهيم خلفاً له على ادارة مدينة السليمانية برز عبد الرحمن بابان، فتولي حكم الإمارة البابانية، وذلك بفعل ثقله الاجتماعي بين العشائر الكردية، وعلاقته مع حكام ايران.( الكركوكلي ،١٩٧٠، ص١٩٢)

ان هذه الخصوصية التي تمتع بها عبد الرحمن لم تكن خافية عن سليمان باشا الكبير والي بغداد، لكنه اراد ان يغض الطرف عن فكرة تعيينه، لإدراكه بان مكانته في منطقة كردستان وعلاقاته الخارجية قد يشكلان مصدر قلق لباشوية بغداد. وهذا ما اراد سليمان تجنبه في وقت كان العراق معرضاً لصراعات داخلية واخطار خارجية. غير ان لجوء عبد الرحمن الى مدينة سقز في اقليم كرمنشاه الايراني قد أثار مخاوف سليمان الكبير من احتمالية إقناعه الإيرانيين بالهجوم على الأراضي العراقية، فطلب من احمد الكهية استدراجه للمجيء الى بغداد ومنحه حكم الإمارة البابانية، العرض الذي لقي قبولاً من قبل عبد الرحمن بابان، لثقة الاخير بأحمد الكهية الذي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولينێن كوردى

تربطه معه صلة قربى. وبالفعل اصدر والي بغداد عام ١٧٨٩ أمراً نص على منح عبد الرحمن بابان حكم الإمارة البابانية ومنطقتي كوي وحرير.( **العزاوي**،١٩٥٥،ج٦ ، ص١٠٧)

عند سماع إبراهيم باشا نبأ تعيين عبد الرحمن أميراً بدلاً عنه، قرر مغادرة السليمانية والتوجه الى ايران لتحاشي حدوث أي صدام مع اتباع عبد الرحمن.( بيك ،٢٠٠١ ، ص ١٠٨-١٠٩)

استمر حكم عبد الرحمن باشا حتى عام ١٧٩٧، وتمكن من تثبيت دعائم الأسرة البابانية في كردستان متخذاً من مدينة السليمانية نقطة انطلاق لتوسيع دائرة نفوذه السياسي، ان تلك الخصوصية جعلت سليمان باشا الكبير يعيد النظر في بقائه حاكماً لآل بابان، لان ذلك سيجعل منه قوة قد تشكل خطراً على النظام السياسي في بغداد او تدعوه للانفصال عن باشوية بغداد. وعليه قرر الوالي عزله واستدعاءه الى بغداد واعادة إبراهيم باشا لحكم الإمارة البابانية متذرعاً بان حالته الصحية لا تسمح له بإدارة شؤون الإمارة، في حين أبقى شقيقه سليم بك حاكما على كوي وحرير، ليثبت لعبد الرحمن بان قراره لا ينطوي على نوايا عدوانية. ( **زكي** ، ١٩٥١ ، ص ١٠٣)

بقي عبد الرحمن بابان مقيماً في بغداد وعلى مقربة من انظار والي بغداد مدة اربع سنوات حتى سئم من ذلك، ففي عام ١٨٠١ طلب من الوالي السماح له بالمغادرة، مما اغضب ذلك سليمان الكبير، الذي قرر عزل سليم بك عن حكم منطقتي كوي وحرير، وتعيين محمد بن محمود باشا السوراني بدلاً عنه ونفي الأخوين الى الحلة للتخلص منهم.(**العزاوي** ، ٢٠٠٠، ص١٩٨؛ **العمري**، ٢٠١٣ ، ص ١٩٨)

في عام ١٨٠٢ توفي سليمان باشا الكبير وتولى علي باشا صهر سليمان مقاليد الحكم، الا ان بغداد شهدت صراعاً سياسياً للاستحواذ على السلطة، كانت ادواته كلاً من سليم بك الصهر الثاني لسليمان الكبير واحمد اغا رئيس الانكشارية فقررا التحالف في جبهة واحدة لإبعاد علي باشا وتسلم سليم بك السلطة بدلاً عنه.( **الكركوكلي** ،١٩٧٠ ، ص٢١٨)

وكعادة امراء بابان فقد جهز إبراهيم باشا بأمر من والي بغداد عام ١٨٠٢ حملة عسكرية انزل خلالها هزيمة بقوات عشائر البلباس القاطنة في كردستان والتي كانت مصدر قلق بسبب هجماتها المتكررة داخل الاراضي الايرانية. (**بيك**، ٢٠٠١،ص ١٧٤ ) كما اسهم إبراهيم باشا في الحملة التي قادها الوالي علي باشا لقتال اليزيدية في سنجار. (**زكي**، ١٩٥١ ، ص ١٠٥ ) وفي طريق عودته الى السليمانية مرض إبراهيم باشا وتوفي.( **الكركوكلي** ،١٩٧٠، ص ١٢٤)

إصدار والي بغداد امرٍ عام ١٨٠٣ بتولية عبد الرحمن باشا حكم مدينة السليمانية لان اصراره على خالد بك قد يثير مشاكل واضطرابات لباشوية بغداد، في وقت تتعرض فيه مدن العراق الحدودية لهجمات من قبل السعوديين، كما ادرك ان عبد الرحمن باشا يمتلك قوة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکولینێن کوردی

تسليحية كبيرة يمكن الاعتماد عليها في مواجهة الاخطار الداخلية والخارجية. ( بيك ،٢٠٠١، ص١٩٠)

كانت اولى خدماته التي قدمها للوالي علي باشا، اشتراكه مع قواته في الحملة العسكرية التي ارسلها علي باشا عام ١٨٠٤ لوضع حد لهجمات السعوديين على مدن العراق الجنوبية وفي مقدمتها البصرة ، وعلى الرغم من الانتصارات التي حققتها تلك الحملة على القوات السعودية، الا ان اندفاعها داخل شبة الجزيرة العربية، عرضها الى كوارث افقدها العديد من رجالاتها بسبب الظروف المناخية الصعبة التي واجهت افراد الحملة، وبعد الانتهاء من المهمة عاد عبد الرحمن الى مدينة السليمانية. ( زكي ، ١٩٥١ ، ص ١٠٦ ؛ بيك،٢٠٠١ ، ص ١٩٦)

شارك عبد الرحمن بابان في الحملة العسكرية التي ارسلها والي بغداد عام ١٨٠٥ ضد عشائر العبيد في منطقة الخابور لقيامها بحركات عدائية ضد حكومة بغداد، وتم مكافئته بمنحه الى جانب حكم السليمانية منطقتي كوي وحرير،( الكركوكلي ، ١٩٧٠، ص٢٨٨؛ بيك ، ٢٠٠١ ، ص ٢٠٦) ليثبت له بان الوالي لا يضمر له أي عداء، قد يؤدي الى تقاعسه عن تنفيذ المهمة التي ارسل من اجلها. الا ان عبد الرحمن بابان كان يدرك نوايا والي بغداد، فاتخذ بعد عودته الى السليمانية اجراءات يمكنه من خلالها الدفاع عن اراضي الإمارة البابانية من أي هجوم محتمل يقوم به علي باشا، وفي الوقت نفسه بعث برسالة الى علي باشا، اعلن فيها طاعته للوالي.( زكي ، ١٩٥١ ، ص ١٠٧-١٠٨)

ولتقوية جبهته العسكرية، طلب عبد الرحمن باشا من ضامن المحمد شيخ العبيد وحمد الحسن شيخ الغرير الوقوف الى جانبه في حالة تعرض اراضيه الى هجوم من قبل قوات الوالي علي باشا. ( زكي ،١٩٥١، ص١٠٧) كما ارسل اخاه سليمان بك مع قوة عسكرية، استولى فيها على مناطق درنة وباجلان وزهاب، وتعيين خالد بابان بدلاً من حاكمها عبد الفتاح باشا، ليضمن ولاء سكان تلك المناطق الى جانبه، بعدها توجه سليمان بك الى اربيل لمعرفة موعد قدوم حملة والي بغداد.( الكركوكلي ، ١٩٧٠، ص٢٢٩)

ولإشعار عبد الرحمن بابان بضعف قدراته القتالية طلب علي باشا من محمد الجليلي (١٧٨٩-١٨٠٦) والي الموصل وقاسم اغا حاكم اربيل التوجه بقواتهما الى مدينة كركوك لاتخاذها نقطة انطلاق للزحف نحو السليمانية بعد وصول تعليماته. كما اغرى والي بغداد، خالد بابان بان الأخير اذا ما تمكن من القضاء على عبد الرحمن باشا فان الوالي سيمنحه حكم الإمارة البابانية.( زكي ، ١٩٥١ ، ص ١٠٨؛ العمري، ٢٠١٣ ، ص ٢٠٥-٢٠٦) وبذلك استخدم علي باشا سياسة ضرب الزعامات الكردية الواحدة بالأخرى من اجل اضعاف جبهة عبد الرحمن باشا العسكرية، وهذا ما تحقق لاحقاً.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

وعلى الرغم مما وعده به الوالي، واستعدادات خالد بابان العسكرية غير ان قواته منيت بهزيمة من قبل قوات عبد الرحمن بابان في منطقة التون كوبري، فاضطر للهرب الى اربيل ( **لونكريك** ، ١٩٦٢، ص ٢٧٩) ، عندها خرج الوالي في عام ١٨٠٥ بقواته لقتال عبد الرحمن باشا، دون علم الأخير بها حتى اقترابها من مدينة كركوك فاضطر امير بابان الى اتباع أسلوب دفاعي. ( **العزاوي** ،١٩٥٥، ج٦ ، ص١٦٦ ؛ **بيك** ، ٢٠٠١،ص ٢٠٩-٢١٠)

وبدأوا بمهاجمة قوات عبد الرحمن التي وجدت نفسها عاجزة عن الصمود امام القوات المهاجمة ، عندها انسحب عبد الرحمن باشا الى مدينة السليمانية ثم غادرها الى ايران ( Arfa, 1966, P22.) ، فعين الوالي، خالد بن احمد باشا حاكماً على الإمارة البابانية في العام نفسه وسليمان بن إبراهيم باشا حاكماً على كوي وحرير، بعدها عاد علي باشا الى بغداد .( **جودت** ١٣٠٩ هـ ، ج٩ ، ص ١٩-٢٠)وبذلك انتهت المدة الثانية من حكم عبد الرحمن باشا التي تميزت بطموحه وتحوله الى قوة سياسة وعسكرية غير خاضعة لباشوية بغداد،

طلب عبد الرحمن بابان بعد لجوؤه الى إيران، تدخل الأخيرة في محاولة منها للضغط على والي بغداد لإعادته الى منصبه، الفكرة التي وجدت قبولا من قبل الحكومة الإيرانية لأن عبد الرحمن بابان في نظرها هو افضل شخصية يمكن الاعتماد عليها في عدم اثارة الاضطرابات على حدودها مع العراق، كما يتمتع بقوة التأثير في غالبية زعماء منطقة كردستان، بعثت الحكومة الايرانية برسالة الى الوالي علي باشا تدعوه فيها الى إصدار عفو بحق عبد الرحمن باشا وإعادته أميراً على بابان.( **الكركوكلي** ،١٩٧٠ ، ص٢٣٤ ؛ **حبيب** ، ١٩٨١، ص٨٣-٨٤ ) الا ان رد الوالي كان مخيباً لآمال الإيرانيين فقد اعتذر برسالته الجوابية من تلبية طلب الحكومة الإيرانية.( **حبيب** ، ١٩٨١، ص٨٤ )

ومما زاد من احتمالية نوايا ايران العسكرية، الرسالة التي بعثها خالد باشا حاكم بابان الى والي بغداد عام ١٨٠٦ ذاكراً فيها ان لديه معلومات دقيقة تؤكد اصرار الحكومة الإيرانية على اتباع مختلف الأساليب لإعادة عبد الرحمن باشا الى منصبه في السليمانية، حتى لو تطلب ذلك استخدام القوة ( **حبيب** ،١٩٨١ ، ص ٨٤ )

جاءت المتغيرات لصالح عبد الرحمن باشا لاسترجاع منصبه من جديد، فبعث برسالة الى الوالي علي باشا طالباً العودة الى منصبه السابق.( **العزاوي** ،٢٠٠٠، ص١٩٧) وإدراكا من الوالي بتدهور الأوضاع بسبب توغل الجيش الإيراني داخل الأراضي العراقية أمر بإعادة عبد الرحمن باشا الى حكم الإمارة البابانية . ( **زكي** ، ١٩٤٥ ، ج٢ ، ص ٨ ؛ **فائق**،١٩٦٢ ، ص٣١ ). وبذلك لم يعد للأخير أية حاجة للقوات الإيرانية فبعث برسالة الى القائد محمد علي مرزا ذكر في مضمونها:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

"حيث ان حكومة السليمانية قد أعيدت إلي، فلا احتاج بعد ان أضنيكم وأتعبكم". (زكي ، ١٩٥١، ص ١١٣ ) عندها بدأت عام ١٨٠٦ المرحلة الثالثة من حكم عبد الرحمن باشا للإمارة البابانية.

**العلاقة بين الإمارة البابانية وسليمان باشا الصغير**

في عام ١٨٠٧ قُتل الوالي علي باشا من قبل الطامعين في الحكم في اثناء ادائه الصلاة في احد مساجد بغداد، فأسندت باشوية بغداد الى ابن اخته سليمان كهية الذي عرف باسم سليمان باشا الصغير ١٨٠٨- ١٨١٠، وكانت العادة المتبعة عند تسلم والي جديد حكم العراق، قدوم عددٍ من الشخصيات وزعماء القبائل العراقية وحكام الولايات التابعة لبغداد لتقديم التهنئة وهذا ما حصل فعلاً، باستثناء عبد الرحمن باشا الذي قام بأعمال عدائية من بينها محاولته الفاشلة للسيطرة على كوي وحرير، مما يدلل على عدم اعترافه بالوضع السياسي الجديد الذي أعقب مقتل علي باشا .( **الكركوكلي ، ١٩٧٠، ص ٢٤٢؛العزاوي ،٢٠٠٠ ، ص ١٩٧**) لمعرفته المسبقة بعدم قدرة سليمان باشا على مواجهته عسكرياً، فضلاً عن اعتماد عبد الرحمن باشا على الدعم الإيراني في حالة حدوث تصادم بين الجانبين.

كانت فاتحة اعمال سليمان باشا الصغير العسكرية، تجهيزه حملة عام ١٨٠٨ للقضاء على عبد الرحمن باشا، الذي اصبح في نظره خارجاً على القانون،، فقرر عبد الرحمن اتباع خطة من شأنها افشال الحملة، قائمة على تحصين وتضييق طريق دربند بازيان بحيث لا يتسع لمرور اكثر من شخصين ( الكركوكلي، ١٩٧٠ ، ص ٢٤٢)، الا ان القوة المهاجمة كانت اكثر ذكاءً، إذ استعان الوالي بالبابانيين المرافقين للحملة لمعرفتهم بطبوغرافية المنطقة فهاجمت قوات سليمان باشا الصغير الدربند من عدة جهات، مما اربك معسكر عبد الرحمن باشا الذي تشتت قواته، فأضطر الأخير الى الانسحاب باتجاه الأراضي الإيرانية للاحتماء بحكامها مجدداً.( **ريج،٢٠٠٨ ، ص ٤٢-٤٣**)

ولضمان ولاء الإمارة البابانية للسلطة المركزية في بغداد، كان المفروض على سليمان الصغير اعادة تعيين خالد باشا لحكم الإمارة ثانية مكافأة للخدمات التي قدمها في المعركة الأخيرة، غير ان والي بغداد اصدر أمر بتعيين سليمان باشا بدلاً عنه، ومنح ادارة كوي وحرير الى محمد بك الخزندار، فعدها خالد باشا اهانة له، وقرر الانضمام مع أتباعه الى جانب عبد الرحمن باشا.( زكي ، ١٩٥١ ، ص١١٥) وبذلك اتحدت قوتان لهما ثقل سياسي وعسكري في منطقة كردستان، الى جانب مساندة الإيرانيين لهم ضد الوالي سليمان باشا الصغير، الذي اضطر تحت الضغط الإيراني الى اعادة عبد الرحمن باشا لحكم الإمارة البابانية.( **نورس،١٩٧٥، ص ٢١٩**)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

## آل بابان في ظل حكومة عبد الله باشا ١٨١٠-١٨١٣

على الرغم من تولي عبد الله باشا باشوية بغداد، الا ان الحاكم الفعلي كان عبد الرحمن بابان، كونه يعد نفسه صاحب الفضل في ايصال عبد الله الى مقاليد السلطة، وعليه فان جميع قراراته ملزمة التطبيق دون الرجوع الى الوالي. وتنفيذاً لذلك اصدر عبد الرحمن بابان أمراً بعزل عبد الفتاح باشا حاكم درنة وباجلان وتعيين خالد باشا بدلاً عنه.( **بيك ، ٢٠٠١، ص ٢٩٦ ؛ مكدول،٢٠٠٤ ، ص٧٩**)

حاول حاكم كرمنشاه التوسط لدى عبد الله باشا لإعادة عبد الفتاح الى منصبه بحكم العلاقة التي كانت تربط الاخير مع محمد علي مرزا، الا ان محاولته فشلت بسبب رفض عبد الرحمن بابان طلب الوالي بخصوص ذلك، عندها قرر عبد الله باشا اقالة كل من عينه عبد الرحمن بابان، الذي توسعت نشاطاته العسكرية خارج حدود امارته باتجاه الاراضي الايرانية ولاسيما المناطق التابعة لإمارة اردلان.( **الكركوكلي ، ١٩٧٠، ص ٢٥٢-٢٥٣**)

ان تصرفات عبد الرحمن بابان الاخيرة قد قربت بين حاكم كرمنشاه ووالي بغداد اللذين قررا القيام بحملة عسكرية مشتركة للتخلص منه، وبالفعل توجه محمد علي مرزا مع قوة بلغت ستين الف مقاتل، لتنفيذ المهمة من دون علم عبد الرحمن بأن هناك اتفاقاً ضده، وان هناك مراسلات بين والي بغداد وحاكم درنة وباجلان خالد باشا تدعو الأخير الى الانضمام للجيش الإيراني عند وصوله منطقة الحدود، وعند انكشاف امر الخطة، ادرك عبد الرحمن صعوبة موقفه العسكري لأنه كان يعتمد على قوات خالد باشا في الوقوف الى جانبه للتصدي للقوات المهاجمة عندها قرر مغادرة السليمانية والتحصن في قلعة كوي. ( **العزاوي ، ١٩٥٥، ج٦، ص٢١١ ؛ فائق،١٩٦٢ ، ص ٤٣-٤٤**)

وعند توغل القوات الايرانية في الاراضي العراقية، ادرك عبد الله باشا مخاطر هذا التحالف الذي قد يؤدي الى سيطرة الايرانيين على مدينة كركوك، عندها وجه منشوراً الى اهالي كردستان يهيبهم فيه الى مساعدة عبد الرحمن باشا في صد الهجوم الإيراني، ( **يوسف ، ٢٠٠٥ ، ص ١٤٤**) فأستغل عبد الرحمن هذا المنشور وأرسل نسخة منه الى محمد علي مرزا عندها أدرك الأخير صعوبة موقفه العسكري في حالة تحالف اهالي كردستان ضد الجيش الإيراني . (**بيك ،٢٠٠١، ص ٢٧٣** )

وللخروج من المأزق، عرض محمد علي مرزا على عبد الرحمن بابان المصالحة، واتفق مع عبد الله باشا على تعيين خالد باشا حاكماً للإمارة البابانية وعبد الرحمن باشا حاكماً على كوي وحرير، ( **العزاوي ، ٢٠٠٠، ص ١٩٩؛ لونكريك ،١٩٦٢، ص ٢٨٠**) وبذلك زال الخطر الذي يخشاه والي بغداد من دخول الجيش الإيراني لمنطقة كردستان كما تم ارضاء عبد الرحمن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

بابان بمنحه حكما ادارياً، اضطر عبد الرحمن الى قبول الوضع الجديد مؤقتاً، الا انه بعد ثلاثة أشهر شن مع اتباعه هجوما على مدينة السليمانية، اجبر خالد باشا على مغادرتها الى مندلي. ( زكي ، ١٩٥١، ص ١٢٤)

وقبل تسلمه مقاليد الحكم في الإمارة بعث برسالة الى والي بغداد طالبه فيها بإسناده منصب الإمارة. ولقرب حلول فصل الشتاء وصعوبة القيام بعمل عسكري وافق الوالي على منح عبد الرحمن بابان حكم مدينة السليمانية وكوي وحرير ( الكركوكلي ، ١٩٧٠، ص ٢٥٥ ) ، وبذلك تسلم عبد الرحمن باشا حكم الإمارة البابانية للمرة الخامسة. وهذا دليل على قوة شخصية هذا الرجل وتأثيره في منطقة كردستان، بحيث يمكنه ان يغير دائماً موازين الصراع لصالحه، حتى لو كانت امكانات الجبهة المتحالفة ضده اقوى منه عسكرياً.

عاود عبد الرحمن باشا نشاطه العسكري من جديد، فبدات قواته تهاجم باستمرار المناطق المحيطة بمدينتي اربيل وكركوك، فقرر الوالي في ضوء ذلك عزله وتعيين خالد باشا لإدارة الإمارة البابانية، ولعدم امكانية خالد العسكرية تنفيذ قرار الوالي، كان على عبد الله باشا القيام بعمل عسكري ضد عبد الرحمن لاسترجاع سلطته السياسية على منطقة كردستان.( الكركوكلي،١٩٧٠ ، ص ٢٥٥ )

لذلك قاد عبد الله باشا عام ١٨١٢حملة عسكرية الى السليمانية بهدف التخلص من عبد الرحمن بابان، الذي استعد هو الاخر عسكرياً لملاقاة جيش الوالي خارج حدود امارته، فالتقى الطرفان في منطقة كفري، كان النصر في بادئ الامر للجيش البابان الذي الحق هزيمة بقوات العشائر المرافقة لحملة الوالي، الا ان ميزان الصراع سرعان ما تغير لصالح الوالي بفعل سلاح المدفعية الذي كان بأمرة داود افندي اذ تمكن من توجيه ضربات مباشرة لاتباع عبد الرحمن بابان وقتل اعدادٍ كبيرة منهم، من بينهم خالد بك شقيق عبد الرحمن، فأصبح موقف الأخير صعباً عندها اضطر الى الانسحاب، واختار كرمنشاه مكاناً للجوء اليه، لإنقاذ نفسه من عقوبة الوالي في حالة القاء القبض عليه. ( ابو شوقي،١٩٧٨، ص ١١٠)

وكعادته تدخل محمد علي مرزا حاكم كرمنشاه للتوسط لدى والي بغداد لإعادة عبد الرحمن بابان الى منصبه، كونه الشخصية الكردية التي يثق الايرانيون في التعامل معها، لان للطرفين مصالح يرغب كل واحد منهم تحقيقها على حساب باشوية بغداد. لهذا ارسل محمد علي مرزا، مهدي خان كلهر مبعوثاً من قبله الى بغداد لمقابلة الوالي للعفو عن عبد الرحمن باشا واعادته الى حكم الإمارة البابانية، الا ان عبد الله باشا اعتذر عن ذلك، فاتخذها الإيرانيون ذريعة للهجوم من جديد على الأراضي العراقية. (شميم ١٣٧٩هـ ، ص١١٦ )



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

استعد عبد الله باشا لمواجهة القوات الإيرانية التي وصلت طلائعها بقيادة محمد علي مرزا الى قزلرباط، الا ان هروب سعيد بن سليمان باشا الكبير من بغداد ولجوءه الى حمود الثامر شيخ المنتفق قد اربك معنويات قوات الوالي، فاضطر الى تلبية مطالب الإيرانيين وفي مقدمتها عودة عبد الرحمن باشا الى منصبه السابق، ودفع تكاليف الحملة الإيرانية كشرط لانسحاب قوات محمد علي مرزا من الاراضي العراقية. وبذلك عاد عبد الرحمن باشا من جديد وللمرة السادسة الى حكم امارته، الا ان مدة حكمه هذه لم تستمر طويلا، اذ سرعان ما داهمه المرض فتوفي عام ١٨١٣. ( زكي ،١٩٤٥ ج٢، ص٦٠)

**الإمارة البابانية ودورها في الصراع على باشوية بغداد ١٨١٣-١٨١٦**

اعتقد أمراء بابان إن إمارتهم ستبقى قوية إذا ما انحصر حكمها في عائلة عبد الرحمن باشا، وعليه اتفق البابانيون على تولية محمود بن عبد الرحمن أميراً عليهم، وعُرض طلبهم على سعيد باشا (١٨١٣-١٨١٦)، الذي أصدر أمراً بمنح محمود حكم السليمانية وكوي وحرير. ( بيك ،٢٠٠١، ص ٢٩٦) واستمر محمود يمارس سلطته السياسية في كردستان حتى عام ١٨١٥، حين أمر سعيد باشا بعزله بناءً على وشاية حمادي اغا، الذي يعد من مقربي الوالي والمتحكم في إدارة شؤون باشوية بغداد، وتعيين عبد الله شقيق عبد الرحمن باشا مكانه، بذريعة إن الأخير أكثر كفاءةً وخبرة في إدارة شؤون الإمارة .( فائق،١٩٦٢ ، ص٥٩ ؛ الكركوكلي،١٩٧٠، ص ٢٧٠ ) إلا إن محموداً لم ينفذ قرار الوالي، معتمداً على المساعدة العسكرية التي أرسلها محمد علي مرزا البالغة عشرة آلاف مقاتل للتصدي لقوة عبد الفتاح اغا، الذي طلب منه سعيد باشا التوجه إلى السليمانية لإجبار محمود على التخلي عن منصبه. وأمام قوة محمود العسكرية، اضطر عبد الفتاح اغا إلى الانسحاب، واحتفاظ محمود باشا بسلطته السياسية. ( بيك ،٢٠٠١، ص٢٩٨ )

إن انسحاب عبد الفتاح اغا يعود إلى ضعف معنويات جنوده، لتردي الأوضاع العامة في العراق بسبب ضعف الوالي وانغماسه بالملذات مع حمادي اغا، في وقت عاشت فيه بغداد، صراعاً داخلياً ضاعف من خطورته خواء الخزينة لامتناع القبائل عن دفع ما عليها من ضرائب ورفعها راية العصيان، مما أدى إلى انقطاع الطرق وانتشار عمليات السطو. ( نوار ، ١٩٦٧، ص٧١-٧٦ ؛ نورس، ١٩٧٥، ص٨٨)

ولإيجاد مسوغ لاستحصال موافقة السلطان العثماني على عزل الوالي أعدت مؤامرة فسك بعض النقود عليها اسم سعيد باشا بدلاً من الطغراء السلطانية، للدلالة بأن الوالي قد تمرد على الحكومة العثمانية ، فعزل سعيد باشا وعين أخاه بالرضاعة احمد بك والياً على العراق بالوكالة كإجراءٍ مؤقت.( الكركوكلي ،١٩٧٠، ص ٢٧١-٢٧٢ ؛ لونكريك، ١٩٦٢، ص ٢٨٣)

تركت تلك الأحداث بصماتها الواضحة على الوضع الداخلي في مدينة بغداد، الذي ازداد سوءاً، مما دفع العديد من الشخصيات والموظفين البارزين إلى المغادرة، أما عامة السكان فاتجهت أنظارهم إلى داود أفندي لإنقاذهم من الوضع المتردي، وهذا ما كان يطمح له، وفي نفس الوقت يتوافق مع رغبة الحكومة العثمانية وفي مقدمتهم محمد سعيد حالت أفندي التي تربطه مع داود أفندي علاقة قديمة.(**الكركوكلي**،١٩٧٠ ، ص٢٧١-٢٧٢)

ولإنجاح خطته، وضمان إفشال أية مواجهة عسكرية يقوم بها سعيد باشا، قرر داود أفندي التوجه إلى كركوك لاتخاذها مركزاً لجمع أتباعه، وخلال وجوده هناك بعث إليه محمود باشا أمير بابان يدعوه للقدوم إلى السليمانية والتعهد بتقديم جميع المساعدات العسكرية والمادية التي تساعد في تحقيق ما يسعى إليه داود أفندي، المقترح الذي رحب به الأخير.(**الكركوكلي**،١٩٧٠ ، ص٢٧٢)، لما يمتلكه آل بابان من قوة عسكرية يمكنها أن تحسم أي قتال قد يحدث بين أتباعه وقوات سعيد باشا، بغض النظر عن دوافع محمود باشا من وراء ذلك، وخلال وجوده في السليمانية زهاء اربعين يوماً، تمكن داود أفندي من استقطاب العديد من المعارضين لحكم سعيد باشا أمثال رستم اغا متسلم البصرة السابق وخليل اغا متسلم كركوك السابق والسيد عليوي، وبعد إتمام كافة الاستعدادات اللازمة لإنجاح مهمة المعارضة، رفعوا طلباً إلى الباب العالي بترشيح داود أفندي لباشوية بغداد، الدعوة التي لقيت قبولاً من قبل الحكومة العثمانية، فأرسلت جوابها بالموافقة في تشرين الثاني ١٨١٦ عند وصول قوات داود إلى مدينة كركوك بعد خروجها من السليمانية قاصدة مدينة بغداد. ( **العزاوي** ،١٩٥٥ ، ج٦، ص٢٣٣)

وعلى الرغم من تصدي قوة من المنتفق لطلائع جيش داود باشا عند وصوله أسوار بغداد في كانون الأول ١٨١٧ وإجباره على التراجع، إلا إن داود تمكن بخطة نسج خيوطها ونفذها أتباعه، من تضييق الخناق على سعيد باشا الذي اضطر الى اللجوء الى القلعة للحفاظ على حياته، عندها انفتح الطريق أمام داود بالدخول إلى بغداد في العشرين من شباط عام ١٨١٧ بعد أن انضم إليه وجهاء مدينة بغداد. أما نهاية سعيد باشا فقد قتله سيد عليوي وهو في حجر أمه في الرابع والعشرين من شباط من العام نفسه .( **فائق**،١٩٦٢ ، ص ٤٨)

**النزاع بين محمود باشا وداود باشا والي بغداد:**

كان داود قد طلب من محمود باشا بابان عند قدومه إلى السليمانية في أيلول ١٨١٦ قطع جميع علاقاته بالجانب الإيراني كشرط للتعاون من أجل إسقاط حكومة سعيد باشا، مقابل توسيع دائرة حكمه في كردستان بعد تسلمه باشوية بغداد، المقترح الذي وافق عليه محمود بابان. وقد أوفى داود بتعهده للأمير البابائي إذ منحه فضلاً عن السليمانية منطقتي كوي وحرير.( **الكركوكلي** ،١٩٧٠، ص ٢٨٢)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لم يخدم التقارب بين الإمارة البابانية وباشوية بغداد الجانب الإيراني، لأن ذلك سيبعد البابانيين عن دائرة النفوذ الإيراني. وعليه مارس حاكم كرمنشاه ضغوطاً على محمود باشا لإنهاء ذلك التقارب، فأحدثت فعلها، إذ اضطر أمير بابان إلى الابتعاد تدريجياً عن باشوية بغداد من خلال رفضه للأوامر التي كان يصدرها داود باشا.(جودت ، ١٣٠٩هـ ، ج١١ ، ص٣٠ )

لجأ داود باشا أول الأمر إلى استخدام طرقاً دبلوماسية في محاولة منه لإقناع محمود بابان بضرورة التمسك بتبعيته لحكومة بغداد، كون إن منطقة كردستان ضمن دائرته السياسية، فأرسل لهذا الغرض عناية الله المهردار عام ١٨١٧ لكن محموداً تمسك بقراره محاولاً إقناع مندوب الوالي بأنه مجبر على اتخاذ هذا الموقف، لقرب إمارته من الحدود الإيرانية التي قد يعرضها إلى هجمات من قبل الإيرانيين في حالة رفضه التعاون معهم قبل وصول مساعدات عسكرية من بغداد، لم يقتنع داود باشا بجواب الأمير الباباني، فأصدر عام١٨١٧ قراراً بعزل محمود بابان، وكلف عناية الله بقيادة حملة عسكرية لتنفيذ ذلك وفرض سلطة الوالي على السليمانية، وقبل مواجهة محمود بابان عسكرياً، تمكن عناية الله من السيطرة على كوي، وكسب حسن بك شقيق محمود بابان إلى جانبه في محاولة لإضعاف جبهة الأمير الباباني، التي ازدادت حراجة عندما أمر داود باشا تعيين حسن بك حاكماً على كوي ومنحه لقب باشا. (زكي ، ١٩٥١ ، ص ١٣٩)

ولمواجهة قوات الوالي، استنجد محمود بابان بحاكم كرمنشاه محمد علي مرزا، الذي أرسل ثلاث حملات عسكرية في آن واحد وزعت على محاور، الأولى عشرة آلاف مقاتل بقيادة محمد علي خان مهمتها مساعدة محمود بابان في السليمانية، الثانية تولى قيادتها حسن علي خان الفيلي، توجهت نحو مندلي، أما الثالثة فكانت تحت أمرة كلبعلي خان وعلي خان رئيس الكلهر، ومسؤوليتها بدرة وجصان. ( بيك،٢٠٠١، ص٣٠٩)

من جهته بادر داود باشا إلى إفشال المخطط الإيراني بتجهيزه ثلاث حملات. (العزاوي ، ١٩٥٥ ، ج٦ ، ص ٢٥١-٢٥٢) إلا إن حدوث تمرد معارض له في الجنوب تزامن مع الحملة الإيرانية جعلت داود باشا يوجه اهتمامه للقضاء عليه، كونه يهدد مستقبل وجوده السياسي في بغداد، إذ لجأ صادق بك بن سليمان باشا الكبير عام ١٨١٨ إلى شيخ عشيرة زبيد في الجنوب، الذي سبق إن انضم إليه جاسم الشاوي كمعارض هو الآخر لداود باشا، مكونين تحالفاً كبيراً ضد الوالي، فأخذوا يمارسون أعمالاً تمثلت بقطع الطرق والاعتداء على السفن المارة بين بغداد والبصرة.( لونكريك ،١٩٦٢، ص٢٨٩)

وللقضاء على ذلك التحالف، قرر داود إحداث الشقاق بين أبناء عشيرة الزبيد، إذ طلب من مبعوثه محمد اغا مساندة علي البندر في الحصول على زعامة العشيرة، مما أدى إلى حدوث معركة بين أبناء العشيرة.( العزاوي ، ١٩٥٥ ،ج٦، ص٢٥٢-٢٥٣)



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

أما بشأن الجبهة الشمالية، فقد أرسل الوالي داود قوة عسكرية بقيادة عبد الله باشا إلى كركوك لتعزيز معنويات المقاتلين الموجودين فيها. وبالفعل تمكنت تلك القوات من إفشال محاولة قوات محمود بابان والإيرانيين احتلال كوي، كما نجحت قوات الوالي في بدرة وجصان من إيقاف تقدم الإيرانيين في تلك الجهة. مما جعل الحكومة الإيرانية تعيد النظر فيما كانت تخطط له من وراء وقوفها إلى جانب محمود بابان. وهذا الرأي ينطبق أيضاً على ما كان يفكر فيه داود باشا، فهو الآخر لا يريد في الوقت الحالي مواجهة الإيرانيين عسكرياً. وعليه بدأت مراسلات بين الجانبين لعقد الصلح بينهما عام ١٨١٨ اتفقوا بموجبه على احتفاظ محمود باشا بحكم الإمارة البابانية فضلاً عن كوي وحرير بشرط أن يكون خاضعاً للسلطة المركزية في باشوية بغداد، وكذلك منح داود باشا الأمان لكل من لجأ إلى إيران من البابانيين، مقابل انسحاب الجيوش الإيرانية من الأراضي العراقية.( **الكركوكلي ، ١٩٧٠، ص ٢٨٦؛ حبيب، ١٩٨١ ، ص٩٤)**

**ازدياد حدة الصراع بين أمراء بابان**

على الرغم من موافقة داود باشا على تنصيب عبد الله حاكماً على الإمارة البابانية بدلاً من محمود، إلا إن هذا لم يكن برغبة الوالي، إذ أجبرته اتفاقية الصلح المعقودة عام ١٨٢١ مع الجانب الإيراني على تنفيذ ذلك. غير إن ذلك لم يمنعه من تقديم المساعدة والتأييد لأي طرف يمكن من خلاله التخلص من الأمير عبد الله باشا الموالي لإيران، لأن استمراره في حكم مدينة السليمانية يعني السماح للإيرانيين بالتوغل إلى داخل الأراضي العراقية. لهذا اتخذ داود باشا موقفاً إيجابياً من محاولة الأمير محمود استرجاع حكمه، الهدف الذي تحقق للأخير عام ١٨٢٢، إذ تمكن من طرد عمه عبد الله الذي قرر الهرب إلى إيران.( **مكدول ، ٢٠٠٤، ص٨٠-٨١ ؛ بابان ، ٢٠٠٨، ص ١٢٩ )**

لم يستمر محمود باشا في إدارة الإمارة البابانية طويلاً ففي نفس العام انتشر وباء الكوليرا في مدينة السليمانية، فاضطر غالبية سكانها للمغادرة إلى الجبال، بينما ذهب محمود باشا مع عائلته إلى مدينة كركوك هرباً من المرض، عندها أصبحت الإمكانات الدفاعية لمدينة السليمانية ضعيفة، فانتهز عبد الله باشا الفرصة للعودة من جديد بعد أن تعهد الجانب الإيراني بمساعدته عسكرياً .( **زكي ،١٩٥١، ص١٤٨)**

وعلى الرغم من وصول أخبار تقدم قوات عبد الله باشا باتجاه مدينة السليمانية، إلا إن داود باشا والي بغداد لم يتخذ إجراءات لصد تلك القوات، بل بالعكس وافق على مقترح الشاه فتح علي بإعادة عبد الله لحكم الإمارة البابانية. **(بابان، ١٩٩٣ ، ص ٥٣)**

إن رضوخ داود باشا لمطالب الجانب الإيراني، جعلت إمكانية عودة محمود باشا لمنصبه صعبة، فوجه أنظاره إلى اسطنبول على أمل مساعدته. وعند وصوله ديار بكر نصحه واليها علي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

باشا بالعودة إلى كردستان، لانشغال الدولة العثمانية بأحداث اليونان. عندها لم يبق أمامه خيار آخر إلا إيران التي لم تتأخر عن تقديم كل أنواع الدعم لأي أمير يطمح بحكم الإمارة البابانية، فلم يكن لها أية صداقات دائمة أو ولاءٍ مستمر لأمراء آل بابان، لأن هدفها استغلال البابانيين للتدخل في شؤون العراق السياسة التي لم ينتبه لها أمراء بابان، لأن شغلهم الشاغل هو كرسي الحكم ليس إلا، فكان هذا سبباً رئيساً أسهم في إضعاف قوة الإمارة البابانية ، أرسل الأمير محمود عام ١٨٢٣ شقيقه عثمان إلى تبريز لطلب المساعدة من عباس مرزا ولي العهد الإيراني، الذي زوده بقوات أسهمت في إعادته إلى الإمارة بعد إقصاء عبد الله باشا منه، فأدى ذلك إلى غضب الوالي داود باشا، كونه هو الذي أمر بتعيين عبد الله بابان، وإن تصرف الأمير محمود الأخير يعد خروجاً على سلطة الوالي، وعليه قرر داود باشا وضع حدٍ لتصرفات أمراء بابان، من خلال اعتماده على قوة كردية جديدة يمكنها تقويض وإضعاف الإمارة البابانية ( بابان، ٢٠٠٨ ، ص ١٢٩)

ولقلة إمكانات محمود العسكرية مقارنة بالجيش الزاحف، قرر الانسحاب من السليمانية التي دخلتها قوات محمد باشا والتوجه إلى قزلجة بانتظار المساعدة الإيرانية، التي ما أن علم بها محمد باشا بقدومها، حتى قرر مغادرة السليمانية والذهاب إلى كركوك. وبذلك استعاد محمود باشا سلطته من جديد،على الرغم من استرجاع محمود باشا حكمه في مدينة السليمانية، إلا أنه خشي من مهاجمة المدينة ثانية من قبل محمد باشا وأمير سوران محمد باشا ميركور، اللذين إتخذا من منطقة حرير مركزاً لهما، لذا قرر التخلص منهما واسترجاع سيطرته ثانية على حرير، من دون أن يأخذ بنظر الاعتبار إن غالبية سكان حرير موالون لمحمد باشا ومحمد باشا ميركور، فغزا المنطقة في عام ١٨٢٧. وبعد معارك بين الطرفين انكسر جيش محمود وقرر الرجوع إلى السليمانية. ( زكي ،١٩٥١، ص ١٥٢؛ بابان ، ١٩٩٣، ص٥٣)

شجعت معارك عام ١٨٢٧ والنتائج التي ترتبت عليها، محمد باشا ميركور على توسيع مساحة نفوذه السياسي التي امتدت حتى وصلت منطقة سورداش. عندها قرر محمود بابان وضع حدٍ لتجاوزات أمير سوران، التي لو استمرت فإنها ستؤدي إلى تهديد كيانه السياسي في السليمانية، فخرج على رأس قوة للقضاء عليه، عندها استغل شقيقه الأصغر سليمان بك الفرصة، وسيطر على مركز حكم أخيه، دون أن يواجه أية مقاومة من قبل سكان السليمانية أو القوة المتبقية فيها، لأن حروب محمود بابان المستمرة قد أنهكتهم وأخذوا يتطلعون إلى أية شخصية بابانية يمكن أن تنقذهم مما هم فيه. في هذه الحال أصبح موقف محمود بابان العسكري صعباً، فقرر التوجه إلى قزلجة، على أمل الحصول على مساعدة عسكرية من الحكومة الإيرانية التي لم تتردد في تنفيذ الطلب، لأن مهمة محمود بابان هي القضاء على أمير سوران الذي كان على خلاف مع الإيرانيين، وعند سماع سليمان بك بتلك الأخبار قرر الانسحاب من السليمانية لعدم إمكانية

مواجهة تلك القوات، وبدأ بتحريض قواد محمود بابان على العصيان والثورة عليه، الخطة التي حققت نتائج إيجابية، أجبرت محمود على ترك السليمانية والتوجه ثانية إلى إيران طالباً منها الدفاع عنه، فأرسل الشاه فتح علي معه جيشاً توجه به إلى السليمانية، انسحب على أثرها أخوه سليمان إلى زهاب مستنجداً بداود باشا والي بغداد، الذي أمده بجيشٍ ومنحه لقب أمير الأمراء، تشجيعاً له في التصدي للقوات المهاجمة . (**بابان ، ١٩٩٣، ص٥٣** )

أثبت سليمان باشا جدارة في المعركة التي دارت بين قواته وقوات أخيه محمود المسندة من إيران في منطقة قره كول، إذ اندحر فيها محمود باشا، لكن شاه إيران أسعفه مرة أخرى، واشتبك الجيشان مرة ثانية في منطقة قره داغ، فلقى جيش محمود المصير نفسه. ومع ذلك استعان محمود للمرة الثالثة بإيران، التي زودته بمساعدة عباس مرزا ولي العهد الإيراني بجيش أتجه به إلى السليمانية عام ١٨٣٠، لكن سليمان باشا انسحب هذه المرة إلى زنك اباد، فدخلت قوات محمود باشا السليمانية دون أية مقاومة.(**بابان ، ١٩٩٣، ص٥٤ ؛ زكي،١٩٥١، ص ١٥٢**)

تجددت المعارك ثانية بين الأخوين، فقد استطاع سليمان باشا الحصول على مساعدة عسكرية من والي بغداد ، فدارت معركة بينهما في منطقة نالباريز خسر فيها سليمان. دون أن تثنيه عن الإصرار في العودة إلى حكم السليمانية ثانية. ففي عام ١٨٣١، ساند والي بغداد مرة أخرى سليمان باشا ضد أخيه محمود، لكن في هذه المرة انتصر سليمان، وهرب محمود باشا إلى إيران للحصول على المساعدة، لكن محاولته فشلت، إذ رفضت الأخيرة الوقوف إلى جانبه. (**بابان ، ٢٠٠٨، ص ١٢٩**)

سئمت الحكومة العثمانية من تصرفات مماليك العراق، لما سببوه لها من مشاكل سواء كان ذلك مع إيران أم مع المقيمين البريطانيين في بغداد. لذا وجد السلطان محمود الثاني، إن استمرار التغاضي عما يجري، قد يؤدي إلى خلق (محمد علي) آخر في العراق، إذ كان داود في بغداد يتبع خطوات محمد علي باشا في مصر، ورأى إن الحل الأمثل هو القضاء على المماليك وربط ايالة بغداد بالعاصمة اسطنبول. (**الزهيري ، ٢٠٠٥ ، ص ٢٢** ) واختير لهذه المهمة صادق أفندي، إلا إن قيام داود باشا بقتله أدى إلى ضرورة عزله بالقوة. وهذا ما حققه علي رضا باشا اللاظ والي حلب. (**ولستيد ، ١٩٨٤ ، ص٧٧** )

استغل محمد باشا ميركور عام ١٨٣٢ الأوضاع التي أعقبت انتهاء حكم المماليك وانشغال الأمراء البابانيين في صراعاتهم، فبدأ بالهجوم على الإمارة. وتشير المصادر إلى محاولة ميركور الاستيلاء على بغداد مما دفع الوالي علي رضا باشا إلى التعاون مع القوات الإيرانية وسليمان باشا أمير بابان للقيام بعمل مشترك ضده، إذ يعدون ميركور عدواً مشتركاً لهم بسبب طموحاته التوسعية. التقى الجيشان في قمجوغة ودارت بينهما معركة كانت خسائر القوات

المشتركة تفوق خسائر جيش محمد باشا ميركور الذي انسحب إلى كوي، بعدها تم التوصل إلى اتفاق بين الأطراف المتحاربة. (بيك ، ٢٠٠١ ، ص ١٣٤-١٣٥)

## سقوط الإمارة البابانية

انعكست كثرة التدخلات الايرانية والعثمانية، والتنافس بين الامراء البابانيين على واقع الإمارة نفسها مما هيأ لضعفها سريعاً اذ تدهورت اوضاعها السياسية والاقتصادية مما ادى الى سقوطها، ففي عام ١٨٣٨ تولى حكم الإمارة احمد باشا خلفاً لوالده سليمان باشا، وبذل الامير احمد جهوداً مضنية للنهوض بقدرة الإمارة العسكرية، ( زكي،١٩٥١، ص ١٥٨). وكان هدفه من هذا هو مواجهة الأخطار المستقبلية التي تواجهها امارته.وعلى الرغم من جهوده العسكرية، التي بذلها لانعاش الإمارة، الا ان عمه محمود باشا تمكن عام ١٨٤١ بفضل المساعدة الايرانية من السيطرة على مقاليد الحكم في السليمانية. لكن بقاء الاخير لم يستمر طويلاً، فبعد جلاء القوات الايرانية عن المدينة عام ١٨٤٢ تمكن احمد باشا من العودة ثانية لحكم الإمارة. ( زكي،١٩٥١، ص ١٥٨- ١٥٩؛ العزاوي ،١٩٥٥ ، ج٧، ص ٤٨)

أبدى الجانبين العثماني والايراني رغبة في حل مشاكلهما الحدودية. وفي ضوء ذلك تشكلت في عام ١٨٤٣ لجنة رباعية ضمت اضافة الى الجانبين العثماني والايراني ممثلين عن روسيا وبريطانيا. ( السعدون ، ١٩٨١، ص١١٦)

بدأت اللجنة الرباعية التي اتخذت من مدينة ارضروم مقراً لها اعمالها في الخامس عشر من آيار١٨٤٣، من اجل التوصل الى اتفاق لترسيم الحدود بين الدولتين. الا ان قيام احمد باشا بعمليات عسكرية قرب الحدود الايرانية قد احرج مركز الحكومة العثمانية، في وقتٍ تسعى فيه الاخيرة الى توطيد الامن على طول الحدود مع ايران، حتى تتمكن اللجنة العمل بما يحقق السلام ومنع تكرار حدوث المنازعات.( نوار ، ١٩٦٨، ص١١٥-١١٦)

عليه قرر نجيب باشا (١٨٤٢-١٨٤٧) والي بغداد وبالاتفاق مع الحكومة العثمانية ضرورة عزل احمد بابان لتهدئة الاوضاع على الحدود مع ايران. وبما ان الاخير لا يمتثل الى قرار الاقصاء عن الإمارة سلمياً، أرسل والي بغداد عام ١٨٤٥، حملة عسكرية الى المنطقة لمواجهة أي احتمالات تصدر من قبل احمد باشا.( بيك ، ٢٠٠١، ص٣٤١-٣٤٢) وبالفعل حدث ما توقعه نجيب باشا، اذ انسحب امير بابان من السليمانية الى كوي لملاقاة الجيش العثماني ، وان احمد باشا كان واثقاً من النصر وحاول صرف رواتب الجند قبل بدء المعركة لكن خزنداره احمد افندي اثناه عن ذلك حتى نهاية المعركة ومعرفة النتائج التي تترتب عليها. لكن انتشار الخبر بين صفوف القوات البابانية قد اغضبهم فقاموا بقتل الخزندار، ومن ثم تفرقوا، عندها اصبح موقف احمد باشا العسكري صعباً، فقرر الانسحاب من المواجهة (زكي ، ١٩٥١،ص١٦١-١٦٢؛ بابان ، ١٩٩٣، ص ٦٣)



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

كانت الحملة التي قادها نجيب باشا هي البداية لسقوط الإمارة البابانية، فبعد رحيل احمد بابان، عين والي بغداد عبد الله بك شقيق احمد قائمقاماً لمدينة السليمانية، التي احتفظت بحامية عسكرية من الجنود العثمانيين. مما يعني الغاء الامتيازات التي كانت تتمتع بها الإمارة البابانية في السابق. وبهذا الأجراء أصبح عبد الله بك مجرد موظفٍ عثماني فاقداً بذلك كل حقوقه الوراثية المكتسبة بصفته اميراً يحكم امارته.

في العام ١٨٤٧، تم التوصل الى عقد معاهدة ارضروم الثانية ( **عبد الكريم ، ١٩٨١، ص٢١٨-٢١٩**) بين الدولة العثمانية وايران، وبموجب هذه المعاهدة تنازلت ايران عن أي ادعاء لها في السليمانية، مقابل تنازل الدولة العثمانية عن المحمرة وجزيرة خضر والمرسى والاراضي الواقعة على الضفة الشرقية من شط العرب. وكان لعقد ذلك المعاهدة وتسوية المشاكل الحدودية بين البلدين، اثراً بارزاً في سقوط الإمارة البابانية، ففي عام ١٨٥١ استدعى نامق باشا (١٨٥١-١٨٥٢) والي بغداد، عبد الله بك الى بغداد ومن هناك ارسله مكبلاً بالأغلال الى اسطنبول، وفي العام نفسه تم تعيين اسماعيل باشا حاكماً للسليمانية، منهياً بذلك الحكم البابائي والى الابد. هناك مجموعة من العوامل ساهمت في اضعاف الإمارة البابانية ومن ثم سقوطها من بينها التنافس الشديد بين الأمراء البابانيين من اجل الوصول الى كرسي الحكم، فانعكس ذلك سلباً على اوضاع الإمارة.. (ريج ، ٢٠٠٨، ص١١٣ )

**مصادر البحث**

**الرسائل والاطاريح الجامعية:**


- الهام محمود كاظم الجادر(١٩٩٠) ، البصرة دراسة في اوضاعها الادارية والاقتصادية والاجتماعية والسياسية ١٨٠٣- ١٨٦٩، رسالة ماجستير( غير منشورة ) ، كلية التربية الاولى -ابن رشد، جامعة بغداد .
- باسم حطاب الطعمة (١٩٨٥) ، تغلغل النفوذ البريطاني في العراق ١٧٩٨-١٨١٣، رسالة ماجستير( غير منشورة ) ، كلية الآداب، جامعة بغداد.
- رنا عبد الجبار حسين الزهيري( ٢٠٠٥) ، ايالة بغداد في عهد الوالي علي رضا اللاظ (١٨٣١-١٨٤٢)، رسالة ماجستير( غير منشورة) ، كلية الآداب، جامعة بغداد.
- عمار محمد كاظم فرج البزاز (٢٠٠٠) ، العراق في عهد حسن باشا واحمد باشا ١٧٠٤- ١٧٤٧ دراسة تاريخية ، رسالة ماجستير( غير منشورة )، كلية الآداب، جامعة البصرة .
- ناهدة حسين علي (١٩٩٦) ، العراق من ١٨٤٢-١٨٥٧، رسالة ماجستير(غير منشورة) ، كلية التربية الاولى – ابن رشد، جامعة بغداد .


**الكتب**



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بو ڤەکولینین کوردی

- ابو شوقي(١٩٧٨) ، لمحات من تاريخ الانتفاضات والثورات الكردية، دار الكاتب، بيروت .
- أحمد جودت(١٣٠٩هـ) ، تاريخ جودت، جلد أول، استانبول.
- ا ياد جمال با بان (٢٠٠٨)،ا سرة با بان الكرد ية شجرتها التاريخ ية وتسلسل اجيا لها ، دار الزمان للطباعة والنشر، بغداد .
- ايلي بانستر سون (١٩٧٠) ، رحلة متنكر إلى بلاد ما بين النهرين وكردستان، ترجمة: فؤاد جميل، ج١، ط١، بغداد.
- تۆفیق قەفتان(٢٠١٩) ،مێژووی حوکمدارانی بابان لە قەڵاچوالان تا دروستکردنی شاری سولەیمانی ، سلێمانی، چاپخانەی سارا،چاپی دووەم،
- جمال بابان (١٩٧٦) ، اصول اسماء المدن والمواقع العراقية ، المجمع العلمي الكردي بغداد .
- جمال بابان (١٩٩٣) ، بابان في التاريخ ومشاهير البابانيين ، ط١ ، مطبعة الحوادث ، بغداد .
- جيمس ريموند ولستيد ( ١٩٨٤) ، رحلتي إلى العراق في عهد الوالي داود باشا، ترجمة سليم طه التكريتي، بغداد.
- حسين ناظم بيك (٢٠٠١) ، تاريخ الامارة البابانية ، ترجمة : شكورمصطفى و محمد الملا وعبد الكريم المدرس ، ط١ ، مؤسسة موكرياني للطباعة والنشر ، اربيل .
- ديفيد مكدول (٢٠٠٤) ، تاريخ الاكراد الحديث ، ترجمة راج آل محمد ، دار الفارابي ، بيروت .
- رسول حاوي الكركوكلي (١٩٧٠) ، دو حة ا لوزراء في تاريخ و قائع بـ غداد ا لزوراء ، نقله عن التركية موسى كاظم نورس ،دار الكتاب العربي ، بيروت ، دار النهضة ، بغداد .
- س. جي ادموندز(١٩٧١) ، كرد وترك وعرب، ترجمة: جريس فتح الله، بغداد.
- ستيفن هيمـ سلي لونكريك (١٩٦٢) ، اربعة قرون من تاريخ العراق الحديث ،ترجمة جعفر الخياط ،ط ٣ ، مطبعة البرهان ، بغداد
- سعدي عثمان حسين (٢٠٠٠) ، إمارة بابان في النصف الأول من القرن الثامن عشر، ط١، مؤسسة موكرياني، اربيل ،٢٠٠٠
- سليمان فائق ( ١٩٦٢) ، تاريخ بغداد ، مطبعة المعارف ، بغداد
- شرف خان البدليسي (٢٠٠٧) شرفنامة ترجمة محمد جميل الملا احمد الروزبياني ، ط٣ ، دار المدى للثقافة والنشر ، دمشق
- عباس العزاوي ( ١٩٥٨) ، تاريخ النقود العراقية لما بعد العهود العباسية من سنة ٦٥٦ هـ - ١٢٥٨ مالى سنة ١٣٣٥ هـ-١٩١٧م يحتوي على مطالب تاريخية وتحقيقات سياسية ومالية وادارية واجتماعية ، طبع شركة التجارة والطباعة ،بغداد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

- عباس العزاوي(٢٠٠٠) ، شهرزور-السليمانية اللواء والمدينة : يبحث في اللواء وتاريخه ومدنه وعشائره وسائر احوا له الثقافية وغيرها ، راجعه وعلق عليه وقدم له محمد علي القرة داغي ، ط١، بغداد .
- عبد الرقيب يوسف(٢٠٠٥) ، حدود كردستان الجنوبية تاريخيا وجغرافيا خلال خمسة الاف عام وماترتب على الحاقها بالعراق، ط١، السليمانية .
- عبد العزيز سليمان نوار (١٩٦٧) ، داود باشا والي بغداد ، دار الكاتب العربي ، القاهرة.
- عبد العزيز سليمان نوار (١٩٦٨) ، تاريخ العراق الحديث من نهاية حكم داود باشا الى نهاية حكم مدحت باشا ، دار الكاتب العربي ، القاهرة .
- علاء موسى كاظم نورس(١٩٧٥) ، حكم المماليك في العراق ١٧٥٠-١٨٣١، دار الحرية للطباعة ، بغداد
- علي اصغر شميم (١٣٧٩هـ) ، ايران دردورة سلطنت قاجار قرن سيزدهم ونمية اول قرن جهاردهم، تهران .
- علي الوردي (٢٠٠٥) ، لمحات اجتماعية من تاريخ العراق الحديث ، ط٢، دار الراشد ، بيروت
- علي ظريف الاعظمي (١٩٢٦) ، تاريخ بغداد القديم وا لحديث او بغداد في(٤٠٠٠) سنة، مطبعة الفرات ، بغداد
- عماد عبد السلام رؤوف (١٩٩٤) ، الاسر الحاكمة ورجال الادارة والقضاء في العراق في القرون المتأخرة ٦٥٦-١٣٣٧هـ/١٢٥٨-١٩١٨م ، دار الحكمة ، لندن .
- كلود يوس جيم ريچ (٢٠٠٨). رحلة ريج؛ المقيم البريطاني في العراق عام ١٨٢٠ إلى بغداد - كردستان- إيران. ترجمة بهاء الدين نوري، الدار العربية للموسوعات، بيروت .
- محمد أمين زكي (١٩٤٥) ، مشاهير الكرد وكردستان، ترجمة: سانحة محمد امين زكي، ج١، بغداد.
- محمد امين زكي (١٩٥١) ، تاريخ السليمانية ، ترجمة الملا جميل الملا احمد الروزبياني ، شركة النشر والطباعة العراقية المحدودة ، بغداد .
- محمد تقي لسان الملك سهبر (١٣٨٥هـ) ، ناسخ التواريخ سلاطين قاجارية، جلداول، تهران.
- مهدي جواد حبيب (١٩٨١) ، الصراع العثماني الفارسي وأثره في العراق حتى أواخر القرن التاسع عشر، في كتاب الحدود الشرقية للوطن العربي، دار الحرية، بغداد .
- نظمي زادة مرتضى افندي(١٩٧١) ، كلشن خلفا، ترجمة: موسى كاظم نورس، النجف الاشرف



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- ياسين بن خير الله العمري (١٩٧٤) ، زبدة الاثار الجلية في الحوادث الارضية ، تحقيق عماد عبد السلام رؤوف ، النجف الاشرف .
- الشيخ يا سين العمري (٢٠١٣)، تاريخ محا سن بغداد " وهو تهذيب غاية المرام " ، تحقيق ميعاد شرف الدين الكيلاني ،دار الكتب العلمية ، بيروت .
- يا سين عبد الكريم (١٩٨١)، اتفاقيات الحدود الشرقية الى نهاية القرن التا سع عشر، في كتاب الحدود الشرقية للوطن العربي، دار الحرية ، بغداد .
- Hassan Arfa,(1966), The kurds, he Kurds: An Historical and Political Study, Oxford University Press, London

**البحوث**

- خالدة السعدون(١٩٨١) ، التطور السياسي لتحديد الحدود العراقية الايرانية، مجلة آفاق عربية، العددان ٩-١٠، بغداد.

## میرنشینی بابان خوێندنەوەیەک لە بارودۆخی ناوخۆ و پەیوەندییەکانی دەرەوە تاکو ساڵی١٨٥١ ز (خوێندنەوەیەکی مێژوویی)

**پۆختە:**

میرنشینی بابان بە یەکێک لە گرنگترین میرنشینە کوردیەکان دادەنرێ کە لە باشووری کوردستان دامەزرا، توانی حوکمی ناوچەیەکی فراوانی کوردستان بکات بۆ چەندین سەدە.

سەرەتایی توێژینەوەکە تیشکمان کردە سەر سەرەتایی سەهەڵدانی بنەماڵەی بابانییەکان تاکوو بنەماڵەی پاشای پێنجەم، دوای ئەوە ئاماژەمان بە گرنگترین پاشاکانی بنەماڵەی بابان کرد لەگەڵ سیاسەت و فراوانخوازییەکانیان لە ناوچەکە. لەوانە (بابە سلێمان و بەکر بەگ و خانە پاشا)، هەر وەها ئاماژە بە رۆڵی سلێمان پاشا ئەبو لەیلە کرد لە میرنشینەکە وە چۆنیەتی لەناوبردنی بزوتنەوەی سەلیم بابان، هەر وەها باسمان لە ململانێی نێوان خێزانی بنەماڵەی فەرمانڕەوای بابان کرد بە تایبەت دوای کوشتنی سەلیم بابان، هەر لەم توێژینەوەیەدا ئاماژەمان بە پەیوەندی نێوان والی بەغدا و بنەماڵەی فەرمانڕەوای بابان کردووە لەسەردەمی محمود پاشا و عبد الرحمان پاشای بابان، لە کۆتایی توێژینەوەکەدا تیشکمان خستە سەر هەڵوێست و پێگەی ئێران لەسەر ململانێی نێوان عوسمانیەکان و میرنشینی بابان، هەر وەها ناکۆکی نێوان والیەکان بەغدا و بابانیەکان کە ئەم ناکۆکییە لە کۆتاییدا بووە هۆی روخان و لەناوچوونی میرنشینی بابان...

**وشە سەرەکیەکان:** *کورد، بابانیەکان، ئێران، عوسمانیەکان، بەغدا*



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

**A Study of Internal Conditions and External Relations of the Emirate of Babani until (1851) AD (Historical Study)**

## Abstract:

The Emirate of Babani is considered one of the important Kurdish emirates that appeared in southern Kurdistan and its rule extended for centuries. Thus, the current study sheds light on several topics, including the early stages of the emergence of the Babani family until the fifth family, and then the study focuses on the most prominent personalities that helped this family extend its influence, including (Baba Suleiman, Bakr Bey, Khana Pash). The study also focuses on the personality of Suleiman Pasha, his position on the emirate, and his success in suppressing Selim Baban. Further, the study discusses the family rivalry within the ruling Babanian family after the murder of Salim Baban. An important point that was clarified in this study is the type of relationship between the governors of Baghdad and the Babani family during the era of Mahmoud Pasha and Abd al-Rahman, and for the necessity of reversing the international position, Iran's position on the Ottoman-Babani conflict was touched upon. Finally, the study reviews, the conflict between the governors of Baghdad and the Babanian emirate, leading to the fall of the emirate and the end of the Babanian dynasty.

**Keywords:** *Kurds, Papans, Iran, Ottomans, Baghdad*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# مساهمات النساء في الشؤون الإدراية والدينية في إمارة أردلان ماه شرف خانم (مستوره) نموذجاً

أ. د. كامران أورحمان مجيد

قسم أصول الدين - كلية العلوم الإسلامية - جامعة السليمانية/ إقليم كردستان العراق

د. محمد مولود متي

مديرية تربية خانقين- بعقوبة/ العراق

**الملخص:**

تجلى دور المرأة في مجالات الحياة المختلفة منذ القرون المفضلة من العصر الإسلامي، فقامت بنشر العلوم كالرواية والتفسير واللغة والأدب وغيرها، كما كانت لها مشاركات في الشؤون المتعلقة بأمور الدولة وإدارة البلاد، وهذه الظاهرة لعل أكثر انتشاراً في الدول والإمارات الكوردية حيث تجد من النساء من قلدن مناصب كبيرة في الدولة بل قد صارت المرأة هي المسؤولة عن الرعية مثل(ست الشام)(ت ٦١٦هـ) أخت صلاح الدين، وزوجته عصمة الدين خاتون(ت٥٨١هـ)، وخانزاد أميرة سوران(ت ١٠٠٦)، وحفظت المرأة مكانتها واستمرت هيمنتها في فترات مختلفة، ومن أولات النساء في الفترات المتأخرة التي لها دور في شؤون الأمارة الأردلانية، هي: ماه شرف خانم المعروفة بـ(مستورة الأردلانية) والتي كانت لها مساهمات ملحوظة سواء كان في إدارة الدولة، وتفقد الرعية مع زوجها خسرو خان أو بيان الأمور الدينية من الأحكام العقدية والفقهية عن طريق كتاباتها ومجالسها، مكانة هذه المرأة العالمة المحنكة في الحياة وإدارة البلاد كانت في مخيلتنا منذ زمن لا بأس به، حيث أن دورها في إمارة أردلان جدير بالبحث والدراسة، ومن ثم النكبة الكبيرة التي تعرضت لها بسبب وفاة زوجها في ربيع عمرها، وما تلته الأحداث بعد وفاة خسرو خان بحاجة إلى وقفة وتأمل، كما ينبغي الحديث عن آثارها ولا سيما كتبها المتعلقة بالاجتماعيات والفقهية وغيرهما، ومن ثم يجب التطرق إلى تنقلاتها من مدينة سنة شرقي كوردستان إلى مدينة السليمانية، وأعمالها في الموطن الثاني.

**الكلمات الدالة:** *إمارة الأردلان، النساء، الأمور الإدارية، الأمور الدينية، ماه شرف خانم*



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**مقدمة:**

الحمدلله الذي خلق الإنسان وأكرمه، و حرّم الظلم على نفسه، وجعله بين بني آدم محرّماً، والصلاة والسلام على خاتم الأنبياء والمرسلين، سيدنا محمد، وعلى آله وصحبه أجمعين.

أورد القرآن الكريم قصة في غاية الطرافة تدور حول شخصية أعطاها الله تعالى عقلاً وحلماً وعلماً فكانت تخطو بتأمل وتدبر في كيفية إدارة مملكته والغريب أن هذه الشخصية لم تكن نبياً ولا رسولاً ولا رجلاً ولا من زمرة الدعاة إلى الله تعالى، وهي إمرأة معروفة بملكة سبأ – بلقيس- لو تأملنا هذه القصة لما فيها من طرائف ولطائف وما دلالالتها وآثارها على الحياة التطبيقية، كيف استطاعت امرأة الاحتفاظ بشعبها وإرشادها الى الطريقة المثلى في التعامل مع رسالة نبي الله تعالى سليمان(عليه السلام) بعكس ما ذهب إليه رجال قومها ووزرائها وأمرائها من التفكير والتلميح بخوض معركة دون معرفة مآلها ونتائجها، ودون الاطلاع على الجيش المقابل وقدراته الحربية، فهي مع رفض اقتراحهم ببيان العاقبة لا بمجرد المزاج، فاختارت طريقة ذكية ما فكرت بمثلها جميع الرجال الذين بعث الله إليهم الأنبياء مباشرة لا عن طريق الرسل والرسالة، لكنهم أبوا فسوّدوا حياة شعوبهم كنمرود وفرعون وأمثالهما، فاختارت اختبار سليمان(عليه السلام) بالمال، ومن يتأمل في مثل هذه القصة وما يستنبط منها هان عليه إعطاء دور يليق بالمرأة الناجحة المؤهلة لتحمل التكاليف من شؤون الحياة بل ومشاركتها في الإدارة، وما ورد من السنة النبوية الشريفة ما تعارض في الظاهر مع قصة هذه الملكة- ملكة سبأ- تأوليه وتفسيره لا يصعب على من تحلى بالصبر والتدبر، فلفظ العام يطرأ عليه التخصيص في أكثر المواطن، وهو معلوم عند من درس ودارس علم الأصول، وما ورد في السنة عام والقصة خاصة، فيقضي الخاص على العام كما هو معلوم في موضعه.

**بواعث اختيار الموضوع:**

لما يفكر الباحث في دراسة كموضوع شجعته للأمر جملة من البواعث والأسباب ومن البواعث لدراسة هذا الموضوع :

١) إبانة دور المرأة في الإمارات الكوردية من النواحي الفكرية والاجتماعية والإدارية والسياسية، وهذا يعني يتوسع دورها بتغطية جميع مجالات الحياة، علماً أن هذا لا يتعارض مع الشريعة مع مراعاة الضوابط.

٢) رفع اللثام عن هذه الشخصية الفذة بتقديم سيرة موجزة دقيقة حولها وما رأت من السهول والرخاء، مع ما تعرّض لها في حياتها من الصعاب والمصائب في حلها وترحالها.

٣) كشف القناع عن مكانتها في تأريخ إمارة أردلان وجهودها الاجتماعية والإدارية والدينية وغيرها.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٤) الوقوف مع كتباتها العلمية والدينية وبيان ما احتوت رسالتها في العقائد والأحكام من الأبواب الفقهية .

**حدود الدراسة:** هذه الدراسة تختص بالبحث عن زاوية لجهود شخصية في حقبة محددة في التأريخ ألا وهو مستوره خانم الأردلاني، والبحث عنها يتطلب منا التدبر في منطقة جغرافية خاصة، وهي مملكة أردلان، ولمثل هذه الدراسات ينبغي الاعتماد على الكتب التأريخية بالامتياز ثم التأمل فيما استنبطه الباحثون والكتّاب بالنسبة للأحداث أو الشخصيات التأريخية ولا يمكن الاستعانة بالبحوث الميدانية لتباعد الزمن .

**فرضيات الدراسة:**

هذه الدراسة تدور حول شخصية لها مكانة اجتماعية وعلمية وأدبية- ماه شرف خانم-، يتم التركيز على الجانب الإداري والاجتماعي وجهودها في مجال العلوم الشرعية، تقف الدراسة على الحياة الشخصية مع التحقيق في زوايا المضطربة فيها ومن ثم تتطرق إلى المشكلات التي تعرض لها ومن ثم تغلغل في رسالتها المعنونة بالشرعيات فنتأمل في مباحثها ومطالبها مع إظهار الجوانب الإيجابية وما فيها غير ذلك.

**مشكلة البحث:** من مشكلة هذا البحث عدة أسئلة بحاجة إلى بيان وتوضيح من ذلك:
من هي مستورة أردلان وما هي المشكلات تعرضت لها وما موقفها تجاهها؟ .
كيف ساهمت مستورة في المجال الإداري وما دورها من هذه الناحية ومنجزاتها ؟.
كيف نعرف جهود مستورة من الناحية الاجتماعية والعلوم الدينية وما آثارها في هذا المجال ؟، فهذه مجموعة من الأسئلة جاءت الدراسة للإجابة عنها.

**أهداف البحث:**

هذه الدراسة تهدف إلى التعرف لحياة ماه شرف خانم الأردلانية، وتبحث عن جهودها في الشؤون الإدارية، وبيان آثارها الاجتماعية، وجهودها من الجانب الديني فنأمل من الدراسة أن تؤدي إلى الكشف عن طبيعة جهودها ومميزاتها في مجال الاجتماعي والعلوم الدينية، وإخراجها في ثوب خاص جديد.

**منهج البحث:**

**اعتمد الباحث في هذه الدراسة على المنهج التأريخي**، وهو مناسب لمثل هذه الدراسة، فيختص المنهج بدراسة الأحداث ثم يقوم الباحث بتفسيرها وتحليلها فضلاً عن الاستعانة بالمنهج الاستقرائي، فيقوم من خلاله على تصفح المسائل المتعلقة بموضوع البحث وعنوانه.


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**الدراسات السابقة:**

ماه شرف خانم من النساء اللواتي ذاعت صيتهن، واشتهرت بين الكتاب والباحثين كتبوا حول هذه الشخصية بحوثاً ودرّسوا جوانب عدة فيما يتعلق بها إلا أن دراسة مستقلة جامعاً بين جهودها الدينية والاجتماعية، لم أجدها رغم متابعتي، وادعاء وجودها قد يكون من المستحيل في عصر كثر فيه الوسائل وكل يوم تنشر دراسات، لكن حسب بحثي ومتابعتي أنني لم أجد مثل هذه الدراسة.

**خطة البحث: يتكون البحث من مباحث ثلاثة:**

المبحث الأول: لمحة عن إمارة أردلان ومسيرة حياة(مستورة الأردلانية)

المبحث الثاني: مساهمات مستورة خانم في إدارة الدولة

المبحث الثالث: جهودها الدينية والاجتماعية

الخاتمة .

## المبحث الأول:

## لمحة عن إمارة الأردلان ومسيرة(مستوره الأردلانية)

يتكون المبحث من مطلبين:

الأول: لمحة عن إمارة الأردلان، والثاني: مسيرة(مستوره الأردلانية).

### المطلب الأول: لمحة عن إمارة أردلان

نشأت إمارة أردلان نتيجة لمجوعة من الاضطرابات والتحركات من مناطق مختلفة ضد الدولة العباسية آنذاك، تعود بداية هذه التحركات إلى القرن الثالث الهجري، وقد استولى أهل الشهرزور على مناطقهم من هذا القرن بشكل غير منظم.(ابن الأثير، الكامل،١٩٩٧م، ١٥٦/٦).(ابن خلدون،١٩٨١م، التأريخ، ١٠٩٣/٤).( الكورد ستاني، ٢٠٠٢م، الحديقة الناصرية، ت: جان دوست، ص٩١-٩٢).(حسن، ٢٠١١م، الأمارات الكوردية في العهد البويهي، ص٣١). وبعد ازدياد الضعف والهوان في الدولة العباسية يوماً بعد يوم، قام أهل شهرزور بإعادة النظر في إدارة المنطقة، حسبما ذكره المهلهل.(الرسالة الثانية، ت: ١٩٥٥م، ص١٠). وبقي الحال هكذا إلى أن جاءت الإمارة بعد مرور الزمن، وعلى هذا ذهب بعض إلى أن الأردلانية تعود إلى بداية أيام العباسية.(زكي بك، ١٩٨٤م تأريخ الدول والأمارات الكردية، ص٢٧٦). لكن الذي يمكن الاعتماد عليه هو أن الإمارة نشأة في القرن السادس الهجري، الموافق للقرن الحادي عشر الميلادي، وبالتحديد بدأت في الظهور من عام(٥٦٤هـ=١١٦٨م أو١١٦٩م) لوجود الاختلاف بين العام الهجري والميلادي، واستمرت الإمارة إلى حوالي(١٢٨٤هـ=١٨٦٧م) حسب ما نقل إلينا، بمعنى أنها استمرت قرابة سبعة قرون.(الكوردستاني، ٢٠٠٢م، الحديقة الناصرية، ص٩١-٩٢).(زكي بك، تأريخ الدول، ص٢٧٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

وأما مؤسس هذه الإمارة، فهو رجل كوردي شهير بـ: با با أردلان، واختلف في ا سمه، ذكر علي أ كبر كورد ستاني أ قوالاً منها: الا سم الأ صلي لأردلان هو(خسرو).(الكورد ستاني، الحديقة الناصرية، ٢٠٠٢م، ص٩١)، ويرى بعض الباحثين أن أردلان كان ا سمه: فيروز بن منصور دوشتيك، وبعدما كوّن قوة وجيشاً اختار لنفسه ا سم قوباد السا ساني، وبعدما جاء هولاكو انتقى له لقب با با للرجل ومعناه الأب الأ كبر، وأ ضاف ا بن هولا كو لفظة أردلان إلى اللقب فصار با با أردلان(موكرياني، الأعمال الكاملة، ٢٠٠٧م، ٣٧٩/١). (زكي بك، تأريخ ا لدول، ص٢٧٦). ( تأريخ كورد وكورد ستان، محمد مردوخ كورد ستاني، ٨٩/٢)، وهناك من يقول: إن أردلان نفسه كان ا سمه خ سرو، و كان طحاناً..(الكرد ستان، الحديقة النا صرية، ص٩١-٩٢) ولا يخفى أن ترجمة لفظة الطحان للكوردية هي أردلان نفسه. وهذا هو أ برز ما قيل حول ا سم با با أردلان وكما روا يات مختلفة غير متواترة وليس هناك سند قوي، وهناك روا يات أ خرى ضعيفة لا تليق با لذكر، وكل ما في الأمر أنه هو المؤسس للإمارة في عام(١١٦٩م).(الكوردستاني، ص٩١)، و(زكي بك، تأريخ الدول، ص٢٧٦).

وأما فيما يتعلق بأصل الرجل – أردلان- ونسبه فيذكرون أشياء مها:

قال شرفخان حول نسب هذه الشخصية:" إن مؤسس إمارة أردلان، هو من أ سرة(أحمد بن مروان) مؤسس الحكومة المروانية في شمال كوردستان، وأنه قدِم من مدينة آمد، واستقر بين عشيرة گوران. ( شرفنامه، ت: عوني، ٢٠٠٦م، ١١٧/١)، وهذا ا لذي أورده شرفخان، وا لذي عا صر جزءاً من هذه الإ مارة، أ خذ به لونكريك فيما يتعلق بأ صل با با أردلان(لونكريك: أربعة قرون من تاريخ العراق ا لحديث. ترجمة: الخياط، ١٩٦٨، ص١٨)، وورد في إحدى نسخ شرفنامه:" و سمى نفسه-أي: بابا أردلان- قباد بن فيروز الساساني"(ترجمة: علي عوني،١١٧/١).

يرى المستشرق(ريچ) الإنكليزي أن الأسرة الأردلانية گورانية الأصل، ومن قبيلة ماموي (رحلة ريچ، ترجمة: نوري ، ١٤٢٩ هـ= ٢٠٠٨ م، ص٢٠٩)، وتبعه في ذلك أ مين زكي.( تأريخ ا لدول، ص٢٧٦-٢٧٧).

وذهب بعض الباحثين إلى بابا أردلان كان من أولاد أردشير بابكان، وقال آ خرون أ نه من أحفاد خسرو الطحان ا لذي قتل يزد جرد ملك العجم. بينما مال بعض إلى القول بأنهم من أحفاد صلاح الدين الأيوبي، لكنني لم أ جد من صرح بهذه النسبة إلا جملة من كلام أ مين زكي بك في هامش كتابه، فقال في هزيمة أ حمد خان أ حد أ مراء الأردلانية مع الترك:" وقد أ ثر هذه الهزيمة تأثيراً بالغاً في هذا الأ مير الشجاع الغيور حفيد السلطان صلاح ا لدين الا يوبي الأ سد الهصور فمات سنة(١٠٤٦هـ)،( تأريخ ا لدول، هامش ص٢٨٨)، وقيل غير ذلك في أ صل الأردلانيين،(مستوره، تأريخ أردلان، ترجمة: هژار، ٢٠٠٢م، ص٣٦-٣٧).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ومما لا خلاف فيه هو أن عاصمة الإمارة كانت في بداية الأمر بشهرزور، وإلى اليوم بقي بعض آثارها مثل قلعة الزلم الواقعة بين قريتي زلم وأحمد آوا، وقلعة خورمال(كلعنبر) وكانت الزلم عاصمة المملكة في البداية، الحديقة الناصرية، ص٩٢)، (مستوره، تأريخ أردلان، ترجمة: هژار، ص٣٧)، وقد قال علي أكبر:" قد تولى أردلان مع جماعته الحكم مرات عديدة في الموصل ودياربكر، وهاجر بسبب تقلبات الدهر مع جميع من قومه وأتباعه، وأرسى دعائم حكومته مستقلة في شهرزور سنة(٥٦٤هـ=١١٦٨م) ووضع أساس قلعة(زلم) التي في غاية المنعة والتحصين، وجعلها عاصمة مملكته كما استولى على أطراف شهرزور ومعظم أراضي كوردستان، ودخلت تحت لوائه(بلنكان) أيضاً التي كانت موطن الكوران والكلهور، وقد بنى فيها أردلان قلعة عظيمة شديدة التحصين، والآن فإن آثار تلك القلعة باقية وظاهرة للعيان"(الحديقة الناصرية، ص٩٢).

وقد حكم شهرزور ومناطق كوردستان الأخرى مدة اثنين وأربعين عاماً، وفي أواخر عهده ضمّ إلى ملكه بأمر جنكيزخان مدن كويه وحرير وشهر بازار وروا ندز والعمادية أيضاً، واستقل بملكها تماماً وما أقبل عام(٦٠٦ هـ=١٢٠٩م)"(الكورد ستاني، الحديقة الناصرية،ص٩٢)، وسيكون لي تعليق حول توظيف جنكيزخان في الإمارة الأردلانية في الصفحة العاشرة.

ومن ثم انتقل إمارة أردلان إلى بلنكان وسنندج(سنه) الواقعة في شمال غرب إيران، وإلى هذه اللحظة التي نكتب هذه العبارات بعض آثار الإمارة باقية احتفظ بها أهل المنطقة جيلاً بعد جيل، كما اشتهرت المدينة فيما بعد بلقب العاصمة لكوردستان إيران إلى اليوم، وهي على بعد(١٥٣ كم) من الحدود مع إقليم كوردستان العراق، ومن المدن الكبيرة الكوردية بإيران.(الموقع وكالة تسنيم الدولية، معالم أثرية في مدينة سنندج...، ٢٠١٦/١٢/٢٥م، https://www.tasnimnews.com/ ).

واختلف حال الإمارة ففي بعض الفترات تمتعت بالاستقلال التام، وأحياناً بقيت تابعة لدولة أخرى عثمانية أو صفوية، وكانت من أهم الحكومات الكوردية، وهي تمتعت بالاستقلال التام فترة من الزمن، وضربت باسم حكامها السكة، وألقيت باسم حكامها الخطب، ويظهر أن فترة الاستقلال التام هذه قد عمرت منذ أوائل القرن السابع الهجري أي: من أواخر عهد الحكومة الإيلخانية حتى أوائل عهد الحكومة الصفوية(بداية القرن العاشر الهجري) أي: قرنين كاملين.(تأريخ الدول، ص٢٩١)، كما توسعت رقعتها في بعض الزمن أو انكمشت حدودها حسب الظروف، فهي بين القوة والضعف التوسع والانكماش، ولا سيما مع ظهور الصراع الصفوي والعثماني، إلى أن جاءت القاجارية بقيادة ناصر الدين شاه(١٨٤٨م-١٨٩٦م) الإيراني قضى على نفوذ الكورد الأردلانيين واستولى على مملكتهم نهائياً، وأسدل عليها الستار ودفن هذا التراث التأريخي، وذلك في سنة(١٢٨٤ه) (١٨٦٧م). (تأريخ الدول والأمارات، ص٢٩١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**مميزات وخصائص الإمارة:**

١) سبب تسمية الإمارة بهذا الاسم دون غيره: سبب تسميتها واضح بأنها سميت باسم أول مؤسس لها، وهو: بابا أردلانن، وقد سبق الحديث حوله.

٢) سبب قيام الإمارة ونشأتها، هو وجود الاضطرابات في الدولة العباسية، وعدم سيطرتها على المنطقة. (حسن، الإمارات الكوردية في عهد البويهي، ص٣٠-٣١)، إضافة إلى ما حُكي عن ابن المستوفي من طبيعة أهل الشهرزور وحبهم للحرية مع عدم الخضوع لحاكم من غيرهم، ذكر المهلهل الخزرجي عند زيارته لمنطقة شهرزور في عام(٣٢٥ه) فقال:" ولأهلها بطش وشدّة يمنعون عن أنفسهم ويحمون حوزتهم إدراة المنطقة، ويفهم من كلامه أن المنطقة كانت بيد أهلها فاستولوا عليها".(المهلهل، الرسالة الثانية، ص١٠-١١). وبقيت الحال إلى تأسيس الإمارة الأردلانية.

٣) اللهجة الرسمية: كانت اللغة الكوردية هي اللغة الرسمية في هذه الإمارة، ولهجة الكوران هيمنت على بقية اللهجات، وذلك لأن منطقة كوران تعتبر المعقل الرئيس للإمارة، فصارت لهجتهم هي الرسمية.

٤) توسع الإمارة: ظهرت الإمارة كما سبق في شهرزور، وتوسعت إلى المناطق الكردية من العراق كلها وإيران ودياربكر من وتركيا، ومع ذلك ضمت مدناً غير كردية مثل: أصفهان والموصل وتكريت وأجزاء من محافظة الكوت وهمدان. وقد ضمت أيضاً إمارة العمادية والتي كانت تضم عقرة والدير ودهوك وزاخو فكلها خضعت لحكم الأردلانيين لمدة(مائتي)عام، فاستمر من القرن الثاني عشر إلى القرن الرابع عشر الميلادي.(مستوره، تأريخ أردلان، ترجمة: ه□ار، ص٣٨)،(زكي بك، تأريخ الدول، ص٢٧٦).

٥) الاهتمام بالجانب الحضاري والعمران :

أ. **حركة العمران وبناء المدن:** مع أن الإمارة كانت منهمكة بالحروب من جهات مختلفة، ومع ذلك لم تغفل عن الاهتمام بالعمران والمدنية، ولعل أوضح الدليل في ذلك بناؤها لعدة مدن في عهدها مثل مدينة سنة وحسن آباد قريب من سنه، والقلعات التي بقيت آثارها إلى اليوم، ففي عهد حسن بن خضر الثاني سنة(٧٧٤ه= ١٣٧٢م) وعلى بعد فرسخ واحد من مدينة سنندج(سنه) الحالية، بنى حصينة على قمة جبل، كما قام بإنشاء مبان في سفح الجبل المذكور من الجهة الشمالية وسمى تلك القلعة والعمران الناشئ باسم(حسن آباد) وإلى يومنا عامرة توفي في شهر ربيع الأول من سنة(٧٨٤ه). (الحديقة الناصرية، ص٩٤).

ب. **ضرب السكة باسم أمرائها** : قال ابن خلدون:" هي الختم على الدّنانير والدّراهم المتعامل بها بين النّاس بطابع حديد ينقش فيه صور أو كلمات مقلوبة، ويضرب بها على الدّينار أو الدّرهم،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

فتخرج رسوم تلك النّقوش عليها ظاهرة مستقيمة..."(التأريخ، ١٩٨١م،١/٣٢٣). وضرب السكة لها اعتبارات عديدة، من الناحية الحضارية يعتبر مظهر حضاري، وهي العمود الأساسي للدولة أو الإمارة التي قامت بضربها، مع أنها وسيلة لفرض الضرائب وجمعها، والسكة وثيقة لمعرفة تأريخ الجهة التي صدرتها مع الزمن التي حكمت، وقد تكون السكة عليها صورة الأمراء أو أسماءهم أو الرموز المتعلقة بالسلطة دينية أو قومية ولغتهم ولهجتهم بل قد تكون مبينة المذهب الاعتقادي للدولة أو الإمارة، وضرب السكة من أبرز العلامات الدالة على استقلالية الإمارة التي قامت بها باسم أمرائها كما أن ضرب السكة من الناحية الاقتصادية تجلب الخير على السلطة لأن السلع تقيم بها وهي السبب الوحيد لتحديد الضرائب والأجور وتساعد على المستوى المعيشي ويعيش.(د. حماد، موسوعة الآثار التأريخية، ٢٠٠٣م، ص٢٤٩-٢٥٠). وقد قامت أمراء الأردلان بضرب السكة باسمها، قال شرفخان:" في ذكر عظماء حكام كوردستان الذين وإن لم يكونوا قد ادعوا السلطنة والاستقلال إلا أنهم انفردوا أحياناً بالخطبة وضرب النقود ووضع صورهم على العملة التي تضرب في مملكتهم".(شرفنامه، ت:عوني، ص١١٦).

ت. **الاهتمام بالعلم والزهد:** العلم من العناصر للتطور وازدهار البلاد وحسبما نقل إلينا موضوع العلم والاهتمام به من صميم أعمال الأردلانيين ففي عام(١٢١٤هـ) خلف أمان الله خان، والده خسرو خان الكبير فدام حكمه حتى سنة(١٢٤٠هـ) وكان هذا الأمير كام محباً للعلم والعلماء، وعاملاً في نشر المعارف وبث روح العمران في أنحاء البلاد، فتقدمت أسباب النهضة الأدبية والعمرانية في مدينة(سنه) تقدماً محسوساً وأصبح بلاطه كعبة القصاد من الشعراء والأدباء والعلماء من أنحاء كوردستان، وقد حظي السرجون مالكولم، والمسيور ريج(ريتز) بمقابلته أثناء سياحتهما في إيران، ولذلك فهما يكيلان له الكثير من آيات المديح والثناء، ويطيران حسن إدارته للبلاد وعظيم خدماته في سبيل إسعادها. (تأريخ الدول، زكي بك، ص٢٩٠) وخلفه-أي: أمان الله خان، ابنه خسرو خان الذي حكم البلاد عشر سنوات والذي كان له القدح المعلي في الشعر والأدب، وكانت ماه شرف خانم الشاعرة المشهيرة والأديبة الفاضلة زوجاً لهذا الوالي.(زكي بك، تأريخ الدول، ص٢٩٠).

ث. **الزهد والتقوى:** توطيد العلاقة مع الخالق يحقق الاستقرار على الأرض ويربي الأجيال على التحلي بمكارم الأخلاق، ومن معالم هذا الجانب هو الزهد والقناعة على مستوى الشخصي والتقوى وعدم التجاوز على الغير، وهذه الأمور متعلقة بالفرد نعم ولا دخل للحكومات فيها لكنها بإمكانها اتخاذ تدابير لنحو هذه التربية الرصينة، فهذا الأمير خضر الثاني الذي جاء بعد والده سنة(٧١٠هـ) كان رجلاً في غاية الزهد والتقوى، وأمضى سنوات في عبادة الله تعالى ولم


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

يظلم رعاياه، ومن في حكمه قيد شعرة، بل كان يرى أن تحصيل الضرائب من رعاياه أمر يخالف الشريعة، وكان لذلك قانعاً بما في يده. الحديقة الناصرية (ص٩٣).

ج. **الاهتمام بالجانب المدني والعسكر:** ففي عهد حسن بن خضر الثاني(٥٧٤٠ه= ١٢٣٩م) الذي كان متحلياً بالفضائل ومكارم الأخلاق، ومع ذلك كان منصرفاً لأمور الحكم أكثر من أبيه، فهو قد كتب دستوراً في الشؤون العسكرية والمدنية معتمداً على رأيه الثاقب وتدبيره لصائب حتى يعرف كل فرد من العساكر أو المدنيين حد حركاته وسكناته، ومن الناحية العسكرية اصطفى جماعة من شباب كوردستان بلغ عددهم أكثر من ثلاثة آلاف نفر وسعى في تنشئتهم تنشئة راقية وسماهم( حماة الملك) وكان يرعاهم رعاية خاصة، بحيث يحلون ضيوفاً على مائدة إحسانه ليلاً نهاراً".(الحديقة الناصرية، ص٩٤). وكما يقول" لونكريك:" أردلان أفضل إمارة ظهرت في المنطقة من حيث الحضارة أو الحكم الملكي قبل الإحتلال العثماني للمنطقة" بل ويصفها بالإمبراطورية الأردلانية أكثر من مرة. (لونكريك، أربعة قرون من تأريخ العراق، ص١٨). (تأريخ الدول والأمارات، ص٢٧٨).

ح. **عدد أمراء الأردلانية:** أدار هذه الإمارة(اثنان وستون) أميرا على التوالي، وأول الأمراء الذي سميت الإمارة باسمه هو: بابا أردلان(١١٦٩—١٢١٠م)، وآخرهم غلام شاه خان(١٨٦٠—١٨٦٩م)، والذي له صلة بدراستنا هو عهد خسرو خان ابن أمان الله خان المعروف بـ(ناكام)(١٨٢٤—١٨٣٤م) فهو أخذ رقم(٥٧) بين الأمراء. (بدليسي، ت: هزار، ص٢٥ وما بعدها).(الكوردستاني، الحديقة الناصرية، ص٩١)، وسيأتي الحديث عن عهده لأنه زوج مستوره التي يدور حديثنا حولها في البحث.

وفي سفح هذا الموضوع وختام البحث لابد من القول بأنه: لا يخفى أن تأريخ أردلان يكتنفه بعض الغموض، وعدم الوضوح في جوانب منها: أصل مؤسس الإمارة بابا أردلان علماً أنه من الكورد لكنه لم يتبين بعد أنه من أهل المنطقة أو جاء من مناطق أخرى على وجه اليقين، وأما اسمه الحقيقي فينبغي أن لا نسأل عن أصل الرجل ونسبه واسمه؟ لأنه لا نعثر على معلومات حقيقية موثقة، المهم هو رجل من الكورد، صاحب أفق فكري واسع، فاستطاع إقناع الناس في منطقة شهرزور وما جاورها من هورامان وغيرها على خطته لإنشاء الإمارة، والظروف السياسية والإدارية كانت سمحت له بل ساعدته لانجاح الخطة أيضاً. وذلك لأن الشهرزور من المناطق العصية على السلطات من أواخر القرن الثاني، واستمر على هذه الحال إلى القرن الرابع، فكانت الإدارة تولاها أهل المنطقة دون العباسية، ومن النصف الأول من القرن الرابع زادت شوكتهم. (المهلهل، الرسالة الثانية، ١٩٥٥م، ص١٠-١١)، و(حسن، الإمارات الكوردية في العهد البويهي، ٢٠١١م، ص٣٠ وما بعدها)، (الكوردستاني، الحديقة الناصرية،٩١-٩٢).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وعلى كل حال(أردلان) هو المؤسس للإمارة، وانتسب إليه أولاده وأحفاده فسموا(بني أردلان).(الحديقة الناصرية، ص٩١)، كما أن نشأة الإمارة أيضاً مختلف فيها حيث هناك من يعيد بدايتها إلى قبل الإسلام، وهذا بعيد كما سبق. (زكي بك، تأريخ الدول والأمارات، ص٢٧٦)، ونحن نعلم أن إمارة الأردلان قد حظيت بالاهتمام وتدوين أهم الأحداث المرتبطة بها لكن مشكلة الاختلاف بين المدوّنين صار عرقلة للوصول إلى حقيقة قريبة من اليقين، وكما نعلم أن هذه المشكلة لها حضورها في رواية تأريخ الأحداث وتدوينها في الحقب الزمنية المختلفة، وسبب هذه المشكلة بالدرجة الأولى على ما يبدو كتابة التأريخ بعد الأحداث بفترات طويلة، كما يعود إلى فقدان الوثائق والمستمسكات المتعلقة بالإمارة غالباً يعتمد عليها المحقق والمدقق والباحث، فيبقى التأريخ شفوياً مدة طويلة، فيكون الكاتب لبعض هذه الأحداث كحاطب ليل يجمع بين كل غث وسمين، فيضطر أحياناً التمسك بما قيل، وقد يعرف أن ما قيل ليس بصواب، ومع ذلك يحكيه كما قيل، ويجعل المسؤولية على من قال، ففي تأريخ هذه الإمارة وقفت على مسألتين غريبتين جداً أما أولهما وهي القول بأن تأريخ الإمارة تعود إلى ما قبل الإسلام وإلى عهد الساسانيين!! (البدليسي، شرفنامه، ت: عوني،١/١١٧)،(زكي بك، تأريخ الدول والأمارات، ص٢٧٦). وهذا مما لا يقبله العقل والواقع.

ثانيهما: القول بأن مؤسس إمارة أردلان كان من الكورد الكاكية بفرضيات غريبة، وتكلفات فوق الطاقة بجرّ بعض الكلمات بقوة لموافقة الغرض وبحكاية بعض الكتّاب الذين جاؤوا بقرون طويلة بعد هذه تأسيس الإمارة!!

(وهبي بك، الآثار الكاملة، ٢٠٠٦م،١/١٥٤)، إضافة إلى التعارض في تأريخ بعض الأحداث أو الشخصيات، (مستوره، تأريخ أردلان، ت: هژار، ص٣٩).

وهناك كلام تكرر ضمن حكاية تأريخ أردلان، وهو نصب جنكيزخان لبابا أردلان والياً على الشهرزور، أو تأييد جنكيز خان واعترافه بهذه الإمارة، هذا الخبر نقله الباحثون والمؤرخون.(لونكريك، أربع قرون في العراق، ص١٨) (الأمارات الكردية، ص٢٧٦).، لكن فيه نظر من أوجه:

أولاً: قامت الإمارة كما سبق في عام(٥٦٤ هـ= ١١٦٨م) وإنما جاء المغول في سنة(٦١٧ ه) وهذا يعني إمارة أردلان كانت قائمة قبل مجيء المغول بـ:( إحدى وخمسين) سنة، هذا إذا ماعتبرنا دخوله بغداد؛ لأنه استولى على بغداد اتفاقاً في سنة( ٦٥٦ ه=١٢٥٨م). ثانياً: لو بحث جنكيز خان عن مؤيد أو ناصر ومساند له في المنطقة لحروبه لكان يتحالف مع القوى الكبيرة والجهات الأقوى من الكورد، فضلاً أن المغول ما كانوا يفكرون بالتحالف بقدر مافكروا بالخراب، فكانوا شرسين إلى أبعد حد كما وصفهم ابن الأثير وغيره(ابن الأثير، الكامل، ط١/١٩٩٧م(١٠/٣٣٣). ثالثاً: هذه الحكاية تنال


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

من منزلة الكورد وتلحق به اللوم والعتاب، ومنفذ لاتهامه بالخيانة ومساندة القوة الوحشية ضد أهل المنطقة وجيرانهم من الشعوب والقوميات.

ومع كل ما سبق فإن إمارة الأردلان كانت إمارة قوية وظهرت كحكومة إن لم نقل إمراطورية كما قال البعض، ذكر الأمير شرفخان بدليسي بأن حكومة أردلان كانت حكومة قوية وعظيمة الشأن. (شرفنامه، ت: هژار، ص١٣١) كما قال زكي بك:" ولا شك في انه لم تظهر قط حكومة قوية ذات شأن بين الحكومات المجاورة للعراق في تلك الأيام مثل هذه الحكومة الكردية- أي:حكومة أردلان- الباقية آثارها تطاول الدهر في غربي إيران.( تأريخ الدول والأمارات الكردية، ص٢٧٨)، وفي باب أردلان قال شرفخان:" فأحسن الإدارة فيها حتى اتسع نفوذه، وصار حاكماً مستقلاً بها". ( البدليسي، شرفنامه، ت: عوني ١١٧/١)

## المطلب الثاني: مسيرة حياة(مستورة الأردلانية)

اسمها ماه شرف خانم بنت محمد أبو الحسن بيك من قبيلة القادري، ولقبها مستورة أو مستورة أردلان، الأديبة والشاعرة والمؤرخة والعالمة، ومما لا يختلف فيه اثنان أنها ولدت بمدينة( سنه) عاصمة الإمارة الأردلانية لكن المشتغلين بحياتها اختلفوا في تحديد سنة ولادتها فمنهم من قال أنها ولدت في عام(١٢٢٠ هـ=١٨٠٤م).( بور، تأريخ أردلان،١٣٣٢ه ش، مقدمة، ص ت).(مستوره، تأريخ أردلان، ت: هژار، ص١٥). وهناك من يقول أنها ولدت في عام(١٢٢٦ه=١٨١١م) وبين التأريخين قرابة ست سنين، ولم أجد تلميحاً أو إشارة لترجيح رواية على الأخرى.(موكرياني، الأعمال الكاملة، ٢٠٠٧م، ٣٧٩/١).

والد مستوره هو أبو الحسن بن محمد آغا ناظر الكوردستاني كان من كبار رجال الدولة وجدّها أيضاً كان ذا نفوذ وشهرة كبيرة في الدولة في وقته ووزيراً للمالية لولاة أردلان، فهي تربَّت في هذا البيت الذي أبوها وجدها من وجهاء المدينة، ومن كبار رؤساء الإمارة، نشأة مستوره في بيت معمور بالعلم والحلم والحنكة من الجانب السياسي، وتحت رعاية رجل صرف شطر عمره في الإدارة والسياسة، وهي الطفلة الأولة أعطاها الله لهذه الأسرة كما قالت هي نفسها، فإذا كان الوالد بهذا المستوى من أمور الدنيا لا شك أنه سيحافظ على مصلحة بنته الصغيرة.

أما والدتها فهي(ملك نيسا خانم، ت ١٢٥٠ه)، وعائلتها من العوائل المعروفة في الإمارة، منهم الوزراء في العاصمة سنه، فكان جدهم هو ميرزا عبدالله، والذي فضلاً عن كونه وزيراً فكان ذا نفوذ في الإمارة، وللعائلة من جهة أمها مكانة مرموقة في المجتمع. (روحاني، بيرئانيني مستوره، بنه ماڵەي مستورەو چاوێك لەكەسایەتي خۆي، ٢٠١٨م، ص٢٥). (روحاني، ديوان مستوره، د.ت. ص٢٨).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

والد مستوره كان يهوي العلم، ويحب أن تكون ابنته عالمة، ولذلك منذ الصغر أدخلها في المدرسة عند العلماء

المتميزين في جامع دار الإحسان بسنه والذي يعتبر قلعة العلم في عصره، وبذل جهده لتكوين شخصيتها، فشجعها في ذلك كما حكت مستورة، وكانت الجهود قد أثمرت فتعلّمت مستوره العلوم واللغات الفارسية والكوردية باتقان قراءة وكتابة.(مستوره، تأريخ أردلان، ت: هژار، ص١٥-١٦)، وهي تلقت العلوم المتداولة في عصرها من شارة علماء عصرها، كما أشار إليها **رضا قلي خان هدايت** عند الحديث عن سيرة مستوره.(مجمع الفصحاء، ١٣٨٢ ش ق، ١٣٩٤/٢)، فوصلت مستوره إلى الهدف فأتقنت العلوم بل تعلمت الخط وامتازت بخطها الجميل كما ذكر أهل زمانه، وكانت بلا نظير في عصرها، فهي عشقت القراءة منذ الصغر، وتشهد كتاباتها أنها كانت على اطلاع من المؤلفات التي كتبت قبلها، وهي مواظبة على القراءة، واهتمت بها اهتماماً بالغاً، فتعرجت إلى الشعر والأدب فضلاً عن التركيز على اللغات، والعلوم الإسلامية، والقراءة عنصر مهم للولوج في مجال الكتابة فشرعت في الكتابة ولم تنحصر اختيارها في زاوية بعينها بل اهتمت بمجالات مختلفة، والتي كانت من صميم أمنيات مستوره، فهي نشأة في النصف الأول من القرن الثامن عشر للميلادي، وتركت أثاراً بسببها تبقى اسمها خالداً في ذاكرة المثقفين وأهل الكتب في مجال العلوم الانسانية، ولا سيما التأريخ والأدب والشعر والعلوم الإسلامية.

قصة زواج مستوره:

خسرو خان كان متزوجاً من حُسن جهان خانم ابنته فتحعلي شاه القاجاري، وله منها ست أولاد ثلاثة ذكور وثلاث بنات، وحُسن جهان كانت امرأة مثقفة أديبة وشاعرة ومع ذلك كانت خبيرة في السياسية وإدارة البلاد، ولها هيبة وقوة ونفوذ من قبل والدها وقربائها القاجارية بل يقال أنها كانت مسيطرة حتى على خسرو نفسه في بعض الأمور المتعلقة بالولاية.( سبحاني، أقيانوس أدبيات، http://ms_78.rzb.ir/post/35، ٢٩/ربيع/١٣٩٢ ش ق). (كلهر، مطالعات تأريخ فرهنكي، ١٣٩٧ ش ه، العام ١٠، العدد ٣٧).

ومن أبرز السبب الذي ذكر للزواج هو الذي سجلته مستوره وباختصار حدثت محاولة للانقلاب من قبل بعض المقربين من السلطة لإقالة والي المدينة خسرو والذي أصبح فيما بعد زوجاً لمستوره، ومحاولات الانقلاب تجاه السلطة أمر وارد في كل زمان ولها حضورها في الإمارات الكوردية، ففي عهد خسرو ناكام والي سنه حدثت محاولة فاشلة للانقلاب حسبما نقلها المؤرخون، واطلع عليه خسرو قبل فوات الأوان فزج جميع من شارك أو شك فيهم إلى السجن كما هو حال السلطات في مثل هذا الموقف، ومن ضمن هؤلاء المعتقلين والد مستوره أبو الحسن، ويبدو أنه تم توقيفه خطأً فلم يكن له صلة بالمتآمرين، ولذلك ندم خسر ناكام على تصرفه تجاه الرجل لكنه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

خاف من التفكير في الانتقام وتشجيع الناس ضده من قبل والد مستوره، فأظهاراً لحسن النية وجبراً لما حدث عرض عليه الزواج من ابنته، فرضي الوالد بالعرض؛ لأنه عرف أن الأمر في مصلحة بنته، لكن مستوره أنكرت ورفضت هذا الزواج، ومع ذلك أطاعت كلام والدها وخضعت للأمر فيما بعد. وذُكر غير ذلك من

الأسباب. وهذا مختصر القصة ولها تفاصيل ورواياتٌ أخرى.(مردوخي، تأريخ كورد وكوردستان، د.ت، ١٦١/٢). إن قلنا بأن سن مستوره ولدت في(١٢٢٠ه=١٨٠٤م) وتزوجت عام(١٢٣٧ه=١٨٢١م).(موكرياني، تأريخ الكورد، ص٣٨٠) فهذا يعني أن عمرها وقتئذ كان سبعة عشر عاماً، ومن قال أنها ولدت في(١٢٢٦ه= ١٨١١م) وتزوجت في عام(١٢٤٤ه =١٨٢٨ أو ١٨٢٩م) يعني تقريقاً سبعة عشر عاماً أيضاً أو أكثر بقليل. وقيل غير ذلك، وقد أقيمت بمناسبة الزواج، احتفالات كبيرة.(مستوره، تأريخ أردلان، ت: هـژار، ص١٥). فأصبحت حريمة حاكم مدينة سنه خسرو خان بن أمان الله خان الأردلاني.

وهناك يأتي سؤال على البال وهو لماذا لم تقتنع بالزواج من خسرو في بداية الأمر؟ هناك احتمالات منها:

رفضت بسبب عمرها؛ لأنها كما عرفنا ما وصلت عشرين سنة إذا أخذنا بالرواية التي سبقت، فلم ترد تضييق حريتها، وتحمل مسؤوليات الحياة الزوجية، ولا سيما هي تعشق العلم والقراءة.

أو قد يكون عدم الاقتناع بالزواج؛ لأنها عرفت شخصية الرجل، وقد تكلم عليه بعض المؤرخين بأنها تكره تصرفات الرجل، ولا سيما فيما يتعلق بميله للنساء دون مراعاة الحدود والشرع وعشقه للخمر، فكان أكثر الليالي يعود إلى بيته، وهو سكران، إضافة إلى ذلك إذائه لأهلها فهو سجن والدها وأقربائها، فكرهت الزواج بخسرو ناكام، كردّ الفعل رفضت الزواج معه.(مردوخي، ص١٦٠).

إما لأنها عرفت الرجل الذي تقلد منصب والي المدينة مشغول في حياته فليس بوسعه تخصيص وقت لأهله وزوجته، وهي بحاجة إلى الاهتمام، ولا تريد أن تكون كهامش في حياته شريكها. أو عرفت طبيعة الرجل وتصرفاته .

أو لأنها رفضت في بداية الأمر؛ لأنها عرفت أن خسرو متزوج، وله أولاد، فلم تفرح بمثل زواج قد يكون سبباً لخلق مشكلات عائلية سواء كان للرجل أو زوجته الأولى أو اللواتي تزوجن قبلها من الرجل.

وقيل إنما رفضت الزواج لأنها كانت تميل لشخص آخر، وهو ابن عمها(حسين قلي خاني) والمعتمد في ذلك كتابة سطر من قبل مستوره بعد وفاة ابن العم حيث قالت:" بسبب ألم فقدان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

هذا الحبيب، منذ يومين أو ثلاثة أيام أشعر بحرارة غطت كل كياني وجسدي، ننتظر أمر الله تعالى.(مستوره، تأريخ أردلان، ت: هژار، ص٢٣٩). وكل منا نعرف أن ابن العم أو بنت العم أقرب الناس إلينا بعد الأخوة والأخوات، فإذا حزن إنسان وشعر بألم وجرح بداخله بسبب وفاة ابن العم، أيدخل ذلك إلى أننا على صلة حب وغرام معهم ؟!!، فضلاً أن جميع الذين وقفوا على سيرة هذه اللؤلؤة مستوره أكدوا على عفتها ونزاهتها، وعليه إنني أرى أن هذا بعيد جداً؛ لأن رثائها له أو حزنها عليه أمر سائغ؛ لأن الرجل ابن عمها وشجنها عليه أمر طبيعي لا يدل على ما قيل، ولا سيما أنهم كانوا في الغربة.

فكيف يلحق بمستوره هذا الكلام، ويليق بشخصيتها، وهي بهذا المستوى الراقي من العلم والثقافة والإيمان ؟.

ومن بين الأسباب السالفة أميل إلى السبب الثاني، وهو معرفتها لشخصية خسرو ولكن تغيرت وجهة نظرها تجاه الرجل بعد الزواج، ففرحت لما رأته يميل إلى الأدب ويحب الشعر. أيّاً كان السبب المهم في نهاية المطاف خضعت للأمر الواقع وسعدت بالزواج.

**اختيار لقب الأردلانية وكردستانية:**

لما كوّنت الحياة الزوجية وأصبحت زوج الوالي، اختارت لقب الأردلانية لنفسها، وهو لقب زوجها والي مدينة سنه، وقد كان خسرو خان يحب الشعر والأدب، فله القدح المعلي في هذا المجال، وبقي حكم البلاد عشر سنوات.(زكي بك، تأريخ الدول، ص٢٩٠)، وأما مستوره كوردستانية فلأنها كانت كوردية، وهو لقب أجدادها.

**وفاة خسر خان :**

بعد أن عاش الزوجان الشاعران معاً برهة من الزمن بسعادة وسرور، انتشر وباء طاعون في المنطقة ومدينة

سنة في سنة(١٢٥٠هـ) فكان المرض على توسع وانتشار سريع، فهجر الناس المدينة، وحسب رواية مستوره للأحداث أن الطاعون أصاب الولاية مرتين وذلك في سنتي( ١٢٤٦هـ و١٢٤٩هـ)أو(١٢٥٠هـ) وقد قتل في المرة الأولى أكثر من ثمانية آلاف شخص، وأما في المرة الثانية فلم يكن مثل المرة الأولى حيث لم يمت إلا بضعة أشخاص، ومع اتخاذ التدابير للوقاية إلا أن خسروخان أصاب به ووقع ناكام على الفراش لفترة من الزمن، والغريب أن مترجم تأريخ مستوره هژار موكرياني لم يترجم ما جاء في كتاب تأريخ مستورة حول مرض خسرو، وما قامت به مستوره في هذه الفترة، وهي صفحة كاملة ونصف صفحة، والصفحة أكثر من عشرين سطراً، ولم يترجم منها حرفا واحداً، ولا مانع من نقل جمل منها:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بعد أن ذكرت الموجة الأولى للطاعون في بداية شهر الربيع سنة(١٢٤٦ه) والذي قتل ألوفاً من الناس ومن كبار الرجال الدولة والعلماء، ثم ذكرت الموجة الثانية والتي كانت في أواخر شهر ذي الحجة سنة(١٢٤٩ه) وقتل بسببه بضعة أشخاص فقط، ولكن خسرو أصابه المرض في(٢/ربيع الأول/١٢٥٠ه)، ثم تعرضت إلى وصف خسرو خان فتنقل لحظة بلحظة حيث تشعر كأنك واقف على رأسه وترى حاله من السوء إلى الأسوأ بعبارات لطيفة وجمل تهيمن عليها الحزن، ومع ذلك وقفت مستوره معه ولم تتركه ولا لحظة حيث سجلت تضحيتها من أجل زوجها بأنها كانت معه ليلاً ونهاراً ولم تتركه طرفة عين فلم تنم ولا غمضت عينيها، ومع ذلك تقول:" جاء الذي كنت أخاف منه وأخاف أتعرض له فطار عصور روحه وترك الدنيا إلى الغربة مع ألف حسرة وأمنية لم تتحقق بعد، فكتبت عدة أبيات مرثية له. فوافاه الأجل يو الخميس المصادف(٢/ربيع الأول /١٢٥٠ ه=١٨٣٤-١٨٣٥م)،.(مستوره، تأريخ أردلان، ص١٨٠). وكان في ربيع عمره حيث توفي وعمره(أقل من ثلاثين) سنة (الحديقة الناصرية، ص١٣٧). (مردوخي، كورد وكوردستان، ص١٦٤).

**مدة الحياة الزوجية:**

فإذا قلنا بأنهما تزوجا في(١٢٣٧ه= ١٨٢١م) يعني أن الحياة الزوجية دامت(ثلاث عشرة) سنة، وإن قلنا بأن الزواج كان في عام(١٢٤٤ه= ١٨٢٨-١٨٢٩م) يعني أن مدة الزواج كانت( ست أو سبع) سنوات فقط، (تذكرة حديقة أمان الله، نقلاً عن الروحاني، ئبير ئانيني مةستوره، ص٣١). وبهذا عرفنا خطأ من قال كانت الحياة الزوجية ثماني سنوات.

ولعل وفاة خسرو خان كان أصعب حلقة في حياة مستوره، وصدمة كبيرة لها، وهذا الفراق زرع في داخلها جرحاً لم يكن قابلاً للإلتئام، والدليل على الشعور بهذا الحزن العميق هو أشعارها فلا تجد مقطعا شعرياً من أشعارها إلا أن التجلي للحزن والغم مثل البدر في ليلة الدجى، فكانا ينظمان الشعر الغزل للبعض، وهذا من أقوى أسباب العشق والشغفه بينهما، ولعل قصائدها الغزلية، هي التعبير الأمثل عن مدى ما تختزن في داخلها من رقة أنثوية وإنسانية، وتدفق في المشاعر والأحاسيس، ولذلك كانت مستوره متعلقة بزوجها وغرقت في حبه.

ومن هنا أستغرب من قال أنها تميل إلى ابن عمها(حسين قلي خاني)، لا أدري القائل بذلك لم يطلع على أشعارها المعروفة، ترثي زوجها وتعبر بوضوح عما بداخلها من قهر وحزن، وتبين مدى حزنها لفوته؟ أو لهم غرض آخر يريدون ينالون من شخصية هذه الدرة العالية. ومن أشعارها الكوردية المترجمة للعربية:

وحدي وبعيون خسرو...أتأمل الربيع......... أروي بدموعي الزهور وقدمي المكسورتين.

وتقول في إحدى قصائدها بعد وفاة خسرو، وهي خارج الحكم والولاية:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

أ نا ملـ كة في ممـلـ كة العـ فّة      ليست لي شبيه في جماعة النسّاك في هذا

رأ سي جديرب تاج      يا لعبث أوهامي، فالقدر المتقلب أخزاني

و حظّ من قدري      فلا حا جب مطـ يع يـ قف الآن عـ ند عتـ بة

(مركز الأخبار، ماه شرف خانم... بصمة واضحة في تاريخ أردلان،/https://jinhaagency.com، الثلاثاء, ٨ فبراير ٢٠٢٢, ٠٨:٠٨)

**ولاية مدينة سنه بعد خسرو خان:**

بعد خسرو خان استلم الولاية ابنه رضا قليخان ابن(الأميرة حسن جهان بانو خانم بنت فتح علي شاه القجر) وكان عمر الوالي الجديد لم يتجاوز عشر سنوات، وبعد وفاة خسرو خان بفترة وجيزة اضطربت الأوضاع،

و توفي الوالي الجديد ثم جاء دور أمان الله خان الذي حكم أردلان من(١٢٦٥ إلى سنة ١٢٨٤ﻫ) فهو أخوه، وآخر حاكم لأردلان، إذ الثابت أن الحكومة الإيرانية قد بدأت تتحرش بحكومة هذه البلاد ابتداء من عام (١٢٦٨ﻫ) حتى تمكن ناصر شاه في عام(١٢٨٤ﻫ) من القضاء عليها.(زكي بك، تأريخ الامارات، ص٢٩٠) فضلاً عن تدخل حُسن جيهان الزوجة الأولى لخسرو في شؤون ابنها ووقوع الصراع بين ابنيها.

**نزوح مستوره إلى السليمانية:**

بعد اضطراب أحوال إمارة أردلان بدأ الناس يشعرون بالهلع والخوف ولا سيما المقربون من آل أردلان، وإن كانت مستوره بقيت سنوات بعد وفاة زوجها في سنه لكن مع وقوع هذه الاضطرابات هـجرت مـستوره مع أكـثر من ألف شخص من أقربائها، و منهم عمها عبدالله إلى الشهرزور والسليمانية.(الحديقة الناصرية، ص١٣٧) .(عبدالله، تتمة تأريخ أردلان، ص٢٠٩)، و قد ذكرت مستوره مرارة هذه الهجرة في بعض أشعارها.

وأما تأريخ نزوحها إلى السليمانية يقال أنه كان في سنة (١٢٦٣ ﻫ و ١٢٦٤ﻫ،= ١٨٤٧و١٨٤٨) وقيل النزوح كان في سنة(١٢٦٧ﻫ).(هدايت، رضا قلي بن محمد هادي، الناشر: أمير كبير- تهران- إيران، سنة: ١٣٨٢ ﻫ ش، ١٣٩٤/٢)،( بور، تأريخ أردلان، مقدمة، ص ج)، عاشت مستوره في السليمانية قرابة سنة واحدة.

**مرض ماه شرف خانم مستوره ووفاتها:**

نزحت مستوره مع أقربائها بعد اضطراب الأوضاع في إمارة أردلان ولاسيما عاصمتها سنه فتوجهوا نحو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

السليمانية عاصم الإمارة البابانية واختلف في أي سنة كان النزوح بين سنة(١٢٦٣هـ)، وسنة(١٢٦٧هـ). ولعل الأول هو الأقرب لوجود قرينة ترجحه، وهي سطر كتبته مستورة في تأريخها حيث ذكرت مرضها الذي ماتت بسببه، فتقول:" أنا مستوره المهاجرة البعيدة عن بلدي بسبب ألم فقدان هذا الحبيب- تقصد حسين قلي ابن عمها الذي توفي سنة(١٢٦٣هـ)- منذ يومين أو ثلاثة أيام أشعر بحرارة غطت كل كياني وجسدي، وأعاني من آلام شديدة، وقد تركت أمري لله، الذي لا يحمد على مكروه سواه".( بور، تأريخ أردلان، مقدمة، ص ج)، (مستوره، تأريخ أردلان، ت: هـژار، ص٢٣٩). وعند التأمل في تأريخ كتابة هذا السطر ووفاتها يتبين أنها كتبت في سنة(١٢٦٣هـ)، وماتت مستوره بسبب هذا الوباء.(مستوره، تأريخ أردلان، ت: هـژار، ص٢٣٩). إذن توفيت هذه الشخصية الكبيرة المؤرخة والعالمة والأديبة والشاعرة مستوره أردلان ماه شرف خانم بسبب تعرضها لوباء قاتل في سنة(١٢٦٤هـ=١٨٤٧م) في عمر يناهز أربعاً وأربعين سنة بعيداً عن مسقط رأسها، ومكان ولادتها، ودفنت في مقبرة سيوان، وهي مقبرة معروفة قديمة في السليمانية، وذلك بتأريخ(١٨٤٧/١٢/٩م).(مستوره أردلان، تأريخ أردلان، هـژار، ص١٦)، و(عبدالله، تتمة تأريخ أردلان، ص٢١١).

ومما لفت انتباهي أن خسرو ناكام تزوج مستورة، ولم يمض على زواجهما إلا أعوام قليلة مات خسرو في سنة( ١٨٣٥م)، وخلفه ابنه قلي خان وعمره عشر سنوات، وهذا يعني أن مستورة كانت الزوجة الثانية إن لم تكن الثالثة.

لم تتحدث مستورة عن والدتها ولا ذكرت اسمها ونسبها إلا أنها قالت إنني الطفل البكر من الوالدين، وهذا يعني كان لوالديها أولاد، وذُكر من أخوانها أبو محمد، وهو أصغر منها ومات وهو شاب في سنة(١٢٦٢هـ) .(مستوره، شه رعييات، ٢٠٠٥م، ت: نويد نقشبندي، ص٣٥).

**المبحث الثاني: مساهمات مستورة خانم في إدارة الدولة**

إذا قلنا إنّ الإدارة عبارة عن فن وعلم من شأنه المساهمة في فعالية الجوانب المادية والمعنوية والبشرية، أو فن أو علم توجيه وتسيير إدارة عمل الآخرين بقصد تحقيق أهداف محددة، والإدارة العامة هي تسيير المهام الحكومية العامة.(ناصر،٢٠٠٥م، الإدارة المعاصرة بين التنظير والتطبيق، ص٥-٦).

وعلى ضوء هذه التعريفات وغيرها مما ذكرها أهل الإختصاص فمشاركة النساء في أمور الدولة وإدارة البلاد، ليس أمراً غريباً في الحضارة الإنسانية، ولا في الأديان السماوية فلو رجعنا إلى القرآن الكريم الذي عبارة عن المصدر الأول في الشريعة الإسلامية، الشريعة التي تمسك بها الدول والإمارات الكوردية بعد قبول الشعب الكورد لهذا الدين الحنيف، فنجد في القرآن إبراز دور امرأة لم يكن لها نظير في إدارة الدولة حتى من الرجال، فهي تأملت وحاورت وأرشدت شعبها نحو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولینێن كوردى

الصواب، وأبعدهم عن الهلاك والخراب، ومن ثم أخذت بيدهم إلى طريق الهداية والحياة السعيدة، وهي ملكة سبأ- بلقيس- والتي وردت قصتها في سورة النمل.(سورة النمل الآيات ٢١-٢٨)، كما وردت القصة في التوراة والإنجيل أيضاً.(السفر المقدس، ملوك الأول ١٠). و(إنجيل متى،١٢-٤٢) .

والشعب الكوردي مع كونه من الشعوب المحافظة فيما يتعلق بالنساء إلا أنه فسح المجال للمرأة، فساهمت في الحياة العلمية والسياسية والإدارية حيث أحياناً هي الشخص الأول في الإمارة أو الدولة، وتجد هذا الأمر في في العصور المختلفة سبق الإشارة إلى هذا الأمر في المقدمة ولا أريد تكراره، وفيما يتعلق بمستوره أردلان سبق أن ذكرنا مكانة عائلة مستوره من الجهتين الوالد والولدة، وهذا عامل مهم لفسح المجال لها بالمساهمة في تقديم حلول لمشكلات عصرها، ولا سيما والد مستوره، والذي له أثر كبير في توسيع الإطار الفكري لمستوره، فكان يأخذها لزيارة أماكن وآثار، وهذه المعلومات عن شخصية مستوره ووالدها الذي كان له منهج في كيفية تربية ابنتها وإعداده لها لتكون لها موقع ومكانة في المستقبل كيف لا يخطط لمثل هذا الأمر، وهو قد تولى تربية أولاد الأمراء، فضلاً كونه رجلاً له مكانته في البلاط، فاستفادت مستوره من معلوماته النظرية والتطبيقية، وبعد هذه الدورات العلمية والعملية دخلت البلاط مع نفوذ وقوة معنوية مستوحاة من سلطة الوالي أو الأمير نفسه- خسرو خان- فهي شريكة حياة الوالي، واحترامها أصبحت واجباً على الجميع.

وهي تحب الاطلاع على الحياة الإدارية والاجتماعية، فتقوم بمرافقة زوجها خسرو في الزيارات لتَفَقُد الآثار التاريخية، والرعية، والاستماع إلى حكاياتهم، وشؤون حياتهم بأفراحها وأتراحها، حيث كانت هي المرأة الوحيدة حظيت بمرافقة خاصة من زوجها في الزيارات وحدها دون نساء الأخريات في بلاط الوالي، وهذه الاطلاعات والمشاركات أعطتها ثقة الأمير ليفسح لها المجال للمشاركة الفعلية في أمور الدولة، فتولت شؤون البلاط وأمور الأسرة الحاكمة والتشريفات، بمعنى أنها أصبحت بمثابة وزيرة "لشؤون القصر والبلاط"، في عهد زوجها منصب وذلك لما امتازت به من الثقافة والوعي. كانت تعمل على تفقد الأوضاع الداخلية للرعية وتسمع قصصهم ومعاناتهم، وعملت على حماية القلاع والآثار التاريخية.(أقيانوس أدبيات محمد سبحاني ٢٩/خرداد/١٣٩٢ ه ش، زندكي نامه مستوره (http://ms_78.rzb.ir/post/35).

الحديث عن اشتغالها بأمور الدولة وإدارة البلاد ليس اجتهاداً ناتجاً عن التأمل في بعض المواقف أو استنباطاً من مقارنة بيت كتاباتها وأشعارها بل هي صرحت بأنها عند مرض زوجها كانت تولت وزارة" الاندرو" أي: الداخلية"، ونحن نعلم أن هذه الوزارة هي تعتبر قلب السلطة، وعمودها الفقري، فهي في تعامل مستمر مع المواطن، وتطلع على أمور المملكة بمشكلاتها ومميزاتها فهي المسؤولة عن استتباب الأمن واستقرار الولاية، وفي هذه الفترة الزمنية كانت الأمور تسير على



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

خطة محكمة، ولم تحدث خرقاً للأمن كما لم تسجل محاولات الانفلات والانقلاب علماً أن مشكلات الانقلاب والانفلات كانت ظاهرة متكررة في الإمارات، فلو سافر الأمير أو الوالي وطلع من عاصمة مملكته ليقوم ضده واحد من أقربائه في الداخل أو أعدائه من خارج الولاية فيقلب عليه، ويضطرب الأوضاع، وكان الظرف مناسباً لمثل هذه الانقلابات، خسرو خان بالفراش، فكانت فرصة ثمينة لمن ينوي القيام به لكن لم تسجل ولا حالة واحدة ويعود الفضل في ذلك إلى وزير الداخلية مستوره، ولو أن تقلدها لهذا المنصب على مايبدو في فترة قصيرة ومع ذلك أتعبت نفسها مجاهدة لتقدم أجمل دور وكما تقول:" لم تنم لمدة شهرين " وإن كان كلامها في سياق انشغالها بمرض زوجها لكن مع ذلك ذكرت حرصها على العمل الذي تولته.

فضلاً أنها كانت مسؤولة قبل الوزارة عن أمور البلاط في ولاية زوجها فهي تقوم بتنظيم أمور البلاط ومتابعة الموظفين والمشتغلين هناك.

ومع ذلك فهي لما كانت مهتمة بتأريخ الإمارة فهذا يعني تعيش مع الناس وتقابلهم وتحاورهم وتسمع منهم حكاية الأحداث ولا مانع من تخصيص جزء من هذه المحاورات إلى الاطلاع على حال الرعية ومعرفة مشكلاتهم مع

ولو سألتني عن دليل لهذا الكلام؟ أجاوبك بما سبق أنك رأيت معي اخلاص مستوره لزوجها كيف وقفت ليل نهار مع خسرو عند مرضه وبعد فوته كتبت له قصيدة أطول في التأريخ من رثاء المرأة لزوجها هذه القرائن الجلية والدلائل الناصعة لاتكون دليلاً على أنها لو رأت أثناء تجوالها مشكلة إدارية تبلغ زوجها لجبرها ومنعها كي لاتكون خطراً على ولايته؟.

وتنصيب مستوره في الشؤون الإدارية كالوزارة أو مديرة البلاط لم يأت من فراغ بل استمعنا معاً إلى حكاية تجولها مع خسروخان واختيارها لهذه المهمة دون غيرها من قبل زوجها، فهل نقر أن الأمر كان عفوياً دون غرض؟ أو أنه أمر مخطط له يهدف إلى هذه النتيجة أي: توليها للشؤون الإدارية.

ولا ننسى أن إقدام مستوره في المسائل الإدارية لم يكن أمراً سهلاً؛ لأن ضرتها حُسن جهان كانت لها نفوذ من

شخصيتها أو بسبب أقربائها، وقد سبق الحديث في ذلك، ومع وجودها وهيمنتها وخبرتها الموروثة عن أبائها في مجال السياسة والإدارة كان أمراً قريباً من المستحيل، ومع ذلك استطاعت إثبات شخصيتها ومهارتها بل ونجاحها في العمل.

ولا بد أن نعترف بأن مستوره لم تبح بتفاصيل أعمالها ولم تسجل لنا وكل ما يقال في دقائق هذا الموضوع عبارة عن تأملات شخصية، وبعد وفاة بعلها تركت مستوره مجال الإدارة وسياسة الولاية تجنباً لحدوث مشكلة مع المرأة القوية المهيمنة على الوضع والتي تدخل في شؤون



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أولادها ولمصلحتهم، وصارت هي الحاكم الفعلي في الولاية إلا أن كبر ابنها فخرج عن قبضة الوالدة لكنه خسر بعصيانه عن إرشادات أمه حسن جهان.

فهذه جملة من المساهمات الإدارية للمرأة التي كانت شخصيات في جسد واحد، فهي مؤرخة وتأريخها من الكتب الثمينة له قيمته العلمية والتأريخية، وهي شاعرة وديوانها شاهدة على تفوقها في مجال الشعر وكانت تكتب الشعر باللغتين الكوردية والفارسية، ومع ذلك كانت على علم بالعربية، واستخدامها في كتاباتها شاهدة على أنها على علم بالعربية، وإنما لم تكتب بها لعدم احتكاكها بالعرب، ومع ذلك نستطيع أن نقول هي امرأة لها مساهمات وعطاء في مجال إدارة الإمارة والشؤون السياسية.

**المبحث الثالث: جهودها الدينية والاجتماعية**

ماه شرف خانم مستوره وإن لم تشتهر كعالم ديني لأن هذا الدور يتولاه في الأغلب الرجال، إلا أنها على علم ودراية بالعلوم الاسلامية، والخوض في هذا المجال ليس بالهين، ولا يمكن اقتحام بابه إلا بعد أن يبقى سنوات ويتعلم علماً علماً، ولمستوره رسالة في الإسلاميات فهي مع صغر حجمها احتوت على علمين من أهم العلوم الإسلامية، فتغطي الجانب الفكري والجانب التطبيقي العملي، وولوج مستوره في هذا الميدان دليل على أنها على صلة بها منذ الصغر، وبالتأمل في تصنيف الكتب وترتيب أبوابه يتبين أنها درست المسائل وتدربت عليها، وكنت أتمنى الحصول على النسخة الفارسية التي هي لغة الرسالة في الأصل لكنني لم أفلح فاضطررت إلى النسخة المترجمة للكوردية والتي تتكون من مائة وعشرين صفحة، وكتبتها بعد وفاة زوجها بدليل ما جاء في مقدمتها من شرح حال المؤلفة وحزنها على ما تعرض له الكرب، وكما قلنا تحتوي على علم أصول الدين بحدود ست صفحات، وخصص للحديث عن فروع الدين أو الأحرى الأبواب الفقهية اثنتان وستون صفحة.

وهذا الجزء الأخير قسم على الأبواب الفقهية التالية: الطهارة والصلاة والصوم والزكاة والحج والجهاد مثل بقية كتب الفقهية.

بالتأكيد ليس عملي هنا تقييم الرسالة فهي مثل ترجمة لكتاب فتح القرب في الفقه الشافعي لشمس الدين الغزي (ت ٩١٨هـ)، وهو كتاب مختصر مفيد خصص لمن شرع في دراسة الفقه من المبتدئين، ولكن الذي يهمني من هذا المكان هو حرص ماه شرف خانم على المجتمع الذي عاشت فيه وكيف بذلت جهودها لتقدم لهم ما يفيدهم، فهي كما ذكرت إنما فكرت في الكتابة بهذا الموضوع لاطلاعها ومعرفتها من حاجة المجتمع لذلك، وغفلتهم عن الأحكام المتعلقة بالشريعة، بمعنى أن الحاجة هي التي دفعتها للشروع في الكتابة مثل أغلب العلماء السابقين لما كتبوا كتاباً بناء على طلب الأصدقاء أو الطلبة أو اطلاعه على الغموض والصعوبة في فهم موضوع ما.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ومن هذه الناحية تدخل جهودها من باب التعاون والتيسير على الناس الوارد في الحديث النبوي:(والله في عون العبد ما كان العبد في عون أخيه) (مسلم، الصحيح، ١٩٥٥م، الرقم ٢٦٩٩)، واسم هذا الكتيب أو الرسالة هو: عقائد وشرعيات، وهذا الاسم هو مناسب لمحتواه وإن أطلق عليه أسماء أخرى، مثل شرعية الدلالة أو إلهي نامه.

وبعد أدركت مشكلة المجتمع من الناحية الدينية قالت:" فكرت ملياً ثم قررت أ جمع الأمور التي فيها أصول الدين وفروعه التي تتفرع عن أصول الدين، وهي الفرائض التي تهدي من ضل الطريق، ويجب معرفتها، مع العرف والعادة الجارية في المجتمع، (مستوره، ٢٠٠٥م، شرعيات، ت: نويد ص٥١). وهي أخذت طريقة أهل علم اكلام في طرح المسائل ولا سيما علماء الأشعرية، فبدأت كعادتها في كتاباتها بالبسملة الله والحمد لة ثم تصلي وتسلم على الرسول والآل والصحب..(مستوره، تاريخ اردلان، ص١)، وكذلك وشروعها بكتاب رسالة العقائد.( مستوره، العقائد، ص٥١). وتأتي إلى الجزء الأول من الكتاب- أصول الدين- فذكرت الأمور التي يستطيع فهمها غير المتخصص أي: المسلم الذي لم يدرس العلوم، وهذا مبين في اختيار المسائل ولغة عرضها، وهو دليل على ذكاء المؤلفة، وإدراكها واقع المجتمع الذي تعيش فيه، فمن أصول الدين تطرقت إلى الإيمان بالله تعالى وركزت على أن الإيمان من أهم الواجبات ومن ثم ذكرت لا يجوز البحث عن الذات وكيفيته وكنهه لأن العقل ليس بإمكان التعرج إلى الموضوع، وتحدثت عن الصفاته فذكر الصفات السبعة التي عند الأشاعرة، وهي: الحياة والعلم والقدرة والبصر والسمع والإرادة والكلام، فوقفت مع كل هذه المفردات وقفة قصيرة، ثم تعود إلى الأصل الثالث وهو المبدء، وتقصد به الخلق والإيجاد فيجب الإيمان بأن الموجود لابد له من موجد وهو الله تعالى.

المعاد: وهو العث والنشورة مرة أخرى بعد الموت.

وأخيراً ذكرت النبوة وفي بداية موضوع الصلاة تفرق بين الرسول والنبي بأن الأول ما أنزل إله كتا والثاني ما تمسك على الكتاب المنزل من قبله وهو الذي ذكره اعلماء في التفرقة بينهما.

ثم تأتي إلى القسم الثاني وهو فروع ادين حسب تعبيرها، والأبواب الفقهية حسب تعبير الفقهاء، فذكرت باختصار وبعبارات سلسة واضحة كل ما يتعلق بالصلاة من الشروط والأركان والنواقض والهيئات والأبعاض وغيرها.

وقدمت نبذة مختصرة عن الصوم أيضاً مثل ما ذكرت في الصلاة ولكن الاختصار هنا أشد. كما هو الحال في

الحج، فعرفت الحج وتكلمت على الشروط، ووقعت في بعض الأخطاء الواضحة في الحج حيث ترى أنه ليس بواجب على فرض العين.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وفي الزكاة لم تعرفها ومع ذلك فيها أخطاء جسيمة، ولا أدري كيف لم يستدرك عليها المترجم حيث أوجبت الزكاة في خمسة مثاقيل دون ذكر للنصاب والحول، وسوت بين الحبوب والثمار في العشر تفصيل.

ثم أوردت الجهاد فذكرت كعا\تها باختصار بعض أحكامه، ثم تعود مرة أخرى على أحكام الغسل.

وبذلك تنهي الكتابة وتختم الكتاب.

وبالاختصار كانت الرسالة في عصرها عطاء ثمين ولا سيما أنها كتبت منقبل امرأة على دراية بعلوم وفنون أخرى. وتعبر هي وحيدة في العصر، كما أن ماه شرف خانم لها دور الريادة من النساء بالتوغل في العلوم الدينية في عصرها، وقد كتبت هذه الرسالة في مجتمع هيمن عليه الخرافات والانحرافات الفكرية، ولعل خير دليل على ذلك هو ما نقلته مستوره عن جدها الحاج الشيخ الإسلام جمال الدين والذي كان إماماً وخطيباً لعاصمة أردلان سنه عام(١٢٤٨هـ) عندما حاول إصلاح المجتمع وتوضيح القضايا المتعلقة بالإيمان، وتصحيح شطحات بعض الجهال، وبعد إلقاء الخطبة هددوه وأهدروا دمه، ولولا تدخل السلطة والدفاع عنه لما تخلص منهم.(مستوره، تأريخ أردلان، ت: هزار، ص٢١٥-٢١٦). ويتبين للمتأمل أن مستوره اطلعت على مصادر كثيرة أثناء كتابتها لهذه لرسالة الفقهية.( مستورة، شرعيات، ص٤٠).

ورسالة ماه شرف خانم واضحة فهي تهدف إلى الاصلاح في البعدين الأساسيين في الحياة والمجتمع، وهما الجانب الفكري العقدي والتطبيقي العملي لأن الإشكال في عصرها تكمن من البعدين، فإذا أقر الإنسان بوجود الخالق بكونه هو الذي أبدع الخلق ثم يعيده وله صفات كمال ومنزه عن النقص والعبث فعلى الإنسان الذي نسب نفسه لدينه واتباع شريعته فلابد من الإلتزام من البعدين العقدي والعملي، فمن الإيمان يجب الابتعاد عن الخرافات مطلقاً ولا سيما المتشرة في عصرها مما نسبه أهل الانحراف والشطحات إلى الدين.

ومن البعد الثاني أو القسم الثاني على تعبير مستوره الفروع والأحكام العملية فعلى الإنسان المطيع لربه الاجتناب عما ألحق بالعبادات ما ليس لها أصل في الدين، فالعبادات قضايا تعبدية، فلابد من الدليل لإثباتها، فهذه رسالة مستوره جاهدة للتصحيح والإصلاح وهذا الامر هو الذي دعا إليها جدها جمال الدين كما سبق.

**الجانب الاجتماعي في حياة ماه شرف خانم:**

ماه شرف خانم كانت شخصية تمج نحو الخير مثل البحر فهي لم تقصر تجاه شعبها بذلت كلما بوسعها لإسعاد الناس، ولم تسجل عليها أذية لأحد، ومن أعمالها البحث والحديث عن الجانب الاجتماعي، فكانت لها محاولات اجتماعية بغية إصلاح المجتمع والإرشاد نحو الأفضل،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ولعل كتاباتها سواء كانت في مجال التأريخ أو الأدب والشعر ولا سيما كتابها " العقائد" الذي ذكرتْ في مقدمتها وجود بعد الناس ومن حولها عن تعاليم دينهم دفعها للكتابة، وهذ من أجمل مثال لمحاولتها الإصلاحية.

علماً أنها كانت لها جهود اجتماعية ميدانية من إصلاح ذات البين وحل الخصومات والتشجيع على رفع مستوى الثقافي ومساعدة المحتاجين وغير ذلك من هذه المسائل إلا أنها لم تسجلها بشكل واضح ولم تتحدث عنها بالتفصيل، ولم أجد من تحدث عن جهود ماه شرف خانم من أهل عصرها ومع ذلك لا نشك بهذه الجهود، والدليل على ذلك كتاباتها عن الوقائع والأحداث، وكشف القناع عن المتجاوزين حتى ولو كان من أقربائها، فهي لم ترفع القلم عن هؤلاء، وهي تتحدث بأوضح الصورة عن الذين جمعوا المال بطريق غير شرعي من أبناء المجتمع، وهذا يثبت كراهتها للفساد في المجتمع بغض النظر عمن قام به، والتصدي للفساد محاولة للإصلاح في أرقى صورها.

بل وصل الأمر إلى سرد صفات زوجها خسرو خان لما تكتب أنه كان رجلاً سهلاً في التعامل ولطيف الحديث في وقت يتعامل مع الآخر بالإحترام حتى مع المخالف مهما أمكن، وجوّداً أسعف شعبه عند القحط وأنقذهم بمال الإمارة، ومع ذلك تكتب أنه كان يتجاوز في ميله للنساء خارج الإطار الشرعي وعاشق للخمر.( مستوره، تأريخ أردلان، ت: هـژار، ص٢٠٦-٢١٢). وشرب الخمر وتجاوز الحدود فيما يتعلق بالنساء من أسباب المشكلات الاجتماعية في جميع المجتمعات.

وكذلك لما ترفض الزواج في البداية بخسرو خان وهذا موقف إصلاحي تريد أن تقول ليس لأحد أن يقرر على مستقبل البنت دون اطلاعها المسبق، هي نجحت في المحاولة أو لا هذا موضوع آخر.

وكذلك حديثها عن الخونة في الإمارة وتصويرهم في صورة قبيحة معناه أنها ضد الخيانة وهذه محاولة لإصلاح المجتمع وخلاصه من هذه الجرثومة.

ولو وسّعنا النطاق نقول ان كتابتها للتأريخ هي محاولة اجتماعية ونداء لولاة الأمور وتذكيرهم بأسباب الاستقرار والخراب، فإذا تفضلون بقاء الولاية فعليكم بالابتعاد عن أسباب السقوط والاضطراب وعليكم بأسباب الإزدهار والتطور من العدل والسماح وغير ذلك.

ولعل أشعارها أيضاً من الوسائل الإصلاحية التي من خلالها صورت واقع الرعية ومعاناتهم مع إظهار الجوانب الإيجابية إن كان وخصوصاً هي كانت شاعرة مرموقة في عصرها، وقد كتبت آلافاً من الأبيات الشعرية، وكانت تكتب الشعر بالفارسية والكوردية لكن ضاعت أشعارها والتي بين يدي القراء الى عبارة عن ألفيت بيت فقط. (مستوره، تأريخ أردلان، ص١٥).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**الخاتمة:**

من خلال هذه الأوراق وتجولي بين تأريخ الإمارات الكوردية وانشغالي بحياة ماه شرف خانم مع تأملاتي في جهودها الإدارية والاجتماعية والعلوم الإسلامية، توصلت إلى نتائج منها:

١) الشعب الكوردي من الشعوب الأصلية في المنطقة، وله بقعة جغرافية معروفة، وكل ما يهم هذا الشعب هو إدارة مناطقه بنفسه بعيداً عن الوصاية والتدخل.

٢) كثرة الانشقاقات داخل صفوف الإمارات الكوردية، ولعل هذه سمة بارزة في أكثر الدول والإمارات الكوردية، والالتجاء إلى الأجنبي لحل المشكلات الداخلية.

٣) تبين لنا قيمة الكتب والمؤلفات التأريخية فيما لها صلة بتأريخ الشعب الكوردي، فلولا هذه المصادر لما كنا نستطيع أن ندعي أن آباؤنا كانوا لهم الدول والإمارات ولنا حضارة وتأريخ.

٤) الإمارة الاردلانية حكمت قرابة سبعة قرون، وهي فترة زمنية طويلة جداً بغض النظر عن قوتها وضعفها وتوسع نفوذها وتضييق الخناق عليها أحياناً.

٥) ماه شرف خانم"مستوره" من النساء العفيفات الفضليات، هي شخصية بارزة في تأريخ أردلان وهي جمعت بين علم وفنون شتى في حياتها، فكانت ديبة وشاعرة وكاتبة إسلامية، إضافة إلى كونها مؤرخة دقيقة، ولها خط جميل.

٦) رسالة شرعيات التي كتبتها ماه شرف خانم تعتبر في وقتها فريدة من حيث مشاركة النساء في المجال العلوم الشرعية ، وبيان الشريعة على جانبي النظرية والعملية.

من توصيات البحث : حاجتنا للاهتمام بمثل هذه الشخصيات النادرة في تأريخنا وينبغي على الباحثين إعادة النظر في آثاره هذه الشخصيات بالوقوف على جهودهم في المجالات المختلفة بغية تعرف الجيل الجديد بتأريخنا والاستفادة منهم.

**المصادر والمراجع :**


١. ابن الأثير، علي بن أبي الكرم محمد بن محمد بن عبد الكريم(ت ٦٣٠ هـ)،( ١٤١٧ هـ/١٩٩٧م)، الكامل في التاريخ، الطبعة: الأولى، بيروت— لبنان: دار الكتاب العربي.

٢. ابن خلدون، عبد الرحمن(٧٣٢ -٨٠٨ هـ)، العِبَر وديوان المبتدأ والخبر في تاريخ العرب والبربر ومن عاصرهم من ذوي الشأن الأكبر، (١٤٠١هـ-١٩٨١م)، ط١، بيروت: دار الفكر.

٣. بدليسى، شرفخان،(١٩٨٢م)، شرفنامه، ت: هژار، ط٢، طهران، إيران: مطبعة الجواهري.

٤. البدليسي، شرفخان،(٢٠٠٦م)، شرفنامه في تأريخ الدول والإمارات الكردية، مؤلف بالفارسي، ترجمه للعربية: محمد علي عوني، ط٢، دار الزمان، دمشق- سوريا.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٥. حسن زاده، صديق بوره كەيي، (٢٧٧٠ )كوردي، ديواني مەستوري كوردستاني، إيران، بانه كوردستان .
٦. حسن، قادر محمد، (٢٠١١م) الإمارات الكوردية في العهد البويهي، الطبعة الأولى، مؤسسة موكرياني للبحوث والنشر، مطبعة رۆژهەلات: أربيل.
٧. الحسيني، على نقي،(٢٠٠٢م) مێژووی٦٤١ ساڵەی فەرمانڕەوایی ئەردەلانییەکان لە ناوچەی ژێر دەستەڵاتی ئێران. ترجمە: ئاسۆس هردی، السليمانية: مطبعة: حسن عبدالكريم.
٨. حماد، د. حسين فهد،(٢٠٠٣م)، موسوعة الآثار التأريخية، ط ١، عمان الأردن: دار أسامة.
٩. الحموي، محمَّد بن سالم بن نصرالله(ت ٦٩٧ هـ)،(١٣٧٧هـ-١٩٥٧م)، مفرج الكروب في أخبار بني أيوب، تحقيق: د. سعيد عبد الفتاح عاشور، جمهورية مصر العربية، القاهرة: المطبعة الأميرية.
١٠. الخَزْرَجي، مسعر بن المهلهل، الرسالة الثانية،(١٩٥٥م)، اعتنى بنشرها: و.مينورسكي، مطبعة جامعة القاهرة.
١١. روحاني، ماجد،(٢٠٠٥م) ديوان مستوره، الطبعة الأولى، مطبعة آراس: أربيل.
١٢. روحاني، ماجد،(٢٠٠٦م)، بيرئانيني مستوره، بنەماڵەي مستورەو چاوێك لەكەسايەتي خۆي، الطبعة الأولى، مطبعة آراس: أربيل.
١٣. ريج، كلوديوس جيمس،(١٤٢٩هـ=٢٠٠٨ م). رحلة ريج- المقيم البريطاني في العراق عام ١٨٢٠ إلى بغداد- كردستان– إيران. ترجمة: اللواء بهاء الدين نوري، ط١، الدار العربية للموسوعات.
١٤. زكي بك، محمد أمين،(١٩٤٨م)، تأريخ الدول والأمارات الكردية في العهد الإسلامي، مطبعة السعادة: مصر.
١٥. سبحاني، محمد، أقيانوس أدبيات ٢٩/ خرداد/١٣٩٢ ه ش، زندكي نامه مستوره (http://ms_78.rzb.ir/post/35).
١٦. شمس الدين، يوسف بن قِزْأُوغلي بن عبد الله(٥٨١-٦٥٤ هـ)،(١٤٣٤هـ- ٢٠١٣م) مرآة الزمان في تواريخ الأعيان، الطبعة: الأولى. دار الرسالة العالمية، دمشق – سوريا.
١٧. القشيري، مسلم بن الحجاج النيسابوري،(١٣٧٤ هـ ١٩٥٥م)، صحيح مسلم، مطبعة عيسى البابي الحلبي وشركاه، القاهرة.
١٨. كلهر، مطالعات تأريخ فرهنكي، ١٣٩٧ ش ه، العام ١٠، العدد ٣٧ .
١٩. كوردستاني، علي أكبر، (٢٠٠٢م)، الحديقة الناصرية في تأريخ وجكرافيا كردستان، ترجمه إلى العربية: جان دوست. الطبعة الأولى، أربيل: مطبعة وزارة التربية.
٢٠. كوردستاني، محمد مردوخ، تأريخ كورد وكوردستان، الطبعة الثانية.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

٢١. لونكريك، ستيفن هيمسلي(١٩٦٨م)، أربعة قرون من تأريخ العراق الحديث، كتاب يبحث عن تأريخ العراق في العصور المظلمة. ترجمة جعفر الخياط، ط٤، بغداد.
٢٢. مركز الأخبار، الثلاثاء ٨ فبراير ٢٠٢٢م ٠٨:٠٨)، ماه شرف خانم... بصمة واضحة في تاريخ أردلان، /https://jinhaagency.com)
٢٣. مستورة، ماه شرف خاتون، (٢٠٠٢م)، ميٚژووي ئەردەڵان. ترجمه: هـژار موكرياني. الطبعة الأولى، مطبعة وزارة التربية: أربيل.
٢٤. مستوره، ماه شرف خانم، شرعيات، ٢٠٠٥م، ت: نويد، ط١، مطبعة مؤسسة النشر آراس: أربيل.
٢٥. الملك المؤيد، إسماعيل بن علي بن محمود، صاحب حماة(ت ٧٣٢هـ)، المختصر في أخبار البشر، الطبعة: الأولى، المطبعة الحسينية المصرية.
٢٦. موكرياني، حسين حوزني،(٢٠٠٧م)، الأعمال الكاملة، الطبعة الألى، مؤسسة: ئاراس، أربيل.
٢٧. ناصر، د. هاشم،(٢٠٠٥م) الإدارة المعاصرة بين التنظير والتطبيق، د.ط، عمان، الأدرن: دار أسامة.
٢٨. هدايت، رضا قلي خان محمد هادي،(١٣٨٢ ش ق) مجمع الفصحاء، الناشر: أمير كبير، تهران، إيران.
٢٩. وكا لة ت سنيم الدول ية،(٢٠١٦/١٢/٢٥م) م عالم أثر ية في مدي نة سنندج...، .https://www.tasnimnews.com/
٣٠. وهبي بك، توفيق معروف،(٢٠٠٦م)، الآثار الكاملة، ط١، إعداد: رفيق صالح، السليمانية .

## بەشداري ژنان لە بواري بەڕێوەبردن و زانستە شەرعیەکان لە ئەمارەتە کوردیەکان مەستورە خانمي ئەردەڵاني بەنمونە

**پۆختە:**

ڕۆڵ و بەشداري ژنان لە کایە جیاوازەکان وەک بەڕێوە بردن و بواري زانستي هەر لە سەدەکاني سەرەتاي هاتني ئیسلام هەمیشە بەرچاو بووەو، لەزانستەکاني گێڕانەوەي فەرموودەو زمان و تێگەیشتن و هتد بوشدار بوون جێ دەستیان دیار بووە، هەرچۆن لەبەڕێوە بردنیش بەشداري بەرچاویان هەبووە بەتایبەت ئەو دیاردەیە زیاترو زۆرتر هەستي پێ دەکرێت لە ئیمارەتە کوردیەکان، بەجۆرێ ژنان پۆستي باڵایان پێ براوە هەر لەسەردەمي سەلاحەدیني ئەیوبیەوە کە (ست شامي) خاتوني خوشکي و(عیسمەت) خاتووني خێزاني و چەندیني تر لەژناني بنەماڵەکاني کە پۆست و پلەي بەڕێوەبردنیان هەبووە، ئەم دیاردە بەردەوام بووە و لە میري سۆران خانزاد هەبووەو لە ئیمارەتي ئەردەڵانیش چەندین ژني خاوەن پێگەو دەسەڵات هەبووە یەک لەوانە ماه شرف خانم کەناسراوە بە مەستورەي ئەردەڵان بووە، شایاني باسە ئەم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خاتوونە لەچەندین بواري جیاوازدا ڕۆڵي هەبووەو خزمەتي کردووە، ئەو لەلایەکەوە هاوکاري خەسرەوخاني هاوژیني بووەو ماوەیەک وەک وەزیر کاري کردووەو لەلایەکي تر مێژوو نووس بووەو هەروەها شاعیرو ئەدیبێکي بەتوانا بووەو هەوڵیشي داوە لە بواري زانستە ئیسلامیەکان خزمەتێک پێشکەشي کوردەواري بکات ئەگەرچي خۆي گووتەني لەو بوارەدا کەمتر زانایي دەرکەوتووە، ماه شرف خان بەهۆي لەدونیا دەرچووني هاوژیني ئازارێکي زۆري بینیوەو تا دوارۆژەکاني ژیاني بەو ئازارەوە ناڵاندوویەتي، دواتر ئاوارە بوونیش هێندەي تر ژیاني تاڵ دەکات و تس لەئاوارەیي و لەشاري سلیماني کۆچي یەکجاري دەکات.

**پەیڤێن سەرەکی**: *میرنشینی ئەردەڵان، ژن، بابەتی ئیداری، بابەتی ئایینی، ماهشەرەف خانم*

**Contributions of women in administrative and religious affairs in the Emirate of Ardalan Mah Sharaf Khanum (Mastoura) as an example**

**Abstract**:

The role of women in the various fields of life has been manifested since the preferred centuries of the Islamic ages, so they spread sciences such as narration, interpretation, language, literature, etc., and they also had participation in affairs related to the affairs of the state of the country, and this phenomenon is perhaps more prevalent countries and Kurdish countries, where you find women who imitated Great positions in the state, also women became responsible for the people, such as (Miss-Sham) (d. 616 AH), the sister of Salah al-Din, and his wife Esma al-Din Khatun (d. 581 AH), and Khanzad, Princess of Soran (d. 1006), and women preserved their status and continued their dominance in different periods. Among the first women in the later periods who had a role in the state of the Jordanian country were: Mah Sharaf Khanum, known as (Mastoura Al-Ardlaniya), who had remarkable contributions, whether it was in the administration of the state, inspecting the people with her husband Khosrow Khan, or clarifying religious matters from doctrinal and jurisprudential rulings Through her writings and councils, the position of this woman, a scholar with experience in life and the administration of the country, has been in our imagination for quite some time, as her role in the country of Ardalan deserves research and study, and then the huge shock she experienced was the death of her husband in The spring of her life, and the events that followed after the death of Khosrow Khan need pause and contemplation, as it should talk about her effects, especially her books related to social, jurisprudence, and others, and then we must address her movements from the city of Sunna in eastern Kurdistan to the city of Sulaymaniyah, and her works in the second homeland.

**Key words**: *Emirate of Ardalan, women, administrative matters, religious matters, Mah Sharaf Khanim*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**د. حسام السيد ذكي الإمام شلبي**

قسم التاريخ والحضارة - كلية اللغة العربية -جامعة الأزهر بالمنصورة/جمهورية مصر العربية

**الملخص:**

تلعب الولايات المتحدة الأمريكية منذ ظهورها كقوى عظمى دورًا مهمًا في تطورات القضية الكُردية، وقد ارتبط موقفها بمحددات سياسية واقتصادية وتاريخية فرضتها دوائر صنع القرار السياسي وجماعات الضغط داخل الولايات المتحدة الأمريكية، هذه القوى المؤثرة في السياسة الأمريكية تستند دائما –بجانب المصالح السياسية والاقتصادية- إلى الجذور التاريخية للقضية، للتعرف على حقيقتها وطبيعتها والعوامل المؤثرة فيها وأوجه الاستفادة منها، ومن ثم فإن هذه الدراسة تطمح إلى التعرف على الجذور التاريخية لتعرف الأمريكيين على القضية الكُردية، وفي نفس الوقت التوثيق لتاريخ الإمارات الكُردية في المصادر الأمريكية المعاصرة.

وردت أول إشارة إلى الكرد في الصحف الأمريكية –في إطار الأعداد التي أتيح للباحث الوصول إليها - في الرابع من نوفمبر/تشرين الثاني ١٨٢٥م بصحيفة " ناشونال إنتيليجنسر National Intelligencer" –وسيتم الإشارة إلى ما ذكر في المقال ضمن البحث-، ومنذ ذلك الوقت نشرت الصحف الأمريكية عددًا من الموضوعات السياسية والاقتصادية والاجتماعية المتعلقة بالإمارات الكُردية خلال النصف الأول من القرن التاسع عشر الميلادي، فتناولت بجانب رسائل ومذكرات المنصرين الأمريكان وغيرهم من الأوروبيين، أحوال الإمارات الكُردية، وقد لعبت هذه المصادر دورًا بارزًا في رسم الصورة الذهنية عن الكُرد في الولايات المتحدة الأمريكية.

ومن ثم فإن هذه الدراسة ستتناول الأوضاع السياسية والاقتصادية والاجتماعية للإمارات الكُردية في المصادر الأمريكية (الصحف ومذكرات المنصرين) خلال النصف الأول من القرن التاسع عشر.

**وتنقسم هذه الدراسة إلى أربعة محاور:**

يتناول المحور الأول الحملات العثمانية على الإمارات الكُردية، ويعرض المحور الثاني لدور الكُرد في الحروب الإقليمية والدولية ويعالج المحور الثالث تناول المصادر الأمريكية لأوضاع الكُرد الاقتصادية والاجتماعية، ويناقش المحور الرابع رؤية المصادر الأمريكية للكرد وكردستان.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وقد اعتمدت هذه الدراسة على عدد من الصحف الأمريكية، منها: "صحيفة نيويورك سبيكتتور New York Spectator"، وليبريتور Liberator، ونا شونال إنتيليجنسر National Intelligencer"، وغيرها من الصحف، بالإضافة إلى مذكرات القس الأمريكي هرشيو ساوثجيت Horatio Southgate، بجانب مجموعة من المراجع التي أسهمت في استكمال جوانب النقص.

**الكلمات المفتاحية:** *الكُرد، الصحف الأمريكية، الأمير بدرخان، محمد باشا السوراني، الحملات العثمانية*

---

## أولاً- الحملات العثمانية على الإمارات الكُردية:

من المعروف أن خارطة كُردستان السياسية في التاريخ الحديث كانت تتشكل من العديد من الإمارات الكُردية التي تمتعت بنوع من الاستقلال الذاتي[1]، واستطاعت أن تحافظ على سلطاتها المحلية حتى عام ١٨٥١م، في ذلك الوقت حاولت الدولة العثمانية فرض المزيد من السلطات على الإمارات الكُردية عبر سلسلة من الإجراءات التعسفية الإدارية والاقتصادية والسياسية في كُردستان، وكرد فعل اتخذ الكُرد طريق المقاومة المسلحة للدفاع عن مصالحهم، ونشبت جراء ذلك انتفاضات وحركات كردية مسلحة كثيرة (ذكي، ٢٠١٩، ص ص٤٨٦-٤٨٧)، وقد شغلت هذه الحركات الجزء الأهم من أخبار الصحف الأمريكية.

كانت البداية في الثامن عشر من أغسطس/آب ١٨٢٦م؛ حيث نشرت صحيفة "أورورا وفرانكلين جازيت Aurora and Franklin Gazette" مقالاً بعنوان "ثورة الإنكشارية المتأخرة" وذكرت أنها نقلت هذا المقال من الصحيفة النمساوية "Austrian Observer"، تحدث المقال عن تمرد الإنكشارية ضد السلطان محمود الثاني (١٨٠٨-١٨٣٩م) في ظل مساعيه لإنشاء جيش نظامي حديث، والقضاء على الإنكشارية، وأن السلطان محمود قضي على الإنكشارية بالقتل والنفي، وعلى الرغم من أن المقال بالكامل كان عن الإنكشارية، إلا أنه ورد به عبارة مبهمة عن الكُرد ما نصها ((وسيكون للأكراد نفس المصير The Kurds will have the same fate))، ولم يُذكر في المقال أي توضيح بخصوص هذه العبارة(Aurora and Franklin Gazette, Volume 15 , Issue 2601, Friday, Aug. 18, 1826).

وفي نفس اليوم نشرت صحيفة "نيويورك سبيكتتور New York Spectator" نفس المقال بعنوان "الثورة المتأخرة في القسطنطينية"، وذكرت أنه منقول من صحيفة إيتولي Etoile( New York Spectator, Volume 29, Friday, Aug. 18, 1826)، وكذا نشرته صحيفة ديلي نا شيونال "Daily National Journal" في الثاني والعشرين من أغسطس/آب عام ١٨٢٦م تحت عنوان "الإنكشارية"(Daily National Journal: Volume 3 , Issue 627, Tuesday, Aug. 22, 1826 ).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ومن الراجح أن المقصود بذلك هو عزم السلطان محمود الثاني على القضاء على السلطة المحلية للإمارات الكُردية، وتطبيق سياسة المركزية في الحكم، إلا أن الإشارة إلى الكُرد دون غيرهم له دلالات مهمة، خاصة وأن النزعات الانفصالية كانت قد ضربت كافة أنحاء الدولة العثمانية، كالولاة المماليك في بغداد، والجليليين في الموصل، ومحمد علي باشا في مصر، وغيرهم، والراجح أن الإشارة إلى الكُرد دون غيرهم يعود لعدة أسباب، من أبرزها:

- وقوع كردستان على حدود الدولتين الفارسية والروسية بجانب العثمانية، وخشية المسؤولين العثمانيين من أن تتخذ الدولتين من الكيانات الكُردية وسيلة لزعزعة الاستقرار في الدولة العثمانية، خاصة وأن الأوضاع السياسية بينهما كانت مضطربة( هروتي، ٢٠٠٨م، ص ص١٧٩-١٨٠).
- تطلع بعض أمراء الكُرد إلى التخلص من السيادة العثمانية، وكان من أبرزهم: الأمير محمد باشا أمير إمارة سوران، الذي قام بتحصين عاصمة الإمارة "راوندوز"، وتوسيع حدود إماراته، وفي عام ١٨١٨م نصب نفسه حاكماً مستقلاً، وشرع في صك العملة النقدية من الذهب والفضة ( جليل، وآخرون، ٢٠١٢م، ص ص١٧-١٨).

ويبدو أن هذه العبارة تناقلتها المصادر عن المسئولين العثمانيين كرسالة تهديد للأكراد بالرضوخ للحكم العثماني، أو القتل والنفي كالإنكشارية، إلا أن المصاعب التي واجهتها الدولة العثمانية حالت دون تنفيذ خطتها، وبخاصة بعد اندلاع الحرب العثمانية الروسية ١٨٢٨-١٨٢٩م، ونشوب الصراع مع والي مصر محمد علي باشا في عام ١٨٣١م، وما تبع ذلك من إلحاق القوات المصرية بقيادة إبراهيم باشا الهزيمة بالقوات العثمانية.

وعلى أية حال، فبعد أن استقرت الأمور في الدولة العثمانية جهزت حملة ضخمة بقيادة محمد رشيد باشا في عام ١٨٣٤م لإخضاع الكُرد، وكان هدفها الرئيسي القضاء على حكم الأمير محمد باشا السوراني (الدوسكي، ٢٠٠٦، ص ص١٣٩-١٤٠).

كانت هذه الحملة محط اهتمام الصحف الأمريكية، ففي السادس والعشرين من فبراير/ شباط ١٨٣٥م نشرت صحيفة "نيويورك سباكتتور New York Spectator" خبراً مقتضباً جاء فيه: خاضت القوات التركية عدة مواجهات مع الأكراد الذين ثاروا، واضطر سرعسكر Seraskier[٢] لطلب تعزيزات(New York Spectator: Volume 38, Thursday, Feb. 26, 1835).

وفي التاسع والعشرين من يونيو/حزيران ١٨٣٥م نشرت صحيفة "نيويورك سباكتتور" في إطار حديثها عن الأوضاع في الدول العثمانية بأن تعزيزات تصل إلى الجيش بشكل شبه مستمر، ولا يمكن أن تكون مخصصة للأكراد فقط، لأنه حسب الروايات الأخيرة من محمد رشيد باشا بأنه حقق نجاحاً ضدهم (نجح في القضاء عليهم)، وفي إحدى الاشتباكات الأخيرة أسرى ١٠٠٠ شخص،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

واستسلم العديد من الرؤساء، وبالتالي فالتحركات الأخيرة استعداداً لشيء أكثر أهمية، ومن وجهة النظر الموضوعية هذه الاستعدادات لمواجهة محمد علي باشا بالطبع ( New York Spectator: Volume 38, Monday, June 29, 1835).

ويبدو أن هذا الخبر غير صحيح، فتشير المصادر التاريخية أن الحملة العثمانية واجهت مقاومة عنيفة من قبل الكُرد، ولم تتمكن من دخول رواندوز إلا في نهاية عام ١٨٣٦م( جليل، وآخرون، ٢٠١٢م، ص ص١٩-٢٠).

والراجح أن هذه التعزيزات كانت لدعم الحملة العثمانية ضد الأكراد، وكانت رواية محمد رشيد باشا مضللة بهدف تشجيع السلطان العثماني على إرسال تعزيزات، والتستر على إخفاقاته.

وفي الثاني عشر من نوفمبر/تشرين الثاني ١٨٣٥م، نشرت صحيفة فرجينيا فري برس Virginia Free Press، خبراً جاء فيه: محمد رشيد باشا القائد العام للسلطان ضد الأكراد، لديه جيش مكون من ١٦٠ ألف رجل، أسر مؤخراً ٣٠٠ رجل كانوا على وشك الغرق في البحر الأسود في طريقهم إلى القسطنطينية، ومن المحتمل أنهم ينتظرون موتاً أكثر إيلاماً ومخزياً( Virginia Free Press: Volume 28, Issue 41, Thursday, Nov. 12, 1835).

ولا يوجد بالمصادر -التي رجع إليها الباحث- ما يفيد بصحة هذه المعلومة، ولم تشر المصادر الأمريكية إلى أسباب توجههم نحو الآستانة، وهذا ما يطرح العديد من الفرضيات، منها: أنهم حاولوا الالتفاف خلف الجيش العثماني لقطع طريق الإمدادات، أو لإثارة الفوضة في الآستانة لإرغام الجيش على العثماني على التراجع، أو الاستنجاد بالسلطان العثماني، خاصة في ظل أعمال السلب والنهب التي كان يقوم بها الجيش العثماني، -ولا أميل إلى هذه الفرضية-، ويبدو أن توجههم كان لضرب خطوط الإمداد، أو إثارة الفوضى لإرغام الجيش على التراجع، ويؤيد هذه الفرضية ما ذكرته الصحيفة بأن مصيرهم الموت، وهذه العقوبة تدل على عزمهم القيام بعمل عسكري.

وفي الخامس من نوفمبر/تشرين الثاني ١٨٣٦م نشرت صحيفة ليبريتور Liberator خبراً بعنوان ( حرب مرعبة "رهيبة") جاء فيه: رسالة من رجل إنجليزي في نينوي على نهر دجلة، نقل بعض التفاصيل عن الجيش التركي تحت قيادة رشيد باشا من أجل إخضاع الكُرد، يبدو أن الزعيم الكُردي يشوي (يحرق) كل الأسرى الذين يأسرهم من الباشا أحياء، وأن الباشا ينتقم من خلال خنق (قتل) جميع الأكراد الذين يسقطون في يده، وهكذا يستمر الصراع بشراسة تتجاوز حتى أهوال الحرب الإسبانية(Liberator: Volume 6, Issue 45, Saturday, Nov. 5, 1836).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ويشير هذا الخبر إلى صحة ما ذكرته المصادر من تعرض المناطق التي كانت تقع في طريق الجيش العثماني للنهب والتخريب، والمقاومة العنيفة للأكراد، ونتيجة لذلك استمرت الحملة لأكثر من عامين في كردستان.

وفيما يخص قتل الأسري من الجانبين فمن الوارد حدوثه، نظراً لشراسة الحرب ومحاولة العثمانيين إنهائها في أسرع وقت، وربما تكون هذه الأنباء كانت في إطار الحرب النفسية من الجانبين، وهذا ما دفع مرسل الرسالة -لم تذكر الصحيفة اسمه- إلى عدم تأكيد ذلك.

وتجدر الإشارة أن الرفض الكُردي للحكم العثماني لم يكن قاصراً على الأمراء الكُرد فقط، بل شمل كافة طوائف المجتمع الكُردي، ولم يرض الكُرد بهذه الإجراءات القمعية، وكانوا مدركين لحقيقة للأطماع العثمانية، فيذكر القس الأمريكي هرشيو ساوثجيت Horatio Southgate[٣] في مذكراته أنه التقى تاجراً كردياً من ديار بكر اشتكى إليه من تحركات السلطان ضد شعبه، ويذكر القس أنه لم يتمكن من إقناعه بأن ذلك لصالحهم(Southgate, 1840, Vol. I, p.206).

وعلى أية حال، فقد أسفرت هذه الحملة عن استسلام الأمير محمد، وأرسل أسيراً إلى إسطنبول؛ حيث تم قتله، وتفككت إمارته، وفي يناير/ كانون الثاني ١٨٣٧م مات رشيد باشا إثر إصابته بالكوليرا، وخلفه حافظ باشا، الذي استأنف العمليات العسكرية ضد الكُرد (جليل، وآخرون، ٢٠١٢م، ص ٢٠).

وقد نشرت صحيفة نورث أمريكان North American خبراً عن هذه الحملة لكن بعد انتهائها؛ حيث نشر مقال في السادس من نوفمبر/تشرين الثاني ١٨٣٩م بعنوان "جيش السلطان في آسيا الصغرى"، وذكرت الصحيفة أن هذه المعلومات أرسلها ضابط بروسي (ألماني)[٤] التحق للخدمة بالجيش السلطاني تحت قيادة حافظ باشا، وكان من بين ما ذكره تحركه مع القوات العثمانية في شهر مايو إلى كردستان لإخماد تمرد الأكراد بين بيتليس وموش بالقرب من بحيرة وان Van، وأنهم تمكنوا من القضاء على التمرد(North American: Volume 1, Issue 202, Saturday, Nov. 16, 1839).

إلا أن حملة حافظ باشا توقفت إثر تجدد الخلاف بين محمد علي باشا والسلطان العثماني، وإثر ذلك أمر الباب العالي حافظ باشا بالتوجه وقواته إلى بلاد الشام لمحاربة الجيش المصري؛ حيث هزم الجيش العثماني في معركة نصيبين في عام ١٨٣٩م( جليل، وآخرون، ٢٠١٢م، ص ٢٠).

وفي الحادي عشر من سبتمبر/أيلول ١٨٣٩م نشرت صحيفة نيويورك هيرالد New York Herald مقالاً عن الحرب العثمانية – المصرية، وذكرت أن حافظ باشا بعد هزيمته على يد قوات



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

إبراهيم باشا توجه مع بقايا جيشه إلى كردستان، وكان عليه أن يدافع عن نفسه ضد الأكراد الثائرين الذين هاجموه، وبعد صراع شديد وجد هو وعدد قليل من أتباعه الأمان في الفرار، وأخذ الأكراد بعض الذخيرة، و٢٧ ألف صندوق من الكنز به (١٣ مليون ونصف من القروش)( New York Herald: Volume 5, Issue 102, Wednesday, Sept. 11, 1839).

والراجح أن هذا الخبر يعود إلى تمرد الكُرد في الجيش العثماني، فخلال توجه حافظ باشا لمواجهة الجيش المصري قام بتشكيل قوة كُردية، وأجبرهم على القتال في صفوف الجيش العثماني، وبعد هزيمة العثمانيين تمرد الكُرد، وبادروا إلى توجيه بنادقهم إلى حافظ باشا وقواته (هروتي، ٢٠٠٨م، ص٢١١).

وفي العاشر من مايو/آيار ١٨٤١م نشرت صحيفة بوسطن كورير Boston Courier خبراً نقلاً عن صحيفة أوجسبورج جازيت Augsburg Gazette يفيد باندلاع تمرد في المناطق الكُردية ((المناطق التي يثور فيها الأكراد))( Boston Courier: Volume 15, Issue 1778, Monday, May 10, 1841).

وربما يقصد بهذا التمرد الصراع الذي اندلاع بين الأمير الكُردي "نور الله" مير "هكاري" وابن أخيه "سليمان"، فقد كان أحد أهم أتباع مير "هكاري" هو "المار شمعون" الزعيم الروحي للآشوريين، وخلال الصراع بين الأمراء الكُرد ساند "المار شمعون" الأمير "سليمان" ضد عمه، وعقب انتصار "نور الله" على خصمه قام بالهجوم على القرى الآشورية ومقر البطريركية في "قودشانيس" عام ١٨٤١م، ومنذ ذلك الوقت تصاعدت الخلافات بين الكُرد والآشوريين في المنطقة، ووصلت ذروتها في عام ١٨٤٣م، وأسهم في إشعال الصراع النشاط التبشيري، والصراع الذي نشب بين "المار شمعون" واثنين من رجال الدين الآشوريين المؤثرين، وتحالفهم مع أمراء الكُرد، كل هذه الأسباب مجتمعة بالإضافة إلى معارضة "المار شمعون" للأمير "نور الله" دفعت الأخير إلى إقامة تحالف مع الأمير "بدرخان" أمير "بوتان" وإسماعيل باشا" آغا العمادية، وفي يوليو/ تموز ١٨٤٣ هاجم الحلف الكُردي "هكاري" فدمروا قرى الآشوريين وطردوهم منها، وإثر ذلك اندلع صراع بين الكُرد والآشوريين في المنطقة، لم يتوقف إلا بعد أن أرسل السلطان العثماني جيشاً إلى المنطقة، واشتبك مع الكُرد، وكان ذلك بضغط من الدول الأوربية لحماية الأشوريين(مكدول، ٢٠٠٤، ص ص٩٤-٩٦).

ويؤيد ذلك الاحتمال هو تناول الصحف الأمريكية لقضية الآشوريين بين عامي ١٨٤١ و١٨٤٦م، فقد كانت هذه القضية مثار اهتمام واضح من الصحف الأمريكية، ولم تضف الصحف جديداً، فحملت الصحف الكُرد مسؤولية ما يتعرض له الآشوريون، ووصفتهم بأبشع الألفاظ ك (المتوحشين وغيرها)، ومن هذه الصحف صحيفة بوسطن كورير Boston Courier ( Boston Courier: Volume 13, Issue 23, Wednesday, Oct. 11, 1843)، وصحيفة ناشونال إنتيليجنسر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

National Intelligencer: Volume 31, Issue 9560, Monday, Oct. 9, ) "National Intelligencer 1843)، وغيرها من الصحف الأمريكية التي سارت على نفس النهج

ويبدو أن السبب الرئيس لانحياز الصحف الأمريكية إلى جانب الأشوريين يرجع إلى تصنيف الصحف للصراع على اعتباره صراعاً بين النصارى (المسحيين) والمسلمين، ومن ثم فقد انحازت الصحف بشكل واضح إلى جانب الأشوريين، وحملت الكُرد كامل المسؤولية.

وفي التاسع عشر من سبتمبر/أيلول ١٨٤٥م نشرت صحيفة أطلس Atlas خبراً عن تمرد الأكراد في مقاطعة وان، وذكرت أن السبب الرئيس لاندلاعها فرض ضرائب جديدة، وتم إرسال القوات لإخضاعهم(Atlas: Volume 14, Issue 69, Friday, Sept. 19, 1845).

وفي العشرين من سبتمبر/أيلول ١٨٤٥ ذكرت صحيفة أطلس أن سكان فان وتشيلدري Tschildri طردوا الولاة المعينين من قبل باشا أرضروم، واستدعوا الباي الكُردي، وتمكن زعيم كردي يحمل اسم حمدي بك Hamdy Bey على رأس مجموعة من المتمردين من السيطرة على بلدة قارس kars، وقد أرسل الباشا قوات إضافية للمساعدة في استعادة المدينة( Atlas: Volume 14 , Issue 70, Saturday, Sept. 20, 1845).

ومن المرجح أن تكون التحركات التى تحدثت عنها الصحف لحلفاء "بدرخان باشا" أمير "بوتان"، فخلال الفترة ما بين عامي ١٨١٢ -١٨٤٥م قام الأمير "بدرخان" بسلسلة من الإجراءات في الإمارة بهدف الاستقلال عن الدولة العثمانية، فقام بتشكيل جيش حديث ومدرب من الكُرد، وأنشأ معملاً للسلاح، وآخر للذخيرة (عثمان، د.ت، ص٤٨)، وفي عام ١٢٥٨هـ (١٨٤٢-١٨٤٣م) أصدر عملة معدنية خاصة بإمارته كتب على أحد جانبيها "أمير بوتان بدرخان" وعلى الجانب الآخر" سنة ١٢٥٨هـ"، وكان الدعاء يردد له في خطب الجمعة في المساجد(هروتي، ٢٠٠٨م، ص ص ٢١١-٢١٤).

وقد اتسع نطاق حركة الأمير "بدرخان" عندما دعا لعقد مؤتمر كُردي يسمي بـ "الحلف المقدس"، وقد لبى العديد من زعماء الكُرد الدعوة، ودخلوا في "الحلف المقدس" للقيام بثورة عامة ضد الإمبراطورية العثمانية لتحرير كُردستان وتشكيل دولة كُردية(عثمان، د.ت، ص ص٤٨-٥٠)

وقد تابعت الصحف الأمريكية الحملة العثماذية على إمارة بوتان، ففي الرابع عشر من أغسطس/آب ١٨٤٧م نشرت صحيفة ناشونال إنتيليجنسر "National Intelligencer" مقالاً بعنوان "تركيا" جاء فيه: ((أنه وفقاً لروايات لندن الواردة من القسطنطينية في السابع عشر من يوليو/ تموز، فإن الأخبار الواردة من كردستان تفيد بأن بدرخان باي -باشا- بعد أن قام بعدة هجمات على القوات التركية بقيادة عثمان باشا، وهزم فيها، تركه جميع جنوده تقريباً وكل حلفائه، فلجأ محمود خان إلى قلعته الواقعة جنوب بحيرة وان...ولم يتبق مع بدرخان باي سوى



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

٥٠٠ رجل تقريباً، من المحتمل أن نسمع بعد ذلك إما عن استسلامه لسرعسكر أو فراره إلى بلاد فارس.

ويبدو أن المعارك التي دارت مع الزعيم الكُردي بالقرب من الجزيرة كانت شديدة للغاية، فقد قام بالهجوم ليلاً على القوات التركية، التي كان يقودها عمر باشا -الذي أخمد قبل عامين التمرد في ألبانيا-، ويقال أن القتال الذي وقع كان أشد صعوبة، يعترف سرعسكر بخسارة ٥٠٠ قتيل و ١٠٠٠ جريح، ويؤكد أن خسارة الأكراد كانت أكبر بكثير، وأيضاً في نفس الوقت تقريباً هاجم جونين باشا Gonin Pacha قوات محمود خان، وبعد صراع يائس للغاية هزمت قواته، التي كانت تتألف من نحو ٣٠٠٠ رجل، منهم ١٠٠٠ كما ورد سقطوا، كان القتال من مسافة قريبة (يدا بيد)، لم تكن هناك معارك كهذه في تركيا منذ معركة نزيب Nazib))[٥]( National Intelligencer: Volume 35 , Issue 10,763, Tuesday, Aug. 24, 1847).

هذا الخبر يدل على مقاومة الأمير "بدرخان" حتى آخر لحظة، إلا أن الحركة لم يكتب لها النجاح؛ فقد استغلت الدولة العثمانية غضب الرأي العام الأوروبي من حركة "بدرخان" بسبب هجومه على القرى الأشورية لصالحها، وقررت القضاء عليها، ويدلل على ذلك ما نشرته صحيفة ناشونال إنتيليجنسر في الأول من نوفمبر/تشرين الثاني ١٨٤٧م حول استسلم الأمير بدرخان، فوصفته الصحيفة بعبارة ((هذا المدمر للمسيحيين النسطوريين))( National Intelligencer: Volume 35 , Issue 10,822, Monday, Nov. 1, 1847).

وعلى أية حال، فقد استسلم الأمير إلى للقوات العثمانية بعد أن أخذ العهد بعدم التعرض لحياته وأسرته وأمواله، وإثر ذلك تم إرساله مع أهله إلى الآستانة، حيث نفي مع عائلته إلى جزيرة "كريت"، فبقي فيها خمسة عشر عاماً، ثم سمح له السلطان بالذهاب إلى الشام؛ حيث مات فيها عام ١٨٦٨م(هروتي، ٢٠٠٨م، ص ص٢١٨-٢١٩).

دفعت هذه الثورة الدولة العثمانية إلى بسط نفوذها بالكامل على كُردستان، ومهدت الطريق للقضاء على الإمارات الكُردية، بجانب تعزيز الدولة العثمانية لوجودها العسكري في المنطقة. وبجانب تناول الصحف الأمريكية للحملات العثمانية على الإمارات الكُردية، فقد تناولت الصحف مشاركة الكُرد في الحروب الإقليمية والدولية.

### ثانياً- دور الكُرد في الحروب الإقليمية والدولية:

شهدت المنطقة في النصف الأول من القرن التاسع عشر سلسلة من الحروب كان للأكراد دورٌ فيها؛ حيث كانت القوى الكبرى، وبخاصة العثمانيين والفرس، تستعين ببعض القبائل الكُردية للقتال بجانبها مقابل أجر، وفي نفس الوقت فقد شهدت كُردستان نفسها صراعاً



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بين القوى الكبرى في المنطقة -العثمانيين والفرس والروس-، وكان للكرد دورٌ فيها، ومن ثم فقد ورد ذكر الكُرد في الصحف الأمريكية في إطار حديثها عن الحروب في المنطقة، ومن أبرزها:

**١- الحرب الروسية الفارسية ١٨٢٦-١٨٢٨م:**

نشرت صحيفة ديلي نا شيونال Daily National Journal" في الأول من سبتمبر/أيلول ١٨٢٧م مقالاً عن الحرب الروسية الفارسية، وذكرت أن أهداف روسيا من الحرب الوصول إلى نهر أراس Araxus، ومن ضمن الأهداف الروسية -التي ذكرتها الصحيفة- هو حماية جورجيا من ناحية الجنوب من غزوات التركمان والأكراد وأتباع الديانات الأخرى في بلاد فارس( Daily National Journal: Volume 4 , Issue 935, Saturday, Sept. 1, 1827).

وفي الحادي والعشرين من ديسمبر/أيلول ١٨٢٧م نشرت صحيفة "ستردي بنسلفانيا جزايت Saturday Pennsylvania Gazette" خبراً في سياق الحرب الروسية الفارسية يفيد بأن مستعمرة ورتمبرج Wurtemberg القريبة من إيزبوثبول Elizabethpol دمرت بالكامل على يد الفرس، وتم بيع السكان كعبيد للأكراد(New York Spectator: Volume 31, Tuesday, June 17, 1828)، وأشارت الصحيفة في صدر الخبر أنه هذه الأنباء وصلتها من فرانكفورت في الثامن من نوفمبر.

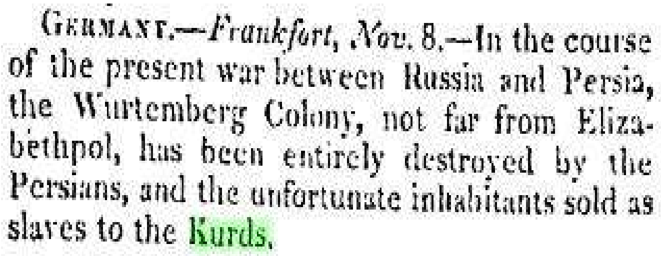
GERMANY.—*Frankfort, Nov.* 8.—In the course of the present war between Russia and Persia, the Wurtemberg Colony, not far from Elizabethpol, has been entirely destroyed by the Persians, and the unfortunate inhabitants sold as slaves to the Kurds.

وتجدر الإشارة أن القوى الكبرى في المنطقة كانت تستخدم بعض القبائل الكُردية الحدودية للقتال إلى جانبها في الحروب مقابل أجر، نظراً لما عرف عن الكُرد من مهارة في القتال، وتحمل المصاعب نظراً لطبيعة بيئتهم الجبلية الواعرة.

ونتيجة لذلك فقد تنافست روسيا مع الفرس والعثمانيين لكسب كتائب الكُرد إلى جانبها، لكن يظهر من المقال السابق أن الفرس نجحوا في كسب الكُرد إلى جانبهم خلال تلك الحرب.

وهناك ملاحظة لا تقل أهمية تظهر في كل المقالات التي ذكرت الكُرد، وهو تعميم مصطلح الكُرد وكردستان، وسيتم الإشارة إلى هذه النقطة بالتفصيل لاحقاً.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**٢- حرب الاستقلال اليونانية ١٨٢١-١٨٣٢م:**

في الحادي والعشرين من مارس/آذار ١٩٢٨م نشرت صحيفة فيرمونت كرونيكل Vermont Chronicle مقالاً عن الحرب العثمانية اليونانية (حرب الاستقلال اليونانية)، والحالة في الدولة العثمانية بعد هزيمة القوات العثمانية على يد الحلفاء (بريطانيا- فرنسا- روسيا)، وذكرت الصحيفة أن السلطان العثماني أعلن النفير العام، وأن هناك أخباراً بحشد مائة ألف كردي، سيصلون إلى أوروبا بحلول نهاية مارس (Vermont Chronicle: Volume 3 , Issue 12, Friday, Mar. 21, 1828).

وقد تناقلت الصحف الأمريكية هذا الخبر طوال شهر إبريل/نيسان فنشرته صحيفة فيرمونت وتشمان Vermont Watchman، ونيويورك تليجراف New York Telegraph، وبينساكولا Pensacola Gazette، وكذا صحيفة لويزيانا Louisiana Advertiser، وغيرها من الصحف.

وعلى الرغم من تداول هذه المعلومات في الصحف الأمريكية، إلا أن المصادر لم تشر إلى مشاركة الكُرد في حرب الاستقلال اليونانية، غير أن هذا لا ينفي احتمالية حدوثه خاصة بعد انسحاب محمد علي باشا والي مصر من الحرب، بالإضافة إلى مشاركة الكُرد في العديد من الحروب العثمانية السابقة، ومن الراجح أن الدولة العثمانية طلبت مساعدة أمراء الكُرد في حربها، إلا أن اندلاع الحرب العثمانية الروسية، وامتدادها إلى داخل الأراضي الكُردية ربما حال دون ذلك.

**٣- الحرب العثمانية الروسية ١٨٢٨-١٨٢٩م:**

نشرت صحيفة بواسطن كورير Boston Courier في التاسع والعشرين من مايو/آيار ١٨٢٨م خبراً يفيد بأن الدولة العثمانية تتجهز لمواجهة القوات الروسية بعد إعلان الأخيرة الحرب عليها، وأن قوات من الأكراد والميليشيات والمتطوعين ساروا من محيط العاصمة إلى أدرنة (أدريانوبل Adrianople)(Boston Courier: Volume 3, Issue 253, Thursday, May 29, 1828).

وفي السابع عشر من يونيو/حزيران ١٨٢٨م نشرت صحيفة "نيويورك سباكتتور New York Spectator" نقلاً عن الصحف الألمانية خبراً يفيد بأن الجيش الروسي الذي كان في بلاد فارس، سيتوجه نحو أرضروم في أراضي السلطان الآسيوية، وستكون المهمة الأساسية للروس الاستحواذ على الحصون التركية في أرض الأكراد (New York Spectator: Volume 31, Tuesday, June 17, 1828).

وخلال تلك الحرب أبدت روسيا اهتمامً كبيراً بالكُرد، ونتيجة لامتداد الحرب إلى داخل الأراضي الكُردية، فقد انقسم الكُرد بين مؤيد للعثمانيين ومؤيد للروس ومحايد، فوقفت الكثير من القبائل الكُردية وحتى الإمارات موقف المحايد، ولم تشترك إلى جانب العثمانيين، وذلك رداً على سياسة القمع والاضطهاد والظلم الذي تعرضوا له على يد العثمانيين، بينما وقف بعض الكُرد



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وبخاصة الإيزديين إلى جانب روسيا، أما الكُرد الذين تحولت مناطقهم إلى ساحة للمعارك فإنهم اضطروا إلى التفاوض مع الجانبين للمحافظة على حياتهم وممتلكاتهم (الدوسكي، ٢٠٠٦م، ص١٨٩).

إلا أن الصحف الأمريكية لم تركز إلا على دور الكُرد في دعم الدولة العثمانية، ففي الرابع عشر من نوفمبر/ تشرين الثاني ١٨٢٩م ذكرت صحيفة لويفيل Louisville Public Advertiser ورود أنباء بتاريخ الرابع من نوفمبر/تشرين الثاني عن نجاح الروس في صد الأكراد أثناء محاولتهم اعتراض نحو مائة عربة محملة بالمؤن( Louisville Public Advertiser: Volume 11 , Issue 1081, Saturday, Feb. 14, 1829).

إلا أن المصادر التاريخية تشير إلى اتصال بعض زعماء الكُرد في كردستان الشمالية بالجيش الروسي، ومن هؤلاء الزعماء حاكم بايزيد "بهلول باشا"، وأمير موش "أمين باشا"، وزعماء آخرون، وعندما اقتنع الروس بقدرة الكُرد العسكرية وأهميتهم في الحرب حاولوا كسبهم، وألفوا فوجاً كاملاً من الكُرد في عام ١٨٢٩م ( هروتي، ٢٠٠٨م، ص١٧٣)، وقاموا بتشجيعهم على الهجرة إلى روسيا، وبالفعل هاجرت بعض القبائل إلى القوقاز(زكي، ١٩٣٩م، ص ص٢٦٦-٢٦٧).

**٤- نزاعات الحدود بين الأتراك والفرس:**

نشرت صحيفة نيويورك هيرالد New York Herald في الرابع من نوفمبر/تشرين الثاني ١٨٤٢م خبراً عن ورود أنباء من أرضروم باندلاع صدامات حدودية بين الأتراك والفرس في منطقة بايزيد Bayazid، وأن الأكراد في مقاطعات بايزيد وموش ووان حملوا السلاح لصالح الأتراك( New York Herald: Volume 8, Issue 305, Friday, Nov. 4, 1842).

وتعود فكرة استغلال الكُرد في المناطق الحدودية لمواجهة الفرس إلى عهد السلطان سليم الأول، الذى رفع الضرائب عن العشائر الكُردية في منطقة الحدود مع بلاد فارس بشرط أن يؤلفوا جيشاً يساعدهم عند الحاجة، وقد حذا حذوه السلاطين الآخرون، وكانت تلك السياسة ناجحة واقتصادية في آن واحد، فقد نجح الكُرد في الدفاع عن الحدود، ومن جهة أخرى خفضت التكاليف العسكرية للعثمانيين خلال مواجهاتهم مع الفرس( هروتي، ٢٠٠٨م، ص١٢٥).

وكان هذا آخر خبر ينشر عن دور الكُرد في الحروب في المنطقة، ويظهر من هذه المقالات أن الصحف الأمريكية لم تكن تدرك الفرق بين العشائر والمناطق الكردية، وعممت في كل المقالات تقريباً مصطلح الكرد دون تمييز.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**ثالثاً- القضايا الاقتصادية والاجتماعية:**

أغفلت الصحف الأمريكية الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية للشعب الكُردي، ولم تتناول أياً من هذه القضايا إلا في إطار سياسي، فوردت أول إشارة عن أحوال الكُرد في الصحف الأمريكية في الرابع من نوفمبر/تشرين الثاني ١٨٢٥م؛ حيث نشرت صحيفة "نا شونال إنتيليجنسر National Intelligencer" خبراً بعنوان " رسائل من بغداد، مؤرخة في ١٠ يونيو/ حزيران" أشارت فيه إلى "ورود رسائل من بغداد تفيد بفيضان نهر دجلة هذا العام بشكل كبير، وقد أدى ذلك إلى سقوط العديد من المنازل في بغداد، بما فيها جزء من قصر الباشا، والسبب في هذا الفيضان بجانب سقوط الأمطار ذوبان الجليد على جبال ميديا وكردستان... في خضم هذا الارتباك تضاعفت الأسعار ثلاث مرات، والعرب والكُرد في كل مكان في حالة تمرد"( National Intelligencer: Volume 13, Issue 3990, Friday, Nov. 4, 1825).

وفي التاسع والعشرين من نوفمبر/تشرين الثاني ١٨٢٥م أعادت صحيفة "إنديانا استيت جورنال (صحيفة ولاية إنديانا Indiana State Journal) نشر هذا الخبر( Indiana State Journal: Volume 3, Issue 131, Tuesday, Nov. 29, 1825).

وفي التاسع عشر من سبتمبر/أيلول ١٨٤٥م ذكرت صحيفة أطلس Atlas في إطار حديثها عن تمرد الأكراد في مقاطعة وان Van أن السبب الرئيس لا ندلاعها فرض ضرائب جديدة، وأن المنطقة تعاني من كل أهوال المجاعة منذ عامين، فشلت المحاصيل، والمياه شحيحة لدرجة أن الكمية المطلوبة لاستهلاك عائلة صغيرة تكلف مبلغاً هائلاً( Atlas: Volume 14, Issue 69, Friday, Sept. 19, 1845).

وهذين المقالان يؤكدان على ما عاشه الكُرد من فقر مدقع في ظل الحكم العثماني، فالضرائب الباهظة، وقرب كُردستان من منطقة الصراع بين العثمانيين والفرس والروس، بالإضافة إلى المجاعات والكوارث الطبيعية التي انتهكت البنية الاقتصادية لكُردستان، في مقابل حالة البزخ والرفاهية التى كانت تعيشها العاصمة إسطنبول، كل هذه الدوافع كانت من أسباب التمرد الدائم للكرد ضد العثمانيين.

**رابعاً- رؤية المصادر الأمريكية للكرد وكردستان:**

ارتبط تعرف الصحف الأمريكية بالكُرد في إطار القضايا السياسية التى كانت تشهدها كُردستان، والتى كانت مصدر الاهتمام الأول لهذه الصحف، والذى يلفت النظر في هذه المقالات هو تعميم مصطلح الكُرد وكردستان، فذكر الكُرد كان يأتي منفصلاً عن القوميات الأخرى سواء في الدولة العثمانية أو في بلاد فارس، وهذا يدل على أن المصادر الأمريكية كانت تدرك أن للكرد قومية مستقلة مختلفة كلياً عن العثمانيين والعرب والفرس، إلا أنها لم تكن تدرك الفرق بين



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

العشائر وتعدد الامارات الكُردية، وهذا ما أسفر عن قيام المصادر بالإشارة إلى أي أعمال سيئة كانت تقوم بها بعض العشائر إلى الكُرد بشكل عام دون تمييز.

وحتى عند ذكر كردستان فإن ذكرها كان دائماً يأتي بشكل عام، حتى يبدو أن مجرد ذكر كلمة كردستان يكفي لتعريف القارئ بحدود تلك المنطقة، ويؤيد ذلك ما نشرته صحيفة "نيو يورك سباكتتور New York Spectator" في السابع عشر من يونيو/حزيران ١٨٢٨م نقلاً الصحف الألمانية فخلال حديثها عن تحرك الجيش العثماني نحو كردستان، ذكرت ما نصه ((وستكون المهمة الأساسية للروس الاستحواذ على الحصون التركية في أرض الأكراد))( New York Spectator: Volume 31, Tuesday, June 17, 1828).

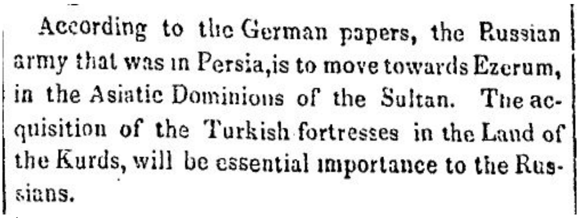

According to the German papers, the Russian army that was in Persia, is to move towards Ezerum, in the Asiatic Dominions of the Sultan. The acquisition of the Turkish fortresses in the Land of the Kurds, will be essential importance to the Russians.

غير أن هذا لا ينفي وجود تحيز واضح ضد الأكراد، وذلك نظراً لما شهدته المنطقة من خلاف بين الكُرد والآشوريين، وبحكم الانتماء الديني للطرف الثاني من القضية فقد انحازت الصحف إلى جانبهم بشكل تام، ووصفت الكُرد بأبشع الأسماء والألفاظ ( الهمج، المتوحشين) وغير ذلك من الألفاظ التى وصف بها الكُرد، ولم تهتم الصحف بالتعرف على الكُرد، أو حتى الاشارة إلى تاريخهم أو قضيتهم حتى في صراعهم مع الدولة العثمانية.

ومن الراجح أن هذا الموقف مرتبط بالسياسة الأمريكية تجاه كردستان، فعندما أبرمت الولايات المتحدة الأمريكية مع الدولة العثمانية معاهدة للصداقة والتبادل التجاري في عام ١٨٣٠، وضعت كردستان كهدف أساسي للمنصرين (المبشرين) الأمريكان، وكانت كُردستان وما جاورها مركزاً لنشاط المنصرين، إلا أن الكُرد لم يقبلوهم في منطقتهم، لأنهم كانوا يلاحظون تدخلهم في شؤون الآخرين(أحمد، ٢٠٠٩، ص٤٢٠).

وهذا ما دفع إلى اتخاذ موقف معاد للكُرد، ويؤيد ذلك ما نشرته صحيفة فيرمونت كرونيكل Vermont Chronicle في التاسع من ديسمبر/كانون الأول ١٨٣١م، فذكرت ورود رسالة من المنصرين سميث Smith ودوايت Dwight مرسلة من تبريز (في بلاد فارس) في الثالث والعشرين من يناير/كانون الثاني ١٨٣١م حول رحلتهم إلى جبل أرارات، جاء فيها ما نصه: ((المنطقة المجاورة لهذا الجبل يسكنها الآن الأكراد، وهم عرق متوحش من المحمديين، وجميعهم تقريباً لصوص، منذ الحرب الأخيرة بين روسيا وبلاد فارس، امتدت الحدود الروسية جنوب أراكسيس Araxes حتى



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أرارات؛ حيث تلتقي في هذا الجبل الممالك الثلاث روسيا وبلاد فارس وتركيا))( Vermont Chronicle: Volume 6 , Issue 50, Friday, Dec. 9, 1831).

> The immediate vicinity of this mountain is now inhabited by Kurds, a savage race of Mahommedans, nearly all of whom are robbers.
> Since the last war between Russia and Persia, the Russian boundaries extend south of the Araxes as far as Ararat, so that at this mountain, the three kingdoms, Russia, Persia, and Turkey, meet.

وتجدر الإشارة إلى أن كتابات المنصرين عن الكُرد لم تسر على نفس النمط السابق، فكان منها الموضوعية نوعاً ما، ومن هذه النماذج ما دونه القس الأمريكي هرشيو ساوثجيت Horatio Southgate في مذكراته، فقد تحدث فيها عن استقبال الكُرد له خلال رحلته، وما لقيه من حفاوة الاستقبال وكرم الضيافة، حتى أنه ذكر أن استقبالهم له كان أفضل من استقبال الأتراك(Southgate, 1840, Vol. I, pp.190-193).

**تقييم عام:**

نظراً للموقع الجغرافي للولايات المتحدة الأمريكية، والبعد المكاني بينها وبين كُردستان، لم يكن هناك أي نوع من التواصل المباشر بين الولايات المتحدة وكُردستان في مطلع القرن التاسع عشر، ومن ثم فإن المعلومات التى كانت تحصل عليها الصحف الأمريكية حول كُردستان كانت تعتمد على الصحف والمصادر الأوروبية بشكل رئيسي، ويؤيد ذلك ما ورد في أكثر من مقال ذكر في البحث، فكانت الصحف الأمريكية تشير أن هذه المعلومات قادمة من أوروبا.

وعقب توقيع المعاهدة العثمانية الأمريكية وتدفق المنصرين الأمريكان على كردستان، كانت رسائلهم ومؤلفاتهم مصدراً رئيساً للتعرف على أوضاع الكُرد والمنطقة، وكذا رسائل المنصرين الأوروبيين التي كانت ترسل إلى الصحف الأمريكية، ويؤيد ذلك ما نشر عن الكُرد في الصحف نقلاً عن المنصرين سميث Smith ودوايت Dwight.

ومن ثم يمكن القول إن الحسابات الاستراتيجية التى استندت إليها الولايات المتحدة كانت نفس الحسابات التي استندت إليها الدول الأوروبية بشأن المسألة الكُردية خلال النصف الأول من القرن التاسع عشر، إذ وقفت وبثبات إلى جانب تعزيز سلطة الحكومة المركزية في اسطنبول في المناطق الكُردية، كما أن الكُرد كانوا يشكلون عقبة أمام حركة التنصير الأمريكية في المنطقة، وهذا ما دفع الولايات المتحدة إلى اتخاذ موقف معاد للحركة الاستقلالية الكُردية.

**توصية:** تشكل مذكرات المنصرين مصدراً مهماً في توثيق تاريخ كُردستان ابتداءً من القرن التاسع عشر، فقد اطلع الباحث على أكثر من مذكرة لمنصرين زاروا كردستان في القرن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

التاسع عشر، من أبرزها مذكرات القس الأمريكي هرشيو ساوثجيت Horatio Southgate، والتي -على حد علمي- لم تترجم أو يتعرض لها أحد من الباحثين، هذه المذكرات يصعب الإشارة إليها فقط في متن البحث، فهي تحتاج إلى دراسة مستقلة ومتأذية، وستسهم في توثيق تاريخ كُردستان في تلك الفترة، فهي مادة خام للعديد من الموضوعات آمل أن يستفيد منها الباحثون في الدراسات المستقبلية عن تاريخ كُردستان.

## قائمة المصادر والمراجع

### أولاً- الصحف الأمريكية:


- Atlas (Boston, MA, United States):

Volume 14, Issue 69, Friday, Sept. 19, 1845.

Volume 14, Issue 70, Saturday, Sept. 20, 1845.

- Aurora and Franklin Gazette (Philadelphia, PA, United States):

Volume 15, Issue 2601, Friday, Aug. 18, 1826.

- Boston Courier (Boston, MA, United States):

Volume 3, Issue 253, Thursday, May 29, 1828.

Volume 15, Issue 1778, Monday, May 10, 1841.

Volume 13, Issue 23, Wednesday, Oct. 11, 1843

- Daily National Journal (Washington, DC, United States):

Volume 3, Issue 627, Tuesday, Aug. 22, 1826.

Volume 4, Issue 935, Saturday, Sept. 1, 1827.

- Indiana State Journal (Indianapolis, IN, United States):

Volume 3, Issue 131, Tuesday, Nov. 29, 1825.

- Liberator (Boston, MA, United States):

Volume 6, Issue 45, Saturday, Nov. 5, 1836.

- Louisville Public Advertiser (Louisville, KY, United States):

Volume 11, Issue 1081, Saturday, Feb. 14, 1829.

- National Intelligencer (Washington, DC, United States):

Volume 13, Issue 3990, Friday, Nov. 4, 1825.

Volume 31, Issue 9560, Monday, Oct. 9, 1843.

Volume 35, Issue 10,763, Tuesday, Aug. 24, 1847.

Volume 35, Issue 10,822, Monday, Nov. 1, 1847.

- New York Herald (New York, NY, United States):
Volume 5, Issue 102, Wednesday, Sept. 11, 1839.
- New York Spectator (New York, NY, United States):
Volume 29, Friday, Aug. 18, 1826.
Volume 31, Tuesday, June 17, 1828.
Volume 38, Thursday, Feb. 26, 1835.
Volume 38, Monday, June 29, 1835.
- North American (Philadelphia, PA, United States):
Volume 1, Issue 202, Saturday, Nov. 16, 1839.
- Vermont Chronicle (Bellows Falls, VT, United States):
Volume 3, Issue 12, Friday, Mar. 21, 1828.
Volume 6, Issue 50, Friday, Dec. 9, 1831.
- Virginia Free Press (Charles Town, WV, United States):
Volume 28, Issue 41, Thursday, Nov. 12, 1835.

**ثانياً- مذكرات المنصرين:**

- Southgate, Horatio (1840): Narrative of a Tour through Armenia, Kurdistan, Persia and Mesopotamia, Vol. I, New York.

**ثالثاً- المراجع العربية والمعربة:**

- أحمد، أحمد محمد (٢٠٠٩): أكراد الدولة العثمانية " تاريخهم الاجتماعي والاقتصادي والسياسي ١٨٨٠-١٩٢٣"، دار سبيريز للطباعة والنشر، كُردستان العراق.
- جليل، جليلي، وآخرون (٢٠١٢م): الحركة الكوردية في العصر الحديث، ترجمة: عبدي حاجي، ط٢، مؤسسة موكرياني للبحوث والنشر، دهوك.
- الدوسكي، كاميران عبد الصمد (٢٠٠٦م): كردستان في العهد العثماني في النصف الأول من القرن التاسع عشر، الدار العربية للموسوعات، لبنان.
- ذكي، حسام السيد (٢٠١٩م): رؤية الصحافة البريطانية لكردستان في القرن التاسع عشر الميلادي مجلة أخبار لندن المصورة (The Illustrated London News) أنموذجاً، بحث ضمن كتاب "سياسة بريطانيا تجاه القضية الكُردية"، مركز زاخو للدراسات الكُردية، كردستان.
- زكي، محمد أمين (١٩٣٩): خلاصة تاريخ الكُرد وكردستان من أقدم العصور التاريخية حتى الآن، ترجمة وتعليق: عوني، محمد علي، مطبعة السعادة، مصر.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

- عثمان، فارس (د.ت): الكُرد والأرمن العلاقات التاريخية، ط٢، مطبعة كمال، اقليم كورد ستان العراق.
- مكدول، ديفيد (٢٠٠٤): تاريخ الأكراد الحديث، ترجمة: راج آل محمد، دار الفارابي، بيروت.
- هروتي، سعدي عثمان (٢٠٠٨م): كورد ستان والامبراطورية العثمانية "دراسة في تطور سياسة الهيمنة العثمانية في كوردستان ١٥١٤-١٨٥١م"، مؤسسة موكرياني للبحوث والنشر، دهوك.

**الهوامش:**

---

(١) كانت الإمارات الكُردية تتمتع بنوع من الاستقلال الذاتي، بموجب الاتفاق الكُردي العثماني الذي عقد في عهد السلطان سليم الأول عام ١٥١٥م.

(٢) لقب كان يستخدم في الدولة العثمانية للوزير المكلف في نظر شؤون الجيش وقيادته، وقد ظل هذا الاسم مستخدماً خلال الفترة ما بين ١٨٢٦-١٩٠٨،

(٣) نشر هرشيو ساوثجيت مذكراته تحت عنوان "سرد لجولة عبر أرمينيا وكردستان وبلاد فارس وبلاد ما بين النهرين Narrative of a Tour through Armenia, Kurdistan, Persia and Mesopotamia، في مجلدين بنيويورك عام ١٨٤٠م، وقد دون مشاهداته عن الأوضاع السياسية والاقتصادية والاجتماعية في المناطق الكُردية خلال الفترة ما بين عامي ١٨٣٦-١٨٣٨م، وتمكن أهمية هذه المذكرات أن صاحبها كان في مهمة شبه رسمية؛ حيث كلفه مجلس البعثات التابع للكنيسة الأسقفية الأمريكية بإجراء تحقيق عن أحوال المسلمين في الدولة العثمانية وبلاد فارس.

(٤) الراجح أن هذا الضباط هو الفيلد مارشال هيلموت مولتكه، والذى كان يرافق حملة حافظ باشا على كردستان.

(٥) هي المعركة التي وقعت بين الجيش المصري والقوات العثمانية بالقرب من حلب في يونيو/حزيران ١٨٣٩م، وألحقت القوات المصرية الهزيمة بالجيش العثماني.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# میرگەهێن کوردی د روژنامەگەریا کوردیدا ل نیڤا ئێکێ ژ سەدەمیێ نوزدەدا


**پۆختە:**

ویلایەتێن ئێکگرتییێن ئەمریکا هەر ژ پەیدابوونا وێ وەك زلهێز رولەکێ مەزن د سیاسەتا جیهانێدا گێرایە و هەردەم ئەڤ وەلاتە پشتەڤانێ وی لایەنی بووك و بەرژەوەندییێن وێ یێن سیاسی و ئابوری بپارێزیت.

ئێکەمین ئاماژە بو میرگەهێن کوردی د روژنامەیێن ئەمریکیدا بو بەروارا ٤ چرییا ئێکێ ١٨٢٦ دزڤریت ئەوژی روژنامەیا ناشنال ئینتلجنز National Intelligence بوو ، وهەر ژ ناڤەراستا سەدەیێ ١٩ روژنامەیێن ئەمریکی دەست ب بەلاڤکرنا گووتاران ل سەر لایەنێن سیاسی و ئابووری و جڤاکییا میرگەهێن کوردی کر ئەوژی ب رێکا بەلاکرنا بیرهاتن و دیتنێن دبلوماسی و مسیونەرێن مەسیحی ل کوردستانێ.

ئەڤ ڤەکولینە ژ چوار تەوەران پێکهاتیە یا ئێکێ ل سەر هێرشێن عوسمانی ل سەر کوردستانێ و یا دووێ ل سەر رولێ کوردان د شەرێن هەرێمی و نێڤدەولەتیدا و تەوەرێ سێیێ ژ بو بەحسکرنا لایەنێ سیاسی و ئابووری و جڤاکی یێن میرگەهان د روژنامەیێن ئەمریکیدا تەرخانکریە و تەوەرێ چوارێ بەحسێ دیتن و هەلویستێ روژنامەیێن ئەمریکی ژ بو کورد و میرگەهێن وان دکەت تایبەت د روژنامەیێن نیویوورك سبیکتتور "New York Spectator"، ولیبریتور Liberator، وناشنال ئینتیلیجنسر "National Intelligencer" دا.



**پەیڤێن سەرەکی:** *کورد، روژنامەیێن ئەمریکی، میر بەدرخان، محەمەد پاشایێ سورانی، هێرشێن عوسمانی*


## Kurdish emirates in contemporary American sources during the first half of the nineteenth century


**Abstract:**

The United States of America has played an important role in the development of the Kurdish issue since its emergence as a superpower. Its position has been linked to political, economic and historical determinants imposed by political decision-making circles and pressure groups within the United States of America. These influential forces in the American politics are always based - in addition to political and economic interests - on the historical roots of the issue, to get to know its truth, nature, factors affecting it, and ways to benefit from it. Hence, this study aspires to identify the historical roots of the Americans' knowledge of the Kurdish issue, and document the history of the Kurdish emirates in the contemporary American sources.

The first reference to the Kurds in the American newspapers - within the framework of the numbers that the researcher had access to - appeared in the "National Intelligencer" newspaper on the 4th of November 1825 AD. This research will refer to what was mentioned in the article since the newspaper has been published. The American Museum published a number of political, economic and social issues related to the Kurdish emirates during the first half of the 19th century. In addition, some letters and memoirs of American missionaries and other Europeans dealt with the conditions of the Kurdish emirates. These sources played a prominent role in drawing the image of the Kurds in the United States of America.

This study will deal with the political, economic and social conditions of the Kurdish emirates in the American sources (newspapers and memoirs of missionaries) during the first half of the 19th century.

This study is divided into four axes:

The first axis deals with the Ottoman campaigns against the Kurdish emirates. The second axis presents the role of the Kurds in regional and international wars. The third axis deals with the American sources dealing with the economic and social conditions of the Kurds, and the fourth axis discusses the representation of the Kurds and Kurdistan in the American sources.

This study relied on a number of American newspapers, including: "New York Spectator", "Liberator", "National Intelligencer" and other newspapers, in addition to the memoirs of the American pastor Hercio Southgate, along with a group of references that contributed to fill the gap in knowledge.

**Keywords**: *Kurds, American newspapers, Prince Badrakhan, Muhammad Pasha Al-Sorani, Ottoman campaigns.*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# صراع النفوذ البريطاني _ الروسي في كردستان خلال النصف الاول من القرن التاسع عشر واثره على الامارات الكردية ١٨٠٠-١٨٥١

**ا. د. عمار يوسف عبدالله**

كلية التربية الاساسية - جامعة الموصل/ العراق

**الملخص:**

تعد كردستان منطقة جذب لمصالح الدول الكبرى خاصة في النصف الاول من القرن التاسع عشر وذلك لأهميتها الاقتصادية والاستراتيجية فقد عملت بريطانيا وروسيا القيصرية خلال الفترة الممتدة منذ اوائل القرن التاسع عشر حتى منتصف هذا القرن لإيجاد موطئ قدم لهما في كردستان ومحاولة التغلغل بين اوساط العشائر الكردية كذلك استمالة الاقليات الدينية وقد تمثل ذلك في العديد من الوسائل سواء أكان ذلك عن طريق النشاط الدبلوماسي أو البعثات التبشيرية او الرحالة والآثاريين .

قسمت هذه الدراسة إلى محورين تناول الاول إعطاء صورة عن أهمية التكوين الاقتصادي والاجتماعي للعشيرة في كردستان .

وتطرق المحور الثاني الى التنافس البريطاني _ الروسي في كردستان منذ اوائل القرن التاسع عشر حتى منتصف هذا القرن واثر ذلك الصراع على مستقبل الامارات الكردية وقد برز ذلك من خلال النشاط الدبلوماسي البريطاني _ الروسي كذلك البعثات التبشيرية و الرحالة والآثاريين .

**الكلمات المفتاحية :** *بريطانيا ، روسيا ، كردستان ، الامارات الكردية ، القرن ١٩*

## اولا : التكوين الاقتصادي والاجتماعي للعشيرة في كردستان

يمكن تقسيم العشائر الكردية من حيث تنظيماتها الاجتماعية والاقتصادية إلى نوعين العشائر الرحالة، والعشائر المستقرة . ( للتفاصيل المائي ، ١٩٦٠ ، خورشيد , Waheed , 1955 167-170 )

وتتمثل الأوضاع الاقتصادية للعشائر الكردية في الانتفاع المشترك بالملكية المشتركة لأراضي المراعي ولمصادر المياه، وحتى الأراضي الزراعية في بعض الأحيان. ولعل هذا التعاون يبدو أكثر وضوحا في حالة العشائر الرحل . فالطائفة تمتلك مساحة معينة من الأرض بصورة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

جماعية كمرعى لحيواناتها ( خصباك ، ١٩٦٠ ، ١٣٢-١٣٣ ) . وقد يؤجر أفرادها بصورة مشتركة أرضاً معينة كمرعى لحيوا ناتهم. فا لجاف مثلاً مشهورون بتربية المواشي وأكثرها الأغنام ( العزاوي ، ج٢ ، ١٩٤٧ ، ٢٣٦-٢٣٧ ) .

وتجوب القبائل الكردية المناطق الشمالية الجبلية وشبة الجبلية في النطاق الممتد ما بين عقرة حتى حاج عمران على الحدود العراقية الايرانية . وتزاول هذه المجموعة الحركات الفصلية ف في الشتاء يهبطون إلى الأودية والسهول وفي مناطق الأحواض بسبب تراكم الثلوج على المرتفعات بينما يتركون هذه المنازل في الفصول الأخرى قاصدين المرتفعات المغطاة بالكلأ لتربية مواشيهم وأغنامهم. والماعز هو الحيوان الرئيسي الذي يربى في هذه البيئة ( هاملتون ، ١٩٩٩ ، ٦٨ ؛ ( Yale , 1958 , 311-312

أما العشائر المستقرة فيتقيد أفراد العشيرة بالملكية المشاعية لمصادر المياه ويتحمل الكوخا (مختار القرية) في العادة مسؤولية تطبيق هذا القانون الاجتماعي بحيث لا يحاول احد الأفراد على الاستيلاء على مياه ري تفيض عن حقه. وربما أن الملكية الاسمية للأرض تعود إلى الأسرة الحاكمة في العشيرة. فان للرئيس الحق في الأراضي الزراعية التي يحتلها المجتمع العشائري. والواقع فان لكل فلاح من أبناء العشيرة له حق المزارعة أي حق التملك لمساحة معينة من الأرض. ويتم إعادة توزيع الأراضي بين الفلاحين كل عام او كل عدد من السنين.

أما مراع القرية فأنها تعد ملكاً مشاعياً لجميع السكان. ويتضح التعاون الاقتصادي بين أفراد الطائفة الواحدة أيضا ضمن القرية بتأجير راع للقيام برعي حيوانات القرية بصورة مشتركة ( خصباك ، ١٩٧٢ ، ٣٨٧ ) .

والأراضي كثير منها مفوضة بالطابو وأن أمرائها ورؤسائها يملكون القسم الأكبر منها وللمتفوض العشر في الديم (المطري) والخمس في السيح المائي ( العزاوي ، ج٢ ، ١٩٤٧ ، ٢٣٦-٢٣٧ )

ويمتهن تربية الحيوانات السكان شبه المستوطنين وتشكل تربية الماشية مصدر رزقهم الوحيد ، أما الفلاحون فيمتهنون الزراعة إلى جانب تربية الماشية وينبغي أن نشير إلى أن عدد الرحل ينخفض باستمرار في كردستان. أما المناطق التي تسود فيها تربية الماشية من قبل السكان فلا نجد أثر للزراعة ( قاسملو ، ١٩٧٠ ، ١٥٢ ، الانصاري ، ١٩٧٠ ، ١٣ )

أما التنظيمات الاجتماعية للعشيرة الكردية فيسودها نوعان متميزان هما التنظيمات العشائرية والتنظيمات اللاعشائرية، ويبدو أن التنظيمات العشائرية هي الأقدم والأكثر ملاءمة للرعاة ( خصباك ، ١٩٧٣ ، ١٦٧ ) . وتعيش العشائر الرحالة في بيوت من الشعر تتكون من شقق سوداء من نسيج الماعز لذلك تسمى البيوت السوداء.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ويتألف مخيم العشائر الرحالة عادة من المجموعات العائلية التي تربط بينها رابطة القرابة، وفي بعض الأحيان تمثل أسرة واسعة، وتشترك تلك المجموعات العائلية في حقوق المرعى. ويتزعم المخيم عادة رجل متقدم في السن ذو مكانة اجتماعية عالية وذو مقدرة اقتصادية، وربما كان رب الأسرة الواسعة ( Wigram , 1916 , 46 ) .

والعشيرة الكردية هي وحدة سياسية تشمل على فئتين منفصلتين، طبقة حاكمة محاربة، وهي في الأصل رعوية ومهمتها القتال وهي المسؤولة عن حماية أفراد الطبقة الأخرى، وطبقة عامة ومهمتها الزراعة وتربية الحيوانات. ولا ترتبط هاتان الطبقتان برابطة النسب، كما لا تربط طوائف الطبقة العامة بروابط النسب، وهذا النموذج العام للعشيرة الكردية وهو في الحقيقة بتأثير العامل الجغرافي ( القيسي ، ١٩٥٨ ، ١٧٣ ) .

ان قبائل كردستان تتكون من عنصرين متميزين احدهما مستقر ثابت والاخر متغير متأرجح .

اما العنصر الثابت مستقر فيتألف من تلك النواة من العائلات التي ينتمي زعيم القبيلة اليها . ويتكون العنصر المتغير من مجموعة دائمة الترحال الذين ينضمون الى هذه القبيلة تارة وتارة الى قبيلة اخرى . ( مزيري ، ٢٠١٣ ، ١٧٠ )

وكان رؤساء الفرق الصوفية يتمتعون بسلطة على عشائر معينة. والى هذه الفئة انتمى أصحاب الطرق النقشبندية والقادرية(١) وغيرها .

أما المميزات العامة للحياة القبلية الكردية فتنحصر في ثلاث صفات أساسية وهي الرئاسة والقتال والمسؤوليات القبلية ( Wilson , 1937 , 290-291 ). وفي كل قبيلة تقريبا هناك عائلة حاكمة يسمى أعضاؤها بالاغا والبيك (Edmonds , 1958 , 150).

كما أن منصب الرئاسة الوراثي يتطلب صفات معينة أهمها القوة الحربية والثروة والمقدرة الشخصية.

وكانت رئاسة القضاء بيد الرئيس العشائري فهو حامي العشيرة من الاعتداء الداخلي والخارجي. والواقع أن الفرد العشائري كان يفضل قضاء الرئيس العشائري على قضاء الحكومة لسببين أولهما ان الرئيس العشائري هو مرجعه الحقيقي، وثانيهما أن شكواه لدى المراجع الحكومية لا تأتي بنتيجة سريعة لأنها تكلفه بعض النفقات. وتعقد المحاكمات العشائرية في مضيف الرئيس ويحضرها الرؤساء الصغار وبعض أفراد العشيرة.( هي ، ج١ ، ١٩٧٣ ، ٩٠-٩٢ )

ويبدو أن سيطرة المحاربين على الزراع قد طبعت مجتمعات العشائر الكردية، واستناداً إلى س.ج. ريج C.j.rich المقيم البريطاني العام في بغداد الذي جال في المنطقة الكردية بين عامي ١٨٢٠-١٨٢١ فأن أهل كردستان ينقسمون إلى عشائر محاربين وطبقة من الفلاحين غير العشائريين



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

الأدنى منزلة تسمى "كوران" أو "كله سبي" (أصحاب القلنسوات البيضاء)، وكان أفراد العشائر نادر ما يمسون المحراث ( Barth , 1953 , 57 ) .

وتضم منطقة كردستان العراق أحلافاً قبلية كبيرة منها زنكنة التي تقطن قبائله الجزء الجنوبي من كردستان العراق. وحلف الجاف وهو أكثر الأحلاف القبلية عددا وأكبرها أهمية في كردستان العراق ويشمل المنطقة المحيطة بالسليمانية ( منتشاشفيلي، ١٩٧٨، ٤٨-٤٩ ).

وبصفة عامة فان السمة البارزة للمجتمع الكردي خلال القرن التاسع عشر هو كونه مجتمع قبلي ، الولاء فيه يكون في المقام الاول للعائلة ثم للقبيلة وغالبا مايكون هذا الولاء مرتبطا بالولاء للقرابة .

**ثانيا : التنافس البريطاني _ الروسي في كردستان خلال النصف الاول من القرن التاسع عشر**

**- تغلغل النفوذ البريطاني في كردستان**

شهد القرن التاسع عشر تنافساً بين بريطانيا وروسيا القيصرية على نحو خاص للهيمنة والنفوذ في اوساط الكرد وقد بدأت الاوساط الحاكمة البريطانية منذ الثلث الاول من القرن التاسع عشر تولي اهتماما كبيرا لكردستان التي تحتل موقعاً ذا أهمية استراتيجية على تقاطع حدود الدولة العثمانية وبلاد فارس وروسيا القيصرية ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٢٧ ؛ محمد ، ٢٠٠٥ ، ١٧١ ) .

ان المبررات التي دفعت بريطانيا الى اختيار النصف الثاني من القرن الثامن عشر لتمد نفوذها الى كردستان تعود الى المنافسة بينها وبين قوى اوربية اخرى للتنافس على مناطق النفوذ ، فقد كان هناك الخطر الروسي المتفاقم اذ لعبت روسيا دورا بارزا و مؤثرا في المناطق الكردية الايرانية فوجهت انظارها الى كردستان ايران لا سيما المناطق الواقعة بالقرب من حدود روسيا الجنوبية . ( الطعمة ، ١٩٨٥ ، ص٧٥ ؛ البياتي ، ٢٠٠٩ ، ص٣٩ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ص٤٥٥ ) .

هذا التحرك الروسي اثار حفيظة الانكليز الذين نظروا بعين الشك الى الاطماع الروسية التقليدية في الوصول الى المياه الدافئة في الخليج العربي ، وقد عدت بريطانيا التوسع الروسي باتجاه الجنوب لايستهدف وجودها في الخليج العربي فحسب بل يستهدف السيطرة على هذا الممر المائي الاستراتيجي الموازي للمستعمرات البريطانية في شبه القارة الهندية . ( علي ، ٢٠١١ ، ص٢٤ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ص٤٥٥ )

ازاء هذه التطورات حذر الوكيل السياسي البريطاني في بغداد كلوديوس جيمس ريج (١٨٠٨-١٨٢١) من مخاطر النشاط الروسي في كردستان . ( الطعمة ، ١٩٨٥ ، ص١٤٣ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٤٥٦ ) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وفي هذا الصدد اقترح تايلور الوكيل السياسي لبريطانيا في العراق في تموز عام ١٨٣٣ على حكومة بلاده تقوية نفوذها في كردستان لجعلها منطقة عازلة بين روسيا والوجود البريطاني في الخليج العربي ( عبدالله ، ٢٠١٩ ، ص٤٥٦ ) .

ان هذه التحذيرات كانت مثار اهتمام بريطانيا التي حولت كردستان الى مجال للتغلغل البريطاني من اجل توفير حزام او نطاق من المناطق الكردية يحمي المصالح البريطانية في الهند وجنوب ايران والخليج العربي من الاطماع الروسية ( البياتي ، ٢٠٠٩ ، ص٣٩ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ص٤٥٦ ) .

وكان من مظاهر الاهتمام البريطاني بكردستان هي الجولات العديدة التي قام بها دبلوماسيون وضباط ورحالة بريطانيين في ربوعها للدعاية من جهة وجمع المعلومات عن المنطقة من جهة اخرى. وقد تمكن هؤلاء من مسح المنطقة بشكل كامل تقريبا وجمع معلومات وافية عن مسالكها ومدنها ومواردها ( **خالفين** ، ١٩٦٩ ، ٢٨-٣٠ ).

وقد ظهر اهتمام الدبلوماسيين البريطانيين لتقوية النفوذ البريطاني في كردستان من خلال اقامة علاقات مع القوى المتنفذة فيها. وكان المقيم البريطاني في بغداد كلاوديوس. ج. ريج C. J Rich (١٨٠٨-١٨٢١) اول دبلوماسي بريطاني في العراق يبدي اهتماما خاصا بالمنطقة الكردية، فقد قام خلال السنوات ١٨٢٠-١٨٢١ بجولة في ربوع كردستان بدعوة من حاكم السليمانية محمود باشا الباباني. وكان من نتائج تلك الجولة اقامة صلات مع بعض الزعماء الكرد ولا سيما في منطقة السليمانية، ومنهم خسرو باشا رئيس عشائر الجاف والشيخ حسن رئيس عشيرة البيات ( **ريج** ، ١٩٥١ ، ١٧ ، ٥٦ ، ٧٧ ؛ **احمد** ، ١٩٨٤، ٣٤ ؛ **مراد** ، ١٩٩٧ ، ١٥٩ ).

ولم يتوان القناصل البريطانيين في استخدام العشائر الكردية ضد العثمانيين عندما تتعارض مصالحهم مع سياسة العثمانيين في العراق. فقد كان الدبلوماسيين البريطانيون وراء المواجهة المسلحة بين والي بغداد داوود باشا وبعض الزعماء المتنفذين في كردستان عندما صادر داؤود باشا بضائع شركة الهند الشرقية واغلق جميع مؤسساتها وأبعد مستخدميها من العراق. وبعد عدة هزائم في المعارك التي خاضها داؤود باشا مع فصائل القبائل الكردية والقوات الايرانية وافق على التصالح مع شركة الهند الشرقية وممثلها الجديد في بغداد تايلور( **بونداريفسكي** ، ١٩٧٥ ، ٢٥-٢٦ ) .

وكان رولنسون من بين الدبلوماسيين البريطانيين الذين ابدوا اهتماما واضحا بكردستان وقام باكثر من جولة فيها خلال العقدين الرابع والخامس من القرن التاسع عشر وقد ارتبط بعلاقات حسنة مع امير الامارة البابانية احمد بن سليمان باشا الباباني ( **محمد** ، ٢٠٠٥ ، ٢١٤ ؛ **عبدالله** ، ٢٠١٩ ، ٤٥٩ ) .


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

ويمكن القول بان هؤلاء الرحالة تغلغلوا في جميع اراضي كردستان تقريبا واثناء تغلغلهم درسوا طوبوغرافيتها واقتصادها ومصادرها الحربية وتركيبتها الاجتماعية والسياسية . وكانت نتيجة تلك الرحلات التي حملت ابعادا تجسسيه تهيا لبريطانيا رسم الخرائط المفصلة لتوزيع الكرد وطرق المواصلات المحلية لهم ومصادر الثروة المعدنية الرئيسة لمناطقهم ومسالك الجبال ومعابر الانهر التي تمر عبر اراضيهم ( خاتفين ، ١٩٦٩ ، ٣٢-٣٣ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٤٥٩ ) .

## _ سياسة بريطانيا ازاء الامارات الكردية

كانت الحسابات الاستراتيجية التي استندت اليها بريطانيا بشأن المسألة الكردية قد اثرت في تصوراتها وردود افعالها تجاه شؤون كردستان ، اذ وقفت بثبات الى جانب تعزيز سلطة الحكومة المركزية في استانبول وطهران في المناطق الكردية ، وظهرت مواقفها السلبية من الكرد من خلال سلوكها المعادي لمساعي بعض الامراء الكرد الطامحين الى اقامة دولة كردية مستقلة ، كذلك دعمها ومساندتها للعثمانيين في قمعهم للانتفاضات الكردية الثائرة ضدهم ( اسكندر ، ٢٠٠٧ ، ٣٦-٣٧ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٤٥٩ ) .

لقد تبلورت صلات بريطانيا بالمنطقة الكردية في هذه الفترة ذاتها عندما كانت الامارة السورانية[٢] في راوندوز (-١٨٤٦) في اوجها وكان يحكمها محمد باشا الملقب " ميركور " الذي وسع امارته فأصبحت اقوى امارات كردستان مما حدا بالعثمانيين على أن يجهزوا حملة عسكرية للقضاء علية. وقد أيدهم الإنكليز في ذلك لمنع الفرس من التدخل في شؤون هذه الامارة تجنبا لاي تطورات عنيفة على الحدود العراقية – الايرانية من شأنها ان تؤدي إلى تعقيدات دولية قد تقضي على السياسة البريطانية الرامية إلى الاستقرار على طول الحدود العثمانية – الايرانية لذلك اتصلوا بالامير السوراني وبعثوا اليه " ريتشارد وود "R . Wood الذي اقنع الامير بان لا يستمع للتحريضات الايرانية، وان يعلن الخضوع للسلطان العثماني على امل ان تسعى السفارة البريطانية في اسطنبول للتدخل في اصدار عفو عنه رغم معارضة القيادة العثمانية لهذا التدخل (نوار ، ١٩٦٨ ، ١٠٥؛ الدوسكي ، ٢٠٠٦ ، ١٠٨ ) .

كان وود مقتنعا من ان القوات العثمانية سوف تمنى بهزيمة فادحة اذا ماحاولت الاستيلاء على راوندوز . وقد سمع في بغداد عن اعتقاد مندوب شركة الهند الشرقية بان النفوذ الروسي في ايران كان يعزز من تاثير الحكومة الايرانية المخرب في المنطقة الحدودية في وقت كان فيه شاه ايران يعمل لمصلحة روسيا وضد المصالح الروسية في الحدود الشرقية للامبراطورية العثمانية ( مكدول ، ٢٠٠٤ ، ٩١ ) .

كانت السلطات البريطانية تخشى ان يعمد ميركور في فترة من فترات اليأس إلى ان يضع إمارته تحت الحكم المصري نكاية بالعثمانيين اذا ما اطبقوا على امارته. وكان الإنكليز

يعملون على عدم اشراك المصريين او غيرهم في هذه المشكلة حتى لا يتطور الصراع إلى ازمة كبرى ، خاصة اذا كان هذا التدخل من جانب قوى مناهضة للمصالح البريطانية في العراق (نوار،١٩٦٨، ١٠٧) .

كما خشية بريطانيا ايضا من دور ميركور في استقلال كردستان الذي سيكون خطوة كبيرة لانهيار الدولة العثمانية وهو ما سيكون في مصلحة روسي القيصرية بلا شك ( توفيق ، ٢٠١٤ ، ٥٣-٥٤ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٤٦٠ ) .

كما حاول رسول بك شقيق ميركور الذي تولى حكم راوندوز بأمر من والي بغداد علي رضا باشا، أن يستعيد ما كان لاخيه من الاستقلال الذاتي فتصدى له نجيب باشا مما دفع رسول بك إلى التفاهم معه وقد تم ذلك في أيلول ١٨٤٦ بوساطة القنصل البريطاني العام في بغداد راولنسون (نوار، ١٩٦٨ ، ١٠٩) .

وازاء ماتقدم فقد وقفت بريطانيا بالند من تحركات محمد باشا الراوندوزي امير سوران وساندت الدولة العثمانية في اجهاض انتفاضته التي استهدفت استقلال الامارة السورانية وايجاد كيان سياسي موحد للكرد .

وقد تجلى الموقف البريطاني من خلال البرقيات التي كانت ترسل من قبل السفير البريطاني في استانبول الى القناصل البريطانيين في المنطقة يحثهم فيها على الاتصال بقادة الكرد واقناعهم بعدم تأييد جهود ميركور في تحقيق أي استقلال له في كردستان ، كما كلف القنصل البريطاني في اورمية بمهمة التنسيق مع الجيش العثماني من اجل توجيه ضربة مشتركة الى قوات امير سوران لاجباره على الاستسلام . فضلا عن ذلك فقد نشطت الدبلوماسية البريطانية في سبيل تحقيق تضامن بين الدولتين العثماني والفارسية للقضاء على ميركور وتحركاته التوسعية فقد اظهر السفير البريطاني في طهران رغبة بلاده الملحة لتحقيق ذلك التضامن المشترك ( علي ، ٢٠١١ ، ٣٢ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٤٦٠ ) .

وامام الضغط العثماني والايراني والدور البريطاني استسلم الامير السوراني لقوات رشيد باشا عندما ادرك عجزه عن مواصلة القتال لا سيما عندما فقد الجزء الاعظم من مناطق نفوذه ( عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٤٦٠ ) .

وكانت سياسة انكلترا تجاه الامارة البابانية في السليمانية [٣] (١٥٠٠-١٨٥٠) تختلف عما هي أزاء الأمارة السورانية، فكان القنصل البريطاني راولنسون ميالا ( خلال المفاوضات الدائرة بين الحكومة العثمانية والايرانية لعقد معاهدة ارضروم الثانية عام ١٨٤٧ حيث كانت ايران تطالب بضم السليمانية اليها ) إلى أن تكون الأمارة البابانية بعيدة عن أيدي العثمانيين بشكل ما، وذلك عن طريق تثبيت الأسرة البابانية في الحكم وتقويتها بحيث تستطيع أن تحافظ على نفسها ازاء الصراع بين هاتين الدولتين الكبريتيين وهي خطة سار عليها المقيم البريطاني ريج خلال محادثاته



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

سنة ١٨٢٠ مع محمود باشا البابانى ( نوار ، ١٩٦٨ ، ١١٨ ) . وخلال الصراع بين الأخوة البا بانيين على حكم الأ مارة كان المقيم البريطاني راولنسون يقول: "أن ا حمد با شا البا باني لو نجح في ا حدى محاولاته لاسترداد السليمانية فستنشب ثورة كردية عامة تنتهي باستقلال كردستان عن الدولة. وفي عودة احمد لسدة الحكم خدمة كبيرة للمصالح البريطانية" ( نوار ، ١٩٦٨ ، ١١٨ ).

وقد دعا راولنسون حكومته إلى احتلال (العراق العربي) [٤] اذا حدث واتفقت الدول على تقسيم الدولة العثمانية وفي هذه الحالة تصبح الأ مارة البابنية وعلى رأسها احمد با بان ( صديق القنصل البريطاني ورجله المفضل في كردستان) في الحد الشمالي لهذه المستعرة البريطانية، الا ان امال راولنسون ضاعت في خضم العمليات العسكرية العثمانية التي قضت على تلك الأ مارة عام ١٨٤٩ ( نوار ، ١٩٦٨ ، ١١٩ ) .

وبخصوص الا مارة البوتانية فقد ا سهمت بريطانيا ايضا في انهاء هذه الا مارة وقمع انتفاضة اميرها بدر خان ( ١٨٤٣-١٨٤٧ ) من خلال نشاطها الفعال في اثارة الصدامات بين الكرد والمسيحيين حتى تجد مبررا لتدخلها في شؤون كردستان بحجة حماية المسيحيين ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٢٤-٢٦ ) ، ففي عام ١٨٤٦ اقدم نمرود رسام مساعد القنصل البريطاني في الموصل بالاتصال بالمار شمعون الذي كان رئيسا روحيا للنساطرة ( الاشوريين ) الذين كانوا يسكنون في منطقة حكاري التابعة لامارة بوتان وطلب منه التمرد على بدرخان وعدم طاعته واثارة المشاكل بين الكرد والمسيحيين ( علي ، ٢٠١١ ، ٣٣-٣٤ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٢٦٠ -٤٦١ ) .

وقد نجح رسام في اشعال الفتنة بين الطرفين حين اعلن النساطرة رفضهم دفع الضرائب الى الامير البوتاني الذي لم يجد بدا من تجريد حملة تأديبية ضدهم ادت الى احتجاج بريطانيا وروسيا على موقفه هذا وفق مذكرة ارسلت الى الباب العالي يطلبون فيها وضع حد لسلطة بدرخان وامارته ولا فان الدول الغربية ستتدخل لايقاف ما اسموه بمذابح المسيحيين ( عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٤٦١ ) .

ولتثبت الدولة العثمانية حسن نيتها امام بريطانيا وروسيا جردت حملة عسكرية عام ١٨٤٧ بقيادة والي حلب عثمان باشا ضد امير بوتان الذي لم يستطع الصمود امام الضربات العثمانية التي انهت حكمه حتى اضطر الى الاستسلام والنفي الى جزيرة كريت . وانتهت بذلك امارة بوتان بفضل الدور البريطاني الذي كان يسعى الى الحفاظ على مصالح بريطانيا في المنطقة وذلك بالمحافظة على كيان الدولة العثمانية دون تفكك من قبل الحركات الاستقلالية الكردية ( نوار ، ١٩٦٨ ، ١١٢ ؛ البوتاني ، ٢٠٠٧ ، ٢١ ؛ عبدالله ، ٢٠١٩ ، ٤٦١ ) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

- **تغلغل النفوذ الروسي في كردستان**

على النقيض من الموقف البريطاني فان الحكومة الروسية لم تولي اهتما ما لكرد ستان حتى مطلع القرن التاسع عشر فأصحاب المشاريع الروس في هذه الحقبة كانوا قد استكانوا الى القناعة بما حققوه من الصلات الاقتصادية التي تمسكوا بها مع ايران والامبراطورية العثمانية باستخدام الطرق المتوفرة المارة عبر كردستان ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٤١ ) .

تعود بدايات العلاقات المباشرة بين روسيا وكردستان التاريخية الى حقبة الحروب الروسية – الفارسية والحروب الروسية – العثمانية في نهاية القرن الثامن عشر وبداية القرن التاسع عشر حيث جاءت الاتصالات الاولى بين روسيا والكرد نتيجة لاقتراب العمليات العسكرية من الاراضي التي يقطنها الكرد ، ثم ما لبث ممثلو الامبراطورية الروسية ان خفضوا مستوى اتصالاتهم مع المفاوضين الكرد في الفترة مابين ١٨٠٤-١٨٠٥ لتقتصر بشكل اساسي على محاولات ضمان حياد الكرد في الصراع الروسي الفارسي والروسي – العثماني ( خالفين ، ١٩٦٩، ٤١ ؛ AL Jazeera Centre for studies )

كانت روسيا القيصرية تهدف من هذه الاتصالات المبكرة مع الكرد الى تحقيق اهداف عدة منها:

١- تحييد الكرد خلال صراعهم مع الدولتين الفارسية والعثمانية .

٢- كسب ود الكرد خاصة بعد ان تمكنت روسيا من بسط سيطرتها على اجزاء من اراضي كردستان.

٣- الاستفادة من الكرد كمقاتلين في حروبها ضد الدولتين الفارسية والعثمانية.

٤- مد نفوذها داخل المنطقة والتغلغل فيها للوصول الى المياه الدافئة في الخليج العربي ( روباري ، ٢٠٢٠).

ان اول اتصال بين ممثلي الامبراطورية الروسية وشيوخ الكرد كما اشارت المصادر حدث عام ١٨٠٤ ففي فترة الحرب الروسية – الفارسية وجه القائد العام للقوات الروسية في جورجيا الامير جيجيانوف في ٢٤ تموز ١٨٠٤ رسالة الى حسين اغا رئيس القبائل الرحالة الكردية في خانية يريفان الذي كان قد وضع فرق من فرسان تلك القبائل تحت تصرف السلطات المحلية الفارسية ، وقد اقترح الامير جيجيانوف على حسين اغا ان يصبح الى جانب روسيا وان يكسب الجنسية الروسية وقد تعهد ان يحفظ للقادة الكرد جميع حقوقهم وامتيازاتهم .

وبالرغم من ان حسين اغا قد امتنع عن الرد على هذه الرسالة الا انه مع ذلك انسحب مع الفرسان الكرد من يريفان التي كانت محاصرة من قبل الجنود الروس . ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٤٢ ) .

جرب القادة الروس في العام التالي ١٨٠٥ محاولات جديدة لاجتذاب الكرد الى جانب الامبراطورية الروسية الا ان جميع هذه المحاولات اصيبت بالإخفاق بل اكثر من ذلك فقد حدثت



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولینێن كوردی

اصطدامات مسلحة بين الكرد والروس على اثر الغزوات التي قامت بها الفرق الكردية على اراضي تابعة للإمبراطورية الروسية ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٤٢ ) .

ونتيجة لهذه الاحداث فقد اخذت سياسة السلطات الروسية بآراء القبائل الكردية وهو ضمان حيادها في الصراع بين روسيا وبلاد فارس وروسيا والدولة العثمانية . وقد صاغ افربالوف اسلوب هذه السياسة كمايلي : " لقد عرض على الرؤساء الاكراد الانتقال الاختياري الى المواطنة الروسية مع التعهد بضمان جميع حقوقهم على القبائل التي هي تحت سيادتهم ، وترك عدد مناسب من القبائل الرحل وحريتهم ومنع الاعمال العسكرية ضدهم الا في حالات الضرورة القصوى وفي نفس الوقت عدم ترك أي عمل من اعمال الغزو والسلب داخل حدودنا بدون عقاب شديد صارم " ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٤٢ ) .

لقد ابدت القبائل الكردية نشاطا اشد بكثير خلال الحروب الروسية – الفارسية ١٨٢٦ – ١٨٢٨ وكان ذلك بسبب قرب مسرح الوقائع الحربية من مناطق سكن الكرد فضلا عن ان الجنرالات الروس ابدوا اهتماما اقل لمحاولات الحصول على نفوذ سياسي بين الكرد ( خاتفين ، ١٩٦٩ ، ٤٣ ) .

ومن جهتها حاولت بريطانيا كما فعلت في الحروب السابقة ان تتدخل دوما لعرقلة انهاء الصدام المسلح الروسي – الفارسي فقد زودت بريطانيا الجيش الايراني بالمدافع والبنادق والذخائر الحربية ، كما اشترك الضباط الانكليز بصفة مدربين في تدريب الفرسان الكرد على الاعمال الحربية . ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٤٣ ) .

حاولت روسيا خلال الحرب الروسية – العثمانية ١٨٢٨-١٨٢٩كسب الكرد الى جانبها في هذه الحرب وفي الصراع المستقبلي ضد الدولة العثمانية وقد افلحت بتجنيد اعداد من الكرد في هذه الحرب وضمهم الى فرقها العسكرية . ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٤١-٤٢ ؛ توفيق ، العدد ٣ ، ٢٠٠٩ ، ٣ ) .

وبخصوص القبائل الكردية في جنوب كردستان فقد اشار خالفين بانها لم تقم باي نوع من المساهمة في الحرب الروسية – العثمانية ١٨٢٨-١٨٢٩ . فسياسة القمع الشديدة التي انتهجتها الدولة العثمانية في اخماد انتفاضات القبائل الكردية المعادية لهم قد نجم عنها الموقف السلبي ازاء الاشتراك في الحرب الى جانب العثمانيين فقد وقف الكثير من الزعماء الكرد في الامارات الكردية بوتان وراوندوز وبادينان وحكاري الواقعة تحت السيادة العثمانية موقف الحياد في هذه الحرب ، فضلا عن وقوف بعض قادة الكرد التي كانت اراضيهم تقع في منطقة العمليات العسكرية موقفا (متذبذبا) فكان قادتهم يتفاوضون مع قادة الجيش الروسي وفي الوقت نفسه مع قادة الجيش العثماني كلما سنحت الفرصة لهم ( خالفين ، ١٩٦٩ ، ٤٣ ) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ومما تقدم فقد اصبح واضحا ان الكرد لم يبدو اهتماما خاصا بالدفاع عن مصالح الدول الغربية خلال الحروب الروسية – الفارسية والروسية – العثمانية في النصف الاول من القرن التاسع عشر .

**الخاتمة:**

تعد العشائر الكردية عنصرا اساسيا مهما ومتميزا في كردستان بأحوالها الاقتصادية والاجتماعية ولذلك فقد ركزت السياسة البريطانية والروسية لاحتواء ولاءها الى جانبها .

ان موقع كردستان واهميتها الجغرافية والاستراتيجية جعلها مصدر جذب للقوى الدولية الكبرى لاسما بريطانيا وروسيا .

وقد اتخذت بريطانيا من تغلغلها في كردستان منفذا لتقوية نفوذها في ايران والدولة العثمانية من اجل ازاحة القوى المنافسة لها في المنطقة وخاصة روسيا القيصرية .

ويلاحظ ان تنامي النفوذ البريطاني كان عاملا من عوامل عدم الاستقرار في كردستان فضلا عن ان بريطانيا اصبحت قوة مؤثرة في مستقبل الكرد وكان لها دور واضح في اسقاط الامارات الكردية .

وخلافا للدور البريطاني لم تحاول روسيا القيصرية ان تعزز مكانتها في كردستان فقد اتبعت نهجا سياسيا ازاء الكرد استهدف ضمان حيادهم في الحروب الروسية – الفارسية والروسية – العثمانية وكان هذا النهج ايضا يتفق مع مصالح القبائل الكردية .

ومن جانبهم فقد وقفت بعض القبائل الكردية الى جانب روسيا بين اعوام ( ١٨٠٤-١٨١٣ ) و ( ١٨٢٦-١٨٢٨ ) اثناء الحروب الروسية – الفارسية فضلا عن وقوفهم الى جانب الروس ايضا في حربهم ضد الدولة العثمانية اعوام ( ١٨٢٨-١٨٢٩ ) وكان هذا الموقف مقابل مساعدات عسكرية ومالية لا قيمة لها .

**قائمة المصادر:**

**اولا : الرسائل والاطاريح الجامعية**


١- باسم حطاب الطعمة ، تغلغل النفوذ البريطاني في العراق ١٧٩٨-١٨٣١ ، رسالة ماجستير ، كلية الاداب جامعة بغداد ، ١٩٨٥ .

٢- عبدالرحمن ادريس صالح البياتي ، سياسة بريطانيا تجاه كرد العراق ١٩١٤-١٩٣٢ ، اطروحة دكتوراه ، كلية التربية – ابن رشد ، جامعة بغداد ٢٠٠٩ .

٣- كامل جاسم دهش ، الامارة البابانية في العهد العثماني ١٦٦٩- ١٨٥١ ( دراسة تاريخية ) ، رسالة ماجستير ، كلية الاداب ، جامعة بغداد ، ٢٠٠٧ .

٤- محمد عصفور سلمان ، العراق في عهد مدحت باشا ١٨٦٩-١٨٧٢ ، رسالة ماجستير ، كلية الاداب ، جامعة بغداد ١٩٨٩ .
٥- محمد هادي القيسي ، احوال العراق الاقتصادية والاجتماعية ١٨٣١-١٨٦٩ ، رسالة ماجستير ، كلية الاداب ، جامعة بغداد ١٩٨٥ .

**ثانيا : الكتب العربية والمعربة**

**أ : العربية**

١- انور المائي ، الاكراد في بهدنان ، ( الموصل ١٩٦٠ ) .
٢- البدليسي ، شرفنامة ، ج١ ، ( القاهرة ١٩٦٢ ) .
٣- حنا بطاطو ، الطبقات الاجتماعية والحركات الثورية في العهد العثماني حتى قيام الجمهورية ، ج١ ، ( بيروت ١٩٩٥ ) .
٤- خليل علي مراد ، دوافع رحلات الانكليز الى الموصل واطرافها في القرن التاسع عشر ومطلع القرن العشرين ، ( جامعة الموصل ١٩٩٧ ) .
٥- سعد بشير اسكندر ، من التخطيط الى التجزئة سياسة بريطانيا العظمى تجاه مستقبل كردستان ١٩١٥-١٩٢٣ ، مطبعة شيفان ، ( السليمانية ٢٠٠٧ ) .
٦- شاكر خصباك ، الاكراد ، مطبعة شفيق ، ( بغداد ١٩٧٢ ) .
٧- شاكر خصباك ، العراق الشمالي ، مطبعة شفيق ، ( بغداد ١٩٧٣ ) .
٨- شعبان مزيري ، كردستان في ظل الحكم العثماني١٥١٤-١٩٠٨ ، دار الشؤون الثقافة العامة ، ( بغداد ٢٠١٣ ) .
٩- صالح خضر محمد ، الدبلوماسيون البريطانيون في العراق ١٨٣١-١٩١٤ دراسة تاريخه ، دار الشؤون الثقافة العامة ، ( بغداد ٢٠٠٥ ) .
١٠- عبدالرحمن قاسملو ، كردستان والاكراد ، المؤسسة اللبنانية للنشر ، ( بيروت ١٩٧٠ ) .
١١- عبدالعزيز سليمان نوار ، تاريخ العراق الحديث من نهاية حكم داؤود باشا الى نهاية حكم مدحت باشا ، دار الكتاب العربي ، ( القاهرة ١٩٦٨ ) .
١٢- عبدالفتاح علي البوتاني ، دراسات ومباحث في تاريخ الكرد والعراق المعاصر ، ( اربيل ٢٠٠٧ ) .
١٣- عباس العزاوي ، عشائر العراق ، ج٢ ، ( بغداد ١٩٤٧ ) .
١٤- عثمان علي ، الحركة الكردية المعاصرة دراسة تاريخية ووثائقية ١٨٣٣-١٩٤٦ ، ط٣ ، ( اربيل ٢٠١١ ) .
١٥- علي شاكر علي ، تاريخ العراق في العهد العثماني ١٧٣٨-١٨٥٠ ، مطبعة اوفسيت ، ( بغداد ١٩٨٥ ) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١٦- فاضل الانصاري ، سكان العراق ، ( دمشق ١٩٧٠ ) .

١٧- فؤاد حمه خورشيد ، العشائر الكردية ، مطبعة الحوادث ، ( بغداد ١٩٧٩ ) .

١٨- كامران عبدالصمد الدوسكي ، كردستان في العهد العثماني في النصف الاول من القرن التاسع عشر ، دار الموسوعات العربية ، ( بيروت ٢٠٠٦ ) .

١٩- كمال مظهر احمد ، كردستان في سنوات الحرب العالمية الاولى ، ترجمة محمد الملا عبدالكريم ، ط٢ ، ( بغداد ١٩٨٤ ) .

٢٠- هوكر طاهر توفيق ، الكرد والمسألة الارمينية ١٨٧٧-١٩٢٠ ، دار اراس ، ( اربيل ٢٠١٤ ) .

ب_ المعربة

١- البرت منتشاشفيلي ، العراق في سنوات الانتداب البريطاني ، ترجمة هاشم صالح التكريتي ، ( جامعة بغداد ١٩٧٨ ) .

٢- بونداريفسكي ، سياستان ازاء العالم العربي ، دار التقدم ، ( موسكو ١٩٧٥ ) .

٣- دبليو . ار. هي ، سنتان في كردستان ١٩١٨-١٩٢٠ ، ج١ ، ترجمة فؤاد جميل ، ( بغداد ١٩٧٣ ) .

٤- ديفد ماكدول ، تاريخ الاكراد الحديث ، دار الفارابي ، ( بيروت ٢٠٠٤ ) .

٥- كلوديوس جيمس ريج ، رحلة ريج في العراق عام ١٨٢٠ ، ترجمة بهاء الدين نوري ، ج١ ، ( بغداد ١٩٥١ ) .

٦- ن . أ . خالفين ، الصراع على كردستان المسألة الكردية في العلاقات الدولية خلال القرن التاسع عشر ، ترجمة احمد عثمان ابو بكر ، مطبعة الشعب ، ( بغداد ١٩٦٩ ) .

٧- هاملتون ، طريق في كردستان ، ترجمة جرجيس فتح الله ، ط٢، ( اربيل ١٩٩٩) .

ثالثا : الاجنبية

1: Sheikh A Waheed , The Kurds and their country , ( Pakistan 1955) .

2: F . Barth , principles of the social organization in southern Kurdstan .( Oslo 1953 ) .

3: William Yale , The Near East ,( London 1958 ) .

رابعا : البحوث والمقالات العربية والاجنبية

أ : العربية

a. بيار روباري ، " العلاقات الكردية – الروسية " ، www . sot Kurdistan .net , 27-10-2020 .

٢- شاكر خصباك ، " مميزات الحياة القبلية الكردية " ، مجلة كلية الاداب ، جامعة بغداد ، العدد ٢ ، شباط ١٩٦٠ .

٣- نزار علوان عبدالله ، " التغلغل البريطاني في كردستان ( ١٧٥٠-١٨٥٠ ) بداياته ، دوافعه ، مظاهره " ، سياسة بريطانيا تجاه القضية الكردية ، جامعة زاخو ٢٠١٩ .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

٤- هوكر طاهر توفيق ، " جريدة كردستان وروسيا القيصرية ١٨٩٨-١٩٠٢ دراسة في موقف جريدة الكرد الاولى ( كردستان ) من روسيا القيصرية ، مجلة التربية والعلم ، المجلد ١٦ ، العدد ٣ ، ٢٠٠٩ .

## ب- الاجنبية

1: C.J. Edmonds, "The Place of the Kurds In the Middle Eastern" , Journal of The Royal Central Asian Society , Vol. XLV, No: 45, January 1958 .

2 : Edgar Wagram, "The Ashiret Highlands of Hakkiari", Journal of The Royal.., Vol. 111, No:3, January 1916 .

3 : Major W. Wilson, "Northern Iraq and its People", Journal of The Royal .., Vol. XXLV, No: 24, January 1937 .

4 : WWW . Al . Jazeera centre for studies . net .

الهوامش:

---

(١) تأسست الطريقة النقشبندية لأول مرة في كردستان العراق في مطلع القرن التاسع عشر تقريباً عبر مولانا خالد (توفي ١٨٢٦)، وهو من أفراد عشيرة الجاف. وفي الوقت نفسه وصلت الطريقة القادرية الأقدم إلى ذروة قوتها في ذلك الإقليم. ويتبع النقشبنديون تعاليم محمد بهاء الدين البخاري (١٣١٧-١٣٨٩). أما القادريون فيتبعون تعاليم الشيخ عبدالقادر الكيلاني (١٠٧٧-١١٦٦) وقد سيطرت الطريقتان فيما بعد على الحياة الدينية الكردية . (بطاطو ، ج١، ١٩٩٥ ، ٦٣) .

(٢) ان العائلة الحاكمة لامارة سوران كانت تنحدر من عشيرة بشدر الجبلية ، وهى احدى اقوى العشائر الكردية ، ( بطاطو ، ج١ ، ٩٦ ؛ البدليسي ، ج١ ، ١٩٦٢ ، ٢٦٨-٢٧٧ ؛ نوار ، ١٩٦٨، ١٠١-١١٠ ).

(٣) يشير الباحث بطاطو ان البابانيين ربما كانوا يمتون بصلة القرابة إلى عشيرة البشدر اذ ان أصولهم كانت من ناحية في بلاد البشدر، وقبل انتقالهم إلى الباشوية كانوا زعماء اقطاعين لهذه العشيرة تحت حكم السورانيين ، وهم ينتمون إلى (فقي احمد) الذي كان قائد عسكري في القرن السابع عشر ، وان الاتراك كافئوه على مساعدته لهم في الحرب بان أقطعوه عدد من القرى . ( بطاطو ، ج١ ، ٩٦-٩٧ ؛ البدليسي ، ١٩٦٢ ، ج١ ، ٢٧٦-٢٨٨ ؛ نوار ، ١٩٦٨ ، ١١٢-١٢٠ ؛ علي ، ١٩٨٥ ، ١٦٤-١٦٧ ) .

(٤) مصطلح جغرافي يقصد به المنطقة الواقعة جنوب كردستان والممتدة من الموصل إلى البصرة.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# هەڤڕكییا هەژمونێ دناڤبەرا بەریتانیا و روسیا ل نیڤا ئێكێ ژ سەدەمیێ نوزده و كاریگەریا وێ ل سەر میرگەهێن كوردی ١٨٠٠-١٨٥٠


**پۆختە:**

كوردستان ل نیڤا ئێكێ ژ سەدیێ ١٩ جهێ راكێشانا بەرژەوەندییێن دەولەتێن زلهێز بوو ئەو ژی ژبەر جهێ وێ یێ ئیستراتیجی و پێگەهێ وێ یێ ئابووری، لەوڕا هەر ئێك ژ بەریتانیا و روسیا قەیسەری هەر ژ دەستپێكا ڤی سەدەی هەولدان پێگەهەكێ بو خوه ل ڤی جهی پەیدا بكەن و هەولا دەرباس بوون بو ناڤ هوز و عەشیرەتێن كوردان بدەن، هەروەسا پێكولكرن كو پێكهاتەیێن ئایینی ژی بو لایێ خوه بكێشن ئەوژی ب چەندین رێیان وەك شاندێن دبلوماسی یان چالاكییێن میسیونەری یان ب رێكا گەروك و شوونوارناسان.

ئەڤ ڤەكولینە ل سەر دوو تەوەران هاتیە دابەشكرن یا ئێكێ وێنەیەكێ روهن سەبارەت پێكهاتا ئابووری و جڤاكییا هوزان ل كوردستانێ دیار دكەت.

تەوەرێ دووێ بەحسێ ململانێیا روسی- بەریتانی ل كوردستانێ ل دەستپێكێن سەدەیێ ١٩ و كاریگەریا وان ل سەر پاشەروژا میرگەهێن كوردی دكەت.



**پەیڤێن سەرەكی:** *بەریتانیا، روسیا، كوردستان، میرگەهێن كوردی، سەدەیێ نوزده*


## The British-Russian influence struggle in Kurdistan during the first half of the nineteenth century and its impact on the Kurdish emirates 1800-1851


**Abstract:**

Kurdistan is an area of attraction for the interests of major countries, especially in the first half of the nineteenth century, due to its economic and strategic importance. Britain and Tsarist Russia worked during the period from the beginning of the nineteenth century until the middle of this century to find a foothold for them in Kurdistan and try to penetrate among the Kurdish clans as well as win over Religious minorities have represented this in many ways, whether through diplomatic activity, missionary missions, or travelers and archaeologists.

This study was divided into two axes. The first dealt with giving a picture of the importance of the economic and social composition of the clan in Kurdistan.

The second axis touched on the British-Russian rivalry in Kurdistan from the early nineteenth century until the middle of this century, and the impact of that conflict on the future of the Kurdish emirates



**Keywords:** *Britain, Russia, Kurdistan, the Kurdish Emirates, the 19th century Abstract*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

# الانتفاضات الكردية في كردستان في النصف الاول من القرن التاسع عشر

أ.م.د. عماد عبدالعزيز يوسف

قسم التاريخ- كلية التربية الاساسية - جامعة الموصل / العراق

م.م. امين غانم محمد

قسم التاريخ- كلية التربية الاساسية - جامعة الموصل / العراق

**ملخص البحث:**

يستعرض هذا البحث أهم الاوضاع السياسية وتطورات الاحداث خلال النصف الاول من القرن التاسع عشر في جنوب كردستان ، حيث تميزت هذه الفترة بتبلور الوعي القومي الكردي من خلال قيامهم بعدد من الانتفاضات والثورات ضد العثمانيين والايرانيين في سبيل الدفاع عن قوميتهم وكيانهم ، واعطاء فكرة عامة عن النزاع القائم بين الكورد والعثمانيين من جهة ، والكورد والايرانيين من جهة أخرى في ظل المتغيرات السياسية التي شهدها الكورد خصوصاً في اطار النفوذ العثماني ، وأنماط السياسات التي اتبعها العثمانيون إزاءهم ، ولا سيما بعد ان حاول السلاطين العثمانيين مع مطلع القرن التاسع عشر فرض السلطة المركزية على جميع انحاء الدولة ، ومن ثم العمل على اخضاع الإمارات الكوردية التي لم تكن تخضع لها للسيطرة المركزية .

ومن هنا فإن صفحات هذا البحث سوف تركز على اثر الاضطهاد والاستغلال من قبل العثمانيين للكرد ، وما نتج عنها من اثارة الروح القومية لدى الشعب الكوردي باشتراك جميع الطبقات من رؤساء العشائر ورجال الدين والأمراء والفلاحين للقيام بعدد من الانتفاضات والثورات ضد العثمانيين .

**الكلمات الدالة:** *انتفاضات ، الكورد ، العثمانيين ، القاجاريون ، القوى الاوروبية.*

**المقدمة:**

قامت العديد من الانتفاضات الكردية في كوردستان منذ مطلع القرن التاسع عشر ضد السيطرة العثمانية وسياستها التعسفية ضد الكورد، وهذهِ الانتفاضات حدثت نتيجة كرد فعل على التدخل العثماني في شؤون الامارات الكردية ، حيث نجحت العديد من الامارات الكردية في التغلب على محاولات كثيرة قامت بها – إلى جانب الدولة العثمانية – القوى الخارجية من أجل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

تحجيم قوتها ، في وقت كانت فيه الإمارات الكوردية أما مستقلة تماماً ، وأما شبه مستقلة خاضعة إسمياً إلى حكام الدول المجاورة وسلاطينها.

وبحلول القرن التاسع عشر تغير الوضع السياسي الداخلي في كوردستان تغيراً جذرياً في ظل وجود التدخل العثماني الإيراني المستمر على أراضيهم ، هذا العامل الذي خلق وضعاً خاصاً لكُوردستان بالنسبة لعلاقتها مع السلطات المركزية في كل من الدولة العثمانية وإيران ، ومما ساعدهم على ذلك التدهور العسكري والسياسي الحاد الذي أصاب الدولة العثمانية بالدرجة الاساس خلال القرنين السابع عشر والثامن عشر ، الذي أدى إلى ضعف السلطة المركزية وانتعاش النزعات الانفصالية في معظم ولاياتها ، وا تخذت هذهِ النزعات وسط الكورد وشّكلت انتفاضات عديدة من قبل أمراءهم تمكنوا خلالها من انتزاع استقلال نسبي لهم ، ومع حلول منتصف القرن التاسع عشر حققت أكثر الإمارات الكوردية استقلالاً عملياً عن الدولة العثمانية .

ومن هنا جاء الحديث في هذا البحث ليتتبع إرهاصات وملامح شعور الكورد بالهوية القومية ، وتحول تلك الإرهاصات إلى ظهور المشاعر القومية ، وسعي الكورد إلى اثبات هويتهم بتحقيق استقلالهم عن طريق قيامهم بانتفاضات عديدة في ظل وجود المعوقات التي ساهمت بها الدول التي هيمنت على كُوردستان ، أو تقاسمها فيما بينها على ذلك وانعكاسها على كوردستان بعد نصف قرن من الصراع والحروب والحملات العسكرية العثمانية التي توجّت بالقضاء على هذهِ الإمارات وعودة الإدارة العثمانية إلى معظم مناطق كوردستان.

قسمت الدراسة إلى مبحثين رئيسيين تناول المبحث الأول الأوضاع السياسية في كوردستان للفترة (١٥١٤-١٨٠٦) ، أما المبحث الثاني فقد تطرق إلى أهم الانتفاضات الكوردية التي حدثت في كوردستان للفترة (١٨٠٦-١٨٤٧) .

**المبحث الأول: الأوضاع السياسية في كردستان (١٥١٤-١٨٠٦):**

لقد تأثرت بلاد كردستان (❖) كثيراً بموقعها الجغرافي التي انعكست آثارها على أغلب جوانبها الحياتية (توفيق، ٢٠٠٤، ١٧)، ومن هذهِ الآثار العامل الديني الذي أفرز نتيجة للسياسة التي اتبعها الشاه إسماعيل الصفوي (١٤٨٧-١٥٢٤) في كُوردستان، بحيث أصبحت المنطقة مهيأة للتغيير ، وكانت الدولة العثمانية آنذاك تراقب عن كثب تطورات الأوضاع في كوردستان التي كانت خاضعة تحت التسلط الصفوي ، ووجدت في الوقت نفسه بأن تحركات الصفويين ونشاطهم في كوردستان خطراً يهدد مصالحها وتوجهاتها التوسعية ، لذلك قررت وقف زحفها نحو أوربا والدخول في صراع مع الصفويين ومواجهة تهديداتهم (صالح، ٢٠٢١، ٨٥٩) .

وهذا ما يشير لنا أن السياسة العثمانية تجاه كوردستان تختلف عن سياستها تجاه معظم المناطق والولايات العثمانية الأخرى لأسباب تأتي في مقدمتها ؛ أن السيطرة العثمانية على



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

كُوردستان كانت نتيجة انتفاضات قامت بها الإمارات الكردية على الحكم الصفوي في كُوردستان وتمكنت من طردها منها ، وقد طلبت تلك الإمارات الدعم من الدولة العثمانية لتقديم العون لها مقابل انضمامهم للحكم العثماني (حسن، ٢٠٢١، ٢٠٣) . إلا أن نتائج الصراع العثماني – الصفوي- كما سنرى – حول كوردستان إلى مسرح نزاع بين هاتين الدولتين القويتين ، ولا سيما بعد أن استغل العثمانيون مشاعر الدين الفياضة لدى الشعب الكوردية الذي كان الإسلام يمثل حجر الزاوية في توجهاتهِ وانتماءاتهِ السياسية وتذمره من الحكم الصفوي ، من أجل استمالتهِ إلى جانبهم . وقد تحقق ذلك في عهد السلطان العثماني سليم الأول (١٤٧٠-١٥٢٠) الذي انتهج سياسة مغايرة للسياسة التي اتبعها الصفويين في تعاملهم مع الكورد ، بعد قناعتهِ التامة بضرورة إتباع سياسة تقوم على كسب الأمراء الكورد إلى جانب دولتهِ وتحريضهم ضد الهيمنة الصفوية على مناطقهم (داقوقي، ٢٠٠٢، ١٦؛ صالح، ٢٠٢١، ٨٥٩) .

وقد حُسِم الكورد هذا الصراع ، لصالح الدولة العثمانية في معركة جالديران عام ١٥١٤ عبر دعمهم للسلطان سليم الأول في مواجهة الشاه إسماعيل الصفوي ، وبالتالي، فإن الامتداد العثماني نحو الشرق ، أيضاً كان على أكتاف الأكراد ومساندتهم لهم (عقلان ، ٢٠١٧، ٣) ، وبجهود ومساعي العلامة والمؤرخ الكوردي إدريس البدليسي (*) . وعلى الرغم من اكتفاء العثمانيين من تحقيق الانتصار على الصفويين وعدم كسر شوكتهم نهائياً ، إلا أن هذا الانتصار – في الوقت نفسه- أجبر الصفويين على التخلي عن معظم المناطق الكوردية التي كانت تحت سيطرتهم . وعلى مدى ثلاثة قرون ، استمر النزاع – بشكل متقطع – بين الدولتين ، هذا النزاع أرخى بظلالهِ على أرض كوردستان فتحولت إلى مسرح له، وتحول الكُرد كشعب إلى وقود له أيضاً (مورو، ٢٠١٨، ١٢٩).

وفي ظل النجاح الذي حققه السلطان سليم ضد الصفويين في معركة جالديران ، إلا أن مصلحة السلطان سليم كانت تقتضي العمل على تأمين انضمام الأمراء الكورد الأخرين لسلطته ، فبدأ بالمرحلة الثانية في إخضاع كوردستان رسمياً ، وكسب الأمراء الكورد الذين وقفوا موقف الحياد في معركة جالديران إلى جانب الدولة العثمانية (آقجة ، ٢٠١٦، ص ١١٢) . وقد تحقق ذلك للسلطان سليم عندما طرح عليه أحد مستشاريه الكورد إدريس البدليسي ، وهي أن يعترف السلطان بجميع الامتيازات والحقوق السابقة للأمراء الكورد مقابل إلتزامهم بحماية حدودهم مع الصفويين والقتال إلى جانب العثمانيين في حالة نشوب أي نزاع مسلح معهم. وبعد موافقة السلطان سليم على هذا الرأي ، انطلق البدليسي إلى الأمراء الكورد لإقناعهم بأنه مثل هذا التحالف يصب في مصلحة الطرفين العثماني والكوردي (الركابي، ٢٠١٣، ٥١٨).

بعد أن قام البدليسي بالاتصال وبمراسلة الزعماء الكورد والاجتماع بهم واقناعهم بأن يخضعوا للدولة العثمانية ومناصرتها ، نجح البدليسي في إقناعهم بقبول السيادة العثمانية، وقد تم ذلك بفضل شخصيته الدينية ومكانتهِ السياسية ، فضلاً عن أن الأمراء الكورد كانوا ينتظرون ساعة الخلاص من الحكم الصفوي بعد هزيمة الصفويين في جالديران (زكي، ٢٠٠٥، ٢٤٩-٢٥٠) .

مع انتهاء العمليات والحركات العسكرية، وطرد الصفويين من المنطقة ، ودخول كردستان في نطاق السيادة العثمانية ، أرسل السلطان سليم الأول ، إدريس البدليسي كمفوض عثماني إلى المنطقة الكوردية، بعد أن منحهُ فرماماً شاهانياً ، يؤكد له فيه باتخاذ التدابير اللازمة لإقامة المؤسسات الإدارية (بيات، ٢٠٠٣، ٢٠؛ صالح، ٢٠٢١، ٨٥٩-٨٦٠) ، وقد قام البدليسي بدوره في تقسيم ولاية ديار بكر إلى تسعة عشر سنجقاً لتسهيل الأمور الإدارية، منها أحد عشر سنجقاً تابعاً للسلطان العثماني بصورة مباشرة . أما السناجق العثمانية الباقية فكانت مستقلة تحت حكم الأمراء الكورد الذين تمتعوا بنوع من الاستقلال الذاتي ، في حين بقت خمس حكومات أخرى تابعة مباشرة للدولة العثمانية ، وكانت مستقلة في جميع امورها الداخلية منها: اكيل، بالو، بوتان، كنج (هروري ، ٢٠٠٠، ٢٥-٢٦).

وقد اسفرت المفاوضات غير المباشرة بين الأمراء الكرد والمفوض العثماني البدليسي عن إيجاد صيغة اتفاق علم ١٥١٥ يقتضي بترك إدارة كُردستان للأمراء الذين يتوارثون الإمارة كل في إمارتهِ ( صباغ، ١٩٩٩، ١٣٢) . ويشير أحد الباحثين الكرد إلى أن بعض الباحثين الكرد المعاصرين أشاروا إلى حصول هذا الاتفاق ، إلا أنه لم يتم العثور على نص هذا الاتفاق لحد الآن ، وأن أول من أشار إليه هو المؤرخ (محمد أمين زكي) ، الذي أورد بنود هذا الاتفاق في كتابه (خلاصة تاريخ الكرد وكردستان) من دون أن يشير إلى المصدر الذي أستقى منه معلوماته . ويرجح أن توصل إلى نقاط هذهِ الاتفاقية من خلال دراسته لطبيعة العلاقات الإدارية والسياسية المتبادلة بين الإمارات الكردية والسلطات العثمانية ، والبنود التي أوردها هي : الحفاظ على حرية واستقلال الإمارات الكردية ، الاعتراف العثماني بالحق الوراثي للأمراء الكرد في إمارتهم ، ومساهمة الأكراد في جميع الحروب التي توكل اليهم من قبل السلطان ، ومساعدة الدولة للأكراد ضد حدوث أي عدوان خارجي عليهم ، ومساهمة الأكراد بتقديم المعونات المالية للسلطة (حسن، ٢٠٢١، ٢٠٤).

نلاحظ مما تقدم ، أن النتائج التي ترتبت على حدوث معركة جالديران بين الدولة العثمانية والدولة الصفوية التي وقعت على أرض كُردستان ، هي انتقال احتلال المنطقة الكوردية من الدولة الصفوية إلى الدولة العثمانية ، أي بقاء المنطقة محتلة من قبل دولة أخرى ، وعلى خلاف موقف الصفويين الذين كانوا يعينون باستمرار حكاماً من القزلباش الآريين على المناطق الكوردية ، وبالتالي ، فقد تحولت المنطقة إلى ساحة دائمة الصراع والحرب الدامية بين العثمانيين



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

والصفويين ، لم تكن ساحة كُوردستان نفسها مكاناً للمعارك فحسب ، بل كان أبناء كوردستان وقوداً لهذهِ الحرب وسداً مانعاً وحامياً للدولة العثمانية (حبيب، ٢٠٠٥، ٤٤).

وبمجيء السلطان سليمان القانوني (١٥٢٠-١٥٦٦) الذي قاد حملتهُ الأولى إلى الشرق عام ١٥٣٤، وتكلّل جهوده من دخوله مدينة بغداد وطرد الصفويين منها ( كوثراني، ١٩٩٠، ٩). قدمت الإمارات الكوردية الدعم الكبير له ، ونظراً لاستراتيجية موقع هذهِ الإمارات الكوردية التي تقع على حدود أعتى أعداء الدولة العثمانية ، فقد أصدر السلطان سليمان أحد أهم فرماناته المتعلقة بالنظام الإداري العثماني في كردستان، نظم فيها طبيعة العلاقات بين السلطات العثمانية والإمارات الكردية ، لتبدأ الدولة العثمانية بعد ذلك باستحداث نظام إداري خاص بكُوردستان ، إذ قسمت الولايات على عدد من السناجق ، إلا أن مستويات هذهِ السناجق ودرجة ارتباطها بالدولة تختلف من سنجق إلى آخر (حسن، ٢٠٢١، ٢٠٤) . وعلى الرغم من الانتصار الذي حققه العثمانيون على الصفويين ، إلا أن هناك محاولات لاحقة قد جرت من قبل الشاه طهماسب الأول (١٥٢٤-١٥٧٦) للسيطرة على مناطق كُوردستان العثمانية ، لكنها باءت بالفشل بسبب قوة الرد العثماني المعتمد على مشاركة الكُرد إلى جانبهم (الجاف، ٢٠١٢، ٣٢).

ومن جهة أخرى ، أن علاقات الكُرد بالدولتين العثمانية والصفوية تسير شداً وجذباً وفق المصالح الكوردية، وحسب تصرفات وسياسة كل دولة تجاه الكورد خاصة في مسألة الضرائب ، فعندما تضيق إحدى الدولتين الخناق على الكورد بسبب الضرائب أو التجنيد الإجباري أو أعمال السخرة ، فأن الكورد يلجأون إلى انتفاضة ، وعندما يستشعرون الخطر يعبرون الحدود المفتوحة دائماً إلى الدولة الأخرى ، وهذا ما يفسر لنا أن الأكراد كانوا يحتفظون بعلاقات مفتوحة مع إحدى الدولتين (تاج الدين، ٢٠٠١، ٨٦) .

وقد استمرت الحملات العسكرية التي قام بها السلطان سليمان القانوني ، حيث قام بثلاث حملات عسكرية استولى فيها على مدينة تبريز عاصمة الصفويين ، والعديد من المدن الأخرى ، وفي عام ١٥٥٥ عقدت الدولتين العثمانية والصفوية اتفاقية بين السلطان سليمان والشاه طهماسب عرفت باتفاقية آماسيا ، وقد عدت هذه الاتفاقية بمثابة أول اتفاقية رسمية بين الدولتين، تم بموجبها تكريس تقسيم كُوردستان رسمياً وفق وثيقة رسمية، نصت على تعيين الحدود بين الدولتين ، وخاصة في مناطق شهرزور، وقارص، وبايزيد (وهي مناطق كردية صرفة) (الدهان وعلاوي، ٢٠١٩، ١٢٣؛ محمود ٢٠١٦، ٤٧) .

ويتبين من هذا، أن الدولتين العثمانية والصفوية ، تقضيان بالمكشوف على ابناء كوردستان ، ولكن ما كان يبعث على الأسى والمرارة ، أن العشائر والقبائل الكوردية كلما هدأت الحرب نوعاً ما بين الدولتين مؤقتاً تحينت الفرص للاشتباك بعضها مع بعض في التناحر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

والاقتتال فيما بينها . وكانت الدولة العثمانية لا تمنح أمراء الكورد حق التمتع بحقوقهم الوراثية في إدارة إماراتهم إلا شريطة مشاركتهم في الحروب ضد الدولة الصفوية ، بل لم تكن لتقر لهم بهذهِ الحقوق إلا بعد انتصارهم في هذهِ الحرب (الضيفي، ٢٠١٨، ١٠). فكلما وجدت الدولة العثمانية عشيرة أو قبيلة كُوردية تعادي الدولة الصفوية رحبت بها على الفور طيلة القرن السادس عشر وأهدت اليها مختلف الخلع والهدايا الثمينة . ففي عام ١٥٦٣ لم يمنح الوزير إسكندر زينل بك إمارة هكاري إلا بعد أن نفذ هجومه على أذربيجان وكُوردستان ونهبهم ، إذ اشتبك زينل بك في منطقة سلماس مع أخيه بايندور بك ، فأندحر بايندر بك في المعركة التي درات رماها بين الأخوين ، فقتل عدد كبير من الكورد وأسروا، فقدم زينل بك إلى الوزير ومعه غنائم كثيرة ليقدمها إليه وبهذهِ الشاكلة عين أميراً على هكاري (حسن، ٢٠١٦، ٥٩-٦٤؛ رؤوف، ٢٠٠٨، ١٦٢) .

ولربما يفسر لنا أمر حقيقة الاقتتال الدائم ما بين الكورد واستعداد الأطراف المختلفة للتعاون مع السلطات المركزية العثمانية ضد أبناء جلدتهم ، هو وجود الاكراد على حدود الدولتين ، مما دفعهم للتورط مباشرة بالمعارك الدائرة بين الدولتين ، وقد عمق ذلك وجود الانقسامات العميقة ما بين القبائل الكوردية . وبطبيعة الحال استطاعت بعض هذهِ الإمارات أن تعزز مركزها باستغلال ضعف الدولة المركزية كلما سنحت لها الفرصة بذلك ( جواد، ٢٠٠٠، ١٢-١٣) .

وعلى الرغم من خضوع أجزاء من الإمارات الكوردية التي تحكم مناطق كوردستان المختلفة تحت الهيمنة العثمانية غير المباشرة ، وأجزاء أخرى منها للهيمنة الصفوية الغير مباشرة أيضاً ، فقد وصل عدد هذهِ الإمارات في عموم كوردستان خلال القرن السابع عشر إلى ستة عشر إمارة (فؤاد، ٢٠٠٠، ١٨) ، وتشير أحداث تلك الفترة إلى اشكال من المقاومة التي كانت تقوم بها العشائر الكوردية ضد تلك الهيمنة ، منها الانعطاف الأخير في العلاقات بين الايزيدية والدولة العثمانية ، ولا سيما في عهد الأمير حسين بك الداسني الذي كان أميراً على ثلاث إمارات في آن واحد وهي إمارة داسني، الموصل، اربل والسوران (جندي، ٢٠٠٨، ١٦١) ، حيث استدعي حسين بك إلى استنابول وجرد بما أنيط إليه من مناطق وإمارات ثم حكم عليه بالموت فأعدم هناك وذلك أواسط القرن السادس عشروذلك بحجة سوء إدارة وعدم محافظته على ما اقطعه إليه السلطان من البلاد . وقد أدى إعدام حسين بك الداسني إلى هياج الايزيدية ، إذ ثاروا على الدولة العثمانية ، واظهروا قوة صارمة ، فاستخدم السلطان سليمان القانوني السلاح الديني ضدهم ، فأصدر مفتي الدولة الرسمي أبو السعود العمادي أول فتوى عثمانية بحقهم أباح فيها قتلهم علناً (عبود، ٢٠٠٥، ٧٤؛ أحمد، ١٩٧٥، ٢٠٤) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

و من الانتفا ضات الكورد ية الأ خرى ، هي المقاو مة البطول ية ا لتي ا بدتها ع شيرة البرادوستيين بقيادة أمير خان برادوست ضد الشاه عباس الصفوي (١٥٧١-١٦٢٩) في الفترة الواقعة ما بين (١٨٠٨-١٦١٠) ، في قلعة دمدم الشهيرة قرب اورمية ، حيث ضرب جيش الشاه حصاراً محكماً على الا كراد البراو ستيين دام عدة شهور أ صيب خلا لها جيشه بضحايا كبيرة وخسائر فاد حة، ودافع الاكراد عن قلعتهم بقيادة أمير خان حتى ابيدو عن آخرهم ، لتتحول المأساة فيما بعد إلى ملحمة أشاد بها المستشرقون ، وتغنى بها الادباء (أحمد، ١٩٨٥، ٢٣١؛ فؤاد، ٢٠٠٠، ١٨؛ أحمد، ١٩٩٥، ص ٤١) ، كما دونت هذهِ الانتفاضة بكلمات اطلقها أمير خان بصوته ضد الشاه عباس ، جاء فيها (الساريسي ، ٢٠١٣، ١٨-١٩):

لن يخضع أبناء شعبنا

أنهم ينتظرون العدو في الميدان

أنهم يقاتلون كالأسود

ويقطعون العدو إرباً إرباً ، دوماً

لن نخاف جندك ولن نخاف خان تبريز

أن البطل لن يهرب في النزل

نحن لا نخاف خان جبن وما جبن

ولن يوليك شعبنا الادبار

لن نخاف الخان التيموري

ولن يترك شعبنا الجبال

لن اقبل تاجك

ولن أسيء إلى سمعة كردستان

بعد احتلال بغداد عام ١٦٢٣ من قبل الشاه عباس الصفوي ، سارع حاكم أردلان الكوردي إلى الوقوف بجانب الشاه ، بينما احتفظ بقية الأمراء الا كراد على ولائهم التقليدي للسلطان العثماني. وقد قاد السلطان العثماني مراد الرابع (١٦٢٣-١٦٤٠) حملة عسكرية في أذار ١٦٣٨ تمكن من خلالها استعادة بغداد ، وقد تم انهاء الحرب بين الدولتين بعقد اتفاقية معاهدة زهاب عام ١٦٣٩ بين الشاه عباس والسلطان مراد الرابع في مدينة قصر شيرين الواقعة في منطقة كرمشان بشرق كوردستان (أبو عليه، ٢٠٠٨، ٢٧٥؛ راوي، ١٩٧٠، ٢٤٣؛ الجاف، ٢٠١٢، ٣٢؛ محمود، ٢٠١٦، ٤٧).

نلا حظ مما تقدم ، أن السيا سات أو الممارسات السابقة للدولة العثمانية تجاه الكورد، كانت سياسات وإجراءات مبطنة ، إذ أنها كانت مدعمة بحجج واهية لا تساندها الحقيقة والواقع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

في أغلب الأحيان. كما أن بعض تلك السياسات كانت تستند إلى بنود الاتفاق الكوردي العثماني نفسها ، كسياسة الاستغلال والاستفادة من الكُرد ، ومن الأرجح أنهم كانوا يلجأون إلى سياسات سافرة أو غير مبررة عندما كانوا يعجزون عن إيجاد سياسات أخرى أكثر منطقية، كفيلة بإيصالهم إلى غايتهم المنشودة في الحالة التي كانت بين ايدهم (هروتي، ٢٠٠٨، ١٣٣).

ويمكن ترجمة هذهِ السياسة من خلال الوقوف على حوادث تاريخية تفسر تلك التوجهات ، والذي كان من ركائزه الأساسية جمع أكبر قدر ممكن من القوة سواءاً كانت من الجانب العثماني أم الكورد أنفسهم ، والتوجه بها إلى المنطقة المقصودة للقضاء على الأمير الكوردي الناقم عليه . ففي عام ١٦٤٠ قام والي ارضروم العثماني في اطار تلك السياسة بالزحف على مصطفى بك أمير شوشيك ، بحجة شكوى الحكومة الصفوية منه ، فأستولى على قلعته بمساعدة الكورد أنفسهم ودمر امارته ، كما وعُدت حادثة الهجوم على امارة بدليسي عام ١٦٥٦ من قبل والي وان ملك أحمد باشا مثالاً بارزاً على سياسة القوة العثمانية المهيمنة أيضاً . فقد كان الوالي المذكور يمثل النموذج الأمثل بين المسؤولين العثمانيين الذين كانوا ينتهجون تلك السياسة العثمانية الهادفة إلى كسر شوكة الإمارات الكوردية ، إذ تمكن من تحقيق هدفهِ عندما زحف على بدليس في عهد أميرها (أبدال خان) ، فسقطت دفاعات بدليس واستسلمت للقوات المغيرة التي كان أكثرها من الكورد (نجار، ٢٠٠٧، ٢٧ ومابعدها ؛ هروتي، ٢٠٠٨، ١٣٣-١٣٤) . وهذا ما يدل على أن الهدف الأساسي لتلك العملية كان يتمثل في القضاء على هذهِ الإمارة التي بلغت درجة واضحة من القوة والازدهار بحيث صارت تشكل خطراً على ولائها للدولة العثمانية، ولم يستطيع العثمانيون القضاء عليها بغير هذهِ الوسيلة. ويرى باحثون آخرون أن تدخل السلطة العثمانية المركزية في الشؤون الكوردية بدأ يظهر بشكل واضح عقب هزيمتها أمام روسيا في ضواحي فيينا عام ١٦٨٣ (ستسيفا، ٢٠٢٠، ١١٥).

وبعد تعرض بلاد فارس للغزو الافغاني عام ١٧٢٢ وزوال الدولة الصفوية ، خفت حدة الصراعات والتوترات المذهبية نوعاً ما بين الدولة العثمانية وحكام بلاد فارس الجدد من الافغان ، إلا أن الحروب والمنازعات ظلت مستمرة بسبب اطماع الدولة العثمانية في التوسع على حساب بلاد فارس والرغبة في اقتطاع اجزاء كبيرة منها وإلحاقها بولاية بغداد ( خوري، ١٩٩٧، ٢٧٠) . وفي ظل هذهِ الظروف الجديدة ، اقتضت أن يقف امراء الكورد موقفاً ايجابياً من المواجهة الحربية بين الدولتين ، وخصوصاً خلال استعدادهم للمعركة التي انتهت بهزيمة قوات احمد باشا (١٧٢٣-١٧٣٢) أثر انسحاب أمراء الكورد وقواتهم من الجيش العثماني، وخلال غزوات نادر شاه (١٦٩٨-١٧٤٧) على الاراضي العثمانية ، لم يقف أمراء بابان وأردلان ضده بالرغم من أن معظم أفراد جيشه كان من البلوش والكورد والافغان والتركمان، وفي الوقت نفسه كان لنادر شاه معرفة سابقة في التعامل



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

مع الكورد بسبب تجربته السابقة معهم وملازمة بعض الكورد الخراسانيين له لسنوات طويلة (لونكريك، ١٩٦٢، ١٣٤). كما وحدثت انتفاضات كوردية أخرى بعد منتصف القرن الثامن عشر منها انتفاضة عشائر جيهان بك عام ١٧٦٥ في ملاطيا ، وانتفاضة عشائر رشكوتا وخرزان بقيادة فرحو آغا وقاسم خرزي بين أمد وسيرت عام ١٧٨٩، وانتفاضة عشائر زركا وتيركان في الشمال من أحد عام ١٧٩٤ (الثورات الكوردية ، الانترنت) .

وبمجيء القاجاريين للحكم في بلاد فارس عام ١٧٩٣ بدأت مرحلة جديدة من الصراع بين الدولتين العثمانية والقاجارية، وقد تزامن هذا الصراع مع إتساع نطاق التغلغل الأوربي وصراع النفوذ في المنطقة ولا سيما بين بريطانيا وروسيا القيصرية في كل من الدولتين، ليشهد الوضع الكوردي حراكاً فوقوياً قاده أمراء الكورد للاستئثار بالسلطة المحلية وتحقيق المزيد من الاستقلال الذاتي في شؤون إماراتهم الإقطاعية المتوارثة. وكان الأمير البابانى عبد الرحمن باشا – كما سنرى – أول من قاد مثل هذهِ الانتفاضات بسبب رغبته وحرصه على أن يستقل في حكم إماراته في شهرزور ، والعمل على توسيع حدودها والخروج عن طاعة المماليك في بغداد (خصباك، ١٩٨٩، ٣٦) . وقد تزامن جهود أمراء الكورد لنيل الاستقلال في حكم إماراتهم المتوارثة مع برامج الاصلاحات الواسعة والخطط التي اعدتها الدولة العثمانية للتغلب على حالة الضعف التي انتابها منذ عقود طويلة لأسباب وعوامل ذاتية وموضوعية (لهارد، ٢٠٠٨، ٤٠).

## المبحث الثاني: الانتفاضات الكوردية في كوردستان (١٨٠٦-١٨٣٤):

مع بداية القرن التاسع عشر، كانت العلاقة بين الإمارات الكوردية والدولة العثمانية قائمة على النهج السابق ، وقبل أن نتناول الاوضاع السياسية وأثرها في نشوب الانتفاضات الكوردية في كُوردستان ، يجدر بنا القول، أن الاوضاع في الدولة العثمانية خلال القرن التاسع عشر قد تركت أثارها المباشرة على كوردستان، وحتى محاولات الاصلاح التي قامت بها مطلع القرن التاسع عشر كانت معظم نتائجها وأثارها سلبية على كُوردستان، وفي مقدمتها العمل على فرض السلطة المركزية للدولة العثمانية على مختلف الولايات ، والعمل على انهاء الإمارات الكوردية القائمة (الدوسكي، ٢٠٠٢، ٧٧) .

هذا وقد شكلت القبائل الرعوية في النصف الأول من القرن التاسع عشر، وبحسب تقديرات الباحثين والمؤرخين، ثلث سكان كوردستان، وكانت القبيلة تمتلك الأرض والمرعى بشكل جماعي ، وقد فرضت على القبائل الكوردية حسب المعاهدات التي مرت حالة من الاستقرار وعدم تجاوز حدود الدولتين العثمانية والقاجارية (أميري، ١٩٩٢، ١٧٣؛ توفيق، ٢٠٠٤، ١٩) ، ومن السياسات الخطرة التي انتهجتها كلتا الدولتين تجاه كوردستان والتي أضرت بالمجتمع الكوردي واقتصادهِ ، هي سياسة فرق – تسد ، وذلك لأن هذهِ السياسة تقطع أوصال المجتمع وتدمر كيان الأمة .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكولينێن كوردى

فالشعب الذي تطبق عليه هذهِ السياسة لن يكون في معظم الحالات في وضع يسمح له بإعادة تكوين ذا ته، فكُورد ستان ومجتمعها خير دليل على آثار هذهِ السياسة، ولا سيما أن المناطق والإمارات الكوردية خلال العهد العثماني – الفترة المعنية بدراسة البحث – شكلت أرضاً خصبة لتجربة تلك السياسة وتوابعها (هروتي، ٢٠٠٨، ٩٤).

ومن جهة اخرى كانت الدولة العثمانية قد وصلت إلى حالة من الضعف والانحطاط مع بداية القرن التاسع عشر، إذ واجهت مشاكل خطيرة وعلى مختلف الصعد الإدارية والعسكرية والاقتصادية وفي علاقتها الخارجية، وبروز النزعة الاستقلالية في معظم ولاياتها (السمر، ٢٠١٢، ٣٣؛ إبراهيم، ٢٠١٨، ٥٠٧، الدوسكي، ٢٠٠٢، ٧٧). وما بين أواخر القرن الثامن عشر ومنتصف القرن التاسع عشر، ظهرت حركات قوية متعاقبة في كوردستان الكبرى استهدفت تشكيل دولة كوردية كبيرة متحررة تماماً من أية قيود سياسية أو عسكرية أو مالية كانت تفرضها الدولتين العثمانية والقاجارية على الإمارات الكوردية، وقد قاد هذهِ الحركات (الانتفاضات)، أمراء شباب، يأتي في مقدمتهم الأمير عبد الرحمن من إمارة بابان، والأمير محمد كورباشا من إمارة سوران، والأمير بدر خان من إمارة بوتان. وشكل ظهور هذهِ الانتفاضات نقطة انعطاف مهمة في تاريخ الشعب الكوردي وذلك لأن الإمارات الكوردية واجهت مستقبلين متفاوتين كلياً على الاصعدة الاجتماعية والاقتصادية والسياسية كافة: الأول هو تشكيل دولة كوردية كبرى، والثاني: هو تدمير الكيانات المستقلة وشبه المستقلة وبالتالي إلحاقها كاملة بالدولتين العثمانية والقاجارية (اسكندر، ٢٠٠٨، ١١١).

وقد خضعت مسألة نجاح تلك الانتفاضات وفشلها إلى جملة عوامل داخلية واقليمية ودولية. عبر العامل الداخلي عن نفسه بقدرة الكورد على توحيد صفوفهم وتحييد نفوذ القبيلة وترقية الولاء المحلي إلى ولاء اشمل يتحدى حدود الإمارة والمنطقة الواحدة، وعلى الصعيد الإقليمي، كان على النخب السياسية الكوردية الاستفادة إلى ابعد حد ممكن الوهن المتزايد الذي عانت منه السلطات المركزية في استانبول وطهران في مساعيها لتكوين كيان سياسي كوردي كبير. أما العامل الأخير والذي آثر في مسار الاحداث السياسية في كُوردستان، فكان توغل القوى الاوربية الكبرى السياسي والاقتصادي في الشرق الاوسط، وسياساتها تجاه مسألة مستقبل الدولتين العثمانية والقاجارية ومشاكلها الداخلية حتى النصف الأول من القرن التاسع عشر (جويدة، ٢٠١٣، ٦٥-٦٦؛ إحسان، ٢٠٠٠، ٢٢-٢٣؛ اسكندر، ٢٠٠٨، ١١١-١١٢). ونظراً لكثرة الانتفاضات التي قام بها الاكراد في القرن التاسع عشر، إلا اننا سوف نحدد فترة هذهِ الانتفاضات حتى عام ١٨٤٧.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**أولاً: انتفاضة عبد الرحمن باشا بابان عام ١٨٠٦.**

بعد وفاة عثمان باشا عام ١٧٨٨، تم تعيين إبراهيم خلفاً له على إدارة مدينة شهرزور برزت شخصية عبد الرحمن بابان (❖) ، ورغبته في تولي حكم الإمارة البابانية ، وذلك بفعل ثقله الاجتماعي بين العشائر الكوردية وعلاقته مع الحكام القاجاريين التي يمكن استثمارها لتحقيق طموحه السياسي ، إلا أن هذهِ الخصوصية التي يتمتع عبد الرحمن بها لم تكن خافية عن سليمان باشا الكبير (١٧٨٠-١٨٠٢) والي بغداد ، لكنه أراد أن يغض الطرف عن فكرة تعيينه ، لإدراكه بأن مكانته في منطقة كُوردستان وعلاقاته الخارجية يشكلان مصدر قلق لباشوية بغداد (الكركوكلي، ١٩٦٣، ١٩٢) . غير أن لجوء عبد الرحمن إلى مدينة سقز في إقليم كرمنشاه الإيراني قد آثار مخاوف سليمان الكبير من احتمالية اقناعه القاجاريين بالهجوم على الأراضي العراقية ، ولهذا أصدر والي بغداد عام ١٧٨٩ أمراً ينص على منح عبد الرحمن بابان حكم الإمارة البابانية ومنطقتي كوي وحرير (الكوراني، ٢٠١٢، ٨٣).

وخلال المدة الأولى من حكم عبد الرحمن باشا التي استمرت حتى عام ١٧٩٧، تمكن خلالها من تثبيت دعائم الأسرة البابانية في كُوردستان متخذاً من مدينة شهرزور نقطة انطلاق لتوسيع دائرة نفوذه السياسي ، تساعده في تحقيق ذلك قوة الشخصية وعلاقاته الحسنة مع غالبية زعماء العشائر الكوردية في المنطقة الشمالية . وبعد بقاء عبد الرحمن بابان لمدة أربعة أعوام مقيماً في بغداد وعلى مقربة من أنظار سليمان الكبير ، طلب من الوالي عام ١٨٠١ السماح له بالمغادرة ، مما اغضب ذلك الوالي سليمان ، الذي قرر عزل شقيقه سليم بك عن حكم منطقتين كوي وحرير ، وتعيين محمد بن محمود باشا السوراني بدلاً عنه ونفي الأخوين إلى الحلة للتخلص منهم (حسين، ٢٠٠٦، ١٨٧) .

وفي العام ١٨٠٢، جاءت الأقدار لتبعث من جديد حلم عبد الرحمن باشا حول إمكانية استرجاع حكمه المغتصب في نظره من جديد ، إذ توفي في العام نفسه سليمان الكبير، وعلى الرغم من تولي علي باشا صهر سليمان مقاليد الحكم ، إلا أن الولاية شهدت صراعاً سياسياً للاستحواذ على السلطة ، كانت أدواته كلاً من سليم بك الصهر الثاني لسليمان الكبير وأحمد أغا رئس الانكشارية ، فقرروا التحالف في جبهة واحدة لإبعاد علي باشا وتسلم سليم بك السلطة بدلاً عنه (حيدري، ٢٠١٦، ١٧؛ الكركوكلي، ١٩٦٣، ٢١٨) . وعلى الرغم من انضمام عبد الرحمن باشا وشقيقه إلى جبهة التحالف، إلا أن قوات الوالي علي باشا تمكنت من إلحاق الهزيمة بهم ، فقتل أغا الأنكشارية . أما عبد الرحمن باشا وسليم بك صهر سليمان ، فقد تم القبض عليهم ، وقرر الوالي أعدامهما لولا توسط بعض الشخصيات العراقية ومطالبتها علي باشا بالإعفاء عنهما (دهش، ٢٠٠٧، ٩٠) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ومع مطلع عام ١٨٠٣ ورد إلى الباب العالي طلب من الحكومة القاجارية يدعو إلى تأديب عشائر البلباس بشدة لما كانت ترتكبها من اعتداءات على القوى القاجارية ، فأصدر الباب العالي أوامر إلى علي باشا بالتوجيه لتأديب هذهِ العشائر . ونظراً لتعدد المناطق التي كانت هذهِ العشائر ترعى بها مواشيها ولسعتها، فقد كلف علي باشا حاكم بابان إبراهيم باشا بمعالجة قضية أولئك الذين كانوا يسكنون كويسنجق وبتوين منهم ، وتوجه بنفسه نحو أربيل، فقتل وأتلف كثيراً فيما حولها وصادر ألوف الدواب والمواشي والكثير من الأموال والأمتعة المنزلية. وفي أربيل التقا به إبراهيم باشا بما كان معه ، وبعد تأديب عشائر البلباس ، فكر علي باشا في قتال اليزيدية في سنجار (بيك، ٢٠٠١، ١٧٤) .

بعد أن أصبح عبد الرحمن باشا بابان أميراً على بابان عام ١٨٠٣، قام بخطوات حثيثة لتعزيز سلطته وتوسيع رقعة إمارتهُ وهكذا عاد لمنصبه للمرة الثانية (الوائلي، ٢٠٠٨، ١٧٩). وكانت أولى الخدمات التي قدمها للوالي علي باشا ، اشتراكه مع قواته في الحملة العسكرية التي ارسلها علي باشا عام ١٨٠٤ لوضع حد لهجمات السعوديين على مدن العراق الجنوبية وفي مقدمتها البصرة ، وإلى جانب تصديه لمخاطر خارجية ، شارك عبد الرحمن أيضاً من الحملة العسكرية التي ارسلها والي بغداد عام ١٨٠٥ ضد عشائر العبيد في منطقة الخابور لقيامها بحركات عدائية ضد حكومة بغداد، وقد اشترك إلى جانب أمير بابان محمد باشا حاكم كوي وحرير، لكن الأخير قتل على يد عبد الرحمن باشا، دون أن يتخذ والي بغداد أي أجراء بحق عبد الرحمن باشا، بسبب وضعه الداخلي والخارجي الذي لا يسمح له بفتح جبهة عدائية جديدة وبالأخص مع أمير بابان، ثم عهد إليه إلى جانب حكم السليمانية منطقتين كوي وحرير (الصويركي ، ٢٠٠٨، ٨٣ ؛ د هش، ٢٠٠٧، ٩١).

ولغرض تقوية جبهة عبد الرحمن باشا العسكرية، طلب من ضامن المحمد شيخ العبيد وحمد الحسن شيخ الغرير الوقوف إلى جانبه في حالة تعرض أراضيه إلى هجوم من قبل قوات الوالي علي باشا ، كما أرسل أخاه سليمان بك مع قوة عسكرية، استولى فيها على مناطق درنة وباجلان وزهاب، وتعيين خالد بابان بدلاً من حاكمها عبد الفتاح باشا، ليضمن ولاء سكان تلك المناطق إلى جانبه ( فائق، ١٩٦٢، ٤٣؛ الكركوكلي، ٢٠٠٨، ٢٢٩؛ الوائلي، ٢٠٠٨، ١٧٩) ، ولإشعار عبد الرحمن بابان بضعف قدراته القتالية طلب علي باشا من محمد الجليلي (١٧٨٩-١٨٠٦) والي الموصل وقاسم بابان أغا حاكم أربيل التوجه بقوتهما إلى كركوك ، لاتخاذها نقطة انطلاق للزحف نحو السليمانية . كما اغرى والي بغداد ، خالد بابان بأن الأخير إذا ما تمكن من القضاء على عبد الرحمن باشا فأن الوالي سيمنحه حكم الإمارة البابانية (بصري، ١٩٩١، ٢١). وبذلك نرى



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ فەکۆلینێن کوردی

أن استخدام علي باشا سياسة ضرب الزعامات الكوردية الواحدة بالأخرى هو من أجل إضعاف جبهة عبد الرحمن باشا العسكرية، وهذا ما تحقق لاحقاً.

وقد منيت قوات الوالي بهزيمة عسكرية أمام قوات خالد بابان في منطقة التون كوبري، فاضطر للهرب إلى أربيل، عندها خرج الوالي في عام ١٨٠٥ بقواته لقتال عبد الرحمن باشا، دون علم الأخير بها حتى اقترب من كركوك فاضطر أمير بابان إلى إتباع أسلوب دفاعي، متخذاً من مضيق بازيان (دربندبازيان) مكاناً لتجمع قواته، ولا سيما بعد تخلي حلفاءه من شيوخ العبيد والغرير عنه، واحاط جنود الوالي بالمضيق من كافة الجهات، وبدأوا بمهاجمة قوات عبدالرحمن التي وجدت نفسها عاجزة عن الصمود أمام القوات المهاجمة، عندها انسحب عبدالرحمن باشا إلى السليمانية، ومنها إلى إيران (جليلي، ١٩٨٧، ٦٩؛ سعدون، ١٩٩٩، ١٥٧، دهش، ٢٠٠٧، ٩٣). ثم عين الوالي خالد بن أحمد باشا حاكماً على الإمارة البابانية في العام نفسه وسليمان بن إبراهيم باشا حاكماً على كوي وحرير، بعدها عاد علي باشا إلى بغداد (الصويركي، ٢٠٠٨، ٢٨٣؛ بصري، ١٩٩١، ٢٦، بيك، ٢٠٠١، ٢٢٦). وبهذا تنتهي الفترة الثانية من حكم عبد الرحمن باشا التي تميزت بطموحه وتحوله إلى قوة سياسية وعسكرية غير خاضعة لباشوية بغداد، معتمداً بالدرجة الأساس على موقف إيران المساند له، ومستغلاً أوضاع الدولة العثمانية في تلك الفترة والتي تمنعها من مواجهة القوة العسكرية الإيرانية التي استغلت هي الأخرى تلك الأوضاع بالضغط على الدولة العثمانية لعودة عبد الرحمن من جديد إلى حكم الإمارة البابانية.

بعد إلتجاء عبد الرحمن بابان وانصاره إلى حليفهِ أمان الله خان أردلان من أجل المساعدة العسكرية، استمر هو وأنصاره في سنقر قرب كرماشان، وهي مدينة قريبة من حدود بابان الشرقية (إسكندر، ٢٠٠٨، ١٣٥؛ الكركوكلي، ١٩٦٣، ١٧٨)، وقد حاولت إيران التدخل في محاولة منها للضغط على والي بغداد لإعادته إلى منصبه، ولا سيما أن الفكرة قد وجدت قبولاً من قبل إيران على اعتبار أن عبد الرحمن بابان في نظرها هو أفضل شخصية يمكن الاعتماد عليها في عدم إثارة الاضطرابات على حدودها مع العراق، كما يتمتع بقوة تأثير في غالبية زعماء منطقة كُوردستان، وبهذا، فقد بعثت إيران برسالة إلى الوالي علي باشا تدعوه فيها إلى اصدار عفو بحق عبد الرحمن باشا وإعادته أميراً على بابان، إلا أن رد الوالي كان مخيباً لأمال الإيرانيين، فقد اعتذر برسالته الجوابية من تلبية طلب الحكومة الإيرانية ذاكراً فيها الأعمال التي قام عبد الرحمن باشا ضد حكومة بغداد (حجاج، ١٩٩١، ٤٧؛ الكركوكلي، ١٩٦٣، ١٦٩؛ سليمان، ، ٣٠؛ دهش، ٢٠٠٧، ٩٣). ويبدو لنا من قراءة الاحداث أن علي باشا قد فهم ما كان يدور في اذهان الإيرانيين، وطبيعة العلاقة القائمة بين عبد الرحمن بابان والحكومة الإيرانية، والفائدة التي يمكن أن تحصل عليها الأخيرة في حالة عودة عبد الرحمن إلى منصبه السابق.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وأمام فشل الجهود الدبلوماسية، قدرت إيران اللجوء إلى الحل العسكري لتحقيق غاياتها، ومما زاد من احتمالية نوايا إيران العسكرية ، الرسالة التي بعثها خالد باشا حاكم بابان إلى والي بغداد عام ١٨٠٦ ذاكراً فيها أن لديه معلومات دقيقة تؤكد إصرار إيران على اتباع مختلف الأساليب لإعادة عبد الرحمن باشا إلى منصبه في السليمانية ، حتى لو تطلب ذلك استخدام القوة (حبيب، ١٩٨١، ٨٥) .

ولمراجعة أي هجوم إيراني محتمل على حدود العراق ، قرر والي بغداد علي باشا ، استنفار قواته العسكرية ، وتوجه عام ١٨٠٦ مع قوة عسكرية بلغ تعدادها حوالي ١٢ الف مقاتل إلى المنطقة الشمالية من دون أخذ موافقة الباب العالي في استانبول. أما رأي الحكومة العثمانية فكان عكس تصورات علي باشا ، فعودة عبد الرحمن باشا إلى حكم إمارة بابان سلمياً هو افضل لها من الدخول في حرب لا تعرف نتائجها . وعليه وجه الصدر الأعظم إلى والي بغداد بعدم تنفيذ مهمته ومطالبة قواته بالعودة إلى بغداد ، ونفذ والي بغداد قرار الحكومة العثمانية ودعا قواته التي وصلت المنطقة الشمالية إلى إيقاف تقدمها والمثول إلى الأوامر التي صدرت إليه، إلا أن قيام بعض أفراد العشائر العراقية المرافقة للحملة بالتعرض على بعض المدن الإيرانية الحدودية خلال انسحابها من المنطقة قد قلب ما خططت له الحكومة العثمانية (العزاوي، ١٩٥٤، ١٧٤؛ حبيب، ١٩٨١، ٨٥).

وأمام تعرض بعض أفراد العشائر لبعض المدن الحدودية الإيرانية ، أمر الشاه فتح علي (١٧٧٢-١٨٣٤) إبنه محمد علي مرزا بقيادة حملة عسكرية والتوجه بها إلى كرمنشاه لحماية منطقة الحدود مع العراق. كما أرسل قوة تعدادها ٦ الاف مقاتل لمساعدة أمان الله خان والي اردلان في التصدي لأي هجوم محتمل تقوم به القوات العثمانية على منطقته ، كما وصل عبد الرحمن بابان إلى منطقة مريوان التابعة لإمارة اردلان لمراقبة تطورات الأحداث . وبعد تكثيف التحشيدات العسكرية الإيرانية في المنطقة المقابلة للإمارة البابانية ، طلب خالد باشا أمير بابان المساعدة من والي بغداد الذي كان متمركزاً مع قواته في منطقة شيروانه ، فوجه الأخير أوامره إلى ابن أخته سليمان كهية التوجه بقواته لمساندة خالد باشا عند الضرورة (بديك، ٢٠٠١، ٢١٤؛ دهش، ٢٠٠٧، ٩٥؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ١٣٥؛ الوائلي، ٢٠٠٨، ١٩٦).

بعد عبور سليمان كهية الحدود ووصل بقواته التي أنهكها التعب إلى مريوان ، اشتبك في معركة غير متكافئة مع القوات الإيرانية كانت نتيجتها هزيمة قواته ووقوعه أسيراً بأيديهم ليرسل بعدها إلى طهران . وفي ظل هذهِ المتغيرات الأخيرة ، جاءت الفرصة لصالح عبد الرحمن باشا لاسترجاع منصبه من جديد ، فبعث برسالة إلى الوالي علي باشا موضحاً فيها أسباب قتله لمحمد باشا حاكم كوي وحرير السابق عام ١٨٠٥، طالباً في الوقت نفسه العودة إلى منصبه السابق ، وإدراكاً من الوالي بتدهور الأوضاع بسبب توغل الجيش الإيراني داخل الأراضي العراقية ، ولضمان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

اطلاق سراح ابن أخته سليمان أمر بإعادة عبد الرحمن باشا إلى حكم الإمارة البابانية (جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ١٤). وبهذا تبدأ المرحلة الثالثة من حكم عبد الرحمن باشا للإمارة البابانية عام ١٨٠٦، وهي مرحلة مليئة بتدخلات دائمة من قبل قوات حاكم بغداد ونائب الشاه في شؤون إمارتهِ .

وبعد مقتل الوالي علي باشا عام ١٨٠٧ من قبل الطامعين في الحكم ، أسندت باشوية بغداد إلى ابن أخته سليمان كهية الذي عرف باسم سليمان باشا الصغير (١٨٠٨-١٨١٠)، وكانت العادة المتبعة عند تسلم والي جديد حكم العراق ، قدوم عدد من الشخصيات وزعماء القبائل العراقية وحكام الولايات التابعة لبغداد لتقديم التهنئة وهذا ما حصل فعلاً ، باستثناء عبد الرحمن باشا الذي قام بأعمال عدائية من بينها محاولته للسيطرة على كوي وحرير، مما يدل على عدم اعترافه بالوضع السياسي الجديد الذي اعقب مقتل علي باشا (نوار، ١٩٦٧، ٤٨؛ الوائلي، ٢٠٠٨، ٣٠).

كانت حصيلة الاعمال والتعديات التي قام بها عبد الرحمن باشا ، أن قرر سليمان باشا الصغير أن يضع حداً لها ، فجهز حملة عسكرية عام ١٨٠٨ للقضاء على عبد الرحمن باشا، الذي أصبح في نظره خارجاً عن القانون ، وقد انضمت إلى تلك الحملة قوات كل من نعمان باشا الجليلي (١٨٠٦-١٨٠٨) والي الموصل التي قادها أحمد أفندي وسليمان باشا حاكم كوي وحرير وخالد باشا بابان (الوائلي، ٢٠٠٨، ١٩٤) . وعلى الرغم من إتباع عبد الرحمن باشا خطة كان من شأنها إفشال ذلك التحالف من خلال عمله على تحصين وتضييق طريق دربندبازيان بحيث لا يتسع لمرور أكثر من شخصين ، إلا أن القوة المهاجمة كانت اكثر ذكاءً ، إذ استعان الوالي بالبابانيين المرافقين للحملة لمعرفتهم بالمنطقة فأكتشف محمد بن خالد باشا ممراً في الدربند، فهاجمت قوات سليمان الدربند من عدة جهات ، مما اربك معسكر عبد الرحمن باشا الذي تشتت قواته ، فاضطر الأخير إلى الانسحاب باتجاه الأراضي الإيرانية للاحتماء بحكامها مجدداً (زكي، ١٩٥١، ١١٥) .

ولضمان ولاء الإمارة البابانية للسلطة المركزية في بغداد ، كان من المفروض على سليمان باشا الصغير إعادة تعيين خالد باشا لحكم الإمارة ثانية مكافأة للخدمات التي قدمها في المعركة الأخيرة ، إلا أن والي بغداد اصدر امراً بتعيين سليمان باشا بدلاً عنه ، فعدها خالد باشا إهانة له ، فقرر الأخير الانضمام مع اتباعه إلى جانب عبد الرحمن باشا ، وبذلك اتحدت قوتان لهما ثقل سياسي وعسكري في منطقة كُوردستان ، إلى جانب مساندة الإيرانيين لهم ضد الوالي سليمان باشا الصغير (دهش، ٢٠٠٧، ٩٨؛ بابان، ٢٠٠٨، ٩٣؛ الكركوكلي، ١٩٦٣، ٢٤٨؛ جليلي، ١٩٨٧، ٥٧).

وبهذا نجد أن عبد الرحمن باشا قد تحقق له ما كان يسعى إليه ، ولا سيما عندما أرسل السلطان العثماني محمود الثاني (١٨٠٨-١٨٣٩) في عام ١٨١٠ محمد سعيد حالت أفندي مبعوثاً


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

خاصاً من قبله إلى والي بغداد للتحقيق في الشكاوي الموجهة ضده ، وهي لمعرفة سبب عدم أرسال سليمان باشا الأموال المترتبة بذمة باشوية بغداد سنوياً إلى خزينة الدولة ، وأمام تجاهل مهمة حالت أفندي قرر اقصاء سليمان باشا من منصبه ولمخاوفه من ردة فعل الوالي ضده قرر التوجه إلى الموصل ، وإلى جانب كسبه لآل الجليلي تمكن حالت أفندي من استقطاب كل من عبد الرحمن باشا بابان وعبدالله أغا وطاهر أغا إلى جانبه ، فضلاً عن انضمام بعض العشائر العربية للتحالف المعارض . وفي عام ١٨١٠ حدثت المعركة الفاصلة بين قوات الوالي وقوات حالت أفندي بالقرب من منطقة الاعظمية كان النصر حليفهِ (جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ١٤؛ دهش، ٢٠٠٧، ٩٨؛ الكركوكلي، ١٩٦٣، ٢٤٨).

على الرغم من تولي عبدالله باشا باشوية بغداد بدلاً من عبد الرحمن بابان، إلا أن الحاكم الفعلي كان عبد الرحمن نفسه ، كونه يعد نفسه صاحب الفضل في إيصال عبدالله إلى مقاليد السلطة ، وتنفيذاً لذلك اصدر عبد الرحمن أمراً بعزل عبد الفتاح باشا حاكم درنه وباجلان وتعيين خالد باشا بدلاً عنه ، إلا أن هذهِ التصرفات قربت بين حاكم كرمنشاه ووالي بغداد اللذين قررا القيام بحملة عسكرية مشتركة للتخلص منه (دهش، ٢٠٠٧، ١٠٠-١٠١؛ الوائلي، ٢٠٠٨، ٢١١) . ففي عام ١٨١٢ قاد عبدالله باشا حملة عسكرية إلى السليمانية بهدف التخلص منه ، كان النصر حليفه ، إذ تمكن من توجيه ضربات مباشرة لاتباع عبد الرحمن وقتل اعداد كبيرة منهم ، من بينهم خالد بك شقيق عبد الرحمن ، فأصبح موقف الأخير صعباً عندما اضطر إلى الانسحاب ، واختار كرمنشاه مكاناً للجوء إليه . وكعادته تدخل محمد علي مرزا للتوسط لدى والي بغداد لإعادة عبد الرحمن إلى منصبه ، إلا أن عبدالله باشا اعتذر عن ذلك ، فأتخذها الإيرانيون ذريعة للهجوم من جديد على الأراضي العراقية ، وكان عبدالله باشا على استعداد لمواجهة القوات الإيرانية لولا هروب سعيد بن سليمان باشا الكبير من بغداد ولجوءه إلى حمود الثامر شيخ المنتفك، مما اضطره إلى تلبية مطالب الإيرانيين وفي مقدمتها عودة عبد الرحمن باشا إلى منصبه السابق ، وبذلك عاد عبد الرحمن من جديد إلى حكم إمارته ، إلا أن سرعان ما داهمه المرض فتوفي عام ١٨١٣، وبذلك انتهت حياة شخصية كُردية أدت أدواراً مهمة حاول خلالها بفضل قدراته العسكرية الانفصال عن باشوية بغداد والارتباط بالباب العالي في استانبول مباشرة (عبدالله، ٢٠٢١، ١٣١-١٣٢؛ الكركوكلي، ١٩٦٣، ٢٥٧-٢٥٨؛ دهش، ٢٠٠٧، ١٠١-١٠٣) .

نلاحظ مما تقدم ، أن هذهِ الإمارة شهدت نزاعات وحروباً شتى بين أمراء بابان أنفسهم ، وبين ولاة بغداد من جهة ، وبين إيران من جهة أخرى ، وقد حاول طرفا النزاع العثماني والإيراني بكل الوسائل زرع بذور الشقاق والعداء بين الأمراء البابانيين . ويفهم ذلك أن سياسة ولاة بغداد كانت تهدف دائماً إلى اضعاف الإمارة البابانية وكسر شوكتها، بل القضاء عليها ، أما سياسة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

إيران فكانت تهدف إلى التدخل في شؤون الإمارة لاستمرار نفوذها في السليمانية، وكان الأمراء البابانيون أنفسهم آلة لتحقيق هاتين الغايتين، دون تمكن هؤلاء الأمراء في الوقت نفسه من إظهار مقدرتهم ودعم إماراتهم وتشييد بنائها، ومع ذلك فقد لعبت الإمارة البابانية وعاصمتها السليمانية دوراً مشهوداً في الحياة السياسية والفكرية والثقافية الكوردية (حيدري، ٢٠١٦، ١٥-١٦).

كما حدثت عام ١٨١٥ وحسب ما اشارت إليه التقارير العسكرية الروسية، انتفاضة بدباس، بعد فشل ولي العهد الإيراني عباس ميرزا (١٧٩٨-١٨٣٣) في قمع أبناء هذهِ الانتفاضة، حيث ثار الكورد القاطنون في منطقة بايزيد وأن الذين أنضم اليهم الكورد الرحل في إيران (في اريوان ونخجوان وخوى)، وقد استمرت هذهِ الانتفاضة حوالي ثلاثة أعوام عندما تمكن حاكم ارضروم عام ١٨١٨ من قمع الانتفاضة. ويذكر بعض الباحثين أن هذه الانتفاضة كانت انتفاضة جماهيرية صحيحة، ولا سيما بعد ما عانى منه الكورد تحت حكم العثمانيين القاسي وبشتى ألوان الظلم من حكامها الطغاة (نيكيتين، ٢٠٠٧، ٣٢٠؛ تاج الدين، ٢٠٠١، ٨٨-٨٩).

وفي عام ١٨٢٠ قام الكورد في منطقة الظاظا بانتفاضة أخرى امتدت في عدة مناطق مثل سيواس واستمرت لشهور قليلة ثم فشلت لنفاذ المؤن والعتاد والذخائر فاعتصم الثوار بالجبال إلى أن تمكن العثمانيين من حصارهم وإبادتهم عن أخرهم (شيركوه، ١٩٣٠، ٤٠).

وإلى جانب هذه الانتفاضات أيضاً، تذكر الوثائق العثمانية، قيام العشائر الكُوردية بانتفاضات ضد السلطات العثمانية، منها انتفاضة العشائر البرازية في المدة ما بين ١٨٣١ و١٨٤٧، حيث أقيم شبه اتفاق بين أهالي بيراجيك –المدينة، وعشائر الريف في سهل سروج وكوباني الحالية من الكورد البرازية وغيرهم ضد العثمانيين لأسباب تتعلق بالتجنيد والضرائب، وقد بدأ القتال فعلاً، ومحاصرة القوات العثمانية الموجودة في المدينة واضطرارها للاحتماء بقلعة بيراجيك، ومن ثم مجيء النجدة العثمانية وقمع العصيان (أحمد، ٢٠١٧، ٨٠).

وقد تطورت حوادث هذهِ الانتفاضة في العام نفسه ١٨٣١، حيث بدأت العشائر الكوردية المتحالفة بالهجوم على مقرات السلطات العثمانية، بعد انضمام كرد مدينة بيراجيك إليها، مما زاد قوة هذهِ الانتفاضة، وقد تمكنت من السيطرة على الأوضاع في بيراجيك، واستطاعت تجنيد السلطات العثمانية ومن ثم لجوءها إلى القلعة بانتظار قدوم النجدة. وقد استمرت هذهِ الاحداث إلى عام ١٨٤٥، عندما تحرك قوة كبيرة من الجيش العثماني لتأديب عشيرة البرازية الموجودة في اورفا وبحلول عام ١٨٤٧، انتهت هذهِ الانتفاضة، بعد أن وصل جيش عربستان العثماني وقضاءه على البرازية في معركة بيراجيك (أحمد، ٢٠١٧، ٨٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

**ثانياً: انتفاضة الأمير السوراني محمد باشا:**

بعد ما دخلت إمارة بابان طور الضعف والاضمحلال في أواخر العقد الثاني من التاسع عشر بسبب فشلها في وضع حد للتدخلات الخارجية في شؤونها، بدأت أمارة سوران وبوتان في النمو سريعاً سياسياً واقليمياً إلى الحد الذي هيمنتا فيه على الوضع السياسي في كُوردستان زهاء أربعة عقود ،والتي شهدت تحدي قام به الأمراء الكورد لسلطة الدولتين العثمانية والقاجارية (رؤوف، ٢٠٠٨، ٣٠١؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ١٤٧-١٤٨) .

وقد لعب الدور الإقليمي والدولي ، وخاصة المنافسة التي انطلقت بين القوى الأوربية المختلفة في سبيل الحصول على نفوذ سياسي واقتصادي في الشرق الأوسط ، ولا سيما روسيا القيصرية وبريطانيا ، التي لعبتا دوراً فعالاً في السياسات الدولية المتعلقة بشؤون الشرق الأوسط وتوسيع تجارتهما مع جيرانهم الجنوبيين ، خاصة الدولة العثمانية وإيران. ففي سلسلة من الحملات العسكرية الكبيرة ، استطاعت روسيا إلحاق هزائم نكراء بإيران في أعوام ١٨٠٤-١٨١٢ و١٨٢٦-١٨٢٨ . ومن جهة أخرى ، عززت الهزائم الثقيلة التي الحقتها روسيا بجارتها الجنوبية الأخرى ، الدولة العثمانية في أعوام ١٨٠٦-١٨١٢ و١٨٢٨-١٨٢٩ من سيطرتها على المناطق القوقازية ، ونتيجة لكل تلك الانتصارات الروسية وما صاحبها من تحولات إقليمية – سياسية تغيرت جغرافية كوردستان السياسية لأول مرة منذ أوائل القرن التاسع عشر ، حيث أصبحت حزاماً جغرافياً استراتيجياً يفصل الدولتين الواحدة عن الأخرى، أي العثمانية والقاجارية ، ولهذهِ الأسباب لم يكن من الصدفة أن تتركز تدريجياً انظار القوى الأوربية الكبرى، مثل روسيا وبريطانيا إلى أوضاع المناطق الكوردية (سنو، ١٩٩٨، ١١٦؛ محمود، ٢٠٠٧، ١٨٠، إسكندر، ٢٠٠٨، ١٦٩؛ عزيز، ٢٠٠٨، ٢١٠) .

وكان من الطبيعي أن يقلق نجاح الروس في كسب دعم الكورد الموجودين في المناطق الحدودية الاستراتيجية السلطات العثمانية في استانبول ، ولهذا أصبح أمراً ضرورياً بالنسبة إلى العثمانيين أن يعملوا على فرض سيطرتهم المحكمة والمباشرة على المناطق الكوردية كلها عن طريق تدمير الإمارات المستقلة وشبه المستقلة فيها ، إلا أن اندلاع الانتفاضات في الولايات العربية شكل إحدى أهم التطورات الإقليمية التي اثرت بشكل مباشر في الوضع السياسي في كوردستان من خلال بروز قوة الإمارتين السورانية والبوتانية . وعلى الأخص بعد كشف الأمراء الكورد مدى الضعف التي وصلت إليه الدولة العثمانية وعجزها عن احتواء طموحات الولايات غير العربية ، منها حصول اليونان على استقلالها السياسي والانتصارات الساحقة للجيش المصري ضد العثمانيين ، لتشجيع الكُرد على استغلال هذهِ الفرص الفريدة من خلال شن حملات سياسية عسكرية تستهدف توحيد الإمارات وتأكيد استقلالها السياسي (إسكندر، ٢٠٠٨، ١٧٥-١٧٦) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

وفي الوقت الذي كان وزراء بغداد من المماليك يسخرون طاقتهم في تدمير قوة بابان السياسية والعسكرية ، بدأ الأمير محمد (❖) ، بسلسلة من الخطوات السرية المفاجئة استهدفت إقامة دولة مستقلة عن طريق توسيع إمارتهِ واقليمياً على حساب المناطق الكوردية المجاورة ، وكذلك تعزيز استقلالها السياسي، وفي ظل سيادة الفوضى وغياب الأمن، التي كانت تؤثر سلباً في الحياة الاجتماعية والاقتصادية لسكان المناطق الكوردية المستقلة وشبه المستقلة ، بدأ الأمير محمد في عام ١٨٢١ باتصاله بالرؤساء المحليين في أربيل وكويسنجق وغيرها بهدف كسبهم إلى حركته، وكانت منطقة حرير أولى المناطق البابانية التي استولى عليها ١٨٢٢، وبعد استيلائه على منطقة خوشناو ، استمر جيش سوران بالزحف جنوباً حتى دخل مدينة أربيل، ثم استمر الجيش في زحفه جنوباً حتى احتل مدينة التون كوبري ومدينة كركوك ومن ثم توزخورماتو (عقراوي، ٢٠٠٥، ٢٩-٣٠؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ١٧٨-١٧٩؛ السمر، ٢٠١٢، ٦٣).

وبالرغم من تمتع الأمير محمد بقوته وجيشه المنظم ، إلا أنه لم يعتمد كلياً على القوة العسكرية لتوحيد الأراضي الكوردستانية التي لم تكن منطوية بعد تحت حكمه ، لكسب ودهم وشرح ابعاد الخطط التي يرمي الأمير بإنجازها ، ونجح المبعوثون بمهمتهم بشكل يدعو إلى الاعجاب ، كما استطاع الأمير محمد أيضاً أن يجمع حوله أولئك الرؤساء والقادة الذين كانوا يتذمرون من السياسات العثمانية التي كان همها الوحيد هو جباية الضرائب ومد الجيش العثماني بالجند عند الحاجة (الداؤدي، ٢٠٠٣) .

وفي عام ١٨٢٦ أعلن الأمير محمد الرواندوزي انتفاضته على الدولة العثمانية في أوضاع أقل ما يقال عنها، أنها كانت ملائمة جداً له، أثر تسرب الوهن والضعف إلى جسد الدولة العثمانية التي كانت علاقتها المتوترة مع جيرانها (الروس واليونان ومصر) تنذر بحروب قادمة لا محالة ، لهذا نجد أن العثمانيون تمهلوا قليلاً قبل إعلانهم شن حرب تأديبية ضد أمير سوران بهدف إعادته إلى حظيرة الباب العالي (سنو، ١٩٩٨، ١٥) .

وبدأ من عام ١٨٢٧، غير جيش سوران وجهة فتوحاته الإقليمية من جهة الجنوب إلى جهة الشرق ، فاستولى على مقاطعتي رانيه وكويسنجق العائدة إلى إمارة بابان ، كما منح اندلاع الحرب بين روسيا القيصرية وإيران القاجارية فرصة للأمير محمد كي يفرض سيطرته على مقاطعات أخرى كانت تابعة للدولة القاجارية ، مثل مقاطعة سيتو أو سلدوز وقلعتها ومقاطعة سردست ، وامتدت سيطرة الأمير محمد المباشرة حتى اطراف مدينة اشنوية إلى الجنوب الشرقي من بحيرة ارومية . وفي عام ١٨٣١ توغلت قوات سوران عميقاً في المقاطعات التابعة إلى إمارة بادينان مثل الشيخان والقوش، حتى انها استولت على عاصمتها السياسية أي العمادية . وما بين عامي ١٨٣٢ و ١٨٣٣ استولى جيش سوران على عقرة وقلعتها وتبع اخضاع عقرة ، سقوط دهوك وزاخو بيد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرى زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

جيش سوران أيضاً، وبهذا النحو فرض الأمير محمد سيطرته على كل مدن ومقاطعات بادينان (نبز، ٢٠٠٣، ١٣٦-١٣٧؛ رؤوف، ٢٠١٣).

إلا أن خطوات الأمير محمد لتقوية إمارته وتوسيعها كانت منذ البداية مبنية على البطش والقسوة وقهر مناوئيه بدون رحمة، فقد أساءت لنفسه كثيراً بارتكابه المجازر بحق الطائفة اليزيدية والنصارى من السريان، وحملاته العسكرية في منطقة بادينان وإلحاق إمارة بادينان قسراً بمركز حكمه في راوندوز (العباسي، ١٩٦٩، ١٠٤-١٠٥). ويذكر الباحث سعد إسكندر في كتابه (قيام النظام الإماراتي في كوردستان وسقوطه ...) في حديثه عن ذلك قائلاً: (( أن واحدة من **المسائل المثيرة للجدل هي معاملة الأمير محمد للأيزيديين المتمركزين في مقاطعتي شيخان وسنجار الكرديتين، وطبقاً إلى إدعاءات صديق الدملوجي، الذي لا يذكر المصادر التي اعتمد عليها في كتاباته، دفع التعصب الديني الأمير محمد إلى قتل أهالي الشيخان من الايزيديين، باستثناء ٥٪ منهم، الذين نجوا من المجزرة، وفي كتاب أمراء سوران يذكر حسين موكرياني، أن الأمير محمد هاجم مقاطعة سنجار حيث قتل العديد من سكانها الايزيديين، وهناك ادعاءات أخرى من قبل الباحثين حول قيام الأمير محمد بقتل المسيحيين بسبب تعصبه، في حين يذكر يوسف بابانا في كتابه (القوش عبر التاريخ)، أن جيش سوران نفذ مجزرة ضد سكان القوش من المسيحيين التي شملت حتى الرهبان، ...** )). إلا أن الأمر اللافت للنظر – وحسب ما ذكره الباحث سعد – هو عدم لجوء الباحثين المذكورين أنفاً إلى ما كتبه معاصرو تلك المرحلة، فلا يتطرق أي منهم إلى شهادة عدد من الرحالة والمبشرين الدينين والمسؤولين الأجانب الذين عاصروا عهد الأمير محمد (إسكندر، ٢٠٠٨، ١٨٠-١٨١).

بعد إتمام عملية الاستيلاء على إمارة بادينان، زحفت قوات سوران شمالاً نحو إمارة بوتان، حيث سقطت بأيديه عاصمتها جزيرة، التي انسحب منها اميرها بدر خان برفقة قواته إلى قلعة حسنكيف، وبعد احتلال جزيرة زحفت قوات سوران غرباً حتى وصل إلى مدينة ماردين الكردية. هكذا وخلال مدة امتدت نحو عشرين عاماً استطاع الأمير محمد عن طريق استخدام القوة بشكل أساسي من فرض سيطرته على مناطق كردية شاسعة، امتدت من ماردين ونهر دجلة في الغرب إلى اشتوية في الشرق ومن جزيرة في الشمال إلى توزخوماتو في الجنوب (نبز، ٢٠٠٣، ١٣٨؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ١٨٢). وبعد أن بسط الأمير محمد سلطته على ارض شاسعة وصلت حتى حدود الدولة القاجارية، وتوطيد دعائم سلطته في المناطق الكوردية الواقعة في الدولة العثمانية، عزم الأمير محمد على ضم المناطق الكوردية الواقعة في إيران أيضاً إلى أراضيه مستغلاً ما سينجم عن عقد معاهدة الصلح التركمانية بين روسيا وإيران، حيث سينصب اهتمام الشاه بصورة تامة على المصاعب الموجودة في شرق بلاده. وقد بدأت وحدات الأمير محمد العسكرية بقيادة مراد بك بالتوغل في لاهيجان، وفي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

المناطق المأهولة بالسكان الكرد الموكريين من دون مقاومة شديدة . ولأجل تعزيز مؤخرة قواته في الأراضي التي حررها الأمير محمد، قام ببناء القلاع، وإعادة بناء التحصينات التي تهدمت جزئياً، وقد منيت القوات الإيرانية الموجهة لمحاربة الكرد بالفشل بالقرب من قرية محموج (جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ١٩) .

إلا أن الخطر كان يحدق في هذهِ الفترة بقيام دولة كوردية فتية ، ولم يأتي هذا الخطر من جانب دولة إيران القاجارية فقط ، إذ قام السلطان العثماني محمود الثاني في اعقاب اتفاقية الصلح مع محمد علي باشا (١٨٠٥-١٨٤٨) عام ١٨٣٣ بتزويد جيش كبير بالسلاح بقيادة محمد رشيد باشا (١٨٠٨-١٨٥٧) والي سيواس ، بغية التخلص وإلى الأبد من الانتفاضات الكوردية (شرف، ٢٠١٧، ١٤٦؛ جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ٢٢).

يبدو أن تحركات وتوسعات الأمير محمد ، وما حققه من أعمال عسكرية في كوردستان ، قد اقلق الدولة العثمانية وجعلتها تفكر في إيجاد حل لمشاكلها الداخلية وخاصة مع الأمير محمد، الذي تزامنت انتفاضته مع محاولات السلطان محمود الثاني لإصلاح الجيش وإعادة المركزية إلى الولايات العثمانية ، مع تحرك محمد علي باشا والي مصر الذي بات هو الآخر يهدد كيان الدولة العثمانية ( مراد، ٢٠١٦، ٤٢؛ الجميل، ١٩٩٩، ١٥٥) . وقد عينت الدولة العثمانية في صيف ١٨٣٤ محمد رشيد باشا قائداً للقوات العثمانية المتوجهة إلى كوردستان، وأصدرت أوامرها أيضاً إلى والي بغداد علي رضا باشا (١٨٣١-١٨٤١)، ووالي الموصل محمد إينجة بيرقدار (١٨٣٣-١٨٤٤) بمساعدة محمد رشيد باشا، إلا أن الأحداث وسير المعارك لم تكن لصالح الأمير محمد ، فبعد محاصرته من قبل القوات العثمانية ، التي كانت بقيادة محمد رشيد باشا مع قوات والي بغداد والموصل ، اضطر إلى تسليم نفسه في آب ١٨٣٦، وعلى الرغم من استسلامه إلا أنه أخذ بنظر الاعتبار شهرة الأمير فعومل باحترام، وتم ارساله إلى استانبول، حيث استقبله السلطان محمود الثاني وسمح له بالعودة إلى كوردستان، لكنه قرر التخلص منه بطريقة دنيئة بأصدار أوامره إلى ولاة الطريق بقتله (الموصلي، ١٩٩٥، ٢٠٢؛ جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ١٩؛ نبز، ٢٠٠٣، ١٤٣-١٤٩).

لم تكتفي القوات العثمانية باحتلالها لمدينة رواندوز، بل واصلت اخضاع أراضي الإمارة الباقية ، واستمرت أعمال التنكيل بالناس الأبرياء مدة ثلاثة أشهر، وحسب احصائيات تقريبية فقد قتل عشرة الاف من الكورد ، كما احرق وذهب عدد كبير من القرى، وبعد وفاة رشيد باشا ١٨٣٧، خلفه حافظ باشا الذي استأنف العمليات العسكرية ضد الكورد في صيف ١٨٣٧ وقام إلى جانب التصفية الجسدية للسكان بتهجير عدد كبير من الكورد إلى المناطق البعيدة والنائية. وفي عام ١٨٣٩ انتهى القتال بين الطرفين، والتي اتصفت بإخماد وحشي للانتفاضة الشعبية الكوردية، حيث أقيمت في عدد كبير من المناطق إدارة عثمانية اضطهدت السكان ونهبت البلاد، وقد كتب فالميراير



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

قائلاً: (( بدلاً من الحكم البطريركي الذي وُلدّ قادته في البلاد وترعرعوا فيها، جاء الطغاة الوحوش من استانبول كي يعودوا بعد فترة قصيرة جداً بمال كثير لقاء المكافأة عن وظيفتهم )) (عيسى، ٢٠٠٥، ٢١؛ جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ٢٠).

**ثالثاً: انتفاضة الأمير بدرخان (١٨٢١-١٨٤٧):**

نلاحظ مما سبق القول، أن سقوط إمارة سوران في آب ١٨٣٦ وإمارة بادينان عام ١٨٤٢، أدى إلى تدهور الحياة الاقتصادية والاجتماعية، وخاصة في المناطق التي أعاد إليها العثمانيون سيطرتهم عليها ، إذ عينت الدولة العثمانية في هذهِ المناطق موظفين غير كفوئين، وكانت سلطة هؤلاء تقتصر على المدن غالباً . أما القرى الكوردية ، فتركت بدون سلطة فأصابها الخراب والعبث ، كما تضايق الكورد أيضاً من الطلب المتزايد على التجنيد الاجباري الذي ترك أثاراً سيئة على الحياة الاقتصادية وتقلص عدد السكان (هروري، ٢٠٠٠، ٥٩-٦٠). وقد تركت هذهِ الاثار من توجه انظار الكرد – كما سنرى – إلى الأمير بدرخان (❖) ، الذي كان يخطط حينذاك لإنشاء كيان كوردي ليتولى أمورهم وقيادتهم، ولا سيما أن الوضع السياسي في كُوردستان والمتمثل في التغييرات التي شهدتها سقوط إمارتي سوران وبادينان، لم تبقي في الساحة الكوردية شخصية كوردية أو قوة مهابة يتوجه إليها الكورد ويلتفون حولها سوى إمارة بوتان وأميرها بدرخان.

قاد الأمير بدرخان أخر الانتفاضات السياسية واقواها في كوردستان خلال النصف الأول من القرن التاسع عشر، والتي استهدفت توحيد المناطق الكوردية في كيان سياسي مستقل، ولم يثني تلك الأوضاع السياسية والاقتصادية والعسكرية المتدهورة آنذاك عزم بدرخان على تحويل بوتان إلى اقوى كيان سياسي مستقل في كوردستان في العقدين الرابع والخامس من القرن التاسع عشر عن طريق تشكيل اتحاد يشمل أكبر عدد من الإمارات الكوردية (إسكندر، ٢٠٠٨، ٢٠٣). ولتفعيل ذلك تجاهل بدرخان الدعوات التي وجهت له من قبل السلطات العثمانية لإرسال قواته والاشتراك في الحرب الروسية العثمانية (١٨٢٨-١٨٢٩) ، كما رفض تقديم أي نوع من الولاء للسلطان العثماني محمود الثاني (سيتان، ٢٠٠٨، ٧٧) .

وقد تعرضت إمارة بوتان بين عامي ١٨٣٣-١٨٣٤ إلى هجمتين عسكريتين، الأولى كانت هجمة الأمير السوراني محمد الرواندوزي ، حيث ارسل قوة عسكرية إلى بوتان وضمها إلى نفوذه وسيطر على مناطق نصيبين وماردين ، فانسحب الأمير بدرخان اثر هذه الهجمة إلى خارج الجزيرة من اجل عدم مواجهة قواته الأمير محمد عسكرياً ، إلا أن الأمير بدرخان توصل فيما بعد إلى حالة سلام مع الأمير محمد، فعاد أثر هذهِ الحالة إلى الجزيرة (مكدول، ٢٠٠٤، ٩٣؛ جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ١٣٨؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ٣٠٧؛ نبز، ٢٠٠٣، ١٣٨). ويبدو وان حادثة الأمير محمد والأمير بدرخان قد دفع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

الأخير الى التفكير في إيجاد جبهة كوردية مشتركة ضد سياسة الدولة العثمانية القائمة على انهاء حكم الامارات الكوردية .

اما الحادثة الثانية التي دفعت الأمير بدرخان بضرورة إيجاد تعاون بين الامارات الكوردية من اجل الوقوف بوجه السياسة العثمانية ، فكانت تعرض بوتان إلى هجوم الجيش العثماني بقيادة محمد رشيد باشا والي سيواس عام ١٨٣٤ وقيامه باحتلال الجزيرة وهو في طريقه إلى إمارة سوران لمقاتلة الأمير محمد في كوردستان ، مما أدى إلى تدمير الجزيرة ونهب ممتلكات أهاليها . أما الأمير بدرخان فقد قرر عدم مواجهة الجيش العثماني بسبب عجزه عن المقاومة ، فقرر الانسحاب إلى الجبل الجودي لكي يحافظ على قواته العسكرية المتبقية ويعيد تنظيم الإمارة وبناء ما تم تدميره (هروتي، ٢٠٠٨، ٢١١؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ٢٠٦-٢٠٧).

إلا أن الاحداث قد تطورت بعد ذلك، ولا سيما عندما شاركت قوات الأمير بدرخان في معركة نزيب عام ١٨٣٩ إلى جانب القوات العثمانية في مقاومة جيش محمد علي باشا والي مصر، وتوحي هذه المشاركة إلى تحسين العلاقة بين الأمير بدرخان والدولة العثمانية بعد تعرض بوتان إلى هجوم محمد رشيد باشا عام ١٨٣٤، إلا أن خسارة الجيش العثماني في هذهِ المعركة، دفع الأمير بدرخان إلى النظر في علاقته مع العثمانيين، بعد أن تبين للأمير بدرخان ضعف الجيش العثماني واعتقاده بعد هذه الخسارة أن الفرصة مواتية للقوى والإمارات الكوردية من اجل التعاون والتكاتف بوجه العثمانيين (محمود، ٢٠١٨، ٥٧٤).

على ما يبدو أن الاحداث التي مرت على بوتان والمناطق المجاورة لها، قد عزز لدى الأمير بدرخان فكرة تحسين العلاقات السياسية مع الامارات الكوردية الأخرى ، واعتبر أن وحدة الموقف الكوردي هو شرط أساسي في مواجهة الوجود العثماني وسياستها في المنطقة، ومن هنا سعى الأمير بدرخان بإرسال الوفود والرسائل إلى امراء الاكراد في محاولة منه لجمع كل القوى الكوردية من الامراء ورؤساء القبائل وكبار رجال الدين واعيان المدن في مختلف ارجاء كوردستان (إسكندر، ٢٠٠٨، ٢٠٧؛ محمود، ٢٠١٨، ٥٧٤).

استطاع الأمير بدرخان في نهاية الامر من تكوين حلف سياسي عسكري واسع انضم إليه زعماء الامارات الكوردية وهو: مصطفى بك، وخالد بك زعيم خيزان، وشريف بك من زعماء لواء موش، وحسين بك رئيس عشائر إقليم قارص واجار، وتشكلت لجنة للدعوة للحلف الجديد تطوف انحاء الامارات الكوردية تدعو لذلك وهم الشيخ محمود من أهالي الموصل، والشيخ طه النهري من هكاري والشيخ يوسف من أهالي زاخو، ولم تقتصر دعوة الأمير على اكراد الدولة العثمانية بل وصلت إلى اكراد بلاد فارس ، فلبى الأمير اردلان الدعوة ودخل الحلف المقدس . وقد بدأ المشاركون في الحلف بإعادة بناء القلاع المتهدمة وإقامة التحصينات وزيادة عدد القوات في أراضيهم (هاميسانز،

١٩٩٨، ٣٨؛ جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ٢١؛ محمود، ٢٠١٨، ٥٧٥-٥٧٦). ومنذ انتهاء الصراع العسكري بين امير سوران والدولة العثمانية ، بدأ الأمير بدرخان بحلول عام ١٨٤٠ باسترجاع المناطق التي فقدها ، لا سيما سيطرته على مقاطعتين ويرانشهر وسنجار وفرض سيطرته المباشرة وغير المباشرة على مناطق كوردية شاسعة امتدت من اطراف مدينة ديار بكر في الغرب إلى ما وراء الحدود القاجارية – العثمانية في الشرق (جالياند، ٢٠١٢، ٤٨؛ قاسملو، ٢٠٠٨، ٥٤؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ٢١٠) .

امتازت الامارة في عهد الأمير بدر خان بتوفير العدالة الاجتماعية والدينية، حيث كان عطوفاً مع أبناء امارته وقدم بصورة دورية مساعدات مالية لكل الذين لجأوا إليه من المحتاجين، ومارس الأمير بدرخان سياسة دينية مثالية، واعتبر نفسه بمنزلة زعيم روحي لسكان امارته، وكان لاستقرار المنطقة امنياً دور في تنشيط الزراعة وتفعيل النشاطات التجارية (محمود، ٢٠١٨، ٥٧٢) ، كما عمل الأمير بدر خان على سك نقوداً كوردية، رسم على أحد الجانبين (بدرخان امير بوتان) والجانب الاخر رسم عليه (تاريخ ١٢٥٨هـ)، لم يكن هذا الاجراء المالي أو ذكر اسم بدرخان في خطبة الجمعة لمدة اثنتا عشر سنة بظاهرة جديدة، لكن تلك المرحلة كانت تشهد صراعاً مصيرياً بين الامارات الكوردية والدولة العثمانية صار لهما أهمية خاصة لتأكيدهما على استقلال المناطق الكوردية السياسي، وهو إجراء قام به الأمير بدرخان لتأكيد مكانة بوتان القيادية داخل التحالف المقدس، واتخذ من الجزيرة عاصمة لدولته، حيث رفع العلم الكوردي عليها وقطع الزعماء الكورد عهداً بتأييد الدولة الجديدة والدفاع عنها (عبد، ٢٠١٣، ٣؛ هروري، ٢٠١٦، ٧١؛ محمود، ٢٠١٨، ٥٧٢؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ٢١٨-٢١٩).

ومع وضوح اهداف الأمير وطموحاته ، فقد ذهب العديد من المؤرخين إلى اعتبار انتفاضة الأمير بدرخان كانت بمثابة حركة قومية تسعى إلى حرية واستقلال ووحدة الكورد، بصرف النظر عن المذاهب والأديان المختلفة الموجودة في كوردستان ، وهذا ما ذهب إليه كينان عندما عدّ إنتفاضة بدرخان اول انتفاضة قومية بالمعنى الحديث. ويذهب نبز إلى القول: (( **كان الأمير بدرخان، المعاصر لأمير رواندوز، كوردياً، ذا وعي قومي، فالبرغم من نظام حكمه الاقطاعي، كان يتحدث باسم الشعب الكوردي** ))، وذكر ماليسانز ان الأمير بدرخان هو ((**أبو الحركة القومية الكوردية**)) ، ولا يستبعد تأثر الأمير بدرخان من جهة أخرى بتأثيرات الصحوة القومية التي بثتها الثورة الفرنسية التي اندلعت عام ١٧٨٩، إذا أن مبادرته أو نيته في ارسال الطلاب إلى اوربا لدراسة العلوم المختلفة دليل آخر على تأثره بالأفكار الاوربية الحديثة (هروري، ٢٠١٦، ٧٢-٧٣) .

ونتيجة لجهود الأمير بدرخان في توحيد صفوف الكورد عن طريق تشكيله للتحالف المقدس، أصبح الأمير البوتاني يلعب إلى حد كبير دوراً مشابهاً للدور الذي لعبته امارة سوران في ظل حكم الأمير محمد باشا ، لذلك وجدت الدولة العثمانية فيه خطراً لا بد من التصدي له،


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وانهاء حكمه في الجزيرة، فأخذت الدولة العثمانية وبتشجيع من الدول الاوربية، وفي مقدمتها بريطانيا بالعمل لأنهاء حكم الأمير بدرخان حيث اثمرت جهودهم بوقوع صراعات قوية بين الأمير نور الله بك حاكم هكاري وبدرخان من جهة ، والاشوريين من جهة أخرى (الدوسكي، ٢٠٠٢، ١٤٤) .

ويلجأ العديد من الباحثين في اعتقادهم أن التدخلات الخارجية كانت احدى السمات والأسباب الرئيسية في نشوء الصراع الكوردي – النسطوري ، إذ شجعت القوى المسيحية الكبرى المارشمعون، و من خلال الارساليات التبشيرية البريطانية والأمريكية التي أرسلت إلى هكاري بتحديه الامراء الكورد ، وقد شجعت وجود هذهِ الارساليات في هكاري الماشمعون بطلب إقامة جمعية تعزيز المسيحية جورج بادجر وفليتشر إلى هكاري عام ١٨٤٣، وعمل المبشران على زيادة الثقة لدى المارشمعون كي يدعوا بريطانيا للتدخل من اجل حماية السناطرة، كمل لعب كريستيان رسام نائب القنصل البريطاني في الموصل دوره في اثارة الصراع بين الكورد والنساطرة ، إذ دعا السناطرة إلى التمرد ضد قرارات الكورد ، وطلب من بريطانيا مراراً التدخل من اجل حمايتهم (محمود، ٢٠١٩، ٦٤٥؛ محمد، ٢٠٠٥، ٥٦؛ جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ٢٣) ، والمهم في الأمر أنهم تمكنوا من تنظيم إثارة النساطرة ضد الأمير بدرخان ، وكان تمرد أولئك النساطرة من أهم اسباب سقوط إمارة بوتان ، لانها اتخذت أبعاداً دينية وهولتها وسائل الاعلام الغربية ( محمود ، ٢٠٠٠ ، ٢٣ ) .

وعلى ما يبدو أن هدف بريطانيا والبعثات التبشيرية من جهة ، والدولة العثمانية من جهة أخرى من إيجاد الخلاف بين الكُرد والنساطرة هو عدم قيام كيانات كوردية مستقلة من قبل الامراء الكورد، لأنها كانت تخشى على مصالحها الاقتصادية والسياسية في المنطقة، كما أن الدولة العثمانية هي الأخرى راغبة في انهاء حكم الامارات الكوردية المستقلة والتي كانت تشكل خطراً على نفوذها في المنطقة ، وترغب كذلك في إضعاف النساطرة الذي اصبحوا أداة سياسية بيد القوى المبشرين الاوربيين للتدخل في الشؤون الداخلية للدولة العثمانية (الأحمد، ٢٠٠٨، ١٨٧-١٨٨؛ محمود، ٢٠١٩، ٦٤٥) .

وفي ظل تلك الاحداث والتحريض والتدخل الخارجي، كان العثمانيون منتظرين بداية الحروب بين القبائل ، من دون اكتراث لما ستخلفه هذهِ الحروب من دمار وضحايا، فالعثمانيون كانوا يرحبون بالتخلص من الزعماء غير المتعاونين معهم، وفي الوقت ذاته يسعون وراء الحجج والذرائع لانزال العقاب بالأخرين، ويرجع البعض إلى أن الأسباب الحقيقية التي أدت إلى المجزرة ، يعود إلى التفكك النسطوري نفسه، حيث هناك من يعتقد ان الخلافات بين النساطرة أنفسهم، زمن الاعداد للحملة، ساهمت بفعالية في حصول حملة بدرخان، فالخلافات النسطورية الداخلية ، واتساع رقعة نفوذ المعارضين للبطريرك شمعون سهلت، بطريقة أو بأخرى، في نجاح حملة بدرخان (جويده، ٢٠١٣، ١٨٥-١٨٦) ، وفي الوقت نفسه، من غير الممكن تجاهل الاعتقاد ان الدولة العثمانية،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

كانت تسعى إلى احداث الفتن بين الكورد والنساطرة ، خصوصاً وان كلا الطرفين، لم يكون ومنذ زمن طويل، محط ثقة السلطات العثمانية ، فهذهِ الفتن ، بالإضافة إلى أنها ستضعف النساطرة وتقضي على الحكم الذاتي الذي كان يتمتع به النساطرة ، فأنها ذريعة للتدخل في الشؤون الكوردية (جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ٢٣؛ جاليالند، ٢٠١٢، ٤٩).

بعد ان شهدت السنوات (١٨٤١-١٨٤٣)عدة هجمات متبادلة بين الكورد وانصار المارشمعون ، اثارت هذهِ التصرفات المحرضة الأمير بدرخان، إلا أنه حاول قبل اتخاذ اية إجراءات رادعة استشارة والي ارضروم الذي كان يشرف إدارياً على هكاري وبتوين وابلغ الوالي المارشمعون بعدم التدخل بالشؤون السياسية الدنيوية التي لا تدخل ضمن صلاحياته وترك الأمور الدنيوية للأمراء ، إلا أن مارشمعون رفض أوامر والي اضروم واستمر في اتصالاته بمساعد القنصل العام البريطاني في الموصل، ومن ثم استمر النساطرة في التمرد على سلطات امير هكاري ، ففي عام ١٨٤٣، ارسل امير هكاري إلى مارشمعون لزيارته للبحث في المسائل الخلافية، إلا أن ابن اخ مارشمعون قال لرسول الأمير أنهم غير خاضعين لحكم الأمير، وأن ديارهم الآن هي ملك لبريطانيا وتحت سيادتها (عبد، ٢٠١٣، ٤؛ هروري، ٢٠٠٠، ١١٩-١٢٠).

أمام هذا التمرد الصريح من جانب المارشمعون وانصاره على سلطة هكاري، طلب امير هكاري من الأمير بدرخان مساعدته للقضاء على التمرد الاشوري ، فأرسل بدرخان احد رجاله ويدعى زينل بك مع قوة عسكرية إلى منطقة اشيتا و شيف ليزاني، فقامت قوات المارشمعون بمحاصرة القوة الكوردية في القلعة الموجودة في المدينة ودام الحصار عدة أيام (محمود، ٢٠١٩، ٦٤٥-٦٤٦؛ هروري، ٢٠٠٠، ١٢٠) . وقد شكل الأمير بدرخان جيشاً كوردياً مؤلفاً من ١٢٦ الف رجل ومشاركة فيه قوات من كل الامارات الكوردية لتأديب المارشمعون، ولكن الجيش الكوردي كان تحت أوامر صارمة بأن لا يمس أي اشوري لا يقام، لذلك لم يتعرض الاشوريين الساكنين في منطقة زاويتا للأذى بعد رفضها الانضمام إلى التمرد المارشمعون. واستطاعت قوات الأمير بدرخان من الدخول بسهولة إلى مقر الماشمعون الذي هرب إلى الموصل واحتمى بمقروكالة القنصلية البريطانية (علي، ٢٠٠٨، ١٦-٢٠؛ عبد ٢٠١٣، ٤-٥) . وقد تقدم الاشوريين بشكوى خاصة إلى رسام القنصل البريطاني في الموصل، الذي كان ينحدر من اصل اشوري وطالب رسام السلطان العثماني عن طريق سفيره في استانبول بمعاقبة بدرخان (جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ٢٣؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ٢٣٥).

أشار القناصل والأجانب والرحالة في مبالغتهم في ذكر عدد الضحايا ووقوع المجازر في صفوف النساطرة ، إلا أن المبالغة منهم في ذكر هذهِ الاعداد كانت لمجرد اثارة الرأي العام الأوربي ضد الأمير بدرخان، وقد تدخل فعلاً ممثلو القوى الاوربية في الموصل واستانبول وطلبوا من



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

السلطات العثمانية التدخل لوقف ما سموه بـ (المذابح) ضد النساطرة (عبد، ٢٠١٣، ٥؛ هروري، ٢٠٠٠، ١٢٢؛ جويدة، ٢٠١٣، ١٨٩) .

امام ضغط الدول الاوربية، أرسلت الدولة العثمانية وفداً حكومياً برئاسة كامل باشا إلى الأمير بدرخان مطالباً إياه بوقف العمليات العسكرية في هكاري، كما طلب منه اطلاق سراح أسرى النساطرة ، وقد أوضح الأمير بدرخان موقفه، بأن حملته كانت تأديبية لرد اعتداءاتهم المتكررة على القوى الكوردية القريبة من مناطق النساطرة بعد أن بدأت القوات النسطورية اعتدائها على القرى الكوردية بإيعاز من المبشرين الاوربيين ، ومهما يكن، فأن الأمير وافق من جانبه على إيقاف القتال، فعاد المارشمعون إلى اشتيا (علي، ٢٠٠٣، ٣١؛ محمود، ٢٠١٩، ٦٤٦؛ هروري، ٢٠٠٠، ١٢٢) .

وبعد مرور ثلاثة أعوام على المواجهة العسكرية الكوردية – النسطورية الأولى، تفجرت ازمة جديدة، حيث قامت بريطانيا ومن خلال جهود رسام ولدريارد في اثارة الفتن بين الكورد، والقسم الثاني من الجماعة النسطورية غير الموالية للمارشمعون والمدعومة من قبل الارسالية الامريكية، وهذا ما حدث في تموز عام ١٨٤٦ في منطقة تخوما عندما ارسل لهم الأمير بدرخان حملة عسكرية لتأديبهم، وعلى الرغم من طلب النساطرة المساعدة من كريدي محمد باشا والي الموصل (١٨٤٥-١٨٤٦) للتدخل من اجل حمايتهم، إلا أنه لم يفعل شيئاً واستطاعت القوات الكوردية أن تدخل القرى النسطورية، بعد أن فر المارشمعون ثانية إلى الموصل (علي، ٢٠١٠، ٤٣؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ٢٣٦؛ هروري، ٢٠٠٠، ١٢٢) .

وفي ضوء ما تقدم، يمكننا استنتاج أن المارشمعون هو الذي وقف موقف المعادي من الكورد ، عندما تعاون مع بيرقدار والي الموصل، الذي غزا جيشه امارة بهدينان، وهذا ما أدى إلى سقوط تلك الامارة ونفي السلالة الكوردية الحاكمة فيها. ومن جهة أخرى نرى أن هجوم قوات الأمير بدرخان العسكرية ضد القوات النسطورية كان مفاجئاً، حيث لم يخفي نيته عن رجال الارسالية الامريكية أو عن المارشمعون، وبمعنى آخر، كان النساطرة مستعدين عسكرياً لمواجهة الحملة العسكرية الكوردية، خاصة عندما رفض المارشمعون الاعتراف بوجود السلطة الكوردية في منطقة هكاري وتأكيده على استقلاله السياسي.

ويذهب الكثير من الباحثين الكورد من اعتقادهم بأن التدخلات الخارجية الإقليمية والدولية في كوردستان، كان السبب الرئيسي في نشوء الصراع النسطوري، ومن هؤلاء ما ذكره الباحث جليل جليلي بأن البريطانيين حثوا النساطرة على عدم التوصل إلى اية تسوية مع الامراء الكورد، وما يدعم صحة هذا الاستنتاج هو عدم تشجيع البريطانيين لمارشمعون في مسألة الدخول في المفاوضات مع الامراء الكورد من أجل حل الخلافات، وانما اجبرته على التوصل إلى تفاهم مع الدولة العثمانية كي توفر الحماية له. ومن جهة أخرى يرى الباحث عبد الرحمن قاسملو ، هو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

حث العثمانيين قادة النساطرة على التمرد ضد الكورد ، بينما يعتقد كندال نزان بأن النشاطات المعادية للكورد التي قام بها رجال الارساليات المسيحية الامريكية والبريطانية تقف وراءها المعارضة المسيحية المحلية لانتفاضة الأمير بدرخان (إسكندر، ٢٠٠٨، ٢٤٠).

ومهما يكن من أمر، فقد شجع المبشرون والاوساط السياسية الاوربية من الضغط على الدولة العثمانية، لإنهاء حكم الأمير بدرخان، فأجبرت الدول الاوربية السلطان محمود الثاني لا تخاذ قرار الزحف على امارة بوتان، إذا رفضت الأخيرة قبول الأوامر السلطانية، وقد أرسلت بريطانيا عن طريق السياسيين القائمين في استانبول رسائل تحذيرية إلى الدولة العثمانية بينت فيها أن علاقتها سوف تتأثر تأثراً كبيراً بالدول الاوربية نتيجة المذابح التي ارتكبت بحق النساطرة، ولذلك من صالح الحكومات الاوربية أن تقوم الدولة العثمانية بأجراءات ضد الأمير بدرخان دون حدوث مذابح أخرى في المستقبل (لازاريف، ٢٠٠١، ٤٨؛ تاج الدين، ٢٠٠١، ٩٠؛ محمود، ٢٠١٩، ٦٤٦-٦٤٧).

وامام هذا الضغط الأوربي، طلبت الدولة العثمانية من السفير البريطاني في استانبول بإبلاغ حكومته بأن الدولة العثمانية عازمة على القضاء على الأمير بدرخان، إلا أن طبيعة كوردستان والظروف المناخية ووجود حوالي ستون الف مسلح كوردي تحت امرة الأمير بدرخان كان يتطلب ذلك التهيء لهم وفق خطط عسكرية منظمة (عبد، ٢٠١٣، ٧). وفي أذار ١٨٤٧ جرى الاعداد لحملة عسكرية ضد الكورد، واخذ عثمان باشا القائد العام الجديد للقوات العثمانية في شرق الاناضول يعد العدة لهذا الأمر، وبحماس شديد، واعلن عن تجنيد عام للجنود، وفي أواسط أيار ١٨٤٧ كان جيش عثمان باشا جاهزاً لبدء هجومه (جليل وآخرون، ٢٠١٣، ٢٣).

وفي بداية حزيران ١٨٤٧، بدأت القوات العثمانية بالاستعداد لمواجهة الامير بدرخان ، فعملت اولاً على توجيه ضربة لحلفاء الأمير بدرخان، فوزع عثمان باشا قواته كالأتي: تولى الجناح الأيمن عمر باشا بينما تسلم الجناح الأيسر رئيس اركان جيش الاناضول صبري باشا، أما عثمان باشا فتولى قيادة قلب الجيش (لازاريف وآخرون، ٢٠٠٦، ١٢٧؛ هروري، ٢٠٠٠، ١٢٥؛ تاج الدين، ٢٠٠١، ٩١؛ محمود ٢٠١٩، ٦٤٧)، واستطاعت القوات المدافعة عن الامارة أن تلحق الهزيمة في اول اشتباك وقع مع الجيش العثماني في جمر زيتون، أجبرت القوات العثمانية على التراجع. وبعد معارك طاحنة استمرت بين الطرفين وتآمر بعض القيادات في جيش الأمير بدرخان مثل يئزدين شيؤ، تمكن الجيش العثماني من دخول معقل الامارة ، اضطر الأمير بدرخان إلى ترك المدينة واللجوء إلى قلعة أروخ الحصينة، وبعد حصار دام شهر سلم الأمير بدرخان نفسه وذلك في ٢٠ تموز ١٨٤٧، ثم ارسل فيما بعد إلى استانبول التي وصل إليها في ٢٩ أيلول ١٨٤٧، وامر السلطان عبد المجيد الأول (١٨٣٩-١٨٦١) بنقله إلى مدينة قندهية في جزيرة كريت (كانديا) في البحر المتوسط وبقى فيها



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

قرابة ١٨ عاماً (هروري، ٢٠٠٤، ١٣-١٤؛ محمود، ٢٠١٩، ٦٤٧؛ هروري، ٢٠٠٠، ١٢٥-١٢٨؛ جاليا ند، ٢٠١٢، ٤٩-٥٠).

بعد أسر الأمير بدرخان ، تابع عثمان باشا حملته العسكرية ضد الزعماء الكورد الآخرين ، فدخل جيشه في ١٥ أب ١٨٤٧ مدينة سيرت، وذكل بسكانها المسلمين ، وقد استمرت حروب عثمان باشا حتى عام ١٨٤٨ عندما تفشي وباء الكوليرا في صفوف قواته الذي تسبب في وفاة ثلاثة ارباع قواته المتمركزة في مدينة بدليس ، وقد اعتبرت الدولة العثمانية النصر على الكُرد هاماً جداً ، بحيث أصدرت بعد الانتهاء من حملة عثمان باشا، ميدالية خاصة حملت على أحد وجهيها قلعة أروخ – بدرخان ، وعلى الوجه الآخر عبارة ميدالية كوردستان ، كما تمركزت الوحدات العثمانية في معظم المراكز الرئيسية ، وذلك لتفادي إمكانية قيام انتفاضات كوردية في المستقبل ، فضلاً عن قيامها بأجراء تغييرات هامة في التقسيم الإداري للمناطق الكوردية ، ومن ثم دمج مناطق الجزيرة وهكاري وبرواري في منطقة نيابية واحدة (جليلي وآخرون، ٢٠١٣، ٢٤؛ هروري، ٢٠٠٠، ١٢٩؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ٢٦٣) .

ونتيجة للحملات العسكرية العثمانية المستمرة آنذاك على كوردستان والمقاومة الشديدة التي ابداها الكورد، فقد نشأت بذور الحركة التحررية الكوردية الحديثة منذ أوائل القرن التاسع عشر، إذ شهدت كوردستان الانتفاضات التي كانت معظمها تهدف إلى رفع الظلم عن الكورد وتحقيق طموحاتهم ومقاومة السياسة المركزية التي كانت نتيجتها زوال الإمارات الكوردية. وعلى الرغم من أن ظهور الانتفاضات الكوردية كانت في بدايتها مختلطة بالروح الاستقلالية والطموح الشخصي، إلا أن الأمراء الكورد لعبوا دوراً مهماً للتعبير عن القومية الكوردية، وهذا ما اكده أحد الباحثين عندما ذكر قائلاً: (( **أظهرت الحوادث والوقائع التي نشأت بكردستان في القرن التاسع عشروجود العاطفة القومية الكوردية بأجلى مظاهرها** )) (زكي، ١٩٣٦، ٢٥٩؛ إسكندر، ٢٠٠٨، ١٤٨-١٤٩) ، وهذا ما مثله الأمير بدرخان والذي عدّ أيضاً في نظر العديد من الباحثين بأنه **"الأب الروحي"** للحركة القومية الكردية وأنه تمكن من تحويل الشعور بالانتفاضة إلى حركة قومية قوية (خيرة ، ٢٠٠٥، ٥٤) . وعندما قضت الدولة العثمانية على إمارة بوتان عام ١٨٤٧، ونفي الأمير بدرخان وأسرته إلى جزيرة كريت ، كان الأمير يجمع حوله أولاده وأحفاده ويقول لهم: (( **أخشى أن تضيعوا لغتكم ، أريد أن تتحدثوا مع اطفالكم وعيالكم بلغة اجدادكم ، ومن لا يعمل بذلك فأنه ليس من أولادي** )) (البوتاني، ٢٠٠٥، ٣٤) . ونظراً لتميز هذهِ الانتفاضة في الأدبيات التاريخية وما نتج عنها من معالم قومية واضحة من حيث مطالبتها باستقلال كُردستان في ظل وجود الدولة العثمانية ، فقد عبر عنها أيضاً جلال طالباني في كتابه (كردستان والحركة القومية الكردية) قائلاً: (( **لولا الانشقاق الداخلي والخيانة ولولا تدخل الانجلو – فرنسي ضد الاكراد**



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بحجة الدفاع عن المسيحية ، ولو استطاع الأمير بدرخان تنظيم قوى الشعب وقواته المسلحة بشكل أفضل ، لكان النصر حليفه ولتحققت أمنية الشعب الكردي من الحكم الوطني )) (طالباني، ١٩٧٠، ٤٥).

**خلاصة واستنتاج:**

تركت التطورات السياسية والعسكرية ، سواء كانت في علاقات الدولة العثمانية الخارجية وخاصة مع إيران أو مع الإمارات الكوردية القائمة آنذاك ، آثاراً واضحة على الحياة العامة في كوردستان ، ولا سيما بعد أن بذلت كلتا الدولتين جهوداً كبيرة لإشغال الكورد بالصراع القائم بينهما من اجل إستغلال قواهم والاستفادة من قدراتهم القتالية في جولات الحروب الدموية، ولمنع الكورد من التحرر أو سد الطريق عليهم للخروج من سيطرتهم وإضعاف الرابطة القومية بينهم ، إذ كانت السلطات في كلتا الدولتين منهمكة دوماً في تأجيج نار العداوة والفتن بين الإمارات الكوردية أو ما بين القبائل المتنازعة بغية تعزيز وتقوية العصبية القبلية وتعين الولاءات المحلية بينهم.

وبدخول كوردستان مطلع القرن التاسع عشر، أخذت فكرة القومية الكوردية في النمو والتبلور بشكل واضح وأساسي ، وتميزت بطابعها الوطني، وبالشعور القومي الذي انتشر أولاً بين الأمراء والمحيطين بهم. ومع انتهاج الدولة العثمانية بتطبيقها السياسة المركزية في الحكم، ثارت سلسلة من الانتفاضات في الإمارات الكوردية في كوردستان ساعدت في إيقاظ الكورد من سباته الطويل ، فمن خلال اندلاع هذهِ الانتفاضات جعل من المرء الكوردي يتحسس هويته القومية، ويتبصر لواقعه ويشعر بوجود التفرقة بينه وبين الولاة العثمانيين الذين كانوا يعاملون الكورد باستعلاء وتكبر فارغين.

ومن جهة أخرى ، فقد لعبت القوى الاوربية الكبرى التي اقتضت مصالحها التوغل في دول المنطقة ومنها كوردستان دوراً سلبياً وعائقاً خطيراً للانتفاضات التحررية الكوردية التي في ظلها أيضاً تبلورت وانتعشت الفكرة القومية ، لا سيما من خلال الضغوط التي مارستها على الدولة العثمانية وعلى رأسها بريطانيا التي كان لها تأثير كبير في مسار الأحداث من أجل انهاء الوضع الاستقلالي التي تمتعت به غالبية الإمارات الكوردية في كوردستان، منها ما قامت به من خلال طرحها لقضية المجازر المزعومة ضد الاشوريين.

كما أن قرار الدولة العثمانية في شن حملات عسكرية واسعة ضد الإمارات الكورية، لم يكن هو الآخر مربوطاً بضغوط أوربا ، وإنما كان يرتكز أساساً في رغبتها في إلحاق كوردستان بالدولة العثمانية والقضاء على الخطر الجدي الذي شكله قيام الإمارات الكوردية، من خلال اتباعها سياسة ضرب الانتفاضة الكوردية بأبنائها، وأمام لجوء كل إمارة كوردية إلى الدفاع عن



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

نفسها بنفسها، وعدم الاتفاق بين الامارات لتوحيد جهودها في مقاومة الإمارات الكوردية المنتفضة في النصف الأول من القرن التاسع عشر.

وأخيراً، وعلى الرغم من إخفاق أكثر هذهِ الانتفاضات في تحقيق الاهداف الوطنية الكبرى، ألا أنها حققت مهاماً خطيرة، منها بلورة القومية الكوردية وحركتها التحررية من قالبها القومي ونشر الوعي والشعور القومي في كوردستان، ثم إرشاد الشعب الكوردي إلى ضرورة تنظيم قواه وتوحيد صفوفه والاستعداد التام والتهيئة لكل انتفاضة قبل الشروع بها، وخرق النطاق الاقليمي المفروض على حريتها في البداية عن طريق شن كفاح وطني على نطاق كوردستان .

(❖) تقع ارض الأكراد ، وهو معنى كلمة كوردستان في الشرق الاوسط من آسيا الغربية ، في المنطقة المحصورة بين الاتحاد السوفيتي وايران وتركيا والعراق وسوريا ، وتلتقي في كردستان حدود هذه الدول الخمس في الوقت الحاضر ، وهي تشمل الاراضي لبتي تمتد من جبل أرارات في الشمال الشرقي الى جبال زاكروس وپشتكوه جنوباً ، ثم تمتد غرباً في خط منحني مروراً بمنطقة شمال الموصل في العراق، وتتعرج نحو الشمال الغربي مخترقة سوريا الى تركيا لتشمل اقصى الركن الجنوبي الشرقي من الاناضول ، وقد قدر الباحثون الاكراد هذهِ المساحة بحوالي ٤١٠الف كيلو متراً مربعاً . ينظر : ابراهيم ، ٢٠١٨ ، ٣٧٣ ؛ أحمد ، ٢٠١٤ ، ٣٧-٣٨ ) .

(❖) هو ادريس حسام الدين علي البدليسي المولود في مدينة بدليس عام ١٤٥٢ ، التحق بالسلطان يعقوب حاكم آق قونيلو في عام ١٥٠١ ، ومن ثم دخل في خدمة السلطان العثماني بايزيد الثاني ، انتقل الى الاستانة وعين هناك في البلاط العثماني ، وقد اشترك ادريس مع السلطان سليم الاول في معركة جالديران ضد الصفويين ، وكان له دوراً كبيراً في استقطاب الاكراد وحثهم على الانضمام الى الجيش العثماني ، كما وافق الحملة العثمانية على مصر عام ١٥١٧ . وكان ادريس صاحب الطريقة الصوفية المعروفة بالنوربخشية ، وهي الطريقة الصوفية الوسطية ، توفي في الاستانة عام ١٥٢٠ . ينظر : ( محمود ، ٢٠١٦، ٤٦).

(❖) هو عبدالرحمن ابن محمود باشا الاول ابن خالد باشا الاول ابن تيمور خان ابن فقيه احمد دار شمانة ، ولد بابان عام ١٧٥٠ في مدينة قلعة جولان التي كانت عاصمة امارة بابان قبل ان تنتقل العاصمة الى مدينة السليمانية ، تزوج الامير عبدالرحمن من ابنة عمه فاطمة خان وانجب منها كل من : محمود باشا وعثمان بك وسليمان باشا ، كما تزوج من ابنة وليد بك رئيس قبيلة جاف ، وانجب منها ايضا ثلاثة ابناء هم : حسن بك ويوسف بك وعزيز بك ، وفي العام ١٧٨٩ وبتأييد من والي بغداد العثماني سليمان باشا الكبير اصبح والي امارة بابان ،



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

واستمر في حكم الامارة لمدة ٢٤ عاماً ، ابعد خلا لها ستة مرات عن حكم الا مارة من قبل رجال اسرة بابان المنافسين له ، توفي عام ١٨١٣ . ينظر : ( بابان ، ٢٠٠٨، ص ١٥٥ ) .

(❖) و لد محـ مدا بن بك بن او غوز بك في مدينة راو ندز عام ١٧٨٤ ، درس ع لوم ا لدين الاسلامي منذ صباه ، وبعد اتمامهِ للدراسة الشاملة عينه والده مشرفاً على بعض المناطق من امارته ، تولى شؤون الامارة بعد وفاة والده عام ١٨١٣ ، امتاز الامير محمد با لدهاء وسداد ا لرأي ، و كان ا لهدف الا ستراتيجي له هو توحـ يد الارا ضي الكورد ية تحت قياد ته ، وبـ ناء كـ يان كوردي يستطيع الصمود والتصدي للمطامع العثمانية والايرانية القاجارية في كورد ستان ، وسعى بإخلاص لتكوين امارة كوردية مستقل بالتعاون مع ابراهيم باشا ابن محمد علي با شا حاكم مصر ، توفي عام ١٨٣٨ . ينظر : ( خيالي، ٢٠١٨، ١٠٠).

(❖) هو ابن عبدالله خان باشا بن مـصطفى خان المو لود في مدينة ا مد (د يار بكر) عام ١٨٠٢ ، تسلم مقاليد الحـكم في الا مارة عام ١٨٢٢ ، واثـناء تولـيه الا مارة عـمل عـلى تو سيع امار ته لتـ شمل مناطق وا سعة بين مها باد وراوندوز ووان وسنجار وبوتان ، وقد وضع بدرخان برنا مجاً لإ علان ا ستقلال امارته ، الا ان تعرضه الى خيا نة قريبة مـنه ومحا صرة القوات العثمانية له في قلعة اروخ حالت دون تحقيق برنامجه القومي ، ومن ثم نفيه من قبل السلطات العثمانية الى جزيرة كريت عام ١٨٤٧ ، توفي عام ١٨٦٩ . ينظر : هروري، ٢٠٠٠، ٤٨).

## قائمة المصادر

### أولاً: الرسائل والاطاريح الجامعية :


١- كا مل جا سم د هش ، الأ مارة البابانية في العـهد العثـماني ( ١٦٦٩ – ١٨٥١م ) . درا سة تاريخـية ، رسالة ماجستير غير منشورة ، كلية الآداب ، جامعة بغداد ، ٢٠٠٧.

٢- نزارا يوب حـ سن ، ا مارة هـكاري في العـهد العـثماني ١٥١٤-١٨٤٩م ، درا سة تاريخـ ية – وثائقـ ية ، اطروحة دكتوراة غير منشورة ، كلية العلوم الانسانية ، جامعة زاخو ، ٢٠١٦.

٣- ويفي خيرة ، تأثير المـ سألة الكرد ية عـلى الا ستقرار الاقليـ مي ، رسالة ماجـ ستير غير منـ شورة ، كلية الحقوق ، جامعة منتوري قسنطينة ، الجزائر ، ٢٠٠٥.


### ثانياً : الكتب العربية والمعربة:


١-ابراهيم داقوقي ، عشائر كردستان ، دار كاوا للنشر والتوزيع ، ( دهوك : ٢٠٠٢).

٢-ابراهيم محمود ، القبيلة الضائعة الأكراد في الأدبيات العربية الا سلامية ، رياض ا لريس للكتب والنشر ، ( بيروت : ٢٠٠٧ ).

٣-احمد تاج الدين ، الاكراد تاريخ شعب – وقضية وطن ، الدار الثقافية للنشر، ( مصر: ٢٠٠١).




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

٤-احمد محمد احمد ، أكراد لبنان وتنظيمهم الاجتماعي والسياسي ، مكتبة الفقيه ، ( لبنان: ١٩٩٥ ).
٥-ارشاك سافرا سيتان، الكرد وكردستان، ترجمة: احمد محمود خليل، ط٢ ، دار الزمان للطباعة والنشر، ( بغداد : ٢٠٠٨ ).
٦-انكه لهارد ، تاريخ الاصلاحات والتنظيمات في الدولة العثمانية ، نقله من العثمانية : علي رشاد، ترجمة: محمود علي عامر، دار الزمان للطباعة والنشر، ( دمشق: ٢٠٠٨ ).
٧-اود يل مورو، الدولة العثمانية في عصر الاصلاحات : رجال النظام الجديد العسكري وافكاره ١٨٢٦-١٩١٤، ترجمة : كارمن جابر ، المركز العربي للابحاث ودراسة السياسات ، (قطر : ٢٠١٨ ).
٨-اياد جلال بابان، اسرة بابان الكردية : شجرتها التاريخية وتسلسل اجيالها ، دار الزمان للنشر والتوزيع، ( الرياض : ٢٠٠٨ ).
٩-باسيلي نيكيتين، الكرد دراسة سوسيولوجية وتاريخية ، نقله من الفرنسية وعلق عليه : نوري طالباني، ط٣ ، مكتب الفكر والتوعية / الاتحاد الوطني الكردستاني، ( السليمانية : ٢٠٠٧).
١٠-بله ج شيركوه، القضية الكوردية ماضي الكرد وحاضرهم، مطبعة السعادة، ( مصر: ١٩٣٠ ).
١١-بولس قرألي، علي باشا جنبلاط والي حلب ١٦٠٥-١٦١١ ، منشورات دار المكشوف ، ( بيروت: ١٩٣٩ ).
١٢- جابر ابراهيم رواي ، الحدود الدولية ومشكلة الحدود العراقية الايرانية ، المطبعة الفنية الحديثة ، ( القاهرة : ١٩٧٠ ).
١٣-جاوان حسين فيض الله الجاف ، الكورد ودورهم في جمعية الاتحاد والترقي . دراسة تارخية ١٨٩٩ – ١٩١٤، دار الزمان للطباعة والنشر والتوزيع، ( سوريا : ٢٠١٢ ).
١٤-جلال طالباني ، كردستان والحركة القومية الكردية ، مطبعة النور ، ( بغداد : ١٩٧٠ ).
١٥-جليل جليلي، من تاريخ الامارات في الامبراطورية العثمانية في النصف الاول من القرن التاسع عشر، الاهالي للنشر والتوزيع ، ( بيروت : ١٩٨٧ ).
١٦-جليل جليلي وآخرون، الحركة الكردية في العصر الحديث ، ترجمة : عبدي حاجي ، ط٢ ، دار الفارابي، ( بيروت : ٢٠١٣ ).
١٧-جمال نبز ، الأمير الكردي مير محمد الرواندوزي الملقب بـ " ميري كوره " ، ترجمة الى العربية : فخري شمس الدين ، ط٢ ، دار ئاراس للطباعة والنشر ، ( اربيل : ٢٠٠٣ ).
١٨-جواد فقي علي الجوم حيدري ، مولانا خالد النقشبندي ومنهجه في التصوف ، منشورات مكتبة كتاب – ناشرون ، ( بيروت : ٢٠١٦ ).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

١٩- جيرارد جاليا ند ، شعب بدون و طن الـ كرد وكرد ستان ، تر جمة الى العربـ ية : عبدالـ سلام النقشبندي ، مطبعة آراس ، ( اربيل : ٢٠١٢ ).
٢٠-حامد محمود عيسى ، القضية الكردية في العراق : من الاحتلال البريطاني الى الغزو الامريكي (١٩١٤-٢٠٠٤)، مكتبة مدبولي، ( القاهرة : ٢٠٠٥ ).
٢١-حسين ناظم بيك ، تاريخ الأمارة البابانية ، ترجمة : شكور مصطفى ومحمد الملا عبدالكريم المدرس ، مؤسسة موكرياني للطباعة والنشر ، ( اربيل : ٢٠٠١ ).
٢٢-حميد حمد سعدون، إمارة المنتفق وأثرها في تاريخ العراق والمنطقة الاقليمية (١٥٤٦-١٩١٨) ، دار وائل للنشر والتوزيع ، ( عمان : ١٩٩٩ ).
٢٣- خالد عقلان ، الجذور التاريخية للقضية الكردية ، منشورات المعهد المصري للدراسات السياسية والاستراتيجية ، ( مصر : ٢٠١٧ ).
٢٤-خليل جندي ، الايزيدية والإمتحان الصعب ، دار ئاراس للطباعة والنشر ، ( دهوك : ٢٠٠٨).
٢٥-خليل علي مراد ، حراس الاتاتوركية موقف المؤسسة العسكرية من الا سلام وا لحراك الا سلامي في تركيا ١٩٥٠-١٩٧٧ ، دار غيداء للنشر والتوزيع ، ( عمان : ٢٠١٦ ).
٢٦-ديفيد مكدول ، تاريخ الا كراد الحديث ، ترجمة : راج آل محمد ، دار الفارابي ، ( بيروت : ٢٠٠٤ ).
٢٧-دينا رزق خوري ، الدولة ومجتمع الولاية في الامبراطورية العثمانية . الموصل ١٥٤٠ — ١٨٣٨ ، ترجمة : سلوى زكو ، المركز العربي للابحاث ودراسة السياسات ، ( قطر : ١٩٩٧).
٢٨-رسول الكركوكلي ، دوحة الوزراء في تاريخ وقائع بغداد الزوراء ، ترجمة : موسى كاظم نورس ، ( بيروت : ١٩٦٣ ).
٢٩-رشيد كريم خان عقراوي ، الطريق الى دولة كردية : دراسة تحليلية نقدية : أراء ، محاولات ، تحديات ، أفاق ، مطبعة زانا ، ( دهوك : ٢٠٠٥ ).
٣٠-زهير كاظم عبود ، الأيزيدية : حقائق وخفايا وأساطير ، المؤسسة العربية للدراسات والنشر ، ( بيروت : ٢٠٠٥ ).
٣١-سامي سعيد احمد ، اليزيدية أحوالهم ومعتقداتهم ، مج (٢) ، منشورات جامعة بغداد ، ( العراق : ١٩٧٥ ).
٣٢-ستيفن هيميسلي لونكريك ، اربعة قرون من تاريخ العراق الحديث ، ترجمة : جعفر الخياط ، ط٣ ، ( بغداد : ١٩٦٢ ).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

٣٣-سعد بشير اسكندر ، قيام النظام الإماراتي في كردستان وسقوطه ما بين منتصف القرن العاشر ومنتصف القرن التاسع عشر ( نبذة تاريخية عن أهميته السياسية وإرثه الثقافي ) ، ط٢ ، منشورات بنكه ى زين لإحياء التراث الوثائقي والصحفي الكردي ، ( السليمانية : ٢٠٠٨ ).

٣٤-سعد ناجي جواد ، مستقبل القضية الكردية في الشرق الاوسط ، مركز دراسات الشرق الأوسط ، ( الاردن : ٢٠٠٠ ).

٣٥-سعدالدين ابراهيم ، الملل والنحل والأعراق هموم الاقليات في الوطن العربي ، ج١، مج٢ ، دار ابن رشد ، ( القاهرة : ٢٠١٨ ) .

٣٦-سعدي عثمان حسين ، كوردستان الجنوبية في القرنين السابع عشر والثامن عشر : دراسة في علاقاتها الادارية والسياسية والاقتصادية مع إيالتي بغداد والموصل ، مكتبة سوران ، ( دهوك : ٢٠٠٦ ).

٣٧-سعدي عثمان هروتي ، كوردستان والامبراطورية العثمانية . دراسة في تطور سياسة الهيمنة العثمانية في كردستان ١٥١٤-١٨٥١م ، مطبعة خاني ، ( دهوك : ٢٠٠٨ ).

٣٨-السعيد رزق حجاج ، الاكراد والأرمن في العهد الحميدي ، مطبعة الأمانة للنشر والتوزيع ، ( القاهرة : ١٩٩١ ).

٣٩-سليمان فائق ، تاريخ بغداد ، مطبعة المعارف ، ( بغداد : ١٩٦٢ ).

٤٠- سيار الجميل ، زعماء وأفندية : الباشوات العثمانيون والنهضويون العرب : البنية التاريخية للعراق الحديث : الموصل نموذجا ، دار الاهلية للنشر والتوزيع ، ( عمان : ١٩٩٩ ).

٤١-شاكر خصباك ، الكرد والمسألة الكردية ، المؤسسة العربية للدراسات والنشر ، ( بيروت : ١٩٨٩ ).

٤٢- صادق عبد علي الركابي ، الانتحار الجماعي : أكبر عمليات الانتحار الجماعي في التاريخ ، مكتبة مدبولي ، ( القاهرة : ٢٠١٣ ).

٤٣- صلاح هروري ، إمارة بوتان في عهد الامير بدر خان ١٨٢١-١٨٤٧ دراسة تاريخية سياسية ، مؤسسة موكريا للطباعة والنشر ، ( دهوك : ٢٠٠٠ ).

٤٤-عباس اسماعيل الصباغ ، تاريخ العلاقات العثمانية الايرانية : الحرب والسلام بين العثمانيين والصفويين ، دار النفائس للنشر والتوزيع ، ( الاردن : ١٩٩٩ ).

٤٥-عباس العزاوي ، تاريخ العراق بين احتلالين ، ج٦ ، من سنة ١٧٤٩ الى ١٨٣١ ، مطبعة بغداد ، ( العراق : ١٩٥٤ ).

٤٦-عبد ربه ابراهيم الوائلي ، تاريخ الامارة البابانية ( ١٧٨٤-١٨٥١ ) ، دار الزمان ، ( القاهرة : ٢٠٠٨ ).

٤٧-عبدالحميد شرف ، ١٤ قرن من الصراع بين الشرق والغرب : رؤية جديدة ، دار سما للنشر والتوزيع ، ( الكويت : ٢٠١٧ ) .

٤٨-عبدالرؤوف سنو ، النزعات الكيانية الاسلامية في الدولة العثمانية ١٨٧٧-١٨٨١ : بلاد الشام ، الحجاز ، كردستان ، البانيا ، دار بيسان للنشر والتوزيع ، ( بيروت : ١٩٩٨ ).

٤٩-عبدالعزيز نوار سليمان ، داؤد باشا والي بغداد ، دار الكتاب العربي ، ( القاهرة : ١٩٦٧ ).

٥٠-عبدالفتاح البوتاني ، بدايات الشعور القومي الكوردي في التاريخ الحديث ، ط٢ ، مطبعة هاوار ، ( دهوك : ٢٠٠٥ ).

٥١-عبدالفتاح حسن ابو علية ، الدولة العثمانية والوطن العربي الكبير ، دار المريخ للنشر ، ( مصر : ٢٠٠٨ ).

٥٢-عثمان علي ، الكرد في الوثائق البريطانية ، مؤسسة موكرياني للبحوث والنشر ، ( اربيل : ٢٠٠٨ ).

٥٣-ــ ، الكورد في الوثائق العثمانية ، مطبعة خاني ، ( دهوك : ٢٠١٠ ).

٥٤-ــ ، دراسات في الحركة الكوردية المعاصرة ، مطبعة الثقافة ، ( اربيل : ٢٠٠٣ ).

٥٥- عدنان زيان فرحان ، الكرد الايزيديون في اقليم كردستان ، مركز كردستان للدراسات الاستراتيجية ، ( السليمانية : ٢٠٠٤ ).

٥٦-علي سيدو الكوراني ، من عمان الى العمادية أو جولة في كردستان الجنوبية ، ط٢ ، دار أراس للطباعة والنشر ، ( اربيل : ٢٠١٢ ).

٥٧-عماد عبدالسلام رؤوف ، دراسات وثائقية في تاريخ الكرد الحديث وحضارتهم ، المديرية العامة للصحافة والطباعة والنشر ، ( بغداد : ٢٠٠٨ ) .

٥٨-عمار عباس محمود ، القضية الكردية : اشكالية بناء الدولة ، دار العربي للنشر والتوزيع ، ( مصر : ٢٠١٦ ).

٥٩-عمار علي السمر ، شمال العراق ١٩٥٨-١٩٧٥ ، المركز العربي للأبحاث ودراسة السياسات ، ( قطر : ٢٠١٢ ).

٦٠-عمر عبدالرحمن الساريسي ، الوعي الفولكلوري في الاردن وفلسطين ، مركز الكتاب العربي ، ( الاردن : ٢٠١٣ ).

٦١-فاتح اقجه ، السلطان سليم الاول ، ترجمة : احمد كمال ، دار النيل للطباعة والنشر ، ( مصر : ٢٠١٦ ).

٦٢-فاضل مهدي بيات ، دراسات في تاريخ العرب في العهد العثماني : رؤية جديدة في ضوء الوثائق والمصادر العثمانية ، دار المدار الاسلامي ، ( بيروت : ٢٠٠٣ ).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

٦٣-فيروز حسن حمه عزيز ، الاهمية الجيو ستراجية لكرد ستان الجنوبية وتأثيرها على السياسة البريطانية ( ١٩١٤-١٩٢٤ ) ، مركز كرد ستان للدراسات الاستراتيجية ، ( السليمانية : ٢٠٠٨ ).

٦٤-كاظم حبيب ، لمحات من نضال حركة التحرر الوطني للشعب الكردي في كرد ستان العراق ، ط٢ ، دار ئاراس للطباعة والنشر ، ( اربيل : ٢٠٠٥ ) .

٦٥- كاميران عبد الصمد احمد الدوسكي ، كورد ستان العثمانية في النصف الاول من القرن التاسع عشر ، دار سبيريز للطباعة والنشر ، ( اربيل : ٢٠٠٢ ).

٦٦-كمال فؤاد ، ملاحظات انتقادية حول كتاب خلاصة تاريخ الكرد وكرد ستان ، مطبعة الاتحاد الوطني ، ( السليمانية : ٢٠٠٠ ).

٦٧-كمال مظهر احمد ، دراسات في تاريخ ايران الحديث والمعاصر ، منشورات الامانة العامة للثقافة والشباب ، ( بغداد : ١٩٨٥ ).

٦٨-ماليسانز ، بدرخانيو جزيرة بوتان ومحاضر اجتماعات الجمعية العائلية البدرخانية ، ترجمة : شكور مصطفى ، منشورات وزارة الثقافة ، ( اربيل : ١٩٩٨ ).

٦٩-محفوظ العباسي ، إمارة بهدينان العباسية ، مطبعة الجمهورية ، ( الموصل : ١٩٦٩ ).

٧٠-محمد احسان ، كرد ستان ودوامة الحرب ، دار الحكمة للطباعة والنشر والتوزيع ، ( لندن : ٢٠٠٠ ).

٧١-محمد امين زكي ، تاريخ السليمانية وانحائها ، ترجمة : محمد جميل بندي الروزبياني ، شركة النشر والطباعة العراقية ، ( بغداد : ١٩٥١ ).

٧٢-ــــ ، خلاصة تاريخ الكرد وكرد ستان : من أقدم العصور التاريخية حتى الآن ، ترجمة : محمد علي عوني ، مج (١) ، ط٢ ، دار الشؤون الثقافية العامة ، ( بغداد : ٢٠٠٥ ).

٧٣-محمود رزوق احمد ، الحركة الكردية في العراق دور البارزانيين في طريق الحكم الذاتي ١٩١٨-١٩٦٨ ، دار المعتز للنشر والتوزيع ، ( عمان : ٢٠١٤ ).

٧٤-مصطفى تحمد محمد نجار ، شرفخان البدليسي ونهجه التاريخي من خلال كابه شرفنامه ، مطبعة سبيريز ، ( دهوك : ٢٠٠٧ ).

٧٥-منذر الموصلي ، عرب وأكراد : رؤية عربية — للقضية الكردية : الأكراد في وطنهم القومي وفي الجوار العراقي-التركي-الايراني-وفي سورية ولبنان ، دار الغصون ، ( بيروت : ١٩٩٥ ).

٧٦-مهدي جواد حبيب ، الصراع العثماني — الفارسي وأثره في العراق حتى القرن التاسع عشر ، بحث ضمن كتاب : الحدود الشرقية للوطن العربي ، دار الحرية ، ( بغداد : ١٩٨١ ) .



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

٧٧-ميثاق بيات الضيفي ، سياسات صنعت الشرقين الادنى والاوسط ، منشورات شركة E-kutub Ltd ، ( لندن : ٢٠١٨ ).
٧٨-مير بصري ، اعلام الكرد ، رياض الريس للكتب والنشر ، ( بيروت : ١٩٩١ ) .
٧٩-نجاة عبدالله ، كردستان ومشكلة الحدود الفارسية – العثماني . دراسة في العلاقات السياسية ١٦٣٩-١٨٤٧م ، ترجمة : حسن احمد مراد ، ط٢ ، مكتب التفسير للطبع والنشر ، ( اربيل : ٢٠٢١ ).
٨٠-هوكر طاهر توفيق ، دور الصحافة الكوردية في تطوير الوعي القومي الكوردي (١٨٩٨-١٩١٨) ، دار سبيريز للطباعة والنشر ، ( دهوك : ٢٠٠٤ ).
٨١-وجيه كوثراني ، الفقيه والسلطان : دراسة في تجربتين تاريخيتين : العثمانية والصفوية ، القاجارية ، منشورات المركز العربي الدولي ، ( القاهرة : ١٩٩٠ ).
٨٢-وديع جويده ، الحركة القومية الكردية نشأتها وتطورها ، ترجمة : مجموعة من المترجمين ، دار أراس للطباعة والنشر ، ( اربيل : ٢٠١٣ ).

**ثالثاً : البحوث والدراسات:**

١-و.باديدونو ستسيفا ، " الكورد في الدوريات الروسية في القرن التاسع عشر " ، ترجمة : عبدي حاجي ، مجلة زين ، العدد (١١) ، السليمانية ، كانون الاول ٢٠٢٠.
٢-احمد حسين عبد ، " حركة بدرخان التحررية (١٨٤٢-١٨٤٧م) " ، بحث مشارك في وقائع المؤتمر الاكاديمي العالمي الاول عن الكورد وكردستان في العهد العثماني المنعقد في جامعة صلاح الدين / اربيل ، للفترة ١٦-٢٠١٣/٤/١٨.
٣- سرمد عكيدي فتحي الدهان و ستار محمد علاوي ، " الصراع العثماني الفارسي وأثره على العراق . دراسة تاريخية (١٥٠٥ – ١٧٧٩م) " ، مجلة الدراسات التربوية والعلمية ، المجلد (٣) ، العدد (١٤) ، الجامعة العراقية ، كلية التربية ، ٢٠١٩.
٤- صلاح محمد سليم محمود ، " التحالف الكردي بقيادة الامير بدرخان في اربعينيات القرن التاسع عشر (دراسة تاريخية) " ، مجلة جامعة دهوك ، المجلد (٢١) ، العدد (٢) ، دهوك ، ٢٠١٨ .
٥- صلاح محمد سليم محمود ، " صدى علاقة الأمير بدرخان مع نساطرة هكارى في الصحافة الغربية (١٨٤٣-١٨٤٦م) (نماذج مختارة) " ، مجلة سر من رأى ، السنة الرابعة عشر ، المجلد (١٥) ، العدد ( ٦١) ، سامراء ، ٢٠١٩.
٦-لقمان خيالي ، " فكرة القومية الكوردية قراءة تاريخية لعقبات التبلور وتحديات التكوين " ، مجلة جامعة كرميان ، المجلد (٥) ، العدد (٣) ، ٢٠١٨.

٧-محمد علي احمد ، " الكرد والعشائر الكردية في الارشيف العثماني " ، مجلة قدمون السورية للعلوم الانسانية ، العدد (٢) ، سوريا ، آب ٢٠١٧.
٨-محمد عي الأحمد ، " قراءات ومراجعات في كتاب الحركة الكردية المعاصرة دراسة تاريخية وثائقية ١٨٣٣-١٩٤٦م ، تأليف عثمان علي " ، مجلة إسلامية المعرفة ، السنة الرابعة عشر ، العدد (٥٤) ، بيروت ، خريف ٢٠٠٨.
٩- نزار ايوب حسن ، " كردستان في المشاريع الاصلاحية العثمانية المبكرة ( قانوننامه سلطاني لعزيز افندي في القرن السابع عشر أنموذجاً " بحث عربي منشور في مجلة :
١٠-VAN Yuzuncuyil UnivesiTESi , Kurdiyt , Say (3) ,2021 , S.203
١١-هاشم عبدالرزاق صالح ، " الكرد والدولة العثمانية بين الانتماء القومي والولاء الديني "، مجلة مركز بابل للدراسات الانسانية ، المجلد (١١) ، العدد (٢) ، ٢٠٢١.

رابعاً : الموسوعات العربية:

١- ثامر عبدالحسين أميري ، موسوعة العشائر العراقية ، مج (٦) ، دار الشؤون الثقافية العامة ، ( بغداد : ١٩٩٢ ).
٢-محمد علي الصويركي ، الموسوعة الكبرى لمشاهير الكرد عبر التاريخ ، الدار العربية للموسوعات ، ( بيروت : ٢٠٠٨ ).

خامساً: شبكة المعلومات الدولية ( الانترنت ):

١- الثورات الكوردية ، مقال منشور في موقع المجتمع المدني الكوردي في اوراب الالكتروني ( الانترنت ) ، متاح على الرابط:
http:// www.Kurdish-civil-Society-in-europe-com
٢- عماد عبدالسلام رؤوف ، المشروع السوراني بحسب وثائق الأرشيف المصري ، مقال منشور في موقع شبكة الألوكة الالكتروني ( الانترنت ) ، نشر في تاريخ ٢٠١٣/١٢/٢٤ ، متاح على الرابط :
http://www.alukah.net/culture/0164340.net
٣- عوني الداؤدي ، إمارة سوران في عهد الباشا الكبير محمد كور باشا الراوندوزي ، مقال منشور في موقع الحوار المتمدن الالكتروني ( الانترنت ) ، نشر في تاريخ ٢٠٠٣/١٢/١٢ ، العدد (٦٩٠) ، متاح على الرابط:
http://www.ahewar.org/debat/show.art.asp?aid=12846.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

## Kurdish uprisings in Kurdistan in the first half of the nineteenth century

**Abstract**:

This research reviews the most important political situations and developments of events during the first half of the nineteenth century in southern Kurdistan. Between the Kurds and the Ottomans on the one hand, and the Kurds and the Iranians on the other hand, in light of the political changes that the Kurds witnessed, especially within the framework of the Ottoman influence, and the patterns of policies that the Ottomans pursued against them, especially after the Ottoman sultans tried at the beginning of the nineteenth century to impose central authority on all parts of the state. And then work to subjugate the Kurdish emirates that were not subject to central control.

Hence, the pages of this research will focus on the impact of persecution and exploitation by the Ottomans of the Kurds, and the resulting excitement of the national spirit among the Kurdish people with the participation of all classes of clan heads, clerics, princes and peasants to carry out a number of uprisings and revolutions against the Ottomans.

**Key Words**: *Uprisings, Kurds, Ottomans, Qajar, European Powers.*

## سەرهلدانێن کوردی ل کوردستانێ ل نیڤا ئێکێ ژ سەدەیێ نوزدە دا

**پۆختە:**

ئەڤ ڤەکولینە هەولکە ژ بو بەردانا روناهیێ ل سەر شورەش و سەرهلدانێن کوردان ل کوردستانێ ل نیڤا ئێکێ ژ سەدەیێ نوزدە دا، ژبورکو ل ڤی سەردەمیدا ژبەر سیسەتێن دەولەتا ئوسمانی هەستێ نەتەوەیی و بەرخودانێ ل کوردستانێ بەلاڤ بوو، و گەلەك ژ میر و کەسایەتییێن کوردان ئالایێ نەرازیبوونێ ل دژی دەستهەلاتا ئوسمانی بلند کرن. و هەر دڤی سەردەمیدا بوو کو هێزێن ئەوروپی هێدی هێدی دەست ب دەرباسبوون بو ناڤ کوردان کرن و رەوشا کوردستانێ چوو د قوناغەکا نوو دا.

ئەڤ ڤەکولینە سیناهیێ بەرددەتە سەر رەوشا کوردستانێ ل سەدەیێ نوزدە دا و جورێن سیاسەتا دەولەتا ئوسمانی و ئیرانێ ل هەمبەر کوردان و کارڤەدانا ڤان سیاسەتان ل سەر پەیدابوونا شورەش و سەرهلدانێن کوردی و رەدکرنا سیاسەتا مەرکەزی ل کوردستانێ.

**پەیڤێن سەرەکی**: *سەرهلدان، کورد،ئوسمانی، قاجاری، زلهێزێن ئەورووپی*

# الابعاد الدولية لحركة الأمير بدرخان باشا ١٨٤٢-١٨٤٧

**ا.د. عثمان علي**
قسم التاريخ-كلية الاداب- جامعة صلاح الدين / اقليم كردستان العراق
**أ.م.د. صدرالدين قادر**
قسم التاريخ- جامعة رابرين (رانيه)/ اقليم كردستان العراق

**الملخص:**

إن لبدء حركة الأمير بدرخان والنهاية التي آلت اليها، أبعاد إقليمية ودولية والتي كانت لها الاثر الواضح في الحركة، علماً أن النظام العالمي الدولي السائد في القرن التاسع عشر لعب دوراً مهماً في تطور ومسار الحركة ونهايتها.

كان النظام الدولي في تلك الفترة تحكمه موازين القوى التي أسست بعد مؤتمر فينا ١٨١٤ بين القوى الاوربية الكبرى التي انتصرت على فرنسا، كما أن القوى الكبرى كانت لها علاقات مع القوى الاقليمية (العثمانية والقاجارية)، علماً أن مصالح القوى الكبرى وخاصة بريطانيا وفرنسا كانت تقتضي الحفاظ على كيان الدولة العثمانية حتى تكون سداً منيعا أمام الاطماع الروسية وسعيها للوصول إلى منطقة الخليج والمضايق الاستراتيجية في اسطنبول أو المياه الدافئة. فعليه كانت القوى الاوربية تساعد الدولة العثمانية في القضاء على أي تمرد داخلي يهدد استقرار الدولة العثمانية وهذا ما حدث عام ١٨٣٩ حين هددت قواة محمد علي باشا الدولة العثمانية. وسيكون هذا الفهم لعلاقات الدول الكبرى مع الدولة العثمانية السياق الذي ننطلق منه لشرح وتحليل موقف القوى المحلية والدولية من حركة مير بدرخان.

فالدراسة مهمة وكانت لها مغزى للأمير بدرخان الذي لم يستوعب هذا البعد الدولي بصورة وافية وأيضا لها اهمية لقادة الحركة الكوردية المعاصرة اليوم لفهم موازين القوى ومصالح الدول الكبرى في الشرق الاوسط وكوردستان.

والمنهجية المتبعة في هذه الدراسة هو المنهج التحليلي للنصوص متبعين السياق الكرونولوجي للأحداث.

معتمدين في هذه الدراسة التاريخية السياسية أسلوب الاعتماد على وثائق القوى المعنية بالصراع ونغنيها بما توصل اليها الباحثون الآخرون.

يتكون هيكل الدراسة من عدة مباحث فالمبحث الأول يتطرق إلى سمة توازن القوى ونبذة عن إمارة بوتان قبل الحركة. والمبحث الثاني يعالج تطورات حركة بدرخان وموقف الدولة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

العثمانية والقاجارية منها. أما المبحث الثالث فهو شرح وتحليل لمواقف الدول الكبرى من حركة الأمير بدرخان باشا.

**الكلمات المفتاحية:** *بريطانيا ، بدرخان الكورد نسطور يه كان عوسمانى*

**المبحث الاول: النظام الدولي في القرن التاسع عشر:**

النظام الدولي أو يسمى بتوازن القوى (وحدات سياسية متعددة ليس فيها واحدة ذات قوة كافية لدحر أخرى، ومثبتة لفلسفات وممارسات داخلية متناقضة بحثا عن قواعد محايدة لضبط سلوكها والتخفيف من الصراع) بحيث يفتقد النظام العالمي وجود قوة أو قوتين تمتلكان بشكل منفرد مقومات القوة ومن ثم قيادة العالم بل أتسم نظام توازن القوى تعدد مراكز القوة على عدد من الوحدات الدولية وبصورة متكافئة مما يساعد على منع نشوب نزاع مسلح وبنفس الوقت يعمل هذا النظام على إيقاف محاولة أي دولة لزيادة قدراتها العسكرية والتسليحية بما يخل بهذا التوازن ويهدد استقراره من خلال إقامة التحالفات مع الدول الاضعف بوجه الدول المهددة للتوازن أو عن طريق توقيع المعاهدات الدولية الملزمة لجميع الاطراف بعدم تهديد التوازن الدولي والاخلال بنظامه.

ونالت أوربا استقرارها بفضل نظام توازن القوى منذ نشأته بعد معاهدة ويستفاليا (*Treaty* of westvalia) ١٦٤٨ إلى عام ١٨٨٩، وبعد ذلك اصبح بإمكان العالم أن تنعم فيها بفترة من السلام هي عندما كانت ثمة توازن في القوى، فعندما تصبح دولة واحدة أو أكثر قوة بصورة غير محدودة يبرز خطر الحرب، ولكن بدأ عدم الاستقرار يتسرب إلى هذا النظام ومهد صراع المصالح والنفوذ بين هذه القوى خارج الساحة الاوربية وبشكل متسارع إلى الذهاب إلى الحربين العالمية الاولى والثانية التي أنهت نظام توازن القوى وتعدد القطبية وبروز نظام عالمي جديد بعد الحرب العالمية الثانية وسمي نظام القطبية الثنائية[1].

دخل مصطلح توازن القوى حيز الاستخدام للإشارة إلى علاقات القوة في نظام الدولة الأوروبية من نهاية الحروب النابليونية إلى الحرب العالمية الأولى. ضمن ميزان القوى الأوروبي، لعبت بريطانيا العظمى دور "الموازن" أو "صاحب الرصيد". لم يتم ربطها بشكل دائم بسياسات أي دولة أوروبية، وستلقي بثقلها في وقت من الأوقات على جانب، وفي وقت آخر على جانب آخر، مسترشدة إلى حد كبير بنوع واحد - الحفاظ على التوازن نفسه. مكّنت السيادة البحرية وحصنتها الافتراضية من الغزو الأجنبي بريطانيا العظمى من أداء هذه الوظيفة، مما جعل ميزان القوة الأوروبي مرنًا ومستقرًا[٢].

في مؤتمر فيينا في مؤتمر فينا الشهير (١٨١٤-١٨١٥) الذي صفّى تركة حروب نابليون، تعاون اللورد البريطاني كاسترليه مع الأمير النمسوي مترنيخ (باسم احترام شرعيّة الحكم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

واستقلال الدول) على إعادة توحيد مملكة بولونية لتكون ركناً في بناء توازن القوى، بعد أن كانت تتقاسمها روسية وبروسية فأخلّتا بالتوازن، وبدوافع من الحرص على التوازن، أيّد الوزير الفرنسي الأمير تالّيران أيضاً هذه المبادرة

في النصف الأول للقرن التاسع عشر، كانت الدول الأوربية الكبرى المهيمنة على الحرب والسياسة هي فرنسة وبريطانية العظمى وروسية والنمسة وبروسية، فعمدت روسية سنة ١٨٥٣ إلى غزو الممتلكات العثمانية وراء الدانوب فتحالفت آنئذ ضد الأطماع الروسية فرنسة وبريطانية العظمى والنمسة وبروسية، ثم أعقب ذلك سنة ١٨٥٤ تحالف آخر بين فرنسة وبريطانية العظمى تأييداً للامبراطورية العثمانية في وجه الروس وانضم ملك سردينية إلى هذا الحلف، وأسفرت حرب القرم بين روسية والحلفاء عن انتصار الحلفاء فعقدت معاهدة باريس سنة ١٨٥٦ التي توقف بموجبها التوسع الروسي. ثم جاء بعد ذلك مؤتمر برلين سنة ١٨٧٨ تجرّد روسية من أكثر الممتلكات التي كانت اكتسبتها وراء حدودها التقليدية[٣].

شهدت أوروبا لأكثر من عقدين اضطرابات وحروب في أعقاب الثورة الفرنسية، إضافة إلى اجتياح الجيوش الفرنسية للأراضي الأوروبية مما أدى إلى تغير خريطة أوروبا السياسية. وبعد انتهاء الحرب وانتصار الدول الكبرى الحلفاء (على فرنسا)، كان لابد من اجتماع الدول المنتصرة في فيينا لعقد مؤتمر من أجل رسم خريطة أوروبا السياسية من جديد وإعادتها لأوضاعها السابقة. من هنا يحاول هذا المقال تسليط الضوء على مؤتمر فيينا وأهم ما تضمنه.

مؤتمر فيينا هو مؤتمر انعقد بين ١٣ سبتمبر/أيلول ١٨١٤ و٩ يونيو/حزيران ١٨١٥، جميع الدول التي وقّعت على معاهدة باريس الأولى وهي: بريطانيا، روسيا، النمسا، بروسيا، إضافة إلى انضمام فرنسا. وقد اجتمعت هذه الدول من أجل إعادة ترتيب أوضاع القارة الأوروبية خاصة بعد الثورة الفرنسية والحروب النابليونية، فتمَّ اختيار العاصمة فيينا مقراً للمؤتمر بسبب التضحيات التي تكبدتها النمسا منذ قيام الثورة الفرنسية وتعويضاً عما ألحقه نابليون بها من هزائم متلاحقة تسببت بفقدانها لنفوذها السياسي في إيطاليا وألمانيا، إضافة إلى كونها عاصمة لإحدى الدول الكبرى في أوروبا وتميزها بموقعها المتوسط بين دول أوروبا[4].

**الصراع الروسي – البريطاني داخل الدولة العثمانية:**

مع بداية القرن التاسع عشر اشتد الصراع الروسي – البريطاني في الشرق الأوسط ووصل إلى مرحلة دقيقة، فالمكاسب التي حققتها روسيا القيصرية في حروبها مع كل من إيران والدولة العثمانية أثارت حفيظة بريطانيا التي كانت تنظر بعين الشك إلى الأطماع الروسية التقليدية في الوصول إلى المياه الدافئة في الخليج.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

عدّت بريطانيا هذا التوسع الروسي باتجاه الجنوب تهديداً لمصالحها في الخليج وتصور الإنكليز أن الهدف الأخير للروس ليس الخليج لذاته ولوحده بل السيطرة على هذا الممر المائي الإستراتيجي المؤدي إلى المستعمرة المهمة في شبه القارة الهندية. ومن الجدير بالذكر أن إيران كانت قد منيت بهزيمة ساحقة أمام روسيا واضطرت في اتفاقية كلستان عام ١٨١٣ إلى التخلي عن مناطق دربند، وقرباغ، وشيروان، وباكو، وداغستان وأبخازية. وإن اتفاقية تركمنجاي الموقعة في العام ١٨٢٨ بعد الحرب الروسية –الإيرانية عززت المكاسب الروسية في مناطق القفقاس وأضافت إليه مناطق يريفان ونخجفان[5].

ولم تكن المكاسب الروسية داخل الدولة العثمانية أقل أهمية من تلك التي حققتها في المناطق الإيرانية. فبعد الهزيمة الكبيرة للقوات العثمانية أمام قوات الوالي محمد علي باشا في مصر (١٨٠٥– ١٨٤٨) والتي أدت بالنتيجة إلى سقوط معظم الولايات الشرقية في الأناضول ووقوعها بيد قوات محمد علي باشا، شعر السلطان العثماني بأن عرشه مهدد في اسطنبول وأجبر على توقيع اتفاقية أنكيار اسكلسي في عام ١٨٣٣. أصبحت الدولة العثمانية بموجب هذه الاتفاقية بمثابة محمية روسية. وكانت للاتفاقية المارة الذكر تأثير كبير في تأجيج الصراع البريطاني والروسي من أجل النفوذ داخل الدولة العثمانية، لذلك تحول كل من بالمرستون رئيس الوزراء البريطاني وستافورد كانينغ السفير الإنجليزي المتنفذ لدى الدولة العثمانية إلى ألد الخصوم للروس [6].

كما يستحب الإشارة هنا إلى أن الصراع الروسي- الإنجليزي في الشرق الأوسط إبّان هذه الفترة كان مرتبطاً بمعادلة توازن القوى في المسرح الأوربي شعرت بريطانيا بأن حصول الروس على مناطق نفوذ ومستعمرات في خارج أوربا سيقوي نفوذهم على المسرح الأوربي وسيخل بمعادلة توازن القوى التي أرادت بريطانيا أن تكون راعية لها وأن تحتفظ بقوتها المتمثلة بالمستعمرات وردع الآخرين من الإخلال بهذه المعادلة؛ لذا أصبح الحفاظ على الدولة العثمانية ومنع الروس من الزحف جنوباً باتجاه المياه الدافئة (الخليج والمحيط) من أولويات السياسة البريطانية طيلة القرن التاسع عشر[٧].

منيت الدولة العثمانية بهزائم عسكرية عدة في بداية القرن الثامن العشر على يد القوى الأوربية التي كانت تعيش فترة إصلاحات في نظمها الإدارية والفكرية والعسكرية. يقول المفكر وعالم الاجتماع المسلم ابن خلدون: من الطبيعي أن يحاول المنهزم أن يقلّد المنتصر. لذلك دعا دعاة الإصلاح في الدولة العثمانية إلى تقليد الدول القومية الأوربية في نظمها العسكرية والإدارية التي كانت آنذاك مفرطة في المركزية. لهذا السبب حاول مستشارو السلطان سليم الثاني ومن ثم محمود الثاني(١٨٠٨-١٨٣٩) وبعده رجال التنظيمات في الدولة العثمانية التخلي عن النظام الإداري العثماني (الايالات) المتميز باللامركزية وتحويل الدولة العثمانية المبنية على التعددية



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الأثنية واللامركزية إلى دولة قومية على الطراز الغربي، فظهرت أولاً ما عرف بـ"الوطنية العثمانية"، ثم تحولت هذه الفكرة على يد جماعة الاتحاد والترقي (١٩٠٨-١٩١٨) إلى القومية الطورانية.[٨] باختصار كان التاريخ العثماني في القرن التاسع عشر هو تاريخ الإصلاحات الغربية على النمط الغربي التي لم تستطع حتى الآن منع موت "الرجل المريض أوروبا[٩]".

أي حين أثرت روسيا بالتالي على العلاقات العثمانية القاجارية بداية، ظهر تدخل بريطانيا في وقت لاحق، في أعقاب هجوم الوهابيين للمراقد الشيعيى المقدسة في محافظة بغداد في وقت مبكر ١٨٠٢. فتح علي شاه رد بشكل حاسم بوعده بمعاقبة الجناة ومهاجمة بغداد. في غضون ذلك، حاول السفير البريطاني لإقناع اسطنبول بتوحيد قواها مع إيران ضد الوهابيين. مسترشدين بالعداء الطائفي وتنافسهما التاريخي على العراق، رفضت اسطنبول مرة أخرى التعاون ورفضت السماح لشقي إيراني حتى مع زيادة النفوذ الروسي والبريطاني، السكان المحليين والسكان كما ساعد في تشكيل العلاقات القاجارية العثمانية. على سبيل المثال، ملف ولاة بغداد وأرضروم وفان من الجانب العثماني وظهرت أذربيجان وكرمنشاه على الجانب الإيراني كدولة رئيسية ممثلين. علي الأراضي الحدودية، بما في ذلك السلالات الوراثية مثل ولاة أردالان وبشت كوه، مع القبائل الكبيرة اتحادات مثل الشقاق الكوردي، وحيدران، وجلالي، والجاف، وكلهور، كما لعب السنجابي وعرب بني لام ومنتفق وكعقب دورًا مهمًا من خلال توفير منطقة عازلة أو طبقة واقية أولية حول كل ولاية. ومع ذلك، لم يلعب أي من هؤلاء دورًا مهمًا في الخمسينيات الأول لسنوات من العلاقات العثمانية القاجارية مثل بابان السليمانية. لهم كانت حالة مثالية لإمارة حدودية محصورة بين الرائد القوى وتكافح من أجل البقاء مستقلاً. شكلها غامض أو السيادة المتنازع عليها من الدول المركزية، وولاءاتهم المنقسمة، وتعدد الجهات الحكومية وغير الحكومية، تمثل قصة البابان مثالاً على دور سكان الأراضي الحدودية بالإضافة إلى تعقيدات الانتقال من السيادة على حدود غير محددة[١٠].

كان من نتائج سياسة الإصلاحات والتنظيمات القضاء على مجموعة من الإمارات في أقاليم عديدة من الدولة العثمانية. فتم القضاء مثلاً على الإمارات المستقلة التي كانت تحكم ألبانيا واناضول لمئات السنين حكماً ذاتياً والمعروفة بـ(Dere Bey) وعلى دولة المماليك في العراق والأمارة الجليلية في الموصل وإمارة المنتفق في جنوب العراق ودولة المماليك مصر وسورية والأمارة السورانية والعباسية و(بهدينانية) وامارة بوتان والبابان في كوردستان. قام محمد رشيد باشا الشركسي، الصدر الأعظم السابق في الدولة العثمانية ووالي كوردستان محمد انجة بيرق دار بمهمة قمع الإمارات الكوردية وقامت القناصل البريطانية والروسية في بغداد واسطنبول والمدن الكوردية بتقديم المساندة القوية للدولة العثمانية لتحقيق هذا المسعى[١١]. ويعزي ن. لازاريف الدعم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

البريطاني والفرنسي اللا محدود للدولة العثمانية ضد النزعات الاستقلالية عند أمراء الكورد وخاصة بدرخان (كما سنبين ادناه) إلى النفوذ القوي لتلك الدولتين عند السلطة العثمانية في اسطنبول في القرن التاسع عشر. علما أن الدولة العثمانية قد وقعت الاتفاقية التجارية مع الدول الاوروبية في عام ١٨٣٨ والتي فتحت اسواق الدولة العثمانية على مصراعيها امام التوغل الرأسمالي في الشرق الاوسط والممالك العثمانية الاخرى[١٢]. وان الدعم المقدم للدولة العثمانية ضد النزعات الاستقلالية عند أمراء الكورد تدخل ضمن نفس السياسة التي اتبعتها تلك الدول ضد محاولات محمد علي باشا في زعزعة السلطة العثمانية كما تجلت في معركة نزيب عام ١٩٣٩ وفي معركة القرم عام ١٨٥٦ بين الدولة العثمانية والامبراطورية الروسية.

**المبحث الثاني:**

**امارة بوتان والعلاقات بين الكورد والنساطرةنبذة عن امارة بوتان:**

هنالك دراسات كثيرة تناولت بروز أمارة بوتان والتطورات المحورية فيها[١٣]، ولكن هذا لا يغنى من أن الامارة ليست بحاجة إلى المزيد من البحث والدراسات، حيث لا يزال هنالك الكثير من الجوانب، لم يتم تغطيتها بعد. لقد ورد اسم تلك الامارة بصيغ مختلفة، وكما أشار الاستاذ صلاح هروري أن تاريخ هذه الامارة غامض في أوائل أمرها واقوال المؤرخين والكتاب تتضارب في تحديد سنة تأسيسها. وتولى شؤون تلك الامارة العديد من الأمراء وكان من أبرزهم الأمير بدرخان، الذي تولى شؤون الامارة في ١٨٢١-١٨٤٧م[١٤].

ينتمي الأمير بدرخان ابن عبدال خان إلى السلالة العزيزية البدرخانية التي كانت تحكم إمارة بوتان لأكثر من خمسمائة سنة ولكن من الصعب تحديد حدود الامارات الكوردية ومنها امارة بوتان، لكن كان موقع هذه الإمارة في المنطقة المحصورة بين بوتان صو غرباً ونهر دجلة شرقاً في المنطقة المعروفة اليوم بمدينة الجزيرة في كوردستان في تركية. كان مؤسس هذه الإمارة هو عبد العزيز ابن عمر، بعض الكتاب الكورد المعاصرين يرجعون أصل العائلة البدرخانية إلى قرية أزيزان الكوردية القريبة من مدينة جزيرة ابن عمر. ويعتقد المؤرخ الروسي فلاديمير مينورسكي بأن أصل العائلة يعود إلى القبائل اليزيدية الكوردية التي اعتنقت الإسلام[١] لكن برزت شأن هذه الامارة ووصلت إلى اوج قوتها في عهد الأمير بدرخان بن آبدال التي تولى شؤون الامارة في ١٨٢١-١٨٤٧م.

وهناك أيضا بعض القضايا الخلافية حول كيفية وصول بدرخان إلى الحكم وعلاقته بالأمير سيف الدين أحد أبناء عمومته، فهناك من يضن بان بدرخان تولى الامارة في عام ١٨٢١ بعد وفاة أبيه (عبدالله بيك) نيابة عن ابن عمه الأمير سيف الدين، ولم يعلن نفسه أميرا رغم تصدره إدارة الامارة[١٥] وهناك من يرى بانه فرض نفسه على الامارة في غياب الأمير سيف الدين، هناك رواية يقول بان الأمير بدرخان تم تعينه أميراً على الامارة من قبل الدولة العثمانية حين كان الأمير



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

سيف الدين ملتجئاً عند الوالي العثماني في بغداد على رضا، إثر هجوم الأمير السوراني (محمد باشا)[16] وهناك أطروحة الدكتوراه من قبل الباحث فاتح جنجر مستنداً على الوثائق العثمانية.ويرى فاتح جنجر انه حتى عام ١٨٣٥ كان امارة بوتان تحكم من قبل الأمير سيف الدين وحيث كان الخطبة باسمه حسب وثيقة عثمانية. ويبدو أن في هذا العام ١٨٣٥ تولى الأمير بدرخان السلطة الفعلية والرسمية لان الأمير سيف الدين خسر المعركة أمام رشيد باشا حين زحف بقواته لإنهاء حكم الامارات الكوردية. وطلب الأمير سيف الدين من علي رضا والي بغداد أن يتوسط له للعفو عنه عند السلطان ولكن لم نسمع عنه في جزيرة بوتان بعد ذلك. وعين رشيد باشا الأمير بدرخان متسلما على جزيرة بوتان[17]. وبذلك انتهى حكم الامارة البدرخانية وتحولت إلى متسلمية، وكان الوظيفة الرسمية لأمير بدرخان متسلم وتعني جابي الضرائب للدولة. لذلك هناك اعتقاد خاطئ بان الأمير بدرخان كان حاكما على الامارة ومنذ عام ١٨٢١ ووقع الكثير من الباحثين في هذا الخطأ[18].

يرى جويدة أن بدرخان يمتلك كل صفات القائد الكارزيما الذي عددهم ماكس فيبر عالم الاجتماع الغربي حيث استطاع الأمير بدرخان لعوامل تتعلق بشخصيته الجذابة وبفعل الأحداث الدولية والإقليمية والمحلية المساعدة توحيد العشائر الكوردية الساكنة داخل الدولة العثمانية والإيرانية في دولة فيدرالية كوردية. امتدت سلطة هذه الدولة جنوباً إلى ضواحي مدينة الموصل وشرقاً إلى مدينة سنندج في إمارة أردلان الكوردية في إيران شمالاً إلى مدينة وان في جنوب شرق تركيا وأبواب مدينة ديار بكر[19].

وفي عام ١٨٣٨م ورد اسم الأمير سيف الدين كمتسلم سابق ضمن قوة كوردية ارسلت لمعاقبة خان محمود، وكذلك فرض حافظ باشا حصاراً على جزيرة بوتان لإخضاع الأمير بدرخان للانضمام إلى القوة التي كان يقودها حافظ باشا للهجوم على امير قلعة فينق المدعو سعيد بك[20]، ويعد حصار حافظ باشا لمدة أربعين يوماً على مدينة الجزيرة تم عقد اتفاق بينه وبين الأمير بدرخان وعلى إثره ودعم بدرخان للجيش العثماني في معركة نزيب ١٨٣٩ التي وقعت بين القوات العثمانية بقيادة حافظ باشا وقوات والي مصر محمد على باشا بقيادة ابراهيم باشا[21]. وأعطيت لبدرخان لقب مير ئالاي وهو بمثابة عقيد في الجيش العثماني[22]. ومع ذلك، تمامًا كما سمحت الحملة المصرية الأولى في سوريا لـ النبلاء الكورد لاستعادة السلطة المفقودة، هكذا مرة أخرى إبراهيم باشا وحكمه عكست الجيوش المصرية ميزان القوى. كما هو معروف، في **1939**م – معركة نيزيب تغلبت الجيوش المصرية على القوات العثمانية، ولكن تدخل القوى العظمى انقذت الدولة العثمانية. إن معركة نزيب قد وفرت فرصة للأمير بدرخان أن يعزز من قوت الإمارة، ومنح لقب مير ئالاي وطلب منه تعبئة قواته للمعركة صد قوات ابراهيم باشا. استخدم بدرخان هذه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الفرصة بحكمة وأضاف السلطة المفوضة من قبل اسطنبول لسلطته الحالية وبسط سيطرته خارج سيطرته مجالات الأجداد. لكن هذه الذروة الجديدة للسلالات الكوردية لم تدم طويلاً . سوف يغير الدعم البريطاني والروسي لإسطنبول مرة أخرى سير الأحداث، وسيطالب الباب العالي كما كان من قبل الضرائب السخرة والمال والمجندين". وما أعقب ذلك من إعادة تأكيد السلطة المركزية، كما يلاحظ فون مولتك، كانت دعوة مفتوحة للثورة، لكن اسطنبول سارعت بإرساله جيشًا متفوقًا قوامه خمسون ألف جندي كان قد حشده ضد إبراهيم إلى الأطراف الكوردية تهديد داخلي هائل يمثله التحدي المصري بمساعدة مكلفة من روسيا وبريطانيا، شرع العرش العثماني في إعادة هيكلته[23].

نرى من خلال ما ذكر أن الاشكالية تكمن في الاعتماد على ما ورد في كتاب بلةج شيركو وهو أقدم من كتب في الموضوع، علماً أن بلهج شيركو (ثريا بدرخان) وهو حفيد الأمير بدرخان ولم يكن من معاصريه[٢٤]. ولذلك نختلف مع ما ذهب اليه الاستاذ صلاح هروري القائل "بان بدرخان باشا تولى الحكم في سنة ١٨٢١م بعد تخلي الأمير صالح عن الحكم وان سكان بوتان بايعوه في الحال لأنه كان يملك الحس القومي في اصلاح شؤون الامارة الداخلية وامورها بعد أن ساءت طيلة فترة الأمير سيف الدين والأمير صالح"[٢٥]. ويتبين لنا مما كتبه الاستاذ هروري بان الأمير سيف الدين والأمير صالح كانا لفترة ما يحكمان الامارة بعد وفات ابيهم عبد الله بك في ١٨٢١. وهذا ما اكدته الوثائق العثمانية التي تمت الاشارة اليه اعلاه، وحسم هذا الجدل الباحث صبري اتاش بالقول إن السلطة الفعلية وقعت في يد الأمير بدرخان بعد القضاء على قوات الأمير محمد باشا الرواندوزي في الجزيرة لذلك يمكن أن نميز هنا بين تصدى الأمير بدرخان لقيادة الامارة بعد وفات ابيه ١٨٢١ في ضل الأمير سيف الدين والسلطة الفعلية الذي مارسه منذ عام ١٨٣٥.

**المبحث الثاني:**

**صراع بدرخان مع النساطرة ١٨٤٣-١٨٤٧: الدور البريطاني في الصراع:**

يرى الكثير من الباحثين الذين تناولوا موضوع صراع الأمير بدرخان مع النساطرة في الفترة ١٨٤٣-١٨٤٧ بكون هذا الصراع العامل الحاسم في سقوط امارة بوتان[٢٦]، و نرى العامل الخارجي، وبالتحديد بريطانيا، بكونها المحرض الرئيسي لهذا الصراع لأنها كانت ترى في النزعة الاستقلالية للأمير بدرخان بكونها عامل يسبب عدم الاستقرار داخل الدولة العثمانية. فنتناول أدناه الحملة الاولى ١٨٤٣ والحملة الثانية ١٨٤٧ التي شنها الأمير بدرخان على النساطرة الذين تحدوا سلطته بتحريك من المنصرين والدبلوماسيين البريطانيين في الدولة العثمانية.

بدأ الصراع النسطوري- الكوردي بقيام الكنيسة البريطانية بتعيين المنصر جورج بادجر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لتمثيل الكنيسة البريطانية عام ١٨٤٢ وكلف المدعو بإنشاء المدارس بين النسطوريين، واستطاع بادجر أن يوطد العلاقة مع البطريارك النسطوري مار شمعون و حرض الاخير على معادات الكورد وقال له "لا تسعى إلى كسب صداقة الكورد بل حاول أن تسمع نصاح الحكومة البريطانية لأنها هي القادرة و الراغبة في تقديم الحماية الكاملة له"[٢٧]. ففي ١٨٤٣ حين كان المنصر بادجر في منطقة تياري وصل رسول من أمير هكاري يطلب من المارشمعون زيارته لبحث المسائل الخلافية، إلا أن ابن أخ مارشمعون قال بالحرف الواحد وفي حضور مارشمعون لرسول أمير هكاري: "نحن لسنا خاضعين لكم وان ديارنا الآن هي ملك هذا الرجل" مؤشراً إلى بادجر".[٢٨] علما أن هكاري واميرها نور الله بيك كان خاضعا للتحالف الكوردي الذي كان يقوده بدرخان. واشتكى نور الله من العديد من تصرفات مارشمعون الرئيس الروحي للطائفة النسطورية والمنصّرين في امارته التي كانت يعدها استفزازية من قبل رفض أداء الضريبة على الاراضي والرسوم الاخرى التي كان من المفروض أن تعطيها النساطرة بكونهم رعية الأمير نور الله"[٢٩]. وازدادت الامر سوءا حين أقدم عدد من النساطرة على الهجوم على قرية كوردية وقتلوا عدد من المسلمين الكورد. وعلى العادة المتبعة عشائريا والعرف المتبع هاجم الكورد من اتباع نور الله القرى المسيحية وازدادت بذلك حدة الصراع وكثرت الضحايا[٣٠]. طلب الأمير بدرخان من الوالي العثماني في ارضروم كاملي باشا الدعم ضد النساطرة المتمردين وكان جواب الوالي اننا في صدد حل مشاكلنا الحدودية مع إيران وقد تخلق الفوضى في هكارى مشاكل تعيق الحل لذلك قام بدرخان بمبادرة من نفسه [31].

ولكن تقارير المنصّرين والدبلوماسيين الانجليز وصفت تلك الصراع بكونها حرب ابادة ضد المسيحيين لتأليب الراي العام الاوربي ضد الأمير بدرخان واجبار الدولة العثمانية على أخذ اجراءات ضده[٣٢]. بدأت الحملة الاولى في تموز ١٨٤٣ واستهدفت بشكل رئيسي عشيرة التياريين في هكاري وكان عدد القوات الكوردية تتراوح بين ٧٠ إلى ١٠٠ الف مقاتل، فقتل العديد من النساطرة و تم أسر العشرات منهم و تمكن قسم منهم من الهروب إلى أورمية داخل ايران، وفي ١٨٤٦ بدأت الحملة الثانية أيضاً في هكاري و استهدفت بصورة رئيسية عشيرة تخوما وكذلك تم الهجوم على اشيتا وارتكب الكثير من المجازر، واتهم قوات بدرخان في هذه الحملة بارتكاب العديد من المجازر وقدر هنري لايارد، عالم الآثار و القنصل الفخري للسفارة البريطانية في اسطنبول عدد الضحايا بعشرة آلاف ضحية أما المبشر الامريكي ادوارد بريد فوضع عدد الضحايا بسبعة آلاف[٣٣].

إن معظم المصادر الغربية التي تناولت الصراع الكوردي- النسطوري اتهمت الطرف الكوردي وبالتحديد زعيمهم الأمير بدرخان بكونه المتهم الرئيسي في هذا الصراع، ويعزى هذه المصادر وفي مقدمتهم هنري لايارد الصراع إلى كون بدرخان مسلم متعصب وإنه مدفوع بدوافع دينية وكونه تحت تأثير رجال دين الكورد المتعصبين. وينسب أحد المنصّرين إلى الأمير بدرخان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

قوله: "ليس من حق أحد أن يعيش في أرض المؤمنين ويحملون السلاح ضدهم ولا حق لهؤلاء الكلاب من المسيحيين أن يعيشوا بيننا الا كرعية خاضعين للمؤمنين " ويضيف المنصر" يقود بدرخان حرب دينية مقدسة ضد من أسمتهم بالكفار".[٣٤]

ولكن ن. لازاريف يرى أن الصراع بدأ حين قام محمد باشا والى موصل الطامع بأراضي امارة بوتان وهكاري بالإيقاع بين الكورد والاشوريين. فمن جانب كان يشجع الاشوريين منذ عام ١٨٤٢ بالتمرد على نور الله حليف بدرخان ووعده بالدفاع عنهم إذا هاجمهم الكورد ومن جانب آخر كان يقول للكورد بأن المارشمعون يتآمر مع الانجليز ضدهم. ولكن الصراع انفجر حين قام "المارشمعون برفع علم البريطاني فوق مقره. وكان هذا العمل والنشاطات التنصيرية من قبل المنصّرين الغربيين وبصورة واسعة النطاق استفز رؤساء الكورد وقاموا بالهجوم على التياريين"[٣٥].

لا شك كانت النساطرة أكثر من تضرروا في هذه المواجهات، ولكن توجيه الاتهام إلى الأمير بدرخان و الأمراء الكورد المتحالفين معه وحدهم بحاجة إلى دراسة جدية و معمقة لتبيان جميع الاطراف المتورطة والجانب الغير مطروق في هذا الصراع والذي يتمثل بالدور الاستفزازي للمنصّرين و الدبلوماسيين من الامريكان و البريطانيين.

ولفهم دور الجمعيات التنصيرية في كوردستان من الضروري هنا استذكار الصورة والسياق الأكبر لدور الجمعيات التنصيرية والاستعمار الغربي قي الدولة العثمانية. ففي بداية القرن التاسع عشر وقبل أن يبدأ الأمير بدرخان باشا بالانتفاضة بسنين طويلة كانت كوردستان ساحة للصراع بين القوى الكبرى المتمثلة بـ(بريطانيا وروسيا) إلى جانب أمريكا التي حاولت أن تجد لها موطئ قدم في المنطقة وتتدخل في هذا الصراع.

كان التدخل البريطاني قد تم عن طريق البعثات الدينية التنصيرية(التبشيرية) وتحت غطاء نشر الدين المسيحي وكذلك عن طريق الرحالة المدنيين والعسكريين وتحت غطاء البحث والتنقيب عن المعادن والآثار وهكذا كانوا يقومون بدراسة كوردستان من جميع جوانبها تمهيدا للتغلغل فيها مستغلين ضعف الدولة العثمانية وفسادها. وأخذوا يخططون ويرسمون خارطة كوردستان وجمع المعلومات عن العشائر الكوردية ودراسة موقع كوردستان وأهميتها ودورها المهم من الناحية الاقتصادية والعسكرية والإستراتيجية وأن الإمبراطورية البريطانية وكما فعلت روسيا القيصرية أخذت تهتم بالأقليات الدينية وخاصة النسطورية والأرمنية والكلدانية واليزيدية الموجودة في كوردستان وأخذت تستغل وضعهم كحجة للتدخل من أجل أن تجد لها موطئ قدم في هذه المنطقة الحيوية من الشرق الاوسط. وهكذا أخذت تتدخل في شؤونها الداخلية ومن أجل تكريس هذه السياسة وكسب ود هذه الأقليات والاطمئنان إلى مستقبلهم قامت بفتح المدارس التبشيرية بين صفوف هذه الأقليات الدينية في كثير من مناطق كوردستان التابعة للدولة

العثمانية ليس من أجل التوعية والتثقيف والقضاء على التخلف والأمية وتطوير المنطقة وإنما من أجل مصالحهم الإستراتيجية. علما كانت الشعوب الساكنة في الدولة العثمانية تعاني من سياسة الاضطهاد التي أخذت أوجها عديدة[٣٦]. وكما يقول عالم الاجتماع الفرنسي (الجزائري الاصل) مالك بن نبي استغل المستعمرون قابلية الاستعمار التي كانت كامنة فينا[٣٧].

ومن خلال قراءة متأنية للوثائق العثمانية والبريطانية يتبين لنا دور الدبلوماسيين الانجليز والروس والفرنسيين في اثارة الصراع بين النساطرة والكورد الذين عاشوا لقرون مع البعض في سلام ووئام. وعل سبيل المثال كتب القنصل البريطاني في أرضروم المدعو جيمس برانت إلى السفير البريطاني في اسطنبول ابردين يقول فيه" لن يكون هناك هدوء في هذا الجزء من الامبراطورية العثمانية طالما بقيت الامارات الكوردية مستقلة عن الباب العالي ويستمرون في إثارة القلاقل في المنطقة وفي المناطق الحدودية مع إيران وهذا سيخلق المشاكل بين الدولة العثمانية وإيران"[٣٨]. وفي رسالة أخرى من نفس القنصل معنونة إلى اللورد بالمرستون، السفير البريطاني في اسطنبول، يطالب القنصل من السفير توجيه أقوى الضربات إلى بدرخان. ويضيف القنصل "وأمل أن يقوم الباب العالي بتهجير رؤساء العشائر الكوردية إلى القسم الاوربي حتى لا يتمكنوا من القيام بتمردات أخرى في المستقبل"[٣٩].

ولعب هنري لايارد دوراً مهماً في صياغة السياسة البريطانية تجاه الدولة العثمانية وسياسة الاخير تجاه الإمارة الكوردية، علماً كان لي للايارد مواقف عدائية تجاه الكورد الذين تم وصفهم في كتاباته "بالمتوحشين و "المتخلفين" "والمتعصبين"[٤٠] وكان له علاقات وثيقة مع الارمن في الدولة العثمانية واعتبر الكورد بأنهم مضطهدوا الارمن، وحث الدولة العثمانية من خلال السفير البريطاني ستراتفورد كاننغ لاتخاذ اجراءات معادية للأمراء الكورد. لكونهم حسب تصوره كانوا يضطهدون الارمن والنساطرة. إضافة إلى ذلك تكون لدى لايارد قناعة بأن تقوية الدولة العثمانية ودعمها هي الضمانة الوحيدة لوقف التمدد الروسي في الشرق الاوسط تجاه المياه الدافئة في الخليج ومضيق الدردنيل والبسفور. وكان ينظر إلى الامارات الكوردية بكونها تهديد داخلي جدي للدولة العثمانية[٤١]. كان هناك اعتقاد عند الدوائر الرسمية الإنكليزية أنه من السهولة التعامل مع المسئولين في إستانبول وفرض الإرادة الغربية عليهم إلا أن ذلك غير ممكن مع أمير كوردي مستقل في منطقة جبلية محصنة. فكتب هنري لايارد تقريراً قال فيه بأن القضاء على الإمارات الكوردية المستقلة ستساهم في جهود بريطانيا للتغلغل اقتصادياً وتجارياً في منطقة كوردستان [٤٢].

كما لعب هورمزد رسام الذي كان يشغل منصب نائب القنصل البريطاني في الموصل لسنوات طويلة دوور كبيرا في صياغة السياسة البريطانية تجاه الكورد من خلال علاقته الوثيقة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

مع لايارد والسلك الدبلوماسي البريطاني داخل الدولة العثمانية. وفي الكثير من مراسلاته يدعو إلى القضاء على الامارات الكوردية بكونهم مؤسسات معادية للجماعات المسيحية خاصة النسطورية علماً أن هورمزد رسام هذا كان أصلا من عائلة كلدانية مسيحية من الموصل[٤٣].

ولتبيان مدى موقف رسام المعادي للكورد يشير الباحث سعد بشير اسكندر إلى قيام رسام بتضخيم وتهويل مآسات النسطورين على يد الكورد و بالاخص بدرخان وحليفه نور الله بك. ويضيف الكاتب: "الغريب أن كلا الشخصين (لايارد و رسام) كانا بعيدين جداً عن مركز الاحداث في هكاري و لم يكتفيا بما ردده المار شمعون من أقوال وإنما أضافا اليه الكثير ففي حين ادعى المار شمعون بمقتل ٥٠٠٠ من أتباعه، يذكر لايارد في كتبه و مراسلاته مقتل أكثر من ١٠٠٠٠ نسطوري وفي حين لم يذكر رجال الارساليات الامريكية الموجودين في هكاري شيئاً عن حرق الكنائس أو تحويل البعض إلى مساجد، ادعى رسام بان الكورد أحرقوا جميع الكنائس"[٤٤]. في الوقت الذي لا يمكن أن نستبعد في الحروب القبلية كالتي دارت بين الكورد والآثوريين وقوع الكثير من الضحايا من الطرفين وخاصة في الطرف الآثوري المنهزم، إلا أن رقم عشرة آلاف مبالغ فيه كثيراً ولأسباب سياسية، علماً أن عدد الآثوريين في المنطقة في تلك الفترة لم يتجاوز ٦٠،٠٠٠ ودارت المعارك بأسلحة بدائية وفي منطقة جبلية وعرة جداً ولمدة لا تتجاوز شهراً. كما أن الآثوريين كما أشرنا إليه كانوا منشقين على أنفسهم ولم تحدث الحرب إلا في منطقة تياري الصغيرة. لذلك نميل إلى رأي الأمير بدرخان بأن عدد القتلى والجرحى تنحصر بين ٢٠٠٠ إلى ٣٠٠٠ [٤٥]. وإنما الإنكليز والمنصرون بالغوا في ذكر عدد الضحايا لإثارة الرأي العام الأوروبي ضد الأمير بدرخان. وهذا ما حدث فعلاً فقد تدخل ممثلوا القوى الأوروبية في إستانبول لدى السلطان وطلبوا منه التدخل لوقف المذابح ضد الآثوريين [٤٦].

حاولت السلطات العثمانية بعد احداث تياري عام ١٨٤٣ تهدئة الموقف واقترح مستر ستراتفورد كاننغتون، السفير البريطاني في اسطنبول، ضرورة إرسال وفد مشترك إلى هكاري. أرسل الباب العالي كامل باشا وهو عضو مجلس الوكلاء والسير استفنسن القنصل البريطاني في طرابزون ضمن وفد مشترك [٤٧].وكانت مهمة الوفد هو إخبار الأمير بدرخان من التبعات الخطيرة إذا استمرا لحرب مع النساطرة ونقل اليه طلب من الحكومة العثمانية لقيام بدرخان بزيارة اسطنبول والمثول بين يدي السلطان ولكن الأمير بدرخان لم يستجيب للطلب وهذا أيضا اعتبر تمرد صريح منه ضد الدولة. وقال كامل باشا للأمير بدرخان: "إذا لم تترك هؤلاء الآثوريين وحالهم إن بريطانيا ستطلب من الدولة العثمانية إما محاسبتك أو أن تترك الإنكليز يحاسبونك. اعلم بأنهم (الإنكليز) قادرون على الوصول إليك لأنهم سبق وأن حاربوا الصين الذين يعيشون خمسة آلاف ساعة بعيداً عن بريطانيا"[٤٨] . وأن الوفد زار أيضا المناطق الكوردية الاخرى و حثهم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

كا مل با شا إلى ضرورة الـ تزام با لهدوء. و حين الـ تـ قى الو فد بالـ سيد جيمس برا نت القنـ صل البريـ طاني في ار ضروم حاول الا خير بإقـ ناع كا مل با شا بأن ا لحل الوحـ يد للاز مة بين الـ كورد والنساطرة هو إنهاء سيطرة أمراء الكورد وبالتحديد القضاء التام على نفوذ بدرخان[49].

ويبدو أن النساطرة و بدعم من المنصّرين والدبلوما سيين الانجليز لم يقتنعوا بالتفاهم الذي حصل بين بدرخان وكا مل با شا رغم الكثير من الايجابيات فيها وا ستعداد بدرخان لفتح صفحة جديدة مع النساطرة. فكان المارشمعون يتردد وبكثرة على وا لي موصل محمد با شا الطامع بممالك بدرخان باشا وأصبح ا لمارشمعون عينا ل هورمزد رسام ويتآمر معه ضد نور الله وبدرخان وا مرا تبا عه بـ عدم د فع الـ ضريبة الـ سنوية لـ نور الله"[50]. وأ قدم قـ سم من الـ نـ ساطرة المـ سلحين قر ية كورد ية قريـ بة من ارا ضي تخو ما في هـ كاري وقتـ لوا اربـ عة من الـ كورد[51]. وأدت ذ لك إلى ا ندلاع الاشتباكات الثانية بين الطرفين. وفي وصفه لتلك الاحداث يقول لا يارد في عام ١٨٤٦ زارا شيتا في هكاري وراى بأم عينيه مذابح الكورد المتعطشين للدماء والتابعين لبدرخان. ويضيف لا يارد "زرت وادي زلان القريبة من اشيتا وتكلمت مع بعض الاشخاص الذين تفادوا مذبحة بدرخان. حيث كان تحصن بالوادي أ لف شخص وبعد مقاومة با سلة استسلموا لبدرخان وبعد أن حلف لهم الكورد بالقران واعطائهم الا مان. ولكن بعد الاستسلام ذبحوهم جميعا بما يملكون من الا سلحة وحين تعبوا من ا لذبح رموا الباقيين من فوق الصخور العالية إلى نهر ا لزاب وهذه وحشية نادرا ما نراه عـ ند الا خرين ..."[52] و لذلك في تموز ١٨٤٦ حـ صلت بـ عض المـ عارك في منطـ قة تخو ما بين أذ صار مارشمعون الذي هرب مرة أخرى إلى والي الموصل الذي حماه، وبين قوات الحكومة الكورد ية. وضخم المنصرون والقنا صل الأوربية في المنطقة الضحايا في الطرف الآ ثوري وذ لك لتشجيع حكو ماتهم الضغط على الدولة العثمانية للتدخل لإنهاء حكم الأ مير بدرخان حيث أ شارت الصحف الغربية التابعة للمنصّرين إلى وقوع آلاف الضحايا في الجا نب الآ ثوري ولكن الو ثائق البريطانية السرية التي نشرت حديثاً تشير إلى حدوث خمسمائة إصابة فقط في الجا نب الآ ثوري[53]. لا حظ الفرق بين ا لرقم ا لذي ورده لا يارد عن الضحايا وعن الوثيقة الصادرة من وا لي ارضروم حول نفس المعركة وهذا دليل آخر يجب أن يؤخذ شهادات لايارد عن الكورد بقدر جيد من التحفظ.

و لهذه الا سباب حـ تى المـ سؤولون العثـ مانيون كانوا يترددون في ا تخاذ الـ قرارات الـ صارمة ضد بدرخان ادرا كا منهم بان المنصّرين والدبلوما سيين الاوربيون يريدون ا لتخلص مـ نه لتحقيق أجـ ندتهم. عـ لى سبيل المثال. يتهم لا يارد حـ تى الـ باب الـ عالي ووا لي مو صل بـ كونهم مـ تورطين في الحرب الذي شنه بدرخان على النساطرة ويقول إن المسؤولين العثمانيين ا ستلموا قسما من غنائم بدرخان من حربه عـ لى الـ نـ ساطرة مقا بل سكوتهم. ولا يـ ستبعد ا لدكتور جو يدة احتـ مال تورط الدولة العثمانية في الصراع النسطوري الكوردي[54] إلا أنه أيضا بدوره لا يستند إلى أي وثيقة تاريخية



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وأ نه بـ نى اعتـ قاده بـ تورط الدو لة العثمانـ ية مجرد إلى ظـ نه بأن الحكو مة المركـ زية كا نت تر يد إضعاف الطرفين (الكوردي والآثوري) من أجل تثبيت سيطرته في المنطقة.

و كان هـ ناك اعتـ قاداً را سخاً في الأو ساط الأوروبـ ية، خا صة عـ ند الإنكلـ يز، أن الدو لة العثمانية متورطة في تآمر مع الكورد ضد الآثوريين. وقد أ شار السفير البر يطاني إلى تورط الدولة العثمانية مع الكورد في قمع الآ ثوريين. كما يعتقد المنصّر الأمريكي دكتور كرا نت بـتورط وا لي الموصل مع الكورد أثناء معارك ١٨٤٣ بغلق حدود ولا ية الموصل مع ولا ية هكاري الأ مر ا لذي سهّل للكورد معاقبة أنصار مارشمعون [٥٥].

حاكم أرضروم، كاميلي با شا، جادل بأن النفوذ البريطاني والأمريكي، جنبا إلى جنب مع كان التدخل الإيرا ني قد شجعهم على ذهب القرى وتحويل المساجد إلى كنائس. مثل هذا ا لدعم المحلي، لبدرخان واعطاه القدرة على السيطرة على أ جزاء من كورد ستان وحمايتها من البريطانيين والفرنسيين واجندتهم السرية [٥٦].

## المبحث الثالث:

## تأثير موقف الدول الكبرى والعامل الايراني في حركة الأمير بدرخان:

في هذا المبـحث نتـناول تأثير الحكو مة البريطانـية والمنـصّرين العاملين معـها و كذلك تأثير العا مل الايرا ني على صنع القرار العثماني لإنهاء حركة بدرخان في الا عوام ١٨٤٦-١٨٤٧. وهـ نا نلا حظ دورا وا ضحا للسيا سة البريطاذ ية والفرذ سية بـ صورة عا مة ودور القنـ صليين البريطانيين في موصل وارضروم بصورة خا صة في صياغة الا حداث بطريقة ادت الى انهاء التحالف الكوردي بقيادة بدرخان والهجوم العثماني على امارة بدرخان وانهائها.

بـعد مرور ثلا ثة أ عوام على المواجهة العسكرية الكورد ية النسطورية الأولى ا ندلعت أز مة جد يدة بين التـ حالف الـ كوردي بقـ يادة بدرخان وجما عة نـ سطورية أ خرى غير موالـ ية لـ مارشمعون وا لتي سبق وأن وقـ فت مو قف المحا يد في الجو لة الاولى من الـ صراع في عام ١٨٤٣ والمدعومة من قبل رجال الارسالية الأمريكية. انتهت هذه الازمة أيضا بحرب دموية بين الطرف الكوردي والنسطوريين وخسر الطرف النسطوري حسب بعض الشهادات ٥٠٠ إلى ٦٠٠ مقاتل. وفيما بعد تم إطلاق سراح جميع الأسرى والأفراد وعادت المياه إلى مجاريها الطبيعية [٥٧].

وبعد هذا الهجوم كان هـناك حملة عدائية كبيرة ضد بدرخان لتحريك الرأي العام الاوربي و كان مبعثـها التـ قاريرا لتي كا نت تر سلها الار ساليات الامريكـ ية والبريطاذ ية وتـ قارير القناصل البريطانية والفرنسية وهذا ما دفعت الحكومة البريطانية والحكومة الفرنسية إلى تقديم مذكرة رسمية شديدة اللهجة مطالبين فيها الدولة العثمانية بإرسال حملة عسكرية ضد الأمراء الكورد في بوتان [٥٨]. ثم ا عدت القنـصل الفرنـسي في موصل تقريرا مفـصلا عن الا حداث في ا شيتة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وا لمذابح المرو عة بحق النـ ساطرة كـ ما اد عت. ود عت حكومـ ته إلى ممار سة اقـ صى الـ ضغوط عـ لى الحكومة العثمانية لاتخاذ اجراء ضد بدرخان[٥٩].

اتخاذ إجراء وهذا ما عجلت خطط الدولة العثمانية المعدة مسبقاً في فرض سيطرتها على التحالف الجديد للأمراء الكورد علماً بان الدولة العثمانية كانت تشعر بدورها في الاعوام ١٨٤٦-١٨٤٧ خطورة صعود نفوذ الأمير بدرخان وحلفائه خاصة الأمير خان محمود وبلغت قوة بدرخان العسكرية ذروتها وقدرت بعض المصادر تلك القوة ٢٦ ألف محارب[٦٠] في الحقيقة إن حكومة كوردستان المستقلة تحت قيادة الأمير بدرخان كان تهدد الدولة العثمانية في الصميم ولأسباب عدة. حيث كانت قوات الفرسان المهمة التابعة للدولة العثمانية تستند بصورة أساسية إلى المقاتلين الكورد في منطقة هكاري وبوتان. شكلت العشائر الكوردية الساكنة في هذه المنطقة حوالي ٤٠ كتيبة من كتائب الفرسان التابعة للدولة العثمانية. وكان هناك عشرون كتيبة أخرى مؤلفة من أبناء العشائر الكوردية في مناطق قبائل الحيدرانية، الجبرانية، ميران، دودري، واتروشي وميلي. لذلك إن كتائب الفرسان الكوردية كانت تشكل عماد القوة العثمانية في مجابهة إيران وروسيا القيصرية[٦١].

فبدأت الدولة العثمانية التخطيط لحملة عسكرية واسعة النطاق وطالبت من المشير عثمان باشا قائد قوات اناضول بأخذ جميع الاستعدادات لشن هجوم واسع النطاق على بدرخان وحلفائه واصرت الباب العالي على أن تبقى تفاصيل الخطة طي الكتمان. وكما طالبت الحكومة العثمانية من حكام موصل ودياربكر وارضروم أخذ الاستعدادات اللازمة لمعركة شاملة وحاسمة ضد الأمير بدرخان. علما كان الموقف متوتر جدا بين الأمير ووالي الموصل وذلك لان الاخير استطاعت قطع أجزاء من امارة هكاري وجزء من إمارة دياربكر إداريا وربطها بالموصل. وادعى والي موصل أن تلك المناطق واقعة فعليا تحت سيطرة الأمير بدرخان وهذا ما توفر له اموال كثيرة وتشجعه على التمرد. وكان رد بدرخان أن المناطق التي تطالب بها والي موصل إلحاقها إليها بعيدة عن الموصل ولم تتخلف عن أداء ضرائبها السنوية وان سكانها يرفضون الحكم التعسفي لوالي موصل وان ضرائبهم ترسل بصورة دورية إلى دياربكر وليس هناك أية داعي لنقل تلك المناطق إدرايا إلى الموصل[٦٢]. وكان هناك توتر مماثل بين حليف بدرخان القوى المسمى خان محمود ووالي ارضروم في هذه الفترة. حيث إن خان محمود واخوته بسطوا سيطرتهم على مناطق واسعة في ولاية ارضروم وصولا إلى مدينة وان وبتليس. وكان خان محمود وإخوته في حالة تمرد واضح منذ عام ١٨٤٥. علما أن خان محمود وإخوته سبق وان تمردوا على الدولة العثمانية وتم أسرهم ونفيهم. ولكن معركة نزيب خلقت فرصة مؤاتية لهم للرجوع إلى أطراف وان في المنطقة الحدودية مع إيران. واشتكى خليل كاملي باشا والي ارضروم في أكثر من مناسبة بان خان محمود يشجع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

العديد من أمراء الكورد الاخرين على التمرد الصريح وهو أيضا مثل بدرخان يجمع السلاح والعتاد ووصلت الامر إلى حد لا يمكن تجاهله والا ستشكل خطرا كبيرا على أمن الدولة العثمانية"[63].

وبعد الاحداث في هكاري ارسلت الحكومة العثمانية مبعوث رفيع المستوى لإقناع بدرخان لإنهاء الحرب مع النساطرة. فزار ناظم أفندي وحذر الأمير من خطورة صراعه مع النساطرة استمراره للسلطان العثماني. ولكن بدرخان استطاع أن يقنع ناظم أفندي بضرورة بقائه في مدينة جزيرة واقسم له باغلض الايمان وفي وجود العديد من العلماء ووجهاء جزيرة بانه مطيع للسلطان ولي نعمته"[64].

**العامل الايراني في حركة بدرخان:**

لعب العامل الايراني دورا غير قليل في صياغة السياسة العثمانية تجاه بدرخان ولأسباب عدة قسما منها يتعلق بالجغرافية حيث إن التحالف الكوردي بقيادة بدرخان و نور الله كان في موقع جغرافي مهم تؤثر على العلاقات بين الامبراطورية العثمانية والقاجارية. فالتحالف الكوردي خاصة جناحها الممثل بنور الله أمير الهكاري كانت لها امتداد داخل الاراضي الايراني. وكما أن نجاح التمرد الكوردي على السلطة العثمانية كانت تثير قلق المسؤولين الايرانيين من قيام العشائر الكوردية بعمل مماثل في إيران. وصلت الشائعات إلى مشير الأناضول الجيش أن نور الله كان يحاول توحيد المناطق الكوردية لإيرانية المحيطة بهكاري. توضح هذه الحالة جيداً تعقيدات الولاء الانتماء في الحدود. كان العثمانيون يشككون في نور الله لأن إحدى زوجاته كانت أخت يحيى خان من سلماس الأخت الأخرى كانت زوجة شاه إيران محمد شاه. بالتالي، وحثت اسطنبول طهران على رفض دخول نور الله إذا عبر الحدود .دخلت القوات العثمانية (Colemerg-Julamerg) جولة ميرك في ٩ ديسمبر ١٨٤٨. هرب نور الله، الذي طغت عليه القوة العثمانية العسكرية المتفوقة، إلى قلعة برديرش الحدودية، وخضعت قبائل هكاري تدريجياً .بينما كان القادة العثمانيون لا يزالون يقررون ما يجب فعله حيال ذلك السيد الكوردي الهارب جاء علي أشرف خان برفقة عدة مئات من الفرسان لإنقاذ نور الله. وطالبت اسطنبول بعودته من السلطات الإيرانية، واتصلت بالمسؤولين الإيرانيين بما في ذلك نجف قولي خان، حاكم أورومية، ومن القنصلين البريطانيين والروس في تبريز. وكتب القنصلين المذكورين التماسات إلى إيران لتسليم نور الله بيك. ووعدت الحكومة العثمانية بأنها ستضمن حياته وشرفه وممتلكاته. علما كان علي أشرف يحيى خان في حالة تمرد في المنطقة الايرانية المحاذية لهكاري وهزم مرتين القوات الايرانية المرسلة لإخضاعه. بالإضافة إلى ذلك، وكان في الأصل من هكاري، كان هناك خطر حركة عامة لدعم نور الله. مرة أخرى، هذه مخاوف لم تتحقق نتيجة الضغط المشترك من اسطنبول الممثلين الروس البريطانيين حيث اضطر نور الله للعودة إلى الدولة العثمانية و لجأ نور الله إلى شيخ طه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

النقشبندي كبار شيوخ الطريقة النقشبندية في الدولة العثمانية، ٢٠٢. ولكن سرعان ما تم إرسال نور الله إلى اسطنبول، ثم إلى المنفى[65].

وفي الاعوام ١٨٤٣-١٨٤٨ كانت هناك محادثات مكثفة بين الدولة العثمانية والقاجارية لتثبيت الحدود وتطوير العلاقات بين الطرفيين بحضور ممثلين من بريطانيا وفرنسا وروسيا كوسطاء وسميت هذه المحادثات بمحادثات ارضروم لإنها تمخضت عن اتفاقية أرضروم بين الدولة العثمانية وإيران في عام ١٨٤٨[٦٦]. ويسمي صبري اتش هذه المحادثات والاتفاقيات التي تمخضت عنها ب " محور زاكروس" ويرى اتش أن المسألة الكوردية شغلت حيزا مهما من تلك المحادثات وكان العثمانيون قلقين جدا من احتمال استعمال تحالف بدرخان- نور الله- خان محمود الظروف السائدة لفرض ارادتهم على الدولة العثمانية من خلال استغلال القاجاريين اذا اقدمت العثمانيين على اية خطوة لإنهاء النزعة الاستقلالية عند أمراء الكورد[٦٧]، أرسل خان محمود وفدا إلى حاكم ارضروم وأخبره أنه أنهم كانوا رعايا مخلصين للسلطان وعلى استعداد لدفع المستحقات الضريبية عليهم فقط، رفضوا تجهيز المجندين، والسماح لوجود حامية من الجيش العثماني في منطقتهم، وكانوا يقولون إن لهم وضع خاص لانهم مهددون من ايران وان القوات المحلية تحمي قلعتهم (ضد إيران)[٦٨] اذن يستغل نور الله وخان محمود علاقاتهم الوثيقة مع القاجاريين والعامل الجغرافي للبقاء على حكمهم الشبه المستقل من الدولة العثمانية[٦٩]. وكان العثمانيون ينطلقون من هذه الخلفية التاريخية في تعاملهم مع نور الله بيك في كوردستان الإيرانية. والدولة القاجارية كانت سلطتها ضعيفة تعني أن موقفهم من الأكراد كان في كثير من الأحيان في حده الأدنى. وكان الموقف الدولي، خاصة موقف بريطانيا وفرنسا وروسيا، الساعي آنذاك لإنهاء التوتر على الحدود الايرانية –العثمانية والتي تجسدت بدعمهم السلطات الايرانية والعثمانية ضد نور الله خان انعكست أيضا على موقف إيران السلبي من بدرخان حين سعى الأخير للهروب إلى إيران في نهاية المعركة مع العثمانيين[٧٠]. وهذا التعامل الاقليمي المشترك وبرعاية بريطانية ضد الحركات الكوردية ستتكرر مع حركة الشيخ عبيد الله ١٨٨١ والشيخ محمود وثورة ايلول في عام ١٩٧٥وفي جميع هذه الحالات كان الدعم المقدم من الدول الاوربية (إضافة إلى الحكومة الامريكية عام ١٩٧٥) إلى الدول الاقليمية العامل الحاسم في القضاء على تلك الحركات.

**المعركة الفاصلة ونهاية الامارة:**

فالدراسات السابقة التي تطرقنا إليها اعطت بالتفصيل معلومات عن سير المعارك وسقوط الامارة ولكن هنا نقف بإيجاز عند بعض الاحداث ودور الحكومة البريطانية فيها.

وفي رسالة مؤرخة في ٢٦ حزيران ١٨٤٧م من نائب القنصل البريطاني في الموصل رسام الموجه إلى السفير البريطاني ويشير فيها بوقوع ثلاث مواجهات بين القوات العثمانية والكورد، وأورد



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أيضاً بان المواجهات مستمرة، ولكن يبدو أن المعركة الكبيرة قد وقعت أمام مدينة الجزيرة بعد عبورهم نهر دجلة. ويضيف رسام "أما بالنسبة للكورد فيبدوا كعادتهم قاموا بهجوم مباغت في الليل على معسكر عمر باشا مستغلين ظلام الليل وأوقعوا خسائر للجانب التركي، واستمرت المعركة إلى طلوع الشمس وكانت القوات الكوردية قد تحصنت بالمناطق الجبلية العالية ولكن الامر تغير بعد قيام قوات عمر باشا بهجوم معاكس من قبل القوات النظامية والتي استطاعت أن تهزم القوات الكوردية بأكملها، وهذا مما اجبر بدرخان باشا إلى الهروب من ساحة المعركة بصحبة فقط ٥٠٠ من مسلحيه وخدمه الشخصي. واصل المشير زحفه متوجها إلى دير شولة واحلته، وانطلق من هناك أيضا بعد أربع ساعات تاركاً فيها بعض من قواته.

ووقعت مواجهة أخرى بين الطرفين في موقع تقاطع نهر سيرت مع نهر دجلة وفي هذه المعركة اتحد قوات بدرخان مع قوات خان محمود وقوات زينل بك التي التحقت بهم مستخدمين الزوارق لنقل المسلحين فقامت القوات الكوردية المشتركة بالهجوم على الوحدات العثمانية التابعة لولاية ارض روم استطاعت القوات العثمانية من دحر القوات الكوردية واجبرتهم إلى العودة باتجاه النهر ولكن بعيداً من زوارقهم وهذا ما سبب من مقتل حوالى ١٥٠ من مقاتلي الكورد في النهر، وغرق ضعف هذا العدد في النهر، قبل فترة رأيت أحد الضباط نجيب باشا الذي عاد من ساحة المعركة بزورق وقال بأنه رأى بام عينيه العشرات من الجثث على ضفاف نهر دجلة، ويبدوا أن زينل باشا قد أصيب بإصابات بالغة" [71].

وحين شعر بدرخان بانه محاصر من جميع الجهات وليست لديه القوة العسكرية والمؤن الكافية لخوض المعركة مع العثمانيين، لجأ إلى المفاوضات كسلوب لاحتواء الازمة.

هناك رسالة من وصلت للقنصلية في الموصل من خلال الشيخ يوسف مبعوث الأمير بدرخان يطلب فيها الأمير بدرخان أن يتدخل الحكومة البريطانية عند السلطات العثمانية لضمان حياته وإصدار العفو عنه في حالة ذهابه إلى اسطنبول واللقاء بالصدر الأعظم وتسوية الخلافات مع الدولة العثمانية لتجب الحرف وسفك الدماء، وتضمن الرسالة استعداد الأمير بدرخان بعدم التدخل في شؤون امارة هكاري وبهدينان، كذلك تضمنت الرسالة تسليم كافة الاسرى النسطوريين عنده وعند اتباعه، وأبدى استعداده إعادة ذكر اسم السلطان في خطب الجمعة بدلا من اسمه يتخلى عن لقب الإمام وسيرسل إلى موصل وسيرسل زينل بك إلى الموصل كرهينة وأبدى أيضا استعداده الضرائب المستحقة على امارته للدولة العثمانية. ويبدى بدرخان استعداده الاعتراف بمارشمعون كرئيس للطائفة النسطورية ولن يضايقه في المستقبل وتعهد الأمير بدرخان عدم التميز بين اتباعه من المسلمين والمسيحيين. وسيرفع عقوبة الاعدام في مناطقه، كما أن الأمير مستعد أن يلتقي بالوالي العثماني في الموصل دون أن يجلب معه مسلحين مرافقين له كما كان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

يصطحبه عدد كبير من المسلحين من قبل، ويسلم كافة الهاربين من ولاية الموصل للوالي في الموصل، باختصار هو مستعد أن يدرس كل الاقتراحات بجدية التي تأتيه من قبل الدولة العثمانية[٧٢].

إن أسباب الهزيمة المفاجئة والسريعة كانت كثيرة فبالإضافة إلى تفوق القوة العثمانية من ناحية العدد والعدة وقادتها خير جنرالاتها والتي هاجمت قوات بدرخان من ارضروم والموصل ودياربكر وارزنجان، كانت الخطة العثمانية استندت إلى عزل بدرخان من حلفائها الاقوياء.

وبينما كانت قوات بدرخان تحارب خارج الجزيرة استطاع رسام أن يقنع يزدان شير بترك قوات بدرخان وتسليم الجزيرة إلى القوات العثمانية وأصبح دليل القوات العثمانية المهاجمة على ديركول. وكتب رسام إلى السفار البريطانية في اسطنبول قائلاً: نأمل أن يكون تسليم اردشير بك وانشقاقا من نور الله بك قريباً أن يقنع بدرخان بأن يأخذ خطوة حكيمة بان يسلم نفسه للمشير عثمان باشا[٧٣]. وبينما كانت القوات الكوردية تخوض معارك ضارية، استطاع الثلاثي والي موصل ورسام ومارشمعون وبعد لقاءات سرية وتبادل الرسائيل من اقناع نور الله على التخلي عن بدرخان[٧٤]. وفي أثناء المعركة كان الولاة العثمانيون في كل من ارضروم والموصل وبدعم القناصل البريطانية يعطون الهدايا والامان لرؤساء العشائر الكوردية المتحالفة مع بدرخان يبينون لهم أن المعركة غير متكافئة وانهم يحاربون قوات سلطان المسلمين وهناك مصير قاتم لكل من يواصل الاستمرار في دعم بدرخان وهذا ما دفع، مثلا أخوي خان محمود تسليم قلاعهم إلى القوات العثمانية في أحرج لحظات المواجهة المعركة[٧٥].

وحين تبين لبدرخان بان المعركة وصلت نهايتها فانسحب هو وحوالي ٥٠٠ من قاربها والمقربين منه إلى قلعة اروخ وكانت هناك قصف شديد على القلعة لأكثر من ثلاثة اسابيع وبأحدث ما كانت تملكها الترسانة العثمانية. أراد بدرخان أن يتفاوض مع السلطان العثماني من خلال رسام الذي كان يتظاهر بكونه صديق له في عدة مراسلات بينهما. وكان رسام يقول له بان لا خيار له الا الاستسلام لقوات عثمان باشا وسوف يكون له الامان على حياته وامواله. علما كان رسام والسفير البريطاني في اسطنبول كانا يحثان الدولة العثمانية على عدم المهادنة مع بدرخان والقادة الكورد ويجب القضاء عليهم نهائيا لأنهم يسببون عدم الاستقرار في المنطقة[٧٦]. وحين اسر بدرخان وتم نفيه إلى جزيرة كريت ابدى الانجليز استيائهم عما اسموه من معاملة كريمة معه وطالبوا بمعاقبته وبإبعاد كل أمراء الكورد ونقلهم إلى غرب تركيا[٧٧].

وقفت الدولة العثمانية ضد الأقليات القومية والدينية تحت ستار التنظيمات وإعادة المركزية للدولة في الوقت الذي كانت تقدم الرعاية لدول الامبريالية عن طريق القناصل والرحالة الأوربيين والذين كانوا يتسلمون الدعم المادي والمعنوي منهم وبالمقابل تقوم هذه الدول

بتوفير الحماية اللازمة في المنطقة إن الدول الامبريالية وخاصة بريطانيا كانت تنتظر بفارغ الصبر مجيء ذلك اليوم الذي يتم فيها تقسيم وتمزيق الإمبراطورية العثمانية التي كانوا يسمونها (الرجل المريض) وأضف إلى ذلك كانت بريطانيا لا ترغب في إن تحدث حركة أو انتفاضة قومية منظمة لها نهج ومبادئ قومية في داخل الإمبراطورية العثمانية وخاصة في منطقة مهمة وحيوية وإستراتيجية ضمن الإمبراطورية العثمانية والتي تسمى بـ(كوردستان) وفي منطقة (بوتان) بالذات ويتم فيها تأسيس مؤسسات قوية ولهذا فان بروز شخصية قوية مثل بدرخان باشا والذي كانت له نظرته بعيدة ليس لتحقيق استقلال إمارته (إمارة بوتان). بل أبعد من ذلك بكثير وهي إنشاء كيان سياسي مستقل أكبر من أن تكون خاضعة للدولة العثمانية .

ولهذا السبب وقفت الدولة العثمانية ومعها الدول العظمى ضد حركة بدرخان باشا وحاربوها. أن الظروف السياسية التي كانت تمر بها كوردستان بصورة عامة وإمارة بوتان بصورة خاصة قد هيئ المناخ لقيادة انتفاضة كوردية التي تبنتها إمارة بوتان في تلك الفترة لأنها كانت اقوى الإمارات الكوردية القائمة في كوردستان آنذاك. في الوقت الذي كانت فيه إمارة راوندوز بزعامة مير محمد باشا حيث قامت الدولة العثمانية بالقضاء عليها كذلك الحال بالنسبة لإمارة بابان والتي كان قد دب فيها ضعف كبير. ولذلك اجتمعت كل هذه الظروف في كوردستان ودفعت بأمير بدرخان باشا لقيادة انتفاضته وبالمقابل قامت الدولة العثمانية التي كانت غير راضية عن الأوضاع السياسية التي تجري في إمارة بوتان بجمع كل إمكانياتها المتوفرة لديها واستخدامها ضد إمارة بوتان في سبيل وضع نهاية لهذه الإمارة وإخضاعها لسيطرته.

**استنتاجات الدراسة::**

إن حركة الأمير بدرخان كانت فعلا علامة مضيئة في تاريخ الكورد فهو بحق كان رجل دولة من الطراز الاول ومتقدم على زمانه ورجال عصره من الكورد وغير الكورد وعدالته بشهادة الجميع نموذج جيد لم تضاهيها أي رجل دولة في الدولة العثمانية أو أي أمير كوردي وتحتاج إلى المزيد من التأمل فهو نموذج ناجح وساطع في تاريخنا التي يجب أن يحتذى بها قادة الحركة القومية اليوم. ولكن العدالة والفكر الاصلاحي والفكر الإداري الجيد لا يضمن لها لك دولة في عصر إذا لم تتحرك ضمن أجواء سياسية مناسبة مدركة جميع أبعاد اللعبة السياسية الدولية والاقليمية. وكما قال وديع جويدة فهو كان شخصية كارزماتية ويحظى بدعم فئات واسعة من الشعب الكوردي ولكن الشعب الكوردي لم يكن مهيأ لدعوته للوحدة فخانه أخلص حلفائه حين دخلوا في المعركة المصيرية. يبدو أنها كان يريد أن يكرر تجربة محمد علي باشا حاكم مصر فربط بين الاصلاح الإداري والقوة العسكرية ولكن ظروف مصر ذات الخلفية الحضارية الغنية تختلف عن ظروف المجتمع الكوردي القبلي. ولكن كما تبين لنا من هذه الدراسة أن المشكلة لم



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

تكمن في شخص القائد وإنما في النظام الدولي القائم وتبعاتها على الدولة العثمانية. فحركته كانت تهدد كيان اقليمي اعتبره الدول الاوروبية وبالتحديد بريطانيا أن بقائها ووحدة أراضيها تخدم مصالحها الاستعمارية الاستراتيجية. كما أن التحالف الكوردي بقيادة بدرخان ولد في فترة وضمن بيئة جغرافية كانت الدولة العثمانية والقاجارية قد توصلت لتوها وبضغط من الدول الاوروبية إلى نظام أمني اقليمي انتهت باتفاقية ارضروم الثانية ولم تقبل لا الدولتان المعنيتان ولا بريطانيا أن تسمح للكورد من أن تكون عاملا لعدم الاستقرار لهذا النظام الاقليمي. وإذا كان بدرخان الضحية الاولى لتبعات الجغرافية السياسة في كوردستان ولكن لم يكن الاول فلعنة الجغرافية السياسية و عدم إدراك قادة الحركة الكوردية لمتطلبات النظام السياسي الدولي والاقليمي صاحبت الحركة الكوردية في القرنين الماضيين -ولا نزال.-

**الهوامش :**

---

1 زهير حمودي الجبوري، دراسة النظام العالمي و حتمية التغير، (مركز النهرين للدراسات الاستراتيجية- قسم الدراسات السياسية) – https://www.alnahrain.iq/post/785 تاريخ زيارة الموقع (١٦-١-٢٠٢٣).

2 " balance of power: international relations",
https://www.britannica.com/topic/balance-of-power

٣ احمد مشعان نجم، توازن القوى الدولي وتوازن القوى الاقليمي: دراسة نظرية تحليلية:
political issues, 2018, Volume , Issue 51, Pages 405-432 .
https://www.iasj.net/iasj/article/167479

4 **الإعداد العلمي :إيمان بن عامر**، مؤتمر فيينا:
١٨١٤-١٨١٥ - The Congress of Vienna 1814-1815 https://political-encyclopedia.org/dictionary (تم زيارة هذا الموقع بتاريخ ١١-١-٢٠٢٣) .

5 G. Lenczowski, the Middle East in World Politics (Cornell University Press, 1980), pp. 38-9.

6 England and the Near East, the Crimea (London: Frank Cass and Company Ltd., 1964), p. 74.

٧ عثمان علي، نفس المصدر، دراسات في الحركة الكوردية المعاصرة-دراسة تاريخية وثائقية، مكتبة التفسير، اربيل ط١، ٢٠٠٣، ص ٦٥.

٩ للاطلاع على المزيد من الدراسات التي تناولت الضعف والانحلال في الدولة العثمانية ينظر الى الدراسات التالية:
Alan Palmer, The Decline and the Fall of the Ottoman Empire. (London: John Murray, 1993). Douglas A. Howard, “With Gibbon in the Garden: Decline, Death

and the Sick Man of Europe," Fideset Historia 26 (1994), pp. 22-34; Aslı Çırakman, From the "Terror of the World' to the 'Sick Man of Europe": European Images of Ottoman Empire and Society from the Sixteenth Century to the Nineteenth. (New York: Peter Lang, 2001).

10 Sabri Ateş, *The Ottoman-Iranian borderlands, making a boundary*, 1843–1914, New York, Cambridge University Press, 2013, p.33

١١ عبد العزيز سليمان نوار، تاريخ العراق الحديث من نهاية حكم داوُد باشا إلى نهاية حكم مدحت باشا، دار الكاتب العربي للطباعة والنشر. القاهرة ١٩٦٨، ص١٠٨-١١٤.

١٢ ميزووى كوردستان، ل ٢٠٦.

١٣ توفر الارشيف العثماني وثائق ثرية لم يتم استكشافها بالقدر الكافي حتى الآن، حيث تم تخصيص ملف كامل (عينيات ٦٠٩) بالكامل لعائلة بدرخان. وهذا الملف (defter)، هو مجموعة من المراسلات بين الحكومة المركزية والمحافظات الكوردية فيما يتعلق بفترة ما قبل وما بعد الثورة، والتي تشير إلى مقدار الاهتمام الذي أولته الحكومة العثمانية لهذه الثورة: (انظر: ب. أ. عينيات )٦٠٩. كما تعطي والوثائق البريطانية للفترة ١٨٤٢- ١٨٤٨ اهتماماً غير عادياً لحركة بدرخان وتم نشر معظمها في المجلد الاول من اصدار المركز الارشيف البريطاني باسم:

Records of the Kurds: Territory, Revolt and Nationalism, 1831-1979, Cambridge Archive Editions; Illustrated edition (February 1, 2016).

١٣ للمزيد من الاطلاع عن إمارة بوتان، ينظر، صلاح هروري، إمارة بؤتان في عهد الامير بدرخان ١٨٢١-١٨٤٧ دراسة تاريخية سياسية، مؤسسة موكرياني للطباعة والنشر، ط١، ٢٠٠٠. خليل علي مراد وعبد الفتاح على البوتاني: صفحات من تاريخ الكورد وكوردستان الحديث في الوثائق العثمانية ١٨٤٠-١٩١٥، من مطبوات الاكاديمية الكوردية، أربيل، ٢٠١٥. لوتفي، مير بدرخان، وەرگێڕانی جمال گردەسۆری، چابخانەی وزارەتی رۆشنبیری" هەولێر، ١٩٩٩، ومالميسانز، بدرخانيو جزيرة بوتان ومحاضر اجتماعات العائلة البدرخانية، ترجمة شكر مصطفى، مطبعة وزارة الثقافة أربيل، ١٩٩٨، وعثمان علي، دراسات في الحركة الكوردية المعاصرة-دراسة تاريخية وثائقية، مكتب التفسير، اربيل ط١، ٢٠٠٣، بالاضافة الى العديد من الدراسات ظمن كتب ودراسات تناول جوانب من تاريخ تلك الإمارة.

١٤ صلاح هروري، إمارة بوتان في عهد الأمير بدرخان ١٨٢١ – ١٨٤٧ دراسة تاريخية سياسية، مؤسسة موكرياني للطباعة والنشر، اربيل، الطبعة الأولى ٢٠٠٠، ص١١.

(انظر: شرف خان البدليسي، شرف نامة في تاريخ الدول والإمارات الكُردية، ص ٣٢٠.

وNoel, Diary,p.١

١٥ ومالميسانز، بدرخانيو جزيرة بوتان ومحاضر اجتماعات العائلة البدرخانية، ترجمة شكر مصطفى، مطبعة وزارة الثقافة أربيل، ١٩٩٨، ص ٤٥.



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینێن کوردی

16 Sabri Ateş, *The Ottoman-Iranian borderlands*, *making a boundary*, 1843–1914, New York, Cambridge University Press, 2013, P 68.

17 Fatih Gencer, MERKEZÎYETÇİ İDARİ DÜZENLEMELER BAĞLAMINDA BEDİRHAN BEY OLAYI T.C. ANKARA ÜNİVERSİTESİ SOSYAL BİLİMLER ENSTİTÜSÜ TARİH (YAKINÇAĞ TARİHİ) ANABİLİM DALI Doktora Tezi Fatih GENCER , T.C.ANKARA ÜNİVERSİTESİ, Ankara-2010 S. 161

١٨ كل هذه المصادر وقعت في هذ الخطأ:

Janet Klein, Power in the Periphery: The Hamidiye Light Cavalry and The Struggle Over Ottoman Kurdistan, 1890-1914, Phd, Princeton University, 2002, s.109; Cabir Doğan, Cizre ve Bohtan Emiri Bedirhan Bey (1802-1869), Basılmamış Doktara Tezi, Afyon Kocatepe Üniversitesi Sosyal Bilimler Enstitüsü, Afyonkarahisar 2010, s.30; David Barchard, "Bedirhan Bey In Crete", Osmanlı'dan Cumhuriyete Diyarbakır, II, Ankara 2008, s.344; Hacer Yıldırım Foggo, Kırmızı Püskül 1843-1846 Nesturi Katliamı, Chiviyazilari Yayınevi, Istanbul 2002, s. 32;, M.A. Gasratyan, O.İ. Jigalina, KürdistanTarihi, (Çev. İbrahim Kale), Avesta Yayınları, İstanbul 2007, s.115; Martin Van Bruinessen, Agha, Shaikh, and State: The Social and Political Structures of Kurdistan Paperback – January 1, 1992, P. 273; McDowall, David. *A Modern History of the Kurds*. 3rd. and updated ed. New York: I.B. Tauris: Distributed by St. Martin's Press, 2004, P. 78؛London

١٩ وديع جويدة، الحركة القومية الكردية نشأتها و تطورها، دار آراس لطباعة والنشر، الطبعة الأولى، اربيل ٢٠١٣، ص ٧٣.

٢٠ Ateş, Ibid, PP. 69-70.

٢١ وديع جويدة، نفس المصدر، ص ١٧٠.

يقول الباحث التركي فاتح كينجر(Fatih Gencer ) بانه لم يحصل على اي وثيقة عثمانية تثبت او تشير الى مدى تدخل امير بدرخان و قواته في في معركة نزيب ولكن لا يستبعد اشتراك بدرخان الامراء الكورد الاخرين في تلك معركة.

. ص١٧٣، ;اسطنبول

Field-Marshal Helmuth von Moltke, Essays, Speeches, and Memoirs, vol. 1 (New York:
Harper &Brothers, 1893), P. 278.

22 FO. 78/2707, No.148 General report by Mr. Brant about frontier regna's 16 June 1838.

23 Ateş, Ibid, PP. 70-71.

٢٤ بلةج شيركو، القضية الكُردية ماضي الكُرد و حاضرهم، دار الكتاب، بيروت ط١، ١٩٨٦، ص ٥١.

٢٥ صلاح هروري، نفس المصدر، ص ٤٩. إن الادعاء بان الامير بدرخان تحرك من منطلق قومي يحتاج الى تأني وتوثيق اكثر.لان الفكر القومي لم تكن بعد وصلت الشرق الاوسط عامة و



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

كوردستان خاصة. ولكن الاستاذ كريس كوجيرا يتفق مع الاستاذ هروري بكون بدرخان رائد الفكر القومي:

FLAMMARION, Le Mouvement national kurde:Publisher: (17 Sept. 1992, pp. 13-18.

الا أن باربرا هاننغ التي ارخت لعائلة بدرخان ترى بان هذا الادعاء لا تقرها الحقائق على الارض. وان كريس كوجيرا وقع تحت تاثير احفاد بدرخان الذين تاثروا بالفكر القومي، خاصة الدكتور كامران بدرخان واحمد رامز (لطفي) (انظر:

Barbara Henning, Narratives of the History of the Ottoman- Kurdish Bedirhani Family in Imperial and Post-Imperial Contexts, 2018, Univ. Bamberg Press, 2018, pp.81-82.

٢٦ هناك الكثير من الدراسات التي تطرقت الى نشاط البعثات التنصيرية في كوردستان و تأثيراتها على العلاقات الكوردية-النسطورية. للمزيد: ينظر:

The Missionary Herald, Reports from Northern Iraq 1833-1847, Vol. 1 (Kamal Salibi and Yusuf K. Khoury (eds.), Amman, Royal Institute for Interfaith Studies, 2002); John Joseph, The Nestorians and their Neighbors (Princeton, NJ, Princeton University Press, 1961); Gordon Taylor, Fever and Thirst: Dr. Grant and the Christian Tribes of Kurdistan (Chicago, Academy Chicago Publishers, 2005). A.H. Layard, Popular Account of Discoveries at Ninevah (London: John Murray, 1851), pp. 122-70 36. Van Bruinessen, pp.290-1; Missionary Herald, Vol.1, pp.474, 483.

27 George Percy Badger, The Nestorians and Their Rituals: With the Narrative of A Mission *to Mesopotamia and Coordistan in 1842-1844, and a Late Visit to Those Countries in 1850,* Facsimile edition (January 1, 1987,

28 J. Joseph The Nestorians and their Muslim Neighbours, Princeton University, 1961, PP. 54-56.

٢٩ سعد بشير اسكندر، *قيام النظام الاماراتي في كُردستان وسقوطه/* ما بين منتصف القرن العاشر ومنتصف القرن التاسع عشر، ط٢، السليمانية ٢٠٠٨، ص ٢٢٣.

٣٠ FO 195/228:

ار. دبليو. ستيفن نائب القنصل في الموصل. إلى سعادة سفير حكومة بريطانيا العظمى/ اسطنبول تقرير حول زيارة بدرخان في مقره بالجزيرة: ١٠ تموز/ ١٨٤٤.

31 FO. 78/2714, from James Brant, Erzurum to costantinapul, Feb 12 1846.

32 (British Documents on Foreign Affairs, Ottoman Empire, 1860-1880. PP. 279-280, Enclosure No. 169. August 2, 1844, Telegram No. 126 17, 1844. Sir Stratford Canning.

33 A.H. Layard, Popular Account of Discoveries at Ninevah (London: John Murray, 1851), pp. 170-173; وديع جويدة، نفس المصدر، ص ١٨٨-١٨٩.

34 Wigram and Lambeth, P. 70. The Missionary Herald, Reports from Northern Iraq 1833-1847, No. 40, letters from Dr. Grant.

میژووی کوردستان، م. س. لازاریف و چەکند نوسەرێکیتر، و. وشیار عه بدواللا سه نگاوی دزگای چاپ و بلاوکردنه وەی روژهه لات، چاپی سێهەم، هەولێر، ٢٠١٢، ص ٢٠٨.

36 ZN Kaya "Orientalist Views of Kurds and Kurdistan" - LSE Research Onlinehttp://eprints.lse.ac.uk › Kaya_orientalist_views_o...PDF.· 2021; IM Okkenhaug, Christan Mission in the Middle East ant The Ottoman Balkans: Education, Reform and Failed Conversions, 1819-1967, https://www.jstor.org/stable/43998006; C Erhan, "Ottoman Official Attitudes Towards American Missionaries"; Mehmet Ali Doğan, Theses and Dissertations on the American Missionary Activities in the Middle East, https://www.academia.edu/32651984/Theses_and_Dissertations.

٣٧ مالك بن نبي، شروط النهضة، دار الفكر المعاصر للطباعة والنشر والتوزيع 2000 .

38 PRO.FO 78/653, Brant to Aberdeen, January 8, 1846.

39 PRO. FO, 78/653, dispatches No. 15, from James Brant, Erzurum to Lord Palmerstone, July 8, 1847.

40 A.H. Layard, Ninevah and Its Ruins,pp. 140-41

٤١ سعد بشير اسكندر، نفس المصدر، ص ٢٤٢-٢٤٣.

42 British Documents on Foreign Affairs, Ottoman Empire 1860-1880, P. 290. to Lord Cowley, No. 360. October 17, 1847. "Memorandum on Koordistan" by H. Layard.

٤٣ سعد بشير ، نفس المصدر، ص ٢٤٥.

٤٤ سعد بشير ، نفس المصدر، ص ٢٤٦.

45 British Documents on Foriegn Affairs, Ottamon Empire 1860-1880. P. 227; Telegram No. 194, September 1, 1843).

46 (British Documents on Foriegn Affairs, Ottoman Empire, 1860-1880. PP. 279-280, Inclosure No. 169. August 2, 1844, Telegram No. 126 17, 1844. Sir Stratford Canning.

٤٧ سعد بشير اسكندر، نفس المصدر. ص ٢٥٢.

48 (British Documents on Foreign Affairs, Ottoman Empire 1860-1880. P 279, Mr. Stevens, May 18, 1844; Inclosure No. 126, June 17, 1844, Sir Cannington); FO., 78/613, August 13th 1845; FO., 195/227, August 13th 1845.

49, FO., 78/613, October 10th 1845.; Fatih GENCER.s.128

50 Sabri Ateş, Ipid, pp. 77-78.

51 FO 195/228 March 23, 1844. W. Stevenson to Stratford Canning.

52 A.H. Layard, Ninevah and Its Ruins, 140.

53 (British Documents on Foreign Affairs, Ottoman Empire 1860-1880, P. 288, Mr. Wellesly No. (8 January 1847).

٥٤ وديع جويدة، نفس المصدر، ص ٢٠٢ ـ ٢٠٣.

55 (The Missionary Herald XXIX, No. 11; November 1843, PP. 435-37; British Documents on Foreign Affairs, Ottoman Empire, 1860-1881. P. 273.Telegram, No. 208 October 1, 1843).

56 Klein,"Power in the Periphery" Ibid, p. 111; Bruinessen. 184; PRO.FO.٧٨ /653, Brant to Aberdeen, January 8,١٨٤٦ ; Klein, "Power in the Periphery," p.114.

57 Martin van Bruinessen, Agha, Shaikh and State: The Social and Political Structures of Kurdistan, Bloomsbury Academic, 1992, PP. 184-185.

58 BOA, İ.MSM,٤٩ / 1238-10,١٢٦٢ (1846); FO.١٩٠ /15, Feb 2, 1846. Letter given to Ottoman Government through Drogaman

59 BOA, İ.MSM, 49/1238-9, 1261 (1846) Fransa Sefareti'ne, Fransa'nın Musul konsolosu tarafından yazılan yazının tercümesi

٦٠ وديع جويدة، نفس المصدر، ص١٩٩-٢٠٠.

61 Shek Waheed, The Kurd And Their Country Lahore, 1958, P. 144.

62 BOA, İ.MSM, 49/1238-4, 13 L.1262 (4 Ekim 1846) Musul Valisi Tayyar Paşa'nın Bedirhan, ; FO., 195/175, November 15th 1841.
BOA, İ.MSM 48/1225-13, 21 Za. 1257 (4 Ocak 1842) Musul Valisi Mehmet Paşa'nın Cizre'nin.
nahiyelerinin Musul Eyaleti'ne bağlanması gerektiği ile ilgili Sadarete yazdığı yazısı Bey'in bölgedeki insanları idaresindeki topraklara çektiğine dair yazısı

63 ١٧٦ PRO.FO 78/2714, Feb12, 1846 Erzurum to Constantinopole.

64 BOA, İ.MSM, 49/1254-5,16 S.1263 (3 Şubat 1847) Bedirhan Bey ile görüşmesine dair Nazım
Efendi'nin yazısı.

65 BOA.A.MKT 112/50, 1264.5.17/ 29 July 1848; BOA.A.MKT 168/63, 1265.2.16/May 28, 1849 and 222/20, 1265.10.16/November 28, 1849

66 ***Aykun***, ***İbrahim***. 1995. "Erzurum konferansı (1843–1847) ve Osmanlı-İran hudut antlaşması." PhD diss., Atatürk Univ. Ayn Ali. 1280/1863–64. Kavânîn-î âl-i Osman der hulâsa-i mezâmîn-i defter-i dîvân. Istanbul: Tasvir-i Efkar Gazetesi.

67 Ateş, Ibid, p.٨٨.

68 BOA.HH 448/22316, 1254–1838.; PRO.FO 78/653, 8 January 1846, Brant to Aberdeen.

69 Sabri Ates, Ibid, p.168.

70 BOA, HR.MKT,106, Lef: 5.

71 Records of the Kurds: Territory, Revolt and Nationalism Vol 1- 1831-1855-: No.15-Mosel: 26 June 1847. Letter from G.A .Rasam to Henrey weallsly the ambassador.

72 Records of the Kurds: Territory, Revolt and Nationalism Vol 1- 1831-1855-: No.15-Mosel: March 22, 1847. Letter from G.A .Rasam to Henrey weallsly the ambassador

73 Records of the Kurds: Territory, Revolt and Nationalism Vol 1- 1831-1855-: No.15-Mosel: April ١٧, 1847. Letter from G.A .Rasam to Henrey Wellesley the ambassador.

74 Records of the Kurds: Territory, Revolt and Nationalism Vol 1- 1831-1855-: No.15-Mosel: Julay ٨, 1847. Letter from G.A .Rasam to Henrey Wellesley the ambassador

[75] FO 78/654, Brant to Palmerston, June 8, 11, 1847

[76] Records of the Kurds: Territory, Revolt and Nationalism Vol 1- 1831-1855-: No.٢٣- Mosel: May 16, 1847. Letter from G.A .Rasam.

[77] Layard, P.179.

**پۆختە:**

ئێمە پێمان وایە کە شکستی فیدراسیۆنی کوردی بە سەرۆکایەتیی بەدرخان لەبەردەم سوپای عوسمانی لە ساڵی ١٨٤٧ تا ڕادەیەکی بەرچاو بەهۆی سروشتی سیستەمی نێودەوڵەتی بوو لەو قۆناغەدا کە بە سیستەمی هاوسەنگی هێز بەڕێوەدەبرا. ئەم سیستەمە لە دوای کۆنفرانسی ڤیەنالە ساڵی ١٨١٤ لە نێوان زلهێزە گەورەکانی ئەوروپا کە شکستیان بە فەرەنسا هێنا، دامەزرا. زلهێزەکان پەیوەندییان لەگەڵ زلهێزە ناوچەییەکان (عوسمانی و قاجار) هەبوو، ئاماژەیان بەوەدا کە بەرژەوەندی زلهێزەکان، بەتایبەتی بەریتانیا و فەرەنسا، پێویستی بە پاراستنی قەوارەی ئیمپراتۆریەتی عوسمانی هەیە بۆ ئەوەی ببێتە قەڵایەکی نەبڕاوە لە دژی ڕووسی ئاواتەکان و هەوڵەکانی بۆ گەیشتن بە ناوچەی کەنداو و گەرووە ستراتیژییەکانی ئەستەنبوڵ یان ئاوە گەرمەکان. بەم پێیە زلهێزەکانی ئەوروپا هاوکاری دەوڵەتی عوسمانییان دەکرد بۆ نەهێشتنی هەر یاخیبوونێکی ناوخۆیی کە مەترسی لەسەر سەقامگیری دەوڵەتی عوسمانی دروستکردبێت و ئەمەش لە ساڵی ١٨٣٩دا ڕوویدا کاتێک هێزەکانی محمد عەلی پاشا هەڕەشەیان لە ئیمپراتۆریەتی عوسمانی کرد. ئە م تێگە یشتنە لە پە یوە ندییە زلهێزە کان لە گە ڵ ئیمپراتۆریە تی عوسمانیدا دە بێتە ئە و کۆنتێکستە یە کە لێوە بە ڕدە وام دە کە ین بۆ ڕوونکردنە وە و شیکاری پێگە ی هێزە لۆکاڵی و نێودە وڵە تییە کان لە سە ڕ بزووتنە وە ی میر بهدرخان.

توێژینەوەکە گرنگە و گرنگی هەبوو بۆ شازادە بەدراخان کە بە شێوەیەکی گونجاو لەم ڕەهەندە نێودەوڵەتییە تێنەگەیشت. هە روە ها بۆ سە ڕکردە کانی بزووتنە وە ی هاوچە ڕخی کوردی ئە مڕۆ بایە خی هە یە کە لە هاوسە نگی هێز و بە ڕژە وە ندییە کانی وڵاتانی گە ورە کانی ڕۆژهە ڵاتی ناوە ڕاست و کوردستان تێبگە ن.

ئەو میتۆدۆلۆژیایەی کە لەم لێکۆڵینەوەیەدا بەکارهاتووە، ڕێبازی شیکاری ڕەخنەیی دەقەکانە، کە پەیڕەوی لە چوارچێوەی کرۆنۆلۆژی ڕووداوەکان دەکات.

لەم لێکۆڵینەوە مێژووییە-سیاسییەدا پشت بە میتۆدی پشت بەستن بە بەڵگەنامەی ئەو هێزە پەیوەندیدارانەی ململانێکان دەبەستین و بە دۆزینەوەی توێژەرانی دیکە دەوڵەمەندیان دەکەین.

پێکهاتەی توێژینەوەکە لە چەند بابەتێک پێکهاتووە. تەوەری یەکەم باس لە تایبەتمەندییەکی هاوسەنگی هێز و تێڕوانینێکی گشتی لە میرنشینی بوتان پێش بزووتنەوەکە دەکات. تەوەری دووەم باس لە پێشهاتەکانی بزووتنەوەی بەدرەخان و هەڵوێستی دەوڵەتانی عوسمانی و قاجار بەرامبەر بەو بزووتنەوەیە دەکات. سەبارەت بە تەوەری سێیەمیش ڕوونکردنەوە و شیکردنەوەی هەڵوێستی وڵاتە گەورەکانە لەسەر بزووتنەوەی شازادە بەدرخان پاشا.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ لێکۆڵینەوەی کوردی

**Abstract:**

We maintain that the defeat of The Badrkhan- led Kurdish federation before the Ottoman army in 1847 was due to a significant degree to the nature international system in that period which was governed by the balance of power system. This system was established after the Vienna Conference of 1814 between the major European powers that defeated France. The major powers had relations with the regional powers (Ottoman and Qajar), noting that the interests of the major powers, especially Britain and France, were It requires preserving the entity of the Ottoman Empire in order for it to be an impenetrable bulwark against Russian ambitions and its endeavors to reach the Gulf region and the strategic straits in Istanbul or the warm waters. Accordingly, the European powers were helping the Ottoman Empire to eliminate any internal rebellion that threatened the stability of the Ottoman Empire, and this is what happened in 1839 when the forces of Muhammad Ali Pasha threatened the Ottoman Empire. This understanding of the relations of the major powers with the Ottoman Empire will be the context from which we proceed to explain and analyze the position of the local and international forces on the movement of Mir Badrkhan.

The study is important and had significance for Prince Badrakhan who did not adequately understand this international dimension. It also has importance for the leaders of the contemporary Kurdish movement today to understand the balance of power and interests of the major countries in the Middle East and Kurdistan.

The methodology used in this study is the critical analytical approach of the texts, following the chronological context of the events.

In this historical-political study, we rely on the method of relying on the documents of the forces concerned with the conflict, and we enrich them with the findings of other researchers.

The structure of the study consists of several topics. The first topic deals with a feature of the balance of power and an overview of the Emirate of Bhutan before the movement. The second topic deals with the developments of the Badrakhan movement and the position of the Ottoman and Qajar states towards it. As for the third topic, it is an explanation and analysis of the positions of the major countries on the movement of Prince Badrkhan Pasha.

The International Dimensions of Badrkhan Movement 1842-1847

We maintain that the defeat of The Badrkhan- led Kurdish federation before the Ottoman army in 1847 was due to a significant degree to the nature international system in that period which was governed by the balance of

power system. This system was established after the Vienna Conference of 1814 between the major European powers that defeated France. The major powers had relations with the regional powers (Ottoman and Qajar), noting that the interests of the major powers, especially Britain and France, were It requires preserving the entity of the Ottoman Empire in order for it to be an impenetrable bulwark against Russian ambitions and its endeavors to reach the Gulf region and the strategic straits in Istanbul or the warm waters. Accordingly, the European powers were helping the Ottoman Empire to eliminate any internal rebellion that threatened the stability of the Ottoman Empire, and this is what happened in 1839 when the forces of Muhammad Ali Pasha threatened the Ottoman Empire. This understanding of the relations of the major powers with the Ottoman Empire will be the context from which we proceed to explain and analyze the position of the local and international forces on the movement of Mir Badrkhan.

The study is important and had significance for Prince Badrakhan, who did not adequately understand this international dimension. It also has importance for the leaders of the contemporary Kurdish movement today to understand the balance of power and interests of the major countries in the Middle East and Kurdistan.

The methodology used in this study is the critical analytical approach of the texts, following the chronological context of the events.

In this historical-political study, we rely on the method of relying on the documents of the forces concerned with the conflict, and we enrich them with the findings of other researchers.

The structure of the study consists of several topics. The first topic deals with a feature of the balance of power and an overview of the Emirate of Bhutan before the movement. The second topic deals with the developments of the Badrakhan movement and the position of the Ottoman and Qajar states towards it. As for the third topic, it is an explanation and analysis of the positions of the major countries on the movement of Prince Badrkhan Pasha.

**Kewwords**: *Badirhan, Nestorians , Kurd , Britain , Ottoman*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

# واقع كردستان في ظل المعاهدات الإيرانية-العثمانية (١٥١٤ - ١٨٤٧) م

**ب. د. محمد الطاهر بنادي**

قسم العلوم الإنسانية-كلية العلوم الإنسانية و الاجتماعية -جامعة بسكرة / الجمهورية الجزائرية

**الملخص:**

مثلت معركة جالديران التي نشبت بين الدولتين الصفوية والعثمانية سنة ١٥١٤م، فاتحة حقبة تاريخية طويلة من الصراع بينهما، والتي امتدت لأكثر من ثلاثة قرون، كانت من خلالها بلاد كردستان محورا له، كونها تشكل حاجزا طبيعيا يفصل بين القوتين. إن الصراع تطور أكثر بسبب طموحات الدولة الصفوية الجديدة، التي كانت تهدف إلى بسط نفوذها خارج حدودها الإقليمية على حساب كردستان. لقد دفع هذا الصراع بالدولتين إلى حل خلافاتهما عن طريق المفاوضات والحوار، بعد استنزافه لقدراتهما على مدى قرون، مع تغير موازين القوى لصالح دول أخرى، خاصة بريطانيا وروسيا، وقد جاء هذا التحول في علاقتهما البينية عبر مسارات عديدة، ترجمتها جملة معاهدات واتفاقيات وقعها الطرفان منها: معاهدة أماسيا ١٥٥٥ م – معاهدة فرهاد باشا (القسطنطينية) ١٥٩٠ م – معاهدة نصوح باشا ١٦١٢ م – معاهدة سراو ١٦١٨ م – معاهدة زهاب (قصر شيرين) ١٦٣٩ م – معاهدة أرضروم الأولى ١٨٢٣ م ومعاهدة أرضروم الثانية ١٨٤٧ م، حيث أثرت بشكل أو بآخر على كردستان جغرافيًا، سياسيًا، اقتصاديًا واجتماعيًا، وهذا بعد أن تمت تجزئتها بينهما إلى مناطق نفوذ. سنحاول دراسة هذا الموضوع ذو الصبغة التاريخية السياسية وفق إشكالية رئيسة، من خلال موقع كردستان في المعاهدات الإيرانية – العثمانية، وأثر ذلك على بنائها الجغرافي، السياسي، الاقتصادي والاجتماعي، انطلاقا من هذه الإشكالية، سنعتمد في دراستنا على المنهج التاريخي بأداتيه الوصفية والتحليلية، مركزين على تحليل مضمون المعاهدات. سنعالج موضوع البحث وفق العناصر التالية: ١- الصراع الإيراني – العثماني بعد عام ١٥١٤ م وتجدده في عهد طهماسب الأول (١٥٢٤ م – 1576 م). ٢- المعاهدات الإيرانية – العثمانية (١٥٥٥ م – ١٨٤٧ م). ٣-أثر المعاهدات على البناء الجغرافي، السياسي، الاقتصادي والاجتماعي لكردستان.

***الكلمات المفتاحية:*** *الصفويون، العثمانيون، كردستان، المعاهدات، العصر الحديث.*

**المحور الأول: التاريخ السياسي للدول والإمارات الكردية - الإمارات الكردية في المعاهدات العثمانية-الإيرانية**

**مقدمة:**

مثل الكرد أحد المكونات الأساسية لشعوب منطقة المشرق، بما كان لهم من دور في بناء دوله وحضاراته وصناعة أحداثه، ومع حلول القرن السادس عشر الميلادي، أصبحت كردستان محط أنظار الإيرانيين والعثمانيين، لغرض السيطرة عليها واستغلال ثرواتها حتى أصبح مصيرها مرتبطا بالتطورات الداخلية والخارجية لكلا الدولتين، لقد مثلت معركة جالديران التي نشبت بينهما سنة ١٥١٤م، فاتحة حقبة تاريخية طويلة من الصراع، والتي امتدت لأكثر من ثلاثة قرون تخللتها فترات سلام، كانت من خلالها بلاد كردستان محورا له، كونها تشكل حاجزا طبيعيا يفصل بين القوتين. إن هذا الصراع تطور أكثر بعد طموحات الدولة الصفوية الجديدة، التي كانت تهدف إلى بسط نفوذها خارج حدودها الإقليمية على حساب كردستان

ولوضع حد لهذه المواجهة بين الدولتين، رأتا ضرورة حل خلافاتهما عن طريق المفاوضات والحوار، بسبب استنزافها لقدراتهما على مدى قرون، مع تغير في موازين القوى لصالح دول أخرى، خاصة بريطانيا وروسيا، وقد جاء هذا التحول في علاقتهما البينية عبر مسارات عديدة، ترجمتها جملة معاهدات واتفاقيات وقعها الطرفان منها: معاهدة أماسيا عام ١٥٥٥م – معاهدة فرهادباشا (القسطنطينية) عام ١٥٩٠م – معاهدة نصوح باشا عام ١٦١٢م – معاهدة سراو عام ١٦١٨م – معاهدة زهاب (قصر شيرين) عام ١٦٣٩م – معاهدة أرضروم الأولى عام ١٨٢٣م ومعاهدة أرضروم الثانية عام ١٨٤٧م، التي أثرت بشكل او بآخر على كردستان جغرافيا، سياسيا، اقتصاديا، واجتماعيا، وهذا بعد أن تمت تجزئتها بينهما إلى مناطق نفوذ، حيث أصبحت جغرافيتها تخضع لحالات التمدد والانحسار لكل منهما.

سنحاول دراسة هذا الموضوع ذو الصبغة التاريخية السياسية وفق إشكالية رئيسة، من خلال موقع كردستان في المعاهدات الإيرانية – العثمانية، وأثر ذلك على بنائها الجغرافي، السياسي، الاقتصادي والاجتماعي.

انطلاقا من هذه الإشكالية سنعتمد في دراستنا على المنهج التاريخي بأداتيه الوصفية والتحليلية، مركزين على تحليل مضمون المعاهدات.

وقد اقتضت خطة هذه الورقة البحثية تقسيمها إلى العناصر التالية:

مقدمة وثلاثة عناصر، حيث تناولنا في العنصر الأول مراحل الصراع الإيراني – العثماني ومجرياته، بداية من معركة جالديران عام ١٥١٤م، حتى عهد الشاه طهماسب الأول (١٥٢٤م-١٥٧٦م)، في حين عالجنا في العنصر الثاني سلسلة المعاهدات الإيرانية-العثمانية منذ عام ١٥٥٥م إلى

غاية عام ١٨٤٧م ، بينما تعرضنا في العنصر الثالث إلى انعكاسات وآثار هذا الصراع على البناء الجغرافي ، السياسي ، الاقتصادي ، والاجتماعي لكردستان ، وختمناها باستنتاج تضمن أهم ما توصلنا إليه من نتائج بعد هذه الدراسة.

نظرا لتأثير الكرد في المنطقة الذي يفوق تأثير باقي المكونات الأخرى ، تعاملت معهم الدولتان بقسوة وشدة ، من منطلق المحافظة على أمنهما القومي ، بانتهاجهما لاستراتيجيات متعددة قصد إخضاعهم، منها محاولة طمس الهوية الكردية ومجابهة أية خطوة في اتجاه تشكيل سلطة تقف في وجههما ، وهذا ما حفزنا للخوض في هذا الموضوع.

لقد اعتمدنا على جملة مصادر ومراجع لتوثيق الموضوع من اهمها كتاب : كوردستان والإمبراطورية العثمانية لهروتي سعدي عثمان ، الذي أفادنا في معرفة المراحل الأولى للصراع الصفوي-العثماني وتطوراته .

كتاب: تاريخ الدولة الصفوية في إيران ١٥٠١-١٧٣٦م لطقوش محمد سهيل ، حيث أعطانا إضاءات حول تطور النظام السياسي الصفوي في هذه الفترة وأهم جولات الصراع مع العثمانيين .

كتاب: العلاقات الدولية ومعاهدات الحدود بين العراق وإيران لـ: الضابط شاكر صابر، سلط فيه الضوء على التسويات بين الجانبين ومخرجات المعاهدات الإيرانية-العثمانية، كتاب: تاريخ العلاقات العثمانية- الإيرانية الحرب والسلام بين العثمانيين والصفويين لصباغ عباس إسماعيل ، تطرق فيه لأهم محطات الصراع وأثره على بنية كردستان، كتاب:العلاقات العثمانية-الإيرانية للنجار جميل موسى، تضمن المعاهدات الموقعة بين الدولتين.

كتاب: The ottomam-Iranian Border lands making a boundary 1834-1914 لـ Sabri Ates: والذي تناول فيه بالتحليل المعاهدات التي أبرمت بين الجانبين الإيراني والعثماني ونتائجها على كردستان.

**١- الصراع الإيراني-العثماني بعد ١٥١٤م وتجدده في عهد طهماسب الأول (١٥٢٤-١٥٧٦م):**

**١-١- الصراع الإيراني-العثماني بعد ١٥١٤م:**

اختلفت الروايات التاريخية حول أصول الكرد، فالكثير من المصادر التاريخية ترجع أصلهم إلى أسلافهم الميديين الذين ينتسبون إلى القبائل الهندو-أوروبية، والتي حلت بالمنطقة بعد موجات هجرات ونزوح كبيرين شهدتهما مناطق بحر قزوين، وبعد زوال الدولة الآشورية سنة ٦١٢ ق.م (مرعي، ٢٠٠٦، ص.٢٥)، أقاموا إمبراطوريتهم فيما بين ٦١٤ و٥٥٠ ق.م، و مع حلول سنة ٥٢١/٦٤٢م اعتنق غالبيتهم الإسلام، حيث أدوا في ظل الدولة الإسلامية دورا سياسيا معتبرا محافظين بذلك على خصوصيتهم القومية واللغوية(اسكندر، ٢٠٠٧، ص.٢٣).

احتوت كردستان في فترة العصور الوسطى على أكثر من ٤٦ إمارة مستقلة من أبرزها: بتليس، سوران، كيليس، ديار بكر، شهرزور، لور، عمادي، شتقان، سليماني، الإمارة الشمدينانية والإمارة الزندية(حصاف، ٢٠٠٩، ص ص. ٤٩- ٥٠)، وقد اهتمت هذه الإمارات بشؤونها الداخلية، غير أنه ومع إرهاصات القرن السادس عشر الميلادي، بدأت تظهر أهميتها الجيوسياسية، بوصفها تمثل حاجزا استراتيجيا بين الدول الواقعة شرقها وغربها، خاصة بعد نشوب الصراع بين الدولتين الصفوية والعثمانية، هذه الأخيرة كانت تخطط للتوسع في مناطق الشرق الأوسط الآسيوية(اسكندر، ٢٠٠٧، ص.٢٣). مثلت جغرافية كردستان جسرا يجمع بين كل مكونات شعوب المنطقة على اختلاف قومياتها ولغاتها، بفعل امتدادها الجغرافي الشاسع، فهي تقع في شمال غرب إيران، شمال كل من سوريا والعراق، جنوب شرق تركيا وما تبقى منها في أذربيجان وأرمينيا(Center for applied linguistics ,1981, p.5).

نجح الشاه إسماعيل الصفوي الذي حكم من (١٥٠١-١٥٢٤م) في إخضاع تبريز، بعد أن شكل دولته الجديدة عام ١٥٠١م متخذا منها عاصمة له، بعدها أخذ في ضم مناطق عديدة من كردستان والتي تميز حكمه لها بالقوة والشدة، وقد مثلت هذه الخطوة بداية الصراع الذي احتدم بين الصفويين والعثمانيين (كاميران، ٢٠٠٦، ص. ١٦٥) بعد أن اعتلى السلطان سليم الأول عرش الدولة العثمانية.

شملت توسعات الشاه إسماعيل الصفوي المناطق الشرقية والجنوبية المجاورة لدولته، والتي اعتقد سليم الأول على أن الشاه من خلال هذه التوسعات يريد السيطرة على المواقع الاستراتيجية، لذا أراد أن يقطع عليه الطريق ، خاصة بعد أن استقر له أمر الحكم،وموازاة مع ذلك مواصلة العمل على استقرار الجبهة الغربية مع أوروبا، لذا عقد معاهدات سلام مع البندقية، المجر وروسيا، مؤسسا بذلك لعلاقات سلام مع هذه الدول(طقوش، ٢٠٠٩، ص. ٧٥). إن الغرض من ذلك هو تحويل قواته نحو الشرق، وبالتالي الحد من التوسعات الصفوية الرامية إلى بسط السيطرة على المواقع الاستراتيجية المهمة ضمن المجال الجغرافي الممتد من أرمينيا حتى كردستان وانتهاء بالأناضول الشرقية ومعها العراق(هروتى، ٢٠٠٨، ص. ٣٦).

أمر السلطان سليم الأول بعقد اجتماع طارئ للديوان السلطاني في مدينة أدرنة في ٢٦ مارس ١٥١٤م، حضره قادة الجيش، رجال الدين والعلماء، أعلن فيه بداية الحرب على الصفويين(العوفي، ٢٠٠٨، ص.١٣٣)، وبذلك بدأ زحفه نحو الشرق في ٢٤ أفريل ١٥١٤م، حيث التقى الجيشان في سهل جالديران في شمال شرق بحيرة وان في ٢٣ أوت من السنة نفسها، وبعد مواجهات عنيفة بين الجانبين رجحت كفة العثمانيين على حساب الصفويين، بعد الانتصار الذي حققته قواتهم، حيث خسر الشاه إسماعيل أعدادا كبيرة من جنوده وقياداته، وبذلك تمكن العثمانيون


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

بعد هذه المعركة من ضم أجزاء كبيرة من كردستان إلى مناطق نفوذهم، مع سيطرتهم على الممرات الاستراتيجية المؤدية من الأناضول حتى القوقاز، سوريا وإيران(نايف، ٢٠٠٩، ص. ٣٢).

تمخضت عن معركة جالديران نتائج عديدة من أهمها:

- إخضاع العثمانيين لمنطقة الأناضول بالكامل، عدا الجزء الواقع تحت سلطة المماليك.

- التحاق بعض الأمراء الكرد الذين كانوا موالين للصفويين بالدولة العثمانية، بعد أن أبدوا لها الولاء.

- رغم هزيمة الصفويين في هذه المعركة إلا أن هذه الهزيمة لم تضعف دولتهم، حيث فشل العثمانيون في القضاء عليها.

- توقف الانكشاريين عن مهمة مطاردة بقايا الصفويين، بسبب نقص المؤونة وشدة البرد في فصل الشتاء (طقوش، ٢٠٠٩، ص. ٨١).

مثلت هذه المعركة نقطة تحول كبرى للشرق الأوسط بوجه عام وكردستان بشكل خاص، فكانت من بين نتائجها تقسيم بلاد الكرد بشكل عملي بيد الدولتين، حازت بموجبه الدولة العثمانية على الجزء الأكبر منها، في حين انضوى ما تبقى منها تحت سلطة الصفويين، حتى أن البعض ذهب إلى القول بأن هذه المعركة كانت نذير شؤم على الكرد(هروتى، ٢٠٠٨، ص. ٤٣).

بعد معركة جالديران خاض الكرد انتفاضة ضد الصفويين، لأجل وضع حد لوجودهم في مناطقهم ، وقد شجعهم في ذلك السلطان سليم الأول، وفعلا استرجعوا بعضا منها في حين بقي البعض الآخر تحت نفوذ الصفويين. إن أهم ما ميز هذا الصراع على كردستان هو محاولة الدولة العثمانية استمالة الكرد لصفها مع منحهم استقلالهم الذاتي ومساعدة الإمارات الكردية ماديا وعسكريا مقابل ولائهم لها، عكس الصفويين الذين كانوا يريدون حكم كردستان حكما مباشرا (الدعوي، ٢٠٠٨، ص. ١٤٤)، كما أن العثمانيين سمحوا للأسر الكردية الكبيرة بالحفاظ على سلطاتها مقابل طاعتها لهم، ولعل مرد ذلك يعود إلى وعورة تضاريسها وطبيعة مناخها، وهو ما يجعلها عصية على مراقبتها بشكل مباشر، لذا كان ولاء الإمارات الكردية للدولتين اسميا فقط (اسكندر، ٢٠٠٧، ص. ٢٤)، كما أن شراسة الكرد القتالية دفعتهما إلى مهادنتهم من أجل الاستعانة بهم في الصراع الدائر بينهما.

قام الملا إدريس البدليسي باعتباره ممثلا للسلطان العثماني بالتفاوض مع أمراء الكرد، وكان مضمونه هو اعتراف الدولة العثمانية بسيادة تلك الإمارات على كردستان مقابل خضوعهم، وفعلا نجح في الحصول على ولاء ٢٣ أميرا كرديا ليضم مناطقهم إلى جغرافية الدولة العثمانية. وكتتويج لهذه المساعي عقد معهم السلطان سليم الأول اتفاقية صداقة وتحالف عام ١٥١٥م، تضمنت التالي:

- تحتفظ كامل الإمارات الكردية الموقعة على المعاهدة باستقلالها التام.
- تستمر وراثة الإمارة من الأب إلى الابن، أو يتم تنظيم ذلك استنادا إلى أعراف القبيلة، ويعترف السلطان بالوريث الشرعي بفرمان خاص.
- يساهم الكرد بتقديم الهدايا للسلطنة بشكل مصاريف فعلية.
- مشاركتها إلى جانب الجيش العثماني في معاركهالخارجية.
- أن يذكر السلطان العثماني وأن يكون الدعاء له على المنابر في خطبة الجمعة، في مقابل اعتراف الدولة العثمانية بسلطات الإمارات الكردية(العلياوي، ٢٠٠٦، ص. ٣٤).

وهذا ما أورده الملا إدريس البدليسي بالقول: «... أن السلطان سليم الأول... أمرني لدى عودتنا من فتح تبريز، بأن أسعى لدى جميع الأمراء الكرد، المنبثين في كردستان: ابتداء من بلاد " أرمية " و" أشنة " و" دياربكر" حتى " ملطية " لإدخالهم في الطاعة، قاطعا لهم العهود والمواثيق الإسلامية بالعمل على تأليف ملوك وأمراء كردستان وانضوائهم تحت اللواء العثماني...»(زكي بك، ٢٠٠٥، ص. ٦٥).

نستشف من خلال مضمون هذه المعاهدة بأن الدولة العثمانية تقر بالعصبيات القبلية وشيوخ العشائر، وأن هذه المعاهدة تولد عنها تحالف استراتيجي بينها وبين الكرد، وذلك في حالة نشوب أي نزاع مع أي طرف، مقابل ضمان استقلالهم الداخلي، كما استفادت بعد هذه الاتفاقية من موارد كبيرة لخزينتها، وأنها ضمنت كذلك حماية حدودها الشرقية بوضعها للإمارات الكردية بمثابة جدار يجنبها أي هجوم صفوي.

إن سوء معاملة الشاه إسماعيل للكرد دفع بهم إلى الثورة عليه، كما أن جهود الملا إدريس البدليسي كانت ظاهرة في هذه الثورة، حيث أقنع أمراؤهم وشيوخ العشائر وحكام المقاطعات بالانقلاب على الصفويين، لذا قامت مختلف المناطق الكردية بالثورة ضدهم مثل: ديار بكر، بدليس، أرزن، ميا فارقين، كركوك وأردبيل(الدهشان، ٢٠٠٩، ص. ٩). من جهته اغتنم الشاه إسماعيل فرصة انسحاب سليم الأول من تبريز، لتقوية الدولة الصفوية داخليا، وهذا بعد أن أعاد تجميع قواته من جديد بعد الخسارة في معركة جالديران، وبعد أن أحس بأن قوته العسكرية بدأت تتعافى، لذلك عاد إلى عاصمته تبريز مجددا، حيث قام بحملات مضادة ضد مراكز الجيش العثماني وعلى محوري أذربيجان، تبريز، كردستان وبلاد الجزيرة، ونجح في استعادة عدة قلاع ومواقع(العوفي، ٢٠٠٨، ص. ١٤٥).

إن حملاته دفعت بالكرد إلى مواجهتها مستنجدين بالسلطان سليم الأول، الذي كان متواجدا في أماسيا، حيث أمدهم بقوة عسكرية لدعم الملا إدريس البدليسي، وبعد مواجهات تمكنت هذه القوة من إلحاق الهزيمة بالصفويين في شهر مارس ١٥١٦م، إن هذا الانتصار مثل نقلة نوعية في



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

تاريخ العلاقات العثمانية-الإيرانية، كونه جاء مكملا لانتصارهم في معركة جالديران، كما استطاع العثمانيون ضم أراضي جديدة بعد انتزاعها من الصفويين.

في ظل هذه التطورات عمل الكرد على تأمين استقلالهم الذاتي وبسط سلطاتهم المحلية، بعد الاتفاق الكردي- العثماني، فقد عمل الملا إدريس البدليسي على إبعاد المراقبة العثمانية المباشرة للأقاليم الكردية، وبذلك ضمنوا استقلالهم الذاتي رغم قبولهم بالسيادة العثمانية على أراضيهم، في مقابل ذلك كانت الدولة العثمانية تستفيد من مساعداتهم المالية والعسكرية (هروتى، ٢٠٠٨، ص. ١٣٧).

لم تف الدولة العثمانية بالوعود التي قطعتها للكرد، حيث عملت على تغيير الوضع القائم في كردستان، فبدأت بفرض سيادتها عليها تدريجيا وعلى مراحل من خلال سياساتها تجاههم، لكنهم دافعوا عن استقلالهم الذاتي رافضين سياسة الأمر الواقع، محافظين بذلك على كياناتهم السياسية وسلطاتهم المحلية لقرون عديدة(هروتي، ٢٠٠٨، ص. ١٣٧)، وتبعا لذلك فإن مواقفهم وردود فعلهم تجاه السياسة العثمانية أخذت شكلين هما:

١. **نظرتهم للعثمانيين:** فقد كانوا في بداية الأمر مرحبين بالوجود العثماني على أراضيهم، لأنهم رأوا فيهم المُخَلِصين لهم من قسوة وسوء معاملة الصفويين، وأنهم هم القوة المنقذة لهم من هذا الوضع، وأنهم على مذهب ديني واحد، وبالتالي فإن معظمهم كان موقفه ايجابيا تجاه العثمانيين، مع بداية تواجدهم بكردستان، لكن وبسبب التعسف في فرض الضرائب وكثرة المظالم، تغيرت نظرتهم تجاههم فأصبحوا يرون فيهم العدو الذي يريد أن يستغل أراضيهم ويستعبدهم.

٢. **الحركات الكردية المسلحة:** لقد ترجم الكرد حقدهم وعداءهم للعثمانيين في انتفاضات مسلحة مناهضة لوجودهم في بلادهم، بهدف الدفاع عن مصالحهم وأراضيهم وحقوقهم السياسية، وبالتالي العمل على تحقيق وحدتهم القومية كأمة متميزة (Peshawa, 2012, p.42؛هروتى، ٢٠٠٨، ص ص. ١٣٨- ١٤٠).

### ١-٢- تجدد الصراع في عهد طهماسب الأول (١٥٢٤-١٥٧٦م):

بعد وفاة الشاه إسماعيل عام ١٥٢٤م تولى ابنه الشاه طهماسب الأول الحكم، ولم يكن قد بلغ سن الحادية عشر من عمره، حيث حكم إيران لمدة ٥٤ سنة، مستهلا فترة حكمه بحروب داخلية ضد الاوزبك في الشرق وخارجية ضد العثمانيين في الغرب(العوفي، ٢٠٠٨، ص. ١١١)، بعد تدهور العلاقات معهم في ظل حكم السلطان سليمان القانوني، مستغلا ولاء بعض الولاة العثمانيين وانضمامهم إليه، خاصة بعد أن أعلن الملا إدريس البدليسي شقه لعصا الطاعة عن العثمانيين وخروجه من التبعية لهم وانضمامه للصفويين ، ما حدا بالسلطان سليمان القانوني إلى الإعلان عن قتاله، بعد أن أمر قائد جيشه الصدر الأعظم إبراهيم باشا بمهمة القضاء على تمرد البدليسي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

في كردستان، كما قاد بنفسه حملة نحو بغداد دامت لعامين وشهرين وثمانية عشر يوما سميت بـ: "حملة الْعِرَاقيْن"، تم فيها الاستيلاء على بغداد عام ١٥٣٤م حاضرة العراق العربي واصفهان حاضرة العراق الأعجمي،وفي الوقت ذاته احتل مدن تبريز و أذربيجان المهمتين، مما اضطر الشاه طهماسب الأول إلى الانسحاب داخل بلاده من أجل مواجهة المشاكل الداخلية (مشعل، ٢٠٠٨، ص. ١٥٢).

استطاع الشاه طهماسب الأول استعادة إقليم أذربيجان ثم تبريز في ٠٩ ديسمبر ١٥٣٤م، غير أن العثمانيين عاودوا استردادها، بعدها قفل السلطان سليمان القانوني راجعا إلى اسطنبول، لكن الشاه طهماسب الأول عاد من جديد واسترد تبريز بعد خروج العثمانيين منها مباشرة ضاما معها كل مناطق أذربيجان وصولا إلى مدينة وان(شوقي، ٢٠٠٥، ص. ٦٩).

إن التراجع العثماني والإصرار الصفوي دفعا بالسلطان سليمان القانوني إلى عدم التفكير مجددا في العودة لمقاتلتهم، لأن إعادة هذه المناطق سيكلف الجهد والمال، وأن الصفويين لا محالة سيسترجعونها من جديد، مكتفيا بسيطرته على بغداد وهمذان(العوفي، ٢٠٠٨، ص. ١٥٧).

دامت فترة الصراع الصفوي العثماني لأكثر من أربعين سنة، اختزلتها أربع حملات عثمانية على الصفويين الذين كانوا في كل حملة يجابهون العثمانيين، غير أنهم وفي آخر هذه المواجهات أصبحوا يبادرون بالهجوم على حدود العثمانيين الشرقية، وقد وقفت وراء الحملات العثمانية عليهم عوامل كثيرة صعبت من مهمتهم، منها مشكلة تنقل الجيش ونقل العتاد ووعورة التضاريس خاصة في موسم تساقط الثلوج، من جهتهم كان الصفويون يتحاشون المجابهة المباشرة معهم، وذلك بإخلائهم للمناطق التي يمر بها الجيش العثماني، وبالتالي العمل على إعاقة تقدمه، فضلا على أن الطرفان كانا منشغلان بحروبهما في جبهات أخرى(العوفي، ٢٠٠٨، ص. ١٦٥).

**٢-المعاهدات الإيرانية- العثمانية (١٥٥٥-١٨٤٧):**

**٢-١- معاهدة أماسيا ١٥٥٥/٠٥/٢٩م:**

أثناء تقدم قوات السلطان سليمان القانوني نحو مدينة أرضروم ثم بعدها أماسيا، وبعد أن تمكن الصفويون من أسر القائد العثماني سنان باشا في إحدى المعارك، عرض الصدر الأعظم محمد باشا على السلطان مسألة عقد صلح مع الشاه مقابل الإفراج عن سنان باشا، وقد وافق الشاه طهماسب الأول على هذا العرض، حيث أوفد مبعوثه شاه قورجي قاجار كبير موظفي الدولة وأحد زعماء قبيلة قاجار القزلباشية إلى مدينة أماسيا، أين كان يقيم السلطان سليمان القانوني للتباحث مع الصدر الأعظم محمد باشا والتمهيد للصلح (طقوش، ٢٠٠٩، ص. ١٠١). وفي٢٩/٠٥/ ١٥٥٥م وقعت معاهدة أماسيا التي كرست تقسيم كردستان باعتبارها معاهدة رسمية، تضمنت تعيين الحدود بين الدولتين خاصة في مناطق شهرزور، قارص وبايزيد (العلياوي، ٢٠٠٦، ص. ٣٤).

يمكن إدراج ما جاءفيها من خلال مايلي:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١. خضوع ولاية أذربيجان الشرقية، أرمينيا الشرقية وكرجستان الشرقية (جورجيا) للدولة الصفوية، في حين تخضع أرمينيا الغربية، كرجستان الغربية والعراق (الموصل، بغداد والبصرة) للعثمانيين، مع حياد منطقة قارص وأن تكون منزوعة السلاح.

٢. السماح لرعايا الدولة الصفوية بالاتجاه نحو مكة المكرمة وزيارة العتبات المقدسة في العراق مقابل الكف عن سب الصحابة على المنابر.

٣. تبقى منطقة شهرزور محل مفاوضات بين الجانبين.

٤. تعهد كلا الطرفين بعدم استقبال المعارضين لكلا الدولتين أو حتى أصحاب البيوت المالكة، وأن يلتزم الطرفان في حالة لجوؤهم إلى أحدهما بأن يسلم إلى حكومتي بلديهما(العوفي، ٢٠٠٨، ص ص. ١٦٧- ١٦٨).

تعتبر معاهدة أماسيا بداية مرحلة جديدة في العلاقات الدبلوماسية بين الجانبين، حيث سمحت من خلالها بحل أي نزاع يمكن أن يحدث، وبذلك اعتبرها المؤرخون أول معاهدة صلح بينهما، كونها استطاعت أن تضع حدا للصراع، بعد أن ساد الهدوء لمدة خمسة وعشرين سنة، لكن تخللته بعض الحوادث من بينها فرار الأمير بايزيد بن سليمان القانوني نحو إيران واستقباله بحفاوة في البلاط الإيراني، لكن هذا السلام كان هشا بسبب تذرع كل طرف بذرائع لتبرير موقفه من بينها:

١. النزاع بين عشائر الحدود وأمرائها خاصة في المناطق التي كانت تحكمها العشائر المحلية وتتمتع بشبه استقلال عن الدولتين، إضافة إلى أن أمرائها كانوا يخوضون صراعات فيما بينهم.

٢. الهجمات التي تقوم بها عشائر البدو على طرق القوافل سواء ما تعلق منها بقوافل التجارة أو الحج.

٣. هجرة القبائل المتمردة عبر الحدود(هريدي، ١٩٨٧، ص. ٦٦).

**٢-٢- معاهدة فرهاد باشا (القسطنطينية) ١٥٩٠/٠٥/٢١م:**

بعد وفاة الشاه طهماسب الأول عام 1576م، تداول على العرش الصفوي بعض أفراد أسرته، الذين كان أقواهم الشاه عباس الأول(الكبير) بن خدا بنده، وفي هذه الفترة عاشت إيران فوضى داخلية وعدم استقرار، لذا انتهز العثمانيون الفرصة من خلال قيام السلطان مراد الثالث بالتوغل داخل الأراضي الإيرانية عام ١٥٧٨م، مما أدى إلى عودة التوتر من جديد، فاستولى على (شيروان) تفليس، كوجستان وداغستان وكثير من المناطق وذلك لمدة عشرة سنين، غير أن الطرفان عقدا الصلح وأبرما معاهدة فرهاد باشا في ١٥٩٠/٠٥/٢١م، ومما جاء في بعض منها ما يلي:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

١. أن تكون كل من تبريز، شيروان، كرجستان، لورستان وشهرزور من نصيب الدولة العثمانية.

٢. التزام الإيرانيين بعدم القيام بالاستفزازات المذهبية (الضابط، ١٩٦٦، ص. ٢١).

وبذلك فإن العثمانيين احتفظوا بمعظم الأراضي التي كانوا قد احتلوها.

### ٢-٣- معاهدة نصوح باشا ١٦١٢/١١/٢٠م:

ا ستغل الإيراد يون فر صة اذ شغال العث مانيين بحروبهم ضد ا لدول الأوروبـ ية، فأ عادوا تجميع قواتهم بهدف استرجاع ما فقدوه من أراض، وفعلا تمكن الشاه عباس الأول من استرداد كل من تبر يز، أريوان وتخجوان عام ١٦٠٢م، موا صلا زحفه حتى حدود مدينة وان، غير أن العثمانيين ردوا بمها جمة الـقوات الـصفوية، لـكن هذه الأ خيرة نجـحت في و قف تـقدمهم، بـعدها ا قترح الـ شاه عباس الأول الصلح، الذي انتهى بتوقيع معاهدة نصوح باشا في ١٦١٢/١١/٢٠م، تضمنت ما يلي:

١. أن تترك للإيرانيين تبريز، وان وشيروان.

٢. أن يدفع الشاه إلى العثمانيين ٢٠٠ حمل حرير سنويا(الضابط، ١٩٦٦، ص. ٢٣).

إن هذه المعاهدة سمحت بعودة العلاقات إلى طبيعتها، بعد أن ا سترجعت من خلا لها إيران ما تبقى من أراضيها.

### ٢-٤- معاهدة سراو ١٦١٨/٠٩/٢٦م:

لم تدم فترة السلام بين ا لجانبين إذ سرعان ما انهار، لتندلع ا لحرب مجددا وا لتي دا مت لثلاث سنوات، بـ عد أن قرر العث مانيون الق يام بعـ مل عـ سكري بحـ جة أن الـ صفويين لم يو فو بالتزاماتهم المتمثلة في تأدية الشاه عباس ضريبة الحرير، التي تعهد بدفعها سنويا، تزامن ذلك مع اعتداءاته المتكررة على كرجستان، مما دفع بالجيش العثماني إلى مها جمة بعض ا لمدن الإيرانية وإطباق الحصار عليها، مما دفع بالإيرانيين إلى التعهد بدفع نصف ضريبة الحرير ا لتي التزموا بدفعها سنويا، إلا أن الأ جواء تعكرت من جد يد ووصلت حد المواجهة العسكرية ا لتي انتصر فيها الصفويون. ولفض الصراع عرضوا على العثمانيين عقد معا هدة يكون أسا سها ما ورد في المعا هدة السابقة(الضابط، ١٩٦٦، ص ص. ٢٦-٢٧)، والتي أنهت الحرب، حيث وقّعت في٢٦/٠٩/١٦١٨م تضمنت ما يلي:

١. الإبقاء على وضع الحدود قائما كما نصت عليه معاهدة أماسيا.

٢. الإبقاء على بعض بنود مواد معاهدة القسطنطينية كما هي عليه (النجار، ٢٠١٦، ص.١٩٣).

مثلت هذه المعا هدة تحولا لافتا في العلا قات بين الطرفين، كون المفاوضات جرت على الأرا ضي الإيرانية، وا لتي كا نت عادة ما تجرى عـ لى الأرا ضي العثمانية وتحد يدا في ا سطنبول،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

بعدها عم السلام لمدة خمس سنوات، سمحت بعودة الحياة الطبيعية لطرق التجارة، تخللها تبادل الرسائل بين عباس الأول وعثمان الثاني(طقوش، ٢٠٠٩، ص. ١٨٠).

**٢-٥- معاهدة زهاب (قصر شيرين) ١٦٣٩/٠٥/١٧م:**

لم تصمد معاهدة سراو كثيرا، إذ سرعان ما انهارت بسبب سياسات الشاه عباس الأول في إحكام الخناق الاقتصادي على الدولة العثمانية وبالتالي حرمانها من تحصيل للضرائب على تصدير الحرير الإيراني الذي يمر عبر أراضيها، واستيلائه على بغداد عنوة سنة ١٦٢٣م، مع ضم كل من كركوك والموصل التي تمكن السلطان العثماني مراد الرابع من استعادتها عام ١٦٣٨م (صباغ، ١٩٩٩، ص. ١٩٤).

أمام هذه التطورات دخل الطرفان وذلك بعد مساعي دبلوماسية حثيثة في مفاوضات دامت عاما كاملا أفضت إلى توقيع معاهدة زهاب (قصر شيرين) على الحدود العراقية الإيرانية في١٧ /١٦٣١/٠٥م نصت على ما يلي:

١. يخضع لحكم الدولة العثمانية كل من: بغداد، جسان، بدرة، مندلي، درنة والأراضي الواقعة بين درنتك وسرحيل، القرى الواقعة غربي قلعة زنجير إلى طريق شهرزور، قلعة قزلجة وتوابعها، جميع القلاع في أخسجة، قارص، وان، شهرزور، البصرة، كما خضعت قبيلتي ضياء الدين وهاروني الكرديتين للعثمانيين.

٢. يخضع للدولة الصفوية كل من القلاع الواقعة شرقي مندلي، درنتك، بيرة، زردويكه، زمردهاوا، الغابات الواقعة شرق قلعة زنجير ومهربان، قلعتي كاكورو ماكور الواقعتين في أعالي جبال وان و قلعة مغاذير الواقعة في منطقة قارص.

على العموم فإن بغداد، البصرة، الموصل وكردستان الغربية (شهرزور)، تخضع للدولة العثمانية في مقابل خضوع أذربيجان الشرقية وكرجستان للدولة الصفوية(صباغ، ١٩٩٩، ص. ١٩٥؛ هريدي، ص ص. ٧٥-٧٦).

يمكن القول، أن من بين نتائج هذه المعاهدة فتح صفحة جديدة في العلاقات بين الطرفين التي سادها الطابع الودي والاستقرار على طرفي الحدود، وهذا بسبب جنوحهما إلى السلم خاصة وأن الصفويين كانوا جد حريصين على حالة الاستقرار والسلام، كما بادلهم العثمانيون نفس التوجه.

اعتبرت هذه المعاهدة حجر الأساس في تثبيت الحدود بينهما، فهي ترسيخ لتقسيم كردستان، وميزتها أنها لم تكن معاهدة صلح فقط، بل زاد عليها الطرفان بأن أصبحت اتفاقا لترسيم الحدود كذلك (كاميران، ٢٠٠٦، ص.١٦٨)، بحيث كانت واضحة في رسمها، وذلك بشكل دقيق نسبيا مع مراعاة طبيعة التضاريس، غير آخذة بعين الاعتبار تمركز السكان الكرد، حتى أنها



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

قسمت قبائل كردية إلى قسمين، فقد ضمت جزءًا من عشيرة الجاف وهو: بيرة وزودي إلى إيران، في الوقت الذي وقعت فيه أسرتا ضياء الدين وهاروني تحت الحكم العثماني(طقوش، ٢٠٠٩، ص ص. ٢١٩ – ٢٢٠).

إن من بين مظاهر تحسن العلاقات إرسال الشاه عباس الثاني عام ١٦٥٦م هدايا للسلطان العثماني مع مبعوث يحمل رسالة يطلب من خلالها الحفاظ على الصلح الذي أبرم بين الطرفين. من جهته كان رد السلطان ايجابيا، حيث أرسل بدوره إلى الشاه هدايا، كما أرسل الإيرانيون عام ١٦٨٩م مبعوثا إلى اسطنبول لتهنئة السلطان سليمان الثاني بمناسبة توليه حكم السلطنة (عبد الله، ٢٠١٤، ص. ٣٠٧).

لم تدم حالة الهدوء والسلام طويلا، فمع حلول القرن الثامن عشر بدأت مؤشرات الغزو الأفغاني لإيران مع نهاية عام ١٧١٩م وإسقاطه للدولة الصفوية بشكل نهائي عام ١٧٢٢م، ولتعويض ما خسره العثمانيون من ممتلكات في أوروبا، قاموا بالتوسع على حساب إيران مستغلين فرصة احتلالها من قبل الأفغان، وفعلا اصدر السلطان العثماني أمرا إلى والي بغداد بقيادة حملة عليها، مكنته من احتلال مناطق عديدة منها، وهكذا بقيت المواجهات تتجدد في سنوات ١٧٢٦م- ١٧٢٧م و ١٧٣٣م (عبد الله، ٢٠١٤، ص. ٣٠٩).

**٢-٦- معاهدة أرضروم الأولى ١٨٢٣/٠٧/٢٨م:**

افتتحت الأسرة القاجارية عهدها بعد عام ١٧٩٥م، بتوسيع مجال مواجهتها للعثمانيين، حيث كانت في كل مرة ترى فيها بأن الدولة العثمانية تخوض حروبها ضد الأوروبيين أو الروس إلا وقامت بأعمال استفزازية أو عسكرية تجاهها، مثلما وقع عند الحدود الإيرانية – العثمانية وتدخلها في شؤون شمال العراق في متصرفيات كل من السليمانية، شهرزور، حرير، كوي وغيرها، كما قامت بمضايقة القوات العثمانية في قارص وبايزيد في الأناضول. إن الانتصارات المهمة التي أحرزها الإيرانيون جعلت الشاه زاده عباس ميرزا يعرض الصلح على والي أرضروم سنة ١٨٢٣ (النجار، ٢٠١٦، ص. ٣٨).

لتذليل الصعاب والبحث عن تهدئة بين الجانبين عقدت جلسات في أرضروم، جمعت

رؤوف باشا والمبعوث الإيراني ميرزا محمد علي اشتياني، توجت بتوقيع معاهدة أرضروم الأولى في ٢٨ /٠٧/ ١٨٢٣م(Sabri, 2013, p 54)، وتم التصديق عليها في طهران وإسطنبول في ٢٣ أوت من السنة نفسها. احتوت ديباجتها على ضرورة توحيد صفوف المسلمين للوقوف في وجه أعدائهم، مع التمسك بالجامعة الإسلامية وأن الحدود ستبقى كما هي عليه وأن تكون المحبة والصداقة أساس العلاقة بين الجانبين مع التزام الطرفين بإطلاق سراح الأسرى ومنع الأعمال العدائية(النجار، ٢٠١٦، ص.٤٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

تضمنت المعاهدة مقدمة ومواد وخاتمة وهذه المواد هي:

- المادة الأولى:

لا يجوز تدخل الدولة في الشؤون الداخلية للدولة الثانية ولا يجوز تدخل الدولة الإيرانية في شؤون الكرد في العراق كما لا يجوز لها التدخل في تعيين بغداد لمتصرفيات الكرد والمحلات الأخرى داخل الحدود، ولا يجوز للدولة الإيرانية الترحيب بالمتصرفين الكرد في أي حال من الأحوال. إن العشائر التي عبرت الحدود من جانب إلى آخر لأجل رعي حيواناتهم تجبى منهم الرسوم الاعتيادية وإذا ظهرت منهم حوادث مخلة بالأمن وباعثة على القلق، يتدخل كل من عباس ميرزا ووالي بغداد لحل النزاع وبحله يجب أن يزول الكدر والنفرة من الدولتين.

- المادة الثانية:

أن يراعى الحجاج والزوار الإيرانيون كما يراعى سائر المسلمين في البلاد العثمانية، ولا يجوز أخذ الرسوم غير الشرعية منهم، وأن يعامل التجار حسب الأصول الجمركية، ويقابل ذلك التجار العثمانيين في البلاد الإيرانية، وتطبق هذه كما هو مثبت في المعاهدات السابقة، وعلى أمراء الحج أن يلاحظوا هذه الأمور أثناء سفر الحجاج الإيرانيين على طريق الشام الشريف والأراضي المقدسة وعلى المسؤولين محافظتهم واحترام مقام الشخصيات البارزة من الإيرانيين الذين ينوون الحج أو الزيارة للعتبات المقدسة، وإذا دفع تاجر إيراني الرسوم الجمركية وهي نسبة ٠٤ % قروش مرة واحدة تعطي له الوثيقة الجمركية لإبرازها طوال الطريق لئلا تؤخذ منه الرسوم مرة أخرى وعلى أن يطبق ذلك على التجار العثمانيين في الدولة الإيرانية.

- المادة الثالثة:

تمنع عشائر (حيدرايلو) و(سبيلكى) من النهب والتخريب عبر الحدود في إيران طالما هم موجودون في الأراضي العثمانية، ويسمح لمن أراد السكنى في إيران عبور الحدود وإذا عبر الحدود لهذه الغاية لا يسمح له بالرجوع إلى البلاد مرة ثانية. وتمنع الحكومة الإيرانية تجاوزاتهم على الحدود العثمانية فيما إذا كانوا ساكنين في إيران.

- المادة الرابعة:

لا يجوز الترحيب بالفارين من دولة إلى أخرى كما نصت عليه القرارات والشروط المعقودة بين البلدين في السابق.

- المادة الخامسة:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

إعادة الأموال التجارية وغير التجارية التي حجزت في إسطنبول والولايات العثمانية الأخرى إلى أصحابها بموجب سجلات وبمعرفة سفير إيران وعند موت أصحابها تجرى على تلك الأموال الإجراءات الشرعية الإسلامية من تسليمها إلى أصحاب الورثة الشرعية، وعند عدم وجود الورثة ترجع إلى خزينة الدولة.

- المادة السادسة:

تحصل الأموال المتروكة للإيرانيين المتوفين من البلاد العثمانية وتسلم إلى أصحاب الورثة.

- المادة السابعة:

يحصل تبادل السفراء بين الدولتين في كل ثلاث سنوات.كما جاء في الخاتمة المطولة، صرف النظر عن المطالبة بتعويض الخسائر أو المصاريف الحربية وغيرها(الضابط، ١٩٦٦، ص ص. ٥٨-٦٠).

لقد غيرت المعاهدة لغة الخطاب بين الجانبين، وذلك بعد أن وضعت حدا لطبيعة الأزمة والصراع بينهما، فعلى سبيل المثال استطاعت إيران أن تحصل على ضمانات للحجاج الإيرانيين بضرورة حمايتهم من قبل السلطات العثمانية، وأن يعاملوا كبقية مسلمي البلدان الأخرى، وألا يطلب منهم دفع رسوم، وحتى زوار العتبات المقدسة والذين لا يحملون معهم بضائع يعفون من دفعها (Sabri, 2013, p.55).

إذا كانت معاهدة أرضروم الأولى لم تجد حلولا ناجعة لجميع نزاعات الحدود الإيرانية – العثمانية، إلا أنها على الأقل عملت على التقليل منها ومنع تفاقمها والحيلولة دون حدوث مواجهة(عبد الله، ٢٠٢٠، ص. ٢٩٣)، لكن ومع وصول محمد علي شاه قاجار إلى الحكم، بدأت مرحلة جديدة ميزتها عودة الخلافات الحدودية من جديد، وكانت كردستان دائما حلبة لهذا الصراع خاصة حول إمارة بابان بوجه خاص، مما أدى إلى حدوث الاحتكاك العسكري المستمر بين الجانبين ما نتج عنه تأجيج الخلافات أكثر (الزبيدي، (د.ت)، ص. ٤٨؛ كاميران، ٢٠٠٦، ص. ١٧٢)، الأمر الذي دفع بالدولة العثمانية إلى إيفاد ممثل عنها إلى إيران للاحتجاج على هذا السلوك.

٢-٧- معاهدة أرضروم الثانية ٣١ /١٨٤٧/٠٥ م:

جرى توقيع معاهدة أرضروم الأولى، في ظروف لم تكن تسمح بتسوية نقاط خلافية كبيرة، خاصة ما تعلق منها بالحدود بين الدولتين، كما أن إيران لم تتوان في التدخل مجددا في شؤون العراق، وبالضبط في شماله، رغم تعهدها بذلك (النجار، ٢٠١٦، ص. ٤٢)، فقد كانت تنتظر الفرصة المواتية للتدخل في أحواله بالخصوص في سنة ١٨٣٢ مستغلة صراع الدولة العثمانية مع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

اليونان وروسيا. وأمام هذه التدخلات الإيرانية المتكررة وبعد مضي عقدين من الزمن، اقتنع الطرفان بضرورة الجلوس إلى طاولة التفاوض من أجل صياغة معاهدة جديدة تساعد على حل المشاكل الجوهرية العالقة بينهما كمشكل الحدود وتبعية العشائر المتنقلة على أراضيهما، لأنهما في ظل هذه الظروف لم يكونا مستعدان ولا مهيآن للمواجهة أساسا، وهذا ما أعطى فرصة الوساطة الروسية البريطانية، بعد أن اتفقتا على التدخل لمنع اشتعال فتيل الحرب مجددا بين الجانبين (Sabri, 2013, pp. 63-64).

كان حرص الروس والبريطانيين على الوساطة نابعا من تأمينهما لمصالحهما في المنطقة، فالروس كانوا يتوخون من وراء ذلك ترسيخ حضورهم في إيران، وقطع الطريق أمام البريطانيين فيها، والتواجد في مياه البحر الأبيض المتوسط. وبعد قبول الطرفين الإيراني والعثماني بالوساطة، انطلقت مفاوضات عسيرة استغرقت أربع سنوات، شملت ثمانية عشر جلسة، كللت بتوقيع المعاهدة في ١٨٤٧/٠٥/٣١ م (الزبيدي، (د.ت)، ص. ٤٩)

إن الوساطة الروسية البريطانية والضمانات التي قدمت للطرفين تحت إشرافهما المباشر، شكلت مرجعية لحالة سلام دائم بين الدولتين، مع عزمهما على إيجاد حلول لمشاكل الحدود من خلال مسحها، تعيينها ووضع خرائط لها من قبل جهات دولية (النجار، ٢٠١٦، ص. ٤٥)، مع تمتع كل طرف بسيادته عليها، ورد فيها ما يلي:

- المادة الأولى:

تتنازل الدولتان الإسلاميتان عن كل ما للواحدة على الأخرى من ادعاءات مالية في الوقت

الحاضر، على شرط أنه ليس في هذا الترتيب ما له مساس بالأحكام الموضوعة لتسوية الادعاءات التي تبحث فيها المادة الرابعة.

- المادة الثانية:

تتعهد الحكومة الإيرانية بأن تترك للحكومة العثمانية جميع الأراضي المنخفضة – أي الأراضي الكائنة في القسم الغربي من منطقة زهاب– وتتعهد الحكومة العثمانية بأن تترك للحكومة الإيرانية القسم الشرقي – أي جميع الأراضي الجبلية – من المنطقة المذكورة بما في ذلك وادي كرند، وتتنازل الحكومة الإيرانية عن كل ما لها من ادعاءات في مدينة السليمانية ومنطقتها وتتعهد تعهدا رسميا بأن لا تتدخل في سيادة الحكومة العثمانية على تلك المنطقة أو تتجاوز عليها، وتعترف الحكومة العثمانية بصورة رسمية بسيادة الحكومة الإيرانية التامة على

مدينة المحمرة وميناءها وجزيرة خضر والمرسى والأراضي الواقعة على الضفة الشرقية – أي الضفة اليسرى – من شط العرب التي تحت تصرف عشائر معترف بأنها تابعة لإيران.

وفضلا عن ذلك فللمراكب الإيرانية حق الملاحة في شط العرب بملء الحرية وذلك من محل مصب شط العرب في البحر إلى نقطة اتصال حدود الفريقين.

- المادة الثالثة:

لما كان الفريقان المتعاقدان قد تنازلا بهذه المعاهدة على ادعاءاتهما الأخرى المختصة بالأراضي، فإنهما يتعهدان بأن يعينا حالا قوميسرين ومهندسين بمنزلة ممثلين عنهما من أجل تقرير الحدود بين الدولتين بصورة تنطبق على أحكام المادة المتقدمة.

- المادة الرابعة:

يوافق الفريقان على أن يعينا في الحال قوميسرين من الجانبين للحكم في كل قضية سببت ضررا لأحد الفريقين وتسويتها تسوية عادلة من القضايا التي وقعت منذ قبول الاقتراحات الودية التي وضعتها وقدمتها الدولتان الكبيرتان الوسيطتان في شهر جمادى الأول سنة ١٢٦١ هـ، وكذلك للحكم في جميع المسائل المتعلقة برسوم الرعي منذ السنة التي وضعت فيها بقايا في تلك الرسوم وتسويتها تسوية عادلة.

- المادة الخامسة:

تتعهد الحكومة العثمانية بأن يقيم الأمراء الإيرانيون الفارون في بورصة وبأن لا يسمح لهم بمغادرة ذلك المحل ولا بأن تكون لهم علاقات سرية بإيران، وكذلك تتعهد الدولتان الساميتان بتسليم جميع المهاجرين للآخر عملا بأحكام معاهدة أرضروم الأولى.

- المادة السادسة:

على التجار الإيرانيين أن يدفعوا الرسوم الجمركية على بضائعهم – عينا أو نقدا – حسب قيمة تلك البضائع الجارية الحالية وعلى المنوال المشروح في المادة المتعلقة بالمتاجرة في معاهدة أرضروم الأولى المنعقدة في السنة ١٢٣٨ هـ (١٨٢٣ م)، ولا يستوفى شيء إضافي ما علاوة على المقادير المعينة في تلك المعاهدة.

- المادة السابعة:

تتعهد الحكومة العثمانية بمنح الامتيازات المقتضية لتمكين الزوار الإيرانيين وفق المعاهدات السابقة من زيارة الأماكن المقدسة في الأراضي العثمانية بسلامة تامة ومن غير التعرض لمعاملات مزعجة مهما كانت وكذلك لما كانت الحكومة العثمانية راغبة في تقوية وتوثيق عرى



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الصداقة والتفاهم الواجب بقاؤهما بين الدولتين الإسلاميتين وبين رعاياهما فإنها تتعهد باتخاذ أنسب الوسائل التي من شأنها أن تؤمن أمر التمتع بالامتيازات المذكورة في الأراضي العثمانية ليس للزوار فحسب بل لجميع الرعايا الإيرانيين وذلك بصورة تحميهم من كل ظلم أو خشونة سواء أكان ذلك فيما يتعلق بأعمالهم التجارية أم بأي أمر آخر.

وفضلا عن ذلك تتعهد الحكومة العثمانية بالاعتراف بالقناصل الذين قد تعينهم الحكومة الإيرانية في أماكن واقعة في أراض عثمانية تتطلب وجودهم بداعي المصالح التجارية أو لحماية التجار وسائر الرعايا الإيرانيين إنما تستثنى من ذلك مكة المكرمة والمدينة المنورة، وتتعهد فيما يخص القناصل بأن تحترم جميع الامتيازات التي لهم حق التمتع بها بناء على صفتهم الرسمية والممنوحة لقناصل الدول المتحابة الأخرى، وتتعهد الحكومة الإيرانية فيما يخصها بتطبيق أصول المعاملة المتبادلة من جميع الوجوه بحق القناصل الذين تعينهم الحكومة العثمانية في أماكن واقعة في إيران، ترى تلك الحكومة لزوما لتعيين قناصل فيها، وكذلك تتعهد بتطبيق أصول المعاملة المذكورة على التجار العثمانيين وعلى سائر الرعايا العثمانيين الذين يزورون إيران.

- المادة الثامنة:

تتعهد الدولتان الإسلاميتان المتعاقدتان الساميتان باتخاذ وتنفيذ الوسائل اللازمة لمنع ومعاقبة السرقات والسلب من جانب العشائر والأقوام المستقرة على الحدود، وتقومان لذلك الغرض بوضع الجنود في مراكز ملائمة وتتعهدان فضلا عن ذلك بالقيام بالواجب المفروض عليهما إزاء مختلف أعمال التعدي كلها، كالنهب واللصوصية والقتل مما قد يقع في أراضيهما.

على الدولتين المتعاقدتين الساميتين فيما يخص العشائر المتنازل فيها، والتي لا يعرف لمن السيطرة عليها أن تتركها حرة في اختيار وتقرير الأماكن التي سيقطنونها دائما من الآن فصاعدًا أما العشائر التي تعرف لمن السيطرة عليها فترغم على المجيء إلى داخل أراضي الدولة التابعة لها.

- المادة التاسعة:

تُؤَيَدُ بهذا من جديد جميع النقاط والمواد المدرجة في معاهدات سابقة – ولاسيما المعاهدة المنعقدة في أرضروم في السنة (١٢٣٨ هـ - ١٨٢٣ م)- والتي لا تعدلها أو تلغيها هذه المعاهدة بصورة خاصة، ويسري هذا التأييد إلى نصوصها كلها كما لو كانت قد نشرت بحذافيرها في هذه المعاهدة. وتوافق الدولتان الساميتان على تقبلها وتمضيا هذه المعاهدة عند تبادل نسخها وعلى أن يتم تبادل وثائق إبرامها في ظرف مدة شهرين أو قبل ذلك (الضابط، ١٩٦٦، ص ص.٦٣، ٦٦؛ Sabri, 2013, pp. 129 – 130).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

**٣- أثر المعاهدات علي البناء الجغرافي، السياسي، الاقتصادي و الاجتماعي لكردستان:**

**٣-١ أثرها علي البناء الجغرافي:**

انتشر الكرد بشكل مكثف ومتماسك ضمن فضاء شمل المنطقة المحصورة بين عراق العرب وعراق العجم، فمجال انتشارهم الجغرافي يمتد شمالا بمحاذاة بحيرة أرومية حتى حدود القوقاز، أين تندرج ضمنه الهضبة الأرمينية، ومن حدود القوقاز يمتد غربا إلى أعماق آسيا الصغرى ليصل سيواس وقونية(صباغ، ١٩٩٩، ص. ١٢٥).

إن استيطانهم لهذه الرقعة الجغرافية الواسعة جعلهم عرضة للتقسيم الجغرافي بين الدولتين الايرانية والعثمانية في إطار صراعهما عليها، حيث خضع للدولة الايرانية كرد كل من كرمنشاه، كردستان (سندج)، كاروس، قسم من أذربيجان، كل مناطق ساوجيلاغ (مهاباد) حتى جنوبي بحيرة أرومية وغربي نهر تاتا، كذلك كرد كل من سلماس، خوي وماكو، في حين خضع للدولة العثمانية كرد كل من ولايتي بدليس، وان، كرد سنجق، هكارى، كرد منطقة ديار بكر، خربوط، جزيرة بن عمر، كرد الموصل، كرد شهرزوروبذلك حصلت الدولة العثمانية على ثلاثة أرباع مساحة كردستان،ما جعل ولائهم لدولة معينة لم يكن ثابتا، بل كان يمتاز بالتغير تبعا لتبدل المناخ السياسي(صباغ، ١٩٩٩، ص ١٢٠)، ومرد ذلك للأسباب التالية:

- السبب الجغرافي: موقع كردستان الوسطى بين ايران، العراق، والأناضول
- السبب الاثني: حيث كانوا يشعرون دوما بأنهم متميزون عن الإثنيات الأخرى،مما ولد عندهم الرغبة في السعي نحو الانفصال وعدم الانسجام مع بقية المكونات الأخرى في المنطقة
- السبب القبلي: يعتبر زعيم القبيلة المرجعية الأولى وليست الدولة التي ينتمون اليها (صباغ، ١٩٩٩، ص. ١٢٠).

**٣-٢ أثرها على البناء السياسي:**

تمكنت اغلبية العشائر الكردية التابعة للدولة العثمانية من تكوين امارات ومناطق مستقلة بشكل شبه كامل عنها منها: امارات بوتان، سنجار، رواندز، بيازيد، درسيم، حكاري، بالو، بركر، السليمانية، جولا مرك، خرشاب وغيرها، في حين أن الإمارات التابعة لايران لم تكن مرتبطة كذلك رسميا بالسلطة المركزية هناك، بل كان ارتباطها شكليا، وقد قسمت هذه الكيانات السياسية من حيث هيكلتها الإدارية طيلة فترة حكم الإمبراطورية العثمانية إلى أربع مستويات، أكبرها سميت بالولاية أو المقاطعة، والتي كانت تدار من قبل الوالي، أما المستوى الثاني فكان السنجق أو اللواء، حيث كان يحكمه المتصرف، أما القضاء فكان تحت إدارة القائمقام، وأخيرا الناحية، حيث كانت تخضع للمدير (حصاف، ٢٠٠٩، ص ص. ١٥٢ - ١٥٣)، أما الأمراء الكرد فكانوا يُدْعون بالأمير أو الحاكم أو المتصرف وفي غالب الأحيان يطلق على أغلبيتهم لقب باشا، بينما



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

أطلق على الأمراء الكرد التابعين لإيران لقب خان (Hawkar, 2017, p. 34 ؛هروتي، ٢٠٠٨، ص. ١٩٤).

منذ حلول القرن التاسع عشر، كانت الامارات الكردية ومعها سلطة القبائل المحلية تديرها كونفدراليات قبلية وهي كالتالي:

إمارة سوران في منطقة حرير وراوندز

إمارة بابان في منطقة السليمانية

إمارة العمادية في منطقة بادينان

إمارة بوتان في منطقة جزيرة بن عمر

إمارة أردان لانفي منطقة كردستان ايران

لقد ظهرت سلطة القبائل الكردية في العديد من المدن والقرى، رغم أنها لا تملك صفة الإمارة، لكنها لعبت دورا أساسيا واجتماعيا في المنطقة، من جانبهم كون العثمانيون اتحادات قبلية أو شعبية وهي بمثابة اتحادات موازية لسلطة الإمارات الكردية، خاصة في ديار بكر مثل اتحاد بوز ألوس أو الشعب الرمادي وهو من بقايا اتحاد آلاق قوينلو، مؤلف من قبائل تركمانية وكردية، حيث بلغ تعداده حوالي 75000 نسمة، يقضي أفراده فصل الشتاء في الصحراء السورية أما فصل الصيف فيقضونه في منطقة ديرسيم/تونجلي، في حين كان يطلق على الاتحاد القبلي الكردي الثاني اسم قرة ألوس أو الشعب الأسود (عبد الله، ٢٠٢٠، ص ص. ٢٧٣ - ٢٧٤).

سعت الحكومة المركزية في كل من اسطنبول وطهران إلى تعزيز سلطتها في المناطق الكردية الخاضعة لها، تجلى ذلك خاصة في عهد السلطان محمود الثاني، الذي سعى إلى تقوية النزعة المركزية (centralization)، وكذلك فعلت ايران للحيلولة دون اقامة الأمراء الكرد دولة كردية كبيرة مستقلة(اسكندر، ٢٠٠٧، ص. ٣٧)، كما يلاحظ بأن سياسة العثمانيين والايرانيين ارتكزت على استمالة أمراء الكيانات المحلية الكردية التي تنال ثقتهم لغرض الارتباط بالدولتين وخدمة أهدافهما في الداخل والخارج(دلير، شاويس، (د.ت)، ص. ٢٩).

قسمت السلطات العثمانية كردستان إلى إيالات منها:

-ايالة الموصل: مركزها مدينة الموصل والتي تضم ست سناجق مقسمة الي مائتين واحدى وسبعين مقاطعة

_ ايالة شهرزور: قسمت الي واحد وعشرين سنجقا يحكمها باشاوات من الكرد

_ ايالة لرستان

_ ايالة كردستان(صباغ، ١٩٩٩، ص. ٢٦١).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

قام السلطان محمود الثاني منذ عام ١٨٢٦م، بإدخال اصلاحات في محاولة منه لتأسيس الادارة المدنية في كردستان، حتى تتسنى له مراقبة المنطقة وتقوية نفوذ الدولة فيها، غير أن أمراء الكرد رفضو هذا الاجراء معتبرين اياه تعديا على سلطاتهم (غريب، ١٩٧٣، ص ١٧٠).

لم يكن زعماء الامارات الكردية ليخضعوا بسهولة إلى سلطات الدولتين، فقد ثبت بأن الأمير محمد باشا وبعد تسلمه زعامة امارة سوران عام ١٨١٤م، قام بتحدي السلطات العثمانية، كما كان الأمير بدر خان أمير بوتان، والذي تولى الحكم عام ١٨٢١م لايعترف بالسلطان العثماني، حيث عمل جاهدا على تحقيق طموحات الكرد في اقامة كيانهم القومي الخاص بهم،فكان يرفض استقبال ممثلي الدول الأوروبية بأوامر من السلطان العثماني، ومن دلائل استقلاليته عن الدولة العثمانية أنه أثر عنه قوله مايلي:"... أنا حاكم هذه البلاد. وليس السلطان العثماني، حتى وان كان السلطان أكثر قوة مني ولكنى أتفوق عليه بكوني أكثر أصالة وشهرة منه، لأنني أعمل من أجل أن لا أضطهد أو أجور شعبي ..."( مراد، ٢٠١٥، ص. ١١)، حتى ذهب البعض إلى اعتباره أب الحركة القومية الكردية.

لقد أبان الكرد عن استعدادهم الدائم للتضحية، ورفض الواقع السياسي المفروض عليهم، رغم وصف هذه الحركات من قبل سلطات البلدين بأنها حركات تمرد، عصيان، خروج عن السلطة والنظام، كي لا تضفى عليها صفة الشرعية، لذا كانت هذه الثورات والانتفاضات تواجه بشدة وقسوة بالغتين، وغالبا ما تتبع بعمليات السلب والنهب وأحيانا السبي. شارك الكرد ضمن الجيشان الايراني والعثماني وقد اشتهروا ببسالتهم وشجاعتهم، فعلى سبيل المثال ساهمت كل من أربيل، مندلى، كويه، حرير زهاب وبادينان بقواتها في جيوش الايالات العثمانية، كما أن الامارات الكردية التابعة لايران كانت تقوم بنفس المهام (هروتي، ٢٠٠٨، ص. ١٧٦).

إن سياسة الدولتان أدت إلى اصطدام الكرد بالسلطة المركزية لكليهما ووقوفهم ضد سياسة التتريك وكذا السياسة الإيرانية، ورغم أن حكم العثمانيين لكردستان دام حوالي ٤٠٠ سنة إلا أن نهايته كانت ما سمي اليوم بكردستان العراق أو جنوب كردستان، كردستان سوريا أو غرب كردستان أما الجزء الأكبر من بلاد كردستان أو كردستان تركيا فمازال تحت حكم ورثة العثمانيين، فيما آل حكم كردستان الشرقية إلى الإيرانيين.

### ٣_٣ أثرها علي البناء الاقتصادي:

عانت كردستان من نزيف اقتصادي حاد طيلة فترة الصراع بين الدولتين والتى استمرت لمدة ٣ قرون ونصف تقريبا، رغم توقيعهما للعديد من المعاهدات، وبما أن المجتمع الكردي وعلى غرار مجتمعات المنطقة، هو مجتمع زراعي،فإن نظام الاستغلال الزراعي العثماني-الايراني الاقطاعي كان يعتمد علي استغلال الأرض، فكانت الأراضي التابعة للدولة العثمانية تقسم كالتالي:



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

_ ميري: أملاك الدولة

_ أوقاف: أملاك تابعة لمؤسسات دينية.

كما قسمت الميري بدورها إلى قسمين:

_ أراضي تابعة للسلطان مباشرة (الأراضي السلطانية)

_ الاقطاعات الحربية ( المنح والاقطاعات)

أما نظام استغلال الأرض الايراني فقسم إلى أربعة أقسام وهي:

_ الأملاك الخاصة: وهي خاصة بالشاه والأسرة الصفوية الحاكمة، حيث يتم تأجيرها الي أشخاص معينين مقابل ثلث ما تنتجه.

_ سيورغال (الانعام) وهي اقطاعات تعود إلى كبار رجال الدولة، رجال الدين و الأشراف وكانت تورث من جيل إلى أخر

_ أراضي المما لك: حيث كانت تمنح للحكام المحليين( صباغ، ١٩٩٩، ص ص. ٨٣، ٢٢٥، ٢٢٦).

لقد نتج عن نظام الاستغلال الزراعي هذا عدم استغلالها استغلالا جيدا، وأن الفلاح لم تكن له الحافزية للعمل، كما أن اضطراب الأوضاع السياسية وفقدان الأمن قلصا من مجموع المساحات الزراعية، تضاف إليها الحملات العسكرية التي يعلنها الولاة لإخضاع العشائر المتمردة، والتي تؤدي إلى إحراق المحاصيل الزراعية أو إتلافها أو تركها بورا، وقد زاد في تدهورها انتشار الأوبئة والأمراض الفتاكة (عبد الله، ٢٠١٤، ص ٤٩٣). أما في المجال الصناعي فان حالة التخلف الاقتصادي، أنتجت صناعة هزيلة وهشة، لم تكن لترقى إلى مستوى النهوض الصناعي بأوروبا.

امتازت التجارة في العهد العثماني والايراني بالتخلف وبدائية وسائل النقل والمواصلات، انعدام الأمن في الطرقات، عجز الدولتان عن حماية التجار، كما كان لتدني مستوى دخل الأفراد دور في تراجع التجارة الداخلية وبالتالي ضعفها (عبد الله، ٢٠١٤، ص.٥٠١).

مس تنوع الضرائب سكان كردستان بشكل كبير، فقد أثر تحصيلها خصوصا على القطاع الزراعي، الذي كانت ضرائبه تدر أرباحا طائلة على خزينة الدولتين، منها ما تؤخذ بشكل عيني أو نقدي (العشور)، ضريبة زراعية أخرى تسمى رسوم وهي خاصة بالبساتين والكروم، الضرائب التي تجبى من تربية المواشي والحيوانات، ضرائب المحال كمحال العطارة، الطواحين، الأفران وغيرها، والتي كانت تحصل على شكل رسوم سنوية، ضرائب المصادرات وهي من بين أهم أنواع الضرائب، بحيث كانت تذهب إلى خزينة الدولة مباشرة، حتى أنها أعتبرت من بين أهم أسباب ترسيخ الشاه عباس الأول لحكمه المركزي وتقويته للبنية الاقتصادية للدولة، بالإضافة إلى

ضرائب التجارة على رأسها الرسوم الجمركية التي قدرت نسبتها مابين٣%الي٤% علي التجار، كل هذه الضرائب كانت تفرض من قبل سلطات الدولتان (صباغ، ١٩٩٩، ص ص. ٨٥ – ٩٩).

تذكر بعض المصادر التاريخية بأن منطقة ديار بكر مثلت مصدر دخل كبير للاقتصاد العثماني طيلة قرون، فقد قارب دخلها عام ١٥٢٨م ما يعادل دخل الدولة الذي يأتيها من كافة ولاياتها في منطقة البلقان (صباغ، ١٩٩٩، ص.٧٩). لم يكن الأهالي الكرد يعانون من ارتفاع نسب الضرائب فحسب، بل كانوا كذلك عرضة لتجاوزات ومظالم محصليها والمسؤولين في الإدارات المحلية، حيث كان هؤلاء يفرضون عليهم غرامات جزافية تتجاوز حدود المعقول، خاصة ما تعلق منها بالإقطاعات الزراعية، التي كان إنتاجها يتقلب من سنة لأخرى.

إن الدولتين العثمانية والإيرانية، كانتا تجمعان الأموال والثروات من السكان بحجج مختلفة، فأحيانا باسم مساعدة الجيش في تأمين حملاته العسكرية، وأحيانا أخرى كانت القبائل الكردية تتعرض لعمليات عسكرية تأتي على موارد المنطقة من تخريب، نهب وسلب، فعلى سبيل المثال تعرضت منطقة سنجار التي يتركز فيها الأزيديون لحملة من ايالة بغداد عام ١٧١٥م، ترتب عنها سلب ونهب قرى عديدة، مع أخذ المواشي والأموال عنوة، كما كان لحملتها على إيالة بغداد مرة أخرى عام ١٨٠٢م أن تم نهب جميع مواشي قبيلة (بلباس) واستيلائها على بعض قرى سنجار، وسلب جميع الأموال والمؤن و تدمير الحقول والبساتين حتى وصل الأمر بالكرد إلى تخبئة نقودهم وأغراضهم النفيسة تحت الأرض خوفا من نهبها، بل حتى أن أموال الأوقاف في كردستان العثمانية لم تسلم من تحويلها خارج المنطقة، بعد أن حرم الأهالي من مواردها التي كانت توجه إلى الحرمين الشريفين كواردات وقف (هروتي، ٢٠٠٨، ص ص. ٣١، ٣٣).

لم تكن أرض كردستان الخاضعة لسلطة ايران بمنأى عن عمليات الحصار، التخريب، السلب، وعمليات تدمير الحياة الاقتصادية،ولم تسلم من ذلك حتى مناطق كردستان الخاضعة للدولة العثمانية بعد أن قام جنود نادر شاه بعد حصاره للموصل عام ١٧٤٣م بارتكاب، فضائع من تدمير، قتل، واعتداء على النساء، الأمر الذي أدى إلى ظهور مجاعات وهذا ما أدلى به أحد شهود هذه الأحداث بالقول:" ... كل ما وجد في القرية قد سلب أو أحرق وكذلك جرى في جميع الأماكن في الجبال فَصَعُب هذا على الناس، فحصل جراء ذلك جوع عظيم في هذه الأماكن المنكوبة..." (هروتي، ٢٠٠٨، ص. ١٩)، وقد ترتبت عن هذا الوضع الاقتصادي المتردي موجة التهاب الأسعار والغلاء الفاحش الذي خرب كردستان.

### ٣-٤ أثرها على البناء الاجتماعي:

لم تكتف المعاهدات الموقعة بين الدولتين الايرانية والعثمانية ومعهما روسيا على ضرب النسيج الاجتماعي الكردي فقط، بل عملتا على تفكيك العشيرة الواحدة خاصة بعد توقيع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

معا هدة أرضروم الثانية عام ١٨٤٧م، و خير مثال على ذلك ما وقع لعشيرتي (جلا لي وزيلا نو)، والجدول التالي يوضح أثر هذه المعاهدة علي عشيرة جلالي من خلال أسر هذه العشيرة

جدول يوضح أثر معا هدة أرضروم الثانية عام١٨٤٧م على عشيرة جيلا لي ( كاميران، ٢٠٠٩، ص. ١٧٦)

| الطائفة | الدولة العثمانية | ايران | روسيا |
|---|---|---|---|
| خالكاني | ٢٥٠ | ٢٦٠ | ٤٠ |
| سالكاني | ٢٣٠ | ٢٠٠ | ٥٠ |
| بلخيكى (بلخكانكو) | ٢٥٠ | ١٥٠ | ١٦٠ |
| مصر كانكو | ٣٠ | ١١٠ | ٢٠ |
| حسن سورانلو | ٣٠٠ | ١٠ | ٣٠ |
| قرلباشوخلي | ٤٠ | ١٥٠ | - |
| بانوكي | - | ٨٠ | ٤٠ |

كذلك الشأن بالنسبة لبعض القبائل الكردية الأخرى، فقد تم إلحاق قسم من عشيرة الجاف وهو (بيرة، رودى) ومعهما منطقة مهربان بإيران، رغم أنها كانت جزءا من ولاية شهرزور العثمانية، أما قبيلتا ضياء الدين وهاروني فضمتا للنفوذ العثماني. إن هذا التقسيم، جعل من بعض العشائر الحدودية تشكل مصدر إزعاج ومشاكل للدولتين.

لقد استُغلَ الكرد من قبل العثمانيين لمواجهة الايرانيين، فمثلا وبعد مهاجمة السلطان سليمان القانوني لبغداد عام١٥٣٤، أخذ معه معظم أغوات العشائر الكردية ووطن عشائرهم بالقرب من الحدود الإيرانية العثمانية، حيث قام الكرد ببناء الحصون والقلاع لحماية حدود أرض الدولة العثمانية من خطر الهجمات الايرانية (سايكس، ٢٠٠٧، ص. ١٥).

عمدت الدولتان إلى تحسين علاقاتهما مع العشائر الكردية من أجل استدراجها خاصة بعد فترات الضعف التي مرتا بها أو فترة حروبهما، تمثل ذلك في منح رؤسائها نفوذا وصلاحيات واسعة، لكن وبمجرد استنفاذ غرضهما منها سرعان ما تنقلبان عليها وتجردانها من كل قوتها ونفوذها، فبعد عام ١٥١٥م خاضت الدولة العثمانية حروبا على العشائر الكردية بشنها حملات واسعة ضدها أدت إلى القضاء على قوتها ومن ثم إضعافها (سايكس، ٢٠٠٧، ص ص. ١٥ - ١٦).

اصطبغت العلاقات بين الدولتين بالصبغة السلبية أحيانا وبالصبغة الإيجابية أحيانا أخرى، وقد انعكس ذلك على المجتمع الكردي، فسوء العلاقة بين الدولتين أفرز انعكاسات اجتماعية متفاوتة، فحالة التأزم التي طبعت علاقاتهما عدة مرات سببت حالات من القلق والشعور


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

بعدم الاستقرار والأمن، خاصة على طرفي الحدود، ما جعل حكومتي البلدين تقدمان على فرض المزيد من الضرائب العشوائية ومصادرة أملاك الكرد، تضاف اليها الاعتداءات التي يقوم بها الجنود على الأهالي (صباغ، ١٩٩٩، ص. ٢٣٩)، منها سياسة الأرض المحروقة التي مارسها كل من طهماسب الأول وسليمان القانوني، بعد احتلال هذا الأخير بعضا من الأراضي الايرانية، وكذلك فعل عباس الأول الذي لجأ إلى نفس السياسة، والتي تمثلت في إحراق كل مظاهر الحياة ضمن إطار عمليات الانسحاب جراء الزحف العثماني على الأراضي الايرانية، كردم الآبار، إتلاف المحاصيل الزراعية والقضاء على الثروة الحيوانية، لحقت كل ذلك عمليات هجرات فردية من إيران نحو الدولة العثمانية أو العكس (صباغ، ١٩٩٩، ص.٢٤٢)، غير أن عودة العلاقات السلمية، كان لها تأثير إيجابي على الحياة الاجتماعية من ثقافة، أدب، فنون، وإدارة.

لم يقم الكرد بالدور المنوط بهم من أجل توحيد كلمتهم، فحالة التشرذم بقيت هي سيدة الموقف، فالإمارات الكردية ميزها الانقسام المجتمعي بفعل تناحرها في غياب كفاءات بإمكانها قيادتهم، صاحبها انتشار الجهل وسيطرة العقلية العشائرية، القبلية والإقليمية (حصاف، ٢٠٠٩، ص.١٥٣).

كان للتحولات التي طرأت على الساحة الدولية مع بداية النصف الأول من القرن التاسع عشر أثر كبير على الكرد، فلقد خدمت الحرب الروسية- الايرانية ١٨٢٦-١٨٢٨م والحرب الروسية-العثمانية ١٨٢٧-١٨٢٩م قضيتهم، حيث تزايدت مشاعر الغضب والعداء تجاه العثمانيين وكلها ساهمت في إضعاف الدولة العثمانية وانهيار حكمها في الإمارات الكردية، وأدت بالتالي إلى تحرير مناطق عديدة من كردستان من السيطرة العثمانية، غير أن الهدنة الروسية-العثمانية سمحت لهذه الأخيرة بإعادة مراقبة هذه المناطق، بعد أن نكلت بقياداتها وعاملت الكرد بقساوة فيما يسمى بالإبادة الجماعية، حتى أن أحد الرحالة الأوروبيين وصف وضعهم الاجتماعي كالتالي:" ... دموع وصراخ النساء بكاء أمهات الأطفال الرضع فجر قلوب الناس هؤلاء الأربعة آلاف كردي المحكوم عليهم بالعذاب المريع يذكر بعذاب المحكوم عليهم بجحيم دانتوفسكي..." (حصاف، ٢٠٠٩، ص.١٥٥؛ .Peshawa, 2012, p. 24).

أثر هذا الصراع بين القوتين على الجانب الصحي، لذا انتشرت الأوبئة والأمراض الفتاكة كالكوليرا والطاعون، بسبب انفتاح منطقة كردستان على الأقاليم والبلدان الأخرى التابعة للعثمانيين والإيرانيين، فقد اجتاحت موجة الطاعون كردستان الجنوبية أعوام ١٧٥٨م – ١٧٧٧م و ١٧٩٩م، والذي كان مصدره مدينة إسطنبول، كما أصابها وباء الكوليرا بعد ظهوره في الهند ووصل إلى البصرة، ثم انتقل إلى منطقة كردستان العراق، كما وصل الطاعون من إيران


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وأصابها عام ١٨٣٠ (هروتي،٢٠٠٨، ص.٢٠)، وهذا ما ذكره المقيم البريطاني ريج حول مرض الملاريا الذي أصاب سكان السليمانية

بقوله: "...هذه الحمى تظهر في الربيع غالبا ومن يصاب بها لا يتعافى إلا نادرًا..."، كما وصف منطقة شهرزور بما يلي: "...بأن منطقة شهرزور والتي يزرع فيها الرز بكثرة مناخها حار وغير صحي، ومليئة بالذباب والبراغيث..." (هروتي، ٢٠٠٨، ص.٢٢).

إن تردي الوضع الصحي، كان مرده كذلك انعدام الوعي الصحي لدى المجتمع الكردي، بسبب أسلوب الحياة وظروف معيشة الأفراد، وعدم الأخذ بالوقاية من الأمراض، وهذا ما أكده أحد المسؤولين الانجليز عندما مر بقرية كردية قرب مدينة موش عام ١٨٣٨م، حيث لاحظ العديد من الأطفال الذين "... غالبيتهم كانوا إما عراة تماما أو نصف عراة بملابس مرقعة ورثة..." (هروتي، ٢٠٠٨، ص.٢٥)، وفي هذا المقام يجب أن نذكر بمسؤولية الدولتان عن هذه الأوضاع التي آل إليها حالهم، بعد تنصلهما من توفير سبل الرعاية الصحية للمواطنين الكرد، بسبب تخلفهما وعدم اكتراث المسؤولين في كلا البلدين بتقديم الخدمات الصحية اللازمة للسكان، كما أدت هذه الحالات إلى هلاك آلاف الأشخاص، ما أثر سلبا على نسبة نمو السكان.

تمخض عن انضواء الكرد ضمن هذا الإطار الجغرافي الذي جمع إيران والعثمانيين تفاعل حضاري كان لهم منه نصيب، حيث تفاعلوا مع مختلف الثقافات المكونة لهذه المنطقة، لذا فإن مكونات هذه المجتمعات ضمت الترك، العرب، الكرد، الأرمن، الكرجستانيين والبلقانيين، وكلها تحت لواء الأسرة الحاكمة في إسطنبول، بينما ضمت مكونات المجتمع الإيراني الترك، العرب، الفرس، الكرد، الأرمن، البلوش، والكرجستانيون.

لقد مس هذا التفاعل اللغة والفكر، وبسبب هيمنة اللغة والثقافة الفارسية على اللغة والثقافة العثمانية بما تحمله من قوة تأثير عليها، جعلها تترك بصمتها على الثقافة الكردية لما تحتويه من طروحات أخلاقية، كانت قد تبلورت عبر العصور، وحيث تعدى تأثيرها قضية الشكل إلى المضمون. إن نتائج هذا التفاعل الحضاري كانت تهذيب الأخلاق العامة وتربية الإحساس الذوقي، وهذا بدوره أدى إلى ترقية الناس الذين تخلت مجتمعاتهم القبلية عن بعض طباعها الجافة، كما أدى إلى تمايز هذه المجتمعات بعد أن أصبحت لها شخصيتها الخاصة بها-مجتمع الشرق الأوسط - عما هو موجود في المجتمعات الأوروبية (صباغ، ٢٠٠٩، ص ص. ٢٦٧- ٢٨٧).

تركت مختلف مراحل الصراع والمعاهدات المنبثقة عنه آثارا متعددية شملت مختلف الميادين، فهي لم تستطع وضع حد لمسألة ضبط الحدود، التي لم تكن ثابتة بشكل مطلق، بل كانت تتغير حسب طبيعة العلاقة بين الدولتين، تنحصر تارة وتتمدد تارة أخرى بآلاف الكيلومترات،

بسبب عدم احترام أحد الطرفين لما ورد في المعاهدات التي أفرغت من محتواها، ورغم ذلك فإنها استكملت ضم المجال الجغرافي لكردستان وتقسيمها بين الدولتين.

لقد فُرِضَتْ العزلة السياسية على كردستان، كونها منطقة لتمركز الصراع العثماني-الإيراني من الناحية الإستراتيجية، بسبب تحكمها وتوسطها لطرق تجارة الشرق في وقت السلم، وممرا للجيوش وقت الحروب والأزمات (بيات، ٢٠٠٧، ص.١٩١)، كما عانت من جور حكام الدولتين، الذي أفرز دمارا، نهبا، قتلا، إذلالاً وإفقاراً. إن تجاوزات الولاة وعمليات السلب والنهب وقتل الأنفس بغير وجه حق، وبث الفتن بين أمراء الإمارات الكردية، بعد استغلال الانشقاقات والمنافسة بين العائلات الكردية، وتحمل سكان كردستان نفقات قوات البلدين بحجة حمايتها والدفاع عنها ومنع الثورات والفوضى، رافقتها الاستعانة بالكتلة البشرية الكردية المؤهلة للقتال في أوروبا وآسيا ودفعها إلى الاشتراك في الحروب (بيات، ٢٠٠٧، ص.١٩١)، التي أنهكت قوتي الدولتان بعد صراع مرير وبعد فوات الأوان، في الوقت الذي خطت فيه أوروبا خطواتها نحو التقدم، وبالتالي انحدرتا إلى هاوية الضعف والخور (صباغ، ٢٠٠٩، ص. ١٩٦).

كسبت الدولتان موارد هامة للخزينة بفضل الضرائب الفاحشة على الرعايا الكرد، تبعها ارتفاع أسعار المواد الزراعية خاصة القمح، انتشار الفساد الإداري في جهاز حكم الدولتان الذي كانت من بين مظاهره الرشوة والمحسوبية، واعتراض القوافل التجارية بسبب انتشار قطاع الطرق، مما أدى إلى انحصار النشاط التجاري في آخرعهدهما، مع حرمان كردستان من خيراتها الاقتصادية (بيات، ٢٠٠٧، ص. ٢٤٦).

عملت الدولتان على تدمير النسيج الاجتماعي لكردستان، فحولت الكثير من أسرها إلى عشائر بفعل سياساتهما، كما تسببت في اندلاع المواجهات والصدامات بين هذه العشائر، في الوقت الذي عملتا فيه على تقوية النظام العشائري تارة وتارة أخرى إضعافه، حسب مصالحهما، كما تدهورت الحالة الصحية لسكان المنطقة بعد انتشار الأوبئة والأمراض دون تكفل بوضعيتهم الصحية. إن تردي الحالة الاجتماعية دفع بالعديد من الكرد إلى القيام بعمليات الهجرة أملا في تحسين ظروفهم المعيشية.

## استنتاج:

يمكن القول بأن ما ترتب عن معركة جالديران عام ١٥١٤م من آثار، هو بمثابة بداية لمواجهة طويلة الأمد بين الدولتين فاقت ثلاثة قرون، كانت ساحتها الرئيسة كردستان، تناوبت جراءها القوات الإيرانية والعثمانية على إخضاع أجزاء منها لنفوذهما.

هذا الصراع وقفت وراءه أسباب عديدة، منها ما ارتبط بالخلاف المذهبي، ومنها ما ارتبط بما هو سياسي، إلا أن السبب الرئيس هو جغرافية كردستان من خلال موقعها الاستراتيجي الهام،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

فهي تتوسط الطريق الرابط بين البحرين الأبيض المتوسط والأسود، أهميتها الاقتصادية، التجارية، غناها بالموارد الزراعية، مكانتها العسكرية كونها منطقة حصينة فضلا على أنها خزان بشري مؤهل لخوض الحروب.

كان واقع كردستان في تلك الحقبة يخضع لحالات (التجاذب) وتوازن القوة بين إيران والدولة العثمانية قوة وضعفا هذا من جهة ومن جهة أخرى كان يعني كذلك حالات من الاستقرار والسلام.

رغم أن الكرد وقفوا إلى جانب الدولتين وضحوا بأرواحهم وأموالهم من أجل حمايتهما بعد أن دفعوا ثمنا باهضا جراء تلك الحروب التي كانت أراضيهم مسرحا لها إلا أن الدولتان لم تقدرا ذلك.

عُدَتْ المعاهدات المبرمة بين إيران والدولة العثمانية، خاصة معاهدة أرضروم الثانية عام ١٨٤٧م ، بداية المؤامرة للقضاء على الإمارات الكردية الواحدة تلو الأخرى وبشكل كامل، من خلال قطع الطريق أمام حكامها الذين سعوا إلى تكوين دولتهم المستقلة على حدود كردستان الكبرى.

إن وضع كردستان في ظل حكم الدولتين ، نجم عنه إهمالها وتهميشها لقرون ، جراء استغلال قدراتها الطبيعية ، البشرية ، عدم النهوض بها، مما أثر على تنميتها، الأمر الذي انجر عنه تدهور أوضاع المجتمع الكردي في شتى المجالات ، فقد سيطرت العناصر الأجنبية على إدارتها العامة بهدف ربطها بالسلطة المركزية لكلا البلدين ، إثقال كاهل السكان بالضرائب الفاحشة ، رافقه سوء الأوضاع المعيشية ، بعد أن عمها الفقر ، البؤس ، وتدني الخدمات الصحية ، وهذا ما دفع ببعض القيادات المحلية إلى محاولة إصلاح أوضاع المجتمع الكردي.

نتيجة لما تزخر به كردستان من إمكانيات وثروات وموارد أضحت بلا شك حديقة خلفية للقوتين المتصارعتين. إن مقولة: «...إن جمالنا يجلب إلينا في كثير من الأحيان المتاعب...» ، لخصت طبيعة الصراع على كردستان والذي أفضى في النهاية إلى منع استقلالها، وبالتالي تقسيمها عمليا بين الدولتين.

**قائمة المصادر والمراجع:**

- اسكندر سعد بشير،(٢٠٠٧)، من التخطيط إلى التجزئة سياسة بريطانيا العظمى تجاه مستقبل كردستان ١٩١٥-١٩٢٣، مطبعة شقان، السليمانية.
- بيات فاضل،(٢٠٠٧)، الدولة العثمانية في المجال العربي، مركز دراسات الوحدة العربية، بيروت.
- دلير اسماعيل، شاويس حقي، (د.ت)، امارة بابان في النصف الأول من القرن١٨ دراسة في علاقاتها السياسية مع السلطات العثمانية، منشورات جامعة صلاح الدين، أربيل.
- الدهشان نائل،(٢٠٠٩)، القضية الكردية، معهد فلسطين للدراسات الاستراتيجية، غزة.

- هر يدى محـ مد عـ بد اللـط يف،(١٩٨٧)،ا لحروب العثماذ ية الفار سية وأثر ها عـ لى انحـ سارا لمد الاسلامي عن أوروبا، دار الصحوة للنشر والتوزيع، القاهرة.
- هرو تى سعدي عثـ مان: (٢٠٠٨)، كورد ستان والامبراطور ية العثماذ ية، مؤسـ سة موكر ياني للبحوث والنشر، مطبعة خاني دهوك.
- زكي بك محـمد أ مين: (٢٠٠٥)، خلا صة تاريخ الكرد وكرد ستان من أ قدم العـصور التاريخـية حتى الآن، القسم الأول،الطبعة الثانية،ترجمة وتعليق: محمد على عوني، سلسلة حكم وأ ثر، بغداد،.
- الزبيدى كريم حمزة مطر، (د.ت)، تاريخ ايران الحديث، (د،ن)، (د،ب).
- مراد خليل علي، البوتاني عبد الفتاح علي،(٢٠١٥)، صفحات من تاريخ الكرد وكورد ستان ا لحديث في الوثائق العثمانية (١٨٤٠ — ١٩١٥ م)، مطبعة الحاج هاشم، أربيل.
- مرعي فرست،(٢٠٠٦)، "الدور التاريخي للكرد" الكرد دروب التاريخ الوعرة، تحرير: لقاء مكي، شبكة الجزيرة للبحوث والدراسات، الدوحة، يونيو، حزيران.
-حصاف اسماعيل محمد: (٢٠٠٩)، كوردستان والمسألة الكردية، مطبعة خاني دهوك.
-طقوش محمد سهيل،(٢٠٠٩)، تاريخ الدولة الصفوية في ايران ١٥٠١- ١٧٣٦، دار النفائس، بيروت.
-كاميران عبد الصمد أحمد الدوسكى، (٢٠٠٦)، كردستان في العهد العثماني في النصف الأول من القرن التاسع عشر، الدار العربية للموسوعات، بيروت.
- مـشعل مفلح ظاهر، الطعمة باسم حطاب، (٢٠٠٨)، «العلا قات الصفوية العثماذية ١٥٨٧-١٦٢٤م دراسة تحليلية»، مجلة آداب البصرة، العدد: ٤٥ ، جامعة البصرة.
- نايف عـيد السهيل:(٢٠٠٩)، «العلا قات السيا سية بين العثـمانيين والصفويين مـنذ قيام الدو لة الصفوية حتى معركة جا لديران(٩٠٧ هـ-٩٢٠ هـ) (١٠٠٢م-١٥١٤م)»، حوليات مركز البحوث والدراسات التاريخية، كلية الآداب، جامعة القاهرة.
- النجار جميل موسى، (٢٠١٦)، العلا قات العثماذية الايراذية، دار مكتبة عدنان للطباعة والنشر، بغداد.
- سايكس مارك،(٢٠٠٧)، القبا ئل الكرد ية في الإمبراطور ية العثماذ ية، تر جمة: خليل عـلي مراد، تقديم ومراجعة وتعليق: عبد الفتاح علي بوتاني، دار الزمان للطباعة والنشر والتوزيع، دمشق.
- عبد الله ايناس سعدى،(٢٠١٤)، تاريخ العراق ا لحديث ١٢٥٨-١٩١٨، مكتبة عدنان للطباعة والنشر والتوزيع، بغداد.

- ع بد الله نجاة،(٢٠٢٠)، الامبراطور يات: ا لحدود والقبا ئل الكرد ية كرد ستان و نزاع ا لحدود التركي- الايراني ١٨٤٣-١٩٣٦، ترجمة: سعادة محمد خضر، تقديم: ابراهيم محمود، المديرية العامة للمكتبات العامة، طهران.
- العوفي محمد عبد الرزاق: (٢٠٠٨)، الصراع الصفوي العثماني وتأثيراته على المشرق العربي ١٥١٤-١٥٥٥، دار الكتب الوطنية، بنغازي.
- العلياوي عبد الله محمد على،(٢٠٠٦)، "جذور المشكلة الكرد ية" الكرد دروب التاريخ ا لوعرة، تحرير لقاء مكي، شبكة الجزيرة للبحوث والدراسات، الدوحة.
- صباغ عباس اسماعيل،(١٩٩٩)، تاريخ العلاقات العثمانية الايرانية الحرب والسلام بين العثمانيين والصفويين، دار النفائس للطباعة والنشر والتوزيع، بيروت.
-شوقي أبو خليل،(٢٠٠٥)، تشالديران سليم الأول العثماني واسماعيل الصفوي، دار الفكر، دمشق.
- الضابط شاكر صابر،(١٩٦٦)، العلاقات الدولية ومعاهدات الحدود بين العراق وا يران، ذشر وطبع دار البصيري،بغداد.
- غريب أدمون،(١٩٧٣)، الحركة القومية الكردية، دار النهار للنشر، بيروت.
- Center for applied linguistics, (1981), The Kurds, ERIC, washington , D,C.
- Jalil Hawkar Moheddin,(2017), The British Administration of south Kurdistan and local responses, 1918 – 1932, Thesis submitted for the degree of doctor of philosophy, school of history, politics and international relations, University of Leicester.
- Peshawa Abdulkhaliq Muhammed, (2012) U.S, perspectives on Kurdish independence from Iraq 1972 - 2011, A Thesis submitted in fulfillment of the Requirements for the degree of doctor of philosophy in politics and international relations, research institute for law, politics and justice, Keele University.
- Sabri Ates , (2013), the Ottoman –Iranian Border lands making a Boundary 1834-1914,cambridge university press, printed in the U. S. A, first published.

**The title: The reality of Kurdistan under the Iranian-Ottoman treaties (1514-1847)**

**Abstract:**

The Battle of Chaldiran, which broke out between the Safavid and Ottoman states in the year 1514 AD, marked the opening A long historical period of conflict between them, which extended for more than three centuries, during which the country of Kurdistan was its focus, as it constituted a natural barrier separating the two powers.The conflict developed further due to the ambitions of the new Safavid state, which aimed to extend its influence outside its regional borders at the expense of Kurdistan.This conflict prompted the two countries to resolve their differences through

negotiations and dialogue, after depleting their capacities for centuries, with the change in the balance of power in favor of other countries, especially Britain and Russia.Treaty of Amasya 1555 AD - Treaty of Farhad Pasha (Constantinople) 1590 AD - Treaty of Nasuh Pasha 1612 AD - Treaty of Sarau 1618 AD - Treaty of Zahab (Palace of Shirin) 1639 AD - First Treaty of Erzurum 1823 AD and the Second Treaty of Erzurum 1847 AD, which affected one way or another with another on Kurdistan geographically, politically, economically and socially, and this after it was fragmented between them into areas of influence. We will try to study this subject, which has a historical-political formula, according to a major problem Regarding the position of Kurdistan in the Iranian-Ottoman treaties, and its impact on its geographical, political, economic and social structure, based on this problem, we will rely in our study on the historical approach with its descriptive and analytical tools, focusing on analyzing the content of the treaties. We will address the research topic according to the following elements: 1- The Iranian-Ottoman conflict after 1514 AD and its renewal during the reign of Tahmasp I (1524 AD - 1576 AD). 2- The Iranian-Ottoman treaties (1555 AD - 1847 AD). 3- The impact of treaties on the geographical, political, economic and social structure of Kurdistan.
**key words:** *Safavids, Ottomans, Kurdistan, treaties.*

## کەتواریێ کوردستانێ ل ژێر سیبەرا پەیمانێن ئاشتیێ دناڤبەرا ئوسمانی و ئیرانێدا ١٥١٤-١٨٤٧

**پۆختە:**

شەرێ چالدیران ئەوا دناڤبەرا هەردوو دەولەتێن عوسمانی و سەفەویدا رووداى دەروازە یا قووناغاکا نوو بوو د ململانییا دناڤبەرا هەردوو دەولەتاندا کو بو ماوەێ سێ سەدەیان ڤەکێشا، و ژبەرکو کوردستان مەیدانا سەرەکییا ڤێ رووداێ بوو، لەورا هەردوو لا یان هەولدا کو ل سەر کیستێ ئەردێ کوردان بەرفرەهـ ببن، و ل پاشەروژێ چەندین لایەنێن دی یێن زلهێز ژی هاتە دناڤ ڤێ کێشمەکێشێدا و وان رول هەبوو د گرێدانا هندەک پەیمانێن ئاشتیێ دناڤبەرا ئیران و عوسمانیاندا، و هەر ژ دەستپێکا ڤێ ململانێ چەندین پەیمان هاتنە گرێدان وەك ئەماسیە ١٥٥٥ و ئیستانبوول ١٥٩٠ و نەسووح پاشا ١٦١٢ و سەراو ١٦١٨ و قەسر شیرین ل ١٦٣٩ و ل سەدەیێ ١٩ دا هەردوو پەیمانێن ئەرزەروما ئێکێ و دووێ ل سالێن ١٨٢٣ و ١٨٤٧.

د ڤێ ڤەکولینێدا دێ هەول هێتە دان کو شروڤەیا بەندێن ئەڤان رێکەفتنان د چوارچووڤێ ململانێیا هەردوو دولەتان پشتی ١٥١٤ و رێکەفتنێن هەردوو لا یان ل سەدەیێ ١٩ هێتە کرن.

**پەیڤێن سەرەکی:** *سەفەوی، عوسمانی، کوردستان، رێکەفتنێن ئاشتیێ، چەرخێ نوی*

# الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية للإمارات الكردية في مذكرات جيمس بكنغهام وجيمس ريج

أ. د. م محمد محمود محمود حمد الدوداني

كلية الآداب -جامعة دمياط/ جمهورية مصر العربية

**ملخص:**

تُعد الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية لأي شعب دليلاً على نهضة الشعب أو تأخره، ونظراً لخصوصية الوضع في كردستان خلال العهد العثماني فإن الدراسات الأكاديمية ركزت جُل همها على الحديث عن الأوضاع السياسية والنزاعات بين الإمارات الكردية والقوى الإقليمية، وبخاصة الدولة العثمانية وبلاد فارس، وربما يرجع ذلك إلى توفر الوثائق السياسية من أوامر سلطانية ومراسلات بين الأمراء الكرد والقوى في المنطقة، وغيرها من الوثائق السياسية التي أذكت تاريخ الكرد السياسي في العهد العثماني.

أما الحديث عن الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية فقد أهملتها الوثائق، لم تحو إلى قرارات بجمع ضرائب، وفرض ضرائب جديدة، دون أي ذكر لأحوال عامة الشعب، ومن ثم فإن ندرة الوثائق التي تتحدث عن الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية في كردستان فرضت على الباحثين النظر في مذكرات الرحالة، والتي تعد مصدراً رئيساً للحديث عن الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية في المنطقة بجانب السياسية، ومنها المذكرات موضوع الدراسة.

وتعد مذكرات الرحالة البريطاني جيمس بكنغهام James Silk Buckingham، ومذكرات المقيم البريطاني في العراق جيمس ريج Claudius James Rich من أهم المصادر التي وثقت تاريخ الإمارات الكردية في تلك المرحلة المهمة من تاريخها، فقد زار الأول – بكنغهام- العراق في عام ١٨١٦م، ومر بسنجار والموصل وأربيل وغيرها من المناطق الكردية، أما الثاني – ريج- فقد قام برحلته إلى كردستان في عام ١٨٢٠م،

وتكمن أهمية ما ذكره بكنغهام وريج أن زيارتهما تزامنت مع التحركات العثمانية لإسقاط الإمارات الكردية، وإخضاعها للحكم المباشر، وما رافق ذلك من تأثير على الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية للإمارات الكردية، ومن ثم فإن هذه الدراسة ستتناول ما ذكره بكنغهام وريج عن الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية للإمارات الكردية، وإخضاع ما ذكره عن كردستان للنقد والتحليل.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وتعتمد هذه الدراسة على مذكرات بكنغهام وريج، بالإضافة إلى مجموعة من المصادر والمراجع التي أسهمت في إذكاء هذا البحث

**الكلمات المفتاحية:** ريج، بكنغهام، كردستان، الموصل.

---

**تمهيد:**

ولد جيمس بكنغهام في عام ١٧٨٦م في قرية بالقرب من مدينة فالموت بإنجلترا، انتقل وهو شاب إلى الهند فاشتغل في إحدى دوائر شركة الهند الشرقية الإنجليزية لعدة سنوات، كان بكنغهام محباً للترحال، فقام بعدة رحلات منها رحلته إلى مصر في عام ١٨١٢م، وفلسطين وشرق الأردن في عام ١٨١٤م(بكنغهام، ١٩٦٨، ص ص٣-٤).

وزار العراق -موضوع الدراسة- في عام ١٨١٦م، فبدأ رحلته إلى العراق عن طريق سوريا إلى سنجار ومنها إلى الموصل ثم بغداد عن طريق الموصل، أربيل، كركوك(بكنغهام، ١٩٦٨، ص٤).

وقد وثق هذه الرحلة في أربعة مجلدات حملة عنوان "رحلة في بلاد الرافدين Travels in Mesopotamia"، و"رحلات عبر أشور وميديا وإيران Travels in Assyria, Media and Persia"، وقد عني "سليم طه التكريتي" بترجمة هذه المذكرات تحت عنوان "رحلتي إلى العراق سنة ١٨١٦م، فنشره في جزئين في عام ١٩٦٨م.

أما الثاني جيمس ريج فقد ولد في عام ١٧٨٧م في فرنسا، وانتقل وهو طفل مع أسرته إلى بريستول بإنجلترا، وقد نبغ ريج في تعلم اللغات الشرقية فأجاد اللاتينية واليونانية والعربية ، وفي عام ١٨٠٣م تم تعيينه طالباً حربياً في الخدمة العسكرية لدى شركة الهند الشرقية البريطانية، ونظراً لحبه للترحال فقد تنقل بين عدد من مدن الشرق في تركيا ومصر، وفلسطين وسوريا وغيرها من البلدان العربية، وفي عام ١٨٠٨م تم تعيينه مقيماً بريطانياً في العراق، وكانت مقيميته تضم بغداد والبصرة، وفي عام ١٨٢٠م قام برحلته إلى كردستان، زار خلالها ربوع إمارتي بابان في كوردستان الجنوبية، واردلان في كوردستان الشرقية، كان الغرض المعلن من سفرهم هو للترفيه والسياحة، لكن معلومات أخرى تفيد أن تردي العلاقات بين داود باشا (والي بغداد) والمستر ريج، وسعي الأول للتدخل في شؤون الثاني، كان السبب الحقيقي للرحلة(ريج، ٢٠٠٨، ص ص٥-١٩).

وقد وثق ريج رحلته إلى كردستان في مجلدين بعنوان " سرد لإقامتي في كردستان ومواقع نينوي القديمة... Narrative of a residence in Koordistan, and on the site of ancient Nineveh..."، وقد قام اللواء بهاء الدين النوري بترجمة مذكرات "ريج" تحت عنوان "رحلة ريج المقيم البريطاني في العراق عام ١٨٢٠م إلى بغداد- كردستان- إيران، ونشرها في عام ١٩٥١م، ثم أعيد نشرها مرة ثانية في عام ٢٠٠٨م، وتجدر الإشارة إلى أن الطبعة الثانية احتوت على مذكرات زوجة ريج أيضاً.

وقد اشتملت هذه المذكرات على الكثير من المعلومات عن أحوال كردستان الاقتصادية والاجتماعية بجانب السياسية، وليس المقصود من المقارنة بين مذكرات بكنغهام وريج هو بيان الاختلاف، وإنما الهدف هو بيان التكامل فرحلة بكنغهام انطلقت من سوريا، ورحلة ريج انطلقت من بغداد، لتغطي الرحلتان معظم أنحاء كردستان، لتقف على أوضاع كردستان الاقتصادية والاجتماعية، وتميط اللثام عن أوضاع المتجمع الكردي في فترة بداية سقوط الإمارات الكردية.

## أولاً  لأوضاع الاقتصادية:

كانت الزراعة وتربية الماشية النشاط الاقتصادي الرئيسي للكرد، ففي مناطق السهول (المدن) كانت الزراعة هي أساس النشاط الاقتصادي، فيذكر بكنغهام أن سكان المدن يعيشون على الزراعة (بكنغهام، ١٩٦٨، ص٢٠).

أما المناطق الجبلية فإن ممارسة الزراعة كانت مرتبطة بالظروف المناخية والطبيعية، فيصف بكنغهام جبل سنجار "بجبل سنجار الخصب الملائم لزراعة مختلف أنواع الفواكه (بكنغهام، ١٩٦٨، ص ص١٨-١٩)، ونظراً للطبيعة الجبلية في كردستان فقد برع الكرد في استصلاح الأراضي الجبلية وتهيئتها للزراعة من خلال جمع الأحجار الكبيرة والصغيرة من أراضيهم، وتشكيل سياج في الطراف لحمايتها، كما كانوا يلجأون إلى رفع الأدغال وتسوية الحفر وبناء الجدران(محو، ٢٠١٢، ص١٥٠).

ويذكر "ريج" أن الكرد كان يتبعون أنظمة خاصة بالزراعة؛ حيث كانوا يزرعون الأرض عاما ويتركوذها في العام التالي، (ريج، ٢٠٠٨، ص١٣٦)، ويسمى هذا النظام بـ (نيرو نير)؛ حيث كانت تترك الأرض عامًا بدون زراعة لكي تستعيد قواتها(محو، ٢٠١٢، ص١٥١).

وكانت المحاصيل الشتوية تعتمد في زراعتها على الأمطار، أما الصيفية فكانت تعتمد على المياه السطحية، وكانت المحاصيل تختلف زراعتها من مكان لآخر، منها ما ذكره ريج أن السليمانية كانت تنتج محاصيل الحنطة والشعير والتبغ والقطن والأرز والذرة والعدس والحمص والبلوط (ريج، ٢٠٠٨، ص ص١٣٥-١٣٦).

وتنتشر في مناطق الغابات والبساتين أشجار التوت والجوز والدلب أو الصنار في كردستان، أما شجر الحور فيوجد في الجزيرة والعمادية، والصفصاف في الفرات من أعالي، وتستخدم هذه الأشجار في تجارة الأخشاب (ريج، ٢٠٠٨، ص ص١٠٩-١١٠).

وعلى الرغم من تنوع المحاصيل الزراعية، فإن بعض المحاصيل لم تكن تناسب كل مناطق كردستان كالقنب أو الكتان، وكذا أشجار البرتقال والليمون في كردستان الجنوبية، فيذكر ريج أن أشجار البرتقال والليمون غير موجود في المنطقة، والسبب في ذلك أن حرارة الصيف تتجاوز حد الاعتدال، أما برودة الشتاء فقارصة بالنسبة لهذه الأنواع من الأشجار (ريج، ٢٠٠٨، ص١٣٦).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وتجدر الإشارة إلى أن معظم أراضي كردستان الزراعية كانت محصورة في أدى رؤساء العشائر، وكانت ممتلكاتهم تبلغ أحياناً عشرات الآلاف من الهكتارات، وفي بداية القرن التاسع عشر تحول رئيس العشيرة إلى إقطاعي يملك أراضي خاصة به، وقد ادي ذلك إلى استقرار الكثير من العشائر وممارسة الزراعة بدلا من الرعي(الدوسكي، ٢٠٠٦، ص ص٤٥-٤٩).

بجانب الزراعة كانت تربية الماشية من المهن الرئيسية في كردستان نظراً لتوفر المراعي والمياه في المنطقة(محو، ٢٠١٢، ص١٥٦)، بل إنها فاقت الزراعة في بعض المناطق الكردية، ونتيجة لذلك كان يتم تربية قطعان الماشية من أغنام وماعز وأبقار وخيول بأعداد كبيرة(الدوسكي، ٢٠٠٦، ص٥٠).

وقد ترتب على ازدهار الزراعة وتربية الماشية ازدهار حركة التجارة، فيذكر بكنغهام أن سكان المدن كانوا يعيشون على المتاجرة بجانب الزراعة(بكنغهام، ١٩٦٨، ص٢٠)، بينما يذكر ريج أن أربيل كانت من المحطات التجارية المهمة وخاصة بالنسبة لتجارة الحبوب، بينما كانت كركوك مركزا لجمع المنتجات من المناطق المحيطة بها من كردستان وخاصة السليمانية، أما مدينة السليمانية فكانت تخرج منها قافلة تجارية باتجاه تبريز شهرياً وأخرى إلى أرضروم سنوياً، ولها تجارة مع همدان وسنه والموصل وبغداد أيضاً (ريج، ٢٠٠٨، ص ص٢٨٩-٢٩٠).

وذكر ريج أيضاً وجود بعض العوائل اليهودية في "بنجوين" تتاجر مع "سنه" و"همدان" بالعفص والجلود وغيرها، ويصدر الكثير من الجلود إلى همدان، وأن اليهود القرويين في كردستان يزاولون مهنة الصباغة، وتعد بنجوين ميناء أو سوقًا للعشائر الرحالة، تصل منها القوافل إلى همدان في ثمانية أيام وإلى سنه في أربعة أيام. (ريج، ٢٠٠٨، ص١٨١).

وعلى الرغم من ذلك فقد أدى انعدام طرق المواصلات ووعورة الطرق وبعد كردستان عن طرق التجارة العالمية إلى تخلف حركة التصدير، فقد كان من الصعوبة تسويق المنتجات الزراعية والحيوانية، مما كان يجبر الفلاح الكردي على بيع منتجاته محلياً بأبخس الأثمان(الدوسكي، ٢٠٠٦م، ص٤٩).

أما الصناعات والحرف اليدوية المحلية فإنها كانت تتم وفق احتياجات الكرد اليومية، فيذكر بكنغهام أن سكان المدن كانوا يعيشون على الصناعة الملائمة لحاجياتهم بجانب الزراعة والمتاجرة، (بكنغهام، ١٩٦٨، ص٢٠).

وكانت صناعة الأقمشة والسجاد والأواني الفخارية والخشبية والخيام والأدوات المنزلية والزراعية منتشرة في كردستان، إلا أن بعض المناطق اشتهرت أكثر من غيرها في صناعات معينة، منها موش وأليجة التي اشتهرت بإنتاج الأقمشة القطنية، واشتهرت قرية زورك إلى جنوب بحيرة


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

وان بصناعة الأواني الفخارية، ومدينة بالو كانت تضم مصابغ ومدابغ للجلود(الدوسكي، ٢٠٠٦م، ص ٥٢).

كما انتشرت أيضاً بعض الأنشطة الاقتصادية الأقل شأناً، إلا أنها كانت من مصادر الدخل لبعض العشائر الكردية، من أبرزها: صيد الحيوانات البرية، فيذكر ريج أن الأرانب والغزلان تكثر في سهول أربيل، مع أسراب لا حصر لها من القطا، وتصاد الصقور في هذا السهل، وتصدر إلى كردستان خاصة(ريج، ٢٠٠٨، ص٣٢٥).

حماية القوافل، فيذكر بكنغهام أن عند وصوله وهو مرافقيه إلى قرية تدعى "جل آغا" دخلوا في مفاوضات مع شيخ العشيرة ليزودهم بثمانين فارساً مسلحاً لحمايتهم إلى أن يصلوا إلى ضفاف نهر دجلة مقابل ثلاثة دولارات اسبانية لكل فارس مسلح(بكنغهام، ١٩٦٨، ص٢٣).

وقد ارتبطت الزراعة وتربية الماشية بعدة عوامل طبيعية وبشرية، أما الطبيعية فكانت مرتبطة بالطقس والأحوال الجوية، خاصة وأن الزراعة كانت تعتمد على هطول الأمطار، لذلك فإن القحط وعدم تساقط الأمطار، وكذا الفيضانات، كان يعني شح المحاصيل، وانتشر القحط والمجاعة(هروتي، ٢٠١٢م، ص١٥).

أما العوامل البشرية فكانت مرتبطة بالحروب والحملات العسكرية، التي كانت تخلف أزمات اقتصادية خانقة إلى جانب الكوارث الإنسانية التي تصاحبها، وذلك بفعل الحصار والنهب والقتل (هروتي، ٢٠١٢م، ص١٨)، هذه العوامل بجانب الضرائب الباهظة التي كانت تفرضها الدولة العثمانية شكلت مجتمعة عبئاً على الأوضاع الاقتصادية في كردستان.

وقد تحدث ريج عن ذلك خلال لقائه مع أمير بابان محمود باشا؛ حيث اشتكى له الأخير من الظروف الصعبة التي تمر بها إمارته، بسبب وضعه على حدود سلطتين متنافستين -الفرس والأتراك- لا تنفك الأولى عن طلب الجزيات والضرائب، والثانية لا يساعدونه في الدفاع عن إماراته من اعتداءات الفرس. (ريج، ٢٠٠٨، ص ص٨٣-٨٤)، كما ذكر له "محمد آغا" بأن انعدام الأمن، وعدم تأكد أبناء العشائر من تملكهم للمقاطعات فإنهم لا يكرسون أنفسهم إلى الزراعة. (ريج، ٢٠٠٨، ص١٠٣).

وعلى الرغم من عدم إشارة بكنغهام وريج إلى هذه الأزمات بشكل مباشر، إلا أن فترة زيارتهم لكردستان تزامنت مع اضطراب الأوضاع في كردستان عام ١٨٢٠م؛ حيث انتشرت أعمال النهب والفوضى (Sydney Gazette and New South Wales Advertiser, Saturday, 19 August 1820, p.3.)، كنتيجة للصراع الذي دار بين الفرس وبعض زعماء الكُرد [1] من جانب، ووالي بغداد وأمير إمارة بابان الكُردية "محمود باشا" من جانب آخر(هروتي، ٢٠٠٨م، ص ص١٦٧-١٦٩).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

كما لعب فيضان نهري دجلة والفرات دوراً مهماً في حدوث اضطرابات وأزمات اقتصادية بسبب تضاعف الأسعار بشكل ملحوظ نتيجة لنقص السلع الأساسية( National Intelligencer: Volume 13, Issue 3990, Friday, Nov. 4, 1825.)

وكنتيجة مباشرة للتدهور الأوضاع الاقتصادية فقد انتشرت بعض أعمال السلب والنهب بين العشائر الحدودية، فيذكر بكنغهام لقاءه بجماعة من الكرد بالقرب من سنجار من اتباع "خليف آغا"، الذي فرض عليهم دفع ألفين وخمسمائة قرش للسماح لهم بالمرور، وأن أفراد من الجماعة سرقوا سرج حصانه ولجامه، كما سلب من شخص آخر في القافلة فرسه بكل ما كان على ظهرها من متاع. (بكنغهام، ١٩٦٨، ص ص١٠-١١).

وفي موضع آخر ذكر "أن الجبليين يؤلفون قبائل يرأسهم شيوخ، وتعيش بصفة رئيسة على سلب القوافل، ولذلك فإنهم ينحدرون من التلال التي يسكنونها ويرابطون عند ممرات الطرق، وهناك قبائل أخرى منتشرة في السهل وحتى حدود ماردين وهي تسير على ذات النمط من الحياة"(بكنغهام، ١٩٦٨، ص ص٢٠-٢١).

**ثانياً- الأوضاع الاجتماعية:**

تطرق بكنغهام وريج إلى ذكر الأوضاع الاجتماعية للعشائر في المناطق التي مروا بها، ويمكن تناول ذلك فيما يلي:

١) **العشائر الكردية:**

كانت العشيرة أساس النظام الاجتماعي في كردستان، ومن الصعب إعداد إحصائية دقيقة لجميع العشائر الكردية، وذلك بسبب العدد الكبير لتلك العشائر، وعدم استقرار العديد منها من حيث السكن، وعدم وجود إحصائيات دقيقيه لعدد السكان، وكانت تسمية العشيرة يختلف من مكان إلى آخر، فبعض العشائر كانت تسمي بأسماء المناطق الجغرافية التي تسكن فيها، وبعضها كان يسمي بأسماء مؤسسي العشيرة، وتشير بعض المصادر أن عدد العشائر الكردية في الدولة العثمانية فقط في مطلع القرن العشرين بلغ نحو (٣٢٢) أو (٣٧٩) قبيلة وعشيرة (سايكس، ٢٠٠٧، ص ص٥-١٨).

فرضت الأوضاع الاقتصادية، وانشغال معظم سكان كردستان بالزراعة والرعي، نفسها على تركيب المجتمع الكردي (الدوسكي، ٢٠٠٦، ص٢٧)، فكان المجتمع الكردي يتكون في بداية القرن التاسع عشر من مجموعة من العشائر الرحل والمستوطنة "سكان المدن" (Heude, 1819, p.228).

ونتيجة لطبيعة كردستان المتنوعة فإن ذلك أثر بشكل واضح على طبيعة حياة القبائل الكردية، ويمكن تميز ثلاث فئات في المجتمع الكردي، الأولى: القبائل التي تعيش حياة متحضرة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

(المستقرين)، وكان يتمركز معظمهم في القرى، ويمارسون الزراعة وتربية الماشية، الثانية: الرحل، التي تنتقل وراء مراكز الرعي، الثالثة: شبه رحل، وهم من يعملون بالزراعة، ويعتبرون من المستقرين بصورة مؤقتة، وتنحصر فترة استقرارهم في الفترة بين موسم البذر وموسم الحصاد، أما الأوقات الأخرى فيعملون في الرعي ويتوجهون إلى الجبال والأودية بصحبة قطعانهم بحثاً عن الغذاء(الدوسكي، ٢٠٠٦، ص ص٢٧-٢٩).

وقد ذكر ريج من العشائر الرحل عشيرة الجاف، وأنهم يسكنون الخيام، وهم يخيمون في الصيف في جبال حاجي أحمد الشاهقة في حدود "سنه"، وفي الخريف ينتشرون في منطقة "شهرزور"، أما الشتاء فيقطنون "شروانه" على ضفاف نهر ديالي(ريج، ٢٠٠٨، ص ص١١٨-١١٩).

ويوجد تمييز كبير بين سكان المدن والجبال، وعن اختلاف سكان السهول عن سكان الجبال يصف بكنغهام ذلك بقوله (علاقة هذه المدن الواحدة بالأخرى مثل العلاقة بين مدن العرب ومدن الصحراء أو العلاقة بين المزارعين والبدو...والشائع أن سكان الجبال منهم أكثر وحشية وقسوة من البقية، وأنهم لا يحلقون شواربهم أو لحاهم، بل لا يقصون شعورهم...) (بكنغهام، ١٩٦٨، ص ص٢٠-٢١).

هذا التمييز لم يكن قاصراً على الرحالة فقط، بل من قبل الكرد أنفسهم، فيذكر ريج أن القرويين في كردستان يؤلفون جماعة تختلف الاختلاف الكلي عن رجال العشائر، ويسمي الكرد العشائريون أنفسهم بالـ"سباه" أو الكرد المحاربين تمييزاً لأنفسهم من الكرد القرويين، أما القرويون فيعرفون بـ "رعية" أو "كويلي"، ويذكر ريج أن أحد أبناء العشائر اعترف له ذات مرة قائلاً: ((إن العشائر ينظرون إلى القرويين على أنهم خلقوا لخدمتهم))(ريج، ٢٠٠٨، ص ص٩٧-٩٨).

وأين كان نشاط القبيلة فالحقيقة الواقعة تمكن بتمتع الكرد بإخلاص شديد لزعمائهم، فيذكر بكنغهام خلال لقائه بـ"خليف آغا": ((كان الاستقبال الذي لقينا به رئيس هذه الجماعة في خيمتنا أشبه باستقبال رجل يدين له الجميع بالطاعة المطلقة...كان الرئيس قد ألقى بنفسه على سجادة في أرض الخيمة، وأقبل عليه أنصاره فتحلقوا حوله))( بكنغهام، ١٩٦٨، ص٩).

وقد أكد ريج ذلك بقوله: ((إن تعلق الكرد برؤسائهم شديد جداً، فهم يعيشون في بغداد مع أسيادهم في حالة نفي منكرة يكافحون فيها شظف العيش وكل أنواع المحن والعوز دون أن ينبسوا ببنت شفة...المعروف عنهم أنهم غالباً ما يتكسبون المال من الحمالة والسقاية ليقدموه إلى أسيادهم ليعينوهم على العيش)) (ريج، ٢٠٠٨، ص ص٩٥-٩٦).


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

**ب- مظاهر العمران:**

أما طريقة بناء المنازل فقد ذكرها بكنغهام بقوله: ((سرنا ساعتين حتى وصلنا إلى قرية على رابية مشرفة تدعي "تل الشعير"، وكانت المنازل القليلة الظاهرة فيها أشبه بمخازن الغلال المستطيلة الشكل في مزارع الإنجليز، وهي مغطاة بسقوف منحدرة من القش، أما السكان، وكلهم من الأكراد، فكانوا يسكنون الخيام بصفة رئيسة، ولذلك كانت معظم هذه المنازل غير مأهولة ولربما كانت هذه الأبنية خاصة بخزن الحبوب على وجه التأكيد، وبعد مسيرة ساعتين من تلك القرية...مررنا بمكان آخر يدعى "ضيعة خليف أغا"، وهو اسم الرئيس الذي يقيم فيها، وتقع هذه القرية أيضاً على رابية أصغر من الأولى، وتضم خمسين بيتًا غير أن حوالي مائة كانت قد نصبت بجوارها))(بكنغهام، ١٩٦٨، ص٧).

وذكر بكنغهام أربيل بأنها من أكبر المدن التي شهدها منذ مغادرة الموصل، وكان بها مسجدان كبيران لهما مآذن، أما الأسواق لها سقوف من أغصان الأشجار تقوم على أعمدة، وبها عدد كبير من المنازل الحسنة المشيدة باللبن(بكنغهام، ١٩٦٨م، ص١٢٦).

ومن مظاهر العمران في أربيل قلعتها الشهيرة، وذكرها بكنغهام بقوله: ((تقع على ربوة في الوسط وتبدو من بعيد أشبه بقلعتي ميسا وحلب في سوريا، وهي توزاي كلا منهما في الضخامة، والتل الذي تقوم عليه القلعة مربع الشكل يرتفع عن سفح منحدر وهو وإن كان واسعاً إلا أنه بلا شك من صنع البشر أو أن سطحه الخارجي على الأقل، قد رصفت بالحجر ولو أن القاعدة الداخلية يوجد الكثير من منازل السكن ولو أن الجزء الأعظم من المدينة ينتشر حول القلعة)) (بكنغهام، ١٩٦٨م، ص ص١٢٦-١٢٧).

وكان ريج دقيقاً بارعاً في وصف بعض مظاهر عمران السليمانية المميزة، منها قصر الأمير الذي وصفه بقوله: ((وصلنا إلى القصر وكان مدخله واطئاً حقيراً ضيقاً وسخاً إلى درجة أظن أنها لا تليق بمسكن حاكم بل بمسكن رجل من عامة الناس، ولكنني علمت أن لهذه الحالة منافعها في مثل هذه الديار إذ إنها تجعل الدفاع عن كرسي الحكومة في الطوارئ ممكناً، والمدخل لا ينتهي إلى واجهة القصر بل ينعطف إلى جانبه...ثم ارتقينا درجات سلم جميل يؤدي إلى بهو الاستقبال الذي لو عمر لكان غرفة فاخرة حقاً، وكانت واجهة البهو مكشوفة تستند على أعمدة))(ريج، ٢٠٠٨، ص ص٨٨-٨٩).

كما وصف الدار التي أقام بها فهي مربعة ذو طابق واحد مبني على دكة مشيدة من اللبن-الطابوق المجفف بحرارة الشمس- ارتفاعها ثلاثة أقدام تقريباً مملوطة جدرانها بالطين الممزوج بالتبن، وقد طليت جدران غرفة واحدة أو غرفتين منها بالنورة فوق الطين، وسقفها مسطح مؤلف من جسور وعوارض تعلوها طبقة من التراب، والبناء كله قائم في وسط حريم واسمه أو



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

كما يعبر عنه في الهند في وسط محيط، وينقسم هذا الحريم إلى فناءين بجدار يتصل بجانبي البناء بالقرب من منتصفه جاعلاً القسم الأمامي منه حريماً والقسم الخلفي منه حريماً آخر، وهكذا يتفرغ إلى فرعي الحرم (مقصورة النساء في البيت) والديوان، وليس ثمة باب يصل بين الفناءين من داخل بناية الدار ذاتها...بل يجب أن ندخل من باب في الجدار الذي يقسم الحريم إلى فناءين...كانت ساحة كل من الفناءين معشوبة، وقد غرزت فيهما أشجار الصفصاف والحور والتوت وأنجم الأزهار من أخاديد ولوحات صغيرة، ويجري في أفنية بيوت السليمانية جدول ماء صغير يسيل من الجبال في الكهاريز)) (ريج، ٢٠٠٨، ص٩٣).

أما البيوت الاعتيادية الأخرى فهي زرائب من الطين، ويظهر أن المكان بكامله يحاكي قرية عربية كبيرة...وتحتوي هذه المدينة الحقيرة المظهر على خمسة خانات وجامعين معمورين وحمام واحد جد أنيق(ريج، ٢٠٠٨، ص٩٤)، وقد أحج ريج بالحمام الذي عده نموذجاً فريداً في نظافته وبنائه ومتفوقاً على غيره من حمامات الإمبراطورية العثمانية (ريج، ٢٠٠٨، ص ص١٠١-١٠٢).

أما عن عدد سكان كردستان فاكتفي بكنغهام بذكر عدد سكان أربيل فذكر أن عدد السكان يتجاوز العشرة آلاف، وقد يكون نصف هذا العدد هو الصحيح (بكنغهام، ١٩٦٨م، ص١٢٦)، وفي الموصل يذكر بكنغهام أن المسلمين يؤلفون القسم الرئيس من السكان في المدينة، وهم من نسب متساوية من العرب والأتراك والأكراد (بكنغهام، ١٩٦٨، ص٦٤)، أما ريج فقد قدر عدد سكان مدينة السليمانية آنذاك بعشرة آلاف نسمة(ريج، ٢٠٠٨، ص٩٤).

وذكر ريج أن عدد بيوتها بـ٢٠٠٠ بيتاً للمسلمين، و١٣٠ بيتاً لليهود و٩ للمسيحيين، و٥ دور للأرمن، والكلدان يمتلكون كنيسة خاصة بهم، هذا فضلاً عن ٥ خانات و٥ حمامات إلى جانب عدد من المساجد والمباني الخاصة بدار الأمارة نفسها. (ريج، ٢٠٠٨، ص١٢٤).

**ج- سمات الكرد:**

أما عن سمات الكرد الخلقية والخُلقية فقد تضاربت أراء الرحالة عن صفات الكرد، فيذكر بكنغهام أنه التقى في الأول من تموز/يوليو ١٨١٦م بإحدى عشائر الكرد في سهول سنجار من أتباع "خليف آغا"، وعن مواصفتهم ذكر أنه لاحظ فيهم استدارة الوجوه وهي أرق إلى السحنة الأوروبية منها إلى السحنة الأسيوية، وكانت مظاهرهم جميلة مثل مظاهر الإنجليز ولو أن أعينهم وشعورهم كانت سوداء، وكان لباسهم مزيجاً من اللباسين التركي والعربي، وإن كان أكثر ميلا إلى الطراز العربي)) (بكنغهام، ١٩٦٨، ص ص٨-٩).

أما ريج فقد وصف عثمان بك الأخ الأصغر لأمير بابان بقوله: ((لم يكن ضخم الجثة بل مربوعاً قوى البنية، وكانت تقاطيع وجهه متناسقة غاية التناسق، ولحيته سوداء مجعدة وعيناه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

زرقاوين غامقتين، وحاجباه سوداوين، وأهدابه سوداء، وسحنته سحنة رجل خفيفة السمرة ووردية جميلة نقية، لقد كان بوجه عام شاباً وسيماً جداً...وقد ألفته مهذباً في سلوكه)) (ريج، ٢٠٠٨، ص٨٨).

أما ملابسه ((فكان يرتدي أفخر الملابس التي تتفق والذوق الكردي، فرداؤه من القماش الهندي الفاخر المزوق بالأوراد الذهبية، وغطاء رأسه من الشال الكشميري المزين بالأهداب الذهبية أيضاً... أما رداؤه الخارجي فكان معطفاً أو جبة من القماش القرمزي الفينيسي (البندقي) ذا أزرار ذهب))(ريج، ٢٠٠٨، ص٨٨)، ويرتدي الرجال الزي الكردي التقليدي(ريج، ٢٠٠٨، ص٢٧٦).

أما لباس السيدات فذكر ريج أنه يشتمل على السراويل التركية العريضة وعلى ثوب فضفاض يحزم من فوقه بحزام ذي عروتين كبيرتين من الفضة أو الذهب، ويلبس فوق ذلك المشلح، وهو على نمط مشالح الرجال، ويزرر عند الرقبة ولكنه يترك غير مزرر من الرقبة حتى الأذيال كاشفاً عن الثوب والمحزم، ويخاط عادة من الحرير المخطط أو المشجر أو من النسيج الملون أو من القماش الكجرات أو من المقصب الاستانبولي، وذلك يختلف باختلاف الموسم أو ثراء صاحبة اللبس، ومن فوق ذلك يأتي الـ"بنش" أو الصدرية، وهى من الستن عادة وتخاط كالمشلح، ولكنها ذات مين ضيقين لا يصل طولهما المرفقين، ويستعضن عن الصدرية في الشتاء باللبادة، وهى رداء من نوع الصدرية إلا أنه مبطن بالقطن، ويلبسن في الشتاء الجاورقة أيضاً التي تصنع من أنواع الحرير المربع الألوان(ريج، ٢٠٠٨، ص ص٢٧٣-٢٧٥).

وعن معاملة النساء يذكر ريج أنه وجد النساء يخرجن مع الرجال سوية لإنجاز واجباتهن البيتية دون أن يتحجبن(ريج، ٢٠٠٨، ص٩٤)، وذكر أيضاً: ((أن مقام النساء في كردستان أفضل بكثير من مقامهن في تركيا أو إيران، وأعني بذلك أن أزواجهن يعاملوهن على قدم المساواة وإنهن يسخرون من خضوع النساء التركيات خضوع العبيد ويحتقرهن وهناك ما يشبه الاستقرار العائلي في كردستان وهو أمر معدوم في تركيا تماما)) (ريج، ٢٠٠٨، ص ص٢٧١-٢٧٢).

وقد انفرد ريج بالحديث عن عادات الكرد في المأكل والمشرب والاحتفال بالمناسبات، فذكر أن الأطعمة كانت تشمل أنواع اللحوم الناشفة وغير الناشفة، وأنواع أخرى من الأطعمة الشهية كالفرهود والقوزي والمحشي المشوي، والأنواع المختلفة من المرطبات كالشنين مبرداً بالثلج ممزوجاً بالإجاص الفج المفروم "قه زوان"(ريج، ٢٠٠٨، ص ص١٢٢ وغيرها).

أما عن الاحتفالات فذكر أنها كانت مبهجة تشمل الغناء والموسيقي الشعبية الكردية، والملابس البراقة، والرقص الكردي؛ حيث تتشابك فيها الأيدي ومن كلا الجنسين، ويتساوى فيها القائد العشائري بالفلاح (ريج، ٢٠٠٨، صفحات متعددة).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

فكانت العادات الاجتماعية تفرض مشاركة الجميع في الرقص، وهناك العديد من الرقصات حيث لكل منطقة رقصتها الخاصة، ولكل منطقة زيها الفولكلوري الخاص براقصيها، مثلما لكل رقصة حركات الرجلين واليدين وهز الاكتاف المختلفة عن الأخرى (أحمد، ٢٠٠٩، ص١٨٣).

د- وسائل التسلية:

ومن عادات الكرد التي ذكرها ريج أنهم الشرقيون الوحيدون الذين يسهرون إلى ساعة متأخرة من الليل، وينهضون في ساعة متأخرة صباحاً، وتكون زياراتهم عادة في الليل؛ حيث يستأنسون بالسمر والتدخين والموسيقي(ريج، ٢٠٠٨، ص١٠٨).

كما يذكر ريج أنهم أناس فرحون اجتماعيون إلى حد بعيد، لا يتنافسون ولا يتحاسدون، ولم أسمعهم يتشاتمون أو يتقاذفون بالكلام البذيء مهما اختلف نزعاتهم وتضاربت منافعهم(ريج، ٢٠٠٨، ص١٠٩).

وكان الكرد يمارسون أنواعاً مختلفة من الألعاب الرياضية والشعبية، فيذكر ريج أنه حضر حفلة للمصارعة في السليمانية، وعلق على ذلك بقوله: ((إن الأكراد أشد الرياضيين الذين أعرفهم عزما سواء أكانوا صغارًا أم كبارًا، شباباً أم شيوخاً، والرياضة هواية لشعب المستحبة لديهم))، وفعالياتها الرياضية والترفيهية تكاد تكون يومية كاللعب بالسيف والرماية بالبنادق وقتال طيور القبج والمصارعة والفروسية والدبكات الشعبية الراقصة وغيرها(ريج، ٢٠٠٨، صفحات مختلفة).

أما بكنغهام فقد أبدى إعجابه باستخدام الكرد للرماح والسلاح، فذكر أنه كان من بين جماعة خليف آغا صبيان صغيران لا يزيد عمر الواحد منهما عن عشر سنوات ومع ذلك كانا يمتطيان صهوتي جواديهما بثبات، ويحسنان استعمال رمحيهما، وإطلاق نيران مسدسيهما بمهارة فائقة مثل بقية الفرسان(بكنغهام، ١٩٦٨، ص٨).

هـ- الأوضاع الصحية:

وما يتعلق بالأوضاع الصحية في كردستان، فلم تبذل السلطات العثمانية جهوداً تذكر في مجال تقديم الخدمات الصحية، وبسبب فقدان الخدمات الصحية فقد انتشرت الأوبئة وراح ضحيتها مئات الآلاف من السكان(الدوسكي، ٢٠٠٦م، ص٣٦).

وقد وثق ريج بعض من هذه الأمراض وأسباب انتشارها، فعندما زار منطقة شهرزور ذكر أن مناخها حار وغير صحي، ومليئة بالذباب والبعوض، وتوجد فيها الأفاعي بكثرة بدرجة أنها غالباً ما ترى زاحفة على طول الطرق حتى في وضح النهار(ريج، ٢٠٠٨، ص ص١١٩-١٢٠).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

كما ذكر أن سكان مدينة السليمانية قد تعرضوا لمرض الملاريا، وهي حمي تظهر في الربيع غالباً، ومن يصاب بها لا يتعافى إلا نادراً، وعندما توجه "ريج" إلى قرية بيستان أصيب مع معظم أفراد جماعته بحمي شديدة سماها الحمي الصفراء، وذكر أنه وباء انتشر بين أهالي القرية المذكورة(ريج، ٢٠٠٨، ص ص١٧٦-١٧٧).

كما ذكر ريج استفحال مرض الجدري في السليمانية، وأودى بحياة العديد من الأطفال وبضمنهم أحد أبناء الأمير البابان نفسه وابن شقيقه عثمان بك(ريج، ٢٠٠٨، ص ص٢٥٥-٢٥٦، ٢٨٧).

وتجدر الإشارة أن معظم تلك الأمراض والأوبئة لم تكن وليدة بيئة وظروف كردستان، بل كانت تأتيها من الأقاليم والبلدان الأخرى (هروتي، ٢٠١٢م، ص٢٠).

وعلى ما يبدو أن المجتمع الكردي قد ترك أثره في ريج، فقال وهو ينهي رحلته إلى كردستان: ((إنني أبارح كردستان بأسف لا حد له، فما كنت أتوقع مطلقاً أن أجد فيها أطيب الناس الذين لاقيتهم في الشرق كله، فقد عقدت الصداقة فيها وعوملت بإخلاص متناه أينما حللت، وبلطف وبضيافة لا حد لهما، وأخشى إنني سوف لا انتظر مثل هذه المعاملة خلال سياحتي المضنية، ولسوف تبقي هذه الذكريات عالقة في قرارة نفسي ما حييت)) (ريج، ٢٠٠٨، ص٣٠٦).

**الخاتمة:**

تبين مما ذكره بكنغهام وريج في أن الأول طوّف بمعظم المناطق الكردية التي كانت في طريقه من سوريا إلى بغداد، دون أن يمكث طويلاً في معظم الإمارات الكردية أو المدن الكردية باستثناء أربيل، ومن ثم فإن احتكاكه بشكل مباشر كان مع القبائل الكردية الرحل، فلم يشهد مجتمعاً كردياً مستقراً كما في الإمارات الكردية، وعلى العكس من ذلك فإن ريج استقر في إمارة بابان فترة ليست بالقصيرة، وأقام علاقات مع سكانها، وشاهد مدنها وعاداتها عن كسب، وقد انعكس ذلك على كتاباته.

ويعد ما كتبه ريج عن المجتمع الكردي المتحضر، ونظرته العميقة والتفصيلية لبعض المناطق الكردية إتماما لما ذكره بكنغهام عن الحياة العشائرية في المناطق الكردية.

ولكن لوحظ أن بكنغهام كانت كتاباته لا تتسم بالعمق، وإنما كانت عبارة عن مشاهدات عابرة دون تفاصيل، أما ريج فقد كان يكتب بنظرة المؤرخ الفاحص والمدقق لمشاهداته كافة، على الرغم من ذلك فلم يناقش نواحي عدة، وسائل الري وطرق انتقال المياه من الأنهار إلى الأراضي، وكذا لم يتطرق بالتفصيل إلى الصناعة والتعليم.

كما ناقش ريج أثر الأوضاع السياسية للإمارات الكردية المتمثلة في الضغوط الفارسية والعثمانية عليها، والتي أدت إلى تدهور الأوضاع الاقتصادية، كما ركز ريج على الأوضاع



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الاجتماعية بتفاصيلها المتمثلة في كتاباته عن المظاهر العمرانية في إمارة بابان، وكذا العادات والتقاليد التي كان يمارسها سكان السليمانية بشكل خاص، وكذا الأوضاع الصحية والعوامل التي كانت تؤثر فيها، وانتشار الأمراض بسبب فقدان الخدمات الصحية، كما لوحظ من كتاباته أنه دائم المقارنة بين الأوضاع الاقتصادية والاجتماعية في الأناضول، ومقارنتها بتلك الأوضاع في الإمارات الكردية، منصفاً الأوضاع في الإمارات الكردية، على سبيل المثال ما ذكره عن المرأة الكردية ووصفه بأنها أفضل من نظيراتها في وجودها كعنصر فاعل في المجتمع الكردي.

**قائمة المصادر والمراجع**


- بكنغهام، جيمس (١٩٦٨م)، رحلتي إلى العراق سنة ١٨١٦م، ترجمة: التكريتي، سليم طه، ج١، بغداد.
- ريج، كلود يوس جيمس (٢٠٠٨)، رحلة ريج المقيم البريطاني في العراق عام ١٨٢٠م إلى بغداد-كردستان-إيران، ترجم: نوري، بهاء الدين، الدار العربية للموسوعات، بيروت.
- أحمد، أحمد محمد (٢٠٠٩)، أكراد الدولة العثمانية تاريخهم الاجتماعي والاقتصادي والسياسي ١٨٨٠-١٩٢٣، سبيريز، كردستان العراق.
- الدوسكي، كاميران عبد الصمد أحمد (٢٠٠٦)، كردستان في العهد العثماني في النصف الأول من القرن التاسع عشر، الدار العربية للموسوعات، بيروت.
- رؤوف، عماد عبد السلام (٢٠١٢)، دراسات وثائقية في تاريخ الكرد الحديث وحضارتهم، دار الزمان للطباعة والنشر، سوريا.
- سايكس، مارك (٢٠٠٧)، القبائل الكردية في الإمبراطورية العثمانية، ترجمة: مراد، خليل علي، دار الزمان، سوريا.
- العزاوي، عباس (د.ت)، موسوعة تاريخ العراق بين احتلالين، مج ٦، الدار العربية للموسوعات، بيروت.
- محو، أرشد حمد (٢٠١٢)، الايزيديون في كتب الرحالة البريطانيين، مؤسسة بحوث ونشر موكرياني، دهوك.
- هروتي، سعدي عثمان (٢٠٠٨)، كوردستان والإمبراطورية العثمانية " دراسة في تطور سياسة الهيمنة العثمانية في كوردستان ١٥١٤-١٨٥١م، مؤسسة موكرياني للبحوث والنشر، كوردستان العراق.
- هروتي، سعدي عثمان (٢٠١٢)، دراسات أكاديمية في تاريخ كردستان الحديث، دار غيداء للنشر والتوزيع، د.م.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ فەکۆلینێن کوردی

- Heude, William (1817), A Voyage up the Persian Gulf and A Journey overland from India to England in 1817, London.
- Sydney Gazette and New South Wales Advertiser, Saturday, 19 August 1820, p.3.
- National Intelligencer: Volume 13, Issue 3990, Friday, Nov. 4, 1825.

**الهوامش:**

---

(١) ضم هذا التحالف أغلب القبائل الكُردية في بلاد فارس، وعدداً من زعماء إمارة بابان الكُردية الطامحين في حكم الإمارة، وهما: محمد باشا بن خالد باشا وسليمان باشا بن إبراهيم باشا، وعبد الله باشا أخو عبد الرحمن باشا. العزاوي، د.ت، ص٣٠٩؛ رؤوف، ٢٠١٢، ص ص١٥٧-١٥٨.

## بارودۆخێن ئابووری و جڤاکی یێن میرگەهێن کوردی د بیرەوەرییێن جێیمس باکینگهام و جێیمس ریچ

**پۆختە:**

شەرت و مەرجێن ئابۆری و جڤاکییێن هەر گەلەکی بەلگەیا ڤەژین یان درەنگماییناگەلییە و ژ بەر تایبەتمەندیا رەوشا کوردستانێ د سەردەمێ ئۆسمانیاندا، پرانیا ڤەکۆلینێن ئاکادیمی بالا وان ل سەر رەوشا سیاسی و ناکۆکییێن د ناڤبەرا میرنشینێن کوردان دا بوو و هێزێن هەرێمێ، ب تایبەتی ئیمبراتۆریا ئۆسمانی و فارسان، و دبنە کو ئەڤ یەک ژ بەر هەبوونا بەلگەیێن سیاسی بە، وەک فەرمانێن سولتانیان و پەیوەندییێن د ناڤبەرا میر و هێزێن کورد ل هەرێمێ، و بەلگەیێن دیێن سیاسی کو دیرۆکا سیاسییا کوردان گەش دکەن. د دەما ئۆسمانیاندا.

دەربارەی شەرت و مەرجێن ئابۆری و جڤاکی ژی، د بەلگەیاندا ئیهمال ل وان هاتییە کرن، ئاماژە ب بریارێن کۆمکرنا باجێ و دانانا باجێن نوو نەکرن، بێیی کو بەحسا شەرت و مەرجێن رایا گشتی بکەن. شەرت و مەرجێن ئابۆری و جڤاکییێن ل کوردستانێ ڤەکۆلەر نەچار کر کو ل تێبینییێن رێویان بنەرن، کو ئەو چاڤکانیەکا سەرەکییە ژ بۆ ئاخافتنێ ل سەر رەوشا ئابۆری و جڤاکییا هەرێمێ ژ بلی سیاسەتێ، تەڤی بیرانینێن کو مژارا لێکۆلینێ نە.

بیرانینێن گەرۆکێ بریتانی ژامەس سلک بوجکنغام و بیرانینێن بریتانییێ روونشتڤانێ عیراقێ ژامەس جلاودوس رچ ژ گرنگترین ژێدەرێن کو دیرۆکا میرنشینێن کوردی د وێ قۆناخا گرنگا دیرۆکا وێ دا بەلگە کرنە.یا یەکەم - بوجکنغام - سالا ١٨١٦ میلادی سەرەدانا ئیراقێ کر، و ژ شنگال، مووسل و هەولێرێ و دەڤەرێن دیێن کوردی دەرباز بوو، وەکیا دویەم - رگ - د سالا ١٨٢٠ میلادی دا سەفەرا خوە بۆ کوردستانێ کر.

گرنگییا تشتێ کو بوجکنغام و رگگ بەهس کرن د وێ یەکێ دەیە کو سەرەدانا وان هەڤدەم بوو لگەل تەڤگەرێن ئۆسمانییێن ژ بۆ هلوەشاندنا میرنشینێن کوردان و دانینا وان د بن سەروەریا راستەراست دا، و باندۆرا پێ رە ل سەر رەوشا ئابۆری و جڤاکییا میرنشینێن کوردان پێک هات. دەربارێ کوردستانێ  ژ بۆ رەخنە و ئانالیزێ.

ئەڤ لێکۆلین خوە دسپێرە بیرانینێن بوجکنغام و رەگ، ژ بلی کۆمەک چاڤکانی و رەفەرانسێن کو بەشداری ڤێ لێکۆلینێ بوونە.
**پەیڤێن سەرەکی**: *ریچ، باکینگهام ، کوردستان، موسل*

**The economic and social conditions of the Kurdish emirates in the memoirs of James Buckingham and James Rigg**

**Abstract**:

The economic and social conditions of any people are evidence of the people's revival or delay, and given the specificity of the situation in Kurdistan during the Ottoman era, academic studies focused most of their attention on talking about the political conditions and conflicts between the Kurdish emirates and regional powers, especially the Ottoman Empire and Persia, and this may be due to the availability of Political documents, such as Sultanian orders and correspondence between Kurdish princes and powers in the region, and other political documents that fueled the political history of the Kurds during the Ottoman era.

As for the talk about the economic and social conditions, the documents neglected them. They did not refer to decisions to collect taxes and impose new taxes, without any mention of the conditions of the general public. Hence, the scarcity of documents that talk about the economic and social conditions in Kurdistan forced researchers to look into the notes of travelers, which It is a major source for talking about the economic and social conditions in the region in addition to politics, including the memoirs that are the subject of the study.

The memoirs of the British traveler James Silk Buckingham, and the memoirs of the British resident in Iraq, James Claudius Rich, are among the most important sources that documented the history of the Kurdish Emirates at that important stage in its history. The first - Buckingham - visited Iraq in 1816 AD, and passed through Sinjar, Mosul and Erbil. and other Kurdish areas, as for the second - Rig - he made his trip to Kurdistan in the year 1820 AD,

The importance of what Buckingham and Rigg mentioned lies in the fact that their visit coincided with the Ottoman moves to overthrow the Kurdish emirates and subject them to direct rule, and the accompanying impact on the economic and social conditions of the Kurdish emirates. What he mentioned about Kurdistan for criticism and analysis.

This study relies on the memoirs of Buckingham and Reg, in addition to a group of sources and references that contributed to fueling this research.
**Keywords**: *Reg, Buckingham, Kurdistan, Mosul*

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

# سياسة الدولة العثمانية تجاه الإمارات الكردية في كردستان (١٥١٤-١٨٥١م)

أ.د. فائزة محمد حسن ملوك

قسم التاريخ- كلية الآداب-جامعة دمنهور/ جمهورية مصر العربية

**الملخص:**

كان دخول كردستان تحت السيطرة العثمانية عام ١٥١٤م بعد معركة جالديران بداية للعلاقات السياسية بين الكرد والعثمانيين بتوقيع اتفاق السلطان العثماني سليم الأول (١٥١٢-١٥٢٠م) في تلك السنة مع قادة الإمارات الكردية على الوقوف إلى جانب الدولة العثمانية في حروبها على أن تعترف الأخيرة باستقلالية الإمارات الكردية.

ومنذ هذه اللحظة أصبح هناك منعطفاً كبيرًا في تاريخ العلاقات العثمانية – الكردية إذ أصبحت معظم المناطق الكردية تابعة للدولة العثمانية، ونتيجة لمشاركة الكرد العثمانيين في حروبهم ضد جيرانهم الصفويين لا سيما بعد المعركة السابقة فقد أقر السلاطين العثمانيون بشرعية وسلطة الأمراء الكرد في إماراتهم الوراثية وسمحت الدولة العثمانية بتشكيل عديد من الإمارات الكردية، وصل عددها إلى ثلاثين إمارة رئيسة مثل إمارات بهدينان، وسوران، وبوتان، وبابان بعد توقيع الدولة العثمانية مع تلك الإمارات اتفاقية صداقة وتحالف عام ١٥١٥م.

لكن لم تلتزم الدولة العثمانية بالاتفاقيتين السابقتين لتحقيق عدة منافع لها على حساب إضعاف الكيانات السياسية في كردستان بإشعال النزاعات والمشكلات بين الإمارات والزعامات الكردية ما عرف باسم سياسة فرق تسد والتدخل العثماني في شؤونهم، وتحقيق مكاسب مالية من قِبَل الأمراء الكرد الطامعين في الحصول على منصب الإمارة فضلاً عن المغالاة في فرض الضرائب وانتشار عمليات السلب والنهب بالإمارات الكردية مما أدى إلى ظهور عدة انتفاضات كردية احتجاجًا على تلك السياسة وا لدفاع عن حقوقهم، و مع حلول القرن التاسع عشر استهدفت السياسة العثمانية إعادة السيطرة المركزية على كردستان لتحقيق هدفها الأكبر وهو سقوط الإمارات الكردية القائمة منذ عدة قرون.

وما تبع ذلك من قيام عدة انتفاضات كردية وقد تم ذلك على فترات متقاربة خلال القرن التاسع عشر حتى سقوط آخر إمارة بها عام ١٨٥١م.

ولم تكتف بذلك بل عمدت إلى إبعاد الأمراء الكرد وعائلاتهم إلى مناطق بعيدة عن كردستان لمنعهم من القيام بأية ثورات في المستقبل.

من هنا جاء مشكلة البحث مركزة على النقاط التالية:



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

١) كيف تمكنت الدولة العثمانية من فرض سيطرتها على كردستان؟

٢) كيف تمت عثمنة كردستان سياسيًا وإداريًا؟

٣) ما هي طبيعة السياسة العثمانية تجاه الأمراء الكرد؟

٤) ما هي الأسباب التي دفعت الدولة العثمانية إلى نقض اتفاقية الصداقة والتحالف مع الإمارات الكردية؟

٥) إلى أي مدى وصلت السياسة التعسفية تجاه الإمارات الكردية؟

٦) ما هو ردود فعل الأمراء الكرد تجاه السياسة العثمانية التعسفية؟

٧) كيف واجهت السلطات العثمانية الانتفاضات الكردية؟

٨) إلى أي مدى نجحت الدولة العثمانية في فرض السلطة المركزية على كردستان؟ وما أثره على حكم الإمارات؟

٩) لماذا لجأت الدولة العثمانية إلى سقوط الإمارات الكردية؟

١٠) كيف تصدت الدولة العثمانية إلى الانتفاضات الكردية جراء محاولة سقوط الإمارات الكردية؟

١١) إلى أي مدى وصلت الأوضاع السياسية والإدارية لكردستان عقب سقوط إماراتها؟

**كلمات مفتاحية:** الإمارات الكردية – الحكم المركزي العثماني – الانتفاضات الكردية – القومية الكردية

---

تعددت الآراء حول تحديد حدود كردستان العثمانية فهناك رأي يذكر بأنها تمتد من أريفان– أرضروم– أرزبجان بتركيا، فالقوس الممتد من (ماراش) نحو حلب وغربًا من سفوح الجبال الشمالية المتصلة بدجلة والمارة بمحاذاته وإلى شمال جبال حمدين وعلى امتدادها إلى مندلي (ادموندز، ١٩٧١، ٧٥).

بينما يحددها آخر بالمنطقة الممتدة بين جبال ارارات شمالاً وولاية بغداد وما جاورها جنوبًا وفارس (إيران)، أما الحد الغربي لكردستان العثمانية فيمتد، كخط من قارص مارًا بـ (أرضروم) و(أرزبجان) و(خربوط) إلى آمد (دياربكر) ومنها على طول نهر دجلة إلى جبال حمدين (زكي، ١٩٣٩، ١١-١٢).

بينما يذكر الرحالة العثماني (أوليا جلبي) بأنها تمتد من (أرضروم) شمالاً وحتى (البصرة) مارًا بمدن وان، هكارى، الجزيرة، أميدى (العمادية بدهوك) - درتنك إحدى مدن الخط الممتد من حلبجة، نفط شاه، دهلران، (زكي، ١٩٣٩، ١٤) في حين رأى ثالث يقول بأن كردستان تشمل البلاد الممتدة من البحر الأسود إلى بلاد ما بين النهرين (كلو، ١٩٩١، ٢٨٣؛ رامبو، ١٩٩٨، ٢٥).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرى زاخۆ بۆ ڤەكولینێن كوردی

ومع ذلك يعد رسم خارطة سياسية دقيقة لكردستان في بداية القرن السادس عشر من الأمور الصعبة نظرًا لعدم استقرار الوضع السياسي فيها وذلك لكثرة النزاعات بين الإمارات الكردية نفسها من جهة وبين تلك الإمارات والدول المسيطرة على كردستان – الآمد قونيلو من جهة أخرى (زكي، ١٩٣٩، ١٦٢). لكن بالرجوع إلى أحد المصادر تبين أن التقسيم الجغرافي للإمارات الكردية كان ممثلاً في الإمارات الشمالية والتي شملت إمارة بالو الواقعة في شمال إمارة أكيل، وإمارة جرموك الواقعة بين ديار بكر وملاطية (البدليسي، ١٩٥٣، ١٨٤)، وإمارة بدليس والتي تقع في جنوب غربي بحيرة وان وتضم في حكمها مدينة بدليس وتوابعها الصغيرة (البدليسي، ١٩٥٣، ٣١٤-٣١٥)، وإمارة ساسون الواقعة في غربي بدليس وتضم مدينة ساسون (المركز) إضافة إلى ناحية هرزن أوكارزن، وإمارة خيزان الواقعة في جنوب غرب بحيرة وان وإمارة موكس الواقعة جنوب بحيرة وان وإمارة سباروت الواقعة جنوب مدينة بدليس (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٣ و ٢٤).

أما إمارات شرقي كردستان فقد شملت إمارة دنبلي الواقعة في شمال غربي بحيرة اورمية وإمارة برادوست الواقعة غرب بحيرة اورمية، وإمارة موكريان الواقعة في جنوب بحيرة اورمية، وإمارة بانه الواقعة جنوب إمارة موكريان وإمارة كلهور الواقعة في شمال لورستان وإمارة لورستان الصغرى الواقعة شمال لورستان الكبرى جنوب غرب إيران (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٧-٢٨).

أما إمارات جنوبي كردستان فقد شملت (إمارة بادينان الواقعة جنوب إمارة هكارى، وإمارة سوران جنوب إمارة بادينان، وإمارة بابان شرق إمارة سوران، وإمارة أردلان الواقعة في شرق كردستان وإمارة داسنى شمال الموصل) (بابان، ١٩٨٦، ١٠٤؛ البدليسي، ١٩٥٣، ١٥).

كانت معركة جالديران عام ١٥١٤م والانتصار العثماني فيها على الصفويين نقطة تحول مهمة للشرق الأوسط عامة ولكردستان خاصة فقد أدت إلى تقسيم كردستان عمليًا بين الدولتين العثمانية والصفوية؛ ما يهمنا كردستان العثمانية فعقب السيطرة العثمانية عليها استعان السلطان سليم الأول بإدريس البدليسي. الذى كان مستشارًا له بوضع خطة تمكنه من كسب تأييد الزعماء الكرد للدولة العثمانية (خصباك، ١٩٥٩، ٢٣ و ٢٧٣- ٢٧٤؛ يحيى، ١٩٨٧، ١٣٥)، واستفاد السلطان سليم من ذلك التأييد مرتين؛ الأولى عندما عاضده الأمراء الكرد في حربه مع الدولة الصفوية خلال معركة جالديران، والثانية عندما عاضدوه لطرد القوات الصفوية الباقية في كردستان لتؤول الأخيرة للدولة العثمانية (زكي، ١٩٣٩، ١٠٥).

ساعد بعض الأمراء الكرد السلطان سليم على اتخاذ ذلك القرار وتبنى تلك السياسة حيث أن بعض الأمراء الذين استولى الصفويون على ممتلكاتهم راسلوا السلطان وأعلنوا ولاءهم له، كما شجعوه على ضرورة التصدى للصفويين مما يُعنى الالتفات نحو كردستان والتفكير فيها، وقد لعب البدليسي دور الوسيط بين أولئك الأمراء وبين السلطان (البدليسي، ١٩٥٣، ٤٣١)،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ويرجح أن تكون تلك الخطوة التي اتخذها الأفراد المذكورون بتأثير البدليسي وتشجيعه لهم أيضًا وخاصةً وأنه كان مكلفًا من قِبَل السلطان للقيام بذلك الدور كما يذكر ذلك بنفسه (زكي، ١٩٣٩، ٧). وقد أفاد السلطان من البدليسي في هذا المجال فائدة كبرى واستفاد البدليسي بدوره من مكانته الدينية والطرق الدبلوماسية التي اتبعها (الجميل، ١٩٨٠، ١٩٣)، وذلك إضافة إلى استياء الأمراء الكرد من سياسة الشاه إسماعيل الصفوي وتعامله معهم (علي، ١٩٩٢، ٩٤)، إضافة إلى أن تلك الطريقة كانت أقل كلفة نتيجة لتلك الجهود شارك الأمراء الكرد بأنفسهم إلى جانب القوات العثمانية لإدخال كردستان في المجال العثماني وتضاءلت بذلك الحاجة إلى قوات عثمانية كثيرة كما أنها كانت أضمن طريقة للدولة العثمانية في تمكنها من دخول كردستان بموافقة أمرائها.

ومن ناحية أخرى استخدم السلطان سليم الأول، إدريس البدليسي في توسطه لعقد اتفاق بين الدولة العثمانية والأمراء الكرد فنجح في مهماته في عام ١٥١٤م أي عقب معركة جالديران جاء مضمون هذا الاتفاق التعهد بالحفاظ على حرية واستقلال الإمارات الكردية، والاعتراف العثماني بالحق الوراثي للأمراء الكرد في حكم إماراتهم ولكن كلما نصب أمير جديد على الإمارة صدر فرمان سلطاني يعترف بحكم ذلك الأمر (جلبى، ج٤، ١٣١٤هـ، ٢٥-٣٥؛ البدليسي، ١٩٥٣، ١٤٤-١٤٥)، يضاف إلى ذلك التزام الأمراء الكرد بمساعدة الدولة العثمانية في حروبها (جلبي، ج٤، ١٣١٤هـ، ٣٦)، مقابل دفاع الدولة العثمانية عن الإمارات الكردية في حالة تعرضها للخطر (خصباك، ١٩٥٩، ٢٣)، كذلك حق السلطات العثمانية في عزل الأمير الكردي الذي يتخلف عن أداء ذلك الواجب (جب و بوون، ١٩٩٧، ٢٠٣)، لكن في ظل ذلك فرضت الدولة العثمانية على الإمارات الكردية رسوم وضرائب نظير التبعية لها (مصطفي، ١٩٨٢، ٨١؛ خصباك، ١٩٥٩، ٢٣)، مع العلم أن الدولة العثمانية كانت تتغاضى عن مطالبة تلك الإمارات بذلك في بداية سيطرتها عليها ربما العثمانيين فضلوا الولاء السياسي والعسكري على أخذ الضرائب من الكرد في تلك الفترة المبكرة (على، ١٩٨٤، ٩٦).

يمكن القول أن ما تتضمنه هذا الاتفاق قد تبين منه عدم التكافؤ لصالح العثمانيين إذ كان الأخير على كردستان واضحًا ذلك في تدخل الدولة العثمانية في تعيين الأمراء الكرد بصدور فرمان سلطاني وهو ما استغله من جهة أخرى، في الوقت نفسه يمكن القول أن هذه الاتفاقية تعد كخطوة إيجابية واعتراف رسمي من الدولة العثمانية بمشروعية الإمارات الكردية، بينما كان هناك اتهام من البعض لإدريس البدليسي بالعمالة والخيانة (حسين، ١٩٩٥، ٥٠ وما بعدها)، لكن مهما قيل عنه فإنه كان يتميز بمكانة خاصة عند السلطان العثماني والكرد أيضًا،



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

ويمتلك شخصية قوية مكنته من القيام بدوره بغض النظر ما احتوته تلك الاتفاقية من جوانب إيجابية أم سلبية.

كما كانت تلك التغييرات – أحيانًا – تعود إلى العامل الذاتي حيث أن بعض الأمراء الكرد كانوا يبادرون إلى توسيع حدود إماراتهم على حساب الإمارات الأخرى حينما يروا في أنفسهم، وفي إماراتهم القدرة الكافية لتحقيق ذلك الهدف وكانت تلك الظاهرة سمة من سمات النظام الإقطاعي السائد آنذاك في كردستان (پی ره ش، ١٩٨٠، ١٦).

وتوالت بعد ذلك الإجراءات العثمانية التي كانت تخل بالاتفاق المذكور وتحجم الاستقلال الداخلي للإمارات الكردية بإخلالها بسلطاتها إذ قامت الدولة العثمانية في النصف الأول من القرن الثامن عشر باتخاذ إجراء سياسي – إداري أثرت في الإمارات الكردية في جنوبي كردستان وذلك عندما دفعت حاجتها إلى وجود قوة واحدة في العراق لتستطيع مواجهة الخطر الفارسي إلى الاعتراف بسلطة والي بغداد (حسن باشا) غير الاعتيادية فامتد نفوذ إيالة بغداد منذ ذلك الحين إلى ما وراء إيالة الموصل وضمت إليها مدينتي ماردين ونصيبين (رؤوف، ١٩٧٥، ١٢٤).

وبموجب هذا الإجراء أصبحت الإمارات الكردية في جنوبي كردستان ومنطقة ماردين تتبع إيالة بغداد إداريًا (لونكريك، ١٩٨٥، ١٥٨ و ٢١٣)، وتعين على أمرائها أن يؤدوا الضريبة إلى ولاة بغداد لقاء إقرار الأخيرين لحكمهم ومنحهم الخلعة الرسمية سنويًا (نيبور، ١٩٦٥، ٧٥)، وآل الأمر في النهاية إلى احتفاظ والي بغداد بسلطة الإشراف على معظم الإمارات الكردية في كردستان الجنوبية (جودت، ١٣٠١هـ، ٢٧٠)، وبالأخص إمارتي بادينان، وبابان إذ بقيت الأولى تابعة إيالة بغداد ولذلك نجد أن أمراء بادينان كانوا يتولون الإمارة بتفويض من والي بغداد خلال تلك الفترة (العزاوي، مج ٤-٧، ١٩٥٥، ٥٢- ٥٣)، ولكن الوالي علي باشا أقدم على وضع أمراء بادينان تحت إشراف والي الموصل عام ١٨٠٦م (العمري، ١٩٤٠، ١٥)، أما الثانية وهي إمارة بابان فإنها رغم تبعيتها لإيالة بغداد إلا أن درجة تلك التبعية كانت تتوقف قبل كل شيء على قوة شخصية الأمير البابانى ثم على قوة وسلطة والي بغداد بعد ذلك (هروتي، ٢٠٠٨، ١١٤)، حيث أن قوة أمير بابان ونفوذه كانا من الأمور التي تساعده على الاستقلال بشؤون إمارته عن والي بغداد كما أن قوة شخصية الوالي (والي بغداد) وسعة نفوذه كانت مانعة لهذا الاستقلال فيؤدي ذلك إلى فرض سطوة بغداد على الإمارة حتى تكون أشبه بأحد سناجقها.

كذلك تدخل العثمانيون في صلاحية الإمارات الكردية في فرض الضرائب والمكوس الجمركية تلك الصلاحية التي اعترف بها كل من السلطانين سليم الأول وسليمان القانوني (١٥٢٠-١٥٦٦م)، ولكن العثمانيين كانوا ينظرون إليها أحيانًا كأنها أعمال سلب ونهب وقطع طرق العثمانيون فيما بعد لتحقيق مآربهم في ضرب هؤلاء الأمراء الذين يناوؤونهم تنصيب الذين



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

يسايرون السياسة العثمانية في محلهم لكن لا يمنع ذلك أن هذا الاتفاق أبرم بين قوتين غير متكافئتين من جميع النواحي خاصةً وأنه مازال مهددين بعدو مشترك هو الصفويين.

عهد السلطان سليم مهمة تحديد الوضع السياسي والإداري للإمارات الكردية إلى إدريس البدليسي حيث حاول الأخير بحكمته أن يجنبها السيطرة العثمانية بقدر المستطاع، كما أطلق اسم الحكومات الكردية على بعض الإمارات الكردية رسميًا (هروتي، ٢٠٠٨، ٧٠).

والجدير بالذكر أن البدليسي كان معنيًا بتحديد علاقة الكيانات الكردية بالسلطات العثمانية فحسب، أما الإطار الشامل للتنظيمات الإدارية في المنطقة فكان يحدده المسؤولون العثمانيون وذلك بالاستناد إلى التنظيمات الإدارية العثمانية المتبعة في تلك الفترة (حسين، ٢٠٠٦، ٧٨-٨٥).

حاولت الدولة العثمانية إيجاد نظام حكومات الذى كان أشبه بالنظام الفدرالي — على حد التعبير — يهدف إلى تسهيل الأمور الإدارية حيث أن أحوال البلاد الخاصة ونزوع رؤساء العشائر فيها إلى السلطة وميل السكان الدائم إلى الحرية كانت تقتضى من العثمانيين إنشاء إدارة مستقلة عن الإدارة العثمانية المباشرة (زكي، ١٩٣٩، ١٧١-١٧٢).

إضافة إلى أن الدولة العثمانية لم تكن تريد خلق كيان كبير له إدارته المركزية في بلاد ذات طبيعة مستعصية، كما أن الأمراء وزعماء العشائر الكرد كانوا قد اشترطوا على البدليسي استمرارهم في حكم إماراتهم وعشائرهم عندما أعلنوا ولائهم للدولة العثمانية وبتلك السياسة ذات النظرة البعيدة ثم ضمان ولاء الكرد للدولة العثمانية (هروتي، ٢٠٠٨، ٧٥).

وفي أحيان أخرى كانت الدولة العثمانية تستخدم بعض الإمارات الكردية لإخضاع الإمارات الأخرى التي لم تدخل ضمن السيادة العثمانية، فقد أصدرت السلطات العثمانية أوامرها لأمير بادينان سلطان حسين بك المذكور وزينل بك (أمير هكاري) مع زعماء إمارة برادوست بأمر من السلطان سليمان القانوني إمارة موكريانى التي رفضت الخضوع للسيادة العثمانية في عام ١٥٤٣م وكانت النتيجة مقتل الأبناء الثلاثة للأمير رستم بن بابا عمرو الموكريانى (هروتي، ٢٠٠٨، ٩٦).

ومن السبل الأخرى التي انتهجوا فيها سياسة (فرق تسد) محاولة هدم البنية السياسية للإمارات الكردية بخلق أسباب الشقاق داخل الإمارة الكردية الواحدة خاصة في مسألة تولية منصب الإمارة وذلك عندما كانوا يعمدون إلى تنصيب أميرين على إمارة واحدة في وقت واحد مثلما حدث في إمارة بابان للحد من أمراءها وحركاتهم المضادة للسلطات العثمانية (البدليسي، ١٩٥٣، ٢٩٢).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

لعل كان هدف العثمانيون من تلك السياسة تحقيق منافع عدة منها إضعاف الكيانات السياسية في كردستان جراء استمرار النزاعات بينها وإشغال الإمارات والزعامات الكردية بالمشكلات الداخلية والحيلولة دون توسيع نفوذها وتوحيد كلمتها، إلى جانب تحقيق مكاسب مالية فكثيرًا ما كانوا يتقاضون مبالغ كبيرة من المال من الأمراء الكرد الطامعين في الحصول على منصب الإمارة لقاء تفويضهم رسميًا بالمنصب المنشود أو لقاء التوسط لهم لدى إستانبول.

في الوقت نفسه تضافرت عدة عوامل استفاد منها العثمانيين في تسهيل تنفيذ سياستهم المذكورة منها حالة كردستان السياسية المتمثلة في انقسامها إلى مجموعة إمارات إقطاعية وزعامات عشائرية متنافرة ومتناحرة حيث كانت النزاعات القائمة بسبب محاولة الحصول على مزيد من الامتيازات الإقطاعية أو الحفاظ على مناصبهم إزاء الخصم في بعض الأحوال يصبح دافعًا قويًا يدفعهم إلى الاستعانة بالدول المجاورة (مالكم، جـ٢، ١٣٢٣هـ، ١١٠) لا شك أن تلك الدول كانت تنتظر تلك الفرصة، وساعد على ذلك عدم نضوج الشعور القومي في المنطقة بشكل عام وفي كردستان بشكل خاص مما أدى إلى عدم وجود قوة محلية رشيدة تتفهم المصلحة القومية وتحاول الحفاظ عليها.

ولعل ما تجدر الإشارة إليه تمتعت الإمارات الكردية طبقًا للاتفاق العثماني — الكردي السابق — بحالة شبه استقلال عن الدولة العثمانية وخاصةً فيما يتعلق بالشؤون الداخلية حيث احتفظت بإداراتها المحلية السابقة، واستمرت في حكم مناطقها ولم ترتبط بالحكومة المركزية إلا برابطة الولاء الأسمى وتقديم الالتزامات المالية والعسكرية لها وظل ذلك الاستقلال الداخلي معترفًا به رسميًا من قِبَل الدولة العثمانية في الفترات اللاحقة أيضًا. وقد أوضح ذلك الرحالة أوليا جلبى عند زيارته لكردستان في الربع الثالث من القرن السابع عشر الميلادي حيث ذكر عند وصفه لقلعة أكيل يقول « إلا أن أميرها ليس أميرًا عثمانيًا ولا يمكن عزله وإذا مات الأمير يرثه ابنه في منصبه لأنها حكومة مستقلة »، كذلك في وصف مدينة بدليس يذكر « عندما أطاع أمير بدليس السلطان سليمان أصبحت بدليس حكومة مستقلة » (جلبى، ج٤، ١٣١٤ هـ، ٢٨، ١٠٥). أما الرحالة نيبور الذي جاء إلى كردستان في عام ١٧٦٦م فصرح بأن «الكرد لا يرضون أن يعين عليهم الباشا "والى بغداد" حاكمًا تركيًا فهم يصرون على أن يترأسهم أحد رؤسائهم» (نيبور، ١٩٦٥، ٧٣).

يمكن القول أن العثمانيين كانوا يتدخلوا في الشؤون الداخلية للإمارات والزعامات الكردية كلما سنحت لهم الفرصة أو اقتضت مصالحهم ذلك إذ كانوا يخلقون المعاذير المختلفة ليتسنى لهم تنفيذ مآربهم في كردستان دون أن يمنعهم الاعتراف العثماني السابق بالاستقلال الداخلي لتلك الإمارات ظهر ذلك واضحًا عندما كانوا يحاولون عزل من يرغبوا من الأمراء وتنصيب الموالين لهم مستقلين في ذلك ضرورة الاعتراف العثماني بالأمير الجديد ليأخذ حكمه



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

طابعًا رسميًا حسبما جاء في الاتفاق الكردي العثماني، ولكن المسؤولين العثمانيين استغلوا ذلك إلى حد بعيد حيث كانت تصدر فرمانات عزل ونصب حكام الإمارات الكردية من قِبَل الصدر الأعظم أو السلطان العثماني نفسه خلال الحقب الأولى من الحكم العثماني، ولكن تلك السلطة قد أعطيت فيما بعد إلى ولاة الولايات العثمانية الكبرى مثل بغداد وديار بكر إذ تم تخويل حكام تلك الولايات صلاحية عزل ونصب أمراء الإمارات الكردية التابعة إداريًا لولاءتهم (البدليسي، ١٩٥٣، ص ٢٢٥).

وإن كانت السلطات العثمانية لم تمتلك في الواقع حق عزل الأمراء الكرد حقًا مطلقًا فيذكر أوليا جلبى «لا يمكن تعيين وعزل هؤلاء الأمراء — أى أمراء الحكومات الكردية ضمن إيالة ديار بكر - إلا في حالة واحدة وهى عدم اشتراكهم في الحروب التي يدعون إلى الاشتراك فيها» (جلبى، ج٤، ١٣١٤ هـ، ٣٥)، ولكن المسؤولين العثمانيين استغلوا ذلك الامتياز الذى اعترف الأمراء الكردية لهم كما ذكرنا بل تطور بهم الأمر حتى أصبحت السلطات العثمانية صاحبة السلطة المطلقة في تعيين وعزل الأمراء الكرد وكانوا يرمون من وراء ذلك إلى إحكام قبضتهم السياسية على كردستان شيئًا فشيئًا وذلك إما عن طريق إبعاد الأمراء الكرد الذين يناوئون السيادة العثمانية على إماراتهم سواء عن طريق الحركات العسكرية أو التمرد والعصيان كما كانت تسميها الدولة العثمانية مثلما حدث في عام ١٧٤٧م ضد سليم باشا بابان الذى كان قد رفض السيادة العثمانية على إمارة بابان وقطع علاقاته بالدولة العثمانية (هروتي، ٢٠٠٨، ١٠٥).

كذلك ضرب الأمراء الذين لهم طموحات سياسية لا تتناسب مع المصالح العثمانية ونقصد بذلك مبادرتهم إلى توسيع نفوذ إماراتهم أو محاولة بناء قوة إقليمية قد تهدد السيادة العثمانية في المنطقة، وخير مثال على ذلك هو «الأمير بدرخان باشا البوتانى» الذي وسع نفوذه حتى امتد إلى مناطق دان، ومهاباد، ورواندوز، والموصل، وسعى إلى الاستقلال فأدركت السلطات العثمانية خطورة تلك التطورات عليها وعملت على القضاء عليه (هروتي، ٢٠٠٨، ١٠٦).

اهتمت الدولة العثمانية بتنصيب الأمراء الموالين لها فعندما رفض الأمير البابانى إبراهيم باشا أن يشترك مع والى بغداد في قمع حركة عشائر المنتفك في جنوب العراق عام ١٧٨٦م أمر الوالي بعزله وعين مكانه الأمير عثمان باشا الذى راح يسعى إلى تلبية الطلب فشارك بالقوات البابانية في الحملة المذكورة (البصري، ١٩٩١، ١٨٣).

وبالإضافة إلى دافع تقوية السلطات العثمانية السياسية في كردستان كانت هناك دوافع أخرى وراء عملية عزل وتعيين الأمراء الكرد من قِبَل المسؤولين العثمانيين وخاصةً مسألة المنافع المادية حيث كانت الرشاوى ودفع الأموال والهدايا التي كانت ترسل إلى المسؤولين العثمانيين تسبب في عزل الأمير الكردي عن إمارته وتولية من دفع تلك الإتاوات، فعلى سبيل المثال


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

في إمارة هكاري لم يتمكن زكريا بك الذى كان وارثًا شرعيًا للإدارة من استرجاع منصبه إلا بعد أن دفع مبلغ مائة ألف فلورى (عملة إيطالية تساوى الواحدة منها نحو ٢٠٠ دولار أمريكي) للمسؤولين العثمانيين (البدليسي، ١٩٥٣، ١٣٥). كما أن الأمير عزيز بن كاك محمد قد حصل على دعم القائد العثماني فرهاد باشا -الذي كان قائدًا للقوات العثمانية في الشرق في الرابع الأخير من القرن السادس عشر- (لونكريك، ١٩٨٥، ٢) ليحصل على إمارة بوتان عندما وعده بمبلغ ١١٢ ألف فلورى وقد تم له ما أراده فعلاً حتى أن فرهاد باشا قام بقتل منافسه الأمير ناصر بن خان إبدال ليزيل العقبات أمام بلوغه المنصب المنشود (البدليسي، ١٩٥٣، ١٦١-١٦٢).

أما الدافع الآخر فكان مسألة الوساطة الشخصية والصداقة والتقرب من المسؤولين حيث كانت هناك حالات عزل وتعيين ساهمت الصداقة الشخصية بدورًا بارزًا فيها فقد عين عمر باشا والى بغداد (١٧٦٤-١٧٧٥م) الأمير سليمان باشا على إمارة بابان لما بينهما من صداقة سابقة وذلك بعد أن عزل أحمد باشا بابان في عام ١٧٦٣م كما عزل المسؤولون العثمانيون الأمير مصطفي بك عن إمارة بالو في عام ١٧٨٤م رغم خدماته الجليلة أثناء الحرب العثمانية الروسية (١٧٦٨-١٧٧٤م) وذلك لترضية طموحات ابن أخيه قاسم بك الذى تقرب من أولئك المسؤولين (ناظم بيك، ٢٠٠١، ١١٦- ١١٧).

أما التهمة الأكثر شيوعًا فهي تهمة التمرد والعصيان أو محاولة الانفصال والاستغلال التي وجهت إلى الأمراء الكرد في كثير من الأحيان وخاصة إلى أمراء بابان حيث كان العثمانيون يوجهون تهمة التمرد والعصيان إلى الأمير الذى كان يطمح إلى شيء من الاستقلال ويعمل على خدمة إمارته بتفان وإخلاص فقد عدّ والى بغداد حسن باشا الأمير البابانى بكربك متمرد أو شقيًا لمجرد أنه حاول تقوية نفوذه وتوسيع سلطاته فجهز حملة عسكرية بقيادته أدت إلى اندحار بكربك ثم قتله فيما بعد (هروتي، ٢٠٠٨، ١٠٩- ١١٧).

يضاف إلى ذلك سببًا آخر وراء عزل بعض الأمراء الكرد وهو عدم المساهمة في المجهود الحربي العثماني فقد أقدم والى بغداد على باشا (١٨٠٢-١٨٠٦م) على عزل الأمير البادينى مراد خان باشا في عام ١٨٠٣م لأنه لم يساهم على رأس قواته في حملة الوالي علي سنجاربل اكتفي بإرسال مائة مقاتل فقط (العزاوي، ١٩٩٨، ٥١).

كذلك استفاد العثمانيون من النزاعات القائمة بين الأمراء الكرد حول منصب الإمارة حيث سعى الأمراء المتنافسين للحصول على البراءات السلطانية للإمارة لما هذه البراءات من قيمة معنوية يرجح كفتهم جعل العثمانيين يستغلون ذلك لتمرير مطالبهم وتحقيق نواياهم على حساب الإمارات الكردية. وكانت تلك الظاهرة أكثر وضوحًا في إمارة بابان من غيرها لأن التناحر



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الأسرى فيها كانت على أشدها كما أن العثمانيين استغلوا مكانة السلطان وأهمية فرماناته بنظر عامة الناس (البدليسي، ١٩٥٣، ١٦١-١٦٥)

ولم يكتف العثمانيون بذلك بل كانوا في بعض الأحيان يتجاوزون حدود عزل الأمراء الكرد ويعمدون إلى قتل بعض الأمراء غدرًا كما فعل الصدر الأعظم فرهاد باشا الذي قتل الأمير ناصر البوتاني في عام ١٥٨٣م وأسند إمارة بوتان إلى منافسه الأمير عزيز بن كاك محمد (البدليسي، ١٩٥٣، ١٦٤).

على أية حال لقد أدت تلك السياسة العثمانية إلى حالة من عدم الاستقرار في أوضاع الإمارات والزعامات الكردية، وانعدام الطمأنينة والسلام في ربوعها مما أسفر عن تأخرتطور كردستان من النواحي السياسية، والاقتصادية، والاجتماعية كما فقدت الإمارات الكردية استقلالها الداخلي شيئًا فشيئًا جراء تدخل السلطات العثمانية في مسألة منصب الإمارة، كما أن خوف الأمراء الكرد الدائم من العزل والتنحية من قِبَل السلطات العثمانية قد أدى بهم إلى انتهاج سياسات موالية لها وعدم الإتيان بما تعارضها الدولة العثمانية وبذلك أصبح الأمير الكردي الراعي لمصلحة إمارته شخصية نادرة بين الأمراء الكرد.

ومن ناحية أخرى لجأت السلطات العثمانية إلى سياسة جديدة تجاه الإمارات الكردية وهو التدخل في شؤونها بما يخل بالاتفاق الكردي العثماني السابق من ذلك في عهد السلطان سليمان القانوني. ظهرت محاولات بتر منطقة معينة من إمارة كردية معنية تحت تأثير ظروف خاصة على سبيل المثال استقطع بعض المناطق (الدائرة للخيرات) من إمارة جمشكزك الكردية وضمها «إلى الخواص الهمايونية» مستغلاً المنازعات التي ذشبت بين أبناء الأمير بير حسين بك حول الإمارة إثر موت والدهم والتجائهم إلى السلطان ليحكم بينهم (البدليسي، ١٩٥٣، ١٨٩).

وفيما يتعلق بتعديلات الحدود وتغيير مناطق النفوذ يمكن عدّ إمارة بابان خير مثال على ذلك، إذ أن كثرة تلك التغييرات وسرعته جعلت رسم خارطة سياسية لتلك الإمارة أمرًا صعبًا إن لم يكن مستحيلاً ويعود ذلك إلى عدم استقرار أوضاعها السياسية نتيجة النزاع المستمر بين أمراء بابان أنفسهم من جهة وبينهم وبين ولاة بغداد.

وبهذا الشكل تناسى العثمانيون أن بنود الاتفاق الكردي العثماني قد حفظت للإمارات والزعامات الكردية استقلالاً داخليًا وكانوا يقومون في كثير من الأحيان بما يعد تدخلاً في الشؤون الداخلية للإمارات الكردية.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

## أولاً-موقف الإمارات الكردية من السياسة العثمانية

اندلعت الثورات والانتفاضات في كردستان خلال العهد العثماني ردًا على سياسة الدولة العثمانية للدفاع عن مصالحهم وحقوقهم المشروعة، وتحسين أحوالهم المعيشية التي ساءت جراء انتزاع ممتلكاتهم أو مناصبهم من قِبَل السلطات العثمانية.

كان من أشهر هذه الانتفاضات؛ انتفاضة ابن جان بولاد والتي جاءت أحداثها في قيام القائد العسكري العثماني جغالة زادة سنان باشا في عام ١٦٠٥م بقتل الأمير (حسين بك بن جان بولاد بك) أمير كلس (بولاية حلب) الذي كان قد أصبح واليًا على إيالة حلب في السنة نفسها وذلك بدعوى تخلفه عن المشاركة في حرب الدولة الصفوية إلى جانبه حينما دعاه إلى ذلك (زكي، ١٩٣٩، ١٨٦).

فقد عدّ القائد العثماني المذكور عدم مشاركة الأمير حسين باشا سببًا للهزيمة التي مُنيّ بها أمام الصفويين في أطراف (سلماس) الواقعة بأذربيجان الغربية في عام ١٦٠٥م وقد أدت تلك الحادثة إلى غضب الأمير على بن جان بولاد بك أخو الأمير حسين باشا فتوجه إلى حلب ليعلن عن انتفاضة مسلحة ضد الدولة العثمانية توسع نطاقها لتشمل الانتفاضة أطراف الشام وقراها حيث مد الأمير نفوذه إلى مدينة طرابلس الشام (هروتي، ٢٠٠٨، ١٤٥). إضافة إلى حمص وبعض النواحي الأخرى في الشام فلما ترسخ نفوذه أعلن استقلاله إذ تم له تأليف جيش كبير وسك باسمه النقود كما ذكر اسمه في الخطب (زكي، ١٩٣٩، ١٨٦).

استغل المنتفضون فرصة انشغال الدولة العثمانية بمحاربة النمسا في إشعال نار الانتفاضة للمطالبة بحقوقهم المشروعة فتحركت الدولة العثمانية بإرسال حملة بقيادة الصدر الأعظم مراد باشا الملقب بـ (قويوجى) في عام ١٦٠٧م والتقى بزعيم الانتفاضة ابن جان بولاد في سهل أورج أسفرت عن هزيمة الجيش الكردي متكبدًا خسائر جسيمة في الأرواح. واضطر ابن جان بولاد إلى الانسحاب إلى مدينة حلب التي لم يستطع الصمود فيها فطالب العفو من السلطات فوافق وعُين واليًا لتيمشوارا (إحدى مقاطعات بلاد النمسا الخاضعة آنذاك للعثمانيين وتقع حاليًا في رومانيا) التي لم يبلغها قط حيث لم يرق هذا العفو للصدر الأعظم فأرسل من يقتله في بلغراد وهو ذاهب إلى مقر عمله الجديد (زكي، ١٩٣٩، ١٨٧؛ المحامي، ١٩٧٧، ١٢٠).

ظهرت انتفاضة أخرى عرفت باسم «أكراد الملي» بقيادة تيمور باشا رغم أنه لم يكن أميرًا على إمارة كردية ذات سلطة سياسية بل برز بشكل زعيم قبلي اضطلع بمهام القيادة في عشائر الملي وانتفاضها ضد السلطات العثمانية، كانت عشائر الملي القاطنة في نواحي طور عابدين وقره جه داغ من منطقة ماردين معروفة بقوة شكيمتها وتمردها، وعدم خضوعها للسلطات العثمانية، ولذلك كانت مناطقها في اضطراب دائم ومشحونة بالمشكلات والأخطار بالنسبة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

للعثمانيين، واكتسبت هذه العشائر قوة إضافية عندما تسلم تيمور باشا مقاليد أمورها والمذكور ينتمي إلى أسرة كردية عريقة. وقد تولى مناصب مهمة في إستانبول ولكنه كان يبحث عن الفرصة التي يستطيع فيها الخروج من العاصمة فتم له ذلك والتحق بالعشائر الملية في بداية العقد الأخير من القرن الثامن عشر ليتم رئاستها (أبو بكر، ١٩٧٣، ٢١).

كان تيمور باشا يدرك أن العثمانيين يمثلون له حجرة عثرة في تحقيق أهدافه، لذلك أخذ منذ تسلمه مهام قيادة الملية يسعى إلى تقوية قواته وتوسيعها وتجهيزها بالأسلحة والمعدات الحربية حتى تألف له جيش قوى يضم محاربين أشداء لاحتمال اصطدامه بالدولة العثمانية يومًا ما؛ لذا اعتمد على ذلك الجيش لتوسيع نطاق نفوذه ليشمل بعض المناطق والعشائر المجاورة الأمر الذى أدى إلى هلع الحكام العثمانيين المجاورين وخاصةً واليا حلب وديار بكر إذ أصبحت تحركات تيمور باشا مصدر خطر على النفوذ العثماني في تلك الأنحاء ومما زاد العثمانيين غضبًا عليه هو عدم التفاته إلى السلطات العثمانية وقيامه بنشاطات معادية لها على جميع الطرق المؤدية إلى ديار بكر، وحلب والموصل، وإزاء ذلك بذل العثمانيون محاولات عدة للقضاء على ذلك الزعيم الكردي ولكنهم فشلوا في تحقيق ذلك (لونكريك، ١٩٨٥، ٢٥٣؛ العزاوي، مج ٤-٧، ١٩٥٥، ١١٠).

وعندما توسع نفوذ تيمور باشا تحرك العثمانيون وعهدوا إلى والى بغداد سليمان باشا الكبير مهمة التصدي له نظرًا لأن مناطق الانتفاضة (وهى نواحي ماردين) كانت في تلك الفترة تدخل ضمن حدود إيالة بغداد (العمري، ١٩٤٠، ٢٣؛ لونكريك، ١٩٨٥، ٢٥٢). وبعد أن جهز سليمان باشا حملة واسعة النطاق في عام ١٧٩١م توجه نحو الموصل ومنها إلى ماردين ليبلغ تعداد جيشه ثلاثين ألف مقاتل بعد أن التحق به واليا الموصل وأورفه بقواتهما وذلك بالإضافة إلى قوات إمارة بابان والكثير من العشائر العربية التي كانت بمعية الوالى. أما تيمور باشا فكان قد جمع ما يقارب (١٥) ألف مقاتل تقريباً. لذلك لم يتمكن صد الصمود إذ رأى عدم قدرته على مقاومة الجيش الزاحف فتشتت شمل قواته والتجأ إلى نواحي حلب (زكي، ١٩٣٩، ٢٢٠-٢٢١).

بالرغم من ذلك فقد مدّت القوات المهاجمة يد البطش إلى مناطق المللين فتعرض سكان تلك المناطق لأنواع الدمار والخراب فأصبحت الممتلكات لقمة سائغة لجنود سليمان باشا الذين عادوا من الحملة بغنائم وافرة. وبعد أن عمد سليمان باشا إلى إعدام بعض زعماء المللي من أقرباء تيمور باشا ومنهم أخوة سعدون بك وابن عمه محمود بك، عين إبراهيم بك أخا تيمور باشا زعيمًا لعشائر الملي (زكي، ١٩٣٩، ٢٢١؛ أبو بكر، ١٩٧٣، ٢٢).

ومع ذلك لم يتخل المليون عن مواقفهم المعادية للعثمانيين بصورة نهائية، إذ واصلوا تحركاتهم فيما بعد وخاصةً عندما تسلم أيوب بك الزعامة بعد إبراهيم بك فاصطدموا مرات عدة بالقوات العثمانية (هروتي، ٢٠٠٨، ١٤٨).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

كذلك قامت انتفاضة عبد الرحمن باشا البابانى الذي تولى إمارة بابان عام ١٧٨٩م وحكمها ما يقارب أربعًا وعشرين سنة في مدد متقطعة (زكي، ١٩٣٩، ٢٢٧) بلغت الإمارة في عهده أعلى درجات القوة والعظمة إذ توسعت حدودها كثيرًا حتى ضمت إليها أربيل ونواحيها، كما هددت بالاستيلاء على مدينة كركوك (لونكريك، ١٩٨٥، ٢٨٠؛ ناظم بيك، ٢٠٠١، ٢٧٤). وصار لأمير بابان نفوذ على إيالة بغداد نفسها فكان تعيين عبد الله باشا الخزنة دارك (١٨١٠-١٨١٢م) واليًا على بغداد أثر مقتل سليمان باشا الصغير في عام ١٨١٠م بتعضيد من عبد الرحمن باشا وتأثيره ( فائق بك، ١٩٦٢، ٤٠). استغل عبد الرحمن باشا سلطته في تطوير قواته العسكرية تحسبًا للتقلبات اللاحقة فقد نقل كمية من الأسلحة والمعدات العسكرية بينها عدد من المدافع من إيالة بغداد إلى السليمانية خلال تلك الفوضى التي نشبت أثناء حادثة تنصيب عبد الله باشا على بغداد (هروتي، ٢٠٠٨، ٤٩).

ولما نجح عبد الرحمن باشا في النهوض بإمارته حاول إبعاد إمارته عن السيادة العثمانية وتأثيراتها وبالأخص تدخلات إيالة بغداد التي كانت بابان تابعة لها (لونكريك، ١٩٨٥، ١٧٩- ١٨٠). الأمر الذي عرضه للاصطدام بقوات إيالة بغداد مرارًا فقد اشتبك مرتين مع تلك القوات في مضيق بازيان ولكنه انهزم في كل منهما لخيانة ابن عمه خالد باشا واتساع نطاق إمارته لتضم أطراف أردبيل ( ناظم بيك، ٢٠٠١، ٢٧٤؛ العزاوي، ٢٠٠٠، ١٩٩٩). الأمر الذي جلب إليه حنق الوالي وغضبه فزحف عليه عبد الله باشا والى بغداد بجيش كبير والتقيا في كفري (التابعة لكركوك) في عام ١٨١٢م فوقعت بينهما معركة دامية انتصرت فيها قوات بابان في بداية المعركة ولكن صمود قوات بغداد قلب الموقف فانهزم عبد الرحمن باشا مع بعض رجاله إلى إيران تاركًا وراءه قوات بغداد ليشيدوا منارة من رؤوس قتلى الكرد (فائق بك، ١٩٦٢، ٤٥- ٤٦؛ ناظم بيك، ٢٠٠١، ٢٧٥).

وبالرغم من عودة عبد الرحمن باشا من إيران بعد هذه الواقعة وتسلمه مهام الأمور في السليمانية، ولكنه توفي بعد ذلك في عام ١٨١٣م وبذلك لم تثمر جهوده عن تحقيق أهدافه بالرغم من طموحاته الكثيرة ومقدراته الكبيرة ويرجع ذلك إلى أسباب عدة في مقدمتها النزاعات العائلية التي أدت إلى خيانة أقرباء عبد الرحمن باشا له (زكي، ١٩٣٩، ٢٢٨؛ ناظم بيك، ٢٠٠١، ٢٧٥).

وذلك بالإضافة إلى قوة ولاة بغداد المعاصرين لعبد الرحمن باشا وحنكتهم السياسية حيث كان لهؤلاء دور مؤثر في إفشال مخططاته، كما أن الظروف السياسية العامة في الدولة العثمانية لم تكن مساعدة للأمير البابانى، فقد عاصر عبد الرحمن باشا فترة كانت الدولة العثمانية تحاول فيها استعادة أنفاسها وتقوية ساعدها ونقصد بذلك عهد السلطان محمود الثاني (١٨٠٨-١٨٣٩م) الذي حاول بإصلاحاته إعادة بناء الدولة على أسس جديدة (هروتي، ٢٠٠٨، ١٥١).


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەكۆلینێن كوردی

ومع اصلاحات السلطان محمود الثاني فقد أمر بتطبيقها في كردستان بالرغم من تمتع الأخيرة بنوع من الاستقلال الذاتي في ظل كياناتها المحلية بموجب الاتفاق الكردي العثماني السابق، كما أنه لم يأخذ موقع كردستان الحدودي ومجاورتها لإيران وروسيا بنظر الاعتبار رغم أن الضغط عليها كان يشكل فرصة سانحة للدولتين الأخيرتين للتدخل في شؤون الدولة العثمانية (العزاوي، مج ٤-٧، ١٩٥٥، ٤٣). وبذلك فقد حاول السلطان إنهاء حكم الإمارات الكردية وتأسيس قواعد الحكم المباشر في كردستان مما كان يعني إلغاء الاتفاق الكردي العثماني نهائيًا وفرض الهيمنة العثمانية المباشرة على كردستان وإنهاء الإمارات الكردية القائمة.

لكن كانت هناك عوامل تقف وراء محاولة فرض سياسة المركزية في أنحاء الدولة العثمانية في مقدمتها محاولة إعادة الحياة إلى مؤسسات الدولة وتقوية السلطة المركزية، وحماية الدولة من التحلل والتفكك (رؤوف، ١٩٧٥، ١٨٩).

ولكن بالإضافة إلى تلك العوامل هناك دوافع أخرى أثرت في تنفيذ تلك المهمة في كردستان لعل أبرزها محاولة قطع السبل أمام الدولتين الإيرانية والروسية للتدخل في الشؤون العثمانية الداخلية، فمن المرجح أن المسؤولين العثمانيين قد ضاقوا ذرعًا بتدخلات الدولتين المذكورتين اللتين كانتا تتخذان من الكيانات الكردية وسيلة لتلك التدخلات خاصة وأنها كانت قريبة من حدود الدولتين وتعرف بموافقها المناوبة للسيادة العثمانية عمومًا، ومن جانب آخر كان العثمانيون يرمون من وراء تلك العملية ضرب الحركة القومية الكردية التي كانت في بدايتها آنذاك وذلك بهدم الكيانات السياسية التي كانت تقوم عليها تلك الحركة خلال هذه الفترة حيث أن جميع الحركات والانتفاضات الكردية كانت حتى تلك الفترة توجه من قبل الأمراء الكرد الذين كانوا حكام تلك الإمارات، وبالإضافة إلى ذلك فإن الدافع الاقتصادي المتمثل بزيادة واردات الدولة من كردستان بإحكام السيطرة عليها واستغلالها ماديًا كان يعد دافعًا مهمًا لهذه العملية في كردستان فقد بادرت السلطات العثمانية إلى فرض ضرائب إضافية في المناطق الكردية في أعقاب الحملة العثمانية التي وجهت إليها لغرض الحكم المركزي مباشرة (برانت، ١٩٨٩، ٤٩). وفي الوقت نفسه لمساهمة في حل الأزمة الاقتصادية التي كانت تمر بها الدولة العثمانية في ذلك الوقت.

إلى جانب تلك الدوافع كان هناك دافع آخر وراء عملية فرض الحكم المركزي على كردستان هو دافع التجنيد حيث كانت الدولة العثمانية تسعى من وراء هذه العملية هو توفير الرجال للجيش النظامي الجديد الذي تأسس حديثًا ويراد تطويره، وبالرغم من كل ذلك لا تخرج عملية القضاء على الإمارات الكردية عن إطار المحاولات العثمانية الهادفة إلى اصلاح دولتهم التي تخلفت عن ركب التطور من وجهة نظر العثمانيين ولكنها كانت خرقًا عثمانيًا كاملاً



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

للاتفاق الكردي العثماني المبرم في عام ١٥١٤م وعملية إعادة احتلال شاملة لكردستان وجهة نظر الكرد.

ومهما يكن فإن الاصلاحات العثمانية طبقت في كردستان بوجهها السلبي أما دعوات المساواة وتنظيم النظام الضريبي، وتحديد الخدمة العسكرية وغيرها من القوانين المتعلقة بالجوانب الاقتصادية والاجتماعية والثقافية فإن آثارها لم تلحظ في كردستان سوى أن الاصلاحات العسكرية وإعداد الجيش الجديد، وبإشراف الخبراء الأوروبيين ترك آثاره الواضحة على كردستان باسم الاصلاحات من خلال الحملات العسكرية العثمانية في الوقت الذي فشل فيه ذلك الجيش في المحافظة على حدود الدولة العثمانية.

نتيجة لما سبق ظهرت موجات استياء عارمة من قِبَل الكرد تجاه السياسة العثمانية التعسفية ضدهم وقد شجعهم على ذلك الاضطرابات السياسية والعسكرية التي مرت بها الدولة العثمانية في ذلك الوقت خاصةً بعد هزيمتها أمام روسيا في حرب عامي ١٨٢٨-١٨٢٩م، وانتصار اليونانيين في حرب المورة والحصول على استقلالهم عام ١٨٣١م، فضلاً عنما انتاب الإدارة العثمانية من التخلف، والظلم، والقيام بعلميات السلب والنهب لممتلكات الكرد خاصة وأن غالبية الحكام والموظفين كانوا قد اشتروا مناصبهم بالأموال والرشاوى مما دفعهم إلى السعي جاهدين لتعويض تلك الأموال على حساب الأهالي، ولذلك كانت الرشوة والفساد منتشرة في جميع مؤسسات الدولة (مولتكه، ١٩٨٨، ٧٧-٧٩).

لذا بدأت عدة حركات وانتفاضات كردية ضد السلطات العثمانية من أهمها انتفاضة الأمير السوراني محمد باشا المشهور بـ(باشاى كه وره) الذى كان يوسع حدود إمارته على حساب الأقاليم المجاورة بهدف بناء كيان سياسي كردى، وقد بذلت إمارة بوتان محاولة مشابهة في عهد أميرها بدرخان بك - باشا فيما بعد– فأصبحت الإمارة أشبه بحكومة مستقلة لا تعد الباب العالي أية أهمية منذ بداية الثلاثينات من القرن التاسع عشر، وفي عام ١٨٢٩م نشبت الانتفاضة في بعض مناطق هكاري وأخذت تتوسع تدريجيًا في المناطق المجاورة (هروتي، ٢٠٠٨، ١٨٢- ١٨٣).

كما أصبحت بعض المناطق في الجهات الشمالية من كردستان بمنأى من السيطرة العثمانية خلال تلك الفترة وخاصةً مناطق وان وبايزيد. أما البقاع الواقعة بين أرضروم وخوى فأصبحت منطقة صعبة الاختراق حتى لساعي البريد العثماني لأن الكرد في هذه المنطقة لم يكونوا يعترفوا بأية سلطة عليهم في تلك الفترة، أما منطقة درسيم الوعرة الكائنة في أقصى شمالي غربي كردستان فقد ظلت تناوئ السيادة العثمانية باستمرار إذ كان أبناء تلك المنطقة المعروفون بأكراد الزازا مصرين على إدارة أنفسهم بأنفسهم بعيداً عن السلطات العثمانية وقاوموا في سبيل ذلك حملات عثمانية عديدة حاولت إخضاعهم بالقوة. ويمكن القول أن الاتصالات خلال



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

تلك الفترة كانت شبه معدومة بين بغداد وإستانبول إذ كان شرقي الأناضول عمومًا أشبه ما يكون تحت سيطرة الزعماء الكرد وخارجة عن السلطة العثمانية (هروتي، ٢٠٠٨، ١٨٣).

لكن سرعان ما استعادت الدولة العثمانية أنفاسها في كردستان وإخضاعها للحكم المركزي عقب توقيع عقد صلح كوتاهية مع مصر في ٨ نيسان ١٨٣٣ ومعاهدة خوذكار أسكله سى مع روسيا عام ١٨٣٣ (أحمد، ١٩٨٦، ١٦٢-١٦٣). مما فرض عليها الدخول في مقاومة شديدة مع الكرد لعدم قبول الأخيرة الخضوع للسلطات العثمانية.

يمكن القول أن الكرد بذلوا جهود في مواجهة السلطات العثمانية؛ ويرجع ذلك إلى عدة دوافع هي رفض الكرد للسلطة العثمانية المباشرة ومحاولة الحفاظ على كياناتهم السياسية واستقلالهم الداخلي التي كانت مهددة من قِبَل العثمانيين، كذلك نفور الكرد من العثمانيين وسيطرتهم الجائرة ورفضهم للإجراءات العثمانية الجديدة وخاصة التجنيد، والضرائب الإضافية التي كانت ضمن أهداف الحملة العثمانية الجديدة على كردستان، كما أن الأمراء والزعماء الكرد الذين كانوا قادرين على حث رعاياهم على الانتفاضة كانوا يحاولون الحفاظ على سلطاتهم السياسية وآخرون منهم على ممتلكاتهم الإقطاعية المهددة من قِبَل العثمانيين في هذه الحملة لذلك بادروا إلى المقاومة واتخاذ موقف الدفاع.

بدأت التحركات العثمانية بتوجيه حملة إلى كردستان بقيادة محمد رشيد باشا والى سيواس فبدأ هجماته على شمال كردستان عام ١٨٣٤م وقام بنهبها ورغم ذلك لم يستسلم الكرد بل تصدى للجيش العثماني في بعض المواقع الحصينة في جنوبي بحيرة وان في إقليم هكاري حيث لم يتمكن العثمانيون من القضاء على نفوذ الزعماء الكرد وسلطتهم هناك. كما لم تستطع قوات محمد رشيد باشا من الظهور في جبال (موش – جاسو) شرقي تركيا، أيضًا (يحيى، ١٩٩٢، ٢٠). والجدير بالذكر أن الأرمن كانوا يشاركون الكرد أيضًا في محاربة الجيش العثماني في بعض المناطق فقد عثر (جيمس برانت) أثناء زيارته لكردستان على دلائل تبرهن على ذلك بالرغم من إذكارهم لذلك خوفًا من العثمانيين إذ بادر أحد الجنود العثمانيين الذين شاركوا في الحملة وكان حاضرًا هناك قائلاً لبرانت «أن الأرمن كانوا عنيدين في مقاومتهم لنا تمامًا مثل المسلمين» (برانت، ١٩٨٩، ٤٧).

وبالرغم من كل ذلك أصر محمد رشيد باشا على القضاء على المقاومة الكردية بقوة متناهية، وقد لجأ في سبيل ذلك إلى تهجير بعض الجماعات الكردية إلى الأقاليم البعيدة من الدولة العثمانية مما أدى إلى موت أعداد كبيرة من العجزة والأطفال منهم.


Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لكن في الوقت نفسه كانت هناك عدة عراقيل منعت الحملة من تحقيق أهدافها الرئيسة منها نقص المؤمن اللازمة للجنود مما اضطرهم إلى القيام بأعمال النهب والسلب بالمدن التي يمرون بها (هروتي، ٢٠٠٨، ١٨٧).

**ثانياً: سقوط الإمارات الكردية وإعادة فرض السيادة العثمانية على كردستان ١٨٣٦-١٨٥١**

كانت كردستان قد قسمت واستمر تقسيمها خلال القرن التاسع عشر بين الدولتين العثمانية والإيرانية، وكان الصراع بينهما مستمرًا من أجل فرض السيطرة على أكبر جزء ممكن من كردستان في الوقت الذى كانت فيه الدولتان تعانيان من الضعف وتتجهان أكثر فأكثر للخضوع للنفوذ السياسي والاقتصادي وحتى العسكري للدول الأوروبية الكبرى والتي كانت قد دخلت هي نفسها في صراع من أجل اقتسام مناطق النفوذ في الشرق الأوسط بشكل عام والدولة العثمانية بشكل خاص، ومن جانبها فإن كردستان كانت مقسمة بين عديد من الإمارات مثل (بابان – سوران – بادينان – بوتان – هكاري) وكانت في تنافس مستمر على توسيع رقعتها. لذلك كانت حدودها في تبدل مستمر بالإضافة إلى الإقطاعيات الواسعة التي كانت تخضع لحكم وقوانين الإقطاعيين (جليلي جليل، ١٩٨٧، ١١).

مرت الإمارات الكردية بعدة مراحل في سقوطها وصولاً إلى استقلالها عن الدولة العثمانية، كانت أولى هذه الإمارات إمارة سوران بدأت أولى مراحلها في عهد الأمير محمد باشا عندما تولى الإمارة في عام ١٨١٣م حيث جنح إلى الانفصال عن الحكم العثماني لتأسيس كيان كردى موحد مستغلاً ضعف الدولة العثمانية في ذلك الوقت من ناحية وضعف الإمارات الكردية المجاورة خلال تلك الفترة وخاصة إمارتا بابان وبادينان وانشغالهما بمنازعاتهما الداخلية حول منصب الإمارة فنجح الأمير محمد باشا في تحقيق طموحاته سواء في تطوير الأمور الدفاعية والعسكرية أم الإدارية والأمنية، والمالية، ولم يكتف بذلك بل اتخذ خطوات مشهودة في طريق الاستقلال عن الدولة العثمانية إذ كان اسمه يذكر في خطب الجمعة، كما ضرب النقود باسمه (موكريانى، د.ت، ٤١؛ نيكيتين، ١٩٦٧، ١٧١).

ركز الأمير محمد في بدايات العقد الرابع من القرن التاسع عشر جهوده على المناطق الواقعة إلى الشمال والغرب من إمارته وبالتحديد الأقاليم التابعة لإمارة بادينان والمناطق الكردية الإيزدية في سنجار والشيخان خاصةً عندما قام أمير الإيزديين على بك بقتل زعيم العشائر المزورية (على آغا البالته) مما أدى إلى لجوء ابن أخيه (ملا يحيى المزوري) إلى الأمير السورانى طالبًا الانتقام له من على بك الإيزدى، ومن أمير بادينان الذى كان له ضلع في هذه الحادثة حسب اعتقاد الملا يحى (زكي، ١٩٣٩، ٢٢٩؛ الموصلي، ١٩٢٣، ٣٠٦-٣٠٧). وكانت تلك الحادثة بمثابة الحجة التي يتزرع بها الأمير لمهاجمة تلك المناطق التي كان ينوى الاستيلاء



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

عليها دون شك وزاد في تشجيعه على ذلك لجوء موسى بك إليه طالبًا معاونته للحصول على منصب إمارة بادينان، وخلع أخيه سعيد باشا الذي كان يحكم الإمارة آنذاك (العزاوي، ٢٠٠٠، ٥٤؛ لونكريك، ١٩٨٥، ٣٤٣).

كما أنه لا يمكننا أن نستبعد العامل الديني في الهجوم السوراني على تلك المناطق، فقد وصف الأمير محمد – من قبل أغلب المؤرخين – بأنه كان متدينًا وحاول تطبيق نصوص الشريعة الإسلامية في حكمة (زكي، ١٩٣٩، ٢٣١). وخاصة عندما أفتى له عالمه الديني ملا محمد الخطى. باستباحة دماء الإيزديين، الأمر الذى حرك الحمية الدينية لديه ولدى قواد وجنوده أيضًا (المائي، ١٩٦٠، ١٦٧).

ومن ثم أعمد الأمير السوراني حملة عسكرية خرج على رأسها في عام ١٨٣٢م أحدث من خلالها مجزرة مروعة في الكود الإيزديين كما أمر بقتل زعيمهم علي بك واستولى على مناطقهم في الشيخان وسنجار، واستولى كذلك على عقرة، زاخو، ودهوك، وآميدي وبذلك تمكن من إلحاق إمارة بادينان بأكملها بإمارته (الموصلي، ١٩٢٣، ٣٠٧).

وبالرغم من حرص الأمير السوراني إلا أنه اصطدم بالدولة العثمانية عندما كلفت الأخيرة محمد رشيد باشا بالقضاء عليه كما ذكرنا سابقًا ولا شك أن تلك المهمة تُعد من المحاولات العثمانية لتقوية السلطة المركزية وفرض الحكم المباشر على أقاليم الدولة العثمانية في إطار اصلاحات السلطان محمود الثاني، كما ذكرنا سابقًا ولكننا نستطيع الإشارة إلى عوامل أخرى ساهمت في توجيه تلك الحملة أيضًا منها أن الدولة العثمانية أرادت تقوية سيطرتها في كردستان لتأمين ظهر جيشها عندما تبدأ الجولة التالية من المواجهة مع قوات إبراهيم باشا في الشام (إسماعيل، ١٩٧١، ٣٢٧).

ومما يرجح هذا العامل وجود إشارات تفيد بأن اتفاقًا قد تم بين الأمير السوراني وإبراهيم باشا في الشام على تقديم المساعدة لبعضهما البعض ضد الدولة العثمانية، ولا شك في أن المسؤولين العثمانيين قد أحيطوا العلم بذلك فأرادوا القضاء أولاً على محمد باشا السوراني ليتفرغوا بعد ذلك للقوات المصرية في الشام (الكوراني، ١٩٣٩، ١٣٣).

بدأ محمد رشيد باشا هجماته على المناطق التابعة لإمارة سوران عام ١٨٣٦م فهاجم زاخو واستولى عليها بعد أن حاصرها ثم توجه نحو الموصل، وعندما علم محمد باشا بذلك انسحب إلى رواندوز وأمر بتحصين المناطق التي كانت تقع في طريق الجيش العثماني وفي إطار خطوة دبلوماسية من جانبه أرسل مبعوثًا إلى الحكومة القاجارية عارضًا عليها العمل المشترك ضد الجيش العثماني مقابل تعهده بإعلانه الانضمام إلى الدولة القاجارية ولكنه جوبه بالرفض نظرًا لعداء المسؤولين القاجاريين له وعدم نسيانهم هجماته على المناطق التابعة لهم وتأثير الضغط



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

البريطاني الروسي، فرغبة روسيا في المحافظة على مصالحها في إيران جعلتها تعادي الحركات المناوئة للحكومة القاجارية، كذلك بريطانيا التي أرادت الحفاظ على مصالحها في تلك المنطقة أيضًا ولتأمين الطريق الذي يمر عبر المنطقة إلى بلاد الهند التي تُعد درة التاج البريطاني لذا جاءت الدبلوماسية البريطانية في العمل على تضامن الدولتين العثمانية والقاجارية للقضاء على الأمير السوراني وحركاته التوسعية للوقوف في وجه الزحف الروسي باتجاه الجنوب من ناحية ولخوف بريطانيا من احتمال إعلان أمير سوران الولاء للحكم المصري القائم في سوريا من ناحية أخرى لذا سارعت بريطانيا بعملية القضاء على الأمير محمد باشا (نوار، ١٩٦٨، ١٠٤-١٠٧؛ إسماعيل، ١٩٧١، ٣٢١).

إلا أنه يبدو أن جميع هذه المساعي قد رفضت من قبل السلطات العثمانية وخاصة من قبل محمد رشيد باشا الذي لم يكن مستعدًا لتقاسم انتصاراته مع أية جهة أخرى بحجة أن هذه الوساطة تعد تدخلاً في شؤون الدولة العثمانية، كما عدّ العرض الإيراني مناورة تهدف إلى التدخل في كردستان العثمانية وحذرت السلطات العثمانية إيران من محاولة دخول أراضيها (نوار، ١٩٦٨، ١٠٥- ١٠٦).

وعندما وصل الجيش العثماني إلى مناطق بادينان أرسل الأمير محمد جيشًا بقيادة أخيه رسول بك مع سعيد باشا وإسماعيل باشا (أمير بادينان) —وكان الأخير قد صالح الأمير السوراني مؤخرًا— لملاقاة الجيش العثماني إلا أنهم لم يصلوا في الوقت المناسب إذ سبقهم الجيش العثماني الذي هاجم آميدي من الموصل، واستولى عليها مستغلاً غياب إسماعيل باشا الذي كان مسؤولاً عن الدفاع عنها، وترك العثمانيون حامية صغيرة في قلعة آميدي ليهاجموا المناطق الأخرى فتحين إسماعيل باشا الفرصة حين وصله المدد فهاجم القلعة وأعاد السيطرة عليها، وتمكن من الدفاع عنها ضد المحاولات العثمانية لإعادة احتلالها (موكرياني، د.ت، ٦٨).

اشتد حصار العثمانيون للأمير محمد في رواندوز وعانى من نقص الماء والمؤن فاضطر إلى الاستسلام خاصة عندما أدرك عجزه عن المقاومة وخاصة عندما فقد الجزء الأعظم من مناطق نفوذه على يد القوات العثمانية (خالفين، ١٩٦٩، ٥٣).

المهم دخل محمد رشيد باشا إمارة سوران، أما الأمير محمد باشا فقد اختلف بعض المؤرخين حول مصيره، لكن معظمهم يتفقون على أن الأمير قد قضى عليه بأمر من السلطان العثماني وهو في طريقه للرجوع إلى إمارته ومعه تفويض بالإمارة (موكرياني، د.ت، ٦٩؛ الموصلي، ١٩٢٣، ٣١٣). كما ظهر رأي آخر يذهب إلى أن الأمير قد حصل على العفو من السلطان بوساطة أحد أمناء الدولة الذي كان جارًا للأمير وهو تحت الإقامة الجبرية في إستانبول مستغلاً الليلة التي كان السلطان يخلو بنفسه فأعاد السلطان إليه حكم الإمارة وأذن له بالرحيل، ولكن والي



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

بغداد قد تدخل في الأمر وبعد مداولات مطولة نجح في حث السلطان على إصدار الأمر بقتله فوصل هذا الأمر إلى والي سيواس متزامنًا مع وصول الأمير محمد فربطوه وألقوه في البحر (بابانى، ١٣٦٦هـ، ١٨٢-١٨٥).

وبعد رحيل الأمير محمد دخلت إمارة سوران في طور الاحتضار ولكنها لم تنهر مباشرة فقد اجتمع أولو الأمر في رواندوز وعينوا أحمد بك (أخي الأمير) أميرًا جديدًا على سوران (موكرياني، د.ت، ٧٠). مما يدل على أن العثمانيين قد اكتفوا باستسلام الأمير محمد باشا ولم يقضوا على إمارته في تلك الحملة. وجاء بعد أحمد بك أخوه سليمان بك إلى الحكم وبعده رسول باشا الذي ظل يحكم سروان إلى عام ١٨٥٢م حيث نصب حاكمًا على رواندوز، وحرير، وشيروان، وبالك، وبرادوست بموجب فرمان فالتجأ إلى إيران بعد هزيمته أمام القوات التي وجهها الوالي إليه فدخلت تلك القوات إلى رواندوز، وتم تعيين متصرف عثماني عليها وأدخلت أجهزة الدولة إليها (موكرياني، د.ت، ٧٠-٧٧). وبعد أن مكث رسول باشا خمس سنوات في إيران أصدر السلطان العفو عنه بوساطة إيرانية، وعاد إلى بغداد، وسافر إلى الحجاز ثم إستانبول، وعُين متصرفًا لمقاطعة وان وبعد ثلاث سنوات اختار الإقامة في أرضروم حتى وفاته هناك سنة ١٨٨٣م (زكي، ١٩٣٩، ص ٤١٥- ٤١٦).

أما المرحلة الثانية من سقوط الإمارات الكردية فجأت بنهاية إمارة بوتان في عهد بدرخان باشا (١٨٢١-١٨٤٧) تزامن عهده مع وصول الدولة العثمانية إلى ضعف خطير في كيانها ومؤسساتها وتزامن أيضًا مع إصلاحات السلطان محمود الثاني الهادفة إلى تقوية السلطة المركزية، والقضاء على الإمارات والزعامات الكردية وقد ترك ذلك تأثيرًا في أعمال بدرخان بك وتطلعاته ثم مصيره فيما بعد. فالضعف الذي أصاب الدولة بعث آمال الحرية والاستقلال لدى الكرد فقامت الحركات والانتفاضات في أنحاء متفرقة من كردستان وكانت إمارة بوتان تشكل أحد مراكز تلك الانتفاضة الهادفة إلى الحفاظ على الاستقلال الداخلي الكردي وتطويره (هروتي، ٢٠٠٨، ٢١١- ٢١٢). فقد اعتبر نفسه بمثابة زعيم روحي للمناطق المحررة من السيطرة العثمانية.

في البداية استغل بدرخان ضعف الدولة العثمانية وشن هجومًا على بعض القبائل المتمردة في النواحي القريبة من منطقة جزرة (جزيرة بوتان) انتهى هجوم بدرخان عليها بأسر بعض أمرائها مما يعد مخالفًا لأوامر السلطانية خاصةً وأن تلك القبائل أعلنت ولاءها للدولة العثمانية لكن ثم هذا الأمر أثار غضب السلطان العثماني ليتدخل لإنهاء هذه الأزمة وإطلاق سراح خاصة وأنه كان من بين الأسرى طفلان من الطائفة النسطورية، وعندما وجه أمر من السلطان إلى بدرخان بإطلاق سراحهما وإرجاعهما إلى أهلهما قوبل ذلك بالرفض على اعتبار أن تلك



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

القبائل قد دأبت على التمرد وعلى إحداث أعمال الفساد والتخريب في المناطق القريبة منها والاستيلاء على ممتلكات الأهالي وأموالهم فضلاً عن تعمدهم قتل وإعدام ستة عشر شخصًا دون وجه حق الأمر الذي جعل تصرفات هؤلاء تجاوز حدود التحمل والصبر، يضاف إلى ذلك إقامة بعض المدارس الأجنبية في لواء وان الذي يسكن فيه تلك القبائل وتلك المدارس وقعت تحت أيدي تدبر سياسة خفية للتدخل في شؤون المناطق لذا جاء تصرف بدرخان كما أوضحه للسلطات العثمانية بهدف الحد من مخاطر تلك القبائل وضرورة عودة إخضاعها للسلطات لكن ذلك لم يمنع السلطان العثماني من التأكد على بدرخان على إطلاق سراحهما وباقي الأفراد الأسرى للحد من الاضطرابات ولم يكتف بدرخان بعدم تنفيذ الأوامر السلطانية فحسب بل عمد إلى تقسيم ممتلكات معظم الأهالي النسطوريين على الأشراف والمشايخ كل ذلك من أجل إدخال عشيرة هكاري وقبيلة نسطوري تحت إدارته مما يعني تعديه على أوامر السلطان من ناحية وإثارة غضب السفراء الأجانب تجاه اضطهاده للنسطوريين بل تعنته في طلب أموال [أقجات-عملة عثمانية فضية] في سبيل إطلاق سراح الطفلين النسطوريين. ولما وجد بدرخان عدم تسليمه لتلك الأموال قام بإرسالهم إلى بيتهم بسوق جزرة فتعمد أحد الدراويش الأفغان بشرائهما تمهيدًا لبيعهم بالموصل فلما علما محمد باشا أحد الأمراء الكرديين الذين أظهروا طاعة للسلطان العثماني بهذا الأمر استدعى هذا الشخص لتسليم الطفلين فوافق الأخير مقابل إطلاق سراح أحد الدراويش الأفغان التابعين له فتم تلبية طلبه وأرسل الطفلين إلى أهلهما دون مقابل، لذا أرسل محمد باشا المذكور بما حدث إلى السلطان العثماني يطلب منه أنه على استعداد تنفيذ ما يطلب منه للحد من تصرفات بدرخان بك أو تجاوزه للأوامر السلطانية والخروج عن الطاعة (مراد والبوتاني، ٢٠١٥، ١٣٧-١٣٩).

بدأ بدرخان في وضع خططه لتنظيم انتفاضة كردية تجاه الدولة العثمانية متجنبًا الأخطاء الذي وقع بها الأمراء الكرد من قبله في فشل انتفاضاتهم السابقة، لذلك بادر باتصاله بالرؤساء والزعماء الكرد لتكوين تحالف كردي ضد السلطات العثمانية وفي إطار ذلك اتصل بالزعماء مصطفي بك، ودرويش بك وخان محمود (حكام مناطق وان) ونور الله بك (أمير هكاري) وفتاح بك (أحد أمراء هكاري) وخالد بك (أمير خيزان) وشريف بك (أمير بدليس) وكور حسين بك (زعيم العشائر الكردية في منطقة قارص) ومما يعطي صفة الشمولية بهذه الانتفاضة ورود اسم أمير أردلان – الذي كانت مناطق حكمه تقع ضمن الدولة القاجارية – في هذه القائمة أيضًا، وقد توصل هؤلاء الزعماء إلى تكوين ما سمي بـ(الحلف المقدس) الذي كان يترأسه بدرخان بك، وأن يلاحظ أن هذا الحلف لم يشمل إمارات كردستان الجنوبية القريبة من إمارة بوتان



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

قياسًا بإمارة أردلان التي تبعد عنها كثيرًا، ويعود ذلك – على الأرجح – إلى رفض أمراء تلك الإمارات دعوة بدرخان بك للانضمام إلى الحلف (هروري، ١٩٩٧، ٦٦- ٧٥).

امتاز حكم بدرخان بك بالقوة والصرامة في كافة أنحاء إمارته إذ لم يكن بمقدور الزعماء المحليين والرؤساء التابعين له رفض أوامره أو التقليل من سلطاته وكان الدعاء يردد له في خطب الجمعة في المساجد لمدة اثنتى عشرة سنة، كما عمد في عام (١٨٤٢-١٨٤٣م) إلى إصدار عملة معدنية خاصة بإمارته كتب على أحد جانبيها (أمير بوتان بدرخان) وعلى الجانب الآخر اقتصرت علاقته بالدولة العثمانية على الهدايا التي كان يرسلها إلى السلطان (مالميسانژ، ١٩٩٨، ٣٥).

لذا كان يخطط للاستقلال عن الدولة العثمانية بانتفاضته التي سعى إلى إشعالها (سعد بشير إسكندر، ص٢٠٣ وما بعدها). وانطلاقًا من ذلك الموقف أيدت الدول الأوروبية السلطات العثمانية في محاولتها القضاء على تلك الانتفاضة، وكان تأييدها مخفيًا تحت الستار الديني والحفاظ على مصالح الأقليات المسيحية في الدولة العثمانية باعتبار أن تلك الانتفاضة قد مارست القمع ضد المسيحيين بدافع التعصب الديني (خالفين، ١٩٦٩، ٦٢).

ونتيجة لذلك استغلت الدولة العثمانية دعم الدول الأوروبية فقررت القضاء على هذه الانتفاضة عام ١٨٤٧م فعهدت بهذه المهمة إلى الحملة التي تكونت بقيادة (عثمان باشا) والى حلب ولكن المسؤولين العثمانيين بذلوا جهودًا عدة لحسم المسألة عن طريق المحادثات وذلك قبل الشروع في استخدام القوة العسكرية، فأرسلوا مبعوثين إلى بدرخان بك لإقناعه بالعدول عن فكرته والدخول في طاعة الدولة والاعتراف بحكمها على إمارته إلا أنهم لم يحصلوا على نتائج مرضية (هروري، ١٩٩٧، ١٣١-١٣٢).

فلجأت السلطات العثمانية إلى أسلوب شراء الذمم وتقديم الهدايا إلى رؤساء العشائر والمناطق الكردية ليتخلوا عن دعم بدرخان، وقد نجحت إلى حد ما في عزله إذ لم يبق إلى جانبه فيما بعد إلا القليل من حلفائه وظهر أن الحلف المقدس الذى شكله بدرخان مع القوى الكردية المجاورة لإمارته كان حلفًا هشًا (هروري، ١٩٩٧، ١٢٣-١٣١).

ومن ثم وقعت الاشتباكات بين الطرفين حتى نجحت الدولة العثمانية في القضاء على حلفاء بدرخان بك ليتبقى لها الأخير فأخذت في الاستعداد له، ومع ضربات المدافع العثمانية، ونقص المؤن، والذخائر دفعت بهم في النهاية إلى التسليم للقوات العثمانية عام ١٨٤٧م وذلك بعد أن أخذ الأمير بدرخان العهد من عثمان باشا بعدم التعرض لحياته، وأموا له، وأسرته، فأرسل بدرخان بك مع أهله إلى إستانبول حيث نفي مع عائلته إلى جزيرة كريت في البحر المتوسط بقى بها لمدة خمسة عشر عامًا ثم سمح له السلطان بالذهاب إلى الشام حيث مات بها عام ١٨٦٩م بعد أن نال لقب الباشوية (هروتي، ٢٠٠٨، ٢١٧).



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

أ ما المشاركون في الانتفاضة فقد التجأ معظمهم إلى إيران أو إلى بلاد القفقاس في روسيا، أو اختبأوا في الجبال ( خالفين، ١٩٦٩، ٦٣). أما خان محمود فقد استسلم أيضًا وذلك بتوسط وجهاء مدينة وان حيث أرسل إلى إستانبول، وهناك نفي إلى بلغاريا، وفي أعقاب ذلك عمد العثمانيون إلى نشر القوات العسكرية في المراكز السكانية الكردية المهمة بهدف منع نشوب الانتفاضات الكردية في المستقبل (هروتي، ٢٠٠٨، ٢١٩).

على أية حال بعد القضاء على انتفاضة بدرخان بك عينت الدولة العثمانية عز الدين شير – أحد أقرباء الأمير بدرخان – حاكمًا على إمارة بوتان والذي ساهم مع العثمانيين في القضاء على الانتفاضة السابقة أي أنه خان الأمير بدرخان عندما كان تزعم أحد أجنحة قوات بوتان (زكي، ١٩٣٩، ٢٣٨؛ هروري، ١٩٩٧، ١١٨). لكن هناك رأيًا مخالفًا لذلك أن عز الدين شير أو (يزدان شير) برئ من تهمة الخيانة ومخالف للحقيقة إذ هناك من يؤكد بقوله أن يزدان شير كان رهن الإقامة الجبرية في (جزيرة) عندما هاجمت القوات العثمانية تلك المدينة فكيف تسنى له قيادة أحد أجنحة قوات بدرخان وإظهار الموقف الخياني المزعوم (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٢٠).

يمكن القول بعد أن تخلى عز الدين شير عن بدرخان بك لجأ إلى زاخو ثم الموصل منحه مشير الأناضول عثمان باشا رتبة أمير الإصطبل الخاص وخصص له راتبًا قدره (٣٥٠٠ قرشًا) وعين بعد القضاء على حركة بدرخان متسلمًا لجزيرة بوتان إلا أن وضعه لم يدم طويلاً عندما عينت السلطات وبموجب التطورات الإدارية التي شهدتها ولاية كردستان قائمقام على الجزيرة، ولم تعد السلطات بحاجة إلى خدماته لذا اقترح والي كردستان أسعد باشا في ٢٦ إبريل ١٨٤٩م منحه وظيفة أخرى أو إرساله مع أسرته إلى إستانبول إلا أنه أعيد إلى مدينة الموصل بموافقة من الدولة العثمانية تحقيقًا للأمن والأمان، فضلاً عن منحه رتبة حاجب الحجاب (أي كبير الأمناء أو رئيس التشريفات) من قِبَل السلطان العثماني ( مراد و البوتاني، ٢٠١٥، ٢٣١- ٢٣٢). وعندما قامت الحرب الروسية – العثمانية، حرب القرم (١٨٥٣-١٨٥٦م) كلفته السلطات بالذهاب إلى المناطق الكردية بجمع المقاتلين فتحرك ومعه ٢٠٠ مقاتل من الموصل إلى الجزيرة حيث سجل نحو ٩٠٠ مقاتلاً وأخذ يطلب المزيد من الأموال لتغطية حاجة قواته إلا أن طلباته لم تحظ باهتمام الإدارة العثمانية فاستغل عز الدين شير عودته إلى الجزيرة وبتحريض من روسيا انقلب على الدولة العثمانية فدخل في صراع مع الأخيرة ( مراد و البوتاني، ٢٠١٥، ٢٦٨-٢٦٩) ووقفت بريطانيا وفرنسا مع الأخيرة ضده لتصبح مسألة عز الدين شير مسألة دولية حتى تمكنت الدولة العثمانية في نهاية الأمر من القبض عليه ونفيه إلى الإيالة العثمانية فيدين الواقعة شمال غرب بلغاريا مع أخيه في قلعة يصعب الهروب منها عام ١٨٥٦م حتى صدر العفو عنهم عام ١٨٦٥م لكن منعوا من العودة إلى كردستان ومنح عز



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

الدين شير لقب الباشا براتب ٢٢٥٠ قرشًا وخصص لأخيه ١٢٥٠ قرشًا واستقرا في سنجق فيدين (مراد و البوتانی، ٢٠١٥، ٣٧-٣٩؛ مالمیسانژ، ١٩٩٨، ٢١٧-٢٣٠).

أما عن سقوط إمارة هكاري فبعد أن أصبح نور الله بك أميرًا على إمارة عليها في بداية العقد الرابع من القرن التاسع عشر أبعد جميع منافسيه في الإمارة، وقد شارك نور الله بك في انتفاضة بدرخان بك وأصبح إقليم هكاري أحد مراكز الانتفاضة الكردية ضد السيادة العثمانية، ونظرًا لوجود مجموعات سكانية ملحوظة من الآشوريين في تلك الإمارة فإن أغلب النزاعات التي نشبت بين الآشوريين والكرد خلال أربعينات القرن التاسع عشر كانت في مناطق تلك الإمارة (جليلي جليل، ١٩٨٧، ١٢٧).

بدأت الدولة العثمانية بعملية القضاء على الانتفاضة الكردية عام ١٨٤٧م فبدأ عثمان باشا هجماته من الشمال محاولاً القضاء على حلفاء بدرخان بك كما ها جمت القوات العثمانية إقليم هكاري إلا أن نور الله بك كان قد ترك مركز إمارته والتجأ إلى الجبال ليتحصن فيها وتمكن نور الله بك من الاستمرار في المقاومة إلى عام ١٨٤٩م وبذلك لم يتمكن عثمان باشا من تحقيق أمنيته والانتصار عليه حيث لم تمض مدة طويلة حتى مات عثمان باشا في إستانبول بتأثير مرض الكوليرا الذى أصيب به جنوده أيضًا فخلفه رشيد باشا في عام ١٨٤٩م وتمكن من إكمال المهمة حيث لم يتمكن نور الله بك من الصمود أمامه فاضطر إلى الالتجاء إلى إيران فقام العثمانيون بعد ذلك بإعادة تنظيم المنطقة فأضيفت بعض السناجق المجاورة إلى إقليم هكاري لتشكل إيالة عثمانية تابعة للسلطة المركزية المباشرة، وعهدت إدارة تلك الإيالة إلى الصدر الأعظم السابق ضياء باشا (جليلي جليل، ١٩٨٧، ١٣٦؛ الدوسكي، ٢٠٠٦، ١١٥- ١١٦).

أما عن إمارة بدليس فقد تعرضت لبطش العثمانيين مرارًا إلا أنها ظلت تحتفظ بكيانها واستقلالها الداخلي إلى نهاية النصف الأول من القرن التاسع عشرين وعندما بدأ العثمانيون محاولاتهم للقضاء على الكيانات الكردية – كما ذكرنا سابقًا – شملت هذه المحاولة إمارة بدليس أيضًا خاصة وأنها شاركت في الانتفاضة الكردية بقيادة بدرخان بك فقد انضم أمير بدليس ( شريف بك) إلى ما سمى بـ(الحلف المقدس). أما بدليس فقد تعرضت في عام ١٨٣٤م لحملة محمد رشيد باشا إلا أنها تمكنت من الصمود في وجه الحملة (برانت، ١٩٨٩، ٢٩). وبقيت مدة خمسة عشر سنة أخرى حيث جاءت نهايتها في عام ١٨٤٩م إذ ألقى العثمانيون القبض على الأمير شريف بك في هذه السنة بعد أن قاوم الجيش العثماني مدة من الزمن فأخذوه إلى إستانبول. أما إمارة بدليس فقد أصبحت تدار من قِبَل حاكم عثماني تابع لإيالة وان ( خالفين، ١٩٦٩، ٦٣).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکولینێن کوردی

أما إمارة بابان فعندما تبوأ أحمد باشا ابن سليمان باشا إمارة في عام ١٨٣٨م بعد وفاة والده، وكان من سوء حظه أن جاء عهده متزامنًا مع فترة ضعف واضمحلال إمارة بابان من جهة، ومحاولات الدولة العثمانية لاستعادة قواها والقضاء على الإمارات والزعامات المحلية من جهة أخرى ورغم ذلك كان له طموحات واسعة للنهوض بإماراته ضد السيادة العثمانية (ميجرسون، ١٩٧١، ١٤١-١٥٢).

وبسبب لجوء أمراء بابان إلى إيران والاستعانة بقواتها لتحقيق مطامحهم في الإمارة غضب ولاة بغداد العثمانيون وترتب عليه تحرك الدولة العثمانية للقضاء على إمارة بابان.

ومن ثم عمد والي بغداد نجيب باشا (١٨٤٢-١٨٤٩م) إلى القضاء على حكم الأمير أحمد باشا في عام ١٨٤٧م فاشتبك الطرفين وانتهت بهزيمة الأخير ولجوئه إلى طهران حيث توسط السفير العثماني هناك للعفو عنه وذهب على إثر ذلك إلى إستانبول (لونكريك، ١٩٨٥، ٣٤٥؛ زكي، ١٩٤٧، ٨٨).

أقدم نجيب باشا بعد ذلك على تعيين عبد الله باشا حاكمًا على السليمانية ولكن ليس بصفة أمير على إمارة بابان بل قائمقاماً على قضاء السليمانية ووضع في المدينة حامية من الجنود العثمانيين إلا أنه لم يطل به العهد إذ عزل في عام ١٨٤٩م ليحل محله موظف عثماني ومؤسسات الدولة العثمانية (بصري، ١٩٩١، ٢٨). ومن الواضح أن تعيين عبد الله باشا بابان بصفة قائمقام على السليمانية كان يعود إلى محاولة العثمانيين التوفيق بين تطبيق سياستهم في القضاء على الإمارات الكردية وبين احترام حق الشرعية لأسرة بابان الذي كان مبجلاً لدى أهل الإمارة أي أن تلك الخطوة كانت بمثابة تعويد الأذهان لسياستهم الجديدة.

أما عن مصير أحمد باشا بابان فقد عينته الدولة العثمانية واليًا على عدة إيالات منها يمن، وان، أرضروم، أدنه، حتى توفي عام ١٨٧٥م (بصري، ١٩٩١، ٣١). أما إمارة بابان فقد قسمت إلى وحدات إدارية عدة للحيلولة دون إعادة توحيدها وتنظيمها ضمن نفوذ الإمارة (العزاوي، مج ٤-٧، ١٩٥٥، ١٠٧- ١٠٨).

على أية حال لقد ساهمت عدة عوامل في فشل الانتفاضات الكردية ضد الحملات العثمانية وما تبعه من سقوط الإمارات الكردية منها الانقسام الموجود في كردستان، ولجوء كل إمارة كردية إلى الدفاع عن نفسها بنفسها، وعدم اتفاق فيما بينها لتوحيد جهودها في مقاومة الحملات العثمانية المتوالية على كردستان يعد عاملاً مهمًا من هذه العوامل (زكي، ١٩٣٩، ٢٤٦). كذلك موالاة الزعماء الإقطاعيون والعشائر للعثمانيين وعدم الوقوف ضدهم أحيانًا.

فقد كان الزعماء الإقطاعيون يعمدون إلى التخلي عن الانتفاضة حينما كانوا يدركون بأن الأمور لا تسير كما تبغي مصالحهم الذاتية حتى وأن أراد الفلاحون الاستمرار في



Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەری زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

المقاومة (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٢٦). كما أن العلاقات العشائرية والولاء إلى العشيرة كانت تقلل من الولاء للإمارة أو القومية، فقد سقطت عقره في يد القوات العثمانية نتيجة خيانة عشيرة الزيبار (القاطنة فيما بين عقره والزاب الكبير جنوبي كردستان) التي كانت تكن لمحمد باشا السوراني العداء الشديد نتيجة قيام الأخير بالتنكيل بهم حينما رفض الزيباريون الانضواء تحت لوائه لقوة انتمائهم القبلي (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٢٧).

كما أن الانقسام الموجود داخل الإمارة الكردية الواحدة ضمن هذه العوامل أيضًا أحيانًا إذ كان الانقسام يؤدى إلى إضعاف مقاومة تلك الإمارة ثم سقوطها، وقد ظهرت تأثير ذلك العامل بصورة جلية في مقاومة أحمد باشا البابانى الذي انهزم أمام والى بغداد لتواطؤ أخيه عبد الله باشا مع عدوه، ويبدو أن الكرد كانوا على علم بذلك العامل حتى في تلك المدة فعندما وصل القنصل البريطاني جيمس برانت إلى إحدى مناطق سهل موش (شرقى تركيا) التي حارب سكانها ضد قوات حافظ باشا بالرغم من وقوف زعيمهم إلى جانب عدوهم (برانت، ١٩٨٩، ٨٤).

كما أن حوادث الخيانة وطريقة ضرب الانتفاضة الكردية بأبنائها والتي اتبعها العثمانيون لإخماد المقاومة الكردية في بعض الأحيان كان عاملاً مساعدًا لفشل المقاومة، وسقوط الإمارات الكردية، وأبرز مثال على ذلك هو موقف عزيز بك البابانى الذي ساهم في الإطاحة بحكم عبد الله باشا بابان في السليمانية لمصلحته الذاتية والتي لم يحصل عليها (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٢٧).

كما لا يمكننا أن نستبعد العامل الديني في فشل بعض الانتفاضات الكردية إذ كان مسألة تبجيل السلطان العثماني بوصفه خليفة المسلمين لا يزال كامنًا في نفوس الكرد البسطاء الذين كانوا يرون أن القتال ضد جيش السلطان ثم لا يغتفر. وقد ذكر في هذا الصدد الرحالة الإنجليزي فريزر بقوله «إن بقايا التبجيل لخليفة الرسول وزعيم الإسلام الديني منعت الكرد عن مقاومة جنود السلطان بالسلاح» (فريزر، ١٩٦٤، ٢٧).

وكان العامل الخارجي المتمثل في الدور الذى اضطلعت به الدول الأوروبية الكبرى وعلى رأسها بريطانيا له تأثير في مسار الأحداث أيضًا، وذلك في الوقت الذى كان معظم الأمراء والزعماء الكرد غافلين عن هذا العامل، وقد برز هذا الدور السلبى في انتفاضتي محمد باشا السوراني، وبدرخان بك البوتانى بصورة أكيدة كما تبين من قبل كذلك قوة الجيوش العثمانية التي أدخلت عليها الاصلاحات وزودت بالنظم والأسلحة الحديثة آنذاك فأصبحت متطورة بالقياس إلى القوات العسكرية الكردية دون شك وخاصة في أعقاب اصلاحات السلطان محمود الثاني الذى أسس جيشًا نظاميًا حديثًا كما ذكرنا من قبل.

وبالرغم من ذلك كله يجب أن لا ننسى أن بقاء الكيانات السياسية الكردية المتمثلة بالإمارات الكردية وتواصلها لهذا الأمد الطويل الذى كانت تبلغ في معظم الأحيان قرونًا عدة



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

لتدل دلالة واضحة على أن الكرد قد أثبتوا في أحيان كثيرة من تاريخهم بأنهم على استعداد للترفع عن مستوى المصالح الضيقة والولاءات العشائرية والاستعداد للتضحية في سبيل تلك الإمارات فقد عاضدت عشائر الجاف الأمير أحمد باشا البابانى في عام ١٨٤٧م عندما تعرض بهجوم والى بغداد نجيب باشا وذلك بالرغم من توتر العلاقة بين الأمير البابانى المذكور وعشائر الجاف في تلك الفترة وكذلك اضطر كهنة (كخيا) الوالي أحمد باشا ابن حسن باشا إلى ترك محاصرة قلعة آميدى لتعرضه المتواصل لغارات عشائر بادينان في عهد الأمير البادينى بهرام باشا الكبير (١٧١٤-١٧٦٨م). ويجب التنويه إلى أن العوامل الداخلية المتمثلة بالنزاعات حول السلطة والتفرقة القائمة لم تكن إلا عوامل مساعدة أو معجلة لعملية السقوط. (المائي، ١٩٦٠، ١٥٤).

خلاصة القول لقد تم القضاء على جميع الإمارات الكردية التابعة للدولة العثمانية عام ١٨٥١م الأمر الذي كان يعنى نهاية عهد الإمارات في كردستان واضمحلال الاستقلال الداخلي الذي كانت تمتاز به كردستان خلال ذلك العهد مما أدى إلى خضوع المناطق الكردية إلى السلطة العثمانية المباشرة وسيادة مؤسساتها في تلك المناطق فقد أصبح الحكم بيد الباشوات العثمانيين يعاونهم عدد من الموظفين وعلى رأسهم متصرف، وقاض، ومحاسب.

حلت القوات العثمانية محل القوات المحلية الكردية (نوار، ١٩٦٨، ١٣٥). فانتشرت هذه القوات كحاميات في المدن المهمة من كردستان وأصبحت وبالاً على كاهل الناس وآلة قمع جاهزة لقمع أية حركة مناوئة تظهر بينهم (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٢٩).

لكن معنى ذلك لم تتحسن الأوضاع الاقتصادية في كردستان عقب هذا التغيير بل فرضت ضرائب إضافية على كاهل السكان واستعمال الشدة في حياتها ترتب عليه سوء حالة الفلاح بل ترك أرضه والالتجاء إلى الجبال هربًا من دفع الضرائب أحيانًا إذا عجز عن دفعها، أو ربما يلجأ بعض الفلاحين اضطرارًا إلى تقديم بناتهن الصغيرات اللاتي تتراوح أعمارهن بين ثلاث وثمان سنوات إلى موظفي الضرائب بدلاً من الأموال لعدم تمكنهم من دفع الضرائب لفقرهم الشديد، وعدم تنازل الدولة عن ضرائبها الجائرة مهما كانت الظروف، وكانت تلك الفتيات يقدمن إلى الموظفين بدلاً من الرواتب حسب رواية أحد شهود العيان (الدملوجي، ١٩٥٢، ٥٠- ٥١).

وإلى جانب ذلك خضعت كردستان لنظام التجنيد الإجباري الذي كان أشبه بعملية «صيد الإنسان» حسب قول أحد المسؤولين عن هذه العملية حيث كان المجندون يؤخذون بأياد مقيدة (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٣٠). وكان الكرد يقاومون التجنيد ويأنفون منه فيلجئون إلى الجبال هربًا منه لقسوته ولأنه كان يؤدى إلى قلة الأيدي العاملة في القرى الأمر الذي كان يضر بالعملية الإنتاجية ويؤثر في وضعهم المعاشي سلبًا (هروتي، ٢٠٠٨، ٢٣٠).



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

وعندما انتزع العثمانيون السلطة من الأمراء الكرد أصبح الأغوات الإقطاعيون ممن لا يمكن لسواد القبائل الكردية الاستغناء عنهم ليكونوا حلقة وصل بالموظفين الأجانب الذين عينوا عليهم وكانت النتيجة الطبيعية هي تمكن الطبقة الأرستقراطية الجديدة من تثبيت مركزها (ادموندز، ١٩٧١، ٢٠٣).

ولعل ما تجدر الإشارة إليه لم تخضع العشائر كما كانوا، وظلوا يمارسون سلطاتهم على أفراد عشائرهم دون أن يتأثر ذلك بالسيادة العثمانية (نوار، ١٩٦٨، ١٣٤). ولعل ذلك راجع إلى عدم تمكن العثمانيين من فرض حكمهم المباشر على هذه العشائر التي كانت رحالة أو شبه رحالة غالبًا وذلك إلى جانب بقاء روح الانتماء القبلي لديهم على قوته مما كان يجعل إخضاعهم أمرًا صعبًا.

أما فيما يتعلق باستفادة العثمانيين من عملية القضاء على الإمارات الكردية فيمكن القول أنهم حصلوا على منافع عدة؛ فقد أصبح التدخل الأجنبي وعلى الأخص الإيراني أقل من ذي قبل وذلك حينما قضى على الأمراء والزعماء الكرد الذين كانوا يلجؤون فرارًا إلى الدول المجاورة –وخاصةً إيران– طلبًا للمساعدة ضد السلطات العثمانية كما انخفضت مجهودات الولاة العسكرية التي كانت تبذل سنويًا في محاربة الإمارات (المتمردة) على السيادة العثمانية (نوار، ١٩٦٨، ١٣٤، ١٣٥). وذلك إلى جانب منافع أخرى.

كذلك أن عملية الإخضاع الطويلة التي مارستها السلطات العثمانية ضد الإمارات الكردية وما نتج عن ذلك من توحيد أقاليم تلك الإمارات والمناطق المختلفة تحت لواء دولة واحدة الدولة العثمانية قد أدى إلى توحيد الأعراف والعادات، وزيادة الاختلاط، والتزاوج، والاتصال بين الكرد بعد القضاء على الحواجز القديمة بين تلك الإمارات، وقد أدى ذلك إلى نمو الشعور القومي الكردي والتطلع نحو توحيد أجزاء كردستان حيث نتج عن توحيد إماراتها الكردية توحيد التطلعات الكردية نحو التخلص من الحكم العثماني، كما أن أحداث الحملات العثمانية الأخيرة والانتفاضات الكردية التي نشبت جراء ذلك فقد أدت إلى ظهور بواكير الحركة التحررية الوطنية الكردية التي عمقت جذورها في انتفاضات محمد باشا السوراني وبدرخان بك البوتاني وأحمد باشا الباباني وغيرهم (الطالباني، ١٩٧١، ٧٤).

## الخاتمة:

أيًا ما كان الأمر لقد عانت كردستان منذ دخولها تحت السيطرة العثمانية من عدة اضطرابات سياسية وإدارية انعكست بشكل واضح على أوضاعها الاقتصادية والاجتماعية حيث هدفت السلطات العثمانية من سياستها تجاه كردستان تطويع إمارتها لخدمة مصالحها برفض


Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

الحكم المباشر عليها كخطوة مهمة في تقوية سلطاتها بكردستان لحفظ الأمن بها والحصول على أموال إضافية لخزينة الدولة.

ومع ردود الفعل الكردستاني تجاه سياستها المضطهدة للكرد ظهرت عديد من الانتفاضات الكردية التي وجهت لها حملات عسكريه عثمانية صاحبها عمليات القتل والدمار والسلب؛ والنهب والتعسف في فرض الضرائب فضلاً عن سياسة التجنيد ورغم ذلك استمرت الحركة التحررية الكردية الحديثة منذ أوائل القرن التاسع عشر بهدف رفع الظلم عن الكرد وتحقيق طموحاتهم، ومقاومة السياسة المركزية الجديدة التي كانت نتيجتها زوال الإمارات الكردية ورغم فشل الكرد في الحفاظ على تلك الإمارات إلا أنه يمكن القول أن تلك الانتفاضات بداية لأول حركة كبيرة للشعور القومي لدى الكرد تظهر بالطرق التقليدية بالإضافة إلى كونها عودة للتفكير بالعصور الذهبية للحركة التحررية الكردية الحديثة والمعاصرة في الفترات اللاحقة لا سيما أواخر القرن التاسع عشر وأوائل القرن العشرين.


**قائمة المصادر والمراجع**

أولاً: الوثائق المنشورة

- عثمان، علي. (٢٠١٠) **الكرد في الوثائق العثمانية**، أربيل.
- مراد، خليل علي، والبوتاني، د.عبد الفتاح علي. (٢٠١٥) **صفحات من تاريخ الكرد وكردستان الحديث في الوثائق العثمانية ١٨٤٠-١٩١٥**، أربيل.

**ثانياً: الرسائل والاطاريح الأكاديمية:**

- حسين، سعدى عثمان. (١٩٩٥) **كردستان والإمبراطورية العثمانية: دراسة في تطورها السياسي ١٥١٤-١٨٥١**)، رسالة ماجستير مقدمة الى قسم التاريخ، كلية الآداب، جامعة صلاح الدين/ إقليم كردستان العراق.
- علي، شاكر علي. (١٩٩٢) **ولاية الموصل في القرن السادس عشر: دراسة في أوضاعها السياسية والإدارية والاقتصادية**، أطروحة دكتوراه مقدمة الى قسم التاريخ، كلية الآداب، جامعة الموصل.

**ثالثاً: المصادر باللغة العربية**

- أبو بكر، أحمد عثمان. (١٩٧٣) **أكراد المللي وإبراهيم باشا**، بغداد.
- أحمد، إبراهيم خليل. (١٩٨٦) **تاريخ الوطن العربي في العهد العثماني ١٥٩٦-١٩١٦**، جامعة الموصل.
- ادموندز، س. جى. (١٩٧١) **كرد وترك وعرب**، ترجمة جرجيس فتح الله، مطبعة التمايس، بغداد.




Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو فەکولینێن کوردی

- إسماعيل، زبير بلال. (١٩٧١) **أربيل في أدوارها التاريخية**، مطبعة النعمان، النجف.
- بابان، جمال. (١٩٨٦) **أصول أسماء المدن والمواقع العراقية**، الطبعة الثانية، بغداد.
- البدليسي، شرفخان. (١٩٥٣) **الشرفنامه في تاريخ الدول والإمارات الكردية**، ترجمة: ملا جميل بندى روژبيانى، مطبعة النجاح، بغداد.
- برانت، جيمس. (١٩٨٩) **رحلة المستر جيمس برانت إلى المنطقة الكردية عام ١٨٣٨**، ترجمة حسين أحمد الجاف: مطبعة الجاحظ، بغداد.
- البصري، عثمان بن سند الوائلي. (١٩٩١) **مطالع السعود**، الموصل.
- بصري، مير. (١٩٩١) **إعلام الكرد**، لندن.
- پى ره ش. (١٩٨٠) **بارزان وحركة الوعي القومي الكردي ١٨٢٦-١٩١٤**، د. م.
- جب، هاملتون و بوون، هارولد. (١٩٩٧) **المجتمع الإسلامي والغرب**، ترجمة: عبد المجيد حسيب القيسي، الجزء الأول، القسم الثاني، دار المدن للثقافة والنشر، دمشق.
- جلبي، أوليا. (١٣١٤هـ) **سياحتنامه**، ج٤، أقدام مطبعة سي، إستانبول.
- جليل، جليلي. (١٩٨٧) **من تاريخ الإمارات في الإمبراطورية العثمانية في النصف الأول من القرن التاسع عشر**، ترجمة: محمد عبدو النجار، دمشق.
- جودت، أحمد. (١٣٠١ه) تاريخ جودت، إستانبول.
- حسين، سعدى عثمان. (٢٠٠٦) **كردستان الجنوبية في القرنين السابع عشر والثامن عشر**، أربيل.
- خالفين، ن. أ.(١٩٦٩) **الصراع على كردستان**، ترجمة د:أحمد عثمان أبو بكر، بغداد.
- خصباك، شاكر. (١٩٥٩) **الكرد والمسألة الكردية**، منشورات الثقافة الجديدة، مطبعة الرابطة، بغداد.
- الدملوجي، صديق. (١٩٥٢) **إمارة بهدينان أو إمارة العمادية**، مطبعة الاتحاد الجديدة، الموصل.
- الدوسكي، كاميران عبد الصمد. (٢٠٠٦) **كردستان في العهد العثماني في النصف الأول من القرن التاسع عشر**، الدار العربية للموسوعات، بيروت، لبنان.
- رامبو، لوسيان. (١٩٩٨) **الكورد والحق**، ترجمة: عزيز عبد الأحد نباتى، أربيل.
- رؤوف، عماد عبد السلام. (١٨٣٤) **الموصل في العهد العثماني فترة الحكم المحلي ١١٣٩-١٢٤٩هـ/ ١٧٢٦-١٨٣٤م**، النجف.
- زكي، محمد امين. (١٩٣٩) **خلاصة تاريخ الكورد وكردستان**، ترجمة: محمد علي عوني، القاهرة.




Zakho Centre for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

- زكي، محمد امين. (١٩٤٧) مشاهير الكرد، ج١، د.ت.
- الطالباني، جلال. (١٩٧١) **كردستان والحركة القومية الكردية**، الطبعة الثانية، دار الطليعة للطباعة والنشر، بيروت.
- العباسي، محفوظ. (١٩٦٩) **إمارة بهدينان العباسية**، الموصل.
- العزاوي، عباس. (١٩٥٥) **تاريخ العراق بين احتلالين**، مج ٤-٧، شركة التجارة والطباعة المحدودة، بغداد.
- العزاوي، عباس. (١٩٩٨) **العمادية في مختلف العصور**، تحقيق حمدى عبد المجيد السلفي وعبدالكريم أفندى، مطبعة وزارة الثقافة، بغداد.
- العزاوي، عباس. (٢٠٠٠) **شهروز السليمانية: اللواء والمدينة**، تحقيق محمد القيره داغى، بغداد.
- علي، علي شاكر. (١٩٨٤) **تاريخ العراق في العهد العثماني ١٦٣٨-١٧٥٠**، دراسة في أحواله السياسية، مطبعة دار الشعب، بغداد.
- العمري، ياسين بن خير الله الخطيب. (١٩٤٠) **غرائب الأثر في حوادث ربع القرن الثالث عشر**، مطبعة أم الربيعين، الموصل.
- فائق بك، سليمان. (١٩٦٢) **تاريخ بغداد**، ترجمة: موسى كاظم نورس، مطبعة المعارف، بغداد.
- فريزر، جيمس بيلى. (١٩٦٤) **رحلة فريزر إلى بغداد في ١٨٣٤**، ترجمة: جعفر الخياط، مطبعة المعارف، بغداد.
- الكوراني، على سيدو. (١٩٣٩) **من عمان إلى العمادية أو جولة في كردستان الجنوبية**، مطبعة دار السعادة، القاهرة.
- لونكريك، ستيفن همسلى. (١٩٨٥) **أربعة قرون من تاريخ العراق الحديث**، ترجمة جعفر الخياط، ط٦، بغداد.
- مالكم، جان. (١٣٢٣هـ) **تاريخ إيران**، ترجمة رضا الشيرازى، جـ٢، د.م.
- مالمىسانژ. (١٩٩٨) **بدرخانيو جزيرة بوتان ووثائق جمعية اتحاد العائلة البدرخانية**، ترجمة: كولبهار بدرخان ودولاوز الزنكى، ومراجعة وتقديم نذير جرمانى، بيروت.
- المائي، أنور. (١٩٦٠) **الأكراد في بهدينان**، مطبعة الحصان، الموصل.
- المحامي، محمد فريد بك. (١٩٧٧) **تاريخ الدولة العلية العثمانية**، بيروت.
- مصطفي، أحمد عبد الرحيم. (١٩٨٢) **في أصول التاريخ العثماني**، دار الشروق، بيروت.
- الموصلي، سليمان صائغ. (١٩٢٣) **تاريخ الموصل**، المطبعة السلفية، مصر.




Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بۆ ڤەکۆلینێن کوردی

- ميجرسون. (١٩٧١) **رحلة متنكر إلى بلاد ما بين النهرين وكردستان**، ترجمة: فؤاد جميل، جـ٢، بغداد.
- ناظم بيك، حسين. (٢٠٠١) **تاريخ الإمارة البابانية**، ترجمة: شكور مصطفي ومحمد الملا عبدالكريم المدرس، اربيل.
- نوار، عبد العزيز سليمان. (١٩٦٨) **تاريخ العراق الحديث من نهاية حكم داود باشا إلى نهاية حكم مدحت باشا**، دار الكاتب العربى للطباعة والنشر، القاهرة.
- نيبور، كارتسن. (١٩٦٥) **رحلة نيبور إلى العراق في القرن الثامن عشر**، ترجمة: د. محمود حسين الأمين، بغداد.
- نيكيتين، باسيل. (١٩٦٧) **الأكراد**، دار الروائع، بيروت.
- هروتي، سعدي عثمان. (٢٠٠٨)**الإمبراطورية العثمانية: دراسة في تطوير الهيمنة العثمانية في كردستان ١٥١٤-١٨٥١**، مطبعة خاني، دهوك.
- هروري، صلاح. (٢٠٠٠) **إمارة بوتان في عهد الأمير بدرخان ١٨٢١-١٨٤٧**، مؤسسة موكريانى للطباعة والنشر، أربيل.

**رابعاً: المصادر باللغة الفارسية**

- باباني، عبد القادر ابن رستم. (١٣٦٦هـ) **سير الأكراد**، تحقيق محمد رؤوف توكلى، تهران.

**خامساً: المقالات**

- يحيى، عبد الفتاح علي. (١٩٨٧) **الهجوم العثماني على كردستان وسقوط إمارة سوران**، مجلة كاروان، العدد (٥٢)، بغداد.
- يحيى، عبد الفتاح علي. (١٩٩٢) **الكورد وكردستان في رسائل الفيلد مارشال هيلموت فون كارل مولتكه**، مجلة (نوسه رى كورد/ الأديب الكردي) العدد (٤)، بغداد.


**سيايەتا دەولەتا عوسمانى ل هەمبەر ميرنشينێن كوردان ل كوردستانى ١٥١٤-١٨٥١**

ل سالا ١٥١٤ كورد ستان كەفتە ل ژێر دەستهەلاتا عوسمانى، و ئەڤە دەستپێكا پەيدابوونا پەيوەنديان دناڤبەرا كورد و عوسمانيا ندا بوو، ئەوژى دەمێ سولتان سەليمێ ئێكێ پەيمانەك د گەل كوردان گرێداى. ل سەر ڤى بنا خەى پتر ژ ٣٠ مير گەهێن كوردى د چوار چووڤێ دەولەتا عوسماني يدا هاتنە رێكخستن وەك: بەهدينان، سوران، بابان و بوتان و گەلەكێن دى.



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەكولينێن كوردى

لێ  هەرزوو دەو لەتا عو سمانی ژ  پەیمانا  خوە د گەل  کوردان لێ ڤەبوو، و دە ست ب مایتێکرنێ دکارو بارێن میرگەها ندا  کر،  ئەوژی ب رێ کا پە یدا کر نا ئاریێ شەیان دناڤ بەرا میرگەهاندا یان دناڤ ئێک میرگەهدا. هەروەسا باجێن گران ل سەر میران هاتنە سەپاندن، و ل ناڤەراستا سەدەیێ نوزدە دەو لەتێ دەست ب سەپاندنا حوکمێ مەلبەندی ل سەر ڤان میرگەهان کر.

ئەڤ ڤەکولینە هەولددەت بەرسڤا ڤان پرسیاران بدەت:

١- چەوا دەولەتا عوسمانی شیا دەستهەلاتا خوە ل سەر کوردستانێ بسەپینیت؟

٢- چەوا شیا کوردستانێ ژلایێ سیاسی و کارگێریڤە ب عوسمانی بکەت؟

٣- سروشتێ سیاسەتا عوسمانی ل هەمبەر میرێن کورد چەوا بوو؟

٤- بوچی عوسمانی ژ پەیمانا خوە د گەل میرگەهێن کوردی لێڤەبوو؟

٥- کارڤەدانا میرگەهێن کوردان چەوا بوو؟

٦- رەوشا سیاسی و کارگێری ل کوردستانێ پشتی کەفتنا میرگەهان ب چ شێوە بوو؟

**پەیڤێن سەرەکی:** *میرگەهێن کوردی، دەولەتا عوسمانی، هزرا نەتەوەیی، سەرهلدانێن کوردان*

## The policy of the Ottoman Empire towards the Kurdish emirates in Kurdistan 1514-1851

**Abstract:**

The entry of Kurdistan under Ottoman control in 1514 AD after the Battle of Chaldiran was the beginning of the political relations between the Kurds and the Ottomans with the signing of the agreement of the Ottoman Sultan Selim I (1512-1520 AD) in that year with the leaders of the Kurdish Emirates to stand by the Ottoman Empire in its wars, provided that the latter recognizes the independence of the Kurdish Emirates.

Since this moment, there has been a major turning point in the history of the Ottoman-Kurdish relations, as most of the Kurdish regions became affiliated to the Ottoman state, and as a result of the participation of the Ottoman Kurds in their wars against their Safavid neighbors, especially after the previous battle, the Ottoman sultans recognized the legitimacy and authority of the Kurdish princes in their hereditary emirates, and the Ottoman state allowed With the formation of many Kurdish emirates, the number of which reached thirty major emirates, such as the emirates of Bahdinan.

Soran, Bhutan, and Baban, after the Ottoman Empire signed an agreement of friendship and alliance with those Emirates in 1515 AD.

However, the Ottoman state did not adhere to the two previous agreements to achieve several benefits for it at the expense of weakening the political entities in



Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخو بو ڤەکولینێن کوردی

Kurdistan by igniting conflicts and problems between the Emirates and the Kurdish leaders, what was known as the policy of divide and rule and the Ottoman intervention in their affairs, and the achievement of financial gains by the Kurdish princes aspiring to obtain the position of the emirate as well Excessive taxation and the spread of looting and looting in the Kurdish emirates, which led to the emergence of several Kurdish uprisings to protest against this policy and defend their rights, and with the advent of the nineteenth century, the Ottoman policy aimed at restoring central control over Kurdistan to achieve its greater goal, which is the fall of the Kurdish emirates that existed for several centuries. .

And the subsequent rise of several Kurdish uprisings, and this took place at close intervals during the nineteenth century until the fall of the last emirate in 1851 AD. It was not satisfied with that, but rather deported the Kurdish princes and their families to areas far from Kurdistan to prevent them from carrying out any revolutions in the future. From here came the research problem focused on the following points:

1- How was the Ottoman Empire able to impose its control over Kurdistan؟
2- How was the Ottomanization of Kurdistan politically and administratively؟
3- What was the nature of the Ottoman policy towards the Kurdish princes؟
4- What were the reasons that prompted the Ottoman Empire to veto the friendship and alliance agreement with the Kurdish emirates؟
5- To what extent has the arbitrary policy towards the Kurdish Emirates reached؟
6- What are the reactions of the Kurdish princes towards the arbitrary Ottoman policy؟
7- How did the Ottoman authorities confront the Kurdish uprisings؟
8- To what extent did the Ottoman Empire succeed in imposing central authority on Kurdistan? What is its impact on the rule of the Emirates؟
9- Why did the Ottoman Empire resort to the fall of the Kurdish emirates؟
10- How did the Ottoman Empire respond to the Kurdish uprisings as a result of the attempt to overthrow the Kurdish emirates?
11- To what extent have the political and administrative conditions of Kurdistan reached after the fall of its emirates

**Keywords**: *Kurdish emirates - Ottoman central rule - Kurdish uprisings - Kurdish nationalism*

پێشکێشکرن | تقديم

هوگر طاهر توفيق

نزار أيوب حسن

ئاراس محمد صالح
أجقو علي
بشار اكرم جميل
پەخشان سابير حەمەد
ثريا محمود عبد الحسن
حسين عثمان عبدالرحمن
خضير عباس المنشداوي
خطاب إسماعيل أحمد
درويش يوسف حسن
زرار صديق تۆفيق
سەردار ئەحمەد حەسەن گەردی
عبدالباسط سيدا
عبد الغنى عبد الفتاح زهرة
عثمان احمد محمدعلي
عمار يوسف عبدالله
عوسمان دەشتی
فايزة محمد حسن ملوك
فرست مرعي إسماعيل
فرهاد حاجي عبوش
كامران أورحمان مجيد
کەیوان ئازاد ئەنوەر
محمد الطاهر بنادي
محمود صالح سعيد
نزار علوان عبدالله
هيمداد حوسێن بەکر
ابوبکر دێوانه حمد بالەکی
توفيق رشيد يوسف
دریا جەمال حەوێزی
سروشت جەوهەر
شهلة برهان عبدالله
طارق محمد أورحيم
عماد عبدالعزيز يوسف

قحطان احمد فرهود
لوقمان رەئوف
محمد علي صالح ويس
محمد محمود محمود حمد الدودانى
هدار سليم صالح
یەدوڵلا پەشابادی
أحمد سعيد السيد زيدان
بزار عثمان أحمد
پەروین رەئووف هادی
حسام السيد ذكى شلبى
شريف محمد مراد
صدرالدين عبدالرحمن قادر
عبد الباري عزيز عثمان
على رحمتى
محسن إبراهيم أحمد الدوسكي
محمد مولود متي
نعمەت شەهاب حاجی
ئیسماعیل خالند ناوخۆش
امين غانم محمد
جەمیل محەمەد ئەنوەر شێلازی
خالد مغديد كانبى
ژێهات قادر حەسەن
شاين حمد امين صادق
شمال خمو خضر
صالح زاهير محمد
عبدالخالق عبدالله عثمان
کۆڤان رێسان حەسەن
نێچیروان جاسم ولی
هێرش کەمال رێکانی

ISBN 978-9922-661-15-5
9 789922 661155

Zakho Centre
for Kurdish Studies
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

مافێ چاپێ یێ پاراستیه بۆ ©
سەنتەرێ زاخۆ بۆ ڤەکولینێن کوردی

zcks@uoz.edu.krd +964(0)751 536 1550
Iraq- Kurdistan region, Zakho- Univesity of zakho